IS 11137

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

DONE

NO

पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

वर्ग.....आगत संख्या .....

पुस्तक-वितरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित २० वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए। अन्यथा १० पैसे के हिसाब से विलम्ब-दण्ड लगेगा।

27 JUN 1986

151137

151137

14.5,MM-S
151137

DONE

NO

151137

151137

14.5,MM-S
151137

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

14.5,MM-S
151137

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Registered NO. A. 434.

धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

शनिवार को प्रकाशित होता है } ४ वैशाख सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १५ अप्रैल सन् १९१६ ई० { भाग २८

आगे आनेवाली पुस्तिका
नाम सं० .....
.....
गुरुकुल ग्रन्थालय कांगड़ी. १

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

साधारण से ... ... ३)
आर्थियों से ... ... २।)
न विभिन्न देशों से ... ... ४=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सत्तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
स ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,
क देर तक विज्ञापन देने के लिये
हार प्रबन्धकर्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र कोवंटाई

पहले देखे बिना प्रचारक में कोई
न नहीं बट सकता।
क्रोड़ पत्र में आधा कालम समा-
ोना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे
सद्धर्म्मप्रचारक का नाम और बं-
तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने
ये प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित
न

रण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
ोले तक १५)
पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से
ए

उषा

अब न चूकिये

स्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रका-
है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख
णयां. आप संस्कृत में भी पढ़ सकते
गौरव की रक्षा और देववाणी का
से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति
रण करने वाले को न चूकना चाहिए
हिए। वार्षिक मूल्य १॥)

उषा कार्यालय गुरुकुल
मपुर काङ्गड़ी, जि०बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसी माल हर वक्त तय्यार रहता है। साफा बूटी रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमखाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यकता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—:o:—

अध्यापिका और अध्यापक की आवश्यकता

आर्य कन्या पाठशाला सदर बाज़ार पेशावर के लिए एक अध्यापिका और एक अध्यापक की आवश्यकता है:—

(१) अध्यापिका ऐंट्रैंस (Entrance) या न्यून से न्यून मिडिल पास हो मासिक वेतन ३० रुपए होगी और मकान भी दिया जायगा।

(२) अध्यापक सीनीअर वरनेक्युलर पास और हिन्दी जानता हो, वेतन का निर्णय पत्र द्वारा हो सकता है।

नोट—अध्यापिका और अध्यापक शुद्धाचरण और आर्य्य हों॥

पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते पर होना चाहिए।

श्रद्धाराम प्रबन्धकर्ता
आर्य्य कन्यापाठशाला
१५ से १६ तक } सदर बाजार पेशावर

—:o:—

Collection Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक के ग्राहक ध्यान से पढ़ें।

(१) २० चैत्र १९७२ के अंक में लिखा गया था कि जिन १३ सप्ताह प्रचारक ग्राहकों के चन्दे के बदले कोई पुस्तक न भेजकर १३ सप्ताह वर्तमान वर्ष में मुफ्त दिए जायेंगे अनेक सज्जन लिखते हैं कि कोई भी पुस्तक रुपए में ४ देकर वैशाख १९७३ में ही प्रचारक के नाम वी० पी० कर दिया जाय और कुछ उत्तर नहीं आया। सबके लिए एक सा ठहराव रहना उचित है। इस लिए:—

(२) निश्चय किया है कि जिन महाशयों का आर्थिक मूल्य इस वर्ष (१९७३) के ग्यारहवें अंक तक समाप्त होगा उन को उपहार में "आर्य पथिक हेरिटेज" की एक एक प्रति ३।) का वी० पी० कर के भेज दीजाय। १३ अंकों के बदले ।।।) की ही पुस्तक भेजने की आवश्यकता थी, परन्तु यह खयाल कर के कि पुस्तक पहली छपी हुई है हमने ३) की पुस्तक देना स्वीकार किया है। डाक महसूल तथा वैधिकादि पर जो ।) शेष व्यय होगा वह अपने पल्ले से ही लगा दिया जायगा इस प्रकार सब ग्राहकों के नाम अखबार तो जारी रहेगा और वी० पी० पुस्तक का उन के नाम हो जायगा। जिन महाशयों के पुस्तकालय में पं० लेखराम की जीवनी नहीं है उन का निजू पुस्तकालय उन्नत होगा और जिन के पास पहले से पुस्तक मौजूद है, वह अपने इष्ट मित्रों को यह फालतू पुस्तक पढ़ने को देसकेंगे।

(३) यह वी० पी० भेजने का सिलसिला २० वैशाख (१ मई, १९१६) से आरम्भ होगा, इस लिए जिन महाशयों को आगे के लिए प्रचारक का ग्राहक रहना स्वीकार न हो उन्हें अभी से सूचना भेज देनी चाहिए जिस से उन के नाम पुस्तक वी० पी० भेजी ही न जाय। पुस्तक भेजी जाकर वापिस लौटेगी तो इस कार्यालय को हानि पहुंचेगी जिस के सहन की अब शक्ति नहीं है।

(४) जो महाशय स्वयम् ३) वेशगी भेज देंगे उन के नाम भी पुस्तक बुक-पोस्ट से भेजदी जायगी।

(प्रबन्धकर्ता)

गुरुकुल समाचार

गंगा की गुरुकुल धारा—अभी तक भरकर चलने नहीं लगी। नहर काट के जो जल बुझवाने लाए थे वह भी बन्द हो गया था क्योंकि किसी परोपकारी सज्जन ने उसे रोक दिया था। रुकावट दूर होने से अब फिर पानी बहने लग गया है।

छप्पर जब तक बने रहेंगे—तब तक आग लगने का भय बना रहेगा। मुख्याधिष्ठाता के आने से जो दो बड़े कमरे, ४ छोटे कमरे और ४ बरामदे बने हैं उन पर अभी नया छप्पर फिर से डाला गया था। एक साधु से बचकर आए लड़के को एक छोटी कोठरी में बैठकर दिन को पढ़ने की आज्ञा दी थी। उस ने रात को तथा प्रातः लैम्प जलाकर व्याकरण रटना आरम्भ किया। प्रातः ५½ बजे लैम्प को छत के साथ लगे कड़े पर रखकर बाहर चला गया कि फूस की छत में आग लग गई। चारों ओर से ब्रह्मचारी और कर्मचारी दौड़े परन्तु फूस आरूढ था—देखते देखते उड़गया। अन्दर लग भग ३०००) की पुस्तकें और २५०) का अन्य सामान था। बड़े हाथों हाथ बाहर कर लिया गया। पासही एक बड़ी छप्पर की बारगी थी। उसकी छत पर चढ़कर ब्रह्मचारियों ने पानी से छत भिगो दी। ऐसा करने से उस छप्पर को आग की चिङ्गारियों से रक्षा हो गई। छप्पर के अतिरिक्त सब शीशों वाले किवाड़ और चौखटें तक जल कर राख हो गए। लगभग १०००) की हानि हुई। Minimax नामी आग बुझाने का यन्त्र कार्यालय में पड़ा रहा; मुख्याधिष्ठाता की स्मरण शक्ति इतनी कम हो गई है कि उस की याद ही न आई। शायद वह यन्त्र समय पर आग को बुझा सकता वा बढ़ी हुई आग को न बुझा सकता परन्तु यदि वे मंगाने की याद आती तो उसका परीक्षण तो हो जाता।

गत वर्ष भी कई घर, थायरलाज सहित, जल गए थे, इस वर्ष यह घटना हुई। इन दुर्घटनाओं से बचने के लिए सब छतें लोहे की चद्दरों की हो जानी चाहिए।

ऋतु का परिवर्तन—हो रहा है। कभी हिमालय से चली हुई ठण्डी पवन ५० दर्जे की सर्दी कर देती है और फिर गरम हवा उसे हटा कर तापमापक यन्त्र की मात्रा को १० तक बढ़ा देती है। फिर भी रातें बड़ी सुहावनी होती हैं।

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अन्य प्रकार अच्छा है परन्तु नवम श्रेणी में ३ ब्रह्मचारियों के खसरा निकल आया था। उसको आश्रम में ले आने का बाहर [illegible] है। जब तक नए को रोग का [illegible] न हो जाय इस [illegible] के टिनशेड में रक्खा जायगा। प्रत्येक वर्ष लगभग ब्रह्मचारियों के संबंधक [illegible] आते हैं। उन में कई छोटे बालक रोगों से पीड़ित होते हैं। सो से के पश्चात् इस प्रकार का के देने को ब्रह्मचारियों को सुविधा है जब तक गुरु पास पर्याप्त स्थिर कोष न हो तब इसी प्रकार धन एकत्र करने के लि त्रुटि मनाने पड़ेंगे और आगन्तु रियों को भय लगा रहेगा। इस से जहां अर्थ जनता को स्थिर पूर्ति में लगना चाहिए, वहां रियों के रक्षकों को चिंतित है बार को मिलाने के लिए, वा से अतिरिक्त, किसी अन्य समय कुल भूमि में लाया करें।

अनाज वस्त्रादि के लिए अपील—[illegible] जायगी। एक महाशय ने कुल रु के लिए जाकर के धर्मपुर (मेरठ) से भेजे हैं। यह आशा लगी हुई है कि मंजाब की देवि काते हुए सूत का खद्दर अवश्य रियों के लिये भेजी अनाज संयुक्त प्रान्त [illegible] है और भी [illegible] करता हूं कि तीन सप्ताह तक ही [illegible] कर [illegible] को [illegible] सकता।

पिछले सप्ताह—हुन से अध्या उपाध्यायों के बाहर आने से कार्य में हानि हुई। गुरुकुल अन्य पाठशालों की तरह विद्यार्थियों दिन के पांच छः घन्टे का रखने वाला विद्यालय नहीं मैंने पहले लिख दिया है और हराता हूं कि आश्विन के अन्त १९१६) तक प्रतिज्ञा किए हुए अतिरिक्त, कहीं भी गुरुकुल के यादि नहीं भेजे जायेंगे। आश्विन में जो जो उपाध्याय, अपना समय देने को उद्यत का सब विभाग बना कर प्रा समाजों को सूचना देदी जायगी।

[मुख्याधि

नया सम्वत्

न भे धनि करुणानिधि केशव करी कृपा अति भारी ।
जु हं नववर्ष दिखायो सकल विघन गन टारी ॥
तो ।सन वसन धन जीवन देत रहत सब सोई ।
ो ऐक धनिवाद दीजिए तितो अल्प अति होई ॥
ि अज तोसम्वत् उनइस सौ सु-तिहत्तर लाग्यो ।
विप्र हरिदया देखि चित चाहिए अति अनुराग्यो ॥
अवर कस न कहिय जय जय जय त्रिभुवन स्वामी ।
पाव पद पङ्कज हेत नमामि नमामि नमामी ॥
ो स्वत आज सब कहँ जे भारत पूत कहावैं ।
चिता तजि घर बाहर की मंगल मोद मचावैं ॥
पूा माहिं मगन ह्वै करहिं पाठ अगियारी ॥
हियो अन्न पट भूषण निज समरथि अनुसारी ॥
ले ोगन के समान निजहित परहित अभिलाषैं ।
दूस सों हिलमिल कै वर्ष शुभागम भाषैं ॥
वर्ष प्यारे भाई यह शुभ सम्वत आयो ।
क गजत जीति भुजबलसों विक्रमदेव चलायो ॥
ु दुर्जन विधंस करि हरि सब पीर प्रजा की ।
भत घर घर सुख सम्पति नीव धरी उन याकी ॥
े हिल उज्जैन माहिं जब अनुष्ठान यहि केरो ।
होगो तब को आनन्द सोइ जानहिं जिन हेरो ॥
न क्तन माहिं कहा अब कहत महत दुख लागै ।
सपदा कथा वृथा है सब सुभाग जब भागै ॥
तो ाय हमारो सम्वत रह्यो पत्तरन माहीं ।
ा ठखहिं बहिन महं बनिया जे जानत कछु नाहीं ॥
ो नए वत्सर महं आनंद अमित मनावैं ।
नि पापी पेट हेत उनही के पीछे धावैं ॥
वैभव सब उनही को हमरे होय कहा है ।
पनो दुखहू रोवत उपजत शंक महा है ॥
नववर्ष हर्ष में हमहुं धाय मिलि जाहीं ।
सम्वत् कब आवत कब जात जानियत नाहीं ॥
वत् सों कछू तनिकहू नहिं सम्बन्ध हमारो ।
सिन के सुमिरन हित परदेसिन जाहि संचारो ॥
के अनुकूल नाहिं जो होत कुऋतु के माहीं ।
कर सों विटप अशोभित होहि लोग सिसियाहीं ॥
हम निज २ वित भरि घर २ मोद मनावैं ।
नता ! हाय खुशामद ! नाना नाच नचावैं ॥
रो सम्वत् हैं जेहि हमरे पुरिखन थाप्यो ।
सहजहि जगत रहत है नव शोभा सुख व्याप्यो ॥
न आगमनहू हा ! केतिक लोग न जानैं ।
तेऊ निजता विन उचित प्रमोद न ठानैं ॥
धिन विप्र उदरहित द्वार २ जे डोलैं ।
णा हेत सु कहुं कहुं सम्वत पत्रहि खोलैं ॥
ऊ कोऊ बूढ़े दयावान सुनि लेहीं ।
त देखतहि दूरिते दुतकारत चलिदेहीं ॥
ल ! जेहि बड़े २ नृप रहे नवावत माथा ।
वना सहि कुकालवश बन उन जोड़त हाथा ॥
ो नहिं काहू विधि की पूजन काको कीजै ।
हा अभाग निज देश माहिं रहि परदेशी सम जीजै ॥
कर अरु चन्दा पथ हा लक्ष्मी ! जाय विदेश बसी है ।
नोन तेल लकरिहु के हित नित रहति प्रजा तरसी है ॥
हाय सरस्वति ! तोहि "भारती" कहत रहे सब कोई ।
सो अब लन्दन गए बिना तब सिद्धि कैसेहु होई ॥
हा दुर्गा ! तब नाम सुने सब कांपत रहे सुरारी ।
सोऊ पृथ्वीराज के सायहि हम कहं छोड़ि सिधारी ॥
अब सब भांति अशक्त हवन हित कहां अन्न घृत पावैं ।
हमतो शाक पात सों हा ! हा ! जीवन काल बितावैं ॥
ऐसी दीन दशा में सूझै सम्वत सुख केहि भांती ।
सुधि विक्रमादित्य की करि कै औरौ दरकति छाती ॥
जिनके राज माहिं सब धरती रही धर्म धन छाई ।
तिनकी कथहु दैववश अब हा ! कतहुं न परति सुनाई ॥
केवल टूटे फूटे खंडहर लखि उजैन के माहीं ।
छाती पर पाथर धरि धरि कै सहृदय गण रहि जाहीं ॥
प्रभु को नाम पतित पावन है हति याहि तें आशा ।
कबहूं निज दिशि देखि करहिंगे दुख दुर्गति कर नाशा ॥
सुमति सहोदर भाव सिखैहैं सुख सम्पति सब दैहैं ।
तबहीं हम नववर्ष मनै हैं जब नवजीवन पै हैं ॥
राजा प्रजा वृद्ध बालक नर नारि सब मिलि साथा ।
करि हैं जैजैकार मुदित मन जोरि २ युग हाथा ॥
जय सुखदायक जय जगनायक जय जय हृदय विहारी ।
जय जय जय प्रिय पूज्य प्रेममय बलिहारी बलिहारी ॥

[स्वर्गीय श्री पं० प्रतापनारायण मिश्र लिखित,
"ब्राह्मण" पत्र से किञ्चित् परिवर्तन पूर्वक उद्धृत]

(गौरीशंकर भट्ट)

——:०:——

राम नवमी

धर्म्म, भारतदेश की रग रग में था, अब है नहीं ।
होगा, पै हो कैसे कि जब राम से राजा नहीं ॥
उच्च पावन भावनाओं से जो था उज्वल मिला ।
संस्कार श्री सौरभ से काञ्चन तुल्य वह आत्मा मिला ॥
संस्कार क्या होता है यह जो जानते कुछ भी नहीं ।
हा ! राम की सन्तान कहने से हिचकते भी नहीं ॥
कैसे नरेश वो देश के जो आज राम से हैं नहीं ।
राज पुत्रों की उचित शिक्षा कि जब बिलकुल नहीं ॥

—:०:—

यह मंगलवाद्य (नाद) क्यों भगवन् ! न सोते दिल जगावेगा ।
न भारत रामनौमी को दिलों से फिर मनावेगा ? ? टेक ॥
अधर्म्मों को कुचल जिन देश का सिर था किया ऊंचा ।
उन्हीं के चरणचिन्हों पै क्या फिर भारत न आवेगा ॥ १
खरारी राम हैं नायक घटाएं पाप की भारी ।
कमी जो है तो साहस की न क्या वो हाथ आवेगा ॥ २
बुजुर्गों की तो वो आज्ञा को शिर माथे पै माने थे ।
भुलाके वक्त क्या उनको यह गफलत में ही जावेगा ॥ ३
वह प्यारे राम लछमन से सनेही हैं कहां भाई ।
कि भाई भाई भारत का न दिल से दिल जुड़ावेगा ॥ ४
अवध के वह कहां वैभव जो प्यारे राम के संग थे ।
धरम के साथ सब वैभव को फिर से क्यों न पावेगा ॥ ५
सुखों का शान्ति का और प्रेम का जो राम शासन था ।
वो सुनने में रहा केवल न फिर सर्वत्र छावेगा ? ? ६

aridwar, Digitized by

यह नया वर्ष भी तेरे ही अर्पण हो।

एक वर्ष और व्यतीत हो गया; जीते जागते आत्माओं ने प्रायश्चित्त और अनुताप पूर्वक पहला दिन बिताया और नए व्रत धारण करके आगे पग उठया, अन्धकार से ढपे हुए निमग्न, गिरे हुए आत्माओं ने बरस की एक गांठ और लगा कर खेल कूद और रङ्गरलियों में उन्मत्त हो, मनघ गंवाया। कौनसा शरीर, मन और आत्मा है जिस में अन्धकार और प्रकाश में परस्पर युद्ध नहीं हुआ; कौनसा अन्तः करण है जिस में देवासुर संग्राम नहीं हुआ। अन्धकार ने दबाया और प्रकाश ने फिर उभारा, फिर फिर काले बादल आशाओं के सामने आखड़े हुए और रह रह कर सूर्य भगवान ने उन्हें छिन्न भिन्न कर दिया। क्या हमारे कर्म ही काले बादलों को लाने वाले नहीं और वही कर्म उन को छिन्न भिन्न कराने वाले भी नहीं ? तब कहां से उन का प्रादुर्भाव होता और किस की प्रेरणा से मानसिक चक्र चलता है ?

इन्द्राय हि द्यौरसुरो अनम्नतेन्द्राय मही पृथिवी वरीमभिर्द्यौर्न वरीमभिः। इन्द्रं विश्वे सजोषसो देवासो दाधिरे पुरः। इन्द्राय विश्वा-सबनानि मानुषा रातानि सन्तु मानुषा॥ ऋग्वेद० मं० । सू० १३१ । म० ॥

उज्वल प्रकाश और काले मेघ उसी की आज्ञा से प्रेरित होकर काम करते हैं। तब बादलों से घबराना नहीं चाहिए। हमारी भौतिक आंखों के आगे आकर बादल, उन्हें सूर्य के प्रकाश के लिए उतावले बना देते हैं और जब आंधी और गरज और मूसलाधार के पश्चात, बादल समाप्त हो, सूर्यकी किरणें प्रकाश फैलाती हैं तब आखों के लिए प्रकृति का दृश्य ही निराला हो जाता है। प्रकाश का मूल्य उस समय ठीक प्रतीत होता है। इसी प्रकार जब आत्मा, किसी किसी समय, घोर अन्धकार मय हो कर निराश हो जाता है तब ज्ञान के प्रकाश के लिए व्याकुल हो कर उस के गौरव को समझता है। उस समय जीवन एक बोझ सा बन जाता है और क्लेशों से पीड़ित मनुष्य आशा से सर्वथा हाथ धोबैठता है। तब एक दम से आशा रूपी विजुली चमक उठती है और व्याकुल आत्मा उस प्रकाश से नया आल्हाद प्राप्त करता है। क्या यह क्लेश रूपी परीक्षा हानिकारक है, वा व्यर्थ है, जिस की समाप्ति पर आनन्द के असली स्वरूप का पता लगता है ?

सूर्य का प्रकाश और मेघ की श्यामलता उसी, सारे ऐश्वर्यों के मालिक के लिये हों। बड़ी (बलवती) प्रकृति और भूमि धर्म के व्यवहारों से सेवा के लिए नम्रता को धारण करें। जिस (सर्व दुःख नाशक) परमेश्वर को, समता का जीवन व्यतीत करने वाले समस्त विद्वान् अपने अन्तः करण में धारण करते हैं उसी ऐश्वर्यों के स्वामी के ही अर्पण वे समस्त मानवी ऐश्वर्य हों जो स्वीकार करने योग्य धर्मों से प्राप्त होते हैं।

गत वर्ष मैं हम ने कहां कहां ठोकरें खाईं ? उन के कारण क्या थे ? परमेश्वर ने प्राकृतिक पदार्थों को हमारा दास नियत किया है। पुरुष स्वामी और प्रकृति उस की दासी है; परन्तु तभी तक जब तक कि उन नियमों का पालन किया जाय जो नियन्ता ने पुरुष और प्रकृति के संयोग के लिए स्थापित किए हैं। कारण प्रकृति (असम्भूति) और कार्य भूमि (सम्भूति) दोनों जब नम्र भाव से गर्दन झुकाए पुरुष की आज्ञा का पालन करती रहें तभी तक संसार में कल्याण रहता है। क्या हमने प्रकृति को उसके स्थान में रक्खा है ? यदि नहीं तो क्यों ? इस लिए कि हमने स्वामी को भुला दिया। महाराजाधिराज को भूल कर जिन्होंने उस के ऐश्वर्य की पूजा आरम्भ कर दी उनको दोनों ओर से ही पछताना पड़ा। जहां ऐश्वर्यों के स्वामी प्रभु निवास करेंगे वहां ही उनका ऐश्वर्य रहेगा। परन्तु जहां वह नहीं हैं वहां उनका ऐश्वर्य भी ठहर नहीं सक्ता।

हम सब अब तक क्यों भटकरहे हैं इस लिए कि हमने मुक्ति प्राप्ति के को नहीं समझा। धर्म दिन रात हम अपनी ओर बुला रहा है, अन्तःकरण नेत्र खोल कर देखें तो धर्म्म ही सारे ज को धारण कर रहा है। उसको धारण रने से ही हम मुक्ति पथ पर चलने योग्य हो सकते हैं। जब २ हमने सा किये तब २ ही हमको सिद्धियां प्र हुईं। हमने नहीं सोचा कि इन सि के प्राप्त कराने वाला कौन है? हमारी शक्ति इसमें निमित्त है? ऐसा होता तो वे सिद्धियां हमारा ही न क्यों करदेतीं। हम भोगों को भागनेकी दौड़तेहैं, समझते हैं कि हमने उ लिया, परन्तु आश्चर्य से देखते हैं कि हमारा भक्तान कर दिया। भो इच्छा में असीम आह्लाद और प्राप्ती के पश्चात दारुण दुःख इसी है कि हमने कर्मों के नियन्ता को दिया है। सिद्धियें उसकी प्राप्ति यत्न करते हुए स्वतः ही प्राप्त हो हैं वे हमारे जीवन के ध्येय की प्राप्ति साधक नहीं प्रत्युत बाधक हैं। वे कार के प्रलोभन हैं जोकि मनुष्य को पद से अलग खैच लेते हैं। जो उनसे ऊपर उठ कर निकल गया वही को प्राप्त होता है, तभी तो महामुनि ने लिखा है—तद्वैराग्यादपिदोषबीजक्षये सिद्धियों के वैराग्य से दोषों का बी होजाता है तभी योगी कैवल्य को करता है।

परन्तु इस प्रलोभन से बचना बड़ा है। अपने कर्मों पर भरोसा करके इन प्रबल शक्तियों का मुकाबला कर सकता इस लिये सब ऐश्वर्यों के पालयिता प्रभु के ही सब कर्म अर्पण से जिज्ञासु की रक्षा हो सकती तब समानता का जीवन मुक्ति के मार्ग पर ले जा सकता है। प्रभु हो को वर दें कि हम आगामी वर्ष अपना सारा पुरुषार्थ, अपने कर्म, अपना ज्ञान उसी के अर्पण करता शमित्योंॐ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राष्ट्रीय जागृति में साहित्य का स्थान

(लेखक-पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति)

गतांङ्क से आगे

गैलिक लीग के स्थापक कहते हैं कि सवीं सदी हमारा नाश करने हो आयी —उस सदी के आरम्भ में हम आ- एड वासी थे—अब हम दोगले अं- हैं' साथ ही वे अपने अपराध दूसरों नहीं डालते। वे कहते हैं कि यह है कि आयरिश भाषा की सभा को जी शिक्षा प्रणाली ने नष्ट किया है— तु साथ ही यह भी सत्य है कि वह र प्रणाली ठोकर खाकर औंधी गिर- ी यदि आयरिश जाति स्वयं अपनी महत्या न कर लेती। उस आत्म- ा से जाति को बचाने के लिए गैलिक की स्थापना की गई है। थोड़े ही ों में इस लीग ने अद्भुत कार्य किया १९०७ में इस लीग ने अपना १३ वां समाप्त किया था। उस समय उस क लाख सभासद् थे और ९०० शा- खों (क्या इस गिनती को देख कर ी पचीस २ साल पुरानी नागरी प्र- णी सभायें न शर्मायंगी ?) आय- के उस समय शिक्षा पाने वाले नग ढाई लाख विद्यार्थी इस सभा के सहायक थे। (क्या हमारे फैशने- अण्डर ग्रेजुवेट इस गिनती को सु- सुंह पर कपड़ा डालना उचित न ये ?) कई स्कूलों और कई सरकारी में इस लीग के पुरुषार्थ से गै- का पढ़ना और जानना आवश्यक या था। विदेशी दर्शकों की भी राय जिस ग्राम या नगर में इस लीग की खुल जायगी वहां एक दम याभिरुचि उत्पन्न होने के साथ पुंसकता जाती रहती है—जीवन देश में प्रेम के भाव जाग उठते हैं।

यह लीग विशेषतया आयर्लैण्ड के इतिहास को अपना पाठ्यविषय बनाती है। देश के साधारण पुरुषों में उसका विशेष बल है। वह अपने इतिहास को अङ्गरेज़ों द्वारा लगाई हुई रंगीन ऐनक से न देख कर, देश प्रेम की पवित्र आंखों से देखने का यत्न करते हैं। पुराने इतिहास की श्रद्धा पूर्वक खोज—और खोज का प्रकाश लीग का विशेष कर्तव्य है।

एक अंग्रेज़ लेखक ने लीग के विषय में लिखा है कि उसका आयरिश जाति की एकता पर विशेष प्रभाव पड़ रहा है। जहां एक देश तथा जाति को, राजनीति, मत, और धन विभक्त करते और बांटते हैं, वहां भाषा उन्हें जोड़ती है। जोड़ने का भाषा से अच्छा साधन जाति के निर्माताओं को नहीं मिल सकता। उस लेखक की राय है कि आयर्लैंड को यदि कोई एक माला में पिरो सकता है, तो वह भाषा का तागा है।

आज आयर्लैण्ड यदि अपने प्रयत्नों का फल पा रहा है—यदि वह होम रूल की आती हुई तीर्थ भूत नदी में स्नान करने लगा है तो उस में श्रेय किसका है? इस में श्रेय है उन वीरों का जिन्होंने मातृ भूमि की सेवा पर अपने जीवन अर्पण किये थे। इस में श्रेय है उनका जिन्होंने आपत्ति और सम्पत्तियें और सब कुछ भुलादिया—किन्तु आयर्लैण्ड को नहीं भुलाया। और साथ ही श्रेय है उनका जिन्हों ने गेलिक-भाषा को जीवित रखने की चेष्टा कर के जाति के रुकते २ हृदय की धड़कन को रुकने नहीं दिया। उनका श्रेय किसी की अपेक्षा कम नहीं है। देश की सभ्यता ही उसका अन्तरात्मा है और भाषा ही सभ्यता का प्राण है। विना प्राण की रक्षा किये जीने में भी श्रेय नहीं है।

अब पोलैण्ड को लीजिए। पोलैण्ड ने अपनी भाषा की रक्षा के लिये जो २ यत्न किये हैं, उन में से और सब की अपेक्षा वह आश्चर्यतम है, जो उन्होंने अपनी भाषा की रक्षा के लिए किया। साहित्य और अपनी भाषा के लिये पोलैण्ड के [illegible] ने जो २ कष्ट इसी शताब्दि में सहे हैं, उन्हें सुन कर मानने को जी नहीं चाहता। लोग आश्चर्य करते हैं कि इतनी दीर्घ पराधीनता होने पर भी पोलैण्ड मरा क्यों नहीं? शरीर के तीन भागों में विभक्त हो जाने पर भी उसकी एकता क्यों नष्ट नहीं हुई? किन्तु आश्चर्य की कोई बात नहीं। बड़ी से बड़ी आपत्ति में पोल लोगों ने यह नहीं भुलाया कि वे पोलैण्ड के वासी हैं। उन्होंने अपने साहित्य तथा भाषा की ऐसी रक्षा की जैसे मनुष्य अपने प्राण की रक्षा करता है। इतिहास का सारा चिट्ठा खोलने का समय नहीं है—केवल एक ही समय की कहानी सुना कर इस विषय को समाप्त करूंगा।

पोलैण्ड का एक भाग चिरकाल से जर्मनी के पास है। जर्मनी की नीति है कि जो देश उसकी अधीनता में आजाय और उसकी सीमा से मिलता हो—उसे वह अपने अन्दर जज़्ब करने की कोशिश करता है। वह चाहता है कि उसके अधीन सहवर्त्ती देश अपनी सत्ता को जर्मनी की सत्ता में मिलादें। इसी सिद्धान्त को सामने रख कर पोलैण्ड के राजकीय-स्कूलों में से पोलिश भाषा की शिक्षा मूल से ही उड़ा दी गई। इसमें सरकार का ज़ोर था—प्रजा से कुछ न हो सका। लोग चुप हो रहे। और तो सब स्थानों से पोलिश भाषा उड़ गई परन्तु अभी कई स्थानों पर ईश्वर प्रार्थना पोलिश में होती थी। सरकारी हुक्म हुआ कि 'अब से प्रार्थना भी जर्मन भाषा में ही हुआ करे। उससे जाति का रुधिर खौल-पड़ा। जोश की लहर चारों ओर दौड़ गई! अध्यापकों को पक्की आज्ञा मिल गई कि

के पोलिश को उड़ादें। प्रजा ने इस आज्ञा का विरोध करने का प्रण किया। प्रार्थना के समय अध्यापक जर्मन में [illegible] प्रारम्भ करता, तो विद्यार्थी [illegible] ही करते रहते, इस पर सरकार [illegible] को अधिकार दे दिया कि वे आज्ञोल्लंघन करने वाले विद्यार्थियों को शारीरिक दण्ड दे सकते हैं। कहते हैं कि विद्यार्थियों ने तब भी अपनी भाषा को न छोड़ा। उन पर बड़ाघड़ बेंतें बरसने लगीं। कई दस २ बारह २ साल की उमर के बच्चे बेंत की मार से मर गये—किन्तु अन्त तक पोलिश भाषा का ही प्रयोग करते रहे। जिन लोगों के भाग्यों में जीवन लिखा होता है, उनके ये ही चिन्ह होते हैं। एक वे बालक थे, जिन्होंने अपनी भाषा के लिये प्राण तक देदिये—एक भारतवासी हैं जो अपनी मातृभाषा को ज़बर्दस्ती परावे हाथों बेचते फिरते हैं। क्या हम भी जीवन के अधिकारी हैं?

इतने देशों के दृष्टान्त देख चुकने के अनन्तर जातीय जीवन में साहित्यका स्थान ढूंढ निकालना कठिन नहीं है। साथ ही अब हमारे लिये यह जान लेना भी कठिन नहीं है कि उस साहित्य की रक्षा के लिये कितने प्रकार का यत्न करना चाहिये।

(१) किसी भी साहित्य की रक्षा के लिये पहली आवश्यक बात यह है कि उस भाषा की रक्षा की जाय, जो उसके स्वाधीन विकाश का साधन हो। आयर्लैण्ड तथा पोलैण्ड में भाषा की रक्षा के लिये जो यत्न होते रहे या हो रहे हैं—वे हमें बतलाते हैं कि जो भाषा मरना नहीं चाहती, उसे कोई नहीं मार सकता। जाति या भाषा को अपनी तलवार ही मार सकती है—शत्रु का शस्त्र नहीं। मूर्छित हुई भाषा को फिर से जीवित किया जासकता है। महाराष्ट्र जाति के पुनरुद्धार का बीज उसी दिन बोया गया जब कवियों ने फैशनेबल भाषा को तिलांजलि देकर देशभाषा का अवलम्बन किया।

(२) वही साहित्य लाभदायक हो सकता है जो जाति को आत्मीयता का भाव सिखा सके—जो उन्हें अपने देश में ही विदेशीन बनादे—और जो उन पर से पराया सूट उतार कर परे रखदे। सच्चा राष्ट्रीय साहित्य वह है जो जाति में स्वाधीनता, एकता और उच्च जीवन के भाव फैलाता है। जर्मनी के अन्दर कभी राष्ट्रीयता न उपजती यदि क्लापस्टाक और लस्सिंग अपने साहित्य पर से विदेशी जंज़ीरें तोड़कर जर्मन लोगों को अपनी देशी भाषा न सिखाते और जर्मनीवासियों को अपनी मातृ भूमि पर अभिमान करना न सिखाते। भाषा और साहित्य को परावे प्रभाव से बचा कर स्वच्छ रखना अत्यावश्यक है।

(३) साहित्य की वास्तविक उन्नति के लिए एक और बात अत्यावश्यक है। साहित्य तथा भाषा बढ़े—इस के लिए उन्हें रीति के लौह मय जंगले में से निकालना होगा। इटली में कभी साहित्य न बढ़ता यदि वहां Scholastisism और Romantisism का विचार न होता यदि वहां प्राचीनवाद आदर्शवाद के सामने न हार जाता। मनुष्य का शरीर तभी बढ़ता है जब उसे स्वच्छन्द बढ़ने के लिए मार्ग हो। लोहे के टोप में बंधा हुआ सिर छोटा ही रह जाता है। वनस्पति तभी बढ़ता है यदि उस के सिर पर खुला आकाश हो। साहित्य और भाषा भी तभी बढ़ते और जीवन पाते है यदि उनका विस्तार रोका न जाय। गले पर जंज़ीर न डाली हो, आकाश के उड़ाने गरुड़ की भांति उन की [illegible] निर्बाध हो।

भारत में राष्ट्रीय जागृति [illegible] लगन सब को लग रही है। क्या हिन्दी भाषा के राष्ट्रीयता उत्पन्न हो [illegible] है। यदि नहीं तो सोचना आवश्यक है कि भारतीय साहित्य कैसे उत्पन्न हो [illegible] विचारशीलों ने विचारा और परिषद् ने निकाला है कि सारे भारत का एक [illegible] हित्य वही हो सकता है—जो एक व्यापिनी भाषा को आधार लेकर [illegible] हो और वह एक देश व्यापिनी भाषा भारत की आशा आर्यभाषा—हिन्दी है। आर्यभाषा द्वारा ही वह स्वा[illegible] साहित्य उत्पन्न हो सकता है—जो [illegible] में राष्ट्रीयता के दृढ़ सूत्रों में बांध दे।

हे आर्यभाषा के उद्धार से प्रेम [illegible] वाले हिन्दी हितैषियों! क्या आप [illegible] ने कभी सोचा है कि आप पर कर्तव्य [illegible] कितना भार है? भारत की राष्ट्री[illegible] आप लोगों के ही कन्धों पर [illegible] हो रही है। सारा इतिहास चिल्ला [illegible] आपको पुकार रहा है और कह रहा है [illegible] या तो तुम अपनी मातृभाषा और उस [illegible] अपने जातीयसाहित्य की रक्षा [illegible] देश की राष्ट्रीयता की रक्षा करो—अन्[illegible] तुम्हारी जाति की वह गती होगी [illegible] बुझी हुई राख की होती है—उस पर [illegible] हरएक आदमी रौंदता हुआ गुजर [illegible] है और अपने कार्य्य पर ओह तक [illegible] करता।

—०—

महाशय लालसुकन्द जी अधिष्ठाता परिवारक उपासना लायलपुर से सूचित देते हैं कि—

परिवारिक उपासना १७ चैत्र को [illegible] हरिश्चन्द्र जी और २४ चैत्र को [illegible] दलीपचन्द, रामचन्द जी के गृह [illegible] सानन्द हुई प्रभाव उत्तम रहा।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

एक झूठ का प्रतिवाद।

प्रकाश लाहौर में किसी महाशय ने
फिर रामप्रसाद बी० ए० पर आक्षेप
ा कि उन्होंने शेखूपुरा (ज़िला कर-
श्यक) के जलसे पर गुरुकुल पर अनुचित
क्षेप किए। उसका उत्तर लाला राम
रिद ने आर्य गज़ेट में देते हुए, जो
अशुद्ध लेख लिखा है उसका उत्तर
प्रकाश के सम्पादक और उन के पत्र
र देंगे, परन्तु गुरुकुल पर जो कटाक्ष
ी का आक्षेप श्री रामप्रसाद जी पर
ह थोड़े से शब्द भेद से उन्होंने स्व
मान लिया है, और लिखा है कि उन
ाक्षेप ठीक हैं। आर्य गज़ेट कालिज
ी का अंगभूत है और उसमें गुरुकुल
अनुचित कटाक्ष कभी भी बन्द नहीं
। स० कृष्ण से इसकी चलती है, इस
उनके विरुद्ध लिखने में इन्हें स्वत-
है, परन्तु गुरुकुल पर बिना कारण
ठीक नहीं। प्रादेशिक सभा के
महाशय जो विज्ञापन प्रचारक में छपने
हैं उसे बिना मूल्य स्थान दिया जाता
दयानन्द कालिज का उचित भाग भी
जाता है। परन्तु उधर से बर्ताव
ही उलटा रहता है। इस से अधिक
विषय में कहने की आवश्यकता नहीं।
रहे लाला रामप्रसाद के कटाक्ष, सो वह
ते हैं कि उन्होंने यह कहा कि उत्सव
दिनों में तो दिखलावे के लिए ब्रह्म-
रियों को पहाड़ों पर भेज दिया जाता
रन्तु इन्हीं ब्रह्मचारियों को बड़े बड़े
ों की सैर कराई जाती है जहां बाज़ारों
र किस्म की औरतें नज़र आती हैं
रण्डियां भी मौजूद होती हैं; और
र्व था झूठ है। उत्सव में ब्रह्मचारी
विशनों में शामिल होते हैं, जहां दे-
भी सम्मिलित होती हैं। कोई
वा नहीं किया जाता। हां, आश्रम
ब देवियां देखने जाती हैं तो उस
ब्रह्मचारी पहले बाहर भ्रमणार्थ चले
ा करते थे और अब किसी अधिवेशन में
मलित रहते हैं। ब्रह्मचारी बाहर आगरा, दिल्ली आदि में ऐतिहासिक इमारतें देखने तो गए हैं, परन्तु अपने उपाध्यायों वा अध्यापकों की संरक्षा में। कालिजों के विद्यार्थियों का कोई भी संचालक अनारकली वा टिब्बी की ओर जाते साथ नहीं होता। फिर भी मेरी सम्मति में आवश्यक नहीं कि इस से उन के आचार बिगड़ जावें। लाला रामप्रसाद स्वयम् सोचें कि पीरूसिंह वा किसी अन्य के विरोध से तंग आकर गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के आचरणों पर कटाक्ष करना क्या मनुष्यत्व है? स्वर्गवासी रायबहादुर लालचन्द्र जानते थे, श्री लाला लाजपत राय जी जानते हैं और यदि चाहें तो स्वयम् महात्मा हंसराज जी बतलासक्ते हैं कि घोर से घोर विरोध के समय में भी मैंने दयानन्द कालिज के विद्यार्थियों के आचरणों की ओर दृष्टि डालने तक को पाप समझा है।

आप के कालिज का एक विद्यार्थी गुरुकुल के तीन लड़कों की कलाई पकड़े तो उन्हें छुड़ाना मुश्किल हो जाय—इस की परीक्षा होनी कठिन है क्योंकि गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने आर्य्य तो एक ओर, ईसाई, मुसलमान् विद्यार्थियों तक की सेवा और प्रेम का ही सबक पढ़ा है। इस लिए आप अपनी जीत ही मानलीजिए। परन्तु त्योरसंसाल जो दयानन्द कालिज के विद्यार्थी गुरुकुलोत्सव पर आए थे, यदि उन से आप पूछेंगे तो वे गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के शारीरिक बल तथा प्रेम की और ही कथा सुनाएंगे।

शेष रहा भारत में अनुपस्थित पं० हरिश्चन्द्र पर कटाक्ष। अनुपस्थित पर सज्जन-पुरुष कटाक्ष नहीं किया करते। आप ने लिखा है—"लाला मुन्शीराम जी के सपूत पण्डित हरिश्चन्द्र जी ही है, जो न सिर्फ़ स्वामी जी के सिद्धान्तों को ही नहीं मानते बल्कि जिनका वेदों पर भी विश्वास नहीं।" इसके उत्तर में मैं बिना संकोच के कह सकता हूं कि यह झूठ है कि पं० हरिश्चन्द्र का वेदों पर विश्वास नहीं। जबतक यहां रहे उनके व्याख्यानों तथा बात चीत में वेदों पर पूर्ण श्रद्धा दिखाई दी। वह ऋषि दयानन्द के, दो के अतिरिक्त सारे सिद्धान्तों को यथावत् [illegible] गुरुकुल में उपाध्याय रहने के लिए सिद्धान्तों का मानना आवश्यक था [illegible] पर उनका उत्तर था कि दो सिद्धान्तों पर उन्होंने विचार ही नहीं किया इस लिए निश्चय पूर्वक कुछ कहना कठिन है। आप जानते हैं कि दसों आर्य समाज के लीडर तथा उपदेशक कुछ सिद्धान्तों को न मानते हुए भी जनता को धोखे में ही डालते रहते हैं, उन से पं० हरिश्चन्द्र का भेद है जिन्होंने कभी व्यभिचारी का पाठ ही नहीं पढ़ा। यह गुरुकुल के अधिक ब्रह्मचारियों की विशेषता है।

परिडत चन्द्रमणि ने एक ऐतिहासिक आन्दोलन किया है। यदि महर्षि पतञ्जलि के ग्रन्थ से पता रखते कि उस समय कुछ वेद विरुद्ध आचार प्रचलित थे तो इस का तात्पर्य यह कैसे निकला कि महर्षि पतञ्जलि को ही वेद विरुद्ध सिद्ध किया गया है।

अन्त में लाला रामप्रसाद तथा सम्पादक आर्य गज़ेट तथा प्रादेशिक सभा के अधिकारियों और श्रीमहात्मा हंसराज से प्रार्थना है कि गुरुकुल पर अनुचित कटाक्ष कर के अपने आप को हानि न पहुंचायें। प्रत्येक वर्ष वार्षिकोत्सव तथा अन्य सभाओं में कम से कम ५० सहस्र जनता गुरुकुल के काम को देख कर ब्रह्मचारियों को मिलजाती है। उनकी आंखों में धूल डालना असम्भव है। जो काम आप लोगों ने ठीक समझा है आप करते जाइये, जो गुरुकुल के सम्बालकों ने आदर्श समझा है उसकी ओर उन को चलने दीजिए। जीवन मृत्यु प्रभु के हाथ में है; न ही दयानन्द कालिज को बन्द कराना प्रकाश व प्रचारक के हाथ में है और गुरुकुल का नाश करना भी आर्य-गज़ेट व लाला रामप्रसाद की शक्ति में नहीं है। यदि आपलोगों ने लड़ना ही है, और आप के विषैले बिना ऐसे कटाक्षों के नहीं चलसकते, तो भी बेचारे निर्दोष ब्रह्मचारियों को कांटों में क्यों घसीटते हो।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का व्याख्यान।

गुरुकुल उत्सव पर साहित्य सम्मेलन की पहली बैठक में श्री [illegible] उमरावसिंह जी जैनी ने "ईश्वर निरूपण" पर निबन्ध पढ़ा था, जिस में कि जैन मानुसार ईश्वर स्थापना करते हुए अन्य सम्प्रदायों के माने ईश्वर का खण्डन किया था। सामयिक सभापति श्री स्वामी सत्यानन्द जी थे, जो कि जैन दर्शनादि से खूब अभिज्ञ हैं। आपने जैन सिद्धान्त की समीक्षा कर उसकी त्रुटियें दिखाते हुए अन्त में वैदिकसिद्धान्त की स्थापना की थी। भाषण वैदिक धर्मानुयायियों के लिए अति उपयोगी था। श्री स्वामी जी महाराज ने मेरी प्रार्थना पर उसे स्वयं लिख दिया है ताकि पाठक इस से लाभ उठावें।

उपमंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा

निबन्ध कर्त्ता ने जो अन्त में यह दिखलाने का यत्न किया है कि जगत् अनादि से ऐसा ही चला आया है, उसका कर्त्ता कोई नहीं, यह ठीक नहीं है क्योंकि जगत् में कार्य कारण भाव देखा जाता है। और कारण कार्य्य भाव ही सृष्टि के अनादित्व का बोधक है। यदि "स्वभाव से ऐसा ही चला आया है" ऐसा माना जाय तो जगत् में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। यह भी तर्क प्रमाण सिद्ध है कि जगत् का उपादान सूक्ष्म है। एक मिट्टी के ढेले को तोड़ें चूर्ण करें तो वह उत्तरोत्तर सूक्ष्म होता चला जाता है। सभी कठिन ठोस पदार्थ वाष्प बनाये जा सकते हैं। यदि ये पदार्थ सूक्ष्म अंशों से स्थूल न बने होते तो सूक्ष्म अवस्था को न प्राप्त होते। यह सब मानते हैं कि कार्य्य जगत् जड़ है इस लिए इसके अत्यन्त सूक्ष्म कारण की भी जड़ता सिद्ध ही है।

तात्पर्य यह कि जगत् का कारण अति सूक्ष्म और जड़ है। क्रिया के बिना संयोग सम्भावित नहीं है और संयोग के बिना कार्य्य जगत् होना असम्भव है। यदि जड़ में स्वाभाविकी क्रिया मानी जाय तो वह क्रिया संयोग जनक है अथवा वियोग? यदि संयोग कारिणीक्रिया मानो तो यावत् जगत् अखंड होना चाहिए, सृष्टिरिक्त के चूर्ण होने पर, भेद पदार्थों के द्रवित हो जाने पर, संयोग का प्रतियोगी होने पर स्वभाव से संयोग मानना सिद्ध नहीं होता। और यदि वियोगजनक क्रिया स्वाभाविक हो तो संयोग मात्र का अभाव हो जाय। सो ऐसा भी नहीं है, इस लिए अति सूक्ष्म जड़ कारण में क्रिया भी नहीं है, अतएव जगत् का उपादान कारण अति सूक्ष्म जड़ और निष्क्रिय है।

जब कारण जगत् में अपनी क्रिया नहीं तो जो क्रिया दीख रही है वह किसी अन्य की प्रेरणा से माननी पड़ेगी।

सृष्टि में सुनियमता पायी जाती है। असंख्य तारक मंडल के आकाश में परिभ्रमण एक नियम से स्वस्व स्वकक्षान्तर में हो रहा है। यह सुनियमता अपना दूसरा दृष्टान्त नहीं रखती। सृष्टि में परस्पर सम्बन्ध भी सर्व विज्ञात है।

जंगम जगत् का स्थावर जगत् से इसी प्रकार चक्षु आदि इन्द्रियों का सूर्यादि के साथ सम्बन्ध है, इस सम्बन्ध की रचना भी अप्रतिम है।

सृष्टि की रचना में तीसरी बात यथायोग्य रचना है। स्थल चरों की रचना में चक्षु आदि इन्द्रियों, पकड़े आदि अवयवों का ऐसा होना कि जल में जलचर देख सकें, प्राण लेसकें और स्थलचरों में इन्द्रियों और अवयवों में उपरोक्त योग्यता का अभाव; एवं विचारों की यथा योग्य रचना इत्यादि अद्भुत स्वरूप संसार के अवलोकन से इसका नियन्ता सम्यक् कर्त्ता और रचयिता, प्रेरकविशेष, ज्ञान स्वरूप है यह सिद्ध होता है। उसके स्वरोक्त कार्यों में अप्रतिम पूर्णत्व है इसलिए वह सर्वज्ञ है।

सूक्ष्म में क्रिया और संयोगादि की प्रेरणा अभ्यन्तर ही से सम्भावित है अतएव सर्वज्ञ प्रेरकविशेष सर्वव्यापक है। [illegible] प्रेरणा किसी अन्य प्रेरणा की [illegible] हैं [illegible] इस लिए प्रेरक [illegible] मानना भी है।

जो यह कहा गया है कि जगत् के [illegible] इच्छा माननी पड़ेगी क्योंकि इच्छा रचना हो नहीं सकती, सो प्रेरक इच्छा हमारी कामनारूप इच्छा [illegible] सिद्धान्त भिन्न है। निबन्धकर्त्ता [illegible] अपने परमात्मवाद प्राप्त को भी [illegible] मानता है। सर्वज्ञता मानने पर [illegible] ज्ञान और ज्ञेयरूप त्रिपुटि की सिद्धि होजाती है। ज्ञानी का ज्ञान द्वारा ज्ञेय को जानना इच्छा बिना [illegible] होसकता, यदि वह इच्छा अस्मदादि की इच्छा से विलक्षण है। कारण जगत् के प्रेरक सर्वज्ञ सर्वशक्ति की इच्छा को विलक्षण मानने में [illegible] हानि है।

पढ़ा गया है कि जगत् की रचना [illegible] गादि के बिना नहीं हो सकती अतएव दोषों युक्तकर्त्ता परमात्मा नहीं हो [illegible] इत्यादि। "रागद्वेष के बिना रचना हो सकती" यह बात स्थूल विचार [illegible] है। स्थूल अंगों की क्रिया को देख यह कल्पना की गई है। परन्तु जब सोजाता है उस समय उस के रक्त का [illegible] नागमन फेफड़ों की क्रिया केन्द्रों [illegible] की सृष्टि और नाश आदि [illegible] कार्य जो निरन्तर रूप से [illegible] होते रहते हैं मन बुद्धि के [illegible] बिना होते हैं और रागद्वेष [illegible] होते हैं। जैसे हमारे आत्मा की [illegible] मात्र से सुषुप्ति दशा में रागद्वेष [illegible] की भ्रान्ति स्थूल इन्द्रियों के बिना [illegible] अनेक कार्य क्रमशः नि[illegible] यथायोग्य सम्पादित होते [illegible] ब्रह्मांड के आत्मा की सन्निधि से [illegible] रचना आदि कार्य क्रम सुनियम [illegible] योग्य रूपेण राग द्वेष के बिना [illegible] दत होते हैं।

निबन्ध कर्त्ता ने परिच्छिन्न आत्मा [illegible] वज्ञ माना है। सर्वज्ञता अनन्त ज्ञान परिच्छिन्नज्ञानी का अनन्त ज्ञान [illegible] सकता। एक देशी एक कालस्थ का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

काल को जानना असम्भव है। इसी प्रकार जैन लोगों का माना हुआ अनन्त चतुष्टय भी नहीं सिद्ध हो सकता।

निबन्ध कर्त्ता महाशय आत्मा में अनन्त ज्ञान मानते हैं उस का प्रतिबन्धक मानते हैं ज्ञानावरणीय कर्म्म को। और उस कर्म को भी परमाणुरूप जड़ मानते हैं और परिमित मानते हैं। यदि जड़ परमाणु ज्ञानावरण कर सकते हैं तो ज्ञान कदापि न होगा। क्योंकि किसी क्षेत्र से भी परमाणुओं का अभाव असम्भव है। लोकाकाश सारा जब परमाणुओं से पूर्ण है तो मुक्त सिद्ध भी सर्वज्ञ न हो सकेंगे क्योंकि जिस आकाश प्रदेश में वे हैं परमाणु भी वहां विद्यमान हैं। परिमित परमाणुओं का अनन्त ज्ञान को आवरण करना अयौक्तिक कथन है।

निबन्धकर्त्ता के मत में आत्मा स्याद्वाद न्याय से अथवा अगुरुलघु पर्य्याय से परिणामी नित्य है। परिणाम कार्य में होता है और कार्य तथा परिणामी अनित्य होता है। जब आत्मा ही अनित्य हुआ तो सर्वज्ञत्व कहां! निबन्धकर्ता के मत में आत्मा जिस २ देह में जाता है उस के आत्म प्रदेशों का उस २ देह के अनुसार संकोच तथा विस्तार हो जाता है। यथा दीप बड़े कमरे में रखें तो उस का प्रकाश उस में फैल जाता है और यदि छोटे में रखें तो संकुचित हो जाता है इत्यादि। ऐसा मानने से आत्मा अ[illegible] परिण[illegible] कार्यवत् अनित्य[illegible] हो जावेगा। और यह मन्तव्य इस [illegible] भी दूषित है कि दीप का प्रकाश बड़े कमरे में विस्तार के कारण पतला होता है छोटे में [illegible] के कारण अधिक। ऐसे ही [illegible] देहों में आत्मा के चैतन्य[illegible] का प्रकाश विस्तारता से पतला [illegible] चाहिये और [illegible] देहों में सघन [illegible] अधिक। निबन्ध निर्माता अनेक सर्वज्ञ मानते हैं। इस अवस्था में क्या एक सर्वज्ञ दूसरे की सर्वज्ञता को जानता है? यदि जानता है तो दूसरा सर्वज्ञ न रहा क्योंकि सर्वज्ञता देशकाल से अनन्त है। अनन्तज्ञान लिया तो वह सान्त होगया। यदि कहो कि नहीं जानता तो सर्वज्ञ स्वयं न रहा।

अगुरुलघु पर्य्याय से ज्ञानादि आत्मगुणों में संख्य असंख्य और अनन्त गुण हानि वृद्धि परिणाम वाद से निबन्धकर्ता को इष्ट है। कल्पना करो एक सर्वज्ञ के पर्याय में अनन्त ज्ञान की हानि है और दूसरे में अनन्त वृद्धि है; इस से भी सर्वज्ञता हानि वाले से सापेक्षिक थोड़ी और वृद्धि वाले में अधिक होगी। और वे दोनों परस्पराक्षेप से सर्वज्ञ अल्पज्ञ हो जावेंगे।

सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान् एक आत्मा विशेष न मानने से पुनर्जन्म व्यवस्था जो निबन्धकर्ता मानते हैं न हो सकेगी। कल्पना करो कि एक प्राणि यहां से देह त्याग कर कलकत्ते में किसी मकान के सातवें अन्दर में किसी क्षुद्र योनि में जन्मता है तो सोचो उसे वहां कौन ले जाता है? यदि कहो स्वयं जाता है तो अपने आप कोई दुःख में नहीं पड़ता। कर्म ले जाते हैं। यह मानों तो कर्म जड़ है उन्हें दूरता तथा नियत स्थानादि का ज्ञान असम्भव है। यदि यह कहो कि जैसे चुम्बक लोहे को खैंच लेता है एवं कर्म आत्मा को आकर्षण कर लेते हैं तो यह भी आपके सिद्धान्त से सत्य नहीं है। क्योंकि आप मानते हैं कि कर्म जड़ [illegible] हैं आत्मा को लिपटे हुए हैं। आकर्षण दूरस्थ का होता है। चुम्बक लोहे को [illegible] जाय तो चुम्बक लोहे [illegible] का [illegible] ले जायगा? [illegible] आत्म [illegible] को लिपटे हुए [illegible] आत्मा को जन्मान्तर [illegible] कैसे ले [illegible] निष्कर्ष यह है कि परिछिन्न [illegible] युक्तियों और निबन्धकर्ता के मन्तव्य से भी सर्वज्ञ सिद्ध [illegible] सकता। [illegible] निमित्त होने से [illegible] का [illegible] सृष्टिरचयिता, [illegible] एक ही [illegible] सर्व [illegible] परमेश्वर [illegible] है।

गुरुकुल में आर्य्यसमाज स्थापना दिवस।

२६ [illegible] तदनुसार ७ अप्रैल की रात्री के ७½ बजे 'आर्य्यसमाज स्थापन दिवस' मनाने के लिये गुरुकुल यज्ञशाला में सभा हुई। इस उत्सव में प्रायः सर्व उपाध्याय तथा अध्यापक उपस्थित थे। सभा से पूर्व एक ईश्वर विषयक गीति गाई गई तदनन्तर ब्र० भूदेव ने अपनी वक्तृता आरम्भ की जिस में वक्ता ने 'आर्य्यसमाज का स्वरूप तथा उसका प्रयोजन बताने का यत्न किया। आर्य्यसमाज का वास्तविक स्वरूप जानने के लिए तीन साधनों का वर्णन किया। प्रथम समाज का उद्देश्य दूसरा उस का संसार में कार्य तीसरा उद्देश्य प्राप्ति का साधन बताया। उस के अनन्तर ब्र० देवराज त्रयोदश ने कहा 'किसी जाति की उन्नति तथा अवनति उस जाति के साहित्य पर बहुत कुछ आश्रित है; यदि भारतवर्ष की जाति जीवित रही तो उस का एक मुख्य कारण साहित्य ही था। यदि हम चाहते हैं कि आर्य्यसमाज जीवित रहे तो हम को चाहिए कि वह हम केवल ऋषि दयानन्द के साहित्य पर ही आधार न रक्खें पर अन्य नवीन पुस्तकें भी लिखें।

पण्डित वेदव्रत जी ने कहा 'कि ऋषि दयानन्द ने अपने जीवन से ही आर्य्य समाज को जो शिक्षाएं दी हैं उनका हमें सदैव ध्यान रखना चाहिए। जीवन पर्यन्त स्वामी जी ने अपना जीवन ब्रह्मचर्याश्रम के पालन तथा आध्यात्मिक विद्या की उन्नति के लिये पाठशालाएं खोलने में व्यतीत किया, इसी प्रकार हम आर्य्यसमाजियों को भी अपने जीवन से इन कार्यों को कर दिखाना चाहिये। तदनन्तर एक गीति गाई गई।

इस के बाद श्री उपाध्याय बालकृष्ण ने आर्य्यसमाज के कार्यों पर दृष्टि देते हुए कहा — सचमुच आर्य्यसमाज का बड़ा ही गौरव है क्योंकि उसने जाति के जीवन के सभी अंगों पर प्रकाश डाला है। जीवन के सभी रहस्यों को समझाने का

प्रयत्न बड़ी निर्भयता से आर्यसमाज कर रही है। आर्यसमाज ने ही पाश्चमी सभ्यता की लहर के प्रभावों को भारतमें आने से बचाया। उसने ही [illegible] जाति में जातीयता का भाव उत्पन्न किया प्राचीनों का गौरव तथा उनकी उच्च सभ्यता संसार के सामने रक्खी। समाज को यदि कोई आवश्यकता है तो वह सच्चे प्रचारकों की है जो कि देश देशान्तरों में जाकर वैदिक धर्म के सन्देश को दुःखित जनता को सुनावें। पुनः एक गीति हुई। तदनन्तर श्री आचार्य जी ने अपना भाषण आरम्भ किया, आपने कहा।

"सब से मुख्य बात जो आज विचारणीय है वह यह है कि आर्यसमाज का जन्म क्यों हुआ था, किस प्रयोजन को दृष्टि में रख इस संस्था ने इस की स्थापना की? ऋषि से पूर्व जनता वर्णाश्रम व्यवस्था के नाश के कारण अपने नाश की तरफ जारही थी। ऋषि ने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से देखा कि एक ही मनुष्य सर्व आश्रमों के धर्मों को नहीं पालन कर सक्ता। ऋषि ने बताया कि सर्व आश्रमों का काम पृथक् पृथक् है। इसी वर्णाश्रम व्यवस्था का पुनरुद्धार करने के लिए ऋषि ने इस संस्था की स्थापना की। आजीवन उस आदित्य ब्रह्मचारी ने वेदों का अनुशीलन कर वैदिक वर्ण व्यवस्था का प्रचार किया। ऋषि ने बताया कि गृहस्थी प्रचार नहीं करसक्ते। प्रचार का कार्य तो संन्यासियों का है क्योंकि वह निष्पक्षपात तथा भयशून्य होता है। पूना में व्याख्यान देते हुए स्वामी जी ने कहा था कि मुझ से कई उपदेशकों की आवश्यकता है जो कि सत्य का ग्रहण करें। आर्यसमाज यदि स्वामी जी के इस सिद्धान्त पर चलेगा तभी जीवित रहेगा। ब्रह्मचारी आज के दिन से जो शिक्षा ले सकते हैं वह यह है कि वे अपने शरीर—मन तथा आत्मा को सुशिक्षित करें। ब्रह्मचर्याश्रम के पूर्ण धारण करने से ही गृहस्थाश्रम उन्नत होगा।

वर्णाश्रम धर्म का यथावत् उपदेश वेद में है अतः वेद का तप उस के व्याख्यान ग्रन्थों का मनन नित्य करना चाहिए। यही हमारा बड़ा साहित्य है अन्य साहित्य भी इसी साहित्य के आधार पर बन सकता है।

समाज का कर्त्तव्य संसार भर का उपकार करना है वह उपकार—वर्णाश्रम धर्म के प्रचार से ही हो सकता है।

इसी उद्देश्य को लक्ष्यमें रख कर यदि हम कार्य क्षेत्र में उतरेंगे तभी हम सच्चे अर्थों में आर्य कहला सकते हैं।

श्री आचार्य्य जी के भाषण के पश्चात् शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

(सम्वाद दाता)

——:o:——

एक विचित्र आचार्य।

संसार में अभी तक कोई न कोई नया मत पैदा होता ही रहता है जिसको देखकर बड़ी परेशानी होती है। एक मित्रसैन नामी मनुष्य ज़िला लायलपुर में मम्मा नहर का पटवारी था। अब वह पटवारी से स्वामी मित्रसैन बनगया है; कई मनुष्य उसके चेले बनगए हैं और "प्रेमविलास" नामी मासिक पत्रिका भी निकालता है, जो पहिले पाक्षिक थी। मेरा पुत्र इस पत्रिका को मंगवाया करता था। मैंने उसे कईबार रोका कि इस पत्रिका को न मंगाया कर, क्योंकि इस के लेख वेद विरुद्ध हैं, जिनके पढ़ने से मनुष्यों के विचार खराब होजाते हैं। इसके लेखों से वाममार्गीपन और नास्तिकपन झलकता है, पूर्णतया पौराणिक विचारों के होते हैं। परन्तु मेरा पुत्र तो स्वामी मित्रसैन का चेला बन चुका था। उस के दिल में स्वामी मित्रसैन की इज्जत स्वामी दयानन्द से कहीं बढ़कर थी, इस लिये उसने कहा कि स्वामी मित्रसैन के बराबर आर्य समाज में न कोई आदमी अबतक पैदा हुआ है और न कोई अब मौजूद है। मैं बीस वर्ष तक आर्य समाज में रहा मगर कुछ भी हासिल न हुआ। स्वामी मित्रसैन ने ऐसा राज़ बता दिया है कि [illegible] से बहुत जल्द परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है और प्रेम विलास के लेख वेद अनुकूल हैं। तुम्हें कुछ खबर नहीं है, इस लिये आयन्दा स्वामी मित्रसैन की बाबत मेरे साथ बात चीत न करना, तुम्हें प्रेम विलास समझने की लियाक़त नहीं है। इस बात पर मैं चुप होगया। अब नौबत यहां तक पहुंच गई है कि एक बार बात चीत करते २ तकरार हो गई और मैंने उसे कहा कि बहतर है कि तू मेरे घर से चले जाओ। मैं ऐसे नालायक का मुंह देखना नहीं चाहता। परन्तु लोगों के कहने सुनने से उसको यह कह दिया कि कोठी घर से खालिया करे, और मैंने उस के साथ बात चीत करना सर्वथा बन्द कर दिया हुआहै। अब उसको देख कर मेरी तबियत को बड़ा रंज होता है। अपने सत सज्जनों से इस का जिक्र करना ज़रूरी होता है। मैंने चौधरी रामचन्द्र जी चक ११५ ग.बी. ब्रांच से जिक्र किया कि मेरा लड़का किशन सिंह स्वामी मित्रसैन का चेला बनगया है। उसको मित्रसैन की तारीफें तथा अख़बार पढ़ता रहता है। मैंने कहा कि मेरे ख्याल में वाममार्ग और नास्तिकता को शिक्षा देते हैं और म० हवेलीराम बज़ाज़ लायलपुर की तरगीब से इस मत का अनुयाई हुआ है। चौधरी रामचन्द्र ने हवेलीराम से कहा कि क्या बात है कि तुम आर्य्यसमाजी को लाते हो और किशन सिंह भी आर्य्य हलाया करता था, अब सुना है कि तुम और किशन सिंह स्वामी मित्रसैन के मुरीद बनगए हो—इन्ही की खयालात की किताबें पढ़ते हो, जिन किताबों वेद विरुद्ध तालीम भरी हुई है। इस पर हवेलीराम ने जवाब दिया कि तुम कहते हो कि इनकी तहरीर वेद के खिलाफ है, तुमने योंही कहदिया, जब महात्मा मुन्शीराम जी स्वामी मित्रसैन को अपना गुरू मानते हैं और उनके कदमों पर सिर रखते हैं तो उनको तुम्हें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जितनी अक्ल नहीं है। स्वामी मित्रसैन बड़े योगी हैं और आर्य्य समाज के बड़े २ लीडर उनको अपना लीडर मानते हैं। इस वक्त रामचन्द्र के साथ आर्य खयालात के तीन आदमी थे। यह बात २५ मार्च १९१६ की है। चौधरी रामचन्द ने मुझ को कहा कि हवेली-राम तो ऐसा कहता है। मुझ को इस बात को सुन कर और भी रंज हुआ कि जो तीन आदमी आप के साथ थे जब उन्होंने यह सुना होगा कि महात्मा मुन्शीराम जी स्वामी मित्रसैन को अपना गुरूमान कर उन के कदमों पर सिर रखते हैं तो उन लोगों के दिलों पर अवश्य स्वामी मित्रसैन की इज्जत असर कर गई होगी। इस तरह हवेलीराम लोगों को धोका देकर स्वामी मित्रसैन के लिए शिकार तय्यार करता रहता है और लोगों को वैदिक धर्म से हटाकर उन की की-मती जिन्दगी को तबाह किया करता है। इस हाल को देख कर मुझे दुःख होता है और आप की सेवा में खत लिखने को मजबूर हुआ हूं। प्रेम विलास का थोड़ा सा नमूना तहरीर पेश करता हूं जिस पर आप रायज़नी कर सकें। मेरी मनशा यह हरगिज़ नहीं कि आप स्वामी मित्रसैन के बर खिलाफ राय जाहिर फरमाऐं बल्के यदि उन की तहरीर वेदानुकूल हो तो आप उन के हक में राय ज़ाहिर फरमावें और अगर वेद विरुद्ध हो तो उस के बरखिलाफ राय जाहिर फरमावें। शायद मैं प्रेम विलास की इबारत समझने के वास्तव में अयोग्य हूं। आप बुजुर्ग हैं, वैदिक शिक्षा से वाकिफ हैं, इस लिए आप की राय हम सब के लिए मानने योग्य है; अब मज़मून लिखता हूं। अखबार प्रेम विलास १५ मई १९०८ के पृष्ट २ पर लिखा है:—

"परम प्यारे परमेश्वर का स्मरण या ध्यान ऐसा पूर्ण अमृत है कि खवाह कोई किसी भाव या रूप से पान करे सब प्रकार एक ही समता में पूर्ण रहता है याने इस प्रेम अमृत को खवाह अमृत जान कर पान करे वा जहर जान कर पान करे, सब प्रकार अमरता है। क्या अपने हृदय के भाव में कहीं ईश्वरीय गुण बदल सक्ता है? कभी नहीं। देखिये प्रह्लाद भाव से भक्ति करते हैं तो भी ईश्वरीयपद के भागी होते हैं। और जो हरणाकुश होकर उस से वैर भाव साधते हैं तो भी इसी एक ईश्वरीय पद को पहुंच जाते हैं। ओहो! जितनी प्रेमभाव में स्मरण की तेजी या खटक ज्यादा है उतनी ही ईश्वर के पाने की जल्दी है। ईश्वर के साथ वैर भाव क्या है, यही तो एक सद्गति है। यदि हम विभीषण बन कर राज्य मांगते हैं तो हम को राज्य ही मिलता है, लेकिन रावण बन कर वैर कर के युद्ध करते हैं तो बस परमप्यारे प्रभु में ही लीन हो जाते हैं। प्यार के रूप में मांगने वाला मांगने वाला है और वैर के रूप में याद करने वाला याद ही करने वाला है, इस में दूसरी रुवाहिश या मांगने का भेद नहीं, इस वास्ते सब रूप से पूर्णता ही पूर्णता। हम आस्तिक बन कर ईश्वर से जगत को मांगते हैं तो हम जगत ही के आस्तिक है, अगर हम नास्तिक के रूप से ईश्वर की याद में लगे रहते हैं तो यह हमारी याद ही रहती है। सिद्धान्त यही है कि मनुष्य का जिस रूप या भाव से ईश्वर के साथ सम्बन्ध है सब प्रकार उसका परम कल्याण ही है।

दीन महाराज के प्रेम को अगर हाथ जोड़ कर, सन्मुख जाकर, गिड़गिड़ा ते हैं; तो वही कृपा, और तलवार लेकर सामने ललकारते हैं तो वही प्यार, देखिए कैसी पारस पत्थरी है कि लोहा सन्दूक बनकर इस को धारण करता है तो भी सोना ही होता है और जो कुल्हाड़ा बन कर इस को तोड़ने को छूता है तो वही सोना।"

विस्तार में जाने के भय से थोड़ा नमूना तहरीर कर दिया है! आखिर फिर विनती करता हूं कि मेरी इस चिट्ठी को सद्धर्म प्रचारक में छापदें और साथ ही इस प्रेम विलास के लेखपर अपनी राय प्रकट कर देवें। अगर आप मित्रसैन को जानते हैं तो जो कुछ इज्जत आप के दिल में इस की है, वह भी प्रकट करदें। अगर आप उसको न जानते हों तो न लिखें।

आप का शुभचिन्तक
अर्जुनसिंह
चक १०५ गणेश ब्रान्च
डाकखाना व तहसील जड़ांवाला
जिला लायलपुर

(महाशय अर्जुनसिंह को सूचना देता हूं कि मैं किसी स्वामी मित्रसैन को नहीं जानता, और न अपने जानने में कोई ऐसा पुरुष मुझे मिला है। प्रेम विलास से जो उद्धरण पेश किया गया है वह किसी साधारण नवीन वेदान्ती का परस्पर विरुद्ध लेख है; ये विचार वैदिक सिद्धान्तों के सर्वथा विरुद्ध हैं। (मुन्शीराम)

—:o:—

मेरे व्रत की पूर्ती

सीत हरी दिन एक निशाचर,
लङ्क लई दिन ऐसो ही आयो।
एक दिना दनयंति तजी नल,
एक दिना फिर ही सुख पायो॥
एक दिना पाण्डव गये बनको,
एक दिना छितिछत्र धरायो।
शोच प्रवीन कछु न करो,
किरतार यही विधि खेल बनायो॥ १॥
तुलसी नरको कहा बड़ो, समय बड़ो बलवान।
प्रिय पाठक वृन्द?

परिवर्त्तन इस सृष्टि का सर्व मान्य और स्वीकृत नियम है। क्या राजा हरिश्चन्द्र और उनकी विदुषी भार्या यह जानते थे कि हम को डेड और भङ्गियों तक के हाथ बिकना पड़ेगा? कदापि नहीं। ठीक इसी के अनुसार मैं भी कुछ और ही सोच रहा था और हुआ कुछ और ही, सत्य है "मनसा चिन्तति कार्य्यम् दैव अन्यत्र चिन्तयेत" मेरा प्रण था कि मैं जन्म भर गुरुकुल मखोवर ही की सेवा करूंगा और इसी के अनुसार अपना

तन मन और धन सर्वस्वही अर्पण करके अहर्निश दारुण पौष की कठिन शर्दी और ज्येष्ठ वैशाख की सख्त गर्मी में नङ्गे सर पांव पौने दस वर्ष मात्र में केवल एक ही ब्रह्मचारी रहगया तब भी उसकी सेवा में रहता हुआ अपने जन्म को सफल्यता मानता रहा। परन्तु दैव को यह भी स्वीकार नहीं हुआ और बीच ही में आर्य्य भाषा विद्या की डिक्री के रु. मयी २०१।, आज के आज ही कोर्ट में दाखिल करने का हुक्म पाकर सामाजिक ऋण की पूर्त्यार्थ और भी अनेक ऋण दाता के ऋण चुकाने तक उसकी भृत्यता स्वीकार करनी पड़ी। क्योंकि इस समय मेरे पास देने को तो पाई एक भी नहीं बची थी जो कुछ भी था प्रथम ही दे चुका था। केवल शरीर मात्र रहगया था सो अब देदिया है। इस प्रकार अपने धर्म की अन्तिम सेवा जिससे बढ़कर कि मैं कुछ कर ही नहीं सक्ता था, करके अपनी पूर्व प्रतिज्ञानुसार गुरुकुल के वस्त्र गुरुकुल ही में रखकर ऋण दाता को कोटिशः धन्यवाद देता हुआ उसही की सेवा में तत्पर होता हूं। मैंने अपने ऋण दाता की शरणगत होते समय एक प्रार्थना और स्वीकार करालो थी जो यह है कि यदि मेरे सौभाग्य से मेरे अन्नदाता हिज़ हाईनेस दी महाराजाधिराज जर्नल सर-प्रतापसिंह जी साहेब बहादुर जी.सी.एस. आई. आदि अनेक पद पूरित ने मेरी उस प्रार्थना को जोकि मैंने वर्तमान घोर युद्ध से पूर्व ही की थी अब भी स्वीकार करली तो मैं उनकी चरण शरण में जाकर अपने इसी जन्म में उनके ऋण से भी उऋण होजाऊंगा। इत्यम्।

ता० २-३ १६ ई०

आपका दास
लक्ष्मण आर्य।

(प्रतिलिपि पूर्व प्रार्थना)

"ओ३म्"

श्री अन्नदाता जी

यद्यपि खाना जाद की इस समय पर भी खाविन्दों ने प्रार्थना की थी कि खाना जाद को भी अपनी खिदमत में साथ लिया जावे। और ऐसे ही और और मौकों पर भी। लेकिन खाना जाद की बदकिस्मती से एक भी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई। अब खाना जाद ने फिर सुना है कि श्री खाविन्द श्री दरबार साहबों के सहित क्षत्रिय धर्म को उज्वल करने के लिए बृटिश गवर्नमेन्ट की सहायतार्थ वार में पधारते हैं इस लिए प्रार्थना है कि खाविन्दी फरमा कर खाना जाद को भी अपनी किसी खिदमत में साथ रखकर सेवक धर्म्म को सार्थक करने का अवश्य ही मौका प्रदान कर कृतार्थ करें। खाविन्द इस बात को तो अच्छी तरहाँ से जानते ही होंगे कि खाने जाद भी सांचे में पड़ कर कुत्ते की मौत मरने को महान ही नीच कर्म्म समझता है। इति,

हस्ताक्षर खाना जाद लक्ष्मण आर्य्य
ता० २-६-१४ ई०

—:o:—

गुरुकुल में राम नवमी

११ अप्रैल तदनुसार ३० चैत्र को रामनवमी के उपलक्ष्य में प्रातः ७ बजे श्री आचार्य जी के सभापतित्व में एक सभा हुई। पहले ईश्वर प्रार्थना विषयक एक भजन तदनन्तर श्रीरामचन्द्र जी के जन्म विषयक एक गीति गाई गई। फिर ब्रह्मचारी सुखदेव १०म् श्रेणी ने स्वनिर्मित एक कविता सुनाई तथा उस के बाद ब्र० देवदत्त षष्ठ श्रेणी ने अपनी सुरीली स्वर में, ब्र० विद्या सागर त्रयोदश के बनाये हुए कुछ संस्कृत श्लोक पढ़े।

मास्टर पुरुषोत्तम जी ने एक वक्तृता दी जिस में उन्होंने बताया कि मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के तुल्य हमें भी अपने नियमों पर चलने का यत्न करना चाहिये।

फिर ब्रह्मचारी शशिभूषण १४ श्रेणी ने कहा कि "मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी का जीवन दुष्टों को दमन करने के लिए हुआ था। जिस राज्य के लिये आधुनिक राजा लोग तथा मध्य कालीन राजा अत्याचार तथा खून की नदियां बहाते थे। राम ने उस राज्य को पिता की प्रतिज्ञा को पूरा करने के लिये त्याग दिया क्योंकि पिता की आज्ञा का पालन करना वह अपना धर्म समझते थे तथा धर्म के सन्मुख राज्य को कुछ भी न गिनते थे अतएव हमें अपने जीवन में कर्त्तव्य पालन का अभ्यास डालना चाहिये"। एक गीति गाई गई। फिर उपाध्याय विश्वनाथ जी विद्यालंकार ने कहा कि "रामचन्द्र के जीवन पर हम दो दृष्टियों से विचार कर सकते हैं। प्रथम, एक आदर्श व्यक्ति के रूप में दूसरा आदर्श राजा के रूप में। प्रथम दृष्टि से हम कह सकते हैं कि उन का जीवन दुःख तथा सुख में समान था तथा दुःख सुख में समान रहते हुये उन्होंने अपना जीवन प्रेममय बनाया था। इन बातों के अतिरिक्त उन में सेवावृत्ति भी अपूर्व थी। रात दिन जंगलों में ऋषियों के पवित्र यज्ञों की रक्षा करने में दत्तचित्त रहते थे। दूसरी दृष्टि से देखें तो राम का जीवन एक आदर्श राजा का जीवन था। प्रजा के हित के लिए उन्होंने सीता का परित्याग किया तथा अपने राज्य में एक ब्राह्मण के उपालम्भ को भी जोकि उसने अपने पुत्र की मृत्यु

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

के कारण दिया था, उन्होंने बड़ा अनुभव किया। उस के राज्य में दरिद्रता का राज्य न था क्योंकि उस समय एक साधारण मज़दूर को भी सोने की मुद्रा में भृति मिलती थी इस के अतिरिक्त उन में लोभ की भी किंचित् मात्रा न थी। लंका को जीत लेने पर विभीषण को ही उस का राज्य दिया। उस समय का आचार बड़ा ही उन्नत था जैसा कि वाल्मीकि के निम्नश्लोक से पता लगता है, "नासीत्पुरे वा राष्ट्रे वा मृषावादी नरः क्वचित्। न कश्चन दुष्टस्तत्रासीत् परदार रतिर्जनः।" तदनन्तर एक गीति गाई गई। उस के पश्चात् श्री गुरुकुलाचार्य जी ने अपना अन्तिम भाषण आरम्भ किया.....

"आज राम का जन्म दिवस है। हमारे देश में जन्म दिवस तथा मृत्यु दिवस दोनों ही मनाये जाते रहे हैं। वे जिन दृश्यों से मनाए जाते हैं उनकी सन्धि हम आज के दिन देखते हैं। हमारे प्राचीन काल में प्रजा यह अच्छी तरह जानती थी कि जो नियम जन्म में कार्य करता है—वही मृत्यु में भी कार्य करता है इसी भाव को राम के जीवन में देखते हैं। इसी लिए राम का—जीवन समता का जीवन था अतएव उनके नाम के पहले मर्यादा पुरुषोत्तम लगा हुआ है। ईसाई, मुसलमान तथा सभी मतवाले राम को अपना आदर्श व्यक्ति मानते हैं।

बहुत से विचारकों की सम्मति है कि राम तथा भरत में भरत का ही जीवन राम से उन्नत प्रतीत होता है क्योंकि भरत ने राज्य जैसे दुर्गम कार्य को चलाया। परन्तु यह ठीक नहीं। जिस प्रकार शिशुमार चक्र को नियम में रखने वाला सूर्य ही है उसी प्रकार राम के जीवन के कारण ही सब का जीवन उच्च था। राम ही उस समय के सर्व व्यक्तियों के जीवनों को मर्यादा में रखने वाले थे। सचमुच उनका जीवन प्रेममय था—इसका एक प्रमाण तो यही है कि रामायण को बार बार पढ़ने से भी मन कदापि थकता नहीं पर प्रेम ही बढ़ता चला जाता है—

राम की समता का उदाहरण देखिये। जिस समय राक्षसों की १४ सहस्र सेना उनके सामने आती है तो उस के हृदय में भय का नाम भी न था। उस ने केवल अपने धनुष की टंकार से ही राक्षसों के हृदय कम्पायमान कर दिए थे। यह थी राम की समता। ब्रह्मचारियों को राम के तुल्य समता का जीवन बसर करना चाहिये तथा इस के लिये अपने शरीर, मन तथा आत्मा को बलिष्ट बनाना चाहिए तभी राम के ऋण से हम उऋण हो सकते हैं।

श्री आचार्य जी के भाषण के अनन्तर शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

(सम्वाद-दाता)

—:०:—

सूचना।

"श्रीमती गौड़ महा सभासदा की भांति इस बार भी १०००) छात्रवृत्ति उन निर्धन गौड़ छात्रों को देगी, जो किसी स्कूल-कालेज में पढ़ते होंगे या किसी पाठशाला में पढ़कर पञ्जाब या काशी युनिवर्सिटी की कोई संस्कृत परिक्षा देने वाले होंगे। मेडिकल कालेज या आयुर्वेदिक क्लासों में पढ़ने वाले छात्रों को भी वृत्ति दी जासकती है।)॥ का टिकिट भेज कर छात्रवृत्ति का फारम महा सभाकार्यालय जगाधरी से मंगवाकर और उसे पूर्ण रूप से भर १८ अप्रैल १९१६ से पहिले २ अपनी (Progress Report) सहित वापिस करनी चाहिए। अन्यथा आगामीवर्ष तक किसी निवेदनपत्र पर ध्यान न दिया जायगा।"

रामचन्द्र बी० ए०
महा मन्त्री सभा

संसारसमाचार पर टिप्पणी

जापानवीर न्यारे कर रहा है—दियासलाई प्रायः इंग्लिश्तानादि देशों से ही आया करती थी। युद्ध छिड़ने ही जापान ने इस काम को हाथ में लिया। एशिया के सब बाज़ारों में (हिन्द, चीनादि) इसी की बनाई दियासलाई नज़र आने लगी। पहले तो कम लाभ हुआ परन्तु जब सस्ती युरोपियन दियासलाइयों की पूंजी समाप्त होगई तो अब जापान मुंह मांगे दाम लेरहा है। गत मास में जापान की दियासलाइयों का मूल्य, पहले की अपेक्षा, अढ़ाई गुणा बढ़गया है। भारत वर्ष में दियासलाई के कारखाने बड़े लाभ पर चल सकते हैं, यदि सामान मिलने में गवर्नमेन्ट की ओर से सहायता मिले।

भारतीय अंग्रेज [ऐंगलोइन्डियन] गोरी और काली जातियों को एक दूसरी के समीप होने न देंगे—यह निश्चित बात समझलेनी चाहिए, जहां बृटिश गवर्नमेन्ट दोनों जातियों के मिलाप में ही कल्याण समझती है, वहां गोरी जाति कालों के साथ मिलने में अपना नाश समझती है। स्कूल की पढ़ाई तक तो गवर्नमेन्ट एङ्गलोइन्डियन जाति के लिए अलग स्कूल खोलती है, परन्तु कालिज की पढ़ाई के लिए उन्हें स्पष्ट कहती है कि अपने लिये जुदे रहने के आश्रम (Hostels) खोलकर हिन्दोस्तानी कालिजों में ही पढ़े। प्रयाग में ऐसा ही एक विद्यार्थी आश्रम खुल रहा है जिसके विरुद्ध कुछ एङ्गलोइन्डियन प्रबल प्रोटेस्ट कर रहे हैं। पायोनियर में आनरेबल मैज तो यहां तक लिखते हैं कि यदि कोई अंग्रेज हिन्दोस्तानी कालिज में लड़का प्रविष्ट करादेगा तो उसे अपनी सन्तान का हिन्दोस्तानी ग्रेजुएटों में मारा मारा फिरते देखकर पछताना पड़ेगा। समझ में नहीं आता कि जब गोरा जाति इस प्रकार सरकार की भारतीय प्रजा से जुदे रहने का यत्न करेगी तो परस्पर का विश्वास कैसे स्थापित होगा और एक बृटिश राज्य की निर्विघ्न स्थिति कैसे होगी।

पैसा अखबार के सम्पादक—श्री मुन्शीमहबूब-ए-आलम गुरुकुल के स्नातकों से कराई हुए प्रतिज्ञाओं को दर्ज कर के "मनुष्य मात्र की सेवा" की प्रतिज्ञा पर बलदेते हुए लिखते है—"मनुष्य मात्र में चूंकि मुसलमान भी बवजह अहसन शामिल हैं इस लिए गुरुकुल के तुलबा (विद्यार्थियों) की निस्बत जो कई लोगों को तरहतरह के अन्देशे थे कि विद्या समाप्ति पर मुसलमानों और दीगर मजाहिब के खिलाफ जो कुछ सीखकर आए होंगे, उससे उन्हें नुकसान पहुंचायंगे, महज़ एक ख़याली और मौहूम बात मालूम होती है।" हम मुंशीमहबूबे आलम साहेब से याचना करते हैं कि वह कभी स्वयम् पधार कर गुरुकुल को देखें और यहां के ब्रह्मचारियों से मिलें; तब उनको पता लगेगा

कि इन विद्यार्थियों में कैसे प्रेम और धर्म का भाव फूंका जाता है। लुधियाना और अमृतसर और अलीगढ़ और फ़ारस तक के मुसलमान भाइयों ने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों से मिलकर प्रसन्नता प्रकट की है। यदि मुन्शीराम खूब आशा भी गुरुकुल का आतिथ्य स्वीकार करेंगे तो कुल वासियों को बहुत ही आनन्द होगा।

युद्ध का आश्चर्य लेकर एक नया विचित्र मेला कलकत्ता नगर में आरम्भ हुआ है। पायोनियर का सम्वाददाता लिखता है कि रमना मंदिर में काली की स्थापना बड़ी पुरानी है। यह प्रसिद्ध किया गया कि काली ने अपने एक भक्त को स्वप्न में कहा है कि उसे रथ में बैठाया जावे क्योंकि वह सरकार बृटानिया के लिए युद्ध करने पधारेंगी। इस लिए एक पवित्र रथ में काली को बैठायागया और एक मेला हुआ जिस में सहस्रों श्रद्धालु भक्त इकट्ठे हुए। चढ़ावा भी खूब चढ़ा होगा। ब्राह्मन देवता की महिमा अपरम्पार है जिन्होंने क्षत्रियों के पुरुषाओं को अवतार बना कर भी पूजा स्वयम् ही बटोरी, उन्होंने यदि सरकार बिरतानिया के युद्ध में फंसने को भी अपनी पूजा का साधन बनाया तो आश्चर्य की बात नहीं।

म० काशीनाथ फिडा ने अपनी धर्म पत्नी की १३वीं बरसी पर ३५) विविध आर्यसामाजिक संस्थाओं तथा विधवाओं को दान दिया।

पूनाहाना आ० स० के मन्त्री महाशय सूचना देते हैं कि वार्षिकोत्सव में कुल २९२।) हुए जिसमें से २२७।) वेद प्रचार फंड को और ३५) गुरुकुल विश्वविद्यालय को भेजे गए।

आर्य-कुमार सभा नजीबाबाद के मन्त्री समस्त जैनी भाईयों को साधारणतः और स्थानीय जैन कुमार हितैषिणी सभा के सभ्यों को विशेषतः अपने उत्सव पर धर्म-चर्चा के लिए निमन्त्रित करते हैं। यह उत्सव २६ से २८ जून तक होगा। अन्य धर्मावलम्बियों को भी निमन्त्रण देते हैं। जो महाशय शास्त्रार्थ के लिए उत्सुक हों उक्त मन्त्री जी को १५ मई १९१६ तक सूचना दें।

स्वतन्त्र अमेरिका में भी अब तक बड़ा पक्षपात है। अमेरिका के बोस्टन नगर से एक मासिक पत्र निकलता है जिसका नाम है—Our dumb animals। इस के मार्च के अङ्क में लिखा है कि "३० दिसम्बर १९१५ को एक प्रान्त में ४ हबशी गोली से मारे गए और २ जला दिए गए। २ और को पीटते पीटते गोरों ने समाप्त कर दिया। अरकान्सस प्रान्त में एक काले को टेलीफोन के खम्भे से लटका कर मार दिया। एक काली औरत को गोरों ने मिलकर इस लिए फांसी दे दी कि उसके लड़के पर किसी गोरे के खरियान में आग लगाने का संदेह था।" लेखक बड़े हृदय बेधक शब्दों में पूछता है कि यदि इनमें से एक भी किसी जहाज़ के साथ डूब जाता तो कहराम मचा दिया जाता। ये सब अमेरिकन प्रजा थे, परन्तु शायद भेद यह हो जाता है कि मार डालने वाला कौन है।

कुन्दनसिंह महाशय कहते हैं जिन्होंने एक पर्चा छपवा कर, शायद, बांटा है। उसके आरम्भ के ३५ शब्दों में आपने व्यवस्था दी है कि आर्य्यसमाज को शिक्षा वर्त्तमान साइन्स को शिक्षा के विरुद्ध है। साहो में पहला वाक्य बुद्धदेव का दिया जिसका वही तात्पर्य है जो निरुक्तकार का है जहां उसने कलियुग के लिए तर्क को ऋषि बतलाया है फिर एक युरोपियन की सम्मति, संसार की धर्म पुस्तकों के विरुद्ध देकर लीडर प्रयाग के लेख का उद्धरण दिया है जो लाला लाजपतराय की पुस्तक की समालोचना में लिखा गया है। वैदिक मैगज़ीन में ऐसे लेखों के धुरें उड़ चुके हैं, फिर भी कुछ ऐसे हालमस्त आपा पन्थी हैं जो अपनी बुद्धि को ही सर्वोपरि समझ कर यह दावा करते हैं कि उनके ढकोंसले के अतिरिक्त और सब ढकोंसले रद्दी हैं।

अमृतसर में हिन्दू मुसलमानों में फिसाद होगया। हिन्दू महम्मदन क्लबों का कन्दु क्रीड़ा (Crieket) में सांमुख्य था। हिन्दू लग भग जीत ही चुके थे कि दङ्गा होगया एक हिंदू मार पीटने से मर गया। उसका मित्र श्मसान भूमि पर पहुंचते ही मित्र की दशा देखकर बेहोश हो गिर पड़ा और वहीं प्राण त्याग दिए।

गुरुकुल के गत वार्षिकोत्सव के विषय में कानपुर गज़ेटका अपना सम्वाददाता लिखता है—"हिन्दू दृष्टि से आज कल कलियुग का समय कहा जाता है कि इस समय में सतयुग की बातों का अभाव है, परन्तु सर्वथा अभाव नहीं कहा जा सकता है।.....मैं आपका ध्यान उस विश्वविद्यालय की ओर ले जाना चाहता हूं जिसको गुरुकुल कांगड़ी भी कहते हैं।.....इस विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव १६ मार्च से २० मार्च तक था। मैं भी उस जलसे में गया था मैंने चार बातें खास तौर पर जलसे की भीड़ में देखीं। सब से बड़ी बात आर्य भाइयों का प्रेम था जो विविध प्रान्तों के आर्य भाइयों में एक सा बहता हुआ नज़र आता था। यह बात दूसरी जगह कहीं नहीं देखी गई।

गुरुकुल मुलतान के समाचार—मुलतान शहर जो कि अपनी गर्मी की अधिकता और भयानक तथा घातक सूर्य्य की प्रचण्ड तथा प्रखर किरणों की उष्णता के लिए प्रसिद्ध है और जिस का अनुभव इस वर्ष पुनः प्रारम्भ होने लगा था वहां ईश्वर की कृपा से तारीख ६ अप्रैल को दुपहर ३ बजे के लग भग एक जोर से आंधी आने के पश्चात् गम्भीर नाद करता हुए, दामिनी को दमकाते हुए, और श्याम छटा लिए हुए मेघ आकाश में सर्वत्र छागये और मुलतान निवासियों के तप्त हृदयों पर ठण्डे पानी की धार बहाते हुए अपने मार्ग पर चले गये। सुनाजाता है कि वर्षा जिस जोर से हुई शायद २ वर्ष से कभी नहीं हुई। कई २ तो यह भी कहते सुनाई दिये कि ऐसी वर्षा हमने कभी देखी ही नहीं।

एक अप्रैल को आदर्श विद्यार्थी के जीवन पर विचार करने के लिए बड़े समारोह से उत्सव मनाया गया जिस में ६ से १० श्रेणी तक के ब्रह्मचारी थे। स्नातक विद्यासागर जी तथा स्नातक जयदेव जी के भाषण के पश्चात् अन्य अध्यापक महाशयों तथा ब्रह्मचारियों ने अपने २ भाव प्रकट किए और अन्तमें मुख्याधिष्ठाता श्री गोपाल जी ने ब्रह्मचारियों को एक सारगर्भित तथा शिक्षा प्रद उपदेश दिया।

७ अप्रैल को आर्य्यसमाज के स्थापनादिवस के उपलक्ष्य में एक बड़ हाल में उत्सव मनाया गया प्रथम से लकर १० तक के ब्रह्मचारी उपस्थित थे। प्रधान की कुरसी पर मु०अ० श्री गोपाल जी विराजमान थे। उन के दाहन बाएदोनों स्नातक तथा इधर अन्य अध्यापक तथा अन्य दर्शक अपने स्थानों पर स्थित उत्सव की शोभा को बढ़ा रहे थे। मु०अ० जी के कुछ भाषण के पश्चात् कुल वन्दना सबने मिलकर गाइ तदनन्तर १० श्रेणी के ब्र० धर्मदेव ने संस्कृत में वक्तृता प्रारम्भ की और आर्य्य सिद्धान्त का सर्वतन्त्र सिद्धान्त बनाने पर बल दिया। फिर ब्र०आत्मदेव (श्रेणी १०) ने केवल एकेश्वर पूजा तथा यज्ञों की बिगड़ी विधिको सुधारने पर कुछ भाषण किया इस के पीछे ब्र० नित्यानन्द श्र० १० ने एक मनोहर निबंध पढ़ा। तदन्तर ब्र० मदन श्रेणी ७ ने एक स्वनिर्मित गीति बड़ी सुरीली आवाज में सब उपस्थित सज्जनों को सुनाई। इस के पीछे ब्र० नारायणदत्त श्र० ६ ब्र० पुरुषोत्तम और ब्र० धर्मदत्त के व्याख्यान हुए। इस के पश्चात् पं० विद्यासागर जी शास्त्री का कुछ संस्कृत में भाषण हुआ और संस्कृत को पुनरुज्जीवन करने में जो आर्य्यसमाज तथा उस के संस्थापक ने भाग लिया है उस का वर्णन किया और संस्कृत के पुनरुज्जीवन के लिए ब्रह्मचारियों को निर्देश किया। इस के पीछे स्नातक जयदेव जी का मातृ भूमि की सेवा पर एक व्याख्यान हुआ और उन्हों ने बतलाया कि मातृभूमि की दशा को देखकर ही ऋषि उठा और आज समय तक उस के आक्रन्द मिटाने के लिए ही भरसक प्रयत्न करता रहा और अपने को देश के लिए बलि कर गया। इस लिए मातृभूमि की सेवा भी आर्य्यसमाज के बड़े उद्देश्यों में से एक बड़ा उद्देश्य है और हमें यथा शक्ति इस के पूर्ण करने का प्रयत्न करना चाहिये। इस के पीछे स्नातक विद्यासागर जी का भाषण हुआ जिस में उन्हों ने ब्रह्मचारियों से एक प्रश्न किया कि क्या जिस यज्ञ में ऋषि अपनी आहुती दे गया है उस मे तुम भी, छोटी या बड़ी कैसी भी हो, देने को तय्यार हो और इस प्रकार एक मधुर भाषण कर बैठ गये। अन्त में श्री मु० अ० गोपाल जी की "आर्य्य समाज का उद्देश्य

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

शारीरिक, सामाजिक तथा आत्मिक उन्नति करना है इस पर एक सार गर्भित वक्तृता हुई और अन्त में कुछ ब्रह्मचारियों को उपदेश देकर अपना भाषण समाप्त किया। कुलगीत तथा शान्ति पाठ के साथ सभाविसर्जित हुई इस प्रकार यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया गया और निर्विघ्न समाप्त हुआ।

(सम्वाद दाता)

—:o:—

भिवानी की युवक मण्डली—का प्रथम वार्षिकोत्सव ३ अप्रैल को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। श्री राय केदारनाथ बहादुर, पेन्शनर डिस्ट्रिक्ट जज प्रधान पद पर विराजमान थे। प्रधान व्याख्यान जाट स्कूल रोहतक के मास्टर नत्थूसिंह का हुआ। प्रधान जी ने सदाचार का महत्व वर्णन करके माता पिता की भक्ति का उपदेश दिया। दूसरे दिन प्रीति भोजन के साथ जलसा समाप्त हुआ। मण्डली ने व्यायामशाला तथा पुस्तकालय स्थापन करने के अतिरिक्त गो सेवा का बड़ा काम किया।

श्री विद्या पीठ (इटावा) का १३ वां विद्या सम्बन्धी मेला ४, ५, ६ मई १९१६, को होगा। इस विद्या पीठ के पुरुषार्थ से संस्कृत पुस्तकों का बड़ा भारी संग्रह हुआ है। स्वामी ब्रह्मानन्द जी ने जिस प्रेम और सहन शीलता से ग्रन्थों की सूची बनाई थी वह अनुकरणीय है। इस विद्या सम्मेलन में संस्कृत के प्रेमियों को अवश्य सम्मिलित होना चाहिए।

गुरुकुल के लिए जो प्रेम—की तरङ्गें उठ रही हैं उनका वर्णन कहां तक किया जाय। शीशमघाट के ठेकेदार बाबू गौरीशंकर पर डाका पड़ा। डाकू अपने जान मार कर डाल गए। गुरुकुल में समाचार पहुंचते ही उन्हें चारपाई पर डालकर लाया गया और डाक्टर सुखदेव ने टांके लगा कर मल्हम पट्टी की। बाबू गौरीशंकर अब निरोग होगए हैं। आपने घाट का किराया न केवल गुरुकुल की गाड़ियों का ही लेना छोड़ दिया बल्कि गुरुकुल के भङ्गी तक से महसूल नहीं लेते।

श्री चौधरी अनूपसिंह ने बड़ी पड़ताल से आम का बड़ा अच्छा पाद लेकर भेजा है जो आषाढ़ में लगाया जायगा।

स[illegible] में पं० शालिग्राम ओवरसीयर हैं। गुरुकुल से कोई भी सम्बन्ध रखने वाला आता जाता [illegible] सूचना देने पर आप भोजन से सत्कार करने [illegible] तैय्यार रहते हैं। पं० इन्द्र के विवाह पर [illegible] कुरुक्षेत्र गई थी उसको जाते हुए प्रातः [illegible] का तथा लौटते हुए सायंकाल का भोजन शालिग्राम ने दिया था।

एक रो[illegible] कांगड़ी के गुरुकुल के पिछले उत्सव में जि[illegible]जन का सब से अधिक आदर हुआ था वे [illegible]म गांधी थे। उत्सव ही में म० गांधी ने भाषण [illegible]ते हुए अपने को सनातन धर्मी कहा था। इस पर सहयोगी "हिंदी समाचार" एक प्रश्न करता है कि यदि एक सनातनी धर्मी का आर्यसमाजी उत्सव में सबसे अधिक आदर हुआ तो इसे हम आर्यसमाज की हीनता कहें, या सनातनधर्म की महत्ता? प्रश्न रोचक है। व्यक्तित्व और सम्प्रदायिकता को अस्पष्ट रीति से सम्मिश्रण किया जारहा है। हम इस प्रश्न का एक तटस्थ की दृष्टि से देख सकते हैं। क्या हम अपने देहलवी सहयोगी से पूछें कि इस काम में आर्यसमाज की महत्ता क्यों नहीं, क्योंकि वह साधारण मतभेद से ऊपर उठकर गांधी के रूप में ऊंचे सिद्धान्तों का आदर कर सका है, जब कि हमारे सहयोगी को उसीमत भेद के चक्कर में पड़े रहने के कारण इस प्रश्न के पेश करने की आवश्यकता पड़ गई! हमारे सहयोगी को आर्यसमाज की इस महत्ता के मानने में कोई उचित रुकावट न होनी चाहिये क्योंकि इस के मान लेने से उस के इस सिद्धान्त का पोषण किसी प्रकार भी नहीं होता कि यदि आर्यसमाज की महत्ता मान जायगी, तो दूसरे पक्ष को नीचे गिर जाना पड़ेगा।

(प्रताप से उद्धृत)

—:o:—

कौंच आर्यसमाज के प्रधान—प्रताप (कानपुर) में लिखते हैं:—"जिस दिन से आर्य्यसमाज कौंच के वार्षिकोत्सव पर हिन्दू मुसलमानों में बलवा होगया उसी दिन से यहां की पुलिस के ख्याल मेरी तरफ से फासिद हो गये हैं। पुलिस का ख्याल है कि इस बलवे का जिम्मेवार प्रत्यक्ष में कोई भी क्यों न हो परन्तु दरपरदा मैं ही हूं। हालाँकि बलवा सम्बन्धी तमाम झगड़ों का निपटारा हो गया और बलवाई मुसलमान सजा भी पा चुके किन्तु किसी अदालत ने मुझे बलवे का जिम्मेवार करार नहीं दिया। फिर न मालूम क्यों पुलिस मुझे तंग कर रही है? पुलिस ही की नाखुशी के कारण मैं बलवे का फैसला होने के चन्द ही दिन बाद कौंच छोड़ कर झांसी चला गया था और वहां से पूरे छः महीना बाद वापिस आया। कौंच आते ही मुझे मालुम हुआ कि मेरे नाम जाप्ता फौजदारी की धारा १०७ के अनुसार सम्मन व नोटिस निकला है। मैं तत्काल थाने में गया परन्तु वहां पता न चला। इस के बाद तारीख २२ मार्च की रात्रि को करीब नौ बजे यकायक एक हेड कानिस्टबिल और दो कानिस्टबिल बिला वरदी नंगे सिर मेरे पास आए और कहने लगे कि आपको सबइन्सपैक्टर साहब बुलाते हैं। मैं उनके साथ हो लिया। थाने में पहुंचते ही थानेदार ने कहा कि तुम्हारे नाम गिरफ्तारी का वारन्ट है। मैंने कहा, दिखलाइए। तो दूर से वारन्ट दिखला दिया जिसे मैं पढ़ नहीं सका इस के पश्चात् मैंने कहा कि ज़मानत ले लीजिए, तो सब इन्सपैक्टर ने ज़मानत लेने से यह कह कर इन्कार कर दिया कि वारन्ट में जमानत लेने की इजाजत नहीं और मुझे बन्द कर दिया। मुझे बंद करने के बाद थानेदार तहसीलदार साहब के यहां चले गये। वहां पर डिपटी साहब भी बैठे हुए थे। उनके यहां से मेरे नाम वारंट निकला था। वहां से एक घंटे के बाद थानेदार साहब वापिस आये। और मेरे पास आकर कहने लगे कि ढाई ढाई सौ की दो जमानत दाखिल करो तो छूट सकते हो। चूंकि ज़मानतदार मौजूद थे इस से तत्काल ज़मानत देकर रात्रि के साढ़े दस बजे के करीब मैं अपने घर वापिस आया। पुलिस सुबूत ढूंढ़ रही है परन्तु मुझे यह आज तक नहीं बताया गया कि पेशी किस तारीख़ को होगा? और न मजिष्ट्रेट के हुक्म की कोई नकल मुझे दी गई जो कि कानून जापता फौजदारी की धारा ११५ के अनुसार वारन्ट के साथ हो देना चाहिए थी। केवल ३१ मार्च को सब इन्सपैक्टर साहब ने मुझे बुलाकर यह कह दिया कि यदि तुम छः महीना के लिए कौंच छोड़ दो तो तुम्हारे ऊपर से मुकदमा उठा लिया जाय। समझ में नहीं आता कि मुझे क्यों कौंच छोड़ने के लिए मजबूर किया जाता है? क्या सरकार इस ओर ध्यान देकर मुझ ग़रीब की पुकार को सुनेगी"? हम श्रीमान सरजेम्स मेस्टन महोदय का ध्यान इस ओर बड़े बल से आकर्षित करते हैं।

—o—

आवश्यकता

मेरे पास सद्धर्म्मप्रचारक की संम्वत् १९६४ से आज तक की पुरी फाईलें हैं यदि किसी आर्यसमाज वा सामाजिक संस्था वा आर्यपुरुष का ज़रूरत हो तो नीचे के पते पर लिखने से भेजी जायगी। डाक का महसूल लेने वाले को देना पड़ेगा और कोई कीमत नहीं लगेगी।

सरदार अरबाजी
बराद वायाडीसा
आर. एम. रेलवे

—o—

उपदेशक की आवश्यकता

आर्य्य समाज मुरादाबाद को जिला प्रचार के लिए एक योग्य उपदेशक की आवश्यकता है, प्रार्थना पत्र निम्न लिखित पते पर आने चाहियें।

[illegible]
टौन स्कूल मुरादाबाद ([illegible])

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ अच्छे २ विद्वानों से संशोधन करा के अथवा लिखा कर तैयार कराई गई हैं। अश्लील भागों, व्यर्थ पद्यों अथवा शब्दों को निकाल कर उचित स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन संस्करण २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसंदेह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं।

संख्या	नाम पुस्तक	दाम
१.	संस्कृत प्रवेशिका	।)
२.	संस्कृत साहित्य पाठावलिः द्वितीयोभागः	=)
३.	आर्य्यसूक्ति सुधा	।)
४.	काव्य लतिका	॥)
५.	संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति	॥)

श्रीमहात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संगृहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं।

६.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र]	॥।)
७.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग [शेष तीन तन्त्र]	॥=)
८.	संशोधित हितोपदेशः	॥=)
९.	संशोधित रघुवंश [मूल]	।)
१०.	संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व	।)
११.	संशोधित नीतिशतकम्	=)
१.	अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण	।)
२.	अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्]	२)
३.	अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्]	१॥)
४.	धातु पाठः—[मूल] महर्षि पाणिनीकृत	।)
५.	नाटिकः	=॥
६.	आख्यातिकः	॥।)
७.	महाभाष्यम् अङ्काधिकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिना प्रणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम्	२॥)

आर्यभाषा

१.	आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र	।)
२.	आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र]	।-)

विज्ञान

१.	भौतिकी [बैलफोर] स्टुआर्ट कृत "फिजिकल प्रायमर" का आर्यभाषानुवाद	॥)
२.	रसायन-(त्रिलयन एस, पनों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद)	॥)

इतिहास

१	भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A.M.R.A.S. कृत	१।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

१.	वेद में वैद्य शास्त्र	-)॥
२.	वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत	।-)
३.	वैदिक देवताओं का स्वरूप उ० इन्द्र वेदालंकार द्वारा लिखित	।-)
४.	वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी	-)॥
५.	वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य	=)॥
६.	भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त	≡)॥
७.	मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार)	।)
८.	पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर)	≡)
९.	साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त	।)
१०	" " तृतीय " "	।)
११	" " चतुर्थ " "	।=)

On Arya Samaj.

1. The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A. ./1/6

2. Life of Swami Dayananda. (Natesan and Co.) ./4/.

3. Life of Swami Dyananda. with an introduction by Prof. Rama Deva (Ganesh and Co.) R. 1/./.

4. The life of Swami Dayananda by Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama Rs. 2/./.

5. The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. ./4/.

6 The Arya Samaj or a paper read by Prof. Rama Deva B. A. M. R.A. S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad. ./1/6

7. Arya Samaj, a Political Body being an Open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. ./4/.

8. Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji ./1/.

9. The Arya Samaj and its Detractors-a Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama Deva B. A-M. R. A. S. Rs. 2/8/.

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A. कृत)

१.	अर्थशास्त्र (धनविद्या)	१॥)
२.	अग्निहोत्र व्याख्या	।)
३.	वेदोक्त राज्य	॥)

(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)

४.	रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry)	३॥)
५.	विद्युत शास्त्र	२।)
६	वनस्पतिशास्त्र	२)

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

७.	उपनिषदों की भूमिका	।=)
	प्रिन्स बिस्मार्क	१॥)
८.	राष्ट्रों की उन्नति	।)
९	राष्ट्रीयता का मूलमन्त्र	≡)
१०	विकासवाद The Theory of Evolution (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे)	२)
११	आर्यपथिक पं० लेखराम जी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीराम जी	१)
१२	महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत (लेखक ब्र० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार	।)
१३.	मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष	॥)
१४.	आर्यों की विज्ञानिक उन्नति (लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०)	=)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered NO. A. 434.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ११ वैशाख सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २२ अप्रैल सन् १९१६ ई० { संख्या २ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञानप छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास „ „ „ „ -) „ „
छः „ „ „ „ -)॥ „ „ „
सालभर „ „ „ „ -) „ „ „

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी, जि०बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—:o:—

आवश्यकता

गोखां पुत्री पाठशाला-शिमला के लिए एक ऐसी अध्यापिका की आवश्यकता है। जो मिडल क्लास तक पढ़ा सकती हो और पढ़ाने में अच्छी योग्यता रखती हो। प्रार्थना पत्र प्रशंसा पत्र सहित और वेतन भी जो स्वीकार हो निम्न पते पर आना चाहिए:—

वजीरसिंह
क्लर्क एलायन्स बैङ्क ऑफ शिमला लिमीटेड
शिमला

हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षाओं के नये केन्द्र

हिन्दी की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाओं के लिए निम्नलिखित नये स्थान केन्द्र बनाये गये हैं:—

इन्दौर, एटा, खंडवा, गोरखपुर, बड़ौदा, मेरठ, लश्कर।

ब्रजराज बी०एस०सी०एल०एल०बी०
संयोजक परीक्षा समिति

—:o:—

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं ।

(१) आर्य-धर्म-ग्रन्थमाला के विषय में—बहुत से ग्राहक पूछते हैं कि प्रचारक पत्र के साथ ही पुस्तक क्यों नहीं भेजी जाती, अलग से डाक व्यय क्यों देना पड़ता है। इसका उत्तर यह है कि जिस पुस्तक का एक ग्राहक महाशय ने अब उल्लेख किया है। उन्होंने १) पेशगी जमा कर दिया है। जब वह समाप्त होगा तो फिर पेशगी भेज देंगे। इस प्रकार जो महाशय पेशगी मनीआर्डर द्वारा नई लघु पुस्तकें लेते रहेंगे उन्हें भी देंगे। प्रत्येक लघुपुस्तक के मूल्य के साथ डाक व्ययका कार्ड लिखा जाया करेगा।

जो आर्य्यसमाज लेख द्वारा धर्म प्रचार के अभिलाषी हैं उनके लिए ठीक ढङ्ग काम करने का यह है कि जो नया ट्रैक्ट निकले उसकी १०० प्रति मंगालें। उन्हें एक आने के स्थान में तीन पैसों में पुस्तक पड़ेगी और वह यदि आगे पूरे मूल्य पर बेचेंगे तो उनके समाज को भी कुछ बचत हा रहा करेगी।

प्रचारक के सम्बन्धदाताओं—तथा पत्रप्रेरकों को फिर से चेतावनी देने की आवश्यकता है कि अपना लेख पत्र के एक ओर ही खुला, स्पष्ट लिखा करें। पोस्टकार्ड के दोनों ओर बारीक लिख अक्षरों को कम्पोज करना कठिन है। यदि नियम विरुद्ध लिखे पत्र रद्दी की टोकरी में डाल दिए जायं तो शिकायत न करनी चाहिये।

ग्राहकों को १३ सप्ताह के बदले—उपहार भेजने का समय आचला है। १ मई से "आर्यपथिक—लेखराम" की एक एक प्रति उन ग्राहकों के नाम वी० पी० द्वारा भेजी जायगी जिनको १ वैशाख १९७३ तक १३ सप्ताह मुजरा मिलने चाहियें। बहुत से भाई लिख रहे हैं कि उन्हें पुस्तक नहीं चाहिए, वे वैसे ही १३ सप्ताह के बदले कुछ नहीं लेना चाहते। ऐसे सब भाइयों की सेवा में निवेदन है कि अपने सेवक पर कृपा करके उसके आत्मा को शान्ति देने के लिए पुस्तक स्वीकार कर लें; विशेषतः वह प्रार्थना उन महाशयों से है जो आगामी वर्ष का मूल्य पहले ही भेजते जारहे हैं।

अभी तक १४०० ही छपरहा है—बाक़िल ख़ारिज एकसा ही रहता है। प्रचारक को स्थिर रखने के लिए इसकी ग्राहक संख्या बढानी चाहिए।

(प्रबन्धकर्त्ता)

गुरुकुल समाचार

१. कुछ दिनों से गुरुकुल में ऋतु बड़ी विषम रही है। दिन में गर्मी रहती है और रात को अच्छी सर्दी हो जाती है। आंधी साथ ओर राका [illegible] में मेघ भी दृष्टिगोचर होते हैं।

खसरे के रोगी अब बिलकुल अच्छे हो गए हैं। पंचम श्रेणी के एक ब्रह्मचारी को कनपेड़े हो गए थे इसे अन्य ब्रह्मचारियों से पृथक आश्रम से बाहर रख दिया था जिस से दूसरों में इस बीमारी के फैलने की सम्भावना नहीं रही। अब वह भी अच्छा हो गया है। इस के अतिरिक्त तीन ब्रह्मचारियों को विषम ऋतु के प्रभाव से साधारण ज्वर है। और सब तरह से स्वास्थ्य उत्तम है।

२. गर्मी की धूप स्वास्थ्य के लिए हानिकर होने के कारण सायंकाल की हाकी फुटबाल आदि खेलें बन्द करदी गई हैं उस के स्थान पर छायादार स्थानों में अखाड़े बना लिए गए हैं और वहाँ कुश्तियें होती हैं।

३. गुरुकुल से १२ मील की दूरी पर लाल ढांग ग्राम है। वहां के एक गरीब मनुष्य पर रीछ ने आक्रमण किया। उस की बाहु और टाँग का बहुत सा मांस काट कर ले गया और माथे पर भी गहरा घाव आया। वह रात्रि के समय गुरुकुल औषधालय में लाया गया। उसी समय घावों का खराब मांस काटकर सी दिए गए और डा० सुखदेव जी के पुरुषार्थ से ६ दिन में ही बिलकुल ठीक हो कर राजी बाजी वह अपने ग्राम को लौट गया।

इसी प्रकार अन्य भी कई दूरवर्ती ग्रामों के मनुष्यों को गुरुकुल के औषधालय से बड़ा लाभ पहुंचता है।

४. गर्मियों के कारण विद्यालय की पढ़ाई दोनों समय करदी गई है। ६ बजे प्रातः [illegible] होती है और शेष ३ अवधी की [illegible] होकर ३ बजे से प्रारम्भ [illegible] है। सब विद्यालय में पहले ७ अवधी पढ़ाई होती [illegible]। इस सूत्र से पाठ विधि में कुछ परिवर्तन कर दिया गया है। एक अवधी और बढ़ा दिया गया है जिस में एक दण्ड, द्वादश अवधी में तो शेष अवधि [illegible] निघण्टु की पढ़ाई होती है और अगली दो श्रेणियों में ब्राह्मणग्रन्थों का पाठ होता है। म० वि० के आठों अवधि प्रातः काल ही पढ़ाई जाती है। दूसरे समय विद्यार्थियों तथा उपाध्यायों को स्वाध्याय करने का पर्याप्त समय मिल जाता है।

गणित के उपाध्याय का स्थानगत सत्र में खाली था। उपाध्याय रामचन्द्र गुप्ता जी के आने से इस की भी इस सत्र से पूर्ति हो गई है।

५. अब गुरुकुल की यशोदुन्दुभि का नाद इतना विस्तृत हो चुका है कि कनखल से गुरुकुल तक के कठिन मार्ग को भुलाते हुए भी न केवल देशी सज्जन अपितु विदेशी लोग भी इस की ओर खिंचे आते हैं। म० डी. डी. पारख्य डिप्टी सेक्रेटरी कमिश्नर संयुक्त प्रान्त, राय ज्वालाप्रसाद बी० ए० एक्जेक्टिव इंजिनीयर के साथ आये। वह गुरुकुल के प्रबन्ध और ब्रह्मचारियों के स्वास्थ को देखकर बड़े प्रसन्न हुए और कहा कि यह संस्था अद्वितीय है।

मिस्टर स्टेनली सुपरिन्टेंडिंग इंजिनीयर तथा मिस्टर हाल एजिनीअर गंगा-नहर, मिस्टर होवर्ट कलेक्टर रुड़की के साथ गुरुकुल देखने आये और बड़े प्रभावित होकर गए। उन्होंने यह भी विचार प्रकट किया कि फिर कभी यहां आकर एक दो दिन रहेंगे।

चन्द्र

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेदामृत ।

ओ३म् नमस्तु नः परिज्मा वसन्तमग्नये वाचो अग्रियाय भरध्वम् । शिशीतमिन्द्रापर्वता युवं नस्तन्नो विश्वे वरिवस्यन्तु देवाः ॥ ऋ० १ । १२१ । १ ॥

"निवास स्थान बनकर जलाता हुआ (अग्नि) हम को आनन्दित करावे; जलों की वर्षा करने हारा पवन हम को आनन्दित करावे। हे सूर्य और मेघमण्डल के खंडश (शिक्षारूपी तेजसे हृदय को पवित्र करके ऊपर उठाने वाले शिक्षक तथा शिष्य) तुम दोनों हम को तीक्ष्ण बुद्धि से युक्त करो, जिस से सब (दिव्य गुणों के निवास कराने वाले) देव हम लोगों को आश्रय देने वाले हों।"

पहले पहल संसार के अथाह समुद्र में गिर कर, बालक सूर्य के प्रकाश में ही आंख खोलता है। जीवन को अनुभव ही नहीं करता जब तक कि सूर्य भगवान् के दर्शन न हो लें। निस्सन्देह प्रकाश ही जीवन है। सारा ब्रह्माण्ड ही प्रकाश ने धारण किया हुआ है। प्रकाश ही सबका निवासस्थान है; सब वस्तु इसी के आश्रय से दिव्यगुणों को बसाने वाली बन रही हैं। परन्तु जहां एक ओर प्रकाश सब का निवास स्थान है, वहां दिव्यगुणों का बसाने वाला भी है। चेतन मनुष्यों में ही नहीं, जड़ पदार्थों में भी दुर्गुणों का अन्धेरा छाया रहता है। वह अन्धेरा भी ठहर नहीं सक्ता जहां प्रकाश हो। अग्नि जहां एक ओर सारी कार्य प्रकृति को घेर लेता है वहां पदार्थों के रोगों को जलाकर भस्म कर डालता है। इस का कैसा उत्तम दृष्टान्त हमारे अपने जीवनों में नित्य दिखाई देता है। कौनसा स्थान हैं जहां हम अपने प्यारे प्राणपति की ज्योति से जुदे होते हैं? सर्व स्थानों, सर्व समयों और सर्व अवस्थाओं में वही हमारे अङ्ग सङ्ग है। वह हमारा निवास स्थान है। अन्दर, बाहर वही परिपूर्ण हो रहा है। परन्तु वह "आदित्य वर्ण" है, वह ज्वलन्त प्रकाश है। इस लिए जहां और जब भी हम उस ज्योतिः का साक्षात्कार करते हैं उसी समय हमारे सारे दुष्ट गुण जल कर भस्म हो जाते हैं। तब आनन्द ही आनन्द का अनुभव होता है। तप के पश्चात् ही ठीक विश्राम मिलता है, तपाया जाकर ही मल नष्ट हो, शुद्ध स्वर्ण चमकता है; तब आत्मा को भी स्वच्छ करने के लिए अग्नि में ही प्रवेश करने की आवश्यकता है।

अग्नि ही सारे मलों से जलों को शुद्ध कर के, गिरी हुई अवस्था से उन्हें ऊपर उठाता है। तब वही अग्नि वायु रूप हो कर मेघ मण्डल को उचित स्थानों में ले जाकर बरसता है। मलों से शुद्ध तो भूमि हो जाती है, परन्तु जल के ऊपर उठजाने से व्याकुल हो उठती है। जब तक भूमि पर जल था तब तक, मलों में भी लथ पथ हुआ, एक प्रकार की तामस शान्ति सी दे रहा था। परन्तु जलों के ऊपर उठजाने से भूमि मलों से मुक्त तो हो गई परन्तु उसके अन्दर की जलन ने उसे व्याकुल कर दिया। तब वायु ने मेघ मण्डल को हिला कर वर्षा कराई जिस से भूमि के चराचर प्राणी सभी तापरहित होगए। यह अवस्था उन धर्म—परायण आत्माओं की होती है, जिन के हृदय के मलों को आस्तिक बुद्धि का तेज स्वच्छ कर देता है। वह समय होता है जब कि आत्मा को पाप का ठीक बोध होता है। पाप के बोध से सच्चे अनुताप की उत्पत्ति होती है। इस निरोग अवस्था में मनुष्य बहुत ही क्लेश अनुभव करता है, परन्तु यह कष्ट देर तक नहीं रहता। जिस ज्योतिः स्वरूप पिता ने सारे मलों से जुदा कर के ज्ञान रूपी जल को ऊपर स्थित किया, वही वायु रूप से इस ज्ञानों के मेघ मण्डल को हिला कर बरसा देता है। तब मन, हृदय और आत्मामें सच्ची शान्ति का संचार होता है।

यही प्रत्यक्ष दृष्टान्त परमपिता ने सांसारिक गुरुशिष्यों के सामने भी रख दिया है। गुरु वा धर्मोपदेशक को पहले अग्नि का रूप धारण करना चाहिए। झूठी दया और झूठे प्रेम को त्याग कर उसे पहले, तेज ही तेज का आश्रय लेना चाहिए। प्यारे शिष्य का प्रेम यही है कि उस के अन्दर एक भी मल न रह जाय। उस के मलों को भस्म कर दिया जाय। तब स्वच्छ हो कर ज्ञान ऊपर को उठेगा। ज्यों ज्यों शुद्ध ज्ञान ऊपर को उठेगा, त्यों त्यों जिज्ञासु शिष्य का हृदय व्याकुल होता जायगा। भाग्यशील हैं वे शिष्य जिन के हृदय सच्चे ज्ञान के लिए व्याकुल हो रहे हैं। जब तक शरीर स्वस्थ न हो तब तक जल का आनन्द नहीं आसक्ता; जब तक आत्मा स्वस्थ न हो तब तक ज्ञान रूपी अमृत को ग्रहण करने की योग्यता प्राप्त नहीं होती। आचार्य की विद्या, आचार्य का सदाचार, उत्तम योग्य शिष्य मिलने पर ही, सफल हो सक्ता है। यह ठीक है कि सत्य विद्या में दान से बुद्धि होती है। जिस समाज में सदाचारी, धर्मात्मा, ज्ञानी आचार्य हों और उन से शिक्षा लेने वाले श्रद्धा सम्पन्न स्वच्छ हृदय शिष्य हों, उसी समाज का कल्याण होता है। उसी समाज की प्रजा अन्तःकरण से यह प्रार्थना कर सक्ती है—"हे शिक्षक तथा शिष्य गण तुम दोनों के संघर्षण से ही हम लोगों की बुद्धियां तीक्ष्ण होंगी। फिर उस तीक्ष्ण बुद्धि की कसौटी पर अपने कर्मों को परख कर जब हम आचरण करेंगे तबसब देव हम को आश्रय देने वाले होंगे।" पृथिवी और जल, वायु और आकाश, इन्द्रियतथामन, सभी शान्ति प्रदान करने वाले होते हैं जहां ज्योतिः स्वरूप, ज्ञान और क्रिया के भन्डार परमात्मा पर विश्वास रखने वाले गुरु स्वच्छ हृदय, श्रद्धालु शिष्यों को शिक्षा देते हैं। शमित्योओम्।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आत्म दर्शनम् ।

तुम कहां हो ! अन्तर हृदय भेदक विलाप है । मन चञ्चल को चुप करानेके बहुत से साधन सोचे । नाच रंग की सभा में फंसकर, वहां की वाह वाह की के शोर में मन को बहलाने की कोशिश की, परन्तु कुछ काल के पश्चात् दिल से दर्द उठा और दर्द-नाक आवाज़ निकल उठी—हृदयेश्वर तुम कहां हो !

इस चिन्ता योगिनी से छुटकारा पाने के लिए, इस चिन्ता से मुक्त होने के लिए, इस ग़म को ग़लत करने के लिए, चरस का दम लगाया, भंग का लोटा चढ़ाया, शराब के कनस्तर लुंढाए; परन्तु फिर भी उन्मत्त हृदय से वही मर्मभेदक शब्द निकले—प्राणपति तुम कहां हो !

शरीर शिथिल होगया, इन्द्रियों की ज्योति मन्द पड़ गई; अब न तो नाचरंग ही आनन्द देते हैं और नही मद्य की आग का सहन हो सक्ता है । डाक्टर मौत का चित्र सामने खींच कर ये सब व्यसन छुड़वा देता है । चौथी अवस्था शीघ्र आ पहुंची, जवानी में ही बुढ़ापे ने आघेरा तब दर्शन शास्त्र (फ़िलासोफ़ी) की शरण ली गई । कोई सृष्टि कर्त्ता नहीं, सब आपही बना और आप ही स्थित है, यह तो सदा से ऐसा ही चला आया है, कर्म फल बच्चों का खेल है । कर्म आप से आप फल देता होगा, नियन्ता कोई नहीं । दूसरों को समझाने का फ़िलासोफ़ी ने खूब काम दिया, परन्तु जब अपने अन्दर वाले के समझाने का समय आया तो वहां से फिर वही शब्द निकले—जगत के निर्माता तुम कहां हो !

इन्कार किसी से बन न आया तेरा ।

चारों ओर की भटकना से निराश हो कर जब बाहर भटकना बन्द कर दिया तब—अन्दर के पट तब खुलें जब बाहर के पट देय—अन्दर के पट खुल गए । पहेली बूझी गई । कष्ट क्यों हुआ, क्लेशों ने क्यों सताया ? इसलिए कि आनन्द की वहां तलाश की जहां वह था नहीं । अब दृश्य ही बदल गया ।

तुम कहां नहीं हो ! आंखे अच्छे रूप के लिए व्याकुल हो रही हैं । उस रूप की ढूढ़ में कांटों में घसीटे गए, गढ़ों में ठोकरें खा कर गिरे, शरीर चलनी होगया; कोई स्थान बिना घाव के न बचा । बहीं जुस्तजू ले कर जब अभीष्ट रूप के सामने पहुंचे और उस के प्रकाश में आंखों को सेंक उस के भोग की तय्यारी की, तो सौन्दर्य के भन्डार का ही स्वरूप उस में भी देखा । स्त्री वा पुरुष के सौन्दर्य के अन्दर सौन्दर्य का श्रोत बहाने वाली जगत जननी के दर्शन हुए । आंखें खुल गईं । हाड, मांस और चरम में सौन्दर्य कहां ! यदि सौन्दर्य इनका होता तो चिरस्थाई होता । इस सारे खोल के अन्दर और बाहर जगदम्बा का सौन्दर्य है । अब आंख का भाव ही बदल गया । जिस रूपवती पर पापकी दृष्टि डालने आया था, उसके अन्दर माता के एक रस, न बदलने वाले सौन्दर्य को देख कर, उस के आगे पूजा भाव से शिर झुक गया और अन्तः करण से अनायास ही ये शब्द निकले—जगत् जननी ! तुम कहां नहीं हो !

कान शब्द में, जिह्वा रस में, नासिका गंध में और त्वचा स्पर्श में—एक एक इन्द्रिय अपने अपने विषय में खींच खींच कर लेगई । परन्तु कोई स्थान भी तो उस से ख़ाली न पाया । जिस हाथ से चोरी का माल उठाने की चेष्टा हुई है, उसमें वह है, जिस वस्तु को चुराने की चेष्टा हुई उस में वह व्यापक है । कहां चोरी करें, कहां विषय भोग करें, कहां कुचेष्टा करें ? कौनसा स्थान है जहां नियन्ता नहीं । आनन्द तभी तक है जब तक कि सुन्दर विषय का भोग नहीं किया । विषय को भोगते ही जहां विषय का रूप भयानक बन जाता है वहां आनन्द महा कष्ट के साथ बदल जाता है ।

तुम कहां नहीं हो ! पापी को ये मर्म-भेदक शब्द कम्पायमान कर रहे थे । परन्तु जब कोई स्थान उससे खाली नहीं—यह निश्चय होगया, और जब सारा सौन्दर्य इसीके अन्दर स्थित प्रतीत हुआ, तब वे ही शब्द गिरे हुए आत्मा का सहारा बन जाते हैं ।

जङ्गल में भूला हुआ यात्री भटक रहा है । ज्येष्ठ का अन्त है । कुत्तों ने भी जीभें बाहर निकालदी हैं । चलते चलते प्यास के मारे व्याकुल हो रहा है । बे होश होकर मैदान में गिर पड़ता है । आंखें बन्द और प्यासा मुंह खुला हुआ है । अन्धेरा छा जाता है, वायु का वेग वृक्षों को हिलादेता है । एक दम से मेघ बरसने लगते हैं और सूखा जिह्वा तर हो जाती है । यात्री शान्त होकर उठ बैठता है और उस के अन्तरात्मा से ये शब्द निकले हैं ।

शान्ति के भण्डार, तुम कहां नहीं हो ! भगवन् ! यदि हम, भूले हुए तुम्हारे पुत्र, तुमको अपने अन्दर और बाहर प्रत्येक समय में देखें तो फिर हमें क्या किसी अन्य शिक्षा की आवश्यकता रहती है ? पर्वत के शिखर पर हिम की शोभा तुम्हारी ही शोभा को तो दर्शाती है, हरे हरे वृक्षों और वनस्पति की तरावट तुम्हारे ही तो दर्शन कराती है ।

एक कामी पुरुष को उन्मत्त होकर एक देवी के पीछे भागते एक सज्जन ने देखा । देवी की रक्षा के लिए सज्जन भी पीछे भागा । समीप पहुंच कर आश्चर्य का दृश्य देखा । देवी लौट कर निडर चक्षुओं से दुष्ट को देख रही है, और दुष्ट आंखों पर हाथ रख कर रोरहा है—"माता जी क्षमा करो, माता जी क्षमा करो ।" सज्जन इस दृश्य को देख कर विमोहित होकर खड़ा रह गया और उसके अन्दर से गद गद होकर फिर वही प्राण प्रदायक शब्द निकले—जननी तुम कहां नहीं हो ! निस्सन्देह कोई प्रदेश तथा कोई भाव भी तुम से ख़ाली नहीं, तब इस पवित्र भाव के उत्पन्न करने की तुम्हारे बिना किस से याचना करूं—

येमे वश वृणुते तेन लभ्यः ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्मप्रचारक।

बूढ़ी काया में नया जीवन

बूढ़ी काया में नया जीवन देखने का दृश्य नया नहीं है। जिन की परमात्मा ने रक्षा करनी हो, उन्हें कोई शक्ति भी गिरा नहीं सकती। उनके शरीर पर बुढ़ापे का आक्रमण होजाय तो भी किसी न किसी जीवनामृत से जवानी फिर से लौट ही जाती है। मुंह पर झुर्रियां पड़ी हुई हों, अन्दर दांत न रहने से मसूड़े पोपले हो गये हों, शरीर झुककर मोड़ी हुई बेत के समान हो जाय, तो भी यदि जीवन का संचार होजाय, यदि किसी प्रकार जीवन शक्ति का प्रवाह वह निकले, तो बुढ़ापे के सारे चिन्ह दूर हो सकते। जिसे भगवान् रखता है, उसे कोई बिगाड़ नहीं सकता।

भारतवर्ष बूढ़ा है, उसकी आयु भूमण्डल के समस्त भूखण्डों से बड़ी है। इसके शरीर पर बुढ़ापे के चिन्ह भी स्पष्ट हैं संसार समझ बैठा है, कि भारत का अन्त काल समीप आगया। गिद्ध आदि मांसाशन पक्षी चारों ओर से घिर रहे हैं, और समझ रहे हैं कि यह बुड्ढा अब मरा और अब मरा। सब अपना २ भागनोचने के लिए तय्यार हैं। मृत्यु भी अपने शिकार को पक्का समझ कर निश्चिन्तता से दांत बाये हुए आरही है उसी समय चमत्कार होता है, न जाने कहां से जीवन शक्ति से भरा पवन बहने लगता है—दिशाएं प्रफुल्ल हो जाती हैं। प्रकृति हंसने लगती है-पक्षी राग गाने लगते हैं—और इसी मंगलमय घड़ी में भारत की प्राण शक्ति सम्पन्न हो जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है, मानो फिर से भारत युवा होरहा है उन्नीसवां शताब्दि उसी संजीवन कारी पवन के बहने की शताब्दि थी। इस सदी ने भारत के बुढ़ापे पर औषधोपचार प्रारम्भ किया। ईश्वर की कृपा से इस जीर्णदेश को ऐसे २ व्यक्ति मिल गये, जिन्होंने उसकी शिथिल नसों को उद्बोधन-उत्पन्न कर दिया।

उत्साह से आती हुई मृत्यु का उत्साह-भग होगया। मांस खण्ड के लोभी कुत्ते और सियार निराश हो हो लौटने लगे—गिद्ध आदि पक्षी उलटे पांव जाने लगे भारत फिर जीवित होने लगा। मुर्दे में जान आती देख कर हितैषी प्रसन्न होने लगे, लोभी खिन्न होने लगे और सारा भूमण्डल आश्चर्यान्वित होने लगा। ऐसी दृश्य को देख कर आम की डाली पर बैठी हुई कोयल ने भी कूक लगादी।

जैसा विस्मयजनक यह दृश्य हुआ है वैसा ही विस्मयजनक दृश्य सद्धर्मप्रचारक के जीवन में भी उपस्थित होता रहा है और अब भी होरहा है। सद्धर्म की जीवनी बड़ी मनोरञ्जक और उपदेश देने वाली है। अपने लगभग एक चौथाई शताब्दि के जीवन में इसने दस सदियों के रङ्ग फेर देखे हैं। इसका अपना जीवन भी परिवर्तनों का ही जीवन रहा है। फिर परिवर्तन भी ऐसा वैसा नहीं। बड़े परिणाम कारी परिवर्तन। यही प्रचारक किसी दिन १२ पृष्ठों का आकार धारण कर चुका है और कभी इसी में २४ पृष्ठों के लेख होते थे। किसी दिन इसी पत्र की ग्राहक संख्या २५०० थी और ऐसे भी समय आये जब इसकी ग्राहक सूचि में एक सहस्र भी नाम नहीं रहे। प्रचारक के जीवन में वे दिन भी रहे, जब इसके ग्राहक बुधवार के दिन घंटों तक डाक की प्रतीक्षा किया करते थे इसी को वे दिन भी देखने पड़े, जब प्रचारक आता था और बन्द का बन्द ही रद्दी में फैंक दिया जाता था। सब प्रकार के समय आये और बीत गये। प्रचारक के चलाने वालों को यदि एक दिन प्रतीत होता था कि इसकी आयु युगयुगान्तरों में भी समाप्त न होगी, वह कभी ऐसा प्रतीत होता था कि यही अंक अन्तिम होगा—बस अब आगे प्रचारक न चलेगा।

प्रचारक ने अपने जीवन के सब के सब उलट फेर बड़े धीरचित्त के साथ सहे हैं। इन अपने जीवन के परिवर्तनों के साथ २ वह अपने समाज आर्यसमाज के अन्दर भी परिवर्तन देख देख कर ईश्वर विश्वास का दृढ़ सिद्धान्त पढ़ चुका है। प्रचारक ने आर्यसमाज की वह दशा देखी थी जब इस पवित्र समाज में कूट-राक्षसी का प्रवेश नहीं हुआ था, फिर इसने वह समय देखा जब पंजाब के सामाजिक संसार में द्वेष की अग्नि धांय धांय जलने लगी और प्रेम शक्ति को राख करने लगी। आग जलती रही, और उसने बीच में ही धर्म और तप के प्रभाव से समाज के जलते हुए देह में फिर प्राण फेंक रहे। समाज दो भागों में विभक्त होगई। इस जीवन-संग्राम में प्रचारक भी एक मुख्य योद्धा था। जहां समाज के समय विनाश की सृष्टि दिखाई देती थी, वहां इसके पीछे आशा का रमणीय वायु बहने लगा। अवनति नदी का प्रवाह ही मुड़ा होकर बहने लगा।

दोनों दल अपने २ कार्य में लग गये। एक दल का कालिज दूसरे दल का गुरुकुल हुआ। यह गुरुकुल प्रचारक का विशेष कार्य था। गुरुकुल के जीवन में वे सारे दृश्य दिखाई दिये, जो भारत के जीवन में आचुके हैं। एक वर्ष के बारह महीनों में ही गुरुकुल की विचित्र दशायें दीखती रही हैं। यदि गुरुकुल कभी अस्तता का प्रतिनिधि दीखता है, तो कभी मृत्युशय्या पर लेटा हुआ जंचता है। ये सब दृश्य सद्धर्मप्रचारक देख चुका है और अपने जीवन में अनुभव कर चुका है, इसी लिये इसने आशा का पाठ पढ़ लिया है, और ईश्वर की अतुल शक्ति की दृढ़ धारणा करली है।

आज निःसन्देह वर्षों में प्रचारक बूढ़ा है। नये साल के प्रारम्भ में वह इस बात को याद करता है। साथ ही यह भी निश्चित है कि इसका बुढ़ापा अकाल बुढ़ापा है। इतनी उमर में और सभी समाचार पत्र बूढ़े नहीं हो जाते, किन्तु उन्हें इतने थोड़े भोजन पर इतना अधिक काम भी नहीं करना पड़ता। भोजन थोड़ा काम अत्यधिक-शीघ्र बुढ़ापा न आजाय तो और क्या हो?

किन्तु एक बात और भी इस समय ध्यान में आती है। यह भारत भूमि चमत्कारों की भूमि है। यहां अनेक चमत्कार हुए हैं। उन्हीं चमत्कारों में से एक भारत का पुनरभ्युदय है, दूसरा आर्यसमाज का प्रतिदिन वृद्धि पाना है और तीसरा प्रचारक को फिर से युवावस्था को धारण करना है। समय और उमर के चिन्हों का तिरस्कार करने वाली युवावस्था का अपना प्रचारक के अंगों को फिर से उत्तेजित कर रहा है। प्रचारक आज नये साल के प्रारम्भ में अपनी जीर्णकाया में प्रवेश करती हुई जीवन शक्ति का फिर से अनुभव करके पाठकों को हर्ष बधाई देता है—और नये साल के शुभ आगमन की आशा और उमंग के साथ स्वागत करता है।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गुरुकुल शास्त्रार्थ

जो नहीं करना चाहते थे, उसे करने के लिए ह[illegible] किया गया है। हम चाहते थे [illegible] गुरुकुल शास्त्रार्थ के विषय में कोई सम्म[illegible] न दें। कारण यह था कि जब हरिद्वार [illegible] सनातनधर्म [illegible]मिति के साथ गुरुकुल के पत्र [illegible]हार प्रारम्भ हुआ था, तभी से [illegible] गया था कि यह शास्त्रार्थ [illegible]जय के अर्थ न होगा बल्कि [illegible] होगा। जनता जोराथ बनाना [illegible] लेगी। उसी समय यह निश्चय कर लिया गया था कि शास्त्रार्थ होचुकने पर [illegible] अ[illegible]ज की ओर से [illegible] भी [illegible]का टिप्पणी न की [illegible]सा न [illegible] से आगे होनेवाले विच[illegible] की आशा जाती रहेगी। पीछे से ताली पीट कर 'बोल आर्यसमाज की जय, 'बोल सनातन धर्म की जय' चिल्ला देने से न केवल यही कि इस शास्त्रार्थ का गौरव जाता रहेगा आगे क[illegible] शान्ति पूर्वक विचारों का द्वार बन्द हो जायगा। शास्त्रार्थ के अन्त में सनातन धर्म सभा के पण्डितों की ओर से जो भाव प्रकाशित किये गये थे, उन से भी आशा पड़ती थी वे लोग शायद इसी रीति का अवलम्ब करना चाहते हैं। इस लिए आर्य्यसमाज के पत्रों ने एक मत होकर टीका टिप्पणी न की। यदि यह बात चित्त में न होती और सचमुच आर्यसमाजी समझते कि इस शास्त्रार्थ में उन का पक्ष निर्बल रहा है तो और भी कारण था कि वे पहले से ही "हम जीते" का शोर मचाते। जो सचमुच विजय जा चुका है, जिसे विश्वास है कि पब्लिक पर उस का अच्छा असर हुआ है, उसे कभी अपने मुंह मिया मिट्ठू बनने की आवश्यकता प्रतीत नहीं हुआ करती। गम्भीरता और शान्ति विजय के प्रथम चिन्ह है। हमें शोक से सूचना देनी पड़ती है कि पौराणिक मत के अनुयायियों ने इस विषय में बड़ी अधीरता दिखाई है। अभी शास्त्रार्थ को हुए सात दिन न हुए थे कि सनातनधर्म के पत्रों से "बोल सनातनधर्म की जय" का शोर मचने लगा। किसी ने लिखा 'हम विजयी रहे' किसी ने लिखा, [illegible]समाज हार गया' और किसी ने तो [illegible] तक साहस करके लिखा मारा कि आर्य समाजी जनता भी हमारी जीत को स्वीकार कर रही है। इस प्रकार वह [illegible] भाव जिन की शास्त्रार्थ प्रारम्भ [illegible] समय आशा रखी गई थी, सनातन धर्म सभा के पत्रों की ओछी कार्यवाहियों से टूटते नज़र आते हैं। गलफाड़ पत्र सम्पादक भला यह कैसे सह सकते हैं कि शास्त्रीय विचार शान्ति पूर्वक हो जाया करें।

हमारा क्या कर्त्तव्य है? जो सत्य है वह किसी से छुपा नहीं रह सकता। सनातनधर्म सभा के पत्रों का घबराकर और उतावले होकर अपनी 'जै' 'जै, पुकारना ही सूचित कर रहा है कि उनका हृदय अपनी निर्बलता को मान रहा है। आर्यसमाज की इस विषय में शान्ति ही इस बात को प्रकाशित कर रही है कि वह अपने विजय के महत्व पर भरोसा रखते हैं और सर्वसाधारण के सन्मुख शोर से कोई लाभ नहीं समझते। हमारी अब भी वही नीति है। हम नहीं चाहते कि शोर शार मचाकर भविष्य में होने वाले विचारों की सम्भावना को कम करदें। हमारी हार्दिक इच्छा है कि हर वर्ष बल्कि वर्ष में कई बार ऐसे ही शान्ति पूर्वक विचार हुआ करें, जिन में 'तू तू मैं मैं' को तिलांजलि देकर, सभ्यता पूर्वक आवश्यक विषयों पर विचार हुआ करें और अन्त में तालियां पीटकर अपनी पीठ ठोकने और जै जै प्रकार ने की रीति को छोड़ दिया जाय। तभी किसी उत्तम परिणाम की आशा हो सकती हैं।

सनातनधर्मसभा के पत्रों में इस विषय पर जो नोट निकले हैं, वे हमारी इस इच्छा के भवन को तोड़ रहे है। किन्तु हम इतना शीघ्र निराश नहीं होना चाहते। हमने सुना है कि इस शास्त्रार्थ का समाचार ऋषिकुल के 'ब्रह्मचारी' पत्र में निकलेगा। हम उसकी प्रतीक्षा करेंगे। क्योंकि शास्त्रार्य के समय ऋषिकुल के सज्जनों की जो सभ्य नीति थी उसी के भरोसे पर हमने ऐसी आशायें बांधी थीं। यदि तो ब्रह्मचारी ने हमें निराश न किया तो हम उस वृथाप्रलाप की, जो अभी तक कई पौराणिक मत के पत्रों में किया गया है, उपेक्षा करेंगे। यदि 'ब्रह्मचारी' ने भी हमें निराश कर दिया तो हम समझेंगे, कि अभी सत्ययुग का समय दूर है, अभी सज्जनता सभ्यता या सौजन्य की जीत नहीं। तब हम निश्चय करेंगे कि हमें क्या करना चाहिए, तब तक हम उसी नीति का अवलम्बन करना चाहते हैं जिस पर हम अब तक चले हैं। सनातन धर्म सभा के इन पत्रों की, जिन्हों ने इस विषय में कोलाहल मचाकर अपनी निर्बलता की सूचना दी है, हम उपेक्षा करेंगे और अपनी शक्ति और कृतकार्यता पर भरोसा रखते हुए 'ब्रह्मचारी' के अगले अंक की प्रतीक्षा करेंगे।

'अभ्युदय' का नया जीवन

प्रयाग का सहयोगी अभ्युदय अपने जीवन की दूसरी पीठिका में पदप्रवेश करता है। अभी तक वह माननीय पं० मदनमोहन मालवीय जी का निजू पत्र था अब उसे एक लिमिटेड कम्पनी के सुपुर्द कर दिया गया है। माननीय मालवीय जी ने अभ्युदय को जितनी हानि सह कर चलाया है, उस का समाचार पढ़ कर श्री मालवीत जी के लिए 'धन्योऽसि' के सिवा कोई शब्द नही निकलता। अभ्युदय की जीवन रक्षा के लिये श्री मालवीय जी ने अब तक २० सहस्र का घाटा सहा है। जिस व्यक्ति ने अपना सर्वस्व धर्म पर वार दिया है, वही अपनी भाषा की सेवा और सर्व साधारण के हित के लिए इतनी हानि उठा सकता है दूसरा नहीं। उतने दिनों तक अभ्युदय को हानि पर चलाकर अब उसे एक लिमिटेड कम्पनी के सुपुर्द करने का विचार भी श्रीमालवीय जी के हृदय की उदारता को ही सूचित करता है। कम्पनी के हिस्सों के लिए 'अभ्युदय के कालमों में अपील की गई है। हमारी हार्दिक अभिलाषा है कि सहयोगी अपने इस नये समारम्भ में कृतकार्य हों। हम आशा रखते हैं कि हाथ बदल जाने पर भी सहयोगी की नीति न बदलेगी और अभ्युदय में सदा सभ्यता और गम्भीरता से भरे विचार पढ़ने का अवसर मिलता रहेगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिन्दूयूनिवर्सिटी के चान्सलर

हिन्दू यूनिवर्सिटी के चान्सलर [illegible] नरेश नियत किये गये हैं। मैसूरनरेश ने अपने राज्य में जो सुशासन किया है उसे कौनसा भारतवासी नहीं जानता, किन्तु वे एक बड़ी यूनिवर्सिटी के चान्सलर भी हो सकते थे. यह बात अबतक छुपी हुई थी। इस चुनाव से हम इस लिये सन्तुष्ट हैं कि इससे अधिक निकम्मा चुनाव नहीं किया गया। इस विश्वविद्यालय के नये कार्य में एक भारतीय नरेश कहां तक मन देसकेंगे. उन के पास इस कार्य की देखभाल के लिये समय होगा या नहीं वे कहां तक स्वाधीनता से इस विपुल कार्यभार को निभा सकेंगे इन प्रश्नों के उत्तर पूछने से अब कोई, लाभ नहीं? जो वायसराय ने कर दिया, वह पत्थर पर लकीर है। हां, हमारी यह सम्मति अवश्य है कि यदि एक नरेश के स्थान में कोई देशमान्य विद्वान् इस स्थान की पूर्ति के लिये चुना जाता तो अच्छा होता।

—:o:—

युद्ध तथा मुकद्दमे

एक बार पहले हम प्रचारक में इस बात की ओर निर्देश करचुके हैं कि जिस समाचार पत्र को उठाइए, उसके स्तम्भों में आप को मुकद्दमों या अपराधों के समाचारों से पत्र के समाचार—स्तम्भ भरे होंगे। कहीं डकैती के समाचार हैं, तो कहीं चोरी के। किसी ने अपने पति को मारडाला है तो दूसरे ने अपनी स्त्री की हत्या की है। साधारण दशा में समाचार पत्रों की ग्राहक संख्या इन्हीं समाचारों से बढ़ती है। आजकल जो दशा है उस पर दृष्टि डालें, तो यही सिद्धान्त और भी स्पष्ट रीति से दिखाई देरहा है जिस पत्र को उठाइए सब से पहले और सब से अधिक समाचार योरप के युद्ध या चीन की अशान्ति के ही मिलेंगे। जितने संसार में युद्ध नहीं होरहा है उसके शायद दो चार ही संवाद मिलें और वे भी अधिकतया युद्धसम्बन्धी ही मिलेंगे। इस का क्या तात्पर्य है? लोगों को युद्ध और अपराध के समाचार सुनने [illegible] जितना प्रेम है, उतना और प्रकार के समाचारों से नहीं है। लोग अशान्ति को ही प्यार करते हैं, उसी को चाहते हैं और समाचार पत्रों के सम्पादकों को [illegible] की रुचि के अनुकूल समाचार [illegible] हैं। इसी अभिरुचि का परिणाम है कि आज योरप में भाई भाई का [illegible] घोट रहा है, इसी का परिणाम [illegible] कि आज कचहरियां भी भरी हुई दिखाई देती हैं। जो पाशविक वृत्ति [illegible] स्वाभाविक है, पुस्तकों और समाचार पत्रों के लेखों द्वारा [illegible] जाता है। युद्ध के गीत गाये जाते हैं। जो युद्ध केवल आत्मरक्षा के निमित्त ही गुणी हो सकता है, उसे अपने आप में उत्तम सिद्ध करने का यत्न किया जाता है। लोगों की मनोवृत्तियां ऐसी होजाती हैं, फिर ज़रासा कारण बनते ही वे एक दूसरे के गले पर पहुंच जाते हैं। जिस संग्राम को वे निरन्तर श्रेष्ठ समझते हैं उसका अवसर मिलते ही लड़ने पर उतारू हो जाते हैं। उस समय जो शान्ति का नाम ले या विचार करने के लिये सन्नद्ध हो, उसे कायर या देशद्रोही समझा जाता है। इस का यही कारण है कि शान्ति के समय युद्ध के गुण गाये जाते हैं युद्ध का उद्देश्य केवल आत्मरक्षा है, और पुस्तकों तथा पत्रों में उसे उन्नति के साधनों में से मान लिया जाता है। क्या ग्रन्थ कर्ता और समाचार पत्र अब भी युद्ध के गुण गाना या युद्ध तथा मुकद्दमे के समाचारों को प्रधानता देना छोड़ेंगे।

सनातन धर्म कालिज लाहौर

कुछ दिनों से लाहौर में सनातन धर्म कालिज बनाने का समारोह बड़े ज़ोर शोर से हो रहा है। विचार अच्छा है। देश को शिक्षा की इतनी आवश्यकता है कि उस में शिक्षा सम्बन्धी जितनी भी संस्थायें हों, कम है। शिक्षा की मांग देश में बहुत भारी है।

किन्तु एक बात दृष्टि में रखनी चाहिये। शिक्षा तो चाहिये परन्तु वह उत्तम प्रकार की हो। शिक्षा ऐसी न हो, जो अपने उद्देश्य को स्वयं मारदे। अधिक साम्प्रदायिक कालिज खुलने से हर समय यह आशंका रहती है कि वे भेदभाव, जो भारतवर्ष को खा रहे हैं, बढ़ न जावें उनका घटना ही अच्छा है, बढ़ने में सरासर हानि है। साम्प्रदायिक कालिज हों, यदि उन में उदारता और [illegible] का पाठ पढ़ाया जाये तो कोई [illegible] नहीं, किन्तु यदि उनमें विधर्मी देशभाइयों से घृणा पैदा कर दी जाती है, तो उनके होने से न होना अच्छा है। आशा है इस नये कालिज के संचालक इस आवश्यक बात पर ध्यान रखेंगे।

भारतोदय में नवीन भाव

ज्वालापुर के [illegible] हृदय की नई नीति के लिए [illegible] देते हैं। हम हृदय से चाहते हैं कि सहयोगी इस नई नीति का आश्रय लेता हुआ फले फूले और आर्य समाज के लिए कल्याणकारी सिद्ध हो। भारतोदय की नई नीति का एक छोटा सा नमूना हम नीचे देते हैं। यदि आर्य समाज के सब समाचार पत्र इन्हीं भावों को सन्मुख रखकर सदा काम किया करें, तो फिर नवयुग प्रारम्भ होने में देर क्या है? वह [illegible] और परस्पर विश्वास का युग [illegible]। विद्यालय [illegible] नवीन वर्ष प्रारम्भ के उपलक्ष में सहयोगी लिखता है—

विद्यालय का नवीन वर्ष।

"जहां हमें संस्कृत विद्या की उन्नति देखकर हर्ष होता है, वहां यह सुन कर दुःख भी होता है कि कुछ सज्जन इस पर मिथ्या [illegible] करने से भी नहीं चूकते। ऐसी कौन संस्था है जिस में त्रुटियां न हों, किन्तु त्रुटियों के सुधार की बजाय उस पर आक्रमण कर उसे नष्ट करने के दरपरदा होना कहां तक अच्छा है वे स्वयम् ही अपने हृदय में विचार करें। यदि वे समझते हैं कि इस में कुछ त्रुटियाँ हैं, तो उन के विचार मुबारिक हैं, वे आवें और दिखलावें ताकि उन के संशोधन करने का प्रयत्न किया जावे। किन्तु यदि उन के विचार केवल मिथ्या दोषारोपण कर विद्यालय को हानि पहुंचाने के अभिप्राय से हैं, तो यही कहना पड़ेगा कि अभी भारतवर्ष के भाग्य अच्छे नहीं जहाँ के मनुष्यों के हृदय किसी पवित्र संस्था के नाश करने के लिए उद्यत हुए हैं। क्योंकि वे नहीं जानते कि ऐसी संस्थाओं के बनाने के लिए किन २ कष्टों का सामना करना पड़ता है, ये वे ही जानते हैं जिन्होंने कि इस कार्य में हाथ डाला हो।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आर्य्यसमाज लाहौर

में पुलिस।

बलात्कार से चुनाव

आज के 'देश' में, पत्र के छपते २ निम्न लिखित समाचार पढ़ा—

"इस से पहले आर्य्यसमाज बच्छोवाली लाहौर में तीनवार पुलिस आ चुकी है, सनीचरवार की शाम को, जब कि आर्यसमाज मजकूरह के ओहदेदारों का सालाना इन्तिख़ाब होने वाला था, चौथी मरतबा भी पुलिस के मुज्ञारिक कदम पहुंचे। इन्तिख़ाब की कारवाई छः बजे शाम को होनेवाली थी। लेकिन करीबन दो दरजन पुलिस के आदमी एक घन्टे पहले से ही मौजूद थे। समाज मन्दिर के अन्दर पुलिस सिर्फ उन आदमियों को जाने की इजाज़त देती थी, जिन के पास ऐसे टिकट थे जिनके नीचे रायठाकुर दत्त प्रधान आर्य्यसमाज के दस्तख़त थे। करीबन ८० मेम्बरान आर्य्यसमाज मन्दिर के अन्दर गये—और इन्तिख़ाब की कारवाई शुरु हुई। मालूम हुआ कि टिकट सिर्फ ८० के नाम के थे। १२५ के करीब आर्य्यसमाज के मेम्बर ऐसे थे, जो इन्तिख़ाब में हिस्सा लेना चाहते थे, लेकिन इसरार करते थे कि इन्तिख़ाब कारवाई खुल्लम खुल्ला और कसरतराय से हो और किसी शख़्स को जो आर्य्यसमाज की सभासदी का मुस्तहिक हो, फरज़ी या मसनूई उज़र पर सभासद बनने से रोका नजाय। यह अज़ीम तादाद थी, जिस को राय ठाकुर दत्त का प्रधान बनाना मंजूर न था और टिकटों की पाबन्दी देखकर इस तादाद ने जलस—ए—इन्तिख़ाब से ग़ैरहाज़िर रहने का फ़ैसला किया। नतीजा यह हुआ कि सिर्फ अस्सी मेम्बरान की मौजूदगी में इन्तिख़ाब अमल में आया। और कसरत राय से रायठाकुर दत्त और ला० तोलाराम बदस्तूर साबिक प्रधान और सेक्रेटरी आर्य्यसमाज करार पाये। यह एतराज करना हमारा फ़र्ज है कि अगर इस मौके पर फसाद नहीं हुआ तो इस का क्रैडिट इस पार्टी को मिलना चाहिये जिस की तादाद बहुत ज्यादः थी, और जिसने इस मौके पर मैदान—ए—जद्दोजेहद से दूर रहना ही मुनासिब समझा"।

इस समाचार पर मैं अधिक टिप्पणी क्या लिखूं। समाचार स्वयं अपनी व्याख्या कर रहा है। न जाने पहले तीन वार समाज मन्दिर में पुलिस के आने के समाचार को आर्य्य पुरुषों ने किस प्रकार सहा था—अब इस चौथी वार पुलिस प्रवेश ने तो उनका धैर्य्य छुड़ा दिया है। इस समाचार को सुन कर प्रत्येक स्वात्माभिमानी आर्य्यसमाजी के चित्त पर भारी चोट लगेगी। अभी तक मुझे स्वतन्त्र रीति से अधिक समाचार नहीं मिला— इस लिये मैं नहीं कह सकता कि इस बलात्कार से आर्य्यसमाज को छुड़ाने के लिये हम लोगों को क्या करना पड़ेगा—किन्तु एक बात निश्चित है। पुलिस का कोई अधिकार नहीं था कि वह समाज के चुनाव में इस प्रकार दस्तंदाज़ी करती और सभासदों को अन्दर जाने से रोकती। इस समय पंजाब भर के आर्य्य समाजों का कर्त्तव्य है कि इस विषय में अपनी प्रबल आवाज़ उठावें और हरएक समाज की ओर से ऐसे प्रस्ताव पास होने चाहियें, जिन में रायठाकुरदत्त और पुलिस की इस कार्यवाही पर शोक और असन्तोष प्रकाशित किया हो। मैं आज डेरा इस्माईलख़ां के उत्सव पर जाने वाला हूं—जाता हुआ लाहौर से पूरे समाचार लूंगा और तब सारे प्रश्न पर विचार करने का अवसर मिलेगा। किन्तु इतना तो अभी होजाना चाहिये। आलस्य त्यागकर सब समाजों को अपने असन्तोष-सूचक प्रस्ताव लाहौर केडिपुटी कमिश्नर और पंजाब के छोटे लाट की सेवा में भेजने चाहिये, जिनमें इसमामले में पुलिस की कार्यवाही की पूरी २ खोज करने के लिये भी निवेदन हो।

इधर से यह समाचार आया है और दूसरी ओर पता लगा है कि कोंच आर्यसमाज के प्रधान महाशय, जिन्हें पुलिस ने पकड़ लिया था, मजिस्ट्रेट के सामने जाकर छूट गये हैं। संयुक्तप्रान्त और पंजाब की पुलिस में चाहे कोई भेद न हो, परन्तु शासन में भेद अवश्य दीखता है। जितनी वार लाहौर के समाज मन्दिर में पुलिस गई है, उतनी वार ही आर्य सामाजिक संसार ने असन्तोष प्रकट किया है। फिर भी पुलिस अपने बलात्कार से बाज़ नहीं आती। इस समय सारे आर्यसमाजों को एक स्वर होकर इस विषय में असन्तोष प्रकट करना चाहिए। अभी इतना ही पर्याप्त है। सारी अव्यवस्था का जो इलाज हो सकता है, वह पूरे वृत्तान्त जान चुकने पर ही निश्चय कर सकूंगा।

—:०:—

विज्ञापन!

धर्मवीर पं० लेखराम जी शर्मा कृत कुल्लयात आर्य्य मुसाफिर उर्दू ग्रन्थ का सरल भाषानुवाद ता० १५ ५ १६ से मासिक पत्र रूप में सत्यार्थ के साइज का ३२ पृष्ठ पर (आर्य्य वीर) नाम से प्रकाशित होगा, जिसका वार्षिक मूल्य भारत से २) रु० अन्य देशों से २॥) रु० होंगे। ता० ३०-४ १९१६ तक बननेवाले ग्राहकों से १॥) रु० लिए जावेंगे और ५ ग्राहक बनाने वालों को एक वर्ष तक विना मूल्य आर्य वीर दिया जायगा। ग्राहक बनने में शीघ्रता कीजिए।

मैनेजर कार्याय आर्य्यवीर
धौलपुर (स्टेट)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुस्तक समालोचना

अथर्ववेदभाष्य —पं० क्षेमकरणदास त्रिवेदी कृत। ओंकार यन्त्रालय प्रयाग में मुद्रित। पंचम काण्ड पर्यन्त।

त्रिवेदी जी कृत अथर्ववेद-भाष्य के पांच काण्ड मुद्रित हुए हैं। उन्हें देख कर त्रिवेदी जी के परिश्रम की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते। त्रिवेदी जी एक अभाव की पूर्ति कर रहे हैं। हमें विश्वास है कि आप को इस उद्योग में सफलता प्राप्त होगी। अब तक पांच खण्ड प्रकाशित हुए हैं और वे त्रिवेदी जी ने अपने खर्च से प्रकाशित किये हैं। अब आप सूचना देते हैं कि ऐसा होना असम्भव है। अब उनकी आर्थिक अवस्था भाष्य के मुद्रित करने की आज्ञा नहीं देती। अन्यत्र इस विषय में आप का पत्र मुद्रित किया जाता है—पाठकगण उसे अवश्य पढ़ें।

अनप्रास अन्वेषण—पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी लिखित। चतुर्वेदी भोलानाथ शर्म्मा, (१०३, मुक्तारम बाबू स्ट्रीट कलकत्ता) द्वारा मुद्रित। =)॥

इस छोटी सी पुस्तिका में दिखाया गया है कि आर्य्यभाषा में अनुप्रासों के प्रवेश के लिए पर्याप्त स्थान है। हर प्रकार के शब्दों के नमूने देकर उनमें अनुप्रास दिखाया गया है। साहित्य की दृष्टि से पुस्तिका महत्त्व की है। कई अनुप्रास प्रचलित हैं—कई ग्रन्थकर्ता के उपजाऊ दिमाग़ से निकले हैं। सारांश यह कि सब प्रकार से आर्य्यभाषा को अनुप्रास योग्य सिद्ध कर दिया गया है। यह अभी प्रथम भाग है दूसरे भाग की भी प्रतीक्षा करनी चाहिये।

दक्षिणआफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास—लेखक श्रीयुत भवानीदयाल प्रकाशक—श्री द्वारिकाप्रसाद सेवक। मूल्य १॥)

किसी दिन भारतवर्ष दक्षिणअफ्रिका से आए हुए सत्याग्रह के सिंहनाद से गूंज उठा था। उस के कई प्रकार के वर्णन पत्रों तथा पुस्तकों में आ चुके हैं। यह उसी रोमहर्षकारिणी घटना का सम्पूर्ण वर्णन है। पुस्तक में कई उपयोगी फोटो दिये गये हैं—और सारी वीर कथा का साद्यन्त वर्णन है। इस पुस्तक के निकालने के लिये लेखक तथा प्रकाशक दोनों ही धन्यवादार्ह हैं। आर्य्यजाति को इस समय जिस सत्याग्रह की आवश्यकता है, उस का नमूना महात्मा गांधी ने दिखा दिया है—उस सत्याग्रह की व्याख्या में जो कुछ भी लिखा या बोला जाता है, वह कभी आवश्यकता से अधिक नहीं हो सकता। पुस्तक उपादेय है।

वैदिकसभ्यता के एक अंश का निरीक्षण—लेखक श्रीयुत पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी। साहित्यपरिषद् द्वारा प्रकाशित। मूल्य =)

इस छोटे निबन्ध में वैदिकसभ्यता का प्राकृत अंश दिखाया गया है। जो लोग समझते हैं कि भारतीय सभ्यता का प्रारम्भ असभ्य तथा जंगली दशा से होता है, वे लोग इस निबन्ध से ही जान सकेंगे कि उन का विचार भ्रमात्मक है। वेदों का एक साधारण निरीक्षण भी इस सचाई को स्पष्ट कर देगा। वेदविश्वासियों को इस निबन्ध का अनुशीलन अवश्य करना चाहिये।

जीवनचरित्र महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी लेखक कविराज जयगोपाल। विद्या भण्डार पुस्तकालय शहालमीदरवाजा लाहौर से प्राप्य।

इस जीवन चरित्र में ऋषि का जीवन वृत्तान्त पद्यों में दिया गया है। कविता मय जीवनि का यह दूसरा नमूना है। ऋषि की पहिली पद्यबद्ध जीवनि सर्वसाधारण के लिए अधिक रुचिकर नहीं हुई—आशा है—यह होगी। कई पद्य वस्तुतः सौन्दर्य से युक्त है। भाषा ज़रा बेढब रखी गई है। खड़ी तथा व्रज भाषा का बेफ़बता मेल भी कई जगह किया गया है—परन्तु साधारणतया रचना आदरणीय हुई है। टीका साथ है—वह न होती तो भी कोई हानि न थी। टिप्पणी से ही काम चल सकता था। छपाई की कुछ मोटी २ भूलें हैं जो आशा है अगले संस्करण में सुधर जायंगी। पद्य में प्रूफ़ की भूलों से छन्दोभंग तक हो जाने की सम्भवना रहती है।

आवश्यक सूचना

श्रीयुत महाशय, नमस्ते।

इस पत्र के साथ "आनन्द समाचार" शीर्षक सूचना (सम्मतियों सहित) आपकी सेवा में भेजी जाती है, और आपका ध्यान विशेषकर श्रीयुत महाशय नन्दलालसिंह जी बी. एस-सी., एल. एल. बी. उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त के लेख ता० २० जनवरी १९१६ की ओर आकर्षित किया जाता है। उससे आपको भली भांति विदित हो जायगा कि हमारे यहां से जो अथर्ववेदभाष्य एक एक काण्ड निकलता है, वह श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध तथा अन्य विद्वान् महाशयों की सम्मति में समुचित भाष्य है। और सबकी प्रेरणा है कि यह भाष्य जहां तक हो सके शीघ्र प्रकाशित होजावे। परन्तु मेरे पास इतना धन नहीं है कि मैं स्वयम् आगे छपवा सकूं, और न इतनी ग्राहक संख्या ही है कि जिसकी आय से छपाई का ही व्यय निकलता जावे। अतएव आप वेद प्रेमी सज्जनों से सविनय प्रार्थना है कि आप भाष्य की आवश्यकता पर भली भांति विचारें और भाष्य के ग्राहकों की संख्या बढ़ाने का यथावत् प्रयत्न करें। ग्राहकों की आवश्यक संख्या पूरी हो जाने से कार्यालय को आर्थिक सहायता मिलेगी और भाष्य शीघ्र छप जायगा। भाष्य को शीघ्र समाप्त करने का यथा शक्ति प्रयत्न होरहा है।

आशा है कि आप इस आवश्यकीय निवेदन पर भली भांति ध्यान देते हुए भाष्य के स्वयं ग्राहक बनेंगे, और अपने मित्रों को बनावेंगे, तथा अपने समाज के पुस्तकालय के लिए एक एक प्रति मंगाने की कृपा करेंगे।

निवेदक
क्षेमकरणदास त्रिवेदी।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

हमीरपुर की पोल

होली में नाच।

'अभ्युदय' में 'हमीरपुर में नाच' शीर्षक एक लेख छपा था। पाठकगण उसे अभी भूले न होंगे। इस लेख के निकलते ही यहां एक प्रकार की सनसनी फैल गई। कुछ लोगों ने तो लेखक को गाली दे देकर अपनी सभ्यता का परिचय दिया। सुना जाता है कि इसको देखते ही खजाञ्ची साहब सदर ने दूसरे रोज़ एक मुहल्ले के दो तीन ठाकुरों को जो चौपई उटाने के खास तौर पर योग देते हैं, बुलवाया। नाच बन्द करने को उनसे कहा गया और इन लोगों ने इस बात को मान लिया और कहा कि वे अपनी चौपई में नाच न करावेंगे। पर दूसरे दिन एक विचित्र दृश्य देखने में आया, क्योंकि जब अन्य लोगों को यह खबर लगी तो बड़ी गड़बड़ी मची। लोग कहने लगे कि अगर नाच न होगा तो होली फूंक कर ही क्या करना है, होली फूंकना भी बन्द कर दिया जाय। कुछ लोग नाच कराने वाले एक वकील साहब के पास गए और जब नाच बन्द कराने के विषय में उन से कहा तो आप ने फ़रमाया कि "जिस के घर गमी होवे रोवे, हम क्यों रोवें, हमारे वहां तो नाच होग।" खूब! कैसा अच्छा उत्तर है!

इन के वहां से यह उत्तर मिलना था कि और कई महाशयों ने भी अपनी कमरे कस लीं और जिन लोगों ने नाच न कराने का प्रण किया था उन से भी कहा गया कि तुम भी अपनी चौपाई में नाच कराओ और जरूर नाच हो।

फिर क्या था, धूम मच गई। जिन लोगों के चेहरे 'नाच न होगा' सुन कर सूख गये थे वे फिर चमकने लगे। इस प्रकार नगर में कई स्थानों पर नाच हुआ और देश का धन इस अनर्थ में व्यय किया गया। धन्य हैं भारत के ऐसे पूत जो अपने हाथों कुल्हाड़ी मारते हैं।

[अभ्युदय से उद्धृत]

—:o:—

वेदार्थ करने का आधार

वैदिक भाषा है।

(लेखक—पं० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार)

किसी भी उद्देश्य तक पहुंचने के लिये मनुष्य को कुछ एक बातों का पहले से ही ध्यान रख लेना आवश्यक होता है। यदि हम चण्डी पर्वत पर जाना चाहें और हमें इस का परिज्ञान न हो कि वहां तक पहुंचने का सरल मार्ग कौनसा है तो हम निस्सन्देह किसी उलटे रास्ते पर जा पड़ेंगे और अपने लक्ष्य पर कभी न पहुंच सकेंगे। हमें भली प्रकार इस बात का ज्ञान होना चाहिए कि अमुक २ स्थान पर अन्य मार्ग निकलते हैं उन को छोड़ते हुए वास्तविक मार्ग पर चलना है। अथवा हमारे साथ कोई पथ दर्शक होना चाहिए जो हमें पगदण्डियों से बचाता हुआ असली लक्ष्य पर पहुंचा दे। इसी प्रकार वेदार्थ करने से पूर्व मनुष्य को किस बात पर सर्वदा ध्यान रखना चाहिए जिस से वह उलटे रास्ते पर लेजाने वाली पगदण्डियों से बचकर अपने उद्देश्य में सफल हो सके इस बात की आलोचना करनी अत्यावश्यक जान पड़ती है।

वैदिक भाषा सृष्टि के आदि काल में मनुष्यों को पूर्णतया परिज्ञात थी उस समय वेदार्थ समझने में वह निस्सीम बाधायें नहीं हो सकती थीं जो आज दृष्टि गोचर हो रही हैं। शताब्दियों से वैदिक भाषा का प्रचार नहीं रहा और अब वैदिक भाषा के विद्वानों का मिलना भी सर्वथा दुर्लभ होगया है।

मनुष्य केवल संस्कृत भाषा का अध्ययन करके इस बात की कल्पना कर लेते हैं कि अब हम वेदों के अर्थ भली प्रकार कर सकेंगे। बस यही अर्थ वेद का बिलकुल ठीक है क्योंकि हमने संस्कृत भाषा और उस के व्याकरण के अनुसार किया है। इस में किसी प्रकार की त्रुटि नहीं आसकती। इसी संस्कृत को आधार में रखते हुए वह इस बात पर विश्वास रखते हैं और एक निश्चय बना लेते हैं कि वेदों में ऐसे उच्च भाव नहीं जो इन्हें अपौरुषेय सिद्ध करें। परन्तु यदि हम देखें तो मूल से ही अशुद्धि कर रहे हैं। हम वैदिक और संस्कृत भाषा को एक समझ कर संस्कृत भाषा के आधार पर वैदिक भाषा समझना चाहते हैं जो कि सर्वथा ठीक नहीं।

इन दोनों भाषाओं में बड़ा भारी अन्तर है। केवल एक भाषा के परिज्ञान से दूसरी को पूर्णतया समझ सकना बड़ा कठिन है। इस बात को स्पष्ट करने के लिए यदि किसी अन्य भाषा की उपमा दे सकता हूं तो वह पालि है। वैदिक भाषा का संस्कृत से उतना ही भेद है जितना कि कहीं २ त्रिपिटक की भाषा का साधारण पालि से। इस भेद को समझने के लिए धम्मपद का एक श्लोक लीजिए उस से मेरा कथन बिलकुल स्पष्ट हो-जाता है। गौतम भिक्षुओं को उपदेश देते हुए कहते हैं।

मातरं पितरं हन्त्वा।
राजानो द्वेचखत्तिये।
रट्ठंसानु चरं हन्त्वा।
अनघो याति ब्राह्मणो।

इस का साधारण पालि में यह अर्थ होगा कि माता, पिता, दोनों क्षत्रिय राजा और अनुचरों सहित राष्ट्र का घात करके ब्राह्मण अनन्त सुख को प्राप्त करता है। परन्तु यदि इस बिना त्रिपिटक पालि का अध्ययन किये साधारण पालि के आधार पर उपरोक्त अर्थ पर विश्वास करलें तो महा अनर्थ होगा। कहां अनन्तर सुख की प्राप्ति और कहां माता पितादि का घात करना महापाप यदि उपदेष्टा ने उत्तर दिशा की ओर जाने को कहा होगा तो हम ठीक उस के विपरीत दक्षिण की ओर जा रहे हैं। इस का वास्तविक अर्थ यह है—तृष्णा, अहङ्कार, शरीर को नित्य मानना तथा पुनर्जन्म को न मानना इन दोनों मिथ्या

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दृष्टियों और विषयासक्ति सहित चक्षुरादि इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर के ब्राह्मण अनन्त सुख को प्राप्त करता है।

यही अवस्था वैदिक भाषा की है। इस में प्रायः कर के यौगिक शब्दों का समावेश है रूढ़ि या योग रूढ़ि शब्दों का नहीं।

संस्कृत का आश्रय लेकर हम शब्दों को रूढ़ि मानते हुए अर्थ कर देते हैं। हम यौगिक शब्दों के भाव को सर्वथा भुला देते हैं और इसी लिये वेदार्थ करने में सफल नहीं होते।

वेदार्थ करते समय केवल संस्कृत का आश्रय न लेकर वैदिक भाषा का ही आश्रय लेना चाहिए। इस सिद्धान्त का पोषण अगले उदाहरणों द्वारा स्पष्टतया होगा।

१. प्रपर्वताना मुशती उपस्थात् अश्वे इव विषिते हासमाने। गावेव शुभ्रे मातरा रिहाणे विपाट् शुतुद्री पयसा जवेते।

यह ऋग्वेद के ३य मण्डल, ३३वें सूक्त का प्रथम मंत्र है। इस में विपाट् शुतुद्री के नाम आ जाने से संस्कृत भाषा की दृष्टि से वेदों का भाष्य करने वाले विद्वान् इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि इस सूक्त में भारत का ऐतिहासिक और भौगोलिक वर्णन पाया जाता है।

उनका कथन है कि विश्वामित्र ऋषि विजवन के पुत्र सुदास् राजा का पुरोहित था। वहां जो धन दक्षिण में मिला उसे लेकर वह विपाशा (व्यास) और शुतुद्री (सतलुज) नदियों के संगम पर पहुंचा। लुटेरों ने विश्वामित्र का पीछा किया नदियें बहुत चढ़ी हुई थीं। पार जाना कठिन हो गया था। तब उसने लुटेरों से अपनी रक्षा के लिये विपाशा-शुतुद्री नदियों की स्तुति की जिस से वह एकदम उतर गईं और ऋषि नदी पार कर गया।

इस सूक्त का देवता नदियें हैं। जिस सूक्त या मन्त्र में जिस वस्तु का वर्णन हो वही उस सूक्त या मन्त्र का देवता होता है। इसी लिए यास्काचार्य दैवतकाण्ड में लिखते हैं "यत्का ऋषिर्यस्यां देवताया मार्थपत्य मिच्छन्स्तुतिं प्रयुङ्क्ते तद्दैवतः सः मंत्रोभवति" अर्थात् ऋषिलोग जिस अर्थ की कामना से जिस देवता को उसकी पूर्ति का साधक मानकर उस की स्तुति या वर्णना करते हैं वही उस मंत्र का देवता होता है।

अब देखना यह है कि देवता शब्द का अर्थ क्या है। देवता शब्द का अर्थ भी स्वयं उपरोक्त अर्थ को स्पष्ट करता है। निरुक्त में देवता का अर्थ करते हुए लिखा है देवो दानाद्वा दीपनाद्वा, द्योतनाद्वा" अर्थात् जो दाता या प्रकाशक हो उसे देव या देवता कहते हैं। अब अर्थ बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। हम कहते हैं कि "अग्निमीळे पुरोहितं" इस मंत्र का देवता अग्नि है। इस का आशय यह होता है कि इस मंत्र में अग्नि का प्रकाश है, अग्नि के विषय में कुछ कहा हुआ है। इसी प्रकार अङ्गादङ्गाल्लोम्नो लोम्नो जातं पर्वणिपर्वणि यक्ष्मं सर्वस्मादात्मनस्तमिदं विवृहामिते।

इस में क्षयी रोग के नाश का वर्णन है इस लिए यक्ष्मघ्न उसका देवता है। इसी प्रकार इन्द्र, वायु, सविता, राज्ञः स्तुति, अलक्ष्मीघ्न, आदि देवतायों के बारे में यही सिद्धान्त कार्य करता है। उपरोक्त ३३वें सूक्त का देवता नदिये हैं। इस सूक्त में नदियों की उत्पत्ति स्वभावादि का वर्णन है न कि कोई विशेष इतिहास प्रदर्शित किया गया है। मंत्रों में इस बात का प्रकाश किया गया है कि किस प्रकार वृष्टि के दिनों में नदियें बड़ा भयंकर रूप धारण कर लेती हैं। पर्वतों से जल प्रवाह निकल कर किनारों को काटता हुआ और बड़े वेग से बहता हुआ समुद्र में जागिरता है। ३३वें सूक्त के उपरोक्त प्रथम मंत्र का अर्थ वैदिक साहित्य के आधार पर इस प्रकार होगा।

(विषिते हासमाने अश्वे इव) बंधन से मुक्त की हुई अतएव खुश होती हुई या स्पर्धा करती हुईं घोड़ियों की न्याईं तथा (शुभ्रे गावौ इव) श्वेत स्वच्छ गौओं की न्याईं (पर्वतानां उपस्थात्) पर्वतों के ऊपर से (उशती) समुद्र गमन की इच्छा रखती हुई (रिहाणे) मार्गवर्ती सब पदार्थों का आस्वादन करती हुई (विपाट् शुतुद्री मातरा) तटवर्ती प्रदेशों को काटने वाली और अत्यन्त वेग युक्त नदियें (पयसा) जल युक्त अर्थात् जल से भरपूर (प्रजवेते) बड़े वेग से बहती हैं।

नदियों के केवल दो स्वभाव ही मुख्यतया होते हैं। एक पार्श्ववर्ती भूमि को काटना और दूसरा बड़े वेग से बहना। इन्हीं दो स्वभावों वाली नदियों का इस मंत्र में वर्णन है इस लिए उनमें द्विवचन का प्रयोग है।

निरुक्तकार विपाट् शुतुद्री का अर्थ करते हुए लिखते हैं:—"विपाट् विपाटनात्। शुतुद्री शुद्राविणी क्षिप्रद्राविणी आशुतुन्नेव द्रवतीतिवा" अर्थात् तटवर्ती भूमि के पाटने से काटने से नदी को विपाट् नाम से पुकारते हैं और शु अर्थात क्षिप्र शीघ्र जाने से या जिस प्रकार अश्वादिक को चुभाने से वह बड़े वेग से दौड़ता है उसी प्रकार बड़े वेग से बहने के कारण नदी का शुतुद्री नाम है।

मंत्र में नदियों का वेग से चलना तथा किनारों को काटना इन दो स्वभावों को बड़ी सरस कविता में दर्शाया है।

नदियें पर्वतों से निकल कर पृथिवी तल पर बड़े वेग से बहती हुई और पार्श्ववर्ती भूमि को काटती हुईं समुद्र में जागिरती हैं। उनका मूल स्थान पर्वत है और अन्तिम स्थान समुद्र है। समुद्र में जाकर अपने नदी नाम को छोड़ देती हैं। जिस प्रकार घोड़ियें बन्धन से छोड़ने पर बड़ी खुश होती हुई या एक दूसरे से आगे निकलने की स्पर्धा करती हुई बड़े वेग से दौड़ती हैं। इस उपमा से नदियों के वेग को स्पष्ट किया है। इससे अच्छी उपमा अन्य कौनसी होसकती है जो वेग के इस भाव को स्पष्टतया जतलासके। अगली उपमा में पर्वतों से निकली हुई नदियों की निर्मलता और जलतरंगों से उत्पन्न

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

स्वच्छ तथा श्वेत फेन का निर्देश किया है। जिस प्रकार गायें शुभ्र, शोभन, सुन्दर शुक्र हों उस प्रकार की नदियें मार्गवर्ती समस्त चटानों, वृक्षों, वनस्पतियों को अपने में लेती हुईं समुद्र की ओर जल से भर पूर बड़े वेग से बहती हैं।

अब मैं आपका ध्यान इस बात की ओर भी आकर्षित करना चाहता हूं कि किस प्रकार केवल संस्कृत का आश्रय लेते हुए विश्वमित्र ऋषि का इतिहास दिखाने का प्रयत्न किया गया है, और इसी लिए अनेक त्रुटियें और दोष रहगये हैं। वह दोष कभी न पाये जाते यदि वेद का वैदिक भाषा के विचार से अध्ययन किया जाता। इसकी पुष्टि के लिए ऋग्वेद के ३य मंडल का ३३वां और ५३व सूक्त पढ़ जाइये। इन्हीं सूक्तों से सायणाचार्यादि विद्वान् उपरोक्त विश्वामित्र की गाथा को दर्शाते हैं।

प्रथम सूक्त में विपाट्शुतुद्री, कुशिकस्य सूनुः तथा द्वितीय सूक्त में विश्वामित्र, सुदास् पद आये हैं जिनको संज्ञा वाची शब्द मान कर वह उपरोक्त ऐतिहासिक अर्थ करते हैं। विश्वामित्र ऋषि के बारे में अनुप्यानन्तर्ये के महाभाष्य में पतञ्जलि लिखते हैं "विश्वामित्रस्तपस्तेपे नानृषिः स्याम इति। तत्र भवानृषिः संपन्नः। स पुनस्तपस्तेपे नानृषेः पुत्रः स्याम इति। तत्र भवान् गाधिरपि ऋषि संपन्नः। स पुनस्त पस्तेपे नानृषेः पौत्रः स्याम इति। तत्र भवान् कुशिकोपि ऋषिः संपन्नः" इन वाक्यों से स्पष्ट पता लगता है कि विश्वामित्र के पिता का नाम गाधि और पितामह का नाम कुशिक था। यही क्रम हमें रामायण व महाभारत में मिलता है। अब ऐतिहासिक पक्ष की ओर ध्यान दीजिए! प्रथम सूक्त में आये हुए कुशिकस्यसूनुः का यदि संस्कृत में भी अर्थ करना होतो कुशिक का पुत्र गाधि होगा न कि विश्वामित्र। द्वितीय सूक्तमें 'यद्मे रोदसी उभे अहमिन्द्र मतुष्टवम्। विश्वामित्रस्य रक्षति.....

इस मंत्र में तो विश्वामित्र एक वचनान्त आया है परन्तु अगले ही मंत्र में "विश्वामित्रा अरासत" यहां विश्वामित्र शब्द बहुवचनान्त है।

इस से हमें स्पष्ट मानना पड़ेगा कि मन्त्रों में कुशिक, सुदास, विश्वामित्र किसी विशेष व्यक्ति के नाम नहीं परन्तु इनके भिन्न यौगिक अर्थ हैं। यास्काचार्य इनका अर्थ करते हुए लिखते हैं—विश्वामित्रः सर्वमित्रः अर्थात् जिस ने ईर्ष्याद्वेष को जीत लिया हो, प्राणिमात्र को मित्र की दृष्टि से देखता हो और सर्व प्रिय हो। कुशिकः, क्रोशते शब्दकर्मणः। क्रंशते वास्यात् प्रकाशयति कर्मणः। साधु विक्रोशयितार्थाना मितिवा।

शब्द करनेवाला उपदेश देने वाला उपदेशा विद्वान् अथवा ज्ञानादि का प्रकाश करनेवाला अर्थात् महात्मा या मेधावी का नाम कुशिक है। सुदाः कल्याणदानः। दास् धातु दानार्थक है। जिस का दान कल्याणकारी हो, प्रशस्त हो। भारतवर्ष में ऐसे मनुष्य अधिकतर पाये जाते हैं जो सहस्रों रुपयों का दान तो करते हैं परन्तु ऐसे स्थान में यहां कि किसी न किसी रूप में पाप की वृद्धि होती हो। या उनका वह प्रभूत दान ऊसर भूमि में पड़े बीज की न्याईं होता है। ऐसे मनुष्यों की भी संख्या कम नहीं जो दान इस लिए देते हैं कि उन का नाम हो। परन्तु सुदास् नामक पुण्य दाता इन दोनों प्रकार के दाताओं से भिन्न और अतिश्रेष्ठ है। उस का दान सदा कल्याण के लिए उन्नति के लिए सुख के लिए होता है ना कि पाप के लिए निष्फलता के लिए या अपने नाम के लिए।

उपरोक्त अर्थों के स्पष्टीकरण के लिए दो वेद मंत्रो को लीजिए। 'महांऋषि देवजा देवजूतो स्तभ्नात् सिन्धुमर्णवं नृचक्षा। विश्वा मित्रो यदवहत् सुदास मप्रियायत कुशिकेभिरिन्द्रः' इसका अर्थ सायण उपरोक्त अशुद्धि में पड़कर इस प्रकार करते हैं महर्षि, तेजों का उत्पादक, तेजों से आकृष्ट, अध्वर्यादि याज्ञिक मनुष्यों के उपद्रष्टा विश्वामित्र ने जल युक्त सिन्धु अर्थात् विपाट् शुतुद्री के संगम स्थान मे नदियों का वेग रोक दिया। और जब उस विश्वामित्र ने पिजवन के पुत्र सुदास् राजा को यज्ञ कराया तब इन्द्र कुशिक गोत्रोत्पन्न ऋषियों के साथ अपने प्रिय की न्याईं व्यवहार करने लगा अर्थात् उन्हें प्रेम करने लगा। इसमें सिंधु-विपाट् शुतुद्री नदियों का संगम। सुदास्-पिजवनराजा का पुत्र यह अर्थ कैसे होगें? फिर वह धातु प्रापणअर्थ में होती है न कि यज्ञ कराने अर्थ में अवहत से यज्ञ कराया यह कैसे होगा। अब आप वैदिक भाषा के विचार से इस मंत्र का अर्थ करें आप को इस में किसी प्रकार की कल्पना या खेंचा तानी करने की आवश्यकता नहीं।

(क्रमशः)

—:०:—

प्राप्त पत्र

"आर्य अनाथालय मुंगेर में वैदिक विवाह"

सद्धर्म प्रचारक के पाठकों को ज्ञात होगा कि सद्धर्म प्रचारक पत्र अंक ३६ भाग २७ (तिथि २५ पौष १९७२) में आर्य्य अनाथालय मुंगेर के कुछ अनाथ कन्याओं के विवाह योग्य होजाने का विज्ञापन छपा था। उस विज्ञापन के उत्तर में अनेक पत्र विवाह संबन्ध में वर पक्ष की ओर से भारतवर्ष के भिन्न २ प्रान्तों से आये थे। उनमें से एक पत्र श्री पं० अनन्तराम शर्मा जी अध्यक्ष सद्धर्म प्रचारक यंत्रालय देहली का इस आशय से आया था कि वह अपने अनुज श्री ब्र० सदानन्द जी उपदेशक आर्य उपप्रतिनिधि सभा पंजाब देहली का विवाह इस अनाथालय के किसी एक ऐसी अनाथ कन्या के साथ करना चाहते हैं कि जो सुशीला, सुन्दर और पठित तथा गृह कार्य में दक्षा हो। उस पत्र के उत्तर में पं० अनन्तराम जी की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सेवामें इस अनाथालय के मंत्री ने विवाह योग्य कन्याओं का विवरण भेज दिया और उसके पश्चात् पत्रव्यवहार होने लगा। निदान अनाथ कन्या देवी वन्द्रवती का विवाह सम्बन्ध श्री ब्र० सदानन्द जी से किये जाने का निश्चय होकर ता० पहली अप्रेल १९७६ विवाह के लिये तिथि निश्चय की गई। इस निश्चय के अनुसार श्री पं अनन्तराम जी तथा श्री ब्र० सदानन्द जी प्रयाग निवासी श्री पं० गोरेलाल तेवारी जीके यहां ता० ३१ मार्च १९१६ को बारह बजे दिन की गाड़ी में पधारे और विवाहकेलिये उचित प्रबन्ध किया गया। ता० पहली अप्रेल शनिवार रात्रि के समय विवाह वैदिक रीत्यानुसार अपूर्व आनन्द उत्साह तथा समारोह के साथ सुसम्पन्न हुआ। विवाह मण्डप में नगर के अनेक गण्य मान्य पुरुष भी उपस्थित थे। वर वा कन्या अपने २ वेद मन्त्रों को स्वयं पढ़ते गये। ब्र० भवदेव जी काव्यतीर्थ विवाह संस्कार में पुरोहित तथा डा० कार्तिकप्रसाद जी सरक्षक आर्य अनाथालय मुंगेर आर्यकर्त्ता के आसन पर सुशोभित थे। दर्शक लोग इस वैदिक विवाह को देख कर बहुत प्रसन्न हुए। दूसरे दिन ता० २ अप्रिल १९१६ रविवार को पं० सदानन्द जी ने एक व्याख्यान संस्कार विषय पर दिया। उनके व्याख्यान को श्रवण कर स्थानिक सज्जनों को उनकी योग्यता का परिचय हो गया था व्याख्यान के पश्चात् द्विगुण प्रसन्नता उपस्थित सज्जनों को उनकी इस योग्यता के कारण हुई। सब लोग यही कहते थे कि एक योग्य कन्या का एक योग्य वर के साथ विवाह हुआ। इस विवाह उत्सव में अनेक ऐसे लोगों ने भी सहायता दी जो आर्य समाज तथा आर्य अनाथालय को सहायता करने के विरोधी थे। इस संस्कार का प्रभाव यहां के लोगों पर बहुत अच्छा पड़ा बहुत से विरोधी भी इस अनाथालय के सहायक हो गये। पं० अनन्तराम जी ने इस उत्सव के आनन्द में भिन्न २ संस्थाओं को ३५ रुपये दान किया।

ब्र० भवदेव जी को दक्षिणा ५) वर पक्ष की ओर से दी गयी।

इस अनाथालय में दो कन्यायें और भी विवाह योग्य हैं उनके लिये भिन्न २ सज्जनों से पत्र व्यवहार हो रहे हैं और कई महाशयों के प्रार्थनापत्र विचाराधीन हैं। शेष दो कन्याओं से जो सज्जन विवाह का निश्चय करना वा कराना चाहें तो मन्त्री आर्य अनाथालय के साथ शीघ्र पत्र व्यवहार करें।

परमेश्वर प्रसाद कर्ण
मन्त्री आर्य अनाथालय

—:o:—

विद्यार्थियों की दशा

(१)

"आज कल जिधर देखिए उधर ही अशान्ति का राज्य विद्यमान है, यदि एक ओर विधवा और अनाथों की पुकार तो दूसरी ओर दरिद्र और रोग ग्रसित मनुष्यों की चीत्कार हैं। इस का कारण मेरे विचारानुसार ब्रह्मचर्य और विद्या का अभाव है। जो विद्या आज कल मनुष्यों को दी जाती है वह नहीं के समान और उतनी ही होती है कि जिस से राज काज का निर्वाह हो। विद्यार्थियों की शारीरिक अवस्था पर ध्यान देने से तो मानों उल्कापात होता है। मुख में रक्त विन्दु नहीं तो ब्रह्माण्ड में विचार शक्ति का अभाव है। शरीर में अस्थि चर्म के अतिरिक्त मांस का टुकड़ा बड़ी कठिनता से प्राप्त होता है। यदि ऐसी अवस्था में आज कल के विद्यार्थियों को बोलती (Statue) मूर्ति कहें तो क्या अनुचित है। अनुभव बतलाता है कि इस का कारण पठन पाठन की कुप्रथा और वास्तविक शिक्षा का अभाव है। यदि जिस पात्र में सेर भर वस्तु का स्थान हो और उस में मन भर वस्तु रखने का यत्न किया जाय तो अवश्य ही पात्र और वस्तु नाश को प्राप्त होंगे। फर्स्ट बुक से लेकर एम. ए. पर्यन्त पुस्तकों का भार यदि किसी गदहे पर लाद दिया जाय तो विश्वास है कि गधा उस भार से तत्काल ही बैठ जाय, तो कहिये फिर ये शुष्क अंग मूर्तिवत विद्यार्थी उस भार को उठा कर क्यों न संसार में कुछ न कर के शीघ्र ही मृत्यु को प्राप्त हो अथवा आरोग्यता और चक्षुओं को खो बैठे वह विद्या भी फिर कैसी है कि जिस के शब्दों में समान (Vowel) स्वर आकर भिन्न२ उच्चारण करें और जिसमें प्रत्येक नियम के साथ उसका (Exception) उपस्थित हो। ऐसी भाषा के पठन से यदि विद्यार्थी के खोटे ग्रह न हों तो क्या। यह आशय कदापि नहीं है कि किसी भाषा का पठन और अध्ययन बुरी चीज है परन्तु उस की पाठ प्रणाली की ओर भी ध्यान देना चाहिये। विद्या उस को कहते हैं कि जिस के अध्ययन से मनुष्य सर्व प्रकार की उन्नति कर सके परन्तु आज कल के विद्यार्थियों पर दृष्टि डालने से लक्षण सर्वथा विपरीत ही प्रतीत होते हैं सब से प्रथम लाभ जो विद्यार्थी प्राप्त कर रहे हैं वे नेत्रों की ज्योति का नाश, सदाचार का गमन आरोग्यता का पलायन वा ऐनक, हैट, बूट, पैंट, कोट, और कालर नैकटाई हैं। विचार का स्थान है कि जिस विद्या के प्रभाव से स्वदेशी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बरसुओं से घृणा और (Mather) प्रकृति में प्रेम ही इस के द्वारा देशोन्नति की क्या सम्भावना है । चलिए जरा स्कूलों में देखिए शिक्षक और शिष्य के व्यवहार को; बिल्कुल सिंह और बकरी से प्रतीत होंगे परन्तु यह भी ध्यान में रखने योग्य है कि ऐसी अवस्था में विद्यार्थीगण स्कूलों में तो वेत्रप्रभाव से शान्त रहते हैं परन्तु शाला से बाहर निकलने पर खूब खाका खिंचता है । क्या शिक्षक (Teacher) और शिष्य का ऐसा ही व्यवहार होना चाहिये जैसा हो रहा है । हा ! यह वह ही भारतवर्ष है जहां पर राम से शिष्य और वशिष्ट से गुरु हो गए हैं । देखिए और विचारिये नीचे लिखी चौपाई क्या कह रही हैं ।

सेवक सदन स्वामी आगमनू,
मंगल मूल अमंगल दयनू ।
तदपि उचित जनु बोल सप्तीती,
पठइय नाथ काज असि नीति ।
प्रभुता तज प्रभु कीन्ह सनेहू,
भयउ पुनीत आज मम गेहूं ।
आयसु होइ सो करहूं गुसाईं,
सेवक लहइ स्वामी सेवकाई ॥

यहां कैसा अनोखा प्रेम झलक रहा है । परन्तु याद रखिये ताली एक हाथ से नहीं बजती । यदि प्रेम पूर्वक दोनों ओर के व्यवहार हों तो बंगाल प्रेसीडेन्सी कालिज के छात्र उपस्थित नहीं यह सब शिक्षक शिष्य धर्म की अनभिज्ञता का कारण है ।

क्रमशः

(विद्यार्थी)

—:o:—

प्रश्न

श्रीयुत मुन्शी नारायण प्रसाद जी और स्वामी हरिप्रसाद ।

श्रीयुत मुन्शी नारायण प्रसाद जी ! यदि पं० रामचन्द्र जी और उक्त स्वामी जी ऋषि दयानन्द जी से भिन्न अर्थ करने में आप की राय से समान हैं: तो फिर आपने उक्त स्वामी के अर्थों के प्रचार को क्यों रोका और पं० रामचन्द्र जी के अर्थों को बांटने से क्यों नहीं रोका ?

आप लिखते हैं कि मुक्ति और पुनरुक्ति के विषय में आप उन से पूछें हम उन के वकील नहीं वह वकालत आपने कबसे छोड़ी ? आप तो कहते थे कि यह पुनरुक्ति मानते ही नहीं ? इसकी सफाई तो आप तब तक देते रहे जब तक उन्हों से अपनी कलम से मामला साफ नहीं किया था अतु—

जो वेदान्त वृत्ति के पृष्ठ ८६९ से लेकर पृ० ८८३ तक ऋषि के मन्तव्यों का इस दूसरे आचार्य्य ने खण्डन किया है वह भी आपने पढ़ा है क्या इस में भी मेरा द्वेष है ? अथवा जो सब आर्य पत्रों ने इनके मन्तव्यों का खण्डन किया है पं० रामचन्द्र का नहीं इसमें भी क्या ? सब के हृदय में मेरे समान द्वेष था ? पं० घासीराम जी की उक्ति अर्थात् हरिप्रसाद जी आर्यसिद्धान्तों के निषेधी हैं इस को तो पहले आप गुमही करगए थे अब क्यों स्वयं आपने लिख दिया ? आप तो लिखते थे कि वहां कड़ा प्रबन्ध था क्या इस कड़े प्रबन्ध में ५०) ६०) हरिप्रसाद की संध्यायें कैसे बिक गईं जिन को आपने प्रथम से रोक रखा था अथवा वह कड़ा पन आर्यों के लिये था ?

आर्य्य मुनि

—:o:—

भूल संशोधन ।

इस सप्ताह के सद्धर्म्म प्रचारक पृष्ठ ८ के तीसरे कालम के दूसरे पैरा में "भारत मित्र" की जगह "आर्य्यमित्र" छपा है, इस को अगले सप्ताह के अंक में शुद्ध कर दीजिए—अन्यथा आपके पाठक "आर्य्य मित्र" पर ही क्रुद्ध होंगे कि आर्य्यमित्र ने गुरुकुल कांगड़ी के विरुद्ध लिखा होगा। आप इस पैरा को पढ़ लीजिए ।

भवदीय

सम्पादक आर्य्यमित्र

श्री वाइसराय के होम मेम्बर

ध्यान से पढ़

मेरे पास एक समाचार पत्र विदेश से ऐसा आता है जिस में अपनी सर्कार के विरुद्ध लेख छपते हैं । जब जब वह पत्र आया मैंने उसे युक्त प्रान्त के लाट साहब की सेवा में भेज दिया । उस पत्र के ऊपर विदेश की कोई मोहर नहीं होती । भारत वर्ष के रेलवे मेलसर्विस की मोहर होती है । मेरे पास इतना धन नहीं कि नित्य रजिस्ट्री का व्यय कर सकूं और बिना रजिस्ट्री कराये भेजने से पैकेट के गुम होने का भय रहता है । एक बार शायद किसी डिटेक्टिव ने गदर के कुछ पर्चे गुरुकुल के प्रोफेसर के नाम भेजदिये । मैंने पैकिट बंधाकर लाट साहब के प्राईवेट सेक्रेटरी के नाम भेज दिए और साथ पत्र भी लिख दिया । चिट्ठा तो प्राइवेट सेक्रेटरी महाशय को पहुंच गई परन्तु गुम हुए पैकिट की अब तक तहकीकात ही हो रही है अब फिर से लिबर्टी नाम के पर्चे नये स्नातकों के नाम आने आरम्भ होगये । यह निश्चय करना कठिन है कि कौन से पत्र वा पर्चे राजविद्रोही गुरुकुल में भेज देते हैं, और कौन से सी० आई० डी० वाले हमलोगों की परीक्षा के लिए भेजते हैं । जैसा कि मैं ऊपर लिख चुका मेरे पास रोज रजिस्ट्री कराने के लिए तो पैसे नहीं हैं, इस लिए अब जो ऐसा पत्र वा पैम्फलेट आएगा, उसको जला दिया करूंगा । गवनमेन्ट आफ इन्डिया के श्रीमान् होम मेम्बर का कर्त्तव्य था कि जब उनका ध्यान किसी राजविद्रोह युक्त पैम्फलेट या पत्र की ओर दिलाया जाय तो उनका बहिष्कार करदें, जिस से कि महाराजाधिराज जार्ज पञ्चम की शान्तिप्रिय प्रजा को व्यर्थ का कष्ट न हो । परन्तु न जाने वहां क्या विचार हो रहा है अन्तिम प्रार्थना यह है कि यदि कोई सी.आई.डी. वाला कभी कोई इस प्रकार की शिकायत करे तो उसके विषय में मुझ से अवश्य पूछ लेना चाहिये ।

मुन्शीराम

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी।

मेरठ आर्य-समाज के वार्षिकोत्सव पर—एक आर्य कवि सम्मेलन होगा, जिसके नियम नीचे दिए जाते हैं—

(१) सम्मेलन का अधिवशन २१ व २४ अप्रैल १९१६ को प्रातःकाल के ८ बजे से १०॥ बजे तक होगा।

(२) प्रत्येक कवी महोदय को अपनी कविता पढ़ने के लिए १० मिनट का समय दिया जायगा।

(३) जो कविताएं इस अवसर पर पढ़ी जायंगी वह पुस्तक रूप में आर्यसमाज मेरठ की ओर से प्रकाशित की जावेंगी और इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक कवि की सेवा में धन्यवाद पूर्वक भेजी जायगी।

उरदू कवियों के लिए तरह:—
"अजब किस्सा है मेरा और निराली दास्तां मेरी"

भाषा के कवियों के लिए समस्या:—
"काज काह नर तन धरि सारा"

विषय:—

(१) ईश्वर स्तुति (२) महर्षी स्वा० दयानंद सरस्वती जी के जीवन चरित्र, महाभारत तथा रामायण से दृश्य (३) आर्य-समाज के कार्य्य।

नोट (१) किसी कविता में अन्य मतों का खंडन, राज नीति, तथा व्यक्तिगत आक्षेप नहीं होने चाहियें।

(२) प्रत्येक कवि को एक अन्य समस्या भिन्न कविता के पढ़ने का भी अधिकार होगा।

(३) कविता पढ़े जाने से पूर्व श्रीमान् प्रधान जी को देख लेना अवश्य होगा।

(४) जो महाशय न पधार सकेंगे वे अपनी कविता भेज सकते हैं।

मन्त्री चौक प्रयाग लिखतेहैं "सर्वआर्यसमाजों के मंत्री महाशयों से निवेदन है कि वे कृपया अपने यहां के उन सभासदों के सभासदी का प्रमाणपत्र उनके पूरे पते सहित उन आर्य समाजों के मंत्रीयों के पास भेजने की कृपा किया करें जहां कि उन सभासदों की तबदीली हो जाय कर अथवा वे किसी और कारण से उस स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थान में चले जाया करें। ऐसा करने से बड़े शहरों में जो कठिनाईयां पड़ा करती हैं वे न पड़ेंगी और समाजों के कार्य्य कर्त्ताओं व प्रेमियों का उन नये स्थानों में पधारे हुए महाशयों से शीघ्र परिचय हो जाया करेगा जिस से समाजों को अधिक लाभ होगा। क्योंकि अक्सर यह देखने में आता है कि जो महाशय एक स्थान को छोड़ कर दूसरे स्थानों में जाते हैं वे उन स्थानों में संकोच वश अथवा किसी से परिचय न होने के कारण समाज के कार्य में उत्तेजित होकर भाग नहीं लेते अतः यदि उनका परिचय इस प्रकार मन्त्री महाशयों के पत्र द्वारा हो जाया करे तो अति उत्तम होगा"

श्रीमान स्वामी सच्चिदानन्द जी स्वामी सत्यानन्द जी और स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द जी से सविनय प्रार्थना है कि वे यदि कृपया मुझे अपने दो मास के प्रोग्राम से सूचित करें तो बड़ी कृपा होगी क्योंकि मुझे उक्त स्वामी जी से एक आवश्यक विषय पर पत्र व्यवहार करना है।"

लेखक व ग्रन्थकारों से निवेदन

जो महाशय वैदिक धर्म तथा अन्य उपयोगी विषयों पर पुस्तक लिख कर श्रीमती आर्य प्रतिनिधिसभा संयुक्त प्रान्त को देंगे, उन की पुस्तकें उपयोगी होने की दशा में, सभा अपनी ओर से सर्वसाधारण के हितार्थ प्रकाशित करा देगी। परन्तु पुस्तक शुद्ध और स्पष्ट अक्षरों में काग़ज़ के एक ही ओर लिखी होनी चाहिए। लेखक महाशय को पुस्तक प्रकाशन सम्बन्धी सब प्रकार का स्वत्व सभा को देने की कृपा करनी होगी। सभा जिस प्रकार उचित समझेगी पुस्तक को प्रकाशित करावेगी।

जो विद्वान् पुरुष स्वलेखनी द्वारा श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा या सहायता करना चाहते हैं उन्हें हमारी इस विनीत प्रार्थना पर अवश्य और शीघ्र ध्यान देने की कृपा करनी चाहिए।

आवश्यकीय सूचना

सर्व सज्जनों से सविनय प्रर्थना है कि यदि उन्हें कोई ऐसी पुस्तक मिले जो आर्य्यसमाज या वैदिक धर्म के विरुद्ध लिखी गई हो और जिस का अभी तक समाज की ओर से उत्तर न दिया गया हो तो कृपया उसे कार्यालय, श्रीमती आर्य प्रतिनिधि सभा, बुलन्दशहर में भेजदें। सभा की ओर से ऐसी पुस्तकों के उत्तर देने का प्रबन्ध कर दिया गया है।

विनीत—
मदनमोहन सेठ
मन्त्रीसभा,

उपदेशक की आवश्यकता

आर्य समाज गणेशगंज लखनऊ, के निमित्त ज़िला प्रचारार्थ एक सुयोग्य, धार्मिक, संस्कृतज्ञ, वैदिक धर्मानुरागी, विद्वान उपदेशक की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार २०) से ३०) तक मासिक मिलेगा प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों सहित मन्त्री के पास किसी आर्य समाज के मन्त्री द्वारा भेजना चाहिए।

पूरणचन्द मन्त्री आर्यसमाज पठान कोट लिखते हैं कि—१३ अप्रैल सं० १९१६ को आर्य्यसमाज मन्दिर में श्रीमान् म० गुरुबक्षसिंह जी प्रधान और लाला तुलसी राम जी सभासद् आर्य्यसमाज के छोटे भाई गुरबख्शसिंह और अतरचंद के अकाल मृत्यु पर अज़हार अफसोस के वास्ते ख़ास जलसा हुआ जिसमें हसब ज़ैल रज़ोल्यूशन पास किये गए।

(१) तमाम मेम्बरान आर्य्यसमाज कोट म० गुरबख्शसिंह और अतरचंदके अकाल मृत्यु पर अति शोक प्रगट करते हैं और श्री परमात्मा जी से प्रार्थना करते हैं कि इनके सम्बन्धियों को शान्ति प्रदान करें।

(२) म० गुरुदत्त सिंह जी और म० तुलसी राम जी की सेवा में शोक पत्र लिखे जावें।

(३) इसकी नकल आर्य्य पत्रों में भेजी जावे।

श्री लाला लब्भूराम जी नय्यर लिखते हैं कि—उन्होंने २३ नवम्बर १९१५ से २६ मार्च १९१६ तक ५४ आर्य समाजों का हिसाब देखा और २५००) निम्नलिखत निधियां में प्राप्त करके श्रीमतीआर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कोष में जमा कर दिये हैं—

११४२॥)७ वेद प्रचार फण्ड
७९४।)४ गुरुकुल काङ्गड़ी
२४९॥=)॥। ऋषिउत्सव चार आना निधि
१०३॥-) धर्मवीरोत्सव चार आना निधि
६९) दशांश
१४॥) आर्य डिफ़ैंस कमेटी
१५-)॥ मूल्य मासिक सर्क्यूलर
३०) मुलतान गुरुकुल
८॥=॥ किराया इन्सपैक्टर
४) शुद्धी सभा फन्ड
२) गुरुकुल साहित्य परिषद्
१५)४ कन्या महाविद्यालय जालंधर
१७) कन्या अनाथालय जालंधर
१९।) अनाथालय फीरोज़पुर
२) गुरुकुल कुरुक्षेत्र
१३) डी. ए. वी. कालिज

२५००) योग।

कुल व्यय डाक व्यय सहित ४१॥-) हुए हैं।

२५००) आर्य प्रतिनिधि सभा के कोष में पहुंच चुके हैं।

—:o:—

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं।

संख्या	नाम पुस्तक	दाम
१.	संस्कृत प्रवेशका	।)
२.	संस्कृत साहित्य पाठावलिः द्वितीयो भागः	=)
३.	आर्य्यसुक्तिसुधा	।)
४.	काव्य लतिका	॥।)
५.	संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति	॥)
	श्रीमहात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संगृहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं।	
६.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र]	॥।)
७.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र]	॥=)
८.	संशोधित हितोपदेशः	।=)
९.	संशोधित रघुवंश [मूल]	।)
१०.	संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व	।)
११.	संशोधित नीतिशतकम्	=)
१.	अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण	।)
२.	अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्]	२)
३.	अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्]	१॥)
४.	धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत	।)
५.	नामिकः	=)॥
६.	आख्यातिकः	॥।)
७.	महाभाष्यम् अङ्काधिकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिना प्रणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम्	२॥)

आर्यभाषा

१.	आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र	।)
२.	आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र]	।-)

विज्ञान

१. भौतिकी [बैलफोर] स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्रायमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
२. रसायन—(विलयम एस, फर्नो की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद)॥।)

इतिहास

१ भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A.M.R.A.S. कृत १।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की

रचित पुस्तकें

१.	वेद में वैद्य शास्त्र	-)॥
२.	वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत	।-)
३.	वैदिक देवताओं का स्वरूप उ० इन्द्र वेदालंकार द्वारा लिखित	।-)
४.	वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी	-)॥
५.	वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य	=)॥
६.	भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त	≡)॥
७.	मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार)	।)
८.	पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर)	≡)
९.	साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त	।)
१०	" " तृतीय " "	।)
११	" " चतुर्थ " "	।=)

On Arya Samaj.

1. The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A. ./1/6

2. Life of Swami Dayananda. (Natesan and Co.) ./4/.

3. Life of Swami Dyananda. with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) R. 1/./.

4. The life of Swami Dayananda by Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama Rs. 2/./.

5. The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. ./4/.

6 The Arya Samaj or a paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R.A. S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad. ./1/6

7. Arya Samaj, a Political Body being an Open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan-Mohan Seth M. A. ./4/.

8. Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji ./1/.

9. The Arya Samaj and its Detractors-a Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. Rs. 2/8/.

गुरुकुल के उपाध्यायों की

रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A. कृत)

१.	अर्थशास्त्र (धनविद्या)	१॥)
२.	अग्निहोत्र व्याख्या	।)
३.	वेदोक्त राज्य	॥)

(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)

४.	रसायनशास्त्र (Hindi Chemistry)	३॥)
५.	विद्युतशास्त्र	२।)
६	वनस्पतिशास्त्र	२)

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

७.	उपनिषदों की भूमिका	।=)
	प्रिन्स बिस्मार्क	१॥)
८.	राष्ट्रों की उन्नति	।)
९	राष्ट्रीयता का मूलमन्त्र	=)
१०	विकासवाद The Theory of Evolution	२)

(लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे)

११	आर्यपथिक पं० लेखराम जी की जीवनी	१)

लेखक श्री महात्मा मुन्शीराम जी

१२	महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत (लेखक ब्र० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार	।=)
१३.	मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष	॥)
१४.	आर्यों की विज्ञानिक उन्नति (लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०)	=)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

15137

Registered NO. A. 434.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १८ वैशाख सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २९ अप्रैल सन् १९१६ ई० { संख्या ३ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गोतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (जि०बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यकता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लालो रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—:o:—

आवश्यकता

गोखां पुत्री पाठशाला-शिमला के लिए एक ऐसी अध्यापिका की आवश्यकता है। जो मिडल क्लास तक पढ़ा सकती हो और पढ़ाने में अच्छी योग्यता रखती हो। प्रार्थना पत्र प्रशंसा पत्र सहित और वेतन भी जो स्वीकार हो निम्न पते पर आना चाहिए:—

टजीरसिंह
क्लर्क एलायन्स बैङ्क ऑफ शिमला लिमीटेड
शिमला

हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षाओं के नये केन्द्र

हिन्दी की प्रथमा और मध्यमा परीक्षाओं के लिए निम्नलिखित नये स्थान केन्द्र बनाये गये हैं:—

इन्दौर, एटा, खंडवा, गोरखपुर, बड़ौदा, मेरठ, लश्कर।

ब्रजराज बी०एस०सी०एल०एल०बी०
संयोजक परीक्षा समिति

—:o:—

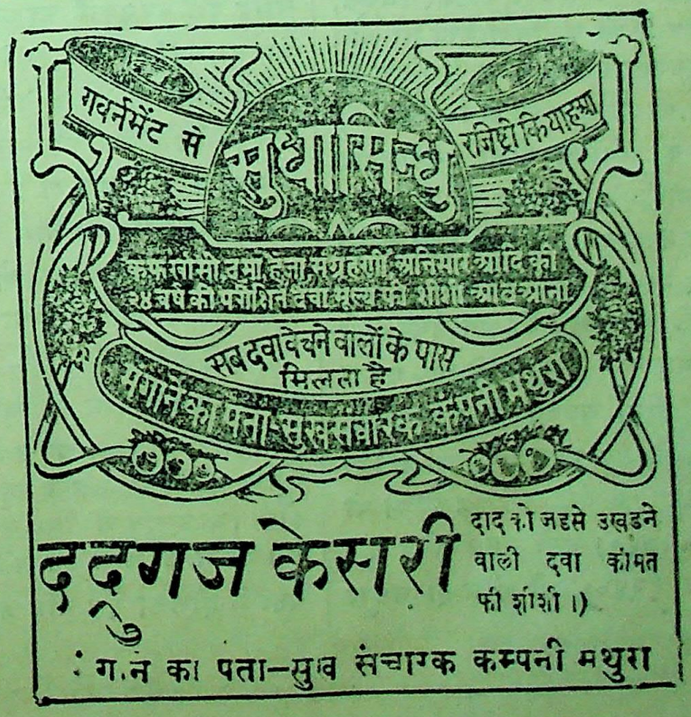

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल की आवश्यकताएं।

[१] दियासलाई— की डिब्बियां बहुत महंगी हो गई हैं। जब तक जर्मनी आस्ट्रिया से आई, बची बचाई, डिब्बियां मौजूद थी तब तक जापान ने सस्ते दामों बेचीं। जब वह कोष समाप्त होगया, तब जापान ने अपने सामान के दाम अढ़ाई गुने कर दिए।

दियासलाई के कारखाने, सैंकड़ों की संख्या में खुलें तक कहीं भारतवर्ष की आवश्यकता, इस अंश में पूरी हो सक्ती है।

(२] गुरुकुल के रसायन सहायक— की सहायता से, गुरुकुल के कुछ छात्रों ने दियासलाई तय्यार की थी जो उत्सव पर अद्भुतालय द्वारा दिखाई गई थी। उस से दर्शकों को पता लग गया था कि यदि प्रयत्न किया जाय तो दियासलाई का कारखाना यहाँ चल सक्ता है। इस कार्य में लकड़ी का प्रश्न बड़ा टेढ़ा हुआ करता है। युक्त के भी उन्हीं प्रान्तों में दियासलाई के कारखाने अधिक थे जिनके जंगलों में सीखों और वक्सों के लिए उपयोगी काष्ट मिल सक्ता है। गुरुकुल के, और उस के आस पास के, जङ्गल में सेमल की लकड़ी बहुत होती है। सेमल से बढ़ कर, भारतवर्ष में, इस काम के लिए, और कोई लकड़ी उपयोगी नहीं हो सक्ती।

(३] दियासलाई के कारखाने के लिए यदि २५००) में लकड़ी काटकर वक्स, बत्ती बनाने की मशीन आजावे तो काम बड़ी सुगमता से चल सक्ता है। उस के साथ ही कार्यारम्भ करने के लिए १०००) रुपयों के विविध सीखा, गन्धकादि मसाले चाहिएं। यदि गुरुकुल को स्थिर करने का प्रस्ताव करने वाले महाशयगण मिल कर २५००) की मशीन तथा १०००) के मसाले जमा करने को धन इकट्ठा कर दें तो यह काम आसानी से चल सकता है। एक दानी सज्जन ने गुरुकुल के गत वार्षिकोत्सव पर २०००) की प्रतीज्ञा एक एञ्जन (Oil-Engine) के लिए की थी जिन में से ७५०) उसी समय देदिए थे। उनके शेष १२५०) भी शीघ्र ही वसूल हो जायगा। यदि २५००) तथा १०००) की दोनों रक्में मिल जावें तो एञ्जन तत्काल ही आसकेगा और काम जारी हो सकेगा।

[४] बड़ी भारी रुकावट—दियासलाई के कारखाने के मार्ग में यह है कि उस में प्रयोग करने वाले फ़ास्फ़ोरस Phosphorus तथा Pottasium दानों के लिए ही हमें विदेशियों पर निर्भर होना पड़ता है। यदि इन का मूल्य जाहर वाले बढ़ादें वा इन का भारतवर्ष में भेजना ही बन्द करदें तो फिर कारखाने को बन्द रखने में आर्थिक हानि हो सक्ती है। परन्तु इस कमी को पूरा करने के लिए गुरुकुल के ही एक अध्यापक तय्यार हुए हैं। हड्डियों से फ़ास्फ़ोरस निकालने के लिए परीक्षण तत्काल ही आरम्भ हो जायगा। मरे जानवरों की सैकड़ों मन हड्डियां आस पास के ग्रामों में व्यर्थ जाती हैं। उनको उपयोग में लाया जासकेगा। इस परीक्षण के लिए जङ्गल में छत दार भट्ठी बनेगी तथा और भी कार्य्य आरम्भ होंगे जिन पर अनुमान ५००) के व्यय होगा।

कान पुर के सेठ रामगोपाल जी ने ५०) इस परीक्षण के लिए रोकदे दिए हैं। यदि पहले परीक्षण के लिए ५००) जमा हो जायें तो यह काम बड़ा लाभ का है कि फ़ास्फ़ोरस अपने देश में ही तय्यार करने का प्रयत्न हो। यदि इस परीक्षण में कृतकार्यता हो गई तो भारतवर्ष को जापानादि देशों का मुकाबिला करना सुगम हो जायगा, नहीं तो व्यापार के मर्मज्ञ जानते हैं कि बाहर वाले जब चाहें फ़ासफ़ोरस और क्लोरेट पोटैश की आमद भारत वर्ष में बन्द कर, वा उस का मूल्य बढ़ा कर, हमारे व्यवसाय का नाश कर सक्ते हैं। यदि यह कृतकार्यता हुई तो अन्य कारखानों को भी लाभ पहुंचेगा।

(५) बड़ा जंगलरूपी मैदान-काङ्गड़ी ग्राम का है। इस मैदान में खुली तौर पर फ़ासफ़ोरस को गरम कर सक्ते हैं। लकड़ी सर्वथा समीप है; उसपर बहुत कम व्यय होगा। कारखाने के लिए स्थान पर्याप्त है। रुपयों का काम इस अंश में, यहां पैसों में होसक्ता है। यदि आर्थिक सहायता में देश प्रेमियों और धर्मभक्तों की ओर से सङ्कोच न हुआ, तो परिश्रम में यहां भी कुछ उठा न रक्खा जायगा।

[ख] कुसुम के फूल—पलास के जङ्गल में बसन्त ऋतु की समाप्ति पर बिछे रहते हैं। वार्षिकोत्सव के समय यात्रियों ने कुसुम की बाहर देखी ही होगी। इस वर्ष रङ्ग का तोड़ा देख कर कुछ बोरियां कुसुम के फूलों की भरवाई गई थीं। यहां तो थोड़ा बहुत प्रयोग उनका होगा ही परन्तु बाजार में कुसुम के फूल बिक सकें तो गुरुकुल कार्यालय से पत्र व्यवहार किया जाय। यदि इन के देसावर भेजने से कुछ लाभ होगा तो आगामी वर्ष और भी अधिक कुसुम इकट्ठे कराए जायंगे।

सेमल की रूई—भी यहां बहुत होती है। इन दिनों सेमल गिर रही है। यदि यह ज्ञात होजाय कि कहीं इसकी निकासी होसक्ती है तो इसे भी इकट्ठा कराने का काम हो सक्ता है। यहां इस के नरम गदेले वा सिरहाने किसी मतलब के नहीं। जहां इस की खपत होसक्ती है वहीं भेजने से लाभ भी होगा।

क्या घोड़ों की आवश्यकता नहीं? ऐसा प्रश्न अपने निजू पत्र में एक भद्र पुरुष ने किया है। संभव है कि अन्य सज्जनों के हृदयों में भी ऐसा प्रश्न उठता हो। मेरा उत्तर यह है कि न केवल गुरुकुल के काम के लिए ही हमें दो अच्छे जानवरों की आवश्यकता है, प्रत्युत यदि पूरे छ बड़े अच्छे जानवर मिल जावें, तो ठीक आयु होने पर महाविद्यालय की ऊपर की श्रेणियों के ब्रह्मचारियों को घोड़े की सवारी भी सिखाई जासके। बहुत वार बड़े प्रतिष्ठित पुरुष केवल बैल गाड़ी के धक्कों से बचने के लिए ही गुरुकुल में आने से रुक जाते हैं। उनके स्वागत के लिए अच्छे घोड़े काम में आसक्ते हैं। इस समय गुरुकुल में चार पांच छोटे टट्टू ही घूमते हैं और घोड़े खरीदने के लिए धन नहीं है। जिन महाशयों के पास फालतू घोड़े हों वे यदि गुरुकुल को दान में देदें तो उनके एक पन्थ दो काज सिद्ध होजायं।

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेदामृत।

श्रुतं मे मित्रावरुणा हवेमोत श्रुतं सदने स्थितः सीम्।
श्रोतु नः श्रोतुरातिः सुश्रोतुः सुक्षेत्रा सिन्धु रद्भिः॥
ऋ० १। ११२ ६॥

मित्र और वरुण हमें जीवन के पल पल में अपना परिचय देते हैं 'मेषति स्निह्यति स्निह्यते वा समित्रः" सब से कौन स्नेह करता और सब किस के स्नेह करते हैं? सूर्यास्त के पश्चात, अन्धेरे पक्ष में, जब घटाटोप अन्धकार छा जाता है, उस समय निर्जन जङ्गल में फंसे हुए यात्री को किस आशा का सहारा है? वृक्षों के पत्तों की भयानक खड़ खड़ाहट और हिंसक पशुओं के क्रूरनाद को सुनता हुआ भी यदि भटका हुआ पथिक जीता है तो एक मात्र इस आशा पर कि प्रातः काल होते ही सूर्य भगवान् का उदय होगा और सब दुःखों का नाश हो जायगा। कुसङ्ग में फंस कर विषयों में लिप्त हो जब आत्मा के ज्ञान चक्षुओं के सामने अन्धकार छा जाता है तो उस निराशा के समय यदि आत्मा जीता है तो केवल ज्ञान रूपी सूर्य के प्रकाश की आशा पर। जब सारा संसार तिनका तोड़ कर किनारा कर जाता है उस समय भी धर्म रूपी सूर्य साथ नहीं छोड़ता। जब अति वृष्टि के कारण वृक्ष और पौदे अपने शिर झुकाकर मुर्झाने लगते हैं उस समय भी सूर्य का उदय होते ही सारी वनस्पति आल्हाद में मग्न होकर फिर से लहलहाने लगजाती है। निस्सन्देह सूर्य से बढ़ कर प्राणी तथा अप्राणी का कोई यदि मित्र है तो सूर्य लोकों का भी प्रकाशक "हिरण्य गर्भ" के सिवाय कोई नहीं।

वही परमात्मा जो अदित्य गुणों से मित्रवत् अप्राणी तथा प्राणी मात्र (निरात्रयों) का आश्रय है, वही अपने वरुण गुण से सारे ब्रह्माण्ड का राजा है। और उस की आज्ञा में काम करने वाला, प्राणों तथा उपप्राणों का प्रेरक वायु भी भौतिक जगत का राजा ही है। धर्मात्मा योगियों को जो स्वीकार करता तथा जो उक्त धर्मात्माओं से ग्रहण कियाजाता वह 'श्रेष्ठ' सब का राजा वरुण परमात्मा है। उस की आज्ञा में चलता हुआ भौतिक वरुण भी पंच भूतों का राजा है। ऋग्वेद मं० २। सू० २७। मं० १०॥ में इसी लिए कहा है—त्वंविश्वपां वरुणा सि राजा। प्रकाश (अग्नि) के विना चिरकाल तक निर्वाह होसक्ता है, पृथिवी से उत्पन्न हुई वनस्पति के विना चालीस दिनों तक निर्वाह हो सक्ता है, जल के विना भी ३ से ७ दिनों तक शायद निर्वाह हो सके, परन्तु प्राण की गति के विना एक पलभी कठिनाई से निर्वाह होता है। मित्र का साथी, परन्तु उसका भी आधार, वरुण निस्सन्देह राजा है।

मित्र और वरुण जब तक अनुकूल न हों तब तक जीवनपथ पर चलना कठिन है। मित्र सारे प्रकाश अर्थात ज्ञान का देने वाला है और वरुण हिलाने की शक्ति रखता हुआ सारी क्रियों का स्रोत है। जिसने मित्र और वरुण का ध्यान अपनी ओर खींच लिया, जिसने इन दोनों को अपने सेवाव्रत से हिला लिया सारी कृतकार्यता और जीवन की सफलता उसी के लिए है—"हे। मित्र और वरुण मुझ अच्छे सुनने वालेके इन समर्पित किए (वचनों) को सुनो" मैं अच्छा सुनने वाला कैसे बना हूं?

'अन्तरीय और वाह्य-दोनों कानों को तुम्हारी ओर लगाए हुए ही मैंने अपने कानों द्वारा अपनी वाणी का भी संशोधन किया है। तुम मुझे तभी स्वीकार करोगे जब मैं उस के लिए योग्यता सम्पादन करूंगा। तब तुम दोनों से बढ़ कर इस तय्यारी के लिए मेरा कौन सहायक हो सकता है।' ये भाव जब तक मनुष्य में नहीं आते तब तक उसका प्राप्त किया आत्मिक बल भी उसके अन्दर स्थिर नहीं हो सक्ता। जिज्ञासु के लिए यही उचित है कि ज्ञान और कर्म, प्रकाश और प्राण-इस जोड़ी की उपासना से कभी गिरे नहीं। तब वह यह उत्तम प्रार्थना शुद्ध भाव से कर सकेगा—"और सामाजिक व्यवहारों तथा सब एकान्त अवस्थाओं में भी (हे! मित्र और वरुण) हम सब को मर्यादा में स्थित रखते हुए हमारी प्रार्थना को सुनो। जलों के समुदाय (समुद्र) से जैसे नदी उत्तम क्षेत्र को प्राप्त होती है इसी प्रकार हे! सारे श्रोत्रों के श्रोत मित्रावरुण आप हमारे समर्पित भावों को स्वीकार करो"

जिस प्रकार अथाह समुद्र में बड़ा से बड़ा जहाज़ विना किसी आश्रम के डावांडोल रहता है और उस पर यात्रा करने वाले मनुष्य सदिग्ध अवस्था में भयभीत रहते हैं, परन्तु किनारे में चमकते हुए ज्योतिस्तम्भ को देखकर छोटी से छोटी नाउका में बैठे हुए यात्री का मन भी स्थिर हो जाता है; इसी प्रकार प्रकाशकों के भी प्रकाशक और प्राण धारियों के भी प्राणाधार जगन्नियन्ता के ज्ञान रूपी प्रकाश के ज्योतिस्तम्भ की ओर जिन की टिकटिकी एक बार लग जाती है वे सांसारिक ऐश्वर्य और सांसारिक शक्तियों से शून्य होते हुए भी स्थिर चित्त होकर कभी डावांडोल नहीं होते। पाठक वृन्द! शरीर, मन और आत्मा की सारी शक्तियों को कुछ काल के लिए ज्योतिस्तम्भ की ढूंढ में लगा दो। बिजुली की न्याईं उस का चमत्कार कई बार तुम्हारे आत्मा को प्रकाशित कर चुका है। वह शुभ घड़ी फिर भी आसक्ती है जब कि वह प्रकाश फिर तुम्हारे अन्दर चमक उठे। अबकी बार उस प्रकाश की रेखा के पीछे अपनी दृष्टि को दौड़ा दो। उस असीम मैदान में एक बार दृष्टि को बलसे छोड़देने पर वह लौट कर नहीं आवेगी, और तब आश्चर्य से देखोगे कि दैवी शक्ति तुम्हारी सहायक होकर उस स्थिर प्रकाश को तुम्हारी दृष्टि से ओझल नहीं होने देती।

शन्नित्योम्।

खानकी में आनन्दोत्सव

सर्दार वैशाखासिंह जी ठेकेदार खानकी के नाम को आर्यपुरुष नहीं भूल सकते। सर्दार वैशाखासिंह जी का प्रेम आर्य-समाज से प्रसिद्ध है, इनकी जेब हर समय आर्यसमाज के लिए खुली रहती है। आर्यसमाज का कौन सा इन्स्टीट्यूशन है जिसके लिए उन्होंने दान न दिया हो। गुरुकुल के साथ इनका विशेष प्रेम है। सहस्रों रुपया इन्होंने गुरुकुल को दान दिया है। १२ अप्रैल को इनके गृह में आनन्दोत्सव था। इन्होंने खानकी में एक विशाल भवन बनवाया है, इसकी प्रतिष्ठा (Opening Ceremony) थी। इस के साथ ही इनके पौत्र का नामकरण संस्कार था। सर्दार साहिब ने इस अवसर से लाभ उठाया, और प्रचार का प्रबंध किया। पं० पूर्णानन्द जी उपदेशक व महाशय गिरधारीलाल जी भजनीक पहिले ३ अप्रैल को वहां पहुंच गये और तीन दिन प्रचार किया फिर वे नौशहरा आर्य्यसमाज के उत्सव से निश्चिन्त हो कर ११ अप्रैल को खानकी पहुंच गये। इनके अतिरिक्त ब्रह्मचारी ब्रह्मदत्त विद्यालंकार भी वहां पहुंच गये थे, ११ अप्रैल की रात्री को इनका व्याख्यान हुआ। १२ अप्रैल को प्रातः-काल पं० पूर्णानन्द जी तथा ब्र० ब्रह्मदत्त जी ने संस्कार कराया। सर्दार साहिब के मित्र सम्बन्धी तथा आर्य भाई भिन्न २ स्थानों से आये हुए थे इस लिए उपस्थिति अच्छी थी। सर्दार साहिब ने इस अवसर पर ३००) दान दिया। जिस में से १००) गुरुकुल के लिए ५०) वेद प्रचार फण्ड तथा ५०) गुरुदत्त भवन के सामान के लिए था। सर्दार साहब ने एक नई बात की; वह यह कि उन्होंने प्रतिज्ञा थी कि जब तक वह जीवित रहेंगे तब तक प्रत्येक वर्ष [illegible] तथा सद्धर्म्मप्रचारक पांच मनुष्यों के नाम बिना मूल्य जारी कराया करेंगे। दो पहर के पश्चात् बहुत से पहलवानों की कुश्तियां हुईं, जिन्हें सर्दार साहिब ने पारितोषिक दिए। इस समय आस पास के ग्रामों के सहस्रों मनुष्य एकत्रित थे। रात्री को फिर सैकड़ों मनुष्यों की उपस्थिति में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। ब्रह्मचारी ब्रह्मदत्त जी, महता जैमिनी जी व श्री सम्पादक जी प्रकाश के व्याख्यान हुए। महा० गिरधारीलाल जी के भजन बहुत पसन्द किए गए। इस प्रकार यह उत्सव अत्यन्त सफलता के साथ समाप्त हुआ परमात्मा करे कि श्री सर्दार वैशाखासिंह जी का यह धर्म भाव सदा बना रहे और वह धर्म कार्यों के लिए हर समय दान देते रहें। इस अवसर पर आर्य समाज खानकी को भी पुनर्जीवित किया गया।

—:o:—

डेराइस्माइलखां का वार्षिकोत्सव

डेराइस्माइलखां का वार्षिकोत्सव—बड़ी धूम धाम से मनाया गया। श्री महात्मा मुन्शीराम जी आचार्य गुरुकुल विश्वविद्यालय, श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज, पं० लोकनाथ जी, पं० चन्द्रभानु जी, पं० हंसराज जी आदि महानुभावों और विद्वानों के व्याख्यान हुए। स्वामी सत्यानन्द जी महाराज की केका वाणी आर्यजनता में प्रसिद्ध ही है। उनके सारगर्भित उपदेशों और कथाओं का श्रोताओं पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। वहां के पौराणिक पण्डितों के साथ वर्णवस्था पर एक मनोरञ्जक शास्त्रार्थ भी हुआ। शास्त्रार्थ ने जनता पर अच्छा प्रभाव डाला। भजनीक गिरधारीलाल, वीरसिंह, धर्मवीर आये हुए थे। नगरकीर्तन भी बड़ी धूमधाम से हुआ। उत्सव पर ५६००) चन्दा विविध सामाजिक संस्थाओं के लिये हुआ। गुरुकुल कांगड़ी के लिये ११६५) नकद हुए। गुरुकुलोत्सव से पूर्व भी ४००) रु० स्नातक युधिष्ठिर तथा स्नातक पूर्णदेव वहां से आर्य भाइयों के पुरुषार्थ से एकत्रित करके लाये थे। इस से यह के आर्य भाइयों का प्रयत्न बड़ा सराहनीय है और गुरुकुल से प्रेम का परिचय मिलता है। समाज के अधिकारी तथा सभासद् बड़े सदाचारी, पुरुषार्थी और दृढ़ आर्य हैं। उनके उत्साह से उत्सव पर २० नये समाज के सभासद् बने। प्रायः अन्य आर्य समाजों का इस ओर बिलकुल ध्यान नहीं। उन्हें भी इसका अनुकरण करना चाहिए।

—:o:—

म० रामदास जी नायक मन्त्री

गुरुकुल वैदिक विद्यालय सूचना देते हैं कि—सर्वशक्तिमान् परमात्मा की कृपा से रामपुर सा० पी० में भी गुरुकुल वैदिक विद्यालय संस्थापित होगया जिसका महोत्सव मि० चैत्र कृष्ण० १४-३० को बड़े धूम धाम से बनाया गया, जिसमें स्वामी अनुभवानन्द जी सरस्वती, स्वामी मंगलानन्द जी, पं० इन्द्रदत्त शर्मा जी, पं० सूर्यदत्त शर्मा जी, पं० गुरुप्रसाद जी वैद्य, आदि विद्वानों और श्रीमती शान्ति देवी जी श्रीमती राजेश्वरी देवी जी आदि देवियों के व्याख्यान तथा कई भजन मंडलियों के भजन प्रभावशाली हुए ता० २ को वेदारम्भ संस्कार विधिवत हुआ। गुरुकुल सभा का वृहत् अधिवेशन भी राजासाहेब रायगढ़ की कोठी में सफलता पूर्वक हुआ। ३०००) का व्यय करना सभा ने पास किया इत्यादि आशा है कि प्रत्येक वेदानुयायी इस पवित्र कार्य में योग देंगे।

—o—

आर्य्य समाज लाहौर का निमन्त्रण

पूज्य सम्पादक जी

नमस्ते!

अपने अमूल्य पत्र में प्रकाशित कर दीजिए कि १४ मई १९१६ से गुरुदत्त भवन में उन भाइयों के वास्ते जो बाहिर की आर्यकुमार सभाओं के सभासद् हों और जो विद्याध्ययन के लिए लाहौर में पधारें किञ्चित्कालिक प्रबन्ध भोजन तथा रहन सहन का होगा। उचित यह है कि अपने शुभागमन से पूर्व ऐसे भाई उन के हितैषी सज्जन अथवा सभाएं पूर्व से ही एकपत्र अधोनिर्दिष्ट की ओर लिख दें कि अमुक महाशय अमुक तिथि को अमुक गाड़ी से पधारेंगे; इस से स्वागत और सत्कार में सुभीता रहेगा। प्रत्येक प्रकार की सूचना तथा सम्मति भी यहां से मिल सकेगी।

मन्त्री आर्य्यकुमार सभा लाहौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्मप्रचारक।

स्त्रियों के अधिकार

मनुष्य जाति मुख्य दो भागों में विभक्त हैं। वे दोनों भाग भिन्न २ प्रतीयमान होते हुए भी वस्तुतः एक शरीर के पूर्व पश्चिम भाग हैं। एक दूसरे का पूरक है—इसी लिये पुरुष स्त्री एक दूसरे के आधे अंग कहलाते हैं।

एक शरीर में जो भिन्न २ अंग होते हैं वे कभी एक ही कार्य के करने वाले नहीं होते। मनुष्यशरीर में दांयें और बांयें हाथ के—कार्य समान नहीं हैं। दांयें का धर्म कार्य करना और बांयें का धर्म उसकी सहायता करना है। शरीर में सिर का कार्य गर्दन से और सिर के दाहने भाग का कार्य बाहिने भाग से नहीं लिया जा सकता। शरीर के अंग और भाग अपने २ कार्य के करने वाले हैं। और सब अंग एक ही कार्य के करने वाले हों तो शरीर की विविध आवश्यकतायें पूरी नहीं हो सकतीं। इस लिये मनुष्य जाति के दोनों अंगों के भी एक से ही कार्य नहीं हैं। यह एक साधारण बुद्धि गम्य बात है कि पुरुष और स्त्री के धर्मों में सर्वथा साम्य नहीं रह सकता। उनमें कोई न कोई भेद रहना ही चाहिये।

इसका यह तात्पर्य नहीं है कि स्त्रियां मनुष्यसमाज में नीचे हैं। भुजा और सिर में से भुजा अधिक कार्य करती दिखती है। क्या वह शरीर में मुख्य है? इस का यह तात्पर्य भी नहीं है कि स्त्रियों के अधिकार कम हैं क्योंकि वही शरीर सजीव रह सकता है जिस के प्रत्येक अंग तथा भाग को स्वच्छन्द रीति से बढ़ने का अवसर मिलता है। यदि एक अंग भी स्वाधीन उन्नति न कर सकता तो सारे शरीर की उन्नति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक अंग और भाग का अपने कर्त्तव्य तथा धर्मों का पालन करते हुए स्वतन्त्र उन्नति करने देना ही मनुष्य समाज के जीवन का एक मात्र साधन है।

इस समय इस विषय में पृथ्वीमंडल के विचारक दो पक्षों में विभक्त प्रतीत होते हैं। दोनों ही पक्ष एक २ भूल को आत्यन्तता तक पहुंचा देते हैं। एक पक्ष यदि स्त्रियों को पुरुषों की दासियां बना कर दासों के पुत्र दास कहाने से नहीं शर्माता, तो दूसरा दल यह कहने में भी संकोच नहीं करता कि पुरुष तथा स्त्री के कार्य अधिकार समान और एक से हैं। ये दोनों ही बड़ी भारी भूलें हैं जो मनुष्य समाज की नाव को जड़ से उखाड़ने की धमकी देती प्रतीत होती हैं। दोनों दलों के पक्षपाती अपनी २ सम्मतियों पर पूरा भरोसा रखते हुए सम्मतियों को कार्यपरिणत करने का यत्न करते हैं और परिणाम यह होता है कि स्त्री जाति की स्थिति की समस्या प्रति दिन अधिकाधिक घुण्डीदार होती जाती है।

इस विषय में जैसा विवाद चलसकता है इस का एक नमूना हम कलकत्ता समाचार से उद्धृत करके देते हैं। कानपुर के प्रताप के उत्तर में समाचार को यह दीर्घ लेख निकालने की आवश्यकता पड़ी। दोनों पक्षों के आधार में कुछ कुछ वेही सिद्धान्त हैं, जो हमने ऊपर बतलाये हैं। दोनों में कुछ २ अत्युक्ति हैं, एक २ सच्चे सिद्धान्त के अशुद्ध परिणामों पर बहुत अधिक बल देकर ही दो पक्ष बने हैं। एक अपना गुरु पश्चिम को मानता है, दूसरा पूर्व को ही शिक्षक स्वीकार करता है। यह भी भूल है। पूर्व और पश्चिम दोनों के ही विद्वान् इन अत्युक्तियों को मनुष्य समाज के लिए भयानक समझते हैं, और सचाई को इनके बीच में रखते हैं। न तो पुरुष और स्त्री के कार्य और धर्म सर्वथा समान हैं और न ही स्त्रियाँ पुरुषों की दासियां हैं। स्त्री पुरुष की अर्द्धांगिनी है। इस लिए उसके वे सब अधिकार हैं, जो पुरुष को प्राप्त हैं। किन्तु यह समझना भूल है, कि स्त्री पुरुष के कार्य समान—धर्म समान और उत्तर दातृतायें समान हैं। प्रकृति को ही यह अभीष्ट नहीं है। प्रकृति ने पुरुष के शरीर में वे अंग नहीं बनाए जिन से उसे गर्भ का कष्ट भोगना पड़े या बच्चे का दूध पिलाना पड़े। जब प्रकृति ने भेद स्पष्ट रखा है तब सर्वथा अभेद मानना कैसे सम्भव है।

इस विषय में गहरे सिद्धान्तों को छोड़ कर साधारण बुद्धि को पथदर्शक मान लेने से भी सारी कठिनाइयां दूर होसकती हैं। साधारण बुद्धि जानती है कि पुरुष के क्या कर्तव्य हैं और स्त्री के क्या? कर्तव्यों के समान ही अधिकार मान लेने पर सारी कठिनाई दूर हो जाती है।

—०—

हम और तुम।

(कलकत्ता समाचार से)

कानपुर के सहयोगी प्रतापको हम 'विशेष अन्तर' पर रखते हैं। फिर भी; हमारी कुछ बातें उस के कानों में जा पड़ीं। उन्हें उस ने 'तिरस्करणीय पुरुषत्व' के आकार में निकाला है। यह 'अन्तर' का सार है—अनिच्छा का परिणाम है। 'बहस' के 'सार्थक' होने न होने के सम्बन्ध में हमारा कहना यह है, कि जिन को 'बहस' में कुछ 'अर्थ' होता है, वह "तय्यार हृदय" ढूंढ़ा नहीं करते—हृदय तय्यार करना उनको 'बहस' का उद्देश्य होता है। हां, सहयोगीवर जिस 'अन्तर' का तुम ने जिक्र किया है, वह अन्तर निश्चय ही बड़ा गहरा अन्तर है। उसी अन्तर के कारण हम पूर्व की ओर चलते तो तुम पश्चिम जाते हो। तुम्हारी मति के अनुसार धर्म्म कुछ और है, समाज संगठन कुछ और। हम हिन्दू हैं। हमारे लिए धर्म और समाज संगठन दोनों एक ही डोर के धागे हैं। गोब्राह्मण सेवा और वर्णअवस्था हमारे सामाजिक जीवन के अङ्ग हैं—इन के प्रति हमारी दृढ़ता हमारी भक्ति है। तुम्हारे लिए यह निर्बोध बालक के खिलौने हैं। इसी लिए प्रियवर!

तुम्हें हम से 'अन्तर पर रहना पड़ता है।' इस 'अन्तर' से तुम भले ही सुखी हो नयी आशाओं के सुख स्वप्न तुम्हें भले ही अन्तर बढ़ाने का उत्साह प्रदान करते हों; किन्तु जो इस 'अन्तर का अन्त समझते हैं, वह सुखी नहीं—उन्हें तुम्हारी और तुम्हारे अनुयायियों की ओर देख वह देख वह दुःख होता है; जो किसी सुयश प्राप्त परिवार के दायित्वपूर्ण प्राणियों को सुपथ स्खलित कतिपय कुटुम्बियों और उनके उत्तम पुरुषों को आगे आने वाली अन्तिम दशा पर विचार करने से होता है।

तुम 'स्त्रियों की उन्नति के' कामी हो, तो हम यह कब कहते हैं, कि हम उन का सर्व्वनाश चाहते हैं। हां, हम उन पर वह रङ्ग चढ़ाना नहीं चाहते, जिसे दूर से देख कर तुम इतना उपयोगी समझते हुए कहते हो,—"हम स्त्री और पुरुष दोनों के कर्त्तव्य को और अधिकार बराबर मानते हैं। हमारी दृष्टि से दोनों के अलग अलग संसार और अलग २ आदर्श नहीं हैं जो एक काम के लिए अच्छा है वह दूसरे के लिए भी अच्छा है। जो एक के लिए बुरा है वह दूसरे के लिए भी बुरा है। जिस शिक्षा ने तुम्हें यह मानना सिखाया है, उस ने तुम्हारे साथ धोखा किया है। दोनों के 'कर्त्तव्य और अधिकार' बराबर इस लिए नहीं, कि एक पुरुष है और दूसरी स्त्री। सांसारिक जीवन क्षेत्र में एक के कर्त्तव्य प्रधान हैं और दूसरे के अनुषङ्गिक। इसी के अनुसार एक के अधिकार पुरुषोचित और दूसरे के स्त्रियोचित हैं। एक पिता, पति, भाई इत्यादि पद पर आरूढ़ होता है तो दूसरी माता, पत्नी, भगिनी इत्यादि पदों को सुशोभित करती है। माता और पिता के कर्त्तव्य विभिन्न हैं, इसी लिए उन के अधिकार भी दूसरे हैं—पत्नी और पति के कर्त्तव्य अलग हैं, इसी लिए उन के अधिकार कुछ और हैं—भ्राता और भगिनी के कार्य्य क्षेत्र दूसरे हैं, इसी लिए उन के अधिकार भी समान हो नहीं सकते,। फिर भी; देश के प्यारे प्रताप! तुम यह क्या मानते हो, कि दोनों के कर्त्तव्य और अधिकार बराबर हैं? और भी; तुम दोनों के "अलग अलग संसार और अलग २ आदर्श" नहीं मानते। यहां भी भूल करते हो। हम पुरुष हैं। हमारी दृष्टि में तुम भी हो। दोनों एक ही संसार में रहते हैं। किन्तु एक जाति के होते हुए भी हमारा संसार और हमारे आदर्श कुछ और और तुम्हारे कुछ और हैं। ऐसी दशा में दूसरी जाति (आप (Sex) समझे) वाली स्त्रियों के संसार और आदर्श आप अलग क्यों नहीं समझते? यदि नहीं तो क्या आप यह उपदेश देने के लिए तय्यार हैं, कि पुरुष पुरुषोचित काम छोड़ कर घरवालियों के काम सीखें-घरवालियां बाहर के काम करें। ऐसा उपदेश देकर क्या आप यह भी आशा करेंगे, कि संसार का कार्य्य सफलतापूर्वक चलेगा। नहीं कदापि नहीं। जिस कारण से मनुष्य के शरीर में गर्भ धारण करने की योनि नहीं, स्त्री के शरीर में मनुष्यों की इन्द्रियाँ नहीं उसी कारण से इन के संसार भी अलग अलग हैं। एक दूसरे की सीमा उल्लङ्घन कर नहीं सकता। करने से अनावश्यक संघर्ष उपस्थित होता है। यही भेद आप अपनी और युक्तियों के सम्बन्ध में भी समझें। यदि आवश्यकता हुई तो हम पुरुष और स्त्री के भेद को उन के कर्त्तव्याधिकारों को और भी विस्तृत रूप से फिर समझाने की चेष्टा करेंगे। कारण हमारा उद्देश्य "हृदय तय्यार" करना है। तय्यार न समझ कर मुंह फेरना नहीं।

आगे चलकर अपने इसी 'तिरस्करणीय पुरुषत्व, में सहयोगी ने हमारी 'ओछी प्रसन्नता' देखी है। सहयोगी का कहना है कि हमने उन्नतिशीलों को चिढ़ाते हुए बदंवान नरेश की बात कही है। नहीं, चिढ़ाना हमारा उद्देश्य नहीं था। हमने जो ठीक समझा वह लिखा। फिर भी उन्नतिशीलों के शिरोमणि इससे चिढ़े और अपनी चिढ़ से हमें प्रसन्न किया तो हम सहर्ष उस प्रसन्नता को लौटा देने के लिए तय्यार हैं। वह 'प्रसन्नता' और उसके साथ "अत्यन्त ओछी जिसने हमें दी है उसी को मुबारिक हो, हम इन्हें किसी से छीनना नहीं चाहते सहयोगी 'प्रताप, के अब शेष 'तिरस्करणीय पुरुषत्व' के सम्बन्ध में हम कालान्तर में लिखेंगे।

—०—

आवश्यक निवेदन

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को कई स्थानों में कई महाशय गुरुकुल वेद प्रचार आदि के लिये गैरमनकूला जायदाद जैसे भूमि तथा मकान आदि दान देते हैं जिन की सूचना कई महाशय सभा में नहीं देते। अतः सर्व आर्य्यसमाजों तथा आर्य पुरुषों से निवेदन है कि उन के नगर में सभा को जो जायदाद गैर मनकूला हो उस से सभा के दफ़्तर में सूचना देदें। ताकि सभा सारी जायदाद का प्रबन्ध करके दानियों की इच्छा को पूर्ण कर सकें।

कृष्ण
मन्त्री सभा

—०—

जगतनारायण मुख्तार मन्त्री, लिखते हैं कि आर्य्यसमाज गंज का वार्षिकोत्सव ता० २८-२९-३० तथा एक मई को बड़ी धूमधाम से होगा जिस में दूर २ से संन्यासी महात्मा बड़े २ विद्वान तथा भजनीक पधारेंगे ता० २८ को सायंकाल ४ बजे से नगर कीर्तन होगा, और ता० २९-३०-१ मई को टाउनहाल के मैदान में व्याख्यान तथा भजन होंगे, तीनों दिन रात को एक व्याख्यान मैजिक लालटैन पर भी होगा, एक मई को सायंकाल एक मजहबी कानफ्रैन्स भी इल्हाम (ईश्वरी ज्ञान) पर होगी, जिसमें पौराणिक तथा ईसाई मुसलमान आर्य अपने २ निबन्ध पढ़ेंगे आशा है आप इस अवसर पर अपने इष्ट मित्रों सहित पधार कर धर्म लाभ उठाएं।

नोट १—जिले के आर्य्य तथा समाजें अपने २ प्रतिनिधि अवश्य भेजें क्योंकि तीनों दिन दोपहर के बाद २ बजे से आर्य कानफ्रैन्स भी ४ बजे तक हुआ करेगी जिसमें जि० प्रचार आदि विषयों पर विचार हुआ करेगा २—जो महाशय पधारना चाहें अपने पधारने की ता० से सूचना दें ताकि स्थान आदि का प्रबन्ध उचित किताजया

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक मेगज़ीन का विशेषाङ्क

हरसाल गुरुकुलोत्सव पर वैदिक मेगज़ीन का एक विशेष अंक निकला करता है। उस में आर्य समाज तथा गुरुकुल सम्बन्धी अनेक विद्वत्तापूर्ण लेख रहा करते हैं। इस वर्ष भी यह अंक बड़ी धूम धाम से निकलेगा। बड़े बड़े विद्वानों के लेख होंगे। श्रीयुत अरोविन्दघोष, बा० भगवान्दास एम.ए. सरसुब्रह्मण्यम् अय्यर, लोक मान्य गांधी, मि० एण्ड्रूज आदि महानुभावों के लेख विशेषतया देखने योग्य होंगे। श्रीयुत अरविन्दघोष का लेख ऋषिदयानन्द के वेदभाष्य पर होगा और आर्यमात्र के लिए बहुत ही मनोरंजक होगा। यह अंक उन सामाजिक तथा बाहिर के लोगों के लिए भी जो अंग्रेज़ी पढ़ने की योग्यता रखते है, आर्य सिद्धान्तों को दर्पण का काम देता है। प्रायः सभी लेख संग्रह-योग्य होते हैं। इस विशेष अंक का मूल्य १) होगा।

तम्बाकू सम्बन्धी प्रस्ताव

पंजाब की लेजिस्लेटिव कौन्सिल ने सरदार गज्जनसिंह को आज्ञादेदी है कि वे बालकों के तम्बाकू पान निषेध विषयक प्रस्ताव को उपस्थित करें। कहते हैं कि सरकार ने इस सम्बन्ध में कृपा पूर्ण उदासीनता का वर्ताव रखा अर्थात् सरकारी सभासदों ने कोई राय नहीं दी परन्तु औरों को राय देने की पूरी स्वतन्त्रता दी गई थी। सरकारी सभासदों ने राय क्यों नहीं दी? इस में क्या हानि थी? क्या सरकार ऐसे सर्व साधारणोपयोगी प्रस्तावों के प्रति केवल उदासीनता के भाव को उपयोगी समझती है? इस उदासीनता का विशेष कारण क्या यह है कि सरकार लोगों पर प्रकट नहीं करना चाहती कि प्रजा की भलाई में उस की विशेष अभिरुचि है?

—०—

एक स्त्री सिपाही।

फ्रेंच सेना में एक स्त्री भी सिपाही का काम करती है। रूसी सेना में कई स्त्रियों के भर्ती रहने का समाचार आचुका है। जर्मनी के कैसर की राजकुमारी ने तो बर्लिन की रक्षा के लिए एक स्त्री-सेना की ही तय्यारी कर छोड़ी है। ये अन्य देशों की स्त्रियों की दशा है। इन समाचारों से दो प्रकार के विचार उठते हैं। पहला विचार तो यह उठता है कि स्त्रियों का सेना में भर्ती होना एक विशेष जीवन का, और जोश का चिन्ह है। यह जोश सूचित करता है कि उन देशो में प्राण हैं। जब उन देशों की अपने देश की दशा से तुलना करें तब भारी भेद ज्ञात होता है। दूसरा एक और विचार भी आता है। इस समय योरप का महायुद्ध अन्त को मनुष्य जाति के सुशिक्षित पाशविक भावों का ही चित्र है। जब तक वे पाशविक भाव पुरुषों में थे कम डर था। किन्तु ज्यों ही वे भाव जाति में प्रवेश करेंगे, फिर बचाव की कोई आशा नहीं रहेगी। स्त्री जाति का युद्ध से युद्ध करना ही शोभा देता है युद्ध में सहायता करना नहीं। हां—जहाँ आत्मरक्षार्थ युद्ध हो, वहां प्रश्न ही दूसरा है। पाशविक विचारों से दबी हुई मनुष्यजाति की अवस्था में एक ही तो आशा की रेखा दिखती है और वह रेखा स्त्रीजाति के युद्ध विरोध की है। स्त्री जाति ही संसार की नृशंसता को दूर कर सकती है। यदि वही इस प्रकार की रणाग्नि में आहुति देने वाली बनजाय, तो फिर और कौनसी आशा रहसक्ती है।

दरिद्रान्भर कौन्तेय !

विदुर नीति का उपर्युक्त वाक्य अक्षरशः सत्य है। जो लोग अर्थी हैं, उन्ही की सहायता करना हमारा कर्तव्य है। जो लोग समर्थ हैं, उन्हें चाहिये कि वे असमर्थों के कष्टों को दूर करें। बम्बई के दक्षिण भाग में रहने वाले डाक्टरों ने एक बड़ा अच्छा काम किया है। उन्होंने परस्पर सहयोग से एक सभा बनाई है जिस की ओर से एक हस्पताल खुलेगा। हस्पताल में दरिद्र रोगियों का मुफ्त इलाज हुआ करेगा। उस सभा के सभासद एक २ सप्ताह उस अस्पताल में बिना कुछ फीस के कार्य किया करेंगे। यह विचार बहुत ही अच्छा है। समाज सेवा के लिये इस प्रकार मिलजुल कर ही अच्छे कार्य्य होसकते हैं। आज कल भारतवासियों का परोपकार धर्म और सब धर्मों की तरह केवल जीभ का धर्म रहगया है। परोपकार को लोगों ने आमदनी का हेतु बनाया है। भला इससे बढ़कर नीचता क्या होसकती है? हम बम्बई के डाक्टरों के इस कार्य की ओर अन्य नगरों के डाक्टरों का ध्यान आकर्षित करते है।

डा० रवीन्द्रनाथ को निमन्त्रण

डा० रवीन्द्रनाथ टागोर को अमरीका से निमन्त्रण आया था, जिसमें उनसे प्रार्थना की गई थी कि वे वहाँ जाकर भिन्न २ विश्वविद्यालयों में व्याख्यान दें। इस कार्य के लिए उन्हें १३ हज़ार डालर मिलने का प्रस्ताव था। किन्तु उस समय डा० रवीन्द्रनाथ इस प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सके। अब फिर वही प्रार्थना आई तो आपने जाना स्वीकार कर लिया है। २६ अप्रैल को आप भारत से जापान के लिए रवाना होंगे। वहां कुछ दिन ठहर कर फिर अमरीका जायंगे और व्याख्यान देते हुए भ्रमण करेंगे। इतने में यदि युद्ध समाप्त होगया तो आप योरप में भी भ्रमण करना चाहते हैं, हमारे देश नहीं जानते। किसी भारतीय विश्वविद्यालय ने डा० रवीन्द्रनाथ से पूरा २ लाभ उठाने का यत्न नहीं किया। ठीक है—घर का जोगी जोगना, बाहर का जोगी सिद्ध।

पाटली पुत्र की खोज

पाटली पुत्र के खण्डरात खोदे जारहे हैं। प्रसिद्ध पारसी दानी रतनतता के दान से तीन चार साल पूर्व यह कार्य प्रारम्भ हुआ था। इतने दिनों में बहुत सी खोज हुई है। अनेक स्थान खोदे गये हैं। अभी तक इस कार्य के अधिष्ठाता डाक्टर स्पूनर रहे हैं। उन्हों ने जो भी कुछ खोज की है, डा० स्पूरनर ने उसका परिणाम यह निकाला है कि मौर्यवंश के समय की इमारतों तथा : हशंगार पर पारसीशैलियों का बड़ा असर था। कल्पना तो विचित्र उठाई गई है परन्तु ऐसी असम्भव नहीं है।

स्त्री शिक्षा का नया प्रकार

स्त्री शिक्षा का प्रश्न बड़ा विकट है। जिस में ज़रा भी स्त्री शिक्षा के लिये प्रेम है वह नया परिक्षण प्रारम्भ कर देता है। यह विषय भी ऐसा ही है। भारत में तो भला स्त्री शिक्षा में रुचि पैदा होने की तिथि अभी दूर नहीं, जिन देशों में सदियां पूर्व स्त्री शिक्षा के द्वार खुल चुके हैं उन में भी अभी फ़ैसला नहीं होता कोई बालकों और बालिकाओं की इकट्ठी शिक्षा को पसन्द करता है और कोई कोई कन्याओं के लिये भी उसी शिक्षा को उपयोगी समझता है जो बालकों को दी जाती है और कोई इससे सर्वथा विरुद्धमत रखते हैं। भारतवर्ष में भी इस सम्बन्ध में नये २ परीक्षण होरहे हैं। कई पाठशालायें ऐसी हैं, जो यूनिवर्सिटी की एन्ट्रैंस परीक्षा की तय्यारी कराती हैं कई विद्यालय कन्या महाविद्यालय जालन्धर के समान शास्त्रीय रीति से शिक्षा देते हैं। महात्मा गान्धी अपने विद्यालय में बालक और बालिकाओं को इकट्ठी शिक्षा देने की परीक्षण कर रहे हैं। मद्रास की ओर से एक नये परीक्षण की ख़बर आई है। वहाँ एक ऐसी संस्था बनी है जो स्त्रियों की घरों में परीक्षा लेगी घूमने वाली स्त्रियां घरों में जाकर ही विविध विषयों की परीक्षा ले आया करेंगी। जो स्त्रियां उत्तीर्ण हों, उन्हें पदक दिए जाते हैं। परीक्षण तो अच्छा है, परन्तु देखें इस में पूरी सफलता प्राप्त होती या नहीं।

—०—

प्राप्त

श्री मन्त्री जी आर्य विद्या सभा बरेली लिखते हैं—"आर्य विद्या सभा बरेली ने ४ जौलाई सं० १५ से एक विद्यालय सरस्वती विद्यालय अरौला नामी बस्ती से पूर्व दिशा में लगभग ४ मील की दूरी पर खोला था। इसके लिए पूज्य बाबू प्रेमनारायण जी रईस मोहल्ला पुराना शहर कुआं वालजती ने दान दी थी और इन के दो सहविचारी सज्जनों ने उसके खोलने में अत्यन्त परिश्रम किया था। अब कई मास से वहां की आय व्यय का ब्योरा ठीक नहीं आता था। इस कारण से आर्य विद्यासभा ने विद्यालय को कई वार लिखा। इस पर उपरोक्त बाबू साहब ने एक अङ्गरेज़ी चिट्ठी १५ अप्रैल की लिखी हुई भेजी है। उसका हिन्दी अनुवाद नीचे किया जाता है। और सर्व सज्जनों की सूचनार्थ आर्य विद्या सभा के उस प्रस्ताव की प्रति भी दी जाती है जो कि १६ अप्रैल सं० १६ की बैठक में पास हुआ।

बाबू प्रेमनारायण जी की अंग्रेज़ी चिट्ठी का अनुवाद।

मन्त्री जी विद्यासभा बरेली आपकी चिट्ठी तारीख १८ लिखित १६ अप्रैल के उत्तर में आपको सूचना दी जाती है कि शहामतगंज में एक जलसा उस प्रस्ताव के अनुसार जो कि आपकी सभा ने ४ मार्च को पास किया गया। एक सज्जन को छोड़कर और जितने सज्जन उपस्थित थे उनकी यह मति हुई कि विद्यालय का कान्स्टीट्यूशन अथवा प्रबन्ध बिलकुल अलग होना चाहिए।

इस अवस्था का ध्यान करके जिसमें कि विद्यालय अब तक चल रहा है मैं भी यह ही आवश्यक समझता हूं कि विद्यालय का (कान्स्टीटयूशन) प्रबन्ध अब बरेली की साधारण पब्लिक में से अलग बना लिया जावे। यह ख़बर बिल्कुल झूठ है कि अरौले की रामनौमी पर कोई जलसा किया गया। और न कोई जलसा शहामतगंज में किया गया। हिसाब किताब इत्यादि उन्हीं कई शोचनीय बातों के कारण से नहीं भेजा गया जोकि होगई थीं। यदि आप चाहें तो आप स्वयम् अरौला आने का कष्ट उठाकर हिसाब किताब देख लें। मुझे अशोक कहना पड़ता है कि साधारण पब्लिक और कम से कम शहामतगंज और पुराने शहर के वासी तो जिन के साथ मैंने अब तक काम किया है इस बात के बिलकुल विरुद्ध हैं कि विद्यालय आर्यविद्या सभा के आधीन रखा जावे। वह लोग तो अलग ही प्रबन्ध मानते हैं। और इसी शर्त पर विद्यालय की सहायता करना चाहते हैं। ऐसी दशा में आवश्यक ज्ञात होता है कि विद्यासभा से विद्यालय का सम्बन्ध तोड़ दिया जावे।

प्रति इस प्रस्ताव की जोकि आर्यविद्या सभा के अन्तरंग में पास हुआ।

सरस्वती विद्यालय का सारा व्यवहार और बाबू प्रेमनारायण जीकी अंग्रेज़ी चिट्ठी पढ़ी गई। प्रस्ताव हुआ कि क्योंकि बाबू प्रेम नारायण जी चिट्ठी से ज्ञात है कि पुराने शहर और शहमतगंज के सज्जन यह पसन्द नहीं करते कि सरस्वती विद्यालय का कोई सम्बन्ध आर्य विद्यासभा से रहे और चूंकि बाबू प्रेम-नारायण जी ने और उनके सहचारियों ने इस में आरम्भ से रुसी तौर से भाग लिया है और विद्या सभा का सम्बन्ध नाम मात्र हो रहा है। अतः विद्या सभा को स्वीकार है कि बाबू प्रेमनारायण जी तथा उन के अन्य सहविचारी सज्जन पुरुषों की इच्छानुसार विद्यासभा का सम्बन्ध विद्यालय जरौला से न रहे।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेदार्थ करने का आधार

वैदिक भाषा है।

लेखक—उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालङ्कार

(गताङ्क से आगे)

(२)

(महान् ऋषिः) प्रतिभाशाली, सूक्ष्म बुद्धि मेधावी (देवजाः) श्रेष्ठ गुण कर्मों से उत्पन्न, श्रेष्ठ गुणों की साक्षात् मूर्ति, (देवजूतः) देव, महात्मा पुरुषों से प्रेरित, महान्तायों की सङ्गति में रहने वाला, (नृचक्षाः) नरों का देखने वाला, श्रेष्ठ नीच मनुष्यों को भली प्रकार पहचानने वाला, (विश्वामित्रः) सब को मित्र की दृष्टि से देखने वाला, ईर्ष्या द्वेष को छोड़ कर प्रजा मात्र पर प्रेम दृष्टि रखने वाला (इन्द्रः) इन्दते वैश्वर्यकर्मणः, इन्दन् शत्रूणां दारयिता। ऐश्वर्यवान्, या मित्रों का स्वामी और शत्रुओं का दलन करने वाला राजा (सिन्धुं अर्णवं) नदी समुद्र को (अस्तभ्नात्) रोके रखता है, धारण करता है, अपने वश में रखता है। (यत्) जब कि वह राजा (सुदासम्) कल्याण दाता, पुण्यदाता को (अवहत्) प्राप्त करता है। और (कुशिकेभिः) मेधावी, महात्मा पुरुषों के साथ (अप्रियायत) प्रिय की न्याई बर्ताव करता है।

दूसरा मंत्र यह है—

विश्वामित्रा ! अरासत
ब्रह्मेन्द्राय वज्रिणे
करदिन्नः सुराधसः।

[विश्वामित्राः] हे सब के मित्र प्रजाजनो! जो राजा [नः] हमें [सुराधसः] उत्तम धनयुक्त समृद्धि शाली [करत] करता है। (इत्) उसी [वज्रिणे] वज्री, बलवान्, वीर [इन्द्राय] ऐश्वर्यवान् राजा के लिए [ब्रह्म अरासत] धन दो। इस में परमात्मा राजा प्रजा के गूढ़ सम्बन्ध का उपदेश करते हैं और दोनों का एक दूसरे पर आश्रय बताते हैं। प्रजा राजा को इस लिए धन देती है, कर देती है कि वह उस की पूर्णतया रक्षा करे। राजा के आश्रय में रहते हुए उस के जानमाल की रक्षा हो। पुरुष समृद्धिसंपन्न, विद्वान्, धर्मात्मा बन सकें। राजा का प्रजा से कर लेना और उस के बदले में राजा से प्रजा की रक्षा की जानी, इन दोनों कार्यों से राजा प्रजा परस्पर में संघटित रह सकते हैं अन्यथा नहीं। यदि प्रजा धन नहीं देती तो राजा रक्षा नहीं कर सकता। और यदि राजा रक्षा नहीं करता तो प्रजा कर देने को उद्यत नहीं। कर का देना तथा रक्षा करना यही दो बातें राजा प्रजा के भाव को पैदा करने वाली हैं और इन में एक गूढ़ सम्बन्ध की स्थापना करती हैं।

२. शास इत्था महाँ असि
अमित्रखादो अद्भुतः
न यस्य हन्यते सखा
न जीयते कदाचन ऋ० १०, १५३, १

वैदिक भाषा पर ध्यान देने वाले विद्वान् इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार करते हैं कि शास नामक ऋषि कहता है कि मैं [इत्था] इस प्रकार इन्द्र की स्तुति करता हूं। इस में इत्था को इदं के अर्थ में कल्पना की है और 'इन्द्रं स्तौमि'। यह पद बाहर से जोड़े गए हैं। परन्तु यदि वैदिक कोष को देखें तो यह सब सन्देह दूर हो जाते हैं और मंत्र का अर्थ बिलकुल स्पष्ट, तथा सरल हो जाता है। निघन्टु में इत्था शब्द सत्य के अर्थ में दिया है। इस ५ मंत्र के सारे सूक्त में राजा के गुणों और कर्तव्यों का वर्णन है। इस सूक्त का देवता इन्द्र है अर्थात् इन्द्र के बारे में कुछ कहा हुआ है। यह मैं पहले बतला चुका हूं कि इन्द्र का अर्थ राजा क्यों है। अब मन्त्र के अर्थ देखिए—हे राजन्! तुम [शासः] शासक, शासन करने की शक्ति रखने वाले (इत्था) सत्य की मूर्ति, सत्य चिन्तक, सत्यवादी, और सत्य पर आचरण करने वाले [महान्] पूजनीय [अमित्रखादः] अमित्रों को खाने वाले, शत्रुओं का विध्वंस करने वाले [अद्भुतः असि] अद्भुत गुणों वाले हो [यस्य सखा न हन्यते] जिस का मित्र नाहीं किसी से दुःखित किया जा सकता (न जीयते कदाचन) और नाहीं कभी दूसरों से जीता जा सकता है। इस मंत्र का सम्बन्ध अगले से है उस का भी अर्थ कर देने से भाव स्पष्ट हो जावेगा, वह मंत्र यह है—

स्वस्तिदा विशस्पतिः
वृत्रहा विमृधो वशी
वृषेन्द्रः पुर एतु नः
सोमपा अभयङ्करः

[स्वस्तिदा] कल्याण का देने वाला, [विशस्पति] प्रजा रक्षक (वृत्रहा) दुष्टों का हनन करने वाला [विमृधः] संग्रामकारी, योद्धा [वशी] जितेन्द्रिय [वृषा] सुखों की वर्षा करने वाला [सोमपाः] सोम अर्थात् श्रेष्ठ मनुष्यों की रक्षा करने वाला [अभयङ्करः] अभय प्रदान देने वाला, दयालु [इन्द्रः] ऐश्वर्यवान् राजा [नः पुरः एतु] हमारे आगे हो। अर्थात् उपरोक्त गुणों वाला राजा हमारा राजा हो। राजा का कैसा उच्च आदर्श है। इस से अधिक गुण और कर्तव्य राजा के अन्य कौनसे हो सकते हैं। वेद में प्रजा के लिए ऐसे राजा की प्रार्थना लिखी है जो शासक हो, मन वाणी कर्म से सत्यवादी हो, पूजनीय हो, अद्भुत शक्तियों वाला हो, शत्रुओं से रक्षा करने वाला हो, जिसकी शरण में आया हुआ पुरुष कभी मारा या जीता न जा सके, सदा सुख पहुंचाने वाला हो, प्रजा रक्षक हो, योद्धा हो, जितेन्द्रिय दुष्टों का नाशक तथा शिष्टों का रक्षक हो और दयालु हो। उसके दर्बार में दरिद्र से दरिद्र भी अपने दुःखों को स्पष्टतया कहने के लिए बिना किसी संकोच के आसकें।

३. ईड्यन्ती रपस्युव
इन्द्रं जात मुपासते
भेजानासः सुवीर्यम्

इस का अर्थ सायणाचार्य इस प्रकार करते हैं कि ऋतुत्यादिकों से इन्द्र को प्राप्त होती हुई और कर्म की इच्छा रखती हुई इन्द्र की माताये प्रादुर्भूत इन्द्र की परिचर्या करती हैं और पुष्टिदायक धन को उस इन्द्र से विभक्त कराती हैं प्राप्त करती हैं।

परन्तु केवल संस्कृत भाषा को दिमाग में स्थान न देकर अर्थ करने से भाव स्पष्ट हो जाता है।

(ईड्यन्तीः) ईड्गतौ धातु से बना है जिस का अर्थ ज्ञान, गमन, प्राप्ति है।

अतः ज्ञान शीला [अपस्युवः] कर्मशीला और [भेजानासः] भक्ति मती देवियें [सुवीर्यं] सुपराक्रमी और [जातं] प्रसिद्ध [इन्द्रं उपासते] परमात्मा के समीप बैठती हैं।

परमात्मा के समीप पहुंचने के यही तीन साधन हैं। विना ज्ञान के, विना कर्म के, या विना भक्ति के कोई मनुष्य ईश्वर के समीप नहीं जासता है। इस वेद मंत्र में ज्ञान, कर्म, भक्ति यही तीन साधन जतलाकर परमात्मा नारियों को उपदेश देते हैं कि इन्ही के अवलम्बन से तुम लोग मेरे निकट पहुंच सकती हो। इस के अतिरिक्त अन्य कोई उपाय नहीं।

४. इसी प्रकार वैदिक भाषा का ध्यान न देने से सायणाचार्यादि विद्वानों ने अश्वि देवतायों के बारे में बड़ी विचित्र२ ऐतिहासिक कल्पनाएं की हैं। उन में से दो उदाहरण आप के सामने रखता हूं, उस से आप स्वयं इस की सत्यता परख सकेगें। पहला मंत्र यह है—

हिमेनाग्निं घ्रंसमवारयेथां
पितुमती सूर्जमस्मा अधत्तम्।
ऋवीसे अत्रि मश्विनाव नीत
मुन्निन्यथुः सर्वगणं स्वस्ति।

सायणाचार्य इस वेद मंत्र से इतिहास निकालते हैं कि असुर लोगों ने अत्रि ऋषि को शतद्वार पीड़ागृह में बन्द करके तुषों से अग्नि लगा दी। ऋषि ने स्तुति से अश्वि देवताओं को प्रसन्न किया। उन्हों ने वहां पहुंच कर अग्नि को जल से शान्त किया और ऋषि को सर्वाङ्गपूर्ण विना किसी हानि के निकाल लिया।

अब आप वैदिक भाषा की ओर दृष्टि देते हुए निरुक्तकार का अर्थ देखिये तब आप को स्पष्ट परिज्ञान होजावेगा कि वैदिक साहित्य को संस्कृत भाषा की दृष्टि से देखने से कितना अनर्थ होता है—

(अश्विनौ) हे द्युलोक पृथिवी लोको! तुम दोनों (हिमेन) जल से (अग्निं घ्रंसं) अग्नितत् तीक्ष्ण तपाने वाले, दाह करने वाले दिनों को, ग्रीष्म दिनों को (अवारयेथां) दूर करते हो। जिससे (अस्मै पितुमतीं ऊर्जं अधत्तम्) उसके लिये, उस प्रजा के लिए अन्न युक्तबल का प्रदान करते हो (ऋवीसे अवनीतं अत्रिं उन्निन्यथुः) पृथिवी में नीचे गई हुई अग्नि को, ताप को ऊपर उठाते हो। इस का फल क्या होता है [सर्वगणं स्वस्ति] सर्व प्राणिमात्र का कल्याण होता है। इस वेद मंत्र में ग्रीष्म काल और वर्षाकाल का वर्णन है। ग्रीष्म ऋतु के दिन बड़े तीक्ष्ण तथा ताप देने वाले होते हैं। पृथिवी के भीतर इतना ताप व्याप्त रहता है कि सब औषधि वनस्पतियें उस ताप से जल जाती हैं। वर्षाकाल में वृष्टि होती है, दिन ठंडे हो जाते हैं, पृथिवी का ताप निकल जाता है। औषधि वनस्पतियें खेतों में, वनों में लहलाहने लगती हैं। खाद्य पदार्थ उत्पन्न होते हैं। प्राणियों को सुख मिलता है और उन का कल्याण होता है।

अब प्रश्न उठता है कि द्युलोक पृथिवीलोक को इस सब कार्य का कर्त्ता क्यों माना गया है। सूर्य की किरणें पृथिवीतल से जल को खींचती हैं। उन से मेघ बनते हैं और वृष्टि होती है। द्युलोक और पृथिवी लोक दोनों मिलकर वृष्टि के कारण हैं जिस से उपरोक्त सर्व कार्य होते हैं अतः अश्विनौ का अर्थ द्यावा पृथिवी करना ही ठीक प्रतीत देता है। इसी प्रकार संस्कृत के विद्वान्

अजोहवी दश्विना वर्तिका वा
मास्नो यत्सीमसुञ्चतं वृकस्य।

इस वेद मंत्र से यह गाथा निकालते हैं कि वृक ने, कुत्ते ने वर्तिका, वेटरनी पक्षी को अपने मुख में लेलिया था। पक्षि ने अश्विदेवतायों की स्तुति की और उन्होंने उसे कुत्ते के मुख से छुड़ा दिया।

अब इस को भी वैदिक भाषा की दृष्टि से आलोचना कीजिए। (अश्विनौ) हे द्युलोक पृथिवी लोको (वर्तिका वां अजोहवीत्) जो प्रति दिन आवर्तन करती है लौटती है ऐसी उषा, उषःकाल तुम दोनों को बुलाती है (यत्सीम् वृकस्य आस्नः असुञ्चतम्) और तुम वृक अर्थात् आदित्य के मुख से उस उषःकाल को छुड़ाते हो। द्युलोक अर्थात् सूर्य लोक और पृथिवी लोक के घूमने के कारण ही प्रातः उषा, मध्यान्ह, सायं, रात्रि आदि काल बनते हैं। और उषः काल सूर्योदय का पूर्वरूप, पूर्वगामी है। सूर्य्य के मुख से, सूर्य के उदय काल से पृथक है इसी लिए यहां अलंकार रूप से इस बात का प्रकाश किया है कि सूर्य पृथिवी का चक्र ही उषःकाल को बनाता है और उसे सूर्य के उदय काल से पृथक् करता है। इस में उषः काल का स्पष्टतया सूक्ष्म विभाग दर्शाया है कि यह सूर्योदय से ठीक पहले तक का समय है

[५] ऋषि शब्द प्रचलित संस्कृत में अधिकतर मंत्र द्रष्टा या योगी के अर्थों में आता है। हम वेद मंत्रों में ऋषि शब्द के आने पर भूल में पड़ जाते हैं और मंत्र का ठीक अर्थ नहीं समझ पाते, उसके कुछ एक अर्थों को स्पष्ट प्रमाणों सहित उल्लेख कर देना भी अच्छा होगा।

इमा अग्ने शरणिं मीमृषो
न इममध्वानं यमगाम दूरात्।
आपिः पिता प्रमतिः सोम्यानां
भूमि रस्यृषि कृन्मर्त्यानाम्।

अग्ने हे प्रकाश स्वरूप परमात्मन्! [नः] हमारी [इमां शरणिं] इस मृत्यु रूपी हिंसा को (मीमृषः) दूर करो। इसी मुक्ति की इच्छा को पुनः दूसरे शब्दों में स्पष्ट करते हैं।

[इमं अध्वानं यम् दूरात् अगाम] इस जन्म मरण मार्ग का नाश करो जिसको हम दूर से प्राप्त हुए। अर्थात अमृत को छोड़ कर दूरवर्ती जन्ममरण के वन में फंस गये हैं। क्योंकि हे प्रभो! तुमही [आपिः] प्रापणीय, [पिता] पिता [सोम्यानां प्रमतिः] शान्त्यादिगुण युक्त श्रेष्ठ मनुष्यों में प्रकृष्ट मतिमान् [भूमिः] संसार चक्र को भ्रमाने वाले और [मर्त्यानां ऋषिकृत् असि] मनुष्यों के ज्ञानकर्ता वा दर्शन कर्ता हो अर्थात तुम्हारे आधीन ही ज्ञान देना या दर्शन कराना है। इसमें परमात्मा को मनुष्यों का ऋषि कृत कहा है अतः ऋषि के अर्थ ज्ञान या दर्शन होते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वयः सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं। प्रियमेधा ऋषयो नाधमानाः। अप ध्वान्त मूर्णु हि पूर्द्धि चक्षुः। मुमुग्ध्यस्मा न्निधयेव बद्धान् ॥ ऋ० १० ७ ३. ११

(सुपर्णाः) साधुगति वालीं, जो अति शीघ्रता से सर्वत्र फैल जाती हैं [प्रिय-मेधाः] यज्ञ के लिये प्रिय, ससार में कोई यज्ञ कोई कार्य नहीं होसकता यदि सूर्य भगवान् उदित होकर अपनी रश्मियों का विस्तार न करें। [ऋषयः] सर्व वस्तुयों को दर्शाने वालीं या उन का बोध कराने वालीं [वयः] सूर्य की रश्मियें [नाध मानाः] याचना करती हुईं (इन्द्रं उपसेदुः) आदित्य के पास जाती हैं। किस बात की याचना करती हैं क्या मांगती हैं क्या कहती हैं यह अगले भाग में दर्शाया है-हे सूर्य तुम (ध्वान्तं अप-ऊर्णुहि) अन्धकार को दूर करो [चक्षुः पूर्द्धि] प्रकाश प्रदान करो जिस से मनुष्य देखने में समर्थ हो सकें [निध येव बद्धान् अस्मान् मुमुग्धि] पाश से, बन्धन से बंधी हुई के समान हमको बन्धन से मुक्त करो।

इसमें किरणों का कार्य तथा सूर्यास्त के समय उनके सूर्यमंडल में लौट जाने का निर्देश करते हुए अलंकार रूप में इस बात को दर्शाया है कि वह सूर्यमंडल में पहुंच कर इस बात की प्रार्थना करती हैं कि पृथिवी लोक अन्धकार से आच्छादित है, सर्व प्राणियों के कार्य रुके हुए हैं हमें इस जाल से मुक्त करो हम वहां जाकर प्रकाश करेंगी।

इस से ऋषि का दूसरा अर्थ दर्शाने वाला, प्रकाशित करने वाला, या ज्ञान कराने वाला हुआ।

(३)ऋषीणां पुत्रो अधिराज एषः।

इस वेद मंत्र में यास्काचार्य ऋषि का अर्थ ऋत्विक् अर्थात् यज्ञ कर्ता करते हैं। इस लिये ऋषि का तीसरा अर्थ यज्ञ कर्ता है। ८.२।

(४) ऋषिः कुत्सो भवति कर्ता स्तोमाना मित्यौपमन्यवः। ३. ११

निघण्टु में कुत्स का अर्थ वज्र दिया है। परन्तु औपमन्यव आचार्य कहते हैं कि कुत्स का अर्थ ऋषि भी हैं क्योंकि वह स्तोम, स्तोत्र, स्तुतियों का कर्ता होता है।

ii ऋषि र्नदो भवति नदतेः स्तुति कर्मणः ५.२ अर्थात् नद ऋषि को कहते हैं जो कि स्तुत्यर्थक नद धातु से बना है। और नद शब्द निघण्टु में भी स्तोता वाची लिखा है।

iii "नोधा इवा विरकृत प्रियाणि" इस वेद मंत्र का अर्थ करते हुए यास्काचार्य लिखते हैं 'नोधाऋषि र्भवति नवनं दधाति स यथा स्तुत्या कामाना विष्कुरुते एवं उषा रूपाण्या विष्कुरुते ४ १६

नोधा ऋषि को कहते हैं क्योंकि वह नवन को, स्तवन को, स्तुति को धारण करता है। जिस प्रकार वह स्तुति द्वारा अपनी कामनायों को प्रकाशित करता है उसी प्रकार उषाकाल संसार के सब पदार्थों को प्रकाशित करती है।

iv निघण्टु के च्यवन शब्द की व्याख्या करते हुए यास्क कहते हैं 'च्यवनो ऋषि र्भवति च्यावयिता स्तोमानां ४.२०।

च्यवन का अर्थ ऋषि है क्योंकि वह स्तुतियों का करने वाला होता है। इन चार प्रमाणों से स्पष्ट है कि ऋषि स्तोता अर्थ में भी आता है। साथ ही इस बात का भी पता लगता है कि कुत्स, नद, च्यवन किसी विशेष ऋषि के नाम नहीं।

५. ऋषि र्दर्शनात् स्तोमान्ददर्शे त्यौपमन्यवः तद् यद् एनां स्तपस्यमानान् ब्रह्म स्वयम्भू अभ्यानर्षत् त ऋषयो ऽभवं स्तदृषीणा मृषित्वमिति विज्ञायते २.११।

यास्काचार्य ऋषि का अर्थ सामान्यतः द्रष्टा करते हैं चाहे वह मंत्र द्रष्टा हो चाहे अन्य किन्ही सूक्ष्म बातों का आविष्कर्ता हो। इस से जो कोई भी प्रतिभाशाली, विशेष बुद्धिमान् विद्वान् जो सूक्ष्म बातों का आविष्कार करता हो उसे ऋषि नाम से पुकार सकते हैं। परन्तु औपमन्यव के मत में केवल स्तोम अर्थात मंत्रों को देखने वाला मंत्रार्थ का आविष्कार करने वाला ही ऋषि शब्द से कहलाया जासकता है। इस पक्ष की पुष्टि में ब्राह्मण का प्रमाण भी देते हैं कि तब जब कि इनको तपश्चर्या करते हुए स्वयम्भू स्वयमेव उत्पन्न होने वाला, अपौरुषेय ब्रह्म, वेद आविर्भूत हुआ, वेदार्थों का यथावत् प्रकाश हुआ वह ऋषि कहलाये यही ऋषियों का ऋषित्व है।

उपरोक्त कुछ एक उदाहरणों से आप लोगों को विदित हो गया होगा कि संस्कृत भाषा वैदिक भाषा से कितनी भिन्न है। वैदिक भाषा पर ध्यान न देने से हम कितनी अशुद्धियें करते हैं। अतः हमें केवल संस्कृत के विचार पर वेदों के अर्थ करने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए। अपितु वैदिक भाषा को ही अपना पथदर्शक बनाना चाहिये।

—०—

प्राप्त पत्र

एक अपूर्वआर्य जोड़ा।

महाशय भीमराव देसाई इंगलैण्ड में बैरिस्टरी का कार्य्य करते थे। बोअर युद्ध में वह बैरिस्टरी छोड़ कर अफ्रिका में आगये थे। सन् १९०५ ई० में एक एमरिका निवासी हालैण्ड में विवाह करके धन कमाने के लिये केप कोलोनी के मीड़लवर्ग नगर में आया और वहां वह कृषिकार्य्य करने लगा। उसकी एक पुत्री मिस मारगरेट थी। जिस के साथ देश के नियमानुसार कोर्ट में महा० भीमरावने विवाह करलिया। विवाह करते समय यह नियम तै हुए कि महाशय भीमराव अपनी पत्नी को आर्य्य धर्म्म स्वीकार करने के लिये बल न देगें और न वह अपने पति को ईसाई बनने के लिये तङ्ग करेगी; किन्तु प्रत्येक अपने २ धर्म्म में रहे।

एमरिकन महाशय मरते समय अपनी पुत्री के लिये १२०० पाउन्ड को मिल-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कियत छोड़ गए, परन्तु शर्त यह रक्खी थी कि यदि वह (पुत्री) महा० भीमराव को ईसाई मत में ले आवे तो यह मिलकियत उसको है और यदि वह स्वयम् आर्य्य बनजावे तो इसे कुछ भी न मिले।

महा० भीमराव आज कल कृषि का कार्य्य करते हैं बैरिस्टरी आदि छोड़ दी है। अब दश वर्ष के पश्चात् उनकी स्त्री ने १२०० पाउन्ड की मिलकियत को छोड़ कर आर्य्य धर्म्म स्वीकार करलिया है और २५ दिसम्बर १९१५ को उन्हीं के Farm पर उनका विवाह संस्कार वैदिक रीत्यनुसार, भाई झीणा भाई, अध्यापक अमरावू पाठशाला ने कराया। उसका आर्य्य नाम कुसुम सुन्दरी रक्खा गया है।

महा० भीमराव के तीन संतान हैं। दो पुत्र और एक पुत्री। विवाह के दूसरे दिन दोनों पुत्रों का, उपनयन संस्कार हुआ। बड़े पुत्र का नाम यशवन्तराव और दूसरे का गुणवन्तराव रक्खा है। और पुत्री का नाम तिलोत्तमा रक्खा गया है।

म० भीमराव ने निम्नलिखित दान संस्कार के समय दिया है।

पा०—शि०—पै०

१—१—०—गुरुकुल बम्बई

०—१०—६—" हरिद्वार

१—१—० म० गांधी का आश्रम अहमदाबाद

१—१—०—अमृतलाल देशाई स्मारक फण्ड

१—०—०—की केलवणी फण्ड बम्बई—

१—१—०—वेद प्रचार फण्ड बम्बई—

आर्य्य सेवक

भाई झीणा भाई

संस्कृत साहित्य सम्मेलन के प्रस्ताव

चैत्र कृ० ७,८ तदनुसार १६,१७ मार्च को श्री मथुरापुरी में अखिल भारत वर्षीय—सनातनधर्म-महा—सम्मेलन के विशाल पण्डाल में अखिल भारतवर्षीय—संस्कृत साहित्य सम्मेलन का जो तृतीय अधिवेशन हुवा था, जिस में मथुरा की सुप्रतिष्ठित विद्वान्मण्डली के अतिरिक्त बङ्गाल के श्री रायचरण शास्त्री, पञ्जाब के वि०वा० श्रीकृष्ण शास्त्री, काठियावाड़ जामनगर के श्री हाथी भाई शास्त्री, मद्रास के श्री गणपति शास्त्री, काशी के श्री महादेव शास्त्री, श्री शालग्राम शास्त्री बरेली, वि० वा० श्री ज्वालाप्रसाद मिश्र जी मुरादाबाद, श्री गिरिधर शर्मा 'नवरत्न' कालराइन श्री बालबन्धु शास्त्री शेखावाटी, श्री मथुरानाथ शास्त्री जयपुर प्रभृति भारत के सर्व प्रान्तों के गण्य मान्य विद्वान् पर्याप्त संख्या में एकत्रित थे, कलकत्ता के भुवन विख्यात महामहोपाध्याय श्री हरप्रसाद शास्त्री एम०ए०सी० आई० ई० जिसके प्रधान सभापति व मथुरा के सुप्रतिष्ठित जोशी बाबा श्री शिवप्रकाशलाल जी जिसकी स्वागत कारिणी के सभापति थे, दर्शकों की संख्या भी पर्याप्त थी, उस सम्मेलन में दोनों सभापति महादयों की अति गंभीर सारगर्भित वक्तृता के अतिरिक्त जो कई एक परम महत्व के प्रस्ताव स्वीकृत हुवे थे उनकी संक्षिप्त सूचना पाठक महोदयों की सेवा में दी जाती है। सब से प्रथम सम्राट् की विजय कामना की गई। आगे वर्तमान संस्कृत शिक्षा-प्रणाली पर विचार हुआ। विद्वान-पाठक सोच सकते हैं कि यह विषय कितने महत्व का है। इस ही प्रश्न के आधार पर संस्कृत विद्याओं की उन्नति अवलम्बित है। अस्तु सम्मेलन इस के सम्बन्ध में एक उपसमिति (सब कमेटी) बनाई है। म० म० श्री हरप्रसाद शास्त्री, (सभापति) श्री विधुशेखर भट्टाचार्य बङ्गाल, श्री रामावतार पाण्डेय बांकीपुर, श्री चंद्रशेखर झा प्रयाग, श्री हीरानन्द शास्त्री लखनऊ, म० म० श्री हरिनारायण शास्त्री देहली, श्री कृष्णमाचार्य मद्रास, श्री रामनाथ शास्त्री बम्बई, श्री सूर्यनारायण शास्त्री जयपुर—इत्यादि भारत के सब प्रान्तों के २३ सुप्रतिष्ठित और पूर्ण रूपसे ही विद्वान् इस समिति के सभ्य निर्वाचित हुवे हैं। ये सब सभ्य स्वयं मिलकर व लेख द्वारा प्राचीन और नवीन, शिक्षा विभाग के पूर्ण अनुभवी योग्य सुप्रसिद्ध विद्वानों की शिक्षाप्रणाली के सम्बन्ध में सम्मति संगृहीत करेंगे। फिर उन सम्मतियों के आधार पर प्राथमिक संस्कृत शिक्षा किस प्रकार सरल की जाय, और संस्कृत शिक्षा को वर्तमान लोकोपयोगी किस प्रकार बनाया जाय—इत्यादि जटिल विषयों की मीमांसा का एक एक निबन्ध लिख कर प्रधान कार्यालय में भेजेंगे। उन सब के आधार पर अग्रिम सम्मेलन में इस विषय का पूरा विवेचन किया जायगा। अन्य उत्साही विद्वान् महोदय भी यदि इस सम्बन्ध में अपना निबन्ध प्रधान कार्यालय को भेजेंगे तो वह सादर स्वीकृत होगा।

कई एक उपयोगी विषयों के जो प्राचीन गृन्थ वर्तमान में आविष्कृत होते हैं, व कई एक उपयोगी गृन्थ जबानी लिखे भी जाते हैं उनका यथोचित प्रचार नहीं हो पाता। लेखक ही ग्रन्थ छपावे, नोटिस दें, व बेचें—यह कार्य उनसे होना कठिन है। इस ही आपत्ति से बहुत से योग्यलेखक संस्कृत ग्रन्थ लिखने को लेखनी ही नहीं उठाते, इधर सर्व साधारण नये नये विज्ञान से वञ्चित रहते हैं। इस संबन्ध में भी सम्मेलन ने एक उपसमिति बनाई है। इस में भी भारत के सब प्रान्तों के सब विषयों के योग्य योग्य २१ विद्वान् सम्मिलित किये गये हैं—जैसा कि वेद विषय के श्री पं० भीमसेन जी, वि०वा० श्री मधुसूदन ओझाजी, दर्शन के डा० श्री गंगानाथ झा, म० म० लक्ष्मणशास्त्री, ज्योतिष के इन्द्र नारायण द्विवेदी, श्री शिवप्रकाशलाल जी मथुरा, आयुर्वेद के डा० जगन्नाथ सेन एम० ए०, धर्म सम्बन्ध के प्रतिवादि भयंकर श्री अनन्ताचार्य, श्री कृष्णशास्त्री, श्री ज्वालाप्रसाद मिश्र जी, नवीन इतिहास अर्थ शास्त्र आदि विषयों के श्री रामावतार पाण्डेय, श्री सतीशचन्द्र विद्याभूषण इत्यादि २। जिस विषय की नवीन पुस्तक लिखित या मुद्रित रूप में प्राप्त होंगी, वह प्रधान कार्यालय से उस विषय के विद्वान् सदस्य के पास भेजी जायंगी। यदि पुस्तक उपयोगी हुई तो उस पर प्रचलित हिन्दी व संस्कृत पत्रों में सम्मेलन की ओर से आलोचनात्मक सम्मति प्रकाशित की जायगी। और संस्कृत विद्यानुरागी धनिक व प्रेसों के स्वामियों से ऐसी पुस्तक के लेखक को यथोचित पारितोषिक देने का व अमुद्रित पुस्तक मु-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

द्रित कराने का सम्मेलन के द्वारा अनुरोध किया जायगा इस से लेखकों का उत्साह वर्धन व पुस्तक प्रचार में सुगमता होगी। अतः जिनके पास उपयोगी प्राचीन पुस्तकें हों उन से व नवीन पुस्तक लेखकों से सानुरोध निवेदन है कि वे अपने लिखित व मुद्रित पुस्तक संस्कृत साहित्य सम्मेलन के प्रधान कार्यालय में अवश्य भेजें। थोड़ा भी विचार करने पर सब बुद्धिमान् सज्जन समझ सकते हैं कि ये प्रस्ताव कितने उपयोगी हुवे हैं। इनकी पूर्ति संस्कृत विद्वान् महोदयों के उत्साह पर ही निर्भर है।

अन्यान्य भी कई एक उचित प्रस्ताव स्वीकृत हुवे। प्रान्तीय सभास्थापन व पुस्तकालयों के आयोजन का एक प्रस्ताव था। इस पर मथुरा के श्री जोशी बाबा प्रभृति विद्वानों ने वहां के विद्याविलास नामक पुस्तकालय को सम्मेलन के आधीन कर देने की शुभ सूचना दी। इनको धन्यवाद दिया गया। हिन्दू विश्व विद्यालय में १२ हजार वार्षिक दान, संस्कृत विद्योन्नति के लिये देने व अपने राज कार्यों में उर्दू शब्दों के स्थान में संस्कृत शब्दों के प्रचार की आज्ञा देने के लिए श्री अलवर महाराज को धन्यवाद दिया गया।

सम्मेलन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए द्रव्य संग्रह करने को एकडेपूटेशन बनाया गया। पूर्व वर्ष का प्रस्ताव स्वीकृत करने के लिये पंजाब यूनिवर्सिटी को धन्यवाद दिया गया। पञ्जाब यूनिवर्सिटी व काशी गवर्नमेन्ट विद्यालयों से संस्कृत परीक्षाओं में कुछ २ से कर्य की प्रार्थना कीगई, इत्यादि कुल १३ प्रस्ताव स्वीकृत हुए कई एक योग्य निबन्धभी हुए। कार्यकारिणि समिति में कुछ नाम घटाए बढ़ाए गए। प्रधान कार्यालय 'ऋषिकुल हरिद्वार में ही मंत्री गिरिधर शर्मा के अधीन रक्खा गया। पूज्यपाद म० म० श्री शिवकुमार मिश्र जी सभापति यथावत नियत रहे। मथुरा के श्रीयुत जोशी बाबा व हरिद्वार के श्री वाचस्पति जी मैथिल उपसभापति, और श्री सूर्यनारायण शास्त्री जयपुर व श्री हरिहर स्वरूप शास्त्री झज्झर सहकारी मंत्री चुनेगये।

गत २ वर्षों की कार्य विवरणी (रिपोर्ट) छपकर प्रस्तुत है, डाकव्यय के टिकट मात्र भेजने पर प्रधान कार्यालय से भेजी जा सकती है। प्रथम वर्ष की निबन्धावली भी जिस में भारत वर्ष भर के योग्य विद्वानों के उत्तम निबन्ध हैं जो २२५ पृष्ठों की बड़ी पुस्तक हैं छपकर तय्यार है। सर्व साधारण को १२ आने में और साहित्य सम्मेलन के सभ्यों को ८ आने में यह दी जा सकती है। डाकव्यय पृथक होगा। सम्मेलन के मुखपत्र 'संस्कृत रत्नाकर' की प्रकाशक जयपुर वर्तु प्रचारिणी एजेन्सी जयपुर अपने पत्र के ग्राहकों को उपहार रूप में यह निबन्धावली देगी। कम से कम १ रुपया वार्षिक देने से साहित्यसम्मेलन का सभ्य हो सकता है संस्कृतके विद्वान् व संस्कृतानुरागी सज्जनों को यह सभ्य पद अवश्य स्वीकार करना चाहिए। फार्म, प्रधान कार्यालय से मिलते हैं।

गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी
मन्त्री सं० साहित्य सम्मेलन
ऋषिकुल हरिद्वार

—:o:—

'खुर्जे में स्वामी दयानन्द जी!'

इस खुरजा नगर में कुछ नवयुवकों ने एक सभा खोल रक्खी है (जिसका कि नाम "श्रीराम सभा" है) इसी सभा का प्रथम वार्षिकोत्सव चैत्र शुक्ला ८-९-१० ता० ११ १२ १३ को मनाया गया था, जिस में ता० १३ को प्रातःकाल ९ बजे स्वामी दयानन्द जी बी०ए० हापुड़ से पधारे उनका व्याख्यान सायंकाल ६ बजे से प्रारम्भ होकर ७॥ बजे समाप्त हुआ (मनुष्यों को सन्ध्या करने का समय भी नहीं मिला) व्याख्यान का प्रभाव जनता पर अच्छा पड़ा, पश्चात् सबको सभा की ओर से धन्यवाद दिए गए परन्तु पब्लिक लायब्रेरी को धन्यवाद के स्थान में द्वेषी बतलाया गया (पब्लिक लायब्रेरी सभा में गई थी) तत्पश्चात् ता० १४ अप्रेल सायं काल के ७ बजे स्वामी जी "समाचारपत्रालय" में अवलोकनार्थ पधारे। "पत्रालय" के कार्यकर्तागण आदि उपस्थित थे, अवलोकन करते समय ला० गंगाशंकर जी रईस व पं० चन्द्रीप्रसाद जी इत्यादि उपस्थित थे। थोड़ी देर बाद पं० नारायणदत्त जी वैद्याचार्य उप प्रधान "पत्रालय" ने कुछ प्रश्न किए:—नारायणदत्त स्वामी जी मैं आपसे कुछ प्रश्न करना चाहता हूं?
स्वामी—करिए।

नारा० पत्रालय में धार्मिक ग्रन्थ रखने चाहिए या नहीं, जैसे वेद शास्त्र इत्यादि।
स्वा० जरूर रखने चाहियें और देखने वालों से प्रति पुस्तक ५) रु० लेलेने चाहिए। कोई ग्रन्थ ५) रु० से अधिक मूल्य का न हो।

नारा० धार्मिक ग्रंथों का पढ़ने का अधिकार किन २ को दिया जाए?
स्वा० क्या कहा?

चंडी० ये कहते हैं कि वेदों अथवा शास्त्रों को देखने के लिए ईसाई, मुसलमान इत्यादि रुतावलम्बी देखना चाहें तो दिए जाएं या नहीं?
स्वा० इनको नहीं देने चाहिए, इन ग्रंथों के देखने का अधिकार उन्हीं को है जो उन के लिखे अनुसार चलते हैं।

नारा० अगर किसी हिन्दू को कुरान देखने की अभिलाषा होतो?
स्वा० बड़े लोग देदेते हैं क्योंकि इनके यहां पर मने नहीं है। तत्पश्चात् स्वामी जी ने अपनी सम्मति पत्रालय को सुनाने की पुस्तक में अंग्रेजी भाषा में लिखी। फिर स्वामी जी चलने को तय्यार हुए तो पं० नारायणदत्त जी ने उनकी कीर्ति बहुत मार्मिक शब्दों में की, परन्तु स्वामी जी ने कुछ उत्तर नहीं दिया और उठकर गाड़ी में सवार हो चले गये।

महाशयगण! विचार का स्थान है कि अब पहिला सा समय नहीं है जो वेद शास्त्र इत्यादि कहीं पर न मिलते हों अब ज़माना उन्नति का है। अब सब धर्म ग्रन्थ प्रेसों में छपते हैं क्या वहीं पर क-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रयोग करने वाले, स्याई फेरने वाले छापने वाले और पुस्तक को रूप में करने वाले सब हिन्दू ही होते हैं, हम जानते हैं कि रेल में भी हिन्दू ही रखते होंगे। जब रेल में पारसल रखते समय ईसाई, यवन, भंगी आदि रखते होंगे तो सनातनधर्ममर्य्यादा रक्षक स्वामी दयानन्द बी० ए० को अति दुःख व क्लेश होता होगा। अस्तु—स्वामी जी अंग्रेजी भाषा का अपने व्याख्यान में खंडन करते हैं परन्तु आप लिखते हैं खुद रोमन में [लोमड़ी भाषा] यह बात वही हुई कि दिगरानसीहत खुदरा फजीहत। सुना है स्वामी जी ता० १८ को कानपुर से फिर आवेंगे जब आपका व्याख्यान होगा तब फिर लिखेंगे।

"सभारुद"

—:o:—

म० गुलजारीलाल के विषय में।

श्रीमान् महाशय जी सम्पादक सद्धर्म प्रचारक को नमस्ते। सेवा में निवेदन है कि मैंने २७ चैत्र तारीख ८ अप्रैल के प्रचारक में गुलजारीलाल वैश्य की चिट्ठी तथा लेख पढ़ा। उन का लेख तो ठीक है, परन्तु प्रार्थना निर्मूल है। कारण यह कि गुलजारी लाल यहां पर एक साल तक रह चुका है। उस की भीतरी हालत बहुत गिरी हुई है। यह मनुष्य यहां पर अपने कुटम्ब समेत बहुत गरीबी हालत में, ज़िले बदायूं, से आया था। इस के साथ सब कुटम्ब करीब सात आदमी हैं। इस ने यहां आकर जीरे का पानी अथवा अचार वगैरह ऐसी चीजें बेच कर निर्वाह किया। हालत बहुत खराब थी। जब इस से मुन्शी नारायण प्रसाद बुकसेलर का परिचय हुआ तब उन को मालुम हुआ कि यह मनुष्य नारमल अथवा मिडल पास है। मुन्शी जी ने समाज की अंतरंग में पेश किया कि गुलजारीलाल को कहीं समाज में जगह दें अथवा अछूतों की पाठशाला खोल दें। यह प्रस्ताव पास हो गया और पाठशाला अछूत जातियों की खोल दी गई। इस में गुलजारीलाल को ८) मासिक पर नियत कर दिया। इस में काम करने लगे, बहुत अच्छा काम किया। फिर कुछ दिन बाद इन के समाज ने १०) मासिक कर दिए, और घर की वस्तु सभासदों ने मिलवा दी जैसे कपड़े रुपये कुटम्ब को गर्मियों तथा जाड़ों के, और कह दिया कि अच्छा काम करोगे तो और तनख्वाह बढ़ जायगी। इधर सभासद्गण खुशी होने लगे कि इस शहर में समाज कुछ काम करेगी। परन्तु वह खुशी थोड़े ही दिन रह सकी। गुलजारी लाल की बुद्धि भ्रष्ट होगई और इस ने समाज को बिना सूचना दिए ही पाठशाला के मकान पर ईसाई मिशनरियों का साईनबोर्ड लगा लिया और कहने लगा कि मैं तो ईसाइयों का नौकर हो गया हूं मैं समाज का नौकर नहीं हूं। और जो समाज पाठशाला में समाज का था उस में से कुछ तो दे दिया बाकी और अभीतक नहीं दिया था। रजिस्टर हाजरी रजिस्टर समाज, सायने की किताब, मेज कुरसी, खाट, किताब इत्यादि और समाज के सभासदों से रुपया करीब ५० पचास के उधार ले लिए थे उस में से भी किसी को एक कोड़ी नहीं दे गये। फिर इन को ईसाइयों ने बुलन्दशहर बदल दिया और वहां अब काम ईसाइयों के स्कूल में करते हैं। अगर मनुष्य अच्छा काम करने वाला होता तो इस को सरिश्ता तालीम क्यों अलग करता। उन को तो नारमल पास की हरवक्त जरूरत रहती है। यह शख्स बड़ा हृदय का काला है इस की बातों से आर्य्य भाईयों को सूचित कर देना मेरा काम है।

आप का कृपाभिलाषी दत्त शर्मा नं० २
प्रचारक का ग्राहक नं० १५७१
खुर्जा

निवेदन

आर्य्यसमाज सिकन्दरा राऊ के उपमन्त्री लिखते हैं:—

"मेरे अनुभव में आया है कि आर्य्य पुरुष भी एक दूसरे के पत्रोत्तर में बहुत देरी करते हैं; कभी २ तो देते भी नहीं यहां तक कि बहुतसी आर्य्य संस्थायें भी इससे वञ्चित नहीं, इस से सामाजिक कार्य्य में सामाजिक पुरुषों को बड़ी कठिनता होती है—मैं सर्व आर्य्यभ्राताओं, उपदेशकों व आर्य्य संस्था संचालकों, कार्य्यकर्ताओं से प्रार्थना करता हूं कि परस्पर पत्र व्यवहार में ऐसा नहीं होना चाहिए; और पत्र व्यवहार उचित रीति से करना चाहिये। उत्तराभिलाषियों को उत्तर अवश्य प्रदान करना चाहिये। दूसरी कठिनाई एक ओर कार्य्य संचालन में होती है, और वह यह कि यदि पत्र द्वारा किसी विषय में प्रार्थना की जावे तो शब्दों का कुछ मूल्य न किया जाय और कार्य्य में रुकावट आजाय—परन्तु यदि सेवामें स्वयं उपस्थित होकर खुशामद कीजाय तो मंजूरी होजाय। हम नहीं जानते कि क्या अब शब्द वे मूल्य नहीं रखते जो कि इनका वास्तव में है, क्या नकली विशेषणों से इनका भी आदर गया। आर्य्य भ्रातओं! स्वयंउपस्थिति में अधिक व्यर्थ खर्च बढ़ता है—पत्र व्यवहार को संभालना और शब्दों का मूल्य करना चाहिए"—

—:o:—

महा० विश्वम्भर जी झज्झर से लिखते हैं कि—

आर्य्यसमाज झज्झर ज़िला रोहतक का वार्षिकोत्सव ता० ७-८ ९ अप्रैल १९१६ को बड़े समारोह के साथ मनाया गया। जिसमें श्रीमान् मास्टर सुखराम जी बी० ए० मुख्याध्यापक गुरुकुल कांगड़ी, श्री ब्र० बुद्धदेव जी, ब्र० बलभद्र जी, ब्र० प्रियव्रत जी तथा ब्र. देवराज जी स्नातक विद्यालंकार, श्री स्वामी कृष्णानन्द जी तथा श्री पं० ब्रह्मानन्द जी आदि उपदेशक महोदयों के मनोहर व्याख्यानों व श्री ठाकुर प्रवीण सिंह जी आदि भजनीकों के उत्तम २ भजनों से श्रोतागणों पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा।

७ तारीख़ को उपरोक्त गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का नगर निवासियों की ओर से खुले दिल से स्वागत किया गया और बाजे व ध्वजा पताकाओं आदि के साथ फूलों की वर्षा होते हुवे नगर के प्रधान स्थानों से घूमते हुवे उत्सव मंडप में लाये गए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

८ तारीख़ को मौजूदा युद्ध में अंग्रेजी राजकी विजय और श्रीमान् राज-राजेश्वर सम्राट जार्ज पंचम महाराज व महाराणी मेरी तथा बड़े लाट महोदय लार्ड चेम्सफ़ोर्ड व लेडी चेम्सफ़ोर्ड की दीर्घ आयु के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई।

९ तारीख़ को अपील पर ९३) गुरुकुल कांगड़ी और १५) वेद प्रचार के लिये दान प्राप्त हुवा।

१० तारीख़ को खेड़ी खुम्मार तहसील झज्झर में आर्य्यसमाज का प्रचार कराया गया जहां लग भग २० यज्ञोपवीत संस्कार हुवे और आस पास के ग्रामीणों पर गुरुकुल का महत्व भली भांति प्रकट हो गया।

इसी शुभ अवसर पर श्री म० मुखराम जी ने आगामी वर्ष के आरम्भ से अपने जीवन के २ वर्ष शाखा गुरुकुल झज्झर के लिए (गुरुकुल कांगड़ी से दो वर्ष की फ़रलो लेकर) दान दिए और शाखा गुरुकुल झज्झर को चलाने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञा की।

आर्य्यसमाज झज्झर श्री पूज्यपाद महात्मा मुन्शीराम जी महाराज गवर्नर गुरुकुल कांगड़ी व श्रीमति आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर का धन्यवाद करती है जिन्हों ने हर प्रकार से इस उत्सव को कामयाब बनाने का यत्न किया।

—:०:—

संसार समाचार पर टिप्पणी।

चांद करण शारदा बी० ए० एल० एल बी० सहायक मन्त्री भारत वर्षीय आर्य्य कुमार परिषद् अजमेर से लिखते हैं कि:—भारतवर्षीय आर्यकुमार परिषद् के मंत्री श्रीमान् बाबू अलखसुरारी जी बी० ए०एल०एल० बी० वकील सहारनपुर अब जौनपुर के एडिशनलसुंसिफ नियुक्त हो गये हैं। आप के सहारनपुर में उपस्थित न रहने के कारण भारत वर्षीय आर्य्य कुमार परिषद् का दफ्तर अजमेर होगा। कृपा कर अब सर्व सज्जन परिषद् सम्बन्धी पत्र व्यवहार मेरे से करें।

आर्यसमाज समराला का वार्षिकोत्सव तारीख १२-१३-१४ मई सन् १९१६ को होगा। अच्छे २ पण्डित महात्मा और सन्यासी इस उत्सव को सुशोभित करेंगे और स्वामी सच्चिदानन्द जी की सेवा में प्रार्थना है कि वह जहां कहीं हों वहां से इस उत्सव पर पधार कर सुशोभित करें। नगर कीर्तन १२ मई की सायंकाल को होगा।

सर्व सज्जन धर्मानुरागी महाशयों की सेवामें प्रार्थना है कि आर्यसमाज भरतपुर का बारहवां वार्षिकोत्सव ता० २८,२९,३० अप्रैल सन् १९१६ ई. को होना निश्चित हुआ है उक्त अवसर पर बड़े २ विद्वान् महात्मा सन्यासी व भजनोपदेशक पधारेंगे, अतएव प्रार्थना है कि उक्त अवसर पर पधार कर धर्मोपदेशक से लाभ उठावें। मन्त्री

नोट—नगर कीर्तन ता० २८ अप्रैल को शामके ४ बजे से होना प्रारम्भ होगा और १ मईको स्त्री समाज अधिवेशन होगा।

म० ईश्वरचन्द मन्त्री आर्यसमाज डोईवाला जि० देहरादून से लिखते हैं कि—

मैं श्री पूज्यवर श्री महात्मा जी का धन्यवाद करता हूं जिन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर श्री पंडित वेदव्रत जी को संस्कारार्थ भेजने की कृपा की। म० ज्वालाप्रसाद जी के पुत्र का नामकरण संस्कार वेदव्रत जी ने कराया और आपका एक व्याख्यान भी आर्य्य समाज मंदिर डोई वाला में हुआ, प्रभाव अच्छा रहा ७) महाशय ज्वाला प्रसाद जी ने गुरुकुल को दान किया।

बड़े हर्ष की बात है कि श्री गोविन्दपुर में आर्य्यकुमार सभा महाशय अमर नाथ जी, महाशय हरीदत्तसिंह जी तथा रामचंद जी के प्रयत्न से खुल गई है।

सभासदों को इकट्ठा करने के लिये पहली बैठक ७ वैशाख को बैठी। २४ सभासद् बन गये तथा शीघ्र औरों के भी बनने की आशा है। उस दिन निश्चय हुआ कि सभा के अधिवेशन बुद्धवार को हुआ करें। सभाके अधिकारी भी नियत हुए जो कि इस प्रकार हैं।

प्रधान महाशय अमरनाथ जी।
उप प्रधान म० हरीदत्त सिंह जी।
मंत्री महाशय चिरंजी लाल जी
उपमन्त्री " नन्दलाल जी
कोषाध्यक्ष महा० रामचन्द जी
पुस्तकालयाध्यक्ष महा० कर्मचन्द जी

सभा की ओर से पुस्तकालय के खोलने का निश्चय हुआ जिस के लिये चन्दा लगाया गया। लाला मणीराम जी ने ४० रुपये एकत्र करने का प्रण किया तथा सभा सदों ने ६० रुपये एकत्र करने का निश्चय किया। अगले दिन ८ वैशाख बुधवार को सभा का अधिवेशन हुआ; भजन होने के पश्चात ब्रह्मचारी पूर्णदेव स्नातक विद्यालङ्कार ने सभासदों के कहने पर प्रार्थना की तथा उपदेश भी किया। सभासदों को हवन तथा संध्या के मन्त्र और उनका अर्थ याद करने के लिये बहुत प्रेरित किया तथा सारी कार्य्यवाही मातृ भाषा में लिखने के लिये जोर दिया जिसे सभासदों ने स्वीकार कर लिया है। सभा सदों की आज्ञा पर स्नातक जी ने प्रतिदिन रात को ८ से ९ तक सत्यार्थप्रकाश सुनाना स्वीकृत कर लिया है। स्नातक जी के जोर देने पर सभासदों ने मिलकर सन्ध्या करने का प्रण किया है। जिस का पालन ८ वैशाख की सायंकाल से प्रारम्भ हो गया है। सत्यार्थप्रकाश का ११ समुलास आरम्भ कर दिया गया है।

महा० खुशीराम लालकुआ दोलतपुर जि० नैनीताल से सूचना देते हैं कि:—

ता०११ मार्च को खुरई में शुद्धि की गई थी जिस का हाल ता: ५ अप्रैल के सद्धर्म-प्रचारक के व ता० १३ के आर्यमित्र में प्रकाशित हो चुका। अब हाल यह है कि ता० १५ अप्रैल को पहली तहकीकात हुई थी फिर दूसरी तहकीकात हुई ता० ४ मई १६ को मुकर्रर है। आशा है संयुक्तप्रान्त व पंजाब प्रतिनिधि सभा इस मुकद्दमे के वास्ते कोई प्रबन्ध करेगी। जो कोई सज्जन इस मुकद्दमे के लिये अलमोड़ा आये तो सारा हाल अलमोड़ा आर्यसमाज से मिलेगा।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
परीक्षा समिति।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की सम्वत् १९७४ की प्रथमा मध्यमा तथा उत्तमा परीक्षाओं के लिए नियम पाठ्य विषय तथा पाठ्य पुस्तकों में उचित संशोधन तथा परिवर्तन कर के विवरण पत्रिका शीघ्र प्रकाशित करना परीक्षा समिति ने निश्चय किया है। समस्त हिन्दी भाषा प्रेमियों से प्रार्थना है कि उन परीक्षाओं के नियमों तथा पाठ्य विषयों में परिवर्तन करना चाहें अथवा जो पुस्तकें निर्वाचित होना ठीक समझें तो अपने प्रस्ताव संयोजक परीक्षा समिति के पास शीघ्र भेजदें इस से परीक्षा समिति को इस कार्य में सहायता मिलेगी और जो २ त्रुटियां अभी देख पड़ती हैं न रहेंगी। मुझे आशा है समस्त हिन्दी भाषा भाषी तथा प्रेमी परीक्षा समिति को इस कार्य में अपनी विद्वता से लाभ उठाने का अवसर प्रदान करेंगे। प्रस्ताव यथा सम्भव शीघ्र आने चाहिएं जिस से विवरण पत्रिका मई मास में संशोधित हो जाय। पुस्तक लेखक तथा प्रकाशक जिन पुस्तकों को उक्त परीक्षाओं में नियत कराना चाहें उस की एक प्रति संयोजक परीक्षा समिति को भेजने की कृपा करें तो ठीक होगा।

ब्रजराज
संयोजक परीक्षा-समिति

—:०:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं।

संख्या	नाम पुस्तक दाम	
१.	संस्कृत प्रवेशका	।)
२.	संस्कृत साहित्य पाठावलिः द्वितीयो भागः	=)
३.	आर्य्यसुक्तिसुधा	।)
४.	काव्य लतिका	॥)
५.	संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्रीमहात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संगृहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं।	॥)
६.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र]	।॥)
७.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र]	॥=)
८.	संशोधित हितोपदेशः	।=)
९.	संशोधित रघुवंश [मूल]	।)
१०.	संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व	।)
११.	संशोधित नीतिशतकम्	=)
१.	अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण	।)
२.	अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्]	२)
३.	अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्]	१॥)
४.	धातु पाठः—[मूल] महर्षि पाणिनीकृत	।)
५.	नाटिकः	=॥)
६.	आख्यातिकः	॥)
७.	महाभाष्यम् अङ्कप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाकृतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम्	२॥)

आर्य्यभाषा

१.	आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र	।)
२.	आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र]	।-)

विज्ञान

१. भौतिकी [बैलफोर] स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)

२. रसायन—(विलयम एस, पर्नो की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)

इतिहास

१ भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A.M.R.A.S. कृत १।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की

रचित पुस्तकें

१.	वेद में वैद्य शास्त्र	-)॥
२.	वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत	।-)
३.	वैदिक देवताओं का स्वरूप उ० इन्द्र वेदालंकार द्वारा लिखित	।-)
४.	वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी	-)॥
५.	वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य	=)॥
६.	भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त	≡)॥
७.	मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार)	।)
८.	पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर)	≡)
९.	साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त	।)
१०	" " तृतीय " "	।)
११	" " चतुर्थ " "	।=)

On Arya Samaj.

1. The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A. ./1/6

2. Life of Swami Dayananda. (Natesan and Co.) ./4/.

3. Life of Swami Dyananda. with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) R. 1/./.

4. The life of Swami Dayananda by Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama Rs. 2/./.

5. The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. ./4/.

6 The Arya Samaj or a paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R.A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad. ./1/6

7. Arya Samaj, a Political Body being an Open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan-Mohan Seth M. A. ./4/.

8. Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji ./1/.

9. The Arya Samaj and its Detractors-a Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. Rs. 2/8/.

गुरुकुल के उपाध्यायों की

रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A. कृत)

१.	अर्थशास्त्र (धनविद्या)	१॥)
२.	अग्निहोत्र व्याख्या	।)
३.	वेदोक्त राज्य	॥)

(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)

४.	रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry)	३॥)
५.	विद्युत शास्त्र	२।)
६	वनस्पतिशास्त्र	२)

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

७.	उपनिषदों की भूमिका	।=)
	प्रिन्स बिस्मार्क	१॥)
८.	राष्ट्रों की उन्नति	।)
९	राष्ट्रीयता का मूलमन्त्र	=)
१०	विकासवाद The Theory of Evolution (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे)	२)
११	आर्यपथिक पं० लेखराम जी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीराम जी	१)
१२	महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत (लेखक ब्र० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार	।=)
१३.	मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष	॥)
१४.	आर्यों की विज्ञानिक उन्नति (लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०)	=)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला विजनौर

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Registered NO. A. 434

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | २५ वैशाख सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० ६ मई सन् १९१६ ई० | संख्या ४ भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतियां, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साढ़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चट्टर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—०—

आवश्यकता

"गौड़ महा सभा के लिए, कुछ संस्कृतज्ञ सदाचारी और हिन्दी साहित्य प्रेमी गौड़ ब्राह्मण उपदेशकों की ज़रूरत है। जो अनुभवी होने के अतिरिक्त सामाजिक सुधार के पक्षपाती हों। आर्य समाज अथवा सनातन धर्म के विरोधी न हों। यदि वे हारमोनियम बजाकर गाना जानते होंगे—या कुछ अंग्रेज़ी जानते होंगे, उन्हें तरजीह दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार मिलेगा। निवेदन पत्र शीघ्र आने चाहियें।"

रामचन्द्र बी. ए.
महामन्त्री गौड़ महासभा
जगाधरी

—:०:—

गवर्नमेंट से रजिष्ट्री किया हुआ
सुधासिन्धु
कफ खांसी दमा हैजा संग्रहणी अतिसार आदि की २४ वर्ष की परीक्षित दवा मूल्य फी शीशी आठ आना
सब दवा बेचने वालों के पास मिलता है
मंगाने का पता—सुखसंचारक कम्पनी मथुरा

ददगज केसरी
दाद को जड़ से उखड़ने वाली दवा कीमत फी शीशी ।)

मंगाने का पता—सुख संचारक कम्पनी मथुरा

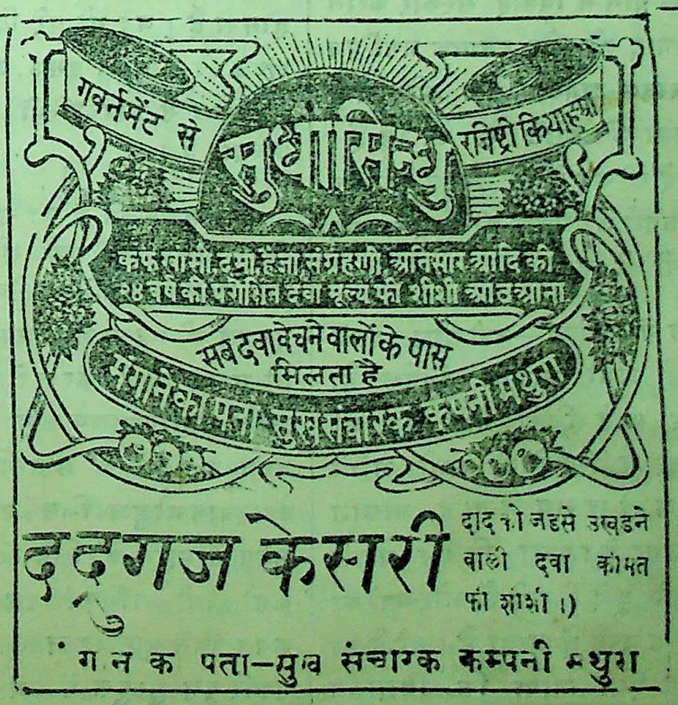

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गुरुकुल-समाचार

पुराने स्नातकों के समाचार—सुनने की इच्छा आर्य पुरुषों को रहती है। उन्हें मालूम है स्नातक भारद्वाज 'आयुर्वेद विशारद' बनने के पश्चात् डाक्टरी के प्रथम वर्ष की परीक्षा में लग गए थे परमेश्वर की कृपा और अपने पुरुषार्थ से वह १२५ परीक्षा देने वालों में से तो सरे नम्बर पर रहे।

स्नातक चन्द्रकेतु—इञ्जिनाय की स्टील कम्पनी के रस क्रियाभवन में ही कर्म करते हैं। एक मास का काम देखकर मैनेजर ने ६० डालर के स्थान में उन का वेतन ७० डालर कर दिया है। ७० डालर है लगभग बराबर २२५) रुपयों के।

स्नातक पं० हरिश्चन्द्र—का पत्र स्विजरलैण्ड के जेनिवा नगर से आया। अब वह लिखते हैं कि साप्ताहिक पत्र लिखा करेंगे।

उपाध्याय इन्द्र—ने इस सप्ताह में लुधियाना और अमृतसर के वार्षिकोत्सवों में व्याख्यान देने के अतिरिक्त २१ वैशाख को आर्य्यकुमार सभा लाहौर के निमन्त्रण पर आर्यप्रतिनिधि सभा के गुरुदत्त भवन में भी एक व्याख्यान दिया। लड़की में म० मुत्सद्दीलाल जी के यहां विवाह संस्कार कराने पं० वेदव्रत जी गए थे, फिर एक ग्राम में विवाह संस्कार कराने पं० रामचन्द्र जी और स्नातक जगत्प्रिय गए। स्नातक जयदेव झंग की आर्य्य कुमार सभा के जलसे पर जा रहे हैं। इस पढ़ाई के सत्र में भी गुरुकुल की ओर से वैदिकधर्म के प्रचार की कुछ न कुछ सेवा होती ही रहती है।

गुरुकुल में वायुमंडल—बड़ी शीघ्र बदलने वाला है। अभी आकाश निर्मल है, आंधी का कोई चिन्ह नहीं, मेघ भी दृष्टिगोचर नहीं होते तो अभी आंधी का बड़ा भारी तूफान आता है, आकाश में इधर उधर मेघमाला दिखाई पड़ती है। एक दो बूंदे गिरती हैं और वर्षा का दिखावा समाप्त हो जाता है। आँधी का एक झोंका ऐसा आया कि विद्यालय आश्रम में भण्डार के पास वाले मकानों की टीन की छत एक दम उड़ गई। थोड़े से टीन गुरुकुलोत्सव पर यात्रियों के लिये बनाये हुए कमरों के भी उड़ गये

दिन में इतनी गर्मी पड़ती है कि ताप परिमाण का पारा १०६° डिग्री तक चढ़ जाता है और रात्रा को अवस्था बिलकुल बदलजाती है। पारा गिरकर ६७° अंश तक आजाता है।

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य—रात्री और दिन में ताप परिमाण में एक दम इतना बड़ा भारी अन्तर पड़ जाने से सर्वथा ठीक नहीं रहसकता। इस लिये कुछ एक को साधारण ज्वर के अतिरिक्त एक ब्रह्मचारी को निमोनिया भी होगया था। वह बिलकुल स्वस्थ हो चुका है। परन्तु अब एक अन्य ब्रह्मचारी को एक दम कहीं शीत लगजाने से यही रोग होगया है उस को भली प्रकार चिकित्सा होरही है आशा है वह भी शीघ्र नीरोग होकर अपनी श्रेणी में चला जावेगा।

पहिले सप्ताह जिन तीन ब्रह्मचारियों को खसरा होगया था वह बिलकुल अच्छे होगये। जो श्रेणी इसी कारण आश्रम से पृथक बाहर रक्खी हुई थी वह भी अब आश्रम में आगई है। परन्तु इसका बीज अभी बिलकुल नाश नहीं हुआ। अब अन्य श्रेणी के दो तीन ब्रह्मचारियों को खसरा होगया है। वह भी पूरे दिन होजाने पर अच्छे हो जावेंगे। इसके अतिरिक्त अन्य सर्वप्रकार से ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है।

नये दर्शकों—में से गत सप्ताह सेन्ट्रल हिन्दू कालिज के मंत्री श्री भगवानदास एम. ए. गुरुकुल के अवलोकनार्थ पधारे। गुरुकुल के प्रबन्ध और अपने ढंग की एक ही संस्था को देखकर बड़े प्रभावित हुए। उनका महाविद्यालय तथा विद्यालय की उच्च श्रेणियों के ब्रह्मचारियों में एक व्याख्यान भी हुआ जिसमें उन्होंने वर्तमान समय में भारत के लिये शिक्षा प्रणाली कैसी होनी चाहिए? इस विषय पर कथन करते हुए यह जतलाया कि जिस प्रकार इस गुरुकुल में मातृभाषा द्वारा शिक्षा दीजाती है और यह संस्था स्वतंत्र है उसी प्रकार जब भारत वर्ष में आधुनिक शिक्षा प्रणालियों को छोड़कर शिक्षा विस्तार का प्रयत्न किया जावेगा तभी देश की कुछ उन्नति होसकेगी अन्यथा यह शिक्षा भारत के लिये सफल नहीं होसकती

गुरुकुल में सभायें—महाविद्यालय तथा विद्यालय की सभायें प्रति सप्ताह होती हैं। गत वर्ष मन्त्री के आलस्य से साहित्य परिषद् के अधिवेशन बहुत कम होसके और यह परिषद् प्रायः मृतसी हो चुकी थी। इस वर्ष नये मन्त्री के उत्साह से पुनः इस परिषद् में जान आगई है। इस सप्ताह में इस का द्वितीय अधिवेशन हुआ जिस में उपाध्याय बालकृष्ण जी ने वेद विषय पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया जिसमें पाश्चात्य विद्वानों की युक्तियों का खण्डन करते हुए यह दर्शाया कि चारों वेदों का आविर्भाव एक ही समय हुआ है न कि अथर्ववेद अन्य तीन वेदों से पृथक प्रकट हुआ है। उपरोक्त विषय पर व्याख्यान के पश्चात् वादविवाद भी हुआ जिससे विषय पर बहुत कुछ प्रकाश पड़ा।

धर्मसभा नियम पूर्वक अनध्याय के प्रातःकाल होती है जिस में भजन, प्रार्थना के पश्चात् श्री आचार्य्य जी का ब्रह्मचारियों तथा अन्य सज्जनों के प्रति उत्तमउपदेश होते हैं। इस प्रथा से ब्रह्मचारियों के चरित्र संगठन में बड़ी सहायता मिलती है।

—०—

ग्राहकों की सूचना।

जिन ग्राहकों को गतवर्ष के १३ सप्ताह प्रचारक न गया उन के नाम सम्वत् १९७३ (वर्तमान वर्ष) का वी.पी. करते हुए "आर्य्य पथिक लेखराम" नामी पुस्तक उसके बदले भेजी जाती है। कृपाकर के वी.पी अवश्य वसूल करलें।

प्रबन्धकर्त्ता, सद्धर्म्म प्रचारक

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आत्मदर्शनम्।

आत्मविचार की आवश्यकता— व्यक्तियों को ही नहीं, मनुष्य समाजों और जातियों को भी है। मैं अभी निउयार्क (अमेरिका) का एक मासिक पत्र पढ़ रहा था उस में अंग हीन सन्तान उत्पन्न करने से बचने के विषयक एक लेख देखा। लेखक ने विस्कान्सिन युनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर गुयर [Professor M. T. Guyer) की पुस्तक " Being Well Born. " में से उद्धरण देकर सिद्ध किया है कि अंग हीनों के विवाह से संसार में बहुत सी आपत्तियां फैलती हैं। प्रोफ़ेसर गुयर की सम्मति है अंग हीनों का विवाह ही नहीं होना चाहिए, परन्तु यदि ऐसा अभी न हो सके तो दो समान अंग हीनों का विवाह तो सर्वथा ही त्याज्य है। वह लिखते हैं कि गूंगे-बहरे यह दोष पैतृक दाय में ही पाते हैं और यदि ऐसों का परस्पर विवाह हो तो यह दोष उन की सन्तान के अन्दर तक पहुंच कर संसार में दुःख का बढ़ाने वाला होता है। उन की सम्मति में जो गूंगे-बहरों के जुदे शिक्षणालय हैं उन से इस समय बड़ी हानि हो रही है। एक ही अंग से वंचित स्त्री पुरुष जब परस्पर मिलते हैं तो स्वभावतः (अन्य सम्बन्ध न मिलने पर) उन का आपस में ही सम्बन्ध हो जाता है। इस से बहुत ही दुखदाई परिणाम निकलते हैं। इस लिए प्रोफ़ेसर महाशय ने इस विषय पर ही पुस्तक लिखा है जिस से विवाह विषय पर ठीक प्रकाश पड़ने और यथार्थ ज्ञान फैलने से लोग स्वयम् अयोग्य होते हुए विवाह रूपी विशेष पवित्र सम्बन्ध से बचें।

ऐसा मालूम होता है कि अमेरिका से स्वतन्त्रता-प्रिय और जाग्रत देश में भी अभी तक लोग अयोग्यों के विवाह को रोकने में प्रवृत्त नहीं होते इसी लिए प्रोफ़ेसर गुयर लिखते हैं:— "हम अपने अगड़दत्त, स्वस्थ उत्तम कोटि के मर्दों को सहस्रों और दश सहस्रों की संख्या में कटवाने के लिए युद्धक्षेत्र में भेजने से संकोच नहीं करते जब हमारे उस वहमी विचार का होता है जिसे जातीय संग्राम कहते अपमान हैं, परन्तु हम इस दैवदुर्विपाक को सर्वथा भूलजाते हैं, जब अयोग्यों को सन्तानोत्पत्ति से वञ्चित रखने के प्रस्ताव से उन की व्यक्तिक स्वतन्त्रता पर हस्तक्षेप को सुनकर हम आपेसे बाहर हो जाते हैं। "समाज ने कुछ मनुष्यों की स्वतन्त्रता छीनना आवश्यक समझा है, किन्तु उन के सम्बन्ध में हम स्वतन्त्रता छिनने की कोई शिकायत नहीं सुनते। परन्तु यदि उस आदमी को रोकने की आवश्यकता है जो कि एक धन के बटुए को वा एक घोड़े को चुरा लेगा तो इससे भी अधिक उस मनुष्य को रोकने की आवश्यकता है जो कि एक सारे परिवार के रक्त को विष-युक्त कर देगा वा पुश्तों तक एक सारे वंश को विष-मय बना देगा।

"इस समय की एक करुणा-मय आवश्यकता यह है कि [विवाह सम्बन्ध में] जानी हुई सचाइयों की शिक्षा देकर स्त्रियों में जागृति उत्पन्न की जाय। क्योंकि सब से अधिक हानि उन को पहुंचती है, और यदि एक बार उन को पता लगजाय तब और नहीं तो अपनी शारीरिक रक्षा के लिये वे अपने भावीवरों से उत्तम स्वास्थ्य का प्रमाणपत्र अवश्य मांगा करेंगी। इस के अतिरिक्त भावी सन्तानों के सुधार में, अन्त को स्त्रियां ही अन्तिम निर्णायक हैं क्योंकि उसी की हां वा ना पर विवाह का फ़ैसला होता है और इस लिए अधिकतः उसी के हाथ में यह निश्चय है कि भावी सन्तान में क्या गुण होने चाहिएं। सब से बढ़ कर युवा कुमारियों को यह अनुभव कर लेना चाहिए कि भ्रष्ट चरित्र वा दुराचारी युवक वास्तव में शारीरिक स्वास्थ्य का स्वामी नहीं होता और अपनी भावी पत्नी और सन्तान के लिए बड़ा भयानक सिद्ध होता है, चाहे उपन्यास उस का कैसा भी कल्पित, मनोरञ्जक चित्र क्यों न खींचें।"

अमेरिका की दशा से अधिक भयानक दशा आर्य्य जाति की है, परन्तु भेद इतना है कि उनको आंखें खुली हुई हैं और हम अपनी दशा पर कुछ विचार नहीं करते। जिस राज रोग का आज अमेरिका ने समझा है और उसकी चिकित्सा भी प्रारम्भ करदी है, उस को हमारे पूर्वज अनुभव से जानते थे और इस लिए ऐसी आश्रम व्यवस्था स्थापन की थी कि रोग सदा जाति से दूर रहता था। ब्रह्मचर्याश्रम की स्थिति ही इस लिए थी कि बालक और बालिकाओं के गृहस्थ के समय तक उस के योग्य बनाया जावे। जिन शक्तियों का आज आर्य्य जाति के बच्चे २० वर्ष की आयु तक ही सर्वथा नष्ट कर देते हैं, उन की रक्षा का पूरा प्रबन्ध गुरुकुलों में होता था। जो गिरता था उसे भी आचार्य जानता था, जो नहीं गिरता था उसे भी आचार्य पहिचानता था। आर्यों का राज शासन ही ऐसा था और जनता की सम्मिलित सम्मति ही ऐसी थी कि आचार्य की आज्ञा लिए विना जो युवक विवाह के पवित्र सम्बन्ध के लिए आतुर होता उसे कोई भी ब्रह्मचारिणी स्वीकार करने के लिए तय्यार नहीं होती थी। मनुभगवान् लिखते हैं:—

गुरुणानुमतः स्नात्वा समावृत्तो यथाविधि।
उद्वहेतद्विजो भार्यां सवर्णां लक्षणान्विताम्।

"गुरु की आज्ञा ले, स्नान और यथाविधि समावर्तन कर के ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य (द्विज) अपने वर्णानुकूल सुन्दर लक्षण युक्त कन्या से विवाह करे।"

गुरु की आज्ञा मन्वादि के समय में ऐसा दृढ़ बन्धन था जिस का मुक़ाबिला आज कल के कड़े से कड़े राज नियम नहीं कर सके।

आर्य्य जाति की कन्याओं में इस समय पूर्ण जागृति उत्पन्न करना कठिन है। जिन में अभी कठिनाई से एक लक्ष में से एक ऐसी विदुषी निकलेगी जो संस्कारों के उच्च तत्त्व को समझ सके, उन के द्वारा उस रोग का दूर करना कठिन है जो इस समय फैल रहा है। विषयासक्त हुए पुरुष स्त्रियों को केवल विषय भोग का साधन समझते हुए अन्धी, कानी,

CC0. Gurukul Kangri Collection

लूली, लङ्गड़ी, बहरी, गूङ्गी, सन्तान उत्पन्न कर रहे हैं, निष्कलङ्क बालक राज रोगों से पीड़ित हो रहे हैं और उन को इन रोगों में फंसाने वाले विषय का आनन्द भोग रहे हैं। कोई पूछने वाला नहीं। प्यास से व्याकुल बनिए का लड़का यदि चमार के घड़े से पानी पीले तो उसे बिरादरी से बहार निकाल दिया जाता है, पिता पैत्रिक सम्पत्ति से उसे वंचित कर देता है, परन्तु यदि वही लड़का हुक्के की ज़हर चढ़ा और शराब के कनस्तर लुंठा कर अपनी धर्म पत्नि को विषमय करने के अतिरिक्त पागल सन्तान उत्पन्न करता है तो उसे पैत्रिक सम्पत्ति से अलग करने का किसी को साहस नहीं होता।

भारत के नवयुवकों! आर्य्य जाति के पुत्रों! क्या तुमने कभी सोचा है कि तुम अपनी जातिको किस रसातल को पहुंचा रहे हो। विदेशियों से शिक्षा लेकर तुमने अपने श्रोत को ही भुला दिया है। तुम अपने आप को देश भक्त कहते हो, तुम भारत को माता कह कर पुकारते हो। वन्दे मातरम् के नाद से अन्तरिक्षको गुंजाना तुम्हारे कर्त्तव्य—परायणता की पराकाष्ठा है। परन्तु क्या तुमने कभी आन्दोलन भी किया है कि तुम्हारी वन्देमातरम् की पुकार से माता को कुछ शान्ति हुई वा नहीं। जितनी अङ्गहीन, निर्बल और रोग ग्रस्त सन्तान उत्पन्न हो रही है, माता का दुःख दिन रात उतना ही बढ़ा रहा है। यदि तुम्हारे अन्दर के नेत्र खुले होते और तुम माता के मलिन मुख को देख सकते, तो तुमको निश्चय होजाता कि माता की सन्तान का नाश करने वाले माता के पुत्र नहीं होसकते।

आर्य युवको! तनिक विचार करो कि क्या केवल शास्त्रार्थ वा विवाद में अन्य मतावलम्बियों को चुप कराना ही वैदिक धर्म की ठीक सेवा है। पुराने आचार्यों का अभाव है और नए आचार्यों के पास कुछ अधिकार नहीं। क्या तुम्हारी सम्मिलित शक्ति आर्य युवकों के लिए आचार्य नहीं बन सकती। मैं जानता हूं कि जब कोई आर्य युवक २४ वर्ष की आयु से पहले विवाह करता है तो तुम अपने अमल से उसे बतला देते हो कि उस ने बुरा काम किया है। मैं चाहता हूं कि तुम अपने संगठन को अधिक विस्तृत परन्तु दृढ़ करो। आर्यकुमार सभाओं में बूढ़े और गृहस्थ दखला देना छोड़दें। इन सभाओं के संगठन से एक भी अविवाहित युवक अलग न रह जाय। अपना मुख्य नियम यह बनावें कि मद्यादि मादक द्रव्यों [तमाखू सहित] का सेवन और मांस भक्षण करने वाले उनके सभासद न बनसकेंगे। यह सब प्रतिज्ञा करें कि उन में से कोई भी विवाह न करेगा जब तक कि विवाह से एक वर्ष पहले सर्व प्रकार के छोटे छोटे व्यसनों से भी मुक्त न होलेगा। तुम में से एक एक प्रतिज्ञा करलें कि यदि उसको कोई भी बीमारी होगी, [चाहे सब की आंखों से छिपी हुई ही क्यों न हो] तो वह विवाह करने से इनकार कर देगा। प्रमेह रोग में ग्रस्त, अन्य रोगों से पीड़ित स्वार्थ वश यह समझ लेते हैं कि विवाह से उनके ये रोग दूर होजायगे, परन्तु यह बड़ी भारी भूल है। यदि ऐसा होना सम्भव भी हो तो एक स्वस्थदेवी के शरीर और मन का नाश करना पिशाचत्व से निचला कर्म नहीं समझा जाना चाहिए। आर्य-युवको! यदि तुम्हारे नियमों के विरुद्ध कोई भी युवक (चाहे तुम्हारा सभासद हो वा नहीं) विवाह तो उससे प्लेग की तरह बचो। उसका ऐसा बहिष्कार करो कि वह फिर समाज में अगुआ बनकर न बैठ सके। यह पवित्र कर्त्तव्य है जिसके पालन से तुम भारत माता के ऋण से उऋण होसकते हो।

डाक्टर की आवश्यकता

डाक्टर सुखदेव के लिए २५ मई से ३ जून तक छुट्टी पर जाना अत्यन्तावश्यक है। यदि कोई डाक्टर महाशय इन १० दिनों के लिए आकर डाक्टर सुखदेव से चार्ज लेलेगें तो गुरुकुल का बड़ा उपकार करेगे। कुल एक दिन भी डाक्टर की सेवा से वंचित नहीं रहना चाहिये क्योंकि चिकित्सक की सेवा की कब आवश्यकता पड़े, यह कहा नहीं जासकता। जिन डाक्टर महाशय को अवकाश हो उनके लिए गुरुकुल के अवलोकन का बड़ा उत्तम अवसर है।

मुख्याधिष्ठाता, गुरुकुल

हा! ठाकुर हीरासिंह जी।

अत्यन्त शोक के साथ प्रकाशित किया जाता है कि ता० २३—४—१६ को श्री० ठाकुर हीरासिंह जी नसीराबाद आर्य समाज के प्रधान का देहान्त हो गया। इन की आयु इस समय ६८ वर्ष की थी। ये बहुत पुराने और दृढ़ आर्य समाजी थे। जब महर्षि दयानन्द सं० १८७८ में पं० शुकदेव प्रसाद जी के प्रयत्न से यहां आये थे तब ही हमारे ठाकुर साहब ने उन से उपनयन संस्कार करवाया था। सन् १८९५ में ये ब्रिगेड आफिस में थे तब बड़ा यत्न करके स्थानीय मजिस्ट्रेट से समाज बनवाने के लिए मुफ्त में जमीन ली और बा० पद्मचन्द जी तथा इनके उद्योग से समाज भवन बना जिस की कूंत इस समय चार हज़ार रुपये हैं। ये बड़े सभ्य वक्ता तथा स्पष्ट वक्ता थे और अपने नित्य—नैमित्तिक कर्मों को यथा विधि नियमानुसार करते थे। मृत्यु के दिन इन्हों ने कोई कष्ट न पाया, न बीमार रहे केवल छाती में साधारण सा दर्द रहा। उसी दिन रात्रि के ८ बजे तक समाज के अधिवेशन में उपस्थित थे, ९॥ बजे जाकर दूध पिया और ११॥ बजे देह छोड़ दिया।

ये महर्षि के जीवन चरित्र के साक्षियों में से एक थे सो इनके उठ जाने से समाज में एक विशेष पुरुष की कमी होगई। यहां की समाज को भी इस से बड़ा धक्का लगा। उनके सुयोग्य पुत्र उन का एक सुयोग्य स्मारक बनाने वाले हैं। परमात्मा मृतात्मा को सद्गति और उन के कुटुम्बियों को धैर्य प्रधान करे।

ग०रा० उवाना।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्मप्रचारक।

कन्या गुरुकुल के लिए

पुनः पुकार।

वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली से असन्तोष जब सीमा का उलंघन कर चुका था, उस समय ऋषि दयानन्द की प्रस्तावित प्राचीन शिक्षा प्रणाली की ओर आर्य-जनता का ध्यान खिंचा। प्रचारक ने अपने जन्म के वर्ष से ही शिक्षा विधि के संशोधन पर बल दिया। प्रान्तिक, साम्प्रदायिक तथा जातीय आदि—सर्व प्रकार के—पक्षपात की इतिश्री करना सद्धर्म प्रचारक की नीति का मूल सिद्धान्त रहा है, इस लिए आरम्भ से ही पुरुषों की शिक्षा के सुधार के साथ साथ स्त्री शिक्षा सुधार तथा उसकी उन्नति पर बल पूर्वक लिखा जाता रहा है। ऋषि दयानन्द के नाम का आश्रय लेकर जो ऐंग्लो वैदिक कालिज खोला गया था; जब उसमें भी आर्ष-ग्रन्थों की पढ़ाई का प्रबन्ध न देखा तथा उससे ब्रह्मचर्य के साधारण अङ्ग, अर्थात् बाल विवाह का रोकना, भी सिद्ध होता दृष्टिगोचर न हुआ तब पंजाब के आर्य-समाजों की प्रतिनिधि सभा ने गुरुकुल का स्कीम तैयार करने की आज्ञा मुझे दी।

उस पहली स्वीकार की हुई गुरुकुल नियमावली में प्रथम नियम के नीचे यह नोट है—"कन्याओं के लिए, जब संभव होगा, पृथक गुरुकुल स्थापित किया जायगा।" इस नोट के आधार पर मेरे पास सैंकड़ों पत्र आते रहे, बीसियों महानुभावों ने बड़े २ दान देने की इच्छाएं प्रकट कीं, चार पांच विदुषी देवियां भी काम करने को तय्यार हुईं, परंतु मुझ से एक बोझ हो कि नाई से उठ सकता था, इस लिए मैं ऐसे सब सज्जनों को कोई सन्तोष जनक उत्तर न देसका। कन्या गुरुकुल के लिए कई बार पुकार उठी और उस से लाभ उठाकर कई स्वार्थी पुरुषों तथा स्त्रियों ने अपना स्वार्थ सिद्ध किया। ऐसी अवस्था देखकर फिर भी धर्मात्मा स्त्री पुरुष मुझे प्रेरणा करते रहे। एक बार स्वर्गवासी चौधरी रणजीतसिंह, रईस धामपुर, ने दो ग्राम, जिनकी वार्षिक आय ४०,०००) से कम न थी, कन्या गुरुकुल के अर्पण करने का विचार प्रकट किया; परन्तु शर्त यह थी कि प्रबन्ध मेरे आधीन हो। कई महाशयों ने अपने बैंकों के हिसाबों में दिखाया कि उन्होंने सहस्रों रुपए भावी कन्या गुरुकुल के लिए रक्खे हुए हैं। डाक्टर सुखदेव ने १५००), अमृतकला छात्रवृत्ति स्थापन करने के लिए देते हुए सभा से यह शर्त स्वीकार कराई थी कि जब कन्या गुरुकुल स्थापित हो जाय तो यह छात्र वृत्ति उस संस्था में बदल दी जावे।

चिरकाल तक आ० प्र० सभा पंजाब तथा विश्वासपात्र आर्य पुरुषों की उपेक्षा को देखकर स्त्री शिक्षा के भक्त फिर चुप कर गये थे, परन्तु अब कुछ महीनों से फिर मेरे पास विविध प्रकार के पत्र इस विषय में आ रहे हैं। कई महाशय गुरुकुल का वृत्तान्त तथा नियमावली मंगाने के पश्चात् अपनी पुत्रियों को गुरुकुल में भरती कराने के लिए पत्र व्यवहार आरम्भ कर देते हैं, और जब मैं उत्तर में लिखता हूं कि कन्या गुरुकुल अब तक सभा ने नहीं खोला है तो वे सज्जन सभा को, उसकी सुस्ती पर, खूब आड़े हाथों लेते हैं। गत सप्ताह में ही एक महाशय ने यहां तक लिखा कि यदि एक वर्ष के अन्दर कन्या गुरुकुल खुलने की आशा हो तो वह किसी अन्य पाठशाला में अपनी पुत्री को शिक्षार्थ प्रविष्ट न करावेंगे।

कारण इस सारी हल चल का यह है कि लोग स्त्रीशिक्षा की प्रचलित विधि से असन्तुष्ट हैं। आश्चर्य यह है कि पुत्री पाठशालाओं के प्रबन्धकर्त्ता न इस असन्तोष की मीमांसा करते हैं और न उस के कारणों को हटाने की ओर उनका ध्यान खिंचता है। आर्य-समाजों की अवस्था पर अधिक आश्चर्य होता है जिन्होंने बड़ी कठिनाइयों के सामने होते हुए भी गुरुकुल विश्वविद्यालय को एक कृतकार्य परीक्षण सिद्ध कर दिखाया। बालकों के लिए गुरुकुल खोलते हुए सब से कठिन प्रश्न यह था कि बिना गवर्नमेंट का समाप-पत्र प्राप्त किए यहां के स्नातक अपना निर्वाह कैसे करेंगे, किन्तु पुत्रियों के विषय में यह प्रश्न उत्पन्न ही नहीं होता। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुत्रियों में पूरी कृतकार्यता हो सकती है। उन्हें न सरकारी नौकरी करनी है और नहीं उन सब को अपनी आजीविका कमाने की चिन्ता होगी; फिर मिडिल और एन्ट्रेन्स की चक्की में पीस कर उनके स्वास्थ्य और उनके कोमल स्त्री भाव का नाश करना बुद्धिमानों का काम नहीं।

कन्या महाविद्यालय जालन्धर के अतिरिक्त पंजाब की सब पुत्री पाठशालाएं सरकारी शिक्षा विभाग की पाठविधि पर चल रही हैं, जिसने हमारे बालकों का पहले से ही नाश कर छोड़ा है। शेष रहा कन्यामहाविद्यालय, सो उसके चालक थोड़े से परिवर्तन के साथ बड़ी सुगमता से स्त्री शिक्षा की अवस्था को बहुत ऊंचा लेजा सकते हैं। परन्तु उनकी मनोवृत्ति ही ऐसी बन गई है कि वहां किसी शेष उन्नति की आशा नहीं पड़ती। आर्यों की एक बड़ी पुत्री पाठशाला देहरादून में श्री पं० ज्योतिःस्वरूप जी की सहायता से चल रही है, परन्तु उसमें अधिकतः ईसाई अध्यापिकाएं हैं और आश्रम में पुत्रियों के रहन सहन में भी भेद है। श्रीमानों की पुत्रियां सैकड़ों की पोशाकें पहिन सकी हैं और बहुमूल्य भोजन पासकी हैं, निर्धनों की लड़कियां कभी कभी साधारण वस्तुओं को भी प्राप्त नहीं कर सकतीं। सिक्ख कन्या महाविद्यालय फीरोज़पुर को देखकर भी मुझे निराश ही होना पड़ा था। उस संस्था की सम्मतिपुस्तक में मैंने लिखा था—"मुझे कार्तिक कृष्णा त्रयोदशी (३नवम्बर) के दिन सिक्ख कन्यामहाविद्यालय देखने

CC0. Gurukul Kangri Collection

का सौभाग्य प्राप्त हुआ। श्री भाई तख़्त-सिंह जी के पुरुषार्थ का यह परिणाम प्रत्येक भारतवासी की प्रीति का पात्र है। स्थान स्वास्थ्य के लिये उत्तम है, आश्रम मन्दिर बड़ा विशाल युक्ति से अनुकूल बन रहा है और वर्त्तमान आश्रम का प्रबन्ध भी सर्वतया उत्तम है। भण्डार गृह के प्रबन्ध से मैंने कुछ विशेष शिक्षा ली। आश्रम में २२५ के लगभग कन्यायें हैं जो स्वयम् अपने सर्वकार्य्य कर लेती हैं। परमेश्वर इन पुत्रियों को भारत का प्राचीन नारी धर्म्म पालन के योग्य बनावे—यह मेरा हार्दिक आशीर्वाद है।

शिक्षक पुरुष अधिक हैं, किन्तु यह त्रुटि हमारे देश के सब कन्या विद्यालयों में देखी जाती है। मैं अत्यन्त प्रसन्न होता यदि अन्य उत्तम प्रबन्धों के साथ शिक्षा का माध्यम (Medium of instruction) मातृ-भाषा को बना देखता, जिससे हमारी पुत्रियां उस कष्ट से बच जातीं जो हमारे बालकों को सरकारी आठशालाओं में होता है। मैं समझता हूं कि यदि इस कन्या महाविद्यालय के प्रबन्धकर्त्ता शिक्षा-विधि को बदल कर अपनी मातृ भाषा (गुरुमुखी) को ही माध्यम बनालेंगे तो गवर्नमेन्ट भी उनको पूर्ण सहायता देगी, क्योंकि इस विचार के साथ इस समय की गवर्नमेन्ट आफ इन्डिया, सहमत प्रतीत होती है। श्री भाई तख़्तसिंह जी निरोग होकर चिरकाल तक अपने लगाये पौदे को फलता फूलता देखें यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है।"

आर्य कन्या महाविद्यालय जालन्धर और सिक्ख कन्या महाविद्यालय फ़ीरोज़पुर—ये दो ही संस्थाएं हैं जिनसे स्त्री शिक्षा के उत्तम परिणाम निकलने की आशा है। परन्तु दोनों में ही त्रुटियां हैं। सिक्ख विद्यालय में तो मिडिल और एन्ट्रेन्स की चक्की चल रही है, और जब तक यह चक्की चलेगी तब तक किसी विशेष लाभ की आशा नहीं। दोनों में स्त्रियों की अपेक्षा पुरुष अध्यापक अधिक हैं, परन्तु फिर भी जालन्धर विद्यालय की आचार्या और उपाचार्या विदुषी देवियां होने के कारण संस्कृत तथा मातृ-भाषा की पढ़ाई तथा पुत्रियों की रक्षा का प्रबन्ध अधिक उत्तम है। दूसरी ओर सिक्ख विद्यालय के आश्रम का प्रबन्ध बहुत ही उत्तम है। पुत्रियां ही भोजन बनाने, खिलाने और चौके का सारा काम करती हैं। पुत्रियों में विनय भाव अधिक है और आर्य गृहों के काम काज में भी वे निपुण होंगी। इस प्रकार दोनों संस्थाओं में कुछ न कुछ कमी है जिसे पूरा करना उन के संचालकों का कर्त्तव्य है।

परन्तु फिर भी प्रश्न वही बना रहता है कि क्या हमारे देश की वर्तमान दशा का सुधार इन संस्थाओं से हो सकेगा?

एक भाई आज कल की पाठशालाओं का चित्र अपने अनुभवानुसार इस प्रकार खींचते हैं:— "प्रत्येक नगर में आर्य समाज की ओर से वा अन्य कन्यापाठशाला हिन्दू बालिकाओं के लिए खुली हुई हैं और खुल रही हैं, परन्तु शोक है कि अब तक न शिक्षा प्रणाली का प्रकार और न शिक्षा की पुस्तकें आर्यसमाज ने वा किसी दूसरी हिन्दू संस्था ने तय्यार कराई हैं। इधर उधर योंही भटक रहे हैं। शिक्षा दिवाजी दी जाती है, ऐसी नहीं जो हिन्दुओं की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली और गृहस्थ में धनाढ्य और निर्धन सब परिवारों को लाभदायक होने वाली हो। मैं आप से अपील करता हूं कि आप अपनी बलवति वाणी और लेखनी के द्वारा लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित करें। बड़ा शोक है कि हम लोग स्त्री शिक्षा को अपने हाथ में लेने और अपनी आवश्यकताओं के अनुकूल बनाने की चिन्ता नहीं करते। इस में न सरकार की पालिसी का विरोध है और न पुत्रियों के सरकारी नौकरी पाने या वकीलादि बनने का प्रश्न कठिनाई उत्पन्न करता है।

यदि हम स्त्री शिक्षा का प्रबन्ध तथा पाठ-विधि सन्तोष जनक बना सकें तो हमारा यह दावा भी सुना जा सकेगा कि मर्दों की तालीम हम अपने हाथ में लेसकें। इस समय शिक्षा पाने वाली पुत्रियों के सामने आदर्श ठीक नहीं रक्खा जाता। मैंने स्वयम् अपने कानों से सुना है कि आपस में बात चीत करते हुए दुकानदारों, ठेकेदारों इत्यादि को घृणित बतलाती हैं और विवाह वकीलों, सरकारी नौकरों और डाक्टरों आदि से कराना उत्तम समझती हैं। दस्तकारी काम जो सिखाया जाता है वह निरर्थक और व्यय का बढ़ाने वाला है। गरीब घरों को लाभ पहुंचाने वाला नहीं होता।"

यह दोष प्रायः सभी पाठशालाओं में है कि साधारण घर के कपड़े सीने के स्थान में पुत्रियों को बहुमूल्य कशीदे के काम में अधिक लगाया जाता है। घर की सादीरोटी बनाने की जगह मुरब्बे, आचार, मिठाई बनाना अधिक सिखाया जाता है। और कन्या विद्यालयों के उत्सवों पर ये मुरब्बे, मिठाई और कशीदे के काम बिक भी, बड़े महंगे मूल्य पर, जाते हैं। परन्तु इस से पुत्रियों का अपना और आर्य गृहस्थ का सुधार कुछ नहीं होता।

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब ने कुछ आर्य भाईयों की प्रेरणापर एक उपसभा स्त्री शिक्षा सम्बन्धी पाठविधि तय्यार करने के लिए बनाई थी परन्तु जब बड़ी संस्थाओं के सञ्चालकों ने उस को सहायता न दी तो वह उपसभा क्या कर सक्ती थी। मेरी सम्मति में लिखने वा बोलने से इस समय कुछ नहीं हो सकेगा। सैकड़ों कन्या पाठशालाओं का एकमत होना कठिन है। कन्या महाविद्यालय यह कार्य बड़ी सुगमता से कर सक्ता था, परन्तु उस के संचालकों की एक विशेष नीति बन चुकी है जिस से हिलना उन के लिए कठिन है। तब यह कर्त्तव्य आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का है कि एक आदर्श कन्या शिक्षणालय खोल कर लोगों को पीछे लगा लेवें। जब १७ वर्ष पहले गुरुकुल की पाठविधि सर्वसाधारण के सामने रक्खी गई थी तो इस के सर्वप्रिय होने का किसे स्वप्न भी था, परन्तु

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आज सनातनी और असनातनी—यहाँ तक कि ईसाई भी सभी गुरुकुल खोल रहे हैं। यदि अब कन्या गुरुकुल का यज्ञ आर्यप्रतिनिधिसभा आरम्भ कर देवे तो कुछ काल के पश्चात् सारे भारत वर्ष में उसी की पाठविधि प्रचलित होजावेगी।

उच्च शिक्षा का आश्रय गुरुकुल ही है।

पंजाब युनिवर्सिटी ने प्रस्तावित सनातन धर्म कालिज लाहौर का अपने साथ सम्बन्ध करना अस्वीकार किया। सनातन धर्म के साथ ईसाई लार्ड चेम्सफोर्ड का नाम जोड़ना भी इस को न बचा सका। दीवान नत्थूलसेन गुजरांवाले में कृष्ण कालिज खोलना चाहते थे, उस की भी यही गति हुई। ख़ालिसा हाई स्कूल गुजरांवाला छलांग मार कर कालिज बनना चाहता था, उस को भी सफलता न हुई। उधर वर्तमान कालिजों में प्रवेश बन्द और इधर नए कालिजों के खुलने में ऐसी रुकावट! क्या सचमुच ऐङ्गलों इन्डियन राज कर्मचारी समझते हैं कि इस प्रकार उच्च शिक्षा का द्वार भारत निवासियों के लिए बन्द हो जायगा।

अभी मध्य प्रदेश की गवर्नमेन्ट ने ५) के स्थान में कालिज की फ़ीस ७॥) कर दी है। चिन्ह ऐसे ही हैं जिन से ज्ञात होता है कि वृटिश इन्डियन गवर्नमेन्ट के सारथी हिन्दोस्तानियों को उच्चशिक्षा से वञ्चित रखने में ही अपना भला समझते हैं। यह उनकी भूल है परन्तु हम उनपर आक्षेप नहीं करसक्ते। उन्होंने अङ्गेज़ी के स्कूल और कालेज अपनी अर्थसिद्धि के लिए खोले थे। उनका मतलब निकल चुका और इस लिए वे शिक्षा का विस्तृत प्रचार करने के स्थान में अपने लिए ही योग्य कर्मचारी उत्पन्न करने का काम अधिक लाभदायक समझते हैं। परन्तु क्या हम को इस पर चुप रहना चाहिए?

एङ्गलो इन्डियन महाशयों का भला इस में है कि भारत निवासी उच्च शिक्षा से वञ्चित रहें, और भारत निवासियों का भला इसमें है कि भारत का प्रत्येक पुत्र और उस की प्रत्येक पुत्री सुशिक्षिता हो। तब दोनों मिलकर काम नहीं कर सक्ते। हिन्दूयुनिवर्सिटी के संचालकों ने कितनी भूलकी है, यह उन्हें आगे चल कर ज्ञात होगा। यदि ईश्वरीय चार्टर पर सन्तुष्ट रह कर श्री आनरेब्ल पं० मदन मोहन मालवीय जी मनुष्यों के चार्टर के पीछे न दौड़ते तो आज अपनी जमा किए रुपए से २०नएहाईस्कूलों को Residential system (आश्रम—निवास—विधि) पर चला सक्ते और साथही अपना जुदा विश्वविद्यालय स्थापन करने के योग्य भी हो जाते। जो आर्य्य भाई गुरुकुल विश्वविद्यालय की अधिक शाखाएं खुलने पर चिन्तित होते हैं उन्हें विचारना चाहिए कि यदि स्कूलों से वंचित रहे लाखों में से सैकड़ों को भी वे साक्षर बना कर उन्हें साधारण ज्ञान प्रदान कर सकेंगे तो स्वदेश तथा मनुष्य जाति की कितनी भलाई हो सकेगी। मेरी सम्मति में जहां आर्य्यसमाज को गुरुकुल की नई शाखाएं खोलने वालों का उत्साह भङ्ग नहीं करना चाहिए वहां हिन्दू विश्वविद्यालय के सञ्चालकों को भी जाति की आवश्यकताओं को भुलाना नहीं चाहिए।

मुसलमान भी युनिवर्सिटी के पीछे भाग रहे हैं परन्तु क्या युनिवर्सिटी इस समय मृगतृष्णा से बढ़कर कुछ अस्तित्व रखती है। एक भी हाईस्कूल का अपने साथ हिन्दूयुनिवर्सिटी सम्बन्ध नहीं जोड़ सक्ती, गवर्नमेन्ट की आज्ञा बिना एक भी अधिक विद्यार्थी को पढ़ा न सकेगी, प्रथम कालिज का प्रिन्सिपल अङ्गेज़ नियत करने की अभी से बात चीत चल रही है। तब कहां तक यह युनिवर्सिटी हिन्दू बनेगी, जैसी प्रतिज्ञा कि श्री मालवीय जी ने मुम्बई में की थी, इस पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है।

आर्य्य पुरुषो! आर्य्यसमाज के बिना, आर्य्य जाति की सब संस्थाएं सोई हुई हैं। आर्य्य जाति की उच्च शिक्षाका भविष्य तुम्हारे हाथ में है। तब आलस्य छोड़ कर तुम्हें अपने कर्त्तव्यपालन में लगजाना चाहिए। गुरुकुल की स्वामिनी सभा का वृहदाधिवेशन समीप आरहा है। १५ ज्येष्ट (२७ मई) को गुरुकुल का बजट पेश होगा। हिसाब करने पर पता लगा है कि जो ४,७०००) रोकथन गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर मिला उसमें से केवल ३५०००) ही व्यय हो सक्ता है। बाकी धन विशेष कार्यों वा स्थिर कोष का है। इस हिसाब से ४२ सहस्त्र और हो तो वर्ष का काम चले। क्या इस में से आधा घाटा सभा के सभासद् पूरा नहीं कर सक्ते? जैसे मैंने पहले लिखा था मैं यह दृश्य देखना चाहता हूं कि सभा के सभ्य उसी समय मेज़ पर २० नहीं तो १५ सहस्त्र की ढेरी अवश्य लगादें।

कुंवर महेन्द्र प्रताप जी कहां है?

मुझे बड़ा शोक है कि कुंवरमहेन्द्रप्रताप जी के विषय में जो कुछ मैंने लिखा था उससे उनके सम्बन्धियों तथा मित्रों को कष्ट हुआ है। मेरे लेख से कहीं नहीं टपकता कि मैं कुंवर महेन्द्रप्रताप के विषय में गवर्नमेन्ट के मर्मज्ञों की बतलाई हुई कहानी से सहमत हूं। कुंवर महेन्द्रप्रताप से मुझे कई बार मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह ऐसे शुद्ध हृदय और सच्चे पुरुष हैं कि अपने आप को कुछ और प्रसिद्ध करना उन के आचार के सर्वथा विरुद्ध है। परन्तु यह सच है कि वृटिश इन्डियन गवर्नमेन्ट को लन्डन के स्काट लेन्डयार्ड (लन्डन की डिटेक्टिव पुलिस का केन्द्र स्थान) से यही सूचना दी गई है जो कि मैं पहले लिख चुका हूं। आगे चलकर मैं कुंवर महेन्द्रप्रताप जी के भाई कुंवर बलदेव सिंह जी का पत्र ज्यों का त्यों देता हूं और उस के साथ ही पादरी स्काट के पत्र के

CC0. Gurukul Kangri Collection

पूरे उद्धरण प्रेम महाविद्यालय के महाशय नारायणदास जी के अङ्गरेज़ी लेख से देता हूं जो उन्हों ने साप्ताहिक पत्र "प्रेम" में छपवाया है। म० नारायण दास जी ने कष्ट में व्याकुल होकर बहुत से अनुचित कटाक्ष पं० हरिश्चन्द्र पर किए हैं, उन पर एक शब्द भी लिखने की आवश्यकता नहीं क्योंकि दुःख में आदमी क्या नहीं लिखदेता। गवनमेन्ट के मर्मज्ञों के नाम बतलाना मेरी शक्ति में नहीं, परन्तु जो मैंने लिखा था उसकी यथार्थता की परीक्षा हो सकती है। कुं० महेन्द्र प्रताप जी के सम्बन्धी श्रीमान् वाइसराय की से बातें एक प्रार्थना पत्र भेज कर पूछें कि क्या Scotland yard ने उन की गवर्नमेन्ट को वह समाचार दिया है वा नहीं जो मैंने लिखा है, और यदि नहीं लिखा तो पादरी स्काट के लेख को प्रामाणिक मान कर क्यों न जर्मनी के सिविलियन कैदी के बदले श्रीमान् कुंवर महेन्द्रप्रताप जी को मंगा लिया जाय, जैसा कि अन्य हिन्दोस्तानी रईसों का छुटकारा कराया गया है। श्री कुंवर बलदेवसिंह जी रईस मुरसां लिखते हैं:—

"श्रीमान् सम्पादक सद्धर्मप्रचारक। आप के पत्र २७ चैत्र सम्वत् १९७२ की संख्या में पढ़कर मुझे बड़ा खेद हुआ कि जो आप यह लिखते हैं कि मुझे कुछ गवर्नमेन्ट के मर्मज्ञों ने यह बतलाया है कि महेन्द्रप्रताप अपने आप को बड़ा महाराजा प्रसिद्ध करके बर्लिन चला गया है और केसर के स्टाफ में उसको जगह मिल गई है। क्या आप कृपा कर के यह प्रकट करेंगे कि वे कौनसे गवर्नमेन्ट के मर्मज्ञ हैं जिससे आपको यह पता चला है। क्योंकि मुझे तो अभी तक ऐसे गवर्नमेन्ट के मर्मज्ञों से मिलने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ बल्कि जहां तक मेरे कोशिश करने व दर्याफ्त करने से पता चल सका यही मालूम हुआ है कि किसी भी शख़्स को कोई भी बात उन के सम्बन्ध में ठीक मालूम नहीं है। लण्डन टाइम्स में जो नोटिस छपाया था उस के उत्तर में—
Rev: W.E. Scott, Chaplain of Geneva वरेन्ड डब्लू० ई० स्काट चेपलेन जनीवा ता० मार्च सन् १९१६ ई० की जो चिट्ठी आई है उस से भी कोई बात सिवाय इन के इतने कयास के कि शायद वह दुश्मन के साथ किसी तरह पकड़कर कैद होगये हों, पतानहीं चलता। उक्त पत्र का कुछ अंश यहां उद्धृत किया जाता है।

"I feel quite sure that Mr. Pratap has somehow wandered into Germany and become interned. He seemed to have such a simple trusting gentle nature that he would not suspect or understand the difficulties."

मुझे इस बात पर बिल्कुल यकीन नहीं आता कि कुं० महेन्द्रप्रताप कभी कोई अनुचित कास कर सके थे—वे भारत वर्ष में जब तक रहे बराबर अपनी सरकार के शुभचिन्तक और पूर्ण राजभक्त थे। जिस समय वे विलायत की यात्रा को देश से चले थे बराबर उनके विचार वैसेही थे—इन सब बातों से मुझे विश्वास नहीं होता कि कभी उनसे ऐसा बर्त्ताव हुआ होवे इस लिये मैं आप से आशा रखता हूं कि आप इस विषय में कुछ विशेष प्रकाश डालें। क्योंकि कैसर के स्टाफ में उनको जगह मिलना मेरी समझ में बिल्कुल नहीं आता—यदि उनके द्वारा कोई अनुचित कार्य हुआ हो तो मुझे सख़्त अफ़सोस होगा—और वह अपने नेक और बद के जुम्मेदार खुद होंगे—मैं या मेरा कुटम्ब उनका साथी कभी न होगा। कृपा कर मेरे इस निवेदन को सद्धर्म प्रचारक पत्र में प्रकाशित कर दीजिये मशकूर होऊंगा।"

इस के साथ ही महाशय नारायण दास के छापे हुए पादरी Scott के पत्र में से उद्धरण नीचे दिए जाते हैं। नवम्बर १९१५ में कुंवर महेन्द्रप्रताप की ढूंढ के लिए नं लिख निकला, जिस पर ७ दिसम्बर को रेवेरेन्ड स्काट ने एक पत्र लिखा जिसमें से श्री नारायणदास जी ने नीचे का उद्धरण दिया है:—

"I was startled to read some days ago your advertisement in the 'Times' asking for news of Mr. Pratap, because I was in the same hotel with him in Geneva last winter.....I was interested in him and made his acquaintance..... my wife and I are naturally much concerned about Mr. Pratap..... we strongly advised Mr. Pratap not to go to Basle which is at the German frontier. We were afraid that he might without knowing it wander across the frontier into Germany, where he would at once be taken prisoner and be interned; if not worse as he might be treated as a spy".

इस पत्र के अन पर पादरी साहेब के साथ पत्रव्यवहार आरम्भ हुआ ज्ञात होता है क्योंकि उन के अन्तिम पत्र से फिर म० नारायणदास ने कुछ उद्धरण दिए हैं:—

"I beg to acknowledge your letter of 15th February last (No. 3513). I do not think it would be of the slightest use, but only waste of money, to employ any local person 'to collect information from place to place' in the endeavour to trace your lost friend Mr. Pratap..... the state of affairs now in Europe is difficult for one, accustomed to the freedom of India, to understand .... There was a Mr. Chandra with Mr. Pratap last year here. Mr. Pratap seemed much distressed that Mr. Chandra desired to part company with him. Mr. Chandra, I believe, went to America but returned to Geneva, and I saw him here and informed him of the advertisement in the Times about Mr. Pratap being missing. He seemed to take it quite quietly; I wonder if he could give any information. I feel quite sure that Mr. Pratap has somehow wandered in Germany and become interned. He seemed to have such a simple trusting gentle nature that he would not suspect or understand the difficulties."

ऊपर के पत्र से ज्ञात होगा कि जब पादरी साहेब ने पं० हरिश्चन्द्र से पूछा तो उन्होंने इस पर विशेष बात चीत न की। इस से ज्ञात होता है कि पं० हरिश्चन्द्र ने स्काटलेन्ड यार्ड से जान लिया था कि कुंवर जी जर्मनी में हैं और इस लिए पादरी साहेब से विशेष बात चीत उचित न समझी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पादरी स्काट के पत्र से यह ज्ञात होता है कि कुंवर महेन्द्र प्रताप जर्मनी की सरहद की ओर गए थे। लन्दन से आए दो भद्र-पुरुषों ने मुझे बतलाया था कि पं० हरिश्चन्द्र को पुलिस ने वह पत्र दिखाए जो कुं० महेन्द्र प्रताप ने अन्य महाशयों को लिखे थे और जिनमें पं० हरिश्चन्द्र को अपना प्राइवेट सेक्रेटरी लिखा था। मालूम यह होता है कि भारतवर्ष से कुं० महेन्द्र प्रताप की खोज होने पर लन्दन पुलिस ने अपने जर्मनी की सरहद के गुप्तचरों को हिलाया। उनको जर्मनों ने चकमा देकर खुश का खुश प्रकट किया। सम्भव यही है कि कुंवर महेन्द्र प्रताप जर्मनों के हाथ में कैदी हैं और जर्मनों ने अपने मित्रों को काबू रखने के लिए यह प्रसिद्ध किया है कि इनके पास एक बड़ा महाराजा आ गया है।

कुंवर महेन्द्र प्रताप का दान अपना आप ही दृष्टान्त है। जिस कुंवर महेन्द्र प्रताप ने अपनी जायदाद का बड़ा भाग निष्काम भाव से बड़े परोपकार के काम में व्यय कर दिया, जिसने देहरादून में डेरा ही इसलिए लगाया था कि निर्बलों के उद्धार में अपनी आय का बड़ा भाग व्यय करें उनको शत्रु के पंजे से छुड़ाना बृटिश गवर्नमेन्ट का कर्त्तव्य है। हमें आशा रखनी चाहिए कि भारतवर्ष के राज्य प्रतिनिधि सहृदय इस विषय में महा मन्त्री श्री मिस्टर ऐस्क्विथ को प्रेरित करेंगे।

लाहौर आर्य समाज की दशा

डेराइस्माइलखां जाते हुए मैं कुछ घन्टों लाहौर ठहरा था। उतने ही समय में लाहौर आ० स० की शोचनीय दशा का बहुत कुछ पता लगा था; फिर साप्ताहिक 'प्रकाश' द्वारा शेष सब समाचार विदित हुआ। डेराइस्माइलखां पहुंच कर मैंने लाहौर से उलटा दृश्य देखा। लाहौर में राय ठाकुरदत्त अपने प्रधानपद की रक्षा के लिए पुलिस बुलाते हैं, १३४ सभासदों के विरुद्ध होते हुए केवल ६० सभासदों की सम्मतियों [जिन में से शायद आधों से अधिक का वार्षिक चन्दा भी राय साहेब ने ही अदा किया है] से प्रधान बनते हैं और आठ दिनों तक समाज मन्दिर में पुलिस के सिपाहियों के लिए तमाखू के धुएं से हवन होता है। दूसरी ओर डेराइस्माइलखां में गवर्नमेन्ट से राय साहेब की उपाधि प्राप्त लाहौर वाले राय साहेब के भतीजे श्री बेलीराम जी ७ मास से अपना चन्दा नहीं देते। यह क्यों? वहां सब सम्मति से उनको फिर प्रधान बनाने का विचार है और बेलीराम जी प्रधान बनना नहीं चाहते। इसी लिए चन्दा नहीं देते। चन्दा मांगने पर कहते हैं कि चुनाव हो चुकने के दूसरे दिन चन्दा ले लेना। कैसा आश्चर्य जनक भेद है! जो यश और कीर्ति और अधिकार को धक्के देते हैं, ये सब उसके पीछे भागे फिरते हैं; परन्तु जो इनके पीछे भागे उसके ये समीप नहीं आते। लोकोक्ति सच्ची है—*'बिन मांगे मोती मिले मांगी मिले न भीख।'* राय ठाकुरदत्त से मैं एक बार फिर प्रार्थना करता हूं कि अपनी अवस्था पर विचार करें। जिस चुनाव पर आप पहले पहल लाहौर आ० स० के प्रधान बने थे उस से २५ दिनों पहले श्री रोशन लाल जी के मकान पर आप मुझ से किसी योगी तथा उपनिषद् के मर्मज्ञ का पता पूछते थे। कहां वह शुद्ध भाव और कहां प्रवृत्ति मार्ग में फंसावट! एक भूल कर के आप भूल ही करते चले गए। अपनी भूल मानने में लज्जा नहीं होनी चाहिए। अपनी भूल को स्वीकार करने के लिए बड़ा विशाल हृदय चाहिए। कुसङ्ग ने किस को ख़राब नहीं किया। जिस की सङ्गत ने आप के यश और आत्मिक शान्ति का नाश कर दिया है उस पर यह लोकोक्ति चरितार्थ होती है कि—*"ऐसे आदमी के चाहे वृत कभी हरे नहीं हुए"* परमेश्वर आपकी बुद्धि को सत्य और शान्ति के मार्ग में चलावे यह आपके सब आर्य्य भाइयों को प्रार्थना करनी चाहिए। श्री रायठाकुर दत्त की आत्म शुद्धी के लिए शुभ प्रार्थना करते हुए भी आर्य्य पुरुषों को अपने कर्त्तव्य को नहीं भूलना चाहिए। पुलिस द्वारा आर्य्यसमाज का चुनाव कराने का जो पाप रायठाकुर दत्त और उनके साथियों ने किया है उस का प्रायश्चित करने का अवसर उन्हें अवश्य मिलना चाहिए। परन्तु साथ ही इस पाप कर्म का दण्ड भी उन्हें समाज की ओर से प्राप्त होना चाहिए। यह काम तो आर्य समाजों का वह है जो उन्होंने आरम्भ कर दिया है। इस अनुचित काम पर सभी आर्य्य समाजों को शोक प्रकट करने के प्रस्ताव स्वीकार करने चाहिएं, और साथ ही इस के आर्य प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना करनी चाहिए कि जब लाहौर आर्य्य समाज मन्दिर की रजिस्ट्री उसके नाम है तो यह निश्चय करना उसका कर्त्तव्य है कि मन्दिर किसके अधिकार में रहे।

आर्य्य प्रतिनिधि सभा का वार्षिकाधिवेशन २७, २८ मई, १९१६ को होगा। यदि सात सभासदों के हस्ताक्षरों सहित नीचे का विषय श्री प्रधान के पास शीघ्र पहुंच जावे तो लाहौर में शान्ति शीघ्र स्थापित हो सकती है:—"श्री प्रधान जी, कृपा करके निम्न-लिखित प्रस्ताव २७ मई १९१६ के अधिवेशन के लिए रखदें—लाहौर आर्य-समाज की शोचनीय दशा को दूर करने के लिए आवश्यक है कि दोनों दलों की शिकायतों को मालूम करके उनका अनुसन्धान किया जाय, इसलिए निम्न लिखित महाशयों की उपसभा नियत की जाती है जो सारे मामले का अन्वेषण करके कल दोपहर तक रिपोर्ट देजिस पर यह सभा अन्तिम निर्णय करेगी। (१) राय मक्खनलाल बी. ए. (२) डा० परमानन्द (३) ला० वज़ीरचन्द्र बी. ए. (४) लाला समरथसिंह लुधियाना (५) ला० दुर्गादास एम. ए. (६) पं० निहालचन्द्र (दिल्ली) और (७) लाला लक्ष्मीनारायण बैरिस्टर।

यदि कोई पक्ष इनके सामने अपनी साक्षी न पेश करेगा तो उपसभा स्वयं उसपक्ष की ओर से आन्दोलन करेगी।"

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

यदि सात सभासदों के हस्ताक्षर हो कर ऊपर का प्रस्ताव, वा इसी भाव से युक्त कोई प्रस्ताव सभा में पहुंच जावे तो प्रधान महाशय का कर्त्तव्य होगा कि राय ठाकुरदत्त और महाशय कृष्ण को अपनी अपनी लेखबद्ध वा मौखिक साक्षी तय्यार रखने को लिखदें और इसके साथ यह भी नियम करदें कि बृहदाधिवेशन में इस पर विचार हो जाने पर इस झगड़े में फंसे हुए लाहौर आर्य-समाज के कोई भी सभासद सम्मति नहीं दे सकेंगे।

आर्य-समाज में अन्तिम न्यायालय आर्य्य प्रतिनिधि सभा है। यदि उसके शासन को मानने से कोई व्यक्ति इनकार करे तो आर्य-समाजों की सम्मिलित शक्ति को उसे संगठन को हानि पहुंचाने में अशक्त बना देना चाहिए।

संसार द्वन्द्व क्षेत्र है

पण्डित इन्द्र वेदालंकार, विद्यावाचस्पति के विवाह की बधाई में १५० से अधिक पत्र आए हैं जिनके जुदे जुदे उत्तर देने में असमर्थ होने के कारण सब महाशयों को प्रचारक द्वारा धन्यवाद देता हूं। जिस प्रकार समाचार पत्रों में चारों ओर से बधाई मिलते हुए एक पौराणिक पत्र ने कुछ विष उगला था जिस को एक दो ईर्ष्यालु आर्यसामाजिक पत्रों ने संभाल कर यत्न से फैलाने का प्रयत्न किया इसी प्रकार जहां १५० से अधिक महाशयों ने गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था की क्रियात्मिक स्थापना को देख प्रसन्नता प्रकट की वहां कांगड़े के ज़िले से निम्न लिखित पत्र (बिना लेखक का नाम दिए) पहुंचा है। "आपने जो इन्द्र का विवाह पं० विष्णु शर्मा की पुत्री से किया है सो ब्राह्मण पुत्री से खत्री का विवाह होना किस शास्त्र में है। आप इस का उत्तर सद्धर्मप्रचारक में छपा देवें।"

यह महाशय प्रचारक के पढ़ने वाले प्रतीत होते हैं, तब क्या अब तक उन्होंने यह नहीं समझा कि जन्म से सब शूद्र होते हैं, संस्कारों से द्विज बनते हैं। जन्म तो वर्ण का निर्णायक है ही नहीं।

मेरे लिए इस प्रकार की शंकाएं नई नहीं। जब मैंने ब्राह्मण कुलोत्पन्न सुमित्रादेवी का विवाह डाक्टर गुरुदत्त के साथ कराया था उस समय आर्य समाज की ब्राह्मन पार्टी ने गालियों की बौछाड़ झाड़ दी थी। फिर जब मेरी पुत्री अमृतकला का विवाह, जाति बंधन तोड़ कर, डाक्टर सुखदेव के साथ करना निश्चय हुआ तब कुछ आर्यसमाज के रत्नों ने आस्मानसर पर उठा लिया था और समाज की कान्फ्रेन्स तक में मुझ पर आक्षेप किए थे जिस में उन्हें लज्जित होना पड़ा। फिर जब उसी प्रकार जाति बंधन तोड़ कर पं० हरिश्चन्द्र का विवाह हुआ तब जहां समयके परिवर्तन के कारण चारों ओर से आनन्द मङ्गल और आशिर्वाद की ध्वनि आई वहां एक विरोधी दल ने गन्द अखेरते हुए 'चिरकीन की रूह को भी मात' कर दिया था। तब इस समय भी जो घृणित चाल एक पौराणिक और एक ईर्ष्यालु आर्य सामाजिक पत्र ने चली है उस पर कुछ आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

जो लोग अपनी भूल से मुझे अपना शत्रु वा विरोधी समझ बैठे हैं उन्हें स्मरण रहना चाहिए कि मैंने जिन सुधारों को धर्मानुसार मनुष्यमात्र के हित के लिए आवश्यक समझा है उन्हें सारे संसार के विरोध पर भी मैं रोकना नहीं जानता। विरुद्ध लेखों के छर्रों की बौछाड़ कभी मेरे उत्साह को दबा नहीं सकी। मैं जिस को सत्य समझता हूं, समय आने पर उस के अनुसार न चलने को पाप समझता हूं। जो आज गाली दे रहे हैं कल वही सत्य के आगे शिर झुकाएंगे, यह मेरा विश्वास है।

—०—

राजा चन्द्रापीड़।

(लेखक-स्नातक जयदेव विद्यालङ्कार)

इतिहास वास्तव में एक खान है जिस में नानाप्रकार की मणियें खोदते जाओ और निकलनी बन्द न होंगी। प्राचीन अर्वाचीन दोनों इतिहासों ने अपने को ऐसी खान बनाने में किसी प्रकार की न्यूनता नहीं रक्खी है। हम पाठकों को एक मनोहर रत्न इतिहास खानि से निकालकर दिखाना चाहते हैं। काश्मीर का प्राचीन इतिहास भी वास्तव में भारत के प्राचीन संस्कृतसाहित्य का एक बड़ा भारी भाग है। रामायण और महाभारत के बाद यदि किसी का पद आसकता है तो श्री कल्याण कवि का ही आसकता है। इसकी कविता देख कर वास्तव में आश्चर्य का पारावार नहीं रहता। इस कविप्रकाण्डने बड़े साहससे काश्मीर का इतिहास निबन्धन किया है। इसी कल्हण कविकृत राजतरङ्गिणी इतिहास के आकर में से हम पाठकों को एक राजरत्न के दर्शन कराने का प्रयत्न करते हैं।

गोनन्द सब से प्रथम राजा हुआ। उसी वंश में दुर्लभ नाम का बड़ा प्रतापी राजा हुआ, इसी का प्रसिद्ध नाम प्रतापादित्य पड़ा। इसी राजा ने बहुत से नगर तथा बस्तियां बसाईं। इसी के नाम पर समुद्र एक नगर प्रतापपुर नाम का भी बसा था। बड़े २ दूर देश से व्यापारी लोग आकर वहां बसने तथा बड़ा विस्तृत व्यापार करने लगे। वहाँ रोहित नाम के देश से आये नोण नाम के एक व्यापारी ने नोण मठ करके एक बड़ा मठस्थापित किया। इस मठ के कारण वह व्यापारी बड़ा ही प्रसिद्ध होगया। राजा ने भी उस का बड़ा आदर सत्कार किया। राजा ने उसे बड़े आदर सत्कार से एक दिन अपने घर राजोचित ठाठ बाठ से निमन्त्रित किया। प्रातःकाल होते ही राजा ने उस से पूछा 'सेठ जी कुशल तो हो?" उस प्रसिद्ध व्यापारी ने झुंझलाकर कहा कि "रात भर जलते हुए दीवे के उठते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हुए दुर्गन्धियुक्त काजल के कारण मेरे शिर में पीड़ा हो रही है।" राजा ने इस बात पर ध्यान न दिया। अस्तु, क्रमशः मित्रता गाढ़ी होती गई। राजा भी उस के घर पर आने जाने लगा। एक रात को उस ने देखा कि सेठ जी का सारा घर रत्नदीपकों से जगमगाया करता है। ऐसी विस्मय-जनक समृद्धि देख कर राजा चकित होगया। एक बार दोचार दिन के लिए उस के घरमें राजा प्रतापादित्य ने वास किया।

सेठ नोण जो की धर्मपत्नी बहुत सुन्दर थी उस का नाम नरेन्द्रप्रभा था। राजा की मनोभिलाषा इस सेठानी पर पड़ी दोनों ही की अन्तः इच्छा से शनैः २ प्रेम बन्ध गया। परन्तु राजा अपने पद की महत्ता के कारण सहसा अकार्य नहीं कर सकता था। राजा अन्त को अपनी राजधानी में लौट आया। राजा सोचने लगा कि कष्ट की बात है कि मेरे मानसरूपी वाटिका में ये राग का विस्तृत वृक्ष खड़ा होगया है। इस राग ने सम्पूर्ण चित्त को जीतकर विवेकादि सब को अर्धचन्द्र देदिया; परन्तु मुझे कुलीन राजा होना चाहिए, मैं सदाचार कैसे उल्लंघन करूं। जहां राजा ही दूसरों की स्त्रियों को चुरालिया करे तो फिर लोक-नीति मर्यादा को भंग करने वाले को कौन दण्ड दें। इस प्रकार सोचकर वह राजा न तो वणिए की सुन्दरी स्त्री को भुला सकता था और नाहीं सदाचार मर्यादा को ही। परन्तु सततचिन्ता से राजा की देह वैराग्य और काम दोनों के एकान्तर आक्रमणों के कारण बहुत क्षीण हो गयी। राजा की इस दशावस्था का वृत्तान्त कर्ण परम्परा से वणिए के कानों तक गया।

सेठ जी ने राजा से एकान्त में कहा —"हा तेरी ये दशावस्था हो गयी है। परन्तु तुम अब भी धन का अनुरोध करते हो, प्राणों के संकट में तो मनुष्य क्या नहीं कर डालता। जिन तपस्वियों के वचनों तथा मन्तव्यों का विद्वान लोग धर्म को निर्णय के लिए आश्रय लिया करते हैं उन का भी वंश प्राय संकर में नष्ट होजाता है।

यश का ख्याल रख कर प्राण छोड़ना ठीक नहीं, मरते आदमियों के लिए कीर्ति भी रसायन का काम नहीं दे सकती है। मेरे योग्य सेवा के कहने में कुछ संकोच न करो। आप के लिए मेरे प्राण भी तुच्छ हैं तो ये भोग साधन इन्द्रीय विषयों की तो गणना ही क्या। यदि इतने पर भी आप मेरी पत्नी को न लेना चाहें तो न लें पर अपनी नर्त्तकी बना लीजिए।" इतना कहने पर राजा ने सेठ की स्त्री को स्वीकार कर लिया। उस ने ही श्री नरेन्द्रेश्वर नामक शिव की स्थापना करादी।

बाद को इसी के छः पुत्र हुए जिन के नाम चन्द्रापीड़, तारापीड़, अविमुक्तापीड़, वज्रादित्य, पद्मादित्य, ललितादित्य, थे।

इस प्रकार ५० वर्ष पृथिवी को सानन्द शासन करके राजा दुर्लभ स्वर्गगत हुए। उस के बाद हमारे चरित्रनायक चन्द्रापीड़ राजसिंहासन पर आरूढ़ हुए।

यह राजा वास्तव में प्रजा के पालन में तत्पर पुण्य कीर्ति राज चूड़ामणि धर्मावतार ही हुआ। इस की लक्ष्मी का उपयोग सम्पूर्ण प्रजा करती थी परन्तु अन्त होना असम्भव था।

इस धर्मिष्ठ राजा ने त्रिभुवन स्वामी का मन्दिर बनवाने की आज्ञा बड़े एंजिनीयर शिल्पियों को दी। त्रिभुवन स्वामी का अद्भुत मन्दिर बनाने के लिये राजा की आज्ञा पाकर शिल्पी लोगों ने उचित स्थान मापना प्रारम्भ किया, उसी आहाते में एक चमार का खेत और कुटिया भी आपड़ती थी। विचारे चमार को यह बात देखकर कि मैं गरीब मारा जाऊंगा, मेरी छोटीसी कुटिया तोड़-डाली जायगी; इस ममता से ऐंजिनीयरों का मापना भी न सहा और उन को अपना आहाता मन्दिर के लिए देने से इन्कार कर दिया। शिल्पियों ने जाकर राजा से चमार का सब हठ कह सुनाया। राजा ने गम्भीरता से कहा कि इस में तुम लोग ही दोषी हो चमार नहीं। तुम बिना सोच विचार करने वाले शिल्पियों को धिक्कार है जिन्हों ने बिना उसके पूछे उसकी भूमि में मापना आदि प्रारम्भ कर दिया। बस मन्दिर बनना बन्द करो या और कहीं बनाओ दूसरे की भूमि छीन कर पुण्य को कलङ्क नहीं लगना चाहिए। जो सद् और असत् को देखते हैं और विवेक करते हैं वे ही यदि न्याय मार्ग को छोड़ कर चलेंगे तो न्याय पर कौन चलेगा। ऐसा सुनकर मन्त्री लोग चले गये परन्तु फिर भी किसी न किसी प्रकार से उस चमार को मनाने लगे। चमार किसी प्रकार भी न माना। आखिरकार चमार की ओर से राजा के पास एक दूत गया।

दूत ने राजसभा में आकर कहा कि "महाराज की जय हो! वह चमार कहता है कि मुझ अस्पृश्य की यदि राजसभा में गति नहीं हो सकती तो न सही परन्तु मैं आपके दर्शन करना चाहता हूं।"

राजाने स्वयं उसके घर पर पधारना स्वीकार किया। राजा ने पूछा कि "क्यों भाई तुम मन्दिर बनाने में क्यों विघ्न करते हो, यदि तुम्हें अपना गृह बहुत प्यारा और धन धान्य युक्त लगता है तो इस से भी अधिक धन सम्पत्ति तुम हमसे लेलो"।

इसी प्रकार राजाने बार बार चमार से कहा और अन्त में राजा हारकर चुपहो रहा। राजा को चुपहुवे देख चमार सविनय हाथ जोड़कर बोला—"देव! महाराज के चरणों में इस तुच्छ चर्मकार की एक प्रार्थना है। इस के सुनाते हुवे आप गर्व के वश न होवें। मैं कुत्ते से भी नीच नहीं हूं, राम से बड़ा कोई दूसरा राजा नहीं हुआ। फिर भी ये मन्त्री आदि राजपुरुष आपके और मेरे बात चीत सुनकर क्यों मत्सर करते हैं, और जलते

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं। पैदा हुवे जन्तु का क्षणभङ्गुर कार्य अहंकार और स्वार्थदो खूंटो से बन्धा रहता है। अहंकार की मात्रा कड़े कङ्कण हारादि से भूषित देह में जिस प्रकार आप श्रीमानों को होती है उसी प्रकार मैले कुचैले वस्त्र पहन तुच्छ शरीर में हम लोगों को भी होती है। महाराज की जिस प्रकार सुधा धवल प्रासादों से हास्य करने वाली राजधानी है उस प्रकार घड़े के "टूटे मुख से बने रोशनदान वाली झोंपड़ी मेरी भी है। माता की तरह जन्म से लेकर ये हमारे सुख दुःखों की साक्षि है इस को आज टूट फूट कर धूलमें लेटती हुई हम कैसे देख सकते हैं। घर के खुस जाने का दुःख वही राजा कह सकता है जिस का राज सुख गया है, या वही देवता कह सकता है जिस को स्वर्ग से गिरादिया हो। हां यदि आप मेरे घर के पास आकर स्वयम् उस झोपड़ी को मांगे तो मैं सदाचार का अनुरोध कर वह झोपड़ी आपको दान कर सकता हूं।" ऐसा उत्तर सुनकर राजा उसके घर पर आया और कुटी मांग ली। चमार ने हाथ जोड़ कर कहा हे राजन् धर्म के वश हो कर तुम मेरे आधीन हुवे हो सो भी ठीक ही है। क्योंकि जिस प्रकार प्राचीन काल में धर्म के रूपमें कुंजेने महाराज युधिष्ठिर की धर्मपरीक्षा ली थी वैसे मैंने भी ली है। तेरे ऐसी ही सदा धर्म श्रद्धा बढ़ती रहे और प्रजा का हित हो।

इस प्रकार इस राजा चन्द्रापीड़ने धर्मपूर्वक त्रिभुवन स्वामी के वंश का स्थापन किया। और धर्म पूर्वक ही राज्य भी किया। इसी प्रकार इस न्याय शील राजा ने अपनी प्रजा को पिता के तुल्य पाला जिसको हम आगामी अंक में दिखावेंगे।

[शेषफिर]

—:o:—

प्राप्त पत्र।

साप्ताहिक प्रार्थना

ईश्वर प्रार्थना— आर्य्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों का एक विशेष अंग बन गया है—परन्तु बहुत से सज्जन जो कि इस विशेष कार्य्य को प्रति सप्ताह समाजों में करते हैं वह इसका उद्देश्य न समझते हुए प्रार्थना ऐसे ढंग से करते हैं कि प्रार्थना का आशय पूरा नहीं होता—

बूट पहिन कर या कुर्सी पर बैठ कर ईश्वर उपासना दूषित नहीं है—परन्तु इस में देश काल आदि का विचार कर लेना चाहिये—

जब अमरीका में वैदिक मन्दरों में प्रार्थना होगी—परमात्मा वह समय शीघ्र लावें—तो बूट कुर्सी और पतलून को रोकना उचित न होगा,

परन्तु भारत वर्ष में इस प्रकार की उपासना न केवल व्यर्थ है बल्कि दूषित भी है।

अधिक ऊंचे ऊंचे स्वर से या शीघ्र २ बोलने से अन्य उपस्थित सज्जनों का ध्यान हम अपने साथ नहीं रख सकते और साप्ताहिक उपासना का मुख्य आशय ही यह है कि उस समय की उपासना गो कि एक मनुष्य के ज़ीरये हो रही है परन्तु वह सब की ओर से होती है—इस लिये ऐसे ढंग पर हो कि जिसमें बोलने वाला तमाम के हृदयों को अपने साथ रख सके।

यह उद्देश्य पूर्ण नहीं होता यदि बोलने वाला बहुत आहिस्ता २ या शब्दों तथा वाक्यों को तोड़कर बोले—ऐसा होने से दूसरे सभासद् पिछले वाक्य और अगले वाक्य के सम्बन्ध को स्थिर नहीं रख सकते—

संस्कृत शब्दों या फ़ारसी शब्दों की भरमार भी उचित नहीं दीखती—भारतीय मन्दिरों में आर्य्यभाषा भली दीखती है।

"मैं" शब्द का प्रयोग तो सर्वथा अनुचित है—क्योंकि उपासना तो सर्व उपस्थित सज्जनों तथा देवियों की ओर से ही करनी होती है।

थोड़े में अपने आशय को इस प्रकार रख सकता हूं कि प्रार्थना ऐसे ढंग पर हो कि जिसमें सर्व सभासद् एक चित हो कर कल्याण स्वरूप शिव के संमुख अपने हृदय को रख सकें—ओम्

दीनानाथ दोसाज

—:o:—

अपने देश की चीज़ें बरतो

भारत की दरिद्रता का यह भी एक भारी कारण है कि यहां के कपड़े के कारखाने बिल्कुल नष्ट हो गए हैं। और हर एक वस्तु हम विदेशियों की तैय्यार की हुई इस्तेमाल करते हैं। इसलिए भारत का बहुत सा रुपया विदेश की ओर खिंचा चला जा रहा है और यहां के लोग आजीविका रहित होने के कारण भूखों मर रहे हैं। इस का प्रतिकार यह है कि न केवल विद्या सम्बन्धी वरन् क्रियात्मिक कार्यवाही भी आरम्भ कर देनी चाहिए। इस में शक नहीं कि विदेश के लोग ज़्यादा धनी और कारीगर हैं इस लिए वह चीजें अच्छी और सस्ती तैय्यार कर सकते हैं। और कुछ समय तक इस मुल्क में बनी हुई चीजें विदेश में बनी हुई चीजों के साथ मूल्य में मुकाबला नहीं कर सकती। यदि हिन्दुस्तानी इस बात का दृढ़ निश्चय करलें कि हम केवल हिंदुस्तान की बनी हुई इस्तेमाल करेंगे तो वह समय बहुत दूर न होगा जब कि इस देश में हर प्रकार के कारखाने कायम होकर उन्नति करेंगे और फिर यहां की बनी हुई चीजें विदेश की चीजों की तरह अच्छी और सस्ती होंगी। अब हिन्दुस्तान के कई जिलों ढाका, भागलपुर अहमदाबाद और लुधियाना में ऐसे अच्छे कपड़े तैयार होते हैं कि योरोपियन कपड़े के साथ मुकाबला कर सकते हैं। परन्तु जब तक हिंद के लोग इस में उस लेडी की नकल न करेंगे जिस ने एक निहायत ही गर्म और तैय्यार चाय का प्याला पीने से इस

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिए इन्कार कर दिया कि वह उस की अपने मुल्क की बोई हुई चाय से नहीं बनाई गई थी, तब तक इस देश के कारखाने अच्छी तरह से नहीं चल सकते क्योंकि जरूरत ही हर प्रकार की उन्नति की जड़ है। आशा है देश के हितचिन्तक अपने देश की बनी हुई चीजें इस्तेमाल करेंगे। ईश्वर भी उन की सहायता करता है जो प्रथम अपनी सहायता आप करते हैं। आशा है कि आप अवश्य इस पर अमल करेंगे।

आप का शुभचिन्तक
टहलराम गंगाराम
ज़मींदार डेरा स्माइलखां

शङ्का

(१) जब यह सिद्धान्त है कि मुक्त जीव बहुत कल्प पर्य्यंत आनंद भोगता है और फिर आदि सृष्टी में जन्म लेता है, तो जो जीव मध्य सृष्टि में मुक्त होते हैं और जिन का कल्प का समय महाप्रलय के मध्य में उक्त सिद्धान्तानुसार व्यतीत होजाता है तो वह जीव महा प्रलय का बाकी समय किस अवस्था में व्यतीत करता है। क्या उस समय में जीव का प्रकृति से सम्बन्ध रहता है? अगर रहता है तो बिना शरीर के या शरीर से। अगर शरीर के द्वारा संबन्ध होता है तो वह कौनसा शरीर होता है?

(२) आदि सृष्टि में जो जीव जन्म लेते हैं क्या उन सबको ज्ञान अवस्था एक सी होती है या उनके ज्ञान में कमी बेशी भी होती है अगर कमी बेशी होती है, तो उसका क्या कारण होता है?

(३) क्या मुक्ती अवस्था में शक्ति रूप शरीर के जीव के साथ होने से जीव अपने उस ज्ञान को जिस के द्वारा उसने मुक्ति प्राप्त की है बढ़ा नहीं सकता। अगर बढ़ा सकता है तो मुक्ती से लौटने में क्या कारण है क्योंकि जब उस का वह नैमित्तिक ज्ञान करा ही जावेगा तो उस को बढ़ा कर मुक्ती की आयु को भी बढ़ा लेवेगा।

यदि आप इन शंकाओं का समाधान करने का समय न निकाल सकें तो प्रकाशित कर देवें आशा है कोई और महाशय उत्तर देवेंगे

लालचन्द मेहरा गृहक नं० २८२

डाक्टर सुन्दरलाल C. I. E.—हाईकोर्ट प्रयाग के स्थानापन्न जज्ज दो मास सात दिवस के लिए बने हैं। हिन्दू युनिवर्सिटी के आर्य वाइस चांसलर भी बनाए गए हैं यदि हिन्दू युनिवर्सिटी में कुछ स्वतन्त्रता से सारा समय देकर, काम करना हो तो श्री पं० सुन्दरलाल जी को हाईकोर्ट का स्थिर जज नहीं बनना चाहिए।

संयुक्तप्रान्त के प्रतिनिधि वाइसराय की काउन्सल में—श्री पं० मदनमोहन मालवीय और डाक्टर तेजबहादुर सपड़ू भेजे गए हैं। इन से बढ़कर और कोई चुनाव हो नहीं सकता था। डाक्टर सपड़ू से बड़ी आशाएं हैं, परन्तु मालवीय जी तथा डाक्टर सपड़ू का काउन्सल में प्रवेश केवल शक्तियों का नाश ही रहेगा जब तक कि बहु पक्षानुसार इनके प्रस्तावों को गवर्नमेन्ट पार्टी गिराती रहेगी।

विश्वव्यापी युद्ध में अपनी जय के लिए—सरकार ऐङ्गलो इन्डियनों की भरती कर रही है। बड़ा जोश फैला हुआ है। लाहौर से ९५ नाम लिखाए गए। लेडियां ज़िम्मा ले रही हैं कि औरों को तयार करेंगी। परन्तु एक बात गवर्नमेन्ट को सोचलेना चाहिए। उधर जनरल टावनसेन्ड को मेसोपुटामिया में ९००० सेना सहित तुर्कों के सामने थियार रखने पड़े और इधर सरहद्द पर डाकुओं ने हिन्दुओं को लूट लिया। कई मार डाले, सैकड़ों घायल किए और बीसियां स्त्री पुरुष को उठा कर ले गए। ऐसे समय में यदि ऐङ्गलो इन्डियनों को भरती कर के फ्रांस में भेजा गया तो यहां रक्षा कौन करेगा। सरकार को अब दुविधा में नहीं रहना चाहिए। प्रथम तो सरहद्द के सब हिन्दुओं को हथियार दे देने चाहिए और दूसरे सरहद्दी ज़िलों की रक्षा के लिए हिन्दोस्तानी महाराजाओं की सेनाएं आगे भेजनी चाहिएं। सरहद्द की सारी रक्षा राजपूत और सिक्ख महाराजाओं की फौजें भली प्रकार कर सकती हैं।

रायज़ादा भक्तराम का पंजाब काउन्सल में प्रवेश अधिकतः मुसलमान भाइयों की सम्मतिओं से हुआ है, यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। आशा करनी चाहिए कि जहां हमारे मुसलमान भाई वोट देकर रायज़ादा साहब को अपना ऋणी न समझ लेंगे वहां रायज़ादा भक्तराम भी उन विशाल हृदय हिन्दुओं का अनुकरण न करेंगे जो हिन्दुओं की सचाई का भी साथ न देते हुए अपने आप को निर्पक्ष सिद्ध करने का यत्न किया करते हैं यदि अपने पूर्व चरित्रानुसार रायज़ादा भक्तराम जो स्वतन्त्रता लिए हुए काम करेंगे तो वह हिन्दू मुसलमानों में सच्ची सन्धि स्थापन करने के साधन बनेंगे।

संस्कृत की उन्नति के लिए श्री महाराजाधिराज बर्दवान की संरक्षा में एक सभा स्थापन हुई जिसका प्रबन्ध करने के लिए प्रिन्सिपल एन. सी. बनर्जी नियत हुए हैं। इस सभा में संस्कृत साहित्य, दर्शन, इतिहास तथा पदार्थ विद्या पर मौलिक निबन्ध लिखने वालों के लिए पारितोषिक भी नियत किए हैं संस्कृत भाषा में इस सुसाइटी की ओर से एक त्रिमासिक पत्र भी निकलेगा। इस प्रकार का यत्न सर्व आर्यजातीय रियासतों में होना चाहिए।

पण्डित गणपति शर्मा की माता तथा भाई की ओर से एक तर्दू में लिखी हुई 'दर्द नाक अपील' हमारे कार्यालय में आई है। वह अपील प्रचारक के आगामी अङ्क में, टिप्पणी सहित प्रकाशित होगी। अपील का सारांश यह है कि राजपुताना पति निधिसभा कुछ काल तक गुज़ारा देती रही, फिर रुपया न होने के कारण बन्द कर दिया। पं० गणपतिशर्मा के नाम से धन ज्वालापुर महाविद्यालय ने जमा किया है, वहां से ही गुज़ारा मिलना चाहिए। आशा है कि उक्त संस्था योग्य प्रधान जी इस विषय में कुछ आन्दोलन करेंगे।

लाहौर आर्य्यसमाज के चुनाव पर आर्य जगत की सम्मति।

आर्य्यसमाज राजकोट—लाहौर आर्य्यसमाज की इस कार्यवाही को कि, चुनाव के समय पुलिस मौजूद थी, नफ़रत की निगाह से देखता है तथा यह प्रस्ताव स्वीकार करता है कि लाहौर समाज को पंजाब के आर्य्यसमाजों के साथ शामिल न किया जावे और इन का कोई प्रतिनिधि, आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब में न लिया जावे।

आर्य्यसमाज फ़गवाड़ा—ने निश्चय किया है कि लाहौर आर्य्यसमाज के चुनाव की कार्यवाही घृणित है, पुलिस का लाना लज्जा की बात है। आर्यप्रतिनिधि सभा को यह अप्रबन्ध दूर कर के शान्तिस्थापित करनी चाहिये।

आर्य्यसमाज क़ादियान्—ने भी ऐसा ही रेज़ोल्यूशन पास किया है।

कांगड़ी आर्य्यसमाज—के साप्ताहिक अधिवेशन में निम्न लिखित प्रस्ताव प्रस्तुत हुए और सर्व सम्मति से स्वीकार हुए।

(१) राय ठाकुरदत्त प्रधान आर्य्यसमाज लाहौर ने जो अनधिकार चेष्टा कर समाज के सभासदों को मन्दिर के अन्दर आने से रोका, तथा समाज की बहुसम्मति के विरुद्ध पुलिस को बुलाया। उस पर यह समाज शोक प्रकाशित करता है। और उन दशाओं में जो चुनाव हुआ है उसे नियम विरुद्ध समझता है। साथ ही वह प्रतिनिधि सभा से प्रार्थना करता है कि सभा उस का उचित प्रबन्ध करे।

(२) उस समय पुलिस ने आर्य्यसमाजसदों का समाज मन्दिर में प्रवेश रोकने में जो अनुचित और नियम-विरुद्ध कार्यवाही की, लाहौर के डिपुटीकमिश्नर उस की ओर ध्यान खींच कर समाज आशा रखता है कि इस घटना की पूरी जांच की जायगी॥

संसार समाचार पर टिप्पणी।

कुपात्र को विद्यादान—देना पुराने आर्य्य पाप समझते थे। इस पर ग़ुरुप मख़ौल उड़ाता रहा है और उन्हें संकुचित विचार के जंगली पुकारता रहा है। परन्तु कुपात्रों के हाथ में रसायनादि प्रबल विद्याओं का अत्याचार इस समय युरोपियनों की आंखें, शायद, खोल रहा है। सब मरीन नित्य निर्दयता से सैंकड़ों मनुष्यों का घात और लाखों की सम्पत्ति का नाश करते हैं। जो विद्या परोपकार में लगाई हुई संसार को स्वर्गधाम बना सकती थी वह बाइबल के शैतान की सन्तान के हाथ पड़ कर इस समय जहन्नुम (Hell) का दृश्य दिखा रही है।

महाराणी कुचबिहार के—५ लाख के आभूषण चोरी चले गये थे। अब बरामद हुए हैं और साथ ही एक नौकर दो बड़े आदमियों सहित इस अपराध में पकड़े हुए हैं। क्या ज़ेवर पहिरने और अपने अबोध बालकों को पहिराने वाले धनाढ्य उस पाप के भागी नहीं, जो निर्बलात्मा मनुष्य प्रलोभन में पड़ कर करते हैं। यदि हिन्दुओं के गुरु और कुछ उपकार अपने चेलों का नहीं कर सके तो इतनी व्यवस्था तो दे दें कि जो हिन्दू व्यवसाय और व्यापार के कामों से हटाकर धन को आभूषणों में क़ैद कर रक्खेगा उस पर देश को कङ्गाल बनाने और स्वदेशियों को चोर डाकू बनाने का पाप लगेगा। यह समय है स्वदेश की कारीगरी को उन्नत करने का और हिन्दू अब सुनार की दूकान का रास्ता नहीं भूलते।

ढाका नगर में एक सांप मारा गया है—जिसके शरीर पर दो पैर की शकल के बढ़ाव हैं। ढाका अजायबघर के प्रोफ़ेसर सत्येन्द्रनाथ भद्र के हवाले वह जन्तु कर दिया गया है। क्या यह सांप बाइबल की इस गाथा को झुठलाने के लिए ज़ाहिर हुआ है कि ख़ुदा के शाप से सांप पेट के बल चलने वाला होगया।

मैसोर (मद्रास प्रान्त) राज्य की ओर से—यह नया राजनियम बना है कि वहां की प्रजा को ७ और ११ वर्ष के भीतर के बच्चों को आरम्भिक शिक्षा के लिए पाठशाला में भेजना आवश्यक होगा। समझ में नहीं आता कि जिस वृटिश जाति के उपदेशों को सुनकर हिन्दुस्तानी रियासतों की भी नींद खुल गई है, वह गवर्नमेंट स्वयम् गाढ़ निद्रा में क्यों पड़ी हुई है। परन्तु भारत की प्रजा का स्वयम भी कुछ कर्त्तव्य है। यदि परिमित बिरादरियों को अपने किए पाप का प्रायश्चित करना है तो चन्दा करके आरम्भिक शिक्षा के लिए अपनी आवश्यकतानुसार पुत्र तथा पुत्री पाठशाला खोल दें और जो पिता अपनी सन्तान को नियत आयु के पश्चात् न भेजें उन्हें सामाजिक दण्ड दिया जाय।

सर आग़ाख़ां—जिन्हें कहा जाता है उनका असली नाम आग़ा सुलतान अली शाह था। सिक्खों सेवकी बहुत होने के कारण इनके पास धन बहुत था। मज़हब के नाम पर जो लाखों रुपये कमाते थे वह अंग्रेज़ों के साथ शिकार खेलने और उन की दावतों में उड़ाते थे। वहां मित्र बहुत बन गए। तब नामका क्रम बदल डाला; सुलतानअली का सुलतान तोयन गया विशेषण और नाम रह गया आग़ाख़ान्। जब सुलतान बने तो मुअज़्ज़म (His Highness) बनने में क्या कसर थी। इस संसार में कृतकार्यता कायर के लिए नहीं है। धर्माधर्म का विचार करके कृतकार्यता नहीं होती। अब सर आग़ाख़ां को ११ तोपों की सलामी मिल गई है। सुलतान को तो पूरी ३१ वा १०१ तोपों की सलामी का अधिकार होना चाहिए। वह दिन भी दूर नहीं है।

हमारे वाइसराय का शिमले के साथ पुरानासम्बन्ध मालूम हुआ है। शिमला म्युनिसिपालिटी ने अपने एड्रेस में कहा कि श्रीमान वाइसराय छुटपन में अपने फौजी पिता के साथ शिमले में रहचुके हैं। उत्तर में आपने कहा कि वह इतने छोटे थे कि उन्हें पता नहीं कि आज की म्युनिसिपलकारपोरेशन और उस समय वाली में क्या भेद है। जिस प्रकार वाइसराय गंभीर भाव से काम लेते हैं, उसी प्रकार भारत प्रजा को भी संकोच से ही काम लेना चाहिए। ऐसा न हो कि एक बार सम्मति प्रकट कर के फिर बदलनी पड़े।

आर्यजाति में संस्कृत और आर्यभाषा का गौरव तो बढ़ रहा है, परन्तु उस से भी बढ़ कर काम होना चाहिए। यह भी नहीं कहसके कि काम नहीं होता। दश वर्ष पहले की अपेक्षा बहुत काम हुआ है, परन्तु अभी मंज़िल दूर है। खनऊ में अभी क्षत्रिय कानफ़रेन्स हुई है जहां ज़िले ज़िले में स्कूल और आश्रम तथा दो बड़े कालिजों के खोलने का प्रस्ताव हुआ। ज़मींदारों ने निश्चय किया कि माल गुजारी के प्रत्येक रुपए पर एक पैसा शिक्षानिधि के लिए वसूल किया जाय। उसी कान्फ्रेन्स के साथ जो "क्षत्रिय युवक सभा" का अधिवेशन हुआ उसके सभापति ने संस्कृत और आर्य्यभाषा को अपनाने पर बड़ा बल दियां। बल तो पंजाब में भी बहुत दिया जाता है, परन्तु जितने आर्य्यभाषा की शिक्षा पर धुआंधार व्याख्यान देते हैं वे सब समाचार पत्र निकालते तथा पढ़ते उर्दू में ही हैं। सम्भव है कि पहले कुछ कठिनाई हो परन्तु जितना किसी अनुष्ठान में कष्ट सहन किया जाय, उतना ही उस के साथ प्रेम का परिचय समझा जाता है।

जाली एम० ए० को महर्षि की पदवी—गत सप्ताह हिन्दू आचार सुधार सभा लायलपुर का वार्षिकोत्सव था। इस अवसर पर जो विज्ञापन निकला था उस में लिखा था कि "हिन्दुस्तान भर के प्रसिद्ध और योग्य उपदेशक मस्ताना

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जोगी फीरोजपुर से, महर्षि शिवव्रतलाल जी लाहौर से, पूजनीय स्वामी शालिग्राम जी अवधूत जनाब अल्हायार जोगी जी लाहौर से, इत्यादि अपने सुभागमन से कृतार्थ करेंगे।' विज्ञापन के नीचे महता जेमिनि वकील लायलपुर प्रधान सभा के हस्ताक्षर हैं, अर्थात् महर्षि की पदवी शिवव्रतलाल को महता साहिब के दर्बार से मिली है। यह निश्चय है कि महता जेमिनि को अच्छी तरह मालूम है कि शिवव्रतलाल जाली एम० ए० है और सर्व साधारण को धोका देने के लिए इस ने यह दुमछल्ला अपने नाम के साथ लगा रक्खा है। ऐसे मनुष्य का केवल इसलिए कि उत्सव जरा दिलकश और शान्दारनजर आए, सर्वसाधारण के सामने एम० ए० जतलाना और फिर इस के खास मजहबी विश्वासी के होने पर भी इसे महर्षि की पदवी देना महता जेमिनि का ऐसा कार्य्य है जिस के लिए उन्हें सर्वसाधारण के सामने उत्तर देना चाहिये। हम कह देना चाहते हैं कि हमें महता जेमिनि से कभी आशा न थी कि वह इस नकली एम० ए० को महर्षि की पदवी देने में अपनी निर्बलता बतलावेंगे।

"देश" से उद्धृत।

——०——

दिल्ली में पन्द्रहसौ अछूत इसाई होने वाले हैं:— यह खबर बड़े दुःख से सुनीजायगी कि दिल्ली में लगभग पन्द्रहसौ चमार जो जूता बनाने का कार्य करते हैं, ईसाई होने वाले हैं। मामला यों सुना जाता है कि जो दुकानदार चमारों से जूता मोल लेते थे, उन्होंने एक पैसा प्रत्येक जोड़े पर असली मूल्य से काटना आरम्भ कर दिया था। इस प्रकार बहुतसा रुपया प्रतिदिन दुकानदारों को बचता था। इस कार्य्यवाही के विरुद्ध चमारों ने पञ्चायत करके निश्चय किया कि जब तक यह एक पैसा काटने का दस्तूर बन्द न हो जाय, कोई भी इन दुकानदारों को जूता न दे; इस पर दुकानदारों ने भी चमारों के साथ सख्ती करनी आरम्भ करदी और अदालत तक नौबत पहुंची, क्योंकि अधिकतर जूता बनाने वाले दुकानदारों के दस वा बीस रुपये के कचवार हुआ करते हैं इसलिए दुकानदारों ने अपने रुपयों के लिए चौबीस घण्टों का नोटिस चमारों को दिया और बहुत वारण्ट निकलवाए। इस तरह दिन प्रतिदिन खैंचातानी बढ़ती गई और चमारों में फाके होने लगे। चमार लोग इस चिन्ता में पड़े कि हमारी दुकानें स्थान २ पर खुल जावें, तो हमारा काम चलने लगे परन्तु इस काम के लिए रुपयों की आवश्यकता थी। अब इन को सहायता करे तो कौन? वह पादरी साहब के पास पहुंचे और पादरी साहब ने इन के सब दुःखों को दूर करने की प्रतिज्ञा की, परन्तु शर्त यह कि सब के सब ईसाई हो जावें और चोटी की इति श्री करदें। अतः चमार लोग इस विषय में सोच रहे हैं। सम्भव है कि कुछ ही दिनों में ये सब के सब ईसाई हो जावें। आशा है कि दिल्ली के आर्य तथा हिन्दू भाई इन दुखियों का तन मन तथा धन से सहायता करेंगे।

"देश" से उद्धृत

अनाथ कन्या का विवाह—जगाधरी में एक हिन्दू कन्या पाठशाला अनुमान १५ वर्ष से चल रही थी जिस के साथ में एक कन्या अनाथाश्रम भी था। हिन्दूजनता जगाधरी का इन की ओर न्यूनध्यान होने के कारण पाठशाला तथा अनाथाश्रम दोनों लगभग २ वर्ष हुए टूट गये। तदन्तर ४ अनाथ बालिका बाबू रलाराम जी जगाधरी निवासी (जोकि इस पाठशाला तथा अनाथाश्रम के मैनेजर थे) उनके हाथ में रहगई जोकि अब तक उन का पुत्रीवत् पालन कर रहे हैं। और उक्त वर्णित कन्या भी इन्हीं ४ कन्याओं में से है जिस का विवाह २३-४-१६ई० को (स्थान जगाधरी में) मास्टर हरिदयालुदास वैश्य कमालिया निवासी जिला मिंटगुमरी के साथ हुआ। वर की ओर से प्रतिष्ठित सज्जन रत्नलाल जी वकील अम्बाला शहर व बाबू गणेशदास जी स्टेशन मास्टर अम्बाला शहर व डाक्टर गेंदाराम जी सब असिसटेन्ट सरजन दादुपुर व डाक्टर नारायणदास जी खरड बरात में उपस्थित थे। वर पक्ष की ओर से विविध स्थानों को २२) दान दिया गया।

—.०:—

मुलतान गुरुकुल समाचार

ईश्वर की कृपा से ऋतु अभी इतनी प्रफुलित नहीं जैसी की आशा थी। रोज़ शाम को एक ज़ोर से आंधी आने के पश्चात् मेघ देवता भी दर्शन दे जाते हैं और पांच चार बून्द बरसा कर अपना रास्ता पकड़ लेते हैं। इसी लिये रातें भी बड़ी ठण्डी गुजरती हैं।

स्वास्थ्य यहां के ब्रह्मचारियों का अत्युत्तम है क्योंकि दो महिने से किसी ब्रह्मचारी को ज्वर से पीड़ित मैंने नहीं देखा। साधारण खेल में किसी के चोट लगी हो तो वह दूसरी बात है। यहां का वायु ही ऐसा उत्तम है कि सुनने से पता लगा है कि अभी नहीं बल्कि पहले भी यहां के डाक्टर महाशय को कभी गुरुकुल में बहुत काम नहीं हुआ। ब्रह्मचारियों के खेल के लिये चूंकि कोई स्थान या क्रीड़ा क्षेत्र नहीं इस लिये सायंकाल के समय ड्रिल तथा जिम्नास्टिक करते हैं। छोटों को आंगन में ही क्रिकेट तथा फुटबौल खिला दिया जाता है। गुरुकुल को क्रीड़ाक्षेत्र के लिये जो भूमि किन्हीं महाशय ने दान दी थी है वह इतनी दूर है कि वहां जाएं तो आते जाते और खेल की तय्यारी करते पौन घण्टा अवश्य लग जाय शेष १५ मिनट खेल के इस प्रकार से रह जाएंगे।

२२ तारीख से मुलतान शहर में सदाचार आश्रम का मेला बड़े समारोह से हो रहा है। अवधूत शालिग्राम जी पधारे हुए हैं रोज़ उनके व्याख्यानों से नर-नारी अमृतपान कर तृप्त होते हैं। कल प्रातः २४ तारीख को ८ बजे के लगभग अवधूत जी गुरुकुल में पधारे। उनका यथोचित स्वागत किया गया और एक सभा बुलाई गई जिस में आपने एक मनोहर भाषण किया।

उन्हों ने कहा कि जिस प्रकार दरिया जेहमल बह रहा है और रास्ते में सारे मैदानों को सरसब्ज़ करता हुआ लोगों और यात्रियों के मनों को मोहित करता हुआ समुद्र में जा गिरता है। परन्तु यह सबलहरें और मौजें यह दरिया कब तक दिखा सकता है। यह तभी तक है जब तक कि उस का मुख अपने मुम्बा झील बुहलर से मिला हुआ है। इसी प्रकार कोई आदमी दुनियां में ताकतवर और सच्चे सुखों और आनन्दों का लेने वाला तभी तक हो सकता है जब तक उसने अपना मुख अपने मुम्बा रूपी परमात्मा से मिलाये रखता है। इस लिये आशा है कि शायद यहां के ब्रह्मचारी सायं प्रातः अवश्य संध्या करते होंगे। वही सर्व शक्तिमान् है उसी से शक्ति [illegible] और उसी से सच्चा आनन्द मिलेगा।

तदनन्तर आपने गोशाला को देखा जिसमें १०० गांवें हैं यहां इस समय १२ ही उपस्थित थीं क्योंकि अन्य सब चारे के अभाव से बाहर कूओं पर भेजी गई हैं। फिर आपने भोजन भण्डार देखा और छोटे आश्रम को देख कर आप विदा हो गए। आपने कहा कि जैसी प्रसन्नता मुझे इस समय है ऐसी शायद पहले गुरुकुल और ऋषिकुल को ही देखकर हुई थी।

ब्रह्मचारियों की पढ़ाई नियमानुसार दोनों समय हो रही है प्रातः ५ अन्तर है और मध्यान्ह में चार [illegible] मिनट [illegible] का गुरुकुल यूनिवर्सिटी की परीक्षा में इस वर्ष सम्मिलित करना है इस लिए उस पर खास परिश्रम किया जा रहा है और ईश्वर से प्रार्थना है कि वे ७ ब्रह्मचारी अपने परिश्रम में सफल हों और गुरुकुल विश्वविद्यालय में जाकर वहां मान्य तथा योग्य उपाध्यायों से उच्च शिक्षा पाकर अपने जीवन को कृतार्थ कर सकें।

—:०:—

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं।

संख्या	नाम	पुस्तक	दाम
१.	संस्कृत प्रवेशका		।)
२.	संस्कृत साहित्य पाठावलिः द्वितीयो भागः		=)
३.	आर्य्यसुक्तिसुधा		।)
४.	काव्य लतिका		॥)
५.	संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्रीमहात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं।		॥)
६.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र]		।॥)
७.	संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र]		॥=)
८.	संशोधित हितोपदेशः		।=)
९.	संशोधित रघुवंश [मूल]		।)
१०.	संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व		।)
११.	संशोधित नीतिशतकम्		=)
१.	अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण		।)
२.	अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्]		२)
३.	अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्		१॥)
४.	धातु पाठः—[मूल] महर्षि पाणिनीकृत		।)
५.	नाटकः		=)॥
६.	आख्यातिकः		॥।)
७.	महाभाष्यम् अङ्गप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम्		२॥)

आर्यभाषा

१.	आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र	।)
२.	आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र]	।-)

विज्ञान

१.	भौतिकी [बैलफोर] स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्रायमर" का आर्यभाषानुवाद	॥)
२.	रसायन (विलयम एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद)	॥।)

इतिहास

१	भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A.M.R.A.S. कृत	१।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

१.	वेद में वैद्य शास्त्र	-)॥
२.	वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत	।-)
३.	वैदिक देवताओं का स्वरूप उ० इन्द्र वेदालंकार द्वारा लिखित	।-)
४.	वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी	-)॥
५.	वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य	=)॥
६.	भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त	≡)॥
७.	मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार)	।)
८.	पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर)	≡)
९.	साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त	।)
१०	,, ,, तृतीय ,, ,,	।)
११	,, ,, चतुर्थ ,, ,,	।=)

On Arya Samaj.

1.	The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.	0.1.0 /1/6
2.	Life of Swami Dayananda, (Natesan and Co.)	0.4.0 /4/
3.	Life of Swami Dyananda. with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.)	1.0.0 R. 1/./.
4.	The life of Swami Dayananda by Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama	Rs. 2/./.
5.	The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula.	0.4.0 /4/
6	The Arya Samaj or a paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R.A. S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.	1/6
7.	Arya Samaj, a Political Body being an Open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A.	/4/
8.	Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji	/1/
9.	The Arya Samaj and its Detractors.a Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S.	Rs. 2/8/

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A. कृत)

१.	अर्थशास्त्र (धनविद्या)	१॥)
२.	अग्निहोत्र व्याख्या	।)
३.	वेदोक्त राज्य	॥)

(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)

४.	रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry)	३॥)
५.	विद्युतशास्त्र	२।)
६	वनस्पतिशास्त्र	२)

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

७.	उपनिषदों की भूमिका	।=)
	प्रिन्स बिस्मार्क	१॥)
८.	राष्ट्रों की उन्नति	।)
९	राष्ट्रीयता का मूलमन्त्र	
१०	विकासवाद The Theory of Evolution (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे)	
११	आर्यपथिक पं० लेखराम जी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीराम जी	१
१२	महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत (लेखक ब्र० चन्द्रमणि जी विद्यालंकार	।=
१३.	मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष	॥
१४.	आर्यों की विज्ञानिक उन्नति (लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०)	=

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २० तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १० सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

ओ३म्

Registered NO. A. 434

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १ ज्येष्ठ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १३ मई सन् १९१६ ई० | संख्या ५ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी, जि०बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा संगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाली रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—:o:—

आवश्यकता

"गौड़ महा सभा के लिए, कुछ संस्कृतज्ञ सदाचारी और हिन्दी साहित्य प्रेमी गौड़ ब्राह्मण उपदेशकों की ज़रूरत है। जो अनुभवी होने के अतिरिक्त सामाजिक सुधार के पक्षपाती हों। आर्य-समाज अथवा सनातन धर्म के विरोधी न हों। यदि वे हारमोनियम बजाकर गाना जानते होंगे—या कुछ अंग्रेज़ी जानते होंगे, उन्हें तरजीह दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार मिलेगा। निवेदन पत्र शीघ्र आने चाहियें।"

रामचन्द्र बी. ए.
महामन्त्री गौड़ महासभा
जगाधरी

—:o:—

Lahore
May 9 1916.

My dear L. Munshi Ram ji Namaste !

M. Radha Krishna B.A. Editor "*Prakash*" stated in a public meeting on Sunday the 7th instant that you had in your possession a letter of mine from R. S. Lala Beliram Dhawan M.A., L.L. B., My nephew; he told the audience what the contents were.

I did not receive the letter nor did I read it; it must have been abstracted while in transit through the Post office Will you send it to me. I am extremely sorry that such tactics should meet with encouragement from the conductor of a religious paper and the Head of a Dharmic Institution. I am told by people educated in western lines that "every thing is fair in love or war" but I did not expect that a person who professes to be a Vedic missionary and who is the acknowledged leader of a Religious movement should countenance these transgressious of the moral Law. I would not have written to you so strongly had I not been convinced that such conduct lays an axe to all mutual regard confidence and co-operation. The way in which you published L. Tolaram's letter which you must have known had been surreptitionsly stolen can not commend to any right thinking Arya and I was surprised that you did not consider the thing objectionable—

It is the eighth or ninth time that you have published leaderrettes containing polemics against me in the *Sat Dharma Pracharak* and in order to damn me before the public, have not scrupled to publish garbled accounts of what passsed between us in private talk. I have made no reply yet but it is a pity that you should take sides in the controversy about the Arya Samaj Lahore and join *the Prakash* faction in a crusade of misrepresentation and insinuations. I am sure that the unscruplous clique will not spare you wnen your turn comes and hat you will then be sorry for what you have been doing to assist them in gaining ascendency and domination in the Arya Samaj—

They do not consider themselves strong enough perhaps to drag you down from your high pedestal but we know how they speak of you among their friends in private—you know all this and much worse: it is presumptuous on my part to warn you but as I am an old admirer of yours, a coworker in the cause, and a well wisher you will excuse my having written to you so frankly.

Yours Sincerly
Thakur Datt

—०—

गुरुकुल की आवश्यकताएं ।

दियासलाई के कारखाने के सम्बन्ध—में जो फ़ोसफरस बनाने का परीक्षण आरम्भ किया गया है उसके लिए कानपुर के सेठ रामगोपाल जी ५०) वार्षिकोत्सव पर दे गए थे। अब श्री बाबू ब्रजनन्दनसिंह, डिपुटी कलेक्टर, आरा लिखते हैं—"इस में ५०) की सहायता मैं दे सकता हूं। यदि और धन इकट्ठा करने का सामान हो जाय और कार्य करना निश्चय हो जाय तो लिख भेजिएगा, मैं तत्काल ही रुपया भेज दूंगा। कार्य बहुत उत्तम है, इसके करने के लिए अवश्य उद्योग करना चाहिए।"

मेरा डिपुटी साहेब से निवेदन है कि कार्य आरम्भ हो चुका है। भट्ठी बनी है और हड्डियें भी जमा हो रही हैं, धन बिना भट्ठी के ऊपर टीन का छप्पर नहीं पड़ा है। आप अब ५०) भेज ही दें और अन्य महानुभाव भी शीघ्र शेष ४००) जमा करदें।

गुरुकुल के लिए धन—आता ही रहता है। विचार किया गया है कि शुल्कादि की आय को छोड़कर केवल दान की आय की सूची प्रत्येक मास की समाप्ति पर सद्धर्म्म प्रचारक में देदी जाया करे। इससे गुरुकुल के प्रेमियों को यहां की आवश्यकताएं ज्ञात होती रहेंगी। अभी एक महाशय ने १००) का करन्सी नोट इस लिए भेजा है कि उससे आवश्यक फल मंगाकर बीमार ब्रह्मचारियों को दिए जाएं। अब आम की फ़सल आने वाली है। गुरुकुल के आस पास से आम तो मिल सकते हैं परन्तु ख़रीदने को धन चाहिए। जिनके पास शुभ कार्यों में देने के लिए धन हो उन्हें इससे उत्तम काम धन व्यय के लिए न मिलेगा। यदि ३००) इकट्ठा हो जांय तो ब्रह्मचारियों को ऋतुमें आम खूब खिलाए जासकते हैं।

मुख्याधिष्ठाता

चौधरी सीताराम लाहौर से लिखते हैं:—

"गत आदित्यवार ७ मई १९१६ को ९ बजे प्रातः श्रीमान् रोशनलाल जी बैरिस्टर की कोठी में लाहौर के आर्यसभासदों तथा मेम्बरों की एक बैठक हुई। अनुमान १५० से अधिक हाज़री थी। दीवान लक्ष्मीनारायण जी बैरिस्टर (जिनको राय ठाकुरदत्त की पार्टी ने उप प्रधान बनाया हुआ है) इस जलसे के सभापति नियत हुए। इस जलसे में श्री भगत् रैमल जालंधर से, तथा पं० विष्णुदत्त जी वकील गोगावाले भी उपस्थित थे इनके अतिरिक्त लाहौर समाज के सब पुराने कार्यकर्ता तथा सभासद सम्मिलित श्री पं० सातवलेकर जी, श्री केदारनाथ जी, श्री कृष्ण जी बी० ए० भा० शिवदयाल जी एम० ए०, श्री रोशन लाल जी बैरिस्टर आदि प्रसिद्ध २ आर्य सज्जन थे और राय ठाकुरदत्त जी की पार्टी के कुछ सभासद भी शामिल थे। ३ घंटे से अधिक भिन्न २ सज्जनों ने लाहौर समाज की शोचनीय अवस्था पर वक्तृताएं कीं और राय ठाकुरदत्तजी का असली स्वरूप हाज़रीन को भली प्रकार दरशाया, जिन को सुन कर लोग चकित रह गये। अन्त में सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव स्वीकार हुए।

(१) यह जलसा रायठाकुरदत्त भवन और उन के साथियों की इस कार्य्यवाही को नाजायज़ समझता और शोक प्रगट करता है जो उन्होंने बिना ११९ पुराने आर्य सभासदों के पुलिस की सहायता से वार्षिक चुनाव करने में की है।

(२) यह जलसा अपनी इस सम्मति का प्रकाश करना ज़रूरी समझता है के पुलिस का राय ठाकुरदत्त के पास के बिना किसी आर्यसमाज के मैम्बर को अपने मन्दिर में न जाने देना अनुचित था।

(३) इस कार्यवाही की नक़ल राय-ठाकुरदत्त साहिब के पास तथा अख़बारों में भेजी जावे।"

आर्य समाज मर्दान—ने भी इसी आशय के प्रस्ताव स्वीकार कर के आर्य्य प्रतिनिधि सभा से उचित प्रबन्ध करने की प्रार्थना की है—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आत्म दर्शनम्

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं दशन विहीनं जातं तुण्डम्।
वृद्धोयाति गृहीत्वा दण्डं तदपि न मुञ्चत्याशा पिण्डम्॥

आशा कैसी बलवती देवी है! अङ्ग ढीले पड़ जायं, शिर श्वेत हो जाय, मुंह में दांत न रहें, बूढ़ा होकर लाठी टेकने लग जाय; फिर भी आशा समूह से मुक्त नहीं होता। आशा के आलम्बों का चित्ताकर्षक चित्र केवल इङ्गलैण्ड के कवि कैम्बेल (Campbell) ने ही नहीं खींचा। प्रत्येक देश, जाति तथा समय में कवि इस पर अपने दिमाग़ लड़ाते रहे हैं। फ़ारसी कवि ने कहा है—दुनिया व उम्मीद क़ायम। संसार चक्र को आशा ही चला रही है।

—:o:—

मेरा हरद्वार कुम्भ के वार्षिकोत्सव से निवृत्त होकर दूसरे दिन कूच था। मैं नित्य कर्मों से निवृत्त होकर बैठा स्वाध्याय कर रहा था कि मेरे सामने एक विचित्र मूर्ति आखड़ी हुई। शिर श्वेत, परन्तु मूंछ दाढ़ी कांटी हुई, सारे मुख और हाथों पैरों पर झुर्रियों की झुर्रियां पड़ी हुईं; हड्डी का पञ्जर, न मुंह में सब दांत और न पेट में आंत। परन्तु शिर पर तिल्लेदार बाँकी टोपी, कानों में सोने की बालियां, जिनमें शायद सुच्चे ही मोती सूंघे होंगे, और पैरों में कलाबत्तून के काम की जूती। मूर्त्ति विचित्र थी। मैंने एक आँख उठाकर देखा, परन्तु उधर से कुछ प्रत्युत्तर न मिलने पर फिर पढ़ने लग गया। फिर भी वह मूर्त्ति सामने से न हिली। तब मैंने कहा—"आइए, बैठिए! क्या आप ब्राह्मण हैं? नमस्ते!" बूढ़े महाशय नमस्ते कहकर बैठ गए और पूछने लगे—"आपने कैसे जाना मैं ब्राह्मण हूं।" मैंने उत्तर दिया—"आपके अभिवादन में पहल करने से रुकने के कारण।" ब्राह्मण देवता ने गुरुकुल की कुशल पूछी और चुप होगए। मैं भी पढ़ने लग गया। जब ५ मिनिट तक मैं चुप रहा तो देवता जी से न रहा गया, बोले—"मैं हकीम हूं, हरद्वार में भी इश्तिहार बांटकर दो, तीन मास रहा था। लोग पीछे पड़े कि हकीम जी यहां ही रहो परन्तु हमने कहा कि हमें रोटी कमाने की आवश्यकता नहीं।" फिर स्वयम् ही उन्होंने अपनी परीक्षा देनी आरम्भ की—नुस्खों का प्रकरण कंठ सुना कर उन्होंने कहा कि वैद्यक में भी वह निपुण हैं। यह कह कर "भाव प्रकाश" में दिया "हरितिकी" का सारा अध्याय तोते की तरह कण्ठ सुना दिया। इसपर भी बस न की, पश्चिमीय चिकित्सा जानने का भी दावा किया और उर्दू के मेटीरिया मेडिका का एक भाग सुनाने लग गए। मैंने लाख कहा कि उनके ज्ञान पर मुझे विश्वास आगया, परन्तु उन्हों ने एक न मानी और सारी कहानी सुनाकर दम लिया! फिर भी क्या दम लिया? नहीं, बोले—"आपने पूछा नहीं कि मैंने हरद्वार में क्या इश्तिहार दिया था।" मैंने उत्तर दिया कि इसकी कुछ आवश्यकता न थी, हकीम जी बोले—"नहीं महाराज, मुझसे तो सब मित्र अपने मुंह से इश्तिहार सुनना चाहा करते हैं। मैं जब उत्तर देता हूं कि लेकर इश्तिहार पढ़लो तो यही कहते हैं कि आपके स्वयम् सुनाने में हमें आनन्द आता है—तो मैं आपको भी सुना देता हूं" यह कहा और लगते हाथ ही सारा इश्तिहार, रटा रटाया, सुना दिया। मैंने कहा—"आप बड़े गुणी हैं।" उत्तर मिला—"आपको अभी हमारे सब गुण मालूम नहीं हुए; हम बाल ब्रह्मचारी हैं। हमने विवाह ही नहीं किया।" मेरी दृष्टि में उनका मान स्थापन होने लगा और मैंने कहा—"तब तो आप इस गिरे हुए समय में एक आदर्श पुरुष हैं—आप अवश्य गुरुकुल में पधार कर वहां के शिक्षा क्रम का अवलोकन करें।" मेरा कथन सुनकर देवता जी बहुत चकराए और बोले—"मैं तो विवाह करना चाहता हूं क्योंकि मेरे कई कुंए हैं और भूमि की आमदनी बहुत होती है। परन्तु एक कठिनाई रहती है। हमारे देश में बड़े बड़े का विवाह होता है। जिस घराने में मैं सम्बन्ध ढूंढता हूं, वहीं से उत्तर मिलता है कि हमारे कुमार पुत्र के लिए लड़की दिलवाओ तो तुम्हारा भी विवाह हो सकता है। परन्तु हमारे कुल में दूर समीप कोई कुमारी लड़की नहीं फिर कैसे विवाह होता।" फिर मेरी ओर झुक कर धीरे धीरे बोले—"यदि आपके आस पास कोई ब्राह्मण कन्या होतो मेरा विवाह करा दीजिए। रुपए की कुछ परवा नहीं, हज़ार दो हज़ार भी ख़र्चने पर हो जाय तो तय्यार हूं।" ज्यों ज्यों बूढ़ा बोलता जाता था मेरा मुख आश्चर्य और घृणामय होता जाता था, परन्तु उसे कुछ पता न लगा। तब मैंने कहा—"महाशय! श्मशान की तैयारी करो, यह क्या बातें कर रहे हो। तुम्हारी आयु क्या विवाह की है?" उत्तर वहां पड़ा पड़ाया था—"आप मेरी आयु क्यालसमझते हैं? मेरी आयु अभी ५० की है। इससे अधिक नहीं।" मैंने कहा—"मैं ६० वर्ष का हूं, मेरे और अपने शरीर का मुक़ाबिला करो।' देवता मुसकिराहट का मुंह बनाने का प्रयत्न करते हुए बोले—"अभी चार महीनों बहुत बीमार रह चुका हूं, नहीं तो आप मेरे शरीर को देखते।' फिर न जाने उसको क्या ध्यान आया और, खड़ा होकर, चलने लगे बोला—'सच, आपतो गुरुकुल में ब्रह्मचर्य का पालन कराते हैं आपको विवाह के झगड़ों से क्या वास्ता' बूढ़ा तो चल दिया परन्तु मेरे मुख से अनायास नीचे का श्लोक निकला—

वलिभिर्मुखमाक्रान्तं पलितैरङ्कितं शिरः।
गात्राणिशिथिलायन्ते तृष्णैका तरुणायते॥

जितने ही शरीर और उसके अंग शिथिल होते हैं उतनी ही तृष्णा जवान होती जाती है।

सच है—संसार चक्र आशा के धुरे पर ही चल रहा है। सब क्या आशा ही जीवन है? यदि संसारचक्र में चक्कर काटते रहना जीवन है तो आशा ही जीवन हो सकता है, नहीं तो कवि का कथन ठीक ही प्रतीतहोता है—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आशाही परमं दुःखं नैराश्यं परमं सुखम ।
यथा संछिद्य कान्ताशं सुखं सुष्वाप पिङ्गला ॥

बूढ़े हकीम की आशा का कुछ ठिकाना है। मुझे बतलाया गया कि बच्चे तक उसका उपहास करते हैं, परन्तु वह आशा में ही मग्न रहता है।

—:o:—

हम में से कितने हैं जो इस 'आशानंद' हकीम के अनुयायी नहीं? आशानन्दकी कहानी पर सभी पाठक हंसेंगे और उस की निर्बुद्धता पर शोक प्रकट करेंगे, परन्तु समय आने पर क्या सौ में से एक भी वीर निकलेगा जो तृष्णा का शिकार न होजाय?

संसार में आधे दुःख झूठी आशा बांधने के कारण उत्पन्न होते हैं। टूटी हुई खटिया पर लेटे अफ़ीमची की तरह कितने युवक हवाई क़िले खड़े करते और नित्य उनको गिरा हुआ देखते हैं!

नवशिक्षित युवक अपने हाथ में किसी महा पुरुष का जीवनचरित्र लेता है; उसका ध्यान उन साधनों और उन तपों की ओर नहीं खिंचता जो तय्यारी के समय में उसने किए। यदि चरित्र नायक धार्मिक संशोधक है तो युवक एक दम से अपने आपको लाखों का पूज्य देव बना हुआ देखना चाहता है। यदि नैपोलियन का जीवन पढ़ता है तो जागते स्वपन्न में एक दम विजई सेनापति बन जाता है। मुझ से एक ब्रह्मचारी ने बिना किसी भूमिका के पूछा—हम नैपोलियन कैसे बनसकते हैं?" मैं इसका उत्तर क्या देता? चुप सा रहगया। परन्तु कुछ काल के पश्चात् ब्रह्मचारी को क्रियात्मक उत्तर मिलगया और उसने 'आशा' को उसके असली रूप में देख लिया।

—:o:—

आशा दुखदायिनी नहीं यदि उसमें स्वार्थ का आवेशन हो। स्वार्थ का आवेश ही उसे परमदुखदाई बनाताहै। धर्मपरायण मनुष्य कभी झूठी आशा बांधता ही नहीं और इस लिए उसे दुःख नहीं होता। बच्चे के मरने का दुःख इस लिए है कि उसके सदैव जीते रहने की झूठी आशा बांधी थी। जिसने किसी काम से एक लाख रुपयों के लाभ की आशा बांधी थी उसे ९०,०००) मिलने पर जितना दुख है उतना ही आनन्द उस आदमी को दस रुपय मिलने पर होता है जिसने कभी कमाई की आशाही नहीं बांधी थी। संसार में वास्तविक दुःख ही कुछ कम नहीं हैं कि आशाएं बांध कर मनुष्य उन के न पूरा होने पर असीम दुःख सागर में डुबकियां लेता फिरे। मनुभगवान् के इस उपदेश को कि 'ब्राह्मण अपमान को अमृत के तुल्य ग्रहण करे और मान से विष की तरह भागता रहे "इस स्थान में लगाना चाहिए। जिस मनुष्य ने अपने किसी काम में भी आशा का आश्रय नहीं लिया, जिसने झूठी आशा को विष के तुल्य त्याग दिया है और जिसने निराशा को अमृतवत् अपनाया है, वही अमर जीवन की ओर चलता है। आशा रहित मनुष्य का जीवन समता का जीवन है, उस में उतराव चढ़ाव का लेश मात्र भी आवेश नहीं होता। जहां द्वन्द्व है वहाँ दुःख है और जहाँ उतराव चढ़ाव है, वहां द्वन्द अवश्य है। झूठी आशाओं का बांधना 'कुमति' का चिन्ह है; और आशाओं से सर्वथा मुक्त होना "सुमिति" का प्रमाण है। गोस्वामी तुलसीदास ने सच कहा है—

जहां सुमति तहां सम्पदनाना।
जहांकुमति तहां दुःख निदाना॥

—:o:—

मैं माननीय बन सकता हूं, मैं एक जगत से प्रशंसा प्राप्त कर सकता हूं, मुझ पर पुष्पों की वर्षा होसकती है, मेरी बग्घी के घोड़े खुल सकते हैं—मुझ में क्या नहीं जो उन मनुष्यों में है जिनकी कीर्त्ति सारे संसार में फैल रही है! युवक शिर उठा कर चलता है; जिससभा में जाता है ऊंची गर्दन किए करतालिका-ध्वनि की आशा में चारों ओर नज़र घुमाता है। कोई भी उसकी ओर आंख भर कर नहीं देखता। परन्तु जब कुछ काल के पश्चात् एक साधारण आकृति का आदमी सादे देशी कपड़े पहिने, नीचा शिर किए सबके पीछे बैठने लगता है तो सारे मण्डप में खलबली मच जाती है। गड़बड़ को देख सामयिक प्रधान उस ओर तिरछी निगाह डाल कर कुछ बोलने को ही हैं कि धोती कुड़ते वाले साधारण, शिर नीचे किए युवक पर दृष्टि पड़ती है। एक दम सारी सभा उठ खड़ी होती है, करतालिका ध्वनि से सभा मण्डप गूंज उठता है। नीचे दृष्टि डाले युवक को खींच कर वेदी पर लाते हैं और जनता एक स्वर से बोलती है—

"बोलो अनाथों, निराश्रयों के सेवक ब्रह्मचारी सेवानन्द की जय।" यह युवक न ग्रेजुएट है और न धनाढ्य है, न बहुत शारीरिक बल रखता है और न ही इस का दिमाग़ ऊंचा उड़ता है, प्रत्युत नीचा शिर किए, बिना किसी फल की आकांक्षा के इसने प्लेग से पीड़ित (माता पिता, बन्धु, पति, पत्नी, से त्यागे हुए) नर नारियों की सेवा की है। दिन रात एक करके इस ने कई निराश्रित बालकों को बचाया है; जिन को हकीम, वैद्य और डाक्टर भी त्याग गये उन को अपने प्रेम के बल से इसने मृत्यु के मुख में जाते जाते खींच लिया है। यहां न दलील की ज़रूरत और न अपील की आवश्यकता, भरे हुए हृदय बहनिकले हैं, और उस शुद्धात्मा की परिक्रमा कर रहे हैं।

पाठक वृन्दः! श्रेय प्रेय दोनों मार्ग तुम्हारे सामने हैं। भगवान् तुमको सुमति दें कि तुम सच्चे मार्ग का ही अवलम्बन करो!

शमित्योम्

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

कन्याओं को शिक्षा कैसी होनी चाहिए ?

मनुष्य जाति के सुधार का प्रश्न आज सारे संसार में गूंज रहा है । भारतवर्ष में इस प्रश्न का अधिक गौरव, इस समय, इस लिए है कि सारे संसार की विविध मनुष्य समाजों में से यही है जो सर्व ओर से दासता की सांकल में जकड़ा हुआ है, नहीं तो कौनसा सभ्य देश है जहां यह पुकार नहीं उठती रही कि मनुष्य जाति की दशा गिरी हुई है और कि उसके सुधार की आवश्यकता है ! परन्तु आज यह सचाई निर्विवाद हो गई है। वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध अभी पूरे छ-महीनों नहीं चल चुका था कि युरप की प्रत्येक नेशन (Nation) के विचारकों ने मुक्त कण्ठ से कहना शुरू करदिया था कि मनुष्य जाति को वर्तमान सभ्यता ने पतित करदिया है और उसके पुनरुद्धार की आवश्यकता है। परन्तु जाति का पुनरुद्धार तभी हो सक्ता है जब कि उत्पत्ति का स्रोत शुद्ध हो और उसकी शुद्धी के लिए स्त्री जाति की शिक्षा ठीक होनी चाहिए।

स्त्री शिक्षा की अवस्था इस समय हमारे देश में बहुत ही शोचनीय है । जब आर्य्य जाति की माताएं सर्वथा लिखने पढ़ने से वञ्चित थीं उस समय उन्हें गृह प्रबन्ध की क्रियात्मक शिक्षा तो दी जाती थी। चक्की पीसने और चौका बर्तन का व्यायाम कर और स्नानादि के लिए बाहर भ्रमण करने से स्वस्थ सन्तान तो उत्पन्न कर सक्ती थीं । इस समय स्वास्थ्य का नाश फेशन की वेदी पर हो जाता है। रसोईया और कहार मौजूद हैं, सैर होता है तो बग्घी में, वा यदि यह सामर्थ न हुआ तो पैदल अशरफी क़दम चल लिए, पढ़ाई होती है तो लड़कों की तरह दिमाग़ चाट जाने वाली—तब स्वस्थ, श्रेष्ठ सन्तान कैसे उत्पन्न हो। एक ओर चङ्गड़नी चलते चले बच्चा जन कर उसको गोद में उठा चल देती है और एक क्षण के लिए भी खटिया पर लेटने का नाम नहीं लेती और दूसरी ओर आजकल की नवशिक्षित सभ्य स्त्रियां जिनको चतुर से चतुर डाक्टर भी प्रसूत के रोगों से नहीं बचासक्ता और जिन में प्रति सैंकड़ा ४० के लग भग प्रसूत रोग से ही मर जाती हैं।

जिस शिक्षा का यह परिणाम हो उसमें कुछ न कुछ त्रुटि अवश्य होगी। मुझे जो त्रुटियां मालूम हुई हैं उन्हें मैं समय समय पर प्रचारक के कालमों में बतलाता रहा हूं, परन्तु उसको यह कह कर टाला जाता रहा कि जो अङ्ग्रेज़ शिक्षा विद्या के गुरु हैं उनका बतलाया मार्ग अशुद्ध नहीं हो सक्ता। यदि यही बात मानलें तब भी हमारे स्त्री शिक्षा के मार्ग दर्शक भूल में ही सिद्ध होंगे। भारत के ऊंचे से ऊंचे कन्या महाविद्यालय इङ्गलेन्ड की उस शिक्षा विधि का अनुसरण कर रहे हैं जो वहां आज से ५० वर्ष पहले प्रचलित थी। इस समय वहां का वायुमण्डल सारा बदला हुआ है और यहां वही लकीर पीटे जाते हैं। आज मैं इङ्गलैन्ड के प्रसिद्ध राजनैतिक राइट आनरेबल सरजान एल्डनगोर्स्ट (जो ब्रिटीकौन्सल की शिक्षा समिति के उपप्रधान थे) की सम्मति, स्त्री शिक्षा के विषय में देता हूं जो उन्हों ने अपनी लघुपुस्तक "शिक्षा और जाति का पुनरुद्धार" में दी है । वह लिखते:—"लड़कों और लड़कियों की शिक्षा में कुछ भेद होने के लाभ को प्रायः सब मानते हैं ……धर्म का राज्य आत्मा का राज्य शरीर पर स्थापित करने से लाया जा सक्ता है जिस से सर्व विषय वासनाएं अपने ठीक मार्ग में लग जाती हैं और कर्त्तव्य परायणता और परोपकार के आधीन कर दी जाती हैं। यह स्वराज्य ज्ञान और अभ्यास से प्राप्त होता है; और तरुण अवस्था से पहले ही लड़कों और लड़कियों को यह विद्या प्राप्त करने लग जाना चाहिए और धार्मिक आत्माव-लम्बन को जीवन का अभ्यास बनालेना चाहिए।" इस के पश्चात् यह बतला कर कि शिक्षा विभाग के नेता प्रति वर्ष लड़कों और लड़कियों के लिए जुदी जुदी पाठ विधियां बनाते हैं, सरजान गोर्स्ट प्रश्न करते हैं:—"परन्तु यह स्त्री शिक्षा का कार्य क्रम कौन बनाता है ? केवल मात्र पुरुष। जातीय शिक्षा के शासन में स्त्रियों की स्थिति केवल सलाह-कार की है। उनकी सलाह प्रायः उपेक्षा वा अनभिज्ञता की दृष्टि से देखी जाती है। वे आज्ञा वा प्रेरणा नहीं कर सक्तीं। शक्ति, सावधानी से, मर्दों के हाथ में रक्खी जाती है।" इसके पश्चात् सरजान इस बात पर विचार करते हैं कि लड़कियों को किन किन बातों की शिक्षा दी जानी चाहिए। वह कहते हैं कि इस के स्थान में यह सोचना चाहिए कि क्या क्या लड़कियों को सीखना चाहिए? क्योंकि लड़कियां पाठशालाओं से बहुत कुछ सीख आती हैं जो उन्हें नहीं सिखाया जाना चाहिए। और इस के लिए उक्त महाशय लिखते हैं कि प्रथम लड़कियों की माताएं सुशिक्षिता होनी चाहिएं। दृष्टान्त के लिए वह भोजन बनाने के विषय को लेते हैं। फ्रांसीसी लड़कियां संसार में उत्तम भोजन बनाने के लिए प्रसिद्ध हैं। क्या इङ्गलैन्ड की पुत्रियां किसी स्कूल वा कालिज में वैसा भोजन बनाना सीख सक्ती हैं। सरजान इस का नकार में उत्तर देकर लिखते हैं कि यतः फ्रेंच माताएं स्वयम् उत्तम भोजन बनाना जानती है, इस लिए वे अपनी पुत्रियों को इसकी क्रियात्मक शिक्षा दे सक्ती हैं। फिर लड़कियों को जननीत्व की शिक्षा की आवश्यकता बतला और उन के ज्ञान और क्रियात्मक दोनों भेदों पर विचार करते हुए सम्मति देते हैं—"ये दोनों विधिएं, मर्दों के नहीं प्रत्युत, स्त्रियों के आधीन प्रयोग में लाईजानी चाहिए। मर्दों का सहयोग और सम्मति लड़कियों की पूर्ण शिक्षा विधि के बनाने में वैसा ही आवश्यक है जैसा कि लड़कों की

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विधि के विषय में स्त्रियों का सहयोग और सम्मति; परन्तु जननीत्व की शिक्षा में प्रधान तथा अन्तिम सम्मति स्त्री की ही चाहिए.....केवल पुरुष होने के कारण मुझे यह बतलाने में संकोच है कि जननीत्व की शिक्षा लेने के लिए लड़कियों को पाठशाला में क्या सीखना चहिए और किसकी क्रियात्मक शिक्षा लेनी चाहिए परन्तु मैं विषय निर्देश कर सक्ता हूं.....परन्तु अन्तिम सम्मति स्त्रियों के हाथ में ही होनी चाहिए—उनकी आज्ञा के विना न कुछ सिखाना और न कुछ हटाना चाहिए।"

इसके पश्चात् विषयों की सूच्ची दी है जिन में प्रथम स्थान सन्तानोत्पत्ति सम्बन्धी क्रियात्म शिक्षा को है। गर्भ धारण करने से प्रसूता होने तक क्या क्या करना चाहिए, किस प्रकार प्रसूता होने पर डेढ़ वर्ष तक गर्भाशय को विश्राम देना चहिए, किसप्रकार का खिलाना पिलाना, वस्त्र पहिराना और उस की बीमारियों का प्राकृतिक इलाज करना चाहिए इत्यादि। दूसरी शिक्षा साधारण गृह प्रबन्ध की—अर्थात मकान हवादार कैसे रखना चाहिए, बिस्तरे आदि कैसे निरोग रहे, घर की बरतन सजावट वस्त्रादि की रक्षा और साधारण नियमों का गृह में प्रचार। तीसरा स्थान भोजन बनाने तथा क्रियात्मिक शिक्षा के लिए दिया है। सरजान की सम्मति में यह क्रियात्मक शिक्षा साथ २ घरों में माताकी दृष्टि के नीचे होनी चाहिए।

क्या इस अनुभवी अङ्ग्रेज़ की सम्मति पर हमारी पुत्री पाठशालाओं के संचालक ध्यान से विचार करेंगे? इस समय आर्य-जाति की बहनों की जो दुर्दशा है उस का विचार करते हुए यह मानना पड़ता है कि आर्य पुत्रियों को वैज्ञानिक और क्रियात्मक दोनों प्रकार की शिक्षा पाठशालाओं में ही दी जा सकती है। तब कन्या आश्रम खोलने में कोई हर्ज नहीं बल्कि उन का खोलना आवश्यक होजाता है। परन्तु फल तब होगा जब पुत्रियों की सारी शिक्षा देवियों के ही हाथों में हो। मैंने जान बूझ कर यहां देवी शब्द का प्रयोग किया है। जिस में दिव्य गुण हों, जो विद्या को प्राप्त करके उस को स्वजीवन में ढाल चुकी हो; वही आश्रम की अधिष्ठात्री हो तो कन्याएं जननीत्व की उत्तम शिक्षा को प्राप्त कर सकेंगी। बीस वर्ष हुए मैंने कुछ भद्र पुरुषों से प्रस्ताव किया था कि ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत कराते हुए अपनी धर्म पत्नियों को इस उच्च काम के लिए तय्यार करें। आज तक उस प्रेरणा का कोई भी फल दिखाई नहीं दिया। अब यदि कुछ उच्च शिक्षा प्राप्त दृढ़ सङ्कल्प और आत्म शक्ति से शक्तिवती देवियां मिल कर इस कार्य के लिए तय्यार हों तो जाति के सुधार की आधार-शिला रक्खी जासकेगी।

—:o:—

राय ठाकुरदत्त क्या चाहते हैं?

दूसरे शब्दों में "धवन परिवार" क्या चाहता है। राय ठाकुरदत्त अपने नाम के साथ "धवन", की उपाधि जोड़ा करते हैं। यह धवन खत्री हैं। इन के भतीजे राय साहेब बेलीराय धवन एम० ए० डेरा इस्माइलखाँ में सरकारी वकील हैं और स्थानीय आर्य समाज के प्रधान हैं। मैं इन के बाहरी निष्काम भाव का प्रचारक के गतांक में वर्णन कर चुका हूं। आज मैं उन्हीं रायसाहेब बेलीराम का, अपने चचा के नाम लिखा हुआ, पत्र ज्योंका त्यों देकर उस का अनुवाद कर देता हूं। उस पत्र से न केवल राय ठाकुरदत्त धवन के ही अन्तरीय भावों पर प्रकाश पड़ेगा प्रत्युत सारी "धवनफ़ेमिली" का फ़ोटो आर्यपब्लिक के सामने आ जायगा।

यह पत्र जिस लिफ़ाफे में आया है वह मेरे पास मौजूद है। भेजने वाले ने साथ कोई पत्र नहीं भेजा; और न अपनी प्रशंसा चाही है केवल निष्कामभाव से यह काम किया है। जिस प्रकार पं० गोपी नाथ के मुकद्दमें में आश्चर्य जनक घटना हुई थी, वही यहां भी दिखाई देती है। जब तक आर्य्य संस्थाओं के साथ मेरा सीधा सम्बन्ध है तब तक उन संस्थाओं की रक्षा के लिए मुझे परमात्मा से यह प्रार्थना करनी पड़ेगी कि—"*मन्युरसि मन्युंमयिधेहि !*" परन्तु जब प्रबन्ध के काम से अलग होकर आत्मचिन्तक के लिए बैठूंगा तब प्रार्थना का अन्तिम रूप यह होगा कि—"*सहोऽसि सहोमयि धेहि ?*"

Dera Ismail Khan.
28/4

My dear uncle ! Namaste.

Our anniversary is over. It was a complete success from every point of view. More than four thousand rupees were collected in cash. The Bhajans, lectures and the *Dharam Charcha* were all interesting. I do not think L. Munshi Ram played any mischief. He got 1000/ for the Gurukula and went very pleased with Dera.

You should not think that I have any mind to follow the suicidal policy of the foolish Prakashists, If some of the members are the followers of Prakash they are mainly so because you have not up to this realised the fact that a party cannot exist without a paper of its own and the want of an organ is prejudicing you more than any other fact. In any case this much is certain that no body here wishes that the Prakash controversy should affect this Samaj. You seem to think that they want to 'dethrone' me. Well probably not, but possibly so. As President I cannot take any active part in this campaign but my idea was that if I retire we can then see how far they fare and I shall then be more free to act as I like. I have no mind to remain outside the *Antrang-Sabha* and I do not think they can take any steps to which I may be opposed. I think you seem to attach too much importance to this aspect of the question. You may rest assured that whatever may happen the Prakashists cannot capture this Samaj.

It is good that after all you have decided to start a weekly at Lahore. Our contribution should be as follows—

Your self	150/-
Beli	150/-
Sukhu	100/-
Parsot	100/-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Hukam	100/-
Chaudhri	75/-
Chetan	50/-
Mukanda	50/-
Devi Dayal	50/-
Prabhu	30/-
Totel Rs.	855

If you contribute 100/- then the contributions should be as follows:—

Yourself	100/-
B. R. D.	100/-
Sukhu	75/-
Parsot	75/-
Hukam	75/-
Chandhri	50/-
Chetan	40/-
Mukanda	40/-
Devi Dayal	40/-
Prabhu	25/-
Total Rs.	620

You write that we have to contribute Rs. 600/-p. a. only, if so, the latter list will do. You may send intimation to all The presumption should be that the contributions will continue for 2 or 3 years.

Your next endeavour should be to capture the Pritinidhi and to purge it of the Rakhshas and the *Dusht* party but the first thing is to start the paper. Without it you will be altogether helpless

Will you kindly send me a syllabus of the Cambridge Senior Local Exam. or let me know where can I get it. I want to save if possible a year or two for Shanti.

Yours mostobedty.
Beliram
Dhawan.

अनुवाद—"डेरा इस्माइलखाँ २८।४—मेरे प्यारे चचा, नमस्ते—हमारा वार्षिकोत्सव समाप्त हुआ। यह सर्वतोदृष्टि पूरा कृत कार्य हुआ। चार सहस्र से अधिक रोक धन एकत्रित हुआ। भजन, व्याख्यान और धर्मचर्चा सब मनोरञ्जक थे। मैं नहीं समझता कि लाला सुन्शीराम ने कोई कुचेष्टा की। उन्हें गुरुकुल के लिए १०००) रुपये मिले और वह डेरा से बहुत प्रसन्न गए।

"आप को नहीं समझना चाहिए कि मूर्ख प्रकाश वालों की आत्मघातक नीति का अनुसरण करने की मेरे मन में कुछ है। यदि कुछ सभासद् प्रकाश के अनुयायी हैं तो उस का मूल कारण यह है, कि आपने अब तक यह अनुभव नहीं किया कि बिना (समाचार) पत्र के कोई पार्टी जीवित नहीं रह सकी और कि एक साधन का अभाव आप के मामले को अधिक बदज़न करा रहा है बनिस्बत और किसी बात के। मेरे मामले में यह निश्चित है कि यहां कोई आदमी नहीं चाहता कि प्रकाश विवाद का इस समाज पर कुछ असर पड़े। आप यह समझते ज्ञात होते हैं कि वे लोग (डेरे के सभासद) मुझे गद्दी से उतारना चाहते हैं। अस्तु—शायद नहीं, मगर कदाचित् ऐसा [ही हो] प्रधान होते हुए मैं इस युद्ध में क्रियात्मक भाग नहीं ले सकता हूं परन्तु मेरा ख़याल था कि यदि मैं अलग होजाऊं तब हम देख सकें कि कहां तक वह काम कर सकेंगे और तब मैं अपनी इच्छानुसार काम करने के लिए अधिक स्वतन्त्र हूंगा। अन्तरंग सभा से बाहर रहने का मेरा कोई विचार नहीं है और मैं नहीं समझता कि जिस बात के मैं विरुद्ध हूं वह यह लोग करेंगे। मैं समझता हूं कि आप प्रश्न के इस अंश को अधिक गुरुतर समझते हैं; आपत्तिचिन्त रहें कि चाहे कुछ हो परन्तु प्रकाश वाले इस समाज को क़ाबू नहीं करसकते।

यह अच्छा है कि अन्त को आपने लाहौर में एक साप्ताहिक (समाचारपत्र) जारी करने का निश्चय कर लिया है। हमारा चन्दा इस में इस प्रकार होना चाहिए:—आप १५०), बेली १५०) खुबसू १००), परसोत १००), हुकम १००), चौधरी ७५), चेतन ५०), मुकन्दा ५०), देवीदयाल ५०), प्रभु ३०) योग, ८५५) यदि आप १००) चन्दा देंतबचन्दे इस प्रकार होंगे।

आप १००), B.R.D.[बेलीरामधवन] १००), खुबसू ७५), परसोत ७५), हुकम ७५) चौधरी ५०) चेतन ४०), मुकन्दा ४०), देवीदयाल ४०), प्रभु २५)=योग—६२०) रुपया।

आप लिखते हैं कि हम लोगों को केवल ६००) वार्षिक चन्दा देना होगा; यदि यह ठीक है, तो दूसरी सूची पर्याप्त है। अनुमान यह होगा कि चन्दे दो या तीन वर्षों तक जारी रहेंगे।

आप का दूसरा प्रयत्न प्रतिनिधि को क़ाबू करना और उस को राक्षस और दुष्ट पार्टी से शुद्ध करना होगा, परन्तु पहला काम पत्र जारी करना है, उस के बिना आप असहाय हैं।

"क्या आप कृपाकर के मुझे सीनियर लोकल परीक्षा की पाठविधि भेजेंगे वा मुझे बतलाएंगे कि कहां से मुझे वह मिल सकती है। यदि सम्भव हो तो शान्ति का एक दो वर्ष में बचाना चाहता हूं।

आप का अत्यन्त आज्ञापालक
बेलीराम धवन

क्या साप्ताहिक पत्र जारी कर के आर्य-प्रतिनिधि सभा धवन परिवार के क़ाबू आ जायगी। प्रतिनिधि को Capture [क़ाबू] करने का बड़ा सरल सीधा मार्ग था जिस का राय ठाकुरदत्त ने कुसङ्ग में पड़ने के कारण, अनुसरण नहीं किया। तीन वर्षों तक यदि ८५५) वार्षिक धवन को मिलती देगी तो कुल २,५६५) रुपए होंगे। यदि राय साहिब २,५६५) एक ही बार सभा के जलसे में वेद प्रचार कोष के लिए सभा के मेज़ पर रख देते तो उन के सिवाय प्रधान कौन बन सकता, और यदि प्रधान बन कर एक वर्ष तक आर्यसमाजों में धर्म प्रचार करते हुए भ्रमण करते तो आर्यजनता की दृष्टि में उन के यश की जड़ें पाताल तक पहुंच जातीं।

रायसाहेब को जब लोगों ने छः वर्ष पहले गुरुकुल का मुख्याधिष्ठाता बनाना चाहा था और पांच वर्ष पहले फिर सभा का मन्त्री और फिर प्रधान बनाना चाहा तो आपके एक ही कन्धे पर एक (Evilgenius) बैठा हुआ था जिस ने आप को यूं भ्रमाया कि अपने बाहुबल से अधिकार प्राप्त करना चाहिए पड़ोसी की सहारे स्वर्ग प्राप्ति की

इच्छा नहीं करनी चाहिए। अब तो आप के दाएं कन्धे पर सर्वोत्कृष्ट Evil genius बैठा हुआ है। अब आप के दर्बार में कतरजनों की सुनाई कहां है। परमेश्वर ही अपनी अनुग्रह से आप को इस जादू की सांकल से छुटकारा दिलाए तो आप का और आर्यसमाज का, दोनों का कल्याण हो सक्ता है।

कोई भी अशिक्षित न रहे।

यदि वर्तमान संसारिक दौड़ धूप में भारतवर्ष को भी कुछ भाग लेना है तोभी उसके एक एक पुत्र वा पुत्री को साधारण ज्ञान होना आवश्यक है। परन्तु यदि इस देश ने अपनी पुरानी स्थिति को पुनः प्राप्त करना है तो ठीक शिक्षा का प्रत्येक भारत सन्तान तक पहुंचाना इस समय का मुख्य उद्देश्य होजाता है। जर्मनी ने युद्ध से पहले सर्वसाधारण तक उच्च शिक्षा पहुंचाने का बड़ा उत्तम साधन सोचा था। उनके Continuation School system के अनुसार जिस पेशे में भी कोई प्रविष्ट होना चाहता, उसी पेशे की शिक्षा के साथ साथ उसे साधारण ज्ञान की भी शिक्षा दी जाती थी। इस समय इस का उदाहरण वृन्दावन का प्रेम महाविद्यालय है। यह स्पष्ट है कि इन्डियन गवर्नमेन्ट की ओर से न तो इस समय उच्च शिक्षा को ही कुछ सहायता मिलेगी और नहीं प्रारम्भिक शिक्षा को आवश्यक करने का प्रस्ताव स्वीकार कियाजायगा। जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए स्वर्गवासी राजनैतिक-सन्यासी गोखले ने अपना अमूल्य समय प्रेस एक्ट के पास होने में लगाया, वह उद्देश्य जैसा का तैसा ही धरारह गया। तब भारत के कुछ नेताओं को अनावश्यक राजनैतिक आन्दोलन का पीछा छोड़ कर देश के व्यवसाय की वृद्धि की ओर लग कर उसके साथ २ साधारण ज्ञान देने का भी प्रयत्न करना चाहिए।

यदि कुंवर महेन्द्र प्रताप का सा विशाल हृदय रखने वाले एक धनाढ्य सज्जन प्रत्येक ज़िले में निकल आवें तो इस प्रकार के कारखाने स्थान स्थान पर खुल सक्ते हैं। प्रत्येक लोहारा, तरखाना दर्ज़ी आदि का कारखाना साधारण ज्ञान जनता तक पहुंचाने का साधन बन सक्ता है। यदि थोड़ा भी अवकाश होता तो मैं इस प्रकार की पाठशालाओं का स्कीम बना कर प्रकाशित करता। यदि कोई अवकाश-प्राप्त सज्जन स्कीम बनाकर देंगे तो मैं उस पर विचार के लिए प्रचारक के कालम खोल दूंगा।

प्रेस एक्ट का अनुचित प्रयोग।

कानपुर के सहयोगी प्रताप के द्वारा "चम्पारन,, के गोरे चाय के जमीदारों के अत्याचारों की कहानी के लिए मसाला जमाकरने को एक पर्चा छपकर बंटा था। गवर्नमेन्ट बिहार और संयुक्तप्रान्त ने उस के निषेध की घोषणा देदी है। मेरे पास उस पर्चे का अंग्रेज़ी अनुवाद अब पहुंचा है। मैंने उस पर्चे को पढ़ा और प्रेस एक्ट को भी फिर से पढ़ा। समझ में न आया कि बिहार और संयुक्त प्रान्त की गवर्नमेन्टों ने इस पर्चे में पकड़ की कौनसी बात देखी जिस से उसे (Proscribe) कर दिया। यदि अत्याचार का शब्द मात्र ही बहिष्कार वा निषेध के योग्य है तो बहुत से ऐंगलोइन्डियन समाचार पत्रों का प्रत्येक अंक ही निषिद्ध ठहर जायगा। यह सच है कि युद्ध के कारण गवर्नमेन्ट ऐसे मामलों का छेड़ना अच्छा नहीं समझती जिस से दो मनुष्यसमाजों में द्वेष फैल सके, परन्तु यह भी तो हमारे लोक-प्रिय लाटसाहेब का ही वचन है कि युद्ध तो समाप्त शीघ्र नहीं होता फिर आवश्यक सुधारों को अनिश्चित समय तक के लिए कैसे रोक दिया जाय। यदि चम्पारन में गोरे ज़मिंदारों की ओर से कोई अत्याचार नहीं होता तो पुस्तक निकलने पर उसे रोका जासकता था, और यदि वास्तव में अत्याचार हो रहे हैं तो इस पर्चे को रोकने से भी शान्ति नहीं होनेकी। जो आग अन्दर ही सिलगा करती है वह जब फूट निकलती है तो बड़ा ही भयंकर रूप धारण कर लेती है। बिहार के लाट साहेब को सोचना चाहिए कि क्या फ़रियाद को दबाना किसी खराबी का वास्तविक इलाज हो सकता है?

राय ठाकुरदत्त का प्रेम-पत्र

राय साहेब बेलीराम का पत्र पहले फ़ार्म में छप चुका था अब राय ठाकुरदत्त जी का प्रेम पत्र मेरे पास पहुंचा। वह पत्र ज्यों का त्यों पृ० २ पर छाप दिया गया है। राय साहेब के लेख का सौन्दर्य उलथा के पर्दे में छिप न जाय, इसलिए उसका अनुवाद करने का साहस मैंने नहीं किया। मैं नहीं जानता महाशय कृष्ण ने किस से सुनकर, समय से पहले 'धवन फ़ेमिली' का पर्दा फ़ाश कर दिया। यदि वह पांच छ दिन ठहर जाते तो कुछ हर्ज न होता। परन्तु फिर शायद श्री राय साहेब के प्रेम पत्र के दर्शन ही न होते।

राय ठाकुरदत्त की लेखनी से वैदिक-धर्म और ईमानदारी के नाम पर अपील कैसी शोभा देती है, यह शायद उनके छेरे बाल भाई तथा उनके लाहौरी सहकारी भाई खूब समझ सकेंगे। रायसाहेब का यह ख़याल ख़ाम है कि मैं प्रकाश पार्टी की हिमायत कर रहा हूं। जब कभी मामला आर्य प्रतिनिधि सभा में आवेगा तो वह देखेंगे कि मैं किसी का पक्षपाती नहीं हूं। मुझ से धवन पार्टी, प्रकाशपार्टी और सभी पार्टियां रुष्ट रही हैं और रुष्ट रहेंगी क्योंकि मैं अपने विरोधियों से बदला लेने का न अभ्यासी हूं और न उस के लिए अनुचित सन्धियां किया करता हूं। प्रकाश वा अन्य कोई पार्टी उसको गिरासकती है जो किसी पद का भूखा हो। मैं तो स्वयम् प्रबन्ध सम्बन्धी कामों से अलग होकर धर्म-तत्व पर विचार करना चाहता हूं। इस लिए वह दिन धन्य होगा जब मुझे अयोग्य सिद्ध कर के प्रकाश वा अन्य कोई पार्टी मेरी वर्तमान उत्तर दायिताओं से मुझे मुक्त करासकेगी।

बहादुर टिवाना और मुस्लिमलीग।

मलिक उमर हयात खां टिवाना ने खां० ब० मियां महम्मद शफ़ी के नाम सूचना, समाचार-पत्रों में, छपवाई है कि पंजाब मुसलिमलीग की कार्य विधि से पंजाब का मुसलमान जगत् असन्तुष्ट है, इस लिए श्रीमान् टिवाना जी उक्त संस्था के अधिकार से अलग होते हैं। टिवाना महाशय का अलग होना जतला रहा है कि पंजाब की लीग कुछ स्वतन्त्र काम करना चाहती है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देवनागरी लिपि को

अलंकृत करने के उपाय*

(लेखक-सुलेखाचार्य्य पं० गौरीशङ्कर भट्ट)

मान्यवर श्रीसभापति जी महोदय तथा उपस्थित सज्जनो !

अलंकृतलिपि का प्रयोजन समझाने की विशेष आवश्यकता नहीं है। भारतवासियों की अलङ्कारप्रियता के प्रसाद से, यहां के नर नारियों और बालक बालिकाओं के अङ्ग प्रत्यङ्ग सजाने के लिए नाना प्रकार के बहुमूल्य वस्त्राभूषणों की सृष्टि पुरानी पड़जाने पर भी अभीतक जीवित जागृत बनी हुई है। अङ्गढांकने के लिए साधारण गज़ी, गाढ़े, खद्दर, लट्ठा, जैनसुख और मलमल आदि पर्याप्त नहीं समझे जाते; वरन तनजेब, चिकन, जामदानी, कामदानी, जाली लोट, ढाकापाटन, गिरेट, कमख्वाब, धूपछाँह, मखमल, दरयाई, सांटन, फुलवर और गुलबदन आदि से देह की शोभा बढ़ाई जाती है। पोशाकों में गोटा, पट्टा, लैस, गोखरू और सुक्कैस आदि झलकाई जाती है। टोपी से लेकर जूतियों तक में सलमे सितारे जड़ कर बेलबूटे निकाले जाते हैं और उन में मोतियों की लड़ियां टांकी जाती हैं।

राजा महाराजा अपनी शोभा बढ़ाने और उच्चता प्रकट करने के लिए मुकट, सरपेंच, कलंगी, तुर्रा, क्रीट, कुण्डल, धारण करते हैं; गले में हीरा, पन्ना, पुखराज, नीलम और पद्मरागादि जटित कण्ठा, कण्ठी, चन्द्रहार, तथा मोतियों की मालाएं, भुजाओं पर रत्नजटित अङ्गद, कलाई में कड़े और गजगौहर के गजरे पहनते हैं—तो साधारण जनों में भी सोने चाँदी के सैकड़ों आभूषणों का व्यवहार होता है। शिर से पैर तक और अंगुलियों के पोरपोर तक के आभूषण गिनाना आवश्यक नहीं, इन दरिद्रता के दिनों में भी ऐसा कोई भी अभागा गृहस्थ न होगा। जिस के यहां हजारों से लेकर सौ पचास रुपए तक के आभूषण न हों। जो दीन और महा दरिद्री हैं वे गिलट, फूल और पीतल ही के आभूषण पहनकर प्रतिष्ठित बन लेते हैं; इन्हीं दरिद्रियों के ही झोपड़ों से निकल कर लाखों रुपए प्रतिवर्ष पीत और कांच के सूंगे मोतियों तथा रङ्गबिरङ्गी चूड़ियों और बिलायती सुलम्मे के आभूषणों के लिए बड़ाबड़ विदेशों को ढोए चले जाते हैं !

मनुष्य जैसे स्वयं सज-धज का प्रेमी है, वैसे ही अपने भवन गृह और झोपड़े तक सजाता है। मकान की शोभा बढ़ाने के लिये दरवाजों पर कई प्रकार की मेहराबें और कंगूरे बनवाता है, दीवारों में कई प्रकार के गोले, गुल्ले, ऐंड, चूड़ी और कार्निसें लगवाता है, अनेक प्रकार की मनोमोहक जालियां कटवाता है, रङ्ग बिरंगे बढ़िया२ बेलबूटे खिंचवाता है, विविध प्रकार के सुन्दर २ चित्र और झालरें लगवाता है, छतों में चित्रकारी करासता है, झाड़, हांडी, गोले और न जाने क्या क्या लटकाता है, फर्श में संगमर्मर और संगसूसा की गंगा यमुनी जड़ाई कराता है। उसपर नाना रङ्गरञ्जित गलीचे और मखमली गद्दे बिछवा कर अपनी अलंकार प्रियता का परिचय देता है। वह हाथी, घोड़े, ऊंट, रथ, बहली, बग्घी, इक्का, पालकी और पीनस आदि को भी बिना अलंकृत किये कोरा नहीं रहने देता। जो साधु वैरागी और विरक्त कहलाते हैं, जिन्हें संसार असार दीखता है, वे भी अपनी टीपटाप और सज-धज से राजा रईसों को मात करना चाहते हैं (इनके ठाटबाट का तमाशा कभी प्रयाग अथवा हरिद्वार के कुम्भ के मेले में देखिए) जो जेण्टिलमैन सुशिक्षित और भद्रपुरुष हैं, वे भी किसी न किसी फैशन के वशीभूत हैं। सारांश यह कि अलंकार मनुष्यों में व्यापक है। कवियों ने विचार तथा कल्पनाओं के उदर का नाम अलंकार रक्खा है; अलंकार ही साहित्य शास्त्र का भूषण है।

कहते हैं कि मनुष्य का भूषण रूप, रूप का भूषण गुण, गुण का भूषण ज्ञान, और ज्ञान का भूषण क्षमा है। इसी प्रकार पाण्डित्य का भूषण मधुरता, वीरता का भूषण वाक्संयम अर्थात् डींग न मारना, ज्ञान का भूषण नीनता, कुल का भूषण विनय, धन का भूषण उचित स्थान में व्यय करना, तप का भूषण क्रोध न करना, बल का भूषण क्षमा, धर्म का भूषण निष्कामता और इन सब का भूषण शील है। इस प्रकार भूषणों की भरमार और अलंकार का चमत्कार देख कर कौन सहृदय नहीं समझसकता कि देवनागरीलिपि का भी कोई भूषण या अलंकार होना ही चाहिए।

"भारत की कारीगरी" नामक पुस्तक में लिखा है कि "भारत में मुसलमानी राज्य स्थापित होने के साथ अरबी फारसी अक्षरों में बेल बूटे बनाना वा खूबसूरत खूबी तुग़रा आदि लिखने की चाल इस देश में चलनिकली है। भारत में इस विद्या को उत्तेजना देने वाले मुख्य बादशाह अकबर थे। उन्होंने महाभारत का "रज़मनामा" के नाम से अनुवाद करा उस में बढ़िया अक्षर लिखवाने के लिए चारलाख रुपया दिया था। उसी रज़मनामे की नकल जयपुराधिप के पुस्तकालय में अबतक विद्यमान है। इसतरह के अक्षरों में ८५ वर्ष पहले अलवर के राजा श्रीमान् विनयसिंह जी के समय में शेखसादी की "गुलिस्तां" लिखी गई थी। महाराज ने इस पुस्तक के लिए लेखक को पचासहजार रुपया इनाम दिया था। इस पुस्तक के हाशियों में मनोमोहक चित्र हैं और तुर्रा यह कि एक पृष्ठ की कारीगरी से दूसरी नहीं मिलती। यह कारीगरी केवल मुसलमानों ही से भारत में नहीं आई; वरन कनकते के अजायबघर में पालीभाषा की लिखी हुई एक ऐसी ही पुस्तक विद्यमान है"

पालीलिपि राजा अशोक के समय की देवनागरीलिपि है। राजा अशोक की धर्माज्ञाओं की भाषा पालीभाषा से मिलती हुई होने के कारण उनकी लिपि का नाम पाली रक्खा गया था, वास्तव

*सन्१९७१के गुरुकुलोत्सव के समय आर्यभाषा सम्मेलन में पढ़ा गया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

में यह लिपि देवनागरी का पूर्वरूप ही है। यह बात "प्राचीन लिपिमाला,, नामक पुस्तक के पृष्ठ दो के लेख से विदित होती है। इस से स्पष्ट है कि देवनागरी अक्षर पालीभाषा में, आज से दो हज़ार वर्ष पहले अलंकृत किए जाते थे। अंग्रेज़ी ग्रन्थकारों ने पता लगया है कि जिस समय भारत में, बौद्धों का दौर दौरा था, यहां चित्रकारी सिखाने के लिए एक विद्यालय मध्यभारत में, दूसरा राजपूताने के पश्चिम भाग में, तीसरा बंगाल में, चौथा नैपाल में और पांचवा कश्मीर में था। ऐसा 'भारत की कारीगरी, भाग १ अध्याय १ में लिखा है।

मुसलमानी राज्य काल में अरबी और फ़ारसी-लिपि की प्रधानता रही और उसी के प्रसाद से ऐन, ग़ैन, फ़े, क़ाफ़ तथा ख़े का उच्चारण हलक़ से करने के लिए अ, ग, फ, क, तथा ख, अक्षर एक२ नुकते से अलंकृत किए गए और ज़े, ज़ाल, ज़ो, ज्वाद के शुद्धोच्चारणार्थ 'ज' अक्षर को भी एक बिन्दु प्रदान किया गया। बस, इतना ही भाग्योदय हुआ। अनेक लोगों का कथन है कि फ़ारसी का ख़ते गुलज़ार देख कर हिन्दी वाले भी अब ऐसे अक्षर बनाने लगे हैं कि जिनके भीतर बेल बूटे होते हैं; परन्तु अभी तक हिन्दी में अधिक उन्नति नहीं हुई। ता० ४ मार्च सन् १९०४ ई० के भारत मित्र में उसके अनुभवी सम्पादक स्वर्गीय बाबू बालमुकन्द जी गुप्त ने "लिपिबोध" की समालोचना में लिखा था कि "अंग्रेज़ी में बहुत नमूने के अक्षर होते हैं। एक अक्षर दस बीस क्या सचासों शकल का होता है, पर नागरी में अब तक कुछ न था। बहुत खेंचतान कर कुछ नए ढंग के अक्षर बनाते थे। मथुरा में गोस्वामी गोपाललाल जी के यहां हमने कई एक नमूने देखे, पर वे भी ऐसे हैं कि कोई लिखने वाला लिख गया और अब वह एक जगह सुरक्षित हैं, किसी प्रकार की सहायता नागरी अक्षरों में नहीं पहुंचाते" इत्यादि। अरबी फ़ारसी अक्षरों की नुकतों वाली नाप, उनकी बनावट तथा अनेक प्रकार से अलंकृत करने की रीति "नज़्म-पर्वी" और "अरज़ङ्गचीन" आदि पुस्तकों में वर्णित और चित्रित की गई है। ख़ते आफ़ाबी, ख़ते बैजावी, ख़ते गुलज़ार, ख़ते गुबार, ख़ते माही, ख़ते तुग़रा, ख़ते तौअम, ख़ते माकूस, ख़ते सरो, ख़ते नाख़ूनी, ख़ते शिकस्ता और ख़ते तिलस्म आदि फ़ारसी लिपि के कितने ही भेद और विभेद पाए जाते हैं। इसी प्रकार अंग्रेज़ी लिपियों को अनेक विद्वानों ने बहुत काल तक अलंकृत करने में बड़ा परिश्रम किया है। उन्होंने ओल्डइङ्गलिश, सेलटिक, चर्चटेक्स्ट, जर्मनटेक्स्ट, गाथिक, रोमन, इटैलिक, एनग्रोसिङ्ग और इजिप्शियन आदि लिपियों की सृष्टिकर, उन्हें सैकड़ों प्रकार से अलंकृत कर दिया है। अथवा उन्हें उन्नति की सीमा तक पहुंचा कर गौरवास्पद बनाया है। परन्तु खेद और लज्जा की बात है कि देवनागरी लिपि की ओर किसी महाराजाधिराज या राजा रईस ने दृष्टिपात नहीं किया!

कलकत्ता प्रेसीडेन्सी के संस्कृताध्यापक पण्डित सतीशचन्द्र आचार्य विद्याभूषण एस. ए. के मतानुसार १२वीं शताब्दी तक कान्यकुब्ज राजाओं की कृपादृष्टि के कारण देवनागरी वर्णमाला ने दूसरी सहयोगिनी वर्णमालाओं से अधिक श्रेष्ठता प्राप्त की थी। तब से अबतक यह लगभग उसी अवस्था में है। गत सातसौ वर्षों में पांच सात बिन्दुओं का पुरस्कार इसे मुसलमानी जमाने में मिला था परंतु इतने लम्बे समय तक भारतवासियों ने जहां विलासिता की हद्द करदी, वहां देवनागरी को अलंकृत करने में उन का कुछ भी ध्यान न देना बड़ी ही शोक जनक बात है! सम्भव है कि लोगों ने यह समझा हो कि देवनागरी सब लिपियों की ललामभूत है, वह स्वयं सब से सुन्दर और सब गुणों से अलंकृत है, इस लिए उसे अलंकृत करने की आवश्यकता ही क्या है? जैसा कि महाकवि कालिदास ने कहा है:—

"सरसिजमनुविद्धं शैवलेनाऽपि रम्यं,
मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्मलक्ष्मी तनोति।
इयमधिक मनोज्ञा वल्कलेनाऽपि तन्वी,
किमिव हिम मधुराणां मण्डनं नाकृती नाम्॥

अथवा—

"नहीं मोहताज ज़ेवर का
जिसे ख़ूबी ख़ुदा ने दी।
कि जैसे ख़ुश्नुमा लगता है
शब को चांद बिन गहने॥"

परन्तु यह मानने को कौन तैयार न होगा कि सुवर्ण के सुन्दर २ आभूषणों की शोभा रत्नों से बढ़ाई जाती है। और सुन्दर सुडौल अंगों की शोभा अलंकारों से दूनी और चौगुनी हो जाती है। यदि विचित्र चित्रकार विधाता आकाश मण्डल के बिखरे हुए तारों की दो चार कतारें चन्द्रमा के चारों ओर विधिपूर्वक जड़ देता, तो क्या वह अधिक चित्ताकर्षक न बन जाता? वसन्तऋतु के हरे भरे वन उपवन विविध रंग के पुष्पों से कुसुमित होने पर सभी को विशेष आनन्दप्रद प्रतीत होते हैं; अतएव स्वभाव रमणीय देवनागरीलिपि को अलंकार विभूषित कर उस का सौन्दर्य बढ़ाना, न केवल लिपि का गौरवढ़ाना है, प्रत्युत उस के अपनाने वाले सज्जनों का भी महत्व प्रदर्शक है।

कई लोगों की सम्मति में देवनागरीलिपि अलंकृत हो ही नहीं सकती! परन्तु यह उन का अज्ञान अथवा भ्रममात्र है। यह विषय वाणी का नहीं, क्रिया का है और बिना बुद्धि दौड़ाए इस में सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

असल बात तो यह है कि मुसलमानी ज़माने में फ़ारसी लिपि का ही अधिक प्रचार भारतवर्ष में रहा और अधिकांश लोग उसी पर फ़िदा रहे। जब से अङ्ग्रेज़ी ज़माना आया तब से अंग्रेज़ी लिपि पर ही लोग लट्टू होगए। इधर कई सौ वर्षों से देवनागरी की ओर किसी ने ध्यान नहीं दिया। विशेषतः प्रान्तिक लिपियों ने इसे शक्तिहीन कर डाला। ऐसे अवसर में इसे अलंकृत करने का अवकाश ही किसे और कैसे मिल सकता था?

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ग्राम पत्र।

वैदिक सिद्धान्त का दैवी दृश्य

[१] ब्रह्म, जीव, प्रकृति—इन तीनों के जानने के लिए दैव ने एक छोटीसी मिशाल हमारे सम्मुख रखदी है, जिसके अनुभव करने से तीनों की भिन्नता और संबन्धादि सूक्ष्म भाव स्पष्ट ज्ञात हो जाता है। जैसे ब्रह्म सदा ज्ञानस्वरूप है ऐसे अलंकार रूप सूर्य सदा प्रकाश स्वरूप है। ब्रह्म के आधीन जैसे जीव और प्रकृति हैं ऐसे सूर्य के आधीन चांद और पृथ्वी हैं। जैसे जीव स्वभाव से न ज्ञानी है न अज्ञानी और अस्थिर है, ऐसे चांद भी स्वभाव से प्रकाश प्रकाश रहित और चंचल गति वाला है। प्रकृति जैसे जड़ और अंधकार रूप है और पृथ्वी में भी यही गुण हैं। और हर एक अपने गुणों से सगुण और दूसरों के गुणों से रहित होने से निर्गुण कहाते हैं। ब्रह्म और प्रकृति के मध्यस्थ जीव है। ऐसे ही सूर्य और पृथ्वी के मध्यस्थ चांद है। चांद जैसे २ पृथ्वी की ओर झुकता जाता है वैसे २ ही अंधकाराकृत होता जाता है, जब पूरी तौर पर पृथ्वी का ही आश्रय कर लेता है तो उसमें प्रकाश का सर्वथा अभाव हो जाता है और अमावस्या का अंधा चांद कहा जाता है। जब सूर्य की ओर झुकता जाता है तो क्रमशः प्रकाश पाता जाता है; जब पूर्ण रूप से सूर्य का ही आश्रय कर लेता है तो पूरा प्रकाश पाकर पूर्णिमा का चांद कहा जाता है। परन्तु सूर्य में लीन या तत्स्वरूपादि नहीं हो जाता और न पृथ्वी का आश्रय लेने से तद्वत् हो जाता है; हां, उस अवस्था को जैसा कहें कह सकते हैं परन्तु वह सूर्य और पृथ्वी दोनों से भिन्न ही रहेगा और चंचलता के कारण सदैव के लिए न तो चांद पूर्णिमा का बना रहता है और न अमावस्या का बना रहता। चांद का पृथ्वी के गिर्द घूमना और पृथ्वी का सूर्य के गिर्द घूमना और उसकी कक्षा में रहना यह जतलाता है कि जीव प्रकृति संबन्ध के बिना न कर्म कर सकता है और न उसका भोक्ता हो सकता है और प्रकृति ईश्वर की कक्षा आदि सम्बन्ध के बिना रचित नहीं हो सकती और भोक्ता के भोगने योग्य स्वयं नहीं बन सकती। यह ब्रह्म जीव और प्रकृति के समझाने के लिए जिसके अनुकरण रूप सूर्य चांद पृथ्वी के भाव को समझ आजाने से उनका जानना सुलभ हो जाता है और वेदोक्त गूढ़ विषयों को प्रत्यक्ष भाव होकर मिथ्या कल्पनाओं से छुटकारा हो जाता है। ऐसे और कई गूढ़ सूक्ष्म भावों को समझो जिसके लिए परमात्मा ने नमूने के तौर अनुकरण रूप कई मिसालें हमारे सामने रखदी हैं जिनका जानना मनुष्यों को परमावश्यक है।

(२) ईश्वर सत्ता और उसका अनुकरण—ईश्वर सारे ब्रह्माण्ड में एक रस सत्तात्मक व्याप रहा है, और जिसकी उपस्थिति से हाथ पैरों के बिना रचना आदि सब काम हो रहे हैं चेतन शक्ति के बिना जड़ प्रकृति निकम्मी है। इस भाव का पूरा निश्चय दिलाने के लिए विभु ने हमारे लिए सामने एक नमूना रक्खा है जिसका अनुभव नित्य-प्रति करते हुए उस महान् सत्ता का दृढ़ विश्वास रखें और नास्तिकपन से छूटे रहें। नमूना क्या है? बड़े से बड़े और छोटे से छोटे सूक्ष्म शरीर तक दृष्टि डालते हुए ब्रह्माण्ड की ओर विचारने से एकसा काम होता नज़र आवेगा। हम देखते हैं कि प्रकृति का बना हुआ शरीर जड़ है और उसमें शरीर के व्यापार चलाने वाली सत्ता उससे भिन्न है। बिना हाथ पैरों के केवल उसकी उपस्थिति से ही अंग प्रत्यंगादि अपना २ काम नियम बद्ध कर रहे हैं जिसको प्राकृतिक इन्द्रियादिक देखने आदि में असमर्थ हैं। शरीर से संयोग वियोग होने पर भी नहीं पकड़ा जाता और न दीखता है क्योंकि हमारे नेत्रादि इन्द्रियां प्राकृतिक हैं। जो प्रकृति से भिन्न और किसी का ग्रहण नहीं कर सकता आत्मा चेतन रूप प्रकृति से भिन्न जिसका अनुभव शरीर के संयोग वियोग से हो सकता है। यह सारे शरीर में भरपूर रहता है जिसकी अनिधता से धात्वोषधात्यादि कलेजा आदि अपने काम को पूरा कर रहे हैं। गर्भाशय में अनेक मूर्तियें तय्यार की जाती हैं, जब कभी उनके साथ नियम विरुद्ध काम हो जाता है तो सारे शरीर में गड़बड़ हो जाता है। अहा! जब शरीर से चेतन शक्ति का वियोग हो जाता है तो सारे का सारा असमर्थ होकर निढाल पड़ जाता है, जो इसके काम अधूरे रहे उनका संवारना तो कहां जिसका एक रेशह भी चल नहीं सकता। देखो जो इसके शरीर में व्यापक चेतन था जिस की अनुपस्थिति शरीर की शोभा को दूर कर कहां चली गई। उस सर्व शक्तिमान् सर्व व्यापक ने इस छोटे से व्यापक को क्यों जुदा कर दिया? दो बातों की सिद्धि के लिए। एक तो ससीम कर्म भी ससीम होने से उसके फल की सीमा भी होती है और संयुक्त पदार्थ का वियुक्त होना भी जरूरी है और दूसरा प्रकृति पूजक शरीराभिमानिओं को चेतन अचेतन वस्तुओं का ज्ञान और उनके कर्म्म स्मरण रहें और अभिमानिओं का अभिमान तोलने के लिए दिखलाया है कि देखो जो गुमान भरी बातें करता था सत्ता के मानने का ही था अब इसको किस बात की कमी है, अब शरीरक एक अणु मात्र भी काम चलाने से हाथ धो बैठा है। अच्छा दूसरे जीवित अवस्था वाले ही इस काम को पूरा करदें क्या यह थोड़ा सा काम उनके लिए कठिन है।

यदि यह तुच्छ से शरीर का काम जब चेतन शक्ति बिना नहीं चलसकता तो ब्रह्मांड बिना चेतन शक्ति से किस तरह चल सकता है। क्या ब्रह्मांड को चेतन शक्ति की आवश्यकता नहीं? हमको एक शरीर के व्यापार को देख कर ब्रह्मांड के व्यापार को भी ऐसे ही समझलेना चाहिए। शरीर में जीवात्मा एक ही व्यापकादि गुण वाला है जिसमें दूसरे आत्माओं की कोई आवश्यकता नहीं। और न बुद्धि ही मानती है। जिस एक की सन्निधाता से बिना हाथ पैर आदि के सब काम नियमबद्ध हो रहे हैं। ऐसे ही ब्रह्मांड का नियम समझ लेना चाहिए-बिना हाथ पैर आदि के केवल परमात्मा की सन्नि-

ध्यता से सब रचना हो रही है जैसे एक शरीर में एक आत्मा की आवश्यकता है ऐसे ब्रह्मांडभर में अनेक ईश्वरों के स्थान एक परमात्मा की आवश्यकता है बहुतों के होने से हमारी तरह सत्यासत्य का विवेक छोड़ केवल हठ धर्मादि वश जगत के नियमों को तोड़ फोड़ कर इसके व्यापार पर ही पानी फिर जावे। जब एक जीवात्मा के उपरांत दूसरे जा जाकर ईश्वर ही ईश्वर बन जावें तो पीछे क्या रहा जिसके नियम अटूट हैं उन्हीं नियमों के सच्चे भरोसे पर ज्योतिषी लोग सैंकड़ों वर्ष पहिले ही तिथि पत्रिकाएं लिख देते हैं जिन में सूर्यादि ग्रहणः ग्रहणतिः तारो का उदयास्त वक्रमार्गी आदि लिखे जाते हैं और उसी २ समय पर गति करते दिखाई देते हैं। देखो मार्गी तारे को बराबर टाइम पर बक्री होने को कौन मजबूर करता है जो पीछे को ढुलकना आरम्भ कर देता है फिर मार्गी होने के समय पर आगे बढ़ने के लिए कौन आज्ञा देता है यदि ज्योतिषी लोग गणित से भूल भी जांय परन्तु दैवी शक्ति कदाचित् नहीं भूलती। हम को तुच्छ से शरीर से लेकर ब्रह्मांड भर में चेतन से काम होता मानना चाहिए। कर्त्ता के विना काम, मुन्सिफ के विना इन्साफ, मुलजिम के विना इन्तजाम, हाकिम के विना हकूमत, नियामक के विना नियम नहीं चल सकता। उस परम पिता परमेश्वर की महिमा का अहर्निश अनुभव करते हुए भी जानबूझ कर अंधे बन कर अपना ही सत्यानाश कर रहे हैं कृतज्ञता के भागी और कुलघ्न बन रहे हैं। देवी कामों को बिगाड़ सुधार नहीं सकते केवल स्वार्थ सिद्धि हठधर्म्मी प्रकृति प्राजकता और बड़प्पन पाने की गर्ज़ से मेंडक की तरह टर टर कर उन्नति का द्वार मनुष्य शरीर अनमोल रत्न को कीचड़ में फेंक रहे हैं। अगर हम इस छोटे से अचेतन शरीर को चेतन कर के नहीं दिखा सकते और सदैव के लिए आप की हुकूमत में नहीं रख सकते तो हम को यही दशा अपनी समझ लेनी चाहिए। स्वतन्त्रता की डोरी से जिधर चाहो उधर करलो।

ओम् शम्

[पं० रामेश्वर शर्मा, ग्राहक सं० ५४१]

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

आवश्यक सूचना

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन वि० आ० षाढ़ शु० २ ता० २ जुलाई सन् १९१६ रविवार को सन्ध्या समय ४ बजे से सम्मेलन कार्यालय में होना निश्चित हुआ है। स्थायी समिति के सदस्यों से निवेदन है कि उक्त अवसर पर पधार कर निम्नलिखत विषयों पर अपनी सम्मति प्रदान करें, यदि किसी कारण से उपस्थित होना सम्भव न हो तो पत्र द्वारा अवश्य अपनी सम्मति देने की कृपा करें।

१—आगामी सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति के पद के लिए पांच नामों की सूची बनाना।

नोट—आगामी सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लिए जबलपुर में स्वागत कारिणी समिति बन गयी है, अतएव हिन्दी साहित्य सम्मेलन के २९ वें नियम के अनुसार समस्त हिन्दी साहित्य सम्मेलन से सम्बन्ध सभाओं पैसा फंन्ड समितियों और स्वागत कारिणी सभा जबलपुर तथा स्थायी समिति के सदस्यों से विवेदन है कि वे उपर्युक्त तिथि के पहले ही सभापति के आसन के लिए उपर्युक्त पांच सज्जनों की एक एक सूची बनाकर सम्मेलन कार्यालय में भेजने की कृपा करें।

२—आय व्यय की स्वीकृति।

३—स्थायी समिति के गत अधिवेशन में सम्मेलन के स्थायी कोष के लिए धन संग्रह करने के विषय में जो उपसमिति बनायी गई थी उसकी तैयार की हुई व्यवस्था पर विचार।

४—उपदेशक विभाग की बनाई व्यवस्था पर विचार।

५—नागरी प्रचारिणी सभा रायबरेली के मन्त्री के पत्र पर विचार जिस में उन्होंने अपनी सभा को सम्मेलन से संबध करने की प्रार्थना की है।

६—पं० मालवलाल चतुर्वेदी खण्डवा के पत्र पर विचार जिस में उन्होंने स्थायीसमिति में अपने स्थान पर पं० कृष्ण प्रसाद मिश्र एम० ए० बुरहानपुर, पं० चन्द्रगोपाल जी मिश्र बी० ए० हरदा और पं० कालूराम जी गङ्गड़े बी० ए० एल० एल बी० खण्डवा, इन तीन सज्जनों में से किसी को चुन लेने की प्रार्थना की है क्योंकि आप की राय में सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के कार्य्य में मध्यप्रदेश से ये सज्जन अधिक उपयोगी होंगे।

७—स्थाई समिति के गत अधिवेशन के निश्चय के अनुसार सम्मेलन के मंत्री मण्डल द्वारा बनाये हुए आरायज़नवीसी परीक्षा के मसौदे पर विचार।

८—षष्ठ हिन्दी साहित्य सम्मेलन के मन्तव्य के अनुसार नियमावली का मसविदा सम्मेलन से पूर्व प्रकाशित करने के लिए सम्मेलन की नियामावली पर विचार।

९— अन्य आवश्यक कार्य जो उपस्थित हों।

रामकृष्ण सारस्वत
सहायक मंत्री

—०—

महान् दुःख

१८ वैशाख सं० १९७३ के सद्धर्म्मप्रचारक भाग २८ संख्या ३ पृष्ट १४ में "निवेदन" नामक शीर्षक का एक लेख आर्यसमाज सिकन्दराराऊ का छपा है, उस लेख में उन मन्त्री जी ने समाजों और सामाजिक पुरुषों की ओर से पत्रोत्तर में विलम्ब होने अथवा उत्तर न मिलने की शिकायत करते हुए शोक प्रकट किया है। मैं इस विषय में अपने मित्र (लेखक महाशय) से सर्वथा सहमत हूं। साथ ही इससे भी बढ़कर महान् शोक और अत्यन्त हानिकारक तथा लज्जाजनक असभ्यता की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं जिसे सुनकर हमारे लेखक महाशय अपना दुःख भूल जायं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गे। अर्थात् जब कभी किसी अज्ञात बात को जानने के लिए बाहर वाले भद्रपुरुष पत्र द्वारा मन्त्री आदिकों से कुछ पूछते हैं अथवा किसी व्यक्ति विशेष के गुण दोष जानना चाहते हैं तो कोई विरले ही भद्र-पुरुष यथार्थ उत्तर देते हैं, शेष कितने ही महाशय तो बिना अनुसन्धान किये ही कुछ अन्टसन्ट लिखकर बेगार सी काट देते हैं उस से पूछने वाला या तो निराश हो जाता है अथवा उनके भ्रमात्मक उत्तर को यथार्थ मानकर अपनी हानि कर लेता है। तथा कितने ही महोदय [समाज के पक्के शत्रु] उत्तर लिखते समय अपनी तथा अपने मित्रों की स्वार्थ सिद्धि का पूरा २ ख्याल रखते हैं। यदि उस विषय से उनका साक्षात कोई सम्बन्ध हो वा परम्परा से किसी मित्र वा कुटुम्बी अथवा किसी खुशामदी का उस मामले से लगाव होतो अत्यन्त पक्षपात और झूठ से लिथड़ा हुआ तथा पौलिसी के मुलम्मे से सजाया हुआ उत्तर लिखते हैं।

शोक! पूछने वाला तो आप को सामाजिक पुरुष जानकर मन्त्री और प्रधान को विश्वास पात्र (धर्माध्यक्ष) समझ कर सम्मति लेता है और मन्त्री तथा प्रधान साहब विश्वासघात करके अपने मेल वाले की तरफ़दारी में महान् मिथ्या उल्लेख करते हैं। अनेक बार ऐसा देखने में आया है कि प्रसिद्ध से प्रसिद्ध बदमाशों की झूठी तरफ़दारी करने में पदाधिकारी लोग नहीं चूके हैं और ऐसी घटनाएं प्रायः होती ही रहती हैं। ये बातें केवल छोटे २ ही समाजों में नहीं हैं किन्तु बड़े २ सभाओं और बड़ी २ सभाओं तथा बड़े २ ऊंचे पदाधिकारियों में भी ऐसे अनेक उदाहरण मिल सकते हैं। अब आप ही बताइये हम क्या करें? हम आप सर्वज्ञ नहीं हैं किसी अज्ञात बात को जानने के लिये मित्रों से ही सहायता ली जाती हैं। मन्त्री वा प्रधान से बढ़कर विश्वास-पात्र कौन हो सकता है। सर्वसाधारण का यही खयाल होता है कि अमुक समाज ने अमुक व्यक्ति को मन्त्री वा प्रधान बनाया है तो इसमें कुछ धर्म का प्रेम अधिक ही होगा।

शोक! जिस सभा वा समाज के सभासद संसार भर के उद्धार का बीड़ा उठावें निरन्तर सचाई की धूम मचावें, जिनकी ओर करोड़ों मनुष्य इस बात की टक टकी लगाए बैठे हैं कि ये हमारा बेड़ा पार करेंगे, उनकी यह शोचनीय दशा!

ऐसे लोगों की तरफ से मेरा तो विश्वास जाता रहा और मेरा अनुमान है कि यदि यही दशा रही तो आगे चलकर परस्पर के विश्वास में और भी कमी हो जायगी और समाज के संगठन को बड़ा भारी धक्का लगेगा। इस लिए समाज के शुभचिन्तकों और लीडरों का कर्तव्य है कि इस बिमारी को हटाने का प्रयत्न करें—

मंगलदेव साधु
आगरा

—०—

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

१—स्वास्थ्य ब्रह्मचारियों का अच्छा है। तीन को साधारण ज्वर है और एक को खसरा की संभावना है अतः उसे औरों से पृथक् रक्खा हुआ है। पढ़ाई आजकल प्रातः ७½ से १०½ तक होती है और मध्यान्होत्तर २ से ४½ तक होती है। इस वर्ष पद श्रेणी के हो जाने से एक नए अध्यापक की आवश्यकता थी। ब्र० देवराज जी सिद्धान्तालंकार स्नातक गुरुकुल के आजाने से वह पूरी होगई; उक्त ब्रह्मचारी जी बड़ी योग्यता और प्रेम से कार्य्य करते हैं।

२—इस शाखा का कार्य्यक्षेत्र अब विस्तृत हो चुका है, आवश्यकतायें बहुत बढ़ गई हैं। प्रारम्भ में आर्य्य जनता के विशेष ध्यान न देने पर भी जैसे तैसे कार्य चलता रहा अब यदि पूरा बल न दियाजायगा कार्य्य चलना कठिन होगा। इस समय इस की जो आवश्यकतायें हैं उन्हें जतलादेना ही हम सब गुरुकुल सेवकों के आधीन है, उन का पूरा करना आर्य्य पुरुषों के अधिकार में हैं।

३—खरास के लिए कई बार सूचना दी गई है जिसके बिना बड़ा कष्ट है। ३५) रु० एक सज्जन ने भेजे हुए हैं यदि १२०) और आजावें संगवा लिया जावेगा।

४—गोशाला में उत्तम गौओं के न रहने से २५ सेर प्रतिदिन दूध बाज़ार से लेना पड़ता है। वह बाज़ारू दूध क्या अच्छा हो सक्ता है? और प्रातः दूध के न होने के कारण ब्रह्मचारियों को दूध के स्थान में कुछ अन्य वस्तु बना कर देनी पड़ती है जो कि दूध के बराबर लाभ दायक नहीं। अतः यदि दानी पुरुष चार चार वा पांच २ सेर दूध देने वाली १० गौएं भेजदें वा उन के ख़रीदने के लिए प्रत्येक गौ का मोल ५०) रु० के हिसाब से दश दानी पुरुष पचास २ रुपया भेजदें तो अन्य दश गौएं मोल लेली जावें। इस कमी को पूरा करने के लिए संरक्षकों को विशेष ध्यान देना चाहिए।

५—विद्यालय के तीन कमरों के लिए प्रत्येक के वास्ते पांच २ सौ रुपया चाहिए ताकि इमारत का झगड़ा समाप्त होजाय।

६—पुस्तकालय में अभी कुल ५२३ पुस्तकें हैं—संस्कृत, उर्दू, आर्य्यभाषा, अंग्रेजी सब भाषाओं की पुस्तकें चाहिएं—जिन के पास हों पुस्तकें भेज सक्ते हैं वा धन भेजकर सहायता हो सकी है।

७—ब्रह्मचारियों के लिए ७० थाली और ७० कौल सुराहीदार अथवा कांशी के चाहिएं।

विशेष निवेदन

८—श्री० ला० नौबत रायजी प्रबन्धकर्ता तथा श्री० बाबू गोपीनाथ जी मन्त्री सहायक साथ गुरुकुलार्थ धन तथा अन्न एकत्र करने के लिए भ्रमण कर रहे हैं। जहां २ पहुंचे आर्य पुरुष यथाशक्ति उन की सहायता करें ताकि यह कार्य निर्विघ्न चलता रहे।

आप का
विश्वमित्रः
शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र

संसार समाचार पर टिप्पणी।

जंगली चिड़ियों के पंख युरुप में—बड़े महगे भाव बिकते हैं। बर्मा देश के ठाकुरबख़श ने २२ पाउन्ड सुन्दर पंख जमा किए। रंगून के मजिस्ट्रेट ने, जङ्गली पक्षियों की रक्षा के क़ानून के अनुसार, ठाकुरबख़श पर ५०) जुरमाना किया। पायोनियर लिखता है कि पंख लण्डन में ६६,६६०) में बिक सकते हैं। बात यह नहीं है कि पंखों के लिए पक्षियों को मारडालना मने है, प्रत्युत यह दण्ड इस लिए दिया है कि ठाकुरबख़श को मारने का अधिकार न था। तब क़ानून का नाम बदल देना चाहिए।

सनातनधर्म कालिज लाहौर—का सम्बन्ध, दूसरे प्रार्थना पत्र पर पंजाब युनिवर्सिटी ने स्वीकार कर लिया है। यह समाचार बड़े हर्ष से सुना जायगा, परन्तु जो यह शर्त लगाई गई है कि प्रथम वर्षीय कक्षा में ६० से अधिक और तृतीय वर्षीय कक्षा में २० से अधिक छात्र न भरती किए जायं, इसको सुनकर कुछ सन्तोष नहीं होता। यदि कालिज के प्रबन्धकर्त्ता अधिक प्रबन्ध कर सकें तो क्यों न अधिक छात्र प्रविष्ट हों। श्री रायबहादुर रामशरण दास जी के ५० सहस्र नक़द देने पर स्वीकृति मिली है। एक शर्त गवर्नमेन्ट की ओर से बहुत अच्छी कराई गई है—वह यह कि कालिज-भवन रावी के दूसरे किनारे, नगर से दूर, बनाया जावे।

दिल्ली के चमार ईसाई होने से बच गये—सहयोगी देश (लाहौर) से यह समाचार उद्धृत किया गया था कि दिल्ली के बनियों के बर्ताव से तङ्ग आकर वहां के १५०० जूते गांठने वाले चमार ईसाई होने वाले थे। उसी सहयोगी से यह हर्ष समाचार मिला है कि आर्यसमाज की बदौलत हिन्दू बनियों की आंखें खुल गईं और अब आपस में निबटारा होकर चमारों ने 'ज़र' के लालच से मत परिवर्तन का विचार छोड़ दिया।

आर्यसमाज सहारनपुर—के सहकारी मन्त्री पं० शालिगराम सूचना देते हैं कि उक्त समाज के लाला देवीचन्द जी रईस तथा श्री हरनामसिंह जी सहित वह बहुतसा कष्ट सहन कर के पास के ग्रामों में भिक्षा करने के लिए गए। आंधी तथा वर्षा की भी कुछ परवाह न करते हुए १४ घन्टों में २५ मील पैदल यात्रा करने के अतिरिक्त पांच से अधिक ग्रामों में अनाज और नक़द चन्दा लिखवाया। ३५ मन पक्की गेंहूं और १३।) रोक लिखवाए गए जिन में से कुछ वसूल भी कर लाए। सारा चन्दा वसूल होने पर आधा स्थानीय आर्य पुत्री पाठशाला के लिए रखकर शेष आधा गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी को भेज दिया जावेगा। श्री शालिग्राम जी लाला देवीचन्द महाशय की बड़ी प्रशंसा करते हैं जिनके लिए इतना पैदल चलने का प्रथम अवसर हो है।

प्रयाग हिन्दू बोर्डिंग हौस के कुछ हिन्दू अंजुएट और अन्डर अंजुएट विद्यार्थियों के विषय में प्रयाग के मासिक "विद्यार्थी" के सम्पादक लिखते हैं—"उनकी दृष्टि में तो समाज की कुरीतियां कोई दिखाई ही नहीं देतीं।.....यदि ऐसा न होता तो क्या वे उस दिन-होली के दिन—काला मुंह करके हाथ में-झाड़ू टोकरा ले गधे पर सवार होकर घूमते फिरते। श्रीमती एनीबेसेन्ट के एक अनन्य भक्त ने तो इस करनी का, बड़े गौरव के साथ समर्थन भी दिया!" पञ्जाब की राजधानी लाहौर में, ऐसा होना, असम्भव है, क्योंकि ऐसे विद्यार्थियों का सारा विद्यार्थी जगत बहिष्कार कर देता। संयुक्त प्रान्त में नेता राजनीति की ओर अधिक झुके हुए हैं, परन्तु समाज सुधार की ओर उन का किञ्चित मात्र भी ध्यान नहीं है।

आर्य कन्यापाठशाला प्रयाग-के आठवें वार्षिक वृत्तान्त से ज्ञात होता है कि सं० १९१५ के अन्त में कन्याओं की संख्या २४९ थी और व्यय वार्षिक ४४२७॥-) हुआ। पढ़ाई सरकारी मिडल मदर्सों की तरह होती है। मिडिल परीक्षा में ८ में से ६ उत्तीर्ण हुई। अन्त में दर्शकों की सम्मतियां इङ्गलिश भाषा में दी गई हैं, जिन का अनुवाद साथ है।

डी० ए० वी० स्कूल देहरादून के नए मन्दिर की आधार शिला रखते हुए श्रीमान लाट साहेब सरजेम्समेस्टन ने कहा कि गिरे हुओं को उठाने और युवकों को शिक्षित करने का बड़ा उत्तम काम आर्य्य समाजकर रहा है।

अखबार-ए-आम के सम्पादक—महाशय गोपीनाथ जी जो काम करते हैं-"लाजवाब" ही करते हैं। अपने ३ मई के अंक में आपने एक लम्बी बात चीत छापी है जो किसी अंग्रेज़ सरकारी आफ़िसर के साथ हुई बतलाई जाती है। साहेब ने हिन्दोस्तानी प्रेस पर यह दोष दिया कि वे पुलिस के विरुद्ध खूब लिखते हैं, परन्तु उनकी कारगुज़ारी की प्रशंसा कभी नहीं करती। यद्यपि गोपीनाथ जी (जैसा कि स्वयम् मानते हैं) आत्मा की आवाज़ के विरुद्ध साहब बहादुर को कुछ न कुछ उत्तर देते रहे परन्तु अन्त को मान लिया और अब सब सहयोगियों तथा हिन्दुस्तानियों से प्रार्थना करते हैं कि पुलिस के अच्छे कार नामों के लेख उनके पत्र में भेजा करें। आगामी अंक में आरम्भ वह स्वयम् करेंगे। आप लिखते हैं—"इस अङ्क में "बिस्मिल्लाह" या "जयगणेश" मैं खुद करूंगा" परन्तु आशा यह करते हैं कि अन्य महाशय भी वैसे ही लेख भेजें जिससे "पुलिस की कारवाइयों का दिलचस्प मजमुआ" हो जायगा। पण्डित साहब के लिए तो "इन्शाअल्ला" मजमुआ दिलचस्प ही होगा क्योंकि "मूजबे खुशनुदीमिज़ाज हुक्काम बालारस्त" होगा, परन्तु लेखकों को क्या मिलेगा?

उर्दू के पक्षपाती—ध्यान देकर पढ़ें। मौलवी अब्दुलकरीम साहेब बङ्गाल की मुसलमीन तालिमी कान्फ्रेन्स के प्रधान ने कहा—"मुझे सन्देह है कि बङ्गाल में मुसलमानों की शिक्षा की उन्नति को शिक्षा के माध्यम के अनुचित चुनाव के कारण, बहुत रुकावट मिली है। मैं कह चुका हूं कि एक समय मैं बङ्गाल के मुस्लिम लड़कों की प्रारम्भिक शिक्षा का माध्यम उर्दू बनाने पर बल देता था और किस प्रकार मुझे अपनी सम्मति बदलनी पड़ी। कलकत्ता, ढाका और मुर्शिदाबाद के नगरों के मुट्ठी भर के अतिरिक्त, बङ्गाल के मुसलमानों की मातृ-भाषा बङ्गाली है, और उर्दू, सर्वतया उनके लिए एक विदेशी भाषा की न्याईं है।" क्या हमारे मुसलमान भाई अब भी यह नहीं सोचेंगे कि जब उर्दू बङ्गाल, मुम्बई, मद्रास पंजाब और सिन्ध के मुसलमानों के लिए विदेशी भाषा की न्याईं है तो क्यों न देव नागरीअक्षर और हिन्दी राष्ट्र-भाषा के वे भी पक्षपाती बनें। हमारी सम्मति में हिन्दी के पक्षपाती तो संस्कृत शब्दों का हिन्दी में अधिक घुसेड़ना छोड़दें और मुसलमान अर्बी फ़ारसी के शब्दों की उपेक्षा करके, एक हिन्दी भाषा का प्रचार सारे हिन्दुस्तान में करके एक राष्ट्र की बुनियाद डालें। परन्तु यह स्वप्न है, जो शायद शीघ्र जागृत में नहीं बदल सकेगा।

हरिद्वार में सहृदया समिति—स्थापित हुई है जिसमें उदासी श्री बालराम के शिष्य श्री आत्मस्वरूप जी, ऋषिकुल के पं० गिरधर शर्मा और पं० शालग्राम तथा भारतोदय के भूतपूर्व सम्पादक महाशय पद्मसिंह जी मिलकर संस्कृत तथा हिन्दी कविता का उद्धार करेंगे।

पं० गणपति शर्मा की माता तथा भाई लिखते हैं:—"पं गणपति शर्मा ने अपनी सारी आयु वेदों की रक्षा में व्यय की.....जब तक वह जीते रहे हम दोनों मां बेटे को हर प्रकार की सहायता मिलती रही...परन्तु चार साल से उनके मरने के पश्चात् हमको ख़र्च की बड़ी तङ्गी हो रही है। कुछ काल तक तो आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान, अजमेर से हमको ख़र्चा मिलता रहा। अब उक्त सभा ने देने से इनकार कर दिया है। वह कहते हैं कि हमारे पास रुपया नहीं जो तुमको ख़र्चा दिया जावे, और कहा कि ज्वालापुर वालों को सब आर्य-समाजों से रुपया मिला है; वह तुम को अवश्य सहायता देंगे। ज्वालापुर वालों को इस बारे में बहुत लिखा पढ़ी की, परन्तु उन्होंने कोई उत्तर न दिया। ...पं० वंशीधर जी वकील के कहने से मंत्री नरदेव शास्त्री जी से कहा गया—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

माता जी ने कहा—परन्तु उन्होंने ·····और कुछ न किया। अब सब आर्यसमाजों और आर्य सज्जनों से प्रार्थना है कि हमें खबर मिलना चाहिये। ज्वालापुर महाविद्यालय वालों ने १०,०००) को अपील करके ६०००) जमा भी कर लिया, परन्तु गणपति हाल बन कर क्या होगा जब उनकी माता और भाई भूखों मर रहे हैं··· अधिक शोकजनक यह घटना है कि जयपुर में पण्डित गणपति शर्मा की सैकड़ों रुपयों की पुस्तकें रक्खी थीं जो लोग बेच कर खा गए।··· जो लोग सहायता भेजना चाहें वह चुरू राज बीकानेर ठिकाना मोंदोनी शामलाल पुरोहित कनिष्ठ भ्राता प० गणपतिशर्मा के नाम भेजदें।" हमारी सम्मति में यदि ज्वालापुर से कुछ सहायता दी जाय तो वह भी राजस्थान आर्य्यप्रतिनिधि सभा के द्वारा और यदि कोई आर्य्य वा आर्यसमाज भेजना चाहें तो वह भी उक्त सभा के मंत्री महोदय के नाम ही भेजें।

आर्य्यसमाज सनूर (रियासत पटियाला) का जलसा—२१-२२-२३ ज्येष्ठ, १९७३ को होगा। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी तथा श्री स्वामी सत्यानन्द जी को सेवा में मंत्री जी की प्रार्थना है कि जहां भी हों वहीं से पधारें।

आर्य्यसमाज लायलपुर में—पारिवारिक उपासना का क्रम जारी है। १ वैशाख को म० खुशालराय जी मैनेजर नैशनल बैंक, ८ को म० लदमणदास जी कोलमचन्ट और १५ को म० बिहारीलाल के यहां पारिवारिक उपासनाएं हुईं। १०॥) वेदप्रचार का दान मिला।

अखबार इंगलिशमैन—की शिकायत है कि युद्ध को आरम्भ हुए २० महीने बीतने पर भी अब तक शत्रु को बनाई वस्तुएं बिक रही हैं। उन का अनुमान है कि अभी तक किसी न किसी तरह शत्रु अपना व्यापार का माल यहां पहुंचाता है। यह सर्वथा भूल है। जर्मनी आदि का माल जहां बहुत पड़ा था वही बिक रहा है। नहीं तो अब जहाज़ के यहां माल कैसे आया होगा; और शत्रु के जहाज़ के आने का मार्ग ही कहां है।

सनातनधर्म सभाएं—बहुत काल से नवीन साम्प्रदायिक समाजें बन रही थीं। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि अब इन समाजों में भी सनातन धर्म उन्नत हो रहा है। अभी समाचार आया कि ५ वैशाख को सनातनधर्म-सभा श्रीनगर ने एक कश्मीरी ब्राह्मणपुत्र को ईसाई मत से वापस करके बिरादरी में मिला लिया। साढ़े तीन सौ कश्मीरी ब्राह्मण इस उत्सव में सम्मिलित थे। ब्रह्मचर्याश्रम के पुनरुद्धार तथा स्त्री शिक्षा के लिए भी सनातन सभाएं बल देने लग गई हैं और वह दिन दूर नहीं है जब वेदों पर लगाए सब कलंकों को धोकर एक ही वैदिकसमाज का राज्य में राज होगा।

आर्य्यसमाजों के वार्षिकोत्सव—बड़े उत्साह से हो रहे हैं। अमृतसर के जलसे पर जहां उत्तमोत्तम व्याख्यान हुए वहां १०००) विविध-लिपियों के लिए चन्दा हुआ। लुधियाने में भी बड़ी रौनक रही और १३००) चन्दा हुआ। दोनों जलसों पर स्वामी सत्यानन्द जी तथा स्वामी सर्वदानन्द जी ने अमृत-वर्षा की। अमृतसर में श्री स्वामी अच्युतानन्द जी ने उपस्थित सज्जनों को वेदामृत पिला कर वेदों की ओर रुचि दिलाई। नाहन का जलसा भी अच्छा हो गया। यह सब कुछ होते हुए भी शोक यह है कि नए सभासदों की संख्या नहीं बढ़ती।

नए सभासदों की संख्या क्यों नहीं बढ़ती?—इस प्रश्न का उत्तर एक उपदेशक महात्मा ने मुझे यह दिया था कि प्रायः प्रत्येक आर्य्यसमाज में धड़ाबन्दी है इस लिये यदि सामयिक अधिकारियों का समर्थन करने वाले सज्जन आगे आवें तो उन्हें सभासद बनाया जाता है, नहीं तो उन्हें सभासद बनने को प्रेरित नहीं किया जाता। यदि यह ठीक है तो इस अनुचित अवस्था को दूर करने का शीघ्र यत्न करना चाहिए।

आर्य्य उपसभा अम्बाला के अधिकारियों का चुनाव डा० भानाराम जी अम्बाला छावनी प्रधान, म० अमोलकराम जी मुस्ताफ़बाद उपप्रधान म० अत्रसेन जी कालका उपप्रधान म० नारायणसिंह जी शाहपुरा मन्त्री म० अमरनाथ जी शाहपुरा उपमन्त्री म० लहनासिंह जी अम्बालाशहर के कोशाध्यक्ष, म० उजागरप्रसाद जी अम्बालाछावनी निरीक्षक।

आर्य्य समाजों की सम्मतियां

(१) कसूर (जि० लाहौर) आ० स० ने पुलिस लाने की अनावश्यक कार्यवाही पर शोक प्रकट किया है, और प्रस्ताव किया है कि लाहौर आ० स० का कोई भी प्रतिनिधि सभा में न लिया जावे और वह के झगड़े का सदैव के लिए समाप्त करने का यत्न करें।

(२) आर्यसमाज जामपुर [जि० डेराग़ाज़ीखां] ने भी इसी आशय के प्रस्ताव स्वीकार करके उनका इङ्गलिश अनुवाद लाट साहेब तथा डिपुटी कमिश्नर लाहौर को भेजना निश्चय किया है और आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब से निवेदन है कि समाज मन्दिर ठीक अधिकारियों के सपुर्द करदें।

आर्य समाज (३) अम्बालाछावनी, (४) कालिका, (५) शाहाबाद (६) आर्य कुमार सभा श्रीगोविन्दपुर की ओर से भी इसी प्रकार के प्रस्ताव स्वीकार हुए हैं।

(७) आर्यसमाज नौशहरा छावनी—ने लाहौर आर्य समाज में पुलिस लाने पर शोक प्रकट किया, तथा आ० प्र० सभा को इस अप्रबन्ध को शीघ्र दूर करने के लिए प्रेरित किया है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन परीक्षा समिति की सूचना

(१) सं० १९७३ की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में निम्न लिखित परिवर्तन किया गया है।

(अ) प्रथमा परीक्षा—विषय साहित्य 'छाया' नामक पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं।

(ब) प्रथमा परीक्षा—विषय विज्ञान—'आगोन्यादर्श' नामक पुस्तक पढ़ना आवश्यक नहीं।

(स) मध्यमा परीक्षा—विषय साहित्य—बिहारी की सतसई के स्थान पर स्त्रियों के लिए 'राम चन्द्रिका' वैकल्पिक नियत की गई है।

(२) जिनकी सूचना पहले दी जाचुकी है उनके अतिरिक्त निम्न लिखित नए केन्द्र और बनाए गए हैं।

फैजाबाद, बिलासपुर, मुजफ्फरपुर, राजनांद गांव, शाहजहांपुर, बहराइच, जयपुर, रायबरेली और झाँसी।

ब्रजराज
संयोजक

—०—

कलकत्ता समाचार से उद्धृत

गत बृहस्पतिवार की रात को कलकत्ता हाईकोर्ट के भूत पूर्व जज मिस्टर मन्मथनाथ मित्र के हितीय पुत्रकी कन्या का विवाह हो गया। इस विवाह की दो विशेष बातें प्रकाशित हुई हैं। एक यह, कि कन्या बङ्गाली कायस्थों के अन्तर्जातीय पति पत्नी की कन्या है और दूसरी विशेषता यह, कि विवाह क्षत्रियों के विवाह-संस्कारों द्वारा सम्पन्न किया गया! यही विशेषता ध्यान देने योग्य है। कहा गया है कि मिस्टर मित्र सामाजिक सुधार के नेता हैं। यज्ञोपवीत पर कृपा करने वालों में भी आपका नम्बर बहुत ऊंचा है। इस विवाह के सम्बन्ध में कहा गया है कि आपने दो प्रस्तावों को कार्य-रूप में परिणत कर डाला है। एक यह, कि दहेज की प्रथा की कोई परवा नहीं की और दूसरा यह, कि क्षत्रियों की विवाह-विधि का अनुकरण किया। पहली बातों के लिये हम आपकी प्रशंसा इसलिये नहीं करते कि आप बड़े पद पर रह चुके हैं और शायद धन सम्बन्धी बातों के लिये आपको विशेष सोच विचार की जरूरत न होती होगी। हां; दूसरी बातों के लिये आपको बधाई दी जा सकती है। कारण, अब इनके परिवार में क्षत्रियोचित विवाह-विधि का प्रचार होगा। किन्तु इस उत्थान उपलक्ष्य में भी बधाई देते हुए हमें शर्म आती है। कारण, कोरे, चमरा सभी इस युग में ब्राह्मण, क्षत्रिय जो चाहते हैं, सो बन बैठते हैं। लोग कहते हैं कि विद्या पढ़लो, बस ब्राह्मण हो गये, मुंह से कह दो मानो क्षत्रिय हो गये। ऐसी दशा में हम भारतधर्म महामण्डल के जेनरल सेक्रेटरी को न प्रशंसा ही कर सकते हैं और न उन्हें बधाई ही दे सकते हैं। खैर; क्षत्रिय-विवाह-संस्कारों द्वारा संस्कृत कायस्थ वर कन्या सुखी रहें।

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा————————।)
काव्य लतिका————————॥।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग'[शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्] १॥)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥।)

महाभाष्यम् अङ्कप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाकीतम्— महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्य्यभाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—बैलफोर स्टुअर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन विलयन एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)
जिनचरितं—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त =)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) =)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R.A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.0
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji—" 0.1.0
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A.कृत)
अर्थशास्त्र (धनविद्या) १०
आर्यों की विज्ञानिक उन्नति =
(लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम०ए०)
अग्निहोत्र व्याख्या ।
वेदोक्त राज्य ।
(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)
रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry) ३।
विद्युत शास्त्र २
वनस्पतिशास्त्र २
पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत
उपनिषदों की भूमिका १॥
प्रिन्स बिस्मार्क १।
राष्ट्रों की उन्नति
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार
भानवली ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष
व्यायोग प्रकाशः स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया यगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविलय डाक० श्यामपुर, जिला विज

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered NO. A. 434

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | ८ ज्येष्ठ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २० मई सन् १९१६ ई० | संख्या ६ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञानप छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी, जि०बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यकता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—:o:—

सासनी में—वैशाख सुदी ९ को एक रथ का मेला निकालते हैं। नियमानुसार वह मेला उक्त तिथि पर अब की बार भी बड़े समारोह से निकला जुलूस के साथ अच्छी भीड़ थी रथ में श्रीकृष्ण जी की मूर्ति विद्यमान थी रथ के आगे काली का मेला था और काली के आगे एक मेला किच किचापीर का कुछ धूर्त लोगों ने बनवाया और बनाया था, जो बड़ा ही निन्दनीय और निकृष्ट था एक ठेला में तीन मूर्तियां बनाकर मिट्टी की इस प्रकार की रक्खी गई थीं कि जिन का कथन करना सीमा के बाहर है तीनों की गुप्तेन्द्रियों का बिल्कुल तीनों मूर्तियों के हाथ में लगा हुआ साक्षात किसी जमाने के वाममार्ग मत का परिचय दे रहा था और उस के आगे एक लड़का कोरी का बड़े मधुर शब्दों में गान उच्चारण कर पौराणिक-सभ्यता के नगरकीर्तन का परिचय दे रहा था और एक गाड़ी में एक जनानियां और पांच छः असभ्य मनुष्य औरतों की तरफ निगाह करके चेतावनी देकर इस कदर निकम्मे अलफ़ाज़ जो बहुत ही मलीन (जो कथन में नहीं आसके) रसिया उच्चारण कर रहे थे कि जिन को सुन कर सभ्य स्त्रियां व पुरुष नीचे को गर्दन कर लेते थे। बेचारी स्त्रियाँ तो छत पर से चली ही जाती थीं अफ़सोस सद अफ़सोस श्रीकृष्ण भगवान का मेला और उस में ऐसा निष्कृष्ट अत्याचार कि जो एक सभ्यता से सर्वथा खिलाफ है इस नगरकीर्तन को देखकर लोग आर्यसमाज के नगरकीर्तन का ख्याल कर के आर्यसमाज की सराहना करते थे, हम नहीं जानते ऐसे मेला से पब्लिक के हृदय में क्या पवित्र भाव उत्पन्न होंगे परमात्मा जो दिन शीघ्र लावे की हमारे पौराणिक भाई बुद्धि से काम लें। जिस से पब्लिक का व्यर्थ समय वध नष्ट न हो और न बुरे विचार पैदा हों (और अगर आप उपरोक्त मजमून में अशुद्धि समझें, कृपया शुद्ध करलें।

(एक सासनी निवासी दर्शक)

——:o:——

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं

स्थिर ग्राहकों की संख्या—२० चैत्र, १९७२ तक १९ हुई थी और उन की ओर से ४३७) जमा हो चुके थे। उस के पश्चात् निम्नलिखित स्थिर ग्राहक हुए हैं—(२०) मन्त्री आर्यसमाज बीजलपुर (जि० सूरत), (२१) म० गंगासहाय जी, रईस लुधियाना, (२२) श्री मास्टर सुखराम जी, गुरुकुल। अभी ७८ स्थिर ग्राहक और चाहिए। स्थिर ग्राहकों का रुपया बराबर जमा रक्खा हुआ है, इसलिए कि यदि पूरे १०० ग्राहक होकर २५००) के लगभग वसूल हो जाय तो छपने के लिए मशीन का प्रबन्ध हो सके।

पुराने ग्राहकों ने भूलसे कुछ वी० पी० लौटा दिए हैं—मालूम होता है उन्होंने ८ फाल्गुन के अंक में दी सूचना और फिर ४ वैशाख, १९७३ के अंक में दी सूचना को ध्यान पूर्वक नहीं पढ़ा। गतवर्ष प्रचारक १३ सप्ताह तक बन्द रहा था। उस के बदल ।।।) का माल देना चाहिए था। यहां से यह निश्चय हुआ कि उस के स्थान में १) की पं० लेखराम की जीवनी भेजी जाय और -) प्रति पुस्तक किराया भी अपने पास से ही दिया जाय। इसी के अनुसार वैशाख १९७२ में बने हुए ग्राहकों के नाम १ मई से पं० लेखराम की जीवनी को ही भेज कर ३-) का वी० पी० किया गया, जिस का तात्पर्य यह है कि पुस्तक तो गतवर्ष के १३ सप्ताह के बदले भेजी गई और ३) में १९७३ के वर्षभर प्रचारक आता रहेगा। अभी तक प्रतिशतक ८० से अधिक ग्राहकों के वी० पी० का तो मूल्य आरहा है, परन्तु शेष कुछ न समझ कर लौटा देते हैं। एक महाशय ने वी० पी० पर ही लिख दिया कि १) की पुस्तक ३) में शायद भूल से भेजी गई है। इस लिए अब फिर सूचना दी जाती है कि जो महाशय ग्राहक रहना चाहें वे पुस्तक का वी० पी० लौटाएं नहीं। इसी में १९७३ के वर्ष भर वह ग्राहक रहेंगे।

ग्राहक बढ़ाने में ढील न कीजिए—महंगी के कारण बड़े से बड़े पत्रों ने घटिया कागज़ बदल दिया परन्तु प्रचारक वैसे ही कागज़ पर निकलता है। ग्राहक संख्या बढ़ेगी तभी इस की स्थिति रह सकेगी।

प्रबन्धकर्त्ता

—:o:—

गुरुकुल समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य—अन्य प्रकार से तो अच्छा है परंतु अब प्रथम और तृतीय श्रेणियों में ख़सरा आरम्भ होगया है। दोनों श्रेणियों को अलग कर दिया है, उनके लिए धोबी भी जुदा कर दिया गया है। श्री डाक्टर जी भी ख़सरा कैम्प में ही सोते हैं। अब वह कुटी पर भी नहीं जायंगे, इस लिए उनके स्थान में अब दस दिनों के लिए भी किसी डाक्टर की आवश्यकता नहीं।

गंगा की गुरुकुल धारा—अब तक ठीक नहीं चली। गंगा में पानी कम आता है और नहर सब खींच लेजाती हैं, क्योंकि वर्षा के अभाव से खेतियें जल खींच रही हैं। यदि ब्रह्मचारी नहर काट कर न लाते तो जो पानी हाथ पैर धोने, धोबी के कपड़ा धोने और पशुओं को जल पीने के काम में आता है वह भी न मिलता।

पढ़ाई का काम भली प्रकार चलरहा रहा है—गुरुकुल की ओर से श्री रामदेव जी उपाध्यक्ष तथा उपाध्याय विश्वनाथ जी गुजरात आर्यसमाज के उत्सव में सम्मिलित हुए। उपाध्यक्ष श्री रामदेव जी ने कार्ग में शनिवार [१३] को लाहौर गुरुदत्त भवन में "मतों का स्रोत" विषय पर व्याख्यान दिया। मास वैशाख २९७३ में गुरुकुल की आय दान मद्दे नीचे लिखे प्रकार हुई :—

७५) म० भगवानदास, हकीम डेरागाज़ी, ५०) राय गोलाराम, अलीपुर, जि० मुज़फ़्फ़रगढ़, २५) सेठ हन्दराम जी, शिकारपुर, २५) म० बूड़ामल जी अजना तहसील, ३२) का आटा भेजा म० सुन्दरदास, अम्बाला, ७५) आर्यसमाज फ़क्कर, २५) पं० चन्द्रमणि द्वारा, ३०) कनखल से लाला कृष्णचन्द्र द्वारा, ११६५) मन्त्री आर्यसमाज डेरा इस्माइलखां, ६३) आर्यसमाज बनावां, १३०) मा० ज्ञानचन्द्र जी, ५०) आर्यसमाज शेखूपुर, ३७) आर्यसमाज अबोहर, ४५॥) डेरा आर्यसमाज ३०) आर्यसमाज लाहौर सदर, १४९) आ० स० पटियाला, ५१) आ० स० पटियाला, ४५) म० बेलीराम ओवरसियर, यूसूफ़वाला जिला मन्टगुमरी, ३२॥ ≈) म० अमीर चन्द्रजी, अर्जानवीस लायलपुर, ५०) म० ठाकुरदास जी, मुन्सरिम बन्दोबस्त, गिलगित, कश्मीर, २५) म० परसाराम जी ठेकेदार, चक नम्बर १२३ लायलपुर, २५) साहु हरिशंकर जी, दिल्ली, ५०) म० शिवदास जी कूचा छिब्बियां, लाहौर २५०) देहली हिन्दुस्तान बर्कटाइल एसोसियेशन। पच्चीस रुपयों से कम की रक़में अलग नहीं दी जा सकीं। इस मास में कुल आय ३२१६॥-) की गुरुकुल महाविद्यालय में हुई, ९०) भोजन भंडार, ९०) स्थिर कोष, ६६॥-) भिक्षानिधि, तथा ७८-)॥। विद्यार्थी निधि में हुए। सर्वयोग=३९०।≈)॥

ब्रह्मचारियों के संरक्षकों से जो शुल्क महीने धन आता है वह इससे अलग है। इस वर्ष बतलाया जा चुका है कि ३५०००) की ही ऐसी आय थी जो चलते हिसाब के घाटे में पड़ सके। आगामी वर्ष के आय व्यय का ब्यौरा (बजट) जो पेश किया जावे उसमें ७७,३००) महाविद्यालय निधि में आय से आशा रक्खी गई है जिसके पूरा होने पर काम चल सकेगा। इस हिसाब से चैत्र १९७३ के अन्त तक ४२,३००) की रक़म और आये तो बजट चल सकेगा। वैशाख में मुख्याधिष्ठाता के डेरा इस्माइलखां जाने से ११६५) की विशेष रक़म आगई। शेष २०००) की औसत भी यदि आगामी १० मास तक जारी रहे तब भी २० सहस्र ही आवेगा और चाहिए ४२ सहस्र। इसलिए गुरुकुल सेवकों को दिन रात ही परिश्रम करते रहना चाहिए।

अनाज अब निकलना आरम्भ हो गया है—पंजाब के प्रत्येक ग्राम में गुरुकुल के लिए अनाज की भिक्षा होनी चाहिए। जिन महाशयों ने अनाज एकत्र करने की मानसिक प्रतिज्ञा की हुई है उनका काम सुगमता से तब होगा जब वह नित्य कोई सायंकाल का समय उगाही के लिए नियत कर लेंगे। अनाज का ढेर लगे पर नहीं किसान और नहीं मालिक को चालीसवां भाग निकाल देने में कुछ भी संकोच होता है।

मुख्याधिष्ठाता

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेदामृत ।

स्त्रियः सतीस्तां उमेपुंस आहुः पश्य दक्ष रावान् विचेतदन्धः । कवियः पुत्रः सईमा चिकेतयस्ता विजानात्सपितुष्पितासत् ॥ऋ० म०१ सू०१६४ मं० १६ ॥

"(जिन के उत्तम गुणों) को विज्ञान-वान् पुरुष देखते हैं, जिन्हें अन्धे (विज्ञान शून्य) पुरुष नहीं जान (सके), जिनको (सदाचारिणी) सती स्त्रियां कहती हैं, उन मेरे पुरुषों को जिन के कवि (तत्त्वज्ञानी) पुत्र उत्पन्न होते हैं, उनको भली प्रकार जानो । यही पिता का पिता होता है, ऐसा तुम जानो ।"

परमेश्वर का प्यारा पुत्र कौन है ? जिस पवित्र जन शक्ति से परमेश्वर सारे ब्रह्माण्ड को उत्पन्न करते हैं, उसी जन शक्ति को उन्होंने मनुष्य के प्रति प्रदान किया है । तब जो पुरुष उत्तम तत्त्वज्ञानी (कवि) सन्तान उत्पन्न करने की शक्ति रखता है वही परमेश्वर का प्यारा पुत्र है । जिस का शरीर वीर्यवान और बलिष्ट है, जिसका मन शुद्ध संकल्पों का केन्द्र है, जिसका आत्मा उत्तम गुणों का निवास स्थान है, उस के वास्तविक रूप को तत्त्वज्ञानी विज्ञानवान् देव ही देख सकते हैं। विज्ञान-शून्य, अन्धा, मूर्ख उसको क्या पहचानेगा। किस प्रकार एक मनुष्य समझे कि यह परमेश्वर का प्यारा पुत्र है ? निस्सन्देह ईश्वर के प्यारे का साक्षी ही इस के लिए प्रमाण हो सकी है। जिस की लाखों मूर्ख प्रशंसा करें और दूसरी ओर एक सदाचारी, धर्मात्मा ज्ञानी उस के आचार को दूषित समझे तो तत्त्वज्ञानी धर्मात्मा की सम्मति ही ठीक है । हे ! संसार यात्रा के पथिक ! मूर्खों की अप्रशंसा से न डर कर तुम धर्ममार्ग से च्युत न हो ।

ऐसे धर्मात्मा सदाचारी ईश्वर के प्यारे से ही सती बात करती है । संसार इस समय अविद्या के गढ़े में पड़ा, जीवन विद्या को भूला हुआ है, इस लिए विवाह के मुख्य उद्देश्य को भूला हुआ है । धन, मान, कीर्त्ति, सम्बन्ध, विषय भोगादि के लिए विवाह होते हैं । पितृऋण से उरिण होने के विचार से शायद कोई ही विवाह होता हो । यह शोचनीय अवस्था है क्यों ? इस लिए कि विवाह में स्त्री को कुछ भी वक्तव्य नहीं समझा जाता । प्रभु परम पिता कहते हैं कि मेरा प्यारा पुत्र वह है जिसे मेरे प्यारे भक्त अपनाते हैं, जिस को सदाचारी धर्मात्मा पुरुष अंगीकार करते हैं । जो मूर्खों के तानों से न डरते हुए अपने कर्त्तव्य पालन में रत है । ऐसे शुद्ध शरीर, शुद्धान्तःकरण तथा शुद्धात्मा पुरुष को ही साध्वी, सती स्त्री प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार करती है । तब इन दोनों का विशेष प्रकार से सम्बन्ध अर्थात् विवाह हो सकता है । और उस सम्बन्ध से कवि उत्पन्न होता है । कैसा सारगर्भित सत्य है । कवि (तत्त्ववेता, Genius) बनाए नहीं जाते और न बनते हैं—वे उत्पन्न होते हैं ।

अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टर जान का वन ने अपनी पुस्तक 'The Science of a new life' का एक अध्याय इसी विषय के अर्पण किया है । उन्होंने वर्तमान अविद्या के साथ संग्राम करते हुए यह बतलाया है कि यदि गर्भाधान संस्कार से वर्ष भर पहले ही माता पिता कवि-सन्तान उत्पन्न करने का दृढ़ संकल्प करलें और अपनी प्रबल मानसिक इच्छा को इसी में लगादें तो जैसी सन्तान वे चाहें वैसी ही उत्पन्न हो सकी है। तुकबन्द का नाम कवि नहीं है; तत्त्वज्ञानी को कवि कहते हैं । किस तत्त्व का ज्ञानी सन्तान हो यह माता पिता के आधीन है, यदि वे शुद्ध भाव से ईश्वरीय नियमों का पालन करें । परम पिता का मनुष्य मात्र के लिए यह उपदेश है कि वे उसकी प्यारी प्रजा को पहचानें, क्योंकि जो परमेश्वर का प्यारा है वही पिताओं का भी पिता अर्थात् रक्षक होता है । पिताओं को उनके कर्त्तव्य से सचेत वही कर सकता है जिस में स्वयम् शुद्ध, उत्तम सन्तान उत्पन्न करने की योग्यता हो । जिसने गृहस्थाश्रम को आदर्श रूप से दम्पतियों के सामने रक्खा, जिसने अपने आचरण से गृहस्थियों को दिखाया कि पति पत्नी का सम्बन्ध विषय भोग में लिप्त होने के लिए नहीं है, जिसने अपने उदाहरण से दिखलाया कि मुख विषयों का दास बनने में नहीं प्रत्युत विषयों को अपना दास बनाने में है, उस से बढ़कर पिताओं का रक्षक और कौन हो सकता । परमात्मा का आदेश है कि जो पवित्रता को देख नहीं सकते, जो पवित्र जीवन की श्रेष्ठता को समझ नहीं सकते उनके लिए संसार में जीवन नहीं है । ऐसे पुरुषों की आंखे भी खोलने का काम ईश्वर के प्यारे पवित्रात्मा ही करसकते हैं ।

देवियो ! तुम्हारा बड़ा अधिकार है। यदि तुम पापी के साथ सम्बन्ध जोड़ने से इनकार करदो तो संसार का आधा क्लेश एक दम दूर हो सकता है और श्रेष्ठ आर्यपुरुषो ? यदि तुम ईश्वराज्ञा का पालन करते हुए शरीर, मन और आत्मा को शुद्ध करके गृहस्थाश्रम में प्रवेश करो तो तुम्हारे सहस्रों, लाखों, भाई विषया शक्ति के गढ़े से निकल कर परमेश्वर के प्यारे पुत्र बन जावें ।

शमित्योम्

—:o:—

ब्रह्मचर्यं परं शौचं ब्रह्मचर्यं परन्तपः । ये स्थिता ब्रह्मचर्येण ब्राह्मणास्ते दिवं गताः ॥ १ ॥ समुद्रतरणे यद्वदुपायो नौः प्रकीर्तिता । संसारतरणे तद्वद्ब्रह्मचर्यं प्रकीर्तितम् ॥ २ ॥ नीरोगः कान्तिसम्पन्नः सर्वदुःखविवर्जितः । ब्रह्मचारी भवेल्लोके पापमना च विवर्जितः ॥ ३ ॥ किं बहूक्तेन लोकेऽस्मिन्साधनं यद्धि विद्यते । ब्रह्मचर्यं तु तत्सर्वमन्तर्भवति सर्वथा ॥ ४ ॥ यथा गजपदे सर्वे पादा अन्तर्भवन्ति हि । नैतस्मादधिकं किञ्चिद् ब्रह्मचर्याद्धि विद्यते ॥ ५ ॥ सर्वसाधनसम्पन्ना ब्रह्मचर्यविवर्जिताः । क्लेशं हि मुनयो भेजुर्विद्वांसोऽपि च कोटिशः ॥ ६ ॥

आत्म दर्शनम् ।

भीलों से पाला हुआ वालमीकि चोर, डाकू बनगया था। अपने सारे परिवार का पालन डाके मार कर ही करता रहा। एक दिन एक ऋषि के धोती लौटा पर भी हाथ मारनाचाहा। ऋषि ने पूछा क्यों ऐसा पाप करता है। डाकू ने उत्तर दिया कि उस के पास परिवार पालन का कोई अन्य साधन नहीं। ऋषि ने पूछा "क्या इस पाप के फल को तेरे परिवार वाले बांटलेंगे ?" डाकू संशय में पड़ गया। ऋषि ने कहा घर वालों को पूछआ, तेरे लौटने तक यहीं रहूंगा। डाकू ने स्त्री पुत्र, पुत्र-वधु, पुत्री, सब से ही पूछा—सबने यही उत्तर दिया कि उस के पाप का फल बांटने को कोई भी तय्यार नहीं। डाकू लौटा और ऋषि के चरणों पर गिर पड़ा। तब ऋषि ने अन्तःकरण-खुले डाकू को आत्मोपदेश दिया, और वही डाकू तप के प्रभाव से वालमिकि ऋषि और तत्वज्ञानी कवि बनगया।

एकः प्रजायते जन्तुरेक एव प्रलीयते।
एकोनु भुङ्क्ते सुकृतमेक एव च दुष्कृतम ॥

अकेला ही प्राणी उत्पन्न होता है अकेला ही मर जाता है। स्वयम् ही शुभ कर्मों का फल प्राप्त करता और स्वयम् ही बुरे कर्मों का दण्ड भोगता है क्या कोई इस में हिस्सा ले सकता है? माता के लिए, पत्नी के लिए, सन्तान के लिए क्या कुछ कुकर्म नहीं किए जाते! परन्तु जब फल भोग का समय आता है तो क्या कोई साथी होता है? देश काल के भेद से भी कुछ अवस्था भेद नहीं आया। जब स्वार्थ-परायणता (परिवार-भक्ति) का समय था तब घर वालों के लिए पाप कमाए गए, अब देश भक्ति (परोपकार) का समय है तो देश के लिए क्यों न पाप किए जायं? परन्तु क्या देशभक्ति से पाप का कुछ सम्बन्ध है? जो सत्य नहीं, जो धर्म नहीं, वह देशहित कैसे हो सकता है। पाप और हित का सम्बन्ध क्या?

—:o:—

काबुल की लाम में लाखों के वारे न्यारे किए। छोटों से लेकर बड़े आफिसरों तक को दसों, सैकड़ों, सहस्रों रिशवत में दिए। दोस्तों की दावतों में सहस्रों व्यय कर दिए। शराबों के कन्टर के कन्टर बहा दिए। पत्नी, लड़कों और सम्बन्धियों के लिए बड़े प्रासाद खड़े कर दिए। व्याह शादियों पर रण्डी भड़ुवों की भेंट भी सहस्रों किए। परन्तु जब ऊपर से पकड़ हुई, गवर्नमेन्ट ने अन्वेषण आरम्भ किया और ताज़ीरात ए हिन्द की दफ़ा ठुक गई, उस समय न घूस लेने वाले बड़े आफ़िसर ही दुःख बांटने को खड़े हुए और न ही पत्नी बच्चे सहारा दे सके; जेल घर में सीधे बड़े कमसरियट एजन्ट महाशय को ही जाना पड़ा। कम्पनी बनाकर लाखों लूट जो सम्बन्धियों और सुधारक संस्थाओं में तुमने लुटा दिए—क्या उन सम्बन्धियों और उन संस्थाओं के चालकों ने तुम्हें आत्मघात से बचा लिया। संसार की आंखों में धूल झोंक कर यदि बच भी गए तो कर्मों के फल प्रदाता, नियन्ता से बच कर कहां जाओगे? उसकी दृष्टि अन्धेरी से अन्धेरी अन्तरीय कोठरी से भी तुम्हें ढूंढ निकालेगी।

अवश्यमेव भोक्तव्यं, कृतं कर्म शुभाशुभम्। किये कर्म का फल भोगना ही पड़ेगा। यहां कटौती का कोई काम नहीं; बुरे का फल बुरा और अच्छे का अच्छा भोगना ही पड़ेगा!

—o—

हमें कुछ मत कहो, हम तो जो कुछ कर रहे हैं केवल परोपकार के लिए। देखते नहीं हो परोपकारी पुरुष इतना बड़ा कालिज चला रहे हैं, लाखों इस के लिए चाहिए, प्राचीन ब्रह्मचर्य की प्रथा को पुनर्जीवित करने के लिए गुरुकुल खोल छोड़ा है; करोड़ से कम में यह क्या चलेगा! यदि हम इस ओर दृष्टि नदें तो और कौन सहायता देगा। माना कि खोतामल का मरा मुकद्दमा हराकर के हम ने दस हज़ार की डिग्री देदी, परन्तु कालिज को तो १०००) दान में तभीमिला; माना कि हम ने शराबी कबीना ठेकेदार की अनुचित प्रशंसा की परन्तु उस से डेढ़ हज़ार नकद भी तो तभी गुरुकुल के लिए मिलवा लिया। हे, भूले भाइयो? जिस समय अन्दर से चोट लगने पर तुम्हारा आत्मा जागेगा और अनुताप की अग्नि तुम्हें जलायेगी तो क्या इन संस्थाओं के संचालक तुम्हारे दुःख को बांट लेंगे!

—o—

हम धर्म्म की रक्षा के लिये, अधर्मियों की पराजय के लिये झूठ बोलते हैं, मक्कारी करते हैं, छल छिद्र से भी सहायता लेते हैं, परन्तु कार्य्य कितना महान् है! भोले भाइयो! यदि तुम कभी अपनी अवस्था पर विचार करते और सच्चाई को शुद्ध अवस्था में देख सकते तो तुम्हें मालूम होता कि सत्य स्वरूप की सृष्टि में असत्य का राज लाना असम्भव है। अधर्म का एक धेला भी जिस शुभ-कार्य्य में पड़े, उसी में हलचल मच जाती है। सारे श्रेष्ठ उत्तम कामों का आश्रय सत्य-स्वरूप है, इस लिए उसी की शरण लेकर और उसी पर श्रद्धा रख कर सब काम सफल हो सकते हैं।

—o—

"प्रभु के गुणों का गान करो—शीतलजल और मन्द २ सुगंधित पवन हमारे शरीर को आरोग्य रखने के लिए हमें किसने प्रदान किये? हरियावल की अद्वितीय शोभा से हमारी आंखों को तरावट किसने दी? जिस समय हम किसी बुरे काम में प्रवृत होना चाहते हैं तब भय, शंका और लज्जा द्वारा हमें कौन नर्ककुंड में डूबने से बचाता है? फिर कौन हमारे लिए उत्तम शिक्षाओं और पवित्र ज्ञान के भण्डार वेद का प्रकाश करता है? यही परमात्मा जो चक्षु का चक्षु, श्रोत्र का श्रोत्र, मन का मन और आत्मा का भी आत्मा है। उसी से हम सब कल्याण मार्ग का दान पाते हैं; तब ऐसे पिता, ऐसे पालक, ऐसे रक्षक को भूलना कैसा महा पाप है, और उस की आज्ञापालन से मुंह मोड़ना कैसी भारी अविद्या है! उसी परमात्मा का स्मरण करो, उसी के गुणों का गान करो, जिस ने वेद रूपी उत्कृष्ट शिक्षाओं का भण्डार तुम्हारे लिए खोल दिया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

मनुष्य जाति का सुधार कैसे हो ?

भारतवर्ष-विशेषतः नव शिक्षित भारत-की दृष्टि अपने सुधार तथा पुनरुद्धार के लिए युरप की ओर लगी हुई थी। युवाभारत ने समझ लिया था कि अपने शिक्षकों, अपनी "आर्य देवीजाति" के संचालकों, का अनुकरण करना ही अपनी जाति के उद्धार का साधन सिद्ध होगा। यद्यपि युरप से ही इस के विरुद्ध प्रति-नाद उठता रहा और प्राचीन आर्यों के विचारों को संसार का भावी उद्धारक बतलाया जाता रहा, फिर भी भारत निवासियों को होश न आया। अब वर्तमान विश्वव्यापी युद्ध में युरोपियन सभ्यजातियों के आचरणों ने सिद्ध कर दिया है कि युरोपियन जातियां स्वयम् गुमराह हैं, वे दूसरों की राहबरी क्या करेंगी! अन्धा अन्धे को मार्ग कैसे दिखला सका है?

युरप और अमेरिका के विचारक इस समय मान रहे हैं कि वर्तमान पश्चिमीय सभ्यता को अवश्य बदल देने से ही मनुष्य जाति का सुधार होगा, और इस सभ्यता को बदलने के लिए आवश्यकता है कि स्त्री पुरुष के सम्बन्ध के आदर्श को ही बदल दिया जाय। जहां पशुभाव से स्त्री पुरुष का सङ्ग होगा, वहां व्यभिचारी, डाकू और घातक सन्तान उत्पन्न होगी; विरुद्ध इस के जहां परस्पर की पवित्र जन शक्ति को लक्ष में रखते हुए पितृऋण से उरिण होने के लिए गर्भाधान संस्कार होगा वहां धार्मिक, न्याय परायण, परोपकारी सन्तान उत्पन्न होगी। परन्तु अभी तक भी युरोपियन सुधारकों की दृष्टि उच्चशिखर पर नहीं पहुंची जहां पर पहुंच कर कि प्राचीन आर्य ऋषियों ने मर्त लोक के निवासियों को उपदेश दिए थे। बृहदारण्यक उपनिषद के आठवें अध्याय के चौथे ब्राह्मण में जो उत्तम दैवी सन्तान उत्पन्न करने की विधि बतलाई गई है उसे अमेरिका के सन्तान विद्या के जानने वाले डाक्टरों ने कहीं अब समझने की कोशिस की है।

अब हमारे नव शिक्षित इन नई Eugenics की पुस्तकों पर मोहित हो रहे हैं। इन पुस्तकों के पढ़ने से लाभ अवश्य है, परन्तु इन को पढ़ते समय सावधान रहना चाहिए। यद्यपि परिणाम दोनों प्राचीन आर्य तथा अर्वाचीन युरोपीय पद्धतियों का एक ही है तथापि लक्ष दोनों के जुदे हैं और इस लिए साधनों में गिरने की संभावना है। प्राचीन आर्य पद्धति के अनुसार ब्रह्मचर्य का पालन धर्म है इसलिए सब अवस्थाओं में उस का पालन ही करना चाहिए। गृहस्थ को २५ वर्षों में केवल दश वार ही सन्तानोत्पत्ति क्रिया करनी चाहिए। परन्तु युरोपियन Eugenics में इस लिए अधिक स्त्री सङ्ग नहीं चाहिए कि स्त्री पुरुष दोनों के शरीर निर्बल हो जाते हैं। इस का परिणाम यह होना चाहिए कि अधिक संग से जिन स्त्री पुरुषों में शारीरिक निर्बलता न आवे उन्हें इस नियम के पालन की आवश्यकता नहीं। Problemsof Sex नामी एक पुस्तक प्रोफेसर टामसन और गीडीज़ ने लिखी है। उस के ग्रथकर्ता लिखते हैं कि सब स्त्री पुरुषों के लिए सङ्ग के एक नियम नहीं हो सके क्योंकि किसी समय अभ्यासी खिलाड़ी से भी बढ़कर एक शारीरिक बल रखने वाला अशिक्षित मनुष्य व्यायाम दिखा सकता है। उन प्रोफेसरों ने परिणाम की ओर ध्यान नहीं दिया। यदि उनका कथन माना जाय तो जो जितना सहन कर सके उतना स्त्री-सङ्ग करे परन्तु इस का सन्तान पर क्या प्रभाव पड़ेगा और दोनों के आत्माओं की क्या दशा होगी इसे नहीं सोचा।

सन्तान-वृद्धि और उसके द्वारा मनुष्य जाति के पुनरुद्धार के काम में धर्म बड़ी सहायता देसकता है, परन्तु संसार में इस समय सम्प्रदायों और मतों का ज़ोर है। पादरी मेयर साहेब ने जातीय पुनरुद्धार पर मज़हब का प्रभाव बतलाते हुए और इसामसीह की श्रेष्ठता बतलाते हुए भी यह मान लिया है कि मज़हब को कुछ आगे चलने की आवश्यकता है। वह लिखते हैं कि जैसे मज़हब ने यह आज्ञा दी है कि अमुक अमुक सम्बन्धियों के साथ विवाह नहीं होना चाहिए वहां क्यों न वह (मज़हब) आगे चले और कहे कि—"किसी ऐसे व्यक्ति को विवाह न करना चाहिए जो किसी मानसिक वा शारीरिक रोग से अभिभूत है, या जो जानता है कि उस में पागल पन वा मिर्गी का वैशिक विष मौजूद है" जिससे कि किसी निर्दोष स्त्री पुरुष को ये रोग न लग जायं और न ऐसे बच्चे उत्पन्न हों जो जीते ही मरे के समान रहें। पादरी साहेब को निराश-ध्वनि से ऐसा न लिखना पड़ता यदि वे ईसाई मज़हब की संकुचित परिधि से बाहर निकल कर वैदिक धर्म की शिक्षा को पढ़ते। मनु भगवान ने कैसी पवित्र और उच्च शिक्षा दी है:—

महान्त्यपि समृद्धानि गोऽजा वि धन धान्यतः।
स्त्री सम्बन्धे दशैतानि कुलानि परिवर्जयेत॥

हीन क्रिय निष्पुरुषं निश्छन्दो रोमशार्श सम्।
क्षय्यामय्याऽपस्मारिश्वित्रिकुष्टि कुलानि च॥

अ० ३। ६। ७

"चाहें कितने ही धन धान्य, गाय, अजा, हाथी घोड़े राज्य श्री आदि से समृद्ध ये कुल हों तो भी विवाह सम्बन्ध में निम्नलिखित दशकुलों का त्याग करदे—जो कुल सत्क्रिया से हीन, सत्पुरुषों से रहित, वेदाध्ययन से विमुख, शरीर पर बड़े लोम, अथवा बवासीर, क्षय, दमा, खांसी, आमाशय, मिरगी, श्वेत कुष्ठ और गलित कुष्ट युक्त हों उन कुलों की कन्या वा वर के साथ विवाह न होना चाहिए।" हेतु इसका ऋषि दयानन्द

देते हैं—"क्योंकि ये सब दुर्गुण और रोग विवाह करने वाले के कुल में भी प्रविष्ट हो जाते हैं।,,

अयोग्यों के परस्पर विवाह का कारण सच्ची सिक्षा का अभाव है। जब तक प्रथम यह विश्वास न हो कि मनुष्यजाति का उद्धार हो सकता है तब इस काम में सुधारकों की प्रवृत्ति ही कठिन है। लोग प्रायः यह कह कर सन्तोष करलेते हैं कि बने हुए भाग्य कोई बदल नहीं सकता। जब बना हुआ भाग्य सञ्चित कर्मों का ही समूह है, तब जहां कुकर्मों के आधिक्य से बुरा भाग्य वा प्रारब्ध बन गया वहां उत्तम कर्मों के प्राबल्य से अच्छा प्रारब्ध भी बन सकता है। ऐसा दृढ़ विश्वास लेकर जब विद्या के प्रकाश में काम करना आरम्भ किया जायगा तो बिना अधिक प्रयास के ही परिवर्तन आरम्भ हो जायगा।

अपनी जाति में इस समय कमी यही है कि इस प्रकार के अपूर्व विश्वास का अभाव है। विश्वास सच्चा विश्वास-पर्वतों को चीरता और लोहे के तवों में वेध कर देता है—परन्तु सत्य पर दृढ़ श्रद्धा जब हो तब न। ब्रह्मचर्य के बल और उसके महत्व पर श्रद्धा न हो तो मनुष्यजाति का सुधार कठिन है। किसी कवि ने कहा है:—

श्रुतिमात्र रसा सर्वे प्रधान पुरुषेश्वर:।
श्रद्धामात्रेण गृह्यन्ते न करेण न चक्षुषा॥

जब ब्रह्म और उसका ज्ञान वेद भी श्रद्धा के लिए अग्राह्य नहीं तो उसका आश्रय लेकर कौनसा कठिन दुर्ग है जिस पर सदाचारी मनुष्य विजय नहीं प्राप्त कर सकता। परन्तु श्रद्धा का आवेश बिना सचाई के नहीं होता।

श्रद्धा-सम्पन्न मनुष्य सर्व साधारण की दृष्टि से पागल दिखाई देते हैं, परन्तु संसार में पाप और अविद्या के दुर्ग गिराने वाले पागल ही हुए हैं। संसार में ब्रह्मचर्य और विवाह की पवित्रता के स्थापन करने में ऐसे मनुष्य कृतकार्य हो सकते हैं जिन्हें इन की श्रेष्ठता पर पूर्ण विश्वास है। जो मन, वचन और कर्म से स्वयम् उपस्थेन्द्रियों की पवित्रता पर विश्वास रखते हों वही दूसरों को भी इस पवित्र मार्ग पर चला सकते हैं।

जहां राजनैतिक कृतकार्यता के सामने सतीत्व तथा शुद्धता का कुछ भी ध्यान न रक्खा जाय, जहां सामयिक सफलता के लिए धर्म का बलिदान कर दिया जाय वहां राज्य और सामाजिक वा जातीय सफलता भी चिरस्थाई नहीं होते। अपनी जाति पर भी विदेशियों की कुनीति का ऐसा ही प्रभाव पड़ रहा है। कुछ काल हुआ यवनों में इस विचार का खुला प्रचार था कि काफ़िर की स्पिरिट को दबाने के लिए द्विजों की स्त्रियों का सतीत्व नष्ट करना चाहिए। वह भाव इस समय भारत में फैलता जाता है। चोरी से चोरी और झूठ से झूठ को जीतने का प्रचार हो चला है। इस भयानक समय में फिर से यह प्रचार करने की आवश्यकता है कि पवित्रता धर्म है और इस लिए उस को बड़े से बड़े व्यक्तिक, सामूहिक वा राष्ट्रीय लाभ पर बलिदान करना, अपने सर्वस्व का नाश करना है। परमेश्वर करे ऐसे पागल उठें जो मनुष्यों को ब्रह्मचर्य और सदाचार की पवित्र वेदी पर मान अपमान तथा सर्व पार्थिव भोगों को स्वाहा करना सिखावें।

—:o:—

मातृभाषा के प्रचार में रुकावट।

आर्य्यभाषा (हिंदी) ही भारतवर्ष मात्र की राष्ट्रभाषा हो सकती है। संयुक्त-प्रान्त, मध्यप्रदेश, राजपूताना और बिहार की तो यह मानी हुई मातृभाषा है। पंजाब में आर्य्यसमाज की बदौलत इस का प्रचार पहले हुआ और अब सनातन सभाओं में भी इस पर बल दिया जाने लग गया है। बङ्गाल में सर गुरुदास बन्दोपाध्याय से शिक्षा-शिरोमणि तक ने इसे अपनाया है। अभी बहुत समय नहीं हुआ कि महाराष्ट्र के प्रसिद्ध विद्वान् प्रोफ़ेसर विश्वनाथ जी भाटे एम० ए० कन्या-महाविद्यालय जालन्धर देखने गए थे। वहां बालिकाओं में कुछ बोलने के लिए जब उन्हें कहा गया तो उन को अंगरेज़ी में बोलना पड़ा। इस पर बड़ा ही शोक प्रकट करते हुए वह अपने एक मराठी लेख में लिखते हैं:—"सारांश यह कि प्राचीन संस्कार एक होने पर भी मुझे अपने हृद्गत विचारों को प्रकट करने के लिए विदेशी अंगरेज़ीभाषा का आश्रय लेना पड़ा। इस से मुझे बड़ी लज्जा हुई। मैं सोचने लग—यदि अपने देश में एक जातीयता को बद्धमूल करना है, यदि अपनी सन्तान के हृदय में बचपन ही से राष्ट्रीयभाव उत्पन्न करना है, तो भारतवासियों के लिए एक देश-व्यापक भाषा का होना आवश्यक है। पर इस के लिए अंगरेज़ी भाषा उपयुक्त नहीं। तेतीस कोटि प्रजा को अंगरेज़ी का यथेष्ट ज्ञान-सम्पादन करना दुष्कर है। मेरी समझ में हिंदी-भाषा ही हिंदुस्तान की राष्ट्रीय-भाषा हो सकी है ... ...,,

बम्बई प्रान्त ही क्या जिस तामिल और कनड़ी का संस्कृत के साथ कुछ भी सम्बन्ध नहीं समझा जाता, वहां के दीर्घदर्शी देशभक्त भी आर्य्यभाषा को राष्ट्रीय-भाषा बनाने के पक्ष में हैं। ऐसे समय में आर्य्यभाषा की उन्नति बड़े वेग से होनी चाहिये थी। परन्तु शोक से देखा जाता है कि जहां बङ्गाली, गुजराती, मराठी, तिलुगू, तामिलादि के साहित्य की उन्नति तथा पूर्ति में इन प्रान्तों के बड़े से बड़े मस्तिष्क लगे हुए हैं और उन भाषाओं के समाचारपत्रों में लेख देना बड़े से बड़े शिक्षित पुरुष अपना गौरव समझते हैं, वहाँ आर्यभाषा के समाचार पत्रों को उच्च कोटि के लेखक नहीं मिलते।

इसका कारण क्या है? क्या आर्य-भाषा-प्रधान प्रान्तों के अंगरेज़ी पढ़े लिखे मनुष्य ही आलसी और प्रमादी हैं? क्या उन में मातृभाषा की सेवा का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सम्पादक ही उत्पन्न नहीं होता? मैंने इस विषय पर बहुत विचार किया, तो पता लगा कि आर्यभाषा के समाचार पत्रों की बैण्टाओं को देख कर ही बहुत से भरतभाषा की सेवा के उत्साही विद्वान् ऐसे समाचार पत्रों में लेख भेजने से रुक जाते हैं। इस से इन्कार नहीं हो सकता कि किसी २ समय उर्दू-पत्रों से भी बढ़ कर व्यक्तिगत आक्षेप आर्यभाषा के पत्रों में होते हैं और एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए अश्लीलता से बहुत काम लिया जाता है। भले मनुष्यों की पगड़ियां उतारने के लिये बहुत से पत्र-सम्पादक होली के भड़वे बनजाने में लज्जित नहीं होते। और होली का आश्रय भी कोई ही लेता है; कई महानुभाव सम्पादक तो दिन रात फाग खेलते रहते हैं।

सर्वसाधारण में किसी प्रचार का आधुनिक साधन साप्ताहिक तथा दैनिक समाचारपत्र ही हो सकते हैं। अब उनका यह हाल है तो आर्य-भाषा साहित्य का सर्व साधारण में प्रचार कैसे हो। जो समाचार-पत्र स्त्रियों और स्वच्छ-हृदय बालकों के हाथों में देने के योग्य नहीं उन से लाभ के स्थान में उल्टी हानि ही होगी। इसका इलाज क्या किया जाय? क्या प्रेस ऐसोसिएशन खोलने से सुधार होगा? कई बार सम्पादक जरहल बना और सो गया। कारण यह कि जिनकी स्वार्थसिद्धि में अश्लीलता और फक्कड़ बाज़ी ही साधक हों, वे इस प्रथा को त्यागने के लिय कब तय्यार होंगे। स्वार्थी को क़ाबू करने के लिए उसके स्वार्थ को ही सेंक लगना चाहिए। यदि आर्यजनता प्रण करले कि जिन पत्रों में अश्लील और फक्कड़ लेख होंगे उनको बहिष्कृत करके, न मानने पर, बन्द कर देंगे तो आर्य-भाषा पत्रों को बदनाम करने वाले सम्पादकों को बड़ी जल्दी होश आजाय।

—:०:—

लाहौर का झगड़ा मिटना चाहिए

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिकोत्सव १५, १६ ज्येष्ट १९७३ [तद्नुसार २७, २८ मई १९१६] को होगा। इस अवसर पर यदि लाहौर के आर्यपुरुषों का झगड़ा न मिटा तो फिर इसके निपटारे की शीघ्र आशा नहीं हो सकती। द्वेषाग्नि बुझाई बड़ी आसानी से जा सकती है; उसका बुझाना ही कठिन है। इस अवसर पर आर्यसमाजों के सभी प्रतिनिधियों को अन्य सब काम छोड़ और कष्ट सह कर भी लाहौर पहुंचना चाहिये। जो भाव एक दूसरे को कुचल डालने का लाहौर के दलों को पागल बना रहा है, उसे आर्यसमाज की सम्मिलित शक्ति से कुचल डालना चाहिए।

राय ठाकुरदत्त मुझ से रुष्ट हैं कि मैं उन्हीं के विरुद्ध क्यों लिख रहा हूं। परन्तु वह ऐसी शिकायत करते हुए भूल जाते हैं कि इस समय अनुचित कार्यवाही उन्हीं की ओर से हुई है। क्या इतने आर्यसमाज जो इस कार्यवाही पर शोक प्रकट करते हैं, सभी प्रकाश पार्टी हैं। आप सारी दुनिया को पक्षपाती क्यों समझ बैठे हैं, अपने कामों पर क्यों नहीं विचार करते। आप से यह अनुचित काम अवश्य हुआ है कि आपने पुलिस द्वारा 'दाये नाजायज़' डालकर मनोवांछित चुनाव कर लिया। आपने जो अश्लीलता-पूर्ण ट्रैक्ट रूपलाल डिसमिस्ड गार्ड द्वारा छपाया है उस से भी आपके पुलिस बुलवाने के लिए कोई रुष्ट हेतु सिद्ध नहीं होता। मनुष्य से भूल हो जाया करती है, यदि घबराकर आप से एक गिरावट का काम हो गया तो उसके लिए आर्य जनता से क्षमा मांगकर फिर जो शिकायतें आपको हों पेश कीजिए। यदि दोनों पक्ष अपनी अपनी भूलों को मान कर क्षमा की प्रार्थना करलें तो फिर कोई झगड़ा न रहेगा। सभा के प्रतिनिधियों को निर्पक्ष होकर निबटारा करने के लिए तय्यार होकर आना चाहिए और जो व्यक्ति भी समाज के कल्याण के लिए अपना हठ छोड़ने के लिए तय्यार न हो उसी को अशान्ति फैलाने में अशक्त कर देना चाहिए।

मुम्बई गुरुकुल के वार्षिकोत्सव की रिपोर्ट, आर्य प्रकाश मुम्बई, के नए अंक में प्रकाशित हुई है। यह उत्सव २१,२२,२३ अप्रैल को मनाया गया। स्वामी विश्वेश्वरानन्द, सर्वदानन्द, ओंकार सच्चिदानन्द के अतिरिक्त पं० बालकृष्ण तथा आर्यन फिलासोफ़र मास्टर आत्मारामादि के व्याख्यान हुए। मास्टर जी को राव बहादुर के साथ यह नई उपाधि मुबारिक हो। आर्य उपदेशकों के व्याख्यान बड़े सारगर्भित और प्रभावशाली हुए। अपील पर १८ हज़ार चन्दा हुआ। परन्तु एक रङ्ग में भंग हुआ। प्रथम दिनकी कार्यवाही के अनन्तर आर्य प्रकाश लिखता है:—

"इसके बाद म० विभाकरजी बैरिस्टर का भाषण गुर्जर भाषा में हुआ। आपने अपने भाषण में यह कहा कि, केवल गुरुकुल में शिक्षण लेने से ही मनुष्य धर्मात्मा तथा देश हितैषी निकलता हो तो, स्वर्गवासी गोखले जैसे पाश्चात्य शिक्षण से धर्मात्मा तथा देशहितैषी कैसे निकले? इस लिए पाश्चात्य शिक्षण को बुरा कहना अच्छा नहीं। मेरा तो मानना है कि शहरों की गलियों में क्यों न हो, परन्तु किसी प्रकार विद्या का प्रचार करना चाहिये। म० विभाकरजी के कथन में कई बातें गुरुकुल शिक्षण के विरोध में आई थीं उनका प्रत्याख्यान पं० बालकृष्ण शर्मा ने अपने द्वितीय दिन के व्याख्यान में कर दिया था, इसके अनन्तर श्री० सभापति देवधर जी का उपसंहारात्मक भाषण हुआ, आपने गुरुकुलों की आवश्यकता दिखा कर औदार्य से गुरुकुल को दान देने की अपील भी करदी और म० विभाकरजी के कथन का कुछ अनुमोदन भी कर दिया था।"

ऐसे उत्सवों में इस प्रकार खण्डन मण्डन होने से रस जाता रहता है।

इस समय तक मुम्बई गुरुकुल सेन्टाकुज़ (Santa Cruz) पर किराए के मकानमें कार्य चला रहा है, परन्तु शीघ्र ही अपना मकान बनाने का विचार हो रहा है। सहयोगी आर्यप्रकाश लिखता है:—

"इस वर्ष गुरुकुल की भूमि खरीदने के लिए आर्यविद्या सभा ने १५००० रुपयों का ठराव पास किया है, दस हज़ार ब्रह्मचारियों के पालक कुछ मुद्दत तक देंगे और पांच हज़ार विद्यासभा स्वयं देगी, ज़मीन खरीदने पर मकान बांधने के लिए सूचना करने पर ब्रह्मचारियों के पालक महाशय और अन्य उदार महाशयों ने अभी से अपने नाम लिखने आरम्भ कर दिये हैं, १२ महाशयों ने २५० रुपयों की एक एक कोठड़ी बांधने के लिए हस्ताक्षर करदिए हैं, वे सब नाम गुरुकुल के उत्सव पर सुनाए गए हैं, गुरुकुल की भूमि खरीदने में अब देरी नहीं है, विद्या सभा के सभापति श्रीमान डाक्टर खांडवाले, श्रीमान मुख्याधिष्ठाता पंडित दीनदयाल जी आदि महाशय भूमि देखने के लिए गये हैं, हमारा अनुमान है कि, वे ज़मीन का निश्चय करके आभी गए हों। अतः गुरुकुल के हितचिन्तक उदार महाशयों से प्रार्थना है कि, अब यही गुरुकुल को सहाय करने का शुभ अवसर है। गुरुकुल स्थान बंधजाने पर बहुत बड़े व्यय के बोझे से गुरुकुल मुक्त होकर ब्रह्मचारियों को विद्यादान देने में वह दत्तचित होगा"

—०—

वर्णव्यवस्था पर शास्त्रार्थ।

जिस सौजन्य तथा प्रेमभाव से पं० गिरधर शर्मा मिला करते थे उससे मैंने यह आशा बांधी थी कि उनका अन्य व्यवहार भी सभ्यता का ही होगा। परन्तु पंडित जी के मासिक 'ब्रह्मचारी' के, बड़ी प्रतीक्षा के पश्चात्, दर्शन करके वह आशा निराशा से बदलगई। शास्त्रार्थ की रिपोर्ट क्या है, पर पक्ष की कही बातों पर भी सन्देह का पर्दा डालने और अपनी उस समय की वक्तृता की त्रुटियों को पूरा करने का यत्न-मात्र है। "ब्रह्मचारी" मासिकपत्र उस समय मिला जब कि प्रचारक के इस अंक का बड़ा भाग प्रेस में चला गया था, इस लिए शास्त्रार्थ को, ज्यों का त्यों, ज्यौरा जानने के लिए आर्य्यजनता को एक सप्ताह की प्रतीक्षा करनी पड़ेगी, परन्तु फिर जब तक वर्णव्यवस्था सम्बन्धी शास्त्रार्थ का सारा हाल न छपले तब तक प्रचार का बड़ा भाग इसी विचार के अरपण किया जायगा।

पं० गिरधर शर्म्मा ने इस शास्त्रार्थ का नाम रक्खा है—*"आर्य्यसमाज की वेदी पर सनातनधर्म्म का डंका"*—मैं भी इस शीर्षक को स्वीकार करता हूं, क्योंकि उस पवित्र वेदी पर *आधुनिक पौराणिक मत* की डफ़ली कभी पिट ही नहीं सकती थी।

यदि पं० गिरधर शर्म्मा डंके के बाद को फिर सुनना स्वीकार करें तो मैं उन्हें अभी से निमन्त्रण दे छोड़ता हूं। आगामी वर्ष के गुरुकुल वार्षिकोत्सव पर विचारास्पद विषय यह होगा कि वेद में परमेश्वर के अवतार लेने अर्थात् मनुष्यादि की देह-धारण करने के लिए कोई आधार है वा नहीं। श्री पं० जी, अपने मित्रों सहित, अभी से इस विषय की तय्यारी शुरू करदें।

शेष रहा 'डंके की चोट' के पश्चात् उनका कमीना आक्रमण कि मैंने अपने अधिकार से अनुचित लाभ उठा कर पं० इन्द्र को 'विद्यावाचस्पति' की उपाधि दे दी है—सो इस में मेरे पथदर्शक श्री प० सुरेशचन्द्र बसु, एम० ए०, रिटायर्ड सेशनजज, श्री महामहोपाध्याय डाक्टर गङ्गानाथ झा एम० ए० तथा श्री डाक्टर सतीशचन्द्र विद्याभूषण एम० ए० आचार्य संस्कृत कालिज कलकत्ता से महानुभाव हैं। पं० इन्द्र के निबन्ध को देखकर जिस उपाधि के पात्र उन्हें इन महानुभावों ने समझा वही उपाधि दी गई। पं० इन्द्र के विवाह पर भी वधु के पिता श्री पं० विष्णुमित्र जी पर कमीने कटाक्ष किए गए हैं, परन्तु मेरी सम्मति में यह अन्तिम लेख किसी ऐसे असाध्य लेखक की लेखने से निकला है जिसने 'जिरकीन' की शागिर्दी में अपनी आयु का बड़ा भाग व्यतीत किया।

क्रियात्मक सिद्धि

कोई भी सुधार केवल वाणी द्वारा काम करने से नहीं हो सकता। वैदिक वर्णव्यवस्था विषय पर शास्त्रार्थ करने से एक सप्ताह पीछे ही जाति बन्धन तोड़कर गुणकर्म की समानता को लक्ष में रख कर जो उपाध्याय इन्द्र ने अपना विवाह किया तो एक मारवाड़ी सुधारक ने मुझे पत्र में लिखा—"आर्य समाज के बीसियों शास्त्रार्थों से बढ़कर पं० इन्द्र का यह आचरण काम करेगा।" पौराणिक दल चाहे कितना लकीर को पीटा करे यह सुधार अब रुक नहीं सकता। यद्यपि अभी तक आर्य्य समाज में घुन की तरह लगी हुई ब्राह्मन पार्टी इस सुधार को रोकने के लिए हाथ पैर मार रही है और इस अंश में पौराणिकों के साथ जत्थे बांध कर आर्य समाज को हानि पहुंचाना चाहती है तथापि आर्य समाज के अन्दर यह लहर चल गई है जिसे कोई भी बनावटी बन्द बांध नहीं सकेगा।

परन्तु इस अंश में किसी किसी समय कुछ निराशा के बादल भी सामने आ खड़े होते हैं। मेरा यह कहना नहीं है कि सब आर्य बिना कारण भी जाति बन्धन को तोड़ दें। यदि जाति के अन्दर ही ठीक गुण कर्म की योग्यता से विवाह हो सके तो कुछ अनुचित नहीं परन्तु जान-बूझ कर—संकुचित परिधि में विवाह करना सुधार के मार्ग में दीवार खड़ी करने के तुल्य है। यदि आर्य समाज के सब युवक और विशेषतः गुरुकुल के नव स्नातक यह दृढ़ संकल्प करलें कि गुण कर्म की योग्यता की तलाश, जाति-बन्धन तोड़ कर ही करेंगे तो सुधार का मार्ग सुगम हो जाय।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पुस्तक समालोचना

आरोग्य विषेसामान्य ज्ञान—लेखक श्रीयुत मोहनदास करमचन्द गान्धी। सस्तुं साहित्य वर्धक कार्यालय अहमदाबाद द्वारा प्रकाशित। प्रथम तथा द्वितीय भाग।

श्रीयुत गान्धी जी को कौन सा भारतवासी नहीं जानता। आपका जीवन सिद्धान्तमय है। जिस सिद्धान्त को आप मानते हैं, उस पर आचरण भी करते हैं। यही आपके जीवन की गुरुता का एक मात्र कारण है। स्वास्थ्य रक्षा तथा भोजनादि के विषय में भी आपके कुछ विशेष सिद्धान्त हैं, जिन्हें आप स्वयं जीवन में बर्तते और अन्यों के लिए भी सुनाते हैं। उन्हें मान सकना या न मान सकना अवस्थाओं पर निर्भर है, परन्तु उन सब सिद्धान्तों की शिक्षाप्रदता में सन्देह नहीं। यह ग्रन्थ गुजराती में है। अच्छा होगा यदि कोई प्रकाशक मण्डली इस उपयोगी पुस्तक का भाषानुवाद प्रकाशित करेगी? भारतवासियों को इस समय भोजन छादन के सुधार और स्वास्थ्य रक्षा के सिद्धान्तों की शिक्षा देने की बहुत अधिक आवश्यकता है।

स्त्रियों की पराधीनता—अनुवादक—श्रीयुत ऋषीश्वरनाथ भट्ट बी० ए०। प्रकाशक रामभूषण प्रेस आगरा। मूल्य ।=)

जानस्टुआर्ट मल की स्त्रियों के अधिकारों के विषय में पुस्तक जगन्मान्य है। उसी का यह अनुवाद है। पुस्तक उन लोगों के लिए अवश्य पठनीय है, जो स्त्रियों को अधिकारों के योग्य नहीं समझते। दूसरी ओर मिल महाशय के कई सिद्धान्त अब अनुभव से विपरीत सिद्ध हो चुके हैं। तो भी पुस्तक की युक्ति अब भी अत्यन्त आदरणीय है। अनुवाद उत्तम और स्पष्ट हुआ है।

जीवन व्यवहार—लेखक, ठाकुर लालसिंह। राजपूत ऐंग्लो ओरियण्टल प्रेस आगरे में मुद्रित।

यह छोटी सी पुस्तक बड़ी उपयोगी बातों से भरी पड़ी है। जीवन सम्बन्धी बहुत से व्यवहारों की मार्मिक आलोचना करते हुए लेखक महाशय ने अन्त में जीवन के उद्देश्य का निरूपण किया है। पुस्तक बालकों युवकों और वृद्धों के लिए शिक्षा-दायक होगी।

बालकों का सुधार—लेखक-कुंवर हनुमन्तसिंह रघुवंशी व पं० पन्नालाल शर्मा। मूल्य ≡)

इस छोटी सी पुस्तिका में बालकों के पालने और योग्य बनाने के विषय में उपयोगी शिक्षा लिखी हैं। हम इसकी उपादेयता में कोई सन्देह नहीं कर सकते।

मेरी दुःख गाथा—लेखक-कुंवर हनुमन्तसिंह रघुवंशी। मूल्य ।)

यह एक उपदेशप्रद कहानी है। घंटे भर का उपयोगी समय यापन करना हो तो ।) में हो सकता है।

बाल शिक्षा—द्वितीय भाग। गुजराती भाषा की एक पुस्तक का अनुवाद। अनुवादक—ठाकुर पूर्णसिंह वर्मा। संशोधक-कुंवर हनुमन्तसिंह रघुवंशी। मूल्य =)

गुरुशिष्य की बात चीत के मिससे बालकों के लिए बहुत सी शिक्षायें दी हैं।

राजा हरिश्चन्द्र—प्रकाशक म० हुलास वर्मा प्रेमी। मूल्य -)।।।

त्याग मूर्ति राजा हरिश्चन्द्र की कथा का संक्षेप ३० पृष्ठों में दिया गया है।

सयाजी चरितामृत—लेखक पं० श्रीराम शर्म्मा। मूल्य १)

भारतवर्ष की रयासतों के शासकों का अनपढ़ और बेसमझ होना नियम है, पठित होना अपवाद है। जो पढ़ भी जांय, उनकी शिक्षा उन्हें सुधारती है या बिगाड़ती है, यह भी सन्दिग्ध है। समझदार और वस्तुतः शिक्षित राजाओं को अपवाद में भी अपवाद समझना चाहिये। बड़ोदा के गायकवाड़ उस थोड़ी सी राजाओं की श्रेणि के मुखिया हैं। यों तो भारत के कई राजाओं ने अपने देशों में शिक्षा प्रचार और अन्य प्रकार के सुधार किए हैं, किन्तु गायकवाड़ के सुधारों में एक विशेष प्रकार का सौन्दर्य है। गायकवाड़ का जीवन प्रत्येक भारतवासी को कई शिक्षाएं दे सकता है। आपका स्वदेश प्रेम, भिन्न २ मतों से प्रेम भाव, पक्षपात का न होना, दृढ़ निश्चयता और योग्यता—ये सब गुण प्रत्येक भारतवासी के हृदय में बसने योग्य हैं। आपका कोई जीवन चरित्र अभी तक आर्यभाषा में नहीं था। पं० श्रीराम शर्मा धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने इस अभाव को पूरा किया। यह जीवन चरित्र उत्तम रीति से लिखा गया है। पं० श्रीराम जी ने स्वयं बड़ौदे में चिरकाल तक रहकर जो कुछ अनुभव किया है, उसने पुस्तक की उपादेयता को बढ़ा दिया है, भारतवासियों को एक सच्चे राजर्षि की जीवनि का अनुशीलन करना चाहिए।

सच्चे सुख की कुंजिया—मि० बड़ीलाल जी लिखित। मूल्य =)

पुस्तक मिलने का पता—चन्द्रसेन जैन वैद्य, भक्त जैन तत्व प्रकाशिनी सभा, इटावा।

यह प्रसन्नता की बात है कि अब भिन्न २ साम्प्रदायों के अनुयायी सार्वजनिक ग्रन्थ लिखने की ओर विशेष अभिरुचि रखने लगे हैं। यह छोटी सी पुस्तक एक जैन सज्जन ने लिखी है। इसमें शील, ब्रह्मचर्य आदि विषयों पर उपयोगी शिक्षायें हैं। यह बड़ा अच्छा चिन्ह है कि साम्प्रदायों के अनुयायी उपयोगी ग्रन्थों में साम्प्रदायिक भेद को स्थान नहीं पाने देते।

संसार या मोक्ष—बाबू ऋषभदास बी० ए० लिखित। कीमत दो पैसे।

इस पुस्तिका में जैन धर्म के अनुसार संसार और मोक्ष की व्यवस्था है।

भजननूतन प्रकाश—म० जगत्सिंह वर्मा नवादा निवासी ने संग्रह करके प्रकाशित किया। पं० शंकरदत्त शर्मा ने शर्मामशीन प्रिंटिंग वर्कस मुरादाबाद में छपा। मू० ≡)

इस संग्रह में उन बहुत से भजनों का संग्रह है, जो इस समय आर्य्य-समाजों में गाये जाते हैं।

श्रीरामलीला का सन्देश—रचयिता पं० उमादयाल मिश्र। मिलने का पता—श्रीमती मनोरमादेवी मिश्राश्रम कालपी। मूल्य)।

इन ८ पृष्ठों में गोसाईं तुलसीदास जी के तथा कुछ नवीन दोहे चौपाइयों में राम चरित के उपदेश सुनाये गये हैं।

धात्री—लेखक—वैद्य हरिश्चन्द्र भिषगाचार्य। मूल्य ।) झज्झर के पते से ग्रन्थकर्ता से प्राप्य।

इस छोटी सी पोथी में माताओं के उपयोग की बहुत सी पुस्तकें लिखी गई हैं।

—:o:—

वेद और पाश्चात्य विद्वान्

(१)

(लेखक—पं० इन्द्र विद्या वाचस्पति)

भेड़ों के समूह पर जब कोई हिंसक पशु आक्रमण करता है तब, कहते हैं कि भेड़ें अपने मुंह भूमि में दबा देती हैं। किन्तु ऐसा करने से वे बच नहीं सकतीं। इसी प्रकार मनुष्य जाति का जो भाग आते हुए ख़तरे से आंखें मूंद लेता है; उसे देखकर भी अनदेखा कर देता; वह ख़तरे से बच नहीं सकता। ख़तरा उसे आकर दबा ही लेता है। आजकल संग्राम के दिन हैं। संसार ही समर भूमि है। इसमें जो जाति या व्यक्ति अपने शरीर को कवच से नहीं ढकती, वही काल चक्र के नीचे रगड़ा खाजाने के ख़तरे में है। हरएक को तय्यार रहना चाहिये-हरएक को अपने चारों ओर रक्षा की दीवार खड़ी रखनी चाहिये।

आर्य जाति का वेदों पर विश्वास है। सम्पूर्ण आर्य-जाति वेदों को अपने विश्वास तथा धार्मिक भवन का आधार मानती है। वेदों पर भारत के आर्य निवासियों की बड़ी आस्था है। यों तो कौनसा ऐसा आर्य पुरुष होगा, जिसने वेदों का नाम न सुना होगा किन्तु एक बड़े आश्चर्य की बात है। जो वेद जातीय-जीवन के लिये आधार शिला के समान हैं, आर्य-पुरुषों को उनके विषय में बहुत थोड़ा ज्ञान है। इधर उधर से उड़ती हुई ख़बर की भांति उन्होंने वेद का नाम सुन रखा है; कभी कहीं व्याख्यानों में भी उन्होंने वेद की महिमा पण्डित जी के मुख से सुन रक्खी होगी, परन्तु इस से आगे पता नहीं। जिस ग्रन्थ से हमारे प्राचीन भारतीय इतिहास के मकान का दरवाज़ा खुलना है, जो भारतवर्ष के धर्म और विश्वास का एक मात्र व्याख्याकार है, उसके विषय में आर्य-सन्तान की इतनी उदासीनता शोक जनक है। साधारण जनता को जाने दीजिये-जो लोग भारतवर्ष के इतिहास के और धर्म के अन्वेषक समझे जाते हैं—वे भी विदेशियों द्वारा किये हुए अनुवादों या इधर उधर की सुनी सुनाई गप्पों पर ही आधार रखते हैं। वेद क्या है? इस प्रश्न का उत्तर जिज्ञासु बन कर बहुत थोड़े लोग पाना चाहते हैं।

भारत वासियों के लिये यह प्रश्न बड़ा विकट है। उनके लिये धार्मिक तथा जातीय दृष्टि से वेदों की रक्षा प्राणरक्षा का महत्व रखती है। विशेषतया ऐसे समय में जब कि दूसरा पक्ष पूरे हथियारों की सहायता से आक्रमण कर रहा है। इस समय क्या दशा है! वेद आर्य मात्र को माननीय है, भारतवासी आर्य-पुत्रों की उस पर परम आस्था है। ऐसे ग्रन्थ के अर्थ समझने का यत्नकौन करता है? विदेशीय विद्वान्। वह स्वदेशी विचारक, जो कभी नई रोशनी के अनुसार वेदों की आलोचना प्रारम्भ करता भीहै, तो पाश्चात्य विद्वानों की दासता से नहीं छूट सकता। वेदों पर स्वतन्त्र विचार करने वाले भारतवासियों की गिन्ती नहीं के बराबरी निकलेगी।

हमारी ओर से इतना आलस्य—और दूसरी ओर से देखिये। पाश्चात्य विद्वान् वेदों की खोज करते २ अपनी आयु बिता देते हैं। कई योरपियन विद्वानों का यही कार्य करते करते शरीर त्याग हो गया। उनके किये हुए कार्य भी कितने २ बड़े हैं। इस समय योरपियन भाषाओं में ऋग्वेद के चार पांच प्रकार के अनुवाद छप चुके हैं। अथर्ववेद का संस्कृत में कोई भी सम्पूर्ण भाष्य नहीं मिलता। किन्तु अंग्रेज़ी में ही उसके दो साङ्गोपाङ्ग अनुवाद विद्यमान हैं। योरप की कोई मुख्य भाषा नहीं जिसमें प्राचीन तथा अर्वाचीन संस्कृत साहित्य का क्रमबद्ध इतिहास देने के लिये कोई पुस्तक न लिखी गई हो। फिर केवल वैदिक देवमाला को लेकर, या केवल वैदिक नाम शब्दों को लेकर कोष विद्यमान हैं। जर्मनी के प्रोफ़ेसर रोथ का वैदिक शब्दों का कोष अपने ढंग का अनूठा है। परन्तु वह आर्य जाति जो वेदों को पूज्य-दृष्टि से देखती है इस ओर से उदासीन है। या तो आर्यजाति के बालक वेदों के विषय में कुछ सुनते ही नहीं, और सुनते भी हैं तो पाश्चात्य विद्वानों के मुख से। परिणाम यह होता है कि जो ग्रन्थ आर्य-जाति की जातीयता के आधार भूत हैं, उनके विषय में उन्हें अपूर्ण या मिथ्या ज्ञान रहता है।

वेद के विषय में हम लोग एक और भी भारी भूल करते हैं, जिसका मुख्य कारण हम लोगों में वेदविषयक गहरे अनुशीलन का अभाव है। वेद के विषय में हम बहुत ही अत्युक्तिपूर्ण तथा अविचारित स्थापना ये कर देते हैं। हम एक साधारण सी बात करते हुए दस बार 'शायद' या 'लगभग' शब्द का प्रयोग करेंगे किन्तु वेद के विषय पर लेखमाला लिख मारेंगे और एक बार भी इन शब्दों का प्रयोग न करेंगे। साथ ही एक और आश्चर्य देखिये। हम लोग कहा करते हैं कि पश्चिम के विद्वान् वेद या संस्कृत के विषय में किसी प्रकार की भी राय देने का अधिकारनहीं रखते, क्योंकि उनमें मूल वेद या अन्य संस्कृत ग्रन्थ पढ़ने की शक्ति नहीं है। वे संस्कृत से अनभिज्ञ होते हैं। किन्तु यहां क्या है। जो जितनी कम संस्कृत जानता है, वह इतना ही अधिक पाश्चात्य विद्वानों को कोसता है, और स्वयं वेद ब्राह्मण और उपनिषदों के विषय में अपने आपको प्रामाणिक मानता है। यह दशा शोचनीय है। इसका कारण यही है कि हम लोगों की वेद में श्रधा होंठ-श्रद्धा है। वह गले के नीचे या तालु के ऊपर नहीं पहुंचती।

पाश्चात्य विद्वान् वेदों पर जीवन बिताते हैं, और अपने मतों को पुष्ट करते हैं। हम लोग वेदों पर कुछ भी परिश्रम नहीं करते और केवल उनको अपशब्द कहने में ही अपनी जीत मानते हैं।

इस लेख माला का उद्देश्य पाश्चात्य विद्वानों द्वारा वेदों पर किये हुए विविध प्रकार के तर्क वितर्कों की आलोचना करके आर्य भाइयों का ध्यान उस ओर आकृष्ट करना है। इस लेखमाला में कितने लेख होंगे और कौन २ से विषय आजायंगे, यह अभी तक नहीं कहा जासकता ज्यों ज्यों विषय बढ़ता जायगा, त्यों त्यों लेखों के शीर्षक निश्चित होते जायंगे। आशा है हमारे पाठक इस लेख माला का ध्यान पूर्वक अनुशीलन करेंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देवनागरी लिपि को

अलंकृत करने के उपाय*

(२)

गतांग से आगे ।

(लेखक-सुलेखाचार्य्य पं० गौरीशङ्कर भट्ट)

परमेश्वर की बड़ी कृपा हुई कि हमारी शिक्षाप्रिय गवर्नमेन्ट ने सर्कारी पाठशालाओं में इसे आश्रय दिया और धीरे २ लोग देवनागरी का महत्व समझने लगे । सौभाग्य से अनेक सभा-समाजों ने जन्म लेकर इसे सम्मानित किया। अनेक राज्यों में इस के दफ्तर हुए तथा संयुक्तप्रान्त के न्यायालयों में श्रीमान् लेफ्टिनेन्ट गवर्नर सरएन्टोनीमेकडानल महोदय की आज्ञा से इस का प्रवेश हुआ। बड़े हर्ष की बात है कि अब सम्पूर्ण भारतवर्ष के विद्वान् और विवेकी महापुरुष इसे राष्ट्रलिपि बनाने का भी उचित और प्रशंसनीय उद्योग कर रहे हैं, जिससे स्पष्ट है कि देवनागरीलिपि ही लिपियों में शिरोमणि है । आज इस सम्मेलन की कृपा से देवनागरी को अलंकृत करने का विचार उपस्थित हुआ है, जिस से आशा है कि अब इसे अलंकार विभूषित होने का सौभाग्य अवश्य प्राप्त होगा ।

मेरी सम्मति में पहले प्रचलित लिपि के अक्षरों को कलम की लाग के अनुसार परिमित करना चाहिए । जैसे अ, इ, उ, ए आकृति संख्या १,२,३,४ । इस से लाभ यह होगा कि अक्षर चाहे जितने बड़े बनाए जायं, वे परिमाण में रहने के कारण कभी बेडौल नहीं बनेंगे । यह अक्षर प्रकार से शुद्ध बन सकते हैं और मुक्तहस्त रीति से भी खींचे जा सकते हैं* । यह अलंकृत करने योग्य होंगे और इन्हीं से बालक बालिकाओं को सुलेख सिखाने के लिये लिपि पुस्तकें भी तैयार होंगी और तैयार हैं । [निबन्ध लेखक से मिलती हैं]

इन अक्षरों का रूपान्तर करना चाहें तो इनके घुमाव सीधीरेखाओं में बदल देने से दूसरे प्रकार के अक्षर बन जाते हैं और वे भी कलम की लाग के अनुसार ही रहते हैं । जैसे अ, इ, उ, ए आकृति संख्या ५, ६, ७, ८ । यह अक्षर फुटरूल के सहारे बहुत ही सुगमता से खींचे जा सकते हैं और मुक्तहस्त रीति से भी बनाए जासकते हैं ।

इन अक्षरों को यदि अंगरेज़ी के इजिप्शियन अक्षरों का सा रूप देना हो तो इन की रेखाएं सब स्थानों में [र, ए, स, ख, इ, ह, आदि की पतली नोकों को छोड़ कर] बराबर मोटाई की बनानी चाहिए । जैसे अ,इ,उ,ए आकृति संख्या ९, १०, ११. १२, । यह अक्षर प्रकार से शुद्ध बनते हैं और मुक्तहस्तरीति से भी बन सकते हैं ।

यदि इन की भी गोलाइयां सीधी रेखाओं में बदल दी जायं तो यह चौथे प्रकार के अक्षर तैयार होजाते हैं । जैसे अ, इ, उ, ए, आकृति संख्या १३, १४, १५, १६ । यह अक्षर भी फुटरूल के द्वारा बड़ी सरलता से शुद्ध खींचे जा सकते हैं और मुक्तहस्त रीति से भी बनते हैं । ऐसे अक्षर काग़ज़ तथा कपड़े की चिटों अथवा गोटे और फीते को मोड़ कर बड़ी ही सुगमता से बनाए जासकते हैं ।

दूसरे प्रकार के [संख्या ५ से ८ तक] अक्षरों की रेखाएं यदि गोल और नोकदार कर दीजायं तो 'ओल्डइंगलिश' के ढंग के अक्षर बन जाते हैं । जैसे आकृतिसंख्या १७ से २० तक । ऊपर वाले चार प्रकार के अक्षरों को यदि अंगरेज़ी के 'इटैलिक' अक्षरों की भांति बनाना हो, तो वर्गकोष्ठों को दाहिने बाएं तिरछा कर के असली अनुपात से अक्षर खींचना चाहिये । जैसे आकृति संख्या २१, २२, और २३, २४ ।

वर्ग कोष्ठों को लम्बा चौड़ा कर देने से अक्षरों की आकृतियां भी उसी अनुपात से लम्बी अथवा चौड़ी हो जाती है । जैसे आकृति संख्या २५, २६ और २७, २८ । यह अक्षर ऐसे प्रतीत होते हैं कि मानो रबड़ की भांति खींच कर बढ़ा दिये गए हैं अथवा दबा कर चपटे कर दिये गए हैं । इसी प्रकार वर्ग कोष्ठों की भिन्न २ अवस्थाओं के अनुसार और भी अनेक प्रकार के अक्षरों की रचना की जासकती है । जैसे 'नव' और 'घन' आकृति संख्या २९ और ३० तथा 'राम, और 'राग' आकृति संख्या ३१ और ३२ । ऐसे ही और भी कितने ही प्रकार के नमूने बन सकते हैं ।

यह सब प्रकार के अक्षर अनेक रंगों से रंजित और अनेक प्रकार से अलंकृत किये जा सकते हैं । यदि अक्षरों की एक ओर की रेखाएं मोटी कर दीजायं, अथवा इन के बीच में गोल, चौखूंटे, लम्बे, तिरछे बिन्दु रख दिये जायं, तो यह एक प्रकार के अलंकृत अक्षर होंगे । जैसे आकृति संख्या ३३ से ४० तक ।

यदि अक्षरों की मोड़ों पर रेखाओं अथवा बिन्दुओं की छाया दीजाय, तो यह भी एक प्रकार के अलंकृत अक्षर होंगे। जैसे अ,ऋ,ग,श, आ० सं० ४१–४४

यदि अक्षरों की पार्श्वरेखा के बीच में बेलें बनादी जायं तो यह भी एक प्रकार के अलंकृत अक्षर होंगे । जैसे व, म,ल, श, आकृति संख्या ४५–४८ ।

यदि अक्षरों की पार्श्वरेखा मिटा कर उसके स्थान में चित्र अथवा बेलबूटे इस तरह बना दिए जायं कि अक्षरों की आकृति ठीक बनी रहे, तो वे भी एक प्रकार के अलंकृत अक्षर होंगे । जैसे क, र, और ग, त, आकृति सं० ४९, ५० ।

यदि अक्षरों के भीतर और बाहर बेल बूटे बना दिये जायं, तो वे एक प्रकार के अलंकारविभूषित अक्षर होंगे । जैसे 'धर्म' और 'जल' आकृति संख्या ५१ और ५२ ।

यदि अक्षरों के नीचे गोट की भांति इकहरी या दोहरी छाया दे दीजाय और

*अक्षरों का नमूना "वर्णाकृतिपत्र" में देखिये जो निबंधलेखक पं० गौरीशंकर भट्ट से गुरुकुल कांगड़ी पो० श्यामपुर ज़ि० बिजनौर के पते पर -)॥ का टिकट भेजने से मिल सकता है ।

भीतर भी बेल बूटे बनाए जायं अथवा कुछ काम कर दिया जाय, तो वे भी एक प्रकार के अलंकारविभूषित अक्षर होंगे। जैसे 'सत्य' और 'कर्म' आकृति सं० ५३, ५४।

उभरे हुए अक्षरों की उंचाई दिखाने के लिये भी छापा लगाया जाता है। जैसे किसी लकड़ी के तख़्ते को काट कर अक्षर गढ़ लिये गए हैं, उन में लकड़ी की मोटाई का जो भाग है वह छापा देकर इस प्रकार दिखाया जायगा:—जैसे ज, ल, ध, र, आकृति संख्या ५५-५८।

जिस प्रकार अंगरेज़ी अक्षरों के कई प्रकार के संयुक्त नामाक्षर (Monogram) बनते हैं, वैसे देवनागरी अक्षरोंके भी बन सकते हैं। जैसे:—

मदनचन्द्र-खन्ना, मोतीलाल-घोष, काशीप्रसाद, सुन्दरलाल, गौरीशंकर भट्ट, आकृति संख्या ५९–६३।

कुछ लोगों का कहना है कि फ़ारसी के ख़ते तुग़रा की भांति देवनागरी अक्षर मोड़े-मरोड़े नहीं जा सकते। परन्तु यह देखिये दो नमूने आप के सामने आज उपस्थित हैं। एक घोड़े के चित्र में और दूसरा कमल की कली के चित्र में है।

घोड़े के चित्र में लिखा है:—"श्री १०८ महाराजाधिराज श्री गंगासिंह जूदेव बहादुर सिपहदारुलमुल्क रियासत घरखारी" इसे इस तरह पढ़िए:—

श्री—दोनों कान
१०८ महाराजाधिराज—अयाल।
श्री—आँख।
गं } मस्तक।
गा } मुख और नथुना।
सिं } कण्ठ और गर्दन।
ह } गर्दन का निचला भाग।
जू—ज़ीन का उपरी भाग।
दे } छाती और गर्दन का अगला भाग।
व } गर्दन में 'ह' से लिपटा हुआ।
बहादुर—ज़ीन में स्पष्ट है।

सिपह दारुलमुल्क—दुमची की बेल।
रि—अगले पैर का अगला भाग और ज़ेरबन्दी की पुछल्ली
या—अगले पैर का पिछला भाग और दूसरा पैर।
स—दूसरे पैर की बगल।
त—रकाब।

च—पेट से पिछले पैर के पिछले भाग तक।
र—पुट्ठा, पूंछ के पास।
खा—तीसरा पैर और चौथे पैर का अगला भाग।
री—पूंछ।

दूसर तुग़रा जो कमल की कली में है, इस में स्पष्ट लिखा है:—"श्री सुदामा जी" इसके सब अक्षर अलग २ हैं, इस लिए समझाने का प्रयोजन नहीं है। आप स्वयं समझ सकते हैं।

ऊपर जितने प्रकार के नमूने दिखाए गए हैं, इन में और भी शाखाएं निकाली जासकती हैं। लिपि को अलंकृत करने के लिए सैकड़ों प्रकार निकल सकते हैं। कागज, कपड़े, गोटे, डंक, झकझके और अबरक आदि के अक्षर बना कर उनमें कई प्रकार की कारीगरी की जासकती है। काग़ज़ के साधारण अक्षरों के कुछ नमूने इस सम्मेलन मण्डप में आपके सामने हैं, जिन्हें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने वेद मन्त्रों की शरण देकर सम्मानित किया है। डंक और अबरक के अक्षरों के भी कुछ नमूने यहां हैं, जो आपको दिखलाए जाते हैं (कई उत्तम नमूने दिखलाए गए)

ऐसे ही चांदी और सोने के अक्षर बनाकर उन में विविध रंगों के नगीने तथा हीरे और मोती जड़ कर देवनागरी लिपि का सच्चा सत्कार किया जा सकता है। यदि हमारे माननीय महाराजाधिराज और राजा रईस तथा अन्य लक्ष्मी के लाडले लाल इस वन्दनीय देवनागरी-लिपि पर दया दिखाने की कृपा करें, तो सब कुछ हो सकता है। साधारण स्थिति के सज्जन भी जहाँ अनेक आडम्बरों से अपने घरों की शोभा बढ़ाते हैं, वहां देवनागरी के अलंकृत स्वर्णाक्षरों से लिखे हुए, मन को पवित्र करनेवाले, कुमार्ग से बचानेवाले, सुमार्ग पर चलाने वाले, सत्कर्मों में लगाने वाले और लोक परलोक सुधारने वाले, महात्माओं के शिक्षादायक लोकोपकारी महावाक्यों को भी थोड़ा स्थान दें, अपने और अपने देश के मंगल के लिए बालक बालिकाओं को देवनागरी लिपि की नियमित शिक्षा से अलंकृत करने का यत्न करें, अपने और देवनागरीलिपि के सम्बन्ध को ध्यान देकर देखें और विवेक पूर्वक अपने कर्तव्य को विचारें; छोटे बड़े सभी चित्रकार और पेण्टर भी इधर ध्यान देने की कृपा करें, तो फिर देखलीजिए कि संसार की सब लिपियां सभी बातों में किस प्रकार देवनागरी के सामने झुक झुक कर प्रणाम करती हैं और किस प्रकार देवनागरी का महत्व वर्धित होता है।

(करतलध्वनि)

समाप्त।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राप्त पत्र

[पत्र प्रेरकों के मत का उत्तरदाता सम्पादक नहीं]

पटियाला धर्म सभा

श्रीपूज्यपाद सम्पादक जी "सद्धर्मप्रचारक" नमस्ते ।

आर्यसमाज पटियाला का वार्षिकोत्सव तो एक मास हुआ हो चुका, वह बात तो अब पुरानी हो गई, उस पर टीका टिप्पणी का अब समय नहीं । आज कल यहां श्री सनातन-धर्म सभा का वार्षिकोत्सव हो रहा है । गत ३० अप्रैल को नगर कीर्तन था : साधारण दृष्टि से तो कहा जायगा कि नगरकीर्तन अच्छा था । सज धज बढ़िया था । वेद भगवान की सवारी हाथियों की गाड़ी में जो राज्य की तरफ से उस समय के लिए मंगाई गई थी निकली थी । भजन मंडलियां दो तीन तो यहां के लड़कों की यों जोकि बिलकुल फीकी थीं । दो तीन मण्डलियां कंसाथ अच्छी भीड़ थी। एक फिटन पर एक लड़का भजन गारहा था, सनातन धर्म और गौ माता की जयमनाता था पूछने पर मालूम हुआ कि यह मुसलमान मिरासी का लड़का है । अस्तु नगरकीर्तन में सब से हिले एक लड़का उर्दू की नज़म गा-रहथा जिस का अर्थ यह था कि संसार की सब पुस्तकों से पुरानी पुस्तक वेद है और इस में ही मनुष्यों के लिए सब प्रकार का ज्ञान दिया गया है वेद आदि-सृ में हुए और अपौरुषेय है इत्यादि ।

वेद भगवान की सवारी के साथ मन्त्र श्लोक पढ़ते जाते थे । गाड़ी पण्डित जी वेद मंत्र गायन कर रहे थे । एक विचित्र बात यह देखी कि कुछेक पण्डितों ने तो खड़ाऊं पहिनी हुई थीं, कुछ कपड़े के जूते, कुछ चमड़े के जूते पहने थे; परन्तु जब खड़े होकर श्लोक उच्चारण करते तो जूता पांव से निकाल उसके ऊपर खड़े हो जाते ।

उत्सव प्रतिदिन शाम के ५½ से ९ बजे तक होता है, सोमवार से शुरु है बृहस्पतिवार तक रहेगा ।

हमें कल मंगलवार उत्सव मंडप में जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ । एक विद्यार्थी महाशय व्याख्यान दे रहे थे । विषय था पतिव्रत का धर्म । इसी में प्रसङ्ग आगया प्राचीन सभ्यता का । विद्यार्थी जी ने बतलाया कि धृतराष्ट्र अंधे थे उनका विवाह गान्धारी से हुआ वह ऐसी पतिव्रता थी कि जब उसने देखा कि मेरे पति अन्धे हैं तो अपनी आंखों पर भी पट्टी बांधली इत्यादि । खैर विद्यार्थी जी के बैठते ही एक महाशय ने भजन गाया "अरे रावण तू धमकी दिखाना किसे मुझे मरने का खौफ़ खतर ही नहीं" यह भजन तो कई वार सुन चुके थे इस लिए कुछ नयापन इस में मालूम न हुआ, परन्तु हैं ! यह क्या बात है; सीता माता रावण से कहती है कि मैं तेरा कहना मानने की नहीं क्योंकि मैं उन लोगों में से नहीं हूं जो नियोग करने वाले हैं । मैं यदि विधवा भी हो जाऊं तो पतिव्रतधर्म को पालन करूंगी इत्यादि गाना शुरू कर दिया । हमारे मन में यह कल्पना उठी कि रावण के समय में तो सत्यार्थ-प्रकाश का कुछ पता भी न था तो फिर सीता रावण संवाद में इन्होंने नियोग का मामला क्यों ला घुसेड़ा । परन्तु फिर समस्या हल हो गई तालियों पर तालियां पिटी । कारण येन केन प्रकारेण आर्यसमाज को बदनाम दिखानी अभीष्ट थी । बिना इस के सभा का उत्सव फीका रह जावेगा । इन्हीं गाने वाले महाशय ने नगरकीर्तन में भी दो एक चोटें की थी । सनातनधर्म सभा वैसे तो अब सत्य सनातन वैदिक धर्म का ही अपने उत्सवों में प्रचार करती है, काल की गति ने इनसे इन को मानी हुई बातें लुड़ा कर वैदिक बातों को ज़बरदस्ती मनवाया है; परन्तु आर्यसमाज से ख़ार नहीं क्यों द्वेष है ? मानेंगे वही जो ऋषि दयानन्द वेदों, शास्त्रों द्वारा कह गए हैं परन्तु एक दो जली कटी उन्हीं को सुना के । पञ्जाबी मसल है कि "बकरी दूध देगी पर मेंगनें डालकर" खैर जैसे इन का जी चाहें करें । हमें तो शोक अपनी समाज पर भी है कि यह लोगों को जगा कर स्वयं घोर निद्रा में हैं । जो कुछ समाज के कहने का अभिप्राय था लोगों ने सुन लिया बहुतों ने मनन करना भी आरम्भ कर दिया । परन्तु आर्य समाज के वीर कर्म काण्ड और श्रद्धा से हीन हो रहे हैं यदि शुष्क तर्क की आवश्यकता हो तो सब से पहिले पहुंचेंगे । यहां तक "तर्क बढ़ा कि अब आपस में ही गुत्थम गुत्था होकर प्रेम का नाश कर रहे हैं ।

इस गाने वाले महाशय के गाने के पश्चात एक और महाशय उठे, वह भी पतिव्रतधर्म की महिमा का गान करने लगे, जिस का हम भी मनन करते हैं । परन्तु एक बात उन की भी हमारी समझ में न आई । पूछने की आज्ञा ही नहीं थी नहीं तो शंकासमाधान कर लेते । आपने कहा "सुनो । आज तक जो कुछ हुआ हो गया, तुम्हारे सब पाप माफ़ कर दिए गए क्योंकि अज्ञात पाप का फल नहीं मिलता" । (?) यह कैसे ? क्या माफ़ी नामा लेकर आप आकाश से उतरे हैं । और अज्ञात पाप का फल क्यों नहीं होता क्या उस के लिए परमात्मा का नियम नहीं है ? यदि आग को हाथ में लेलें तो हाथ न जलेगा ?

इस के पश्चात एक वैद्यराज जी का व्याख्यान हुआ । विषय था आयुर्वेद और सनातनधर्म । आपने कहा मेरा व्याख्यान केवल सनातन धर्मियों तक ही नहीं है, प्रत्युत मनुष्य मात्र के लिए है । न पुराण वालों के लिए न सत्यार्थप्रकाश प्रकाश वालों के लिए । मैं जिस भाव से एक सेहतर की चिकित्सा करना धर्म समझता हूं वैसे ही अब-

[illegible] पिता [illegible] की भी आप का [illegible] दि[illegible] पर [illegible] जो अक्षरशः [illegible] भी आपको साधु- [illegible] ऐसे ही व्याख्यान [illegible] समाजों में हों [illegible] धर्म का [illegible] भी हो [illegible] कटी सुन[illegible] दिल न [illegible] जाति में फूट [illegible] बहे तो भारत [illegible] आज [illegible] । [illegible] ऐसा [illegible]

[illegible] गतिवाला

हिन्दू विश्वविद्यालयस्य शिलालेख

ॐ

काशीविश्वविद्यालयस्य

ताम्रपत्रलेखः ।

ॐ

धर्मं सनातनं वीक्ष्य कालवेगेन पीड़ितम् ।
भूतले दुर्व्यवस्थं च व्याकुलं मानवं कुलम् ॥
कलेः पञ्चसहस्राब्दे गते भारतभूमिषु ।
आरोपयितुमुद्धारबीजमस्य पुनर्नवम् ॥
काशीक्षेत्रे पवित्रेऽत्र गंगातीरे महोदया ।
शुभेच्छा पुण्यसंपन्ना संजाता जगदात्मनः ॥
संगमय्याथ पाश्चात्याः
प्राच्याश्चापि प्रजा निजाः ।
तच्छ्रेष्ठानां विधायैक-
मत्यं सुमतिलक्षणम् ॥
विश्वनाथपुरे विश्व-
जनीनो विश्वभावनः ।
विश्वात्माऽऽकारयाद्वैश्व-
विद्यापीठव्यवस्थितिम् ॥
निमित्तमात्रमत्राभूत्
समीहायाः परेशितुः ।
मालवीयो देशभक्तो
विप्रो मदनमोहनः ॥
निधाय वाङ्मयं तेजस्त-
स्मिन्नुद्बोध्य भारतम् ।
प्रह्वीकृत्यापि तच्छा-
स्तृनस्मिन्नर्थे व्यधात्प्रभुः ॥
अन्ये चापि निमित्तानि
प्राभवन्नन्तरात्मनः ।
बीकानेर नृपो वीरो
गंगासिंहो महामनाः ॥
श्रीरमेश्वरसिंहश्च दरभंगामहीपतिः ।
प्रधानः कार्यकारिण्याः सभाया मानवर्धनः ॥
सुधीः सुन्दरलालश्च मन्त्री कोषाभिरक्षकः ॥
गुरुदासादित्यरामौ वासंती वाग्मिनी तथा ॥
तथा रासविहारी च वृद्धा ये देशवत्सलाः ।
दासाश्चान्ये भगवतो यथाशक्यं सिषेविरे ॥
विक्टोरियामहाराज्ञाः पौत्र एड्वर्डदेहजे ।
सम्राजि पंचमे ज्यार्जे-भारतं परिशासति ॥
मेवारकाशिकाश्मीरमयसूराल्वराधिपान् ।
कोटाजयपुरेन्दौरजोधपूरादिभूमिपान् ॥
तथा कपूर्थलानाभाग्वालेरादिनरेश्वरान् ।
ईरयित्वा सहायार्थं सज्जनानपरांस्तथा ॥
गर्भस्य सर्वधर्माणां रक्षायै प्रचयाय च ।
प्रसाराय स्वलीलानां स एवैकः परः प्रभुः ॥
लार्ड हार्डिङ् सुविख्यातं
सम्राट्प्रतिनिधिं वरम् ।
धीरं वीरं प्रजाबन्धुं
जनानां हृदयंगमम् ॥
विश्वविद्यालयस्यास्य
शिलान्यासे न्ययोजयत् ।
संप्राप्ते नेत्रभूभृद्ग्रहधर-
णिमिते वैक्रमेऽब्दे च मासे
माघेपक्षे च शुक्ले प्रतिपदि
च तिथावह्नि शुक्रे क्षणेऽच्छे ।
श्रीकाश्यां श्रीलसम्राट्प्रतिनिधि-
करतो यच्छिलान्यास आसीद् ।
यावच्चन्द्रार्कतारं विलसतु स
महाविश्वविद्यालयोऽयम् ।
सरस्वती श्रुतिमहती महीयताम्
ततः स्नुता ज्ञानसुधा निपीयताम् ।
सदा मतिः शुभचरिते विधीयताम्
रतिः परा परमगुरौ प्रचीयताम् ॥

महाविद्यालय-ज्वालापुर सम्बन्धी आवश्यक निवेदन

नवीन वर्ष के निर्वाचनानुसार पं० शिवदत्त जी काव्यतीर्थ मुख्याधिष्ठाता तथा पण्डित बलदेव सहाय जी व्यास मन्त्री नियत हुए हैं। अतः महाविद्यालय सम्बन्धी समस्त पत्र व्यवहार इन्हीं दो महानुभावों के नाम से होना चाहिये मेरे नाम से नहीं। आशा है नवीन अधिकारिवर्ग के समय में विद्यालय और भी उन्नत होगा।

(२) गुरुवर श्री ६ पण्डित गंगादत्त जी शास्त्री आचार्य की आज्ञानुसार ही मैं इस विद्यालय के कार्य में प्रवृत्त हुआ था और ईश्वर की कृपा से जितने वर्षों का संकल्प था वह पूर्ण हो गया। अब आगे इस 'संकुचित' कार्य क्षेत्र में रह कर पक्ष विपक्ष चक्र में अपनी शक्ति का ह्रास समझ कर मैंने श्री [illegible] पं० जी से आज्ञा मांगी और हर्ष का विषय है कि उन्होंने मुझे—विस्तृत कार्य क्षेत्र में कार्य करने के लिये अनुज्ञा दे दी है। अतः कुछ काल तक पृथक् रह कर साधन सम्पन्न होने के पश्चात् विस्तृत कार्य क्षेत्र में उतरने तथा—"सब हमारे और हम सबके"—इस तत्त्व पर कार्य करने का पूर्ण मानस है। आगे ईश्वरेच्छा और अदृष्ट।

निवेदक—

उत्तरकाशी
वैशाख सुदि ८
१९७३

नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ
भूतपूर्व मन्त्री म० वि०
ज्वालापुर

—:०:—

लेखक-स्वामी योगानन्द यति खुरजा सिटी

निम्न लिखित समाचार आप की सेवा में भेजा जाता है कृपया सद्धर्म्म-प्रचारक में प्रकट करके अनुगृहीत कीजिये। प्रिय सज्जन वृन्द! कतिपय दिवस व्यतीत हुए कि गुरुकुल सिकन्दराबाद का महोत्सव था। दैवयोग से मैं भी वहां पर पहुंच गया प्रथम दिवस विद्वान्मण्डली का स्वभाव नित्य अनित्य है इस विषय पर शास्त्रार्थ पं० मुरारी लाल जी के सभापति में हुआ जिस में पं० अखिलानन्द जी का पक्ष था कि स्वभाव नित्य है। उनका आशय यह था कि वर्ण व्यवस्था जन्म से

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुण कर्मानुसार नहीं। यह सिद्धान्त उन का उनकी बनाई हुई वैदिक वर्ण व्यवस्था नामक पुस्तक में विद्यमान है प्रत्येक आर्य्य जनता देख सकती है। जोकि आर्य्यसमाज के सिद्धान्त के सर्वथा विरुध है। दूसरे दिवस संन्यासाश्रम वैदिक है वा अवैदिक, इस विषय पर खूब शास्त्रार्थ हुआ जिस में पं० अखिलानन्द जी का पक्ष था कि संन्यासाश्रम अर्थात् अतीत मार्ग अवैदिक है और मेरा तथा अन्य विद्वानों का पक्ष था कि अतीताश्रम वैदिक है। खास तौर पर मैंने वैदिक मन्त्रों से ही संन्याश्रम वैदिक सिद्ध किया था परन्तु पं० जीने एक भी मन्त्र का यथोचित उत्तर नहीं दिया इस में वहाँ की आर्य्य जनता साक्षी है। जिन मन्त्रों में संन्यासाश्रम यति आश्रम के नाम से वर्णित है जिनसे कि यति आश्रम सिद्ध होता है उन मन्त्रों का श्री स्वामी दयानन्द जी कृत भाष्य भी पेश किया परन्तु पं० जी ने अस्वीकार किया। आपने यतिशब्द इण गतौ धातु से बना कर जलका वाचक बतलाया। विचार शील सज्जन विचार सकते हैं कि जिन का पाण्डित्य इतना प्रौढ़ हो कि जिस के बल से यति शब्द इण गतौ से बनना प्रारम्भ हो जावें तो क्या आश्चर्य्य है कि उसी पाण्डित्य बल से वैदिक सिद्धान्तों का चकनाचूर न हो जिस का नमूना वैदिक वर्ण व्यवस्था पुस्तक विद्यमान है जोकि वैदिक सिद्धान्तों तथा आर्य्यसमाज के सिद्धान्तों के सर्वथा विरुध है। मेरी आर्य्य जनता से वह विनय है कि पं० जी की पुस्तक की समालोचना करें यदि पं० जी की पुस्तक वेदविरुध है तो पं० जी का आर्य्यसमाज के पवित्र सिंहासन पर पदार्पण न होना चाहिए। मेरे विचार में तो प्रायः पं० जी की पुस्तक में लिखित पं० जी के सिद्धान्त आर्य्य समाज के प्रवर्त्तक ऋषि के सिद्धान्तों के सर्वथा विरुध है खास कर संन्यासाश्रम खण्डन तो वेदों से सर्वथा विरुध है जिस के लिए पं० जी को खुली आज्ञा दी जाती है कि जहां चाहें तहां शास्त्रार्थ द्वारा निर्णय कर लें केवल स्वकीय कुटिया में विराजमान हो कर किसी वैदिक सिद्धान्त पर हमला न किया करें किन्तु प्रथम रण में हाथ दिखा कर फिर लेखनी को तकलीफ दिया करें। यदि आर्य्यजनता पं० जी की लिखित पुस्तक पर कुछ विचार न करेगी तो अवश्य आर्य्यसमाज के लिए दुर्दिन समीप में आने वाला है यह पार्टियां आर्य्यसमाज के लिए अनिष्ट हैं।

—०—

संसार समाचार पर टिप्पणी।

आर्यकुमार सभा झग—का वार्षिकोत्सव सकुशल समाप्त हुआ। नगरकीर्तन प्रभावशाली हुआ। एक नौमुस्लिम की शुद्धी हुई और उसे आर्य्य समाज में ले लिया। और उसके माता पिता ने भी उसे स्वीकार कर लिया। श्री स्वामी अच्युतानन्द सरस्वती जी, श्री गोपाल जी बी०ए० मुख्याधिष्ठाता मुलतान गुरुकुल, और स्नातक जयदेव विद्यालंकार उत्सव में सम्मिलित हुए। कान्फ्रेन्सादि की कार्य-वाही उत्तम प्रकार से हुई।

आर्य-समाज जतोई—के मन्त्री महाशय नन्दलाल जी लिखते हैं कि गुरुकुल के स्नातक भीष्मदेव विद्यालंकार वहां अपने सम्बन्धी को मिलने गए थे। स्थानीय सामाजिक पुरुषों की प्रार्थना पर उन्होंने दो मनोरञ्जक, विद्वत्तापूर्ण व्याख्यान दिए। श्रोता गणों पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। प्रथम का विषय "आध्यात्मिक उन्नति और दूसरे का 'भूतकाल, वर्तमानकाल'" था, जिसमें सुधार के साधन बतलाए थे।

आर्य-समाज गुरुदासपुर—ने भी लाहौर आर्य-समाज में पुलिस द्वारा चुनाव पर शोक प्रकट करके गवर्नमेन्ट और आर्य-प्रतिनिधि सभा का ध्यान इस ओर खींचा है।

पं० हरिश्चन्द्र विद्यालंकार—के विषय में सहयोगी प्रताप दो बार झूठा भ्रम फैला चुका है। सिवाय दस बारह दिनों के जब लण्डन की डिरेक्टिव पुलिस ने उनसे पूंछ तांछ की, वह बराबर स्वतन्त्र रहे। फ्रांस के पेरिस नगर में वह स्वतन्त्र थे और दो मास से स्विज़रलैन्ड के जेनेवा नगर में वह स्वतन्त्रता से रहते हैं। जो कुछ महाशय नारायणदास प्रेम महाविद्यालय वाले ने खिजकर लिखा था उसको दोहराने में न जाने प्रताप के सम्पादक की क्या नीति है। पं० हरिश्चन्द्र के विषय में झूठी कमीना कल्पनाएं करने से श्री कुंवर महेंद्र प्रताप जी लौट सक्ते हों तो हमारे लिए भी प्रसन्नता की बात हो। परन्तु उनके लौटाने के लिए तो उनके सम्बन्धियों और प्रेम महाविद्यालय के संचालकों को निरन्तर गवर्नमेन्ट का दर्वाज़ा खटखटाना पड़ेगा।

श्री [illegible] विषय में पक्का समाचार [illegible] है कि [illegible] रिका चले गए हैं। [illegible] उन [illegible] जापान का इतिहास आर्य-दृष्टि [illegible] होगा। हमें आशा रख [illegible] चाहिए कि [illegible] युद्ध की समाप्ति [illegible] इस समय वह सा[illegible]

पं० केशवदेव शास्त्री, भिषगाचार्य [illegible] में भी यही ज्ञात हुआ है कि वह [illegible] और अमेरिका में रहेंगे।

महाशय नारायण[illegible] आर्यसमाज [illegible] शहर—सूचना देते [illegible] इस के आसपास के [illegible] प्रकाशित किया [illegible] अम्बाला ने आ[illegible] पण्डित बाल[illegible] अम्बाला के [illegible] निर्वाचित किया है। श्री पण्डित ७ जी जून से कार्य आरम्भ [illegible] आशा की जाती है कि आर्य भाई वेद प्रचार में तन मन धन से सहायता देंगे और इस प्रचार को उन व्यक्तिओं तक पहुंचाने का यत्न करेंगे जो कि ग्रामों में रहने के कारण यह भी नहीं जानते कि वेद क्या वस्तु है। यह भी सूचना दी जाती कि अब और कोई महाशय उपदेशक पक के विषय में पत्र व्यवहार करने का कष्ट न उठावें।

लायलपुर, सांथला पहाड़ी, पटियालादि आर्य समाजों—ने भी लाहौर आ० स० के चुनाव पर पुलिस बुलाने की कार्यवाही पर शोक प्रकट किया है।

मनसूरी आर्य-समाज—के अधिवेशन लन्डौर बाज़ार में नियम-पूर्वक होते हैं. अधिवेशनों में हवन भजन उपनिषदों की कथा सन्ध्या होती है और आर्य समाचार पत्रों से उपयोगी लेख सुनाये जाते हैं!

(१) १ली मई सन् १६ से समाज मन्दिर में कन्यापाठशाला भी खोल दी गयी है। मकान किराम का है।

(२) मई को अधिकारियों का निर्वाचित हो गया। प्रधान श्री रामचन्द्र जी तथा मन्त्री बा० गजशदीप्रसाद जी, उपमन्त्री म० दीवानचन्द जी नियत हुए।

पंडित भोजदत्त जी-शुद्धि सभा के प्रसिद्ध सचालक का देहान्त, मंसूरी पर्वत पर, गत सोमवार (१५ मई) को आधीरात के समय हो गया। यह समाचार बड़े शोक से सुना जायगा। परमेश्वर उनके परिवार को शान्ति प्रदान करें यह मेरी हार्दिक प्रार्थना है। मौत के साथ सारे मत भेद दूर होगये। काल को विकराल करते हैं, परन्तु वह शिक्षा बड़ी उत्तम देता है, यदि कान खोल कर लोग उसके शिक्षा प्रद उपदेश को सुनें।

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा————————।)
काव्य लतिका————————॥)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्] १॥)
धातु पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नास्तिकः =)॥
आख्यातिकः ॥)
महाभाष्यम् अङ्कप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाकृतम्— महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।=)

विज्ञान

भौतिकी—बैलफोर स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन—विलयम एस, फर्नो की प्रसिद्ध "केमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥)
जिनचरित—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।=)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मद्य और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।=)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।=)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ।)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र ।)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत ।=)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।=)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी ।)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक मं० घनश्याम सिंह जी गुप्त =)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) =)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R.A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Re
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —"
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji—"
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —"

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A.
अर्थशास्त्र (धनविद्या)
आर्यों की विज्ञानिक उन्नति
(लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम०ए०)
अग्निहोत्र व्याख्या
वेदोक्त राज्य
(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)
रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry)
विद्युत शास्त्र
वनस्पतिशास्त्र
पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत
उपनिषदों की भूमिका
प्रिन्स बिस्मार्क
राष्ट्रों की उन्नति
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन
लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार
मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष
ध्यायोग प्रकाशः स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) सैकड़ा तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया यगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल, लय डाक० श्यामपुर, जिला बिज

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A.434.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १५ ज्येष्ठ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २७ मई सन् १९१६ ई० { संख्या ७ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये शुभ व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख और टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी (जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसी माल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

—:o:—

अध्यापिका

आर्य्य कन्या पाठशाला गोरखपुर के लिए एक योग्य आर्य्य अध्यापिका चाहिए, जो पाठशाला के प्रबन्ध में भी दक्ष हो प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों के लिपि सहित निवेदक के पास शीघ्र आना चाहिए। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा।

हृदयनारायण
मन्त्री
आर्य्य समाज गोरखपुर

—:o:—

आर्य-समाजों के सम्बन्ध में

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में जिन समाजों को अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है, वे त्रिवार्षिक चुनाव के लिए एक वार प्रतिनिधि भेज कर अपने सभासदों की तादाद बढ़ जाने पर दूसरी वार भी प्रतिनिधि भेजते रहे हैं और इससे यह नतीजा साफ़ तौर से निकलता था कि सभासदों की तादाद घटने पर समाजों के प्रतिनिधियों की तादाद घट भी सकती है। लायलपुर समाज द्वारा यह विषय आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा के सामने आया। सभा ने जो निश्चय इसके मुतअल्लिक़ किया है उसकी प्रति आर्य्य-समाजों की सूचनार्थ दर्ज की जाती है।

आ० सभा के प्रस्ताव सं० ५ तिथि २ ज्येष्ठ, ७३ की प्रति लिपि—"आर्य-समाज लायलपुर के प्रतिनिधियों की संख्या के विषय में इस प्रश्न पर कि तीन वर्ष के अन्दर किसी समाज के सभासद् घटने बढ़ने पर उसके प्रतिनिधि घट बढ़ सकते हैं या नहीं। अन्तरंग सभा ने जो उप सभा बनाई थी उसकी रिपोर्ट कि किसी समाज के प्रतिनिधि एक वार चुने जाने पर तीन वर्ष के अन्दर उसके सभासद् घटने बढ़ने पर प्रतिनिधियों की संख्या घट बढ़ नहीं सकती है, पेश हुआ। निश्चय हुआ कि प्रतिनिधियों के साधारण चुनाव के समय जिस क़दर प्रतिनिधि एक समाज के हों आगामी त्रिवार्षिक चुनाव तक उसी क़दर रहें।"

फ़वदीय
कृष्ण मन्त्री सभा

—:o:—

CC0. Gurukul Kangri Collection

पंजाब प्रतिनिधिका घोषणापत्र

(उर्दू से अनुवादित)

स्वर्गवासी पण्डित लेखराम के पश्चात महर्षि दयानन्द के जीवन वृत्तान्त के अन्वेषण करने की धुन में महाशय देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय का नाम प्रसिद्ध है। यह महाशय कई वर्षों से स्वतन्त्र रूप से ऋषिका जीवन बंगला भाषा में तय्यार करने में लगे हुए हैं। जो टुकड़े इन्होंने इस विषय के प्रकाशित किये हैं वे विचारने योग्य हैं। यह महाशय पहले अपने तौर पर पुस्तक तय्यार करने में लगे रहे, परन्तु अब इनके विचार में परिवर्तन हुआ है और वह आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब को अपनी पुस्तक की कापी राइट देकर सभा द्वारा पुस्तक प्रकाशित कराना चाहते हैं। गतवर्ष लाला सन्तराम बी० ए० ने "आर्य मुसाफिर" पत्रिका में आर्य जनता का ध्यान इस उपयोगी कार्य की ओर खींचा था, जिस पर सभा में इस कार्यके लिए थोड़ासा [यद्यपि नाम मात्र] धन भी आया था। इस के पश्चात "प्रकाश" के ऋषि अङ्क में लाला घासीराम एम० ए० प्रधान आर्य्यप्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त के लेख ने आर्यजनता के उत्साह को चमका दिया और सभा पर बल दिया जाने लगा कि सभा इस पुस्तक को प्रकाशित करने का प्रबन्ध करे। इस पर यह प्रस्ताव अन्तरङ्ग सभा के सामने रक्खा गया, क्योंकि महाशय देवेन्द्रनाथ ने अपने पत्र में अपनी इस पुस्तक की कापी राइट ५००) में दे देने का लिखा था इस लिए सभा ने उनकी इच्छानुसार १० माघ १९७२ के अधिवेशन में निम्न प्रस्ताव पास किया—ऋषि दयानन्द के बङ्गला जीवन चरित्र के कर्त्ता महाशय देवेन्द्र नाथ मुखोपाध्याय का पत्र जिसमें उन्हों ने पुस्क का कापी राइट देने की प्रार्थना की है, पेश हुआ; निश्चय हुआ कि मन्त्री सभा को अधिकार दिया जावे कि वह पत्र व्यौहार करके यदि पुस्तक इस योग्य हो कि तुरन्त ही प्रस में दी जासके तो शेष प्रचार फण्डसे ५००) देकर पुस्तक लेलें।"

इस प्रस्ताव की प्रति महाशय देवेन्द्रनाथ जी को लाला सन्तराम द्वारा भेजी गई परन्तु उनका जो उत्तर आया उससे ज्ञात हुआ कि जो सामान उनके पास है वह पुस्तकाकार में नहीं परन्तु बेतरतीब बंगाली और अंग्रेज़ी नोटों के ढेर की सूरत में है। इस को पुस्तकाकार में लाने के लिए एक योग्य पुरुष की आवश्यकता थी और साथ ही बहुत सा धन भी इस कार्य के लिए चाहिये था जिसकी सभा ने आज्ञा नहीं दी थी; इस लिए सभा से पूरी आज्ञा लेने के लिए महाशय देवेन्द्रनाथ से पुस्तक की तय्यारी और छपाई आदि के व्यय का अनुमान मांगा गया। उनका जो उत्तर आया उससे यह ज्ञात हुआ कि कापी राइट के ५००) के अतिरिक्त पुस्तक के ठीक करने और छपवाने के लिए २०००) की आवश्यकता होगी अतः प्रस्ताव पुनः अन्तरङ्ग सभाके सामने स्वीकृति के लिए रक्खा गया, जिस पर सभा ने ५ वैशाख १९७३ को निम्न प्रस्ताव पास किया: "मंत्री सभा ने स्वामी जी के बंगाला जीवन चरित्र सम्बन्धी सारा पत्र व्यवहार पेश किया, इससे ज्ञात हुआ कि महाशय देवेन्द्रनाथ ५००) केवल कापी राइट का मांगते हैं और पुस्तक तय्यार करने और छपवाने के लिए २०००) के व्यय का अनुमान करते हैं, निश्चय हुआ कि २५००) के लिए आर्यजनता से अपील की जावे, जिस में से ५००) म० देवेन्द्रनाथ को पुस्तक तय्यार होने पर दिया जावे, और जब तक पुस्तक तय्यार करते रहें उनको ४० मासिक अलौन्स दिया जावे, वह गुरुकुल में रहकर पुस्तक तय्यार करें। उनके कार्य की निरीक्षक एक उप सभा होगी जिसके निम्न सभासद होंगे।—(१) महात्मा मुन्शीराम जी [२] प्रोफेसर रामदेव जी (३) प्रोफेसर इन्द्रचन्द्र जी विद्यावाचस्पति। परन्तु कार्य्य आरम्भ करने से पूर्व उप सभा यह निश्चय करे कि Material इस योग्य है कि इस से पुस्तक तय्यार की जावे और पुस्तक के लिखने में कितना समय लगेगा।" इस प्रस्ताव की प्रति लाला सन्तराम के द्वारा महाशय देवेन्द्रनाथ को भेजी जा चुकी है। यदि म० देवेन्द्रनाथ सभा की आज्ञानुसार गुरुकुल में बैठकर पुस्तक रचना का कार्य्य आरम्भ करदें तो आशा करनी चाहिए कि पुस्तक शीघ्र छपकर तय्यार हो जावेगी। इस समय जो सभा का कर्तव्य था उसने पालन कर दिया अब पुस्तक का बनाना म० देवेन्द्रनाथ और बनवाना आर्य्य जनता के आधीन है। अब महाशय जी के प्रशंसकों को उन्हें प्रेरणा करनी चाहिये कि सभा की आज्ञानुसार वह शीघ्र कार्य्य आरम्भ करदें। धन इकत्र करना आर्य्य जनता का काम है और जो साहस दिलाने वाले पत्र आर्य पुरुषों के सभा में आते रहे हैं, उनसे यह अनुमान लगाना कठिन नहीं कि धन एकत्र करने में कोई कठिनाई न होगी। एक ही महाशय ने दो सहस्र एकत्र करने का भार अपने ऊपर लेने का साहस किया है। अब जब कि सभा ने पुस्तक छपवाने का निश्चय कर दिया है अतः आर्य जनता को शीघ्र धन एकत्र करने का काम आरम्भ कर देना चाहिए ताकि धनाभाव के कारण पुस्तक की तैयारी में रुकावट न हो।

नोट—म० देवेन्द्रनाथ के साथ जो पत्र व्यवहार इस समय तक हुआ है, उस से ज्ञात होता है कि वह सभा की आज्ञानुसार शीघ्र ही पुस्तक को तैयार करने का कार्य आरम्भ करना चाहते हैं, इस लिए आर्य पुरुषों को धन एकत्र करने में शीघ्रता करनी चाहिए और जो धन जमा हो वह शीघ्र ही सभा के कार्यालय में भेज देना चाहिये।

वैदिक धर्म का सेवक—कृष्ण बी० ए०
मन्त्री आर्यप्रतिनिधिसभा पञ्जाब

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं।

(१) श्री सर्दार बैसाखासिंह जी ने अपने नवीन भवन की प्रतिष्ठा के समय पांच नए ग्राहकों के लिए बिना मूल्य सद्धर्मप्रचारक जारी करने के लिए १५) भेजे थे। उन में से एक ग्राहक को बिना मूल्य प्रचारक भेजना आरम्भ हो गया है। चार अन्यों के नाम भी जारी हो सका है यदि वे किसी आर्य समाज के प्रधान तथा मन्त्री से अपने अधिकार का प्रमाण पत्र साथ भेजें। जन चार को अधिकार समझा जायगा, उन के नाम एक वर्ष के लिए प्रचारक बिना मूल्य जारी हो जायगा।

(२) वैदिक वर्णव्यवस्था सम्बन्धी शास्त्रार्थ-का असली वृत्तान्त इस अङ्क में निकलना आरम्भ हुआ है। आगामी अङ्क का बड़ा भाग भी इसी शास्त्रार्थ के वृत्तान्त की भेंट होगा। इसीलिए कुछ प्राप्त लेख पड़े रहेंगे। शास्त्रार्थ का हाल समाप्त होते ही सब आवश्यक लेख निकल जायंगे।

(३) प्रचारक के बी० पी० सम्बन्धी—लेख जो गताङ्क में निकला है उसे जिन ग्राहक महाशयों ने नहीं पढ़ा, वे अवश्य पढ़लें। पुस्तक गतवर्ष के उपहार में दी है, ३-) आगामी वर्ष का मूल्य, अनोखा डेर कमीशन सहित, है।

(प्रबन्धकर्त्ता)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेदामृत।

यत्रासुपर्णा अमृतस्य भागमनिमेषं विदथाभिस्वरन्ति।
इनो विश्वस्य भुवनस्य गोपाः समाधीरः पाकमत्रा विवेश॥
ऋ० १। १६४। २१॥

"सारे भुवनों [लोक लोकान्तरों] का पालक सूर्य मण्डल जिस में स्थित है, जिस विज्ञान-मय परमेश्वर में शोभन कर्म वाले जीव [आप्त धर्मात्मा विद्वान्] अमृत के अंश (अमर जीवन दिलाने वाले तत्वज्ञान वेद) को निरन्तर प्रत्यक्ष कहते हैं, उस (परमेश्वर का उपदेश) मुझे वे ही धीर (ध्यानवान्) पुरुष, परिपक्व अवस्था में करें।"

सारे लोकों तथा लोकान्तरों को प्राण शक्ति सूर्य ही प्रदान करता है, इसी लिए उसे सब का पालक कहते हैं। परन्तु यह प्राण-शक्ति सूर्य ने किस से प्राप्त की? निःसन्देह प्राणों के भी प्राण ब्रह्माण्डपति से ही यह प्राणशक्ति सूर्य ने प्राप्त की है। इस लिए शारीरक जीवन का परम स्रोत परमात्मा ही है। परन्तु शरीर के जीते हुए, शरीर के सर्व प्राकृतिक व्यापार करते हुए भी नहीं कह सकते कि मनुष्य जीवित है, यदि उसका आत्मा जीवित न हो। जिस प्रकार शरीर के चलता फिरता रखने और जीवित कहलाने के लिए आवश्यक है कि अन्य भोजनों के साथ वह सूर्य की प्राण प्रदायिनी किरणों को भी अपने अन्दर खींचें, उसी प्रकार आत्मा को जीवित [अर्थात चेतन अवस्था में] रखने के लिए मानसिक भोजनों के साथ साथ वैदिक ज्ञान की अमृतमय किरणों से अमर जीवन प्राप्त करने की आवश्यकता है।

जिस से जड़ और चेतन सभी जीवन धारण करते हैं, जो ही एक प्राणी और अप्राणीमात्र का आश्रय है; उसकी प्राप्ति की शिक्षा देने का कौन अधिकारी है? यह कहे नहीं बनता कि इसे परमपिता की प्राप्ति की आवश्यकता है और उसे नहीं है। तुम चाहो वा न चाहो, उसकी प्राप्ति, उसके सहवास की आवश्यकता सब को है। जब वह घट घट में व्यापक है, जब कहीं भी भागे फिरो, तुम उसको त्याग नहीं सकते हो, तब बिना उसको जाने तुम्हारा निर्वाह कैसे हो सकता है। आंखें मूंदने से क्या अन्दर के भाव ओझल हो सकते हैं? वह है, और हमारा प्राणेश्वर है और उससे हम किसी समय भी अलग नहीं हो सकते। कह कह कर लोगों ने नास्तिक-पन के गढ़े में पैर लटका दिए, परन्तु यह कहते हुए भी, कि गढ़ा कहीं नहीं, उन्होंने अपने पांव गढ़ से अलग खींच लिए। मुख द्वारा उससे विमुख होते हुए भी तुम कर्म में उसका आश्रय न छोड़ सके। हे, संसार यात्रा के पथिक! तुम्हें चलना वहीं है चाहे किसी मार्ग से पहुंचने का यत्न करो। जो श्रद्धालु, भक्तजनों का लक्ष है वही श्रद्धा शून्य प्रत्यक्ष वादियों का भी है। प्रत्यक्ष वादि अपने आप को बतलाते हुए भी इन भटके हुओं ने समझा नहीं कि प्रत्यक्ष क्या है? प्रत्यक्ष तो गुणों का होता है गुणी के तो साक्षात् दर्शन होते हैं। परन्तु बाह्य चक्षु ने आज तक अल्प से अल्प गुणी के भी दर्शन नहीं किए। ऊपर से चाहे कितने आडम्बर रचो, झूठी लोकलाज चाहे तुम्हें अङ्गीकार करने से रोके, परन्तु उत्कंठा तुम्हारे अन्दर साक्षात दर्शन की ही है।

तब दर्शन क्यों नहीं होते? इस लिए कि अभिमान से जिनकी गर्दन उठी हुई हो उन्हें कभी प्रकाश के दर्शन आज तक नहीं हुए। जिसे कभी सूर्य के दर्शन नहीं हुए, जो जन्म लेते ही अन्धा हो गया, प्रकाश का अनुभव भी करने न पाया था कि आंखें खो बैठा; उसे यदि धन्वंतरि मिल जाय और उसकी आंखें खोलदे तो उस की क्या दशा होती है। यदि वह नई आंखें धारण करने वाला अभिमान से अकड़ कर दोपहर को ऊपर आंखें उठाए सूर्य की ओर पूर्ण दृष्टि डालता है तो आंखें चौंधिया जाती हैं और शायद वह फिर अन्धा हो जाता है। परन्तु यदि चिरकाल से बिछड़े हुए प्रकाश के आगे श्रद्धा से शिर झुका देता है और नीची दृष्टि कर के शनैः शनैः सूर्य भगवान् के तेज को सहन करने का अभ्यास करता है तब जहां उसकी आंखें बहुत ही बलिष्ट हो जाती हैं, वहां सूर्य भगवान् के साथ क्रीड़ा करने और उनके प्रत्यक्ष दर्शन करने की भी शक्ति धारण कर लेती हैं। परन्तु दो चक्षु रोग से पीड़ित मनुष्यों की अवस्था में भेद क्यों पड़ा। पहले का अपरेशन शायद एक नव शिक्षित सर्जन ने किया, जिसे पुस्तक और चीर फाड़ का ज्ञान तो शायद अद्वितीय है, परन्तु अनुभव अभी कुछ भी नहीं। परन्तु दूसरे का अपरेशन अनुभवी चिकित्सक ने किया है। उसके हाथ से सहस्रों ऐसे रोगी निकल चुके हैं और उसने देखा है कि रोग की चिकित्सा इतनी कठिन नहीं जितना पथ्य का सेवन कराना दुस्तर है। इसी लिए बुद्धिमान घरवाले रोगी को परिपक्व अनुभवी चिकित्सक की शरण में ले जाते हैं, और बुद्धिमान रोगी भी ऐसे धन्वंतरी की शरण में ही जाता है।

हे, अविद्यान्धकार रूपी रोग से पीड़ित भाइयो! हमारा रोग एकसा ही है। क्या हमें इस रोग से मुक्त होने के लिए ऐसे ही आत्मिक धन्वंतरी की शरण में जाने की आवश्यकता नहीं है? जिस परमात्मा के अन्दर सूर्यादि लोक स्थित हैं, वही तो वैदिक अमृत-मय ज्ञान का आधार है। उसे वेद ही ठीक कहता है और इस लिए वेद-वित् विप्र के पास ही हमारे अज्ञानान्धकार की औषधि है। वही आंखों के उस जाले का अपरेशन कर सकता है जिसने आत्मिक सूर्य के प्रकाश को देखने से हमें रोका हुआ है। सहस्रों अपनी अवस्था को समझते और चिकित्सा के लिए वैद्य के पास चल देते हैं। बीसियों वेद का पुस्तक खोले बैठे हैं, उन्हें चारों वेद कण्ठस्थ हैं, वे अन्वय करके पदार्थ भी लगाते हैं, ठीक भाव को बतला कर आंखों के पर्दों को गिरा भी देते हैं, ज्ञान चक्षुओं में देखने की शक्ति भी उत्पन्न हो जाती है। परन्तु आगे कुछ नहीं है। वैद्य को आगे का ज्ञान नहीं है, यह खोले हुए चक्षु दृढ़ रहेंगे वा नहीं यह उसे मालूम नहीं है। इसीलिए उपनिषद्कार ऋषि ने लिखा है कि ब्रह्मनिष्ट विद्वान् की सेवा में समित्पाणि जाकर प्रश्न करो और वेद भगवान का आदेश है कि जिस परमेश्वर में सूर्यादि भौतिक लोक लोकान्तर स्थित हैं और जिसमें आत्मिक सूर्य वेद की भी स्थिति है उसके दर्शन के लिए उसी ब्रह्मवादी की शरण में जाओ जिसकी, साधन द्वारा परिपक्व अवस्था हो चुकी है। [illegible]॥

आत्मदर्शनम्

आवश्यकता है चतुर्थाश्रमियों की जो, आर्य समाज के मन्तव्यानुसार वैदिक धर्म का उपदेश करें। इस प्रकार के विज्ञापन आज आर्यसामाजिक अख़बारों की शोभा को बढ़ा रहे हैं। चित्ताकर्षक और मनोरञ्जक शीर्षक दे देकर आर्य अख़बारों ने सन्यासाश्रम की पूर्ति की आवश्यकता को बड़ी मर्म भेदक अपीलों द्वारा जतलाया। परन्तु अपील का असर क्या हुआ, इसका पता लगाना आवश्यक है।

—०—

बूढ़े डिपटी साहेब ने ५६ वर्ष की आयु में बूढ़ों के नाम की पुकार पढ़ी। "हे बुड्ढो! तुम क्यों संसार के विषयों में लिप्त हो रहे हो; बहुत कमाया, बहुत खाया और खिलाया अब तो कुछ परोपकार करलो। सन्यास लेना तुम्हारा कर्तव्य है।" आयु के दो वर्ष कम लिखा कर ५६ में ५४ के बने हुए डिपुटी साहेब अभी एक वर्ष की और रियायत लेने की फ़िक्र में थे। परन्तु अख़बार की अपील काम कर गई और नौकरी का समय बढ़ाने की विज्ञप्ति को जवाब देकर पेन्शन लेने को तय्यार हो गए। पेन्शन लेकर जब सीधे लाहौर अख़बार वाले के पास दीक्षा लेने के विचार से पहुंचे तो क्या देखते हैं कि बुढ़ापे पर जवानी की लहर चल रही है और सम्पादकाचार्य जी मृत-स्त्रीक होते हुए भी मूंछों पर मेंहदी लगाए और उनको ऊपर चढ़ाए गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। उधर से निराश होकर भी धर्म की प्यास बुझाने के लिए आर्य-सामाजिक बूढ़ों की ओर झुके और उपनिषद् तथा योग का सार जानना चाहा। परन्तु वहां अवकाश किस को था। बूढ़े से बूढ़े वोटों (Votes) के हासिल करने और विपक्षी दल को गिराने की फ़िक्र में लगा हुआ है। बूढ़ा पेन्शनर एक ठंडी सांस भर कर घर लौट गया और फिर उसने आर्यसमाज का द्वार न देखा।

—:०:—

बूढ़े डिपुटी का दृष्टान्त आगे रख कर एक "पुरजोश नौजवान" अधिकार पर प्राण देने वाले एक पेन्शनर के पास पहुंचा और विवश होकर बोला—'कैसा सच्चा सज्जन, रत्न, धर्म की रक्षा के लिये मिल रहा था। आप का लड़ाई झगड़ा देख कर समाज से उपराम होकर चला गया। यह पाप किस के शिर चढ़ेगा?' पेन्शनर अधिकारी बोले—"अरे छोकरे! जब हम सरकारी नौकरी करते थे तब तो हमारे पीछे पड़ कर तुम लोगों ने हमें यहां बुलाया और अब हमें पता बतलाना चाहते हो। अरे! सामाजिक क्षेत्र में तो जवानी हम पर अब चढ़ी है, अब कैसे छोड़ दें।" युवक निराश हो कर लौट आया।

बूढ़े सम्पादकाचार्य की अपील जब कुछ फल न लाई तो जवान सम्पादक ने अपील शुरू की—"आर्यसमाज के नौनिहालो! सब कुछ तुम्ही ने करना है। जब बूढ़े नहीं हिलते तो तुम मैदान में निकलो और सन्यास लेकर अपना तन, मन और धन वैदिक-धर्म पर न्यौछावर करदो। बूढ़ों की प्रतीक्षा मत करो। ऋषि दयानन्द ने कब गृहस्थ किया था? यदि वह बुढ़ापे की प्रतीक्षा करते तो धर्म का प्रचार कैसे होता!" नौजवान उत्साहक (Under graduate) को जोश आया और वह दृढ़ व्रती होने के लिए सम्पादक-महाशय की शरण में पहुंचा। वहाँ उसी समय वेतन के ७५) गिनवाए जारहे थे। गृहस्थ के सर्व भोग विद्यमान थे। बिरादरी के साथ सम्बन्ध स्थिर रखने की सलाहें हो रही थीं। विपक्षी अख़बार नवीस के विरुद्ध मन्सूबे गढ़ रहे थे। युवक वहां मुंह बाए रह गया। क्या पूछे और किस से पूछे। युवक की यह दशा देख कर एक अनुभवी स्वतन्त्र विचारक ने पूछा—"युवक? आश्चर्य में क्यूं डूब रहे हो। क्या अचम्भा देखा। "युवक बोला—"महाराज अचम्भे की क्या कथा कहूं। सामने बैठे सम्पादक जी की दर्दनाक अपील पढ़कर मैं सन्यास लेने आया था; यहां का रङ्ग ढङ्ग देख कर विस्मित हो गया हूं। अन्धा अन्धे का पथदर्शक कैसे बनेगा। इस को देख कर कौन युवक सन्यासी होगा।" स्वतन्त्र विचारक बोले:—"तुम ने क्या गुसाईं तुलसीदास की रामायण नहीं पढ़ी? नहीं, तो अब पढ़ो। गुसाईं जी लिखते हैं—नारि मुई घर सम्पत नासी। मूंड मुंडाय होहि सन्यासी॥—इन की धर्म पत्नि जीती हैं, बिरादरी में मान है और परमेश्वर की दया से घरमें रिद्धि सिद्धि सभी कुछ है। फिर यह सन्यासी कैसे हों।" युवक निराश हो कर लौटा और पढ़ाई में दिल लगाने को तय्यार हुआ। परन्तु उखड़ा हुआ दिल क्या फिर कहीं जमता है। युवक के हृदय पट पर उस कृतकार्यता का चित्र खिच चुका था जो उसे होने वाली थी। एक सुन्दर युवक केश दाढ़ी कटवाए, भगवा चोला पहिने सभा मण्डप में पहुंचता है। करतालिका ध्वनि से सभा मण्डप गूंज उठता है। सन्यासी निडर हो कर बुराइयों पर कोड़े लगा रहा है और जनता चित्रवत् बैठी है। पापी अनुताप कर रहे हैं और उन के जीवनों में पलटा आरहा है। कहां यह दिव्य चित्र और कहां कि रोसीनलैन्य के सामने फिर से रङ्गत!

—:०:—

घर जा कर भी व्याकुल युवक कुछ पढ़ लिख नहीं सका। एक दम शिखर से गिर पड़ना किस को व्याकुल नहीं कर देता। एक वृद्ध वैदिक धर्मी सज्जन, जो समाचार पत्रों और सामाजिक झगड़ों से अलग हैं, युवक के अन्दर आए परिवर्तन को देखते हैं। प्रेम से उसे अपने साथ घूमने लेजाते हैं। बड़े प्रेम और सहानुभूति से बातें करते हुए उस का सारा हाल जान लेते हैं; एक उच्च विचार उठा कर उसे नीचे पटक देना युवक को पाप कर्म प्रतीत होता है, इसी लिए वह उदासीन है। वृद्ध महाशय लौट कर उसे अपने घर लेजाते और उसके हाथ में मनुस्मृति देते हैं। युवक पढ़ता है—

"इन्द्रियाणां निरोधेन रागद्वेष क्षयेणच।
अहिंसया च भूतानाममृतत्वायकल्पते॥
दूषितोपिचरेद्धर्मं यत्रतत्रा श्रमेरतः।
समः सर्वेषु भूतेषु न लिंगं धर्मकारणं॥"

जो सन्यासी बुरे कामों से इन्द्रियों का विरोध, रागद्वेषादि दोषों का क्षय और निर्वैरता से सब प्राणियों का कल्याण करता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है। सूर्खों से दूषित किए हुए भी जो धर्म करता है वह चाहे किसी आश्रम में हो समदर्शी होने से सन्यासी है केवल चिन्ह (काषायवस्त्र) धर्म का कारण नहीं।

इतना पढ़कर युवक के पुराने संस्कार जाग उठे और वह गाने लगा—

'जब रंगा नहीं उस रंग में तो क्या गेरुवे रंगने से।'

वृद्ध ने गदगद होकर आशिर्वाद दिया और युवक विदा होकर अपने कर्तव्य में लग गया।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

इस अधूरे यत्न से क्या होगा ?

भारतवर्ष में इस समय ३ प्रति शतक भी पढ़े लिखे नहीं हैं। युरोपियन देशों में वह देश अभागा समझा जाता है जिसमें अनपढ़ों की संख्या एक प्रति शतक से अधिक हो। भारतवर्ष में शिक्षा प्रचार की आवश्यकता को सब, चिरकाल से, स्वीकार कर रहे हैं। परन्तु क्या मानसिक शिक्षा मात्र से इस देश का कल्याण हो सकेगा ? माना कि कुछ काल से शारीरिक शिक्षा का प्रबन्ध भी हो चला है और उसकी आवश्यकता को तो सभी समझने लगे हैं। परन्तु क्या प्रजा के शरीर और मन को बलिष्ठ करने से ही किसी राष्ट्र का कल्याण हो सकता है ? जिन युरोपियन देशों की ९९ प्रतिशतक शिक्षित प्रजा का अभिमान है, जिनके यहां शारीरिक बल बढ़ाने के बढ़िया से बढ़िया साधनों का विकास हो चुका है, उनकी इस समय क्या दशा है ? जो सारी सभ्यता के ठेकेदार थे और काली जातियों को पशु और असभ्य समझते थे, उनका झूठ, उनका अत्याचार, उनका पिशाचत्व संसार में हाहाकार मचवा रहा है। ऐसी सभ्यता से उन्हीं देशों के विचारक अब लज्जित हो रहे हैं। तब वे देश जो जुलाई सं० १९१४ ई० के अन्त तक हमारे पथ दर्शक थे अब शिक्षा की उन्नति में भी हमारे लिए आदर्श नहीं समझे जा सकते।

इन सभ्य देशों की गिरावट का कारण क्या हुआ ? मनुष्य शरीर, अन्तःकरण चतुष्टय और आत्मा के संयोग का नाम है। इन जातियों ने आत्मा को बीच में से उड़ा ही दिया। जब आत्मा न रहा तो सदाचार का क्या काम ? जनेन्द्रिय की पवित्रता को इन लोगों ने भुला दिया। राजनैतिक विजय की प्राप्ति के लिए स्त्रियों ने सतीत्व की कुछ परवा न की, पुरुषों ने ब्रह्मचर्य के पालन और वीर्य रक्षा को कुछ न समझा; आज इसी लिए हम "सभ्य हिंसक पशुओं" का दंगल हम देख रहे हैं।

परन्तु हम अब तक उन्हीं का अनुकरण करते चले जाते हैं। ब्रह्मचर्य का पालन यही समझा गया है कि कुछ दिनों विवाह को रोक दिया जावे। गुरुकुल के खुलने से तीन वर्ष पीछे देवी ऐनीबेसेन्ट ने नियम बनाया कि बनारस हिन्दू कालिज के स्कूल में मिडिल तक कोई ऐसा विद्यार्थी प्रविष्ट न हो सके जिसका विवाह हो चुका हो। त्यौरस साल से दयानन्द स्कूल लाहौर में भी इस नियम को मिडिल तक प्रचलित किया गया है। यह तो कुछ सुधार ही नहीं, परन्तु यदि बी. ए. क्लास तक भी विवाहित की भरती बन्द करदें तब भी क्या होगा ? क्या पशुजीवन बन्द हो जायगा ? क्या विवाहित जोड़े अपने कुकर्मों से कभी कभी ख्वान परिवार को भी मात नहीं कर देते ? क्या बोर्डिंग स्कूल खोल कर इस रोग का इलाज हो जायगा ? जब तक सुकुमार बालकों को जनेन्द्रिय की रक्षा और उसकी पवित्रता को स्थिर रखने की विधि न सिखाई जायगी, तब तक विवाह न करना वा विद्यार्थियों को वर्ष का कुछ भाग एक साथ रखने से कुछ भी लाभ न होगा।

आज कल के कालिजों की शिक्षा प्रणाली कैसे विद्यार्थी उत्पन्न करती है ? आज से ७२ वर्ष पहले जिस प्रकार काशीपुरी में कालिजों के विद्यार्थी व्यभिचार दोषों से पीड़ित लट्ठ और छुरी को लड़ाई लड़ते थे आज भी कालिजों के केन्द्र स्थानों में वही छुरी चल रही है। इसमें विद्यार्थियों का कितना अपराध है उस पर विचार करना चाहिए। जिन्हें माता पिता ने पशु जीवन व्यतीत करते हुए उत्पन्न किया, जिन्हें व्यभिचारी लम्पट विषई पुरुषों ने शिक्षा दी, कालिज में पहुंच कर जिनके सामने बड़े नगरों के नेताओं का दुराचारपूर्ण जीवन रक्खा गया है, उन से और क्या आशा हो सकती है। कालिज रावी वा यमुना के इस पार हो वा उस पार, इस से कुछ भी लाभ नहीं जब तक कि माता पिता के उत्तम संस्कारों से प्रभावित होकर बालक आचार्य कुल में निवास नहीं करता। तभी तो वह उत्तम आचार्य चुनने के योग्य होगा। वेद भगवान की आज्ञा है—

स्वयं वाजिंस्तन्वं कल्पयस्व स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व। महिमानेऽन्येन न सन्नशे—"हे ज्ञान के जिज्ञासु विद्यार्थी ! स्वयम् अपने शरीर को समर्थ कर, स्वयम् अच्छे आचार्य को मिल, स्वयम् उसकी सेवा कर, जिस से तेरा यश औरों [कुसंग] के साथ नष्ट न हो।" कैसा पवित्र उत्साह जनक उपदेश है ! परन्तु क्या कालिजों की वर्तमान स्थिति में कोई विद्यार्थी अपने लिए स्वयम् आचार्य को स्वीकार कर सकता है ? सैंकड़ों में कोई एक आत्मज प्रिन्सिपल दिखाई देता है, दौड़ता हुआ जिज्ञासु ब्रह्मचारी उसके पास पहुंचता है प्रिन्सिपल भी युवक के शुद्ध भाव को पहिचानता है। परन्तु शोक ! भरती की संख्या पूरी होगई। अब एक भी और प्रविष्ट नहीं हो सकता। फिर आचार्य को कैसे चुने।

परन्तु आचार्य भी कहां मिलते हैं ? और बेचारे करें भी क्या ? उन्हें प्रविष्ट करते हुए विद्यार्थी की परीक्षा लेने का कहां अधिकार है ? प्रार्थी की आंखें भयानक है, उसका मुख पिशाचत्व का नमूना है, उस पर विषय ही विषय भोग अंकित है, परन्तु परीक्षा की परची जिस के पास है उसे इनकार नहीं किया जा सकता। ऐसी अवस्था में गुरु और चेला दोनों ही असन्तुष्ट हैं। परन्तु वेद भगवान का उपदेश है कि—कस्त्वाच्युयति कस्त्वा विशास्ति कस्ते गात्राणि शम्यति। काउते शमिता कविः—"कौन (तेरे अंग प्रत्यंग की परीक्षा करके) तुझे छेदन करता (अर्थात् तेरा सार जान लेता है) कौन तुझे उत्तम शिक्षा देता, कौन तेरे (भौतिक तथा आत्मिक) अंगों को शान्ति पहुंचाता और कौन तेरा यज्ञ करता तत्वज्ञानी कवि है ?"

कहां यह गुरु शिष्य का आदर्श और कहां आज कल के बेमेल जोड़ ! जब तक जाति की शिक्षा जाति के हाथ में

नहीं आती, जब तक शिक्षणालयों को राज के प्रबन्ध से अलग करके उनकी स्थिति का निर्भर उनके आचार्यों के सदाचार और उच्च जीवन पर ही नहीं रक्खा जाता और जब तक माता पिता शुद्ध भाव से सन्तान उत्पन्न करके उनमें आचार्य चुनने की योग्यता का संचार नहीं करते तब तक वर्तमान शिक्षा-प्रणाली हमें दिनों दिन रसातल की ओर ही लिए जायगी।

राज की ओर से एक उत्तम सुधार

संयुक्त प्रान्त के लाटसाहेब बड़े सज्जन पुरुष हैं। राज नैतिक मामलों में तो किसी हाकिम से भी सारी प्रजा एक सी प्रसन्न नहीं रह सकी और इस लिए सरजेम्स मेस्टन महोदय से भी उस अंश में सब प्रसन्न नहीं रह सके। वहां उन के व्यक्तित्व का कुछ वश नहीं; वहां उन्हें दूसरों की नीति का समर्थन करना पड़ता है, चाहे उनका आत्मा उसके कितना भी विरुद्ध हो। परन्तु जहां उनकी स्वतन्त्रता को कोई रोकने वाला नहीं, वहां उनके सब कार्य्य उन को एक धर्मात्मा, सत्यप्रिय, परोपकारी सज्जन सिद्ध करते हैं। बच्चों का आभूषणों के कारण दुष्ट प्रणघात कर देते हैं, यह देख कर सरजेम्स ने एक बड़ा ही मर्म भेदक घोषणा-पत्र निकाला था। समाचार पत्रों में उस पर लिखा अवश्य गया परन्तु यह जानना कठिन था कि उसका फल क्या हुआ। अब संयुक्त प्रान्त की गवर्नमेन्ट ने यह नियम बनाया है कि जो लड़का आभूषण पहिन कर किसी भी सरकारी स्कूल में प्रविष्ट होने को आवे उसे दाखिल करने से इनकार कर दिया जाय। यदि दूसरे प्रान्तों के गवर्नर भी इस उत्तम सुधार का अनुकरण करें तो बहुत से बच्चों की जानें बिना प्रयास ही बच सकती हैं। #

श्री प० ज्योतिःस्वरूप जी ध्यान दें।

मसूरी में जो आर्य्य धर्मशाला है उस का प्रबन्ध एक रजिस्टर्ड सुसाइटी करती है जिसके श्री पण्डित ज्योतिःस्वरूप भी प्रधान हैं। कहा जाता है कि इस की भूमि आर्य्यसमाज मसूरी के धन से खरीदी गई थी और पहले पहल चन्दा भी आंशिकतः आर्य्यपुरुषों ने ही इकट्ठा किया था। इस समय एक महाशय ने असभ्यकुछ टाइपपूर्ण एक लेख मेरे पास छापने को भेजा था जो मैंने इसी कारण लौटा दिया है। उस में लिखा था कि जहां पहला धन समाज से मांगा अब स्थानीय समाज को इतना भी अधिकार नहीं कि सप्ताह में एक बार अपने अधिवेशन भी उस मकान में कर सके। यह भी शिकायत थी कि धर्मशाला पर कुछ ऋण है जिसे चुकाने के लिये अब उस में से एक छोटे मकान के बेचने का नोटिस दिया गया है। मैं चाहता हूं कि श्री पण्डित ज्योतिःस्वरूप जी इस धर्मशाला की अवस्था पर स्वयम् प्रकाश डालें और बतलाएं कि स्थानिक आर्य्यसमाज का उसके साथ क्या सम्बन्ध है। मुझे मालूम है कि इस धर्मशाला के सम्बन्ध में कुछ लोग श्री पण्डित जी को बदनाम करते हैं; ठीक अवस्था सर्वसाधारण को मालूम होने से ऐसे पुरुषों का फैलाया विष मन्द पड़ जायगा।

—:o:—

श्री स्वामी सत्यानन्द जी की धर्म कथा।

इस देश में कथा की प्रणाली बहुत पुरानी है। लेकचर और सर्मन तो ईसाइयों की नकल है, आर्य्यजातिस्थ सर्वसाधारण की श्रद्धा धर्म कथाओं में अब तक है। इसी बात को लक्ष में रख कर श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने रामायण और महाभारत और गीता और उपनिषदों की कथा का क्रम जारी किया। आजकल लाहौर में अमृतधारा भवन के अन्दर भी स्वामी जी महाभारत की कथा कर रहे हैं। प्रथम दिवस ४ सहस्र नरनारी जमा हुए तो दो दिन पीछे ७ हज़ार की उपस्थिति होने लगी, ऐसा दैनिक 'देश' से पता लगा है। श्री स्वामी जी की कथाओं ने कई स्थानों में सर्वसाधारण की काया पलट दी है। उन्होंने रामायण और महाभारत की कथाओं द्वारा नास्तिकों को आस्तिक और जड़पूजकों को एक अद्वितीय निराकार ब्रह्म का उपासक बना दिया है। कुछ ईर्ष्यालु पुरुष यह अपवाद फैलाते हैं कि स्वामी जी इन कथाओं को रोचक बना कर सर्वसाधारण को वेदों से उदासीन बना रहे हैं। परन्तु मैंने कुछ कथाओं में सम्मिलित होकर देखा है कि लोगों की श्रद्धा वेदों और वैदिक कर्म काण्ड पर इन कथाओं से बढ़ती है। ईर्ष्यालु लोग यह बतलाते हैं कि उनकी वेद की कथा में इस लिये कम उपस्थिति है कि वेदों की व्याख्या शुष्क होती है। परन्तु बात और है। सर्वसाधारण को अपने उपदेशों द्वारा वही हिला सकता है जो स्वयम् उन सत्यों पर विश्वास रख कर तदनुकूल आचरण करता है। मेरी सम्मति में यदि श्री स्वामी अच्युतानन्द जी की वेद कथा रक्खी जाय तो उस में लोग खिंचे चले आयंगे, परन्तु यदि ऐसे पण्डित को वेद कथा के लिए बैठाया जाय जिस ने जीवन के पग २ पर वेदाज्ञा का भङ्ग किया हो तो वहां ७ सहस्र के स्थान में ७ सौ की भी उपस्थिति नहीं हो सकी।

—:o:—

गुरुकुल में ऋतु।

जिस प्रकार खसरे के बीमार बढ़ने आरम्भ हुए थे उन से भय था कि शायद कुछ काल तक इस रोग से छुटकारा न होगा। परन्तु परमेश्वर की अपार दया से गर्मी खूब पड़ने लग गई, गरम आंधी ने रोग ऋतुओं को भस्म कर डाला और अब नए बीमार होने बन्द होगए। इस समय सब का ज्वर उतर चुका है और आशा है कि दस दिनों तक सब रोगी भले चंगे होकर आश्रम में चले आयंगे। जिस प्रकार डाक्टर सुखदेव जी की उपस्थिति में बीमारों की कुछ भी चिन्ता नहीं रहती क्योंकि उन्हें दिन रात उन्हीं की लगन रहती है, इसी प्रकार रोगियों की सेवा की कुछ भी चिंता नहीं रहती क्योंकि वृद्ध महाशय कन्हैयालाल दिन रात बालकों की सेवा में लगे रह कर प्रबन्ध कर्त्ताओं का कष्ट दूर करते रहते हैं। इस समय यदि म० कन्हैयालाल न होते तो तीन रक्षकों के होने पर भी इतनी निश्चिन्तता न होती। महाशय कन्हैयालाल पर ब्रह्मचारियों का भी बड़ा विश्वास है क्योंकि वह निष्काम भाव से उनकी सेवा करते हैं।

ब्रह्मचारियों के संरक्षक महाशयों को निश्चिन्त रहना चाहिये। गुरुकुल-धारा में कुछ जल भी आ चला है।

—:o:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक सिद्धान्त का विजय

वर्ण व्यवस्था पर शास्त्रार्थ

गुरुकुलोत्सव पर सूचना के अनुसार वर्ण-व्यवस्था विषयक शास्त्रार्थ होगया। उपस्थित जनता ने बड़े शौक से उस शास्त्रार्थ को सुना और अपने परिणाम निकाले। यह कोई साधारण शास्त्रार्थ नहीं था। बहुत समय पूर्व से दोनों पक्ष तय्यारियां कर रहे थे। लोगों को प्रतीक्षा भी बहुत थी। नियत समय पर ऋषिकुल के विद्वान् अपनी पुस्तकों आदि के साथ पहुंच गये। उनका यथोचित सम्मान किया गया। उनके वक्ताओं के लिए पृथक् प्लेटफार्म बनाया गया था, वहां पर सारा पौराणिक संघ विराज गया और नियम पूर्वक शास्त्रार्थ प्रारम्भ हुआ।

शास्त्रार्थ का नियन्त्रण मुख्याधिष्ठाता ही करते थे। उनका कार्य समय के अनुसार वक्ताओं का प्रबन्ध करना, और उन्हें विवाद की सीमा में रखना था। उन्हें इस कार्य में अधिक कठिनाई नहीं पड़ी। अप्र वक्ताओं ने कुछ अधिक समय मांगा, तुरन्त देदिया गया। विद्वत्समिति के वक्ता के मांगने पर अधिक समय भी दिया गया और बोलने के लिए एक अवसर भी बढ़ा दिया गया था। दूसरा प्रश्न था—वक्ताओं को सीमा में रखने का। यह भी बहुत सुलझा था। वक्ताओं को स्वयं ही इसका बड़ा ध्यान था। उसके लिए वक्ताओं का धन्यवाद है। जनता पर इस शिष्ट और सभ्य व्यवहार का बड़ा उत्तम प्रभाव रहा विशेषतया आर्यसमाज की ओर से तो कोई भी तीव्र शब्द नहीं कहा गया और जिस शब्द में तीव्रता की बू भी थी, वह उसी समय लौटा लिया गया।

वह शास्त्रार्थ जिन्होंने सुना वे अपनी २ राय बना कर लेगये। जनता की राय थी कि ऐसी सभ्यता और सज्जनता से बहुत कम शास्त्रार्थ होते हैं। साथ ही आर्यत्व का बल भी शास्त्रार्थ में स्पष्ट हो गया। लोगों ने बड़े आश्चर्य से देखा कि पौराणिक धर्म के बड़े २ पण्डित किस प्रकार पुराणों तथा स्मृतियों से घबराते हैं, और कैसे पेच खाकर उनसे छुटकारा पाना चाहते हैं। उन्होंने यह भी देखा कि तर्क के सम्मुख जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था नहीं ठहर सकती। सब से बढ़कर उन्होंने यह देखा कि वेदों के जो प्रमाण पौराणिक लोग दिया करते हैं, उनके अन्दर कुछ भी बल नहीं है। प्रत्युत वेदों का सिद्धान्त दूसरा ही प्रतीत होता है। वे सब परिणाम जनता ने निकाले और पौराणिक मत के कई पत्रों के विपरीत लेख इसे अन्यथा नहीं करसकते।

उसी रमणीय शास्त्रार्थ का प्रामाणिक वृत्तान्त आगे दिया जाता है। वक्ता प्रतिवक्ता के भाषणों की रिपोर्ट पं० आर्यमुनि जी को दिखाली गई है। उन्होंने उसके हरएष्ट पर हस्ताक्षर कर दिये हैं। उसी के आधार पर यह विवरण दिया जाता है।

प्रारम्भिक इतिवृत्त

(१) गत वर्ष के मध्य में विचार किया गया था कि गुरुकुलोत्सव के अवसर पर अन्य सम्मेलनों तथा व्याख्यानों के अतिरिक्त धर्मचर्चा को भी समय दिया जाय। धर्मचर्चा के लिए 'वर्णव्यवस्था' विषय रखा गया था। उसकी समाचार पत्रों द्वारा सूचना दी गई। उस सूचना के उत्तर में शीघ्र ही विद्वत्समिति (हरिद्वार) के मन्त्री महोदय का पत्र आया जिस में शास्त्रार्थ करने के लिए इच्छा प्रकट की गई थी। साथ ही नियम विषयक कई प्रश्न भी थे। उनके यथोचित उत्तर दिए गए। देरतक पत्र व्यवहार होता रहा। दोनों ओर से पत्र व्यवहार में बड़ी शिष्टता और शान्ति से काम लिया गया, और यह भारी प्रसन्नता की बात थी कि पत्रव्यवहार में जो २ भी विषय विचार के लिए उपस्थित होते रहे, उन पर खुले दिल से ही विवेचना होती रही और अधिक विषयों में सन्तोषदायक परिणाम भी निकल आए विद्वत्समिति की ओर से भेजे हुए पहले पत्र में प्रधानतया दो प्रश्न थे। शास्त्रार्थ के समय सभापति कौन होंगे और भाषण करने के कैसे नियम होंगे? इन के उत्तर में लिखा गया कि सभापति विशेषतया कोई न होंगे, केवल नियन्त्रण का कार्य मुख्याधिष्ठाता ही करेंगे बोलने के विषय में जो नियम गुरुकुल से लिखा गया वह विद्वत्समिति को स्वीकृत नहीं था। इस लिए विद्वत्समिति की इच्छानुसार ही नियम किया गया और पहले बोलने का अधिकार विद्वत्समिति के पण्डितों को दिया गया धर्मचर्चा के लिए समय विभाग में १९ तारीख का समय रखा गया था। किन्तु विद्वत्समिति के सभ्यों को उस दिन आने में सुभीता नहीं था, इस लिए उनकी इच्छानुसार समय विभाग में परिवर्तन करके १७ को ही शास्त्रार्थ के लिए समय देदिया गया।

(२) एक और आवश्यक विषय पत्र व्यवहार में आकर बड़ी उत्तम रीति से निर्धारित हुआ था। अपने १३-३-१६ के पत्र में विद्वत्समिति के मन्त्री महोदय ने एक बड़ा उत्तम प्रस्ताव किया था प्रस्ताव यह था—

"अतएव बार बार हमारा यह आग्रह है कि जो कुछ सभा में पक्ष-प्रतिपक्ष रूप से भाषण हो उनको अशेष लिपिबद्ध किया जाय, जिससे कि उनके प्रकाशित होने पर अनुपस्थित जनता भी लाभ उठा सके। और लेख यथार्थ हुआ, इसकी साक्षी मात्र के लिए एक संस्कृतज्ञ विद्वान् दोनों पक्षों के पत्रों पर हस्ताक्षर करदेवें। इसके लिए आप चाहें जिस योग्य विद्वान् को नियुक्त कर सकते हैं उसकी आप्तता पर हमारा कोई विवाद न होगा।"

इस पत्र के उत्तर में उन्हें लिखागया—
"आपकी अन्तिम बात हमें स्वीकार है। शास्त्रार्थ को लेखबद्ध किया जायगा—जिस आप्त सज्जन को साक्षी रखा जायगा उसका नाम धर्मचर्चा के प्रारम्भ के समय ही आपको बता दिया जायगा, क्योंकि आपने इस विषय में हमें ही अधिकार दिया है।"

CC0. Gurukul Kangri Collection

इसी नियम के अनुसार शास्त्रार्थ के प्रारम्भ में मुख्याधिष्ठाता ने सूचना देदी कि श्री० पं० आर्य्यमुनिजी शास्त्रार्थ की रिपोर्ट को प्रमाणित करने के लिये आप्त चुने गये हैं। विद्वत्समिति के किसी सभासद् ने उस समय कोई आपत्ति नहीं की। गुरुकुल की ओर से चार २ ब्रह्मचारी दोनों ओर की रिपोर्ट लेने के लिये बिठाये गये। विद्वत्समिति की ओर से पं० शालिग्राम शास्त्री जी नोट कर रहे थे। शास्त्रार्थ समाप्त होने पर ऋषिकुल की परिषद मण्डली से प्रार्थना की गई कि वह सायंकाल तक के लिए गुरुकुल का आतिथ्य स्वीकार करें। विचार यह था कि इतने समय में पक्षप्रतिपक्ष के भाषणों की रिपोर्ट तय्यार हो जायगी और उसी समय पं० आर्य्यमुनि जी उन्हें देखकर—यदि उचित समझेंगे तो संशोधन करके—प्रमाणित कर देंगे। किन्तु ऋषिकुल के विद्वद्गण ने यह कृपा न की और उसी समय चलेगए। इस लिए उस समय विवरण पर पं० आर्य्यमुनिजी का हस्ताक्षर होना असम्भव होगया।

उत्सव से पीछे ब्रह्मचारियों की ली हुई रिपोर्ट को ठीक कराके पं० आर्य्यमुनि जी के पास भेजने से पूर्व यह उत्तम समझा गया कि ऋषिकुल के विद्वानों ने जो रिपोर्ट ली थी, उसे भी देखकर अपनी रिपोर्ट में यदि कोई भेद हो तो ठीक कर लिया जाय। इस लिये ऋषिकुल के प्रधानाध्यापक पं० गिरिधर शर्म्मा जी को निम्न लिखित पत्र भेजा गया—

"श्रीमन् महोदय जी नमस्ते! वर्ण-व्यवस्था पर उत्सव के समय जो विचार हुआ था, उसकी आपकी ओर से भी रिपोर्ट ली गई थी। हमारी ओर से ली गई दोनों पक्षों की रिपोर्टें तय्यार है। उन में जो कुछ त्रुटि हो, उसे पूरा करने के लिए हम चाहते हैं कि आपकी रिपोर्टों से भी सहायता ले सकें। यदि आप अपनी ओर की रिपोर्टें भिजवादें तो कृपा होगी। जनता के सन्मुख अधिक से अधिक विश्वसनीय विवरण दिया जा सकेगा। दोनों ओर के नोटों को देखकर जो रिपोर्ट तय्यार की जायगी, वह फिर पं० आर्य्यमुनि जी के पास भेज दी जायगी।

आपका
मुन्शीराम"

उसके उत्तर में निम्नलिखित पत्र मिला—

—:०:—

"श्री० चैत्र शु० ६ शनी १२,७३
ऋषिकुल हरिद्वार

श्रीयुत महोदय वर!

यथोचित सम्मान पूर्वक निवेदन है कि आप का नं० ४४८ का पत्र मिला। हमें तो आशा थी कि शास्त्रार्थ की रिपोर्ट पर तब ही श्री आर्य्य मुनि जी के हस्ताक्षर ले लिये गये होंगे, और उसकी एक कापी हमें शीघ्र मिलेगी। किन्तु अब आपके पत्र से विदित हुआ कि आपके यहां की शास्त्रार्थ की रिपोर्ट भी अपूर्ण है, और उस पर अभी तक हस्ताक्षर भी नहीं हुये हैं। हस्ताक्षरों का प्रश्न इस ही वास्ते उठाया गया था कि शास्त्रार्थ में ये बातें इस ही रूप में कही गई—इसकी एक आप्त विद्वान् की साक्षिता रहे। किन्तु अब प्रायः एक मास के पश्चात् उस ही रूप में सब बातों का स्मरण रहना साक्षी महाशय को अति कठिन है। इस से अब वह बात जाती रही। अस्तु अब तो यही उचित हो सकता है कि अपने २ लिये हुये नोटों के आधार पर दोनों ही पक्ष विवरण प्रकाशित कर दें। यह अवश्य दोनों पक्षों को आशा करनी चाहिये कि विवरण यथास्मरण यथार्थ ही प्रकाशित होगा। विद्वत्समिति की ओर से शास्त्रार्थ विवरण ब्रह्मचारी में प्रकाशित होगा। आप जहां और जब प्रकाशित करें उस की भी कृपया सूचना देवें—

भवदीय
गिरिधर शर्म्मा
चतुर्वेदी

इस उत्तर को पाकर बड़ा आश्चर्य हुआ। पहले विद्वत्समिति का ही आग्रह था कि एक आप्त के हस्ताक्षर हों, और फिर उसी समिति ने अपनी रिपोर्ट को प्रकाशित करने से पहले निश्चित किए आप्त सज्जन को दिखाना तक उचित न समझा। हमारी ओर की रिपोर्टें उत्सव के पीछे झट पट ही तय्यार करली गई थीं। परन्तु यह सोचा गया कि शायद कोई बात रह गई हो—या शायद विद्वत्समिति को शिकायत हो कि पं० गिरिधर शर्मा के भाषण ठीक नहीं दिए गए, इस लिए उन्हें लिखा गया कि वे अपने नोट भेजदें तो उन पर ठीक २ विवरण प्रकाशित करने में सहायता मिले। पर यहां तो शास्त्रार्थ का विवरण पहले ही ब्रह्मचारी में छप रहा था। मान लीजिए गुरुकुल की ओर से पूरा विवरण तय्यार होने में कुछ विलम्ब हो गया। आप तो आप्त सज्जन को साक्षी बनाने का प्रस्ताव करने वाले थे—कृपया अपनी रिपोर्ट ही पं० आर्य मुनि जी के पास भेज कर हस्ताक्षर करवा लेते। आप कहते हैं गुरुकुल से आप को रिपोर्ट नहीं भेजी गई। क्या आपने रिपोर्ट मांगी थी। गुरुकुल में क्या यह समाचार तेलार की तार द्वारा बिना भेजे ही पहुंच जाता कि विद्वत्समिति ब्रह्मचारी में शास्त्रार्थ का समाचार प्रकाशित किया चाहती है?

प्रश्न यह होता है कि स्वयं प्रस्ताव करके विद्वत्समिति के मन्त्री महोदय आप्त सज्जन के हस्ताक्षर कराने से क्यों घबरा गए। उत्तर मन्त्री महोदय का हृदय ही दे सकता है। सम्भव है उस दशा में शास्त्रार्थ का वैसी काटा छांटा हुआ विवरण न प्रकाशित किया जा सकता, जैसा अब ब्रह्मचारी में किया गया है।

(३) पत्र व्यवहार में एक और भी बड़ा मनोरञ्जक विषय छिड़ा था। एक वही विषय ऐसा था, जिस का निर्णय शास्त्रार्थ प्रारम्भ होने के समय तक नहीं हो सका था। विद्वत्समिति की ओर से पूछा गया था कि आर्यसमाज किन

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ग्रन्थों को प्रामाणिक मानेगा। उत्तर में लिखा गया कि 'आर्यसमाज ऋक्यजुः साम और अथर्व नाम की संहिताओं को ही स्वतः प्रमाण मानता है' साथ ही विद्वत्समिति से पूछा गया कि वे किन २ ग्रन्थों को प्रमाण भूत मानते हैं। पहली बार इस प्रश्न का उत्तर न मिला। तब दूसरे पत्र में उन्हें लिखा गया कि "यह मैं स्पष्टतया लिखदूं कि यदि इस प्रश्न का अपने कोई उत्तर विचार दिन से पहले ही न भेजा तो हमारी ओर से समझ लिया जायगा कि आप वेद के साथ ब्राह्मण रामायण महाभारत पुराण आदि ग्रन्थों को भी स्वतः प्रमाण मानते हैं। उन के आधार पर भी आप के मत की परीक्षा हो सकती है। आप भी संहिताओं के आधार पर हमारे सिद्धान्तों की परीक्षा कर सकेंगे। जब वाद ही करना है तो आप अपने प्रमाण भूत ग्रन्थों का संकोच क्यों करना चाहते हैं?" इस पर दोनों ओर से लिखा पढ़ी होती रही। १२. ३. १६ के पत्र में विद्वत्समिति के मन्त्री महाशय ने लिखा—

"आप संहिता मात्र माने, हम ब्राह्मण स्मृति पुराण सब मानें—इस दशा में वादसुव्यवस्थित नहीं रह सकता। जब आप स्वयं स्मृति पुराण नहीं मानते तो आप अपना पक्ष उन के आधार पर कैसे पुष्ट कर सकेंगे?" आगे आपने लिखा—"हां अवश्य ही वेद विरुद्ध होने की दशा में स्मृति पुराणादि सब अप्रमाण हो सकते हैं।" इस के उत्तर में लिखा गया।—

"स्वतः प्रमाण तथा परतः प्रमाण का भेद स्वीकार कर के आप ने बड़ी कृपा की। अभी तक मेरा विचार था कि सनातनधर्मावलम्बी सज्जन ब्राह्मणों स्मृतियों तथा पुराणों में कोई वेद विरुद्ध बात नहीं मानते। यदि मेरा यह विचार ठीक है तो आप को इन सब ग्रन्थों की उत्तरदायिता लेने में आगा पीछा न करना चाहिए"। आगे लिखा गया था—"अभी तक मेरी समझ में नहीं आया कि आप उन सब ग्रन्थों के नाम बीच में से क्यों उड़ाना चाहते हैं। संहिताओं को छोड़ कर अन्य ग्रन्थों की साक्षी हम आप के पक्ष के साधन द्वारा अपने पक्ष के साधन में देंगे। इस में कुछ भी अनुचित नहीं है। इस विषय में आप का आग्रह हमें आश्चर्य में डाल रहा है।"

इस पर फिर कुछ लिखा पढ़ी हुई। सारे का सारांश यह था कि विद्वत्समिति स्मृतियों तथा पुराणों से कोसों दूर भागना चाहती थी। यह आश्चर्य जनक परिवर्तन इस बार पहले ही देखा गया। पहले पौराणिक खण्डन पुराणों के नाम से इतना नहीं घबराता था।

शायद इस घबराहट का ही परिणाम था कि पुराणों का प्रकरण आने पर पं० गिरिधर शर्मा जी बहुत ही चकरा गये थे, और उपस्थित जनता चतुरवक्ता को इस विषय में निरुत्तरसा होता देखकर आश्चर्यित हो रही थी।

(४) पहले लिखा जा चुका है कि वक्ता प्रति वक्ता दोनों ने ही सभ्यता की सीमा में रहने का विशेष यत्न किया, इस का उपस्थित जनता पर अधिक प्रभाव पड़ा। पं० गिरिधर शर्मा ने यद्यपि प्रारम्भ में विलण्डा आदि शब्दों को बीच में घसीट कर कुछ तीव्रता लाने का यत्न किया, किन्तु दूसरे पक्ष का शान्तिभंग न हुआ और विचार निर्विघ्न होता रहा।

(५) अब ब्रह्मचारी के गतांक में विद्वत्समिति के मन्त्री की ओर से शास्त्रार्थ का रंगा हुआ वृत्तान्त छपा है। ऊपर लिखा जा चुका है कि ऋषिकुल वालों के ही आग्रह पर एक आप्त विद्वान् को साक्षी के तौर पर बिठाया गया था—और उन्हीं की ओर से उस की अवहेलना की गई। अब जो वृत्तान्त छापा गया है वह खूब ही रौनदार है। पं० गिरिधर शर्मा जी के भाषणों को पूर्णता से और खूब ही बढ़ा कर दिया है। जिन २ वाक्यों पर पण्डित जी पकड़ में आगए थे उन्हें बदल या बढ़ा दिया गया है ताकि पकड़ ढीली प्रतीत हो। और पं० इन्द्र के भाषणों को अधूरा और संक्षिप्त दिया गया है। यद्यपि बोलने में पं० गिरिधर शर्मा धीरे २ और पं० इन्द्र शीघ्र बोलते थे, इस लिए पं० इन्द्र के भाषण में अधिक मसाला रहता था, तो भी पं० गिरिधर शर्मा के भाषणों को अधिक स्थान मिला है।

एक बात बहुत ही विलक्षण की गई है। पौराणिक पक्ष का कथन है कि उपस्थित जनता पर पं० गिरिधर शर्मा का बहुत अधिक प्रभाव पड़ा और उसने पौराणिक सिद्धान्त के महत्व को मान लिया। मान लीजिये, ऐसा ही हुआ। आपने पं० गिरिधर शर्मा के भाषणों की अविकल रिपोर्ट छापदी है। अब भी उनका वैसा ही प्रचण्ड प्रभाव पड़ेगा। यदि भाषण के समय पं० इन्द्र के भाषण का खूब खण्डन हो गया था, तो भाषणों के मुद्रण होने पर भी वह वैसा ही रहेगा। परन्तु विद्वत्समिति के मन्त्री महाशय की राय ऐसी प्रतीत नहीं होती। उन्हें पं० गिरिधर शर्मा के भाषण में अनेक त्रुटियां प्रतीत हुई हैं। तभी तो स्थान २ पर टिप्पणियां देकर पं० इन्द्र के भाषणों का खण्डन करने का यत्न किया गया है। यदि पं० गिरिधर शर्मा के भाषणों में पं० इन्द्र के भाषणों का उत्तर आगया था तो फिर टिप्पणियों की क्या आवश्यकता थी। टिप्पणियों का दिया जाना ही सूचित करता है कि विद्वत्समिति के मन्त्री महोदय सत्य सनातनधर्म गज़ट आदि के साथ सहमत हो कर यह नहीं समझते कि पं० गिरिधर शर्मा ने आर्यसमाज के पक्ष का पूर्णरूप से खण्डन कर दिया था।

पं० इन्द्र ने जो अन्त में भाषण किया था उसकी तो मन्त्री महाशय को बहुत ही अधिक चिन्ता है। उस के वाक्य वाक्य पर टिप्पणी चढ़ाई गई हैं। जब सनातन धर्म का डंका उत्सव पर बज

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गया था, और पं० इन्द्र का भाषण पं० गिरिधर शर्म्मा के युक्ति तथा प्रमाणों के असर को दूर नहीं कर सकता था, तो विवरण में कैसे करदेगा? तब विवरण में टिप्पणियां चढ़ाना सूचित करता है कि विद्वत्सभिति के मन्त्री महाशय सभा में सर्वथा आंखें बन्द करके नहीं बैठे रहे थे। वे देख रहे थे कि पं० गिरधर शर्मा के भाषण अन्त में आकर बहुत निर्बल होगये थे। इसी लिए उन्हें टिप्पणियों की दवाई देकर सबल करने की कोशिश की गई है।

यह विवरण अविकल रूपसे प्रकाशित किया जाता है। इस में कोई टीका टिप्पणी अपनी ओर से नहीं चढ़ाई गई उस समय ली गई रिपोर्ट को पं० आर्य्य मुनि जी के पास भेजा गया। उन्होंने स्वीकृत किया। उसी के आधार पर यह सच्चा विवरण प्रकाशित किया जाता है।

पं० गिरिधर शर्मा जी-प्रथम वार

"सज्जन गण! वर्णव्यवस्था पर ही हमारे धर्म की विशेषता अवलम्बित है, इस ही के कारण आज करोड़ों वर्ष से यह धर्म और जाति जीवित है। जन्म से वर्णव्यवस्था होना बराबर प्रचलित है। उस के लिये किसी प्रमाण विशेष की आवश्यकता नहीं किन्तु कुछ काल से यह विचार उठा है कि गुण कर्म के अनुसार वर्ण मानना चाहिये। इस ही विप्रतिपत्ति के आधार पर आज यह विचार आरम्भ हुवा है। सब से प्रथम मैं आप लोगों का ध्यान इस आवश्यक रहस्य की ओर दिलाता हूं कि तीनों द्विज वर्णों के वेद और लोक में प्रसिद्ध नाम ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य, अपत्यप्रत्ययान्त हैं। इन की अपत्यप्रत्ययान्तता ही दिखला रही है कि ब्राह्मणत्वादि अपत्यता पर अवलम्बित है, अर्थात् ब्राह्मण का अपत्य ही ब्राह्मण हो सकता है, क्षत्रिय का अपत्य ही क्षत्रिय इत्यादि। दूसरे हम लोग सदा अपने कौशिक भरद्वाज भार्गव आदि गोत्र बोल कर दिखाया करते हैं कि हम विश्वामित्र, भृगु, भरद्वाज आदि की सन्तान में से हैं, और अभिमान करते हैं कि भरद्वाज आदि का रुधिर आज भी हमारे शरीरमें प्रवाहित है। गुण, कर्म, से वर्णव्यवस्था होती तो इस अभिमान का हमें कोई हक नहीं था। हम किस की सन्तान में हैं यह हम जान भी न सकते। अब शब्द प्रमाण की ओर चलिये। आज 'वैदिक वर्णव्यवस्था' पर शास्त्रार्थ है, इस लिये हमारी अभिलाषा है कि आज केवल वेद मन्त्रों के आधार पर ही यह विचार किया जावे कि वेद कैसी वर्णव्यवस्था मानता है। मैं अपने पक्ष में वेद मन्त्र ही प्रमाण दूंगा। पहले पुरुष सूक्त का यही मन्त्र लीजिये, जो अत्यन्त प्रसिद्ध है। और ऋक्, यजु, अथर्व, तीन वेदों में कुछ पाठ भेद से आया है

"ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्
बाहू राजन्य: कृत:।
ऊरू तदस्य यद्वैश्य:
पद्भ्यां शूद्रो अजायत"॥

इस के चतुर्थपाद में पैरों से शूद्रों का उत्पन्न होना स्पष्ट 'अजायत' शब्द से लिखा है, उस के अनुरोध से पहिले के ३ पादों में भी कार्य और कारण का अभेद से निर्देश मान कर 'मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुवा" इत्यादि ही अर्थ मानना चाहिये। मीमांसा का सन्दिग्धार्थ निरूपणाधिकार न्याय भी यही बताता है कि आगे के उपसंहार वाक्य के अनुरोध से पूर्व के वाक्यों की व्यवस्था कर लेनी चाहिये। शाखान्तर में (कृष्ण यजुर्वेद में) जो इस का समानार्थक मन्त्र है, उस में उत्पत्ति स्पष्ट लिखी है।

'प्रजापतिरकामयत, प्रजायेयेति,
स मुखतस्त्रिवृतं निरमिमीत,
तमग्निर्देवता अन्वसृजत,
गायत्रीछन्दो रथन्तरं साम,
ब्राह्मणो मनुष्याणाम्, अज:
पशूनाम्, तस्मात्तेमुख्या:मुखतो
ह्यसृ यन्त'॥
(तैत्तिरीयसंहिता ७ का० १ प्रपा० १० अनु

यहां अग्नि देवता, गायत्री छन्द, रथन्तर साम, ब्राह्मण और अज (बकरा) की उत्पत्ति मुख से स्पष्ट शब्दों में कही है। अन्य ५ वर्णों की भी बाहु आदि से उत्पत्ति लिखी है। तो इन सब श्रुतियों से ब्राह्मणादि का उत्पत्तिसिद्ध होना स्पष्ट ही प्रकट हो गया। उत्पत्ति अर्थात् जन्म से ही ब्राह्मण ब्राह्मण और क्षत्रिय क्षत्रिय होता है। ईश्वर ने चारों को भिन्न पैदा किया है, वे गुण कर्म से नहीं बनते। और भी श्रुतियां ब्राह्मण को उत्पत्तिसिद्ध बताती हैं, जैसा कि अथर्व वेद काण्ड १९ अनुवाक ३ सूक्त २२ का २१ वां मन्त्र है।

ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि
ब्रह्माग्ने ज्येष्ठं दिवमाततान।
भूतानां ब्रह्मा प्रथमोऽथ जज्ञे
तेनार्हति ब्रह्मणा स्पर्द्धितुं क:॥

अर्थात् ब्राह्मण का वीर्य्य सब से ज्येष्ठ [उत्कृष्ट] है, ब्राह्मण यज्ञ द्वारा द्युलोक को विस्तीर्ण करता है। भूतों में ब्राह्मण ही सब से प्रथम उत्पन्न हुआ, उस ब्राह्मण के साथ और कौन स्पर्द्धा कर सकता है। यहां भी ब्राह्मण को सब से प्रथम उत्पन्न कह कर ब्राह्मणत्वादि जाति उत्पत्तिसिद्ध बताई है। और लीजिए अथर्व० काण्ड ४ अनु० २ सूक्त ६॥ पहिला मन्त्र है कि—

ब्राह्मणे जज्ञे प्रथमो
दशशीर्षो दशास्य:।
स सोमं प्रथम: पपौ
स चकारार्टं विषु॥

यहां ब्राह्मण की उत्पत्ति तो प्रथम बताई ही है, किन्तु 'दशशीर्ष और 'दशास्य' ये दोनों ब्राह्मण के विशेषण यहां विशेषत: विचारणीय हैं। मेरे विचार से

CC-0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस का यह अभिप्राय है कि ब्राह्मण जाति के दश शीर्षस्थानीय हैं, अर्थात् जैसे पहिले मस्तक उत्पन्न होकर फिर उस से सब शरीर उत्पन्न होता है, वैसे ब्राह्मणों में दश ऋषि, जो कि गोत्र निर्झरों में प्रसिद्ध हैं-जमदग्नि, भरद्वाज, विश्वामित्र, गौतम, अत्रि, कश्यप, वसिष्ठ भृगु, अङ्गिरा, अगस्त्य-ये सब से प्रथम उत्पन्न हुए और इन से सब ब्राह्मण उत्पन्न हुए। एवं चार वेद और छः वेदाङ्ग ब्राह्मण के मुख में विराजते हैं, अतः वह दशास्य कहाता है। वही ब्राह्मण प्रथम सोमपान करता है, और अपने प्रभाव से विषको भी निर्वीर्य कर देता है। इस से दश गोत्र प्रवर्तक ऋषियों की सन्तति होना, और वेद वेदाङ्ग का अध्ययन दोनों ही ब्राह्मणत्व के प्रयोजक हुवे। केवल गुण कर्म नहीं। और सुनिये पिता, माता के प्रशस्त होने पर ही पुत्र का प्रशस्त होना जन्म सिद्ध जातिव्यवस्था का मूल सिद्धान्त है। सो श्रुति में स्पष्ट उद्घुष्ट है—

'ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं
पैतृमत्यम्, ऋषिमार्षेयम्'

शु० य० अ० ७४६।

यहां पितृमान् आदि शब्द में बुद्धिमान् आदि शब्दों की तरह प्रशंसा अर्थ में ही मतुप् प्रत्यय मानना होगा। सब जिस का पिता और पितामह अर्थात् पितृकुल प्रशस्त है, उस ही को ब्राह्मण इस श्रुति ने बताया। अब केवल गुण, कर्म के अनुरोध से जिस किसी के पुत्र को भी ब्राह्मण बनादेना श्रुत्यनुमोदित कहां रहा? एवं राजसूय यज्ञ में राजा का अभिषेक करता हुआ अध्वर्यु, मन्त्र पढ़ता है कि:—

'इममस्य पुत्रमस्यै पुत्रम् (यजु० अ० ८

अर्थात् यह अमुक पिता का और अमुक माता का पुत्र है। कहिए, पिता माता के नाम निर्देश की क्या आवश्यकता पड़ी? यही गुण कर्म नहीं बताये। बताये माता और पिता। इस से स्पष्ट सिद्ध है कि जिस का मातृकुल, पितृकुल दोनों शुद्ध हैं, वही तत्तद्वर्ण के होकर यज्ञादि कर्मों में अधिकारी होता है। और भी देखिए, पिता आदि के अनुसार ही पुत्रादि भी कर्म करें—यह श्रुति से सिद्ध होता है—

'अनुप्रत्नस्यौकसो हुवे तं
विप्रतिं नरम्। यं ते पूर्व
पिता हवे।

[ऋ० १ काण्ड० ३० सू० ६ मं०]

'येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञ
अर्चन्तोऽङ्गिरसो गा अविन्दन्'

[ऋ० १ म० ६२ सू० २ मं०]

इन मन्त्रों में जैसे हमारे पितृपितामहादि अमुक देवता का अवाहन अर्चन करते थे, वैसे हम भी करते हैं, यह बताया है। यही वर्णव्यवस्था का मूल सिद्धान्त है कि जो जिस का कुल क्रमागत कर्म है, उस ही का वह अनुष्ठान करता रहे। वर्गविभाग से कर्म विभाग है, कर्म से वर्ण नहीं बनते। सज्जनो! इस सम्बन्ध में बहुत से प्रमाण दिए जा सकते हैं, समय की अल्पता के कारण मैंने कुछ प्रमाण आप लोगों की सेवा में उपस्थित किए हैं, जिससे कि वर्णव्यवस्था के जन्मसिद्ध होने में कोई सन्देह नहीं रह जाता। अब मैं अन्त में इतना और निवेदन कर देना उचित समझता हूं कि दूसरे पक्ष से यदि मेरे प्रमाणों का अर्थान्तर किया जाय तो उन को यह भी दिखाना आवश्यक होगा कि मेरा अर्थ क्यों अप्रमाण है, और वे अर्थ करेंगे वह क्यों माननीय है। इस बात की व्यवस्था अवश्य करनी होगी कि जब वेदसंहिता मात्र ही स्वतः प्रमाण है, तो इन का अर्थ निर्णय हम किस प्रकार से करें? यह व्यवस्था भी मैं दूसरे पक्ष पर ही छोड़ता हूं।

पं० इन्द्र जी—प्रथम वार

सज्जनो! यह बिल्कुल सत्य है कि वर्णव्यवस्था ही आर्यजाति के जीवन का आधार है। इतिहास हमें बतलाता है कि जब तक भारतवर्ष में वर्णव्यवस्था को गुणकर्मानुसार माना जाता रहा, और जो जिस योग्य था उसे वह वर्ण मिलता रहा, तब तक यहां पर सत्ययुग सुख और समृद्धि का राज्य रहा। जब से वर्णव्यवस्था का रूप बिगड़ा, और जन्म से ही वर्णव्यवस्था मानी जाने लगी, तब से ही देश का नाश प्रारम्भ हुआ है। आज जो बुरी दशा है वह हमारे सन्मुख है।

(१) अभी आप जन्मानुसार वर्णव्यवस्था के विषय में पं० गिरिधरशर्मा जी की स्थापना सुन चुके हैं। इस स्थापना में आपको बतलाया गया था कि वर्णव्यवस्था जन्मानुसार ही होती है। पण्डित जी की स्थापना में एक दोष था। "वर्णव्यवस्था" विषय पर आज विवाद है, इस में वर्ण शब्द है पण्डित जी ने कहीं जाति शब्द का प्रयोग कर दिया है, और कहीं वर्ण शब्द का? उन्हें चाहिए था कि वे बतलाते कि जाति तथा वर्ण में कोई भेद है या नहीं। वर्ण शब्द का एक दूसरा अर्थ गुण भी है। पण्डित जी को बतलाना चाहिए था कि क्या वर्ण शब्द के दोनों अर्थों में कोई सम्बन्ध है या नहीं?

(२) पण्डित जी ने अपने पक्ष में एक युक्ति दी है कि जन्मानुसार वर्णव्यवस्था प्रचलित है-उसे सिद्ध करना आवश्यक नहीं। क्या किसी रीति या सिद्धान्त का प्रचलित होना भी उसके पक्ष में युक्ति हो सकती है? यदि हो सकती है तो सुरापान भी प्रचलित है, क्या वह भी जन्मानुसार वर्णव्यवस्था की भाँति स्वतः सिद्ध है।

(३) पं० जी की एक युक्ति यह है कि ब्राह्मण क्षत्रिय तथा वैश्य शब्द अमत्यर्थीय प्रत्ययान्त हैं। यह भी जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानने में युक्ति है। क्या पण्डित जी मानते हैं कि अमत्यर्थ प्रत्ययान्त होते हुए भी ब्राह्मण शब्द की प्रवृत्ति वहीं होती है, जहां ब्रह्म का पुत्र विवक्षित हो? मैं पण्डित जी को चैलेंज देता हूं कि वे ब्रह्म से अमत्यर्थप्रत्यय करके ब्राह्मण शब्द को सिद्ध कर दिखावें। नहीं तो यह सिद्ध नहीं हो सकता कि ब्राह्मण के पुत्र को ही ब्राह्मण कहते हैं। ब्रह्मणोऽपत्यं ब्राह्मणः ब्राह्मण शब्द की यह निरुक्ति है, क्या ब्रह्म परमात्मा का नाम नहीं है?

CC0. Gurukul Kangri Collection

(४) पं० जी ने अपनी स्थापना में बड़ा भारी बल पुरुषसूक्त के मन्त्र पर दिया है 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्, इत्यादि मन्त्र में आप अर्थ करते हैं 'मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुआ भुजाओं से क्षत्रिय उत्पन्न हुआ उरुस्थल से वैश्य उत्पन्न हुआ इत्यादि, क्या इस मन्त्र का यह शब्दार्थ है ? पंडित जी भी कहने का साहस नहीं करेंगे कि यह इसका शब्दार्थ है। तब यह अर्थ कैसे हुआ ? पं० जी अपनी सहायता ढूंढने मीमांसा दर्शन में गये हैं। मैं कहता हूं कि आप सहायता के लिए इतना दूर क्यों गये ? स्वयं पुरुष सूक्त पर ही आप दृष्टि क्यों नहीं डालते ? वेद के अर्थ वेद से ही स्पष्ट हो सकते हैं। वेद स्वयं अपना तात्पर्य अन्य सब की अपेक्षा उत्तम बता सकता है। यह मन्त्र एक प्रकार का उत्तर है। पहले मन्त्र में कुछ प्रश्न उठाए हैं, उनका इस मन्त्र में समाधान है प्रश्न इस प्रकार हैं।

जिस विराट् पुरुष की कल्पना की गई, उसका मुख क्या था, भुजायें कौनसी थीं, और उरु और पाद कौनसे थे ?"

मुखं किमस्यासीत्किमबाहूकिमूरू पादा उच्येते" इस मन्त्र भाग के सायणाचार्य कृत अर्थ भी यही हैं, जो ऊपर मैंने दिखाए हैं। प्रश्न है-'उसका मुख कौनसा था ?, उत्तर मिलता है—'ब्राह्मण उसके मुख से हुआ" क्या न्याय है! पूछी जांघों की कही आसमान की" "आकाशान् पृष्टः को विदाराणाचष्टे"। पूछा कि आम कितने हैं, और उत्तर मिला कि किवनार दस हैं। क्या उत्तर देने वाला बुद्धिमान् कहा जा सकता है ? इसी प्रकार पौराणिक लोग वेद के विलक्षण अर्थ करते हैं। इस सूक्त में, जैसा प्रश्न है वैसा ही उत्तर होना चाहिए। प्रश्न उत्पत्ति विषयक नहीं है, उत्तर भी उत्पत्ति विषयक नहीं है 'ब्राह्मणोऽस्य मुख मासीत्, इन शब्दों का साधारण संस्कृतज्ञ भी 'ब्राह्मण मुख से पैदा हुआ" यह अर्थ नहीं कर सकता।

पंडित जी ने इस मन्त्र के अतिरिक्त और भी कई प्रमाण दिये हैं। इस बार समय नहीं है कि इन सब के विषय में कहा जा सके। पंडित जी ने जो मन्त्र ब्राह्मण की श्रेष्ठता आदि के विषय में कहे हैं, उनसे वर्णव्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ब्राह्मण श्रेष्ठ है यह ठीक है—परन्तु कैसा ब्राह्मण ? हमारा उत्तर है कि जो गुणकर्मानुसार ब्राह्मण है, वही श्रेष्ठ है।

पंडित जी जिस प्रकार जन्मानुसार वर्णव्यवस्था का प्रतिपादन करना चाहते, हैं, उसके वेद में आधार नहीं है। प्रत्युत वेद में गुण तथा कर्म से ही ब्राह्मण क्षत्रिय आदि वर्णों का होना पाया जाता है। इस के लिए प्रमाण देखिए—

ज्येष्ठं वे ब्राह्मणंविदुस्तेविदु परमेष्ठिनम्
अथर्ववेद ।१० कांड । ७ । १७

जो सब में बड़ा है, उसेजो लोग ब्राह्मण जानते हैं, वही वस्तुतः परमात्मा को पहिचानते हैं।

त्वमिंद्राधिराज अवस्यु,
स्त्वंभरति भूतिर्जानानाम्।
त्वं दैवी विशमा विराजा
युष्मत्क्षत्रं अजरम्मे अस्तु ।
अथर्व । ६ कां । ९८ ।

इस मन्त्र में बतलाया है कि हे राजन् ! तू प्रजाओं का हित चिन्तक और रक्षक है, इसी लिए तेरे अन्दर क्षत्रिय भाव है। है। क्षत्रिय यों ही नहीं हो जाता-अनश्वर क्षत्रिय भाव प्रजा रक्षा आदि कर्मों से मिलता है।

वेदों के अर्थों को समझने का एक साधन ब्राह्मण ग्रन्थ है। उनके वाक्यों से जन्मानुसार वर्णव्यवस्था सिद्ध नहीं होती। देखिए गोपथ ब्राह्मण में क्या लिखा है।

"व्रतेन वै ब्राह्मणः संशितो भवत्य शून्यो भवत्य विच्छिन्नो भवति"
गोपथ । १ । प्रपाठक । ३४ ।

व्रत अर्थात् कर्म से ही ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व अशून्य और अटूट होता है। कर्म छोड़ देने पर ब्राह्मणत्व टूट जाता है—अर्थात् ब्राह्मण कर्मों से हीन मनुष्य ब्राह्मण नहीं रहता। तब वेदों के व्यवस्थाकार ब्राह्मण हमें गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था की ओर ले जाते हैं, तो जन्मानुसार वर्णव्यवस्था को वैदिक सिद्ध नहीं कहा जा सकता।

पंडित जी के प्रमाण जन्मानुसार वर्णव्यवस्था के साधक नहीं और दूसरी ओर के प्रमाण बहुत से मिलते हैं, इस लिए वर्णव्यवस्था गुणकर्मानुसार ही माननी चाहिए, जन्मानुसार नहीं।

पं० गिरिधरशर्मा जी (द्वितीयवार)

न्यायदर्शनकार गौतम मुनि ने वाद की मर्यादा यह नियत की है कि दोनों पक्षवाले अपने २ पक्ष की स्थापना और दूसरे का खण्डन करें कि तु हमारे मित्र चिरजीवी इन्द्रजी स्नातक ने गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था की स्थापना में एक भी मन्त्र प्रमाण नहीं दिया। केवल मेरे प्रमाणों पर कुछ आक्षेप मात्र किये। बिना स्वपक्षस्थापना के तो यह वितण्डा हो गई, वाद कहां रहा। वर्ण और जाति शब्दों का अर्थ और उनका भेद पूछना विषयान्तर है, इसमें 'अर्थान्तर' रूप निग्रहस्थान आजाता है। वर्ण शब्द का अर्थ गुण है—इससे ही आप गुण का संबन्ध ब्राह्मणादि में लाते हैं और उनके परिवर्तन की भी आशा करते हैं, किन्तु मैं कहता हूं कि वर्ण शब्द का अर्थ अक्षर भी है इस ही का संबन्ध ब्राह्मणादि में क्यों नहीं मान लेते। ऐसा होने पर जैसा एक वर्ण (अक्षर) दूसरे वर्ण (अक्षर) के रूप में कभी नहीं जाता, इस ही प्रकार ब्राह्मणादि का भी परिवर्तन नहीं होता—यही सिद्ध हो जायगा। आपने सुरापान भी प्रचलित बताया है। किन्तु स्मरण रहे—सुरापान प्रशंसा के साथ प्रचलित नहीं है। वर्णव्यवस्था की प्रचलितता में बहुत बड़ा भेद है। अतः अपना कब्जा बतलाने के लिये प्रचलितता भी अवश्य एक युक्ति है। ब्राह्मण आदि शब्दों में अपत्यप्रत्यय मान कर भी जो आपने शङ्का उठाई है, और मुझे चेलेञ्ज किया है—वह बिलकुल निःसार है। ध्यान दीजिये कि ब्रह्म, क्षत्र, और विश्, शब्द भी तीनों वर्णों के वाचक हैं, उनही ब्रह्मणादि वाचक ब्रह्मादि शब्दों से अपत्य प्रत्यय होकर ब्राह्मणादि शब्द बनते हैं, और वे भी उनके समानार्थक ही रहते हैं। इस से स्पष्ट सिद्ध है कि जिसका स्वयं

Gurukul Kan... Digitized by eGangotri

भी 'ब्रह्म' अर्थात् ज्ञान से सम्बन्ध है, और जो ब्रह्म अर्थात् ब्राह्मण का पुत्र भी है वही ब्राह्मण होगा। क्षत्र भी क्षत्र—क्षतत्राण कर्ता है, और क्षत्र का पुत्र भी वही क्षत्रिय होगा। क्या अब भी जन्म से वर्णव्यवस्था सिद्ध नहीं हुई? आपने कहा है, कि वेद के अर्थ में अन्य शास्त्र की आवश्यकता नहीं, वेद का अर्थ वेद से ही पूछो। मैं कहता हूं कि आप बिना अङ्गों के अग्नि शब्द का अर्थ तो करलीजिये। वेद यह कैसे बता सकेगा कि अग्नि शब्द का अर्थ प्रज्वलित नायक है? इसके लिए आपको अवश्य व्याकरण या व्यवहार की शरण लेनी पड़ेगी।

फिर मीमांसा का तिरस्कार आप कैसे कर सकते हैं? 'ब्रह्म जिज्ञास्य सुब्रह्मण्योम्' के अर्थ में अपने प्रश्न और उत्तर की असङ्गतता बताई है, वह भी युक्त नहीं। 'सुखं किञ्चिदध्यासीत्' इत्यादि वाक्य द्वारा सुखादि के लक्षण का पक्ष है। लक्षण दो प्रकार का होता है—स्वरूप लक्षण, और तटस्थ लक्षण। तटस्थ लक्षण कार्य करण आदि के द्वारा ही होता है—जैसा कि वेदान्त सूत्र में 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' कह कर 'जन्माद्यस्य यतः' सूत्र द्वारा इस संसार के जन्मादि का जो कारण है वही ब्रह्म है— यह तटस्थ लक्षण कहा है। यहां यह शङ्का कदापि नहीं होती कि ब्रह्म के प्रसङ्ग में संसार का ज़िक्र क्यों किया गया? संसार की कारणता के द्वारा ब्रह्म का परिचय कराया है, यह सब ही बुद्धिमान् समझ लेते हैं। इस ही प्रकार यहां भी मुख, ऊरू आदि के लक्षण का प्रश्न था, जिस से ब्राह्मण उत्पन्न हुये हैं—वह पुरुष का मुख है—इस प्रकार कार्य द्वारा परिचय देते हुये उसका उत्तर दे दिया—इसमें असमञ्जस क्या हुआ? आपने जो मन्त्र का अर्थ किया है कि 'इस मनुष्य समाज का मुख ब्राह्मण है' सो बिलकुल ठीक नहीं हो सकता। क्योंकि इस पुरुष सूक्त के मन्त्रों में सर्वत्र पुरुष की अनुवृत्ति है, 'अस्य' 'ततः' आदि शब्दों से पुरुष ही लिया जाता है। तब ही तो 'छन्दांसि जज्ञिरे तस्मात्' इस मन्त्र में पुरुष ईश्वर से वेद प्रकट हुये—यह अर्थ बनता है। मनुष्य समाज का यहां कोई प्रसङ्ग भी नहीं है, फिर 'अस्य' का अर्थ मनुष्य समाज कैसे किया जा सकता है। पुरुष के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुये—यही अर्थ युक्तियुक्त होगा। मेरे और प्रमाणों पर आपने कुछ नहीं कहा है। ब्राह्मण की श्रेष्ठता के प्रमाण मैंने नहीं दिए हैं मैंने कई मन्त्रों से ब्रह्मादि को जन्म सिद्ध बताया है ब्राह्मणों के मन्त्र प्रवर्तक ऋषियों तक का ज़िक्र मन्त्र में बताया है। अपने पक्ष की पुष्टि में भी आपको प्रमाण देने चाहिए।

पं० इन्द्र जी (द्वितीय वार)

पण्डित जी बड़े होने के कारण मेरे मान्य है, वे मुझे वितण्डावादी कहें, या निग्रह स्थान का नाम लें—इस के लिये मैं कुछ न कहूंगा, धन्यवाद ही दूंगा। वितण्डा आदि शब्द कहने से ही पण्डित जी का पक्ष सिद्ध नहीं हो जायगा। ऐसे शब्दों से कोई फल नहीं। (१) आपका पुरुषसूक्त का प्रमाण प्रधान था। इसकी मैंने सम्यक् विवेचना कर दी। पंडित जी ने इसका कोई संतोषप्रद उत्तर नहीं दिया। आप की अर्थ कल्पना में प्रमाण क्या? आप कहते हैं ब्राह्मण उत्पन्न होता है। मैं भी कहता हूं। हां, ब्राह्मण उत्पन्न होता है। ब्राह्मण का उत्पन्न होना तो सब ही मानते हैं, झगड़ा तो योनि, या गुण कर्म पर है। मैं कहता हूं ब्राह्मण गुण, कर्म से ही उत्पन्न होता है।

"अजायत" शब्द पर ही पण्डित जी बहुत बल देते हैं। "अजायत" का अर्थ है, उत्पन्न हुआ। निन्दित गुण-कर्म से मनुष्य में शूद्रत्व आता है—इस शूद्रत्व के कारण शूद्र उत्पन्न होता है। इसमें असमञ्जस क्या है?

(२) मैंने अपने पूर्व भाषण में ब्राह्मण ग्रंथ का एक प्रमाण दिया था, पण्डित जी उस पर चुप हो रहे हैं।

(३) पुरुष सूक्त के मन्त्र का अर्थ करने में प्रश्न और उत्तर की सङ्गति हम जिस ओर ले जाते हैं, उधर भी ध्यान देना आवश्यक है। पण्डित की मीमांसा के न्याय पर विशेष बल देते हैं। यदि वेद स्वयं ही अपने अर्थों की ओर निर्देश करदें, तो फिर बाहर की सहायता की क्या आवश्यकता है। मीमांसा व्याकरण आदि सब अंगोपांग अपने २ स्थान पर सहायक हों, किन्तु वेदों के अर्थों का मुख्य पथ प्रदर्शक स्वयं वेद ही हो सकता है।

(४) वेद मुक्तकण्ठ होकर गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था की सूचना देता है। जो दो मंत्र मैंने पहले भाषण में दिए थे उन्हें पण्डित जी ने नहीं छुआ तक नहीं। अब मैं और प्रमाण पेश करता हूं—

अहमेव स्वयमिदं वदामि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः।
यं कामये तं तमुग्रं कृणोमि तं ब्रह्माणं तमृषिं तं सुमेधाम्॥

[ऋ० मं० १० अ० १० सू० १२५ म० ५]

इस मन्त्र की वाक् ऋषि है। वेदवाणी कहती है कि मैं ही ब्राह्मण बनाती हूं। और इस वेद मन्त्र का भी तो अर्थ कीजिये—यह मन्त्र निरुक्त में भी आया है—

कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना।
नानाधियो वसूयवोनुगा इव तस्थिम॥

ऋ० । ९ । ११२ । ३

'ऋषि कहता है कि मैं कारु अर्थात् वेदसूक्तों का कर्त्ता हूं, और पुत्र भिषक (वैद्य) है, लड़की उपलप्रक्षिणी, अर्थात् पत्थर तोड़ने वाली है। जब एक ही कुटुम्ब में सब प्रकार के काम होते हैं तो जन्म से वर्णव्यवस्था कहां रही?

पिता ऋषि है और मन्त्रार्थ द्रष्टा है। वह ब्राह्मण ही होना चाहिए। और इस का पुत्र भिषक् वैद्य है। वैद्य की आजीविका करता है, और लड़की उपलप्रक्षिणी, पत्थर तोड़ने वाली है। इस मन्त्र से प्रतीत होता है कि वेद में एक ही परिवार के लोगों के लिए भी एक प्रकार के कार्य निश्चित नहीं है। इस से स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि जन्म से वर्णों का विशेष सम्बन्ध नहीं है।

CC0. Gurukul Kangri Coll

(५) मेरे चैलेंज का उत्तर आप ने यह दिया है कि 'जिस का स्वयं भी ब्रह्म और ज्ञान से सम्बन्ध है, और जो ब्रह्म अर्थात् ब्रह्मण का पुत्र भी है, वही ब्राह्मण होगा। स्वयं भी क्षत्र क्षतत्राणकर्ता है और क्षत्र का पुत्र भी है वही क्षत्रिय होगा।" इस से तो जन्मानुसार वर्णव्यवस्था सिद्ध नहीं होती। ब्राह्मण और क्षत्रिय में स्वयं भी इन गुणों का होना आवश्यक है। और जिस ब्रह्म शब्द से अपत्य प्रत्ययान्त ब्राह्मण शब्द बनता है, क्या उस का ईश्वर अर्थ नहीं है। यदि है तो आप का यह कथन कि ये शब्द अपत्य प्रत्ययान्त होने से जन्मानुसार वर्णव्यवस्था को सिद्ध करते हैं-कैसे ठीक हुआ।

(६) आप की एक युक्ति यह थी कि पूर्वकाल से वर्णव्यवस्था गुण कर्मानुसार ही चली आई है। आपने इस कथन में प्रमाण नहीं दिया। वस्तुतः आप का कथन ठीक नहीं। प्राचीन काल से गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था ही चली आई है। आप के सम्मानित पुराणों के ही प्रमाणों से मैं आप के कथनको निर्मूल-सिद्ध करूंगा।

वैश्यकर्म चयो विप्रो लोभमोहव्यपाश्रयः
ब्राह्मण्यं दुर्लभं प्राप्य करोत्यल्पमतिः सदा॥
स द्विजो वैश्यतामेति वैश्यो वा शूद्रतामियात्।
स्वधर्मात्प्रच्युतो विप्रस्ततः शूद्रत्वमाप्नुयात्॥
(अ० २२३, श्लोक १६, १७)

अर्थात्-जो ब्राह्मण, दुर्लभ ब्राह्मणत्व को पाकर वैश्य के कर्म करने लगता है वह ब्राह्मण वैश्यत्व को प्राप्त हो जाता है और वैश्य से शूद्र भी हो सकता है। अपने धर्म से पतित ब्राह्मण शूद्रत्व को भी पा सकता है—

मनुस्मृति अध्याय ११ श्लोक ९७ में भी लिखा है।

यस्य कायगतं ब्रह्म मद्येनाप्लाव्यते सकृत्।
तस्य व्यपैति ब्राह्मण्यं शूद्रत्वं च स गच्छति।

अर्थात् एक बार भी सुरापान करने वाला ब्राह्मण शूद्र हो जाता है। उस का ब्राह्मणत्व नष्ट हो जाता है। जब वर्ण पलट सकते हैं तो वे जन्मसिद्ध कहां रहे। देवी भागवत में यह श्लोक आया है—

द्वादशाह मनग्नि सन् द्विजः शूद्रत्व मानुयात्। स्कन्ध ११। अध्याय ३)

बारह दिन यज्ञ न करने वाला ब्राह्मण शूद्र हो जाता है।

पं० गिरिधरशर्मा जी (तृतीय वार)

बाद काल में वितण्डा बताना या निग्रहस्थान उद्भावित करना मेरे विचार से दोष युक्त नहीं है, जिस पर कि आप ने बुरा माना है। (इस पर श्रीयुत लाला मुन्शीराम जी ने कहा, नहीं कोई दोष नहीं है आप कहते जाइए) पुरुषसूक्त के मन्त्र पर आप की शंका का तटस्थ लक्षण घटा कर मैं युक्तियुक्त उत्तर दे चुका हूं, फिर भी न जाने क्यों आप वही शंका उठाते हैं। मेरे अर्थ में प्रमाण तो वेद ही है, मन्त्र के ही चौथे पाद में "पद्भ्यां शूद्रो अजायत" स्पष्ट लिखा है, इस ही के अनुसार मैं सम्पूर्ण मन्त्र का अर्थ करता हूं। यह अर्थ मानना कि 'ब्राह्मण उत्पन्न होता। किन्तु जरा सोचिए, आप के मत से उत्पत्ति काल में ब्राह्मणत्व है कहां? आप तो पचीसवें वर्ष में गुण कर्म देखकर विद्यासभा द्वारा ब्राह्मण क्षत्रिय दिलवाते हैं।

तब ब्राह्मण उत्पन्न हुआ-इसका क्या अर्थ करोगे। लक्षणाद्वारा ब्राह्मणत्व उत्पन्न हुआ, कहेंगे तो लक्षणा मानने में प्रमाण क्या? सुतरां उत्पत्ति काल से ही ब्राह्मणत्व आप को मानना पड़ेगा। गुण और कर्म ब्राह्मण व्यक्ति को उत्पन्न नहीं कर सकते। आपने ब्राह्मणग्रन्थ का प्रमाण यह कह कर दिया है कि 'ब्राह्मण मन्त्र की व्याख्या में सहायक होते हैं' किन्तु जो गोपथ ब्राह्मण का वचन आपने पढ़ा है, इस का प्रकृत मन्त्र की व्याख्या से कोई भी सम्बन्ध नहीं है। हां प्रकृत मन्त्र का व्याख्यान रूप ब्राह्मण मैं आप को सुनाता हूं-प्रजापतिरकामयत, प्रजायेय इति। स मुखतस्त्रिवृतं निरमिमीत, तमग्निर्देवतान्वसृज्यत, गायत्री छन्दो, रथन्तरं साम, ब्राह्मणो मनुष्याणाम्, अजः पशूनाम्, तस्मात्ते मुखतो सृष्टाः मुखतो ह्यसृज्यन्त' इत्यादि। यहां स्पष्ट प्रजापति के मुख आदि से ब्राह्मणादि चारों वर्णों को उत्पत्ति बताई गई है।

आपका यह आशय भी हमारे विरुद्ध नहीं पड़ता, क्योंकि उस में 'व्रतेन ब्राह्मणो संशितो भवति' लिखा है, कर्म से ब्राह्मण प्रशंसनीय (?) होता है—यह शब्द ही मानते हैं। गुण, कर्म से ब्राह्मण बनना इस वाक्य में कहां है? आप कहते हैं, व्याकरण आदि यदि हमें वेद विरुद्ध ले जायं, तो वे कैसे माने जायं? किन्तु मैं निवेदन करता हूं कि बिना व्याकरण आदि के आप वेदविरुद्ध या वेदानुकूल कैसे समझ सकेंगे! बिना व्याकरण आदि की सहायता के तो किसी शब्द का अर्थ ही नहीं प्रतीत हो सकता, विरोध और अनुकूलता कैसे मालूम होगी। आप ने जो मन्त्र प्रमाण दिये हैं, वे कथमपि आप का अभिमत सिद्ध नहीं कर सकते। 'अहमस्मि ब्रह्म' इत्यादि मन्त्रों का विशेष अर्थ सनातनधर्म की दृष्टि से तो कुछ और ही है, किन्तु मैं यहां आप का ही अर्थ मान लेता हूं—वेदवाणी कहती है कि मैं जिसे चाहूं उसे ब्रह्म बना देती हूं, मैं ही ब्राह्मण को ब्राह्मण करती हूं—इत्यादि। तो इसमें हमें आपत्ति क्या है। वेदाध्ययन को क्या हम ब्राह्मणत्व का प्रयोजक नहीं मानते? मुख्य ब्राह्मणत्व अवश्य वेदाध्ययन और तदुक्त कर्मानुष्ठान से ही होता है। हमारा तो यही सिद्धान्त है कि 'तपः श्रुतं च योनिश्चेत्येतद् ब्राह्मण लक्षणम्' तप, शास्त्र और जन्म तीनों का योग होने पर मुख्यतया ब्राह्मण आदि माने जाते हैं। इससे आप का अर्थ मान लेने पर भी हमारे सिद्धान्त से कोई विरोध नहीं हुआ। 'कारुरहम्' इत्यादि दूसरा मन्त्र तो प्रकृत अर्थ में कुछ भी साधक नहीं, ऋषि कहता है कि मैं वेदसूक्तों का प्रचार करता हूं, पुत्र वैद्यक करता है, लड़की सतू पीसती है, (उपलप्रक्षिणी का अर्थ निरुक्तकार ने सतू पीसने वाली ही किया है पत्थर कूटने वाली न) अर्थात् घर के काम कर लेती है-तो इससे किस का वर्ण पलट गया? जब आपस में बांट कर भिन्न २ काम करते हैं तो क्या वे भिन्न २ वर्णों के हो गये?

पुराणों के प्रमाणों के सम्बन्ध में समयाभाव से मैं कुछ न कह सका केवल इस बार इतना ही कह देता हूं कि ब्राह्मण पुराणादि के वचन वेदाध्ययनादि कर्म अनुष्ठान की प्रशंसा बताते हैं नये वर्णों की उत्पत्ति नहीं बोधित करते।

प्राप्त पत्र

"ग्रीष्म ऋतु में सहारन पुर के स्टेशन पर ठण्डा जल"

यह बात कि बड़े कामों का आरम्भ छोटीर घटनाओं से हुआ करता है बिलकुल सत्य है। सहारनपुर के स्टेशन पर गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के उत्सव के दिनों में यात्रियों की जलादि, तथा अन्य प्रकार की सहायता का काम आर्य-समाज सहारनपुर की ओर से किया गया था। गुरुकुलोत्सव के पश्चात कुछ उत्साही पुरुषों, विशेषतः लाला अमरनाथ जी इन्सपेक्टर सल्डे कम्पनी, ने इच्छा प्रगट की वह और उनके साथी सारी की सारी गरम ऋतु में ठन्डे जल से यात्रियों की सेवा करना चाहते हैं। चुनाचे उस पर विचार हो कर एक सेवक मंडली बनाने का निश्चय हुआ और उस का नाम सहारनपुर सेवक मंडली रखा गया जिसके मन्त्री लाला सीताराम जी नियत किये गये और साथ ही यह भी निश्चय हुआ कि डी० टी० घस हाहिब सहारनपुर से इस के बारे में पत्र व्यवहार किया जावे। चुनाचे उन को पत्र लिखा गया और उन्हों ने कृपा पूर्वक सहारनपुर के स्टेशन पर यात्रियों को जलादि पिलाने की स्वीकारी देदी। स्वीकारी मिलते ही स्टेशन पर ठंडे जल का प्रबन्ध सेवक मंडली की ओर से किया गया। अब सहारनपुर के स्टेशन पर गरमियों की ऋतु में यात्रियों को जल का कष्ट नहीं होगा। अलावा चन्द कहारों के जो कि बहुधा पानी की ढूलाई पर रहते हैं बहुत से सज्जन पुरुष जिन में अधिक तर स्थानीय भिन्न २ अनाज की कम्पनियों में कार्य्य करते हैं और बाज अच्छे धनी भी हैं जिन के गृहों में अपने कई नौकर काम करते हैं वह लोग स्वयं बड़े प्रेम पूर्वक यात्रियों को जल पिलाते हैं।

पंजाबप्रान्त में जहां के ये भद्र पुरुष हैं वहां तो पहिले ही से कई स्टेशनों पर जल का प्रबन्ध हो रहा है, क्या अन्य प्रान्तों के लोग भी इस ओर ध्यान देकर अपने भाइयों की सहायता करेंगे? हमारे शास्त्रों में तो जल का पिलाना बड़ा उत्तम कर्म्म लिखा है भूखे को अन्न से और प्यासे को जल से जो प्यास बुझाता है उसका इस लोक और परलोक में भला होता है। ऐसा बहुधा सुनने में आया है तो फिर ऐसे कार्य्य करने के लिए सब स्थानों पर यत्न होना चाहिये विशेष कर कलकत्ता की माड़वाड़ी सेवासमिति अथवा प्रयाग की सेवासमिति को ऐसे उत्तम कार्य को अपने हाथ में लेकर इसे सफलीभूत बनाने का प्रयत्न करना चाहिये। लखनौ आदि स्थानों में सीसीयों आदमी लोटा डोरी लिए जल पिलाते फिरते हैं परन्तु उस से सर्वसाधारण को लाभ नहीं पहुंच सका क्योंकि जल पिलाने का एक पैसा जल पिलाते ही फौरन मांगा जाता है जो सब को देना कठिन होता है। आशा है कि वह लोग जो अपने भाइयों की सेवा करना अच्छा कार्य ख्याल करते हैं अवश्य इस काम को हाथ में लेंगे।

शालिग्राम
सहारनपुर।

—:o:—

संसार समाचार पर टिप्पणी

आर्य समाज बुढाना—(जि० मुज़फ़र नगर) का वार्षिकोत्सव १२, १३, १४ जून को होगा।

रायपुर (मध्यप्रदेश) में आर्यकुमार सभा स्थापित हुई है जिस के प्रधान प० सूर्यदत्त शर्मा मुख्याधिष्ठाता स्थानीय गुरुकुल तथा मन्त्री महाशय मोहनलाल जी नियत हुए हैं।

आर्यसमाज ठन्डी सड़क कानपुर-के उप मन्त्री महाशय सूचना देते हैं कि उच्च कोटि के कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्री पांडेबनवारीलाल ने अपनी पुत्री का विवाह डाक्टर शिवनन्दन प्रसाद तिवारी के भ्रातृज के साथ वैदिक रीति से कर दिया। डाक्टर जी इङ्गलैण्ड हो आए हैं, इसलिए बिरादरी विवाह में न आई, आर्य्य भाई खूब सम्मिलित रहे। वर पक्ष की ओर से विविध निधियों को २०) दान में मिले। जब तक आर्य पुरुष जाति बन्धन को न तोड़ेंगे तब तक उनके गृहों में शांति का राज नहीं हो सक्ता।

जीवन—नया उर्दू का मासिक पत्र लाहौर से महाशय चिरञ्जीलाल प्रेम ने मई १९१६ से निकालना शुरू किया है। इसमें वैदिक सिद्धान्तों पर गवेषणा-पूर्ण लेख देने की प्रतिज्ञा की है। वार्षिक मूल्य १।)

प्रेममहाविद्यालय के म० नारायणदास ने फिर अंग्रेज़ी में कुछ लिखा है जिसका नोटिस लेने की कुछ आवश्यकता न थी क्योंकि उन्होंने नमकहलाली के विचार से जो कुछ लिखा है उसका उन्हें अधिकार है परन्तु एक असत्य लेख का खंडन आवश्यक है। जैसा गताङ्क में लिखा जा चुका है पं० हरिश्चन्द्र पर किसी प्रकार की रुकावट नहीं और न पेरिस में थी और न किसी ने युद्ध की समाप्ति तक आने से मनाकिया है। परन्तु इस समय जहाज़ की यात्रा में भय है। इसलिए इ उसी समय जेनेवा से चलेंगे जब निश्चय हो जाय कि मार्ग में कोई भय नहीं।

राय ठाकुरदत्त धवन-की लाहौर आ० स० के चुनाव वाली कार्यवाही पर पानीपत, लाहौर छावनी, खोस्ट आदि लगभग १४ अन्य आर्यसमाजों ने भी शोक प्रकट करके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से निबटारे की अपील की है।

दिल्ली के चमारों के ईसाई होने के सम्बन्ध में-उपमन्त्री आर्यसमाज, चावड़ी बाज़ार दिल्ली, लिखते हैं:—

"आपके दो नोट जो कि देश अखबार लाहौर से नकल किए गए हैं, २५ वैशाख और १ म ज्येष्ट ७३ के प्रचारक में छपे हैं जिनके शीर्षक ये हैं:—

(१) देहली में पन्द्रह सौ अछूत ईसाई होने वाले हैं।

(२) देहली के चमार ईसाई होने से बच गए।

मुझे शोक है कि इन लेखों में एक विचित्र अशुद्धि होगई है और वह यह कि आपने यह समझा कि चमार हिन्दू दुकानदारों को जूते बेचा करते थे और उन्हीं से इनका लेन देन था और इन्हीं की सख्ती से तङ्ग आकर वे ईसाई होने लगे थे। परन्तु मामला सर्वथा इससे उलटा है। वास्तव में बात यह है कि यहां के चमारों का मुसलमान जूते बेचने वालों से झगड़ा होगया था। मुसलमान एक पैसा एक रुपये पर कटौती काटते थे और इनके साथ बहुत बुरा बर्ताव करते और उन्हें बुरी २ गालियां दिया करते थे। विवश होकर और इनकी सख्ती से तङ्ग आकर हिन्दू चमारों ने मुसलमान दुकानदारों के हाथ माल बेचना बन्द कर दिया। देहली के आर्यसमाजियों और हिन्दुओं ने इन की सहायता करना अपना कर्तव्य समझा और कुछ आर्य समाजियों ने चमारों के साथ सम्मिलित होकर दुकानें खोली हैं; परन्तु उन को रुपयों की अत्यन्त आवश्यकता है, जिस का प्रबन्ध हो रहा है। आशा है अन्य स्थानों के आर्य तथा हिन्दु भाई अछूत जातियों का सुधार करना चाहते हैं इस कार्य में देहली के आर्यसमाजों की सहायता करेंगे।

नोट—देहली में देशी जूते बेचने का काम केवल मुसलमान ही करते हैं, केवल चार पांच वर्षों से कुछ दुकाने अंग्रेज़ी जूता बेचने की हिन्दुओं की हैं; या इस घटना से तीस पैंतीस दुकानें हिन्दु चमारों व आर्य समाजियों की खुली हैं।"

—:o:—

CC0. Gurukul Kangri Collection

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका——————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः——————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——————।)
काव्य लतिका——————॥)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्] १॥)
धातु पाठः—[मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्गप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—बैलफोर स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन विलयम एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)
जिनचरितं—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त ≡)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) ≡)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji—" 0.1.0
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A.
अर्थशास्त्र (धनविद्या) १॥)
आर्यों की विज्ञानिक उन्नति =)
(लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०)
अग्निहोत्र व्याख्या ।)
वेदोक्त राज्य ॥)
(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)
रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry) ३॥)
विद्युतशास्त्र २।)
वनस्पतिशास्त्र २)
पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत
उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १॥)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)
मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष ॥)
ध्यायोग प्रकाशः स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत १।)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

ओ३म्

Registered NoA. 434

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २२ ज्येष्ठ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० ३ जून सन् १९१६ ई० { संख्या ८ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थीयों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

चरक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०

तीन मास „ „ „ „ -) „ „

छः „ „ „ „ -)॥ „ „ „

सालभर „ „ „ „ -) „ „ „

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता !

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लालो रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

अध्यापिका

आर्य्य कन्या पाठशला गोरखपुर के लिए एक योग्य आर्य्य अध्यापिका चाहिए, जो पाठशाला के प्रबन्ध में भी दक्ष हो प्रार्थना पत्र प्रमाण पत्रों के लिये सहित निवेदक के पास शीघ्र आना चाहिए। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा।

हृदयनारायण

मन्त्री

आर्य्य समाज गोरखपुर

—:०:—

गुरुकुल के लिए अनाज की अपील।

गुरुकुल के लिए अनाज एकत्रकरने की जो अपील सद्धर्मप्रचारक में की गई थी, वह फली भूत होती हुई प्रतीत होती है। चकझुमरा ज़िला लायलपुर के कुछ उत्साही गुरुकुल के प्रेमियों ने पुरुषार्थ कर के अपनी मण्डी से गुरुकुल के लिए अनाज एकत्र किया है। महाशय काशीराम जी दरेज़ा चकझुमरा से लिखते हैं—

"आपने सद्धर्मप्रचारक में इस फसल के अवसर पर गुरुकुल के लिए अनाज एकत्र करने की आवश्यकता बतलाई थी, उसी के अनुसार यहां के गुरुकुल प्रेमी म० बूड़ी राम जी तथा महाशय साहब दित्तामलज़ी ने मिलकर मण्डी के आढ़तियों से गेहूं मांगनी आरम्भ की थी और २३ मन गन्दम एकत्र होगई हैं, जिस की बिल्टी इस पत्र के साथ आपकी सेवामें प्रेषित की जाती है। क्योंकि यह एक छोटी सी मण्डी है इस लिए थोड़ीसी गेहूं ही एकत्रित होसकी है अतः कृपा करके इसे स्वीकार कीजिए। यदि इसी प्रकार अन्य मण्डियों अर्थात् लायलपुर, सांगलोहिल, गोजरा, टोबाटेकसिंह, जड़ांवाला, तांड़लियांवाला आदि मंडियों से भी गुरुकुल के प्रेमी गुरुकुल के वास्ते गेहूं मांगनी आरम्भ कर देवें तो पूर्ण आशा है कि गुरुकुल के लिए बहुतसी गेहूं बहुत शीघ्र एकत्र होजाय।"

हम चक झुमरा के आर्य्य पुरुषों को उन के इस पुरुषार्थ के लिए हार्दिक धन्यवाद देते हैं और उपरोक्त मण्डियों तथा दूसरी मण्डियों के गुरुकुल प्रेमियों से प्रार्थना है कि वे भी अपनी २ मण्डियों में गुरुकुल के लिए अनाज एकत्र करने का कार्य्य आरम्भ करदें क्योंकि इस कार्य्य के लिए उत्तम समय यही है।

गुरुकुल समाचार ।

गरमी असाधारण—पड़ रही थी । गत १४ वर्षों के अन्दर, गुरुकुल भूमि में, ऐसी कड़ी गरमी कभी नहीं पड़ी । १५ ज्येष्ठ (२७ मई) के दिन, बतलाया जाता है कि, गर्मी का पारा ११६ दर्जे पर पहुंच गया था । फिर १६ ज्येष्ठ को धूल चढ़ी । जिस दिन कलकत्ते में आंधी से वृक्षादि उखड़ रहे थे, उसी दिन गुरुकुल भूमि में भी आंधी की प्रतीक्षा थी । १७ ज्येष्ठ को जब मैं लाहौर से गुरुकुल भूमि में पहुंचा तो वर्षा लाने वाला, दक्षिण का, वायु चलने लगा । सायंकाल ७॥ से मूसलाधार बरसने लगा । रात भर टीन की छतों पर तड़तड़ होती रही । १८ ज्येष्ठ को १२ बजे के पश्चात् सूर्य भगवान के दर्शन हुए । ११६ दर्जे से पारे का ६० दर्जे पर गिर जाना विचित्र परिवर्तन है।

गंगा की धारा—अभी तक ज़ोर से नहीं बहने लगी । निर्वाह मात्र के लिए जल चल रहा है । इसी लिए गंगा के पुल अब तक खड़े हैं । अभी पहला ही पुल टूटा है।

सभा के अधिवेशन से—वे सब उपाध्याय तथा अध्यापक लौट आए जो लाहौर गए थे । वर्ष भर का बजट स्वीकार होगया जो दूसरे स्थान में दिया गया है । उससे विदित होगा कि सभा में कतर व्योंत हो कर वर्ष का घाटा ७७ हज़ार के स्थान में ७० हज़ार रह गया है । इस सत्तर हज़ार की रकम में से अभी आधी से कुछ अधिक रकम ही आई है । गुरुकुल के प्रेमियों को शीघ्र यह रकम पूरी कर देनी चाहिए, जिससे दूसरे वर्ष के व्यय के लिए नया चन्दा जमा करने का मैदान खुल जाय ।

गुरुकुल कार्यालय में—अन्य आय के साथ दान का धन भी आता रहता है । १ ज्येष्ठ से १५ ज्येष्ठ १९७३ तक (पन्द्रह दिनों में) कुल दान की आय ४,२२१) हुई है जो इस प्रकार, विविध निधियों में, विभक्त है—महानिधि में २००५–यह धन वर्ष के चलते व्यय में पड़ेगा—मितार्थ निधि में ६३) उपदेशक महाविद्यालय में ९००) गोदान ९) और विशेष कार्यार्थ १२४४)—इस ब्योरे से पता लगेगा कि गुरुकुल को गत १५ दिनों में भी अच्छा धन आगया है । यदि इसी प्रकार पुरुषार्थ होता रहे और परमात्मा की कृपा बनी रहेगी तो सब काम निर्विघ्न होंगे ।

दान का ब्योरा देखने से—पता लगता है कि यदि आर्य पुरुष थोड़ा सा भी पुरुषार्थ करते रहें तो दान का मिलना कठिन नहीं । इन दो सप्ताहों के दान में १६८८॥) तो गुरुकुल के पुराने हितैषी सेठ जयनारायण, रामचन्द्र जी ने भेजा है । ९००) उपदेशक विभाग के छात्रों की छात्रवृत्ति मद्दे, ५००) महानिधि में, २५०) श्री सेठ केशवदेव जी के काकड़ी ग्राम में बनवाए कूप का शेष धन तथा ३८॥) दरी का मूल्य जो उन के अपने बनवाए गृह में बिछाने के लिए होगी ।

एक दान अपूर्व ही है—पटना आइलमिल्ज़ बेगमपुर के स० श्यामलाल चौधरी जी का बालक रोगी था । उस बालक को दूसरे पलड़े पर बैठा कर रुपयों के बराबर तौला गया । कुल ८८६) रुपये चढ़े । उन्हों ने निश्चय किया कि किसी आनधिकारी ब्राह्मणकुलोत्पन्न व्यक्ति को देने के स्थान में भारतवर्ष की किसी सर्वोत्तम संस्था के कोष में धन भेजा जाय । तदानुसार श्री महाशय जी ने ८८६) के नोटों का बीमा करा के भेज दिया ।

सरदार गुरुदत्तसिंह चरणदास जी प्रति वर्ष १००) भेजा करते हैं, वह धन भी इन्हीं दिनों प्राप्त हुआ । अमृतसर निवासी महाशय रामकृष्ण जी ने ला० द्वारिकादास जी के द्वारा १२५) भेजे । गर्गाश्रमी श्री गौरी शङ्कर जी ने कुर्ग [रायपुर] से ३१) भेजे हैं । श्री डाक्टर राजसिंह जी ने कराची द्वारा ५१।=) भेजे हैं और अधिक धन एकत्र कर रहे हैं जो जमा होते ही भेज देंगे । श्री रौनक़राय जी S.D.O. ने बोगा स्थान से २५) भेजे हैं । शेष छोटी रक़मों का ब्यौरा स्थानाभाव से नहीं दिया जाता ।

मुन्शीराम स्मारक निधि की ओर—गुरुकुल के प्रेमियों को दृष्टि फिर से फेरने की आवश्यकता है । दो वर्ष से अधिक हुए जब सम्पादक सद्धर्मप्रचारक ने उन की यादगार में गुरुकुल में परीक्षा—भवन बनवाने के लिए अपील की थी । उस समय बहुत थोड़ा धन आया था । फिर जब मैंने प्रचारक से सम्बन्ध हटाया तब मेरे नाम पर हाल बनाने को धन मांगा-गया । उसमें भी ५००) से कुछ अधिक आया । मैंने इस धन को भी अमेरिका में काम करने वाले अ... पने पुरुषार्थी भाई मुंशीराम के स्मारक में ही डालने की आज्ञा देदी । फिर भी ७००) तक सारी रक़म न पहुंची । अ... दक्षिण हैदराबाद से महाशय सोहनलाल जी रवि ने ८४०) रुपए भेजे हैं । महाशय रवि उन युवकों में से थे जिन्हें महाशय मुन्शीराम ने अमेरिका में आर्थिक सहायता दी । वही धन रवि जी लौटाते हैं कि उनके मित्र के स्मारक में लगाया जावे । १५००) रुपया इस प्रकार होजायगा यदि १५००) रुपया और वसूल होजाय तो एक खुला परीक्षा भवन बन जाय और जो कष्ट परीक्षा के समय होता है वह दूर होजाय ।

महाशय मुन्शीराम का जीवन-चरित्र लिखने योग्य है । हैदराबाद में वह सैनिक थे । अंग्रेज़ी का एक शब्द नहीं जानते थे । रूस-जापान युद्ध आरम्भ था । आप मेरे पास आशिर्वाद लेने आए और जापान को चल दिए । वहां अपनी सेवा अर्पण की जो अस्वीकार हुई । पास एक कौड़ी न बची । डेक (Deck) पर काम कर के रोटी कमाते बिना दाम ख़र्च अमेरिका पहुंचे । वहां अपने बाहुबल से जो कुछ कमाते उस का तीसराभाग गुरुकुल को भेजते रहे । भारतनिवासी विद्यार्थियों को हाथ से रोटी बनाकर खिलाते और अपनी कमाई में से तीसरा भाग उन की आर्थिक सहायता में व्यय करते । श्री स० च० सिंह जी को मैं अन्तिम प्रेरणा यह थी कि गुरुकुल में काम करना । अमेरिका में ही उन का देहान्त हो गया था । महाशय मुन्शीराम स्वर्गवास से सहायता पाए हुये बीसियों सज्जन सहस्रों कमाते होंगे । क्या इस समय वे अपने संरक्षक और मित्र के स्मारक के लिए दान का हाथ न बढ़ाएंगे । श्री गोविन्दपुर इनकी जन्म भूमि थी । क्या उनके स्वदेशी भाई इस समय कुछ उदारता से काम लेंगे । श्रीगोविन्दपुर को ऐसे निष्काम सेवक का बड़ा मान करना चाहिए और उसके स्मारक को पूर्ण कराने में पूरी सहायता देनी चाहिए ।

अविशिष्ट—परीक्षाएं समाप्त होगईं और पढ़ाई का कार्य भी पुनः आरम्भ होगया ।

श्री गोविन्दपुर की—आर्य्य कुमार सभा के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए श्री उपाध्याय स० च० सिंह जी, श्री स्नातक बुद्धदेव जी तथा श्री स्नातक जयदेव जी गए हुए हैं । श्री जयदेव जी उत्सव के पश्चात् मुकेरियां आदि स्थानों में प्रचार करेंगे ।

मुन्शीराम, मुख्याधिष्ठाता ।

वेदामृत।

यस्मिन्वृक्षे मध्वदः सुपर्णा निविशन्ते सुवते चाधिविश्वे।
तस्येदाहुः पिप्पलं स्वादग्रे तन्नोन्न शुष्कः पितरं न वेद
॥ ऋ० १।१६४।२२।

"जिस सारे (कार्य प्रकृति रूपी) वृक्ष पर (इन्द्रियों के भोग रूपी) मधु का पान करने वाले [जीवात्मा रूपी] सुन्दर पंखों से युक्त, पक्षी स्थिर होते हैं, और सन्तान उत्पन्न करते हैं। उस के निर्मलफल को आगे स्वादिष्ट कहते हैं तथा वह [विषय भोग में न लिप्त होने वाला प्रत्युत इन्द्रियों से काम लेने वाला प्राणी] नष्ट नहीं होता। [परन्तु] जो पुरुष सारे (जगत के) पालक परमात्मा को नहीं जानता (वही) नष्ट होता है।"

प्रकृति रूपी वृक्ष पर जीव रूपी पक्षियों को परमात्मा ने ही बैठाया है। तब यह लोकोक्ति कैसे सच्ची हो सकी है कि गृहस्थ पाप का मूल है। जिस गृहस्थ को इस समय संसार ने विषय भोग का साधन मात्र समझा हुआ है, जिस को अज्ञानी पुरुष नर्क धाम बतलाते हैं, उस गृहस्थ को प्राचीन ऋषि तपो-भूमि बतलाया करते थे। जिस गृहस्थ में प्रवेश करने के लिए आज कोई तय्यारी आवश्यक नहीं समझी जाती, उस के लिए कम से कम २४ वर्ष की आयु तक निरन्तर तप होता था। आज समझदार आदमी गृहस्थ में प्रवेश करते हुए डरते हैं, कांपते हैं; परन्तु वेद में परमात्मा गृहस्थ को आज्ञा देते हैं—गृहामाविभीत मावेपध्वम्—"हे गृहस्थ लोगो! तुम मत डरो, मत कम्पायमान हो।" कांपने वाले का गृहस्थ में प्रवेश होने का क्या काम! मनुभगवान् कहते हैं:—

ससंधार्यः प्रयत्नेन स्वर्गमक्षयमिच्छता।
सुखं चेहेच्छता नित्यं योऽधार्यो दुर्बलेन्द्रियः॥

"[हे गृहस्थ दम्पति!] जो तुम अक्षय मुक्ति सुख और इस संसार के सुख की इच्छा रखते हो तो—जो दुर्बलेन्द्रियों के धारण करने योग्य नहीं है उस गृहस्थाश्रम को नित्य प्रयत्न से धारण करो।"

मनु और जितने भी अन्य ऋषियों ने गृहस्थ का धारण करना मनुष्य के लिये आवश्यक बतला कर पितृ ऋण से उऋण होने का उपदेश दिया है, उन्होंने वेदाज्ञा को ही आधार भूत माना है। जिस को परमात्मा की पवित्र आज्ञा ने अपनाया हो उसे कौन अपवित्र कह सक्ता है। न प्रकृति अपवित्र है और नहीं जीवात्मा, केवल मनुष्य के कर्म उन को पवित्र वा अपवित्र बनाते हैं। जो मनुष्य गृहस्थ में प्रवेश कर के इन्द्रियों को केवल सन्तानोत्पत्ति और उस की रक्षा के लिए ही काम में लाते हैं उन्हें संसार वृक्ष पर बैठे हुए उत्तम स्वादिष्ट फल प्राप्त होते हैं; तभी तो मनु ने गृहस्थ को जेष्ठाश्रम कहा है। अन्य सारे आश्रमों का आश्रय भी यह आश्रम है। यदि गृहस्थ उत्तम सन्तान उत्पन्न करेंगे तो ब्रह्मचर्याश्रमों को योग्य उत्तम संस्कृत ब्रह्मचारी मिलेंगे, यदि अपने आश्रम में गृहस्थ दम्पति धर्मानुसार जीवन व्यतीत करेंगे तो उत्तम बनी गुरुकुलों में पढ़ाने और, योगाभ्यास द्वारा, सन्यासाश्रम में प्रवेश की तय्यारी भली प्रकार कर सकेंगे और आयु के चौथे भाग में सन्यासी होकर निर्भयता और निर्पक्षता से मान व धर्म का प्रचार कर सकेंगे। मनुस्मृति में लिखा है:—

यथा वायु समाश्रित्य वर्तन्ते सर्वजन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्त्तन्ते सर्व आश्रमा:॥

जैसे वायु के आश्रय से ही सब जीवों का जीवन व्यवहार सिद्ध होता है, वैसे ही गृहस्थ के आश्रय से अन्य सब आश्रमियों का जीवन व्यहार होता है। गृहस्थ ही सब आश्रमों का श्रोत है और अन्त को गृहस्थ में ही सब आश्रम स्थित भी होते हैं। इसी लिए मनु जी कहते हैं:—

यथा नदीनदाः सर्वे सागरेयान्ति संस्थितम्।
तथैवाश्रमिणः सर्वे गृहस्थे यान्ति संस्थितम्॥

'जैसे सब नदी और बड़े नद सागर में पहुंच कर स्थित होते हैं, वैसेही सब आश्रमी गृहस्थ ही को प्राप्त हो कर स्थिर होते हैं।"

गृहस्थाश्रम स्वच्छ है क्योंकि शुद्धस्वरूप परमात्मा का निर्माण किया हुआ है। प्रकृति रूपी वृक्षपर जीवात्मा को परमात्मा ने ही बैठाया है, उसे इन्द्रियों द्वारा ज्ञानोपलब्धी और कर्म करने की शक्ति भी उसी प्रभुने प्रदान की है, उस वृक्ष के निर्मल फल भी उसी परमात्मा की कृपा से स्वादिष्ठ होते हैं। इस प्रकार सदाचार से गृहस्थ-जीवन व्यतीत करके जो नियम पूर्वक सन्तान उत्पन्न की जाती है वह निर्मल और अपने जन्मदाता पिता और माता के लिए स्वादिष्ठ फल होता है।

परन्तु नास्तिक के मन में संशय उत्पन्न होता है। परमेश्वर और उस के नियमों का विद्रोही कहता है कि जब दुराचारी और नियम तोड़ने वाला भी सन्तान उत्पन्न कर सक्ता है तो फिर परमेश्वर की क्या आवश्यकता रहती है। उत्तर मिलता है कि जो आस्तिक ईश्वराज्ञा पालन करता हुआ सुन्दर शरीर, इन्द्रिय और आत्मा रखने वाला मनुष्य उत्पन्न करता है, वह नष्ट नहीं होता, वह गिरता नहीं। उसकी सन्तान भी चिरंजीवी होती है। उस के कर्मों का फल निर्मल स्वादिष्ट होता है। परन्तु जो अधर्मी परमात्मा के नियमो से विमुख हो कर अकस्मात सन्तान उत्पन्न करदेता है उसे न स्वयम् ही सन्तान से कुछ सुख पहुंचता है और नहीं उसकी सन्तान सुखी रहती है। सारे जगत के पालक परमात्मा को न जानते और न मानते हुए जिसने नियम विरुद्ध काम करके प्रकृति के भोगों को भोग ना आरम्भ किया उसकी दशा उस पक्षी की न्याईं है जो कि सुन्दर फलदार वृक्ष पर घोंसला बनाकर भी नहीं जानता कि किस ऋतु में फल पकता है और किस प्रकार वह खाया जाता है। ऐसा पक्षी कच्चे फलको खाकर बीमार हो जाता है और कांटों में फंस कर नष्ट भ्रष्ट हो जाता है।

हे, आकाश में उड़कर उच्च शिखरपर पहुंचने के अभिलाषी पक्षीगण! उसी ऊंची चोटी पर दृष्टि रखते हुए वायु मण्डल की तहों को तै करते चले जाओ और मार्ग में फिर कर एक आंख भी न देखो क्योंकि उस उच्च ज्योतिः स्तम्भ का प्रकाश दृष्टि से परे होते ही ऐसे स्थान में गिरोगे जहां से फिर उठना चिर कालके लिए, कठिन होजायगा। शमित्यों म०,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by Google

आत्मदर्शनम् ।

हाय ! कुसंग ने सर्व नाश कर दिया ! कैसे हृदयवेधक शब्द हैं। परन्तु नगर नगर ग्राम ग्राम से यही ध्वनि उठरही है, और यही आकाश मंडल में गूंज रही है। जिस समय स्वच्छ हृदय लेकर माता की गोद को छोड़, बालक हम जोलियों में प्रथम बार प्रवेश करता है, माता पिता की उस पर कैसी आशाएं बंधती हैं। उस के शरीर की चमक और उसके चेहरे की दमक उनको आल्हाद-मय बना देती है। परन्तु शनैः शनैः उसका मुख और उसके अंग मलिन होने लगते हैं। विचित्र प्रकार की बोलियां बोलने लगता है और उसके कर्म विस्मय-उत्पादक हो जाते हैं। माता पिता की आंखें उस समय खुलती हैं जब राज-रोग में ग्रस्त हो जाता है। माता विलाप करती है और पिता के मुख से अनायास निकलता है—अथदुर्जन संसर्गेपतिष्यसिपतिष्यसि पतित युवक व्याकुल होजाता है; उसकी भी आंखे खुलती हैं और रोग की पीड़ा से क्लेषित धाढ़ें मार कर रोता है—'हाय! कुसंग ने सर्वनाश कर दिया !' कुसङ्ग से उसे घृणा होजाती है और तब भगवान की ओर ध्यान जाता है। लुच्चों लुंगाड़ों की संगत में जिस प्रकार मखौल उड़ाए जाते थे आज उसी ज्योतिस्तम्भ की ओर टिक टिकी लग रही है। यदि पहले ही उसका आश्रय लेता तो क्यों यह दुखमय दिनदेखना नसीब होता—

दुख में तो सबकोइ भजै, सुख में भजै न कोय।
एकबार सुख में भजै, तो दुखकबहूं न होय॥

अबतो उसी से लिव लग गई है। युवक का आत्मा उच्च शिखर के केन्द्र में जुड़ गया। जब तक आत्मा उधर लगा रहा तब तक दुख भूला रहा परन्तु उधर से दृष्टि हटते ही दुख की तरंगों ने आघेरा। ये लहरें भयानक हैं, इन से निकल चलूं यही पाठ युवक का आत्मा कन्ठस्थ कर रहा है। परन्तु कहां चलो ? जिस में दृष्टि पात करने मात्र से दुख भूल जाता है उस शान्ति धाम के समीप पहुंचने से कैसी न प्राप्त होगी ? किन्तु वहां पहुंचें कैसे ? त्रिपा दूर्द्ध उदैत्पुरुषः वह तो बहुत ऊंचा है। 'चित चाहत हैं उड़ जाय मिलों, पै उड़ो नहीं जात बिना पर सों।' पर कहां हैं जिनके आश्रय उड़ कर जा मिलूं। न जप किया न तप किया, न यम नियम का पालन किया। कोई भी तो आश्रय नहीं जो ऊपर ले चले। इस दुर्गम मार्ग में कैसे निर्वाह होगा ? नीचे वही पुरानी कुसंगत, वही पाप की भट्ठी दहक रही है। और ऊपर शान्तिधाम इतनी दूर ! निर्बल, गिरा हुआ प्राणी कहां जाय ? शान्ति धाम की ऊंचाई को देख कर व्याकुल युवक फिर से उसी भट्ठी में गिरने लगता है। कैसा भयङ्कर दृश्य है।

—:०:—

युवक अचेत हो गया। पाप की जलती हुई भट्ठी में गिरने को ही था कि इड़े मधुर स्वर में नीचे का श्लोक उसके करण-गोचर हुआ—

असार संसार पयोऽब्धि मध्ये निमज्जता सद्भिरुदार वृत्तैः। महात्मभि संगति देव साध्या नान्यस्तदुत्तार विधावुपायः।

आंखे खुलगईं। आगे एक दिव्य मूर्त्ति दिखाई दी। बाल सारे श्वेत हैं' अस्सी वर्ष से कमआयु नहीं, परन्तु चेहरे पर एक झुई नहीं; शरीर रक्त-मय लाल है परन्तु मुख से शान्ति का श्रोत बहरहा है। बांह बढ़ा कर भट्ठी के ऊपर से युवक को अलग कर लेते हैं—"पुत्र ! शान्ति स्वरूप के राज में तू क्यों व्याकुल है ? अमृत के श्रोत की सृष्टि में क्यों मौत की भट्ठी में जा रहा है ?" युवक उस दिव्य मूर्त्ति के पीछे होलेता है और एक आनन्द भवन में पहुंच कर बहुत से सन्तों का सह वास करता है। दूसरे ही दिन आश्चर्य से देखता है कि जहां कुसंङ्ग में दिनों-दिन वह नीचे को गिर रहा था वहां सत्सङ्ग के प्रभाव से वह बिना पर के ही ऊपर उठ रहा है। आज और कल और परसों और—चित्र ही बदल चला है। ठीक है—

सठ सुधरहिं सत संगत पाई।
पारस परसि कुधातु सोहाई॥

—:०:—

सत्सङ्ग की महिमा कौन वर्णन कर सक्ता है ! इस के बिना ब्रह्मप्राप्ति का कोई साधन नहीं। संसार रूपी भवसागर के पार उतारने के लिए सत्सङ्ग नावका है। सत्सङ्ग के बिना विवेक नहीं होता और विवेक के बिना मनुष्य पापों और व्यसनों से बच नहीं सक्ता। माता विदुषी हो तो पहला उत्तम सत्सङ्ग होता है, जो बहुत से गुणों का बीज बालक के हृदय में बो देता है। फिर सदाचारी पिता का सत्सङ्ग बालक के अन्दर शुभ आचार का पौदा उगाता है, जिस की श्रेष्ट आचार्य मिलने से पूर्ण रक्षा होती है। भाग्य शील हैं वे युवक जिन्हें प्रेम-मयी माता को गोद का सहवास मिला, जिन्हें धर्मात्मा, सदाचारी पिता से सहायता मिली और जिन्हें सावित्री के गर्भ में प्रवेश करा के निःस्वार्थ तत्त्व ज्ञानी आचार्य ने दूसरा जन्म दिया।

परन्तु यह सौभाग्य इस समय थोड़े ही पुरुषों को प्राप्त है। करोड़ों संसार सागर में बहे जातों के लिए सिवाय सत्सङ्ग के और सहारा नहीं।

—:०:—

आज से तीस वर्ष पहले सत्सङ्ग सभाओं का कुछ पता नहीं लगता था। वह विज्ञापनों का युग न था। इसी लिए जिज्ञासु को प्रलोभनों से बच कर सत्संग करने के योग्य सज्जनों की तलाश करनी पड़ीती थी। इस तलाश में जितना कष्ट होता था, उतना ही फल भी स्वादिष्ठ और स्वच्छ होता था। आज सत्संग बड़ा सुलभ है। बड़े नगरों में तो शाम को सैर करने जाते हुए बीसियों सभाओं के नोटिस मिलते हैं। युवक इच्छानूकूल जिस में चाहें चले जाते हैं। आज कल सत्संग सुलभ है। जितना ही सुलभ है उतना ही अपमानित भी है।

हे सभाओं के संचाल को ! तुम्हारा अधिकार बड़ा उच्च है और इसी लिए कर्त्तव्य भी बड़ा कठिन और उत्कृष्ट है। लाखों बालकों तथा युवकों के जीवन तुम्हारे आश्रित हैं। क्या तुम उन के लिये अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करने का यत्न न करोगे ?

—:०:०:—

सद्धर्म-प्रचारक।

मृतकश्राद्ध विषय पर विचार।

वैदिक वर्ण व्यवस्था विषय पर जो विचार गुरुकुल के गत वार्षिकोत्सव पर हुआ था उसका ठीक वृत्तान्त आज के अङ्क में समाप्त होता है।

इस वृत्तान्त में, आर्य्यसमाज की ओर से जो कुछ भी उस समय कहा गया था, उतना ही दिया गया है; परन्तु वर्ण-व्यवस्था विषय की पूर्ति के लिए लिखा और भी जासक्ता है और प्रमाणों का संग्रह भी अधिक किया जासक्ता है। यदि थोक ५०० लघुपुस्तकों के ख़रीदार पत्र भेजदें तो पुस्तक गुरुकुल की ओर से छपवाई जायगी। मूल्य उस लघुपुस्तक का दो आने प्रतिपुस्तक से अधिक न होगा।

यह शास्त्रार्थ तो समाप्त हुआ, परन्तु ऋषिकुल ब्रह्मचारी आश्रम का वार्षिकोत्सव होने वाला है, उस समय के लिए निम्नलिखित शास्त्रार्थ का निमन्त्रण सद्धर्मप्रचारक में छपने के लिए आया है:—

"श्री गंगादशमी, निर्जलाएकादशी के पवित्र अवसर पर ज्वेष्ठ शु० ११, १२ चन्द्र, भौमवार ता० १२, १३ जून को मायापुर के समीप "श्री गुरुमण्डलाश्रम" स्थान में हरिद्वार की विद्वत्समिति का महाधिवेशन बड़े समारोह से होगा। ऋषिकुल के वार्षिकोत्सव पर पधारे हुए विद्वान्, महोपदेशक महानुभाव सब ही इस में सम्मिलित होंगे। जिनके विद्या और धर्म के महत्त्व पर विविध व्याख्यान सुन कर जनता को आनन्द लाभ का सुयोग प्राप्त होगा। विशेषता यह है कि इस अवसर पर विद्वत्समिति के योग्य सदस्य विद्वान् पिण्डपितृयज्ञ [श्राद्ध] की वैदिकता को युक्ति, प्रमाण पूर्वक समर्थन करेंगे, और जो कोई आर्यसमाजी आदि विद्वान् इस विषय में विप्रतिपन्न हों, उनको उक्त दिवसों में प्रातः ८ बजे से १० बजे तक खुले शास्त्रार्थ का समय दिया जायगा। विद्वत्समिति के सभ्य काङ्गड़ी गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के समय 'वर्णव्यवस्था' पर विचार करने वहां गए थे। अतः आशा की जाती है कि गुरुकुल के सुयोग्य विद्वान् भी प्रेम पूर्वक शास्त्रीय विचार करने को इस अवसर पर पधारेंगे। यह शास्त्रार्थ बड़े महत्त्व का होगा। संपूर्ण धर्म और विद्या के प्रेमी सज्जनों को निमन्त्रित किया जाता है कि वे ऐसे सु अवसर पर पधार कर अवश्य लाभ उठावें।

ह० विनीतस्य
ह० विश्वनाथ वेद पाठिनः
मन्त्री विद्वत्समिति हरिद्वार

—:o:—

बड़ी प्रसन्नता की बात है कि पौराणिक धर्म सभा के सभ्य "पिण्डपितृयज्ञ की वैदिकता" सिद्ध करने को उद्यत हुए हैं। परन्तु आर्य्यसमाज तथा धर्म सभा का पारस्परिक विचार "श्राद्ध" विषय पर अब तक जिस नाम से होता रहा है वही नाम विवादास्पद विषय पर वहां भी रहना चाहिए। विवादास्पद विषय यह है कि मरे हुए पुरुषों के नाम पर ब्राह्मणों को खिलाया, पहिनाया हुआ अन्न वस्त्र उन बड़ों को पहुंचना युक्ति तथा प्रमाण से समर्थित है वा नहीं। आर्य्यसमाज का पक्ष यह है कि मरों के नाम पर खिलाया पिलाया उन्हें नहीं पहुंचता और धर्म सभा का पक्ष इस से विरुद्ध है। गुरुकुल की ओर से बड़ी प्रसन्नता से विद्वन् मण्डली विचार के लिए १२ जून को ८ से १० बजे तक विचार करने के लिए पहुंचेगी यदि निम्नलिखित नियम स्वीकार करके म० विनाय वेद पाठी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता के पास शीघ्र भेजदें:—

(१) धर्म सभा के सभ्य प्रथम युक्ति तथा वेद प्रमाण द्वारा यह पक्ष स्थापन करेंगे कि ब्राह्मणों को खिलाया पिलाया हुआ मृतकों को पहुंचता है। आर्य्यसमाज की ओर से इसका उत्तर दिया जायगा। दोनों वक्ता पन्द्रह २ मिनिट लेंगे। फिर उभय पक्ष की ओर से दस दस मिनिट तक वक्तृता होगी। अन्तिम उत्तर आर्य्यसमाज की ओर से दिया जायगा, क्योंकि आरम्भ धर्म सभा की ओर से होगा।

[२] सामयिक सभापति का अधिकार केवल वक्ताओं को समय और सभ्यता की सीमा में रखना होगा। अन्य प्रकार वह किसी पक्ष को सहायता न देंगे।

(३) उभय पक्ष को अधिकार होगा कि अपने नोटों के अनुसार शास्त्रार्थ का वृत्तान्त छपवा कर मुद्रित करादें।

शास्त्रार्थ बड़ा मनोरञ्जक होगा, इस लिए आशा है कि आर्य्यपुरुष भी इस अवसर पर पधारेंगे।

आर्यप्रतिनिधि सभा का अधिवेशन

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन निर्विघ्न समाप्त होगया। सारे वर्ष के कार्य-क्रम तथा प्रबन्ध का निर्भर इसी अधिवेशन पर रहता है, इस लिए आर्यजनता की आंख इस पर लगी रहती है। इस वर्ष यह अधिवेशन १५, १६ ज्येष्ठ [२७,२८ मई] को हुआ। सभा तथा गुरुकुल के वार्षिकवृत्तान्त पढ़े जाने के पश्चात् अन्तरंग सभा के अधिकारियों तथा सभासदों का चुनाव निम्नप्रकार हुआ:—[१] श्री रामकृष्ण जी प्रधान (२) श्रीकृष्ण बी०ए०, मन्त्री [३] श्री रोशनलाल जी, बी०ए० [४] श्री केदारनाथ जी [५] श्री राय अक्षयलाल जी—तीन उपप्रधान [६] श्री विश्वम्भरनाथ जी बी०ए०, कोषाध्यक्ष [७] श्री जगन्नाथ निरुक्तरत्न, पुस्तकाध्यक्ष [८] श्री बालकृष्ण एम०ए० [९] श्री मुन्शीराम जी [१०] श्री रामदेव बी०ए० [११] श्री वज़ीरचन्द्र बी०ए० [१२] श्री उमरावसिंह जी (१३) श्री गंगाराम जी, शिमला [१४] श्री रामलाल बी०ए० [१५] श्री गंगाराम बी०ए० [१६] श्री गुरुदित्ता मल बी०ए० [१७] श्री इन्द्रवेदालंकार [१८] श्री विष्णुदत्त बी०ए० [१९] श्री गोवर्धन जी बी०ए० [२०] पं० निहालचन्द्र जी (२२) श्री मास्टर दुर्गाप्रसाद जी।

चुनाव के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साधारण बजट पेश हुआ जो कुछ परिवर्तनों के साथ स्वीकृत हुआ। व्यय की मोटी रकमें नीचे दी जाती हैं:—[१] उपदेशकों का वेतन १२,०००) उपदेशकों का मार्ग व्यय ३५००) कार्यालय ३५००) छात्रवृत्तियां ६००) ट्रैक्ट विभाग ३००) आर्य डिफेन्सलिग ५००) आर्यकुमारसभा ४००) वैदिक पुस्तकालय २१३५) शुद्धि ५३५) ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र, बंगाला में २५००) इत्यादि। सविस्तार बजट ठीक होने पर छप जायगा।

इनके अतिरिक्त गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा शास्त्रगुरुकुल कुरुक्षेत्र के बजट भी पास हुए जो नीचे दिए जाते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by Google

गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी

के

आय व्यय का अनुमान

मद्धे सम्वत् १९७३ विक्रमी

अर्थात् चैत्र १९७२ से फाल्गुण १९७३ तक

जो श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के साधारण अधिवेशन तिथि १५ तथा १६ ज्येष्ठ १९७३ में स्वीकार हुआ ।

अनुमान आय		अनुमान व्यय	
रण्डार	११००	भण्डार	४३५००
ाशाला	२९००	गोशाला	४०००
श्व तथा वृषभशाला	३३००	अश्व तथा वृषभशाला	३०००
दिक मैगज़ीन ...	३१००	वैदिक मैगज़ीन ...	४०००
र्षिकोत्सव ...	३००	वार्षिकोत्सव ...	३०००
ायाद्य आय ...	३०००	दायाद्य व्यय ...	३६०००
देशक महाविद्यालय	२८००	उपदेशक महाविद्यालय	२८००
ा	१६०	उषा	४००
कित्सालय ...	२००	चिकित्सालय ...	२९००
ाज	५०००	शिक्षा	३६६००
क	२५०००	कार्य्यालय ...	५५००
ानिधि ...	७०२४०	स्वास्थरक्षा ...	९००
ह भाड़ा ...	६००	उपकरण सुधरवाई	२५०
ान्य शाखा गुरुकुल	५००	मन्दिर तथा मार्ग सुधरवाई ...	२५००
		गुरुकुल प्रचार तथा भिक्षा मंडली	२०००
		वार्षिक वृत्तान्त मुदरण	१०००
		गुरुकुल रक्षा ...	१०००
		सभा का कर ...	१०००
		उपकरण वनवाई ...	२५०
योग	११८२००	योग	११८२००

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के व्यय का अनुमान मद्धे १९७३

शीर्षक		अनुमान
भंडार		
७० ब्रह्मचारी का भोजन वस्त्र मासिक दर से	८४००)	
अतिथि १ प्रतिदिन १० मासिक	१२०)	९०००)
हवन सामग्री रोशनी तथा फुटकर	४८०)	
गोशाला		
गौ तथा बैल २॥) मासिक की दर से प्रति मास प्रति गौ ६ गास का ३० गौ बैलों का	४५०)	
वेतन प्रबन्धकर्त्ता तथा भृत्य	३००)	७७५)
फुटकर रस्से आदि	२५)	
वाटिका		
माली १ दर १२) मासिक	१४४)	
बेलदार २ दर १०) मासिक	२४०)	
बैल जोड़ी १ दर १५) मासिक	१८०)	६००)
बीज फुटकर आदि	३६)	
वार्षिकोत्सव		३००)
दायाद्यव्यय		
सरकारी कर	२००)	
भृत्य एक दर ६) मासिक	७२)	
खर्च मुकद्दमा जायदाद हिबा करनाल वाली	८००)	
फुटकर २८)		११००)
शिक्षा		
मु० आ० दर ६०) मासिक	७२०)	
संस्कृताध्यापक दर ५५) मासिक	६६०)	
इंगलिशमास्टर २५) मासिक	३००)	
ग० अ० २५) मासिक	३००)	२५००)
आर्य-भाषा अध्यापक दर २५) मासिक	३००)	
आलेख्य सामग्री तथा पुस्तक स्याही आदि	२२०)	
चिकित्सालय		
चिकित्सक एक दर २७) मासिक	३२४)	
भृत्य एक दर १०) मासिक	१२०)	
औषधि	१८०)	
भंगी एक दर १०) मासिक	१२०)	८००)
यंत्रादि फुटकर	५६)	
कार्यालय		
लेखक एक दर १५) मासिक	१८०)	
स्टेशनरी आदि	७०)	२५०)
मंदिर बनवाई		
गोशाला		
स्नानगृह	१०००)	
अध्यापक अधिष्ठाता आदि के रहने के स्थान	१०००)	
	२०००)	४०००)
उपकरण क्रिय		
तख़्त मेज़ कुर्सी आदि उपकरण सुधरवाई		१५०)
मंदिर सुधरवाई		२५)
टीप व वार्षिक मरम्मत		
सभा का दशांश		४००)
वार्षिक वृतान्त		३४५)
भूमि क्रय		...
गुरुकुल प्रचार		...
		...
	योग	२०२४५)

वैदिक सिद्धान्त का विजय

वर्णव्यवस्था पर शास्त्रार्थ

(गताङ्क से आगे)

पं० इन्द्र जी—तीसरीवार

(१) पण्डित जी का विशेष बल पुरुषसूक्त के मन्त्र पर था। इस लिये उसी पर मुझे अधिक कहना पड़ा है। अब पण्डित जी 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' इत्यादि में तटस्थ लक्षण मानते हैं। इस में दृष्टान्त देते हैं, 'जन्माद्यस्य यतः' इस वेदान्त सूत्र का। जैसे 'अथातोब्रह्म जिज्ञासा' यह प्रकरण उठा कर अगले सूत्र में ब्रह्म का तटस्थलक्षण किया है—इसी प्रकार इस मन्त्र में ही आप हमें स्वरूप-लक्षण न मानने की आज्ञा देते हैं। इस आज्ञा के मानने में हमें दो आपत्तियां हैं। किसी वाक्य का भी अभिधेय अर्थ मुख्य होता है और उसका बाध होने पर ही लक्ष्य अर्थ लिया जाता है। 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' में स्वरूप लक्षण स्पष्ट और अभिधेय है। उस का बाध नहीं होता। अतः उस के अर्थों को पलट कर तटस्थ लक्षण बनाने का किसी को अधिकार नहीं। दूसरी आपत्ति यह है कि आप का दिया हुआ दृष्टान्त विषम दृष्टान्त है। 'जन्माद्यस्य यतः' में यतः यद् पंचम्यन्त विद्यमान है, जो स्पष्ट रीति से तटस्थ लक्षण करता है, किन्तु इस मन्त्र में 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' के साथ सम्बद्ध होने वाला कोई ऐसा पद नहीं है।

(२) मेरे दिये हुए ब्राह्मण के प्रमाण को आप विचित्र रीति से अपने पक्ष में लेजाना चाहते हैं। संशितोभवति—इतनी लेकर ही अर्थ करने से कुछ भी सिद्ध नहीं हो सकता—जब तक 'अविच्छिन्नो भवति' इन शब्दों की व्याख्या नहीं की जाती। 'अविच्छिन्नो भवति' ये शब्द स्पष्ट ही वर्ण का गुण-कर्माश्रित होना प्रतिपादित करते हैं। इस प्रकरण में भाषण करते हुए पंडित जी बड़ी स्पष्टता से मान गये हैं कि वेदाध्ययन और व्रतादि भी ब्राह्मणत्व के प्रयोजक होते हैं।

(३) चिरकाल से वर्णव्यवस्था जन्मानुसार ही प्रचलित है, इस युक्ति को लेते हुए मैंने पण्डित जी का ध्यान ब्रह्म-पुराण तथा मनु के वाक्यों की ओर खींचते हुए बताया था कि उन प्रमाणों से तो गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था ही चिरकाल से प्रचलित प्रतीत होती है उसका पण्डित जी की ओर से कोई उत्तर नहीं मिला। उसका केवल इतना उत्तर मिला है कि वह प्रशंसा है। यह कोई उत्तर नहीं है। प्रश्न यह है कि *पुराणों में ब्राह्मणों का अपना धर्म न पालने के कारण, जो शूद्रादि होजाना लिखा है, वह ठीक है या नहीं?* यदि ठीक है तो हमें कोई विवाद नहीं—पंडित जी ने हमारा पक्ष मान लिया और यदि सत्य नहीं है, तो पण्डित जी साहस-पूर्वक कहदें कि पुराणों के अमुक २ भाग सत्य नहीं हैं। झगड़ा तय हो जायगा। पण्डित जी इन प्रमाणों को टाल नहीं सकते। गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था ही प्रचलित थी, इस के लिए और भी बहुत से प्रमाण हैं, जिनमें से कुछ आप लोगों के सन्मुख उपस्थित करता हूं।

न विशेषोऽस्ति वर्णानां
सर्वम्ब्राह्ममिदं जगत्
ब्रह्मणापूर्वसृष्टं हि
कर्म्मभिर्वर्णतांगतम्।
कामभोगप्रियास्तीक्ष्णाः
क्रोधनाः प्रियसाहसाः।
त्यक्तस्वधर्मा रक्ताङ्गाः
ते द्विजाः क्षत्रतां गता।
गोभ्यो वृत्तिं समास्थाय
पीताः कृष्योपजीविनः।
स्वधर्मान्नानुतिष्ठन्ति
ते द्विजा वैश्यतां गताः।
हिंसानृतप्रियालुब्धाः
सर्वकर्मोपजीविनः।
कृष्णा शौचपरिभ्रष्टाः
ते द्विजा शूद्रतां गताः।
इत्येते कर्मभिर्व्यस्ता
द्विजावर्णान्तरं गताः॥
महाभारत। शान्ति। १८८।

श्लोकों का तात्पर्य यह है कि पहले जो लोग ब्राह्मण थे, उनमें से ही जो लोग साहसप्रिय हो गये और ब्राह्मणकर्म छोड़ बैठे वे क्षत्रिय हो गये। जो लोग गोपालन और कृषि आदि कर्म करने लगे तथा ब्राह्मण के कामों से विमुख हो गये। इसी प्रकार निन्दित कर्मों के करने से ब्राह्मण लोग ही शूद्रत्व को प्राप्त हो गये।

भगवद्गीता में भगवान् कृष्ण कहते हैं—

चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं
गुणकर्मविभागशः।

गुण तथा कर्म के विभागानुसार ही मैंने अपने राष्ट्र में चातुर्वर्ण्य स्थापित किया है।

महाभारत के वन पर्व में निम्न लिखित श्लोक है—

न कुलेन न जात्यावा
क्रियाभिर्ब्राह्मणो भवेत्।
चाण्डालोऽपि हि वृत्तिस्थो
ब्राह्मणः स युधिष्ठिर!

कुल या जाति से कोई ब्राह्मण नहीं है—क्रिया से ही ब्राह्मण होता है। हे युधिष्ठिर! धर्म में लगा हुआ चाण्डाल भी ब्राह्मण हो जाता है।

(४) आप लोकप्रथा को प्रमाण मानते हैं तो मैं आपके सम्मुख आपकी लोक प्रथा के ही कुछ नमूने धर देता हूं।

भविष्य पुराण में लिखा है—

गणिका गर्भसम्भूतो-
वसिष्ठश्चमहामुनिः
तपसा ब्राह्मणो जातः
संस्कारस्तत्र कारणम्।

महाभारत में भी यह श्लोक थोड़े से भेद से है।

मनु में लिखा है—'ब्राह्मण्यं चैव गाधिजः'

महाभारत के वन पर्व में लिखा है—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

जातो व्यासस्तु कैवर्त्याः
श्वपाक्यास्तपराशरः
बहवोऽन्येपि विप्रत्वं
प्राप्ता ये पूर्व मद्विजाः ।

वसिष्ठ वेश्या के पुत्र थे। व्यास मुनि धींवरी की सन्तान थे-और पराशर श्वपाकी के। फिर भी वे ब्राह्मण हो गये। क्या ये दृष्टान्त सिद्ध नहीं करते कि प्राचीन काल में वर्णव्यवस्था गुण कर्मानुसार ही प्रचलित थी।

मैं पहले भी स्मृति तथा पुराण के प्रमाण दे चुका हूं और अब फिर देता हूं। पहले पण्डित जी ने मेरे प्रमाणों का कुछ उत्तर नहीं दिया-अब आशा है देंगे। ये प्रमाण टालने से नहीं टल सकते। जो वेद मन्त्र मैं दे चुका हूं उन्हें भी पण्डित जी टाल ही रहे हैं-आशा है कि उनका भी उत्तर मिलेगा।

पं० गिरधर शर्मा जी (चौथीवार)

पुरुष सूक्त का पूरा उत्तर होजाने पर भी आप व्यर्थ बार २ उस ही बात का उल्लेख [?] करते हैं। 'यतः' पद नहीं है तो क्या हुवा ? 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत' यह तो चौथे पाद में स्पष्ट लिखा है, और आगे 'नाभ्या आसीदन्तरिक्षम्' इत्यादि मन्त्रों में सब पञ्चमी ही पंचमी विभक्ति हैं, इस सब प्रकरण को देखते हुवे 'मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुआ' इसके अतिरिक्त और क्या अर्थ होसकता है ?

'मुख क्या है' इस प्रश्न का उत्तर तटस्थ लक्षण द्वारा होगया— यह मैं कई बार समझा चुका हूं, 'जिससे ब्राह्मण उत्पन्न हुवे वह पुरुष (ईश्वर) का मुख है' यह स्पष्ट तो उत्तर है। 'अहमेवेदम्' मन्त्र का आपका कहा हुआ अर्थ मानकर भी मैं उत्तर दे चुका हूं—उस पर आपने कुछ नहीं कहा। 'कारुरहम्' मन्त्र पर आप शंका उठाते हैं कि मनुस्मृति में चिकित्सक होना निषिद्ध है, किन्तु इसका वर्णव्यवस्था के प्रकृत विषय से क्या सम्बन्ध हुआ? मनुस्मृति में चिकित्सा क्यों निषिद्ध है, और मन्त्र में वैद्य होना क्यों लिखा है-यह एक बिलकुल भिन्न विषय है, तर्क-व्यवस्था से इस का कुछ भी सम्बन्ध नहीं।

प्रमाण के सम्बन्ध में जो पत्रों में वाद चलता था, वह अब सामने आया। हमारी धारणा थी कि आर्यसमाज वेद के प्रचार के लिए है, वेद को ही मुख्य प्रमाण मानता है, और यह गुरुकुल वेद प्रचारार्थ ही प्रधानतया उद्योग करता है। यहां बड़े २ वैदिक विद्वान् अवश्य होंगे। इस ही लिए वेद के आधार पर ही हम लोग आज का विचार चाहते थे। मैं बराबर वेद के ही प्रमाण दे रहा हूं, किन्तु आप वेदालंकार होते हुवे भी क्यों मुझे स्मृति और पुराणों की तरफ घसीटते हैं। सब बातों का उत्तर देने का समय कहां है? गोपथ ब्राह्मण में 'अविप्लवो भवति' पर फिर आपने व्यर्थ ही शंका की है, मैं पूर्व ही कह चुका हूं कि 'व्रत' अर्थात् कर्म से ब्राह्मण प्रशंसित होता है, और उसकी धन, सन्तति विच्छिन्न नहीं होती। अच्छे कर्म करेगा, उसका कुल अविच्छिन्न रहेगा—ठीक ही है ? मैं अपने पक्ष में ब्राह्मण के कई एक प्रमाण दे चुका हूं—तिस पर आपने कुछ नहीं कहा है। और सुनिये शतपथ कांड ३ अध्याय १ ब्राह्मण में लिखा है कि शूद्र यज्ञशाला में भी न जाने पावे, आगे यहां तक निषेध है कि यजमान शूद्र से कभी संभाषण न करे। आवश्यकता आपड़े तो ब्राह्मण आदि के द्वारा उसे कहलावे। और शतपथ कांड ४ अध्याय ४ ब्राह्मण ४ में लिखा है कि 'तस्मान्न ब्राह्मणः सर्वस्यैवक्षत्रियस्य पुरोधां कामयेत' 'नो एव क्षत्रियः सर्वस्मिन ब्राह्मणं पुरोदधीत' अर्थात् ब्राह्मण चाहे जिस क्षत्रिय का पुरोहित न बने, और क्षत्रिय भी चाहे जिस ब्राह्मण को पुरोहित न बनावे, किन्तु योग्य ब्राह्मण ढूंढे। इस से सिद्ध है कि अयोग्य भी ब्राह्मण और क्षत्रिय हो सकते हैं, जो कि गुण, कर्म से वर्ण मानने पर असंभव है। और तारुक्ष्य ब्राह्मण के छान्दोग्य उपनिषत् में तो स्पष्ट लिखा है कि 'तद्य इह रमणीयचरणा अभ्याशो ह यत्ते रमणीयां योनिमापद्येरन् ब्राह्मणयोनिं वा क्षत्रिय योनिं वा, वैश्य योनिं वा। अथ य इह कपूयचरणा अभ्याशो ह यत्ते कपूयांयोनिमापद्येरन् श्वयोनिं वा शूकर योनिं वा चाण्डाल योनिं वा (छान्दोग्यउप० प्रपा० ५ ख० १० क० ७) अर्थात् जो अच्छे आचरण करते हैं, वे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि की अच्छी योनि प्राप्त करते हैं, और बुरे आचरण वाले शूकर, कुक्कर—चाण्डाल आदि की बुरी योनि में जाते हैं। यहाँ पूर्व जन्म के कर्मानुसार ही शूकर, कुक्कर आदि योनियों की तरह ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि योनि पाना भी लिखा है। इससे ब्राह्मण, क्षत्रिय आदि का योनि सिद्ध होना स्पष्ट हो जाता है। पं० श्री आर्यमुनि जी जो इस सभा में विराजमान हैं, उन्होंने भी छान्दोग्य के भाष्य में इसका यही अर्थ स्पष्ट लिखा है।

'यस्यकायगतं ब्रह्म' इत्यादि वचन के द्वारा मनु ने मद्यपान से ब्राह्मण की पतितता दिखलाते हुये उस कर्म का निषेध किया है, वर्ण पलटना या छोटे वर्ण से बड़ा वर्ण बन जाना मनु ने कहीं नहीं लिखा। ब्राह्मणपुराण भी शूद्र कर्म करने का निषेध करता हुआ अपने अपने कर्म में दृढ़ रहने की आज्ञा देता है। स्मृतियां तो सब जन्म सिद्ध वर्णव्यवस्था के ही अनुकूल हैं। न केवल मनु आदि स्मृति, ब्रह्मसूत्र भी जिनके आधार पर हमारे संस्कार होते हैं, वे भी जन्म से ही वर्ण मानते हैं। उन सूत्रों के आधार पर ही श्रीस्वामी दयानन्द जी ने भी संस्कार विधि में लिखा है कि 'ब्राह्मण का वसन्त में उपनयन करे, क्षत्रिय का ग्रीष्म में' इत्यादि। भला पचीसवें वर्ष में गुण कर्म देखकर जब वर्ण कायम करना ठहरा, तो उपनयन काल में वह ब्राह्मण या क्षत्रिय कहाँ से हो गया ? उपनयन ही नहीं, नामकरण में भी श्री स्वामी जी लिखते हैं—ब्राह्मण का नाम शर्मान्त हो, क्षत्रिय का ऐसा इत्यादि। बालक होते ही ग्यारहवें दिन नाम रक्खा जाता है, उस समय गुण, कर्म कैसे समझ लिये गये ! यहां सिवाय

त्पत्ति के और कोई बात नहीं कही जा सकती। आप पुराणों के लिए कहते हैं कि उन में दूसरे वर्णों का ब्राह्मण होना लिखा है, मैं कहता हूं कि पुराण में तप और योग की अलौकिक शक्ति मानी जाती है, उस शक्ति के प्रताप से असंभव से भी संभव हो सकता है। पुराणों में शिला का चेतन होजाना तथा पुरुष का स्त्री और स्त्री का पुरुष हो जाना भी लिखा है।

'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टम्' वाक्य का अर्थ स्पष्ट है कि चारों वर्ण मैंने ही (ईश्वर ने) बनाये, और उनके गुण और अर्थ का विभाग भी मैंने ही किया। इस से आप अपना मत कैसे सिद्ध कर सकते हैं? क्या गुण, कर्म पद देख कर ही आपने श्लोक बोल दिया? महाभारत के श्लोक का उत्तर समय समाप्त हो जाने से नहीं दे सका हूं—अगली बार दूंगा।

पं० इन्द्रजी—चौथीबार

(१) सज्जनो! पं० गिरधर शर्मा जी इस बात पर बड़ा शोक प्रकाशित करते हैं कि मैं पुराण को तथा स्मृतियों को बीच में घसीट लाया हूं। इस के लिए मैं उत्तरदाता नहीं हूं। प्रारम्भ में पं० जी ने कहा था कि जन्मानुसार वर्णव्यवस्था प्रारम्भ से प्रचलित है। उस के उत्तर में मैंने दिखाया है, कि और तो क्या महाभारत में स्मृतियों में तथा पुराणों में भी गुण-कर्मानुसार वर्णव्यवस्था का ही विधान है। इस पर आप इतने असन्तुष्ट क्यों होते हैं?

(२) पुराणों में गुणकर्मानुसार वर्णव्यवस्था मिलती है। इसका उत्तर आप यह देते हैं कि पुराणों में तो पत्थर से आदमी बनना भी लिखा है। पुराणों में एक असम्भव या असंगत बात है इस से क्या आप यह सिद्ध करना चाहते हैं, कि उन में सभी असम्भव या असंगत बातें लिखी हुई हैं। तब तो मेरा प्रश्न स्पष्ट ही हो जाता है। पुराणों में गुण कर्म से वर्णव्यवस्था का तथा वर्ण-परिवर्तन का जो विधान है, वह माननीय है या नहीं? यदि है तो आप ने हमारा पक्ष मान लिया। यदि नहीं तब हमें वक्तव्य नहीं आप केवल स्पष्टतया इतना कहदें।

(३) पुरुषसूक्त के मन्त्र के विषय में आप 'तटस्थलक्षण' मान कर छुटकारा पाना चाहते हैं। किन्तु इस प्रकार छुटकारा पाना कठिन है। 'तटस्थलक्षण' तब माना जाय, जब पहले 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' इस वाक्य का लाक्षणिक अर्थ मानने में कोई प्रमाण हो। मुख्यार्थ-बाध के बिना लाक्षणिक अर्थ नहीं लिया जा सकता। तब तटस्थलक्षण कैसे संगत हो सकता है। आप एक 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत' के आधार पर सारे मन्त्र का अर्थ बदलना चाहते हैं। यहां 'अजायत' का जो तात्पर्य है, वह मैं पहले बतला चुका हूं। साथ ही यह भी विचारिए कि पहले तीन पदों के बनाने से चौथे पद का लाक्षणिक होगा या एक पद के मूल से समझे हुए अर्थ के आधार पर तीन पदों का अर्थ बदल जायगा।

(४) आपने जन्मानुसार वर्णव्यवस्था सिद्ध करने के लिए जो वेदमन्त्र दिए हैं, उनसे ब्राह्मण का मुख से होना दिखलाया है। यदि क्षणभर के लिए मान भी लें कि यह ठीक है तो इससे यह कैसे सिद्ध हुआ कि ब्राह्मण का पुत्र ही ब्राह्मण होता है दूसरा नहीं। वस्तुतः इन मन्त्रों में मुख से ब्राह्मण की उत्पत्ति का तात्पर्य यही है कि 'मुखस्थ' गुणों के कारण ही ब्राह्मण में ब्राह्मणत्व आता है। 'मुख से ब्राह्मण' उत्पन्न हुआ है, यह अर्थ प्रत्यक्ष अनुमान तथा अन्य वेद मन्त्रों आदि से बाधित है। यदि परमात्मा के मुख से आप ब्राह्मण की उत्पत्ति मानते हैं तो कृपया बताइये कि परमात्मा के कौन से शरीर से उस मुख का सम्बन्ध है। दस अवतारों में से (यहां पर मुख्याधिष्ठाता जी ने कहा कि २४ अवतार हैं) या चौबीस अवतारों में से कौन से अवतार के मुख से ब्राह्मण उत्पन्न हुए? पहले तो ईश्वर के मुख या पैर हैं ही नहीं, यदि हों भी तो उन से मनुष्योत्पत्ति होना असम्भव है। इस लिए बाधित अर्थ को छोड़ कर 'मुख्य गुणों के कारण ब्राह्मण होता है' ऐसा तात्पर्य लेना ही ठीक है।

(५) आप संस्कार-विधि आदि की ओर निर्देश कर के कहते हैं कि वहां स्वामी जी ने भी ब्राह्मणादि के प्रश्नों के उपनयन की अवस्था तथा नामकरण में भेद रक्खा है। इस से सिद्ध होता है कि ऋषि दयानन्द जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानते थे। वह किस युक्ति के आधार पर? जो पुरुष अपने गुण कर्म के आधार पर ब्राह्मण या क्षत्रिय बन चुका है, उस की सन्तान के उपनयनादि की ऋतु या अवस्था में भेद होने से पौराणिक पक्ष कैसे सिद्ध हो जाता है? इस में बालक को तो ब्राह्मण या क्षत्रिय नहीं माना।

(६) हमारा यह पक्ष नहीं कि गुण-कर्म के उत्पन्न होने में माता पिता के संस्कार का कोई प्रभाव पड़ता ही नहीं। प्रभाव पड़ता है—किन्तु उस के साथ कई बातें और रहती हैं। मनुष्य के गुण-कर्म बनाने वाले तीन कारण हैं [क] माता पिता के संस्कार [ख] उस के अपने पूर्व जन्म के संस्कार [ग] तथा परिस्थिति के प्रभाव। ये तीनों कारण मनुष्य के गुण-कर्म बनाने में थोड़ा २ भाग लेते हैं।

गुण कर्म के बिना ब्राह्मण को ब्राह्मण कहना ऐसा ही है जैसा किसी रोटी पकाने वाले को महाराज कहना या किसी डाक बांटने वाले को मखौल में रायसाहिब कहना है। जैसे रसोइया महाराज नहीं और डाकिया रायसाहिब नहीं, ऐसे ही ब्राह्मण कर्मविहीन मनुष्य भी ब्राह्मण नहीं है।

[७] मैंने जो ब्राह्मण-वाक्य दिया था, उस में 'अविच्छिन्नो भवति' की आप व्याख्या करते हैं कि 'उस का कुल अविच्छिन्न' है। यहां कुल शब्द कहां से आगया है। कुल का तो यहां प्रकरण ही नहीं।

[८] माता पिता की दी हुई जाति नश्वर है, किन्तु गुरु की दी हुई जाति स्थिर होती है। मनुस्मृति में ऐसा ही विधान है:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आचार्यस्त्वस्य यां जातिं
विधिवद्वेदपारगः ।
उत्पादयति सावित्र्या
सासत्या साजराऽमरा ।

माता की दी हुई जाति नष्ट होती है, किन्तु वही जाति अजर तथा अमर होती हैं जिसे वेदज्ञ आचार्य देता है। इस से स्पष्ट ही सिद्ध होता है वास्तविक जाति वही है, जो गुण-कर्म के आधार पर, आचार्य द्वारा दी जाती है। तीन उच्चवर्ण द्विजन्मा भी इसी लिये कहाते हैं।

(९) आपने कहा है, कि ब्राह्मणों में शूद्र का यज्ञ में प्रवेश भी निषिद्ध है। आप के इस प्रकार के विचारों की वेदों से पुष्टि नहीं होती। वेदों के विचार बहुत ही उदार हैं। वेद में स्तुति देखिये।

रुचंनो धेहि ब्राह्मणेषु
रुचं राजसु नस्कृधि ।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु
मयि धेहि रुचारुचम् ॥

यह ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य तथा शूद्र की ओर से समान प्रार्थना है। सारे वर्णों को मिलकर यह प्रार्थना करनी चाहिये। कहां सब वर्णों का मिलकर वेद मन्त्र द्वारा परमात्मा से प्रर्थना करना और कहां आपका कहना कि शूद्रों को यज्ञ में जाने तक का अधिकार नहीं है। कैसा विरोध है ?

(१०) आपने शतपथ का प्रमाण दिया है, और बतलाया है कि उसमें ब्राह्मण को पुरोहित बनाने का विधान है। इससे जन्मानुसार वर्ण-व्यवस्था कहां मिलती है। यज्ञ में पुरोहित वही हो सकता है जो गुण कर्म से ब्राह्मण हो। और क्या कोई ब्राह्मण कुलोद्भव रसोइया पुरोहित बनाया जायगा ?

(११) अन्त में मेरा पं० जी से प्रश्न है कि मनुष्ययोनि कर्मयोनि है या भोग योनि ? यदि कर्मयोनि है और कर्म करने में मनुष्य स्वतन्त्र है तो फिर वह कर्मों के बल से अपने वर्ण को क्यों नहीं बदल सकता ? यदि नहीं बदल सकता तो क्या मनुष्य योनि भोगयोनि न हो जायगी ?

पं० गिरिधर शर्मा जी (पांचवी वार)

वर्णव्यवस्था को प्रचलित कहने का मेरा आशय वर्तमान में प्रचलित होने से था, मैंने प्रत्यक्ष प्रमाण की साक्षी दी थी कि वर्तमान में सर्वत्र जन्म से ही वर्ण माना जाता है। पुराण की कथा का मैंने कोई उल्लेख [?] नहीं किया था, स्मृति और पुराणों को आप ही बीच में लाये थे और अब भी बराबर उनही प्रमाणों पर ज़ोर देते हैं। वेद के प्रमाणों का आपने कोई उत्तर नहीं दिया है, और आपके सब प्रमाणों का मैं उत्तर दे चुका हूं। पुराण के सम्बन्ध में कह चुका हूं कि पुराण की कथाएं सब सत्य हैं। न केवल इतर वर्ण से ब्राह्मण या ब्राह्मण से *इतरवर्ण होजाना सत्य* है, स्त्री से पुरुष और पुरुष से स्त्री हो जाना भी सत्य है। किन्तु यह सब योग और तप की अलौकिक शक्ति से कहीं २ होता था। वर्तमान में उस शक्ति का अभाव होने से उन बातों का ज़िक्र व्यर्थ है।

पुरुष सूक्त के मन्त्र पर फिर आप वही बात कहते हैं कि एक पाद तीन पाद को कैसे खैंच ले जायगा। महाशय ! जरा विचारिये एक पाद नहीं, आगे मन्त्रों में सब प्रकरण ऐसा ही है।

'चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो
अजायत ।
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत।
नाभ्या आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः
समवर्तत।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां
अकल्पयन् ।

इन सब में पुरुष के (ईश्वर के) मन से चन्द्रमा उत्पन्न हुआ, चक्षु से सूर्य हुआ— इत्यादि उत्पत्ति ही उत्पत्ति स्पष्ट लिखी है। फिर इन सब के साथ 'ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत्' का भी ब्राह्मण मुख से उत्पन्न हुआ—यह अर्थ क्यों न होगा। तटस्थ लक्षण यहां क्यों नहीं सम्भव है—यह तो आप कुछ कहते नहीं, यों ही अपनी पहली बात को दोहरा देते हैं। आगे आप पूछते हैं कि पैर से शूद्र कैसे उत्पन्न हो गये ? और किस शरीर से हुवे ? वह कौनसा अवतार था ? इस पर विवश मुझे फिर कहना पड़ता है कि यह सब 'अर्थान्तर' रूप निग्रहस्थान नहीं तो क्या है ? वर्णव्यवस्था के विषय में आप सृष्टि और अवतारों की बात पूछते हैं—७ मिनिट मुझे बोलने का समय मिलता है, जिसमें मैं सृष्टि प्रक्रिया भी बता दूं, ईश्वर स्वरूप भी कहूं और पुराणों की सब कथाओं की व्यवस्था भी करदूं—भला यह भी कोई न्याय है ? श्रुति आपको और मुझ को दोनों को मान्य है, श्रुति में 'पद्भ्यां शूद्रो अजायत' लिखा है, फिर उस प्रकरणान्तर की शङ्का यहां क्यों छेड़ी जाय ? श्रुति को जब आप स्वतः प्रमाण मानते हैं, तो फिर उसमें शुष्क तर्क को क्यों आश्रय देते हैं कि 'पैर से कैसे पैदा हुवे' श्रुति ने कहा है—इससे मान लीजिये। अवतार तो पुराण शास्त्रों में अनन्त मानते हैं, किन्तु यहां तो अवतार का कोई प्रसङ्ग नहीं, आगे चल कर आप ने ३ कारण मान लिये हैं, पूर्व जन्म के संस्कार, माता पिता, और शिक्षा आदि। भला फिर सनातन-धर्मी और क्या कहते हैं ? ईश्वर आपका भला करे कि आपने प्रतिवादी होते हुवे भी इस सत्य तत्त्व को स्पष्ट अक्षरों में मान लिया। यह तो वही बात प्रत्यक्ष होगई कि—

जादू वो जो सिर पर चढ़ कर बोले

आप के ही मुख से फैसला हो गया। गोपथ ब्राह्मण के वचन में 'अविच्छिन्न' पर फिर आपने प्रश्न उठाया है कि 'कुल अविच्छिन्न होता है,' इसमें कुल कहां से आ गया। मैं कहता हूं कि 'विच्छिन्न' का मुख्य अर्थ तो टूटना है, ब्राह्मण टूटता नहीं, इसका आप और क्या अर्थ करेंगे ?

यही मानना युक्ति युक्त होगा कि उसका सन्तान नहीं टूटता। मनु का वचन आप ने फिर कहा, किन्तु आश्चर्य है कि आप न जाने उस से क्या सिद्ध करना चाहते हैं। वह आचार्य की प्रशंसा का प्रकरण है कि आचार्य, माता पिता से उत्कृष्ट है। क्योंकि माता, पिता जो जन्म देते हैं, वह उनका पैदा किया हुआ हाड मांस का पुतला विनश्वर है, शीघ्र नष्ट हो जाता है। किन्तु आचार्य का दिया हुआ विद्या रूप जन्म अजर अमर है, अर्थात उसके द्वारा जो यशः या धर्मादि-रूप शरीर प्राप्त होता है, वह शीघ्र नष्ट नहीं होता। इस से गुण कर्म से वर्ण होने में क्या सहायता मिली? आचार्य के समीप ब्राह्मण आदि द्विजों के पुत्र ही जा सकते हैं—यह इस ही अध्याय के आरम्भ में मनुस्मृति में ही स्पष्ट है। मेरे ब्राह्मण और स्मृति के प्रमाणों पर तो आप ने कुछ कहा ही नहीं है। अब आप कहते हैं—वेद में संकुचित विचार नहीं है, वहां सब के लिये समान प्रार्थना है सो मैं कब कहता हूं कि वेद में संकुचित विचार हैं। जाति भेद संकुचित विचार नहीं कहा जा सकता। समान प्रार्थना होने पर भी ब्राह्मणादि भेद तो मंत्र में कहा है। और समानता का जो मंत्र आपने उपस्थित किया है—

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्य्याय स्वाय चारणा

"उस से तो स्पष्ट जन्म से वर्णव्यवस्था सिद्ध हो जाती है, क्योंकि ईश्वर कहता है कि मैं ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र, आर्य सब को वेद वाणी का उपदेश देता हूं" यह आप उस का अर्थ करते हैं, सो इस अर्थ में वेदवाणी के उपदेश से पूर्व ही ब्राह्मण क्षत्रिय, शूद्र आदि वर्णविभाग सिद्ध होगया तब ही तो कहा कि इन सब को उपदेश देता हूं। पहले वर्ण विभाग में जन्म के अतिरिक्त और क्या कारण हो सकता है?

पं० इन्द्र जी (पांचवीं वार)

(१) 'यथेमां वाचं कल्याणीं' मन्त्र मैंने नहीं बोला है। आप को भ्रम हुआ।

(२) आप ने पुरुषसूक्त के सब मन्त्र पढ़ डाले हैं, किन्तु यहां आदि 'कतिधा व्यकल्पयन्' और अन्त "तथा लोकां अकल्पयन्" में दोनों में कल्प शब्द आता है, उसे पं० जी भूल गए। कल्प शब्द का अर्थ आप लगाइए।

(३) मैंने 'पैर से कैसे पैदा हुवे' पूछा था, उस पर आप कहते हैं तर्क मत करो किन्तु पण्डित जी? निरुक्तकार तो तर्क को ऋषि मानते हैं, तर्क से ही तो निर्णय हो सकता है, आप हमें तर्क से क्यों रोकते हैं।

(४) पुरुष सूक्त के प्रकरण में प्रश्न उत्तर की संगति आप ने अभी तक नहीं लगाई। सीधी सी बात है, अगर कोई पूछे कौन जाता है, तो इस का उत्तर होगा देवदत्त जाता है। कौन जाता है का उत्तर यह कोई नहीं देता कि देवदत्त यज्ञदत्त का पुत्र है। फिर 'मुखं किमस्य' का उत्तर मुख से ब्राह्मण हुवे यह कैसे हो गया?

(५) मैंने माता पिता आदि को वर्ण का कारण नहीं कहा था, गुण, कर्म के तीन कारण बताये थे। वर्ण तो गुण-कर्मानुसार ही होता है, किन्तु गुण, कर्म तीन कारणों से हैं, पूर्व जन्म के संस्कार से, माता पिता के गुण कर्म से, और शिक्षा आदि से। जैसे घट के कई कारण हैं, तो क्या कोई बुद्धिमान् कहता है कि केवल मिट्टी से घड़ा होगा? जल, दण्ड आदि के बिना नहीं होगा। ऐसे ही जब तक और कारण न होंगे, आप के सिद्धान्तानुसार केवल जन्म से ब्राह्मण कैसे बन जायगा? मनु के श्लोक में जब दूसरा जन्म सावित्री से बताया है, और उस जाति को अजर अमर कहा है तो हमारा पक्ष सिद्ध हो गया कि आचार्य की दी हुई जाति स्थिर रहती है। जन्म की जाति को जरा, मृत्यु आ जाती है। आप बीच में यश कहां से ले आए। इस मन्त्र में 'अजरा अमरा' स्त्रीलिंग में विशेषण हैं और यश शब्द नपुंसक लिंग में आता है।

(६) मैंने आप के सब मन्त्रों की व्यवस्था कर दी है, आप बार बार कहते हैं, हमारे प्रमाणों का उत्तर नहीं मिला प्रत्युत मेरे मन्त्रों का आपने उत्तर नहीं दिया। क्या यह कोई नियम है, कि आप ही के प्रमाण प्रमाण माने जांय, मेरे न माने जांय।

(७) लीजिए, मैं और भी मन्त्र प्रमाण देता हूं इस का भी अर्थ लगाइये—

तमेव ऋषिं तमु ब्रह्माणमाहुर्यज्ञन्यं सामगामुक्थशासम्।
स शुक्रस्य तन्वो वेद तिस्रो यः प्रथमो दक्षिणया रराध॥
(ऋ० मं० १० सू० १०७ मन्त्र ६)

इस में कर्म से ही ब्राह्मण होना लिखा है।

(८) आप ने अभी तक पुराण महाभारत के प्रमाणों का कोई उत्तर नहीं दिया। यदि आप पुराणों को सत्य मानते हैं तो गुण, कर्म से जाति मानिए। मैंने एक युक्ति दी थी कि मनुष्य योनि भोगयोनि है या कर्म योनि, उस का कोई उत्तर नहीं मिला। अब मैं दूसरी युक्ति देता हूं—कि कपाल से घट बनता है, और मट्टी से कपाल बनता है। तो क्या घट का कारण मट्टी नहीं होगी? ऐसे ही वर्ण का कारण आप कहते हैं, जन्म है, और जन्म का कारण है-पूर्व जन्म के कर्म। तो वर्ण के कारण भी कर्म क्यों न हुवे?

(९) पं० जी आदेश करते हैं कि वेदार्थ करने में तर्क से काम न लो। क्या विवेचना शक्ति युक्ति तथा बुद्धि का प्रयोग किए बिना ही वेद मन्त्रार्थ किये

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

जा सकते हैं? वेद में कई शब्द ऐसे हैं जिन के व्याकरण तथा निरुक्त की सहायता लेने पर भी अनेक अर्थ ही रहते हैं एक अर्थ स्थापित नहीं होता। क्या यहां बुद्धि का प्रयोग वर्जित है? अंगों या उपांगों से भी तो विना तर्क प्रयोग के सहायता नहीं ली जा सकती।

पं० गिरिधर शर्मा जी (छटीवार उपसंहार)

पुरुषसूक्त के मंत्र में कल्प धातु कह कर फिर आप शङ्का उठाते हैं, कहता हूं क्या कल्प धातु का अर्थ उत्पादन नहीं है? 'भक्तिर्ज्ञानाय कल्पते' में उत्पादन ही तो तो अर्थ है, और क्या है? 'फिर लोकां अकल्पयम्' लोकों को उत्पन्न किया, इस में आप को क्यों संदेह हुआ? कल्प धातु के आप ब्राह्मणादि की उत्पत्ति का निषेध नहीं कर सकते। प्रश्नोत्तर की संगति वार वार कह देने पर भी यह शंका आप की नहीं हटती। आप ही के दृष्टान्त पर समझ लीजिए 'कौन जाता है' इस प्रश्न का उत्तर यह भी हो सकता है कि 'देवदत्त जाता है' और यह भी हो सकता है कि 'रामलाल का पिता जाता है' क्या देवदत्त नाम न लेकर "रामलाल का पिता जाता है" कहने से उत्तर नहीं हुआ? यही तटस्थ लक्षण है, कार्य द्वारा वस्तु परिचय कराया गया। ऐसे ही इस मन्त्र में भी 'मुख क्या है' प्रश्न है" जिस से ब्राह्मण उत्पन्न हैं, (वह मुख है) यह उत्तर है, क्या यहां कार्य्य द्वारा वस्तु परिचय नहीं हुआ? और कितना इसे समझाऊं। आप तर्क मानने में निरुक्तकार की साक्षी देते हैं किन्तु स्मरण रहे कि निरुक्तकार ने "मन्त्रार्थ विचार" को ही तर्क कहा है। अपनी बुद्धि के आधार पर वेदों को चलाने को नहीं कहा। जो हमारी समझ में न आया, उस वेदोक्त अर्थ को न मानना, अपनी बुद्धि के पीछे मन्त्रों को चलाना है। वेद में कहा है कि, मुख से ब्राह्मण और पैर से शूद्र पैदा हुवे" अब हमारी बुद्धि में न आने से यदि हम इसे न मानें तो हमने वेद को कहां प्रमाण माना? रही यह बात कि मन्त्रों का अर्थ कैसे करें? सो यह तो मेरा आप से प्रश्न था, आप ने उलटा उसे मुझ ही पर डाला है। हमारे तो वेद का अर्थ करने के साधन बहुत हैं, यह तो आप बताये कि आप वेद मात्र को ही स्वतःप्रमाण मान कर उस का अर्थ या अर्थनिश्चय कैसे कर सकेंगे? वेद से वेद का अर्थ कैसे होगा? व्याकरणादि के विना तो किसी भी शब्द का अर्थ ज्ञान नहीं हो सकता। यह मैंने पूछा था उस का आपने कोई उत्तर नहीं दिया। आप ने आगे कहा है, माता पिता वर्ण के कारण नहीं, गुण, कर्म के कारण हैं। अस्तु, यही सही, किन्तु गुण, कर्म के बिना वर्ण नहीं होता, और गुण कर्म में माता पिता कारण हैं, तो माता पिता के अनुसार गुण, कर्म होंगे। और उनके अनुसार ही वर्ण होगा। यही सनातन धर्म का सिद्धान्त आगया। और आगे आप ने घट के दृष्टान्त से स्पष्ट कर दिया। जो बात मुझे कहनी चाहिए थी, वह आप स्वयं कह कर मेरी सहायता कर रहे हैं। घट का दृष्टान्त आप का दिया हुआ कैसा अच्छा है, घट किसी एक कारण से पैदा नहीं हो सकता, कारण-सामग्री से होता है। ऐसे ही सन्तान के गुण, कर्म भी पूर्व जन्म के संस्कार, माता पिता, और शिक्षा आदि तीनों के मिलने पर होंगे। एक भी कारण न रहने से नहीं हो सकते। सज्जनगण! प्रिय स्नातक इन्द्र जी आखिर विद्वान् हैं, इनने शास्त्र पढ़ा है, इस से इन के मुख से बात ठिकाने की निकलती है, फिर चाहे आग्रह वश उसे छिपाने की कोशिश करें। आप के दिए हुए न्याय से मेरा पक्ष स्पष्ट सिद्ध हो जाता है, हम भी यही कहते हैं कि योनि, विद्या और कर्म तीनों मिलने से ब्राह्मण होता है। विना गुण कर्म के भी वह 'जाति ब्राह्मण' कहा जाता है, ब्राह्मणोचित कार्य न होने से मुख्य ब्राह्मण नहीं हो सकता। मनु के श्लोक में जाति शब्द का अर्थ जन्म है, यह मैं दिखला चुका हूं। फिर आचार्य का दिया हुआ जन्म अजर अमर है, इसका अर्थ यदि मैंने किया कि विद्या से जो यशः शरीर बनता है वह अमर है तो क्या बुरा किया। आप क्या विद्यावान् शरीर को अजर अमर कह सकते हैं? शरीर तो विद्यावान् हो चाहे अविद्यावान्, नश्वर ही है। यश रूप से या धर्म रूप से ही अजर अमर कहना होगा। सो उससे आपका मत सिद्ध नहीं होता। आपने भोगयोनि और कर्मयोनि का प्रश्न किया है, तो यह सब ही जानते हैं कि मनुष्ययोनि कर्मयोनि है, किन्तु किये हुवे सब कर्मों का फल इस ही जन्म में नहीं मिल जाता, ऐसा होता तो फिर आगे जन्म ही न होता। योगदर्शन के "सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगाः" सूत्र के भाष्य में स्पष्ट व्यवस्था है कि जाति निष्पादक कर्म अदृष्ट जन्म वेदनीय ही होते हैं। अर्थात् जातिकी उच्चता या नीचता के संपादक कर्म इस जन्म में अपना फल नहीं दे सकते, क्योंकि एक जन्म में जाति पलट नहीं सकती, दूसरे जन्म में उस कर्म के अनुसार उच्च या नीच जाति होगी। यहीं मैंने "तद्य इह रमणीयचरणाः" इत्यादि ब्राह्मण वाक्य से दिखाया था, जिस का आप कोई उत्तर न दे सके हैं। फिर आप की यह युक्ति किस काम की रही। परम्परा से

Gurukul Kangri Haridwar. Digitized by eGangotri

कर्म का कारण सिद्ध करने का दूसरी युक्ति का भी आपने व्यर्थ श्रम किया, क्योंकि पूर्व जन्म के कर्म को तो हम स्पष्ट वर्ण होने में कारण मानते ही हैं। इस के तो मैं स्वयं पहिले ही कई प्रमाण दे चुका हूं। विवाद तो यही है कि इस ही जन्म में वर्ण नहीं पलटता। सो आप की दोनों युक्ति बिलकुल व्यर्थ होती हैं। अब मेरी युक्ति सुनिये। आप कहते हैं—जैसे कर्म करता है, वैसा वर्ण होता है। मैं पूछता हूं—कोई नीच कर्म क्यों करता है? कदाचित् कहो इच्छा से, तो भला नीच कर्म की इच्छा किसी को क्यों होने लगी? तब यही कहोगे कि अपने स्वभाव के अनुसार सब कर्म करते हैं, तो स्वभाव ईश्वर का बनाया हुआ है—इस से वर्ण भी ईश्वरकृत ही हो गया। और स्वभाव पलट नहीं सकता, इस से वर्ण का भी पलटना असंभव है। प्रमाणों के सम्बन्ध में आप कहते हैं—मैंने सब का उत्तर दे दिया, अस्तु मैं उपसंहार में आप को स्मरण करा देता हूं कि किस २ का उत्तर नहीं हुआ। कई बार मेरे करने पर भी आपने पुरुषसूक्त के "ब्राह्मणोस्य मुखमासीत्" मन्त्र का अपने पक्ष का अर्थ बताया ही नहीं, फिर अब तक कोई उत्तर नहीं। "पद्भ्यां शूद्रो अजायत" का अर्थ किया ही नहीं। जब आप से कोई अर्थ नहीं बना, तो अब मैं अगत्या श्री स्वामी दयानन्द जी के 'भाष्यभूमिका, के अर्थ पर विचार करता हूं। श्री स्वामी जी ने लिखा है—"अस्य पुरुषस्य मुखं विद्यादयो मुख्यगुणाः, सत्यभाषणोपदेशादीनि कर्माणि च सन्ति, तेभ्यो ब्राह्मण आक्षीदुत्पन्नो भवतीति" अर्थात् ईश्वर के जो विद्या आदि मुख्य गुण हैं, और सत्य भाषण, उपदेश आदि कर्म हैं, उन से ब्राह्मण उत्पन्न होता है। ऐसे ही आगे कहा है कि ईश्वर के जड़ बुद्धिता आदि गुणों से शूद्र 'उत्पन्न होता है, [भा० भू० पृ० १२७] तो अब इस पर विचार होता है कि ईश्वर के विद्या आदि गुणों से ब्राह्मण कैसे बन गया? ब्राह्मण तो द्रव्य है, गुण और कर्म से द्रव्य कैसे बन सकता है?

और सुनो—ऐसा अर्थ मानने पर ईश्वर में जड़बुद्धिता भी माननी पड़ेगी प्रत्युत शूद्र और वर्णों की अपेक्षा अधिक होते हैं—इससे जड़बुद्धिता ईश्वर में बहुत अधिक सिद्ध होगी। यह तो खूब ईश्वर हुआ? और भी कई शङ्काएं इस अर्थ में आपड़ती हैं—जिन्हें समयाभाव से मैं नहीं उठाता। सुतरां मेरा कहा हुआ अर्थ ही इस मन्त्र का मानना होगा। आगे मेरे कहे हुवे 'प्रजापति रजीयत' 'ब्रह्मज्येष्ठा संभृता वीर्याणि' 'दशशीर्षी दशास्यः, ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्तं पैतृमत्यम्, 'अमुष्य पुत्रम् मुष्यै पुत्रम्" 'येनानः पूर्वे पितरः' इतने मन्त्रभाग के प्रमाणों का आपने कोई उत्तर नहीं दिया है। कई ब्राह्मण और उपनिषद् के प्रमाणों पर भी कुछ नहीं कहा है। अपत्य प्रत्ययान्त की युक्ति पर भी आप मौन हैं। अब आप के प्रमाण ली-"जिये अहमेवदम्" और 'कारुरहम्' दो मन्त्र आपने कहे थे दोनों का स्फुट उत्तर मैं दे चुका हूं—जिस पर आगे आप कुछ नहीं बोले हैं। अब की बार जो मन्त्र आपने कहा है—उससे भी कुछ सिद्ध नहीं होता। क्या आपने कोई वेद—मन्त्र बोल दिया—इस ही से मैं प्रमाण मानलूं? मन्त्र का प्रकृतविषय से कोई संबन्ध भी तो हो। गोपथ ब्राह्मण का अपने वचन कहा था उसका भी उत्तर मैंने दे दिया। स्मृति, पुराण आदि का सामान्यतः उत्तर दे चुका हूं। विशेषतः वाद आज वेद के आधार पर था—इस लिये उन पर अधिक बल नहीं दिया गया। हां, एक महाभारत का वचन बाकी है—उसका संक्षिप्त उत्तर सुनिये। महाभारत शान्तिपर्व मोक्षधर्म अध्याय १८६ में भरद्वाज का प्रश्न यह है कि सब ही वर्णों में काम, क्रोध, भय, लोभ, शोक, चिन्ता क्षुधा, श्रम आदि होते हैं, और स्वेद, मूत्र, पुरीष, कफ, पित्त, रुधिर आदि भी सब के शरीर में होता है, फिर उन का वर्णों का भेदज्ञान कैसे हो? 'कुतो वर्णाविनिश्चयः, यह वर्ण के समझने का प्रश्न है, इस पर भृगु ने उत्तर दिया है कि 'न विशेषोऽस्ति वर्णानां ....कर्मभिर्वर्णातां गतम्, अर्थात् पूर्वोक्त शोक क्षुधा स्वेद, मूत्र आदि में वर्णों का कोई विशेष नहीं है, ये सब ही के होते हैं, वर्णों की पहचान तो कर्म से होती है। आगे जिन कर्मों से पहचान होती है, वे ब्राह्मणादि के कर्म बताये हैं। बस, स्पष्ट हो गया कि कर्मों से वर्ण की पहचान होती है, उत्पत्ति नहीं, जैसा कि आप चाहते हैं। आपके सब प्रमाणों का उत्तर हो चुका है। मुझे आगे समय नहीं मिलेगा—इससे अब आपको नया प्रमाण कोई नहीं देना चाहिये। और उपस्थित जनता अपने चित्त में समझ ले कि कौन पक्ष ठीक है। समझ कर सब सत्य का ग्रहण करें, यही मेरा अन्तिम विनय है।

पं० इन्द्र जी—छठी वार

(१) पं० जी ने अपने भाषण में कहा था कि मैं कोई नया प्रमाण या युक्ति पेश न करूं। उनके कथनानुसार मैं कोई न प्रमाण न देकर यही बतलाऊंगा कि अब तक के विचार में पं जी का पक्ष कितना निर्बल रहा है।

(२) आपने पुरुष सूक्त में आए हुए "अकल्पयत्" इत्यादि स्थलों में "कल्प" का अर्थ उत्पत्ति बतलाया है। इसी सूक्त में एक मन्त्र का भाग है—"यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन्" इसका अर्थ आपके कहे अनुसार होगा—"ईश्वर को कितने प्रकार से उत्पन्न किया"। इसलिए आप अकल्पयत् का व्यकल्पयन् के जो अर्थ करते हैं वे असंगत हैं। नहीं तो ईश्वर की कृतकता आ जायगी।

(३) आप वेद के समझने में तर्क का प्रयोग करने के बड़े विरोधी हैं। निरुक्तकार वेदार्थ करने में तर्क को सहा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

यक मानते हैं, इससे आप कुछ २ स्वीकार भी करते हैं परन्तु पूर्ण रीति से नहीं क्योंकि ऐसा करने से आपको वेद की स्वतः प्रमाणता में बाधा आती दिखाई देती हैं। यह आपकी आशंका वृथा है। सूर्य स्वतः प्रकाश है—क्योंकि उसके देखने के लिए किसी और सूर्य चन्द्रमा दिए आदि की आवश्यकता नहीं है। किन्तु सूर्य भी अन्धे को दिखाई नहीं देता। देखने के लिए आंखें आवश्यक हैं। आंखों से देखा जाता है—इस कारण सूर्य परतः प्रकाश नहीं हो जाता। जैसे सूर्य के देखने के लिए आंख की आवश्यकता है ऐसे ही वेद के समझने के लिए बुद्धि की आवश्यकता है। बिना तर्क प्रयोग के वेदार्थ का जानना असम्भव है।

मैंने कहा था कि तप योनि [illegible] को समष्टि रूप से कारण मानते हुए पं० जी ने वैदिक सिद्धान्त स्वीकार [illegible] इस पर अपना सिद्धान्त मुझ पर डाल कर पण्डित जी अपना जादू [illegible] बढ़ाना चाहते हैं। मेरा कथन [illegible] था। गुण कर्म के अनुसार वर्ण [illegible] है। गुण तथा कर्म बनने के कई [illegible] हैं—जिनमें से माता पिता के संस्कार [illegible] एक कारण हैं। जैसे यहां से कनखल जाने की इच्छा रखने वाला आदमी पैदल भी जा सकता है, घोड़े पर भी जा सकता है, और ताँगे पर भी जा सकता है इसी प्रकार किसी मनुष्य के गुण कर्म केवल अपने संस्कारों तथा परिस्थिति से भी बन सकते हैं—पैतृक संस्कार ही के कारण नहीं हैं। हम प्रत्यक्ष संसार में देखते हैं कि कई अति नीच कुलोत्पन्न बालकों के गुण कर्म ब्राह्मणों से सहस्रों गुणा श्रेष्ठ होते हैं। और कई ब्राह्मण कुलोत्पन्न अधम से अधम पाप कर बैठते हैं। तब जन्म को गुण कर्म का आवश्यक कारण मानना कहां बना। तभी तो भविष्य पुराण के भी "तस्मान्न गो अश्ववत्काश्चित्" इत्यादि श्लोक में कहा है कि ब्राह्मणादि जातियें गौ या घोड़े आदि की तरह नहीं हैं—अर्थात् परिवर्तन शील हैं।

(५) आपने वर्ण शब्द का अक्षर अर्थ बतला कर कहा है कि एक अक्षर दूसरे अक्षर के रूप में नहीं जा सकता, किन्तु एक विद्वान् ऐसे किस प्रकार कह सकता है क्योंकि सन्धि में एक के स्थान में स्पष्टतया दूसरा अक्षर आ जाता है।

(६) मनु के श्लोक में "साऽजरा मरा" का निर्देश्य यशः शरीर कदापि नहीं हो सकता। श्लोक की साधारण संगति लगाने से भी आपका अर्थ भ्रमात्मक ठहरता है। श्लोक में 'या' से जाति का परामर्श है; 'सा' से भी उसी का परामर्श होगा, यशः शरीर का नहीं।

(७) आपने एक वेद मन्त्र प्रमाण रूप से दिया था जिसमें सब से प्रथम ब्रह्मा की उत्पत्ति बतलाई थी। वहां आप 'ब्रह्मा' से ब्राह्मण अर्थ लेना चाहते हैं। इसमें क्या प्रमाण है। चतुर्वेदवित् को ब्रह्मा कहते हैं। ऋषि के आरम्भ में चतुर्वेदवित् मनुष्य की प्रथमोत्पत्ति का ही इस मन्त्र में विधान है—ब्राह्मण का नहीं।

(८) मैंने आपसे पूछा था कि क्या इस जन्म का कारण कर्म नहीं है। आपने स्वीकार किया है कि है। तब कहिए क्या घट का कारण मिट्टी नहीं है। आपके मत के अनुसार भी वर्ण का अन्तिम कारण कर्म ही ठहरता है। भेद इतना ही है कि आप घड़े का कारण कपाल को मानना चाहते हैं, मिट्टी को नहीं।

(९) आपने भी अपने पक्ष में एक तर्क दिया है। आप पूछते हैं—मनुष्य बुरे कर्म क्यों करता है? अपनी ओर से उत्तर देते हैं कि स्वभाव से। वह स्वभाव कहां से आया? इसका आप उत्तर देते हैं कि परमात्मा की ओर से मिला। परमात्मा के दिए हुए स्वभाव से प्रेरित होकर ही मनुष्य सब कार्य करता है। यह मान कर आप क्या परमात्मा को न्यायी मान सकते हैं? मनुष्य बुरे कर्म भी परमात्मा के दिए हुए स्वभाव से ही प्रेरित होकर करता है—तब तो बुरे कर्मों के लिए उत्तर दाता ईश्वर होगा—परमात्मा नहीं। फिर मनुष्यों को पाप का दुःख रूपी फल क्यों मिलना चाहिए। स्वयं पाप कराकर दुःख देना कहां का न्याय है। मनुष्य का स्वभाव परमात्मा ने यों ही नहीं बना दिया—वह भी मनुष्य के अपने कर्मों का ही फल है। क्या कोई राजा नियम बना दे कि चोरी किया करो और फिर चोर को दण्ड दे, वह भी न्यायी कहायगा?

[१०] ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में से संस्कृत का उद्धरण देकर आपने जो आक्षेप किया है, वह निःसार है। उसी संस्कृत के भाषार्थ में 'आज्ञा से' शब्द से हैं। स्वामी जी का तात्पर्य है कि ईश्वर की आज्ञा से मुख्य गुणों से युक्त को ब्राह्मण मानना चाहिए। नीचे दी हुई भाषा ही स्वामी जी के तात्पर्य को स्पष्ट कर देती है।

[११] हमारे शास्त्रों में जीवन्मुक्ति का तात्पर्य है जहां शरीर विद्यमान रहे और फिर भी मनुष्य मुक्त हो जाय। सांख्य दर्शन में उसका वर्णन 'चक्रभ्रमणवद्धृतशरीरः" इस सांख्य सूत्र में किया है। यदि एक मनुष्य जीवित होता हुआ कर्म बल से उच्चावस्था को पा सकता है, तो क्या कर्म बल से ही वह शूद्र से ब्राह्मण नहीं हो सकता।

अन्त में पण्डित जी ने जनता से न्याय की अभिलाषा की है। मैं भी जनता से ही न्याय की आशा रखता हूं। पण्डित जी ने पहले कुछ वेद के प्रमाण दिए थे—उनके उत्तर मैं दे चुका हूं। ब्राह्मण मुख से उत्पन्न हुए—इसका क्या तात्पर्य है—यह भी समझा चुका हूं। पुरुष सूक्त के मन्त्र पर पण्डित जी कुछ भी सन्तोषदायक उत्तर नहीं दे सके। मैंने अपने भाषणों के बीच २ में वेदों के प्रमाण दिए हैं, पं० जी ने उनके अन्यथा अर्थ करने का यत्न किया है—परन्तु मैं दिखला चुका हूं कि उन्हें ऐसा करने में सफलता नहीं हुई। महाभारत तथा स्मृति तथा पुराणों के तथा भगवद्गीता के बहुत से प्रमाणों पर पण्डित जी मौन ही हो गये हैं। ऐसी दशा में जनता ही ठीक न्याय कर सकती है। उन्हीं पर न्याय छोड़ कर मैं अपने कथन को समाप्त करता हूं।

—:o:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी

श्री स्वामी सत्यानन्द जी की महाभारत की कथा—पर आर्य्य गज़ट, लाहौर ने यह आक्षेप किया था कि वेदकी ही कथा होनी चाहिए, महाभारतादि की कथा से वैदिक धर्म को कुछ सहायता नहीं मिलती। इस पर लाहौर से लाला धनपतराय सम्पादक आर्य्य गज़ट की युक्तियों की समा-लोचना भेजते हैं। श्री स्वामी सत्यानन्द जी के उपदेशों पर आक्षेप अब आर्य्यजनता को भ्रमा नहीं सक्ता इस लिए ऐसे लेखों के नोटिस लेने की कुछ आवश्यकता नहीं रहती।

श्रीमान हाकिमराय जी प्रधान,आर्यसमाज—सहारनपुर हेड़क्लार्क के पद से उन्नति पाकर क्वेटे के डी०टी०एस० के चीफ़क्लार्क बनकर जा रहे हैं। आप को विदा होने के लिए आर्य्य मन्दिर में २० मई को एक आर्य्य भाइयों का सम्मेलन हुआ जिस में आप के आर्य्य जीवन की प्रशंसा की गई और आप के आर्य्य समाज के प्रति प्रेम का मान किया गया। श्री हाकिमराय जी ने सरल भाव से कहा कि आर्य्यसमाज ने उनका जीवन उच्च बनाया है जिस के लिए वह धन्यवाद देते हैं। पुनः फलों का सहभोज हुआ, और रात को सब आर्य्यभाई उन्हें रेलपर चढ़ाने गये।

आर्यसमाज लुधियाना—ने भी लाहौर आ० स० के चुनाव में पुलिस लाने पर शोक प्रकट किया है और आर्यसमाज पत्तोंकी में भी इसी प्रकार के प्रस्ताव स्वीकृत हुए हैं।

शिकारपुर के प्रोफ़ेसर ताराचन्द्र एम० ए०—सिंध में वैदिक धर्म के प्रचार का बड़ा सन्तोषजनक काम कर रहे हैं। उन्होंने जो ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र अंग्रेज़ी में छपवाया है वह बड़ा ही उत्तम है। अब आर्यसमाज को अपना पुस्तकालय देकर "सरस्वती पुस्तकालय" नामसे साहित्य का प्रचार करना चाहते हैं। इस पत्र के साहित्यसेवी ग्राहकों तथा पाठकों से प्रार्थना है कि शिकारपुर के "सरस्वती पुस्तकालय" को, बिना मूल्य के पुस्तकें भेजा करें।

वैदिक विवाह का समाचार, अजमेर से—केशवदेव जी भेजते हैं। पं० वंशीधर जी एम०ए० की भतीजी श्रीमती चन्द्रकला का विवाह पं० मुरारीलाल जी के ज्येष्ठ पुत्र पं० देवेन्द्र शर्मा जी शास्त्री के साथ१७ मई को हुआ। बरात में अनेक विद्वान् पधारे थे। वर की अवस्था अनुमान २४ वर्ष और कन्या की १६ वर्ष की है। विवाह के समय वधु ने प्रतिज्ञामन्त्रों का स्वयम् उच्चारण किया। कन्या पक्ष की ओर से १०१) और वर पक्ष की ओर से १०२) दान हुआ। हम दम्पति को आशिर्वाद देते हैं कि वे धर्ममार्ग में प्रवृत्त रहें और उनके संरक्षकों को बधाई देते हैं।

आर्य्यसमाज नजीबाबाद—का वार्षिकोत्सव २३, २४, २५ जून १९१६ को होगा।

आर्यसमाज चावड़ी बाजार दिल्ली—ने भी लाहौर आर्य्यसमाज के चुनाव पर पुलिस बुलाने के विरुद्ध शोक प्रकट करके श्री सभा को उसके सुधार के लिए प्रेरणा की है। दिल्ली आर्य्यसमाज का चुनाव होगया। श्री पं० निहाल चन्द्र जी प्रधान, श्री बुलाक़ी दास जी तथा श्री नारायण दास जी उपप्रधान, श्री जानकीनाथ शर्म्मा मन्त्री नियत हुए हैं। अन्य अधिकारी तथा अन्तरङ्ग के प्रतिष्ठित सभासद् भी चुने गए हैं।

आर्यसमाज सम्राला और जगाधरी—ने भी ऐसे ही प्रस्ताव स्वीकार किए हैं।"

एडवर्ड-हिन्दी-पुस्तकालय हाथरस—एक रजिस्टर्ड सभा के आधीन चलती है जिस की रजिस्टरी हो चुकी है। इसकी नियमावली इस कार्यालय में आई है। वाचनालय में समाचार पत्र हरप्रकार के रहते हैं। छपी और हस्तलिखित सभी प्रकार की पुस्तकों का संग्रह किया जाता है।

आर्यसमाज विहारीपुर बरेली पं० भोजदत्त जी की मृत्यु पर शोक और उनके कुटुम्ब के साथ सहानुभूति प्रकट करता है।

रायठाकुरदत्त जी धवन की उस अनुचित कार्यवाही पर जोकि उन्होंने निर्वाचन के समय पर की, अर्थात् पुलिस की सहायता से चुनाव कराया, घृणा प्रकट करता है।

अ०स० सरहिन्द जिला लुधियाना का—वार्षिकोत्सव बड़ी सफलताके साथ,तारीख१२-१३तथा१४ मई को समाप्त हुआ। प्रचार ७ मईसे ही आरम्भ होगया था। इस प्रचार का सर्व साधारण पर इतना प्रभाव पड़ा कि पौराणिक दल में खलबली मचगई। उन्हों ने अपनी रक्षार्थ ऋषिकुल के पं० गिरिधर शर्म्मा, तथा पं० गणेश दत्त, पं० कर्मचन्द पं० गिरिप्रसाद पं० वासुदेव आदि कई पौराणिक विद्वानों को बुला लिया। सारांश यह क १६ मई को २ बज मध्यान्होत्तर से ६ बजे सायंकाल तक "मूर्त्ति पूजा" विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्य्यसमाज की ओर से शास्त्रार्थ के लिए पं०पूर्णानन्द जी खड़े हुए थे और पौराणिकों की ओर से पं० गिरिधर शर्म्मा जी। पं० पूर्णानन्द जी के मूर्त्ति पूजा के विरुद्ध दिये हुए वेदों, उपनिषदों और शास्त्रों के प्रमाणों और युक्तियों के आगे प० गिरिधर शर्म्मा की कुछ भी बन नहीं पड़ी और निरुत्तर हो कर कहने लगे कि मूर्त्ति पूजा तो केवल आज्ञानियों के लिये है; परन्तु जब ऐसी आज्ञा भी वेदों में बतलाने को कहा गया तो पण्डित जी चुपके हो गये और बार २ चैलैञ्ज देने पर भी मूर्त्ति पूजा वेदों से सिद्ध न कर सकें।

इस शास्त्रार्थ का सर्वसाधारण पर बड़ा प्रबल प्रभाव पड़ा।

आर्य्य समाज कराची—भी रायठाकुरदत्त धवन के पुलिस द्वारा निर्वाचन को घृणा की दृष्टि से देखता है और आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से प्रार्थना करता है कि वह नियमानुकूल अपने प्रबल शक्ति का प्रयोग कर लाहौर समाज में शान्ति स्थापन करे।

—:०:—

"भारतोदय से विदाई"

महाविद्यालय ज्वालापुर से "साप्ताहिक भारतोदय" निकलता था जो अनेक कारणों से वर्ष ७ केअंक १६ से बन्द होगया था। पण्डित भीमसैन शर्मा मुख्याऽध्यापक महाविद्यालय ज्वालापुर त्याग पत्र देकर अपने घर चले गये (पंडित जी प्रैस के प्रिंटर थे) साथ ही म० कर्म्मचन्द्र जी ने भी पबलिशरी से त्यागपत्र दिया—इन दोनों महानुभावों के त्याग पत्र देने पर नवीनडिक्लेरेशन दाखिल करना पड़ा जिस पर ५००) की ज़मानत मांगी गई। ग्राहकों और प्रेमियों ने सहायता भी की परन्तु ५००) न हो सके और सहायता वाला धन (जिसकी ठीक तादाद मुझे याद नहीं) प्रैस फन्ड में जमा किया गया-५००) ऋण लेकर ज़मानत दाखिल की और भारतोदय निकलना आरम्भ किया—सम्पादकी का कार्य्य भार श्री युत बाबू ज्योतिः स्वरूप जी रईस देहरादून भूत पूर्व मुख्याधिष्ठाता व उपप्रधान म० वि० की—आज्ञा से मैंने स्वीकार कर लिया-निदान अंक १७ से २४ तक मैंने एडिट किया, जहां तक बन पड़ा उदार नीति से काम लिया। ता० १० मई से १ मास की छुट्टी की दर्ख्वास की, परन्तु छुट्टी स्वीकृत न होने पर मैंने त्याग पत्र भेजदिया जिसे श्री मु० अ० जी ने कृपा पूर्वक स्वीकार कर लिया-साम्पादकी का त्याग पत्र भी श्रीयुत प्रधान जी ने स्वीकार करलिया। अंक २५ को मैंने एडिट किया था परन्तु त्याग पत्र देने के कारण मेरे सब लेख मैनेजर महाशय ने नहीं छापे। अब मेरा महाविद्यालय ज्वालापुर के स्टाफ़ और भारतोदय से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रहा। मैं अपने उन मित्रों और आर्य्य भाइयों का कृतज्ञ हूं जिन्होंने मुझ तुच्छ के लिखने पर भारतोदय को अपनाया और ग्राहक बने या सहायता दी। अब "भारतोदय" के सम्बन्ध में मुझ से [illegible] पत्र व्यवहार न करना चाहिए। मुझे [illegible] है कि नवीन मुख्याधिष्ठाता जी [illegible] वित रक्खेंगे।

मेरा वर्तमान पता।
बालाप्रसाद शर्म्मा
असिस्टेण्ट सुपरिण्टेण्डेन्टरोड [illegible] हाई स्कूल हॉस्टल देहरादून

क्या श्रीमती प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक या गुरुकुल के कोई स्नातक यह बतला सकते हैं कि पर्दा का रिवाज कब से प्रचलित हुआ और क्या वेद भगवान इस रस्म का परिपोषक है? (पर्दे से अभिप्राय आंख [illegible] दिल का पर्दा नहीं प्रत्युत घघट आदि [illegible] से हैं।) यदि नहीं तो अथर्ववेद कां० ८ सू० ६ मन्त्र २४ का क्या अर्थ है।

यह लिखने की कोई आवश्यकता नहीं थी क्योंकि आज तक हम जानते थे कि आर्य्यसमाज इस बुरी रीति का प्राणपत्र से विरोधी है। परन्तु एक दिन यहां (रंगून में) एक पंडित का (पं० धनीदत्त जो कि अपने को उपरोक्त प्रतिनिधि का उपदेशक रहा बतलाते हैं) व्याख्यान सुना। यह व्याख्यान क्या था उन पर किये गये आक्षेपों का उत्तर था। इस में उन्हों ने आर्य्यसमाज के महोपदेशकों और अन्य उपदेशकों को Challenge देते हुवे बतलाया कि उपरोक्त वेद मन्त्र पर्दे का पोशक है और पर्दा भी उपरोक्त लिखित रीत्यानुसार। साथ ही यह भी कहा कि यदि आपने पूछना हो तो स्नातकों से पूछिये क्यों स्नातक अन्य उपदेशकों की भान्ति संकुचित मन नहीं रखते।

कृपया कोई महाशय इस का शीघ्र ही उत्तर इसी पत्र में छपवाकर कृतार्थ करें क्योंकि पं० जी के भाषण से कुछ आर्य्यसमाज के सभ्यों की गलत फ़ैम्ही हो गई है। जिस के कारण दो दल बन गये हैं अर्थात (Party feeling) हो जाने से समाज में वही अशान्ति करती है।

भवदीय
विद्याधर वर्मा
विद्यानन्द वर्मा १६-५-१६

CC0. Gurukul Kangri Collection

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा————————।)
काव्य लतिका————————।॥)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥)

महाभाष्यम् अङ्गप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाशीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—वैलफोर स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन-विलयम एस, फर्नो की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)
जिनचरित—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त ≡)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) ≡)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji—" 0.1.0
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A.
अर्थशास्त्र (धनविद्या) १॥)
आर्यों की विज्ञानिक उन्नति =)
(लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम०ए०)
अग्निहोत्र व्याख्या ।)
वेदोक्त राज्य ॥)
(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)
रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry) ३॥)
विद्युत्शास्त्र २।)
वनस्पतिशास्त्र २)
पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत
उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १॥)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)
मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष ॥)
ध्यायोग प्रकाशः स्वामी लक्ष्मणानंन्द कृत १।)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २६ ज्येष्ठ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १० जून सन् १९१६ ई० { संख्या ६ भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थीयों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

चरक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०

तीन मस ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,

छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,

सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० श्यामपुर कांगड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीसाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साढ़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लालो रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

अध्यापक चाहिए।

आर्य्य-समाज कांगड़ी की पाठशालाओं के लिए अध्यापकों की ज़रूरत है। पांचवीं श्रेणी तक आर्य-भाषा में सब विषय अच्छी तरह पढ़ा सके। शुद्ध सदाचारी और वैदिक धर्मी हो वेतन १५ तक योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थनापत्र निम्नलिखित पते से आवें। इन्द्र

मन्त्री आर्य-समाज शिक्षासमिति

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

कांगड़ी आर्य-समाज का चुनाव

१८ ज्येष्ठ को हुआ जिसके अधिकारी इस प्रकार चुने गए—

उपाध्याय इन्द्र विद्यावाचस्पति प्रधान

मुख्याध्यापक मुखराम बी. ए. उप-प्रधान

उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार मंत्री

मास्टर हरिगोपाल बी० ए० उप मन्त्री

म० विश्वजित पुस्तकाध्यक्ष

अन्तरंग सभा के प्रतिष्ठित सभासद्—

उपाध्याय म० च० सिंह जी तथा डा० सुखदेव जी निर्वाचित हुए।

समाचार-पत्रालय खुर्जा—का वार्षिक वृत्तान्त समालोचनार्थ आया है। जिस पुस्तकालय में ५१० पुस्तकें हों. जिसकी सभासदों से वार्षिक आय १९५॥।=) हो, जिस के स्थिर कोष में ३१) ही आए हों, उस समाचार-पत्रालय की ४५ पृष्ठ की रिपोर्ट चिकने टाइटिल समेत छपनी उचित है वा नहीं यह पत्रालय के संचालक ही निश्चय कर सकते हैं।

मुज़फ्फरगढ़ के पं० गंगाराम जी—उस प्रान्त के आर्यसमाजों के गुरु हैं। आप सर्वसाधारण के समझने योग्य ट्रैक्ट छपवाया करते हैं। इस समय धर्म-शिक्षा की मुहारनी—उर्दू तथा आर्य-भाषा में छपवा कर अधेले और पैसे में फैला रहे हैं। ये ट्रैक्ट नज़्म् में हैं। दूहरा ट्रैक्ट स्वर्ग और नर्क—शीर्षक देकर छ भागों में समाप्त किया है। ये छओं उर्दू में हैं। पहले में इस विषय पर दृष्टान्त पूर्वक लिखा है कि बड़ी उमर वाले को स्त्री के मरने पर विवाह करने पर बड़े कष्ट होते हैं। दूसरे में कुरीतियों को दूर करने की रीति, तीसरे में बड्ढे के विवाह की बुराई, चौथे में बाल विवाह की हानि, पांचवें में स्त्रीसुधार की विधि तथा छठे में प्रतिज्ञा पालन की आवश्यकता पर दृष्टान्त पूर्वक लेख हैं।

इन में से कुछ की समालोचना प्रचारक में पहले भी हो चुकी है।

कृषिकुल हरद्वार के आचार्य पण्डित गिरधर शर्म्मा तथा आश्रम के प्रबन्ध पर पं० ताराचन्द्र जी ने बहुत से आक्षेप पूर्वक एक २० पृष्ठ का ट्रैक्ट छापा था। उसका उत्तर "ब्रह्मचारी" में प० अनन्दनारायण वकील की ओर से छप रहा है। हम ऐसे विवादों से लाभ उठाकर विरोधियों का मुंह बन्द करने के प्रयत्न के विरुद्ध हैं इस लिए उस ट्रैक्ट को स्थान नहीं दिया, परन्तु पं० आनन्दनारायण जी के उत्तर से पता लगता है कि पं० गिरधरशर्मा ने तुलसी शालिग्राम के विवाह में दक्षिणा प्राप्त की तथा अन्य स्थानों से भी सकड़ा दक्षिणा में लाते हैं। इस प्रकार के 'आनरेरी वर्कर' संस्थाओं के लिए बड़े महंगे पड़ते हैं। इस प्रकार निष्काम भाव से काम करने वालों को ऐसों की बदौलत हानि पहुंच जाती है। क्यों नहीं पं० गिरधर जी सौ सवा सौ वेतन नियत करा लेते जिस से प्रलोभन में फंसने से बच सकें।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं

नैपोलियन बोनापार्ट की जीवनी—का द्वितीय संस्करण छपवाने के लिए प्रचारक प्रेस दिल्ली में आज्ञा देदी थी, दो फार्म कम्पोज़ भी हो चुके थे। परन्तु काग़ज़ का भाव बहुत महंगा होने और अपने पास धनाभाव के कारण, इस की छपाई रोक दी गई। नित्य इस पुस्तक की मांग के पत्र आते हैं। इस लिए सूचना देदी गई है कि नैपोलियन की जीवनी के आज्ञापत्र न भेजिए।

बिना मूल्य चार सज्जनों के नाम—उन्हें अधिकारी समझ कर, बिना मूल्य एक वर्ष के लिए प्रचारक जारी कर दिया गया है। अब सर्दार बैशाखासिंह जी के दिए दान से और कोई लाभ नहीं उठा सक्ते। इस लिए उस विषय में कोई पत्र न भेजें।

गुरुकुल समाचार

महाविद्यालय में रसायन तथा पाश्चात्य दर्शन का निरीक्षण—गत सप्ताह आगरा कालेज के रसायन उपाध्याय श्री M. C. नाग तथा भूतपूर्व सेन्ट्रल हिन्दू कालेज बनारस की कमिटी के सन्त्री श्री भगवानदास जी एम० ए० ने किया।

रसायन के निरीक्षक महाशय ने निरीक्षण के पश्चात् अपनी सम्मति देते हुए लिखा कि यहां रसायनिक वस्तुयें तथा यंत्रों का चुनाव बहुत अच्छा है और भली प्रकार नियम में रक्खे हुए हैं। विद्यार्थियों का क्रियात्मक कार्य अच्छा है और उन के क्रियात्मक कार्य की कापियें उन की बुद्धिमत्ता को प्रकट करती हैं। श्री० नाग ने यह विचार प्रकट किया कि यदि विश्लेषण के लिए विद्यार्थियों को केवल शिल्प द्वारा बने हुए शुद्ध पदार्थों की जगह भारतीय खनिज पदार्थ ही दिए जावें तो उत्तम होगा। और यह भी कहा कि ज्ञानात्मक रसायन में कई ऐसे स्थल हैं जो बिना उच्च गणित तथा पदार्थ विद्या के सामान्य विद्यार्थियों की समझ में शीघ्र नहीं आसकते।

पं० भगवानदास जी पाश्चात्य दर्शनशास्त्र के निरीक्षण से बड़े प्रसन्न हुए। उन्होंने जो सम्मति दी उसका कुछ सारांश यह है। "एक दम देखने से मेरा यह विचार था कि दर्शन की पाठविधि बहुत अधिक है। परन्तु यह देखने पर कि संस्कृत की शिक्षा प्रारम्भिक विद्यालय से ही शुरू की जाती है और पाठन का माध्यम आर्य-भाषा है पाठविधि बहुत अधिक प्रतीत नहीं देती परन्तु यथोचित ही है। विद्यार्थियों से बात चीत करने, पाठ्यपुस्तक में से पूछने तथा उत्तर पत्र देखने से जान पड़ा कि आशाजनक कार्य किया जारहा है। मैंने विद्यार्थियों के हिन्दी के उत्तरपत्र देखे, उनमें किसी प्रकार के घोटे के शब्द तथा पुनरुक्ति नहीं पाई जाती, प्रत्युत पता लगता है कि विषय को बहुत अच्छी तरह समझा हुआ है। मैं यह देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ कि उन में कुछ ऐसे प्रश्न थे जिनमें संस्कृत दर्शनों से मुकाबला करते हुए उत्तर देने को लिखा था" और उन्होंने इस अन्तिम बात को बड़ी महत्वपूर्ण बताया क्योंकि केवल संस्कृत तथा अंग्रेजी भाषा को जानने वाला मनुष्य उतनी अच्छी पुस्तक नहीं लिख सक्ता जैसी कि दोनों भाषाओं के दर्शनों को भी जानने वाला विद्वान् पाश्चात्य पौरस्त्य दर्शनों का मुकाबला करते हुए उत्तम पुस्तक लिख सकता है। और यह लाभ गुरुकुल के विद्यार्थियों को प्राप्त है।

इन के अतिरिक्त महाराजा इन्दौर के सेक्रेटरी N.V. कीबे एम० ए० सरदार राय बहादुर, प्रधान मंत्री इन्दौर के सेक्रेटरी V. K. Kinle B. A. तथा L. R. Pangarkar B. A. सम्पादक "मुमुक्षु" पूना गुरुकुल अवलोकनार्थ पधारे। ये सज्जन गुरुकुल को देख कर बड़े प्रभावित हुए और लिखा कि इस संस्था में कई विशेषतायें हैं और ऐसी संस्थाओं की भारतवर्ष में बड़ी ज़रूरत है। बड़ी थोड़ी धन राशि से बड़ा उत्तम कार्य्य किया जारहा है तथा इस को और अधिक बढ़ाने की आवश्यकता है।

२. गुरुकुल में ऋतु—अब उत्तम होती जारही है। गरम वायु चलना तथा आंधियें आना बन्द होगया है। यदि कुछ अधिक गर्मी पड़ने लगती है तो आकाश में मेघमाला उठती है और वृष्टि होने पर कुछ ठंढ पड़ जाती है।

अब गंगा की धारा भी गुरुकुल के समीप आगई है। गंगा के शीतल जल में स्नान करलेने से उष्णता अधिक अनुभव नहीं होती। सायंकाल तैरने से जहां ब्रह्मचारियों को सारे दिन की गर्मी से शान्ति मिलती है वहां शारीरिक व्यायाम भी बहुत कुछ होजाता है।

सायंकाल कुश्तियें चार अखाड़ों में बड़े उत्साह के साथ होती हैं जिनमें विद्यालय म० वि० के प्रायः सब विद्यार्थी भाग लेते हैं। म० वि० के जिस ब्रह्मचारी को निमोनिया होगया था वह अब बिलकुल अच्छा होगया है। और चल फिर भी लेता है। निर्बलता भी तीन चार दिन में दूर होजावेगी। ख़सरे के रोगी भी डा० सुखदेव जी के पुरुषार्थ तथा सावधानी से ठीक होरहे हैं। अन्य सब तरह से ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है।

३. पढ़ाई का समय—अब बदल दिया गया है। पहले प्रातः ७ बजे पढ़ाई प्रारम्भ हो कर म० वि० विभाग की ११¾ पर समाप्त होती थी और विद्यालय की १०¾ समाप्त होकर मध्यान्होत्तर ३ बजे से फिर तीन अन्तर होती थी। परन्तु अब कभी २ गर्मी के अधिक्य हो जाने के कारण ३५ मिनिट की जगह ३० मिनिट के अनन्तर करके दोनों विभागों की पढ़ाई प्रातःकाल ही ६ बजे से प्रारम्भ कर के १०¾ तक समाप्त कर दी जाती है।

४. बंगले के पास के जो मकान आग लगने से जल गए थे और दूसरों की छतें आंधी से उड़ गई थीं वह सब अब बन कर तय्यार हो गए हैं। पुनः आग लगने के भय से उन पर अब टीन की छत डाल दी गई है।

(सम्वाद-दाता)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेदामृत ।

जगता सिन्धुं दिव्यस्तभायद्रथन्तरे सूर्य पर्य पश्यत् । गायत्रस्य समिधस्तिस्र आहुस्ततो मह्ना प्ररिरिचे महित्वा ॥ ऋ० ॥ १ ॥ १४६ ॥ २५ ॥

"जो (जगदीश्वर) संसार के साथ समुद्र को और अन्तरिक्ष में प्रकाश को दृढ़ करता है, और सब ओर से देखता है, उसे गायत्री की तीन समिधाएं कहती हैं। वह बड़े प्रशंसनीय भाव से उन [तीनों समिधाओं] से भी अलग समझा जाता है।"

गायत्री यज्ञ की तीन समिधाएं ही उस तक पहुंचाने वाली हैं, क्योंकि वे ही उसके स्वरूप का ठीक वर्णन करती हैं। उसको अनुभव कैसे किया जाता है ? अशक्त जीवात्मा जब संसार की ठोकरें खाकर चारों ओर से निराश हो व्याकुल अवस्था में तड़पने लगता है और उसका दम घुटने लगता है, उस समय कोई अदृश्य दैवी शक्ति उसे ढारस देती है। गए हुए प्राण बल से अधिक पुष्ट होकर लौटते हैं। *भूरिति वै प्राणः* प्राणों का भी प्राण वही चराचर जगत को धारण करता है। डांवाडोल हृदय इस प्रकार ढारस बांधकर देखता है कि आश्रय मिलते ही उसके दुख दूर होगए—*भुवरित्यपानः*—दुःखों से रहित होने के कारण वह प्राणी को अपनी ओर खींचते ही दुःख रहित कर देता है। *स्वरिति व्यानः*—तब व्यान के समान व्यापक जगदीश्वर के साथ लगकर जीवात्मा स्थिति को प्राप्त होता है। यही सुख विशेष की अवस्था है जो सुख स्वरूप के सहवास में मिलती है।

गायत्र रूपी गान बतलाता है कि सारे ब्रह्माण्ड में गान रूपी यज्ञ हो हो रहा है। उस यज्ञ की पहली समिधा को यज्ञ कुण्ड में प्रवेश करते ही जीवात्मा को स्थिति मिलती है तब उसे, सन्देह रहित होकर, उस महति शक्ति के दर्शन करने का अवसर प्राप्त होता है जिसके आश्रय से वह स्वयम् दुःखों से अलग हुआ है। वह देखता है—*सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य*—जिस ऐश्वर्यवान् जगदुत्पादक, प्रकाशमय का अति श्रेष्ठ, स्वरूप है—*तद्धीमहि*—उसी शुद्ध स्वरूप को धारण करें। ब्रह्म यज्ञ के ज्ञानमय प्रज्वलित कुण्ड में श्रद्धालु उपासक की ओर से यह दूसरी समिधा की भेंट है। इस भेंट के समर्पित करते ही ज्वाला प्रचन्ड होती है और तब जिज्ञासु के हृदय से ये शब्द निकलते हैं—*धियो योनः प्रचोदयात्*। [हम उस शुद्ध स्वरूप के दर्शन कर रहे हैं] जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग में प्रेरित करता है।

पृथिवी और आकाश—दोनों—के समुद्रों को दृढ़ करने वाला वही है इसीलिए तो उसके भक्त किसी भी सांसारिक शक्ति से भयभीत नहीं होते। समुद्र की उठती हुई लहरों को देखकर अनजान मनुष्य यही समझ लेता है कि वे, मुंह बाए, उसको निगल जाने के लिए आ रही हैं। परन्तु बुद्धिमान पुरुष उनके तत्व को जानता हुआ, उन्हीं लहरों को अपना दास बना लेता है, और उनकी सहायता से सहस्रों मीलों की यात्रा शीघ्र तै करके अपने अभीष्ट स्थान पर पहुंच जाता है। यदि किसी नियम में ग्रंथित न होता तो समुद्र पृथिवी पर फैलकर सब प्राणधारियों को दबा लेता। परन्तु नियन्ता के नियमों से बंधा हुआ, पृथिवी पर दृढ़ होकर उसको बड़ा लाभ पहुंचा रहा है।

फिर जिस प्रकाश पर ही संसार का जीवन है और जिसके नानात्व के सौन्दर्य से आकाश की शोभा है, यदि वह छलावे की तरह स्थिर अवस्था में रहे तो आंखों को चौंधिया दे। जुगनु की चमक और बिजुली की दमक मनुष्य को चकाचौंध में डालकर कैसा अस्थिर चित्त बनादेती है। परन्तु सूर्य का स्थिर दृढ़ प्रकाश प्राणधारियों को प्राणरूपी जीवन प्रदान कर के मोद-मान बना देता है।

जिस परम पिता [पालक] ने समुद्र को पृथिवी पर दृढ़ किया और प्रकाश को अन्तरिक्ष में दृढ़ किया, उसे गायत्री की तीन समिधा कहती हैं। सूर्यादि प्राण शक्ति डालने वाले, और उदानादि मनुष्य शरीर में प्राणों को दृढ़ करने वाले उसी के आश्रय पर काम करते हैं। प्राणों का भी प्राण होने से वह मनुष्य को दुःखों से रहित करके आनन्दमय बनाता है। यह उस के जागृत पाद की क्रीड़ा है। जागृत में स्तुति द्वारा, मन, वाणी, कर्म से उसे अनुभव करके पहिली समिधा ब्रह्म-यज्ञ-कुंड में छोड़ी जाती है। तब अपनी निर्बलता का ज्ञान होकर दूसरी प्रार्थना रूपी समिधा हाथ में ली जाती है। उस समय उसका दिव्य, श्रेष्ठ स्वरूप उपासक के सामने आता है और श्रद्धापूर्वक वह इस दूसरी समिधा को भी यज्ञ—कुंड में छोड़ देता है। तब उस दिव्य सौन्दर्य से आकर्षित हुआ उपासक अपने उपास्यदेव के समीप पहुंचने के लिए आतुर होकर उपासना रूपी तीसरी समिधा को हाथ में लेता है और दिव्य चक्षुओं की प्राप्ति की प्रार्थना के साथ उसे भी यज्ञकुंड के अर्पण करता है।

परन्तु फिर भी पता नहीं लगता कि वह क्या है—*स्कम्भं तं ब्रूहि कतमस्सदेवसः*—वह देव कहां है ? स्तुति, प्रार्थना और उपासना द्वारा जागृत, स्वप्न और सुषुप्त अवस्थाओं को भी प्राप्त होकर उसके दर्शन नहीं होते। इन तीनों अवस्थाओं से तो वह कहाजाता है, गायत्री तो उसको कहती है; गायत्री की तीन समिधाएं तो उसका पता देती हैं—उसका निजस्वरूप उनके द्वारा नहीं दीखता। परन्तु वह सब अवस्थाओं से ऊपर अमात्ररूपी चतुर्थ पाद है। वही आत्मा है जिसे जानना, अर्थात जिसके दर्शन करने चाहिएं—"नान्तःप्रज्ञं न बहिः प्रज्ञं नोभयतः प्रज्ञं न प्रज्ञान घनं न प्रज्ञं नाप्रज्ञम्। अदृष्टय व्यवहार्य मग्राह्यमलक्षणम चिन्त्यम व्यपदेश्य मेकात्म प्रत्ययसारं प्रपञ्चोपशमं शान्तं शिवमद्वैतं चतुर्थं मन्यन्ते स विज्ञेयः॥" माण्डूक्य ॥

बड़े शोक से अभी समाचार मिला है कि बृटिश सेना के शिरोमणि श्रीमान् लार्ड किचनर, स्टाफ़ सहित, बड़ी जहाज़ में डूब गए। परमेश्वर बृटिश राज पर दया करें।

CC0. Gurukul K...

सद्धर्म-प्रचारक

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

गत अंक में हरिद्वार विद्वत्समिति के मन्त्री महाशय का पत्र देते हुए लिखा गया था कि यदि उन्हें हमारे प्रस्ताव किए हुए नियम स्वीकार हों तो गुरुकुल के पंडित शास्त्रार्थ के लिए उपस्थित होंगे। उसके उत्तर की बहुत दिनों तक प्रतीक्षा रही। जून की ८ तारीख को निम्नलिखित पत्र मिला—

श्रीयुत लाला मुन्शीराम जी योग्य यथोचित सम्मान पूर्वक

निवेदन—

आपने २२ ज्येष्ठ के 'सद्धर्म-प्रचारक' में विद्वत्समिति के निमन्त्रण स्वीकार करते हुए "पिण्डपितृ यज्ञ" (श्राद्ध) की वैदिकता" पर शास्त्रार्थ करने के लिए आना स्वीकार कर लिया है—तदर्थ धन्यवाद। विवादास्पद विषय आर्य-समाज और सनातन धर्म में जिस रूप से रहता आया है, उस ही रूप में होगा। आप वेदों से जीवितों का श्राद्ध सिद्ध करेंगे, और हम मृतक श्राद्ध का वैदिकत्व स्थापन करेंगे। आपने जो २ नियम लिखे हैं, उन पर वक्तव्य यह है—

नं० १—अन्तिम पक्ष यहां आपका नहीं हो सकता। आपके प्लेट फार्म पर अनुचित समझ कर हमने अन्तिम पक्ष लेने का हठ नहीं किया था, इस ही प्रकार यहां आपको भी अन्तिम पक्ष के लिए आग्रह नहीं करना चाहिए। दूसरे हम लोग तो मृतक श्राद्ध मानने वाले हैं। आपकी एक प्रकार उस पर शंका रूप विप्रतिपत्ति होगी। समाधान हमारा होगा, अन्तिम पक्ष समाधान का ही रहा करता है। हां आदि का पक्ष आप चाहें तो आप ही ले सकते हैं। और सब मिनट आदि का नियम आपका लिखा स्वीकृत है।

नियम नं० २ आपका लिखा स्वीकृत है।

नियम नं० ३ के विषय में यही वक्तव्य है कि साक्षि रूप से एक विद्वान् रख कर उसके उस ही समय हस्ताक्षर करवा कर विवरण एकत्रा ही दोनों ओर से प्रकाशित हो सके तो ठीक है। अन्यथा जैसी आपकी मरज़ी हो वही हमें स्वीकृत है।

आशा है, आप अवश्य ही १२ जून को प्रातः ८ बजे श्री गुरु मण्डलाश्रम मायापुर में दर्शन देकर अनुग्रहीत करेंगे।

भवदीय
विश्वनाथ शर्म्मा
विद्वत्समिति मन्त्री

(१) यह पत्र आठ जून को मिला। यदि इसका रजिस्टर्ड पत्र द्वारा उत्तर दिया जाय तो १० को विद्वत्समिति के मन्त्री के पास पहुंचेगा और १२ को उनका उत्तर हमें मिल सकता है। इस प्रकार एक बार पत्र का उत्तर आने में ही शास्त्रार्थ का दिन निकल जायगा। हमारा यह तात्पर्य नहीं कि मन्त्री महाशय ने जान बूझ कर इतना विलम्ब किया है, किन्तु किसी न किसी कारण से इतना विलम्ब हो गया है।

[२] मन्त्री महोदय के पत्र से स्पष्ट प्रतीत होता है कि वे उस मुख्य शर्त को मानने के लिए तय्यार नहीं हैं जो हमने पेश की थी। वे शास्त्रार्थ का 'पिण्डपितृयज्ञ' यह अस्पष्ट ही विषय रखना चाहते हैं—और स्पष्ट रीति से इस पर विचार नहीं करना चाहते कि ब्राह्मणों को खिलाया हुआ भोजन मृत पितरों को पहुंचता है या नहीं? हमारी ओर से उपस्थित किया हुआ विषय मन्त्री महोदय को स्वीकृत नहीं है। यह नया शीर्षक शायद इस लिये घड़ा गया है कि शास्त्रार्थ में बहुत सा शब्दमय माया जाल फैला कर विवाद के असली विषय को छुपाया जासके।

[३] मन्त्री महाशय के पत्र में एक भारी परस्पर विरोध पाया जाता है। बोलने का अन्तिम अवसर देने के बारे में लिखते हुए आप कहते हैं—"हम लोग तो मृतक श्राद्ध मानने वाले हैं। आपकी एक प्रकार उसपर शंकारूप विप्रतिपत्ति होगी। समाधान हमारा होगा" इसका तात्पर्य यह है कि हमारा कार्य केवल आक्षेप करना और आपके पक्ष का प्रतिषेध करना होगा। आप का पक्ष स्थापित हुए बिना हम आशंका कैसे करेंगे, हमारी सब आशंकायें कर चुकने पर यदि आपने कह दिया कि हमारा जो सिद्धान्त आपने माना है, वह हमारा सिद्धान्त ही नहीं है—तब सारा प्रयास व्यर्थ होगा। हम आशंका उठायें—इसके लिये आवश्यक है कि आप अपना पक्ष पहले प्रतिपादित करें। गुरुकुल में हमने आपको प्रथम बोलने का अवसर आपके मान लेने पर ही दिया था। एक स्थान में हमारा उत्तर पक्ष मान कर दूसरे स्थान पर आप लिखते हैं—

"आप वेदों से जीवितों का श्राद्ध सिद्ध करेंगे, और हम मृतक श्राद्ध का वैदिकत्व स्थापित करेंगे"। अर्थात् हमारा पक्ष प्रथम स्थापित होगा। आप के लेख का क्रम ऐसा ही सिद्ध करता है। हमारा प्रथम पक्ष है तो आपके न्याय से हम आशंका उठाने वाले नहीं हैं फिर हमारा ही अन्तिम भाषण क्यों न हो?

कथन है कि प्रथम आपकी ओर से पक्ष स्थापना हो, और अन्तिम उत्तर का हमें अधिकार हो।

[४] आप्त विद्वान् के हस्ताक्षरों की बात आपने व्यर्थ ही दोहराई है। इस विषय में आपने पहले आप्त महोदय से जो व्यवहार किया था—वह काफी है। उसी समय क्या ऐसे नोट लिखे जासकते हैं जिन्हें कोई आप्त प्रमाणित कर सके? जबतक नोटों को शोधकर विस्तृत किया जाय—तब तक आप प्रतीक्षा नहीं कर सकेंगे और पहले ही पत्रों में शास्त्रार्थ का वृत्तान्त छापना चाहेंगे, तब आप्त महाशय किस काम आयेंगे? यह व्यर्थ का प्रस्ताव आप स्वयं न मानने के लिये ही करते हैं—या किसी और उद्देश्य से।

[५] पहले तो शास्त्रार्थ का नोटिस ही इतनी देरमें भेजा गया शास्त्रार्थ से लगभग पन्द्रह दिन पूर्व ही वह जनता के हाथों में पहुंचा। फिर हमारा उत्तर इतना विलम्ब से आया कि केवल ४ दिन शेष हैं। नियमों का निर्धारित होना ही कठिन है। विषय आप वैसा ही अस्पष्ट रखना चाहते—और फैसला नहीं करना चाहते। बिना पक्ष स्थापना किये ही हमें आशंका करने की आज्ञा करते हैं—यह भी विलक्षण बात है। इन कारणों से स्पष्ट है कि नियम बद्ध शास्त्रार्थ हो—इस के मार्ग में आपका व्यवहार ही रुकावट हुआ है।

[६] आपने वाद के लिये जो समय रक्खा है—वह ख़ाली नहीं जायगा। उस समय आप अपने पक्ष का समर्थन करने के लिये सर्वथा तय्यार रहियेगा किन्तु नियम पूर्वक शास्त्रार्थ न होने के लिये आप उत्तर दाता होंगे।

———:०:———

पुस्तक समालोचना

साहित्य परिषद् की पुस्तकें

गुरुकुलीय साहित्य परिषद् की ओर से हमें चार निबन्ध समालोचनार्थ प्राप्त हुए हैं। उनके लिए सभा का धन्यवाद है ये निबन्ध सरस्वतीसम्मेलन के अधिवेशनों में पढ़े गये थे।

पुराण विमर्श—स्नातक विद्यासागर विद्यालंकार ने गतवर्ष यह निबन्ध सरस्वती सम्मेलन में पढ़ा था। निबन्ध में पुराणों के समुद्धारटन के लिए अच्छा प्रयत्न किया गया है। पुराण क्या हैं? उनके हानि लाभ क्या २ हैं? पुराणों में कैसी २ अपौराणिक बातें हैं—और उनके साथ फ़जूल का मसाला कितना है-इन सब बातों की दिग्दर्शन रूप से समीक्षा इस निबन्ध में भली प्रकार की गई है। पुराणों के भक्तों तथा आलोचकों को इस का अध्ययन अवश्य करना चाहिए। मूल्य =)

वैदिकसभ्यता के एक अंग का निरीक्षण-श्री पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी लिखित। निबन्ध का विषय बड़ा मनोरंजक है। वेदों में कहां तक प्राकृत सभ्यता मिलती है-इस प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर देने के लिए यह निबन्ध लिखा गया है। पण्डित जी की वेदविषयक खोज प्रसिद्ध है। इस निबन्ध में अनेक शब्दों की साक्षी से सिद्ध किया गया है कि जो प्राकृत वस्तुयें वर्तमान सभ्यता की शिरोमणि समझी जाती हैं--उनका वर्णन वेद में आता है। निबन्ध शिक्षादायक तथा मनोरंजक है।

मूल्य =)

वैदिक राज्यपद्धति—लेखक-श्री पं० श्री दामोदरसातवलेकर जी। इस निबन्ध में वेद तथा ब्राह्मणों से प्रमाण उद्धृत करके निम्नलिखित सचाइयां बताई गई हैं।

[१] राज्य साम्राज्यादि भेदों से वैदिक राज्य शासन पद्धति ११ प्रकारों में विभक्त होती है [२] सभा समिति और आमन्त्रण ऐसी तीन सभायें राज्य शासन में होती हैं [३] इन सभाओं में प्रजा की राय ही काम करती है।

[४] सब शासनों में बहुपाय्यस्व राज्य श्रेष्ठ है [५] बहुपाय्य स्वराज्य पद्धति से शासित अनेक राष्ट्रों में युद्ध की सम्भावना न्यून होगी है [६] राजा का चुनाव उसके गुणों से होना वेदानुकूल है [७] राजा के बनाने में सब राष्ट्रों की सम्मति चाहिए। यह विषय सूचि ही निबन्ध की उपादेयता को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है।

मनु और मांस—लेखक स्नातक बुद्धदेव विद्यालंकार। इस छोटे से निबन्ध में मनु में मांस विधान है या नहीं इस विषय की विवेचना की गई है। लघु और मधुर इन दो शब्दों में इस निबन्ध का वर्णन हो सकता है। निबन्ध में थोड़े से किन्तु उपयोगी शब्दों द्वारा बतलाया गया है कि मनु के माथे मांस विधान का जो दोष मढ़ा जाता है वह निर्मूल है।

मूल्य ⁻)॥

ये सब निबन्ध साहित्यपरिषद् के मन्त्री से प्राप्त हो सकते हैं।

ओथेलो—अनुवादक श्री गोविन्दप्रसाद खिलड़याल। मूल्य ॥) कविवर शेक्सपियर के प्रसिद्ध नाटक ओथे लोकाष्ट भाषानुवाद है। इसी भाषा का अनुवाद करना कठिन है--और फिर यदि एक ऐसे जगत्प्रसिद्ध कवि के काव्य का अनुवाद करना हो तो बहुत ही कठिन है। निःसन्देह अनुवादक महाशय को अपने कार्य में सफलता प्राप्त हुई समझी जाती, यदि पद्यों का भाग इतना शिथिल न होता। गद्य भाग उत्तम है। कई बड़े २ रहस्यमय पदों का बड़ा उचित अनुवाद हुआ है—महावरे की भी रक्षा करने का यत्न किया गया है। किन्तु पद्यभाग में अभी बहुत सी सुधारणा की जासकती है। साधारण तौर पर हम इस अनुवाद को भाषाप्रेमियों के लिए पठन योग्य समझते हैं, और अनुवादक के परिश्रम की सराहना किये बिना नहीं रह सकते।

सत उपदेश मालाउर्दू—श्री स्वामी सत्यानन्दजी के व्याख्यानों का संग्रह। संग्रह कर्ता म० राजपाल, सब एडीटर प्रकाश। मूल्य १० आना।

म० राजपाल ने एक सरस्वती आश्रम खोला है उस की ओर से आर्यसमाज के प्रसिद्ध पुरुषों के व्याख्यानों तथा लेखों के संग्रह प्रकाशित करने प्रारम्भ किए हैं। म० राजपाल का उद्देश्य श्रेष्ठ है—इस में उन्हें सफलता प्राप्त होनी चाहिए। अभी तक दो महानुभावों के व्याख्यानों तथा लेखों के ही संग्रह छपे हैं। यह प्रथम है। इस में श्री स्वामी सत्यानन्द जी के उपदेशों का संग्रह है। श्री स्वामी जी के उपदेशों का आर्यसमाज में बड़ा मान है उन की आकर्षण शक्ति का सिक्का सब मानते हैं। यह संग्रह आर्य जनता के लिए निःसन्देह लाभदायक होगा।

प्राचीन तहजीबऔर वैदिक धर्म—(उर्दू) श्री प्रो० रामदेव जी के लेखों तथा व्याख्यानों का संग्रह। मूल्य ॥=)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह उसी ग्रन्थमाला की दूसरी पुस्तक है। इस में रामदेव जी के योग्यतापूर्ण लेखों तथा व्याख्यानों का संग्रह है। वैदिक मेगज़ीन तथा प्रकाश में प्रोफेसर साहिब के जो लेख निकलते रहे हैं, उन में से चुने हुए लेख इस संग्रह में संगृहीत हैं। आप की योग्यता को आर्य्य-सामाजिक क्षेत्र में कौन नहीं जानता भारतवर्ष के इतिहास के विषय में आप ने कई प्रकार की खोज की है आप के बनाए इतिहास में वे संगृहीत हैं और उस इतिहास से भी आगे नई खोज उन लेखों में झलक रही है, जो संग्रह में संग्रहीत हैं। साथ की एक भूमिका भी है, जिस में पाठकों को प्रो० रामदेव जी के सम्पूर्ण गुणों का पर्याप्त परिचय मिल सकेगा। इसी प्रसंग को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए दोनों ही पुस्तकों में पुस्तकों के नेताओं के चित्र और उन की प्रशंसा में एक २ कविता भी दी गई है। सारांश यह है कि संग्रह वर्त्ता ने पुस्तकों को आकर्षक बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

Our Countriy's Awakening—Part 11 Education (अंग्रेजी) लेखक म० तेजूमल मुर्लीधर। प्रबन्ध कर्त्ता, देश सेवा यज्ञ। सूरत। मूल्य।-)

यह छोटी सी पोथी साधारण काग़ज़ और अतिसाधारण रीति पर छपी हुई है। भाषा पर विशेष बल नहीं दिया गया। किन्तु इस में ज़रा भी सन्देह नहीं कि इस का विषय बड़ा आवश्यक है। जातीय शिक्षा के आवश्यक अंग कौन से हैं इस का धार्मिक वर्णन करने की लेखक ने पूरी कोशिश की है।

भारतीय विद्यार्थी विनोद—लेखक म० भगवानदास माहेश्वरी। मूल्य ।=) प्रबन्धकर्त्ता, विद्यार्थी, प्रयाग से प्रयाग से प्राप्त।

म० भगवानदास माहेश्वरी अलीगढ़ के मासिक पत्र माहेश्वरी में शिक्षा सम्बन्ध में बहुत काल से लेख लिखते रहे थे। अब उन लेखों का संग्रह पुस्तक 'विद्यार्थी' के उपहार रूप में प्रकाशित हुआ है। पुस्तक का नाम विद्यार्थी विनोद है—किन्तु पुस्तक में विनोद के उपाय अधिक नहीं विचारने योग्य बातें बहुत हैं। शिक्षा के अंग भूत सभी आवश्यक विषयों पर लेखक के विचार प्रकट हुए है। पुस्तक पढ़ने योग्य है।

लघु लेख संग्रह—(गुजराती) अहमदाबाद के सस्तु साहित्यवर्धक कार्यालय द्वारा प्रकाशित।

इस कार्य्यालय के कार्य की ओर हम हिन्दी हितेषियों का ध्यान कई वार खेंच चुके हैं। इस की ओर से बहुत ही उपयोगी कार्य होरहा है। गुजराती साहित्य के भंडार को पूर्ण करने का कार्य इस की ग्रन्थमालाओं से खूब हो रहा है। इस लघुलेख संग्रह में तीन लेख हैं—

(१) जर्मन जासूस की आत्म कथा
[२] फिजी द्वीप में २१ वर्ष—
[३] जगत के महान युद्ध

सामयिक लेखों का किसी भाषा में ऐन समय पर प्रकाशित होते रहना उस के मंगल का सूचक है। हमारी हार्दिक इच्छा है—कि आर्य्य भाषा को भी कोई ऐसे महानुभाव मिलजायं—जैसे गुजराती को श्री स्वामी अखंडानन्द जी मिलेहुए हैं, जो इस कार्यालय के प्राणभूत हैं।

हिन्दी आल्हा—श्रीयुत देवीदयाल जी रचित। हिन्दी आश्रम बौक्स दरबन, नेरास।

यह एक छोटी सी कविता है—और जिसे नेटालस्थ एक सज्जन ने बनाई है। कविता आल्हा के ढंगपर है और भारत धर्ष की वास्तविक दशा का चित्र खेंचती है। कविता साहित्य रसिकों और अलंकार ते समालोचकों को आनन्द न देसकेगी परन्तु जिन के हृदय में देशप्रेम की जागृति है, उनके लिये अनुपम होगी। नमूने के तौर पर हम दो चार पद्यदेते हैं। कवि भारत माता और हिन्दी माता के लक्ष्य कर कहता है।

माता का ऋण हम पर भारी,
जो हाड़न में गयो समाय।
माता रोवें तड़प तड़प कर,
दुख कर हाय ठिकाना नांय।
हिंदी रोवें बिलख बिलख कर,
हम सब सोवें पांव पसार।
धिक धिक मेरे इस चोले को,
जो नहीं करूं मात निस्तार।

प्राप्ति स्वीकार

अहिंसाप्रदीप—लेखक पं० गणेशदत्त शास्त्री। मूल्य ।-)

आपवित्रेतिस्मृत्यर्थनिर्णयः—मूल्य का स्थान खाली है।

तमाखूसिगरेट नषेध—पं० देवीदत्त शर्म्मा मालिक किन्डर गार्टिन कार्यालय पो० भुवाली, ज़िला नैनीताल ने प्रकाशया। मूल्य -)।

योगवंश—पं० वंशीधरदुबे लिखित मूल्य =)

पं० गौरी शंकर भट्ट जी
के नये मुद्रण

गुरुकुल के मुलेखाध्यापक पं० गौरीशंकर भट्ट जी के गुणों से अब हिन्दी संसार भली भांती परिचित हो चुका है। आप कुछ न कुछ उपयोगी कार्य सदा करते ही रहते हैं। कोई न कोई मनोहर और अनूठी वस्तु आपकी ओर से प्रकाशित होती ही रहती है। आपका एक निबन्ध हमें समालोचनार्थ मिला है — जिसमें 'देवनागरी को अलंकृत करने के उपाय' लिखे हैं। यह निबन्ध पिछले गुरुकुलोत्सव पर पढ़ा गया था, प्रचारक में भी निकल चुका है। इस का पढ़ना देव नागरी के प्रेमि मात्र के लिए लाभदयक होगा। मूल्य -)

—:o:—

"आवश्यकता"

"आर्य्य-समाज स्यालकोट के लिए एक विद्वान् आर्य्योपदेशक की आवश्यकता है जो वेद उपनिषद् आदि धर्म पुस्तकों की कथा कर सकें। वेतन गुज़ारे के लिए २५) मासिक से ४०) मासिक तक योग्यतानुसार तथा आवश्यकतानुसार दिया जावेगा। प्रार्थना पत्र शीघ्र ही निम्नस्थ पते पर आनी चाहिए।

चरणदासखुरी मन्त्री
आर्य-समाज स्यालकोट

Digitized by eGangotri

उच्च जीवन।

(श्री उपाध्याय सेवाराम एम. ए. लिखित)

उच्च जीवन से सब से प्रथम भाव जो हमारे दिल में आता है "भला होना" और "भले ही काम करना" है। दूसरे शब्दों में उच्च जीवन से अभिप्राय एक तरफ़ तो "आत्मपरीक्षण" से है, और दूसरी तरफ़ "निष्कामभाव से परसेवा करना" और "मानव समाज का यथाशक्ति परोपकार करना है"। सब ही मनुष्य सब स्थानों और सब अवस्थाओं में इस का अभ्यास कर सक्ते हैं, और सब को यह प्रारम्भ कर देना चाहिए। Felix Adler के शब्दों में इसे इस प्रकार कह सक्ते हैं, कि उच्चजीवन और सामान्यजीवन के क्षेत्र प्रत्येक जगह परस्पर टकरा रहे हैं और हम एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में प्रत्येकक्षण में सीमालांघ कर जा सक्ते हैं। उच्च जीवन ऐसा ही वास्तविक पदार्थ है जैसे कि ये सब स्थूल पदार्थ जो कि हमारे दृष्टिगोचर होते हैं। पर उस को देखने के लिए हमारी सदा आखें खुली रहनी चाहिए।

उपरोक्त भाव का विस्तार करने से हमें उच्चजीवन के कार्य चतुर्धा विभक्त और उन के परखने की चार ही कसौटियां प्रतीत होती हैं; जो कि मनुष्य के स्वभाव पर ही निर्भर हैं। इस से पता लगता है कि प्रत्येक आत्मा में निर्धारण और आत्मसंयम की थोड़ी या बहुत शक्ति अवश्य होती है। इच्छा निर्धारण तथा संयम दोनों ही काम करते हैं। किसी को महा पुरुष पूर्णतया तब ही कह सकते हैं जब कि वह अपनी इच्छा का राजा हो। वह प्रान्तीय तथा अल्प चेष्टाओं को अपने वश में कर लेता है, और अपने आदर्शों के अनुकूल बना लेता है। यह दिव्य संयम वाचिक कायिक और मानसिक संयमों (आत्मसंयम, स्वादेन्द्रिय संयम, स्वभावसंयम, मनोवृत्तिसंयम, समयसंयम और शक्तिसंयम) इत्यादि में अपने आप को प्रकट करता है।

उच्चजीवन विनापरिश्रम ही जैसे तैसे नहीं बन जाता, पर यह विवेक और आत्म संयम का फल है। उच्चजीवन का ही मनुष्य यह धारण करता है कि "मैं यह बनूंगा" और वह अपनी सम्पूर्णशक्ति वही बनने में खर्च कर देता है। वह पक्का इरादा कर लेता है कि "मैं यह करूंगा" और वह उसे कर के दिखा देता है। आत्मसंयम के कई एक भेद ये हैं:— ब्रह्मचर्य और और शुचि ही वासनाओं का संयम है,, 'उत्साह, साहस' दुःखों का वशीकरण है; और वाह्यशुद्धि "मैलीकुचैली वस्तुओं तथा रोगों के प्रतिघृणा" का नाम है।

प्यारे भाई! अपने धर्म पर दृढ़ रहने के लिए विषयों और द्वन्द्वों पर कहां तक विजय पा सकते हो? यह तुम में वा किसी अन्य मनुष्य में उच्चजीवन की सब से प्रथम सीढ़ी है।

ऊंचे जीवन के परखने की कसौटी जैसे पवित्रता वा आत्म संयम है वैसे ही "सच्चा प्रेम" भी है। प्रेम से हमारा अभिप्राय उस वर्ताव तथा चेष्टा से है जो मनुष्य जाति के हृदयों को प्रेम के डोरे में बांधती है? और तुम को संसार के सब तरह के जीवनों के उपयोगी बना देती है। प्रेम या दूसरों के दुःखों को अनुभव करने की शक्ति का भी ज्ञान मनुष्य के चित में स्पष्टतया होता है। जिस आत्मा में दिव्यभावों का उदय और विकास हो जाता है, उस के अन्दर एक ऐसी चमत्कारिणी शक्ति उत्पन्न हो जाती है जो मनुष्यों के हृदयों को परस्पर प्रेम के डोरे में बांधने का काम करती है और उस का संसारोपयोगी जीवन बना देती है। प्रेमसंयोग का और घृणा वियोग का कारण है। प्यारे भाई! क्या तुम मनुष्यों के हृदयों को धर्मानुकूल जोड़ने या इस के विपरीत फोड़ने का काम करते हो? यही मनुष्य के यथार्थस्वरूप की कसौटी है। हम माता की तरह दूसरों के दुःखों की चिन्ता करें, दूसरों में आनन्द का संचार करें उन के शोक को कम करें, उन के व्याकुल चित्तों को सान्त्वना देवें, और दुःखी दिलों के आंसुओं को करुणारूपी जल से धोवें। यह सब कुछ हमें प्रेम ही सिखाता है। क्या तुम इन में से किसी का भी पालन करते हो? प्रेम हमें सिखाता है कि देश जाति और धर्म्म का भेद होने पर भी धर्मात्मा मनुष्यों का मान, उन की सराहना, प्रशंसा, और पूजा करो। क्या तुम यह करते हो? यदि करते हो तो समझो कि उच्चजीवन का अङ्कुर तुम्हारे अन्दर फूट पड़ा है।

प्रत्येक मनुष्य को संसार की हर एक सचाई को जानने का प्रयत्न करना चाहिए। महापुरुष अपनी शक्तियों को पूरे बल से काम में लाता है, और संसार की हर एक सचाई को जानने तथा ग्रहण करने का पूरा प्रयत्न करता है। यह उच्चजीवन के परखने की तीसरी कसौटी है। क्या तुम ऐसे सत्य की अन्वेषणा करते हो जो कि किसी को भी हानि न पहुंचावे? क्या तुम सत्य को परखते हो? क्या जो सत्य तुम्हारे मनोरथों के प्रतिकूल है, पर कसौटी पर ठीक २ ठहरता है, उसे ग्रहण करते हो? क्या तुम हर तरह की प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ रहते हो? क्या तुम सत्य बोलने में वाक्छल तो नहीं करते? क्या तुम सत्य का समर्थन, सत्य का उपदेश और सत्य से ही प्रेम करते हो? क्या दूसरों के विषय में सम्मति बनाते समय, तुम्हारा साक्षी धर्म होता है? महापुरुष यह सब कुछ करता है। वह सत्य को खोजता, सत्य को परखता, सत्य ही बोलता, सत्य का समर्थन, सत्य का उपदेश और सत्य से ही प्रेम करता है। धर्म को ही साक्षी रख कर दूसरों के विषय में सम्मति बनाता है; और अपने इरादों और प्रतिज्ञाओं का पक्का रहता है। वह सत्य का ग्रहण, सत्य का पालन और सत्य का ही प्रकाश करता है।

मनुष्य में कार्य करने की शक्ति है वह भोजन अपनी जीवन यात्रा बनाये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रखने के लिए खाता है। इस तरह वह संसार से ऋण लेता है। उस का परिवार और समाज उस का भरण पोषण करते हैं, और उसे शिक्षा देते हैं। वह उनका भी ऋणी बनता है। यदि वह धर्मात्मा है तो वह अपना ऋण उतारने का प्रयत्न करेगा। संसार उस की सहायता करता है, इस लिए उसे संसार का ज़रूर उपकार करना चाहिये। उसे मन, वचन, कर्म से इन ऋणों से मुक्त होने का यत्न करना चाहिए। उसे अपने धर्म का अवश्य ही पालन करना चाहिए। महापुरुष अपने धर्म का पालन करता है। वह अपना सुधार करता है, वह परिवार, जाति और देश के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन करता है। यह जानता हुआ कि दूसरों ने मेरे साथ भलाई की है, वह दूसरों का भला करता है। क्या तुम अपने आत्मा, शरीर, गृह, देश सम्बन्धी कर्तव्यों का पालन करते हो? यदि करते हो तो समझो कि तुम ऊंचे बनने लग गये हो, तुम वर्ण संयमी और सच्चे द्विज हो। इन चार परखों को तुम अपने जीवन में भी घटाओ, और देखो कि तुम ने उच्च जीवन में कहां तक प्रवेश किया है। क्या तुम पवित्रता और दिव्य आत्मसेवन का जीवन व्यतीत करते हो? क्या तुम उस प्रेम की शक्ति का प्रयोग करते हो जो कि संसार को एक डोरे में बांधे रखती है? क्या तुम सत्य का ग्रहण, पालन और प्रकाश करते हो? क्या तुम सब के प्रति अपना कर्तव्य पालन करते हो? और अपने साथ की हुई भलाई का बदला चुकाते हो? और अपने से की हुई बुराई को सुधारते हो? आओ। हम एक दूसरे का उच्च जीवन बनाने में सहायक होवें।

—:०:—

महाराष्ट्र में राष्ट्रीयता का गुरु
विष्णु शास्त्री चिपलूनकर

(उस के एक भक्त द्वारा लिखित)

प्रायः सब कोई और विशेषतया राष्ट्रीयदल का वाम पक्ष हमारे चरित नायक को महाराष्ट्र में राष्ट्रीयता के भावों का उद्धारक समझता है। उस का नाम महाराष्ट्र में घर घर प्रसिद्ध है। इस उत्साही युवाने, रामदास और शिवाजी से पवित्र की गई महाराष्ट्र भूमि में जातीय आत्म विश्वास के साथ सब के जीवनों में प्राण संचार कर दिया। आज भी, जब उस का स्वर्गवास हुए ३४ वर्ष बीत गए हैं उस का नाम, वार्षिक उत्सवों में बड़े मान और भक्ति से स्मरण किया जाता है।

विष्णु शास्त्री का जन्म पूना में १८५० में हुआ। उस का पिता वेद और दर्शनों का प्रसिद्ध पण्डित था। उसने अपने गुरु को शास्त्रार्थ में हरा कर उस से "बृहस्पति" की मान्य उपाधि उपलब्ध की थी। उसने अङ्गरेज़ी शिक्षा २५ वर्ष की अवस्था में शुरू की और वह शीघ्रही ग्रीन जैसे अध्यापकों का प्रीति पात्र बन गया। विष्णु शास्त्री की माता यद्यपि अशिक्षित थी पर वह बुद्धिमति थी। वह एक सती साध्वी देवी थी। इसी लिये उसकी सास उसे (विष्णु की माता को) 'तुकाराम की बहिन' कहा करती थी। बालक विष्णु स्कूल में प्रविष्ट होगया। १८६५ में उसने एण्ट्रेन्स पास कर लिया। १८७१ में वह डेकन कालिज से ग्रेजुएट् बना। विष्णु शास्त्री ने अपने जीवन का यह बहुमूल्य भाग अपने कालिज के पुस्तकालय की उत्तमोत्तम पुस्तकों के सार के संग्रह करने में और अपने जीवन के उद्देश्यों के बढ़ाने और सुधारने में बिताया। उस के भविष्यत् के उद्योगों से यह स्पष्ट पता लगता था कि यह जीवन का भाग उसके जीवन के अपने परमोद्देश्य की तय्यारी का समय था।

ग्रेजुएट् बन के उसने पूना गवर्मेन्ट हाईस्कूल की असिस्टेंट मास्टरी स्वीकार की। पर उस का चित्त किसी दूसरी ओर जारहा था। अपने प्रियदेश के अङ्गरेज़ी पढ़े लिखे युवाओं के भ्रमों को दूर करने के लिए और उन की आकांक्षाओं और भावों को सन्मार्ग की ओर फेरने के लिए उसने "निबन्धमाला" नाम का एक मासिक पत्र १८७४ में निकला और १८८१ तक उसे बिना किसी सहायता के चलाया।

इस ७ वर्ष के अन्तर में उसने राजनैतिक, साहित्य सम्बन्धी और ऐतिहासिक विषयों पर लेख लिखकर विचार भूमि में एक विप्लवसा उपस्थित कर दिया। उसने भारतवासियों की उन दुर्बलताओं को, जो जातीय तथा कुल परम्परागत समझी जाती हैं, छिन्न भिन्न कर दिया, और युवाओं में, विशेषतया अंग्रेज़ी पढ़े लिखे युवाओं में जातीय साहस, और जातीय उत्साह से जीवन फूंक दिया। उस के भाई की संग्रह की हुई उसकी १५०० पृष्ट की निबन्धमाला पुस्तकरूप में मिलती है। उन में जान फूंकी लगती है। उनमें वाक् सौष्ठव है, और वक्रोक्ति व्यङ्ग और लालित्य से परिपूर्ण गौडीरीति है। आज ३६ वर्ष के बाद भी यह पुस्तक, विचारों की अभिनव कल्पना में, निर्भीकता में और विषय की पाण्डित्य पूर्ण विवेचना में अद्वितीय है।

ऐसे स्वतन्त्र और प्राणमय लेख बहुत देर अप्रसिद्ध नहीं रहे विशेषतया जब कि वे एक गवर्नमेन्ट हाईस्कूल के असिस्टैण्ट अध्यापक की लेखनी से लिखे गये थे। उस के पत्र की ३० वीं संख्या अचानक मिस्टर जेकोबी के हाथ जापड़ी। जिसने उसमें से चार सन्दर्भ अनुवाद

Digitized by eGangotri

करके "बाम्बेगज़ट" में छपने भेज दिये। अपना अज्ञात नाम "एलिफस" रख दिया। जेकोबी महाशय ने उन्हें उस समय की गवर्नर की भेंट कर दिया। साथ यह लिख के कि ये एक गवर्मेन्ट हाईस्कूल के असिस्टेन्ट मास्टर की राजभक्ति का नमूना है और देशी अख़बारों पर नियत किये रिपोर्टर के पुत्र के परिश्रम के मीठे फल हैं। इस संख्या में विष्णु शास्त्री ने भारतीय इतिहास के अंग्रेज लेखकों को आड़े हाथों लिया था और उन के भारतीय लोगों के धर्म, साहित्य आदि विद्या विषयक ज्ञानढोल की पोल खोल दी थी। १८७७ में उस की रत्नागिरि बदली होगई। १८७८ में उसके पिता का स्वर्गवास हो गया। वह स्वतन्त्र होगया। १८७९ में उस ने गवर्मेण्ट सेवा की सुन्दर सुन्दर लुभाने वाली चांदी की जंजीरों को खोल परे फेंका और मातृभूमि की सेवा के लिये स्व-तन्त्र हुआ, पहिला काम जो उसने जिम्मे लिया वह एक जातीय संस्था में युवाओं को विद्या देने और जातीय उन्नति के योग्य बनाने का था। १८८० की पहिली जनवरी को अब तक प्रसिद्ध "न्यूइङ्गलिश स्कूल" स्थापित किया जो "दक्षिण शिक्षा समिति" के आधीन विशाल फर्गुसन कालिज के रूपमें परिणत हुआ। यह कार्य उसने लोकमान्य तिलक और नाम जोशी महोदय की सहायता से किया। इनके और भी अनुगामी बने जिनमें प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ कोषकार आपटे और प्रसिद्ध समाज संशोधक आगर कर महाशय थे। कालिज में पढ़ते हुए इन युवाओं के हृदय शास्त्री महोदय के लेखों से जोश से भरजाते थे और ज्यूंही उन्होंने अपना कालिज अध्ययन समाप्त किया वे इस साहसिक कार्य में सहयोगी बन गये। इन शक्ति-शाली युवकों की सहायता से १८८१ के अन्त में उसने "केसरी" और "मराठा" दो पत्र क्रमशः मराठी और अङ्गरेज़ी में निकाले और क्रमशः तिलक और आगर कर के हवाले कर दिये। और इन के प्रकाशन के लिए उसने "आर्य्यभूषण प्रेस" स्थापित किया—

स्वदेशी शिल्प तथा व्यापार के प्रोत्साहन के लिये "चित्र-शाला प्रेस" स्थापित किया-जहां कि लिथोग्राफ तरीके से चित्र छपते थे। जोशी महाशय के हाथ में आकर यह प्रेस अब बहुत बढ़ गया है और अब इस में से एक सुन्दर सचित्र साप्ताहिक पत्र निकलता है जो देश के उस भाग में एक अद्वितीय पत्र है।

विद्यार्थियों के उपयोग के लिए शास्त्री महाशय ने एक "किताब खाना" भी स्थापित किया और वह एक चाकू आदि का कारखाना खोलने को ही था। इस समय नाना विधअर्थ साहित्य, समाचार पत्र, विद्या, शिल्प सम्बन्धी उद्योगों में लगे हुए विष्णुशास्त्री का जीवन का अन्त समीप आगया और १७ मार्च १८८२ को वह टाईफाईड्ज्वर से इस संसार से चलबसा। इस समय विष्णु शास्त्री चिपलूणकर महोदय की आयु केवल ३२ वर्ष की थी।

ऐसा जीवन इस, सामयिक महाराष्ट्र के प्रथम महादेशभक्त का है, जो कि जातीय उत्साह और उद्योग से परिपूर्ण है। इस से फलकरी प्रतिभा टपकती है। उपर्युक्त चरित्र से प्रकट होगया होगा कि उस के उद्योग कितने विशाल थे। पूना की अनेक सार्वजनिक संस्था उसी प्रतिभा भूमि पर फले फूले वृक्षों के मधुर फल हैं अनेकों में प्राण उसी के कारण आये। इस लिये यह स्वाभाविक ही है कि हर एक महाराष्ट्र नवयुवक के हृदय में इस पूजनीय महानुभाव को स्थान मिले।

यद्यपि ३४ वर्ष उसको गुज़रे होगये हैं तो भी उसकी आत्मा उसकी संस्थाओं के ऊपर मण्डला रही है और अब भी वह उन का रक्षक देवता प्रतीत होती है जो कि उन के कार्यों को पीछे से देख रही है और सामयिक कार्यकर्त्ताओं को, अपनी दुर्दम्य श्रद्धा और मातृभूमि के कार्य की आशा के बल से प्रोत्साहित कर रही है।

(लीडर से अनुवादित)

—:o:—

प्राप्त पत्र

सन्देह

प्रिय पाठक वृन्द! जिस प्रकार ब्राह्मण क्षत्रिय और वैश्य इन तीनों वर्णों के बालकों को उपनयन और वेदारम्भ संस्कार के अनन्तर वेद पढ़ने का पूर्ण अधिकार है इसी प्रकार उपरोक्त तीनों की बालिकाओं को भी उपनयन तथा वेदारम्भ हो कर वेद विद्या पढ़ने का पूर्ण अधिकार है व नहीं यह सन्देह है। इस विषय में सर्वदा आर्य-समाज तथा सनातन समाज में शास्त्रार्थ भी हुआ करता है जिसमें आर्य-समाज की तरफ से यथेमाम् वाचम् इत्यादि वेद मन्त्र प्रमाण दिए जाते हैं। सनातन समाज की तरफ से मन्वादि धर्म शास्त्रों के प्रमाण दिए जाते हैं। और बतलाया जाता है कि विवाह संस्कार के अतिरिक्त स्त्रियों के संस्कार वेद मन्त्रों द्वारा करना वेद विरुद्ध है और पति सेवा ही गुरुकुल में वास है यह कार्य ही अग्नि क्रिया है। शायद यथेमाम् वेद मन्त्र के अर्थांश में दोनों समाजों का प्रभेद हो परन्तु जब ऋग्वेद के मन्त्रों के ऋषियों की तरफ दृष्टि डालते हैं तो इस प्रकार पता लगता है। ऋग्वेद संहिता के पांचवें मण्डल और दूसरे अनुवाक के अट्ठाइसवें सूक्त के ऋषि के स्थान पर विश्ववारा का नाम लिखा है जिसका जन्म अत्रि गोत्र में हुआ था। इस सूक्त में ६ मन्त्र हैं जिसके गूढ़ाशय को विश्ववारा ने सब से प्रथम जाना। ऋग्वेद संहिता के दशवें मण्डल के १५३ वें सूक्त में ५ ऋचायें हैं, इनका ऋषि ऐन्द्रमातृगण हैं। यह स्त्रियां कश्यप ऋषि की कन्यायें थीं। इन मन्त्रों के गूढ़ाशय को इन कन्याओं ने जाना और संसार में प्रचार किया। ऋग्वेद संहिता के दशवें मण्डल के १२५ वें सूक्त के आठ ऋचाओं की वाग् ऋषि है, जिन मन्त्रों को देवी सूक्त भी कहते हैं और यह वाक् अत्रि ऋषि की कन्या थी। इसी वाक् देवी ने सब से प्रथम अद्वैत सिद्धान्त का अनुभव किया और अद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया। इसी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देवी के मूल सिद्धान्त को आदर्श मान कर भगवान् शंकराचार्य्य जी ने संसार में अद्वैत सिद्धान्त का प्रचार किया है। इस सिद्धान्त के प्रवर्त्तक भगवान् शंकराचार्य नहीं हुए किन्तु वह तो केवल पुनरुद्धारक हुए हैं। इस सिद्धान्त की कर्त्री वाग् देवी ही हुई थी। अस्तु, ऋग्वेद संहिता के आठवें मण्डल के ६१ वें सूक्त की आठ ऋचाओं की ऋषि अपाला देवी है। इसी देवी ने इन मंत्रों के गूढ़ भाव को जाना और उसका संसार में प्रचार किया। इस देवी का जन्म भी अत्रि ऋषि के गोत्र से हुआ था। ऋग्वेद संहिता के पहिले मण्डल के १७६ सूक्त की पहिली और दूसरी ऋचाओं की ऋषि लोपामुद्रा है। यह देवी बड़ी पण्डिता और विदुषी थी और पातिव्रतधर्म्म में पूर्ण थी। अपने समय में यह देवी एक ही हो गई है। इस की पुराणों में कथा भी आती है। ऋग्वेद-संहिता के चौथे मण्डल के १८ वें सूक्त की ६-७ ऋचाओं के ऊपर ऋषि के स्थान में देवमाता अदिति का नाम सुशोभित है, यह कश्यप ऋषि की स्त्री थी और बड़ी विदुषी थी। देवराज इन्द्र अदिति के ही पुत्र पुराणों में प्रसिद्ध हैं।

ऋग्वेद संहिता के मण्डल १० वें सूक्त १० मन्त्र १-३-५-७ और ११ तथा सूक्त १५४ के पांच मन्त्रों के ऊपर ऋषि के स्थान में यमी देवी का नाम सुशोभित है। इन मन्त्रों के गूढ़ भावार्थ को यमी देवी ने ही सब से प्रथम जाना और संसार में प्रचार किया। ऋग्वेद-संहिता के मण्डल ८वें सूक्त १ के ३४ मन्त्रों की ऋषि शश्वती देवी है जो अंगिरा ऋषि की कन्या थी और जो आसंग नामक राजा को ब्याही थी। ऋग्वेदसंहिता के मण्डल १० सूक्त ३६ और ४० की ऋषि घोषा है जो कि कक्षीवान् नामक राजा की कन्या थी। ऋग्वेद-संहिता के १० वें मण्डल के ८५ वें सूक्त को देखने से पता लगता है कि इस सूक्त का ऋषि और कोई नहीं केवल सूर्य्या ही है। यह देवी बड़ी विदुषी और ब्रह्मवादिनी थी।

बृहस्पति की स्त्री जुहू ऋग्वेद संहिता के मण्डल १० सूक्त १०६ की ऋषि है। देवराज इन्द्र की स्त्री इन्द्राणी ऋग्वेद संहिता के मण्डल १० सूक्त १४५ की ऋषि है। विदुषी शची ऋग्वेद संहिता के मण्डल १० सूक्त १५६ की ऋषि है। विदुषी गोधा ऋग्वेद संहिता के मण्डल १० सूक्त १३३ की ऋषि है। विदुषी श्रद्धा ऋग्वेद संहिता के मण्डल १० वें के कई मन्त्रों की ऋषि है। विदुषी रोमशा, जो कि भावगव्य राजा की स्त्री थी, ऋग्वेद संहिता के मण्डल १ के सूक्त १२६ की पहिली ऋचा का भावार्थ जाना और वह उसकी ऋषि बनी। सज्जन वृन्द! यह तो वैदिक युग की स्त्रियों का वर्णन रखा है जिन्होंने बड़ी बड़ी तपस्यायें करके वेदों को पढ़ा और वेद मन्त्रों के गूढ़ाभिप्राय को समझा तथा उसका संसार भर में भ्रमण करके प्रचार किया। सन्देह उत्पन्न होता है कि यदि स्त्रियों का उप नयन तथा वेदारम्भ संस्कार पुरातन काल में नहीं होता था तो अब बिना उपनयन संस्कार तथा वेदारम्भ के वेद पढ़ने का अधिकार ही नहीं है तो इन देवियों ने वेदों को कैसे पढ़ा और पढ़ कर वेद मन्त्रों के गूढ़ाशय को कैसे जाना और उसका संसार में प्रचार किया। क्या कोई सुरदेव इन को धर्म मर्य्यादा बतलाने वाला नहीं था। इस प्रकार इस युग में भी अनेक रमणियां होगई हैं जिन से भारत का नाम आज देदीप्यमान है। जैसे मैत्रेयी, गार्गी, देवहूती, मंदालसा आत्रेयी, भारती (जिसका नाम सरस्वती भी प्रसिद्ध है और जो मंडन मिश्र की स्त्री थी) जिसने भगवान् शंकराचार्य के साथ शास्त्रार्थ किया था, खनादेवी, लीलावती, मीराबाई, कर्मवतीबाई, लक्ष्मीदेवी, प्रवीणाबाई, मधुरवाणी, मोहनांगनी, मल्ली देवी, अमपार-नाची, इन्दमुखी, माधुरी, गोपी रसमयी, माधवी, आनन्दमयी, गङ्गामणि, वैजयन्ती, माननीदेवी, प्रियंवदा, इत्यादि भारत मुखोज्ज्वल अनेक विदुषियां भारतवर्ष में मनुष्यों से अधिक पाण्डित्य प्रवीण होगई हैं। संभव है कि उपरोक्त इस युग की रमणियां वेद के संहिता भाग को छोड़कर अपना अनुपम पाण्डित्य प्रकट कर गई हों परन्तु वेद मन्त्रों की ऋषि बन कर उपरोक्त रमणियें भारत का नाम तथा अपना नाम अमर कर गई हैं इस में मुझे बड़ा संदेह है। विद्वानों की सृष्टि संदेह निवृत्त करने के लिये है इस लिए मैं इस का समाधान किसी सनातनधर्म्म के प्रतिष्ठित प्रौढ़ विद्वान् से लेने चाहता हूं। यदि ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम के मुख्याचार्य्य श्री ६ पं० गिरिधर शर्म्मा जी दें तो और मुझे संतोषजनक होगा। ये सब भारत रमणियां स्वयं वेद के संहिता भाग को पढ़ कर वेदार्थ ठीक २ अनुभव कर के वेदों के पठन-पाठन का अधिकार भारत-रमणियों को बतला गई हैं। इस लिये मैं इस का समाधान सनातनधर्म्माचार्य्य विद्वान् से ही लेना उचित समझता हूं ताकि फिर इस विषय में संदेह तथा विवाद कभी न चले। यह विवाद ही अनैक्य का कारण है। इसी प्रकार आर्य्यसमाज तथा सनातन समाज में जो विषय विवादाग्रस्त हैं, दोनों तरफ के विद्वानों को चाहिये प्रेम से वेदशास्त्रों द्वारा शीघ्र निर्णय कर लेवें; इस में ही हमारा तथा हमारे प्रिय भारत देश का हित है—

(लेखक-स्वामी योगानन्द
खुरजा सिटी)

—:०:—

हाय! पं० पारस नाथ जी

यह सूचना अत्यन्त हृदय विदारक है कि वैदिक धर्म के भूषण सच्चे आर्य्य सदाचारी वैदिक पाठशाला झज्झर के प्रवेतक श्री पं० विश्वम्भर जी के पिता श्रीमान् पंडित पारसनाथ जी का देहान्त गाज़ीयाबाद (मेरठ) में होगया। श्री पंडित पारसनाथ जी की आयु इस समय (७२) बहत्तर वर्ष की थी। आप शरीर से ऐसे हृष्ट पुष्ट थे कि मरने से एक सप्ताह पहिले तक २० और २५ कोस तक पैदल

Haridwar. Digitized by eGangotri

चलसकते थे और वोह कार्य्य शारीरिक का कर सकते थे जो आज कलके नवयुवक नहीं कर सकते हैं। जिस समय झज्झर में प्लेग हुआ उस कठिन समय में जब कि बाप बेटे के, भाई भाई के, स्त्री पति के, पति स्त्री के मरते ही गृह का द्वार बन्द करके भाग जाया करते थे उस समय आप ही थे कि जिन्होंने मकानों के किवाड़ तक खोल कर अनाथ मृतकों की मृतक क्रिया की। उस विकट समय में उन्होंने जो प्लेग पीड़ितों की रक्षा और मृतकों की सद्गति की है वह अकथनीय है। आपने वैदिक पाठशाला झज्झर को भूमी दान दी, आप झज्झर की ब्राह्मण जाति में धनाढ्य निस्वार्थ सेवक एक ही थे। आप के परलोक सिधारने से झज्झर को अत्यन्त हानि हुई है श्रीमान् जी का मृतक संस्कार वैदिक रीत्यानुसार श्रीमान् पंडित विश्वम्भर जी ने किया और दश रुपया वेदप्रचार फण्ड को दान दिया और एक स्वर्णपदक गुरुकुल कांगड़ी के किसी ब्रह्मचारी को देना निश्चय किया है जो श्री पूजनीय महात्मा जी की सेवामें शीघ्र भेज दिया जायगा। श्रीमान् पं० पारसनाथ जी अच्छी सम्पति छोड़ गये हैं। श्री पं० विश्वम्भर जी कि जिन्होंने अपना सबसे पूर्व सब कुच्छ देकर गुरुकुल कांगड़ी की सेवा की तत्पश्चात आपके पास सिर्फ २०००) रुपया था वह भी वैदिक पाठशाला के अर्पण किया।

अब आप शाखा झज्झर का प्रबन्ध कर रहे हैं। हम झज्झर निवासियों को श्रीमान्जी के मरने का अत्यन्त शोक है परमात्मा से प्रार्थना है कि मृतात्मा को सद्गति और इन के परिवार को शान्ति प्रदान करें।

कविराज हरिश्चन्द्र वैद्य

—:o:—

विद्यार्थियों की दशा

(२)

परन्तु उसके सर्वथा विपरीत आज कल शिक्षक और शिष्यों में जैसा घृणित व्यवहार हो रहा है उसको दर्शाते हुए लेखनी भी अपनी असमर्थता प्रकाशित करती है। सदाचार और आरोग्यता तो विद्यार्थी से पाठशाला में पदार्पण करते ही गमन करजाते हैं। विद्यार्थियों के लिए स्वस्थ रहना प्रायः दुर्लभ हो गया है। बहुतेरे शिक्षक तो स्वधर्म विरुद्ध विद्यार्थियों पर पाशविक अत्याचार तक करते है और विद्यार्थी उस के प्रतिरोध में जिह्वा तक हिलाने में असमर्थ हैं और उन की सुनता भी कौन है। पदाधिकारियों का निरीक्षण भाव और प्रधानाध्यापक को सर्वाधिकार ही इस का मुख्य कारण है। बहुत सी जगह की [प्रधानतया देशी रियासतों की] पाठशालाओं में तो उच्चपदाधिकारी महाशय पधारते हुए झखाते हैं। वर्ष में यदि एक दिन भी वह पधार आवें तो बड़ा शुभ दिवस मानना चाहिए। करें क्या खुद इस योग्य नहीं कि पाठ प्रणाली का निरीक्षण और पाठशाला की पड़ताल कर सकें रियासतों को इस ओर विशेषतया ध्यान देना योग्य है। परमेश्वर की दया और सरकार की असीम कृपा से अब वह समय आया है कि प्रत्येक प्राणी अपने कष्टों को पत्रों द्वारा प्रकाशित करसकता है अब वह समय नहीं है कि मनुष्य एक दूसरे का अत्याचार सहन कर सके। हमें पूर्ण आशा है कि हमारी न्याय प्रिय बृटिश गवर्नमेंट की छत्र छाया में अब यह कुप्रथायें ज्यादा दिन न ठहर कर शीघ्र ही मृतावस्था को प्राप्त होंगी देशी रियासतों को अब अच्छी २ School शालायें व छात्रालय खोलने तथा सदाचारी प्रबन्धकर्त्ता नियत कर के सुप्रबन्ध करना चाहिये। उचित छात्रालयों का अभाव भी विद्योन्नति में एक रोक है। बड़ोदा राज्य को छोड़ कर कहीं भी कारीगरी सिखाने का समुचित प्रबन्ध दृष्टि गत नहीं होता केवल भाषाओं का शुकवत् पाठ करलेना भारतोन्नति नहीं कर सकता। इस समय देश में धार्मिक तथा व्यापार सम्बन्धी शिक्षा की महती आवश्यकता है यदि इस देश में इस समय व्यापार उन्नति पर होता तो क्या दैनिक प्रयोग की वस्तुओं को प्राप्त करने के हेतु जापानादि देशों के सम्मुख कर प्रसारित करने पड़ते। शोक है कि यह वही भारतवर्ष है जिसमें विद्या प्राप्ति के हेतु विदेशी विद्यार्थी आते थे। और अब सूई और दियासलाई के लिए मुखावलोकन करना पड़ता है। यही समय है जब देशी नृप अपने प्रगाढ़ देश प्रेम तथा भक्ति का परिचय देसक्ते हैं। यदि इस समय भी भारत का व्यापार उन्नति न करसका तो और कोई समय मिलना इस के लिये कठिन ही नहीं बल्कि सर्वथा असम्भव है। गवर्नमेन्ट और रजवाड़ों को इस ओर ध्यान देना उचित है।

कालिंगड़ा—लही सुख सब विधि भारतवासी। विद्या कला जगत की सीखो तजि आलस की फाँसी॥

अपनो देस धरम कुल समुझहु छोड़ि वृत्ति निज दासी। उद्यम करिकै होहु एक मति निज बल बुद्धि प्रकासी॥

प्रकृती की भगति छोहिकै ठै हरी चरन उपासी। जग के और नरन सम येउ होउ सबै गुन रासी॥

न० ४३१ बालकृष्ण विद्यार्थी कोटा

कृपया संख्या २ भाग १८ ता० २२ अप्रैल का अंक तथा जिस में लेख खतम हो एक २ प्रति अधिक प्रेषित करें अनुग्रह होगी—

[महाशय जी! एक आने की डस्तक तो इस लिए पड़ी कि आपका पत्र खोलने से लिफ़ाफा बैरंग होगया, उस पर आप पर्चे भी मांगते हैं। आप के लेख का शेष भाग होने मात्र से छाप दिया गया है।

सम्पादक।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कालूराम का प्रलाप।

अजरौधा निवासी पं० कालूराम जी ने अप्रैल मास के ब्राह्मण सर्वस्व में [ला० मुन्शीराम अध्यक्ष गुरुकुल कांगड़ी के नाम खुली चिट्ठी] शीर्षक लेख छपाया है—जिसमें आपने निजस्वभावानुसार अनर्गल प्रलाप करते हुए। आ० स० में द्वेष फैलाने का प्रयत्न किया है—यद्यपि ऐसे ज्ञान शून्य लेखों से शिक्षित जनता पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता न आ० स० की कुछ हानि है—इसी कारण आ० स० की ओर से ऐसे द्वेष युक्त लेखों का कुछ उत्तर नहीं दिया जाता—परन्तु ऐसे लेखों का पाठ कर अल्प शिक्षित समुदाय अवश्य भ्रम में पड़ जाता है—इसी कारण इस के उत्तर लिखने की आवश्यकता हुई। यह लेख ब्राह्मण सर्वस्व के ३½ पृष्ठों में समाप्त हुआ है जिसका सारान्श निम्न प्रकार है—

समस्त आर्य्य समाजी संस्कृतानभिज्ञ तथा निरक्षर है—ला० मुन्शीराम फार्सी के मुन्शी होकर संस्कृत विषयों में शास्त्रार्थ करना चहाते हैं। इन्हीं के कारण आ० स० में पार्टीबन्दी हुई है, अब आ० स० और सनातनधर्म में द्वेष फैलाना चाहते हैं। आपका उद्देश है कि चाहे भले ही द्वेष फैलै परन्तु हमारा रोब जमना चाहिए—शास्त्रार्थ के वास्ते आप से कोई तय्यार नहीं क्योंकि आप संस्कृत से रहित हैं तथा हमारी सरकार का ध्यान यूरूपीय महायुद्ध में लगा हुआ है। हम नहीं चाहते कि अपनी सरकार की शक्ति को अपने घरेलू झगड़ों में व्यय करावें। हम आप जैसे नहीं कि समय कुसमय भी नहीं देखते इस से प्रथम अनेक शास्त्रार्थ होचुके हैं जिनसे कुछ भी लाभ नहीं हुआ। इसका कारण आ०समाजियों की चालवाजी और सत्यता से विमुख होना है। आ० स० अन्तःकरण से नास्तिक दिखावे को वेद मानने वाला है। इसी कारण वेद भाष्य में स्वा० द० को मन्त्रों के कान पूंछ मरोड़ने पड़े—अब आर्य्य समाज के सिद्धान्तों की पोल खुल चुकी है। २० वर्ष में इसका नाम मात्र रह जायगा। समाज शास्त्रार्थ तथा प्रचार के बहाने देश में द्रोह फैलाता है, आ० स० की माननीय चार संहितायों में एकभी वर्ण-व्यवस्था परक मंत्र नहीं जिस से उस के [गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था वाले] सिद्धान्त की पुष्टी हो। यदि कोई मन्त्र हो तो ला० मुन्शीराम जी अपने पत्र में लिखें फिर हम शास्त्रार्थ को आवेंगे—नहीं तो हम समझेंगे कि आ० स० के नेता जनता की आंखों में धूल झोंकते हैं—इत्यादि २।

उत्तर—[आ०समाजी संस्कृत से रहित है] इस विषय पर हमें विशेष लिखने की आवश्यकता नहीं लोकोक्ति प्रसिद्ध ही है कि [हीरा मुख से नाक है, लाख हमारा मोल] प्रत्यक्ष के सामने प्रमाण की आवश्यकता नहीं—इस बात से कोई अनभिज्ञ नहीं कि आ० स० के १४-१५ गुरुकुल हैं जिनमें संस्कृत की उच्च शिक्षा दी जाती है—जहां के स्नातकों के व्याख्यान संस्कृत भाषा में धारा प्रवाह होते हैं [लेखक ने स्वयं सुने हैं] इस बात को भारत के प्रसिद्ध २ विद्वान् स्वीकार करते हैं कि जो कुछ भी आज देववाणी की उन्नति दीखती है उस में अधिक भाग आ० स० के परिश्रम का फल है—आ० स० ने वेद उपनिषद् दर्शन शास्त्रों तक का भाष्य करके जनता के सन्मुख प्रस्तुत कर दिया है। जिस समाज में स्त्रियां भी शास्त्री पास हैं—इस पर भी कालूराम को सामाजिक विद्वान् संस्कृत से रहित दीखते हैं तो अवश्यमेव इनको किसी प्रकार का रोग है यदि सूर्य के होते हुए भी उलूक नामकपक्षी को नहीं दिखाई देता उस में उस के नेत्रों का दोष है—नकि सूर्य का। परन्तु हिन्दू समुदाय अवश्य ही उच्च संस्कृत से रहित हैं क्योंकि द्विवेदी त्रिवेदी शास्त्री इत्यादि का पूछल्ला उनके-पीछे माता के गर्भ समय से ही लग जाता है—यदि हिंदू समुदाय में वेदादि सत्य शास्त्रों के ज्ञाता होते तो अवश्य इनका भाष्य करते। जिस से सर्वसाधारण को लाभ होता—हिन्दू समुदाय के पण्डितवर्ग शीघ्रबोधादि आधुनिक ग्रन्थों को रट कर मूर्ख मन्डली में अन्ड बन्ड बकते फिरते हैं जैसा कि बा० मैथिली शरण गुप्त का कथन है कि [शीघ्र बोध रटा कि फिर वह गणक-पुङ्गव बन गए। पञ्चाग पकड़ा हाथमें सर्वज्ञाता में सन गए, [भा० भा०] यदि कुछ संस्कृताभिमानी हैं भी तो उनमें से चन्द को छोड कर शेष आ० स० से दोषादि के कारण निकाले हुए हैं परन्तु प्रकृति का नियम है कि नेत्रों पर जिस रङ्गत की ऐनक लगाई जाती है संसार उसी रङ्गत का नजर आता है यही अवस्था कालूराम की है—[आ० स० निरक्षर है] इसके समाधान में सं० १९११ ई० वाली मनुष्य गणना की रिपोर्ट ही पढ़लेते जिस से मालूम हो जाता कि हिन्दू फीसदी ५ के लग भग साक्षर है और आ० स० के समस्त सभासद्—लेकिन आपको कुछ दीखता ही नहीं—[ला० मुन्शीराम जी फार्सी जानते हैं और संस्कृतज्ञों को शास्त्रार्थ के वास्ते ललकारते है] जिस गुरुकुल में वेदों तक शिक्षा दी जाती है जिस के महोत्सव में भारत के सब प्रान्तों के विद्वान् सम्मिलित हुए थे जिन से आप के ऋषिकुल की पण्डित मण्डली शास्त्रार्थ कर चुकी है क्या उन में एक भी आप जैसे शास्त्री मात्रों के सदृश नहीं था। श्री महात्मा जी फार्सी के अतिरिक्त संस्कृत के पूर्ण ज्ञाता और इंगलिश के ग्रेजुएट हैं लेकिन आप के सिर पर तो पक्षपात का भूत सवार है कि आप को अपना ऐब दूसरों में दीखता है क्योंकि आप के आधुनिक पौराणिक सम्प्रदाय में केवल उर्दू मिडल तक जानने वाले व्यक्ति भी पेटेन्ट लीडर बने हुए हैं। लेकिन कालूराम को द्वेषवस अपना टेंटें तक ज्ञात नहीं। द्वेष के फैलाने वाले भी पौराणिक सम्प्रदाय में आप जैसे १०—२० स्वार्थी उपस्थित हैं जो टके के लोभ से सत्य को छुपाना चाहते हैं। लेकिन आप को याद रहै कि सत्य तालों में भी बन्द नहीं हो सकता और आप ही अपना रोब जमाने के हेतु ऐसे २ द्वेष फैलाने वाले लेख लिखा करते हो जिस से जनता समझे कि कालूराम भी कोई विद्वान पुरुष होंगे। जो महात्मा मुन्शीराम जी जैसे प्रसिद्धि पुरुष को खुली चिट्ठी लिखते हैं जिन के पीछे

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शास्त्रीपने का पुछल्ला भी लगा हुआ है न कोई आर्यविद्वान् इन के सन्मुख आता है [अब तक अनेक शास्त्रार्थ हुए जिनसे कुछ भी लाभ नहीं हुआ] शास्त्रार्थ में किसी को कुछ लाभ हुआ हो अथवा नहीं। लेकिन आपने अपनी फीस और फर्स्टक्लास का किराया अवश्य वार्ज किया होगा। शास्त्रार्थ से सत्या सत्य का निर्णय न होना आप जैसे स्वार्थियों की उद्दण्डता है क्योंकि जहां कहीं भी आप को आधुनिक पौराणिक धर्म का पक्ष गिरता नज़र आया झट सनातनधर्म के जय २ कार का कोलाहल मचातेहुए भाग गए ऐसा आपने अपना सिद्धान्त बनालिया है इस प्रकार से बालबाजी कर के आप लोग सत्या सत्य का निर्णय नहीं करते महर्षिमनु ने लिखा है कि [नास्तिको वेद निन्दकः] वेदों के न मानने वाले निन्दक नास्तिक हैं यह बात सब पर प्रगट हो चुकी है कि हिन्दू सम्प्रदाय सर्वान्श में वेद विरोधी भागवतादि पुराणोक्तधर्म है और दिखावे के लिए वेद भगवान की सवारी निकाली जाती है और जहां कहीं शास्त्रार्थ होता है वहां पर मंत्रार्थ में कान पूछ मरोड़ना [खैंचातानी करना] भी हिन्दू पंडितों का ही मुख्य काम है यदि आप ने आज तक न देखा हो तो अब मुरादाबादी पं० ज्वाला प्रशाद जी कृत द० ति० भा० पृष्ट २६७ तथा २६८ का पाठ आंख खोल कर लीजिए जिस में उन्होंने हिन्दुओं के माननीय सायणाचार्य के विरुद्ध अर्थ करके उपरोक्त आचार्य का अपमान किया है।

भारतवर्ष के अतिरिक्त अन्य देशों में भी पौराणिक सम्प्रदाय के सिद्धान्तों की पोल खुल चुकी है इस को समस्त बुद्धिमान स्वीकार करते हैं कि २० नहीं तो चालीस वर्ष में हिंदुसम्प्रदाय का नाम मात्र रह जायगा। विरुद्ध इस के आ० स० के सिद्धान्तों की विजय होरही है। स्त्री शिक्षा पतितोद्धार ब्रह्मचर्याश्रम बाल-विवाह निषेध इत्यादि आ० स० के अनेक सिद्धान्त सनातन नाम धारिणी सभाएं स्वीकार कर चुकी हैं। आ०स० के गुरुकुलों का अनुकरण कर के हिन्दुयों ने ऋषिकुल खोला D.A.V. कालिज का अनुकरण करते हुए अब सनातन धर्म कालेज बनाने की सूझी है यदि आप जैसे [शास्त्रियों] की आत्माएं शुद्ध हो जावें तो वह दिन दूर नहीं है जबकि समस्त ऋषि सन्तान पौराणिक अन्धकार से निकल कर वैदिक प्रकाश में आवेगी और सब भाई प्रेम पूर्वक एक आ० स० मन्दिर में एकत्र होकर नानाप्रकार की उड़ोपसना को तिलाञ्जली देकर एक जगनियन्ता परमात्मा की उपासना करेंगे। आ० स० प्रति समय प्रेम पूर्वक धार्मिक शास्त्रार्थ को तैयार है लेकिन पौराणिक सम्प्रदाय सदा मुख छिपा कर भाग जाता है जैसे आप जलेशर से भागे थे। अब रहा यूरप का संग्राम और सरकारी शक्ती को अपने घरू झगड़ों में व्यय करना सो भी आपका एक बहाना मात्र और आ० स० के ऊपर विष उगलना है क्योंकि प्रेम पूर्वक शास्त्रार्थ करने में कोई झगड़ा नहीं न सरकारी प्रबन्ध की आवश्यकता है इस से भी स्पष्ट प्रतीत होता है कि आप का उद्देश्य शास्त्रार्थ की आड़ लेकर उपद्रव करने का है अतः ऐसा करने के लिए सदा कुसमय है वास्तव में आ० स० केवल ऋगादि नाम की चार संहितायों को ही स्वतः प्रमाण मानता है और आप आ० स० के सन्मुख इन के ही प्रमाण दे सकते हैं। अन्य के नहीं परन्तु आप का सिद्धान्त तो [संस्कृतं प्रमाणम्] है फिर आवश्यकता नहीं कि आप के वास्ते केवल वेदों के प्रमाण दिए जावें आप को तो गोपाल सहस्र नाम तक माननीय हैं जिस में (चोर जार शिखा मणी० इत्यादि] भी ईश्वर का नाम है आप के सन्मुख तो (पीत्वा पीत्वा पुनः पीत्वा०] का भी प्रमाण दिया जासकता है जिन से आप किसी प्रकार इन्कार नहीं कर सकते न आप का कुछ अधिकार है कि जिन २ पुस्तकों को आप मानते हों उन के वाक्यों को न मानें-और (ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्०) इत्यादि, वेद प्रमाण के होते हुए भी न मालूम कालूराम जी जनता की नेत्रों में क्यों धूल डालने का व्यर्थ परिश्रम करते हैं-शास्त्री जी इस मंत्र के अतिरिक्त वेदों में शतशः प्रमाण इस विषय के विद्यमान हैं—यदि आप यह लिखदें कि हम वेदों के अतिरिक्त पुराणादि कल्पित ग्रन्थों को प्रमाण नहीं मानते—उस समय हम गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था पोषक अनेक वेद मंत्र आपकी सेवा में पेश करेंगे, मुसलमान और इसाईयों को हम कुरान तथा इन्जीलादि का प्रमाण दे सकते हैं जिनसे वह इन्कार नहीं कर सकते इसी प्रकार हिन्दुओं के समक्ष हम पुराणादि का प्रमाण दे सकते हैं लेकिन हम नहीं कहसकते कि आप कैसे हिन्दू हैं जिनका पुराणादि पर विश्वास नहीं—यदि आप का विश्वास पुराणों पर से उठ चुका है फिर भी आप जन्म से वर्णव्यवस्था मानते हैं तो एक वेद मंत्र पेश कीजिए जिससे जन्म से वर्णव्यवस्था विषय की पुष्टी हो लेकिन कृपा करके मुरादाबादीय मित्र जी जैसा मंत्रार्थ न करना जैसा उन्होंने सायण के विरुद्ध अनर्थ किया है यदि आप पुराणादि ग्रन्थों को मानते हैं तो मनुस्मृति गीता महाभारतादि से सिद्ध है कि जन्म से वर्णव्यवस्था नहीं किन्तु गुण कर्मानुसार है, फिर वेद मंत्र के प्रमाण का आग्रह करना आपका हठ मात्र है।

जब आपके पुराणों से सिद्ध ही है कि जाबालि विश्वामित्रादि अनेक पुरुष नीच वर्ण से उच्चवर्ण स्थ बन गए फिर भी इस विषय पर बितण्डा करना आप का प्रलाप नहीं तो और क्या है—

यद्यपि समाज की ओर से कई पुस्तकें प्रकाशित होचुकी हैं जिन में सनातन नामधारी विद्वानों से उनके सिद्धान्तों पर

हम ने यहां पर कितने ही मनुष्यों की जबानी सुना है कि प० कालूराम जी शास्त्री पास नहीं उन्होंने अपने नाम के साथ झूठ मूठ शास्त्री का पुछल्ला लगा लिया है।

हम आशा करते हैं कि शास्त्री जी इस समाधान शीघ्रतः किसी पत्र के द्वारा करेंगे आपके पीछे शास्त्री का पुछल्ला परीक्षोत्तीर्ण कर लगा है अथवा गर्भकाल से ताकि जनता भ्रम दूर—होजावे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अनेकों शंकाएं की है लेकिन आज तक किसी भी पौराणिक ने उत्तर नही दिया आधुनिक पौराणिक सम्प्रदाय में कालूराम जी अपने को अद्वितीय विद्वान् होने की ढपली पीटते हैं-इस लिए हम कुछ प्रश्न करके आशा करते हैं कि पं० कालूरामजी इष्ट मित्रों सहित विचार करें तथा अन्य पौराणिक विद्वानों से खोज कराकर उनके उत्तर देने का साहस करेंगे-अन्यथा आगे फिर कभी भी ऐसे निरर्थक लेख लिख कर जनता में भ्रम न फैलाया करेंगे—

(प्रश्न)

(१) वर्णव्यवस्था गुणकर्मानुसार है अथवा जन्म से ?

(२) यदि जन्म से है तो उसमें वीर्य प्रधान है वा क्षेत्र अथवा दोनों ?

(३) यदि वीर्य प्रधान है तो व्यासमुनि से उत्पन्न हुए धृतराष्ट्रादि क्षत्रिय क्यों ?

(४) यदि क्षेत्र प्रधान है तो सत्यवती (शुद्रा) से उत्पन्न हुए व्यास जी ब्राह्मण क्यों ?

(५) यदि दोनों प्रधान हैं तो क्षत्रिय कुलोत्पन्न विश्वामित्र जी ब्रह्मऋषिक्यों और शूद्रकुल उत्पन्न कवषएलशू वेद मंत्रों का ऋषि क्यों हुआ क्योंकि आपके सिद्धान्तानुसार शूद्रों को वेदादि के पढ़ने तक का अधिकार नहीं—

६) यदि जन्म से वर्णव्यवस्था है तो आप हाल के जन्मे बालक को देखने मात्र से बतलासकते हो कि किस वर्ण का है-यदि नहीं तो जन्म से वर्ण मानना आपका हठ नहीं तो क्या है—

७) सर्वशक्तिमान सर्वव्यापक परमात्मा अवतार किस कार्य के लिए लेता है-क्या उस कार्य को बिना अवतार लिए नहीं कर सकता-यदि नहीं कर सकता तो सर्वशक्तिमान क्यों मानते हैं यदि कर सकता तो अवतार लेना व्यर्थ क्यों नहीं और यह व्यर्थ कार्य करना बुद्धिमान का काम है—

८) वीरभद्र ने नृसिंह जी का शीश काट कर चर्म उत्तार लिया देखो लिङ्ग पुराण अध्याय ९६ छापा नवलकिशोर)

इन दोनों में कौन ईश्वर है—यदि दोनों ईश्वर हैं तो एक समय में दो अवतार क्यों और ईश्वर ने ईश्वर को क्यों मारा और वीरभद्र का नाम अवतारों की सूची में क्यों नहीं—

इन प्रश्नों का युक्ति सहित शीघ्र उत्तर किसी पत्र में प्रदान कीजिए।

उत्तराभिलाषी
जौहरीलाल, धोलपुर स्टेट

गुरुकुल विश्वविद्यालय के इसी वार्षिक महोत्सव से लौट कर मैंने स्थानीय मिशन हाईस्कूल के सुपरिन्टेन्डेन्ट Rev. J. Macfie M. A. को निम्न तीन पुस्तकें पढ़ने को दी थीं :—

(I) Gurukula Through European Eyes.
(II) Gurukula system of Education and its Critics.
(III) Prospectus of Gurukula Vishva-Vidyalaya, Kangri.

पुस्तकों को पढ़ कर लौटाते समय शिक्षा-विषय पर अपनी सम्मति प्रकट करते हुए पादरी साहब ने यों पत्र लिखा:-

21-5-1916

My Dear Ganga Ram, !

I return the 3 books you lent me. I have read them with great interest and pleasure:

I am in cordial agreement with the idea that we teach far too much through English with the result that we do not really educate students as we should.

The indian B.A. as a result is about equal to the matriculation standard in Britain.

I wish you could get for me the English Translation of Satyarth Prakash I wrote for it to the publisher at Lahore some time ago, and received no answer. I should like the Hindi edition as well.

Will you Please get them for me by V.P. P. and I'll pay

Yours—
(Sd.) J. Macfie.

English Translation of Satyarth Prakash by Durga Prasad, Lahore. 2/
Virja Nand Press

फिर जब मैं उन से ता० २४ को मिला तो पादरी साहबने कई बातों में आर्य्य समाज की प्रशंसा करते हुए उस के साथ सहानुभूति प्रगट की और गुरुकुलविश्वविद्यालय देखने की भी इच्छा प्रगट की।

इस उक्तपत्र से दो बातें प्रकट होती हैं:—

(१) पादरी साहब की सम्मति में शिक्षा का माध्यम देश भाषा का होना शिक्षा के स्टेन्डर्ड को ऊंचा करने में पूर्ण सहायक है, अतः इस देश में भी वैसा ही होना चाहिये।

(२) पादरी साहब ने विरजानन्द-प्रेस, लाहोर, को मास्टर दुरगा प्रसाद कृत अंग्रेज़ी सत्यार्थ प्रकाश के लिए लिखा, परन्तु प्रेस वालों ने कुछ परवाह न की और पुस्तक की सख्त जरूरत होने से उन्होंने मुझे लिखा। विरजानन्द प्रेस के अध्यक्ष, मैनेजर तथा कर्मचारी सुस्ती और लापरवाही का अधिक प्रयोग करते हैं।

यदि प्रेस वालों के पास अंग्रेज़ी सत्यार्थ-प्रकाश (फ़र्ज़ करलें कि) समाप्त होगई होगी, तो यथा योग्य उत्तर देना उनका कर्त्तव्य अवश्य है। पुस्तक-प्रकाशकों, पत्रों के मैनेजरों आदि की इस प्रकार की लापरवाही से प्रचार में बाधा पड़ती है, इस लिये उन को सदा इस बात को स्मरण रखना चाहिये।

कई समाचार पत्र वा मासिक पत्र ऐसे भी है कि उपहार के नाम से पुस्तक छापते हैं और उसका मूल्य दुगना तिगुना रख कर ग्राहकों को लिखते हैं कि अमुक उपहारी पुस्तक आधे वा तिहाई मूल्य में देंगे।

कई ऐसा करते हैं कि पहिले पुस्तक की बहुत प्रशंसा करके नीचे लिखते हैं—"उपहारी पुस्तक ग्राहकों को वी० पी० द्वारा भेजते हैं, यदि पसन्द न आवे तो लौटा देना, बदले में दूसरी पुस्तक भेज देंगे। आशा है आप महानुभाव वी०

...ukul Kangri C... Haridwar. Digitized by eGangotri

पी० अवश्य छुड़ा कर हमारे उत्साह को बढ़ावेंगे।" भोले लोग वी० पी० छुड़ा लेते हैं फिर पसन्द न आवे तो भी लौटाने का कष्ट कोई ही उठाता है, यदि किसी ने पुस्तक लौटा दी तो एक पुस्तक तीस बार पोस्टेज पेकिंग वी० पी० खर्च वगैरा लग कर कई पुस्तक पहुंचती हैं (जिस की जरूरत खरीदार को शायद ही हो।) आखिर पुस्तक—विक्रेता की बिक्री तो हो ही गई।

कोई २ प्रेस नोटिस देता है कि अमुक बड़ा भारी ग्रन्थ हमारे यहां छप रहा है ग्रन्थ बड़ा होने से कई भागों में निकलेगा, छपाई उत्तम होगी, कागज़ बढ़िया लगाया जायगा, पेशगी दाम भेजने वालों के साथ बहुत रिआयत होगी। छपाई व कागज़ का नमूना देखना हो तो आध आने का टिकट भेज कर नमूने के ४ पेज मुफ्त मंगा लेवें। ग्रन्थ शीघ्र छपजायगा। थोड़ी ही प्रतियां छपेंगी इस लिये ग्राहक कृपया भेजने में शीघ्रता करें।" ऐसा नोटिस देकर नमूने के ४ पन्ने अच्छे कागज़ पर अच्छे टाइप में अच्छे ढंग से छापते हैं और आगे चल कर अच्छा और बुरा दोनों तरह का कागज़ लगा कर "सेंपल" बना देते हैं। लिखते हैं "जल्दी छपेगा" फिर कुंआ आए बाद चाहे बरस ही क्यों न लग जांय।

कोई विज्ञापन—बाज़ नोटिस देते हैं कि अमुक पुस्तक का मूल्य डाक व्यय सहित १) है। फिर मंगाने पर डाक व्यय अलग कर १।) ली वी० पी० कर देते हैं।

कुछ पत्र तो ऐसे धूर्त हैं कि वी० पी० का अंक भेज कर कभी २ खुश हो बैठते हैं फिर उन को कितने ही पत्र दो जवाब तक नहीं देते। कुछ समय हुआ मैंने अपने अजमेर निवासी दो मित्रों को प्रयाग से एक स्त्री—धर्म—शिक्षा सम्बन्धी पत्र मंगा दिया था, उनके साथ ऐसा ही व्यवहार हुआ— कई पत्र दिए पर जवाब न आया आखिर रजिस्टर्ड नोटिस दिया पर फिर भी पत्र न आया—दावा करना ना मुनासिब समझा तब अन्त में चुप हो बैठे।

पुस्तक विक्रेताओं में कई ऐसे भी हैं कि मंगाई हुई पुस्तक उनके पास न हो अथवा उनके पास कोई ऐसी पुस्तक हो जो दीर्घ काल से न बिकती हो तो वह उस [मंगाई हुई पुस्तक] के बजाय उस ही को भेजदेते हैं। फिर लिखने पर लिखते हैं कि "भूल से भेज दी गई, इच्छा हो तो वापिस भेज कर दूसरी पुस्तक मंगालेवें।"

इत्यादि कई प्रकार की कार्यवाही करते हैं जो सौजन्य तथा सभ्यता के नियमों से बिल कुल विपरीत है।

मेरे उपरोक्त सब आक्षेप न किसी एक पत्र वा प्रेस पर हैं और न हो ही सकते हैं—कोई दोष किसी में है कोई किसी में। मुझे किसी के दोष दिखलाना अभीष्ट नहीं, परन्तु मैंने उन्हीं के हित की जान कर लिखी है इस लिये वे मुझे क्षमा करें, और कृपया भविष्य में अंग्रेज़ी कम्पनियों के व्यवहार से शिक्षा लेते हुए साहित्य की उन्नति करके देश का उपकार करें। इत्योम्।

गंगाराम, उवाना

संसार समाचार पर टिप्पणी

दिल्ली में आग से दो हजार मकान जलगए—कैसा भयानक समाजर है! शहरों और ग्रामों—सभी स्थानों से आग लगने के समाचार आते हैं, परन्तु लोग फिर भी सावधान नहीं होते। एक बड़ा काम सुधारकों के लिए यह है कि सर्वसाधारण को जीवन-निर्वाह की विधि बतलाई जाय। तमाखू उड़ाजाय जो आग लगने का मूल कारण है, चूल्हे आदि की आग बुझाकर उठने का अभ्यास डलवाया जाय तो आग लगने के आधे कारण दूर हो जाय।

बंगाल अति में सब से बढ़ा हुआ है—राज विद्रोह होगा तो अति सीमा का और यदि राजभक्ति होगी तो वह भी असीम। बाकर गंज के राधाचरणपाल ने एक नया मत चलाया है जिस का पहला नियम् यह है कि महाराजाधिराज चार्ज ५ तथा महारानी मेरी की मूर्त्तियों की पूजा की जाय। इस मत के अनुयायी ५५ सरल मनुष्य हो गए हैं। पूजा करने वाले बिना दक्षिणा के पूजा को पूर्ण नहीं समझते। कलेक्टर के पास पूजा के रुपये भेजे उसने लौटा दिए। अब गवर्नर बंगाल तथा अखबार इङ्गलिश्मन से याचना है कि उनकी दक्षिणा अपने सम्राट तक पहुंचाई जाय। राधाचरणपाल को कम से कम सी. एस. आई. अवश्य बना देना चाहिए।

म० अविनाशचन्द्र जी आनन्द भण्डार कम्पनी नई सड़क दिल्ली—महाशय नानकचन्द जी प्रचारक अछूत जाति का पता पूछते हैं। यदि किसी महाशय को इनका पता मालुम हो तो इन महाशय को उपरोक्त पते पर सूचना दे दें।

मन्त्री जी आर्यसमाज डोईवाला जिला देहरादून—सूचना देते हैं कि बाबू शमशेरसिंह जी गोरखा की भगिनी के विवाह संस्कार की समाप्ति पर इनके पिता महाशय ने सत्य नारायण की कथा कराई और बाबू शमशेरसिंह जी ने आर्यसमाज की ओर से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का उपदेश कराया और सहभोज दिया। उपदेश का प्रभाव सर्वसाधारण पर उत्तम पड़ा। कई प्रकार के प्रश्न किये गये, जिनका यथोचित उत्तर दिया गया। बाबू शमशेरसिंह जी ने विवाह भर में मांस मदिरा का प्रयोग नहीं होने दिया।

शोक समाचार—स्वामी सोमदेव जी का देहान्त तारीख १६ मई १९१६ को आर्यसमाज शाहजहांपुर में होगया। आप बड़े ज़ोर से कार्य्य करने वाले थे। आपकी मृत्यु से आर्यसमाज को बड़ी हानि हुई। परमात्मा आपकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

भाड़े के टट्टू—कहीं भी काम नहीं कर सकते। आर्य समाज ने जो पहले पहल जन्म के ब्राह्मणों को आजीविका के लालच में फंसा कर उन्हें प्रचारक बनाने की प्रथा डाली वह बहुत ही हानिकारक थी। "मारवाड़ी" में छपा है कि राजस्थान प्रतिनिधि के उपदेशक पं० नृसिंह शर्मा ने फिर सनातन धर्म का आश्रय ग्रहण किया है। ब्राह्मण कभी किसी के बने ही नहीं। उनमें से जो पं० लेखराम, पं० सीताराम शास्त्री, पं० विष्णुमित्रादि की तरह धर्म के लिये काम करते हैं वे तो ठीक हैं, परन्तु जो आजीविका के लिए आते हैं वे अन्त को धोखा ही देते हैं। जैसे टटावा वाले भीमसेन निकले वैसे अखिलानन्दादि अब भी बीसियों पड़े हैं, जिन से बचने में ही आर्यसमाज का कल्याण है। यहां एक बात अवश्य कथनीय है। वैदिक-धर्म का प्रचार सच्चे संन्यासी ही कर सकते हैं।

महामण्डल की उपाधियां—गेंद की तरह उछलती फिरती हैं। श्री पं० मदनमोहन मालवीय जी ने भी "भारत-भूषण" की दी हुई उपाधि को अस्वीकार किया।

अभ्युदय तथा मर्यादा—की निर्पक्ष और सभ्य नीति अब कुछ बदलती जाती है। प्रचारक के कुंवर महेन्द्रप्रताप सम्बन्धी लेख पर एक कटाक्षयुक्त प्रेरित-पत्र अभ्युदय ने बिना किसी कारण के छाप दिया। सम्पादक महोदय को चाहिए था कि ऐसा करते समय साथ ही प्रचारक का पहिले ही दिया हुआ उत्तर भी छाप देते। वैशाख का मर्यादा में एक 'ग्रामीण' का लेख छपा है जो शायद वही देहाती हैं जो महाविद्यालय ज्वालापुर से पहले अपनी कतरनी चलाया करते थे। 'नाजायज़ फायदे से देश की हानि' शीर्षक देकर उन्होंने जो जी में आया लिख दिया है। गुरुकुलों पर जो दोषारोपण किए हैं वह लिखे तो उस संस्था को लक्ष्य में रखकर हैं जिस में ग्रामीण जी ने निवास किया है, परन्तु अभ्युदय के सम्पादक ने इस लेख को स्थान देकर बड़ी असावधानी का प्रमाण दिया है। जो आर्यसमाचार-पत्र हिन्दू युनिवर्सिटी के स्कीम की समालोचना करते हैं वे व्यक्तियों के आचरणों पर हमले नहीं करते।

ग्रमीण ने लिखा है—"चूंकि मैंने देखा है, इस लिए उन दोषों को लोगों के सामने रख देना मेरा फ़र्ज़ है।" भले मनुष्य! सैकड़ों निरापराध लड़कों पर कटाक्ष करने का तो तेरा फ़र्ज़ है, परन्तु यह तेरा फ़र्ज़ नहीं कि लोग तेरा नाम पता जानलें जिससे उन्हें पता लगे कि कहीं किसी गुरुकुल से निकाले जाने पर तो तू दिल के फफोले नहीं फोड़ रहा। वैसे तो पांच सात और भी समाचार-पत्र हैं जिनमें गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा उस के संचालकों पर इस लिए कटाक्ष होते हैं कि यदि उनका उत्तर प्रचारक में निकले तो शोहरत होकर उनकी ग्राहक संख्या बढ़ जाय (ऐसा एक पत्र के चालकों ने स्वयम् माना।) ऐसों का तो नोटिस लेना व्यर्थ समझ कर उनसे उपेक्षा की गई। परन्तु अभ्युदय और मर्यादा के विषय में हमने अपना कर्त्तव्य समझा कि उन्हें चेतावनी दे दें। मर्यादा का कर्तव्य है कि यदि अपने पुराने गौरव को स्थिर रखना चाहते हैं तो ग्रामीण का नाम पते सहित प्रकाशित करदें।

CC0. Gurukul Kangri Collection

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा ————————।)
काव्य लतिका————————।॥)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग'[शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व =)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्] १॥)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥)
महाभाष्यम् अङ्काप्रकाशः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्यभाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—ब्रैलफोर स्टूअर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन—विलयम एस, फर्नो की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)
जिनचरित—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवरधन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त ≡)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) ≡)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji—" 0.1.0
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M.A.
अर्थशास्त्र (धनविद्या) १॥)
आर्यों की विज्ञानिक उन्नति =)
(लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम०ए०)
अग्निहोत्र व्याख्या ।)
वेदोक्त राज्य ॥)
(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)
रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry) ३॥)
विद्युत शास्त्र २।)
वनस्पतिशास्त्र २)
पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत
उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १॥)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)
मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष ॥)
ध्यायोग प्रकाशः स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत १।)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। सुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

॥ओ३म्॥ Registered No. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | ४ आषाढ़ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १७ जून सन् १९१६ ई० | संख्या १० भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २।)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३।।।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०
तीन मस ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रम्बन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साढ़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चट्टर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

प्रचारक पुस्तक भण्डार की अनूठी पुस्तकें।

उपनिषदों की भूमिका—लेखक, श्री० इन्द्र वेदालंकार। इस पुस्तक में उपनिषदों का सार बड़ी मनोरञ्जक रीति से दिया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि उपनिषदों का आधार वेद ही है। विषय गम्भीर है तो भी भाषा रोचक और बल पूर्ण है। मूल्य ।=)

धर्मवीर पं० लेखराम की जीवनी—महात्मा मुंशीराम जी लिखित। धर्मवीर की आर्य-भाषा में यह एक मात्र जीवनी है। प्रत्येक आर्य्य गृह में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। धर्मवीर की जीवनी और महात्मा जी की लिखी हुई आप क्यों न लेंगे? मूल्य १)

प्रिंस-बिस्मार्क की जीवनी—जर्मनसाम्राज्य के निर्माता राजनीति विशारद बिस्मार्क की जीवनी को जिसने नहीं पढ़ा, उसे योरप का वर्तमान युद्ध समझ में नहीं आ सकता। पुस्तक बेहद मनोरञ्जक है भाषा प्रौढ़ ओजस्विनी है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है शीघ्र लीजिए।
मूल्य १॥)

कमीशन का दर

२५) से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रति सैंकड़ा, ५०) से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति सैंकड़ा, १००) से अधिक के ख़रीदार को २५) सैंकड़ा तथा २००) से अधिक के ख़रीदार को ३०) सैंकड़ा कमीशन मिलेगा।

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र
गुरुकुल कांगड़ी, पो० श्यामपुर-कांगड़ी
ज़ि० बिजनौर

—:०:—

पुस्तकालय
गुरूकुल काँगड़ी

CCO, Gurukul Kangri Collection

गुरुकुल-समाचार

ऋतु बड़ी सुहावनी होगई है—जब वायु विद्या निरीक्षक की सम्मति पायोनियर में निकली कि इस वर्ष ऋतु के आरम्भ में पश्चिमोत्तर प्रान्तों में वर्षा कम होगी, उसी समय समझ लिया गया था कि वर्षा अधिक होगी। गुरुकुल भूमि में २९, ३० ३१ ज्येष्ठ [१०, ११, १२ जून] को आकाश मेघ मण्डल से आच्छादित रहा, और वर्षा बहुत हुई। इस का विशेष वर्णन मृतकश्राद्ध वाले शास्त्रार्थ के लेख में मिलेगा। इस समय हरीघास उग आई है, गङ्गा की धारा लहराती हुई पक्के बन्द के साथ साथ चल रही है, ब्रह्मचारियों को तैरने का आनन्द आरहा है, और महाविद्यालय के पुस्तकालय की छत पर से चारों ओर का दृश्य अद्वितीय है।

गत सप्ताह में छुट्टियें बहुत हुईं—सम्राट जार्ज-पंचम के जन्मदिवस और लार्डकिचनर के मृत्यु दिवस पढ़ाई बन्द रही और लार्डकिचनर की मौत के उपलक्ष में शोक सभा करके बड़े तथा छोटे लाट को तार भी भेजा गया। ऋषिकुल के पंडितों के साथ शास्त्रार्थ को देखने बड़े ब्रह्मचारी गए थे इस लिए ३१ ज्येष्ठ को म० वि० बन्द रहा। उस दिन बाढ़ अधिक होने और किश्ती न मिलने के कारण ब्रह्मचारी न लौट सके, इस लिए ३२ ज्येष्ठ को भी म० वि० बन्द रहा। उसके पश्चात् पढ़ाई भली प्रकार हो रही है।

ख़सरे के बीमार राजी हो कर—सब अपनी श्रेणियों में चले गए। जहां नगरों से ख़सरे के कारण ¼ बीमारों की मौत के समाचार आते हैं वहां गुरुकुल में परमेश्वर की कृपा से सर्वतया कुशल रही। अन्य रोगी भी कम हैं। विशेष रोगी कोई भी नहीं कहा जा सक्ता।

ज्येष्ठ के अन्तिम १७ दिनों की आय—प्रथम १५ दिनों की आय की अपेक्षा, कुछ सन्तोषजनक जनक नहीं हुई। इस १७ दिनों के अन्तर में कुल १२०७) दान के आए जिन में ११८०) गुरुकुल महानिधि के वर्ष के व्यय में पड़ सकेंगे। शेष भिक्षानिधि में, पुस्तक क्रय के लिए ६) और भिक्षार्थ निधि में २१) आये हैं। इस १२०७) की रक़म में से २२५) राय बहादुर रतियाराम जी डिप्टी ने तिरुवाड (ज़ि० गुजरात) से लाला काकाराम मल्लोतरा गुजरात निवासी वसीयत के अनुसार भेजे थे। शेष धन छोटी छोटी रक़मों से जमा हुआ है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से लोगों को प्रेम तो बहुत है और इसी लिए किसी समय भी इस का ध्यान दान शीलों का नहीं भूलता, परन्तु अन्य संस्थाओं के चालक गुरुकुल के विरोधी भी बहुत हैं, इसलिए जब कभी कोई सज्जन दान देने लगता है तो उसमें से अधिक भाग अपनी संस्थाओं के लिए ही दिलवाते हैं। गत दो सप्ताह में जो शेष रक़मे आई हैं उन में से ८०) आर्यसमाज पेशावर सदर छावनी के उत्सव पर इकट्ठे हुए थे, ३०) महाशय नत्थू भाई ऊका भाईने सूरत से भेजे और पचीस २ रुपये डाक्टर धनीराम, म० पन्नालाल और महाशय रामचन्द्र ने भेजे थे।

कई स्थानों में गुरुकुल को धनदान दिया पड़ा है जिस का कभी कभी अन्य साधनों से पता लगता है। उस धन की वसूली का प्रयत्न स्थानीय आर्यसज्जनों को करना चाहिये। डाक्टर नत्थूमल जी ने अन्य संस्थाओं के लिए दान की वसीयत करते हुए १०,०००) गुरुकुल के लिए भी वसीयत किया था। उस वसीयत को पूरा कराने वाले तीन में राय केदारनाथ बहादुर एम० ए० दिल्ली निवासी भी थे। डाक्टर नत्थूराम ने लिखा था कि उनके Executors एक वर्ष के अन्दर सर्व संस्थाओं को धन पहुंचादें। राय केदारनाथ के कारण तीन वर्ष से अबतक उसमें कुछ कार्यवाही नहीं हुई। उनका उज़्र था कि दरबोस्त देने को रुपया नहीं। गुरुकुल से दूसरे Executor मास्टर भागीरथ लाल के नाम १०००) का चैक भेज दिया है। ५०,०००) के लगभग रक़म का सूद रुका हुआ है, परन्तु राय बहादुर न न जाने किस उधेड़ बुन में लगे हुए हैं। यह एक घटना है, ऐसी और भी घटनाएं होंगी।

इस वर्ष महानिधि की कुल आय—ज्येष्ठ के अन्त तक, ३९,३१४) हुई। बजट में ७०,२४०) की कमी इस महानिधि से पूरी करने का विधान है। तब आवश्यक है कि ३०,९२६) रुपये अधिक से अधिक भाद्रपद मास के अन्त तक जमा हो जावें, जिस के पश्चात आगामी वर्ष के लिए मांग शुरू होगी। संरक्षक सभा के मन्त्री संरक्षकों का ही आत्मिक सम्बंध ब्रह्मचारियों के साथ बतलाया करते हैं। क्या यह आशा करना अनुचित है कि भाद्रपद के अन्त तक वे कम से कम १०,०००) स्वयम् जमा करके दें। यदि कुल ३००) से अधिक संरक्षकों में २०० धनाढ्य संरक्षक भी एक एक सौ रुपया और भेज दें तो २०,०००) जमा हो सकता है आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभासदों के कानों पर तो जूं तक नहीं रेंगी, मन्त्री महाशय के स्वयम् अपना भाग पेश करने पर भी किसी ने एक पैसा देने की प्रतिज्ञा न की। मैं तो अब भी यही लिखूंगा कि इस ३०,९२६) में से कम से कम १०,०००) की रक़म पूरी करना आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों तथा सभासदों का कर्तव्य है।

मुन्शीराम मुख्याधिष्ठाता

प्रचारक सम्बन्धी सूचानाएं।

प्रचारक पुस्तक भण्डार की—पुस्तकों का विज्ञापन पहले पृष्ट पर आज से फिर निकला है। कमीशन का दर उदारता से लगाया है, जिससे पुस्तकें शीघ्र बिक जावें। इनके बिकने पर अन्य लाभदायक पुस्तकों की छपाई में सहायता मिलेगी।

जिन छ सौ पुराने ग्राहकों को वी. पी.- वैशाख के अन्त तक भेजे थे उन में लग भग १२० लौट आए। उनमें से १० एक ऐसे निकले जिन्होंने भूल मान कर फिर से वी. पी. मंगा लिया वा वार्षिक मूल्य भेज दिया। शेष को आज तक प्रचारक जारी रहा। इस अङ्क के साथ उन का मूल्य समाप्त हो गया। आगामी अङ्क से उनके नाम काट दिए गए। यदि प्रचारक के सत्सङ्ग की उन्हें फिर इच्छा हुई तो उन्हें आग्रिम मूल्य भेजना होगा।

मृतक श्राद्ध विषयक शास्त्रार्थ—इस अंक के साथ आरम्भ हुआ है। आगामी अंक में उसे समाप्त कर दिया जायगा, और साथ ही ट्रैक्ट रूप में भी छाप दिया जायगा। जो आर्य्य समाज बहुतसी प्रतिएं मंगा कर बांटना चाहें, वे अपने प्रार्थना पत्र अभी से भेजदें।

प्रचारक न पहुंचने पर—तत्काल ही सूचना आ जानी चाहिए, जिससे डाकखाने वालों से पूछ ताछ की जा सके। शिकायत देर से पहुंचने पर कुछ ध्यान इस ओर नहीं खिंच सकता।

आवश्यकता

आर्य्य कन्याविद्यालय श्री गोविन्दपुर के लिए एक अध्यापिका की आवश्यकता है, जो कि आर्य्यासामाजिक हो- वेतन योग्यतानुसार दिया जायेगा।

मन्त्री आर्य्य कन्याविद्यालय
श्री गोविन्दपुर
(ज़िला गुरुदासपुर)

Gurukul Kangri ... Digitized by eGangotri

वेदामृत।

उपहूतये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्। श्रेष्ठं सवंसविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदश्विना प्रवोचत ॥ ऋ० १। १६४। २६ ॥

"इस भली प्रकार दुही जाने वाली धेनु को मैं निपुण हाथों वाला गोधुक स्वीकार करूं और उत्तम ऐश्वर्य का देने वाला हमें इस दोहने की विद्या की सामर्थ्य उत्पन्न करे, जिस से मैं सर्वतः प्रदीप्त प्रताप से प्रकाशित हो कर उस विद्या को भली प्रकार कहूं।"

धेनु इतिवाङ्नामसुपठितम्—निरुक्त के नैघण्टुक काण्ड अध्याय २, खंड २३ में धेनु को वाणी के अर्थ में लिखा है। यहीं *गो, गौः* भी वाणी अर्थ में प्रयुक्त हैं। दुही जाने वाली वाणी ही है। जब तक ज्ञान आत्मा और मन के अन्तरगत ही रहता है, तब तक उस का बाहर प्रचार नहीं हो सकता। ज्ञान का प्रसरण वाणी द्वारा ही होता है। उत्तम दुग्ध की प्राप्ति के लिए दो बातों की आवश्यकता है, एक यह कि गौ, सुशीला सुगमता से दुही जाने वाली हो और दूसरे यह कि दोहने वाला सुहस्त अर्थात दोहने में निपुण हो। इसी प्रकार वाणीरूपी धेनु से पूरा लाभ उठाने के लिए पहली आवश्यकता यह है कि ज्ञान का उल्लेख ऐसी भाषा में हो जिस में तत्त्वज्ञान की प्राप्ति सुलभ हो सके और दूसरे उसमें से तत्त्व निकालने वाला जिज्ञासु ऐसा निपुण हो कि दूसरों तक उस के भाव को आसानी से पहुंचा सके। वेद स्वयम् इस सचाई का प्रमाण है। जहां वैदिक भाषा सरल से सरल और सब प्रकार के शब्द जाल से मुक्त हैं वहां उस का आशय सदा ही उच्च रहता है। उस आशय को दूसरों तक पहुंचाने वाला यदि सुहस्त, योग्य हो तभी वैदिक सत्य का प्रचार होता है।

धर्मोपदेशक की तरह शिक्षक का पद भी बहुत ऊंचा है। जितना शिक्षक का पद ऊंचा है उतनी ही, उस पद तक पहुंचने के लिए, तय्यारियां अधिक करनी पड़ती हैं। शिक्षक के लिए, कवि की न्याईं, इतना ही काफ़ी नहीं कि वह पूर्व योनि के उत्तम संस्कारों सहित जन्म ले, प्रत्युत अत्यन्तावश्यक यह है कि वह इस जन्म में साधन-सम्पन्न हो। उतनी सावधानी की, एक साम्राज्य के मन्त्री के चुनाव में, ज़रूरत नहीं है जितनी कि छोटे बच्चों के शिक्षक के चुनाव के लिए आवश्यक है। असील से असील गाय से शुद्ध, स्वास्थ्य-प्रद दूध प्राप्त करने के लिए भी दोहने की विद्या में बड़े परिश्रम की आवश्यकता पड़ती है, तब वेद रूपी ज्ञान को दोह कर मक्खन निकालने के लिए कितने उच्च साधनों की आवश्यकता न होगी! शिक्षक को पहले स्वयम् अपने अंगप्रत्यंगों को वश में करना चाहिए; उसे, बनावटी नहीं, स्वाभाविक नट बनने की आवश्यकता है। इस प्रकार साधन-सम्पन्न हो कर उसे मैदान में उतरना चाहिए।

ऐसा ही साधन-सम्पन्न विद्वान् पता लगा सकता है कि सरलता से दुहे जाने पर अमृत-मय फल की प्राप्ति किस वाणी से हो सकी है जिसे वह संसार के कल्याण के लिये फैला सके। शिक्षा देने से पहले शिक्षक को उचित पाठविधि के निश्चय करने की आवश्यकता है। गाय तो सहस्रों, मेले में बिकने को खड़ी रहती हैं; उनमें से कोई सींग मारने वाली, कोई दूध न देने वाली और कोई रोगों से पीड़ित हैं। बुद्धिमान गोधुक उनमें से किसी को हाथ भी नहीं लगाता। इसी प्रकार ज्ञानरूपी गाय की अवस्था है। शिक्षक, फैलाने के लिए, किस ज्ञान को स्वीकार करे? जिस पुस्तक की भाषा में इन्द्रियों को उकसाने और बुरी कामनाओं को उत्तेजित करने का दुर्गुण है, उन्हें बुद्धिमान साधन-सम्पन्न शिक्षक अपनी पाठविधि से पहले ही उड़ा देगा। जिस वाणी से मनुष्यों में परस्पर द्वेषाग्नि प्रज्वलित हो, जिन उपन्यासों से काम चेष्टा उत्तेजित हो, जिन तुकबन्दियों से विफल कर मनुष्य में पशुभाव का प्रवेश हो, उन को शिक्षक पहले त्याग दे। फिर निदुग्धा गाय की तरह वाणी निस्सार भी नहीं होनी चाहिए। वेद का एक एक शब्द अपने अन्दर सार रखता है। वेद के पीछे चलते हुए उपनिषत्कार मुनियों ने भी एक शब्द बिना प्रयोजन के नहीं लिखा। परन्तु कलियुगी संस्कृज्ञों ने 'अवच्छेदकावच्छिन' के शब्द जाल में फंसा कर आर्य जाति को नास्तिक पन के गढ़े में गिरा दिया। ईश्वर भक्ति और उपासना से विमुख करा के इसी शब्द जाल ने जीवों को भ्रम युक्त कर उन्हें ब्रह्म का धोखा दिलाया।

इन के अतिरिक्त जो वाणी मनुष्यों में अभिमान तथा आत्मश्लाघा का कुसंस्कार डाल कर उन का सर्वनाश करने वाली हो उस से भी रुग्न गाय की तरह बचना चाहिए। रुग्न गाय का विष जिस प्रकार दूध के साथ जाता और पीने वालों में उसे फैला कर उन का घात करता है; उसी प्रकार विषयुक्त वाणी सुनने वालों में फैल कर उन को मार डालती है।

सच मुच शिक्षक का पद बहुत ही ऊंचा है, परन्तु उस के लिए साधन भी बड़े कठिन हैं। वे साधन कैसे निभ सकें? अल्प जीवात्मा की शक्ति तो इस बड़े बोझ को उठाने के योग्य नहीं है। तब उस महति शक्ति से सहारा लेना चाहिए जिस के आश्रित को कोई भी क्लेश की आंधी डगमगा नहीं सकती। जिस के पास ऐश्वर्य है वही दूसरों को भी ऐश्वर्यवान् बना सकता है। जिस के पास अपना कुछ नहीं वह किसी को क्या दे सकता है। *"नंगी, क्या नहाये और क्या निचोड़े?* जिन्हों ने अपनी अल्पज्ञता को भुला कर दूसरों की पथ दर्शकता का बोझ अपने ऊपर लिया उन्होंने शिष्य का और अपना-दोनों का—नाश कर लिया; परन्तु जिन्होंने वाणी के स्वामी, सर्वज्ञ पिता से ज्ञान लाभ कर के जो कुछ भी प्राप्त किया, उसे ज्यों का त्यों शिष्यों के आगे रख दिया, उन्होंने अपने शिष्यों का और अपना—दोनों का—कल्याण कर के जीवन का उद्देश्य पूर्ण किया। शिक्षक को परमात्मा से प्रकाश लेना चाहिए, तब उस प्रकाश से प्रदीप्त होकर वह अपने शिष्यों को प्रकाश दे सकता है। तब उसे अधिक बल लगाने की आवश्यता न होगी; उस का जीवन, उस का रोम रोम स्वयम् बोलेगा और बिना परिश्रम के ही शिष्यों के अन्दर विद्या रूपी सूर्य का संचार होगा। धन्य है वह जाति और धन्य वह देश जहां इस प्रकार की, गुरु-शिष्य के सम्बन्ध द्वारा, शिक्षा होती है। शमित्योम्।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आत्मदर्शनम् ।

सांच को आंच नहीं—"हम तो खरी खरी ही सुनायेंगे, हम कुछ उठा न रक्खेंगे। कोई बिगड़ो वा कुढ़ो, हमें तो ज्यों का त्यों कहने से प्रयोजन है।" इन शब्दों से आज भारत वर्ष का नभ-मण्डल गूंज रहा है। आज सभी सत्यवादी हैं। सम्पादक और पत्र प्रेरक, उपदेष्टा और अनुगामी सभी सचाई की बुनियाद पर वाक् जाल का प्रासाद खड़ा कर रहे हैं। चारों ओर से ही यही शब्द सुन कर युवक को भी साहस हुआ, और उसने समालोचना की रंगभूमि में प्रवेश करते हुए उच्च स्वर से कहा—*सत्येनास्ति भयं-क्वचित्*।

—०—

युवक आर्यसमाज का सभासद् बना है, दृढ़ वैदिक धर्मी है। तब पुराने निरर्थक नाम से घृणा क्यों न होती। *लट्ठदूमल*—भला यह भी कोई नाम है! अज्ञान वश माता पिता ने ऐसा नाम रख दिया; अब सार्थक नाम रक्खेंगे। हमने सत्य के प्रकाश का बीड़ा उठाया है, इस लिए आज से *सत्यकाम* हमारा नाम हुआ।

महाशय सत्यकाम पग पग पर सचाई की ढूंढ़ में रहते हैं। एक उपदेशक महाशय एक महिला से बात कर रहे थे। महिला का पति धन कमाने के लिए विदेश में गया था। ब्रह्मा देश में वह डाक्टर था। उपदेशक जी अभी ब्रह्मा देश से प्रचार कर के आए हैं। देवी अपने पति का समाचार पूछ रही है। युवक के पास एक पुराने पापी आ पहुंचे और कुहनी मार कर कान में कहा—"कुछ देखा, ऐसे उपदेशक हैं!" युवक चकितसा रह गया। पुराने पापी ने कहा—"देखो औरत का चेहरा प्रसन्न है, पराई स्त्री को यह प्रसन्न करने वाले उपदेशक हैं।" उस समय उपदेशक बतला रहे थे कि देवी के पति डाक्टर साहेब के सदाचार की धूम है और एक बड़े राज रोगी को राज़ी करने पर उन्हें जनता की ओर से विशेष प्रशंसा पत्र तथा चांदी के हवन-पात्र मिले हैं। इस पर देवी का मुख अल्हाद से भर गया था। परन्तु युवक ने पुराने पापी की विष-भई वाणी को सुना और निश्चय कर लिया कि उपदेशक महाशय गिरे हुए व्यभिचारी हैं। पुराने पापी ने चलते समय कहा—"हम लोग तो नीच हैं, हौसला नहीं रखते। आप निडर महात्मा हैं, पाप का भण्डा फोड़ना चाहिए।"

—:०:—

हम सत्य को छिपा नहीं सक्ते, हम सत्यकाम हैं; हम सारे जहान में इस पाप को प्रसिद्ध करेंगे। उसी दिन से श्री सत्यकाम जी ने अपने और बेगाने सब में ढिंढोरा पीटना शुरू कर दिया। देवी अपने तीन बच्चों समेत जब दूसरे सप्ताह आर्य्य समाज के साधारण अधिवेशन में गई तो स्त्रियों का बर्ताव बदला हुआ देखा। परन्तु पतिव्रता सती देवी कुछ न समझी। उपदेशक महाशय दौरे पर चले गए। देवी को कोई पूछने वाला न रहा। प्रधान, मन्त्री सबके त्योर बदल गए और सत्यवादी सत्यकाम का मिशन पूरा हुआ। कृत-कार्यता के मद ने अन्धा कर दिया। पुराने पापी ने जिस की पगड़ी उतरवानी चाही उतरवादी। उपदेशक ने लौट कर जब यह जन अपवाद फैला हुआ देखा तो हैरान होगया। परन्तु कहे क्या, और कहे किससे? यदि एक को समझावे तो वह आगे इस प्रकार बात चलायेगा—"घटना तो मानली, शेष भी ठीक ही होगा।"

तीन मास के पश्चात् डाक्टर जी ब्रह्मा से लौटे। उन के पास घर का सारा समाचार उपदेशक जी भेजा करते थे। धर्म पत्नि पतिव्रत धर्म के पालन में वैसी ही दत्तचित्त थी जैसे पत्निव्रत पालन में डाक्टर जी। गृह में बधाई और प्रसन्नता का राज हुआ। इस रंग में भंग डालने के लिए पुराने पापी जी डाक्टर के पास पहुंचे और सत्यकाम की करतूत स्वयम् वर्णन करदी। डाक्टर जी केवल सदाचारी ही न थे प्रत्युत बुद्धिमान भी थे। उन्होंने सत्य काम को मिल कर प्रेम पूर्वक सारा हाल पूछा और कहा-"युवक उपदेशक जी तो मेरे सच्चे भाई हैं, मेरी प्रार्थना पर ही वह मेरे घर का सारा समाचार भेजते रहे। क्या तुमने स्वयम् कुछ देखा वा सुना था? वा तुमने किसी के बहकाने से ऐसा अपवाद फैलाया।" तब युवक की आंखें खुलीं और उसको सब कुछ स्मरण आया और उसने व्याकुल होकर पूछा—"डाक्टर जी! आपके कथन से तो ऐसा प्रतीत होता है कि मैंने पाप किया है, परन्तु मैंने तो जो कुछ कहा अपने ज्ञान के अनुसार सत्य ही कहा। परन्तु उस से हानि बहुत हुई। फिर भी मुझे भ्रम है कि जब अपने अन्तःकरण के निश्चय अनुसार मैंने सच बोला तो मैं पापी कैसे होसक्ता हूं।"

—:०:—

डाक्टर जी ने तत्काल ही पातञ्जलयोग दर्शन का व्यास भाष्य खोला और द्वितीय [साधन] पाद के सूत्र ३० पर नीचे का भाष्य पढ़ने लगे—यथार्थं वाङ्मन सं, यथा दृष्टम् यथा नुमितंयथा श्रुतं तथा वाङ्मनश्चेति परत्र स्वबोध सक्रान्तये वागुक्तासायदिन वञ्चिन्ता क्रान्तये वागुक्तासायदिन वंचिता प्रतिपत्ति बन्ध्या वाभवेत् इत्येषा सर्व भूतोपक्रातय रवैस्यान्न सत्यं भवेत पापेमवभवेत्तेन पुण्याभासेन पुण्य प्रति रूपकेनकष्टनन्तमः प्राप्नुयात् तसमत परीक्ष्य सर्वभूतहितं सत्यं ब्रूयात्॥

"जिस में मन और वाणी यथार्थ रहें, जैसा देखा हो, जैसा अनुमान किया हो, जैसा सुना हो, वैसा ही अपने मन और वाणी को रखना। दूसरे मनुष्य में अपने ज्ञान की प्रेरणा को जो वचन कहा वाक्य छलकपट भरा, भ्रम में डालने वाला और न निरर्थक हो। सब प्राणियों के उपकार के वास्ते कही गई हो किन्तु प्राणियों के नाश के वास्ते नै कही गई हो। यदि वह कहा हुआ वाक्य प्राणियों के नाश का हेतु हो, वह सत्य नहीं होगा उसके अनुसार आचरण करने से पाप ही होता है। पुण्य के नाम से जो स्वार्थ साधन किया जाता है, वह अपुण्य के कृत्य से अत्यन्त कष्ट पाता है। परीक्षा करके— जिसमें सब प्राणियों का हित हो (वह) सत्यबोले।"

Vrukul Kangri ... Digitized by eGangotri

ज्यों ज्यों डाक्टर महाशय भाष्यार्थ पढ़ते जाते थे सत्यकाम की व्यग्रता बढ़ती जाती थी। समाप्ति पर शान्त होकर उसने डाक्टर महोदय को नमस्कार किया और क्षमा की प्रार्थना की। डाक्टर ने कहा—"प्यारे आर्य युवक! क्षमतव्य कुछ है ही नहीं तो क्षमा की प्रार्थना क्या। तुमने सत्य का वास्तविक रूप देख लिया, मुझे सब कुछ मिल गया।"

सत्यकाम नदी के किनारे एकान्त में जा बैठा; उसके हृदय पट पर गत तीन चार मास की घटनाओं के चित्र खिंचते गए। उसमे आश्चर्य से देखा कि जिसे उसने पुण्य समझा था, वह अपुण्य ही था। पुण्य पाप की तुलना परमात्मा के लिए है, अल्पज्ञ निर्बल मनुष्य क्या तुलना कर सकेगा।

सत्यकाम ने उस समय अपने जीवन पर दृष्टि डाली तो उस में बीसियों छिद्र दिखाई दिए। अपनी निर्बलताओं की सूची देख कर उसका हृदय भर आया और उसने मन को परमात्मा के आगे झुकाकर अपने सुधार की दृढ़ मानसिक प्रतिज्ञा की और इस लोकोक्ति का मन से पाठ करता हुआ लौटा—*तुझ को पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू।*

—०—

घोषणा

श्रीमती आर्यवर्तीय सार्वदेशिक आर्य्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा का अधिवेशन श्रावण कृ० ३० शनिवार सम्वत् १९७३ तदानुकूल ३० जौलाई सन् १९१६ ई० को १२ बजे दिन से सार्वदेशिक भवन दिल्ली में, जो परेट के मैदान के सामने है, संगठित होगा—सभासदों की सेवामें नियमानुसार नोटिस भेजे जा चुके हैं—यदि किन्हीं महाशय के पास न पहुंचा हो तो कृपा कर कार्य्यालय से भंगवालें—अन्तरंग सभासदों से निवेदन है कि वे कृपया अवश्य पधारें।

नारायण प्रसाद
मन्त्री

—०—

सद्धर्म-प्रचारक।

क्या यह सर्वनाशकयुद्ध समाप्त न होगा?

लार्डकिचनर की मौत का शोकजनक समाचारगताङ्क में दिया जा चुका है। किचनर को इस समय बृटिश सामराज्य की मुख्य सम्पत्ति कहा जाता था। बूढ़े दूरदर्शी, धर्मात्मा, वीर, रावर्ट्स से जो आशाएं थीं उनका वर्णन व्यर्थ है। यदि फ्रांस के मैदान से वह बीमार होकर न लौटते तो शायद शत्रुदल की अराजकता पर बड़ा प्रबल अंकुश बना रहता। परन्तु यह अब कल्पनामात्र ही है। किचनर का प्रभाव प्रत्यक्ष है। किचनर बृटिश चक्रवर्ती राज्य का ही एकमात्र आश्रय न था, मित्रमण्डल का भी सर्वस्व वही था। महा मन्त्री ऐस्किथ ने बड़े परिश्रम से सारे मित्र मण्डल को एक सूत्र में बांधा यह ठीक है, परन्तु इस ग्रन्थन की दृढ़ता का एक मात्रसाधन किचनर था। मित्रों को यदि आशा थी तो किचनर के दृढ़ साहस तथा बुद्धि बल पर, और शत्रुदल को यदि किसी शक्ति का भय था तो उसके शिर पर किचनर लिखा हुआ था। इस समय लार्डकिचनर एक अपूर्व पुरुष था।

ऐसी महत्ति शक्ति के अस्त होते हुए कौनसा दिल दहल नहीं जाता, और कौनसा हृदय नहीं पसीजता। ऐसे समय मित्र, शत्रु दोंनों पर एक सा प्रभाव पड़ना चाहिए था। परन्तु संसार से पुराना सात्विक काल महाभारत के युद्ध में ही समाप्त होचुका है। भीष्म और द्रोण के गिरने पर-पितामह और आचार्य के मृत्यु शय्या पर लेटने से भी जब पाण्डव और कौरव दल ने एक क्षण सांस न लिया तो इस समय लार्डकिचनर की अकालमृत्यु पर वर्तमान उभयपक्ष में विचार का प्रकाश होने की क्या सम्भावना हो सकती है। चाहे लार्ड किचनर को लेजाने वाला जहाज़ टार्पीडो किया गया वा स्वयम् डूब गया, दोनों अवस्थाओं में यह मौत शिक्षा जनक है। परन्तु इस का प्रभाव जर्मनी पर कुछ भी पड़ा नहीं दीखता। जर्मनी को सोचना चाहिए की यदि किसी ऐसी ही दैवीघटना से कैसर विलियम् का देहान्त हो जाय तो उनकी क्या दशा होगी।

गुणी और ज्ञानी और कर्मवीर दोनों ओर से नाश को प्राप्त हो रहे हैं, लाखों निरापराध-बेलजियम, सर्विया, मान्तिनगरो, अलबेनियां तथा अफ्रीका के उपनिवेशों की-प्रजा घरबार से निकाली गई टुकड़े को मोहताज फिर रही है, दो करोड़ से अधिक मारे जाचुके और घायल पड़े सिसिक रहे हैं, परन्तु फिर भी तोप चन्द्रिकाओं के मुंह खुले हुए हैं और उन की भूख बढ़ती ही जाती है। महाभारत के समय क्या अविद्या की घटा छाई थी जो इस समय युरुप में व्याप्त हो रही है। बुद्धिमानों की बुद्धियां उन्हें जवाब देचुकी हैं। वह युरोप जो अन्य जातिओं का सारा बोझ उठाने का दावीदार था आज कैसा भयानक, एशिया को दिखा रहा है।

पोप की शक्ति शिथिल पड़ी हुई है युरुप ने धर्म के पीछे लाठी लेकर उसे देशनिकाला देदिया था। अब भी एक दूसरे का गला काटने के लिए ही प्रार्थनाएं होती हैं। बाहर से शान्ति की प्रार्थना करते हुए भी मन में मारधाड़ ही लगी हुई है। जितना रक्त अधिक बहता है युद्ध की चन्डी की भूख उतनी ही बढ़ती जाती है। क्या इस की तृप्ति अधिक रक्त बहाने से होगी? हा! आजकल का सभ्य संसार कैसा मूर्ख हो रहा है। जिसे युद्ध ने बहादुरी समझा है वह निरा कायरपन है। आंख मूंद कर भाइयों का गला काटना बहादुरी नहीं। क्या कोई शक्ति भी इस सर्व नाशक युद्ध को बन्द नहीं करा सकी?

युरप और अमेरिका में तो ऐसी कोई शक्ति है नहीं। कोई युद्ध में प्रवृत्त हो कर अन्धे हो रहे हैं, और शेष अन्धों को बांटने में लगे हुए। प्रकृति के उपासकों ने एशिया पर भी शासन जमाना शुरू कर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

दिया है। अमेरिका एक ओर और जापान दूसरी ओर सोनाही सोना बटोरने में लगे हुए हैं। तब वे कैसे इस युद्ध को समाप्त कराना चाहेंगे। एशिया भी इसी भट्टी में गिरता जाता है। तुर्किस्तान और अरब और फारस में ज्वाला धधक उठी है। चीन को खाने के लिए जापान मुंहबाए तय्यार है।

इस समय जगत की आंख (अर्थात उस बुद्धिमान जगत की जिन के अन्दर के नेत्र खुले हुए हैं) भारत वर्ष (प्राचीन आर्य्यवर्त्त) की ओर लगी हुई है। ६००० वर्षों के पश्चात् आर्य्यवर्त्त के आत्मा को फिर जगाया जारहा है। क्या आर्य्यवर्त्त जागेगा। आर्य्य वीरो! तुम्हारे आत्मा में अब तक भी वही सोई हुई शक्ति विद्यमान है, इस समय की घटना तुम्हें पुकारही है। उठो और अपने आत्मिक बल से काम लो। भारत वर्ष का सम्मिलित मन अपनी प्रबल इच्छा को संसार में शान्ति फैलाने के लिए लगा देवै, प्रत्येक हृदय से यही प्रबल प्रार्थना उठे, प्रत्येक आत्मा अपना बल इसी इच्छा के अर्पण करदे; तब यह निष्काम प्रार्थना अपना प्रभाव अवश्य डालेगी।

क्या आर्य्य जाति के नर नारी यह प्रतिज्ञा करेंगे कि प्रतः काल की सन्ध्या के पश्चात् अवश्य एक बार अपनी सारी श्रद्धा शक्ति, ५ मिनिट के लिए, संसार में शान्ति का राज्य लाने के लिए लगाया करें गे?

जिससे वह मांगो जो हम देसकें।

इस विश्व व्यापी युद्ध में भारत वर्ष ने धन, मन, धन से अपनी गवर्नमेन्ट की सहायता की है। बृटिश सरकार ने कहा कि तुम्हारा मन हमारे साथ तब समझा जाएगा, जब तुम प्रत्यक्ष हमारे विजय के लिए अपने इष्ट देवों से प्रार्थना करोगे। भारत प्रजा ने ऐसा ही किया। न केवल मन्दिरों और मस्जिदों से ही प्रार्थना की गई उठी प्रत्युत आर्य्य और ब्राह्मण समाजों ने भी उनका साथ दिया। जो प्राणों से दूसरों को लाभ पहुंचाने के सिद्धान्त को न मानने वाले थे उन्होंने भी अपने द्वारा अपने सिद्धान्त को तिलांजली देदी। धन भी इस निर्धन देश ने अपनी शक्ति से बाहर दिया, और तन का तो कहनो ही क्या है। ऐसे विपत्ति के समय में जो अपने राष्ट्र के लिए तपस्वी का जीवन व्यतीत कर सकें उसी को तपस्वी कह सक्ते हैं। जहां अंग्रेज़ी पुरुषों में से (इङ्गलैण्ड और इन्डिया में) थोड़ों ने अपनी आर्थिक आवश्यकताओं में कांट छांट की वहां भारतियों ने सच मुच तप का जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया है। तन के विषय में इतना ही कहना है कि जो भारतीय सेना में रह कर युद्ध विद्या सीख चुके थे वे तो नमक हलाली करने को जाकर फ्रांस और मेसोपोटामियां के मैदानों में कट गए और जिन्हें सरकार भरती करती वे भरती होते जाते हैं। यहां के उच्च तथा मध्यम कोटि के सब मनुष्य युद्ध में कटने को तय्यार हैं, परन्तु उन्हें अवसर नहीं दिया जाता। उल्टे एङ्गलो इन्डियन अख़बार उनका दिल दुखाते हैं और स्पष्ट कहते हैं कि भारतियों पर सरकार विश्वास नहीं करसक्ती इस लिए हथियार चलाने का काम लेने के लिए उनके हाथों में हथियार कैसे दें। यदि विश्वास नहीं है तो जाने दो। यहां तो १०० वर्ष से अपने में सब भले मनुष्य लठिया तक चलाना भूल गए; तब जो आपत्ति शिर पर आयगी झेलेंगे और झेल रहे हैं। सरहद पर हिन्दुओं की स्त्रियां तक उठाकर पठान पर ले जा रहे हैं। बिना हथियार चलाना जाने वहां के हिन्दू अपनी स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा नहीं कर सकते, तब वे सरकार की क्या सहायता कर सकते हैं। मन हमने सरकार को दिया, तन को पेश करते हैं कि इसे सहायता के योग्य बना लो, वह स्वीकार नहीं होता, मांगा जाता है धन! विलायत में बैठे अंग्रेजों को स्वप्न आता है—"भारत में अनगिनत कोष गड़े हुए हैं; उनकी ख़बर लो।" गड़े ख़ज़ानों को तो महमूद ने ही नहीं छोड़ा था, जो शेष थे गुलाम परिवार से लेकर मुग़लों के बहादुर शाह तक ने खोद लिए। मुग़लों से आंग्ल जाति ने सब कुछ ले लिया। अब तो ऊपर की सफ़ेद पोशी ही रह गई है। इसे देखकर बेचारों की कूं खिंच रही हो। आप मियां मंगते द्वार खड़े दर्वेश—धन किसके पास है। हां, हिन्दूयूनिवर्सिटी की आधार शिला के समय राजे महाराजे अवश्य बहुमूल्य आभूषण पहिन कर आये थे; यदि उनको बेचकर आधा धन गवर्नमेंट युद्ध में लगा दो और आधा भारत के भूखों के पालने में लगा दिया जाय तो कुछ हानि नहीं।

मन हमारा सरकार के साथ है, तन पेश किया जाता है तो ऐङ्गलो इन्डियन सभ्य उसकी स्वीकृति में अपनी जाति के लिए भय बतलाते हैं और धन हम निर्धनों के पास है नहीं—तब हम और क्या सहायता दे सक्ते हैं? बृटिश गवर्नमेन्ट ने इन गोरे शाहियों के शोर मचाते हुए भी नए टैक्स न लगा और प्रजा पर अनुचित दबाव न डाल कर अपनी प्रजा भक्ति तथा उदारता का प्रमाण दिया है।

प्रवासी भारत वासी, फ़िजी में।

फ़िजी से लौट कर मेरे भाई महाशय ऐन्ड्रूज़ ने स्वामी मनोहरानन्द सरस्वती की बड़ी प्रशंसा की थी। उन्हों ने कहा था कि उस टापू में यदि वह किसी को अपना मित्र कह सक्ते हैं तो वह स्वामी मनोहरानन्द जी ही हैं। चिरकाल से स्वामी मनोहरानन्द अकेले फीजी के प्रवासी भारतीयों को घोर नास्तिकपन से निकालने का यत्न कर रहे हैं। यहां कई बार उन्हों ने अपीलें कीं कि एक बैरिस्टर और एक डाक्टर फीजी में चहुंच जायं तो वहां के भारतीयों को पशु जीवन के गढ़े से निकालने में सहायता मिलेगी। प्रचारक में भी लिखा गया परन्तु कुछ भी परिणाम न निकला। स्वामी मनोहरानन्द क्या काम कर रहे हैं यह उन के पत्र से विदित होगा जो अन्यत्र प्रकाशित किया जाता है। यदि कोई बैरिस्टर वा डाक्टर जाना चाहें तो उन के सुविचारों को जान कर स्वामी जी से मैं सब कुछ तै करादूंगा। स्वामी जी शीघ्र फल की आकांक्षा करने वाले हैं, इस लिए वरसों की लगातार अकृत कार्यता ने उन को लेख में कुछ कटुता का प्रवेश करादिया है, परन्तु यह स्पष्ट विदित होता कि वह अपने निशान पर कट मरने वालों में से हैं, इस लिए फीजी के सुधार के लिए हमें निराश होना नहीं है।

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ
वैदिक धर्म की
विजय-घोषणा।

'सद्धर्मप्रचारक' के पाठकों को भली भांति विदित है कि हरिद्वार की विद्वत्-समिति ने ऋषिकुल के वार्षिकोत्सव पर, श्राद्ध विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए आर्यसमाज को खुला चेलेंज दिया था। शास्त्रार्थ के नियमों को निर्णय करने के विषय में जो भी पत्र व्यवहार हुआ वह प्रचारक' के पाठकों से छिपा नहीं है। ३ जून के सद्धर्म-प्रचारक में हरिद्वार की विद्वत्समिति के मन्त्री महाशय का पत्र देते हुए लिखा गया था कि यदि उन्हें हमारे प्रस्ताव किए हुए नियम स्वीकार हों तो गुरुकुल के पण्डित शास्त्रार्थ के लिये उपस्थित होंगे। इस के उत्तर की बहुत दिनों तक प्रतीक्षा की गई किन्तु शास्त्रार्थ के दिन से ५ दिवस पूर्व तक भी कोई उत्तर न आया आखिर ८ जून को, जब शास्त्रार्थ में केवल ४ ही दिन रह गये, विद्वत्समिति के मन्त्री महाशय का उत्तर प्राप्त हुआ जो १० जून के प्रचारक में प्रकाशित हो चुका है। यदि ८ जून को प्राप्त हुए पत्र का रजिस्टर्ड पत्र द्वारा उत्तर दिया जाता तो १० जून को विद्वत्समिति के मन्त्री के पास पहुंचता और यदि इस पत्र के उत्तर पाने की १२ जून तक प्रतीक्षा की जाती तो शास्त्रार्थ का दिन निकल जाता और यदि उत्तर की प्रतीक्षा ही न की जाती तो शास्त्रार्थ के नियम बिलकुल गड़बड़ और अनिर्णीत रह जाते।

अस्तु पत्र का उत्तर पाने और शास्त्रार्थ के नियमों का निर्णय हुए विना ही, गुरुकुल की पण्डित मण्डली, आर्यप्रतिनिधि सभा के महोपदेशक श्री पं० पूर्णानन्द जी, तथा ऊपर की श्रेणियों के ब्रह्मचारियों ने ११ जून को मध्यान्होत्तर ३½ बजे गुरुकुल से प्रस्थान करने की ठानी। अभी १½ भी न बजे थे कि विधाता ने, वैदिक-धर्म की अटलता में गुरुकुल मण्डली की श्रद्धा की कठिन परिक्षा लेनी चाही। पश्चिम से घन घोर घटा उनड़ने लगी और देखते ही देखते उस ने सारे आकाश में छा कर अपने बाणों की मूसलधारा आरम्भ करदी।

गुरुकुल मण्डली ने भी ३½ बजे अपने दृढ़ निश्चय के अनुसार गुरुकुल से प्रस्थान आरम्भ कर दिया। मेघ सैन्य ने हार-मानी पर जिद्द न छोड़ी। धीमी २ वर्षा होती ही रही। वर्षा के पानी से सब नाले उमड़ रहे थे, गुरुकुल मण्डली भी झीगती भागती, कूदती, फांदती, सब नालों को पार करती सायंकाल ६ बजे गंगा की बड़ी धार के तीर पर किश्ती पाने की आस में बड़े उत्साह से जा पहुंची। पहुंचते ही जो दृश्य देखने में आया उस से एकदम सब रंग ही पलट गया। गुरुकुल मण्डली के दृढ़निश्चय और उत्साह पर एकाएक वज्राघात सा हुआ किन्तु आखिर वह वज्र ही टूटा न कि दृढ़ निश्चय। दो तीन दिन की वर्षा से गंगा भरपूर भरी जा रही थी, किनारा सामने दूरी पर देखने में आता था। किश्ती भी किनारे की किसी खोह में बड़े ग़ौर से देखने पर धीमी २ दृष्टि गोचर होती थी। परले पार पहुंचने की कोई आशा न थी।

किश्ती को इस पार भेजने के लिए एक आदमी तूम्बों पर पार गया। आखिर ७॥ बजे दूर से कोई चीज़ हिलती सी दिखी और थोड़ी ही देर में किश्ती इस पार आलगी। ब्रह्मचारीगण किश्ती खैंच कर ऊपर लाये। जब पार जाने की तय्यारिएं हुईं तो देखने में आया कि सवासौ की मण्डली के लिए किश्ती बिलकुल छोटी है। एक ही हल्ले में पार जाना नितान्त असम्भव है। उधर अंधेरा पग बढाये बुरी तरह चला रहा है। किश्ती का जाकर फिर लौटना, अत्यन्त दुष्कर कार्य है, पर इस के सिवाय कोई दूसरा चारा भी नहीं। गुरुकुल मण्डली के दृढ़निश्चय ने भी यही विचारा कि अंधेरा आता है तो आने दो, रात आती है तो उसे भी आने दो, और किसी का भी जी चाहे तो उसे भी मैदान में आने से कोई रुकावट नहीं, किन्तु हर हालत में किश्ती को दुबारा लौटना ही होगा।

आधी मण्डली किश्ती में सवार हुई,

अभी किश्ती परले पार न लग पाई थी कि किश्ती को एक ज़ोर का ठसका लगा, किश्ती की एक बड़े पत्थर से टक्कर हुई, उसका पैंदा यरां गया और उसी पत्थर से किश्ती अटक गई। अन्ततः ब्रह्मचारियों और मल्लाहों ने ज़ोर लगा कर किश्ती को आगे बढ़ाया। इस समय तक अंधेरा पूरी तरह पसार पाचुका था, पार से पार की कोई चीज़ भी देखने में न आती थी ८ बज गये, ८½ भी देखते ही देखते बीत गए, किश्ती के लौटने न लौटने का कुछ भी हाल उरली तरफ वालों को मालूम न हुआ। बिजली के आने की कोई आस न देख सब सन्ध्यावन्दनादि में लग गये। सन्ध्यादि के अनन्तर फिर सब ने अपनी टिक टिकी परले किनारे पर लगाई, किन्तु गाढ़े अंधेरे में बिचारी नज़र का क्या दख़ल, १०,२० गज़ चल कर आगे बढ़ने से उसने कान को हाथ लगाया। ९ बज कर १० मिनट पर पार से धीमा सा हल्ले का शब्द आया और थोड़ी देर बाद एक काली सी चीज़ गंगा तट पर तिरती नज़र आई। मालूम हुआ कि पहिली मण्डली को पार लगने पर किश्ती बहुत ऊपर ले जाती थी। पानी ज़ोर का था अतः सवा घण्टा रेड़ी को ऊपर खैंचने में लगा और जब बेड़ी खिंच चुकी तब वह मंडली हल्ला कर के उसे पार से रवाना करती गई। दूसरी मंडली भी पार होकर १० बजे मायापुर वाटिका में जा पहुंची रात के १२ बजे तक थोड़ा बहुत खा पीकर जिस को जहां तहां जगह मिली वह वहीं पड़ रहा प्रातःकाल नित्यकर्मों से निवृत्त होकर ७ बजे गुरुमण्डलाश्रम की ओर प्रस्थान प्रारम्भ हुआ। वर्षा तो रात से ही सिर पड़ी हुई थी उस ने अब भी पीछा न छोड़ा। पौने ८ बजे गुरुकुल मंडली गुरुमंडलाश्रम के उस कमरे में जा पहुंची

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जहां शास्त्रार्थ होना था।

दरियें बिछ रही थीं, दोनों तरफ एक २ टेबल लगादी गई और ८ बजे शास्त्रार्थ आरम्भ होने का समय आया।

कमरा दर्शकगणों से खचाखच भर गया, कमरे में जैसे तैसे ढाई, तीन सौ आदमियों के प्रविष्ट होने की खासी जगह थी।

पहले विद्वत्समिति के मन्त्री पं० विश्वनाथ त्रिपाठी जी ने शंनो मित्रः, मंत्र का उच्चारण करते हुए यह सूचना दी कि लाला बलदेवसिंह जी इस सभा के सभापति निश्चित हुए हैं।

इसके अनन्तर पं० दुर्गादत्त जी पन्त ने उक्त सूचनात्मक प्रस्ताव का अनुमोदन किया।

फिर सभापति जी ने प्रार्थना के साथ निम्नलिखित अभिभाषण किया:—

"ओ३म् हरि ओ३म् तत्सत् श्री गणेशायनमः। ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव।

परम प्यारे पिता जी! आज इस सभा में जो विचार होने लगा है वह शान्तिपूर्वक समाप्त हो और सब में प्रेम बढ़े। वक्ताओं के शब्द आकाश में फैल कर वायु को पवित्र कर दें, और सब में प्रेम हो जाय।

सज्जनों! मुझे कल सायंकाल ही इस सभा के सभापति होने की सूचना दी गई थी और मुझे यह बतलाया गया था कि मेरा आज का काम केवल समय का धारण करना तथा वक्ताओं और सभ्यों को शान्ति में रखना है।

इस के अनन्तर शास्त्रार्थ के नियमों को सुनाने के लिये पं० शालिग्राम जी उठे जिन के व्याख्यान का सार यह है:—

देशों की भी दशा हमारे देहों की तरह है जिस प्रकार देह में कई मर्मस्थल होते हैं वैसे ही देशों में भी कई मर्मस्थल होते हैं। किसी देश का मर्मस्थल व्यापार है किसी का कुछ और किसी का कुछ, किन्तु भारत का मर्म, धर्म है। तथापि भारत में धर्म का इतना ह्रास हो गया है कि थोड़े सालों से जनेऊ भी जर्मन से बन कर आने लग गये हैं मुझे सन्देह हुआ था कि कहीं पुजारी भी जर्मनी से न आने लग जावें किन्तु हमारी प्रबल सरकार ने इस का दमन किया है। हमारे धर्म का मूल वेद है—'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' ऋषि इसी लिये पूज्य समझे जाते थे कि वे वेद मन्त्रों के अर्थ द्रष्टा होते थे। देर से वेद पर आघात होते चले आए हैं। जब वेदों को न मानते हुए युक्तिवाद से वेदों पर आघात होने लगा तो स्मृति-कारों ने—'नास्तिको वेद निन्दकः'—कह कर उनका पराजय किया फिर कर्मकाण्ड चला और कर्मकाण्ड के बाद बौद्धों और चार्वाकों ने यहां तक कहना आरम्भ कर दिया कि 'त्रयो वेदस्य कर्तारः भाण्डधूर्त निशाचराः'। पर आज कल दूसरी ही हवा चल पड़ी है।

(सभापति जी वक्ता को—शीघ्र ही नियम सुना दीजिए व्याख्यान की आवश्यकता नहीं।) प्राचीन काल में वेदों को न मानते हुए वेदों पर आक्षेप किये जाते थे किन्तु अब वेदों को मानते हुए भी इस प्रकार विवाद किया जाता है कि अमुक २ विषय वेदों में नहीं है। गुरुकुल के उत्सव में पहिले शास्त्रार्थ पर भी उसी प्रकार विचार हुआ था और आज भी इसी प्रकार ही विचार होता है कि वेद में पितृपिण्डदान मृतकों के लिये है वा जीवितों के लिये। अभी तक चिट्ठी पत्री से सब नियम असन्दिग्ध नहीं हुए हैं अतः अब निर्णय सुनाया जाता है।

१. पहिले वक्ता जीवित पक्ष की ओर से १५ मिनिट तक "शङ्काएं" उठाएंगे तदनन्तर प्रतिपक्ष की ओर से १५ मिनिट में समाधान किया जायगा। फिर दोनों पक्षों की ओर से १०, १० मिनिट बोला जायगा।

२. साथही सब सज्जनों का ध्यान इस तरफ आकर्षित करता हूं कि कोई भी सज्जन 'कुवाच्य-उत्तेजक भाव गाली और जय शब्द न उठावें, अब मेरा निवेदन है कि प्रति वक्ता महाशय अपना पक्ष स्थिर करें। इस के अनन्तर सभापति जी उठे उन्हों ने पूछा कि—

"क्या यह नियम दोनों पक्षों को स्वीकृत हैं।

पं० पूर्णानन्द जी—माननीय भाइयो! हमें पहिले नियम पर आपत्ति है, हमें आमन्त्रण में बताया गया है कि आज का शास्त्रार्थ पितृपितृयज्ञ पर होगा जिस में हम प्रतिवादी हैं। वादी के विना बोले प्रतिवादी कैसे बोल सकता है। इस लिए पहिले वादी महाशय अपनी स्थापना करें साथ ही हमें बड़ा हर्ष है कि हमारे भाइयों ने यावद् ग्रन्थ को प्रमाणीभूत मानना छोड़ कर वेद को ही धर्म का मूल मान लिया है।

पं० गिरिधर जी—माननीय सज्जनो! हमारे पण्डित जी ने कहा कि वाद में 'पक्ष' पहिले स्थापित होना चाहिये उस के बाद ही प्रतिवादी उस पर 'शङ्का' उठा सकता है। आज यह सब को विदित है कि ३० साल से यह विषय स्पष्ट हो चुका है और यह स्थापित हो चुका है कि मृतकों को श्राद्ध देना हमारा पक्ष है।

हमारे चैलेञ्ज देने पर श्रीमान् लाला मुन्शीराम जी ने ३ बातें कहीं थीं उन में एक बात यह भी थी कि अन्तिम वक्ता आर्य समाज की ओर से बोलेगा, इस पर हमारा यह कहना है कि अन्तिम वक्ता उसी पक्ष का होना चाहिए जिसका प्लैट-फ़ार्म हो यदि आप आग्रह करें तो मैं अपने पक्ष की पहिले स्थापना करने को उद्यत हूं किन्तु अन्तिम पक्ष हमारा ही रहेगा।

पं० पूर्णानन्द जी—माननीय सज्जनो! पंडित जी के कथनानुसार यह बात तो निश्चित हो चुकी है कि प्रथम पंडित जी ही अपनी पक्ष स्थापना करेंगे। अब निर्णय यह करना है कि अन्तिम वक्ता किस पक्ष का होगा। सब सभा सोसाईटियों में यही बात होती है कि उत्तर सदा बाद में हुआ करता है। अतः अन्तिम पक्ष अवश्य हमारा होगा (पौराणिक मण्डल में शोर-गुल)—मेरा निवेदन है कि तीसरे व्यक्ति के बोलनें से वक्ता का ध्यान बंटता है अतः सभापति महोदय इस बात का ध्यान रखें—

सभापति जी—बीच में कोई महाशय न बोलें।

पं० पूर्णानन्द जी—निर्णय के लिए पक्ष प्रति पक्ष का होना आवश्यक है अतः जब तक पक्ष स्थापित नहीं होगा तब तक प्रति-पक्ष किस प्रकार उठाया जा सकता है। शास्त्री जी ने कहा कि बीस साल से इस विषय पर विवाद चला आया है अतः पक्ष स्पष्ट है, किन्तु मैं पंडित जी से पूछता हूं कि नास्तिक आस्तिकों में सदा से विवाद चला आया है तथापि नास्तिकों को विवादमें अपना पक्ष पहिले स्थापित करना होता है।

मैं २६ वर्षों से शास्त्रार्थ कर रहा हूं जब कि पंडित जी का कहीं पता भी न था। मैं चैलेञ्ज देकर कहता हूं कि इस विषय पर इसी शीर्षक से कभी शास्त्रार्थ नहीं हुआ।

पं० गिरिधर जी:—उत्तर सदा बाद में होता है और उत्तर हमने देना है न कि आपने, अतः अन्तिमवक्ता उत्तर देने वाला होना चाहिए। पिंडपितृयज्ञ नया शब्द नहीं श्रौत सूत्रों का है और हमने चैलेञ्ज देते हुए ब्रैकेट में श्राद्ध शब्द लिख दिया था। मैं पहिले नहीं बोलना चाहता। अतः आपही पहिले बोलिये मैं आशा करता हूं कि समय खराब करने के लिए आप विप्रतिपत्ति न उठाएंगे।

पं० पूर्णानन्द जी—:आप जब तक पूर्वपक्ष न करेंगे तब तक शास्त्रार्थ न होगा। क्योंकि बिना पक्ष के प्रतिपक्ष नहीं होता। अब रही बात अन्तिम वक्ता की। सो यदि आप इस लिए अन्तिम भाषण करना चाहें कि यह हमारा मकान है तो हमें स्वीकार है किन्तु न्याय यही कहता है कि अन्तिम भाषण उत्तर देने वाले का ही होना चाहिए। आप अपना पक्ष पहिले रखिए तो मैं उस पर शंका उठाऊंगा॥ "सति कुड्ये चित्रं भवति कुड्या भावे कुतश्चित्रम्"॥

आप कहते हैं कि वेदों में मृतक श्राद्ध है मैं कहता हूं नहीं है अतः मैं ही उत्तर दाता हूं और मेरा ही पक्ष अन्तिम होगा।

पं० गिरिधर जी—संसार में प्रसिद्ध है कि भाव कोटि ही उत्तरदात्री हुआ करती है अभाव कोटि नहीं, हमारे सब शास्त्रों में यही रीति चली आई है। असल बात यह है कि आप शास्त्रार्थ नहीं करना चाहते और समय टालना चाहते हैं। मैं प्रधान जी से अपील करता हूं कि दोनों पक्ष आप के सामने हैं आप इसका निर्णय करदें।

पं० पूर्णानन्द जी—सभापति जी का केवल यही काम बताया गया था कि वे समय की व्यवस्था करेंगे और अशान्ति तथा असभ्यता के व्यवहार को रोकेंगे। प्रधान जी को इस बात का अधिकार नहीं है कि वे इस विषय का भी निर्णय करें कि अमुक पक्ष का अन्तिम भाषण होगा और अमुक का नहीं।

गुरुकुल के उत्सव पर आपका कहा माना गया था। जो पहिले बोला था वह अन्त में न बोला, और अभी १०, १५ दिन पूर्व (समराला के मूर्ति पूजा के शास्त्रार्थ में) भी यही नियम था कि जो पहिले बोला था वह अन्त में न बोला। पण्डित जी ने कहा कि हम शास्त्रार्थ करना नहीं चाहते और यूं ही समय टालना चाहते हैं मैं उनसे स्पष्ट शब्दों में कहता हूं कि आप आज नहीं १५ दिन तक शास्त्रार्थ कर सकते हैं।

जब तक वादी पक्ष का स्थापन न करे तब तक प्रतिवादी खण्डन किसका करेगा।

ईश्वर की हस्ती को सिद्ध करने वाले को ही पहिले बताना पड़ता है कि "ईश्वर सत्वे किं मानं" तदनन्तर ही नास्तिक उसका खण्डन करता है।

पं० गिरिधर जी—आपने कोई युक्ति भी नहीं दी कि आपका अन्तिम भाषण क्यों हो, अतः आपको सभापति का निर्णय मानना चाहिए किन्तु यदि आप यह भी नहीं मानते तो, पब्लिक से ही वोट द्वारा निर्णय कराना चाहिए, कि किस का अन्तिम भाषण होना चाहिए।

हम दोनों ही हठी हैं यदि आप अन्तिम भाषण करने के हठी हैं तो मैं भी यह हठ नहीं छोड़ता। तो बताइये निर्णय कैसे होगा। मोरी वहीं रहेगी।

सभापति जी:—यद्यपि मैंने यह कहा तो था कि मेरे पास केवल समय निर्धारण ही काम है किन्तु फिर भी सभापति की कुछ जिम्मेवारी होती है। मैंने अपने काम को यदि हलका समझ कर यह कह दिया तो इसका यह मतलब नहीं कि मेरी ज़िम्मेवारी ही नहीं। यदि ऐसा ही है तो आप किसी अन्य को सभापति चुन सकते हैं। अन्तिम भाषण किस का हो इसका निर्णय या तो श्रोतागण कर सकते हैं या मैं करूं, तो बताइये कि आप किस तरह निर्णय करना चाहेंगे।

पं० पूर्णानन्द जी:—विद्वत्समिति की ओर से यह निश्चित हो चुका है कि 'सामयिक सभापति का काम केवल वक्ताओं

की समय की सूचना देना और उन्हें सभ्यता में रखना होगा, किसी को सहायता देना न होगा। इस से तिल भर भी इधर उधर न होगा और———(पौराणिक मंडल में शोर गुल)।

सभापति जी:–मेरी सुनिये, मेरी सुनिये, मैं—

पं० पूर्णानन्द जी:–महाराज ! मुझे तो आप बोलने ही नहीं देते आप ही दोनों बोलते जाते हैं।

सभापति जी:–मैं किसी पक्ष का नहीं हूं, मैं निष्पक्ष हूं। मैं तो इस सभा में आना भी नहीं चाहता था, और न मैं ऐसी सभाओं में जाया करता हूं। सभापति के कुछ हक होते हैं यदि ऐसा न हो तो सभापति बनना ही व्यर्थ है। मैंने पण्डित जी (पं० गिरिधर जी) के पक्ष के कारण औडियेंस की सम्मति लेने को नहीं कहा था किन्तु एक सभासद् के तौर पर सुझाया था। मैं किसी पक्ष में नहीं हूं।

पं० पूर्णानन्द जी:–प्रधान जी कहते हैं कि यदि हमें अधिकार न मिले तो प्रधानता ही क्या, किन्तु आप के अधिकार निश्चित हो चुके हैं और छप चुके हैं। पिछले गुरुकुल वाले शास्त्रार्थ में भी यही हुआ था कि जिसने पहिले अपना पक्ष स्थापन किया उसका अन्तिम पक्ष न हुआ, आज भी यही होगा। औडियेंस की सम्मति से काम नहीं चल सकता क्योंकि यहां आप का घर है यदि यही रीति गुरुकुल के उत्सव पर भी वर्त्ती जाती तो आप की ओर की सम्मतियें तो ना के बराबर ही रह जातीं। पंडित जी ने यह पूछा है कि यदि आप सभापति जी के भी निर्णय को नहीं मानते और नहीं पब्लिक की सम्मति से काम करना चाहते हैं तो तीसरा मार्ग ही कौन सा है? तीसरा मार्ग तो शास्त्रों में ही बताया है कि पहिले पक्ष का स्थापन किया जाय और पुनः प्रतिपक्ष होगा। आप मुक्तावली को ही लीजिये उसमें पहिले पक्ष का ही स्थापन किया गया है न कि पहिले ही शङ्कोद्भावन किया है। आपने कहा कि हम श्राद्ध की वैदिकता सिद्ध करेंगे जो विप्रतिपन्न हों वे शंका करें। आप कहते हैं कि पक्ष तो १५ साल पहिले से ही स्थापित है किन्तु मेरा कथन है कि शास्त्रार्थ तो आज करना है—

(पौराणिक मण्डल का गुलगपाड़ा और भी बढता गया) शास्त्र कहता है कि पहिले पक्ष हो फिर प्रतिपक्ष होना चाहिए। सभापति जी से मैं प्रार्थना करूंगा कि वे क्षमा करें और घड़ी ले कर बैठ जावें और अपनी अमृतवाणी से जिस वक्ता का जब समय हो जावे उसे सूचना दे देवें। हमारी प्रार्थना है और बड़े अदब से प्रार्थना है कि पण्डित जी अपना पक्ष स्थापन करें और वृथा ही समय-यापन न करें।

पं० गिरिधर जी— कल के प्रचारक में लाला साहिब ने लिखा था कि "किन्तु नियम पूर्वक शास्त्रार्थ न होने के लिए आप उत्तर दाता होंगे" इस वाक्य का मतलब मैं पहिले न समझा था किन्तु अब मुझे समझ आ गया है। पण्डित जी, यह सब कुछ उसी का भाष्य कर रहे हैं।

प्रधान का काम समयादि की व्यवस्था करना है न कि किसी पक्ष की सहायता करना इस झगड़े में भी सभापति जी ही व्यवस्था देंगे। परन्तु आप प्रधान के निर्णय को भी मानने को तय्यार नहीं हैं। २० वीं सदी में वोट ही से काम चलता है किसी एक की सम्मति से काम नहीं होता किन्तु आप पब्लिक वोट भी नहीं लेना चाहते अब कि आप की भी मण्डली (जिस में सवासौ थे) हमारे बराबर ही हैं। तो मैं यह तीसरा मार्ग बतलाता हूं कि प्रो० महेशचरण सिंह जी (गु० कु० वि० वि० के कृषि के उपाध्याय) इस का फ़ैसला कर दें। पण्डित जी ने शास्त्रीय पद्धति की बात उठाई सो मुक्तावली में 'नन्वेवं' से पहिले शंका उठाई है और उत्तर बाद में दिया है।

पं० पूर्णानन्द जी:—आप ने मुक्तावली का ढंग स्वीकृत किया है अतः जिस प्रकार उस में पहिले मंगल की स्थापना की है और तदनन्तर उस पर 'नन्वेवं' से शंका उठाई है। उसी प्रकार पहले आप अपना पक्ष स्थापित करें तो हम उसपर शंका उठाएंगे। आप मुझ पर दोष देते हैं कि मैं वृथा समय गवां रहा हूं किन्तु आप का केवल १५ दिन पहिले ही सूचना देने का यह मतलब प्रतीत होता है कि समय किसी तरह टाला जाता। पण्डित जी ने कहा कि प्रो० महेशचरण सिंह जी का फ़ैसला माना जाय किन्तु हम शास्त्रीय रीति से कभी न टलेंगे कि पहिले पक्ष का स्थापन होना चाहिए।

पं० गिरिधर जी:—बात सीधी हो गई जिस प्रकार मुक्तावली में विघ्न विघाताय मङ्गल किया है उसी प्रकार हम भी उतने ही अक्षरों में अपना पक्ष स्थापित कर देते हैं कि "हम मृतक श्राद्ध को वेद-विहित माना करते हैं"। अन्तिम पक्ष 'नन्वेवं' वाले का नहीं होगा किन्तु सिद्धान्ती का होगा। कृपासिन्धो ! आप केवल यह कह दें कि आप प्रो० महेशचरण जी के फैसले को मानेंगे वा नहीं ?

पं० पूर्णानन्द जी:—पण्डित जी ने कहा कि 'नन्वेवं' वाले का पक्ष अन्तिम नहीं होता। किन्तु हम सिद्धान्ती हैं आप प्रतिवादी हैं और—

(पौराणिक मण्डल में—वाह वाह..... अन्याय अन्याय....शोर गुल.....) (पं० गिरिधर जी का जोश में आकर मध्य में ही खड़े होना और दोनों का आमने सामने खड़े हो कर उत्तर प्रत्युत्तर)

पण्डित गिरिधर जी:— विघ्नविघाताय मङ्गल करने वाले का ही अन्तिम निर्णय है कि नहीं ?

पं० पूर्णानन्द जी—(आवेश में) मैंने आपके कहे हुए पर शङ्का करनी है अतः आप पहिले बोलेंगे, किन्तु—

पं० गिरिधर जी:—आशङ्का करने वाला क्या पीछे बोला करता है ? ज़रा इन्साफ करिये।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सौर मास और सौर संवत्

वर्त्तमान समय में स्वदेशी वर्णमाला तथा भाषा के सार्व्वजनिक एक प्रकार के प्रचार का यत्न अत्यन्त उत्तेजना के साथ होरहा है। परन्तु शोक का स्थल है, कि स्वदेशी तिति तथा संवत् का प्रचलन प्रति दिन न्यून होता जाता है और अङ्गरेज़ी तारीख तथा सन् का प्रचार दिन पर दिन बढ़ता ही जाता है, देख कर भी इधर किसी का ध्यान आकर्षित नहीं होता।

संयुक्तप्रान्त, बिहार तथा मध्यप्रदेश में चान्द्रमास और संवत् का प्रचलन अव्याहत था और अब भी एकदम उठ नहीं गया है। परन्तु चान्द्र वत्सर किसी साल में तेरह महीनों के होते हैं; किसी महीने में कोई तिथि अन्तर्हित हो जाती है और किसी महीने में एक तिथि के दो दिन होते हैं तथा किसी महीने में एक दिन में दो तिथियां होती हैं। चैत्र वदी १५ को संवत् समाप्त होता है और चैत्र सुदी १ को नया संवत् प्रारम्भ होता है अर्थात चैत्र का आधा महीना एक संवत् में और आधा दूसरे संवत् में पड़ता है। अंग्रेज़ी तारीखों के प्रेमी ऐसा कहते हैं, कि इस व्यवहारिक अनियम के होने के कारण काम-काज में बहुत ही अड़चन पड़ती है। इन असुविधाओं के मिटाने के लिए ही अङ्गरेज़ी तारीखों के प्रेमियों के द्वारा वर्त्तमान हिन्दी जगत् में अंग्रेज़ी तारीख और सन् का प्रचलन हो पड़ा है। विशेषतः अंग्रेज़ी तारीख, महीने और सन् केवल अंकों से ही सूचित किये जा सकते हैं, जिससे पत्र लेखकों को शीघ्र लिखना बहुत ही सुलभ हो जाता है, जो कि चान्द्रमास के प्रचलन से उतना नहीं प्राप्त हो सकता और यही अन्यतम मुख्य कारण है, कि हमारे पत्र व्यवहारों में भी मिति और संवत् का प्रचलन घटता जाता है और अंग्रेज़ी महीने तथा सन् का प्रचार क्रमशः बढ़ता ही जाता है। वर्त्तमान समय में अंग्रेज़ी तारीख, महीने और सन् का प्रचलन इतना विस्तृत हो रहा है, कि हिन्दीभाषा के संवादपत्र और मासिक पत्र सभी अंग्रेज़ी महीनों के अनुसार नवीन वर्ष का प्रारम्भ करते हैं तथा आर्थिक लेनदेन भी इन्हीं महीनों के अनुसार करते हैं। हिन्दी की तो बात क्या, संस्कृत के व्याख्यानों और पुस्तकों तथा मासिकपत्रों में भी अंग्रेज़ी महीनों ने अपना अधिकार जमा लिया, जो कि हमारे राष्ट्रीय गौरव को धक्का लगाता है। यदि इस प्रचलन पर अभी से बाधा न पहुंचायी जायगी, तो किसी समय उर्दू अक्षरों के सदृश इस प्रचलन को रोकना अत्यन्त कष्टकर हो जायगा।

इस वर्त्तमान आपत्ति से बचने का यह उपाय हो सकता है, कि सौर मास और सौर संवत् का प्रचलन किया जाये। अंगरेज़ी महीनों के सदृश सौर मास के बारह महीनों का एक वर्ष होता है, तेरह महीनों का कभी नहीं होता। सौर मास और वत्सर सूर्य्य की चाल पर निर्द्धारित किए गए हैं अर्थात् एक राशि से दूसरी राशि तक पहुंचने पर्य्यन्त जो समय का दैनिक व्यवधान होता है, वही सौर मास है और दैनिक गणनानुसार सौर मास की प्रत्येक अहोरात्रि ही उसकी मिति या तारीख है, इस हेतु अंगरेज़ी तारीखों के सदृश प्रत्येक राशि में सूर्य दैनिक भोगकाल के अनुसार सौर मास की मिति अर्थात प्रत्येक सौर दिवस भी है और इसकी कोई मिति अर्थात प्रत्येक सौर दिवस का लोप या द्विगुण नहीं होता ऐसे ही बारह राशियों में परिभ्रमण करते समय प्रत्येक राशि के संक्रमण से बारह सौर मास निर्द्धारित हुए हैं; इस हेतु सौर वत्सर सदा बारह महीने का ही होता है।

सौर मासों के साथ ऐसे संवत् का व्यवहार भी होना उचित है, जो कि सौर क्रमानुसार हो। भारतवर्ष में सौर क्रमानुसार सन् बङ्गाब्द और शकाब्द ये दो प्रचलित हैं। बंगाब्द मुसलमानों के हिज़री सन् का सौर संस्करण मात्र है और शकाब्द शक नामक म्लेच्छ जाति का सन् है। यह दोनों म्लेच्छाब्द हैं, अतएव इनके व्यवहार से भारतवर्ष को गौरव नहीं समझा जा सकता। विक्रमीय संवत् का प्रचार ही अव्याहत रखना हमारा परम कर्त्तव्य होना चाहिये। परन्तु संयुक्त प्रान्त में प्रचलित विक्रमीय संवत् का प्रारम्भ और समाप्ति चन्द्रमानुसार होती है। यदि यह विक्रमीय सम्वत् का वर्त्तमान चान्द्रमासक्रम सौर मासों के साथ व्यवहार किया जाये, तो सौर वत्सर से प्रारम्भ और समाप्ति के साथ विक्रमीय संवत का ऐक्य नहीं होगा, क्योंकि वर्त्तमान प्रचलित विक्रमाब्द का कुछ अंश एक और कुछ दूसरे सौर वत्सर में पड़ेगा, इस अड़चन के कारण लोगों को व्यवहार करने में असुविधा अनुभव होगी। अतएव वर्त्तमान विक्रमाब्द का चान्द्रमास क्रम जैसा चान्द्रमासों के साथ व्यवहृत होता है, वैसा ही अव्याहत रहे। परन्तु सौरमासों के साथ व्यवहार के लिये विक्रमाब्द का प्रारम्भ मेषमास से कर समाप्ति मीनमास में की जाये और इस संवत् का नाम 'विक्रमीय सौरक्रमाब्द' अथवा 'सौर संवत्' रक्खा जाय, तो अच्छा है। भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में विक्रमाब्द का प्रारम्भ और समाप्ति विभिन्न प्रकार की होती है। संयुक्तप्रान्त में विक्रमाब्द का प्रारम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है, गुजरात प्रान्त में दिवाली के दिनों से और कच्छ तथा काठियावाड़ में आषाढ़ महीने से प्रारम्भ होता है; परन्तु पञ्जाब में विक्रमाब्द का प्रारम्भ सौरमासानुसार सौर वैशाख अर्थात् मेष मास की पहली मिति अर्थात् पहले दिवस से होता है। इन विभिन्न प्रान्तों में विभिन्न प्रारम्भ शैलियों में संयुक्तप्रान्त की चान्द्रमासों के लिये, तथा पञ्जाब प्रान्त की सौर मासों के लिये अच्छी है। शास्त्रों के अनुसार सृष्टि का प्रारम्भ चान्द्रमास चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तथा सौर मेष मास की पहली मिति अथवा पहले दिवस को हुआ था। अतएव वैज्ञानिक प्रथानुसार चान्द्र चैत्र शुक्ल प्रतिपदा तथा सौर मेषमास की पहली मिति अथवा पहला दिवस नवीन वर्षारम्भ के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by...

लिये प्रशस्त हैं चन्द्रमा की द्रुतगति के कारण वर्त्तमान समय में चान्द्र और सौर वत्सरों के प्रारम्भ में बहुत अन्तर पड़ गया है सही; परन्तु ये दोनों ही वैज्ञानिक प्रथानुसार ठीक हैं। अतएव उपयुक्त युक्ति की सहायता से विक्रमाब्द का चान्द्र मास के अनुसार प्रारम्भ चान्द्रमासों के सहित जैसा व्यवहृत होता है, वैसा ही अव्याहत रहे; परन्तु सौर मासों के सहित सौर क्रमानुसार उपर्युक्त 'विक्रमीय सौर क्रमाब्द' अथवा 'सौर सम्वत्' व्यवहृत होना उचित है। यह सौर सम्वत् का सार्वजनिक प्रचलन नवीन भी समझा नहीं जा सकता, जब कि पंजाब में इसका [सौर संवत् का] प्रचलन बहुत वर्षों से हो रहा है। अतएव मेरा यह प्रस्ताव है, कि सौर मास और सौर संवत् के प्रचलन सर्व साधारण में करना, तथा इन्हें राष्ट्रीय मिति और सन् स्वीकार करना भारतवर्ष को लाभ पहुंचायेगा। सौर मास के दैनिक गणनानुसार प्रचलन ज्योतिष के साथ प्रत्येक राशि में सूर्य्य के दैनिक भोग काल का सम्बन्ध रहने के कारण विज्ञान सम्मत भी हो सकता है। अंग्रेज़ी तारीखों की तरह सौर मिति अर्थात् सौर दिवस मास और सौर सम्वत् केवल अंकों के द्वारा सूचित किये जा सकते हैं, इस हेतु इनका प्रचलन यत्न करने से बढ़ सकता है। अंग्रेज़ी तारीख, महीने और सन् का सम्बन्ध ज्योतिष के साथ कुछ भी नहीं। ईसा की मृत्यु के समय से सन् प्रारम्भ हुआ है, परन्तु वह समय ग्रहों की किसी विशेष चाल के साथ सम्बन्ध रखता न था। अंग्रेज़ी महीने भी देव देवियें तथा उत्सवादि को लक्ष्यकर बने हैं। इस विषय पर सविस्तृत विवरण पंजाब से प्रकाशित संवत् १९६० की आर्य्ययन्त्री में प्रकाशित हुआ था, पाठकों के जानने के लिये वह अंश यहां उद्धृत कर दिया जाता है। "अंग्रेज़ी महीनों के नाम लाटिन भाषा से लिये गये हैं, जो रोमियों या इटली देश निवासियों की पूर्व भाषा थी। अंग्रेज़ी महीनों का वर्त्तमान क्रम जनवरी आदि दिसम्बरान्त रोम (इटली) के प्रसिद्ध नृपति जुलियस ने छियालीस वर्ष खृष्टाब्द से पूर्व नियत किया था। इसके पूर्व प्राचीन समय में उस देश में वर्ष का प्रारम्भ मार्च मास से गिना जाता था अर्थात् उनके महीनों के नाम क्रमपूर्वक इस प्रकार थे।

(१) मार्च (२) अपरेल (३) मई (४) जून (५) जुलाई (६) अगस्त (७) सितम्बर (८) अक्तोबर (९) नवम्बर (१०) दिसम्बर (११) जनवरी [१२] फरवरी।

इस क्रमको मनमें स्थिर कर लेने से निम्नलिखित यन्त्र जिसमें वर्त्तमान क्रम रक्खा गया है, भलीभांति समझ में आजायगा।

(१) जनवरी—यह लाटिन भाषा के 'जैनस' शब्द से बना है, जो पूर्व्व रोमियोंका सूर्य्य और वर्ष का देवता था, यह मास उसकी प्रतिष्ठा के लिए नियत था।

(२) फरवरी—यह शब्द लाटिन भाषा के शब्द 'फ्रुबेरिपस' से निकला है। जिसका अर्थ कफ्फारा (प्रायश्चित) है; अर्थात् पापों का प्रतीकार करके उन से शुद्ध होना। इटली के पूर्व निवासी इस मास के मध्य में एक बड़ा उत्सव कबर के पापों के निकृत्यर्थ 'कफ्फारा' दिया करते थे, इस कारण इस मास का यह नाम हुआ।

(३) मार्च महीने का नाम पूर्व रोमियों के युद्ध सम्बन्धी देवता मार्च के नाम पर रखा गया है।

(४) अप्रैल—यह नाम लाटिन भाषा के शब्द 'एप्रिलज' से निकला है। एप्रिल का अर्थ उस महीने का है, जिस में वनस्पति अपनी उद्भेदक शक्ति से ऋतु के परिवर्त्तन होने को सूचित करती है अर्थात् बहार वसन्त मास में अप्रिल अपेरान वसन्त ऋतु की आदि में होता है। अतः यह नाम रखा गया।

(५) मई—यह महीना रोमियों की देवी 'मैया' के नामपर आदरार्थ रखा गया है। जो 'अतलस' देवता की कन्या और मर्क्युरी देवता की माता मानी जाती थी।

[६] जून—इस में अनेक मत हैं। लिखा है, कि यह महीना रोमियों के प्रसिद्ध सम्प्रदाय और जेनज के नाम पर रखा गया है अथवा जूनो देवी के नामपर।

[७] जुलाई—यह महीना रोमियों के प्रसिद्ध नृपति 'जुलियस कैसर' के नाम पर स्मारक रूप से रखा गया था, जिसका इसी मास में जन्म हुआ था। इस से पूर्व इस महीने का नाम क्विंटिलिस था अर्थात् पांचवां महीना। [देखिये पूर्व रोमियों के महीनों का क्रम]

[८] अगस्त—यह नाम रोम के प्रसिद्ध 'औयटस' ने जो ईसाई संवत् से कुछ पहले और उस के आदिमें हुआ है; अपने विजय और जुलियस के स्थापित 'जुलियन कलेण्डर' [यन्त्री] के परिवर्त्तन के स्मरणार्थ अपने नामपर रखा इस से पूर्व इस मास का नाम लाटिन भाषा में 'सेक्सटलिस' था अर्थात् पूर्व रोमन 'कलेण्डर' [यन्त्री] छठवां महीना।

[९] सितम्बर—यह शब्द लाटिन भाषा के 'सेप्टेम' शब्द से निकला है। जिसका अर्थ अर्थात् प्राचीन इटलीवालों का सप्तम मास। [सातवां महीना] अनुमान है, कि यह शब्द संस्कृत शब्द सप्तम से लिया गया है, जिसका अर्थ सातवां है।

[१०] अक्तोबर—यह शब्द लाटिन भाषा के शब्द 'ओक्टो से बना है, जिसका अर्थ आठ है अर्थात् प्राचीन रो-

Vrukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मियों का आठवां महीना। अनुमान है, कि यह शब्द संस्कृत के अष्टम से बना है।

(११) नवम्बर—यह लाटिन भाषा के नवम शब्द से बना; जिसका अर्थ नौ है अर्थात् प्राचीन इटली वालों का नौवां महीना। यह शब्द भी संस्कृत नवम से बना अनुमान होता है।

(१२) दिसम्बर—इस महीने का नाम लाटिन भाषा के "डिसेम" शब्द से बना है। जिसका अर्थ दश है अर्थात् प्राचीन रोमियों का दशवां महीना, यह शब्द भी संस्कृत दशम की प्रतिध्वनि है। उपर्युक्त यन्त्र से भलीभांति प्रकट होगा कि कतिपय नामों का तो कल्पित देवताओं से सम्बन्ध है और कतिपय रोमियों के प्राचीन प्राकृत गणित क्रम-पर रखे गए, ज्योतिष विद्या से इन नामों का किञ्चित्मात्र सम्बन्ध नहीं, तथापि किसी किसी नाम से यह अवश्य सूचित होता है, कि युरोप के अत्यन्त प्राचीन तथा 'क्लासिकल लैङ्गवेज' [साहित्य] का भी अन्त में संस्कृत ही स्रोत्र है और इस कारण यह नाम उस [संस्कृत] की प्राचीनता को एक प्रकार प्रकाशित करते हैं।"

आर्यपत्रों से उद्धृत उपर्युक्त विवरणों से यह भलीभांति समझा जाता है, कि अंग्रेजी सन् और महीनों के साथ ज्योतिष का सम्बन्ध कुछ भी नहीं। इस हेतु मैं सर्व साधारण को विशेषतः प्रसिद्ध प्रसिद्ध संस्थाओं के संस्थापकों और संचालकों की दृष्टि इस ओर आकर्षित करने के लिए प्रार्थना करता हूं, कि वह इस प्रस्तावित विषय पर मनन करें, कि विज्ञानसम्मत प्रत्येक राशि में सूर्य्य के दैनिक भोगकालानुसार सौर मास और सौर सम्वत् का प्रचलन देशहितकर होगा अथवा अङ्गरेज़ी तारीख और सन् का प्रचलन हो सकता है।

उपसंहार में निवेदन यह है, कि सौर मास का प्रचलन बंगाल, आसाम, उड़ीसा और पञ्जाब में बहुत दिनों से होरहा है, इस हेतु इन प्रदेशों में अङ्गरेज़ी सन् और महीनों ने अपना एकाधिपत्य जमा नहीं पाया; परन्तु चान्द्रमास का प्रचलन विहार, मध्यप्रदेश और संयुक्तप्रान्त में रहने के कारण ही इन प्रदेशों में भी अंग्रेज़ी महीने और सन् का प्रचलन दिन पर दिन बढ़ रहा है। इस हेतु यदि इन प्रदेशों में भी सौर मास के प्रचार करने का यत्न किया जाए, तो अंग्रेज़ी महिनों का एकाधिपत्य रुक सकता है और तब सम्पूर्ण उत्तर-भारत में सौरमास का एकाधिपत्य हो जायगा।

उपसंहार में मेरा निवेदन यह भी है, कि मेरे उपर्युक्त प्रस्ताव से लोग यह न समझें, कि मैं चान्द्रमासों का विरोधी हूं, अथवा इसे अवैज्ञानिक और अयोग्य समझता हूं। चान्द्रमास भी चन्द्रमा की गति के अनुसार ठीक है। तिथि की हानि वृद्धि मलमासादि जिन्हें अंग्रेज़ी तारीखों के प्रेमी अड़चन समझते हैं, यह सभी गणितानुसार ठीक हैं। अतएव चान्द्रमास भी विज्ञानगुणसम्पन्न है, इसमें सन्देह नहीं। शास्त्रानुसार प्रत्येक धर्म कार्यों में निर्दिष्ट शुक्लादि और कृष्णादि इन दोनों चान्द्रमास कर्मों का व्यवहार होना बहुत ही उचित है। सौरमास और चान्द्रमास ये दोनों ही हमारी राष्ट्रमितियां हैं। परन्तु भेद इतना ही होना उचित है, कि धर्म कार्यों में राष्ट्रमिति चान्द्रमास के उपर्युक्त दोनों क्रम मानि जायें; परन्तु पत्र तथा आर्थिक लेनदेनादि व्यवहारिक कार्यों में राष्ट्र मिति सूर्य के प्रत्येक राशि में दैनिक भोग कालानुसार दैनिक गणना की भित्ति पर सौर मास माना जाए, तो अंग्रेज़ी तारीखों के प्रचार पर बड़ा धक्का पहुंचेगा। जिन २ प्रान्तों में सौरमासों का प्रचार है, वहां वहां सौर और चन्द्रमा। ऐसे ही माने जाते हैं। अतएव यह शैली नवीन नहीं समझी जा सकती। परन्तु जो महाशय धार्मिक और व्यवहारिक इन दोनों कार्य्यों में चन्द्रमासों का व्यवहार करते हैं, उनसे मेरा विशेष विरोध नहीं। विरोध विशेष कर केवल अंग्रेज़ी तारीखों के प्रेमियों से है। अर्थात् जो महाशय चान्द्रमासों पर उपर्युक्त दोषारोपण कर अंग्रेज़ी तारीखों का व्यवहार कर रहे हैं, उन्हें उचित है, कि अपने जातीय गौरव की रक्षाकर तथा स्वदेशीय व्यवहारों पर प्रेम प्रकाश कर अपनी देशी मिति, उपर्युक्त सौर मास और सौर सम्वत् को व्यवहार में लाएं।

इस कार्य्य के प्रारम्भ करने का भार सर्व प्रथम पत्र-सम्पादकों तथा विभिन्न संस्थाओं को लेना उचित है। क्योंकि इनके उद्योग से ही सौर मास का प्रचार विशेष कर अङ्गरेज़ी तारीखों के प्रेमियों के बहुत शीघ्र हो सकता है और क्रमशः व्यवसायी भी इनका अनुकरण कर सौर मास का व्यवहार करने लगेंगे। यदि संस्थाओं के सञ्चालक और पत्र-सम्पादक यह आशंका करें, कि इस परिवर्त्तन से उन्हें आर्थिक हानि पहुंचेगी, तो यह ठीक नहीं। क्योंकि सौर मास की पहली मिति को अङ्गरेजी १३ से १८ तारीख तक होती है। वर्त्तमान वर्ष में प्रत्येक सौर मास में अंगरेजी के जो-जो महीने पड़े हैं, भूतकाल में वही पड़े थे और भविष्यत् में भी वही पड़ेंगे। इस हेतु हानि नहीं पहुंच सकती।

प्रस्तावक, अयोध्याप्रसाद वर्म्मा,
कलकत्ता।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्राप्त पत्र

फ़ीजी के समाचार ।

ता० २३ मार्च १९१६ को बा० रणधीरसिंह जी ब्यान-डूासा-लौटाका की स्त्री का प्राणान्त-मलमूत्र अवरुद्ध होने के कारण हो गया; यह स्त्री वैदिक धर्मानुयायिनी शान्त-स्वभाव और सागरी पढ़ी थी, क्रिया मृत संस्कार वेदानुसार ही हुआ ।

उपरोक्त अन्त्येष्टीसंस्कार पूर्ण होने के बाद आर्य्योपदेशक पं० द्वारकादत्त जी का भी देहान्त, ज्वर रोग से, ७ अप्रैल १६ को "जि० वा०"—में—"जब लौटा का होस्पिटल से आरोग्य हो कर बा० राम गरीब सिंह आर्य्य के मकान पर आगमे थे ।"

पं० द्वारकादत्त फ़ीजी में एक दृढ़ वेद-, भक्त बुद्धिमान्,—व—दूरदर्शी, तथा अभय अवैत्तनिक उपदेशक थे । ये, वैदिक धर्मकी सेवा अपनी शक्ति भर करने में निष्कपट कसर नहीं लगाई-मृत पं० के "तीन पुत्र" तथा स्त्री; और "दो अनाथ बालक भी" पाले थे—सो हैं, इन की सहातार्थ और पं० जी का कर्ज़ अदा करनार्थ तथा जो अति अल्पसम्पति है उस के भी रक्षार्थ आर्य्य पुरुष कसर तो न छोड़ेंगे, किन्तु फ़ीजी के वेद-भक्त बड़े धनी, मानी जनों में से नहीं हैं यहां की (सांसारिक, मानसिक, समाजिक तथा आत्मिक) अवस्था सर्वोपरि अव्यवस्थित है-) और इस पापमय स्वार्थोपासक देश में विद्याका भास्कर तो कभी उदय ही नहीं हुआ ।

प्रणः—मृत पं० जी को, जब में फ़ीजी प्रथम पहुंचा तो यह आशा दी की आप यदि पूर्णमनो योग देकर वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे तो मैं गुरुकुल के महात्मा अधिकारियों से यह प्रार्थना करूंगा कि वे एक पुत्र का अर्द्ध शुल्क पर गु० कु० में प्रवेश करें ।

नोटः—चाहे कितना ही धन व्यय किया जाय परन्तु हमदर्दी के साथ और समय पर एवं उपयुक्त चिकित्सा-व-सुचिकित्सक मिलना सदा दुर्लभ ही रहता है, इसी कुअवसर के लिए डाक्टरों की आवश्यकता ३ वर्ष से बतलाता जाता हूं, किन्तु जब कोई सद् हृदय वास्तविक आर्य्य-डाक्टर हो तब ना सुनवाई हो [?]

समाचार—कभीने लोग सत्य के अवलम्बी नहीं होते ! वे सदा शक्ति शाली जन के पीछे भागते हैं; अतः उपरोक्त शाक्षियों के दूषण व अभाव से तथा एक भी वकील अपना न होने से बा० रामगरीबसिंह का दामाद लछमूसिंह-'परजरी Case' में पड़कर दो वर्ष के लिए "हगरग कम्पनी के साथ विवाद होने. के कारण" क़ैद हो गया है, और कई एक लोगों को असमर्थता के और सुसहाय काभाव के कारण एक से पांच पौण्ड तक प्रति व्यक्ति अर्थ दण्ड पाना तो दैनिक कर्म हैं ।

नोटः— इसी लिए आर्य्यबारिस्टर की आवश्यकता दरशाई जाती रही व दिखलाई जाती है, यहां की कोन्सल में न भारत सन्तानों का उचित रक्षक न कोई मेम्बर है न जूरी और असेसर हैं; चारों ओर निराशाविशाची मुख खोले खड़ी है; यहां वकील इतनी फीस लेते हैं कि मजदूर पेशा, तीन साल में उतना न कमा सकेगा; साधारण जुर्माने में २-३ मास की आय गायब हो जाती है।

समाचार—ब्यान सामाबूला-लूवा का आर्य मन्दिर व स्कूल भवन में ३ वर्ष से मैं भी देखता आता हूं कि इसके अधिकारी आर्यगण रहे हैं यह भवन १९०८ ई० में बना था, चन्दा द्वारा और इसकी "घर टैक्स" भी सरकार की ओर से माफ़ है, जमीन सरकारी है पट्टे पर कीड़ी-फुरमी लिये हैं; यवनों ने कीड़ी को बहका कर जो मनुष्यता और स्वधर्म से नितान्त अनभिज्ञ हैं—मन्दिर तोड़ के अश्लील नाच गान के पश्चात—दावा गीर ठहराके—डा० वर्क द्वारा मुझे नोटिस दिलाया हैं कि मैं चाभी [कुंजी] जो आर्य लोगों से मुझे मिली हैं—कीड़ी के हवाले करूं; बस अभी इतना ही हुआ है, मूर्ख झगड़ा करने कराने पर आमादह हैं ।

नोट—कहिये अब मैं अपनी दुर्बल आर्यप्रतिनिधियों [भारतस्थित] व सभाओं के अकर्म्मण्यता के कारण-अपना तन, मन, धन उपरोक्त अभियोग व अभियोगों में व्यय करूं कि विद्यालय के लिए और फ़ीजी में वैदिक धर्म के प्रचारार्थ खर्च करूं ? किम्वा भारतीय संस्थाओं की दान के धन से सहायता करूं कराऊं ? जब लोग असहायता के कारण मर रहे हैं अर्थ से दण्डित-व-तन से कारागार में जा रहे हैं—लम्बी २ डाक्टरों और वकीलों की फीसों से दबकर घर विहीन सम्पत्ति शून्य हो ऊपर से ऋणि हो रहे हैं तब गुरुकुलादि के लिए धन दान किन से कराया जाय ? महान् लज्जा और परम शोक की वार्त्ता है कि हमारे भारती आर्य्यों का पाषाणीय कलेजा ज़रा भी नहीं पसीजता कि आकर और धन लगा कर इस घृणित दुरावस्था को मेंटे ! ! !

हः मनोहरानन्द सरस्वती

—०—

अध्यापक चाहिए ।

आर्य्य-समाज कांगड़ी की पाठशालाओं के लिए अध्यापकों की ज़रूरत है। पांचवीं श्रेणी तक आर्य भाषा में सब विषय अच्छी तरह पढ़ा सकें । शुद्ध सदाचारी और वैदिक धर्मी हो वेतन १५) तक योग्यतानुसार दिया जायगा । प्रार्थनापत्र निम्नलिखित पते से आवें । इन्द्र

मन्त्री आर्य-समाज शिक्षासमिति
गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

—:०:—

"आवश्यकता"

आर्य-समाज स्यालकोट के लिए एक विद्वान् आर्य्योपदेशक की आवश्यकता है जो वेद उपनिषद् आदि धर्म पुस्तकों की कथा कर सके । वेतन गुज़ारे के लिए २५) मासिक से ४०) मासिक तक योग्यतानुसार तथा आवश्यकतानुसार दिया जावेगा । प्रार्थनापत्र शीघ्र ही निम्न पते पर आने चाहिए ।

चरणदासपुरी मन्त्री
आर्य-समाज स्यालकोट

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी

पं० भोजदत्त जी की मृत्यु—पर आर्य्य समाज में चारोंओर से शोक प्रकट किया गया। आगरे के "मुसाफ़िर" अख़बार का गताङ्क इन्हीं के उल्लेख से भरा हुआ है। आर्य्यसमाज धर्म की थोड़ी सी की हुई सेवा का भी बड़ा मान करता है। ऐसे उदार समाज की जो सज्जन निष्काम-भाव से सेवा करते हैं, वे धन्य हैं।

श्रीगोविंदपुर की कन्या पाठशाला—के साथ कन्या आश्रम भी चलता था जो कई कारणों से भाद्रपद सं० १९७१ से बन्द होगया था। अब पं० विश्वम्भरनाथ जी कोषाध्यक्ष आ० प्र० निधि सभा के वृद्ध पिता श्री पं० मकुन्दराम जी ने सरकारी नौकरी छोड़ने पर बिना वेतन पाठशाला का काम अपने ज़िम्मे लिया है। कन्याश्रम का भी वही प्रबन्ध करेंगे। प्रायमरी विभाग में प्रविष्ट होने वाली कन्याओं से ६) तथा मिडिल विभाग में दाख़िल होने वाली कन्याओं से ७) मासिक लिए जावेंगे। प्रार्थनापत्र पं० मकुन्दराम और लाला मोहनलाल जी के नाम आने चाहियें।

क्या अब तक स्त्रीशिक्षा पर भी प्रायमरी और मिडिल का भूत सवार रहेगा। यदि कुछ भला करना है तो पाठविधि को बदलना चाहिए।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी से—नजीबाबाद आर्यकुमार सभा के मन्त्री सविनय निवेदन करते हैं कि २६-२७-२८ जून को उन के उत्सव में अवश्य पधारें। जैनियों के साथ शास्त्रार्थ भी होना है।

पौराणिकों में विधवा विवाह भी होने लग गए—महाशय दीपचन्द जी लिखते हैं कि लाला टेकचन्द्र वासल गोत्रज ने अपनी पुत्री कृष्णा-देवी का (जिस की आयु १७ वर्ष की है) विवाह भोलाराम महाजन संगले गोत्रज के २२ वर्ष आयु वाले पुत्र देवी सहाय के साथ बड़ी धूम-धाम से ग्राम मूंज (दिल्ली प्रान्त) के साथ कर दिया। विवाह संस्कार पुरोहित मोमीराम जी ने कराया। यदि बालविवाह की कुरीति दूर होजाय तो फिर विधवाविवाह की आवश्यकता भी बहुत कुछ उड़ जाय।

स्वर्गवासी पं० [illegible] शर्म्मा की माता—लिखती हैं कि "मन्त्री आर्य्यसमाज लावान ज़िला मेरठ ने उन की सहायतार्थ ५) सर्वहित-कारिणी सभा चूरू के नाम भेजे थे; परन्तु उन्होंने यह धन उन को नहीं दिया, इस लिये आगामी को जो धन भेजा जाय उन के पास सीधा ही भेजा जाया करे।"

मेरी सम्मति में इन को कोई भी धन सीधा न भेजा जाकर आर्य्य-प्रतिनिधि सभा राजस्थान अजमेर के द्वारा ही भेजा जाय तो उत्तम है। यह सम्मति पूर्व भी प्रकाशित की जा चुकी है।

मुंह में राम नाम बग़ल में छुरी।

आज कल बहुत से लोग आर्य्य-समाज के मेम्बर तथा सेक्रेटरी व प्रधान तक केवल नाम के लालच से होजाते हैं, परन्तु समाज के नियमों का पालन करना कराना तो दूर रहा कुरीति प्रचार ही में वे सारी शक्ति लगा बैठते हैं। ऐसे ही एक सज्जन राठ जि० हमीरपुर के आ० स० के प्रधान हैं। गत १९ मई को आपके पुत्र की शादी थी। रांड़, भांड़ आतिशबाजी व ठहरोनी इत्यादि सब कुरीतियों की भरमार थी। पं० टेकचन्द जी भजनोपदेशक भी निमन्त्रित हो कर बारात में सम्मिलित हुए थे। उन्हें मजबूर कर के रंडी के गाने के बाद गवाया गया, और उन्होंने वेश्यानृत्य खण्डन विषयक एक भजन गाया जिस के बदले में रण्डी के भड़ुए उन्हें मारने तक पर उद्यत हो गये। वेश्या राक्षसी ने जीखोल करगालियां दीं, परन्तु प्रधान जी का ध्यान रण्डी की तरफ़ से नहीं हटा। बहुत से बराती सभा से अलग हो गये, परन्तु प्रधान जी ने उस पर भी मङ्गलमुखी को नहीं छोड़ा कैसे लज्जा की बात है कि प्रधान हो कर भी ऐसा निन्दनीय कार्य्य करें। यह सुन कर मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि स्वयं लड़के ने जिस की शादी थी, रण्डी के वजह से महफ़िल में जाना स्वीकार न किया, व प्रधान जी के कहने पर भी उसने अपने हाथ से रण्डी को एक पैसा भी न दिया। क्या प्रधान जी उस सच्चे सुपूत से शिक्षा नहीं ग्रहण कर सकते हैं?

—जगदीश-नारायणसिंह (राठ)
(प्रताप से उद्धृत)

वार्षिकोत्सव—आर्य्यसमाज सदर रावलपिन्डी का १-२ जून को शहर और सदर में नगरकीर्तन बड़ी उत्तमता से हुआ। म० कृष्ण अमृतसरी, पं० गिरधारीलाल, मास्टर फतेहचन्द और चौ० रामलुभाया के बहुत प्रभावशाली भजन हुये। ३ जून को हवन और उपासना के पश्चात् पं० हंसराज जी का मनोहर उपदेश और पं० रामरत्न जी का गृहस्थ आश्रम पर व्याख्यान हुआ। दोपहर बाद म० कृष्ण अमृतसरी का भजनों द्वारा और श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज का वेद पर उत्तम व्याख्यान हुआ। सन्ध्या समय श्रीयुत चक्रवर्त्ती सम्राट महोदय जार्ज पंचम के जन्मोत्सव पर प्रधान आर्य्यसमाज ने अत्यन्त हृदय ग्राही वक्तृता दी और महाराजाधिराज की आयु तेज की वृद्धी के लिये श्रीमान् महाशय वजीरचन्द जी प्लीडर ने प्रार्थना की और रात्रि को श्रीमान् पण्डित पूर्णानन्द जी का मनोहर व्याख्यान ईश्वर भक्ति पर बड़े प्रभाव का हुआ। हाज़री बहुत भारी थी। ४ जून को प्रातः हवन और उपासना के पश्चात् श्री स्वामी अच्युतानन्द जी का उपदेश और पं० हंसराज जी का व्याख्यान यम और नियम पर हुआ। दोपहर बाद पं० रामरत्न जी का व्याख्यान और पं० पूर्णानन्द जी की अपील वेद प्रचार के लिये हुई। रात को म० कृष्ण का व्याख्यान होने के बाद गवरमेन्ट और कर्मचारियों तथा उपस्थित सज्जनों का धन्यवाद देकर पूरी कामयाबी के साथ जलसा समाप्त हुआ। इस उत्सव पर ४५०) नकद और वायदे का एकत्रित हुआ।

हरिद्वारीलाल
आर्यसमाज सदर रावलपिन्डी

मंत्री आ० स० डोई वाला लिखते हैं कि—इस सप्ताह महाविद्यालय ज्वालापुर के बड़ी श्रेणी के पच्चीस ब्रह्मचारी अध्यापकों तथा श्री मुख्याधिष्ठाता सहित ऋषिकेश भोगपुर आदि से भ्रमण करते हुये आर्य्यसमाज डोई-वाला जि० देहरादून में पधारे। समाज की ओर से यथा सम्भव स्वागत किया गया। पंजाब के रहतीया शुद्धी शुधा आर्य्यों की ओर से कच्चा भोजन दिया गया।

श्री मन्त्री जी आर्य्यकुमारसभा नजीबाबाद लिखते हैं कि—आर्य कुमार सभा नजीबाबाद ने जो चैलेञ्ज समस्त जैनियों को शास्त्रार्थ के लिए दिया था जिसकी अवधि उत्तर आने के लिए १५ मई सन् १६ नियत हुई थी वह समाप्त हो गई परन्तु कोई जैनी शास्त्रार्थ के लिए उद्यत न हुआ। अचानक ५ जून को एक पत्र पं० बनारसीदास जी जैन अम्बाला निवासी का प्राप्त हुआ जिस में उन्होंने नियम मांगे थे। उनको जो नियम भेजे गये थे उनको स्वीकार करके २७ व २८ जून को "क्या ईश्वर जगत् कर्त्ता है" इस विषय पर शास्त्रार्थ करने के लिए आना स्वीकार कर लिया है। दोनों ओर के विद्वान् एकत्रित होंगे, यह शास्त्रार्थ ख़ास तौर से देखने योग्य होगा। बाहर से आने वालों के लिए ठहराने का प्रबन्ध भी किया है—सभा के स्वयम् सेवक स्टेशन पर उपस्थित होंगे।

—०—

महात्मा तिलक का गीतारहस्य

जब से हिन्दी संसार ने, हिन्दी गीतारहस्य के प्रकाशित होने की सूचना पाई, तभी से ग्राहकों की इस आशय की चिट्ठियां धड़ा-धड़ आ रही हैं, कि पुस्तक तैयार होते ही हमारे नाम वी० पी० से भेज दी जावे। परन्तु पूर्व सूचनानुसार पुस्तक समय पर प्रकाशित न हो सका। इससे ग्राहकगण अधीर हो, पत्र लिख लिख कर विलम्ब का कारण पूछ रहे हैं।

अब यह जान कर सब को सन्तोष होगा कि हिन्दी गीतारहस्य का अधिक अंश छप गया है। शेष अंश शीघ्रता से छप रहा है। आशा है, जुलाई के अन्त तक 'रहस्य' ग्राहकों की अभिलाषा पूर्ण कर सकेगा।

चित्रशालाप्रेस, पूना। १०-[illegible]-१९१६ } निवेदक—माधवराव सप्रे, बी० ए०

CCO, Gurukul Kangri Collection

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका——————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः——————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——————।)
काव्य लतिका——————॥।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्गप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—बैलफोर स्टआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन—विलियम एम. फर्नी की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)
जिनचरितं—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवरर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखक श्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्य वैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त ≡)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) ≡)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda: By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs. 0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji—" 0.1.0
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0

गुरुकुल के उपाध्यायों की रचित पुस्तकें

(श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी M. A.
अर्थशास्त्र (धनविद्या) १॥)
आर्यों की विज्ञानिक उन्नति =)
(लेखक प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०)
अग्निहोत्र व्याख्या ।)
वेदोक्त राज्य ॥)
(श्री उपाध्याय महेशचरणसिंह जी M.A. कृत)
रसायन शास्त्र (Hindi Chemistry) ३॥)
विद्युतशास्त्र २।)
वनस्पतिशास्त्र २)
पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत
उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १॥)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन लेखक पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)
मानवती ले० बाबू गिरिजाकुमार घोष ॥)
ध्यायोग प्रकाशः स्वामी लक्ष्मणानन्द कृत १।)

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ११ आषाढ़ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २४ जून सन् १९१६ ई० { संख्या ११ भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चट्टर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

आर्य्य कन्या पाठशाला, लुधियाना

के लिए एक अध्यापक की आवश्यक्ता है जो आठवीं श्रेणी तक संस्कृत पढ़ा सके। दृढ़ आर्य्य और सदाचारी हो। ट्रेन्ड को तरजीह दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार ३५) मासिक तक नियत किया जा सकता है। प्रार्थना पत्र, सदाचार और योग्यता के प्रशंसा पत्रों सहित, नीचे लिखे पते पर आने चाहिएं—

प्रबन्धकर्त्ता,
गणेशीलाल आर्य्य कन्यापाठशाला
लुधियाना।

प्रचारक पुस्तक भण्डार की अनूठी पुस्तकें।

उपनिषदों की भूमिका—लेखक, श्री० इन्द्र वेदालंकार। इस पुस्तक में उपनिषदों का सार बड़ी मनोरञ्जक रीति से दिया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि उपनिषदों का आधार वेद ही है। विषय गम्भीर है तो भी भाषा रोचक और बल पूर्ण है। मूल्य ।=)

धर्मवीर पं० लेखराम की जीवनी—महात्मा मुंशीराम जी लिखित। धर्मवीर की आर्य्य-भाषा में यह एक मात्र जीवनी है। प्रत्येक आर्य्य-गृह में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। धर्मवीर की जीवनी—और महात्मा जी की लिखी हुई—आप क्यों न लेंगे? मूल्य १)

प्रिंस-बिस्मार्क की जीवनी—जर्मनसाम्राज्य के निर्माता राजनीति विशारद बिस्मार्क की जीवनी को जिसने नहीं पढ़ा, उसे योरप का वर्तमान युद्ध समझ में नहीं आ सकता। पुस्तक बेहद मनोरञ्जक है भाषा प्रौढ़ ओजस्विनी है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है—शीघ्र लीजिए।

मूल्य १॥)

कमीशन का दर

२५) से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रति सैंकड़ा, ५०) से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति सैंकड़ा, १००) से अधिक के ख़रीदार को २५) सैंकड़ा तथा २००) से अधिक के ख़रीदार को ३०) सैंकड़ा कमीशन मिलेगा।

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र
गुरुकुल कांगड़ी, पो० श्यामपुर-कांगड़ी
ज़ि० बिजनौर

—:०:—

प्रचारक संबन्धी सूचनाएं।

हिन्दुग्राहकों में डाक्टर केदारनाथ अतरीश—ने भी २४) भेज दिए हैं। और भी चार महाशय स्थिर ग्राहक बनने की प्रतिज्ञा कर चुके हैं। यदि वे भी अपना हिस्सा शीघ्र भेजदें तो छपाई और भी बढ़िया होने की आशा अधिक बंध जाय।

कागज़ का भाव—तेज़ होता जाता है। प्रायः सभी समाचार पत्रों के प्रबन्धकर्ताओं ने ख़राब काग़ज़ लगाना शुरू कर दिया है। प्रचारक ने काग़ज़ नहीं बदला और नहीं पृष्ठ संख्या कम की है। परन्तु जब वर्तमान काग़ज़ समाप्त हो जायगा तो बड़ा महंगा काग़ज़ लेना पड़ेगा। अन्य पत्र मूल्य बढ़ाने का विचार कर रहे हैं। प्रचारक का यह भी विचार नहीं। केवल ग्राहक संख्या बढ़नी चाहिए। यदि १००० ग्राहक और बढ़ जायं तो बड़ी महंगी का भी सामना हो सकेगा। वर्तमान ग्राहकों को इस ओर ध्यान देना चाहिए। जो पांच छ सज्जन दिन रात प्रचारक की ग्राहक संख्या बढ़ाने का अब तक प्रयत्न करते रहे हैं, वे अब बहुत थक चुके हैं।

गुरुकुल समाचार

उपाध्यायगण प्रचार करके—सब लौट आए। अब केवल नजीबाबाद के उत्सव पर श्री उपाध्यक्ष रामदेव जी तथा पं० जयदेव विद्यालंकार जायंगे और फिर इस सत्र में कोई बाहर नहीं जायगा। १ भादपद (१६ अगस्त) से अन्तिम आश्विन [१५ अक्टूबर] तक बड़ा अवकाश होगा उन दिनों उपाध्यायगण गुरुकुल से बाहर रहेंगे। उनमें से जो भी अपने आराम के समय में से कुछ काल धर्मप्रचार तथा गुरुकुल का सन्देश बाहर पहुंचाने के अर्पण करेंगे, उनको धन्यवाद दूंगा।

ऋतु अत्युत्तम है—यह लिखना इस समय अत्युक्ति नहीं है। आरम्भ के दिन वर्षा ६ घण्टों में १¾ इन्च हुई। उसके पश्चात् बराबर वर्षा ऋतु का समय बंधा रहता है और दिन में दो तीन बार बूंदे बरस जाती हैं। गङ्गा की पहली बाढ़ भी ५ आषाढ़ को आयुर्वेद ब्रह्मचारी तैरने का आनन्द खूब लेते हैं। बेड़े बांध कर मील डेढ़ मील की यात्रा करते हुए अभ्यासी मल्लाह बनते जाते हैं।

आनाज के लिए जो अपील की थी—उसका फल कम निकला। देशी कपड़ा भी जो मांगा था वह वहीं के बराबर ही मिला। परन्तु मैं अब तक निराश नहीं हुआ हूं। अब तक आशा बंधी हुई है। स्नातक पूर्णदेव २६ गज़ गाढ़ा ले आए हैं।

शास्त्रार्थ ने सब का दबालिया।

प्रचारक का यह पर्चा शास्त्रार्थाङ्क कहला सकता है। अन्य सब लेख इसी के नीचे दब गये हैं। कोई समय था जब आर्य समाज की ओर से नगर नगर और ग्राम ग्राम में शास्त्रार्थ के लिए घोषणा होती थी, और पौराणिक मतों के प्रचारक शास्त्रार्थ से घबराया करते थे। जालन्धर तथा अन्य प्रदेशों में कई बार यह विचित्र दृश्य देखने में आया कि आर्य लोग जहां खुला शास्त्रार्थ मैदान में करने को तय्यार होते वहां पौराणिक मण्डल की ओर से यह चेष्टा होती कि घोड़ों में ही बातचीत होजावे। उन दिनों पौराणिक गढ़हिल रहे थे और उनको दृढ़ रखने के लिए सर्वसाधारण को अन्धकार में फंसाए रखना पौराणिक प्रचारकों के लिए आवश्यक था।

फिर समय आया जब मूर्त्तिपूजा, अवतार वाद, मृतक-श्राद्ध, बालविवाह, जाति बन्धनादि की निस्सारता मूर्खों को भी विदित होगई। तब खण्डन मण्डन की आवश्यकता कुछ न रही और आर्य पुरुषों ने इस ओर से ध्यान हटा लिया। उन में विचार शीलों ने शोक से देखा कि निरन्तर खण्डन में लगे रहने से आर्य पुरुषों में कर्म काण्ड के लिए पुरानी श्रद्धा न रही। यही कारण था कि शास्त्रार्थों के विरुद्ध बड़े ज़ोर से आवाज़ उठी और स्वसिद्धान्त मण्डन और आचार संगठन की ओर अधिक ध्यान दिलाया जाने लगा।

शास्त्रार्थों के बन्द होने से सर्वसाधारण धर्मप्रेमी हिन्दू तो प्रसन्न हुए और बिना वादविवाद के कुरीतियों को त्यागने लगे। बाल विवाह सुशिक्षितों में बन्द होने लगा, स्त्री शिक्षा की ओर रुचि बढ़ने लगी, उपजातियों के भेद बंधन टूटने लगे, मूर्त्तिपूजा की इतिश्री होगई, तीर्थों पर भी मनोरंजनार्थ हो जाने की प्रथा बढ़ने लगी। सद्ग्रहस्थों में तो सन्तोष हुआ, परन्तु जिन की आजीविका ही कुरितियों पर निर्भर थी वे किस तरह चुप बैठ सकते। उन्होंने आर्यों के चुप होते ही अपनी आजीविका जाते देख कर फिर से ढिंढोरा पीटना शुरू किया। जिन्हें शास्त्रार्थों पर चार दिनों के काम पर सौ सवासौ विदायगी मिलजाती थे भला कब चुप होने वाले थे। यह अवस्था देख कर आर्य स[illegible] को भी फिर जागना पड़ा और इन लोगों का ठीक रूप आर्य्य जनता को दिखाना आवश्यक हुआ। मेरी सम्मति में स्थान स्थान पर शास्त्रार्थ का बखेड़ा व्यर्थ है। यदि गुरुकुल और ऋषिकुल के ही जलसों पर प्रेम पूर्वक शास्त्रार्थ हुआ करे तो फि[illegible] सनातन धर्म सभाएं भेंट पूजा के भार [illegible] भी बच जाया करें। वर्णव्यवस्था आ[illegible] मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ हो चुके। अ[illegible] तीसरे शास्त्रार्थ की बारी गुरुकुल के आ[illegible] गामी वार्षिकोत्सव पर आवेगी। विष[illegible] पहले से ही मुद्रित कर दिया गया है। सनातन धर्म सभा की ओर से यह दि[illegible] लाया जाना चाहिए कि वेद [illegible] ईश्वर के मनुष्यादि की देह धारण क[illegible] का विधान है जिस का उत्तर आर्य्य [illegible] माज की ओर से दिया जायगा। आ[illegible] श्यक नहीं कि सनातन हिन्दू धर्म सभा की ओर से एक ही संख्या प्रबन्ध करे। उचित तो यह है कि सब से यो[illegible] अनुभवी पण्डित स्वसिद्धान्त स्थापन क[illegible] के लिए उद्दित हों। इसमें भी कोई ह[illegible] नहीं है कि यदि उसी समय एक वक्ता [illegible] त्तर न दे सके तो उसके स्थान में दूस[illegible] खड़ा हो कर उत्तर दे दे। गुरुकुल के [illegible] र्षिकोत्सव पर यह विवाद समाप्त हो [illegible] फिर ऋषिकुल के आगामी वार्षिकोत्स[illegible] पर मूर्त्तिपूजा के विषय पर शास्त्रा[illegible] होना उचित है। आशा है कि पं० गि[illegible] धर शर्मा इस बार शास्त्रार्थ की रिपो[illegible] के साथ किसी असभ्य लेखनी से निक[illegible] हुआ कोई नोट न दिलायगे और ऐ[illegible] अवस्था न आने देंगे कि आगे के लि[illegible] परस्पर के प्रेम व्यवहार में कुछ [illegible] धा पड़े।

आवश्यकता

आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को च[illegible] योग्य उपदेशकों और भजनिकों की आ[illegible] वश्यकता है। उपदेशक महाशय सद[illegible] चारी विद्वान और आर्य्य समाज से प्रे[illegible] रखने वाले और प्रचार के काम [illegible] निपुण हों। भजनीक महाशय सदाचा[illegible] आर्य्य सिद्धान्तों से वाक़िफ़ और गा[illegible] में निपुण हों। वेतन योग्यता अनुस[illegible] दिया जावेगा। प्रार्थना पत्र निम्न पते [illegible] आने चाहियें।

कृष्ण, बी. ए. मन्त्री स[illegible]
लाहौर

Haridwar. Digitized by eGangotri

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ
वैदिक धर्म की
विजय-घोषणा।

गताङ्क से आगे

पं० पूर्णानन्द जीः—(एक आध शब्द बोला था कि—

पं० गिरिधर जीः— आप प्रो. महेशचरणसिंह जी को भी सभापति नहीं मानते, अच्छा यह ब्रह्मचारी बैठे हैं इन से ही सम्मति ले लीजिये।

पं० पूर्णानन्द जीः—चाहे कुछ ही हो किन्तु पूर्व पक्ष स्थापित

पं० गिरिधर जीः— (आवेश में) मतलब साफ है, हमारे आर्यसमाज के हैड उपदेशक जी ने कह दिया है कि पीछे सूचना मिलने के कारण आप तय्यार न हो सके। (पौराणिक मण्डल में तालिएं.....वाह—वाह.....ही...ही .....)

(पौराणिक मण्डल की ओर से—पुस्तकें देख कर नहीं आये अतः तय्यार नहीं हुए—इस वाक्य का दुन्दुभिनाद)

पं० पूर्णानन्द जीः—(बड़े आवेश में और जोर से) यह असभ्यता है इस के लिए पण्डित जी क्षमा मांगे नहीं तो शास्त्रार्थ नहीं होगा। (पौराणिक मण्डल में हल्ला गुल्ला शोर गुल और गुल गपाड़े का बढ़ते जाना) और (पं० देवदत्त जी ऋषिकुलाध्यापक का मुक्का कस कर, क्रोधाभिभूत हो, पं० पूर्णानन्द जी की तरफ सावेग डग भरना—तथा पौराणिक मण्डल के कुछ सज्जनों का उन्हें पकड़ पकड़ाकर समझाते बुझाते लौटाल ले जाना)

सभापति जीः— सुनिये.....सुनिए.....

ऐसी जगह अब यह आशा नहीं कि प्रेम, नम्रता और मिठास से कुछ कार्य हो। अभी तक प्रेम से कुछ नहीं कहा गया। अब मैं यहां बैठना पसन्द नहीं करता। अतः मुझे आज्ञा दीजिए। इस मन्दिर में यह क्या.....

(पौराणिक मण्डल में शोर गुल का जारी रहना)

पं० गिरिधर जीः— (सभापति जी से—आप बैठिये...बैठिए) (फिर बुलन्द आवाज से) बस फैसला हो गया मैं पण्डित जी की बात मान लेता हूं। मैं पहिले पक्ष स्थापित करता हूं।

सभापति जीः—क्या यह प्रेम सभा है कि मैं यहां बैठूं? अच्छा हो कि मुझे आप आज्ञा देवें।

पं० गिरिधर जीः— (सभापति जी से) नहीं नहीं आप बैठिये आप कृपा कर के घड़ी लेकर बैठें।

सभापति जीः— यह काम तो कोई भी व्यक्ति कर सकता है अतः आप मुझे आज्ञा देवें।

पं० गिरिधर जी तथा अन्य

पौराणिक महाशयः—नहीं २ आप बैठिए बैठिए।

पं० पूर्णानन्द जीः—जब पण्डित जी ने हमारा पक्ष मान लिया है तो हमें भी अब किसी तरह की आपत्ति नहीं।

सभापति जीः—अच्छा सब शान्त हो कर तीन बार बोलें कि—"पिता जी सब आप के भक्त बन जावें"। (सब का मिल कर उक्त मधुर वाक्य का उच्चारण करना)

सभापति जीः—अच्छा अब पहिले पं० गिरिधर जी अपने पक्ष का १० मि० तक स्थापन करेंगे, फिर दूसरी ओर से १० मि० तक उस का समाधान किया जायगा, फिर दोनों पक्षों से तीन २ बार भाषण होंगे। अब मैं पण्डित गिरिधर जी से निवेदन करता हूं कि वे पहिले अपना पक्ष स्थापन करें।

पं० गिरिधर शर्मा जी (प्रथम वार)

शरदिन्दुसुन्दररुचिश्चेतसि सा मे गिरांदेवी
अपहृत्य तमः संततमथानखिलान् प्रकाशयतु।

माननीय सज्जनो!

व्यर्थ के विवाद में बहुत सा समय निकल गया। जो युक्ति युक्त बात है वह सब कोई समझ गया है किन्तु यदि आप अतिथि के तौर पर दबाव डालना चाहते हैं तो और बात है।

अस्तुः—हमारे धर्म के प्राण यज्ञ हैं उन में भी महायज्ञ पांच हैं। शास्त्रों में हिन्दू मात्र के लिए पञ्च-यज्ञों का अनुष्ठान आवश्यक बताया है। उन पांच यज्ञों में से पितृयज्ञ भी एक है। इस पितृयज्ञ के सम्बन्ध में किसी की भी विप्रतिपत्ति नहीं इसे आर्यसमाजी भी मानते हैं। यहां केवल मात्र यही विप्रतिपत्ति है कि वे पितृगण जिन के लिए यज्ञ करना है मृत हैं वा जीवित? यह विषय प्रत्यक्ष गोचर नहीं अतः इस विषय में शास्त्र की ही शरण लेनी चाहिए। शास्त्र ही हमें बतलायगा कि वे पितृगण मृत हैं वा जीवित। शास्त्रों में संहिताएं तो सब को मान्य हैं। हम स्मृति पुराणादि को भी मानते हैं किन्तु आर्यसमाजी इस अंश में हमसे विप्रतिपन्न हैं। किन्तु 'वेदोऽखिलो धर्म मूलम्' वेद तो सभी को प्रमाण रूपेण मान्य हैं। पूर्व मीमांसा के 'विरोधे त्वनपेक्ष्यं स्यात् असति ह्यनुमानम्' सूत्र के अनुसार

संहिता और स्मृति में यदि किसी को विरोध दीखे तो वहां संहिता ही प्रमाण भूत हैं। अतः उपोद्बलकतया ब्राह्मणादि के भी प्रमाण लिए जा सकते हैं। अब मैं मृतक पितरों का श्राद्ध करने में आप के सामने प्रमाण रखता हूं!

१. संगच्छस्व पितृभिः संयमेनेष्टापूर्त्तेन परमेव्योमन्।
हित्वायावद्यं पुनरस्तमेहि संगच्छस्व तन्वा सुवर्चाः॥
ऋ० म० १०। सू० १४। म० ८।

मरते हुए मनुष्य का पुत्र उसे सम्बोधन करता हुआ कहता

CCO, Gurukul Kangri Collection

है कि हे पिता जी आप इष्टापूर्त्त साधन के द्वारा यम राज्य में स्थित पितरों के साथ मिलें और फिर इस लोक में जन्म ले कर भी पितरों से मिलें ॥ यमराज्य में स्थित पितृगण जीवित नहीं हो सकेत अतः यहां पर पितृ शब्द जीवितों के लिए नहीं। और लीजिए, अथ० १८वें काण्ड के दूसरे अनुवाक् का ४८वां मन्त्र ।

२. उदन्वती द्यौरवमा पीलुमतीति मध्यमा।
तृतीयाह द्यौरिति यस्यां पितर आसते ॥

इस मन्त्र में अधम मध्यम और उत्तम तीन प्रकार के द्युस्थान बताये हैं जहां कि पितृगण निवास करते हैं मैं पूछता हूं क्या कभी जीवित पितर द्युलोक में निवास कर सकते हैं ? अतः यह स्पष्ट है कि यहां पितृ शब्द से मृत पितर ही लिए जाते हैं न कि जीवित पितर । और लीजिए अथर्ववेद १८वां काण्ड अनुवाक ४, मन्त्र ५७ ।

३. ये च जीवा ये च मृता ये जाता ये च यज्ञियाः।
तेभ्यो घृतस्य कुल्यैतु मधुधारा व्युन्दती ॥

जो जीवित हैं और मृत हैं (ये जाता) और जो गर्भ में स्थित हैं और ये च यज्ञियाः, इन सब पितरों को हमारी घृत की कुल्या पहुंचे। इस मन्त्र में स्पष्ट 'ये च मृता' पड़ा है। और देखिए अथर्व १८ का०, ४ अ. ७८ मन्त्र ।

४. स्वधा पितृभ्यः पृथिवीषदभ्यः
स्वधा पितृभ्यः अन्तरिक्षसदभ्यः
स्वधापितृभ्यः द्युषद्भ्यः

अर्थात् पृथिवी अन्तरिक्ष तथा द्युलोक के अन्तर्वासी पितृगणों के लिए स्वधा हो। क्या अन्तरिक्ष में रहने वाले पितृगण जीवित हो सकते हैं ?

यदि अब भी सन्तोष न हो तो और लीजिए अथर्व १८वां काण्ड, द्वितीय अनुवाक् ३४ वां मन्त्र ।

५. ये निखाता ये परोप्ता ये दग्धा ये चोद्धिताः ।
सर्वांस्तानग्न आवह पितॄन् हविषे अत्तवे ॥

अर्थात् हे अग्ने ? जो पितर गाडे गये हैं नदी में बहाये गये हैं वा जला दिए गये हैं उन्हें हवि का उपभोग करने के लिए बुलावें इस मन्त्र में स्पष्ट ही गाडे गये आदि मृत पितरों का निर्देश किया गया है। और भी देखिए अथर्व । १८ । २ । ५४ ॥

६. पूषात्वेतश्च्यावयतु प्रविद्वाननष्टपशुर्भुवनस्य गोपाः ।
सत्वैतेभ्यः परि ददत् पितृभ्योग्निर्देवेभ्यःसुविदत्रियेभ्यः॥

इस मंत्र में साफ़ २ मरते हुए मनुष्य के प्रति कहा गया है कि पूषा अग्नि तुम्हें पितरों के पास ले जावे। मरते हुए आदमी मृत पितरों के पास ही जा सकते हैं न कि जीवित पितरों के पास अतः सिद्ध है कि पितृ शब्द मृत पितरों के लिए ही आया है ।

पं० इन्द्र जी वाचस्पति (प्रथम वार)

१. प्रिय बन्धु गण ! विचार यह करना है कि पण्डित जी ने अपने पक्ष की पुष्टि में जो प्रमाण दिए हैं वे उन के पक्ष के साधक भी हैं वा नहीं ?। पंडित जी ने जितने मन्त्र दिखलाए उन से यह कदापि सिद्ध नहीं होता कि मृत पितरों के लिए कोई श्राद्ध होता है। आपने जो कुछ कहा उस से केवल मात्र यही सिद्ध होता है कि वेदों में पितृशब्द मृतों के लिए आता है किन्तु यह बिलकुल सिद्ध नहीं होता कि मृतपितरों का श्राद्ध करना चाहिये। अन्यथा, **वेद में पितृशब्द तो बालक के लिये भी आता है।**

२. और जिस प्रकार श्राद्ध शब्द वेदों में कहीं नहीं मिलता उसी प्रकार 'पिण्डपितृयज्ञ' यह शब्द भी वेदों में नहीं मिलता। यह शब्द सूत्र ग्रन्थों से लिया गया है जब तक आप इस शब्द को वेदों में न दिखला दें तब तक इसका कोई मूल्य नहीं ।

३. अच्छा अब मैं आप से तीन प्रश्न पूछता हूं, कृपया आप उनका स्पष्ट २ उत्तर दीजिए:—

(क) 'पिण्डपितृ यज्ञ' शब्द वेद में कहां है ?
(ख) 'मृतक श्राद्ध' शब्द वेद में कहां है ?
(ग) श्राद्ध में ब्राह्मणों को दिया भोजन मृत पितरों को कैसे मिल सकता है ?

सज्जन गण: ! अब मैं आप के सन्मुख पंडित जी के कहे प्रमाणों को तोलता हूं और यह दिखलाता हूं कि उन में कितना सार है—

४. आपका प्रथम मन्त्र 'संगच्छस्व पितृभिः' इत्यादि था । इस मन्त्र में मृत पितरों का वर्णन कहां है ? इसका अर्थ तो स्पष्ट है । हे पितः ! आप अज्ञादि कर्मों द्वारा परमात्मा का साक्षात्कार करने वाले बनकर सच्चे पितरों अर्थात् पालकों की श्रेणी में मिलें। यहां यम शब्द का अर्थ ईश्वर है। तीसरे पद में पण्डित जी ने अद्भुत अर्थकौशल दिखाया है आप वहां 'अस्तमेहि, का अर्थ करते हैं, जन्म लेकर । यह अद्भुत अर्थ कहां से हुआ। अस्त होने का अभिप्राय है—मरना या डूबना न कि उत्पन्न होना ।

५. आपके अगले दो मन्त्र 'उदन्वती द्यौरवमा' और 'स्वधा पितृभ्यः' इत्यादि दोनों मंत्रों में 'पितृ' शब्द से 'ऋतु' लिया जाता है—वहां मृतपितरों का कोई वर्णन ही नहीं ।

६. 'पूषात्वेत श्च्यावयतु' इत्यादि मन्त्र में आपने यह तात्पर्य कहां से निकाला कि 'पितृभ्यः' का अर्थ 'मृतपितरों के लिये' यह है । इस में तो मृत होने की छाया भी नहीं है ।

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विचित्रता यही है कि जहां 'पितृ' शब्द का प्रयोग है वहां पंडित जी झट मृत पितर अर्थ करदेते हैं, किन्तु प्रमाण कोई नहीं देते। सज्जनो ! मैंने आप को अच्छी तरह से दिखा दिया कि पंडित जी ने जितने भी प्रमाण दिये उन में क्या कुछ सार है और वे प्रमाण उन के पक्ष को सिद्ध भी करते हैं वा नहीं। अब मैं अपने पक्ष की पुष्टि में—कि वेद के सूक्तों में पितृ शब्द से जीवित पितरों का ग्रहण है—प्रमाण दिखलाता हूं। देखिए यजुर्वेद के १९ वें अध्याय का ५८ वां म०।

आ यन्तु नः पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः
अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधि ब्रुवन्तु ते ऽवन्त्वस्मान्॥

'अग्निष्वात्त' अर्थात् औपासनाग्नि से पवित्र हुए पितर श्रेष्ठ यान वाले मार्गों से आवें। इस यज्ञ में मंत्रादि द्वारा प्रसन्न हों तथा हमारे हित की बातें कहें और हमारी रक्षा करें।

यहां पितरों के बोलने का स्पष्टविधान है। क्या कभी मरे हुए पितर भी बोलते हुए सुने गए हैं ? जब बोलना लिखा है—तब भला मृत पितरों का ग्रहण कैसे हो सकता है।

८ और देखिए यजु० १९ अ० ६३ वां मंत्र—

आसीनासो अरुणीना मुपस्थे रयिं धत्त दाशुषे मर्त्याय।
पुत्रेभ्यः पितरस्तस्य वस्वः प्रयच्छत त इहोर्जं दधात॥

ऊन के लाल आसनों पर विराज कर हे पितरो ! आप दानी पुरुष के लिए सम्पत्ति के देने वाले हो। सन्तान के लिए ऐश्वर्य का भागदो तथा इस यज्ञादि में बलधारण कराओ।

क्या कभी मृत पितरों का भी आसनों पर बैठना हो सकता है ? यह भी जीवित पितर का ही चिन्ह है।

'अरुणीनाम्' इस का अर्थ आप के ज्वालाप्रसाद जी ने भी ऊन के लाल आसन ही माना है।

९. और भी देखिये यजु० १९ अ० ६८ मन्त्र

पौराणिक मण्डल से:—प्रतीक बोलिये—वक्ता-यदि आप पहिले ही ध्यान से सुनें तो शायद कभी यह परिश्रम न हो और मेरा समय भी ख़राब न हो।

इदम्पितृभ्यो नमो अस्त्वद्य ये पूर्वासो य उपरासईयुः।
ये पार्थिवे रजस्या निषत्ता ये वा नूनꣳसुवृजनासु विक्षु॥

इसमें पितरों के विषय में दो विशेषण विचारणीय हैं। जो 'पार्थिव (रज) लोक में स्थित है' और 'जो उत्तम बल युक्त प्रजाओं में वर्तमान हों, पार्थिव लोक में रहना और उत्तम बल वाली प्रजाओं में रहना भी क्या मृत पितरों के लिए सम्भव है यहां जीवित पितर ही अभिप्रेत हैं। यदि अन्य प्रमाण भी लेना चाहें तो और भी लीजिए, देखिए अथर्व० १८। १। ५२।

आच्याजानु दक्षिणतोनिषद्येदं नो हविरभि गृणन्तुविश्वे।
मा हिंसिष्ट पितरः केनचिन्नो यद्व आगः पुरुषता कराम।

हे पितरो ! तुम सब वाम घुटने को नवाकर, दक्षिण में बैठकर इस यज्ञ का अभिनन्दन करो ! यह पूर्व के दो पदों का अर्थ है। क्या मरे हुए पितर भी एक घुटने को झुका कर दूसरी जांघ पर बैठ सकते हैं। ये सब चिन्ह जीवित पितरों को ही सूचित करते हैं।

पं० गिरधर शर्म्मा जी (द्वितीय वार)

१. मित्रवर ! आपने मुझ पर पहिला एतराज़ यह किया कि मेरे कथन से केवल मात्र यही सिद्ध होता है कि पितर मृत भी होते हैं किन्तु यह सिद्ध नहीं होता कि मृत पितरों के लिए श्राद्ध भी होता है। अच्छा, श्राद्ध तो दोनों के मत में माने जाते हैं आप के स्वामी दयानन्द ने भी लिखा है कि पितृयज्ञ दो प्रकार का होता है एक तर्पण और दूसरा श्राद्ध। तो जैसे हमारे यहां आप दोष देते हैं वैसे ही आप को भी श्राद्ध की वैदिकता सिद्ध करनी होगी।

श्राद्ध विधान में मन्त्र भी हैं किन्तु भेद यह है कि आप उन मन्त्रों का अर्थ जीवित पितरों पर लगाते हैं और हम मृत पितरों पर लगाते हैं।

२, आपने प्रश्न किया था कि क्या श्राद्ध शब्द वेदों में है। यदि हम शब्द पर ही झगड़ा करते रहेंगे तो यह नितान्त निरर्थक होगा और समय यापन करना ही होगा।

३. आप ने दूसरा यह प्रश्न किया था कि—क्या ब्राह्मणों को खिलाया भोजन मृत पितरों को मिलसकता है ? यह प्रश्न तो किसी नास्तिक के मुख पर शोभा देता, जिस प्रकार इस लोक में किये हुए पुण्य दानादि का फल परलोक में प्राप्त होता है इसी प्रकार पुत्र से किये हुए संस्कार का फल भी अदृष्ट द्वारा वा किसी ईश्वरीय नियम द्वारा पितरों को मिल जाता है। इसी लिए कहा भी है कि 'शास्त्रदर्शितफलमनुष्ठानकर्तरीत्युत्सर्ग इति'। और पुत्र से किए संस्कार का फल पितरों को मिलता है यह अपवाद है।

४. अब यह बात रही कि पितृ शब्द मृतों का वाचक है वा नहीं ? पर आप कहते हैं कि पितृ शब्द के कई अर्थ हैं। भला यह तो बताईये कि आप इस प्रकार कहां क्या अर्थ करेंगे अतः यदि पितृशब्द के कई अर्थ मानेंगे तो अव्यवस्था होगी इस से अच्छा है कि एक ही निश्चित अर्थ माना जाय।

५. आपने शंका की कि यदि श्राद्ध में पितरों का आह्वान किया जाता है तो बताईये यह किस तरह सम्भव है कि वे गोडे टेक कर आसन पर बैठ सकें। इसके लिये देखिये शतपथ २ का० ४ अ० २ का०॥

'अथैनं पितरः प्राचीनावीतिनः सव्यं जान्वाच्यो पासीदंस्तानब्रवीन् मासि-मासि वोऽशनꣳ स्वधा' इत्यादि।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इस से स्पष्ट सिद्ध हुआ कि मृत पितर घुटने टेक कर बैठ सकते हैं । और मास, मास के बाद उन्हें अन्न मिलना चाहिये ।

६. आपने 'संगच्छस्व पितृभिः' इस का अर्थ यह किया कि पुत्र अपने मरते हुए पिता को सम्बोधन करता है । मैं आप से पूछता हूं कि क्या कभी पुत्र भी पिता को उपदेश दिया करता है । आपने इस मन्त्र में यम का अर्थ परमात्मा किया, सो ऐसा सम्भव है कि यम का अर्थ परमात्मा भी हो किन्तु यह नहीं कहा जासकता कि सब जगह यही अर्थ होगा।

७. आपने 'ये ऽग्निदग्धाः, 'ये ऽनग्निदग्धाः' मंत्र का अर्थ भोज्य पदार्थों पर लगाया है । मैं पूछता हूं कि क्या कभी पके हुए पदार्थ अन्तरिक्ष में जासकते हैं । और यह मंत्र पितृ सूक्त का है अतः इस मंत्र का अर्थ पितृ परक करना आवश्यक है । और इस मंत्र में आगे चल कर आया है कि हे अग्ने तुम उन पके पदार्थों को जानते हो । पके हुए पदार्थों को तो हम भी जानते हैं अतः अग्नि को यह कहने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती ।

८. हमें पितर दीखते नहीं 'तिरो हि वै पितरो मनुष्येभ्यः' अतः उनका बैठना हमें चाहे न दीखे किन्तु वे बैठ सकते हैं ।

पं० इन्द्र जी वाचस्पतिं (द्वितीय वार)

१. मैंने पंडित जी से प्रश्न किया था कि 'श्राद्ध' शब्द वेद में कहां है । पंडित जी ने कहा कि जैसे यह एतराज़ हम पर है वैसे ही आप पर भी है । जैसे इस शब्द की वैदिकता हम को सिद्ध करनी आवश्यक है वैसे आप को भी इसे दिखलाना चाहिये । खैर, कुछ ही हो पंडित जी ने श्राद्ध शब्द वेद में न दिखा कर अपना दोष तो स्वीकार कर लिया और मुझ पर भी वही दोष दिया है—गौतम के न्याय के अनुसार आप यहां **'मतानुज्ञा' निग्रहस्थान** में जकड़े गये ।

२. पंडित जी ने अपने पक्ष की पुष्टि में 'ये च जीवा ये च मृता य जाता, इत्यादि मंत्र सामने रक्खा, परन्तु यह तलवार तो पलट कर फिर उन्हीं पर पड़ी ।

मैं पूछता हूं कि क्या **'जीवा** और **'जाता'** इन दोनों में भेद है वा नहीं ? यदि आप 'जाता' शब्द से बालक का ग्रहण करें तो क्या बालक भी पितर होते हैं ?

३. आपने कहा जैसे हमारे दान पुण्यादि का फल हमें परलोक में मिलता है वैसे ही पुत्र के किए संस्कार का फल पितरों को मिल सकता है । क्या खूब ! पंडित जी ! इस प्रकार तो आपके कथन में **कृतहान्य कृताभ्यागमदोष** आवेगा । भला यह कैसे सम्भव है कि दान करे कोई और फल पावे कोई, खाऊं तो मैं और पेट भरे दूसरे का । संस्कार तो किया पुत्र ने, किन्तु फल मिले पितरों को, वाह कैसा न्याय है ! दर्शनों का सिद्धान्त यही है कि जो कर्म करे वही फल भोगे ।

४. आपने तो संहितामात्र को दोनों पक्षों का मान्य कहा था किन्तु आप ब्राह्मण के भी प्रमाण दे रहे हैं ।

(पौराणिक मण्डल में·····शोर गुल·····शान्ति से)

५. पण्डित जी कहते हैं कि यदि आप पितृ शब्द के अनेकार्थ मानेंगे तो किस २ जगह क्या २ अर्थ हो यह व्यवस्था कौन करेगा अतः एक ही निश्चित अर्थ होना चाहिए । मेरा पण्डित जी से निवेदन है कि यह दोष आप मेरे पर न लगावें, किन्तु सायणाचार्य, शतपथ के कर्त्ता ऋषियों तथा महीधर पर आप इस दोष को थोपें, क्योंकि वे ही कहते हैं कि पितृ शब्द के अनेक अर्थ हैं । मनु भगवान् ने कहा है :—

जनकश्चोपनेता च यश्च विद्यां प्रयच्छति ।
अन्नदाता भयत्राता पञ्चैते पितरो मताः ॥

शतपथ में वसन्त ग्रीष्म आदि ऋतुओं का नाम भी पितर आया है । **आपके मान्य आचार्य सायणाचार्य ने 'अरूरुचत् रुशसः' इत्यादि मन्त्र में पितृ शब्द का अर्थ रश्मि किया है ।**

महीधर ने भी यजु० के २ अ० के ३२ पृ० में पितृ शब्द का अर्थ ऋतु माना है सो आप अव्यवस्था का दोष अपने आचार्यों पर थोपें ।

निरुक्तकार यास्काचार्य ने "गो" शब्द के अनेक अर्थ किए हैं सो बताईये कहां २ क्या २ अर्थ होगा ? इस लिए आप को भी मानना पड़ेगा कि प्रकरणानुसार इन अनेक अर्थों की व्यवस्था होगी । यही व्यवस्था पितृ शब्द के अनेक अर्थों के साथ भी रखनी पड़ेगी । यदि आप यह मानने को तय्यार न हों तो आपके मत में यास्काचार्य का निरुक्त भी अव्यवस्था दोष ग्रस्त होने से अनादरणीय होने के कारण गंगा में प्रवाहित कर दिया जाना चाहिए ।

(पौराणिक मण्डल में·····शोर गुल·····शान्ति·····शान्ति)

६. आगे पण्डित जी फ़र्माते हैं कि पितरों को मास, मास में भोजन देना चाहिए यह विधान है और यदि यहां जीवित पितरों का ग्रहण हो तो क्या वे जीवित पितर एक मास तक भूखे रहेंगे ? परन्तु पंडित जी ! मैं आप से पूछता हूं क्या उन जीवित पितरों के अपने २ घर नहीं हैं ? जब अपने २ घर मौजूद हैं तो वे एक मास तक भूखे क्योंकर रहेंगे ? हां आदर के लिए उन जीवित पितरों—विद्वान् जनों-को मास, मास के बाद अपने घर में भोजन कराना चाहिये । अच्छा अब मैं पंडित से ही पूछता हूं कि आपके मृत पितर जिनका कोई घर बार भी नहीं, एक मास तक भूखे क्यों न रहेंगे ? अतः यह मानना पड़ेगा कि यहां पितृ शब्द से जीवित पितर ही लिए जाते हैं न कि मृत पितर ।

७. "संगच्छस्व पितृभिः" इस मन्त्र के अर्थ पर आशंका करते हुए पण्डित जी पूछते हैं कि क्या पुत्र भी पिता को

Gurukul Kangri Vishwavidyalaya, Haridwar. Digitized by eGangotri

उपदेश देता है ? मैं पण्डित जी से पूछता हूं कि जो व्यक्ति जिस किसी के प्रति जो भी कुछ कहे क्या वह उपदेश ही होता है ?

'विश्वानि देव सवितः' इस मन्त्र में क्या मनुष्य ईश्वर को उपदेश दे रहा है अथवा प्रार्थना कर रहा है ? कभी सम्भव है कि अल्पज्ञ मनुष्य सर्वज्ञ ईश्वर को उपदेश दे ?। अतः स्वीकार करना पड़ेगा कि यहां मनुष्य ईश्वर से प्रार्थना कर रहा है एवं 'संगच्छस्व पितृभिः' इस मन्त्र में पुत्र पिता से प्रार्थना करता है कि हे पितः आप सच्चे पालक बनिए और यज्ञादि से परमात्मा के गुणों को प्राप्त कीजिए।

८. मैं पण्डित जी से 'हां' या 'ना' में पूछता हूं कि 'संगच्छस्व पितृभिः संयमेनेष्टापूर्त्तेन' इस मन्त्र में 'यम' शब्द का अर्थ ईश्वर है वा नहीं ? यदि पण्डित जी इसका अर्थ ईश्वर नहीं मानते तो मैं प्रमाण से सिद्ध करने को तय्यार हूं कि यहां 'यम' का अर्थ ईश्वर ही है और कुछ नहीं, बस केवल पण्डित जी एक बार 'हां' या 'ना' में इसका साफ़ २ जवाब दे दें।

९. यदि आप 'ये अग्निदग्धा ये अग्निदग्धा' इस मन्त्र का अर्थ भोज्य पदार्थ परक मानने को तय्यार नहीं और मृत पितरों पर ही यदि इसका अर्थ करते हैं तो मैं आप से एक आशंका करता हूं—आप बतावें आपके मृत पितर स्थूल-शरीर हैं वा आत्मा ? चूंकि वे दीखते नहीं अतः यह नहीं माना जा सकता कि वे स्थूल-शरीर हों, और यदि वे आत्मा हैं तो क्या आत्मा का दग्ध होना सम्भव है। आप तो कहते हैं 'ये अनग्निदग्धाः'। पर दूसरी तरफ भगवान् कृष्ण जी पुकार २ कर कह रहे हैं 'नैनं दहति पावकः। अतः, हो नहीं सकता कि इस मन्त्र का अर्थ मृत पितरों पर लगाया जाय, किन्तु भोज्य पदार्थ परक ही इसका अर्थ मानना होगा। 'ये अग्निदग्धाः ये अनग्निदग्धा मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते' जो पदार्थ अग्नि में पकाये जाते हैं और जो पदार्थ अग्नि में नहीं किन्तु सूर्य की धूप से ही पकते हैं, यहां 'दिवः' से निरुक्त-कार के अनुसार सूर्य भी अर्थ हो सकता है।

१०. अच्छा अन्त में, मैं पण्डित जी के सामने एक अन्य मन्त्र भी रख जाता हूं। पंडित जी बतावें आप इस मन्त्र का अर्थ मृत पितरों पर किस प्रकार लगा सकते हैं। देखिए—अथर्व० १८ का० २ अनु० २९ मन्त्र।

संविशन्त्विह पितरः स्वानः स्योनं कृण्वन्तः
प्रतिरन्त आयुः। तेभ्यः शकमे हविषा नमोभिः
ज्योग् जीवन्तः शरदः पुरूचीः॥

इस मन्त्र में स्पष्ट २ कहा कि हे पितरः आप आवें और विराजें। मैं पण्डित जी से फिर पूछता हूं कि क्या जीवित पितर—विद्वज्जन—बैठ सकते हैं अथवा मृत पितर ?॥

पं० गिरिधर शर्म्मा जी तृतीय वार

१. मित्रवर ! आपने कहा कि मैं 'मतानुज्ञा' निगृह-स्थान में जकड़ा गया, पर कहिए तो। किस प्रकार ? हां यदि मैं आप के पक्ष को मान लेता तो मैं निगृहीत होता, मेरा कहने का अभिप्राय तो यह था कि जो एतराज़ आप मुझ पर लगाते हैं वह आप पर भी है। जैसे मुझे इस दोष का परिहार करना होगा तैसे ही आप को **करना होगा**।

२. 'ये च जीवा ये च मृता ये जाता' इस मन्त्र के अर्थ में आपने जो शंका उठाई थी—कि क्या 'जाताः' बालक भी पितर होते हैं—वह निर्मूल ही है क्योंकि 'जाताः' का मतलब है जो जन्मान्तर ग्रहण कर चुके हैं और 'जीवाः' जो गर्भ दशापन्न हैं।

३. आगे आप कहते हैं कि यदि पुत्र के किए संस्कार का फल पितरों को मिलेगा तो कृतहान्यकृता भ्यागम दोष उपस्थित होगा। ठीक है जिस का कर्म से कोई सम्बन्ध नहीं उसको फल चाहे न मिले किन्तु जिस को उद्देश्य करके कर्म किया जायगा उसको फल मिलने में तो कोई बाधा नहीं।

सेना फ़तह करती है किन्तु उसका फल तो राजा को ही मिलता है—जीत का सेहरा तो राजा के ही सिर बंधा जाता है।

४. मित्रवर ! आप पूछते हैं कि 'वेद' का प्रमाण न देकर आप 'ब्राह्मण' का प्रमाण क्यों देते हैं ? सो मैंने पहिले भी कहा था कि उपोद्बलकतया, सहायता के लिए ब्राह्मण का प्रमाण देने में क्या हानि है ?

५. आप कहते हैं कि जिस प्रकार 'गो' शब्द के निरुक्तकार ने अनेक अर्थ बताये हैं। उसी प्रकार 'पितृ' शब्द के भी अनेक अर्थ हैं, किन्तु यहां मेरा वक्तव्य यह है कि गौण अर्थों का आश्रयण तभी किया जाता है जब कि मुख्यार्थ से सिद्धि न हो, जिस प्रकार लक्षणादि में मुख्य अर्थ से काम न चलने पर गौण अर्थ का आश्रयण आवश्यक है। परन्तु जब 'पितृ' शब्द के मुख्यार्थ से सिद्धि होती है तो गौण अर्थ की अपेक्षा क्यों कर हो सकती है ? अन्यथा, यूं तो मैं यदि 'पावक' का अर्थ पानी कर दूं तो क्या सब जगह यही अर्थ लिया जायगा ? कभी नहीं।

६. मित्रवर ! आप जानते हैं कि भारत में शुरू से ही 'फ़ैमिली प्रथा' चली आई है तो यदि श्राद्ध जीवित पितरों का ही माना जावे-गा तो क्या उस घर का पिता एक मास भूखा बैठा रहेगा, और फिर 'मसि मासि' के अनुसार एक मास में केवल एक बार ही भोजन पा-येगा ? हमारे यहां तो 'मृत पितरों' का अहोरात्र ही एक मास का होता है अतः वे भूखे नहीं रह सकते।

७. प्रिय सज्जन ! ठीक है कि 'विश्वानि देव सवितः' में अल्पज्ञ मनुष्य सर्वज्ञ परमात्मा की प्रार्थना कर रहा है न कि उसे उपदेश दे रहा है किन्तु मैं पूछता हूं कि क्या 'संगच्छस्व पितृभिः' इस मंत्र में भी पुत्र पिता की प्रार्थना कर रहा है ? प्रार्थना अपने लिए होती है न कि पराये के लिए, तो क्या पुत्र पिता के लिए प्रार्थना कर रहा है ? कभी नहीं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

८. 'नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि' जीव के लिए है आपने तो इसको स्थूल शरीर के लिए कह डाला ।

पौराणिक मण्डल में.....धन्य धन्य
.....वाह वाह.....शिव शिव.....

पं० इन्द्र जी तृतीय वार ।

गुरुकुल के उत्सव पर हज़ारों की जनता उपस्थित थी, उन में से किसी ने भी 'वाह वाह' नाम को भी नहीं कहा । किन्तु जिस प्रकार आप 'वाह वाह' की डुगडुगी पीट रहे हैं उसी प्रकार यदि वहां पर भी 'वाह वाह' की बुलन्दी दी जाती तो आप का कुछ भी कथन सुनाई न पड़ता, न सुना जा सकता ।

पौराणिक मण्डल में.....ठीक है, ठीक है,
कोई न बोले.....कोई न बोले

१. पण्डित जी फ़र्माते हैं कि यदि हमारा 'श्राद्ध श्राद्ध' शब्द वेदों में नहीं मिलता तो आप का 'श्राद्ध' शब्द भी तो वेदों में नहीं है । अस्तु, कुछ ही हो पंडित जी ने अपना दोष तो मान ही लिया । अपना दोष माने बिना आप मुझ पर दोष कैसे दे सकते हैं । अब यदि पण्डित जी 'मतानुज्ञा' निग्रह स्थान की बेड़ियों से नहीं कसे गये तो और क्या है ?

२. 'ये च जीवा ये च मृताः' आदि मन्त्र का अर्थ करते हुए पंडित जी ने 'जीवा' का अर्थ गर्भ स्थित पितर का किया है, भला इस में कोई वैदिक आधार भी है ?

हां, मनमानी ही चलाना हो तो **अलग बात है** ।

३. पण्डित जी के अनुसार जिस को उद्देश्य करके कर्म किया जाता है उसका फल उसे अवश्य मिल जाता है, एवं पुत्रादि द्वारा किए श्राद्ध का फल पितरों को मिलने में कोई बाधा नहीं होती । अच्छा, यह मान लिया । परन्तु पण्डित जी महाराज ! यह तो बताइये कि पितरों के उद्देश्य से ब्राह्मणों को खिलाए भोजन का तृप्ति रूप फल तो मिलना है पितरों को, तब ब्राह्मण देवता का पेट क्योंकर भर जाता है ? तृप्ति तो होनी ठहरी पितरों की, इस लिए ब्राह्मण के पेट में तो चूहे ही कूदते रहने चाहियें । एक ही फल हो सकता है, या तो पितृ तर्पण ही हो या तोंदतर्पण ही हो. उभयतर्पण **किस प्रकार** से हो सकता है ?

पिता के संस्कार जो पुत्र में आते हैं उन में पुत्र के ही कर्म कारण हैं, और पिता को अपने संस्कार देने का फल पृथक् ही होता है

४. आगे पण्डित जी का फिर वही आग्रह है कि यदि पितृ शब्द के अनेक अर्थ माने जायेंगे तो बड़ी अव्यवस्था होगी, किन्तु इस अव्यवस्था दोष की निवृत्ति के लिए पहिले आप मनु भगवान् और सायणाचार्य तथा महीधर का द्वार खटखटा आईये । हां यदि आप उधर से आंखें ही मूंद कर निकल जावें और मेरे ही दरवाज़े पर आवें तो इसमें मेरा दोष नहीं है ।

५. और देखिए, अब पण्डित जी ने नया ही रास्ता पकड़ा है—लौट पौट के उन्हीं बातों पर नया रंग चढ़ा कर सामने लाना शुरू किया है। आप कहते हैं कि भारतवर्ष में शुरू से ही सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा रही है तो जब आप जीवित पितरों का ही श्राद्ध मानते हैं तो क्या 'मासि, मासि' के अनुसार उन २ घरों के पिता लोग एक २ मास फाके ही उड़ाया करेंगे ? पर पण्डित जी, मैं तो पहिले ही आप को मनु भगवान् का श्लोक याद करा आया हूं—'जनकश्चोपनेता च' इत्यादि । क्या सम्मिलित कुटुम्ब प्रथा के अनुसार राजा गुरु आदि सब एक ही घर में भोजन करते थे ।

यह लोग अपने २ घर में तो भोजन पाते ही रहेंगे किन्तु इन पितरों की पूजार्थ आप को भी एक २ मास के बाद अपने घर पर भी भोजनार्थ बुलाना चाहिये । क्योंकि यदि विद्वज्जन आदि पितृगण प्रसन्न रहें तो समाज का भी कल्याण होता है ।

६. नैनं छिन्दन्ति, का प्रमाण मैंने जीवित के लिये नहीं कहा था, किन्तु आत्मा के लिये । कदाचित् आप के सुनने में भूल हो गई है ।

७. सभ्यगण ! हम आश्चर्य से देख रहे हैं कि आज कल पौराणिकों ने पैंतरे बदल लिये हैं । पहिले शास्त्रार्थों में, बड़ी युक्तियों से सिद्ध किया जाता था कि 'ब्राह्मणों को खिलाया भोजन पितरों को पहुंच जाता है' किन्तु जानपड़ता है कि इस बात की निर्मूलता आप को भी स्वयं अनुभव होने लग गई है इसी लिये इस प्रश्न को सामने लाने तक का भी यत्न नहीं किया गया और टालाजाता है ।

८. मृतपितरों का अहोरात्र एक २ मास का होता है इस में आपने कोई भी वैदिक प्रमाण नहीं दिखलाया ।

९. आपने मेरे पहिले दिये हुए मन्त्रों का कोई उत्तर नहीं दिया अब मैं आप के सामने दो अन्य मन्त्र भी रखता हूं । ज़रा इन पर भी अपना बुद्धि बल प्रकाशित कीजिये-देखिये, यजुर्वेद ॥ अ० १९ । म० ५७ ॥

उपहूताः पितरः सोम्यासो बर्हिष्येषु निधिषु प्रियेषु ।
त आगमन्तु त इह श्रुवन्त्वधि ब्रुवन्तुतेऽवन्त्वस्मान् ॥

इस मन्त्र में स्पष्ट २ 'अधिब्रुवन्तु' शब्द पड़ा है जिस का अर्थ है कि वे पितर बोले, मैं पूछता हूं कि क्या मृत पितर बोला भी करते हैं, कभी आपने सुना है । हां यदि पण्डित जी ने कभी सुना हो तो पता नहीं ॥

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अच्छा और भी देखिये—उसी अध्याय का। ४७ वां म० ॥

उदीरता मवर उत्परास उन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः।
असुं य ईयुरवृकाऋतज्ञास्ते नोऽवन्तु पितरो हवेषु ॥

इस मन्त्र में स्पष्ट ही पितरों के लिये 'असुं यईयुः' शब्द पड़े हैं। जिनका तात्पर्य यह है कि यहां प्राणधारी जीवित पितर लिये जाते हैं।

१०. पण्डित जी से मेरा आग्रह है कि आप अपनी इस बात पर दृढ़ रहें कि "ब्राह्मण के शरीर में आकर पितर भोजन करते हैं" अच्छा अब मैं पण्डित जी के सामने कुछ प्रश्न रखता हूं। पण्डित जी कृपया उनका उत्तर दें:—

१. भला जो पितर गर्भ में स्थित हैं वे ब्राह्मण के पेट में क्यों-कर आ सकते हैं? जिस समय वे आते होंगे उस समय क्या गर्भ में बच्चा नहीं रहता?

२. जो पितरगण मुक्त हो चुके, वे मोक्ष से लौट कर किस प्रकार ब्राह्मणों के पेट में आ सकते हैं।

३. कल्पना कीजिये कि कोई पितर पशुयोनि में गये हैं, तो ऐसी अवस्था में ब्राह्मण के मन की मिठाई खिलाने से उस पशुयोनिस्थ पितर की तृप्ति होगी वा, घास आदि पशु के रुचिकारक वस्तुएं खिलाने से? साथ ही यह भी बताईये कि यह व्यवस्था कौन करेगा कि अमुक २ के पितर अमुक २ योनि में गये हैं ताकि तदनुसार ही भोजन ब्राह्मण देवता के पेट में डाला जाय?

४. ब्राह्मण को खिलाया भोजन पितरों को पहुंच जाता है इस में वेद का क्या प्रमाण है

पं० गिरिधर शर्म्मा जी (चतुर्थ वार)

१. आपने 'मतानुग्रह' निग्रहस्थान मुझ पर किस प्रकार लगाया है. मेरा तो कथन है कि आप भी श्राद्ध को ठीक मानते हैं मैं भी ठीक मानता हूं। जिस प्रकार मुझे अपने पक्ष की पुष्टि करनी होगी वैसे ही आप को भी करनी होगी?।

२. मित्रवर! आपने यह कैसे कह दिया कि पितरों के उद्देश्य से खिलाये भोजन से या तो पितरों की ही तृप्ति होगी और या ब्राह्मणों की ही तृप्ति होगी, दोनों की तृप्ति नहीं हो सकती? क्या एक ही क्रिया से दो कार्य्य नहीं हो सकते? अग्नि जलाने से मकान भी काला हुआ और चावल भी पक गये।

सेना की विजय से सैनिकों को तमगे मिल गये, राजा की जीत हो गई और शत्रु का पराजय भी हो गया, एवं उसी भोजन से ब्राह्मण की भी तृप्ति हो गई और पितर भी तृप्त हो गये। ऐसी २ शंकाओं से वृथा समय यापन ही होता है।

३. प्रिय सज्जन! जब पितृ शब्द के मुख्य अर्थ से ही काम चल जाता है तो अन्नदाता, भयत्राता, आदि गौणअर्थों के आश्रय की क्या आवश्यकता है।

४. मित्रवर! पौराणिक "पैंतरे बदल रहे हैं" यह कैसा कटाक्ष है! हमारे सिद्धान्त तो लाखों बरस बीते सदा से एक ही चले आये हैं यह तो आप की समाज का ही हाल है कि ३० साल में ही पार्टियें खड़ी हो गई हैं।

५. आप पूछते हैं कि मृत पितरों का अहोरात्र एक २ मास का होता है उस में वेद का क्या प्रमाण? वाह वाह, अजब कही, क्या हर बात वेद में से निकलेगी? क्या लोटा भरने का विधान भी वेद ही बतलावेगा। शब्द शक्तिग्रह के लिये वेद की आवश्यकता नहीं, किन्तु,

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान कोशाप्त वाक्या द्व्यवहारतश्च। वाक्यस्य शेषाद्विवृतेर्वदन्ति सांनिध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धाः ॥

६. 'ये च मृता ये च जीवा' इस मन्त्र में जो 'घृत कुल्या' है वह जीवित पितरों के लिये कैसे हो सकती है? आप बताईये कि 'ये निखाताः' इत्यादि मन्त्र का क्या अर्थ है? यदि आप इस का अर्थ भौज्यपदार्थों पर लगाते हैं तो यह कैसे उपपन्न होगा कि 'हे अग्ने तुम उन पदार्थों को लाओ! यदि आप मृत पितरों का श्राद्ध नहीं मानते तो 'मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते' इस के अनुसार द्युलोक में आप किस को अन्न देंगे।

७. 'ये अग्निदग्धाः' आदि विशेषण स्थूल शरीर के ही दग्ध होने से उपचरित हुए हैं वे मृतपितर जिन का स्थूल शरीर दग्ध हो चुका है। जिस प्रकार आत्मा के न चलसकने पर भी 'मैं चलता हूं' यह व्यवहार होता है।

८. जिस प्रकार मेरा जमा किया हुआ धन वसीयत वाले को मिलेगा तैसे ही हमारे कर्म्मों का फल पितरों को मिलता है।

९. आपने कई प्रश्न किये थे? किन्तु वे विषयास्पृष्ट हैं "मरे हुए पितरों का जन्म कब होता है" इस का विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है ॥

पं० इन्द्र जी (चतुर्थ वार)

१. पण्डित जी ने 'मतानुज्ञा' निग्रहस्थान से पीछा छुड़ाने के लिये एक नई तरकीब निकाली है। आपने कदाचित् यह समझा होगा कि इतना कह देने से कि—आप भी श्राद्ध को ठीक मानते हैं और मैं भी ठीक मानता हूं—मैं बच कर निकल जाऊंगा, पर हम तो वेद में श्राद्ध शब्द का आना नहीं मानते और पितृयज्ञ का विधान जीवितों के लिये मानते हैं, नकि मृतों के लिये, इस बात को हम वेद के प्रमाणों से सिद्ध भी कर रहे हैं। सो यह विचार न कीजिये कि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आप निग्रहस्थान से बच निकले, वह तो आप को दबोचे बैठा ही है।

२. पण्डित जी ने फर्माया कि जिस तरह सेना विजय से सैनिकों को तमगे भी मिल जाते हैं और राजा की भी जीत हो जाती है दो उद्देश्य पूरे हो जाते हैं तैसे ही ब्राह्मण के पेट की और पितरों की, दोनों की ही तृप्ति हो सकती है। पण्डित जी! क्या तमगे देना भी सेना विजय का उद्देश्य होता है? 'ग्रामं गच्छान् तृणं स्पृशति' के अनुसार तमगे भी मिल जाते हैं किन्तु तमगे देना उद्देश्य नहीं होता। इस सकल संहारी महा युद्ध में बृटिश सरकार इस उद्देश्य से नहीं कूद पड़ी कि अमुक २ व्यक्तियों को तमगे ही देने थे।

अग्नि जलाने में केवल चावल पकाना ही उद्देश्य होता है, दीवारों को काला करने की नियत से कोई भी भला-मानस कभी आग नहीं जलाता।

३. भला पंडित जी! आप यह तो बतलाईये कि 'श्राद्ध' कब से चला है? अनुशासनपर्व में—.....

पं० गिरिधर जी—यह आप की लास्टटर्न है अतः आप नया दोषद्घाटन नहीं कर सकते।...बक्ता.....अच्छा रहने दीजिये।

४. आगे पंडित जी कहते हैं कि पितृ शब्द के मुख्य अर्थ से ही काम चल जाने से, मनु और सायणाचार्यादि के लाक्षणिक अर्थ करने की कोई आवश्यकता नहीं है। पर पहिले आप मनु आदि के किये अर्थों की लाक्षिणकता तो सिद्ध कीजिये।

५. आप चाहें तो यजु०। २९, ४६ में स्पष्ट २ देख सकते हैं कि वेद में जीवित पितरों का वर्णन है। मंत्र यह है-

स्वादुषः सदः पितरो वयोधाःकृच्छ्रेश्रितः शक्तीवंतोगभीराःचित्रसेनाइषुबला अमृध्राः सतो वीरा दुरवो व्रातसहाः।

इसमें आयु धारण करने वाले, विचित्र सेनाओं वाले बाणप्रहारी पितर कहें हैं? क्या मरे हुए पितर भी धनुष बाण लेकर अन्तरिक्ष लोक में एक दूसरे को मारते हैं।

अब मैं एक और मन्त्र पेश करता हूं, जिसके अर्थ समझ लेने पर कोई भूल कर भी पितृ शब्द से मृत पितरों का ग्रहण न करेगा।

'य इह पितरो जीवा इह वयं स्मः।
अस्मां स्तेनु वयं तेषां श्रेष्ठा भूयास्म॥
अथर्व। १८। ४। ८७

इस मन्त्र में जीव तथा पितृ शब्द विशेष्य विशेषण है। यहां स्पष्ट ही जीवित पितर कहे गये हैं। इस पर पण्डित जी क्या कहते हैं?

इस मंत्र से कोई भी सन्देह नहीं रहता कि जीवित पितरों का ही आवाहन किया जाता है।

६. 'ये निखाता' इत्यादि मंत्र का अर्थ करते हुए पंडित जी फर्माते हैं कि वे पितर जो गाड़े गये हैं। भला पंडित जी महाराज! यह तो बताइये कि क्या हमारे प्राचीन काल में कोई ऐसा भी समय था जब कि हमारे यहां मुर्दा गाड़ने की प्रथा जारी थी? क्या आप मुर्दा गाड़ने में कोई वैदिक विधान दिखाने को तय्यार हैं। वेद तो सुना रहा है 'भस्मान्ततः शरीरं' और आप वेदों में मुर्दों का गाड़ना दिखाते हैं। 'ये निखाता' इत्यादि मंत्र का आप का किया अर्थ कभी वेद सम्मत नहीं हो सकता, अतः उक्त मंत्र को 'भोज्य पदार्थ परक' ही लगाना पड़ेगा—अन्यथा आप के कथनानुसार 'मृत पितृ परक' लगाने से वेदों को दूर से ही तिलाञ्जलि देनी पड़ती है।

७. पंडित जी ने प्रमाण देते हुए बड़े ज़ोर से कहा कि 'अहोरात्र' के शब्द शक्तिग्रह के लिये वेद की आवश्यकता नहीं, परन्तु पंडित जी! यह तो 'मम मुखे जिह्वा नास्ति' वाली बात हुई न। एक तरफ़ तो आप कहते हैं कि शब्द शक्तिग्रह के लिये वेद की आवश्यकता नहीं है, किन्तु दूसरी तरफ़ 'पितृ' शब्द के निर्णय के लिये आपने वेदों के कितने ही प्रमाण दिये हैं क्या यहां परस्पर विरोध नहीं है?

८. अनुशासन पर्व में, युधिष्ठिर ने भीष्मपितामह से प्रश्न किया है कि 'श्राद्ध की प्रथा कब से आरम्भ हुई? उस के उत्तर में भीष्मपितामह ने कहा है कि निमि नाम के राजा के समय से यह प्रथा जारी हुई है। तो क्या 'निमि' से पूर्व विचारे मृत पितरों की दुर्गति ही हुआ करती थी? मानना पड़ेगा कि श्राद्ध जीवित पितरों का ही होता था।

९. ब. मैंने पांडत जी से पूछा था कि 'श्राद्ध' और 'पिण्ड पितृदान' शब्द वेदों में से दिखाईये, किन्तु पंडित जी ने अब तक इसके लिये कोई उत्तर नहीं दिया।

ख. ब्राह्मणों को खिलाया हुआ मृत पितरों को कैसे पहुंच जाता है इस का भी आपने कोई उचित उत्तर नहीं दिया।

ग. मैंने जिस मंत्र द्वारा यह स्पष्ट २ बताया कि 'जीवित पितरों' का ही श्राद्ध होता है उस मंत्र के विषय में पंडित जी बिलकुल चुप्पी साध गये।

घ. मैंने दिखाया था कि वेद में पितरों का उठना, बैठना, तथा बोलना लिखा है। इस प्रश्न पर से पंडित जी साफ़ कदम उठा कर निकल गये।

पं० गिरिधर जीः—यतः लास्ट टर्न होने पर भी नये २ दोषोद्भावन किये गये हैं अतः एक २ टर्न और मिलनी चाहिये।

सभापति जीः—अच्छा एक २ टर्न यदि आप चाहें तो और हो सकती है।

(गुरुकुल मण्डलीः—बड़ी खुशी से)

पं० गिरिधर जी (अन्तिमवार)

१. क. मित्रवर! 'मृत पितरों' को घृत की कुल्पा मिलने के विषय में आपने कोई उत्तर नहीं दिया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ख. पूषा त्वेत रचयावयतु' इस का भी आपने उत्तर नहीं दिया ।

२. आप की यह आदत है कि अन्तिम टर्न में ही आप दूसरों के दोष निकाला करते हैं ।

३. जिस प्रकार 'युद्ध' का अवान्तर उद्देश्य सिपाहियों को तमगा देना भी होता है एवं श्राद्ध का अवान्तर उद्देश्य ब्राह्मणों की तृप्ति होना भी हो सकता है ।

४. 'ये निखाता' इत्यादि मंत्र का आप के कथनानुसार यह अर्थ होगा कि हे अग्ने ! हवि खाने के लिये तुम उन निखात पदार्थों का आवाहन करो । 'निखाताः' है प्रथमान्त और हविषे है चतुर्थ्यन्त भला यह तो बताइये कि आप इन का समन्वय किस प्रकार करेंगे ।

५ प्रिय सज्जन ! महाभारत में जो निमि से श्राद्ध प्रथा का प्रारम्भ बताया है वह सत्ययुग से ही प्रारम्भ हुई थी और निमि ने वेद से देख कर श्राद्ध प्रथा चलाई थी ।

३ शब्दार्थ निर्णय के लिये वेद से तब आश्रय लेना पड़ता है जब कि व्यवहार में विप्रतिपत्ति हो । मनु भगवान् ने जो 'पितृ' शब्द के अन्य अर्थ किये हैं वे लाक्षणिक हैं । मुख्य अर्थ तो लोक में प्रसिद्ध ही है कि 'पितृ' शब्द से जनक ही लिया जाता है ।

७ आपने 'य इह पितरो जीवाः यह मंत्र दिया था कि इस में तो स्पष्ट २ जीवित पितरों का विधान है । परन्तु मित्रवर ! 'मृत पितर' कहने से हमारा यह अभिप्राय नहीं कि जो पितर नितान्त नेस्तोनाबूद हो गये हैं, किन्तु वे अपनी योनि में तो जीवित ही हैं ।

८. आगे ही चल कर मन्त्र में आया है कि 'इहवयम्' अर्थात् हम यहां हैं और तुम अन्यत्र हो अतः इस से मृत पितरों का ही निर्देश है ।

९. 'स्वधापितृभ्यो अन्तरिक्ष सद्भ्यः ? इस मंत्र में स्पष्ट २ लिखा है कि अंतरिक्ष में रहने वाले पितरों को अन्न मिले, भला यह तो कहिये कि अंतरिक्ष में रहने वाले मृतपितर हो सकते हैं अथवा जीवित पितर ? कदाचित् आप के जीवित पितरों को पर लग गए होंगे जिन से वे अंतरिक्ष में भी उड़ान भरा करते हैं ।

१०. 'श्राद्ध' शब्द वेद में नहीं है पर उस का अर्थ तो वेद में मिलता है वह तो कहीं नहीं भाग गया अतः 'श्राद्ध' शब्द के विषय में झगड़ा करने की क्या ज़रूरत है ? चाहे वह वेद में हो या न हो ।

पं० इन्द्र जी (अन्तिम वार)

१. आधा प्रश्न तो हल हो गया, पण्डित जी ने कह दिया कि श्राद्ध शब्द तो वेद में कहीं नहीं पाया जाता । अच्छा अब.....

पौराणिक मंडल में ———शोर, गुल.....
अन्याय, अन्याय.....

पं० गिरिधर जी—यह मैंने कब कहा कि श्राद्ध शब्द वेद में नहीं है ? मेरा तो कहना है कि इस पर झगड़ा करने की ज़रूरत ही क्या है ?

पं० इंद्र जी—अच्छा यदि आप ने यह नहीं कहा तो अब भी बता दीजिये कि श्राद्ध शब्द वेद में है वा नहीं ? मैं अपना ही एक मिनिट आप को देता हूं आप इसका उत्तर साफ़ २ देदें । सब झगड़ा तै हो जायगा ।

वक्ता महाशय का एक मिनिट तक चुप रहना और पं० गिरिधर जी के उत्तर की प्रतीक्षा करना ।

पं० इंद्र जीः—आप ने देख लिया कि पंडित जी को मैंने अपना भी एक मिनिट दिया किंतु फिर भी आप ने इसका कोई उत्तर नहीं दिया कि वेद में श्राद्ध शब्द मिलता है वा नहीं ?

पौराणिक मंडल से————उपनिषद् में श्राद्ध शब्द आता है ।

पं० इंद्र जी—वेद में तो कहा नहीं आता ।

२. पंडित जी ने कहा कि यह मेरी आदत है कि जब लास्ट-टर्न आती है तो मैं नये २ दोष दिखाया करता हूं । मैं भी पंडित जी की एक आदत बतलाता हूं कि जब लास्ट टर्न दूसरे की हो तो पंडित जी अपने पक्ष की निर्बलता देख कर घबरा जाया करते हैं ।

३. आप ने शंका उठाई कि आप प्रथमान्त और चतुर्थ्यन्त का समन्वय किस प्रकार करेंगे । मैं पूछता हूं कि 'हविषे अत्तवे' दोनों चतुर्थ्यन्त है तो आप 'हवि के खाने के लिये' ऐसा चतुर्थी का षष्ठ्यर्थ किस प्रकार करेंगे—

(पौराणिक मण्डल में———शी,——शी——शीः————)

४. जिस प्रकार वहां 'हविषे' की जगह षष्ठी का अर्थ करना पड़ता है उसी प्रकार यहां पर व्यत्यय से 'पितॄन्' का अर्थ पितृणा होगा और मन्त्र का यह अर्थ होगा—कि हे अग्ने ! तू उन निखातादि भोज्य पदार्थों को पितरों के 'हवि' खाने के लिए ला ।

५. आपने कहा कि महाभारत में आया है कि यह 'मृत पितरों' का श्राद्ध सत्ययुग से चला है—परन्तु वहां ऐसा बिलकुल भी नहीं आया, वहां तो आया है कि **'अकृतं मुनिभिः पूर्वं किं मयेद मनुष्ठितम् । कथं न शापेन न मांदहेयु ब्राह्मणा इति ॥ महाभारत, अनुशासन पर्व, अ० ९१, श्लो० १७.**

अर्थात् मैंने यह 'मृत पितृश्राद्ध' कर के मुनियों द्वारा दिखाये मार्ग से विरुद्ध कर्म किया है अतः अब मुझे ब्राह्मण अपने शाप से कहीं दग्ध तो न कर देंगे ? इस लिये 'मृत पितृ श्राद्ध' सर्वथापि शास्त्राविरुद्ध कर्म है ।

पंडित गिरिधर जी— (बीच में ही)
अच्छा कृपया आप थोड़ा और आगे तो पढ़ें ।

पं० इंद्र जी—मेरे पास इतना समय नहीं है

पौराणिक मंडल में———शोर गुल, ...गुल गपाड़ा .....तालिए.....

पं० इंद्र जीः—यह आप की सभ्यता और शिष्टता है ।

पं० गिरिधर जीः—महाशय जी कृपया आप अगले श्लोक भी पढ़ देवें आप को उतना समय और मिल जायगा ।

सभापति जीः—हां आप अगले श्लोक भी पढ़ देवें आप को उतना समय और मिल जायगा ।

पं. इन्द्र जीः—अच्छा अभी पण्डित जी पुस्तक में से वह स्थल निकालते हैं । इतने में अपना वक्तव्य कहता हूं ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पण्डित जी ने फर्माया कि 'अहोरात्र' शब्द पर जब विप्रतिपत्ति थी नहीं तो वेद में से प्रमाण देने की आवश्यता ही क्या ? क्या खूब ! मैं इतनी देर से स्पष्टतया विप्रतिपत्ति उठा रहा हूं किन्तु पण्डित जी कहते हैं कि किसी की विप्रतिपत्ति ही नहीं। क्या सुनी को भी अनसुनी करियेगा?

६. पंडित जी ने कहा कि 'मृत पितर' से हमारा यह अभिप्राय नहीं कि जो नितान्त नस्तोनाबूद हो गये हैं किन्तु जो अपनी योनि में तो जीवित ही हैं। तो भला पंडित जी आप यही अर्थ करेंगे कि जो मरे जीते हैं ? यदि यही अर्थ करना है तो दोनों शब्दों की क्या आवश्यकता कि—'ये च जीवा ये च मृता'। और 'य इह पितरो जीवाः' इसका अर्थ आपके मत के अनुसार सर्वथापि संगत नहीं हो सकता।

अच्छा, महाभारत में से वह स्थान निकल आया है मैं उसे आपके सामने पढ़ देता हूं। सभापति जी देख लें कि मेरा कितन समय अवशिष्ट है वह समय मैं बाद में ले लूंगा।

सभापति जीः—आपका एक मिनिट अवशिष्ट है वह आप को बाद में मिल जाएगा।

(पं० इन्द्र जी का अगले श्लोकों को पढ़ना)

पं० गिरिधर जीः—अच्छा उन के अर्थ भी कर दीजिए।

पं० इंद्र जीः—आप बीच में बार २ टोकते हैं, सो लीजिए आप ही अर्थ कर दीजिए !

(पं० गिरिधर जी के हाथ में ही पुस्तक दे देना) (पं० गिरिधर जी का अर्थ कह देना और पौराणिक मण्डल में..... बाह २.....शोर गुल.....सावधान)

पं० इंद्र जीः—पंडित जी ने आपके सामने वे श्लोक पढ़ दिए हैं किन्तु उनमें कहीं भी 'मृत पितरों' का वर्णन नहीं आया।

अच्छा अब मैं अपना एक मिनिट लेता हूं।

मैंने पंडित जी से पूछा था कि वेद मन्त्र में तो पितरों के लिए आता है 'आधिब्रवन्तु' क्या 'मृत पितर' कभी बोल सकते हैं ?

परन्तु पंडित जी ने इसका कोई भी उत्तर नहीं दिया। 'ये निखाता' इत्यादि मन्त्र का भी पंडित जी ने कोई उत्तर दिया॥

आप शोर गुल से असर मिटाना चाहते हैं किन्तु जो बात सत्य है वह आज स्थित होगई है।

सभापति जीः—का अंतिम भाषणः—

पूज्यगण और भिक्षुगण ! आज की कार्य वाही समाप्त हुई। पब्लिक स्वयं निर्णय कर लेगी।

आओ अन्त में सब मिलकर परम पिता से प्रार्थना कर लें:—

हे परम पिता जी ! वक्ताओं के मुख पवित्र हो जावें, सुनने वालों के कान पवित्र हो जावें, सारे आकाश में पवित्रता फैल जावे और परम पिता अनुचित भावों को दूर करें।

अच्छा सब मिलकर तीन बार बोलें 'परम पिता जी सब आपके भक्त बन जावें'

(सब का मिलकर तीन बार बोलना 'परम पिता जी सब आपके भक्त बन जावें'।)

पं० दुर्गादत्त पन्त ने, जो चुप बैठे थे, अन्त में उठते ही बड़े आवेश में कहा कि—मैं चैलेञ्ज देता हूं यदि आप 'गुरुकुल और यज्ञोपवीत शब्द वेद में से निकाल दें।

इसके उत्तर में पंडित पूर्णानन्द जी ने कहा कि हां, चलिए गंगा के किनारे, मैं २० साल तक शास्त्रार्थ करने को तैयार हूं, मैं आपको दिखलाऊंगा कि वेद में इसका मूल कहां २ पाया जाता है।

इसके अनन्तर—

पौराणिक मंडल में.....बोलो सनातन धर्म की जय की ध्वनि.....और ताड़िए

इधर से पं० पूर्णानन्द जी का बड़े आवेश में कहना 'बोलो वैदिक धर्म की जय'

पं० पूर्णानंद जीः—(सम्मुखस्थ विद्वत्समिति के मंत्री जी से) भला यह आपका कैसा शिष्ट व्यवहार है यदि आप हमारे यहां आते और हम आपकी पगड़ी उतारते तो हमें कैसी शर्म आती। इसके अनन्तर शनैः २ शास्त्रार्थस्थली खाली होगई॥

गुरुकुल में

साहित्य परिषद् का जन्म दिवस

तीन आषाढ़ को गुरुकुलीय साहित्य परिषद् का जन्म दिवस था अतः इसके उपलक्ष्य में इस उद्देश्य से मध्यान्होत्तर ३ बजे एक सभा हुई कि साहित्यपरिषद् की जीवनमाला में जो एक और मोती पिरोया गया उस की परख की जाय कि आया वह मोती उस माला में कबता भी है—उस मोती के पिरोने से क्या उस जीवन माला की शोभा में कुछ वृद्धि भी हुई ? क्या वह मोती पहिले मोतियों की अपेक्षा घटिया था वा बढ़िया ? यदि घटिया था तो आगे से बढ़िया मोती पिरोने का यत्न करें और यदि बढ़िया था तो आगे से और भी बढ़िया मोती पिरोने का प्रयत्न किया जाय।

एक गीति के अनन्तर प्रारम्भिक वक्ता ब्र० धर्मदत्त ने अपनी वक्तृता की जिस का सार यह है—

आज हमारी साहित्य परिषद् का जन्म दिवस है। जिस प्रकार आप इस के उपलक्ष्य में सायंकाल को सानन्द सभोज करेंगे उसी प्रकार अब भी आप के मन सरस बातें सुनने को लालायित होंगे। किन्तु 'सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते, के अनुसार मेरा नीरस कथन भी इस स्थान में अनुप युक्त न होगा। आंवला खाने के बाद ही पानी अधिकतर मीठा प्रतीत होता है। आज साहित्य परिषद् की यात्रा में एक वर्ष और व्यतीत होता है। तदनुसार मैंने आज आप के सामने साहित्यपरिषद् के गतवर्ष के कार्य्य पर एक समालोचनात्मक दृष्टि डालनी है यदि आप गत वर्ष की, पिछले वर्षों से तुलना करेंगे तो आप को स्पष्ट प्रतीत होगा कि पिछले वर्षों की अपेक्षा गतवर्ष में साहित्यपरिषद् एक पौड़ी ऊपर चढ़ने के स्थान में एक पौड़ी नीचे उतर गई है। पहिले तो, गतवर्ष में बहुत थोड़े अधिवेशन हुए दूसरा उन में अत्यन्त थोड़ी उपस्थिति होती रही है इस के सभ्यों में उत्साह की भी कुछ कमी होगई है। अन्य कारणों के साथ इस का एक कारण यह है कि सभा का काम अनियंत्रितरूप से विस्तृत होगया है यदि इस को थोड़े से क्षेत्र में लाकर नियन्त्रित रूप से काम किया जाय तो आशा है कि सभा पुनरपि उन्नति पथगामिनी हो सके। अच्छा हो कि सभा के कार्य को कुछ शीर्षकों में बांट लियाजाय

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और उसी नियन्त्रण में सारा कार्य हो। जितने भी निबन्ध वा व्याख्यान हों वें उन्हीं शीर्षकों के अनुसार हों। वे शीर्षक तीन चार हो सकते हैं यथा वैदिक अन्वेषणात्मक, विज्ञानात्मक, और साधारणज्ञानात्मक आदि। यदि इन शीर्षकों को सामने रख कर, कुछ नियत रूप से प्रयत्न किया जायगा तो सभा की उन्नति में कोई सन्देह नहीं।

इसके अनन्तर ब्र० जयचन्द्र ने अपनी वक्तृता की जिसका अभिप्राय यह है—

मेरी सम्मति में सभा की शिथिलता के दो मुख्य कारण हैं एक है सभाओं की अधिक संख्या। सभाओं की अधिकता के कारण उत्साह का बंट जाना स्वाभाविक है। तीस थालियों की अपेक्षा यदि एक ही थाल निकाली जाय तो वह अधिक तेजी से चलेगी अतः यदि हम सभाओं की संख्या को संकुचित करदें तो हमारा ध्यान और उत्साह एक ही ओर लगकर अधिकतर उन्नति कर सकेगा सभा की अवनति का दूसरा बड़ा कारण हमारा आलस्य है यदि हम इस ओर कुछ ध्यान दें तो न सभा के लिए निबन्धों की कमी रहे और नाही अधिवेशनों में कम सभ्यों के आने की शिकायत रहे।

अनन्तर पं० विश्वनाथ जी उठे—आप ने कहा कि यदि इस सभा के सभ्य अपने कार्य करने की विधि पर कुछ ध्यानदें तो तो बहुत सी शिकायत दूर हो सकती है। यदि सभ्य गण जो २ विषय पढ़ते हैं उन के साथ २ संस्कृत की पुस्तकों वा अंग्रेजी भाषा की पुस्तकों से स्वस्व विषयानुसार ज्ञानोपार्जन करते जाएं तो इस से हमारे साहित्य की भी बड़ी उन्नति होसकती है और निबन्ध पर्य्याप्त राशि में मिल सकते हैं। परन्तु साथ ही वह विधि नियम पूर्वक जारी रहनी चाहिए कि प्रतिदिन अपने २ विषय के लिए कुछ न कुछ उपार्जन कर लिया जाय, और २, ४ पृष्ठप्रति दिन इकट्ठे करलेना कोई बड़ी बात नहीं है। इस प्रकार एक मास में बड़ीअच्छी तरह एक निबन्ध तय्यार हो सकता है। यदि निबन्ध के छोटे होने का ध्यान छोड़कर जिस को स्व २ विषय में कुछ भी नया ज्ञान मिला हो वह सभा के सामने रख दिया करे तो इस से भी सभा को उन्नति करने में बड़ा सुभीता हो जावे! इसके अनन्तर एक गीति हुई और तत्पश्चात् पं० इन्द्र जी ने अपना कथन प्रारंभ किया—

जिस सुर के अलापने का आज दिन है उस को छोड़कर मैंने आज अपने कथन में नई ही तान छेड़नी है अतः इस के लिए आप मुझे क्षमा करेंगे।

मैं साहित्य परिषद् की उन्नति के विषय को छोड़ कर 'कृत कृत्य साहित्यिक जीवन' विषय पर कुछ कहूंगा।

धार्मिक वादार्शनिक विचारों में परिवर्तन लाने वाले महानुभावों से अगला दरजा साहित्यिक जीवन व्यतीत करने वालों का है। मैं आज 'आप के सामने साहित्यिक जीवन की कुछ शर्तें रखना चाहता हूं।

१. साहित्यिक जीवन की प्रथम शर्त 'परिश्रम' है। वाल्मीकि, व्यास, कालिदासादि कवि हमारे यहां हुए हैं और पाश्चात्यों में भी होमर, शेक्सपीयर आदि अनेक कवि हुए हैं। कहा करते हैं कि कवि बनाए नहीं जाते किन्तु पैदा होते हैं, यद्यपि इस वाक्य में कुछ सत्यता अवश्य है तथापि यदि उक्त कवियों ने परिश्रम न किया होता तो न जाने आज वे किसी गिनती में भी आते। कई ग्रामीण मनुष्य कवित्व शक्ति में स्वभाव से ही चतुर से लगते हैं किन्तु जब तक उस हीरे को शाण पर नहीं घढ़ाया जाता तब तक उस की चमक अन्दर ही छिपी रह जाती है। इस लिए उस चमक के अविर्भाव के लिए 'परिश्रम' एक आवश्यक साधन है।

'मैकाले' एक प्रतिभा शाली व्यक्ति था वह अपने मित्रों आदि को पद्य रूप में ही पत्र भेजा करता था, किन्तु अपने पद्यों की नाक कान ठीक करने के लिए उस से दुबारह कभी परिश्रम न होता था। उस के मित्र उस से कहा करते थे कि यदि तुम अपने पद्यों पर एक नज़र डाल लिया करो तो तुम्हारे पद्य रुचिरतर होजावें। फ्रांस के विख्यात लेखक 'बौल्टेयर' ने एक दुःखान्त नाटक लिखा था, इस ने उस के ६ भाग पूरे कर के ७ वें दिन आराम लिया, तो उस के एक मित्र ने उसे कहा कि यदि तुम आराम लेने की जगह अपनी कृति पर एक नजर मार लेते तो अच्छी बात होती। अभिप्राय यह कि 'परिश्रम' का तत्व साहित्यिक जीवन का एक अवश्यक और विशेष अंग है।

साहित्यिक जीवन की दूसरी शर्त है 'किसी सामयिक उद्देश्य को सामने रखना'। कवियों की श्रेणी में हमें दो प्रकार के कवि देखने में आते हैं। एक तो जिन के काव्यों में सब प्रकार का ज्ञान पाया जाता है। इस श्रेणी में कालिदास और शेक्सपीयर सरीखे कवि हैं। इस श्रेणी के ऐसे कवि विरले ही होते हैं जो अपने काव्यों में चुतरफ़ी मार मारते हुए भी प्रसिद्धि पालें। किन्तु दूसरी श्रेणी है 'तरंग प्रचारक' कवियों की, जैसे प्रबोध चन्द्रोदय नाटक का कर्त्ता और चैतन्य चन्द्रोदय का कर्त्ता यह नाटक 'वेदान्त, और 'चैतन्य' की लहर चलाने के उद्देश्य से बनाये गये थे। तुलसीदास जी, और सूर सरीखे कवि रामचन्द्र और कृष्ण की भक्ति की लहर चलाने वाले थे। 'गैटे' 'रूसो, और बौल्टेयर' भी इसी श्रेणी के साहित्य सेवी थे। बंकिम बाबू और रोमेश चन्द्रदत्त के उपन्यास देशोन्नति की लहर को चलाने के लिए बने थे अतः दूसरी मुख्य शर्त जिसे कि किसी भी साहित्यसेवी को पूरा करना आवश्यक है, अपनी कृतिनिर्माण के लिए किसी सामयिक उद्देश्य को अपनी आंखो में रखना है।

एक अन्य शर्त का पूरा करना भी साहित्य सेवी के लिये आवश्यक है कि उसे 'साहित्य को अपनी आजीविका न बनाना चाहिये. रटूअर्ट मिल भी कहा करता था कि यदि किसी ने उत्तम साहित्य सेवी बनना है तो उसे साहित्य को, कमाने का साधन न बनाना चाहिये अतएव जब एक तरफ़ मिलकी 'स्वाधीनता' नामी पुस्तक प्रकाशित होरही थी तो आप इण्डिया आफिस में क्लार्क के पद पर नियुक्त थे। रवीन्द्र बङ्किम तथा रोमेश चन्द्रदत्त ने साहित्य से कभी अपनी आजीविका करने का सपना भी नहीं लिया था। दूसरी तरफ 'स्कौट, सरीखे प्रसिद्ध लेखक का 'नोपोलियन चरित, चूंकि आजीविका की दृष्टि से पक्षपात युक्तभावों से पूर्ण बना था सो उसका परिणाम हमारे सामने है कि आज उस चरित की तरफ़ कोई आंख भी नहीं उठाता। अतः साहित्य सेवी के लिए तीसरी पालनीय शर्त इसे 'आजीविका का साधन न बनाना है'।

इसके पश्चात् उपाध्यक्ष श्री रामदेव जी ने अपना कथन आरम्भ किया।

सब बातों का स्वर्णीय काल प्रायशः सदा प्राचीन काल में ही होता है

CC0. Gurukul Kangri Collection

मारी साहित्यपरिषद् के साथ भी यही बात है। आज कल इस की अवस्थाअवनति पथगामिनी हो रही है इसका बहुत बड़ा कारण 'सुस्ती' है। पहिले चूंकि इस के सभ्यों की संख्या न्यून थी अतः १० १२ ब्रह्मचारियों में परस्पर स्पर्द्धा रहाकरती थी यदि एक निबन्ध लिखने को तय्यार होता था तो दूसरा भी देखादेखी तय्यार हो जाया करता था। किन्तु अब सभ्यों के आधिक्य से उन में यह प्रवृत्ति नहीं रही है और साहित्य परिषद् के सभ्य होने का मान्य अब कुछ घटता सा दीखता है अतएव आप में से भी कई इस के सभ्य नहीं हैं। अतः जिस प्रकार हमारी 'व्याख्यान-माला, सभा में श्री आचार्य जी की तरफ़ से प्रत्येक विद्यार्थी का सम्मिलित होना आवश्यक कर दिया गया है उसी प्रकार साहित्य परिषद् को भी अपना नियम कर लेना चाहिये कि प्रत्येक अधिवेशन के प्रारम्भ में मन्त्री महाशय उपस्थिति ले लिया करें और जो सभ्य गुरुकुल में होते हुए भी अनुपस्थित रहें उन से इस का कारण पूछा जाया करे और यदि कोई सभ्य दो बार भी लगातार न आवे तो उस का नाम सभ्यों में से पृथक् कर दिया जाय। अन्यथा प्रत्येक सभ्य के दो २ रुपये तो मिल ही जाते हैं उन को 'वैङ्क' की तरह इकट्ठा करने से कोई लाभ नहीं। निबन्धों के लिये यह विधि करनी चाहिये कि जो सभ्य तो गुरुकुल में उपस्थित हैं उन्हें वर्षभर में दो निबन्ध लिखने आवश्यक हों और जो सभ्य बाहिर रहते हैं उन को वर्ष में एक निबन्ध लिखना आवश्यक हो' और निबन्ध मन्त्री के पास फ़ालतू पड़े रहने चाहिये, यहां तक कि मन्त्री को उन के लिए नैमित्तिक अधिवेशनों के करने की भी आवश्यकता पड़ा करे, और फिर भी कई निबन्धों के सुनाने के लिये समय न मिलसके। जो सभ्य उपर्युक्त नियम का पालन न करे उस का नाम भी सभ्यों की नामावली से पृथक् कर देना चाहिये। परन्तु अब अवस्था क्या है कि कोरम पूरा करने के लिये मंत्री इधर से उधर दौड़ा फिरा करता है।

इस बात के लिये कि इस सभा के सभ्य होने को पुनरपि मान्य की दृष्टि से देखना आरम्भ हो। हमें अभी से यह चाहिये कि विद्यालय के विद्यार्थियों के लिये साहित्यपरिषद् की ओर से विद्वान् व्यक्तियों को बुलवा कर व्याख्यान करवाये जाया करें जिस से साथ ही साथ जहां एक तरफ़ हमारे ज्ञान की वृद्धि होगी वहां इस सभा का सभ्य होना एक मान्य की बात समझी जायगी।

इस के अनन्तर निम्नलिखित गीति हुई—

ईमन कल्याण

साहित्य मानस न्हाईये परिषद् के प्यारो ध्रु०
१—दिव्य उजाले उन रतनों को,
यत्न से प्रियवर पाईये। परिषद् के प्यारो
२—पूज्यपुरातन तत्वविदों के,
वचन सलिल बिमलाईये। परि०
३—सन्त विवेकी 'हंस' बने हो,
सत्य असत निरखाईये। परि०
४—दिनमणि उत्सव उदित हुआ है,
हृदय कमल विकसाईये। परि०
५—मधुरस अनुपम छवि पुनि धर कर,
अलिजन लोक लुभाईये। परि०
६—प्रीति मिला उतसाह अतुल हो,
दिशि दिशि हित छवि छाईये। परि०
७—सज्जन विद्वज्जन संगम के,
आज से अवसर लाईये। परि०

गीति के अनन्तर श्री आचार्य्य जी उठे आप ने कहा—

आरम्भ से ही जो टकोर लगी वही अन्त तक लगती रही। और ठीक ही लगती रही, जब कुछ किया ही नहीं तो सिवाय इस के और क्या हो सकता है कि अपनी राम कहानी सुनाते हुए अपने को ही दोष देते जायं। किन्तु फिर यही बात नहीं रहनी चाहिये कि अपनी राम कहानी भी सुनाते गये और अवस्था भी वही रहे।

कहा गया कि हमारे पास समय नहीं है इस के लिये तो मैं यही कहूंगा कि सभा में प्रायः वे ही आया करते हैं जिन्हें अधिक काम होता है। जो काम नहीं करते उन्हें ही प्रायः समय की शिकायत हुआ करती है। जब मैं कराँचीं में था वहां एक सभा होनी थी उस का सभापति बनाने के लिये बहुत से ख़ाली आदमियों से पूछा गया किन्तु सबने यही उत्तर दिया कि आप किसी अन्य को चुनलें कदाचित् मुझे आने में देरी हो जावे, अन्ततः सभापति वही व्यक्ति हुआ जिस का एक २ मिनिट भी ख़ाली नहीं था, तो समय की शिकायत केवल कहने को ही है।

अतः ऐसा ही यत्न करना चाहिये कि इस सभा की जो ख्याति फैली हुई है वह घटने न पावे। और अपने अन्दर नई बातों को जानने की उत्कट प्रवृत्ति पैदा करनी चाहिए। इस प्रवृत्ति के ही कारण विदेशों की सभा समितियें दिन पर दिन उन्नति करती जाती हैं, उन्हें तो नये ज्ञान की प्राप्ति का इतना शौक है कि यदि कोई पुस्तक बड़े नये नाम में भी प्रकाशित हो जावे तो वे उसे लेने को बड़े उत्सुक हो जाते हैं।

एक पुस्तक "मेड इन जर्मनी" नाम से प्रकाशित हुई उस की केवल तीन ही सप्ताह में ३० लाख प्रतिएं उठ गईं। यद्यपि उस में बातें वही थीं कि—जर्मनी सारा व्यापार अपने हाथ में कर लेगा, किन्तु चूंकि पुस्तक का नाम कुछ अद्भुत सा प्रतीत होता होता था इस लिए उस पुस्तक पर इतनी दौड़ हुई—तो नई बात की जिज्ञासा का ऐसा ही शौक तुम्हें भी अपने अन्दर पैदा करना चाहिये। परमेश्वर कृपा करें कि तुम्हारे अन्दर जो भाव आज उदित हुए हैं वे फलें फूलें और कार्य में परिणत हों।

इसके अनन्तर मन्त्री जी ने जन्म दिवस के उपलक्ष्य में होने वाले सायं सहभोज की की सूचना दी और निम्नस्थ गीति के साथ सभा की कार्य्यवाही समाप्त हुई—

जय जय आर्य्य गिरा रसखानी

गौड मल्हार

अतिशय मधुरस गुणवती, दैवी,
सरला देवता बानी।
हिन्द देश की हिन्दी भाषा,
आर्य्य भारती जानी।
वही देश की जीवन करनी,
चतुर छन्द ने जानी।
तुलसी की रस नदी निहारो,
शुभ कविता मनमानी।
सूरसूरि की निर्मल बानी,
सुधा पियो मन मानी।
भूषण का पद विक्रम देखो,
समरभूमि में मानी।
हरिश्चन्द्र ने चन्द्र जोत की,
शोभा अनुपम तानी।
मणि मोती पाओ सब भाई,
बैठ काव्यरस पानी।
मानस नभ में तब उपजेगी,
वह प्रतिभा सुखदानी।
बनो भारती, भारत वाले!
कहो भारती बानी।
पर भाषा का नाश देश से,
करो बनो विज्ञानी।

—:o:—

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी

लाहौर निवासियों की ओर से श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज को अभिनन्दन पत्र.—गत २८ दिन से अमृत धारा भवन लाहौर में महाभारत की जो कथा हो रही थी और जिसको हजारों नरनारी बिना इस विचार के कि आर्य-समाजी हैं या सनातनधर्मी, ब्राह्म समाजी हैं या देव समाजी, सिक्ख हैं या किसी अन्य मत के, बड़ी श्रद्धा और प्रेम से सुन रहे थे, ११ जून को समाप्त हो गई। हिन्दुओं में कथा की समाप्ति पर यथाशक्ति अपनी श्रद्धा के प्रकाश में कुछ न कुछ भेंट चढ़ाई जाती है किन्तु स्वा० सत्यानन्द जी जैसे स्वार्थत्यागी और निर्लोभी सन्यासी इस प्रकार कथा रूपी अमृत को विक्रय करने के सर्वथा विरुद्ध हैं और इस का प्रकाश उन्होंने कई बार कथा के प्रसंग में भी कर दिया था, इस लिए भोग पे दिन किस प्रकार के चढ़ावे को छोड़ कर स्वामी जी की अमृत वर्षा से लाहौर-वासियों को जो लाभ पहुंचा उसके लिए कृतज्ञता प्रकट करने के उद्देश्य से लाहौर वासियों की ओर से एक अभिनन्दन पत्र देना निश्चित हुआ, और उसके लिए पं० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य ने बड़ी धूम धाम से तैयारी की, जन संख्या उस दिन बहुत अधिक थी, जिसका अनुमान दस सहस्र तक किया जाता है, उपस्थित जनों में बहुत से प्रतिष्ठित पुरुष भी सम्मिलित थे।

प्रति दिन के विरुद्ध उस दिन कार्य्यवाही ८ के बदले ७ बजे श्याम से आरम्भ हुई। पहिले बड़ा भारी हवन यज्ञ हुआ, तत्पश्चात् पं० गिरधारीलाल जी के मनोहर भजन हुए इसके पश्चात् पं० ठाकुरदत्त जी शर्म्मा वैद्य ने स्वामी जी, गवर्नमेन्ट, राय बहादुर रामशरणदास, म्यूनीसीपल कमेटी और वालण्टियरों आदि को धन्यवाद देने के अनन्तर इस बात का वर्णन किया, कि यज्ञों में विघ्न भी हुआ करते हैं एवम् ईर्षादि के कारण कई लोगों ने शहर के भीतर मिथ्या किम्वदन्तियां उड़ाईं, शोक का विषय है कि एक किम्वदन्ती तो पुलेटीन ने लिख दिया है और लिखा इस ढंग से है कि मानो कथा में कोई घटना हुई है। प्रथम तो जहां तक पुलिस के दफ्तरों और सम्पूर्ण शहर में मनुष्य भेज कर पता लगाया गया, यह किम्वदन्ती ही किम्वदन्ती है, और इसके भीतर सचाई नहीं, किन्तु यदि कुछ हो भी तो लाहौर की दो लाख बस्ती में क्या कुछ नहीं हो रहा है। उसका जिम्मेवार कौन हो सकता है। इस भी कथा के साथ निकाल दिया है।

कथा का ऐसी कि लाहौर में प्रथम दृष्टान्त है जिस में १ मास तक इतना उपस्थिति होता रही, और श्री स्वा० जी महाराज के सदोपदेशों ने कई जीवनों को सुधारा, इस खबर को प्रकाशित करना और इस भयानक शीर्षक के साथ बहुत ही बुरे परिणाम फैलाना है, और यह भी ठीक उस दिन जो समाप्ति का दिन है, और अभिनन्दनपत्र दिया जा रहा है।

इस के पश्चात् ला० शिवदयाल जी एम० ए० प्रोफेसर गवर्नमेन्ट कालेज लाहौर ने लाहौर वासियों की ओर से एक सुन्दर सुनहरा छपा हुआ अभिनन्दनपत्र पढ़ कर सुनाया और रेशमी रुमाल में आपकी भेंट किया, जिसमें कथा की प्राचीन प्रणाली को आर्यजाति में नए सिरे से प्रचलित और अपने मधुर व मनोहर भाषण से लाहौर-वासियों को कृतार्थ करने के लिए स्वामी जी महाराज का धन्यवाद किया गया, उस की एक छोटी प्रति हाथ में दी गई। अभिनन्दनपत्र पढ़ने के पश्चात् ला० शिवदयाल जी ने एक सांक्षिप्त वक्तृता की, जिस में बतलाया कि सर्व प्रकार के मत-भेद को छोड़ कर सहस्रों नरनारियों का २८ दिन तक इस कथा में सम्मिलित होना बतला रहा है, कि स्वा० सत्यानन्द जी का अस्तित्व विशेष व महान् है, यह आकर्षण केवल उच्च स्वर के कारण नहीं है, महाभारत के भाग से नहीं है, वरन् उस श्रद्धार्जक और धार्मिक जीवन में है जो स्वामी जी के हृदय में वर्तमान है। स्वामी सत्यानन्द जी के हृदय में महर्षि दयानन्द और वैदिकधर्म्म के लिए अगाध प्रेम है, उनका जीवन परोपकारी है—उस की हम लोग जितनी प्रशंसा करें कम है। स्वामी जी का धन्यवाद करने के पश्चात् हम लाहौर वासियों को पं० ठाकुरदत्त जी शर्म्मा वैद्य को धन्यवाद देना चाहिये जिसके उद्योग से हमें इस मनोहर कथा को सुनने का अवसर मिला है, ऐसे धर्म्म-कार्य्यों में पण्डित जी का प्रेम सर्वोपरि है—वह अपना धन, व समय निःसंकोच व्यय करते हैं, उन में सब से बड़ी खूबी यह है कि जिस काम को हाथ में लेते हैं मूर्ति तक पहुंचाते हैं।

इस के पश्चात् ला० शिवदयाल रिटायर्ड इन्सपैक्टर महाशिय ने एक संक्षिप्त वक्तृता में बतलाया कि ऐसे सन्यासी महात्माओं का जीवन परोपकार के लिए ही होता है, रामायण महाभारत, जो हमारे पूर्वजों और ऋषियों के पवित्र जीवनों के प्रतिफल हैं उन्हें कर स्वामी जी ने हमारे बीच में आकर हमारी और महान् की के लिए श्रद्धा उत्पन्न कर दी है—आशा है कि आगामी वर्ष वह मनुस्मृति की कथा सुनायेंगे, पं० ठाकुरदत्त जी का भी हमें धन्यवाद करना चाहिए कि अमृतधारा भवन में अमृत वर्षा कराई।

अन्तिम ला० कुंवरसेन एम० ए० ला कालेज लाहौर ने कहा कि जितनी श्रद्धा और भक्ति मेरे हृदय में स्वामी जी के प्रति है कदाचित और किसी के हृदय में न होगी। हिन्दू जाति में अपने धार्मिक ग्रन्थों के लिए प्रेम नहीं रहा, स्वामी जी अपने सत्योपदेशों और मनोहर कथाओं से उन के लिए श्रद्धा-भाव उत्पन्न कर रहे हैं, इसके लिये हम उनका जितना धन्यवाद करें कम है। मैं आशा करता हूं कि स्वामी जी लाहौर जैसे नगर में जहां काम का मैदान और आवश्यकता अन्य शहरों की अपेक्षा बहुत अधिक है प्रति वर्ष कृपा करते रहेंगे।

स्वामी जी का उत्तर।

अभिनन्दनपत्र और वक्तृताओं के उत्तर में स्वामी जी ने कहा कि मनुष्य दर्पण में अपने ही मुख को देखता है, आपने जो सद्भाव मेरे प्रति प्रकट किए हैं वास्तव में मुझे एक दर्पण अनुभव कर के अपने ही मुखों को देखा, और अपनी शोभा को बढ़ाया है, आप लोगों के हृदयों में धर्म्म के लिए श्रद्धा भक्ति का प्रबल भाव देख कर मुझे अत्यन्त प्रसन्नता हुई है, आप लोगों ने आगामी वर्ष के लिए जो मुझे निमन्त्रण दिया है, यदि ईश्वर ने जीवन दिया तो, मुझे आप की सेवा करने में संकोच न होगा, जिस प्रकार पतंग की गति पवन व डोर पर निर्भर है उसी प्रकार मेरा आना आप की प्रेमरूपी डोर और परमात्मा की कृपारूपी वायु पर निर्भर है।

इस प्रत्युत्तर भाषण के पश्चात् स्वामी जी ने भीष्मपितामह जी का अन्तिम उपदेश सुना कर कथा को समाप्त किया, अगले दिन प्रातः समय स्वामी जी महाराज लाहौर से जालन्धर को रेलगाड़ी द्वारा पधारे, उस समय स्टेशन पर बहुत से सज्जन उन को विदा करने के वास्ते गए हुए थे, पुष्प-हारों से आप का सत्कार कर के नमस्कार कर के लौट आए।

लेखक—
गोविन्ददास
गम्भीर सादर्स
लाहौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————२)
आर्य्यसुक्तिसुधा————————।)
काव्य लतिका————————।।।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ।।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ।।।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ।।=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् ।)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्] १।।)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नास्तिकः =)।।
आख्यातिकः ।।।)
महाभाष्यम् अङ्कप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महाभाष्योपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २।)

आर्य्यभाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—वैलफोर स्टुअर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ।।)
रसायन—विलियम एस, पर्नी की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ।।।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरित—गली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ।)।।
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)।।
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)।।
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)।।
लेखकश्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त =)।।
मांस भीनांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) =)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M. R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— '
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Magnum Opus called the Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bhardwaja F. R. C. S.; D.P.H. etc 2d edition—Printed on superior paper and published by the Arya Prati Nidhi Sabha United Provinces Agra and Oudh—First ten chapters only Rs. 3/

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १।।)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. वेदाङ्ग प्रकाश स्वामी दयानन्द कृत (वैदिक यन्त्रालय अजमेर)
२. भारत का सच्चा इतिहास (भास्कर यन्त्रालय मेरठ)
३. उपनिषदें—शंकर भाष्य सहित (आनन्द आश्रम पूना)
4. The Direct Method of Teaching by Nelson Fraser in 4 parts.
५. चक्षु रामायण (निर्णय सागर यन्त्रालय बम्बई)
६. हर्ष चरित

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

"Gurukul Kangri" Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १८ आषाढ़ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १ जुलाई सन् १९१६ ई० | संख्या १२ भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थीयों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०

तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,

छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,

सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रम्बन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा सू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

आर्य्य कन्या पाठशाला, लुधियाना

के लिए एक अध्यापक की आवश्यक्ता है जो आठवीं श्रेणी तक संस्कृत पढ़ा सके। दृढ़ आर्य्य और सदाचारी हो। ट्रेन्ड को तरजीह दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार ३५) मासिक तक नियत किया जा सकता है। प्रार्थना पत्र, सदाचार और योग्यता के प्रशंसा पत्रों सहित, नीचे लिखे पते पर आने चाहिएं—

प्रबन्धकर्त्ता,

गणेशीलाल आर्य्य कन्यापाठशाला

लुधियाना।

प्रचारक पुस्तक भण्डार की अनूठी पुस्तकें।

उपनिषदों की भूमिका—लेखक, श्री० इन्द्र वेदालंकार। इस पुस्तक में उपनिषदों का सार बड़ी मनोरञ्जक रीति से दिया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि उपनिषदों का आधार वेद ही है। विषय गम्भीर है तो भी भाषा रोचक और बल पूर्ण है। मूल्य ।=)

धर्मवीर पं० लेखराम की जीवनी—महात्मा मुंशीराम जी लिखित। धर्मवीर की आर्य-भाषा में यह एक मात्र जीवनी है। प्रत्येक आर्य्य-गृह में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। धर्मवीर की जीवनी—और महात्मा जी की लिखी हुई—आप क्यों न लेंगे? मूल्य १)

प्रिंस-बिस्मार्क की जीवनी—जर्मनसाम्राज्य के निर्माता राजनीति विशारद बिस्मार्क की जीवनी को जिसने नहीं पढ़ा, उसे योरप का वर्तमान युद्ध समझ में नहीं आ सकता। पुस्तक बेहद मनोरञ्जक है भाषा प्रौढ़ ओजस्विनी है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है—शीघ्र लीजिए।

मूल्य १॥)

कमीशन का दर

२५) से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रति सैंकड़ा, ५०) से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति सैंकड़ा, १००) से अधिक के ख़रीदार को २५) सैंकड़ा तथा २००) से अधिक के ख़रीदार को ३०) सैंकड़ा कमीशन मिलेगा।

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र

गुरुकुल कांगड़ी, पो० श्यामपुर-कांगड़ी

ज़ि० बिजनौर

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल समाचार

ऋतु अत्यन्त सुहावनी होकर फिर बदल गई। वर्षा पांच दिन से नहीं हुई। वैसे तो शीतलपवन के झोंके और गङ्गा-स्नान गरमी अनुभव नहीं होने देते परन्तु जब थोड़ी देर के लिए भी वायु बन्द हो जाता है तो कष्ट प्रतीत होने लगता है। वर्षा फिर आने वाली ही है। गङ्गा की दो बाढ़ें आचुकी हैं जो असाधारण बात है।

पढ़ाई का काम बड़ी उत्तम रीति से चल रहा हैं। सभी उपाध्याय, अध्यापक अपने अपने काम से दिल से लगे हुए हैं। महाविद्यालय विभाग की अङ्ग्रेज़ी के निरीक्षक इस वर्ष के लिए श्रीमान महाशय टी. एल. बसवानी एम. ए. प्रिन्सिपल महेन्द्र कालिज पटिआला नियत हुए हैं और बङ्गाल के प्रसिद्ध दार्शनिक पण्डित फणिभूषण जी संस्कृत दर्शनशास्त्र की पढ़ाई के निरीक्षक बनाए गए हैं। दोनों महानुभावों ने बड़े प्रेम और बड़ी श्रद्धा से निरीक्षण के कार्य्य को स्वीकार किया है।

विद्यालय विभाग की पढ़ाई का निरीक्षण महाविद्यालय के उपाध्यायों के द्वारा होता है। प्रत्येक विषय के विद्वान् उसी विषय के निरीक्षक होते हैं और वह पढ़ाई की परीक्षा कर के अपने अनुभव से पढ़ाई के प्रकार में उन्नति के साधन भी बतलाते हैं।

आश्रमों का काम पूर्वापेक्षा उन्नति के मार्ग की ओर जा रहा है। महाविद्यालय आश्रम में रात को सोने तथा सोने से पहले और उठने से पश्चात् का काम श्री उपाध्याय रामशरण M. Sc. करते हैं और दिन भर ब्रह्मचारिचयों को श्री उपाध्याय सेवाराम जी का सत्सङ्ग मिलता है। महाविद्यालयाश्रम में एक बड़ा नया कमरा बना है जिस में सभाओं के अधिवेशन बड़ी सुगमता से हो सकेंगे। आशा यह रक्खी जाती है कि जो विश्वास महाविद्यालयस्थ ब्रह्मचारियों पर किया जाता है उसका वे दुरुपयोग कभी न करेंगे, प्रत्युत सदुपयोग ही करेंगे और कर रहे हैं।

विद्यालय विभाग में पं० यज्ञदत्त जी और मुख्याध्यापक मुखराम जी दिन रात अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहते हैं। इस समय अधिष्ठाताओं का भी कर्त्तव्य पालन की ओर झुकाव है और यदि काम निर्विघ्न चला तो आशा रखनी चाहिये कि ब्रह्मचारियों को अपने मुख्योद्देश्य की पूर्त्ति के लिए बहुत अवसर मिलेगा।

गुरुकुल की आर्थिकदशा के सुधार की भूमिका बंध चली है। इस वर्ष का बजट तब पूरा हो सक्ता है जब ३१०००) धन और जमा हो जाय। इस का $\frac{1}{3}$ भाग पूरा करने के लिए मैंने ब्रह्मचारियों के संरक्षकों से, प्रचारक द्वारा, साधारण अपील की और सब ब्यौरा लिखकर संरक्षक महाशयों के पास पत्र भी भेजे। अन्तिम पत्र को यहां से गए अभी पूरे छ दिन न हुये थे कि अपील का फल निकलने लगा महाशय कृपाराम जी अफ्रिका निवासी के पुत्र के संरक्षक भी लछमूराम जी मय्यड़ हैं। उन्होंने सब से पहले १००) भेज दिए। दूसरी १००) की रकम पं० बलदेव प्रसाद जी सागर निवासी ने भेजी है। इन के अतिरिक्त नीचे की प्रतिज्ञाएं आई हैं जो पहुंचने वाली ही हैं :—

२५०) श्री लाला विष्णुदास जी प्रधान आर्य्यसमाज श्रीगोविंदपुर, २००) राय साहेब श्री लाला सन्तरास जी, सबडिविज़नल आफ़िसर, मेरठ शहर, २००) श्री सर्दार वैशाखासिंह जी, ठेकेदार ख़ानकी, ज़िला गुजरांवाला, १००) श्री लाला प्यारेलाल जी सब ओवरसियर गुजरांवाला।

जिस उत्साह से सहायता आरम्भ हुई है उस से आशा पड़ती है कि वर्तमान वर्ष की कमी शीघ्र ही पूरी होगी। यह तो एक प्रसन्नता की बात है। परन्तुदूसरा लाभ इस कृतकार्य्यता से यह हुआ कि आर्य्यजनता को यह पता लग गया कि जिन महोदयों के बालक इस गुरुकुल में पढ़ते हैं उन्हें इस शिक्षा प्रणाली पर कितना विश्वास है। जिन जातीय संस्थाओं को अकृतकार्य होना पड़ा है उन्हें बड़ी कठिनाई यह झेलनी पड़ी कि उनके संचालकों का उन के क्रम पर विश्वास न था। कलकत्ते के नैशनल कालिज की अकृतकार्यता का कारण यही बतलाया गया। उस कालिज के उपाध्याय भारत के बड़े बड़े प्रसिद्ध विद्वान् थे, परीक्षक बङ्गाल के शिक्षितदल के शिरोमणि सब थे, परन्तु इस पर भी अकृतकार्यता क्यों हुई? एक वहीं के उपाध्याय ने मुझे उत्तर दिया- "सब काम विश्वास से होता है। जब इस कालिज के संचालक अपने पुत्रों को प्रेसिडेन्सी कालिज में भरती कराते हैं तो और कोई भद्र पुरुष क्यों अपने बालकों को यहां प्रविष्ट कराएगा।"

यह गुरुकुल इसी लिए कृतकार्य हुआ कि इस के संचालकों ने अपनी सन्तान को इसी प्रणाली पर शिक्षा दिलाना अपना कर्त्तव्य समझा। और अब जब कि ब्रह्मचारियों के संरक्षक थोड़ी सी अपील पर इस प्रकार इस की सहायता के लिए खड़े हो जाते हैं तो मुझे निश्चय है कि ३१०००) जमा होने के पश्चात् स्थिर कोष की पूर्त्ति का प्रश्न शीघ्र हल हो जायगा। जिस संस्था पर चलाने वालों को ऐसा दृढ़ विश्वास है उस पर साधारण आर्य्यजनता को क्यों विश्वास न होगा।

मैंने तो अपने जान सभी संरक्षक महाशयों को पत्र लिख दिए हैं, परन्तु यदि किसी महाशय को भूल से पत्र न भेजा गया हो वा डाकख़ाने की असावधानी से पत्र पहुंचा ही न हो तो वे भी यथा शक्ति सहायता शीघ्र भेजदें। मैं चाहता हूं कि जो भी सहायता आती है वह सितम्बर की पहली तारीख़ से पूर्व ही पहुंच जाय, जिस से उस के पश्चात् आगामी वर्ष के लिए ७५, ०००) जमा करने का लग्गा लगाया जावे। यदि उस में भी कृतकार्यता हो तो सम्वत् १९७४ सारा का सारा ही स्थिर कोष के जमा करने में लग सकेगा।

ब्रह्मचारियों के लिए ऋतु का फल (आम) बहुत से महाशय भेज रहे हैं। बहुत ही अच्छा हो यदि भेजने वाली तिथि से दो दिन पहले गुरुकुल कार्यालय में सूचना दे दिया करें। जिस से गुरुकुल का कर्मचारी समय पर माल छुड़ा लिया करें।

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक वर्णव्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञान भिक्षु जी लिखित)

[यह लेख पृष्ठ १२ पर प्रकाशित लेख का शेषांश है ।]

गुण कर्म तो होना—और कहे कि मैं ब्राह्मणादि वर्ण वाला हूं और ब्रह्मचारी हूं यह कदापि नहीं होसकता—इसमें कौनसी बात थी जिसे लेकर आप पब्लिक को धोखा देना चाहते हैं—योग्यता का अर्थ स्वभाव कदापि नहीं होसकता—हमारा तो इस में भी कुछ नहीं बिगड़ता करिये आप स्वभाव ही अर्थ करिये । आप ने पृ० २१ पर स्वयं माना है कि स्वभाव और योग्यता एकार्थक नहीं आप तो अपनी निराली विद्वत्ता से स्वभाव का अर्थ शरीर मानते हैं अर्थात् जन्म से ही—अच्छा तो अब यह बतायें ? क्या कोई जन्म से ही ब्रह्मचारी गृहस्थी, वानप्रस्थी, सन्यासी हुआ हुवाया आता है ? यदि कहो कि हां तो 'बालोन्मत्तादिवत्प्रमादमात्रम्'—यदि कहो नहीं तो स्वभाव-अर्थ छोड़ कर योग्यता ही क्यों नहीं मानते—कुछ समझे कि नहीं, नहीं आप की प्रारब्ध ही ऐसी है । आप लिखते हैं कि "मानव सृष्टि में एक जन-समाज आर्य्य और दूसरा दस्यु है" हां, हां, हैं तो दोनों ही समाज—परन्तु आप बताइये आप कौन समाज में हैं आर्य्य तो आप अपने को कहने से रहे क्योंकि आर्य्यसमाज के सिद्धान्त के तो आप विरुद्ध ठहरे—शेष रहे दस्यु—उनकी ओर ही आजकल श्रीमानों की तीव्रगति है स्यात्—परन्तु हम तो सत्य कहते हैं कि हमें आप का शोक ही है—जो कि आप ने ऋषि के ग्रन्थों और आर्य्यसमाज के सिद्धान्तों का अनादर कर के अपना अधःपतन कर आर्य्यसमाज से पृथक् हो पोपडम की लहर में बहना आरम्भ कर दिया—अस्तु यह तो आप की इच्छा है चाहे किसी समाज को पसन्द कीजिए आर्य्यसमाज से आप के निकल जाने पर कोई त्रुटि नहीं आ सकती—आप प्रसन्न चित्त हो दस्यु समाज के सभासद बनिये—परन्तु यह आपने नहीं बताया कि दस्यु कौन होता है—आप लिखते हैं कि "जो देवताओं का पूजक न हो, जिस की यज्ञ में श्रद्धा न हो, जिस में पशुत्व प्रतीत हो, और जो स्थिर निश्चय न हो उस को दस्यु कहते हैं" समीक्षक—भाई आप को—बड़ी अच्छी समाज अपने लिये निश्चित की है क्यों न हो सजाति, सजाति की ओर खिंचा करता है—आप तो प्रवेश करते ही तद्गुणी हो गये—आप शतपथ ब्राह्मण के (विद्वांसो हि देवाः) इस के अनुसार विद्वान् मात्र को देव मानते हैं कि नहीं यदि मानते हैं तो फिर किसी देश का निवासी हो, गोरा हो, काला हो [आप का कल्पित] नीच हो या उच्च हो, उसे आप को देवता कहना पड़ेगा और उस की पूजा करनी होगी, यदि नहीं करोगे तो देवताओं के पूजक न होने पर दस्यु क्यों नहीं ? और यदि विद्वान् को देव नहीं मानते तो आप प्राचीन ग्रन्थों के विरुद्ध चलते हैं और कहते हैं कि प्राचीनों के आधार पर लिखूंगा—कहते कुछ करते कुछ, जब कि आप का निश्चय ही स्थिर नहीं तो आप दस्यु क्यों नहीं क्योंकि आप ने स्थिर निश्चय न रखने वाले को दस्यु कहा है—कहिये वेद आप के लिये क्या बतलाता है—"वेदों में दस्युओं के नाश की प्रार्थना आई है" समीक्षक—बेचारे नीच कहे जाने वाले मनुष्यों पर अत्याचार कर उनको दासत्व में ही लगा कुछ कल्याण न करने वाले अनार्य्य जन्माभिमानी दस्यु के नाश की [दण्ड] प्रार्थना न आवे तो क्या रक्षा की आवे—भाई-रक्षा तो आर्य्य की होगी यदि रक्षा चाहते हो तो आर्य्य बनो—यह कभी नहीं होगा दस्यु भी रहो और रक्षा भी चाहो—छोड़ो इस विचार को और आर्य्यसिद्धान्तों को स्वीकार करो । पं० जी आप के ग्रन्थ में एक बड़ी न्यूनता यह है कि प्रमाण देते समय पता तो देते ही नहीं कि किस ग्रन्थ का है—कहीं ऊंघते २ नींद खुल गई तो किसी का लिख दिया परन्तु उस में भी ठीक नहीं। पृ० ६ पर लिखते हैं "नीचैः दासा उपसर्पन्तु भूमिम्-इत्यादि "कई मंत्रों से दस्यु का दास पर्याय वाची मिलता है, कैवर्त दास धीवरों इस के आधार पर धीवर के अर्थ में प्रयुक्त होता है"—"इसी लिये दासान्त नाम शूद्रों का रक्खा जाता है" पृष्ठ ७—

समीक्षक—पाठक गण अपने कवि जी का आशय समझा? आपका अभिप्राय है कि दास दस्यु धीवर शूद्र यह एकार्थ शब्द हैं—अच्छा हम तोड़ मरोड़ से आपकी लें दास नाम धीवरादिक का हो सही तो कहार आदि सेवकों का काम कौन करेगा क्योंकि दस्यु के तो नाशकी प्रार्थना आती है—जब दास नहीं होंगे तो मलादि स्वयं फेंका करना और दासत्व के शेष कार्य भी अपने आप करने पड़ेंगे शायद इसी भयसे आप इन को यज्ञाधिकार वेद पठन व्रत तपश्चर्यादि शुभ कर्म करने का अधिकार नहीं देते—क्योंकि इन्होंने यह गुण संपादन किये और आपके पंजे से निकले—यह है आप को अनिष्ट—इसी लिये ७पृष्ठ पर लिखा है "दास कदापि स्वतन्त्र नहीं रह सकता"—"आप कभी इन बेचारों को स्वतन्त्र रहने देना चाहते हैं—आप कीजिये ऐसे मनोरथ सबदा तो आप के परतन्त्र होने से रहे—क्या प्रत्येक कर्ता स्वतंत्र नहीं ? या आपने भी प्राचीन ईसाईयों के समान दासों में जीव का चिन्ह नहीं पाया ?—जीव कर्म करने में स्वतंत्र और फल भोगने में पर तन्त्र है—तब दास सजीव होने पर स्वतंत्र क्यों नहीं—प्रत्येक अवस्था में तो परमेश्वर बिना कोई भी स्वतंत्र नहीं फिर आप और दास में क्या विशेषता—अस्तु कुछ हो आप के मनो भाव का तो पता लगता ही रहता है कि आपने अपना क्या उद्देश्य बनाया है-देखिये उस मंत्र [आपने तो लिखना न ठहरा तो क्या हम भी न लिखें—] का अर्थ यह है—नीचैः दासा निकृष्टकर्मभिः दासा दस्यु भावयुक्ता पुरुषाः भूमिं बृहत्स्थान मुत्कृष्ट पदं उपसर्पन्तु उपरि गच्छन्तु प्राप्नुवन्तु—अर्थात् वेद की आज्ञा है कि जो पुरुष अधम कार्य करने से कुत्सित है वह उत्तम कार्य करने से उत्कृष्ट पद को प्राप्त हो—पृष्ठ७ पर लिखते हैं कि "वेदमें वर्ण शब्द प्रायः रूप के अर्थ में प्रयुक्त होता है यथा सूरो वर्णेन ततनन्नुषासः—४—५—१३ [२] उपद्विवर्णेरमिराम मस्थात् १०-३-३ [३] भद्रं वर्णं पुष्यन्—४-२ [४] प्रजापते वर्णः ४—१६" "समीक्षक नहीं जहां कहीं भी वेद में वर्ण शब्द आता है वहां 'स्वीकरणीय, यही अर्थ होता है—[वर्णो वृणोतेः निरुक्त] सूर्य—प्रभात के सौंदर्य से विस्तृत होता हुआ— उदय हुआ ?—दूसरे मंत्र का अर्थ—उत्तम गुणों से उत्तमता को स्वीकार कर अभिरामस्थात् पूर्णानन्द को प्राप्त करो—तीसरे का शुभ कार्यों में धैर्य दृढ़तादि से आत्मा को पुष्ट बलवान करे—(४) ईश्वर के न्यायादि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उत्तम गुण को मनुष्य सेवे। यदि आप के कथनानुसार रूप ही अर्थ माना जावे तो क्या 'प्रजापति परमात्मा का रूप ऐसा मानेंगे। आप से दूर तो है नहीं क्योंकि जो समाज अपने अपने लिये निर्धारित की है उसमें रहते आप इसे भी कुछ दिनों में अवश्य स्वीकार करने लगेंगे—हम तो चाहते हैं कि इस से अधिक और न गिरें परन्तु आप अपने स्वभाव से विवश हैं क्या किया जावे—हमारा तो इस में कोई दोष नहीं—क्योंकि हम तो देखो तुम्हें सतझा ही रहे थे और अब भी ख़बर दार कर रहे हैं—स्यात् आप से सन्मार्ग पर चलने से शपथ खाबैठे हैं "वर्ण शब्द जाति के अर्थ में भी आता है जैसे-उ भौवर्णौऋषिरुग्रः पुपोष १—१७९—६— वेद में वर्ण और जाति शब्द पर्याय वाची माने जाते हैं।" समीक्षक—जब वर्ण और जाति शब्द वेद में पर्याय वाची हैं तो पुस्तक किस के आधार पर लिखने बैठे हो—आप वर्ण शब्द ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र इन के लिये मानते हैं—(पृष्ट २२ पर चारों वर्णों में द्विज आर्य और शूद्र अनार्य ठहरता है यह लिखा है) और जाति आपने दस्यु और आर्य दो मानी हैं—जब जाति वर्ण एकार्थ हैं तो अनार्य (जाति) का समावेश वर्ण में क्यों नहीं करते वेद की आज्ञा का उल्लंघन करते हुये आप शूद्र को अनार्य कह कैसे सकते हैं—जब कि उसकी गणना वर्ण में मानी हैं—और वर्ण और जाति एक आप मानते हैं—यदि स्वभाव से विवश होकर नहीं मानना तो तुम्हारा कथन उन्मत्त प्रलाप क्यों नहीं?—एक स्थान पर वर्ण जति को पर्याय मानते हैं और दूसरे स्थान पर विपरीत लिखते फिरते हैं—तुम्हारी बुद्धि भी ठिकाने सिर है कि नहीं—दोनों प्रकार से भूत आपके सिर पर है—यदि वेद की आज्ञा मानते हो तो आर्य शब्द में शूद्र और सर्व ईश्वर पुत्रों को सम्मिलित करो—(आर्य ईश्वर पुत्र-निरुक्त) और यदि वेद की आज्ञा से पराङ्मुख हो तो अपने को नास्तिक मानो— हमारी ओर देखो हमतो तुम्हारे जैसे...को अपना रहे हैं परन्तु आप अड़चने लगा कर पीछे ही सरक रहे हैं— मरज़ बढ़ता गया जूंजूं दवा की— फिर भी प्रातः काल का भूला सायं काल को यदि घर लौट आवे तो वह भूला नहीं कहा जाता—अब भी समय है—सोचलो—उस मन्त्र का अर्थ यह है—उभौ वर्णौ दोनों प्रकार के इन्द्रिय अन्तरिन्द्रिय (मन बुद्धि) बाह्येन्द्रिय (ज्ञान कर्म) इन को पुपोष जिसने दीर्घ काल नैरन्तर्य सत्कारा सेवित हो जितेन्द्रियत्व प्राप्त किया है इस से ही जिस का शरीर पुष्ट है वह पुरुष ऋषिरुग्रः—ब्रह्मवित् ऋषि है—क्योंकि बलमिच्छमानः वह चाहने वाला है (यह पद इसी मंत्रमें आता है) आशय वेद का यह है कि जिस पुरुषने वेदाभ्यास करते हुये इन्द्रिय जीतली हैं वह पुष्ट हृदय ऋषि है—जिह्वा तो इन्द्रियारामी जनों की भी ललचाती है कि हमें भी ऋषि कहा जावे—परन्तु जब तक अपने को इस योग्य न बनाले तबतक कदापि इस पवित्र नाम का वाच्य नहीं हो सकता—ऋषि नाम लेकर कहते हैं कि हम ऋषि सन्तान होने से ऋषि हैं—वेद कदापि मलिनान्तः करण को ऋषि नहीं कहते—इसी प्रकार ब्राह्मण विप्रद्विजादि शब्द जब तक इन का पात्र नहीं बन जाता वेद तक उसे यह नाम नहीं—हम स्थानान्तर पर सिद्ध करेंगे कि ब्राह्मण ऋषि विप्रशब्द एकाथ हैं जिस में इनके गुण ही ऋषि वा ब्राह्मण वहीं विप्र है-आगे लिखते हैं कि "कोई २ विद्वान् वेद में जाति शब्द का प्रयोग नहीं बताते हैं परन्तु-एषांविष्णो सजात्यानाम्-८-८३-७ सजात्येन मरुतः सबन्धवः ८-२०-२१ सजात्यमाश्विनोश्वारुनाम ३-५४-१६ नसजात्यस्यमरुतो विबोधथ १०-६४ १३-१-८" समीक्षक-जहां कहीं वेद में सजात्य शब्द आता है वहां सहायक साथी यह अर्थ है—इसी प्रकरण में सजात्य के नाम समान्य सबान्धव सजोषस इत्यादि शब्द आते हैं नैयापिक जाति और वैशेषिक सामान्य एकार्थक प्रयोग करते हैं—अपनी विकल्पकल्पित जाति शब्द को वेद में दिखाने से कहीं जन्म से वर्ण व्यवस्था सिद्ध होने लगी है, कुछ तो सोचा करो, अगला मन्त्र भी यही जितलाता है कि नः हमें मरुतः वायु के सजात्येन सहायक होने से साथी जानो—यस्मिन्नपो मातरिश्वादधाति यजु ४०-४ मातरिश्वा यह गर्भ में सोने वाला होने से जीवात्मा का नाम है। (शेष फिर)

एक आवश्यकीय सूचना

सर्वसज्जनों को सविनय सूचना दिया जाता है कि श्रीमद्दयानन्द अनाथालय दानापुर की ओर से ठाकुर खूबसिंह जी भजनोपदेशक नियत हुए हैं जो सज्जन वार्षिकोत्सव या संस्कार पर भजनोपदेश कराना चाहें, भजनीक जी को बुला सकते हैं परन्तु बुलाने वाले महाशय को १५ दिन प्रथम पत्र देना होगा और अनाथालय के लिए सहायता प्रदान करना परम कर्त्तव्य होगा।

इस समय भजनीक जी बिहार और बंगाल के समाजों में भ्रमण करेंगे समाज के मन्त्री महोदयों की सेवा में सविनय निवेदन है कि जिनके समाज में भजनीक जी जायं अनाथालय रक्षार्थ सहायता दे दिला कर देश रक्षा का फल ग्रहण करें।

विनीत
रामलोरीमतसिंह
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय दानापुर कैम्प

—:o:—

आवश्यकता

बलदेवार्य सं० पाठशाला को एक अध्यापक की आवश्यकता है जो सम्पूर्ण व्याकरणाचार्य या व्याकरण शास्त्री पास हो वेतन योग्यतानुसार होगा। पत्र व्यवहार श्रीयुत माननीय पं० राधाकृष्णदास जी वकील, मुरादाबाद से करें।

मङ्गलदेव
मुरादाबाद

आवश्यकता

आर्य्य प्राइमरी कन्या पाठशाला खानकी के लिये एक योग्य परिश्रमी, तथा अनुभवी आर्य्य अध्यापिका वा पंडित की आवश्यकता है। वेतन योग्यता नुसार दिया जायगा। प्रार्थना पत्र, प्रशंसा पत्रों की प्रति, तथा जिस २ पाठशाला में कार्य किया हो उसके ब्यौरे सहित, निम्न लिखित पते पर आने चाहियें।

१३/२ से १३/८ तक
मुकन्द लाल
मैनेजर कन्या पाठशाला,
खानकी ज़िला गुजरांवाला।

—:o:—

वर्रों की आवश्यकता

श्री मद्दयानन्द अनाथालय अजमेर में इस समय ६ विवाह योग्य कन्यायें हैं। जो महाशय गुणकर्मानुसार वर्ण मानते हुए सम्बन्ध करना चाहें वे ।) के टिकट भेजकर निम्नलिखित पते से शादी फ़ार्म मगावें और फिर उन को हिन्दी भाषा में भरकर कार्यालय में भिजवावें।

नोट—आवेदन पत्र ता० ३१ जुलाई १९१६ ई० तक आजाने चाहियें।

निवेदक
गुलराज गोपाल गुप्त
मन्त्री
श्री मद्दयानन्द अनाथालय अजमेर।

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

हमारी शिक्षा हमारे हाथों में।

संसार भर का परीक्षण-सिद्ध सिद्धान्त है कि जाति की शिक्षा जाति के हाथों में होनी चाहिए। भारतवासी इस सिद्धान्त को भूल रहे हैं, और भूल का फल पारहे हैं। उदाहरणों की कमी नहीं है। जो भारतवासी होने का अभिमान रखते हैं—और जो भारत के लिए स्वाधीनता का दिन देखना चाहते हैं—वे अपनी सन्तान के शरीर और बुद्धि को उनके हाथों बेचने के लिए उद्यत रहते हैं, जिन्हें वे धर्म तथा जाति के लिए हितकारक नहीं समझते। जाति की सन्तान ही भाविनी जाति है। जिस भाविनी जाति की वैरोक उन्नति के लिए भारतवासी यत्न करते हैं—उसी को अपने हाथों परकीय बेड़ियों में जकड़ देते हैं। जिस वृक्ष की शाखाओं का भयानक रूप देख कर हम रोते चिल्लाते हैं, उसी के मूल में निरन्तर अपनी प्यारी सन्तान को पानी की भांती सींच रहे हैं। क्या ये हमारी बुद्धिमत्ता के सबूत हैं?

हमारे बड़े २ समाजनेताओं से लेकर साधारण समझदार सज्जनों के जीवन में एक परस्पर विरोध मिलता है। एक पत्र के सम्पादक या कांग्रेस के नेता महाशय से पूछिए कि "महाराज! भारतवर्ष की शिक्षा के विषय में आपकी क्या राय है?" आपके सामने शंकाओं के ढेर लग जायंगे। आपको बताया जायगा कि भारतवर्ष की शिक्षा की नौका भंवर में है; शिक्षा का शासन सरकार के हाथ में है, जिसका शिक्षा से एक मात्र उद्देश्य शिक्षा देना ही नहीं है; हमारे यहां स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी है, विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना सर्वथा अस्वाभाविक और हानिकारक है; हमारे सरकारी स्कूलों में शिक्षालयों के मकानों की विद्यार्थियों की अपेक्षा अधिक खबर रखी जाती है; जो विद्यार्थी एन्ट्रेंस में या कालेज में परीक्षा के लिए बैठते हैं, उनमें से बहुत कम पास होते हैं। इस प्रकार की बीसियों आशंकाओं का दफ्तर आपके सामने खुल जायगा। सुनने वाला समझेगा कि हमारे सम्पादक सज्जन तथा नेता महाशय शिक्षा के बड़े भारी आलोचक हैं। इन्होंने शिक्षा पर बड़ा विचार किया है—अवश्य ही अपनी सन्तान को किसी प्रकार स्वाधीन जातीय शिक्षा दिलाने का यत्न कर रहे होंगे। यह सोच कर पूछिए कि 'महोदय! आपके बालक किस जातीय शिक्षणालय में शिक्षा पाते हैं' तो हमारा दावा है कि सौ में से नब्बे स्थान पर आपको पता लगेगा कि सम्पादक या नेता महाशय ने देशी शिक्षणालयों का प्रबन्ध ठीक न देखकर किसी योरपियन स्कूल में बालक को दाख़िल करा दिया है ताकि योरपियन झल वायु में रहकर वह पक्का 'भारतवासी' बन जाय और जो कसर रह जाय तो ठीक ठाक कर 'योरपियन' अध्यापक उसे गोलमाल अंग्रेज़ बना दें। पूछने पर कहा जायगा कि 'साहिब क्या करे, नेटिव स्कूलों में Efficiancy नहीं होती और न ही बड़ी नौकरी के मिलने की आशा रहती है। क्या किया जाय, हम योरपियन नहीं बने, तो बच्चा योरपियन स्कूल में पढ़कर आधा योरपियन तो बन ही जायगा।" जिन लोगों की इतनी हैसीयत नहीं कि बच्चों को योरपियन स्कूल में दाख़िल करा सकें, वे बेचारे स्वर्ग का भोजन न पाकर बचे खुचे बर्तन चुनने पर ही सन्तोष करते हैं। योरपियन स्कूल न सही तो मिशनरी स्कूल ही सही। लड़का मिशन स्कूल में सुशिक्षित हो जायगा और कन्या को भी educated करना है। देशी पाठशालाओं में लड़कियों को ठीक culture नहीं मिलती, उन्हें किसी कानवेन्ट में भेज देना ही ठीक है। बेटी कानवेण्ड में पढ़कर बेटी रहेगी या मिस बन जायगी, यह चिन्ता कभी पिता के दिमाग़ को नहीं खुजलाती।

इस प्रकार की सब बातें हमारी जाति की पतित दशा को सूचित करती हैं। जिस बात को हम कल्पना में मानते हैं उसी को कार्य में परिणत नहीं करना चाहते। जब विश्वासों को कार्य में परिणत करने का समय आता है तो कई लोग कार्य की कठिनता से डर जाते हैं और अन्य लोग आत्मविश्वास के अभाव से घबरा जाते हैं। शिक्षा का प्रश्न सारे देश के विचारकों को विचलित कर रहा है। नित्य नये उदाहरण इस सिद्धान्त की पुष्टि करते हुए दृष्टि गोचर होते हैं कि जाति की शिक्षा जातीय हाथों में ही होनी चाहिए। हमारी आंखें फिर भी नहीं खुलती। लोगों की आंखें खोलने की बड़ी आवश्यकता है।

प्रतिदिन ऐसी घटनायें प्रत्यक्ष में आती हैं जो भारतवासियों को जगाने के लिए पर्याप्त हों, यदि भारतवासी आंख कान मूंदकर न बैठे हों। अभी हमें पंजाब का वह उदाहरण भूला नहीं है, जिस में कई हिन्दू कन्याओं ने ईसाई धर्म ग्रहण करने के निमित्त पर बार छोड़ना भी कबूल कर लिया था। आज हम यहां एक नई घटना सहयोगी कलकत्ता समाचार के शब्दों में उद्धृत करते हैं।

'मद्रास प्रान्त की एक ब्राह्मण कुमारी ने पादड़ी स्कूल में शिक्षा पायी थी। आज वह पन्द्रह वर्ष की है। कहती है मैं ईसाइन हो जाऊंगी। अब तञ्जोर के हिन्दुओं के कान खड़े हुए हैं। सार्वजनिक सभा करनेवाले हैं। हम पूछते हैं इस अग्निपरीक्षा की ज़रूरत भी क्या है। पन्द्रह वर्ष तक अविवाहिता रखकर ईसाइयों के साथ शिक्षा-प्राप्ति हुई। अब युवती कहे, कि मैं तो ईसाइन बनूंगी। मुझे हिन्दू धर्म्म का कुछ ज्ञान नहीं, तो इसका दोष युवती पर भी नहीं और सुअवसर से लाभ उठाने वाले पादड़ियों पर भी नहीं दोषी वह हैं, जो बिना समझे ही पुड़िया के चमकते हुए रंग को देख कर उसका मुंह ताकते हैं। हिन्दुओ बहुत होचुक अब सचेत हो।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सहयोगियों से बात चीत

महीने ही बीत गये—सद्धर्म्म-प्रचारक ने अपने सहयोगियों से प्रेमालाप नहीं किया। कभी अवसर ही नहीं मिला। जब कभी कर्त्तव्य-वश प्रचारक को किसी सहयोगी से थोड़ा सा आलाप करना भी पड़ा—तो रूखा सूखा। जिस से सहयोगी का दिल भी थोड़ा सा जला—और उस ने प्रचारक का भी जी जलाया। प्रेमालाप का कभी अवसर ही न आया। वह जीवन, जीवन नहीं जिस की स्वाभाविक रगड़ को प्रेमालाप का तेल कम नहीं करता। गुण दोष विवेचन अच्छा काम है—परन्तु जिसे केवल दोषों की ही चर्चा करनी पड़े, उससे बढ़कर अभागा व्यक्ति कोई नहीं। आज हमें ध्यान आया—कि चलें, सहयोगियों से थोड़ा सा प्रेमालाप करलें। यदि उनमें से कोई बन्धु किसी विशेष बात से नाराज़ हो गया हो तो उसे दो मीठी बातें कहकर प्रसन्न करें और समझायें 'भाई! सार्वजनिक विषयों पर जो नोक झोंक होती है, उसका हृदय पर इतना प्रभाव नहीं पड़ने देना चाहिये, कि वह व्यक्तिगत विद्वेष के रूप में परिणत हो जाय।" दूसरी ओर जो बन्धु हमें सर्वथा भूलगये हों उन्हें अपनी याद भी करादें। इसी लिये आज लेखनी उठाकर बैठे हैं।

× × × × × ×

बरसात के दिन हैं। देवयोग से आकाश से मेघ उड़जाते हैं। चारों दिशायें खिलजाती हैं—और उन में तमतमाती धूप चमकने लगती है। देखते देखते, अकस्मात् दक्षिण दिशा में काली २ घटा उठती है—दूरसे ही गर्जता हुआ बादल चला आ रहा है। पास आया और सूर्य के मण्डल को दबा बैठा। सूर्य का वह गौरव थोड़ी देर के लिये लुप्त हो गया। बादल बरस कर ज़रा हलका हुआ कि सूर्यदेवता की पैनी किरणों ने छिन्न भिन्न कर के उड़ादिया। फिर भगवन् मरीचिमाली का किरणजाल सब ओर दौरा लगाने लगा यही इन्द्रदेव युद्ध है। इस नैत्यिक युद्ध को देखकर अनुमान होता है कि सूर्य और मेघ का भयंकर विद्वेष होगा। इन का कभी मेल नहीं हो सकता। किन्तु जिसे ऐसा सन्देह हो, वह जाकर महासमुद्र से पूछे जिस की छाती पर सूर्य की किरणें ही मेघों को जन्म देती हैं। दोनों का युद्ध हो परन्तु दोनों जगत् के उपकारक हैं, दोनों ही परोपकार व्रत के व्रती है। जगत् के सामने दोनों का युद्ध होता है—निजूतौर पर सूर्य मेघ का सहायक होता है। प्रकृति की यह रोज़ की घटना हमें क्या सिखाती है? यदि तुम्हारा जीवन समाज के हित के लिये है, और तुम एक दूसरे से मतभेद होने के कारण झगड़ भी पड़ो तो तुम्हारे निजू सम्बन्धों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ना चाहिये। तुम समाज हित से ही सब काम करते हो—इस बात का सबूत यही है कि तुम्हारा सामाजिक मतभेद व्यक्तिगत विशेष के रूप में परिणत न हो।

× + × × × ×

प्रचारक आज केवल उपदेश देने ही खड़ा नहीं हुआ। 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' पर उपदेश करना बहुत सहल कहा जाता है—परन्तु जो बहुत सहल है, वह पर-उपदेश नहीं, केवल आत्मज्ञ का प्रलापमात्र है। उपदेश—सच्चा उपदेश—देना संसार में सब से कठिन कार्य है। इस समय प्रचारक उस कठिन कार्य को करने के लिये उद्यत नहीं हुआ। उस की ऐसा करने की इच्छा है और न अवसर है। और न ही वह दावे के साथ कह सकता है, कि उसने कभी पब्लिक झगड़े को निजूझगड़े में परिणत नहीं किया, किन्तु हां इतना वह अवश्य कह सकता है। कि यदि उसने कभी ऐसी भूल की भी है तो शीघ्रही उस का संशोधन करने का यत्न किया है, और उसे दिल से बुरा समझा है।

× × × × × ×

सहयोगियों से हमारा सप्रेम निवेदन है कि किसी भी पत्र-समुदाय की प्रतिष्ठा का एक मात्र कारण उसकी अपनी शैली है। जो पत्र समुदाय अपने गौरव को नहीं रख सकता, वह कहीं भी प्रतिष्ठा नहीं पा सकता। गौरव रखने का यही उपाय है कि हम जो राय दें, तोल कर दें। समाजहित के प्रश्न को समाज सम्बन्धी समझें और व्यक्तिगत विद्वेषों को बीच में न आने दें।

जो पत्र समुदाय अपने जातीय कर्तव्य को व्यक्तिगत राग द्वेष से जुदा नहीं कर सकता, वह गौरव और प्रतिष्ठा खोदेता है—उसे बुद्धिमान् लोग कभी प्रतिष्ठित पत्र-श्रेणी में नहीं रखते! दौर्भाग्य से, हम लोग अपनी छाती पर हाथ रख कर नहीं कह सकते कि हम इस नियम का पालन करते हैं। यदि हम दूसरे पत्र की राजनीतिक नीति से सहमत नहीं तो उसके दादे पड़दादे तक की ख़बर लाने की आवश्यकता समझते हैं। यदि हम किसी के धार्मिक विचारों को समाज के लिये अहितकारक समझते हैं तो उसके पुत्र पुत्री और खान्दान पर चोटें लगाना युक्ति युक्त मानते हैं। और दूसरी ओर यदि हम किसी से कोई निजू शिकायत हो गई तो फिर उसकी नीति रीति सब खण्डनीय हो जाती है। दूसरे के घर के मैले कपड़ों को समाज के सामने छांटना और सामाजिक क्षेत्र में उत्पन्न हुए मैल को दूसरे के घर के घड़ों में घोलना हमारे आचार शास्त्र में प्रतिषिद्ध नहीं है। यह संशोधन योग्य दशा है। क्या हम लोग इस पर विचार न करेंगे?

× × × × ×

पत्र-बन्धुओं से एक और भी निवेदन है। आर्य-भाषा के पत्रों में जो झगड़े होते हैं, उनमें से आधों से अधिक का कारण 'परिवर्तन सूचि' ही होती है। उस पत्र ने मेरे साथ परिवर्तन नहीं किया? क्यों नहीं किया? यह एक झगड़ा है। मैं दैनिक हूं—मैं दूसरे पत्र से परिवर्तन क्यों करूं। हमारा आकार प्रकार सब से बढ़िया है, परिवर्तन में हमारी गौरव हानि है। ऐसी युक्तियों के आधार पर ही कई पत्र अन्य पत्रों से परिवर्तन बन्द कर देते हैं। किन्तु केवल ये दो ही कारण परिवर्तन बन्द करने के नहीं होते। पत्र की आर्थिक अवस्था भी कारण हो सकती है। जो पत्र पहले दो कारणों से ही परिवर्तन बन्द करते हैं, वे अवश्य दोषी हैं। इन कारणों से परिवर्तन बन्द करना

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऊंची सम्पादकीय शिष्टता के विरुद्ध हैं। अन्य भाषाओं में केवल दैनिकता या रंगीन चित्र परिवर्तन में बाधक नहीं होते। दृष्टान्त के लिये हमारे यहीं लीजिए-प्रचारक के परिवर्तन में अंग्रेज़ी तथा उर्दू के दैनिक पत्र तो आते हैं किन्तु भाषा के केवल दैनिक कलकत्ता समाचार के ही दर्शन होते हैं। यदि हमारे सम्पादक गण सम्पादकीय शिष्टता पर अधिक ध्यान दें-तो शिकायत ही न हो।

× × × × ×

किन्तु जिन से परिवर्तन बन्द हो, उन्हें भी एक बात पर विचार करना चाहिये। भाषा के पत्रों की आर्थिक दशा अच्छी नहीं। इसी कारण कभी २ परिवर्तन बन्द करने पड़ते हैं। प्रचारक को आर्थिक विचार से ही दो तीन बार कई पत्रों से परिवर्तन रोकना पड़ा। इस से उन पत्रों को बहुत खटका। किन्तु हमें फिर भी क्षमा ही मांगनी पड़ी। जिस पत्र ने हम से परिवर्तन नहीं किया, यदि हम उसकी कठिनाइयों पर विचार करें तो शायद शिकायत न हो।

अभी निवेदन समाप्त नहीं हुआ।

—:o:—

मैं कहूं तो ठीक, तू कहे तो झूठ।

कई व्यक्तियों का स्वभाव होता है कि उनकी राय में यदि वे एक बात कहें तो ठीक होजाती है, और यदि उसी बात को कोई अन्य सज्जन कहदे तो, वह झूठ समझी जाती है। वे कहें कि दो और दो चार हैं तो बिल्कुल सत्य है, परन्तु यदि दूसरा कोई इसी बात को दोहरादे तो 'हरे' 'हरे' वह कैसा झूठ हो जाता है। संसार के आधे मतभेद इसी निर्बलता के परिणाम होते हैं। इस प्रकार की कुरुचि जिन व्यक्तियों को आघेरती है, उनका अपना जीवन तो दूभर हो ही जाता है वे दूसरों को भी सुख से नहीं बैठने देना चाहते। हमारे 'कानपुर के एक प्रियसहयोगी' को कुछ रोज़ से ऐसी ही कुरुचि का रोग लगगया है। यदि समाज संशोधन की कोई बात वह कहे तो 'वाह' 'वाह' दूसरे कह बैठें तो पसन्द नहीं आती। यदि वह जातीयशिक्षा का समर्थन करे या सरकारी शिक्षा की बड़ी आलोचना करे तो अच्छा २ सत्य, दूसरा करे तो हठ दुराग्रह और मिथ्याज्ञान। हम अपने सहयोगी को एक बात सुझाते हैं। क्यों नहीं वह एक प्रस्ताव उठाता कि भारतवर्ष की सब सभा समाजें एक दम बन्द करदी जायं। कांग्रेस आदि सभाएं तो क्रीड आदि के कारण निकम्मी हैं, आर्यसमाज आदि समाजों के कार्य में उसे अज्ञता की बू आती है-और यों भी सभा समाजें अन्यथा सिद्ध हैं क्योंकि हमारा सहयोगी इन सब कामों को खूब भली प्रकार कर लेगा फिर और किसी की क्या आवश्यकता है। बात यह है कि जिन बातों को सहयोगी एक प्रकार से कहता है, इन्हीं को कई पत्र तथा समाजें भी कह डालती हैं और कार्य में भी परिणत करदेती हैं यह बड़ी बुरी बात है। इस में सहयोगी के महत्व में कुछ न्यूनता सी आती दीखती है।

टके सेर भाजी, टके सेर खाजा।

'टके सेर है टके सेर' 'लेलो जिसने लेनी हो' 'चाहो तो बिना टके भी मिल सकती है' क्या चाहिए?

क्या आप घर बैठे, बिना परीक्षा दिये दर्शनशास्त्री बनना चाहते हैं? बस और कुछ नहीं चाहिये। काशी के महामण्डल को सूचना देदीजिये कि आप भारत में रहते हैं और उम्मेदवार हैं। या इतनी सूचना देने की भी आवश्यकता नहीं-केवल किसी पत्र में नाम प्रसिद्ध कर दीजिये। चमकती दमकती उपाधि आजायगी।

क्या आप को व्याख्यान वाचस्पति बनने की अभिलाषा है? बस महामण्डल के किसी गुरुमहाराज के चरणों में सिर नवाइये और झटपट उपाधि पाइये, और धोये के धोये घर वापिस जाइए। क्या आप भारत भूषण बनना चाहते हैं? बस, महामण्डल के संचालकों की ज़रा खुशामद कीजिये, खुशामद से काम न चले तो महामण्डल के संचालकों को दो एक ज़बर्दस्त धमकियां दीजिए। घर बैठे बिठाए भारतभूषण बन जाइएगा। यदि पीछे जी उकता जावे तो बेशक लौटा दीजिए क्योंकि महामण्डल को उपाधि लौटाने में शर्म नहीं है।

श्रीमालवीय जी ने और पं० दीनदयालु शर्मा ने महामण्डल की भारतभूषण उपाधि वापिस करदी है-और धन्यवाद सहित वापिस करदी है।

पत्रों की स्वाधीनता

मिसेज़ एनीबेसेण्ट के पत्र से मद्रास-सरकार ने ज़मानत मांगी। इस पर श्रीमती जी ने बड़ा कोलाहल मचाया है। प्रैस की स्वाधीनता का प्रश्न एक बार फिर सामने आगया है। हमारी सम्मति है कि बार २ इस प्रश्न को उठाना फ़ज़ूल है, जो पत्र स्वाधीनता पाया करते हैं, वे केवल लेख द्वारा हलचल मचाने से नहीं पा सकते। यदि भारतीय पत्रों के कुछ सम्पादक आत्मा को दृढ़ करके प्रतिज्ञा करलें कि चाहे कुछ हो, वे आत्मा के विरुद्ध एक भी शब्द न लिखेंगे, तो थोड़े ही दिनों में भारतीय प्रैस की ज़ंजीरें बहुत कुछ कट सकते हैं।

—:o:—

श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

भूल सुधार

सद्धर्मप्रचारक के गत दो अंकों में एक रिपोर्टरमहाशय का लिखा हुआ शास्त्रार्थ-समाचार छपा है। समाचार वस्तुतः बहुत परिपूर्ण है-और रिपोर्टर की सावधानता को सूचित करता है। तो भी बीच में दो एक स्खलित रहगए हैं- जिन्हें शोधदेना आवश्यक प्रतीत होता है।

[१] श्री पं० गिरिधर शर्मा जी ने अपने भाषण में—

'ये अग्निदग्धा ये अनग्निदग्धाः। मध्ये दिवः स्वधया मादयन्ते'॥

इत्यादि मन्त्र भी उद्धृत किया था। वह रहगया है।

[२] मेरे भाषणों में कई स्थानों पर ऐसे मुहाविरे या वाक्य आगये है, जो मैंने नहीं कहे थे। जैसे मेरे तीसरे भाषण में 'पेट में चूहे' तथा 'तोंद तर्पण' आदि शब्द मैंने नहीं कहे थे।

सामान्यतया रिपोर्ट बिल्कुल ठीक छपी है।

इन्द्र

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रेल की दुर्घटनायें

लों में प्रायः दुर्घटनायें होती रहती हैं—
र उन दुर्घटनाओं की रंगस्थली प्रायः
ाना कम्पार्टमेण्ट ही होता है। ऐसी
टनाओं में निन्यानबे फीसदी उस
ास्था में होती है, जब ज़नाना डब्बे
कोई अकेली अबला यात्रा कर र.ी
, रेलवे वालों का ऐसी दुर्घटनायें
कने के लिए जो कर्त्तव्य हैं—उसे हम
समय छोड़ देते हैं। क्या दुर्घटना-
के लिए मुसाफिर भी कुछ उत्तरदाता
या नहीं? प्रश्न यह है कि ज़नाने
पार्टमेन्ट में अकेली स्त्रियों को क्यों
ठाया जाता है? यदि स्त्री के साथ पुरुष
यात्रा रहा हो, तब तो वह साथी
रदाता होना चाहिए। उस ने क्यों
ली अबला को ज़नाने कमरे में बिठाया?
र अपने साथ साधारण कम्पार्टमेण्ट में
ं नहीं बिठाया? अथवा जब तक कोई
री संगिनी न हो तब तक साथ
मर्दाना सवारी भी ज़नाना कम्पार्ट
ट में बैठ सकती है। इन सब साधनों
होते हुए अबला को कठिनाई में डाल-
के लिए साथ का साथी ही उत्तरदाता
झना चाहिये। यदि स्त्री अकेली ही
र कर रही हो, तो उस का भी और
नी न होने पर मर्दाना कम्पार्टमेण्ट
बैठ जाना अधिक सुरक्षित होता है।
में रुकावट होती है केवल हमारी
ति में महिलाओं की अनुचित झूठी
जा। जहां लज्जा चाहिए, वहां
जा ठीक है। किन्तु जहां यात्रा करनी
वहां झूठी लज्जा में फंस कर आपत्ति
निमन्त्रणदेना कहां की बुद्धिमत्ता है।

दिल्ली के लड्डू

अमृत बाज़ार पत्रिका में सरकारी
ामक सभा के एक नए सभासद् ने
ही लिखा है कि उन नियामक सभा-
की सभासदी दिल्ली के लड्डू के समान
—उसे खाओ तो पछताओ, न खाओ
छताओ। बुद्धिमत्ता यही है कि न
ने पर पछताना छोड़ दो ताकि खाकर
छताना पड़े। यदि हम अपने जीवनों
विचार करें तो प्रतीत होगा कि हम
तिहाई ऐसे कार्यों को ही करते हैं,
न के विषय में अन्तिम राय हमें यही
पड़ती है, कि ये दिल्ली के लड्डू
'जानामि धर्म्मं न च मे प्रवृत्तिः जाना-
र्म्मन्न च मे निवृत्तिः' जानते बूझते
भी न जाने से किस आकर्षण में खिचे
कार्यों में प्रवृत्ति कर बैठते हैं। हृदय
ता भी है—और भागता भी है। जानते
क इस रेशमी पर्दे की सुनहरी झालरों
छे कांटा लगा हुआ है, किन्तु वह की
नहीं सकते, उस पर्दे की ओर बढ़ते चले
जाते हैं। भारत वर्ष का आधा सामाजिक
जीवन ऐसा ही है। जो यथार्थ में देश
सेवा है उस के दूसरी ओर कांग्रेस और
कौंसिल के चमकीले दरवाजे लगे हुए हैं,
जो नये कार्यकर्ता को झट अपनी ओर
घुमाकर माया जाल में फसादेते हैं, और
जाति सेवा का असली कार्य—क्षेत्र सूना
का सूना पड़ा रह जाता है।

आर्यसमाज के मन्दिर।

लगभग चारसाल हुए, जब आर्यसमाज
के मन्दिरों की अवस्था को सुधारने के
लिए सद्धर्मप्रचारक ने शब्द उठाया था।
उस समय हमें कई स्थानों से सन्तोष जनक
आश्वासन भी दिलाये गये थे और हमें
ज्ञात हुआ था कि हमारा कथन बिल-
कुल बहरे कानों पर नहीं पड़ा। किन्तु
जो फल अभिप्रेत थे, वे पूरी तरह न
निकल सके। अवस्था वैसी ही रही। अब
सहयोगी प्रकाश ने इसी विषय पर लेख
माला लिखकर आर्य समाजों की आंखें
खोलने का यत्न किया है। यह आश्चर्य
की बात है कि इस विषय में आर्यसमाज ने
बिल्कुल विचार शक्ति से कार्य नहीं लिया
समाज मन्दि का मुख्य कार्य भुला दिया
गया है। समाज मन्दिर आज कल
तीन भागों में विभक्त किए जा सकते है।

समाजधर्मशाला—जिस में यात्री या उप-
देशक ठहरते हैं।

समाज-कन्या-पाठशाला—जिस में दिन
भर कन्यापाठशाला लगती है।

समाजबैठक— जिन में आर्यपुरुष गप-
शप उड़ाने आबैठते हैं।

ऐसे समाज मन्दिर गिन्ती में बहुत कम
हैं, जो केवल धर्म मन्दिर का कार्य देते हैं।
धर्मशाला या पाठशाला आदि समाज के
परिशिष्ट होने चाहियें, न कि उसके स्थान
पर आजाने चाहिएं। समाज मन्दिरों पर
पाठशालाओं के धावे को देख कर ही कई
लोग कहते हैं कि समाज के प्रचार कार्य
को शिक्षा कार्य ने दबा लिया है। समाज
मन्दिर में दिनरात जूतियां घूमें—या ठहरने
वालों के हुक्के की राख के परमाणु आकाश
को पवित्र करें—यह दशा शोचनीय है—
और सुधारणीय है। समाजों के प्रधान
मन्त्रियों को इस ओर ध्यान देना चाहिए।

पञ्जाब को हाईकोर्ट

भारत सरकार की घोषणा निकल गई
कि पंजाब को युद्ध के अनन्तर हाईकोर्ट
मिल जायगा। जो लोग केवल शब्द के उ-
पासक हैं—वे कहेंगे, बहुत कुछ मिलगया।
किन्तु जो लोग शब्द की अपेक्षा सार की
ओर अधिक ध्यान देते हैं वे कहेंगे कि
नया कुछ नहीं मिला। भेद शब्द में है,
अर्थ में नहीं। चीफ़कोर्ट और हाईकोर्ट
में एक ही आत्मा काम कर रही है फिर
नाम कुछ ही हो।

हिन्दू सभा का कार्य

भारतवर्षीय हिन्दू सभा के मन्त्री म०
देवरतन की एक चिट्ठी समाचार पत्रों में
छपी है, जिसमें वे हिन्दूसभा के भावी सा
हित्य सम्बन्धी कार्य का प्रोग्राम बनाना
चाहते हैं। जो भावी कार्य सभा के सामने
बताया गया है, वह बड़ा भारी है। मन्त्री
महोदय के प्रस्ताव के अनुसार हिन्दूसभा
की ओर से हिन्दूमात्र के लिए मान योग्य
एक धर्म पुस्तक तय्यार होनी चाहिये,
जिसके तीन भाग होंगे। पहले भाग में
लगभग ५००० वेद मन्त्रों को अर्थ सहित
दिया जायगा। विकट प्रश्न यह उपस्थित
होता है कि वेदार्थ किस प्रणाली पर किया
जाय। वेदार्थ करने की वास्तवरीति ढूंढ-
ने का कार्य बड़ा विषम और विकट है।
यह कार्य साधारण नहीं है। प्राच्य और
पाश्चात्य पण्डितों के मस्तक इस प्रश्न ने
घुमा दिये हैं। इस पर अभी एक मत की
कोई सम्भावना भी नहीं है। किन्तु म०
देवरतन पब्लिक को इस विषय में बिना
रास्ता दिखाये सन्तोष कैसे करते? आपने
वेद की व्याख्या करने के उपाय भी उस
छोटे से लेख में ही बता दिये हैं। म०
देवरतन जी ने वेदार्थ करने के साधनों को
जिस हलके पन से टाल दिया है-उससे
प्रतीत होता है कि उन्होंने कभी उन स-
म्मति भेदों पर अच्छी तरह विचार नहीं
किया जो इस विषय में विद्वानों के अन्दर
विद्यमान है। हिन्दूसभा के सामने जो
कार्य सहज सा रखा गया है, वह वस्तुतः
इस समय भारतवर्ष के आत्मिक जगत् का
ही नहीं संसार की धार्मिक-सृष्टि का
सब से अधिक आवश्यक और सब से वि-
षम प्रश्न है। वेद का असली भाव क्या
है और वेद की ठीक व्याख्या प्रणाली
कौनसी है? इनदो प्रश्नों के पेट में दुनिया
आजाती है। यदि हिन्दूसभा वस्तुतः
कोई कार्य करना चाहती हैं तो इस हलके
प्रकार से प्रोग्राम न बनाकर एक 'अन्वेषण-
विभाग' खोले, जिसके साथ एक बड़ा
भारतीय ग्रन्थों का पुस्तकालय हो।
भारती भाषाओं और प्राचीन संस्कृत के
कुछ विद्वानों को पूरे साधन देकर बिठा
और फिर प्राचीन साहित्य सागर के म-
थन से जो रत्न निकलें, उन्हें धीरे २
लोगों के सम्मुख रखे। केवल प्रोग्राम प्र-
काशित करने से कोई भी लाभ नहीं हो
सकता केवल समाचार पत्रों के कालम ही
काले होते हैं।

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राप्त पत्र

श्रीमान् पूजनीय सम्पादक जी नमस्ते !

सेवा में सविनय प्रार्थना है कि निम्न-लिखित लेख को जिसमें कि मैंने अपने मानसिक क्षेत्र में उत्पन्न हुई शंका को लिखित किया है अपने अमूल्य पत्र सद्धर्म-प्रचारक में स्थान देकर कृतार्थ कीजिए और हो सके तो समुचित उत्तर द्वारा मेरे इन के भावों को बदल दीजिए। कृपाकर इसमें से किसी एक बात को पुष्ट करते हुए यह ध्यान में रखें कि प्रश्नकर्ता वैदिक धर्मानुयायी होते हुए भी संस्कृत भाषा का प्रेमी नहीं है।

आपका दास
बसन्तलाल
कनखल

(आशा है कि इस पत्र की शंका का समाधान उपाध्यक्ष रामदेव जी कर देंगे)
सम्पादक

संस्कृत जानने वाले मन्त्रों का पाठ क्यों करते हैं ?

इस वर्ष गुरुकुलोत्सव पर प्रोफ़ेसर रामदेव जी ने हवन विषय पर भाषण करते हुए प्रसङ्गवश इस प्रश्न का कि "क्या हिन्दुओं में मुसलमानों की तरह जातीय उपासना है" उत्तर यह दिया था कि स्वस्ति वाचन शान्ति पाठ, जिसको कि पाठ उच्च स्वर सबको करना चाहिए, हमारी जातीय उपासना है और उन्होंने यह भी कहा कि यदि आर्य्य पुरुष इन मंत्रों का प्रति दिन विचार पूर्वक पाठ किया करते तो सम्भव था और भी उन्नति करते।

ठीक है एक प्रश्न उठता है कि क्या आर्य्य-समाज मन्त्रों को विधि पूर्वक उच्चारण करने में कोई और शक्ति मानता है यदि हां; तो सनातनी पण्डितों का कथन कि सन्ध्यादि वैदिक कर्मों में मन्त्रों का पाठ, चाहे उनके अर्थ भी नहीं जाने गये हों, परलोक के लिए पुण्य जनक होता है अथवा तान्त्रिकों के मन्त्रों से इष्ट सिद्धि होने वाले सिद्धान्तों को मानना पड़ेगा। यदि नहीं तो—क्या एक विदेश के मनुष्य जिसने अंग्रेजी या कोई और भाषा द्वारा जो उसे आती हो अपने सिद्धान्तों को वैदिक धर्मानुयायी बनाकर ईश्वर की प्रार्थना से कुछ लाभ प्राप्त करने की इच्छा करता हुआ, संस्कृत भाषा में वैदिक मन्त्रों के अर्थ समझने की योग्यता प्राप्त करना अपनी शक्ति के बाहिर समझ कर संध्या व हवन मंत्रों के अर्थों को अपनी मातृ-भाषा में लिख कर और विचार पूर्वक प्रति दिन ईश्वरोपासना करता है। धर्मशास्त्रानुसार क्या वह यह कहलाने का अधिकारी है? "वह हमेशा नित्यकर्म करता है हवन करता है और गायत्री का भी जाप करता है"। यदि नहीं तो क्यों जब कि ईश्वरीय ज्ञान जिसको किसी भारत निवासी ने संस्कृत भाषा में प्राप्त किया हो एक विदेशी उसी ज्ञान को अपनी मातृभाषा इंग्लिश, फ्रेंच आदि किसी ज़बान में सीखता है। यदि हां तो आर्य्य-समाज क्यों ६ वर्ष की आयु के बच्चे का यज्ञोपवीत संस्कार कराते हुए उसके सामने वैदिक मन्त्रों का पाठ करता है (जैसा कि गुरुकुल कांगड़ी आदि सब जगहों में प्रतिवर्ष किया जाता है) जिनमें से एक भी मन्त्र का यथार्थ ज्ञान उन बच्चों तथा उपस्थित जन संख्या में से ९० फी सदी को भी न होगा। अति प्राचीन काल में जब कि जन संस्कृत ही बोलते थे मन्त्रों की संस्कृत समझाने के लिए किसी और भाषा की आवश्यकता नहीं थी। आज कल जब कि हम वैदिक संस्कृत को नहीं समझते क्यों न उन मन्त्रों के भावों को हिन्दी "अपनी मातृ भाषा" में लिख कर लाभ उठावें और वेद के मन्त्रों को विना अर्थ ज्ञान किए हुए तोते की तरह बार२ दोहराना बन्द कर उनका हिन्दी में ही पाठ कर लिया करें। इससे जो मेरी अल्प बुद्धि के अनुसार लाभ होंगे वह यह हैं—(१) प्रथम तो संस्कृत भाषा न जान सकने के कारण ही कोई भी मनुष्य वैदिक कर्म संध्याग्निहोत्रादि से विमुख न हो सकेगा क्योंकि वह उन्हीं भावों से परिपूर्ण पद्यमय मंत्रों का निर्माण अपनी भाषा में कर लेगा। जैसे कि पारसी लोग अभी तक हवन करते हैं और संस्कृत नहीं जानते। (२) वैदिक ग्रन्थों को अपनी मातृ-भाषा हिन्दी में अनुवादित करके यदि हम पढ़ेंगे तो विद्यार्थियों की मानसिक शक्ति भाषा ज्ञान की बड़ी कठिनाई से बचकर अपनी सारी शक्ति भाव समझने से ही लग जावेगी। (३) आर्य्य भाषा (हिन्दी) का प्रचार और भी अधिक होगा। और इसका गौरव अधिक विस्तृत होगा क्योंकि जब इसमें वेदों जैसे गम्भीर विषय भी पढ़ाये जाया करेंगे। (४) वैदिक और दार्शनिक सिद्धान्तों को जानने के लिए लोगों की रुचि अधिक होगी क्योंकि वह संस्कृत के व्यर्थ शब्द जाल में अपना समय नष्ट न कर के भी ईश्वरीय वैदिक ज्ञान को हिन्दी में ही जान सका करेंगे। (५) भाषा की क्लिष्टता के कारण वेदों के प्रचार में जो रुकावटें हैं वह दूर होकर वेदों का प्रचार और भी अधिक हो जावेगा इत्यादि।

यदि इसका उत्तर यह दिया जावे कि जो ग्रंथ जिस भाषा में लिखा गया हो दूसरी भाषा में अनुवादित करने पर उसका भाव ठीक नहीं प्रगट किया सकता। यह ठीक हैं किन्तु यदि इतनी बात से ज़रा सी न्यूनता रह भी जाये तो वह त्रुटि भाषा ज्ञान करने के लिए अपेक्षित समय के बच जाने के लाभ की अपेक्षा कुछ भी नहीं है, दूसरे यदि अनुवादित ग्रन्थों के पढ़ने से वह योग्यता नहीं आती तो क्यों हिन्दी भाषा के पक्षपाती इस बात पर बल देते हैं कि हमको सब कुछ, यथा साइन्स आदि, हिन्दी ही में पढ़ाया जावे जब कि वह हिन्दी में पढ़ कर उन विषयों की इतनी योग्यता नहीं प्राप्त कर सकते जैसी कि अंग्रेज़ी में पढ़ कर प्राप्त कर सकते हैं—संस्कृत भाषा हमारे पूर्वजों की मातृभाषा होने पर भी हमारे लिए उतनी ही मुश्किल है जैसी कि अंग्रेज़ी अथवा और कोई भाषा—अतः

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जिन कठिनाइयों को सामने रखकर, भाषा के पक्षपाती अंग्रेज़ी में पढ़ाये जाने वाले विषयों को हिन्दी में पढ़ाया जाना चाहते हैं, ठीक वैसे ही संस्कृत के पाठ्य विषयों को भी हिन्दी ही में पढ़ाया जाने के लिए प्रयत्न करें; यही मेरा आन्तरिक भाव है। आशा है कि आप इस पर विचार जो ठीक हो उत्तर द्वारा मुझको सत्य ज्ञान देंगे—इतिशम्

—०—

शङ्का समाधान

प्रचारक के २५ वैशाख सं० १९७३ पृष्ठ १३ पर लालचन्द मेहरा (ग्राहक नम्बर २८२) महाशय के मुक्ति विषय में तीन प्रश्न छपे हैं जिनका समाधान कई सप्ताह व्यतीत होने पर भी प्रचारक ने न जाने किन कारणों से नहीं दिया। प्रचारक के प्रश्नों का समाधान भास्कर पत्र में श्री पण्डित भूमित्र जी ने किया है। समाधान में शब्द तो बहुत हैं परन्तु प्रश्नकर्ता के आघात से आर्य्य मन्तव्य के मर्म की रक्षा पूर्णतया नहीं हुई जो उत्तरदाता का मुख्य कर्तव्य था। उत्तरदाता को योग्य था कि पूर्व प्रश्नों के मार्मिक भावों को देखते, और यह भी देखना आवश्यक था कि प्रश्नकर्ता का जो भाव है वह स्पष्ट हुआ वा नहीं यदि नहीं हुआ तो उत्तर में स्वयं खोलना था इत्यादि। विषयों के रह जाने से उत्तर प्रश्न कर्ता को सन्तोष-प्रद हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता। अतः यह विषय स्पष्ट होने के अर्थ इस विषय पर थोड़े विचार की आवश्यकता जान कुछ कहने का साहस करते हैं। प्रश्नकर्ता महाशय ने अपने प्रश्नों को तीन संख्याओं में रक्खा है इससे यह कुछ अच्छा है कि प्रश्नों को अविकल रूप से उद्धृत कर पृथक २ उत्तर हो इस से समझने वालों को सुगमता होगी। प्रश्न नम्बर:—

(१) जब यह सिद्धान्त है कि मुक्त जीव बहुत कल्प पर्य्यन्त आनन्द भोगता है और फिर आदि सृष्टि में जन्म लेता है, तो जो जीव मध्य सृष्टि में मुक्त होते हैं और जिनका कल्प का समय महाप्रलय के मध्य में उक्त सिद्धान्तानुसार व्यतीत होता है तो वह जीव महाप्रलय का बाकी समय किस अवस्था में व्यतीत करता है? क्या उस समय में जीव का प्रकृति से सम्बन्ध रहता है? अगर रहता है तो विना शरीर के या शरीर से। अगर शरीर के द्वारा सम्बन्ध होता है तो वह कौनसा शरीर होता है?

इस प्रश्न पर विचार करने के पूर्व यह विचार कर देखना है कि इस प्रश्न में प्रश्नकर्ता ने अपने सर्व भावों को स्पष्ट कर दिया वा कुछ शेष हैं। प्रश्नकर्ता का प्रश्न श्री स्वामी जी के इस सिद्धान्त पर है कि श्री स्वामी जी ने कहा है कि जीव कल्पान्त में मुक्ति का सुख भोग कर जन्म लेता है और साथ ही में यह भी कहा है कि मुक्त जीव अमैथुनिक सृष्टि में जो सृष्टि के आदि में होती है जन्म लेते हैं।

श्री स्वामी जी महाराज के इस सिद्धान्त ने इस प्रश्न की उत्पत्ति प्रश्नकर्ता महाशय के अन्तःकरण में की है। प्रश्नकर्ता महाशय को इस कथन में यह शंका हुई कि यदि किसी व्यक्ति का मुक्ति काल महाप्रलय के मध्य में समाप्त हो तो वह जन्म किस प्रकार लेगा क्योंकि न तो वहां रचना का आरम्भ है और अमैथुनिक योनि है, क्या वह जीव महाप्रलय के अर्द्ध काल पर्यन्त विना शरीर ही रहेगा; परन्तु प्रश्नकर्ता महाशय यदि थोड़ा विचार और स्वयं करते तो यह प्रश्न ही उपस्थित न होता।

श्री स्वामी जी महाराज ने उक्त दोनों बात तो अवश्य कही हैं परन्तु जन्म के लिए किसी देश विशेष को निरधारित नहीं किया जिस से यह स्पष्ट विदित होता है कि श्री स्वामी जी महाराज प्रभु की रचना का विशेष अवगाहन किए हुए थे। इसमें कोई सन्देह भी नहीं कि जगन्नियन्ता ने यह रचना इस ढंग से रची है कि इसमें उठे सन्देह विचार करने पर स्वयं निवृत्त हो जाते हैं। इस कारण ही स्वामी जी ने इस विषय से स्थान विशेष का निर्देश नहीं किया। इस शंका को जगन्नियन्ता ने स्वयं ही स्पष्ट कर दिया है। यह ब्रह्माण्ड जिस में हमारा निवास है एक ब्रह्माण्ड है, एक सूर्य्य का एक ब्रह्माण्ड होता है जिसके साथ अनेक तारागण रहते हैं। ऐसे २ कोटान् कोट ब्रह्माण्ड, प्रभु की रचना में स्थित हैं।

जैसे इस ब्रह्माण्ड की रचना देखने से यह विदित होता है कि यह रचना तारतम्यता के साथ रची गई है सब समान रूप से नहीं, यद्यपि समस्त ब्रह्माण्ड का विवेचन करना मनुष्य शक्ति से वाह्य है तथापि ऋषिगणों ने अपने परम पिता की प्रदान की हुई वेद विद्या के द्वारा स्थालीपुलाक न्याय से ज्योतिष शास्त्र के द्वारा खगोल के चित्र का कुछेक वर्णन किया है। पृथिवी से लेकर सूर्य पर्यन्त सातग्रहों का सम्बन्ध यथा क्रम है। यथा आदि में हमारे निवास का स्थान पृथिवी है। उससे कुछ बड़ा मंगल, मंगल से बुद्ध, बुद्ध से बृहस्पति, बृहस्पति से शुक्र, शुक्र से शनि, शनि से सूर्य्य यदि इसका यह क्रम न होता तो प्रत्येक की स्थिति कठिन थी, यदि सूर्य्य से एक लक्ष गुणी छोटी पृथिवी का सम्बन्ध सीधा सूर्य्य से होता तो क्या यह सूर्य्य से ही न चिपट जाती? जब यह प्रत्यक्ष है कि इन सब में न्यूनाधिकता है तो सबकी रचना और विनाश का भी एक काल नहीं है। जितने काल में अपने कार्य को करके पृथिवी के परमाणु भिन्न होंगे मंगल के उससे कुछ विशेष में होने युक्ति युक्त हैं। एवम् अन्यों को जानना जैसी दशा इन सातग्रहों की है ऐसी ही अन्य तारागणों की है, अन्य तारागण जिनका वर्णन वेदों में स्पष्ट रूप से आता है बड़े २ मान के हैं: सप्तर्षि मण्डल त्रिशंकु मण्डलादि में उनका वर्णन है। जब इसी ब्रह्माण्ड में सब के कार्य्यों में भिन्नता है तो अन्य ब्रह्माण्डों के कार्यों में भिन्नता क्यों न होगी? प्रभु की रचना में काल के सब

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भागों में रचना और विनाश का कार्य होता रहता है। कोई क्षण ऐसा नहीं जिस में किसी का विनाश और रचना न होती हो। इस नियम के अनुसार यह सन्देह स्वयं समूल नष्ट हो जाता है कि मुक्त जीव यदि महाप्रलय के मध्य में अपना कल्पान्त समाप्त करे तो कहां जन्म ले और क्या करे। जिस काल में उसका कल्प समाप्त होगा वह काल भी किसी ब्रह्माण्ड वा तारागण रचना का अवश्य ही होगा। वही उसको सृष्टि की आदि और अमैथुनिक योनि मिलेगी। यदि स्वामी जी महाराज इस विषय में कोई देश निर्धारित कर जाते तब तो यह प्रश्न वास्तव विचार करने योग्य था। इस ब्रह्माण्ड की रचना विशेष तो इसको सोदाहरण स्वयं ही निवृत्त कर रही है। यही सरलता देख श्री स्वामी जी ने इसे विशेष नहीं कहा।

द्वितीय प्रश्न (२) आदि सृष्टि में जो जीव जन्म लेते हैं क्या उन सब की ज्ञान अवस्था एकसी होती है या उनके ज्ञान में कमी-वेशी होती है। यदि कमी-वेशी होती है तो उसका क्या कारण होता है?

उत्तर—हमारे प्रश्नकर्ता महाशय को इस विषय में यह विचारना अवश्य था कि वह पूर्व ज्ञान का चित्र अपनी बुद्धि में खींचते पश्चात् प्रश्न करते। ज्ञान जीव मात्र का एक ही है उसमें न्यूनाधिकता प्रकृति के आवर्णों से होती है। जैसा जिस आत्मा पर प्रकृति का आवरण होता है उतना ही उसके ज्ञान में भेद होता है। बहुतों का ज्ञान किसी २ दशा में एक भी होता है और नहीं भी होता। जिनका मन्तव्य विचार एक से होते हैं उनके ज्ञान में भी उतनी सादृश्यता मानी जाती है। लोक में भी यह देखा जाता है कि एक ही उपाध्याय द्वारा एक ही पुस्तक को पढ़ने वाले सब विद्यार्थी एक से नहीं हों, जिन २ को प्रकृति में एकता है वह समान ज्ञान वाले भी हों सम्भव हैं, और जिन की प्रकृतियों में अन्तर है उनमें उतनाही भेद होगा। ऐसी बातों का नियम सर्वथा एकसा नहीं होता इससे यह प्रश्न भी प्रभु की लोक प्रथा के देखने से स्वयं सिद्ध हो जाता है।

तृतीय प्र०—क्या मुक्ति अवस्था में शक्ति रूप शरीर के जीव के साथ होने से जीव अपने उस ज्ञान को जिस के द्वारा उसने मुक्ति प्राप्त की है, बढ़ा नहीं सकता; अगर बढ़ा सकता है तो मुक्ति से लौटने में क्या कारण है? क्योंकि अब उस को वह नैमित्तिक कर ही जावेगा तो उस को बढ़ा कर मुक्ति की आयु को भी वह बढ़ा लेगा॥ ३॥

इस तृतीय प्रश्न के करते समय भी यह विचार करना अवश्य था कि प्रत्येक पदार्थ की सीमा अवश्य होती है सीमा कहते ही अन्तिम भाग को हैं। जब उससे परे अवकाश ही नहीं तो वृद्धि को स्थान कहां रहा, मुक्ति जीव के ज्ञान की अन्तिम सीमा है। यदि यह भी मानलें कि वह ज्ञान को बढ़ा भी ले तो बढ़ा कर क्या करेगा, मुक्ति सुखका भोग स्थान है वहां वह अवधि के पश्चात् बिना प्रभु की आज्ञा के रह नहीं सकता। सृष्टि के यावत सुख और दुःख हैं उन का यथावत् भोग द्वन्द्वों के बिना होना असम्भव है। आनन्द को आनन्द रूपसे हम तभी जान सकते हैं जब कि पूर्व दुःख का थोड़ा भोग करलें। सोने का सुख जागने वाला ही अच्छी प्रकार जान सकता है। बैठने का सुख उसी को आता है जो पूर्व मार्ग चल चुका है। सर्वदा बैठने वाले को बैठने का सुख नहीं और सर्वदा सोने वाले को सोने में सुख नहीं प्रत्युत दुःख प्रतीत होने लगता है अतः मुक्ति के सुख का आनन्द बंध से छूटने पर ही होना सम्भव है। सर्वदा एक दशा सुख रूप नहीं रहती तब तक उसका प्रतियोद्वन्द्व समक्ष में उपस्थित न हो। यदि वह जीव अपनी अवधि को बढ़ा भी ले तो अब उसको वह आनन्द रूप नहीं होगी, इससे प्रभु का यह नियम अटल ही मानना बुद्धिमत्ता है। अपनी तुच्छ बुद्धि को कुतर्कों से उसमें बंधार देना कालयापन करना है। प्रभु के नियम सर्व ही शिरोधार्य्य हैं। यह सृष्टि प्रभु ने [illegible] चार शीलों के अर्थ कौतुक रूप से र[illegible] है विद्वानों के खेलने तथा मन बहल के अर्थ यह खिलौना रूप है। विद्वा को नित्य ही इस कौतुक में अपना म लगाये रहना श्रेयसकर है। अपने प्र कर्त्ता के प्रश्नों पर हमने अपना विच प्रगट किया है यदि उन को इस में कु वक्तव्य हो तो फिर लिखें।

विनीत—
हरिशंकर दीक्षित
प्रधान आर्य्य समाज नगीन

—०—

वैदिक वर्णव्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञानभिक्षु जी लिखित)

सर्व वैदिक-धर्मी सज्जनों को विदित हो कि सनाढ्य प्रेस आगरा से "वैदिक वर्णव्यवस्था" इस नाम की एक पुस्तक पं० अखिलानन्द कवि ने प्रकाशित की है, जिसमें यह लिख कर सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि वेदादि सच्छास्त्र और ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ जन्म से वर्णव्यवस्था मानते हैं—यह तो संसार समझ ही गया है कि महर्षि दयानन्द क्या मानते थे, ऋषि के कथन पर किसी भी मेधावी को संशय नहीं प्रत्युत सब मानते ही हैं कि जिसने जैसा गुण व कर्म स्वीकार किया वह उस नाम वाला हो गया—यही वेद शास्त्र प्रतिपादन करता है। जन्माभिमानी प्रमाणित ग्रन्थों को मान कर भी सर्व साधारण को किस प्रकार और कैसे २ धोखा देसकते हैं या दिया करते हैं, इस पुस्तक से पूर्णतया पता लगता है—हम आज इस पुस्तक पर समीक्षा करते हुए इस का उत्तर देते हैं—एक विचित्र बात जो कि आपने किसी और पुस्तक में न देखी होगी वह यह कि ३० ही पृष्ट तक पं० जी ने प्रस्तावना, उपोद्घात, भूमिका, अवतरणिका पर न जाने कितने दोबाचे लिखे हैं। कहीं बेचारे विकासवाद पर पन्ने काले किये कहीं कुछ कहीं कुछ लिख लिखा कर ८० पृष्ट की पुस्तक निकाली—आप

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देखेंगे कि पं० जी कैसे विचार रखते हैं। प्रस्तावना में आप लिखते हैं कि 'बहुत से अर्थ का अनर्थ करते हुवे आत्मा का हनन करते हैं'। समीक्षक–क्या आप कह सकते हैं कि दूसरों के अधिकार को नष्ट कर उन्हें उच्चपद पर पहुंचने से रोकने वाला आत्महन्ता नहीं? क्या सत्य को दबा कर असत्य वादी हो, आत्मा के विरुद्ध कार्य करने वाला आत्म हनन नहीं करता? यदि है तो अपने गिरेवान में मुंह डाल कर देखो तो कौन है–क्या आप छाती पर हाथ धर के कह सकते हैं कि मैंने 'यथेमां वाचं' के अर्थों का अनर्थ नहीं किया? क्या आप ने 'जघन्यो वर्ण' और श्लोकादि के अर्थ का अनर्थ नहीं किया? फिर कौन हुआ अनर्थकर्त्ता और आत्महन्ता–आगे लिखते हैं कि 'वर्ण-व्यवस्था यदि न मानी जावे तो संसार में कोई भी व्यवहार नहीं चल सकता' समीक्षक–क्या भारत भिन्न इंग्लैंड, अमेरिका आदि देशों में (जहां कि आप की मनमानी वर्णव्यवस्था का गन्ध मात्र भी नहीं) व्यवहार नहीं चल रहे या आप को दीखे ही नहीं–क्या दूसरे देशस्थ जनों के समान आप व्यवहार में कुशल हैं–वहां मनुष्य मात्र अपनी सम्मति निशंक दे सकता है–(आप का माना) नीच से नीच भी योग्यतानुसार उच्चाधिकार प्राप्त कर सकता है–स्यात् आपने काल्पनिक उच्चनीच का अभिमान किसी मनुष्य का स्पष्ट जल न पीना, उसकी छाया अपने पर न पड़ने देना, उनके स्पर्श करने पर दिन भर स्नानादि प्रदक्षरण करते फिरना, वैमनस्य फैला कर बेचारे निर्धनों को क्रोध शोकादि दिला धर्मच्युत करवाना, पाप कराना यही व्यवहार समझा हो–परमात्मा ऐसे व्यवहार को न चलाये तभी कल्याण है। ऐसे व्यवहार की कोई बुद्धिमान् इच्छा नहीं करता–यदि आप की अत्युत्कट इच्छा हो तो अपने परिवारगृह में ही स्थापित कर लीजिये–अच्छे-व्यवहाराभाव पर शोक मनाने चले हैं–हां, यदि सब से प्रीति गुणी जनों का आदर सत्कार सेवादि व्यवहार चलाना चाहते हैं तो निःसंदेह आप को वैदिक वर्णव्यवस्था माननी पड़ेगी, नकि कोई और फूट फैलाने वाली जातिभेद वर्ण-व्यवस्था–परन्तु यही आपको इष्ट है–फिर कल्याण हो तो कैसे हो–देखो–यदि संसार का उपकार करना चाहते हो तो अनुचिताभिमान छोड़ हृदय को विकसित करो और सच्चे आर्य बन कर परमात्मा की कृपा के पात्र बनो–यदि कूप मंडूक के समान रहना चाहते हो तो इस धर्म के मनोरथों को त्यागो–बोलो क्या चाहिये? आगे लिखते हैं कि 'आज मैं प्राचीन आचार्यों के सिद्धान्तानुसार इस ग्रन्थ का आरम्भ करता हूं'। समीक्षक-हमें तो बड़ा हर्ष हुआ जो आप सरीखे विद्वान् पुरुष इस शुभ इच्छा से कार्य करणार्थ आगे बढ़े हैं–परन्तु हमारी आशा निराशा में परिणत हो गई जब आप के ग्रन्थ को आद्योपान्त पढ़ा–आप सत्य कहिये क्या आपने औपमन्यव जैमिनि पतञ्जलि चरकादिक ऋषियों के वाक्यों का अनादर नहीं किया–ऋषि तो ऋषि, आपने तो वेद भगवान् को कुछ नहीं समझा–यदि ऋषि प्राचीनाचार्य और वेद के सिद्धान्त से विरोध रखने वाला भी वैदिक वर्ण-व्यवस्थापक और आर्य हो सकता है तो बताइये अनार्य और नास्तिक किस का नाम? देखिये क्या लिख रहे हैं–"ऋषि दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में वेदों के अतिरिक्त बाकी सब पुस्तकों को परतः प्रमाण माना है मैं भी यदि सत्यार्थप्रकाशादि ग्रन्थों को परतःप्रमाण मानूं तो कोई आश्चर्य नहीं, किन्तु उनकी आज्ञा का पालन है।"

समी०–आप चाहते तो हैं कि ऋषि की आज्ञा का पालन करूं परन्तु आप के बुरे संस्कार आपकी इस पवित्र इच्छा को पूर्ण नहीं होने देते। ईश्वर आप को बल दे जिससे आप ऋषि की आज्ञा को भली प्रकार पालन कर सकें और इस सदिच्छा के विघातक कुसंस्कार स्वार्थ दुराभिमानतादि को नाश कर सर्वोपकारी बनें। वास्तव में आप ने ऋषि वचनों को अच्छी प्रकार समझा नहीं; क्या आप इस परिभाषा को भूल बैठे थे–"सन्निपात लक्षणो विधिरनिमित्तं तद्विघातस्य" वेद स्वतः प्रमाण है–कौन कहता है–सत्यार्थ-प्रकाशादि ऋषि प्रणीत ग्रन्थ–यदि महर्षि कृत ग्रन्थ परतः प्रमाण होने से अप्रमाण हैं तो उनसे प्रतिपादित वेद का स्वतः प्रामाण्यात्मक ज्ञान प्रमाण कैसे? वेद के स्वतः प्रमाणत्व का साधक हेतु सत्यार्थ-प्रकाशादि ग्रन्थ हैं, भला जिस साध्य का साधक हेतु ही असिद्ध अर्थात् साध्य हो–उसे मान कर प्रवृत्ति कैसे? क्या आप इस अयुक्त बात से अपनी न्याय शास्त्र से अनभिज्ञता नहीं जितला रहे–और आश्चर्य कैसे नहीं; आप जैसे आर्य विद्वान् स्वार्थादि दोषों में ग्रस्त हो ऐसा अनर्थ भी कर सकते हैं यही आश्चर्य है–अपने लिखने का प्रकारावलम्बन बताते हुवे लिखते हैं कि 'कभी अपने प्रयोजन के लिये सत्यपक्ष का और कभी औरों को परास्त करने के लिये असत्यपक्ष का आश्रय लेता है"। अच्छा तो श्रीमान् जी ने किधर इष्टाश्रयण किया है–यदि सत्यपक्ष का आधार लिया तो आप का निजप्रयोजन सिद्ध नहीं हो सकता है क्योंकि सत्य का किसी के स्वार्थ के साथ सम्बन्ध नहीं है और यदि असत्यपक्ष का स्वीकरण इस लिये किया कि वैदिक धर्म को परास्त किया जावे तो इस संकल्प को दिल से निकालिये; यह क्या आप को असम्भावित सूझा है—यह तो चाहे आप सकुल सज्जीभूत हो कर आवें तो भी अपने को असमर्थ पावें–यदि वैदिक धर्म को परास्त करने घर से निकले हो तो चाहिये तो यह था कि सत्य पक्ष को स्वीकार कर समक्ष आते–परन्तु आप झूंठ से सत्य को दबाना चाहते हैं "सत्यमेव जयते नानृतम्"–आगे श्री शंकराचार्य के उदाहरण से उन पर असत्यपक्षाश्रयण रूप दोष लगा कर लिखते हैं कि "वास्तव में उनका मत क्या था इस का पता उन के 'सत्यपि भेदागमे' इस वचन से मिलता है। क्यों धोखा खारहे हो आपने यह अर्थ ठीक नहीं समझा जीवेश भेद सत्य है—गोस्वामी शंकराचार्य जी का सिद्धान्त वैदिक नहीं–परन्तु तो भी वह जिस को सत्य समझते थे उसे छोड़ कभी आत्मा के विरुद्ध असत्यपक्ष

Digitized by eGangotri

स्वीकार नहीं कर सकते–प्रथम तो यह पद शंकर दिग्विजयी का नहीं। उनके प्रतिनिधि गद्दी पर बैठने वालों में से किसी का बनाया है–नहीं तो उनके प्रस्थानत्रयी के भाष्य में कहीं न कहीं यह होता या न्यूनतः इस का अनुवाद रूप उल्लेख होता तब भी इस दोष से दूषित करने का सौभाग्य आप को प्राप्त होता। अर्थ तो इसका यह है "भेदाग्रह मे सतिअपि-भेदस्यापगते दूरेगते नष्टेऽपि तस्योपलब्धिर्नभवति" अर्थात आत्मा तथा परमात्मा के अन्तर देशादि भेद के नष्ट होने पर भी लोक उस आत्मा की प्राप्ति नहीं कर सकते–भेद को सत्य कहने वाला यह पद नहीं–कहीं ऐसे विद्वान् ब्रह्मचारी शंकराचार्य जी कहीं कुछ कहीं कुछ लिखते फिरें ऐसा नहीं हो सकता–आपसे तो कुछ दूर भी नहीं-आगे ऋषिदयानन्द के सत्यग्राही कह कर सत्यार्थप्रकाश की भूमिकानुसार अशुद्धि जितलाकर सत्य को मनवाने के लिए उनकी त्रुटी बताते हैं "जब पिंगलाचार्य, यास्काचार्य.....आदि के ग्रन्थ भी निर्दोष नहीं हैं तब ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों में कहीं भी भूल न हुई हो यह सम्भव नहीं है। क्योंकि गच्छत स्खलनं क्वापि भवत्येव प्रमादतः.....समाधति सज्जनाः" समीक्षक—आप तो कह रहे थे कि प्राचीनाचार्यों का आश्रय लेकर ग्रन्थ लिखा है–चलिए यास्क और पिंगल भी छुटे और शेष रहे ऋषि दयानन्द–उन के ग्रन्थों में तो भूल पड़ी है–कहिये–अब आप किस के आधार लेखनी लिए बैठे हैं। आपको इतनी भी सोच नहीं आई कि ऋषि के ग्रन्थ और उनमें भूल? इति विप्रतिषिद्धम्–ठीक है दूध से मुंह जला छाछ को भी फूक २ पीता है आपको शास्त्रों और आचार्यों के मत से क्या प्रयोजन–आप को तो कालीदास भवभूति तथा नाटकादि के रसिक रचयिता कवि और उन्हीं के ग्रन्थों से अवकाश नहीं मिलता। इतने पर भी कोई बात नहीं–बात तो यह है कि आप एक ऐसा कार्य करने लगे हैं जिसे कोई भी हाथ न लगाता था और वह स्वामी जी की अशुद्ध उपकार दृष्टि से जितला कर ठीक करना है जो कि ऋषि से प्रमाद के कारण होगई हैं–आप का इस में दोष नहीं क्योंकि आपने तो अपने जैसा ही ऋषि को कहना है-भला कहीं दयानन्द जैसे पूर्ण विद्वान महर्षि से प्रमादतः भूल हो सकती है? ऋषियों की दृष्टि सर्वत्र पड़ा करती है। उनके लिए तो स्खलन शब्द भी स्खलित हो जाता है। आप की तरह चलने वालों का तो स्खलन होसकता है परन्तु क्या ऋषियों का–अरे 'ओ३म्' जपो-क्या कह रहे हो-अच्छा दुर्जन तोष न्याय से माना अशुद्धि ही सही–तो क्या तुमने ठीक करना है–भाई हाथी को उठाने के लिए गधे की पीठ पर्याप्त नहीं-किन्तु हाथी ही चाहिए–आगे आप अपने इस अनुचित कार्य पर पश्चाताप करते हुए लिखते हैं–कि "बहुत से अपठित अविचार शील अदूरदर्शी इस ग्रन्थ के प्रकाशित होने पर बड़ा कोलाहल मचावेंगे"–"परन्तु मैं भी मूर्खों के भय से ग्रन्थ लिखना नहीं छोड़ सकता हूं"। समीक्षक-ओ हो! आप तो सच मुच ही दूरदर्शी निकले। भविष्य का भी पता लगा लिया कि अपठित और अविचार शील कोलाहल मचावेंगे। क्या कहने आप की पठितव्यता के और विचार शीलता के–परन्तु एक भूल तो आपसे भी हो ही गई–आप की दूरबीन ने यह नहीं जितलाया कि शोर मचाने वाले मूर्ख हैं–जब आप दूरदर्शी हो रहे थे उस समय आप की दृष्टि अपने आप पर ही पड़ गई इसी कारण आपको सत्यज्ञान न होकर भ्रान्ति होगई-यह बात तो हमने आप में अच्छी पाई कि मूर्खों के भय से ग्रन्थ लिखना नहीं छोड़ूंगा-परन्तु इतना तो विचार लेते कि प्रतिपक्षी कौन हैं यदि मूर्खों से ही आप का पाला पड़ा है तब तो ठीक है आप की प्रतीज्ञा-परन्तु याद रखो जहां कहीं फूंस लेजाओगे अग्नि का तो भय कदापि छूटे ही नहीं-समझा रहे थे सत्य का मुकाबला मत करो परन्तु हठ करते चले जारहे हैं और मानते हैं नहीं आप की इच्छा–हमारी प्रार्थना का प्रभाव तो कुछ पड़ा–शुकर है-आप कहते हैं "ईश्वर मुझे बल दे वेद मुझे ज्ञान दे" समीक्षक–हम तो भाई सहस्रबार ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि आप परमकारुणिक होकर बल दें वेद के [illegible] के लिए तो आचार दृढ़ होना चाहि क्योंकि "अचार हीनं न पुनाति वेद":-पने अन्दर से स्वार्थाभिमानादि दो को निकालो फिर वेद भी ज्ञान देदेगा ४ पृष्ट पर लिखते हैं कि "वर्णव्यवस्था गुण कर्म स्वभाव से होनी चाहिए" सत्यार्थप्रकाश के वचनों को सुवर्णाक्षरों में लिख कर मकानों में लगाना चाहि बड़े हर्ष की बात है कि ऋषि के वच का आप स्वार्थ वश या किसी वश हो सत्कार करने तो उद्यत हुवे हैं—परन्तु आप ठहरिये बगलें क्यों बजाते फिरते है वाक्य का तो तात्पर्य ही आपके पक्ष नहीं। देखो सत्यार्थ 'विद्यादि सद्गुण सत्यभाषणादि कर्म सुशीलतादि स्वभाव यह हैं गुण कर्म स्वभाव से महर्षि का अभिप्रायः-अर्थात् जो विद्वान् सत्यवादी सुशील हो वह ब्राह्मण और जो मूर्ख व्यभिचारी क्रोधी है वह ब्राह्मण नहीं हो सकता–और जो यह कहते हो कि "गुण कर्मस्वभाव में से किसी एक पर वर्ण व्यवस्था माननी जहां एक ओर ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त के विरुद्ध है वहां वेदादि सत्य शास्त्रों के भी विरुद्ध है" यूं आगे सीधे रस्ते ऐसा मानो तो चाहिये ही और क्या? परन्तु आप को चैन भी आए आप ने तो अर्थ का अनर्थ करना ही सीख रक्खा है यदि ऋषि के ग्रन्थों के विरोध से डरते थे तो इतना विकल्प गौरव क्यों करने बैठे हो? सीधी बात को भी आपने उल्टा ही समझना है। इस मिथ्या ज्ञान को छोड़ कर निदिध्यासन करो-स्वामीजी के स्वमन्तव्यप्रकाश का उल्लेख करते हुवे लिखते हैं कि "वर्णाश्रम गुण कर्मों की योग्यता से मानता हूं, यहां योग्यता का अर्थ स्वभाव है-पृ० ५" इस से स्पष्ट और क्या ऋषि का अभिप्राय हो सकता है कि वर्ण ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और आश्रम ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास यह गुण और कर्मों की योग्यता पर निर्भर हैं। जिस पुरुष ने जिस पद की योग्यता प्राप्त करली वह उस पद का अधिकारी हुआ॥ (अपूर्ण)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सार समाचार पर टिप्पणी।

दिल्ली प्रान्त के उत्तर में चारे की कमी पत-
जाती है। राजपूताने से भी प्रायः ऐसी ही
ने प्रति वर्ष उठा करती है। क्या इस पर ह-
ज़मीन्दारों ने कभी ध्यान दिया? सरकारी
र के कालिजों में जो मोटी सफ़ेद गेहूं बोने
र किसानों से बुवाने की प्रथा चल रही है,
सके भूसा और अन्य चारा कम होने की तो
भावना नहीं? कौनसी फ़सल इस समय देश
लिए अधिक लाभ दायक हो सक्ती है? इन
ओं पर विचार करने के लिए यदि ज़िले २ में
भाएं स्थापित हो जायं तो फिर प्रान्त भर में
न प्रश्नों पर आन्दोलन हो सके। क्या पंजाब
ौर संयुक्त प्रान्त के कृषिकार इस प्रस्ताव पर
चार करेंगे?

संयुक्त प्रान्त का म्युनिसिपल बिल श्रीमान्
ायसराय ने स्वीकार कर लिया। इस बिल की
नावट में जो त्रुटि है वह अधिक बुरे फल उ-
पन्न करेगी, इसमें सन्देह नहीं। हिन्दू मुसलमानों
का आपस में अधिक बिगाड़ होगा। इस बिल के
विरुद्ध लीडर के योग्य सम्पादक ने बड़ा आन्दोल-
न किया और निडर आन्दोलन किया और अन्त
को उन्हें भी लिखना पड़ा कि इस आन्दोलन के
भाग्य का निर्णय वही हुआ जो किसी लोकल
गवर्नमेंट के प्रस्ताव का विरोध करने से हुआ
करता है। फिर यह लिख कर कि भिखमंगों को
सफलता नहीं होती, फिर भी भीख के लिए
हाथ फैलाना क्या बुद्धिमत्ता है? इस समय हि-
न्दुओं को यह सोचना चाहिए कि जब मुसल-
मान सभा 'जबन-ए-हाल' से यही कहते रहते
हैं कि—"तुम्हारे घर आएंगे तो क्या खिलाओगे
और हमारे घर आओगे तो क्या लाओगे"—तब
गवर्नमेन्ट और मुसलमान-दोनों से भीख मांगने
की चेष्टा को छोड़ किसी तीसरे स्वतन्त्र मार्ग
का अनुसरण करें जिससे अपने आत्म-सम्मान
को तो धक्का न लगे।

लखनऊ कांग्रेस की स्वागत कारिणी के प्रधान
श्री पण्डित विष्णुनारायण दत्त नियत हुए। तब
एक ओजस्वी, निर्भयता-पूर्ण व्याख्यान की आशा
रखनी चाहिए। १० उप प्रधान, ४ मन्त्री और
१५ [illegible] सदस्य बन चुके हैं। आशा की गई है कि
६०० लगभग सदस्य बनेंगे। संयुक्त प्रान्त की आर्य्य
प्रतिनिधि सभा को इस अवसर पर वैदिक धर्म
के प्रचार का विशेष प्रबन्ध करना चाहिए।

इण्डियन होमरूल लीग का विचार इङ्गलैन्ड में
फैलाने के लिए श्रीमति एनीबैसेन्ट ने लन्डन में
एक विशेष स्थान लेकर, इसके सम्बन्ध का सा-
हित्य फैलाना शुरू कर दिया है। प्रेस एक्ट के
सम्बंध में जो आन्दोलन इस समय हो रहा है
वह भी इसी देवी की बदौलत है। देवी बैसेन्ट
६८ वर्ष की हो जाने पर भी युवकों से बढ़कर
जोशीली हैं, इसीलिए कभी कभी उन से भूलें
हो जाती हैं। जिस काम की उन्हें एक समय
लगन हो उसका प्रेम उनसे अनुचित व्यवहार भी
करा देता है; परन्तु यह उनमें विशेषता है कि कार्य
क्रम बदल कर उस भूल को लोगों के हृदयों से
वह भुला देती हैं। धर्म प्रचार उनके लिए ठीक
क्षेत्र न था, अब राजनैतिक क्षेत्र में वह बड़ा
काम कर सकेंगी।

दाद के रोगियों के लिए कौड़ियों की दवा—
सिकन्दराराऊ के म० गोपीनाथ लिखते हैं
कि यदि Crysophanic acid को घुले हुए
घी में मिलाकर लगा दें तो दाद चला जाएगा।
परीक्षा अवश्य होनी चाहिए।

आर्य्य स्कूल दानापुर के स्थान में तीन बार
वैश्याओं का तथा एक बार भांडों का नाच स्था-
नी आर्य-समाज के पुराने प्रधान राय साहेब ने
करा डाला—यह समाचार एक स्थानीय सम्वाद-
दाता ने भेजा है। यदि यह समाचार सत्य है
तो बड़ा भारी शोक है। राय साहेब से यदि ता-
त्पर्य मास्टर जनकधारीलाल जी से है तो और
भी शोक है। जहां नेताओं के ऐसे आचरण हों
वहां सुधार की क्या आशा हो सकती है। यदि
यह समाचार झूठा सिद्ध हो जाय तो हमें प्रस-
न्नता होगी, परन्तु यदि ठीक ही हो तो हमारे
संवाद-दाता के लेखानुसार बिहारी आर्य युवकों
को राय साहेब के दुश्चरितों का अनुकरण नहीं
करना चाहिए।

ब्रह्मा देश में भी अन्त को प्रचार का प्रबन्ध
हो चला।—धर्मशाला (भागसू) के चौधरी
ठाकुरदास आज कल रंगून में हैं। उनके हिलाने
पर ब्रह्मा देश की आर्य्य प्रतिनिधि सभा ने १०० मासिक पर पं० परमानन्द बी० ए० उपदेशक को बुलाया था जो वहां पहुंच चुके हैं। श्री चौधरी ठाकुरदास भी उनके साथ चक्कर लगाएंगे। पंडित परमानन्द जी गुरुकुल के उपाध्यायों से मिल और वेद विषयक नोट उनसे लेकर पधारे हैं। आशा करनी चाहिए कि अब उस देश में भी वैदिक धर्म का खूब प्रचार होगा। श्री चौधरी ठाकुरदास लिखते हैं (जैसे सहस्रों पहिले लिख चुके हैं) कि ब्रह्मा में अब तक गुरुकुलों की प्रथा जारी है। आशा रखनी चाहिए कि पं० परमानन्द जी तथा चौधरी ठाकुरदास गुरुकुल के लिए अपील करके इस संस्था को भी धन से सहायता देते रहेंगे।

मर्यादा (प्रयाग) में गुरुकुलों पर आक्षेप करने वाला कौन है? इस प्रश्न का उत्तर महाशय राम लाल जी शिवपुर (काशी) निवास इस प्रकार देते हैं:—

"गत सप्ताह के सद्धर्म्म प्रचारक देखने से ज्ञात हुआ है कि आप "ग्रामीण" नामक एक व्यक्ति का पता पूछते हैं जिस का लेख गुरुकुल के विरुद्ध मर्य्यादा में छप रहा है इस के उत्तर में निवेदन है—यह मनुष्य ज़िला बनारस के अन्त-र्गत मौ० कूंडी का रहने वाला एक ब्राह्मण है जिस का नाम पं० उदितमिश्र है। यह पहिले हरिश्चन्द्र हाईस्कूल काशी में एक सामान्य अध्यापक हिन्दी का था। अर्सा ११ वर्ष का होता है कि यह आप के गुरुकुल में नीची श्रेणी का अध्यापक हो कर श्रीमान् पंडित रामनारायण जी हे० मा० की सिफ़ारस से भेजा गया था—परन्तु थोड़े ही दिन के बाद आप के यहाँ से निकाला गया। इस के पश्चात ज्वालापुर में जाकर गुरुकुल के वि-रुद्ध लेख लिखता रहा अब इस समय बाबू ज्यो-तिस्वरूप जी वकील देहरादून के यहाँ निवास करता है—श्री पं० रामनारायण मिश्र जी को भी इसने अपनी चालाकी से मुग्ध कर लिया था परन्तु उनको भी पीछे पछताना पड़ा—यह अपने को विद्यालंकार की पदवी से विभूषित क-रता है—"

यह उदित मिश्र गुरुकुल से विशेष अप-राध के कारण निकाला गया था और तब से ही गुरुकुल के लिए अपशब्द बोलता रहता है। संस्थाओं पर आक्रमण—युक्त लेख अपने पत्रों में देने से पहले अभ्युदय और मर्यादा के सम्पा-दकों को यह निश्चय कर लेना क्या आवश्यक नहीं कि लिखने वाले कौन हैं? परन्तु आज कल तो समाचार पत्र बदला निकालने के लिए चल रहे हैं, तब उन के ऐसे लेखों की, आगे से उपेक्षा ही ठीक प्रतीत होती है।

फ़िजी से स्वामी मनोहरानन्द सरस्वती—लि-खते हैं कि जब गुरुकुल के लिए १५ लाख का स्थिर कोष जमा होने लगेगा तो वह भी १००) जमा कर के भेजेंगे।

मन्त्री आर्य्य समाज छावनी फीरोजपुर लिखते हैं कि:—"अन्तरङ्ग सभा ने निश्चित किया है कि समाज मंदिर में यदि कोई ऐसे साधु निवास करना स्वीकार करें, जो सामाजिक सिद्धान्तों से वाक़िफ़ व प्रचार कर सक्ते हों और बालकों व सभासदों को सामाजिक ग्रन्थ पढ़ावें तो समाज यथाशक्ति उनकी सेवा कर सक्ती है। जो म-हात्मा समाज सुधारार्थ ऐसा करना स्वीकार करें तो कृपया दास से पत्र व्यवहार करें कि किस प्रकार रहने की कृपा कर सकते हैं, स्थान उत्तम व रम्य है।"

फ़रुखनगर की दिलचस्प खबरें—इस शीर्षक के नीचे अखबार —ए—आम में पहली खबर यह छपी है—"जो लड़का एन्जन से ज़खमी हुआ था, वह फ़ौत हो गया" यहां तो यह! मि-सरा चस्पां होता है कि—किसी की जान गई आपकी अदा ठहरी।" शायद सारे अखबार पर सम्पादक श्री प० गोपीनाथ जी की दृष्टि नहीं

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वर्गीय स्वामी रामतीर्थ जी के छोटे पुत्र 'ब्रह्मानन्द गोस्वामी' के गुम होने का समाचार उसके बड़े भाई ने जो खान विद्या के प्रसिद्ध ऐन्जिनियर W.N.M. Gosvami ने लाहौर के दैनिक 'पजावी' में छपवाया है। आयु उसकी १७ वर्ष की है और लम्बा गोरे रङ्ग का दुबला युवक है। यदि किसी को मिले तो उस के भाई को सोलन में पता दिया जावे।

स्वामी रामतीर्थ के पुत्र के विषय में सभी भारत--निवासियों को चिन्ता हो सकती है। संभव है कि इस युवक पर पिता के जीवन ने कुछ असर किया हो और उसी धुन में यह चल निकला हो। धर्म उस युवक का सहायक हो यह आशिर्वाद सभी हृदयों से निकलेगा।

लाहौर के एक महाशय, जो कुछ वर्ष पहले आर्य्य समाजी थे, अपने लड़के को ईसाइयों के सपुर्द करना चाहते हैं। यह समाचार पंजाबी में, म० गोपालदास ने छपवाया है। लड़के की माता मर गई है और पिता गृहस्थ के झगड़ों में रहना नहीं चाहते। यदि आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को धन की पर्याप्त सहायता मिलजाय और उक्त सभा गुरुकुल में एक प्रारम्भिक श्रेणी खोलने की आज्ञादे देवें, तो इस प्रकार के बालकों का पालन गुरुकुल में आसानी से हो सके। सुना है कि बालक का पिता २०) मासिक तक खर्च करने को तय्यार है।

ईसाइयों के लिए मद्रास में बड़ी अच्छीफसल रहती है। लीडर ने 'न्यूइन्डिया' से एक समाचार लिया है। एक १५ वर्ष की हिन्दू लड़की अपने माता, पिता, भाई, बहिनों और पति को छोड़कर एक ईसाई पादरी के पास शिक्षा प्राप्त करने को चली गई है। तंजौर के महाशय रामस्वामी आयर लिखते हैं—"जब मैंने लड़की से उस का इतिहास पूछा तो उसने मेरे सर्व प्रश्नों के बुद्धिमत्ता से उत्तर दिए, परन्तु साथ ही कहा कि वह ईसाई होनाचाहती है।उस ने माना कि वह हिन्दू मत के विषय में कुछ नहीं जानती, जिस की उसने कभ भी शिक्षा नहीं पाई। इस विषयमें ही वह हठ करती थी, यद्यपि अन्य उत्तर न्यायानुकूल देती थी।" कारण इसका यह कि ईसाई स्कूल म उसे शिक्षादिलाई गई थी। आर्य्यसमाज में यदि योग्य सच्चे उपदेशक होते तो ऐसी दशा न रहती।

फ्रांस में सन्तानोत्पत्ति के विरुद्धभाव बहुत फैल रहे हैं। विशयासक्त युरुप से यह आशा तो पहले हीथी, परन्तु युद्धमें दो करोड़ से अधिक हानियां होने पर फ्रांस के 'डाक्टर-ए, लिगार्ड' एक लेख में अपील करते हैं कि देश भक्ति के लिए ही प्रत्येक माता पिता को कम से कम तीन बालक अवश्य उत्पन्न करने चाहिए। पितृऋण का सिद्धान्त यदि युरप में पहुंचाया जाता तो आप दिन इस प्रकार की अपीलें न करनी पड़तीं। इस समय जब युद्ध से युरप के मुख्य देशों की पुरुष संख्या बहुत कम होरही है उस समय देश को फिर से रक्तक देने और व्यभिचार से बचने के लिए पितृऋण के वैदिक भाव के साथ सदाचार की श्रेष्ठता को भी जतलाने की आवश्यकता है।

विभिक्षतुकिं न करोतिपापम्! बंगाल, बिहार और उड़ीसा के सबसे पिछले नवाब नाजिम (सय्यदहुसैन अलीमिर्ज़ा) को ५००) मासिक गुज़ारा मिलता है। जो लाखों वर्ष में व्यय कर देते थे उनके लिए ५००) क्या चीज़ है। और फिर जब वैसे ही शौकीन बेटे बेटियों को गुज़ारा देना हो। बूढ़े नवाब-नाज़िम की आयु ८० वर्ष की है और उसके एक लड़के ने उस के विरुद्ध डिगरी हासिल कर के बाप के नाम गिरिफ़्तारी का वारण्ट ज़ारी करा लिया। बूढ़े नवाब ने दिवाले की दर्ख़ास्त दी है। पेट पापी क्या क्या पाप नहीं कराता।

शाखागुरुकुल हरियाने का प्रथम उत्सव—प्राचीन शिक्षा प्रणाली के पुनरुज्जीवन तथा ब्रह्मचर्य्य के पुनरुद्धार के निमित्त इसी वर्ष शाखा-गुरुकुल हरियाने ने ज़िला रोहतक में सांपला स्टेशन से ७ मील दूर गढ़ीसमाना और मंटीराट्ट के एकान्त तथा रम्य वन और एक छोटी सी नहर के मध्यवर्ती मैदान में जन्म लिया है।

यहां की जनता का प्राचीन शिक्षा प्रणाली और ब्रह्मचर्य्य के प्रति प्रेम और श्रद्धा विश्वास दिलाती हैं कि इस गुरुकुल को अवश्य ही कृतकार्य्यता होगी। जहां लौकिक जनता का ऐसा जोश और श्रद्धा इस गुरुकुल के साथ है, वहां ईश्वर का अनुग्रह और प्रकृति देवी भी इसके साथ है।

प्राकृतिक अवस्थाएं—यहां की आबहवा प्रायः सब स्थानों से अच्छी नहीं तो बुरी भी नहीं है। जल मीठा तथा पाचक है। घास बलवती होने से गौ और भैंस का दूध भी पुष्टिकारक है यहां के आदमियों के लम्बे क़द तथा शरीर की दृढ़ता ही यहां की प्राकृतिक अवस्थाओं की सूचक है।

इसी शाखा गुरुकुल हरियाने का प्रथम उत्सव १५,१६,१७ जून, सन् १९१६ तदनुसार आषाढ़ वदी १,२,३, सम्वत् १९७३ को बड़े समारोह से मनायागया। जिस में श्री स्वामी सर्वदानन्द सरस्वती जी महाराज, आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब के महोपदेशक श्रीमान् पं०पूर्णानन्द जी, गुरुकुल के नव स्नातक श्रीमान् पं० जगत्प्रिय जी विद्यालंकार, श्री पं० ब्रह्मानन्द जी तथा कई अन्य प्रतिष्ठित विद्वान् और भजनीक भी पधारे हुए थे जिनकी ओजस्वी वाणी ने श्रोतागणों के हृदयों में वैदिक धर्म तथा प्राचीन शिक्षा प्रणाली और ब्रह्मचर्य्य का बुझा हुआ दीपक फिर से प्रज्वलित कर दिया जिस के लिए हम उन सब महानुभावों को शतशः हार्दिक धन्यवाद देते हैं। १५ जून सन् १९१६ के दिन आंधी वर्षा के कारण उत्सव की कार्यवाही न हो सकी। इसी लिए १६ जून के प्रातःकाल ही से उत्सव का कार्य निर्विघ्न प्रारम्भ हुआ। एक तरफ़ तो जहां वेदी पर श्रोतागण उक्त महानुभावों की प्रेममय वाणी का सुधापान कर रहे थे वहां दूसरी तरफ़ एक स्वच्छ कमरे में गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के आचार्य जी की आज्ञानुसार निम्नलिखित सदस्यों की समिति नवागत ब्रह्मचारियों के चुनाव में लगी हुई थी।

परीक्षक समिति—पं० ब्रह्मानन्द जी, श्री डा० शिवराज जी गुरुकुल थानेसर, श्री चौधरी पीरूसिंह जी मन्त्री शाखा गुरुकुल हरियाना तथा स्नातक प्रियव्रत विद्यालंकार, इन चार सभ्यों का यह परीक्षक समिति थी। १६ तथा १७ जून तक चुनाव होगया। और शाखा गुरुकुल हरियाने की प्रबन्धकर्त्री सभा के स्वीकृतप्रस्तावानुसार ४५ ब्रह्मचारी चुने गये जिनका वेदारम्भ संस्कार करवाना निश्चय किया गया। इसी दिन मध्यानोत्तर श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज की गुरुकुल हरियाने के लिए अपील हुई जिसमें उन्होंने बड़ी योग्यता और सरलता से वैदिक धर्म की उच्चता और गुरुकुलों की आवश्यकता दिखाते हुए गुरुकुल के लिए दान देने की ओर उपस्थित सज्जनों का ध्यान आकर्षित किया। व्याख्यान समाप्त होजाने पर धन एकत्रित होने लगा। लगभग ४००) नक़द, १००) की हुण्डी तथा १०० बीघे नहर वाली भूमि, और ६८ बीघे वर्षाश्रित भूमि दान में सुनाई गई। इसके अतिरिक्त ३०० मन से ऊपर अनाज जो अब तक इकट्ठा हो चुका है, सुनाया गया। रात्री को भजन तथा व्याख्यान होते रहे।

अगले दिन प्रातःकाल वेदारम्भ संस्कार हुआ और संस्कार के पूर्ण होजाने पर ब्रह्मचारी भिक्षा मांगने गये। कुछ भिक्षा भी आगई जिसके बाद सब उपस्थि सज्जनों ने एक स्वर से स्वागत ब्रह्मचारियों को आशीर्वाद दिया और शान्ति पाठ के साथ ही उत्सव समाप्त हुआ।

उत्सव तो समाप्त होगया पर साथ ही हम उन महाशयों को भी नहीं भूल सकते जिन्होंने अपना सर्वस्व गुरुकुल को दान करके अपना जीवन भी गुरुकुल को दान कर दिया है। आपका नाम चौधरी माईधन जी है। आप ज़िला कर्नाल के रहने वाले हैं। आप अभी नवयुवक हैं आपकी स्त्री पुत्रादि मर चुके हैं इस लिए इन्होंने अपना यह भाव प्रकट किया कि अपना सर्वस्व गुरुकुल को दान दें। गुरुकुल के अधिकारियों के यह कहने पर भी कि अभी तो आपयुवा हैं कदाचित् आप काविचार बदल जाय और आप फिर दूसरी शादी करलें तो फिर आप को कष्ट होगा, अतः जीविका निर्वाहार्थ आधी जमीन आप अपने पास रखिये और आधी दान करदें। इसका उत्तर जो उन्होंने दिया हम समझते हैं वह सब गृहस्थों के लिये आदर्श है। उन्होंने कहा कि मैंने अपनी आयु में बहुत ये झगड़े देखे हैं और अब मैं इनसे बहुत खिन्न हो चुका हूं, मैं चाहता हूं कि किसी धर्म कार्य में अपना सर्वस्व देकर धर्म की सेवा करूं। उपरिलिखित भूमियां उन्हीं की दान दी हुई हैं जिनकी रजिस्टरी भी हो चुकी है। यदि ऐसेर धर्म प्रेमी सज्जन गुरुकुल की सहायता करते रहे तो यह गुरुकुल निश्चय से थोड़े समय में ही अपनी पूर्ण यौवनावस्था में पहुंच जायगा। इनके अतिरिक्त श्री पं० ब्रह्मानन्द जी और चौधरी पीरूसिंह जी को भी हम बहुत धन्यवाद देते हैं जो इस गुरुकुल के आधार स्तम्भ हैं जिनका प्राचीन शिक्षा प्रणाली में प्रेम और अनथक परिश्रम गुरुकुल की आधार शिला को दृढ़ कर रहे हैं। साथ ही रोहतक के आर्य्य समाजिक वादित्र मण्डल का भी बड़ा धन्यवाद करते हैं जिसने अपने मधुर ध्वनि से उपस्थित सभ्यों को आनन्दित किया और सज्जनों के आल्हाद को बढ़ाते रहे। आशा है इस बार की तरह सदा वे अपना सम्बन्ध गुरुकुल से रक्खे रहेंगे। शमित्योम्

प्रियव्रत विद्यालङ्कार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतः विद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका——————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः द्वितीयो भागः——————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——————।)
काव्य लतिका——————।।।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ।।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ।।।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ।।=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १।।)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नामिकः =)।।
आख्यातिकः ।।।)
महाभाष्यम् अङ्गाप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २।।)

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—वैलफोर स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ।।)
रसायन—विलयम एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ।।।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितं—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)।।
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)।।
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवरर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)।।
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)।।
लेखकश्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त ≡)।।
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) ≡)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— '
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Tranlation of Swami Dayanand Saraswati's Magnum Opus called the Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bhardwaja F. R. C. S.; D.P.H. etc 2d edition—Printed on superior paper and published by the Arya Prati Nidhi Sabha United Provinces Agra and Oudh—First ten chapters only Rs. 3/

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १।।)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. वेदाङ्ग प्रकाश स्वामी दयानन्द कृत (वैदिक यन्त्रालय अजमेर)
२. भारत का सच्चा इतिहास (भासकर यन्त्रालय मेरठ)
३. उपनिषदें-शंकर भाष्य सहित (आनन्द आश्रम पूना)
4. The Direct Method of Teaching by Nelson Fraser in 4 parts.
५. चम्पु रामायण (निर्णय सागर यन्त्रालय बम्बई)
६. हर्ष चरित

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २५ आषाढ़ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० ८ जुलाई सन् १९१६ ई० { संख्या १३ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आधतोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रम्बन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर कांगड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसी माल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा मूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

आर्य्य कन्या पाठशाला, लुधियाना

के लिए एक अध्यापक की आवश्यक्ता है जो आठवीं श्रेणी तक संस्कृत पढ़ा सके। दृढ़ आर्य्य और सदाचारी हो। ट्रेन्ड को तरजीह दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार २५) मासिक तक नियत किया जा सकता है। प्रार्थना पत्र, सदाचार और योग्यता के प्रशंसा पत्रों सहित, नीचे लिखे पते पर आने चाहिएं—

प्रबन्धकर्ता,
गणेशीलाल आर्य्य कन्यापाठशाला
लुधियाना।

प्रचारक पुस्तक भण्डार की अनूठी पुस्तकें।

उपनिषदों की भूमिका—लेखक, श्री० इन्द्र वेदालंकार। इस पुस्तक में उपनिषदों का सार बड़ी मनोरञ्जक रीति से दिया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि उपनिषदों का आधार वेद ही है। विषय गम्भीर है तो भी भाषा रोचक और बल पूर्ण है। मूल्य ।=)

धर्मवीर पं० लेखराम की जीवनी—महात्मा मुंशीराम जी लिखित। धर्मवीर की आर्य्य-भाषा में यह एक मात्र जीवनी है। प्रत्येक आर्य्य-गृह में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। धर्मवीर की जीवनी—और महात्मा जी की लिखी हुई—आप क्यों न लेंगे? मूल्य १)

प्रिंस-बिस्मार्क की जीवनी—जर्मनसाम्राज्य के निर्माता राजनीति विशारद बिस्मार्क की जीवनी को जिसने नहीं पढ़ा, उसे योरप का वर्तमान युद्ध समझ में नहीं आ सकता। पुस्तक बेहद मनोरञ्जक है भाषा प्रौढ़ ओजस्विनी है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है—शीघ्र लीजिए।

मूल्य १॥)

कमीशन का दर

२५) से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिसैंकड़ा, ५०) से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिसैंकड़ा, १००) से अधिक के ख़रीदार को २५) सैंकड़ा तथा २००) से अधिक के ख़रीदार को ३०) सैंकड़ा कमीशन मिलेगा।

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म-प्रचारक पब्लिक
गुरुकुल कांगड़ी, पो० श्यामपुर-कांगड़ी
ज़ि० बिजनौर

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल समाचार

ऋतु इस समय फिर आल्हाद जनक है। पांच छः दिनों के निर्वात आकाश मण्डल की पीड़ा के पश्चात् २१ आषाढ़ (४ जुलाई) के प्रातःकाल मूसलाधार बरसने लगा और दो तीन घन्टों में सारा स्थल जल-मय होगया। ११ बजे ऐसा खुला कि मानो कभी बादल ही नहीं आए थे। दूसरे दिन फिर ऐसा ही हुआ। अब प्यासी भूमी शान्त हुई और सब काम निर्विघ्न होंगे।

पिछले दिनों गर्मियों में आम खाने और वायु बन्द होने से दस बारह छात्रों को साधारण ऋतु ज्वर तथा पांच छः को दस्त लग गए थे जो शीघ्र ही आराम हो कर वर्षा होते ही चिकित्सालय छोड़ गए। कुल वासियों का स्वास्थ प्रायः अच्छा ही है।

श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम. ए—२० जुलाई को गुरुकुल में पधारे और उसी दिन मध्यानोत्तर ४ बजे से ५½ बजे तक उन्होंने सृष्टि उत्पत्ति विषय पर बड़ा मनोरञ्जक तथा शिक्षाप्रद व्याख्यान, ब्रह्मचारियों तथा उपाध्यायों की उपस्थिति में, दिया। आपने चार प्रश्न उठाकर कि (१) सृष्टि किस से हुई (२) कब हुई (३) कैसे हुई और (४) उसकी ठीक मीमांसा का मनुष्य के जीवन पर क्या प्रभाव है, क्रमशः इनका उत्तर देते हुए संसार के सब नास्तिक तथा आस्तिक वादों के सिद्धान्तों की समालोचना की और साथ साथ ही प्रमाणों से सिद्ध किया कि सृष्टि विद्या की सब से उत्तम, बुद्धि पूर्वक शिक्षा वैदिक-धर्म से ही मिलती है। आप इस विषय में कई बार व्याख्यान दे चुके हैं और अपने विचारों को अंग्रेजी भाषा में लेख बद्ध करके वैदिक मैगज़ीन के लिए दे गए हैं। आशा करनी चाहिए कि श्री पं० गंगाप्रसाद जी वर्ष में, कम से कम, दो व्याख्यान अवश्य गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के हित के लिए दिया करेंगे।

पढ़ाई का कार्य उत्तम रीति से चल रहा है। इस समय पढ़ाई के काम में हमारे नवस्नातक अच्छी सहायता दे रहे हैं तथा सर्व अध्यापक और उपाध्याय मन लगाकर काम कर रहे हैं। गर्मी और सर्दी, अति वृष्टि और अति अना-वृष्टि-जैसी भी अवस्था हो सब अपने काम में लगे रहते हैं।

महाविद्यालय आश्रम का आङ्गन ठीक हो कर बड़ा दर्वाज़ा लगचला है। अब इस आश्रम के मुख्य अध्यक्ष (Superentendent) उपाध्याय रामशरण जी को अपने प्रबन्ध के कार्य में और भी सुगमता रहेगी। उपाध्याय रामशरण जी सारे प्रबन्ध के साथ आश्रम में निर्बल ब्रह्मचारियों को विशेष सहायता भी देते हैं। श्री उपा० रामशरण जी तथा उ० सेवाराम जी का आश्रम सम्बन्धी काम सराहनीय है।

गुरुकुल को ही आर्य-समाज के कामों का केन्द्र—केवल शिक्षित दल ने ही नहीं समझा हुआ अशिक्षित दल की भी ऐसी ही श्रद्धा है, यद्यपि उस श्रद्धा का प्रकार अलग है। प्रान्त जौनपुर के पोस्ट ज़फ़राबाद के निवासी म० कालीचरण कोइरी लिखते हैं—"आर्य्य-समाज के महोपदेशक सज्जन गण महाशयों से मेरी यह सविनय प्रार्थना है कि मेरी (कोइरी की) वंशावली कृपा पूर्वक भेजदी जावे" लिफ़ाफ़े पर पता इस प्रकार लिखा है—"हरद्वार काङ्गड़ी स्कूल, सेवा में श्री १०८ महाराजाधिराज देशोपदेशक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती।"

इस महाशय ने ऋषि दयानन्द का नाम तो सुधारकों के आचार्य रूप में सुना हुआ है परन्तु उनके पुरुषार्थ का केन्द्र हरद्वार के कांगड़ी स्कूल को ही समझा है। आर्य्य-समाज के उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए कैसे विद्वान् चाहिएं इस का निर्णय गुरुकुल के संचालक ही समझ सक्ते हैं और यदि उनके मार्ग में रोड़े न अटकाए जायं तो योग्य उपदेशक भी तय्यार किए जा सकते हैं।

गुरुकुल के वर्तमान बजट की पूर्ति के लिए जो अपील हुई थी, उसका फल अच्छा निकल रहा है। हल्दौर निवासी श्री महाशय ठाकुरदास गुप्त तथा श्री पं० विष्णुमित्र जी ने एक एक सौ रुपया रोक भेज दिया है। अन्यों में से केवल एक महाशय ने आर्थिक अवस्था बिगड़ने के कारण इस समय क्षमा चाही है। अन्य जितने भी ६ सात और उत्तर आए हैं उन सब में ही शीघ्र सहायता भेजने की प्रतिज्ञा है। अब प्रतिज्ञाओं को प्रचारक द्वारा प्रकाशित करने से कोई लाभ नहीं; जिन सज्जनों की ओर से धन पहुंचता जाता है उन्हीं की रसीद प्रचारक में प्रत्येक सप्ताह छापदी जावेगी।

संरक्षक महाशयों के उत्तर बहुत ही सन्तोषजनक हैं परन्तु अन्य महाशयों को भी मौन नहीं साधना चाहिए। जो महाशय जो कुछ भी देसकें देना आरम्भ करदें तो शीघ्र ही सवाली का सवाल पूरा होजाय। मैं विशेष नाम यहां लेना नहीं चाहता परन्तु मैं समझता हूं कि जिन के मनों में गुरुकुल के लिए हित है वे स्वयम् ही सहायता भेजनी आरम्भकरदेंगे।

अन्न दान को भी मत भूलिए। मण्डी ज-गरावां ज़िला लुधियाना से श्रीलाला बलासामल सुलतानी मल जी ने ग्यारह (११) बोरी सकैंड गेहूं की भेज का रेलवे रसीद गुरुकुल कार्यालय में भेज दी है। जो महाशय भी अनाज भेज सकें भेज देवें।

ऋतु के फल ब्रह्मचारियों को मिलते रहते हैं। महाशय कन्हैयालाल ने बीमारों की सेवा के लिए अपना सारा समय अर्पण कर रक्खा है। इन को बड़े छोटे सब ब्रह्मचारी प्रेम पूर्वक "बाबाजी" कह कर पुकारते हैं। भोजन के साथ केवल जेब खर्च मात्र लेकर यह काम करते हैं। बाबा जी ३०) से अधिक के आम ब्रह्मचारियों को खिला चुके हैं और न जाने कब और मंगाने बन्द करेंगे। बाहर से संरक्षक महाशय भी आम भेज रहे हैं।

मद्रास प्रान्त के वकील महाशय 'वेंकेट सुब्बाराउ' वृद्धावस्था में अपना काम पुत्रों के हवाले कर के गुरुकुल की सेवा के विचार से आए हुए हैं। यदि उनका मन लग गया तो बहुत लाभदायक सिद्ध होंगे।

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं।

(१) गताङ्क में अन्य आवश्यक कार्य के कारण लेखों के क्रम में कुछ गड़ बड़ होगई जिस के लिए क्षमा की प्रार्थना है। इस बार भी वेदामृत तथा आत्मदर्शन सम्बन्धी लेख नहीं जा सके जिस का कारण मुख्य सम्पादक का अन्यअवश्यक कार्यों में फंसे रहना है।

(२) ग्राहक संख्या बढ़ाने में प्रचारक परिवार की ओर से पूरा यत्न नहीं हो रहा। इस में कुछ उन्नति की आवश्यकता है।

(३) इस समय डाक श्यामपुर से कनखल को किश्ती वा तमेड़ पर जाती है। कभी कभी गङ्गा की बाढ़ वा अति-वृष्टि के कारण प्रचारक के पहुंचने में देर हो जाने की संभावना है। आगामी दो मास तक इस त्रुटी के लिए भी क्षमा की प्रार्थना है।

(४) व्यय में संकोच की आवश्यकता देख कर कुछ पत्रों के साथ परिवर्तन बन्द करना पड़ा है, इस का मुझे शोक है; परन्तु अधिक शोक यह है कि एक पत्र सम्पादक ने, जो पहले भी गालियां लिखने में कसर नहीं छोड़ते, अब गालियों की बाढ़ झोंकने की धमकी दी है। यह बाढ़ भी शायद प्रचारक को भस्मी भूत करने में कृतकार्य न होगी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

सच्चा वेदप्रचार

प्रचार ही उसकी बाईं ओर है—और प्रचार ही उसकी दाईं ओर है ; प्रचार ही उसके पीछे है और प्रचार ही उसके आगे है—तो भी अज्ञान और पाप की सेनायें बढ़ती चली जाती हैं। प्रचार के गोले बीच में पड़ते हैं और हवा के गोले की तरह उड़ जाते हैं । पाप की सेना निर्बल नहीं होती—बढ़ती ही चली जाती है ।

कौन सा देश है—जहां किसी धर्म का प्रचार नहीं होता और कौनसा धर्म है—जो संसार से पाप की जड़ उखाड़ने का दावा नहीं भरता। प्रति दिन प्रचारसभायें और प्रचारक बढ़ते जाते हैं। नये नये मिशन स्थापित हो रहे हैं—किन्तु क्या संसार का अज्ञान कम हो रहा है ? क्या पाप की सेनायें उजड़ रही हैं ? और क्या अशान्ति का समूल उन्मूलन हो रहा है ? यदि कोई 'हां' में उत्तर दे तो उसकी दृष्टि योरप की ओर खेंच देनी चाहिये। जैसा भयङ्कर संग्राम हो रहा है, वैसा मनुष्य जाति ने आज तक नहीं देखा था। हरएक देश परमात्मा के नाम पर, धर्म के नाम पर और सत्य के नाम पर युद्ध कर रहा है। हरएक देश के मुख्य २ गिरजों के लाटपादरी अपनी सेना की तलवार के लिये परमात्मा से कृतकार्यता मांग रहे हैं। कई रेवरेण्ड पादरी तो तोपखानों और घुड़सवारों में जनादारों का काम कर रहे हैं। यह ईसाई मिशनरियों के सदियों के प्रयत्न का परिणाम है।

इन सब प्रकार के मिशन-कार्यों को देख कर दृष्टि अन्तर्मुख होती है और विचार करती है कि इस असफलता का कारण क्या है ? मनुष्य समाज को सुधारने के लिये जो यत्न किये जाते हैं—उन का परिणाम शून्य के समान प्रतीत होता है। आर्य-समाज ने प्रचार के कार्य का बीड़ा उठाया है—और उस कार्य में अपनी बहुतसी शक्तियों का व्यय किया है। अब भी प्रतिदिन वेद प्रचार का यत्न बढ़ रहा है। सारे देश में ही वेदों के प्रचारकों की संख्या में बढ़ती हो रही है। विशेषतया पंजाब ने सभा के वर्त्तमानमन्त्री के सदुद्योग से प्रचार कार्य में विशेष उन्नति देखी है। इन सब यत्नों का सम्मिलित परिणाम अभी तक जो निकला है—वह असन्तोषदायक तो नहीं—परन्तु बहुत सन्तोषदायक भी नहीं। यह आर्य-समाज के विचारकों की स्थिर मति हो रही है कि प्रचार का कार्य यत्न के अनुरूप फल नहीं देता।

शायद हमारे इस लेख से कई समाजी भाई चौंकेंगे। शायद कई बाहिर के भाई इन लेखों से अनुचित लाभ उठाने का यत्न करेंगे। आर्य समाजी भाइयों से हमारी प्रर्थना है कि आप हमारे अगले लेख को पढ़ कर अपनी राय बनायं और पहले ही न चौंकें। बाहिर के दोषदर्शी भाइयों से हमारा निवेदन है कि आप प्रसन्न न हों। आर्य समाज के प्रचार-कार्य के फल की अपर्याप्तता बताने से यह तात्पर्य नहीं निकलता कि और मत वालों का बड़ा गौरव बढ़ रहा है। हमारी दृढ़ सम्मति है कि यदि कोई सोसाइटी वस्तुतः प्रचार का कार्य कर रही है और कर सकती है तो वह आर्य समाज है। आर्य समाज के प्रचार कार्य में, कृतकार्यता के वे तत्व विद्यमान हैं, जो और किसी भी मत या सम्प्रदाय में नहीं हैं। इस लिये जब हम यह कहते हैं कि आर्यसमाज का प्रचार कार्य पूरे फल नहीं लाता तो उसका तात्पर्य यह नहीं कि हम आर्य-समाज के प्रचार कार्य की सर्वोत्तमता को स्वीकार नहीं करते।

जिस बात की ओर हम आज ध्यान खेंचना चाहते हैं वह और ही है। प्रचार का तात्पर्य क्या है ? प्रचार का तात्पर्य है—एक सचाई को जन साधारण तक फैला देना। फैला देने के कई साधन हैं। विचार लेख द्वारा भी फैलाये जा सकते हैं—और भाषण द्वारा भी। लेख और भाषण ये दोनों ही विचार फैलाने के साधन हैं—किन्तु इन दोनों का प्रेरक एक और भी हेतु है—जो प्रचार का सर्वोत्तम साधन है। केवल लेख या केवल भाषण से कुछ भी नहीं बनता। उनका कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता। इन दोनों की पीठ पर कोई और ही शक्ति होनी चाहिये, जो प्रचार का मुख्य साधन बनती है।

धार्मिक सुधार की बातें कई कहते थे किन्तु भारत-वर्ष के धार्मिक मल को धोने के लिये एक ब्रह्मचारी के सिंह-नाद की आवश्यकता थी। राष्ट्रीय विचार बहुतों ने प्रकाशित किये थे किन्तु मेज़नी के कथन में जो जादू था वह और स्थान पर नहीं हो सकता था। इसका कारण क्या था ? जहां औरों के भाषण-लेख थोथे थे—उनकी पीठ पर कोई शक्ति नहीं थी, वहां ऋषिदयानन्द या मेज़नी के लेख तथा भाषण के आधार में

उच्च जीवन की शक्ति

थी। उच्च जीवन ही था, जो ऋषि के शत्रुओं की आंखें नीची करदेता था—उच्च जीवन ही था जो मेज़नी के दो चार शब्दों में भी पुस्तकों की सामर्थ्य भर देता था। उच्च जीवन की महिमा अपार है। उच्च और धार्मिक जीवन ने निरक्षर भट्टाचार्यों को सन्त बना दिया और उस के अभाव ने बड़े २ दिग्गज विद्वानों की विद्या को फोका बना दिया । एक शुद्ध आचरण वाले गंवार के मुंह से निकले हुए टूटे फूटे वाक्य जादू का असर कर सकते हैं—उच्च आचरण से लोहे का सोना बन जाता है—और उसका अभाव विद्यावारिधि की विद्या को 'गज भुक्त कपित्थवत्' निःसार करदेता है।

प्रचार का वास्तव रहस्य सदाचार—और उच्च आचार है। इस कसौटी को

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

सामने रखकर यदि हम धर्मों के प्रचार की अवस्था पर विचार करें तो समझ आजायगा कि क्यों इतने साधनों के होते हुए भी प्रचार का सन्तोषदायक कार्य नहीं होता। हमारी सम्मति में धर्मों के प्रचार के लिये भाषा के सौष्ठव की या विद्या के भार की इतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी उच्च आचारणों की है। यदि उच्च तथा शुद्ध आचरणों को ही देख कर प्रचारक नियत किये जायं तो प्रचार की समस्या हल हो जायगी।

वैद्य लोग कहते हैं कि :—

पथ्येसतिगदार्तस्य किमौषधनिषेवनैः
पथ्येऽसतिगदार्तस्य किमौषधनिषेवनैः

यदि पथ्य है तो फिर बीमार को दवाई की क्या आवश्यकता है और यदि पथ्य नहीं किया गया तो फिर दवाई करेगी ही क्या, इसी प्रकार यदि किसी धर्म के अनुयायियों में सदाचार और उच्च आचार की न्यूनता नहीं है तो जुदा प्रचार अनावश्यक है। हरएक शुद्ध आचारी पुरुष मौन रहता हुआ भी प्रचारक है। जिस धार्मिक समाज के हरएक सभ्य की विशेषता उच्च आचार हैं—उसे प्रचार की कार्य पर पैसा ख़र्चने की आवश्यकता नहीं होगी। दूसरी ओर जिस सोसाइटी के सभासदों के आचार अन्य जनता की अपेक्षा ऊंचे नहीं, वे कितने ही प्रचारक रखें—कृतकार्यता नहीं हो सकती। वहां प्रचार पर पैसे ख़र्च करना पैसों को गंगा में बहाना है।

आर्यसमाज एक प्रचारक समाज है। उसे प्रचार का यह मूल मन्त्र सदा स्मरण रखना चाहिये—हमारा यही निवेदन है।

एण्ट्रेंस परीक्षा की शिकायत

प्रयाग का दैनिक लीडर बहुत सप्ताहों से मैट्रीक्यूलेन परीक्षा के विषय में शिकायतें छाप रहा है। शिकायत यह है कि इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की ओर से जो परीक्षा होती है, उस में थोड़े विद्यार्थी उत्तीर्ण होते हैं, बंगाल की अपेक्षा संयुक्त प्रान्त के कम उम्मेदवारों का उत्तीर्ण होना भी सिद्ध करता है कि यहां कुछ गड़बड़ है। हमारी राय में तो भारतवासियों को तब तक ऐसे विचारों में ही न पड़ना चाहिये जब तक वे भारतीय बालकों की शिक्षा को अपना काम नहीं समझते। शिक्षा का माध्यम विदेशी भाषा भी रहे, शिक्षा जाति के हाथों में भी न रहे, और उत्तीर्णों की संख्या कम न हो। अर्थात् गर्मियों के दिन भी हों, बादल भी न आयं, और दोपहर के समय गर्मी भी न हो। ऐसा समय कलियुग में आना तो कठिन है।

साठ और बारह

मुरादाबाद की ख़बर है। ६० वर्ष के एक बूढ़े महाशय ने १२ साल की कन्या के साथ विवाह किया है। इस प्रकार की घटनाओं में दोष किसे दें? बेचारी कन्या का तो कोई दोष नहीं। दोष दो का हो सकता है—कन्या के पिता का या नये दुलह का। दूलह का दोष यह है कि वह अपनी आयु का नाश करने के सिवा एक अबला की आयु का भी क्षय करने पर उतारू हुआ है—और जिस समय उसे गंगातट पर बैठ कर भगवान् के नाम की माला जपनी चाहिए थी, उस समय वह सुनहरे पल्लेवाला साफ़ा बांध कर दूलहा बना है। उस से भी बढ़ कर दोष है उस पिता का, जो पिता शब्द का अधिकारी न रहा। क्या अपने बच्चे को गंगा के जल में बहादेने वाला पिता पालक—पिता कहा सकता है। हमारी सम्मति में अपनी १२ वर्ष की यह लक्ष्मी को साठ वर्ष बूढ़े की गांठ से बांध देने की अपेक्षा उसे गंगा में बहादेना अधिक दया का कार्य है। हमें ज्ञान नहीं कि वे पिता और पति महाशय कौन हैं? संवाद दाता ने उनकी कोई सूचना नहीं दी, नहीं तो उन में सेपहले सज्जन से हम पूछते कि 'भाई! आपको अपनी जान से क्यों शत्रुता है, और दूसरे से पूछते कि 'आपको अपनी सन्तान से क्या विद्वेष है?

'होमरूललीग' बन गई

कांग्रेस सोचती ही रह गई—और मिसेज़ बेसेण्ट ने अपनी लीग स्थापित भी करली। मद्रास में होमरूललीग की स्थापना हो-गई, और मि० अरण्डेल उसके मन्त्री बन गये। इस पर मिसेज़बेसेन्ट का परमभक्त प्रयाग का लीडर भी घबरा कर पूछ रहा है कि 'यह लीग कब और कहां से आगई? इसके बनाने वाला कौन हैं?' मिसेज़बेसेन्ट ने बड़े शौक से यह प्रस्ताव बम्बई में एकत्र हुए नेताओं के सामने रखा, और टालम टोला होते देखा। मिसेज़ बेसेन्ट उन व्यक्तियों में से नहीं है, जो टाली जासके। उसने बिना इधर उधर से पूछे अपनी लीग बना डाली। अब उससे पूछना व्यर्थ है। जो काम चिरकाल पूर्व होना चाहिये था, उसका श्रीमती ने प्रस्ताव किया। कई कारणों से, जिन्हें प्रत्येक भारतवासी समझ सकता है, कांग्रेस के लीडरों ने उसे उत्साहित नहीं किया। अब लीग बन गई। वे सब कारण जो पहले थे, अब भी विद्यमान हैं। देखें कांग्रेस के नेता अब क्या रुख़ रखते हैं?

हिन्दी साहित्य सम्मेलन

जबलपुर में हिन्दी साहित्यसम्मेलन की स्वागत कारिणी बन गई, और उसने सम्मेलन की तिथि भी नियत करली। सम्मेलन मुहर्रम की छुट्टियों में होगा। सम्मेलन के साथ हिन्दी पुस्तकों की एक प्रदर्शनी भी होगी। प्रभा के सम्पादक पं० मक्खनलाल चतुर्वेदी स्वागत कारिणी की ओर से सारे प्रान्त में घूमेंगे। जिन विषयों पर लेख लिखवाने हैं, उनकी सूचि बना लीगई है।

एक शिकायत

ये सब समाचार हमने प्रयाग के लीडर से लिये हैं—किसी प्रकार का स्वतन्त्र संवाद हमें सभा की ओर से नहीं आया। सम्मेलन के बारे में जो कुछ हो, उसे जानने का सब से अधिक अधिकार यदि किन्ही को है, तो वह आर्यभाषा के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सियों को है। इस प्रकार की सूचनाएं सब स्थानों पर भाषाभाषियों को पहुंच जायं, उस के लिऐ ज़रूरी है कि हिन्दी के पत्रों को न भुलाया जाय। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के लिए किये गये यत्न की सूचना सब से प्रथम आर्यभाषा के पत्रों को ही दी जानी चाहिये। नहीं तो स्थायी समिति का कार्य कुछ २ कांग्रेस की शैली पर हो जायगा। राजनीतिक शिक्षा देनी है—सर्वसाधारण को, और व्याख्यान हों उस भाषा में, जिस के समझाने के लिए एक दुभाषिये की आवश्यकता हो। क्या हम आगे से आशा रख सकते हैं कि स्थायीसमिति के मन्त्री महोदय इस ओर ध्यान देंगे?

सभापति

एक बड़ा आवश्यक प्रश्न सम्मेलन के सभापति का है। जिन सज्जनों के नाम सभापतित्व के लिये प्रस्तावित किए जाते हैं—वे तीन श्रेणियों में बांटे जा सकते हैं। (१) वे लोग प्रथम श्रेणी में हैं, जिन्होंने अपना जीवन साहित्य सेवा में लगा दिया है, और आर्यभाषा संसार जिन का आभारी है। ऐसे सज्जनों का सभापतित्व के लिए प्रथमाधिकार है। (२) दूसरी प्रकार के वे सज्जन हैं, जिन्हों ने भाषा की लेख द्वारा या सीधे प्रचार द्वारा तो अधिक सेवा नहीं की, परन्तु हां, जन समाज के प्रसिद्धनेता होते हुए अपनी मूल्यवती सहानुभूति द्वारा भाषा के अभ्युदय की सहायता की है। ऐसे सज्जनों का सभापतित्व के लिए दूसरे दर्जे का अधिकार है। (३) तीसरे प्रकार के नाम उन महाशयों के पेश होते हैं जो न भाषा सेवी हैं, और न समाज के नेता होते हुए हिन्दी हितैषी हैं—वे लौकिक दृष्टि से ऊंचा स्थान रखते हैं और भाषा के प्रति सहानुभूति भी दिखाते हैं ऐसी श्रेणि में रयासतों के नरेश या बड़े ताल्लुकेदार समझे जाते हैं। ऐसे भद्रपुरुषों का सम्मेलन की गद्दी के लिए तीसरे दर्जे का अधिकार है। कारण यह है कि जहां साहित्य सेवा का मूल्य केवल धन सम्पत्ति के कारण बढ़ता हो, वहां अधिकार में न्यूनता ही समझनी चाहिए। इस कसौटी को सन्मुख रखते हुए ही सम्मेलन के सभापति का निर्णय करना चाहिये।

—:o:—

भारत में शिक्षा क्यों नहीं है?

एक अमरीकन महाशय ने सरहाकोर्ट-बटलर से दिल्ली में पूछा कि भारतवासी शिक्षा के विषय में जो शिकायतें करते हैं, उनका क्या समाधान है। उस महाशय को जो उत्तर मिला वह विचित्र है। आपने शिक्षा प्रचार में रुकावट के तीन कारण बतलाए—(१) भारत की साधारण प्रजा के संकुचित विचार हैं। (२) योग्य अध्यापक नहीं मिलते। (३) धन नहीं है। सेना तथा अन्य विभागों के लिए व्यय करने के अनन्तर गुंजायश ही नहीं रहती। इन तीनों कारणों को पढ़कर हमें हंसी आई। ये युक्तियां ऐसी हीं हैं जैसे कोई कहे कि अमुक पुरुष को भोजन नहीं देना चाहिए क्योंकि उसे भूख ज़ोर से लगी है। भारतवासियों को शिक्षित नहीं करना चाहिए—क्योंकि भारत की प्रजा के संकुचित विचार हैं-अर्थात् भारतीय प्रजा अशिक्षित है। शिक्षा का न होना ही संकुचित विचारों का कारण है—और वही शिक्षा न देने का प्रथम हेतु बतलाया गया है। योग्य अध्यापक नहीं मिलते। क्यों? इसी लिए तो कि भारत में शिक्षा का प्रचार कम है—और अध्यापकों की मांग कम है—ये दो ही तो कारण हैं कि भारत वर्ष में अध्यापक नहीं मिलते—और अध्यापकों का न होना शिक्षा न देने का हेतु बतलाया जाता है। तीसरा कारण और भी मज़ेदार है। रुपया नहीं बचता—ठीक है। कारण क्या है? सेना पुलीस आदि विभागों में खर्च बहुत हो जाता है। यों तो लार्डहार्डिंग अभी कुछ दिन हुए कह चुके हैं कि ऐसा समय भी था जब भारत में केवल १५००० सिपाई थे—और फिर भी देश में कोई गड़बड़ नहीं हुई। तब फिर सेना पर अधिक व्यय की आवश्यकता ही क्या है? भारतवर्ष तो शायद विना सेना के भी अंग्रेजों के हाथ में रह सकते हैं। किन्तु यदि सेना की आवश्यकता मान भी लें तो शिक्षा और सेना में से सेना को अधिक आवश्यक क्यों माना जाय? क्या कभी समझ में आसकता है कि सरहाकोर्ट बटलर जैसे योग्य पुरुष भी ऐसी निर्बल युक्तियां देसकते हैं।

—o—

फिर हत्याकाण्ड

कलकत्ते में फिर एक डिपुटी सुपरिण्टडण्डण्ट पुलिस का वध हुआ। मारने वाले कुछ बंगाली नव युवक थे। ऐसी घटनाओं को पढ़कर दो बातें स्मरण आजाती है। देश की पहिली आवश्यकता उचित शिक्षा की है। वह शिक्षा, शिक्षा नहीं जो आत्मा को उच्च न बनावे। यदि देश में आत्मिक शिक्षा ठीक मिलने लग जाय तो देश के शिक्षित नव युवक कभी ऐसे खोटे मार्गों से अपनी देशभक्ति का प्रकाश न किया करें। दूसरी बात जो स्मरण हो आती है, पूना के मरहट्टा अखबार की है। उसने लिखा था कि गुप्त कुमंत्रणाये तीन सीढ़ियों से बनती है। (१) उच्च अभिलाषा, (२) निराशा, तथा (३) कुमन्त्रणाशा। पहले नव युवकों के हृदयों में ऊंची अभिलाषा होती हैं, उन से जब निराशा होती है तब उन के मन में कुमन्त्रणा की आशा उपजती है। आशा का एक मात्र अवलम्ब गुप्त मन्त्रणा ही रह जाती है। यह बात भारत सरकार के ध्यान देने योग्य है। क्या ऐसा दिन नहीं आसकता जब भारत के युवक निराशा के शिकार न हुआ करें?

मिशनरी स्कूलों में धर्म हानि

पिछले सप्ताह मिशनरी स्कूलों की शिक्षा के बुरे परिणामों को हम दिख चुके हैं। इन स्कूलों में पढ़ते हुए आर्य जाति के कई बच्चे धर्महीन हो जाते हैं उन के कोमल हृदयों पर गहरी चोट लगती है—और उन के विचार डांवा-डोल हो जाते हैं। पिछली वार हमने एक घटनादी थी इस वार हम दो और घटनायें देते हैं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

आर्य-सज्जन इन घटनाओं पर विचार करें—और अपने कर्तव्य का निश्चय करें। हमें हर्ष है कि इलाहाबाद वाली घटना में आर्यसमाज ने अपना कर्तव्य पालन किया। सम्भवतः एक ईसाइन के विवाह का या उत्तम भोजन का विचार ही उस बालक को फिर ईसाइयों के चुंगल में खींच ले गया हो। घटनायें अन्यत्र दी गई हैं।

—०—

सहयोगियों की गति

सरस्वती—सरस्वती का जून का अंक हमारे सन्मुख है। अंक बढ़िया है। विश्वसंहारी महायुद्ध ने कई पत्रों का और—कई पत्रों के सौन्दर्य का संहार किया है। किन्तु प्रसन्नता की बात है कि सरस्वती पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वही पुरानी रौनक और वही चमक दमक अब भी विद्यमान है। प्रेस के धनिक स्वामी भी ऐसा भार सह सकते हैं। इस अंक में कई लेख उत्तम हैं। 'हिन्दू और मुसलमान' इस शीर्षक का लेख विचार पूर्ण बातों से भरा हुआ है। 'पञ्च परमेश्वर' की कथा सरस्वती की पुरानी कथाओं में जोड़ की है। इस अंक में बाबू मैथिलीशरण गुप्त जी का 'साकेत' नाम का काव्य प्रारम्भ हुआ है। आशा है, यह काव्य क्रमशः सरस्वती में प्रकाशित होगा और पाठकों के लिये आनन्ददायक होगा।

मर्यादा—मर्यादा का ज्येष्ठ का अंक प्राप्त हुआ। स्वत्व परिवर्तन होने के साथ नीति में नहीं तो रीति में भेद आना आवश्यक ही था। मर्यादा के सम्पादकीय विभाग में अब पं० कृष्णकान्तजी की गंभीर लेखनी काम नहीं करती, इसलिए रीति का कुछ अस्वाभाविक नहीं हुआ। इस अंक में कई अच्छे २ लेख छपे हैं। मर्यादा का यह अंक विशेषतया वाणिज्य प्रेमियों के काम का है। 'गेहूं की खेती' 'भारत का अन्तर्जातीय वाणिज्य' 'संसार में भारत की चाय का स्थान' इत्यादि लेखों से वाणिज्य प्रेमी उत्तम लाभ उठा सकते हैं। आदि में निदाघ पर एक कविता छपी है। उस में कोई २ पद बड़े मज़ेदार हैं।

बतादे, ऐ क्रूर पिशाच तूसो,
कहां हुआ, लुप्त उपल पुथल के,

इस का पद सन्निवेश भी बड़ा विचित्र है और अर्थ भी विलक्षण है। एक और मज़ेदार पद है—

प्रमत्त पावस बरसा रहा है
स्वतन्त्र जलधर निजकालिमा का।

इन पदों को यदि निर्माता महाशय उच्चारण करें, तभी छन्दोरचना में ठीक बैठ सकते हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि कुछ ही दिनों में मर्यादा संसार को सभ्यता की शिक्षा देने योग्य भी हो गई है। पहले क्योंकि शायद वह स्वयं सभ्यता रखती थी, उसे सभ्यता की उपदेशकता अधिक पसन्द न थी। परन्तु अब तो आपने महात्मा मुन्शीराम जी को 'गुरुकुल के महन्त' कह कर सभ्यता का आदर्श स्थापित किया है, और महात्मा जी को कई सभ्यता के उपदेश भी दिये हैं। अन्त में आपने सम्पादकीय उत्तर दातृता का सर्वोत्तम आदर्श यह स्थापित किया है—'मर्यादा का कोई ऐसा नियम नहीं है कि जब तक लेखक के सम्बन्ध में सब कुछ ज्ञात न हो उसके लेख न प्रकाशित किये जायं'। अपने पक्ष की पुष्टि के लिये सम्पादक महाशय ने गोसांई तुलसी दास की दो चौपाइयां उद्धृत की हैं—यदि उनके साथ ही आपको 'पर उपदेश कुशल बहुतेरे' इतना और भी स्मरण हो आता तो शायद हमें इतनी पंक्तियां लिखने की आवश्यकता न पड़ती।

प्रभा—प्रभा का प्रकाश कभी २ होता है—पर जब होता है तब अच्छा ही होता है। यदि इस पत्रिका के संचालक इसे समय पर निकालने का प्रबन्ध करसकें, तो बहुत उत्तम हो, हमारे सन्मुख मार्गशीर्ष और पौष के अंक पड़े हैं। इस अंक में 'कृषि को मत भुलाओ' 'काव्यचित्र' 'योरप की धार्मिक चढ़ाइयां' 'मराठों के नाश के कारण' 'पूर्ण कवि का साहित्य जीवन' ये लेख बड़े मनोरंजक और विचार पूर्ण हैं। प्रभा के लेखों की ओर शैली की हम कई बार प्रशंसा कर चुके हैं। हमें आशा है कि वह अपनी एक मात्र निर्बलता को दूर करके समय पर निकलने का यत्न करेगी। प्रारम्भ में श्रीयुत मन्नन द्विवेदी की उलहना शीर्षक कविता है—जो बड़ी मज़ेदार है। उस में शब्दों के सुगठन के साथ भावों की भी उत्तमता है-उसे हम यहां उद्धृत करते हैं।

(१)
नाथ! फिर कब लोगे अवतार
अच्युत अगम अधर्म मिटाने
जग में सदाचार फैलाने।
इसीदेश में प्रकट हुए, विश्वम्भर बारंबार॥

(२)
दोनों दल को बना नीललल
खिलवा कर इनको कल बल छल
भारत भाग्य उदधि को पुल से
करदे प्यारे पार॥

(३)
तुमने कुरुक्षेत्र करवाये
भाई से भाई लड़वाये।
हमें याद अब तक वह तेरा
अद्भुत अत्याचार॥

(४)
तब से क्या २ रंग जमाये
वियोगान्त नाटक रचवाये।
खेल खतम कर अरे खिलाड़ी
मत भारत को मार॥ नाथ!

हिंदीचित्रमय जगत्—हिंदी चित्रमय जगत का मई का अंक साधारण है। इस समय इस पत्र में एक बड़ी विशेषता है। हर एक अंक में मास-भर के युद्ध का सारांश रहता है। यह घटनाचक्र चित्रों को सहायता से समझाया जाता है। यह रीति हमारे भाषा के पत्रों में अभी तक नहीं

Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चली। साप्ताहिक पत्रों में भी युद्धादि के समाचार यों ही तिथिवार देदिये जाते हैं और उन्हें विशेषतया समझाने का यत्न नहीं किया जाता। वस्तुतः साप्ताहिक पत्रों का कार्य केवल समाचार देना नहीं—समाचारों को समझाना भी है। प्रचारक ने तो यह अपनी उद्घोषित नीति बना रखी है कि युद्ध समाचार देने ही नहीं। किन्तु जो पत्र युद्ध समाचार देते हैं उन्हें अवश्य यत्न करना चाहिये कि वे युद्ध के पौर्वापर्य और कार्य कारण भाव समझाया करें, ताकि समाचार केवल टुकड़े ही टुकड़े न रहें, उनकी उत्तम कथा गूंथी जाय। 'जयदेव कवि' के समय पर एक उत्तम लेख पठन योग्य है।

ब्रह्मचारी—ब्रह्मचारी हरिद्वार ऋषिकुल का मुख पत्र है। कुछ दिन तक यह अपने सम्प्रदाय की पुरानी चाल को छोड़ता नज़र आता था। किन्तु अब तो वह अमृतसर के 'सत्य सनातन धर्म' से बाज़ी लेजाना चाहता है। पौराणिक मत की मुख्य संस्था के मुख पत्र को अपने सम्प्रदाय की रीतनीत में आगे रहना ही चाहिये।

विद्यार्थी—यह पत्र विद्यार्थियों के लिए प्रतिदिन अधिकाधिक उपयोगी होता जारहा है। इसके लेखों की उपयोगिता में ज़रा भी सन्देह नहीं। छोटी २ कविताओं तथा छोटे २ लेखों के संग्रह में पं० रामजीलाल शर्म्मा अच्छे सिद्धहस्त हैं। ज्येष्ठ के अंक में प्रारम्भिक कविता बड़ी मीठी है। पाठकों के मनोरंजनार्थ वह नीचे दी जाती है।

तुम्हीं हो इस उपवन के फूल॥
बिना तुम्हारे हरित देश में
उड़ती मानों धूल।
जनता कुंज कलेवर सूना
जो हो तुम न दुकूल॥ तुम्हीं०
रंग रूप प्यारे! तुम रखना
संतत ऋतु अनुकूल।
सहज सुगन्ध सुरस से अपने
हरना मन के शूल॥ तुम्हीं हो०
ग्रीष्म ताप हेमन्त शीत से
घबराना न क़ज़ूल।
विमल वसन्त प्रतीक्षा ही में
सब दुख जाना भूल॥ तुम्हीं हो०
ऐसे फल लाना निज बल से
मधुमय मंगल मूल
जिन पर गर्व करे यह भारत
जय हर्ष से फूल॥ तुम्हीं हो०

श्रावणी का उत्सव

रक्षा बन्धन

श्रावणी का उत्सव बड़ा पुराना है—रक्षा बन्धन भी बड़ा पुराना है। उत्सव किसी न किसी सिद्धान्त का सूचक होता है। उत्सव चिरकाल से चले आये हैं वे निर्मूल और निराधार नहीं है। श्रावणी का उत्सव भी बड़े महत्व का है। श्रावणी का महत्व है—रक्षा बन्धन में। उस उत्सव पर सब जगवासी एक दूसरे की रक्षा की प्रतिज्ञा करते हैं। एक देश और एकजाति तक ही यह उत्सव परिमित नहीं समझना चाहिये। भारत वर्ष में जब भिन्न प्रान्तों में भिन्न २ जातियां थीं और भिन्न जातियों के लोग एक दूसरे के साथ पूरा एका भाव न रखते थे—उस समय सारे देश भर में रक्षा बन्धन का दिन निर्व्याज मिलाप का दिन था। आज के मिलाप में वे प्रेम या द्वेष के कारण भूल जाते थे, जो साधारणतया जगत्प्रसिद्ध है। जगत् में उपकार को मित्रता का और अपकार को शत्रुता का कारण कहा जाता था। इस दिन ये कारण भूल जाते थे और प्रेम का एक यही कारण स्मृत रहजाता था कि 'हम सब एक ही परमात्मा के पुत्र हैं' एक ही पिता की सन्तान को परस्पर लड़ना झगड़ना न चाहिये। इस दिन का यह मनाया हुआ रक्षा बन्धन अबलाओं का मान रक्षक होता था—और हिन्दू-मुसलमान भेदों को भुला देता था।

क्या वह दिन फिर भी आयगा? क्या रक्षा बन्धन का वह महत्व कभी जगद्व्यापी होगा?

जिस दिन रक्षा बन्धन के दिन का पूरा महत्व स्थापित होगा उस दिन से भारत फिर एक अपनी नारकी स्थिति को छोड़ कर नन्दन वन का आधिपत्य पायगा।

उस दिन योरप भर में महा-तोपों के भयंकर नाद के स्थान पर सुरीले शान्ति-गीत सुनाई देंगे।

अभी वह दिन दूर है—परन्तु क्या भारतवासी और देश वासी इस उत्सव की पूरी २ तय्यारियां प्रारम्भ कर देंगे? अगली वार हम इस दिन पर कुछ विशेष तौर से लिखेंगे।

समालोचना

चित्र तथा मोटोज़

कलकत्ते से म० गोकुलचन्द गोविन्दराम ने स्वामी दयानन्द जी का रंगीन चित्र और चार मोटोज़ भेजे हैं। इनकी समालोचना में विलम्ब हुआ, जिस का शोक है। स्वामी जी का चित्र उत्तम है। मोटोज़ भी सब उत्तम हैं। 'ओ३म्' बहुत खूबसूरत बना है। गायत्री मन्त्र भी उपादेय है।

मिलने का पता बम्बई—ट्रेडिंग कम्पनी २१३ बहूबाज़ार स्ट्रीट कलकत्ता।

समालोचना

भट्ट जी का लिपिकौशल

वर्णाकृति पत्र

गुरुकुल के मुलेखाध्यापक पं० गौरीशंकर जी भट्ट ने "देवनागरीलिपि को अलंकृत करने के उपाय" शीर्षक निबन्ध लिखा था जो गत गुरुकुलोत्सव पर आर्यभाषा सम्मेलन में सुनाया गया था, उस के सम्बन्ध में अलंकृत अक्षरों के अत्यन्त मनोहर अनेक नमूने तथा मोनोग्राम और तुगरे दिखलाए गए थे, वही सब इस वर्णाकृतिपत्र में बहुत ही स्वच्छ छापेगए हैं। निबन्ध गत १ और ८ ज्येष्ठ के प्रचारक में मुद्रित हो चुका है उसे जिन सज्जनों ने पढ़ा है और जो देवनागरीलिपि के विविध प्रकार के सुन्दर २ नमूने देखना चाहते हैं, उनको यह वर्णाकृतिपत्र अवश्य मंगाकर देखना चाहिए। मूल्य एक आना और डाक महसूल आध आना।

गायत्री मन्त्र

और

प्रार्थना मन्त्र

यह दोनों मन्त्र भी उक्त भट्ट जी ने अतिसुन्दर अक्षरों से लिखकर अच्छे चिकने काग़ज़ पर छपवाए हैं। आकार १८×२२ इञ्च है। छपाई स्वच्छ है। मन्त्रों के नीचे संक्षेप भाषार्थ भी है। इनके चतुष्कोण बार्डर लगे हुए हैं। दोनों पत्र समाजमन्दिरों तथा आर्यसज्जन मात्र के बैठकों की सजावट के लिए उत्तम हैं। दोनों का मूल्य डेढ़ डेढ़ आना। रंगीन पाउडर से चमचमाते हुए दोदो आने।

मिलने का पता—
प० गौरीशंकर भट्ट गुरुकुल कांगड़ी
पो० ज्वालापुर (ज़िला सहारनपुर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ईसाई स्कूलों में शिक्षा

[१]

ईसाई स्कूल में शोचनीय कांड।

(अभ्युदय से)

स्थानीय जमुना मिशन स्कूल का गत जन्माष्टमी का झगड़ा पाठकों को भली भांति मालूम होगा। उसके थोड़े ही दिन पश्चात् एक और नया बखेड़ा उठ खड़ा हुआ। मध्यप्रदेश के होशंगाबाद शहर में भी यहां की तरह पादरियों की एक पाठशाला है। इन लोगों ने वहां पर एक गौड़ ब्राह्मण के लड़के रामदास को अपने चंगुल में फँसाया। रामदास एक दरिद्र पुरुष का पुत्र है। उसका बाप कहीं कचहरियों में पानी पिलाया करता है और इस तरह ६) अथवा ७) रु० महीना पैदा कर किसी न किसी प्रकार अपने कुनबे का पालन करता है। नवयुवक रामदास को पादरियों की मिठाईयों के सामने अपने घर की सूखी रोटी अच्छी न लगने लगी। वह इन लोगों की कही में आगया पादरियों ने उसे चुपचाप इलाहाबाद भेज दिया और वह यहां क्रिश्चियन बोर्डिंग में डाक्टर जैनविवर और मिस्टर जेकब की निगरानी में रक्खा गया। वह लड़का जमुना मिशन स्कूल के छटवें स्पेशल क्लास में पढ़ने लगा। पहिले कुछ महीनों तक वह अपने हाथ से भोजन बनाता रहा पश्चात् क्रिश्चियन बोर्डिंग हौस के रसोईघर का मैनेजर नियत किया गया और मासिक वज़ीफे के अतिरिक्त उसे भोजन भी मिलने लगा। उस की चोटी काट दी गई और जनेऊ तोड़ कर फैंक दिया गया। इन पादरियों ने उसे बपतिस्मा देना चाहा परन्तु लड़के ने कहा कि आपलोग थोड़े दिन और ठहरिये इसके बाद मैं बपतिस्मा ले लूंगा। यह बात सिवा ईसाइयों के और किसी को मालूम न थी। स्कूल में मिस्टर विश्वास नाम के एक वृद्ध ईसाई मास्टर हैं। क्लास में बाइबिल पढ़ाते समय उन्होंने एक दिन कहा कि "देखो" हमारे मज़हब में इतनी विशेषता है कि अभी हाल ही में एक ब्राह्मण का लड़का ईसाई होने पर उद्यत हुआ है।" लड़कों में खलबली मची और यह खबर आर्य्यसमाजी भाइयों के कान तक पहुंचाई गई। शनैश्चर का दिन था। इस भय से कि कल इतवार है और ऐसा न हो कि कल ही उसको बपतिस्मा मिल जाय, आर्य्यसमाजी भाइयों ने गुलगुपाड़ा मचाना प्रारम्भ कर दिया। उनमें से दो तीन उस लड़के का पता पूछने के लिए मि० जेकब और स्कूल के मैनेजर डा० एडवर्डस से मिले। दोनों साहबों ने पता देना अस्वीकार किया। मि० जेकब ने यह भी कह डाला कि—"The boy is a christian. He belongs to a church which does not recognize baptism" अर्थात् 'लड़का ईसाई हो गया है और वह एक ऐसे गिरजे का सभ्य है जो बपतिस्मा को नहीं मानता" खैर, किसी न किसी प्रकार उन लोगों ने पता मालूम करके रामदास के पिता को बुलाया। रामदास का वृद्ध पिता जिसने अपने पुत्र को मृतवत् समझ रक्खा था, जिसको स्वप्नमें भी इस बात का ख्याल न था कि वह पादरियों के पंजे में आ चुका है, बड़ी उत्सुकता के साथ अपने पुत्र को देखने के लिए वहां आया और आर्य्यसमाज में ठहरा। दूसरे दिन वह पता लगाता २ स्कूल के समय में स्पेशल क्लास के दरवाज़े पर आकर खड़ा हुआ और उस क्लास के अध्यापक श्रीयुत सूरजदीन से गिड़गिड़ाकर कहा कि "मैं अपने पुत्र रामदास से मिलना चाहता हूं।" मास्टर साहब ने रामदास को खड़ा कर पूछा कि "तुम इस आदमी को जानते हो?" लड़के ने कहा, "जी हाँ यह मेरा पिता है।" मास्टर साहब ने कहा, "वह तुम से मिलना चाहता है, यदि तुम्हारी इच्छा हो तो तुम मिल सकते हो।" लड़के के हृदय में भी पिता को देख कर प्रेम की लहरें चक्कर मारने लगीं। वह बाहर निकला और सब के सामने दोनों गले मिल कर ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। तदनन्तर पिता और पुत्र दोनों इक्के में बैठ कर समाज में आये। उस लड़के ने उस समय पादरियों की सारी पोल खोल दी। उस ने यह भी कहा कि जैनविवर साहब ने अपने हाथ से मेरी चोटी काटी और मेरा जनेऊ तोड़ा। उसने कई मनुष्यों के सामने यह भी प्रगट किया कि "एक सयानी ईसाई लड़की से बात चीत करा कर मुझे यह वचन दिया गया कि तुम्हारा विवाह इसी लड़की से हो जायगा।" हम नहीं कह सकते कि इस में कहां तक सत्यता है। दो दिन समाज में रह कर पिता पुत्र को ले कर घर चला गया। परन्तु होनहार प्रबल है, वह चंचल लड़का इलाहाबाद फिर भाग आया और तूसरे दिन बैपटाइज़ (ईसाई) कर लिया गया। आफ़त बेचारे हिन्दू अध्यापकों पर पड़ी। डाक्टर एडवर्ड्स ने मास्टर सूरजदीन पर इस बात का लाञ्छन लगाया कि तुम्ही ने लड़के को भगा दिया था और दो तीन दिन तक खूब परेशान किया। हिन्दू अध्यापकों के प्रति इस बात की कसक स्कूल के अधिकारियों के दिल में बनी रही। स्कूल बन्द होते ही उन लोगों ने अपनी हृदय-कलुषता का परिचय देना प्रारम्भ कर दिया। ६ अध्यापकों को जवाब मिल गया! इस में से दो ईसाई भी हैं। इन दोनों ईसाई भाइयों का दोष तो मालूम नहीं परन्तु सन्देह यह होता है कि मिस्टर लुविस को हिन्दुओं की सोसाइटी में अधिक रहने के कारण और मिस्टर विश्वास को उन की पोल खोलने के लिए इन लोगों ने अपने यहाँ से हटा दिया। इस खबर को सुन कर अन्य हिन्दू अध्यापकों ने भी विसर्जन पत्र देना प्रारम्भ कर दिया है।

[२]

पादरियों का साहस बहुत बढ़ता मालूम होता है। दक्षिण भारत-वाही के एक संवाददाता ने लिखा है, कि चोम्बल स्थान के मि० रोसवर नामक एक पादरी ने तय्या जाति की एक चतुर्दश वर्षीया लड़की को रोक रखा है। समय पाकर वह उसे ईसाइन बनायेंगे। लड़की की माता ने लड़की से जब घर लौट चलने के लिये कहा, तो उस ने अपने गहने उतार कर रोती हुई माता को सौंपे और कहा, कि मैं मर भले ही जाऊं; किन्तु ईसाइन बनने से बाज़ न आऊंगी। लड़की का विवाह हो चुका था। पतिराम अदालत की शरण लेने को फिर रहे हैं। अभी उस दिन तञ्जौर के एक देशी ईसाई ने भी एक सोलह वर्षीया ब्राह्मण युवती के कानों में ऐसा ही मन्त्र फूंका है। क्या मद्रास के हिन्दू इस नये मर्ज़ का इलाज करने में असमर्थ हैं या पादरी वर्ग ने ही कोई नये वशीकरण मन्त्र याद कर लिये हैं। (कलकत्ता समाचार)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्राप्त पत्र

ग्रन्थ संशोधन कार्य।

महाभारतार्य्य टीका वनपर्व अध्याय ४७ में लिखा है कि:—

बृहदश्व बोले कि हे युधिष्ठिर! राजा नल दमयन्ती को छोड़ कर एक गहन वन में पहुंचा जहां दावानल=वनाग्नि लग रहा था, वहां उसने किसी प्राणी को बारंबार ऊंचे स्वर से यह पुकारते हुए सुना कि हे राजा नल! दौड़ और मुझे बचा।

यह सुन कर नल ने कहा कि तू भयभीत मत हो और यह कह कर वह जलती हुई अग्नि में घुस गया, वहां पहुंच कर देखता क्या है कि एक सर्प कुंडली बांधे बैठा है, नल को देखकर वह सर्प नम्रता पूर्वक कहने लगा कि हे राजन्! मैं करकोटक नामक सर्प हूं। मुझे किसी अपराध के कारण ब्रह्म-ऋषि नारद ने यह शाप दिया था कि तू जड़ समान पड़ा रह, जब राजा नल तुझको यहां से ले जाएगा तब तू मेरे शाप से छूटेगा। सो मैं उस शाप के कारण एक पग भर भी नहीं चल सकता हूं, आप मेरी रक्षा करें मैं आपको कल्याण का उपदेश करूंगा, और आप से मित्र भाव मान कर रहूंगा, मेरे समान दूसरा कोई सर्प नहीं है, मैं अपने शरीर को हलका किए लेता हूं तुम मुझे यहां से उठा ले चलो।

यह कह कर वह सर्प अंगूठे के बराबर होगया और नल उसे उठाकर वहां ले आया जहां अग्नि न थी। जब राजा नल ने उस अग्नि से बचाए हुए काले सर्प को छोड़ना चाहा तब वह पुनः बोला कि हे राजा नल! अब कुछ दूर तू अपने पग गिनता हुआ चलाचल मैं तेरा परम कल्याण करूंगा। तदन्तर वह पग गिनता हुआ चला, दशवें पग पर उस सर्प ने राजा को काट खाया, उसके काटने से राजा नल का वह स्वरूप तुरंत अंतर्हित होगया, तब वह अपने विकृत स्वरूप को देखकर चकित हो खड़ा हो रहा और उस नाग को अपना स्वरूप धारण किए हुए देखा।

तत्पश्चात् वह कर्कोटक सर्प राजा नल को धैर्य देकर कहने लगा कि मैंने तुम्हारे स्वरूप को इस कारण अन्तर्हित कर दिया है जिससे तुझे कोई जान न सके। और हे नल! जिसके कारण तैने इतना दुःख उठाया है वह दुष्ट जब तक तेरे शरीर में से नहीं निकलेगा तब तक वह मेरे विष से महा दुःखी होकर वास करेगा। हे राजन्! मैंने यह तुम्हारी रक्षा इस कारण की है और उस पापी पर इस लिए क्रोध किया है कि उसने तुझ निष्पाप तथा दुःख के अयोग्य को निरपराध ठगा है, मेरी कृपा से तुमको राक्षस ब्रह्मज्ञानी, शत्रु तथा दाढ़ी वाले हिंसक जीवों से भी भय नहीं रहेगा, विष भी तुम्हारी देह में पीड़ा न दे सकेगा और संग्राम में तुम्हारी सदा जीत रहेगी।

हे राजा नल! अयोध्या में ऋतुपर्ण नामक एक इक्ष्वाकुवंशी राजा है वह अक्ष=पासों की विद्या में बड़ा निपुण है, सो तुम उस राजा के पास यह कहते हुए चले जाओ कि मैं "बाहुक" नामा सूत हूं, वह राजा तुम्हें अश्वहृदय विद्या के बदले अक्ष हृदय विद्या देगा, सो जब तुम्हारी उस राजा से मित्रता हो जायगी और वह विद्या तुम उससे प्राप्त कर लोगे तब तुम्हारा कल्याण होगा।

अब तुम शोक करना छोड़दो, तुम को तुम्हारा राज्य, पुत्र तथा स्त्री फिर मिलेंगे, यह मैं तुम से सत्य कहता हूं और जब तुम अपना निज-स्वरूप देखना चाहो तब तुम मुझे स्मरण करना और यह दिव्य वस्त्र जो मैं तुम्हें देता हूं इस को ओढ़ लेना, ऐसा करने से तुम अपने स्वरूप को फिर पाओगे, यह कह कर और वस्त्र देकर वह नागराज वहीं अन्तर्हित होगया।

यह कथा असम्भव दोष से परिपूर्ण है। राजा नल जलती हुई अग्नि में कैसे घुस गया? क्या सर्प मनुष्य से वार्तालाप कर सकता है? अथवा पूर्वकाल में कोई ऐसी विद्या मौजूद थी जिस से मनुष्य सर्प की बोली समझ सके? क्या सर्प योगीराज था जो अपने शरीर को हलका करके अंगूठे के बराबर होगया? सर्प के काटने से राजा नल का न मरना, पर विकृत स्वरूप होजाना और नाग को नल का रूप धारण करना—ये कैसे सत्य हो सकते हैं? नाग के पास दिव्य वस्त्र कहां से आए? इन बातों से सिद्ध होता है कि यह ४७ वां अध्याय प्रक्षिप्त है।

वनपर्व अध्याय ९०-९१

इन अध्यायों में लिखा है कि जब एक जंगल में पाण्डव प्यासे हुए तो युधिष्ठिर ने नकुल से कहा कि तू वृक्ष पर चढ़ कर देख कहीं आस पास कोई जल का स्थान है क्या? नकुल ने देख कर कहा कि है; तब युधिष्ठिर बोले कि जल लेआ। नकुल जल के निकट गया और पानी पीने लगा तो वृक्ष पर से किसी यक्ष ने कहा कि पहिले मेरे प्रश्नों का उत्तर दे तत्पश्चात् पानी पीना और लेजाना। परन्तु नकुल ने उस के कथन की उपेक्षा की और पानी पीलिया। पानी पीते ही वह अचेत होकर गिर पड़ा। इसी प्रकार सहदेव, अर्जुन और भीमसेन भी क्रमशः मरगए। तब युधिष्ठिर ने जाकर यक्ष के सब प्रश्नों का उत्तर देकर उस को सन्तुष्ट किया। प्रसन्न होकर यक्ष ने उसके चारों भाइयों को जिला दिया। सो श्लोक ये हैं:—

यक्ष उवाच

यस्य ते ऽर्थाच्च कामाच्च आनृशंस्यं परं मतम्। तस्मात्ते भ्रातरः सर्वे जीवन्तु भरतर्षभ। १२८॥

अर्थ—यक्ष बोला कि हे युधिष्ठिर! तुम समता को अर्थ तथा काम से ही श्रेष्ठ मानते हो, इस लिए तुम्हारे सब भाई जीवित हो जावें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

वैशम्पायन उवाच

ततस्ते यक्ष वचनादुदतिष्ठन्त पाण्डवाः। क्षुत पिपासे च सर्वेषां क्षणेन व्यपगच्छताम् ॥ अ० ९२ श्लो० १ ॥

अर्थ—वैशाम्पायन बोले कि हे राजा जनमेजय ! तत्पश्चात् उस यक्ष के कहने से चारों भाई क्षण भर में जीवित होकर उठ खड़े हुए और उनकी भूख प्यास सब निवृत्त होगई।

आशंका—यह यक्ष कौन था ? अब भी यक्ष होते हैं अथवा नहीं ? होते हैं तो कहां रहते हैं और उस समय की तरह अब प्रकट क्यों नहीं होते ? पानी पीकर चारों भाई कैसे मरगये ? यदि कहें कि उस पानी में विष मिला होगा, तो क्या उस यक्ष के प्रश्नों का उत्तर देकर पानी पीने से वे न मरते ? यदि मरगए थे तो यक्ष के कथन मात्र से वे कैसे जीवित हो गए और विना भोजन और जल के उन की भूख प्यास कैसे निवृत्त होगई ? ये सब असम्भव बातें हैं जिनके सत्य होने का सबूत कोई नहीं देसकता।

विराट् पर्व अध्याय ५८

इस अध्याय में अभिमन्यु और उत्तरा के विवाह का वर्णन है। उस विवाह में कितने आदमी जमा हुए थे-इस का अनुमान इन श्लोकों से करना चाहिये:-

दशनागसहस्राणि हयानांचदशायुतम्।
रथानामर्बुदं पूर्णं नि-खर्वं च
पदातिनाम् ॥ २२ ॥
वृष्ण्यंधकाश्च बहवो भोजाश्च परमौजसः।
अन्वयुर्वृष्णिशार्दूलं वासुदेवं
महाद्युतिम् ॥ २३ ॥

अर्थ—बड़े पराक्रमी कृष्ण जी के साथ दश सहस्र हाथी, दश अयुत घोड़े, एक अर्बुद रथ एक खर्व प्यादे और भोज तथा अंधकवंशी बड़े २ शूरवीर भी आये।

यह एक खर्व, एक अरब, एक लाख, दश हज़ार [१०१०००११००००] तो केवल कृष्ण जी की फ़ौज हुई। अब यदि एक २ हाथी पर दो २ सवार व एक २ महावत, एक २ रथ में दो २ रथी व एक २ सारथी, एक २ घोड़े पर एक २ सवार व एक २ सईस, काशीराज, राजा शैव्य और महाबली राजा द्रुपद [तीनों] की तीन अक्षौहिणी सेना और मंडैली, जनैतियों के दास, दासी, सेवक, अनुचर, आदि सब का जोड़ लगाया जाय तो अनुमान १५००००००००० (डेढ़ खर्ब) तक संख्या पहुंच जावे।

आशङ्का—क्या इतने मनुष्य एक जगह इकट्ठे हो सकते हैं ? डेढ़ खर्ब मनुष्य तो एक जगह इकट्ठे हो गए तो उस समय दुनियां की आबादी अनुमान १५–१६ खर्ब होनी चाहिये; आजकल तो दुनियां की आबादी करीब डेढ़ अरब है, क्या उस समय सैंकड़ों गुणा अधिक आबादी थी ? इस में क्या प्रमाण ?

यहां पर मेरी एक छोटी सी विनय आर्य्य ग्रन्थ कर्ताओं से है कि ऐसी २ असम्भव, युक्ति प्रमाण विरुद्ध बातें आर्ष-ग्रन्थों में से सर्वांश में क्यों न निकाल डाली जायं और यदि इस प्रकार की बातें वास्तव में उन ग्रन्थों के लेखकों की लेखनी से निकली हुई हैं तो उन ग्रन्थों को आर्ष पद से क्यों न गिराया जाय ? क्योंकि यह आवश्यक नहीं कि प्राचीन सर्व ग्रन्थ-कर्ताओं के ग्रन्थों को अपने अनुकूल बनाने ही से इस संसार में हमारा काम चल सके।

प्रायः आर्य सामाजिक विद्वानों में यह एक दोष आ बसा है—जो अत्यन्त हानिकारक है—कि वे प्रत्येक प्राचीन ग्रन्थ को काट छांट कर वा उसका अर्थ खैंच-तान कर अपने सिद्धान्तों के अनुकूल बनाने का यत्न करते हैं। इस से सिवा हानि के लाभ क्या हो सकता है। कई जगह शर्म उठानी पड़ती है। दृष्टान्त के लिये महाभारतार्य्य टीका आदि पर्व अ० ४९ में लिखित द्रौपदी का पांचों पाण्डवों के साथ विवाह का वर्णन प्रस्तुत किया जासकता है। कौन भद्र पुरुष इस के लिये हामी भर कर शर्म न उठायगा।

इसी प्रकार मनुस्मृति में भी कई जगह और रामायण में भी कहीं २ बहुत खैंचा तानी करनी पड़ती है। रामायण का एक दृष्टान्त देता हूं कि रामायण में कहीं ऐसा श्लोक देखने में नहीं आता कि जिस में रामचन्द्र का विवाह के समय में आदित्य, रुद्र वा वसु ब्रह्मचारी की अवस्था को प्राप्त हुए का वर्णन हो वा सीता को २४ वा २० वा १६ वर्ष की अवस्था तक पहुंची हुई विवाह के समय में बतलाता हो। मनुस्मृति के विषय में एक आर्य विद्वान् का कथन है कि १०-१५ वर्ष पश्चात् यह ग्रन्थ आर्य समाज में अमान्य हो जायगा। यदि यही बात है तो पहिले से ही बहुत सोच विचार कर कार्य करना चाहिये, जिससे फिर शीघ्र उलट फेर न करना पड़े।

ग्रन्थ ही सब सभा समाजों व धर्मों की स्थिति को बनाने तथा बिगाड़ने में पूर्ण सहायक होते हैं। शास्त्रार्थों में भी जय विजय के यही कारण होते हैं और प्रचार के भी यही साधन हैं, इस लिये ग्रन्थ संशोधन व प्रकाशन एक बड़ी भारी ज़िम्मेवारी का काम है। ऐसी भारी ज़िम्मेवारी के काम को व्यक्तियों के हाथों में न जोड़ कर श्रीमती आर्यावर्तीय सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने हाथ में लेना चाहिये। यही मेरा अन्तिम निवेदन है। ओंशम्॥

गंगाराम उवाना.

—०—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्रीमान् सम्पादक जी सद्धर्म्म,प्रचारक
गुरुकुल काङ्गड़ी ।

य महोदय,

आज कल समाचार पत्रों में देशीमिति के सम्बन्ध की चर्चा चलरही है। देश के लिए एक मिति की आवश्यकता के विचार से ही यह प्रश्न उठाया गया है। इस में प्रधानतः दो पक्ष हैं, एक पक्ष कहता है कि राष्ट्रमिति के लिये सौर गणना उपयुक्त है दूसरा कहता है चान्द्र गणना ठीक है। सौर गणना का वास्तविक रूप नजाम कर लोग उस के पक्ष में सम्मति देने लगते हैं क्योंकि सौर गणना व्यावहारिक न होने के कारण सर्व साधारण से अपरिचित है अतएव उसके गुण दोष लोगों को विदित नहीं सौर गणना के वास्तविक रूप दिखलाने के लिये कुछ प्रश्न मैंने किये हैं जो आप की सेवामें भेज कर आशा करता हूं कि अपने बहुमूल्य पत्र में इसे स्थान देकर बाधित करेंगे।

भवदीय
इन्द्र नारायण द्विवेदी

हिन्दी साहित्य सम्मेलन—
कार्य्यालय प्रयागराज
सौर वादियों से प्रश्न

जो सज्जन यह विश्वास करते हैं कि हमारे देशकी देशीमितियों में सौर मिति ही सरलता से राष्ट्र मिति बनाई जा सकती है उनके प्रति हमारे निम्नलिखित पांच प्रश्न हैं, आशा है कि देशहित के विचार से [वाद प्रतिवाद की दृष्टि से नहीं] वे ऐसे उत्तर देंगे जिन से व्यर्थ का विवाद न बसकर राष्ट्र मिति का निर्णय हो सकेगा।

[१] सौर-गणना दो प्रकार की है:— एक सायन दूसरी निरयण। सायन में भी दो भेद हैं पाश्चात्य गणितानुसार दृश्य-गणना और आर्ष गणन गणना। निरयण गणना में ग्रन्थों के भेद से अनेक भेद हैं अत एव पञ्चाङ्गों में पारस्परिक भेद पड़ता है अतएव 'राष्ट्रमिति' के लिए किस सौर गणना को आप लेंगे? क्योंकि दृश्य और अदृश्य गणना में लगभग २३ दिनों का अन्तर है।

[२] अदृश्य—निरयण गणना ही अपनी मितियों में आप लोग मानते हैं और उसी को आप वैज्ञानिक गुण सम्पन्न बतलाते हैं किन्तु अदृश्य गणना गतानुगतिक और एक मात्र आगम प्रमाण के आधार पर टिकी है उसे वेध आदि क्रियाओं के द्वारा आप कैसे जान सकते?

[३] सौर मासों की सावन तारीखें आप ठीक मुसलमानों के चान्द्र मासों की सावन तारिखों के समान मानते हैं जो उन की छाया मात्र है, इस के लिये क्या कोई प्रमाण शास्त्रों में है? यदि नहीं है तो मुसलमानों की नकल क्यों करते हैं?

[४] सौरमास २९—३२ दिनों तक के होते हैं, इतना ही नहीं प्रति वर्ष उनके दिनों में अन्तर भी पड़ता जाता है अतएव व्यापार एवं राजकार्य में इस गणना का उपयोग क्यों कर किया जा सकता है?

[५] चान्द्र मासों में २९॥ ही सावन दिन होते हैं सावन चान्द्र के मिलान में जो आप २९—३० दिन ही होते हैं ऐसी दशा में क्या सौर गणना इससे अधिक सरल है।

इन्द्रनारायण द्विवेदी

—:०:—

श्रीमती गौड़ महासभा
के
ध्यान देने योग्य

श्रीमती गौड़ महासभा को इस बात का अभिमान है कि वह गौड़ ब्राह्मण कुलोत्पन्न विद्यार्थियों की जब कि उन की आर्थिक दशा अति निर्बल होती है छात्र वृत्ति द्वारा सहायता कर उन को योग्य बनाती है। यह अभिमान सच्चा अभिमान है। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इस के अधिकारी गण छात्र वृत्तियां देते समय अधिकारी व अनधिकारी का कुछ खियाल नहीं करते प्रत्युत सिफारिशों पर काम करके और आपस के द्वेषों को सामने रख कर सभा की शोभा को बढ़ाने का प्रयत्न करते हैं। जैसे कि निम्न लिखित प्रमाणों से पाया जाता है।

बनवारीलाल विद्यार्थी द्वितीय मिडल कक्षा, बनारसीदास हाईस्कूल अम्बाला छावनी, ने जो कि गौड़ कुलोत्पन्न है कोई ३ मास छुटा अपना प्रार्थना पत्र छात्रवृत्ति के लिए भेजा था। यह प्रार्थी एक बुढ़िया विधवा का पुत्र है। इस का पिता समय हुआ मृत हो चुका है। यह तहसील रीवाड़ी ज़िला गुड़गांवां के एक ग्राम का रहने वाला है। पांच छः साल हुए इस की विधवा माता इसे लेकर मांगती तांगती हमारे ग्राम (शाहपुर तहसील तथा ज़िला अम्बाला) में आ गई थी, और यहां ही रहने लग गई थी, और अब तक यहां ही मजदूरी करके निर्वाह करती है। पंचम प्राइमरी कक्षा तक तो यह विद्यार्थी ग्राम की डिस्ट्रिक्टबोर्ड पाठशाला में पढ़ता रहा, और इस के खान पान वस्त्र पुस्तकादि का व्यय इस की माता मजदूरी करके चलाती रही और कुछ सहायता ग्राम वासी भी देते रहे। अब ढाई साल से यह अम्बाला छावनी जाकर बनारसीदास हाईस्कूल में विद्या प्राप्त करने लगा है। ग्राम में वह तीन पैसे की टोपी लंगोटी, और सादा कुर्त्ता पहिन कर अपने दिन काट लेता था और रूखी मिस्सी खाकर पेट भर लेता था। पुस्तकों पर भी अधिक व्यय न होता था। अब छावनी में जाकर लंगोटी के स्थान में धोती बांधनी या पाजामा डालना पड़ता है। कुर्ते को कोट के साथ ढकना आवश्यक है। ३ पैसे की टोपी पहिननी कठिन है। विद्यार्थी आश्रम (Bordinghouse) में रह कर रूखी मिस्सी भी नहीं खा सकता। वहां इसे वही खाना पड़ता है जो और छात्रों के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वास्ते पकता है। पुस्तकादि का व्यय भी बढ़ गया है। मुख्याध्यापक महाशय की कृपा से (SchoolFee) इस की मुआफ़ है, खान पान का प्रबन्ध इस प्रकार से किया हुआ है—कि आश्रम में विद्यार्थी अधिक होने के कारण इन को दो विभागों में विभक्त किया हुआ है, यह एक दिन एक विभाग के साथ भोजन पाता है और एक दिन दूसरे के साथ, वस्त्र यह बाबू साहिबों के उतरे हुए धारण करता है। पुस्तकादि के वास्ते इस को इधर उधर से चन्दा करके टके दिए जाते हैं। चूंकि मैं इस विद्यार्थी की दशा को भली प्रकार जानता था। मैंने इस के छात्र वृत्यर्थ प्रार्थना पत्र पर सब कुछ पूर्णतः लिख कर उस पर सही डाली थी। श्री० मुख्याध्यापक जी ने भी बल पूर्वक इस के पक्ष में लिखा था। अब मुझे सूचना मिली है कि इस की प्रार्थना अस्वीकार हुई है। क्या श्रीमती गौड़ महासभा कृपा करके बतलावेगी—कि जिन विद्यार्थियों को इस साल छात्रवृत्तियां दी गई हैं क्या उन की दशा इस विद्यार्थी से भी बुरी है? क्या निर्वाचक सभ्यों ने सिफारशों के आगे ही सर झुकाया है। व न्याय पूर्वक अधिकार व अनधिकार का ध्यान रख कर निर्वाचन किया है! क्या उक्त सभा प्रार्थी विद्यार्थी के दिल के शान्त करने के वास्ते उन विद्यार्थियों की वर्त्तमान दशा बतलावेगी जिन को कि छात्रवृत्तियां दी गई हैं? क्या उक्त सभा इसके प्रार्थना पत्र पर पुनः विचार कर इस की सहायता करेगी, और इस प्रकार के निश्चय करते समय सिफारशों को ताक में रख कर न्याय से काम लिया करेगी? कोई भी पाठक सज्जन उक्त सभा का अधिकारी व सभासद् जिस के अन्दर कुछ थोड़ा बहुत न्याय हो। इस विद्यार्थी को अनधिकारी न कहेगा—

सिफारशों के चलने का प्रमाण यह है—हमारे ही ग्राम का एक गौड़ कुलोत्पन्न हरिवंश नामक विद्यार्थी कोई तीन साल हुए मिडल विभाग में पढ़ा करता था। उस का पिता जीवित है वह उक्त विद्यार्थी के पढ़ते समय ग्वालियर की ओर एक पंजाबी जमींदार के यहां कर्म्मचारी था। उस का एक चचा पोस्टमैन है। दूसरा चचा कृषि करता है। उन के पास जजमानों के भी बीस तीस घर हैं। भली प्रकार से निर्वाह होता था और होता है। लेन देन भी कुछ करते हैं। मकान कुछ पक्का बन गया है और कुछ बन जावेगा। उस विद्यार्थी को जब तक वह पढ़ता रहा, गौड़ महासभा से छात्रवृत्ति मिलती रही। इस के पोस्टमैन चचा ने उक्त सभा के एक अधिकारी की जो कि उस समय Railway Mail Service विभाग में कर्मचारी और उक्तसभा के अधिकारी थे सेवा कर उन से छात्रवृत्ति की स्वीकृति के लिए डाह लगवाई और मैदान मार लिया।

श्री० गौड़ महासभा के सभासद् तथा अधिकरीगण इन दोनों अवस्थाओं को अपने सामने रख कर स्वयम् ही न्याय करें कि विद्यार्थी बनवारी लाल के साथ न्याय हुआ है व अन्याय। यदि उक्त महासभा का धन सिफारशी छात्र वृत्तियों के वास्ते है तो पृथक् बात है। इस अवस्था में प्रार्थना पत्र मंगवाने और नाम मात्र निर्वाचन करने का कष्ट उठाने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

विद्या० बनवारीलाल के प्रार्थना पत्र की अस्वीकृति का कारण कुछ अंश में आपस का द्वेष भी हुआ है, क्योंकि उस के प्रार्थना पत्र पर तीसरी सही एक गौड़ महाशय की थी। इस द्वेष की कथा को लेख बद्ध करना मैं उचित नहीं समझता क्योंकि इस द्वेष में घटने के स्थान में बढ़ती होने की सम्भावना है। अन्त में श्रीमती सभा की सेवा में मेरी प्रार्थना है कि वह बनवारी लाल की प्रार्थना पर पुनः विचार कर के अपनी भूल का संशोधन करें और एक अधिकारी विद्यार्थी को सहायता से वंचित न रक्खें।

निवेदक
नारायणसिंह, अनुवादक
कार्य्यालय डिप्टी कमिश्नर
अम्बाला शहर।

वैदिक वर्णव्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञान भिक्षु जी लिखित)

(२)

गताङ्क से आगे

जीवात्मा का मरुत् वायु सजात्य अर्थात् सहायक है—क्योंकि आत्मा के शरीर धारण करने में वायु से अत्यन्त सहायता मिलती है—वायु से प्राण का चलना प्रत्यक्ष ही है—इसी प्रकार दूसरे मन्त्र का अर्थ यह है कि 'अश्विनोः' दोनों पारमार्थिक तथा ऐतिहासिक ब्रह्म वालों का 'सजात्यं नाम' सजात्य यह नाम 'चारु' ठीक ही है आगे इसी मन्त्र में आता है क्योंकि—'रयिणां-दात्रं रक्षेथे' धनी लोगों के धन की रक्षा में तत्पर हैं—आशय यह है कि जो पुरुष परस्पर सहायक हैं और संसार का उपकार करते हैं अपने धन को दूसरों के लिये व्यय करते हैं उनका ही मनुष्य जन्म लेना सफल है—आप पृष्ट ८ पर लिखते हैं कि 'इतना ही नहीं द्विज और द्विजन्मा शब्द का भी वेद में प्रयोग मिलता है-यथा द्विजा अह प्रथमजा-ऋतस्य १०—६१—१६=पूर्व द्विज ही उत्पन्न हुए, शूद्र नहीं' यदि द्विज और द्विजन्मा शब्द मिलते हैं तो क्या आपका मनोरथ पूर्ण होने लगा है-आप ने भी पढ़ा पढ़ाया कृपार्पण किया हुआ प्रतीत होता है—देखो इस मन्त्र के अंतिम भाग में जाय-मानो शब्द आता है। अतः इस का अर्थ यह हुआ कि जितने भी चराचर जगत् में प्राणी हैं उन में द्विजाः द्विप्रकाराभ्यांजाताः प्रसिद्धाः दो कारणों से प्रसिद्ध होने वाले एक तो अपने पीछे होने वाली सन्तान के पिता होने से, और दूसरे वेदोपदेश द्वारा गुरु होने से, प्रथमजा सृष्टि के आरम्भ में होने वाले अग्नि-आदि ऋषि सर्व मनुष्यों से प्रथम हुए क्योंकि ऋतस्य धेनुः इदं अदुहत् सत्यस्वरूप परमेश्वर की वेद वाणी यही कहती है—ऐसे मन्त्र का अर्थ न समझते हुवे आपने जो अनधिकार चेष्टा की है आप का चित्त ही उस पर अश्रुप्रवाह कर रहा होगा। आपने द्विज शब्द को समझा क्या है? जो झट कहने लग पड़े कि द्विज (आज कल के अपने को ब्राह्मणादि उत्तम नाम वाला बताने वाले मूर्ख मांसाहारी नास्तिक वेदनिन्दक) पहिले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उत्पन्न हुए शूद्र नहा, आप के दिल के द्विज और शूद्रों का यहां क्या वास्ता? यहां भी आप को विचारने का अवकाश नहीं मिला—नहीं तो ब्राह्मण, शूद्र का स्वप्न क्यों देखते, यह तो सृष्टि विद्या है—फिर कहते हैं कि "स्तुता मया वरदा वेद माता प्रचोदयन्ती पावमानी द्विजानां ६-४-६=वेद वाणी भी द्विजों के लिए ही वेद में बताई गई है शूद्रों के लिए नहीं" क्या अब भी आप अनर्थ करते हुए अपने को ऋषि दयानन्द की आज्ञा का पालने वाला और वेद का मानने वाला कहते चले जाओगे—आपने स्यात् यथेमां-वाचं को भुला दिया है—या कलुषितान्तःकरण से उस का अभिप्राय आप की समझ में नहीं आया—तुम तो वेद को अपने पीछे लगा रहे हो ऐसे कल्याण नहीं होगा—सज्जन! वेद के स्वयं पीछेचलो तब कुछ ज्ञान प्राप्त होगा—यूं ही क्यों माथा कूटी कर रहे हो--यही समय और विद्या, सत्पक्ष में लगाते तो क्या ही अच्छा होता-परन्तु आपने तो किसी की बात ही न सुननी ठहरी—वेद मन्त्र का तो अर्थ यह है-[वेद माता वरदा] वेद रूपी माता अपने सब मनुष्य बच्चों को सुख देने वाली है—क्यों कि परमात्मा कहते हैं [मयास्तुता] मैंने सत्कृत की है—अर्थात् सब मनुष्य मात्र को पुत्रत्व का अधिकार दिया है इसी लिए तुम्हारी माता है—निर्भ्रान्ती है प्रत्येक की कामना पूर्ण करने वाली है—फिर माता है-निःशंक होकर आवो और माता की गोद में बैठ कर सब संताप दूर करो देखो उच्च स्वर से [प्रचोदयन्ती] प्रेर रही है [आयाहि सुषुमाहित इन्द्र सोमं पिबा इमम्-एदं बर्हिः सदोममं-साम-प्र २-अर्धप्र २-द१०-मंत्र ७— हे मेरे [इन्द्र] प्यारे आखों के तारे आसुषुम हम तुझे बुलाते हैं अतः आयाहि आवो इदं बर्हिः ममसदः यह स्थान मेरी गोद है-इस पर आहित निर्भय होकर बैठ और ताप भय को भुला कर इदं सोमं पिब इस शान्तिदायक ज्ञान दुग्ध को पी जिस से तेरी व्यथा मिट कर यथेष्ट सुख प्राप्त हो-सुना क्या कह रही है—वेद माता पावमानी द्विजानां का यह अर्थ है कि सर्व मनुष्य मात्र पुत्रों को पवित्र करने वाली है आप घबराइये नहीं इस का भी प्रमाण देता हूं, देखिए ऋग्वेद—पावकानः सरस्वती वाजेभि र्वा-जिनीवती यज्ञं वष्टु धियावसुः १-४-१० उस मंत्र में वेद माता और इस में सरस्व-ती उस में पावनानी इस में पावका, अर्थ में किंचिन्मात्र भिन्नता नहीं और उस में द्विजानां इस में नः दोनों षष्ठ के बहुवचन हैं— नः अस्माकम् के स्थान पर आया है अस्मद् शब्द सर्व नाम है और सर्वनाम [सब के लिए प्रयुक्त होने के कारण] अस्मत्पद वाच्य सब कोई है—अतः वेद का सब को अधिकार है जिस की इच्छा हो माता के पास आए माता प्रेम से कह रही है कि मेरी गोद ख़ाली है आवो शान्ति पावो-आपको तो जलन उठती है यदि कोई वेद को पढ़ कर उच्च पद पर पहुंच जाता है-न जाने आप के यह बुरे भाव ईर्षाद्वेष के कुसंस्कार कब छूटेंगे—आगे लिखते हैं कि "अथ स होता यो द्विजन्मा ६-४-६ इस मंत्र में यज्ञ क-रने का अधिकार भी द्विजों के लिए ही है, शूद्र के लिए नहीं पृष्ठ ८" शूद्रों ने आप का क्या बिगाड़ा है सेवा ही तो करते हैं, चलिए न लीजिए सेवा-परन्तु इस प्रकार भी तो आप प्रसन्न नहीं। न वेद देने में राज़ी हैं-न वे चारों से व्यवहार ही करना चाहते हैं-हे ईश्वर न जाने कब इस को समझ आएगी इतना भी क्या अत्याचार—कुछ तो सीमा हो-परमात्मा तो सब का पिता है आप के टके तो टीके ही नहीं हैं—वेदों पर जो आप आवेला मचा कर ग़रीब मार कर जावेंगे यह स्वप्न में भी न हो सकेगा -छोड़िये इस कुविचार— को लिजीए आप को अर्थ सुनावें-अयं यो होता यह जो होता है होता नाम अनेक मंत्रों से अग्नि का है अग्निर्होता ऋ० १-१ १-५ अग्निं होतारं-साम-१-१-३ त्वमग्ने यज्ञानां होता साम-१-१-२- अर्थात् यह जो प्रत्यक्ष भौतिक अग्नि है स द्विजन्मा वह दो गुण वाला है एक प्रकाश दूसरे दाह गर्मी—इस का एक और भी अर्थ है जिस पर आप विस्मित होंगे—यह जो होता अर्थात् अग्नि के समान सत्यस्वरूप एक रस तपस्वी संसार का उपकार तन मन धन से कर रहा है वह ही द्विजन्मा है उसे ही ब्राह्मण कहना चाहिये—जो कोई हो क्योंकि वेद में द्वि-जन्मानो ये ऋतसापः सत्याः ऋ—६—५०-२— जो सत्य ग्राही देवता हैं—धर्मात्मा हैं उन को द्विजन्मा जानो क्योंकि वह सु-ज्योतिषः अग्नि के समान शुभकार्यरूप ज्योति को धारण किये हैं—वेही पूजनीय हैं कोई पाखण्डी नहीं—अब भी क्या आप जन्म से किसी को उत्कृष्ट मानेंगे-देखा मन्त्र कैसे स्पष्टाक्षरों में उपदेश कर रहा है जिस में शंका का स्थान ही नहीं अब भी यदि हठ और दुराग्रह किया तो चुल्लू भर पानी लेलीजिये—आप शूद्र को अनार्य और शेष तीन वर्णों को आर्य सिद्ध करने के लिये वेद मन्त्र लिखते हैं "त्रय कृ-ण्वन्ति भुवनेषु रेतस्तिस्रः प्रजा आर्या-ज्योतिरग्राः ७—३३—७=जो आर्य ही नहीं उस को यज्ञ का अधिकार कहां मि-लेगा" इस मन्त्र का किसने आप को यह उलटा अर्थ बतला दिया भला अन्धों को तो जो चाहे जिधर लेजायं-परन्तु चक्षु-ष्मान् तो अन्धो न हो जावे आप भी तो सच्चे हैं स्वार्थ ने हृदय पर दो २ उं-गल मैल चढ़ा रक्खी है-दीखे तो कैसे दीखे-इधर ध्यान करो-मन्त्र का अर्थ बताऊं—तिस्रः प्रजा तीन प्रकार के उन्नत लोग 'आर्य ज्योतिरग्राश्चरेतः' सामा-जिक बल, आत्मिक बल, शारीरिक बल, इन तीन बलों को भुवनेषु देशों में आकृ-ण्वन्ति स्थापित करते हैं—आशय है कि संसार को उपकार करने वाले धर्मात्मा तीन बलों की उन्नति का प्रचार करते हैं—यदि आर्यसमाज का नियम भी देखा होता तब भी तो कुछ अर्थ आप की समझ में आजाता—परन्तु आप को आर्य पुरुषों के समाज से द्वेष है नियम देखें तो कैसे देखें—आगे आप लिखते हैं "मी-मांसा में केवल ब्राह्मणों को ही यज्ञाधिकार दिया है" समीक्षक—जो २ सत्कर्मा और सद्गुणी हैं उन को तो अधिकार ही है यदि आप का अभिप्राय किसी और प्रकार के नाम धारी ब्राह्मण से हो तो मुंह बन्द करके चुप रहो नहीं तो वेद कुछ और आज्ञा देने लगेगा—जो सहनी आप को दुःसाध्य होगी—मैं तुम्हें पहिले मीमां-सा से कुछ सूत्र बताऊं—सुनो क्या कह रहा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

है। जैमिनि आचार्य—फलार्थत्वात्कर्मणः शास्त्रं सर्वाधिकारं स्यात् मीमांसा- ६-१-४=शास्त्र में सब का अधिकार है किसी जाति विशेष का नहीं किन्तु सब मनुष्यों का—क्योंकि सुखादि की सब की कामना है उस सुख.दि के प्राप्त करने का साधन यज्ञादि वेद प्रतिपादित कर्म हैं अतः प्रत्येक सुखाभिलाषी वेद और यज्ञ का अधिकारी है-क्या आप के मनमाने शूद्र सुख नहीं चाहते-यदि कहो कि हां-तो आप उन बेचारों की इच्छा का विघात कर के पाप के भागी क्यों बन रहे हैं-क्या जान बूझ कर मूर्खता से गड्ढे में गिर कर दुःख उठाना भी कोई विद्वत्ता है? यदि कहो नहीं चाहते-तो पूछ देखो तुम से अधिक बलवती इच्छा होगी-जब कि मनुष्य मात्र का उद्देश्य सुख पाना है तो आप कौन हैं उनको अनधिकारी कहने वाले? और देखो जैमिनि क्या कहते है- चातुर्वर्ण्यमविशेषात् मीमांसा ६ १-२५=शास्त्रं चातुर्वर्ण्यं कस्मात् अविशेषात्-वेदशास्त्र के पढ़ने का अधिकार चारों वर्णों [अर्थात् शूद्र का भी है] क्योंकि कामना में सब समान हैं किसी में भी विशेषता नहीं सब की इच्छा सुख की है- सुनते जाइये आप का मीमांसा क्या कहरहा है-घड़ी २ जैमिनि २ चिल्ला चिल्ला कर कान खाये डालते थे। आज देख तेरा जैमिनि और मीमांसा क्या खुले शब्दों में वैदिक भाव दिखाकर तेरे मन की कल्पना को धूल में मिला रहे हैं-वैगुण्यान्नेति चेन्न काम्यत्वात्-मी-६-१-३० अनुपवति अव्रती आदि वैगुण्य शूद्रों में पाये जाने से शास्त्र यज्ञादि का उनको अधिकार नहीं है यदि कहो तो ठीक नहीं क्योंकि काम्यात् कामना पाये जाये से उसका भी अधिकार है- कामना यह है सब सुखाभिलाषीजनों की-अदीमा स्याम-शृणुयाम प्रब्रवाम पश्येम शरदः शताम् इत्यादि-परमात्मा इस कामना को पूर्ण करने के साधन का उपदेश करते हैं कि-कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः यजु-४०-२=वेदानुकूल यज्ञ कर्मों को करो यदि सौवर्ष पूरी आयु आनन्द से जीना चाहते हो तो=पाठकगण हम मीमांसा दर्शन और वेद के मनुष्यमात्र के यज्ञ वेदाधिकार में] प्रकरण से अतिरिक्त भी पुष्कल प्रमाण देंगे पं० जी के स्वमंतव्यों के खन्डन में-सज्जन परीक्षण करें। यहां इस लिए नहीं लिखें कि उत्तर काफी होगया और छपनेमें बहुत लम्बा पड़ जायगा=यज्ञेषु विप्राराज्ये और विप्रो यज्ञस्य साधनः इत्यादि मन्त्रों में अर्थ विप्रशब्द का है-विशेषेण विपर्ति पूरयति भक्तानां सदिच्छा स परमेश्वरो विप्रः जो भक्त जनों की शुभ कामनाओं को पूर्ण करता है इस कारण परमात्मा के राज्य में [उतेयं भूमि वरुणस्य राज्ञः उतासौ द्यौ बृहती दूरे अन्तः अथर्ववेद भगवान् आज्ञा करते हैं कि-यहां परमात्मा का शासन है दिल खोल वैदिक-धर्म का प्रचार करो-यज्ञ का साधन भी विप्र अर्थात् विशेष रूप से प्रार्थना करनेयोग्य परमात्मा है ईश्वर ही निर्विघ्न यज्ञ का पूर्ण करने वाला होने से सत्य साधन है इसी लिए यज्ञो में परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना स्तोम है- व्यर्थ ही आप ने वेदमन्त्र और शास्त्र वचन न समझने के कारण इतना अमंगल बाग्जाल फैलाया यह याद रखना-जहां कहीं ब्राह्मण शब्द आता देख आप कूद फाँद कर हाथ पैर तुड़वा बैठते हैं वहां ब्राह्मण शब्द का अर्थ वही वेद सम्मत शुभगुण वेदज्ञ आत्मज्ञानी ही है—न कि कोई और अज्ञाचारी महासूर्खराट यदि आप पूर्ण विचार से १ बार भी धीर हो कर पढ़ते तो कभी भी इतनी बड़ी भूल न करते परन्तु आपने २० बार पन्ने गिण कर पढ़ाकू बनना है-आप जो यह कहते हैं कि "महाभारत में यज्ञ का अर्थ कर्म कहीं नहीं चत्वारोवर्णाः यज्ञमिमं वहन्ति-वन १३४९ पृष्ट"-समीक्षक-क्या आप नीलकण्ठी को वेद से अधिक प्रमाणित मानते हैं क्या कहने आप की बुद्धि के-वेद को छोड़ अन्धन्तम तामिस्रमें फंस रहेहो-देखो जब तक वेद का प्रकाश न लोगे तब तक मिट्टी ख़राब हुवे बिना रह नहीं सकती-देखें आप की धृष्टता कब तक निभाते हैं-लोग सच ही कहर करते हैं एक झूट को सिद्ध करने के लिये सौ झूट बोलने पड़ते हैं-फिर आप कहते हैं कि "बप का यज्ञ अर्थ किसी आचार्य ने नहीं किया. १० पृष्ट-समीक्षक-आपने कुछ सोचा भी है कि ऐसे ही हांके जा रहे हो-अन्धे को कुछ दीखा थोड़ा करता है-या आप ने जान बूझ कर आंखों पर पट्टी बांधी है-आप को नहीं पता चला तो आओ मैं बताऊं-ऋतं तपः सत्यंतपः श्रुतं तपः शान्तं तपो दमस्तपः तैत्तिरीय-पृ० १० अ० ८=और यदि महर्षि का सत्यार्थ ११ समुल्लास इस पर देखें तो रहा सहा सब भ्रम निवृत्त हो जावे- स्वामी जी योगाभ्यास वेदानुकूल धर्माचरणका नाम तप मानते हैं-क्या यह यज्ञ नहीं? तुम ने तो गीता के कई श्लोक पुस्तक में उद्धृत किये हैं-कहीं तीसरा अध्याय भी देखा होता जहां स्पष्ट लिखा है-द्रव्य यज्ञास्तपोयज्ञा योगयज्ञास्तथा परे इत्यादि-३-२८-अब तो आप की शंका मिट गई होगी-महर्षि दयानन्द-कृष्ण योगीश्वर-तैत्तिरीयोपनिषत्कार-आचार्य हैं जिन्होंने तप का अर्थ यज्ञ किया है-आपने एक वाक्य का अनुवाद स्पष्ट होने के कारण नहीं किया है-आपने काहे को करना था हम जो करने वाले प्रस्तुत (मौजूद) हैं-"श्रवणे त्रपुजतुभ्यां श्रोत्र परिपूरणम्-उच्चारणे जिह्वा छेदो-धारणे हृदय विदारणम्" यदि शूद्र वेद मंत्र को सुनले तो उस के कानों में सिक्का आदि भरदे-यदि जिह्वा से मंत्रों को उच्चारण करे तो उस की जीभ काट डाले-यदि तदनुकूल शुभाचरण करने लग जावे तो उस के कलेजे को निकाल लै-इसी लिये इस का अर्थ नहीं लिखा-क्योंकि लिखें तो पोल खुल जाती-वाहरे अन्यायी-वैदिक धर्म का अप्रचार तेरे जैसे स्वार्थी अधर्मियों ने ही किया—पौराणिक लोगों में और तुझ में क्या भेद रह गया-किस प्रमाणित ग्रन्थ का बचन हो तब भी ले ही-क्या आप को इतना भी स्मरण नहीं रहा कि आर्यसमाज ऐसे क़साईयों के बचनों को नहीं मानता-वेद को और आप्त प्रमाण को मानता है-आप को और आप की दस्यु समाज को क़साई पद मुबारिक हो-हे ईश्वर-ऐसे नीच हृदय स्वार्थी लोगों का संसार से सत्यानाश हो जो किसी बेचारे निष्पाप से अत्याचार करते हैं। (शेष फिर)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी।

दयालसिंह कालिज लाहौर— के प्रिन्सिपल महाशय ने विद्यार्थियों में लिखित आज्ञा फैलाई है कि जिन विद्यार्थियों ने गरमियों की छुट्टी में तमाकू पीने के दुराचार को त्याग न किया उन्हें बोर्डिङ्ग में रहने की आज्ञा न दी जायगी। अन्यों को भी यही ताड़ना की गई है और यह बुरा अभ्यास न छोड़ने वालों को ७ दिन का नोटिस देकर कालिजों के बोर्डिङ्ग से निकाल देने की घोषणा है। हमारी सम्मति में यह नियम सभी स्कूलों तथा कालिजों के बोर्डिङ्ग हाउसों के सम्बन्ध में बन जाना चाहिए। आर्यसमाज के स्कूलों और कालिजों को तो तत्काल इस नियम को प्रसरित कर देना चाहिए।

मौलवी लियाकतेहुसैन— कलकत्ते की गलियों की शोभा हैं। परन्तु जब कभी वह व्याख्यान देने के लिए स्वतन्त्र होते हैं, उसी समय पुलिस कमिश्नर उन के व्याख्यान बन्द कर देते हैं। अब २४ जून, १९१६ से फिर एक वर्ष तक व्याख्यान देने की उन्हें मनाही हो गई है। न जाने मौलवी साहेब की वाणी में कैसी अग्नि है जिसे कलकत्ते की वीर पुलिस सहन नहीं कर सकी।

डी. ए. वी. हाई स्कूल देहरादून— का कविता पूर्ण वृत्तान्त आगरा कालिज के स्टूडैन्ट (विद्यार्थी) श्री रामशर्मा की सही से आया है। नेगी पूर्णसिंह के वृहत् दान का यह विद्यत्पूर्ण फल है, परन्तु हमने शोक से सुना है कि उसे पुरानी इमारत को गिराने लगे हैं। नए विद्यालय भवन की आधार शिला श्रीमान लाटसाहेब ने पिछले दिनों रक्खी थी। यदि नई के साथ पुरानी इमारत भी बच जाय तो अच्छा है। हेडमास्टर लाला लक्ष्मण प्रसाद एम० ए० की बड़ी प्रशंसा की है और कुमेटी के मन्त्री आनरेबल रायबहादुर आनन्द स्वरूप तथा प्रधान आनरेबल रायशंकर सहाय बतलाए हैं। न जाने श्री पण्डित ज्योतिः स्वरूप जी क्यों इस स्कूल के प्रबन्ध में अब भाग नहीं लेते। धार्मिक शिक्षा का भी अब प्रबन्ध है और स्कूल के कार्यारम्भ से पहले सब मिल कर ईश्वर प्रार्थना करते हैं और पहले घन्टे में ही धर्म शिक्षा दी जाती है। सारी पढ़ाई की समाप्ति पर फिर ईश्वर प्रार्थना होती है। धर्म-शिक्षा का काम एक विशेष बोर्ड के आधीन है जिस से प्रबन्ध अच्छा होगा। बोर्डिङ्ग का प्रबन्ध बहुत अच्छा बतलाया जाता है, जिस पर विश्वास हो सक्ता है क्योंकि इस के सुपरिन्टेन्डेन्ट श्री महाशय निरञ्जननाथ जी हैं। स्कूल फ़ीस के अतिरिक्त बोर्डिङ्ग का शुल्क १२॥) मासिक है। भोजन अच्छा दिया जाता है। बोर्डरों के पास धन अलग नहीं रहता, प्रबन्धकर्त्ता के पास ही जमा रहता है। नित्य जेब ख़र्च बटता है, परन्तु है यह भी कुछ ठीक नहीं। ब्रह्मचारी स्वयं व्यय न करें तो ठीक हो। बोर्डिङ्ग में सभाएं भी हैं और उन के पुस्तकालय भी हैं। स्टूडैन्ट जी बलपूर्वक लिखते हैं कि यहां के छोटे बालक भी "बोल चाल, भाषण, पेटीकेट आदि में ऐसी योग्यता रखते हैं जैसी की आर्यसमाज द्वारा स्थापित बड़ी बड़ी संस्थाओं में बड़ी २ आयु के लड़कों में भी नहीं" बड़ी उन्नति हर्ष से यह प्रकाशित की गई है कि "प्राइमरी विभागों में कोई भी विवाहित बालक भर्ती नहीं हो सका।" लेखक चाहते हैं कि 'यह स्कूल' कालेज तक पहुंचे।

दो चालाक छोटे लड़कों— का हाल देश में निकला है जो बिना एक पाई लिए घर से निकल मुम्बई, कलकत्तादि की सैर कर आए। आयु दोनों की दस दस वर्ष की है। लक्सर पुलिस ने पकड़ कर उन्हें लाहौर भेजा है। यदि इन की शिक्षा ठीक होती तो यही बालक शायद बड़े होकर देश के रत्न सिद्ध होते। उचित शिक्षा का अभाव कैसा दुखदाई है।

देवी जीभन चढ़ा सकी— म० लक्ष्मण दास देश में लिखते हैं कि एक दस वर्ष की बालिका को देवी समझ कर, एक १८ वर्ष के युवा ने अपनी जीभ काट कर चढ़ा दी। भक्तों के बड़ी पूजा पर भी जीभ न चढ़ी। अभी देश में बहुत अविद्या है जिस का नाश आर्यसमाज ने करना है।

मुसलमानों का धर्म-ग्रन्थ क़ुरान है। इस के अनुवाद कई भाषाओं में निकल चुके हैं, परन्तु मुसलमानों की दृष्टि में ये सब अनुवाद भ्रम युक्त हैं। अब कादियां के अहमदिया फ़िर्के के मुसलमानों की ओर से एक नए अंग्रेज़ी अनुवाद का विज्ञापन निकला है जिस के साथ ४ पृष्ठ नमूने के भी भेजे गए हैं। काग़ज़ छपाई आदि तो बहुत ही उत्तम है और टिप्पणिएं भी अपने मत की पोशक सोच कर दी गई हैं। परन्तु पहले पृष्ठ पर ही जो नमूना टिप्पणियों का है उस से पता लगता है कि इस अनुवाद की पड़ताल आर्य्यसमाज की ओर से पहले ही आरम्भ हो जानी चाहिए। पहले सूरा फ़ातिहा है, उसकी पहली आयत है— "बिसिल्लाह, अररहमानुरहीम" इसका अर्थ— "आरम्भ करताहूं अल्लाह के नाम के साथ रहमान, रहीम" इस में पहली टिप्पणी 'अल्लाह' शब्द पर है। उसमें यह बतलाया गया है कि यह परमेश्वर का निज नाम है। अरबी में यह शब्द और किसी वस्तु वा व्यक्ति के लिए नहीं प्रयोग किया जाता। "अन्य किसी भाषा में परमात्मा के निज नाम के लिए शब्द नहीं है।" यह प्रतिज्ञा कैसी निर्मूल है, इसे वे लोग ही जान सके हैं जिन्होंने गत ३५ वर्षों के धार्मिक इतिहास पर दृष्टि रक्खी है। ऋषि दयानन्द ने पहले पहल संस्कृत शून्य जगत को बतलाया कि ओ३म परमात्मा का निज नाम है। तब आर्यसमाज के धर्म-प्रचारकों ने बतलाया कि जहां अन्य मतों में परमेश्वर के गौण नाम हैं, वहां संस्कृत में ही उस का निज नाम है। आर्यसमाज से ही यह भाव अहमदियों ने लिया और अब उन्हीं को डांट बतलाते हैं कि अन्य किसी भाषा में भी परमेश्वर के निज नाम के लिए शब्द नहीं। अल्लाह जाती नाम पहले कभी माना गया वा नहीं, इस पर फिर विचार होगा परन्तु यह नोट अशुद्ध है कि अरबी के अतिरिक्त अन्य किसी भाषा में परमेश्वर का निज नाम नहीं है। शेष विचार के लिए अब स्थान नहीं, वह फिर कभी।

महा० राम प्रतापसिंह विद्यार्थी आर्यसमाज शेरहा डाकखाना सबलपुर जिला बदायूं से लिखते हैं कि उन्होंने स्वामी सोमदेव जी की जीवनी लिखना आरम्भ की है, अतः जिन महाशयों के पास उनका कुछ भी हाल हो वह उनको लिख भेजें।

आर्यसमाज पठानकोट महा० पूर्णचन्द्र जी मंत्री उक्त समाज की धर्म पत्नी की अकाल मृत्यु पर शोक प्रकट करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि मृतक की आत्मा को शान्ती प्रदान करें। महा० पूर्णचन्द्र जी के पिता म० शंकरदास जी के पास समाज की ओर से शोक पत्र भेजा गया।

भूल संशोधन

८ ज्येष्ठ १९७३ के प्रचारक में "स्वामी चरितामृत" की समालोचना निकली थी। पुस्तक मिलने का पता छपने से रह गया था। पुस्तक म० भगवद्दत्त शर्मा-कारेलीबाग, बड़ौदा, से मिल सकती है।

मंत्री आर्यसमाज बरेली लिखते हैं कि— सरस्वती विद्यालय अहरोता अब खुली तौर से आर्यसमाज बरेली के हाथ में आगया है, पीछे जो कुछ लिखा गया था उस के लिए बाबू प्रेम नारायण जी क्षमा के प्रार्थी हैं अब उन्होंने निश्चय कर लिया है कि आर्यसमाज के सिवाय इस का कोई प्रबन्ध नहीं कर सकता, अब इस विद्यालय का सालाना उत्सव ९ जौलाई को बड़ी धूम-धाम से मनाया जायगा।

आशा है कि सन्यासी महात्मा इस अपूर्व अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ायंगे।

आवश्यकता

वैदिक धर्म के प्रचार के लिए एक योग्य उपदेशक तथा एक भजनीक की आवश्यकता है। उपदेशक महाशय को ३०) से ४०) तक तथा भजनीक महाशय को १०) से १५) तक योग्यतानुसार वेतन दिया जायगा। प्रार्थनापत्र निम्न पते पर शीघ्र आने चाहियें।

मन्त्री, आर्य्यसमाज
रावलपिण्डी

आवश्यकता

आर्य्यकन्या पाठशाला मिर्ज़ापुर में तृतीयाध्यापिका का स्थान रिक्त (ख़ाली) है। अतएव जिन देवियों को आना स्वीकार हो, वह अपनी योग्यता के प्रमाण पत्र सहित प्रार्थना पत्र मैनेजर के नाम भेजें। वेतन २०) मासिक तक दिया जावेगा।

निवेदक
लक्ष्मणप्रसाद वकील
मैनेजर आ० क०
पाठशाला

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा————————।)
काव्य लतिका————————॥।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ॥।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग' [शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्] १॥)
धातु-पाठः—[मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
नास्तिकः =)॥
आस्यातिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्कप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनागीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—बैलफोर स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन—विलयम एस, फर्नो की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितं—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवरधन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखकश्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त ≡)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) ≡)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R.A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— '
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Magnum Opus called the Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bhardwaja F. R. C. S.; D.P.H. etc 2d edition—Printed on superior paper and published by the Arya Prati Nidhi Sabha United Provinces Agra and Oudh—First ten chapters only Rs. 3/

पं० इन्द्र जीं वेदालंकार कृत

उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स विस्मार्क १॥)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution). (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. वेदाङ्ग प्रकाश स्वामी दयानन्द कृत (वैदिक यन्त्रालय अजमेर)
२. भारत का सच्चा इतिहास (भास्कर यन्त्रालय मेरठ)
३. उपनिषदें-शंकर भाष्य सहित (आनन्द आश्रम पूना)
4. The Direct Method of Teaching by Nelson Fraser in 4 parts.
५. चम्पु रामायण (निर्णय सागर यन्त्रालय बम्बई)
६. हर्ष चरित

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) से २०) तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जायगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाक० श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC-0. Gurukul K... Haridwar. Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १ श्रावण सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १५ जुलाई सन् १९१६ ई० | संख्या १४ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास „ „ „ „ =) „ „
छः „ „ „ „ -)॥ „ „ „
सालभर „ „ „ „ -) „ „ „

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वी०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लक्खी चबूतरा बनारस शहर।

आवश्यकता

श्री मद्दयानन्द हाईस्कूल अजमेर को मुख्याध्यापक संस्कृत के स्थान के लिये एक ऐसे सुयोग्य पण्डित की आवश्यकता है कि जो संस्कृत में शास्त्री की योग्यता रखता होवे तथा एन्ट्रेन्स क्लास के छात्रों को अंग्रेज़ी से संस्कृत और संस्कृत से अंग्रेज़ी में लेख लिखवा सके। वेतन योग्यतानुसार ३०) रु० मासिक तक दिया जा सकता है, आर्य्य-सामाजिक पुरुष के प्रार्थना पत्र पर विशेष ध्यान दिया जावेगा, प्रार्थना पत्र निम्न पते पर आना चाहिए।

घीसूलाल
वकील
मन्त्री स्कूल

प्रचारक पुस्तक भण्डार की अनूठी पुस्तकें।

उपनिषदों की भूमिका—लेखक, श्री० उमेश वेदालंकार। इस पुस्तक में उपनिषदों का सार बड़ी मनोरञ्जक रीति से दिखाया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि उपनिषदों का आधार वेद ही है। विषय गम्भीर है तो भी भाषा रोचक और बल पूर्ण है। मूल्य ।=)

धर्मवीर पं० लेखराम की जीवनी—महात्मा मुंशीराम जी लिखित। धर्मवीर की आर्य-भाषा में यह एक मात्र जीवनी है। प्रत्येक आर्य्य-गृह में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। धर्मवीर की जीवनी—और महात्मा जी की लिखी हुई—आप क्यों न लेंगे? मूल्य १)

प्रिंस-बिस्मार्क की जीवनी—जर्मनसाम्राज्य के निर्माता राजनीति विशारद बिस्मार्क की जीवनी को जिसने नहीं पढ़ा, उसे योरप का वर्तमान युद्ध समझ में नहीं आ सकता। पुस्तक बेहद मनोरञ्जक है भाषा प्रौढ़ ओजस्विनी है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है—शीघ्र लीजिए।

मूल्य १॥)

कमीशन का ढेर

२५) से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिसैंकड़ा, ५०) से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति सैंकड़ा, १००) से अधिक के ख़रीदार को २५) सैंकड़ा तथा २००) से अधिक के ख़रीदार को ३०) सैंकड़ा कमीशन मिलेगा।

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र
गुरुकुल कांगड़ी, पो० श्यामपुर-कांगड़ी
जि० बिजनौर

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रचारकप्रेमी भी हिलें

महायुद्ध ने बहुत सी कठिनाइयां उत्पन्न की हैं--और उन में से सब से बड़ी कठिनाई पत्र संचालकों के सामने आई है।

काग़ज़ का मूल्य कई गुना हो गया है--छपाई भी महंगी हो गई है। पत्र की छपाई आदि का ख़र्च आगे से ड्योढ़ा होता है।

और पत्र इस कठिनाई का हल कई तरह से कर रहे हैं, कई पत्रों ने वार्षिक मूल्य बढ़ा दिया है, औरों ने काग़ज भद्दा कर दिया है, और अन्यों ने अपनी पृष्ठ संख्या कम करदी है।

प्रचारक ने कुछ नहीं किया--और किसी ओर भी न्यूनता करना उसकी नीति के विरुद्ध है। हमारा कागज़ वैसा ही है--जैसा पहले था--छपाई प्रतिदिन उत्तमोत्तम हो रही है--और पृष्ठ संख्या कम नहीं हुई, न कम होगी।

ऐसी दशा में समस्या कैसे हल हो। प्रचारक अपने ग्राहकों से कुछ नहीं छुपाया करता। इस समय प्रचारक की आय में से न पत्र स्वामी ही किसी प्रकार का लाभ लेता है, और न सम्पादक के लिए किसी प्रकार का वेतन लिया जाता है। केवल एक क्लार्क का वेतन निकाला जाता है--तब भी यह कहना कठिन है कि पत्र अपना ख़र्च भली प्रकार निकाल रहा है।

अपने प्रेमियों से हम पूछते हैं कि समस्या का हल क्या किया जाय?

क्या प्रचारक परिवार इस समय अपने कर्तव्य के लिये सन्नद्ध न होगा?

कर्तव्य बड़ा कठिन नहीं है। प्रचारक के ग्राहक यदि इस समय आगे से

दुगने हो जायँ

तो वर्तमान कठिनाई दूर हो जायगी। नहीं तो प्रचारक के चलाने में विशेष कठिनाई आयगी, एक २ ग्राहकों के लिये

एक २ नये ग्राहक

का बनाना क्या कठिन कार्य है। ज़रा परिश्रम चाहिये--प्रेम और लगन चाहिये फिर कोई कठिनाई न रहेगी।

हम प्रचारक परिवार से बल-पूर्वक आग्रह करते हैं कि वे इन थोड़े शब्दों को अधिक समझें, और यह निश्चित समझें कि पत्रों का जीवन ग्राहकों पर ही निर्भर है।

हम आशा करते हैं कि प्रचारक प्रेमियों को बारंबार याद नहीं करना पड़ेगा। इस लेख को पढ़ते ही हर-एक ग्राहक एक एक--या इससे भी अधिक--नये ग्राहक बनाने के लिए सन्नद्ध हो जायं।

इन्द्र

—:o:—

आवश्यक सूचना

आज डाकखाने से सूचना मिली है कि 'प्रचारक के अंक ११ ता० २४ ६/६ का एक थैला कनखल डाक लेजाते समय उनके आदमी से गङ्गा में बहगया है। इस का हमें अत्यन्त शोक है। कार्यालय से तो भली प्रकार देख भाल कर भेजागया था।

बहुत से ग्राहक महाशयों को तो उनके पत्र आने पर अंक दुबारा भेज दियागया है, परन्तु यदि किसी महाशय को नहीं पहुँचा होतो क्षमा करें, क्योंकि इस में कार्य्यालय का दोष नहीं है।

प्रबन्धकर्त्ता

—:o:—

गुरुकुल समाचार

वर्षाऋतु आगई। पंजाब में अभी तक वर्षा का सर्वथा अभाव था वह भी दूर होगया। पञ्जाब से आते हुए लोगों से पता लगता है कि वहां भी कुछ २ वर्षा होने लगी है। यहां तो शिमला भी मात है। दृश्य पहाड़ के हैं--और कठिनाइयां पहाड़ की नहीं है। बादल और वर्षा के कारण असह्यसर्दी नहीं होती। न्हाने और घूमने का आनन्द बराबर आता रहता है। सायंकाल को सब ब्रह्मचारी तैरने का व्यायाम करते हैं।

× × × ×

गुरुकुल के आचार्य तथा, प्रो० रामदेव जी तथा बालकृष्ण जी अन्तरंगसभा के अधिवेशन के लिए लाहौर गये थे वे लौट आये हैं। इस बार के अधिवेशन में एक महत्व का प्रस्ताव पास हुआ है। पं० यज्ञदत्त विद्यालंकार का स्थिरसेवकता विषयक प्रार्थना पत्र स्वीकृत होगया है। गुरुकुल का-स्थिर सेवक-मण्डल स्नातक महोदय का स्वागत करता है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि गुरुकुल के स्नातक अपने आचार्य-कुल की सेवा के लिये सन्नद्ध होरहे हैं। पं० यज्ञदत्त जी ने इस लगभग एक वर्ष में प्रबन्ध में जो कृतकार्यता प्राप्त की है, उससे आगे बड़ी आशा बंधती है।

× × × ×

गुरुकुल विद्यालय तथा महाविद्यालय का यह सत्र समाप्ति पर है। परीक्षायें पास आरहीं हैं। अध्यापक उपाध्यायगण अपने २ विद्यार्थियों को परीक्षा के लिये तय्यार कर रहे हैं। विद्यार्थी भी अपने कार्य में लग रहे हैं।

× × × ×

गुरुकुल के चिकित्सक महाशय की रिपोर्ट है कि हस्पताल को आज कल छुट्टी है। बिमारों की संख्या नहीं के बराबर है।

× × × ×

गत अनध्याय के पूर्व के दिन आर्यव्याख्यान माला का चौथा व्याख्यान हुआ। श्रीयुत इन्द्र विद्यावाचस्पति ने 'ईश्वर प्रकृति और जीवात्मा, इस विषय पर व्याख्यान दिया।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

सड़े तालाब में हलचल

गत दो सप्ताहों से हम स्वामी विज्ञान भिक्षु जी का वैदिक वर्ण व्यवस्था विषयक लेख प्रकाशित कर रहे हैं। यह लेखमाला पं० अखिलानन्द की पुस्तक के उत्तर में लिखी जा रही है। पं० अखिलानन्द किसी दिन आर्य समाज के उपदेशक रह चुके हैं, और उन्होंने आर्यसमाज के सिद्धान्तों के वर्णन करने के लिए कई संस्कृत काव्य भी लिखे हैं। ऐसे पण्डित का आज आर्यसमाज के सिर पर कुठाराघात करने के लिए उद्यत होना और ऋषिदयानन्द के मन्तव्य का स्पष्ट खण्डन करते हुए भी अपने आप को उन के अनुयायी बतलाने का साहस करते जाना-एक विशेष घटना है। यह एक ऐसी घटना है जिस की उपेक्षा नहीं की जा सकती। इसे हंस कर टाल नहीं सकते। यह ऐसी घटना नहीं है कि इसे कह कर चुप हो जायं और एक गिलास पानी पी कर इसे धोडालें। आखिर इस का कारण क्या है? आर्यसमाज के एक उपदेशक को जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था सिद्ध करने की आवश्यकता क्यों पड़ी? अपनी पुरानी बनी हुई वृत्ति को बिगाड़ कर फिर एक नये क्षेत्र में भाग्यपरीक्षा के लिए सन्नद्ध होने का कारण क्या?

पं० अखिलानन्द एक उदाहरण मात्र हुए हैं। सामाजिक क्षेत्र में केवल वे ही ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, जो इस समय जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था को पुष्ट करने के लिए अभ्युद्यत हुए हैं। ऐसे बीसियों और पण्डित हैं—जो पं० अखिलानन्द की पीठ ठोकने को तय्यार हैं। उन से मूर्ति पूजा के खण्डन में धुआंधार व्याख्यान दिला दीजिये-श्राद्धों का मज़ाक उड़ाने में भी वे अनूठी चतुराई दिखायंगे, किन्तु उन से वर्ण व्यवस्था की बात पूछिये और आप के किन्तु परन्तु की मुहारनी सुनाई देगी। और सब कुछ सहलेंगे, किन्तु गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का नाम आते ही घबरा जायंगे।

हम अत्युक्ति नहीं कर रहे। इस समय आर्यसमाज में, विशेषतया संयुक्त प्रान्त में जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था मानने वाला समूह काफ़ी बड़ा है। युक्तप्रान्त के दो एक पत्र भी इसी मत की ओर झुकते हुए प्रतीत होते हैं। एक संस्था पर भी थोड़े दिन हुए ऐसा ही दोष लगाया गया था। पंजाब में शायद कोई २ व्यक्ति ऐसे निकल आयें जो जन्मानुसार वर्ण-व्यवस्था में विश्वास रखते हों—परन्तु ऐसा साहसिक व्यक्ति शायद कोई न निकलेगा, जो अपने ऐसे सिद्धान्त को सर्व-साधारण के सन्मुख उद्घोषित कर सके। इस सारी गड़ बड़ का कारण क्या है?

ऋषिदयानन्द ने जब भारतवर्ष की सामाजिक दशा पर दृष्टिपात किया तो उन्हें दो तीन रोग ऐसे दिखलाई दिए जो जाति के शरीर का समूल नाश किया चाहते थे। उन में से एक जातपात के कठोर बन्धनों का रोग था। ऋषि ने देखा कि आर्य जाति सर्वथा कुपथ पर प्रवृत्त हुई है। उस ने वेद की आज्ञा को भुलाया, स्मृतियों की आज्ञा को भुलाया और तो क्या पुराणों के सिद्धान्त का भी निरादर किया—और गुणों के आदर के स्थान में जन्म का आदर करने लगी। कहां वह समय था जब एक क्षत्रिय, एक वैश्य और एक शूद्र भी तप करके ब्राह्मणत्व को पा सकता था और गणिका तथा श्वपाकी को गर्भ से उत्पन्न हुए बालक भी ऋषिपदवी को पा सकते थे- और कहां यह समय कि एक बरतन साफ़ करने वा चिलम भरने वाले पण्डित या महाराज का लड़का तो ब्राह्मण समझा जाय और एक विद्वान् तपस्वी क्षत्रिय ब्राह्मणत्व को न पा सके। ऋषि ने देखा कि अवस्था बड़ी गिर गई है। इस का सुधार शीघ्र ही होना चाहिए। देर हो जाने से रोग कहीं असाध्य न हो जाय। जब ऋषि ने वेदादि सच्छास्त्रों पर दृष्टि डाली तो वहां गुणों तथा कर्मों की महिमा का गान पाया। तब ऋषि ने अपने ओजस्वी शब्दों में जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था का खण्डन कर के गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का प्रतिपादन किया और अपने स्वमन्तव्यों में ऐसा ही प्रकाशित भी किया।

आर्य्य समाज में आर्य जाति की जनता प्रवेश करने लगी। पौराणिक नियमों के अनुसार वेदादि शास्त्रों के पढ़ने का अधिकार जन्म ब्राह्मणों को ही था इसलिए पहले पहले आर्यसमाज को शास्त्रज्ञों की खोज में जन्म-ब्राह्मण—मण्डल की ओर ही आंखें उठानी पड़ती थीं। पुराने संस्कारों से जन्म ब्राह्मणों के प्रति जनता का आदर भी विशेष था। उन की कई त्रुटियां भी उपेक्षित की जाती थीं। जन्म ब्राह्मण मण्डली अपनी अवस्था से प्रसन्न थी। जिस गुणकर्मानुसार वर्ण व्यवस्था के सिद्धान्त ने प्रचारित होकर भी उन की अवस्थिति में कोई त्रुटि नहीं आने दी उस के मान लेने में जन्म ब्राह्मणों की क्या हानि थी।

किन्तु समय एक सा नहीं रहता। सम्पत्ति के साथ विपत्ति और सुख के साथ दुःख लगे रहते हैं। २४ घण्टे सूर्य का प्रकाश या चांद की चांदनी नहीं मिल सकती। समय ने पलटा खाया। वैदिक सिद्धान्त काम करने लगा। जन्म ब्राह्मणों के अतिरिक्त और लोगोंने भी वेद शास्त्र का अध्ययन प्रारम्भ किया—और सब प्रकार के साधनों से सम्पन्न होकर अपने आप को ब्राह्मणपदवी के योग्य बनाया। आर्य-जनता ऋषिदयानन्द के वैदिक सिद्धान्त को स्वीकार करती थी—उसने योग्य को योग्यस्थान प्रदान किया। जिन्हों ने साधन किए थे, उन्हें सिद्धि प्राप्त हुई। जिन्होंने अपने परिश्रम से ब्राह्मणपदवी कमाई थी, आर्य्यसमाज ने उन्हें उस पवित्र पदवी से विभूषित किया।

अब स्वार्थ का तकाज़ा आया। सदियों से बने हुए टेके को टूटता देख कर किस का दिल नहीं दहलता? जिस स्थान को अनायास ही पा लेते थे, उसे परिश्रम साध्य बनते देख कर किस का चित्त डांवाडोल नहीं होता? जहां निर्बाध राज्य हो, जिधर कोई आंख उठा कर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

भी न देख सके, वहां कई और अधिकारियों को आया देख कर किस को अन्तरात्मा विचलित नहीं होता ? जन्म ब्राह्मण मण्डल में खलबली मच गई। मानों सड़े तालाब में हल-चल पैदा होगई।

यह कहना दुःसाहस होगा कि वैदिक सिद्धान्त की पुनर्जागृति से सभी जन्म ब्राह्मण घबरा गये। ऐसे सच्चे आर्यों की संख्या बहुत अधिक है, जो गुण-कर्म के गले में ब्राह्मणत्व की माला पड़ती देख कर बड़े प्रसन्न होते हैं और इसी में ब्राह्मणत्व का गौरव समझते हैं। किन्तु जहां परार्थ की अपेक्षा स्वार्थ की मात्रा अधिक है—अथवा जहां अभी पुराने कुसंस्कारों की जड़ बहुत प्रबल हो, वहां ऐसी उदारता की आशा नहीं हो सकती। दूरदर्शिता और उदारता के अभाव ने ही इस जात पांत के सड़े तालाब में हल-चल पैदा करदी है।

यह हल-चल बुरी नहीं है। दो चार बार पुस्तकों या लेखों के रूप में सारी सड़ांद निकल जाने पर इस हल-चल से समाज रूपी तालाब को लाभ ही होगा। मैल निकल जाने पर शुद्ध भाग ही शेष रह जायगा। पुराने संस्कार भूल जायंगे और लोगों के हृदयों में फिर वैदिक सिद्धान्त का अभ्युदय होगा और सारी जनता मिल कर निम्नलिखित निगम का गान करेगी—

'मित्रस्यचक्षुषा समीक्षामहे'

वह दिन धन्य होगा।

कहां वे-कहां हम

इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध सम्पादक मि० सिडने वेब ने अपने साप्ताहिक 'न्यूस्टेट्समैन' में एक बढ़िया बात लिखी है। इंग्लैंड में प्रारम्भिक शिक्षा आवश्यक और मुफ्त है। किन्तु मध्यम शिक्षा इस प्रकार मुफ्त नहीं है। अमेरिका में मध्यम शिक्षा भी बहुत सस्ती-कहीं २ मुफ्त के बराबर है। मि० सिडने वैब का प्रस्ताव है कि अमेरिका की तरह इंग्लैण्ड में भी मध्यम शिक्षा सस्ती होजानी चाहिये। ग़रीब लोग भी उससे लाभ उठा सकें—इस लिए आवश्यक है कि छात्रवृत्तियां बहुत अधिक राशि में दी जायं। वे तो प्रारम्भिक शिक्षा के सर्वसाधारण प्रचार से भी असन्तुष्ट हैं और हम अभी उसका नाम लेने से भी गुनहगार होते हैं और यों भारत और इंग्लैण्ड दोनों ही देश एक भूतल पर बसे हुए हैं।

आर्यगज़ट को लहू से घृणा

लाहौर के सहयोगी आर्यगज़ट में आज कल एक मनोरंजक विवाद चल रहा है। मुत उषा के सम्पादक म० सन्तराम बी.ए. ने पट्टी में एक कृषि आश्रम खोला है। पृथिवी की उत्पादक शक्ति बढ़ाने के लिए म० सन्तराम पृथिवी में लहू डालना आवश्यक समझते हैं-इस पर विवाद चल रहा है। आर्यगज़ट के सम्पादक महाशय ने इस बात को बुरा समझा-म० सन्तराम ने अपने पक्ष की पुष्टि में एक चिट्ठी आर्यगज़ट को भेजी है। चिट्ठी की कुछ पंक्तियां हम यहां देते हैं—

"दर्जी ज़बान से कहने की ज़रूरत क्या है, मैं तो नक्कारे की चोट कहता हूं कि भगवती वसुन्धरा को सस्य शालिनी बनाने के लिए रक्त से सींचना परम आवश्यक है।"

आगे आपने दिखाया है कि पृथिवी को रुधिर देने के लिए हिंसा करना आवश्यक नहीं है। बिना हिंसा के भी पृथिवी को रुधिर दिया जासकता है। इस पर सम्पादक महाशय लिखते हैं—

"सवाल यह है कि क्या खून का इस्तेमाल एक आर्य कर सकता है? और वह भी महज़ इस लिए क्योंकि इससे फसल ज़रा अच्छी तय्यार हो जाती है।.....

.... कैसे अफ़सोस की बात है कि एक आर्य पुरुष खून का इस्तेमाल करे। क्यों ? क्योंकि उसकी आमदनी में ज़रा एज़ाफ़ा हो जाता है"।

एक महाशय इस नोट को पढ़कर अनायास ही कह उठे कि "आर्यगज़ट का ऐसी सलाह देना 'नौसौ चूहे खाय के बिलाई चली हज को' इस कहावत को चरितार्थ करना है।" किन्तु हम कहते हैं कि सुबह का भूला यदि सांझ को भी घर आजाय तो वह भूला नहीं कहाता। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि आर्यगज़ट स्वास्थ्य के लिए रुधिर-प्रयोग को बुरा समझता है-मांस खाना उसकी सम्मति में शास्त्र विरुद्ध होगया। यह सम्मति अगर १५ साल पूर्व ही प्रकाशित होजाती तो आज आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में इतने फूटे हुए सिरों के निशानात न दिखाई देते।

सूखी तर्क

मद्रास का दैनिक पत्र हिन्दू बड़ी मार्के की बातें लिखा करता है। अभी उसने सरकार को एक गुरुत्वपूर्ण सलाह देडाली है। वह कहता है कि लेजिस्लेटिव कौंसिलों के लिए अपनी ओर से सभासद् चुनते हुए सरकार को यह सिद्धान्त स्मरण रखना चाहिए कि सरकारी चुने हुए सभासद् प्रजा के चुने हुए सभासदों की अपेक्षा कम योग्यता तथा कम उदार विचार वाले न हों। सलाह बड़ी उत्तम है-परन्तु उस पर हमारा शुष्कतर्क भी सुन लीजिए; यदि सरकार के चुने हुए सभासद् वैसे ही हों जैसे प्रजा के चुने हुए सभासद् होते हैं, तो फिर जुदा सरकारी सभासदों की सभाओं की ज़रूरत ही क्या हो ? उतने सभासद् चुनने का भी प्रजा को ही अधिकार दे दिया जासकता है। सरकारी चुनाव से आये हुए सभासदों में कुछ भेद का होना ज़रूरी है। वह किस स्थान पर हो ? वह या योग्यता में हो सकता है और या उदारता में। योग्यता के लिए फिर भी क्षमा की जासकती है—परन्तु सरकारी सभासद् की उदारता नहीं सही जासकती। यदि संसार में उदारता का अतिशय हो जाय तो फिर अफ़सर—शासन-पद्धति की दाल कैसे गले ? इसलिये हिन्दू की सलाह ठीक नहीं।

एक मज़ेदार घटना

क. को सांप काटता है, ख. पास खड़े हुए ग. के एक थप्पड़ जमा देता है और क. की ज़हर उतर जाती है। क्या विचित्र घटना है। कहां ऐसा होसकता है सकने का प्रश्न नहीं, क्योंकि कलकर्ता

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का स्टेट्समैन ऐसी ही ख़बर देता है। मानिक पुर के स्टेशन मास्टर में ऐसी शक्ति कही जाती है। यदि किसी दूर स्थान में भी किसी पुरुष को सांप काट जाय और स्टेशन मास्टर साहिब पास खड़े व्यक्ति के एक करारा सा थप्पड़ जमादें तो साँप की ज़हर उतर जाती है। लोग तारों द्वारा स्टेशन मास्टर को समाचार देते हैं कि अमुक आदमी को सांप काट गया। इलाज कीजिये। स्टेशन मास्टर बहुत जल्दी इलाज करने के लिए तार लाने वाले पोर्टर को थप्पड़ के मारे 'शतचन्द्रनभस्तलम्' सौ चांद वाला आकाश मण्डल दिखादेते हैं। इधर पोर्टर एक दुःखभरी आहभरता है और उधर सांप का विष उतरने लग जाता है। अब कहते हैं कि जहां एक तरफ़ स्टेशनमास्टर साहिब ज़हर उतारने की चार आना फ़ीस मांगते हैं, वहां बेचारे पोर्टरों ने परोपकार वृत्ति से हाथ धो लिया है। कोई ऐसी तार लेकर स्टेशनमास्टर के पास नहीं जाता। लोग कहेंगे कि इस में मन्त्र का प्रभाव है, किन्तु एक अभिज्ञपुरुष जानता है कि यह सारी इच्छाशक्ति की खेल है।

मुकद्दमेबाज़ी

सहयोगी 'कलकत्ता समाचार' ने अपने ८ जुलाई के पर्चे में मुकद्दमेबाज़ी पर एक बड़ा उत्तम मुख्य लेख लिखा है। उस के अन्त में वह लिखता है— 'जाति के बुरे दिन आते हैं तो सब से पहले घर २ विद्रोह की सृष्टि होती है। घर २ विद्रोह के कुफल से यदि आज भी हम अपरिचित हों तो कहना होगा कि दुर्दशा का पहाड़ हमें दबा कर घट कर डालने के लिए आगे बढ़रहा है। रोज़ की बढ़ती हुई मुकद्दमें बाज़ी रोकी जानी चाहिए बात बात पर मुकद्दमे के लिए कमर कसने की जो ओछी प्रवृत्ति जाति में पैदा हो रही है, उसके समूलछेद का यथेष्ट प्रयत्न होना आवश्यक है" हम भी सहयोगी की स्वर में स्वर मिला कर कहते हैं कि 'आवश्यक है,

पराडकर जी की गिरिफ़्तारी

कलकत्ते से समाचार आया है कि भारतमित्र सम्पादक पं० बापूराव विष्णु पराडकर को पुलिस ने गिरिफ्तार किया है। पहले पुलिस ने भारतमित्र कार्यालय पर छापा मारा-वहां की तलाशी ली और बहुत से कागज़ पत्र लेगई। बहुत दिनों के पीछे पुलिस के देवताओं की आंख एक आर्यभाषा के पत्र की ओर उठी है भगवान् कल्याण करे। जो लोग पराड करजी से परिचित हैं, वे कहते हैं कि आप बड़े सज्जन और साधु पुरुष थे, और आप में कुमन्त्रण— चक्र—कारियों की सी कोई भी बात नहीं पाई जाती थी। देखें पुलिस ऐसे भद्र पुरुष के विरुद्ध क्या कर दिखाती है?

पूना में पतितोद्धार का कार्य

पूना में पतितोद्धारक सोसाइटी की एक शाखा है, जिसने अछूत जातियों के बालकों की शिक्षा के लिए एक स्कूल खोल छोड़ा है। स्कूल में बालक बालिकायें सब पढ़ते हैं। बालिकाओं से किसी प्रकार की फ़ीस नहीं लीजाती। शिक्षा उत्तमरीति से होती है। धार्मिक शिक्षा को विशेष स्थान दिया जाता है। प्रति दिन विशेष संगीतों द्वारा प्रार्थना होती है, जिस में सब बच्चे उपस्थित होते हैं। विद्यार्थियों की अपनी सभा ये भी है जिस से विशेष लाभ होता है। उनके लिये भिन्न २ विषयों पर व्याख्यानों का भी प्रबन्ध किया जाता है—जिससे ज्ञान में अच्छी वृद्धि होती है। रिपोर्ट से पता लगता है कि तीसरे स्टैन्टर्ड तक अंग्रेज़ी की पढ़ाई भी रखी हुई है। क्या वे लोग भी जिन्हें देश के लिये उपजाऊ काम करना है, और नौकरियों की तलाश में इधर उधर नहीं भटकना, अंग्रेज़ी भाषा के जंजाल से नहीं दूर हो सकते।

सभ्यों की भाषा

पूर्व की जातियां तो बेचारी असभ्य हैं—भला उन्हें बोलने का ढंग क्या आता है। उन्हें न बोलना आता है, न तोप बन्दूक बनाने की अक्ल है, न गैस छोड़ कर प्राणियों का संहार करना आता है और न ही सभ्यता की डींग हांकनी आती है। पर धीरे २ पश्चिम से पूर्व भी कुछ न कुछ सीख ही रहा है। जापन ने तोप बन्दूक बनाना सीख लिया, गैस बनाने की तय्यारियां भी पूरी करली होंगी। भारत वर्ष अभी ऐसी २ भयानक वस्तुयें बनाने सीखने के पक्ष में नहीं है—ऐसी बातें भारत वासियों के स्वभावतः धर्मपरायण हृदयों को बहुत खटकती है—हां एक शिक्षा है, जो उन्हें बड़ी शीघ्रता से मिल रही है। पश्चिम के प्रतिनिधि भारत के गौर अफ़सर कभी २ बोलने के विषय में हमारे सामने आदर्श स्थापित कर दिया करते हैं। अभी गत सप्ताह की बात है। इलाहाबाद के म्यूनिसिपल बोर्ड का अधिवेशन हो रहा था। मि० एच० एस० औस्थवेट सभापति के आसन को सुशोभित कर रहे थे। पं० शामलाल नहरू एक आवश्यक विषय पर बोल रहे थे। मि० औस्थवेट ने आप को रोका और कहा कि आप इस विषय पर कुछ न बोलें। पं० नहरू अपना तात्पर्य समझाने लगे। इस पर सभापति ने उन्हें फिर चुप होने को कहा और साथ ही धमकी दी कि यदि ऐसा न होगा तो पं० नहरू को 'बाहिर निकलवा दिया जायगा' स्कूल की छोटी श्रेणियों में कभी २ अध्यापकों को ऐसे शब्द कहने पड़ते हैं, परन्तु कालिजों के प्रोफ़ेसर अपने विद्यार्थियों के लिये शायद ही कभी ऐसे शब्द कहते हों। म्युनिसिपल बोर्ड के सभासदों की हैसीयत अभी तक विद्यार्थियों से कहीं ऊंची समझी जाती थी परन्तु पश्चिम की सभ्यता के प्रतिनिधि हमें बतलाते हैं कि ऐसा नहीं है। अंग्रेज़ सभापति के लिए अंग्रेज़ सभासद् चाहे कुछ इज्जत रखता हो, परदेशी सभासद् की क्या हैसीयत हो सकती है: वह तो आखिर नेटिव ही है। परमात्मा ही इस सभ्यभाषा से बचावे।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

एक पादरी साहिब की सलाह

ईसाई मिशनरियों ने भारत वर्ष को बहुत कुछ दिया है। उन्होंने जितनी चीजें इस अभागे देश को बख़्शी हैं उन में से एक ब्रिटिश साम्राज्य भी है। ख़ैर वह तो पुराना माजरा है —उसे जाने दो। इन दिनों में भी मिशनरी पादरियों ने अपनी उपकार की झोली का मुंह बन्द नहीं किया है। भारत पर धड़ाधड़ उपकार हो रहे हैं। उनमें से कई एक गिनाये जा सकते हैं। मिशन स्कूल तथा कालिज खोलना उनमें से एक है। इन स्कूलों और कालिजों से भारत की शिक्षा समस्या एक दम हल हो जायगी, क्योंकि अपने बच्चों को बहकता देख शायद माता पिता स्कूलों में बालक बालिकाओं को भेजना ही छोड़ देंगे। इससे भी परमोपकार की अभी भूमिका ही बंधरही है। एक पादरी नालिस साहिब को भारतवर्ष की गन्दी तथा भद्दी लिपि देख कर तरस आ गया है, उन की आंखों से कृपा की बूंदें टप २ गिर रही हैं, और उसी दशा में उन्होंने टाइम्स आवइण्डिया में एक पत्र लिखा है। उस पत्र में जापान के एक प्रोफ़ेसर की सम्मति देते हुए आप भारत सरकार को सम्मति देते हैं कि शीघ्र ही भारतीय स्कूलों में और सब देशी लिपियों की जगह रोमन लिपि का ही प्रचार कर देना चाहिये। पादरी साहिब पूर्वीय लिपियों के अच्छे ज्ञाता प्रतीत होते हैं, उन्हों ने इस विषय में कई नई गवेषणायें भी की होंगी। आज तक यह कहने की हिम्मत किसी को न पड़ी थी कि भारतवर्ष की नागरी आदि लिपियां चीनी लिपि की भांती पेचदार कठिन और अपूर्ण है। अभी तक विद्वान् लोग नागरी लिपि की उत्तमता पर मोहित थे—परन्तु पादरी नालिस साहिब का फ़र्माना है कि यह ख़्याल ग़लत है। ये सब लिपियां 'गड़बड़ वाला' हैं, रोमन लिपि सुन्दर सुहावनी पूर्ण और मनभावनी है— वही भारत के लिए उपयोगिनी है। अवश्य ही बहुत सी भारतीय प्रजा को पादरी साहिब का इस सम्मति के लिए धन्यवाद देना चाहिए। इस सम्मति को मान लेने से कई प्रकार की भलाइयां होंगी। एक तो भारत वर्ष का पुराना सारा रद्दी साहित्य लोगों को भूल जायगा, दूसरा बाइबल आदि पढ़ना बहुत सहल हो जायगा, और तीसरा ये जो भारतीय धर्म और भारतीय-जातीय-जीवन नाम के दो कांटे हैं ये भी निकल जायंगे। एक हथियार से तीन बहादुर मारे जांयगे— भला ऐसे पादरी साहिब का धन्यवाद क्यों न किया जाय?

सलाम न करने का दण्ड

सुपरवाइज़र श्रीयुत प्रथमनाथ वन्द्योपाध्याय बी० ए० नाम के एक बंगाली सज्जन को एक गौरांगता के सामने सलाम न करने तथा कुर्सी पर से न उठने का जो दण्ड मिला है—वह बड़ा मनोरंजक है। पाठकों के मनोरंजनार्थ उस का कुछ भाग हम सहयोगी पाटलि पुत्र से यहां उद्धृत करते हैं।

सलाम के लिए पदच्युति।

विहार—मुजफ्फरपुर से सलाम न करने के कारण एक उच्च पदस्थ बङ्गाली सज्जन की नौकरी छूट जाने का मनोरंजक समाचार मिला है। बात यह है, कि श्रीयुक्त प्रमथनाथ वन्द्योपाध्याय बी. ए. नाम के एक बंगाली सज्जन मुजफ्फरपुर के ज़िला बोर्ड में दो-ढाई सौ रुपये महीने पर सुपरवाइजर नियुक्त हुए थे। अब से पहले ये बाबू विहार के कितने ही उच्च पदों पर रह बहुत कुछ प्रशंसा प्राप्त कर चुके थे। किन्तु दुर्भाग्यवश उस दिन उन्होंने एक गोरी रमणी को "सलाम" न करने का अद्भुत औद्धत्य प्रकाश कर अपने इस गर्हित कर्म के लिए क्षमा मांगने पर भी पदच्युत हुए हैं! इस प्रकार नौकरी छुटने के सम्बन्ध में उन्होंने विहार के माननीय छोटे लाट की सेवा में अपनी पदच्युति का जो विवरण लिख भेजा है, वह यों है,—

"१५ वीं मार्च को मैं सरकारी कार्य्य की देख भाल के लिए सीतामढ़ी गया। उसी दिन सन्ध्या समय मैं अपनी मोटर गाड़ी पर चढ़ वहां के "इन्सपेक्शन" बंगले में उपस्थित हुआ। बंगला मेरे ही देख भाल में था। फलतः वहां मुझे रहने का अधिकार था। बंगले में जा देखा, कि सोने के कमरे में कोई नहीं, तब मैं भोजन के कमरे में गया। कमरा सूना देख मैं एक कुरसी पर बैठ गया और सिगरेट जला पीने लगा। कुछ देर बाद विलायती ढङ्ग के वस्त्राभूषण से सज्जीभूत एक रमणी ने उस कमरे में प्रवेश किया। तथा अपमानसूचक स्वर से मुझे पूछा—'तुम्हारा यहां क्या कर्य है?" मैं नहीं जानता था, कि वे कौन हैं; इससे मैं उठा भी नहीं और सलाम भी नहीं किया। किंतु उनके प्रश्न का यथोचित उत्तर दिया। मैं उन्हें देख उठ कर खड़ा नहीं हुआ तथा सलाम भी नहीं किया, इस अपराध, के लिए वे मुझे गालियां सुनाने लगीं। उन के खानसामां ने भी मेरा बहुत कुछ अपमान किया। इस घटना के कुछ देर बाद रमणी के बुलाने पर सीतामढ़ी के सुहकमामजिस्ट्रेट वहां आ पहुंचे। वे मुझ से कुछ बिना पूछेताछे और मेरी बात सुने बिना मुझे ऐसे असभ्य शब्दों में अपमानित करने लगे, कि यदि मैं चुप न रहता, तो होथपाई की नौबत पहुंच जाती। उन्होंने मुझे बङ्गले से निकल जाने की आज्ञा दी। उसी समय सुना, कि उक्त महिला पुलिस-सुपरिण्टेण्डेण्ट की आत्मीया हैं। मैंने उनसे और सुहकमामजिस्ट्रेट दोनों से बार बार क्षमा प्रार्थना की। किन्तु इतने पर भी मैं उन्हें शान्त न कर सका। उसी रात मुझे मोटर-सहित वह बङ्गला छोड़ जाना पड़ा।

मैंने इस घटना का विवरण मुजफ्फर के डिस्ट्रिक्ट इञ्जीनियर को लिख भेजा इधर सुहकमा-मजिस्ट्रेट ने जिला-बोर्ड के चेयरमैन के पास मेरे विरुद्ध रिपोर्ट की। इसके बाद डिस्ट्रिक्ट-इञ्जीनियर की चिट्ठी मुझे मिली. कि मुझे मुजफ्फर पुर लौट चेयरमैन से मिलना चाहिए। मिलने पर चेयरमैन मिस्टर वेस्टन ने मुझे बहुत अपमानित किया और कहा, कि इस महीने के आखिर में तुम्हारी नौकरी चली जायगी। १८ वीं मार्च को मैंने अपने काम से इस्तेफा दिया; पर वह मंजूर न हुआ। प्रत्युत्तर में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड के चेयरमैन की इस मतलब की मुझे एक चिट्ठी मिली, कि घोर तर औद्धत्य के अपराध में मुझे बरखास्त किया गया और इसके लिए मुझे एक महीने का समय दिया गया है। चेयरमैन की यह आज्ञा पीछे डिस्ट्रक्टबोर्ड की सभा में भी पास करा ली गई। मैंने इस आज्ञा के विरुद्ध विभागीय कमिश्नर की सेवा में अपील की थी, किन्तु उसका कुछ फल न हुआ।"

(पाटलिपुत्र)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ईश्वर स्तुति

चकित हूं मैं जब से
यह अचरज लखा है !
जो नित है क्रिया
है, अनित दीखता है ॥ १ ॥
बताओ तो कैसे कोई
उस को पाये !
जो सब से अलग
और सब से मिला है ॥ २ ॥
यह चांद और सूरज
यह धरती सितारे
बताओ इन्हें किसने
उत्पन्न किया है ॥ ३ ॥
समुन्दर अथाह
बे नदी और नाले
इन्हें इतने पानी से
किस ने भरा है ? ॥ ४ ॥
यह अपनी जो जीवन
हमारा बनी है
इसे ऐसा चमकीला
किस ने रचा है ? ॥ ५ ॥
यह वायू जो है
प्राण आधार सब की
इसे काम किसने
यह सौंपा हुआ है ? ॥ ६ ॥
यह आकाश जिस में
कि ठहरे हैं हम सब
इसे इतना फैलाव
किसने दिया है ? ॥ ७ ॥
मनुष्यों से सम्भव हैं
क्या काम सब यह ?
जो अल्पज्ञ हैं दोष
जिन में भरा है ॥ ८ ॥
वह है ओम् रक्षक, जो
है सब जगत् का
उसी ने यह संसार
उत्पन्न किया है ॥ ९ ॥
कोई गाड कहता
है उसको यहां पर ।
किसी ने खुदा
नाम उसका धरा है । ॥ १० ॥
निरंजन यह सच है कि
उस सा कोई भी ।
न अब है न होगा
न आगे हुआ है ॥ ११ ॥
नमस्कार उस को
करें आओ हम सब
कि सारे जगत का
वही आसारा है ॥ १२ ॥

निरंजनसिंह

प्राप्त पत्र

शास्त्रार्थ के लिए पं० गिरधरलाल जी की टालमटूल

इस वर्ष गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर जो स्नातक इन्द्र और पं० गिरिधर शर्मा में वैदिकवर्णव्यवस्था पर शास्त्रार्थ हुआ था उसे पाठक भूले न होंगे। मुझे वह अवसर देखने का सौभाग्य तो न प्राप्त हुआ था, पर प्रथम सद्धर्म द्वारा और फिर ब्रह्मचारी द्वारा उसे पढ़ कर मैंने अपनी सम्मति यही निर्धारित की कि स्नातक इन्द्र वेदालंकार महाशय का पक्ष ही पुष्ट हैं परन्तु ब्रह्मचारी के टीका टिप्पणी और अन्य समाचार पत्रों की कांव २ ने बात का बतंगड़ बना कर अकारण ही जन साधारण को उत्तेजित कर दिया।

इन सब बातों को देख कर मेरी इच्छा उनसे लेख द्वारा इसी विषय पर विचार करने की हुई—और एक पत्र द्वारा अपनी यह इच्छा मैंने उन्हें जताई उसकी ज्यों की त्यों नकल यह है—

पत्र नं १
श्री कल्याण औषधालय
नया बाजार अजमेर
१७, ६, १६

श्रीयुक्त महोदय ! नमस्ते ।

सद्धर्म और ब्रह्मचारी द्वारा गुरुकुल के शास्त्रार्थ को पढ़ कर वर्ण सम्बन्ध में आपसे विचार करने की उत्कण्ठा है किन्तु प्रत्यक्ष में यह विचार असम्भव है-क्योंकि हम लोग शीघ्र ही वैसा सुअवसर नहीं देखते।

तो यह उचित जंचता है कि हम लोग किसी पत्र को चुनलें-इसके लिए आपके हाथ में तो ब्रह्मचारी है ही, मैं सद्धर्म प्रचारक या इन्दौर से प्रकाशित नवजीवन में से किसी एक को आपकी रुचि के अनुसार चुने लेता हूं, मेरे लेख उस में निकलें आप के उसमें। अथवा कोई और प्रसिद्ध पत्र ऐसा चुन लिया जाय जो अन्त तक दोनों के लेखों को नियम पूर्वक प्रकाशित करता रहे। यह यदि साप्ताहिक हो तो कुछ ही मास में हमारा विचार समाप्त हो जायगा। विश्वास है, आप उदारता पूर्वक हमारी याचना निष्फल न होने देंगे।

एक सप्ताह उत्तर की प्रतीक्षा करके मैं समाचार पत्रों में खुली चिट्ठी द्वारा पुनः इस धर्म युद्ध की याचना करूंगा—पर आशा है कि आप यहां तक मामला बढ़ने न देंगे। कृपामय उत्तर आने पर अपने सिद्धान्त लिख भेजूंगा।

श्री चतुरसेन वैद्य

इसका उत्तर यह मिला।

श्रीः
२१-६-१६ ऋषिकुल हरिद्वार

श्रीयुत महोदयवर !

आपका पत्र मिला। आप वर्णव्यवस्था पर विचार करना चाहते हैं? बड़ी आनन्द की बात है! "ब्रह्मचारी" एक संस्था का मुख पत्र है इसमें चिरकाल तक ऐसे (?) विचार चलना कठिन है (?) जयपुर का संस्कृत रत्नाकर मेरा अपना पत्र है, उसे ही मैं इस विचार के लिए चुनता हूं—आप गुरुकुल की संस्कृत पत्रिका "उषा" को चुन लीजिये। यदि किसी कारण उषा अस्वीकार करे तो रत्नाकर हां आप के लेख प्रकाशित करने को सम्बद्ध रहेगा। अथवा शारदा आदि और कोई पत्र चुन लिया जाय। ऐसा विचार संस्कृत में ही विशेष उचित होगा। आशा है आप स्वीकार करेंगे।

भवदीय
गिरिधर शर्मा

इस पत्र के उत्तर में जो पत्र मैंने लिखा वह यों हैं—

ओ३म
पत्र नं२ कल्याण औषधालय
नया बाज़ार अजमेर २३-६-१६

श्री युक्त महोदय वर !

आपका पत्रमिला—हमारी प्रार्थना स्वीकार करली—इस लिए विनाधन्यवाद

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

दिये नहीं रहा जाता। किन्तु एक बात है। हमारा अभीष्ट इस शास्त्रार्थ से जन साधारण के कान में इस विषय को डाल देना है। इससे यदि संस्कृत भाषा में शास्त्रार्थ होगा तो सिवाय इसके कि कुछ चुने हुए सज्जनों का मनोविनोद हो—हमारा प्रकृत उद्देश्य सिद्ध न होगा। दूसरी बात यह है, संस्कृत द्वारा शास्त्रार्थ में यह बहुत कुछ सम्भव है कि हम मुख्य विषय को छोड़ कर व्याकरण और न्याय के फंदे में फंसें और भटक जायं। इन सब बातों के सिवा मैं अपनी मातृभाषा ही को प्रत्येक विषय के उच्च से उच्च विचार प्रकट करने के लिए उपयोगी भाषा समझता हूं और इसी में हमारा गौरव भी है, आशा है आप भविष्य राष्ट्र-भाषा और स्वमातृ-भाषा को ही यह सम्मान देंगे। एक बात और याद रखियेगा कि इस प्रकार के विचार करके हम लोग अपना पांडित्य नहीं प्रकट कर रहे हैं प्रत्युत एक ऐसे विषय को सन्देह रहित करना चाहते हैं, जिस के ऊपर हिन्दू-आर्य जाति का बहुत कुछ भविष्य निर्भर है। सो हम लोगों को कोई ऐसी पत्रिका या पत्र चुन लेनी चाहिए जिसके सब से अधिक ग्राहक हों। और जो मातृभाषा की हो तथा बिना टीका टिप्पणी के जो दोनों पक्षों के वक्तव्यों को नियमित रूप से निरन्तर निकालने को सन्नद्ध हो पहली बात फिर दोहराय देता हूं कि मैं मातृभाषा को छोड़ अन्य भाषा में [सिवाय प्रमाणादि उद्धृत करने के] लिखना कदापि स्वीकार न करूंगा। आशा है आप मेरे अभिप्राय को समझ कर इस विषय में आग्रह न करेंगे।

अन्त को एक बात कहता हूं कि हमारा यह विचार साम्प्रदायिक बन्धनों से बहुत कुछ स्वतन्त्र होगा। संहिता भाग वेद की मुख्य साक्षी रहेगी और निर्धारित [४] परीक्षाओं द्वारा सत्य सिद्ध होने पर संसार के समस्त ग्रन्थ समूहों को प्रमाण मान लूंगा.....कृपया आप स्पष्ट लिखें कि किन २ ग्रंथों का आप प्रमाण मानेंगे।

भवदीय
श्रीचतुरसेन वैद्य

इस पत्र का उत्तर आज ही यह मिला है—

श्रीः २९-६-१६
ऋषिकुल हरिद्वार

श्रीयुक्त महोदयबर !

कृपा पत्र मिला। शास्त्रीय विचार शास्त्रीय भाषा में ही उपयुक्त हुआ करते हैं—यह कोई राजनैतिक प्रश्न नहीं जिसके लिए राष्ट्र-भाषा पर दृष्टि डाली जाय (?) धार्मिक विचारों के लिए संस्कृत भाषा की परमोपयोगिता सर्वत्र प्रसिद्ध है। रहा सर्व साधारण के जानने का प्रश्न, सो निर्णय हो जाने पर अनुवाद आदि द्वारा सब कुछ प्रकट हो सकता है—पहले से ही हल्ला मचाना या प्रसिद्धि प्राप्त करना तो न आपका न मेरा उद्देश्य है—प्रमाणादि की विप्रतिपत्ति सब विचार चलने पर (?) निश्कृत हो जायगी। अपने २ मन्तव्य भी तभी तब ही प्रकट हो जायंगे। यदि आपको विचार चलाना अभीष्ट है तो संस्कृत में अपना पहला लेख लिख भेजिए वह उसी रूप में छप जायगा। अन्यथा पत्र व्यवहार में समय नष्ट करना वृथा है—विशेष क्या ?

भवदीय
गिरिधर शर्मा

इस पत्र को देखकर पाठकों को यह समझने से न रहेगा कि किस भद्दे और लचर ढंग से टाल टूल की जारही है।

मेरी इच्छा इस पत्र व्यवहार को चुप चाप प्रेम-भाव से ही आपस में तै करने की इच्छा थी—पर हमारे प्रशंसित पंडित जी इस पत्र व्यवहार में समय नष्ट नहीं किया चाहते हैं—मेरे पत्रों को भी किसी का समय नष्ट करने तथा अवज्ञा का भाजन बनने का अभ्यास नहीं है—इस से इस लेख द्वारा मैं उन्हें सूचित करता हूं कि वे किसी प्रकार इस शास्त्रार्थ से बच नहीं सकते—मैं न कोई इस विषय में उज्र सुनूंगा न हीला हवाला। यहां मैं पाठकों तथा पं० गिरिधर शर्मा जी को यह सूचित करदेना कुछ आवश्यक समझता हूं कि मेरी प्रकृति स्वभाव और संस्कार बहुत कुछ क्षात्र धर्म से मिलते से हैं सो प्रेरणा करने पर या ललकारने पर जो प्रति पक्षी यदि युद्ध करने पर सन्नद्ध नहीं होता उसे युद्ध के लिये विवश करना मुझे खूब आता है। पं० गिरिधर शर्मा अनुग्रह करके यदि हमारी प्रार्थना स्वीकार न करेंगे तो मैं उसी उत्कट अस्त्र का प्रयोग करूंगा—फिर चाहे वह धर्मयुद्ध या वाक् युद्ध ही क्यों न हों।

पण्डित जी के पत्र से ज्ञात होता है कि आप संस्कृत में शास्त्रार्थ इस कारण चाहते हैं कि शास्त्रीय-विचार शास्त्रीय-भाषा में ही होना चाहिए। दूसरी बात यह कि राजनैतिक विषय ही राष्ट्रीय भाषा में प्रकट किये जायं। हमारे पाठक इन दोनों दलीलों को सुनकर हंसेंगे, बात ही हंसने की है। मैं पण्डित जी से यह पूछता हूं कि यह ज्ञान गुरुकुल में या ऋषिकुल में शास्त्रार्थ करती-बार कहां चलागया था ? उस समय वर्णव्यवस्था या श्राद्ध ये शास्त्रीय विषय नहीं थे। या आपने उन्हें राजनैतिक विषय समझा था ? अगर ऐसी बात है तो मैं अत्यन्त नम्रता और सभ्यता पूर्वक आपकी कम समझी पर शोक प्रकट करता हूं।

बात बढ़ाने से प्रयोजन नहीं है सौ बातों की तो बात यह है कि उन्हें मेरे साथ अवश्य वर्णव्यवस्था पर शास्त्रार्थ करना होगा—इस से छूटने का कोई भी उपाय नहीं है—और यह विचार भी अटल है। जब तक पं० जी के हिमायती सारे समाचार पत्र और विद्वान् गण संस्कृत में शास्त्रार्थ की उपयोगिता सिद्ध कर के संस्कृत में शास्त्रार्थ की सम्मति न दें। कि 'शास्त्रार्थ आदि से अन्त तक मातृभाषा में ही होगा।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस विज्ञप्ति के द्वारा मैं प्रकाशित करता हूं कि १५ दिवस के अन्दर २ उन्हें मेरी प्रार्थना पर अच्छे प्रकार ऊहापोह कर के मुझे स्वीकृति की सूचना भेज देनी चाहिये कि फिर नियम आदि तै कर के शास्त्रार्थ चले।

इस अवधि में कुछ उत्तर न मिलने पर मैं गुरुकुल वाले शास्त्रार्थ की आलोचना इन्दौर से प्रकाशित "नवजीवन" में निकालना प्रारम्भ कर दूंगा यह आलोचना लग भग एक वर्ष तक चलेगी उसकी यथेष्ट सामग्री मेरे पास प्रस्तुत है।

मुझे विश्वास है कि वैसी अवस्था में पं० गिरिधर शर्म्मा को अपनी लेखनी पकड़नी ही पड़ेगी—और तब उन्हें यह शास्त्रीय विषय भाषा द्वारा ही लिखना पड़ेगा क्योंकि जिन लोगों के लिये लिखा जायगा वे संस्कृत पढ़ न सकेंगे खण्डन मण्डन एक भाषा में होना चाहिये—जिस से पाठक दोनों पक्षों की बात ठीक २ समझलें—भाषा में लिखे ऐतराज़ों का उत्तर संस्कृत में (भाषा-जानते हुये भी) पं० जी दे—यह तो शायद वे उचित न समझेंगे—तब विवश भाषा में ही लिखना होगा।

हां, एक चाल इस में चली जा सकती है जिस से पं० अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा कर के भी गुबार निकाल सकते हैं—उसे भी अभी खोल कर कहे देता हूं—वह यह है कि जैसे सतसई सहार में सुधाकर जी ने की थी। अर्थात पं० जी—किसी शिखण्डी को आगे खड़ा कर के भीष्म का शिकार करें। पर मुझे इस से कोई सरोकार नहीं— मुझे तो गु०कु० के शास्त्रार्थ की आलोचना करना है—बीच जो घास फूँस होगा—आप ही कटता जायगा।

पर ऐसी दशा में एक बात अवश्य विचार ने योग्य है कि पं० जी का कोई चेला या अनुयाई यदि पण्डित जी के विचार के विरुद्ध अन्याय से भाषा में लिखेगा तो इस से स्पष्ट ही यह सिद्ध होगा—कि पं० जी का वह संस्कृत वाला विचार उस के शिष्य गाना नहीं पसन्द करते न मानते हैं—और यह पं० जी की यथेष्ट अवज्ञा होगी। फिर मैं भी उन्हें इस विषय पर शास्त्रार्थ करने पर विवश करूंगा—कि भाषा सम्बन्ध में पं० जी का विचार यथार्थ है या नहीं—यदि है तो उसके विरुद्ध क्यों भाषा में क़लम चलाई जाती है? हो न हो इस से फिर गुरु चेलों में चले क्योंकि दोनों का मत भिन्न होगा न। तब हम ज़रा तमाशा देखते हुये सुस्ता लेंगे।

यह बात विस्तार से मैंने इस लिये लिखी है कि पं० जी इस बात को समझ जायं कि इस कठिन पेंच में वे फँस गये हैं कि शास्त्रार्थ किये बिना छुटकारा नहीं है। अब आशा है कि पं० जी अच्छी प्रकार सोच कर अपना कर्त्तव्य निश्चय करेंगे। इस के सम्पादक तथा अन्य सम्पादकों से प्रार्थना है कि भाषा के सम्बन्ध—में उनकी क्या राय है? फिर यदि संस्कृत ही सब को उपयोगी जँचे तो मैं पं० जी के अनुरोधानुसार संस्कृत में ही शास्त्रार्थ स्वीकार कर लूंगा। अधिक क्या

भवदीय
श्री चतुरसेन वैद्य शास्त्री
अजमेर

—०—

शंका समाधान।

शंकायें हरिशंकर जी के लेख "शंका समाधान" पर प्रकाशित कर के कृतार्थ करें।

(२) महाशय जी के पहले प्रश्न के उत्तर का सार यह है कि जिन मुक्त जीवों का बाध महा प्रलय में होगया है वह उस समय में होने वाले ब्रह्माण्ड में जन्म लेते हैं। परन्तु उस बात को सूची में देने से पूर्व उत्तर दाता महाशय का कर्त्तव्य था कि वह महा प्रलय में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति तथा विनाश को प्रमाण तथा युक्ति से सिद्ध करते! क्योंकि यह बात सब परम्परा सदाचर से सिद्ध है कि ब्रह्माण्डों की उत्पत्ति तथा विनाश एक समय में नहीं होगा वह किस क्रम से इन कि उत्पत्ति" आदि सृष्टि में होती है उसी क्रम से इन का विनाश होता है। लेकिन यह उत्पत्ति तथा विनाश का व्यवहार सृष्टि काल या ब्रह्म दिन में ही समाप्त हो होता है और महा प्रलय में उस ब्रह्माण्ड आदि अपने कारण रूप प्रकृति में लीन हो जाता है और ब्रह्म रात्री की आयु व्यतीत हो चुकने तक उन में विनाश तथा उत्पत्ति वही होगी? यदि कोई प्रमाण तथा युक्ति उत्तर दाता महाशय के पास हो तो प्रकाशित करें!

(२) ज्ञान की न्यूनाधिकता में प्रकृति का सुवर्ण होना आदि सृष्टि के मुक्त जीवों के वास्ते नहीं। क्योंकि यह व्यवहार पूर्व जन्म के संस्कारों से होता है जिन का मुक्त जीवों से अभाव होता है। मेरी आश दूसरे प्रश्न से यह है कि जब मुक्त जीवों की ज्ञान दशा में कोई भेद नहीं होता और वेदों का प्रकाश उस समय होता है जब कि मुक्त जीवों के मन पर प्रकृति का कुछ असर नहीं होता तो यह क्यों मारा जाय और ज्ञान की कमि-वेशीका कोई निमित्त नहीं दीखता।

[३] मुक्ति की प्राप्ति के समय तो ज्ञान का अन्त होता है और जीव उस से अधिक ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकता? परन्तु वह ज्ञान प्रति काह न्यूनता को प्राप्त होता जाता है क्योंकि उस ज्ञान का निमित्त (वेदों का अभ्यास) नाश हो जाता है। उस समय मैं अपने ज्ञान को साथ साथ बढ़ाने से यह लाभ होगा कि इस से उस मुक्त जीव का ज्ञान न्यूनता को प्राप्त नहीं होगा और इस तरह वह उपयुक्ति काल को भी कहा सकता है। बस अपने ज्ञान को बढ़ाने का यही लाभ है। क्योंकि ऐसा जीव बद्ध अवस्था से मुक्ति को प्राप्त हुआ है इस वास्ते वह इस आनन्द ही आनन्द अनुभव करेगा।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

विज्ञापन विभ्राट्

संसार की सभ्यता में विज्ञापन का विशेष हाथ है। सभ्य देशों में यह एक कला है और वहाँ योग्यतम रीतियों से यह काम में लाई जाती है। पत्रों में चीज़ की जैसी तारीफ़ होती है—वैसी ही वास्तव में होती भी है। इसी कारण से इस की वक़त होती है और लोगों का विश्वास जम कर उस का प्रचार बढ़ता है। पर हिन्दी संसार में यह कला नगण्य दशा में होने पर भी लोग इस से अनुचित लाभ उठा रहे हैं। यह बात अब तक दवाइयों आदि के ही विषय में थी पर अब काम करते २ इन विज्ञप्ति—ठगों का दिल और भी अधिक बढ़ गया है। अब किताबों में भी इन के करतब नज़र आने लगे हैं। हमारे एक मित्र ऐसे ही एक विज्ञापन के शिकार बन बैठे हैं—इस लिए हिन्दी संसार को परिचित कराने के लिए यह सूचना दी जाती है—आशा है भोले भाई इन धोके बाज़ विज्ञापन जीवियों के पंजे से बचेंगे।

ता० २० जून के "हिन्दी समाचार" दिल्ली के १६ वें पृष्ट पर यह विज्ञापन निकला जिस का शीर्षक है "सचित्र कोकशास्त्र चौसठ आसन सहित"। इस की तारीफ़ विज्ञापन में जो कुछ है वह भोले भाइयों को बहकाने के लिए काफ़ी है। इस का मूल्य ४) रु० चार रुपये हैं। हमारे मित्र महाशय ने झट पट वी० पी० भेजने के लिए लिख दिया। पुस्तक आने से पहले उन्होंने हम से ज़िक्र किया। हमारे यहां एक पहले की मँगाई कोकशास्त्र की पुस्तक पड़ी थी—पुस्तक अच्छी थी। हमने इस की तारीफ़ की और उन्हें वह पढ़ने को दी। इस का नाम है "दयादी—इल्म उलनसा" और सम्पादक हैं बाबू शालिगराम भक्ला। पृष्ट संख्या २१६ और "पंजाब प्रिंटिंग वर्कस लाहौर "में छपी है। इसका मूल्य पुस्तक पर छपा है १॥=) एक रुपया ग्यारह आने। हमारे मित्र महाशय जब इस हमारी दी हुई पुस्तक को पढ़ चुके तब ऊपर वाले विज्ञापनी महाशय की वी. पी. मिली। वी. पी. का मूल्य था ४॥-) चार रुपये नौ आने। एक लकड़ी के डिब्बे में घास भर कर बीच में पुस्तक रक्खी गई थी और ऊपर मोमजामे पर कीलें जड़ कर छपा हुआ लेबिल लगाया गया था। इसी का डाकख़र्च था नौ आने नहीं तो शायद तीन आने में पुस्तक आजाती। ख़ैर, जब पुस्तक खोली तो हमारी १॥=) वाली और यह एक ही थीं—फ़रक इतना ही था कि इसका कवर पेज फाड़ डाला गया था। जिससे क़ीमत और प्रेस का नाम तथा लेखक के नाम का पता न चल सके। विज्ञापन दाता बड़ी छाती वाले दिलेर आदमी जान पड़ते हैं—यों दिन में आंखों में धूल झोक कर उन्होंने रुपये ठगने की क्रिया खूब निकाली है। कवर पेज फाड़ कर उन्होंने उसी का मोल तिगुना बना डाला है और दर असिल २१६ पृष्ट की पुस्तक का १॥=) भी मोल अधिक है। जो समाचार पत्र बिना जांच पड़ताल के ऐसे विज्ञापनों को अपने पत्रों में स्थान देते हैं वे भी अपने आप को अविश्वास से नहीं बचा सकते। पत्रों का कर्त्तव्य है कि वे विज्ञानों की जांच कर के छापे जिस से सर्व साधारण की यों हानी न उठानी पड़े। इन विज्ञापनी सख़ुन का पता है, "सचित्र कोकशास्त्र आफिस, पोस्ट नगर नौसा, ज़िला पटना Viâ Futawah आशा है भोले सज्जन इन महाशय से बचेंगे। हमारे मित्र ने इन्हें नोटिस दिया है।

भवदीय,—
केदारनाथ गोयनका,
कटरा नवाब, देहली।

——:०:——

चेतावनी।

श्रीयुतमान्यवर महोदय नमस्ते!

१८ आषाढ़के प्रचारक में पृष्ट १४ के बीच वाले स्तम्भ में दाद के रोगियों के लिए कौड़ियों की दवा शीर्षक से छपा है कि (Chrysophanic acid) को घुले हुए घी में मिला कर लगाना चाहिए। सर्व. साधारण लोग भ्रम न पड़ें इस लिए आवश्यक है कि उन्हें कुछ ज्ञान इस विषय का कराया जावे। (Chrysophanic acid) का मूल्य २) प्रति Ounce है और यह नेत्रों के लिए बहुत हानिकारक है यदि इस के सेवन पश्चात् हाथ भले प्रकार न धो डाले जावें। और प्रायः दश ग्रेन Grain से अधिक एक औंस ounce घी का वैसलीन में न मिलाना चाहिए। मेरी विशेष प्रार्थना है कि बिना डाक्टर की आज्ञा कोई महाशय इस अथवा और तीव्र औषधियों का सेवन केवल परीक्षार्थ न करें।

भवदीय शुभचिन्तक
बनारसीदास ग्राहक सं० ६२२

"उपदेशक की आवश्यकता"

भरतपुर राज्य आर्य्य समाज को एक वैदिक सिद्धान्त के ज्ञाता सदाचारी क्रम काण्डी उदेशक की आवश्यकता है जो सज्जन पधारना चाहें अपना समाजिक जीवन वृत्तांत, योग्यता, मासिक वेतन लिखकर मन्त्री आर्य्य समाज भरतपुर के पते से शीघ्र भेजें।

सूचना

सर्वसाधारण महोदयों की सेवा में सविनय निवेदन है कि "जिज्ञासु" नामक पुस्तक जो प्रकाशित होता था उस को जिलाधीश महोदय ने नोटिस देकर छपवाना बन्द करादिया है। अतः "जिज्ञासु,, ग्राहक तथा अनुग्राहक महोदय की सेवा करने में असमर्थ है इस समय इसके प्रकाशित करने के लिए उद्योग किया जारहा है, यदि किसी प्रकार प्रकाशित नहीं होसकेगा तो सब ग्राताओं की सेवा में शेष रुपया शीघ्र ही लौटा दिया जायगा।

प्रबन्धकर्त्ता—
"जिज्ञासु" मुस्तफापुर
दानापुर खगौल

CC-0. Kanya Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम-कादिर

पहला परिच्छेद

'अतिसुमनोहर राग रंग में यह क्या हुआ
भयंकर नाद' । स्फुट

बड़ा मनोहर प्रभात था । वसन्तऋतु—उसमें भी पौह फूटने का समय । पूर्वदिशा में सूर्योदय की प्रस्तावना बंध रही थी । आकाश का रंग अवर्णनीय था । न लाल ही थी-और न पीला रंग ही प्रधान था । दोनों रंगों का सुहावना घोल था, जो पूर्व दिशा को रंगीन बना रहा था । भगवान् रश्मिमाली के सुनहरे किरणजालों का समूह पृथ्वी के विस्तार को पूर्वदिशा में संकुचित सा करता हुआ नभ मण्डल में फैला जा रहा था । उसकी ओर चोंचे किए हुए पंछीगन अपने २ मनमोहने राग अलाप रहे थे, मानो पृथ्वी के साथ सूर्य के भावी सम्बन्ध की प्रसन्नता में गायक लोग अपनी २ गीतियाँ सुना रहे थे । फूले हुए सुगन्धित फूलों को हिलाता, हरी२ नई कोंपलों को झिलहाता, शाखाओं पर बैठे हुए पंछी गायकों को हरसाता और हृदयों को हुलसाता हुआ सुगन्धित वायु मन्द २ गति से एक २ वृक्ष को छूता हुआ मानों प्रकृतिदेवी के साथ कलोलें कर रहा था । चारों ओर प्रसाद गुण का साम्राज्य हो रहा था, जिस में सौन्दर्य की देवी ने सम्पूर्ण संकोच छोड़ कर अपनी अनूपम छवि का विस्तार किया था ।

उस प्रसाद-साम्राज्य में यमुना तट की शोभा और भी अनूठी थी । पूर्व दिशा की ओर नभमें उठते हुए प्रकाश-समुद्र की चमकीली प्रति-लहरि, उठती बैठती हुई लहरियों पर पड़ कर धूप-छाया की मनभावनी खेल खेलरही थी । आपस की टक्कर से उठते हुए जल कणों पर पड़ कर लालाभय सुनहला प्रकाश यमुना पर पुष्प वर्षा सी कर रहा था । वृक्षों के एक सघन कुञ्ज के नीचे खड़ा एक राजपूत युवक इस शोभा की ओर एक टक निहार रहा था और भगवान् की हृदयहारिणी रचना पर मोहित हो रहा था ।

उस राजपूत युवा की अवस्था लग भग २४ वर्ष की होगी । उसका ऊंचा कद, उन्नत ललाट, विशाल आंखें, विस्तीर्ण पेशानी और सुघट पट्ठेदार शरीर-सब स्पष्टतया सूचित कर रहे थे कि वह एक ऊंचे वंश का राजपूत है । चौहानवंश को कौन नहीं जानता । जिस वंश को रायपिथौरा ने अपने नाम से उज्ज्वल किया था, उसे याद करता हुआ कौनसा भारतवासी उचित अभिमान से अपनी गर्दन को ऊंचा नहीं कर लेता ? राजपूत युवक ने उसी वंश में जन्म लिया था । युवक के अङ्ग प्रत्यंग से उत्साह तेज और साहस झलक रहा था । उसका वेष इस समय साधारण था । प्रभात के मनोहर वायु को सेवन करने के लिए उठते ही वह प्रतिदिन यमुना तट की ओर घूमने आया करता था । तट पर पहुंच कर प्रकृति के अद्भुत सौन्दर्य ने उसे ऐसा खेंचा कि वह मन्त्रमुग्ध की न्याईं वहीं खड़ा होगया । यमुना के शीतल जल से किलोलें करता हुआ वासन्तिक पवन उसके ललाट पर लेटे हुए घुंघरीले बालों को नचा २ कर पेड़ के पत्तों में हंसने लगा । पास ही एक आम की डाल पर बैठकर मीठी कोयल मन मोहने राग सुनाकर उसके चित्त को हरने लगा । आकाश से यमुना जलतक दौड़ लगाने वाला छुपे हुए सूर्य का प्रकाश-जाल उसके मन को भूलोक से उठाकर अन्तरिक्ष लोक में विहार कराने लगा । तेजसिंह चुपचाप खड़ा हुआ सौन्दर्य के फंन्दे में फंस कर अपने आप को भुलाने लगा ।

एक उमंग ने दूसरी उमंग पैदा की । तेजसिंह के सुरीले कंठ ने एक सुरीला आसागीत गाना शुरू किया । गले से मधुर स्वर के निकलते ही कोयल ने लजाकर अपना गीत चोंच में छुपा लिया, यमुना की कोलाहल करने वाली तरंगों ने मानों दांत दबाकर मौन धारण कर लिया, और वन के वनस्पति—समाज ने भी ध्यान से कान लगाकर स्वरसुधा को पीना प्रारम्भ किया । वहां का सारा आकाश मंडल निस्तब्ध होकर गीत श्रवण करने लगा-हां एक रंगीला वासन्तिक पवन शान्त नहीं हुआ जो घने कुञ्ज में चोट लगा २ कर ताल देने और गायक के उत्साह को बढ़ाने लगा ।

कुछ देर तक ऐसाही स्वर्गीय समय बंधा रहा । जैसे एक उत्तम चित्र बनाने में विविध रंग अपनी २ सत्ता को छोड़ कर एक मूर्ति की सत्ता में मिल जाते हैं, इसी प्रकार युवक, वासन्तिक पवन, वन कुंज और यमुना-ये सब अपनी २ पृथक् सत्ता को भुला कर एक सौन्दर्यमय संसार में लीन से होगये । युवक अपने आप को भूल गया ।

आसा का गीत समाप्त हुआ । स्तब्ध हुई प्रकृति ने मानों विश्राम सा पाकर पवन के झोंके द्वारा एक लम्बा सांस लिया । उसी सांस में मिला हुआ कोई और अस्पष्ट सा स्वर भी सुनाई दिया, जिसने युवक के कानों को एक दम अपनी ओर खेंच लिया । वह शब्द अस्पष्ट था-तो भी इतना प्रतीत हो रहा था कि किसी स्त्री का घबराहट की दशा में निकला हुआ शब्द है । ध्यान लगाने पर युवक को जंचने लगा जैसी कोई आपत्तिग्रस्त महिला सहायता के लिए चिल्ला रही है । क्षण भर में उस के साथ एक और भी चिल्लाने और पुकारने का शब्द सुनाई पड़ने लगा । प्रतीत होता था कि पहली स्त्री को विपत्तिग्रस्त देख कर कोई दूसरी स्त्री सहायता के लिए चिल्ला रही है । दोनों शब्द क्षण २ में अधिकाधिक ऊंचे और तीखे होकर उस प्रशान्त कानन का समाधि-भंग करने लगे । उस जंगल की घनता के कारण युवक के लिए यह देखना कठिन था कि शब्द कहां से आरहे हैं । वह केवल दिशा को पहिचान सका । लि-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

खने में लेखनी विलम्ब कर देती है, परन्तु उस युवक को सब कुछ सुनने और उस ओर भागने का निश्चय करने में आध मिनिट से अधिक न लगा होगा। दिशा का निश्चय होने पर युवक ने यह भी अनुमान किया कि आक्रन्दन ध्वनि यमुना तट से ही आरही है। उसी को लक्ष्य करके किनारे की झाड़ियों को चीरता हुआ, कांटों को कुचलता हुआ और वृक्षों की अड़ी हुई शाखाओं को रास्ते से धकेलता हुआ तेजसिंह तीव्रगति से जाने लगा।

ज्यों २ तेजसिंह आगे जाने लगा, चिल्लाने का शब्द अधिक साफ़ सुनाई देने लगा। जो शब्द सुनाई दिये उनसे अनुमान होता था कि कोई स्त्री यमुना तट की दलदल में धंस गई है और निकल नहीं सकती। वह सहायता के लिये चिल्ला रही है। दूसरी एक स्त्री उस की दशा को देख कर सहायता के लिये चिल्ला रही है, और स्वयं दल दल में धंस जाने के भय से कुछ नहीं कर सकती। तेजसिंह की चाल और भी तेज़ होने लगी। वह कूदता और फांदता हुआ भागने लगा। वन बड़ा बीहड़ था। कांटेदार वृक्ष बड़ी बहुतायत से थे। वृक्षों के तनों में लिपट कर जाल के समान बनी हुई लताओं ने मार्ग में पग पग पर किलाबन्दी सी कर रखी थी। तेज सिंह की टांगों में कई स्थानों पर कांटे चुभ गये—और लताओं की फांसी ने कई बार छाती और पेट पर धावा किया, किन्तु इच्छा और बल के सामने कोई विघ्न नहीं ठहर नहीं सकता लग भग पांच मिनट तक इसी दौड़ धूप के पश्चात् तेजसिंह उस जंगल से बाहिर हुआ। सामने यमुना का खुला रेतीला किनारा था जिस में दृष्टि दौड़ाते ही तेजसिंह ने देखा कि उस का अनुमान ठीक था।

भगवान् किरण माली की आधी उज्ज्वल मूर्ति पूर्व दिशा में भूमि ऊपर निकली हुई दिखाई दे रही थी—उसकी चमकीली सुनहली किरणें भूतल के साथ २ आती हुई, रेती पर संचार कर के, मानों स्नान करने यमुना के जल पर विहार कर रही थीं। उन्हीं सैलानी शीतल किरणों के प्रकाश में तेजसिंह ने देखा कि जल से थोड़ी दूर दल दल वाली विकट भूमि में एक अबला का आधा शरीर धंसा हुआ है। पेट तक वह अन्दर धंसी हुई है। एक बालिका उस से कोई दस हाथ दूर पगडंडी पर खड़ी चीखे मार रही है और सहायता के लिये चिल्ला रही है। जो अबला दल दल में धंसी हुई थी, अब नहीं चिल्ला रही थी। प्रतीत होता था कि वह थक गई है और अब हिलने जुलने या चिल्लाने की शक्ति नहीं रखती। तेजसिंह इस करुणा जनक दृश्यको देखकर उस स्थान तक पहुंचने का मार्ग ढूंढने लगा। देखने पर उसे एक चक्कर दार पगडंडी दिखाई दी जो घूमकर वहां पहुंचती थीं, जहां बालिका खड़ी चिल्ला रही थी। तेजसिंह उसीरास्ते हो कर भागता हुआ दो तीन मिनट में दलदल के पास जा पहुंचा।

जो स्त्री दल दल में फंसी हुई थी, वह वस्तुतः लग भग १६ वर्ष की एक सुन्दरी थी। तेजसिंह ने उस की आपत्तिमय दशा को देखा और उस के उद्धार के उपायों का विचार प्रारम्भ किया। उसे दल दल से कैसे निकाला जाय? सुन्दरी ज्यों ज्यों निकलने की चेष्टा करती थी, त्यों २ अन्दर ही अन्दर धंसती जाती थी। विषयों में आसक्त विषयी की भांती वह नीचे ही नीचे जा रही थी। तेजसिंह ने पहला काम यह किया कि सूचित करने वाले ऊंचे स्वर से सुन्दरी को भूमि पर, जहां तक होसके, लेट जाने को कहा। पहले दो बार कहने का कोई प्रभाव न हुआ, तीसरी बार कहने पर सुन्दरी ने सचेत सी होकर अपना ऊपर का धड़ भूमि पर डाल दिया। ऐसा करने से वह आगे धंसने से बच गई। तब तेजसिंह ने अपनी पगड़ी उतारी, और उसके किनारे पर एक छोटा सा पत्थर बांध कर ऐसे ढंग से फैंका कि पगड़ी का दूसरा सिरा सुन्दरी के हाथ के पसार में आ जाय। तब फिर उस ने सुन्दरी को पगड़ी का किनारा पकड़ कर लेटे ही लेटे धीरे २ दल दल से उठने का यत्न करने के लिये कहा और स्वयं पगड़ी को दूसरे किनारे से थोड़ा थोड़ा खेंच कर सहायता देनी प्रारम्भ की। इसी प्रकार धैर्य पूर्वक चेष्टा करने पर भी कोई विशेष कृतकार्य्यता न हुई क्योंकि लेटे २ दल दल से निकालना बड़ा दुष्कर था। तब तेजसिंह ने दल दल से निकलने का एक नया ही उपाय किया। पास ही यमुना के पानी का गिराया हुआ एक छोटा सा सीमल का पेड़ पड़ा था—वह बालिका की सहायता से उसे खेंच लाया और पीछे से धकेल कर दल दल पर ऐसे ढंग से रख दिया कि उस पर से होकर सुन्दरी के पास पहुंचा जा सके वह वृक्ष पत्तों और शाखाओं की बहुतायत से दल दल के अन्दर नहीं घुस सकता था। उस के तने और शाखाओं की सहायता लेता हुआ वह सुन्दरी के पास पहुंच गया, और अपने हाथ का सहारा देकर धीरे २ ऊपर को खेंचने लगा। बहुत देर तक परिश्रम कर के सफलता हुई। वह सुन्दरी, अधमुई सी दशा में दल दल से बाहिर निकली। उसे उसी दशा में पगडंडी तक पहुंचाना बड़ा कठिन था। उठा कर वृक्ष के तने के ऊपर २ चलने में गिरने का बड़ा भय था। तेजसिंह ने पत्ते तोड़ कर शाखाओं के ऊपर डाल दिये। अपने साफे और ऊपर के चोये को उतार कर उनके ऊपर बिछा दिया। जहां तक उस अवस्था में सम्भव था, बिस्तरा बना कर वहीं वृक्ष पर सुन्दरी को लिटा दिया। बालिका को बुला कर सुन्दरी की अचेतना हटाने के उपाय समझाये तथा स्वयं पगडंडी पर चला गया और बालिका को कह गया कि "जब सुन्दरी सचेत हो जाय तब मुझे पुकार लेना ताकि तुम लोगों को गांव तक पहुंचा आऊं।"

(शेष फिर)

—:o:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक-वर्णव्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञानभिक्षु जी लिखित)

(३)

गताङ्क से आगे।

भगवन्! मेरी आंखें तो ऐसी हिंसा नहीं देख सकती। वह दिन कब आवेगा जब स्वार्थी शब्द भी संसार में न व्यवहृत हो जिधर देखें उधर विद्वान् धर्मात्मा सदाचारी ही दृष्टिगोचर हो—निषाद स्थपतिं याजयेत। आपस्तम्भश्रौत पृ० ६ कं० १४ निषाद-स्थपति का यज्ञ करावे यदि किसी आप के माने शूद्र के यज्ञ कराने से दक्षिणा अन्नादिलें तो भी तो ब्राह्मणत्व नष्ट हो जावे (शूद्रान्नं ब्रह्मवर्चसम् ३५ पृ०) फिर यह जो आप का अर्थ है कि ब्राह्मण (नाम मात्र का) यज्ञकरावे यह तो आप के सिद्धान्त के भी प्रतिकूल है—आगे रामायण के २ श्लोक देकर लिखते हैं कि "यदि शूद्र का तप करना वेदानुकूल होता तो मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी क्यों शम्बूक शूद्र का गला काटते ११ पृष्ठ" क्योंकि प्रत्येक वेदानुकूल शुभ कर्म तप कर सकता है और अधिकार है जैसे कि पीछे लिख चुके हैं और आगे लिखेंगे—इस लिए रामचन्द्र जी ने ऐसा घोर पाप नहीं किया यदि किया तो उन को पापी क्यों न कहें—हां ऐसा तो हो सकता है कि वह तप करने वाला छिप कर दुष्ट कर्म किया करता होगा जिस से रामचन्द्र जी ऐसा कर बैठे होंगे। चाहे तो श्लोक को वेद विरुद्ध मान कर प्रक्षिप्त ठहरोवो या उन को पापी कहो। यदि दोनों में से कुछ भी न मानो तो मारने का कारण तप क्यों मानते हो पाप कर्मा था इस कारण मारा गया इन में से जो पसन्द करें हमें स्वीकार है—यह नहीं माननेदेंगे कि शूद्र था और तप करता था इस कारण से हनन किया—वेदाध्ययन रूप तप शूद्र कर ही सकता है। आर्यवर्णस्यवेदस्य शेष इत्युपदिशन्ति आपस्त—११—२९ इसे आप ही मानते हैं केवल शेष का अर्थ आप की समझ में नहीं आया मैं समझाये देता हूं—आप द्विजों को अधिकृत कहते हैं कि नहीं। हां द्विज अधिकारवान् हैं बताओ, वर्ण कितने हैं—चार—कौन २ ब्राह्मण; क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र-आप द्विज किस को कहते हैं। ब्रा० क्ष० वैश्य को। अच्छा तो अब आप यह बताइये वर्णों में से द्विज गये बाकी कौन रहे। ४ में से ३ निकले १ रहा—वह कौन—शूद्र—शूद्र क्या हुआ? शेष। अब करो अर्थ शेष को अर्थात् शूद्र को। आथर्वणस्यवेदस्य। अथर्व वेद का अधिकार है। याद रहे अथर्व में विज्ञान (शिल्पादि) है इसी लिए शूद्रों में आज तक यह काम चला आता है अथवा जो कोई शिल्पादि कार्य करता है वह शूद्र कह कर प्रकाश जाता है। इसी लिए इस पर स्मृति कोप है जो किसी समय वेद-प्रचार के कारण प्रचरित होगए वास्तव में वेद किसी परोपकार कार्य करने वाले को नीच व उन का अन्नादि ग्रहण न करना आदि घृणित व्यवहार नहीं बताते—उपदिशन्ति शब्द से भी ठीक है कि पूर्व प्राचीन आचार्य ऐसा ही मानते हैं। इस का एक और अर्थ है जो कि हम आगे किसी उत्तर में लिखेंगे। यह क्या आप में बुरी आदत पड़ी हुई है कि जो अर्थ आप के विरुद्ध और वेद के अनुकूल कहें उसे ही आप छोड़ भागते हैं और फिर कहते फिरते हैं कि प्राचीन आचार्यों का आधार लेता हूं। शोक तो यही है कि आप कहते कुछ और करते कुछ और पृष्ठ १२ पर लिखते हैं शूद्राणामदुष्टकर्मणामुपनयनम् उपनयनं विद्यार्थस्य श्रुतितः संस्कार पारस्कर १-१-२=पारस्कर का मत सर्वतन्त्र सिद्धान्त न होने के कारण माननीय नहीं है। साथ ही वेद और मीमांसा के विरुद्ध है" बेचारे पारस्कर भी धक्के लगे, क्या कहने आप के। देखना कहीं प्राचीनाचार्यों का आश्रय न लेलेना—यह सूत्र तो क्या ही अच्छा कह रहे हैं जिन का आप ने तिरस्कार किया। सच्चे शूद्र अर्थात् मांस मद्यादि का सेवन न करता हो धार्मिक हो ऐसे शूद्र का यज्ञोपवीत करे। दूसरे सूत्र का अर्थ यह है कि वेद से विद्यार्थी पुरुष का अर्थात् जो कोई चाहे कि मैं विद्या-वेदादि का अध्ययन करूं उस का यज्ञोपवीत अर्थात् उपनयन संस्कार हो—यह सिद्ध होता है—उपनयन का लक्षण भी कर दिया—विद्यार्थस्य श्रुतितः संस्कार उपनयनम्—श्रुति शब्द का अर्थ वेद हैं न कि संहिता। भिन्न अन्य ब्राह्मणादि ग्रन्थ—यह पौराणिक लोग तो मानते हैं कि सब वेद ही है परन्तु आर्य लोग मूल वेद संहिता को ही वेद मानते हैं—आप की चालाकी तो स्पष्ट ही प्रतीत होती है ऋषियों के वचनों को न मानना और कहना कि हम मानते हैं क्या थोड़ी धोखे बाजी है और फिर कहेंगे कि देखो जी हमें ऐसा ऐसा कहा जाता है। यदि तुम्हें अपने को अच्छा कहलवाना था तो अच्छा बन कर दिखाते। सब कोई फिर आप को आर्य कहता आप की प्रारब्ध में ही पश्चात्ताप लिखा है। हम क्या करें। फिर १२ पृष्ठ पर लिखते हैं कि "शूद्र का किसी वेद से सम्बन्ध नहीं है" कैसा सरासरी धोखा दे रहे हो। ऋषि दयानन्द की तो जिह्वा थक गई। यथेमां वाचं को चिल्लाते २, परन्तु आप हैं जो कान तक नहीं हिलाते। प्रतीत होता है कानों में सिक्का डलवा कर आए हो या दृष्टि बन्द किये बैठे होंगे-मैं जितलाता हूं। शूद्र का किस के साथ सम्बन्ध है। आथर्वणस्य वेदस्य शेष इत्युपदिशन्ति आप ११-२९-(यह तो आप को ही उद्धृत सूत्र है फिर आप सोचते क्या हैं) बताओ ब्राह्मण का किस वेद से सम्बन्ध है, सामवेद से—क्षत्रिय का किस वेद से, यजुर्वेद से—वैश्य का किस वेद से, ऋग्वेद से—अब बतावो शेष कौन रहा शूद्र—और उधर वेद कौन शेष रहा—अथर्व वेद—शूद्र से अथर्ववेद का सम्बन्ध है यह आचार्य मानते हैं। आया सूत्र समझ में—यह तो बड़ा स्पष्ट सूत्र है—अबतो पता लगा है शूद्र का किस से सम्बन्ध है=नहीं तो बतावो अथर्ववेद का किस वर्णसे सम्बन्ध है। आप सारी आयु लगे रहें तब भी न बतला सकें—ब्राह्मण का तो साम वेद से सम्बन्ध है—सामवेदो ब्राह्मणानां—(तैत्तिरीय—) क्षत्रिय का यजुर्वेद से—यजुर्वेदं क्षत्रस्याहुः तैत्तिरीय—वैश्य का ऋग्वेद से—अब इनका यह वेद है तो अथर्ववेद का किस का साथ—देखिये जैसे वेदान्त में नेति नेति से आत्म

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सिद्धि होती है-और वैशिषक में परिशिष्टा दात्म ज्ञानम् है-इसी प्रकार यहां भी शेष जो शूद्र उस का सम्बन्ध शेष वेद अथर्ववेद से है-और फिर आचार्य भी यही उपदिशन्ति कहते हैं कि अथर्वणस्य वेदस्य अथर्ववेद का—शेषः सम्बन्धी-शूद्र सम्बन्ध वाला है-यदि अब भी आप की समझ में नहीं आया-तो आप को यह मानना होगा कि जब वेद विभक्त हुए इन वर्णत्रय को-या तो उस समय अथर्ववेद नहीं था पीछे से मिला-या शूद्र वर्ण नहीं था-दोनों में से एक भी ठीक नहीं उपनिषद् ब्राह्मण ग्रन्थ सब अथर्ववेद को प्राचीन मानते हैं और रहे शूद्र यह भी तब से ही हैं जब से और वर्ण हैं-फिर अथर्व वेद का शूद्र से क्यों नहीं सम्बन्ध मानते-क्या यह हट और दुराग्रह नहीं। हम सौ कहें तुम एक न मानों-आप एक और आचार्य का अनादर मीमांसा के भय से कर रहे हैं। पं० जी मैं आप को निश्चय दिलाता हूं कि मीमांसा से कदापि विरोध नहीं होगा परन्तु आप ऋषि के बचन का अनादर न करें-गायत्री छन्द ब्राह्मणों का त्रिष्टुप् क्षत्रिय का-जगती वैश्य का-और 'अनुष्टुञ्छन्दसः शूद्राः'-शंखायन सूत्र १४-१९-ऋषि जनों ने तो स्पष्ट ही छन्द तक देदिये-जहां कहीं अनुष्टप आये चाहे कोई वेद हो-उस से शूद्र का सम्बन्ध है-ऐसे ही और वर्णों का और छन्दों से-ऋषि तो सब वर्णों को इकट्ठा कर रहे हैं परन्तु आप ऋषि जनों के विपरीत, फूट फैला कर भाई भाई को परस्पर लड़ाने और पक्षपातसे बेचारे ईश्वर पुत्रों पर अत्याचार कर ने में लगे हुए हैं। ईश्वर आप को सुमति प्रदान करें।

छान्दोग्य उपनिषत् के आधार पर शूद्र को नीच कुत्सित योनि और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य को उत्तम योनि सिद्ध करने के लिये पृष्ठ १२ पर लिखते हैं कि "रमणीयाचरणा रमणीयां योनि मापद्येरन्" ब्राह्मण योनिं वा क्षत्रिय योनिं वा वैश्य योनिं वा छान्दोग्य में इस वचन से द्विजों को उत्तम योनिं और शूद्र को कपूय कुत्सित नीच योनि माना है।" समीक्षक-इस प्रतीक में तो उत्तम योनि शब्द तक नहीं-आप कहां से यह शब्द ले आये-स्यात् आपने रमणीयां योनिं का अर्थ किया है परन्तु आप के मनोगत भावों का यहां लेश तक नहीं-रमणीय आचरण वाले पुरुष श्रेष्ठ पद को प्राप्त होवें चाहे ब्राह्मणत्व को अथवा क्षत्रियत्व-वैश्यत्व को-यह है इस का अर्थ-इस में किसी को जन्म से नीच कुत्सित वा उत्तम नहीं कहा-क्या आप अपने जैसा ही उपनिषत्कर्त्ता को असत्पक्षपाती समझे बैठे हैं? तुम जैसे मनुष्य आंखों पर पट्टी बाँध बैठें तो कुछ भी आश्चय नहीं परन्तु ऋषि लोगों ने तो नेत्रमीलन नहीं कर लिया-उन बेचारों का क्या दोष यदि कोई उन के आशय को न समझ पक्षपातरहित विचार से शून्य हो जन्माभिमानी बन किसी निष्पाप को नीच कह कर नीच हो कर पश्चात्ताप करें-पं० जी-आपने वास्तव में उपनिषदर्थ को विचारा नहीं। यदि कुछ थोड़ा सा भी सोचते तो पता लगना कुछ कठिन न था-इस में स्पष्ट रमणीयाचरण शब्द पड़ा है जिस का अर्थ शुद्ध धर्म के आचरण करने वाले अर्थात् धर्मात्मा जन रमणीयां योनिं श्रेष्ठता को प्राप्त हों जो श्रेष्ठाचरण शील हों वह श्रेष्ठत्व को पावें। वह श्रेष्ठत्व तीन प्रकार से हैं ब्राह्मणत्व क्षत्रियत्व वैश्यत्व अभिप्राय यह है कि जिन मनुष्यों के धर्माचरण हों वहे ही ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन पदों के अधिकारी हैं-और उन्हीं को ब्राह्मण कहना चाहिये-क्षत्रिय, वैश्य कहना चाहिये-कैसी अच्छी श्रुति है परन्तु कलुषित विचार आप के इस पर भी आक्रमण करने दौड़े परन्तु पत्थर पर मट्टी के ढेले के समान चूर चूर हो गये-कहीं वैदिक भावों पर आप के निकृष्ट विचार प्राबल्य दिखा सक्ते हैं कदापि नहीं-और यह तो बताइये आप शूद्र को नीचयोनि कैसे कह रहे हैं इस उपनिषद्वचन में तो शूद्र को नीच योनि कहने वाला कोई शब्द नहीं। तब आप क्यों भोले भाले को धोखा दे रहे हैं क्यों इतना पाप कमाते हो-ऐसा प्रतीत होता है पुस्तक लिखते समय आपने ईश्वर को व्यापक न जानकर सर्वान्तर्यामी को किसी मन्दिर में बैठा दिया होगा वरना आप ऐसा क्यों लिखते-क्योंकि यदि ईश्वर का स्मरण करते लिखते तो पाप की कभी सम्भावना थी? कहा-परन्तु आप स्यात् यह कहें कि हमने तो गीता से शूद्र को नीच योनि सिद्ध किया है-अब आप की गीता को देखते हैं क्या कहती है-

मांहिपार्थ व्यपाश्रित्य येऽपिस्युः पापयोनयः। स्त्रियो शूद्रास्तथा वैश्यास्तेऽपियान्तिपरांगतिम्-गीता-९-३२-इस में तो स्त्री शूद्र, वैश्य इन तीनोंको पापयोनि कहा है और आप वैश्ययोनिं वा इस छान्दोग्य वाक्य से वैश्य को उत्तम योनि मान चुके हैं। अब इस विरोध में आप किसे प्रमाण मानते हैं। यदि कहो कि छान्दोग्य का अनादर नहीं करना चाहते इस लिए उपनिषद् को मानते हैं तो आप शूद्र को नीच योनी कह सकते-क्योंकि छान्दोग्य में यह लिखा ही नहीं। गीता ही कहती है और यदि गीता को प्रमाणित कहें तो छादोग्य का अनादर होता है। गीता वैश्य को पाप योनी कहती है परन्तु उपनिषद् वैश्य को-उत्तम योनि मानती है। अब आप को उचित तो यही है कि छान्दोग्य के अनुसार शूद्र को पापयोनि न कहें और प्रायश्चित करें कि हे परमात्मन् मैंने शूद्रों को जन्म से नीच कह कर बड़ा अनर्थ किया है जिस से किसी आर्य के सामने मुख दिखलाने के योग्य नहीं रहा-मेरे इस पाप को क्षमा करो और सुमति दो ताकि आगे को कभी ऐसी भूल न करूं—कोई प्रार्थना से ही काम न चलेगा परमात्मा के हां, नाक रगड़ों और चान्द्रायणादि व्रतकरो—गीता के ९वां अध्याय के इस श्लोक के ऊपर के दो श्लोकों को पढ़ो फिर देखो क्या कह रही है जो ईश्वर भक्त हैं वह मेरा प्यारा है दुष्ट से दुष्ट पुरुष भी यदि सदाचारी बन जावे तो पूजनीय होता है और सब से उत्तम स्थान को प्राप्त होता है।

(शेष फिर)

—:o:—

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी।

मंत्री आर्य-समाज डोईवाला देहरादून व संसू-

री जाने वाले आर्य्य उपदेशकों और सन्यासी महात्माओं से प्रार्थना करते हैं कि वे अवश्य डोईवाले उतर कर समाज में पधार उन्हें अपने सदुपदेशों से लाभ पहुंचावें। देहरादून से तीस-रा स्टेशन डोईवाला है और स्टेशन से समाज मन्दिर ¼ फर्लांङ्ग की दूरी पर है।

देहली की श्री दर्शनानन्द तर्क शालनी सभा का वार्षिक साधारण अधिवेशन ता० ३ जुलाई सं० १९१६ को सायंकाल हुआ जिसमें निम्नलिखित अधिकारी नियत किए गए।

प्रधान—बा० रामचन्द्र जी आर्योपदेशक
उपप्रधान—पं० जानकीनाथ जी शर्म्मा
—पं० भोलानाथ जी शर्म्मा
मन्त्री —विद्यादत्त प्रेमी
स. मन्त्री—ला० गोविन्द प्रसाद जी
उपमन्त्री—म० छुट्टनलाल जी
कोषाध्यक्ष—म० हरफूल जी
पुस्तकाध्यक्ष—ब्र० ललता प्रसाद जी
आडीटर—म० शिवचरणदास जी

इसके अतिरिक्त ९ अन्यसज्जन अन्तरङ्ग सभा के समासद नियत हुए।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
स्थायी समिति का द्वितीय अधिवेशन

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का द्वितीय-अधिवेशन सम्मेलन कार्य्यालय में तिथि आषाढ़ शु० २ सं० १९७३ ता० २ जुलाई सन १९१६ रविवार को ४ बजे सन्ध्या समय निम्न लिखित सकस्यों की उपस्थिति में हुआ—

१. स्वा० सत्यदेव परिव्राजक
२. बा० सरयूप्रसाद महाजन, गया
३. विशारद बा० पुत्तनलाल जी विद्यार्थी लखनऊ
४. बा० गौरीशङ्कर प्रसाद, काशी
५. बा० लालबिहारीलाल सतना
६. प्रो० रामदास गौड़ एम. ए.
७. पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी
८. पं० जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल
९. पं० चन्द्रशेखर शास्त्री
१०. ठा० शिवकुमारसिंह
११. प० लक्ष्मीनारायण नागर
१२. बा० नवाब बहादुर

सर्व सम्मति से राय बहादुर बा० लालबिहारीलाल ने सभापति का आसन ग्रहण किया।

१ गत अधिवेशन की रिपोर्ट पढ़ी जाने और स्वीकृत होने के अनन्तर निम्न लिखित विषयों पर विचार हुआ।

१—सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति निर्वाचन पर विचार हुआ। पत्र द्वारा आई हुई स्थायी समिति के सभासदों, सम्बद्ध सभाओं और स्वागत कारिणी समिति की तथा स्थायी समिति के उपस्थित सदस्यों की सम्मतियों की गणना करके आगामी सम्मेलन के सभापति पद के लिए पांच नामों की एक सूची बनायी गयी।

२—आय व्यय उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

३—सम्मेलन के स्थायी कोष के लिए धन-संग्रह के सम्बन्ध में विचार हुआ और निश्चय हुआ कि यह विषय सम्मेलन के वार्षिक अधिवेशन में उपस्थित किये जाने योग्य है पर यह किस रूप में आगामी सम्मेलन में उपस्थित हो इसका निश्चय स्थायी समिति के आगामी अधिवेशन में, इस सम्बन्ध में जो उप समिति बनायी गयी थी उसकी स्कीम आजाने पर किया जावे।

४—उपदेशक विभाग की व्यवस्था तैयार न होने के कारण निश्चय हुआ कि यह विषय आगामी अधिवेशन में उपस्थित किया जावे।

५—नागरी प्रचारिणी सभा राय बरेली का सम्मेलन से सम्बद्ध होने के लिए प्रार्थना-पत्र उपस्थित किया गया और सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

६—पं० माखनलाल चतुर्वेदी के त्याग-पत्र पर विचार हुआ निश्चय हुआ कि यह स्वीकार किया जाय और आप के स्थान पर श्रीयुत कालूराम जी गङ्गराडे मध्य प्रदेश से स्थायी समिति के सदस्य निर्वाचित हुए।

७—नियमावली संशोधन का विषय उठाया गया पर संशोधन का मसविदा तैयार न होने के कारण निश्चय हुआ कि बा० पुत्तनलाल विद्यार्थी, पं० इन्द्रनारायण द्विवेदी, प्रो०. रामदास गौड़ और ठा० शिवकुमारसिंह इन चार सज्जनों की एक उप समिति, जिसके संयोजक बा० पुत्तनलाल विद्यार्थी हो, संशोधन का मसविदा शीघ्र तैयार करने के लिए बनायी जाय और संयोजक को अधिकार दिया जाय कि वे पञ्च सम्मेलन के १३ वें मन्तव्य के अनुसार आगामी सम्मेलन से कम से कम दो मास पूर्व मसविदे को विचारार्थ प्रकाशित कर दें।

८—अन्य आवश्यक विषय

(क) हिन्दी साहित्य सभा लखनऊ के ता० ८-४-१६ के पत्र पर विचार हुआ जिस से सभा ने आगामी कांग्रेस के समय में हिन्दी के सम्बन्ध में कुछ कार्य करने की सम्मति मांगी है जिसके कांग्रेस में उपस्थित सज्जनों पर उसका कुछ विशेष प्रभाव पड़े। निश्चय हुआ कि सभा को लिखा जाय कि कांग्रेस के समय में हिन्दी साहित्य सभा अवश्य अपना सार्वजनिक अधिवेशन करके उपयोगी व्याख्यानों का प्रबन्ध करे और सम्मेलन के उपदेशक विभाग की ओर से यथा सम्भव उपदेशक की सहायता देने का प्रयत्न किया जायगा।

(ख) हिन्दी साहित्य सभा लखनऊ के ता० २३-४-१६ के पत्र पर विचार हुआ। जिसमें सभा ने श्रीयुत बा० मदनमोहन सेठ के मामले में कुछ आन्दोलन करने के विषय में सम्मेलन की सम्मति मांगी है। निश्चय हुआ कि इस विषय में आन्दोलन करना आवश्यक है और इस विषय का पूरा हाल जान कर सम्मेलन की ओर से आन्दोलन करने का अधिकार सम्मेलन के मन्त्रिमण्डल को दिया जाय।

(ग) नागरी प्रचारिणी सभा आरा के ता० १४-६-१६ के पत्र पर विचार हुआ जिसमें सभा ने अपने उस मेमोरियल का को उस ने बिहार प्रान्त की कचहरियों में नागरी प्रचार के सम्बन्ध में बिहार प्रान्तीय गवर्नमेन्ट के पास भेजा था और उस पर बिहार गवर्नमेन्ट ने जो आज्ञा दी है, उसका उल्लेख किया है। निश्चय हुआ कि बिहार प्रान्तीय गवर्नमेन्ट की जो आज्ञा इस सम्बन्ध में बिहार गजट के ता० ७ जून के अङ्क में छपी है उसका अनुवाद सम्मेलन पत्रिका में प्रकाशित किया जाय और सप्तम सम्मेलन का ध्यान इस महत्व पूर्ण विषय की ओर आकर्षित किया जाय।

(घ) प्रताप में निकली हुई उस टिप्पणी पर विचार हुआ जिसमें सम्मेलन का ध्यान इस बात की ओर आकर्षित किया गया है कि नये मैसोर विश्वविद्यालय में हिन्दी को स्थान नहीं दिया जारहा है। निश्चय हुआ कि मन्त्रियों को अधिकार दिया जाय कि इस विषय में पूरा हाल जान कर उचित कार्यवाही करें।

(ङ) चतुर्वेदी पं० द्वारका प्रसाद शर्म्मा तथा सेठ दामोदर दास राठी के त्याग-पत्र पर विचार हुआ। निश्चय हुआ कि दोनों सज्जनों से पुनर्विचार की प्रार्थना की जाय।

सभापति को धन्यवाद देकर बैठक समाप्त हुई।

रामकृष्ण सारस्वत
सह० मन्त्री

१०००० आम व लीची के क़लम मुफ्त।

नियम और सूचीपत्र के लिये आजही लिखिये। कलमों के तो पकाने का बहुत अच्छा समय बीत रहा है। पता—नर्सरी पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवर्ण का महान ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार है मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय.

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवर्ण युक्त निर्णय का ६० से अधिक पृष्ट पर पूरा हुवा सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २. अनेकों सरकारी रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्ट के फैसिले, श्री जगद्गुरू शंकराचार्य्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्म्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥)

पता:—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मैनेजर ओरिय पुस्तकालय डा० कुलिश जि० जयपुर।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य

ये पुस्तकें सर्व साधारण के विशेषतःविद्यार्थियों के लाभार्थ, अच्छे २ विद्वानों से संशोधन कराके अथवा लिखवा कर के तय्यार कराई गई हैं। अश्लील भागों, वाक्यों, पदों अथवा शब्दों को निकाल कर उन के स्थान पर, क्रम को बनाये रखने के लिये नवीन उत्तम २ भाग, वाक्य, पद अथवा शब्द रक्खे गये हैं। ये पुस्तकें बालक तथा बालिकाओं के हाथ में निःसन्देह बिना किसी संकोच के दी जा सकती हैं। धार्मिक तथा सदाचार के भावों को ये पुस्तक पुष्ट करने वाली हैं:—

संस्कृत प्रवेशका————————।)
संस्कृत साहित्य पाठावलिः
द्वितीयो भागः————————=)
आर्य्यसुक्तिसुधा ————————।)
काव्य लतिका————————।।।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत जिस में से प्रक्षिप्त, वेद विरुद्ध श्लोक निकाल दिए हैं। ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'प्रथम भाग' [प्रथम दो तन्त्र] ।।।)
संशोधित पञ्चतन्त्र 'द्वितीय भाग'[शेष तीन तन्त्र] ॥=)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।=)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—[मूल] सम्पूर्ण ।)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] महर्षि पाणिनीकृत ।)
धार्मिकः =)॥
आख्यातिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्काप्रकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)

आर्यभाषा

आर्य्यभाषा पाठावली [प्रथमभाग] सचित्र ।)
आर्य्यभाषा पाठावली [द्वितीयभाग सचित्र] ।-)

विज्ञान

भौतिकी—वैलफोर स्टुआर्ट कृत "फिजिक्स प्राइमर" का आर्यभाषानुवाद ॥)
रसायन—विलयम एस, फर्नो की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितं—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

गुरुकुल साहित्य परिषद् की रचित पुस्तकें

मनु और मांस—ब्रह्मचारी बुद्धदेव विद्यालंकार कृत ।-)
संगीत पुष्पांजली—(ब्रह्मचारियों की बनाई गीतियां) ।-)
वैदिक राज्य पद्धति— श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वैदिकसभ्यता के एकअंश का निरीक्षण =)
वेद में वैद्य शास्त्र -)॥
वेदों का अनादित्व उ० श्री गोवर्धन जी B.A. कृत ।-)
वैदिक देवताओं का स्वरूप श्रीपाद दामोदर सातवलेकर लिखित ।-)
वेद में रोगजन्तु शास्त्र लेखक श्री पाद दामोदर सातवलेकर जी -)॥
वेद में आयुर्वेद का क्रम विकाश =)॥
लेखकश्री निवारणचन्द्र भट्टाचार्यवैद्य
भारत शिक्षादर्श लेखक म० घनश्याम सिंह जी गुप्त =)॥
मांस मीमांसा (लेखक ब्र० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार) ।)
पुराणविमर्श लेखक ब्र० विद्यासागर) =)
साहित्य परिषद् का द्वितीय वार्षिक वृत्तान्त ।)
" " तृतीय " " ।)
" " चतुर्थ " " ।=)

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. by Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
Life of Swami Dayananda; (Natesan and Co.) —" 0.4.0
Life of Swami Dyananda; with an introduction by Prof. Rama-Deva (Ganesh and Co.) —" 1.0.0
The life of Swami Dayananda; By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The Arya Samaj. A paper read by Prof. Rama Deva B. A. M.R. A.S. on Arya Samaj in the Convention of Religions at Allahabad.—Rs.0.1.6
Arya Samaj, a Political Body Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— '
The Arya Samaj and its Detractors A Vindication by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Magnum Opus called the Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bhardwaja F. R. C. S.; D.P.H. etc 2d edition—Printed on superior paper and published by the Arya Prati Nidhi Sabha United Provinces Agra and Oudh—First ten chapters only Rs. 2/

पं० इन्द्र जी वेदालंकार कृत

उपनिषदों की भूमिका ।=)
प्रिन्स बिस्मार्क १॥)
राष्ट्रों की उन्नति ।)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)
विकासवाद (The Theory of Evolution) (लेखक उपाध्याय श्री विनायकगणेश साठे) २)
आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)
महर्षि पतञ्जलि और तत्कालीन भारत लेखक ब्र० चन्द्रमणिजी विद्यालंकार ।=)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. वेदाङ्ग प्रकाश स्वामी दयानन्द कृत (वैदिक यन्त्रालय अजमेर)
२. भारत का सच्चा इतिहास (भास्कर यन्त्रालय मेरठ)
३. उपनिषदें-शंकर भाष्य सहित (आनन्द आश्रम पूना)
4. The Direct Method of Teaching by Nelson Fraser in 4 parts.
५. चम्पु रामायण (निर्णय सागर यन्त्रालय बम्बई)
६. हर्ष चरित

कमीशन के नियम

गुरुकुल की बनाई पुस्तकों पर १०) सैकड़ा तक की पुस्तकें मोल लेने वालों को १०) सैकड़ा तथा इस से अधिक की पुस्तकें लेने वालों को १५) सैकड़ा कमीशन दिया जाएगा। मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय डाकखाना श्यामपुर, जिला बिजनौर।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 134

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ८ श्रावण सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २९ जुलाई सन् १९१६ ई० { संख्या १५ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थीयों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास „ „ „ „ -) „ „
छः „ „ „ „ -)॥ „ „ „
सालभर „ „ „ „ -) „ „ „

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र-ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर कांगड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफा जूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यकता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वो० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

अध्यापिका की आवश्यकता।

श्री उड़वायर कन्या पाठशाला के लिये एक सहायक अध्यापिका की ज़रूरत है।

अध्यापिका हिंदी मिडिल पास होनी चाहिये। वेतन २५) से ३०) तक योग्यतानुसार दिया जावेगा। प्रार्थनापत्र सार्टीफिकेटों के साथ निम्नलिखित पते पर भेजे जाने चाहियें।

रायबहादुर श्रीयुत
नन्दलाल जी जज,
छावनी इन्दौर

प्रचारक पुस्तक भण्डार की अनूठी पुस्तकें।

उपनिषदों की भूमिका—लेखक, श्री० इन्द्र वेदालंकार। इस पुस्तक में उपनिषदों का सार बड़ी मनोरञ्जक रीति से दिया गया है। साथ ही यह भी बतलाया गया है कि उपनिषदों का आधार वेद ही है। विषय गम्भीर है तो भी भाषा रोचक और बल पूर्ण है। मूल्य ।=)

धर्मवीर पं० लेखराम की जीवनी—महात्मा मुंशीराम जी लिखित। धर्मवीर की आर्य-भाषा में यह एक मात्र जीवनी है। प्रत्येक आर्य्य-गृह में इस पुस्तक का होना आवश्यक है। धर्मवीर की जीवनी—और महात्मा जी की लिखी हुई—आप क्यों न लेंगे? मूल्य १)

प्रिंस-बिस्मार्क की जीवनी—जर्मनसाम्राज्य के निर्माता राजनीति विशारद बिस्मार्क की जीवनी को जिसने नहीं पढ़ा, उसे योरप का वर्तमान युद्ध समझ में नहीं आ सकता। पुस्तक बेहद मनोरञ्जक है भाषा प्रौढ़ ओजस्विनी है। पुस्तक हाथों हाथ बिक रही है—शीघ्र लीजिए।

मूल्य १॥)

कमीशन का दर

२५) से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिसैंकड़ा, ५०) से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिसैंकड़ा, १००) से अधिक के ख़रीदार को २५) सैंकड़ा तथा २००) से अधिक के ख़रीदार को ३०) सैंकड़ा कमीशन मिलेगा।

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म्म-प्रचारक पत्र
गुरुकुल कांगड़ी, पो० श्यामपुर-कांगड़ी
ज़ि० बिजनौर

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

गुरुकुलसमाचार।

ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य—पर ऋतु का भी उत्तम प्रभाव पड़ता है। वर्षा बराबर होती है। यदि छः घन्टों की धूप लगजाय तो साथ ही बादल घिर आते हैं और वर्षा होने लग जाती है। फिर बीमारी कैसे ठहर सक्ती है। तैरने का व्यायाम इन दिनों बहुत ही लाभदायक सिद्ध हो रहा है।

पढ़ाई का कार्य समाप्त हो चुका—आज से ब्रह्मचारियों को पुनरावृत्ति के लिए छुट्टी दी गई है। १८ श्रावण (१ अगस्त) से इस सत्र की परीक्षाएं शुरू होंगी और २६ श्रावण (९ अगस्त) से वृहदवकाश प्रारम्भ होगा। १८ आश्विन (३ अक्टूबर) को महाविद्यालय खुलेगा और इस प्रकार सर्व उपाध्यायगण दसहरे का त्यौहार मनाने के लिए इकट्ठे हो जायंगे। दसहरा गुरुकुल में विशेष समारोह से मनाया जाता है। जिन स्कूलों वा कालिजों की फुटबाल तथा हाकी टीमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ सान्मुख्य करने का विचार रखती हों उन के मुखियां महाशयों को अभी से उपाध्याय इन्द्र (क्रीड़ाध्यक्ष) से पत्र व्यावहार करना चाहिए।

गंगा में बाढ़—कोई बड़ी नहीं आई। इस समयभी तमेड़ों पर दर्शक महाशय बराबर आते रहते हैं। गुरुकुल आने वालों को हरिद्वार से कनखल जाते हुए, नहर के बड़े पुल से आगे, गुरुकुल वाटिका में जाकर वहां के प्रबन्धकर्त्ता से मिलना चाहिए। वह सारा प्रबन्ध गुरुकुल पहुंचाने का करदेंगे।

मायापुर वाटिका में ठहरने का नियम—तोड़नो आर्य्यपुरुषों को शोभा नहीं देता। दो रात तो सब आगंतुक तथा आर्य्यभाई (स्थान होने पर) विश्राम कर सक्ते हैं, परन्तु इस से अधिक दिन रहने के लिए मुख्याधिष्ठाता की विशेष आज्ञा मंगानी चाहिए। इस के अतिरिक्त कुछ महानुभाव केवल आलोचना करने तथा गुरुकुल की बुराई करने के लिए ठहरते हैं। ऐसे महाशयों को, उन की करतूत का पता लगने पर, विना विशेष सूचना के अलग किया जा सकता है। प्रबन्ध और सभ्यता को स्थिर रखने के लिए यह आवश्यक ही है।

[illegible] वर्ष उत्तीर्ण हुए नए स्नातकों—के कामों में कुछ परिवर्त्तन करना पड़ा है। स्ना० देवराज कुरुक्षेत्र शाखा में तथा स्ना० प्रियव्रत शाखा हरियाना (रोहतक प्रान्त) में बराबर काम कर रहे हैं, परन्तु स्नातक विद्यासागर तथा जयदेव को मुलतान गुरुकुल से बुलालेने के लिए बाधित होना पड़ा। जिस प्रतिज्ञा पर वहां के मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य (महाशय गोपाल बी० ए०) इन को लेगये थे, उसे भङ्ग करने का विचार लेख द्वारा ज्ञात होते ही दोनों स्नातकों को बुलवा लिया गया। गुरुकुल विश्वविद्यालय में दो स्थान रिक्त पड़े थे, जिन पर वे काम कर रहे हैं।

ब्रह्मचारी जगत्प्रिय अब तक मारिशसद्वीप में नहीं जा सका। कारण यह है कि मई मास के पश्चात् उधर जाने वाले किसी जहाज़ का पता नहीं आया। अब वर्षा ऋतु में समुद्र की अवस्था ठीक नहीं रहती इस लिए सितम्बर के पश्चात् किसी स्नातक को उधर भेजा जायगा। ब्रह्मचारी जगत्प्रिय को ग्रामों में धर्म प्रचार पर लगा दिया गया है।

शेष बुद्धदेव, बलभद्र और धर्मपाल गुरुकुल में पढ़ाने का कार्य्य ही कर रहे हैं।

गुरुकुल की आर्थिक दशा—पर गुरुकुल प्रेमियों की निरन्तर दृष्टि रहनी चाहिए। आषाढ़ मास में दान मद्धे कुल आय ३१५१॥)॥ हुई। इस का व्यौरा इस प्रकार है:—

२३७६।) महानधि
६३५।=) विशेष कार्यार्थ
११३॥=)॥। मिष्टार्थ
५) भन्डार
२१॥) भिक्षानिधि

विशेष कार्यों में महांशय रौनकी राम जी की ५००) की रक़म विशेष वर्णनीय है जो एक कमरे के लिए प्रतिज्ञा की पहली क़िस्त है। गुरुकुल महानिधि में ज्येष्ठ के अन्त तक ३९,३१४) की आय हुई थी, आषाढ़ मास की आय मिला कर सारा जोड़ ४१,६६२।) हुआ। ७०,२४०) वर्ष की कमी के लिए चाहिए; इस प्रकार अभी २८,५७८) और प्राप्त होने चाहिएं। यह रक़म यदि सितम्बर मास तक इकट्ठी हो जाय तो आगामी वर्ष के लिए अक्टूबर मास से ही कार्यारम्भ होसकता है।

ऊपर की आय में जो धन मुख्याधिष्ठाता की विशेष अपील पर संरक्षक महाशयों की ओर से आया है उसकी सूची नीचे दीजाती है। इस में जो रक़में १००) से कम दर्ज हैं, उनका तात्पर्य यह है कि कुछ संरक्षक एक ही वार १००) भेजने की शक्ति न रखते हुए कुछ किस्तों में वह धनपूरा करदेंगे।

१००) ला० लब्भूराम नय्यड़ द्वारा म० कृपाराम जी से—१००) पं० बलदेव प्रसाद शर्मा, सागर [C.P.]—१५०) म० श्री कृष्ण जी मुलतान छावनी—१००) श्रीपं० विष्णुमित्र जी मुख्याधिष्ठापक शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र—५०] म० देवभाई झीनाभाई, बीजलपुर (सूरत)—२५) म० भोजराज, बुलन्दशहर—५०) महताज्ञानचन्द जी, डलवाल-१००) म० हज़ारासिंह जी ठेकेदार, माराडले (ब्रह्मादेश]-२५) म० वामन मामाहादेव पाठक, रंगून—१००) महाशय ठाकुरदास गुप्त, हल्दौर—१५०) श्री सेठ घनश्याम। दास जी, अजमेर—२५) म० मूलजी धर्मसिंह, जामनगर—२०) म० नत्थुराम कपिल, कमारी [कराची]=योग ९९५)। अबतक ९९५) इस मद में आए हैं। अभी तक उन सज्जनों ने रोक धन भेजना आरम्भ नहीं किया जिन्होंने बड़ी बड़ी रक़में देने की प्रतिज्ञा की हैं। उन्हें यह समझलेना चाहिए कि प्रतिज्ञा का धन उनके घर में पड़े रहने की अपेक्षा गुरुकुल कोष में पहुंच जाना अधिक लाभदायक होगा। जो सज्जन अबतक नहीं हिले उन्हें भी इस ओर ध्यान देना चाहिए।

गुरुकुल की सहायता का एक साधन ब्रह्मचारियों को भोजन देना है। अभी मुलतान निवासी सेठ नत्थूराम के उत्तराधिकारी म० देवदत्त जी आए थे। उन्होंने ११४) व्यय करके गुरुकुल के सर्व ब्रह्मचारियों तथा अध्यापकों को भोजन दिया। इसी प्रकार यदि अन्य धार्मिक दानी सज्जन ब्रह्मभोज देने का यश लेना स्वीकार करें तो गुरुकुल को बड़ी भारी सहायता मिलसकती है।

मुंशीराम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

रक्षाबन्धन का दिन

रक्षाबन्धन का दिन समीप आ रहा है—उस दिन के लिए कुछ विचार हम पेश करते हैं। आशा है, हमारे पाठक हमारे हृदय की कामना को पूरा करेंगे। ईसाई धर्म जब प्रारम्भ हुआ था उसके अनुयायियों में बड़ी एकता थी। वे एक दूसरे के साथ भाई भाई से भी अधिक प्रेम करते थे। उस समय अविश्वासी लोग ईसाईयों को देख कर कहा करते थे, कि "देखो ये लोग एक दूसरे से कितना प्रेम करते हैं" थोड़े ही दिन पीछे ईसाइयों में पार्टियां बनने लगीं—सम्प्रदाय पर सम्प्रदाय बनने लगे। ईसाई लोग एक दूसरे से लड़ने लगे। उस समय ईसाई धर्म के विरोधी कहा करते थे कि 'जंगल के नृशंस जन्तु भी उन ईसाइयों से अधिक क्रूर नहीं हो सकते।' कारण क्या था? कारण यही था कि वह प्रारम्भ का प्रेम भाव समय ने खा लिया था और परस्पर विश्वास का स्थान अविश्वास और ईर्षा ने लिया था।

आर्य्य समाज की यही दशा है। आर्य समाज के स्वर्गीय समय का याद करके आज भी पुराने समाजी आंसू बहाते हैं। कोई समय था जब एक 'नमस्ते' का शब्द दिल को दिल से मिला देने के लिए पर्याप्त था। एक आर्य्यसमाजी यदि विदेश में दूसरे समाजी को देख लेता था, तो समझता था कि मैंने अपने भाई से भी अधिक प्यारा बन्धु पा लिया। एक से दूसरे तक समाजी भाव की लहर ऐसे चल जाती थी, जैसे धातु की तार में बिजुली की लहर चल जाती है।

किन्तु आज दशा विचित्र है। आज तीस सालों के जीवन की रगड़ ने समाज की काया पलट दी है। अब दूसरे समाजी को देखकर वैसी आनन्द की लहर नहीं उठती। 'नमस्ते' इस सामान्य शब्द के साथ और भी कई विशेषण ढूंढने पड़ते हैं। क्या नमस्ते करने वाला आर्य कालिज पार्टी का है, या 'गुरुकुल पार्टी' का? क्या वह सज्जन 'बाबू पार्टी' का है या 'ब्राह्मण पार्टी' का? क्या वह महाशय 'पंजाबी' है, या 'संयुक्त प्रान्ती' ऐसे प्रश्न पहले उठते हैं। फिर इन प्रश्नों में कई उपप्रश्न भी सामने आते हैं। "गुरुकुल पार्टी" में भी वह किस पार्टी का है? यदि अमुक पार्टी का है तो नमस्ते का उत्तर सीधी तरह देना चाहिए। नहीं तो रूखा सा उत्तर ही पर्याप्त है। कालिज पार्टी में भी "क्या यह शिक्षा पार्टी का है या प्रचार पार्टी का?" यह विचार किए बिना आगे चलना कठिन है।

ऐसी दशा को देखकर एक समाज हितैषी का चित्त अवश्य ही खिन्न हो उठता है। समाज के नये कार्यकर्ताओं पर तथा उन लोगों पर जो विशेष धार्मिक प्रेम का भाव लेकर समाज में आते हैं, इन भेद भावों का प्रभाव बड़ा बुरा पड़ता है। बहुत से नये आर्य पुरुष इसी झगड़े को देखकर समाज में निजू जीवन ही बिताना चाहते हैं, बहुत से उसके प्रबन्ध कार्य से उपरत ही रहना चाहते हैं, और कई थोड़ा सा अन्दर घुस कर फिर डर कर भाग जाते हैं। यह दशा शोचनीय है। शायद इन रूखे शब्दों के लिए हमें कई आर्य भाई दूषण देंगे, किन्तु सचाई से आंख बंद करने से वह झूठी नहीं हो जाती। जो अवस्था है, वह असन्दिग्ध रीति से दीख रही है। इस परस्पर भेद भाव के देखने के लिए आर्यसमाजों में एक भ्रमण कर लेना ही आवश्यक है। शायद ऐसा कोई समाज हो, जो इस विरोध रोग से रहित हो। कई लोगों की दृष्टि में परस्पर कलह समाज का एक अंग सा हो गया है। एक सज्जन ने, कोई एक साल हुआ, हम से पूछा कि 'अमुक समाज में कोई झगड़ा है या नहीं?' हम ने उत्तर दिया कि 'नहीं'। आप ने इस पर कहा कि 'तो वह आर्यसमाज ही नहीं होगा' इन शब्दों में अशुद्धि हो परन्तु वह अशुद्धि शुद्धि के बहुत ही समीप रहने वाली है। ऐसी समाजें अपवाद रूप से ही समझनी चाहिये, जिन में किसी प्रकार का भी विरोध भाव न हो।

हां, व्यक्तियां ऐसी बहुत हैं। ऐसे आर्यपुरुष बहुत हैं, जो इस विरोध भाव को दिल से बुरा समझते हैं उस से घृणा करते हैं। उन से दूसरे दर्जे पर बहुत से ऐसे आर्य सज्जन भी हैं, जो दिल से विरोध-भावना को हानिकारक समझते हुए भी, प्रबन्ध के काम में फंसे रहने के कारण विरोधों में हिस्सा लेने के लिए बाधित हो जाते हैं। तीसरी कोटि के सज्जन वे होते हैं, जिन्हें झगड़े और विरोध में मज़ा आता है। झगड़े के लिए झगड़ा करना उन का नैत्यिक भोजनसा हो जाता है। ऐसे ही लोग झगड़ों और विरोधों की जड़ में होते हैं। ऐसे पुरुष समाज में अधिक नहीं—किन्तु उन का अभाव भी नहीं। ऐसे भद्रपुरुषों के कारण भी समाज को बहुतसी हानि उठानी पड़ती है।

किन्तु आर्यसमाज के क्षेत्र में जो बहुत से विरोध उठे हैं, उन के मूलकारणों पर सोचना आज हमें अभिप्रेत नहीं। न गड़े मुर्दे उखाड़ने से हम कोई लाभ देखते हैं। यहां पर एक बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है। गत अंक में सहयोगी आर्य गज़ट पर एक नोट लिखते हुए हमने कुछ शब्द ऐसे लिखे थे, जिन्हें देखकर एक सज्जन ने हम से कहा कि "शायद ये शब्द 'आर्य गज़ट' को बुरे लगेंगे, और फिर झगड़ा खड़ा होगा।" हमने जो उत्तर उस सज्जन को दिया, उपयोगी होने से उसे यहां भी दे देते हैं। हमारे उस नोट का तात्पर्य किसी के सिर पर उत्तरदातृता फेंकना नहीं था—बल्कि जिस प्रश्न पर विवाद हुआ था, उस की ओर निर्देश करना मात्र था। आर्य गज़ट के पुराने तथा नये विचारों में जो भेद दिखता था—उसी को नोट में स्पष्ट किया गया था। हमारी यह दृढ़ सम्मति है कि झगड़े को शान्त करने का सब से उत्तम उपाय यह है कि पुरानी बातों को एक ओर रख दिया जाय। विशेषतया उस अवस्था में जब कि भेद-

CCO, Gurukul Kangri Collection

भाव के पुराने कारण दूर हो रहे हों। भेद के कारण दूर हो रहे हैं-यही उस नोट का उद्देश्य था। अस्तु-यह तो प्रकरणागत बात थी—परन्तु इस से हमारे वर्त्तमान वक्तव्य को बड़ी सहायता मिलती है।

आर्य समाज में परस्पर विरोध का बीज कैसे उत्पन्न हुआ, उस का इतिहास बतलाता है कि अन्य कारणों में से एक कारण कई मामलों में 'मिथ्या ज्ञान' या 'ग़लत फ़हमी' भी होता है। संसार के आधे झगड़ों का मूल परस्पर मिथ्याज्ञान ही होता है। इस समय समाजों में परस्पर जो झगड़े हैं, उन के आधार में भी प्रायः यही बात मिलेगी।

जो हो चुका, वह हो चुका। बीती को बिसार देने में ही बुद्धिमत्ता है। संसार में समाज के यश को कलंक-रहित रखने के लिए, लोगों में आर्यसमाज को प्रिय बनाने के लिए, भविष्य में वैदिकसेना को अति प्रबल बनाने के लिए आवश्यक है कि हम लोग अपने परस्पर के भेद-भावों को भुला दें। मित्रता की ओर ध्यान न दे कर जो एक धर्म की शृंखला हम सब को एक दूसरे से बांधती है, उस पर दृष्टि रखें।

रक्षा बन्धन को दिन समीप है। विरोध के भावों को भुलाने का वह बड़ा उत्तम अवसर है। उस दिन कुछ समय यत्न कर के आर्यमात्र को परस्पर वैमनस्य के धोने का यत्न करना चाहिए, तथा आगे से एक दूसरे का पूरा सहयोग देने की प्रतिज्ञा करनी चाहिए। तभी रक्षाबन्धन सफल होगा—तभी श्रावणी मनाने से कोई लाभ होगा।

—:o:—

कुछ नमूने

भाषा के कुछ मज़ेदार नमूने पाठकों के मनोरञ्जनार्थ दिए जाते हैं। पहले हम 'युद्ध समाचार' नाम के पत्र से दो उद्धरण देते हैं। यह पत्र लन्दन से निकलता है और युद्ध में गई हुई हिन्दुस्थानी फ़ौज में बांटा जाता है। पाठक देखेंगे कि कैसी मुहाविरेदार और आदर्श भाषा में समाचार पत्र लिखे जाते हैं—

(१)

रूस की खबरे

"पीछले अंक के छपने के बाद खबरें आइ है कि रूसी बहादर अपने लम्बे चौडे मोरचों पर जगह जगह बढ रहे हैं। खास कर के दो जगह उन की बड़ी भारी फतेह हुइ और उन्होने बड़ी जबरदस्त तरक्की कर दी। सुना है एक जगह रूसी और अस्त्रीयन फौजें टकराइ। लड़ाई सख्त हुई और रूसी दोस्तों की फतेह हुई।

जरमनों की और आस्त्रीयनो की फौजी रिपोर्ट में रूसीयों की इन फतेह कबूल की गइ। इस पर में ख्याल किया जा सकता है कि रूसी दोस्त बडे बडे ठोस हमले करने चाहते है। उमेद करते है दोस्तों की दोनों दोन फतेह होवेगी।

(२)

७ जनवरी को सरहद पर जो लड़ाई हुइ थी उस के बारे में लंडनगेझेट में खबरे छपी हैं जीस का मुख्तसर अहवाल हम यहां पर देते हैं।

रबीस्त वालों का एक बड़ा लशकर ब्रीटिश मुल्क पर हमले करने को आरहा था और स्पीना खीसोरा नामी चौकी तक बढ़ गया था। बलु सुवेवस कालम और नोर्थ वझीरिस्तान मीलीशिया इस का सामना करने गये। इन दो पलटनों में से सिर्फ वझरीस्तान मीलीशिया को ही लड़ने का मौका मिला। दुश्मन के ६० जवान खेत रहे। दूसरे तित्तर बितर हो गये।"

एक मज़ेदार कविता

नीचे हम एक मज़ेदार कविता छपरे के नारदपत्र से देते हैं। यह कविता सुकविता का नमूना है। शब्दों की रचना, पदों का अन्तिम मेल, भावों का गौरव सब कुछ अनूठा है। जो लोग कवि महाशय जितना ब्राह्मणत्वाभिमान न रखते हों, शायद वे इस कविता को पढ़ कर थोड़ा सा मुस्करा पड़ेंगे।

कविता यह है—

ब्रह्मतेज

—:o:—

सब वर्ण बीच प्रभाव था,
जगमें तुम्हारा नाम था।
तुम शास्त्र तत्व प्रवीण थे,
तुम्हे याद हो कि न याद हो ॥१॥
उस पूर्ण ब्रह्म परेशकी,।
छाती में मारी लात थी (?)
वह तेज भृगुमुनि राज का,
तुम्हेयाद हो कि न याद हो॥२॥
वह काठ ही का दण्ड था,
कौशिक भी कौशिक सा हुआ।
वह तेज सूर्य्य वशिष्ट का,
तुम्हेयादहो कि न याद हो॥३॥
देखो अगाध समुद्र को,
ऋषिहीं घटोद्भवने पिया।
वह ब्राह्मणोंमे शक्ति थी,
तुम्हे याद हो कि न याद हो॥४॥
रणबीच द्रोणाचार्य ने,
जब शस्त्र अनुचित भी लिया।
पारथ महारथ की दशा,
तुम्हे याद हो कि न याद हो॥५॥
निज विमल बुद्धि विवेक ते,
तुम देश में आदर्श थे।
तब नाम गौर था बड़ा,
तुम्हे याद हो कि न याद हो॥८॥
विद्या कलाविज्ञान में,
तव शिष्य सकल जहान था।
क्षिति हाथ कंदु समान थी,
तुम्हे याद हो कि न याद हो॥९॥
उत्साह मणिमय दीपका,
तव रोम २ प्रकाश था।
भय भीत आलस था कहां,
तुम्हे याद हो कि न याद हो॥१०॥
कामादि षड्गुण शत्रु का,
बस नाम मात्र पुकार था।
निज बन्धुओं मे ऐक्य था,
तुम्हे याद हो कि न याद हो॥११॥

साहित्याचार्य्य व्याकरण शास्त्री
काव्यतीर्थ
गोपालप्रसाद त्रिपाठी
चेतगंज-बनारस।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पं० रामभजदत्त जी छूट गए

पं० रामभजदत्त जी को हम बधाई देते हैं। आप पर कई मुकद्दमें एक दम चले थे। साधारण जनता इस विषय में बहुत चिन्तित थी कि देखें क्या होता है? अब समाचार मिला है कि चीफ़ कोर्ट से उन्हें रिहाई मिल गयी है।

शिक्षाद्वार बन्द है

विद्यार्थी दरवाज़ा खटखटाते हैं, और कोई उत्तर नहीं मिलता। यदि मिलता भी है तो निषेधात्मक ही मिलता है। संयुक्तप्रान्त में विशेषतया, अन्य प्रान्तों में सामान्यतया यही दशा देखने में आती है। कालिजों के प्रिन्सिपल कह देते हैं कि उन के यहां गुञ्जायश नहीं है। कहते हैं कि कई वर्षों से ऐसी ही दशा हो रही है। विद्यार्थी इलाहाबाद कानपुर और लखनऊ में प्रवेशार्थ जाते हैं और सूखा उत्तर पा कर लौट आते हैं। उत्तर सब स्थानों में एक ही है कि गुञ्जायश नहीं है। शिक्षा के लिए मांग है। पर स्थान नहीं है। इस का कारण क्या है? कारण यही है कि अपनी सारी शिक्षा को जाति सरकार के हाथों में देकर सन्तोष कर बैठी है। अपनी शिक्षा की स्वयं सुध लेने की चिन्ता ही उसे नहीं रही। यदि जाति को स्वयं अपनी शिक्षा की चिन्ता होती तो क्या कभी सम्भव था कि अपने पुत्रों की शिक्षा विषयक पर इतनी कठिनाइयों का प्रतीकार अभी तक न होता। हमारे यहां तो यह दशा है कि यदि कोई इलाज करे, तो सरकार ही करें, हम लोगों के हाथ में इलाज नहीं है। कोई कारण समझ में नहीं आता कि सरकार क्यों अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा देने की फ़िक्र करे। आगे ही सरकार की आवश्यकता से बहुत अधिक विद्यार्थी कालिजों में शिक्षा पा रहे हैं। उस संख्या को और भी बढ़ा देने में सरकार का विशेष लाभ क्या हो सकता है? अपनी सन्तान में शिक्षा का प्रचार करने की इच्छा प्रजा को होनी चाहिए। उसी को इस न्यूनता के पूरा करने में सदा अग्रसर होना चाहिए। जब वह सन्तोष से बैठी है—तो सरकारी दफ्तर भी चुप चाप तमाशा देख सकते हैं। जाति को अपनी शिक्षा अपने हाथों में लेनी चाहिए।

विद्यार्थियों को दण्ड चाहिए या नहीं!

बम्बई से एक अद्भुत मुकद्दमें का समाचार आया है। एक अंग्रजी महिला का बालक यौरपियन स्कूल में पढ़ता था। उसे सिर्की अपराध पर दण्ड मिला। मुख्याध्यापक भी अंग्रेज़ था। उस ने लड़के को बेंत लगाई जिस से उसका हाथ सूज गया। लड़के की माता ने मुख्याध्यापक से दो तीन चिट्ठियों में इसे अनुचित कार्य समझ कर जवाब तलबी की, किन्तु मुख्याध्यापक ने उत्तर देना ज़रूरी न समझा। इस पर कचहरी में मुख्याध्यापक पर मुकद्दमा चलाया गया। मजिस्ट्रेट का फैसला यह हुआ कि मुख्याध्यापक ने जो दण्ड दिया, वह अधिक नहीं था, और लड़के का हाथ सूजने का कारण उस की निर्बलता थी। यह घटना पढ़कर दो प्रश्न उठते हैं—क्या विद्यार्थियों को शारीरिक दण्ड मिलना चाहिए? क्या उस दण्ड के लिये मुख्याध्यापक से जवाब पूछा जा सकता है? हमारी सम्मति में विद्यार्थियों को दण्ड देना ही बुरा है—जहां तक हो सके वैसे ही उन का सुधार करने का यत्न करना उचित और उपयोगी है। उन्हें दण्ड देने के उद्देश्य ही हुआ करते हैं—एक सुधार, दूसरा औरों के लिए दृष्टान्त। सुधार बिना दण्ड के भी हो जाता है—कोई कोई ही विद्यार्थी ऐसे होते हैं जिन का सुधार दण्ड के बिना असम्भव हो। किन्तु बुरी आदत ही न पड़ने देना सब से अच्छा है, और उस का एक साधन दृष्टान्तस्थापित करना है। जो विद्यार्थी कोई बहुत बड़ा अपराध करे, उसे और विद्यार्थियों के लिए दृष्टान्त रूप बनाना चाहिये। दण्ड बहुत कम हो परन्तु जब हो तब दृष्टान्त रूप से होना चाहिए, और जब तक वह दण्ड मर्यादा को पार न कर जाय जब तक मुख्याध्यापक से जवाब तलबी न होना चाहिए। हां—निर्बल बालकों को मार २ कर मूर्छित कर देने वाले मुख्याध्यापक से अवश्य ही उत्तर मांगना चाहिए।

आर्य्यमित्र के नये सम्पादक

सहयोगी आर्य्यमित्र का सम्पादन नये हाथों में पड़ा है। इस में कई प्रमाण हैं। तीसरे पृष्ठ पर पत्र के नाम के नीचे लिखा हुआ निम्नलिखित श्लोक उन में से एक है—

ओमादि श्री शंकर पिता के
नित्य नाम लिया करो
ज्ञानी दयानन्दर्षि गुरु का
ज्ञान गान किया करो।
होकर हितूराजा प्रजा के
कर्म वीर बढ़ा करो
सानन्द वैदिक आर्यमित्रो
"आर्य्यमित्र" पढ़ा करो

प्रतीत होता है कि नये सम्पादक जी का शंकर नाम से पिता पुत्रका विशेष सम्बन्ध है। नये सम्पादक जी से सम्पादित अंक में संगठन शक्ति वाला लेख बड़ा उत्तम है। आर्य्य मात्र के लिए, विशेषतया संयुक्त प्रान्त की आर्य्य जनता के लिए संगठन शक्ति के गुण दिखाना बड़ा उपयोगी है। हम पूरी आशा रखते हैं कि नये सम्पादक जी के हाथों में मित्र दिनों दिन उन्नति करेगा।

श्रीमती एनीबेसेन्ट और बम्बई सरकार

बम्बई सरकार ने बम्बई प्रान्त में मिसेज़ एनीबेसेन्ट का आना रोक दिया है। इस समाचार को पढ़कर भारत भर में सनसनी फैल गई है। मिसेज़ एनीबेसेन्ट ने ऐसा कौनसा काम किया था—जिससे उनका बम्बई में आना रोका गया। लोग आश्चर्यित होकर यही प्रश्न पूछ रहे हैं। किसी स्थान में किसी व्यक्ति का जाना दो दशाओं में रोका जा सकता है—या तो उस व्यक्ति की वहां जाने से हानि होने की सम्भावना हो—या उस स्थान को उस व्यक्ति के प्रवेश से किसी प्रकार की क्षति होती हो। क्या श्रीमती एनीबेसेन्ट को बम्बई में जाने से कोई हानि हो सकती थी? उत्तर मिलता है कि ऐसा नहीं है। यदि बम्बई सरकार बम्बई प्रान्त में रहनेवाले किन्हीं पुरुषों को इतना खतरनाक समझती थी कि उनके पास जाने से मिसेज़ एनी बेसेन्ट के विचारों पर बुरा प्रभाव पड़ता तो पहले उन पुरुषों से हिसाब किताब मांगना चाहिए था। उन लोगों का प्रान्त में रह सकना सूचित करता है कि वे बहुत खतरनाक नहीं हैं। तब एक सुशिक्षित अनुभव वाली वृद्ध महिला को उनके पास जाने से रोकने का क्या अर्थ है। दूसरा कारण यह हो सकता है कि मिसेज़ एनीबेसेन्ट के विचार इतने खतरनाक हैं कि उनका बम्बई में प्रचार ठीक नहीं। मिसेज़ एनीबेसेन्ट मद्रास में रहती हैं। मद्रास भी भारतीय साम्राज्य में है—और बम्बई प्रान्त भी। इतने दिनों से मद्रास में रहते हुए श्रीमती एनीबेसेन्ट ने कितने विद्रोह करा दिए हैं? उत्तर मिलता है कि एक भी नहीं कराया। यदि श्रीमती एक प्रान्त में खतरनाक नहीं—तो दूसरे में खतरनाक कहां से बन जायंगी। यदि एक चिनगारी फूस के एक किनारे को नहीं जला सकती तो दूसरे को कैसे जलायगी? बम्बई सरकार की इस कार्यवाही का कारण समझ में नहीं आता। कौनसे न्याय से श्रीमती एनीबेसेण्ट का बम्बई प्रान्त में जाना रोका गया। किन्तु हम भूलते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हैं। असाधारण समयों में असाधारण कार्य करने पड़ते हैं। युद्ध के समय में न्याय तथा बुद्धिमत्ता के साधारण नियम अनियम रूप हो जाते हैं—और इनका अभाव ही नियम समझा जाता है। यह युद्ध का समय है। इस समय सरकारों से मत पूछो कि 'तुमने यह काम क्यों किया? और यह क्यों नहीं किया?' जब सारा संसार लाठी चला रहा है तब मेरा सिर फूठा या उसका—एक ही बात है।

पराडकर जी का समाचार

भारतमित्र सम्पादक श्री पराडकर जी को पुलिस गिरिफ्तार कर लेगई। आगे क्या हुआ—कुछ पता नहीं। इतना ही सुना है कि उनके लिए ज़मानत देने की कोशिश की गई—पर सरकार ने स्वीकार नहीं की। ऐसा क्या कारण है—और सरकार इतनी सख़्ती क्यों कर रही है—यह केवल सरकार ही कहसकती है—हम नहीं हक सकते। हमतो केवल पूछ सकते हैं?

यूनिवर्सिटी में आर्यसमाजी

सहयोगी आर्यमित्र एक विशेष बात की ओर संयुक्तप्रान्त के आर्यसमाजों का ध्यान खेंचता है। इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की सेनेट में एक भी आर्यसमाजी नहीं है—यद्यपि प्रान्त में आर्यसमाज की कई शिक्षा सम्बन्धी संस्थायें हैं। हम समझते हैं—इसके मुख्यतया दो कारण हैं। प्रथम कारण तो यह है कि संयुक्त प्रान्त में आर्यसमाजियों के हाथ में कोई विशेष कालिज नहीं—जिससे कि वह अपने विद्यार्थियों को एक ही प्रकार से प्रभावित कर सकें। दूसरा बड़ा कारण यह है कि जो आर्यसमाजी सज्जन आर्यसमाज के शिक्षा कार्य में विशेष भागलेते हैं वे प्रान्त के साधारण राजनीति या सामाजिक जीवन में बहुत कम भागलेते हैं, और जो महोदय उन कामों में थोड़ा बहुत भागलेते हैं वे आर्यसमाज के कार्यक्षेत्र में बहुत पीछे रहते हैं। पंजाब में यह कमी नहीं है।

भारत और फिलिपाइन

भारतवर्ष में अंग्रेजों को आये जितना समय हुआ है, फिलिपाइन में अमरीका को गये उसका केवल दसवां भाग हुआ है। परन्तु जहां दो भारतीय बालक शिक्षा पारहे हैं, वहां फिलिपाइन में पांच बालक शिक्षित होते हैं। त्रैराशिक के अनुसार तो फिलिपाइन पांच बालकों की बराबरी में भारतीय ५० को शिक्षा मिलनी चाहिये थी—किन्तु साधन हैं केवल दो को मिलने के। २५ वां भाग हुआ। क्या इससे यह समझें कि भारतवासियों की बूढ़ी जाति की शिक्षित होने की शक्ति या इच्छा या प्रवृत्ति फिलिपाइन वालों से २५ वां हिस्सा है या इससे दोनों देशों की सरकारों की शिक्षा देने की शक्ति या इच्छा या प्रवृत्ति का भी हिसाब लगता है। प्रजा के पुरुषार्थ की मात्रा पर भी इस घटना का प्रभाव पड़ता ही है।

कानपुरी सहयोगी

कानपुरी सहयोगी खरी बात सुनकर आपे से बाहिर होगया है। जो लेख उसने प्रचारक के उत्तर में लिखा है, उससे और गुणों के साथ २ 'असहिष्णुता' का भी विशेष प्रकाश होता है। समाजहित के लिए और 'न्याय' सत्य तथा कल्याण के लिए, सिर झुका देने को अपना विशेष गुण बताता हुआ सहयोगी सम्बद्ध असम्बद्ध जो कुछ दिल में आया है लिख गया है। जो लोग अपने आपको राष्ट्र के सेवक बताते और अपनी सेवाप्रवृत्ति को सर्वोच्च मानते हैं, वे इतने असहिष्णु नहीं हुआ करते। आप लिखते हैं 'देश भरके कार्यों का भारतो दूर रहा, हमें अपने अस्तित्व का ही भार दूभर हो रहा है' ठीक है, तभीतो आप भारत की कार्य करने वाली सोसाइटियों को व्यर्थ, और भारत के सुधारक दलों को अधिकांश 'उच्छृंखल ओछे' बतलाते हैं। देश के शिक्षित लोगों का अधिकांश इस समय सुधार के कार्य में लगा हुआ है—उनका अधिकांश तो 'ठोक पीट कर वैद्यराज' बनना चाहता है; असली सुधार हमारे सहयोगी के आफ़िस से प्रारम्भ होता, और वहीं समाप्त होजाता है। यदि आपको अपनी समाजसेवकता का अभिमान है, तो पहले भारत की उन्नति के लिए यत्न करने वाली संस्थाओं को तो उदार दृष्टि से देखना सीखिए। जब आपकी राय में इस समय भारत में जितने सुधारक दल हैं--वे ओछे हैं--तब क्या उन सबको बन्द कर के आपको ही सुधार का झंडा न खड़ा करना चाहिए। यदि आपको अभी अपने अस्तित्व की ही आशंका लगरही है तो कृपया चलते हुए कामों पर तीरवर्षा करके देशसेवा के कार्य में विघ्नरूप तो न बनिए। जो कार्य आप नहीं कर सकते, यदि औरों द्वारा वह हो रहा है, तो आपको प्रसन्न होना चाहिए। राष्ट्रहित का सच्चा भाव इसी को कहते हैं। किसी देश सेवक को अवाच्य कहने से आपकी संकुचित नीति सहेतुक नहीं समझी जासकती। आप भी राष्ट्रीय शिक्षा के पक्षपाती हैं—किन्तु उसका प्रयोग देखकर आप घबराते हैं। आपभी देशीभाषा में शिक्षा दिया जाना उत्तम मानते हैं, किन्तु जिसमें आर्यभाषा शिक्षा का माध्यम नहीं है, ऐसे कालिज वा विश्वविद्यालय की आलोचना में एक शब्द नहीं सहसकते। क्या इसी को कुरुचि नहीं कहते?

पराड कर जी को देश निकाला

ऊपर हम पराडकर जी के विषय में जिज्ञासा करचुके हैं। अब जो समाचार मिला है, वह शोकजनक है। लाहौर के सहयोगी देश से ज्ञात हुआ है कि पराडकर जी गिरिफ्तार नहीं हुए—बल्कि उन्हें देश निकाला हुआ है। यह भी ज्ञात हुआ है कि जिस नियम के अनुसार ला० लाजपतराय जी को देश निकाला दिया गया था, उसी नियम से पराडकर जी प्रवासित किये गये हैं। यह समाचार पढ़ कर चित्त में जो २ भाव उठते हैं—उन्हें लिखना कठिन है, एक भाषा पत्र के सम्पादक का प्रवासन हमें ऐसा ही जंचता है, जैसे एक निजसम्बन्धी का विछोहा हो। फिर पराडकर जी तो बड़े मिलनसार और सौम्य सज्जन थे। यदि सहयोगी देश का लिखना सत्य है तो सरकार के इस बलात्कार-पूर्ण कार्य पर दुःख प्रकाशित किये बिना नहीं रह सकते। बिना उचित विचार किये और अभियोग में अभियुक्त का पूरा २ वक्तव्य सुने दंड देना स्वयं एक न्यायविरुद्ध कार्य है—और फिर यदि वह दंड एक ऐसे सज्जन को दिया जाय, जिस की अशान्तिप्रियता का प्रजा को सन्देह भी नहीं हो—तो मामला और भी गहरा होजाता है। हम सरकार से बल पूर्वक निवेदन करते हैं कि वह पराडकर जी के सम्बन्ध में सच्चे समाचार प्रकाशित करे और यदि देशनिकाले का समाचार सत्य है, तो उसका पूरा कारण दे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पत्रों की सैर

महामंडल की धृष्टता।

मालवीय जी की फटकार।

मण्डल उपहास के योग्य है।

काशी के भारत धर्म्म—महामण्डल की उपाधि को अस्वीकार करते हुए मान० पं० मदनमोहन मालवीय ने यह पत्र उसके 'जनरल सेक्रेटरी' श्रीयुत रामचन्द्र नायक कालिया के पास भेजा है:—

महाशय,

आपने मुझ को भारत–धर्म्म–महामण्डल की ओर से जो मान–पत्र भेजा उसे मैं इस पत्र के साथ वापिस करता हूं। मेरी रायमें, भारत–धर्म्म महामण्डल को किसी को मान पत्र देने की योग्यता नहींहै, और इस लिये उस का मान पत्र किसी अर्थ का नहीं है।

आप को विदित है, कि भारत–धर्म्म–महामण्डल के वर्त्तमान प्रबन्ध से सर्व साधारण सनातन–धर्म्मानुयायी सज्जन बहुत अप्रसन्न हैं। और बातों को अलग रख, मण्डल के नेताने सातवें दर्शन के नाम से जिस ग्रन्थ को प्राचीन ग्रन्थ कह कर प्रकाशित किया है उस के विषय में यह स्पष्ट रीति से कहा गया है, कि यह ग्रंथ बिलकुल आधुनिक है। महामण्डल ने इस बात का प्रतिवाद करने का साहस नहीं किया, और मेरा विश्वास है, जैसा कि मैं आप से वार्तालाप में कह चुका हूं, कि वह इस का प्रतिवाद कर नहीं सकता। इस से तथा और दोषों से महामण्डल के विषय में अनेक धर्म्म-शील सज्जनों को न केवल उदासीनता; किन्तु घृणा हो गयी है। ऐसी दशा में महामण्डल को इस बात की आवश्यकता है, कि वह अपने दोषों का प्रायश्चित कर तब साधारण की दृष्टि में प्रतिष्ठित होने के लिए शुद्ध, सत्यमय व्यावहार का प्रमाण–पत्र प्राप्त करे। यह न कर के धर्म्म मण्डल का छः सौ से अधिक सज्जनों को मान पत्र देना घोर धृष्टता है। इस धृष्टता से भारत–धर्म्म–महामण्डल ने अपने को नितान्त उपहास के योग्य बनाया है। विद्वन–मण्डली भारत-धर्म्म महामण्डल को किस दृष्टि से देखती है, यह इसी से विदित है, कि काशी के उन सौ से ऊपर विद्वानों में से, जिन को भारतधर्म्म महामण्डलने मान पत्र दिया है, दो या तीन से अधिक विद्वान् महामण्डल के अधिवेशन में नहीं गये, यद्यपि वह अधिवेशन बहुत आडम्बर के साथ काशी में ६ दिन तक होता रहा। ऐसी दशा में देश के गण्यमान्य जनों को मान पत्र देना उन सज्जनों का मान करना नहीं है; किन्तु अनुनय (खुशामद) और दुस्साहस से अपना दोष छिपाना और मिथ्या मान बढ़ाना है। मैं आपसे और महाराजा साहब दर्भङ्गा से भी भारत–धर्म्म–महामण्डल के वर्त्तमान दोषों को दूर करने के विषय में कह चुका हूं। जब तक आप उन दोषों के मूल से अपने को मुक्त नहीं करते, तब तक मैं महामण्डल से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता।

आपका हितचिन्तक,
मदनमोहन मालवीय
("अभ्युदय")

——:o:——

क्लार्की से यह नौकरी बुरी नहीं है।

इंग्लैन्ड में युद्ध के कारण क्या दशा हो रही है, इस विषय में एक बात चीत समाचार पत्र में छपी है, उसे पढ़कर हंसी भी आती है और दुःख भी होता है। उस बात चीत को हम यहां नीचे प्रकाशित करते हैं:—

एक बड़े व्यापारी की कोठी में मैनेजर साहब बैठे कुछ सोच रहे थे कि एक युवक ने आकर, जो युद्ध से अभी हाल में ही वापिस हुआ था, सलाम किया और मैनेजर से कहा:—

"क्या आप के यहां कोई नौकरी खाली है?"

मैनेजर:—नहीं, मेरे यहां तो अभी कोई जगह खाली नहीं। क्या तुम लड़ाई से लौटे हो?"

नौकरी चाहने वाला:—"जी हां; परन्तु लड़ाई पर जाने से पहिले एक आफिस में क्लार्क था। अब किसी आफिस में जगह खाली नहीं। सब काम स्त्रियां कर रही हैं, मर्दों की जरूरत ही नहीं।"

मैनेजर:—"यहां भी यही हाल है। स्त्रियों के काम से हमें बहुत कुछ सन्तोष है। अत एव मैं तुम को नौकर नहीं रख सकता"।

नौकरी चाहने वाला अपनासा मुंह लेकर वापस जाने लगा कि इतने में ही मैनेजर ने फिर कुछ सोच कर उसे बुलाया और कहा:—"देखो, तुम्हारे लिए हम ने एक नया काम सोचा है अगर तुम चाहो तो कर सकते हो"।

नौकरी चाहने वाला—"वह कौनसा नया काम है?"

मैनेजर:—"पति बनने का काम"।

नौकरी चाहने वाला—"मैं समझा नहीं पति बनने का काम कैसा?"

मैनेजर:—"सुनो, क्या तुम नहीं जानते कि इस समय पुरुषों के अभाव के कारण बहुत सी युवा कन्यायें विवाह के लिए बैठी हुई हैं, तुम किसी ऐसी युवा कन्या से विवाह करलो जिसे माकूल तनख्वाह मिलती हो। उस की तनख्वाह में तुम्हारा और उस का दोनों का काम चलेगा।"

नौकरी चाहने वाला:—"तो क्या आप का यह मतलब है कि कोई युवा कन्या मुझे अपने पति की तरह रखले?"

मैनेजर:—"हां, यही समझो"।

नौकरी चाहने वाला—"अच्छी बात है, मुझे मंजूर है। अब आप कोई कन्या

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बतावें जिसे पति की जरूरत हो"।

मैनेजरः—"एक की कौन कहे बीसों-ठहरो, मैं अभी एक बताता हूं"।

मैनेजर ने घंटी बजाई, चपरासी हाजिर हुआ, उसने उससे कहाः-"जाओ, हेड क्लार्क साहब को बुला लाओ।

कुछ देर बाद एक युवती कान पर कलम रक्खे मैनेजर साहब के सामने आ खड़ी हुई।

मैनेजर ने पूछाः-वैल। मिस जान, तुम्हारी तनख्वाह क्या है?

मिसः—"जी, सौ रुपया माहवार।"

मैनेजरः-"घर में तुम्हारी मां और तुम दो ही आदमी तो हो? क्या तुम इस तनख्वाह में एक पति नहीं रख सकतीं?"

मिसः—"हां, रख क्यों नहीं सकतीं। सौ रुपये बहुत हैं।"

मैनेजरः-"तो अच्छा यह लो, यह मर्द नौकरी की तालाश में यहां आया था। हमारे यहां कोई जगह खाली नहीं है। तुम चाहो तो इसे अपना पति बना-लो। यह घर बार का सारा काम काज किया करेगा। जब बच्चे होंगे (शरमाती क्यों हो) तो यह उन बच्चों को पाले पोसेगा। तुम दाई को नौकर रखने की फिकर से बचोगी। बोलो, है मंजूर?"

मिसः—(शरमाकर) "हां मंजूर है।"

मैनेजरः—(मर्द से) "बोलो क्या कहते हो?"

मर्दः—"है तो मंजूर, पर यह जानना चाहता हूं कि मुझे कभी कभी घर से जाने की छुट्टी मिला करेगी या नहीं और खर्च क्या मिलेगा?"

मिसः—"जो हम खावें वह तुम खाना इस के अलावा कुछ जेब खर्च भी दिया जायगा। और रोज कुछ देर के लिए छुट्टी भी मिलेगी।"

नौकरी चाहने वालाः "तो ठीक है, मुझे मंजूर है। लो चलो किसी पादरी के पास, मैं अभी पति होने का पट्टा लिखे देता हूं। क्लार्की से यह नौकरी बुरी नहीं है।"

(जयाजी प्रताप)

——:o:——

प्रेरित

आक्षेप

आर्य-समाज के दो दांत

वर्तमान काल की धार्मिक संस्था व सम्पूर्ण देश सुधारक सभाओं में जो आर्य-समाज का नाम गौरव दृष्टि से उच्चतर कोटि में लिया जाता है वह उसके उदारभाव व विशाल उद्देश्य तथा सम दृष्टि का फल है। परन्तु इसके विपरीत कतिपय स्थानों की समाजों व व्यक्ति विशेष सामाजिकों में संकीर्णता व द्वेष के भाव उत्पन्न हो जाना, ऋषि दयानन्द के पवित्र नाम को दूषित कर देना है। इस का एक ताज़ा प्रमाण हाल में ही हमको हिन्दू धर्म-वर्ण व्यवस्था मण्डल कुलेरा के महा मंत्री जी द्वारा रचित ब्राह्मण निर्णय नामक ग्रन्थ से पता लगता है जिसमें महर्षि दयानन्द के वैदिक प्रेस अजमेर की कई चिट्ठियां छाप कर महामन्त्री जी ने प्रमाणित किया है कि हमारे कट्टर सनातनधर्मी होने तथा आर्य्य-समाज के दोषों व त्रुटिगों को दर्शाते रहने के कारण सामाजिक लोग हमसे इतना द्वेष करते हैं कि छपाई लेकर हमारे ग्रन्थों को छापना तो दूर रहा किन्तु कटाई लेकर (Cutting Machine) कटिंग मैशीन द्वारा काटने को भी वैदिक प्रेस अजमेर तय्यार नहीं है। हमने श्रोत्रिय पं० छोटेलाल शर्म्मा द्वारा रचित सम्पूर्ण ग्रन्थ पढ़े हैं, जिनसे हम कह सकते हैं कि आप एक निष्पक्ष पुरुष हैं आप अपने लेखों में निष्पक्ष भाव व सत्य का विचार रखते हुए आर्य्य-समाज व सनातन धर्म्म दोनों को ही फटकारा करते हैं तथा दोनों के ही गुणों की प्रशंसा करते रहते हैं, ऐसी दशा में हमारे दोषों को प्रकट करके सुधार कराने वाले सज्जन से हम द्वेष करें यह उचित नहीं जान पड़ता है, क्योंकि आर्य्य-समाज के उद्देश्यों के अनुसार हम को सत्य के ग्रहण करने व असत्य के परित्याग करने में सर्वथा सर्वदा तत्पर रहते हुए सबके साथ धर्मानुसार प्रीतिपूर्वक वर्तना चाहिये। यह हम ऐसा नहीं कहते हैं तो हम आर्य्य-समाजी ही नहीं कहे जा सकते हैं क्योंकि हमको मतमतान्तर व साम्प्रदायिक झगड़ों में न पड़कर इनके गुणों की ओर दृष्टि देनी चाहिए कि आप ऋषि दयानन्द को किस अपूर्व गौरव व महती दृष्टि से देखते हैं।

परन्तु देश के कल्याण के लिये सद्भाव व उपकार बुद्धि से क्या कर रहे हैं ऐसी दशा में हम को पं० जी की सहायता करनी व प्रेम तथा निष्पक्ष भाव से उन के ग्रन्थों को देख कर लाभ उठाना चाहिये। हाँ किसी विषय में उन का हमारे साथ मतभेद है तो उस का उत्तर लेख द्वारा दे कर सर्व साधारण के भ्रम को दूर कर देना चाहिये।

इस विषय में हम "ब्रह्म प्रेस" इटावा की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते हैं कि जो कट्टर सनातनी होते हुए भी लेखक के आदेशानुसार विपक्षियों का सम्पूर्ण कार्य्य छापते रहते हैं, यदि उन विपक्षियों के ग्रन्थों का उत्तर इन को देना होता है तो किसी अन्य पुस्तक द्वारा अपने "ब्राह्मण सर्वस्व" पत्र द्वारा दिया करते हैं न कि वैदिक प्रेस अजमेर की तरह साहित्य का जवाब थपेड़ से। आशा है कि हमारे भातृगण व वैदिक प्रेस कमेटी अजमेर तथा परोपकारिणी सभा अजमेर हमारे निवेदन पर ध्यान देंगी।

सुक्खीलाल
वकील
इटावा

——:o:——

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्यों के दो दांत नहीं ३२ दांत हैं।

किसी पुराने ढांचे के सीधे सादे सुक्खी लाल जी इटावा निवासी "आर्यसमाज के दो दांत" नामक लेख में हमारे ऊपर काम नहीं करने का दोष लगाते हुए प्रेसकमेटी आदि से अपील करते हैं। इस अपूर्व धींस के लिए हम आपकी बुद्धि की सराहना किए बिना नहीं रह सकते।

महाशय जी! आर्यसमाज के दो गुण सोलह आने [कलदार]=तुल्य बत्तीस दांत हैं अब भी भ्रम हो तो मुंह में अंगुली डाल कर देखिए तो पूरा २ पता लग जावेगा।

हमें आपके समान दांतों को दिखाना है। वैदिक प्रेस में महाशय छोटेलाल जी की पुस्तक को क्यों नहीं छापा, इस प्रश्न का उत्तर तो हम चिट्ठी में पहिले ही लिख चुके हैं परन्तु सर्व साधारण के ज्ञानार्थ फिर लिखते हैं-

१-वैदिक यन्त्रालय श्री स्वामी जी कृत ग्रन्थों वा अन्य ग्रन्थों के छापने के लिए है जब इसे अपने काम से ही अवकाश नहीं तो दूसरों का काम कैसे लेवे, यों तो इस सुप्रसिद्ध प्रेस में सनातनी, जैनी, ईसाई आदि सब ही अपना काम छापना चाहते हैं और यथावकाश सब का बहुत कुछ काम छापा भी जाता है जिसके कारण सैकड़ों प्रमाण पत्रों के अतिरिक्त १०० रुपये का पारितोषिक और सुवर्णपदक भी प्राप्त कर चुका है। समयाभाव से हमें अजमेर म्यूनीसिपेलटी का कार्य आज तक नहीं लिया, परन्तु उक्त कमेटी ने कभी भी आपकी सी धींगा धांगी नहीं मचाई क्योंकि प्रत्येक विचारशील जानता है कि वैदिक यन्त्रालय शुद्ध, शीघ्र और सस्ती छपाई के लिए प्रसिद्ध है परन्तु सब का काम यही यन्त्रालय करे ऐसा तो असम्भव है।

२-महाशय छोटेलाल जी की पुस्तक झगड़ों से भरी हुई है इसमें कई जातियों पर, जैसे कायस्थों पर, मैथिल लोगों पर, पुष्कर के ब्राह्मणों पर, खत्रियों पर, गुर्जर गौड़ ब्राह्मणों पर तथा अन्य और कतिपय जातियों पर आक्षेप किये गये हैं, जिनकी ओर से मान हानि की नालिश होने पर प्रेसमैनेजर बिसा २ फिरता और संस्था को आर्थिक हानि के अतिरिक्त बड़ी बदनामी उठानी पड़ती तो सब ही लोग कहते कि प्रेस में ऐसी पुस्तक क्यों छापी गई।

३-महाशय छोटेलाल जी का व्यवहार ठीक नहीं है। हम उन से भले प्रकार परिचित हैं, हम अपना काम करें या झगड़ालू लोगों से मगज पच्ची करें।

४-पुस्तक कैसी है और महाशय जी कैसे हैं, इसके विषय में हम घर के भेदी जानते हैं न कि बाहर वाले। जो बिना ज्ञान बीन वृथा कागजी आडम्बरों के फन्दे में फंस जाते हैं। महाशय छोटेलाल जी अजमेर में ही पढ़े हुए हैं। पहिले यह ८) आठ रुपये मासिक पर वैदिक यन्त्रालय में ही नौकर हुए थे, परन्तु लड़का होने से समाज स्कूल में बदले गए, वहां समाज के अधिकारियों को बुरा भला कहने व उद्दण्डपना मचाने के कारण पृथक हो रेल में तार बाबू बने—जिस पद पर दो तीन दफा छोड़ २ कर फिर विराजे हैं। इनको ३३) रुपए मिलते हैं इसी से आप इनकी योग्यता जान लेवें, बीच में इन्होंने अपने छोटे २ लड़के लड़की को कुछ संस्कृत याद करवा आगरा, कानपुर आदि में बंदरिया नाच की तरह कुछ पैसे जोरे थे, कुछ समय तक ज्योतिष आदि का पाखंड जाल भी फैलाया था। कभी आर्य, कभी सनातनी कोई धर्म नहीं टका धर्म है। पिता से महा खोटा बर्ताव १५-२० वर्ष से रखते हैं यदि किसी को शंका हो तो इनके पिता पं० करुणानन्द जी से आर्यसमाज अजमेर के पते से पूछ लेवें, वे ऐसे धर्मात्मा हैं कि सत्य २ लिख देंगे और इनकी कल्पित सभाओं वा टका बटोरने आदि कागजी आडम्बरों की सब पोल खोल देंगे। अब हम छोटेलाल की पुस्तक में से पाठकों के अवलोकनार्थ कुछ उद्धरण करते हैं—ब्राह्मण निर्णय पृष्ट ४२६.....हमारे देश के सुनार, बढ़ई, लुहार, कसेरे, ठठेरे, माली, कुम्हार, चित्रकार आदि २ जातियों! आप ब्राह्मण वर्ण में हैं.....। आपको कोई शूद्र कहे तो अब शास्त्रार्थ कराइए मैं शास्त्रार्थ करने को तय्यार हूं।

ब्राह्मण निर्णय पृष्ठ १०८

चमार.....यह लोग अछूत नहीं हैं और नीच वर्ण में नहीं हैं वरन क्षत्री वर्ण में हैं।

कोरी.....यह जाति ब्राह्मण-वर्ण है।

जाति अन्वेषण प्रथम भाग पृष्ठ १७५.

कायस्थ.....हमारे भ्रमण में सर्वत्र इन के क्षत्रियत्व के विरुद्ध सम्मतिएं मिलीं, ...किसी ने इन्हें शूद्र और किसी ने इन्हें सत शूद्र लिखा है।

पृष्ठ १७७.

.....चित्र गुप्तवंशी सम्पूर्ण कायस्थ शूद्र संज्ञक हैं .....सैकड़ों कायस्थों में कोई एक आध ही सज्जन होता होगा .....ठग, चोर, इन्द्रजाली, डाकू और विशेषतः कायस्थ इनसे पीड़ित पूज्य की रक्षा करे।

पृष्ठ २१८ और २२० में

खत्रियों के लिए तो ऐसे अनुचित शब्दों का प्रयोग किया है कि जिसका प्रकट करना प्रचारक जैसे नागरी के पवित्र पत्र में सर्वथा असंभव है। इसी प्रकार कई जातियों को मनमाना लिखा है।

महाशय छोटेलाल जी ने जो हिन्दू धर्म वर्णव्यवस्था मंडल नामक एक संस्था प्रसिद्ध कर अपने को उसका महामंत्री प्रसिद्ध कर रखा है यह भी आपके टका बटोरने का एक साधन है; वास्तव में न कोई मंडल है न कमंडल, दूर देशों

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

के पुरुष इन की चालों से परिचित नहीं हैं परन्तु हम अजमेर निवासी इनकी सब चालें जानते हैं।

अब अन्त में पंजाब भूषण श्रीमान् बुलाकीराम जी शास्त्री, विद्यासागर एम० आर० ए० एस० ऐनी कालेज अजमेर [उच्च सभापति जी महामंडल,] के पत्र से कुछ उद्धरण देते हैं जिससे आपको मंडल की असलियत का पता लग जायगा, जब प्रधानों की ही यह दशा तो अन्य साधारण सभासदों का तो कथन ही क्या।

Panjab Bhushan
P. Bulaki Ram Vidyasagar,
Shastri, Mays-College, Ajmer.

No. 288
Amritsar
23-6-191

.....आप का पत्र प्राप्त हुआ.....।

.....मुझे पंडित छोटेलाल फलेरेवाले ने न कभी कुछ लिखा है न पूछा है न बताया है न किसी भी पुस्तक के छापने की कोई बात की है न मुझे पहिले ही पुस्तक की प्रति भेजी है न दूसरे की। मुझे तो उसके छापने की खबर भी नहीं और मैंने तो उसी दिन से उससे अपक्ष सम्बन्ध, जो कि वस्तुतः प्रथम भी कुछ नही था, बिलकुल ही छोड़ा हुआ है कि जिस दिन से पं० जी नाथूलाल जी के समस्त नाम काट देने के लिए आपको लिख भेजने को कहा था तब से आज तक मेरा उससे कुछ भी पत्रालाप नहीं हुआ, न जाने उसने मेरा नाम फिर क्यों छापा है। मुझे पता नहीं। आप उन से पूछें कि निषेध करने पर भी नाम क्यों लिख दिया है।

भवदीय—
बुलाकीराम

उपरोक्त बातों से आप को अब पूरा पता लग गया होगा कि इन्हीं कारणों से छोटेलाल जी की यह चौपड़ी झगड़े की झोंपड़ी समझ वैदिक यन्त्रालय के मैनेजर ने प्रेस में न घुसने देना ही श्रेयस्कार समझा।

हरिश्चन्द्र त्रिवेदी
प्रबन्धकर्त्ता
वैदिक यन्त्रालय अजमेर

—:०:—

धर्म्मोदय पत्र के सम्पादक से प्रश्न

१ सृष्टि के आदि काल में ब्रह्मा जी की प्रथमोत्पत्ति चारों वेदों के किसी वेद मन्त्र से सिद्ध कर दें क्योंकि वेद स्वतः प्रमाण है अन्य सब ग्रन्थ वेदानुकूल होने से प्रमाणित हो सकते हैं अन्यथा नहीं।

—:०:—

२ चारों वेद ब्रह्मा जी के क्रमशः चारों मुखों से प्रकट हुए यह किसी वेद मन्त्र से सिद्ध कर बतला भेजिए चारों मुखों से न सही ब्रह्मा ही पर वेद प्रकट हुए यही बतला दीजिए। वेद मन्त्रार्थ षडङ्गों द्वारा व ब्राह्मण ग्रन्थों द्वारा सायणाचार्य जी के भाष्यानुसार कीजिएगा।

—:०:—

३ ब्रह्मा जी को आप परमात्मा मानते हैं अथवा जीव मानते हैं? यदि परमात्मा मान कर वेदों का उत्पादक मानते हैं तो मुक्तामुक्तयोरयोग्यत्वात् इस कपिल सूत्र का विरोध हटावें क्योंकि कपिल जी कहते हैं कि परमात्मा वेदों का साक्षात् उत्पादक नहीं हो सकता। वीतराग होने से परमात्मा को सराग स्वीकार करेंगे तो एतस्माद् मिथ्या ज्ञानादनुकूल रागः प्रतिकूलद्वेषः इस वात्स्यायन वचनानुसार परमात्मा मिथ्या ज्ञानी होंगे किन्तु पारब्रह्म की प्रेरणा मात्र से अग्नि वायु रवि और अंगिरा से वेद प्रकट यही मानना पड़ेगा।

———

४. यदि आप ब्रह्मा जी को जीव मानते हैं तो वह वेदों के उत्पादक नहीं हो सकते हैं क्योंकि जीव पांच क्लेश से रहित है पांच क्लेश का कारण अविद्या क्षेत्र मुत्तरेषाम् इस पतञ्जलि वचनानुसार अविद्या है अविद्या विपरीत ज्ञान का नाम है वेद भी विपरीत ज्ञान होगा सो अनिष्ट है हम आप को:—

—:०:—

५. जीव विशेषैरग्निवाय्वादित्यैर्वेदानायुत्पादितत्वात् सायणाचार्य्य कृत छापा ऋग्वेद-भाष्य उपक्रमणिका पृ० ४ पं० कलकत्ता।

सायणाचार्य्य जी अग्नि, वायु, रवि को सृष्ट जीव विशेष मानते हैं न कि अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता इस मंत्रोक्त जड़ देवताओं को यह सायणाचार्य जी का वचन आप मानते हैं अथवा नहीं।

—:०:—

६ ईश्वरस्याग्न्यादि प्रेरकत्वेन निर्मातृत्वं द्रष्टव्यम् पृ० ४ पं० ६ छा० कलकत्ता इस वचन में सायणाचार्य जी अग्नि आदि प्रेरक होने से ईश्वर को वेद का निर्माता बतलाते हैं। क्या यह आचार्य की आज्ञा आपको माननीय है व नहीं, यदि है तो ईश्वर की प्रेरणा से अग्नि वायु आदित्य और अंगिरा से वेद प्रकट हुए यह आर्य्यसमाज का सिद्धान्त सत्य व नहीं।

—:०:—

७ वेदांत् ब्रह्मा भवति, वेद से ब्रह्मा होता है न की ब्रह्मा से वेद, इस गायत्री उपनिषद् के वचन को आप मानते हैं व नहीं। यदि मानते हैं वेद पढ़ने से ब्रह्मा कहलाता है यही सिद्ध हुआ न कि ब्रह्मा से वेद प्रकट हुए यह सिद्ध हुआ।

८. अग्निर्देवता वातो देवता सूर्योदेवता इस वेदप्रमाण से अग्नि वायु आदित्य को आप जड़ देवता सिद्ध करते हैं और कहते हैं कि अग्नि वायु आदित्य देवता से ब्रह्मा ने ऋग् यजुः साम वेद को कहा। क्या जड़ पदार्थ में भी ज्ञान रहता है जिस से ब्रह्मा जी ने दोहा? यदि जड़ पदार्थ में ज्ञान रहता है तो शास्त्रप्रमाण से सिद्ध करें नहीं तो वेद प्रकट कर्त्ता अग्नि वायु आदित्य को सायणाचार्य जी के वचनानुसार जीव विशेष मानने में क्या आपत्ति है।

उत्तराभिलाषी
स्वामी योगानन्द
खुरजा

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम-कादिर

दूसरा परिच्छेद

लखि मृगनैनानैन धीरज छूट्यो वीर को।

यमुना से लगभग पौन मील की दूरी पर सुजानपुर नाम का एक गांव था। उस में प्रायः राजपूतों की बस्ती थी। थोड़े से मुसल्मान भी थे, किन्तु वे राजपूतों के बंधुए ही थे। यह गांव दिल्ली से यमुना के किनारे २ लगभग १८ मील दूर था। कोई सौ वर्ष हुए, सुजानसिंह नाम के चौहान राजपूत ने मुग़ल बादशाहों की भक्तिपूर्वक सेवा करके एक गांव इनाम में पाया था। गांव का पहला नाम सुचेतपुरा था, सुजानसिंह के नाम पर वह सुजानपुर हो गया। पहले वहां मुसल्मानों की बस्ती बहुत थी, किन्तु सुजानसिंह के वहां बस जाने से आस पास के गांवों में से भी राजपूत लोग इकट्ठे होने लगे। गांव राजपूतों का गढ़ बन गया। धीरे २ और वंशों के राजपूत भी बस गये। इस समय वह ख़ासा क़स्बा बन गया था।

सुजानसिंह के वंश में इस समय ध्यानसिंह का बड़ा नाम था। उसने वंश की परम्परा के अनुसार मुग़ल बादशाही में नौकरी करके कई लडाइयों में नाम पाया था। मुग़ल बादशाह की ध्यानसिंह पर कृपादृष्टि थी। वह प्रायः दिल्ली में ही रहा करता था, तेजसिंह उसी का बड़ा पुत्र और ज़मींदारी का उत्तराधिकारी था। गांव में तेजसिंह का बड़ा मान था। वह गांव भर के नव युवकों में प्रतिष्ठित समझा जाता था। उस की तीव्र बुद्धि, और अद्भुत शारीरिक शक्ति उसे स्वभाव से ही समवयस्कों में ऊंचे स्थान पर पहुंचा देती थी। तेजसिंह ध्यानसिंह का सर्वगुणसम्पन्न उत्तराधिकारी समझा जाता था। वह गांव की भविष्यत् प्रतिष्ठा-रूपी डोर का आधार था।

गांव में और भी कई वंशों के राजपूत रहते थे। वे प्रायः ध्यानसिंह के मुखियापन को स्वीकार करते थे—परन्तु सब नहीं। उन में कई ऐसे भी थे, जो ध्यानसिंह की चढ़ती देखकर जलते थे, और समय समय पर अवसर पाकर उसे सब प्रकार की हानि पहुंचाने को तय्यार रहते थे। वे लोग ध्यानसिंह के पुत्र की गांव भर के युवकों में प्रतिष्ठा देख कर और भी आग खाते थे।

उस गांव के लोग कट्टर हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। गांव के हर-एक बाज़ार और रास्ते पर कोई न कोई मन्दिर दिखाई देता था। सब से बड़ा मन्दिर वह था, जो ध्यानसिंह के पिता भगवानसिंह ने गांव के मध्य में चौक के एक ओर बनवाया था। उस मन्दिर के साथ एक बड़ा कुआ, और एक तालाब था। तालाब के दो हिस्से थे-एक पुरुषों के लिए खुला हुआ और स्त्रियों के लिए पर्देदार। गांव भर के नर नारी प्रातःकाल उसी तालाब पर इकट्ठे होकर स्नानादि कर जाते थे, और जाते हुए पीने के लिए कुंए से घड़े या लोटे भर ले जाते थे। पौन मील चल कर यमुना तक जाना किसी किसी दिलचले नवयुवक का या किसी देव परायणा भक्ति-मती का ही काम था। जिस सुन्दरी को तेजसिंह ने दल दल से छुड़ाया था, वह आज प्रातःकाल अपनी छोटी बहिन को साथ लेकर यमुना स्नान के लिए निकली थी। यमुना का घाट बहुत अच्छा नहीं था—ज़रासी वर्षा हो जाने से उस में दलदल हो जाती थी। दो दिन हुए थे, रात के समय कुछ बूंदे पड़ गई थीं। भूमि में कई जगह दलदल हो रही थी। सुन्दरी को उस का ध्यान न रहा।

नदी की ओर जाते २ उस का पांव दलदल में धंसने लगा। जब वह दलदल से दूर भागने का यत्न करने लगी तो और भी गहरी दलदल में धंस गई। वहां से निकलने की चेष्टा करने लगी, तो भूमि ने उसे और भी ज़ोर से नीचे की ओर खेंच लिया। उसी अवस्था से तेजसिंह ने उसे छुड़ाया था।

तेजसिंह के अलग खड़े हो जाने पर उस बालिका ने अपनी बड़ी बहिन के अंगों पर से मिट्टी को पोंछा, और धीरे २ मलने लगी। वसन्त के प्राभातिक पवन ने उस की सहायता की। लगभग १५ मिनट में उस की आंखें खुलीं और वह सचेत हुई। तब बालिका ने आवाज़ देकर तेजसिंह को बुला लिया। तेजसिंह जब आया तो सुन्दरी को आंखें खोले एक शाखा का सहारा लिए बैठे हुए पाया। वह सुन्दरी बालिका के मुख से अपने छुटकारे की कथा सुन रही थी और बीच बीच में आंखें उठा कर दूर से आते हुए तेजसिंह की ओर देख रही थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पास आकर तेजसिंह की आंखें अद्भुत सौन्दर्य की पुतली पर पड़ीं। निकालने के समय मिट्टी में लथ पथ होने के कारण तेजसिंह उस काया की सुघड़ रचना को ठीक तरह नहीं देख सका था। अंगों पर मिट्टी अब भी थी, परन्तु आकृति स्पष्ट-तया दिखाई दे रही थी। सुन्दरी की मूर्त्ति युवक के हृदय पर अंकित होने के योग्य थी। स्वाभाविक सौन्दर्य्य के स्वर्ण में चढ़ती यौवन ने मानों सुगन्ध डालदी थी। चांद सा गोल चमकीला चेहरा, नीचे कमल सी रसीली आंखें, अर्धचन्द्रसा सुघड़ माथा, सौन्दर्यलता की भांती फैली बिखरी हुई काली लटायें—और इन सबके ऊपर गम्भीरता का दुर्लभ रोग़न-ये वस्तुएं एकएक ही यौवन को हुलसाने के लिए पर्याप्त होती हैं फिर जहां सब इकट्ठी हों वहां क्या कहना है?

जब तेजसिंह समीप आया, उसकी आंख सुन्दरी के चेहरे पर पड़ी। सुन्दरी उस समय अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाश करने के लिए मधुर आंखों से, बचानेहारे प्राणदाता की ओर देख रही थी और कुछ कहा चाहती थी। दोनों की आंखें मिलीं-और नीची होगईं। सुन्दरी की जिव्हा पर तेजसिंह की आंख ने मानों ताला लगा दिया। वह कुछ न कह सकी। केवल आंखों से निकलते हुए कृतज्ञता प्रकाशित करने वाले आंसुओं को भूमि पर बरसाने लगी। मुंह पर पहले थोड़ी सी लाली चढ़ आई, और पीछे से उसने अपने आपको पीले रंग में परिवर्तित कर दिया। तेजसिंह के चित्त में भी उसी समय एक अद्भुत भाव का आविष्कार हो आया, जिसे वह स्वयं भी न समझ सका कि वह क्या है? यह नहीं कि उसने इस समय से पूर्व सुन्दरी स्त्रियां नहीं देखी थीं—परन्तु न जाने उन मीठी कृतज्ञता भरी आंखों में क्या विशेषता थी, कि तेजसिंह का वीर हृदय भी ज़ोर २ से धड़कने लगा।

शीघ्र ही दोनों ने अपने आप को संभाल लिया। धीमी सी स्वर से आंखें नीचे ही किये हुए सुन्दरी ने कहा—

"मैं सुजानपुर के मुखिया रावल ध्यानसिंह के पुत्र का हृदय से धन्यवाद करती हूं—जिन्होंने आज मेरी प्राण-रक्षा की, मैं उनके उपकार को कभी नहीं भूलूंगी"

तेजसिंह अपने गांव में इतने सर्वप्रिय थे, कि शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति होगा जो तेजसिंह को पंचायतों में वा अखाड़ों में न देख चुका हो। ध्यानसिंह के पीछे पंचायत में उनका स्थान युवा तेजसिंह ही लेता था। लज्जा और कुलीनता जितने शब्दों की आज्ञा देसकती थी, सुन्दरी ने उतने शब्दों में अपने भाव का प्रकाश कर दिया। तेजसिंह उन संगीतमय सुरीले शब्दों का रस पान करके अद्भुत आनन्द अनुभव करने लगे किन्तु रस स्रोत शीघ्र ही रुक गया। तेजसिंह ने कहा—

"देवी! मैंने कोई धन्यवाद-योग्य कार्य नहीं किया। जो एक राजपूत का कर्तव्य था, मैंने उसी का पालन किया है। अब मेरी सम्मति में व्यर्थ के लोकाचार में समय न बिता कर गांव की ओर चलना चाहिए। सूर्य बहुत चढ़ता आता है-ऐसा न हो कि हमारे ग्राम पहुंचने से पहले धूप तेज़ हो जाय। हां.....क्या आप बिना सहारे के चल सकेंगी?"

सुन्दरी ने उत्तर दिया कि वह बिना सहारे के नहीं चल सकेगी। बालिका का सहारा पर्याप्त न समझ कर तेजसिंह ने एक ओर से सुन्दरी को थामा और धीरे धीरे वृक्ष के तने पर चला कर पगडंडी पर पहुंचा दिया। वहां से गांव का मार्ग सीधा था। एक ओर से बालिका और दूसरी ओर से तेजसिंह का सहारा लिये हुए सुन्दरी धीरे २ चलने लगी। लगभग पाव घंटे में वे तीनों गांव के पास पहुंचे। गांव में लोगों का चलना फिरना प्रारम्भ होचुका था। खेती करने वाले किसान फ़सल काटने के लिए दातियां हाथों में लिए हुए जारहे थे। तेजसिंह ने उस स्थान पर सुन्दरी को सहारा देते हुए चलना उचित न समझ कर ठीक समझा कि उसे और बालिका को वहां बिठा कर वह गांव से सहायता ले आय, और सुन्दरी के घर वालों को उसकी निर्बल दशा की सूचना दे दे। इस के लिए उसने बालिका से सुन्दरी के पिता का नाम पूछा। नाम सुन कर वह पहले तो क्षण भर चुप रहा, परन्तु शीघ्र ही उन्हें एक वृक्ष के नीचे छोड़ कर डग बढ़ाता हुआ गांव की ओर चला।

तेजसिंह के क्षणभर चुप रहने का कारण क्या था? सुन्दरी के पिता का नाम था-गुलाबसिंह। उस से बढ़ कर ध्यानसिंह और तेजसिंह का शत्रु गांव भर में कोई नहीं था।

[शेष फिर]

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक-वर्ण-व्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञान भिक्षु जी लिखित)

(४)

गतांक से आगे

येऽविस्युःपाप योनयस्तेऽपियान्ति परांगतिम् यह इसी श्लोक के पद हैं फिर आप ने इन पर क्यों न दृष्टि डाली और डाली भी तो उल्टी ही—यह श्लोक और उपनिषद्-वचन स्पष्टतया गुण कर्म से वर्णव्यवस्था को मानते हैं—आप को पता न लगे तो इस में उपनिषद् का क्या दोष—पृष्ठ १३ पर लिखते हैं एक भागवत का श्लोक देकर-कि "भागवत के इस पद्य में भी स्त्री शूद्र और वैश्यों को वेद का अनधिकारी ठहराया है' समीक्षक—क्यों जी इसी से चिल्लाया करते हो कि मैं आर्य हूं-क्या कहने आप के आर्यत्व के, पौराणिक हो कर अपने को वैदिक कह रहे हैं १३ पृष्ठ पर लिखते हैं कि "यजुर्वेद में ब्रह्माअसृज्यत क्षत्रमसृज्यत शूद्रार्यावसृज्येताम् । यह मन्त्र विद्यमान है । इन के आधार पर ही ऋषिदयानन्द ने जाति भेद को ईश्वर कृतमाना है"—समीक्षक—कितनी बुरी बात है कि आप ने पता तक नहीं लिखा कि किस अध्याय का है आप के मन में तो वही कुसंस्कार घर किये हैं न—यदि पता लिख दिया तो झट उत्तर लिखकर भांडा फोड़ देंगे और किये कराये पर पानी फिर जावेगा—यह तो कई मन्त्रों के पद हैं और यजुर्वेद १४ अध्याय के २८-२९ ३० मन्त्रों में से लिए है इन मन्त्रों में अपितु इस समग्र अध्याय में परमात्मा की विभूति का वर्णन है परमात्मा ने यह रचा वह रचा इत्यादि—

जगत रचा इसमें ब्राह्मण क्षत्रादि आ ही जाते है—और इस समस्त संसार तथा इस में निवास करने वाले मनुष्यादि जातियें सब परमेश्वर के शासन में है—यस्य विश्व उपासते प्रशिषं देवायस्य इत्यादि से भी स्पष्ट ही है—और ऋषिदयानन्द जी ने तो ब्रह्माण्ड मात्र को ईश्वरकृत माना है । ब्राह्मणादि क्या संसार से बाहर हैं ? द्रव्य गुणकर्म रूप जाति युक्त संसार ही परमेश्वर का है—शेष रही आप की फूट की जड़ जातिभेद—न तो ऋषि दयानन्द ही इस व्याधी को मानते है और नाहीं वेद ऐसी अज्ञानता का प्रचार करता है-अपितु नाश करना चाहता है—पहिले आप वेद का प्रकरण समझते फिर बात करते-अच्छे प्रकार जानभी लेते और शंका भी ठीक बनती परन्तु आपने तो ऐसा करना कसरे शान समझ रक्खा है—आगे आप फिर ऐसा ही करते लिखते हैं "ब्राह्मणो ज्ञजे प्रथमः" यह अथर्ववेद में आया है" । समीक्षक—अथर्व में कहां आया है—कुछ तो कहा होता—यह मन्त्र—४कांड—२ अनुवाक ६ सूक्तक १ मन्त्र है—पूर्ण इस प्रकार है—ब्राह्मणो ज्ञजे प्रथमो दशशीर्षो दशास्यः । ससोमं प्रथमः पपौ सचकारारसं विषम्—सिर के समान सुरक्षित दश शुभगुण वाला और मुख्य दश कर्म वाला जो धर्माचरण शील मनुष्य वैदिक आज्ञा परमपुरुषार्थ के पालने से प्रसिद्ध है वह ब्राह्मण है—क्योंकि ससोमं प्रथमः पपौ उसने अमृत को पिया और विष को अरस किया अभिप्राय यह है कि जिस में सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, आपरिग्रह, अस्तेय, तप, शौच, सन्तोष, ईश्वर प्रणिधान, वेदाभ्यास यह दस कर्म हों-और आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि, विशोका ज्योतिष्मति, ऋतंभरा प्रज्ञा, ब्रह्म वर्च्चस्, ओज, यह दश गुण हों-वह ब्राह्मण है—क्योंकि उस महान् पुरुषार्थी ने पाप रूप इन्द्रियों के विषय विष को बाहर फैंक पर ब्रह्म के मोक्ष रूप सोम को पिया है । यदि इस मन्त्र को पूर्णतया विचारते तब आखें खुलतीं । इतने ज्ञानपूर्ण मन्त्र के दो अक्षर पकड़ कह दिया अथर्ववेद में आता है—यदि वेदों से कुछ भी प्रेम था तो उन का आदर करते हुए पढ़ते—परन्तु आपके भाव तो हैं ही और कुछ—वेदों से क्या प्रयोजन आपको ? आस्य शीर्षक का अर्थ मुंह सिर ही लेता है तो जिस के १० सिर और १० मुंह हों वह ब्राह्मण—तब आज कल के जो ब्राह्मण सिद्ध न हो सकेगा—न आप और न आप की जाति—यह तो नितान्त असम्भव है कि किसी व्यक्ति के १० सिर मुंह हों-जब कोई व्यक्ति ही नहीं तब जाति कहां से आई इस कारण न कोई ब्राह्मण और न ब्राह्मण जाति—फिर आप की यह पुस्तक और लिखने आदि का प्रयत्न भी हवाई किला हुवा तब आप की इस अवस्था पर मुझे-वन्ध्यापुत्रः समायाति खपुष्प कृत शेखरः मृगतृष्णा जलं पीत्वा शशशृङ्गधनुर्धरः यह कहना पड़ता है—एक तो यह हुआ-दूसरे यह कि यदि आस्य शीर्षक का कोई और लक्षणादि से अर्थ करें तब आप की सिद्धान्त हानि है और आप को गुण कर्म से ब्राह्मण मानना पड़ता है—और फिर ज्ञजे का अर्थ आप उत्पत्ति का यदि मानते हैं तब तो दोषों की माला आप के गले में आपड़ती है—क्योंकि आप को एक भी ऐसा मनुष्य दिखाना कठिनतम पड़ जायगा जो कि १० सिर मुंह वाला उत्पन्न हुआ हो—और यदि प्रसिद्धि मानें तो आप को महर्षि दयानन्द की शरण में आना होगा—जो कि आप को क्लिष्ट प्रतीत होता है क्योंकि आप ने भीमसेन आदि की ओर मुख प्रचार किया है इस लिये आप को कब स्वीकार महर्षि के पीछे चलना—आप तो अपने स्वभाव के अनुयायी होने के कारण उन से आगे निकलने की चेष्टा कर रहे है न जाने यह उल्टी आप को क्या सूझी है-देखिये पाठक महाशय जी—यह किस बुद्धि से बुद्धिमान् बनते हैं जहां कहीं वेद में ब्राह्मणादि शब्द आजावें वहां लोकानुसार कुरीति प्रचलित कल्पित ब्रह्मणादि का ग्रहण करते हैं—लौकिक कोशों से वैदिक शब्दों का अर्थ करते हैं—पं० जी भी तो सच्चे हैं—क्या करें बेचारे—निरुक्त निघण्टु का कभी नाम तक तो सुना नहीं-हां, अमर कोश मेदिनी आदि लौकिक कोश ही देखे हैं—सब उन्हीं के बल पर वेद के अर्थ करने चल पड़े-पहिले कोई बता देता तब तो सम्भल जाते परन्तु अब क्या करें—होना था सो तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हो ही गया—हां, आगे को ध्यान रक्खें—यदि कोई व्यभिचारी अपना नाम सदाचारी रख बैठे और मूर्ख अपने को विद्वान् कहा करे—और चाहे बुद्धि शून्य आदमी भी उन को इन नामों से पुकारा करें और वह बोला करें परन्तु क्या वह इन नामों के पात्र हो जायेंगे ? कदापि नहीं—बुद्धिमान् तो कभी ऐसे को यह उत्तम नाम नहीं दे सकता क्योंकि फिर विद्वान् पुरुष को किस शब्द से पुकारे जब कि विद्वान्—एक मूर्ख का नाम और धर्मात्मा एक पापी का नाम हो—सभा में उस नाम के विद्वान् की पूछ नहीं हो सकती वहां तो जो विद्वत्ता गुण वाला होगा उस का ही आदर सत्कार होगा गवर्नमेन्ट को कर्मचारी जनों की अवश्यकता है जो कि B. A. -M. A., पास हों। २ मनुष्य कहते हैं कि हम को नौकरी दीजिये क्योंकि मैं एम.ए. हूं और यह बी.ए. हैं—उन की जब परीक्षा ली तब कोरे मूर्ख काला अक्षर भैंस बराबर समझने वाले निकले—ऐसों की तो आवश्यकता नहीं जो अपना नाम एम. ए. बी. ए. रखे फिरते हों—आवश्यकता तो परीक्षोत्तीर्णों (डिगरी याफ्ता) की है—ऐसे ही उन ब्राह्मणादि की आवश्यकता नहीं जो कि अपना नाम ब्राह्मणादि रखे फिरते हैं चाहे व्यवहार में व्यभिचारी का नाम ब्रह्मचारी की तरह अनाचारी अनार्य का नाम ब्राह्मणादि हो परन्तु ब्राह्मणत्व न होने के कारण वह इस नाम का भाजन नहीं हो सकता और न-ही उस उच्चाधिकार पर नियुक्त हो सकता है जो कि वेद शास्त्रों में ब्राह्मण के लिये कहा है—वेद में लिखा है कि ब्राह्मण को मार्ग दर्शक बनावे स्मृति में कहा है कि ब्राह्मण को आचार्य कर उस को धनादि दे प्रसन्न करे—अब एक आदमी आया और कहने लगा कि मैं ब्रह्मण हूं सनाढ्य वंश से हूं अमुक शाखादि है—हम उस से पूछते हैं तुम्हारे ब्राह्मण होने में क्या प्रमाण—तेरे माता पिता ब्राह्मण थे—न तो मैं तेरे पिता को जानता हूं और नाही तेरी माता को देखा था [देखा भीहीं तो उस के ब्राह्मणत्व में क्या प्रमाण—उन के माता पिता ब्राह्मण कैसे इत्यादि अनवस्था] फिर तू ब्राह्मण कैसे माता पिता के हेतु से ब्राह्मणत्व असिद्ध है क्योंकि परदेश में गये मनुष्य का सिवाय उसके अपने कहने से और कोई भी प्रमाण नहीं और उस का कथन उन्मत्त प्रलाप के समान होगा न तो वह किसी का मार्ग दर्शक ही बन सकता है और न स्मृति ऐसे असिद्ध ब्राह्मण को आचार्य कहती है । फिर वह वेद स्मृति सूत्रादि ग्रन्थों में लिखित सत्काराधिकारादि का पात्र कैसे—कोई अपना नाम राजा रखले और उसे राजा कह कर पुकारा भी चाहे जावे—परन्तु शासन करना ऐश्वर्यवान् होना आदि राजा के गुण न होने के कारण किसी से वन्दनीय नहीं हो सकता—इसी प्रकार ब्राह्मण नाम रखने पर गुण—कर्म रहित मनुष्य उस उच्चाधिकार को प्राप्त नहीं कर सकता—जिस महान् आत्मा को वेद ब्राह्मण कह रहे हैं इसी भाव को महर्षि पतञ्जलि महाभाष्य में लिखते हैं—

तपःश्रुतंचयोनिश्च एतद्ब्राह्मण कारकम् तपः श्रुताभ्यां योहीनो जाति ब्राह्मण एवसः २-२-६ तप श्रुत और योनि अर्थात् अन्य कारण जो ब्राह्मणत्व के हों इन से वास्तव में ब्राह्मण होता है तप और वेद को जो नहीं रखता अर्थात जो तपस्वी और वेद-वित् नहीं वह ब्राह्मण पद वाच्य नहीं—हां नाम का ब्रह्मण हो ऐसे ही मनुस्मृति में भी कहा है यथा काष्ठमयो हस्ती यथाचर्ममयो मृगः—तथा विप्रो ऽनधीयानस्त्रयस्ते नाम बिभ्रति—२-१-४७=काठ का हाथी चमड़े का मृग और मूर्ख ब्राह्मण यह तीनों नाम के ही हैं—गुण कर्म न होने के कारण ब्राह्मणाधिकार नहीं रखता—ब्राह्मणत्व का कारण कदापि जन्म नहीं किन्तु संस्कार ईश्वर ज्ञान वेदाभ्यासादि हैं—इसी लिये जिस पुरुष में शुभ संस्कार धर्मिक भावादि पाये जावें वह ब्राह्मण है—ऐसे ही क्षत्रियादि-गुण-कर्म ही वर्ण के भेद-कहीं जन्म से तो सब ही एक जैसे हैं—जो कोई भी व्यापार करता है वैश्य कहदो—जो बलवान् प्रजारक्षक है उसे क्षत्रिय कह दो—जो कोई वेदाभ्यास विज्ञान तपश्चर्यादि करता हो उसे ही ब्राह्मण कहदो—और जो धर्मिक सेवक हो उसे शूद्र कहो—इन में कोई उच्च नीच नहीं सब की संसार को अवश्यकता है—अपने २ कर्त्तव्य पर प्रत्येक बड़ा है—इस वैदिक शिक्षा को ग्रहण करो—और अपनी मन मानी जाति से प्रीति और अन्य जाति से द्वेष इस पाप के मूल से निकल कर मनुष्य मात्र को जाति समझ कर प्रेम करो—सब से भ्रातृभाव पूर्ण प्रीति रक्खो—शेष फिर

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवर्ण का महान ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार है मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवर्ण युक्त निर्णय का ६० से अधिक पृष्ठ पर पूरा हुवा सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २ अनेकों सरकारी रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्टों के फैसिले, श्री जगद्गुरू शंकराचार्य्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्म्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥)

पताः—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मैनेजर श्रोत्रिय पुस्तकालय डा० फुलेरा ज़ि० जयपुर।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी।

आर्य्यसमाज के नियमों की अवनति

म० आर. ए. वर्मा लिखते हैं कि श्री०१०८स्वामी दयानन्द जी ने आर्य्यसमाज के नियमों में एक तीसरे नियम में लिखा है कि वेद सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म्म है।

बड़े शोक से लिखना पड़ता है कि मैं कराची गया था वहां मुझे आर्यसमाज में जाना पड़ा। वहां जाकर क्या देखता हूं कि सभा हो रही थी और वहां अंग्रेजी भाषा में बात चीत होरही थी। यह देख मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ कि दूसरे लोग आर्यसमाज की बड़ाई करते हैं कि आर्यसमाज ने आर्य भाषा की वृद्धि की है और किसी ने नहीं। देखिए दूसरे आदमी तो समाज की बड़ाई करते हैं और आर्यसमाजी भाई समझते हैं कि अब तो हमने बहुत कुछ करडाला अब कुछ शेष नहीं।

भाइयों आप ऐसा न करें शेखी में न आवें अभी आपने कुछ नहीं किया है।

फिर आगे देखिए। जब आर्यसमाज की सभा होती है तब उसका विज्ञापन घुमाते हैं, वह भी अंग्रेज़ी में, तो ऐसा आर्यसमाज में नहीं होना चाहिए, इस विषय में आर्यसमाज के सभासदों से प्रार्थना करता हूं कि इस विदेशी भाषा का परित्याग करदें, और अपनी मातृभाषा का प्रयोग करें।

मंत्री आर्यसमाज बहादुरगढ़ ज़िला रोहतकलिखते हैं कि आर्य्यसमाज बहादरगढ़ प्रस्ताव के अनुकूल १८ जून सन् १९१६ ई० को मण्डी की ज़मीन में "जिसकी रजिस्टरी सभा के नाम है" कुंवे और यज्ञशाला का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया था क्योंकि उसमें कुवा खुद चुका था और यज्ञशाला का चौखटा भी तय्यार हो चुका था, इसलिए ३०—६—१६, को ला० हीरालाल जी ने यज्ञशाला का पत्थर स्थापित किया।

"नव जीवन"

हमें अपने कई शुभ चिन्तकों से यह सुनकर बड़ा आश्चर्य और दुःख हुआ कि "नव जीवन" के सम्बन्ध में सर्वसाधारण में बड़ा भ्रम फैल रहा है। हम अपने सब शुभ चिन्तकों, प्रेमियों और ग्राहक महानुभावों को उनका मिथ्या भ्रम दूर करने के लिए सूचना देते हैं कि पहले प्रेस से सम्बन्ध टूट जाने के कारण ३ मास से "नव जीवन" प्रकाशित नहीं हुआ है। दूसरे प्रेस का प्रबन्ध किया जारहा है। पूर्ण आशा है कि इस मास में सब निश्चय होजायगा। और अगस्त मास के अन्त तक "नवजीवन" प्रकाशित होकर आप की सेवा में अवश्य पहुंच जायगा। "नवजीवन" बंद करदिया गया है या बन्द करने का विचार है—यह बात आप कभी भूलकर भी न सोचें। ईश्वर न करें कि कभी हमें इसके लिये मजबूर होना पड़े तो हम अपने ग्राहकों को कोड़ी वापस करदेंगे।

विश्वास रखिये, मास डेढ़ मास में "नवजीवन" सेवा में अवश्य पहुंच जायगा।

विनीत सेवक
सम्पादक "नव जीवन"

——:०:——

प्रेम महाविद्यालय
वृन्दावन
मुफ़्त शिक्षा

सर्व विद्याभिलाषियों को सूचित किया जाता है कि इस विद्यालय में मैट्रीक्यूलेशन तक शिक्षा देने के अतिरिक्त (१) मैकनी कैल इञ्जिनियरिङ्ग (२) इञ्जिन ड्राइविङ्ग (३) स्पैशल मौलडिङ्ग (४) फिटिङ्ग (५) कमर्शियल (वाणिज्य शिक्षा) ६ सर्वे (मापविद्या) (७) मलीचाबुनना (८) प्रेस का काम (९) कारपेन्टरी व स्मिदी (बढ़ई व लुहार का काम (१०) चीनी मिट्टी (Porcelain) तथा जयपुरी रङ्गदार वर्तन बनाने आदि के कार्य भी विना किसी प्रकार की फीस लिये हुए अच्छी तरह सिखाये जाते हैं। विद्यार्थियों के रहने के लिए एक बोर्डिङ्ग हाउस है जिस में विना फीस लिए हुवे ही छात्रों को (फरनीचर) मेज़ कुर्सी चारपाई आदि भी दी जाती हैं। केवल भोजनादि के व्यय छात्रों को अपनी तरफ से उठाने पड़ते हैं। दाखिल होने वाले छात्रों को चाहिये कि नियमावली मंगाने तथा प्रविष्ट होने के लिए नीचे लिखे पते से पत्र व्यवहार करें।

ओनरेरी जनरल मैनेजर
प्रेम महाविद्यालय
वृंदावन (मथुरा)

——:०:——

गुरुकुल मुलतान का आठवां वार्षिकोत्सव—२९-३० सितम्बर तथा १ अक्टूबर को होना निश्चित हुआ है। इस वार इस में बड़े २ विद्वान् महात्मा सन्यासी तथा आर्योपदेशक अपने व्याख्यानामृत से आर्य्यजनता को आनन्दित करेंगे। व्याख्यानों के अतिरिक्त एक सरस्वती सम्मेलन आर्य्यविद्वत्परिषत् तथा अच्छूतोद्धार सम्मेलन होगा, नये ब्रह्मचारियों का चुनाव २५ सितम्बर को होगा, अतः आर्य्यजनता से निवेदन है कि वह इस शुभ अवसर से लाभ उठावें, और साधु महात्माओं के सत्सङ्ग से अपने आप को पवित्र करें।

पटना ज़िला में एक सेटभुक्का नाम—का ग्राम है। वहां के एक ६० वर्ष के वृद्ध मनुष्य को विवाह करने की उत्कट इच्छा उत्पन्न हुई। बिचारा द्वदू करीब तीन वर्ष प्रथम से अपना नोटिस दिए हुये था कि कोई १५०० रु० ले और हमारा विवाह करादे, परन्तु किसी को उस बिचारे की अभिलाषा पूरी करने की ढ़ाढ़स नहीं हुई। इस वर्ष पटने ज़िले के समीप पलंगा के रहने वाले एक व्यक्ति ने १२०० रु० लेकर उस बिचारे वृद्ध की अभिलाषा पूरी की।

अगुये के पास लड़की तो थी नहीं; परन्तु उसने एक ग्रामीण सज्जन के ८ वर्ष की बालिका को कुटनी लगा कर वृद्ध के पास पहुंचा दिया और पिशाच विवाह सानन्द समाप्त हो गया। बिरादरी वालों ने सहर्ष इस विवाह का अनुमोदन किया। लड़की वाले की तरफ से अदालत में मुकद्दमा हो रहा है देखें क्या होता है। फैसला होने पर पुनः पाठकों पर प्रगट किया जायगा।

——:०:——

सूचना

हमारे यहां एक भजन मंडली और एक उपदेशक की आवश्यकता है जिन महाशयों को हमारे यहां भजन मन्डली व उपदेशक का कार्य करना स्वीकार हो—कृपया हम से पत्र व्यवहार करें—

हरप्रसादसिंह,
मन्त्री
उपप्रतिनिधि सभा, बांदा

१०००० आम व लीची के कलम
मुफ्त।

नियम और सूचीपत्र के लिए आजही लिखिये। कलमों के तो पकाने का बहुत अच्छा समय बीत रहा है। पता—नर्सरी पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

——:०:——

आवश्यकता

आर्य्य प्राइमरी कन्या पाठशाला खानकी के लिये एक योग्य परिश्रमी तथा अनुभवी आर्य्य अध्यापिका वा पंडित की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। प्रार्थनापत्र प्रशंसा पत्रों की प्रति, तथा जिस २ पाठशाला में कार्य्य किया हो उस के ब्यौरे सहित, निम्न लिखित पते पर आने चाहियें।

मुकुन्दलाल
मैनेजर कन्या पाठशाला,
खानकी जिला गुजरांवाला।

——:०:——

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी। प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा संशोधित। अश्लील वाक्यों से मुक्त। कन्याओं के हाथ में बिना संकोच देने योग्य।

संस्कृत प्रवेशिका ——— ।)
संस्कृत साहित्य पाठावली: २यभाग =)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——— ।)
काव्य लतिका ——— ॥।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र १म भाग ॥)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] ।)
[illegible] =)॥
आष्टाध्यायिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्गाधिकारः
श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाप्रणीतम्—महानदीपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप
पुल्लसितम् २॥)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)
ऋषि दयानन्द कृत वेदाङ्ग प्रकाश
१ कारकीयः ≡) के स्थान में =)
२ आख्यातिक १।) ” १)
३ उणादीकोषः ॥=) ” ।≡)
४ स्त्रैण तद्धित १≡) ” १)
५ पारिभाषिक ≡)॥ ” =)
६ गणपाठ ।-) ” ≡)
७ निघण्टु ।=) ” ।)
८ सामासिकः ।) ” ≡)
९ अव्ययार्थ -)॥ ” -)
१० नामिक ।≡)॥ ” ।=)
११ सीवर =)॥ ” =)
१२ सन्धिविषय ।≡)॥ ” ।=)
१३ वर्णोच्चारण शिक्षा -) ”)॥।

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली सचित्र १म भाग ।=) तथा द्वितीयभाग ।-)

विज्ञान

रसायन—विलयम एस, फर्नी की प्रसिद्ध "केमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितम्—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

अन्य उपयोगी पुस्तकें।

१. एकान्तवासी योगी-(Goldsmith's Hermit) का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध श्रीधर पाठक जी कृत ≡)
२. चन्द्रशेखर। प्रसिद्ध कवि वैंकिमचन्द्र द्वारा रचित का हिंदी अनुवाद १)
३. भारतवर्ष का सच्चा इतिहास (भास्कर यन्त्रालय मेरठ) १॥)
४. शिशुपाल वध (बम्बई) २)
५. शिवराज विजय [बनारस] २)
६. साहित्य दर्पण [बम्बई] ३)
७. First Aid to the injured का हिन्दी अनुवाद ॥।)
8. The 1st step in teaching of English on Direct method by Nelson Fraser M.A. -)॥
9 The 2nd part Do -)॥
10 " 3rd " " =)॥
11 " 4th " " =)॥
१२. संक्षिप्त महाभारत संस्कृत वेद्य कृत २)
१३. Bacon's Essays का हिन्दी अनुवाद ।=)

श्री स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेद-भाष्य भूमिका, पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि और गुरुकुल के उपाध्यायों की बनाई सब पुस्तकें यहां से मिल सकती हैं।

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. By Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
The life of Swami Dayananda. By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The works of the late P. Gurudatt Vidyarthi, M.A. 1.0.0
The Hand book of the Arya Samaj by P. Vishnu Lal M. A. /6/.
Is Arya Samaj a Political Body? Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— 0-1-0
The Arya Samaj and its Detractors—A Vindication—by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Satyarth-Prakash by the late Pt. Chirinjiva Bhardwaja—2d edition—superior paper—First ten chapters only. —Rs. 3-0-0

आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. संक्षिप्त महाभारत पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ३) के स्थान में २)
2. Macmillans English Readers for United Provinces
Agra and Oudh-Part 1 /4/.
Do 2 /4/.
३. उपनिषदें श्री शंकराचार्य्य भाष्य सहित आनन्द आश्रम पुना की मुद्रित
बृहदारण्यकोपनिषद ८) के स्थान में ५।)
छान्दोग्य ,, ५) ,, ३॥)
प्रश्न ,, १) ,, ॥≡)
ईश ,, ॥=) ,, ॥=)
केन ,, १) ,, ॥≡)
कठ ,, १) ,, ॥≡)
माण्डूक्य ,, २।-) ,, १॥)
तैत्तरीय ,, १॥) ,, १)
मुण्डक ,, ॥=) ,, ॥)
ऐतरेय ,, १) ,, १=)
४. चम्पु रामायण संस्कृत मुम्बई २) के स्थान में १॥)
५. चम्पु भारत मुम्बई २॥) ” २)
६. हर्ष चरित मुम्बई २) ” १॥)
७. प्रसन्न राघवम् ॥।) ” ॥)
८. भूगोल हिन्दी हिल साहिब कृत Indian press Allahabad से मुद्रित
९. सोमनाथ जी आर्य्य कृत हिन्दी की १म तथा २य पुस्तकें
१०. प्राचीन सभ्यता का इतिहास R. C. Dutt [बनारस]

कमीशन के नियम

गुरुकुल रचित पुस्तकों पर १०) से २०) की पुस्तकों पर १०) सैकड़ा और अधिक पर १५) प्रति सैकड़ा।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय-कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १५ श्रावण सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २९ जुलाई सन् १९१६ ई० { संख्या १६ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०

तीन मास „ „ „ „ -) „ „

छः „ „ „ „ -)॥ „ „ „

सालभर „ „ „ „ -) „ „ „

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० ध्यासपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यकता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वो०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

अध्यापिका की आवश्यकता।

श्री उडवायर कन्या पाठशाला के लिये एक सहायक अध्यापिका की ज़रूरत है।

अध्यापिका हिंदी मिडिल पास होनी चाहिये। वेतन २५) से ३०) तक योग्यतानुसार दिया जावेगा। प्रार्थनापत्र सार्टीफिकेटों के साथ निम्नलिखित पते पर भेजे जाने चाहियें।

रायबहादुर श्रीयुत
नन्दलाल जी जज,
छावनी इन्दौर

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवर्ण का महान ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था नगङ्गल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार है मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवर्ण युक्त निर्णय का ६०० से अधिक पृष्ठ पर पूरा हुवा सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २ अनेकों सरकारी रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्टों के फैसिले, श्री जगद्गुरु शंकराचार्य्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्म्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥)

पता:—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मेनेजर श्रोत्रिय पुस्तकालय डा० फुलेरा ज़ि० जयपुर।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

प्रचारक सम्बन्धी [illegible]

[illegible] अंक [illegible] बन्द [illegible] दिया [illegible] है। [illegible] यह है [illegible] सारी पुस्तकों का सौदा [illegible] पर हो कर रुपए वसूल हो [illegible] हैं। अब "विस्मार्क" और "आर्य्य [illegible]" के [illegible] चरित्रों के लिए आर्य्य पुस्तकालय लाहौर के नाम आज्ञाएं जानी चाहिए, और [illegible] पुस्तकों तथा "उपनिषदों [illegible]" आदि ग्रन्थों के लिए गुरुकुल पुस्तक-भन्डार के नाम। केवल [illegible] पथिक-[illegible] की २५० प्रतिएं तथा आर्यों की नित्यकर्म पद्धति की [illegible] प्रतिएं शेष हैं जो सब की सब खरीदने वाले को ३३ प्रति शतक कमीशन पर दी जा सकती हैं। पुस्तकों के मूल्य से प्राप्त [illegible] "प्रचारक" का ऋण उतारने में लगा दिया गया है।

[illegible] के प्रबन्ध का सारा काम अब तक [illegible] करता था। अब उस बोझ [illegible] करने के लिए म० मूलचन्द्र [illegible]-प्रबन्ध कर्त्ता नियत किया है। [illegible] साधारण पत्र व्यवहार उन्हीं के [illegible] हुआ करेगा। विशेष पत्रों का उत्तर [illegible] मैं ही दिया करूंगा।

[illegible] चारक को शिक्षाप्रद तथा मनोरञ्जक भी [illegible] का प्रयत्न बराबर रहेगा। गत कुछ अङ्कों में मेरे लेख इस लिए नहीं जासके कि अन्यकार्यों का बोझ अधिक था। आगामी अंक से आगे फिर नई लेख माला का प्रारम्भ होगा।

प्रचारक की ग्राहक संख्या बढ़ाने की ओर मैं फिर एक बार ध्यान आकर्षित करता हूं। यह ठीक है कि दसहरे के पश्चात् ग्राहक संख्या अवश्य बढ़ेगी, परन्तु इस समय भी काम चलाना आवश्यक ही है।

मुन्शीराम जिज्ञासु

—:o:—

गुरु[illegible] वार

[illegible] हो तो गुरुकुल भूमि में [illegible] हि। शिमले की तरह यहां भी बिना छाते के बीच पैर चलना कठिन है। उपाध्याय, घर से महाविद्यालय तक जाते हुए, निश्चिन्त नहीं कि वर्षा न होगी। शिमले से भेद इतना है कि यहां असह्य सर्दी नहीं और एक कुर्ता पहिने ही, मूसलाधार बरसते हुए भी, निर्वाह हो सक्ता है।

तैरने का सान्मुख्य ब्रह्मचारियों में—हो गया। ८ श्रावण को दो बजे दिन के गङ्गा का किनारा दर्शकों से भर गया। पहिले सिंह गति का सान्मुख्य हुआ। एक ही स्थान से सब ब्रह्मचारी छोड़े गए। देखना यह था कि कौन सीधी तैरी लगाकर दूसरे किनारे पर सब से निकट लगता है। महाविद्यालयस्थ ब्रह्मचारियों में से देशबन्धु प्रथम रहा, परन्तु विद्यालय की १०,९, ८ श्रेणियों में हंसराज प्रथम रहा जो देशबन्धु से भी अधिक समीप लगा। फिर सर्पगति का सन्मुख्य हुआ, इस के लिये जो विद्यार्थी तय्यार थे वे पार चले गए। गुरुकुल की ओर एक वृक्ष को लक्ष बनाया गया जिस पर आगा पीछा छोड़ कर तैराकों के लिये लगना आवश्यक था। इस सान्मुख्य में महाविद्यालय विभाग में से शान्तिस्वरूप प्रथम रहा, तथा विद्यालय के बड़े दल में से लोकपाल सब से पहले पहुंचा। विशेष सान्मुख्य दूसरे दिन पर मुलतवी किया गया।

९ श्रावण को तीन बजे से कार्य आरम्भ हुआ। ६ और ७ श्रेणियों की सर्पगति में धनञ्जय प्रथम रहा। फिर विद्यालय के बड़े दल के ब्रह्मचारी कनखल वाले बन्द के सामने पहुंचे और वहां से गङ्गा में चल दिए। अनुमान २½ मील तैर कर महाविद्यालय आश्रम के सामने पहुंचे। मार्ग में एक भी ऐसा न थका था कि ठहर जाता। सब के सब २½ मील तैर आए। इन में से भी अष्टम श्रेणी का लोकपाल ही प्रथम रहा। अभी गोता मारने का सान्मुख्य बाकी है जो परीक्षाओं के पश्चात् होगा।

[illegible] विभाग के निरीक्षक श्री डाक्टर शिवनारायण कश्यप D.Sc. बृहस्पति वार को पधारे और इस विभाग के छात्रों की परीक्षा लेकर उन्होंने सब कुछ देखा। जो सम्मति वह देंगे उस को आगामी अङ्क में प्रकाशित किया जायगा।

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ साधारणतया अच्छा है, कुछ विशेष शिकायत नहीं। ९ श्रावण को प्रातः चार बजे परिवार गृहों से आते हुए मुन्शी निहालसिंह अध्यापक को सांप ने लात पर काटा। अध्यापक महाशय ने वहीं काटी जगह के ऊपर कपड़ा कस के बांध दिया और डाक्टर सुखदेव के पास पहुंच गए। डाक्टर जी ने रबड़ से स्थान दृढ़ बांध कर विष को रोक दिया और काटे स्थान में नश्तर लगा कर औषधि लगा दी। मुन्शी निहालसिंह जी को सर्वथा आराम होगया।

सर्प निकलने की ऋतु देखकर उसी समय बड़ा घास छीलने के लिए बहुत से मज़दूर लगा दिए, जिस से सांप का सन्देह दूर हो जाय। परमेश्वर ने १४ वर्षों से अधिक जैसी रक्षा की है, आशा है कि आगे भी वैसी ही रक्षा होती रहेगी।

षाण्मासिक परीक्षाओं—का आरम्भ आगामी मंगलवार से हो जायगा। उस के लिए अब ब्रह्मचारी तय्यारियां कर रहे हैं। महाविद्यालय विभाग की परीक्षा ६ अगस्त को समाप्त हो जायगी और आशा पड़ती है कि ८ अगस्त को परिणाम सुना दिया जायगा। ९ अगस्त से छुट्टियां हो जायंगी।

वर्तमान बजट की पूर्ति के लिए जो ब्रह्मचारियों के संरक्षक यत्न कर रहे हैं उस की सूचना प्रत्येक सप्ताह प्रचारक द्वारा देनी आवश्यक प्रतीत होती है। गत अङ्क में जोड़ ९९५) किया गया। अब निम्न रक़में और वसूल हुई हैं—२००) श्री पं० केशवराव जी हाईकोर्ट वकील, दक्षिण हैदराबाद, १००) श्री म० महाराज ओवरसियर, ब्रम्हादेश, २००) श्री राय साहेब माधोदास जी, एन्जिनियर, कुन्दियां। सर्ववोग १४९५)

जिन सज्जनों ने केवल प्रतिज्ञामात्र ही भेजी है उन्हें अब अपनी प्रतिज्ञा का धन शीघ्र भेजदेना चाहिए।

मुख्याधिष्ठाता,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

छुट्टियों के कार्य

छुट्टियों की ऋतु आगई। कोई कार्यालय बन्द होगये हैं, कोई होरहे हैं और कोई कुछ ही दिनों या सप्ताहों बाद बंद हो जायंगे। छुट्टियों की ऋतुयें आरही हैं। वे लोग जो धनी हैं, गर्मी के दिन बिताने के लिए पहाड़ पर चले जाते हैं। सामान्य वृत्ति वाले लोग केवल स्थान परिवर्तन पर ही सन्तोष करते हैं। विद्यार्थियों का समूह गण, जो अपने घरों से दूर बड़े नगरों में रहता है अपने २ घरों में, पारिवारिक शान्ति का उपभोग करने चला जाता है। जो लोग कई कारणों से स्थान परिवर्तन भी नहीं करसकते, वे कार्यपरिवर्तन तो अवश्य करलेते हैं उनका समयविभाग बदल जाता है।

लोग प्रायः यह समझते हैं कि गत १० या ग्यारह महीनों के समय में साल भर का कर्तव्य पालन कर लिया-अब हमें कुछ भी कर्तव्य नहीं रहा। इस लिए दीर्घावकाश के दिन बिल्कुल व्यर्थ ही गंवा दिये जाते हैं। दिन का समय विभाग कुछ ढीला होजाता है। प्रातःकाल ५ बजे की जगह ७ बजे उठना, घंटा भर चारपाई पर लेटे रहना-फिर गपशप उड़ाना-ताश खेलना और शाम को मित्र मंडल के साथ घूम आना। बस यही छुट्टियों का समय विभाग होता है। यदि किसी बड़े नगर में निवास हुआ तो रात को बायस्कोप या नाटक अधिक समय के लिए देख आये। बस योंही दिन और रात बीत जाते हैं।

उन सब अवकाश भोगने वाले सज्जनों से हम आज कुछ निवेदन करना चाहते हैं। सामान्य सज्जनों से हम यह निवेदन करना चाहते हैं—कि इस छोटे जीवन में वस्तुतः कोई अवकाश नहीं हो सकता। काम अनन्त हैं—और जीवन मात्र है। अनन्त कार्य भला [illegible] जीवन में कैसे समा सकते हैं। मनुष्य के ऊपर तीन बड़े भारी ऋण पड़े हैं—जिन्हें वह पार करना चाहता है। इस लिए वस्तुतः अवकाश का नाम लेना ही भूल है। अवकाश का तात्पर्य केवल यह है कि हम एक प्रकार के कर्तव्यों का पालन करने से थक कर दूसरे प्रकार के कर्तव्यों के पालनमें यत्नवान् होते हैं। अवकाश का यही तात्पर्य है। प्रतिदिन आप अपनी तथा अपने परिवार की पालना के लिए यत्नवान् होते हैं। यह भी कर्तव्य है- यदि इसे आप सचाई से पालन करते हैं—तो आपने इतने दिनों तक अपने कर्तव्य का पालन किया। अब एक या दो मास तक वैसे कर्तव्यपालन की आवश्यकता नहीं रही। अब आपको इतने दिनों के स्वार्थजीवन के पीछे परार्थजीवन बिताने का समय मिला है। जब आप इतने महीनों तक स्वार्थ जीवन बिता चुके, तब यह अवकाश वस्तुतः स्वार्थ जीवन से ही अवकाश समझना चाहिए। इस लिए हमारी सम्मति में छुट्टियों में साधारण सज्जनों का समय विभाग इसी विचार को सन्मुख रखकर बनना चाहिए। अवकाश का तात्पर्य निठल्लापन समझना ठीक नहीं।

प्रश्न होगा कि लोग इन दिनों में क्या करसकते हैं ? केवल एक या दो महीनों में क्या बड़ा परोपकार होसकता है ? इस प्रश्न के उत्तर में हम ऐसे बहुत से परोपकार के कार्य बतला सकते हैं, जिन्हें अवकाश के थोड़े से दिनों में किया जासकता है। हमारा यह विशेषतया निवेदन आर्यपुरुषों और आर्य विद्यार्थियों के लिए है। इस लिए आज उन्हीं विशेष कार्यों का वर्णन करेंगे जो आर्यसज्जनों द्वारा अवकाशों में होने चाहियें।

सामान्यतया आर्यपुरुष मध्यम श्रेणि के ही होते हैं। अधिक धनी या अधिक निर्धनों की समाज में न्यूनता है। मध्यम श्रेणि वाले सज्जन अपने समय को केवल शिमले की बहारों में नहीं गंवा सकते। वे समय को भी और रुपय को भी दोनों को इकट्ठा व्यर्थ नहीं फेंकसकते। वे नगरों या ग्रामों में रहते हैं। उस अवस्था में, हमारी सम्मति में दो प्रकार के कार्य उन के समय को सफल [illegible] के लिए पर्याप्त हैं।

प्रथम कार्य स्वाध्याय है। रोटी के धंधे में पड़ कर मनुष्य [illegible] ने धार्मिक तथा जातीय स्वाध्याय को नहीं करता। जो नौकरी पेशा या वकील हैं, वे प्रति दिन इतना समय नहीं निकाल सकते (यद्यपि [illegible] सकते हैं) कि जब में अपने धार्मिक जातीय तथा [illegible] कर्तव्यों का चिन्तन कर सकें, और साहित्य को पढ़ सकें जो उन्हें चिन्ता करने में सहायता दे। इन [illegible] काश दिनों का यह विशेष कार्य होना चाहिये। प्रति दिन कम से कम दो घंटे धार्मिक तथा राष्ट्रीय ग्रन्थों के अध्ययन में लगाने चाहियें।

यह अपनी अवस्था को उत्तम बनाने का साधन है। किन्तु शेष समय परार्थ के लिये चाहिये। आवश्यकतानुसार सज्जनों के लिये ऐसे बहुत से का[illegible] यदि आपके नगर या ग्राम के [illegible] दशा उत्तम नहीं है, तो उसे उत्तम [illegible] का यत्न कीजिये। यदि आप के [illegible] कोई समाज की पाठशाला है तो उस [illegible] उन्नति के लिये यत्नवान् हूजिये। समाज की दशा अच्छी है और पाठ[illegible] आदि के लिये भी कार्य की [illegible] नहीं है, तो आप एक और [illegible] कार्य कर सकते हैं। भारत वर्ष में सब साधारण के लिये सस्ती शिक्षा की बड़ी आवश्यकता है। सारी सरकारी तथा अन्य प्रकार की शिक्षा भारतीय जनता के ऊपर के भाग को छूती है, गहराई में नहीं जाती। आवश्यकता यह है कि भारत सागर की तह में पहुंचा जाय। जब तक देश की साधारण जनता शिक्षित नहीं होती, तब तक किसी प्रकार का सुधार भी जड़ नहीं पकड़ सकता। यह काम अभी तक आर्यसमाज ने भुलाया हुआ है। जो अत्यावश्यक कार्य था, इतने दिनों तक उस की उपेक्षा की गई है। यदि आपने अवकाश के दिनों में परोपकार के लिये समय देने का निश्चय किया है, तो अपने नगर में ऐसी प्रारम्भिक

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पाठशालायें खोलने का यत्न कीजिये। इन कामों से आप के छुट्टियों के दिन सार्थक होंगे।

विद्यार्थियों के लिये हमें कुछ विशेष कहना है। उन का नैत्यिक जीवन स्वार्थ में तो नहीं परन्तु एक विशेष प्रकार की तय्यारी में बीतता है। वे परीक्षाओं के लिये ही पढ़ते हैं। अवकाश दिनों में उन्हें चाहिये कि वे धार्मिक और राष्ट्रीय साहित्य पर विशेष ध्यानदें। धर्म और देश के प्रति कर्त्तव्य बतलाने वाले ग्रंथों का इन दिनों में विशेष अनुशीलन करें। साथ ही उनके लिये सेवा का कार्य बहुत पड़ा है। ये अवकाश के दिन नगरों में प्रायः रोग के दिन भी होते हैं। विद्यार्थियों को चाहिये कि वे अपने २ नगरों में सेवामण्डलियां स्थापित करलें और रोगियों की सेवा शुश्रूषा करने का कार्य अपने मुख्य कर्त्तव्यों में से मान लें। इसके सिवा इन्हीं दिनों में विद्यार्थी लोग अपने २ स्थानों में घूम कर वेद-प्रचार गुरुकुल आदि सामाजिक कार्यों के लिये धन भी एकत्र कर सकते हैं।

ये सब कार्य हैं, जो अवकाशों में किये जा सकते हैं। यह केवल निर्देश मात्र है—अवस्थाके अनुकूल प्रत्येक आर्य्यपुरुष अपने २ कर्तव्य का चिन्तन कर सकता है। सारांश यही है कि छुट्टियों के दिन फ़ालतू नहीं हैं—प्रत्युत जीवन के कार्यक्रम को कुछ दिनों तक बदलने के लिये हैं। वर्ष के शेष भाग में हमारे जीवन की पूर्णता में जो न्यूनतायें रह गई हैं इन दिनों में उन्हें पूरा करना चाहिये, और यदि सारा वर्ष अपने तथा अपने परिवार की पालना में यत्नवान् हों तो इन दिनों को परसेवा के अर्पण करना चाहिये।

—:o:—

हिन्दू विश्वविद्यालय

काबे में कुफ़्र हो, तो फिर मुसल्मानी कहां रहे। यदि हिन्दूविश्वविद्यालय में ही हिन्दी आर्यभाषा का अपमान हो तो उस का आदर कहां होगा। किन्तु यह तो नम्बर एक है। काशी के म० शिव-प्रसाद गुप्त के एक लेख से ऐसी ही एक और घटना भी प्रकाशित होती है। हिन्दू विश्वविद्यालय आर्यजाति का विद्यालय है। आर्य जाति की एक विशेषता अहिंसा भी है। धनियों के लिए निर्धनों को, शक्तिशालियों के लिए अशक्तों को और अधिकारवालों के लिए अधिकार रहितों को कभी कष्ट नहीं मिलना चाहिए। यही आर्यजाति का और आर्य धर्म का मूल भूत सिद्धान्त है। सुनते हैं, बनारस में इस समय हिन्दू विश्वविद्यालय का नाम इसी कारण स्थान २ पर बदनाम हो रहा है कि उस के संचालकों ने आर्य धर्म की इस विशेषता को भुला दिया है। श्रीयुत गुप्त जी का कथन है कि जिस स्थान पर विश्वविद्यालय की इमारतें बनने वाली हैं उस स्थान पर कई गांव बसे हुए हैं। ग्राम निवासियों को वहां से उठाया जा रहा है। विश्वविद्यालय के संचालकों ने स्थान को ख़ाली करने के लिये सरकार की भी सहायता ली है। जो ग्राम निवासी उठाए जा रहे हैं, वे विश्वविद्यालय को कोस रहे हैं। यदि ये सब बातें सत्य हैं तो हमें शोक है कि जिस कार्य के एक मुखिया माननीय मालवीय जी जैसे सच्चे ब्राह्मण हों, उस की ओर से ऐसी बलात्कार पूर्ण कार्यवाही हो। ग्रामों से उठने में निवासियों को जो दुःख होता है, उसे हम ने आंखों देखा है। नई दिल्ली बनाने के लिए भी बहुत से गांव उठाये गये थे। उस समय का ग्राम वासियों का रोना सचमुच करुणा जनक होता है। कृतकार्यता प्राप्त करने के लिए हिन्दू यूनिवर्सिटी के संचालकों को साधारण प्रजा का आशीर्वाद लेना चाहिये, न कि शाप। ऐसे उपाय होने चाहियें जिस से विश्वविद्यालय के लिए प्रजा पर ये अत्याचार और बलात्कार रुक जायं।

श्रीयुत गणनाथसेन और ब्राह्मण

श्रीयुतगणनाथसेन कलकत्ते के प्रसिद्ध वैद्य हैं। इस समय पूर्वीय भारत में आप की जोड़ी के शायद दो एक ही वैद्य होंगे। देश आप के चेलों से भरा हुआ है। सरकार ने आप को महा महोपाध्याय की उपाधि से सुभूषित किया है। इस पर कलकत्ते के कुछ ब्राह्मण आप को बधाई देने के लिए एकत्र होना चाहते थे। सहयोगी कलकता समाचार इस पर बहुत नाराज़ हुआ है। अन्यत्र हम ने सहयोगी के दो मोट छापे हैं—उन्हें पढ़ कर पाठक शायद हंसेंगे। गणनाथसेन भाग्यवश "ब्राह्मण" नहीं हैं। तब ब्राह्मण उन्हें धन्यवाद देने क्यों खड़े हुए। क्या खूब! ब्रिटिश सरकार तो ब्राह्मणों की ही होगी—अन्यथा कई ब्राह्मण पण्डित उस सरकार के वृति-भोगी क्यों होते, उस की प्रशंसा के गीत क्यों गाते और सहयोगी के कालमों में ही सरकार को जीत पर बधाई क्यों दी जाती? क्या कोई ब्राह्मण पण्डित ब्रिटिश सरकार से महामहोपाध्याय की पदवी नहीं पाता? क्या यह बुरा है? यदि नहीं तो हम पूछते हैं कि क्या "अब्राह्मण" को बधाई देना तक भी गुनाह हो गया। शायद सहयोगी का अगला प्रस्ताव यह होगा कि किसी भी ब्राह्मण को अब्राह्मण के साथ बात चीत न करनी चाहिए, और उस के आगे यह प्रस्ताव होना स्वाभाविक है कि यदि अब्राह्मण लोग भूमि पर चलें तो "ब्राह्मणों" को आकाश में चलना चाहिये।

'ब्राह्मन' और ब्राह्मण

ब्राह्मण वह है जो 'अध्यापनमध्ययनम्' इत्यादि शास्त्रोक्त कर्मों को भली भांती सम्पादित करता है, और 'ब्राह्मन' वह हैं, जो शास्त्रोक्त कर्मों से सर्वथा हीन होकर केवल जन्म या कुल विशेष में होने

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के कारण अपने आप को दुनिया से निराला समझता है। कुछ दिन हुए प्रचारक में ब्राह्मणों के विषय में नहीं परन्तु 'ब्राह्मनों' के विषय में लिखा गया था कि 'वे किसी के नहीं हुए' इस पर न जाने 'ब्राह्मन' मण्डली के साथ कई ब्राह्मण भी आपे से बाहिर होगए हैं। किन्तु 'ब्राह्मनों' के विषय में जो लिखा गया था वह सत्य था- उस पर नाराज़ होने से क्या फ़ायदा- क्या कभी नाराज़गी से सच का झूठ बन सकता है?

खेती में रुधिर-प्रयोग

अन्य स्थान पर हम म० सन्तराम गोहिल का लेख प्रकाशित करते हैं। इस विषय में विगत सप्ताह हमने एक नोट लिखा था। म० सन्तराम के समस्त लेख के सब अंशों से सहमत न होते हुए भी हम एक बात को स्वीकार करते हैं। यदि यह सम्भव हो कि हिंसा किये बिना पृथ्वी की उत्पादक-शक्ति को बढ़ाया जा सके और यह भी सच हो कि रुधिर से उत्तम खाद बन सके तो हम म० सन्तराम जी के प्रस्ताव में कोई हानि नहीं समझते। कठिनाई यही है कि यदि रुधिरवाली खाद की मांग अधिक बढ़ जाय तो इस निमित्त से भी पशुओं को न मारना पड़े। यदि म० सन्तराम ऐसा कोई उपाय बता सकें, जिस से यह ख़तरा जाता रहे तो हम समझते हैं, उन का प्रस्ताव धार्मिक दृष्टि से अनुचित न होगा।

नाटक और स्त्रीपात्र

प्रश्न बड़े ज़ोर से उठा है। लाहौर के पत्र इस विषय में बड़ी मनोरंजकता ले रहे हैं। पारसियों की एल्फ्रड थियेट्रिकल कम्पनी लाहौर आई हुई है। यह वही कम्पनी है जिस के महाभारत नाटक ने दो साल हुए पंजाब में ख़ासी ख्याति पाई थी। अब इसी कम्पनी ने रामायण का भी नाटक बनाया है। म० लालचन्द फलक उर्दू के अच्छे कवि हैं। आपने उर्दू पत्रों में इस कम्पनी पर दो आक्षेप किये थे। प्रथम आक्षेप यह था कि कम्पनी में द्रौपदी तथा सीता का भाग एक मिस गौहर नाम की वेश्या को दिया गया है। यह अच्छा नहीं। भारत की प्रसिद्ध सती देवियों का भाग निकृष्ट दर्जे की औरतों से कराना अपराध ही नहीं पाप भी है। इस पर कम्पनी के मालिक खटाऊ जीने पत्रों में चिट्ठी छपवाई है, जिस द्वारा बताया है कि मिस गौहर वेश्या नहीं एक पारसी महिला है। वे विवाहिता हैं और उन का एक पांच साल का बच्चा भी है। यह प्रश्न तो यों हल हुआ। इस से हमें कोई तात्पर्य नहीं। परन्तु इस प्रश्न ने दोहरी मौलिक समस्याएं उत्पन्न करदी हैं। प्रथम समस्या यह है कि क्या राम युधिष्ठिरादि महापुरुषों को पात्र बना कर कोई नाटक बनने चाहियें? दूसरी समस्या यह है कि क्या नाटकों में स्त्रियों को भी पात्र बनाना चाहिये? इनमें से पहले हम प्रथम समस्या को लेते हैं। हमारी सम्मति में मौलिक प्रश्न यह है कि क्या नाटक खेलने की रीति ही उत्तम है या नहीं? यह रीति भारत में इतनी पुरानी है जितना पुराना भरत का नाट्य शास्त्र है। महाभाष्य में भी बलिबन्ध आदि नाटक कंसवधसूचक नाम आते हैं। इस लिये इस प्रश्न पर अधिक विवाद अपेक्षित नहीं। प्रश्न यह है कि यदि नाटक बनने ही हैं तो क्या वे राम आदि महापुरुषों के हों? इस का उत्तर यदि इतिहास से दें तो स्पष्ट है। संस्कृत में जितने उत्तम २ नाटक हैं, वे प्रायः राम दुष्यन्त भीम युधिष्ठिरादि महा पुरुषों की कथा को आधार ले कर ही बनाये गये हैं। हमारे यहां इन महापुरुषों के चरित का नाटकों में चित्रित करना अधिक अच्छा समझा जाता था। यदि कवि कोई अनुचित या असत्य बात बीच में नहीं मिला देता, या खेलनेवाले पात्र ही नाटक को भ्रष्ट नहीं कर दे, और नाटकों की रचना स्वतः निन्दित नहीं तो रामादि के चरित को आधार मान कर बने हुए नाटक ही जनता का उपकार कर सकते हैं—दूसरे नाटक नहीं। दृष्टान्त के लिये हम खटाऊजी की कम्पनी के महाभारत का एक दृश्य लेते हैं। कृष्ण की स्त्रियों का परस्पर झगड़ा और कृष्ण का उस में भाग बहुत ही अनुचित है। वह दृश्य कभी बुद्धिमत्ता से अनुमोदित नहीं। दूसरा प्रश्न यह है कि नाटकों में स्त्रियों को पात्र बनाना चाहिये या नहीं? यहां हम कुछ अधिक निश्चयपूर्वक कह सकते हैं। शास्त्रों में विधान है कि पुरुष को स्त्रीवेश में नहीं देखना चाहिये। यदि नाटक करना बुरा नहीं और यदि उन में स्त्रीपात्र होंगे, तो पुरुषों से स्त्रीपात्रों का कार्य कराने की अपेक्षा स्त्रियों से स्त्रीपात्रों का कार्य लेना उत्तम होगा। शर्तें दो हैं। ऐसी स्त्रियें कुत्सित आचरणों वाली न हों, और उन पर कोई बुरा प्रभाव पड़ने का डर न हो।

सत्य और सभ्यता

आज कल एक बड़ा मनोरञ्जक प्रश्न उन लोगों के हृदयों में उठ रहा है, जो संसार की घटनाओं को गहरी दृष्टि से देखते हैं, और पक्ष प्रतिपक्ष की वायु के झोकों से इधर उधर प्रवाहित नहीं होते। वह प्रश्न है 'सत्य' का। क्या सभ्यता के साथ २ सत्य की भी वृद्धि हुई है? क्या वर्तमान सभ्यता के साथ सत्य का कोई सम्बन्ध है? यों तो वर्तमान सभ्यता के पक्षपाती हमें बताते हैं कि सभ्यता—अर्थात् पश्चिम की सभ्यता—की वृद्धि के साथ सभी गुणों की वृद्धि होती है। ज्यों २ सभ्यता बढ़ती है, मनुष्यजाति में सभी गुणों की उन्नति होती जाती है किन्तु जो कुछ आज दृष्टि गोचर हो रहा है, वह मन में भारी सन्देह उत्पन्न करता है। पूरा और असली सत्य कौनसा है—यह भगवान् को ही ज्ञात है, किन्तु जब हम सभ्य जातियों के साधेल सत्य पर विचार करते हैं—तो आश्चर्य होता है। जो देश युद्ध में शामिल हैं, वे सब अपने आपको सभ्य बतलाते हैं। दो साल पूर्व रूस के पूरा सभ्य होने में कुछ सन्देह था, किन्तु अब वैसी शंका नहीं रही। जो अंग्रेज़ लेखक इन दिनों साथ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रूस से होकर आये हैं उनका कथन है कि आज का रूस पुराना रूस नहीं है। अब रूस भी सभ्यता की श्रेणी में ऊपर के नम्बर पर है। जर्मनी तथा आस्ट्रिया उससे कोसों पीछे हैं। एक टर्की को छोड़ सकते हैं—किन्तु बाकी के देशों की सभ्यता में क्या सन्देह है। अब आश्चर्य की बात देखिए। सब सरकारों की ओर से युद्ध के विशेष समाचार प्रकाशित होते हैं। सरकारें उनकी प्रामाणिकता तथा सचाई का दावा करती हैं। हमारे पास ऐसे साधन नहीं हैं कि हम उनकी सभ्यता की परीक्षा कर सकें। किन्तु एक बात अन्य लोग भी स्वतन्त्रतया देख सकेंगे। दोनों पक्षों की सरकारों के दिए हुए समाचारों में बड़ा अन्तर प्रतीत होता है। केवल सम्मतियों में नहीं, घटनाओं में भी अन्तर होता है। दृष्टान्त के लिए एक उदाहरण देखए—वर्डून दुर्ग का एक किला है—जिस का नाम "वो" है। एक बार जर्मनी की रिपोर्ट निकली कि हमने "वो" किले में प्रवेश किया, फ्रांसीसियों की रिपोर्ट थी कि जर्मन लोग वहां पहुंचे भी नहीं। रूस और आस्ट्रिया के युद्धों में जहां बिना युद्ध के रूस कहता है कि 'हमने दुश्मन के २५०० सिपाही कैद किए' वहां युद्ध होने पर भी आस्ट्रियन कहते हैं कि हमारे १०० या २०० कैदी हुए, और जर्मनी और आस्ट्रिया का भी दावा यह है कि हम सभ्यता में किसी से पीछे नहीं हैं। क्या सभ्यता का सत्य से कोई सम्बन्ध नहीं है?

मातृ-भाषा को धर्म समझो

भारतवर्ष दिमाग़ से हीन नहीं है, किंतु कमी एक बात की है। भारतवासियों का दिमाग़ सदा उस दिशा में चलता है, जिधर उसका पूरा उपयोग नहीं हो सकता। दृष्टान्त के लिए हम भारतवासियों का अंग्रेज़ीभाषा में लिखना और बोलना लेते हैं। भारतवासी, शिक्षाक्रम के वश से, अंग्रेज़ी ही पढ़ते और उसी का प्रयोग करते हैं। कई सज्जनों ने इस विषय में युक्तियां भी घड़ी हुई हैं। अंग्रेज़ी राज भाषा है, अंग्रेज़ी सारे भारत के शिक्षित समुदाय में समझी जाती है, अंग्रेज़ी से भारतीय विचार विदेश में फैल सकते हैं, अंग्रेज़ी भाषा पूर्ण है, इस लिए इस द्वारा राजनीतिक विचार फैलने से बहुत सहायता मिल सकती है। ऐसी ऐसी युक्तियां हैं, जो हमारे सन्मुख उपस्थित होती हैं। इन युक्तियों की धुंधली चादर के पीछे बैठ कर भारतवासी शिक्षित समुदाय अपना जीवन अंग्रेज़ी भाषा की सेवा में बिताता है। परिणाम क्या है? शायद एक या दो भारतवासी ही ऐसे बताए जा सकें, जिनके नाम अंग्रेज़ी साहित्य में स्थिर होगये हों। अच्छे से अच्छे अंग्रेज़ी विज्ञ भारतवासी की अंग्रेज़ी एक साधारण अंग्रेज़ की कोटि तक कठिनता से पहुंच सकती है। दूसरी ओर आप मातृभाषा की ओर दृष्टि डालिए। थोड़े से भी परिश्रम से उसमें अपूर्वयोग्यता प्राप्त की जा सकती है। इंग्लैंड के एक राजमन्त्री ने राजा की चिरकाल तक राजसेवा की और अन्त में फांसी चढ़ाया गया। उस समय उसने कहा था कि जितनी सेवा मैंने राजा की की है यदि इतनी परमात्मा की करता, तो बुढ़ापे में यह दिन न देखना पड़ता' इसी प्रकार हमारी भी दशा है कि जो भारतवासी अंग्रेज़ी भाषा की सेवा में जीवन बिताते हैं, और फिर भी तीसरे दर्जे के लेखक ही रहते हैं, यदि एक तिहाई परिश्रम के साथ भी मातृभाषा की सेवा किया करें तो पहले दर्जे के लेखक बन सकते हैं, और तब उन्हें उस अविदितता की खोह में न जाना पड़े जिस में वे अब जा गिरते हैं। हमारी सम्मति में आर्यभाषा की इतनी शिथिल उन्नति का एक बड़ा कारण यह है कि भारतवासियों के चित्तों में अंग्रेज़ी लिखने का कुछ विशेष गौरव बैठा हुआ है। अंग्रेज़ी पत्रों में लिखना हम लोग गौरव का स्थान समझते हैं। कारण इस में हमारी मानसिक दासता है। मानसिक दासता की बेड़ियों ने अपने पंजे में हमें खूब पकड़ा है। अब इस रोग का इलाज एक ही है। भारत में इस समय तो मातृभाषा का उद्धार तभी होसकता है यदि भारत के शिक्षित समुदाय में अंग्रेज़ी लिखना अपराध और मातृभाषा में लिखना धर्म समझा जाय। जब तक मातृभाषा की सेवा को धर्म नहीं माना जाता तब तक उस का उद्धार नहीं हो सकता।

एक भारतवासी अंग्रेज़ी का बड़ा फुर्तीला लेखक हो, तो भी हमारी सम्मति है कि वह जितने श्रम से अंग्रेज़ी का एक पृष्ट लिख सकता है, उतने ही श्रम से मातृभाषा के दो तीन पृष्ट लिखसकता है। किन्तु हम लोगों का दिमाग़ ही ऐसा है कि घाटे का सौदा हमें पसन्द आता है।

भारत में पत्रों पर लगाम

जब चातक भी घोंसले में लुप जाय तब समझो कि अतिवृष्टि होगई। जब कमल भी दिन में कुम्हलाने लगे तो समझ लेना चाहिए कि सूर्यभगवान् की किरणों का अत्याचार असह्य है। ऐसे ही जब भारत सरकार के किसी काम के विरुद्ध गोरे-ऐंग्लो इण्डियन पत्र भी लिखने लगें तो समझो कि सीमा का उल्लंघन हो गया। गोरे पत्रों की काया को भारत पर लगी हुई चोट प्रतीत ही नहीं होती—हां, जब भारत देह का अंग भंग ही होने लगे तब उन्हें कुछ २ अनुभव होने लगता है। प्रेस के पांव में भारत सरकार ने जो बेड़ियां डाली हैं, भारतीय पत्रों के लिए तो वे असह्य हैं ही—वे तो बेचारे रोना धोना करते ही रहते हैं—किन्तु इस से इतना ही प्रतीत होता कि भारतवासी इन बेड़ियों से तंग हैं। अब तो सीमा का उल्लंघन हुआ समझना चाहिए जब कि स्टेट्समैन तथा इंग्लिश मैन जैसे कट्टर गोरे पत्रों को भी पत्र स्वाधीनता की रागनी अलापनी पड़ी है। उन पत्रों की शिकायत है कि भारत में पूरे २ समाचार नहीं दिये जाते। बड़े २ आवश्यक समाचार भी भारत में आने से रोके जाते हैं। जब एंग्लो इंडियन पत्रों को भी रोना धोना पड़ा तो भारतीय पत्रों का क्या कहना है, जिन्हें पहले ही सरकारी विश्वस्त समाचारों के योग्य नहीं समझा जाता। जब भीमसेन ही असन्तुष्ट हो तो युधिष्ठिर को सोचना चाहिए कि कहीं उसकी भूल तो नहीं है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुसुम

(१)

पुष्प तुम्हारी यह गरबीली
छवि मुझको अति प्यारी है,
जिस पर तुमने जन्म लिया है
कितनी सुन्दर डारी है।
और जहां यह लगी हुई है
क्यारी कितनी प्योरी है,
जिस क्यारी से शोभित सारी
हुई आज फुलवारी है॥

(२)

कैसी रम्य मनोहर भूमी
जिस में तुम हो आज खिले,
रूप रंग औ गन्ध सभी गुण
तुमको अच्छे अहो मिले।
एक नहीं दस आज तुम्हारे
गुण गाने को हैं तय्यार,
जड़ चेतन सब ही यह देखो
करते तुमको कितना प्यार॥

(३)

मुग्ध भ्रमर तुमको तनमन से
कितना अहो रिझाते हैं,
अपने मन के सभी भाव व
तुमको ही दिखलाते हैं।
कभी कूदते कभी उछलते
कभी पास को आते हैं,
कभी तुम्हारी रजो धूलि को
ले निज शीस चढ़ाते हैं॥

(४)

प्रबल वायुका वेग उन्हे
यदि दूर उड़ा लेजाता है,
तेरा प्रेम सूत्र ही उनको
पास खींच फिर लाता है।
कठिन ताप से तेरा कोमल
बदन म्लान हो जाता है,
तो निज पत्तों से वह तुझको
कोमलता पहुंचाता है॥

(५)

सूर्य अस्तके समय तुम्हें
जब कुम्हलाया वे पाता है,
किसी डाल पर पास तुम्हारे
खिन्न बदन सो जाता है।
प्रभा उदित होने से पहले
फिर वो तान सुनाता है,
गाकर गीत तुम्हारे मानो
बन्दी तुम्हें जगाता है॥

(६)

देख तुम्हारे नव वैभव को
वायू तुम से करता खेल,
कभी उठाता कभी झुकाता
करना बहुविध अहो झमेल।
धीरे धीरे डाल हिला कर
झूला तुझे झुलाता है,
स्मित विकसित अति कान्तवदन को
दूना और फुलाता है॥

(७)

मधुर गन्ध हो लेकर तेरी
दूर दूर उड़ जाता है,
दसो दिसों में कर तब ख्याती
फिर वापिस मुड़ आता है।
नव मौक्तिक समजल कणिकों से
तेरा करता है शृङ्गार,
लख तव शोभा जग यह सारा
होता तुझ पर मुग्ध अपार॥

(८)

पाकर सकल अतुल वैभव को
मत करना मन में अभिमान,
इस जीवन के नये रागका
सोच समझ कर करना पान।
चाहे तुझे मनोहर सुन्दर
शोभा युक्त मिला है स्थान,
विश्व विधाता की रचना में
आखिर सब का है अवसान॥

(९)

कितने तेरे अन्य साथ के
खिले खड़े थे सुन्दर फूल,
हाय पवन ही के झोके से
चाट रहे हैं मट्टी धूल।
शोक उन्हें होता है कितना
देख दशा अपनी प्रतिकूल,
अन्त समय फिर मत पछताना
सोच सोच कर अपनी भूल॥

(१०)

उस शिल्पी का धन्यवाद कर
जिसने तुझे बनाया है,
रूप रंग के साथ मनोहर
दी जिसने यह काया है।
जिस का वैभव पाकर अब तू
निज सम और न लखता है,
उसी नियन्ता जन कर्त्ता को
मूल वृथा क्यों हंसता है॥

शान्तिस्वरूप

—०—

पुस्तक समालोचना

सिक्खों का परिवर्तन—लेखक-डा० गोकुल चन्द्र नारंग, मूल्य १॥) प्राप्ति स्थान—पुस्तक भंडार लाहौर।

डा० गोकुलचन्द्र की प्रसिद्ध अंग्रेजी पुस्तक का यह भाषानुवाद है। मूल पुस्तक ने भारत में विशेष ख्याति पाई है। इसी निबन्ध के आधार पर जर्मनी के एक विश्वविद्यालय से आप को डाक्टर की उपाधि प्राप्त हुई थी। निबन्ध में सिक्खों के इतिहास की बड़ी उत्तम आलोचना है। आलोचना भी साधारण नहीं—ऐतिहासिक रीति से विषय को प्रारम्भ किया गया है और फिर क्रमपूर्वक बतलाया गया है कि वह सिख धर्म, जिसका आधार केवल धार्मिक विचारों पर था, किस प्रकार धीरे २ एक राजनीतिक सिद्धान्त बनगया। किस प्रकार वह फुलवारी, जो किसी दिन कोमल फूलों से जनता को आमोदित करने के लिए लगाई गई थी—कटीले वृक्षों की बाड़ बन गई, जिसे लांघना और पैरों तले रौंदना किसी के लिए भी सम्भव न था, सिक्ख गुरुओं के अमिट इतिहास का बड़ा ही उत्तम खाका खेंचा गया है। इस में ज़रा भी सन्देह नहीं कि इस ग्रन्थ का भाषानुवाद कर के पुस्तक भण्डार के संचालकों ने बड़ा उपकार का कार्य किया है।

भारतवर्ष में इस समय इतिहास के ठीक अनुशीलन की बहुत अधिक आवश्यकता है। भूतकाल को समझे विना हम भविष्यत् का निर्माण नहीं करसकते। इतिहास भी विशेष २ समयों का ही अधिक उपयोगी होता है। जिन समयों का इतिहास अत्यन्त उपयोगी है, उनमें से एक समय सिखों का है। भारतवासी मात्र को इस धर्म के इतिहास का सावधान होकर पाठ करना चाहिए।

पुस्तक की आकृति आदि उत्तम है—उनके विषय में हमें कुछ नहीं कहना। हां भाषा के विषय में थोड़ा सा विवेदन करना है। मूल लेखक की अंग्रेजी में बल और ओज है—वह बल और ओज इस अनुवाद में पूर्णतया प्रतिबिम्बित नहीं हुआ। भाषा और भी अधिक ओजस्विनी होती तो उत्तम था।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बालोपदेश—लेखक पं० रामनारायण मिश्र बी० ए० प्रकाशक-सरस्वती सदन, कैम्प, इन्दौर। मूल्य।)

पं० रामनारायण मिश्र जी पुराने अध्यापक हैं। मुख्याध्यापक का कार्य करते हुए आपको पर्याप्त समय बीत चुका है। इस लिए बालकों की आवश्यकताओं को आप खूब समझते हैं। इस छोटीसी पुस्तक में उसी अनुभव के थोड़े से परिणामों का समावेश किया गया है। समझाने बुझाने से ही बालकों का सुधार होना चाहिए—जहां तक होसके उन पर दण्ड प्रयोग की आवश्यकता कम होनी चाहिए, समझाने बुझाने का मनोरंजक प्रकार ही इस पुस्तक में दिया गया है। छोटे दृष्टान्तों और छोटी २ बातों से गहरी सचाइयों के निकालने का ढंग इस पुस्तक में अच्छा दिखाया है। जिन्हें शिक्षा का पूरा अनुभव है—उन्हें चाहिए कि और लोगों के हित के लिए सदा यत्नवान् रहें, तथा शिक्षण रीति के नये २ परीक्षणों के परिणामों का समावेश लेखों या पुस्तकों में करके जनता को अनुगृहीत किया करें।

महाराणाप्रतापसिंह—लेखक पं० नन्दकुमार देवशर्मा। प्रकाशक पं० ओंकारनाथ वाजपेयी। मूल्य।)

महाराणाप्रताप का नाम भारत माता के उन पुत्रों में है, जिनका नामअमिट है जब तक भारत में जीवन ज्योति की एक चिनगारी भी बाकी है, तब तक प्रताप का नाम भुलाया नहीं जासकता। वहदेश भक्तों का शिरोमणि था। आर्यभाषा में उसकी विस्तृत जीवनि की बड़ी आवश्यकता है। यह छोटी सी जीवनी आशा दिलाती है, कि दूसरी जीवनी भी अवश्य निकलेगी। पं० नन्दकुमारदेव जी पहले कई जीवन चरित और भी लिख चुके हैं। ऐतिहासिक विषयोगिनी भाषा लिखने में आप विशेषतया सिद्धहस्त हो रहे हैं। इस जीवन चरित की भाषा भी उत्तम और स्थान २ पर ओजस्विनी भी है। पुस्तक जीवनचरित्र की रीति पर लिखी गई है, या उपन्यास की रीति पर यह कहना कठिन है। यद्यपि यों लिखा जीवन चरित गया है, परन्तु स्थान २ पर औपन्यासिक ढंग बर्ता गया है। कहीं यह भी सन्देह होता है कि जीवनचरित में जहां खाली अवकाश प्रतीत होता है, वहां कल्पना शक्ति से स्थान पूर्ति की गई है। पुस्तक मनोरंजक है-और बालकों के पठन पाठन के लिए बड़ी उपयोगी सिद्ध होगी।

आत्मवीर सुकरात—लेखक पं० दृज़मोहन शर्मा। प्रकाशक पं० ओंकारनाथ वाजपेयी। मूल्य।)

आत्मिक तथा मानसिक स्वराज्य के राणाप्रताप तत्ववेत्ता सुकरात की यह जीवनि बहुत अच्छे ढंग से लिखी गई है। उस के जीवन के हर एक पहलू का निरीक्षण किया गया है। जिस अंग्रेज़ी पुस्तक के अधार पर यह लिखी गई है, वह बहुत प्रसिद्ध है। उस की सी पूर्णता लाने का यहां भी यत्न हुआ है। पुस्तक पास है।

—०—

प्राप्त पत्र

हड्डी और लहू की खाद

शङ्का।

मैं यहां कृषि का काम करता हूं। कृषि के लिए हड्डी और लहू की खाद अत्युपयोगी समझी गई है। मेरा विचार भी कसूर से लहू मंगाकर खेतों में डलवाने का है। पर इस पर आर्य गज़ट ट्युलेटिन, अख़बारे आम आदि कई हिन्दू समाचार पत्रों ने शोर मचाकर आकाश शिर पर उठा रक्खा है। मैंने अपने पक्ष की पुष्टि में कुछ पंक्तियां लिख भेजी थीं पर उन्हें मन मानी काट छांट के बाद उन्हें अधूरा प्रकाशित कर दिया है। वे लोग इस खाद को युक्ति से पाप सिद्ध करने के स्थान में केवल 'हिन्दू जज़्बे' को भड़काते हैं। इस से किसी भी समझदार व्यक्ति की सन्तुष्टि नहीं हो सकती। हिन्दू अख़बारों की सब से बड़ी आपत्ति यह है कि इस से पशुवध की वृद्धि होगी। इस का उत्तर मैं यहां देता हूं। सम्भव है मैं भ्रान्ति में हूं—इस लिए मैं चाहता हूं कि आप या कोई अन्य विद्वान् इस विषय में अपनी सविस्तार व्यवस्था देकर कृतार्थ करें। ताकि यदि हड्डी और लहू का कृषि के लिए उपयोग वस्तुतः पाप हो तो मैं भी ऐसा न करूं।

१—लहू आज कल बूचड़खानों के बाहर छप्परों में से मुफ्त मिल सकता है। यदि लहू न हो तो उस छप्पर की ममटी ही लहू का काम देसकती है। जो चीज़ मुफ्त मिलती है। उस के लिए कभी कोई अपने पशु को नहीं मार सकता।

२—यदि कोई व्यक्ति लहू को मूल्य भी बेचना चाहे तब भी इस के निमित्त पशु हत्या नहीं हो सकती। कारण यह कि एक पशु के मारने से दो चार सेर से अधिक लहू बाहर नहीं निकलता। इतने लहू के लिए कोई भी किसान दो चार पैसे से अधिक दाम देकर कृषि से लाभ नहीं उठा सकता क्योंकि साधारणतया खाद का २०) मन का बारह आने या एक रुपये में मिल जाता है। बहुत महंगी खाद लेकर फायदा नहीं हो सकता: अब दो चार पैसों की ख़ातिर कोई मूर्ख ही पशु हत्या करे तो करे कोई स्वस्थ मस्तिष्क वाला तो कदापि नहीं कर सकता। अतः इस से पशु हत्या नहीं बढ़ सकती।

३—सैकड़ों मन लहू जो आज कल व्यर्थ पड़ा रहता है यदि उसे खलनादि की तरह खाद रूप से खेतों में डाल लिया जाय तो किसी प्रकार भी पाप की सीमा में नहीं आसकता।

४—पंजाब से प्रति वर्ष लाखों मन हड्डी विदेश जाती है। यह बात सरकारी रिपोर्ट से विदित है। वहां जा कर इस की फासफोरस की दियासलाई चाकूओं तथा छतरियों के दस्ते और बटन आदि बन कर हमारे देश में आते हैं। इस की खाद से उन लोगों की खेतियां लहलहाती हैं। इस के निख़ार से चुकन्दर की खाण्ड साफ होकर हमारे यहां आती है। ये सब बातें हम सहन कर लेते हैं क्योंकि इस से विदेशी लाभ उठाते हैं पर यदि यहां का रहने वाला उन्हीं हड्डियों से कुछ काम लेने लगे तो वह पाप कर्म क्यों हो जाता है।

५—पाश्चात्य देशों में भी आज तक हड्डी और लहू बेचने के लिए पशु वध होना शुरू नहीं हुआ। सब कहीं मांस और चर्म के लिए ही पशु हत्या होती

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। इन दोनों वस्तुओं का उपयोग बन्द कर देने से ही पशुहत्या बन्द हो सकती है। पर हिन्दू लोग मांस भक्षण करते हैं। बूटों और जूतों के कारखाने खोलते हैं। बूटों की दुकाने खोल कर सहस्रों रुपये कमाते और उसे देश सेवा कह कर फूले नहीं समाते। क्या कोई हिन्दू छाती पर हाथ रख कर यह कह सकता है कि बूटों जूतों, काठियों और बक्सों आदि के लिए चमड़ा सब स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए पशुओं से ही लिया जाता है? कदापि नहीं। फिर इस कर्म को कोई पाप नहीं कहता यद्यपि यह हिंसा का मूल कारण है। इतना ही नहीं बल्कि लाहौर में तो एक एक-हिन्दु बूट विक्रेता ने अपनी दुकान पर लिख रक्खा है कि भारत का बेड़ा तभी पार लग सकता है जब कि "बी० ए० लुहार हो तो एम० ए० चमार हो" हिन्दू लोग लहू पीने और हड्डी चबाने को बुरा नहीं समझते, ऐसे कुत्सित कर्म करने वालों को दण्डनीय नहीं ख्याल करने पर व्यर्थ नष्ट हो जाने वाले लहू हड्डी आदि पशुओं के देहावशेष को किसी उपयोगी काम में लाने वाले को पापी समझते हैं। यह केवल अंधविश्वास और बेहूदा जज़बा है। यदि केवल स्वाभाविक मृत्यु से मरे हुए पशुओं के चर्म से ही जूते आदि बनने लगें तो किसान लोग उन मरे हुए पशुओं के गले सड़े मांस का लहू के स्थान में उपयोग कर सकते हैं, पर यह बात तो तब हो जब मांसहारी मांस भक्षण छोड़दें।

६–ऋषि दयानन्द धर्मसम्बन्धी बातों में सदैव न्याय और युक्ति से काम लेते थे। किसी भाव विशेष के वशीभूत हो कर वह कोई बात नहीं करते थे, सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थ इस बात के साक्षी हैं। यहां तक कि जिस चोटी के लिए हिन्दू लोग इतना बल देते हैं वे उष्णता प्रधान देशों में उसे भी कटा देने की आज्ञा देते थे। नियोग के विरुद्ध हिन्दू लोगों का कितना जज़बा था; पर उन्होंने इस की तनिक भी पर्वाह न करके सत्य का ही प्रतिपादन किया। जहां हानिकारक पशुओं को मारने की आज्ञा दी वहां उन के मांस को व्यर्थ नष्ट करने के स्थान में उससे भी यथोचित काम लेने को कहा। गो करुणानिधि में भी उन्होंने युक्ति से गाय की उपयोगिता और उस की रक्षा की आवश्यकता सिद्ध की है। बेहूदा जज़बात को अपील करके हिन्दूओं को तरह वावेला नहीं मचाया क्योंकि ऐसी भड़काने वाली बातों से मुसलमानों और ईसाइयों पर क्या असर होसकता है। इस लिए जो भी महाशय शंका समाधान की कृपा करें वे जज़बात को अपील करने के स्थान में युक्ति से ही काम लें क्योंकि यही मांस हो सकती है। साथ ही यहां मैं यह कहदेना चाहता हूं कि हिंसा लहू, के और मांस भक्षणादि के विषय में मेरा मत यह है कि:—

क्या गाय क्या बकरा क्या घर का जाया
सब में एक ही रक्त है साहब फ़र्माया।

उत्तराभिलाषी—
सन्तराम बी०ए०
कृषि-आश्रम, पट्टी-लाहौर।

—०—

पत्रों की सैर

हिन्दू विश्वविद्यालय कार्यालय।

(अभ्युदय से)

श्रीयुत सम्पादक, "अभ्युदय"

आपने हिन्दू विश्वविद्यालय-सम्बन्धी मेरे पत्र के छापने की कृपा नहीं की। किन्तु बिना उसके छापे ही उस पर टिप्पणियां आपने आषाढ़ सुदी १ के अंक में की हैं। मुझे नहीं मालूम कि ऐसा करना कहां तक उचित है। किन्तु यह कहना आवश्यक है कि मेरे विचार में यह सम्पादन-रीति के विरुद्ध है। मुझे इस की चिन्ता है कि आपके पाठकगण जब आपकी टिप्पणी बिना मेरे पत्र को जाने पढ़ेंगे तो वे भ्रम में पड़ेंगे।

जो मेरे पास इस समय जो अन्तिम नियम स्वीकृत हुए हैं उनकी प्रति नहीं है तथापि मुझे हिन्दू विश्वविद्यालय सम्बन्धी नियमों का कुछ न कुछ पता अवश्य है। इस लिए आपको मुझे नियम बताने की आवश्यकता नहीं थी। यदि आपको मुझे उत्तर देना ही था तो प्रश्न के यथेष्ट उत्तर की आवश्यकता थी जिससे मेरा और जनता का हृदय सन्तुष्ट होता और भ्रम मिटता, किन्तु दुःख है कि आपका उत्तर बहुत ही अस्पष्ट है जिससे कोई बात पूर्णरीत्या ज्ञात नहीं होती।

मुझे मालूम है कि दस हज़ार से अधिक देने वाले व्यक्ति "कोर्ट" के सदस्य हो सकते हैं। मुझे यह भी मालूम है कि एक लाख या उससे अधिक देने वाले व्यक्ति कोर्ट में स्वयं उन सकते हैं और अपने १ प्रतिनिधि को भेज सकते हैं। किन्तु मेरा प्रश्न नियम जानने के लिए नहीं था। मैं यह जानना चाहता था और जनता का जनवाना चाहता था कि कोर्ट की इस बैठक में कौन २ व्यक्ति विशेष सम्मिलित होंगे। विशेष करके मैं यह जानने के लिए उत्सुक हूं कि कोर्ट की प्रथम बैठक में पूज्य मालवीय जी महाराज जाने पावेंगे कि नहीं। क्योंकि जहां तक मुझे मालूम है उनका दान द्रव्य रूप में गो प्रथम था किन्तु बहुत अल्प था। और उस मिस से वे कोर्ट में नहीं आ सकते और विद्वान् होते हुए भी विद्वन्मण्डली के १० प्रतिनिधियों में वे चुने जायंगे या नहीं, यह विदित नहीं हुआ है। यह अब मैं इस कारण से पूछ रहा हूं कि हिन्दू विश्वविद्यालय एक सर्वसाधारण की संस्था है, कतिपय व्यक्ति विशेषों की नहीं कि वे जो चाहें स्वयं कर लें।

जून मास के 'सेन्ट्रल हिन्दू कालेज मैगज़ीन' में और मुझे इस समय स्मरण नहीं है किन्तु 'लीडर' में भी मई मास के अन्त में किसी तिथि को वह छपा था कि आगामी १६ जुलाई को कोर्ट की प्रथम बैठक होगी। जहां तक मुझे मालूम है उसमें यह नहीं लिखा था कि कतिपय लोगों

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by...

द्वारा '[illegible] जाना था कि १६ जुलाई [illegible] ऐसी बड़ी सार्वजनिक [illegible] प्रथम अधिवेशन होने [illegible] नों से बहुत लोग उत्सुक [illegible] कारण बताये ए[illegible] देना और उस [illegible] अनुचित [illegible] होता है कि कुछ लोगों ने यह समझ रक्खा है कि [illegible] जो चाहें सो इस सम्बन्ध में कर सकते हैं। आप आगे यह भी लिखते हैं कि 'कुछ कारणों से तिथि बदल गई और अब आशा है कि १२ अगस्त का फिर अधिवेशन होगा" आपके इस लेख से यह प्रतीत होता है कि आपको इस सम्बन्ध से पूरी सूचना है। तो क्या आप इसके बताने का भी कष्ट उठावेंगे कि वे क्या कारण थे जिनसे १६ जुलाई की तारीख जो नियत हो चुकी थी बदल कर अब १२ अगस्त कर दी गई है।

आप यह भी लिखते हैं कि "सभा के कार्य का विवरण अंगरेज़ी और हिन्दी भाषा में अवश्य प्रकाशित किया जायगा।" कृपा कर इसके बताने का भी कष्ट उठाइये कि कब इस सम्बन्ध में भविष्य क्रिया की जगह वर्तमान क्रिया का प्रयोग होगा। आज ४ वर्षों से विश्वविद्यालय सम्बन्धी-काग़ज़-पत्र छप रहे हैं। क्या आप यह बताने का कष्ट उठावेंगे कि कार्यालय में इतने दिनों में कितने पत्र या अन्य सूचनाएं अंगरेज़ी के अतिरिक्त किसी देशी भाषा में छापी गई हैं?

पूज्य मालवीय जी महाराज की आज्ञा से "हिन्दू विश्वविद्यालय विधान प्रस्ताव" १९१३ में पूज्य बाबू भगवानदास जी की सहायता से मैंने हिन्दी में अनुवाद करके छपवाया था। उसकी बहुत सी प्रतियां मैंने विश्वविद्यालय कार्यालय में भेजी थीं और प्रार्थना की थी कि वे हिन्दू विश्वविद्यालय समिति के सभासदों को और अन्य सज्जनों को बांट दी जायं। हाल में पूछने पर मालूम हुआ कि उनमें से एक प्रति भी नहीं बांटी गई। यदि इतना भी विश्वविद्यालय के कर्मचारियों ने नहीं किया तो आपके कहने पर मैं कैसे मान लूं कि आगे चल कर हिन्दी का इतना आदर होगा कि विवरण इस भाषा में छापा जायगा? विश्वविद्यालय के कार्यकर्त्ताओं की ओर से संस्कृत का कितना आदर हो रहा है उसका भी मैं हवाला दे देता, यदि मुझे यह विश्वास होता कि आप मेरे पत्र को छापेंगे। फिर हिन्दी की कौन पूछ?

२१ आषाढ़ १९७३ } शिवप्रसाद गुप्त।

—०—

'सेन'—महा महोपाध्याय

(कलकत्ता समाचार से)

श्री गोसाईं जीने कहा है,—

'जापर कृपा राम की होई,
तापर कृपा करे सब कोई।'

गत जून मास में स्थानीय सुचिकित्सक बङ्गाली वैद्य श्रीयुक्त गणनाथ सेन महाशय को सरकार की कृपा से 'महा महोपाध्याय' की उपाधि प्राप्त हुई थी। यदि हम भूलते नहीं, तो लार्ड कार्माइकल के प्राइवेट सेक्रेटरी मि० गोरले तकने कविराज महाशय को लिपिबद्ध बधाई दी थी। आज प्रायः सवा महीने के बाद स्थानीय जोड़ासांकू राजवाड़ी में सायंकाल के ४ बजे एक दूसरे समाज की ओर से वैसी ही बधाई और अभिनन्दन का काम फिर किया जायेगा। हम बङ्गवासी नहीं, बङ्गाल के प्रवासी मात्र हैं ऐसी दशा में हम ठीक ठीक नहीं कह सकते, कि आज के अभिनन्दन के पात्र श्री मान्य गणनाथ सेनजी ने किस घर में जन्म लेकर किस कुल को पवित्र किया है। उनका नाम 'सेन' है, यही हमारा परिचय है। बङ्गीय सहयोगियों में सनातन धर्मावलम्बियों ने इन के इस उपाधि प्राप्त करने पर कोई आनन्द प्रगट नहीं किया; वरन् उन की नजरों में 'महा महोपाध्यायों' का इस प्रकार ब्राह्मणेतर जातियों में बंटना खटकता है। अपने इन भावों को उन्होंने यथा समय व्यक्त भी किया था। किन्तु साथ ही; एक और पार्टी ने यानी बङ्गीय विद्वत्सभा ने कविराज महाशय का बड़ी शान के साथ अभिनन्दत भी किया था।

—:०—

जो हो; हम कविराज महाशय के गुणों का अनादर करना नहीं चाहते; किन्तु उन की जाति से सुपरिचित बङ्गीय संसार जब उन के इस उपाधि प्राप्त करने पर अनधिकार प्राप्ति समझता है, तो हम अनभिज्ञ प्रवासी, जाति विषयक प्रश्न को लेकर कविराज जी का साथ कैसे दे सकते हैं। फिर भी; जहां स्वतन्त्राचरण की शक्ति होती है, वहां कोई किसी का रोका भी तो नहीं रुकता। स्वतन्त्राचरण की शक्ति दो प्रकार की होती है। एक तो धर्म और समाज की आज्ञा से प्राप्त होती है; दूसरी चलती-पुरजी व्यक्तिगत शक्तियों की खींचा तानी से प्राप्त होती है। पहली में बल होता है; उस से धर्म और समाज की रक्षा होती है। दूसरी में क्षणभङ्गर बनावटी उत्साह की मात्रा होती है; वह जातीय उद्देश्यों और सिद्धान्तों को घातक हो सकती है। चाहे जिस शक्ति की प्रेरणा से हुआ हो-यदि दूसरी से हो, तो प्रशंसा के योग्य नहीं—आज हमारे मारवाड़ी ब्राह्मण समाज के अधिकांश प्रमुखों के उद्योग से कविराज 'सेन' जी को बधाई दी जायेगी; उन का अभिनन्दन किया जायगा। अभिनन्दन सभा के आहान-कर्त्ता कह सकते हैं, कि हम ब्राह्मण के चोले को अलग रखकर वैद्यों की हैसियत से यह काम करते हैं। इस पर उन से पूछा जायगा, कि पण्डितवर लक्ष्मण शास्त्री किस वैद्य समुदाय के हैं और श्रीयुक्त पण्डित चतुर्थीलाल जी शर्म्मा का मेडिकल हाल कहां है?

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम-कादिर

तीसरा परिच्छेद

वसन्त पंचमी

ऊपर वर्णन की हुई घटना को हुए पांच दिन होगये। आज वसन्तपंचमी है। यह पंचमी भारतवर्ष भर में उत्सव और आनन्द का दिन है। आजके दिन देश की युवतियां प्रकृति के यौवन को अपने यौवन के खुले विकास से द्विगुणित करती हुई हृदय की उमंग को शृंगार और संगीत के मार्ग से प्रकाशित करती हैं। युवकगण अपने और सब शौक छोड़ कर खेल कूद और आनन्द विहार द्वारा खिलते हुए हृदयपुष्प को विकसित करते हैं। बूढ़ों के लिए यह उत्सव सोए हुए सुखसंस्कारों को जगाने वाला होता है। युवावस्था को पुष्पित होता हुआ देखकर मुरझाई हुई वृद्धावस्था की कोई कोई पंखड़ी भी चमक उठती है। पुराने संस्कार उद्बुद्ध हो जाते हैं। बालकों के लिए आज कूदने चिल्लाने और पैसे खर्च कर खिलौने खरीदने का दिन है। वर्षा ऋतु के पीछे प्रकृति को ज्वर सा आजाता है। उस ज्वर से निवृत्त होकर, रुग्णावस्था के सारे मैल धोकर नये वस्त्र पहिने हुए प्रकृति देवी ने शृंगार प्रारम्भ किया है, प्रकृति के शृंगार को पूरा करने के लिए ग्राम ग्राम और नगर नगर ने आज सजावट की है। कोई घर नहीं, जहां आज शुद्ध दीवारों पर विविधवर्ण चित्र नहीं खेंचे गये; कोई ऐसा खेत नहीं जहां सरसों के पीले फूलों ने दिग्दिगन्तरों से भौंरे और तितरियों की श्रेणियों को आकृष्ट नहीं कर लिया, कोई ऐसा जंगल नहीं जहां टेसू के लाल लाल फूलों ने उषःकाल का समा नहीं बांध दिया, और कोई ऐसा मार्ग नहीं, जिस पर अनेक रंगों के सजे हुए कपड़ों में युवकों की पीली पीली पगड़ियां हिल कर खेत और जंगल की शोभा का उपहास नहीं कर रही हैं। आज भारतवर्ष का कोई सशक्त व्यक्ति ग्राम और नगर की चार दिवारी में बंद रहना पसन्द नहीं करता।

सुजानपुर ग्राम ने भी आज अपने ढकने से बाहिर, प्रकृति की विशाल गोद में विहार करना विचारा है। गांव के उत्तर की ओर कोई तीन फर्लांग की दूरी पर खेतों [illegible] एक पुराना मंदिर है-वसन्त का उत्सव वहीं मनाया जाता है। गांव भर के नर नारी खेतों की अनन्त [illegible] देखते [illegible] दोपहर से पूर्व ही उस मन्दिर के पास पहुंच जाते हैं। [illegible] दिन वहीं आनन्द से कटता है। लोग गाते हैं, बजाते [illegible] सन्त का शुद्ध पवन पान करके स्वास्थ्य [illegible] नहीं बैठता। गांव के बीच में से एक [illegible] जो खेतों में से होता हुआ मन्दिर के पास से वह रास्ता गांव में से होकर यमुना को कोई आधा [illegible] छोड़ता हुआ सीधा दिल्ली की बड़ी सड़क में जा मिलता है।

गांव वालों ने उत्सव मनाने की बड़ी तय्यारियां की हैं। पुरुषों ने पीली पगड़ियां और स्त्रियों ने पीले दुपट्टे रंगवाये हैं। जहां से होकर लोगों ने गुज़रना है, उस रास्ते पर छोटे २ दुकानदारों ने अपनी दूकानें जमादी हैं। कई फेरी वाले पास २ के छोटे गांव छोड़ कर इस कस्बे में माल बेचने आये हैं। खाने पीने का समान बेचने की दूकानों की संख्या औरों से अधिक है। दो तीन दूकानदार तो दिल्ली से चलकर यहां सुन्दर २ कपड़े तथा कीमती खिलौने बेचने आये हैं। उनकी दूकानों के इर्द गिर्द खूब जमघटा है। खेतों के बीच २ में जहां खाली जगह है, वहां लोग सुख पूर्वक बैठ कर घर से लाया हुआ या दूकान से खरीदा हुआ भोजन का सामान निकालते हैं, और हंसते खेलते हुए खाते हैं। कई तमाशा दिखाने वाले नट दूर २ से आये हैं और कपड़े खाकर, बन्दर नचा कर और रुपया हाथ में छुपा कर पैसे कमाते हैं। एक दवाई बेचने वाला फ़कीर भी आया है जो अपनी एक २ दवाई के सौ २ गुण बतला कर भोलेभाले लोगों की गांठें खुलवा रहा है। पगपग पर मनोरंजन का समान उपस्थित है, और लोगों के समूह खड़े हुए मेले की रौनक बढ़ा रहे हैं।

पाठक! ज़रा आप इसी पास वाले समूह पर दृष्टि डालें, कोई आप का परिचित मनुष्य तो इस में नहीं है? हां, क्यों नहीं, तेजसिंह अपने पांच छः नौजवान हमजोलियों के साथ घूम रहा है। तेजसिंह के उन्नत सिर पर राजपूती ढंग से बांधा हुए तिट्टी फेंटा खूब ही शोभायमान होरहा है। भरे हुए सांवले लाल चेहरे पर दोनों किनारों से मरोड़ कर ऊपर को चढ़ाई हुई मूंछें विचित्र छटा दिखला रही है, और वीर के आत्मसन्मान की सूचना देरही है। तेजसिंह चारों ओर दृष्टि दौड़ाता हुआ चला जारहा है। मुंह से बात चीत कर रहा है, किन्तु आंखें एक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्थान से दूसरे स्थान पर भागती हैं और निराश सी होकर दूसरी ओर चली जाती हैं। तेजसिंह कुछ ढूंढ रहा है।

जिस दिन से तेजसिंह ने उस सुन्दरी को देखा है, उसके हृदय में एक नई ही अवर्णनीय वासना उत्पन्न हुई है। वह नहीं बतला सकता कि उस वासना का वास्तविक रूप क्या है? उसे केवल इतना ज्ञान है कि उस की आंखें लोभिन होगई हैं। वे उस मूर्ति को फिर एक बार देखना चाहती हैं। साथ ही उसे यह भी प्रतीत होता है कि तब से आंखों और हृदय में कोई विशेष सम्बन्ध होगया है क्योंकि जहां पहले आंखें अकेली घूमती थीं, वहां अब हृदय को भी साथ लिये फिरती हैं। इस समय भी तेजसिंह की आंखें हृदय को लिये हुए चारों ओर भाग रही थीं। इस ज्ञान ने भी कि वह सुन्दरी एक ऐसे पुरुष की कन्या है, जो तेजसिंह का कुलशत्रु है, उस की आंखों के नये उत्पन्न लोभ पर कोई असर नहीं डाला। यह तेजसिंह जानता था कि उस सुन्दरी को उस के घर जा कर मिलना असम्भव है, इसी लिये आज उस ने मेले में ही अपने हृदयचकोर की चांदनी को ढूंढ निकालने का संकल्प किया।

वह सुन्दरी कहां है? कमलदेवी यह उस सुन्दरी का नाम था। उसकी दशा भी तेजसिंह से कुछ भिन्न न थी। भेद इतना ही था कि वह अपनी आंखों के लोभ को पूरा करने के लिये इधर उधर न घूम सकती थी। उस की आंख ने भी तेजसिंह की आंख से बातचीत करली थी। चाहे वह बातचीत क्षणिक थी—पर तो भी उस का प्रभाव क्षणिक न था। वह स्थायी था। अपनी आंखों के लक्ष्य को पाने का कमलदेवी ने दूसरा ही उपाय निकाला। ऐसा स्थान जहां से सभी ग्रामवासी गुज़रते थे, मन्दिर का द्वार था। कमलदेवी ने निर्धारण किया था कि और कहीं हो न हो, मन्दिर के दरवाज़े पर तो प्रीतम के दर्शन हो ही जायगें। इस लिये वह अपनी माता को कई बहानों से प्रेरणा कर के पहले से मन्दिर के दरवाज़े पर लेगई और वहीं पास ही एक उत्तम स्थान ढूंढ कर बैठगई। दोनों हृदयों में एक विद्युत् की शक्ति सी काम कर रही थी, जो उन्हें एक दूसरे की ओर खेंच रही थी।

देर तक ढूंढ जारी रही। तेजसिंह ने मेले का कोना २ देख डाला। उस के साथी आश्चर्यित थे कि तेजसिंह की आंखें क्यों नहीं जमतीं। आंखें एक स्थान पर जाती थीं-खोज करती थीं—और एक ठंडे सांस के साथ वहां से लौट आती थीं। तेजसिंह के साथी सोचते थे, आज उन के मुखिया की तबीयत खराब है।

मध्यान्ह होगया। सूर्य की किरणें पृथ्वी पर सीधी मार करने लगीं। तेजसिंह ने सारा मेला छान मारा। अन्त को सोचा, चलो एक बार मन्दिर में भी हो आयं। सारे लोग उधर जा रहे थे, तेजसिंह भी उधर ही चल पड़ा। प्रेम की विद्युत् हृदयों का एक दूसरे के समीप लाने लगी।

मन्दिर पास ही था। तेजसिंह के एक साथी ने प्रस्ताव किया कि—'ठहरो भाई यहां इस ढाक के पेड़ के नीचे थोड़ी देर विश्राम ही कर चलें। घूमते घूमते तो आज कोल्हू के बैल को भी हरा दिया। दो चार मिनट आराम भी तो कर लो।" सब ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। तेजसिंह भी बैठने के लिये अनिच्छुक नहीं था। ढाक के नीचे डेरे जमा दिए गये और बात चीत होने लगी।

जिस पेड़ के नीचे बैठे हुए नवयुवक बातें कर रहे थे, वह सड़क के ऐन किनारे पर ही था। अभी उन्हें बैठे दो चार ही मिनट हुए होंगे कि रास्ते पर कुछ हल चल प्रतीत हुई। ऐसा प्रतीत होता था कि मानों रास्ते में जाने वाली जनता दो भागों में बंट रही है। बीच में रास्ता किया जा रहा है। रास्ता लोगों से खचाखच भरा हुआ था। इस लिये खेतों की बाड़ों और कहीं कहीं खेतों में भी लोग धकेले जा रहे थे। गड़बड़ का कारण जानने के लिये तेजसिंह खड़ा हो गया—भीड़ और भी पास आने लगी। सब लोग सड़क की ओर देखने लगे। देखा, दूर से दो सुसज्जित घुड़सवार घोड़े भगाये चले आरहे हैं। पास आने पर पता लगा कि पीछे, कोई आधमील की दूरी पर शाही सवारी आरही है। बादशाह सलामत शिकार को जा रहे हैं—उनके लिए रास्ता साफ़ करते हुए वे दोनों घुड़सवार आगे आगे जारहे हैं।

शाही सवारी के नाम पर लोग एकदम चौंक गये। सब एक दूसरे की ओर देखने लगे। जिन्हासे कहने की आवश्यकता न रही। मानों सारी जनता के हृदय में एक बार ही समाचारविद्युत् संचार कर गई। सब एक मत हो, रास्ता छोड़ कर दूर २ जाने लगे। सवारी पास ही थी और ग्राम की ओर से आरही थी, इस लिए उस ओर जाकर घर में छुपने का किसी को साहस न हुआ। जैसे भेड़िये के आने की बू पाकर बकरियां झाड़ियों में छुपती फिरती हैं, इसी प्रकार वहां इकट्ठा हुआ स्त्री समूह इधर उधर का स्थान ढूंढने लगा।

सवारी हाथियों पर आरही थी, और पास ही थी। वस्तुतः वह जितनी दूर थी, घुड़ सवारों ने जान बूझ कर उस से अधिक दूरी बतलाई थी। लोग अभी छिड़ कर इधर उधर भाग न सके थे कि शाही हाथियों के घण्टे सुनाई देने लगे। घंटो का शब्द सुनकर आंख उठते ही मार्ग के किनारे किनारे लगे हुए वृक्षों की ओझल से, बादशाह के जंगी हाथी का हौदा दिखाई दिया। लोगों की भागा दौड़ी बंद होगई। केवल जो स्त्रियां सड़क के किनारे खड़ी थीं उन्होंने उधर को पीठ करली।

(अपूर्ण)

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जैनियों से शास्त्रार्थ

गत २६,२७,२८ जून को नजीबाबाद आर्य्य कुमार सभा का वार्षिकोत्सव हुवा। २७ की शाम की बैठक और २८ की प्रातः काल की बैठक दोनों में जैनियों से, बड़ी धूम धाम से ईश्वर जगत्कारण विषय पर शास्त्रार्थ हुआ।

इस शास्त्रार्थ के बारे में जैनियों ने अपने पत्रों में तथा जहां तहां ऐसे ही गप्प मारना और हवा में डोगें भरना शुरू कर दिया है। हमारे कारण वश मौन रहने का यह भी एक प्रयोजन था कि देखलें जैनियों को गप्प मारना कितना अधिक अभ्यस्त है।

अब शास्त्रार्थ का क्या वास्तविक सार तथा परिणाम था वह संक्षेप से लोगों की शंका निवृत्ति तथा असत्य प्रवादों के निराकरण के लिये लिखाजाता है।

जैनियों की तरफ़ से अम्बाले से आये पं० बनारसी दास जैनी शास्त्रार्थ के दिन उपस्थित हुवे जिन के बारे में वहां के जैनी कह रहे थे कि बनारसी दास जैनी कोई नहीं है; इस का सारी जैनियों की लिस्ट में कहीं नाम नहीं है। झूठासा नाम धरके आगया है। इत्यादि।

शास्त्रार्थ नियत समय पर प्रारम्भ हुआ पं० बनारसी दास जैनी ने अपना पक्ष स्थापन विना किये ही "जगत् सकर्तृकं कार्यत्वात् घटवत्" इस अनुमान की हमारी ओर से स्थापना कर के दूषण देना प्रारम्भ किया यह अशुद्ध व्याप्ति मान कर कि जहां जहां कर्तृजन्यता है वहां २ शरीर जन्यता है सत्प्रतिपक्षादि दूषण दिये। शेष जितने दोष थे वे सब इस प्रकार ही डाले हुवे थे। यथा—

ईश्वर जगत् का कारण है क्या शरीर वाला है या शरीर रहित है। शरीर रहित मानोगे तो इस अनुमान में दूषण होंगे—" जगत् अशरीरबुद्धिमन्निमित्तिकं कार्यत्वात् घटवत् " इस में उन्होंने अनैकान्तिकादि पांच दूषण दिये। [मैं पहले जैन पं० जी] की बात कहूंगा।

इस में पण्डित जी के जितने दूषण थे वे सब स्वकल्पित अनुमान पर थे। और जो अनुमान आर्य्यसमाज की ओर से बोलने वाले स्वा० विज्ञानभिक्षु तथा श्री स्वामि सत्यानन्द जी ने दिये थे उन पर तो पण्डित जी के मुखने कभी भूलकर भी चूं न की।

पं० जी अपने विषय को छोड़ कर दूसरे विषय में भागने की बड़ी कोशिश करते थे। जगत्कर्त्ता सिद्ध करने को छोड़ कर पं०जी ईश्वर की दयालुता न्यायकारिता आदि खण्डन करने लगते थे और चोर और वैश्या को परमात्मा सर्वज्ञ सर्व शक्ति मान होने से पाप करने से पहले क्यों नहीं बचाता बस इन्हीं दो प्रश्नों से वे ईश्वर को स्वयं मान कर उस के गुणों का खण्डन करने बैठ जाते थे। और कितनी वार भी पं० जी को समय दिया गया; सिवाय पिछली बात और ये दृष्टान्त ज्यूं के त्यूं ठीक उन्हीं शब्दों में दोहराने के और पं० जी कुछ भी नहीं करते थे। दूसरे दिन की बैठक में जब पं० जी से श्री स्वा० सत्यानन्द जी ने पूछा कि पं० जी आपके ईश्वर न मानने से आप के त्रिभुवन आपके ३न कोस के आदमी और सर्पिणी उत्सर्पिणी क्रम और सब जैनियों का झूठा प्रपंच जो किसी ने देखा ही नहीं और न खयाल में आता है बिना किसी कर्त्ता के कैसे हो जाता है तिसपर पं० जी ऐसे मौन हो गये और झुंझला कर बोले कि हम तुम पर आक्षेप करते हैं पहले अपने सब उत्तर देलो फिर हमारे पर आक्षेप करना वादको किसी दूसरे शास्त्रार्थ में उत्तर देंगे। शायद पं० जी वाद के नियम नहीं जानते थे कि वाद में परपक्षदूषण तथा स्वपक्षसाधन दोनों होते हैं। यदि पं० जी का कोई पक्ष न था तो पक्ष रहित क्या वितण्डावादी बन कर आये थे। शायद ऐसा ही हो क्योंकि जैन गज़ट ने शास्त्रार्थ होने के दो सप्ताह पहले ही लिख दिया था कि आर्य्यसमाजियों से शास्त्रार्थ करने वाला अवश्य वितण्डा वादी होना चाहिये। यदि जैन सम्प्रदाय वितण्डावादी हो कर शास्त्रार्थ करने आये तो उनकी भी वैसी ही भद्द उड़ेगी जैसी कि पं० जी की उड़ी जब कि उनसे पठिलक में अपने पक्ष का कुछ भी बन न सका।

वैसे पं० जी स्वयं बड़े सरल स्वभाव थे, मितभाषी थे शान्तिप्रिय थे और बुरा मानने वाले न थे। इसी कारण उन्हों ने अपने ऊपर सब दूषण शान्ति से सुन लिये थे। और उन का कुछ उत्तर न बनते पड़ने पर भी मौन रहना स्वीकार किया। शास्त्रार्थ के पं० जी के अन्तिम भाषण से पता लगता था कि उन्हें आर्य्य समाज के सिद्धान्त में कोई दूषण न मिला प्रत्युत सब शान्त हो गये थे सिवाय वेश्या और चोर के दृष्टान्त के जिस का उत्तर श्री स्वा० स०न० जी ने बड़ी उत्तमता से दिया था।

पं० जी ने उन अनादि के सिद्धान्त पर दूषण देते हुवे कुछ सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका में से परस्पर विरोध के उदाहरण दिखाने का प्रयत्न भी किया था; परन्तु फिर थोड़ा ही सा पूर्वापर सम्बन्ध मिला कर दिखा देने से पं० जी का सारा उत्साह भंग हो गया। इस प्रकार जैन पं० बनारसी दास की सब कथा समाप्त होती है अब आर्य्य पक्ष के वक्ताओं की कथा सुनिये।

प्रथम दिन स्वा०विज्ञान भिक्षु जी थे। आपने प्रथम दिन पं० जी के दूषणों को स्वकल्पित अनुमान परक बता कर तथा पं० जी के निजपक्ष के न होने से उन की वितण्डा बतलाई, इस पर प्रथम बहुत बल दिया। फिर अपने अन्य सब भाषणों में कर्मसिद्धान्त तथा ईश्वर की निमित्तता से चोर और वैश्या के दृष्टान्तों का बड़ी अच्छी तरह से विस्तार से उत्तर देते हुवे ईश्वर के साधन में निम्नलिखित हेतु दिये, जिन में से पं० जी ने एक को हाथ न लगाया।

CCO, Gurukul Kangri Collection

(१) जगत् में एक तरतीब दीखती है।

(२) ,, ,, नियम दीखता है।

(३) ,, ,, गति दीखती है जिस का कारण हमारे जीव नहीं हो सकते।

(४) परमाणु २ के अन्दर सूक्ष्म रूप से कार्य होता दीखता है इसको भी शरीरी कर्त्ता नहीं कर सकता।

इन युक्तियों पर पं० जी कुछ भी न कह कर बस अपनी पहली कही पट्टी को रटना शुरू कर दिया। दूसरे दिन के वक्ता श्री० स्वामी सत्यानन्द जी थे। आपने पं० जी के दिए दूषणों को निर्मूल तथा निराधार सिद्ध करके संक्षेप से ईश्वर के जगत्कर्त्तृत्व में ये हेतु दिए थे।

ईश्वर चेतन कर्त्ता होना चाहिए क्योंकि—

(१) जगत् परिणामी है

(२) जगत् नियम से बद्ध है इस लिए नियामक होना चाहिए।

(३) नियम होने ही से कोई बुद्धिमान कर्त्ता होना चाहिए।

शरीरी नहीं हो सकता क्योंकि वह परमाणुओं को पकड़ नहीं सकता इस से अशरीर होना चाहिये।

(४) सम्पूर्ण जगत् सावयव है इस से घटक निमित्त फिर कोई होना ही चाहिए।

(५) शरीर में जिस प्रकार रसादिका परिपाक तथा परमाणु आदि का संस्थापनादि चेतन जीव स्वयं मूर्त्तिमान होकर एक परमाणु को पकड़ २ कर नहीं करता इसी प्रकार ब्रह्माण्ड में भी परमात्मा वैसा न करके अपनी सूक्ष्म शक्ति से करता है।

स्वभाव से सृष्टि नहीं हो सकती क्योंकि स्वभाव एक रूप है और सृष्टि अनेक रूप है। इसी प्रकार के जैनियों के तीन कोस के लम्बे ऋषभदेवादि भी स्वभाव से पैदा नहीं हो सकते हैं।

(६) कर्म कारण नहीं हो सकते क्योंकि वे जड़ हैं उन का अधिष्ठाता और नियामक अवश्य होना चाहिए। चोर जिस प्रकार स्वयं कैद में नहीं जाता राजा उसे डालता है। इसी प्रकार जीव भी कर्म करके फल न भोगेगा। भुगाने वाला एक कोई होना चाहिये।

(७) स्वर्गादि में जैनियों के दूध की व शहद की नदियें व कोस भर के आदमियों को भी काबू करने वाला कोई चाहिये।

जैनियों की पोल खोलना विषय छोड़ना नहीं, क्योंकि इस पर जैनियों के सृष्टि के कर्त्ता की सिद्धि की भी उन को फिक्र करनी चाहिये नहीं तो उन की ऋषभदेवादि पैदा ही न होकर वन्ध्या पुत्रादि के तुल्य हो जायंगे।

जैनियों के सम्प्रदाय में रह कर पाप करने वालों को उन्हीं के कल्पित कुम्भीपाकादि नरकों में डालने वाला भी कोई अधिष्ठाता चाहिये। कर्म जड़ होने से नहीं लेजा सकते।

इसी प्रकार जैनियों के माने बहुत से सर्वज्ञ ईश्वर अल्प परिमाण होने से सर्वज्ञ नहीं हो सकते।

जैन पं० जी ने इस पर कतिपय दूषण दिए कि क्रियावान् ईश्वर में क्रिया डालने वाला एक ईश्वर और तुम्हारे मत में भी होना चाहिए और उसमें डालने वाला और इस प्रकार अनवस्था है।

दूसरा दोष वैश्या के पैदा करने में ईश्वर दयालु कैसे है। कसाई के पैदा करने में ईश्वर अच्छा कैसे है।

इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया कि जड़ में चेतन क्रिया डाला करता है। चेतन तो स्वतः चेतन है उस में चेतनान्तर की कल्पना ठीक नहीं।

परमेश्वर वैश्या पैदा नहीं करता पर वह तो परम पवित्र स्वच्छहृदया बालिका पैदा करता है। फिर वह कार्य करने में स्वतन्त्र है।

स्वभाव आप का जगत्करण नहीं बन सकता, नानाविधसर्ग आप ही माने बैठे हैं। कर्म आप के नहीं बनते हैं, वे जड़ हैं। पं० जी को अपना पक्ष सिद्ध होना नहीं पता लगता क्योंकि शायद जैन पं० जी वीर हैं।

जै० पं० जी ने प्रश्न किया कि जब ईश्वर सर्वज्ञ था तो जानते हुए भी उस ने वेश्या को पाप से क्यों नहीं रोका।

स्वामी जी ने उत्तर दिया कि यदि पहले ही वह हाथ पकड़ कर रोक देता तो यह उस चेतन पर अत्याचार था। शिक्षा तो भय शंका लज्जादि द्वारा दी ही थी। यदि उसे भी तोड़कर कोई पाप करे तो उस पर दण्ड के सिवाय और क्या गति।

इस प्रकार जैन पण्डित जी के साथ आर्य्य पुरुषों का शास्त्रार्थ हुआ था। हार जीत की तो कोई शर्त्त ही न थी। तिस पर भी पं० जी अपने पक्ष में ईश्वर को कर्त्ता न मानने से आने वाले दूषणों को सुनकर चुप रहे, इस का मतलब क्या सिवाय 'सौनमर्द्धु स्वीकारे' के।

सुननेवाली पब्लिक ने जो निर्णय किया होगा वही अन्तिम फैसला होसकता है। यूं ही कालका आदि स्थानों पर स्वतः डींगें मारने से क्या कहीं जीतें हुई हैं। हम अधिक इस विषय पर लिखना नहीं चाहते।

एक दर्शक

१०००० आम व लीची के क़लम मुफ्त।

नियम और सूचीपत्र के लिए आज ही लिखिये। कलमों के तो पकाने का बहुत अच्छा समय बीत रहा है। पता—नर्सरी पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी

अभी थोड़े दिन हुए कि बाबू वसन्तकुमार चटर्जी सहायक कप्तान पुलिस को कलकत्ते में किसी ने गोली से मार डाला था। अब गवर्नमेन्ट बङ्गाल ने यह घोषणा की है कि जो अपराधियों का पता लगावेगा उसे १५०००) पारितोषिक दिये जावेंगे।

जब हमारे युवक विलायत की उच्चश्रेणी की परीक्षाएं पास करते हैं तो प्रसन्नता होती है, परन्तु जब युवतियां भी पास करने लग जायं तो और भी अधिक प्रसन्नता होती है। यह बात प्रसन्नता से सुनी जायगी कि श्रीमती मिस चटोपाध्याय कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के मारल साइन्स की उच्च श्रेणी की परीक्षा में बड़ी सफलता पूर्वक उतीर्ण हुई है। यह देवी श्रीमती सरोजिनी नायडू की बहिन हैं। इस परिवार से भारत का मुख उज्ज्वल हो रहा है।

मिस एवरेस्ट का जो विलायत के ज़िला केन्ट में हिवर नामक नगर में रहती थी गत मार्च में देहान्त हुआ। इस ने मरते समय २२३७३ पौंड की जायदाद छोड़ी थी, जो भिन्न २ कामों में वसीयत के अनुसार व्यय की जायगी। इस में से एक बड़ी रक़म भारतवर्ष में कालिज खोलने के लिए लगाई जायगी, जिस में भारत वासियों को पढ़ाया जायगा और शिक्षक सब भारतवासी ही नियत किए जावेंगे। इस देवी के दान के लिए भारत वासी बड़े कृतज्ञ हैं क्योंकि इस से भारतवासियों की शिक्षा में कुछ हद तक सहायता पहुंचेगी।

पण्डित रामभजदत्त के मुकदमें का फैसला अभी नहीं हुआ। हमारी तहकीकी चिट्ठी के जवाब में जो पं० रामभजदत्त चौधरी के मुकदमे के परिणाम के सम्बन्ध में थी हमें मिस्टर ए० कैम्बल साहब आई.सी.एस. रजिस्ट्रार चीफ कोर्ट पञ्जाब का निम्नलिखित पत्र ति० १५ जुलाई १९१६ को प्राप्त हुआ है:—

"श्रीमान्— आप के पत्र ता० १५ जुलाई १९१६ के उत्तर में मुझे लिखने की आज्ञा दी गई है कि चीफकोर्ट से, इस मुकदमे में जो कानूनी पेशा लोगों के कानून के अनुसार चलाया गया था, और जिस का आपने अपनी चिट्ठी में हवाला दिया है, अन्तिम आज्ञा अभी तक नहीं सुनाई गई है।" (ट्रिब्यून) अर्थात् जो नोटिस लाला हीरालाल कपूर ने समाचार पत्रों में भेजे थे वे ठीक निकले जैसा कि रजिस्ट्रार के पत्र से पता लगता है। "देश"

सर रविन्द्रनाथ टेगोर अपने साथियों सहित, जिन में मिस्टर एन्ड्रयूज़ भी हैं, मई मास के अन्त में कोब में पहुंच गये हैं। वह बसन्त ऋतु तक जापान ही में रहेंगे, यह समय वह जापानी रहन सहन तथा प्रसिद्ध स्थानों के देखने में व्यतीत करेंगे। राजधानी में रहने के लिये इन को एक पूर्ण जापानी ढंग का बना मकान सेयोकन (ऊयेनो पार्क) में दिया जायगा। गत ६ जून को इण्डिया-जापान एसोसिएशन की ओर से इन का स्वागत किया गया।

सामाजिक समाचार

५ श्रावण को आर्य्य समाज जम्मू में श्री लाला हंसराज जी तथा प्रो० दीयानचन्द्र जी के प्रभाव शाली तथा मनोहर व्याख्यान हुए। जिन का उपस्थित जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा। भीड़ इतनी बतलाई जाती है कि स्थानाभाव से कई महाशयों को वापिस जाना पड़ा।

आर्य्य समाज लायलपुर का वार्षिकोत्सव २७—२८ तथा २९ अक्टूबर सन् १९१६ को होगा—श्री मन्त्री जी आर्य्योपदेशकों, सन्यासी महात्माओं तथा सर्व आर्य्य पुरुषों को इस धर्मोत्सव में सम्मलित होने की प्रार्थना करते हैं।

पंजाब के भूतपूर्व आर्य्योपदेशक पं० सदानन्द आज कल सिंगरा मिशन सोसाइटी बनारस के फन्दे में हैं। उस के भाई पं० अनन्तराम तथा धर्म पत्नी श्रीमती चन्द्रावती देवी उस से मिलना चाहते थे, परन्तु उन को मिलने की आज्ञा नहीं दी गई। म० सदानन्द की आयु इस समय ३४ वर्ष की है और उसका विवाह हुए अभी चार मास ही हुए हैं। उसने अब तक वैपतिस्मा नहीं लिया है। इस घटना से आर्य्य समाजियों में सनसनी फैल रही है। बहुत से आर्य्य समाजी बाहर से भी आये हैं आर्य्य समाज मन्दिर में एक विशेष व्याख्यान का प्रबन्ध किया गया है। अब तक स्थानीय ईसाईयों तथा आर्य्यसमाजियों में मित्रता का घनिष्ठ सम्बन्ध है।

आर्य्य समाज ब्लाक नं० २ सरगोधा का पांचवा वार्षिकोत्सव २९, ३० सितम्बर तथा १ अक्टूबर १९१६ को होगा।

पानीपत में श्री डाक्टर श्रीराम जी की पुत्री कमला देवी का विवाह श्री बाबू मुखतारसिंह जी नकल नवीस सहारनपुर के साथ पूर्ण वैदिक रीति से हुआ। नगर निवासियों ने बड़े प्रेम से इस संस्कार को देखा। प्रभाव उत्तम पड़ा। इस शुभ अवसर पर वरपक्ष की ओर से १३) तथा कन्या पक्ष की ओर से २५) विविध संस्थाओं को दान दिया गया—

सरस्वती विद्यालय अहरोला का प्रथम वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से विद्यालय की भूमि में मनाया गया, जिस के प्रधान गोहल खरड़ डिविज़न के कमिश्नर साहब थे, जो विद्या के कार्य्य में विशेष रुचि रखते हैं। स्वामी अनुभवानन्द जी आदि के अच्छे व्याख्यान हुए।

श्री मन्त्री जी गुरुकुल विद्यालय हरपुरजान डाकखाना राजा पट्टी ज़िला सारन सूचना देते हैं कि उक्त गुरुकुल में दशहरे के दिन नये २० ब्रह्मचारियों का प्रवेश होगा जिन की आयु ८ से १० तक की होनी चाहिये। अतः प्रार्थना पत्र उक्त तिथि से पूर्व पहुंच जाने चाहियें।

आर्य्य समाज बुजरगवाल जिला गुरदासपुर का दूसरा वार्षिकोत्सव २३, २४ तथा २५ जून १९१६ को सानन्द समाप्त हुआ। इस में पं० पूर्णानन्द जी, पं० पूर्णचन्द्र जी, पं० चन्द्रभानु जी, म० कृष्ण व स्वामी धर्म्मानन्द जी पधारे थे इनके प्रभाव शाली व्याख्यानों से लोगों पर बड़ा प्रभाव पड़ा। ३०) दान आया, जिस में से २६) वेद प्रचार फण्ड में डाला गया।

७ जौलाई १९१६ को जगाधरी में आर्य्य कुमार सभा फिर स्थापित हो गई है।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

(१) स्वास्थ्य ब्रह्मचारियों का उत्तम है रोगी गृह में केवल दो ब्रह्मचारी हैं जिन्हें साधारण ज्वर था वह भी अब अच्छे हैं। त्रैमासिक परीक्षा हो चुकी जिस का परिणाम संतोषजनक रहा।

(२) ऋतु सुहावनी है-यद्यपि वर्षा अधिक नहीं हुई तथापि गर्मी नाम मात्र ही रही सारा ग्रीष्म ऋतु में ११० श० से अधिक पारा नहीं बढ़ा अब कई एक दिनों से ८५ है-वर्षा तीन दिन से निरन्तर हो रही है।

(३) देहली से पं० जानकी नाथ जी ने ७० थाली तथा ७० लोटे भिजवा दिए हैं अब पात्रों में केवल ७० कौल और चाहिएं।

(४) इस वर्ष ब्रह्मचारियों को फल खूब मिलते रहे खरबूजा तो अपने यहां ही अधिकता से हुआ था, अब आम भी प्रायः प्रति दिन ही मिल जाते हैं। मुरादाबाद से म० त्रिभुवन जी और मुज़फर नगर से म० बुलाकीराम काशीराम आढती, तथा गोरखपुर से डा० रामस्वरूप जी ने कलमी आमों के भेजने की कृपा की है।

(दो आवश्यकतायें)

(५) पुस्तकालय के लिये श्री० स्वामी जी कृत सम्पूर्ण वेद भाष्य तथा महाभारत संस्कृत और ब्रह्मचारियों के लिये ७० चारखाना मोटे ऊनी कम्बलों की आवश्यकता है।

श्री मन्त्री जी आर्यसमाज सहारनपुर सूचना देते हैं कि

(१) लाला हाकिमराय जी प्रधान आर्यसमाज सहारनपुर के क्वेटे तबदील हो जाने पर अन्तरङ्ग सभा आर्यसमाज सहारनपुर तारीख ४-६-१६ के निश्चयानुसार उक्त समाज के पदाधिकारियों में निम्नलिखित परिवर्तन हुआ:—

१ लाला मेलाराम जीवकील प्रधान

२ म० शालिग्राम जी मन्त्री

३ पं० शंकरदास जी एस०डी०ओ० मिलटरी वर्क्स सहकारी मन्त्री

(२) लाला धनयालाल जी समासद आर्यसमाज सहारनपुर की पौत्री के विवाहोत्सव पर आर्यसमाजिक संस्थाओं के लिए १५०) का दान स्थानीय आर्यसमाज को प्राप्त हुआ।

(३) एक नौजवान लड़का जोकि धिमान कौम का था मुसलमानों से अधिक हेल मेल रखने के कारण मुसलमान होगया था, ता० ९-७-१६ को उसकी शुद्धि आर्यसमाज में की गई।

आवश्यकता

शाखागुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिए एक आलेख्या ध्यापक (Drawing Master) की आवश्यकता है। आर्यसमाजिक हो तो अच्छा है। वेतन २०) से २५) मासिक तक योग्यता नुसार। प्रार्थना-पत्र नीचे लिखे पते से भेजें—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी
ज़िला बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण

विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी। प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा संशोधित। अश्लील वाक्यों से मुक्त। कन्याओं के हाथ में बिना संकोच देने योग्य।

संस्कृत प्रवेशिका——————)
संस्कृत साहित्य पाठावली: २यभाग =)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——————)
काव्य लतिका——————॥।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र १म भाग ॥)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्गाधिकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाप्रणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)

ऋषि दयानन्द कृत वेदाङ्ग प्रकाश

१ कारकीयः	≡)	के स्थान में	=)
२ आख्यातिक	१।)	"	१)
३ उणादीकोषः	॥=)	"	।≡)
४ स्त्रैण तद्धित	१≡)	"	१)
५ पारिभाषिक	≡)॥	"	=)
६ गणपाठ	।-)	"	≡)
७ निघण्टु	।=)	"	।)
८ सामासिकः	।)	"	≡)
९ अव्ययार्थ	-)॥	"	-)
१० नामिक	।≡)॥	"	।=)
११ सौवर	=)॥	"	=)
१२ सन्धिविषय	।≡)॥	"	।=)
१३ वर्णोच्चारण शिक्षा	-)	"	)॥।

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली सचित्र १म भाग ।=)
तथा द्वितीयभाग ।-)

विज्ञान

रसायन—विलयम एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितम्—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

अन्य उपयोगी पुस्तकें।

१. एकान्तवासी योगी-(Goldsmith's Hermit) का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध श्रीधर पाठक जी कृत ≡)
२. चन्द्रशेखर। प्रसिद्ध कवि बैंकिमचन्द्र द्वारा रचित का हिंदी अनुवाद १)
३. भारतवर्ष का सच्चा इतिहास १॥) (भासकर यन्त्रालय मेरठ)
४. शिशुपाल वध (मुम्बई) २)
५. शिवराज विजय [बनारस] २)
६. साहित्य दर्पण [बम्बई] ३)
७. First Aid to the injured का हिन्दी अनुवाद ॥।)
8. The 1st step in teaching of English on Direct method by Nelson Fraser M.A. -)॥
9 The 2nd part Do -)॥
10 " 3rd " " =)॥
11 " 4th " " =)॥
१२. संक्षिप्त महाभारत संस्कृत वेद्य कृत २)
१३. Bacon's Essays का हिन्दी अनुवाद ।=)

श्री स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेद भाष्य भूमिका, पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि और गुरुकुल के उपाध्यायों की बनाई सब पुस्तकें यहां से मिल सकती हैं।

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. By Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
The life of Swami Dayananda. By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The works of the late P. Gurudatt Vidyarthi M.A. 1.0.0
The Hand book of the Arya Samaj by P. Vishnu Lal M. A. /6/-
Is Arya Samaj a Political Body? Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— 0-1-0
The Arya Samaj and its Detractors—A Vindication—by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bharadwaja—2d edition—superior paper—First ten chapters only. —Rs. 3-0-0

आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. संक्षिप्त महाभारत पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ३) के स्थान में २।)
2. Macmillans English Readers for United Provinces
Agra and Oudh-Part 1 /4/.
Do 2 /4/.
३. उपनिषदें श्री शंकराचार्य्य भाष्य सहित आनन्द आश्रम पुना की मुद्रित

बृहदारण्यकोपनिषद्	८)	के स्थान में	५॥)
छान्दोग्य	,,	५)	,,	३॥)
प्रश्न	,,	१)	,,	॥≡)
ईश	,,	॥।=)	,,	॥=)
केन	,,	१)	,,	॥≡)
कठ	,,	१)	,,	॥≡)
माण्डूक्य	,,	२।-)	,,	१॥)
तैत्तरीय	,,	१॥।)	,,	१।)
मुन्डक	,,	॥=)	,,	॥)
एत्तरेय	,,	१।)	,,	१=)

४. चम्पु रामायण संस्कृत मुम्बई २) के स्थान में १॥)
५. चम्पु भारत मुम्बई २॥) " २)
६ हर्ष चरित मुम्बई २) " १॥)
७. प्रसन्न राघवम् ॥।) " ॥)
८. भूगोल हिन्दी हिल साहिब कृत Indian press Allahabad से मुद्रित
९. सोमनाथ जी आर्य्य कृत हिन्दी की १म तथा २य पुस्तकें
१० प्राचीन सभ्यता का इतिहास R. C. Dutt [बनारस]

२।० कमीशन पर

कमीशन के नियम

गुरुकुल रचित पुस्तकों पर १०) से २०) की पुस्तकों पर १०) सैकड़ा और अधिक पर १५) प्रति सैकड़ा।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | २२ श्रावण सं० १९७३ वि० | दयानन्दाब्द ३३ | ता० ५ अगस्त सन् १९१६ ई० | संख्या १७ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा सूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिलक इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यक्ता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वो० पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

विज्ञापन

"आर्य्य पुत्री पाठशाला लायलपुर के वास्ते दो अनुभवी आर्य्य अध्यापिकाओं की बड़ी आवश्यकता है। वेतन २०) से ३०) तक दिया जायगा। प्रार्थना पत्र शीघ्र आने चहियें।" १० से १६ तक

हरिश्चन्द्र
मंत्री आर्य्यसमाज
लायलपुर

—:o:—

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवर्ण का महान् ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार है मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवर्ण युक्त निर्णय का ६०० से अधिक पृष्ठ पर पूरा हुवा सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २ अनेकों सरकारी रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्टों के फैसिले, श्री जगद्गुरू शंकराचार्य्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्म्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥)

पता:—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मैनेजर श्रोत्रिय पुस्तकालय डा० फुलेरा जि० जयपुर।

CCO. Gurukul K

गुरुकुल समाचार

स्वास्थ्य का सम्बन्ध ऋतु के साथ घनिष्ट है। इस समय ऋतु आदर्श है। पहले जो कुछ इस विषय में लिखा जा चुका है वह सब गत तीन चार दिनों की झड़ी ने मात कर दिया है। इस लिए चिकित्सालय भी, बीमारों से लगभग ख़ाली है।

परीक्षाओं का आरम्भ होगया। नवम् तथा दशम् श्रेणियों की परीक्षा १६ श्रावण से ही आरम्भ होगयी थी। महाविद्यालय विभाग की परीक्षा १८ श्रावण से हो रही है। इन सब श्रेणियों की परीक्षा २३ श्रावण को समाप्त हो जायगी और परिणाम प्रायः २५ श्रावण को सुना दिया जायगा। उसी दिन से उपाध्याय गण गुरुकुल भूमी छोड़ना प्रारम्भ कर देंगे।

गुरुकुल विश्वविद्यालय की प्रथम तीन श्रेणियां, गंगा पर पुल तय्यार होते ही, दिल्ली के समीप चली जायंगी। आगामी वर्ष के भरती होने वाले ब्रह्मचारी भी वहीं जायेंगे। आर्य्यप्रतिनिधि सभा का अन्तरंगाधिवेशन मायापुर बाटिका में गत शनिवार १५ श्रावण (२९ जुलाई) को हुआ था। उसमें निश्चय होगया है कि ३ श्रेणियां दिसम्बर तक उस नए भवन में चली जावें जो सेठ रघूमल जी की उदारता से, दिल्ली से मथुरा जाते हुए, तुगलकाबाद के पास, बन गया है। यहां से श्रेणियां परिवर्त्तन करने में जो व्यय होगा उसकी भी स्वीकृति उक्त सभा ने करदी है। सेठ रघूमल जी ने ५०,०००) में जो भवन बनवा दिया है वह बहुत ही खुला और हवादार है। स्थान भी वह बड़ा रमणीय है। पहाड़ी और मैदान दोनों के दृश्य है। विशेष वर्णन स्थान और मकानों का पीछे होगा, इस समय इतलाना यह है कि उक्त पहाड़ी का वायु स्वास्थ्य के लिए बहुत उत्तम है और आशा की जाती है कि वहां जाने से छोटे ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य में बहुत उन्नति होगी।

इस नए शाखागुरुकुल की प्रतिष्ठा नवम्बर के अन्त वा दिसम्बर मास के आरम्भ में होगी। यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया जावेगा। दिल्ली निवासी तो इस में सहस्रों की संख्या में सम्मिलित होंगे ही, जो ब्रह्मचारी दिल्ली जारहे हैं उनके संरक्षक भी स्थान देखने पधारेंगे ही परन्तु पंजाब और संयुक्त प्रान्त की अन्य आर्य्यजनता को इस अवसर पर अवश्य आना चाहिए। श्री सेठ रघूमल जी ने अपने स्वर्गवासी भाई सेठ जग्गूमल के स्मारक में ५०,०००) तो इमारत के लिए देडाला है और यदि चार पांच हजार और लगेगा तो वह भी देदेंगे; परन्तु प्रतिष्ठा के समय श्री सेठ जी ५० सहस्र का चैक गुरुकुलाचार्य के हवाले करेंगे जो इस शाखा के स्थिर कोष का पहला बीज होगा और जिसका सूद ही व्यय हुआ करेगा। सेठ रघूमल जी ने प्राचीन ब्रह्मचर्य प्रथा के पुनर्जीवित करने में बड़ा अनुकरणीय काम किया है।

पुरुषार्थ निधि की नई अपील में गतांक तक १४९५) की आय दिखाई जाचुकी है। इस सप्ताह में निम्नलिखित धन और आया है:—१००) श्री पण्डित मूलजन्द्र जी सब डिविज़नल आफ़िसर दिल्ली—५०) श्री पं० गुरांदित्ता जी, रिटायर्ड स्टेशन मास्टर अमृतसर—

—:०:—

गोरक्षा के लिए अपील।

कलकत्ते के ग्वालों का अत्याचार और पापविहित कार्य प्रायः धार्मिक सज्जनों पर अविदित नहीं होगा। ये लोग प्रति वर्ष लाखों गौ बछड़ों को कसाइयों के हाथ बेचते हैं। फूंका दे देकर गायों का दूध निकालते रहते हैं। दूध बन्द हो जाने पर उन गौओं को भी कसाइयों को दे देते हैं। इस अधर्म्म कार्य के निवारणार्थ और गौमाता की प्राण रक्षा हित कलकत्ते के समीप लिलुआ में श्रीकृष्ण गोशाला की ओर से ग्वालों के एवं गौओं के सुरक्षित रखने के लिये २०० बीघा खरीदी हुई भूमि पर गो-धर्म्मशाला बनाना निश्चत किया गया है। ग्वालों ने भी लिलुआ में रहना स्वीकृत कर लिया है।

अतएव सम्पूर्ण गो-सेवक ब्राह्मण, साधु सन्यासी, महात्माओं से निवेदन है, कि आप लोग गो-माता की वृद्धि के लिये समस्त गावों में फिर फिर कर गो भक्तों से अपील करें और उपदेश दे देकर द्रव्य एकत्रित करें। इस एकत्रित द्रव्य से लिलुआ में गौओं के लिए सुरक्षित धर्म्मशाला बनायी जायगी।

प्यारे गो-सेवकों और श्री कृष्णचन्द्र आनन्द-कन्द के दुलारे भक्तों के कायिक परिश्रम बिना ऐसे महायज्ञ की पूर्ति नहीं हो सकती। क्योंकि ऐसे धार्मिक कार्यों की पूर्त्ति राजा दलीप सरीखे हार्दिक प्रेमियों द्वारा ही परम्परा से होती आयी है। आप लोग अन्यान्य तीर्थों के अतिरिक्त इस गो-रक्षा क्षेत्र में भी स्नान कर अक्षय पुण्य के भागी बनिये।

भ्रमण करने वाले धर्म्मवीर सज्जनों को श्री कृष्ण गोशाला की ओर से प्रमाण पत्र दिए जायेंगे, जिससे दान-वीरों और धार्मिक सज्जनों के चित्तमें द्रव्य देते हुए किसी प्रकार की शंका न उत्पन्न हो।

जगन्नाथ झुंझुन वाला,
स० मन्त्री श्रीकृष्णगोशाला;
कलकत्ता।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

उपदेशक क्यों नहीं मिलते ?

आर्यसमाज को उपदेशक नहीं मिलते। उपदेशकों की अत्यन्तआवश्यकता बहुत है, किन्तु योग्य पुरुष वेदप्रचार विभाग में सेवा करने के लिये तय्यार नहीं होते। इसी विषय को लेकर सहयोगी प्रकाश लिखता है—

"सवाल और ऐसा सवाल जिस का हल नज़र नहीं आता, यह है कि उपदेशक कहां से आयंगे। इस समय आर्यसमाज में उपदेशक नहीं हैं, और नहीं लोग उपदेशक बनने को तय्यार हैं। इस लिये यह मुश्किल तो बनी रहेगी। न ही पंजाब और न ही संयुक्त प्रान्त में कोई ऐसी पाठशाला है जहां उपदेशक तय्यार किये जा रहे हों। ऐसी हालत में सवाल तो काबिल गौर यह है कि उपदेशक कहां से आयं। चूंकि समाज में उपदेशकों को वह दर्जा नहीं दिया गया, जो उन का हक़ था, इस लिये नौजवान उपदेशक बनने से झिझकते हैं। और जो बनते हैं, वे इस टोह में रहते हैं कि किसी तरह आर्यसमाज से कुछ लेना न पड़े। वेदप्रचार के मुताल्लिक तजवीज़ पेश हुई, और होंगी। सवाल काबिल गौर तो यह है कि उपदेशक कहां से आयं। यह कहने की हाजत नहीं कि अगर चन्द साल तक उपदेशक पैदा करने का यत्न न किया गया तो आर्यसमाज का भविष्य तारीक समझना चाहिये"

इस सारे लेख का संक्षिप्त सारांश यह निकलता है (१) आर्यसमाज को योग्य उपदेशक नहीं मिलते (२) आर्यसमाज के पास उपदेशक बनाने के योग्य कोई पाठशाला नहीं है (३) आर्यसमाज में उपदेशकों का उचित आदर नहीं होता, इस लिये भी योग्य पुरुष, जो आदर के प्रार्थी हैं उपदेशक नहीं बनते। इन्हीं तीन स्थापनाओं को लेकर आज हम कुछ निवेदन करना चाहते हैं।

इन में से पहली समस्या के विषय में हमें कुछ भी वक्तव्य नहीं है। प्रकाश के सम्पादक महोदय पंजाब की आर्य प्रतिनिधिसभा के मन्त्री भी हैं। वे कहते हैं कि योग्य पुरुष आर्यसमाज में नहीं आना चाहते—यह बिलकुल ठीक है। उन्हें प्रायः योग्य पुरुषों को उपदेशक बनने के लिये प्रेरित करना पड़ता होगा—और वे लोग तय्यार न होते होंगे। औरों की अपेक्षा इस विषय में मन्त्री जी अधिक प्रमाण भूत हैं। किन्तु एक बात अवश्य है। प्रकाश के सम्पादक या सभा के मन्त्री महाशय वर्त्तमान समय के विषय में अधिक प्रमाण भूत हो सकते हैं—भूतकाल के लिये हमें पुराने आर्य पुरुषों और सभाओं के विवरणों की सहायता लेनी पड़ती है। उन से हमें ज्ञात होता है कि वेद प्रचार की ओर योग्य पुरुषों का सदा से ऐसा ही भाव नहीं रहा। ऐसा भी एक समय था जब आर्य पथिक लेखराम जी, पं० पूर्णानन्द जी और पं० आर्यमुनि जी जैसे विद्वान् और ब० बज़ीरचन्द विद्यार्थी जैसे जोशीले सज्जन आर्य प्रतिनिधिसभा की उपदेशकता को अनादर का हेतु नहीं समझते थे। उस समय तो प्रतिनिधिसभा का उपदेशक पद तिरस्कृत नहीं समझा जाता था। इस समय भी प्रतिनिधिसभायें उसी पुरानी पूंजी की कमाई खा रही हैं। इस लिये प्रकाश के सम्पादक महाशय की प्रथम स्थापना केवल वर्त्तमान समय के विषय में है। इतने दिनों में योग्य विद्वानों के इस विचार परिवर्तन का क्या कारण है? अब पण्डित या योग्य सज्जन क्यों उपदेशता की ओर नहीं झुकते? सम्पादक महाशय को कोई ऐसे कारण बतलाने चाहियें थे। क्या आर्य पथिक लेखराम या पं० पूर्णानन्द जी या पं० आर्यमुनि जी आर्य प्रतिनिधिसभा की किसी वैदिक पाठशाला के ही विद्यार्थी थे? और जालन्धर या गुजरांवाले में जो वैदिक पाठशाला थी, उस के पढ़े हुए कितने पंडित आज प्रतिनिधि सभाओं की सेवा में हैं? सम्पादक जी ने इस पर कोई प्रकाश नहीं डाला।

इन उपर्युक्त विचारों से प्रतीत होता है कि प्रथम स्थापना को समझाने के लिये केवल दो बातों का कह देना पर्याप्त नहीं है—यह प्रश्न ऐसा सहल नहीं है। पहले में और अब में इतना भेद क्यों है? क्या पहली वैदिक पाठशाला ने आर्यसमाज की योग्य उपदेशकों की न्यूनता को कम कर दिया था। हमारे कालिजी भाइयों के पास उपदेशक पाठशाला है—क्या उन्हें योग्य उपदेशक न मिलने की वैसी ही शिकायत नहीं है, जैसी हमें है? संयुक्त प्रान्त में दो एक उपदेशक पाठशालायें हैं—क्या उस प्रान्त के मंत्री महाशय भी ऐसी शिकायत नहीं करते। तब उपदेशक पाठशाला के अभाव को ही मुख्य कारण बतलाना कहां तक उचित है?

इस के साथ ही एक और आवश्यक प्रश्न उठता है। पंजाब और संयुक्तप्रान्त की प्रतिनिधियों के पास एक २ गुरुकुल हैं। पंजाब के पास तो कई शाखाओं से युक्त एक पूरा २ गुरुकुल वृक्ष है। आर्य्यसमाज ने इन गुरुकुलों को अपने रुधिर से सींचा है। सारा आर्यसमाज, आर्य्य प्रतिनिधि सभा और गुरुकुल के कार्य कर्त्ता भी स्वीकार करते हैं कि गुरुकुल का एक बड़ा मुख्य उद्देश्य वैदिक धर्म के उपदेशक तथा प्रचारक उत्पन्न करना है। इस से किसी को भी इन्कार नहीं है। एक साधारण बुद्धि वाला पुरुष भी समझ सकता है कि गुरुकुल में आर्य सिद्धान्त विषय को मुख्य स्थान देने का एक बड़ा कारण यही है। गुरुकुल का जीवन, उस की पाठविधि-गुरुकुल का सब कुछ उत्तम योग्य और परिश्रमी प्रचारक तय्यार करने की ओर झुकता है। यह एक सर्वसम्मत बात है। किन्तु आज हमें आर्यप्रतिनिधिसभा के मन्त्री महाशय के लेख से एक नई बात ज्ञात हुई है। आज हमें बताया गया है कि आर्यसमाज के पास योग्य उपदेशक

CCO, Gurukul Kangri Collection

बनाने का कोई भी साधन नहीं है । यह आश्चर्य की बात है । सभा के एक ऊंचे अधिकारी की ओर से ये शब्द कानों को खटकते हैं ।

किन्तु शायद पाठक हमारी दो बातों में परस्पर विरोध समझेंगे। यदि गुरुकुल से योग्य उपदेशक तय्यार हो सकते हैं, तो फिर मन्त्री महाशय को इस शिकायत का अवसर क्यों मिला कि हमें योग्य उपदेशक नहीं मिलते ? वस्तुतः यह एक विरोध प्रतीत होता है । हम भी पाठकों का ध्यान इसी विरोध—या विरोधाभास—की ओर खींचना चाहते हैं । गुरुकुल से अभी तक स्नातकों के चार समूह निकल चुके हैं—किन्तु उनमें से कोई प्रतिनिधि सभा के उपदेशक विभाग की सेवा में नहीं गया । इसका क्या विशेष कारण है ?

क्या स्नातकों में उपदेशक बनने की विद्यासम्बन्धी योग्यता नहीं है ? यह कहने का कोई भी साहस नहीं कर सकता । हम उस साहसिक का नाम जानना चाहते हैं जो यह कहने को तय्यार हो कि गुरुकुल के स्नातकों की शास्त्रीय योग्यता और साधारण योग्यता प्रचारक बनने के लिए अपर्याप्त होती है । कम से कम मन्त्री जी का तो ऐसा विचार नहीं हो सकता ।

क्या स्नातकों में सेवा करने के लिये उमंग नहीं है ? इस प्रश्न के उत्तर में 'नहीं है' कहने वाला बड़ा हिम्मती पुरुष होना चाहिए । इस समय कांगड़ी गुरुकुल में नौ स्नातक काम करते हैं—जिनमें से दो स्थिर सेवक हैं—तीन स्थिर सेवकों के वेतन पर ही काम करते हैं—और शेष चार केवल २५) मासिक पर सेवा कर रहे हैं । गुरुकुल की दो शाखाओं में दो स्नातक भी २५) मासिक पर ही कार्य करते हैं । ये बातें गुरुकुल के स्नातकों में सेवाभाव के अभाव को तो सूचित नहीं करतीं । पं० ब्रह्मदत्त जी देर से आर्यसमाजों में प्रचार का काम कर रहे हैं और प्रायः उत्सवों तथा अन्य अवसरों पर घूमते रहते हैं । वे इस कार्य को बिना किसी आर्थिक लब्धि के करते हैं । क्या इन उपर्युक्त सत्य बातों को देखता हुआ कोई बुद्धिमान् पुरुष कह सकता है कि स्नातक सेवा करना नहीं चाहते । गुरुकुल में काम करने वाले स्नातक गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता जी की आज्ञा से प्रायः उत्सवों पर जाते रहते हैं । स्नातक बुद्धदेव जी पिछले छः महीनों में कई उत्सवों में प्रचार के लिए भेजे गए थे । सारांश यह है कि यह कारण भी ठीक नहीं है ।

तब गुरुकुल के स्नातक आर्यप्रतिनिधि सभा के उपदेशक क्यों नहीं बनते? आर्यप्रतिनिधि सभा से उन्हें कोई द्वेष नहीं है । गुरुकुल की स्वामिनी सभा आर्यप्रतिनिधि सभा है । जो गुरुकुल के सेवक हैं । वे सभा के सेवक पहले हैं । इस लिए यह कारण भी नहीं कहा जा सकता ? तब कोई और ही कारण होना चाहिये जो अब जहां एक ओर आर्यपथिक लेखराम जी, और पं० आर्यमुनि जी जैसे विद्वानों को आर्यप्रतिसभा की सेवा में भर्ती होने से रोकता है वहां दूसरी ओर सेवा करने की प्रबल इच्छा रखने वाले स्नातक मण्डल को भी आर्यप्रतिनिधिसभा की उपदेशकता स्वीकार करने से पीछे हटाता है । वह कोई व्यापक कारण होना चाहिये ।

प्रकाश के सम्पादक महाशय ने एक और कारण लिखा है । आपकी सम्मति है कि आर्यसमाज में उपदेशकों को वह दर्जा नहीं, जो उनका हक़ है । हमारी राय में यह सम्पादक महाशय की सरासर भूल है, और आर्यसमाज पर मिथ्या दोषारोपण है। आर्यसमाज अपने उपदेशकों का आदर नहीं करता—यह कहना सर्वथा भ्रममूलक है । हां—यदि सम्पादक महाशय यह कहते कि आर्यसमाज अपने उपदेशकों को यथोचित आदर देता है—अनुचित आदर नहीं देता तो बिलकुल ठीक होता । शायद सम्पादक महाशय इसके उत्तर में कई समाजों की घटनाएं छापदें—जिन में किसी एक उपदेशक महाशय का निरादर हुआ है । किन्तु हमारा कथन है कि ऐसी घटनायें अपवाद रूप हैं । ऐसा कहीं कहीं होता है—प्रायः नहीं । जहां तक हमने सुना या देखा है आर्यसमाजी सज्जन अपने उपदेशकों का यथोचित आदर करते हैं । हां—जहां किसी उपदेशक महाशय की मांग सीमा से बढ़ जाय—वहां यदि समाज के मन्त्री महाशय उपेक्षा कर जायं तो उन का दोष नहीं । एक दृष्टान्त लीजिए । करनाल के ज़िले में एक स्थान पर आर्यकुमार सभा का उत्सव था । वहां दो भजनीक महाशय बुलाये गये । उन की सब से बड़ी मांग यह रहती थी कि उन्हें पीने के लिए तमाकू मंगा कर दिया जाय । मन्त्री महाशय ऐसा वैदिक कार्य करने में असमर्थ हुए । इस पर भजनीक महोदय समाजके अधिकारियों से बहुत ही नाराज़ हुए ।

हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि आर्यसमाजों में उपदेशकों का यथोचित आदर होना नियम है—और इस से उलटा होना अपवाद है—कभी २ होता है । मन्त्री महाशय का यह लिखना कि आर्यसमाज ने उपदेशकों का उचित आदर नहीं किया—ठीक नहीं । प्रतिनिधिसभा के मन्त्री महाशय जिस उपदेशक मण्डली को समाजों में भेजते हैं, वह जितने आदर तथा सम्मान के योग्य हैं, आर्यसज्जन उस में कोई त्रुटि नहीं रखते ।

कारण कोई और ही है । सम्पादक महाशय गुरुकुल के उद्देश्यों तथा अधिकारों को भुलाकर—उन का अपमान करके उस असली कारण को भुला नहीं सकते । गुरुकुल ही वैदिक सिद्धान्त के प्रचारक उत्पन्न कर सकता है अन्य विद्यालय नहीं । गुरुकुल इसी लिए खोला गया था—और इसी लिये चल रहा है ।

सम्पादक महाशय आर्यसमाजों पर यदि इस का दोष फैंकना चाहें, तब भी असली कारण नहीं छुप सकता । आर्यसमाजों ने अपने योग्य उपदेशकों का योग्य आदर किया है-और अब भी करते हैं ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

योग्यपुरुषों का अभाव नहीं है—और न ही सेवा करने की प्रबल इच्छा का अभाव है। आर्य समाज के पास उपदेशक तय्यार करने के साधन का अभाव कहने वाले सज्जन के विषय में क्या कहें—यह हम नहीं जानते, जबकि जिस सभा के वे मन्त्री हैं, उसी सभा ने हरिद्वार के समीप इतना धन व्यय करके एक गुरुकुल विद्यालय खोला हुआ है, जिस में उपदेशक बनने की विशेष योग्यता पाने की इच्छा रखने वालों के लिए कई छात्र वृत्तियां भी हैं।

असली कारण क्या है? इस प्रश्न का उत्तर हम शीघ्र ही पाठकों की भेंट करेंगे।

इन्द्र

—:o:—

"उषा"

गुरुकुल से निकलने वाली संस्कृत की मासिक पत्रिका "उषा" कई महीनों तक विश्राम लेकर अब फिर निकली है। अब जो अंक हमारे सम्मुख आया है, वह दो महीनों का इकट्ठा ही है। पत्रिका में लेख उत्तम हैं। स्नातक जयदेव, स्नातक ब्रह्मानन्द और पं० कन्हैया लाल शास्त्री के अतिरिक्त दो तीन ब्रह्मचारियों के भी लेख तथा कवितायें हैं। 'संस्कृत कविता का प्रथम अवतार' विषय पर सम्पादकीय लेख विचार योग्य है। स्नातक जयदेव जी के लेख में 'श्री शंकर' की खूब खोज लगाई गई है। इधर पुराण के मोक्ष और मुसल्मानों के सक्के की एकता दिखाने वाला लेख बड़ा मज़ेदार है। इस बार से "बालशिक्षणम्" शीर्षक देकर छोटे २ पाठ शुरू किए गए हैं— जिनकी संस्कृत बड़ी सरल है। ये पाठ साधारण पाठकों के लिए बड़े उपयोगी होंगे। इस अंक में "सम्पादकीय निवेदन" में विश्वास दिलाया गया है कि आगे को उषा नियम पूर्वक निकलती रहेगी। "उषा" के प्रेमी निराश न हों।

नंगे पांव

कीचड़ में से कमल का उत्पन्न होना अस्वाभाविक नहीं है। हीरे भी कंकरों में से निकल आया करते हैं। इस युद्ध ने भी मनुष्य जाति को कई लाभ देने का उपक्रम किया है। कई देशों में शराब का पीना रुक गया है। सब स्थानों पर मित व्ययता का प्रचार हो रहा है। पहले आवश्यकताओं का बढ़ाना सभ्यता का चिन्ह समझा जाता है आज उनको कम करने के लिये अपीलें हो रही हैं। इन बड़ी २ बातों के साथ एक और भी आवाज़ उठी है। इंग्लैण्ड की कौनहिल मेगज़ीन में एक सज्जन ने कम ख़र्ची पर लेख लिखते हुए बड़ा बल इस बात पर दिया है कि बच्चों को नंगे पांव रखना चाहिए। योरप के निर्धन परिवारों में ख़र्च की एक बड़ी रक़म बूटों पर व्यय होती है। लेखक महोदय लिखते हैं—"इस से स्वास्थ्य में जो उन्नति आयगी वह भी कम नहीं क्योंकि गीली जुराबों तथा बूटों के व्यवहार के कारण जो जुकाम या खांसी आदि रोग होते हैं, वे बहुत कुछ कम होजायंगे। इस में बच्चों को भी कोई कष्ट न होगा क्योंकि थोड़े अभ्यास के पीछे पैर कठोर से कठोर सर्दी और सख्त से सख्त सड़क को सह सकते हैं। उन स्काटलैंड के बालकों पर कोई दया नहीं करता जो अब तक गर्मी और सर्दी में नंगे पांव घूमते हैं।" लेख में प्रस्ताव किया गया है कि युद्ध समय के उपलक्ष में बच्चों को बूट पहिनाने की रीति उड़ादी जाय। हम पूछते हैं कि केवल युद्धसमय के लिए क्यों, सदा के लिए क्यों नहीं? जहां तक सम्भव हो, घर में नंगे पांव रहना बहुत उपयोगी है। कम ख़र्च होता है—और पूरा आराम मिलता है। किसी को इसकी उपयोगता तथा सम्भावना पर विश्वास न हो तो गुरुकुल आकर देखले।

पं० गोपीनाथ और आर्यसमाज

गोपीनाथ आर्यसमाज के पुराने मित्र हैं। यद्यपि पंजाब में पुनरावृत्ति करते हुए आपने आर्यसमाज से कन्धा भिड़ाने का विचार छोड़ दिया था—तो भी आप समाज को भुला नहीं सके। भुला भी कैसे सकें। परशुराम और रामचन्द्र एक दूसरे को कैसे भुला सकते हैं। २९ जुलाई के अंक में आप लिखते हैं—"एक मुझ अकेले को ही इज्ज़त हासल है कि तमाम मुलक की आर्यसमाजों में मेरा नाम इनके ख़ास दिल के अन्दरूनी से अन्दरूनी परदे की तह में मौजूद है" आपका यह लिखना भी ठीक है। जिस लेख में उपर्युक्त पंक्तियां आई हैं, वह डिटेक्टिव पुलिस के गले में जयमाला पहिनाने को लिखा गया है। आपको आर्यसमाजी सदा याद रखते हैं—इस लिए आपने उनका धन्यवाद किया है। हम आर्यसमाज की ओर से पं० गोपीनाथ जी को विश्वा दिलाते हैं कि आर्यसमाज उनके न्यवाद को बहु-मूल्य समझता है—भ विशेषतया जबकि वह धन्यवाद 'दिल अन्दरूनी से अन्दरूनी पर्दे की तह निकला हुआ हो। आर्यसमाज को धन्य वाद देकर आप पुलीस को डबल धन्य वाद का पात्र करार देते हैं क्योंकि उ ने कई बार आप की समाजी दोस्तों रक्षा की है। परमात्मा आप के इन न दोस्तों का कुशल क्षेम रखे—कोई समाज आप का बाल भी बांका नहीं कर सकेगा यदि आप की यह लेखमाला छः महीने तक जारी रही तो फिर शायद 'आप विरुद्ध या आप की आलोचना में दो ए शब्द लिखना भी कठिन हो जायगा

स्कूलों में स्ट्रायक

स्कूलों में स्ट्रायक धड़ाधड़ होते हैं अध्यापक और विद्यार्थियों के सम्बन्ध ठीक नहीं रहते। सब स्थानों से यह शिकायतें सुनने में आरही हैं। विद्यार्थ और अध्यापक का सम्बन्ध बहुत कु वैसा ही हो गया है—जैसा स्वामी औ सेवक में होता है। मज़दूर लोग मालि की किसी बात से नाराज़ हुए, मालि ने उन्हें कम वेतन या मज़दूरी दी, और हड़ ताल हो गई। इधर भी अध्यापक किसी विद्यार्थी को धमका दिया, य ज़रा कठोरता से बर्ताव किया—और हड़ ताल हो गई। जैसे मजदूरों की हड़तालों में मुख्य दोष मालिक का ही होता है जो अपने पैसे के लोभ से मज़दूरों अधिकार छीनता है, वैसे ही विद्यार्थियों की हड़ताल में अध्यापक की मुख्य उत्त दायिता है—जो विद्यार्थियों को वश नहीं रख सकता या प्रेम के बन्धन में नहीं बाँध सकता। जो मज़दूर किसी शिकायत विना काम छोड़ दे और जो विद्यार्थ कारण विना ही हड़ताल कर दे, उन क तो कहना ही क्या है? उन का त स्वभाव ही अपराधी है— परन्तु सामान्य तया स्वामी और अध्यापक का ही दो समझा जाता है। कारण क्या है कारण यही है कि हम लोग शिक्षा के उच्च आदर्शों को भूल गये हैं। आर्य जाति अपने पुराने वैदिक आदर्शों को भूलग है और शिक्षा का मूल्य भी टके जांचा जाने लगा है। गुरुकुल शिक्ष प्रणाली इसी भाव के विरुद्ध प्रतिवाद है।

CCO. Gurukul K

ध्यान दीजिए

आर्य्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त के मंत्री महोदय की भेजी दो आवश्यक छियां हम नीचे देते हैं-पाठक इनकी ओर ान दें—

मान्यवर, नमस्ते।

अब गुरुकुल की उपयोगिता और महत्व वर्णन करके लम्बी चौड़ी अपील लिखने आवश्यकता नहीं है। उसकी श्रेष्ठता, ादेयता और महत्ता को प्रायः प्रत्येक पु- जानता है। सार्वजनिक संस्थाओं को ाने के लिए सर्व साधारण के सहयोग आवश्यकता होती है। इसी के सहारे उन्नत और परिपुष्ट होती हैं। वृन्दावन में मती आर्य्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त ओर से गुरुकुल स्थापित है जो दिन पर न ख्याति लाभ करता जा रहा है। अब यें कालिज (महाविद्यालय) क्लासें भी ु गई हैं; ज्यों २ उसका विस्तार बढ़ता ता है त्यों २ आर्य्यों की उत्तरदायिता बढ़ती जाती है। क्योंकि उसके व्यय का ंश भार इन्हीं के ऊपर निर्भर है। ज कल दुर्भिक्ष और युद्ध के कारण खाने े और पहने लिखने की प्रायः प्रत्येक ु बहुत-महंगी हो रही है जिसके कारण ुल" को व्यय भी बहुत कुछ बढ़ गया है। ं दशा में गुरुकुल प्रेमियों से उसकी ा शक्ति सहायता करने के लिए प्रार्थना जाती है। वे स्वयम् अपनी भिक्षाम डली ाकर गुरुकुल की भिक्षा के लिए निकल और बहुत शीघ्र एक अच्छी रकम प्राप्त के कुल में भेज दें। हमारी समझ में ह समाजें आगरा समाज का अनुकरण तो बड़ा अच्छा हो। वहां के सामाजिक ष गुरुकुलोत्सव से कुछ काल पूर्व अपीलें ह कर तथा डेपूटेशन द्वारा स्थानिक स- नों से सैकड़ों रुपये प्राप्त करके उत्सव के य समाज की ओर से गुरुकुल को प्रदान देते हैं। इससे जहां समाज का व बढ़ता है वहां गुरुकुल को एक अच्छी म एक साथ मिल जाती है। आशा है समाज इस शैली का अवश्य अनुकरण करेंगे। जो लोग इस प्रणाली पर कार्य्य न कर सकें वे जिस प्रकार भी सम्भव हो उसी प्रकार 'कुल" को सहायता प्रदान करें। अभिप्राय यह कि यथा शक्ति सहायता प्रदान करने में कभी पीछे न रहना चाहिए।

सर्वेषामेवदानानाम् ब्रह्मदानं विशिष्यते।

—:०:—

मान्यवर, नमस्ते!

आपको ज्ञात होगा कि आर्य्यसमाज के अनुभवी वयोवृद्ध विद्वान् श्री प० क्षेम-करणदास जी त्रिवेदी गत कई वर्षों से बड़ी योग्यता पूर्वक अथर्ववेद का भाष्य कर रहे हैं। आपने महर्षि दयानन्द के अनुसार ही इस भाष्य को करने का प्रयत्न किया है। भाष्य, कांडों में निकलता है अब तक ६ कांड निकल चुके हैं। आर्य्यसमाज के वैदिक साहित्य सम्बन्ध में वस्तुतः यह बड़ा महत्व पूर्ण कार्य्य हो रहा है। त्रिवेदी महाशय के भाष्य की जानकारों ने खूब प्रशंसा की है। परन्तु खेद है कि अभी आर्य्यसमाज में उच्च-कोटि के साहित्य को पढ़ने की ओर लोगों की बहुत कम रुचि है। जिसके कारण त्रिवेदी जी अर्थ हानि उठा रहे हैं। भाष्य के ग्राहक बहुत कम हैं। लागत तक वसूल नहीं होती। वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्य्यमात्र का प्रधान कर्तव्य है। अतएव सविनय निवेदन है कि वैदिक धर्मी मित्र श्री त्रिवेदी जी को उनके महत्वपूर्ण गुरुतर कार्य्य में सहाय्य प्रदान करे।- स्वयम् ग्राहक बनें और दूसरों को बनावें। ऐसा करने से भाष्यकार महाशय उसे छपाने की अर्थ सम्बन्धिनी चिन्ताओं से मुक्त होकर भाष्य को और भी अधिक उत्तमता से सम्पादन करने की ओर प्रवृत्त होंगे। आशा है कि वेदों के प्रेमी उक्त प्रर्थना पर ध्यान दें, इस ओर अपना कुछ कर्तव्य समझेंगे। प्रत्येक आर्य्य के घर में वेदों के भाष्य होने चाहियें। समाज के पुस्तकालयों में तो उनका रखना बहुत ही जरूरी है। भाष्य के प्रत्येक कांड का मूल्य त्रिवेदी जी ने बहुत थोड़ा रक्खा है।

त्रिवेदी जी से पत्र-व्यवहार ५२ लूकर-गंज, प्रयाग के पते पर कीजिये। जल्दी से भाष्य मंगाइये!

भवदीय—
नन्दलाल सिंह
B. Sc. L. L. B.
उप मन्त्री

—:०:—

योरुप और सन्ध्या

विलियम जेम्स अमेरिका के बड़े प्रसिद्ध दार्शनिक स माने जाते हैं। आप ने अपनी एक पुस्तक में अध्यापकों को सलाह देते हुए एक बात लिखी है, जो ध्यान देने योग्य है। आपने कहा कि 'थोड़े समय से कई शिक्षित हिन्दू कैम्ब्रिज में मुझ से मिले जो जीवन और दर्शन के विषय में खुली बात चीत करते थे। उनमें से बहुतों ने मुझ से कहा था कि अमरीकनों के अति खिचाव व चिन्ता के कारण खिचे हुए से चेहरों और बैठने के समय भद्दी और बदसूरत चेष्टाओं को देख कर उन पर बड़ा बुरा असर पड़ता था।,, आगे उन हिन्दू सज्जनों ने प्रोफेसर को बतलाया कि "हिन्दुओं में यह एक आवश्यक नियम है कि प्रति दिन कम से कम आध घंटे के लिए शान्ति पूर्वक अपने पट्ठों को ढीले छोड़ कर बैठजाना, प्राणायाम करना, और भगवान् का ध्यान करना' आगे प्रोफेसर साहिब अपने पश्चिम की चंचल प्रकृति के दोष दिखा कर अध्यापकों को बताते हैं कि वे विद्यार्थियों को इसी प्रकार प्रतिदिन ध्यान लगाने की शिक्षा किया करें।

१०००० आम व लीची के क़लम

मुफ्त।

नियम और सूचीपत्र के लिए आजही लिखिये। कलमों के तो पकाने का बहुत अच्छा समय बीत रहा है। पता- नर्सरी पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

आवश्यकता

शाखागुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिए एक आलेख्या ध्यापक (Drawing Master) की आवश्यकता है। आर्यसमाजिक हो तो अच्छा है। वेतन २०) से २५) मासिक तक योग्यतानुसार। प्रार्थना-पत्र नीचे लिखे पते से भेजें—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी
ज़िला बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक तरङ्ग।

लेखक-एक मल्लाह

पाठकगण! मैंने बहुत तरंगों का अनुभव किया है। ऊंची और नीची दोनों प्रकार की तरंगें समुद्र में प्रायः उठा करती हैं मेरी नैया दोनों में तैर चुकी है।

इतिहास समुद्र के अगाध पाराबार का बड़ा विस्तार है। मेरी बाल भी पाश्चात्य और पौर्वात्य दोनों तरफ की समुद्र की तरंगों में हिलोरे लिया करती है। मैं आप पाठकों को भी कुछ अद्भुत घटनाएं यदि सुनाऊं तो आप को वास्तव में कुछ कौतुक होगा। क्योंकि मैं बहुत बड़ा यात्री हूं, इस लिए यात्राप्रकार के इतिहाससमुद्र के रत्न भी दिखाने में किसी प्रकार की भूल चूक न करूंगा। मनोरञ्जन के लिए मैं एक ही पुराण का तांता नहीं बांधूंगा परन्तु नाना कथा और उपाख्यान आप के सामने आते पीछे जुड़ते दिखाई देंगे।

इजिप्ट की सैर सुनिये—

इजिप्ट को पुराने संस्कृतसाहित्य में मिश्रस्थान कहते हैं। इसी से इस को अभी तक मिसर या मिशर या मिश्र इस नाम से प्रायः लोग पुकारा करते हैं।

जाईजिल में भी कथा आती है कि हैम के पुत्र मिस्रियम Missrium ने इजिप्ट को बसायाः—

× × × ×

पहिले काल में अर्थात् मिश्र देश की सभ्यता का मानव संसार में वर्त्तमान काल था तब भी मिश्र की राजधानी कैरो का असली नाम मिश्र ही था। वहां का सब से पहला राजा मिस्रीज़ था। वहां के लोगों का यह विश्वास था कि यह राजा मीनोज़ ही मनुष्य जातिका शासक महाराज हुआ है।

ऐतिहासिक इस से परिणाम निकालते हैं कि यह मिनोज़ नाम सम्भवतः भारत वर्ष के प्रसिद्ध और सब से प्रथम शासक राजर्षि भगवान् मनु के नाम का अपभ्रंश ही है। या द्वितीय कल्प में सृष्टि के पुनः उत्पन्न होने पर हुवे शासक सत्यव्रत मनु के नाम का अपभ्रंश है।

× × × ×

(मनु, राजा की उपाधि)

यह भी हो सकता है कि इस प्रसिद्ध मनु नाम को एक राजाओं की उपाधि बना दिया हो जो कि भारत में सबे वीर विक्रमशाली क्षत्रियों से शासित मिश्र देश का राजा बनता हो। इसी प्रथा का अनुकरण भारत में १४ मिश्र मनुओं के होने और सब का सत्यव्रतमनु में केन्द्रित होने से होता है।

× × × ×

(मनु-मिनवीस्)

डायडोरस सिकुलस यूनानी लेखक इस मिनोज़ को मिनवीस् लिखता है। इससे भी मनु की ही सत्ता की दृढ़ता होती है।

× × × ×

(ओसरिस-मनु-सूर्य)

पाश्चात्य विद्वानों के मत में ओसरिस राजा ने २२१५ ई० पू० मिश्रदेश में अपनी राजधानी बसाई थी। ओसरिस और मनु में वे कोई भेद नहीं करते। इस में युक्ति ये है कि मनुवैवस्वत और ओसरिस दोनों का शब्दार्थ सूर्य ही है।

× × × ×

(मिश्र में सभ्यता का प्रकाश)

पूर्वोक्त ओसरिस राजाने अपनी राजधानी थीबीज २३२५ ई० पू० में बनाई। इस ने मिश्रदेश को अज्ञान व असभ्यता के गढ़े में से निकाल कर सभ्यता के प्रकाश में स्थान दिया। इस असभ्यता और अज्ञान का वर्णन मिश्र देश के विषय में पुराणों में बहुत बार आया है।

इसी ओसरिस राजाने वहां के निवासियों को खेती करना और कीचड़ीली भूमि जिस में बड़े सर्प और अजगर भरे पड़े थे उसको साफ करके और सर्वथा सीलादलदूर कर खेतों में नाना प्रकार के धान्य बोने सिखाए। उस ने अंगूरों की खेती भी सिखाई।

× × × ×

(धर्म और शिल्प)

इसी पूर्वोक्त राजा ने वहां के निवासियों को ईश्वर और देवताओं की भक्ति सिखाई और नाना प्रकार के शिल्प सिखा कर सब का जीवन सुखमय और आनन्दमय बनाया।

× + ×

(ओसरिस—राम)

कतिपय पाश्चात्यों की सम्मति है कि मिश्रदेश का ओसरिस-असिरिया या असुर देश का राजा सिसोस्त्रिस और भारतवर्ष का महाराजा रामचन्द्र एक ही हैं हेतु केवल अपने समय में देशान्तर विजय ही है।

× × ×

(बक्कस—बागीश)

बक्कस या बारकुस या बोक्स नाम का भी मिश्रदेश का एक बड़ा पुराना राजा हुआ है। जोन्स की सम्मति के अनुसार भारत वर्ष का शिवजी और बक्कस एक ही है।

क्योंकि बागीश शिवका एक नाम है बागीश शब्द का बक्कस यह एक अपभ्रंश है।

और भी प्रायः अन्यदेशों में भी यह शिवजी किसी न किसी अपभ्रष्ट नाम से पूजा गया है।

× × ×

(डायोनिसस—देव नहुष)

एरियन नामक ऐतिहासिक ने नीसा नाम के प्रदेश का वृत्तान्त लिखा है इस स्थान पर सिकन्दर ने आक्रमण किया था। इस देश ने अपनी स्वतन्त्रता की प्राप्ति की याचना और विजेता सिकन्दर से की, परन्तु विजेता ने अपना विजय स्तम्भ वहां पर भी गाड़ ही दिया। इस देश का सम्बन्ध मिश्र के राजा डायोनिसस के साथ भी बड़ा गूढ है ऐतिहासिकों के कथनानुसार इस देश पर—डायोनिसस ने आक्रमण किया इस ने इस देश के बारे में लिखा है कि यह मेरुनाम के पर्वतों से घिरा है। पर्वत पर आइवी बेल या इक्षुरेचक की बेल बहुतायत से पाई जाती है।

× × ×

इससे वैदेशिक अनुमान करते हैं कि डायोनिसस ने मिश्रदेश से भारत पर आक्रमण किया।

यह मेरु पर्वत का समीपवर्ती स्थान निषध देश है। जिसका अपभ्रष्ट नाम नीसा है और इस स्थान के पास के पर्वत का नाम भी वास्तव मेरोस है।

× × ×

CCO. Gurukul K

पत्रों की सैर

पं० अखिलानन्द

—:०:—

प्रायः आज कल सभी धार्मिक सभाओं में टकापन्थी तथा प्रतिष्ठाभिलाषी लोग घुस जाते हैं। कोई तो टके मिलजाने के ऊपर ऐसे नाचते हैं जैसे लकड़ी के बल बंदरी नाचती है। कोई २ अपनी प्रतिष्ठा, मान मर्यादा बढ़ाने के लिए जिस धर्म में वह स्थित होते हैं उस के नियमों उपनियमों को उल्लंघन कर के केवल अपनी प्रतिष्ठा तथा टकों के लिए अपने धर्म का भी कुछ ध्यान न रखते नई २ बातें कर डालते हैं। उदाहरणार्थ आर्य समाज की ओर चलिए। वही धर्मवीर धर्म पाल जिन के विषय में आर्य समाजी भजनीक यह गाते थे कि "ये मत समझों प्यारे भाइयो ? कर गये लेखराम जी काल एक गये दो आगये धर्मवीर धर्मपाल"। वही आज फिर से मुसलमान होकर आर्य समाज की निन्दा करते फिरते हैं। इस से मालूम होता है कि वह उपरोक्त मतलबों को लेते हुए आर्य समाजी हुये तो जब उन का मतलब सिद्ध नहीं हुआ था फिर मुसलमान हो गए—इस दूर की बात को जाने दो, वर्त्तमान उदाहरण यह है कि पंडित अखिलानन्द जी शास्त्री कविरत्न जो कि अपने को कट्टर आर्य समाजी बताते हैं, उन्होने भी आर्य समाजिक मन्तव्यों के विरुद्ध वैदिक वर्ण-व्यवस्था नामक किताब बना डाली है उस में आपने जन्म से वर्णव्यवस्था मानी है। गुण कर्मानुसार नहीं। उपरोक्त पुस्तक की समालोचना करते हुये "निगमागम चन्द्रिका" के सम्पादक महाशय लिखते हैं कि "इस वैदिक वर्णव्यवस्था के पढ़ने से विदित होता है कि लेखक महाशय पर जो आर्य समाजी होने का कलंक लगाया जाता था वह निर्मूल ही था" ऐसी बातें लिखने से और भी पता लगता है [illegible] ने अवश्य आर्य सामाजि[illegible] को उल्लंघन किया [illegible] उक्त सम्पादक महोदय [illegible] आर्य समाजी ही नहीं ठहराते [illegible] हम बहुत दिनों से सुनते चले आये हैं कि [illegible]० अखिलानन्द जी आर्यसमाजी ही [illegible]। और हम ने उन का नाम आर्य समाजी कवियोंकी नामावली में भी देखा है फिर यह कैसा कि पण्डित जी ने आर्यसामाजिक मन्तव्यों के विरुद्ध लेखनी उठाई है। यदि उक्त सम्पादक महोदय के लेखानुसार पंडित अखिलानन्द जी यह स्वीकार करते हैं कि मुझ पर आर्य समाजी होने का पूर्व कलंक लगाया जाता था तब तो पण्डित अखिलानन्द जी ने अपने धर्म के विरुद्ध कुछ नहीं किया, अगर पण्डित अखिलानन्द जी आर्य समाजी ही बनते हैं तो हम को अवश्य कहना पड़ेगा कि पंडित जी ने अपने धर्म के विरुद्ध किया है। और आर्य सामाजियों में भी भेदभाव उत्पन्न कर के मुफ्त का झगड़ा खड़ा किया है, हमारा तो सब के लिए यही आदेश है कि जो जिस धर्म में है उसी धर्म में रह कर देशोन्नति की तरफ ध्यान दे और व्यर्थ के झगड़े उत्पन्न करके समय को नष्ट न करते हुए प्रेमभाव से काम करें।

(प्रेम)

हिन्दी का विरोध

एक बी० ए० एल० एल० बी० सज्जन लिखते हैं:—"श्रीयुत् मदनमोहन सेठ एक नये मुंसिफ हैं। आज कल झांसी में हैं। कुछ दिनों पहिले वे एटे में थे। उन्होंने गवाहों के इज़हार अपने हाथ से हिन्दी में लिखने शुरू किए थे। एक मुकद्दमा अपील में अलीगढ़ आया। मुसलमान वकील थे। उन्होंने जज साहब से शिकायत की कि हिन्दी में मुंसिफ साहब इज़हार नहीं लिख सकते। जज साहब ने मुंसिफ को आयन्दा हिन्दी में लिखने को मना कर दिया और हाईकोर्ट में इस बात की इतला शिकायत के तौर पर कर दी। सुना है, हाईकोर्ट में इस बात पर विचार हो रहा है कि सरकार के रिजिल्यूशन का क्या अर्थ है और आया मुंसिफ खुद हिन्दी में इज़हार लिख सकते हैं या नहीं" जब सेठ जी बदायूं में थे तब भी उर्दू के अन्धभक्तों ने यही रौला मचाया था, मानों हिन्दी में इज़हार लिखना कोई घोर पाप है। यदि कानून से हिन्दी की मनाही होती तो सेठ जी स्वयं साहस नहीं करते। दो वर्ष हुए प्रान्तीय सरकार आनरेरी मुंसिफों और मेजिस्ट्रेटों को इच्छानुसार नागरी अक्षरों के उपयोग की आज्ञा दे चुकी है। क्या हम आशा करें कि सरकार इस विषय में एक स्पष्ट आज्ञा जारी कर के कुल भ्रान्तियां दूर कर देगी?

"अभ्युदय"

युवराज

भारत के भावी सम्राट् के विवाह का सामान होगा। इस के सम्बध में पेरिस की एक चिट्ठी द्वारा जो समाचार मिला है, उस का भाषान्तर हम आगे देते हैं,—इङ्गलेण्ड में कोई चाहे न जानता हो; किन्तु इटाली के एक पत्र ने इस खबर का सत्य बताया है, कि ब्रिटिश युवराज की सगाई इटाली की षोडश वर्षीया राजकुमारी के साथ हो गयी। अभी युवराजमहोदय इटाली की राजधानी रोम गये थे। वहीं वह अन्तिम रूप से अपना दिल दे बैठे। कुछ ही सप्ताह बाद सरकारी तौर से ड्यूक आफ कनाट इटालियन राजकुमारी के विवाह का प्रस्ताव लेकर इटाली आये। भावी वरवधू एक धर्म के नहीं हैं। युवराज महोदय प्रोटेस्ट ईसाई हैं और इटालियन राज कुमारी केथालिक ईसाइन हैं। यह भेद पूरा कर लिया जायेगा। श्रीमती बदल कर प्रोटेस्टेण्ट बना ली जायेंगी।" इसी चिट्ठी में आगे और भी लिखा है,—'इस घटना से युवा पेरिस वासियों के दिल कुछ हिले हैं। कारण, युद्ध के आरम्भ से पहिले जब श्रीमान् युवराज पेरिस गये थे, तब अपने सहज मनोहर व्यवहार से उन्होंने अजानतः अनेक युवतियों के मन हर लिए थे।' पाठक! युरोपीय राज-परिवार के सम्बन्ध में ऐसी बातें कहना सुनना 'धृष्टता' या 'उपहास' में दाखिल नहीं है। देश देश की सभ्यता।

[कलकत्ता समाचार]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राप्त पत्र

समस्त पौराणिक विद्वानों

से

वर्णव्यवस्था विषयक

एक प्रश्न

यह सब पर प्रगट है कि पौराणिक लोग जन्मानुसार वर्ण व्यवस्था मानते हैं और गुण व कर्मों के आधार पर वर्ण का पलटना नहीं मानते अर्थात ब्राह्मण कैसा ही कर्म-हीन और विद्या हीन क्यों न हो वह मृत्यु पर्यन्त ब्राह्मण ही बना रहेगा। तुलसी कृत रामायण में लिखा है कि—

पूजिय विप्र शील गुण हीना।
शूद्र न गुण गण ज्ञान प्रवीना॥

इसी प्रकार अन्य वर्णस्थ मनुष्य भी मृत्यु पर्यन्त निज २ वर्ण में ही रहेंगे। चाहे उनको कितने ही प्रमाण क्यों न बतलावें, इतिहास में अनेकों के वर्ण पलटते हुए बतावें, युक्ति और तर्क द्वारा इस की हानियां सुझावें और सब संसार भर में गुण कर्मानुसार वर्ण का सार्वकालिक प्रचलन समझा कर उनके उक्त मन्तव्य को प्राकृतिक नियमों के विरुद्ध सिद्ध करें परन्तु वे अपने मन्तव्य को नहीं छोड़ते, चाहे हजार तरह से कोई समझावे पर अपनी बात को छोड़ कर सत्य वैदिक सिद्धान्त को ग्रहण करने को वे उद्यत नहीं होते। इस का अवश्य ही कोई जबरदस्त कारण होगा कि वे गुण कर्मों की प्रशंसा करते हुए भी जन्म के पुछल्ले पर इतनी हठ करते हैं। मेरी सम्मति में इसका एक ही कारण, वह है केवल उनकी अनुद्योगी, 'कायरता'। आलसी एवं कायर मनुष्य सदा यही सोचा करते हैं कि उनको घर बैठे बिना श्रम किये सब प्रकार के ऐश्वर्य—धन विद्या यश, कीर्ति आदि सुख—प्राप्त हो जावें। यही हाल पौराणिक भाइयों का है। वे चाहते हैं कि बिना 'अ, आ' पढ़े ही पंडित बन जावें, बिना [illegible] के द्वारा ब्रह्म को जाने बिना ही ब्राह्मण बन जावें, बिना अग्नि होत्रादि यज्ञ करें ही अग्नि होत्री बन जावें, बिना वेद पढ़े ही द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, आदि बन जायं, संस्कारों का नाम तक भी न जानते हुए पुरोहित कहलावें, बिना विद्या और योग्यता के ही नित्य नए स्वादिष्ट भोजन और प्रचुर दक्षिणा पावें, बिना शूरवीरता के क्षत्रिय कहलावें, बिना व्यापार, कृषि, गोरक्षा आदि के लिए ही 'गुप्त' कहलावें और कुछ भी योग्यता न होते हुए पढ़े लिखे धर्म परायण शूद्रों पर अपना सिक्का जमाने का यत्न करें।

जब किञ्चित मात्र श्रम किये बिना ही उनको इतने ऐश्वर्य—सुख प्राप्त हो जावें तो बतलाइए, श्री वेदालंकार! जी वे सुख कर्मों के कष्ट साध्य फेर में क्यों आने लगे। इतनी बुद्धि तो उन में अवश्य है कि वे अपने तात्कालिक हिताहित को पहचान लें।

यहां पर मुझे एक दृष्टान्त याद आता है कि एक गांव के किसी महाजन को गाड़ी लदी हुई कहीं अन्य स्थान में जाने को तय्यार खड़ी थी। इतने ही में रजवाड़ी घस-पस के सिपाहियों ने आकर उन को कहा कि गाड़ी खाली करो, इसे बेगार में ले जायंगे। सेठ ने कहा कि भाई यह मेरी घरू गाड़ी है, किराये की नहीं, और लदी हुई भी है, इस लिये किसी किराये की गाड़ी को जाकर पकड़ो। इस तरह बार बार समझाने पर भी जब सिपाही राम न माने तब महाजन ने कहा, 'भाई कुछ तो न्याय करो'। तब किसी भले मानस सिपाही ने साफ़ कहा कि न्याय करें तो जोतें क्या?

यही दशा पौराणिक भाइयों की है उनको शास्त्रों के प्रमाण, युक्ति, तर्क आदि बतला कर न्याय की याचना करना व्यर्थ है। यदि वे न्याय की आज्ञा से गुणकर्मों को मानलें तो द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी, त्रिपाठी, पंडित पुरोहित, अग्निहोत्री आदि चमकती दमकती उपा[illegible] प्राप्त करने में उनको इतना कठिन [illegible] न करना पड़े—दिन भर मस्तक को पुस्तकों पर झुकाना पड़े और रात्रि में भी दीपक देव के सामने ग्रन्थ पढ़ते २ रातें जगानी पड़ें—कि जिस परिश्रम का उनको कभी स्वप्न भी न आया होगा उसी ही को उन्हें लगातार सहन करना पड़े। भला इस बात को वे जानते हुए भी कैसे स्वीकार कर सकते हैं।

हमारे पौराणिक भाई तो कदाचित इस विचार में होंगे कि बिना A.B.C. पढ़े ही उन को B.A, M.A. की उपाधियां भी मिल जाया करें तो अच्छा हो क्योंकि आज कल के कलियुगी विश्वविद्यालयों की उपाधि प्राप्त करने में अपने आप को पहिले योग्य बनाना पड़ता है जिस से पौराणिक भाइयों को भी बड़ा कष्ट उठना पड़ता है। मेरी सम्मति में तो समस्त पौराणिक महामंडल को मिल कर सरकार को यह निवेदन करना चाहिये "हुजूर! हम गुण कर्म और योग्यता को नहीं मानते। ये हमारे धर्म के विरुद्ध हैं। हमारे धर्म में लिखा है कि इन की उपेक्षा करके जन्म पर ही दार मदार रखो हमारे यहां पर बिना परीक्षा पास किए ही पण्डित का बेटा पण्डित और चतुर्वेदी का बेटा चतुर्वेदी बन जाता है, इसी तरह क्यों न ग्रेजुएट का बेटा ग्रेजुएट, M.A. का बेटा M.A., शास्त्री का बेटा शास्त्री और वकील का बेटा वकील हो जाया करे। योग्यता प्राप्त करना और परीक्षा देकर उपाधि प्राप्त करना हमारे धर्म में नहीं लिखा, इस लिए दया कर के हम को अर्थात केवल पौराणिकों को परीक्षा के जंजाल से छुड़ाकर वैसे ही उपाधियें दे दिया कीजिये। इस के बदले में हम लोग सदा सर्वदा आप के गुण गान करते हुए अनुग्रहीत बने रहेंगे।"

ऐसी अर्जी श्रीमान् बड़े लाट साहिब की सेवा में भेजें और 'ब्रह्मचारी' 'पताका' 'धैर्कटेश्वर' आदि पौराणिक पत्रों को चाहिए कि इस विषय में खूब आन्दोलन

करें और साथ ही ३३ करोड़ देवी देवताओं से भी कहदें:—बड़े कष्ट का समय आ उपस्थित हुआ है। यह मदद का वक्त है। तुम हमारा साथ दो! अगर इस वक्त हमारी गुण कर्म विहीन योग्यता की विरोधिनी व्यवस्था कायम हो जाय तो ठीक है अन्यथा फिर आप लोगों को भी देव पदवी प्राप्त करने के लिए पहिले योग्यता की परीक्षा देनी पड़ेगी। जमाना पलटता जा रहा है। विद्या का दिनों दिन प्रचार बढ़ता जारहा है। आज कल के पढ़े लिखे लोगों के दिलों में गुण कर्म और योग्यता की आवश्यकता ने घर कर लिया है। यदि इस का शीघ्र उपाय न करेंगे तो आप की और हमारी दोनों की मुश्किल है, अतः हम आप से बारम्बार प्रार्थना करते हैं कि हमारी सहायता कीजिए! सहायता कीजिये!! सहायता कीजिये!!" इत्यादि।

इतना प्रयत्न करने पर कदाचित् कुछ फल निकल आवे। यदि कुछ भी फल न निकले तो—

यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।

फिर बैठे २ दैव को दोष दिया करना अथवा सब दोष कलियुग के मत्थे मढ़ देना। अस्तु।

जो कुछ भी हो मैं पौराणिक मतानुयायी समस्त विद्वानों से एक प्रश्न अवश्य करूंगा जिस के उत्तर में उन को निम्न तीन बातों में से कोई न कोई अवश्य स्वीकार करना पड़ेगा:—

(१) अपने मत के विरुद्ध कार्य करना,

(२) चुप रहना,

(३) गुण कर्म की व्यवस्था मानना।

मेरा प्रश्न यह है:—

एक जन्म का ब्राह्मण यदि ईसाई वा मुसलमान हो जावे तो क्या आप उस को ब्राह्मण मान कर उस के हाथ का खाने को और उस के साथ बेटी व्यवहार करने को तय्यार हैं?

यदि आप तय्यार हैं तो पौराणिक मत के विरुद्ध कार्य करेंगे, यदि आप तय्यार नहीं हैं तो सब संसार समझ लेगा कि जन्म से ब्राह्मण होते हुए भी ब्राह्मणोचित गुण कर्म के अभाव में आप उस से रोटी बेटी का व्यवहार नहीं कर सकते और तीसरा विकल्प आप के लिये यह है कि चुप्पी साधलें।

आप चाहें सो करें, इस से आप के मत का वास्तविक हाल सर्व साधारण पर प्रगट हो ही जायगा।

गंगाराम उबाना।

(नसीराबाद)

—०—

चिट्ठियां

प्रियवर नमस्ते

आप के सद्धर्म प्रचारक अंक १३ भाग २८ में एक महाशय गंगाराम उबाना नामक ने एक लेख दिया है जिस में उन का कहना है कि सर्प से मनुष्य को वार्तालाप कैसे हो सक्ता है—इस से वह अनुमान करते हैं कि यह कथा प्रक्षिप्त है। मुझ को उन के लेख में बहुत कहने की आवश्यक्ता नहीं है केवल इतना ही कि यह पातंजल योगदर्शन के विभूतिपाद के १७ वें सूत्र को पढ़ें यदि अभी तक इस ग्रन्थ को न देखा हो तो उन को उचित है कि कांगड़ी गुरुकुल के शरण लें। ऐसे २ लोगों की सहर (?) शंका से हमारे शास्त्रों की मर्यादा उठी जाती है। उन लोगों को उचित है कि पहले संदेह करने के अपने सद्ग्रन्थों को पूरी रीति से अवलोकन कर लें।

आपका कृपाभिलाषी
श्री कालीचरण
अमहरिया,

—:०:—

महाशय जी! Chrysophanic acid वास्तव में प्रसिद्ध ही तो है—संभव है कि नेत्रों के लिये हानिकारक हो—परन्तु यह भी तो सब आप जानते ही हैं कि (acid) को किस तरह मिलाते हैं—हाथ धो डालना भी एक मामूली बात है विशेष प्रकार से केवल इस कारण से नहीं लिखा गया था कि स० प्र० जैसे पत्र का अधिक भाग इस में व्यय करना उचित नहीं समझा था—परन्तु हां यह अवश्य है कि यह औषधि सेवन से लाभ दायक सिद्ध हुई है भाव यदि अब तेज हो गया है तो इस में मेरा अपराध तो नहीं परन्तु हां अब भी २ पैसा ही में काम चलता है—और इस पर ही डाक्टर महाशयों की सलाह लेना अत्युत्तम है—मैंने तो भोले भाव से केवल लाभ पहुंचाने के हेतु से लिखा था, यदि किसी प्रकार से आप की सम्मति में हानिकारक है तो मैं आप से व सर्व पाठक महोदयों से क्षमा मांगता हूं और चेतावनी देने वाले महाशय जी को धन्यवाद देता हूं—

क्षमाप्रार्थी
गोपीनाथ

शंका

हमारे मूर्ति विषयक प्रश्नों के उत्तर में शंकायें प्रचारक १ श्रावण में छपी हैं वह स्पष्ट नहीं। प्रश्नकर्ता का भाव स्पष्ट नहीं होता। जो उत्तर हमने दिये हैं, उन में शंका यह हुई है कि हमने बहुत ब्रह्माण्ड माने हैं। इस के लिये देखो सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास। एक २ ब्रह्माण्ड में एक सूर्य्य है। इसी आधार पर हमने लिखा है। ब्रह्माण्ड बहुत हैं। उन की रचना सर्वदा हो होती है। द्वितीय शंका के लिए देखो सत्यार्थ प्रकाश अष्टम समुल्लास। जीव का परम अवधि तक ज्ञान बढ़े तो भी परिमित ज्ञान और सामर्थ्य वाला होता है। इन्हीं के अन्तर्गत आप की शंका है। हमारे लेख को पढ़ते ही पढ़ते शंका आप को हुई उस को एक दो दिन खूब विचार से तो पता लग जाता वह उत्तर पर्य्याप्त है। वृथा लेख बढ़ाने से फल अच्छा नहीं होता, यदि फिर आप लिखें। तो अपने भाव को स्पष्ट कर के लिखें प्रभु की रचना पर ध्यान देने से सब शंका निर्मूल हो जाती हैं। अतः यदि आगे आप को शंका हुआ करें तो सृष्टि में उस का खोज कर लेना—पीछे प्रकाशित करना, यह रचना बहुत स्पष्ट उत्तर देती है।

हरि शंकर दीक्षित
प्र० आ० स० नगीना।
जि० बिजनौर,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम-कादिर

[गतांक से आगे]

शाही सवारी सामने आई। सब से आगे थोड़े से पठान घुड़ सवार थे। सवारों के हाथों में भाले थे—और अगले के हाथ में एक मुग़ली झंडा लहरा रहा था। सवारों के ऊंचे घोड़े और ऊंचे कद—भारत का शासन करने वाली जाति की शारीरिक सम्पत्ति का अच्छा परिचय दे रहे थे। उनके पीछे बादशाह का हाथी था। हाथी पर सुन्दरे काम वाली झालरें, चारों ओर बजते हुए घंटों को छुपा रही थीं। हाथी के पीठ पर चांदी का सुन्दर हौदा था, और उस हौदे में भारत का शाहनशाह शाह आलम बैठा हुआ था। शाह आलम अभी पौढ ही था। बुढ़ापे के चिन्हों ने उसे दबाया नहीं था। दुराचार और विलास की रेखायें चेहरे पर स्पष्ट दिखाई दे रही थीं, परन्तु उन्होंने स्वाभाविक मुग़ल चमकाहट को मार नहीं दिया था। शाह आलम चारों ओर नज़र मारता हुआ और किनारे किनारे खड़े हुए राजपूतों के सलाम का सिर के हिलाने से उत्तर देता हुआ जा रहा था। सलाम तो ले रहा था—परन्तु नज़र उसकी मुखों पर नहीं बल्कि पीठों पर थी। अपनी ओर राजपूत रमणियों की पीठें देख कर उसके चेहरे पर निराशा और खिजलाहट के निशान प्रतीत हो रहे थे।

सवारी जब पास आई, स्त्रियों ने भी थोड़ी २ नज़र फेर कर अपनी उत्सुकता की पूर्ति की। और सब स्त्रियां तो नज़र फेर कर झट मुड़ गईं परन्तु एक की नज़र उधर की उधर ही रह गई। वह स्त्री कमलदेवी थी। ज्यों ही उसने सड़क की ओर आंख की, त्योंहीं उसे दूसरी ओर खड़े हुए तेजसिंह का चेहरा दिखाई दिया। चातकी जिस बादल की खोज में थी, वह सामने दृष्टि गोचर होगया। उस की नज़र न मुड़सकी। उसकी माता ने उसका पल्ला पकड़ कर खेंचा, और झिड़क कर कहा कि "अरी मुई क्या बादशाह को मुंह दिखला कर धरम में जायगी, मुंह क्यों नहीं मोड़ती"। उसी समय तेजसिंह की आंख भी कमलदेवी की आंख पर पड़ी। दोनों आंखें मिलगईं और मानों बंध गईं। उन दोनों को ज्ञात नहीं था, कि किसी तीसरे पुरुष की भी आंखें हैं, जो उनकी दृष्टियों को बीच में काट रही हैं। उन्हें क्या, जनता में से किसी को यह भी ज्ञात नहीं हुआ, कि ऐन एक ढाक के वृक्ष के पास आकर, बादशाह का हाथी थोड़ी देर क्यों ठहर गया? बादशाह ने ढाक की ओर पीठ कर के थोड़ी देर के लिए तक क्या देखा?, और फिर अपने पीछे बैठे हुए एक अर्दली को क्या कहा जिस से कि वह उत्तम वस्त्रधारी अर्दली उतर कर वहीं किनारे पर ठहर गया? इन बातों का कारण किसी को भी पता नहीं लगा। सवारी निकल गई, जनता छिड़ गई, और प्रेमियों की आंखों का मेल भी टूट गया। कमलदेवी की माता उसकी और सखियों की सहायता से उसे लताड़ती हुई वहां से मन्दिर की ओर रवाना हुई। तेजसिंह अपने दलबल सहित गांव की ओर मुंह मोड़ कर चलदिया। प्रियपाठको! आज का वसन्तोत्सव भी इसी गड़ बड़ में समाप्त हो गया।

—:o:—

चौथा परिच्छेद

बात चीत

'जातयो नो भयावहाः' रामायण

वसन्तपंचमी की रात है। कोई नौ बजे का समय होगा। गांव के लोग दिन भर के थके मांदे जल्दी ही सोने की तय्यारियों में लगे हुए थे। कमलदेवी के पिता गुलाबसिंह भी भोजन करके थोड़ी देर बैठक में आराम करने के लिए आगये थे। बैठक में ज़रा गर्मी अनुभव होने से घरके सामने के चबूतरे पर ही कपड़ा बिछा कर मसन्द लगा दिया गया। वहीं पर गुलाबसिंह आबैठे। जब से राजपूत दिल्ली आगरे की ओर अधिक आने लगे, उनमें पान चबाने की आदत बढ़ गई थी। गुलाबसिंह भी पान चबाते २ अपने दो एक मिलने जुलने वालों से कुछ बात चीत करने लगे।

अड़ोस पड़ोस के और भी लोग इकट्ठे होने लगे। गप शप उड़ने लगी। बात चीत आज दिन की घटनाओं पर ही चली। गुलाबसिंह का चचेरा भाई फूलसिंह कहने लगा—

"भाई साहिब! आज शाही सवारी का नाम सुनकर हम तो डर गये थे। उत्सवों और मेलों के दिनों की ये सवारियां व्यर्थ नहीं होतीं। बादशाह किसी न किसी अबला का शिकार कर ही लेजाया करते हैं। पर आज ख़ैरियत रही, सवारी खाली ही चली गई।"

CCO, Gurukul Ka

गुलाबसिंह बोले "भाई! कुछ कह नहीं सकते। हम तो मन्दिर के पास थे नहीं, परन्तु वहां जो लोग थे वे कहते है कि उस स्थान पर आकर ढाक के सामने शाही हाथी थोड़ी देर ठहर गया था, और एक अर्दली हाथी पर से उतर कर वहीं खड़ा होगया था। यह भी सुनते हैं कि वह इस गांव वाले बड़े २ आदमियों के घर देखता फिरता था। आगे क्या बात है यह भगवान् जाने?" इसी तरह देर तक बात चीत होती रही। कोई भी यह निश्चय न कर सका कि घटना साधारण ही थी, या उसमें कोई रहस्य भी है? धीरे २ लोग उठने लगे और बात चीत भी धीमी पड़ने लगी। अन्त को दस बजते २ सब लोग उठ गये, केवल एक फूलसिंह ही रह गया। फूलसिंह अपने भाई से आयु में बहुत छोटा था, इस लिए उनके साथ वैसे व्यवहार करता था जैसे छोटे भाई को बड़े भाई से करना चाहिए। यद्यपि वह गुलाबसिंह का भाई था तो भी तेजसिंह के साथियों में उसकी गिनती थी। इसी लिए गुलाबसिंह उसे बहुत अपना नहीं समझता था। बहुत कम समय ऐसे होते थे जब दोनों भाई एकत्र बात चीत करते हों। जब कभी फूलसिंह ऐसा करता भी था, तब उसे गुलाबसिंह से कुलप्रेम पर उपदेश और कुलशत्रु से मेल रखने पर दो चार झाड़ें ही सुननी पड़ती थीं। इसलिए वह अकेले में गुलाबसिंह से बहुत कम मिलता था। गुलाबसिंह के स्वभाव में यह बड़ा भारी दोष था कि वह दूसरे की बढ़ती नहीं सह सकता था, इसी लिए ध्यानसिंह और तेजसिंह से उसकी शत्रुता थी। आज गुलाबसिंह फूलसिंह को वहां बैठा हुआ देख कर कुछ आश्चर्यित सा हुआ। कुछ देर तक दोनों ही चुपचाप बैठे रहे। अन्त में गुलाबसिंह ने ही मौनमुद्रा को तोड़ा। उसने कहा—

"कहो भाई फूलसिंह! आज हम पर इतनी कृपा कैसे हुई? आज बड़े दरबार नहीं बैठे? क्या अपने परम मित्र तेजसिंह से कोई खटपट हो गई? कहो, क्या कुछ कहना चाहते हो?"

फूलसिंह ने धीरे २ उत्तर दिया—

"भाई साहिब! मैं आप पर कृपा करने वाला कौन? मुझे ही आपकी कृपा चाहिए। मैं तो बारंबार फिर यही प्रार्थना करता हूं कि आप किसी प्रकार शान्ति धारण करके ध्यानसिंह और तेजसिंह से वैर छोड़ दें और गांव भर को सदा दो दलों में बंटे रहने से बचावें। लड़ाई से कभी कोई लाभ नहीं हो सकता। मैंने इसका एक उपाय भी सोचा है। यदि आप बुरा न मानें तो कहूं। यह आप जानते ही हैं कि राजपूत कभी अपने वंश का बुरा नहीं सोच सकता, इस लिए मैं भी जो कुछ कहूंगा, हितकर समझ कर ही कहूंगा।"

गुलाबसिंह "अच्छा, कहिए। आपकी उत्तम सलाह भी सुननी चाहिए। क्या हमें ध्यानसिंह या तेजसिंह के सन्मुख जाकर, भूमि पर नाक से सात लकीरें निकालनी होंगी?"

फूलसिंह "नहीं भाई साहिब! मैं जो प्रस्ताव करने वाला हूं, वह ऐसा नहीं है। उसमें हमारी भी प्रतिष्ठा है, और जिन लोगों को आप अपना शत्रु समझे बैठे हैं, उनकी भी। आपकी कन्या कमलदेवी अब विवाहयोग्य वय को पहुंची। उसके सम्बन्ध की चिन्ता आपको भी होगी। कल उसकी माता ने भी मुझ से योग्य वर की ढूंढ के विषय में बात चीत की थी। मेरा प्रस्ताव है कि कमलदेवी का विवाह तेजसिंह से कर दिया जाय। इसमें हमारे कुल की कोई अप्रतिष्ठा नहीं क्योंकि चौहान वंश से हमारे सम्बन्ध प्राचीन काल से होते आये हैं। सांसारिक दृष्टि से तेजसिंह हम लोगों से किसी प्रकार नीचा नहीं। कहिए, आप इस प्रस्ताव पर क्या कहते हैं?"

गुलाबसिंह इस प्रस्ताव को सुनकर एक साथ चौंक से पड़े। तेजसिंह के साथ कमल देवी का ब्याह। जिसे वह अपना प्राणान्त शत्रु समझे हुए हैं, उससे पुत्री का सम्बन्ध। क्या यह बात कभी सपने में भी सोची जा सकती थी? क्या कुलद्रोही फूलसिंह के सिवा और कोई पुरुष भी ऐसा प्रस्ताव गुलाबसिंह के सन्मुख रखने का साहस कर सकता था? गुलाबसिंह ने तीखे स्वर से कहा—

"फूलसिंह! क्या तू मेरे यहां इसी प्रकार मेरा अपमान करने आया है? क्या तू नहीं जानता कि मैं तेजसिंह को अपना कुल-शत्रु समझता हूं? क्या मैं अपनी इकलौती कन्या को उस नरराक्षस के गले बांध सकता हूं? तूने सब कुछ जानते हुए भी मेरे सामने किस भरोसे पर ऐसी बात छेड़ी? मैं जो कुछ समझता था, वही ठीक निकला। तुझे तेजसिंह ने मेरे घर में ऐसे कार्य करने के लिए गुप्त दूत रख छोड़ा है। बस, अब आगे इसके सम्बन्ध में कोई शब्द अपने मुख से न निकालना।"

फूलसिंह नहीं समझता था कि गुलाबसिंह प्रस्ताव को सुनकर आपे से बाहिर हो जायगा। ज्वालामुखी के इस प्रकार फूटने से वह कुछ विचलित सा होगया। उसने एक दो बार फिर मीठे २ वाक्यों से गुलाबसिंह को समझाना चाहा कि "जो तुम्हारा वैर है—वह कुलवैर नहीं बनाना चाहिए। सम्बन्ध से हमारी कोई हानि नहीं, लाभ ही है। किन्तु गुलाबसिंह की समझ में एक बात भी न आई। वह अधिक से अधिक तेज होता गया, और अन्त को खड़ा होकर कहने लगा—

(अपूर्ण)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

वेदिक वर्णव्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञानभिक्षु जी लिखित)

अङ्क १५ से आगे

"पाठकगण—पं० जी १३ पृष्ट पर लिखते हैं "महाभारत में युद्ध का वर्णन होना चाहिए धर्म की व्यवस्था लगाना वेद मन्वादि का काम है महाभारत का नहीं" समीक्षक—क्या युद्ध धर्म और अधर्म से नहीं होता? तब इन युद्ध धर्म अथवा अधर्म युद्ध और योद्धा जनों का परस्पर व्यवहार और उन की जीवन गत प्रसंगों का वर्णन करना क्यों महाभारत का काम नहीं? महाभारत के समय वाले विद्वान् धर्म को कैसा समझते थे इत्यादि बातों की तो इतिहास को भी स्पष्ट करने की आवश्यकता है—उसमें ऐसे कोरे शब्द आर्य सिद्धान्त के पोषक आते हैं कि जिन के आगे आप को चुप होना पड़ता है परन्तु आप व्याकरण को धर्म शास्त्र क्यों मान रहे हैं— जब कि वह शब्द शास्त्र है—क्या यहां भी कोई बुद्धिमत्ता है—हां हां व्याकरण के प्रमाण जो दिये हैं—वहाँ से कुछ थोड़ी सी तो सहायता मिलती है—बुद्धिमानी तो है ही-[व्याकरण के प्रकरण समय में उस पर भी उत्तर प्रस्ताव होगा) आगे आप परतात्मा को मनु कहते हुवे उस की सृष्टि का नाम मानव बता कर क्या विचित्र बात लिख रहे हैं "उसका ज्ञान वेद मानव धर्म शास्त्र कहा जाता है" समीक्षक—यह काम मेरे विचार में तो आज तक किसी विद्वान ने भी वेद का नहीं बताया। अपने कलाकौशल ना सही, यह क्या थोड़ी ईजाद की है— वेद और मानव धर्म शास्त्र—यह किसी ने एक बताये (सत्यार्थ प्रकाश १ समुल्लास की व्युत्पत्ति देखो महर्षि की बराबरी करना चाहते हो आप ही वेद का नाम मानव धर्मशास्त्र जो कि मनुस्मृति का नाम है बताते हैं—लोग ब्राह्मण ग्रन्थों को ही वेद मानते थे परन्तु आप उन से भी चार अंगुल आगे बढ़ गये। बड़े मियां सो बड़े मियां छोटे मियां सुब्हानल्ला। पं० जी को आगे फिर वही सनातन चर्चा याद आई, लिखते हैं कि "वेद में जहां कहीं पर विप्र शब्द आता है वहां ब्राह्मण जाति का वाचक आता है जैसे ऋषि विप्रः पुरएता जनानाम् ९ ८७-३८- ऋषि विप्रो विचक्षणः - ९-१०७ ७ विप्रप्रिष्टः सत्वेष्म बभूव १०-६१ १३ ऋषि विप्रः ९ ९३३ पृष्ट ५४., समीक्षक—यहां जाति वाचक किन हेतुओं से मान रहे हो क्या विप्र शब्द को देख कर ही कह उठे या अन्य भी प्रमाण है—

विप्र शब्द ब्राह्मण जाति वाचक है, ब्राह्मण जाति वाचक है चिल्ला रहे हो यह विलक्षण जाति कहां कूद पड़ी जिस का वाचक विप्र शब्द ठहरा रहे हो—

विप्र शब्द भी किसी एक व्यक्ति या जाति का नाम नहीं किन्तु अन्य बहुत से अर्थ हैं—यदि कहो अन्य अर्थों में अव्याप्ति है इस लिए वंश परम्परा ही अर्थ है—यह भी नहीं क्योंकि अन्य अर्थों में भी प्रयुक्त होता है—ब्राह्मणः परमात्मनः पुत्रः पूयतरः प्रियतरोवा, परमात्मा का प्यारा जो कोई भी शुभकार्य कर के भगवान् को प्रसन्न करे वह ब्रह्म पुत्र। इस से सर्वमनुष्यों का नाम ब्रह्म पुत्र है— ब्रह्मणो वेदस्य पुत्रः रक्षकः। जो वेद का रक्षक हो वह ब्रह्मपुत्र। इस से ईश्वर और वेद वेत्ता मनुष्य ब्रह्म पुत्र है ब्रह्मणो धनस्य पुत्रः पाता। जो धन का रक्षण करता है। वह ब्रह्मचारी (वीर्य की रक्षा करने से) ब्रह्मपुत्र शब्द का अर्थ है— पुत्र शब्द अपत्यवाची भी नहीं (देखो निरुक्त) इस लिए भी ब्रह्म पुत्र का अर्थ ब्राह्मण की सन्तान नहीं हो सकता— यही एक शब्द है जिस पर आप अकड़ रहे हैं—और इस का और ही अर्थ निकला— अब बताइये क्या अवस्था है और दूसरे यदि यौगिक मानो तो जहां कहीं ब्रह्मत्वादि गुण पाओ उसे ही ब्रह्म पुत्र कह दो-रूढ़िमानने में ३ दोष आवेंगे। महर्षि दयानन्द के भाष्य का अनादर निरुक्त और से विरोध बुद्धिकल्पना-और यौगिक मान लो तो एक ही टोटा है और वह कि वेद आप का साथ नहीं देता अर्थात् वेद से आर्य का सिद्धान्त नहीं निकलता। लीजिए अब उन मन्त्रों का अर्थ सुनिये जिनको आप ने उलटा ही समझा है। पहिला मंत्र पूर्ण इस प्रकार है। ऋषिर्विप्रः पुरएता जननामृधुर्धीर उशना काव्येन सचिद्विवेद विहितं यदा सामयीच्यं गुह्यं नाम गो नाम। ऋ ९-८-३=मनुष्यों का आगे चलने वाला अर्थात् सत्योपदेश करने वाला कौन हो-उत्तर-ऋषिर्विप्रोधीरः(स) जनानामृधु पुरएता—जो ऋषि अर्थात् सर्वत्र भ्रमण शील शुभ गुण संपन्न ब्रह्मात्मदर्शी परिव्राट् है (ऋषीगतौ) ऐसा जो वैदिक धर्म के प्रचार में (विप्र) विशेष प्रवृत्त है और धीर है। (धीरा ध्यानवन्तो-योगिनः—महाभाष्ये) विज्ञान पूर्ण कार्य करने वाला है योगी है इन गुणों से अलंकृत जो सन्यासी है वह ही मनुष्यों का ठीक मार्ग दर्शक है। क्योंकि सआसां गोनां गुह्यं विवेद—वह इस संसार में छिपी शक्ति को जानता है (सांघातिक शक्ति) आसां गोनां निहितं विवेद—और वह इन इन्द्रियों के अन्दर काम करने वाली (वीर्य शक्ति) को अच्छी प्रकार जानता है उशना काव्येनचित् अपीच्यं विवेद—कर्मेन्द्रिय और ज्ञानेन्द्रिय में काम करने वाले अपीच्य (अन्दर ठहरे आत्मा को) बहुत अच्छी प्रकार जानता है—अभिप्राय यह है—कि जो संसार में नियमित संघबल है उस को और शरीर की स्थिति रखने वाले वीर्य को और ज्ञान कर्मेन्द्रियों से काम लेने को मैं तो आप को यहां तक कहता हूं कि वेद में ब्राह्मण जाति शब्द ही आप दिखा दें। आप कदापि नहीं दिखा सकते जब ब्राह्मण जाति शब्द ही नहीं तब उस के वाचक विप्रादि शब्द कैसे होंगे गुणत्व जाति के बोधक ही हैं— वेद के शब्द यौगिक हैं उन में गुणत्व का ही विधान हो सकता है—यदि आप ऐसा नहीं मानते तो अपनी कल्पित ब्राह्मण जाति वेद में दिखाओ— मंत्रो का अर्थ आगे करेंगे पहिले यह बताओ— ब्राह्मण शब्द किस व्यक्ति का वाचक है= जिस के माता पिता ब्राह्मण हों (उन का भी ब्राह्मणत्व साध्य है— तब यह तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

साध्य सम हेतुहुवा) एक शिखा धारी यज्ञोपवीत पहने तुलसी रामायण लिये आ कर कहता है कि मैं ब्राह्मण हूं-मेरे माता पिताब्राह्मण थे-(परन्तु वास्तव में वह भंगी और भंगन की सन्तान है) अब बताईये उसका क्या निश्चय किया जावे-यादि कहा जावे कि वह ब्राह्मण है तो भी आप के सिद्धान्तानुसार ब्राह्मण नहीं क्योंकि उसके माता पिता ब्राह्मण न थे- यदि कहा जावे कि वह भंगी है तो इस में कोई प्रमाण नहीं जिस से पता लगजावे कि वास्तव में वह वैसा ही है-अब आप द्विविधा में फंसे हैं-कदापि नहीं निकल सकते-यदि कहो कि उस के कर्म ही बता देंगे-किवह कौन है तो आप की रेतकी दीवार भी गिरगई और सिद्धान्त भी आप का चिकनाचूर हो गया-क्या आप कोई प्रमाण दे सकते हैं कि जो ब्राह्मण ब्राह्मणीकी सन्तान हो वह ब्राह्मण है—दीजिये—परन्तु यह याद रखना प्रमाण देना वेद का—स्यात आप स्मृत्यादि को कह बैठें उनमें लिखा है-उनकी भी प्रमाणता वेदानुकूल होने से होगी—जब आप इस विषय में वेद से भाग अन्याश्रयण कररहे हैं तो कुछ न कुछ तो वेद में भी आना ही चाहिये—वेदानुकूल होने पर ही स्मृत्यादि ग्रन्थों को इस कारण प्रमाण मानता हूं कि आज कल प्राप्त होने वाले स्मृत्यादि ग्रन्थों में मृतक श्राद्ध, श्राद्ध में मांस, गोहत्या मद्यादि वाममार्गीय चिन्ह पाये जाते हैं-अतः आप वेद का प्रमाण दें—जिस में स्पष्ट रूप से लिखा हो कि ब्राह्मण ब्राह्मणी की सन्तान ही ब्राह्मण पद वाचक है=यदि कहो कि ब्राह्म पुत्र आता है—तो हम यह कहते हैं—कि जिस वस्तु का जो रूढ़ि नाम है वह दूसरी वस्तु का ग्राहक नहीं हो सकता—गोनाम गौ का है तो कुत्ते बिल्ली आदि यह नाम कदापि नहीं हो सकता—कुत्ते का कुत्ता बिल्ली का बिल्ली—और यौगिक नाम से द्विपाद चतुष्पाद—जो कोई दो पांव वाला ही वह द्विपाद और जो कोई चार पांव वाला हो वह चतुष्पाद—तो क्या ब्रह्मपुत्र यह शब्द आपके माने ब्राह्मण वाच्य के लिये रूढ़ि है या यौगिक है-रूढ़ि कहो—तो बन नहीं सकता क्योंकि ब्रह्म और पुत्र शब्द मिल कर यह बना है। ब्रह्म शब्द का अर्थ स्वामी जी अपने वेद भाष्य में निघण्टु निरुक्त के आधार पर ईश्वर—बल—धन अर्थ करते हैं वेद और ब्राह्मण भी अर्थ किया है—इस लिये ब्रह्म शब्दका अर्थ केवल ब्राह्मण ही नहीं किन्तु धन बल वेद ईश्वर भी है—जब ब्राह्मण के लिए ब्राह्म शब्द रूढ़ि ही नहीं तो उसकी सन्तानार्थक ब्रह्म पुत्र शब्द कैसे हो सकता है—क्योंकि जो विशिष्ट व्यक्ति से अति व्याप्त हो अन्य का ग्राहक हो जावें वह शब्द उस व्यक्ति के लिए रूढ़ि नहीं हो सकता—जैसे चार पाव वाला' यह शब्द केवल गौ का ही नाम नहीं—किन्तु भेड़ बकरी गधा घोड़ा भैंस आदि सब चार पांव वालों का ग्राहक है। इसी तरह ब्रह्म पुत्र वाले जीवात्मा को जानता है और इसी कारण ऋषि (सामाजिक बल वाला विप्र (शारीरिक बल वाला) वीर्यवान् ब्रह्मचारी और धीर (आत्मिक बल वाला) आत्मदर्शी जो परिव्राजक सन्यासी है (जैसे महर्षि ब्रह्मचारी दार्शनिक दयानन्द सन्यासी) वह मनेष्यों को अगुवा होवे-दूसरा मन्त्र इस प्रकार है सोमो मीढ्वान् पवते गातुवित्तम ऋषि विप्रो विचक्षणः त्वं कविरभको देववीतय आसूर्य रोहय दिवि-ऋ-९-१०७-७ ऋषि कौन है यः सोमः—जो शान्त स्वभाव चन्द्रमा के समान सर्वप्रिय परोपकारी सन्यासी (महर्षि ने सन्यास प्रकरण में इन्दो परिस्रव सन्यासी अर्थकिया है) इन्दु सोम एकार्थ हैं और विप्र कौन है—योमीढ्वान्-जो पराक्रमी शारीरिक बलवाला है- विचक्षण अर्थात् भीतर की आंख वाला धीर योगी कौन है-यो गातुवित्तमः-जो व्याख्याओं में विशिष्ट है अर्थात आत्म दर्शी है-ऐसा मनुष्य ही पवित्र करता है-हे देव वीतये-सर्वान्तर्यामी होने से जीवों के कर्मफल प्रदाता हो। इस लिए हे परमेश्वर! हमारी तीनों क्लेशों से निवृत्ति कराने के लिए दिवि कल्याण रूप प्रकाशमय सूर्य मारोहय-सूर्य के समान अपने साथ लेने वाले सामाजिक बल बढ़ाने वाले-तेजस्वी ब्रह्मचारी वीर्यवान शरीरिक बल वाले प्रकाश स्वरूप आत्मा को जानने से आत्मिक बल वाले सन्यासी को स्थित कीजिए-अर्थात् हमारी उन्नति के लिये ऐसे पुरुष को नायक (लीडर) बनाये। तीसरा मन्त्र इस प्रकार है-'अथ यद्राजानागविष्ठौ सरत्सरण्य कारेव जरण्युः विप्रः प्रष्ठः सत्वेषां बभूल पराच वशहुत पर्कदेवान्-ऋ-१०-६१ २३= इस का आशय यह है कि जो राजा धर्माचरण चातुर्य न्यायादि से प्रजा की रक्षा करता हैं उन का मन्त्री [जोकि नीतिशास्त्रादि का ज्ञाता होने से राजाओं को सन्मन्त्र देता है और प्रजा राज्य प्रबन्ध में संलग्नचित है, वह राजा और प्रजा का अतिप्रिय होता है-यहां विप्र शब्द का अर्थ मन्त्री है क्योंकि व्यापन करता है। राज्य प्रबन्ध में चौथा मन्त्र इस प्रकार है- ब्रह्मदेवानां पदवीः कवीनां ऋषि विप्राणां महिषो मृगाणां श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोम पवित्र मत्येतिरेफन् ऋ ९ ९६-६- निरुक्त ने देव, कवि, विप्र, मृग, गृध्र, वन, इनको आदित्यरश्मि (सूर्य की किरण) और ब्रह्मा, ऋषि, महिष, श्येन, स्वधिति, इनको आदित्य वाचक माना है-और दूसरा आध्यात्मिक अर्थ करते हुवे देवादि षष्ठयन्तों को इन्द्रिय वाची और ब्रह्मादि प्रथमान्तों को आत्मा वाचक मानते हैं। देखो निरुक्त परिशिष्ट-२-१२) इस लिए एक अर्थ तो इस का यह हुवा कि सूर्य अपनी किरणों से स्तूयमान होता हुवा संसार को पवित्र करता है इस मंत्र का विज्ञान पूर्ण अर्थ [वैदिक विज्ञान में करेंगे] यहां इतना ही उपयोगी था-दूसरा अर्थ यह है कि जीवात्मा अपनी इन्द्रियों से प्रकाशित होता हुवा अपनी सत्ता को जतलाता है—इस में आत्म गति बतलाई [निरुक्त] इन मन्त्रों को आपने बिला सोचे समझे लिख दिया—जहां विप्रशब्द देखा झट लिख दिया चाहे वहां किसी आशय से हो—लौकिक और वैदिक भाषा को एक ही समझ रहे हैं।

[शेष फिर]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संसार समाचार पर टिप्पणी।

महात्मा तिलक के विरुद्ध व्याख्यानों द्वारा राज्य द्रोह फैलाने का अपराध लगा कर जो नोटिस सर्कार की ओर से निकाला गया था, उस की पेशी का दिन पहिले शुक्रवार रक्खा गया था, तत्पश्चात् बुधवार तारीख २ अगस्त परन्तु अब सुना जाता है कि ७ वा ११ अगस्त को पेशी होगी। म० तिलक की ओर से मिस्टर जिन्हा पेशी में उपस्थित होंगे।

जिला मुलतान में—रावी नदी में नौका पर ८० मनुष्य डूबे। मनुष्यों के अतिरिक्त उस पर दो भैंसें एक ऊंट और दो घोड़े भी थे। जब नौका दूसरे किनारे पर पहुंची तो दो मल्लाह कूद कर रस्से को खैंचने लगे, परन्तु रस्सा गला हुआ था अतः टूट गया, और नौका तेज धार में बह चली। थोड़ी ही दूरी पर एक पुल था। नौका पुल के स्तम्भ से टकरा कर फट गई और डूब गई। केवल एक पांच वर्ष का बच्चा एक तख्ते के साथ लटका हुआ एक एक मील की दूरी पर बहता हुआ पकड़ा गया। शेष सब डूब गये।

शिवपुर इञ्जीनीअरिंग कालिज आज कल विद्यार्थियों की हड़ताल के कारण बन्द है। हड़ताल करने वाले सब हिन्दू विद्यार्थी हैं। मुसलमान तथा युरोपियन विद्यार्थी इन के साथ सम्मिलित नहीं हुए। शनिवार के दिन आश्रम के अधिष्ठाता पर पत्थर फैंके गए। जब उपस्थिति ली गई तो चार विद्यार्थी अनुपस्थित थे अतः उन चारों को कालिज से निकाल दिया गया। इस पर हिन्दू विद्यार्थियों ने विरोध किया और प्रिन्सिपल को अर्ज़ी दी। प्रिन्सिपल ने उत्तर दिया कि यदि पत्थर फैंकने वालों का पता बतादें तो प्रार्थना पत्र पर विचार किया जा सक्ता है। दूसरे दिन श्रेणी के नायकों ने कहा कि पत्थर फैंकने वालों का पता नहीं लग सका और हड़ताल कर दी गई। इस पर निम्न आज्ञा प्रिन्सिपल की ओर से निकली:—

"इञ्जिनीअरिङ्ग विभाग के द्वितीय, तृतीय तथा चतुर्थ वर्षीय कक्षा के विद्यार्थी जो लोहार खाने में काम नहीं करते हैं; तुरन्त कालिज छोड़ कर चले जायं। अप्रेन्टिस विभाग के सब विद्यार्थी तथा इञ्जिनीअरिंग विभाग के प्रथम वर्षीय कक्षा के विद्यार्थी यदि कल ८ बजे प्रातःकाल काम पर नहीं आयंगे तो वे पृथक कर दिए जायंगे।" उसी समय दूसरा नोटिस निकला कि "अधिकारी वर्ग हिन्दू विद्यार्थियों के प्रिन्सिपल की आज्ञा उल्लङ्घन करके, श्रेणी तथा वर्कशाप से अनुपस्थित रहने के कार्य्य को घृणा की दृष्टि से देखता है। अब नवम्बर १९१६ तक कोई दुबारा प्रवेश नहीं होगा और उस के पश्चात् भी अधिकारियों की आज्ञा से ही प्रवेश हो सकेगा। इञ्जीनीअरिङ्ग विभाग में पुनः प्रवेशार्थ उन के संरक्षक हर समय मन्त्री के पास प्रार्थना पत्र भेज सक्ते हैं। इन प्रार्थना पत्रों पर उन के वर्तमान तथा भूतकाल के आचार व्यवहार पर विशेष ध्यान दिया जायगा। छात्र वृत्तियों का तथा शुल्क में न्यूनता का किसी को अधिकार नहीं रहेगा।"

———

मिस पैंकहर्स्ट ने वकालत करने के लिये हाई कोर्ट में प्रार्थना पत्र दिया था। इस पर विचार करने के लिये हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस तथा चार अन्य जजों की विशेष सभा हुई। मिस्टर नार्टन ने कहा कि कानून में स्त्रियों को भी वकालत करने की आज्ञा है परन्तु एडवोकेट जनरल (Advocate General) ने कहा कि कानून के अनुसार केवल पुरुष ही वकालत कर सक्ते हैं, स्त्रियां नहीं। अभी इस विषय में कुछ निश्चय नहीं हुआ।

पारसी कम्पनी के कुछ खेलों के विरुद्ध जो लाहौर में विरोध किया गया था और उन खेलों को बन्द करने के लिये डिपटी कमीश्नर की सेवामें प्रार्थना पत्र भेजा गया था। इस के उत्तर में डिपटी कमिश्नर लाहौर ने केवल खेल ही बन्द नहीं कर दिये हैं परन्तु हिन्दुओं को सभा भी जो इस विषय में होने वाली थी बन्द कर दी गई है जैसा कि निम्न आज्ञा से स्पष्ट है:—

"क्योंकि एक सभा कुछ खेलों के सम्बन्ध में विरोध प्रकट करने के लिये होने वाली है, जो मिस्टर खटाऊ ने दिखलाए हैं और मैंने ये खेल बन्द कर दिये हैं। इस सभा से उपद्रव होने की सम्भावना है अतः मैं आज्ञा देता हूं कि जिस सभा के २६ जुलाई १६ को ६ बजे सायंकाल होने की व्यापरालाला गोपालचन्द्र मन्त्री हिन्दू सभा, ला० काशीराम खोसला तथा अन्य पुरुषों ने दी है वह न कीजाय। यह आज्ञा दफा १४४ बज़ाबता फौज़दारी दी जाती है।

(देश)

पंजाब के कारागृह

पञ्जाब के कारागृहों की वार्षिक रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि सन् १९१५ई० में १० सहस्र कैदी गतवर्ष की अपेक्षा अधिक प्रवेश हुए, और दैनिक उपस्थिति में दो सहस्र की बढ़ती हुई। ५० सहस्र से अधिक मनुष्य कारागृह में गये: दैनिक उपस्थिति की औसत १७ सहस्र के लगभग थी। कारागृहों में केवल १४७२९ कैदियों के लिए निवास का स्थान है अतएव फालतू कैदियों को रात्री के समय खेमों या बर्कशापों में रक्खे जाते थे। ३५५ कैदियों के लिए कालेपानी की आज्ञा थी, परन्तु १३८ ही ऐण्डमन में भेजे गये और वर्ष की समाप्ति पर ऐसे कैदियों की संख्या, जिन के लिए काले पानी की आज्ञा मिल चुकी है परन्तु अभी वे पञ्जाब के कारागृहों में ही हैं १२२० थी।

कारागृहों में २५९२ कैदियों को दण्ड दिया गया। १३७८००) जेल का खर्च था, परन्तु महंगाई के कारण एक कैदी का ७८॥-)॥१ के स्थान ८२॥)॥॥२ व्यय हुआ। जेलखानों में कैदियों के काम से २७६०००) का लाभ हुआ। इस हिसाब से प्रत्येक कैदी ने १९) कमाये। जेल की आबादी में केवल २ मौते प्लेग से हुईं और हैजे का एक भी केस नहीं हुआ, परन्तु नगरों में दो लाख सात प्लेग से हुई, इस से साबित है कि जेलखाना व स्वास्थ का प्रबन्ध म्युनिसिपल के प्रबन्ध से अत्युत्तम है

सामाजिक समाचार

गुरुकुल वृन्दावन में इस वर्ष २० नवीन ब्रह्मचारी लिए जावेंगे। १८ पूरा भोजन व्यय देने वाले, एक अर्द्ध व्यय देने वाला तथा एक मुक्त। प्रार्थना पत्र कार्तिक कृष्ण १५ (२६ अक्टूबर १९१६) तक मुख्याधिष्ठाता के पास पहुंच जाने चाहियें। निर्वाचन अगहन की अमावस्या तथा पड़वा (२५, २६, नवम्बर को होगा। भोजन व्यय देने वालों में १५००) एक साथ देने वाले को विशेषता दी जायगी।

श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी सूचना देते हैं कि साधु आश्रम कालिन्दी का पुल डाकखाना हरदुआगंज ज़िला अलीगढ़ का तृतीय महोत्सव मिति कार्तिक कृष्ण ३,४,५ सम्वत् ७३विक्रमी शनि. रवि. तथा सोमवार तदनुसार २८, २९, ३० अक्टूबर १९१६ को होना निश्चय हुआ है; अतः आर्य साधु महात्माओं की सेवा में निवेदन है कि वे उपदेश करते हुए नियत तिथियों पर पधार कर अवश्य दर्शन दें।

अनजान उपदेशकों से आओ भाई सावधान रहें—चौधरी दयाराम वर्म्मा ग्रामअम्बरहाई डा० पालम ज़ि० दिल्ली लिखते हैं कि एक महाशय हरप्रसाद जो अपने को महाविद्यालय ज्वालापुर का वेतनिक उपदेशक बतलाते थे और चन्दा इकट्ठा करने के लिये आये थे, ता० २१ [illegible] को चौधरी ईश्वरसिंह भजनोपदेशक के स्थान पर ठहरे। उन के पास ज्वालापुर महाविद्यालय की रसीद बुक भी थी। चौधरी जी ने दूसरे दिन चन्दा इकत्र करने में सहायता देने की प्रतिज्ञा की। उस रात्री को १० बजे तक प्रचार किया। जब सब सोगये तो उपदेशक महाशय चौधरी जी का डबलरीड हारमोनियम बाजा, एक सफेद लोंगी सूती और एक दरी लेकर चम्पत हुए। उसका हुलिया निम्न प्रकार है:—

कद दरम्याना, रंग सांवला, मूछें लम्बी और पतली, और रहने वाला ज़िला सहारनपुर का बतलाते थे। भाषा अधिकतर उर्दू बोलते थे।

चौधरी जी के समान का हुलिया:—डबल हारमोनियम बाजे का काला रङ्ग स्वरों पर १ से ३७ अंक तक खुदे हुए। बाजे के दानों ओर की पत्तियों में से एक पत्ति नहीं है। परदे पर सम्पदयाल एण्ड कम्पनी की अंग्रेजी अक्षरों में छिट लगी है। लोंगी सफेद और दरी नीली व सफेद धारीदार है। जो महाशय इसका पता लगाने के वह कृपया मुझे अवश्य सूचना दें।

CCO, Gurukul Kangri Co...

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण

विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी। प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा संशोधित। अश्लील वाक्यों से मुक्त। कन्याओं के हाथ में बिना संकोच देने योग्य।

संस्कृत प्रवेशिका——————)
संस्कृत साहित्य पाठावली: २यभाग =)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——————।)
काव्य लतिका——————।।।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र १म भाग ॥)
संशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, संस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ।।।)
महाभाष्यम् अङ्गाधिकारः
श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाप्रणीतम्—महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)

ऋषि दयानन्द कृत वेदाङ्ग प्रकाश

१ कारकीयः	≡)	के स्थान में	=)
२ आख्यातिक	१।)	"	१)
३ उणादीकोषः	॥=)	"	।≡)
४ स्त्रैण तद्धित	१≡)	"	१)
५ पारिभाषिक	≡)॥	"	=)
६ गणपाठ	।-)	"	≡)
७ निघण्टु	।=)	"	।)
८ सामासिकः	।)	"	≡)
९ अव्ययार्थ	-)॥	"	-)
१० नामिक	।≡)॥	"	।=)
११ सौवर	=)॥	"	=)
१२ सन्धिविषय	।≡)॥	"	।=)
१३ वर्णोच्चारण शिक्षा	-)	"	)।।।

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली सचित्र १म तथा द्वितीयभाग

विज्ञान

रसायन—विलयम एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितम्—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

अन्य उपयोगी पुस्तकें।

१. एकान्तवासी योगी-(Goldsmith's Hermit) का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध श्रीधर पाठक जी कृत ≡)
२. चन्द्रशेखर। प्रसिद्ध कवि बैंकिमचन्द्र द्वारा रचित का हिंदी अनुवाद १)
३. भारतवर्ष का सच्चा इतिहास १॥) (भासकर यन्त्रालय मेरठ)
४. शिशुपाल वध (मुम्बई) २)
५. शिवराज विजय [बनारस] २)
६. साहित्य दर्पण [बम्बई] ३)
७. First Aid to the injured का हिन्दी अनुवाद ।।।)
8. The 1st step in teaching of English on Direct method by Nelson Fraser M.A. -)॥
9 The 2nd part Do -)॥
10 " 3rd " " =)॥
11 " 4th " " =)॥
१२. संक्षिप्त महाभारत संस्कृत वेद्य कृत २)
१३. Bacon's Essays का हिन्दी अनुवाद ।=)

श्री स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेद भाष्य भूमिका, पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि और गुरुकुल के उपाध्यायों की बनाई सब पुस्तकें यहां से मिल सकती हैं।

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. By Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
The life of Swami Dayananda. By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The works of the late P. Gurudatt Vidyarthi M.A. I.0.0
The Hand book of the Arya Samaj by P. Vishnu Lal M. A. ./6/.
Is Arya Samaj a Political Body? Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— 0-1-0
The Arya Samaj and its Detractors—A Vindication—by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bharadwaja—2d edition—superior paper—First ten chapters only. —Rs. 3-0-0

आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. संक्षिप्त महाभारत पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ३) के स्थान में २।)
2. Macmillans English Readers for United Provinces
Agra and Oudh-Part 1 ./4/.
Do 2 ./4/.
३. उपनिषदें श्री शंकराचार्य्य भाष्य सहित आनन्द आश्रम पुना की मुद्रित

बृहदारण्यकोपनिषद	८)	के स्थान में	५॥)
छान्दोग्य	,,	५)	,,	३॥)
प्रश्न	,,	१)	,,	॥≡)
ईश	,,	।।।=)	,,	॥=)
केन	,,	१)	,,	॥≡)
कठ	,,	१)	,,	॥≡)
माण्डूक्य	,,	२।-)	,,	१॥)
तैत्तरीय	,,	१।।।)	,,	१।)
मुण्डक	,,	॥=)	,,	॥)
एत्तरेय	,,	१)	,,	१=)

४. चम्पु रामायण संस्कृत मुम्बई २) के स्थान में १॥)
५. चम्पु भारत मुम्बई २॥) " २)
६. हर्ष चरित मुम्बई २) " १॥)
७. प्रसन्न राघवम् ।।।) " ॥)
८. भूगोल हिन्दी हिल साहिब कृत Indian press Allahabad से मुद्रित
९. सोमनाथ जी आर्य्य कृत हिन्दी की १म तथा २य पुस्तकें
१० प्राचीन सभ्यता का इतिहास R. C. Dutt [बनारस]

२५ ०/० कमीशन पर

कमीशन के नियम

गुरुकुल रचित पुस्तकों पर १०) से २०) की पुस्तकों पर १०) सैकड़ा और अधिक पर १५) प्रति सैकड़ा।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Registered No A. 434.

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २९ श्रावण सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १२ अगस्त सन् १९१६ ई० { संख्या १८ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, -) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बढ़ाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आधतोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य ३॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

कृपा करके एक दृष्टि इधर भी

हमारे यहां सब प्रकार का बनारसीमाल हर वक्त तय्यार रहता है। साफ़ा मूती रेशमी मूल्य ५) लगाय १००) तक कमख़ाब साड़ी दुपट्टा लहंगा मू० १) लगाय २००) तक चद्दर तथा सूट के वास्ते स्वदेशी बनारसी सिल्क इत्यादि सब प्रकार का बनारस का तय्यार किया हुआ स्वच्छ और उत्तम कपड़ा दाम में भी बहुत रियायत समाज की सेवा के वास्ते हर वक्त प्रस्तुत रहता है। जिन महाशयों को आवश्यकता हो आर्डर लिख कर निम्न लिखित पते से वो०पी० द्वारा मंगवा सकते हैं।

[नोट] आर्य्य भाइयों के वास्ते बनारस की सम्पूर्ण वस्तु प्रस्तुत की जा सकती है।

पता—लाला रामनाथ चमनलाल सौदागर लखी चबूतरा बनारस शहर।

विज्ञापन

"आर्य्य पुत्री पाठशाला लायलपुर के वास्ते दो अनुभवी आर्य्य अध्यापिकाओं की बड़ी आवश्यकता है। वेतन २०) से ३०) तक दिया जायगा। प्रार्थना पत्र शीघ्र आने चाहियें।" १६ से १९ तक

हरिश्चन्द्र
मंत्री आर्य्यसमाज
लायलपुर

—:o:—

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवर्ण का महान ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार है मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवर्ण युक्त निर्णय का ६०० से अधिक पृष्ठ पर पूरा हुवा सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २ अनेकों सरकार रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्ट के फैसिले, श्री जगद्गुरु शंकराचार्य्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥)

पता:—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मैनेजर ओरियन्टल पुस्तकालय डा० फुलेरा जि० जयपुर।

CC0. Gurukul K

गुरुकुल समाचार

ऋतु पूर्वानुसार ही मनोहर है। वर्षा बराबर होती रहती है। २२ श्रावण को बहुत वृष्टि हुई जिस के पश्चात् गङ्गा खूब बढ़ आई। इस वर्ष की खेती बहुत अच्छी अवस्था में है। अब तक बीमारी भी कोई विशेष नहीं; स्वास्थ्य ब्रह्मचारियों का बहुत अच्छा है।

महाविद्यालय और विद्यालय की नवम् व दशम् श्रेणी की परीक्षाएं समाप्त हो चुकीं। अष्टम, सप्तम और षष्ठ की परीक्षाएं भी लग भग समाप्ती पर हैं। निचली श्रेणियों की परीक्षा १० भाद्रपद (२५ अगस्त) को समाप्त हो जायगी। महाविद्यालय विभाग में २६ श्रावण से छुट्टियां आरम्भ हो गईं। इस वर्ष महाविद्यालय की अन्तिम श्रेणी के छात्रों को इन्हीं दिनों घर जाने की आज्ञा देदी गई है जिस से वे अपने संरक्षकों की सम्मति प्राप्त कर लें कि उन को भविष्य में क्या करना है। कुछ ब्रह्मचारी विशेष रोगों की चिकित्सा के लिये उन के संरक्षकों के पास भेजे गये हैं। शेष सब ५ भाद्रपद (२० अगस्त) को गंगोत्तरी की यात्रा के लिये जायंगे। यात्रा में उन के अध्यक्ष श्री नन्दलाल जी सहायक मुख्याधिष्ठाता होंगे। ऋषिकेश के श्री रामनाथ जी कच्छी वाले महाशय ने अपनी सब धर्मशालाओं में ब्रह्मचारियों को आराम देने के लिये लिखवा दिया है।

विद्यालय विभाग की छुट्टियां १५ दिन पीछे होंगी और उस के पश्चात अष्टम नवम् और दशम श्रेणियों को चकरोते की ओर भ्रमणार्थ भेजा जायगा। छुट्टियों की समाप्ति के समीप अन्य श्रेणियों को भी थोड़ी यात्रा कराई जायगी।

महाविद्यालय के उपाध्यायों में से श्री उपाध्यक्ष रामदेव जी कार्य्यालय द्वारा पत्र व्यवहार करा के गुरुकुल के लिये धन इकत्र करने को डेपुटेशन (Deputation) लेगये हैं। उन के साथ उपाध्याय विश्वनाथ विद्यालंकार तथा उपाध्याय सुधाकर एम० ए० भी गये हैं। जिन स्थानों में यह डेपुटेशन जायगा, मैं आशा करता हूं कि आर्य्य पुरुष उन की पूरी सहायता करेंगे। उपाध्याय इन्द्र विद्यावाचस्पति भरतपुर बड़ौदा अहमदाबाद आदि स्थानों में भ्रमण करते हुए राजपूताने के रास्ते गुरुकुल लौटेंगे। उन के साथ पण्डित यज्ञदत्त विद्यालंकार तथा पं० बलभद्र विद्यालंकार भी भ्रमणार्थ गये हैं। उपाध्याय इन्द्र ने प्रतिज्ञा की है कि यदि सहायता मिल सकी तो वह भी गुरुकुल के लिए धन एकत्र करके लावेंगे। शेष सब उपाध्याय भी गुरुकुल से चले गये हैं। मैं आशा करता हूं कि अपने घरों का काम करते हुए भी वे गुरुकुल को न भूलेंगे।

मैं छुट्टी के दिनों में और उसके पश्चात् विजयदशमी की समाप्ति तक गुरुकुल ही में रहूंगा जो महाशय किसी विषय में पत्र व्यवहार करना चाहें इसी पते से करते रहें। यहां सब कार्यकर्त्ता बाहर चले गये और जा रहे हैं इस लिए इन दिनों कार्य का बोझ मुझ पर बहुत रहेगा इस लिये अनावश्यक पत्र व्यवहार से मुझे बचाया जाय तो अच्छा होगा। २२ श्रावण से मेरी शारीरिक दशा खराब हो रही है फिर भी काम करते ही जाने के कारण निर्बलता बहुत है इस लिये पत्रोत्तर में विलम्ब होने की सम्भावना रहेगी इस के लिये पत्र व्यवहार करने वाले महाशय क्षमा किया करें। बाहर से बहुत से हितैषी मित्रों के पत्र आ रहे हैं कि मुझे कम से कम एक मास आराम लेना चाहिए। डाक्टर भी ऐसी ही सम्मति देते हैं, परन्तु मैं आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियों से लेखबद्ध प्रतिज्ञा कर चुका हूं कि मैं इस वर्ष के अन्त तक रुग्णावस्था में भी कभी छुट्टी नहीं मांगूगा इस लिए इस प्रकार के पत्र व्यवहार में मेरे हितैषी मित्र अपना समय नष्ट न करें। जिस परमेश्वर पर विश्वास रखते हुए गुरुकुल सेवा में सोलह सत्रह वर्ष निरन्तर व्यतीत हुए हैं उसी परमेश्वर पर विश्वास कर के आने वाले ८ महीने भी आनन्द पूर्वक व्यतीत होंगे।

गुरुकुल की मायापुर वाटिका में यात्रियों को गुरुकुल आने के सम्बन्ध में सारी बातें मालूम हो सकी हैं। तमेड़ों का प्रबन्ध भी इन दिनों पूरा किया गया है। केवल १८ से २० अगस्त तक यात्रा जाने वाले ब्रह्मचारियों को पार उतारने का अधिक काम रहेगा; उस के पश्चात् जो भी दर्शक महाशय गुरुकुल देखने के लिए आना चाहें उन के लिए आने जाने का बड़ा अच्छा प्रबन्ध कर दिया जायगा। सितम्बर की छुट्टियों में पञ्जाब से और दशहरे की छुट्टियों में संयुक्त-प्रान्त से प्रायः वकील और सरकारी अहलकार हरिद्वार और देहरादून आया करते हैं। उन सब महाशयों से निवेदन है कि यदि पहिले से मुझे सूचित कर दिया करेंगे तो मैं उन के गुरुकुल आने का पूरा प्रबन्ध कर दिया करूंगा।

ब्रह्मचारियों के संरक्षक महाशयों से पुनः निवेदन है कि जिन २ महाशयों ने बजट की कमी पूरा करने के लिए धन नहीं भेजा, वे इस समय अवश्य अपना २ सहायता का भाग भेजना आरम्भ कर दें। मैं चाहता हूं कि अगस्त के अन्त तक यह सारा धन आजावे और इस वर्ष के बजट की चिन्ता दूर हो जावे तब सितम्बर में डेपुटेशनों में लाया हुआ धन आगामी वर्ष के लिए काम दे आसकेगा और संरक्षक महाशयों को बहुत सी चिन्ता दूर हो जावेगी। जो महाशय इस समय धन भेज रहे हैं, उन का मैं बहुत ही कृतज्ञ हूं। पिछले अंक में १६४५) की जोड़ दी जा चुकी है। इस सप्ताह में निम्नलिखित धन आया है:—

१२५) महाशय गोपीनाथ जी ओवरसिअर कौल जिला करनाल

१००) महाशय प्यारेलाल जी सब ओवरसिअर गुजरांवाला

१००) महाशय भवानी प्रसाद जी गुप्त रईस हल्दौर ज़िला बिजनौर

इस प्रकार सर्व जोड़ १९७०) हुआ और करना है पूरा बीस हजार।

मुन्शीराम

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं

(१) उपाध्याय इन्द्र भ्रमणार्थ चले गये हैं और मैं अभी कुछ निर्बल हूं। इस लिए यदि आगामी अंक में कुछ देर हो जाय तो क्षमा का प्रार्थी हूं।

(२) काग़ज़ तथा अन्य सब वस्तुएं महंगी हो जाने के कारण कईयों ने समाचार पत्रों का मूल्य बढ़ा दिया, कईयों ने काग़ज़ बहुत ही सस्ता और खराब लगाना आरम्भ कर दिया और कईयों ने और प्रकार से गुज़ारा किया। यह कुछ तो प्रचारक नहीं करना चाहता। विज्ञापन इस में पहिले ही नहीं लिए जाते, अब सर्वथा निश्चय कर लिया है कि सिवाय पहिले पृष्ठ के विज्ञापन कहीं भी नहीं दिए जायंगे। अन्तिम पृष्ठ पर जो गुरुकुल की पुस्तकों का विज्ञापन है उस का समय इस अंक के साथ समाप्त हुआ। वह भी नहीं दिया जाय। प्रथम पृष्ठ के सिवाय शेष सब स्थान उत्तम लेखों से ही पूरित हुआ करेंगे। ऐसी अवस्था में यदि ४ पृष्ठ कम कर के, युद्ध की समाप्ति तक, १२ पृष्ठ ही छपा करें तो काग़ज़ का काम चल जायगा और इस वर्ष काग़ज़ के लिये कहीं अन्यत्र भागना नहीं पड़े गा। इस लिये आगामी अंक १२ पृष्ठ का ही होगा।

ऐसा करने से यह नहीं कि मैटर कम आवे—क्योंकि कम्पोज़िटर को हिदायत होगी कि स्पेस बहुत न छोड़े और बारीक टाइप से अधिक काम लिया जाय—हां, यह अवश्य होगा कि इस समय जो कभी भी बिना देखे अनावश्यक लेखों से स्थान भर जाता है वह न होगा। आशा है कि प्रचारक परिवार मेरे प्रस्ताव को सहानुभूति की दृष्टि से देखेंगे।

मुन्शीराम जिज्ञासु

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

उपदेशक क्यों नहीं मिलते ?

आर्य प्रतिनिधि सभा को उपदेशक न मिलने की शिकायत है। उस के जो कारण प्रकाश के सम्पादक महाशय ने बताये हैं वे ठीक नहीं। जो असली कारण हमें प्रतीत होते हैं, उन का हम यहां उल्लेख करते हैं।

कारणों का उल्लेख प्रारम्भ करने से पूर्व हम एक बात स्पष्ट कर देना चाहते हैं। इस विचार में हम ने जो कुछ भी लिखा है, वा आगे लिखेंगे, वह किसी व्यक्ति को लक्ष्य करके नहीं हैं। हम इन लेखों में एक घटना के साधारण कारणों पर विचार कर रहे हैं—व्यक्ति का कोई प्रश्न नहीं।

हमारी सम्मति है कि हमारा प्रचार विभाग का जो प्रबन्ध है, उसकी जो रीति और शैली है, वही इस विचित्र घटना में कारण है। वेद प्रचार की हमारी संस्था, हमारी रीति, सब संसार से विलक्षण है। जो आज तक किसी धर्म ने परीक्षण नहीं किया, वह हम आज कर रहे हैं। सम्भव था वह परीक्षण सफल हो जाता, किन्तु शोक है कि नहीं हुआ। धर्म के प्रचार की यह शैली ही नहीं, जो काम में लाई जारही है। हमारी प्रचार शैली में जो मुख्य २ त्रुटियां हैं उन्हें हम यहां दिखाते हैं।

(१) उपदेश का कार्य उपदेशकों की योग्यता पर निर्भर है। जैसे उपदेशक होंगे, वैसा ही प्रचार का कार्य होगा। यदि प्रेमी, श्रद्धालु और जोशीले उपदेशक होंगे तो प्रचार का काम भी बड़ी उत्तमता से होगा। यदि उपदेशक केवल पेट—पूर्ति के अर्थी हैं, तो जो कार्य होगा, वह न होने से भी बुरा होगा। धर्म प्रचार बिना धार्मिक, आवेश के नहीं हो सकता। यह बात मुख्यतया दृष्टि में रखनी चाहिये। जो केवल नौकर या सेवक बन कर प्रचार का कार्य करते हैं, वे उलटा ही प्रभाव पैदा कर सकते हैं। किन्तु हमारी जो प्रचार की संस्था है, उस में इस के सिवा और आशा ही क्यों हो सकती है। प्रचार का कार्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा एक सज्जन को सौंप कर-प्रायः सभा के मन्त्री को—उसे उपदेशक विभाग का अधिष्ठाता बना देती है। अधिष्ठिता महाशय की हैसीयत उपदेशकों के प्रति मालिक की हो जाती है। उपदेशक उन की सेवा में दैनिक डायरी भेजते हैं, समय २ पर उन की सेवा में उपस्थित होते हैं, 'स्वामी जी' 'स्वामी जी' कह कर उपासना करते हैं—तब उन्हें रूखी मिलती है। सारे उपदेशकों का ऐसा व्यवहार नहीं—ऐसे भी उपदेशक हैं, जो ऐसी कार्यवाही से कोसों दूर हैं; किन्तु साधारणतया उपदेशक महोदय मन्त्री जी को प्रसन्न रखना अत्यावश्यक समझते हैं। इस में उन का दोष भी नहीं। जब मन्त्री जी इन के कर्ता धर्ता और हर्ता हैं, तब मनुष्य प्रकृति ही मजबूर करती है कि वे ऐसा करें।

किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं, हम एक साधारण बात कहते हैं। यह आवश्यक नहीं कि सभा के मन्त्री महाशय अवश्य धर्म के मर्मज्ञ, शास्त्रों के ज्ञाता या उपदेशक हों। यह भी आवश्यक नहीं कि वे धर्म प्रचार के कार्य का पूरा महत्व समझते ही हों। ऐसी दशा में क्या होगा? क्या यह आशा की जा सकती है कि कोई भी त्यागी, योग्य और धर्म प्रेमी विद्वान् उन मन्त्री महाशय के नीचे सेवक की हैसीयत में रहे, इन सब बातों को जानता हुआ मन्त्री जी का वेतन-भोगी नौकर बन कर रहे। एक दृष्टान्त हमें याद आता है। एक बार एक उपदेशक महोदय को मन्त्री जी से दस पांच दिन का अवकाश लेना था। मन्त्री जी बाज़ार में जूता ख़रीदने गये, उपदेशक जी पीछे २ थे। ख़रीदा जा कर बंधा हुआ जूता बाज़ार में उपदेशक महोदय की बग़ल में रहा। घण्टा भर इसी प्रकार की सेवा के पीछे अवकाश मिल गया। इस में व्यक्तियों का दोष कम या-रीति का अधिक। कोई योग्य विद्वान् इस व्यवहार को सहन नहीं कर सकता। हम स्पष्ट कहते हैं कि जब तक उपदेशक-विभाग की प्रबन्धकर्त्—सभा का सब कुछ इसी अद्भुत अवस्था में रहेगा, तब तक कभी योग्य विद्वानों के उपदेशक विभाग में आने की आशा नहीं रखनी चाहिये।

जो नियम—बद्ध संस्था में प्रचार का काम करेंगे, उन्हें प्रबन्ध में रखना ही पड़ेगा। उन्हें नियम में रखने के लिये जो भी कोई विभाग का मुखिया होगा, उसे देख रेख करनी पड़ेगी, उपदेशकों को समझाना पड़ेगा, कभी २ उन के दोष भी दिखाने पड़ेंगे। किन्तु एक आत्म-सम्मानी धार्मिक जोश वाले आत्म-सम्मानी के लिये एक ऐसे सज्जन से इन सब बातों का सहना असम्भव है, जिस की शास्त्रीय योग्यता या धार्मिक भाव के विषय में वह आदर भाव नहीं रख सकता। एक शास्त्रज्ञ दूसरे शास्त्रज्ञ और अनुभवी पुरुष के डाले हुए बन्धनों को सह सकता है—दूसरे के नहीं। जब तक इस बात पर ध्यान नहीं दिया जाता तब तक हमें सन्तोष से ही बैठना चाहिये। हमने स्वयं आत्म-सम्मान रखने वाले उपदेशकों को ऐसी शिकायत करते सुना है। इन दशाओं में भी जो योग्य उपदेशक कार्य करते हैं वे धन्यवाद के पात्र हैं।

उपदेशकों और प्रचारकों का अधिष्ठाता या प्रबन्धकर्त्ता वह होना चाहिये, जिस की धार्मिक तथा शास्त्रीय योग्यता के सिक्के को उपदेशक लोग स्वीकार करें। जिस समय सभा को दो चार योग्य उपदेशक मिले थे, उस समय उपदेशकों के अधिष्ठाता भी उपदेशकों के साथ नगर २ में घूम कर प्रचार करते थे, और उपदेशक लोग उन के प्रधानत्व को स्वीकार करते थे। यह बात थोड़े ही समय तक रही—पं० पूर्णानन्द जी उसी समय के अवशेष हैं।

हमारी सम्मति में उपदेशकों की उच्च श्रेणी को यदि सभा के नौकर न समझ कर वेतन या गुज़ारा लेने वाले अधिकारी समझा जाय, और निचली श्रेणी के उपदेशकों को उन्हीं के प्रबन्ध में रक्खा जाय तो उत्तम हो। वर्त्तमान संस्था की निर्बलता स्पष्ट हो जाने पर नई संस्था का रूप सोचा जा सकता है।

(२) योग्य उपदेशक न मिलने का एक और कारण है। उस कारण के विषय में कोई दो साल हुए तब प्रचारक में एक लेख जाला लिखी गई थी। जो लोग वस्तुतः विद्या व्यसनी और पण्डित हैं, वे अभ्यास तथा अनुशीलन का मूल्य जानते हैं। एक विद्वान् अपनी विद्वत्ता को स्थिर रखने और मन को आवश्यक भोजन देने के लिये समय चाहता है। वह रात दिन कोल्हू के बैल की तरह घूमते रहना पसन्द नहीं कर सकता। एक २ घन्टे का भ्रमण प्रोग्राम होने से अपनी आत्मिक तथा मानसिक उन्नति को समय नहीं मिलता। बिना ग्रन्थाभ्यास के विद्या का भण्डार खाली हो जाता है—थोड़ा सा चलता हुआ भाग ही याद रह जाता है। कोई भी विद्या-व्यसनी विद्वान् अपनी विद्या के भण्डार का खाली होना नहीं सह सकता। हमारी उपदेशकों के घुमाने की शैली कैसी है? आज रावलपिण्डी हैं तो कल बम्बई पहुंचना पड़ता है। आज बज़ीराबाद के उत्सव पर हैं, तो परसों कलकत्ते की सभा में सम्मलित होना होता है। इस रगड़े में अभ्यास छूट जाता है। जब अपने मन और आत्मा की उन्नति करने का अवसर नहीं मिलता तो दूसरे की उन्नति की लम्बी चौड़ी आशा करना व्यर्थ है। जब तक यह लम्बे और निरन्तर भ्रमणों की नीति का कोई इलाज नहीं होता, तब तक वस्तुतः विद्वान् पण्डितों को सभा की सेवा में अवश्य ही कठिनाई उपस्थित होगी। उपदेशकों को काम में लाने की कोई दूसरी ही शैली होनी चाहिये। वह रीति ऐसी होनी चाहिये कि जिस में उपदेशकों को अपनी मानसिक तथा आत्मिक उन्नति जारी रखने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो; ऐसे अवसर बहुत कम उपदेशकों को मिलते हैं। इसी लिये हमारे यहां चौमासा करने की प्राचीन रीति प्रचलित थी। बिना दोहराये शास्त्रीय ज्ञान छूट जाता है। यदि हम योग्य उपदेशकों की सेवा से लाभ लेना चाहते हैं तो हमें चाहिये कि उनकी योग्यता स्थिर रखने का भी सामान पैदा करें।

(३) तीसरा एक और कारण है, जो यहां लिख देना अप्रसंगिक न होगा। प्रकाश के सम्पादक महाशय ने अपने नोट में लिखा था कि प्रतिनिधि सभा के पास उपदेशक तय्यार करने का कोई साधन नहीं है। अर्थात् वे गुरुकुल को उपदेशक बनाने का साधन नहीं समझते। सम्भव है सम्पादक महाशय कि यह दिलीराय हो, किन्तु हम अभी तक इस बात पर विश्वास नहीं कर सकते। यह भी सम्भव है कि अब सम्पादक महाशय गुरुकुल की ओर से निराश हो चुके हैं। अब वे समझते हैं कि गुरुकुल में उपदेशकों की आशा रखना व्यर्थ है। हमने इन दो बातों को बिल्कुल साफ़ शब्दों में इस लिये रख दिया है कि जो सच हो वह पता लग जाय। सम्पादक महोदय की उपेक्षा वृत्ति का तात्पर्य जानने की हमारी हार्दिक अभिलाषा है। साधारण जनता पहेलियां नहीं बूझ सकती उसे—स्पष्ट तौर पर—समझाना ही अच्छा होता है। क्या हम सम्पादक महोदय से पूछ सकते हैं कि 'आप की इस उपेक्षा का क्या कारण है? क्या आप उपदेशक तैयार करना गुरुकुल का एक उद्देश्य ही नहीं समझते या आप गुरुकुल से निराशा हो चुके हैं?' हम उत्तर की प्रतीक्षा करते हैं।

इधर हम अपनी ओर से इस समस्या को हल कर देना चाहते हैं। स्नातक प्रतिनिधि सभा के उपदेशक विभाग में क्यों नहीं जाते? हम इस समय स्नातकों के प्रतिनिधि रूप से नहीं लिख रहें, किन्तु अपनी सम्मति के अनुसार लिख रहे हैं। ऊपर लिखी दोनों बातें सम्भवतः कारण हैं; किन्तु एक बड़ा भारी और भी कारण है। उपदेशक विभाग के प्रबन्ध में उदारता और प्रेम का ही साम्राज्य होना चाहिये। उपर्युक्त दोनों कारणों के होते हुए भी विद्वानों तथा स्नातकों को शायद सभा की सेवा में खींचा जा सके। खींच सकना सर्वथा असम्भव नहीं है। किन्तु उस के लिये अधिकार और कथन के सिवा कुछ और भी चाहिए। वह खींचने वाली चीज़ कौन सी है? यह सभी जानते हैं। आलोचना और दोष दर्शन ही एक मात्र आकर्षण का उपाय नहीं है। खींचने की योग्यता, योग्यता का आदर और सब से बढ़कर प्रेम भरी उदारता की अवश्यकता है। आर्यसमाज के क्षेत्र में योग्य पुरुषों का अभाव नहीं है—और न सेवा करने की इच्छा रखने वालों का अभाव है। उपर्युक्त दो कारणों को हटा कर—और प्रेम-भरी उदारता को अपना मूल मन्त्र बना कर उन्हें उपदेशक विभाग में लाया जा सकता है, अन्यथा नहीं। इन कारणों के होते हुए, आर्यसमाजियों पर दोष थोपना, आर्य प्रतिनिधिसभा की मुख्य शिक्षा सम्बन्धिनी संस्था की उपेक्षा करना, इस न्यूनता की पूर्ति का उपाय नहीं है।

इन्द्र

—:o:—

मातृभाषा और रवीन्द्रनाथ

भाषा बिना राष्ट्र नहीं—यह उक्ति कहावत बिल्कुल सच है। भारतवर्ष में जातित्व न होने का एक भारी कारण निज भाषा के गौरव का न समझना है। एक दृष्टान्त इस सचाई को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त है। दृष्टान्त बिल्कुल ताज़ा--अभी कल का ही है।

भारत के प्रसिद्ध कवि रवीन्द्रनाथ आजकल विदेश यात्राकर रहे हैं। आजकल आप जापान में हैं। जापान में प्रवेश करने के समय से ही आप पर स्वागतों और अभिनन्दनों का बोझ पड़ रहा है। जापानी विद्वानों ने और समाचार पत्रों ने रविन्द्र का खुली भुजाओं से स्वागत किया है। आप के अनेक व्याख्यान हो

Digitized by eGangotri

चुके हैं और कई स्थानों पर आपका विशेष रीति से सभाओं में सत्कार किया गया है। एक स्थान पर स्वागत के उत्तर में आपका व्याख्यान था। उसमें जापान के प्रसिद्ध २ बहुत से विद्वान और नेता उपस्थित थे। जापान के प्रधान मन्त्री कौन्ट ओक्यूमा, डा० लाटा, मिस्टर कोनो आदि जाति के नेताओं से उपस्थित जनता सुशोभित थी। रवीन्द्रनाथ ने अपने व्याख्यान के प्रारम्भ में कहा 'मैं जापानी नहीं बोल सकता। और अंग्रेज़ी जापानियों की मातृ भाषा नहीं है, और साथ ही क्योंकि मैं उधार ली हुई भाषा में पूरी सुलभता से नहीं बोल सकता, इस लिये मैं जापानी मित्रों की उपस्थिति में अपनी बंगाली भाषा में ही व्याख्यान दूंगा।"

आगे आपने बङ्ग भाषा में ही भाषण किया। आपकी बंगाली वक्तृता का प्रो० कोमूराने जापानी में अनुवाद कर दिया। अन्त में जापान के प्रधान मन्त्री कौण्ट ओक्यूमा कवि को धन्यवाद देने उठे। आपको अंग्रेज़ी का इतना परिज्ञान था कि रवीन्द्रनाथ की बंगाली वक्तृता को आपने अंग्रेज़ी भाषा की वक्तृता समझा। आपने कहा कि "मैं अंग्रेज़ी नहीं समझ सकता तो भी भारत के मुनि को यहां आने पर बहुत २ धन्यवाद देता हूं।" कहते हैं इस पर थोड़ी बहुत हंसी भी हुई।

इन दोनों महापुरुषों ने हमें एक विशेष शिक्षा दी है। रवीन्द्रनाथ अंग्रेज़ी के अच्छे ज्ञाता हैं। आप उस भाषा के प्रलोभन में नहीं पड़े—प्रत्युत एक ऐसी भाषा में भाषण किया जिसे शायद सारी जनता में से एक या दो सज्जन ही समझते हों। उधर कौण्टऔक्यूमा जापान के प्रधान मन्त्री है। जापान का इंग्लैंड सब से बड़ा मित्र देश हैं। किन्तु फिर भी कौण्टओक्यूमा अंग्रेज़ी नहीं समझते, क्या ही हृदयाकर्षक दृश्य है! भाषा का मूल्य छोटे हृदयों और तुच्छ मनों वाले लोग नहीं समझते। वे नहीं जानते कि मातृभाषा का क्या महत्व है?

एक अंग्रेज़ी पत्र के सम्पादक महोदय से हमारी बात चीत हुई। हमने उनसे निवेदन किया कि आप भारतवासी होते हुए अंग्रेज़ी पत्र का सम्पादन क्यों करते हैं? और कभी २ आर्यभाषा लेख क्यों नहीं लिखते? आपके उत्तर का भावाशय यह था कि यह ठीक है कि भारत वासियों को अपनी भाषा की उन्नति में ध्यान देना चाहिये, किन्तु अंग्रेज़ी को छोड़ा नहीं जा सकता। अंग्रेज़ी में हम अपने विचार इस लिए प्रकाशित करते हैं कि विदेशी लोग भी हमारे सिद्धान्तों के महत्व समझ जायं।' ठीक है—देश में शिक्षा हो या न हो, देशवासियों के अन्दर किसी प्रकार की रोशनी पहुंचे या न पहुंचे— विदेशियों को ज्ञान देना आवश्यक है। भारत वर्ष सदा से परोपकार व्रती रहा है। भारतवर्ष की वर्तमान दशा शोचनीय है—किन्तु उस पर विशेष विचार करना तो स्वार्थ में शामिल है। भारतीय प्रजा मूर्ख है— किन्तु उन की दशा को सुधारने की चिन्ता करना तो महा स्वार्थ है। अपनी भाषा दरिद्रा है—किन्तु उसी की उन्नति में दत्तचित्त हो जाना महा—स्वार्थ है। यहां तो परोपकार व्रत है। योग्य की रक्षा कैसे हो? पश्चिम इस भयानक सभ्यता से कैसे बचे? यही चिन्ता है जिस में हमारे यहां के अनेक विद्वान् अधमुए हो रहे हैं। उन्हें योरप की दशा सुधारने के साधन सोचने में रातों नींद नहीं आती। किन्तु अपनी भाषा अपनी जाति के लिए कटिबद्ध होना किसे कहते हैं— इस प्रश्न का उत्तर सोचने में दिमाग़ का वृथा व्यय नहीं करते।

ऐसे देश सेवक भी हैं, जो समझते हैं कि अंग्रेज़ी भाषा ही भारत की उन्नति का साधन है क्योंकि यह भारतवर्ष में समझी जाती है। उन लोगों के लिए हमें कुछ नहीं कहना। वे तो अंगुली के अगले भाग मात्र को सारा शरीर समझने के लिए तैयार हैं। भारत की जातीय देह में अंग्रेज़ी जानने वालों की वही हैसियत है जो एक शरीर में अंगुली के अगले भाग की होती है। उन की सेवा के लिए सारे शरीर की सेवा को छोड़ देने वाले सज्जन सहस्त्रों नमस्कारों के योग्य हैं। वे विलक्षण तत्ववेता हैं।

हर्ष की बात है कि ऐसे परार्थ परायण या विलक्षण तत्ववेत्ता के अतिरिक्त और भी प्राणी भारत में बसते हैं और कविवर रविन्द्र उन में से एक हैं। कवि के धर्म पालन को कौण्ट ओक्यूमा के दृष्टान्त ने और भी पुष्टि देदी है। भारतवासी अन्धे होंगे-यदि वे इन दृष्टान्तों के भी देखने की शक्ती नहीं रखते। क्या ये दृष्टान्त अंग्रेज़ी सेवकों की आंखें खोलने के लिये पर्याप्त नहीं हैं।

वेद में पर्दासिस्टम

बहुत दिन हुए सद्धर्मप्रचारक में एक महाशय ने एक आर्यसमाजी उपदेशक की शंका छपाई थी कि—वेद में पर्दासिस्टम है या नहीं? पर्दासिस्टम की पुष्टि में एक प्रमाण भी पेश किया था। उस का उत्तर उसी समय देने का विचार करने पर विस्मरण हो गया। इतने दिनों तक उसकी याद न आई अब एक सज्जन के पत्र ने उधर ध्यान खेंचा है। जिस मन्त्र से एक उपदेशक महाशय पर्दासिस्टम् सिद्ध करते हैं—उससे पहिला और वह मन्त्र नीचे दिया जाता है। प्रकरण और अर्थ से पाठकगण समझ जायंगे कि उस में पर्दासिस्टम की गन्ध भी नहीं है। उससे पहिला मन्त्र है—

य आमं मांसमदन्ति पौरुषे यंच येक्रविः।
गर्भान्खादन्ति केशवास्तानितो नाशयामसि
ऋ। ६। ६। २३

"जो क्रिमि या कीराण्ड मांस को खाते हैं, और गर्भ तक मार करते हैं और जिनकी गति जल युक्त वायु या स्थान में ही रहती है—उनका हम नाश करें।" इस मन्त्र में रोगजनक जन्तुओं के नाश का उपाय है। आगे इन्हीं जन्तुओं के विषय में दूसरा मन्त्र है—

ये सूर्यत् परिसर्पन्ति स्नुषेव श्वशुरादधि इत्यादि इसका तात्पर्य है कि—जो जन्तु सूर्य के प्रकाश तथा ताप से ऐसे दूर भाग जाते हैं, जैसे श्वशुर से पुत्र-कधु

दूर हट जाती है।" बस इन्हीं दो पदों के आधार पर वेद में से पर्दा सिद्ध करने का यत्न किया गया है। इन मन्त्रों में पर्दे का द्योतक कोई भी शब्द नहीं, पुत्र वधू की श्वशुर से स्वभाविक और उचित लज्जा का अभिप्राय है। यह कहां से निकल आया कि वेद में पर्दे का कथन या विधान है। यह स्वाभाविक ही है कि बुजुर्ग के सम्मुख कन्या लज्जा करे—यह पर्दा नहीं। योरप में पर्दा नहीं—किन्तु क्या वहां श्वशुर से पुत्र वधू को लज्जा नहीं होती। पर्दे का सिद्धान्त ही दूसरा है। वेद में तो स्त्रियों के जिस प्रकार के धर्म लिखे हैं उससे पर्दे के भाव का सर्वथा खण्डन होता है। विवाह के समय पत्नी द्वारा पति को जो वेद मन्त्र कहे जाते हैं—भला क्या एक हिन्दू पर्दे में रहने वाली कन्या अपने सब बड़े सम्बन्धियों के सामने उन्हें कह सकती है।

—:०:—

"श्रीयुत महाशय!

वर्तमान समय में ग्रामों के स्कूलों में जो तालीम दीजाती है, जिसमें सवाय भेड़, बकरी, बिमगादड़ वग़ैरह के किस्से पढ़ायेजाते हैं जिसके कारण बच्चों को कैसा फ़ायदा होना चाहिये नहीं होता। जो मास्टर ग्रामों में बच्चों को पढ़ाते हैं, खासकर देखा गयाहै बच्चों से एक पैसे की कापी के दो पैसे लेलेते हैं, इसी हिसाबसे किताबें, पेनसिल वग़ैरह पर भी लेते हैं और स्कूल के समय में ही बच्चों से तमाखू भरवाकर उन्हें भी पिलाते हैं और आपभी पीते हैं जहां। बच्चा थोड़ासा पढ़ा फिर वह खेती का काम करना पंसद नहीं करता, इसी कारण हमने उपयोगी पुस्तकें लिखवा कर ग्राम २ में मुफ़्त तालीम देने का प्रबन्ध किया है।

आप इस संस्था के मेम्बर व सहायक हैं इसलिये आपसे प्रार्थना की जाती है कि आपके ज़िले में तहलीलों में व ग्रामों में ऐसे कितने मन्दिर होंगे जिनमें हमें स्कूल खोलने के लिये इजाज़त मिल सकती है।

मन्दिरों में जो अध्यापक रहेगा वह ब्राह्मण होगा वह कौन २ धर्म्मात्मा ऐसे हैं जो अपना मकान सिर्फ स्कूल खोलने को देदेंगे।

स्कूलों में किसी प्रकार की फ़ीस वग़ैरह नहीं लीजायगी न जाति वग़ैरह का ख्याल किया जायगा कृपाकर इन तमाम बातों की ठीक से जाँच कर के पक्का उत्तर दीजिये।"

ऊपर उद्धृत किया पत्र महाशय मन्त्री "विश्व विद्या प्रचारक महा मण्डल" बन्दीसी ने सुद्रणार्थ भेजा है। मातृ-भाषा ही शिक्षा का माध्यम हो सकती है और उसके द्वारा जितना ज्ञान सर्व साधारण का बढ़ाया जावेगा उतना ही जाति धर्म की उन्नति होगी।

—:०:—

महामंडल की महिमा

श्री बाबू सारदाचरण मित्र भूतपूर्व जज तथा वर्तमान मन्त्री महामण्डल ने अपने मण्डल के 'महा' सम्मान-पत्रों के समर्थन के लिए पटना के 'पाटली पुत्र' में लेखनी उठाई है। यह बतला कर कि आज तक जितने सम्मान-पत्र वा (स्वर्ण-रजत और रौप्य) पदक दिए गए हैं उनमें से केवल पांच ने ही मान-पत्र लौटाए हैं आप ने मान पत्रों और पदकों की संख्या दी है जो आज तक विविध राजों, महाराजों, श्रीमानों और विद्वानों को दिए गए हैं। वह संख्या ३०० से अधिक है। फिर लिखते हैं—

"ऊपर लिखित मानों के अतिरिक्त पांच व्यक्तियों ने मान पात्र वापस किए हैं। बड़े शोक की बात है, कि ऐसे स्वजातीय मान के फेरने वालों में दो अति प्रसिद्ध व्यक्ति हैं और उन्होंने ऐसे शब्दों के साथ फेरे हैं, जिन शब्दों को प्रकाश करना उन सज्जनों की कीर्त्ति के प्रतिकूल समझते हैं। श्री महामण्डल हिन्दू जाति की प्रतिनिधि सभा है। दरिद्र हिन्दूजाति की दरिद्र प्रतिनिधि सभा धनादि देकर गुण की पूजा करने में असमर्थ है। श्री महामण्डल के मानदान के तात्पर्य्य यह है कि इस प्रकार से सन्मानित करके विद्वान् और गुणियों की पूजा की जाय और उनका उत्साह बढ़ाया जाय। भारतवर्ष के सब प्रान्तों में राजा महाराजाओं से लेकर सब श्रेणी के विद्वानों में महामण्डल के इस मान की कदर किस प्रकार से हुई तो ऊपर लिखित मानदान की संख्या से ही पठाकों को विदित होगा। यदि पांच सज्जन अपनी अनुदाता दिखा कर श्री महा मण्डल की इस सद्वासना और सत्पुरुषार्थ का निरादा करें तो भारत के ऐसे दुर्दिन में कुछ निरुत्साह होने की बात नहीं।

इन पांच महाशयों में से एक सज्जन ने व्यक्ति गत द्वेष के कारण अपने पत्र में ऐसा लिखा है, कि महामण्डल को मान देने का अधिकार नहीं है व पब्लिक की नज़रों में महामण्डल योग्यता ही रखता है। इस के उत्तर में निवेदन यह है कि महामण्डल अपनी योग्यता का अहंकार नहीं रखता किन्तु केवल गुण की पूजा और गुणियों का उत्साह बढ़ाने का यथा साध्य प्रयत्न करता है। दूसरी ओर अब देखने में आरहा है कि आचार्य प्रभुओं में बड़े बड़े आचार्य कुलतिलक शृंगेरिमठाधीश जैसे महानुभाव, राजा महाराजाओं में बड़े बड़े बालिए मुल्क स्वाधीन नरपति, विद्वानों में सब विद्यापतियों के बड़े बड़े विद्वान्, नवीन शिक्षित व्यक्तियों में बड़े बड़े विज्ञानवेत्ता हिन्दुस्थान के सब प्रान्तों के हिन्दू नेतागण जब इस स्वजातीय मान की कदर कर चुके हैं तो पब्लिक ही इस विषय की विचार सकती है, कि श्रीमहामण्डल की सद्वासना उस के अधिकार के उपयोगी है, कि नहीं।

इस के अतिरिक्त दैवी मीमांसा दर्शन के विषय में जो कुछ भ्रान्तिजनक बातें लिखी गई हैं उस विषय में किसी को ज्ञातव्य होवे तो श्री महामण्डल का मुखपत्र "निगमागम चन्द्रिका' के वर्त्तमान मास की संख्या को मंगवा कर समस्त शंकाओं का समाधान कर लेवें। उसमें दैवी मीमांसा दर्शन के आविष्कार व प्रकाश के विषय में बहुत कुछ लिखा गया है।"

इस सारगर्भित लेख का उचित उत्तर तो लोकमान्य मालवीय जी ही देंगे परन्तु हम जज महाशय के सामने तीन शंकाएं पेश कर देते हैं—(१) क्या प्रमाण है कि सबने प्रमाण पत्र सहर्ष ही स्वीकार किए और रद्दी की टोकरी में नहीं फेंक दिए—(२) जब मण्डल के विरुद्ध अन्य सनातन सभाएं भी, जो आप की सभा को अपमानित समझती हैं, लाखों हिन्दुओं को अपनी ओर खींच रही हैं तो आप हिन्दू जाति के प्रतिनिधि हैं—यह कैसे सिद्ध हुआ और (३) राजों महाराजों की गोद में पलने वाला मण्डल धन से क्यों विद्वानों का सम्मान नहीं कर सकता?

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इतिहास तरंग

लेखक एक मल्लाह

कतिपय ऐतिहासिक पौराणिक गाथाओं और वैदिक मिथ्या कथा प्रवादों की तुलना के आधार पर डायानिसज़ और देवन हुप को एक ही मानते हैं। देव नहुष भी भारत के साहित्य में एक विख्यात विजय शील राजा हो चुका है। वैदेशिक और स्वदेशीय विद्वानों की सम्मति में भेद इतना है कि हम लोग देवनहुष को भारत का राजा मानते हैं और वैदेशिक विद्वान् लोग डायोनिसज़ को मिश्र का राजा और भारत का विजेता मानते हैं।

× × × ×

यूनान के वासियों की सम्मति में भी मेरू भारतवर्ष के एक पहाड़ का नाम है। हमारे साहित्य के आन्दोलन से प्रतीत होता है कि बहुत सम्भवतः मेरू पृथिवी का मध्य दण्ड होने से उत्तरी ध्रुव ही का नाम हो।

× × × ×

भारत और मिश्र के प्राचीन काल के सम्बन्ध के विषय में यह सम्मति है, कि भारत और मिश्र देश का सम्बन्ध सार्वदैशिक अज्ञाततिथिक जलप्लव के ज़माने में भी बहुत गाढ़ था। ये दोनों सभ्यताओं के क्षेत्र एक समय परस्पर भिन्न भाव की स्पर्द्धा से स्वतन्त्रतया बढ़ रहे थे यहां तक कि मिश्र देश वालों ने अपनी पुराण माला को बनाने के लिए बहुत सी बातों में भारतीय पुराण कथा तथा उपाख्यानों की कलमें और डालियें काटली हैं। इसी आधार पर ऐतिहासिक मिश्र के बक्कस की और भारत के रान की मूंछ मिलाकर एक बनाना चाहते हैं।

× × × ×

राजा बक्कस के बारे में यह प्रसिद्ध है कि मेरू के पहाड़ों में पला और नीसा या निषधस्थान में शिक्षित हुआ। इस राजा बक्कस और पूर्वोक्त ओसरिस दोनों को ऐतिहासिक एक भी मान लिया करते हैं। और इस के बारे में भी वही कहते हैं कि बक्कस जब बड़ा हुआ तो इसने मिश्र के वासियों को असभ्यता तथा जंगलीपने से निकला। उनको भूमि जोतना सिखाया। देश भर को शहरों में बीरों देवताओं की पूजा सिखाई। और सहस्रों मन्दिरों की स्थापना की, इसी ने पूर्वोक्त थीवी शहर भी बसाया।

(ओसरिस और डायानेसिज़)

ऐतिहासिकों ने जिस प्रकार बक्कस और देवनहुष या डायोनेसिज़ को एक व्यक्ति माना है उसी प्रकार देवनहुष और पूर्वोक्त ओसरिस को भी कोई भिन्न व्यक्ति नहीं माना।

× × × ×

(भारत पर आक्रमण)

इस राजा का भारत पर आक्रमण बहुत ऐतिहासिकों ने निश्चित किया है। ऐतिहासिक उसकी भारत पर विजय यात्रा का वृत्तान्त लिखते हुवे लिखा करते हैं कि इस राजा ने भारतवर्षियों को भारत के पर्वतों और मैदानों में गड़रियों के सादे जीवन में घूमते हुवे देखा था। उस समय वे बिचारे सब से प्रथम सभ्यता की सीढ़ी में स्वाभाविक निष्क्रिय अज्ञान की अवस्था में थे। इन्हें खेती बाड़ी के साधारण नियम भी नहीं ज्ञात थे। यद्यपि इनके पास साधारण पत्थरों के और कुछ २ लोहे के हथियार थे, परन्तु फिर भी नियम तथा नियन्त्रण के नीचे पुर्दों के करने आदि सभ्यता के मार्गों तथा अवस्थाओं से सर्वथा अनभिज्ञ थे।

× × × ×

(डायोनेसज़ की विजय सीमा)

डायोनसज़ (देवनहुष) की सेनाएं पास की तरफ के सीमा प्रान्तों से भारत में प्रविष्ट हुईं। सेनाएं बड़ी सजधज से विजयपताका फहराते हुवे भारत में बड़ी शान से घुसीं। यद्यपि उसके मुकाबले में पहले कोई भी खड़ा न हुआ परन्तु फिर भी भारत के निवासियों ने अपनी मातृभूमि में विदेशियों के पांव प्रलोभों को न सह कर विरोध की ठान ली।

भारत के जिलों जिलों, और गावों गावोंसे जगह२ के लोग जोधमें इकट्ठे होने लगे और अन्त में आक्रामक शत्रु का सामना किया गया। परन्तु इसका देवनहुष पर बहुत प्रभाव न पड़ा।

× × × ×

ऐतिहासिकों की सम्मति में ओसरिस की विजयसेना का पदाक्रमण गंगा के निकास तक हो चुका है। वहां तक उसने अपने विजयस्तम्भों को भी गाड़ दिया था और कतिपय ऐतिहासों की सम्मति में तो इस राजा ने एशिया के परले पार तक धावा बोला था और अन्तिम रुकावट का स्थान अथाह और अपार समुद्र ही था।

× × × ×

(यूनानी ऐतिहासिक)

ऐतिहासिक डायोडोरस की सम्मति औसिरिस या बक्कस के बारे में इस प्रकार की है कि—

"मिश्र देशवासी लोग वास्तव में स्वीकार करते हैं एक बड़े भारी विजेताने उनके देश को विजयकिया। उसकेही अपने विज्ञान-कौशल से वहां के वासियों ने शासन में रहना और शासन करना भूमि में खेती करना और अंगूर आदि के बाग बगीचे लगाना, और भारत की बड़ी अंजीरों का पैदा-करना तथा कलम आदि लगाना सीखा। वे लोग इन सब उपकारों के लिये इस राजा के बड़े ऋणी हैं।

इस राजा ने उनके देश में बहुत से बड़े बड़े नगर खड़े किये। और देवताओं की पूजा करने के लिये पवित्र स्थान और देवालयों की स्थापना की।

परन्तु इस के साथ ही साथ इस विजेता को वो अपने से भिन्न न समझते थे और कहते थे कि असली वासी भारतवर्ष का ही है।

× × × ×

(भारत में उत्पन्न जेता)

डायोडोरस की इस सम्मति पर पाठकों को विशेष ध्यान देना चाहिये।

इससे प्रतीत होता है (१) मिश्र के वासी भारत से जाकर बसे, जिनो ने विजेता को अपने से भिन्न नदेखा (२) वह विजेता स्वय भारत वासी तथा सभ्य संसार का बड़ा संशोधक तथा आचार्य और देवगुरु था। (३) डायोडोरस की सम्मति ने प्रागुक्त ऐतिहासिकों के मत को आग्रह मिट्टी में मिला दिये।

प्राप्त पत्र

गुरुकुलों का नियन्त्रण

श्रीमान् मन्त्री जी नमस्ते,

मैंने गुरुकुलों की वर्त्तमान अवस्था और आर्य जनता की विशेष निर्धनता पर विचार करते हुए और यह देखते हुए कि गुरुकुलों की सहायता अधिकतर आर्य ही करते हैं, यह विचार किया था कि यदि भारतीय गुरुकुल एक प्रणाली पर शिक्षा दें और एक संगति में आजावें तो अति उत्तम हो। इस के लिए मैंने यह विचरा था कि यदि सार्वदेशिक सभा के आधीन एक विद्या सभा स्थापित की जाय और उस विद्या सभा के आधीन भारतीय समस्त गुरुकुल रक्खे जायें और उनकी पाठप्रणाली एक कर दी जावे और हाल में एक गुरुकुल महाविद्यालय रहे और शेष गुरुकुल विद्यालय तक रह कर अधिकारी परीक्षा तक अपने यहां शिक्षा दें—

जिस गुरुकुल में महाविद्यालय हो वही विश्व विद्यालय अथवा यूनीवर्सिटी समझा जावे और उस में ब्रह्मचारीगण रह कर शिक्षा पावें जैसा कि प्रत्येक गुरुकुल में होना है। यह विश्वविद्यालय रेजीडेंशल यूनीवर्सिटी इस अंश में रहेगी कि महाविद्यालय के विद्यार्थी उस में अपने अध्यापकों के साथ रहेंगे और शिक्षा प्राप्त करेंगे, परन्तु अधिकारीपरीक्षा के लिये यह विश्वविद्यालय इफ्लियेशन (Affiliation) का भी अधिकार रक्खेगा और इस तरह से अन्य गुरुकुलों के विद्यार्थी इस विश्वविद्यालय की निर्धारित अधिकारी परीक्षा में उत्तीर्ण हो कर विश्वविद्यालय में प्रविष्ट हो सकेंगे—ऐसा संगठन करने से मेरी सम्मति में गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा अधिक उत्तम रीति से दी जा सकेगी और आर्य्य जनता को यह अवसर—प्राप्त होगा कि वह अपनी प्राचीन प्रणाली की शिक्षा का महत्व संसार को दिखा सके।

यह कठिनाई भी कि गुरुकुल के लिये योग्य अध्यापक नहीं मिलते, दूर हो जायगी—शास्त्रों और वेदों के अध्यापक जो इस समय प्रत्येक गुरुकुल के लिये मिलना असम्भव है बड़ी सुगमता से एक महाविद्यालय होने पर उस महाविद्यालय के लिये मिल सकेंगे—मेरे विचार में एक महाविद्यालय को अच्छी तरह चलाने के लिये धन भी सुगमता से एकत्रित हो सकेगा—

वर्त्तमान समय में जब कि प्रत्येक गुरुकुल महाविद्यालय बनने की इच्छा में मस्त है तब कोई भी महाविद्यालय अच्छा साफ़ (अध्यापक गण) रख कर और उसके अतिरिक्त दूसरे महाविद्यालयों की आवश्यकताओं को पूर्ण करके शिक्षा नहीं दे सकता और न धन ही उस को काफ़ी मिल सकता है—

हां यदि हम प्रत्येक गुरुकुल को विद्यालय और एक गुरुकुल को महाविद्यालय रक्खें तो अवश्य हम एक बड़े अंश में कृत-कार्य्य हो सकते हैं—हिन्दू विश्वविद्यालय के खुलने से मेरे विचार में गुरुकुल शिक्षा को किसी अंश तक धक्का पहुंचने की सम्भावना है—इस धक्के से बचने के लिये आवश्यक है कि हम अपनी गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा का महत्व पूर्ण रूप में जनता को दरशा दें और यह उसी समय हो सकता है कि जब हम एक प्रणाली पर और एक योग्य संगठन (Constitution) के अधीन रह कर अपने कार्य्य को बड़े बल और उत्साह से करें अपनी २ ढपली और अपना २ रागवाला कार्य सदैव हानिकारक होता है—अतः हमारी सब प्रतिनिधियों को चाहिये कि सार्वदेशिक सभा को शीघ्र एक जीवित जागृत संस्था बनाकर विद्या सभा का संगठन करादें और अपने प्रत्येक गुरुकुल को उसके आधीन करदें—

विद्या सभा जो बनाई जावे उस में ऐसे विद्वान् पुरुष रक्खे जावें जिनको शिक्षा का अनुभव हो और जो साथ हुए देश के आर्य्य विद्वान् हों और महर्षि के सिद्धान्त के अटल विश्वासी हों—

कांगड़ी गुरुकुल जो इस समय महाविद्यालय की कोटि को प्राप्त हो चुका है महाविद्यालय रहना चाहिये-इस विषय पर जब अधिक विचार किया जायेगा तो मेरे विचार में मेरा यह प्रस्ताव आर्य्य जनता को लाभदायक और उत्तम प्रतीत होगा—मैं एक युक्त प्रदेश वासी हूं मुझे कांगड़ी गुरुकुल से कोई अधिक प्रेम नहीं है बल्कि मेरा सम्बन्ध भी उस से नहीं है यदि मेरा संबन्ध भी उस से नहीं यदि मेरा संबन्ध भी किसी गुरुकुल से है तो वृन्दावन गुरुकुल से युक्त प्रदेशीय प्रतिनिधि सभा के सभा सद होने के कारण है—इस से कोई महाशय यह न विचार करें कि कांगड़ी गुरुकुल को महाविद्यालय रहने के लिये मैं इतना बल क्यों देता हूं। मेरा अभिप्राय इस से यह कि कांगड़ी गुरुकुल जो महाविद्यालय की कोटि को प्राप्त हो चुका है दूसरे गुरुकुलों से जो उस कोटि को अभी प्राप्त नहीं हुए अधिक अधिकार रखता है। कि वह्रो महाविद्यालय रहे और इस में सुगमता भी रहेगी—मुझे पूर्ण आशा है कि आप अपनी २ प्रतिनिधियों में इस पत्र को प्रविष्ट कर के इस पर शीघ्र ही विचार करेंगे—

मेरी अन्तिम प्रार्थना यह भी है कि इस विषय पर विचार करते हुए आप अपने २ गुरुकुल के अधिष्ठताओं से भी सम्मति प्राप्त करलें—मुझे पूर्ण आशा है कि आप मेरी त्रुटियों के लिये यदि कोई आप को प्रतीत हो तो क्षमा करेंगे—

वैदिक धर्म सेवक,
हरप्रसाद सिंह
मन्त्री श्रीमती उप प्रतिनिधि सभा बुन्देलखंड बांदा

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

मोक्ष से पुनरावृत्ति

अग्ने वयं प्रथमस्या मृतानां मनामहे चारु देवस्य नाम स नोमन्द्या अदितये पुनर्दात् पितरं च दृशेयमम्मातरञ्च ॥ ऋग्वेदः

वेद मुक्ति से पुनरावृति का कथन करता है परन्तु नवीन वेदान्त के प्रचार से इस सत्यसिद्धान्त को विद्वानों ने ऐसा भुलाया जैसे यूनान में विद्वद्वर अरस्टाख के पृथिवी आदि के घूमने के सिद्धान्त को भूल कर बतलीमूस का खगोल (जिसमें पृथिवी को स्थिर माना है) मान लिया गया। उस समय से लोगों को इस बात का स्वप्न भी नहीं आता था कि पृथिवी घूमती है। परन्तु अब कोपरनिकस के परिश्रम से पुराने सच्चे सिद्धान्त से स्कूल का एक बच्चा भी इनकार नहीं कर सकता। इसी प्रकार ऋषि दयानन्द के तप से स्फुटित हुआ मुक्ति से पुनरावृत्ति का वा अन्य वैदिक सिद्धान्तों का कोई निस्पक्ष विद्वान् अस्वीकार नहीं कर सकता (अनावृत्तिः शब्दा दनावृत्तिः शब्दात्) वेदान्त। नमुक्तस्यपुनर्बन्धयोगोप्यनावृत्तिश्रुतेः। सांख्य) इत्यादि वाक्य जिन का यह आशय समझा जाता था, कि मोक्ष से कभी भी पुनरावृत्ति नहीं होती। और जीव ब्रह्म ही हो जाता है इन के ठीक अभिप्राय को [सकल्वेवं वर्तयन्यावदायुषं ब्रह्मलोकमभि संपद्यते नच पुनरावर्तते। छां०॥ ते ब्रह्मलोकेषु परान्त काले परामृताः परिमुच्यन्ति सर्वे। मुं०) इन प्रमाणों से सुलझा दिया है। कि इन का अर्थ केवल यही है कि मोक्ष की अवधि पर्यन्त ही अनावृत्ति कही गई है। वैज्ञानिक रीति से तो इस सिद्धान्त के माने बिना चारा ही नहीं।

परन्तु मोक्ष से जीव क्यों और कैसे पतित होते हैं पहले पहल किस योनि में जन्म लेते हैं। इन प्रश्नों का उत्तर जो प्रायः दिया जाता है उसने इस सत्य सिद्धान्त को कठिन और दुःसाध्य बना दिया है। मुझे यह अभिमान नहीं। कि इन दोनों का एक मात्र सुलझाने वाला हूं। विद्वान् इसका बहुत अच्छा समाधान कर सकते हैं। तथापि ऋषि कथन के बिना जो संक्षिप्त उत्तर है। प्रायः मुझे आर्य विद्वानों का जो विचार स्मरण है आगे वर्णन करूंगा। उसने मैं सहमत नहीं। मेरा जो विचार है उस पर जो भाई शंका उठावेंगे। उनका उत्तर (सम्पादक जी की आज्ञा होगी) तो दूंगा। असत्य का त्याग और सत्य को स्वीकार करूंगा।

[१] मोक्ष च्युत जीव किस योनि में जन्म लेता है। प्रायः उसके संबन्ध में विचार फैल चुका है कि मोक्ष पतित जीव सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न होते हैं। और जिन को परमात्मा की ओर से वेद ज्ञान मिलता है वह भी मोक्षसे लौटे हुए जीव होते हैं। यह युक्ति विरुद्ध होने के अतिरिक्त ऋषि के विचार के भी विरुद्ध है। अगले प्रश्नों के उत्तर में इस का युक्ति पूर्वक खंडन होगा। यहां केवल ऋषि का विचार उद्धृत किया जाता है।

[ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका वेदोत्पत्ति विषय। अत्रैवं वेदितव्यं तेषामेव पूर्वपुण्यमासी द्यतः खल्वेतेषां हृदये वेदानां प्रकाशः कर्तुं योग्योऽस्ति] स्पष्ट है कि ऋषियों को पूर्व कर्मानुसार वेद प्राप्ति हुई। [सत्यार्थप्र० समु० ७ वेद विषय। वह ही चार सब जीवों से पवित्र आत्मा थे। अन्य इनके सदृश नहीं थे इस लिए पवित्र विद्या द्वारा प्रकाश इन हीं में किया] सत्यार्थप्र० समु० ८ सृष्टि प्रकरण [अ] सृष्टि की आदि में एक वा अनेक मनुष्य उत्पन्न किये थे वाक्या [उत्तर] अनेक क्योंकि जिन जीवों के कर्म ऐश्वरी सृष्टि में उत्पन्न होने के थे। उनका जन्म सृष्टि की आदि में ईश्वर देता है। इस से स्पष्ट होगया कि सृष्टि के आरम्भ में वेद ज्ञान की प्राप्ति वा जन्म का कारण पिछले जन्म के कर्म होते हैं। जो मोक्ष च्युत जीवों के नहीं होते। इस लिए सृष्टि के आदि या मध्यकाल में उत्पन्न होना मोक्ष पतित जीवों के लिए कोई नियम नहीं है।

[२] मोक्ष से आवृत्ति क्यों होती है। [प्र] [क] मोक्ष में जीव कर्म नहीं करता जिसका फल इस संसार में जन्म लेना हो। [ख] यदि कहो के मोक्ष प्राप्ति से पहले जीव के कर्म ही इतने थे कि परान्त काल पर्यन्त मुक्ति प्राप्त हो तो निम्नलिखित प्रश्न और उपस्थित हो जाते हैं। [१] एक सेठ एक मज़दूर को उस की मज़दूरी अपने बाग़ की दो घंटा सैर देता है। पश्चात उसको अपने बाग से बाहर कर देता है। और मज़दूर अपने घर में चला जाता है। यदि सेठ उसको बाहर करके किसी कुएं में गिरा दे तो अन्यायी समझा जावेगा। जीव को मोक्ष से बंध में डालना ही है। क्यों इसकी अपनी अवस्था न बंध है न मोक्ष है। संसार में आकर दुष्ट कर्मों में प्रवृत होकर दुखी होना कुंआ ही है। यदि कहा जाए मोक्ष के सामान फिर बना देता है तो यह ऐसा ही है; जैसे किसी को मकान से गिरा कर उस के चढ़ने को सीढ़ी लगा देवे। जब संसारोत्पति का कारण जीवों को मोक्ष दिलाना ही है तो मोक्ष से गिराया क्यों जाता है। [२] जबकि कर्मों का कर्तृ नियत फल [मज़दूरी] कर्ता की इच्छा नुसार होता है तो वह जीवों को सदैव की मोक्ष क्यों नहीं दे देता। संसार से दुख उठ जावें और सब जीव मोक्ष के सुख को भोगें परमात्मा भी संसार के झगड़ों से अलग हो जावे और प्रकृति भी मारी मारी न फिरे। (ग) १-मुक्ति मज़दूरी रूप फल नहीं जिसका अन्त आवश्यक हो। मज़दूरी कुछ पैसे वा दो घंटा तक सैर होसकती है। परन्तु एक मनुष्य जिस के दोनों हाथ रस्सी से बंधे हुए हैं वह उससे छूटना चाहता है। और यत्न करता है कोई न्यायधीश उसकी सहायता के लिए आजाता है उसकी सहायता से वह छूट जाता है अब वह सदैव के लिए मुक्त है जब तक दोबारा स्वयं न बांधे। या किसी अपराध पर उसको न बांधा जावे। यदि वही न्यायाधीश दोबारा बिना कारण उसके हाथ यह कह कर बांध देवे कि तुम्हारे कर्म अनन्त नहीं थे। तो उसको कौनसा शंस नहीं कहेगा। जीव का मुक्ति से लौटना ऐसा ही है। [२]

यदि यह कहा जावे कि मुक्ति में परमात्मा का योग होता है इस योग का त्याग कर्मानुसार होना चाहिये। इसके उत्तर में निवेदन है कि एक पिता का प्यारा पुत्र पिता की गोद में जावैठा है।

जबतक पिता या पुत्र को कोई दुःख न हो पिता का पुत्र को गोद से उठा देना कठोरता ही है। (घ) यदि गूढ़ विचार से देखा जावे तो मुक्ति एक जीव की अवस्था है। जो यह अपने कर्म से ज्ञान प्राप्ति पर करता है। खिलौना नहीं जो थोड़े समय के पश्चात् छीना जा सके। अवस्था को कोई अन्य व्यक्ति दूर नहीं कर सकती इस लिए मोक्ष से जीव वापिस संसार में नहीं आता।

[उत्तर] यदि यह माना जावे कि मुक्ति पतित जीवों को ही वेद ज्ञान सृष्टि के आरम्भ में परमात्मा की ओर से मिलता है। जिस के लिए आवश्यक है कि वह बड़े ज्ञानी हों। और परमात्मा का योग कर सकते हों। इस अवस्था में मोक्ष पतित जीवों के ज्ञान का कम हो जाना नहीं माना जा सकता यह मोक्ष की अवस्था ही होगी। इस के साथ यदि मोक्ष को मज़दूर की मज़दूरी समझा जावे तो यह अकाट्य युक्तियां हैं। परन्तु यह सत्य सिद्धान्त नहीं। जीव परान्त काल पर्यन्त मुक्ति सुख भोगता है। उस के पश्चात् इस का ज्ञान घटना आरम्भ होता है जब यह ज्ञान के कम होते २ सुषुप्ति अवस्था को पहुंच जाता है। तो इस अवस्था में यदि परमात्मा इसे संसार में न भेजें तो सदैव उसी अवस्था में रहे इस लिए परमात्मा इसे अपनी परम दयालुता से संसार में भेजते हैं (मृत्योर्मामृतं गमय) ताकि फिर मोक्ष के लिए यत्न करे इस लिए उपर्युक्त कोई प्रश्न भी उपस्थित नहीं हो सकता।

(३) मोक्ष से जीव कैसे वापिस आते हैं॥ (प्रश्न) जीव को अपने आप अज्ञान कैसे हो जाता है और इस के लिए क्या प्रमाण है—

(उत्तर) आरोप्यते शिलायैले यत्नेन महता यथा। निपात्यते क्षणेनाधस्तथात्मा गुण दोषयोः॥ अल्पज्ञता के कारण जीव ज्ञानोत्पत्ति परिश्रम से ही कर सकता है। परन्तु भूल स्वयं ही जाता है। एक बालक जिस ने बड़े परिश्रम से बी. ए. पास किया है। स्वाध्याय रहित स्वयं ही भूल जाता है। इसी प्रकार हर प्रकार के ज्ञान की उन्नति या अवनति में यही नियम है। मोक्ष प्राप्त जीव भी स्वयं ही ज्ञान रहित हो जाता है।

(प्रश्न) जैसे बी. ए. पास लड़का स्वाध्याय से ज्ञान को बढ़ाता चला जाता है ऐसा मोक्ष में भी ज्ञान बढ़ाया जा सकता है। (उत्तर) मोक्ष जीव के ज्ञान की अन्तिम सीमा है इस लिए ज्ञान बढ़ाया नहीं जा सकता। [प्र] तो स्वाध्याय से उतना तो बना रह सकता है। [उत्तर] अल्पशक्ति होने से सदैव अपने ज्ञान को स्थित भी नहीं रख सकता। जीव लगातार काम नहीं कर सकता। इसी लिए परमात्मा ने जीव के लिए दिनरात जन्म मरण सृष्टि प्रलय बनाई है। जैसे संसार में मनुष्य धन की प्राप्ति के लिए यत्न करता है। उस धन से अभीष्ट आनन्द प्राप्त करता है। शोक के पश्चात् सो जाता है। प्रातः पुनः कर्म करने लग जाता है। इसी प्रकार जीव यत्न से मोक्ष सुख प्राप्त करता है फिर स्वभाव से सोना चाहता है। मोक्ष तुरीया वस्था है उस के पश्चात् जाग्रत उस के पश्चात् सुषुप्ति को प्राप्त करता है। पश्चात् परमात्मा इसे पथम उन योनियों में जन्म देता है। जो सुषुप्ति योनि जीव शरीर है यथा वृक्षादि।

(क) परान्त काल के पश्चात् जब यह तुरीय अवस्था को छोड़ कर जाग्रत अवस्था में आता है। उसी समय मनुष्य योनि में क्यों नहीं भेजा जाता। (उत्तर) (क) यह जीव की स्वाभाविक शक्तिके विरुद्ध होगा। जीव उस समय स्वभाव से सुषुप्ति प्राप्त करना चाहता है। उपर्युक्त धनेच्छु मनुष्य के अनुकूल सो कर काम कर सकेगा (ख) यदि परमात्मा इसी अवस्था में संसार में भेजे तो ऐसे जीव स्वल्पश्रम से ही पुनः मोक्ष प्राप्त कर लेते। और संसार में श्रेष्ट मनुष्यों से भिन्न कोई जीव योनि दृष्टिगोचर न होती। (ग) यदि सब पाप कर्म के कारण नीची अवस्था को प्राप्त कर लेते हैं, ऐसा माना जावे। तो मानों परमात्मा उन्हें पाप कर्म के करने के लिए ही भेजता है। यह एक दोष है। इस से यही अच्छा है, कि उन को संसार में न भेजा जावे। (घ) यदि कुछ उन्नति करते हैं। तो पतितों पर उपर्युक्त प्रश्न उपस्थित होगा। और द्वितीय जब ऐसे मोक्ष पतित जीव एक ही अवस्था में संसार में आते हैं। तो यह भेद क्यों। यदि सांसारिक संस्कारों से उच्च नीचावस्था को प्राप्त होते हैं। तो इन संस्कारों के उत्पादक परमात्मा पर अन्याय का दोष आवेगा। इस से जीवों का सुषुप्ति अवस्था की प्राप्ति के पश्चात् संसार में आना ही युक्ति सिद्ध है।

(सारांश) जीव मोक्ष से पतित होकर शनैः शनैः ज्ञान शून्य हो कर सुषुप्ति अवस्था को प्राप्त होता है। पश्चात् परमात्मा उस को ज्ञान वृद्धि के लिए संसार में उसे प्रथम वृक्षों में पुनः पशु-योनि में दीर्घ समय तक रखते हैं इस के उत्तर मनुष्य योनि को प्राप्त कर के मोक्ष का अधिकारी बनता है, इतिशम्॥

भवदीय हकिमराय उपदेशक आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब लाहौर समराला आर्यसमाज जि० लुधियाना १३। ४। ७२

—:o:—

आवश्यकता

शाखागुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिए एक आलेख्याध्यापक (Drawing Master) की आवश्यकता है। आर्यसमाजिक हो तो अच्छा है। वेतन २०) से २५) मासिक तक योग्यतानुसार। प्रार्थना-पत्र नीचे लिखे पते से भेजें—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी
ज़िला बिजनौर

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

"गतांक से आगे"

"सुनो फूलसिंह ! मैं तुम्हें साफ़ शब्दों में कहता हूं। मैं अपनी कन्या को कुत्तों के वंश में कभी नहीं दूंगा। कमलदेवी को तेजसिंह के साथ ब्याहने की अपेक्षा मैं उसे किसी मुसल्मान के साथ ब्याह देना अच्छा समझता हूं। क्या कमल देवी को कोई वर न मिलेगा ? साथ ही तुम भी आज से यह जान लो कि मेरे परिवार से अब तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं रहा। मेरे यहां आना जाना तुम्हें बन्द कर देना चाहिये। तुम जैसे कुलद्रोही के लिये मेरे घर का द्वार बन्द है।"

फूलसिंह भी खड़ा हो गया था। वह भी अधिक देर तक अपने जोश को थाम न सका। उसने कहा—

"भाई साहिब ! जिस प्रेम से प्रेरित होकर मैं आपके कार्यों से अपमन्न होता हुआ भी आपको भाई समझता रहा, मुझे शोक है कि आपने उसे कभी नहीं समझा। मैं आज साफ़ कहता हूं कि इस सारे झगड़े में मैं आपको अपराधी और ध्यानसिंह या तेजसिंह को निरपराधी समझता हूं। आपने अपने घर का द्वार मेरे लिये बन्द किया है-मैं भी आज से उस पर थूकता हूं। आप मुझे इस द्वार के भीतर कभी नहीं पायंगे। शेष रहा कमलदेवी के विवाह का प्रश्न। मैं आपको बतला दूं कि तेजसिंह कमलदेवी को चाहता है, और वह उससे विवाह अवश्य करेगा। वीर राजपूत जिसे चाहते हैं, उसे पाही लेते हैं। चौहान वंश के राजपूतों का ऐसे विषय में निश्चय बड़ा भयानक होता है। यदि आप शान्ति से नहीं देंगे तो वह कमलदेवी को दूसरे साधनों से लेगा। बस मैं इतनी सूचना देदेना अपना कर्तव्य समझता था-अब मैं जाता हूं-पर आशा रखता हूं कि परमात्मा अब भी आप की बुद्धि को ठिकाने लगायंगे।"

गुलाबसिंह अपनी बात समाप्त करते ही बैठक के भीतर घुस गया था। वह फूलसिंह के कथन का उत्तर न देकर उसको अपमानित करना चाहता था, परन्तु अन्तिम वाक्य सुनकर उससे न रहा गया। बलात्कार से तेजसिंह कमलदेवी को ले जायगा-यह बात उसके कानों को सह्य न हो सकी। वह उत्तर देने के लिये बैठक के दरवाज़े पर आया तो देखा कि फूलसिंह वहां नहीं है।

—०—

पांचवां परिच्छेद

गुलाम कादिर

फूलसिंह वहां नहीं था-परन्तु किसी के पग की आहट सुनाई दे रही थी। गुलाबसिंह उस आहट को सुनने लगा। थोड़ी ही देर में गली के बीच में से निकलती हुई कोई सफ़ेद सी मूर्ति दिखाई दी। गुलाबसिंह एकटक हो उधर देखने लगा। वह मूर्त्ति बैठक की ओर बढ़ने लगी। पास आने पर गुलाबसिंह ने देखा कि एक लम्बा चौड़ा खूबसूरत मुसल्मान नौजवान उसकी ओर को बढ़ा आरहा है। नौजवान का वेष बादशाही अर्दलियों का सा था। उसके विशाल सुन्दर देह पर वह वेष अनूठी छवि दिखा रहा था। वह नौजवान पास आया और गुलाबसिंह की ओर देख कर कहने लगा—

"क्या मैं अपने साम्हने सुजानपुर के प्रसिद्ध राव गुलाबसिंह को देख रहा हूं ?"

गुलाबसिंह ने कहा कि "हां, मेरा ही नाम गुलाबसिंह है, कहिये आपको मुझ से क्या काम है ?"

नौजवान। "मेरा काम ऐसी जल्दी का नहीं है। आप अन्दर चलिये। बैठकर शान्ति से ही मैं अपना निवेदन करूंगा। मुझे आप से किसी बड़े गुप्त और आवश्यक विषय में बातचीत करनी है।"

रात के समय बादशाही सिपाही को अपने घर में आता देख कर गुलाबसिंह का माथा ठनका, गुप्त और आवश्यक विषय का नाम सुन कर उसका विस्मय और भी बढ़ गया। वह शिष्टता पूर्वक कहने लगा—"आइये ! अन्दर आजाइये।"

दोनों अन्दर चले गये। एक चौकी पर दिया रक्खा था। उसके पास बड़ा गद्दा बिछा हुआ था। गुलाबसिंह अर्दली को भी पास ही बिठाकर मसन्द के सहारे बैठकर उसके बोलने की प्रतीक्षा करने लगा।

मुसल्मान नौजवान ने कहा-"अपना निवेदन करने से पहले मैं यह बतला देना ज़रूरी समझता हूं कि मैं कौन हूं। मैं हिन्दुस्थान के शाहन्शाह जहांपनाह शाह आलम का नौकर हूं। मेरा नाम गुलाम-कादिर है। मुझे शाहन्शाह ने आप के पास भेजा है। जो सन्देशा उन्होंने आप के पास भेजा है-वह गोपनीय है। वह किसी को पता नहीं लगना चाहिये। आप पर शाहन्शाह ने इतना अनुग्रह किया है, उसके बदले में वे चाहते हैं कि आप अपना मुंह इस बारे में बन्द रखें। आप मुझे ऐसी उम्मेद दिलावें तो फिर मैं आप को सन्देशा सुना दूं।"

गुलाबसिंह ने उत्तर दिया "हम लोग चाहे हिन्दूधर्म के अनुयायी हैं, परन्तु हमने मुसल्मान बादशाह की अधीनता स्वीकार की है, तब हम उसकी प्रजा हैं। वे हमारे राजा हैं। राजा की बात को गुप्त रखना प्रजा का धर्म है। कहिये, बादशाह इस राजपूत की तलवार से किस दुश्मन का सिर उड़वाना चाहते हैं।"

गुलामकादिर-"शाहन्शाह आप लोगों से इसी प्रकार की हार्दिक सहानुभूति की आशा रखते हैं। उनके तख़्त के चार-

पायों में से कम से कम एक राजपूतों के कन्धों पर ही खड़ा है। मैं आपकी इस राजभक्ति का समाचार शाह शाह तक ज़रूर पहुंचा दूंगा। पर इस समय मुझे जो निवेदन आप से करना है वह लड़ाई के सम्बन्ध में नहीं है। वह किसी और ही विषय में है। उसमें भी आपकी राजभक्ति की ही परीक्षा होगी। शाहन्शाह की सवारी आज यहीं से निकली थी—इसी गांव को आज उनके दर्शन के सौभाग्य प्राप्त हुए थे, यह आप को ज्ञात ही है। वे आगे जाते हुए मुझे यहां छोड़ गये हैं कि मैं आपको उनका संदेशा दे दूं। संदेशा यह है कि आप अपनी सुन्दरी कन्या को आज ही मेरे साथ दिल्ली रवाना करदें। वह बादशाह के हरम में दाखिल की जायगी।"

बादशाह ने इस बारे में आप को सोच विचार करने के लिये अधिक समय नहीं दिया। उन्हें आप की राज भक्ति पर इतना विश्वास था कि मुझे आज ही रात दिल्ली लौट जाने की आज्ञा दी है। सो अब आप देर न करके अपनी दिव्य सुन्दरी पुत्री को मेरे साथ रवाना करदें।"

गुलामकादिर अपनी बात करता रहा। उस का ध्यान अपनी बात में इतना लगा हुआ था कि वह गुलाबसिंह की दशा पर ध्यान न देसका। उस की दशा शाही सन्देसा सुनने के साथ ही विचित्र हो गई। उस का स्वभाव बड़ा मानी और प्रचंड था। वह सहन नहीं कर सकता था। इस समय तो वह पहले ही फूलसिंह से लड़ कर चुका था। फूलसिंह से बात करते २ उसने कहा था कि वह तेजसिंह को अपनी कन्या देने की अपेक्षा उस का किसी मुसल्मान से ब्याह कर देना उत्तम समझता है। उसे ज्ञात नहीं था कि कहे हुए को सच्चा करदिखाने का अवसर इतना शीघ्र आजायगा। सन्देसे को सुन कर उसे पहले तो इतना क्रोध आया कि तलवार निकाल कर गुलामकादिर का सिर उड़ा देने की इच्छा हुई। परन्तु फिर बादशाही क्रोध का स्मरण हो आया और उस के भयंकर परिणामों पर ध्यान गया। इस लिये अपने क्रोध को कुछ रोक कर उसने दूत को कहा—

गुलाबसिंह—"बादशाह की आज्ञा उस की प्रजा को वहीं तक शिरोधार्य होती है, जहां तक वह धर्मानुकूल है। आप भी जानते हैं कि हमारा हिन्दू धर्म और राजपूती कुल-धर्म इस प्रकार के सम्बन्ध की आज्ञा नहीं देता। मैं इसी समय इतने आवश्यक विषय में कोई निश्चय नहीं कर सकता। मुझे विचार के लिये समय दीजिये। दो दिन की मोहलत हो तो मैं आज से तीसरे रोज़ इसी समय आप को उत्तर देसकूंगा।"

गुलामकादिर—"मैं आप से पहले निवेदन कर चुका हूं कि शाहन्शाह ने आप को सोचने विचारने के लिये कोई समय नहीं दिया। उन की आज्ञा है कि मैं आज रात समाप्त होने से पहले ही आप की कन्या को महलों में दाखिल करदूं। आप इस बात पर आग्रह न करें। जो शाहन्शाह की आज्ञा है वह टल नहीं सकती। आप खुशी खुशी अपनी कन्या को मेरे साथ भेजदें। और जो आपने कुल धर्म आदि के बारे में कहा, तो क्या आज से पहले बड़े २ राजपूत राजाओं ने अपनी कन्याओं को शाही महलों में भेज कर अपने आप को अधर्मी नहीं माना? तब फिर आप इसे अपने धर्म के खिलाफ़ क्यों समझते हैं?"

गुलाबसिंह—"जिन राजपूत राजाओं ने अपनी कन्यायें मुसल्मान राजाओं को दी हैं, उन्होंने नियम पूर्वक ब्याह कर के दी हैं। इस प्रकार चोरी से नहीं दीं। बादशाह मेरी कन्या से भी खुली तौर पर विवाह करने को तय्यार हों, तो मैं अपनी कन्या देने को तय्यार हूंगा।"

गुलामकादिर—"राबसाहिब? ये तो केवल समझने की बातें हैं। विवाह की रीत हुई या न हुई—बात तो एक ही है। मैं आप से निजू तौर पर कहता हूं कि आप इस मौके को हाथ से न जाने दें। न जाने इस सम्बन्ध से आप को क्या २ इनाम मिलें।"

गुलाबसिंह विवाह में और महलों में पहुंचा देने में भेद जानता था। जहां विवाह होने से कन्या की एक स्थिर स्थिति हो जाती थी, वहां महलों में जाने का मतलब यह था कि बादशाह अपनी दो दिन की विषयवासना पूरी करके नया शिकार मिलने पर कन्या को दासीमण्डल में डाल देंगे, जहां उसे रात दिन बादशाही मुसाहिबों के कटाक्षों का निशाना बनना पड़ेगा।

गुलाबसिंह—"यदि आप मुझे विचार के लिये समय नहीं देते और इसी समय उत्तर लेना चाहते हैं तो मेरा उत्तर साफ़ है। मैं अपनी कन्या को इस अवस्था में नहीं देसकता। मैं जानता हूं कि इस से मेरे ऊपर शाही कोप टूट पड़ेगा, परन्तु राजपूत अपने धर्म को तन मन और धन से बहुत ऊंचा समझते हैं। धर्म पर आपत्ति आये तो वे अपनी गर्दन को तलवार के तले रख देने से नहीं हिचकिचाते। गुलाबसिंह को शोक है कि वह आप की इस इच्छा को पूरा नहीं कर सकता।"

गुलामकादिर—"राबसाहिब? आप मुझे इस प्रकार का उत्तर न दें। मैं नहीं चाहता कि आप पर कोई आफ़त आवे। मैं फिर अर्ज़ करता हूं कि आप हित अनहित को पूरा २ तोल कर देखें—और फिर उत्तर दें। मैं आप से उत्तर में 'नहीं' नहीं सुनना चाहता।"

गुलाबसिंह—"अब मैं और विचार नहीं करना चाहता। मेरा यही निश्चय है। इस प्रकार कुरीति पर मैं अपनी कन्या देकर अपने और अपने वंश के माथे पर कलंक का टीका नहीं लगाना चाहता। राजपूत अपने वचन से नहीं फिर सकता। आप जाइये और कृपया मेरा यही उत्तर शाहन्शाह तक पहुंचा दीजिये।"

गुलामकादिर खड़ा होगया। खड़े होकर उसने कुछ रूखे से स्वर से कहा—"मैं आशा करके आया था कि आप इतनी भारी शाही कृपा को आनन्द पूर्वक स्वीकार करेंगे, परन्तु मुझे शोक है कि आपने उसका अपमान किया। ख़ैर—आपकी इच्छा।"

गुलामकादिर चला गया। जाने के समय भी गुलाबसिंह उस के चेहरे पर क्रोध या खिजलाहट के चिन्ह न पासका। उस की अन्तिम बात में ज़रा सी रुखावट अवश्य थी परन्तु क्रोध दृष्टिगोचर नहीं होता था। गुलाबसिंह सारी समस्या को चिन्तित हृदय से सोचता सोचता बैठक का दरवाज़ा बन्द कर के और दिया बुझा कर मकान के भीतर चला गया।

[अपूर्ण]

वैदिक वर्णव्यवस्था

(श्रीयुत स्वामी विज्ञानभिक्षु जी लिखित)

गताङ्क से आगे

[६]

विप्र-शब्द है ही मेधावी वाचक (निघण्टु ३-१५) इस पर आप क्या कह सकते हैं—विशेष्य विशेषण हर कोई जानता है ऋषि विशेष्य है विप्रधीर विशेषण है—शायद आप विप्र को विशेष्य मानते हैं इस में भी हमारा कुछ जिगाड़ नहीं—आपत्ति तो आप पर है—जिन्हें विप्र शब्द का अर्थ (कल्पित) ब्राह्मण सिद्ध करना है—हमें क्या हम तो निघण्टु के अनुसार खड़े हैं इसी लिये विप्र-शब्द बुद्धिमान् मनुष्य के लिये आता है जो कोई बुद्धिमान् हैं हम उसे विप्र कहेंगे—परन्तु संकुचित हस्त तो आप हो—जो निरुक्त के विरुद्ध मूर्ख लट्ठ आदमी को विप्र कहे जा रहे हो—क्या अब भी राग अलापते जाओगे कि मैं प्राचीन ऋषि आचार्यों के आधार पर लिखता हूं—क्या आपने अपने सिवाय संसार भर को अन्धा समझ रक्खा है—जो कहा सत्य वचन कह कर मान लिया—होंगे वह आप के ही निर्बुद्धि विप्र नामधारी—यहां आर्य्यसमाज है—देख भाल कर चलता है अन्धों के पीछे नहीं चलता—किन्तु अन्धों की लाठी पकड़ उसे अपने पीछे लगा सच्चे रास्ते पर पहुंचाता है उपकार करता है—धर्म कमाता है—आचार्य्य विप्र को मेधावी वाचक कहते हैं और यह विप्र नाम मूर्ख की बता रहे हैं—सूर्य का प्रकाश है—सम्भल जाओ क्यों अविद्या में झकोले लेरहे हो—इस में आप का अपमान नहीं—हम सत्य कहते हैं हम से बढ़ कर और कोई आप के स्वार्थी मित्रों में हितचिन्तक नहीं—मित्रता से समझाते हैं—समझो कुछ होश करो—क्यों मिथ्यावाद का ठेका लेरक्खा है—सत्य बोलने ही से जाबाल (सत्यकाम) को ब्राह्मण कह दिया गया—तो हम आप को मिथ्या बोलने से अब्राह्मण क्यों न कहें—यदि ब्राह्मण बनना चाहते हो तो सत्य को ग्रहण करो—नहीं तो वशिष्ठ की तरह हम भी आप को ब्राह्मण कहना अच्छा नहीं समझते—जब सत्यवादी सत्यग्राही सत्यमानी हो जाओगे हम फ़ौरन आप को ब्राह्मण कह देंगे—परन्तु पहले योग्यता सम्पादन करलो—पृष्ट १५ पर लिखते हैं कि "ज्ञानेन्द्रियों का हिस्सा शरीर में ब्राह्मण माना जता है" समीक्षक—क्यों जी शरीर में ज्ञानेन्द्रियों का हिस्सा ब्राह्मण माना गया है—यह तो आपने नहीं बताया कि किस के शरीर में—ब्राह्मण के शरीर में कहो तो ज्ञानेन्द्रियों से भिन्न कर्मेन्द्रिय तथा शेष भाग तो ब्राह्मण न रहा तब ब्राह्मण के पांव धोवे यह कैसे बने—और यदि क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र के शरीर का मुख ब्राह्मण है तो उन को ब्राह्मण क्यों न कह कर किसी शूद्र से विद्या पढ़ने और उसे गुरु कहने में हिचकिचाते हो—और यह तो बताइये आपने केवल मुख को ही क्यों ब्राह्मण कहा जब कि ब्राह्मण ब्राह्मणी की संतान को तुम ब्राह्मण मानते हो—तो क्या सारा शरीर ब्राह्मण (ब्राह्मण-संतान होने से) नहीं, मुख से अतिरिक्त भाग, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र ठहरा—परन्तु यह असम्भव कि ब्राह्मण-कुल में उस का सिर भुंह उत्पन्न हो—क्षत्रिय कुल में बाहु छाती और वैश्य-कुल में ऊरू (जन्घा) शूद्र-कुल में पांव उत्पन्न हों—जैसे आप अपने को ब्राह्मण मानते हैं क्या सारे शरीर को ब्राह्मण कहते हैं यदि कहो कि नहीं केवल मुख ही ब्राह्मण है तो आप की संतान ब्राह्मण नहीं हो सकती क्योंकि मुख से किसी की उत्पत्ति नहीं हो सकती जो उत्पन्न करने वाली इन्द्रिय हैं यह है वैश्य या शूद्र-स्थानी—फिर भी आप का किया लक्षण अव्याप्त हुआ—यदि कहो कि नहीं—सारा शरीर ही ब्रह्मण है—तो यह क्यों लिखा कि शरीर में ज्ञानेन्द्रियों का हिस्सा ही ब्राह्मण माना गया है—इस के विरुद्ध होने पर आप का लक्षण ब्राह्मण-कुलोत्पन्न ही ब्राह्मण है यह ठीक नहीं रहा—अब यह बताइये कि कहां माना गया है शायद ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीत० यह यजुर्वेद का मन्त्र है जिस में यह माना गया है—जब उस में मुख को ब्राह्मण कहा है तो जहां मुख वहां ही ब्राह्मणत्व-समुदाय-मात्र फिर ब्राह्मण हुये—फिर एक नामधारी जाति ही ब्राह्मण कैसे—यह मन्त्र तो स्पष्ट ही (आप की ज़बानी) ज्ञान के भण्डार को ब्राह्मण मानता है—जैसे शरीर में मुख ज्ञानवान् है ऐसी मनुष्यों में जो ज्ञानी है वह ब्राह्मण है ब्राह्मणत्व किसी के नाम रजिष्टरड नहीं—पुश्त-दर-पुश्त चले यह तो गुणकर्म हैं जिसने स्वीकार किये हो गया ब्राह्मण—विद्वान् धर्मात्मा किसी के शूद्र कहने पर शूद्र नहीं हो सकता—हां जो मांसाहारी—मद्यप-वैश्यागामी—पाप से धन कमाने वाला कुकर्मी भी अपने को ब्राह्मण कहे तो कदापि वह ब्राह्मणाधिकार नहीं रखता—वह तो महाचाण्डाल हो चुका—वह ब्राह्मण कैसे आखिर सत्य प्रकट ही हो गया विप्र शब्द का दुर्गाचार्य्य का अर्थ प्रमाणित मान कर १५ पृष्ट पर लिखते हैं कि "विशेषेण पूरयति विद्यार्थिनामपेक्षा इति विप्रः" इस का भावार्थ यह है कि जो विद्यार्थी लोगों की आवश्यकता को विशेषतया पूर्ण करे वह विप्र है—क्या विद्यार्थीजनों को मूर्ख पढ़ा सकता है—क्या विद्यार्थियों को दुराचारी—धर्महीन बना सकता है? फिर जन्म का मूर्ख आदमी क्या किसी को पढ़ायेगा और क्या शिक्षा देगा—तब विप्रत्व का अनुमान (लिंग) क्या है—जो विद्यार्थियों को पढ़ाये वह विप्र—तो विद्वान् सदाचारी होना ही विप्रत्व है जहां २ सदाचार और विद्वत्ता देखो विप्र कहो—जिसे विद्यार्थियों को पढ़ाता शिक्षा देता देखो फ़ौरन् विप्र कह दो—इसी लिए मनुस्मृति में (पत्र्यादब्राह्मणस्त्वेषाम्)—इन को पढ़ाये ब्रह्मण—जो पढ़ाये वह ब्राह्मण—आगे एक मन्त्र के आधार पर विप्र को ब्राह्मणार्थ कहते हैं—"ये च पूर्वे ऋषयो ये च नूत्ना इन्द्र ब्रह्माणि जनयन्त विप्रः—अस्मे ते संतु सख्या शिवानि यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः—७-२२-६७" समीक्षक—इस का अर्थ यह है जो ऋषि पूर्व हो गये हैं और जो नये हो गये वह ब्रह्माणि जनयन्त वेद को प्रसिद्ध करते भये (देशदेशान्तरों में प्रचार करने से) इसी कारण वह वेदवेत्ता ऋषि जन विप्र

[व्यापनकर्मा] कहलाये [इस लिए हे मनुष्यों यदि तुम भी इस पवित्र वेदवाणि को प्रसिद्ध करोगे तो तुम भी विप्र कहलाओगे-] आप का मनोगत ब्राह्मणत्व यहां कहां-यह तो वेद है-अन्धेरे में कहां के कहां आ पहुंचे-तुम यह सिद्ध करो कि विप्र नाम ब्राह्मण कुलोत्पन्न का है—यह क्या कि ऋषि [विप्र] ब्राह्मण ही हुये---ऋषि तो होते ही ब्रह्म के ज्ञाता [ब्राह्मण] हैं—तुम को अपनी प्रतिज्ञा पर ठहरना चाहिए—न कि सिद्ध पक्ष को लेकर ही धोखा दे जाओ तुम्हारा पक्ष है साध्य और हमारा सिद्ध है जिसे तुम भी विवश होकर मान आये हो-ब्राह्मण की सन्तान को ब्राह्मण सिद्ध करो-गुण कर्म से तो आपको मानना ही पड़ेगा-पृष्ठ १६ पर लिखते हैं कि-"ब्रह्माणि जनयन्त विप्राः इस प्रकार किसी मन्त्र में क्षत्रिय और वैश्य का नाम न दिखा दें तब तक उनकी बात किस प्रकार मानी जा सकती है"-समीक्षक-इसमें ही कहां ब्राह्मण कुलोत्पन्न (शूद्र मूढ़) (ब्राह्मण नामधारी को) ऋषि कहा है-विप्र शब्द मेधावी का वाचक है—प्रत्येक कुल से बुद्धिमान् सन्तान उत्पन्न हो सकती है—क्या क्षत्रिय निर्बुद्धि होते हैं और क्या वैश्य मूर्ख ही होते हैं कदापि नहीं इसी प्रकार शूद्र भी बुद्धिहीन नहीं होते—फिर आप किस बात पर फूं फूं कर रहे हैं—

जबकि इस मन्त्र में ब्राह्मण जाति वाला ही स्पष्ट नहीं-तब आप कैसे कह सकते हैं कि इसमें ब्राह्मण आया है-विप्र शब्द जिसका अर्थ निरुक्त ने कदापि कल्पित] ब्राह्मण नहीं किया-किन्तु व्यापन कर्मा और निघण्टु ने बुद्धिमान् मेधावी किया है-जो सर्व मनुष्य मात्र के लिए प्रयुक्त हो सकता है-क्या मनुष्यों में क्षत्रिय वैश्यादि नहीं-या ब्राह्मणों का ही नाम आदमी है, शेष पशु ही हैं-नहीं ऐसा नहीं-तो सब मनुष्य मूर्ख ही होते हैं-कदापि नहीं-फिर बुद्धिमान् क्षत्रिय वैश्यादि को विप्र क्यों न कहा जावे-जब कि यास्काचार्य्य जी स्वयं [विप्र इति मेधावी नाम] कह रहे हैं-यदि आप ऐसा नहीं मानते तो यास्क के विरुद्ध चलने पर आप प्राचीनों का अनादर करने वाले क्यों नहीं-मानो तो यही मन्त्र इस विषय में हम देते हैं जिसमें क्षत्रिय वैश्यादि को वेद का प्रसिद्धकर्त्ता माना है-अब तो आप कुछ नहीं ना कह सकते-अन्य मन्त्र हम पुस्तकाकार में प्रकाशित करेंगे विस्तार भय से यहां नहीं लिखे-आगे १६ पृष्ट पर लिखते हैं कि—

"ऋग्वेद की अनुक्रमणिका में कक्षीवान् को दासी पुत्र लिखा है-और ऋग्वेद कक्षीवान् को ब्राह्मण बतलाता है-देखिये अहं कक्षीवान् ऋषिरस्मि विप्रः-४-२६-१=" पाठक गण- इन वाक्यों को पढ़ा-क्या कहरहे हैं कवि जी-पं० जी ? क्या अब भी कहोगे कि मैं आर्य हूं वेदों को ईश्वरीय ज्ञान मानता हूं-क्या इसी का नाम आर्यत्व है—क्यों उलटे रास्ते पर चल रहे हो, तुम तो वेदों में इतिहास मानते हो-यदि नहीं तो इस वेद मन्त्र को लिखने का क्या प्रयोजन जिसमें इतिहास हो वह ईश्वरीय ज्ञान नहीं-तुम स्वयं ईश्वरीय ज्ञान वेद को मानते हो और साथ ही इतिहास भी मानते हो-यह क्या-[भवत्येवं प्रमादतः] और आप तो १३ पृष्ठ पर लिख आये हैं-कि जो पुस्तक इतिहास वाली है उसका काम धर्म का बतलाना नहीं-इसी हेतु से आप ने महाभारत के प्रमाण से मुंह मोड़ा है-फिर इतिहास की पुस्तक का धर्म में प्रमाण कैसे-एक तो आप पर ही यह आपका दिया हेतु कुठार के समान आकर पड़ता है—अर्थात् आप वेद को प्रमाण्य नहीं मानते-जब वेद ही प्रमाणित नहीं तो उसके प्रमाणों को आप कैसे दे सकते हैं-दूसरे इतिहास मानने पर भी धर्म में प्रमाण मानना वेद को और महाभारत को न मानना-यह भी ठीक नहीं इतिहास होने पर महाभारत को प्रमाणता ठहरी और इस से फिर वेद और इतिहास पुस्तकें एक सी हुवीं वेद में कुछ विशेषता न रही-इत्यादि-जबकिअ नुक्रमणिका में साफ (दास्यापुत्र कक्षीवानृषि) लिखा है तो आप वेद को अनर्थ से दूषित करते हैं—इस वेद मंत्र का अर्थ तो पीछे बताउंगा पहिले कुछ थोड़ा सा निवेदन करलूं [वेद में इतिहास नहीं इस विषयक प्रमाण युक्तियां आदि पुस्तकाकार में लिखेंगे यहां विस्तार भय से नहीं लिखा]क्या आप सच मुच ऋषि दयानन्द के शिष्य अनुयायी आर्य हैं-यदि कहो कि हां मैं महर्षि के पीछे चलता हूं उन की आज्ञा मुझे सर्वथा शिरोधार्य है- तो जनाब-यह दिखावो कि ऋषिदयानन्द वेद में इतिहास मानते थे-अन्य मतावलम्बी भी कदापि मानने को उद्यत न होगा कि वह वेद में इतिहास मानते थे-[महर्षि रचित वेद भाष्यादि पढ़िये कैसे सायणादि के इतिहास परक मन्त्रों पर विज्ञान पूर्ण-भाष्य कर उन के अर्थ खण्डित करते हैं-आपने काहे को ऋषि रचित भाष्य देखना है-आप तो सायण के अनुगामी ठहरे-[जब ऋषि इतिहास परक वेद नहीं मानते तो आप उन के अनुगामी कैसे-जो कि उन की आज्ञा के विरुद्ध ऊट पटांग मान रहे हैं-इस लिये आप न तो आर्यसमाजी और न वैदिक धर्मी-मैं आप को हितसे कहता हूं-प्रेम से समझाता हूं कि आप ऐसा धोखा न दिया करें-सत्य बोलना आप बुरा क्यों मानें:—

(शेष फिर)

१०००० आम व लीची के क़लम मुफ्त।

नियम और सूचीपत्र के लिए आज ही लिखिये। कलमों के तो पकाने का बहुत अच्छा समय बीत रहा है। पता-नर्सरी पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

संसार समाचार पर टिप्पणी

आर्य समाज बरेली में तारीख ४ अगस्त को सरकार की विजय के लिये प्रार्थना की गई। उपस्थिति ६०० के लग भग थी। इस से पूर्व ता० २,३ तथा ४ अगस्त को श्री प्रोफेसर रामदेव जी के व्याख्यान बड़ी धूम धाम से होते रहे। इन प्रभावशाली व्याख्यानों का श्रोतागणों पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। ईसाईयों को शास्त्रार्थ के लिये चेलेंज पर चेलेंज दिये गये, परन्तु किसी को भी साहस शास्त्रार्थ के लिये आने का नहीं हुआ।

आर्य समाज टंडी रोड़ कानपुर, तथा आर्य समाज सिरसा और मटेरकोटला में भी सरकार की विजय के लिये ४ अगस्त को प्रार्थना की गई।

आर्य समाज पानीपत का वार्षिकोत्सव ता० १९, २० तथा २१ सितम्बर १९१६ को होना निश्चय हुआ है। श्री मन्त्री जी समाज सब आर्य्य भाईयों को निमंत्रित करते हैं तथा श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज से, इस अवसर पर अवश्य पधार कर, अपने मनोहर उपदेशों से पानीपत निवासियों को कृतार्थ करने के लिए प्रार्थना करते हैं।

आर्य समाज काशी का वार्षिकोत्सव तारीख २५, २६,२७ तथा २८ अगस्त को होना निश्चय हुआ है। जिसमें प्रसिद्ध व्याख्यानदाता, सन्यासी महात्मा तथा भजनोपदेशकों के पधारने की आशा है। अतः श्री मन्त्री जी समाज आर्य्य भाईयों से प्रार्थना करते हैं कि काशी को लक्ष्य में रखकर सब भाई इस शुभ अवसर में अवश्य सम्मिलित हों।

श्री मंत्री जी आ० स० धनोट जिला पटियाला सूचना देते हैं कि आर्य समाज मन्दिर में श्री पं० परशुराम जी वाशिष्ठ उपदेशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा के व्याख्यान हुए जिनका प्रभाव श्रोतागणों पर उत्तम पड़ा। शंका समाधान भी होते रहे और समाज में फिर से जागृति आगई।

श्री मंत्री जी आर्य समाज नजफगढ़ जि० दिल्ली आर्य्योपदेशकों तथा सन्यासी महात्माओं का ध्यान दिल्ली प्रान्त के ग्रामों में प्रचार के लिये खैंचते हैं क्योंकि इन ग्रामों में प्रचार की बड़ी आवश्यकता है।

पं० देवी प्रसाद जी मिश्र कानपुर से लिखते हैं कि अभी ग्राम बिलासपुर ज़िला खीरी का एक १५ वर्ष का ब्राह्मण का लड़का केशवराम मुसलमानों के साथ अधिक रहने के कारण पतित हो गया है। अब उसका नाम गुलाममोहम्मद रक्खा गया है और वह इस समय इस्लामिया अन्जुमन स्कूल सीतापुर में पढ़ रहा है। उसका पिता उसे लेने के लिए सीतापुर गया, परन्तु उसने स्पष्ट कह दिया कि हिन्दू काफ़िर होते हैं, मैं काफ़िरों में रहना नहीं चाहता। अत्यन्त दुःख की बात है कि उसका विवाह भी हो चुका है और उस की स्त्री घर ही पर है। आर्य्य भाईयों को उसे वापिस लेने का प्रयत्न करना चाहिये और खासकर आर्य्य समाज सीतापुर को यह भार अपने ऊपर लेना चाहिये। आशा है कि उनका यह परिश्रम व्यर्थ नहीं जायगा।

पं० लालचन्द भजनोपदेशक सूचना देते हैं कि अब उनका अनाथालय आगरा के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। वह स्वतन्त्र रूप से प्रचार करेंगे। जिन महाशयों को उन्हें प्रचारार्थ, संस्कारार्थ तथा अन्य कार्य्यार्थ बुलाना होवे उन से ठाकुर भूपसिंह बिचपुरी ज़िला आगरा द्वारा पत्र व्यवहार करें।

श्री मंत्री जी आर्य अनाथालय मुंगेर लिखते हैं कि—कुप्रबन्ध वा असंतोष जनक कार्य्य तथा अन्यान्य विशेष कारणों से भूतपूर्व प्रबन्धकर्ता म० शीतल प्रसाद को आर्य अनाथालय से पृथक कर दिया गया है। अब उनका किसी प्रकार का सम्बन्ध इस अनाथालय से नहीं है। आज कल पं० गङ्गासहाय जी उपदेशक युक्त प्रान्त प्रबन्धकर्ता का कार्य्य कर रहे हैं और उनकी धर्म पत्नि प्रबन्ध कर्तृ का कार्य्य करती हैं और पं० मोहित मिश्र जी उपदेशक नियत किये गए हैं और इस अनाथालय के योग्य सभापति श्रीमान् बा० मुरलीधर जी बी०ए० बी० एल वकील अनाथालय के प्रबन्ध में उत्तमोत्तम परिवर्तन किये हैं तथा कर रहे हैं। इस नये प्रबन्ध से अनाथालय सम्बन्धी कुल त्रुटियां दुरिभूत होकर अनाथालय का कार्य्य सतोष जनक हारहा है तथा होने की आशा है। सर्वसाधारण अब आगे से अनाथालय सम्बन्धी किसी प्रकार का पत्र व्यवहार भू०पू० प्रबन्धकर्त्ता म० शीतलप्रसाद के साथ नहीं करें और न दानादि उनके पास भेजें और जो सज्जन चाहें अनाथालय में पधार कर प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य्यों का निरीक्षण करें तथा उचित विचार वा सम्मति प्रदान करें।

प्रधान मन्त्री आयुर्वेद विद्यापीठ द्वारा गंज प्रयाग सूचना देते हैं कि:—अम्बाला निवासी श्रयुत लाला बालमुकुन्द जी रईस एक स्वर्ण पदक ऐसे सज्जन को देना चाहते हैं जो पञ्जाब की रियासतों में आयुर्वेद सम्बन्धी विशेष कार्य कर रहा हो। यह पदक निखिल भारतवर्षीय वैद्य सम्मेलन की स्थायी समिति द्वारा दिया जायगा। इस लिये स्थायी समिति यह जानना चाहती है कि पंजाब का रियासतों में कौन सज्जन आयुर्वेद सम्बन्धी किस प्रकार कैसा कामकर रहे हैं, अतएव आयुर्वेद हितैषियों से प्रार्थना है कि वे अपनी निकटवर्ती ऐसे सज्जन का नाम मय पता के कार्यों के विवरण सहित लिख भेजें।

वेद में बुरके का विधान—आप के पत्र सद्धर्म-प्रचारक २२ ज्येष्ठसम्वत् १९७३ के पृष्ठ १५ कालिम ३ पर वेद में परदा सिस्टम विषयक एक शंका, म० विद्याधर वर्मा की ओर से छपी थी जिस से ज्ञात होता था कि पं० धर्मदत्त जी ने जो किसी समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक थे और आज कल स्वतन्त्रानन्द हैं परदे को वेदानुकूल मानते हैं और रंगून समाज में उन्होंने अपनी वक्तृता में परदे का समर्थन करते हुये यह सिद्ध करने की कोशिश की थी कि परदा-सिस्टम वेदानुकूल है जिस की पुष्टी में आपने अथर्ववेद कां० ८ सू० ६ मंत्र २४ का प्रमाण पेश करते हुये न केवल आर्य्यसमाज के उपदेशकों महा-उपदेशकों को ही (चेलिंज) दिया किन्तु गुरुकुल के स्नातकों से इस का समाधान कराना चाहा था।

शोक कि इतना समय गुजर जाने पर भी आज तक इस विषय पर किसी महाशय ने प्रकाश नहीं डाला। क्या उससे यह जाना जाय कि आर्य समाज के सभ्यों के पास इस का कोई उत्तर नहीं है या उन के उत्तर ना देने से कहीं आर्यों में असन्तोष तो नहीं फैलता? यदि पहली बात नहीं तो दूसरी तो अवश्य है और साथ ही यह कि स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने वर्षों से उपरोक्त वेद मंत्र को अपनी नोट बुक में दर्ज किया हुआ है और जहां पधारते हैं ऐसी २ बातों का प्रचार करते फिरते हैं और अपने मन कल्पित सिद्धान्तों की पुष्टी करने के लिए भी उन्हें आर्य्य-समाज जैसी सोसाइटी की ही ज़रूरत रहती है जबकि वह उसी का अन्न खाकर उसी के सिद्धान्तों पर कुठार चलाते हैं तो आर्य भाइयों का भी यह कर्तव्य है कि वह सत्य का प्रकाश करें इस से जहां यह फायदा होगा कि आर्य्य भाई स्वतन्त्रानन्द जी महाराज से स्वतन्त्र रहेंगे वहां सर्वसाधारण में भी किसी प्रकार का भ्रम न फैल सकेगा और शायद उनकी नोट बुक भी उस से साफ होजावेगी—

श्री स्वतन्त्रानन्द जी बात चीत में आर्यों के सन्मुख यह भी कहा करते हैं कि हम आर्य्य हैं दयानन्दी नहीं। न जाने इसमें उनकी क्या नीति है। श्रीस्वामी जी घोड़ा घास फूस खाने की शिक्षा देने वाला बताने के आदि हैं। नेक नीति तो यह है कि जब उनके आर्य्यसमाज से सिद्धान्त नहीं मिलते तो यह आर्य्यों पर अपनी कृपा रक्खा करें न यह कि उन्हीं की गोद में पल तथा बैठ कर उन्हीं की दाढ़ी नोचा करें। आशा है इन पंक्तियों को आप अवश्य प्रकाशित करके अनुग्रहीत करेंगे—और शंका का समाधान भी:—

शंका

अथर्ववेद कां० ८ सू० ६ मन्त्र २४ क्या परदे का पोषक है? परदे से मतलब यज्ञादि कर्मों में खास कर विवाह संस्कार के समय स्त्री को घूंघट निकाल कर सर्व कार्य करना चाहिए या खुले मुंह? और आर्य्यसमाज की पोज़ीशन परदे के विषय में क्या है?—स्पष्ट २ शब्दों में इस का उत्तर दिया जावे।

ठाकुर दास चौधरी (रंगून)

नोट—लेखकमहाशय स्पष्ट लिख भेजें कि उनका किस स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी से मतलब है।
(सम्पादक)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पुस्तकाकार छप गया है।

मूल्य =)॥ हैं जिनके पत्र पहिले आ चुके हैं उनके नाम वीपी. भेजी जा रही है। मिलने का पता—

मैनेजर सद्धर्म-प्रचारक
पोस्ट-श्यामपुर-कांगड़ी (बिजनौर)

गुरुकुल पुस्तक भंडार की ग्रन्थावलिः

संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण

विद्यार्थियों के लिये विशेष उपयोगी। प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा संशोधित। अश्लील वाक्यों से मुक्त। कन्याओं के हाथ में बिना संकोच देने योग्य।

संस्कृत प्रवेशिका ——————— ।)
संस्कृत साहित्य पाठावली: २यभाग =)
आर्य्यसुक्तिसुधा ——————— ।)
काव्य लतिका ——————— ॥।)
संक्षिप्त वैदिक मनुस्मृति श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा संग्रहीत ॥)
संशोधित पञ्चतन्त्र १म भाग ॥)
सशोधित हितोपदेशः ।=)
संशोधित रघुवंश [मूल] ।)
संक्षिप्त महाभारत भीष्म पर्व ।)
संशोधित-नीतिशतकम् =)
अष्टाध्यायी—संस्कृत टीका सहित [पूर्वार्द्धम्] २)
अष्टाध्यायी, सस्कृत टीका सहित [उत्तरार्द्धम्) १॥)
धातु-पाठः— [मूल] ।)
नामिकः =)॥
आख्यातिकः ॥।)
महाभाष्यम् अङ्गाधिकारः 'श्रीमता पतञ्जलिमुनिनाप्रणीतम्- महामहोपाध्याय श्री कैय्यट प्रदीप समुल्लसितम् २॥)
संस्कृत साहित्य का अनुशीलन ।=)

ऋषि दयानन्द कृत वेदाङ्ग प्रकाश

१ कारकीयः	≡)	के स्थान में	=)
२ आख्यातिक	१।)	"	१)
३ उणादीकोषः	॥=)	"	।≡)
४ स्त्रैण तद्धित	१≡)	"	१)
५ पारिभाषिक	≡)॥	"	=)
६ गणपाठ	।-)	"	≡)
७ निघण्टु	।=)	"	।)
८ सामासिकः	।)	"	≡)
९ अव्ययार्थ	-)॥	"	-)
१० नामिक	।≡)॥	"	।=)
११ सौवर	=)॥	"	=)
१२ सन्धिविषय	।≡)॥	"	।=)
१३ वर्णोचारण शिक्षा	-)	"	)॥।

आर्य भाषा

आर्य्यभाषा पाठावली सचित्र १म भाग ।=)
तथा द्वितीयभाग ।-)

विज्ञान

रसायन-विलयस एस, फर्नों की प्रसिद्ध "कैमिस्ट्री" का आर्यभाषानुवाद ॥।)

इतिहास

भारतवर्ष का इतिहास (प्रथम भाग) श्री उपाध्याय राम देव जी B.A. M.R.A.S. कृत १।)
जिनचरितम्—पाली भाषा में महात्मा बुद्ध की जीवनी —उपाध्याय चन्द्रमणि विद्यालंकार कृत ।-)

अन्य उपयोगी पुस्तकें।

१. एकान्तवासी योगी-(Goldsmith's Hermit) का हिन्दी अनुवाद प्रसिद्ध श्रीधर पाठक जी कृत ≡)
२. चन्द्रशेखर। प्रसिद्ध कवि बैंकिमचन्द्र द्वारा रचित का हिंदी अनुवाद १)
३. भारतवर्ष का सच्चा इतिहास १॥) (भास्कर यन्त्रालय मेरठ)
४. शिशुपाल वध (मुम्बई) २)
५. शिवराज विजय [बनारस] २)
६. साहित्य दर्पण [बम्बई] ३)
७. First Aid to the injured का हिन्दी अनुवाद ॥।)
8. The 1st step in teaching of English on Direct method by Nelson Fraser M.A. -)॥
9 The 2nd part Do -)॥
10 " 3rd " " =॥।
11 " 4th " " =)॥
१२. संक्षिप्त महाभारत संस्कृत वेद्य कृत २)
१३. Bacon's Essays का हिन्दी अनुवाद ।=)

श्री स्वामी दयानन्द कृत ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेद भाष्य भूमिका, पञ्चमहायज्ञ विधि, संस्कारविधि और गुरुकुल के उपाध्यायों की बनाई सब पुस्तकें यहां से मिल सकती हैं।

On Arya Samaj.

The Gurukula System of Education and its critics. By Prof. Balkrishna M. A.—Rs. 0.1.6
The life of Swami Dayananda. By Professor Tara Chand M.A, with a foreword by Mahatma Munshi Rama —" 2.0.0
The Gurukula through European Eyes or Opinions of the European Visitors on the Gurukula. —" 0.4.0
The works of the late P. Gurudatt Vidyarthi M.A. I.0.0
The Hand book of the Arya Samaj by P. Vishnu Lal M. A. ./6/.
Is Arya Samaj a Political Body? Being an open letter to the Secretary of State for India by Mr. Madan Mohan Seth M. A. —" 0.4.0
Arya Samaj and Politics. A lecture delivered on the anniversary of the Lahore Arya Samaj by Mahatma Munshi Ram ji— 0-1-0
The Arya Samaj and its Detractors—A Vindication—by Mahatma Munshi Rama and Prof. Rama-Deva B. A-M. R. A. S. —" 2.8.0
Light of Truth or an English Translation of Swami Dayanand Saraswati's Satyarth-Prakash by the late Dr. Chirinjiva Bharadwaja—2d edition—superior paper—First ten chapters only. —Rs. 3-0-0

आर्यपथिक पं० लेखरामजी की जीवनी लेखक श्री महात्मा मुन्शीरामजी १)

पढ़ने योग्य-उत्तम पुरानी (2nd hand) पुस्तकें बहुत सस्ते दामों पर—

१. संक्षिप्त महाभारत पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी ३) के स्थान में २।)
2. Macmillans English Readers for United Provinces
Agra aud Oudh-Part 1 ./4/.
Do 2 ./4/.
३. उपनिषदें श्री शंकराचार्य्य भाष्य सहित आनन्द आश्रम पुना की मुद्रित

बृहदारण्यकोपनिषद	८)	के स्थान में	५॥)
छान्दोग्य	,,	५)	,,	३॥)
प्रश्न	,,	१)	,,	॥≡)
ईश	,,	॥=)	,,	॥=)
केन	,,	१)	,,	॥≡)
कठ	,,	१)	,,	॥≡)
माण्डूक्य	,,	२।-)	,,	१॥)
तैत्तरीय	,,	१॥।)	,,	१।)
मुण्डक	,,	॥=)	,,	।।)
एत्तरेय	,,	१)	,,	१=)

४. चम्पु रामायण संस्कृत मुम्बई २) के स्थान में १॥)
५. चम्पु भारत मुम्बई २॥) " २)
६. हर्ष चरित मुम्बई २) " १॥)
७. प्रसन्न राघवम् ॥।) " ॥)
८. भूगोल हिन्दी हिल साहिब कृत Indian press Allahabad से मुद्रित
९. सोमनाथ जी आर्य्य कृत हिन्दी की १म तथा २य पुस्तकें
१० प्राचीन सभ्यता का इतिहास R. C. Dutt [बनारस]

२५ % कमीशन पर

कमीशन के नियम

गुरुकुल रचित पुस्तकों पर १०) से २०) की पुस्तकों पर १०) सैकड़ा और अधिक पर १५) प्रति सैकड़ा।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

ओ३म्

Registered No A. 431

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ४ भाद्रपद सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० १९ अगस्त सन् १९१६ ई० { संख्या १९ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक =) प्र
तीन मास ,, ,, ,, ,,) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के ऊपरी सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर लिखा कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आधा तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

शब्द न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये २ लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भर सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और वाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मू १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिकः लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं जो एक साथ खरीदने वाले को ⅔ [दो तिहाई] मूल्य पर दे दी जायंगी।

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—मूल्य ।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

छप रही हैं—

[२] पांच महायज्ञों की विधि
[३] आचाराऽनाचार और भक्ष्याऽभक्ष्य
[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज
[५] वेद और आर्यसमाज

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस शामपुर-काङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवरण का महान ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार है मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवरण युक्त निर्णय का ६०० से अधिक पृष्ट पर पूरा हुआ सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २ अनेकों सरकारी रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्ट के फैसिले, श्री जगद्गुरु शंकराचार्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्म्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥)

पता:—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मेनेजर ओत्रिय पुस्तकालय डा० कुलेरा ज़ि० जयपुर।

१०००० लीची व आम के क़लम मुफ्त

नियम और सूचीपत्र के लिए आज ही लिखिये। कलमों के तो पकाने का बहुत अच्छा समय बीत रहा है। पता-नर्सरी पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं।

विज्ञापन सब बन्द कर दिए। इस अङ्क से केवल प्रथम पृष्ठ पर ही विज्ञापन रहेंगे। जहां तक हो सकेगा पढ़ने के योग्य लेख ही जाया करेंगे। स्वामी विज्ञानभिक्षु का, वर्णव्यवस्था सम्बन्धी, लेख बहुत लम्बा हो गया था। अभी भूमिका भी समाप्त नहीं हुई थी। श्री स्वामी जी की यह सम्मति लेकर, कि अपने विचारों को पुस्तकाकार में छपवादें, उन की लेख-माला बन्द कर दी गई है। साप्ताहिक पत्रों में ऐसे लेख कम पढ़े जा सकते हैं।

प्रचारक पुस्तक भण्डार का विज्ञापन फिर से देने की आवश्यकता हुई है। आर्य—धर्म ग्रन्थ—माला के चार गुच्छक और छप रहे हैं और पहले गुच्छक की अभी लग भग १५०० प्रतिएं पड़ी हैं। पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का निबन्ध भी अभी गुरुकुल के पुस्तक—रचना विभाग से लौटाया गया है। धर्म वीर परिडत लेखराम के जीवन चरित्र की भी २५० प्रतिएं पड़ी हैं।

इन सब के अतिरिक्त जिन आर्य—सिद्धान्त के विषयों पर मैंने गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को व्याख्यान दिए थे उन को भी, गुरुकुल कोष तथा प्रेस में गुंजाइश न होने के कारण, अपने व्यय से ही सद्धर्मप्रचारक प्रेस देहली में छपवाने का विचार है। इस (स्वदेशी) वर्ष के अन्त तक मेरा, इस समय तक लेखनी से निकले हुए, अपने विचार छपवा देने का इरादा है, और इतना धन है नहीं कि ग्रन्थ छपवा कर रखता जाऊं। इस लिए विज्ञापन का आश्रय लिया है, जिस से एक ग्रन्थ के बिकने पर दूसरे की छपाई के लिए धन निकल आवे।

प्रचारक के कागज़ छपाई आदि में कुछ भेद नहीं आया, जहां सरकारी रेल कम्पनी को भी अपने समय विभागों में खराब कागज़ लगाना पड़ा है। फिर मूल्य भी वही है, अन्य समाचार पत्रों की तरह मूल्य बढ़ा देने का भी विचार नहीं। तब काम चलने के लिए नए ग्राहकों का बढ़ना तथा पुराने ग्राहकों का स्थिर रहना आवश्यक है। अक्टूबर, १९१६ के आरम्भ में ही जिन ग्राहक महाशयों के मूल्य समाप्त होने वाले हैं, उन के नाम सूचनाएं जा रही हैं। यदि वे मनीआर्डर द्वारा अपना चन्दा भेजने की कृपा करेंगे तो बहुत से अनावश्यक पत्र व्यवहार से प्रचारक का प्रबन्ध विभाग बच जायगा।

सुशीलाराम जिज्ञासु—

गुरुकुल समाचार।

ऋतु अब तक अच्छी है। इस वर्ष अब तक सतयुगी वर्षा तो बराबर होती रही, परन्तु झड़ी कोई नहीं लगी थी; २७ से ३० श्रावण के दस बजे दिन तक झड़ी खूब लगी, जिस में सूर्य के दर्शन भी न हुए। श्रावणी की विधि की समाप्ति के अढ़ाई घन्टों पीछे खुल गया। परन्तु अभी वर्षाऋतु समाप्त नहीं हुई। बादल फिर उमड़ रहे हैं।

परिक्षाएं समाप्ति पर हैं। महाविद्यालय तथा विद्यालय की १० से ६ श्रेणी तक की परीक्षा बिलकुल समाप्त होचुकी। निचली पांच श्रेणियों की परीक्षा भी दो तीनदिनों तक आरम्भ हो जायगी। महाविद्यालय के ब्रह्मचारी यात्रा पर जा रहे हैं।

गुरुकुल को आर्थिक सहायता. ब्रह्मचारियों के संरक्षकों की ओर से बराबर मिल रही है। बजट की पूर्त्ति के लिए जो सहायता आ रही है उस का गताङ्क में जोड़ १९७०) था। उस के पश्चात निम्न लिखित धन आया है:—

२००) श्री सर्दार बैसाखासिंह जी ठेकेदार, खानकी।

२५) श्री जामन महादेव पाठक, रंगून (दूसरी किस्त) योग ११९५)

गुरुकुल विद्यालय इन्द्रप्रस्थ—प्रचारक के पाठक जानते हैं कि सेठ रंगूमल दिल्ली निवासी के दान से ५०,०००) की लागतका मकान, दिल्ली से १३ मील दूर पहाड़ी पर, खड़ा हो गया है। अपने प्रिय स्वर्गवासी भाई जगूमल के स्मारक में श्री सेठजी ने यह आश्रम बनवाया है और जिस दिन गुरुकुल विश्व विद्यालय से कुछ छोटी श्रेणियों का प्रवेश करा कर इस आश्रम की प्रतिष्ठा होगी उस दिन भी सेठ रंगूमल जी ५०,०००) नकद "गुरुकुल विद्यालय इन्द्रप्रस्थ" के स्थिर कोष के लिए देंगे। सेठ रंगूमल जी के दान के अतिरिक्त, चिकित्सालय, भोजन भन्डार, यज्ञशाला, धर्मशालादि के लिए भी दान आया है, जिस से ये सब स्थान तय्यार होरहे हैं। जिस समय आवश्यकतानुसार इमारत तय्यार हो कर स्थान की सफाई हो जावेगी, उसी समय कुछ श्रेणियां काङ्गड़ी से इस नए आश्रम में चली जावेंगी।

इस नई पाठशाला का नाम शाखा गुरुकुल नहीं रक्खा गया, इस लिए कि यह गुरुकुल विश्वविद्यालय का एक भाग ही होगा। शायद बढ़ते बढ़ते यहां १० श्रेणियों तक की पढ़ाई होने लग जाय और अधिकारी परीक्षा, सब शाखाओं की, यहां ही होने लगे। सम्भव है कि जब काङ्गड़ी में कृषि, आयुर्वेद, व्यापारादि के जुदे जुदे महाविद्यालय खुलने के पश्चात् सारा स्थान समाप्त हो जावे, और गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के प्रचार में उन्नति हो, तो इसी स्थान पर महाविद्यालय की पढ़ाई भी आरम्भ हो जावे और विद्यालङ्कार उपाधि धारण कर केस्नातक बनने के लिए यहां के ब्रह्मचारी काङ्गड़ी विश्वविद्यालय के दीक्षान्त संस्कार में सम्मलित होने जाया करें। ये सब कल्पनाएं शायद आकाश में पुष्प उत्पन्न होने के सदृश हैं, परन्तु एक बात निश्चित है कि यह विद्यालय, गुरुकुल-विश्व-विद्यालय का एक भाग ही होगा और गुरुकुल शिक्षाप्रणाली में आदर्श विद्यालय (Model school) का काम देगा। इस लिए इसके समाचार भी प्रति सप्ताह दिए जाया करेंगे। अभी इमारत का काम १ मास तक चलेगा, फिर सफ़ाई होगी। आश्विन मास के अन्तिम सप्ताह में (दसहरे के पश्चात) गुरुकुल के सहायक मुख्याधिष्ठाता को प्रबन्ध के लिए 'गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ' में भेज दिया जायगा। जब कार्यालय, भन्डार, आश्रमादि का सब प्रबन्ध ठीक हो जायगा तो ब्रह्मचारी काङ्गड़ी से उधर को चलेंगे। यहां से जो प्रबन्ध हो सकेंगे वह तो कर दिए जायंगे परन्तु जो शेष आवश्यकताएं हैं उन को यहां लिख दिया जाता है।

आवश्यकताएं।

एक लेखक जो पत्रव्यवहार और हिसाब, दोनों कामों को कर सके। वेतन योग्यतानुसार २०) से २५) मासिक तक दिया जायगा।

एक भन्डारी भोजन शाला के लिए। भोजन बनवाने, परसवाने और उस सब का हिसाब रखने में निपुण हो। वेतन योग्यता नुसार २०) मासिक तक।

नोट—यदि कोई श्रेष्ठ आर्यपुरुष प्रेम से गुरुकुल सेवा करने के लिए केवल भोजन मात्र लेकर बिना वेतन काम करने को उद्यत हों तो इस से बढ़ कर प्रबन्ध नहीं होसक्ता। छोटे बच्चों को सातावत भोजन लादन कराने वाला भन्डारी बहुत ही उपयोगी हो सकेगा।

कृषि तथा इमारत विभाग का प्रबन्धकर्त्ता—११०० कच्चे बीघे ज़मीन है। ६०० बीघों में बड़ी उत्तम खेती हो सक्ती है। पत्थर और कङ्कर की खानें हैं। जंगल की पैदावार भी हो सक्ती है। इस प्रकार आमदनी बढ़ाने के लिए यदि कोई पेन्शन पाने वाले आर्यसमाजी मिल जायं तो इस विद्यालय को बहुत स्थिरता हो सक्ती है। पत्र व्यवहार नीचे के पते से:—

मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल विश्वविद्यालय P.O. शान्धर-कांगड़ी [ज़ि० बिजनौर]

Haridwar. Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

सत्याद्धर्मो दमश्चैव सर्वंसत्ये प्रतिष्ठितम्।

धर्म और इन्द्रिय निग्रह का समवाय-सम्बन्ध है। एक के बिना दूसरा रह नहीं सक्ता। जहां धर्म नहीं वहां मन और इन्द्रियां इधर उधर भागती फिरती हैं। जहां इन्द्रियां वश में नहीं हैं वहां धर्म को धारण करने की शक्ति ही जीवात्म में नहीं रहती। परन्तु इन दोनों का आधार सत्य है। इसी लिए कविने कहा है — नास्ति सत्य समोधर्मो न सत्याद्विद्यते परम्। सत्य के समान कोई धर्म नहीं, उससे बढ़ कर भी कोई धर्म नहीं। सारा ब्रह्माण्ड सत्यस्वरूप के सत्य पर ही अवलम्बित है। यह सचाई सब मत वादी स्वीकार करते हैं। परन्तु संसार में कितने पुरुष हैं जिन्होने सत्य को अपना आधार समझा हुआ है, जिन्हें सत्य से प्रेम है? लन्दन के न्यूस्टेट्समैन New stateman नामी साप्ताहिक पत्र में एक लेखक ने "सत्य का प्रेम" विषय पर एक लेख लिखा है। उन्होंने अपना लेख इस प्रकार आरम्भ किया है— "कुछ वर्ष हुए, एक सुपरिचित विद्वत्परिषद के सम्मेलन पर, मिस्टर जानमार्ले ने अपने गिर्द जमा हुए पुरुषों से (जिनमें मैं भी था) कहा कि उनके एक वृद्ध, दर्शन-शील, अनुभवी मित्र को, अपने जीवन में केवल तीन ही सत्य प्रेमी मिले। मुझे भली प्रकार याद है कि मैंने ऐसे आदेश को घोर और अप्रमाण-भूत समझा था।" इस लिए कि जब मनुष्य में जानने की जिज्ञासा ऐसी प्रबल है तो उसके अधिक भाग को सत्य के साथ प्रेम क्यों न होगा? परन्तु गत ५ वर्षों में, और विशेषतः युद्ध के समय में इन्हीं महाशय को अधिक विचार की अवसर मिला और सहस्त्रों मुखिया धर्मोपदेशकों, राजनैतिकों और उच्चपदाधिकारी राज-कर्मचारियों से मिल कर इन्होंने यह परिणाम निकाला कि सत्य चाहे हमारे कौतूहल और मनोरञ्जकता का कितना भी कारण क्यों न हो परन्तु हमें सत्य से प्रेम सर्वथा नहीं होता। हम सत्य के दार्शनिक परिणाम तक जाने के लिए इसलिए तय्यार नहीं होते कि कहीं हमारे माने हुए सिद्धान्तों का उससे खन्डन न हो जाय। वह लिखते हैं:— "वह स्त्री जिसे चिन्ता है कि उस का वेश फ़ैशन के अनुसार हो, वह विद्यार्थी जो वैचित्रमय दिखाई देने से डरता है, वह राज नैतिक जिस का जीवन अपने नियोजकों (सम्मति देने वालों) में निकले हुए प्राणों पर निर्भर है इन में से कोई भी सत्य का प्रेमी नहीं हो सक्ता क्योंकि उन्होंने लोक मति को उच्चासन दिया है और सत्य तथा कीर्त्ति की सेवा को वैसा ही असम्भव समझते हैं जैसा ईश्वर और कुबेर की पूजा को। मेरे नूतन अनुभव में भ्रान्ति जनक बात यह है कि अधिक-वृद्ध, उच्चतर और प्रामाणिक, सबल और माननीय व्यक्ति ही ऐसे हैं जिन में बनावट और वास्तव्यता को दबाने और सृष्टि यिमम की धोखा देने का अभ्यास सम्भवतया अधिक प्रचण्ड दिखाई देता है।"

जिस पश्चिमीय सभ्यता रूपी देवी की पूजा में भारत वर्ष का सुशिक्षित दल निमग्न था उस को अपने उच्चासन से गिरी हुई देखकर किस को आशा की झलक दिखाई दे सक्ती है। जब सत्य पर ही सब कुछ प्रतिष्ठित है तो उस सत्य को तिलाञ्जलि देने वाली युरपियन प्रजा के पीछे चलकर भारत का कल्याण कैसे हो सकेगा।

मरने से जाति के लिये जीना भला है।

स्वदेश और स्वजाति के लिए मरने को तय्यार रहना देश-भक्ति का प्रथम अङ्ग समझा जाता है। और जब उचित समय आवे तो स्वदेश (मातृभूमि) की वेदी पर प्राण न्यौछावर कर देना है भी बड़ा धर्म का काम। परन्तु मातृभूमि की सेवा के लिए जीना उस से भी बढ़ कर धर्म है। इस समय भारत वर्ष में राजनैतिकों की ओर से स्वराज Homerule के लिए बड़ा आन्दोलन हो रहा है। मैं नहीं कहता कि यह आन्दोलन अनुचित है क्योंकि योग्यतानुसार स्वतन्त्रता प्राप्त करने का अधिकार प्रत्येक मनुष्य को है। परन्तु प्रश्न यह है कि क्या स्वराज की पुकार और उस के लिए यत्न करने का यही सब से उचित समय है।

पहली बात विचार ने योग्य यह है कि क्या भारत निवासी बलात्कार से स्वराज लेना चाहते हैं, और उस के लिए शक्ति भी रखते हैं? राजनैतिक उत्तर देते हैं कि हम राज नियम की सीमा में रह कर स्वराज के लिए आन्दोलन करना चाहते हैं। तब स्पष्ट है कि बलात्कार से स्वराज प्राप्ति कोई भारत निवासी नहीं चाहता। फिर दूसरी विचारणीय बात यह है कि क्या हमारे शासक (जो हमें स्वराज देसक्ते हैं) इस समय शान्ति पूर्वक हमारी प्रार्थना को सुनने के लिए तय्यार हैं वा नहीं? घटनाएं स्वयं इस प्रश्न का उत्तर देती हैं। वर्तमान विश्व-व्यापी युद्ध ने सब देशों के शासकों की बुद्धि को एक ही ओर खींच लिया है। जब आयरलेन्ड से अपेक्षाया बलिष्ट और उन्नत देश की पुकार की इस समय कुछ भी परवा नहीं की जाती, जब बेलजियम के युद्ध को पाप समझने वालों की फ़रियाद मक्कारी और कायरता पर अवलम्बित समझी जाती है, जब अविश्वास का चारों ओर राज्य हो रहा है; उस समय में "होमरूललीग" की बुद्धि पूर्ण, न्याययुक्त सम्मति और पुकार को कौन सुन सक्ता है। जिस आयरलेन्ड के बच्चे बच्चे के हाथों में हथियार हैं, जिस आयरलैन्ड का वायुमण्डल ही स्वतन्त्रा से आच्छादित है, जिस आयरलेन्ड में मरने मारने को सहस्त्रों तय्यार थे, जब उस की पुकार इस समय अनुचित समझी गई; तो जिस भारत वर्ष को सप्ताहों तक १५ सहस्त्र गोरे ही काबू रख सके उस की आवाज़ को इस समय कौन सुनेगा? इस समय लोक-मान्य तिलक की ज़मानतें कराने वा श्रीमति एनीबेसेन्ट को कद दिलवाने से कुछ भी लाभ नहीं। जो बृटिश जाति की बलिष्ट भयङ्कर शत्रु से अपने राजनैतिक तथा जातीय जीवन के

लिए लड़ रही है, उस से इस समय शान्ति से सोच कर अधिकारियों को अधिकार देने की चेष्टा करना व्यर्थ है। इस समय के हमारे बलिदान और आत्म समर्पण के भाव कुछ भी काम नहीं कर सकेंगे।

मेरी सम्मति शुच्छ है और राज नैतिकों की दृष्टि में आदरणीय नहीं हो सकती। परन्तु अपनी सम्मति देना मैं इस समय अपना कर्त्तव्य समझता हूं। युद्ध के समाचार देने बन्द करते हुए मैंने स्पष्ट लिख दिया था कि जब अपनी गवर्नमेन्ट किसी प्रकार की भी सम्मति सुनने को तय्यार नहीं तो युद्ध के समाचार देना व्यर्थ है। इसी प्रकार यदि मेरी सम्मति कांग्रेस के नेता सुनें तो मैं उन को यह सलाह दूंगा कि लखनऊ के आगामी अधिवेशन में पहला प्रस्ताव इस प्रकार स्वीकार करें—"इस कांग्रेस की सम्मति में वह समय आ गया है जब (Crown colonies) की तरह भारत-वर्ष को भी स्वराज दे देना चाहिए। परन्तु यतः इस समय विश्वव्यापी युद्ध के कारण राज कर्मचारी भारत निवासियों की अधिकार-प्राप्ति की चेष्टाओं को सन्देह की दृष्टि से देखते और इस में वृटिश साम्राज्य की हानि समझते हैं, इस लिए युद्ध की समाप्ति तक इस आन्दोलन को बन्द किया जाता है। परन्तु यह कांग्रेस स्पष्टतया सूचना देना चाहती है कि युद्ध की समाप्ति के पश्चात् वह अपनी मातृभूमी को पूरे अधिकार दिला ने का पूरा यत्न करेगी।"

इस स्पष्ट घोषणा के पश्चात् दो काम हैं जिन पर अपना सारा बल लगा देने से "इन्डिय नैशनल कांग्रेस" जीवित रह सकती है।

एक तो ग्राम ग्राम और गृह गृह में शारीरिक व्यायाम-शालाएं खुलवाने का प्रयत्न करे और दूसरे जाति की ओर से अनिवार्य शिक्षा Compulsory education का प्रबन्ध करे। स्वर्गवासी गोखले जब गवर्नमेन्ट से अपना बिल पास कराने में कृत-कार्य न हुए तो आदरणीय पण्डित श्रीनिवास शास्त्री को आशा रखनी न चाहिये कि वह कुछ कर सकेंगे। इस समय स्वराज देना वा न देना गवर्नमेन्ट के हाथ में है परन्तु प्रारम्भक शिक्षा को, मातृभाषा द्वारा, सारे देश में फैलाने तथा भोजन छादन और व्यायाम के सुधार से अपनी जाति की मानसिक तथा शारीरिक दशा को सुधारना तो हमारे अपने हाथ में हैं। प्राप्त का छोड़ कर अप्राप्त की ओर भागना बुद्धिमानों का काम नहीं।

बोलो बहादुर बङ्गाली बाबू की जय!

डाक्टर मलिक के पुरुषार्थ का यह फल निकला कि गवर्नमेन्ट ने बंगालियों की दो कम्पनियों की भरती स्वीकार करली। दो कम्पनियों में २२८ जवान होंगे। अब तक यही ज्ञात होता है कि इन को वेतनादि हिन्दोस्तानी पलटनों की दर से मिलेगा। बङ्गाली यह प्रयत्न कर रहे हैं कि इन के साथ गोरों का सा व्यवहार हो। यह तो जब होगा तब होगा, इस समय तो गवर्नमेन्ट ने यह मान लिया कि बङ्गली भी बहादुर हैं; वैसे बोदे कायर नहीं जैसे मेकाले के समय में थे। मेरी सम्मति में गवर्नमेन्ट के वे कर्मचारी बड़ी भूल कर रहे हैं जो इस समय भी अविश्वास की नीति पर चल रहे हैं। लोक-मान्य तिलक की स्पीच छप गई है। उस में कुछ भी राज विद्रोह नहीं परन्तु मजिस्ट्रेट ने उन से ज़मानत मांग कर लाखों हृदयों को धक्का लगाया। श्रीमति एनीबेसेन्ट के साथ बुरा वर्ताव कर के लाखों को अप्रसन्न कर लिया। विपत्ति के समय तो शत्रुओं से भी सहानुभूति की आवश्यकता होती है, यहां लाखों राजभक्तों को निराश कर के उन को निरपेक्ष बना देना ही नीति समझा गया है। मैंने एक बार आज्ञा मांगी थी कि यदि आवश्यकता हो तो युद्ध में बीमारों की सेवा के लिए आर्यों का एक दल बना कर पेश कर दिया जाय। इस का कुछ भी उत्तर न मिला। अब भी यदि गवर्नमेन्ट इच्छा प्रकट करे तो आर्य पुरुषों की एक दृढ़ रेजिमेन्ट तय्यार हो सकती है। परन्तु विश्वास पहले चाहिए। मैं बङ्गालियों को बधाई देता हूं कि उनसे सहायता लेना गवर्नमेन्ट ने स्वीकार कर लिया है। अब किसी की मजाल नहीं उन का अपमान कर सके। जिस प्रकार बङ्गालियों ने गत आठ नौ वर्षों में पुलिस के छक्के छुड़ा दिए थे, आशा करनी चाहिए कि "जरमन जानवरों" के शिकार में हमारे भाई इस से भी अधिक साहस दिखलायंगे। विचार में शिरोमणि थे ही, अब शारीरिक कठिन्य में भी अगुआ बनने लगे हैं—बोलो, बहादुर बंगाली बाबू की जय!

सत्यार्थप्रकाश का मूल्य बढ़ाना नहीं चाहिये।

इस समय सभी समाचार पत्रों तथा पुस्तकों का मूल्य बढ़ रहा है। सत्यार्थप्रकाश का वर्तमान संस्करण समाप्त होने पर है। उसके सम्बन्ध में श्री सहकारी मन्त्री परोपकारिणी सभा का जो पत्र आया था, वह अपने उत्तर सहित नीचे देता हूं—

श्री बाबू हरविलास जी का पत्र

"सत्यार्थप्रकाश नागरी सालभर में ४००० प्रति बिकता है, हमारे पास अब २३०० प्रति स्टाक में हैं। लगभग आवृति एक साल में छपकर तय्यार होती है इस लिये अब कौरन छपाना चाहिये, परन्तु कागज़ का भाव बहुत बढ़ गया है। अभी फी पुस्तक १) में बिकती है, अब १-)॥ में छपेगी -)॥ फी पुस्तक स्टाफ़ आदि का खर्च पड़ेगा। इस लिये जब तक कीमत न बढ़ाई जावे नुक्सान होता है। हमने कमीशन देना बन्द किया है इस लिये कुछ कम बिक्री है। अभी प्रेस में दिया जावे तो एक वर्ष में तय्यार होगा। इस लिये श्रीमान् मन्त्री जी महाशय की आज्ञा से आपकी सेवा में यह पत्र भेजता हूं कि आप सम्मति दें कि क़ीमत बढ़ाई जावे या नहीं। छपाई बन्द करना तो दुरुस्त नहीं है इस लिये इसकी क़ीमत १॥) रख कर कमीशन दिया जावे तो ठीक रहेगा। कागज़ की कीमत कम होने पर पीछे १) कीमत कर दी जावेगी और सिर्फ़ ४००० छपाई जावे ताकि सालभर में खर्च हो जावे:— करें।

कृपा कर अपनी सम्मति से कृतार्थ

आपका कृपाकांक्षी
हरबिलास सारदा
सहकारी मन्त्री"

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरा उत्तर

"श्रीमान् सहकारी मन्त्री जी परोपकारिणी सभा अजमेर, समस्ते।

आपका पत्र सं० १६१ ता० ३-६ पहुंचा। उत्तर में निवेदन है कि मेरी सम्मति में सत्यार्थप्रकाश का मूल्य बढ़ाना नहीं चाहिये। काग़ज़ का मूल्य बढ़ने से जो अधिक व्यय हो वह परोपकारिणी के जमा धन में से डालना चाहिए। ऋषि दयानन्द की पुस्तकें व्यापार की दृष्टि से नहीं छपाई गईं थीं। जिस सत्यार्थ प्रकाश ने सभा को सहस्रों कमा दिये, उसकी न्यौछावर यदि दो अढ़ाई हज़ार हो जावे तो क्या चिन्ता है।

प्रतियें ४००० ही छपवाई जावें।

आपक
मुंशीराम
सभासद् परोपकारिणी सभा"

ऊपर के पत्र व्यवहार से पता लगेगा कि सत्यार्थप्रकाश के मूल्य बढ़ाने का प्रश्न सभासदों के बहु-पक्ष से निश्चय होगा। परन्तु आर्यजगत को अपनी सम्मति बल से सुनानी चाहिए और यदि वे मेरे साथ सहमत हों तो सहकारी मन्त्री जी को सूचना देनी चाहिए कि इस प्रश्न का अन्तिम निश्चय केवल परोपकारिणी सभा के सभासदों के बहु-पक्षानुसार ही न करदें।

पेशावर एक्टिरों की चालें।

लाहौर के "बुलेटिन" (Bulletin) नामी अख़बार के सम्पादक, आज कल, महाशय श्यामलाल हैं। आप अब्दुल-गफ़ूर (उर्फ़ धर्मपाल) की शागिर्दी में भी रह चुके हैं। इस लिए गफ़ूरी हथकण्डों के भी आप माहिर हैं। पारसी महाशय खटाऊ की कम्पनी लाहौर में आई और रामायण के खेल उसने आरम्भ किए। कवि लालचन्द्र फ़लक को सीता बनने वाली नटी के आचरण पर सन्देह हुआ; उन्होंने प्रेस में कुछ लिखा। लाला श्यामलाल ने अपने पत्र की ग्राहक संख्या बढ़ाने का यह अच्छा अवसर देखा और लोगों की सम्मतिएं मांगनी आरम्भ कीं। प्रश्न जो उन्होंने प्रकाशित किए थे उन्हें दो वार मेरे पास भेजा परन्तु मैंने इस लिए उत्तर न दिया कि मैं ऐसे साधनों से "अख़बार की अशायत" बढ़वाने के विरुद्ध हूं। ऐसे ही प्रश्न उन्होंने प्रचारक के सम्पादक के पास भी, उनका नाम लिख कर, भेजे। सम्पादक ने अपनी योचित सम्मति दी, जिसका उन्हें पूर्ण अधिकार था। इस पर बुलिटिन में किसी "हरगोपाल" की ओर से मेरे विरुद्ध एक असभ्य अश्लील लेख निकला। यह नाम भी कल्पित ही मालूम होता है और यह पत्र भी ग़फ़ूरीहथकन्डे का एक नमूना है। जैसे अब्दुल ग़फ़ूर स्वयं ही नाम घड़ लिया करता था, वैसे ही इस जगह भी किया गया है। मालूम होता है कि बुलेटिन के कुछ सभ्य पाठकों ने महा० श्यामलाल को, इस पत्र के छपने पर, आड़े हाथों लिया इसी लिये उन्होंने अब नीचे का पत्र मेरे नाम भेज कर अपने अख़बार में छाप दिया है—

"२६ जौलाई के अख़बार सद्धर्मप्रचारक में एक नोट पारसी एलफ्रैड थिएट्रिकल कम्पनी के रामायण और महाभारत के तमाशों के मुताअलक़ छपा हुआ है जिसने हिन्दुओं के एक वसीअ-सर्कल में बड़ी बेचैनी पैदा करदी है और दफ़्तर बुलेटिन में इस के खिलाफ बहुत सी चिट्ठियां मौसूल हुई हैं जिन में से एक इस वक्त तक दर्ज अख़बार हो चुकी है और पर्चा आप की सेवा में अरसाल किया जा चुका है। चूंकि इस नोट के खिलाफ ख़तूत का सिलसिला बराबर जारी है और मेरा ख़याल है कि यह नोट आप का लिखा हुआ हरगिज़ नहीं, इस लिए मैं असली पोज़िशन आप की सेवा में अर्ज़ करके आप का जवाब हासिल करना चाहता हूं। सवाल ज़ेरबहस इस वक्त यह है कि—(१) क्या एक ग़ैर हिन्दु पेशावर थिएट्रिकल कम्पनी को यह इजाज़त होनी चाहिए कि वह हिन्दुओं के पूजनीय बुज़ुर्गों और मान्य देवियों को लोगों की तफ़रीह और अपनी रोज़ी का ज़रीया बना सके, जैसा कि मिस्टर खटाऊ मालिक पारसी एलफ्रैड कम्पनी ने अपनी चिट्ठी में साफ़ इस अमर का इक़रार किया है कि वह इस काम को किसी मज़हबी या क़ौमी ग़रज़ से नहीं करते बल्के बतौर पेशावर और प्रोफैशन के करते हैं। (२) क्या ग़ैर हिन्दू पेशावर एक्टरों और एक्ट्रेसों को यह इजाज़त होनी चाहिए कि वह पूजनीय हिन्दु-बुज़ुर्गों और मान्यदेवियों के लिबास और पोज़िशन में स्टेज पर आकर इन का पार्ट करें, मैं उम्मेद करता हूं कि आप वापसी डाक इस सवाल का जवाब देकर मुझे मशकूर करेंगे।"

म० श्यामलाल अपने आप को आर्य्यसमाज के सभासद् कहते हैं, और जिस अंक में यह चिट्ठी प्रकाशित करते हैं उसी में बड़ी चिन्ता प्रकट करते हैं कि कहीं आर्य्यसमाज और गुरुकुल कांगड़ी "हिन्दुओं की हमदर्दी को, एक बड़ा हद तक" न खोदें। जब ऐसा है तो अपने अख़बार में एक रुसवाकुन की चिट्ठी छपवा, मेरा और साथ ही ऋषि दयानन्द का मखौल उड़वा कर, पीछे यह पत्र क्यों भेजा। इस से पहले ही पत्र भेजने की कृपा क्यों न की? और यदि "एक लोकल हम असर" ने "ग़लत तर्जुमा छाप कर ग़लत फ़हमी फैलाई थी, तो आर्य्यसमाज के हित का ख़याल करके आपने क्यों न 'सही तर्जुमा' छाप दिया। १५ आवज के प्रचारक का लेख मैं पुनः उद्धृत कर देता हूं जिस से पता लगेगा कि इस लेख से हिन्दू नहीं भड़क सकते, यदि भड़के हों भी तो म० श्यामलाल जी के लेखों से ही भड़के होंगे।

"नाटक और स्त्रीपात्र

प्रश्न बड़े ज़ोर से उठा है। लाहौर के पत्र इस विषय में बड़ी मनोरंजकता ले रहे हैं। पारसियों की एलफ्रैड थियेट्रिकल कम्पनी लाहौर आई हुई है। यह वही कम्पनी है जिस के महाभारत नाटक ने दो साल हुए पंजाब में खासी ख्याति पाई थी। अब इसी कम्पनि ने रामायण का भी नाटक बनाया है। म० लालचन्द फ़लक उर्दू के अच्छे कवि हैं। आपने उर्दू पत्रों में इस कम्पना पर दो आक्षेप किये थे। प्रथम आक्षेप यह था कि कम्पनी में द्रौपदी तथा सीता का भाग एक मिस गौहर नाम की वेश्या को दिया गया है। यह अच्छा नहीं। भारत की प्रसिद्ध सती

देवियों का भाग निकृष्ट दर्जे की औरतों से कराना अपराध ही नहीं पाप भी है। इस पर कम्पनी के मालिक खटाऊ जी ने पत्रों में चिट्ठी छपवाई है, जिस द्वारा बताया है कि मिस गौहर बेग्ला नहीं एक पारसी महिला है। वे विवाहिता हैं और उनका एक पांच साल का बच्चा भी है। यह प्रश्न तो यों हल हुआ। इस से हमें कोई तात्पर्य नहीं। परन्तु इस प्रश्न ने दो-हरी मौलिक समस्याएं उत्पन्न करदी हैं! प्रथम समस्या यह है कि क्या रामयुधिष्ठिरादि महापुरुषों को पात्र बना कर कोई नाटक बनाने चाहियें? दूसरी समस्या यह है कि क्या नाटकों में स्त्रियों को भी पात्र बनाना चाहिए? इनमें से पहले हम प्रथम समस्या को लेते हैं। हमारी सम्मति में मौलिक प्रश्न यह है कि क्या नाटक खेलने की रीति ही उत्तम है या नहीं? यह रीति भारत में इतनी पुरानी है, जितना पुराना भारत का नाट्य शास्त्र है। महाभाष्य में भी वलिबन्ध आदि नाटक कंत्वसूचक नाम आते हैं; इस लिए इस प्रश्न पर अधिक विवाद अपेक्षित नहीं। प्रश्न यह है कि यदि नाटक बनने ही हैं तो क्या वे राम आदि महापुरुषों के हों? इस का उत्तर यदि इतिहास से दें तो स्पष्ट है। संस्कृत में जितने उत्तम २ नाटक हैं वे प्रायः राम दुष्यन्त भीम युधिष्ठरादि महा पुरुषों की कथा को आधार ले कर ही बनाये गये हैं। हमारे यहां इन महा पुरुषों के चरित का नाटकों में चित्रित करना अधिक अच्छा समझा जाता था। यदि कवि कोई अनुचित या असत्य बात बीच में नहीं मिला देता, या खेलने वाले पात्र ही नाटक को भ्रष्ट नहीं कर देते, और नाटकों की रचना स्वतः निन्दित नहीं तो रामादि के चरित को आधार मान कर बने हुये नाटक ही जनता का उपकार कर सकते हैं—दूसरे नाटक नहीं। दृष्टान्त के लिये हम खटाऊ जी की कम्पनी के महाभारत का एक दृश्य लेते हैं। कृष्ण की स्त्रियों का परस्पर झगड़ा और कृष्ण का उस में भाग बहुत ही अनुचित है। वह दृश्य कभी बुद्धिमत्ता से अनुमोदित नहीं। दूसरा प्रश्न यह है कि नाटकों में स्त्रियों को पात्र बनाना चाहिये या नहीं? यहां हम कुछ अधिक निश्चय पूर्व कह सकते हैं। शास्त्रों में विधान है कि पुरुष को स्त्रीवेश में नहीं देखना चाहिये। यदि नाटक करना बुरा नहीं और यदि उन में स्त्रीपात्र होंगे, तो पुरुषों से स्त्रीपात्रों का कार्य कराने की अपेक्षा स्त्रियों से स्त्रीपात्रों का कार्य लेना उत्तम होगा। शर्तें दो हैं। ऐसी स्त्रियें कुत्सित आचरणों वाली न हों, और उन पर कोई बुरा प्रभाव पड़ने का डर न हो।"

अब मैं नाटकों के विषय में अपनी स्पष्ट सम्मति देता हूं:—

(१) आजकल पर्दे बना, मुंहों पर सफ़ैदा मल, रातों को रोशनी करके जो नाटक खेले जाते हैं उनके मैं सर्वथा विरुद्ध हूं क्योंकि उनमें आचार बिगड़ने की सम्भावना है। इनके स्थान में भारतवर्ष का पुराना यात्राओं का रिवाज जारी होना चाहिये जहां दिन को बिना पर्दों आदि की सहायता के स्वाभाविक रीति से उत्तम चरित्र दिखाए जाते थे।

(२) राम लीला, रास लीला आदि में लड़कों को स्त्री वेश में सीता, राधा बनाकर उन से थाली फिरवाना तथा कभी कभी भक्तों का उन लड़कों से व्यभिचार करना महा पाप है, यह बन्द हो कर केवल सदाचारी पुरुष स्त्रियों द्वारा उत्तररामचरित्र, महावीर चरितादि नाटकों में महा-पुरुषों के आचार व्यवहार दिखाए जाने चाहिएं।

(३) जैसे पेशावर एडिटरी पाप नहीं वैसे ही नट का पेशा भी पाप नहीं, यदि सदाचारी पुरुष स्त्रिएं शिक्षा देने के लिए नाटक खेलें। दुराचारी हिन्दू का भी नाटक खेलना दूषित समझता हूं! शेष रहा पारसियों का प्रश्न सो मुसलमान, ईसाई तो ठीक "गैर हिन्दू" हैं, परन्तु गोरक्षक, यज्ञोपवीत धारी, अथर्ववेद के अनुयायी पारसियों को "गैरहिन्दू" कहने में महाशय श्यामलाल को अवश्य स्वतन्त्रता है, परन्तु मैं उन्हें अनार्य नहीं समझता। मेरी सम्मति स्पष्ट है कि अहिन्दू सदाचारी पुरुष स्त्री, यदि राम, कृष्णादि महापुरुषों के नाटक खेलें तो कोई दोष नहीं।

अन्त में निवेदन है कि यह मेरी निज की सम्मति है, इसके लिए आर्य समाज या गुरुकुल की संस्था वा अन्य कोई व्यक्ति उत्तर दाता नहीं।

मुंशीराम जिज्ञासु.

आने वाली कांग्रेस का प्रधान।

यह प्रश्न बड़ी हल-चल मचा रहा है कि आने वाली कांग्रेस की बैठक का प्रधान कौन हो। लखनऊ की स्वागत कारिणी के कुछ सभ्यों ने कुमेटी कर मारी कि उन्हें एनीबेसेन्ट के अतिरिक्त और कोई प्रधान स्वीकार नहीं। प्रयाग के लीडर दैनिक के सम्पादक श्री चिन्तामणी जी ने देवी बेसेन्ट को ही आड़े हाथों ले डाला, यद्यपि वह स्वयम् मद्रास में कह चुकी थीं कि जब कुछ वृद्ध कांग्रेस के नेता डरते और इस में हानि समझते हैं तो वह अपना अधिकार छोड़ती हैं। मद्रास ने एक दीवान बहादुर को चुना इस से श्री विजयराघवाचारियार के प्रशंसक रुष्ट हो गए। इस का कुछ फैसला शीघ्र होना चाहिए। प्रधान सर्व सम्मति से ही बनाना ठीक है। बम्बई ने बाबू अम्बिकाचन्द्र मोज़मदार को चुना है। बङ्गाल और बरार ने भी उन्हीं को चुना है। चाहिए यह कि शेष प्रान्त भी उन्हीं को चुन डालें। वृद्ध मोज़मदार में सब उम्मीदवारों के सम्मिलित गुण हैं। ओज तो उन के भाषण में देवी एनीबेसेन्ट से कम न होगा, नरम भी वह दीवान बहादुर से कम न होंगे और सब से बढ़ कर बात यह है कि वह निर्भय और भारत माता के अनन्य भक्त हैं। विजयराघवाचार्य तथा दीवान बहादुर को फिर अवसर मिल जायगा। परन्तु वृद्ध मोज़मदार को इस समय मान दे ही देना चाहिए। चाहे कुछ भी मांगो वा कुछ भी अधिकार जतलाओ यदि एक स्वर हो कर बोलोगे तो सुनाई होने की अधिक संभावना है। देवी एनीबेसेन्ट और लोकमान्य तिलक तो प्रस्तावों पर बोल कर भी अपना काम कर जायंगे।

मृतकश्राद्ध पर शास्त्रार्थ—
मूल्य =)॥ प्रतिपुस्तक। १००० प्रतिएं ही छपी हैं। बांटनी हों तो शीघ्र मंगा लीजिए। प्रबन्धकर्ता मनोरंजक पुस्तक भण्डार

प्राप्त ।

म० जौहरीलाल [धौलपुर]—ब्राह्मण सर्वस्व में प्रसिद्ध संशयात्मक पं० भीमसेन के असभ्य लेख की पड़ताल भी व्यर्थ समय गंवाना ही है। मृतकश्राद्ध के शास्त्रार्थ पर पौराणिक जगत के मुंह पर तो ताला लग चुका है, अब गालियों से कुछ नहीं बनता— [सम्पादक]

हिन्दी समाचार की योग्यता ।

राजधानी दिल्ली से निकलने वाले हिन्दी समाचार नामक एक हिन्दी के समाचार ने अपने २५ जुलाई के मुख्य लेख में अपनी योग्यता का पूरा २ परिचय करा दिया है जो समाचार पत्रों का जाति विभाग करने में बड़े काम का होगा। हमने प्रचारक की किसी पिछली संख्या में "विज्ञापन विभ्राट्" के नाम से एक सूचना निकलवाई थी जो एक धोकेबाज़ पुस्तक के विज्ञापन दाता की पोल खोलने के लिए निकलवानी आवश्यक थी—क्योंकि उस से जैसे हमारे मित्र ने धोका खाया वैसे ही और सज्जन भी भूल कर धोका खा सकते थे, पर हिन्दी समाचार जैसे पत्र को यह अभीष्ट नहीं कि लोगों को धोके से बचाया जाय। उस विज्ञापनी का विज्ञापन हिन्दी समाचार में छपता है इस लिए उसे सब से ज्यादा दर्द उस का आता है—पर हम नहीं समझते पाप कमाई कहां तक जायज़ हो सकती है? और ख़ास कर उस हालत में जब उस का धोका प्रमाणित हो गया है। हमने उक्त सूचना उस विज्ञापन दाता के लिए लिखी थी और लोगों से प्रार्थना की थी कि विज्ञापनी सज्जन ने जाल फैला रक्खा है भोले भाई उनके जाल से बचें। पर हिन्दी समाचार मानो कुचले सांप की तरह मौक़ा ताक रहा था, उस के पत्र में वह विज्ञापन छपता है इस लिए उस का पक्ष समर्थन करने में उस ने पत्र का मुख्य लेख सवा तीन कालम का लिख मारा। इस से अनुमान किया जाता है कि हिन्दी समाचार ने उस विज्ञापनी से विज्ञापन की छपाई के अलावा इस धोके के व्यापार में साझा भी कर रक्खा है, नहीं तो चोर की डाढ़ी में तिनका कहने से उसे अपनी डाढ़ी झाड़ने की ज़रूरत ही क्या थी? एक विज्ञापनी का पक्ष समर्थन करने के लिए मुख्य लेख लिखना हिन्दी समाचार की योग्यता प्रकट करता है [?] या मुख्य लेख के लिए उसे इस से अच्छा विषय ही न मिला हो। फिर हमें सम्पादक देवता की शकल देखनी भी नसीब नहीं हुई और वे वाद-विवाद को ऐसे शब्दों में अदा करते हैं जैसे बड़ी घनिष्टता हमसे है। पूज्य महात्मा जी और सद्धर्मप्रचारक पर हिन्दी समाचार ने इस लिए अपना ज़हर उगला है कि उन्होंने हमारी सूचना को अपने पत्र में स्थान दिया—पर अपने जालसाज़ विज्ञापनी का पक्ष समर्थन कर के उसके नमक खाने का ख़ूब परिचय दिया है!! हमारे स्थान को समाचार "नये सेंसर का कार्यालय" कहता है—हां हो सकता है, पर वह खटक सकता है समाचार जैसे 'परोपदेशे पाण्डित्यम्' के भक्तों को ही। समाचार ने अपने लेख में बताया है कि, "पुस्तक से अनुचित लाभ उठाने का एक मात्र कारण हिन्दी समाचार को बता कर उस पर एक प्रकार से दोषारोपण किया है"। इस के लिए समाचार के सम्पादक को फिर से हमारी सूचना पढ़नी चाहिए—उस में एक शब्द भी हिन्दी समाचार के ख़िलाफ़ नहीं—पर चोर की डाढ़ी में तिनका था। हम ने लिखा था कि हिन्दी समाचार में जो विज्ञापन छपा था उससे हमारे मित्र ने धोका खाया। इस में हम हिन्दी समाचार का दोष नहीं समझते थे पर उसकी इस उछल कूद से उस पर जो शक होता है उस से वह अपनी रक्षा नहीं कर सकता। हमने अपने मित्र से कहा था कि कोकशास्त्र की वह पुस्तक अच्छी है जो हमारे पास है। यही हमने सूचना में भी छपा दिया था, पर हिन्दी समाचार का सम्पादक हमें "विषयीप्रेमी" आदि कहता है। ख़ैर—हम विषयी हैं या प्रेमी हैं यह तो हमारे मित्र और मिलने वाले सज्जन ही जानते हैं सम्पादक को इसका क्या पता! पर जिस पुस्तक की हमने प्रशंसा की थी उसके लिए ४॥-) ख़र्च करके पहले सम्पादक देवता मंगा कर देखें तो हमारे शब्दों का वज़न भी उन्हें मालूम हो। पर यदि आप विषयों के सिरमौर सुलफ़े की लपटें लपका कर ऐसा लिखा करते हैं तो हमें आपके लिखने की ज़रा भी चिन्ता नहीं। पर बताइए इस हालत में विषयी आप हैं या हम? आगे आप लिखते हैं, "ठगी के लिए अदालतों के द्वार खुले पड़े हैं।" सो आप हमारी सूचना में पढ़ ही चुके हैं कि हमारे मित्र ने बाक़ायदा रजिष्ट्री कराके उस विज्ञापनी को नोटिस दिया है। समाचार का सम्पादक कहता है, "समाचार पत्रों के लाभ उठाने के विरुद्ध खड्गहस्त होना न जाने कहां तक न्याय संगत है," इस से यह मालूम होता है कि हिन्दी समाचार न्याय वा अन्याय का ख़याल न करके लाभ को ही अपने सामने रखता है। तभी तो विज्ञापनी की साफ़ जालसाज़ी प्रकट होने पर भी केवल विज्ञापन छपते रहने से दो पैसे की प्राप्ती समझ कर अपने मुख्य लेख में उसका पक्ष समर्थन करने को तैयार हुआ है। हमने माना कि काग़ज़ आदि की महँगाई के कारण समाचार पत्रों को हानि हो रही है—पर अकाल पड़ने पर भी क्या चोरी करना और डाका डालना धर्म समझा जा सकता है! पर हिन्दी समाचार अपने शब्दों में इसे भी धर्म ही समझता है। हिन्दी समाचार प्रताप की टिप्पणी का एक२ शब्द सच्चा मानता है। पर प्रताप साफ़ लिखता है, "पत्र विज्ञापनों से रंग कर लोगों को लूटने और लुटवाने का अवसर देते हैं, अधिकांश विज्ञापन झूठे हैं।" यदि हिन्दी समाचार अपने कहने के अनुसार इन प्रताप के शब्दों को सच्चा मानता है तो फिर विज्ञापनों को झूठा समझते हुए उसने मुख्य लेख में इसका समर्थन क्यों किया? हिन्दी समाचार जिसे झूठा समझता है उसी की सहायता भी करना चाहता है, इससे क्या हम झूठे के भाई को भी झूठा समझें? आगे चल कर हिन्दी समाचार ने लिखा है कि, जिस पुस्तक की आप तारीफ़ कर चुके हैं वह दूसरे के हाथों में जाने से बुरी कैसे होगई और यदि पुस्तक का मूल्य

अधिक लिया गया तो इस में हिन्दी समाचार का क्या दोष है।" हमारी सूचना को पढ़ने पर हिन्दी समाचार के सम्पादक के इस प्रलाप को पढ़ने से अच्छी तरह पता लगता है कि अभी उर्दू की बदली होने के कारण सम्पादक को हिन्दी भाषा का समझना भी नहीं आया। हमने मित्र से जिस पुस्तक की प्रशंसा की है उसकी बुराई अपने आप नहीं की और न हमारे शब्दों में ऐसा विरोधाभास ही आया फिर सम्पादक यह बात कहां से उठा लाये सो वे ही बता सकते हैं। दूसरे हमसे पूछते हैं इसमें हिन्दी समाचार का क्या दोष है? हम भी कहते हैं व्यर्थ दोष देना हमारा काम नहीं और अपनी सूचना में हिन्दी समाचार को दोष भी नहीं दिया पर जो दोषी है वह शब्द करने से पहले ही अपनी सफ़ाई पेश करना चाहता है इसका इलाज क्या? आगे चल कर आप कहते हैं, "परन्तु मालूम होता है कि हिन्दी समाचार से धार्मिक विषय में आपका मतभेद है उसी द्वेष के कारण आपने हिन्दी समाचार को दोषी बनाने का प्रयत्न किया है।" क्या खूब, मान न मान मैं तेरा मेहमान! बात हो रही है विज्ञापनदाता की जालसाज़ी की और हज़रत फ़रमाते हैं कि धर्म के द्वेष के कारण आप हिन्दी समाचार को दोषी बताते हैं। नया मुसलमान जैसे अल्लाह ही अल्लाह की रट लगाया करता है वैसे ही नया सनातन-धर्मी हिन्दी समाचार धर्म का फ़तवा खूब दे रहा है! पर यह धोका कहां तक दिया जा सकता है। हज़रत, जिस पत्र का मालिक जैन धर्मी रहता हुआ वैसे पैदा करने के लिए सनातन धर्म का पक्ष समर्थन करे वास्तव में उस पत्र का धर्म जैन है, सनातनी है या केवल उस का टका धर्म है सो आप ही बता सकते हैं। यदि कल मुसलमानों से उसे अधिक रुपयों की सहायता मिले तो शायद वह रोज़े और नमाज़ की शागिर्दी में उसका पक्ष समर्थन करने लगे। ऐसे बिना पेंदी के लोटे का ढुढ़ता की ढींग मारना उचित नहीं। जो हिन्दी समाचार दो ऐसे की सहायता के लिए भीतर जैन धर्मी बनकर ऊपर से सनातन धर्म की चादर ओढ़ सकता है, जिसका सम्पादक सनातन धर्म की ढींगें मार कर सुलफ़े की लपटें उठा सकता है, और जो हिन्दी समाचार सरासर झूठे विज्ञापनों का पक्ष समर्थन करने के लिए मुख्यलेख लिख सकता है—उसका धर्म कौनसा है सो सिवाय परमेश्वर के और कौन बता सकता है? हमें हिन्दी समाचार उपदेश लेने के लिए लिखता है। पर ऊपर बताए हुए इतने गुणों से भूषित सज्जन के उपदेश की हमें आवश्यकता नहीं। वे दूसरों को उपदेश न देकर अपने ही काम में लावें। हमें विवश होकर यह लिखना पड़ा क्योंकि पाप को बढ़ते हुए देखना भी पाप है। यदि हिन्दी समाचार इतनी खराबियों को सुधारने के स्थान पर फिर लिखेगा तो हम भी तैयार हैं। अन्याय को देखना हमारा धर्म नहीं। न्याय को उच्चासन देना ही हमारा धर्म है।

किदारनाथ गोयलका
कटरा नवाब देहली.

कविराज पं० नाथूराम शङ्कर शर्म्मा का अनौचित्य

(१)

आर्य्य जनता में श्री पं० नाथूराम शङ्कर शर्म्मा का नाम बहुत प्रसिद्ध है, इस कारण कि आप आर्य्य समाज में सुप्रसिद्ध अद्वितीय कवि हैं। कवि ही नहीं, किन्तु कविराज और कवि सम्राट तक आप कहे जा सकते हैं। परमोत्तम कवि होने के कारण कवियों में भी आपका आसन ऊंचा है। इसमें कुछ विवाद नहीं।

आपने अब तक दो अमूल्य ग्रन्थों की रचना की है, जो आर्य्य समाज के साहित्य-भण्डार में अलभ्य रत्न है। आपके उन ग्रन्थों का नाम है, शंकर-सरोज और अनुराग-रत्न। वास्तव में उत्कृष्ट रचना के विचार से ये दोनों ही ग्रन्थ अपूर्व हैं—अद्वितीय है। एक अच्छे कवि की रचना के ग्रन्थ होने भी ऐसे ही चाहिएं। परन्तु किसी कवि की रचना सर्वथा निर्दोष ही हो, उस में कोई भी दोष न रहा हो, ऐसा हमें मानने में संकोच है। महाकवि कालिदास तक की रचनामें जब दोष है, तब आज कल के किसी कवि और महाकवि के विषय में यह कि वह सर्वथा निर्दोष रचना करता है, उसकी कविता में कोई दोष नहीं रहता, कहना उपयुक्त प्रतीत नहीं होता।

जिन कविराज जी के विषय में हम यह लिख रहे हैं, इसमें सन्देह नहीं कि आप एक अच्छे कवि हैं, आपकी कविता भी सर्वांश में अच्छी ही होती है। पर हम उसे सर्वथा निर्दोष नहीं कह सकते।

कुछ भाग आपकी कविता का ऐसा है जो प्रायः इन पुस्तकों में नहीं, किन्तु "भारतोदय" और "विद्यार्थी" में पृथक पृथक शीर्षक देकर छपा है। आपकी कविता के, इस आधुनिक भाग से, आर्य्य समाज में, अच्छे भावों की वृद्धि नहीं हुई, किन्तु उलटा मनोविकार ही बढ़ा है—उलटी स्पर्धा ही बढ़ी है। इस लिए आपकी सारी ही कविता इस [आधुनिक] भाग की निकम्मी है। आपका यह श्रम सफल नहीं हुआ। यह हम को दुःख है। अस्तु आपकी, उल्लिखित भाग की, कविता ही ऐसी है, जिसकी हम इस लेख में आलोचना करना चाहते हैं। आशा है, कविराज जी इस विषय में हम को क्षमा प्रदान करेंगे?

× × × × ×

आर्य्य जनता स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज को जानती है। कैसे अच्छे साधु हैं! आपका सा सारगर्भित सुमनोहर—श्रुति सुखद, व्याख्यान हमने किसी दूसरे साधु का कभी सुना नहीं? आपके व्याख्यान में सहृदयता और सर्व हितकारिता के, भाव कूट कूट कर भरे होते हैं। जो कहते हैं, अच्छा कहते हैं सो भी हृदय से, ऊपर से नहीं। ढोंग तो आपसे कोसों दूर है। ऐसे अद्वितीय सच्चे सन्यासी दूसरे आर्य्य समाज में देखने को कहां? कुछ किसी से स्वार्थ ही नहीं। नित्यनिरन्तर आर्य्य समाज का काम करते रहना पर कभी विश्राम पाना कैसा?

पाठक बतलाइए, कोई आर्य्य सन्यासी ऐसा और हो तो। शोक है कि ऐसे सर्वहितकारी सर्व सुधारक अच्छे साधु समाजश्रेष्ट सन्यासी को पाकर आर्य्य समाज गर्व न करे?

(शेष फिर)

× × × × ×

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

छठा परिच्छेद

गुलाबसिंह अन्दर जाकर पलंग पर लेट गया; लेट तो गया पर नींद न आई। चित्त का क्षोभ ऐसा था कि शान्ति से लेटना भी कठिन था—सोने की तो कौन कहे? फूलसिंह के अन्तिम शब्द और गुलामकादिर की छुपी धमकी हृदय में बार बार आने जाने लगी। गुलाबसिंह ज्यों २ सोचता था, त्यों २ फूलसिंह पर उसका कोप बढ़ता जाता था। क्या घर का सांप इसी को नहीं कहते? और फिर धमकी यह कि तेजसिंह कमलादेवी को बलात्कार से ले लेगा। क्या तेजसिंह और फूलसिंह—दोनों को समाप्त कर देना ही ठीक न होगा? यह विचार गुलाबसिंह के चित्त में गहरा स्थान पा रहा था। वह विचार रहा था कि इन दोनों को इस भूमि पर से बदा कर देना ही ठीक है। मेरे घर में मेरा अपमान और फिर बलात्कार की धमकी! राजपूत कभी ऐसी अवहेलना सहन नहीं कर सकते। दूसरी ओर बादशाह का संदेसा भी पक्का और कठोर। परन्तु गुलामकादिर का शील और सभ्य व्यवहार गुलाबसिंह को आश्चय में डाल रहा था। वह ऐसा चुपके से चला गया? उसने कोई धमकी क्यों न दी? शायद वह कल फिर आवेगा। खैर आयगा तो देखा जायगा। कहां गुलामकादिर का सभ्य व्यवहार और कहां फूलसिंह की गर्वोक्ति। दोनों का अन्तर गुलाबसिंह के हृदय में उपजे हुए क्रोध में उबाल पैदा करने लगा। कल गुलाबसिंह और फूलसिंह के संहार का साधन करना ही होगा! इन दर्दीले दांतों को मुंह से निकाल ही देना होगा। बादशाह को क्या उत्तर देंगे? यह कल देखा जायगा। जल्दी काहे की है।

इस प्रकार के विचार आज कामरीति से, बिना किसी क्रम के मन में देर तक घूमते रहे। विचारों का केन्द्र यह था कि फूलसिंह और तेजसिंह का संहार किया जाय, और गुलामकादिर को उत्तर—यह तो कल देखा जायगा। और कोई निश्चित बात गुलाबसिंह के मन में न आसकी। इसी तरह सोचते २ आधीरात से अधिक होगया। आखिर चिन्ताग्रस्त मन पर दिन की शारीरिक थकावट ने विजयप्राप्त किया। धीरे२ आंख बन्द होने लगी। गुलाबसिंह का सांस ज़ोर से चलने लगा। हठीला चित्त फिर भी न माना। नींद में भी उसने अपना साम्राज्य जमा लिया। सोये हुए मन ने अपनी नई दुनिया घड़नी प्रारम्भ की।

गुलाबसिंह एक पहाड़ की चोटी पर खड़ा है बहुत ऊंची है और बेढब मुंड है। कोई वृक्ष देखने तक को नहीं। सामने कोई सौ गज़ की दूरी पर एक और चोटी दिखाई देरही है उस पर एक शेर खड़ा है और गुलाबसिंह की ओर को घूर रहा है। शेर के मुंह में एक मारी हुई बकरी पकड़ी हुई है। गुलाबसिंह के चित्त में भय नहीं था—वह उस पर वार करने के लिए अपनी तलवार म्यान से निकाल रहा था। उसने तलवार म्यान से निकाल कर ऊपर को उठाई और सामने को देखा। देखता क्या है कि वहां शेर नहीं है-परन्तु उसके स्थान पर तेजसिंह खड़ा है। उसके मुंह में बकरी नहीं है परन्तु पास ही कमलदेवी खड़ी है। तेजसिंह अपनी बड़ी २ आंखें उघार कर गुलाबसिंह को डरा रहा है। वे गुलाबसिंह के हृदय में तेजसिंह की आंखें देखकर भय का संचार हो आया। उसके हाथ से तलवार छुटगई और आंख नीची होगई। आंख नीची होते ही उसके कान में भयानक चीख सुनाई दी। आंख ऊपर उठाकर गुलाबसिंह ने देखा तो वहां तेजसिंह का कहीं पता नहीं। एक भयानक काले रंग का राक्षस, जिसका मुंह गुलामकादिर के मुंह जैसा था, कमलादेवी को कन्धे पर रख—पहाड़ से ऊपर को उड़ा जाता था। कमलदेवी ज़ोर ज़ोर से चीखें मार रही थी। गुलाबसिंह का हृदय कांपने लगा। इतने पहाड़ की चोटी पर कुछ आवाज़ सुनाई दी। गुलाबसिंह ने देखा कि तेजसिंह और फूलसिंह राक्षस की ओर को अपनी बन्दूकें खेंचे निशाना ठीक कर रहे हैं। चमक दिखाई दी और जरा भर पीछे बन्दूक का गूंजता हुआ शब्द गुलाबसिंह के कान में पड़ा शब्द से वह चौंक उठा। उसकी निद्रा टूटगई। पर टूटते टूटते उसे ऐसा ख्याल हुआ मानो वह राक्षस कमलदेवी को छोड़ कर गोली से बिंधा हुआ नीचे को गिर रहा है। और अधिक गुलाबसिंह नहीं देख सका। उसकी नींद टूटगई।

नींद टूटने पर उसे विश्वास न हुआ कि वह जाग रहा है। वही बन्दूक का सा शब्द अब भी सुनाई दे रहा था। वह आंखें मलकर फिर जागने का प्रयत्न करने लगा उसी समय एक दम धड़ाके का शब्द हुआ और गुलाबसिंह के सोने के कमरे का दरवाज़ा फड़ाक से खुल गया। गुलाबसिंह उठ कर चार पाई पर बैठने भी न पाया था कि खुले हुए दरवाजे से चार खड्ग धारी जवान घुस आये और उस की चार पाई को घेर कर खड़े हो गये। उन में से एक ने गुलाबसिंह की छाती को दबाया, दूसरे ने उसके हाथों को पकड़ कर बांधना प्रारम्भ किया, तीसरे ने उसकी टांगें बांधली, चौथे ने उसके मुंह में कपड़ा ठूंस दिया इस प्रकार गुलाबसिंह को अशक्त करके उन्होंने उसे पलंग के साथ बांध दिया और स्वयं अपने कार्य में लग गये। गड़बड़ में गुलाबसिंह यह भी नहीं पहचानने पाया कि उसके बांधने वाले कौन हैं? घर में बिल्कुल अंधेरा था।

गुलाबसिंह और कुछ भी न जान सका। उसे केवल इतना पता लगा कि वे लोग उसे बांध कर उस कमरे में घुस गये, जिस में घर की स्त्रियां सोती थीं। वहां से कुछ चिल्लाने का सा शब्द भी सुनाई दिया परन्तु वह शीघ्र ही रुकगया। ऐसा प्रतीत हुआ मानों चिल्लाने वाले व्यक्ति का मुंह बंद कर दिया गया। थोड़ी देर पीछे गुलाबसिंह को ऐसा प्रतीत हुआ जैसे वे लोग जो दूसरे कमरे में गये थे उसके पास से होकर

र के बाहिर को जारहे हैं उसे ऐसा भी ज्ञात हुआ कि मानों उन्होंने किवाड बन्द करके बाहिर से सांकल लगादी आगे गुलाबसिंह को ज्ञात नहीं होसका कि क्या हुआ।

थोड़ी देर में कुत्ते के भौंकने का शब्द हुआ। गुलाबसिंह का एक पड़ौसी अपने कुत्ते के भौंकने का कारण जानने के लिए घर से बाहिर आया तो देखा गुलाबसिंह की बैठक के किवाड़ खुले पड़े हैं-और ऐन दरवाजे से किसी के सिसकने की अवाज आरही है। रोशनी लाकर देखने पर उसे जो कुछ दृष्टि गोचर हुआ, वह उसका विश्वास न करसका। गुलाबसिंह का विश्वासी नौकर भीमा खून में लथपथ बेहोशसा पड़ा हुआ कराह रहा है। उसके सिर में भयानक चोट लगी हुई थी, और रुधिर की धारा अबतक बह रही थी। यह दृश्य देखकर उसने सहायता के लिए चिल्लाना प्रारम्भ किया। आन की आन में सारा गांव गुलाबसिंह के दरवाजे पर आ जमा। अन्दर का दरवाजा खोलकर गुलाबसिंह के बन्धन काटे गये और पूछा गया तो वह कुछ भी न बतासका। जनाने में जाकर देखा तो कमलदेवी की माता भी गुलाबसिंह की भांति पलग से बंधी पड़ी थी:—और उसके पास ही कमलदेवी का पलंग खाली पड़ा था।

सातवां परिच्छेद

जब चार आदमी गुलाबसिंह को बांध कर अन्दर चले गये तब थोड़ी देर में उसे भली प्रकार चेतना आई। वह नींद से उठता ही अकस्मात् पकड़ लिया गया था; पकड़े जाने के समय वह पूरी तरह सचेत भी न होने पाया था। पूरी तरह चेतना आने पर उन को अपनी और अपने घर की सारी दशा पर ध्यान गया। चित्त में कोई सन्देह ही न रहा। गुलाबसिंह का मन एक दम निश्चय पर पहुंच गया। उसे रास्ते में पूछा पाछी भी न करनी पड़ी। तेजसिंह ने ही यह सारा उपद्रव किया है फूलसिंह ने जो धम की दी थी, उस का यही तात्पर्य था। दुष्टों ने पहले से डाका मारने का विचार कर रखा था। चारों बांधने वालों में से उसे एक का कद और डीलडौल तेजसिंह का सा, और दूसरे का फूलसिंह का सा प्रतीत हुआ था। कोई सन्देह न रहा। मन ही मन गुलाबसिंह फूलसिंह को कुलद्रोही कुलघातक और तेजसिंह को झूठ नृशंस डाकू आदि विशेषणों से विशेषित करने लगा। चारों डाकू किसी वस्तु को उठा कर चले गये। गुलाबसिंह के चित्त में दृढ़ धारणा हो गई कि अपनी धमकी के अनुसार तेजसिंह कमल देवी को उठा कर ले गया।

खुलने पर जब उसने देखा कि कमलदेवी अपने पलंग पर नहीं है, उस के सब सन्देह पक्के हो गए। कमलदेवी की माता बेचारी बेहोश पड़ी थी। उसे कुछ भी ज्ञात न था। वह तो ज्यों ही दरवाजे खुलने की आहट पाकर उठी त्योंही धरदबा दी गई और बेहोश हो गई। और उसे कुछ ज्ञात नहीं था।

देखते देखते गुलाबसिंह के दरवाजे पर सारा गांव इकट्ठा होगया। पहले लोगों ने साधारण चोरी समझी— जब उन्हें ज्ञात हुआ कि गुलाबसिंह की कन्या चुराई गई है, तब तो उन लोगों के अचम्भे की सीमा न रही। क्या सुजानपुर में से अब कन्यायें भी चोरी में जाने लगीं। यह तो गांव पर बड़ा भारी धब्बा है। पर यह चोरी का किसने? कोई कहता 'कन्याओं की चोरी करने बाहिर के आदमी नहीं आया करते। यह तो कोई घर का भेदी है। कोई गांव का ही आदमी यह कार्य करके भाग गया है।" कोई कोई कहते 'नहीं भाई! हमारे गांव में ये बातें सम्भव नहीं हैं। आज तक तो कभी किसी ने ऐसा बुरा काम किया नहीं था। हमारे गांव का नाम अब तक तो निष्कलंक था। यह गांव वाले का काम नहीं है। हो न हो, यह कोई बाहिर वाला ही है।

इस प्रकार कई प्रकार की बातें होने लगी। जितने मुंह उतनी बातें करती हुई जनता इधर उधर घूमने लगी।

गांव के मुखिया लोग कोठी के चबूतरे पर जमा हो कर इति कर्तव्यता का विचार करने लगे। एक आदमी सरकारी चौकी की ओर भगाया गया— उसने आकर उत्तर दिया कि चौकी में कोई भी आदमी नहीं है। एक बूढ़ा चपड़ासी बैठा है, वह कहता है कि सारे चौकी वाले कल शाम से बाहिर चले गये थे और अभी तक नहीं लौटे। तब निश्चय किया गया कि लुटेरों का जितना शीघ्र हो सके, स्वयं ही पीछा किया जाय। गुलाबसिंह बेचारा आपत्ति से ऐसा धक्का खा गया था कि अभी तक इस विचार में सम्मिलित न हो सका था। उसे भी अन्दर से बुलवाया गया।

अन्दर से आने पर गुलाबसिंह के आश्चर्य की सीमा न रही। वह अपनी आंखों पर विश्वास न कर सका। उन्ही मुखिया लोगों के अन्दर तेजसिंह और फूलसिंह भी बैठे हुए उस के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। गुलाबसिंह समझ गया कि ये धूर्त लोग कमलदेवी को कहीं छुपा कर स्वयं भले मानस बनने के लिए यहां आबैठे हैं। वह उन का वहां होना न सह सका। उस का चिन्ता से ग्रस्त हृदय खुले शत्रुओं को निर्लज्जता से साम्हने आकर बैठे हुए देख कर क्रोध के मारे जल उठा। चिन्ता और शोक से व्याकुल होकर गुलाबसिंह कुछ देर के लिए स्तब्ध सा खड़ा रह गया। उसे कोई भी कर्तव्यता न सूझी।

गुलाबसिंह के बाहिर आते ही सारी सभा खड़ी होगई। पंचायत के मुखिया लोग दुःख ग्रस्त गुलाबसिंह से मिलने के लिए आगे बढ़े। दुःख और चिन्ता से उस मानी राजपूत का हृदय पहले ही व्यथित था। तेजसिंह आदि के सामने खड़े होने से क्रोध की एक विशेष लहर उस के अन्दर उठी। लहर के वशीभूत हो कर उस की विवेक शक्ति कुछ देर के लिए लुप्तसी हो गई। सारे लोग उस की इस दशा को देख आश्चर्यित से होगए।

गुलाबसिंह की यह दशा कुछ क्षणों तक ही रही। गर्मियों के बादल की भांती वह शीघ्र ही उड़ गई। गुलाबसिंह ने अपने आप को कुछ सम्भाला और कदम आगे बढ़ कर तेजसिंह और फूलसिंह के सामने जा खड़ा हुआ। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं कि इस डाके के समाचार ने सब से अधिक व्यग्रता तेजसिंह के हृदय में पैदा की थी॥ (अपूर्ण)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इतिहास तरंग

लेखक मल्लाह

धूर्त ऐतिहासिक

डायोडोरस की इस ऐतिहासिक प्रबल साक्षी के विरोध करने के लिये पाश्चात्यों ने भरपूर जोर लगाया है। कहते हैं कि डायोडोरस ने यह बात ठीक नहीं लिखी; क्योंकि ओसिरस देवता शराब पीया करता था परन्तु भारत के ब्राह्मण शराब से घृणा करते हैं।

वहां पाश्चात्यों ने पता नहीं यह युक्ति किस द्वेष भाव से अपने ही विरोध में दी है।

कहां तो देव नहुष, ओसिरस, ब्रक्कस, राम, सब को एक व्यक्ति बनाने तक को तय्यार रहते हैं और दूसरी ओर कहां भारत का विजेता मिश्र देश में आया था, इस सत्यता को छिपाने के लिये तथा भारत की सभ्यता को सर्वथा जांगलिक प्रथम मानवरूप सिद्ध करने के लिये उपरोक्त लतड़ पोच सी युक्ति दी गयी है।

क्या पाश्चात्य भूल जाते हैं कि भारत में ही तान्त्रिक ग्रन्थकारों ने सुरा को कितना अपनाया है। इसी प्रकार महाभारत काल में भी सुरा और क्षत्रियों का कैसा समवाय सम्बन्ध रहा करता था।

× × × ×

(क्या मानें !)

महाभारत के समय तो समीप हैं परन्तु ब्राह्मण ग्रन्थकारों के समय भी सुरा का प्रयोग होना यज्ञ कार्यों में शुरू हो गया था। खैर !

पाश्चात्यों की सम्मति के अनुसार पूर्वोक्त ओसिरस राजा ने भारत पर तीन वर्ष राज्य किया। परन्तु यह निर्णय करना कठिन है कि आया मिश्र के विजेता ओसिरस ने भारत को जय कर के भारत पर तीन वर्ष राज्य किया, या भारत के राजा ओसिरस ने तीन वर्ष भारत में राज्य करने के अनन्तर मिश्र देश को विजय किया। हमारी सम्मति तथा डायोडोरस की सम्मति के अनुसार तो पिछली बात ही सत्य प्रतीत होती है।

× × × ×

(भानुमती का कुनबा)

पाश्चात्य ऐतिहासिकों के मत में डायोनिसिज़ और देव नहुष राम ये सब एक व्यक्ति ही हैं। क्योंकि देव नहुष का नाम डायोनिसस से मिलता है दूसरा उसके और उसके कार्य और चरित कुछ मेल रखते हैं। राम को पता नहीं क्यों वही व्यक्ति माना गया है या विजेता होने से या दाशरथि नाम की समानता से।

परन्तु आश्चर्य है कि राम तो लंका को जीतने वाला था। मिश्र का निवासी होकर पता नहीं भारत में कब आया है।

हमें तो ऊपर की पाश्चात्यों की कल्पना "कहीं का ईंट कहीं का रोड़ा भानुमती का कुनबा जोड़ा" ऐसा ही प्रतीत होता है।

× × × ×

(सुरा तरङ्ग)

इन पाश्चात्यों की अज्ञानसुरा की तरङ्ग वास्तव में बहुत ही प्रबल है ये शिव जी और राम को भी एक बनाने में अपनी सूखता अनुभव नहीं करते।

× × × ×

(ओसिरिस=शिव)

ओसिरिस शिव ही था और कोई नहीं क्योंकि ओसिरिस का वाहन बैल था। और इधर शिव भी बैल सांढिया की सवारी करते हैं।

(दिन के दिवाभीत)

पाठक, थोड़ा ध्यान दें:—

देखिये पाश्चात्यों की अनभिज्ञता तथा निःसीम सूखता का एक अलौकिक दृष्टान्त आप के सामने रखता हूं। विलियम जोन्स के अनुवादित ग्रन्थों पर एक अच्छे बड़े लिखे वौल्यूम के पृष्ठ १२१ पर का इसी विषय का हम आप के सामने उद्धरण रखते हैं:—

"There Could be hardly a doubt arise that Doynysis and Ram were the same personage and it inclines to think that he was Ram son of kusha. Who might have established the first regular Government in this part of Asia."

अर्थः—"राम और डायोनिसिज़ एक ही व्यक्ति थे इस में शायद ही कोई सन्देह हो सके। इस बात को भी सोचने की तरफ प्रवृत्ति होती है कि वह कुश का पुत्र राम ही होगा जिसने एशिया के इस भाग में एक नियमित शासन स्थापन किया हो" ऐ सच्चे ऐतिहासिको ! क्या किसी इतिहास में कुश भी राम का बाप हुवा है। अभी तक तो राम कुश का बाप था। परन्तु पाश्चात्य विलोचन पण्डितों ने शायद राम को कुश का बेटा भी देखा हो।

खैर कुछ भी हो—

× × × ×

(राम का वैभव)

ऐतिहासिकों ने तो यूनान के एलिथीरिया या दि त्रियम्बस को भी राम ही माना है।

पता नहीं कि पाश्चात्य पण्डितों को भिन्न २ देश के भिन्न महापुरुषों को भिन्न २ मानते हुये कौनसी आपत्ति आती है। यही और इसी प्रकार अभी सैकड़ों अनुदार तथा भूल चूक वाली और पाश्चात्यों की पोलें भी पाठकों के सामने शनैः २ खुलेंगी।

× × × ×

(त्रियम्बक देव)

यूनान के एलियीरिया और दि त्रियम्बस को राम से अभिन्न व्यक्ति इस लिये मानते हैं कि—

दि त्रियम्बस का शब्दार्थ है,

'विजेता'

दूसरा क्योंकि शिव और राम एक हैं और शिव को त्रियम्बक कहते हैं इस से शायद यह उसी का अपभ्रंश प्रतीत होता है।

हमारी सम्मति में त्रियम्बस को त्रियम्बक का अपभ्रंशमात्र कर इस परिणाम पर अवश्य पहुंचा जा सकता है कि शिव जी ने 'त्रिपुर' असुरों के नगरों का विध्वंस किया था यूनान या असीरियादि असुर-स्थानों पर उसका त्रियम्बकादि विजेता का नाम होना कोई असम्भव नहीं है।

× × × ×

—:o:—

विज्ञापन

"आर्य पुत्री पाठशाला लायलपुर के वास्ते दो अनुभवी आर्य अध्यापिकाओं की बड़ी आवश्यकता है। वेतन २०) से ३०) तक दिया जायगा। प्रार्थना पत्र शीघ्र आने चाहियें।" १२ से १२ तक

हरिश्चन्द्र
मंत्री आर्य समाज लायलपुर

संसार समाचार पर टिप्पणी

राजा मण्डी, आगरा में एक आर्यस्कूल नामी पाठशाला है। इस में सरकारी प्राइमरी जमात तक की पढ़ाई होती है। जिन जातियों को पौराणिक हिन्दू अस्पर्श वा अछूत कहते हैं, उनकी शिक्षा के लिए यह स्कूल सं० १९१२ ई० से खोला गया है। इस के चलाने वाले कुछ सुशिक्षित धनाढ्य पुरुष लिखे हुए हैं। इस स्कूल में इस समय ७१ लड़के पढ़ते हैं। ४ अन्य शाखाएं भी खोली गई थीं जो कई कारणों से बन्द हो गईं। अच्छा काम हो रहा है। चारों वर्षों में आय १९८६ ॥≡)॥। हुई और व्यय १९२३॥=)॥। हुआ।

आर्य समाज जयपुर का पञ्चम वार्षिकोत्सव ता० २१,२२ तथा २३ अगस्त को होना निश्चय हुआ है। श्री मन्त्री जी समाज आर्योपदेशकों, सन्यासी महात्माओं तथा भजनोपदेशकों को निमंत्रित करते हैं तथा श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी तथा पं० रामचन्द्र जी देहलवी से इस उत्सव में अवश्य सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

आर्य समाज फाज़िल्का का षष्ठ वार्षिकोत्सव ता० २७,२८ तथा २९ अक्टूबर को होगा। अच्छे उपदेशकों तथा भजनीक महाशयों के सम्मिलित होने की सम्भावना है।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज डोईवाला जिला देहरादून-लिखते हैं कि आज कल पं० फकीरचन्द्र जी वानप्रस्थी वहां की समाज के सभासदों को संस्कारविधि तथा सत्यार्थप्रकाश पढ़ा रहे हैं। इसी प्रकार आप ने देहरादून में भी ४-५ सज्जनों को पढ़ा कर संस्कार कराने योग्य बना दिया है। यदि इसी प्रकार और भी वानप्रस्थी महाशय समाजों में घूम कर आर्यसिद्धान्तों का प्रचार तथा धार्मिक ग्रन्थों की ओर लोगों को रुचि बढ़ावें तो बड़ा ही उपकार हो सक्ता है।

आर्यसमाज कोहमरी जिला रावलपिण्डी— का वार्षिकोत्सव ता० २५, २६ तथा २७ अगस्त को होगा। नगर कीर्तन २५ को होगा। श्री मंत्री जी समाज, श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज से प्रार्थना करते हैं कि इस उत्सव पर अवश्य पधार कर अपने मनोहर उपदेशों से कोहमरी निवासियों को कृतार्थ करें।

आर्य समाज पत्तोकी के साप्ताहिक अधिवेशन प्रत्येक सप्ताह, बड़े समारोह से होते रहते हैं। यह समाज के लोकल उपदेशक पं० भूमानन्द जी के उत्साह का फल है। सभासदों की संख्या पूर्व की अपेक्षा द्विगुणी हो गई है। अधिकारियों में इस प्रकार परिवर्तन हुआ है कि मंत्री म० सौदागरमल जी उपप्रधान चुने गये हैं और म० फकीरचन्द्र जी मंत्री बनाये गये हैं।

श्री अधिष्ठाता जी आर्य समाज भजन मण्डली आगरा सूचना देते हैं कि महा० लालचन्द्र भजनीक श्रीमद्दयानन्द अनाथालय आगरा की ओर से कार्य्य करते थे। कुछ दिनों से अपने कार्य्य में शिथिलता करने के कारण जब सहायक अधिष्ठाता जी ने उत्तर मांगा तो बड़ी असभ्यता से उन्होंने उत्तर दिया। एक वार झूंठी डायरी भी पकड़ी गई। एक पत्र सहायक अधिष्ठाता जी ने म० लालचन्द्र को लिखा था उस में अपनी ओर से कुछ अनुचित शब्द बढ़ालिये ताकि यह सहायक अधिष्ठाता जी पर मिथ्या दोषारोपण कर सकें। इसके अतिरिक्त सहायक अधिष्ठाता जी पर कई निर्मूल तथा घृणित दोष लगाये। इन अपराधों के कारण म० लालचन्द को पृथक कर दिया गया है। उनका सम्बन्ध अब अनाथालय से कुछ नहीं है। कोई महाशय उनको अनाथालय वा किसी अन्य संस्था के लिये दान न दें।

मंत्री जी आर्यपुस्तकालय उरई लिखते हैं कि— गत दो वर्षों से इस नगर में सर्वसाधारण के हित के लिए एक आर्य्यपुस्तकालय खुला हुआ है। कुछ महिनों से यह पुस्तकालय एक मन्दिर में आगया है। इस के ३३ सभासद् हो गये हैं और चन्दा भी तिगुना हो गया है। पौराणिकों ने भी एक पुस्तकालय खोल दिया है, परन्तु वे आर्य पुस्तकालय की बढ़ती को नहीं देख सके। वे और तो कुछ कर नहीं सके इस लिए मन्दिर के बाबा जी को बहका कर आर्य पुस्तकालय को वहां से हटवाना चाहते हैं परन्तु बाबा जी ऐसा करने को राजी नहीं हुए। आर्य्य लोग मन्दिर में न कोई मूर्ति खण्डन विषयक भजन गाते हैं और न व्याख्यानादि ही देते हैं, वे लोग केवल समाचार पत्र तथा पुस्तकें पढ़ने के लिए आते हैं, फिर न मालूम क्यों पौराणिक भाई इन से द्वेष करते हैं। अच्छा तो यही है कि वे व्यर्थ के वैरभाव से दूर रह कर अपना काम करते जायं और आर्य्यों के सर्व हितकारी काम में बाधा न डालें।

ब्रह्मचारी ब्रुक्स के देहान्त का समाचार हम ने बड़े शोक से सुना। जब डेढ़ मास पहले एक सज्जन ने बतलाया कि महाशय एफ़-टी-ब्रुक्स, अवध में, गोली मार कर मर गये तो हमें निश्चय न आया। अब २९ जुलाई के मद्रासी "सोशल रिफार्म एडवोकेट" में यह पढ़ कर कि मिस्टर ब्रुक्स का देहान्त ३ जून को होगया है, बड़ा ही दुःख हुआ। ब्रह्मचारी ब्रुक्स का आर्यसमाज के साथ भी सम्बन्ध रहा है। यह उन धर्मात्मा आदमियों में से थे जिन्हें संसार में मक्कारी को देखकर कष्ट हुआ करता है और मक्कारी को जड़ से उखाड़ने में अपने आप को अशक्त देखकर वे आत्मघात पर उतर आते हैं। श्रीमति एनीबेसेन्ट के गिर गिट की तरह रङ्ग बदलने पर मिस्टर ब्रुक्स बहुत तलमलाते थे। उन्होंने उस के विरुद्ध आवाज़ उठाकर बहुत कष्ट पाए, और हमारा ख़याल है कि उसी के कारण अन्त का उनका प्राणान्त हुआ। गुरुकुल को हमारे स्वर्गवासी भाई ने एक अलमारी भर उत्तम पुस्तकें डेढ़ वर्ष पहले अर्पण की थीं।

छबीलाल क़मर, एडीटर अख़बार सौदागर मेरठ का पत्र आर्यगज़ेट लाहौर में छपा है जिस में यह लिखते हैं कि उनकी "बीबी" उनकी पुत्री को "इन्द्रप्रस्थ-गर्लज़ हाईस्कूल देहली" में पढ़ाना चाहती हैं, और क़मर जी के पास इतना धन नहीं। बीबी धमकी देती हैं कि यदि कोई आर्थिक सहायता देने को तय्यार न होगा तो वह लड़की को किसी ईसाई मिशन की लेडी सुपरिन्टेन्डेन्ट के हवाले कर देंगी।

समझ में नहीं आता कि आर्य गज़ेट के सम्पादक ने यह पत्र क्यों छाप दिया। हमें याद पड़ता है कि आज से १६ वर्ष पहले एक आर्य समाजी ने पांच सन्तानों सहित धर्मपत्नी के जीते हुए एक ख़ाविन्द वाली तीन चार स्थानों में व्यभिचार से बदनाम स्त्री के साथ फेरे ले लिये। जब उस पर लानत डाली गई तो उसने उत्तर दिया कि औरतईसाई हो चली थी, इसलिए उसने पिछलग बच्चों समेत उसे अङ्गीकार कर लिया। लानत डालने वाले ने कहा—"यदि एक दर्जन ईसाई होने लगेंगी तो क्या सब को घर डाल लोगे।"

हम पूछते हैं कि यदि सभी निर्धन पुरुष धमकी दें कि यदि उन की सन्तान को उच्च शिक्षा न दिलाई जायगी तो वह ईसाइयों के सपुर्द करदेंगे तो जाति की क्या दशा होगी। जैसे ईसाइयों के यहां पाप क्षमा होने का मसला पाप बढ़वा रहा है, वैसे ही आर्य्यसमाज में भी ऐसी धमकियों में आने से पाप बढ़ेगा।

सदानन्द ईसाई हो गया—काशी आर्य्य समाज ने इसका दोष सदानन्द (पूर्व जगन्नाथ) के भाई पं० अनन्तराम पर थोपा है। इन लोगों को क्या मालूम है कि पहले भी यह ईसाई होने लगा था, केवल इस लिये कि भाई इसका विवाह क्यों नहीं कराता। फिर अनाधिकार चेष्टा में कपड़े रङ्ग लिए और स्वामी सदानन्द बन बैठे, पुनः ब्रह्मचारी का रूप धारण किया। परिडत अनन्तराम ने बड़ी भूल की कि अपने हितैषियों के मना करने पर भी इसके विवाह पर धन ख़र्च दिया। अब उस भूल का परिणाम बदनामी के रूप में भुगत रहे हैं। हमें निश्चय है कि जब ईसाइयों में भी आलसी का ठीक रूप प्रकट हुआ तो उन्हें भी वह कोसना शुरू करेगा।

आवश्यकता

एक सीनीयर वर्नाकयूलर ट्रेण्ड अध्यापक की आवश्यकता है, जो शाखा गुरुकुल थानेसर में मिडिल तक की श्रेणियों को गणित की शिक्षा दे सके। वेतन योग्यतानुसार २५) रुपये मासिक पर्य्यन्त दिया जावेगा। आर्य्य समाजी अध्यापकों को विशेषतयः पसंद किया जावेगा।

प्रार्थना पत्र, प्रमाण पत्रों की प्रति लिपि सहित, निम्नपते पर आने चाहिएं।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी
डाकघर श्यामपुर-कांगड़ी
ज़ि० बिजनौर

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No A. 434.

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | ११ भाद्रपद सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २६ अगस्त सन् १९१६ ई० | संख्या २० भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

एक मास तक प्रति पंक्ति प्रति अंक ≡) प्र०
तीन मास ,, ,, ,, ,, =) ,, ,,
छः ,, ,, ,, ,, -)॥ ,, ,, ,,
सालभर ,, ,, ,, ,, -) ,, ,, ,,

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र की बंटाई

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रम्बन्धकर्ता से कीजिए

आवश्यक्ता

आर्य कन्या पाठशाला शिमला के लिए दो अध्यापिकाओं की आवश्यक्ता है जो मिडल और प्राइमरी तक पढ़ा सके। ट्रेंड हों तो विशेषता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार। ट्रेंड वा पैन्शनर वृद्ध पुरुष भी प्रार्थना पत्र भेज सक्ते है। प्रार्थना पत्र मन्त्री आर्य कन्या पाठशाला शिमला के नाम आने चाहिये।

प्रचारक पुस्तक-भण्डर

आर्य पथिकः लेखाराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं जो एक साथ ख़रीदने वाले को ⅔ [दो तिहाई] मूल्य पर दे दी जायंगी।

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—मूल्य ।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

छप रही हैं—

[२] पांच महायज्ञों की विधि
[३] आचाराऽनाचार और भक्ष्याऽभक्ष्य
[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज
[५] वेद और आर्यसमाज

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफ़िस शामपुर—कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

जाति अन्वेषण

३५० जातियों के विवर्ण का महान ग्रन्थ हिन्दू धर्म वर्ण व्यवस्था मण्डल के महामन्त्री जी के बीस वर्ष के परिश्रम द्वारा रचित वेद शास्त्र कलक्टर कमिश्नरों के लेखाधार पर तय्यार हैं मू० २) बढ़िया सजिल्द २।=)

ब्राह्मण निर्णय

३२४ प्रकार के ब्राह्मणों के विवर्ण युक्त निर्णय का ६०० से अधिक पृष्ठ पर पूरा हुवा सचित्र ग्रन्थ है वेद शास्त्रों के प्रमाणों के साथ २ अनेकों सरकारी रिपोर्टों के हवाले, अदालत व हाईकोर्ट के फैसिले, श्री जगद्गुरू शंकराचार्य्य व काशी तक की व्यवस्थाओं का संग्रह है मू० ३) बढ़िया सजिल्द ३॥)

प्रेस की कुञ्जी

एक परम अनुभवी प्रेस कर्म्मचारी द्वारा रचित यथार्थ में छापेखाने का काम सीखने के लिये यह कुञ्जी ही है मू० ॥

पताः—पं० ओमदत्त शर्म्मा—मेनेजर श्रोत्रिय पुस्तकालय डा० फुलेरा ज़िला जयपुर।

१०००० लीची व आम के क़लम मुफ्त

नियम और सूचीपत्र के लिए आज लिखिये। कलमों के तो पकाने का बड़ा अच्छा समय बीत रहा है। पता—नमक पो० ओ० कमतौल दरभंगा।

पुस्तक समालोचना।

पुष्प-माला—पुरुषों तथा स्त्रियों के गाने योग्य भजन, ग़ज़लें। "श्रीमति रामजीवाई धर्म पत्नि ला० मेहरचन्द जी सभरवाल कोरेस्टरेंजर" कृत। प्रकाशक स्त्रीसमाज भेरा (पंजाब) मूल्य प्रति पुस्तक =)॥—

ज्योतिभण्डार हिस्सा अव्वल अर्थात् ईश्वर दर्शन-भक्त मोतीराम, मियांवाली निवासी कृत-मूल्य प्रतिपुस्तक ।)-मिलने का पता—भक्त मोतीराम, मैनेजर, ज्योतिभण्डार, मियांवाली शहर—

उर्दू भाषा में (ब्रह्मयज्ञ) सन्ध्या के मन्त्रों की यह सर्व साधारण के समझने योग्य व्याख्या है। ११२ पृष्ट की पुस्तक है जिस का मूल्य चार आने अधिक नहीं। सन्ध्या में ध्यान लगाने के लिए जिन उपासकों का विस्तृत ध्यान लगाने की इच्छा हो उन्हें इस पुस्तक से सहायता मिल सक्ती है। प्रत्येक मन्त्र की व्याख्या समाप्त करके मन्त्रार्थ के भाव को तुकबन्दी द्वारा जतलाया है। इन शेरों को कण्ठ कर लेने से संस्कृत शून्य मनुष्यों को भी सन्ध्या में बैठ कर ध्यान लगाने का कुछ अभ्यास हो सक्ता है। पुस्तक उर्दू जानने वाले सर्व साधारण के लिए उपयोगी है।

बाल प्रश्नोत्तरी—ईश्वर, जीव, प्रकृति, मोक्ष, धर्म, ब्रह्मचर्य, वीर्यरक्षादि-कोई भी ऐसा सूक्ष्म विषय नहीं जिस पर बालक ने प्रश्न नहीं किया और जिस का पिता ने उत्तर नहीं दिया। सुशिक्षितों के समझने योग्य है। मूल्य दो पैसा-प्रकाशक-ज्वाला प्रसाद शर्मा, आगरा।

विधवा विवाह फैसला—विधवा विवाह के प्रमाण तथा युक्ति द्वारा समर्थन में लबीयत लड़ाई है—अर्थात् तुकबन्दी की है। प्रकाशक-बाबू ज्वालाप्रसाद शर्मा, बुकसेलर पुल्टी बाज़ार, आगरा। मूल्य -)—

प० ऊधोराम शर्मा, संस्कृताध्यापक, रामजस-हाई स्कूल देहली रचित पुस्तकें—

धर्म बोध—मूल्य)॥

व्याकरणसन्दर्भ मूल्य)॥

सरसितावन, शान्ति प्रकरण तथा सामान्य प्रकरण मूल्य =)॥

ब्रिटानवीसमाचार पत्रों का इतिहास—लेखक महाशय प्यारेलाल मिश्र, बैरिस्टर-एट-ला छिंदवाड़ा (मध्यप्रदेश)—मूल्य ।)

इस छोटी सी पुस्तक में इङ्गलैण्ड के लन्दन नगर के समाचार पत्रों का इतिहास उत्तम रीती से दिया गया है। प्रसिद्ध प्रसिद्ध पत्रों की नीति का भी समालोचना पूर्वक वर्णन है।

कुरान-भाष्य—(तिमिरनाशक ग्रन्थावली का प्रथम खण्ड) सम्पादक-स० धर्मवीर 'आर्य मुसाफ़िर'-अवी अध्यापक-मुसाफिर विद्यालय आगरा। मूल्य =)

स० धर्मवीर कुरान का खण्डन और सनातन वैदिक धर्म का मण्डन करते २ एक अभियोग में फंस गए थे। उस से छूटकर उन्होंने ऊपर लिखित ग्रन्थावली का छपवाना आरम्भ किया है। इस प्रथम भाग में कुरान का अनुवाद और भाष्य आरम्भ किया गया है। पहले भाग में ९६ पृष्ट हैं। मूल्य =) बहुत नहीं है। भावार्थ तथा भाष्य सरल रीति से किए गए हैं तथा प्रमाण ठीक दिए गए हैं। आर्यप्रचारकों के बहुत काम का यह कुरान भाष्य होगा। अन्तिम विज्ञापन में लिखा है कि ३०० ग्राहक होने पर इस ग्रन्थावली को स्थिर रूप से निकाला जावेगा। आवश्यकता है कि इस ग्रन्थावली के ३०० ग्राहक पहले साल के लिए अवश्य हो जावें जिस से यह आवश्यक काम रुके नहीं।

संस्कृत का स्वयं शिक्षक—लेखक श्री पं० श्री पाद दामोदर सातवलेकर, प्रथम भाग—मूल्य १।)-सजिल्द का १॥)-

पं सातवलेकर का वैदिक साहित्य से जो प्रेम है उस से सभी आर्य सज्जन परिचित हैं। पं० जी चाहते हैं कि आर्य जाति का कोई भी व्यक्ति संस्कृत शून्य न रह जाय, इस लिए इस ग्रन्थ में पहले उर्दू जानने वालों को देव नागरी लिपि सिखाने का यत्न किया गया है। इस में कृतकार्यता होगी वा नहीं यह परीक्षण पर निर्भर है। परन्तु फिर जो आर्यभाषा जानने वालों को संस्कृत सिखाने का प्रयत्न है वह कृतकार्य पाया हुआ होता है। सातवलेकर जी की प्रतिज्ञा है कि यदि इस विधि से एक घन्टा नित्य लगा कर एक वर्ष तक प्रयत्न किया जाय तो एक आर्य भाषा जानने वाला विद्यार्थी संस्कृत भाषण की योग्यता, बिना किसी शिक्षक की सहायता के, सम्पादन कर सक्ता है। यह पहला भाग दो मास के लिए है। शेष ५ भाग और छपेंगे। यदि ७॥) रुपयों में एक घन्टा नित्य परिश्रम करने से, संस्कृत में बात चीत करने की योग्यता हो जाय तो सौदा महंगा नहीं है। इस प्रकार की पुस्तकों में छापे की अशुद्धी कोई भी नहीं होनी चाहिए। तीन पृष्ठों के शुद्धिपत्रक के अतिरिक्त कुछ और भी अशुद्धियां हैं। यदि ग्रन्थ बेचने से पहले सब अशुद्धियां हाथ से दूर कर दी जायं तो विद्यार्थियों को लाभ पहुंचेगा। उर्दू के दास पंजाब में यदि यह पुस्तक संस्कृत भाषा का प्रचार कर देगी तो आर्य पुरुषों को बड़ी प्रसन्ता होगी।

मिलने का पता—प्रबन्धकर्त्ता, सरस्वती आश्रम, लाहौर।

मुस्तनद-मोतबिर मुफ़्त-तिब्बी मशवरा-हिस्सा अव्वल—एक बार यह उर्दू की पुस्तक पहले भी मेरे पास आई थी। उस पर मैंने अपनी सम्मति महता सीताराम दत्त कविराज-कविरत्न को लिख कर उन्हीं के भेजे कार्ड पर भेज दी थी। अब उसी पुस्तक का दूसरा एडीशन फिर भेज कर महता सीताराम दत्त जी ने मुझ से याचना की है, कि मैं आध घन्टा लगा कर उसे देखूं और उस का "मुफ़स्सिल रिव्यू" अपने समाचार पत्र में दूं। इस मुफ़्त मशवरे को जो पढ़ेगा उसे महता जी की २।) मूल्य वाली "चश्म ए-ज़िन्दिगी" अवश्य मगानी पड़ेगी इसी लिए मैंने १० पौष, १९७२ को महता जी के नाम निम्नलिखित पत्र लिखा था—"जनबेमन! तिब्बीमशवरा पर सरसरी नज़र डालने से मालूम हुआ कि आप की किताबों का यह इश्तिहार है। जो हिदायात आपने लिखी हैं, उन पर कोई डाक्टर या वैद्य ही राय दे सकता है। तपेदिक में अन्डे और लाऊन में शोरबे के इस्तेमाल बतला कर सफ़ा १५ पर यह दर्ज करना कि इस हिदायात के दौरान में इस्तेमाल शराब और गोश्त हर क़िस्म से परहेज़ करो मेरी राय में हुज्जत-मायज़िद्दैन (व्याघात) है। मेरी राय में अगर किताबों का इश्तिहार देना है तो साफ़ तौर से देना चाहिए। मैंने साफ़ साफ़ अपनी राय लिखी है। उम्मेद है कि आप इस के लिए नाराज़ न होंगे—आप का खैरन्देश, मुन्शीराम"

प्रचारक बिना मूल्य।

एक महाशय ने २॥) इस लिए भेजे हैं कि एक वर्ष के लिए एक विद्यार्थी को प्रचारक बिना मूल्य दिया जाय। प्रमाण सहित जो पहला प्रार्थना पत्र आयगा, उसी के नाम जारी होगा।

Digitized by eGangotri

साथही स्वयम् भी लखनऊ पधार कर 'हो-मरूलीग' के प्रधान नियम अपनी ओजस्विनी भाषा में जनता के सामने रखती हुई बूढ़ों के मुर्दे दिलों को भी उभारने का काम करेंगी। जो काङ्ग्रेस का सभापति नहीं कह सका वह एक स्वतन्त्र सभासद खुल कर कह सका है और ऐसे कहने वालों का नेता सिवाय देवी एनीबेसेन्ट के और कौन हो सक्ता है।

पात्र का मान अवश्य होता है।

पंजाब के सरकारी चिकित्सालयों के वार्षिक विवरण से पता लगता है कि आंखों के कुल अपरेशन का चौथा भाग तथा विशेष अपरेशनों का तीसरा से अधिक भाग हमारे सुयोग्य भाई डाक्टर मथुरादास जी के हिस्से आया है। उन से दूसरे दर्जे पर उन के गुरु कर्नल स्मिथ है जिन के अपरेशनों का सर्व योग इन से आधा भी नहीं। डाक्टर मथुरादास के दयालु बर्ताव के कारण बीमारों ने उन्हें देवता की पदवी दी है। जिस गुण ग्राहकता के कारण भारत मन्त्री ने उन्हें असिस्टेन्टसर्जन बना दिया था क्या उसी हेतु अब उन को फ़र्स्टग्रेड असिस्टेन्टसर्जन नहीं बना देना चाहिए। गवनमेन्ट की, उस के चिकित्सा विभाग की शोभा इसी में है कि शीघ्र ही डाक्टर मथुरादास सिविलसर्जन बनाए जा कर किसी मध्यवर्त्ती ज़िले में स्थित कर दिए जायं।

मूलराज कम्पनी ने भारत के अनाथों, विधवाओं तथा पब्लिक इन्स्टीट्यूशनों का धन इस लिए डुबवाया था कि महाशय हरिकृष्ण लाल को जेल में पहुंचावें। दीनों की आह तो निकली और सब कर के चुप हो गई, उस में पार ने फल दिया या नहीं—यह परमेश्वर ही जानता है। परन्तु महाशय हरिकृष्ण लाल जी का बालबीकान हुआ। अब श्री महाराजा नाभानरेश ने उन्हें अपना आर्थिक मन्त्री नियत किया है। पात्र का मान अवश्य होता है. ईर्षालुओं का डाह उन्हें कुछ हानि नहीं पहुंचा सकता।

कांग्रेस पर धर्म-प्रचार।

काङ्ग्रेस का आने वाला अधिवेशन लखनऊ में होगा। उस समय आर्यकुमार सम्मेलन भी लखनऊ में होगा—ऐसा म० चन्द्रीप्रसाद बी० ए० के पत्र से ज्ञात होता है जो उन्होंने अंग्रेज़ी समाचार पत्रों में छपवाया है। इसअवसर पर आर्य समाज के सुशिक्षित शस्त्र-सम्पन्न वक्ताओं को आर्य समाज के विशेष विशेष सिद्धान्तों पर ख़ास तय्यारी कर के जाना चाहिए और प्रचारक का प्रबन्ध स्थानीय आर्य भाइयों की ओर से ऐसा होना चाहिए कि अन्य प्रांतों से आए-भाई आर्य समाज के व्यख्यानों से पूरा लाभ उठा सकें।

गीता रहस्य

लोकमान्य श्रीतिलक के भगवद्गीतारहस्य का आर्यभाषा में अनुवाद निकल आया। मराठी में इस ग्रन्थ की ६००० प्रतिएं निकलते ही बिक गईं। आर्यभाषा का अनुवाद ८५२ पृष्ठों में समाप्त हुआ है, छपाई काग़ज़ सब उत्तम है। तिसपर मूल्य ३)—सर्वसाधारण इस ग्रन्थ को ख़रीद सकते हैं।

जिस ग्रन्थ पर लोक-मान तिलक १६ वर्ष की आयु से ही विचार करने लगे, जिस के विषय में विद्वानों के साथ चर्चा की, जिस पर इस लिए व्याख्यान दिए कि यदि उनकी सम्मति से किसी को मतभेद हो तो प्रकट होजाय, जिस पर लिखे हुए किसी ग्रन्थ को भी विचारने से नहीं छोड़ा और जिसके दार्शनिक सिद्धान्त को तुलना उन्होंने पुराने और नए सभी दर्शकारों के विचारों से की; उस ग्रन्थ पर श्री तिलक के विचार, कम से कम आर्यजाति के प्रत्येक सभ्य को अवश्य पढ़ने चाहिएं। इतने बड़े ग्रन्थ पर और ऐसे विचारों पर जो ४० से अधिक वर्षों में पके हों, समालोचनात्मक लेख महीनों के विचार के पश्चात् ही लिखा जासकता है। एक दृष्टि डालने से पता लग गया कि मूलसिद्धान्तों की ऐक्यता होते हुए भी गौण विषयों में श्री तिलक जी से बहुत मतभेद प्रकट करना पड़ेगा, परन्तु यह बिना संकोच के लिखना पड़ता है कि इस पुस्तक की एक एक प्रति सब पुस्तकालयों तथा आर्य-साहित्य प्रेमियों के प्रत्येक निजू लाइब्रेरी में अवश्य होनी चाहिए—मिलने का पता—मैनेजर 'केसरी' पूना सिटी—

उपदेशक कहां से मिलेंगे?

कई सज्जनों ने पूछा है कि गत दो लेखों में जो त्रुटियां हमने बतलाई हैं उनका इलाज क्या है? क्या केवल लिखने से उनका संशोधन हो सकता है? इस लिए उत्तर में अपनी सम्मति लिखदेना उचित प्रतीत होता है। इन लेखों के लेखक का विश्वास है कि धीरे २ उचित संशोधन अवश्य हो जायंगे। बहुत सालों के पीछे अब गत दो तीन वर्षों से वेद प्रचार का काम नये उत्साह से प्रारम्भ हुआ है। सभा के वर्तमान मन्त्री महोदय को वेद प्रचार की बड़ी चिन्ता है—और आपके अनथक परिश्रम से प्रचार के बजट में और उपदेशक संख्या में भी वृद्धि हुई है। आप योग्य पुरुषों का संग्रह करने में भी यत्नवान् रहते हैं। लेखक को आशा है कि वर्तमान मंत्री महाशय इन त्रुटियों को स्वयं ही अनुभव कर के उन के संशोधन करने का यत्न करेंगे।

लिखने का प्रयोजन यह था कि सामान्यतया आर्य जनता और विशेषतया सभा के अधिकारियों का ध्यान इस ओर आकृष्ट हो।

विशेष निवेदन यह है कि उन लेखों में जो भी आलोचना की गई है, उसे एक रीति की आलोचना समझना चाहिए—व्यक्ति की आलोचना नहीं। व्यक्ति की दृष्टि से तो हमारी राय है कि सभा के वर्तमान मन्त्री में वेद प्रचार की उन्नति करने की इच्छा, शक्ति और योग्यता विद्यमान हैं। आप ही हमारी प्रस्तावित सुधारनाओं पर विचार करेंगे तो ठीक होगा।

इन्द्र-वर्म्म

—०—

एक राही के विचार

व्रज के दृश्य

मथुरा जंक्शन का स्थान था। चार यात्री कुलियों के सिरों पर असबाब धराए बी. बी. सी. आई. की एक्स्प्रेस ट्रेन से उत्तरे। वृन्दावन जाने वाली गाड़ी तय्यार थी—इस लिये तीन यात्री सारे असबाब के साथ उस ओर बढ़े और एक को टिकट लाने का काम सौंपा गया। सारा स्टेशन यात्रियों से खचा खच भरा हुआ था। चारों ओर दृष्टि डालने से सारे भारत के नज़ारे दिखाई देते थे। एक ओर सिर नंगे माशा बाबू घूम रहे थे, और ज़ोर २ से यक्के वाले को पुकार रहे थे तो दूसरी ओर चार पांच पञ्जाबी सज्जन फेंटे बांधे खड़े २ ही पूरी कचौरी उड़ा रहे थे। इधर देखिये तो बांगड़ की पंडली गठरियां धरे बैठी थी और उधर कई सिन्धी परिवारों सहित टिकट ख़रीदने की फ़िक्र में थे। हजूम का कोई ठिकाना न था। उस मनुष्य संघट्ट को चीरता हुआ वह यात्री टिकट लेने के स्थान पर पहुंचा। जैसे समुद्र में जहाज़ का यात्री ज्योतिःस्तम्भ की रोशनी को दूर से देखता है—परन्तु वहां नहीं पहुंच सकता; जैसे भारत वासी स्वराज्य के सुखभवन को पाना चाहते हैं—किन्तु दूर ही रह कर देखने मात्र से सन्तोष कर लेते हैं, उसी प्रकार वह यात्री टिकट लेने की खिड़की को देखता है, और दूर ही खड़ा२ निराश हो जाता है। बीच में मुसाफ़िरों का ऐसा ठट्ठ बंधा है कि घन्टे दो घन्टे तक उस के समाप्त होने की आशा नहीं दिखती थी। पीछे दृष्टि पड़ती थी तो उसी खिड़की की ओर सारा स्टेशन उमड़ा हुआ चला आता था। यात्री निराश हो कर सोचने लगा। उधर वृन्दावन की गाड़ी ने सीटी लगाई—और निराश हो कर यात्री लौट आया।

× × × × ×

अहा! यह इतना जन समूह—और वह भी देश के सब प्रान्तों से आया हुआ! सिन्ध से मथुरा पहुंचने में और फिर लौटने में एक परिवार का इतना व्यय होता है, जितना एक साधारण मनुष्य मास भर पसीना बहा कर नहीं कमा सकता। और भी सब यात्री इतना कष्ट उठा कर और पैसा ख़र्च कर आये हैं।

× × × × +

यात्रियों ने घोड़ा गाड़ी किराये ली और वृन्दावन की ओर चल पड़े। गाड़ी में नया घोड़ा जुता था—और बार बार स्टेशन पर लौट आने की धमकी देता था। गाड़ीवान का चाबुक फरकता था—घोड़े की पीठ पर पड़ता था—और प्रतीत होता था कि गाड़ी हवा से बातें करती हुई वृन्दावन पहुंच जायगी, किन्तु चार क़दम आगे बढ़ कर घोड़ा अड़ जाता था। चाबुक—और उस से भी तीखी घोड़ेवान की गालियों से भरी वाणी भी उसे टस से मस न कर सकती थीं। अन्त को कोचवान अपने ऊंचे सिंहासन पर से उतरा और उतर कर पहिये में कन्धा लगाया। साहसी कन्धे का लगाना था कि गाड़ी दलदल को पार कर के भाग निकली। हम मथुरा के जाने वाली सड़क पर भागे जा रहे थे।

× × × × ×

जैसे २ हम आगे बढ़ते जाते थे—बन्दरों के समूह दृष्टि गोचर होते जाते थे। थोड़ी देर हम कुछ विवेचन करने लगे। वृक्षों के तले सड़क के किनारे बैठी हुई कई और मूर्तियां भी दीखने लगीं। ये कौन हैं? अहो! ये मथुरा के प्रसिद्ध चौबे हैं। मथुरा वृन्दावन में ये हज़ारों की संख्या में हैं। इन का काम क्या है? दिन रात कसरत करना, भांग पीना, और पेड़े उड़ाना। उन्हें खिलाता पिलाता कौन है? वही जनता, जो अभी स्टेशन पर दीखती है। तब तो यात्रियों का बड़ा व्यय होता होगा। इतना ही नहीं—उन लोगों को यमुना जी पर जा कर फिर कुछ न कुछ भेंट करना पड़ता है—व्रज में सैकड़ों मन्दिर हैं, उन पर भेंट चढ़ानी पड़ती है। पैसा पानी की तरह बहाना पड़ता है।

× × × × ×

मन्दिर के पीछे मन्दिर आने लगा, कलस के पीछे कलस दृष्टिगोचर होने लगा। यह मन्दिर १० लाख की लागत से बना था, और वह मन्दिर ४० लाख में भी समाप्त नहीं हुआ; इस घाट पर अमुक सेठ ने ५लोख खर्च किये हैं, और इस बुर्जी पर अमुक राजा के ८ लाख व्यय हुए हैं। यह मथुरा की कहानी है, अभी वृन्दावन का माजरा और भी अनूठा है। रंगजी के मन्दिर का खर्च बताने से डर लगता है—शायद उसे कोई मानेगा ही नहीं। गोविन्द जी का मन्दिर देख कर कल्पना शक्ति भी चकित हो जाती है। न जाने मथुरा में कितने करोड़ों रुपया ईंट पत्थर के रूप में पड़ा है—और कितना प्रति दिन डाला जा रहा है।

× × × × ×

उस दिन सायंकाल का समय है। हम सब यात्री गुरुकुल वृन्दावन के अतिथि हो गये हैं वहां के मुख्याध्यापक और मेरठ के म० विश्वम्भरदयाल बी. ए. के साथ घूमने घामने की ठहरी। बादल घिरे हुए थे देर भी अधिक हो गई थी। दूर जाना सम्भव न जान कर पास का जयपुर वाले का मन्दिर देखने का निश्चय कर के चल पड़े। मन्दिर को देख कर जहां एक ओर आनन्द हुआ, वहां दूसरी ओर दुःख भी हुई। आनन्द तो इस लिए हुआ कि अभी तक भी भारतीय राजाओं में धर्मार्थ धन व्यय करने की प्रवृत्ति नष्ट नहीं हुई है। किन्तु कष्ट दो बातों से हुआ—एक तो यह सुन कर कि यह मन्दिर एक अंग्रेज़ इञ्जिनियर की अध्यक्षता में बना है और दूसरे इस बात पर विचार करके कि इस सारे का लाभ क्या होगा? यह शान—यह महिमा किस काम की! मन्दिर की रचना में ५० लाख से ऊपर व्यय हो चुका था—मरम्मत लगी हुई थी और यह समझा जाता था कि एक करोड़ से कम में मन्दिर पूरा न होगा। मन्दिर पूरा होजाने पर क्या २ लाभ होगा। एक तो यह लाभ होगा कि कई मुफ़्त खोरे पेट पालना करेंगे, दूसरा लाभ यह होगा कि इतना रुपया जो अभी तक घूमती घामती दशा में था, ईंट पत्थर के रूप में बैठ जायगा। बीच का भवन देखने योग्य था—इतना लम्बा

सद्धर्म्म-प्रचारक।

संन्यासः विच्छेद वा उद्धार !

वर्णाश्रम व्यवस्था वैदिकधर्म का मौलिक सिद्धान्त है। आर्यसभ्यता का यही स्तम्भ था और संसार की अन्य सभ्यताओं से इस का भेद जतलाने वाला यही मुख्य धर्म है। इस लिय यदि आर्य-वैदिक-धर्म की सामयिक स्थिति का पता लगाना हो तो यह जानने की आवश्यकता है कि उस समय वर्णाश्रम व्यवस्था की क्या दशा है।

वर्णों की इस समय क्या दशा हैं? इस पर कईवार विचार हो चुका है। ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य और शूद्र की व्यवस्था गुण-कर्मानुसार इस समय नहीं होती, यह सभी विचार-शील सज्जन मानते हैं और इसी के साथ यह भी अनुभव कर रहे हैं कि गृहस्थाश्रम की अधो-गति का कारण भी यही है। जन्म पर जातियों का निर्भर जिस देश में हो वहां अराजकता (Anarchism) और नास्तिक पन (Nihilism) का राज हो जाता है। युरप और अमेरीका में जहां जहां अशासन और नास्तिकपन का दौर दौरा दिखाई देता है वहां इस का कारण धनियों, अमीरों तथा राज कुमारों के स्वार्थ में ही ढूंढना पड़ता है। इस लिए भारत वर्ष से भी इससमय अराजकता तथा नास्तिकपन को दूर करने के लिए एक ही साधन है—वह यह कि जात-पात के गढ़ को चकनाचूर कर के गुण कर्मानुसार वैदिकवर्ण व्यवस्था की फिर से स्थापना की जाय।

यह काम इस समय बड़ा कठिन प्रतीत होता है। ब्राह्मसमाज, प्रार्थना समाज, भ्रातृ समाज- यह समाज और वह समाज यहां तक कि आर्य समाज भी वेद शास्त्र का शस्त्र हाथ में लेकर प्रयत्न कर चुकी, परन्तु किसी का भी वश न चला। बिरादरियों के मगर मच्छों ने इन सब को पेट में धर कर डकार तक न लिया। बड़े से बड़े जोश वाले सुधारक युवक भी जब बिरादरी के सामने हुए तो उसकी एक झपटक सहने की भी उन में शक्ति न दिखाई दी। तब कुछ समझ में आया कि जिस की बुनियाद खोखली हो, वह प्रासाद कब दृढ़ हो सकता है? जहां ब्रह्मचर्य रूपी कंकरीट बुनियाद में नहीं कूटा गया वहां गृहस्थ रूपी प्रासाद कैसे ठहर सकता है। आर्य-जनता की आंखें खुल गईं।

तब चारों ओर से ब्रह्मचर्याश्रमों के खोलने की पुकार मच गई। गुरुकुल खुले और काम होने लगा। कांगड़ी गुरुकुल में वायुमण्डल ही ऐसा उत्पन्न हो गया कि देखने वालों की दृष्टि में वैदिकवर्णव्यवस्था की स्थापना तथा पुनरुद्धार का समय समीप दिखाई देता है। परन्तु यहां भी परिणाम ठीक निकलता नहीं दीखता यदि सावधान हो कर काम न किया गया। अपने परिवारों के प्रभाव यहां के स्नातकों पर भी शीघ्र पड़ते हैं। जिन के माता पिता ही दृढ़ सुधारक हों अब तक उन्हीं से सुधार हुआ है, अन्यों में से किसी को भी यह दृश्य दिखाने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ कि वह धर्म पर दृढ़ रहते हुए विनय भाव से अपने मन्तव्य को कर्तव्य में परिणित कर सकता हो।

गृहस्थ की व्यवस्था ठीक नहीं— उस का असर ब्रह्मचर्याश्रम पर भी पड़ गा ही। यह अव्यवस्था कैसे दूर हो?

इस प्रश्न का उत्तर भी हमें प्राचीन काल में ही ढूंढ़ना पड़ेगा। आर्यजाति में जब जब धर्म मर्यादा से जनता डांवा-डोल होती रही तभी उस मर्य्यादा को स्थित करने के लिए चतुर्थाश्रमी सन्यासियों ने ही बीड़ा उठाया। इस समय भी ब्रह्मचर्य्य और गृहस्थ की बिगड़ी दशा को मर्यादा में बांधने और निर्भय होकर धर्म का प्रचार करने के लिए सन्यासी ही आगे होने चाहिए थे, परन्तु सन्यासाश्रम की इस समय क्या अवस्था है। भगवान् कृष्ण ने कहा है— "काम्यानां कर्मणां त्यागं सन्यासं कवयोविदुः" परन्तु आज हम सन्यासियों को गृहस्थों से बढ़कर कामनाओं के दास देखते हैं। आर्यसमाज ने जो संन्यासी उत्पन्न किए हैं और ऋषि दयानन्द ने जो संन्यास का लक्षण बतला है उस पर विचार पीछे के लिए छोड़ कर यहां यह दिखलाना अभीष्ट है कि जिन शङ्कराचार्य महाराज के आदेशानुसार आजकल के बालक दशनामी संन्यास धारण करते हैं, उनके मत में भी संन्यासाश्रम का क्या गौरव था—

चतुर्थाश्रम को सन्यासाश्रम कहते हैं. उस में रहने वाले मनुष्यों के धर्म भेद से नाम १० प्रकार हैं इस का बृहच्छङ्कर-विजय में निम्न प्रकार वर्णन किया है:—

"तीर्थाश्रम, वना, रण्य, गिरि, पर्वत, सागराः।
सरस्वती, भारती च पुरीति दश कीर्तिताः॥"

अर्थः—तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी यह १० प्रकार के सन्यासी हैं।

अब क्रमशः उन में से प्रत्येक का लक्षण करते हैं—

१. तीर्थ लक्षण—

त्रिवेणी सङ्गमेतीर्थे तत्त्वमस्यादि लक्षणे।
स्नायात्तत्त्वार्थभावेन तीर्थनामा स उच्यते॥

अर्थ—'तत्त्वमसि' आदि महावाक्य जिसका स्वरूप है, ऐसी त्रिवेणी सङ्गम तीर्थ में सत्य वाक्यार्थ को समझ कर जो स्नान करता है उसे तीर्थ-सन्यासी कहते हैं

२. आश्रम लक्षण—

आश्रमग्रहणे प्रौढ आशापाशविवर्जितः
याताऽयातविनिर्मुक्त एतदाश्रमलक्षणम्

अर्थ—आशा आदि बन्धनों से रहि व्यावहारिक गमनाऽगमन से पृथक्, न्यासाश्रम ग्रहण में उत्कट इच्छा व आश्रम नाम का सन्यासी कहाता है

३. वन लक्षण—

सुरम्ये निर्झरे देशे वने वासं करोति
आशापाशनिर्मुक्तः वन नामा स उच्य

अर्थ—वन में शान्त रमणीय ज प्रदेश में सब आशाओं को छोड़ कर वास करता है उसे वन नामक सन्य कहते हैं।

४. अरण्य लक्षण—

अरण्ये संस्थितो नित्य मानन्दनन्दः
त्यक्ता सर्वमिदं विश्वम्-अरण्य लक्षणं

अर्थ—सांसारिक सब पदार्थों क कर आनन्द प्रद उत्तम वन में जो

निवास करता है वह अरण्य नामक सन्यासी कहाता है।

५. गिरि लक्षण—

वासो गिरिवरे नित्यं गीताभ्यासे हि तत्परः।
गम्भीराऽचलबुद्धिश्च गिरिनामा स उच्यते॥

अर्थ—उत्तम पर्वत में जिसका निवास हो, और गीता का अभ्यास करता हो, स्थिर बुद्धि, दूरदर्शी गिरिनाम का सन्यासी होता है।

६. पर्वत लक्षण—

वसेत्पर्वत मूलेषु पीठो यो ध्यान धारणात्।
सारात्सारं विजानाति पर्वतः परिकीर्तितः॥

अर्थ—जो पर्वत-गुफाओं में रहता हुआ ध्यान-धारणा (योग शास्त्रोक्त) से अचल होकर सार को (बल बुद्धि वैभव से परमात्मा को) जानता है वह पर्वत नामक सन्यासी कहाता है।

७—सागर लक्षण—

वसेत्सागरगम्भीरो न च रत्नपरिग्रहः।
मर्यादाञ्च न लंघेत सागरः परिकीर्तितः॥

अर्थ—समुद्र के समान गम्भीर, धनरत्न आदि को न लेने वाला, और शास्त्रीय मर्यादा में रहने वाल सागर नामक सन्यासी कहाता है।

८. सरस्वती लक्षण—

स्वरज्ञानवशा नित्यं स्वरवादी कवीश्वरः।
संसारसागरे सारामिज्ञो या हि सरस्वती॥

अर्थ—स्वरोदय के जानने वाला और स्वर के बल से कहने वाला संसार-समुद्र के सार को परखने वाला सरस्वती नामक सन्यासी कहाता है।

९. भारती लक्षण—

विद्याभारेण सम्पूर्णः सर्वभारं परित्यजेत्।
दुःखभारं न जानाति भारती परिकीर्तिता॥

अर्थ—ज्ञान भार से पूर्ण सांसारिक सब भारों को छोड़ता हुआ जो मनुष्य दुःख सुख को कुछ नहीं समझता वह भारती नामक सन्यासी कहाता है।

१०. पुरी लक्षण—

ज्ञानतत्त्वेन सम्पूर्ण पूर्णतत्त्वपदे स्थितः।
ब्रह्मरतो नित्यं पुरीनामा स उच्यते॥

अर्थ—यथार्थज्ञान को उपलब्ध कर ज्ञानी, स्वस्वरूप को पहिचानने वाला, परब्रह्म में सर्वदा लीन रहने वाला पुरी नामक सन्यासी कहलाता है॥१०॥

(शेष फिर)

सुशिक्षित भारती ही भरती हों।

यदि वृटिश सरकार चाहती है कि भारतवर्ष से उसे पूरी सहायता इस युद्ध में मिले तो उसे चाहिए कि इस समय जितनी नई भरती हो वह सब सुशिक्षित पुरुषों में से ही की जाय। वे विचार अमृत बाज़ार पत्रिका में ताज़ा समाचार पढ़ कर हुआ कि सिलहट में बाबू सीतानाथ M.Sc. को गुरखे सिपाहियों ने बहुत बे-इज्जत किया। बारीसाल में गुरखों ने जो अत्याचार अपने स्वदेशी भाइयों पर किए थे उन्हें दोहराने की आवश्यकता नहीं है। मैं एक दिन रेल पर यात्रा कर रहा था; नए भरती हुए चार पांच केशधारी सिक्खों ने एक ग़रीब आदमी और उसकी औरत को पीट दिया। पुलिस सबइन्सपेक्टर ने उनके नाम पूछे—उत्तर मिला—"असी सरकार लई मरन जान्ने हां सान्नू सरकार दो खून माफ कर दित्ते हन" मैंने यह देखा है कि रोहतकादि के जाट, राजपूत, डोगरे, गढ़वाली सिपाही बड़े सभ्य और देश भक्त होते हैं, परन्तु सिक्ख और गुरखों में मद्य मांस के अधिक सेवन के कारण क्रूरता भरी रहती है। कर्नल बीडन का यह कहना (जो प्रसिद्ध हो रहा है) शायद ठीक ही है कि भूखों मरते वे लोग लड़ाई की लूट मार के लालच से भरती हो रहे हैं—सरकार पर कुछ एहसान नहीं कर रहे। यदि सरकार सुशिक्षित युवाओं को, गोरी फ़ौज के समाधिकार देकर, भरती करे तो जो सेना उसे इस प्रकार मिलेगी वह अपने देश, अपनी जाति और अपनी सभ्यता की लाज के लिए जान तोड़ कर लड़ेगी और शत्रु के दांत खट्टे कर देगी। तभी एक सामराज की प्रजा होने का दोनों को यथार्थ ज्ञान भी होगा जिससे वृटिश तथा भारतीय जातियों का सम्बन्ध सचमुच निकट तर हो जायगा। यदि गवर्नमेन्ट ने इस ओर ध्यान दिया तो आर्य्यसमाज भी शायद दस सहस्त्र जवानों का एक डिवीज़न सरकार की भेंट कर सके।

पं० अखिलानन्द नए रूप में।

आर्य्यमित्र में पं० अखिलानन्द ने बतलाया है कि श्री स्वामी विरजानन्द जी का बनाया शब्द-बोध-व्याकरण उनके पास उनके पिता से मिला मौजूद है। और 'वाक्य मीमांसा' तथा 'पाणिनीय विवरण' जो उनके गुरु युगल किशोर जी ने श्री दण्डी स्वामी से सुनकर लिखा था, वे दोनों ग्रन्थ भी उन्हीं की सम्पत्ति हैं। अन्तिम ग्रन्थ की प्रसंसा यह है कि श्री स्वामी दयानन्द जी भी उसी ग्रन्थ पर से पढ़ते रहे। पं० अखिलानन्द इनके छपवाने के लिए धन मांगते हैं और आर्य्यमित्र के सम्पादक लिखते हैं—"यदि पंडित जी यह ग्रंथ श्रीमती सभा की भेंट करदें तो उत्तम हो।" श्री सम्पादक जी को यह ज्ञात नहीं कि अखिलानन्द महाशय को तो धन की आवश्यकता है। आपकी सभा चार पांच सौ दे दे तो ग्रन्थ उसी के हवाले हो जायंगे। परन्तु सभा को भी सावधान होना चाहिए। पहले योग्य विद्वानों से ग्रन्थ दिखला कर फिर सौदा करे—क्योंकि अखिलानन्द जी की ललितवाक् रचना प्रसिद्ध ही है।

कांग्रेस के सभापति।

यदि लखनऊ की स्वागत कारिणी सभा ने कोई और विघ्न न डाला तो बाबू अम्बिकाचरण मोजूमदार के सभापति चुने जाने में कोई सन्देह नहीं। बम्बई बङ्गाल, बरार, पंजाब, अवध इन पांच प्रदेशों ने इन्हीं को चुना है। श्रीमति एनीबेसेन्ट ने समाचार पत्रों में एक घोषणा पत्र निकाला है जिससे स्पष्ट विदित होता है कि यदि अब भी उनका सभापतित्व स्वीकार किया जाय तो वह आने को उद्दित है। श्रीमति जी का भाव तो अत्युत्तम है, उनके ये वचन—कि चाहे कांग्रेस में प्रधान आसन वा जेलखाना नसीब हो, दोनों अवस्थाओं में वह मातृभूमि की ही सेवा करेंगी—बड़े ही हृदय वेधक हैं। हमें आशा रखनी चाहिए कि श्रीमति जी अपने अनुयायियों को समझादेंगी कि अब श्री बाबू मोजमदार जी को ही सभापति स्वीकार करलें, और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बीड़ा कि उस में पांच छः कालिजों के विद्यार्थी परीक्षा देने या उपाधि प्राप्त करने बैठ सकते थे। हमें एक मथुरा के ज्ञानकार सज्जन ने एक बार बतलाया था कि मथुरा में प्रतिदिन जितना धन इमारत बनवाने और चीथों को लड्डुआ खिलाने में व्यय होता है उतने से तो दस कालिज भली प्रकार चल सकते हैं।

लोग कहते हैं—भारत में धन नहीं है। यह ठीक हो तो भी इतना धन अवश्य है कि केवल एक ही तीर्थ पर करोड़ों रुपयों का व्यय हो सकता है। इसी प्रकार अन्य तीर्थों पर भी दैनिक व्यय बहुत होता होगा।

यह भी कहा जाता है कि भारत-वासियों में स्वार्थ की मात्रा अधिक है। किन्तु जिस देश के वासी इतना २ धन व्यय करके तीर्थ यात्रा करने आते हैं—इतना समय देते हैं—इतने कष्ट उठाते हैं—उस देश में तप का अभाव नहीं कहा जा सकता।

फिर कमी किस चीज़ की है?

× × × × ×

कमी है—रास्ता दिखाने की। आवश्यकता है—भारत वासियों के धन और तप को सच्चे मार्ग पर चलाने की। यदि इस का उदाहरण देखना हो—तो वृन्दावन में ही गुरुकुल और प्रेममहाविद्यालय को देख लीजिये। ये दोनों संस्थायें भारत वासियों को शुभ प्रवृत्तियों के परिणाम हैं। जब मन्दिरों के साथ २ इन संस्थाओं को देखा जाता है तो केवल एक त्रुटि का पता लगता है। भारतीय जनता में विवेक बुद्धि पैदा करने की आवश्यकता है। उन्हें यदि ठीक मार्ग दिखा दिया जाय तो यही सब कष्ट और यही सब धन—जो अब विचार-शील भारत-वासियों को चिन्तग्रस्त करता है—भारत के उद्धार का हेतु हो सकता है।

यही कार्य है जो आर्यसमाज को करना है।

परमात्मा इस कार्य में समाज को आशिर्वाद देंगे यह निश्चय है।

—:o:—

कवि पं० नाथूराम शङ्कर शर्म्मा का अनौचित्य

(२)

(गताङ्क से आगे)

आर्य्य समाज लोगों को खोही रहा है। किसी को पैदा भी करता है। यह इस की करतूत है, जो इस के आगे आवेगी?

× × × ×

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का स्थापित किया हुआ, "साधु-आश्रम" भी आर्य्य समाज को उपकार पहुंचाने के लिए है। यह साधु-आश्रम, अलीगढ़ प्रान्त में काली नदी के किनारे श्रीयुत् लाभ धन्य ठाकुर कृष्णसिंह जी वर्म्मा की प्रदत्त भूमि में है। आश्रम का स्थान बड़ा रमणीक है। बाहर के लोग जो कभी कभी आश्रम को देखने पधारते हैं, बड़े प्रसन्न हो हो कर के लौटते हैं।

स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज, विचारों के बड़े उदार हैं। स्वामी जी महाराज चाहते हैं कि आपका स्थापित किया हुआ साधु 'आश्रम' भी आर्य्य जनता को उदारता का परिचय दे? यह सच्चे आर्य्य साधुओं को उत्पन्न करे, जिनसे धर्म्म के प्रचार में आर्य्य समाज को सहायता प्राप्त हो। अछूतों के लिये भी यह आश्रम कुछ काम करे? छोटे—बड़े, अमीर—अमीर सब ही के बालक आश्रम से शिक्षा पायें। असीपक्ष दरिद्रनारायणों के उपकारार्थ यहां उपनिषदादि ग्रन्थों की कथा भी नित्य निरन्तर होती रहे। ये सब आर्य्य समाज के एक सच्चे यशोयुक्त सन्यासी के विचार और मनोरथ हैं, जो पूरा होना चाहते हैं।

इन्हीं पूज्य आर्य्य सन्यासी के स्थापित किये हुए 'साधु-आश्रम' को किसी न किसी प्रकार जड़ उखाड़ दी जाय? आर्य्य समाज में इस के संस्थापक को कोई पूछे तक नहीं, यह 'आश्रम' जो अछूतोद्धार की विशेष चर्चा रखता है, कभी इस का नाम तक न ले। जो लोग आश्रम को अच्छा समझते हैं, और जो इससे प्रेम रखते हैं, उन तक को लताड़ा जाय? यह श्री० पं० नाथूराम शङ्कर शर्म्मा के विचार हैं जो आपकी कविता ही के उस—भाग से प्रकट होते हैं। जिसका उल्लेख, इसी लेख में, ऊपर हो चुका है? पर क्यों? यह एक प्रश्न है। जिसका उत्तर हम इस लेख में क्रमशः दे ही रहे हैं।

× × × ×

उक्त कवि जी, जाति के ब्राह्मण हैं। ब्राह्मणों में ऐसे बहुत थोड़े अहैमानस होंगे, जो आर्य्य समाज को अन्तः करण से यथेष्ट भलाई चाहते हों? स्वामी दयानन्द, यदि जाति के ब्राह्मण न होते तो ये लोग, आर्य्य समाज के पास तक खड़े न होते।

संयुक्त प्रान्त में, आर्य्य समाज के अन्तर्गत एक दल का दल है जो प्रायः आर्य्य समाज को कुछ करने देना नहीं चाहता। इसी दल में एक बेधो हैं। जो और कुछ नहीं तो अपनी कविता से ही ज़मीन और आसमान के कुलाबे मिला देना चाहते हैं? इसलो आपकी कविता को आग्नेयास्त्र से कम नहीं समझते, यही एक आप का शस्त्र, आप को विजय लाभ करावेगा? वाह री कविता तू सफल हो तू उक्त कवि जी के लिये, एक ऐसा आग्नेयास्त्र बन जा कि जिस से इन को सामी जय प्राप्त हो?

× × × ×

पाठक महोदय? अब इस आप से वास्तविक रहस्य सुनाते हैं, ज़रा कान लगा कर सुन लीजिए?

स्वामी सर्वदानन्द जी के आठ पर आरम्भ काल में दो चार लड़के, सूतों के भी पढ़ते थे, जो बाद में बैठ लाठ रहे। उन्हीं में से एक लड़का जिसको कष्य हो रही थी, पता न कि कहां चला गया? उसका बाप इता था उसका विवाह करना? उसे पढ़ना था। अतएव इसी उद्दे से उसने अपना घर भी छोड़ दिया वह लड़का अब कहीं भी हो, है नहार?

"होनहार बिरवान के होत चीकने प

यह किसी कवि का वाक्य ठीक है?

जिस लड़के का हम ज़िक्र कर रहे हैं, यह अछूतों में कुछ काम करेगा? यह एक कारण है, आश्रम और स्वामी जी महाराज पर कवि जी की कोप दृष्टि होने का? यदि इसे साफ़ साफ़ जानना चाहें तो आप "भारतोदय" में छपी इन की "चमर-पञ्च की पढ़ाना" नामक कविता को पढ़ें?

खूब दिल खोल कर लिखी गई है; क्या कहना कोई कविता में कविता है?

एक कड़ी उसकी यों है:—

"चमरन के दल निसतारन को,
उतरे सन्त सर्वदानन्द।"

अर्थात् चमारों के दल का निस्तारा करने ही को सर्वदानन्द सन्त उतरे हैं। सिवाय इन के और किसका वे निस्तारा करेंगे? हम से पूछते हो तो यह सारी ही कविता व्यङ्ग्य से पूर्ण है। कविता कार के मनोविकार का पता इस कविता से लग जाता है।

आर्य्य समाज के वृद्ध सन्यासी स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के प्रति ऐसी मनोविकार-पूर्ण कविता का लिखा जाना भी आर्यों के दुर्भाग्य का सूचक है। कवि जी इसे क्यों समझें?

कहां स्वामी सर्वदानन्न जी और कहां कवि जी? स्वामी जी महाराज के प्रति अण्ड बण्ड लिखने का साहस करना भी सूर्य पर धूल उड़ाने के समान है। आपको भारतोदय में लगातार कई ऐसी कविताएं निकली जिनमें भरसक स्वामी सर्वदानन्द महाराज की निन्दा की गई भारतोदय आर्य्य समाज के एक विद्यालय का, मुख पत्र होने से, स्वपक्ष की परिपुष्टियों के लिये, आपकी मनोविकार पूर्ण-विषैली कविताओं को छाप सकता था। और छापने में वह चूका भी कब? परन्तु आश्चार्य्य है, हमको विद्यार्थी की चाल पर?। विद्यार्थी ने भी इस पत्र की चाल पर चलना उचित समझा? जिसका हमको दुःख है। हमारी सम्मति में पं० रामजीलाल जी शर्म्मा को ऐसी बातों से अपने पत्र को बचाये रखना था।

× × × ×

पाठकों को हमारे कहने से 'विद्यार्थी के भाग २ की ८ व संख्या में, उक्त कवि जी की छपाई हुई 'रेसू नहीं ढकफुलानन्द' नामक कविता पढ़नी चाहिए? यह कविता आद्योपान्त व्यङ्ग्य से भरी हुई है। कवि जी के मनोविकार की, इसमें बहुलता है। यह खूब दिल खोल कर लिखी गई है। कोई कसर नहीं छोड़ी गई? एक महाकवि की कृति जो ठहरी?

अब तक किसी को स्वामी जी के शिष्यों के नाम मालूम नहीं थे। चलो अच्छा हुआ? कविजी ने अपनी एक कविता में उनके नाम भी लिख दिए। अब तक यह श्रेय किसी और आर्य्य कवि को प्राप्त नहीं था। यह आप ही के भाग में था।

आपकी कविता का वह अंश यह है:—

मेरे शिष्यं मुनीश प्रसिद्ध,
शिक्षा लेते अनुभव सिद्ध।
परमादर्श कृष्ण को मान,
करें सत्य का अनु सन्धान।
काटे, कुसुर—कुलों की मेल,
तागड़ दिन्ना नागर बेल॥"

धन्य कवि जी महाराज? आपने स्वामी जी महाराज के शिष्यों के नाम खूब लिख दिये? स्वामी मुनीश्वरानन्द, स्वामी अनुभवानन्द, स्वामी परमानन्द, स्वामी कृष्णानन्द, स्वामी सत्यानन्द, बतलावें कि स्वामी सर्वदानन्द जी महराज के ही दीक्षित शिष्यों में आपकी गणना है? या यह कविजी महाराज की विश्वतोमुखी प्रतिभा की सूझ है या इनका यह प्रलाप है।

इसके आगे एक और पद्य है, उसे भी सुन लीजिए?

पूजें मुझको गीदड़ दास,
करते सिंहों का उपहास।
मोह महासुर को संहार,
पाते चर्म—पुष्प उपहार।
चोट चटो पर चुपड़े तेल, (?)
तागड़ दिन्ना नागर बेल॥

क्या खूब? सभ्यता की तो हद करदी गई? पाठक! किया इस महा काव्य की सुरस रचना का रसास्वादन? यह हैं सुरस काव्य? धन्य है आर्य्य समाज के उस महा विद्यालय में, जिसमें, आप से महा कवियों के, काव्य को क़दर है? इसको रघुवंश और मेघदूत काव्य से कम न समझ कर पढ़ने वालों को अवश्य पढ़ाना चाहिए? बड़ा लाभ होगा? इस कविता की ओर भी बानगी लीजिए?

"जाति पांति के बन्धन तोड़,
छुआ छुत पर छी छी छोड़।
बुध्दू बढ़ियों के अनुसार,
ऊलें, उठें गिरे परिवार।
धरिया पन पै डालें डेल,
तागड़ दिन्ना नागर बेल॥

× × × ×

सुधरे धानुक भंगी डौम,
बिगड़ी रहे न कोई कौम।
हो अन्तज दल का उद्धार,
सबसे ऊंचे चढ़ें चमार।
ओढ़े वृष की खाल उचैल,
तागड़ दिन्ना नागर बेल॥

× × × ×

वैरिकता का तत्व निचोड़,
घोर अविद्या का घर फोड़।
पक्षपात पर मारी लात,
सबको ठीक बतादी बात।
तोड़ा जटिल जाल का जेल,
तागड़ दिन्ना नागर बेल॥"

इन पद्यों में, एक सुधारक, महा पुरुष पर, खुला आक्रमण है? कविजी को इस साहस के लिये धन्यवाद है?

जिस देश में, जाति के अनुचित बन्धन और छुआ छूत रखने की बेजा रिवाज है; समझ लीजिए कि, वह देश कितना किन बातों में, उन्नत है। देश की गिरी जातियों को उठाने में, इस महा कवि की क्या राय है, यह उक्त पद्यों से प्रकट ही है। अछूतों के लिये कोई काम ही यहां न किया जाय! सिवाय अपने वेद कोई पढ़े ही नहीं यह इस महा कवि का विचार है; जो कविता द्वारा आर्य्यसमाज के आगे रक्खा गया है?

एक जगह आपने इस कविता में साधुओं के गेरुआ सूट, पैरों के बढ़िया फुलबूट, हाथ में की हँसली दार बालटी, बग़ल में के छाते और बेंत तक की निन्दा की है। ऐसी भी निन्दा किस काम की, ज़रा सुन लीजिए? आपलिखते हैं:— (शेष फिर)

Haridwar. Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम क़ादिर

गतांक से आगे

वह, न जाने वास्तविक और न जाने बनावटी, चिन्ता से बहुत ही व्याकुल प्रतीत होता था। यों तो वह सारा माजरा सुन चुका था, पर कई बातों के रहस्य वह गुलाबसिंह से जानना चाहता था। जो लोग घर के अन्दर घुसे वे किस जाति के प्रतीत होते थे, उन के वेष कैसे थे, उन के पास कौन से हथियार थे, वे कितने थे, इन सब प्रश्नों के उत्तरों से वह लुटेरों का कुछ सुराग़ लगाना चाहता था। वह और फूलसिंह निश्चय करके आये थे कि थोड़ा बहुत सुराग़ लगते ही वे दोनों कमलदेवी की खोज में निकल पड़ेंगे। सुराग़ लगाने ही वे दोनों यहां उपस्थितहुए थे।

तेजसिंह, गुलाबसिंह के अपने प्रति, विशेषभाव को जानता था। उसे निश्चय था कि मानी गुलाबसिंह आपत्ति में भी उस वैमनस्य को भुलायेगा नहीं। इस लिए वह स्वयं आगे बढ़ कर पूछने का साहस नहीं कर सकता था। उस ने यही निश्चय किया था कि औरों से गुलाबसिंह जो बातें करेगा, उन्हें वह ध्यान से सुनेगा। गुलाबसिंह को एक दम सामने खड़ा देख कर तेजसिंह कुछ आश्चर्यित सा होगया, और प्रतीक्षा करने लगा कि देखें सामने से क्या चीज़ भेंट होती है—अमृत या विष। गुलाबसिंह को भारी आपत्ति ने कुछ नम कर दिया है—या और भी अधिक भयंकर बना दिया है। लोहा तप कर नर्म हो जाता है—और बड़ा आवे में कठोर हो जाता है। तेजसिंह निश्चय न कर सका कि गुलाबसिंह लोहे का अनुकरण करेगा या घड़े का।

किन्तु तेजसिंह को अधिक देर तक प्रतीक्षा न करनी पड़ी। गुलाबसिंह की शक्ल देखकर वह और भी आश्चर्य में पड़ा। उस के नथुने फूले हुए थे, होंठ फड़ फड़ा रहे थे और आंखों से लहू बरस रहा था। वह साधारण रोष तो समझ सकता था—पर इतने अधिक गुस्से के चिन्हों को देख कर वह अचम्भे में पड़ गया। उसे और भी अधिक विस्मय हुआ जब उस के कान में गुलाबसिंह के निम्नलिखित कर्कश शब्द पड़े:—"चाण्डाल! तू अब यहां क्यों आया है? घर में आग लगा कर तमाशा देखने के लिए क्यों आ खड़ा हुआ है? मैं सब कुछ जानता हूं—मुझ से कुछ छुपा हुआ नहीं है। इस प्रकार की चालाकियों से मैं धोके में आने वाला नहीं हूं। मैं राजपूती शपथ खाकर कहता हूं कि यदि ध्यानसिंह के वंश का समूल नाश न कर दूंगा तो महापातकी हूंगा, घोरनरक में पड़ूंगा और अनन्त काल में वहां से छुटकारा न पाऊंगा।"

ये शब्द उपस्थित जनसमुदाय ने सुने, परन्तु कोई भी कुछ समझ न सका। सबने यही समझा कि आकस्मिक विपत्ति ने गुलाबसिंह के दिमाग़ को बे ठिकाने कर दिया है। तेजसिंह तो औरों से भी अधिक चकित हुआ, उसने इन कर्कश शब्दों से न घबरा कर बड़ी शान्ति से उत्तर दिया।

"मैं आपका [illegible] अभिप्राय नहीं समझ सका। आप इस दुर्घटना का [illegible] पर क्यों क्रोधित हैं? मैं इस से उतना ही दुःखित हूं—[illegible]। मैं यहां इति कर्तव्यता पर विचार करने आया हूं किसी बुरे भाव से नहीं। आप कृपया अपने चित्त को सम्भाल कर आये हुए सज्जनों के साथ परामर्श में सम्मिलित होइए"। तेजसिंह की शान्ति और गम्भीरता ने गुलाबसिंह के रोषाग्नि पर मानों घृत की आहुति डाल दी। ऐसे दुष्ट कार्य—और यह दम्भ! एक तो डाका डाल [illegible] और फिर ऐसा माथा। गुलाबसिंह का [illegible] अनायास ही कमरे में पहुंच गया। परन्तु वहां तलवार नहीं थी। उसने और भी ऊंची और कठोर स्वर में कहा—

'पापी तेजसिंह! तू समझता है मैं धोखे में आ जाऊंगा। मैं भली भांति जानता हूं कि तूने और फूलसिंह ने मिल कर ही यह नाटकियों का कार्य किया है। तू मुझे धोखा नहीं देसकता। दुष्ट! क्या करूं इस समय कमर में तलवार नहीं है, नहीं राजपूत कुल में कलंक लगाने [illegible] इसी क्षण धड़ से जुदा होजाता।'

तेजसिंह धीर था, वह गम्भीर था, परन्तु धैर्य और गम्भीरता की कोई हद होती है। तलवार का नाम और "राजपूत कुल पर कलंक" यह शब्द सुनकर तेजसिंह अधिक न सह सका। किन्तु अधिक बखेड़ा करना भी उस समय उसने उचित न समझा। इस लिए अपने रोष को दबाकर रूखे स्वर में उसने केवल इतना कहा—

'गुलाबसिंह! तुम मेरे पिता के हम उम्र हो—इसलिए मैं तुम्हें अपने चचा के समान समझता हूं। शत्रु होने पर भी तुम मेरे बड़े हो। साथ ही एक और भी सम्बन्ध है, जिससे तुम मेरे पूज्य हो। इस लिए तुम्हारे इन शब्दों को मैं क्षमा कर देता हूं। इस जनसमुदाय के सन्मुख मैं केवल इतना कहना चाहता हूं कि तुम्हारा भ्रम निर्मूल है। किस पापी ने ऐसा दुष्कार्य किया है, इसका मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं। यदि मैं उसे मनुष्य जाति के कलंक को पाऊं तो उसका सिर धड़ से जुदा करदूं।'

इतना कह कर तेजसिंह गुलाबसिंह के उत्तर की प्रतीक्षा न करके बड़ी फुर्ति से उस स्थान को छोड़ गया। फूलसिंह उसके साथ २ था।

दोनों मित्र वहां से हट कर कुछ दूर एक मन्दिर की छाया में खड़े हुए और सलाह करने लगे कि क्या कियाजाय। देर तक परामर्श करते रहे। अन्त में दोनों में से कोई निश्चय न कर सका कि डाका मारने वाला कौन था। परन्तु कुछ करना अ

श्य चाहिये। गुलाबसिंह की मति ठिकाने नहीं है—वह कुछ भी नहीं सोच सकता। तब स्वयं ही कुछ करना होगा। तेजसिंह के मन में एक और भी भावना उत्पन्न हुई। यदि खोज करने पर उसने कमलदेवी को ढूंढ निकाला, तो उसे पाने का अधिकार भी बढ़ जायग। सम्भव है, गुलाबसिंह अधिक आक्षेप न उठाएगा, विधाता की बात कौन जानता है शायद वह कमलदेवी को ऐसी दशा में ढूंढनिकाले कि गुलाबसिंह से पूछने की अपेक्षा ही न रहे। चन्दन और चमेली स्वयं ही मिल जायं। इन सब विचारों ने तेजसिंह के चित्त में उत्साह और साहस का संचार कर दिया। 'कार्यं का साधयेयं, देहंवा पातयेयम्' की दृढ़ प्रतिज्ञा करके वह सन्नद्ध होगया।

देरतक विचार के पीछे निश्चय हुआ कि पूरे शस्त्रों से सज्जित होकर दोनों मित्र गांव के दोनों ओर चलदें। तेजसिंह को दिल्ली की ओर का मार्ग मिला और फूलसिंह को उससे दूसरी ओर का। यह भी निश्चय हुआ कि यह खोज दो रातों तक जारी रखी जाय, और फिर दोनों मित्र अपने २ कार्य की रिपोर्ट दें।

—०:०—

आठवां परिछेद

मध्यान्ह का समय था। सूर्य भगवान् की प्रखर किरणों प्रातःकालिक वसन्त ऋतु का समय बांध रही थीं। दिल्ली के आस पास के मैदानों में चैत्र और कार्तिक मास में भी जैसी धीमी २ लूहें चलती हैं उसे वे लोग ही जानते हैं, जो कभी उस ऐतिहासिक नगर के समीप रहे हैं। दोपहर का समय इस प्रदेश में सदा ही असह्य होता है। पृथिवी ने धूप से कुछ गाढ़ी मित्रता सी बांध रखी है। सूर्य की गर्मी को यहां की भूमि न जाने किस प्रकार अधिक गर्म कर देती है उसी गर्मी से तपाये हुए मैदान में तेजसिंह इधर उधर देखता हुआ चला जा रहा है।

यमुना के तट के साथ ही साथ तेजसिंह चला जा रहा है। किनारे के पास के खेतों तथा झाड़ खण्डों को भली प्रकार देखता जाता है। किनारे के कहीं बिल्कुल पास, और कहीं कुछ दूरी पर पक्की सड़क बनी हुई है। उस सड़क तक नजर दौड़ा कर राजपूत फिर आगे को पग बढ़ा देता है, गांव और दिल्ली में कोई लम्बा चौड़ा अन्तर नहीं है। तेजसिंह, जैसे युवक के लिए केवल एक दिन का मार्ग है। परन्तु चारों ओर देख भाल करनी आवश्यक थी। उसी में विलम्ब होता जाता था। यद्यपि अभी तक तेजसिंह को डाकुओं का कुछ पता न चला था; परन्तु उस ने कहीं ऐसे चिन्ह अवश्य देखे थे, जिन से उसे सन्देह होता था, कि हो न हो यहां से कोई घुड़ सवारों का दस्ता आज ही आवश्य गया है।

घोड़ों की टापों के निशानों को ही देखता वह आगे बढ़ता चला जा रहा था। टापों की पैड़ शहर की ओर गई थी। पहले उस ने समझा था कि यह मान भी लिया जाय कि ये चिन्ह डाकुओं के घोड़ों के ही हैं तो वे लोग धोखा देने के लिए शायद कुछ दूर तक शहर की ओर को गए होंगे। किन्तु जब कई मील तक निरन्तर घोड़ों के पैरों के चिन्ह उसी ओर का चले गये तो उसे सन्देह होने लगा। क्या डाकू कभी सीधे राजधानी की ओर भी जा सकते हैं? यह असम्भव है। तेजसिंह ने सोचा कि झूठी लीक पकड़ी है, इतना श्रम व्यर्थ गया। उसी समय एक और विचार उठा। दिल्ली के बादशाह का दरबार उन दिनों विलासियों का दरबार था। दरबार के उमराव उमरा भोग विलास में ही जीवन की इति श्री समझते थे। हिन्दू धन को अपना माल और हिन्दू रमणी को अपनी काम चेरी मानना ही उन का धर्म कर्म था। तेजसिंह ने सोचा—यह असम्भव नहीं है कि उन्हीं काम देव के दासों में से किसी का यह कार्य्य हो। तब तो राजधानी की ओर घुड़ सवारों का जाना समझमें आ सकता है।

इसी प्रकार तर्क वितर्क करता हुआ तेजसिंह जा रहा था। एक ही विचार में मस्त हुआ, संसार की चिन्ता भुला कर, अपनी प्रियतमा की खोज का व्रत लिए वह राजपूत युवा भूख प्यास और नींद की अवहेलना करता हुआ पापी के पकड़ने को आगे ही आगे बढ़ रहा था। प्रातः काल से तेजसिंह के होठों को पानी भी छू तक नहीं गया था। जो लोग एक लगन में मस्त हैं, उन्हें फिर शरीर की क्या सुध होती है। एक ज़बर्दस्त उमंग और उमंगों को खा जाती है। एक प्रबल भावना अन्य भावनाओं को स्वाहा कर देती है। अत्यन्त त्यागी और भोगी में यदि कुछ साम्य है तो यही है कि वे दोनों ही अवान्तर विषयों को भुला कर एक ही पदार्थ की प्राप्ति में मस्त हो जाते हैं। एकाग्रता एक सौभाग्य है, जो किसी २ पुण्यात्मा को ही मिलता है। भोग में एकाग्र होने वाले भी अपनी एकाग्रता को सुफल और पाप का बुरा फल प्राप्त करते हैं। तेजसिंह भी उसी एकाग्रता के सौभाग्य का पात्र होता हुआ, और प्रेयसी की चिन्ता में लीन होता हुआ तपी हुई भूमि पर वेग से बढ़ता जा रहा था।

आगे नदी के किनारे पर एक बना झाड़ खण्ड था। सपाट मैदान के बीच थोड़ी सी जगह में बहुत सी झाड़ियां वृक्षों के साथ २ अटी हुई उस वन-खण्ड को खण्ड-मुण्ड वृक्ष पर बने हुए घोंसले के समान बना रही थीं। यद्यपि वह क्षुद्र-वन विस्तार में अधिक न था, तो भी उस के वृक्षों की सघनता इतनी थी, कि उस में एक मिनट पहले घुसे हुए व्यक्ति को पाना कठिन था। वृक्षों की डालियां एक दूसरे में अड़ी हुई थी, और जङ्गली झाड़ियां उनके बीचों बीच फैल कर पूरा २ गोरखधन्धा सा बना रही थीं। दृष्टि उस पर पड़ कर किनारे पर ही रह जाती थी, ऐसा प्रतीत होता था मानो वह कोई घनी बालू है।

दो पहर की धूप से तेजसिंह के प्राण खुश्क हो रहे थे। यद्यपि एक ही लगन ने उसे खरा क्लेश भुलाया हुआ था, तो भी व्यथा का अनुभव हो ही रहा था। उस जंगल का दृष्टिगोचर होना था कि उस के मन में अपनी अवस्था की झलक सी भासने लगी। उसे प्रतीत हुआ कि वह बड़ा थका हुआ है। प्रभात से पहली बार ही उसे प्यास का भान हुआ। धूप भी बहुत गर्म लगने लगी। जिन २ शत्रुओं ने अभी तक सिर दबाया हुआ था, उन्होंने एक दम सिर उठाकर तेजसिंह पर धावा किया। धूप असह्य जंचने लगी, प्यास के मारे कलेजा सूखने लगा और भूख भी सताने लगी। तेजसिंह शत्रुओं से पराभूत होकर उस जंगल के पास जा पहुंचा। (शेष फिर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इतिहास तरंग

लेखक मल्लाह

(पुरानी जातियों के वचन)

पुराण भी हमारी बात में अत्यन्त प्रबलता से सहमत हैं। असीरिया और यूनान दोनों जातियें अपने इतिहास में ये स्वीकार करती हैं कि त्रियम्बस ने उन्हें नियन्त्रित राजनियम दिये और वहां के पारस्परिक जनसमाज के लड़ाई झगड़े शान्त किये। उसने नौका-विभाग वा जलयान-विभाग की बड़ी उन्नति दी। और व्यापार को बड़ी वृद्धि दी। और सब से मुख्य बात ध्यान देने योग्य यह है कि उसने भारत का भी विजय किया और देश भी सतीर की सेनाओं की सहायता से विजय किये।

× × × ×

(भूल संशोधन)

इस उपरोक्त वर्णन में पाश्चात्य किसी प्रकार भी नहीं बताते कि सतीर और उसकी सेनाएं क्या थीं और कौन थे।

परन्तु शिव के त्रिपुर दहन पर विचारते हुये हमें ऐसा भान होता है कि असुरों के पुरों के विजय के अतिरिक्त इसने भारत में शुम्भ निशुम्भादि नाना दैत्यों का संहार किया और सतीर की सेना अर्थात् क्षत्रियों की सेनाओं से उसने अन्य देशों का विजय भी किया हो।

× × × ×

(राम और वक्कस की कलम)

पाठकगण! ओसिरिस या अक्कस या राम को एक व्यक्ति मानने के विषय में एक प्रमाण और लीजिये।

पाश्चात्य ऐतिहासिक कहते हैं कि भारत वर्षीय साहित्य में तीन राम माने हैं। राम, परशुराम और बलराम। इसी प्रकार ये तीनों विजेता हुये। और दूसरी ओर ठीक इसी प्रकार तीन बक्कस भी माने गये हैं।

× × × ×

(पचरंगा खेल)

बक्कस और शिव एक ही हैं क्योंकि बक्कस शिव वाचक बागीश का अपभ्रंश शब्द है। ओसिरिस शिव एक हैं क्योंकि त्रियम्बस त्रियम्बक का अपभ्रष्ट शब्द है। तीन राम हैं और तीन बक्कस हैं इस से बक्कस राम एक हैं। अब भी इतने से रामचन्द्र, देव नहुष, जामदग्न्य, मनु, वागीश त्रियम्बक शिव, बलराम ये सब कहां कहां के आकर एक २ बन गये हैं। कहिये, हैं नहीं पाश्चात्य लोचनान्ध?।

× × × ×

(चमत्कार)

मिश्र देश के प्रसिद्ध विजेता और गुरु के बारे में अभी तक पाश्चात्य ऐतिहासिकों की दृष्टि कभी राम और कभी शिव जी पर पड़ती थी। परन्तु अब दूसरे नायक की बारी आई है।

पुराणों को अनुशीलन करने के बाद यह सूझ पड़ी कि वही ओसिरस जिसके बारे में इतना उलटा सीधा पहले किया। वास्तव में परशुराम था।

जामदग्न्य परशुराम के अवतार ने २१ बार क्षत्रियों का संहार किया था। इसी प्रकरण में पुराण कहते हैं कि इसने शंखाल जाति, जो नरमांस भक्षी थी और मिश्र देश के उत्तरीय भाग में रहती, उसका विजय किया था। यह जाति समुद्र के शंखों के बने खोहों और चट्टानों की गुफाओं में निवास करती थी। क्योंकि यह जाति बड़ी नृशंस थी अतः ओसिरस ने इसका सर्वथा वध या मूलोच्छेद न करके राज नियमों की न्यायानुकूल कठोरता से बांधा और इन्हें बस्तियें बसा कर रहना सिखाया।

× × × ×

इसी प्रकरण में महाशय विलियम जोन्स का ध्यान ओसिरस शिव को भी मानते हुये, शंख पर ही पड़ा। शंख वास्तव में न दैत्यों का एक अग्रणी योद्धा था। यह रात को निकलता था और दिन में समुद्रों पार जाकर छिप जाता था। ये नाग था। वस्तुतः यह कोई मानव था परन्तु नाग वंश का था। क्योंकि हैलिप्ट में पहले जमाने में सब दलदल ही दलदल थी और सारी भूमि में बड़े २ सर्प और महा सर्प विचरते थे सम्भवतः इस विचार से वहां के निवासी भी नाग ही कहलाते हों। नागों वाला देश नागदेश; और नागदेश के रहने वाले लोग नाग कहला सकते हैं। इसमें यत् किञ्चित भी सन्देह नहीं है।

× × × ×

ये नाग कहलाना ही उपरोक्त राजा की व्यक्ति को देव नहुष मानने में भी सहायक है क्योंकि देव नहुष सम्भवतः पहले भारतीय हो। परन्तु उद्धतता आदि के कारण भारतीय ऋषियों-ब्राह्मणों ने उसे 'सर्पोभव' का शाप दे दिया हो जिस का तात्पर्य यह हो कि वह भारत के देश को त्याग कर नाग देश अर्थात् नागों से भरे मिश्र देश में जाकर रहे।

बड़े अपराध पर कालापानी मिलना कोई कठिन नहीं। सम्भवतः इस राजा को ऋषियों के मन्त्रिमण्डल ने अत्याचार के कारण यह कालापानी दे दिया हो। और यही मिश्रदेश में जाकर देवनहुष के स्थान पर डायोनिसस नाम से प्रसिद्ध हुआ हो।

× × × ×

स्वर्ग में देवनहुष के स्वच्छन्दोचार की कथा का मूल भी देखिये।

पुराणों में देव नहुष को मेरु का राजा कहा गया है सम्भवतः यह राजा नीसा या निषाद स्थान के पास के मेरुनामक पर्वत के इलाके का राजा हो। और ऋषियों के आदेश से तीन वर्ष के राज्य सुख भोग के बाद ही उसे देश छोड़ना पड़ा हो और मेरु वा स्वर्ग भूमि सदृश राज्य को त्याग कर बाहर का रास्ता लेना पड़ा हो।

प्राचीनकाल में इस प्रकार ऋषियों के आदेश या शाप से या छोटे २ अन्य कारणों से देश त्याग, गृह त्याग वन विचरण देशान्तर गमनादि कुछ भी आश्चर्यजनक नहीं। क्योंकि राम का वनवास युधिष्ठिरादि का वनवास परीक्षित का गृह त्यागादि सैकड़ों उदाहरण ऐसे राजाओं के गिनाये जा सकते हैं।

× × × ×

क्योंकि क्षत्रियों का धर्म है कि प्रत्येक वस्तु को बाहु के प्रताप से कमाना चाहिये। अतः इसने भी अपने देश को छोड़, असीरिया, यूनान और मिस्र को विजय किया और उन्हें भारतीय सभ्यता का पाठ पढ़ाया और बसाया हो।

पुराणों में देवनहुष को मेरु का राजा कहा गया है। क्या पुराणों के अनुसार मेरु का राजा होता हुआ देवनहुष मिश्रदेश का विजय नहीं कर सकता। हमें इसमें कोई आश्चर्य नहीं प्रतीत होता। क्योंकि प्राचीन काल में आर्य जाति सब सभ्यताओं की दाता तथा विजेत्री जाति थी।

× × × ×

संसार समाचार पर टिप्पणी ।

सिकन्दराबाद गुरुकुल की सं० १९१४—१५—१६ की सम्मिलित वार्षिक रिपोर्ट २८ पृष्ठों में अभी मुद्रित हुई है। उस से ज्ञात होता है कि गुरुकुल और उपदेशक विभाग दोनों मिला के इस समय ५४ ब्रह्मचारी शिक्षा पारहे हैं। आर्ट, वैद्यक, कृषी—सभी प्रकार की शिक्षा दी जाती है। अकेले श्री मुरारीलाल जी इसे चलाते हैं। आवश्यकता ४००० पुस्तकों की तथा पक्की यज्ञ शाला और गोशाला की बतलाई गई है। ७०००) वार्षिक व्यय है जो दान से पूरा हो जाता है।

आर्यसमाज मुरादाबाद तथा (उस के अन्तर-गत) बलदेवार्य संस्कृत पाठशाला का छत्तीसवां वार्षिक वृत्तान्त अभी छप कर आया है। पाठशाला की आय वर्ष भर में ७७४॥=)॥ हुई और व्यय केवल २०७।-)।२ हुआ। इस समय पाठशाला के स्थिर कोष में ११, २४४॥)॥। १ है। ४७ विद्यार्थी पढ़ते हैं, और दो अध्यापक काम करते हैं। इस आर्यसमाज के आधीन एक कन्या पाठशाला भी है जिस में ३५ लड़कियां पढ़ती हैं।

समाज की भी स्थिर कोष है जिसमें ३०८।=)। जमा हैं। समाज साधारणतया अच्छा काम कर रहा है, धर्मप्रचार में तथा सभासदों के आचार सङ्गठन में अधिक काम की आवश्यकता है।

आर्यसमाज मजीठा (कालेज विभाग) का वार्षिकोत्सव ३,४, ५ नवम्बर को होगा।

मानसा मण्डी (पटियाला) में पं० परशुराम उपदेशक के परिश्रम से नया आर्यसमाज स्थापित होगया है जिस के प्रधान श्री राधाकृष्ण जी हुए हैं और मन्त्री महाशय आत्माराम नियत हुए हैं। दुनीचन्द्र भजनीक ने भी खूब काम किया।

गुरुकुल हरपुरजान (पो० राजापट्टी जि० सारन) के मन्त्री सूचना देते हैं कि उनका डेपुटेशन बिहार में घूम रहा है जिसने गया से ४६=) नकद लिए और १५) का वादा कराया। और ६०) वार्षिक चन्दा भी लिखाया। यह नया गुरुकुल सुना गया है। कोई महाशय इसका सविस्तर हाल लिखें।

म० मुसद्दीलाल सलोनोपर अपने पुत्र के यज्ञोपवीत तथा सायंकाल को मेले में धर्मप्रचार का हाल लिखते हैं, परन्तु स्थान का नाम नहीं लिखते। मोहर डाकखाना नजफ़गढ़ का है।

पिण्डदादनखां के महता हरभगवान रिडायर्ड तहसीलदार बड़े धार्मिक सच्चे पुरुष थे। उनका देहान्त ४ अगस्त को होगया। वसीयत कर गए कि उन के अन्त्येष्टिसंस्कार के समय कोई अवैदिक काम न हो। ५००) मरते हुए दान किया जिस में से १००) गुरुकुल के लिए पहुंच गया है। १००) दयानन्द कालिज, १२५) सुशील जनरल सभा द्वारा छात्रवृत्ति, ५०) कन्या महाविद्यालय जालन्धर, ५०) अनाथालय फीरोज़पुर, ५०) आर्यसमाज पिण्डदादनखाँ तथा २५) आर्यसमाज जेहलम को शेष दान दिया।

बरेली में उपाध्यक्ष रामदेव जी के व्याख्यानों की धूम मच गई थी, परन्तु समाचार देर से लिखे आए। १,२,३ अगस्त को उन के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। पहले दिन का विषय था—"वेद सर्व मतों का स्रोत" ईसाई सभ्य शास्त्रार्थ को तो उद्यत न हुए पहले दिन आर्य मन्दिर के पास वाले ईसाई के मकान से ईंटों की वर्षा अवश्य हुई। दूसरे दिन "सामाजिक अशान्ति और उस के दूर करने के उपायों" पर और तीसरे दिन "जातीय शिक्षा" पर व्याख्यान हुए। अन्तिम व्याख्यान में गुरुकुल की विशेषताएं बड़ी योग्यता से वर्णन की गई।

बरेली आर्यसमाज की ओर से २२ अगस्त को आनरेबल मिस्टर फ्रीमेन्टल कमिश्नर को अभिनन्दन पत्र दिया गया था जिस के उत्तर में उन्होंने गुरुकुल काङ्गड़ी की बड़ी प्रशंसा की और वहाँ के ब्रह्मचारियों को सरकारी पाठशालाओं के विद्यार्थियों की अपेक्षा बहुत अच्छा बतलाया। इसका समर्थन खाँ साहब असगरअलीखां प्रधान म्युनिसिपलबोर्ड ने किया और बोर्ड के मन्त्री महम्मद अबदुलगफ़ूर महाशय ने तो यहाँ तक कह दिया कि अलीगढ़ कालिज के विद्यार्थी होते हुए भी वह यह कहने को वाधित हैं कि गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली अलीगढ़ कालिज की प्रणाली से उत्तम है।

आर्य समाज सुर्जन नगर के सुयोग्य मन्त्री श्री महाशय अयोध्या प्रसाद जी का १२ अगस्त को देहान्त होगया। आप दृढ़ आर्य तथा गुरुकुल के भक्त थे। आपके पिता चौधरी बलदेवसिंह जी ने बड़े धैर्य से इस आपत्ति का सामना किया आपने मृत्यु से पहले अपने पुत्र से आर्यसंस्थाओं के लिए दान भी कराया।

पटियाला में आनन्द का सप्ताह। गत सप्ताह पटियाला में गुरुकुल काङ्गड़ी के डेपुटेशन के आने के कारण विशेष आनन्द रहा। महात्मा जी की कृपा से इस वर्ष पटियाला में भी गुरुकुल शिक्षा का नाद बज गया जिस के लिए उन्हें बहु धन्यवाद है। ६ अगस्त को श्रीमान प्रो० रामदेव जी प्रो० सुधाकर जी तथा पण्डित विश्वनाथ जी पधारे। उसी शाम को प्रो० रामदेव जी का व्याख्यान जातीय शिक्षा पर हुआ। यह व्याख्यान उसी दिन ही समाप्त नहीं हुआ वरञ्च १० और ११ तारीख को भी उसी सम्बन्ध में व्याख्यान होते रहे। अन्तिम दिवस पं० विश्वनाथ जी का व्याख्यान भी हुआ प्रो०जी ने भली भान्ति जतला दिया कि यदि देश की उन्नति हो सकती तो शिक्षा के लिए अपनी देशी भाषा को ही उच्च स्थान देने से होगी, विदेशी भाषा से कदापि भी उन्नति न होगी। वरञ्च जाति की सवनाति और मृत्यु की सम्भावना है पण्डित जी ने वेदों का गौरव वेद मंत्रों को जनता को सुना कर तथा उन के अर्थ बतला कर लोगों के—हृदयों पर बिठलाया। बड़े हर्ष से लिखा जाता है कि कई विशेष रुकावटों के होते हुए भी धन गुरुकुल के लिए पर्याप्त हो गया प्रो० जी को जाते हुए ५५०॥=) (550/14a.) नकद दिए गए जिस में २५) रु० पटियाले के पास ही एक छोटी सी समाज सनौर ने दान दिए, हम इस दान के लिए तमाम भाईयों को धन्यवाद देते हैं। गुरुकुल के डेपुटेशन को भी धन्यवाद है जिसने लोगों के दिलों पर गुरुकुल प्रणाली की शिक्षा का सिक्का बिठा दिया।

इस के अतिरिक्त म० दुनीचन्द जी के भजनों ने भी, जोकि समय के अनुकूल होते थे, जनता पर बड़ा प्रभाव डाला।

१३ अगस्त को श्रावणी (रक्षाबन्धन) का त्योहार बड़े समारोह से मनाया गया। प्रातः ८ बजे समाज मन्दिर से नगर कीर्तन शुरु हुआ, म० दुनीचन्द तथा म०धर्मवीर के उत्तम २ भजन श्रवण कर नगर वासी अत्यन्त प्रसन्न हुए। १२ बजे दोपहर को नगर कीर्तन समाप्त हुआ तथा सब भाई मिल कर एक बाग़ में चले गए, जहां कबड्डी कुश्ती आदि होती रही। ३ बजे सबने स्नान कर नए यज्ञोपवीत धारण कर हवन कर के सबसे प्रेम और प्रीति-पूर्वक मिल कर सहभोज किया। शाम को समाज मन्दिर में श्री पं० गमरत्न जी का रक्षाबन्धन विषय में प्रभावशाली व्याख्यान हुआ। इस तरह से इस वर्ष श्रावणी का त्योहार भी बड़े उत्साह से मनाया गया।

ज्ञानीलाल सभासद
पटियाला समाज

आर्यसमाज श्रीनगर कशमीर का वार्षिकोत्सव ११-१३ भाद्रपद १९७३ तदनुसार २६-२८ अगस्त १९१६ को होगा। जो महाशय काशमीर में भ्रमणार्थ आना चाहें तो वह एक पंथ दो काज के दृष्टान्त अनुसार उत्सव से भी लाभ उठा सकते हैं।

म० जैमनी जी वकील के पिता का मृतक संस्कार १४ श्रावण सं० ७३ वि० को हुआ। रक्काबी (मिरासी) लोग और पं० चेतराम जी उपदेशक सभा साथ २ टमटम पर बैठे हुए भजन गाते जाते थे! आगे २ अंग्रेज़ी बाजा बजता जाता था और अर्थी के ऊपर से छुहारों और पैसों और दवनयों आदि की एक पुरुष वर्षा करता जाता था और म० जैमिनी जी का बड़ा पुत्र आत्मा अनुकूल मोर पंखों (मोर छड़) से अपने पिता महां के शव को पंखा करता जाता था। अर्द्ध मार्ग में अर्थी को एक पक्के चबूतरे पर रखा गया। वहां पर म० जैमिनी जी की धर्मपत्नी जी ने अपने श्वसुर के चरणों पर (पर दक्षिणा करके) एक रुपया और नारयल आदि को रखकर चरण वन्दना की और अपने कर्तव्य को पूरण किया। इस के अनन्तर अर्थी को उठाकर श्मशान भूमि में लेगए। वहाँ शव को चिता में रखदिया गया और ऊपर से रेशमी कपड़ों को उतार लिया गया। इसके अनन्तर पुष्कल हवन सामग्री से दाह क्रिया किया गया और फिर पं० चेतराम जी का एक भजन हुआ और इस के अनन्तर म० जैमिनी जी ने वर्णन किया जिसका सारअंश यह था कि मैं ने २००) दान किया है और मेरे पिता जी फ़ारसी के प्रसिद्ध विद्वान थे और मुसलमान जो ताज़ियों में मर्सिहे पढ़ा करते हैं उनको वह पढ़ा करते थे मरने से दो तीन दिन पहिले तक मर्सीहियों को किताब उनके सिरहाने पड़ी थी इतना वह उस किताब से प्रेम करते थे और आर्य्य ख्यालात रखते थे परमात्मा उन की आत्मा को शान्ति देवें। इस के अनन्तर नहर के लोगों ने स्नान किया और म० जैमिनी जी के शोक प्रकाश करके लोग अपने २ घरों को चले

अर्थी के साथ स्त्री पुरुषों का बहुत समूह था।
भवदीय
हरीशचन्द्र—मन्त्री आर्यसमाज लायलपुर

(नोट— ज्यों का त्यों इसलिए छापदिया है कि जो निर्बलताएं आर्य्यपुरुषों में अब तक हैं उन सबको ज्ञान हो। सम्पादक)

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १८ भाद्रपद सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २ सितम्बर सन् १९१६ ई० | संख्या २१ भाग २८

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोक-हित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रम्बन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है: नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण [illegible] को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक [illegible] वार्षिक मूल्य १॥)

पता—[illegible] गुरुकुल

पो० श्यामपुर [illegible] जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डर

आर्य पथिक: लेखाराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं जो एक साथ ख़रीदने वाले को २/३ [दो तिहाई] मूल्य पर दे दी जायगी।

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—मूल्य ।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

छप रही हैं—

[२] पांच महायज्ञों की विधि

[३] आचाराऽनाचार और भक्ष्याऽभक्ष्य

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज

[५] वेद और आर्यसमाज

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफ़िस शामपुर-कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

आर्य कन्या पाठशाला शिमला के लिए दो अध्यापिकाओं की आवश्यक्ता है जो मिडल और प्राइमरी तक पढ़ा सके। ट्रेंड हों तो विशेषता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार। ट्रेंड वा पैन्शनर वृद्ध पुरुष भी प्रार्थना पत्र भेज सक्ते है। प्रार्थना पत्र मन्त्री आर्य कन्या पाठशाला शिमला के नाम आने चाहिये।

—:o:—

छप गया! छप गया!

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक के

श्रीमद्भगवद्गीता-रहस्य का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक:—पं० माधवराव सप्रे, बी.ए.

पृष्ठ सख्या लगभग ९०० मूल्य सिर्फ ३) रु० डाकव्यय आठ आने।

सुनहले अक्षरों की मज़बूत जिल्द।

जिस ग्रन्थ ने महाराष्ट्र के धार्मिक और सामाजिक जगत् में हल चल मचादी है; और जिसके लिए हिन्दी-प्रेमी महीनों से उत्कण्ठित हो रहे थे, वह अब छपकर तैयार है। प्रतियां बहुत थोड़ी छपाई गई है, बहुतेरे ग्राहकों ने पहले से ही नाम दर्ज करा लिया है; इस लिए जो लोग इस ग्रन्थ को लेना चाहें वे, शीघ्र ही पत्र भेजें वर्ना फिर अवसर न रहेगा।

मिलने का पता:—मैनेजर, "केसरी" पूना सिटी।

—:o:—

प्रचारक सम्बन्धी सूचनाएं ।

बारीक टाइप द्वारा रीडिंग मैटर बढ़ाने का जो विचार किया गया था उसका बहुत से ग्राहकों ने विरोध किया है। उनकी सम्मति में वर्तमान टाइप में छपना ही लाभदायक होगा। ऐसा ही किया जायगा।

विज्ञापनों की छपाई सर्वथा ही बन्दकर दीगई है इस लिए विज्ञापन छपाई का दर भी देने की कोई आवश्यकता नहीं रही। कोई महाशय विज्ञापन की छपाई के लिए पत्र व्यवहार न करें। गत सप्ताह २००) के विज्ञापनों से इनकार किया गया है। विज्ञापनों की बंटाई का काम जारी रहेगा, परन्तु वहां भी बंटाई वाले विज्ञापन को पहले स्वीकार कराना आवश्यक होगा। प्रबन्धकर्ता का अधिकार है कि अश्लीलता तथा अन्य किसी त्रुटि के कारण किसी विज्ञापन की बंटाई से भी इनकार करदें। बंटाई का दर पहले पृष्ट पर छपा रहेगा।

परोपकार सम्बन्धी विज्ञापन स्थानानुसार पहले पृष्ट पर ही दिए जायंगे। जिन ऐसे विज्ञापनों के लिए वहां स्थान न होगा उन्हें समाचारों में देदिया जायगा। एक से अधिकवार ऐसा कोई विज्ञापन (गुरुकुल विश्वविद्यालय तथा उसकी शाखाओं के अतिरिक्त) नहीं दिया जासकेगा।

गुरुकुल समाचार ।

ऋतु का वर्णन उसके वास्तविक स्वरूप को वर्णन नहीं कर सकता। भादों में ऐसी जमी हुई वर्षा कभी देखी नहीं गई। रात दिन मूसलाधार ही पड़ती है। दो बार गंगा में भी खब बाढ़ आई। वर्षा के कारण जहां प्राकृतिक सौन्दर्य में कभी नहीं हुई वहां कुलवासियों का स्वास्थ्य भी बहुत उत्तम रहा।

प्रवासी कुलनिवासियों की कुछ कथा भी सुना ही देनी चाहिए। श्री उपाध्यक्ष रामदेव जी ने उपाध्याय सुधाकर जी तथा उपाध्याय विश्वनाथ जी सहित पहले पटियाला में व्याख्यान दिए जिसका फल, ५५०॥=) की प्राप्ति, गतांक में बतलाया जा चुका है। अब ये तीनों महाशय क्वेटा आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव मना कर वहां ही कुछ दिन रहेंगे। स्नातक बुद्धदेव रोपड़ की आर्यकुमार सभा के उत्सव में सम्मिलित होने गये हैं। स्नातक बलभद्र दक्षिण हैदराबाद ज्योतिष सम्बन्धी गणित के अनुशीलनार्थ पहुंचे हुए हैं। उपाध्याय इन्द्र, यज्ञदत्त तथा चन्द्रमणि दिल्ली, मथुरा, भरतपुर, बड़ौदा होते हुए बम्बई पहुंचे थे। वहां एक सप्ताह निवास करके पूना गये और वहां से फिर बम्बई पहुंच कर शीघ्र लौट-लौट आये हैं। इनके पत्रों से ज्ञात होता है कि ये सब उधर के शिक्षणालयों का भली-प्रकार परिदर्शन कर रहे हैं। महाविद्यालय के ब्रह्मचारियों का एक दल श्री लाला नन्दलाल जी के साथ गंगोत्री की यात्रा है।

शेष ब्रह्मचारी अपने अपने काम में लगे हुए हैं। कुछ जो षाण मासिक परीक्षा में अनुत्तीर्ण थे फिर से २१ भादों को परीक्षा देंगे वे पढ़ने में लगे हुए हैं। विद्यालय की दो सभाओं के जन्मोत्सव हैं, वे उसकी तय्यारी में लग रहे हैं और सब प्रकार से आनन्द है। आशा है कि २५ भादों [१० सितम्बर] तक विद्यालय की ऊपरली तीन कक्षाओं के विद्यार्थी पर्वत यात्रा के लिए चल देंगे।

दशहरे का उत्सव निकट आरहा है। गुरुकुल में यह उत्सव सदा बड़े उत्साह से होता है। आर्यस्कूलों तथा कालिजों के हितैषी विद्यार्थी यदि सम्मुख्य के लिए आना चाहें तो ९ सितम्बर के पश्चात् पं० इन्द्र वेदालंकार क्रीड़ाध्यक्ष के साथ पत्र व्यवहार करें।

एक चिकित्सक की भी आवश्यकता इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल विद्यालय के लिए होगी। यदि कोई डाक्टर महाशय आत्मत्याग के विचार से छोटे ब्रह्मचारियों की स्वास्थ्य सम्बन्धी सेवा करना चाहें तो मुख्याधिष्ठाता से पत्र व्यवहार करें। डाक्टर महाशय की भेंट ४०) मासिक से अधिक देने की सामर्थ्य नहीं है।

बजट की पूर्ति के लिए जो धन आरहा है उसकी जोड़ ११९५) ४ भाद्रपद के अङ्क में दीजाचुकी है। उसके पश्चात् निम्नलिखित धन और आया है:—१००) डाक्टर सच्चादास जी पेन्शनर सीनियर सब असिस्टेन्ट सर्जन, भेरा [ज़िं० शाहपुर]—१००) महाशय रौनकीराय जी, अपरसवार्डिनेंट, वारछैनी (बालाघाट—१००) महाशय रामचन्द्र जी द्वितीयाध्यापक गवर्नमेन्ट हाईस्कूल, झङ्ग—१००) द्वारा महाशय शिवराम जी, प्रागपुर (ज़िला काङ्गड़ा]—अन्तिम १००) उन बूढ़ें दुकानदार महाशय ने भेजा है जो सबसे पहले सम्वत् १९५९ या ६० में आकर ४००) की ढेरी कर गए थे। फिर १९६२ में जब मैं गुरुकुल से जालन्धर चला गया था तब ४००) लेकर गुरुकुल में गए, मुझे वहां न पाकर जालन्धर पहुंचे और जब वहां से भी मुझे अनुपस्थित पाया तो उस समय के सम्पादक के सामने ४००) रखकर कहा—"मैं अपने गुरुकुल को गुप्त दान देता हूं। मेरा नाम लिखने की ज़रूरत नहीं। सनातनी मुझे कहते हैं कि इस बुड्ढे की बुद्धिमारी गई है कि हमें छोड़ आर्यों को दान देता फिरता है। मैं उनसे कहता हूं कि बुद्धि तुम्हारी मारी गई है—तुम तनिक एक बार जाकर मेरे गुरुकुल को तो देखो" उस विश्वासी बूढ़े ने अब तक गुरुकुल को नहीं भुलाया, परन्तु आर्य रूपों में कितने हैं जिन्होंने हमें अपना कर भुला ही दिया प्रत्युत अपने स्वार्थ पर उसको बलि चढ़ाने को तय्यार हो गए।

(मुन्शीराम, मुख्याधिष्ठाता)

पुस्तक समालोचना

शास्त्रार्थ समराला जो श्रीमान् पं० गुरुदत्त जी महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब और श्रीयुत पं० गिरिधर जी शर्म्मा आचार्य ऋषिकुल के सभ्य हुआ। मिलने का पता—मास्टर बाबूलाल आर्य सेवक, सरहिन्द [राज पटियाला]—उर्दू भाषा में—मूल्य प्रतिपुस्तक =) जिना मूल्य वितीर्ण करने वालों को एक रुपए में सात प्रतियां दी जायंगी।

इस ९६ पृष्ट की लघु पुस्तक में उस मूर्तिपूजा सम्बन्धी शास्त्रार्थ का वर्णन है जो समराला आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर हुआ था। शास्त्रार्थ की पूरी रिपोर्ट तो दी ही गई है परन्तु साथ ही २७ पृष्ठों की भूमिका में उस पर बहुत कुछ प्रकाश डाला गया है। लेखक का दावा है कि इस के पढ़ने से "साधारण मूर्तिपूजकों से वार्तालाप करने में बड़ी बड़ी ज़खीम किताबों से ज़्यादा इमदाद करें या बल्कि इस के अन्दर, शक, दलायल वगैरह याद करले से पर सनातन धर्म सभा के बड़े बड़े पण्डितों से बहस करना एक आसान अमर हो जायगा"। यह हौसला साधारण उर्दू पढ़ों को देना कि बड़े पण्डितों के सामने खड़े हो जायं अनुचित हैं; हां, यह ठीक है कि अपने विचारों की दृढ़ता के लिए इस लघुपुस्तक का पढ़ना उर्दू जानने वालों आर्यों के लिए लाभ दायक होगा।

लिखाई, छपाई साफ़ और काग़ज़ भी अच्छा लगाया, गया है।

वारांगना-रहस्य—पण्डित चन्द्रशेखर पाठक रचित—

इस पुस्तक की १००० प्रतियां दूसरी बार छपाई गई लिखी हैं। हमें आश्चर्य होता है कि पं० चन्द्रशेखर ने क्या समझ कर यह पुस्तक छपवाई है। हमारी सम्मति में इस पुस्तक से लाभ तो किसी पाठक को भी नहीं होसक्ता; हां, यदि इसकी कोई प्रति किसी पढ़ी-लिखी कुमारी वा कुमार के हाथमें पड़ जाय तो उन को हानि पहुंचा सकती है। रोग जन्तुओं को अनाड़ियों के हाथों में परीक्षार्थ देना जैसा भया वह है वैसा ही इस पुस्तक को युवकों के हाथों में देना घातक होगा। समालोचना इस पुस्तक की यह की गई है कि इसे जला दिया गया है।

सद्धर्म्म-प्रचारक।

संन्यास—विच्छेद वा उद्धार।

(२)

शंकर स्वामी ने स्वयं तो दश नामों में से कभी कोई ग्रहण नहीं किया था। उन के पीछे विद्यारण्य स्वामी ने ही इनकी बुनियाद डाली प्रतीत होती है। परन्तु उन्होंने भी जिस लिए नाम भेद किया वह गतांक में लपे श्लोकों से विदित है। परन्तु आज क्या दशा है? तीन अनादि के मानने वाले, आर्य्यसामाजिक पण्डित भी क्षोभ के कारण यदि संन्यास लेते हैं तो वह भी तीर्थ की उपाधि धारण करते हैं। तब क्या "तत्वमसि" आदि नवीन वेदा-ितियों के माने महावाक्यों पर उनका विश्वास है? विश्वास से क्या मतलब, यहां तो काम चलाने से मतलब है। जिन आश्रम नाम धारियों को व्यवहार से अलग हो आशा की पाशों से मुक्त हो कर, हरिभजन करना था वे स्वयम् तृष्णा के दासबन रहे हैं। बन नामधारी कामाश्रमों में निवास कर रहे हैं। आनन्द-रूपी आरण्य में जिनका निवास होना चाहिए उन्हें राजरोगों से पीड़ित हो कर हा हा कार मचाते देखा गया है। गिरिओं को गम्भीर और अचल बुद्धि धारण किए गीता के अभ्यासी देखने के स्थान में छुरी चलाते और बदमाशों में नाम लिखाते पकड़ा गया है। पर्वत गुफ़ाओं में रहने के स्थान में हुन्डी पत्री की कोठियां चला रहे हैं। समुद्र नाम धारियों ने समुद्र से गम्भीर भाव को त्याग कर मत विरोध के कारण दिन रात गाली देना ही अपना नित्य कर्म बना लिया है। स्वरवादी कवीश्वर के स्थान में निगुरे अक्षर—शून्यों ने सरस्वती की उपाधि धारण कर ली है। भारती ससार को भार से मुक्त कराने के स्थान में मनुष्य जाति पर अधिक बोझ बन रहे हैं; और पुरी, पूर्ण ब्रह्म में लीन होने के स्थान में, मूर्त्तियों के पुजारी और आना रुपया ब्याज पर ऋण चढ़ाने की चिन्ता में निमग्न हैं।

वर्त्तमान नामधारियों की यह दशा देख कर ही शायद बाबा नानक जी के अवधूत पुत्रने उदासीन होकर इनसे किनारा किया था; परन्तु वहां भी उदासियों के छोटे, बड़े और मंझले अखाड़े के साथ निर्मले आदि अनेक पंथाई मठ बना बैठे हैं। वैरागियों की "रामा सरे" जुदी ही धूनी जल रही है। दादू पन्थी, कबीर पन्थी, सुथरेशाही अनेक कुपन्थों की भरमार है। इन में से शायद ही कोई ऐसा हो जो शास्त्रों के विचार में भी लगता हो। एक प्रति शतक साक्षर कठिनाई से, इन सब साधुओं में दिखाई देते हैं, और वे साक्षर भी अपनी स्वार्थसिद्धि में ही लगे हुए हैं। दीन गृहस्थों से टुकड़ा छीन कर लाखों निकम्मे भगवेंपोश पल रहे हैं और बदले में उन करोड़ों लुटे हुए दीन गृहस्थों को एक नेक सलाह भी नहीं देते। धर्म की मर्य्यादा स्थापन करने के स्थान में अधर्म और अराजकता का राज फैल रहे हैं। उत्तम से उत्तम भोग्य पदार्थ जिन्हें प्राप्त हों, वे इन्द्रियों को वशमें कैसे कर सकते हैं?

इसी दुर्दशा को देखकर सैकड़ों विचारशील पुरुष पुकार उठते हैं कि संन्यासाश्रम को समूल ही नष्ट कर देना चाहिए। उनकी सम्मति में भगवी सृष्टि के मूलोच्छेद में ही भारत का कल्याण है। परन्तु एक बात वे भूल जाते हैं। चार आश्रमों का विभाग स्वाभाविक है और आवश्यक है, इस लिए संन्यास का मूलोच्छेद भी मनुष्य की शक्ति से बाहर है। परन्तु इस के साथ ही यह एक प्रकार का संगठन हमारे सामने है, इस का नाश असम्भव है। जो श्रद्धा अन्ध-विश्वासी करोड़ों प्रजा में जमी हुई है उसे क्या गृहस्थ दूर कर सकेंगे? उस अन्ध-विश्वास पर कुठाराघात करने के लिए भी भगवे पोशों की ही आवश्यकता होगी। उन्हीं में से कर्मवीर निकल उनका सुधार करेंगे। मूलोच्छेद संन्यास का करने की आवश्यकता नहीं, मूलोच्छेद उस धूर्त्तता का करने की ज़रूरत है जिस ने लाखों आर्यपुत्रों को आलसी, विषयी बनाने के साथ ही करोड़ों सद्गृहस्थों को अन्धकार के गढ़े में धकेल रक्खा है।

संन्यास की महिमा के दृश्य दिखाने वाले संन्यासी कभी कभी भूमि पर आजाते हैं और वे प्रजा को अन्धकार के गढ़े से उठा कर यथार्थ ज्ञानरूपी प्रकाश के सूर्य का दर्शन करा जाते हैं। ऋषि दयानन्द उन्हीं महात्माओं में से एक थे। उन्होंने संन्यास के यथार्थ स्वरूप की न केवल अपने ग्रन्थों में व्याख्या ही की प्रत्युत अपने जीवन में उसे सार्थक करके दिखाया। आर्यसमाज को उन्हीं का अनुकरण करना चाहिए। आर्य समाज में इस समय भी कुछ विद्वान संन्यासी हैं। यदि वे मिलकर संन्यासाश्रम का सुधार करना चाहें तो उनके लिए कृतकार्य होना कठिन नहीं। सम्वत् १९६६ की अर्धकुम्भी के समय एक पन्थाई विद्वान ने एकान्त में अपने पापों को स्वीकार करके उनके लिये पश्चाताप किया और मुझ से साधुओं के लिए एक पाठशाला स्थापन करने में सहायता माँगी। साथ ही यह भी मान लिया कि पंथ तथा संन्यासियों के दश नाम का भेद सब झूठा है। मुझ से उन्होंने पाठविधि तथा प्रबन्ध के नियम निर्धारण करने में भी सहायता मांगी। मैंने उन्हें उत्तर दिया—"स्वामी जी महाराज! आपके पास १½ लाख की सम्पत्ति है; या सारी सम्पत्ति देकर, और अर्थ की दासता से मुक्ति लाभ करके, पाठशाला कुछ विद्वानों और धार्मिक पुरुषों की समिति को सौंप, लङ्गोट कसकर ओ३म् का झण्डा हाथ में लेलो। एक ईश्वर, एक वेद, एक संन्यासाश्रम की घोषणा करते हुए सिंहनाद करो। पन्थों को छोड़ कर सहस्र तुम्हारे पीछे लग जायंगे और फिर तुम्हारे द्वारा वैदिक-धर्म का वास्तविक प्रचार सहसाधारण में होजायगा।" पन्थाई महात्मा ने उस दिन से फिर मेरे साथ उस विषय में बात चीत न की। अब मैं आर्य्यसमाज के संन्यासी मंडल से उसी प्रकार का निवेदन करता हूं। आप में से कई यह जानते करते हैं कि जो साधु आर्यसमाज की ओर झुकते हैं उनके पढ़ाने का प्रबन्ध करो और जो आर्य संन्यासी बीमार हों कुछ काल स्वाध्याय वा आराम करना चाहें उसके लिए कोई आश्रम नहीं। इस लिए उन्हें विशेष गृहस्थों की शरण लेनी पड़ती है और इसी लिए कभी २ उन्हें अपने निजी विचार दबाने भी पड़ते हैं। मेरा उत्तर है—आप में से जिन के पास कि भी धन सम्पत्ति हैं उसके नगदे वा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम से पर्याप्त भूमि खरीद कर उसके भाग में एक पुस्तकालय तथा सभा बनवाकर पहले बीस पचीस जुदी २ टियाएं बनवा उन में सब भाई जमाकरलो। एक गृहस्थ त्यागी को प्रबन्धक बनाकर सारा आर्थिक प्रबन्ध कराओ। आपमें से एक दो विद्वान चार चार मास के लिए आश्रम में पढ़ने वालों को तय्यार कराया करें सब नाक की सीध पर चारों ओर वेद के प्रचार के लिए चले जायं। कि-सी सोसाईटी वा संस्था की महायता स्वतन्त्र हो कर सत्य का प्रचार संन्यासाश्रम का भी उद्धार होगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जगत का भी सुधार हो सकेगा। यदि आप लोग चाहते हैं कि संन्यासाश्रम सम्मूल नष्ट न हो जाय तो आप को अपने जीवन से उसका गौरव और उसकी आवश्यकता दिखलानी होगी।

युरप का विश्वव्यापी— युद्ध संन्यास मण्डल के ध्यान को बल से अपनी ओर आकर्षित कर रहा है। धर्म प्रचारकों की गिरावट का क्या परिणाम होता है यह आज कल की सभ्यताभिमानी जातियों के आचरणों से ही ज्ञात होता है। संन्यासी महात्माओं! संसार का पुनरुद्धार यदि हो सक्ता है तो वह अनादि वैदिक सभ्यता के फैलने से ही, और उस सभ्यता के अपूर्व कोष की कुंजी तुम्हारे हाथों में है। उठो! अपने कर्त्तव्य को सम्भालो, नहीं इस प्राचीन पवित्र आश्रम का कहीं चिन्ह भी न दिखाई देगा और इस पाप तुम्हारे शिरों पर रहेगा।

राजनैतिक भारत के पिता महं

वृद्ध दादा भाई नौरोजी राजनैतिक भारत के पितामह हैं। उनकी आयु के वर्ष ४ सितम्बर को समाप्त होंगे। ...ई के एक दैनिक पत्र का सम्वाद... उनसे अभी मिल कर आया है। ...तक दादा भाई नौरोजी का स्वास्थ्य है, बड़े प्रसन्न वदन बात चीत क... । अब तक उनका यही निश्चय है ... उन्होंने अपनी पुस्तक में भारत ...लापन सिद्ध किया था वह ठीक है ... तक भी उनकी यही सम्मति है ... तक भारत को स्वराज्य न मि... ब तक यह दारिद्र दूर न होगा। ... कहीं १०० वर्ष की आयु के स... वृद्ध पितामह पहुंच चुके हैं और भारत की यह हार्दिक प्रार्थना है ...की आयु १०० से भी अधिक हो। ... हम उनके सादा जीवन और ... भोजी वृत्तियों पर विचार करते ...में निश्चय होजाता है कि अभी ...५ वर्ष और हम उनके उत्साह-...देशों को सुनते रहें गे।

...धन टूटते जाते हैं

...वर्णव्यवस्था की स्थापना के ... ज्यों काम होता है त्यों त्यों ...दल में खलबली मचती है और ...लियों की बाढ़ झोंकी जाती है। ... से उन गालियों का उत्तर काम से दिया जाता है। इसी अङ्क में अन्तिम पृष्ठ पर पण्डित शङ्कर जी अध्यापक गुरुकुल वृन्नवन के विवाह का समाचार (आर्यवर्त्त से उद्धृत करके, छपा है। उस का वृत्तान्त पढ़ने से निश्चय हो जाता है कि चौधरी नवलसिंह के कथनानुसार "झूठ और पाखन्ड के बन्धन टूटते जाते हैं" और युद्ध-क्षेत्र में दिनों दिन कर्म-बीर बढ़ते आरहे हैं। यदि पहले से विवाह की तिथि विदित होती तो मैं वर वधु को आशिर्वाद पूर्वकसन्देश भेजता। अब भी मेरी हार्दिक प्रार्थना यही है कि यह आर्य जोड़ा धर्मानुसार ग्रहस्थाश्रम के नियम पालन करता हुआ उत्तम सन्तान मातृ भूमि की भेंट करने में कृतकार्य हो, जिस से इस पुण्य भूमि में फिर से वैदिक (स्वाभाविक) मर्य्यादा की स्थापना हो।

इस पाप का भागी कौन है?

दयानन्द अनाथालय आगरा के सहकारी मन्त्री एक विज्ञापन छापने को भेजते हैं, जिस में लिखा है कि "सोहनसिंह, लालचन्द्र, रामचन्द्र, मुन्शीराम, रामलाल, तेजसिंह (कौलरा, ज़ि० आगरा, निवासी) और परसादीलाल इन सब का..... अनाथालय- से कुछ सम्बन्ध नहीं है, अब वह भजनोपदेशक का काम स्वतन्त्र करते हैं" यह भी लिखा है कि कोई उन को अनाथालय के लिए धन न दे। यदि वे कोई रसीद-बुक दिखावें तो उसे झूठी समझे। इस विज्ञापन ने यह प्रश्न उत्पन्न किया कि यह जो बीसियों भजन गाने वाले जनता को लूटते और उस के लिए धोखा देते तथा झूठ बोलते हैं, उन के पाप का भागी कौन है? आप आर्य संस्थाओं के लिए धन इकत्र करने के लिए स्वयं तो समय नहीं देते और भजनीकों को धन बटोरने के लिए नियत करते हैं। जब भजनीक की वाह वाह हो कर रुपये बरसते हैं तो भजनीक की आंखें खुल जाती हैं और वह समझलेता है कि जिस मेरी कमाई पर वकीलादि सभ्यजन अनाथों के रक्षक होने की प्रशंसा पा रहे हैं, वह कमाई मैं स्वतन्त्रता से अपने लिए ही क्यों न करूं। मेरी सम्मति में भजनीक रूपी रोगजन्तु आर्य-जनता को चिमटाने का पाप अधिकतः आर्यसमाजों और आर्य-संस्थाओं के अधिकारीयों से ही होता है।

वास्तविक गोरक्षा की विधि।

मथुरा की गोहित कारिणी सभा के मन्त्री जी ने 'समस्त भारत-वर्षीय गोशाला तथा पिंजरापोल संचालकों के नाम एक 'घोषणा पत्र' निकाला है जिस में गोशालाओं की वर्तमान दशाको असन्तोष जनक सिद्ध कर के उनको एक संकठन में बांधने के लिए अपील की है। उनकी सम्मति ठीक है कि इस समय गोभक्तों का रूप धारण कर के जो धूर्त्त विश्वासी आर्यनता का धन हरलेते हैं, उनका कुछ भी बन्दोबस्त नहीं हो सकता तथा गोरक्षा के पत्रों में स्थिरता भी नहीं है। इस लिए सुधार के लिए बहुतसी युक्तियां देकर उन्हों ने प्रस्ताव किया है कि जहां प्रत्येक प्रान्त के गोशालाओं आदि के प्रबन्ध के लिए एक "प्रान्तीय गोरक्षा महा-मण्डल सभा" की रजिस्टरी कराई जावे वहां एक 'अखिल भारत-वर्षीय गोरक्षा महा-मण्डल सभा' किसी मध्यस्थान में स्थापित कर के, उसकी भी रजिस्टरी करादी जावे। ये विचार पहले भी उठ चुके हैं और इनको कार्य में परिणित न करने से अब तक बहुत सी हानियां भी हुई हैं। आशा करनी चाहिए कि गोरक्षक आर्य जाति इस नए अवसर को हाथसे न जाने देगी। गोशालाओं तथा पिंजरापोलों के प्रवर्तकों से निम्न लिखित प्रश्न किए गए हैं जिन का उत्तर श्री मंत्री गोहितकारिणी कार्यालय, मथुरा, के नाम अवश्य भेजिए—

"१ आप और आपकी गोशाला सभा की राय में अखिल भारतवर्षीय गोरक्षा महामण्डल महासभा का होना ज़रूरी है या नहीं?

२—आपका पिंजरापौर तथा गोशाला सभा एक सूत्र में होकरमेम्बर होना मंजूर करती है या नहीं?

३—आप अपने यहां से इस गो० म० स० के और कितने मेम्बरों को बना सक्ते हो या मेम्बर नहीं बना सक्ते हो?

४—आपके यहां से एक बार प्रथम और वार्षिक सहायता कितनी मिलसकेगी?

५—और किस २ प्रकार की सहायता देसकते हैं या नहीं? तथा महासभा के काम करने के लिये आप तय्यार हैं या नहीं?

६—इस पत्रको यदि अपनी सभामें पेशकर जवाब देने का विचार हो तो पत्र की पहुंच अवश्य लिख दीजिये फिर सभाकी मंजूरी से जवाब देना।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक राही के विचार

(२)

पुरानी बातें

बे घोड़े और बे एंजिन गाड़ी २० मील प्रति घण्टा के हिसाब से भागी चली जारही थी—मानो हवा से बातें कर रही थी। पर्दे पड़े हुए थे. परन्तु मेघराज के तीर कहीं न कहीं से स्थान पर घुसते आरहे थे—और गाड़ी वासियों को भिगो रहे थे। सालने लगे हुए शीशे में से दूर तक का जंगल और रास्ता साफ़ दिखाई देरहा था। रास्ता साफ़ था शायद ही कोई मनुष्य दिखाई देता हो। हां—कभी २ कोई चरवाहा गौओं को आगे हांकता हुआ दृष्टिगोचर होता था। साग की स्वारिनी हमारी गाड़ी दूसरे जन्तु को रास्ते पर देखकर भौं २ करके चिल्ला उठती थी।

सामने लम्बा रास्ता था—इधर उधर दोनों ओर जंगल था या झील थी- निश्चित उत्तर देना कठिन था। वृक्ष-था घना—अवश्य था, परन्तु वह कमर कमर तक पानी में डूबा हुआ था। घास बूटी का तो कहीं पता ही न लगता था—हां बड़े २ वृक्षों की शाखायें और पत्ते अवश्य दीख रहे थे। ऐसी झील एक मील या दो मील तक नहीं, बहुत दूर तक, लगभग सात आठ मील तक चली गई। जब उस झील पर दृष्टि पड़ती थी तो कहीं समाप्ति दिखाई नहीं देती थी। नीचे जल, इधर उधर आकाश में बरसता हुआ जल और ऊपर जलों का भंडार मेघ जल का साम्राज्य था—जिस में से हम गुज़र रहे थे। हमारे मन प्रकृति के सौन्दर्य से आनन्दित और विस्मित हो रहे थे। वह विस्मय तथा आनन्द और भी बढ़ता जाता था, जब हम उस झील के ऐतिहासिक गौरव पर विचार करते थे। भरतपुर का पुराना इतिहास ऐसा ही विचित्र है।

एकाग्र-चित्त से सब चले जारहे थे। इतने में कान में कुछ भिनक सी पड़ी, कोई बोल रहा था। हमारे साथ ही बैठे हुए एक वृद्ध महोदय भरतपुर का पुराना इतिहास कहरहे थे। आप कहरहे थे—

"यह जंगल 'घन' कहाता है। इस में बारहमास पानी भरा रहता है। इसी प्रकार की झील से सारा भरतपुर घिरा हुआ है। इसी प्राकृत रक्षा को देख कर राय सूर्यमल ने भरतपुर का किला बसाया था। कोई शत्रु इस जल को पार नहीं करसकता था। बरसात में तो यहां नौका की सहायता के बिना आना जाना असम्भव होजाता था। गम्भीर आदि नदियों का जल बन्दों में भरा रहता था, दुश्मन के आने पर वह छोड़ दिया जाता था। रास्ते रुक जाते थे—और शेष काम किले पर लगी हुई तोपें कर लेती थीं। ये जंगल भी दुश्मन की गति को रोकते थे। एक और भी बात थी। भरतपुर पर कभी तोप का गोला नहीं पड़ता था।"

"क्यों? ऐसा क्या कारण था, जिस से तोप का गोला भरतपुर पर नहीं पड़ता था"।

"मैं भी सोच रहा था कि आप ऐसा प्रश्न करेंगे। भरतपुर बड़ी दलदल पर है नगर के आस पास का स्थान इतना नीचा होने से ही उसके चारों ओर जल एक-सा हो जाता है। बीच में एक थोड़ा सा ऊंचा स्थान है, जिस पर नगर बसा हुआ है। आसपास दूर २ तक कोई ऐसी ऊंची जगह नहीं है, जहां से नगर पर गोला पड़ सके। दूर २ तक नीचान ही नीचान है। भरतपुर का किला जितनी जगह पर बसा वहीं कुल ऊंचा स्थान है। वहां से चारों ओर गोले की मार होती थी।"

"भरतपुर के चारों ओर इतना जल है तो वहां मलेरिया का ज्वर तो अवश्य होता होगा।"

"हां—बहुत। यहां के लोगों की सेहत बड़ी खराब रहती है।"

"तो फिर वे जाट राजा—और इनकी सेनायें यहां कैसे रहती होंगी"?

"यह रहने का स्थान नहीं था। यहां तो राजा लोग केवल लूट मार का सामान लाकर छुपा दिया करते थे। यह लूट मार के सामान का ही स्थान था। यह तो आप जानते ही हैं कि वे, जाट राजा, जिनके नाम से किसी दिन दिल्ली का मुग़ल तख़्त कांपता था-और जिन्होंने आगरे और दिल्ली से सावन भादों तथा अमूल्य रत्नों का हरण करके मुग़ल झण्डे पर चोट लगाई थी, पहले केवल लुटेरे थे। लुटेरे से राजा का स्थान दूर है-परन्तु इतिहास हमें ऐसा ही बताता है। मरहटों का इतिहास भी ऐसी ही कथा सुनाता है।"

"तब भरतपुर के राजाओं का निवास-स्थान कहां था?"

"वे लूटमार का सामान भरतपुर में रखते थे और स्वयं उस क़िले में जहां हम जा रहे हैं रहते थे। उस किले का नाम डीघ है। वहां एक बड़ा ज़बर्दस्त क़िला है। उस क़िले ने कई बार मुग़लों और अंग्रेजों की सेनाओं का सामना किया है। किला ऊंचाई पर है और उसके पास ही नीचान पर पुराने राजभवन हैं। उन्हें देखकर आप आश्चर्यित होंगे।"

इन्हीं बातों को सुनते २ हमारी मोटर गाड़ी डीघके पास पहुंचने लगी। हमने फिर पूछा—

"डीघ और भरतपुर के ऐसे ज़बर्दस्त क़िले थे फिर भी यह कैसे जीता गया?"

"इस प्रश्न का उत्तर एक है—आपसकी फूट। परस्पर की फूट ने ही भारत की नव्या गर्क की है। सालों तक ये क़िले मुग़लों की छाती में कांटे से चुभे रहे। मुग़ल बादशाह सैकड़ों मील पार करके ग़ालत को जीतने जाते थे—परन्तु दिल्ली से ४० या ५० मील की दूरी पर बसा हुआ मेवात सदा विद्रोही रहा—और क़ाबू नहीं आया। डीघ और भरतपुर के क़िलों पर मुग़ल राजाओं की तलवार खुगड़ी हो जाती थी। अंग्रेज़ों की सेना ने भी इन क़िलों पर दो तीन धावे किए। पहले उन्हें कोई कृतकार्यता न हुई; सेनायें सिर टकराकर चली गईं। भरतपुर में शत्रुओं के तोप के गोले पी न पड़े। परन्तु अन्तिम वार घर की फूट ने कार बिगाड़ा। जो गद्दी के मालिक महाराजा थे, वे नाबालिग थे। उनके चचा शासन करते थे। उस लोभी ने बालक को मार कर स्वयं गद्दी का मालिक बनने की ठानी। राजा के पालने वाले धाय ने गुप्त रीति से बालक की रक्षा की और उसे ब्रिटिश सेनापति के पास पहुंचा दिया, और रक्षा का भार उसी पर कर खास क़िले में ही बालक के पक्ष की सेना ज़बर्दस्त थी। ऐन समय पर भरतपुर सेना बंट गई। मण्डलियां भिन्न २ हो गईं एक मंडली ने आक्रमण कारियों की सहायता की। परिणाम वही हुआ, जिस की सम्भावना थी। भरतपुर का क़िला होगया"

इस समय हम डीघ के राजभवनों के सामने पहुंच गये थे। पास ही उन की दीवारें दिखाई देरही थीं। लोगों ने उतर कर राजभवन देखे। वे उद्यान, अनगिनत फव्वारे, और पत्थर के महलों को देखकर चित्त में गोते खारहा था। गोपाल-भवन सूर्यभवन का सौन्दर्य देखकर ही जासकता है। इन भवनों को देख लोग दिल्ली आगरा और सीकरी भूलने से लगे। सब राही पुराने और विजय के इन चिन्हों को देख सुख दुःख [illegible] चित्त [illegible] गोते खाने [illegible]

CCO, Gurukul Kangri Coll[illegible]

कवि पं० नाथूराम शङ्कर शर्म्मा का अनौचित्य

(३)

(गतांङ्क से आगे)

तनमें धार गेरुआ सूट पैरों में बढ़िया फुल बूट
हाथ बालटी हँसली दारबातावेंत बगलमें मार
खेल खिलाता हूं खुलखेल तागड़ दिखा नागर बेल

इस से आगे के, एक पद्य को और सुनाते हैं:—

टे भ्रामक भोग विलास रँड़ुआ हुआ लिया संन्या
हो न सेवकता का रोग स्वामी कहते हैं सब लोग
डा हूं अलमस्त अलेल तागड़ दिखा नागर बेल

अपने समाज के, साधु संन्यासियों की, इस से अधिक और क्या निन्दा की जा सकती है? यह सारी ही कविता उनकी निन्दा से भरी हुई है। पाठक! इस आर्य कवि की रचना को बलिहारी है?

हमारी सम्मति में कवि का हृदय उच्च और उदार होना चाहिए? सहृदयता मात्रा भी उस में खूब होनी चाहिए? समर्थ हो, समाज में उसका आदर हो, तो कवि है। नहीं तो वह कवि न- उच्चता, उदारता और सहृदयता से त, कवि समाज में चाहिए ही नहीं। निको बहुत बड़ा मानने वाले कवि के में, कहीं लुटाई, बड़ाई और नीचता प आकर काम करते हैं? कदापि नहीं।

× × × ×

जन कविजी के विषय में हम लिख , अपने से इतर जाति के लोगों की नक निन्दा होसकेकरें, ठाकुरों से ये द्वेष रखते हैं, यदि यह बात जान- ही तो आप की "ठाकुरों की ठोकरें" ली कविता भारतोदय के वर्ष७ री संख्या में पढ़नी चाहिए? इस के लिखने में आपने हद करदी ए,?

वैदिक वीरों ने, बांध बोध की पोट
दिनाड़ मान मेरु पै, चढ़ डंके की चोट
प्रधारते हैं ठोकर मारते हैं
पाखण्ड खसाया, खोल ढोंग की पोल
के चित्र विगोये, वेदों की जय बोल
उधारते है ठोकर मारते हैं
नामी सिंहों को, सौंप ज्ञान गम्भीर
हित के द्वारा, मोह सिन्धु से वीर
उतारते हैं ठोकर मारते हैं

जाति पांति की लुआ-लूत पै, हितके कींटे मार
धन्य अछूतों को अपनाते, करते पूरा प्यार
कब धिकारते हैं ठोकर मारते हैं

इन पद्यों का भाव क्या है, पाठक इस पर ध्यान दें? हमको दुःख है कि आर्य्य-समाज के एक नामी कवि को ऐसी सिड़ सवार हुई। और उनको ध्यान ही नहीं रहा कि उनके समय को सदुपयोग होता है, या दुरुपयोग।

× × × × ×

अपने में से जो भाई बिछुड़ कर, पर धर्म्म में, चलेगये हैं, उनके वापस करने का, आर्य्यसमाज यत्न न करे? न जाति पांति की लुआ-लूत पर ही, ध्यान दिया जाय? आर्य्यसमाज ढकोसले का ही, आर्य्यसमाज रहे, कार्य-क्षेत्र में यह प्रवेश ही न करे? ब्राह्मण जाति के प्रति, तो आर्यसमाज में मुंह से ही कुछ न निकाला जाय? यह है, एक कवि के हृदय की विचित्र उदार बाढ़? नीचे के उद्धृत पद्य से यह और भी विस्पष्ट होजाता है:—

"वैदिक पाग कराते डोलें धर्म कमाते धोंग
झूतभूत भोजन भट्टोंको, दिखलाते हैं सींग"
"बक निहारते हैं ठोकर मारते हैं।"

समझ लिया कुछ मर्म? यह है कविता यह है एक महा-कवि का काव्य! कोई कवि कविता करने में समर्थ हो, तो वह ऐसी कविता ज़रूर करे!

संयुक्त प्रान्त की श्रीमति आर्य्यप्रतिनिधि सभा के एक उपदेशक महाशय हैं, श्रीयुत दान सहाय वर्म्मा। आर्य्य जाति के हैं, स्वर्णकार। अतएव आपकी यह स्वर्णमयी उन्नति देख कर, कवि जी को प्रसन्नता नहीं हुई। उलटा क्षोभ ही हुआ। अतएव उपरोक्त उपदेशक जी के विषय में भी कवि जी का उद्गार सुनलीजिए।

"ऊंचे उपदेशक विप्रों में, विद्या वृद्ध कहाय
दान देरहे उपदेशों का, वर्मा दान सहाय
"नाम निखारते हैं ठोकर मारते हैं"

भारतोदय के सम्पादक जी को भी क्या कहें, निरे साहित्य-सरोवर के 'पद्म' ही निकले। आपने कवि जी की इस कविता को भी पत्र में स्थान देही दिया। धन्य है! आपकी इस कविता का पूर्वार्द्ध, मर्यादा पुरुषोत्तम, महाराज रामचन्द्र और योगीराज श्री कृष्णचन्द्र आदि निष्कलंक महापुरुषों पर है, जो उनमें नाना दोष उद्भावित करने में पूरा किया गया है, शेष उत्तरार्द्ध में उन ही के वर्तमान वंशधरों की भरपूर निन्दा भी की गई है? जो ऊपर के उद्धरणों से सूचित होती है।

जिस कविता के विषय में ऊपर निवेदन किया गया है, उस कविता में महात्मा मुंशीराम तक पर आक्षेप रूप बौछाड़ की गई है। वर्तमान के गुरुकुल वासी किसी इन्द्र उपेन्द्र की तो कही क्या जाय! कवि ठहरे न! इन के सामने है कौन? चाहे जिस पर कलम चला सकते हैं? है कौन? जो इनकी कलम को रोक सके—ज़फ़ दे सके, कविता करने में त्रिभुवन विजयी कवि ठहरे न! धन्य है! भला हम पूछते हैं, महात्मा जी और इन्द्र, उपेन्द्र का 'ठाकुरों की ठोकर' से सम्बन्ध ही क्या? या निरी अन्धाधुन्धी ही ठहरी?

नहीं! नहीं!! महाविद्यालय ज्वालापुर की हिमायत भी, आप कुछ करते! वहां से आपको बढ़िया स्वर्ण पदक भी मिला है न!

"कविता कामिनी कान्तः श्री नाथूराम शंकरः" यह उसी स्वर्ण पदक पर तो "कविता कामिनी कान्तः" करके श्री नाम अंकित है। भला फिर उसकी हिमायत, जिस से यह प्राप्त हुआ है, न की जाती! महात्मा जी से उपरोक्त ज्वालापुरी महाविद्यालय की ठहरी लगी, फिर लगी में लगा लगी, इन की भी सही! आया न, आपकी समझ में इस लगा लगी का सम्बन्ध? तब जो कुछ महात्मा जी के भी विषय में, कविता में लिया गया, सो पूर्वा पर सम्बन्ध के विचार से ठीक ही है। अस्तु विशेष क्या?

कविजी महाराजकी इस भाग की कविता, हमारे विचार में ठीक नहीं ठहरती। अतएव कवि जी इस भाग की कविता पर कलम मारदें। यह अच्छी नहीं, इससे समाज में अच्छे भावों की वृद्धि हो ही नहीं सकती। यह हमने प्रस्तुत लेख के आरम्भ में साफ़ साफ़ लिख दिया है।

आर्यसमाज में, कवि जी महाराज का ऐसी निकम्मी कृति के कारण नाम न हो ऐसा हम चाहते हैं। विद्यार्थी के स-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

योग्य सम्पादक श्री पं० रामजीलाल जी शर्म्मा के शब्दों में, जो उन्होंने पं० अखिलानन्द कवि रत्न के प्रति "वैदिक वर्ण-व्यवस्था" नामक पुस्तक की समालोचना में लिखे हैं हम भी इन दूसरे महाकवि के विषय में इतना कह देना चाहते हैं कि "एक सत्कवि का समय ऐसे काम में लगा है, जिसकी आवश्यकता समय को देखते हुए, हमारी तुच्छ सम्मति में, नहीं है। यदि कवि जी की यही शक्ति किसी और समाज के कार्य्य सम्पादन में लगती, तो बड़ा काम होता"—"ढक फुलानन्द" जैसे बुरे काव्य लिखने में कवि जी, अबतो अपने समय का दुरुपयोग न करें, यह आपके चरणों में हमारी विनीत प्रार्थना है। पर यह स्वीकार ही क्यों होगी? क्योंकि "खुदाने आपको शायद इसी लिए बताया है,,

अनेक बार के कहने पर, प्रार्थना करने पर, कि आप व्यक्तिगत कोई बात कविता में न लेउड़ा करें, यही उत्तर आपसे मिलता रहा है कि "हमें खुदाने शायद क्यों बनाया, जो जी में आया न लिखें" वाह! वाह!! क्या दुरुस्त फ़रमाना है?

"शंकर सरोज और अनुराग रत्न" कवि जी के ही रचे हुए हैं न? उनमें जो विचार पद्यों द्वारा प्रकट किये हैं, क्या वह उपरोक्त भाग के पद्यों से मिलते हैं? कदापि नहीं आकाश पाताल का अन्तर है! एक ही कवि की कृति में पूर्वा पर ऐसा अन्तर क्यों! समझ में नहीं आता।

छुआ-छूत पर आपने 'शंकर-सरोज' की एक गीति में लिखा है:—

दुरदुर छुआछूतके मारे होगये छिन्नभिन्न हमसारे
सत्यानाश भयौ भारत कौ
शोक! शोक!! हा शोक!!!

इस गीति में एक बहुत बड़ी लोगों को दावत दीगई है? जिस में सम्पूर्ण हिन्दू, मुसलमान, ईसाई सम्मिलित किये गये हैं:—

आगे इसी बात को आप सुन लीजिए।
हिंदू, मुसलमान, ईसाई सब देशी, परदेशी भाई
वैदिक धर्म्म वीर बन जाओ, वेग हटाय हटोक।

अपने हिन्दुओं के खान पान, आचार विचार आदि पर भी प्रकाश डाला है। जो सुन लेने के लायक है, यथा:—

खान पान में दुर दुर छीछी, छोंके छुआछूत
ठौर ठौर दम्भोदक छिड़कें, बन जंगम जीमूत
पाप दिन रात पखरते हैं कहा सब मेरा करते हैं
ये आचार विचार ग्रन्थ मत पद्धति पंथ अनेक
कभी न होने देंगे भोले, भारत भर को एक
हठीहठ को न विसरते हैं कहा मेरा सब करते हैं?

आप के ये पद्य मौलिकता से रहित नहीं। पर खेद इतना है कि कहदेना तो सब कुछ, पर उस पर आचरण करके दिखलाना कभी भी नहीं? यही आज कल का आर्यत्व है—

इसी प्रकार

"पाखण्ड खण्डन" नामक गीति में भी आप लिखते हैं:—

"छुआ-छूत पर छार पड़ेगी?
मन्द मतौं पर मार पड़ेगी?
हठ के पीछे हार पड़ेगी?
शङ्कर घोरघमण्ड को? गुड़ कीनि शिवासर देंगे?"

कहिए, इस विषय में यह कितनी ज़ोर दार हैं? कविजी ने जिस समय यह गीति लिखी थी; हमको स्मरण है—उस समय आपके आर्य्य भावों में कमी नहीं थी, और हो भी तो हमको मालूम नहीं? शङ्कर-सरोज की रचना तो, जो हम लिख रहे हैं, दर्शाती ही यह है! गौण भाव से यही हमें इस लेख में दिखलाना भी है। पर विचार है' मनुष्य के; वह सदैव एक से किसी के रहते भी नहीं। आज कल कविजी के क्या विचार हैं, यह प्रस्तुत लेख से प्रकट ही है।

× × × × ×

आपने आर्य्य होकर भी अपने रँडुवे लड़कों के विवाह अक्षत—योनि कन्याओं से ही किये; सिद्धान्त का या अपने लिखे का ज़रा भी विचार न किया:—

आपने विधवा विवाह पर बड़ा जोर दिया है। पर मालूम नहीं, कह कर, दिखलाने की शक्ति लोगों में से कहां चली गई? आर्य्य सामाजिक लोगों में अभी कर्मण्यता पाई ही नहीं जाती। काम कर के दिखलाने में कम कठिनाई नहीं? भला "शङ्कर से डरपोक*" कर क्या सकते हैं; पर आप कथन करने में डरपोक नहीं ठहरते। सुनिए—एक विधवा द्वारा आप कहलवाते हैं:—

"वीरन और उपाय विचारौ,
उर धर न्याय नियोग पसारौ,
बहुर व्याह की विधि विस्तारौ,
अबतो यों सुख दीजिए, यदि हो शंकर के प्यारे?
उन्नति की चरचा करते हो,
पग मङ्गल मगमें धरते हो,
फिर क्यों क्रूरों से डरते हो,
प्राण पालकबन लीजिए
विधवा वध रोकन हारे।"

× × × × ×

कविजी का कविता कून्दन,

ऊपर के लेख में हम आपकी "चमर पंच की पाढ़न्त"—"टेसू नहीं ढकफुलानन्द"—"ठाकुरों की ठोकरें"—नामक कविताओं का उल्लेख कर आये हैं। पाठकों ने वह पढ़ा होगा। हमने उल्लिखित शीर्षक की कविताओं पर अपना मत भी प्रकट कर दिया है। इस से आगे जिस कविता पर हम को लिखना है वह आपकी 'कविता कून्दन' है, जो 'विद्यार्थी' के भाग २ की १० वीं संख्या में छपी है। यह कविता तुक्कड़ों के विषय में है। कविजी को अपने आपको छोड़ और जितने भी कवि हैं, वे सब तुक्कड़ ही जान पड़ते हैं। कविजी का विचार ही जो ठहरा! परन्तु हमारे विचार में, यह कविता भी सहृदयता के विचार से थोड़े ही लिखी गई है? सहृदयता का विचार ही क्या? कविजी को तो 'एक हम्हीं कवि हैं, और सब तुक्कड़ हैं ऐसा दर्शाना था। अस्तु—उक्त शीर्षक की कविता के भी यहां दो चार उद्धरण दिये जाते हैं. पाठक सुनें:—

लव कुश रामायण के द्वारा, पूरा परिचय देते
शुद्ध मैथिली शरणागत को, रामनरेश न लेते
त्याग रहे सुकवित्व-प्रथा को, यों हठ वश अनुद
हा! मुझ अबला से अटके हैं अब तुक्कड़ जड़

बाबू मैथिल शरण गुप्त और पं० राम नरेश त्रिपाठी इस कूट कटाक्ष को वि चारलें।

बाबू मैथिलीशरण गुप्त की कैसी कविता होती है, इस को बतलाने की आवश्यकता नहीं। राष्ट्रीय कवियों में आप और आपकी कविता का अच्छा आ है, तिस पर भी उक्त कविजी की दृष्टि आप अभी कुछ नहीं? आपने अब

*यह आपही की एक गीति का टुकड़ा है:—ले०

CCO, Gurukul K

जितने पद्य लिखे हैं उन सब में से, कविजी महाराज को, आपका 'टिटानिक जहाज़' पर लिखा गया पद्य ही थोड़ा बहुत पसन्द आया है। हमारे विचार में तो गुप्त जी को यों छेड़ना ठीक नहीं किन्तु उनको उत्साह दिलाने की आवश्यकता है। पं० रामनरेश त्रिपाटी को कविता चोर समझ कर चाहे जो कह लीजिए, क्योंकि इन्होंने आपके पद्यों के अनेक टुकड़े ज्यों के त्यों अपने पद्यों में मिला लिये हैं, जैसे—

नारायण निर्गुण गुण धारी
प्रकृति चकोरी चन्द
हरें भ्रम जनित विकार

यह किसी कवि को उचित भी नहीं। आपको कविता चोर समझ कर ही शायद इतना लिखा गया हो। इशारा है, कुछ समझ लीजिए।

आगे और सुनिए:—जोड़ तोड़ कर पद्य पुराने,
छन्द नवीन बनाते हैं धन्य धनेश विराने धनके,
श्रीधरत्व अपनाते हैं।

× × × × ×

बड़ी अनस्थिर महा वीरता, सुयश निरंकुश धार
हुआ! मुझ अबला से अटके हैं, अब तुकड़ जड़ जार

× × × ×

पं० श्रीधर पाठक कैसे प्रकृत कवि हैं! उन की कविता कितनी अच्छी होती है, इस का पता कविता—प्रेमी लगा सकते हैं। हम कोई पाठक जी के हिमायती तो ठहरे नहीं, जो इस पर अधिक ज़ोर दें।

पाठक जी ने 'एकान्त वासी योगी' में जो छन्द प्रयुक्त किया है, वास्तव में वह प्राचीन छन्द नहीं है, नया गढ़ा हुआ है। यही छुपा छुपा एक आरोप है, जो इन पर उक्त कवि जी ने पढ़ा है। परन्तु कवि जी क्षमा करें, इस नये छन्द की गढ़न्त आप के भी काम आई। क्या "शंकर छन्द" एकान्तवासी योगी में प्रयुक्त हुए छन्द से भिन्न है? कदापि नहीं। तब छेड़ छाड़ ही क्यों की गई?

द्विवेदी जी की अनस्थिरता भी आप को याद आही गई, क्या कहना है! यह दूर की सूझी। कवियों में जो निरंकुशता होती है, उस से आप भी नहीं बचे। द्विवेदी जी अब कोई कविता तो लिखते नहीं, तुकड़ फिर कहाँ से रहे? अस्तु आप की तीव्र दृष्टि में चाहे जो भी तुकड़ सही, यह आप ही जानें।

पाठक महोदय! जब 'विद्यार्थी' में भी आप को इन कविताओं को प्रकाशित होते देखा, तब हमने एक पत्र द्वारा श्री० पं० रामजीलाल जी शर्मा से प्रार्थना की कि, विद्यार्थी' को इन कविताओं से बचाया जाय, इन से आप के पत्र को कोई भी लाभ नहीं।

उक्त पण्डित जी ने हम को निम्न लिखित उत्तर दिया, जो आप के पत्र से ज्यों का त्यों यहां पर उद्धृत है:—

"विद्यार्थी कार्य्यालय"
हिन्दी प्रेस, प्रयाग
मिति आ० शु० ६ सं० १९७३

महाशय, नमस्ते

कृपा पत्र मिला। आप की सम्मति बिलकुल ठीक है। मेरी भी यही राय है। मैंने स्वयं उन को बारंबार कहा है कि ऐसी गन्ध न आने पाये। और ताकीद कर दूंगा। यदि फिर भी गन्ध न गई तो लाचारी, आपने से हाथ खींच लूंगा?

भवदीय
रामजीलाल शर्म्मा"

इस उद्धृत पत्र में 'विद्यार्थी' के सुयोग्य सम्पादक की सचाई प्रकट हो सकती है। इस से अधिक और आप लिख भी नहीं सकते थे।

× × × ×

कविजी के विषय में हम कुछ लिखने का विचार नहीं रखते थे, परन्तु कई कारण ऐसे उपस्थित हुए कि हमको अपना यह विचार स्थगित करना ही पड़ा। उन में से एक कारण हमारे एक मित्र का पत्र है, जो यहां पर उद्धृत किया जाता है—

इटोला
P. O. Itala, B. B. jc. Jry 13-6-16

महाशय जी! नमस्ते

मैं यहां पहूंच गया हूं। कुशल हूं। और आप सबों की कुशलता चाहता हूं।

कविजी की परीक्षा भी मैं ने करली। जैसा सब कहते हैं वैसाही निकला (?) अपनी आगे दूसरों को कुछ नहीं समझते। साधु आश्रम के बरखिलाफ भी अपना बड़ा बड़ाट सुनाते थे। अभिमान भी कुछ कम नहीं था।

भवताम् कृपा कांक्षी
धर्म्मानन्द

यह एक 'आर्य्य सुधारक' प्रेस के प्रोप्रायटर के पत्र की नक़ल है। हाल में आप कवि जी के दर्शनों को आये थे, जिन्होंने कि लौट कर अपने यहां से हम को यह पत्र लिखा—क्या कविजी महाराज वास्तव में ऐसे ही हैं? बाहर के लोग भी ऐसा इन को क्यों समझने लगे, यह आश्चर्य्य है! कविजी से आप को भी अश्रद्धा होगई।

कवि जी के भी एक पत्र की नीचे नक़ल दी जाती है, पाठक महोदय, कवि जी के आर्य्यत्व का पता इस से लगालें। हिन्दू बिरादरी का आप पर कितना प्रभाव है? आप आर्य सिद्धान्तों के कितने कायल हैं, छिका-छिकी को कैसा समझते हैं? ये सब बातें आप के ही पत्र से खुल जाती हैं।

हाल में ठाकुर मक्खनसिंह जी, जो आर्य समाज हरदुआगंज के भूतपूर्व प्रधान हैं, की रिश्तेदारी में लड़की का विवाह था, जिस में कवि जी के किसी पुत्र का भी सम्मिलित होना था। कविजी ने जब यह सुना कि इस में ठा० खमानसिंह जी भी शरीक होंगे, जोकि इस समय नोमुसलिया राजपूतों की शुद्धियों के ठेकेदार बने होने से बिरादरी से छिक रहे हैं, तब कवि जी को बड़ा बुरा मालूम हुआ। और यहां तक उपाय भी किया गया कि जिस से उक्त ठाकुर साहब विवाह में कदापि शरीक न किए जायं, जो किए गये और हुए।

आप ज़रा कविजी के पत्र को पढ़ें—

"हरदुआगंज
६।५। १९१६

"श्रीमान् वैदिकार्य्य ठा० मक्खनसिंह जी वर्म्मा (नमो नमस्ते)

मैंने कुं० मुकुन्दसिंह (इन्हीं वैदिकार्य्य के छोटे भाई) से जो कुछ कहा है, वह मन गढ़न्त नहीं।

मैं श्रीमान् ठा० खमानसिंहजी को वर्त्तमान आर्यसमाज का मुख्य अङ्ग समझता हूं परन्तु बिरादरी की राय बड़े बड़े सिंह शार्दूलों को भी माननी पड़ी और मानते हैं, यहां तक मानते हैं कि एक ही समाज के सदस्य बिरादरी के डर से सिद्धान्त का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

खून पीकर असत्य पर फूल बरसाते हैं (आप हीं की तरह ?) बिरादरी के खिलाफ़ कोई छुप कर किसी छिकेला (ठा० खमानसिंह जी से मतलब है) के साथ खाता है, तो वह बहादुर नहीं? अस्तु बिरादरी बड़ा भारी हौआ है, जिस ने सिंह भी पछाड़ डालें ?

"फिर पानी पांड़े, दश दश पुस्त (?) के रसोइया, अपनी बिरादरी के विरुद्ध, क्या कर सकते हैं। कल कुं० पूरण सिंह (तमाखू फ़रोश ?) ने ११ बजे रात्रि को सुनाया कि श्री० ठा० खमानसिंह जी श्री० पं० आर्य्य मित्र (प्रतिनिधि सभा के उपदेशक) जी को साथ लेकर बेलौन पधारे हैं, इसी से मैं स्टेशन से लौट पड़ा। क्या श्री० ठा० खमानसिंह जी बिना बुलाये के ही जा धमके, यदि हां तो वे धन्य हैं। सब को यथायोग्य कहिए !

नाथूराम शंकर शास्त्री
(शंकर)

नोट—पत्र में सरनामे की जगह बारीक अक्षरों में यह और लिखा है—

यदि मुझ नाचीज़ अहमक़ से कोई गुस्ताख़ी हुई हो तो मुआफ़ फ़रमाईए। चि० रविशंकर (आपका एक पुत्र ?) आता था, वह 'पूर्ण' की कथा सुन कर नहीं आया।

नोट—यह पत्र ठा० मक्खनसिंह का दिया हुआ हमारे पास मौजूद है।

यह है एक जाति के ब्राह्मण, नामी आर्य्य कवि के हृदय का हिन्दू-भाव, जो इस पत्र से साफ़ जाहिर है। ठाकुर खमानसिंह जी को बिरादरी से ख़ारिज समझना, इन को कोई अपने यहां बुलावे ही नहीं, इस पर आप का कितना ज़ोर है ? ठा० मक्खन सिंह जैसे अस्थिर आर्य ही आप के बहकाये बहक सकते हैं, ठा० खमान सिंह जी भला बिना बुलाये क्यों किसी के विवाह में शरीक़ होते हैं ? यह कवि जी ने विचारा तक नहीं। शोक है इस समझ को ! दूसरों की बिरादरी में चले पांव अड़ाने, धन्य है !

जिस समाज में श्री कविजी जैसे आर्य्य भूषण वर्त्तमान हैं, भला उस समाज की उन्नति का ठिकाना ही क्या ? उठावे आर्य्य समाज इन की कविता से लाभ !

लेख का उपसंहार

आप की कविता बहुत अंशों में निर्दोष है, यह हम मानते हैं। पर किसी कवि को अपनी कृति पर इतना अभिमान भी नहीं होना चाहिए, जितना कि आप को है। यही नहीं जब कि आप को औरों की कविता में, दोष ही दोष दीखते हैं तब औरों की भी तो निगाह है, अतएव प्रस्तुत लेख के उपसंहार में हम आप की कविता में कुछ दोष दिखलाते हैं, जो वास्तव में हैं भी। सुनिए—

आपने "शंकर सरोज" में "अभिनव निदर्शन नामक एक कविता लिखी है, जिस में कई जगह यतिभङ्ग दोष रह गया है। किसी नामी कवि की कविता में यह दोष रह जाना ज़रा अच्छा नहीं मालूम होता। इस दोष को आप औरों की कविता में बहुत निकाला करते हैं, आश्चर्य है कि यही दोष एक दो जगह नहीं, कई जगह, आप की कविता में है।

आप की जिस कविता का हम ज़िक्र करते हैं, वह षट्पदी छन्दों में है। षट्पदी छन्द का लक्षण भी आप सुनलें—इस छन्द की रचना "रोला" और "उल्लाला" के योग से हुई है। रोला में ११, १३ मात्रा के विश्राम से २४, २४ मात्रा के चार चरण होते हैं। उल्लाला १५, १३ के विश्राम से २८ मात्रा का होता है। किसी किसी कवि ने इसे २६ मात्रा का भी माना है। अस्तु उपरोक्त लक्षणानुसार आपकी "अभिनव निदर्शन" नामक कविता यतिभङ्ग दोष से पूर्ण हैं।

कविजी हमें बतलावें— आप के "ब्रह्म बोध वारिधिविमुक्त शंकर जग-जाने" में यति कहां पर मानी जाय ? क्या "ब्रह्म-बोध वारिधि" इस जगह ? यदि हां, तो एक मात्रा कहां से लाई जावे। क्या आगे के "विमुक्तशंकर जग जाने" में से ? यदि हाँ, तो यही तो यतिभंग दोष हुआ !

"ब्रह्म-बोध वारिधि"—और—'विमुक्त शंकर जग जाने' में १०,१४ मात्रा विश्राम हुआ और होना चाहिये ११-१३ मात्रा पर, सो है नहीं।

आगे चल कर और देखिए—

उपजावे उर में अ(?)सीम आनन्द उदासी
ऐसे अनभल भाज(?)न को फिर कौन कमावै
दुखदे उन्नति के शि(?)रपै वाणिज्य चढ़ावै
कोसें साधन को वि(?)चार की छाती छोलें
अण्ड बण्ड बोलें नि(?)शंक बौरे से डोलें
उन्नति की आशा प्र(?)संग के संग नचाई
पीट पीट तारी सु(?)धार की धूम मचाई
बूड़े संकट सा(?)र में सुख भोग हमारे
क्रोधी कटुवादी ल(?)बार कच लम्पट कामी

जहां जहां इसमें (?) ऐसे चिन्ह दिए गए हैं, वहां वहां आप यतिभङ्ग दोष ही समझें।

इसी प्रकार एक और दोष आपकी "पाखण्ड खण्डन" नामक गीति में रह गया है—अर्थात् "भूतों की भय त्रास न होगी" इस में, सो इसको भी आप स दोष ही समझें ! इस प्रकार के दोष भी आप दूसरों की कविता में निकाला करते हैं—

प्रथम बार के छपे "शङ्कर सरोज" में अश्लीलता की भी गन्ध थी, जो आर्य समाज बरौठा ने दूसरी और तीसरी बा की आवृति में नहीं रहने दी। स्वर्ग वास पं० तुलसीराम जी स्वामी ने अपने ए पत्र में इस बात को लिख कर आर्य्य स माज बरौठा को चेतावनी दी थी, आर्य्य साहित्य में अश्लीलता कैसी

अतएव "शंकर शंकर" के वे पद्य ये हैं

ये परखें परनारि बने रँडिया गणिका गड़ियान के
साथ रहें कुटनी भड़ुवा कुल बोरन के कुल पालन
आमिष खाय पिये मदिरा
करनी कर पोच सुकर्म्म
भूल गये प्रभु शङ्कर को मतिमन्द भये प्रियबन्धु
(अबोध बन

(यहां जो पद दिया वह अत्यन्त श्लील होने के कारण नहीं दिया ग सम्पादक)

× × × ×

कवि जी से अन्तिम निवेदन

श्री कवि जी हमें क्षमा करें, यह भी आप के विषय में, तभी लिखा जब कि आपने भी व्यक्ति गत, पूर्ण पद्य लिखने में, कोई कसर छोड़ी। अब आप से जो निवेद उसे भी सुन लिजिए।

स्वामी सर्वदानन्द जी जैसे ब्र निस्पृह सच्चे साधु, फिर कहां आर्य्यसमाज को इन से कुछ तो

उठाने दीजिए। व्यर्थ की छिद्रान्वेषण करने को यही रह गये हैं? साधुओं पर यह कोप? क्षमा कीजिए कवि जी, बहुत आपने कविता लिख ली। आर्य्य-समाज को आप की ऐसी कविता नहीं चाहिये!

हमने यह निवेदन आप की सेवामें औचित्य के बिचार से किया है। आशा है कि, आप इस पर पूरा पूरा ध्यान देंगे।

स्थान चन्डौली
पोष्ट. हरदुआगंज
(अलीगढ़)
राघवण कृ० १५-७३

विनीत
तुक्कड़,
"कर्ण"

तुकबन्दी

समाज सुधारकों के प्रतिघोषणा

(१)

(सोरठा)

करो समाज सुधार, आर्य्य वीर बन बेगही।
दिक-धर्म प्रचार, शिथिल कर्ण कवि क्यों रहे?

(षट्पदी छन्द)

पस में तानों न, समाज सुधारक होकर,
लूटो निष्कपट, स्वधर्म्म प्रचारक होकर।
जातीय विरोध, न अपनी जड़ कटने दो,
पात का पड़ा हुआ, पर्दा हटने दो।
कर्ण जो न कुछ कर सके तो अपयश होगा बड़ा,
तो सच्चे आर्य्यत्व का झण्डा होने दो खड़ा।
ही का नाद बजाने, लगो न फिर क्यों?
र-साज समाज, सजाने लगो न फिर क्यों?
ो सच्ची सीख, सिखाने लगो न फिर क्यों?
कुछ उपकार, दिखाने लगो न फिर क्यों?
र्ण त्याग उत्कृष्टता, मत विपन्न होते रहो।
ज समुन्नति के सदा, जनता में बोते रहो?
जागृति के भाव, उदय होने लग जावें
आलस्य, प्रमाद, भला क्यों रहने पावें।
फिर भी आत्म-शक्ति, दिखलानेलगिए।
जिक अधिकार, यथोचित पाने लगिए।
र्ण आर्य्य धर्म्मज्ञता, रहे नाम की ही नहीं:
ो नाम कर हूजिए, सम्मानित सब सबही कहीं
कोरा कथन, ँखाते रहो न अब तो?
णों में कभी, दिखाते रहो न अब तो?
ते हो करो, स्वयं भी, तब कुछ होगा?
ही से कार्य, कहो क्या सब कुछ होगा?
ी सुधारक है वही. जो कह कर करने लगे।
लक्ष्य पर स्वकृति के, दोष सभी हरने लगे॥

तुक्कड़—"कर्ण"

—:o:—

प्राप्त पत्र।

पुनरावृत्ति में शङ्का

२६ श्रावण सम्वत् १९७३ के सद्धर्म-प्रचारक में पण्डित हाकिमराय जी उपदेशक आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने जो लेख पुनरावृति मोक्ष पर मुद्रित किया है वह सन्देह जनक है। स्वामीजी ने मोक्ष की पुनरावृत्ति मानी है। आर्य्य सिद्धान्त है कि दुःख से छूटने का नाम मुक्ति है; मुमुक्षु जीव अत्मास्वरूप से अपने जाति-इरादे के द्वारा आनन्दमय कोष में विचरता हुआ आनन्द स्वरूप है। चूंकि जीव अल्पज्ञ और महदूद कर्मों का कर्त्ता है इस लिये महदूद कर्मों का बदला महदूद ही होना चाहिये। यदि जीव अपने सत्कर्मों से मोक्ष को प्राप्त हो गया तो मोक्ष से पुनरावृत्ति लाज़मी ठहरती है। मगर यह बड़ा अन्याय है। मोक्ष से पतित हुआ जीव शनैः शनैः ज्ञान शून्य होकर सुषुप्ति अवस्था को प्राप्त होकर, वृक्ष पशु योनि को धारण करे, यह बात सर्वथा बुद्धि से विरुद्ध और प्रमाण रहित है। जिस दशा में आर्यों का अटलसिद्धान्त हैं कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र और फल भोगने में परपत्र हैं तो मुक्त जीव का मनुष्य देह धारण करने में क्या हानि है? क्योंकि श्री कृष्ण जी महाराज का वाक्य है कि जब २ धर्म में ग्लानि आती है तो मैं देह धारण करता हूं क्या कृष्ण या राम, अथवा शंकराचार्य, स्वामि दयानन्द मुमुक्षु पुरुष नहीं थे? इस प्रस्ताव पर श्री इन्द्र जी वेदालङ्कार वाचस्पति को रोशनी डालनी चाहिये। इत्योम्।

आप का कृपा कांक्षी
ईश्वर दास हकीम, जोधपुर
खरीदार प्रचारक नं १२४

शङ्का समाधान

म० कालीचरण जी, नमस्ते

मैंने ता० ८-७-१६ के प्रचारक में 'ग्रन्थ संशोधन कार्य' शीर्षक लेख में महाभारत की ३ घटनाओं का उल्लेख कर के उन पर १६ आशंका करते हुए उनको असम्भव सिद्ध किया था। उनमें से एक का उत्तर देते हुए आप लिखते हैं कि पातञ्जल योग दर्शन के विभूति पाद के १७ वें सूत्र को पढ़ें; जिससे आप ख्याल करते हैं कि सर्प और राजा नल की वार्तालाप सम्भव सिद्ध हो जायगी। उत्तर में निवेदन है कि यदि उस सूत्र को आपने नोट में छपा देते तो पाठक स्वयं ही विचार लेते और मुझे लिखने की आवश्यकता न रहती।

लीजिए उस सूत्र को मैं लिखे देता हूं:-

शब्दार्थ प्रत्ययानामितरेतराध्यासात्संकरस्तत्प्रविभाग संयमात् सर्वभूतरुतज्ञानम्। पा० ३। सू० १७॥

शब्द, अर्थ और प्रत्यक्ष (ज्ञान) में परस्पर अन्य को अन्य समझने से (सब का) संकर (एकमेक) हो जाता है (परन्तु) उन (शब्द, अर्थ, ज्ञानों) के विभाग में संयम करने से सब प्राणियों की बोली ज्ञात हो जाती है।

भावार्थ यह है कि धारणा, ध्यान, समाधि रूप संयम करने से योगी को सब प्रकार की भाषाओं का ज्ञान हो सकता है।

अब म० कालीचरण जी सप्रमाण बतलावें कि क्या राजानल उस समय संयम किए बैठा था कि झट से उसने सर्प की बात समझ ली? अथवा सर्प ही योगी था जिसने अपना सब भाव नल को समझा दिया? यह सर्प कभी भारी होता है और कभी हलका, और नल को उत्तम २ सम्मति तथा वस्त्र भी देता है। ये कार्य बिना योगी के और कोई नहीं कर सकता; अतः मानना पड़ेगा कि यह सर्प योगी था। अब बतलाईए कि सर्प कौन सूत्र के अनुसार योगी हो सकता है।

आप १६ असम्भव दोषों में से केवल १ को सम्भव सिद्ध करने बैठे, पर वह भी न कर सके।

मैं प्रचारक के समान धार्मिक पत्रों की एक पंक्ति भी व्यर्थ व्यय करना अपराध समझता हूं अतएव मुझे खेद है कि आपने व्यर्थ ही प्रचारक का आधा कालम व्यय किया। यदि महाभारत का कोई टीकाकार वा उस कोटि का कोई विद्वान् इस विषय में अपनी सम्मति देता तो अच्छा होता।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक बात सदा स्मरण रखनी चाहिए कि प्राचीन शास्त्रों की सत्यासत्यता पर आन्दोलन करने और तत्पश्चात उनकी सत्यता सिद्ध होने पर उनकी प्रतिष्ठा बढ़ती ही है घटती कदापि नहीं।

गंगाराम उबाना।

गुरुकुलों का नियन्त्रण।

उपरोक्त शीर्षक का एक लेख २९ श्रावण की प्रचारक में श्रीमान कुंवर हरप्रसादसिंह जी वकील मंत्री श्रीमती उपप्रतिनिधि सभा बुंदेलखंड बांदा की ओर से आर्य्यप्रतिनिधि सभाओं के मन्त्री महाशयों के नाम प्रकाशित हुआ है। इस लेख में बड़ी आवश्यकीय बातें गुरुकुलों के विषय में कुंवर जी ने बतलाई हैं जिन पर चलने से गुरुकुलों को भारी लाभ होसकता है। मैंने लगभग इन्हीं सब विषयों को अनुभव करके गुरुकुल कांगड़ी के सं० १५ वाले वार्षिकोत्सव पर श्री मुख्याधिष्ठाता जी की अज्ञा लेकर एक विज्ञापन वितीर्ण किया था जिसको आज फिर आर्य पुरुषों के विचारार्थ नीचे उद्धृत करता हूं, और आशा करता हूं कि आर्यप्रतिनिधि सभा इन आवश्यक विषयों पर विचार करेगी।

श्री मान् जी! नमस्ते।

एक समय था जब कि "गुरुकुल" शब्द को भी कोई नहीं जानता था, परन्तु एक समय अब है कि जिस प्रान्त में आप जायए "गुरुकुल खोलो—गुरुकुल खोलो" यह शब्द सुनाई पड़ते हैं, इस का कारण क्या है। मेरे विचार में इस का कारण गुरुकुल कांगड़ी की महिमा है। इस गुरुकुल को जो कुछ सफलता गत दो या चार वर्ष में प्राप्त हुई है, उस से सर्वसाधारण ने यह समझ लिया है कि गुरुकुल का चलाना एक सरल कार्य है जो कि थोड़े प्रयत्न से हो जायगा। परन्तु मेरा विचार यह नहीं, मैं इस कार्य को सुगम कार्य नहीं समझता। मुझे यह प्रतीत होता है कि यह एक महान् और कठिन कार्य है। अगर नेशन बिलडिङ्ग के कार्य को कोई सुगम कार्य समझता है तो उस की सर्वथा भूल है। जो विचार सर्वसाधारण में पैदा हो रहे हैं या जो प्रथा आजकल गुरुकुल खोलने की चल रही है ऐसा न हो कि इस महा कार्य को एक सुगम कार्य समझ कर गुरुकुल अपनी उच्च पदवी से गिर कर साधारण पाठशाला की अवस्था में परिवर्तित हो जावे। उस अवस्था में परिणाम यह होगा कि जो तजुर्बा ५००० वर्ष व्यतीत होने पर किया गया है वह कई हज़ार वर्ष पर पड़ जायगा। जिन सज्जनों का ऐसा विचार है उन को अच्छी तरह सोचना चाहिये। कहीं ऐसी भूल न हो जावे कि जिस से गुरुकुल के पवित्र नाम को बट्टा लगे। यह आवश्यक है कि उन के यह विचार अति पवित्र हैं, परन्तु इन विचारों पर कार्य करना भी अति कठिन है और उस के लिये बड़े प्रयत्न की आवश्यकता है। गुरुकुल कांगड़ी को जो सौभाग्य अब प्राप्त हुआ है वह आर्यसमाज के संगठन का पवित्र परिणाम है। गुरुकुल का क्या उद्देश था और उसको क्या सफलता प्राप्त हुई उस पर अब समालोचना करने का समय नहीं और न ही कोई उस की किस्मत का फैसला कर सकता है, कारण यह कि जब तक वहां के स्नातक अपनी आयु व्यतीत करने का समय विलाप नहीं बनाते, उस वक्त तक हम सर्वसाधारण कुछ नहीं कह सकते। ऐसी अवस्था में ऐसे पवित्र काम को ध्यान से चलाना चाहिये, कि जिस से शुभ परिणाम की आशा बनी रहे, मेरी सम्मति में निम्नलिखित विचारों पर अगर सर्वसाधारण ध्यान दें तो अत्यन्त ही लाभदायक होगा। मेरी प्रार्थना है कि आप मेरे विचारों को अपने समाजमन्दिर के दरवाज़ों पर लगवादें ताकि आर्य पुरुष उन को पढ़ कर अपनी सम्मति प्रगट कर सकें। समाज के साप्ताहिक अधिवेशन में पढ़ कर सुनादें अन्तरङ्गसभा में विचार के लिये रखदें और सभी की राय अख़बारों द्वारा प्रकाशित करदें, ताकि आर्य्य जाति को विचार का समय मिले। साथ ही साथ समस्त आर्य्यप्रतिनिधिसभाएँ और आर्य्य सार्वदेशिक सभा भी इस पर गूढ़ विचार करे और इस महान् कार्य्य पर अपनी २ सम्मति प्रगट कर मुझ को और सर्व आर्य जाति को कृतार्थ करें।

१—सार्वदेशिक सभा का वहैसियत यूनिवर्सिटी तमाम गुरुकुलों पर पूरा अधिकार हो और वह अपनी विद्यासभा की मार्फ़त उन के लिये तालीम के कोर्स तय्यार करे, और उन के लिये उनकी आमदनी के मुआफ़िक हर साल बजट मन्जूर करे और उनको उस बजट के मुआफ़िक ब्रह्मचारियों को दाख़िल करने की इजाज़त दे।

२—हर प्रतिनिधिसभा अपने प्रान्त में अपनी आमदनी के मुआफ़िक और सार्वदेशिक सभा की हिदायत पर अपने विद्यालय के लिये नये ब्रह्मचारियों को दाख़िल करे और उस विद्यालय में सिर्फ १० श्रेणी तक पढ़ाई का इन्तज़ाम करे।

३—सार्वदेशिक सभा सिर्फ महाविद्यालय का इन्तज़ाम करे और उस के लिये हरएक प्रतिनिधिसभा से हिस्से मुनासिब खर्च के लिये रुपया ले और उसी आमदनी के मुनासिब हरएक प्रतिनिधिसभा के ब्रह्मचारी उस महाविद्यालय में लिए जावें।

४—गुरुकुल कांगड़ी की इमारत सार्वदेशिकसभा की जायदाद करदी जावे, क्योंकि उस में संयुक्त प्रान्त आदि का रुपया अधिक लगा है और चूंकि आर्यसमाज का काम सार्वभौमिक है इस लिये श्री आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब को भी खुले दिल से उस जायदाद को सार्वदेशिकसभा को दे देना चाहिये, ताकि गुरुकुल की स्कीम पूरी हो सके।

५—तमाम इम्तहान सार्वदेशिकसभा की ओर से लिये जावें।

६—जो ब्रह्मचारी किसी गुरुकुल की जल वायु आदि के कारण या किसी अन्य मुख्य कारण से एक गुरुकुल से दूसरे गुरुकुल में जाना चाहे तो वह सार्वदेशिकसभा की आज्ञा से गुरुकुल बदल सकता है।

आपका—
बालकृष्ण
अध्यक्ष—बाली एन्ड कम्पनी
चांदनीचौक, देहली।

—०—

CC0. Gurukul K...

संसार समाचार पर टिप्पणी।

आर्यसमाज सरगोधाका वार्षिकोत्सव २९,३० सितम्बर के स्थान में ३,४,५ अक्टूबर को होगा। उपमंत्री महाशय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी तथा श्री स्वामी सत्यानन्द जी को निमन्त्रण देते हैं।

श्री [illegible] जी प्रधान आर्यसमाज मानिकपुर (प[illegible]) ने अपने पुत्र के नामकरण संस्कार [illegible] आर्यसंस्थाओं को १४॥) दान दिए वहां प्रकाश रक्षा फन्ड में भी ॥) दिए। पं० बालमुकन्द जी ने संस्कार कराके व्याख्यान दिया। उनको २) दक्षिणा में मिले। यह सब मन्त्री काशीराम जी की आज्ञानुसार छापा गया है।

कबीलपुर (ज़िला सूरत) के आर्य भाइयों ने श्रावणी के दिन इकट्ठे नए यज्ञोपवीत धारण किए और [illegible] गुरुकुल महानिधि में भेजे।

[illegible] छावनी का वार्षिकोत्सव २७,२८, [illegible] को मनाया जाना निश्चित हुआ है।

हि[illegible]सम्मेलन का जो अधिवेशन जबलपु[illegible] है, उसकी स्वागतकारिणी समि[illegible] भी खुलगई है। प्रदर्शिनी के लिए हस्त[illegible] पुस्तकें मांगी जारही हैं, विषय सूची भी [illegible] जारही है। आशा पड़ती है कि जबलपुर में सम्मेलन को अवश्यकृतकार्यता होगी। [illegible] के शिर तो जो कलङ्क का टीका लगचुका है [illegible] कोई प्रयत्न अबतक पंजाबियों की [illegible]।

[illegible] कांधला (जि० मुजफ्फरनगर) [illegible] हरिशङ्कर श्रोत्रिय ने फिर से जीवित [illegible] चौधरी हरिवंशलाल जी ने २००) [illegible] स्थानी आ० स० की भेंट [illegible] आर्य-मन्दिर का प्रवेश संस्कार मनाया गया। बृहत् हवन के पश्चात् दानी चौधरी जी का धन्यवाद किया गया। सायंकाल को भजन और उपदेश हुए।

कन्या-महाविद्यालय जालन्धर की उस छात्रा को, [illegible] भक चिकित्सा, रोग सेवा तथा गृहस्वा[illegible] परीक्षा में प्रथम रहेगी, एक रजत-पदक दिया करेंगे।

[illegible]ता के प्रसिद्ध गोभक्त महाशय हासानन्द [illegible] छपा हुआ पत्र व्यवहार भेजा है जिस [illegible]ता है कि शुद्ध दूध उत्पन्न करने के लिए [illegible] 'कलकत्ता कारपोरेशन' की ओर से यत्न होने लगा है, उस की गोशाला के लिए उक्त कारपोरेशन ने कृष्ण गोशाला सभा से १००० बीघे जमीन मांगी थी। सभा ने इस शर्त पर देनी स्वीकार की कि जो गाय वहां रहें वे कभी बूचड़ों के हाथ न बेचीजायं। यह शर्त कारपोरेशन को स्वीकार न हुई और इस लिए वह भूमि न दी जा सकी। हमारी सम्मति में अन्यप्रकार धन व्यय करने की अपेक्षा सब गोशालाएं एक नियम शृङ्खला में बन्ध कर यदि उत्तम दूध पैदा करने के काम में लगजाये तो अधिक गोरक्षा हो सकेगी।

आर्यसमाज भटिन्डा के मन्त्री श्री स्वामी सत्यानन्द जी से निवेदन करते हैं कि उनके ३,४,५ अक्टूबर के जलसे पर अवश्य पधारें।

दाजी अब्बाजी खरे बम्बई के प्रसिद्ध राज नैतिक तथा वकील के देहान्त का विचारक समाज में बड़ा शोक मनाया जारहा है। यह निष्पक्ष तथा निशङ्क जीवन व्यतीत करते रहे। यद्यपि नरम दलके राज नैतिकों से सम्बन्ध रखते थे तथा लोक-मान्य तिलक के मित्र होने के करण दो बार इङ्गलैण्ड केवल उन्हीं के मुक़द्दमों की अपील के लिए गए। २९ वर्ष से उनका राजनैतिक कांग्रेस के साथ सम्बन्ध था। हमें भी ऐसे धर्म-परायण पुरुष की मृत्युका बहुत शोक है।

वेद विद्यालय तथा दयानन्द स्कूल काशी का चतुर्थ वार्षिकोत्सव, आर्यसमाज काशी की ओर से, २८ अगस्त के मध्यान्होत्तर टाउनहाल में मनाया जावेगा। गुरुकुल विश्वविद्यालय के उपाध्याय श्री पं० बाकृष्ण एम० ए० सभापति का आसन ग्रहण करेंगे।

वैदिक-विवाह—गत २० अगस्त रविवार को गुरुकुल वृन्दावन के अध्यापक पं० शंकर जी का विवाह गुर्जर प्रान्तान्तर्गत यवला (नासिक) निवासिनी श्रीमती जानकी देवी से हो गया। वर-वधू की आयु यथा नियम २५ और १६ वर्ष की है। जिस प्रकार महाशय शंकर जी संस्कृत के विद्वान् हैं उसी प्रकार जानकी देवी जी की भी उस में अच्छी गति है। उन्होंने भी व्याकरण और साहित्य का खूब अनुशीलन किया है। यह विवाह गुणकर्मानुसार हुआ है। वर ब्राह्मण वंशोद्भव और बधू वैश्यकुलोत्पन्ना हैं। दोनों को विद्या, सुशीलता और सच्चरित्रतादि गुणों के कारण ब्राह्मण वर्ण दिया गया।

कन्या के पितादि उसे मथुरा ले आये थे। अतः विवाह कृत्य मथुरा के आर्य्यमासज-मन्दिर में सम्पादित हुआ। संस्कार के समय गुरुकुल के अध्यापक गण, श्री मुख्याधिष्ठाता जी, श्री पं० घासीराम जी एम० ए० एल० एल० बी०, श्री बा० मदनमोहन सेठ M.A. L. L. B. आदि सभा के अधिकारी तथा अन्तरंग सभासद उपस्थित थे।

संस्कार की समाप्ति पर श्री पं० घासीराम जी तथा श्री बा० मदनमोहन जी सेठ ने बधू को एक स्वर्ण मुद्रिका और एक रशमी साड़ी प्रदान की। पश्चात् कन्या और वर पक्ष की ओर से दान दक्षिणा देने के पश्चात् वैवाहिक कार्य्य पूर्ण हुआ।

बिजनौर ज़िले से पं० शंकर जी के पिता भाई तथा अन्य पारिवारिक जन सम्मिलित हुये थे। किसी प्रकार की प्रतिकूलता न थी। हम चाहते हैं इस प्रकार के विवाह संस्कार अधिक संख्या में होने लगें जिससे पुनः वर्णों की ठीक ठीक व्यवस्था हो जाय। (आर्यमित्र से उद्धृत)

"आर्य्यसमाज स्यालकोट का वार्षिकोत्सव ता० २७, २८ और २९ अक्टूबर सन् १६ ई० तदनुसार १२,१३ और १४ कार्त्तिक सं० १९७३ वि० शुक्र, शनि और रविवार का होगा"।

भारती पाठशाला कानपुर के लिए दो अध्यापकों की आवश्यकता है एक तो ऐसे जो संस्कृत की मध्यमा परिक्षा कम से मक दो खण्ड उत्तीर्ण हो और साथ ही हिन्दी मिडल भी पास किया हो तथा ट्रेन्ड भी हो। दूसरे ऐसे जिन्होंने हिन्दी साहित्य सम्मेलन की मध्यमा परीक्षा संस्कृत अथवा अंग्रेज़ी लेकर पास की हो—वेतन योग्यतानुसार मिलेगा—और आर्य्यसामाजिक को विशेषता दी जावेगी, प्रार्थना पत्र प्रशंसा पत्र सहित निम्न पते पर आना चाहिए।

डाक्टर फकीरेराम—मन्त्री
भारती पाठशाला समिति—
नई सड़क—कानपुर

वैदिकधर्म महोत्सव-वा-धार्मिक-मेला। प्रत्येक धर्म्मभक्त सज्जन को यह सुन कर अतिप्रसन्नता होगी कि दानापुर का प्रसिद्ध धार्मिक मेला अर्थात् आर्य्यसमाज दानापुर का वार्षिकोत्सव इस वर्ष आश्विन शुक्ल ४, ५, ६ ता० १, २, ३ अक्टूबर सन् १९१६ को होना निश्चित हुआ है। पहिल दिन प्रातःकाल में प्रार्थाना उपासना के पश्चात् वेद मंत्रों के सहित यज्ञ की शोभा देखने ही योग्य होती है। अपराह्ण में नगर के महल्ले २ भजन मंडलियों का भजन और उपदेशकों के संक्षेप व्याख्यान होंगे। ता० २, ३ अक्टूबर को प्रातःकाल तथा सायंकाल में प्रसिद्ध २ साधु, सन्यासी, पंडित, प्रोफ़ेसर और अन्य विद्वानों के विचार पूर्ण गंभीर व्याख्यान और बीच २ में भजनीकों के उपदेश पूर्ण मनोहर भजन होंगे।

स्त्रियों के डेरे तथा परदे का भी प्रबन्ध किया गया है। पूरा कार्य अगले अंक में उपस्थित करूंगा।

दानापुर आर्यसमाज ता० १६—२—१६— { निवेदक रामप्रताप उप मन्त्री

आर्यसमाज बुलन्द शहर का पांचवा वार्षिकोत्सव ता० २७, २८, २९ और ३० अक्टूबर १६ ई० तदनुसार कार्त्तिक शुक्ला १, २, ३ और ४ को मनाया जायगा। उत्सव के साथ ही कन्याओं की दस्तकारी की प्रदर्शिनी भी गत वर्षों के अनुसार होगी। तथा उपहार भी एक अच्छी राशी में दिया जायगा। यथार्थ में यह दृश्य द्रष्टव्य होता है। गत वर्षों में इस कार्य ने अच्छी सफलता प्राप्त की है।

जैन जीवदया फंड लुधियाना लुधियाना की जैन बिरादरी ने अब के साल अपने परम पवित्र पर्युषण पर्व पर एक जीवदया फ़ंड लाला मिट्ठीमल बाबूलाल के प्रबन्ध में स्थापित किया है कि इन्सान व पशु सब प्राणियों की सहायता निमित्त इस फ़ंड से यथाशक्ति लाभ पहुंचाया जाए। अतएव इन दिनों में दीनों को भुने हुए चने और पशु आदि जीवों के लिए भूसा व दाना दिया जाता है। और लोकल स्त्री हस्पताल और जंगी हस्पतालों के अन्दर इलाज़ कराने वाले बीमारों और ज़खमियों की सेवा के लिए कुछ धन भेजा गया है।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | २५ भाद्रपद सं० १९७३ वि० | दयानन्दाब्द ३३ | ता० ९ सितम्बर सन १९१६ ई० | संख्या ३२ पृ० २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है: नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं जो एक साथ खरीदने वाले को ⅔ [दो तिहाई] मूल्य पर दे दी जायगी।

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—मूल्य ।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

डाक व्यय सब का मूल्य से अतिरिक्त है।

छप रही हैं—

[२] पांच महायज्ञों की विधि

[३] आचार अनाचार और भक्ष्य अभक्ष्य

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज

[५] वेद और आर्यसमाज

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर-काङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

आर्य कन्या पाठशाला शिमला के लिए दो अध्यापिकाओं की आवश्यकता है जो मिडल और प्राइमरी तक पढ़ा सके। ट्रेंड हों तो विशेषता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार। ट्रेंड वा फैन्शनर वृद्ध पुरुष भी प्रार्थना पत्र भेज सकते हैं। प्रार्थना पत्र मन्त्री आर्य कन्या पाठशाला शिमला के नाम आने चाहियें।

—१०—

छप गया! छप गया!

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

के

श्रीमद्भगवद्गीता-रहस्य

हिन्दी अनु[illegible]

अनुवादक—पं० माधव [illegible] बी ए

पृष्ठ संख्या लगभग [illegible] सिर्फ

३) रु० डाकव्यय

सुनहले अक्षरों [illegible]

जिस ग्रन्थ ने [illegible]

और सामाजिक क्रान्ति [illegible]

है; और जिसके लिए हिन्दी-[illegible]

से उत्कण्ठित हो रहे थे, वह [illegible]

तैयार है। प्रतियां बहुत थोड़ी छपाई गई है, बहुतेरे ग्राहकों ने पहले से [illegible]

दर्ज करा लिया है; इस लिए जो [illegible]

ग्रन्थ को लेना चाहें वे, शीघ्र [illegible]

वर्ना फिर अवसर न रहेगा।

मिलने का पता:—मैनेजर

पू[illegible]

आवश्यकता

श्रद्धानन्दगुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउण्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

सुपरिण्टेण्डेण्ट

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P. O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

कुछ अपने सम्बन्ध में

मुझे कभी कोई महाशय बी.ए. लिख देते हैं और पत्र व्यवहार में प्रायः एम.ए. की उपाधि दे देते हैं। पत्र व्यवहार में तो ऐसे दयालु गुण ग्राहियों का भ्रम दूर कर देता हूं, परन्तु समाचार पत्रों के प्रत्येक लेख का खण्डन करना मेरे लिए दुस्तर है। प्रचारक के भी कई लेख बिना सम्पादक के आद्योपान्त पढ़े ही चले जाते हैं; उन में से भी थोड़े दिन हुए एक लेख में मुझे बी.ए. लिखा गया था। यद्यपि पहले भी कई बार लिख चुका हूं, परन्तु अब फिर दोहरा देता हूं कि मैं न एम.ए.हूं, न बी. ए.हूं, न एफ़.ए.हूं; मैं केवल एट्रेन्स पास हूं। मैं संस्कृत, अंग्रेज़ी, फ़ारसी—किसी एक भाषा का भी पण्डित नहीं हूं; और नही कोई विद्या विशेष जानता हूं। जो कुछ भी ज्ञान मुझे है वह "लैंग्वेज" वाला ज्ञान तथा भाषा की योग्यता कह सक्ते हैं। इस लिए मुझे सादा "मुंशीराम" कर के ही सम्बोधन किया जाया करे।

विपत्ति में भाइयों की सहायता करो

गङ्गा, यमुना की सम्मिलित बाढ़ ने प्रयाग में बड़ी हानि पहुंचाई है। ४० वर्षों से ऐसी बाढ़ कभी नहीं आई? निर्धन कई परिवार खाने से तङ्ग हैं। सेवा-सदन की ओर से बड़ी हृदय-भेधक अपील निकली है। माननीय मालवीय जी इस अपील में मुख्य भाग ले रहे हैं।

प्रयाग के विषय में तो अपील छप गई, परन्तु मुझे पता लगा है कि अन्य कुछ नगरों तथा ग्रामों की सहायता की आवश्यकता होगी। मेरे पास पहले "विप्लव पीड़ित निधि" का एक सौ से अधिक रुपया गुरुकुल कोष में जमा पड़ा है। उस में से ५०) मैंने श्री मालवीय जी के नाम भेज दिए हैं। प्रचारक परिवार से ही नहीं, प्रचारक के सर्व पाठकों से मेरा विवेदन है कि जो कुछ भी हो सके "गु०कु० विप्लव पीड़ित सहायता फन्ड" में भेजना आरम्भ कर दें। जहां प्रयाग के सेवासदन के लिए और सहायता भेजी जा सकेगी, वहां अन्य नगरों और ग्रामों से भी विश्वस्त सज्जनों की साक्षी आने पर, वहां के दीन निर्धनों को सहायता भेजी जायगी। जिन व्यापारी तथा साहूकार दानियों के यहां दान खाते का धन जमा हो उन के लिए इस से बढ़ कर सहायता देने का और अवसर कौनसा हो सक्ता है।

जो धन इस निधि में आवेगा उस की रसीद इसी कालम में छापी जाया करेगी।

मुंशीराम जिज्ञासु, गुरुकुल भूमि
P.O. शमशपुर कांगड़ी (ज़िला बिजनौर)

गुरुकुल समाचार।

गंगा में बाढ़ इस वर्ष बहुत साधारण आई है। कलकत्ता और काशी प्रयाग और हमीरपुर—सर्व स्थानों से गङ्गा और यमुना दोनों की भयावनी बाढ़ों के समाचार मिल रहे हैं और साथ ही गुरुकुल का कुशल समाचार पूछा जारहा है। गुरुकुल भूमि में भी वर्षा बहुत हो रही है परन्तु इस वर्ष गङ्गा बहुत कम बढ़ी है। यहां किसी प्रकार की चिन्ता नहीं। ऋतु बड़ी मनोहर है। वर्षा नित्य हो जाती है। अन्दर कम्बल लेकर सोते हैं।

गंगोत्री के यात्रियों का समाचार आता रहा है। २५ अगस्त को उत्तर काशी पहुंचे थे २ सितम्बर को उत्तर काशी में लौट आए होंगे। आज कल में ही लौटने वाले होंगे।

नई यात्रा की तय्यारियां हो चुकीं—पं० यज्ञदत्त तथा, पं० चन्द्रमणि विद्यालङ्कार बम्बई से लौट आए। पं० यज्ञदत्त, मुख्याध्यापक सुखराम जी तथा स्नातक बुद्धदेव विद्यालंकार विद्यालय की ८,९, १० श्रेणियों को लेकर पर्वत यात्रा के लिए चकौते जा रहे हैं। इन श्रेणियों के कुछ ब्रह्मचारियों की अवशिष्ट परीक्षा रहती थी जो हो चुकी। इन की साहित्य संजीवनी और साहित्य सम्वर्द्धिनी सभाओं के जन्मोत्सव भी होचुके जिन्हें दोनों सभाओं ने बड़े समारोह से मनाया। दोनों ने अभिनय द्वारा प्राचीन काल के क्षत्रियों के वीरता-पूर्ण इतिहासों की झलक दिखलाई।

गुरुकुल को आर्थिक सहायता जैसी आनी चाहिए वैसी नहीं आती। ब्रह्मचारियों के संरक्षकों की ओर से तो सहायता आरही है। प्रचारक के गताङ्क में पिछला जोड़ भूल से ११९५) छपगया था—असल में २१९५) था। गताङ्क में एक एक सौ की चार रक़में और लिखी गईं। इस प्रकार जोड़ २५९५) हो गया था। इस बार अभी तक श्री ला० विष्णुदास जी साहूकार, प्रधान आर्यसमाज श्री गोविन्दपुर के भेजे २५०) और आये हैं—अर्थात् कुल जोड़ २८४५) हुआ है। मुझे आशा थी कि संरक्षकों से १०,०००) अवश्य ही आजावेंगे। अब भी निराश नहीं हूं, शायद सितम्बर में अधिक धन आजावे।

पटियाला से श्री उपाध्यक्ष रामदेवजी के डेपुटेशन ने ५५०॥=) वसूल किए थे, और अब उनका डेपुटेशन क्वेटे में काम कर रहा है। गुरुकुल में तो किसी प्रकार की सूचना नहीं आई परन्तु "प्रकाश" लाहौर के सम्पादक महाशय ने अपने गताङ्क में लिखा है कि उनके पास जो निजी पत्र आया है उस से ज्ञात हुआ है कि १०००) तक नकद गुरुकुल के लिए क्वेटे में जमा हो चुका है और शेष की आशा है।

उपाध्याय इन्द्रादि ने बम्बई में कुछ टोहली थी और बड़ौदे में भी कुछ यत्न करना चाहा था। एक तो इस समय दोनों नगरों से बड़े दानी अनुपस्थित थे और दूसरे दोनों स्थानों में विरोधी शक्तियां बड़े ढंग से काम कर रही हैं, इस लिए वहां से कुछ नहीं किया गया। तिस पर भी २४ अगस्त की शाम को उपाध्याय इन्द्र को तेज़ ज्वर होगया और सन्देह टाइफ़ाईड का हुआ। तार आते ही डा० सुखदेव आठ दिनों का आकस्मिक अवकाश लेकर चले गए। १ सितम्बर को तार यहां पहुंचा कि ज्वर उतर गया और ५ सितम्बर को डाक्टर सुखदेव उन्हें लेकर गुरुकुल भूमि में पहुंच गए। यदि यह विघ्न न पड़ता तो शायद इन की भिक्षा मण्डली भी कुछ काम कर सक्ती। इस प्रकार सिवाय इन के कि उपाध्यक्ष श्री रामदेव जी दो तीन हज़ार कर लावें और कहीं से कुछ आने की आशा नहीं प्रतीत होती। श्री बालकृष्ण जी कलकत्ते गए, जहां शायद कुछ कर सकें। मैंने यह सब इस लिए लिखा है कि आर्य पुरुषों को अपनी जिम्मेवारी मालूम हो जावे। स्वयम् मुफ़्त में भ्रमण करके धन एकत्र करने की शक्ति पहले ही नहीं थी, अब गुरुकुल का स्थानीय काम भी इतना विस्तृत है कि बिना १२ से १४ घन्टों तक निरन्तर काम किए समाप्त नहीं होता; इस लिए यदि मैंने बहुत निभाया तो आगामी वार्षिकोत्सव के अन्त तक काम कर सकूंगा। इससे आर्य-जनता को सचेत करना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। आर्य प्रतिनिधि की अन्तरङ्ग सभा तथा वृहत् सभा को कई बार चेतावनी दे चुका हूं, परन्तु वहां इस पर कुछ ध्यान नहीं दिया गया।

मेरा निवेदन यह है—[१] एक बड़ा डेपुटेशन तब तक बराबर घूमना चाहिए, जब तक १५ लाख का स्थिर कोष जमा न हो जावे [२] गुरुकुल के प्रबन्ध का विस्तृत काम संभालने के लिए दो तीन दृढ़ाङ्ग, सुशिक्षित, योग्य आर्य पुरुष आगे आने चाहिएं। गुरुकुल की वर्त्तमान कृतकार्यता सदेह अपील कर रही है, भगवान ने जिन्हें शक्ति दी है उन्हें सुननी चाहिए।

मुन्शीराम जिज्ञासु

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

कितने अवसर बिसार दिए!

कहानी लोक प्रसिद्ध है कि एक बार शहंशाह अकबर ने बीरबर से कहा कि जब वह हिन्दुओं के सब सिद्धान्त मानते हैं तो उन्हें हिन्दू क्यों न बना लिया जाय। बीरबर ने, अपनी लोक-प्रसिद्ध प्रकृति के अनुसार, उत्तर के लिए चार दिनों की मोहलत मांगी। जब तीन दिनों तक दर्बार से बीरबर को अनुपस्थित पाया तो उस का पता दर्बारियों से पूछा। एक ने बतलाया कि तीन दिनों से बीरबर यमुना तट पर कुछ क्रीड़ा किया करते हैं। बीरबर का बिछोड़ा अकबर के लिए असह्य हो जाता था क्योंकि वह बीरबर के वाक् चातुर्य पर मोहित था। बादशाह सलामत स्वयम् यमुना तट पर पधारे। देखते क्या हैं कि बीरबर एक गधे को साबुनादि से खूब मलमल के धो रहा है। अकबर ने हंस कर पूछा—"यह क्या मसख़रापन कर रहा है।" उत्तर मिला—"जहां-पनाह! इस गधे को घोड़ा बना रहा हूं।" बादशाह सलामत बोले "अबे-बेवकूफ! कहीं गधा भी घोड़ा बना है?" हाज़िर जवाब बीरबर ने कहा "तब बादशाह सलामत! कभी मुसलमान भी हिन्दू बना है?" विदूषक का भन्डेलापन तो यह चल गया, परन्तु यह कोई उत्तर न था; क्योंकि गधे और घोड़े में जातीय भेद है और मुसलमान और हिन्दू एक मनुष्य जाति के सभ्य हैं।

बीरबर का वह २०० वर्ष पुराना उत्तर अब तक आर्य जाति के संकुचित विचारों का उदाहरण है। यदि उस समय अकबर को आर्य जाति में मिला लिया जाता तो न औरङ्गज़ेबी ज़माना आता और न भारत की वह दुर्दशा होती जो आचारहीन मुग़ल बादशाहों के नीचे रहने से हुई। और न जाने उस वीरता का पग उठाने पर आज संसार ने कैसा पलटा खाया होता! वह अकबर जिस ने अपने सारे जीवन में पक्षपाती मुहम्मदी मत से किनारा रक्खा, अपनी मृत्यु के समय मुहम्मदी मुल्ला को बुलाकर 'कलमा' पढ़ता है; क्योंकि आर्यजाति के संकुचित विचार रखने वालों ने उसे धर्म भाई मान कर अङ्गीकार न किया। जो बर्ताव, आर्य सभ्यता की कुंजी बरदार, आर्य्य जाति ने अकबर के साथ किया था वही बर्ताव उसका अब तक विदेशी हित चिन्तकों के साथ जारी है। आर्य सभ्यता के पुराने आदर्श पर मोहित होकर कितने भद्र-पुरुष बाहर से मातृ भूमि (भारत) के सेवक बन कर आए, परन्तु आर्यजाति ने उन को अपने से दूर ही रक्खा और अन्त को वे, प्रबल इच्छा रखते हुए भी, भारतमाता की वह सेवा न कर सके जो हम में मिल कर वे कर सक्ते।

अकबर के मन्तव्य।

अकबर के मन्तव्यों का (जिन्हें वह दिन रात कर्त्तव्य में लाता था) वर्णन पढ़कर कौन इनकार कर सक्ता है कि वह एक आदर्श आर्य सुधारक था। सय्यद महम्मद-लतीफ़ ने जो आगरा का वर्णन किया है, उस में उन्होंने अकबर का इतिहास, उस के समय के मूल ग्रन्थों में से दिया है। लतीफ़ महाशय के उस ग्रन्थ से उद्धरण देकर यह दिखलाना बहुत सुगम है कि अकबर मुसलमान वा हिन्दू साम्प्रदायिक न था, प्रत्युत शुद्ध आर्य धर्म के समीप पहुंचा हुआ था।

अकबर को हिन्दू धर्म के सिद्धान्त पैत्रिकदाय से ही मिले थे। अकबर गर्भ में ही था जब उस के पिता हुमायूं को अमरकोट के राजा रणप्रसाद की शरण लेनी पड़ी। उसी अमरकोटाधीश के घर में १५ अक्टूबर १५४२ ई. के दिन अकबर का जन्म हुआ। हुमायूं यहां तक उदार हो चुका था कि वह चित्तोड़ के राणा उदयसिंह की माता कर्णवती का "रक्षाबन्ध भाई" बना था, और उसे बहादुरशाह के विरुद्ध सहायता भी दी थी, इस लिए यह स्वाभाविक बात थी कि अकबर के अन्दर हिन्दुओं से घृणा न हो।

अकबर को सब से पहले "क़यामत के मसअले" पर सन्देह हुआ। "उसने क़यामत के मसअले को जवाब दे दिया और पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास स्थिर किया। इस लोकोक्ति का वह दिल से अनुमोदन करता था कि 'कोई भी ऐसा मन नहीं है जिस में जीवात्माओं के पुनर्जन्म के सिद्धान्त ने दृढ़ता से जड़ न पकड़ी हो' ब्राह्मण इस सिद्धान्त के समर्थन की साक्षी के लिए पुस्तकें रखते थे" (पृ० २१०) "वह पुनर्जन्म से विरुद्ध सज़ा ज़ज़ा से इनकारी था".....पीरों और पीरों के मोजज़ों के विरुद्ध था; और जिन्नों, फ़िरिश्तों तथा अदृश्य जगत के वासियों के अस्तित्व से इनकारी था [पृ० २०१] अकबर के समय गायत्री मन्त्र में सूर्य की उपासना का विधान ही समझा जाता था, इसी लिए "शीमान सब से बड़े प्रकाश सूर्य की पूजा करते थे जिस की, शेष सब प्रकाश, प्रजा हैं और उन्होंने सात विविध रङ्गों के वस्त्र धारण आरम्भ किए जो कि सप्ताह के विशेष दिनों पर सातों ग्रहों के रंगों के अनुसार वह पहिरते थे" [पृ० २१०] "और एक आज्ञा दीगई कि प्रातः, सायं-मध्यान्ह दिन तथा रात्री को, चार बार, सूर्य की पूजा हुआ करे। शीमान नित्य सूर्य की ओर मुंह कर के, १००१ सूर्य के नामों का संस्कृत में जप करते थे और हिन्दू चिन्ह (चन्दन) का माथे पर टीका लगाते थे। अपने मत का नाम उन्होंने तौहीदेइलाही रक्खा था और हिन्दू मुसलमान, दोनों, में से चेले बनाते थे" (पृ० १६१) "इसलामी निमाज़ संकुचित और अशुद्ध बतलाई जाकर वर्जित हुई और रोज़ों (भूखों रहने) को 'तक़लीदी' (अन्ध विश्वास) कह कर मना किया गया। ईरान के अग्नि पूजकों तथा ब्रह्मा के अनुयायियों की प्रार्थनाएं अधिक विस्तृत तथा फल दायक समझी जाकर प्रयुक्त की गईं। .....(इस तौहीदेइलाही मत के) समासद मांस भक्षण से निवृत्त रहते; अपने जन्म दिवस पर उन्हें उसके समीप आने की भी मनाही थी।" (पृ० २१३) "उसने गोमांस का खाना मने किया; उसका विश्वास था कि गाय को मारना पाप है और वह गोबर को शुद्ध समझता था। वैद्यगण अपनी पुस्तकों से यह सिद्ध करने

के लिए उद्धरण देते थे कि गोमांस स्वास्थ्य के लिए हानिकारक और बहुत सी बीमारियों का उत्पन्न करने वाला है।" (पृ० २१०) फ़ादर अक्वावा एक ईसाई पादरी था जिसने २७ सितम्बर, १५८२ ई० के एक पत्र में लिखा था—"बादशाह (अकबर) आए दिन नई बातें करके दर्बार में हल-चल मचादेते हैं। अन्य बातों में वह सूर्य और चांद सी पैदा की हुई वस्तुओं की स्तुति करते हैं और शनि तथा आदित्यवार को मांस सर्वथा छोड़ देते हैं.....(इन दिनों) प्रायः बाज़ार में मांस नहीं बिकने पाता और आदित्यवार को कुछ भी मांस खाने को नहीं मिलता" (२१४)

मांस भक्षण से तो अकबर निवृत्त हो ही गया था; ज्ञात होता है कि वह सब उत्तेजक पदार्थों से भी परहेज़ करता था—"श्रीमानों ने केवल गोमांस की शपथ डालदी है प्रत्युत लहसुन और पियाज़ और दाढ़ी को भी (जबाब दे दिया है) दिवाली के त्यौहार पर, जब हिन्दू गौ की पूजा करते हैं, बहुत सी गौएं, सजा और सुन्दर बनाकर श्रीमानों के सामने लाई जाती हैं।.....दाढ़ी मुण्डाना बादशाह की दोस्ती और प्रेम का बड़ा चिन्ह समझा जाता था और (इस लिए) यह रिवाज आम होगया। हिन्दू रसिकता के विरुद्ध सब बातें छोड़दी गईं। घन्टियों के बजाने का रिवाज भी जारी किया।"

हिन्दू विचारों के अनुकूल आचरण करने में अकबर बुद्धि से काम लेता था और निरक्षर होते हुए भी उसका कोई काम युक्ति शून्य न था—इस के लिये एक ही उदाहरण काफी है—"जंगली सुअर और चीते के मांस खाने की आज्ञा थी, इस बुनियाद पर कि खाने वाले आदमी में इन जानवरों की बहादुरी का अंश प्रविष्ट हो जायगा।" [२१६]

जल से अकबर को बड़ा प्रेम था। वह जल को अमृत समझता था; परन्तु गंगाजल पर वह मोहित था—"चाहे घर पर हों वा यात्रा में, वह गङ्गाजल का ही सेवन करता था जो कि ख़ासी हुई सुराहियों में 'सारन' से आता था जो कि गंगा तट पर सब से समीप स्थान था जबकि दर्बार आगरे में वा फ़तहपुर में होता; और गंगातट से जल भेजने के लिए विश्वासपात्र मनुष्य नियत थे। श्रीमानों का भोजन वर्षा के जल से बनता था अथवा यमुना वा बिनाब से लाए हुए जलसे (जब बादशाह पंजाब में होते) परन्तु थोड़ा गङ्गाजल उस में अवश्य मिलाया जाता"। (पृष्ठ २२३)

"अकबर अपने भोजन में त्यागी तथा अल्पाहारी था। वह मांस को त्यागे हुए था और उसे हाथ लगाए बिना उसे महीनों बीत जाते थे। वह प्रायः चावल दूध और मिठाई पर ही गुज़ारा करता था और २४ घंटों में एक बार से अधिक भोजन नहीं करता था।" (पृ० २२२)

अकबर के दयालु स्वभाव का एक उदाहरण देकर लेख के इस भाग को समाप्त करता हूं—"सं० १५८० ई० में ऐसा हुआ कि जब अकबर 'दस्तर ख़ान' पर बैठा था तो उसे एक विचार सूझा—(वह यह था) कि जहां मैं भोजन का आनन्द ले रहा हूं वहां बहुत से भूखे मनुष्य होंगे जिन्होंने इसी भोजन को अत्यन्त लालसा से देखा होगा। इस पर ऐतिहासिक (मिर्ज़ा निज़ामुद्दीन अहमद) पूछता है—"तब कैसे खामख्वाह था जब भूखे भोजन से वंचित थे?" उसी समय उस (अकबर) ने आज्ञा दी कि जो भोजन उस के लिए बने उस में से पहले भूखों को खिलाया जाया करे और पीछे उसके सामने परसा जाय। मालूम होता है कि बिना जाति और मतभेद के उसकी दया सब ओर विस्तृत थी।"

परन्तु क्या अकबर केवल प्रचलित हिन्दू सिद्धान्तों का पोशक ही था? वह केवल अपने अपनाए हुए हिन्दूधर्म का ही सुधारक न था प्रत्युत मुहम्मदी मत का भी संशोधक था।

जहां मद्य को मनुष्य के लिए हानिकारक समझ कर वह उस की त्याज्य वस्तुओं में गणना करता था, वहां "शराब की इजाज़त थी यदि वह (शारीरिक) बल बढ़ाने वा वैद्य की आज्ञानुसार दी जावे।" अपनी माता की मृत्यु पर अकबर ने स्वयम् मूछ दाढ़ी मुण्डवा डाली; तब सब मुसलमान दर्बारियों ने भी उसका अनुकरण किया। और तब से ही दाढ़ी मुण्डवाने की प्रथा चली। अकबर का पुत्र जहांगीर और पोता शाहजहां भी दाढ़ी मुण्डवाते रहे। दाढ़ी की प्रथा, फिर से, कट्टर औरङ्गज़ेब ने प्रचरित की। अकबर से पहले मुसलमान बादशाहों ने हिन्दुओं के लिए भी महम्मदी शर ही चलादी थी, अकबर ने उदार हिन्दू नीति के अनुसार यह आज्ञा दी कि हिन्दुओं के झगड़ों का फैसला विद्वान ब्राह्मण शास्त्रानुसार किया करे और मुसलमानों का महम्मदी क़ाज़ी। मुसलमानों में सूद का लेना भी बादशाह ने जायज़ क़रार दिया।

शुद्धि का महकमा भी अकबर ने खुला जारी कर रक्खा था। जो हिन्दू लुटपन में बलात्कार से बिना समझे, मुसलमान बनाए गए थे, युवा होने पर उन्हें अवसर दिया जाता था कि अपने कुलमें लौट जावें। "किसी मनुष्य को भी उस के मन्तव्य के कारण छेड़ा नहीं जा सक्ता था। प्रत्येक को स्वतन्त्रा प्राप्त थी कि अपना पैत्रिक मत छोड़ कर अपनी इच्छा और सुगमता के अनुसार दूसरा मत ग्रहण कर ले। यदि कोई हिन्दू स्त्री किसी मुसलमान के प्रेम से मत परिवर्तन करती तो उसे ज़बरदस्ती उन के क़ब्ज़े से ले कर उस के परिवार के सपुर्द किया जाता। इसी प्रकार यदि कोई मुसलमान स्त्री का किसी हिन्दू से प्रेम हो जाता था तो वह हिन्दुओं में शामिल होने से रोकी जाती।" [पृ० २१८,२१९] अकबर की इस व्यवस्था की ओर उन आर्य-नाम-धारियों को, ध्यान देना चाहिए, जो वर्मा के व्यभिचार पर शुद्धी और विवाह का ठप्पा लगा कर समाचार पत्रों में अपने यश के गीत गवाते हैं।

"अकबर हिन्दुओं के इस रिवाज के विरुद्ध था जिस के अनुसार एक आदमी को उस स्त्री के साथ विवाह में जोड़ दिया जाता है, जिसे उस ने कभी देखा नहीं और न जिसका सत्संग किया है। उसका मत था कि विवाह को धर्म सम्मत बनाने के लिए उचित है कि वर और वधू

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की परस्पर सहमति हो; और यदि वे नाबालिग़ हों तो उन के माता पिता की अनुमति हो। जब तक वर वधू अपने बुरे भले के समझने योग्य न हो जावें वह (अकबर) उन का विवाह उचित नहीं समझता था....." संसार में सदाचार की दृढ़ता के लिए अकबर विवाह को अत्यन्तावश्यक समझता था "परन्तु विवाह करते समय मनुष्यों का उद्देश्य विषय भोग से उच्च होना चाहिए; उन के अन्दर आत्मिक सम्बन्ध प्राप्त करने की याचना होनी चाहिए और यह तभी हो सकता है जब दोनों के गुण, कर्म मिल जायं।"

बाल विवाह के विरुद्ध अकबर ने क़ानून बनाया। १६ वर्ष की आयु से पहले लड़की का तथा १८ वर्ष की आयु से पहले लड़के का विवाह न होने पावे। बहु विवाह के वह विरुद्ध था। "गर्भवती, बूढ़ी, बांझ वा अत्यन्त बाला स्त्री के साथ संभोग का निषेध था।" सती के रिवाज के विषय में यह क़ानून था कि बलात्कार से किसी स्त्री को न जलने दिया जाय; परन्तु उस की स्वतन्त्रता को रोका न जाय।

कहां तक लिखा जाय। यदि अकबर का आर्यजाति में प्रवेश हो जाता तो इस देश की काया ही पलट जाती। फिर ५१ उपनिषदों का फ़ारसी में अनुवाद कर के उन्हीं के उपदेश को अपने जीवन का आधार मानने वाला और ब्रह्मविद्या (उपनिषद्) के आगे सारे युरप का शिर झुकवाने वाला दारा-शिकोह ही शायद अकबर की डाली हुई बुनियाद पर एक उदार राष्ट्र का महल खड़ा करता—परन्तु, इस अभागे देश के निवासियों ने अभी कर्मफल भोगना था! हा, कितने अवसर विसार दिए! आर्य सन्तान! क्या अब भी न चेतोगे?

फंस जाल में अट्ठ के
समझते हैं हम बढ़े!

भारत निवासी बढ़ रहे हैं, जागृति हो आई है, जीवन आगया है—युवा भारत की घोषणा आकाश में गूंज उठी है। यह सब ठीक है, परन्तु इसी जोश में शत्रु अपना काम कर रहे हैं। लखनऊ के मुसलमान चाहते हैं कि श्रीमति एनीबेसेन्ट कांग्रस के सभापति के आसन पर बैठें। वे ऐक्यता के नाम पर अपील करते हैं, तब प्रसिद्ध जहांगीराबादी संशोधन को क्यों नहीं लौटा लेते जिस से हिन्दू-मुसलमानों का वैमनस्य सर्वथा निर्मूल हो जाय। लखनऊ का युवक दल समझता है कि अपने वृद्धों का अपमान कर के श्रीमति एनीबेसेन्ट को सभापति बना वे स्वराज्य प्राप्त कर लेंगे। परन्तु जिस जनता के लिए स्वराज्य की याचना करनी है यदि उसी को तुम सन्तुष्ट न कर सके तो तुम्हें स्वराज्य कौन देगा। भीखमंगों का ऐंठना भी भारत वर्ष में ही देखा जाता है। यदि भीख मांगनी है तो नरम गरम दल में फिर क्या भेद है? और यदि है भी तो नरम दल वाले अधिक बुद्धी की बात कहते हैं। जब अपने हाकिमों से भीख ही मांगनी है तो उन के आगे झुक कर चलो। हमारे हाकिम बतलाना चाहते हैं कि सारी भलाई सिविल-सर्विस के आगे शिर झुकाने में है। यदि उस के विरुद्ध कोई चले तो गोरा चमड़ा भी उस की रक्षा नहीं कर सकता।

ऐनीबेसेन्ट की २०००) की ज़मानत ज़प्त हो गई। इस से बढ़ कर गवर्नमेन्ट और वाइसराय के विरोध में इङ्गलिशमैनादि पत्र लिख चुके हैं, परन्तु उन्हें कोई पूछता नहीं कि तुम्हारे मुंह में कितने दान्त हैं। तब देवी बेसेन्ट पर बज्रपात इसी लिए आवश्यक है कि उसे शिक्षा दी जाय कि गुलामों की हिमायत का यह फल है। जिन ऐङ्गलोइन्डियन अखबारों को भारतीय युवक अपना शत्रु समझते हैं वे वर्त्तमान अनैक्यता को देख कर प्रसन्न हो रहे हैं।

इस समय चाहिए क्या? यदि भीख ही मांगनी है तो नैशनल पार्टी को भी नरम दल के वृद्ध राज नैतिक नेताओं के पीछे लग कर श्री बाबू अम्बिकाचरण मोज़मदार को अपना लीडर बना "साम्राज्य के भीतर स्वराज्य" मांगने के लिए 'अलख'जगानी चाहिए। परन्तु यदि वे सच्चे नैशनैलिस्ट हैं तो 'गदा-गरी' को छोड़ भारत-वर्ष में विद्या और ब्रह्मचर्य का प्रचार करने में लगना चाहिए। जब कौन्सलों के संशोधन ने तुम्हारा परस्पर का वैमनस्य इतना बढ़ा दिया है तो न जाने भीख में दिया हुआ 'साम्राज्य में स्वराज्य' तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर के कहां फेंकेगा?

गुरुकुल का संशोधित पुस्तकें

आज कल आर्य जातीय समाचार पत्रों में बम्बई युनिवर्सिटी की खूब ख़बरली जा रही है कि वहां के एफ़० ए० क्लास-की पाठविधि में ऋतु संहार सी अश्लील पुस्तक को स्थान दिया गया है। सरकारी युनिवर्सिटियों में संस्कृत, अरबी, और फ़ारसी की पाठविधियों के साथ ऐसा वर्ताव होता ही रहता है। मैं जातीय शिक्षणालयों के संचालकों की सूचना के लिए लिखता हूं कि गुरुकुल में संस्कृत की पंचतन्त्र, रघुवंशादि पुस्तकों के संशोधित संस्करण निकाले गए हैं जिन में से अश्लील भाग सर्वथा दूर कर दिया गया है। यदि पुस्तकों का अभाव ही सरकारी शिक्षणालयों के कार्यकर्त्ताओं से ऐसी अनुचित कार्यवाही कराता हो तो मांग आने पर गुरुकुल से सब काण्डों के संशोधित संस्करण मुद्रित कराए जासक्ते हैं।

उषा का नया अङ्क।

'उषा' मासिकपत्रिका दो वर्ष से निकल रही है। गत वर्ष की समाप्ति पर तो इसे बन्द करने की ठन गई थी परन्तु अब गुरुकुल के ब्रह्मचारियों तथा संस्कृत के अध्यापकों ने फिर से इस में नई जान डालनी आरम्भ कर दी है। वैशाख-ज्येष्ठ का अङ्क सामने पड़ा है। लेख उत्तमोत्तम हैं। चार पृष्ठ श्लोकों के शिक्षाप्रद तथा मनोरञ्जक है। छः पृष्ठों में सम्पादकीय विचार बड़ी सरल भाषा में निकले हैं। साहित्यालोचक के अधिकारों का वर्णन बड़े गौरव का है। शेष नोट भी मर्मज्ञ हैं। उस से आगे भवभूति की आलोचना साहित्य प्रेमियों के पढ़ने योग्य है। फिर पण्डित कन्हैयालाल जी शास्त्री, सांख्यतीर्थ के शास्त्रीय विचार बड़ी रङ्गीन भाषा में निकले हैं। विद्यालंकार जयदेव स्नातक की अवतार मीमांसा युक्ति पूर्ण है। फिर बाल शिक्षण विषय में तीसरा पाठ बड़ा सरल है।

यह पाठ क्रम पं० हरिश्चद्र विद्यालङ्कार ने आरम्भ किया था जो उनके विदेश जाने पर रुक गया था। इस पाठ में मातृ-भूमि को नमस्कार पूर्वक बड़े हृदय बेधक शब्दों में सम्बोधन किया गया है। अन्त में श्री पं० कन्हैयालाल जी की ओर से मातृभूमि की वन्दना है। आर्य जनता को इस मासिक पत्र के ग्राहक अवश्य बनना चाहिए। वार्षिक मूल्य केवल १।) है।

बुरे भले सभी जातियों में हैं।

कर्ण कविने श्री कविनाथूराम शङ्कर के, अपने पूज्य गुरु श्री स्वामी सर्वदानन्द पर, तीव्र कटाक्ष देख कर, एक बहुत ही-लम्बा लेख भेज दिया। उसका कुछ भाग आरम्भ करके उसको रोकना उचित न समझा गया, इस लिए वह सारा लेख निकल गया। लम्बा लेख पहले से पढ़ने को समय नहीं मिला, इस लिए एक ऐसा वाक्य भी चला गया जिस में सारी ब्राह्मणजाति पर अनुचित कटाक्ष था। उस पर श्री पं० शालिग्राम शर्मा जी का ब्रह्मतेज जाग उठा और उन्हों ने लेखक को आड़े हाथों लिया। उन का लेख ज्यों का त्यों प्राप्त पत्रों में छाप दिया गया है। ज्ञात तो यही होता है कि कवि कर्ण का असली तात्पर्य सारी ब्राह्मण जाति पर लांछन लगाने का न था क्यों-कि उन के गुरु (जिन की मान-रक्षा में लेख लिखा गया) महाराज का भी जन्म ब्राह्मण कुल में ही हुआ था, परन्तु फिर भी श्री शालिग्राम जी का लेख देने से दूसरे पक्ष की शान्ति भी हो जायगी।

एक भ्रम मैं दूर करना चाहता हूं जो न जाने क्यों फैल रहा है। न सभी ब्राह्मण कुलोत्पन्न मक्कार हैं और न सभी रजपूत, खत्री, बनिए स्वच्छ हृदय के हैं। जितने भजनीक टका पंथियों की शिकायतें निकलती हैं उन में "सिंह" कइयों के नामों के साथ लगा रहता है। तब क्या सभी रजपूतों को धोखाबाज़ टका पन्थी समझें। एक जाटने शाखागुरुकुल कुरुक्षेत्र के नाम पर अपील कर के सैंकड़ों रुपये ग़बन किए। पता लगने पर उस का कुछ भाग उस से उगलवाया गया। क्या इस लिए रोहतक, कर्णाल, दिल्ली आदि प्रान्तों के सहस्रों कृषिकार आर्यों की उदारता और दान शीलता पर पानी फिर सका है? आर्य्यसमाज में आकर सब आर्य भाई हैं, यदि उन में से किसी ने निषिद्ध काम किया तो वह पतित होगा; उस के सम्बन्धियों तथा कुल को कलङ्क नहीं लग सका।

आर्य समाज का साहित्य भी सस्ता होना चाहिए।

अहमदाबाद में एक "सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय" है। उसने छोटी तो अनगिनित पुस्तकें छाप कर बांटी हैं। उन्हीं में "नैपोलिन बोना पार्ट" और 'प्रिन्सबिस्मार्क' पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति कृत के गुजराती अनुवाद छपे हैं। बड़ी पुस्तकें भी ६ छप चुकी थी। दसवीं "श्री योगवासिष्ठ महारामायण" का दूसरा भाग है। इस में १०६७ पृष्ठ हैं। छपाई, काग़ज़ जिल्दादि अत्युत्तम और मूल्य ३) है। आर्यभाषा को राष्ट्रभाषा बनाना आर्य जाति मात्र इस समय अपना उद्देश्य मान रही है, परन्तु उस के साहित्य के प्रचार का पूरा यत्न नहीं किया जाता है। अहमदाबाद के कार्यालय को धन की बहुत सहायता मिली हुई है-ऐसा ही सही; परन्तु क्या आर्यसमाज यदि चाहे तो आर्य भाषा द्वारा अपने साहित्य का प्रचार नहीं कर सक्ता?

पुस्तक प्रचार यदि कहीं से भली प्रकार हो सक्ता है तो वह गुरुकुल विश्वविद्यालय है। उसकी "पुस्तक रचना निधि" में रोक धन तो शायद २५००) से अधिक न हो परन्तु पुस्तकें २०,०००) से कम की न होंगी। यदि १००० सज्जन एकदम से दस दस रुपयों की पुस्तकों के लिए आज्ञा पत्र भेजदें तो उक्त निधि में इतना धन एकत्र हो सक्ता है कि जो पुस्तकें तय्यार पड़ी हैं उन्हें छाप डालें और अन्य योग्य लेखकों से भी उपयोगी पुस्तकें लिखवा कर सस्ती कीमत पर फैला सके। सङ्गठन और समाज की शक्ति ऐसे समयों पर ही देखी जाती है।

उर्दू के लिए बङ्गाल में यत्न

आर्य भाषा को हम राष्ट्रभाषा कहते हैं और सिद्ध भी हो चुका है कि भारत में यही बोलचाल की विस्तृत भाषा है। परन्तु हमारे मुसलमान भाई उर्दू के लिए अब बहुत हाथ पांव मार रहे हैं। जब बम्बई में "उर्दू साहित्य सम्मेलन" की बैठक होती है जहां के मुसलमानों को उर्दू का सौन्दर्य तथा गौरव आङ्गल भाषा द्वारा समझाना पड़ता है तो कलकत्ते की 'अंजुमन ए-उर्दू' की बैठक में यदि मैसूरी टीपूसुलतान के परिवार के शाहज़ादा गुलाम महम्मद शाह उर्दू के बंगाल में प्रचार पर ज़ोर दें तो क्या आश्चर्य है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन यद्यपि अच्छा काम कर रहा है तथापि जो कठिन मार्ग उस को तै करना है उस पर ध्यान देने से ज्ञात होगा कि उस ने अभी अपने काम के गुरुत्व को नहीं समझा। जब तक हिन्दी-साहित्य की स्थाई समिति प्रत्येक प्रान्त की भाषा का अन्वेषण कर के सब प्रान्तों के समझने योग्य राष्ट्रभाषा को नहीं बना देती तब तक समझना चाहिए कि इन्होंने अपने उद्देश्य की पूर्त्ति की ओर पहला पग भी नहीं उठाया।

भारत पुत्रियों का कर्तव्य

स्त्रियों को अधिकार चेष्टा तो युरप-अमेरिका में ही नहीं, भारत वर्ष में भी हद से बढ़ गई है। पंजाब के समाचार पत्रों में तो नवीन पश्चिमीय शिक्षा के गुण गाते हुए एक महिलाने पुरुष-लेखकों को खासी झाड़ डाली थी। परन्तु पश्चिम से कुछ और ही पुकार आ-रही हैं। अगस्त के माडर्न-रिव्यू नामी मासिक में एक अमेरिकन कुमारी Freida Hauswirth का लेख छपा था जिस में उसने अपनी विद्याप्राप्ति की कठिनाइयों का इतिहास आरम्भ किया था। सितम्बर के उसी मासिक-पत्र में उस देवी ने अपनी शिक्षा की कहानी समाप्त कर के अपनी भारतीय बहिनों से एक अपील की है। यह देवी एक अमेरिकन युनिवर्सिटी की ग्रेजुएट है और ६ वर्षों से शिक्षा का काम ही करती है। इस लिए उस की अपील और भी बहुमूल्य है। वह लिखती हैं—"मैंने आवश्यकता बतलादी तुम्हारी (भारत) मात का दरिद्र प्रेरक हेतु प्रत्येक सच्ची भारतमहिला की सहर्ष इच्छा इस आवश्यकता को पूर्ण करने के लिए यथा शक्ति यत्न। यही अपना उद्देश्य बनाओ-अपने आपको इस लिए दमन करना कि सब देशों में से जो कुछ उत्तम है वही बुद्धिमता से चुनना और दृढ़ता से सुरक्षित करना जिस से भारतवर्ष में स्त्रीशिक्षा का एक बड़ा सङ्गठन होजाय यह देखना कि कहीं यह अन्य देशों का अनुकरण न हो जो उन्हीं देशों की आवश्यकताओं के अनुसार है—इस का भी ध्यान रखना कि शिक्षा-पद्धति जीवन के वास्तविक प्रयोजन तथा नैतिक आवश्यकताओं के साथ ऐसा मिला हुआ हो कि विद्यालय की शिक्षा और सामाजिक तथा गृह सम्बन्धी जीवन में बहुत भेद न पड़ जाय, जो कि पश्चिमीय स्त्रियों के जीवनों में दुख से देखा जाता है; जो कि कृतकार्यता नहीं होने देता और जिससे युवा प्रयत्नों का अनर्वचनीय नाश होता है।"

स्त्री शिक्षा के संचालकों को इस स्वतन्त्रजीवी अमेरिकन कुमारी के वचनों को ध्यान पूर्वक पढ़ना चाहिए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भद्रोद्गार।

(सोरठा)

(१)

दूर करो अभिमान धाम-धरा-धन आदिका:
मिले मित्र सम्मान, सबसे मिल जुल कर रहो॥

षट् पदी छन्द)

(२)

दया-दृष्टि से सुकवि कर्ण सबही को लखिए;
आत्मा में सद्भाव सुजनता के नित रखिए।
किसी पुरुष का हृदय न पीड़ित होने पावे:
सब से रखिए प्रीति फैल जग में यश जावे॥
है अल्प--अल्पतर आयु यह मत अभिमान बढ़ाइए,
भक्ति भवानी पर प्रेम के पुष्कल पुष्प चढ़ाइए॥

"कर्ण"

पात्र-पत्र

म० जौहरीलाल, धौलपुर–वैदिक संस्कारों पर लम्बा लेख भेजते हैं जो पुस्तकाकार छपने में ही शोभा देगा। इस लिए लौटाया गया।

श्री स्वामी योगानन्द जी— "ईश्वर निराकार मीमांसा" और "छेदों पर से पुनरुक्ति दोष की निवृत्ति" और "मोक्ष से पुनरावृत्ति" तीनों गूढ़ विषयों पर विस्तृत लेख लघु-पुस्तक रूप में ही लाभदायक होंगे। साप्ताहिक पत्र उनके लिए उचित स्थान नहीं।

श्री उदय शंकर जी, अमृतसरी—आर्यसमाज के भविष्य पर लिखते हुए तीन पदार्थ उन्नति के मूल बताते हैं—(१) भक्ति (२) दृढ़ता (३) प्रयत्न शीलता इन तीनों का आर्यसमाज में अभाव बतलाकर फिर भी आशा दिलाते हैं कि आर्यसमाज संसार का गुरु होगा; क्योंकि उसके दश नियम संसार में स्वयम् फैल रहे हैं।

महाशय सन्तलालसिंह जी—"आर्यावर्त्त" पत्र हमारे यहां परिवर्त्तन में नहीं आता बिना उक्त पत्र को देखे आपका लेख प्रचारक में नहीं छपसक्ता। उचित यह है कि आप अपना लेख आर्यावर्त्त में ही भेजें।

उपदेशक क्यों नहीं मिलते

आज आप के पत्र में उक्तशीर्षक का लेख पढ़ कर बहुत शान्ति हुई। आप अवश्य इस लेखनी को जारी रखें और अच्छी भांति उन दोषों को प्रगट करें जिन के कारण यह कमी है।

आप को ज्ञात होगा कि गत तीन वर्ष से मैं लगातार श्रीमान् मन्त्री जी से सभा के अधिवेशनों में इसी सम्बन्ध में प्रश्न पूछता रहा हूं जिसके ठीक उत्तर न देकर श्री मन्त्री जी मुझको निराश करते रहे हैं। श्री मन्त्री जी का अपने निजू पत्र में यह लिखना कि सभा के पास कोई उपदेशक बनाने का विद्यालय नहीं है गुरुकुल पर दोष लगाना है। दूसरी बात उपदेशकों का आदर सत्कार का न होना बताते हैं, उस का उत्तर भी आपने बहुत अच्छा और सच्चा दे दिया है। मुझे भी बहुत से दृश्य ऐसे ज्ञात हैं कि जहां उपदेशक महाशयों ने अनुचित बातें की हैं और समाजों से कुछ प्राप्ति भी करने की चेष्टा की है। बात असल में और है, आजकल जितने उपदेशक सभा में हैं, उन में से दो तीन को छोड़कर बाकी सब मध्यम श्रेणी के हैं। इन को शास्त्रीय ज्ञान अधिक नहीं है, जिनको समाज के प्रचार का बहुत कम ख़याल है, जो सिर्फ जीविका के वास्ते समाज में आये हुये हैं। और किसी जगह यदि उनको अधिक वेतन मिले तो फौरन भाग जावें, इसी लिए सामाजिक उन का यथा योग्य सत्कार करते हैं। मैं जानता हूं कि उन्होंने कुछ व्याख्यान रटे हुये हैं, जहां जाते हैं वहां कहदेते हैं, कुछ स्वाध्याय नहीं करते।

सभा ने कुछ भजनीक ऐसे रखे हुए हैं उनका आचार व्यवहार समाज के नियमों के विरुद्ध है। परन्तु इस का कुछ ध्यान नहीं रखा जाता।

क्या पं० पूर्णानन्द जी, पं० रामरत्न जी, या पं० परमानन्द जी आदि ने कभी किसी को वर्ताव की शिकायत की है। कभी नहीं। मेरे अपने विचार में समाजों पर मिथ्या दोष लगाना और अपनी कमियों को न देखना, मन्त्री जी को उचित नहीं है।

इस समय आवश्यकता है कि वर्तमान प्रबन्ध की खूब जांच करके ऐसे नियम बनाए जावें, जिससे योग्य उपदेशक मिल सकें।

प्रकाश के योग्य और (Graduate) सम्पादक जी ने एक छोटासा नोट पं० इन्द्र जी के लेखों के उत्तर में लिखा है। वह लेख यदि गूढ़ दृष्टि से पढ़ा जावे तो ज्ञात होगा कि यह भी चोट गुरुकुल पर की गई है? प्रकाश के सम्पादक जी गुरुकुल पर स्पष्ट चोट करते हुये डरते हैं, क्योंकि आर्य्यजनता इस बात को अच्छी नहीं समझती, परन्तु गुप्त रीति से महाशय कृष्ण जी गुरुकुल पर चोटें बहुत दिनों से कर रहे हैं।

म० कृष्ण को चाहिए था कि पं० इन्द्र जी के लेखों को पढ़ कर अपनी भूल स्वीकार करते और सभा में वेद-प्रचार के योग्य और विद्वान् अधिष्ठाता के नियत कराने का यत्न करके किसी अच्छे तरीके से काम को जारी रखते। क्या कोई भला पुरुष मन्त्री जी की इस कार्य्यवाही से प्रसन्न होगा?

म० कृष्ण को अपने दोष तो दिखाई नहीं देते। उपदेशकों से जूते उठवा कर यह आशा रखते हैं कि गुरुकुल से अब नहीं तो दो चार वर्ष पश्चात् उपदेशक मिल जावेंगे। मेरे विचार में दो चार वर्ष नहीं बल्कि हमेशा को गुरुकुल से उपदेशक नहीं मिलेंगे जब तक कि उपदेशक रखने और उन का प्रबन्ध करने की प्रणाली को न बदला जावे। यही कारण है कि अब सभा में दो तीन आर्य्य उपदेशकों को छोड़ कर और कोई विद्वान् उपदेशक नज़र नहीं आता। यदि श्रीमान् मन्त्री जी की कोई खुश-मद करता रहे तो सभा में रह सकता है, बदख़िलाफ़ इस के यदि किसी उपदेशक से सभा के कार्यलय का कर्मचारी नाराज़ हो जावे तो उस को फौरन निकाल दिया जाता है।

उपदेशकों को कोई उचित आराम नहीं मिलता। दिन रात Travelling Agent की तरह डायरी भरते रहते हैं। नतीजा यह है कि सिवाय पं० पूर्णानन्द जी के कोई शास्त्रार्थ करने को उद्यत नहीं होता।

क्या यह दशा शोचनीय नहीं हैं? क्या ऐसी दशा में गुरुकुल से उपदेशक न मिलना गुरुकुल से निराश होना है।

अब भी यदि किसी जगह योग्य उपदेशक की आवश्यकता होती है तो गुरुकुल के प्रोफ़ेसर, स्नातक और ब्रह्मचारी ही सहायता देते हैं। मेरे विचार में सर्व आर्य भाइयों को उचित है कि पं० इन्द्र जी के लेखों को पढ़ कर खूब सोच विचार कर के श्रीमती सभा में इस पर प्रस्ताव पेश कर के कोई नई स्कीम बनवा के, जिस से गुरुकुल के स्नातक अथवा योग्य पुरुष उपदेशक की पदवी पर आते हुये न झिझकें।

श्रीमान् म० कृष्ण जी को चाहिये गुरुकुल पर कलंक लगाने से कुछ लाभ न होगा; पहले अपने आप को इस योग्य बनावें, फिर शिकायत करें तो ठीक है। जूते उठाने वाले उपदेशक गुरुकुल से नहीं मिल सकेंगे।

आशा है कि श्रीमती सभा के सभासद् इस पर अवश्य विचार कर के आगामी अधिवेशन में इस पर निश्चय करावेंगे कौनसा तरीक़ा अच्छा है? म० कृष्ण जी का या पं० इन्द्र जी का।

(डाक्टर) भानाराम,
अम्बाला छावनी।

—:०:—

ब्राह्मण जाति पर निर्मूल कटाक्षों का उत्तर

गत सप्ताह के सद्धर्म प्रचारक में एक लेख किसी महाशय की ओर से 'कवि नाथूराम शंकर का अनौचित्य' विषय पर मुद्रित हुआ है, जिस में उपरोक्त कवि के दोषों को प्रगट करते हुए लिखा है कि "उक्त कवि जाति के ब्राह्मण हैं, ब्राह्मणों में ऐसे बहुत थोड़े भले मानस होगे, जो आर्य्यसमाज की अन्तः करण से यथेष्ट भलाई चाहते हों? स्वामी दयानन्द यदि जाति के ब्राह्मण न होते तो यह लोग, आर्य्यसमाज के पास तक न खड़े होते।"

यह लेख जिस में एक सारी की सारी जाति पर निर्मूल और घृणा युक्त दोष लगाया गया है मालूम नहीं आप ने इसे प्रचारक में कैसे दर्ज होने दिया। जहां तक मेरा ख़याल है आप के बिना देखे उपरोक्त लेख मुद्रित हुआ है। इस प्रकार के लेख तो किसी फक्कड़बाज़ अख़बार को शोभा दे सक्ते हैं।

पूर्व इस के कि मैं इस असत्य और असभ्यता पूर्ण लेख का उत्तर दूं, मैं स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि मैं जाति को गुण-कर्मानुसार महर्षि के बताये वेदोक्त सिद्धान्तों के अनुसार मानता हूं और नीच जाति को उच्च करने में पूर्णतया सहमत हूं और नहीं शंकर कवि के ऐसे लेखों को अच्छी दृष्टि से देखता हूं बल्के ऐसे घृणित लेखों के सर्वथा विरुद्ध हूं। मेरे ख़याल में अनौचित्य विषय पर लिखने वाले महाशय कोई ना तजुर्बाकार नौजवान प्रतीत होते हैं जहां आर्य्यसमाज का यह सिद्धान्त है कि आर्य्यसमाज कुल दुनियां के लिये है वहां एक सारी की सारी जाति पर यह दोष लगाना कि यदि स्वामी दयानन्द ब्राह्मण न होते तो यह लोग आर्य्यसमाज के पास तक न खड़े होते। कहाँ तक सत्य माना जा सक्ता है या यूं कहिये कि जितने ब्राह्मण जाति के लोग जो कि सहस्रों की तायदाद में होंगे और जो आर्य्यसमाज से प्रेम रखते तथा इस के अनुयायी हैं वह आर्य्यसमाज के सिद्धान्तों को तो अच्छा नहीं समझते परन्तु स्वामी दयानन्द, क्यों कि ब्राह्मण थे इस लिये वह आर्य्यसमाज में प्रविष्ट हुऐ। इस से मिथ्या बात और क्या होसक्ती है और भलेमानस महाशय की लेखनी ऐसे कुटिल और लज्जास्पद शब्दों के लिखते हुऐ क्यों न रुकी? एक व्यक्ति गत लेख को लिखते हुऐ एक सारी जाति पर मिथ्या दोष लगाना कौन सी सभ्यता की बात है? जिस प्रकार बच्चे आपस में लड़ते हुए माता पिता को गाली निकालते हैं यही बात भलेमानस महाशय ने की है अगर भलेमानस महाशय की बात मान लीजावे तो यह स्पष्ट है कि आर्य्यसमाज के सिद्धान्त ब्राह्मण जाति के ख़याल में जिस में कि संस्कृत के सब से अधिक विद्वान् मौजूद हैं जिस जाति ने शंकराचार्य्य, दयानन्द और अन्य ऋषियों को जन्म दिया जिस ने आर्य समाज के पं० लेखराम को दिया जिस जाति में पं० गणपति शर्म्मा स्वामी दर्शनानन्द पं० तुलसीराम से विद्वानों ने जन्म लिया और जिस जाति के अधिकतर उद्योग से हिन्दू यूनिवर्सिटी ने जन्म लिया अथवा जिस जाति के लोग अन्य बहुत सी यूनिवर्सिटियों के उच्च आसनों पर विराजमान हैं जिस ने गोखले, तिलक और मदनमोहन मालवीय जैसे देशभक्त पैदा किये अगर उस जाति के लोग आर्य्य समाज के सिद्धान्तों को दिल से ठीक नहीं मानते तो क्या इस में आर्य्य समाज के सिद्धान्तों की कमज़ोरी तो नहीं पाई जावेगी। ऐसी जाति जिस ने देववाणी को जीवित रखा जिस ने यहां क्लेश सहन कर वेदादि सत्य शास्त्रों को नाश होने से बचाये रखा और जिस जाति के लोग कई मुख्य २ समाजों में मन्त्री का कार्य्य कर रहे हैं। मसलन देहरादून, सहारनपुर, दिल्ली, बनारस आदि; तो क्या भलेमानस को ऐसे बुरे शब्द लिखते हुऐ कुछ ख़याल न आया कि जिन लोगों को वह गाली दे रहा है वह क्या ख़याल करेंगे। पहिले क्या आर्य्य समाज में कम-कशमकश है सत्य कहा है कि नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है परमात्मा ऐसे दोस्तों से आर्य्य समाज को बचाये रखे अच्छे और बुरे लोग सब जातियों में पाये जाते हैं भलेमानस महाशय को समझना चाहिये कि चन्द एक काली भेड़ों के होने से सारी जाति कभी दोषी नहीं ठहर सक्ती क्या आर्य्य समाज के दो दल ब्राह्मण जाति ने कराये थे, अथवा, लाहौर जैसी अग्रगण्य समाज का नाश किस के हाथों हो रहा है आशा है भलेमानस महाशय आयन्दा से सोच विचार कर लेखनी उठाया करेंगे—

आपका शुभचिन्तक
शालिग्राम
मंत्री आर्य्य-समाज सहारनपुर

—:०:—

आर्य समाज मुज़फ़्फ़रनगर का वार्षिकोत्सव कार्तिक कृष्णा १५, शुक्ला १, २, ३, सं० १९७३ वि० तदनुसार २६, २७, २८, २९ अक्टूबर सन् १९१६ ई० बृहस्पति, शुक्र, शनि और रविवार को समाज मन्दिर में होना निश्चित हुआ है। श्री स्वामी सर्वदानन्द तथा स्वामी अनुभवानन्द जी, मनीषी नारायणप्रसाद जी, पं० घासीराम जी एम० ए० वा० रामचन्द्र जी देहली वाले, पं० सन्तराम भोगा निवासी, और पण्डिता कुमारी लज्जावती वाइस-प्रिन्सपल कन्या महाविद्यालय जालन्धर तथा अन्य सुयोग्य उपदेशकों के पधारने की आशा है। उत्सव पर एक ज़िले मुज़फ़्फ़रनगर की कन्याओं तथा स्त्रियों की बनाई हुई दस्तकारी और सुलेख की प्रदर्शनी होगी। अनोखेलाल
मन्त्री

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम क़ादिर

गतांक से आगे

उस समय तक तेजसिंह ने इधर उधर का बहुत स्वस्थान ढूंढ चुका था। उसे कमलदेवी का कोई भी चिन्ह न मिला था। अब दिल्ली समीप थी। यह उसे असम्भव सा प्रतीत होता था कि कोई लुटेरा एक अबला को चुरा कर राजधानी के इतना समीप चला आया हो। इस लिए उस ओर अधिक बढ़ने की उसकी इच्छा नहीं रही थी। तब थोड़ी देर विश्राम कर लेना ही ठीक जंचा।

किनारे के पास से जंगल में घुसने की एक पगडंडी थी। उस से तेजसिंह जंगल में घुस गया। धूप के तपे हुए पुरुष को घनी छाया में पहुंच कर जो आनन्द आता है— उस का वे लोग ही अनुभव कर सकते हैं, जिन्हें कभी सूर्यभगवान का साम्हना करने का अवसर मिला हो। मनुष्य उस समय वृक्ष की छोटी छाया को घर की घनी और शीतल छाया से कहीं अधिक सुखदायिनी समझता है। वहां तो फिर छाया भी बड़ी घनी थी। कई गुञ्जान झुरमुटों के नीचे तो इतना सघ अँधेरा था कि तहखाने से प्रतीत होते थे। ऐसे ही एक तहखाने को ढूंढ कर तेजसिंह ने अपनी टांगों पर रोक लगाई।

इधर उधर देख दाख कर पहले उसने बैठने के योग्य स्थान चुना। वहां से कांटा लकड़ी हटा कर कुछ पत्ते इकट्ठे किए और उन्हें बिछा लिया। कोई दो चार मिनिट सांस लेने के अनन्तर वह अपनी प्यास शान्त करने के लिए यमुना के किनारे पर उतरा। यद्यपि उस ने प्रभात से एक दाना भी मुंह में न डाला था तो भी इतनी देर हो जाने से भूख मर गई थी, और यदि न भी मरी होती तो उस के पास भूख की निवृत्ति का साधन ही कोई नहीं था। पीछा करने की शीघ्रता में पेट पालना की सामग्री लाना सर्वथा भूल गया था। यमुना के तीर पर पहुंच कर हाथ मुंह और सिर धोने के पीछे तेजसिंह ने जल पान किया, और फिर झुरमुट के नीचे तय्यार की हुई पर्णशय्या पर आकर लेट गया।

थकावट और धूप के मारे आंखों में निद्रा भरी हुई थी। वह निद्रा का प्रभाव हृदय में जलती हुए आग को कुछ निबल कर रही थी। अभी तक कमलदेवी नहीं मिली। न जाने कौन पिशाच उस का हरण करके ले गया है? उस को क्या मति होगी? वह बेचारी कातर हरिणी के समान भीरू बाला क्रूर-चीते को देखकर किस प्रकार भयभीत हुई होगी? क्या उसे अब न पा सकेंगे? क्या अब उस से निराश होजायं? हाय? हमने पहले ही बलात्कार से उसे क्यों न छीन लिया?

इस प्रकार के विचार थे—जो उस थके पांदे वीर के हृदय में भी बराबर उठ रहे थे।

थोड़ी देर तक ऐसे ही विचार तेजसिंह के मन पर आक्रमण करते रहे। धीरे २ उन में विच्छेद होने लगा। पहले और दूसरे विचार के बीच में नींद का झोंका आने लगा। थोड़ी ही देर में नींद झोंकों के मध्य-विच्छेद कम होने लगे। चिन्ता के विचार भी कुछ अस्पष्ट से होने लगे। जो केवल चिन्ता थी, वह कुछ सपना सा भासने लगा। सपने में ही वसन्त के दिन की सारी घटनाएं एक २ करके आंखों के सामने से घूम गईं। कमलदेवी की खोज, शादी सवारी का आना, उसी समय आंखों का मिलना—सवारी का खड़ा होना ये सब दृश्य अस्पष्टरूप से हृदय पर से घूम गये। बायस्कोप के पात्रों की तरह चुपचाप नाटक के सारे पात्र अपना २ रङ्ग दिखा गये। शृंखला टूट गई, पर नाटक वहा रहा। सब से पहला दिन याद आया। यमुना पर शुद्ध वायु का फांकना। करुणध्वनि का सुनना और कमलदेवी का दलदल से बचाना-सब कुछ अस्पष्टरूप से सन्मुख आया। भेद थोड़ा ही रहा। यमुना के स्थान पर एक तालाब सा दिखाई दिया। दल दल के स्थान में एक कुआ था और कमलदेवी उस में आधी ऊपर आधी नीचे लटक रही थी।

ऐसे ही दृश्य देखते २ तेजसिंह को गहरी नींद ने आ दबाया। संसार के दुःख हरने वाली निद्रादेवी ने तेजसिंह के भी दुःख कुछ देर के लिए हर लिए तेजसिंह उस समय उस दुःखमय लोक में नहीं था—तब वह कहां था।

—:०:—

नवां परिच्छेद

तेजसिंह लग भग तीन घंटे सोया। जब उस की नींद कुछ २ खुलने लगी, तब उसे ऐसा भाव होने लगा, मानों वह अकेला नहीं। उस के कान में किसी दूसरे व्यक्ति का शब्द पड़ रहा था। कोई दो पुरुष परस्पर बातें कर रहे थे। तेजसिंह वैसे ही लेटा २ बात-चीत सुनने लगा। शब्द उस झुरमुट के दूसरी ओर से आरहा था। बात चीत के लहजे से प्रतीत होता था कि बात चीत करने वाले दोनों व्यक्ति मुसल्मान हैं। एक दूसरे को कह रहा था—

देखो भाई मुराद? तुम्हें मेरी सौगंद—यह बात किसी से मत कहना। कहोगे तो गुलामक़ादिर को अपना दुश्मन पाओगे। खुदा की सौगन्द खाकर कहा कि किसी से नहीं कहोगे।"

मुराद बोला—

'नहीं' जनाब! आप कोई फ़िक्र न करें। यह बात मुराद किसी को नहीं कहेगा। फ़ौलाद की दीवार को छेद कर हवा निकल सकती है, मगर मुराद के दिल को छेद कर बात नहीं निकल सकती। आप किसी तरह की चिन्ता न करें। लेकिन एक बात का ख़्याल रखियेगा। कल्याणसिंह बोलने में बड़ा मीठा है—लेकिन है पूरा शैतान का बेटा। वह जब अड़ जाता है तब मारने मरने पर उतारू हो जाता है। अगर उसे आप की हरकत से कोई शक हो गया तो बड़ी गड़ बड़ होगी।"

"तुम उस की कोई चिन्ता मत करो। ज़रा उसे मेरे पास भेज दो—मैं उस से स्वयंनिपट लूंगा। सारा काम ऐसे ढंग

से किया जायगा— जिस में वह औरत भी हमारे कब्ज़े में रहे— और कल्याणसिंह को शक भी न हो। और तुम ज़रा होशियारी से पालकी की हिफ़ाज़त करना। लेकिन इधर से भी बेख़बर न होना। जब मैं ऊंचे से 'ख़बरदार' कह कर पुकारूं, तब तुम फ़ौरन सब सिपाहियों सहित हाज़िर होना। तेजसिंह को पता लगा कि किसी औरत को फंसाने का मामला है।

मुराद 'बहुत अच्छा' कह कर एक ओर को चला गया। तेजसिंह ने बहुत जानने की कोशिश की कि मुराद कहां गया है और पालकी किधर खड़ी है, लेकिन झाड़ियों के कारण न देख सका। देख सकने के लिये हिलना जुलना पड़ता— और अब तेजसिंह अपने वहां होने की सूचना किसी को नहीं देना चाहता था। उसी प्रकार स्तब्ध दशा में लेटा हुआ वह कल्याणसिंह के आने की प्रतीक्षा करने लगा। थोड़ी ही देर में दूर से सूखे पत्तों के दबने और चर चर की आवाज़ से उसने पहिचान लिया कि कल्याण सिंह आरहा है। कल्याण सिंह आकर पहिले बैठे हुए मुसल्मान सिपाही के पास बैठगया तेजसिंह के कानों में इस प्रकार की बात-चीत पड़ने लगी। मुसल्मान ने कहा—

"कल्याण सिंह! आप लोगों की हिम्मत और बहादुरी से हमने वह काम कर लिया, जिस के लिये हम सब को बादशाह सलामत से बहुतसा इनाम मिलने की उम्मेद है। इस काम में जितनी सहायता मुझे तुमसे मिली है, और किसी से नहीं मिली। तुम अगर कलरात उस दरबान का काम तमाम न करते तो हमारा रास्ता रुका ही रहता। अब हमारा काम पूरा हो गया। सांझ के समय, सूरज डूबते ही, हम लोग पालकी को किले में पहुंचा देंगे। लेकिन तुम्हारे लिये एक और ही काम है। काम मुश्किल है, उसे करना तुम्हारे जैसे जवांमर्द का ही काम है। हमारे और सब साथी तो पूरे २ उल्लू हैं—एक तुमही समझदार और बहादुर हो। एक बड़ा ज़रूरी काम है। अगर इसी वक़्त रवाना हो जाओ तो कल दोपहर तक काम करके लौट सकते हो। कहो क्या तुम उस ज़रूरी काम के लिये जाने को तय्यार हो।"

"मीर साहिब! आप हमारे मालिक हैं—और इस समय आपका हुक़्म ही हमें सिर माथे पर रखना चाहिये। किन्तु बादशाह सलामत की आज्ञा आप को और मुझे दोनों को माननीय है। वे हम दोनों के स्वामी हैं। उन्होंने मुझे यही आज्ञादी थी कि मैं किले तक आपके साथ रहूं। किले में पालकी पहुंचते ही मैं आपकी आज्ञानुसार जाने को तय्यार हूं। काम करना तो हम लोगों का पेशाही है—किन्तु स्वामी की आज्ञा को मानना भी परम-धर्म है। मैं किले तक अवश्य पालकी के साथ रहूंगा।"

"देखो कल्याण सिंह! यह तुम्हारा व्यर्थ का हठ है. तुम इस समय मेरे मातहत हो मैं बादशाह सलाम की खिदमत में अर्ज कर दूंगा कि कल्याण सिंह को मैं ही दूसरे काम पर भेज आया हूं—तुम्हारे सिर पर किसी तरह का ख़तरा नहीं आयगा। इतना वक़्त फ़ज़ूल गंवाने से क्या फ़ायदा। दूसरा काम भी, जहां मैं तुम्हें भेजना चाहता हूं, बहुत ज़रूरी है। अब रास्ते में कोई डर भी नहीं गांव वालों ने हमारा पीछा ही नहीं किया—अगर किया भी हो तो अब हम दो तीन घण्टे में किले में ही पहुंच जायंगे। गांव वाले यहां भी हमारा क्या बिगाड़ सकते हैं। पांच आदमी हमारे साथ हैं—फिर मुराद और मैं मिल कर दस दुश्मनों का सामना करने की ताक़त रखते हैं। इस लिये हमारी कोई फ़िक्र न करो और काम पर जाने को तय्यार हो जाओ काम के लिये तुम्हें काफ़ी इनाम मिलेगा।"

"नहीं जनाब! ऐसा न होगा। हम राजपूत लोग इनाम के लिये काम नहीं करते। अपने स्वामी की आज्ञा पालना ही हमारा धर्म है। मुझे यही आज्ञा है कि मैं किले तक आप के साथ रहूं। इस आज्ञा को आपके कहने से भी मैं टाल नहीं सकता।"

थोड़ी देर तक तेजसिंह के कानों में कोई शब्द न आया गुलामक़ादिर फिर कहने लगा—

"कल्याण सिंह! तुम व्यर्थ का हठ मत करो। देखो! तुम मेरे आधीन काम करते हो, तुम्हारी घटती बढ़ती मेरे हाथों में है। इस लिये मेरा कहा न मानना तुम्हारे लिये बुरा होगा। मैं तुम्हें समझा कर कह रहा हूं—और मीठा बोल कर समझाना चाहता हूं—इस पर मत भूलो। मेरे अन्दर ताक़त है कि मैं तुमसे अपनी आज्ञा मनवा लूं।"

गुलामक़ादिर का स्वर कुछ कठोर हो गया। वह फिर कहने लगा—

"अब मैं सीधी तरह पूछता हूं कि तुम मेरा हुक़्म मानने को तय्यार हो या नहीं।"

बड़े नर्म परन्तु रूखे शब्दों में कल्याण सिंह ने जवाब दिया—

"मैं मालिक की आज्ञा नहीं टाल सकता. आप का धमकाना या लालच देना व्यर्थ है। राजपूत कभी अपने निश्चय से नहीं हिला करते। आप मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मैं एक राजपूत बाला को कभी मुसल्मान सिपाहियों के हाथ में छोड़ कर नहीं जा सकता तेजसिंह का माथा ठनका। गांव से रात को उड़ाना—और राजपूत बाला—ये दो बातें तेजसिंह के मन में सन्देह पैदा करने के लिये पर्याप्त थीं, उसके दिल में आया कि हो न हो ये लोग अवश्य कमलदेवी को ही चुराये हुए लेजा रहे हैं। किन्तु अभी निश्चय नहा हुआ था।

आगे गुलामक़ादिर ने जो कुछ कहा—उस से सन्देह निवृत्त हो गये वह बोला—

"तो तू हम लोगों पर पहरेदार है। इस हिमाक़त की भी भला कोई हद है! मेरे साथ इस समय छः सिपाही हैं। तू मेरा कहना नहीं मानता—इस लिये मैं तुझे यहीं पर सज़ा दे सकता हूं। उस राजपूत औरत को हम लोग सुजानपुर से यहां तक क्या इस लिये लाये हैं कि अपने घर में डालें। उसे किले में पहुंचाने के लिये तेरी पहरेदारी की क्या ज़रूरत है। अब भी समझ जा— नहीं तो तू पीछे पछतायेगा।"

(शेष फिर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इतिहास तरंग

लेखक मल्लाह

मेरु

मेरु के बारे में हम कह आये हैं कि यह एक पर्वत विशेष है जो निषध देश के समीप वर्त्ती है। दूसरा उत्तरीय ध्रुव भी मेरु कहाता है। बहुत सम्भवतः उत्तरीय ध्रुव ही तेजोमय (Arora) होने से स्वर्ग पर्वत कहाता है। तीसरा पुराणों के अनुसार मेरु पृथ्वी का आधा मण्डल या गोलार्ध भी कहाता है। पुराणों में दो मेरु माने हैं एक सुमेरु और दूसरा कुमेरु। सुमेरु सौन्दर्य युक्त है और दूसरा कुमेरु नारकीय दृश्यों से भयंकर है। सुमेरु में इन्द्र का आसन है।

× × × ×

इन्द्र ने एक बार एक ब्राह्मण की हत्या की। दैत्यों ने इस महापातक ब्रह्महत्या को देखकर बहुत गुल-गपौड़ा मचाया। देवता और दैत्यों का भीषण युद्ध ठन गया। दैत्य लोग जीत गये। दैव लोग हार गये। देवताओं ने राजा नहुष से सहायता ली। इस ने दैत्यों का संहार किया। इस के पारितोषिक में देवनहुष सब द्वीपों का राजा बनाया गया। इसने महाराजाधिराज बन कर बहुतसी सेना एकत्रित की और कुशद्वीप या ईरान और अरब में विजय की। शंखद्वीप या मिश्र में गया। वराहद्वीप या योरोप में गया। चन्द्रद्वीप या साईबेरिया में भी गया। और सर्वत्र विजय प्राप्त किया।

जिस समय वह मिश्र देश या शंखद्वीप पर आक्रमण कर रहा था वहां उसे कुटिशीर्ष और श्याममुख दो प्रकार की जातियें मिलीं।

कुटिशीर्ष लोग वही प्रतीत होते हैं जो अरबभक्तादि स्थानों पर सब घरबार और डेरा डण्डा अपने साथ ही सिरों पर लिये फिरा करते हैं। और श्यामसुख मिसर के असली वासी नागहीं होंगे। खैर!

× × × ×

देवनहुष ने मिश्रदेश में नीलनदी के किनारे बहुत से मन्दिर खड़े कराये जिनका सबका नाम देवनहुषम् रखा गया। और सब अच्छे २ स्थानों पर बस्तीयां भी बसाईं, यह इतना-प्रताप शाली राजा हुआ कि इस के नामपर मिश्रदेश की नीलनदी भी नहुषा नदी के नाम से पुराण में प्रसिद्ध है।

× × × ×

यही भारतीय विजेता देवनहुष ओक्सस या चक्षु नदी की ओर आया और पुनः भारत में प्रवेश किया।

पुराणों के इस इतिहास को सुनकर हमें पूरा २ निश्चय होता है कि डायोनिस मिश्र का विजेता तथा शिक्षक और सभ्यता का गुरु जिसके बारे में पाठकों ने पहले अंकों में पाश्चात्यों की नाना कल्पनाएं सुनी और कोई भी नहीं हो सकता सिवाय देवनहुष के।

हमारी सम्मति में डायोनिसज़ और देवनहुष में कोई भेद नहीं।

× × × ×

ब्रायन्टसदृश ऐतिहासिक वायबिल के नूह के साथ डायनिस का सम्बन्ध जोड़ा करते हैं परन्तु प्रमाण बड़ा न होने से यह मत उपेक्षणीय है।

× × + ×

शेष कथा

अब डायोनिस या ओसिरिस के वंशीय इतिहास की भी उपेक्षा न करनी चाहिये। इतिहास में बड़ा चमत्कार दीखता है।

इस विजेता के इतिहास के दो भाग हैं। १म धार्मिक जिसमें धर्म के सिद्धान्तों का वर्णन तथा धार्मिक क्रिया काण्डों का विस्तार है। और खास कर इस भाग में मनुष्य समाज की रक्षाका हाल है। दूसरे भाग में इतिहास में प्रसिद्ध बड़े २ व्यक्तियों की विजयों के वर्णन और नाना प्रकार के उपनिवेशों (Colonies) की स्थापना का इतिहास लिखा है।

× × × ×

हर्मीज़ ओसरिस का बड़ा पक्का मित्र तथा सहयोगी था। इसके नाम पर बहुत से ग्रन्थ मिलते हैं। वे ग्रन्थ भी डायोनेसिज़ के राज्य (Empire) के दृढ़स्थापक थे।

विल्फर्ड महाशय कहते हैं कि ये चार ग्रन्थ चार वेद ही थे। क्योंकि उनमें सम्पूर्ण विद्याओं का वर्णन था। उस समय का इतिहास बताता है कि उपरोक्त ग्रन्थ परमात्मा ने ब्रह्मा के दिल में प्रकाशित किए थे। ब्रह्मा उनका बड़ा शासक तथा माननीय उपदेशक हुआ है। यही ब्रह्मा हर्मीज़ एक व्यक्ति प्रतीत होते हैं।

× × × ×

उपरोक्त ग्रन्थ प्राचीन मिश्रवासियों में बड़ी मानास्पद थीं। शेष सब पुस्तकें काल की गति से लुप्त होगईं; परन्तु उनमें से केवल पीमाण्डर नामक ग्रन्थ शेष रह गया है। उपरोक्त नाम में मान्डर शब्द मन्त्र शब्द का अपभ्रंश प्रतीत होता है।

× × × ×

संकोनियेथन नामक यूनानी इतिहासकार कहता है कि ये पूर्वोक्त ग्रन्थ उसने अपने आंखों देखे थे। इसिस देवता के मेलों में एक ब्राह्मण पुजारी इन पुस्तकों को उठाया करता था।

इस विषय पर बहुत से ऐतिहासिकों ने बड़ी २ खोजें की हैं। उनसे ऐसा पता लगता है कि यह पुस्तकें निम्नलिखित विषयों पर थीं।

× × × ×

पहले में परमात्मा की स्तुति के गीत वक्तृताएं थीं, दूसरे में राज्य के शासन के प्रकार थे। तीसरे में ज्योतिष का विधान था और चौथे में आयुर्वेद छटे में गायन शास्त्र इत्यादि इत्यादि नाना विषयों पर नाना ग्रन्थ थे।

शायद इन ग्रन्थों की उपलब्धि काश्मीर के पण्डितों के घरों में हो सके।

× × × ×

संकोनियेथन यूनानी ने इन ग्रन्थों का अपनी भाषा में अनुवाद किया था। ऐतिहासिकों के मत में या तो वे पुस्तकें वेद थे या पुराण थे या वेदों के भाष्य ब्राह्मणादि ग्रन्थ थे। या भारत की धार्मिक पुस्तकों की विद्या के नियमों और सिद्धान्तों के आधार पर कोई संग्रहीत ग्रन्थ थे।

× × × ×

पुराण कहते हैं कि ये ग्रन्थ निरपराध दण्डित पुरुष भारत से मिश्रदेश में ले गए थे।

संसार समाचार पर टिप्पणी।

दानापुर में भी दयानन्द अनाथालय है—वहां के अनाथ सेवक रामलोभितसिंह जी सूचना देते हैं कि ठाकुर खूबसिंह की भजन मण्डली के साथ ब्रह्मचारी विद्यानन्द शर्मा धर्मोपदेशक नियत हुए हैं, सब संस्कार कराने वाले महाशय १५ दिनों की सूचना देकर उन्हें बुला सकते हैं। मतलब यही होगा कि इन सब का मार्ग व्यय, वेतन तथा अनाथालय को कुछ भेंट देने वाले महाशय के यहां ये लोग जायंगे। आज तो यह सूचना छप रही है और शायद महीने पश्चात यह सूचना छपने आवे कि इन सब का अनाथालय से कुछ सम्बन्ध नहीं है। जो लोग अपने दान से काम नहीं चला सक वा स्वयम् नहीं मांग सक्ते, वे क्यों साधारण युवकों को प्रलोभन में डाल कर अनाचार को बढ़ाने हैं?

राजवाल (जि० लुधियाना) में एक विचित्र बछड़े का जन्म १ वर्ष से हुआ है। गुरुकुल का एक ब्रह्मचारी, जो पिता की मृत्यु पर घर गया था लिखता है कि उसने स्वयम् बछड़े को एक वृक्ष के नीचे सुख ऊपर करके दूध पीते देखा। "बछड़े के मुख से झाग निकलती थी और जो २ गौएं दूध पीने के समय बछड़ा किया करता है वे सब यह करता था। परमेश्वर की लीला, उस के गले से कुछ जाता भी दीख पड़ता था लोगों के कथनानुसार उस की कोखें भी भरती सी मालूम होती थीं।

इस समय हज़ारों आदमी उस के दर्शन करने जाते तथा उसे अवतार कह २ कर उस के पग दबाते एवं उस के लिए अपनी २ सामर्थ्यानुकूल दान भी देते हैं। पहले पहल यह बछड़ा तीन बार दूध पीता था। फिर आयु बढ़ने पर दो बार पीने लगा और अब लग भग डेढ़ वर्ष की उमर पर केवल एक बार प्रातःकाल ही दूध पीता है।"

यह समाचार देश में भी निकला है। प्रश्न यह है कि बछड़े का मालिक कौन है? क्या किसी ने देखा है कि बछड़े को विशेष शिक्षा नहीं दी गई? जिस वृक्ष के नीचे खड़ा होकर मुह ऊपर को कर दूध पीना है, उसे किसी ने देखा है? यदि यह सब भी देख लिया हो तो फिर भी बछड़े के मालिक को दान देने का क्या मतलब है? क्या लेखकों ने स्वयम् भी दोहकर देखा कि बछड़े की कोख पहले खाली थी और अब भरगई। यह एक विचित्र घटना होसक्ती है, परन्तु ऐसी विचित्र घटनाओं से भूले लोगों का धन हरण करना बुद्धिमानों का काम है।

शाहदरा (दिल्ली) में २१ से २४ अगस्त तक श्री पं० आनन्द जी ने ५ व्याख्यान विविध धार्मिक विषयों पर दिए। २३ अगस्त को इसी स्थान में ११ महाशयों को यज्ञोपवीत धारण कराए गए थे। यजमानों ने ४०) विविध आर्य सामाजिक संस्थाओं को दान दिया।

बूढ़े तोते भी कभी पढ़ाकरते हैं? यह लोकोक्ति भारत वर्ष में प्रसिद्ध है। परन्तु अमेरिका विचित्र देश है। वहां विस्कान्सिन विश्वविद्यालय में एक ८५ वर्ष की वृद्धा श्रीमती 'ऐमी डी० विनशिप' अब तक विद्यार्थिनी हैं और आगामी सत्र से कैलिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय में वनस्पति भौतिकी और अर्वाचीन व्यापक शासन शास्त्र में निपुण होने के लिए प्रविष्ट होंगी भारत के अधःपतन की समाप्ति नहीं होगी जब तक विद्या के साथ जनता का असीम प्रेम न हो जावे।

स्त्रियों को बृटिश साम्राज्य में समाधिकार नहीं मिल सक्ते। मिस शुहने कलकत्ता हाईकोर्ट में वकालत पास करके काम करने की आज्ञा के लिए प्रार्थना पत्र दिया। पांच जजों ने (जिन में दो स्वदेशी थे) यह फैसला दिया। कि वर्तमान राजनियमानुसार स्त्री वकालत का काम नहीं कर सकती। जब इस विषय में स्वाधीन इङ्गलेन्ड का कानून ही न बदला तो पराधीन भारत का नियम कैसे बदलगा।

फतेहपुर में पैंगले संस्कृत पाठशाला के हेड. मास्टर ने १७ अगस्त को यह हुकम जारी किया है 'कि लड़के पतलून और खुले हुए गले के कोट के साथ २ टाई और कालर बांधकर आया करें।' सहयोगी प्रताप (कानपुर) के सम्वाददाता लिखते हैं कि इस स्कूल का 'एक जातीय संस्था कहाजाता है' परन्तु यदि यहां पर ही फैशन की लहर चली तो फिर सरकारी स्कूलों का क्या ठिकाना है।

आर्यसमाज खेमकरण (जि० लाहौर) का वार्षिकोत्सव ७-८-९ आश्विन २२-२३-२४ सितम्बर को मनाया जाना निश्चित हुआ है।

आर्य्य प्र० उपसभा मुज़फ़्फ़रनगर भी एक भजन मण्डली खड़ी करना चाहती है जिन्हें वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। और जब अपनी शक्ति बढ़ा कर भजन मंडली अपनी जेबें भरने लगेगी तो फिर उप सभा की ओर से उल्टा विज्ञापन छपने को आएगा।

बरेली में धर्मप्रचार का कमचल रहा है १६ अगस्त को डी० ए० बी कालिज लाहौर के पं० भगवद्दत्त जी ने ६०० की उपस्थिति में व्याख्यान दिया। फिर २७ अगस्त के सांयकाल को महाशय उजाला प्रसाद बी.ए. प्रोफ़ेसर वृन्दावन गुरुकुल का व्याख्यान हुआ विषय था—"सबसे बड़ी आवश्यकता।" इसी आ०स० की ओर से एक सेवासमिति स्थापित हुई है। समाज के आधीन यह समिति मेले जलसों आदि पर प्रबन्ध में सहायता देने के अतिरिक्त बीमारों की सेवा करेगी। अन्य आर्यसमाजों को भी इनका अनुकरण करना चाहिए।

खण्डेलवाल [वैश्य] बिरादरी में विधवा-विवाह का समाचार, मथुरा से, म० नंदन सिंह भेजते हैं। कन्या १६ वा १७ वर्ष आयु की मथुरा निवासिनी और वर ३० वर्ष की आयु का दिल्ली-वाल। १५) आर्यसमाज और कन्या पाठशाला को दान में मिले। कन्या अक्षत योनी थी। विवाह समाज मन्दिर में हुआ।

बम्बईयों में विधवा-विवाह के कारण बड़ी हलचल मची हुई है। अंग्रेजी दैनिक लीडर में बिरादरी के गरम गरम दोनों दलों के पत्र निकल रहे हैं।

श्वासरोग निवारिणी सभा चित्रकूट की सूचना नीचे दी जाती है। प्रचारक में गत वर्ष छप चुका है कि हमें कपी दवाई, एक सात्विक साधु महात्मा से प्राप्त की हुई, केवल शरत् पूर्णिमा को प० हीरालाल रिछारिया देते हैं। प्रबन्ध एक सभा करती है जिसकी ओर से सूचना है—"श्वास (दमा) रोगनिवारिणी सभा चित्रकूट की ओर से समस्त श्वास रोगियों को सूचना दी जाती है कि जिस दिन दमा की दवा सबको दी जाती है वह दिन अर्थात् कुंवार की पूर्णिमा के ५ सप्ताह बाकी हैं इस लिये जिन २ महाशयों को यहां आना हो। अपने ठहरने तथा विशेष प्रबन्ध के लिये सभा से पत्र व्यवहार करें नियम भी मंगा कर देखें। इस औषध के एक ही बार सेवन से पुराना से पुराना दमा अवश्य अच्छा हो जाता है समय चूकने से वर्षभर पछताना पड़ेगा, जो सज्जन धन से सहायता करना चाहें वे सभा के मन्त्री जी के पास भेज दें।"

वर्णव्यवस्था विषय पर

श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी लिखते हैं:—"वर्णव्यवस्था गुणकर्म स्वभाव के अनुसार है—मैं इस का बहुत दिनों से पक्षपाती हूं। स्वर्गवासी स्वामी जी के सिद्धान्तों में सब से कठिन है तो यही सिद्धान्त है। लोग कहते हैं आर्य हार गये, पर मेरी ऐसी सम्मति है कि सारे दुनिया के पंडित नाम धारी मिल जावे तो भी कबीर मत सिद्धान्त को खण्डन नहीं कर सकते—भाषा में कहा है।"

"कबीर जो ब्राह्मण तू ब्राह्मणी जाया,
आन बाट काहे नहीं आया?
तुम कब ब्राह्मण हम कब शूद;
हम कब लोहू तुम कब दूध"

यहां औषधियों के नाम आने हैं वहां उन के निशान उनके रस पत्रों की लंबाई चौड़ाई ऊंचाई लिखी रहती है। ब्राह्मण नाम के आगे भी कुछ ईश्वरीय निशान पूच्छादि हस्तादि होने चाहियें। जाति का नाश नहीं होता ब्राह्मणत्वादि सब नष्ट हो जाते हैं—

विज्ञान भिक्षु का जो लेख छप रहा था वह बहुत उत्तम था श्रीमानों ने क्यों बन्द किया है इस सिद्धान्त के प्रचार बिना कभी भी देश वा धर्म की उन्नति नहीं हो सकती। अर्थात् आर्य वा भारतवासी वा हिन्दू एक शब्द से न पुकारे जावें, जब तक रोटी बेटी हमारी एक न होगी, तब तक उन्नति की आशा न करनी चाहिये। संस्कृत का प्रचार मनुष्य मात्र में होना चाहिये। कैसा बुरा काम करो ब्राह्मण तो भी वह अपनी बिरादरी में मिल जाता है। हृदय का भाव प्रकट किया—प्रकाशानन्द ने।"

गंगा यमुना की बाढ़ने इस बार बड़ी हानि पहुंचाई है। प्रयाग की सेवासमिति की सहायतार्थ, अलग अपील, इसी अंक में छपी है। अब पता लगा है कि बलिया नगर पर गङ्गा का धावा हुआ है। पुराना बलिया सारा गङ्गा की भेंट हो गया। नए बहुत से सुन्दर मकान गिर गए। डूकों पर नाउका चल रही हैं। जेलघर, डाकघर, पुलिस लाइन की इमारतों को हानि पहुंची है। बलिया दो बार पहले गङ्गा में डूब चुका है। बलिया की सहायता के लिए भी यत्न होना चाहिए।

सब को ही सहायता मिलनी चाहिये—हिन्दू, मुसलमान, ईसाई—कोई भी हों, सब पीड़ितों को सहायता मिलनी चाहिए। सेक्रेटरियों और अधिकारों के झगड़े ऐसे समय गङ्गा में बहा देने चाहिए। सब प्रान्तों के आर्य भाईयों को इस समय विशेष सेवा के लिये उद्यत होना चाहिए।

पंजाब को भी हाईकोर्ट मिल गया—कांग्रेस के, स्पमें घीके चिराग़ जल गए। परन्तु समझ में नहीं आता कि क्या सम्पत्ति मिल गई। समय पड़ने पर अत्य हाईकोर्ट क्या यमालय के स्थान में यम-पुरी सिद्ध नहीं हुए? चलो बच्चों को खिलौना मिल गया।

डाकगाड़ी मालगाड़ी से टकरा गई—कलकत्ता मेल जगाधरी से आगे १०½ बजे कलानौर से गुजरी तो एक मालगाड़ी खड़ी कर रही थी। उस में डाकगुलगई और कुछ गाड़ियां चकनाचूर हो गई। सरकारी रिपोर्ट है कि ३ युरपियन और ८ हिन्दोस्तानी मरगए और १ बृटिश आफ़िसर और १४ हिन्दोस्तानी घायल हुए।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १ आश्विन सं० १९७३ वि० | दयानन्दाब्द ३३ | ता० १६ सितम्बर सन् १९१६ ई० | संख्या २३ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछ कर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का प्रचार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० श्यामपुर काङ्गड़ी जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं जो एक साथ खरीदने वाले को २/३ [दो तिहाई] मूल्य पर दे दी जायंगी।

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—मूल्य ।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

छप रही हैं—

[२] पांच महायज्ञों की विधि

[३] आचाराऽनाचार और भक्ष्याऽभक्ष्य

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज

[५] वेद और आर्यसमाज

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर—काङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

आर्य कन्या पाठशाला शिमला के लिए दो अध्यापिकाओं की आवश्यकता है जो मिडल और प्राइमरी तक पढ़ा सकें। ट्रेंड हों तो विशेषता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार। ट्रेंड वा पैन्शनर वृद्ध पुरुष भी प्रार्थना पत्र भेज सकते हैं। प्रार्थना पत्र मन्त्री आर्य कन्या पाठशाला शिमला के नाम आने चाहियें।

—:o:—

छप गया! छप गया!

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

के

श्रीमद्भगवद्गीता-रहस्य का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक—पं० माधवराव सप्रे, बी.ए.

पृष्ठ संख्या लगभग ६०० मूल्य सिर्फ ३) रु० डाकव्यय आठ आने।

सुनहले अक्षरों की मज़बूत जिल्द।

जिस ग्रन्थ ने महाराष्ट्र के धार्मिक और सामाजिक जगत् में हल चल मचादी है; और जिसके लिए हिन्दी प्रेमी महीनों से उत्कण्ठित हो रहे थे, वह अब छप कर तैयार है। प्रतियां बहुत थोड़ी छपाई गई है, बहुतेरे ग्राहकों ने पहले से ही नाम दर्ज करा लिया है; इस लिए जो लोग इस ग्रन्थ को लेना चाहें वे, शीघ्र ही पत्र भेजें वर्ना फिर अवसर न रहेगा।

मिलने का पता:—मैनेजर, "केसरी" पूना सिटी।

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउण्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

सुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P.O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

प्रचारक सम्बन्धी सूचना

(१) रायसाहेब श्री डाक्टर हरप्रसाद जी आज कल फ्रान्स के मुख्य जङ्गी हस्पताल में काम करते हैं। उन्होंने २४) भेज कर लिखा है कि वह प्रचारक के स्थिर ग्राहक बनते हैं।

(२ प्रचारक के दो पृष्ठों से अधिक का कोई भी लेख प्राप्त पत्रों में नहीं जासका। लेखक महाशय इस का ध्यान रक्खा करें।

(३) गताङ्क डाक मुन्शी की अयोग्यता के कारण ६ दिन डाकखाने मे पड़ा रहा। यह अङ्क भी न जाने कब पहुंचे। P.M.G. को तार दिया गया है।

ग्राहकों के लिए आवश्यक सूचना—२ अक्टूबर १९१५ को जो ग्राहक हुए थे, उन को सूचना के पत्र भेजे गए थे। बहुतों ने वी० पी० लेने स्वीकार किए, कुछ ने पहले ही अगले वर्ष का मूल्य भेज दिया और कुछ ने पत्र लेना बन्द कर दिया और बहुतों ने कुछ उत्तर नहीं दिया। इनकार करने वालों के नाम काट दिए गए और शेष सब के नाम अगला ८ आश्विन [२३ सितम्बर] का पर्चा वी०पी० कर दिया जावेगा। ग्राहक महाशय शीघ्र वी० पी० छुड़ा लेंगे तो आगामी वर्ष के लिए चिट्ठे छपवाने का काम सुगम हो जायगा। प्रबन्धकर्त्ता

गुरुकुल समाचार।

विद्यालय विभाग के ब्रह्मचारी—गंगोत्री की यात्रा से लौट आए हैं। उस का संक्षिप्त वृत्तान्त एक ब्रह्मचारी का भेजा हुआ नीचे दिया जाता है:—

"१६ अगस्त को हमने गुरुकुल, माता की सुखद गोद, से जुदा होकर गंगोत्री की यात्रा के लिए प्रस्थान किया था। १७ ता० को ६ बजे प्रातःकाल हरिद्वार से रेल में बैठ कर ८ बजे देहरादून जापहुंचे। देहरादूनमें श्री भक्तराज बलदेवसिंहजी के यहां २ दिन ठहर कर तीसरे दिन राजपुर जा पहुंचे २० ता० को मन्सूरी पहुंचे, २१ को १५ मील चल कर धनौल्टी पहुंचे-७ बजे (सायंकाल) भोजन किया। यहां रात को खटमलों ने बहुत सताया १० बजे के लगभग धर्मशाला की कोठरी की दीवारों से खटमलों की सेनाओं ने उतर कर हम पर धावा बोल दिया; २ बजे तक हमारा और उन का खूब घमासान युद्ध हुआ, पतही पत्थर, लालटैन की गरम टीन, ही हमारे शस्त्र थे। २ बजे के बाद तक नींद हमारे पास तक न फटक सकी। इस युद्ध में विजय खटमलों की ही रही, क्योंकि हमारे सारे शरीर पर धप्पड़ पड़ गये और खुजाते २ खून तक निकल आया। २२ को ८ मील कानाताल पहुंचे, यहां खटमल कम थे परन्तु शीत अधिक था। २३ को ९ मील की कठिन उतराई उतर कर भड़ियाना पहुंचे यह रास्ता बहुत ही ख़राब था, कई भाईयों के पैरों में छाले पड़ गए, २४ को १५ मील धरासू पहुंचे। यहां रात्रि को धनौल्टी जैसी दशा बनी। २५ को १८ मील चल कर उत्तरकाशी पहुंचे. यहां जगह बहुत अच्छी है। यहां रात्री बड़े सुख से कटी, १ दिन यहां विश्राम किया। महाशय भक्तराम नाम के एक हंसमुख वयोवृद्ध भक्त यहाँ के प्रबन्धकर्त्ता हैं, आपने हमारा बड़ा आतिथ्य किया। २७ को १८ मील भटवारी पहुंचे। भटवारी से पहिले उत्तर काशी तक एक समय की, परन्तु तर रोटी मिलती रही। भटवारी से गंगोत्री तक रोटी सूखी तथा शाक रहित मिलती रही। २८ को ९ मील गगलानी पहुंचे। यहां एक गरम जल का स्रोत है, इस जल में स्नान करने से खटमल तथा पिस्सुओं के काटने से समुत्पन्न खाज बहुत कुछ शान्त हो गयी, परन्तु रात को सोते समय फिर वही हाल हुआ। २९ को १५ मील चल कर हरसिल पहुंचे, यहां रक्त पिपासु-पिस्सुओं का बड़ा आक्रमण हुआ। रात जैसे तैसे कटी। यहां पर ब्रह्मचारी कृष्णकुमार कुछ अधिक रोगी हो गया, अतः लालाजी तथा कृष्णकुमार यहीं रहगये और हम महन्त जी के साथ उत्तरकाशी को आगे चल दिये। यहां से गंगोत्री १५ मील है। हम २ बजे तक गंगोत्री जापहुंचे। इस मंजिल में भैरों घाटी की चढ़ाई बहुत कठिन थी, परन्तु गंगोत्री देखने की लालसा प्राबल्य के कारण हम जैसे तैसे उसी दिन गंगोत्री पहुंचे। गंगोत्री पहुंचने से पहिले मार्ग का कष्ट, रात्रि का जागरण और भोजन का कच्चा पक्का रुखा सूखा मिलना कुछ भी मालूम नहीं होते थे। प्रतिदिन नया २ उत्साह होता था; परन्तु जिस समय गंगोत्री पहुंचे उस समय बड़ी निराशा हुई। गंगोत्री में कोई अच्छा दृश्य नहीं है। गंगा जैसी उत्तर काशी से हरसिल तक बहती थी गंगोत्री में उससे भी अधिक चौड़ी तथा कीचड़ मयी तथा बर्फ़ के समान शीतल बहती है। चारों ओर के पहाड़ बिलकुल गञ्जे हैं, चोटियों पर तो एक पत्ता भी दृष्टिगोचर नहीं होता था, गंगोत्री की धर्मशाला से खराब, गन्दी कोई धर्मशाला रास्ते में नहीं मिली। यहां एक मुनीम रहते थे उनसे पूंछने पर पता लगा (वे २ मास हुये गोमुख गये थे) कि जैसी गंगा यहां बहती है वैसी ही जाकर १८ मील आगे बहती है, कुछ फर्क नहीं हैं। हमने पंडों से गोमुख को रास्ता पूछा तो वे कहने लगे कि महाराज चाहे इधर से चले जाओं बस गोमुख ही जापहुंचोगे गोमुख का रास्ता वास्तव तो कोई है नहीं। यह सुनकर फिर हमने गोमुख का नाम तक नहीं लिया। सांयकाल ५ बजे भोजन किया दाल में गंगोत्री के मिश्र जी ने इतनी मिर्च झौंकदी कि सारा मुख जल गया तथा पेट में पहुंचते ही पेट में आग लग गयी।

गंगा के शीतल जल ने इस आग को कुछ शान्त किया परन्तु रात्री को एक दो घन्टों के बाद पिस्सुओं ने जो सारे शरीर में आग लगाई, उसे गंगोत्री के गुणानुवाद गाते २ तथा खुजाते २ सारी रात बीत गई; बुझा न सके, अन्त को प्रातःकाल होते ही गंगोत्री से प्रस्थान किया और १२ बजे के लगभग हरसिल आपहुंचे। बड़ी कठिनता से गङ्गोत्री की मुक्ति से बचे, अन्य साधारण जनों की तो वास्तव में गङ्गोत्री में मुक्ति होजाती होगी; अब हम लौटते हुये उत्तरकाशी आपहुंचे हैं।

आर्थिक सहायता—अभी क्वेटे से २०००) रोक जमा कर के श्री उपाध्यक्ष रामदेव जी ने भेजे हैं। और धन भी इकट्ठा हो रहा है।

आर्य कन्या की आवश्यकता

एक क्षत्रिय कुलोत्पन्न सदाचारी आर्य युवक, जिनकी आयु २७ वर्ष की है, गृहस्थ में प्रवेश करना चाहते हैं। रूप रंग और स्वास्थ्य बहुत उत्तम है। संस्कृत की साधारण और आर्य्यभाषा की उत्तम योग्यता रखते हैं। गुरुकुल में कार्य करते हैं। लगभग ३५) मासिक आय है। सम्बन्ध में जाति बन्धन का कोई विचार न रखा जायगा। पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते से कीजिए-

प्रबन्धकर्त्ता-सद्धर्मप्रचारक
पो० श्यामपुर-कांगड़ी
ज़िला बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पारसीमत और वैदिक-धर्म।

प्रस्तावना पारसियों के मत की धार्मिक पुस्तक, पाश्चात्य विद्वानों में, ज़िन्दावस्ता के नाम से प्रसिद्ध है। जब तक योरप में इस पुस्तक का पता नहीं लगा था, तब तक पारसी-मत के असली निकास का स्रोत सर्वसाधारण को विदित न था। बहुत समय तक तो यही ज्ञात न था कि भारतवर्ष में जो पारसी जाति के लोग बसे हुए हैं, वे किसी बड़े पुराने मत के अनुयायी हैं; समझा यह जाता था कि फ़ारस के अर्वाचीन मत की ही यह कोई शाखा है।

पारसी-मत का इतिहास पारसी-मत का वर्णन पहिले पहिल यहूदियों की धर्म पुस्तक "तौरेत"। * अध्याय ३९। आयत ३ में आया है. जहां पैग़म्बर जेरीमाया ने सम्राट् नैबुकैडनेज़र के जेरुसेलम में प्रवेश करते हुए लिखा है कि उसकी सवारी के साथ एक व्यक्ति Rag mag भी था (Rag का अर्थ है=प्रधान पुरुष, और Mag का=Magi। उस समय पारसी-मत के पुरोहितों की जाति को Magi कहते थे) और यहूदियों के प्रधान तीर्थ 'जेरुसेलम' को विजय करके प्रवेश के समय [illegible] के सर्दार का साथ होना जतलाता है कि नेबुकैडनेज़र [बैबीलोनिया के सम्राट्] ने पारस [फ़ारस] को विजय करके उसके प्राचीन-धर्म के आचार्य को भी साथ ले लिया था। यह घटना ईसा से ५८८ वर्ष पूर्व हुई थी। फिर मालूम होता है कि ५०० ई० पू० (B. c.) तक बैबीलन के राजदर्बार में Magi का अधिकार था।

Bible में इनका वर्णन फिर केवल पैग़म्बर एज़ी-कायल, अ० ८। आ० १६ में आता है। वहां लिखा है कि कुछ यहूदी अपने मंदिर के द्वार की ओर पीठ करके, अपना मुख पूर्व को किए, सूर्य की पूजा करते हैं। इससे ज्ञात होता है कि उस समय भी पारसी मूर्तिपूजक न थे।

ईसाईयों की New Testament [अञ्जील] में भी वर्णन इस प्रकार है कि जब ईसा उत्पन्न हुआ तो उसे देखने के लिए विद्वान् पुरुष पूर्व से आये। वहां Magi शब्द है:—

"Now when Jesus was born in Bethlehem of Judæ in the days of Herod the king, behold, there came wise men (Magi) from the east to Jerusalam." (Saint Mathew अ० २। श्लो० १।)

इतिहास में, सब से पूर्व, पारसी-मत का वर्णन यूनानी ऐतिहासिक 'हैरो-डोटस' ने किया है। उसका समय ४०० B. c. है। इस की पुस्तक के ८१. ८२ अध्याय में पारसियों के कर्मकाण्ड का बहुत सा विधान किया हुआ है। उस से मालूम होता है कि पारसियों में उस समय भी मूर्त्तिपूजा न थी, परन्तु पशु का बलिदान देने लग गये थे। आगे पारसियों की धर्म-पुस्तक का आन्दोलन करते हुए पता लगेगा कि आदि में इनके यहां मांस भक्षण तथा हिंसा का निषेध था, जिससे परिणाम यह निकलता है कि भारत में वाममार्ग के प्रचार होने के पश्चात भी आर्यों के धर्म सम्बन्धी विचार पारसियों में जाते रहे।

हिरोडोटस के पश्चात् ४०० ई० पू० में टिशियस, ३५० ई० पू० में 'डीनन' ३०० ई० पू० में थियोपाम्पस, २५० ई० पू० में हर्मीप्पोस ने भी पारसियों [Magi जाति के लोगों] के मत के विषय में बहुत लिखा है; परन्तु उनकी पुस्तकें बहुधा नहीं मिलतीं, और प्राप्त भाग भी शृंखला बद्ध नहीं हैं। प्राचीन यूनानी ग्रन्थों से यह पता लगता है कि सिकन्दर का गुरु अरस्तू (Aristotle) भी पारसी-मत के विषय में बहुत कुछ जानता था। रोमन ऐतिहासिकों में से 'प्लूटार्क' ने भी पारसी-मत का वर्णन किया है। भूगोल विद्या के अविष्कर्ता "स्ट्रावो" ने ६० ई० पू० में अपनी भूगोल पुस्तकों में Magi के मत का वर्णन करते हुए लिखा है:— "चाहे किसी भी देवता को बली देनी हो, पारसी लोग सब से पूर्व अग्नि का आवाहन करते हैं जिसे (अग्नि को) उनकी यज्ञशाला में छिलका उतारी हुई लकड़ी से भोजन दिया जाता है, तथा उसको कभी बुझने नहीं दिया जाता है, वे उस पर घी डालते हैं तथा तैल भी। यदि कोई पुरुष उस में मुर्दा वा कोई अन्य अपवित्र पदार्थ डालता है तो उसे मृत्युदण्ड देते हैं; अग्नि को धौंकनी से सुगलाते हैं।"

सन् १८० ईसवी में प्रसिद्ध यूनानी यात्री "पौसेनियस" ने भी पारसियों के 'होम' का वर्णन किया है, जहां यज्ञकुण्ड, समिधा, और घृताहुतियों के अतिरिक्त किसी हिंसादि का वर्णन नहीं है। फिर ५०० ईसवी में ऐतिहासिक एमेथियस ने पारसी-मत का कुछ विस्तृत वर्णन किया है।

इस ने बतलाया है कि फ़ारस के रहने वालों ने अपने पुराने धर्म को छोड़ कर 'ज़रथश्त्र' को अपना पैग़म्बर मान लिया और उसका समय फ़ारस के बादशाह 'कैख़ुसरों' के साथ जतलाया है। यूनानी लेखकों की, पारसी-मत के विषय में, क्या सम्मति रही है, इस से उस मत के स्रोत का भी पता लगता है। यूनानी लेखक 'डमेशियस' ने अपनी पुस्तक मूल-सिद्धान्त नामी में लिखा है:—

"Magi तथा सारी आर्यजाति यूडिमौस' के लेखानुसार, कोई अवकाश को तथा कोई काल को, मूलकारण समझते हैं जिस में से कि उत्पन्न हो कर स्वच्छ देवता और दुरात्मा एक दूसरे से जुदा हुए हैं. व जैसे कि अन्य कहते हैं— प्रकाश और अन्धकार—इन दोनों आत्माओं के प्रादुर्भूत होने से पूर्व।"

इसी प्रकार यूनानी लेखक थियोडोरस ने यही सिद्ध किया है कि ज़रथश्त्र का मत फ़ारस का प्राचीन मत नहीं। पारसी मत के सम्बन्ध में इसी प्रकार के विचार आरम्भ के ईसाइयों में भी फैले हुए थे जिन्होंने 'ईरान' के सासानी सम्राटों के समय अमिनियन लेखकों के आधार पर पारसियों के मत का वर्णन कर, उस का खण्डन किया है। इन के लेखों से यह भी मालूम होता है कि उस समय पारसियों के दो भेद भी हो गये थे। उन में से

(*) Bible का पूर्वार्द्ध = Old Testament (तौरेत)
उत्तर भाग = New Testament (अञ्जील)

CC0. Gurukul

पश्चिम में रहने वालों का नाम Magi अर्थात् माधव था, और पूर्व में रहने वालों का नाम जेण्डिक था ।

मुसल्मान लेखकों ने भी, महम्मदियों के फ़ारस पर विजय पाने के पश्चात् ही, पारसीमत पर लिखना आरम्भ कर दिया था। अरब के प्रसिद्ध यात्री तथा ऐतिहासिक 'मसऊदी' ने पारसियों की धर्म पुस्तकों के विषय में लिखा है—"प्रथम पुस्तक जो ज़र्दुश्त ने बनाई "अवस्था" थी; यतः पारसी उसे समझ नहीं सकते थे, अतः ज़र्दुश्त ने उसका भाष्य किया और उसका नाम 'ज़न्द' रक्खा, फिर उसने इस भाष्य की भी टीका बना कर उसका नाम "पज़न्द" रक्खा। ज़र्दुश्त की मृत्यु के बाद पारसियों ने उसकी भी टीका बनाई, जिस में ऊपर वर्णित पुस्तकों पर विशेष टिप्पणी कर "यज़दाह" नाम रक्खा।"

मसऊदी की सम्मति में ज़रथुस्त्र का समय ईसा पूर्व ६१० सम्वत् था। सन् ११५३ ईसवी में प्रसिद्ध मुहम्मदी लेखक "शाहरास्तानी" का देहान्त हुआ, उसकी सम्मति Magi जाति के विषय में बहुत अच्छी थी। जहां अन्य मुसल्मान लेखक Magi को मूर्तिपूजक और ब्राह्मणों की तरह सितारों की पूजा करने वाले समझते थे, वहां शाहरास्तानी उनको एक ईश्वर पूजक बतला कर यहूदियों, ईसाइयों, और मुसल्मानों की श्रेणी में ही समझता था। यही लेखक बतलाता है कि पारसियों का एक भाग पुनर्जन्म को भी मानता था। एक बात मुसल्मान लेखकों में विचित्र मालूम होती है। अन्तिम महम्मदी लेखकों ने अपने लेखों तथा कोशों में भी 'ज़र्दुश्त' अपने पैगम्बर "इब्राहीम" का ही दूसरा नाम बतलाया है। परन्तु संसार के इतिहास में यह कोई नई बात नहीं। जब कहीं किसी जाति ने अपने धार्मिक विचार किसी पूर्व जाति से लिये तो उस जाति के प्रवर्तक को अपनी जाति का सुधारक ही समझ लिया। आगे आन्दोलन करने पर पता लगेगा कि मुसल्मानों ने अपने धार्मिक विचार प्रायः पारसियों से लिये हैं अतएव उस मत के सुधार के पैगम्बर को इब्राहीम ही बतलाया है।

पारसी-मत में युरोपियन खोज

भारत-वर्ष में आने से पूर्व युरोपियन जातियां पारसीमत के विषय में कुछ नहीं जानती थीं; मुसल्मानों के अत्याचार से तंग आ कर ज़रथुस्त्र के अनुयायियों ने भारतवर्ष में आकर उदार आर्य-जाति की शरण ली! उनको यहां निवास करने की आज्ञा देते हुये ३ शर्तें कराई गईं :—

१—यह कि वे सब हथियार रखदेवें।

२—यह कि अपनी पोशाक बदल लें—इसी लिये वर्तमान बम्बई के पारसियों की टोपी हिन्दुओं की पगड़ी के बंधेज से मिलती है।

३—गो बध न करें।

इस समय सारे संसार में पारसियों की संख्या एक लाख पांच हज़ार से अधिक नहीं है (लग भग इतनी है) जिनमें से भारत वर्ष में १,००,० ९६ बसते हैं। इन में बम्बई प्रान्त तथा बड़ौदा में रहने वालों का जोड़ कुल संख्या का ९०% भाग है। शेष १०% सारे भारत वर्ष में बंटे हुए हैं, जिसमें से उनका विशेष भाग मध्यप्रदेश, बरार तथा दक्षिण हैदराबाद में रहता है।

पहिले पहिल यूरोपियन जातियों को 'पारसी' मत का परिचय भारत वर्ष में हुआ। सब से पूर्व पारसी-मत की कुछ धर्म पुस्तकें इंग्लैण्ड में १७वीं शताब्दि ईसवी में लाई गईं; परन्तु उनको अद्भुततालय का शृंगार ही बना लिया गया, तथा खोल कर के किसी ने भी न देखा।

सब से पहला पुरुष जिसने Magi जाति के सिद्धान्तों का अपेक्षया विस्तृत वर्णन किया Oxford का प्रसिद्ध साहित्यसेवी हाइड Hyde था। उसने सन् १७०० ईसवी में विविध साधनों द्वारा पारसी मत के विषय में बहुत कुछ लिखा है, परन्तु यह सब कुछ मूल पुस्तकों के आधार पर नहीं है।

यूरप का प्रथम विचारक जिसने पारसियों के मूल ग्रन्थों का आन्दोलन किया फ्रांसिसी विचारक एन्क्विटिल डुपेरन [Anquetil Duperron] था। 'अवेस्ता' के कुछ पत्रे देखकर उसने दृढ़ संकल्प किया कि पारसीमत के मूल ग्रन्थों को ढूंढ़ निकालना है। सन् १७५४ में बहुतसा कष्ट झेल कर वह बम्बई पहुंचा। उस समय जैनियों की तरह पारसी भी अपने मत की पुस्तकें अन्यों को नहीं दिखाते थे, और युरोपियनों पर तो उनके विदेशी होने के कारण विशेष सन्देह था। परन्तु जो काम धर्मानुसार न होसका उसी में 'एन्क्विटिल' को रिश्वत देकर कृतकार्यता प्राप्त हुई। सूरत के *दस्तूर दराब ने पैसे के लालच से इसको अवेस्ता तथा पहलवी भाषायें लिखलाईं। इन भाषाओं में पर्याप्त योग्यता प्राप्त करके मार्च सन् १७५९ ईसवी में एन्क्विटिल ने ज़िन्दावस्था का अनुवाद करना प्रारम्भ कर दिया, और १७६१ में युरप लौटने तक वह अनुवाद करता रहा। उसने पूर्वीय भाषाओं के १८० हस्त-लिखित पुस्तक प्राप्त किये, जिनमें कुछ पारसियों के धर्म पुस्तक भी थे। युरप लौटने पर वह सीधा इंगलैंड गया और जो अवेस्ता के हस्त-लिखित पत्रे [British Museum] में पड़े थे उनके साथ अपनी पुस्तक का मुक़ाबिला किया; तब अपनी प्राप्त की हुई पुस्तकें पैरिस की [National Liberary] में धरदीं। १० वर्ष के पश्चात् सन् १७७१ ईसवी में ज़िन्द-अवेस्ता का प्रथमानुवाद एनक्विटिल ने छपाकर मुद्रित किया।

इस ग्रन्थ के छपने पर युरप के विद्वद् मंडल में तहलका मचगया; लोगों को नई बात जानने की बहुत आशा बंधी, परन्तु सारा ग्रन्थ पढ़ने पर दार्शनिकों [Philosophers] को बहुत निराशा हुई। जर्मनी के प्रसिद्ध Philosopher Kant ने कह दिया कि सारी ज़ेन्द-अवस्ता में किसी एक दार्शनिक विचार का ग्रन्थ भी नहीं मिलता केवल इतनाही नहीं प्रत्युत् Oriental Scholars में पूर्वीय विचारकों में तो झगड़ा आरम्भ होगया कि एनक्विटिल का अनुवादित ग्रन्थ वास्तविक है वा नहीं। Sir Willian Jones का तो यह हेतु था कि यतः ग्रन्थ में बुद्धि तथा न्याय से कार्य नहीं लिया गया अतः वह ज़र्दुश्त की बनाई नहीं होसकती। फ़ारसी कोष का कर्त्ता Richardson यह युक्ति देता था कि

* पारसियों के पुरोहितों को दस्तूर कहते हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यतः पुस्तक में फ़ारसी भाषा के शब्द नहीं हैं, तथा अरबी के अधिक शब्द हैं, तथा इस में बचपन की सी बातें लिखी हुई हैं, जो प्राचीन पारसियों की समझ पर एक धब्बा है; अतः ग्रन्थ असली नहीं है। इस समय इन युक्तियों में कोई सार नहीं दिखलाई देता, जब पता लग चुका है कि अवेस्ता के प्रत्येक १० शब्दों में ६ वा ७ शब्द शुद्ध संस्कृत के हैं; और अरबी के शब्दों का नाम भी नहीं है।

फ्रांस के विचारक तो स्वभावतः एनक्विटिल के अनुकूल थे। परन्तु सबसे अधिक सहायता (Kleuker) क्लयूकर से मिली, जिसने न केवल उनको असली बतलाया प्रत्युत सारे का जर्मन में अनुवाद कर अपनी टिप्पणी भी दी। जर्मनी में उसके पश्चात् पारसीमत ही क्या यहूदियों के Old Testament के समझने के लिये भी इसी को प्रयोग में लाया जाता था। इंगलैण्ड में एनक्विटिल की पुस्तक को बनावटी समझा जाता रहा तथा उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

५० वर्ष तक इसी प्रकार सन्देह की अवस्था रही जब कि डेन्माके के प्रसिद्ध विचारक (Rask) ने बम्बई आदि घूम कर सन् १८२६ ई० में ज़िन्द भाषा का समय तथा उसकी प्रमाणता पर एक लेख लिखा उस लघु पुस्तका में उसने सिद्ध किया कि ज़िन्द-अवेस्ता की भाषा संस्कृत से मिलती है। उस समय लोगों के संदेह दूर हुए। परन्तु ज़न्द-अवस्ता के ठीक विचारों को तथा उस के शब्दार्थ को ठीक प्रकार प्रकट नहीं किया जासकता था, क्योंकि अवस्ता तथा संस्कृत के शब्दों की समानता दिखलाने के लिये उस समय कोई कोश नहीं बना था। इस कमी को भी एक फ्रेञ्च विचारक ने पूर्ण किया। पेरिस के प्रसिद्ध कॉलेज के Professor Eugene Burnouf ने सबसे पूर्व आधुनिक संस्कृतसाहित्य में बहुत योग्यता सम्पादन कर के भागवत पुराणका अनुवाद किया। बर्नूफ ने अपनी संस्कृत की योग्यता को अवस्ता की शिक्षा तथा व्याकरण की बुनियाद डालने में लगाया और तब पता लगा कि यद्यपि एनक्विटिल को ज़ेन्द-अवस्था की पुस्तक तो ठीक मिली थी, परन्तु संस्कृत न जानने के कारण वह उसका अनुवाद ठीक न करसका। बर्नूफ़ को पारसियों की धर्म पुस्तक "यास्ना" का संस्कृत अनुवाद, 'नेरियोसंघ' का किया हुआ मिल गया; उसी का आधार लेकर इसने यास्ना का एक फ्रेञ्च में भाष्य लिखा।

पारसियों की अन्य पुस्तकों का भी इसने अनुवाद किया। सन् १८५२ में बर्नूफ के मरने पर पारसीमत का आन्दोलन मध्य में ही रह गया। एनक्विटिल का अनुवाद बहुत दोषों से युक्त था; फिर भी उसने असली ज़िन्द अवस्ता का पुस्तक युरप में प्रचलित किया। बर्नूफ का कार्य उससे बहुत बढ़कर था, पर उसको भी पर्याप्त समय आन्दोलनार्थ नहीं मिला। पारसी गाथाओं तक उसकी गति नहीं हुई थी, जिनके छन्द भी संस्कृत से मिलते हैं।

सबसे पूर्व विचारक जिसने अवस्ता की भाषा, व्याकरण तथा कोष संसार को दिया, Kiel University का प्रसिद्ध Professor Olhausen था। उसने सन् १८२९ ईसवी में वैण्डीडाड के चार अध्याय छपवाये। इसके कार्य की पूर्ति प्रसिद्ध डेनिश स्कौलर Danish Scholar "Francis Bopp" ने की। इसके पश्चात् बवेरिया की गवर्नमेन्ट ने बहुतसा धन देकर अपने दो पूर्वीय भाषाओं के विचारकों अर्थात् मार्कजेज़फ़ म्यूलर और फ्रेडरिक स्पीगल इस कार्य पर लगा दिए। म्यूलर पैरिस से अवस्था तथा पहलवी के मूल ग्रन्थों की नक़ल करवा लाया परन्तु स्पीगल ने मूल ज़िन्दा-वस्था को शोध कर सबसे पूर्व छपवाया। फिर वह कोपिन हैगन, पैरिस, लण्डन, ऑक्सफोर्ड में भ्रमण करता हुआ, अपनी आवृत्ति छपवाने ही लगा था कि लिपज़िग में प्रोफेसर हरमन ब्रोकहस ने एक प्रथम की आवृत्ति, वैण्डीडाड, यास्ना और विस्परद की छापी और साथ ही एक अवस्था का कोश भी छाप दिया। उस समय से जर्मनी में पूर्वीय भाषाओं के अन्तर्गत अवस्था की भी गिनती होने लगी।

इसी समय जब स्पीगल ज़िन्द-अवस्था की अपनी आवृत्ति छाप रहा था प्रो० वेस्टरगार्ड ने कोपनहेगन से ज़ेन्द-अवस्ता के छापने की सूचना दी। उसने भारत तथा फ़ारस दोनों ही स्थानों में बहुत सी हस्त-लिखित पुस्तकों की खोज की। वास्तव में पारसी मत की धर्म पुस्तकों के पुराने लेख पश्चिमीय भारत, उस में भी विशेषतः गुजरात में मिलते हैं। परन्तु गुजरात के पारसियों ने वेस्टरगार्ड पर विश्वास न किया, अतः उसको बहुत थोड़ी पुस्तकें मिली। स्पीगल की तरह वेस्टरगार्ड ने फ़ारसी व्याकरण तथा कोश बनाने का विज्ञापन दिया था। इन दोनों विद्वानों की पुस्तकों की समालोचना जर्मनी के प्रसिद्ध (Scholar) मार्टिनहाग ने भी की थी, परन्तु सबसे उत्तम समालोचना हैनोवर देश के गौटिनजन नगरस्थ विश्वविद्यालय के प्रो० थियोडोल बेनफ़ी ने की वह स्वयं संस्कृत का उपाध्याय था, अतः उसने संस्कृत से मुक़ाबिला कर के यह बतलाया कि ज़िन्द-अवस्था के पहलवी भाषा में अनुवाद की अपेक्षा संस्कृत से सहायता लेने पर अवस्ता के मंत्रों का अर्थ ठीक समझ में आ सकता है।

इस समय पारसी मत के विषय में जो हम जानते हैं उस के बड़े भाग का आन्दोलन मार्टिनहाग ने किया है। यह बार्टिनबर्ग के होहन—ज़ौलर्न [Hohen Zollern] गढ़ के पास आस्टडार्फ में ३० जनवरी १८२८ ई० में उत्पन्न हुआ था। उसका पिता एक साधारण किसान था, परन्तु पुत्र को उसने अच्छी शिक्षा दी। सन् १८४१ ई० में उस ने हिब्रू आदि कई भाषायें पढ़लीं थीं, और नवम्बर १८४३ में वह पाठशाला में सहायक अध्यापक नियत हुआ। मार्टिनहोग ने १८४७ में (Inspector of Schools) को कह दिया कि वह नौकरी छोड़ युनिवर्सिटी में शिक्षा प्राप्तार्थ जावेगा। संस्कृत में वह इस समय अच्छी योग्यता प्राप्त कर चुका था और मार्च १८४८ में १२ आने के पैसे जेब में डालकर ट्यूबिनजेन् के विश्व-विद्यालय को चल दिया, जहां उसके उपाध्यायों ने शीघ्र उसकी योग्यता को पहचान लिया और उसे D.Sc. बना दिया।

(शेष फिर)

CC0. Gurukul

दीनदयालु जी पर झूठा आक्षेप

पादरी फ़रकुहार साहेब की पुस्तक आलोचना करते हुए मैंने दिखलाया कि पादरी साहेब ने कृष्णियन-विभिन्नों का इतिहास लिखते हुए बड़े उपात से काम लिया है। उसी सम्बन्ध उदाहरण के लिए, मैंने उन का श्री० दीनदयालु जी के विषय में एक ठा, दूषित लेख पेश किया था। बड़ी सन्नता की बात है कि जब श्री पण्डित जी पादरी फ़रकुहार को कराची की न में मिले और अपने विषयक लेख देख र उसे झूठा बतलाया, तो पादरी साहेब द्वितीय संस्करण में लेख के उस भाग दूर करने की प्रतिज्ञा की और अब यही प्रतिज्ञा दोहराते हुए उन्होंने पण्डित जी के पुत्र पण्डित हरिहर स्वरूप शर्मा जी से शुद्धात्मक क्षमा मांगी है। फ़रकुहार साहेब लिखते हैं कि पुस्तक इङ्गलेन्ड, अमेरिका और आस्ट्रेलिया तक में बिक चुकी है और बहुत सी भारत वर्ष में भी बिकी हैं। यतः सब तक उस लेख का खन्डन पहुंचना असम्भव है इस लिए दूसरे प्रकाशन में वह इस भूल का संशोधन करदेंगे। पं० हरिहर शर्मा जी ने अंग्रेज़ी में ही पत्र लिख कर भेजा है और याचना की है कि उन का तथा पादरी फ़रकुहार का पत्र, दोनों प्रचारक में छाप दिए जावें। असल पत्र, पंजाबी ट्रीब्यूनादि में छप चुके हैं, इस लिए उनके यहां देने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती।

मेरी सम्मति में पं० हरिहर शर्मा ने पादरी फ़रकुहार के लेखों को बहुत सम्मान दिया है। श्री पण्डित दीनदयालु के विषय में जो कुछ भी पादरी साहेब ने लिखा था उसे मैंने तो किसी मूल्य का नहीं समझा था। आर्य्यसमाज और उस के प्रवर्तक के विषय में पादरी फ़रकुहार ने बहुत ज़हर उगला था, परन्तु यहां किसी ने उनकी रत्ती भर भी परवा नहीं की। प्रचारक के जो पाठक पहले ही पादरी के आक्षेप को निर्मूल समझते थे, उनके लिए पादरी फ़रकुहार का "मुआफ़ी नामा" भी किसी गुरुत्व का नहीं है।

(मुंशीराम)

उपदेशक कहां से मिलेंगे?

ज़ाहिर से आकर अपनी लेख माला के विषय में, दो लेख हमारे देखने में आये जिन पर कुछ टिप्पणी करना आवश्यक है। गतसप्ताह के प्रचारक में डा० भानाराम का एक पत्र प्रकाशित हुआ है। हम समझते हैं कि वह ठीक ढंग पर नहीं लिखा गया। लेख व्यक्ति विषयक हो गया है। ऐसा होने से हमारे लेखों का तात्पर्य नष्ट हो जाने का भय है। हमारे लेखों का उद्देश्य म० कृष्ण जी पर आक्षेप करना या उपदेशकों की योग्यता पर सन्देह करना नहीं था। डा० भानाराम जी के लेख से ऐसी ध्वनि निकलती है। हमारी राय में म० कृष्ण से वेदप्रचार के बहुत से भले की आशा है—यदि कोई न्यूनता दीखती है तो वह रीति का दोष है। उपदेशक महाशयों की योग्यता या शक्ति पर सन्देह करना मेरा प्रयोजन न था; हम समझते हैं कि वर्त्तमान उपदेशक मण्डली ने आपत्ति और सम्पत्ति में कष्ट झेल कर वैदिकधर्म के प्रचार का बहुमूल्य कार्य किया है। आर्यजनता को उपदेशकों का कृतज्ञ होना चाहिये। म० कृष्ण जी ने लिखा था कि योग्य उपदेशक नहीं मिलते—क्यों नहीं मिलते? इस प्रश्न का अपने ढंग पर उत्तर देने का हम ने यत्न किया था। उस को डा० भानाराम ने जो व्यक्ति विषयक व्याख्या की है, उस से हम असहमत हैं।

दूसरा प्रकाश सम्पादक की ५ भादों के प्रकाश में एक नोट था। नोट के प्रारम्भ की पंक्ति में हमारा परिचय देने के लिये पिता जी का पूरी उपाधियों सहित वर्णन किया गया है—इसका प्रयोजन हमारी समझने में नहीं आया। यह एक रहस्य है। सम्भव है, नोट की अन्तिम पंक्तियों में उसकी कुछ चुग्गी खुलती हो। गुरुकुल का जो उद्देश्य हमने लिखा था, उस का उद्धरण देकर आप सम्मति देते हैं—

"जब यही बात है तो आर्यसमाज को निराश नहीं होना चाहिये। अगर इस वक्त तक गुरुकुल ने आर्यसमाज को उपदेशक नहीं दिये तो चन्द साल में मिल जायंगे।"

इन पंक्तियों से सम्पादक महोदय का यदि यह तात्पर्य है कि इतने सालों के पीछे अब कहीं जाकर गुरुकुल वालों के दिमाग़ में गुरुकुल का असली उद्देश्य आया है, अब तक वे भूले हुए थे, तो मैं कहूंगा कि यह उन का एक अपने आप पैदा किया हुआ भ्रम है। प्रकाश सम्पादक महोदय के दिल में यह कहीं से बैठ गया है कि गुरुकुल का ठीक उद्देश्य वे या उन के कुछ मित्र ही समझते हैं, अन्य लोग नहीं समझते। मैंने तो लिखा था कि गुरुकुल के संचालक सदा से गुरुकुल का यही उद्देश्य समझते आये हैं। हां—यदि सम्पादक महोदय का यह तात्पर्य ही नहीं, जो हमने ऊपर लिखा है, तब हमारी सम्मति में ऊपर के नोट का कुछ बल ही नहीं रहता। आगे आपने लिखा है—"अगर इस वक्त तक गुरुकुल ने आर्यसमाज को उपदेशक नहीं दिये तो चन्द साल में मिल जायंगे।"

इस वाक्य में यदि सम्पादक महाशय उपदेशक शब्द से प्रचार करने वाले का ग्रहण करते हैं—तो मेरी समझ में आप का यह कहना कि 'गुरुकुल ने आर्यसमाज को उपदेशक नहीं दिये' सर्वथा अशुद्ध है। यह ठीक है कि प्रतिनिधि सभा को गुरुकुल से वेतनभोगी उपदेशक नहीं मिले, किन्तु आर्यसमाज को उपदेशक मिले हैं। स्नातक पं० ब्रह्मदत्त जी ने इन अढ़ाई तीन सालों में न जाने कितने स्थानों पर प्रचार किया, कितने उत्सवों को कृतकार्यता दी—वे उपदेशक ही नहीं रहे! गत वर्ष स्नातक विश्वनाथ जी कई उत्सवों पर गये, स्नातक बुद्धदेव जी तथा स्नातक जयदेव जी ने कितनी ही समाजों में प्रचार का कार्य किया, क्या वह उपदेशकता का कार्य नहीं? यह कहना सरासर अशुद्ध है कि गुरुकुल ने आर्यसमाज को उपदेशक नहीं दिये। हां—यह ठीक है कि गुरुकुल ने प्रतिनिधिसभा को वेतन भोगी प्रचारक नहीं दिये—और उस में वर्त्तमान रीति का दोष है। यदि रीति में परिवर्त्तन न होगा तो शायद एक सदी तक भी गुरुकुल से वैतनिक उपदेशक न मिल सकें। गुरुकुल से प्रचारक निकलेंगे—वे प्रचार का कार्य करेंगे—आर्यसमाजों की सेवा करेंगे—किन्तु प्रतिनिधि सभा के उपदेशक विभाग में प्रविष्ट होना कई अवस्थाओं पर निर्भर है। प्रकाश सम्पादक महाशय को यही भ्रम है, वे अभी तक यही समझ रहे हैं कि गुरुकुल ने अभी तक वैदिक-धर्म के प्रचार की इच्छा रखने वाले स्नातक उत्पन्न ही नहीं किये। असल में बात दूसरी है। जो वास्तव में न्यूनता है उस की ओर ध्यान खींचना ही इस लेख माला का उद्देश्य है।

(इन्द्र)

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यशोधिकारी

(रोला छन्द)

(१)

सुकवि कर्ण जो भाव भलाई के रखते हैं;
कभी किसी को जो न द्रोह दृग से लखते हैं।
जो कहते कम किन्तु अधिक कर दिखलाते हैं,
वास्तव में नर वही यशस्वी कहलाते हैं॥

हम हमीं ?

(षट्पदी छन्द)

(१)

हम चाहें तो वीर महा नर हो सकते हैं ?
नय-निकेत, निर्भीक-धनुर्धर होसकते हैं।
दृढ़ प्रतिज्ञ, दृढ़ व्रती, आर्यवर होसकते हैं;
कर्णार्जुन से ख्यात धरा पर होसकते हैं।
पर केवल अपने ध्यान मेंलाने की यह बात है;
फिर हो सकते हैं हम हमीं कठिन नहीं
कुछ भ्रात है ?॥

तुकड़ "कर्ण"

प्राप्त-पत्र

विश्व विद्या प्रचारक महामंडल चन्दौसी क्या है ?

प्रायः हमसे पूछा जाया करता है कि चन्दौसी में उक्त नाम की संस्था है या नहीं और उसका वास्तविक रूप क्या है? अतएव हम जो कुछ जानते हैं सूचित करते हैं—हमारी समझ में यह संस्था केवल नाम मात्र है। ता० १६-८-१६ को निम्नलिखित प्रश्न आर्यसमाज चन्दौसी ने उक्त मंडल के मंत्री महोदय से किये थे, उत्तर मिला कि आर्यसमाज इस मंडल से ऐसे प्रश्न करने तथा उत्तर पाने का अधिकारी नहीं है प्रश्न यह हैं—

(१) उक्त मंडल के प्रधान, जनरल सेक्रेटरी तथा प्रबन्धकर्ता, कौन २ महाशय हैं?
(२) आप उसके कब से मंत्री हैं ?
(३) उक्त मंडल कब से स्थापित है ? तब से अब तक कौन कौन अधिकारी कब कब रहे ?
(४) सभासद कितने व कौन कौन हैं ?
(५) आपको मंत्री कितने सभासदों की उपस्थिति में बनाया गया ?
(६) उपदेशक कौन २ रहा और रहे और गतवर्ष कहां २ प्रचार हुआ ?
(७) ११९) की रक़म सहायतार्थ किसको तथा किस निमित्त दी ?
(८) आप के यहां कितने व कौन २ रजिस्टर हैं ?
(९) कौन २ नौकर तथा कितने हैं ?
(१०) किस के मकान में सभा है, कितने किराये पर है और कब से है ?
(११) १।) पुरस्कार किस को तथा किस निमित्त दिया गया ?

(नोट) दान दाताओं को निश्चय करके धन देना चाहिये।

प्यारेलाल उपमन्त्री
आर्यसमाज चन्दौसी।

[नोट-इस मंडल को प्रचारक द्वारा भी प्रसिद्ध किया गया है, इस लिए ऊपर लिखित प्रश्न छाप दिए गए हैं : इस पत्र के पीछे ही शर्मा प्रेम वर्द्धिनी लाइब्रेरी के उपमन्त्री रामस्वरूप शर्मा ने, म० प्यारेलाल और उनके किसी मित्र पर आक्षेप पूर्वक लेख भेजा. और साथ ही ऊपर के मंडल की ओर से संस्थाओं को एक करने के विषय में लेख भेजा। जबतक विश्वविद्या-प्रचारक मंडल की स्थिति का विश्वस्त प्रमाण न मिले, इन का कोई समाचार न छपेगा—सम्पादक]

—०—

महता जी का उत्तर

पंडित हरिश्चन्द्र जी का लेख और उस पर सम्पादक की टिप्पणी जो आपके पत्र ११ भाद्रपद में मुद्रित हुई है, मैंने पढ़े। यदि केवल पंडित जी का लेख आपके पत्र में छप जाता तो मुझे उत्तर देने की कोई आवश्यकता न होती परन्तु उस पर जो आपने टिप्पणी दी है उसने मुझे उत्तर देने के लिए प्रेरित किया। इस लिए आप कृपा करके मेरे लेखको अपने पत्र में प्रकाशित करें। पंडित हरिश्चन्द जी ने जो कुछ लिखा है वह लगभग ठीक है विशेषतः मेरी धर्म पत्नी जी ने कोई प्रदक्षिणा नहीं की; मैंने आपका लेख पढ़कर अपनी धर्मपत्नीजी से पूछा तो उन्होंने कहा कि मैं लायलपुर की रीत्यानुसार एक रुपया और नारियल साथ लेगई थी। नारियल तो मुझ से दूसरी स्त्रियों ने छीन लिया और भक्षण कर लिया और एक रुपया मैंने अपने श्व के चरणों पर प्रतीक्षा करके रब्बाबी को दिया। मैं पंडित जी के अन्य कथन को यथातथ्य मानता हूं और आपसे पूछता हूं कि मैंने अपने पिता जी के अन्त्येष्टि संस्कार पर कौनसी निर्बलता प्रगट की पंडित जी के लेख में अन्त्येष्टिसंस्कार के विषय में अधोलिखित बातें पाई जाती हैं। [१] अंग्रेज़ी बाजा का प्रयोग और भजनीक मंडली रब्बाबी मंडली का साथ होना। [२] पिता जी की मृत शय्या पर दुअन्नियां न्यौछावर करना, [३] मेरे बड़े पुत्र शंकरदेव का मोरपंख अपने पितामह की अर्थी पर हिलाना।

[४] अर्द्धमार्ग प्रयाण करने के पश्चात अर्थी को एक पक्के चबूतरे पर रखा गया।

[५] मेरी धर्मपत्नी का प्रदक्षणा करके एक रुपया और नारियल अपने श्वशुर के चरणों पर रखना।

(७) श्मशान भूमि में अर्थी के ऊपर से रेशमी वस्त्र उतार लिये गए।

(८) मेरे उपदेश का सार है कि मेरे पिता जी फ़ारसी के प्रसिद्ध विद्वान थे और मर्सिया ख़ानी का बड़ा शोक था और आर्य्य विचार रखते थे इत्यादि।

अब मैं सभ्यजनों से प्रश्न करता हूं कि इन सप्त बातों में मेरी ओर से कौनसी निर्बलता प्रगट होती है, न मैंने किसी आचार्य्य को आवाहन किया नहीं कोई विघटदान हुआ; न किसी ने मुण्डन संस्कार किया। स्वस्त्यर्थ कोई भी पौराणिक रीति नहीं की गई। अगर संपादक जी किसी निर्बलता का वर्णन कर देते तो मुझे इस प्रकार लंबा विस्तृत प्रस्ताव लिखने की आवश्यकता न होती।

(२) अर्थी के ऊपर दुअन्नियों का न्यौछावर करना; इस में कौनसी अवैदिक बात या निर्बलता है ? यदि मैंने अपने पिताकी यथेच्छा उन का संस्कार धूमधाम (समारोह) से किया और उस पर हज़ार रुपया खर्च कर दिया और गरीबों को दुअन्नी पैसे और रुपये उन की अर्थी पर वार कर धन दिये तो उस में कौनसी निर्बलता हुई ? यह गौणिक बातें हैं! एक

CC0. Gurukul K

मनुष्य विवाह संस्कार पर हज़ारों रुपया खर्च कर देता है दूसरा सैंकड़े में निर्वाह कर लेता है। वैसे ही एक मनुष्य अपने पिता के देहान्त पर हज़ार रुपये खर्च कर देता है दूसरा पचास साठ में निर्वाह कर लेता है यह तो अपनी शक्ति और उदार चित्त होने की बात है इसमें निर्बलता की कौनसी बात है। हां यदि मुझ पर व्यर्थ धन लुटाने का दोष लगाया जाता तो और बात थी परन्तु इसमें निर्बलता का दोष लगाना व्यर्थ है।

(४) अर्द्ध मार्ग चलने के अनन्तर अर्थी को चबूतरे पर रक्खा गया इस में कौनसी अवैदिक व निर्बलता है सारे पंजाब में रीति है कि श्मशान भूमि के रास्ते में एक स्थान होता है जिसे घड़े-भन कहते हैं वहां अर्थी को रक्खा जाता है। क्रिया करने वाला एक घड़ा भग्न करता है, आचार्य्य पिंड भराता है सिर्फ वहां से प्रतिनिवृत होती हैं मनुष्य फिर अर्थी को उठा कर श्मशान भूमि में लेजाते हैं हमने भी यहां अर्थी को उतारा और किसी प्रकार की कोई अवैदिक रीति नहीं हुई, परन्तु उसकी कि सिपोंको रीत्यानुसार वापस कर दिया गया और अर्थी को उठाकर श्मशान भूमि में लेगए।

(५) वहां पर मेरी स्त्रीने परदक्षिणा कर के एक रुपया और नारियल अपने श्वशुर के चरणों पर रक्खा, कुच्छ उत्तर तो ऊपर वर्णन किया जाचुका है परन्तु मैं अभी उसका उत्तर देने को तैय्यार नहीं हूं। यह प्रथा वैदिक है कि पौराणिक इस को विचार करने के लिए एक बड़ भारी समाज की आवश्यक्ता है, जिस में इस बात पर विचार किया जावे कि कौनसी बातें वैदिक हैं और कौनसी अवैदिक। वेद में तो केवल "भस्मान्त ꣳ शरीरं" का वर्णन आया है कि शरीर को मृत्यु के अनन्तर अग्नि मे भस्म करदो। सूत्रग्रन्थों में ऋषियों ने संस्कारों पर व्याख्या की है परन्तु प्रत्येक सूत्रकार यथा गोवलि, पारस्कर, कात्यायन, वात्सायन, अश्वालायन और स्मृतिकारों ने देश और कालानुसार अलग २ रीतिएं और आज्ञाएं लिखी हैं। मेरा विचार है कि संस्कारों के असल नियम तो विद्यमान रहेंगे परन्तु शेष गौणिक बातें समय और देशानुसार सर्वदा बदलती रहेंगी।

चूंकि स्वामी जी ने इन बातों पर विस्तृत वितर्क नहीं किया इस लिए आर्य पुरुषों को इन विषयों पर विचार करने के लिए भारी कान्फ्रेंस बुलाने की आवश्यकता है। इस समय आर्य पुरुषों में पगबन्धन रीति प्रचलित है अड़ौसी पड़ौसियों को खाना खिलाने या श्रीणी (मिठाई) विभाग करने की प्रथा बराबर चली आती है। परन्तु संस्कारविधि में किसी ऐसी रीति का वर्णन नहीं। इस के बग़ैर काम चलना कठिन है। स्वामी जी ने गौणिक बातों में हस्तपद नहीं दिया इस ख़्याल से इन विषयों पर देश और काल के अनुसार स्वयं विचार और प्रबन्ध कर लें। परन्तु यदि यह बात अवैदिक भी हो तो इस में मेरी तरफ़ से कौन सी निर्बलता प्रगट की गई है। मैंने कभी दावा नहीं किया कि मेरी धर्मपत्नी जी आर्याविचार की हैं। इस समय तक निश्चय से आर्य विचारों ने हमारे घरों में कोई प्रभाव उत्पन्न नहीं किया, अतएव मेरे विचार में आर्य समाज अभी रेत पर खड़ी है। लाला काशीराम सीडर मुल्तान ३७ साल तक आर्यसमाज के मैंबर रहे। स्वामी दयानन्द जी के समय आर्य बने, परन्तु उस के मरणान्त हम क्या देखते हैं कि उस के घराने में आर्य धर्म का नाम व निशान नहीं रहा और उस के स्त्री बाल बच्चे पौराणिक हिन्दू-धर्म में वापिस हो गए, कोई समाज में जाने का नाम तक नहीं लेता, तो यदि मेरी धर्मपत्नी ने स्वतन्त्रता से या दूसरी स्त्रियों के बलावश हो कर कोई अवैदिक रीति रास्ते में या घर में कर भी दी हो तो इस में मुझ पर दोष नहीं आता है मेरा यह विचार है हज़ार आर्य-पुरुषों में से एक पुरुष भी कठिनता से ऐसा होगा जिस की स्त्री के विचार अपने पति के साथ मेल रखें। हां इतनी निर्बलता मुझ में ज़रूर [अवश्य] है कि मैं अपनी धर्मपत्नी को अब तक अपने विचारों का नहीं बना सका—परन्तु यह दोष पण्डित गुरुदत्त एम०ए० से लेकर सर्व आर्य-पुरुषों तक प्रयुज्य है। संस्कारविधि के साथ एक पद्धति की आवश्यकता है नहीं तो किसी की सम्मति में कोई रीती वैदिक है तो दूसरे की सम्मति में वह अवैदिक होगी। एक जगह अर्थी को तख़्ते पर ले जाते हैं दूसरी जगह संदूक में रख कर, तीसरी जगह बैल गाड़ी में रख कर, कहीं टमटम में रखकर, कहीं मंझी पर लेजाते हैं। तो एक जगह के लोग दूसरी जगह को रीतियों को अवैदिक कहेंगे। मेरे विचार में यह गौणिक बातें हैं। ऐसे भेद स्थानिक रीतियें अथवा देश कालानुसार अवश्य रहेंगे। आप इन्हें निर्बलता नहीं कह सकते किन्तु अन्य रीतियों को अनुचित कह सकते हैं। इन पर शीलता से विचार कर के उन में परिवर्तन करना चाहिये। यदि पगबन्धन की रीति अवैदिक है तो उस के स्थान में कोई समय नियत करना चाहिये जब कि बन्धु आदि अन्य स्थानों के बन्धु एकत्र हो कर [मृत्युसंस्कार] मातम पुरसि में [सम्मिलित] हो सकें और इस तरह सर्व संस्कारों पर आन्दोलन करने की आवश्यकता है। आर्य-पुरुषों को इस ओर ध्यान देना चाहिये। मैं आशा करता हूं कि जिस शुद्धभाव से मैंने इस लेख को लिखा है उसी में लिया जावेगा।

आपका शुभचिन्तक
म० जैमिनी बी०ए०
वकील, लायल पुर

[नोट—सारा लेख पढ़ने पर भी सम्मति नहीं बदली। मुझे सं० २,४ तथा ५ पर शंका थी। उन्हीं के विषय का उत्तर छाप दिया है। शेष का उत्तर अनावश्यक था इस लिए काट दिया है। ५ का उत्तर स्वीकार है, आप की धर्मपत्नी जी ने स्वतन्त्रता से किया उस के आप उत्तरदाता नहीं। २ का उत्तर कुछ नहीं। यदि ग़रीबों का पालन ही करना था तो उन को भोजन वा अन्य सहायता दी जा सकती थी। जगत की वाह वाह के लिए लुटा कर वस्तुओं का नाश करना ठीक न था। ५ के विषय में जब पौराणिक क्रिया न करानी थी और घड़ा न फोड़ना था तो अर्द्धमार्ग पर अर्थी रखना व्यर्थ था। हां आपका लिखना ठीक है कि संस्कारों में गौण क्रियाओं के लिए भी कोई पद्धति बननी चाहिए।
सम्पादक]

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम-क़ादिर

गतांक से आगे

तेजसिंह का सन्देह दूर होगया और उसने अपनी कमर में बंधी हुई तलवार की मुट्ठी पर हाथ रखलिया। किंतु पालकी के साथ गुलामक़ादिर के सिवाय छः सिपाही थे। छः सात से एक का लड़ना असम्भव था। यदि कल्याणसिंह से भी सहायता की आशा रखें तो भी दो की सात से लड़ाई विषम लड़ाई है। किन्तु और कोई चारा भी नहीं। अभी दो घण्टे में पालकी क़िले में पहुंच जायगी, और मुसल्मान बादशाहों के क़िले अनन्तखाई के समान थे, उन में एक वार जो सुन्दरी गई, उस का फिर कहीं ठौर ठिकाना न मिलता था। तेजसिंह ने यह तो निश्चय कर लिया कि जो कुछ भी करना हो अभी करना चाहिए—इस के विना काम न चलेगा। वह तलवार संभालकर उठ बैठा। उसी समय ज़ोर से चिल्ला कर गुलाम क़ादिर ने कहा—

'ख़बरदार! कल्याणसिंह यहां से नहीं हिलना होगा— नहीं तो तुम्हारा सिर धड़ से अलग होगा।'

एक मिनिट में, तेजसिंह, झाड़ी फांद कर गुलामक़ादिर के सामने बिजली की तरह जा चमका और कल्याणसिंह की ओर देख कर कहा" राजपूत भाई! मत घबराओ। मैं तुम्हारी सहायता के लिए तय्यार हूं।"

दसवां परिच्छेद।

द्वन्द्व युद्ध

तेजसिंह ने उस समय गुलामक़ादिर को देखा। वह उसी समय यह जान चुका था, कि कमलदेवी का हरने वाला गुलाम क़ादिर ही है। यह उसने बात चीत से जाना कि उस ने दिल्ली के बादशाह की आज्ञा से ही यह काम किया है, और अब वह बीच में कुछ कुमन्त्रणा किया चाहता है। तेजसिंह पूरी तरह नहीं जान सका कि उस की कुमन्त्रणा का झुकाव किधर है। क्या वह बादशाह के हरम् में न पहुंचा कर कमल देवी को अपने काबू में लाना चाहता है, या बादशाह के सिवा किसी और नव्वाब का काम बनाना चाहता है। तो भी इतना वह निश्चय कर चुका था कि गुलामक़ादिर की धोखा देने की इच्छा अवश्य है। इस सारी कथा से तेजसिंह के दिल में गुलाम क़ादिर के प्रति तीव्र घृणा पैदा हो गई थी। तो भी उसे देख कर क्षणभर के लिए उस का हाथ रुक गया। जहां वह भयानक मूर्ति वाले लठैत को देखने की आशा रखता था, वहां उसे एक सुन्दर सौम्यमूर्ति वाला नव युवा दिखाई दिया। गुलामक़ादिर की आयु २३ वर्ष से ऊपर न थी उस का यौवन अभी पूरी तरह खिला नहीं था। परन्तु इस अपूर्ण अवस्था में भी उस की मूर्ति दर्शनीय थी। ऊंचाक़द खूब भरा हुआ शरीर चौड़ी उभरी हुई छाती-और पट्टेदार हाथ एक आदर्श मुसल्मान सिपाही का रूप दिखा रहे थे। गुलामक़ादिर का रंग खूब गोरा था—और चढ़ती जवानी के कारण लाल लाल उभरी हुई गालें दिखाई दे रहीं थीं। उसकी की अति सुन्दर मूर्ति को देखने से यह नहीं जंचता था कि यह रात को किसी भलेमानस के घर से कन्या चुरा लाया है, और अपने स्वामी को धोखा देकर उसे अपने काबू किया चाहता है। उस सुन्दर मुख में और कहीं बुराई नहीं दिखाई देती थी—हां, आंखों पर दृष्टि पड़ते ही देखने वाला सहम जाता था। उस सुन्दर सुडौल चेहरे में वे आंखें बहुत क्रूर जंचती थीं। देखने में वे आंखें एक मनुष्य की नहीं—चीते की आंखें प्रतीत होती थीं। मानुषीय भाव का उन में सर्वथा अभाव सा था। उन में आई हुई विशेष प्रकार की लाली क़ादिर के नृशंसता पूर्ण हृदय का अच्छा ख़ाका खेंचती थी। वे आंखें, उस रमणीय देहरूपी उपवनिका में हिंसक जन्तु की भांती चमक रही थीं।

तेजसिंह ने नवयुवा शत्रु को तलवार खेंचे सामने खड़े पाया। आ[illegible] देख कर क्षणेक उस की तलवार रुक ग[illegible]

गुलामक़ादिर ने बिजुली की त[illegible] कूद कर सामने आते हुए कल्याणसिंह [illegible] सहायक को देखा—तो उसे अपना पूरा प्रतिद्वन्द्वी पाया। दो शत्रुओं को सन्[illegible] देख कर क़ादिर का मन एक दम मु[illegible] की ओर भागा। उसने उधर आंख उठा[illegible] जिधर से मुराद का सिपाहियों स[illegible] आना चाहिए था। किन्तु मुराद क[illegible] दिखाई न दिया वह नहीं जानता था, जो मनुष्य अपने स्वामी को धोखा सकता है, वह अपने नौकरों से विश्व[illegible] की आशा नहीं रख सकता। उसे क[illegible] पता था कि जो मुराद उस की हां में मिला रहा था, वह असल में कल्याणसिंह मिला हुआ था, और उसके साथ यह फ़ैस[illegible] कर चुका था कि आज इस धोखे बाज़ अ[illegible] दमी को बांधकर किले में पहुंचायंगे औ[illegible] उस की पोल खोल कर बादशाह से इना[illegible] पायंगे? वस्तुतः बात यही थी। मुरा[illegible] पहले भी गुलामक़ादिर के नीचे का[illegible] करता २ तंग आगया था। वह बादशा[illegible] का पुराना सेवक था। किले में काम क[illegible] रते हुए मुराद को लग भग पन्द्रह सा[illegible] होने वाले थे। गुलामक़ादिर अ[illegible] डेढ़ साल से बादशाह की सेवा में आय[illegible] था। परन्तु कुछ सुन्दर आकृति का प्र[illegible] भाव समझिये और कुछ चालाकी औ[illegible] वीरता के कारण समझिये उसकी बहु[illegible] शीघ्र उन्नति हो रही थी। जिस काम [illegible] देखो, गुलाम क़ादिर को ही लगाया जात[illegible] था। वह छाया की तरह बादशाह [illegible] साथ ही साथ रहा करता था और समय [illegible] पर मन्त्री का काम भी कर देता था। कोई छः महीने हुए मुरादबख़्श को क़ा[illegible] दिर के अधीन कर दिया गया। इस [illegible] मुराद का दिल जल उठा था। एक छोक[illegible] की अधीनता में काम करना उसे बहुत खटकता था। किन्तु राजदरबारों की चालें विचित्र हैं—बेचारा क्या करता चुप हो रहा। अब समय पाक[illegible] उसने मंसूबा बांधा। गुलामक़ादिर ने जब से कमलदेवी की सूरत देखी, तब से उसका दिल हाथ से जाता रहा था। उसने, कमलदेवी को अपने काबू की करने पह[illegible]

नली थी। अपने दिल में समझा था कि
राद मुसलमान है, कल्याणसिंह हिन्दू है।
के विरुद्ध इसे भड़काना मुश्किल नहीं।
जपूत के चले जाने पर फिर इसका काम
चुपके से तमाम करेंगे—और कमज-
ती को अपने काबू करके बादशाह को
ाकर कह देंगे कि राजपूत लोग रास्ते
से लड़की को छीन ले गये। बस काम
न जायगा। कल्याणसिंह को पता ही
लगेगा कि क्या हुआ है, मुराद मारा
जायगा और बाकी सिपाहियों की
ट्ठी में कुछ दे देने से ही काम चल जा-
गा। मुराद ने अच्छा मौका देखा। सारी
मन्त्रणा का हाल कल्याणसिंह को कह
नाया और यह बात ठहराई कि जब
लामकादिर तलवार लेकर सामने से
ट सभी मुराद उस पर पीछे से वार करे।
स प्रकार दो के बीच में ला करके उसे
ायल कर लिया जाय। फिर बांध
र किले तक पहुंचाना कठिन न
ोगा।

गुलामक़ादिर दो को सामने देखकर, और मुराद के चिन्ह न पाकर कुछ थोड़ा डरा, किन्तु निमेष मात्र के लिये। वह भी वीर था और तलवार का चतुर खिलाड़ी था। शेर की भांती गर्ज कर उसने तेजसिंह पर ही पहला वार किया। बड़ी फुर्ती से कूद कर तेजसिंह उसी क्षण एक ओर को हट गया और ज़ोर का हाथ मार कर क़ादिर के हाथ से तलवार का मुट्ठा छुड़ा दिया। क़ादिर की तलवार झन झन करती हुई दूर जा पड़ी, किन्तु इसी समय एक और घटना हो गई। मुराद एक झाड़ी में पीछे छुपा बैठा था— और समय की प्रतीक्षा कर रहा था। झपट होते ही वह उठा किन्तु एक बात पर उसने पहले विचार न किया था। उसके चारों ओर कटीली झाड़ियां थीं। उनमें फंसजाने का भय था। जल्दी में उन में उलझ कर निकलना भी मुश्किल था। वैसा ही हुआ। ज्यों ही वह उठा, उसके कपड़े कांटों में उलझ गये। एक बड़ी कटीली शाख आकर उसकी गाल पर जमी। उससे बचने लगा तो दूसरी झाड़ी के कांटे हाथ को पकड़ बैठे। इसी गड़ बड़ में उसे कुछ समय लग गया। किन्तु वह समय धैर्य पूर्वक कांटे छुड़ाने का नहीं था।

उन कांटों को साथ घसीटना, और कपड़े फड़वाता हुआ मुराद झाड़ी में से निकलने का यत्न करने लगा। थोड़ी सी हल चल के बाद उसे कृतकार्यता हुई। वह झाड़ी से बोहिर आया—और आते ही क़ादिर के कन्धे पर तान कर तलवार चलाई। उधर क़ादिर की तलवार छुड़ा कर तेजसिंह ने उनके अड़ंगी लगाई और उसे डांवांडोल होते देखकर लिपट गया। मुराद का वार क़ादिर से टल गया, और उस पर लिपटते हुए तेजसिंह के कन्धे के पास छाती पर लगा। मुराद भी पुराना सिपाही था—उसका हाथ कमज़ोर नहीं था। उसकी तलवार का अगला भाग तेजसिंह के बाहुमूल के पास घुस गया। घाव गहरा लगा—परन्तु तेजसिंह ने कोई परवा न की, और गुलामक़ादिर को चित कर दिया।

लिखने में इतना समय लगा है, परन्तु इन सब घटनाओं के होने में कुछ भी समय न लगा। ये सारे काम कोई दो तीन मिनिट में हो गए। गहरा घाव खाकर तेजसिंह के शरीर से लहू का फव्वारा छूट पड़ा। झपट के आयास ने लहू को और भी सहायता दी। गुलामक़ादिर बड़ा बली और फुर्तीला था। उसे गिराना तेजसिंह के लिए सहल नहीं था। बहुत से उतराव चढ़ाव के पीछे गुलामक़ादिर काबू आकर चित पड़ गया।

तेजसिंह और गुलामक़ादिर की झपट इतनी शीघ्र प्रारम्भ हो गई थी कि कल्याणसिंह उस द्वन्द्व में प्रवेश का समय भी न पासका और न ही यह जान सका कि कौन अज्ञात व्यक्ति उसको सहायता के लिए आकाश से उतरा है। वह दंगसा खड़ा रह गया। जब द्वन्द्व का प्रथम अध्याय समाप्त हुआ और गुलामक़ादिर नीचे पड़ गया तो कल्याण सिंह और मुराद दोनों ही पास आये और क़ादिर को इधर उधर से संभालने लगे। उस समय उन्होंने देखा कि उस अज्ञात सहायक के शरीर से रुधिर की नदी बह रही है। तेजसिंह और गुलामक़ादिर के सारे कपड़े एक मिनिट भर में लहू से सनगये हैं, और प्रवाह अब तक जारी था। एक मिनिट भर के जोश में तो तेजसिंह ने घाव की पर्वा न की और उसे घाव का पता भी न चला—किन्तु विश्राम मिलते ही असर हुआ। इतनी थोड़ी देर में लहू बहुत मात्रा में गया था और अब भी भरपूर जारहा था। कल्याणसिंह को तेजसिंह के एक क्षण भर पहले तेजस्वी चेहरे पर मुर्दनी के से चिन्ह दिखाई दिये।

मुराद और कल्याणसिंह का पहला काम गुलामक़ादिर को काबू करना था। यह काम बहुत सरल न था। दोनों शरीर में हृष्टपुष्ट थे लेकिन क़ादिर की फुर्ती और हिम्मत को नहीं पासकते थे। तेजसिंह ने जब देखा कि उसके दो सहायक आपहुंचे हैं तब आधी बेहोशी की सी हालत में जुदा होकर घाव को संभालने लगा। उसने घाव को बहुत दबा कर लहू रोकने का यत्न किया किन्तु वह न रुका। निर्बलता क्षण २ बढ़ने लगी। जितने में कल्याणसिंह और मुराद ने किसी प्रकार कोशिश कर के क़ादिर को पहले से तय्यार की हुई रस्सियों में जकड़ा, उतनी देर में तेजसिंह बिलकुल बेहोश होगया था।

जब वे दोनों गुलामक़ादिर को बांध चुके, तब तेजसिंह की ओर मुड़े। इतनी देर में इधर झपटा झपटी की आवाज़ सुनकर सारे सिपाही भी आपहुंचे थे। मुराद ने पहले ही सोचरखा था कि सिपाहियों को क़ादिर के कैद करने का क्या कारण बताना होगा। क़ादिर के मुंह में कपड़ा ठूंस कर उन्हों ने उसे बोलने के अयोग्य पहले ही बना दिया था। मुराद ने सिपाहियों को थोड़े में ही समझा दिया कि "यह शख़्स उस सुन्दरी को, जो बादशाह सलामत के हरम् के लिये लाई गई है, अपने काबू करना चाहता था। इस लिए मैंने और कल्याणसिंह ने इसे क़ैद कर लिया है। तुम लोग चुप रहो। कल तुम्हें बहुत इनाम मिलेगा" सिपाही भी क़ादिर का पक्ष करने में कोई ख़ास युक्ति न देखकर विजयी पक्ष की ओर हो गये।

संसार की रीति ही ऐसी है। जो जीतता है संसार उसके साथ हो जाता है। हारे हुए का भाई भी उसे छोड़ बैठता है। कवि ने ठीक कहा है कि—

याति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्यञ्चोऽपि सहायताम्,
अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति।

[शेष फिर]

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इतिहास तरंग

(लेखक मल्लाह)

पुराण कहते हैं कि ये ग्रन्थ निरपराध दण्डित पुरुष भारत से मिश्र देश में ले गये थे।

इसी सम्बन्ध में पालिस जाति का इतिहास हमें बहुत कुछ बताता है। इन से हमें मुख्य तीन बातों का पता मिलता है—

(१) ये पालिस लोग पालिपुत्र या पालीबोथ के प्राचीन पुरुषा थे। प्राचीन लेखकों के अनुसार ये लोग सिकन्दर के समय तक सिन्ध तक फैले हुये थे। कहें तो बंगाल तक भी फैल गए थे।

(२) ये लोग शैव थे। इसी लिए इन को अन्य मतीय राजा ने निकाल दिया था। ये अग्नि की भी पूजा करते थे।

(३) ये लोग मिश्र देश तथा असुर या असीरिया देश में जाकर थे। भारतवर्ष के साथ फोनीशिया से जहाज़ों द्वारा व्यापार किया करते थे। यूनान के पहले २ इतिहास में यही लोग भेड़ बकरियां भी चराया करते तथा पशुपति या गोपाल वृत्ति किया करते थे। परन्तु इन की अपनी समाज का सारा संगठन प्रबन्ध इन का अपना होता था।

× × × ×

पिरामिड

मिश्र में तीन पर्वताकार बड़ी २ कबरें हैं जिन का आकार चौकोन आधार में चौड़ा और ऊपर तुर्की टोपी की तरह नोकदार है। इन को बनाया अवश्य किसी माननीय शक्ति ने है, परन्तु इस का ऐतिहासिक कोई निश्चय नहीं कर सके कि वे किसने बनाये हैं।

पाश्चात्य लोगों की इन के बारे में भी बड़ी अद्भुत २ कल्पनाएं हैं। हम उन सब कल्पनाओं को यथा समय बाद देंगे परन्तु प्रथम हम पौर्वात्य इतिहास सागर में डुबकी लगायंगे। और अवश्य पिरामिड़ों के बारे में भी कुछ अलौकिक रत्न खोज लायंगे।

\+ × + +

हमारे पुराण वास्तव में एक मदारी का थैला हैं, जो चाहो निकाल लो और जो चाहो डालदो; न उसका पेट घटेगा न बढ़ेगा।

पुराणों के अनुसार इन पिरामिडों का सम्बन्ध एक अत्याचारी निर्मर्याद नामक राजा से है। इसी निर्मर्याद अत्याचारी राजे का बायबिल की Nimrod निमरोद नाम आया है। अब यह देखिये ये कौन है। इस का पिरामिडों से क्या सम्बन्ध।

× × + +

देखिये पुराणों में महाकल्प की कथा

वत्स एक प्राचीन राजा था। वत्स ऋषि के वंश में से था। उसने कृष्णागिरि की कन्दराओं में नील नदी के तट पर शत वर्ष वास किया। यह राजा विष्णु का बड़ा भक्त था।

उस की अनन्य भक्ति से सुहर्ष विष्णु प्रगट हुये। राजा का सारा तप पुत्रोत्पत्ति के लिये था यह भाव विष्णु ने समझ उसको यथा अभिलषित वर दिया। उसके वरानुसार पुत्र उत्पन्न हुआ। उस का नाम तमोवत्स रखा गया। तमोवत्स भी बड़ा वीर योद्धा तथा प्रजा का हित चिन्तक विजेता हुआ और अपने पिता के सदृश विष्णु का अनन्य भक्त हुआ। उसने भी विष्णु की अराधना कर कतिपय वर प्राप्त किये। उसने सुना कि निर्मर्याद मिश्रस्थान में बड़े अन्याय और अत्याचार से राज्य करता है। इस प्रजा के हितचिन्तक से यह न सहा गया। उस ने बहुत सी सेना इकट्ठी की। परन्तु बिना युद्ध की घोषणा के ही सम्पूर्ण मिश्र-देश पर राज्य करना तथा प्रबन्ध चलाना प्रारम्भ किया। और प्रजाओं को अपने गुणों से मुग्ध कर के और निर्मर्याद के सम्पूर्ण अत्याचारों को सर्वथा रोक देने का विश्वास दिला कर प्रजा को निश्चिय करा दिया कि उनका राजा बहुत अच्छा होगा।

× × × ×

निर्मर्याद को इस गुप्तरहस्य का भेद खुलते ही गुस्सा आ गया। उसने कतिपय दूत भेज कर राजपाट छोड़ने को तमोवत्स पर ज़ोर दिया। परन्तु निर्मर्याद की सब अत्याचारिक कठोरता और अधिकार की अवहेलना कर के तुमुल युद्ध करने को तय्यार हुआ।

× × × ×

बारह दिन बड़ा घोर रण रंग मचा। अन्ततः निर्मर्याद को प्राणों की बलि देने के लिये बाधित होना पड़ा। और फलतः तमोवत्स राजा बना। उसने सम्पूर्ण मिश्र में बड़ी शान्ति से राज्य किया।

उसका पुत्र बालवत्स हुआ। यह भी बड़ा धार्मिकता वैराग्य प्रियभक्त था। इसने अपने यौवन में ही अपने पुत्र रुक्मवत्स को राज पाट सम्भला कर वन का मार्ग पकड़ा।

रुक्मवत्स ने न्यायानुकूल करादि का प्रबन्ध कर प्रभूत सम्पत्ति संग्रह की। निर्मर्याद से अत्याचारिक राजे के निवाश और नवीन धार्मिक राजाओं के विजय की यादगार में उसने अपने सम्पद् वैभव को प्रजाके सामने ज्वलन्त रूपेण रखने के लिये यह रीति अवलम्बन की।

× × × ×

उसने ये बड़े २ विशाल तीन पर्वत खड़े किये:—

(१) रुकनाद्रि
(२) रजताद्रि
(३) रत्नाद्रि

ये तीनों पर्वत वास्तव में पिरामिडों के रूपों में महाकाय विशाल भवन ही है। महायरिणाह से पर्वत सदृश लगते हैं। इतने अंश तक प्रसिद्ध ऐतिहासिक—प्लिनी और पुराणकार दोनों सहमत हैं।

परन्तु हिरोडोटस यूनानी ऐतिहासिक की सम्मति में ये एक गोपाल या हमनेपालिस जाति में की किसी बड़े व्यक्तिने बनवाये थे।

परन्तु हमें उपरोक्त कथन सत्य प्रतीत होता है क्योंकि वर्तमान में भी एक पिरामिड सुवर्ण रंगके कीमती पत्थर का बना है। एक सफ़ेद संगमेर का है। तीसरे में पालिश किये हुए क़ीमती पत्थर जड़े हुए चमकते दिखाई देते हैं।

× × × ×

कई लोगों की सम्मति में इन पिरामिड़ों को खड़ा करने वाले राम और नूह है। और कईयों की सम्मति में वही हायनेसिज़ या देवनहुष ही हैं।

हमारी सम्मति में पुराण के ज्वलन्त फ़ैसले के मिल जाने पर अधिक उहापोह किया हुवा भ्रम मुलक है। यदि ये सब एक ही होते तो प्राचीन ऐतिहासिक—सबके भिन्न २ चरित लिखने का कष्ट वृथा क्यों उठाते?। [शेष फिर]

संसार समाचार पर टिप्पणी।

भारतीय पाठनालय नाम का एक वाचनालय अजमेर नगर, कपड़े वालों में, मेयूजीन का प्याऊ के पास खुला हुआ है, जिस में २२ समाचार पत्र रक्खे रहते हैं और [illegible] प्रकार की पुस्तकें पढ़ने को मिलती हैं। [illegible] स्थाई जमा कराने से पुस्तकें तथा [illegible] पत्र घर लेजा कर भी पढ़े जा सकते हैं। [illegible] वाचनालय ग्रामों में भी खुलने चाहिए।

अम्बाला [illegible] तथा सहारनपुर आर्यसमाजों के वार्षिकों [illegible] २७, २८, २९ अक्टूबर को होंगे।

आर्यसमाज बरेली का वार्षिकोत्सव २३ से २९ अक्टूबर तक मनाया जायगा। पहले दो दिन स्त्री समाज और २५ को आर्यकुमार सभा के अधिवेशन होंगे, २६ को नगर कीर्त्तन, २७ को पारिवारिक सम्मेलन, २८ को अनाथालय विद्या सभा और २९ को आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव मनाया जावेगा।

आर्यकुमार सम्मेलन की आगामी बैठक (जो लखनऊ में होगी) के सभापति श्री म० हंसराज बी० ए० प्रधान डी० ए० वी० कालिज कुमेटी लाहौर होंगे। अब इस सम्मेलन की कृतकार्यता में कुछ सन्देह नहीं है।

आर्यसमाज कुग्गीवाला (पंजाब) के नए प्रधान लाला लक्ष्मीनारायण जी, उप प्रधान लाला रीझूराम जी, मन्त्री महाशय ईश्वरदास जी, उप मन्त्री म० ज्ञानचन्द्र जी तथा कोशाध्यक्ष ला० गोविंदराम जी नियत हुए हैं।

जामनगर के जाम साहेब क्रिकेट के प्रसिद्ध धनी, जाम रणजितसिंहजी हैं। आप बृटिश सरकार तो क्या, बड़ौदा आदि रियासतों को भी पीछे छोड़ गए हैं। उन्होंने एन्ट्रेन्स तक कीजमातों में फीस बन्द कर दी है। जो कुछ देसी रियासतों में वहां के शासक कर रहे हैं वही काम बृटिश सरकार की अमलदारी में राजनैतिकों का कर्त्तव्य है। स्वराज्य की भीख मांगने की अपेक्षा यह काम अधिक लाभदायक होगा, क्योंकि हम स्वराज्य के समीप ले चलेगा।

बंगाली बहादुरों की कम्पनियों में केवल ७० की कमी रह गई। बङ्गाल के लाटसाहेब ने एक उत्सव कर के भरती हुए बङ्गालियों की बड़ी प्रशंसा की और उन का दिल बढ़ाया।

हिन्दी साहित्यसम्मेलन की आगामी बैठक जबलपुर में कार्त्तिक शुक्ला ११, १२, १३ सं० १९७३ (ता० ५, ६, ७ नवम्बर, १९१६) होगी—यह निश्चय प्रयाग की स्थाई समिति ने किया।

महाशय सम्पादक प्रकाश लाहौर लिखते हैं कि उन के पत्र का "ऋषिनम्बर" श्री महर्षि स्वामी दयानन्द की यादगार में २४ अक्टूबर को बड़ी आबोताब से निकलेगा। तीन पारितोषिक रक्खे गए हैं। उत्तम कविता के लिए १५) द्वितीय कविता के लिए १०) और १५। उस महाशय को दिए जायंगे जो महर्षि के सम्बन्ध में ऐसी घटना बतलावेगा जो अब तक लेखबद्ध नहीं हुई। मूल्य -)॥ और १०० प्रति के ग्राहक से ६।) लिए जायगे। एक पर्चा मगाने वाले सज्जन -)॥। के टिकट भेजदें।

आर्यकुमारसभा मेरठ की प्रार्थना को स्वीकार करके श्री स्वामी सर्वदानन्द जी माहाज ने गत १, २, ३ सितम्बर को मेरठ में ३ व्याख्यान "वेद विचार," "विद्यार्थी जीवन" और "संस्कार महत्व" पर क्रमानुसार दिये। तीनों दिन जनता की उपस्थिति बहुत अधिक होती रही और अन्त में सब की यही इच्छा रही कि श्री स्वामी जी धर्मामृतपान और भी करावें। इन तीन दिन के केवल २ घन्टों के सत्संग ने वैदिकधर्म का प्रभाव सर्व साधारण पर इतना जमाया जितना कि समाजों के वार्षिकोत्सवों पर भी बहुधा नहीं पड़ा करता।

नेशनल कांग्रेस के आगामी अधिवेशन पर वैदिकधर्म के प्रचार के लिये जो तय्यारी हो रही है वह नीचे के घोषणा-पत्र से विदित है:—

"इस वर्ष नेशनल कांग्रेस का अधिवेशन दिसम्बर १९१६ के अन्तिम सप्ताह में इस नगर में होना निश्चय हुआ है। उस समय देश के प्रायः सभी गण्य मान्य महानुभाव लखनऊ नगर में पधारेंगे। ऐसे समय पर वैदिकधर्म्म का प्रचार करना परमावश्यक है। इसी बात को ध्यान में रखकर इस नगर की सिटी तथा गणेशगंज आर्य्य समाजों तथा आर्य्यकुमार-सभा ने अपना उत्सव कांग्रेस के समय एक साथ करना निश्चय किया है और विचार है कि उस समय पुस्तकों तथा व्याख्यानों द्वारा वैदिकधर्म का प्रचार वृहत रूप से किया जावे। इस कार्य्य के सम्पादनार्थ इस नगर की आर्य्य समाजों तथा आर्य्य कुमार सभा ने एक "कार्यकारिणी समिति संयुक्त अर्य्य समाज नखलऊ" बनाई है।

यह कार्य्य इतना बड़ा है कि समस्त आर्यों की सहायता बिना पूरा होना कठिन है। अतः अर्य्यसमाज के समस्त सन्यासियों, व्याख्यानदाताओं, उपदेशकों तथा भजनीकों से सविनय प्रार्थना है कि दिसम्बर १९१६ के अन्तिम सप्ताह में इस नगर में पधार कर वैदिकधर्म के प्रचार में सहायता करें। आर्य्यसमाज के लेखकों से प्रार्थना है कि वे कृपा करके कोई उपयोगी पुस्तक उस समय के लिये बनाकर मेरे पास भेज देवें कि जिसमें उसके छपवाने का प्रबन्ध शीघ्र हो सके। आशा है कि वदिकधर्म के प्रेमी सर्व प्रकार से इस शुभ कार्य में सहायता प्रदान करने की कृपा करेंगे। यदि किसी महाशय के पास कोई उपयोगी पुस्तक हो जिसे वह प्रचार के निमित्त देसकें तो उसे भी अवश्य भेजने की कृपा करें। आर्य्य महाशयों से प्रार्थना है कि इस प्रचार के विषय में अपनी सम्मति कृपा करके अवश्य प्रकट करें कि जिसमें प्रचार के कार्य्य में सुविधा हो। निवेदक रास विहारी तिवारी मन्त्री आर्य्य कारिणीसमिति, संयुक्त आ.स., लखनऊ।

स्वामी ब्लाकटानन्द बड़े सुधारक थे। उनकी पुस्तकों के विषय में निम्न लिखित घोषणापत्र आया है:—

"महाशयों! आप स्वामी ब्लाकटानन्द जी के नाम से अपरिचित न होंगे। स्वामी ब्लाक्टानन्द जी ने १ वल्लभ कुल चरित्र दर्पण २ वभल्लभ कुल छल कपट दर्पण इत्यादि नामक पुस्तकें रची हैं जिन में वल्लभ कुल सम्प्रदाय के आचार्यों गोस्वामियों की कृतियों और चरित्र हीनताओं का स्पष्ट वर्णन है। उपरोक्त पुस्तकों से वल्लभ कुल सम्प्रदायों के आचार्यों की पोल और ढोंग का पता ठीक ठीक लगता है इन्ही पुस्तकों की बिक्री से उपरोक्त स्वामी जी की गुज़र होती थी और हज़ारों रुपया स्वामी जी धर्म कार्य में व्यय कर चुके थे। उपरोक्त स्वामी जी अब इस असार संसार में नहीं हैं। सुना है कि नाथद्वारे के गोस्वामी उपरोक्त पुस्तकों को पूरी क़ीमत देदेकर मोल लेरहे हैं। और फिर उपरोक्त पुस्तकों को जलवा डालेंगे, जिससे उपरोक्त स्वामी जी तथा उनकी उपकारी पुस्तकों का नाम व निशान मिट जायगा। हम इस चिट्ठी के द्वारा नाथ द्वारे के गोस्वामियों को तथा सर्वसाधारण को सूचित करते हैं कि स्वामी जी अपनी कुल पुस्तकों के छापने का अधिकार अपने जीवन में मुझे दे चुके हैं, और हम शीघ्र ही उपरोक्त पुस्तकों को छपा कर पबलिक के सामने पेश करेंगे, और उपरोक्त पुस्तकों से जो कुछ लाभ होगा वह विद्या प्रचार में व्यय किया जायगा। आशा है कि विद्या प्रचारक तथा स्वामी जी के प्रेमी स्वामी जी की पुस्तकों के स्थाई ग्राहक बनकर स्वामी जी के डूबाए हुये नाम का बचावेंगे। हमें आशा है कि अन्य पत्र भी इसका अनुकरण करेंगे। लोकनाथ अवस्थी स्थान बिल्हौर प्रान्त कानपुर

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की ओर से निम्नलिखित अत्यावश्यक सूचना निकली है:—

१. हिन्दी साहित्य सम्मेलन की नियमावृत्ति पर विचार करने के लिए स्थायी समिति का पंचम अधिवेशन मि० आश्विन कृ० सं० १९७३ रविवार ता० २४ सितम्बर सन १९१६ को ठीक १२ बजे दिन से सम्मेलन कार्य्यालय में होना निश्चय हुआ है। स्थायी समिति के सम्पूर्ण सदस्यों से प्रार्थना है कि सौ काम छोड़ कर भी इस अधिवेशन में उपस्थित होने की कृपा अवश्य करें।

नोट—उप समिति नियमावली का मसविदा स्थायी समिति के सदस्यों, पत्र सम्पादकों तथा सम्बद्ध सभाओं के पास सम्मति के लिए भेज चुकी है अतएव जिन २ सम्मेलन से सम्बध सभाओं तथा स्थायी सम्मति के सदस्यों ने अपनी सम्मति लिख कर अभी तक उस सम्मति के संयोजक के पास नहीं भेजी है तथा जिन २ पत्र सम्पादकों तथा हिन्दी प्रेमियों ने जो इस विषय में अपनी सम्मति देना चाहते हैं अपनी सम्मति प्रकाशित नहीं की है अथवा संयोजक के पास नहीं भेजी है उससे प्रार्थना है कि भाद्रपद शु० १५ पहिले ही वे अपनी सम्मति अवश्य ही उपसमिति के संयोजक बा० पुत्तनलाल विद्यार्थी, विशारद, बान वाली गली लखनऊ के पास भेजदें जिस से सम्पूर्ण सम्मतियां सङ्कलित रूप में अधिवेशन में उपस्थित की जा सकें। स्थायी समिति के जो सदस्य स्थायी समिति के इस अधिवेशन में उपस्थित होंगे उन्हें उनकी भेजी हुई सम्मति उनकी सुविधा के लिए अधिवेशन में ही मिल जायगी।

२—अन्य आवश्यक विषय में जो उपस्थित हो।

निवेदक—रामकृष्ण सारस्वत
सहकारी मन्त्री
हिन्दी साहित्य सम्मेलन"

अजमेर से म० ग्यासी लाल लिखते हैं:—

गत कृष्णजन्माष्टमी ता० २१ अगस्त ३१९६ सोमवार को इस अजमेर नगर की "मथुराप्रसाद गुलाबदेवी" आर्यकन्या पाठशाला की छात्राओं को पारितोषिक बांटा गया था। उसमें दीवान बाहादुर श्रीयुत पं० दामोदरलाल जी भार्गव एडिशनल शैसन्स तथा डिस्ट्रिक्ट ज़ज्ज अजमेर मेखाड़ ने सभापति का आसनन ग्रहण किया था और उन्होंने ही अपने कर कमलों से पारितोषिक बांटा था। उत्सव के कार्यक्रम पाठशालों के विवरण तथा छात्राओं के मुख्य २ गायन की एक २ प्रति आप की सेवामें आलोचनार्थ भेजी जाता है।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ८ आश्विन सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २३ सितम्बर सन १९१६ ई० { संख्या २४ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बाँटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

पो० श्यामपुर कांङ्गड़ी जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं जो एक साथ खरीदने वाले को २/३ [दो तिहाई] मूल्य पर दे दी जायगी।

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—मूल्य ।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

छप रही हैं—

[२] पांच महायज्ञों की विधि

[३] आचाराऽनाचार और भक्ष्याऽभक्ष्य

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज

[५] वेद और आर्यसमाज

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर-कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

आर्य कन्या पाठशाला शिमला के लिए दो अध्यापिकाओं की आवश्यक्ता है जो मिडल और मैट्रिकुलेशन तक पढ़ा सकें। ट्रेंड हों तो विशेषता दी जायगी। वेतन योग्यतानुसार। ट्रेंड वा पेन्शनर वृद्ध पुरुष भी प्रार्थना पत्र भेज सकते हैं। प्रार्थना पत्र मन्त्री आर्य कन्या पाठशाला शिमला के नाम आने चाहियें।

—:o:—

छप गया! छप गया!

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

के

श्रीमद्भगवद्गीता-रहस्य का हिन्दी अनुवाद

अनुवादक—पं० माधवराव सप्रे, बी.ए.

पृष्ठ संख्या लगभग ६०० मूल्य सिर्फ ३) रु० डाकव्यय आठ आने।

सुनहले अक्षरों की मज़बूत जिल्द।

जिस ग्रन्थ ने महाराष्ट्र के धार्मिक और सामाजिक जगत में हल चल मचादी है; और जिसके लिए हिन्दी प्रेमी महीनों से उत्कण्ठित हो रहे थे, वह अब छप कर तैयार है। प्रतियां बहुत थोड़ी छपाई गई है, बहुतेरे ग्राहकों ने पहले से ही नाम दर्ज करा लिया है; इस लिए जो लोग इस ग्रन्थ को लेना चाहें वे, शीघ्र ही पत्र भेजें वर्ना फिर अवसर न रहेगा।

मिलने का पता:—मैनेजर, "केसरी" पूना सिटी।

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउण्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P. O.. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

पत्रों की सैर

अखबार वालों का विचित्र ढंग

नवाबी के समय लखनऊ की भटियारियां जब सब कामों से छुट्टी पाकर निठल्ली बैठतीं, तो आपस में कहती थीं "आओ पड़ोसन हम तुम लड़ें।" यों वे बेचारियां दो घड़ी आपस में लच्छेदार गालियों की बौछार कर अपना दिल बहलाया करती थीं। देखते हैं, हमारे कई लाहोरी उर्दू सहयोगियों के संचालक भी कुछ उसी नीतिसे परस्पर दिल बहलावें की सूरतें निकाला करते हैं। आज न जाने कितने समय से वहां यही देखने में आता है, कि उन संचालको के परस्पर कभी मानहानि की नालिशें होती हैं, तो कभी लठबाजी की। वीर पंजाब के अखबार ठहरे न, इस लिये वहां सम्पादकीय लाठी डण्डों की सृष्टि होना कोई आश्चर्य की बात नहीं। जो हो, यह दिल्लगी अभी तक जारी है। महायुद्ध के कारण लाहौर में शायद ख़बरों का भी अभाव होगया, इसिलिये निठल्ले होने से वे सञ्चालक गण परस्पर मानहानि आदि की नालिशें दाग़करदिल बहलाया करते हैं। आज कल "लायलगज़ट" के सम्पादक और "पञ्जाब समाचार" के मालिक में मामले बाजी शुरू हुई है। पंजाब में अख़बार नवीसी की दशा अवश्य शोचनीय है।

वे० स०

नकली पुर्ज़े।

गत वृहस्पति वार को सागरमल और लदमीनारायण नामक दो मनुष्य एक बड़े धनाढ्य मारवाड़ी मदनलाल जी के यहां गये। मदनलाल जी रामनारायण गंगाविशन नामक फ़र्म्म के मालिक हैं। आप का फ़र्म्म १३५।१ धाटन स्ट्रीट में हों उक्त दोनों आदमियों ने अपने को नानक राम जगमल नामक फ़र्म्म के गुमाश्ते बतला कर कहा, कि हमारे फ़र्म्म के मालिक ने एक हुण्डी दी है और आप के यहां से १५०००) उधार मंगवाये हैं। इतना कह कर उन लोगों ने हुण्डी निकाली। मदनलाल जी ने इन दोनों भले आदमियों पर विश्वास किया और जाली हुण्डी लेकर उन्हें १५०००) दे दिये। रुपये लेकर वे जब जाने लगे, तब मदनलाल जी को सन्देह हुआ और आपने अपने एक आदमी को उन के पीछे पीछे जाने के लिये कहा; परन्तु मदनलाल जी के आदमी के पहुंच ने के पहले ही लदमीनारायण और सागरमल दोनों हो छुप गये बाद को वह आदमी नानकराम जगमल के यहां पहुंचा और उस ने फ़र्म के मालिक से पूछा, कि क्या आपने हमारे यहां पुर्जा भेज कर १५०००) उधार मंगवाये हैं। फ़र्म के मालिक इन बातों को सुन कर आश्चर्य्य से अवाक हो गये। आपने उत्तर दिया नहीं। बादको उस अदमी ने उन दोनों रुपये लाने वाले मनुष्यों की हुलिया बतलायी। इस को सुन कर आपने उत्तर दिया, कि मेरे फ़र्म्म में इस हुलिया के कोई गुमाश्ते नहीं हैं। इस के बाद गङ्गाविशन का आदमी बड़ी बाज़ार थाने दौड़ा गया। यहां उस ने मामले की रिपोर्ट की और पुलिस ने तत्काल जांच करना आरम्भ किया। बड़ी खोज होने पर लक्ष्मीनारायण की गिरफ़तारी हुई है। सागरमल की खोज भी पुलिस बड़ी सरगर्मी से कर रही है।

कलकत्ता समाचार

—:o:—

कहां गई।

ऐ मालकाने तख़्त वो
दौलत कहां गई।
वह ताज क्या हुआ
वह हुकूमत कहां गई॥
कहती है रो के कब्र
सिकन्दर पै बेकसी।
वह दबदबा वह शान
वह शौकत कहां गई॥
क़ारू से पूछे वह
ख़ज़ाना किधर गया।
हातिम से पूछिये वह
सख़ावत कहां गई॥
दारा का खून करके
सिकन्दर ने क्या लिया।
लालच किया था जिसका
वह दौलत कहां गई॥
शादाद रूसिया तू
जहन्नुम में क्यों गया।
कैसी ख़ोदाई की
तेरी जिन्नत कहां गई॥
हारूं रसीद जिसकी
ख़लाफ़त की धूम थी॥
अब पूछिये वह उस की
ख़लाफत कहां गई॥
आले नबी पै जुल्म
किया क्यों एज़ीदने।
ज़ालिम की पञ्जरोज़ा
वह नौबत कहां गई॥
लैला से पूछिये कि
वह अरबी किधर गये।
मजनूं से पूछिये वह
मोहब्बत कहां गई।
लाखों हसीन गज्ज
लहद में समा गये।
वह नाज़ क्या हुआ
नज़ाकत कहां गई॥
कल पड़ गई लहद में
अजीज़ों की किस तरह।
वह प्यार क्यो हुआ
वह मोहब्बत कहां गई॥
पैदा हुए यह कौन
वो मकान किसके वास्ते।
"ताहिर" बता वह नूर
की सूरत कहां गई।

नारद

—:o:—

विज्ञापन

अखरीधी नीवासी कालूराम के रचि धर्म्मप्रकाश का उत्तर और उन के अन्य ग्रन्थ का उत्तर समाज की ओर छपा है कि नहीं यदि छपा हो तो मुझे प्राप्ती स्थान मालूम होनी चाहिये; पुनः सब आर्य्य भाईयों से निवेदन है कि जिन किसी को पुस्तकप्राप्ती स्थान मालूम हो तो वैसा और यदि समाज से कोई उत्तर नहीं छपा हो वैसा लिख कर अथवा सद्धर्म्मप्रचारक में छपा कर मेरी अभीलाषा को पुरण करें।

भवदीय
बलदेव लाल पुस्तकाध्यक्ष
आर्य्यसमाज बाका जिला भागलपुर

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक।

हिन्दू विश्वविद्यालय पर

आलोचनात्मक दृष्टि

(१)

'हिन्दुस्तान रिव्यू' के अगस्त मास के अंक में म० गणेश गंगाधर जम्भेकर का एक बड़ा विचार पूर्ण लेख है। लेख में हिन्दू विश्वविद्यालय की विशेषतायें बतला कर कुछ सलाहें दी गई हैं। पूर्व भाग में लेखक ने मुख्यतया यह दिखाया है, कि वे हिन्दू विश्वविद्यालय से क्या आशा रखते हैं। विषय बड़े महत्व का है। विश्वविद्यालय की स्थापना डंके की चोट की गई है। विश्वविद्यालय की आधारशिला लार्ड हार्डिंज से रखाई गई-और बड़े समारोह का उत्सव हुआ। भारत के राजाओं ने तथा प्रजा ने विश्वविद्यालय का प्रस्ताव उठाने वालों पर तथा सरकार पर विश्वास रखकर बहुत सा धन दिया है। इन सब बातों ने हिन्दू विश्वविद्यालय को भारतवासी मात्र की आंखों का केन्द्र बना दिया है। भारतीय जनता—और विशेषतया हिन्दू जनता—विश्वविद्यालय से बहुत सी आशायें रखती है। विश्वविद्यालय के संचालकों को स्पष्ट रीति से पता होना चाहिए कि हिन्दू यूनिवर्सिटी से प्रजा की क्या आशायें हैं, और प्रजा को स्पष्ट रीति से यह ज्ञात होना चाहिए कि हिन्दू विश्वविद्यालय से उन की आशायें कहां तक पूरी हो सकती हैं।

सार्वजनिक संस्थाओं को चलाने वालों में दो प्रकार के दोष हो सकते हैं। यह हो सकता है कि संचालक लोग सर्वसाधारण या समाचार पत्रों की सम्मति को या आलोचना को चिड़चिड़ाहट के साथ सुनें। यह बड़ा दोष है। किन्तु इससे भी बड़ा दोष यह है कि आर्थिक दृष्टि से स्थिरता हो जाने पर संस्था के संचालक लोग सर्वसाधारण की सम्मति की कोई भी पर्वा न करें, उसे सुनें ही नहीं। एक कान से सुनें और दूसरे कान से निकाल दें। हमें विश्वास है कि जिस संचालक मण्डली में लोकमान्य मालवीय जी का नाम हो, वह कभी सर्वसाधारण की राय की उपेक्षा न करेगी, किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रबन्ध जिन हाथों में जा रहा है, वहां यह ख़तरा अवश्य है। यह डर बना रहेगा कि कहीं विश्वविद्यालय में सर्वसाधारण की सम्मति की सुनवाई सर्वथा ही रुक न जाय।

इतनी प्रस्तावना के अनन्तर हम अपने विषय पर आते हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय से भारतीय जनता क्या आशा रखती है?

सब से प्रथम आशा भारतीय जनता की यह है कि हिन्दू-विश्वविद्यालय की नीति, उसकी कार्य प्रणाली हिन्दू समाज के हाथों में हो। हिन्दू विश्वविद्यालय सदा 'हिन्दू' पद का अधिकारी रहे, इस के लिए आवश्यक है, कि उस का नियन्त्रण तथा प्रबन्ध सर्वथा आर्यजाति के हाथों में रहे। इस पर हम म० जम्भेकर की राय का कुछ भाग उद्धृत करते हैं। आप लिखते हैं—

"तथापि, हिन्दू यूनिवर्सिटी का संघटन अभी तक काग़ज़ी-संघटन है, और वह ऐसा है जिस से प्रजा का सन्तोष नहीं हुआ। अधिकार खुले तौर पर नहीं दिए गए, यद्यपि हमें विश्वास दिलाया गया है कि सरकार को बीच में दख़ल देने का कोई अवसर ही न होगा। किन्तु असली दुनिया सुलहनामे से चलती है, और हमें उतने से ही सन्तुष्ट हो जाना चाहिए जितने से बहुत परिश्रम के अनन्तर हम अपने लक्ष्य को पासकें।"

ये शब्द एक दैववादी भारतवासी के हैं। हमारी सम्मति है कि 'हमें उतने से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए' यह समझना कठिन है कि यदि हिन्दू विश्वविद्यालय सरकार की शिक्षानीति से एक दो कदम भी इधर उधर जाने का यत्न करेगा तो सरकार को दख़ल देने का अवसर क्यों नहीं होगा? विश्वविद्यालय की कोर्ट के अधिवेशनों में संयुक्त प्रान्त के छोटे लाट के दर्शक की भांती बैठने, प्रत्येक कार्य पर दृष्टि रखने, और वायसराय के हर कार्य का विटो कर सकने के अधिकार का तात्पर्य यदि दख़ल दे सकना नहीं तो क्या? और जहां सरकार की शिक्षा नीति के विरोध में कोई कार्य दृष्टिगोचर होगा—वहां वे अधिकार क्यों काम में न लाये जायंगे, जो सरकार के अधिकारियों को प्राप्त हैं यह समझ कर चुप हो रहना कि 'हमें चार्टर ज़रूर चाहिए, चाहे उस का मूल्य स्वाधीनता के रूप में देना पड़े' एक बात है, और उतने से ही सन्तुष्ट हो जाना दूसरी बात है। हिन्दू जाति हिन्दू-विश्वविद्यालय के प्रबन्ध संघटन से सन्तुष्ट कैसे हो सकती है, जब कि विश्वविद्यालय के प्रबन्ध में उस का खुला हाथ नहीं है। इस की क्या ज़िम्मेवारी है कि हिन्दू विश्वविद्यालय भविष्य में हिन्दू जाति की समस्त इच्छाओं को पूरा कर सकेगा?

यह कहा जा सकता है कि जब भावी विश्वविद्यालय की कोर्ट तथा सेनेट हिन्दू होंगे तब ज़िम्मेवारी क्यों नहीं है? इस कथन में कुछ सचाई है परन्तु पूरी २ नहीं। मुख्य प्रश्न नीति का है। विश्वविद्यालय की मुख्य नीति किस के हाथ में रहेगी। विश्वविद्यालय के कामों पर वायसराय तथा युक्त प्रान्त के छोटे लाट के इतने अधिकार हैं—कि स्वभाव से नीति की घुण्डी सरकार के हाथ में रहेगी। घड़ी का स्प्रिंग शासकमण्डल की इच्छा से ही हिलेगा। फिर शेष पुर्ज़ों का तो गौण कार्य है वे चाहे किसी धात के हों—और किसी ढंग पर रखे गये हों। घड़ी की सूइयें तो स्प्रिंग की चाल के अनुसार ही चलेंगी।

इस विषय में हिन्दू जनता का सहज में ही सन्तोष नहीं हो सकता। हिन्दू विश्वविद्यालय की बागडोर जब तक केवल हिन्दू जाति के हाथों में न रहे, तब तक सन्तोष का प्रश्न ही नहीं। यह बिलकुल ठीक है कि चार्टर की प्रबल आकांक्षा ने हिन्दू विश्वविद्यालय का प्राण चूस लिया है।

आगे म० जम्भेकर संक्षेप से हिन्दू विश्वविद्यालय का उद्देश्य यों बताते हैं कि 'भारत वर्ष की जो वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली है, उस की त्रुटियों को पूरा करना ही इस प्रस्तावित विश्वविद्यालय का उद्देश्य है।' इस के लिये सब से आवश्यक यह है कि हिन्दू विश्वविद्यालय की रीति नीति वर्त्तमान भारतीय विश्वविद्यालयों से सर्वथा जुदा हो। क्या वर्त्तमान प्रबन्ध—संघटन के होते हुए यह आशा हो सकती है? यदि हो सकती है तो हम यही कहेंगे कि—

हते भीष्मे हते द्रोणे
कर्णे च विनिपातिते।
आशा बलवती राजन्।
शल्यो जेष्यति पाण्डवान्।

—०—

आर्यगज़ट की ईमान्दारी

जिस समय नैपोलियन बोनापार्ट फ्रांस में राज्य करता था, उस समय योरुप के कई देशों में देशभक्त सम्पादक कहाने लिए एक गुण आवश्यक समझा जाता था। वही लेखक उत्तम तथा मातृभूमि का भक्त सम्पादक समझा जाता था जो नैपोलियन को बढ़िया से बढ़िया, तीखी से तीखी और झूठी से झूठी गालियां देसके। जिस लेखक में यह गुण न हो, वह निकम्मा और देशद्रोही समझा जाता था। जिस पत्र में ऐसी गालियां न हों, वह बहिष्कार के योग्य समझा जाता था। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यगज़ट का सम्पादक होने लिए भी यह आवश्यक समझा जाता है कि सम्पादक महाशय महात्मा मुन्शीराम जी को और गुरुकुल को समय असमय पर, कारण से या बिना कारण से खूब गालियां देसके। आर्यगज़ट के वर्तमान सम्पादक महाशय गज़ट के सम्पादकत्व के लिए अपने अधिकारों को समय असमय पर स्थापित करते रहते हैं— ताकि उन्हें गज़ट की सम्पादकता के अयोग्य न समझा जाय। फिर इस कार्य के करने में सच झूठ की, सभ्यता असभ्यता की, शिष्टता अशिष्टता की पर्वा करना व्यर्थ ही समझा जाता है। म० खुशालचन्द्र जी गज़ट के बड़े कृतकार्य सम्पादक हैं—क्योंकि आपने ऐसा कर्तव्य पालन कई वार किया है। इतनी वार किया है, कि अबतक आप अपने दिल में अपने आपको अवश्य ही तीसमारख़ां समझ बैठे होंगे।

सम्पादक महोदय को अपने कर्तव्य पालन की बड़ी भारी चिन्ता है। एक श्रावण के प्रचारक में सम्पादक का एक नोट था, जिस में आर्यगज़ट की लहू से घृणा के विषय में कुछ लिखा गया था। शायद उस समय आर्य गज़ट दीर्घ निद्रा में था या प्रचारक के लिखे हुए सत्य ने गज़ट के दिल पर गहरी चोट की। सत्य की चोट गहरी ही होती है। पूरा डेढ़ महीना आर्यगज़ट मौनी रहा। किन्तु तब सम्पादक महाशय को चिन्ता हुई कि "अहो? यह तो गज़ट की सम्पादकता का अधिकार चला। इतने दिनों से महात्मा मुन्शीराम जी को गालियां नहीं दीं" १६ भादों के पर्चे में सम्पादक महाशय एक लम्बे लेख के साथ कमी पूरी करने उतरे हैं। लेख क्या है, गज़ट के सम्पादक के हृदय का नमूना है। उस में गालियों के और असभ्यता के गुच्छे हैं। लेख इतना गिरा हुआ है कि उस की दो चार पंक्तियां प्रचारक में उद्धृत करना पत्र के पृष्ठों को गन्दा करना है। गन्द का उत्तर देना व्यर्थ है। हां—एक बात हम गज़ट के सम्पादक महोदय के सन्तोष के लिये लिख देते हैं। ऐसे निकम्मे और गन्दे लेख लिखना चांद पर थूकने के समान है। सम्पादक महाशय सन्तोष रखें कि ऐले फ़ज़ूल लेख महात्मा जी तक पहुंचाये भी नहीं जाते। उनके पास इस गन्दगी की ओर दृष्टि डालने का समय भी नहीं है।

सम्पादक महोदय ने लेख में बड़ी ईमान्दारी से काम लिया है। जिस नोट से गज़ट को नाराज़गी है, वह प्रचारक के सम्पादक का लिखा हुआ था। प्रचारक का हर एक पाठक जानता है कि महात्मा जी अपने लेखों के नीचे अपना नाम देते हैं। उनके लेखों और सम्पादकीय लेखों में भेद स्पष्ट ही होता है। इस बात को गज़ट के सम्पादक महाशय नहीं जानते—या जानकर भी नहीं जानना चाहते। ख़ैर यों न सही, प्रचारक के आवरण पृष्ठ पर लिखा हुआ है—प्रवर्तक मुन्शीराम जिज्ञासु। प्रवर्तक शब्द का अर्थ भी शायद गज़ट के सम्पादक महाशय न समझना चाहें—इस लिये हम बतादेते हैं कि प्रवर्तक कहते हैं—प्रारम्भ करने वाले को। ऋषि दयानन्द को आर्य्य समाज के प्रवर्तक कहा जाता है। वे आर्य्य समाज के सम्पादक नहीं हैं—संस्थापक थे। क्या कभी सम्पादक होते हुए ही किसी का नाम पत्र पर प्रवर्तक के तौर पर लिखा जाता है। एक साधारण बुद्धि वाला व्यक्ति भी समझ सकता है कि जब महात्मा जी को प्रचारक का प्रवर्तक लिखा जाता है, और वे अपने नाम से लेख देते हैं, तो सम्पादकीय लेखों के वे उत्तरदाता नहीं किन्तु यदि इतनी ईमान्दारी से काम लिया जाय तो शायद गज़ट की सम्पादकता का अधिकार ही छिन जाय। सम्पादकीय नोट को महात्मा जी का लिखना और उस पर सभ्यता की अमृत वर्षा करना—यही गज़ट के सम्पादक महाशय की ईमान्दारी है। इतना ही नहीं—लेखके साथ ही एक नोट है। प्रचारक में उपदेशकों के विषय में दो लेख निकले थे, जिन के नीचे लेखक का नाम स्पष्ट लिखा था। उनका वर्णन करते हुए लेखक का नाम नहीं लिखा और महात्मा जी के कोसने का शुभ कार्य कर दिया है—यह सम्पादकीय ईमान्दारी का दूसरा नमूना है। तीसरा नमूना और देखिये। जिस अंक में सम्पादक महाशय ने अपनी गाली देने की योग्यता का परिचय देकर गज़ट की सम्पादकता का पूर्णाधिकार स्थापित कर लिया है, वह अंक भी प्रचारक के बदले में नहीं आया। इस गाली—अध्याय की सूचना भी हमें न मिलती यदि एक और सज्जन वह पृष्ठ काट कर हमारे पास न भेज देते। यह सब से बड़ी ईमान्दारी है। १६ भादों के अंक से पहला अंक भी आया और अगला भी आया—पर वह नहीं आया। यदि डाकख़ाने की ही भूल थी—तो भी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ऐन मौके पर भूल बड़ी बढ़िया हुई है।

एक निवेदन हम कालिज पार्टी के मुखियाओं से करते हैं। यदि वे अपनी पार्टी की भलाई इसी में समझते हैं कि महात्मा जी को गालियां दिला कर प्रसन्न हों तब तो बिल्कुल ठीक है। आर्य गज़ट के न्याय के अनुसार म० खुशालचन्द के लेख के लिये हम भी यदि म० हंसराज जी को उत्तर दाता ठहरा कर दोषी गर्दानें तो ठीक न होगा—किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि गज़ट अपनी सभा का मुख पत्र है। उस के सम्पादक को सम्पादकता का अधिकार स्थापित करने के लिये कम से कम गन्द और झूठ लिखना तो आवश्यक न समझना चाहिये। इस में आर्यसमाज की गौरवहानि है।

इन शब्दों के साथ हम इस लेख को समाप्त करते हैं और आर्य गज़ट के कम से कम दो पृष्ठों में, महात्मा जी के लिये गुरुकुल के लिये और प्रचारक के लिये बढ़िया गालियों की प्रतीक्षा करते हैं।

वर्ण व्यवस्था पर आर्य मित्र

सहयोगी आर्य्य मित्र में वर्णव्यवस्था पर एक बड़ा उत्तम लेख प्रकाशित हुआ है। लेख सम्पादकीय है। लेख के निम्नलिखित भाग पढ़ने योग्य हैं:—

"सृष्टि के आदि में मनुष्यों को चार श्रेणियों में विभक्त किया गया था। जो मस्तिष्क से कार्य करने की अधिक योग्यता रखते थे वे ब्राह्मण, जिन की शारीरिक शक्ति बढ़ी होती थी वे क्षत्रिय, जो व्यापार और पशु पालनादि कार्यों में अधिक अभिरुचि रखते वे वैश्य और जो इन तीनों में से किसी के योग्य न हो कर केवल सेवा कर सकते थे वे शूद्र कहाते थे। यदि विचार पूर्वक देखा जाय तो इस से उत्तम कार्य विभाग (Division of lauo) और क्या हो सकता है? जो जिस कार्य के योग्य हुआ उसे उस की योग्यतानुसार उपरोक्त वर्णों में से कोई वर्ण मिला करता था। और यह 'वर्ण' ही उसकी योग्यता का परिचायक समझा जाता था।

परन्तु आज इस प्रकृत वर्णव्यवस्था की उल्टी अवस्था हो रही है। जिस प्रकार सहस्रों मत दिखाई देते हैं उसी प्रकार 'जातियों' और 'उप जातियों की संख्या भी कम नहीं है। मत और जाति भेद दोनों ही द्वेष के मूल और अधःपतन के कारण हैं। जब से इन का जन्म हुआ तभी से हम लोगों के ह्रास का विकास हुआ। जो जिस वंश में जन्मा वह उसी का हो गया। अपनी योग्यता अयोग्यता का किसी ने विचार ही न किया। इतने पर ही सन्तोष होता सो भी नहीं 'ऊंच नीच' के विचार अलग उछल कूद मचाने लगे "उस ने घटिया कुल में जन्म लिया है।" "मैं बढ़िया खानदान और जाति का आदमी हूं" ऐसी बातों ने कृत्रिम जाति क्षेत्र में और भी विरोध के बीज बो दिये जो आज वृक्ष बन कर कटु फलों के भार से लदे हुये हैं।

आर्य्य समाज में हमें ऐसे जाति भेद की चरचा देख दुःख होता है। ऋषि दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास के ८४ वें पृष्ठ की नवीं पंक्ति में स्पष्ट लिखते हैं:—"वर्णव्यवस्था गुण कर्म स्वभाव के अनुसार ही होनी चाहिये" एक नहीं अनेक स्थलों पर उन्होंने इस बात को दुहराया है। कहीं २ उन्होंने गुण कर्म का ही उल्लेख कर के इस विषय की ओर संकेत किया है। कैसी अच्छी कसौटी है! इस के अनुसार जो जैसा ठहरे वह तदनुकूल ही "वर्णों" का अधिकारी समझा जाय। आगे इसी समुल्लास के ८५ वें पृष्ठ की २५ वीं पंक्ति में ऋषि लिखते हैं:—"जो नीच भी उत्तम वर्ण के गुण, कर्म स्वभाव वाला होवे तो उसको भी उत्तम वर्ण में और जो उत्तम वर्णस्थ होके नीच काम करे तो उसको नीच वर्ण में गिनना चाहिये।"

बताइये, ऋषि के उपरोक्त आदेश के अनुसार कार्य्य कर के क्या कोई जन्म मात्र से किसी वर्ण विशेष का अधिकारी बन सकता है? ऋषि ने गुण कर्म स्वभाव लिख कर ही छोड़ दिये हों सो नहीं बल्कि उन्होंने आगे चल कर इस विषय का खूब विस्पष्टीकरण किया है। मनु महाराज के श्लोक पेश करते हुये चौथे समुल्लास के ९० पृष्ठ पर वे लिखते हैं:—"ये संक्षेप से वर्णों के गुण कर्म लिखे। जिस २ पुरुष में जिस वर्ण के गुण कर्म हों उसे उस उस वर्ण का अधिकार देना।"

बस, वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में आर्य्यसमाज अथवा वैदिकधर्मी मात्र के लिये इस से अधिक प्रामाणिक बात दूसरी नहीं हो सकती। क्योंकि यह मनु भगवान की आज्ञा है। इसे न मान कर वृथा की मैं मैं 'तू तू' में पड़ना सन्मार्ग से कोसों दूर भाग जाना है।

इस में सन्देह नहीं कि गुरुकुलों में पढ़ने वाले देश और धर्म के आशास्थल ब्रह्मचारी ही यथार्थ रूप से वर्ण व्यवस्था के अधिकारी होंगे जिन लोगों ने ब्रह्मचर्य्यादि धारण कर यथाविधि विद्याध्ययन नहीं किया वे कदापि किसी वर्ण में परिगणित नहीं हो सकते।

हिन्दी समाचार की नीति

दिल्ली के सहयोगी हिन्दी समाचार की नीति का प्रश्न आज कल गर्म हो रहा है। सहयोगी लिखता है—"जहां सहयोगी प्रकाश उसे 'कट्टर पौराणिक' शब्द से सम्बोधित करता है वहां प्रतिष्ठित सहयोगी 'कलकत्ता समाचार' ने हिन्दी समाचार के लिये विधर्मी की उपमा प्रदान की है' सचमुच यह बड़ा पेचीदा प्रश्न है। 'न इधर के रहे न उधर के हुए' न सनातनी ही हुए, न सुधारक ही बने। इस दशा को देख कर सहयोगी ने जो अपना मार्ग निश्चित किया है, वह प्रशंसनीय हैं। सहयोगी लिखता है, 'ऐसी दशा उपस्थित होने में हिन्दी समाचार के लिये एक मात्र यही मार्ग रह गया है कि वह समदृष्टि भाव से अपना कर्त्तव्य पालन करता रहे' हम इस मार्ग में सहयोगी का हृदय से अभिनन्दन करते हैं। सहयोगी ने सनातन धर्म का पट्टा कलकत्ता समाचार के नाम देकर भी अच्छा ही किया है। समाचार का अभ्युदय वस्तुतः डूबते हुए सनातनधर्म के उद्धारार्थ ही हुआ है। सहयोगी का बस चलेगा तो मध्य कालीन भारत के जातीयभवन को कोई छेड़ तक न सकेगा—न कोई उस की ईंट हिला सकेगा, न उस की गिरती हुई दीवारों की मरम्मत कर सकेगा, और नहीं कोई उस के बिगड़े हुए कमरों में कलई पोत सकेगा। भारतीय भवन वैसा का वैसा एक दर्शनीय नमूना खड़ा रहेगा—और संसार भर के यात्री आ कर कहा करेंगे कि हां—यह भवन एक दिन बड़ा आलीशान रहा होगा।"

विद्यार्थियों के स्ट्रायक

ये नए ढंग के स्ट्रायक भारत के भविष्य को बड़ा सन्दिग्ध बना रहे हैं। मज़दूरों के स्ट्रायक जाति के बाह्य भाग भाग पर असर करते हैं—यदि अन्दर तक उन का असर पहुंचता है तो भी शरीर के निचले भागों तक ही परिमित रहता है। किन्तु जब वही प्रथा विद्यार्थियों तक पहुंच जाय तब तो समझिए—दिमाग़ में विकार है। जिस देही के दिमाग़ में विकार हो जाय, उस की कोई गति नहीं। स्कूलों और कालिजों के विद्यार्थियों का मिल कर स्ट्रायक कर देना जाति के मर्मस्थल में दोष की सूचना देता है। अभी मद्रास की स्ट्रायक का समाचार सुना था—दूसरे दिन पटने से वैसा ही समाचार आया। यह शिक्षा के बिगड़े हुए आदर्श के परिणाम हैं। न जाने भारत वासी कब समझेंगे कि हमारी शिक्षा की किश्ती भँवर में है।

प्रकाश का ऋष्यङ्क

दीवाली पर सहयोगी प्रकाश का ऋष्यङ्क प्रतिवर्ष की भांती इस वर्ष भी प्रकाशित होगा। सामाजिक संसार में वैदिक मेगज़ीन के गुरुकुलांक तथा प्रकाश के ऋष्यङ्क की विशेष प्रतीक्षा रहती है। ऋष्यङ्क में उत्तमोत्तम लेख होंगे। इस बार एक विशेषता यह होगी कि जहां पहले इस अंक में केवल ऋषिविषयक लेख हुआ करते थे, अबकी बार वैदिक सिद्धान्तों का महत्व दिखाने वाले भी लेख होंगे।

लोकमान्य तिलक की विलायत यात्रा

लोकमान्य तिलक को विलायत जाने के लिए पासपोर्ट मिल गया है। वे मि० चिरोल के मुकद्दमे के सम्बन्ध में इंग्लैण्ड जायंगे। इस पर पौराणिक ब्रह्मा का आसन डोल गया है। सनातन धर्म की मर्यादा के रक्षक समाचारपत्र लोकमान्य तिलक की इस इच्छा से बड़ा असन्तोष प्रकट कर रहे हैं। उनमें से एक ने तो यहां तक धमकी देडाली है कि यदि महात्मा तिलक ऐसा करेंगे तो हिन्दू धर्मावलम्बी उनके लिए पुराना आदरभाव नहीं रख सकते। देखें—उन लोकमान्यतिलक के लिए, जिन्हें सर्वास्त्रसम्पन्न राज्यकीय शक्तियों की धमकियां सत्य से नहीं डिगा सकीथीं, समाचार पत्रों की पोली धमकियां क्या बल रखती हैं? ऐसे समाचार पत्रों से हमारा इतना निवेदन है कि वे व्यर्थ की धमकियां न दें क्योंकि लो० मा० तिलक अवश्य विलायत जायंगे और पत्रों को उनका आदर फिर भी करना ही पड़ेगा।

पंजाब के समाचार पत्र

पंजाब के समाचार पत्र अपने झगड़ालूपन के लिए बहुत बदनाम हो रहे हैं। इस में सन्देह भी नहीं कि पंजाब में मत भेदे होते ही गर्मी का पारा बहुत ऊपर चला जाता है। मत भेद अन्यत्र भी होते हैं विवाद और आलोचनायें भी सारे प्रान्तों में होती हैं किन्तु इतनी तेज़ी अन्यत्र नहीं पाई जाती। विवाद की सीमा को पंजाब के पत्र शीघ्र ही पार जाते हैं। इसकी एक ही उपमा हमें याद है। लग भग तीन सालों से आर्यभाषा के पत्रों की दशा में बड़ा भेद आगया है। इस से पूर्व आर्यभाषा का पत्रसमूह भी विवाद की सीमा को पार करने के लिये विशेष प्रसिद्धि रखता था। आज कल हिन्दी के सामयिक साहित्य की लय ज़रा धीमी है। यह लक्षण बहुत उत्तम है। किन्तु पंजाब के उर्दूपत्रों ने अभी मर्यादा का पाठ नहीं पढ़ा। अभी कुछ सप्ताह बीते ट्रिब्यून पत्र ने विवाद में सभ्यता की पराकाष्ठा करदी थी, आज ही हमने आर्य गज़ट की विचार शैली की ओर निर्देश किया है, उधर लायल गज़ट और पंजाब समाचार के सम्पादकों मालिकों ने एक दूसरे पर मान हानि की नालिश ठोक दी हैं।

इतने पर भी शान्ति नहीं। लायलपुर से एक नया सिख पत्र निकला है। इसने अपने अंक में 'एक लोंडे अखबार नवीस के अख़बार का जनाज़ा' शीर्षक देकर लेख लिखा है, जो दो सिख समाचारपत्रों में तू तू मैं मैं का कारण होगा। विवाद होते रहें—मतभेद भी हों—यह तो संसार का मार्ग ही है, किन्तु उस में सीमा का उल्लंघन न होना चाहिए। समालोचना का स्थान गाली और शिष्टता का स्थान अशिष्टता ले ले तो फिर परस्पर प्रेम की आशा नहीं रहती।

—:o:—

"नगरकीर्तन और आर्य्यसमाज सहारनपुर"

म० शालिग्राम जी के पत्र का कुछ भाग नीचे दिया जाता है। आर्य्य सज्जन इस विषय पर विचारकरें।

आजकल आर्य्यसमाजों के उत्सवों में नगर कीर्तन का करना आवश्यक ख़याल किया जाता है। जो आर्य्यसमाजें नगर कीर्तन को शोभायमान और बारौनक़ बनाने में असमर्थ होती हैं चाहे धन की कमी से या उत्सव समय पर अच्छे भजनीकों के न मिलने से, वह बहुधा अपने उत्सव ही को नहीं मनाती।

उन भजनीकों को छोड़ कर जो कि संगठित संस्थाओं के आधीन कार्य्य करते हैं, जिन में दुर्भाग्य वश महात्मा जी के गत सप्ताह के सद्धर्मप्रचारक के लेखानुसार बहुत सी ऐसी भी हैं जिन के संचालकों ने धन के एकत्र करने में अपने आप को अशक्त जानकर अथवा स्वयं समय न दे सकने के कारण से, धन संग्रह करने का कुल भार भजनीकों पर छोड़ा हुआ है और जो रोग बढ़ता २ इस क़दर दृढ़ गया है कि एक मुसिया प्रतिनिधि सभा के कुल उपदेशकों का मुख्य कर्तव्य धन संग्रह करना ही अब हो गया है और क्योंकि उन विचारों की वेतन वृद्धि अधिक धन एकत्रित करने पर ही निर्भर है इस लिए वह धर्म के प्रचार के चन्दे पर पारवा न करते हुए अपने समय को धन संग्रह करने में अधिकतर लगाते हैं और जो काम समाजों को समाजों द्वारा होना चहिये या वह उपदेशकों के सिर थोपा जा रहा है। इस नीति पर चलने वाले भाई अब भी सम्भल जावें, बहुत से खुद ग़रज़ लोगों ने गायन पार्टियें जारी करदी हैं और भजन कीर्तन करने के लम्बे चौड़े इस्तहार निकाल कर लोगों को ठगते फिरते हैं। खूब चैन उड़ाते हैं, यहां तक है कि एक उत्सव में सम्मिलित होने की १०० एक रुपया तक की फ़ीसें मांगी जाती हैं शोक! कि इन भले मानसों को कर्णरस में बहे हुए स्थानीय लोगों से बार २ लेने की ख़ातर अथवा अपने नगरकीर्तन की शोभा को बढ़ाने के विचार से बहुत सी आर्य्यसमाजों के मन्त्री महाशय एक २ पैसा एकत्रित किये हुए चन्दे में से ऐसी भारी रक़म देने को तय्यार होजाते हैं. वेद प्रचार और गुरुकुलादि को चाहे कुछ सहायता मिले या न मिले परन्तु इन किराये के टट्टुओं का हिसाब फ़ौरन चुका दिया जाता है। धन अधिक प्राप्त होने से वह शीघ्र दुराचारी हो जाते हैं और आख़िरकार अपने दुराचारों का फल उन्हें भुक्तना पड़ता है जैसा कि सहारनपुर के ज़िले के चन्द ऐसे भजनीक जेहलख़ाने की हवा खा रहे हैं।

नगरकीर्तन में अकसर देखा जाता है कि जिस भजनीक की आवाज़ सुरीली हुई उसी ओर लोगों का जमघटा जा मौजूद हुआ और अन्य भजन मंडलीयें वे रौनक़ हो गईं—इस के अतिरिक्त जितना व्यय सारे उत्सव पर किया जाता है लग भग उतना ही नगरकीर्तन में हो जाता है और जितना लाभ नगरकीर्तन में होता है वह उस धन के मुक़ाबले में जो कि नगरकीर्तन पर ख़र्च होता है बहुत न्यून है—इन सब त्रुटियों पर विचार कर के आर्य्यसमाज सहारनपुर की अन्तरङ्ग सभा ने यह निश्चय कर लिया है कि आगामी वार्षिकोत्सव पर जो कि १७, १८, १९ अक्टूबर को होगा नगरकीर्तन न किया जावे लाहौरादि बड़ी बड़ी समाजों को छोड़ कर जहां कि नगरकीर्तन ख़ास हैसीयत रखता है बेहतर हो अगर अन्य समाजें भी इस ओर अपना ध्यान दें।

आप का शुभचिन्तक शालिग्राम
मन्त्री आर्य्यसमाज सहारन पुर।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

राही के विचार

(३)

सयाजीराव का बड़ोदा

बड़ोदानगर का रेलवेस्टेशन अच्छा शान्दार बना हुआ है। स्टेशन से बाहिर सड़क पर जो गाड़ियाँ खड़ी रहती हैं, उन की शान भी विचित्र है। ये गाड़ियां गुजरात की विशेषता हैं। ये बड़ा आराम देने वाली, और छती हुई गाड़ियां और प्रान्तों में कम दिखाई देती हैं। गाड़ी पर सवार होकर नगर की ओर चल दीजिये। थोड़ी दूर जाकर कमाठीबाग के दरवाज़े पर आप को एक विशाल मूर्ति दिखाई देगी। मूर्ति दर्शनीय है। एक ऊंची वेदी पर घोड़े की मूर्ति है, और उस पर पूरे सिपाहियाना वेश में वर्त्तमान गायकवाड़ महाराज सयाजी राव की रमणीय मूर्ति है। मूर्तिकार ने महाराज की आंखों का तेज और गाम्भीर्य दिखाने में कमाल कर दिखाया है। यह मूर्ति बड़ोदे की कृतज्ञ प्रजा ने अपने महाराज के प्रति प्रेम और भक्ति के भाव दिखाने के लिए स्थापित कराई थी। रेल से आने वाले यात्री को बड़ोदे में यही मूर्ति पहले दृष्टिगोचर होती है— और निःसन्देह—इसी में सारा बड़ोदा भी आंखों के सन्मुख आजाता है।

आज का बड़ोदा क्या है? सयाजीराव की प्रतिकृति है। सयाजीराव ने उसे बनाया है। वर्तमान महाराज के आने से पूर्व वह एक सामान्य गुजराती नगर था। आज उस की चौड़ी सड़कें, उत्तम उद्यान, पग २ पर शिक्षणालय, शान्दार हाईकोर्ट, योरुप के राज महलों को मात करने वाला लक्ष्मी विलास राज भवन, अद्भुतालय और जीवालय, और सब से बढ़कर बढ़िया पुस्तकालय—ये सब चीज़ें मिल कर उसे भारत वर्ष के प्रसिद्ध और दर्शनीय नगरों में गिनवा रही हैं। राजधानी ही नहीं—सारी रियासत ही सयाजी राव के हाथ की कृति है। किसानों से जाकर पूछिये—वे वर्त्तमान महाराज की महिमा गाते हैं। वर्तमान महाराज से पूर्व किसान लोग रयासत के कर्ज़दार थे। कोई एक करोड़ के लगभग रुपया रयासत ने उनसे लेना था। महाराज सयाजीराव ने वह सारा क्षमा कर दिया। इस पर किसान आज भी कृतज्ञता के आंसू बहाते हैं। रयासत में कई लोकल रेलवे निकाल कर खानों का काम प्रारम्भ कराया है—उस से हज़ारों आदमी पल रहे हैं। सब से बढ़कर गांव २ में सरस्वती के मन्दिर शिक्षणालय बने हुए हैं जो सयाजीराव की अटूट यादगारें हैं।

बड़ोदा रयासत में आज जो कुछ है, वह वर्तमान बड़ोदा नरेश का काम है। दक्षिण हैदराबाद को लोग 'चन्दूलाल का हैदराबाद' कहा करते थे, वर्तमान बड़ोदे को 'सयाजी राव का बड़ोदा' कहना कहीं अधिक संगत है। वर्तमान महाराज से पूर्व बड़ोदे में महाराज मल्हारराव राज्य करते थे—उन्हें अयोग्य समझ कर ब्रिटिशसरकार ने राजगद्दी से उतार दिया था। उन की स्त्री महारानी यमुना बाई ने गोद में दत्तक लेने के लिए राजवंश के तीन बालकों को बुलाया। उन के नाम आनन्दराव, गोपालराव और सम्पतराव थे। उन तीनों से पूछा गया कि 'आप लोग बड़ोदे में क्यों आये हैं' सब से बड़े आनन्दराव ने कोई उत्तर न दिया; सम्पतराव छोटे थे। उन्होंने कहा 'मुझे मालूम नहीं' सबसे छोटे ने बड़े विश्वास से उत्तर दिया कि 'मैं राजा होने आया हूं' जो अपने में विश्वास करता है, संसार उस पर विश्वास करता है। महारानी यमुना बाई ने गोपालराव को गोद में लेलिया। उसी दिन उस बालक के शब्दों ने बता दिया था कि 'यह साधारण बालक नहीं है। यह बड़ोदे का सच्चा राजा होगा' वही गोपालराव आज सयाजीराव गायकवाड़ के नाम से भारत में ही नहीं, देशदेशान्तरों में भी प्रसिद्ध हो रहा है।

महाराज सयाजीराव ने पहले से ही नया रास्ता पकड़ा। सारी जाति और ब्राह्मणों के रोकते हुए वे योरप की सैर करने गए। पुराने लोग दांतों में अंगुलि दबाते रहे और महाराज सयाजीराव अपनी महारानी चिमना बाई को लेकर फिर विदेश की सैर करने गये। आज भी गायकवाड़ के काम अनूठे हैं। कोई उन्हें पसन्द करे या न करे—उन के अनूठेपन में सन्देह नहीं। बड़ोदे की प्रजा एक अचम्भे से छूटती नहीं कि दूसरा अचम्भा आजाता है। जो कार्य ब्रिटिशराज्य में बीस सालों तक लटक कर भी नहीं हो सके, वे बड़ोदे में आंख मीचते हो जाते हैं। शासन और न्याय विभाग को जुदा करने के प्रश्न पर हांपते हुए कांग्रेस को शताब्दि का चौथाई हिस्सा बीत गया— बड़ोदे में वह प्रश्न कभी का हल हो चुका—दोनों विभाग जुदा हो गये। पंचायत प्रथा जारी होगई—किसानों के अपने बैंक जारी हो चुके — प्रारम्भिक शिक्षा बिना शुल्क और बाधित हो गई— अछूतों और अन्त्यजों के लिए शिक्षा का बढ़िया प्रबन्ध हो गया। इतना ही नहीं जो लोग साधारण हिन्दुओं के लिए अछूत हैं, उनके सहस्रों यात्रियों को महाराज ने अपने महलों में निमन्त्रित किया और वहां भोजन कराया और कपड़े बांटे। [illegible] के कन्या बीच में घूमते और बच्चों की पीठ थप [illegible] रहे। अन्त्यजों में से ही एक [illegible] धारा सभा (Parliament) में भी ले लिया। अभी कल की बात है कि बड़ोदे में एक नया नियम बना है। और परीक्षाओं की भांती पुरोहिताई के लिए भी परीक्षा देनी होगी। कोई भी व्यक्ति, जो उस परीक्षा में पास न हो, किसी प्रकार का भी संस्कारादि कराने का अधिकारी न होगा। बड़ोदे के पौराणिक समाज के लिये अचम्भे पर अचम्भा आ रहा है। सबों के लिये आश्चर्य पर आश्चर्य आरहा है—किन्तु महाराज सयाजी राव को न अचम्भा है—न आश्चर्य है—जो राजमार्ग उन्हों ने बनाया है—उस पर चले जा रहे हैं। देखने वाले प्रतीक्षा सहित देख रहे हैं—कि 'देखें—कल के बड़ोदे में कौनसी नई घटना संघटित होती है?'

बड़ोदे में नित्य नई उन्नति हो रही है। उस उन्नति का उद्भवस्थान सयाजीराव का दिमाग़ है। बड़ोदे की ईंट २ पर सयाजीराव के हाथ का निशान है। तभी हम कहते हैं कि आज का बड़ोदा सयाजीराव का बड़ोदा है।

राही

सच्चे आर्य्य ।

(षट्पदी छन्द)

(१)

मन, वच कर्म्म पवित्र सर्वदा रखते हैं जो;
कर जप, तप, मख, दान सुधाफल चखते हैं जो।
बाह्याडम्बर एक न जिनमें पाया जाता;
भरा हुआ सारल्य—भाव जिनमें लख आता ॥
जो पर उपकारी, धीरमति, ध्रुव धर्म्मात्मा सिद्ध हैं;
कवि कर्ण वहा जन जगत में सच्चे आर्य प्रसिद्ध हैं॥

नैतिक उद्घोष ।

(सोरठा)

(१)

है न जिसे अधिकार, अपनों पर भी कर्ण कवि;
वाणी-बाण प्रहार, क्यों वह औरों पर करे ? ॥

तुकड़ "कर्ण"

—:o:—

प्राप्त पत्र

सनातन धर्म सभा जगाधरी

वामन द्वादशी

गत ७ सितम्बर को स्थान २ तथा शहर २ में वामन द्वादशी का उत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया । जगाधरी एक जिला अम्बाला पंजाब में साथ ही सनातन धर्म सभा का वार्षिकोत्सव भी बड़ी धूम से मनाया गया । नाना स्थानों से प्रसिद्ध विद्वान इस उत्सव में सम्मिलित हुए । पटना के पं० गंगाविष्णु--तथा मालरापाटन के वासी पं० गिरिधर शर्म्मा चौबे आचार्य ऋषिकुल भी पधारे थे।

आज कल सनातन हिन्दू मात्र में शास्त्रीय चर्चा से प्रेम बढ़ता हुआ प्रतीत होता है । क्योंकि प्रायः प्रत्येक उत्सव पर चाहे किसी समाज का हो शास्त्रार्थ की प्रतीक्षा सर्व साधारण करता रहता है । इस उत्सव पर आर्य्य सेवक सभा जगाधरी ने आर्य विद्वानों को नाना स्थानों से इस शास्त्रचर्चा के लिये तथा वामन द्वादशी पर प्रचारार्थ निमन्त्रण देकर वैदिकधर्म को फैलाने का अच्छा प्रयत्न किया जिसमें आर्य विद्वान् बुलन्दशहर के पं० गंगाशरण तथा गुरुकुल से पं० श्री कन्हैय्यालाल जी और जयदेव शर्म्मा स्नातक भी उपस्थित हुये।

आर्य्य समाज के अधिवेशन सायं ६ से १० तक ७, ८, ९, तथा १० सितम्बर तक लगते रहे । श्रोताओं की उपस्थिति अच्छी रहती थी । व्याख्याताओं का प्रभाव अत्युत्तम पड़ा । दूसरी तरफ़ सनातन धर्म सभा का उत्सव भी प्रति दिन रात्री को ९ से १½ बजे तक धौक में लगा करता था । साथ ही मेले के कारण चौबोले आदि भी अश्लील गीत बाज़ार में होते रहे हैं । सनातनी भाइयों ने चौबोलों में उत्सव की अपेक्षा अधिक भाग लिया । पर फिर भी उत्सव में पर्याप्त उपस्थिति रहती थी ।

प्रथम दिवस [८ सित०] रात्रि को पं० गंगाविष्णु का व्याख्यान "अछूतों के साथ सनातनी भाइयों का क्या वर्त्ताव होना चाहिये" इस विषय पर हुआ । व्याख्याता महाशय ने अपने विषय का तो नाम लेकर प्रथम अवतार वाद को समर्थन किया । परन्तु अन्त में सुदामा और कृष्णकी कथा छेड़कर अपने विषय को कहीं २ स्पर्श करजाते थे । तथापि व्याख्यान में बहुत कुछ सार था । दबी ज़बान से बहुत से संशोधन सनातनी भाईयों को दिये गये ।

[१] पं० जी ने बताया कि ब्राह्मणादि उच्च वर्णों को कभी भी नीच वर्णों से नहीं मिलना चाहिये क्योंकि जिस प्रकार सोना अलग रहता हुआ ही अपना पूरा मूल्य रखसकता है अन्यथा अन्य पीतल ताम्बा आदि धातुओं से मिलने पर अशुद्ध सोने का मूल्य मान कुछ नहीं रहता इसी प्रकार ब्राह्मणादि वर्णों को अपना मान रखने के लिये पृथक् ही रहना चाहिये ।

[२] पं० जीने कहा कि जिस प्रकार श्री कृष्णने अपने पुराने साथी सुदामा को मैले फटे कपड़ों के होते हुए भी बिना किसी हिचक के अपने गले लगाया उसी प्रकार हमें भी प्रेम से परस्पर छोटे बड़े का ख़्याल न करके परस्पर गले लगाना चाहिये ।

परन्तु पं० जी की उपरोक्त दोनों बातें परस्पर विरोधी थीं ।

[३] इसी प्रकार शुद्धि के प्रकरण को छूते हुए पं० जीने "गंगा गंगेति यो ब्रूयाद्योजनानां शतैरपि।"

इस गंगा माहात्म्य के श्लोक की सत्यता प्रतिपादन करते हुए बताया कि यद्यपि लड्डू २ कहने से मूंह मीठा नहीं होता तथापि खट्टा नीम्बू सुनने से दांत झरने लगता है । इस से शब्द से भी बड़ी तृप्ति हो सकती है । इसी प्रकार मृतक पितरों के श्राद्ध में भी दिया लड्डू आख़िर कचौड़ी आदि तो पितरों को नहीं पहुंचता परन्तु फिर भी शब्दमय पिण्ड, पहुंच जाते हैं उन से ही तृप्त होते हैं । खूब कहा पं० जी ने । सनातनियों को सैंकड़ों रुपये खर्च न करके श्राद्ध करने की सुगमरीति बतलादी है ।

इस प्रकार पं० जी ने सुदामा को जीवात्मा तथा कृष्ण को परब्रह्म बता कर उनका योग द्वारा मेल बनाकर कथा समाप्त की । और पूजा आदि कर्मकाण्ड पर ज़ोर दिया । दूसरे दिन पं० गिरिधर शर्म्मा चोबे ऋषिकुल का व्याख्यान हुआ । उसमें पं० जी ने संस्कारों की अत्यंत मनोहर व्याख्या करते हुए प्राचीन सूत्रकारों तथा धर्म शास्त्र कारों की बड़ी ही विद्वत्ता बताते हुए वर्तमान में फैले हुए बालविवाहादि कुरीतियों पर सनातनधर्म्मावलम्बियों को अत्यन्त लज्जित किया । और विशेषतया विवाह जैसे पवित्र संस्कार में रण्डियों के नाचको तो बहुत ही घृणित बताया । कहा कि इस बात का सनातन सभा के प्लेटफार्म पर नाम लेते हुए भी शर्म आती है । यह व्याख्यान बहुत मनोहर तथा प्रभाव शाली हुआ ।

तृतीय दिवस पं० जीका ही वर्ण व्यवस्था पर व्याख्यान हुआ । वर्णव्यवस्था की बहुत सुन्दर रूप में व्याख्या की, परंतु अन्त में गुण कर्म से बयान कर जन्म से ही व्यवस्था की जिस में एक हेतु यह भी दिया कि ब्राह्मणों का स्थान अन्यों से लिये जाने से ही आर्य्यसमाज में घास मांस की पार्टी तथा वर्तमान में बाबू ब्राह्मण पार्टी बनी हैं । इत्यादि ।

इस प्रकार सनातनधर्म सभा का उत्सव समाप्त होता है । परन्तु एक विचित्र घटना भी होती है ।

वह यह कि प्रथम दिवस की रात्रि में शंकासमाधान के समय एक आर्य्यसभा-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धने खुली तौर पर शास्त्रार्थ का चेलेंज देदिया ।

तदनुसार अगले दिन लिखित चैलेञ्ज भी सनातन धर्म सभा के दफ़्तर में भेज दिया गया । परन्तु वे नियमादि निर्धारण करना अपना कर्त्तव्य न समझते थे। दो तीनवार पत्रों के भेजने भिजाने से अन्त में इधर उधर से कतिपय प्रति निधियों की उपसभा द्वारा कुछ एक नियम निर्धारित हुए। जिनमें मुख्य ये थे।

(१) सभापति का कर्त्तव्य, समय को देखना पब्लिक को नियम में रखना।

(२) मध्यस्थ पब्लिक होगी ।

(३) उभय पक्षवाले अपने व्यक्तियों के नियम में रखने के ज़िम्मेवार होंगे ।

(४) शास्त्रार्थ मृतकश्राद्ध पर होगा ।

(५) केवल वैदिक प्रमाण दिये जायगे।

(६) ताली आदि कोई न बजावे ।

(७) शास्त्रार्थ दो घण्टे होगा ।

परन्तु आर्य भाईयों ने इन नियमों को स्वीकार करते हुए एक नियम बढ़ाने को और कहा कि—

दोनों वादी परस्पर के पक्ष के खण्डन तथा मण्डन में उनके माने ग्रन्थों के भी प्रमाण ले दे सकते हैं ।

इस पर पं० गिरिधर शर्मा तथा अन्य सनातनी असन्तुष्ट थे ।

शास्त्रार्थ समय १० सितम्बर की रात को ९½ तथा १० से प्रारम्भ था । परन्तु सनातनियों की ओर से यह विश्वस्त ख़बर मिली । सनातनी लोग डण्डे लेकर दङ्गा करने की तय्यार हैं । इस से और शास्त्रार्थ के भय से ९ बजे के पूर्व ही २० एक सनातनी पहले ही थानेदार के पास गये और दंगे के बारे में चर्चा की और कहा कि हमतो शास्त्रार्थ ही करना नहीं चाहते थे । और नाहीं हम इस भावी दंगे फ़िसाद का प्रबन्ध कर सकते हैं । अतः शास्त्रार्थ रोकदें । थानेदारने ९½ बजे आर्य्यसमाज के ४ एक व्यक्तियों को बुलाया और कहा कि मैने सुना है कि बहस होने वाली है—उस में दंगे का अन्देशा है । इस से यह सब रोका जाता है । यदि तुम दोनों अपनी अर्ज़ियें दो तो मैं ज़िले में भेज देता हूं वहां से मंज़ूरी आजायगी । तब बाकायदा बहस मुबाहसा सरेआम बाज़ार में कर सकते हो । सनातनियों के जलसे के बारे में कहाकि मेरी बग़ैर इजाजत के सरेबाज़ार क्यों तीन दिन से जलसा हो रहा है मैं तो वामन द्वादशी के लिये ही मंज़ूरी दी थी । अच्छा शीघ्रही अपने गीतादि समाप्त करो इत्यादि ।

तिसपर भी सनातनधर्म के मन्त्रीने अपनी सभा में यह कहा कि आर्यसमाज में से एक ..... महाशय ने स्वयं जा कर थानेदार को इत्तिलाह की थी । परन्तु यह सत्य नहीं क्योंकि आर्य भाईयों के वहां पहुंचने से पहले २० एक सनातनी वहां पहले से मौजूद थे ।

दूसरा यह कि ९½ बजे हमने एक व्यक्ति को यह सूचना देने को भेजा कि हम लोग तय्यार हैं यदि सनातनी तय्यार हों तो हमें शीघ्र ही आनेको कहें । तिसपर वहां के लोगों ने यह कहा कि सब "उत्तर दाता लोग यहां है नहीं । "इत्यादि ।

बहुत से सनातनियों के मुखसे पुराणों की बाबत यह भी सुना गया कि पुराण तो कच्ची रोकड़ हैं ।

इन सब बातों से हम कुछ परिणाम नहीं निकालते पाठक स्वयंपरिणाम निकालेंगे । वामनद्वादशी के मेले पर आर्य भाइयों ने प्रचारका अच्छा प्रबन्ध किया था । खूब श्रोता डटे रहे । एक वेदान्ती की शंका समाधान भी की गई । इस उत्सव पर आर्य धर्म के प्रचारके लिये अम्बाले के उपदेशक पं० लालमुकुन्द जी तथा पं यतीन्द्र शर्मा भी उपस्थित थे ।

एक दर्शक

—०—

संसार की गति विचित्र है । योरप में समाचार-पत्रों के मूल्य बढ़ रहे हैं क्योंकि काग़ज़ तथा अन्य सब सामान महंगा हो रहा है । भारत वर्ष में भी पत्रों की माली हालत ऐसी ही है ।' किन्तु अमरीका के पत्र अपना मूल्य घटा रहे हैं । हम रो रहे हैं और वे हंस रहे हैं ।

—०—

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

ग्यारहवां परिच्छेद

(गतांक से आगे)

कमल देवी कहां गई ?

तेजसिंह के ठीक ठाक कर के संभालने में कुछ विलम्ब लगा । वह उस समय बिल्कुल बेहोश पड़ा था । उसे ज़रा भी सुध बुध न थी । कल्याणसिंह ने बड़े यत्न से उस के घाव का सामयिक उपचार किया, और तब आदमियों को कैदी गुलामक़ादिर और तेजसिंह दोनों को उठा कर पालकी के पास चलने का आदेश किया । अभी तक उन्हें पालकी का कोई ख़याल न आया था । उस पालकी में बे-चारी एक अकेली हिन्दू अबला थी । उसे अकेला छोड़ने में क्या हानि थी क कन्या मुसलमान सिपाहियों ने समझा—क्या का इस जंगल में वह अकेली कहां जा सक्ती है । मुसलमान सिपाही ऐसा ही विचार कर पालकी अकेली छोड़ गये थे । अब तक कल्याण या मुराद को भी उधर का ध्यान न था । ध्यान आते ही कल्याणसिंह ने सिपाहियों से पूछा कि 'तुम लोग पालकी की संरक्षा के लिए किसे छोड़ आये हो ?' सिपाहियों ने उत्तर दिया कि 'किसी को नहीं ।' कल्याणसिंह का चित्त एकदम चंचल हुआ । मुसलमान सिपाही एक राजपूत अबला के बल को नहीं जानते थे—राजपूत कल्याणसिंह जानता था । उन सिपाहियों ही का क्या दोष था ? भारत में राज्य करने वाली सारी मुसलमान जाति की हिन्दुओं के और विशेषतया हिन्दू अबलाओं के विषय में बड़ी अयथार्थ भावना थी । वे कभी एक हिन्दूरमणी के सामर्थ्य को समझ ही नहीं सक्ते । इसी लिये उन्हें पग २ पर ठोकर लगती थी, और कृतकार्यता नहीं हो सकती थी ।

कल्याणसिंह के चित्त में सन्देह का संचार हुआ । वृथा बातचीत और घ-

मकी में समय बिताना हानि कारक समझ कर सारा समूह वहां को चला जहां पालकी थी। पालकी कुछ दूर नहीं थी, वहां से कोई तीन मिनिट के रास्ते पर झाड़ियों के एक गुञ्जान में रखी हुई थी। वह गुञ्जान यमुना की ओर को था। झाड़ी के पत्तों में से कहीं २ थोड़ा सा अवकाश था—उस में से यमुनाजल दिखाई देता था। तीन मिनिट के रास्ते को दो मिनिट में ही पार करके सिपाही लोग झाड़ी के मुंह पर पहुंचे। सामने जो कुछ दिखाई दिया, उस से वे सब स्तब्ध से रह गये। पालकी का द्वार खुला पड़ा था और उस में कमलदेवी नहीं थी। कमलदेवी कहां गई?

जिस समय रात को घर से कमलदेवी का बलात्कार से हरण हुआ, वह मूर्छित सी दशा में थी। जब उसे पालकी पर रख कर सिपाहियों के कन्धों पर धरा गया, तब भी उसे कुछ चेतना न थी। जब पीछा करने वालों को रास्ता भुलाने के लिये पालकीवाले उसी गांव के इधर उधर फेरा डालते रहे, तब तक भी वह होश में न आई। वायु की प्रातःकालिक मनोहारिणी लपटों ने सूर्य की किरणों की सहायता से उस को औषधोपचार किया और जब वह सचेत हुई तब पालकी उजाड़ मैदान में से हो कर दिल्ली की ओर जा रही थी। कुछ देर तक वह कुछ भी निश्चित न कर सकी कि वह किस दशा में है। पालकी के दोनों ओर दरवाजे पर बड़े मोटे २ पर्दे पड़े हुए थे, उन के किनारों के पास से कोई २ भूली भटकी सूर्य किरणें अन्दर प्रवेश कर जाती थीं। उन्होंने भी उसे अपनी दशा जानने में कोई सहयता न दी। थोड़ी देर बाद पालकी उठाने वालों में परस्पर बात चीत होने लगी, उससे वह केवल इतना जान सकी कि उसे कोई गुलामकादिर नाम का सर्दार चुरा लाया है और दिल्ली ले जायगा। कमलदेवी साधारण स्त्रियों की सी भीरु नहीं थी, परन्तु अपने आपको एक मुसलमान के पंजे में पाकर उसका कोमल देह कांपने लगा। वह बार बार भगवान का नाम लेने लगी। बात चीत बहुत देर तक होती रही, किन्तु इससे अधिक कोई समाचार उसे न मिला। कोई दो घंटे इसी द्विविधा में बीते। एक नये व्यक्ति का स्वर पास ही सुनाई दिया—बोल चाल से कमलदेवी अनुमान करसकी कि वह नया व्यक्ति कोई राजपूत होगा। एक हिन्दू के शब्द ने उसके कानों में अमृत सा बरसा दिया—हृदय की चिन्ताग्नि पर जलसा डालदिया। वह राजपूत किसी दूसरे व्यक्ति से बात चीत कर रहा था, जो बोलने के ढंग से प्रतीत होता था कि इस लुटेरे दल का सर्दार है। कमलदेवी ने अनुमान किया कि वही व्यक्ति गुलामकादिर होगा। उन दोनों की बातचीत से वह इतना और जान सकी कि दिल्ली में उसे शाही किले का अतिथि बनना होगा। हिन्दू स्त्रियों के लिए उस समय शाही किले का नाम ऐसा भयंकर होरहा था कि कमलदेवी का कलेजा उसे सुनते ही धड़कने लगा। क्या उसे सचमुच जीते जी कबरिस्तान में जाना होगा?

अचानक पालकी नीचे रखी गई और उस पालकी का पर्दा उठा, और राजपूत का मुंह सामने आया। कमलदेवी ऐसे स्थान पर और ऐसी दशा में बाहिर रहने की अपेक्षा पालकी में बन्द रहना अधिक पसन्द करती। ऐसा होने से कम से कम कुछ देर के लिए तो सती भाव सुरक्षित था। पर्दा उठने से वह एक दम चिहुंक उठी। उसे सान्त्वना देते हुए राजपूत कहने लगा 'मैं हिन्दू हूं। मेरी आयु तुम्हारे पिता के बराबर है। तुम मुझ से भय मत करो। यह कुछ थोड़ा सा तुम्हारे लिये खाने को है—इसे मुंह में डालकर पानी पी लेना।' यह कह कर उसने एक कपड़े में बंधा हुआ कुछ खाने का पदार्थ और लोटे में जल दे दिया, और एक ओर हटगया। उसी समय कमलदेवी ने दूर खड़े हुए मुसलमान सर्दार को देखा-और यह भी देखा कि वह उसी की ओर टिकटिकी लगाये ताक रहा है। राजपूतनी ने आंखे बन्द करके अपना मुंह एक ओर को कर लिया-और पालकी का पर्दा भी गिर गया-परन्तु गुलामकादिर के दिल का पर्दा न गिरा। उसकी दृष्टि कमलदेवी पर पड़ते ही गड़ सी गई। वह उसके सौन्दर्य को देखकर मुग्ध होगया। उसी समय से उसने कुमन्त्रणा के मनसूबे प्रारम्भ किए, और उनका फल हम देख चुके हैं।

कमलदेवी की मानसिक दशा ऐसी नहीं थी कि वह कुछ मुख में डालती। यों तो न जाने क्यों, कल्याणसिंह की सूरत देख कर उसे कुछ विश्वास सा हो गया था कि उसे जो भोजन दिया गया है, वह एक हिन्दू रमणी के लिए अस्पृश्य नहीं है—परन्तु उसका जी खाने को नहीं था। बहुत देर होने पर वह केवल लोटे में से थोड़ा जल पीकर ही सन्तुष्ट हो रही।

ज्यों २ पालकी वाले चलते, दिल्ली उसे पास आती हुई नज़र आती थी। साथ ही साथ उसकी घबराहट बढ़ती जाती थी। अनेक प्रकार के संकल्प चित्त में उठने लगे। वह सोचने लगी, "इस का परिणाम क्या होगा? क्या सच मुच ही मुझे मुसलमान के वश में आना पड़ेगा? पड़ेगा क्या मैं उनके वश में आगई हूं। अब निकलने का उपाय क्या है? उपाय कोई भी नहीं दीखता। इन छः मुस्टण्डों से निकल भागने का क्या साधन है? कोई भी साधन दिखाई नहीं देता। तब क्या होगा? मुसल्मान के हाथ का शिकार होना अधर्म, महा अधर्म है। इस जीते हुए शरीर को तो कभी यवन शरीर न छूसकेगा। मुसल्मान मेरी देह को छुए, इससे पहले मरजाना उत्तम है। परन्तु क्या मेरे पिता—और वे...मेरे उद्धार का यत्न न करेंगे? हाय वे क्या करेंगे? वे क्या सोचेंगे? परन्तु वे मेरे कौन हैं? उन्हें मेरा ख्याल भी नहीं। मैं ही मूर्खा उन पर मर रही हूं। परन्तु फिर स्वर्ण सिंह ने आकर प्रस्ताव क्यों किया? वह तो उनका परम बनेही है। मेरी भावना झूठी नहीं। उन्हें भी अवश्य मुझ से प्रेम है। परन्तु उनकी तो मेरे पिता से बनती नहीं। पिता तो उन्हें देने से इन्कार करते हैं। तब तो घर में भी मृत्यु ही मेरा एक मात्र अवलम्ब था। शायद विधाता ने मुझे इसी भांती इस भारी जीवन का अन्त करने का अवसर देना था अब तो मरने के सिवा कोई चारा नहीं।

(शेष फिर)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इतिहास तरङ्ग

लेखक मल्लाह

अब और विचित्रता सुनिये। मिसर में डायोनेसिज़ के बाद राज्य लक्ष्मी उसके बड़े विश्वास्य नौकर स्पार्टम्बस को मिली। ५२ साल के बाद बूडियास को और उसके भी बाद क्रैडेवेस को राज्य मिला।

× × × ×

पाश्चात्य पण्डित स्पार्टम्बस को हनूमान मानते हैं, बूडियास का बुद्ध मानते हैं और क्रेडेवस को कृष्णदेव मानते हैं।

बलिहारी पाश्चात्यों को। यदि डायनेसिज़ को राम मान कर स्पार्टम्बस को हनूमान मानना था तो पाश्चात्य इस बातको देखने में अन्धे हैं कि राम के विजय के बाद हनूमान राजा नहीं बना। राज मिला किष्किन्धा में सुग्रीव को, लंका में विभीषण को और अयोध्या में कुश को। फिर स्पार्टाम्बस गुलाम बीच में कहां आकूदा।

इसी तरह से युगों के अन्तर वाले अवतारों के ऐसे क्रम में पास २ राज्य लक्ष्मी का अधिपति मानना महामूर्खता के लक्षण के सिवाय दूसरी बात नहीं।

क्या बुद्धने रोज पाट छोड़ बन लिया था या राज्य?।

शेष रहे कृष्ण देव। वे बुद्ध के बाद कैसे हुये। जिन के अवतारों पर इतना कुठारा घात है उनके कृष्णावतार भी बुद्ध से पहले हुए।

बस पाठक समझ लीजिये कि पाश्चात्य पण्डित वास्तव में बड़े संकुचित विचारक तथा बुद्धि शून्य ऐतिहासिक प्रतीत होते हैं। वे अपना कपोल कल्पित निराश्रय सिद्धान्त स्थिर करने के लिये दूसरों के साहित्य पर बड़ी निर्दयता से कुठाराघात करते हैं।

× × × ×

अब इस से आगे हम बली हरकुलीस के बारे में लिखेंगे।

हरकुलीस

पाश्चात्य ऐतिहाकों की सम्मति में दूसरा आक्रामक भारत वर्ष पर हरकुलीस हुआ है। परन्तु इस अद्भुत भीमकर्मा-विजेता के बारे में भी नाना पाश्चत्य ऐतिहासिकों की नाना प्रकार की सम्मतियें सुनने लायक हैं। पाठकगण इस में भी बड़ा कौतुक अनुभव करेंगे।

ये हरकुलीस बड़ा धीर तथा साहसी था। इसने भी भारत के भीम के सदृश नाना राक्षसों का हनन किया तथा अपने ज़माने में ही नहीं पर अभी तक उसके भुजदण्डों का यश पश्चिमी देशों में घर घर में प्रसिद्ध है।

× × × ×

ऐतिहासिक सिसरों की सम्मति में यह वीर हरकुलीस भारत वर्ष का निवासी था। परन्तु डायोडोरस की सम्मति में यह भारत का वासी न था। परन्तु भारत पर आक्रमण करने वाला एक विजेता था।

उसने भारत पर किये हरकुलीस के आक्रमण का इस प्रकार वर्णन किया है:—

जिस समय हरकुलीस ने भारत पर आक्रमण किया उस समय भारत वर्ष एक बड़े सुन्दर वनों से ढका हुआ था और वहां के वासी अज्ञान और असभ्यता में मग्न थे। उसने वहां की सब अरण्य वासिनी जातियों को विजय किया। सम्पूर्ण विजित देश को नाना राज्यों में बांट दिया। और प्रतिराज्य में अपने ही वंश में से एक एक पृथक् २ राजा नियत किया। तब से भारत वर्ष में सिकन्दर के आक्रमण तक उन्नति ही उन्नति होती रही।"

\+ × + +

इसी हरकुलीस के बारे में यह भी प्रसिद्ध है कि इसने बहुत से बड़े २ नगर भी बसाये थे। पाली बोथ्रा भी इसीने बसाया। सब ऐतिहासिकों की दृष्टि में यह नगर बहुत पुराना है। इस के बारे में यों सुना जाता है कि:—

"हरकुलीस ने पालीबोथ्रामें में एक बड़ा भारी राजमहल खड़ा किया। इसे बड़ी मज़बूत कोट से दृढ़ किया और अच्छी प्रकार से किलाबन्दी की। चारों तरफ एक गहरी खाई खोदी गयी। इस से शत्रुका भीतर तक जाना असम्भव था।"

\+ + × ×

इस पालिबोथ्रा शहर का सम्बन्ध पाश्चात्य ऐतिहासिक पटना या पाटलि पुत्र से जोड़ा करते हैं और इसी प्रकरण में पाश्चात्य ऐतिहासिक चाली राम और चन्द्रगुप्त का अजब पंचमेल बनाते हैं। उपरोक्त पालि बोथ्रा के ४७० बुर्ज थे ६५ दर्वाजे थे। नहर की चौड़ाई ६ एक्र और गहराई ४५ फीट थी।

इस शहर का पटना या पाटलि पुत्र से सम्बन्ध जोड़ना हमारी सम्मति में भारी भूल है क्योंकि पाटलि पुत्र की उत्पत्ति पाटली नाम की एक राज कन्या के नाम से हुई है। यही बात सोमेश्वर के कथा सरित्सागर तथा गुणाढ्य की बृहत्कथा मञ्जरी से प्रमाणित है।

× × × ×

ऐतिहासिकों का दूसरा जत्था इस प्रकार के आश्चर्य कर दिखाता है कि उन के मत में कृष्णचन्द्र और हरकुलीस एक हैं।

प्रमाण यह है कि हरकुलीस की एक कन्या पाण्डिया नामक थी। क्योंकि कृष्ण का सम्बन्ध पाण्डवों से था तो शायद वे पाण्डव इस पाण्डिया कन्या के वंशज हों। इसी आधार पर वे मानते हैं कि पाण्डव वंश इसी पाण्डिया से चला।

खूब कहा! कहां तो पाण्डव वंश का प्रवर्त्तक पाण्डु राजा और कहां हरकुलीस की एक पाण्डिया नामक कन्या। और कहां पाण्डव अर्जुन भीमादि कृष्ण के साथी और हमजोली और अब कहां उस के दोहते बने। बलिहारी है कल्पनाओं की। ऐसा ही इतिहास भारत के बारे में ये पाश्चात्य शायद मद्य के मद में लिखा करते हैं।

और आश्चर्य यह है कि ये ऐतिहासिक कहते हैं कि इन्हींने पाण्डव देश भी बसाया है।

× × × ×

इसी हरिकृष्ण को हरकुलीस मान कर ऐतिहासिक कहते हैं मथुरा और प्रयाग इसने बसाये थे। यह कृष्ण भारत का वासी न था पर मिश्रदेश में कृष्णा नदी या नील नदी के किनारे पैदा हुआ था।

× × × +

(शेष फिर)

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

संसार समाचार पर टिप्पणी।

समाचार है कि आगरे में वेश्याओं को भी म्युनिसिपल कमेटी के चुनाव में भाग लेने का अधिकार दिया गया है। निःसन्देह यह अनर्थ है। अब म्युनिसिपलिटी में चुनाव चाहने वाला को नगर के अन्य वासियों के साथ इन मूर्तियों का भी सेवा करनी पड़ा करेगी। आगरे की 'म्युनिसिपल रिफार्मर्स असोसियेशन' ने इस कार्य का विरोध करके उत्तम ही किया है। सारे आगरा वासियों को इस अनर्थ का विरोध करना चाहिये।

—:०:—

लाहौर के बुलटिन पत्र का नाम इन एक दो महीनों में लोगों के सन्मुख बहुत अधिक रहा है। पहले इस पत्र ने खटाऊ जी की कम्पनी के विरुद्ध मार्का मारा—और उसके नाटक बन्द करादिये। फिर उसी मद में मस्त हो कर पत्रों की सभ्यता से मुंह मोड़ लिया और गाली गलौच तक नौबत पहुंचा दी। उसके पीछे मुसलमानों से उलझना पड़ा—जिसके लिये बचारे सम्पादक तथा स्वामी को मिला कर दस माफ़ियां मांगनी पड़ीं। तो भी मुसलमानों के देखता प्रसन्न न हुए। अब अन्त में सरकार ने उस पत्र से एक हज़ार की जमानत मांगली है। इस अन्तिम घटना के लिये हम सहयोगी से सहानुभूति प्रकाशित करते हैं।

—:०:—

गङ्गा की नहर को पानी पहुंचाने के लिये गङ्गा का पानी हरिद्वार से ऊपर बांधा जायगा इस पर हिन्दू सभा बहुत घबराई है। उनका कथन है कि गङ्गा को हरकी पैड़ी पर बन्धन में न डालना चाहिये। ऐसा एक मेमोरियल भी युक्तप्रान्त के छोटे लाट की सेवा में भेजने का विचार हो रहा है। किन्तु हम पूछते हैं—इस में हर्ज क्या है? जिस जाति के तन मन धन सब बन्धनों से जकड़े हुए हैं—उसके तीर्थ बंधे हुए हों तो क्या आश्चर्य है?

—:०:—

तलाशियों का बाज़ार गर्म है और प्रेस के मालकों पर आपत्ति का बादल गर्ज रहा है. लाहौर के निफाह ए आम प्रेस की तलाशी हुई और उस के मालिक अब्दुलहक को पुलिस ने अपनी निगरनी में कर लिया है। प्रेस से किताबों के भरे हुए दो ट्रंक पुलिस लेगई है।

—:०:—

दानापुर के श्री मद्दयानन्द आनाथालय के म० रामलोभित सिंह सूचित करते हैं कि बिहारप्रान्त के आरा ज़िले में बाढ़ से बहुत से बालक बालिकायें अनाथ होगये होंगे। लोगों को चाहए कि वे ऐसे अनाथों को अनाथालय में भेजदे। यदि न भेज सकें तो उन्हें सूचना अवश्य दें।

—:०:—

बाढ़ के वृत्तान्त चारों ओर से आ रहे हैं। बनारस, बलिया, आरा, इलाहबाद आदि सब स्थानों के समाचार हृदय द्रावक हैं। बलिया से ब्रह्मचारी रामरक्ष की एक अपील आई है जो स्थानाभाव से इस बार नहीं आ सकी, अगली बार आयगी। इस समय दुर्शाग्रस्त देश वासियों की दशा पर दया करना सब को कर्त्तव्य है। जहां २ धन की आवश्यकता है-वहां २ भेजना चाहिये। जो लोग स्वयं देह से सेवा कर उन्हें भी पीछे न रहना चाहिये।

—:०:—

जब तीन वर्ष हुए पालिताना में बाढ़ आई थी, उस समय प्रचारक की अपील पर कुछ धन आया था। वह गुरुकुल कोष में जमा था इस समय वह आवश्यक स्थानों पर भेज दिया गया है। जो सज्जन प्रचारक द्वारा सहायता भेजना चाहें, वे सम्पादक के पास भेज सकते हैं—ऊपर स्पष्ट लिखना चाहिये कि धन बाढ़ से पीड़ितों की सहायतार्थ है।

—:०:—

संक्षिप्त समाचार

सीवान नामक नगर में एक बालसभा है, जिस का काम नगर में हिन्दी प्रेमियों में हिन्दी प्रचार करना है।

—:०:—

आर्य्यसमाज राहों ज़िला जालन्धर का उत्सव ३९, तथा सितम्बर और १ अक्टूबर को होगा। नगर कीर्तन २९ की शाम को चार बजे प्रारम्भ होगा।

—:०:—

आर्य्यसमाज मिर्ज़ापुर का वार्षिकोत्सव ता० २७. २८, २९ और ३० अक्टूबर सन् १९१६ ई० को होना निश्चय हुआ है। नगर कीर्तन २७ को होगा। कृपया श्री० स्वा० सर्वदानन्द जी, श्री० स्वा० अनुभवानन्द जी और श्री म० रामचन्द्र जी देहली निवासी अवश्य पधार कर कृतार्थ करें

भवदीय विनीत
शिवदास शर्म्मा
मन्त्री आ० स०

—:०:—

कन्या ब्रह्मचर्य्याश्रम ठट्ठा—इस वर्ष समस्त आश्रम परिवार ने अनध्याय का समय करांची वासियों के अनुरोध से करांची में भ्रमण तथा बालाओं के व्याख्यान संवाद संगीतादि भिन्न २ चार स्थानों पर करवाते हुए व्यतीत किया। विशेषतः खालिक दीन हाल में जहां कि प्रायः सर्व नागरिक प्रतिष्ठित सज्जन उपस्थित थे सब नागरिक पत्रों की सम्मति में आश्रम बधाई का पात्र बना करांची से ९००) दान तथा २५) मासिक सहायता का वचन प्राप्त हुआ जिस में से १०) मासिक प्रसिद्ध पारसी सेठ जेएन मेहता का है। इस वर्ष ८ नवीन कन्यायें प्रविष्ट हुई। पंजाब से महोपदेशक पं० पूर्णानन्द जी महोपदेशक ने अपनी कन्या आश्रम में श्रीमती रामप्यारी जी के साथ भेजदी है। सिंध के स्त्री जगत में विख्यात, श्रीमती दमयन्ती देवी जी अपनी माता के सहित तीन मास से धर्मार्थ आश्रम की सेवा कर रही हैं। आश्रम के सौभाग्य से १ मास से श्रीमती पं० द्रोपदी देवी जी शास्त्रिणी यहां पधारी हुई हैं। आज कल पण्डिता जी आचार्य्या पद से सुभूषित हो कर उच्चकक्षाओं को संस्कृत संभाषण सिखाती हुई आश्रम की उन्नति में दत्तचित्त हैं। आश्रम की सुव्यवस्था के लिए गवर्नमेन्ट आफ़िसरों, शिक्षित जनों, तथा संरक्षकों ने हार्दिक सहानुभूती दर्शाई है। मासिक ५००) व्यय है प्रति मास २००) खोट पड़ती है। दानियों को शांत भाव से काम करती हुई इस संस्था की ओर तनिक आंख उठा कर देखना चाहिए। एक वा अनेक दाता यदि मिल कर १० सहस्रमात्र एकत्रित करदें तो एक ऐसा उद्योग कन्याओं को सिखाया जायेगा, जिस से चिरकाल तक आश्रम का उस से कार्य्य अच्छी तरह होता रहे और बार २ भीख भी मांगनी न पड़े।

आर्य्य जाति का एक तुच्छ सेवक
नृसिंहलाल
मन्त्री कन्या ब्रह्मचर्य्याश्रम ठट्ठा सिंध

विज्ञापन

विदित हो कि श्रीमती परोपकारिणी सभा का नैमित्तिक अधिवेशन कार्तिक शुक्ला प्रतिपदा सं० १९७३ विक्रमीय तदनुसार २७ अक्टूबर १९१६ ई० शुक्रवार को अजमेर नगर में होगा, जिसमें निम्नलिखित विषय निवेदन किये जायेंगे—

(१) श्रीमती परोपकारिणी सभा के कार्य्यालय के आय व्यय का हिसाब तथा आगामी वर्ष का बजट।

(२) श्रीमहर्षानन्दश्रमान्तर्गत स्थापनाओं के गत वर्षों के आय व्यय का हिसाब और आगामी वर्ष का बजट।

(३) वैदिक-यन्त्रालय के लिये मकान बनवाने की स्वीकृति।

(४) श्रीस्वामी जी महाराज के बाग़ के पास वाले बाग़ के लेने पर विचार।

(५) सत्यार्थप्रकाश की क़ीमत बढ़ाने पर विचार।

(६) पं० कालूरामजी शास्त्री अमरोधा निवासी ने सत्यार्थप्रकाश की पहली आवृत्ति छापी है जिसको वे ब्राह्मण-सर्वस्व के ग्राहकों का उपहार में देते हैं उसके सम्बन्ध में आर्य्यसमाजों के जो पत्र आये हैं—

उन पर विचार।

(७) विदेश में तथा आर्य्यावर्त के मद्रास प्रान्त में वैदिकधर्मप्रचार कराने के लिए विचार।

(८) मेवाड़ राज्य की दूकान में जो श्रीमती परोपकारिणी सभा का रुपया जमा है उसके मँगाने के लिए प्रबन्ध।

(९) रायबहादुर सेठ दुर्गाप्रसाद जी फ़र्रुखाबाद वालों के पास जो रुपया श्रीमती परोपकारीणी सभा का जमा है उन से लेने के सम्बन्ध में विचार।

(१०) आर्य्यसमाजों के आये हुए पत्रों पर विचार।

(११) वैदिक-यन्त्रालय का अधिष्ठाता नियत करना।

आज्ञानुसार—
हरविलास शारदा,
सहकारी मन्त्री,

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 431

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | १५ आश्विन सं० १९७३ वि० | दयानन्दाब्द ३३ | ता० ३० सितम्बर सन् १९१६ ई० | संख्या २५ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छपे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल कांगड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखरामकेवल २५० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)

[३] आचार अनाचार और भक्ष्य अभक्ष्य मूल्य=)

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाजमूल्य -)

[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउन्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P. O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

आर्य कन्या की आवश्यकता

एक क्षत्रिय कुलोत्पन्न सदाचारी आर्य युवक, जिनकी आयु २७ वर्ष की है, गृहस्थ में प्रवेश करना चाहते हैं। रूप रंग और स्वास्थ्य बहुत उत्तम है। संस्कृत की साधारण और आर्य्यभाषा की उत्तम योग्यता रखते हैं। गुरुकुल में कार्य करते हैं। लगभग ३५) मासिक आय है। सम्बन्ध में जाति बन्धन का कोई विचार न रखा जायगा। पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते से कीजिए-

प्रबन्धकर्त्ता—सद्धर्मप्रचारक

पो० श्यामपुर-कांगड़ी

ज़िला बिजनौर

प्रचारक परिवार को
आवश्यक सूचना

प्रचारक विजयदशमी पर एक सप्ताह का विश्राम लिया करता है । अगला अंक न निकलेगा । प्रचारक परिवार इस अन्तर में विजयदशमी मनाले, फिर मिलाप होगा ।

सम्पादक

—:o:—

राही के विचार

[४]

शिक्षा का परीक्षास्थल

यह बड़ोदा रयासत की राजधानी बड़ोदा नगरी है । नगरी का एक चक्कर लगाना उसकी विशेषता जतला देने के लिए पर्याप्त है । सारे नगर में घूम जाइये और किसी अभिज्ञ से पूछते जाइये कि यह कौन सा स्थान है? सब से अधिक सार्वजनिक इमारतें आप को शिक्षणालयों की मिलेंगी । नमूने के तौर पर देखिए । यह कला भवन है—इस में भारतीय विद्यार्थियों को सब प्रकार का मशीन का तथा हाथ का काम सिखाया जाता है । लोहे का लकड़ी का मिट्टी का चित्र कारी का—सभी प्रकार का कार्य छात्रों को सिखाया जाता है । रयासत इस पर वार्षिक साठ सत्तर हज़ार रुपया व्यय करती है । विद्यार्थियों से केवल नाम मात्र की फ़ीस लीजाती है । पुरुषों के लिए ट्रेनिंग कालिज—इस में रयासत के स्कूलों के लिए अध्यापक तय्यार किये जाते हैं—सब विद्यार्थियों को बिना शुल्क के शिक्षादी जाती है । ३८७ विद्यार्थी शिक्षा पाते हैं । स्त्रियों के लिए ट्रेनिंग कालिज जुदा है—जिसमें १३७ छात्रायें शिक्षा पाती पाती हैं । सारी रयासत में जो आवश्यक शिक्षा का प्रचार किया गया है—उसके लिए इन्हीं दोनों कालिजों से अध्यापक तथा अध्यापिकायें मिलती हैं । एक बड़ा कालिज है, जिस में बी० ए० तक शिक्षा होती है । उस की उदर पूर्ति के लिए रयासत में चार हाईस्कूल हैं, और एक हाईस्कूल कन्याओं के लिए है । इन के सिवा लगभग ६० के और ऐंग्लोवर्नेक्यूलर स्कूल रयासत भर में हैं जिन में स्कूल की उच्च शिक्षा दी जाती है, किन्तु यह अभी ऊपर २ का भाग है । ऐसे कालिज तथा स्कूल तो सभी स्थानों में होते हैं बड़ोदे की विशेषता तब पता लगती है जब हम प्रारम्भिक शिक्षणालयों की ओर झुकते हैं । हमें बड़ोदा रयासत की शिक्षा सम्बन्धी रिपोर्ट से कई अद्भुत बातें पता लगती हैं । ऐसे स्कूल जो रयासत के बालकों को प्रारम्भिक शिक्षा देते हैं, गिन्तीमें ३०७६ हैं । इतने से इस संख्या का पूरा महत्व नहीं पता लगता । यदि बड़ोदा रयासत के सारे शिक्षणालयों की रयासत के नगरों तथा ग्रामों से हिसाब लगाया जाय, तो पता लगता है कि सारी रायसत में कोई नगर या ग्राम बिना एक शिक्षणालय के नहीं है । जितने नगर तथा ग्राम हैं, लगभग उतने ही शिक्षणालय हैं । इस का महत्व तब समझ में आसकता है जब हम अपने अंग्रेज़ी राज्य के ऐसे ग्रामों की संख्या पर विचार करें जिन जिन के पास किसी प्रकार का भी शिक्षणालय नहीं है ।

इसे और भी भली प्रकार समझने के लिये दूसरी बात लीजिये । रयासत में स्कूल जाने योग्य आयु के जितने बालक हैं उन में से कोई भी ऐसा नहीं जो स्कूल में नहीं जाता । अर्थात् शीघ्र ही ऐसा समय आजायगा जब रयासत में कोई भी पुरुष अशिक्षित न होगा । कन्याओं की शिक्षा का प्रबन्ध देखकर आश्चर्य होता है । रयासत में जितनी कन्यायें पढ़ने योग्य आयु में हैं, उन में ८० फ़ीसदी पाठशाला में जाती हैं ।

यह सारी शिक्षा रयासत के व्यय से होती है । रयासत की जितनी व्यय योग्य आमदनी होती है, उसका एक तिहाई भाग शिक्षा के लिये व्यय किया जाता है । यह साधारण शिक्षा का वृत्तान्त है । रयासत की ओर से एक और बड़े महत्व का काम होरहा है । भारत के अन्य स्थानों की भांती बड़ोदे में भी अन्त्यज जाति हैं, जिन्हें छूना तक पाप समझा जाता है । वे नितान्त अशिक्षित हैं । रयासत की ओर से उन की शिक्षा का जुदा प्रबन्ध है । सारी स्टेट में २९८ अन्त्यज पाठशालायें हैं, जिन में ११९४० लड़के शिक्षा पाते हैं । इन अन्त्यज बालकों के लिये रयासत की ओर से दो एक बोर्डिंग हाउस भी हैं, जो बड़ा उत्तम कार्य कर रहे हैं ।

सारी रयासत की कहानी छोड़ कर फिर बड़ोदा नगरी की ओर आइये । एक ओर जाइये, आपको गुजराती पाठशाला का मकान मिलेगा तो दूसरी ओर अन्त्यज शिक्षणालय दृष्टि गोचर होगा । एक स्थान पर देखिये—अन्धबधिर शिक्षणालय का बोर्ड दिखाई देगा—इसमें नये से नये ढंग पर अन्धों तथा बहिरों को शिक्षित करने का समारम्भ किया गया है । अन्यत्र देखिये—संगीत पाठशाला का मकान दिखाई देगा—जिस में देसी विदेशी सब प्रकार की संगीत शिक्षादी जाती है । आगे चलिये—आपको चित्र-शिक्षण-पाठशाला का स्थान मिलेगा । इसमें चित्र विद्या सिखाई जाती है । एक स्थान पर रात्रि पाठशाला का पट्टा लगा हुआ है और उधर देखिये तो व्यायाम शाला का सुन्दर स्थान ध्यान को खेंचता है । इस व्यायाम शाला का विस्तृत वृत्तान्त हम किसी और समय पाठकों की भेंट करेंगे इस लेख में इतना ही बताने से तात्पर्य है कि एक व्यक्ति के जादू ने बड़ोदा की छोटी सी नगरी और रयासत को शिक्षा का परीक्षा स्थल बना दिया है । इस परीक्षा का परिणाम होगा यह अगले दस साल बता देंगे ।

"राही"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

हिन्दू विश्वविद्यालय पर आलोचनात्मक दृष्टि

(२)

म० जम्भेकर आगे लिखते हैं—

"दूसरी बात बहुत आवश्यक है। वर्तमान यूनिवर्सिटियां सर्वथा परदेशी हैं। केवल इतना ही नहीं कि यह पेड़ विदेशी भूमि से लाकर बोया गया है, इस का पालन पोषण भी विदेशी साधनों और उपायों से हो रहा है। किन्तु सच्ची शिक्षा सदा अन्दर से होती है।"

लेखक की राय है कि हिन्दू यूनिवर्सिटी इस रोग का भी इलाज करेगी। यह हम मानते हैं कि हिन्दू विश्वविद्यालय के संगठन में ऐसे नियम विद्यमान हैं, जिन से आशा पड़ती है कि यह इस दोष का कुछ न कुछ इलाज कर सकेगा। प्रबन्ध यद्यपि स्वाधीन नहीं तो भी कला में बहुत सा भाग देशी है। परन्तु इस आशा को तोड़ने वाले भी कई चिन्ह विद्यमान हैं। जब तक विश्वविद्यालय की नीति-सर्वथा देशी नहीं, तब तक वह भविष्य में सदा देशी भाव को स्थिर रख सकेगा—ऐसा निश्चय नहीं कर सकते। फिर एक बात और है। ऐसी जन श्रुति है—और पक्की जन श्रुति है कि हिन्दू विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले प्रोफ़ेसरों का एक आवश्यक भाग विदेशी होगा। ऐसा भी उड़ाया गया है कि विश्वविद्यालय का प्रथम प्रिंसिपल अंग्रेज़ होगा। हम नहीं जानते—इस समाचार में कितनी सचाई है। हां—इतना हम निश्चयपूर्वक जानते हैं कि कई एक योरपियन सज्जनों से विश्वविद्यालय में पढ़ाने के लिए अवश्य कहा गया था। कह नहीं सकते कि उसका क्या परिणाम हुआ। परिणाम कुछ ही हो—इस में ज़रा भी सन्देह नहीं कि विश्वविद्यालय में एक बड़ी राशि योरपियन प्रोफ़ेसरों की होगी। सम्भवतः सरकार के साथ ऐसी बात भी पक्की हो गई हो। हम पूछते हैं कि जब विश्वविद्यालयों में इतने विदेशी प्रोफ़ेसरों के होने की बात सुनी जाती है, तब उपर्युक्त रोग का इलाज क्या हुआ? विदेशी साधन और कौन से होते हैं? 'यथा राजा तथा प्रजा' इसे थोड़ा सा बदल दें तो 'यथा गुरुस्तथा शिष्यः' यह वाक्य और भी सच्चा हो जाता है। जैसे गुरु होंगे वैसे ही शिष्य होंगे। जब हिन्दू विश्वविद्यालयों में इतने विदेशी प्रोफ़ेसर होंगे तब देशी भावों का राज्य कहां रहेगा। फिर म० जम्भेकर जैसे कुछ जनों की हरी आशालतायें क्या शीघ्र ही न कुम्हला जायंगी?

हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालकों को एक बात स्पष्ट रीति से समझ लेनी चाहिये। जनता में ऐसा प्रसिद्ध हुआ है कि हिन्दू विश्वविद्यालय में विदेशी अध्यापकों की अधिकता होगी। विश्वविद्यालय के संचालकों की ओर से उस का कोई प्रतिवाद नहीं किया गया। संचालक महोदयों ने इस तुच्छ सी जनश्रुति के प्रतिवाद के लिए अपने ऊंचे तख़्तेताऊस से उतरना आवश्यक नहीं समझा। किन्तु जनता की आशंका इस प्रकार दूर नहीं हो सकती। इस का स्पष्ट प्रतिवाद होना चाहिए। यदि उस जनश्रुति का प्रतिवाद नहीं हो सकता, और यह सत्य है कि विदेशी प्रोफ़ेसरों की एक पर्याप्त संख्या विश्वविद्यालय में काम करेगी, तो बड़े भारी असन्तोष का स्थान है। जिस रोग का इलाज करना है, वह कहीं बढ़ न जाय।

शायद यहां कहा जाय कि केवल भारतवासी प्रोफ़ेसरों से इतना बड़ा विश्वविद्यालय नहीं चल सकता, और शिक्षा के मामले में इतने संकुचित विचार रखना अच्छा नहीं। 'बालादपि सुभाषितम्' बाल से भी सुभाषित लेने में हर्ज नहीं। तब भला विदेशी विद्वान् से विद्या लेने में क्या हर्ज है। यह कथन बड़ी उदारता से भरा हुआ है किन्तु हम पूछते हैं कि यदि ऐसी उदारता का ठेका भारतवासियों ने ही लेलिया है तो हिन्दू विश्वविद्यालय की आवश्यकता क्या है? क्या हिन्दू शब्द के साथ जुड़ा हुआ विश्वविद्यालय बोलना स्वयं संकुचितवृत्ति का परिणाम नहीं? वस्तुतः बात यह है कि उदारता और संकोच सापेक्षक शब्द हैं तथा समय पर दोनों ही उचित होते हैं। असमय पर उदारता भी हानिकारक और अनुचित समझी जा सकती है। जब जातीय जीवन का प्रश्न हो तब प्रायः पृथ्वी भर में व्याप्त होने वाली उदारता को तिलांजलि देना पड़ती है। यह समय भी ऐसा ही है। तभी तो हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना आवश्यक हुई है। हिन्दूविश्वविद्यालय बना कर-फिर उसी थोथी उदारता का अवलम्ब लेकर यदि हम किये पर पानी फेरें तो सारा यत्न व्यर्थ ही समझना चाहिये। हिन्दू विश्वविद्यालय में कम से कम पचानवें फ़ीसदी प्रोफ़ेसर ऐसे होने चाहियें, जिन्हें हम भारतीय-आर्य्य कह सकें। यदि सौ के सौ भारतीय हों तो कहना ही क्या है।

एक प्रश्न शेष रह जाता है। क्या सारे विषयों के लिये योग्य देशी प्रोफ़ेसर मिल सकते हैं? हमारी समझ में ऐसा प्रश्न उठाना ही अपनी कम समझी की सूचना देना है। भारतवर्ष में इस समय अपने २ विषय के योग्य से योग्य विद्वान् विद्यमान हैं। डी० ए० वी० कालिज और फ़रग्युसन कालिज जैसे ऊंचे दर्जे के कालिज केवल भारतीय अध्यापकों के सहारे चल रहे हैं। अभी सैंकड़ों भारतीय विद्वान् ऐसे पड़े हैं जो बुलाये जाकर आ सकते हैं। यह कहना कि भारत वर्ष एक विश्वविद्यालय के लिये भी अध्यापक उपस्थित नहीं कर सकता, भारत की विद्वन्मण्डली का अपमान करना है। विज्ञान दर्शन इतिहास संस्कृत आदि विषय लीजिये या क्रियात्मक विषय लीजिये, सब में ऊंची योग्यता रखनेवाले भारतवासियों की कमी नहीं है—उनके संग्रह करने वाला चाहिये। उन लोगों को अभी पूरा आदर नहीं मिला—यदि हिन्दू-विद्यालय में भी न मिला तो और कहां मिलेगा।

म० जम्भेकर की सम्मति है कि हिन्दू यूनिवर्सिटी को विदेशी शिक्षा रीति

का प्रतिकार करना चाहिये। विश्व विद्यालय का प्रथम शब्द उठाने वालों के हृदय का प्रथम संकल्प भी ऐसा ही था। अब भी सम्भवतः माननीय मालवीय जी जैसे सज्जन उसी उच्चभाव की रक्षा का-यत्न करेंगे—ऐसी आशा है।

किन्तु संसार में कभी कभी 'वानरं कुर्व न्नीशेश चकार' की लोकोक्ति भी सत्य हो जाया करती है। वानर की मूर्ति बनाने लगा और बन गये गणेश जी। ऐसा न हो कि अनेक कारणों के पेच में पड़ कर हिन्दूविश्वविद्यालय कुछ का कुछ हो जाय। हिन्दूविश्वविद्यालय अपने मुख्य उद्देश्य को पूर्ण करसके—और उसमें आर्यभावों का साम्राज्य हो-इसके लिए आवश्यक है कि उसमें भारतीय आर्य ही विद्यादान का कार्य करें। इस विषय में विश्वविद्यालय के संचालकों को साफ़तौर से जनता का भ्रम दूर करदेना चाहिए, और अपने विचार की विशुद्ध सूचना दे देनी चाहिए।

—:o:—

अन्यत्र हमने भारतमित्र के एक लेखके कुछ उद्धरण दिये हैं। उन में सहयोगी ने विश्वविद्यालय के संचालकों के सन्मुख कई प्रश्न रख कर उनके उत्तर मांगे हैं। संचालक लोग वस्तुतः किसी ऊंचे लोक में निवास करते हैं—और भूलोक के वासियों के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए नीचे नहीं उतरते। ऐसा नहीं होना चाहिये। जनता अपने प्रश्नों का उत्तर लेगी अन्यथा विश्वविद्यालय के भविष्य पर सन्देह के बादल खड़े रहेंगे। समाचार पत्रों को चाहिये कि संचालक देवताओं को इस शान्ति सेन बैठने दें, और उन्हें हिलने के लिए बाधित करें। हिन्दू जनता को ज्ञात होना चाहिए कि उसके नेता विश्वविद्यालय के विषय में क्या सोच रहे हैं।

सम्मेलन के सभापति द्विवेदी जी हों।

सम्मेलन का समय समीप आरहा है। अभी तक सभापति का निश्चय नहीं हुआ ऐसा प्रतीत होता है कि स्थानीय स्वागत-कारिणी के सभासद् सभापति के झगड़े को अभी आगे नहीं लाना चाहते। शायद वे घबराते हैं कि व्यक्तियों पर झगड़ा न चल जाय। व्यक्तिगत विवाद बहुत अच्छा नहीं होता किन्तु जिस व्यक्ति को हम इतना बड़ा आदर देना चाहते हैं, उसे समाचार पत्रों के स्तम्भों से डरना न चाहिए। उधर देखिए-कांग्रेस के सभापति के बारे में खूब झगड़ा चल रहा है। जब तक यह विवाद तुच्छ बातों तक न गिर जाय, तब तक इस में डर ही क्या है। जबलपुर के सज्जनों को सभापति का प्रश्न टालना न चाहिए, समाचार पत्रों को भी इस प्रश्न की उपेक्षा न करनी चाहिए यदि शान्ति पूर्वक सभापति के प्रश्न पर विवाद हो सके तो कोई हानि नहीं।

हमने पहले एक बार लिखा था कि सभापति बनने के लिए पहला अधिकार किसी साहित्य सेवी का होना चाहिये। दूसरा अधिकार किसी सार्वजनिक नेता का और तीसरा अधिकार किसी लौकिक अधिपति का है। जबलपुर को महोदयों ने तीसरे दर्जे का अधिकार रखने वाले राजाओं से पहले पूछ पाछ लिया—और वहां से इन्कार भी ले लिया। अब हमारी समझ में पहले अधिकार रखने वालों की ओर दृष्टि डालनी चाहिए।

कई प्रस्ताव किये गये हैं। उनमें से साहित्याचार्य श्री पं० रामावतार पाण्डेय का प्रस्ताव अधिक स्थानों पर हुआ है। पाण्डेय जी की विद्वत्ता में क्या सन्देह है? किन्तु क्या हिन्दी संसार भी उनका पर्याप्त आभारी होचुका है? हमारी सम्मति में पाण्डेय जी को सभापति बनने के लिये चार पांच साल तक और आर्यभाषा की अनवरत सेवा करनी चाहिये।

हमारी सम्मति में अब समय है कि हम असली अधिकारी को उसका अधिकार दें। सरस्वती सम्पादक पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने हिन्दी की बड़ी सेवा की है। सरस्वती के वर्षों तक सुसम्पादन के अतिरिक्त आपने जो पुस्तकें लिखीं हैं, उनके लिए साहित्यसंसार उनका कृतज्ञ है। जो थोड़ी बहुत लोभवृत्ति द्विवेदी जी के लिए कई स्थानों पर उत्पन्न हुई थी, वह समय के साथ २ क्षीण हो गई है। पुरानी बातें भूल गई हैं—अब नये युग में नये ही राग द्वेष हैं। द्विवेदी जी की सेवा इतनी लम्बी और सुविदित है कि उसके विस्तार पूर्वक वर्णन की आवश्यकता भी नहीं है। आवश्यक है कि अब योग्य को योग्य स्थान पर बिठाया जाय—मणि को मस्तक पर चढ़ाया जाय। इस वर्ष सम्मेलन के सभापति का स्थान पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी को ही मिलना चाहिए।

यह याद रखना चाहिए कि साहित्य सेवियों तथा सार्वजनिक नेताओं को छोड़ कर लौकिक अधिपतियों की खोज में जाना, अधिक लाभदायक नहीं होगा। हमें चाहिये कि जिन लोगों ने आर्यभाषा की चरणसेवा में अपने केश पकाये हैं, उन्हें सम्मेलन के आदरणीय आसन पर बिठायें और बतलादें कि हम लोग सरस्वती के उपासक हैं सूखी लक्ष्मी के नहीं।

—:o:—

विजयदशमी

आर्य वीरो! धर्म को पाप पर, सत्य को झूठ पर और देवताओं को राक्षसों पर विजय दिलाने वाली विजयदशमी आरही है। इसी दशमी ने अत्याचार के प्रतिनिधि रावण को मर्यादा पुरुषोत्तम राम के हाथ से मरवाया था। देखना-आपके लिए यह खाली ही न चली जावे ऐसा न हो कि विजयदशमी में भी बुरी भावनायें आप पर विजय पाये रहें। इस दशमी के दिन हम सब का संकल्प होना चाहिए कि चाहे कुछ हो, हम पाप पर, अत्याचार पर और अन्याय पर अवश्य ही विजय पालेंगे। कोई सांसारिक शक्ति हमें रोकने वाली न होगी। यदि मर्यादा पुरुषोत्तम का कुछ भी धर्म बल है तो हमारा और सच्चे सिद्धान्तों का संसार में विजय होगा।

—:o:—

कलकत्ते में प्रो० बालकृष्ण जी

कोटे की ओर प्रो० रामदेव जी को धन एकत्र करने के कार्य्य में जो कृतकार्य्यता हो रही है, उसका वर्णन कई बार प्रचारक के कालमों में हो चुका है। प्रो०

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बालकृष्ण जी कलकत्ते में हैं। वहां उनके आर्य्यसमाज में तथा अन्यत्र कई व्याख्यान होचुके हैं। उन का बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ रहा है। अब आपके तीन विशेष व्याख्यानों का प्रबन्ध हो रहा है। ये व्याख्यान यूनिवर्सिटी की ओर से यूनिवर्सिटी इंस्टिट्यूट में होंगे। प्रथम व्याख्यान का विषय होगा—प्राचीन भारत में स्थल युद्ध के अन्तर्जातिक नियम। प्रधान जस्टिस ए० चौधरी होंगे। दूसरे व्याख्यान का विषय होगा—प्राचीन भारत में सम्पत्ति शास्त्र। इस में प्रधान डा० ब्रजेन्द्र सील होंगे। तीसरा व्याख्यान 'प्राचीन भारत में इतिहास का अनुशीलन' इस विषय पर होगा। सभापति—महामहोपाध्याय श्री हरप्रसाद शास्त्री सी. आई. ई. होंगे। गुरुकुल के लिये पुष्कल राशि एकत्र होने की सम्भावना है।

शंकर और कर्ण

कर्ण महाशय के लेख प्रचारक में छप गये। अब शंकर जी के पक्षवालों के भी लेख आरहे हैं। मामला तूल पकड़ रहा है। अब जो लेख आरहे हैं, उनमें व्यक्तिगत झगड़े की बू अधिक है। हम प्रथम ही सूचना दे देना चाहते हैं कि इस शंकर-कर्ण—युद्ध में अब ऐसा कोई लेख न छापा जायगा जिसमें व्यक्तिगत आक्षेपों की बू होगी। कवि शंकर जी की ओर से कोई उत्तर आयगा जिसमें किये गये आक्षेपों का उद्धार हो, या शंकर जी के कोई पक्षपाती उन साहित्यसम्बन्धी दोषों का उद्धार भेजेंगे जो कर्ण जी ने दिखाये हैं तो ऐसे लेख छापे जायंगे। केवल उक्ति प्रत्युक्तियों को न छापा जायगा।

—:०:—

हिन्दी समाचार का भ्रम

हिन्दी समाचार एक भारी भ्रम में फंस गया है। उसे ख़याल हो गया है कि आर्य्य समाज की नींव सत्यार्थप्रकाश पर रखी गई है। सहयोगी प्रकाश ने उस के इस भ्रम को दूर करने के लिये लिखा था कि यह ठीक नहीं। आर्य्य समाज की नींव वेदों पर है। इस पर हिन्दी-समाचार ने अपनी स्थापना को फिर दोहराया है। उसका अभिप्राय है कि जब सनातनधर्म की नींव पुराणों पर है, तो आर्य्य समाज का आधार सत्यार्थ प्रकाश पर क्यों नहीं? क्या खूब? यही तो भेद है। जहां सनातनधर्मी अपने आधार ग्रन्थ पुराणों को मानते हैं—वहां आर्य्य समाज पहले से ही कहता है कि उसका आधार वेद पर है। बड़े मज़े की बात यह है कि पुराण स्वयं अपना आधार वेद को मानते हैं। आर्य्य समाज के संस्थापक की यही घोषणा थी कि वेद ही धर्म के आधार हैं—इसी लिये तो वैदिक-धर्म, वर्तमान सनातनधर्म की अपेक्षा अधिक प्राचीन और अधिक प्रामाणिक है।

—:०:—

संसार समाचार पर टिप्पणियां

चीरोनाम के एक जोतिषी महाशय ने अब पत्रों में एक चिट्ठी छापी है। चिट्ठी में लार्ड किचनर के हाथ का हाल लिखा है। उन का कथन है कि १८९४ में उन्हों ने लार्ड किचनर का हाथ देखा था और कहा था कि "आपकी मृत्यु सम्भवतः समुद्र पर होगी।" कहते हैं, लार्ड किचनर को यह निश्चय था कि वे समुद्र पर ही मरेंगे। मरे पीछे जोतिष लगाना बहुत सहल है। किन्तु अज्ञ लोग इस पर भी यही समझेंगे कि ज्योतिषी महाशय ने अवश्य ऐसी भविष्यवाणी की होगी।

—:०:—

सहयोगी बङ्गवासी लोकमान्य तिलक के समुद्र यात्रा करने का बड़ा भारी विरोधी है। उस की राय में समुद्र पर जाने से आप पतित हो जायंगे। पतित हो जायंगे क्या— वे तो पहले ही पतित हो चुके हैं। क़ैद की दशा में लो० मा० तिलक देर तक धर्म्मा में रहे हैं। वहां जाते हुए समुद्र का कुछ भाग पार करना ही पड़ता है। सो छूत तो लग चुकी है—अब तो केवल आवृत्तिमात्र होगी।

—:०:—

पारसी सज्जन नि० अर्दशीर वाड़िया की बीबी श्रीमती ईमाई बाइ ने सरकारी प्रामिसरी नोटों के रूप में १ लाख रुपया दान दिया है, जिस के सूद से पारसियों को सहायता दी जायगी। निर्धन पारसियों की शादी ग़मी के समय सहायता में, या दुर्भिक्ष बाढ़ आदि के कष्ट में इस धन से सहायता मिलेगी। केवल अपने कोटे समूह के लिए दान सर्वश्रेष्ठ दान तो नहीं, तथापि दान होने से प्रशंसनीय है।

—:०:—

लाहौर के अख़बार बुलटिन के सम्पादक के विषय में नये २ रहस्य खुलते जाते हैं। उसने नाटकों के झगड़ों में एक चिट्ठी महात्मा मुन्शीराम जी के विरुद्ध छापी थी—जिस के नीचे एक मन घड़न्त नाम लिखा था। लेखक शायद स्वयं सम्पादक हो। जब पूछा गया कि लेखक कौन है तो चुप। फिर बुलटिन के मित्रों ने एक सभा की, उस में बुलटिन के सम्पादक को हिन्दू जाति की सेवा के लिए एक पदक दिया गया। सभा का जो विज्ञापन था, उसके नीचे भाई मूलसिंह का नाम छपा था। अब भाई जी ने सभा के प्रधान को नोटिस दिया है कि उन्होंने बिना पूछे भाई जी का नाम क्यों छापा। बुलटिन के सम्पादक ने अपने मित्रों से जो इनाम पाया है, वह उसे सदा याद दिलाता रहेगा कि केवल नाम करने के लिए पत्र सम्पादन कैसे २ भक्त उत्पन्न कर सकता है।

—:०:—

सहयोगी वेद प्रकाश अब पं० लुहनलाल स्वामी जी द्वारा सम्पादित होता है। पं० तुलसी राम जी ने जो मार्ग बनाया था, पं लुहन लाल जी भी उसी पर चलना चाहते हैं। आपने ऋग्वेद भाष्य का प्रारम्भ किया है। पं० भीमसेन जी इटावा निवासी का ब्राह्मणसर्वस्व वेद-प्रकाश का पुराना मित्र है। उस ने इस नये ऋग्वेद भाष्य की आलोचना प्रारम्भ कर दी है। एक शास्त्रार्थ में पं० लुहनलाल जी ने भाग लिया था—उस का हाल छाप कर भी उस ने पण्डित जी को नीचा करना चाहा है। आशा है पं० लुहनलाल जी अपने समाजी भाइयों को भलीबुरी सुनानेपर ही सन्तोष न करके, समाज के इन आक्षेपकारियों का सन्तोषदायक उत्तर देंगे।

—:०:—

काश्मीर में आज कल व्याख्यानों की खूब धूम धाम है। अनेक प्रकार के वक्ताओं का जमघटा हो रहा है। आर्य समाज की ओर से स्नातक पं० ब्रह्मदत्त जी, स्वामी विज्ञान भिक्षु जी, म० हंसराम जी, आदि सज्जनों के और सनातन धर्म सभा की ओर से पं० गोपीनाथ जी आदि के व्याख्यान हो रहे हैं। काश्मीर की जनता खूब आनन्द ले रही है।

—:o:—

आर्य गज़ट के सम्पादक को एक नई बात सूझी। सहयोगी प्रकाश ने एक लेख में लिखा था "इस का एक ही जवाब है कि उपदेशकों की तादाद बढ़ाई जावे। इस के लिये दो चीज़ों की ज़रूरत है। एक धन की दूसरे उपदेशक पैदा करने के साधन की। धन आर्य समाजें मुहय्या करें, उपदेशक पैदा करने के लिये सभा के अधिकारी सोच लेंगे" इस पर सहयोगी लिखता है कि सद्धर्मप्रचारक को चोट लेनी क्योंकि यह गुरुकुल पर आक्षेप है। हम कहते हैं कि 'अन्धे को अन्धेरे में बहुत दूर की सूझी' यह तो एक साधारण बात है, इस में गुरुकुल पर आक्षेप क्या है?

—:o:—

आर्यसमाज शिमला का वार्षिकोत्सव बड़ी कृतकार्यता से होगया। क्या व्याख्यानों और क्या धन के लिहाज़ से उत्सव को सफलता प्राप्त हुई। उत्सव पर सन्यासिमंडल का खूब जमाव हुआ था। स्वामी सत्यानन्द जी तो चिरकाल से शिमले में कथा कर रहे थे; स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी इन दिनों को अपनी शान्तकुटी में ही काटा करते हैं, बाहिर से स्वामी अच्युतानन्द जी तथा स्वामी सर्वदानन्द जी पधारे थे। सब के व्याख्यानों में बड़ी रौनक रही। लोगों पर प्रभाव भी अत्युत्तम हुआ। महात्मा मुन्शीराम जी के दो व्याख्यान हुए। एक ब्रह्मचर्य पर और दूसरा सात्विक आहार पर। इन महानुभावों के अतिरिक्त स्वामी विज्ञान भिक्षु जी तथा म० कृष्ण जी के भी बड़े मनोहर व्याख्यान हुए। लगभग चार हज़ार रुपया पाठशाला तथा अन्य फन्डों के लिए एकत्र हुआ। इस कृतकार्यता के लिये समाज के अधिकारी धन्यवाद के पात्र हैं।

—:o:—

"सरस्वती" के दो अंकों में दो लेख "हिन्दी कविता" पर बड़े उपयोगी निकले हैं। प्रथम लेख श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु का है। श्रीयुत कामताप्रसाद आर्यभाषा जगत् में विशेष ख्याति रखते हैं। आप हिन्दी विषयक अनेक प्रश्नों पर मार्मिक विचार प्रकाशित करते रहते हैं। आपने जो विचार प्रकट किये हैं, उनमें से दो पर साहित्य-समाज को विशेष ध्यान देना चाहिये। प्रथम विचार यह है कि इस समय हिन्दी कवियों की गिन्ती जितनी बढ़ गई है योग्यता उतनी ही कम होगई है। संख्या बढ़ जाने का सवाल उतना ही विचारणीय है—जितना योग्यता कम होने का। ये दोनों बातें सदा तो इकट्ठी नहीं जातीं, परन्तु हिन्दी कविता के बारे में इनका मेल अवश्य है। बरसात में पौदे और बहार में तितरियां उस बहुतायत से पैदा नहीं होते—जिस बहुतायत से आज कल हिन्दी कवि उत्पन्न हो रहे हैं। कविता का काव्यत्व मारा जारहा है। कुछेक कवियों को छोड़ शेष हिन्दीकवियों के पद्य को यदि बिखाड़ा हुआ गद्य कहें तो अनुचित न होगा।

—:o:—

दूसरी ध्यान देने योग्य बात यह है कि हमारी कविता में मौलिकता का सर्वथा अभाव प्रतीत होता है। अभी हिन्दी कवियों के दिमाग़ रूपी पक्षी इस संसार के विस्तृत उद्यान में स्वच्छन्द विहार नहीं करने लगे। अभी वे सैंकड़ों यात्रियों के रगड़े हुए रास्तों पर ही चल रहे हैं। कहीं आपके संस्कृत की छाया मिलेगी तो कहीं अंग्रेज़ी की बू। कहीं बंगला की आभा मिलेगी तो कहीं मराठी की नक़ल। अभी स्वाधीन प्रवृत्ति और भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के शब्दों में अनूठी बात दिखाई नहीं देती।

—:o:—

दूसरा लेख पं० बद्रीनाथ भट्ट का है। इस लेख के अधिकांश में श्रीयुत कामताप्रसाद गुरु के लेख की ही पुष्टि की गई है। एक बात नई है और बड़े काम की है। गुरुजी की राय है कि हिन्दी में बहुत तुच्छ २ विषयों पर कविता होती है, सो न होनी चाहिये। भट्ट जी की राय है कि तुच्छ विषयों पर भी अत्युत्तम कविता हो सकती है। इसे रोकना ठीक नहीं। हमारी सम्मति भट्ट जी के साथ मिलती है। कवि और दार्शनिक के लिए संसार में कुछभी तुच्छ नहीं। एक ज्योतिषी के लिए आकाश में विहार करने वाला छोटे से छोटा पिण्ड भी उपेक्षणीय नहीं हो सकता, ऐसे ही संसार का मर्म पहिचानने वाले के लिए कुछ भी तुच्छ नहीं। ख़ैर पर भारत के बड़े से बड़े कवियों ने कितना वाणीविलास किया है? क्या उन के महाकवित्व में किसी को सन्देह है। प्रश्न है सारा प्रतिभा का। प्रतिभा एक सूखे पत्ते और मोकीले पत्थर में जगत् के व्यापक सिद्धान्तों को ढूंढ लेती हैं, और जहां प्रतिभा नहीं वहां सुन्दर से सुन्दर उद्यान भी लकड़ी पत्थों का ढेर हो जाता है।

—:o:—

इस वर्ष कांग्रेस के सभापति कौन हों— यह प्रश्न बड़े मर्म विवाद का विषय हो रहा है। पत्र और प्रकृत अपने २ प्यारे चुने हुए सभापति के लिए यत्न कर रहे हैं। प्रस्तावित व्यक्तियों के विषय में हमें कथनीय नहीं। कांग्रेस जैसी सभा की कुर्सी पर से कैसी वक्तृता पढ़ी गई और किस द्वारा पढ़ी गई— इस से भारत के भविष्य पर कोई असर नहीं पड़ता। न मजुमदार की वक्तृता से भारत स्वर्ग में पहुंच जायगा और न गोविन्द राघव के भाषण से पाताल में चला जायगा। व्यक्ति के लिए नहीं—ऐसे विषयों में मुख्य विचारणीय समस्या के विषय में हम दो शब्द अवश्य कहेंगे। सभापति का भाषण और उस का व्यक्तित्व भी सभा में जान डालने वाला होना चाहिये। जो पति सभा को सुलादे— वह सभापति नहीं— सभा का शत्रु है। इस कसौटी पर कसें तो इस समय कांग्रेस के लिए श्रीमती एनीबैसेन्ट या मि० हक से उत्तम कोई सभापति मिलना मुश्किल है। किन्तु राजनीति के मार्ग विकट और टेढ़े हैं—कांग्रेस के कर्णधारों को यह भी तो सोचना है कि आकाशवाणी क्या कहती है?

—:o:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक पुस्तक भण्डार
की नई पुस्तकें
आर्य्यधर्मग्रन्थमाला

श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा लिखित
आर्यों की नित्य कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तिका में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठकर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिए यह इस बड़ी उत्तमता से दरशाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आचारानाचार और भक्ष्या-भक्ष्य—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है कि छुआ-छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किसके साथ खाना चाहिए, किसके घर खाना चाहिये—इन सब प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तिका में भली भांती आगया है।

मातृभाषा का उद्धार—मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्यसम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्य-जाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य हैं? आर्यमात्र को इस निबन्ध से आर्यभाषा के गुणों का ज्ञान होसकता है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
का
संस्कृतसाहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन

यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इस में पहले दिखाया गया है कि सारे नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण ग्रन्थो पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं—मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है और आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्ता सद्धर्म्म प्रचारक

मूर्ति पूजा

१ क्यों भिकारी बना है छः घर का
रख भरोसा तू एक ईश्वर का।

२ उस के आधीन है यहां सब कुछ
वही स्वामी है इस जगत् भर का।

३ है असम्भव कि हो कोई भी और
उस से बढ़कर तथा बराबर का।

४ वह अनुपम है, उस के बदले में
टुकड़ा पूजो न हाय पत्थर का।

५ मूर्ति पूजा ही का निछावर है
प्राप्त दासत्व है जो घर घर का।

६ पूजा कंकर की हाय सोचो तो
कैसा अपमान है यह शङ्कर का।

७ रक्त आंखों से क्यों न टपके आह
देख कर यह हाल घर घर का।

८ शीघ्र ईश्वर को भाइ पहचानो
कुछ ठिकाना नहीं है दम भर का।

९ सपर्यगादि मन्त्र कहते हैं
सच्चा सच्चा स्वरूप ईश्वर का।

निरंजन

—:०:—

चांद के चोर

ग्यारहवीं शताब्दी की बात है जबकि अर्ब की उठती हुई शक्ति ने ईश्वर भक्ति की आड़ में अपने सन्मुख किसी की हस्ती न समझते हुये अपने यौवन के अभिमान में अपनी कुदरती सीमा को पार करके इधर फारिस व काबुल, उधर स्पेन व पुर्तगाल में जा, ताल ठोके थे, और अफ्रीका की अंधियारी भूमि में तलवार की धार से इसलाम फैलाने की तय्यारी कर, फ़ारिस की खाड़ी को तांघ हिंगलाज देवी के प्राचीन देश मकरान व बिलोचिस्तान के तिरले समुद्र को नौका के द्वारा पार कर मजहबी जोश में हिमालय की पुत्री सिंध के दक्षक देश सिंध में रहने वाले हिन्दुओं पर धावा मारने को आधमके थे और शान्तिपरियासी धारातटनिवासी आलस्य की राशी सिंधियों को बंदी बना निज रेगिस्थानी देश में लेजा उनके शरीर को सूर्यरूपी भौतिक व आधीनता रूपी आत्मिक ताप से तपा, दुवारे वल बुखा अन्त में दुवारों के मोल लौंडी गुलाम बना बेच दिये। इन मज़हबी लड़ाकों के लाव लशकर ने पुष्कर व अजमेर तक बन की बढ़ती हुई दावा नल के समान अपने सन्मुख आये हुओं को भस्म करते हुये गढ़ बीटली के शिखर तक अपनी ज्वलंत लाट को पहुंचाना आरम्भ कर दिया था। परन्तु अटल व्रतधारी गिरारी को अज्म देव की प्राचीन नगरी का अज्य योधा वा उसके चरणों में अपने प्राण रूपी भेट अर्पण कर शिलाओं में मुंह ढांप, सहस्रों की संख्या में सो रहे, और भांति२ का रुद्र नाद कर अपने बंशजों को बदला लेने के लिए उत्तेजित करते रहे और अन्त में सफल मनोरथ हो अपनी हड्डियों पर विशाल भवन व दरगाह बनवा प्रति वर्ष सहस्रों नरनारियों को चुम्बक बन अपनी पूजा के लिए आकर्षित करते रहे और नाना साधनों से निर्बल विश्वासहीन हिन्दुओं पर अपना आतंक जमा भेड़ बकरियों की भांति अपने एवज़ में दाखिल करने लगे। यहां तक कि इनकी संख्या लाखों तक पहुंच गई और ऐसी कोई उपजाति या वंश नहीं रहा जो उनके मन्दिर के साथ खण्डित नहीं हुआ हो और आज तक उनकी क्रूरता व हिन्दुओं की नासमझी की साक्षी न देता हो जिन्होंने महाभारत के सर्वनाशी संग्राम के पश्चात् गणित के पहिले पाठ जोड़े से अपना मुंह मोड़ केवल जातीय शक्ति को तोड़ने के लिये बाकी की फक्की लगाना सीख लिया। जो जातियें इस प्रकार हिन्दू राष्ट्र से पृथक हुई उनमें से एक मने अर्थात मेवाती भी थे जो कृषि प्रधान जाति होने के अतिरिक्त बड़े बीर व अदालु भी थे—जब इन लोगों के गोल के लोग नवीन धर्म्म की पोल में घुसने लगे तो जैसी कि कहावत प्रसिद्ध है कि "नया मुल्ला अल्ला ही अल्ला पुकारे" यह लोग जैसे पहिले हिन्दुओं के देव देवताओं की पूजाके लिये बड़े ठाट बाट से जाबा करते थे वैसे ही इन मज़ारों व दरगाहों पर आने लगे, यहां तक कि रेवाड़ी अलवर व तिजारे के इलाके से सैकड़ों के झुंड के झुंड अपनी २ गाड़ीयें व झंडे लिये हुये ढोलकियें बजाते हुये, मेले से

६०–६२ दिन पहले आने लगे परन्तु जैसी यह जाती श्रद्धालु थी वैसी चोर भी थी इसी कारण अपने पुराने खोटे में से प्रेरे जाकर एक मेवाती ने ख्वाजे साहब के म-ज़ार पर की गुबंद की सुनहरी कलश को चुराने की ठानली, और एक रात्री को बड़ा साहस करके मरने से न डरके बड़े यत्न से गुंबद पर चढ़गया, और कलश उ-तार कर आहो रहा था कि चोरों के शत्रु चंद्रमा ने अपनी चांदनी द्वारा चोर का गुबंद पर से मौरवत उतरते दिखा दिया फिर क्या था, सारे मेले में शोर मचगया और मेवों पर तानें तमुने धिक्कार प-ड़ने में कोई कसर नहीं रही। अंत में वि-द्वानों की सम्मति से यह निश्चय हुआ कि यह जाति बड़ी चोर है इन का मेले में रहना ठीक नहीं, नहीं तो न मालूम कितनी बड़ी २ चोरियें व गोल माल होंगे। इस लिये इन को कहदिया जावे कि तुम चांद के निकलने से पहले २ जब की उरस (मेला) प्रारम्भ होता है ज़ियारत करके चले जाया करो तुम को यही सज़ा है तब ही से इन को चांदके चोर कह के पुकार ने लगे और यह लोग चंद की प्रथमा से पहले २ ही नगर छोड़ कर चले जाने लगे —नवीन शिक्षा के प्रचार व अज़ादी के विचारों के विस्तार से पहलेवाली रोक टोक नहीं रही है, परन्तु फिर भी मेवाती लोग अपनी जाति के एक व्यक्ति के दुष्ट कर्म्म के कारण अभीतक बदनाम हैं और चंद्रमा से जो उन की चोरी को प्रकट करने का कारण हुआ रुष्ट रहते हैं–इसी लिये कहा है कि एक मछली तालाब को गन्दा कर देती है। एक व्यक्ति सारी जाति को कलंकित करने का साधान होता है। एक मनुष्य सारे संसार में युद्धरूपी प्रचण्ड अग्नि लगाने का साधक हो सकता है जैसाकि प्राची-न समय में दुर्योधन महाभारत जैसे सर्वनाशी संग्राम का कारण हुआ था और वर्तमान में एक सर्विया निवासी युवक ने आस्ट्रिया के युवराज और उसकी पत्नी को मार सं-सार व्यापी घोर संग्राम का मूल कारण बना है। इसही प्रकार सुवर्णकारों की गर्दन सदैव के लिये नीची करने वाला वह व्य-क्ति हुआ है जिसने जनश्रुति के अनुसार हिमाचल निवासी बद्रीनाथ की स्वर्ण मूर्ति की उंगली को लालचवश काट लिया था। इस कारण विद्वानों का मत है कि क़ौमों व जातियों के प्रत्येक व्यक्ति को सुशिक्षित किया जाय और उसको राज्य की भली प्रजा का अङ्ग बना-या जाये, नहीं तो क्या मालूम; कौनसा व्यक्ति क्या कर गुजरे जो सर्वनाश का कारण हो। इसलिये यह प्रत्येक वैदिक धर्मी का कर्तव्य है कि वह संसार में इस लिये ज्ञान फैलाने व मनुष्य मात्र को तिमिर से निकालने का यत्नकरे—

रामविलास शारदा

—:o:—

प्राप्त पत्र

हमारे एक ब्रह्म देव दोस्त

–"कवि वर पं० नाथूराम शङ्कर श-र्म्मा के अनौचित्य" शीर्षक लेख को पढ़ कर वे तरह भड़के हैं? उन्होंने हमें एक नातजुर्बेकार, नौजवान, भला मानुष स-मझकर बेतरह झाड़ा है? आप एक स-च्चे ब्रह्म देव मालूम होते हैं एतदर्थ आ-पको अनेक धन्यवाद? हम अपने इन्हीं आर्य्य दोस्त को बतलाना चाहते हैं कि हमने उन्नीस बीस वर्ष से इसी नातजुर्बे-कारी की हालत में आर्य्यसमाज की बा-तों को सुना समझा है? विशेष तजुर्बा आपने कहां से, हमारे उस लेख को पढ़ कर आपको इस क़दर भड़कने की आवश्यक-ता नहीं थी, आप जैसे तजुर्बेकार को हमारी असली नीयत पर ध्यान देने की ज़रुरत थी। आपने अपनी तजुर्बेकारी को क्यों धब्बा लगाया। "बुरे भले सभी जातियों में हैं, ज्ञात तो यही होता है कि कवि कर्ण [कवि नहीं तुक्कड़?] का अ-सली तात्पर्य्य सारी ब्राह्मण जाति पर लांछन लगाने का न था" यह सम्पादकीय टिप्पणी, जो वास्तव में उचित है, आ-पको लेख लिखने से पहले पढ़लेनी चा-हिए थी?

ब्राह्मण जाति से जितना उपकार, अप-कार हुआ, उस पर बहस शुरू न कराइए? यह प्रकरण से अलहदा जाने वाली बात है? सच मुच के सुधारक, ऋषि महर्षि, देवता, पण्डित जो हुए ब्राह्मण जाति में ही हुए। आप का यह ख़याल दुरुस्त? हम इस की तरदीद भी नहीं करते। ब्रा-ह्मण जाति ने ही देव वाणी को जीवित रक्खा, इसने ही नानाक्लेश सह कर वेदादि सच्छास्त्रों को नाश होने से बचाये रक्खा, और इस जाति के पूज्य नरदेव कई मुख्य २ समाजों के मन्त्री सही। प्रधान भी चाहे सही। हम जैसे भले मानस को इ-स से सरोकार ही क्या? या यह कोई धमकी है।

कविवर श्री शङ्कर जी के अनौचित्य को तो आप स्वीकार करते हैं, इन्हों ने जो व्यक्तिगत, व्यङ्ग्य पूर्ण, दूषित क-विताएं लिखीं, उन्हें भी आप अच्छा नहीं समझते, घृणित ही समझते हैं। निस्सन्देह यह आप की ईमान्दारी है आप बहुत अच्छे आदमी हैं, आप जैसे सच्चे ब्राह्मणों पर हमारा कटाक्ष नहीं, आप जैसे आर्य्य ब्राह्मणों के तो हम च-रण–सेवक हैं। आपने सभ्यता और स-त्यता पूर्वक जो हमपर लेख लिखा, त-दर्थ आपको धन्यवाद? पर असलियत पर तो आप पहुंचते। भड़कने और व्यर्थ ही ब्रह्म तेज भड़ने को आप भी अच्छा न समझते।

विनीत "कर्ण"

बलिया की बाढ़

हृदय विदारक दृश्य। रोमञ्चकारी दृ-श्य। देखने से आंसू रुकती नहीं, कहने से छाती फटती है।

मेरे प्यारे आर्य्य भाइयों। आपकी अलौकिक कीर्ति को कौन नहीं जानता, आपने भारत के हित के लिये कौनसा कार्य्य बाकी रख छोड़ा है आप असहायों को सहाय बनाते हैं, शरण देते हैं, नि-र्बलों को सबल बनाते हैं, उत्साह हीन को उत्साही बनाते हैं। अधार्मिकों को धर्म के पथ पर आरूढ़ करने को सदाकटिबद्ध रहते हैं। आप आर्य्य सज्जनों के इन्हीं गुणों पर मोहित होकर आज बलिया के हज़ारों निरीह प्रजा की ओर आप का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। आज बलिया की बड़ी बुरी दशा है, सैकड़ों गांव बह गये, लियाहज़ारों बच्चे बह गये, सैकड़ों विधवायें क्रन्दन कर रहीं हैं, खाने को अन्न नहीं, पहरने को वस्त्र नहीं, रहने को झोपड़ी नहीं, जहां देखें वहीं हाहाकार मचा हुआ है, सैकड़ों बच्चों को दुःख से तड़फते हुए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देख कर कोई सहृदय अपने हृदय को थाम नहीं सक्ता। लोग बिलकुल असहाय हैं अशरण्य हैं, कुल कामिनियों के देह पर वस्त्र नहीं। सब बह गया, पशुओं के लिये चारा नहीं, बलिया का बड़ाही बीभत्स दृश्य हो रहा है। ऐसी दशा में बलिया के प्रति आप का क्या कर्तव्य है? स्वयं आप अपने आत्मा से पूछें अपने मन में विचार करें। क्या इस समय इस दृश्य के सामने अपने उत्सवों में हज़ारों रुपये व्यय करना आप को सोभा देगा। भूखो से तड़फते हुए हजारों मनुष्यों को छोड़ कर क्या आप को घी बूध खाना अच्छा लगेगा,? मुझे तो विश्वास नहीं कि कोई भी आर्य्य मुंहफट इस प्रश्न के उत्तर में कभी हां कहेगा। तब फिर आप को क्या करना चाहिये? आप अपने समाजों में प्रस्ताव करें कि अपने उत्सवों को रोक कर उन रुपयों को बाढ़ पीड़ित बलिया के निरीह भाइयों के लिये व्यय करें और अपनी समाजों में बलिया बाढ़ फरड खोल कर भिक्षा मांगें। उस भिक्षा को आप स्वयं आकर बाढ या यहां के ज़िलाधीश कलक्टर के पास भेज कर यशस्वी बनें। यह बात नहीं कि बलिया में बाढ़ आई और चली गई, रुपयों की आवश्यकता नहीं सो बात नहीं, यहां छः मास तक रुपयों की ज़रूरत पड़ेगी, क्योंकि सैकड़ों गाओं के बह जाने से उन गाओं के डूबने से बाकी मनुष्यों के बच जाने से, रहने खाने का हाहाकार मचा हुआ है, कलरा का प्रकोप हो गया, मलेरिया ज़ोर पकड़ेगी, ऐसी दशा में आप स्वयं विचारें दवाइयों की कितनी आवश्यकता है? बस अब आप अनाथों के नाथ बनें, अपनी मुट्ठी खोलें, मैं आप की ओर क्या लिखूं, आप से अधिक क्या प्रार्थना करूं, आप आर्य्य हैं, ऋषियों का रक्त आप में विद्यमान है, आप के सामने हृदय खोल कर रख दिया है, आप अपने ऋषि सन्तानों की दशा पर आंसू बहाते हुए अपने कर्तव्य पथ पर आरूढ़ हों।

दुःखित

ब्रह्मचारी रामरक्ष

नोट—प्रत्येक आर्य पत्र इस लेख को अपने पत्र में उद्धृत कर यश के भागी बनें।

२ बिहारी भाई फुटकर भेजें तो बाबू राजेन्द्र प्रसाद एम. एल; छपरा के नाम भेजें अथवा बिहारी आर्य फरड खोल कर स्वयं बांटें।

प्रत्येक प्रान्त के आर्य्य समाजों से मेरी यह विनीत प्रार्थना है।

"कर्ण" को चिनौती (चैलेन्ज)

गत तीन सप्ताहों से इसी पत्र में "कविराज पं० नाथूराम शंकर शर्म्मा को अनौचित्य" शीर्षक लेख निकल रहा था—जो अब की बार तीसरे अंक में समाप्त हो गया—इस लम्बे लेख के लिखने वाले कर्ण नामक कोई तुक्कड़ हैं— लेख की अन्य बातों पर हमें कुछ नहीं कहना, परन्तु तुक्कड़ जी ने कविराज की कविता कामिनी के कलित कलेवर को कलुषित करने में जो क्रूरता दिखाई है वह उन्हीं का साहस है-हम ऐसे दुस्साहस को घोर घृणा की दृष्टि से देखते हैं— प्रतिभाशाली कवि की मौलिक कविता के दोष-दर्शन कराना 'तुक्कड़' का काम नहीं—कोई कवि इस प्रकार की चर्चा चलावे तो चलावे—आज हिन्दी साहित्य संसार में कदाचित् ही कोई होगा जो 'शंकर' जी की कविता को सम्मान की दृष्टि से न देखता हो—वर्तमान समय के सुप्रसिद्ध काव्य मर्मज्ञों ने उन के काव्य की भरपेट प्रशंसा की है—हमारी प्रतिज्ञा है कि 'दोष-दर्शन' तो अलग रहा 'तुक्कड़ जी' 'शंकर जी' के काव्यों को समझ तक नहीं सकते—हम उन से कुछेक पद्यों के अर्थों को पूछने के लिए तय्यार हैं यदि साहस हो तो वह अर्थ करें-यदि दूसरे साहित्य वेत्ता उन अर्थों को स्वीकार कर लेंगे तो हम प्रत्येक पद्य के लिए 'तुक्कड़ जी' को अपनी ओर से उपहार स्वरूप भेंट करेंगे—

नन्द किशोर तिवारी—

टूंडला (आगरा)

प्रान्त

—:o:—

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

(गतांक से आगे)

मैं यदि सुरक्षित भी हो जाऊं, बुड्ढा भी ली जाऊं और पिता भी स्वीकार करलें तो क्या वे मेरा ग्रहण करेंगे क्या मुझ पर यवन के हस्तस्पर्श का कलंक न आयगा? मैं सच सच कह दूंगी, तो भी स्त्रियों के वाक्य का विश्वास कौन करता है? हाय—अब मुझ अभागिन का छूटना भी तो व्यर्थ है। मृत्यु ही एक मात्र आश्रय है।" इसी प्रकार अनेक संकल्प विकल्प करते हुए उस ने निश्चय किया कि पालकी के दिल्ली घुसने से पूर्व ही मैं गले में कपड़ा बांध कर किसी न किसी भांती मर जाऊंगी।

गर्मी अधिकाधिक बढ़ने लगी—और पालकी जंगल में ला कर रखी गई। अब तक पालकी चलती थी, कमलदेवी फिर भी अपने आप को कुछ सुरक्षित समझती थी—परन्तु पालकी रखते ही उस का दिल दहल जाता था—और वह सोचती थी कि अब न जाने क्या होगा? बहुत देर तक पालकी रखी रही

उसके पीछे फिर पालकी का एक पर्दा उठा और उसी राजपूत ने पूछा 'किसी चीज़ की आवश्यकता तो नहीं।' कमलदेवी ने सिर हिला कर निषेध का इशारा कर दिया। पर्दा गिरगया। उसी समय कमलदेवी ने सुना कि एक और सिपाही ने आकर उस राजपूत को 'कल्याणसिंह' कहकर पुकारा और सर्दार के पास भेज दिया। फिर कोई चार पांच मिनट पीछे उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि वे सिपाही कुछ घबराहट से बातें कर रहे हैं। उसे ऐसा भी ज्ञान हुआ कि वे सब चले गये। साहस करके कमलदेवी ने पर्दा उठाया और देखा कि वहां सचमुच कोई नहीं है। दिल में एक बार ही राजपूती साहस की लहर उठी। ऐसा सुयोग फिर मिलने की आशा नहीं थी। यहां से कहां जाऊंगी—यह विचारने

ा समय नहीं था। बिजली की फुर्ती
वह पालकी से बाहर निकली और
ारों ओर नज़र दौड़ाई। सामने यमुना
ा जल दिखाई दिया। बस, वह पगडंडी
े रास्ते एक दम निकल कर यमुना के तट
र आखड़ी हुई। मध्याह्न के समय सूर्य
ी प्रखर किरणें यमुना जल पर उछल२
कर खेल रही थीं। कमलदेवी को प्रतीत
ुआ, मानो वे मुंह खोलकर उसे नि-
मन्त्रण दे रही है। कोई २ उठती
ुई लहरें हाथ उठा २ कर उसे
आलिङ्गन करने दौड़ रही थी। कम-
लदेवी को भान हुआ कि यवनों के
अत्याचार के विरुद्ध माता यमुना उसे
आश्रय देने को तय्यार है। एक क्षण भर
में उसने निश्चय कर लिया। बाल्यावस्था
से ही उसे तैरने का अच्छा अभ्यास था।
अब विचार करने का समय नहीं था। कि-
नारे पर एक बड़ी लकड़ी पड़ी थी।
ज़रा सा धक्का देते ही वह जल में बह
चली। कमलदेवी ने अपनी छाती उस
पर रखी और अपनी जीवनचय्या यमुना
की शीतल लहरों पर डालदी।

जब सिपाही लोग पालकी के पास प-
हुंचे, कमलदेवी प्रवाह के साथ ब-
हुत नीचे नहीं गई थी। किन्तु उन लोगों
का ध्यान उधर गया ही नहीं। उन्हें यह
कल्पना नहीं हुई कि राजपूत बाला अ-
केली नदी में कूद जायगी। इधर उधर
झाड़ियों में, वृक्षों पर, मैदान में—चारों
ओर खोज होने लगी। घन्टों तक ढूंढ़
जारी रही। मुराद तेजसिंह तथा गुलाम-
क़ादिर की रक्षक के लिए रहा और बाकी
सब लोग ढूंढ करते रहे। घंटों की खोज
पर भी कुछ फल सिद्धि न हुई। कमलदेवी
का कोई चिन्ह न मिला। तब आख़िर
थक कर दिल्ली चलने की सलाह ठहरी
तेजसिंह अभी तक पूरी होश में न आया
था—निर्बलता के कारण चलने में
सर्वथा अशक्त था। बंधे हुए गुलामक़ादिर
का दो आदमियों के कन्धों पर और
तेजसिंह को पालकी पर डाला गया और
वह पार्टी सांझ होने से पूर्व ही दिल्ली
के लिए रवाना हुई।

बारहवां परिच्छेद

बादशाह का कोप

रात के नौ बजे होंगे। यह समय सामान्य समय नहीं है। यदि मनुष्य जाति की असली दशा जाननी हो तो इसी समय का अनुशीलन करो। यदि व्यक्ति की आदतें परखनी चाहो, तब भी इसी समय मिलने जाओ। एक कार्य्य व्यग्र आदमी के यहां जाओ तो उसे लिखने पढ़ने या हिसाब साफ़ करने में लगा हुआ पाओगे। यदि एक व्यसनी पुरुष के यहां पहुंचोगे तो महफल के राग रंग मिलेंगे। एक मध्यम आदतों वाला व्यक्ति शायद उस समय भोजन कर रहा होगा। दो ही समयों में आदमी के शील और चरित की परीक्षा हो सकती है। या प्रातः उठते समय, और या रात्रि को सोते समय। ये समय मनुष्य के अन्तरात्मा को प्रतिबिम्बित कर देते हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली उस समय भोग विलास की पुरी थी। देशदेशान्तरों की सम्पति ने आकर वहीं पर डेरा जमाया था। मानों शाहजहां की विस्तृत शहर पनाह की गोद में स्वयं लक्ष्मी निवास करती थी। उस समय के मुग़ल सम्राट् भी भोग विलास के पुतले थे। यदि निश्चय न हो तो चलो—लाल किले में चल कर शाहन्शाह शाहआलम को ढूंढें, वह क्या कर रहा है? अभी तक किले में बड़ी हलचल है— लोगों की आवाजाही बराबर जारी है। दरबार बर्खास्त हो चुके— परन्तु अभी किले की रात की रौनक धीरे २ ही सोयगी। शाहआलम को ढूंढो तो न दर्बार आम में है, और न दर्बार ख़ास में। तब क्या वह महलों में है? नहीं वहां भी नहीं है। महलों में बादशाह की प्रतीक्षा हो रही है। तब बादशाह सलामत कहां हैं? बहुत ढूंढने पर आप को किले के एक किनारे पर बना हुआ एक अकेला और कुछ २ गुप्त कमरा मिलेगा—जिस में एक आराम चौकी पर शाहआलम लम्बायमान हो रहा है। सामने एक एक सुन्दर तिपाई धरी है—और उस पर सुगन्धित दिया धरा है। आराम चौकी के पास ही एक और चौकी रखी है, जो खूब गद्दों और रेशमी झालरों से शोभायमान है। शाहआलम बड़े आराम से लेटा हुआ प्रतीत होता है— उस की आधी २ आंखें बन्द हैं—किन्तु वे निरन्तर द्वार की ओर लगी हुई हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वह किसी की प्रतीक्षा कर रहा है। बाहिर ज़रा सा भी खटका होता है तो शाहआलम चौंक उठता है। उस के हृदय में मानों कोई आशा सी लग रही है, जो उसे चंचल बना रही है।

देर तक शाहआलम इसी प्रकार लेटा रहा। दो एक बार चौंका, किन्तु किसी को अन्दर आता न देखकर फिर वैसे लेट गया। तीसरी बार फिर आहट हुई— शाहआलम कुछ घबराया हुआ सा भुजा के बल उठ बैठा और बड़ी उत्सुकता से द्वार की ओर देखने लगा। दरवाज़े का द्वार खुला और द्वारपाल का मुंह दिखाई दिया। ज़रा कड़ी स्वरसे शाहआलम ने पूछा 'क्या डोली आगई।' दरबान ने झुक कर सलाम किया और उत्तर दिया कि 'नहीं जहांपनाहां! दारोग़ा—सर्फ़—खास दरवाज़े पर हाज़िर हैं'।

शाह आलम ने सूखे स्वर से कहा— 'इस वक्त हम अपने किसी अमीर को नहीं मिल सकते। मंजूर अली को कहो—हम से कल मिले।'

दरबान "जी हुज़ूर" कह कर चला गया। शाह आलम कुछ बुड़ा बुड़ाता हुआ सरहाने पर झुकने लगा—कि इतने में दरबान ने फिर दरवाज़ा हिला कर सलाम की। इस बार कुछ खिझ कर शाह आलम ने तीखे स्वर से पूछा "क्या है?।" दरबान ने फिर झुककर कहा कि "हज़ूर! दारोग़ा सर्फ़-ख़ास फ़र्माते हैं कि 'आपने अभी २ मुझे आदमी की ज़बानी बुलवा भेजा था। इस लिये ख़िदमत में हाज़िर हुआ हूं। हुक्म होगा तो कल फिर हाज़िर हो जाऊंगा।' शाह आलम को मानों कुछ याद आगया। कोई पर्दा सा ढारहा था जो उठ गया। उसने दरबान को आज्ञा दी कि 'अच्छा आने दो'

[शेष फिर]

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पत्रों की सैर

हिन्दू विश्वविद्यालय।

(भारतमित्र से)

× × × ×

हिन्दू विश्वविद्यालय का यथार्थ कार्य हिन्दुओं में प्राच्य ज्ञानके साथ ही पाश्चात्य विज्ञान और कलाकौशल का प्रचार करना है। यह काम वर्त्तमान विद्यालयों वा विश्वविद्यालयों से नहीं होता इसी लिये हिन्दू विश्वविद्यालय की आवश्यकता थी। पर हिन्दू विश्वविद्यालय क्या कर रहा है? इसका उत्तर देना कठिन है, क्योंकि विश्वविद्यालय के विधाता इस ढङ्ग से कार्य करते हैं कि, किसी को कानोंकान खबर नहीं होती कि, उन्होंने क्या करना विचारा है। वे अपने विचारों और संकल्पों को मन्त्रवत् गुप्त रखते हैं और सर्वसाधारण हिन्दुओं को किसी प्रकार की सूचना तक नहीं देते। क्या यह उचित है? यदि हमारा विश्वविद्यालय सरकारी विश्वविद्यालयों का अनुकरण सब विषयों में करने लगेगा तोफिर उससे हिन्दुओं की आशा दुराशा मात्र है।

काशीनिवासी बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने पिछले जुलाई महीने में दैनिक भारतमित्रमें हिन्दू विश्वविद्यालय के विषय में कई लेख छपाये थे। इनमें उक्त विश्वविद्यालय के सञ्चालकों से कुछ प्रश्न किये गये थे। मालूम नहीं कि, उन्हें सन्तोष जनक उत्तर मिले या नहीं; पर इसमें सन्देह नहीं कि, समाचार पत्रों में अधिकारियों की ओर का कोई वक्तव्य नहीं प्रकाशित हुआ।

× × × ×

हम चाहते थे कि, इस हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी द्वाराशिक्षा दी जाय, पर सरकार के आग्रह से वैसा न हो सका और अब अन्य विश्वविद्यालयों की तरह इसकी शिक्षा का द्वार भी अङ्गरेज़ी ही है। परन्तु बा० शिवप्रसाद गुप्तने ओरियण्टल डिपार्टमेण्टकी बात छेड़ी है जिसमें हिन्दी द्वारा वैज्ञानिक विषयों की शिक्षा देना निश्चय हुआ है। बाबू शिवप्रसाद का यह प्रश्न बहुत ही उचित है कि, वैज्ञानिक विषयों की पुस्तकों का उलथा करने के लिय हिन्दू विश्वविद्यालय ने कोई विद्वन्मण्डल बनाया है या नहीं? यदि नहीं, तो क्यों नहीं? विश्वविद्यालय की ओर से इन प्रश्नों का कोई उत्तर नहीं मिला। बा० शिवप्रसाद ने मिश्र के एक नवजात विश्वविद्यालय का उदाहरण दिया है, जिसने विषयों को अरबी भाषा द्वारा शिक्षा देना अपना उद्देश्य स्थिर किया है। इस विश्वविद्यालय ने भाषान्तर कारोंका एक मण्डल बनाया है जो अरबी भाषा में वैज्ञानिक शब्द बनाता और वैज्ञानिक पुस्तकों का अनुवाद करता है। इसके साथ ही विज्ञान के विदेशी अध्यापकों के साथ एक एक ऐसा विद्वान् रखा है जो क्लासों में अध्यापकों के भाषणों का भाषान्तर कर विद्यार्थियों को समझाता है और विद्यार्थी और उक्त स्वदेशी विद्वान् उस भाषान्तर को लिख लेते हैं। इस प्रकार वहां वैज्ञानिक साहित्य तैयार होता है। बा० शिवप्रसाद चाहते हैं और हम भी उनसे सहमत हैं कि, हिन्दू विश्वविद्यालय इस पद्धति का अनुकरण करे। पर उसके कर्त्ता धर्त्ता तो सांमतक नहीं लेते। मालूम नहीं, उनके मनमें क्या है।

बाबू शिवप्रसाद ने अपने एक लेख में कहा है कि, मकानों में बहुत द्रव्य न व्यय करना चाहिये और इस बात की चेष्टा करनी चाहिये कि, हिन्दुओं को सस्ती शिक्षा मिले। बात ठीक है, पर हमें आशङ्का है कि, सरकार की सहायता के नियम इसमें बाधक होंगे। तो भी इतनाअवश्य कहेंगे कि, अस्थायी और स्थायी दिल्ली का अनुकरण न करना चाहिये। सरकारी कर्मचारी यदि प्रजाके भाव नहीं समझ सकते, तो वे परदेशी हैं इस लिये हम उन्हें दोष भी नहीं दे सकते। पर हिन्दू विश्वविद्यालय के अधिकारियों को अवश्य इस बातका ध्यान होना चाहिये कि, यह धन हिन्दुओं में शिक्षा प्रचार के लिये हमें मिला है, ईंटगारे में लगाने के लिये नहीं।

संस्कृत शिक्षा के प्रति यदि हिन्दू विश्वविद्यालय के अधिकारियों का वही भाव है, जो बा० शिवप्रसाद के लेखसे झलकता है तो बड़े ही खेद का विषय है। एक तो विश्वविद्यालय के अधीन रणवीर पाठशाला के अध्यापकों का वेतन कम है और दूसरे यदि वे उसे बढ़ाने के लिये कहते हैं तो कोई सुनवाई नहीं होती। क्या यह उचित है? पर यही नहीं, इस प्रार्थना के उत्तर रूप में उनसे अब ९॥ या १० बजेसे ४ बजे तक पढ़ाने को कहा गया है और यही पाठशाला का समय कर दिया गया है? हिन्दू विश्वविद्यालय के अधिकारियों या उनके कर्मचारियों का संस्कृत के प्रति यही भाव यदि रहा, तो हिन्दू विश्वविद्यालय का उद्देश्य कभी सफल न होगा।

:०:—

दक्षिण अफ्रिका में शिक्षा पद्धति

[धर्मवीर से]

भारतवर्ष के हिन्दी लोगों ने इस देश में आकर और इस देश को अपना निवासस्थान बनाने पर भी अपनी सन्तानों का धार्मिक शिक्षा देने का कोई प्रबंध नहीं किया था और गवर्नमेण्ट ने अपनी शर्त के अनुकूल स्कूल बना कर उनको थोड़ी बहुत अंग्रेज़ी की शिक्षा दी। परन्तु वह अपनी मातृभाषा से बिलकुल शून्य रहगये और हमारे नेताओं ने उनके बच्चों की मातृभाषा अथवा धार्मिक शिक्षा के बारे में आजतक कुछ प्रबंध नहीं किया लेकिन वह अपनी ही स्वार्थ सिद्धी में लगे रहे। इसलिये इस कारण से भी उनको उनके राजनीतिक काम में ऐसी सुफलता प्राप्त नहीं हुई जैसी होनी चाहिये थी इस से हमारा यह मतलब नहीं है कि वह राजनीतिक काम न करते परन्तु जितना ज़ोर वे राजनीतिक काम में लगाते रहे यदि उतना उनकी शिक्षा के बारे में भी ज़ोर देते तो अवश्य उनको पूरी सुफलता हुई होती यदि वह अपने राजनीतिक काम के साथ २ उनके सन्तानों की शिक्षा के बारे में कभी कुछ गवर्नमेण्ट से तजवीज करते तो उस में कुछ सन्देह नहीं गवर्नमेण्ट अवश्य ध्यान देती। और दक्षिण अफ्रिका में हिन्दीयों के लिये जैसी शिक्षा पद्धति प्रचलित है। उससे जाति को क्या लाभ हुआ है अथवा क्या हानी हुई है इसका उत्तर देना ज़रा कठिन है पर इतना हम अवश्य ही कह सके है कि प्रत्येक जाति की उन्नति उसके अपने हाथों में है। जो जाति दूसरे पर भरोसा करके अपनी उन्नती की अभिलाषा रखती है उसकी उन्नती होना तो एक तर्फ रहा बल्कि वह यथार्थ बाणी को भी बदल देती है और रही सही को भी खो बैठती है मनुष्यों की जीवन पद्धति का ढांचा उसकी बालावस्था में ही तैयार होता है अथवा बालकाल में उसकी प्रवृति जिस ओर को झुका दी जाती है आजन्म उसी ओर झुकी रहती है इसलिये बाल अवस्था की शिक्षा एक कठिन और असाधारण कार्य जिसकी ओर पाठकों को ध्यान देना परमावश्यक है ॥ इति शम् ॥

समाचार

युद्ध में इंग्लैण्ड के मुख्य सचिव मि० ए स्मिथ का देहान्त होगया। यह समाचार सारे सम्राज्य में दुःख से सुना जायगा।

सामाजिक समाचार–देहरादून समाचार गत ७-८-९ सितम्बर को यहां आर्य स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव शान्ति तथा समारोह से होगया।

१० ता० रविवार से १७ ता० रविवार पर्यन्त प्रसिद्ध व्याख्याता पं० हरिशंकर जी व्यास ने इन विषयों पर उत्कृष्ट सार्वजनिक व्याख्यान समाज मन्दिर में दिये।

(१) सुख नियम-और दुःख अपवाद (२) तप और पुरुषार्थ (३) यज्ञ भावना तथा आत्मार्पण (४) मनुष्य जीवन सार (५) श्री-स्वा० दयानन्द जी का सन्देश (६) सत्य की महिमा।"

व्यास जी के भाषण समाज सिद्धान्तों की पुष्टि में सार्वजनिक और भाव पूर्ण होते हैं-आप के उपदेशों की सब नगरों में आश्यकता है जो सज्जन व्यास जी को समाज सेवार्थ आमंत्रित करना चाहें वे गुरुकुल वृन्दावन के अधिष्ठाता महोदय से पत्र व्यवहार करें।

१७ ता० रविवार को साप्ताहिक अधिवेशन में-गंगा यमुना की बाढ़ से पीड़ित भाइयों की शोचनीय कहानी सुनाकर सहायतार्थ याचना की गई-उसी समय स्त्रियों पुरुषों और विद्यार्थियों की ओर से २३॥=)। सहायता प्राप्त हुई।

यह समाज की तुच्छ सहायता 'सेवासमिति प्रयाग' की सेवा में भेजी गई है।

निवेदक
वैद्य—अमरनाथ औदीच्य मंत्री
आर्य्यसमाज—देहरादून

आर्यसमाज सहारनपुर

(१) श्रीमान पं० फकीरचन्द्र जी बानप्रस्थी आज कल आर्य समाज सहारनपुर में संस्कार विधि और सत्यार्थप्रकाश नित्य प्रति सात आठ समाजिक पुरुषों को पढ़ाते हैं, इस के अलावा साप्ताहिक अधिवेशनों में अपने उत्तम उपदेशों द्वारा इस समाज को लाभ पहुंचा रहे हैं। जिस के लिये यह समाज उनकी बहुत कृतज्ञ है।

(२) गत सप्ताह पं०शंकरदास जी S.D.O. सहकारी मन्त्री आर्यसमाज के आरज़ी तौर पर पूने तबदील हो जाने पर श्रीमान लाला मेलाराम जी वकील प्रधान आर्यसमाज सहारनपुर की ओर से उक्त पंडित जी के सन्मान में उनके यहां से प्रस्थान करने के दिन अन्य चन्द आर्य पुरुषों सहित प्रीति भोजन दिया गया।

शालिग्राम मन्त्री

गत रविवार तिथि १७—९—१६ प्रातः काल म० त्रिलोकचन्द्र जी के पुत्र का नाम करणसंस्कार श्रीमान पूज्य पं० चूड़ामणी जी ने वैदिक रीति से कराया तथा एक उत्तम व्याख्यान भी इस संस्कार के सम्बन्ध में दिया, इस के अतिरिक्त म० विष्णुदत्त जी के मनोहर भजन हुये। इस शुभ अवसर पर उक्त महाशय जी ने ४) दान दिये। आर्य पाठशाला ॥) वेद प्रचार १) आर्य कुमार सभा ॥) भ्राष्ट्री स्कूल लय्या १) गुरुकुल मुलतान ॥) लाकल आर्य्य समाज ॥) उपस्थित सज्जनों का लड्डुओं द्वारा सत्कार किया गया। बालक का नाम ज्ञानचन्द्र रक्खा गया।

सेवक
सुन्दर लाल प्रेम मन्त्री
मुलतान छावनी

"प्रयाग में वृहद् शास्त्रार्थ"

सर्व महाशयों को विदित हो कि इलाहाबाद के ईसाई साहबान की ओर से चौक के गिर्जे में तारिख १ सितम्बर से तारीख १७ सितम्बर तक व्याख्यान व शंका समाधान होता रहा है, अतः आर्यसामाज चौक प्रयाग की ओर से तार द्वारा महाशय शान्तिस्वरूप जी से प्रथम दिवस ही पादरी ज्वालासिंह को निरुत्तर कर दिया। विशेष कर जेनविंयर साहब प्रिन्सिपल जमुना मिशन कौलिज इलाहाबाद को और एडवन साहब प्रिन्सिपल सेन्ट पाल्स डिविनिटी स्कूल इलाहाबाद को कई बार परास्त करते रहे हैं इस बात को हिन्दू और आर्य लोगों के अतिरिक्त मुसलमान भी मान चुके हैं और कहते हैं कि महाशय शान्ति स्वरूप जी के प्रश्नोत्तर दांत खट्टे करने वाले होते हैं-जिनका जवाब देना पादरियों को अति कठिन होता है आज कल के नाजुक समय में ऐसे ही शान्ति प्रदायक और सभ्य सज्जन कार्य निभा सके हैं। यह बात सुन कर आपको और भी हर्ष होगा कि मुसलमानों ने आपकी शंका समाधान को सुनकर इस प्रकार मोहित हो गये कि उन्हों ने अपने समय को भी आपके लिये अर्पण कर दिये। आर्य पुरुषों को आपके शास्त्रार्थ से विशेष लाभ उठाना चाहिये। क्योंकि आपके शास्त्रार्थ में किसी प्रकार की गड़बड़ी की सम्भवना नहीं होती है।

भवदीय
जंगबहादुर मन्त्री आर्य समाज
चौक प्रयाग

इलाहाबाद का सहयोगी "लीडर" बतलाता है कि मद्रासप्रदेश के चियसियन नगर में कोई एक सप्ताह हुआ कि एक मुसलमान परिवार की शुद्धि आर्य्य ने की। इस शुद्धि संस्कार में लोगों की खासी भीड़ हुई थी। पंजाब के आर्य समाजी पुरोहित पं० धानाराम जी ने संस्कार पुष्कल हवन सामग्री से कराया। शुद्ध हुए मुसलमान भाई का नाम वाला इश्वरामा रक्खा गया। उन की धर्मपत्नी का नाम ललिता देवी पड़ा। ज्येष्ठ पुत्र का नाम शंकर बचपन से ही थो और द्वितीय पुत्र का नामाकादरि बक्स से बदल कर प्रसन्न राय हुआ। छोटे २ बच्चो के नाम बदल कर हिन्दू रक्खे गये। इस संस्कार में "अर्य प्रकास" के सम्पादक हरि सर्वोत्तम राव, मिस सुशीला बाई और अनेक गण्यमान्य सज्जन उपस्थित थे।

श्री पंडित मनसा राम जी उपदेशक सिरसा समाज के व्याख्यान भारत की दुर्दशा व उसके उपाय पर। तथा दूसरा गायत्रीमंत्र की महत्ता पर। आर्य समाज मानसा में ३० व ३१ भा० की हुए जिस से मानसा निवासियों पर उत्तम परभाव पड़ा। श्री पंडित जी का धन्यवाद करता हूं।

मानसा समाज की सहायता करते रहा करें ताकि यह निर्बल पौदा उन्नति कर सके। अति दया होगी। श्री संपादक जी कृपया उपरोक्त समाचार अपने पत्र में परकाशत कर के कृतार्थ करें। अति दया होगी। भवदीय आत्मा राम मंत्री आर्य समाज मानसा।

---

(१) आर्य्यसमाज बरेली की अन्तरंग सभा १७–९–१६ में सर्व सम्मति से निश्चय हुआ है कि पं० कालूराम ने जो अस्वीकृत सत्यार्थ प्रकाश की प्रति छपवाई है उस के लिये परोप कारणी सभा को ज़ोर दिया जावे कि उन पर मुकद्मा करे।

(२) सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य न बढ़ाया जावे। सभा आपके कोष से व्यय करे। (३) परोपकारणी सभा में आर्य्यसमाजों की ओर से प्रतिनिधि चुने जाया करें।

भवदीय
श्याम स्वरूप सत्यव्रत
मन्त्री आर्य्यसमाज बरेली

हमारा दुखड़ा

इस बार लम्बा दुखड़ा सुनाने के लिये स्थान नहीं है। वह अगली बार सुनायेंगे। अभी तो इतना ही रोना सुनाना है कि प्रचारक पो० आ० फिस के बारे में अभागा है। शामपुर के पोस्ट-आफिस में प्रचारक डाला जाता है। उस पो० आ० का प्रबन्ध इतना रद्दी है–कि भगवान् ही मालिक है। प्रचारक वहां बृहस्पति वार को डाल दिया जाता है–और कभी सोम कभी मंगल को आगे भेजा जाता है। इतने दिनों तक पो०आ० की ही हवा खाता है। पिछले अंक के तो लेने से ही पोस्टमास्टर ने जवाब दे दिया। वह चार दिन हमारे कर्यालय में पड़ा रहा। तब कहीं कनखल के पोस्टआफिस में भेजने का प्रबन्ध हुआ। प्रचारक देरी में पहुंचने का यही कारण है। पोस्टल हैड आफिस पर हमारी तारों और चिट्ठियों का कोई असर नहीं होता। क्या करें, समझ में नहीं आता।

प्रबन्धकर्त्ता

नन्दलाल सहायक गुरुकुलाधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A. 434

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २२ आश्विन सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० ७ अक्टूबर सन १९१६ ई० { संख्या २६ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २।)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिय।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म्मचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

काङ्गड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)

[३] आचार अनाचार और भक्ष्य अभक्ष्य मूल्य=)

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज मूल्य -)

[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर-कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कन्याउन्दर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P. O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

———

आर्य कन्या की आवश्यकता

एक क्षत्रिय कुलोत्पन्न सदाचारी आर्य युवक, जिनकी आयु २७ वर्ष की है, गृहस्थ में प्रवेश करना चाहते हैं। रूप रंग और स्वास्थ्य बहुत उत्तम है। संस्कृत की साधारण और आर्य्यभाषा की उत्तम योग्यता रखते हैं। गुरुकुल में कार्य करते हैं। लगभग ३५) मासिक आय है। सम्बन्ध में जाति बन्धन का कोई विचार न रखा जायगा। पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते से कीजिए-

प्रबन्धकर्त्ता—सद्धर्मप्रचारक

पो० श्यामपुर-कांगड़ी

ज़िला बिजनौर

———

भूल सुधार

गत अंक में एक बड़ी भूल होगई। १२ वें पृष्ठ के प्रथम स्तम्भ में 'मि० एस्किथ का देहान्त' के स्थान पर 'मि० एस्किथ के पुत्र का देहान्त' ये शब्द पढ़ने चाहियें। इस भूल के लिये हमें शोक है।

राही के विचार

(५)

भारत की वैश्य नगरी

बम्बई

भारतवर्ष में बम्बई से बढ़कर कृत्रिम सुन्दरता रखने वाली पुरी कोई नहीं है। कलकत्ता बड़ा है, उस में महल भी बहुत हैं किन्तु सामान्यता नगरी का जो सौन्दर्य बम्बई में है, वह कलकत्ते में नहीं है। बम्बई के बाज़ार, उसकी सड़कें और सब से बढ़कर उसकी चौपाटी-ये चीज़ें अन्यत्र दिखाई नहीं देती। चौपाटी का सा तो भारत भर में कोई रमणीय स्थान ही नहीं है। पहाड़ों का अपना ही सौन्दर्य है; किन्तु उसमें मनुष्य का हाथ नहीं लगा। प्रायः देखा जाता है कि जहां प्रकृति के निष्कलङ्क सुन्दर देह को मनुष्य का कलंकी हाथ लगा, वहां सौन्दर्य बढ़ने के स्थान में घट जाता है। किन्तु चौपाटी में कुछ विशेषता दिखाई देती है। यहां प्रकृति ने अपने दिव्य उग्र जल की महिमा से मनुष्य के कलंकी हाथ के कलंक को भी धो दिया था। समुद्र का एक बड़ा भाग बम्बई के पर्यंक में पुसा हुआ है-दोनों ओर से भारत की वैश्य नगरी मानों व्यापार के पिता समुद्र को दोनों बाहुओं से आलिंगन किये हुए है। उसी अन्दर को आये हुए जल के किनारे २ बना हुआ मार्ग चौपाटी कहाता है। इस मार्ग पर दिन और रात प्रीणप्रद सामुद्रिक वायु के झोंके आते और घूमने बैठने वालों को आनन्द देते रहते हैं। यदि अन्दर के रोगों को मारडालने के लिये चौपाटी पर बैठना न मिले, तो शायद बम्बई में रहना कठिन होजाय। इस चौपाटी पर से समुद्र की गम्भीर महिमा दृष्टि गोचर होती है।

सायंकाल इस मार्ग पर विश्राम करने का विशेष माहात्म्य है। उस समय यहांआधा बम्बई नगर एकत्र हो जाता है। सुन्दर किन्तु बन्द बाज़ारों में रहने वाले दूकानदार तक प्रकृति के प्राण सन्देसे को फांकने निकल आते हैं। एक साधारण नगरवासी, जो बम्बई में आज ही आया है, देखकर आश्चर्य में आता है। दो तीन मील तक बराबर चला जाय-रास्ते के साथ २ घोड़ा गाड़ियों और मोटरकारों की पंक्ति लगी हुई दिखाई देगी। मोटरकारों में कहीं पारसी कहीं मारवाड़ी और कहीं भाटिये घूमते दिखाई देंगे। एक प्रभाव, जो बुद्धि पर उसी समय आ जमता है, यह है कि इस नगरी में धन बहुत है। यदि वह नगरी के बाजारों में, फ़ोर्ट में, बन्दरगाहों में भ्रमण करेगा, तो उस पर पड़ा हुआ प्रभाव पुष्ट होताजायगा। रत्नाकर समुद्र के पेट में जिस बम्बई का हाथसा बढ़ा हुआ है, वहां रत्न न हों तो कहां होंगे।

बम्बई कई कारणों से भारत की वैश्य नगरी है। यहां धन बहुत है, इसके अनेक कारणों में से मुख्य समुद्र की कृपा है। बम्बई बन्दरगाह है—और योरप के स्टीमर यहीं से भारत को छोड़ते हैं। ऐसे दिनों में, जब समुद्र का व्यापार ही जातियों का पालक पोषक बन रहा है, बन्दरगाह होना सौभाग्य की बात है। एक दार्शनिक इतिहासज्ञ का मत है कि मनुष्य जाति में पहले सभ्यता नदी के किनारों पर बढ़ती है, फिर छोटे समुद्रों के किनारों पर और फिर महासमुद्र ही सभ्यता की वृद्धि के कारण और चिन्ह हो जाते हैं। एक चौथा स्थान आन्तरिक्षगत समुद्र-अकाश का भी है। आगे की शायद अन्तरिक्ष मार्ग होने के कारण सारा भूमण्डल ही सभ्यता के लिये समान हो जायगा। यह समय समुद्रों का है। यह बम्बई की समृद्धि का प्रथम कारण है।

दूसरा कारण भी कम प्रबल नहीं। बम्बई में तीन ऐसी जातियां एकत्र होगई हैं, जो व्यापार में सानी नहीं रखतीं। पारसी जाति की व्यापार बुद्धि की समानता शायद ही कोई जाति करसके। यदि यह जाति भारत जैसे अभागे देश में न होती और अनुचित अबाधित व्यापार के कारण इस की शक्तियां कटी छटी न होतीं, तो आज उसमें करोड़पतियों की संख्या उतनी ही होती जितनी अब लखपतियों की है। पारसियों में विशेषतया संगठन शक्ति का प्राधान्य हैं। एक कम्पनी खड़ी कर लेना, बड़े से बड़े व्यपार—देह को अद्भुत सुगमता से चलाना—इस में पारसी लोग सिद्धहस्त हैं। बम्बई के लिये इस जाति का होना बड़ा शुभ कर हुआ है।

बम्बई की दूसरी जाति गुजराती और उनमें से भी भाटिया लोग है। भाटिया लोगों में पारसियों कीसी संगठनशक्ति का अभाव नहीं—किन्तु उन की विशेष विशेषता लेनदेन की बुद्धि है। बड़े २ लेनदेन करने में यह जाति बड़ी प्रवीण है। योरप से आते माल या योरप को जाते माल के सौदे बहुत कर इसी जाति के हाथ में रहते हैं। मारवाड़ी जाति में संगठन शक्ति नहीं है, किन्तु दलाली में उनकी बराबरी कोई नहीं कर सकती। भाटिया लोगों की दलाली बड़े २ सौदों की होती है, और वे लोग स्वयं भी माल भेजने की कम्पनियां खोलते हैं। परन्तु मारवाड़ी लोग दलाली का ही काम करते २ लोटा डोरी छोड़ पन्द्रह सालों में मोटर कार पर चढ़ने लगते हैं। इन तीनों जातियों की व्यापार बुद्धि प्रसिद्ध है। बम्बई ने उस बुद्धि से बहुत सा लाभ उठाया है। उन्हीं के कारण बम्बई भारत की वैश्य नगरी है।

इन तीनों जातियों ने बम्बई को धनिक बनाया है। कलकत्ते में भी बहुत धन है परन्तु वह बम्बई की समता नहीं कर सकता। उत्पत्ति के प्रकार में भी विशेषता है। कलकत्ते का रुपया भूमि से आता है—बड़े २ जागीरदारों के महलों में ही लक्ष्मी का निवास है, किंतु बम्बई को सारा धन व्यापार का परिणाम है। व्यपार से उत्पन्न हुआ धन सब में बंट जाता है। व्यापार एक झील में बन्द हुए धन रूपी जल को लेन देन की नालियों द्वारा बहुत कुछ बखेर देता है। इस कारण बम्बई में धन बहुत बंटा हुआ है—धनियों की संख्या अधिक है।

—:०:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

हिन्दू विश्वविद्यालय पर
आलोचनात्मक दृष्टि

(३)

अन्त में हम सब से अधिक आवश्यक प्रश्न पर आते हैं। वह प्रश्न यह है कि इस विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम कौनसा हो? इस विषय पर म० जम्भेकर की सम्मति के कुछ भाग नीचे उद्धृत किये जाते हैं—

"हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना केवल जोश में भर कर न कर देनी चाहिये, हम इस विश्वविद्यालय से कई ऐसे विशेष शिक्षासम्बधी भावों की पूर्ति की आशा रखते हैं जो भारतवर्ष के विद्यमान विश्वविद्यालयों से पूर्ण नहीं हो सकते। वे भाव हिन्दू विचारों की रक्षा शुद्धि और प्रचार तथा भारतीयजाति की आर्थिक भलाई के निमित्त से अर्वाचीन विज्ञान की शिक्षा को बढ़ाना—ये दो हैं। अब यह स्पष्ट ही प्रतीत हो जायगा कि ये उद्देश्य उसी दशा में पूरे हो सकते हैं यदि शिक्षा और ज्ञान जाति की अपनी भाषा में दिये जायं। इस सचाई से कोई भी शिक्षा—मनो—विज्ञान का जाननेहारा इन्कार नहीं कर सकता कि ज्ञान का प्राप्त करना मनन और प्रचार करना मातृभाषा द्वारा ही हो सकता है। तब हिन्दू-विश्वविद्यालय का क्या कर्तव्य है? जितना शीघ्र हो सके, उसे अपने आप को देसी भाषा के विश्वविद्यालय के रूप में परिणत कर देना चाहिये।"

आगे यह बतला कर कि हिन्दी ही शिक्षा का माध्यम हो सकती है, आप लिखते हैं—

'क्योंकि यदि हिन्दू-विश्वविद्यालय में कोई भी भाषा माध्यम बन सकती है तो वह हिन्दी है, और हिन्दी ही है।

"और साथ ही हिन्दी भारत मात्र की एक भाषा कही जा सकती है—कम से कम इतना तो कह सकते हैं कि इसी भाषा को ऐसा अवसर है, क्योंकि केवल उत्तरीय भारत गुजरात, महाराष्ट्र और मध्य प्रान्तों में यह सुलभता से समझी जाती हो, इतना ही नहीं, दक्षिण की द्राविडियन जातियां भी इसी भाषा का परिचय शीघ्र ही प्राप्त कर लेंगी। हमारे मुसल्मान भाई भी बहुत करके हिन्दी को समझ सकते हैं।"

"हमें याद रखना चाहिये कि अब देसी भाषाओं के विश्वविद्यालयों का युग आरहा है। माईसूर का विश्वविद्यालय इस ओर रास्ता दिखायगा, और अन्य ऐसे विश्वविद्यालयों की स्थापना भी कुछ समय का ही प्रश्न हैं। इस लिये यह समय के अनुसार ही है कि हिन्दू यूनिवर्सिटी प्रान्त में एक देसी भाषा की यूनिवर्सिटी हो; और साथ ही साथ भर भारत की एक भाषा की उन्नति भी करे।"

"आज भी हिन्दी को मध्यम शिक्षा देने के लिये माध्यम बनाया जा सकता है और कई विश्वविद्यालय के विभागों में भी उसे माध्यम रख सकते हैं।"

ये उद्धरणमात्र हैं। सारे लेख का बड़ा भाग इसी विषय के अर्पण किया गया है। लेखक महाशय एक महाराष्ट्र सज्जन प्रतीत होते हैं किन्तु आपकी उदार दृष्टि की सीमा मराठी तक ही नहीं रही। भारत की नई सन्तान की विस्तीर्ण दृष्टि से आपने जान लिया है कि भारत भर की एक भाषा होने का अधिकार यदि किसी भाषा का है, तो वह हिन्दी का ही है। आप की यह राय भी ध्यान देने योग्य है कि इस समय भी हिन्दी को बहुत हद तक शिक्षा का माध्यम बनाया जा सकता है। म० जम्भेकर ने वस्तुतः हिन्दू यूनिवर्सिटी के रूप को खूब समझा है। हम समझते हैं कि साधारण भारतवासिजनता आपके विचारों से पूर्णतया सहमत होगी। जिन लोगों के दिमाग़ अंग्रेज़ी की दासता में ही बढ़े और उसी में अब भी रहते हैं, वे चाहें कुछ कहें। ऐसे मुट्ठी भर सज्जनों की सम्मति एक राष्ट्रीय विचारक के लिये निर्बल है। किन्तु जो मनुष्य कुछ भी विवेकसहित विचार करेगा—फिर वह चाहे किसी देश या प्रान्त का हो—अवश्य इसी परिणाम पर पहुंचेगा कि मातृभाषा द्वारा दी गई शिक्षा ही फलीभूत हो सकती है, अन्य नहीं। साथ ही यह समझ लेना भी बहुत कठिन नहीं है कि यदि भारतीय ज्ञान और कला की रक्षा अभीष्ट है, तो उनके समझने और समझाने के लिये साधनभूत भारतीय भाषा भी जीवित रहनी चाहिये। विदेशी माध्यम से देसी ज्ञानकोष का संरक्षण असम्भव है।

हिन्दू यूनिवर्सिटी से भारतीय जनता यही आशा रखती थी, और आशा भी किस से रखी जाती। मर्यादा पुरुषोत्तम से ही मर्यादा की रक्षा हो सकती है, और धर्मराज ही धर्म के संस्थापक हो सकते हैं। इसी प्रकार हिन्दी के उद्धार की आशा में हिन्दू-विश्वविद्यालय की ओर ही आंख उठती थी। लोगों ने यही समझा था कि हिन्दू यूनिवर्सिटी हिन्दी और संस्कृत को कीचड़ में से उठा कर हस्तिपृष्ठ पर चढ़ादेगी। पहले आशायें भी ऐसी ही दिलाई गई थीं। जहां माननीय पं० मदनमोहनमालवीय मुखिया हों, वहां हिन्दी के प्राधान्य की आशा करने में लोगों ने कोई भूल भी नहीं की थी। चांद के उदय के समय यदि चकोर चांदनी की आशाभरी चाह रखे तो अनुचित न समझना चाहिये। किन्तु जब कल्पनात्मक जगत् ने वास्तविक जगत् का रूप धारण किया, तब निराशा की हद न रही। तब हिन्दी प्रेमियों को कई प्रकार की युक्तियां तथा कई बहाने सुनने पड़े। विश्वविद्यालय को सरकार से चार्टर अवश्य लेना है—जाने सरकार देसी भाषा को माध्यम होने योग्य समझे या न समझे? धीरे २ सब हो जायगा, एक वार हिन्दू यूनिवर्सिटी बन तो जाने दो? अभी हिन्दी में पाठ्य पुस्तकें नहीं हैं—उसे माध्यम बनाने में शीघ्रता न करना चाहिये। हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालकों में बहुत से समझदार लोग हिन्दी को मुख्यता देने के विरुद्ध हैं। ऐसी २ बातों से ज-

नता का सन्तोष करने का यत्न किया गया।

ये सब बहाने कैसे निर्बल हैं—इसे दिखलाने की आवश्यकता नहीं। इनकी निर्बलता अपने हाथ की भांती प्रत्यक्ष है। यदि विश्वविद्यालय के मूलसिद्धान्त पर ही कुठाराघात होता है, तो चार्टर को दूरसे ही नमस्कार करना चाहिये। क्या मोहरों के एक खज़ाने के पीछे अपनी जान दे देना मूर्खता नहीं है। जब प्राण ही न रहेंगे तो मोहरें किस काम आयंगी? जब हिन्दू-विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम आर्य्यभाषा ही न हो सकेगी, तो फिर चार्टर का पुर्ज़ा क्या करेगा? इस विषय में प्रजा का मत बहुत प्रबल है। म० जम्भेकर ने प्रकारान्तर से इसी प्रजामत का प्रकाश किया है।

हम जानते हैं कि हिन्दू विश्वविद्यालय के हाथ इस विषय में बंध चुके हैं। चार्टर ही काफ़ी था—फिर इस समय विश्वविद्यालय की मुख्य समिति में जिन लोगों की संख्या बढ़ रही है, उनमें से कई केवल धन के कारण आदर पारहे हैं, और शिक्षा विषय में अनजान होने से 'जीहुज़ूर' के समान हैं, और बहुत से सज्जन ऐसे हैं जिन्हें आधे साहिब कहना चाहिये। जो लोग वस्तुतः आर्य-जाति की अन्तरात्मा के प्रतिनिधि कहा सकें, उनकी संख्या बहुत कम है। यही कारण है कि किसी भारी परिवर्तन की शीघ्र आशा नहीं, और यही कारण प्रतीत होता है कि विश्वविद्यालय में प्रजामत की विशेष सुनाई नहीं होती।

—:०:—

इनके अतिरिक्त म० जम्भेकर ने विश्वविद्यालय के और भी कई उद्देश्य कहे हैं, जिनके विषय में कुछ लिखा नहीं जासकता। हिन्दू विश्वविद्यालय को सस्ती शिक्षा देना चाहिये, उसमें आचारों पर विशेष ध्यान देना चाहिये इत्यादि बातें समय सापेक्ष हैं। अवश्य ही विश्वविद्यालय के संचालक इधर ध्यानदेंगे और यथाशक्ति सफलयत्न भी होंगे। किन्तु सस्ती शिक्षा का प्रकरण आने से एक बात याद आती है। विश्वविद्यालय की इमारत बनने के लिए जिस प्रकार व्यय होने की सम्भावना हो रही है, यदि इसी से अनुमान लगसके, तो शिक्षा के सस्ता होने की विशेष आशा नहीं। मकान आदि साधन इसके हों-शिक्षा भारी हो, यही हमरा आर्य आदर्श है। हिन्दू यूनिवर्सिटी को इसी सिद्धान्त का अनुगम करना चाहिए।

———

यह हमारी आलोचना हिन्दू विश्वविद्यालय के किसी संचालक तक पहुंचेगी, ऐसी तो आशा नहीं। परन्तु हां-हम अपने सहयोगी अभ्युदय तथा प्रताप से अवश्य ही इन तीन आशंकाओं का उत्तर पाना चाहते हैं। वे आशंकायें ये हैं—

[१] क्या हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रबन्ध में सरकार का इतना दखल उसकी वास्तविक स्वाधीनता में बाधक न होगा?

[२] क्या हिन्दू विश्वविद्यालय में विदेशीय-विशेषतया योरपियन-प्रोफ़ेसर रखे जाने की ख़बर सच है? यदि सच है तो क्या इससे विश्वविद्यालय का असली लक्ष्य ही आहत न होगा?

[३] विश्वविद्यालय में हिन्दी को माध्यम नहीं रखा गया। इस विषय में उनकी क्या राय है? और क्या इस विषय में भारतीयप्रजामत को सन्तोष न देना चाहिये?

अभ्युदय विश्वविद्यालय की सरकारी राय जनता तक पहुंचा सकता है, और प्रताप भी [जहांतक हमें ज्ञात है] विश्वविद्यालय के कार्यरहस्यों से परिचित है। क्या हम इन आशंकाओं के विस्तृत उत्तर सुनने का सौभाग्य प्राप्त कर सकेंगे?

—:०:—

हमारा दुखड़ा

प्रचारकका दुखड़ा भी सुन लीजिए। प्रचारक श्यामपुर के पोस्ट आफ़िस में पोस्ट किया जाता है। ग्राहकों को यह सुन कर विश्वास न होगा, जो प्रचारक शनिवार को निकलना चाहिए, वह गुरुकुल में प्रायः बृहस्पति वार को बंट जाता है—और शाम तक पोस्ट आफ़िस में चला जाता है। अब ज़रा पोस्ट आफ़िस की हक़ीकत सुनिए। पोस्ट आफ़िस का शब्द सुन कर शायद ग्राहक समझें कि श्यामपुर में कोई चबारा नहीं तो पक्का कमरा अवश्य ही होगा। किन्तु ऐसा न भूलिए। "कहां राजाभोज कहां भोजा तेली" उनके पोस्ट आफ़िसों के सामने यह बेचारा भोजा तेली भी नहीं। पोस्ट आफ़िस के आलीशान मकान का एक ही छप्पर है—और वहभी आधा मानों लज्जा के मारे पृथ्वी माता के गर्भ में घुसा जारहा है। प्रतीत होता है कि पो० आ० का दरवाज़ा बनाने वाला खज्जन कोई ढाई गज़ के करीब लम्बा होगा—नहीं तो द्वार इतना नीचा न होता। छप्पर में सील इतनी है कि मानों सातों समुद्रों ने अपना गीलापन यहीं विश्राम करने भेज दिया है। पोस्टमास्टर साहिब की कुर्सी की कैफ़ीयत ऐसी है कि कभी २ सन्देह हो जाता है कि कुर्सी बैठनेवाले के ऊपर हो जायगी। चारों ओर घास बूटी का कजली बन खड़ा है। आज कल यदि किसी ने मलेरिया के कीड़ों को इकट्ठा करके परीक्षण करने हो तो पोस्ट आफ़िस के पास [पोस्ट आफ़िस में नहीं अन्यथा परीक्षक महाशय शायद ही बच कर जायं] एक मास काट लीजिये। जब पोस्ट आफ़िस की यह दशा है तो पोस्ट मास्टरों की दशा का अनुमान कर लीजिये। जो आया, वह चारपाई पर पड़ा। फिर तो बेचारे के लिये भागने के सिवा कोई गति नहीं रहती, बीमारी का सार्टिफ़िकट ढूंढने लगता है। जो कोई हिम्मत करके छः सात महीने रहले वह जन्म भर के लिए रोग की गठरी बांध लेजाता है। पोस्ट आफ़िस विभाग ने शायद मलेरिया के कीटाणु सम्बन्धी परीक्षण करने के लिए ही श्यामपुर की शाखा खोल रखी है—पर दुःख तो यह है कि इस परीक्षणशाला के चक्कर में बेचारा प्रचारक चक्की के पुर्ज़ों में घुन की भाँती पीसा जाता है। उदाहरण लीजिये। प्रचारक का पिछले से पिछला अंक बृहस्पतिवार को पोस्ट आफ़िस में पहुंचा। पोस्टमास्टर साहिब ने यह कह कर लौटा दिया कि 'मैं बीमार हूं—अखबार नहीं छूंगा" प्रचारक लौट आया और चार दिन

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल में पड़ा रहा। हम भी भेजते तो कहां? लखनऊ सूचना भेजी गई—सोमवार को हमें कनखल के पोस्टमास्टर ने लिखा कि आप 'प्रचारक हमारे यहां भेज सकते हैं' यह बड़ी कृपा हुई। सोमवार को पत्र कनखल भेजा गया। वहाँ से सोम को ही रवाना होगया: या मंगल को—यह भगवान् जाने। यह तो एक बार की कथा है। रोज़ का दुखड़ा भी छोटा नहीं। इस बार तो पोस्टमास्टर साहिब ने बड़ी कृपा की कि हमें साफ़ इन्कार कर दिया—पहले तो कई बार प्रचारक छः छः सात २ रोज़ इसी फूस के महल में विश्राम करता रहता है। शिकायतें कई बार भेजी गई हैं—पर सुनवाई नहीं हुई। नहीं जानते दुखड़ा किसे सुनायें? सरकार के सब महकमे काम में चुस्त हैं—एक शामपुर का पोस्ट आफ़िस प्रचारक के दुर्भाग्य से सुस्ती की पराकाष्ठा तक पहुंचा रहा है। ग्राहक महोदयो! और कुछ नहीं तो इस दुखड़े में हमारे साथ सहानुभूति के दो आंसू ही बहा छोड़ो।

—०—

यह अंक क्यों निकला?

पिछले सप्ताह सूचना दी गई थी कि यह अंक न निकलेगा। किन्तु साथ ही १२वें पेज पर एक ऐसी भूल हो गई, जिस का शीघ्र ही सुधार आवश्यक समझा गया इस लिये यह अंक पाठकों की भेंट किया जाता है—अगला अंक न निकलेगा। उस भूल को दूसरे पृष्ठ पर सुधार दिया गया है।

—०—

एक आवश्यक लेख

११ वें पृष्ठ पर पाठक आर्यमित्र का एक उद्धरण देखेंगे। म० रत्नलाल जी ने उपदेशकों के विषय में जो लेख लिखना प्रारम्भ किया है, उसके इस प्रथम खण्ड से हम अक्षरशः सहमत हैं। उपदेशक महोदयों को अवश्य ही विश्राम मिलना चाहिये, जिस में वे स्वाध्याय द्वारा योग्यता को बढ़ाते जायं। हम पाठकों से आग्रह करेंगे कि वे अवश्य उस लेख को पढ़ें।

—०—

कराची में डेप्यूटेशन

उपाध्यक्ष रामदेव जी, प्रो० सुधाकर एम. ए. तथा पं० विश्वनाथ विद्यालंकार के डेप्यूटेशन ने कैंट में गुरुकुल के लिये खूब काम किया, और लगभग अढ़ाई हज़ार रुपया एकत्र किया। यहां से डेप्यूटेशन शिकारपुर गया, और कुछ राशि एकत्र की। अगला पड़ाव कराची में हुआ। कराची में डेप्यूटेशन ने कई दिन काम किया, किन्तु पीछे हमारे उपाध्यक्ष जी के रोगी होजाने से कार्य रुकगया। आशा है कि उपाध्यक्ष महोदय अति शीघ्र ही स्वास्थ्य लाभ करके, अपने प्यारे कुल में आकर विश्राम लेंगे। कुलवासी सब सभाओं के सभासदों के लौटने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

—०—

बिछुड़ों का मिलाप

गुरुकुल विश्वविद्यालय के अवकाश दिनों ने सालभर के साथियों को जुदा २ कर दिया था। सब अपने २ घरों को चले गये थे। कोई २ सज्जन अवकाश के दिनों में भी गुरुकुलसेवा का कार्य करते हुए ही विचरते रहे। अब दसहरे पर सब बिछुड़ों का मिलाप होगा। सारा कुलवासी संघ कुल भूमि में शीघ्र ही एकत्र होगा। दसहरे के पीछे पढ़ाई नियम पूर्वक प्रारम्भ होजायगी।

———

संसार समाचार पर टिप्पणियां

सहयोगी बङ्गवासी श्रीयुत राधाकुमुद मुकर्जी पर बड़ा नाराज़ है। मुकर्जी महोदय ने एक पुस्तक लिखी है जिसमें दिखाया है कि प्राचीन आर्य सामुद्रिक व्यापार किया करते थे। लेखक महाशय ने जो प्रमाण दिये हैं, वे प्रायः अकाट्य हैं, किन्तु सहयोगी को इस से क्या? मुकर्जी महोदय की उस ग्रन्थ ने भारत के इतिहास का एक भूला हुआ पृष्ट याद करा दिया, यह भी तुच्छ बात है—किन्तु भाई! धर्म कर्म तो नष्ट होता है। यदि इसी तरह भारत का सच्चा इतिहास प्रकाशित होता रहा तो किसी दिन धर्म की मर्यादा की धूर उड़ जायगी। भारतवासी समुद्र पर जायं—हरे! हरे!! ऐसा अनर्थ। इस से तो पाताल में चले जाना अच्छा है।

—०—

सहयोगी को एक बात पर और विचार कर लेना चाहिये। भविष्य पर पहले से ही सोच लेना बुद्धिमानों का कर्त्तव्य है। अब तो आकाशयान भी चलने लगे हैं। यदि लोग जहाज़ पर न चढ़ कर वायुयानों द्वारा विदेश जाया करेंगे, तब तो कोई आपत्ति न होगी। इस पर शास्त्रों की व्यवस्था अभी से ले छोड़नी चाहिये।

—०—

आकाश से दूध पीने वाले बछड़े की कहानी खूब लम्बी हो गई। सभी पत्रों में इसकी चर्चा है। हमें भी इस सम्बन्ध में कई पत्र मिले हैं। घटना वस्तुतः अभ्यास को सूचित करती है। जिस खुर के तले रह कर बछड़ा चिरकाल तक बांस की नली से दूध पीता रहा था, उसके नीचे जाकर उसके संस्कार प्रबल हो उठते हैं, और वह दूध पीने की सी क्रिया करने लगता है। और कोई गहरा रहस्य यहां नहीं दिखता।

—०—

पिछले दिनों बम्बई में एक विचित्र घटना देखने में आई। सारे बाज़ारों में विज्ञापन लगा हुआ था कि अमुक २ स्थान पर ऐसी कन्या दिखाई जाती है, जिस के दो मुंह, चार बाहु, और चार टांगें हैं। सारा बम्बई इस अद्भुत प्राणी को देखने के लिये टूट पड़ा। दिखाने वालों ने टिकट लगा कर खूब थैलियां भरीं। देखने पर क्या निकला? दो कन्यायें इकट्ठी उत्पन्न हुईं—उनके समग्र शरीर भिन्न २ थे, केवल कटिभाग पीठ की ओर से मिला हुआ था। इसी के आधार पर बम्बई के कई धुरन्धर विद्वानों ने चतुर्मुख ब्रह्मा सिद्ध कर डाला।

—०—

सहयोगी आर्यमित्र के नये सम्पादक उसे रुचिकर तथा उपयोगी बनाने का पूरा यत्न कर रहे हैं। पं० हरिशंकर जी के परिश्रम से मित्र को लाभ होने की आशा है। विशेष प्रसन्नता की बात यह है कि अभी तक आपने सामाजिक झगड़ों में

कोई पक्ष प्रतिपक्ष नहीं लिया। संस्था के पत्र को संस्था और संगठन का सदा ही पक्ष पोषण करना चाहिये। नये सम्पादक महोदय इस ओर विशेष यत्न कर रहे हैं। हमारी प्रबल इच्छा है कि पंडित हरिशंकर जी को आर्यमित्र के कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त हो। संयुक्तप्रान्त के आर्य समुदाय को भी मित्र का उचित आदर करना चाहिये।

—०—

वायसराय प्रधान होंगे, और भारत के राजा महाराजों की एक सभा होगी। सभा का स्थान भारत की राजधानी दिल्ली रखा गया है। महापुरुषोंकी इस सभा में किन विषयों पर विचार होगा—इसका परिचय साधारण लोगों को देना उचित नहीं समझा गया—क्योंकि वे अधिकारी नहीं है। पृथ्वी-लोक वासियों को यह जानने का क्या अधिकार है कि चन्द्रलोक में क्या होता है? ख़ैर कुछ हो हो—हम तो समझते हैं कि हरेक लेजिस्लेटिव कौन्सिल के अधिवेशन के पीछे एक अधिवेशन इस नरेश-सभा का भी होना चाहिये, ताकि कौंसिल के गड़बड़ मचाने वाले भारतीय सभासदों की लम्बी वक्तृताओं से श्रीमन्त वायसराय तथा अन्य सरकारी मेम्बरों पर जो कुछ मासा तोला असर पड़ा हो—वह धुल जाया करे। कौंसिल कांग्रेस के बुरे प्रभावों को सरकारी वस्त्र से दूर करने के लिये यह प्रक्षालनशाला अच्छी है।

—:०:—

संयुक्त प्रान्त के प्रसिद्ध पण्डित देवदत्त जी शास्त्री का देहान्त हो गया। आप आर्य्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वानों में से थे। व्याकरण में आपकी योग्यता असाधारण थी, और अन्य विषयों में भी आपकी अच्छी गति थी। दो तीन दिनों तक शरीर में दर्द रहने के अनन्तर आपका देहान्त हो गया। अब कुछ सालों से पण्डित जी का नाम विशेषतया प्रकाश में नहीं आता रहा, किन्तु कई साल पूर्व आप कार्य क्षेत्र में आते रहते थे। एक आर्य विद्वान् की शरीरयात्रा समाप्त होने का हमें बड़ा दुःख है।

—:०:—

नई सभ्यता का नमूनास्वरूप प्रेस ऐक्ट जब से भारत वर्ष में पास हुआ है, तबसे भी इस देश के समाचार पत्रों ने उन्नति की है। उदाहरण लीजिये १९१० में भारत वर्ष में ६५८ समाचार पत्र थे, १९१३ १४ में ८२७ हो गये। प्रेस ऐक्ट भी पत्रोंकी उपज को कम नहीं करसका। इससे इन ऐक्टों के बनाने वाले कम से कम इतनी शिक्षा तो लेसकते हैं तो यह औजार पत्रों की तेज़ी को कम करदे परन्तु संख्या को नहीं घटा सकता।

—:०:—

जहां एक ओर भारत के राजनीतिक नेता होमरूल और स्वराज्य के लिए शोर मचा रहे हैं, और देश के नवयुवकों के हृदयों में अपने देश के धर्म और गौरव को स्वाधीन पैरों पर खड़ा करने की प्रबल इच्छा जाग रही है, वहां ऊपर की दुनिया किसी और ही ओर को जारही है। समझदार लोग भारत की वर्तमान शिक्षा-पद्धति से बहुत असन्तुष्ट हैं—क्योंकि उस में जाति की इच्छा का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। शिक्षा सरकारी बन्धनों में बंधी हुई है। किन्तु आगे आगे सुधार की आशा नहीं दीखती। अब बिहार प्रान्त को भी एक यूनिवर्सिटी मिली है, और वह पटने में खुलेगी। लेजिस्लेटिव कौन्सिल में उसकी स्थापना का प्रस्ताव पेश हुआ। इस यूनिवर्सिटी की जो संस्था बनी है, उसमें स्वाधीनता की मात्रा और भी कम हो गई है। सरकारी ज़ंजीरें और भी कड़ी हो गई है। बाहिर के किसी नगर का कोई कालिज यूनिवर्सिटी से सम्बन्ध न रख सकेगा। इससे हमारे राजनीतिक कर्णधार असन्तुष्ट हैं। किन्तु हमारा निवेदन है कि जब तक भारतीय अपनी शिक्षा सर्वथा अपने हाथों में नहीं लेते तब तक सरकार ने स्वाधीनता के दो दाने दिये या तीन—यह देने वाले की इच्छा पर है। उस पर रोना धोना क्या? यदि हिम्मत है तो कदम बढ़ाकर जाति की शिक्षा अपने हाथों में लो—फिर विलाप की आवश्यकता न रहेगी।

—:०:—

बारहवें पृष्ठ पर हम एक उपदेशक महाशय का पत्र प्रकाशित करते हैं। उस पत्र में एक पुलिस के कर्मचारी के दुर्व्यवहार का वर्णन किया गया है। यदि वह घटना सत्य है, तो हम सरकार का ध्यान इस ओर खेंचते हैं। सरकार की प्रायः यह शिकायत रहती है कि भारत की प्रजा अपराधों की निवृत्ति में पुलिस की सहायता नहीं करती। मैं जिससे सहायता की आशा रखता हूं—मुझे चाहिये कि उसके साथ उत्तम और मीठा व्यवहार करूं। पुलिस तो प्रजा के सम्मान की कोई पर्वा न करे—समय २ पर बाज़ार में प्रजा का कन्धा छीलने पर उतारू रहे, और प्रजा उसका हाथ बंटावे, ऐसा शायद देवलोक में होसकता हो, पृथ्वी लोक में तो असम्भव ही दीखता है। म० जयनारायण जी ने जो घटना लिखी है, वह एक नमूना है। हम में से प्रत्येक भारतवासी किसी न किसी समय पुलिस के क्रूरग्रह की मार में आकर ऐसी ही कठिनाई भोग चुका होगा। सरकार यदि प्रजा से शान्ति तथा राज्य की रक्षा में हार्दिक सहानुभूति और सहायता चाहती है तो उसे चाहिए कि वह पुलिस को सज्जनता का पाठ पढ़ावे।

—:०:—

कलकत्ते की परीक्षक-परिषत् के प्रस्ताव पर भारत सरकार ने एक नया शिक्षाविभाग खोला है। उसका नाम 'पूर्वीय-भाषा-शिक्षक—परीक्षा, होगा। इस विभाग की ओर से हर प्रान्त में पूर्वीय भाषाओं की विशेष परीक्षायें हुआ करेंगी इस का विशेष उद्देश्य ऐसे अध्यापक तय्यार करना होगा जो योरपियन लोगों को पूर्वीय भाषायें सिखा सकें और सामान्य उद्देश्य पूर्वीय भाषाओं के अध्यापक उपस्थित करना होगा। परीक्षास्थल ६ हैं। कलकत्ते में अरबी, फ़ारसी, उर्दू, हिन्दी, बङ्गाली, आसामी, और उड़िया—मद्रास में तामिल, तैलगू, मलयालम, कनाड़ी और और उर्दू—बम्बई में अर्बी, फ़ार्सी, उर्दू, मराठी, गुजराती, और कनाड़ी कराची में सिन्धी—लाहौर में पंजाबी, अर्बी, फ़ार्सी, उर्दू और हिन्दी—लखनऊ में अर्बी, फ़ार्सी, उर्दू और हिन्दी। प्रस्ताव तो अच्छा है—परन्तु हम एक बात नहीं समझ सके। मद्रास तथा बम्बई में हिन्दी को क्यों नमस्कार किया गया है? उर्दू को सब प्रान्तों में स्थान दिया गया है, अर्बी और फ़ार्सी भी स्थान पागई हैं, पर बेचारी हिन्दी पर थोड़ी ही कृपा कीगई है। विशेष हम फिर लिखेंगे, परन्तु हिन्दी साहित्य सम्मेलन तथा नागरी सभाओं को इस प्रश्न पर आकाश पताल एक करदेना चाहिये।

—:०:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक पुस्तक भण्डार की नई पुस्तकें

आर्यधर्म ग्रन्थमाला

श्री महात्मा सुन्शीराम जी द्वारा लिखित आर्यों की नित्य-कर्मपद्धति —मूल्य -)

इस पुस्तिका में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्य्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रतः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिए यह सब बड़ी उत्तमता से दरशाया गया है। महात्म जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आचाराऽनाचार और भक्ष्या-भक्ष्य—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है कि लुआ-कूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किसके साथ खाना चाहिए, किसके घर खाना चाहिये— इन सब प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तिका में भली भांती आगया है।

मातृ भाषा का उद्धार—मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य हैं? आर्य मात्र का इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृतसाहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन

यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इस में पहले दिखाया गया है कि सारे नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत साहित्य का भारत वर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं—मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का ऋषिकुल वालाशास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है और आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्ता सद्धर्म प्रचारक,

—:o:—

फिर ऐसा अवसर कहां?

(सोरठा)

[१]

यह असार संसार, निश्चित ही है कर्णकवि
करनी करो विचार, फिर ऐसा अवसर कहां?

मृत्यु काल समीप है

(षट्पदी छन्द)

[१]

लाये हो क्या साथ और क्या लेजाओगे?
समझे ही हो नहीं अन्त में पछताओगे?
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह, में फंसे हुए हो,
हा! पर छुटते हो न जाल में फंसे हुए हो?
कर्णाधम क्या व्यर्थ ही
खो दोगे अवसर सभी?
या सुकृती बन करलोक में
सुख भी पाओगे कभी?

[२]

कभी टलेगी ही न मृत्यु अब आजावेगी?
काम किसी कविराज की न बूटी आवेगी?
है न यहां चिरवास कूच कर जाना होगा?
अपना सब कुछ अन्त समय बेगाना होगा?
कर्णाधम तब तो वेगही
मायिक बन्धन तोड़िये।
सुख चाहो तो भय कूप
में गिरने से मुख मोड़िये॥

[३]

जीते जी के मात, पिता, सुत, बन्धु, यार हैं;
साथी किसका कौन रहे सबके आसार हैं।
शाश्वत कोई रहा न रहने पाया अबलों;
जो जन्मा सो मरा न समझोगे यह कबलों?
जीवनोद्देश्य पर ध्यान दे
दोनों लोक सुधारलो;
कर्णाधम प्रभु-गुण-गान
ही निज औचित्य विचारलो॥

[४]

शैशव काल समाप्त हुआ यौवन भी बीता;
अबलों हो पाया न एक भी मन का चीता।
वृद्धावस्था हुई भला होहीगा क्या अब?
बीत गये हा दिवस वृथा ही, जीवन के सब।
कर्णाधम निज विभवादि पर
मिथ्या गर्व न कीजिये;
हा! जाना रीते हाथ है
कुछ तो यश पालीजिए॥

[५]

मिट जाने पर आंख सभी जग सपना होगा;
फिर यह धरा न धाम समझना अपना होगा।
जीवन-अभिनय पूर्ण निमिष में होजावेगा;
कोई भी फिर दृश्य न लखने में आवेगा॥
कर्णाधम जो अभिलषित है
ध्यान उसी पर दीजिए;
सुख हो दोनों ही लोक में
ध्रुव धर्मामृत पीजिये॥

तुकड़ "कर्ण"

—:o:—

महाराष्ट्र प्रान्त में जातीयता के भाव के जन्मदाता विष्णुशास्त्री चिपलूंकर की जीवनी पर एक दृष्टि

यदि किसी मनुष्य को जाति के नेता बनने की अभिलाषा है तो उचित है कि वह प्रथम अपनी जाति के उत्थान का प्रयत्न करे।

मैं आज अपने पाठकों को केवल इतना दिखाने के लिए कि एक धनहीन मनुष्य क्या २ कर सकता है पूजनीय विष्णुशास्त्री चिपलूंकर के जीवन का संक्षिप्त रूप से वर्णन करूंगा।

शास्त्री जी का नाम महाराष्ट्र प्रदेश में जातीयता के उच्च भाव को उत्पन्न कराने के लिए बहुत काल से प्रसिद्ध है यद्यपि उन्हें इस संसार को छोड़े हुए ३४ वर्ष होगये तो भी महाराष्ट्र प्रान्त में शुभ कार्य तथा प्रायः सभी संस्थाओं के वार्षिक अधिवेशनों पर अब तक चिपलूंकर का नाम सर्वजनता द्वारा बड़े पूज्य भाव से लिया जाता है।

इन महात्मा का जन्म सन् १८५० ई० में पूना नगर में हुआ था। इनके पिता कृष्णशास्त्री बड़े प्रसिद्ध दार्शनिक तथा वेदों के ज्ञाता थे। कृष्ण शास्त्री जी को उनके गुरु ने ही इनकी विद्वत्ता तथा चैतन्यता पर प्रसन्न होकर "बृहस्पति" की उपाधि से विभूषित किया था। कृष्ण शास्त्री ने २५ वर्ष की अवस्था में अंग्रेजी पढ़ना आरम्भ किया और वे शीघ्र ही अपनी चैतन्य बुद्धि के कारण प्रोफेसर ग्रीन सरीखे अंग्रेजी विद्वानों के प्रिय पात्र बनें। चिपलूंकर की माता यद्यपि

लिखना न जानती थी परन्तु बड़ी बुद्धिमती थी और उनके शुद्ध बुद्धि तथा शुभ आचरणों पर प्रसन्न होकर उनकी सास "तुकाराम की बहिन" करके उनको पुकारा करती थी।

विष्णु स्कूल में भर्ती किये गये १८६५ ई० में इन्होंने मेट्रिकूलेशन परीक्षा पास की उसके उपरान्त डेक्कन कालेज में विद्याभ्यास कर सन् १८७१ ई० में डिग्री प्राप्त की। अपने विद्यार्थी जीवन में ही कालेज की लाइब्रेरी भर की उत्तम २ पुस्तकों का अध्ययन करडाला। बी०ए० की डिग्री प्राप्त करने के पश्चात् गवर्नमेन्ट स्कूल पूना के एसिस्टेन्ट मास्टर नियत हुए। अंग्रेज़ी पढ़े मति भ्रष्ट नवयुवकों के कोमल हृदयों में नीच भावों को दूर करने के प्रयत्नार्थ सन् १८७४ में एक मासिक "निबन्धमाला" के नाम से निकालना आरम्भ कर दिया और सन् १८८१ ई० तक ये इसको केवल अपने ही भरोसे पर चलाते रहे। इन सात वर्षों में इन्होंने अनेकानेक विद्या, इतिहास, तथा राष्ट्रीयता सम्बन्धी लेख लिखे। इन्हीं लेखों का फल यह हुआ कि महाराष्ट्र नवयुवकों के हृदयों में से भारतीय मनुष्यों के हीन होने का भाव जाता रहा और एक नवीन उत्साह तथा जातीयता के भाव का अंकुर जमा।

यह सब लेख एक पुस्तकाकार में [जिस में कोई १२००-१५ पृष्ठ होंगे] उनके भाई से मिल सक्ते हैं। उनके पढ़ने में अब भी वही आनन्द और उत्साह का श्रोत है जो ३४ वर्ष पूर्व था। इतने समय बीत चुकने पर भी उन लेखों के प्रत्येक शब्द में वही जीवन है जो ३४ वर्ष पहिले था।

ऐसे जीवनमय स्वच्छन्द लेख बहुत काल तक बिना सर्कार की दृष्टिपड़े नहीं रह सकते और विशेषतया जब उनका प्रेरक एक सर्कारी कर्म्मचारी मदर्से का अध्यापक हो। इस "निबन्धमाला" की ३० वीं संख्या मिस्टर जेकन नामी सज्जन के आंखों से गुज़री इन्होंने कोई चार पैरा का अंग्रेज़ी में भावान्तर करके बम्बई के गज़ट में छपवाया और एक सर्कारी स्कूल के अध्यापक की राज भक्ति का परिचय प्रांतीय गवर्नर को कराया। इन चार पैरों में लोकमान्य चिपलूंकर ने भारतीय इतिहास लेखक अंग्रेजी की योग्यता तथा भारतीय कला कौशल तथा धर्म से उन धुरन्धर इतिहासज्ञों की अनभिज्ञता पर एक बड़ा कटाक्ष किया था।

सन् १८७७ ई० में उनके वे रत्नागिरि भेजे गये। सन् १८७८ में पिता का देहान्त हुआ और सन् १८७९ ई० में सर्कारी नौकरी को तिलांजली देकर मातृभूमि की सेवा करने के लिये छुटकारा पाया।

नवयुवकों की शिक्षा तथा उनमें जातीयता के भाव को प्रेरित करने के लिये जातीय संस्था का संगठन इन्हीं की अनुग्रह से हुआ। पहली जनवरी सन् १८८० ई०को (New English School) न्यूइंगलिश नामी प्रसिद्ध स्कूल खुला जो धीरे २ दक्षिण विद्या सभा के निरीक्षण में अब प्रधान कालेज बन गया।

यह कार्य्य लोकमान्य बाल-गंगाधर तिलक तथा एम. बी. नाम जोशी की सहायता से हुआ। फिर संस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् तथा कोष निर्माण कर्त्ता मिस्टर वी. एस. अप्टे और समाज सुधारक मिस्टर अगरकार ने भी सहायता दी। इन नव-युवकों की बुद्धि-जन ने कालेज में पढ़ते थे तभी विष्णु शास्त्री के लेख पढ़कर मुग्ध हो चुकी थी और जैसे ही उन्होंने कालेज अध्ययन को समाप्त किया त्योंही वे शीघ्र इस जातीय संस्था की सेवा के लिये आ मिले।

इस जाति सेवा के लिये उत्कंठित नवयुवक मंडली की सहायता तथा साहस का फल यह हुआ कि सन् १८८१ में दो साप्ताहिक समाचार पत्रों का जन्म हुआ—एक मराठी में केसरी "जिसका मिस्टर अगरकार को तथा दूसरा अंग्रेज़ी में (Mahratha) [मराठा] जिसका लोकमान्य तिलक को सम्पादन का भार सौंपा गया। इन दोनों पत्रों के संचालन तथा छापने के लिये आर्य्य भूषण प्रेस संस्थापित किया।

चित्रकारी इत्यादि कला को उत्साहित करने के लिये चित्रशाला प्रेस पूना स्थापित किया। मिस्टर जोशी के निरीक्षण में यह अब एक बड़ा प्रेस हो गया है। और अपने ढंग का निराला ही एक सचित्र साप्ताहिक मातृभाषा में इसी प्रेस से निकलता है।

विष्णु शास्त्री ने उसी अपने नये स्कूल में एक "किताबखाना" नामी विद्यार्थियों को पुस्तक बेचने के लिये दुकान खोली। वे एक चाकू, कैंची, सरौता इत्यादि बनाने का बड़ा कारखाना खोलने वाले ही थे कि दुर्दैव अकाल कराल मृत्यु के १७ मार्च १८८२ ई० को ३२ वर्ष की अवस्था में ही विषमज्वर के बहाने उस पूजनीय प्रिय विष्णु को इससंसार से उठा लिया।

इस छोटे से ३२ वर्ष के जीवन में एक भारत माता के सच्चे सपूत चिपलूंकर करने कितनी जातीय संस्थाओं को उस समय में स्थापित किया जब इस देश में कांग्रेस इत्यादि संस्थाओं का नाम भी न था-यह उपरोक्त लेख से पता लगेगा।

उस महान् आत्मा ने महाराष्ट्र प्रदेश में एक नवीन जीवन का संचार किया यद्यपि आज उसका शरीरांत हुए ३४ वर्ष हो चुके हैं तो भी उसकी आत्मा प्रत्येक संस्था में काम कर रही है। उसका जीवन हमें प्रत्येक पग पर उत्साहित कर रहा है कि आओ चलें कुछ पूजनीय दुःखित विलपित भारत माता की सेवा करें।

आपका
अम्बिकाप्रसाद

प्राप्त पत्र

आर्यमित्र आगरे का ऋषिअङ्क

आर्य्यमित्र का ऋषिअङ्क आगामी दीवाली से तीन दिवस पूर्व अर्थात् २३ अक्टूबर को प्रकाशित होगा, गत वर्ष की भांति अबकी बार भी सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान् और कवियों के गद्य-पद्यात्मक लेख दिये जावेंगे। ऋषि दयानन्द का सुन्दर चित्र भी रहेगा, छपाई, सफाई काग़ज़ आदि भी उत्तम होंगे। अभिप्राय यह है कि अंक को सर्वांङ्ग सुन्दर बनाने में यथा शक्ति

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

किसी प्रकार की कमी न की जायगी। उसका आकार वर्तमान आकार से आधा होगा परन्तु पृष्ठ संख्या बहुत पर्याप्त रहेगी।

हम चाहते हैं कि ऋषिअंक का आर्यमित्रों में खूब प्रचार हो। इस के लिये यह आवश्यक है कि इसकी बहुत २ कापियां एक साथ आर्य सज्जन मंगालेवें और उनका प्रचार करें अब की बार काग़ज़ की तेज़ी के कारण मूल्य प्रति अंक =) निश्चित किया है, परन्तु साथ ही में नवीन ग्राहकों तथा अधिक संख्या में ऋषिअंक ख़रीद ने वाले पुराने ग्राहकों को भी नीति शतक नामक पुस्तक जिसका मूल्य -)॥ है उपहार में दी जायगी। अधिक से अधिक १५ अक्टूबर तक हमें यह ज्ञात हो जाना चाहिये कि कौन कौन महाशय कितनी २ कापियां मंगालेवें। मांग के अनुसार ही कापियां छपाई जावेंगी ५ कापियां से कम के ख़रीदारों को टिकट भेजने चाहियें।

पता—मैनेजर 'आर्यमित्र'
आगरा

—:०:—

गुरुकुल--हरपुरजान

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते।

आपके ११ भाद्रपद सम्वत १९७३ के सद्धर्मप्रचारक में जिज्ञासानुसार हरपुरजान पो० राजापट्टी ज़िला सारन के गुरुकुल के विषय में लिखा जाता है आप अपने पत्र में प्रकाश कीजियगा।

इस स्थान पर एक वेद विद्यालय एक स्थानीय ज़मींदार बाबू कृष्ण बहादुर सिंह तोमर वंशीय राजपुत्र के पुरुषार्थ और उत्साह से आठ दस वर्ष से चल रहा है परन्तु त्रुटी यह है कि गुरुकुल के ढंग पर पठन पाठन न होता है, विद्यार्थी प्रति दिन घर से आते हैं और पढ़कर चले जाते हैं, अथवा मन माने जब जी चाहा पाठशाला छोड़ देते हैं अतएव जिस उद्देश्य से पाठशाला खोली गई थी उसकी पूर्ति यथार्थ में नहीं होती इस लिये अनेक सज्जनों ने इस विद्यालय को गुरुकुल में परिवर्तन करने का विचार कर एक गुरुकुल स्थापित किया है और २० ब्रह्मचारी प्रविष्ट करने के लिये आगामी विजय दशमी तिथि पर उक्त सभा से नियम हुई है, और यह गुरुकुल श्रीमती आर्य्य प्रतिनिधि सभा बिहार और बंगाल के अधीन रहेगी, उपरोक्त बाबू कृष्ण बहादुर सिंह जी ने गुरुकुल के आस पास अपनी ज़मीन्दारी में से २५ बिघा भूमी दानदी है भूमी अच्छी है। आस पास के ग्राम भी दूर २ पर हैं और इस स्थान का जल वायु भी अच्छा है, एक छोटीसी नदी भी इस भूमी से एक फर्लांग दूरपर है, और रेलवे स्टेशन ६ मील के अन्तर पर बी० एन० डब्लयू० (B. N. W. Ry.) रेलवे का है।

भवदीय
बद्रीनाथ वर्म्मा
मैम्बर गुरुकुल,

—:०:—

शंका

प्रिय आर्य्य विद्वानों की सेवा में निवेदन है कि, सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में स्पष्ट रीति से प्रकाश डालें कि नक्षत्र, ग्रह, सूर्य, चन्द्र, पृथ्वी और उस पर वनस्पति, कीट, मत्स्य, सर्प, पशु, पक्षी और मनुष्य इत्यादि, की उत्पत्ति, किस प्रकार हुई तथा किस क्रम से, ये सब उत्पन्न हुई।

कृपा कर प्रचारक द्वारा उत्तर दें तो सर्व साधारण पर बड़ा अनुग्रह होगा।

आपका उत्तराभिलाषी
गोपालसिंह आर्य्य गोसां
देहरादून,

—:०:—

हिन्दी के ग्रन्थों की प्रदर्शिनी।

इसके पूर्व हिन्दी के पत्रों द्वारा हमने हिन्दी साहित्य सेवी सज्जनों को हिन्दी ग्रन्थ-प्रदर्शिनी के विषय में जो सूचना दी थी और उनसे प्रकाशित तथा हस्तलिखित ग्रन्थ प्रदर्शनार्थ भेजने की प्रार्थना की थी, उसके अनुसार बहुत सज्जनों ने प्रकाशित और थोड़े लोगों ने हस्तलिखित ग्रन्थों को प्रदर्शनार्थ भेजने की कृपा की है। जिन सज्जनों ने ग्रन्थ भेजने की कृपा की है उन लोगों ने इस दशा में हमारे उत्साह को बढ़ाने वाले पत्र भी लिखे हैं। इस कृपा के लिए हम इन सज्जनों के अत्यधिक कृतज्ञ हैं।

समाचार पत्रों में प्रदर्शिनी विषयक विज्ञप्ति को पढ़, अनेक सज्जनों ने हमसे यह पूछा है कि प्रदर्शनार्थ ग्रन्थ कब तक भेजे जायं। अभी तक सम्मेलन की तिथि का पूर्ण रूप से निश्चय नहीं हुआ था, अतः हम उन लोगों के पत्रों के उत्तर सनिश्चय देने को असमर्थ थे। सन्तोष का विषय है कि अब यह बात पूर्ण रूप से निश्चित हो गई है कि सम्मेलन आगामी कार्तिक शुक्ल ११, १२ और १३ सं० ७३ तदनुसार नवम्बर की ५, ६ और ७ तारीख को होगा। सम्मेलन के पूर्व प्रदर्शिनी का सुसज्जित होना वांछनीय है। यह काम तभी हो सकेगा जब प्रदर्शनीय ग्रन्थ यहां १५ अक्टूबर के पूर्व वा निदान तब तक आजायं। ऐसी अवस्था में हम अपने समस्त हिन्दी साहित्य सेवी भाइयों से पुनरपि प्रार्थना करते हैं कि वे लोग अपने प्रदर्शनीय ग्रन्थ श्रीयुत पंडित दया शंकर भा बी. एस, सी. एल. एल. बी., मंत्री हिन्दी साहित्य सम्मेलन, जबलपुर सी. पी. के पते से शीघ्र भेजने की कृपा करें। हमें पूर्ण भरोसा है कि हिन्दी के ग्रन्थ लेखक, प्रकाशक तथा विक्रेता गण अपने अपने यहां की प्रकाशित तथा हस्तलिखित पुस्तकें भेजने का अनुग्रह अवश्य करेंगे।

प्रदर्शिनी विषयक और जो कुछ पूछताछ किसी महाशय को करनी हो वे हमसे पूंछ सकते हैं।

गंगाप्रसाद अग्निहोत्री,
संयोजक, दीक्षितपुरा, जबलपुर

—:०:—

आकाश से दूध पीना

भाद्रपद मास की शुक्ल पक्ष की चौदस (अनन्त चौदस) को जगरामा तहसील के छपरा ग्राम में गुग्गे का मेला होता है। पास ही मालेर कोटला रियासत की अहमदगढ़ मण्डी है। मेले के मौके

पर आर्य्य-समाज के प्रचार का प्रबन्ध किया गया था, लुधियाना स्कूल के मुख्याध्यापक की ओर से। इस पत्र में सारे मेले का वर्णन तो लिखा नहीं जा सकता, पर संक्षेप से १½ या २ लाख आदमी मेले पर आये होंगे, सभी प्रायः व्यसनी थे। ९० प्रति शतक शराबी होंगे, इस प्रकार इसे मैला कहा जा सकता है।

आपके पास प्रचार विषय में कुछ लिखता हूं। सुना था कि मुख्याध्यापक तो रोगी होने से नहीं आसके।

प्रचार के लिए उपदेशक पंडित रामरत्न आए थे, उन्हीं के साथ मैं मंडी कार्यवशात गया था और भजनीक पं० मथुरा दास जी थे, पिता जी ग्राम से अपनी सहायता के लिए एक भजनीक को और ले गए इस प्रकार ये तीन आदमी थे। प्रचार का स्थान भी कोई निश्चित न था आपही चादनी गड़वा कर प्रचार करने को सोच रहे थे। परन्तु छावनी के एक ठेकेदार आये हैं उन्होंने कुछ सामान और स्थान की सहायता दी पर प्रचार में वे भी दो मिनिट के लिए ही आए होंगे, इस प्रकार छावनी के लोग तो कहते थे कि मेले का ही तो मौका होता है हमारी वस्तु बिकने का, अतः वे प्रचार में उपस्थित नहीं होते थे। लुधियाने और मालेर कोटला समाज की ओर से भी कोई व्यक्ति वहां नहीं आया इस से पता लगता है कि इस काम में उनका कोई उत्साह न हीं। यदि उत्साह पूर्वक और दो चार जगह में मण्डलियां बनाकर कार्य किया जाता तो अच्छा फल होता। ऐसी अवस्था होते हुए प्रचारकों ने अपना कार्य किया और उपस्थिति तीन या चारसौ की रहती, कभी कम भी हो जाती थी। उपस्थित पुरुषों में से शराब छोड़ने का कुछेक ने प्रण भी किया, पर यदि उत्साह से ४ या ५ दिन कार्य किया जाता तो फल बहुत उत्तम होता।

अभी मेला समाप्त नहीं हुआ था, जबकि यह सुना गया कि केवल मण्डी में २४ हजार की शराब बिक चुकी थी, मेले में भी पता नहीं कितनी बिकी होगी। शराब पीकें इधर उधर गन्द बकते लोग घूमते फिरते हैं। मेले के उद्देश्य को वे नहीं जानते। गुग्गा कौन था यह उद्देश्यता नहीं। बस मेला नामसे सब आते हैं और साल भर की कमाई शराब जुए आदि में लगाकर घर चले जाते हैं इतना अच्छा है कि इस मेले में स्त्रिएं नहीं आतीं। उन का मेला दसहरे के बाद होता है और वह भक्ति श्रद्धा से चढ़ावा चढ़ा कर चली जाती हैं। यह हालत है मेले का सविस्तर वृत्तान्त जो कुछ सुना है अगले पत्र में लिख दूंगा। यहां की सामान्य अवस्था अच्छी है अब गरमी नहीं रही। ईश्वर की कृपा से मेरा स्वास्थ भी अब अच्छा है।

सम्वा.ददाता

—:०:—

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

[१] ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य समाचार अच्छा है—आश्विन मास के प्रारम्भ में कुछ-ब्रह्मचारियों को मौसमी ज्वर हो गया था किन्तु अब सब प्रसन्न हैं। षाण्मासिक परीक्षा समीप है, जिस की तैयारी में ब्रह्मचारी तथा अध्यापक अच्छा परिश्रम कर रहे हैं।

[२] वार्षिक अवकाश एक मास का समाप्त हो चुका—प्रथम आश्विन से पढ़ाई का प्रारम्भ हो गया। अवकाश में पञ्च तथा पञ्चास के ब्रह्मचारी भ्रमणार्थ देहली गये थे--वहां चावड़ी आर्य्यसमाज की ओर से, पं० जानकीनाथ जी तथा म० कृष्णसिंह जी सभासद् आर्य्यसमाज ने ब्रह्मचारियों का अच्छा सत्कार किया-जिसके लिये हम सब गुरुकुल निवासी उपरोक्त महानुभावों का हृदय से धन्यवाद करते हैं, देहली में प्रति-दिन भोजन का निमंत्रण आर्य्य परिवारों से ही आता रहा।

(३) पहिले जितनी आवश्यकतायें लिखी गई थीं वह पूरी हो चुकी जिन की सूचना सविस्तर दूसरे समाचार में दी जायगी। दो आवश्यकतायें शेष हैं। (क) जाड़ा समीप आ रहा है ब्रह्मचारियों के लिये ऊनी ७० कंबल चाहियें। (ख) अच्छे मकान के बिना गौओं को बड़ा कष्ट है अतः यदि कोई दानीपुरुष गोशाला बनवा दें तो बड़ा ही उत्तम हो। यह दोनों आवश्यकतायें जाड़ा आने से पहिले ही पूरी हो जानी चाहियें

विष्णुमित्रः

—:०:—

ब्राह्मण सर्वस्व की मूल भुलईयां

ब्राह्मणसर्वस्व के किसी गतांक में आदि सृष्टि कहां हुई शीर्षक एक लेख दयालसिंह स्वामी का छपा था, जिस कतिपय पाश्चात्य विद्वानों की इंग्लिश में सम्मति रूप प्रमाण देकर बतलाया था कि पाश्चात्य विज्ञान वेत्ता आदि सृष्टि का स्थान ऐशिया लिखते हैं तत्रापि हिमवान् का उन्नत शिखर विशेष क्योंकि सब से ऊंचा स्थान हिमवान् है और आदि सृष्टि जलानावृत किसी उन्नत शिखर पर होना ही पाश्चात्य विज्ञान बतलाता है। लेखक महाशय ने अपनी तरफ़ से भी तो कुछ लिखना था इस लिए लेख के अन्त में लेखक महाशय ने लिख मारा कि इस लेख को देखकर दयानन्दी या तो तिब्बत में आदि सृष्टि हुई इसमें वेद प्रमाण देकर सिद्ध करें या स्वामी के लेख पर हरताल फेर दें।

आपने तो कोई वेद मन्त्र तथा वेदानुकूल प्रमाण नहीं दिया कोरी पाश्चात्यों की हांकी हुई हांक रहे हैं और दूसरों को तिब्बत में आदि सृष्टि हुई के वेद प्रमाण के लिए कह रहे हैं और कि तिब्बत क्या हिमवान् से बाहर है। सब से ऊंचा स्थल तो हिमवान् का तिब्बत ही इतिहास सिद्ध है तब दयानन्द जी ने क्या बुरा कहा मैंने सम्पादक जी के पास चार पांच प्रश्न भेजे थे जिन का उत्तर आज तक नहीं मिला प्रश्न यह है आदि सृष्टि भारतवर्ष में तत्रापि हिमवान् पर हुई यह वेद प्रमाण से सिद्ध कर दीजिये ॥ १ ॥ तिब्बत हिमवान् की सीमा से बाहर है वा अन्दर है सीमा के यह आर्ष ग्रन्थों से सिद्ध करदीजिये ॥२॥

अश्व मेध, गो मेध, नर मेधादिक यज्ञों का अर्थ अश्व को गौ कौतर को शस्त्र विशेष से काट कर इन के मास की अग्नि में बलि देना भी सनातन मानता वा अन्य विलक्षण कोई अर्थ मानता है अर्थात् दैव कर्म पितृकर्म तथा मधुपर्क में सनातन शास्त्रों में मांस विधान है वा नहीं यदि है तो सनातन धर्म्म उसको धर्म मानता वा अधर्म पक्षपादि मानता है ॥ ३ ॥

कन्या का विवाह जन्म से कितने वर्ष पश्चात् करना चाहिए इस में वेद भगवान् की क्या आज्ञा है ॥ ४ ॥ शिखर का वैदिक विज्ञान क्या फल बतलाता है ॥ ५ ॥

श्रीमान् सम्पादक जी से विनय है कि या तो वह देव विरुद्ध लेखों को अपने धार्मिक पत्र में स्थान न दिये करें या उन की वैदिकता सिद्ध किया करें।

निवेदक स्वामी योगानन्दाश्रम सुर्जा

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पत्रों की सैर

आर्य्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों का मान आर्य्य जनता में क्यों नहीं ?

ले० श्री रत्नलाल B. A. L. L. B.

संयुक्तप्रान्त की आर्य्यसमाजों में प्रायः यह सुनने में आता है कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा के उपदेशकों को उत्सव में बुलाना व्यर्थ है। उनकी योग्यता कुछ भी नहीं! सर्व साधारण पर उन के उपदेशों का कोई उत्तम प्रभाव नहीं पड़ता। उधर उपदेशकों को भी प्रायः यह कहते हुए सुना जाता है कि आर्य जनता प्रतिनिधि के उपदेशकों का उचित सन्मान ही नहीं करती। जब तक कोई व्यक्ति आनरेरी प्रचार करता है श्रद्धा और सन्मान पाता है। जहां वह प्रतिनिधि की सेवा में गया आर्य्यसमाजियों के हृदय से उतर गया। इन बातों में कहां तक सत्यता है इसका निर्णय कठिन ही नहीं वरन भयंकर भी है। हम इस प्रश्न के एक अंश पर ही कुछ काग़ज़ काला करना चाहते हैं और यह वह अंग है जो प्रतिनिधि से संबन्ध रखता है। यह सुलभ कार्य्य है कि हम उपदेशकों पर दोषारोपण करते हुए उनको स्वाध्याय के लाभों पर एक लेक्चर दे डालें। प्रश्न यह है कि आर्य्य प्रतिनिधि सभा की प्रचलित कार्य्य प्रणाली किसी उपदेशक को कुछ अवकाश स्वाध्याय का देती भी है या नहीं? प्रत्येक वर्ष में जब तक किसी पुरुष को न्यून से न्यून चतुर्मास का समय ऐसा न दिया जाय जिसमें वह केवल एक दो विषय के उत्तम २ पुस्तकों का स्वाध्याय करके उस विषय पर व्याख्यान तय्यार करले तब तक यह कैसे संभव है कि उस पुरुष के व्याख्यानों में तत्व हो और वह किसी विषय पर उत्तम २ विचार कैसे संग्रह कर सक्ता है? हमारी प्रतिनिधि में कोई ऐसा नियम हो तो हमें ज्ञात नहीं परन्तु जहां तक हम जानते हैं नहीं हैं। परिणाम यह होता है कि जितनी योग्यता एक पुरुष में प्रतिनिधि का उपदेशक बनने से पूर्व होती है उस योग्यता के नष्ट होने की तो संभावना है। क्योंकि स्वास्थ्य का बिगड़ना स्वाभाविक ही है। जैसे कोल्हू का बैल दिन रात चलता है उस ही निर्दयता से एक उपदेशक को प्रतिनिधि रात दिन वर्ष से वर्ष तक चलोती है फिर उनके ज्ञानोन्नति की आशा कैसी ? हम तो धन्य समझते हैं उन सज्जनों को जो आज कल इन नियमों के अनुसार उपदेश का कार्य्य कर रहे हैं। वर्ष में यदि वर्षा ऋतु में ही यह नियम कर दिया जाय कि प्रत्येक उपदेशक किसी ऐसे स्थान में रहकर ग्रन्थावलोकन किया करें जहां अनेक उत्तम ग्रन्थ सुगमता से प्राप्त हो सक्ते हों और जहां अन्य मतावलम्बी विद्वानों का सत्संग भी संभव है जैसे प्रयाग अथवा काशी तो फिर तीन चार वर्ष में ही आर्य्यजनता देखे कि वर्तमान उपदेशक ही कैसी२ उत्तम वक्तृताएं देने लगें नहीं तो फिर जो है उसकी शिकायत ही क्या ? (आर्यमित्र)

—०—

मुकुर्जी पर कोप

उस दिन दारजिलिङ्ग में एक वक्तृता दे प्रोफ़ेसर राधाकुमुद मुख्योपाध्याय ने कहा है, कि प्राचीन काल में हिन्दू अपने जहाज़ों द्वारा समुद्रयात्रा किया करते थे, इस समय फिर हिन्दू अपने जहाज़ बनायें और समुद्र यात्रा किया करें। आपने यह भी कहा है, कि इस विषय में बङ्गाल, ब्रह्मा, सन्द्राज और बम्बई में जहाज़ी कालेज प्रतिष्ठित हों और जहाज़ बनाने के कारखाने खुलें। किन्तु हम पूछते हैं, कि इस शास्त्र विरुद्ध कार्य्य में प्रवृत्त होने से हिन्दू उन्नति के किस आकाश में पहुंच जायेंगे ? क्या प्रोफ़ेसर मुख्योपाध्याय महाशय यह समझते हैं, कि एक जहाज़ न बनाने और समुद्र यात्रा न करने के कारण ही हिन्दू रसातल में पड़े हुए हैं और जैसे ही यह दोनों कार्य्य होने लगेंगे, वैसे ही हिन्दूओं का उद्धार हो जायेगा? यदि यह बात नहीं, तो हिन्दुओं को इस शास्त्र विरुद्ध कार्य्य में प्रवृत्त करने का प्रयोजन क्या है ? चीन ईरान आदि जिन देशों में समुद्र यात्रा निषेध नहीं; उन देशोंके अधिवासी उन्नतिके स्वर्ग का आरोहण क्यों नहीं कर रहे हैं ? (बङ्गवासी)

भ्रम मार्जन

भ्रम मार्जन—सहयोगी 'सद्धर्म-प्रचारक' की किसी विगत संख्या में महाशय नारायणसिंह अनुवादक डिप्टी कमिश्नर साहिब अम्बाला का एक लेख गौड़ महासभा के विषय में निकला है, जिस में अपने ज़िले के बनवारीलाल नामक किसी गौड़ ब्राह्मण विद्यार्थी के लिये, सभा से कुछ वृत्ति स्वीकार न होने के कारण सभा पर आक्षेप किया है। अनुवादक महाशय का आक्षेप अनुचित है, क्यों कि सैकड़ों बी० ए० एफ० ए० की उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले निर्धन छात्रों के समक्ष उस के लिये स्वीकृति नहीं मिली। और उस की अत्यन्त निर्धन होने की जो दशा लिखी गई है सभा के अधिकारियों को कैसे ज्ञान हो सकता है? क्योंकि सभा प्रति वर्ष छात्रवृत्ति का निर्णय करने के लिये यू० पी० और पंजाब की अलग २ सब कमेटियां बनाती है, जिन में कोई सज्जन कहीं के होते हैं और कोई कहीं के। सब कमेटी के सभ्य प्रायः ग्रेजुवेट और एक प्रतिष्ठित व्यक्ति होते हैं; और वे सैकड़ों निवेदन पत्रों को खूब छान बीन कर देखते हैं, फिर पीछे अधिक जो इस योग्य होता है, उस के लिये वृत्ति स्वीकार करते हैं। वृत्ति का पात्र वह विद्यार्थी अधिक समझा जाता है, जो बिलकुल पढ़ने के लिये धन व्यय करने में असमर्थ हो, ज़हीन, सदाचारी, जिसकी दूसरी भाषा संस्कृत या हिन्दी हो और थोड़ी अवस्था में ही किसी उच्च श्रेणी में हो तथा विवाहित न हो। इन सब बातों को जानने के लिये ही निवेदन पत्रों पर सिफ़ारिसों की ज़रूरत होती है। विद्यार्थी बनवारीलाल के साथ किसी का द्वेष नहीं था। सभा के अधिकारियों के पास देने को धन हो, और उन्हें किसी छात्र की वास्तविक स्थिति का ज्ञान हो; तो वे बिना किसी पक्षपात के वृत्तियों को स्वीकार करते चले आये हैं। और महासभा को इस बात का अवश्य अभिमान है कि ७०० सौ के लग भग वह ऐसे ही छात्रों को शिक्षा में सहायता दे चुकी है, जिन में दर्जनों ग्रेजुवेट और अनडरग्रेजुवेट हैं। इसी प्रकार से हां कुछ कम अवश्य,

वह संस्कृत के भी कितने ही छात्रों को यूनिवर्सिटियों की परीक्षाओं में उनकी आर्थिक सहायता कर उत्तीर्ण करा चुकी है। रही उदाहरण की बात सो अनुवादक महाशय का दिया उदाहरण ठीक नहीं। क्योंकि जिस वर्ष का उदाहरण दिया गया है, उस वर्ष सभा के पास वृत्ति के बजट का रुपया अधिक था, और निवेदन पत्र थोड़े। ऐसी दशा में यदि किसी ऐसे छात्र को शिक्षा में सहायता दी गई, जो बड़ा पठनशील और बिल्कुल साधारण आर्थिक स्थिति रखता था, तो महासभा ने क्या अनुचित किया। सहयोगी प्रचारक से भी हमें इस विषय में शिकायत है कि उसे कम से कम यदि वह अनुवादक महाशय का पत्र छापना ही था, तो महासभा कार्यालय से इस विषय में पूंछ लिया जाता। अस्तु। अब प्रचारक से प्रार्थना है कि वह हमारे इस छोटे से नोट को उद्धृत करने की कृपा करे। [ब्राह्मण समाचार]

—०—

गुरुकुल-समाचार

ऋतु

ऋतु बदल रही है— परन्तु बादल अभी तक नहीं गये, रात दिन इधर उधर मंडलाते ही रहते हैं। शायद इन बादलों से कहीं कहीं खेती का हानि पहुंच जाय, किन्तु मलेरिया दबा सा रहता है। मलेरिया ज्वर का इसवार वैसा ज़ोर नहीं हुआ, जैसा पहले हो जाया करता था।

अवकाश समाप्त

अवकाश समाप्त हो गये। विद्यालय, महाविद्यालय के सब ब्रह्मचारी तथा अध्यापक, उपाध्याय गण आगये हैं। जो अभी पहुंचे नहीं, वे मार्ग में हैं। दशहरे का उत्सव बड़े आनन्द से मनाया जा रहा और उस के पीछे फिर पठन पाठन का कार्य प्रारम्भ होगा। संवाद दाता

दान

म० खतरी मल जी धर्म्मसिंह ठिकाना पंच पट्टी जामनगर काठियावाड़ निवासी से गुरुकुल की सहायतार्थ ३१०००)की कमी पूरी करने मङ्गे २६ श्रावण ७३ को १००) प्राप्त हो चुके हैं। भूल से पहिले प्रकाशित नहीं हो सके। मुख्याधिष्ठाता

सामाजिक समाचार

आर्य संन्यास मण्डल को निमन्त्रण

विरजानन्द संन्यासाश्रम का तृतीय वार्षिकोत्सव ता० १४.१५.१६ अक्टूबर तदनुसार कार्तिक कृष्ण ३.४.५ को होगा-अतः सर्व आर्य सन्यासी महात्माओं से सविनय प्रार्थना है, कि विचरते हुए नियत समय पर आश्रम में अवश्य पधार कर अनुग्रहीत करें—आशा है कि सब महानुभाव दर्शन देकर कृतार्थ करेंगे-निमन्त्रणपत्र पृथक् २ सब की सेवा में भेजे गए हैं।

भवदीय—
सर्वदानन्द, सत्यानन्द
अलीगढ़

डी.ए.वी. पाठशाला [हाई स्कूल] व सदर आर्यसमाज अलीगढ़ का सप्तम वार्षिकोत्सव ता० २७, २८, २९, ३० अक्टूबर सन् १९१६ ई० तदनुसार कार्तिक शुक्ला १, २, ३, ४ शुक्र, शनि, रवि और सोमवार को होना निश्चित हुआ है। अतः सर्व सन्यासी, महात्मा, विद्वान, भजनीक और अन्य सभ्यगण महाशयों की सेवा में निवेदन है कि यहां पधार कर इस उत्सव को सुशोभित करें।

मोहनलालवर्म्मा—वार्डन एटला
सैक्रेटरी—पाठशाला-

ब्रह्मा देश में पहला वैदिक विवाह

लोयर बर्मा में टिघाये एक बस्ती है इस बस्ती के हैलथा फीसर महाशय देसराज जी बोरी हैं जो जिला गुरदास पुर के रहने वाले हैं उन्ही का विवाह संस्कार था, जिस पर रंगून से मुझे जाने और संस्कार कराने का सौभागय प्राप्त हुआ। आप की आयु २५ वर्ष के लगभग है और कन्या की आयु १६½ वर्ष की है। कन्या एक ब्रहमी ज़मीदार की लड़की है जो बड़ी चतुर और सुशील ब्रहमी भाषा पढ़ी हुई है और महाशयजी भी इस भाषा को जानते हैं। दोनों की परस्पर प्रसन्नता से यह सम्बन्ध निश्चित हुआ। ३१/६ तिथि इस संस्कार के लिये नियत थी। प्रातःकाल कन्या के गृह पर शान्तिपाठ के पश्चात् कन्या का शुद्धी संस्कार होकर उसका नाम सुभद्रा देवी रक्खा गया। कन्या ने ब्रहमी वेश (माने,लिबास) परित्याग कर पारसी किसम का वेश धारण कर लिया और सदा के लिये इस के धारण करने की प्रतिज्ञा का व्रत किया। इसके लिखने की आवश्यकता इस लिये हुई कि ब्रहमी स्त्रियां और सब कुछ त्याग भले ही दें किन्तु अपना लिबास नहीं त्यागतीं: साहिब लोगों के घरों में जो आबाद हो चुकी हैं वह भी ब्रहमी लिबास में ही रहती हैं अतः इस देवी की इस बारे में प्रशंसा करनी चाहिये। संस्कार ४ बजे सायं काल के आरम्भ हुआ और यथा विधि कन्या ने अपने घरके द्वार पर वर का स्वागत किया। संस्कार के मध्य में हमारे चन्द पञ्जाबी भाइयों की ओर से जो वर के साथ आये थे यज्ञ मन्डप में ही मद्य यानी शराब मांगी गई ताकि वह वहीं बांट कर अपना दौरा चलावें। जब उनकी यह इच्छा पूरी न हुई तो संस्कार से यह कह कर उठ गये कि यह विवाह नहीं किन्तु क्रिया है-इस तरह से जहां उन्हों ने अपने आप को तो कलंकित किया ही था किन्तु अपने देश को भी बदनाम कराया? इस देश में बड़ी शोचनीय दशा है और सचतो यह है कि ऐसे ही लोगों ने अपने देश का नाम डबोया है। संस्कार की पूर्व विधि समाप्त होने पर विश्राम भोजन आदि के पश्चात् उत्तर विधि ८ बजे रात्री के आरंम्भ होकर १० बजे संस्कार निर्विघ्न समाप्त हुआ:

५०) रुपये गुरुकुल कांगड़ी को दान के मिले और ७) रुपये संस्कार की दक्षणा के, संस्कार में और भोजनादि में शहर के सभ्य सज्जनों ने कि जिन में डाक्टर, इन्जनीयर, प्लीडर वहां के बड़े बड़े मरचेंटस और मदरासी पारसी महिलाऐं भी शामिल थीं, शामिल होकर महाशय बौरी जी से सहानुभूति प्रगट की और वर वधु को बधाई दी।

पति पत्नी दोनों ने इन बातों के पालन की प्रतिज्ञायें कीं।

वैदिक धर्म का सेवक
ठाकुरदास चौधरी रंगून

आर्यसमाज ब्यावर का चतुर्थ वार्षिकोत्सव मिति कार्तिक शुक्ला १,२ या ३ शुक्र,शनी वा रविवार सम्वत १९७३ वि०ता०२७-२८ वा २९अक्टूबर सन १९१६ ईस्वी को होना निश्चय हुआ है और नगर कीर्तन ता० २७ को होगा।

शुभ संवाद

परब्रह्म परमात्मा की कोटिशः धन्यवाद है कि जिसकी असीम कृपा से आर्य्यसमाज गोरख पुर के दशम वा० उत्सव की तिथियां २३, २४, २५, तथा २६ नवम्बर १९१६ ईस्वी दिन बृहस्पति वार से रविवार तक नियत की गई हैं। श्रीमान् पूज्य पाद स्वामी अनुभवानन्द, लाला रामचन्द्र देहली निवासी प० शिव शंकर काव्यतीर्थ तथा ठा० नत्थासिंह आदि २ ने पधारने का वचन दिया है; अन्य महात्मा भी तथा उपदेशक महाशयों से सविनय प्रार्थना है कि उक्त समय पर पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ावें—

भवदीय सेवक
हृदयनारायण मन्त्री
आर्य्यसमाज गोरखपुर

पुलिस जमादार का जुल्म।

मैं जलाल पुर में था तो मेरे ऊपर प्र० स० यं० पुर का पत्र २५-९-१६ को तरभण जाने को मिला। तो मैं जलाल पुर से वाणियां वाली आया और बाबा भाई की दूकान पर मुकाम किया। इतने में जलालपुर तालुका जि० सूरत के पुलिस (मुसलमान) जमादार दारू पी करके आया और बाबा भाई से कहने लगा कि यह कौन है। तो उन्हों ने कहा कि बबई प्र० सभा के उपदेशक हैं। इतने में जमादार बोले कि मोटा गवरनर होवे तो क्या है मैं २४ घंटे कैद कर सकता हूं। इनका जीवन हमारे हाथ में है। इस तरह से धमकी दे और गाली देने लगा, मारने को भी तैयार हो गया। मैंने कहा सभ्यता से बोलो तो कुरसी के ऊपर बैठा और बोला कि अभी इसन्पेकटर के पास रिपोर्ट भेजता हूं। इतना कहके लिखने लगा। लेकिन दारू का नशा होने से कलम नीचे गिरपड़ी। बाबा भाई से लिखने को कहा। लेकिन बाबा भाई ने कहा कि मैं ऐसी झूठी रिपोर्ट नहीं करूंगा तो उसने कहा कि इन का पता बराबर लिख देओ, मैं ऐसा बन्दोबस्त करूंगा कि इनके पीछे पुलिस लगी रहेगी। इसी प्रकार ३ घंटे तंग किया। बहुत लोगोंने समझाया लेकिन इन की इच्छा लांच (रिसवत) खाने की मालूम होती थी और लोग भी कहते थे कि इसी से इसने ऐसा तंग किया। उस समय बाबा भाई तथा पं० जय कृष्ण जी शास्त्री मौजूद थे यह हकीकत छपाने का प्रयोजन यह है कि ऊपरी अमलदार लोग सुधार नें का भी प्रयत्न करेंगे। यह हकीकत अन्य पत्रकार स० प्र० पत्र को देख करके छापदें। जयनारायण शा० उपदेशक बंबई प्र० सभा०।

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Registered No. A. 434

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ६ आश्विन सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३३ } ता० २१ अक्टूबर सन् १९१६ ई० { संख्या २७ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ४॥=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बाँटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बट सकता।

(२) क्रोड़ पत्र में आवश्यक समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतियें, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

काङ्गड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य ॥=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)

[३] आचार अनाचार और मद्य मूल्य =)

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज मूल्य -)

[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)

[६] पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त)

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउण्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P. O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

आर्य कन्या की आवश्यकता

एक क्षत्रिय कुलोत्पन्न सदाचारी आर्य युवक, जिनकी आयु २७ वर्ष की है, गृहस्थ में प्रवेश करना चाहते हैं। रूप रंग और स्वास्थ्य बहुत उत्तम है। संस्कृत की साधारण और आर्य्यभाषा की उत्तम योग्यता रखते हैं। गुरुकुल में कार्य करते हैं। लगभग ३५) मासिक आय है। सम्बन्ध में जाति बन्धन का कोई विचार न रखा जायगा। पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते से कीजिए-

प्रबन्धकर्त्ता—सद्धर्मप्रचारक

पो० श्यामपुर-कांगड़ी

ज़िला बिजनौर

जापान में स्त्रियों का स्थान

(अक्टूबर के 'माडर्नरीव्यू' के आधारपर)

—:o:—

बाल्यकाल (Babyhood)

जापान में सन्तान का जन्म बड़ा आनन्द दायक समझा जाता है। सन्तान के जन्म-काल में बड़ी खुशियां मनाई जाती हैं। सब सम्बन्धियों और मित्रों को इसकी सूचना दी जाती है और वे कुछ भेंट लेकर—जैसे खिलौने इत्यादि—उसके दर्शन करने आते हैं। सातवें दिन बिना किसी विशेष संस्कार वा उत्सव के पिता सन्तान का "नाम" रखता है। प्रकृति में जो सुन्दर २ पदार्थ हैं उनके नाम पर लड़की का नाम और पत्थर लकड़ी बघियाड़ रीछ इत्यादि के नाम पर लड़के का नाम रक्खा जाता है।

लड़के और लड़की में भेद करने के लिये उनकी पोशाकों में भेद दिया जाता है। लड़की का वेश लाल और पीला तथा लड़के का नीला हरा और भूरे रंग का होता है।

जापानी बच्चे साधारण तथा अपने गोडों को अन्दर की ओर झुका कर बैठते हैं। उस के कारण उनकी टांगों के जहां एक ओर पट्ठे सुदृढ़ हो जाते हैं वहां दूसरी ओर उन में अच्छी लचक भी आजाती है। लड़के तो बैठने के उस ढंग को कुछ देर के बाद बदल देते हैं परन्तु लड़कियां आयु भर इसी ढंग पर बैठती हैं।

जापानी बच्चों को सबसे पहिले यदि कोई शिक्षा मिलती है तो वह चलने फिरने की है। चलने फिरने के लिये चारों ओर की दशायें अनुकूल रक्खी जाती हैं; जैसे किसी विशेष कमरे में जिसमें मेज़, कुर्सी, स्टूल इत्यादि कुछ नहीं (सर्वथा खाली होता है) उसे चलने फिरने का अभ्यास कराया जाता है। कमरे के फ़र्श की चटाई इत्यादि बिछा कर कोमल कर दिया जाता है। इसके बाद दूसरी बात जो इसे सिखाई जाती है वह हलके बूट पहिना कर घरसे बाहर घुमाना है।

—:o:—

कन्या-काल (Girl hood)

जापानी घराने में लड़की की बड़ी उत्तम दशा होती है; वह सब सम्बन्धियों के लिये एक प्रकार का खिलौना होती है। लड़की अवस्थानुसार जिस आदर के योग्य होती है उस के अनुसार सिवाय माता पिता के और उसे कोई नमस्कार नहीं करता। यदि वह अपने घर में सबसे बड़ी लड़की है तो नौकर उसे "निसान" (Ne San) कह कर पुकारते हैं; जिसका वास्तविक अर्थ "प्रौढ़ कन्या" हैं, और उसके भाई बहिन उसे "निसान" (Ne San) कहते हैं अर्थात "बड़ी भगिनी। और यदि वह छोटों में से एक है तो उसके छोटे भाई बहिन और नौकर उसे "ओ" और इस के साथ "सान" (O San) कह कर पुकारते हैं, जिस का अर्थ "मिस" है।

इस अवस्था में माता पिता केवल उसे प्यार ही नहीं करते परन्तु कुछ सिखाते भी हैं। गृहस्थ सम्बन्धी वे सब शिक्षायें उसे दी जाती हैं जो अगले जीवन में उसे काम देने वाली हैं। उसे उत्तर-दातृत्व के कुछ काम अभी से सौंपे जाते हैं; जैसे, प्रातःकाल अतिथियों के लिये चाय तय्यार करना; माता पिता का बिस्तरा बिछाना और इकट्ठा करना, कमरे में झाड़ू देना; बारी इत्यादि खोल कर हवा लगा देना, घर की दीवारों पर लगाये हुए काग़ज़ों पर जो सिट्टा वा जाला इत्यादि लगा होता है उसे साफ़ करना; प्रातःकाल का भोजन परोसना, तश्तरी साफ करना और घर पर जो फेरी वाले आते हैं उन से मछली शाक इत्यादि मोल लेने—इत्यादि ये सब काम उन्हें करने पड़ते हैं। इस के बाद जो समय बचता है उस में सीना पिरोना, पढ़ना अथवा माता अपनी रुचि और इच्छा के अनुसार जो चाहे काम करवाती है। लड़की के सब कर्त्तव्य कर्म घर से ही सम्बन्ध रखते हैं बाहर से बिल्कुल नहीं। और यदि लड़की निर्धन घराने की है तो उस के सब काम खेत से ही सम्बन्ध रखते हैं। लड़की स्वतन्त्र कभी नहीं रह सकती; हर अवस्था में उसे माता, पिता, पति अथवा पुत्र के आधीन ही रहना पड़ता है। लड़की को इस अवस्था में सब से अधिक शिक्षा आज्ञा पालकता और अन्य संयम की दी जाती है। केवल शिक्षा ही नहीं दी जाती परन्तु उस से इस के अनुकूल काम भी करवाया जाता है। उसे हर समय प्रसन्न रहने की शिक्षा दी जाती है। इन्हीं शिक्षाओं का यह प्रभाव है कि आज जापानी लड़कियों और स्त्रियों का व्यवहार बड़ा ही सभ्यता पूर्वक और चित्ताकर्षक होता है।

———

प्रौढ़-काल (Maidanhood)

लैफ केडियो हौस नामक लेखक की सम्मति में जापानी स्त्री संसार भर की स्त्रियों के लिए सब बातों में आदर्श स्वरूप होती हैं। इस प्रौढ़ावस्था में लड़की को किसी-किसी स्कूल वा कालेज में अध्ययन के लिए भेजा जाता है। छोटी जातियों में लड़कियां प्रायः घरेलू काम पर ही लगी रहती हैं; उन्हें खाली समय बहुत थोड़ा मिलता है। कन्या काल में तो उसे केवल परोसना; झाड़ू देना इत्यादि छोटे २ काम ही सिखाये गए थे परन्तु अब इस अवस्था में उसे भोजन पकाना भी सिखाया जाता है। उच्च घरानों में स्त्रियों को भोजन पकाना, थाली परोसना तथा चावल पकाना जो कि कुछ काम नहीं है—सिखाया जाता है। मतलब यह कि इस अवस्था में उसे अगले गार्हस्थ जीवन के लिए पूरा २ तैय्यार कर दिया जाता है।

परन्तु अब तक और आगे भी उसे भावी जीवन के लिए बिल्कुल चिन्तित नहीं होना पड़ता और नाही माता पिता होने देते हैं। उसे इन बातों से सर्वथा 'अपरिचित' रखते हैं। गृहस्थ की चिन्ता का सब भार उस के पिता पर होता है और वही उस के लिए वर ढूंढता है। वह कुछ नव युवकों से स्वयं मिलता है और जब उन में से किसी एक के साथ पक्का निश्चय हो जाता है तब पिता लड़की को उस नवयुवक से मिला देता है। परन्तु इस अवसर से पूर्व उसे कुछ नहीं बताया जाता और न चिन्तित होना पड़ता है। वह सदा बाल्य-काल की तरह खुश और निश्चिन्त रहती है।

[शेष फिर]

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

गुरुकुल में विजयदशमी

विजयदशमी के उत्सव का भारतवर्ष के लिए विशेष महत्व है। यह उत्सव वस्तुतः भारत की अन्तरात्मा को सूचित करता है। भारत की राजनीति उसकी सामाजिकता सब धर्म के अन्तर्गत हैं। यहां का प्राचीन धर्म केवल यागहोम में या आंख बन्द करने में नहीं-सत्यमय साहसमय और क्रियामय जीवन व्यतीत करने में था ये सब बातें मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के जीवन से प्रतीत होती हैं। इस लिये राम को प्राचीन भारत का प्रतिनिधि कहना अनुचित नहीं है। यह सत्य गुरुकुल की विजय दशमी के उत्सव में स्पष्टतया झलकाती है। नीचे इसी उत्सव का सम्वाददाता द्वारा भेजा हुआ वृत्तान्त दिया जाता है—

"३ अक्टूबर से गुरुकुल के क्रीड़ाक्षेत्र में खूब खेलों का समारोह था। ६ अक्टूबर विजयदशमी का अन्तिम दिवस था। इस दिन कुछ खेलें हुईं। सांयकाल ४ बजे से यज्ञशाला में बृहद् हवन हुआ। ५ बजे से श्री आचार्य जी के सभापतित्व में 'रामदर्शन' सभा प्रारम्भ हुई। सभा में गुरुकुल के सर्व उपाध्याय तथा अध्यापक महाशय और कुछ निमंत्रित महानुभाव भी पधारे हुए थे। आरम्भ में ईश प्रार्थना की एक गीति तथा राम दर्शन भजन गाया गया। तदन्तर ब्रह्मचारी कृष्णकुमार ने निम्नलिखित वक्तृता दी "मैं समझता हूं कि विजयदशमी का दिन ही भारत की उन्नति का एकमात्र उपाय बन सकता है। इसी दिन भारत की जनता को एक झंडे के तले लाया जासकता है और मृत जाति को पुनरुज्जीवित किया जासकता है। इसी लिये यह उत्सव सर्व उत्सवों में प्रधान समझाजाता है। इस उत्सव के सूत्रधार श्री रामचन्द्र हैं। उन के चरित्र से हम दो उच्चतम शिक्षाएं ले सकते हैं। प्रथम देश भक्ति, दूसरी अपने से बड़ों की आज्ञा का पालन।

अपनी नगरी का वर्णन करते हुए एक स्थान पर रामचन्द्र जी कहते हैं कि "यद्यपि सब वैकुण्ठ समाना, वेद पुराण विदित जगजाना। अवध सरिस प्रियमोहनि सोऊ, यह प्रसङ्ग जाने कोऊ कोऊ"

यह था रामचन्द्र जी का स्वदेश प्रेम। अब उनका आज्ञा पालन देखिये। रामचन्द्र जी कैकयी से कहते हैं 'अहो धिङ् नार्हसे देवि वक्तुं मामीदृशं वचः। अहं हि वचनाद्राज्ञः पतेयमपि पावके॥ भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं पतेयमपि चार्णवे। नियुक्तो गुरुणा पित्रा नृपेण च हितेन च॥'

बस यही दो शिक्षाएं विशेषतः हम उनके जीवन से ग्रहण करसकते हैं" उस के बाद ब्र० धर्मदत्त ने कहा—

इस दिन को तीन विशेषताएं उत्कृष्ट बनाती हैं।

(१) इसी दिन सर्व आर्यजाति एक छत्र के नीचे आसकती है।

(२) हमारी आधुनिक मृत जाति को भी यह विजयोत्सव उठा सकता है।

(३) रामायण का युद्ध एक आदर्श युद्ध था। उस की नींव स्वार्थ पर न थी जैसी की आज कल के युद्धों की है पर निर्बलों की रक्षा करने के लिये तथा पापमय शक्ति को गिराने के लिए किया गया था।

उस के बाद एक गीति हुई तथा छोटी श्रेणी के ब्रह्मचारियों का श्लोक गायन हुआ। तदन्तर श्री मुख्याध्यापक सुखराम जी ने कहा—"निस्सन्देह ऐसे दिन ही मृत जातियों में नया जीवन फूंक सकते हैं। जिन जातियों ने ऐसा दिनों को भुलादिया वे संसार में नहीं रहीं। रामायण का समय आदर्श समय था। उस समय वैदिक धर्म का पूर्ण रूप से प्रचार था। रामायण की गाथा एक कल्पित कहानी नहीं हो सकती जैसा कि पाश्चात्यों का विचार है।

हम यद्यपि सब राम नहीं बन सकते पर राम उत्पन्न होने के साधन लासकते हैं। उन्हीं साधनों को हमें आज के दिन से लाना सीखना चाहिये।" उस के बाद श्री उपाध्याय महेन्द्रपालसिंह जी की वक्तृता हुई। आपने कहा—"राम के दर्शन में मुख्यतः हम तीन बातें देख सकते हैं।

प्रथम राम की आचरण सम्बन्धी
दूसरी पारिवारिक तथा तीसरी राजनै
घटनाएं। इस दिन का राजनैतिक म
भी कुछ कम नहीं है। हम को बड़ा
सिमान होना चाहिये कि कम से
एक विजय तो है जो कि भारत के
हुई थी।

तदनन्तर एक गीति हुई।

उस के बाद श्री उपाध्याय
जी ने एक मनोहर वक्तृता दी।
का सारांश यह है—

प्रत्येक प्रकार के उत्सव का अपना
हत्व होता है। कई धार्मिक उत्सव
हैं, जिन में किसी धार्मिक नेता की
पर विचार किया जाता है। इसके अति
राजनैतिक दिन भी मनाये जाते हैं
में एक राजनीतिज्ञ की विजय की मा
हैं। जैसे शिवाजी का दिन या
द्रगुप्त का विजय मनाना एक राजनै
उत्सव है। पर विजयदशमी के उत
का एक विशेष महत्व है। अन्य उत्स
से जुदा विजयदशमी ही ऐसा
त्सव है जो कि उपरोक्त दोनों महत्व
खता है। रामचन्द्र की नीति धर्म के
न्दर ही आजाती थी। अब एक
बात देखिए।

रामायण के युद्ध तथा आधुनिक यु
पर विचार कीजिये। आधुनिक युद्धों के
राने वाले अपने मकानों के अन्दर बैठे
ही तारें खटकाते हैं। वे युद्ध क्षेत्र
आकर कभी सेनापति का कार्य नहीं करते
यही बात रावण में भी थी। रावण
अपने भवन में ही बैठा हुआ सबमें
नाता है। वह युद्ध भूमि में सब सेनापतियों के मरने पर उतरता है। पर दूसरी तरफ राम स्वयं युद्धक्षेत्र में आते हैं तथा सेनापति का कार्य करते हैं। अब इस कारण पर तनिक विचार कीजिए। राम अपने को धर्म पर आश्रित समझता था अतएव उसको कोई भय न था, पर रावण अधर्म पर आश्रित होने के कारण युद्ध क्षेत्र में आने से डरता था। रावण को सत्य या धर्म पर विश्वास न था। राम के जीवन से हम यह शिक्षा ले सकते हैं कि प्रत्येक आदमी सत्य को तथा धर्म पर विश्वास रखते हुए साहस करना चा

पे। यदि यह नियम कर दिया जावे कि
करानेवाले ही युद्ध करने वाले हों
हमारा विश्वास है कि संसार में कोई
युद्ध न हो। एक कवि का कथन है
क्या सिद्धिः सत्वे भवति महतां नोपकरणे'
त्य और धर्मपूर्वक साहस ही सत्व है।
मचन्द्र में सत्व की प्रधानता थी उसी
कारण उन्होंने साहस किया तथा
ना के आगे रहे। रामचन्द्र से हम सब
ो शिक्षा ले सकते हैं वह यह है कि प्रत्येक
कार्य में सत्य तथा धर्म पर विश्वास र-
खते हुए आगे बढ़ना चाहिए। राम का
जीवन हमें आत्मविश्वास सिखलाता है।
हर एक आदर्श को दिखाने के लिए हम
रामचन्द्र का जीवन पढ़ सकते हैं। राम
सर्वांशों के दिखाने वाले थे। धर्म और
सत्य इन बातों के मूलमन्त्र थे।"

उस के बाद एक गीति हुई।

तदनन्तर श्री आचार्य जी का मनो-
हर और उपदेशदायक भाषण हुआ।
आज के दिन को जो जातीय दिन सम-
झते हैं वे इस बातको भूलजाते हैं कि
राम का दिन केवल भारतवर्ष में ही नहीं
इस के दूसरी तरफ़ पाताल में भी
मनाया जाता है। एक राम का ही जी-
वन है जो कि अन्य जातियों के सभ्यों
को भी अपनी तरफ़ खींच लेता है। मुझे
यहां एक घटना याद आती है। क्वेटे में
प्रिंस पिल विस्वानी का व्याख्यान था
उन्होंने अपने व्याख्यान में मुहम्मद-नानक, ईसा आदि की बड़ी प्रशंसा की।
व्याख्यान के पश्चात् एक मुसलमान भाई ने
कहा कि आपने सभी बड़े बड़े आदमियों
का नाम लिया पर महान् आत्मा
दयानन्द सरस्वती का नाम नहीं लिया-
उस समय सारा हौल तालियों से गूंज
उठा। आगे उन्होंने कहा कि मुझे बड़ा
शोक है कि इस के अतिरिक्त दुनिया के
एक बड़े महापुरुष राम का नाम भी नहीं
लिया गया। उस समय व्याख्यानभ-
वन में सन्नाटा सा छा गया।

मेरा कहने का मतलब यह है कि राम
का जीवन सन्मुख आता है तो सब ही
उसकी तरफ़ आकर्षित हो जाते हैं।
रामचन्द्र आर्य्य वैदिक सभ्यता के आ-
दर्श पुरुष थे। धर्म उन की रग रग में घूम
रहा था। धर्म पर अत्याचार हटाने के
लिये ही उन का जीवन था। यही उन
की जीवन की प्रतिज्ञा थी। राम म-
र्यादा पुरुषोत्तम इस लिये थे कि राम
सदा धर्म की मर्यादा में रहते थे तथा धर्म
भी वह जो कि संसार के प्रत्येक व्यक्ति
को धारण करना चाहिये। धर्म
के अर्थ उस समय किसी सम्प्रदाय के
न थे।

राम का जीवन आधुनिक सभ्यता के
विरुद्ध खड़ा हुआ है। आधुनिक सभ्यता
को उस के पोषक भी अकृतकृत्य समझ
रहे हैं।

राम उस सभ्यता के अग्रणी थे जिसमें
वर्णों की उत्तम व्यवस्था थी। धर्म की
स्थापना ही राम के जीवन का उद्देश्य
था। जिस समय शूर्पणखा का नाक
काटा गया उस समय भी धर्म की स्था-
पना ही लक्ष्य था।

१४ हज़ार राक्षसों को मारने के लिये
धनुष की टंकार भी धर्म मर्यादा के लिये
थी। एक वालिवध भी धर्म के उद्देश्य से
ही किया गया। रामचन्द्र वैदिक सभ्यता
के उत्तम नियमों को इकट्ठा करने
के लिये एक केन्द्र का कार्य्य कर
रहे थे।

राम के जीवन को सामने रखकर हम
सब को अपने कार्य प्रारम्भ करने चा-
हियें। ब्रह्मचारियों को भी चाहिये कि
वे अपने कामों का आरम्भ राम को उच्चा-
सन पर बिठाकर करें।

यदि सभी आश्रम राम को अपनी दृष्टि
का केन्द्र बना कर अपने अपने धर्म
का पालन करें तो वे कभी भी नहीं गिर
सकते। परमात्मा हमें बलदें कि हम
राम का सर्व अंशों में अनुकरण करें।

श्री आचार्य जी के भाषण के पश्चात्
एक गीति हुई।

तदनन्तर सभा समाप्त हुई।

७$\frac{3}{4}$ बजे सहभोज की घंटी बजी। स-
हभोज में गुरुकुल के सभी उपाध्याय तथा
अध्यापक महाशय और अन्य निमंत्रित
सज्जन भी थे। सब ने मिलकर भोजन
किया—और इस प्रेमसम्मेलन के साथ
उत्सव समाप्त हुआ।

पंजाब की स्त्री शिक्षा

म.ए. टी. गिदवानी एम. ए. ने ली-
डर पत्र में पञ्जाब की स्त्री शिक्षा पर एक
लेख लिखा है। लेख में दो संस्थाओं का
वर्णन किया है। एक कन्या महाविद्या-
लय जालन्धर का और दूसरे सिख कन्या-
महाविद्यालय फीरोज़पुर का। दोनों
की तुलना में आपने तीन चार बड़ी म-
नोरंजक बातें कही हैं। तुलना में आप
ने स्त्री शिक्षा पर अपने भी कुछ विचार
प्रकट किये हैं। कन्या महाविद्यालय जा-
लन्धर में शिक्षा आर्य्य भाषा द्वारा दी
जाती है और सिख कन्या महाविद्यालय
में गुरुमुखी द्वारा। इस पर आप लिखते
हैं—"इस कारण से जहां सिख महा वि-
द्यालय केवल एक स्थानीय विश्वविद्या-
लय रह जाता है वहां आर्य विद्यालय का
क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। ठीक तो यह
है कि एक मद्रास को छोड़ कर सभी
प्रान्तों को यह विद्यालय अपनी ओर
खींचता है।" लेखक महाशय की राय है
कि सारे देश के लिये ग्रहण करने योग्य
एक भाषा हिन्दी है और अतः उसे मु-
ख्यता दे कर विद्यालय ने उत्तम कार्य्य
किया है। दूसरा भेद यह है कि जहां
सिख महाविद्यालय में अंग्रेज़ी आवश्यक
है वहां आर्य्य महाविद्यालय में ऐच्छिक
है—जो कन्या चाहे पढ़े जो न चाहे न
पढ़े। इस विषय में भी लेख की राय
है कि—"जिस आयु में अधिक कन्याओं
को पाठशाला छोड़नी पड़ती है, उसका
विचार करते हुए उन्हें एक विदेशी भाषा
पढ़ाकर समय व्यर्थ गंवाना सार्थक प्र-
तीत नहीं होता—और भाषा भी ऐसी
जिसका वह इतना ज्ञान नहीं कर सकतीं
कि अगले जीवन में उससे काम ले सकें"
कारण यह है कि सिख महाविद्यालय
कन्याओं को यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं
में भेजता है, आर्य्य विद्यालय कम से कम
एण्ट्रेंस आदि परीक्षाओं में नहीं भे-
जता। आर्य विद्यालय की कन्याओं की
सादगी से भी लेखक महाशय प्रसन्न हुए
हैं और सर्वतोभाव से लेखक कन्या म-
हाविद्यालय जालन्धर को पंजाब का स-
र्वोत्तम कन्या शिक्षणालय स्वीकार क-
रते हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक चुटकला

लाहौर के "देश" में एक चुटकला छपा है, वह प्रचारक परिवार के मनोरंजनार्थ दिया जाता है—"कल एक दोस्त को एक बड़ा कर्ज़दार वाका पेश आया। उन की शिकायत थी कि इनका अख़बार सद्धर्म प्रचारक उन्हें ठीक नहीं मिलता, और चिट्ठीरसां अपने दोस्तों के लिये कभी २ उड़ालेता है। मेरे दोस्त ने चिट्ठीरसां से शिकायतकी कि क्यों साहब तुम मेरा अख़बार सद्धर्म प्रचारक रास्ते में क्यों उड़ालेते हो? इसने जवाब दिया कि 'जनाब! मुझे आपका अख़बार उड़ाने की क्या ज़रूरत है, मेरे पास तकसीम के लिये कई सद्धर्मप्रचारक के पर्चे आते हैं, बल्कि अगर आपको ज़रूरत हो तो आप एक पर्चा फ़ालतू लेलेंवे।"

यदि किसी महाशय को प्रचारक का कोई अंक न मिले तो ऐसे दानी उदार पोस्टमैनों से भी पूछलिया करें।

विश्व-विद्याप्रचारक-महामंडल क्या है!

प्रचारक के किसी अंक में विश्वविद्या प्रचारक महामण्डल के विषय में एक महाशय का लेख निकला था। लेख में इस महामण्डल पर कुछ आक्षेप थे। उस पर हमारे पास पक्ष प्रतिपक्ष में कई लेख आये हैं। उन सब को प्रकाशित करने के लिये प्रचारक में स्थान नहीं है। मण्डल के मन्त्री महाशय के दो लेख आये हैं, उन्हें हम प्रकाशित कर देते किन्तु हमे शोक है कि उन में मण्डल के कार्यक्रम का पूरा ब्यौरा न दे कर मन्त्री जी ने पहले लेख के लेखक के आचरणों और उद्देश्यों पर बहुत से कलंक लगाये हैं। ऐसे लेख समाचार पत्रों के स्तम्भों में स्थान नहीं पा सकते।

हां हमारा मन्त्री जी से निवेदन है कि वे अपने कार्य का और प्रबन्ध का ठीक २ हाल लोगों को सुनादें इतना ही पर्याप्त होगा। इधर कोई सज्जन अब मण्डल के प्रतिपक्ष में यूंही पत्र न भेजते जांय कोई निश्चित आक्षेप की बात हो तो लिख सकते हैं।

ब्राह्मणाध्याय

अभी तक ब्राह्मणाध्याय जारी है, समाप्त नहीं हुआ। म० कर्ण ने अपने लेख में एक दो ऐसी पंक्तियां लिख दीं जो कई ब्राह्मण भाइयों को चुभीं। सहारनपुर से पं० शालिग्राम शर्मा ने एक लेख भेजा जिस में म० कर्ण के लेख का प्रतिवाद किया। इस पर कर्ण जी ने अपना तात्पर्य समझाया और अब महाशय शालिग्राम जी ने हमें पत्र लिखा है, जिस की निम्न लिखित पंक्तियां इस विवाद को समाप्त करती हैं—

"बहुत से मेरे मित्र ब्राह्मण जाति पर स० प्र० में मेरे लेख को पढ़ कर शायद मुझे किसी ख़ास जाति के पक्ष में समझ लें, इस लिए मैं मुनासिब समझता हूं कि विषय पर अपने भाव प्रगट कर दूं। मैंने जो लेख स० प्र० में ब्राह्मण जाति के पक्ष में लिखा था अगर किसी अन्य सारी की सारी जाति पर कोई दोष लगाया जाता तो अवश्य वैसा ही लेख मैं उस दोष लगाई गई जाति के पक्ष में लिखता, परन्तु कर्ण कवि जी ने बड़े शुद्ध हृदय से स्वीकार कर लिया है कि उस लेख का तात्पर्य सारी जाति से नहीं था तो फिर मेरे और कर्ण कवि जी के विचारों में कोई भेद नहीं रहता।

(२) मैंने पूर्व के लेख में पं० गणपति शर्मा अथवा स्वामी दर्शनानन्द जी का ज़िकर समाज के कार्य करने वालों में लिखा था परन्तु उन के तरीके काम से मैं सहमत कभी नहीं हुआ, इन त्रुटियों को मानता हुआ भी मैं ख़याल करता हूं कि आर्य समाज के वह हितैषी थे।"

शालिग्राम

संसार समाचार पर टिप्पणियां

धार्मिक

भारत सरकार की नींद रामायण के प्रसिद्ध कुम्भ कर्ण की नींद से कुछ कम नहीं। जब आती है, तो छुटती नहीं। और जब कहीं छूट जाय तो हाथी घोड़े सब हड़प कर जाती है। १० साल के लगभग हुए स्वामी दर्शनानन्द जी ने डाक्टर पादरी और भोंदू जाटका परस्पर कल्पित शास्त्रार्थ छापा था। अभी तक सारी शक्तियां सोई रहीं और पुस्तक की कई आवृत्तियां होगईं। इतने दिन सरकार ने पुस्तक ज़ब्त करली है। क[illegible]ै—यह बताने की कृपा नहीं की। [illegible]कार ने समझ लिया होगा कि पुस्त[illegible] भारत में शान्तिभंग की सम्भावना [illegible] तभी तो ज़ब्त किया गया है।

किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि [illegible]ैक्ट में शान्तिभंग के लिए जो व[illegible] भरा गया था—बहुत गीला था। [illegible] साल तक तो फटा नहीं—उस पुस्तक [illegible] कारण कई शान्तिभंग हुआ न[illegible] सम्भव है किसी बारूद-विज्ञान-ले[illegible] सरकार को अब सुझा दिया हो कि "[illegible] साल में वह बारूद सूख गया—अब [illegible]ने का समय समीप है।"

युक्तप्रान्त तो पं० अखिलानन्द ने सर कर लिया। बम्बई जाने पर ज्ञ[illegible] हुआ कि आप वहां भी गतवर्ष एक डेपूटे[illegible] लेकर गये थे। आप वहां लोगों से मि[illegible] और कहा कि 'मेरा घर खेत सब पानी [illegible] ह गया है—सहायता चाहिये" किस[illegible]ने कुछ दिया, किसी ने न दिया। पी[illegible]ता लगा कि ईश्वर की कृपा से आपक[illegible] सब सम्पत्ति सुरक्षित है, कोई हानि नहीं। ख़ैर—इस प्रकार बम्बई भी जीत[illegible] लिया गया। अब पंजाब की बारी है [illegible] लाहौर में रायठाकुरदत्त जी की कृपा से आप का व्याख्यान भी हो गया। किन्तु रायठाकुरदत्त जैसे बेअसूले आदमी पंजाब में कम मिलेंगे। इस लिए हम अखिलानन्द को सूचना देते हैं कि इस चारपाई में कांटे बहुत हैं, ज़रा समझ कर लेटें।

—:o:—

सहनशीलता या उदारता की भी कोई सीमा होनी चाहिए। आर्यसमाज को उदारता सीखनी चाहिए—किन्तु वे असूलापन नहीं। जो आदमी ऋषि के कहे हुए वैदिक वर्णव्यवस्था के सिद्धान्त का खम ठोक कर खण्डन करता है; ऋषि दयानन्द सन्यासी थे—जो व्यक्ति कहता फिरता है कि सन्यास का वेद में विधान ही नहीं; बीसियों क्या सैकड़ों के सामने सन्ध्या हवन आदि की हंसी उड़ा चुका है—वह भी आर्यसमाजी कहाये, और

[illegible] पर स्थान पाये क्या यह मूलाधार नहीं है। पं० अखिलानन्द ने [illegible] समाजी कहाने या आर्य समाज की [illegible] पर खड़े होने के सब अधिकार खो [illegible] हैं। जो आर्य समाज [illegible] बातों के [illegible] हुए भी पं० अखिला[illegible] को वेदी [illegible] खड़ा करता है वह [illegible] प्रान्त को [illegible]लङ्कित का[illegible]

[illegible] ओ३म् का झण्डा फहरा रहा [illegible] के प्रधान मन्त्री उपमन्त्री [illegible] और प्रेम से भजन कीर्तन [illegible] का पाठ करते हुए [illegible] उत्तम—क्या ही दिव्य [illegible] बाजार के नर नारी नगर के सुपति [illegible] वृद्धों को देखकर प्रेम के आंसू बहायेंगे, और धर्म की महिमा लोगों के हृदयों में घर कर जायगी। ये दृश्य काल्पनिक नहीं, हो चुके हैं। प्रारम्भ में आर्य समाजी नगर में वेदमन्त्र बोलने या भजन गाने से कतराते न थे। वे ओ३म् का झण्डा उठाकर नगर कीर्तन में सम्मिलित होते थे। आज यह शुभकार्य पेशावर भजनीकों ने संभाल लिया है। आर्य समाज में ऐसे आर्य भजनीकों का अभाव नहीं जो नगर कीर्तन करने के पूरे अधिकारी हैं, किन्तु अब तो उन सज्जनों को भी पेशावर गवय्ये पीछे डाल रहे [illegible] और धार्मिक प्रेम का स्थान धीरे २ [illegible] है। सहारनपुर [illegible] नगरकीर्तन बन्द कर दिया है। हम अन्यत्र मुरादाबाद समाज का प्रस्ताव देते हैं। प्रस्ताव अत्युत्तम है। यदि आर्यसभासद् नगर कीर्तन करें, इस से उत्तम और क्या हो सकता है। यह केवल सम्भवता: का प्रश्न है— यदि यह सम्भव न हो तो पेशावर भजनीकों को बुलाकर नगरकीर्तन को कृत-कार्य करने की अपेक्षा न करना अच्छा है।

—:o:—

जो बीमारी किसी मनुष्य को हर रोज़ या हर मास आती हो, और उस का इलाज़ भी हो सकता हो, और फिर भी बीमारी होती ही जाय तो समझना चाहिए, कि इलाज नहीं किया जाता-वह मनुष्य अपने कर्तव्य को पालन नहीं करता। यही दशा हमारे देश में है। ईद के अवसर पर भारत के किसी न किसी भाग में दगा होता है और अवश्य होता है। हर साल ही लोगों के एकत्र होने और पुलिस के गोलियां चलाने के [illegible] सुनने पड़ते हैं। अभी ११ अक्टूबर [illegible] से ज्ञात हुआ कि पटना ज़िले के दो ग्रामों में बकरीद पर झमेला हुआ और पुलिस ने हिन्दुओं पर गोलियां बरसाईं। यह एक निश्चित रोग है जो हर अवसर पर उपस्थित होता है और होता भी धार्मिक जोश के नाम पर है। राजा और प्रजा दोनों को ही ऐसी अशान्ति से खेद होता है—तब क्यों नहीं इस का इलाज होता। यदि राज्य की ओर से निष्पक्षपात यत्न हो, और प्रजा भी ज़रा धैर्य पूर्वक विचार करे तो ये धार्मिक झगड़े समाप्त हो सकते हैं।

—:o:—

गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी के नवीन ब्रह्मचारियों के प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र माघ सुदी १४ सम्वत् १९७३ तदनुसार ८ दिसम्बर सन् १९१६ पर्य्यन्त कार्य्यालय में पहुंच जाना चाहिये। इस तिथि के पश्चात् जो प्रार्थना पत्र प्राप्त होंगे उन पर विचार नहीं किया जा सकेगा।

प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र के फार्म तथा नियमावली गुरुकुल कार्य्यालय, पोस्ट श्यामपुर ज़िला बिजनौर से लिख कर मंगा लेवें।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय

—:o:—

राजनीतिक

ईद के दिनों ने भारत के कई भागों में राजनीतिक सभा समितियों की हलचल देखी। यहां पास ही झांसी में, लीडर के उठते हुए सम्पादक श्रीयुत चिन्तामणि जी ने सभापति के आसन से राजनीतिक खर्रा पढ़ कर सुनाया। खर्रा अंग्रेज़ी था—उस का अनुवाद हमें भी मिला है। इतना ही बहुत है। भाषानुवाद छपा तो सही। नहीं तो हमारे नेता लोग तो अपने अंग्रेज़ी भाषणों द्वारा ब्रिटिश सरकार को ही राजनीति की शिक्षा देने में कृतकार्यता समझते हैं। बेचारे 'अंग्रेज़ी भाषा से अनभिज्ञ' लोगों को राजनीति के पवित्र मन्त्रों अधिकारी नहीं समझते।

—:o:—

यह परीक्षण अनेक देशों में किया गया और फ़ल हुआ। दूसरे देश से मांगी हुई सभ्यता, भाषा, या नीति से देशों और जातियों ने उठना चाहा, और मुंह की खाई। भिखारी, और मानसिक दासता से जकड़े हुए देशों ने कभी उन्नति नहीं की। गिर पड़ कर अन्त को सभी ऐसे देशों के नेताओं ने आत्मावलम्ब और आत्मीयता का पाठ सीखा। भारत की राजनीतिक किश्ती के कर्णधार भी देख चुके हैं, और अच्छी प्रकार देख चुके हैं कि इन मांगे हुए चप्पुओं से नय्या पार न होगी—इस के पार करने के लिये उस पक्की लकड़ी के चप्पुओं की आवश्यकता है, जो स्वदेश में ही होती है। देखा है—पर देख कर आंखें बन्द करली हैं। जब तक विचारों की और भाषा की दासता से हम छुटकारा नहीं पाते तब तक स्वाधीनता और स्वराज्य के सपने व्यर्थ हैं।

—:o:—

इस वार कांग्रेस के सभापति बङ्गाल के प्रसिद्ध मिस्टर मजुमदार होंगे। लखनऊ में निःसन्देह एक निर्भीकता युक्त साहसी व्याख्यान सुनने में आयगा। इस में भी सन्देह नहीं कि मि० मजूमदार पुराने सेवक हैं। कांग्रेस के जगत् में आप का पुराना नाम है। इस लिये यह आदर योग्य ही हुआ है। किन्तु यह समय विचित्र है। इस समय एक ऐसे मस्तिष्क की आवश्यकता है जो भारत में उठने वाली नई समस्याओं को हल करने की योग्यता रखता हो, युद्ध से भारत वासियों को जो आशा रखनी चाहिये, उस की ठीक २ व्याख्या कर सके; सरकार यदि टलना चाहे, तो उसे टलने न दे। जो राजनीतिक प्रश्न इस समय उत्पन्न हो रहा है, उसे ऐन ठीक रूप में घड़ कर भारत वासियों के सन्मुख रखने वाला कार्य कर्ता ही भारत का भावी नेता हो

सकता है। ऐसा कोई सज्जन ही अब कांग्रेस का कर्णधार होना चाहिये। सालों से घुटे घुटाये ठण्डे २ नीति मन्त्रों का जपव्या अब न चाहिये—अब तो कोई नया ही साहसिक चाहिये जो ठण्डा दिमाग़ रखता हुआ भी साहस का मारू राग सुना कर भारत वासियों को उन्नति के रास्ते पर ले जा सके। देखें, श्रीयुत मजुमदार इस कसौटी पर ठीक बैठते हैं या नहीं?

—:०:—

बड़ी लेजिस्लेटिव कौंसिल के सभासदों ने (तीन को छोड़ कर) वायसराय के पास एक निवेदन पत्र भेजा है, जिस में उन सुधारों का वर्णन किया है जो युद्ध के पश्चात् भारत वर्ष के शासन में अवश्य करने चाहियें। यह अच्छा है। किन्तु जनता को भी पता लगाना चाहिये कि उन के नेता क्या सोच रहे हैं? हमारी सम्मति में कांग्रेस की ओर से पुराने और समझदार कुछ एक राजनीतिक नेताओं की एक कमेटी बननी चाहिये, जो वर्तमान राज नीतिक समस्या पर विचार करके आवश्यक सुधारों के विषय में और भविष्य नीति के विषय में अपने प्रस्ताव प्रकाशित करदे—ताकि कम से कम कांग्रिसिये राज नीतिक कार्य कर्ता तो एक स्वर हो कर कुछ कह सकें। जिनको कांग्रस की राजनीति में विश्वास नहीं उनका तो दूरवर्ती किन्तु ऊंचा उद्देश्य सामने है ही।

—:०:—

इंग्लैण्ड की पार्लिमेण्ट में कुछ मनोरंजक प्रश्नोत्तर हुए हैं। मिस्टर प्रिंगेल ने पूछा कि "यदि सरकार ने यह निश्चय कर लिया है कि आयर्लैण्डको स्वराज्य देने का समय आ गया है तो क्या उन्हें नहीं चाहिये कि वे वहां से मार्शल—लाहटा कर साधारण राज नियम चलादें" इसका उत्तर मुख्य सचिव मि० एस्क्विथ ने दिया। आपने कहा—'मैं इस प्रश्न का उत्तर देता हूं। आयर्लैण्ड में मार्शल ला किसी वास्तविक रूप में विद्यमान नहीं है। आयर्लैण्ड का शासन वैसा ही हो रहा है—जैसा इंग्लैण्ड का" मुख्य सचिव का यह कथन कुछ अत्युक्ति पूर्ण है। आयर्लैण्ड में सब समाचार पत्रों को सूचना दी गई है कि वे सरकार की आलोचना में शान्ति जनक लेख न छापें ऐसी सूचना इंग्लैण्ड के सब पत्रों को नहीं दी गई। तो भी मुख्य सचिव कहते हैं—ठीक ही होगा। पर एक बात ज़रूरी है। यह भी कहा जासकता है कि भारत का भी इंग्लैण्ड जैसा ही शासन होता है। राज नियम एकसे हैं। परन्तु प्रश्न तो उन नियमों के प्रयोग का है। जिस प्रकार के नोट पर भारत वर्ष में १० हज़ार की ज़मानत जड़ी जाती है, वैसे ही लेख पर इंग्लैण्ड में काग़ज़ भी नहीं हिलता। नियम वही है—भेद प्रयोग में है।

—:०:—

उर्दूवाले योरप के बल्गेरिया रूमानिया आदि छोटे २ देशों को बलकान—राज्य के नाम से पुकारते हैं, किन्तु भाषा पत्र उन्हें 'बालकन' कर के लिखते हैं। उच्चारण कोई हो—हमारी राय में भाषा में इन्हें बालक—राज्य या बालकन—राज्य नाम से लिखना चाहिये। योरप की जवान जातियों में उन छोटे २ देशों की बालकों वाली ही दशा है। ये आपस में लड़ते झगड़ते भी बालकों की तरह ही है—युवाओं की तरह नहीं। इस लिये इन्हें 'योरप के बालक राज्य' ही लिखना चाहिये।

—:०:—

प्रयाग का लीडर अपने १२ अक्टूबर के पर्चे में शिकायत करता है कि उसके कार्यालय में इंग्लैण्ड का 'नेशन' पत्र पहले तो बहुत दिनों तक आया ही नहीं—और जब आया भी तो उस का कुछ भाग फटा हुआ था। लीडर का यह पहला अनुभव हुआ है, इस लिये उसे आश्चर्य हुआ होगा। यहां तो ऐसे बीसियों दृष्टान्त देखे बैठे हैं। हमारे पास अमरीका का 'लिटरेरी डायजस्ट' पत्र आता था, महीनों तक उसके कभी दो कभी डेढ़ पर्चे फटे होते थे। इधर वैदिक मैगज़ीन के परिवर्तन में कई विदेशी पत्र आते हैं। कभी एक दृष्ट कभी एक लेख और कभी अङ्क का अंक ही सेन्सर को [illegible] देने योग्य हो जाता है। सेन्सर की महिमा ही ऐसी है। इतना अवश्य प्रतीत होता है कि सेन्सर के संचालकगण मनोविज्ञान में बहुत निपुण नहीं हैं, अन्यथा उन्हें ज्ञात होता कि कभी २ एक बात जानलेने की अपेक्षा उसका न जान लेना अधिक [illegible] है। यदि किसी पत्र में से कोई आपत्ति विषयक लेख निकाल दिया गया और पाठकों को ज्ञात हो गया कि लेख आपत्ति विषयक है, [illegible] अपेक्षा बहुत [illegible] चित्र अवश्य खेंच लेंगे।

—:०:—

मुस्लिम लीग का अधिवेशन भी [illegible] ग्रेस के साथ होगा। [illegible] सभापति जिन्ना होंगे। मि० जिन्ना का सभापति बनना राष्ट्रीयता के विरुद्ध का सूचक है। मि० हक और जिन्ना राष्ट्रीय दल के नेता हैं—उनकी अध्यक्षता में जो लीग होगी, वह राष्ट्रीयता का ध्वंस नहीं कर सकती। कांग्रेस और लीग पास २ आयें, यह तो अच्छा है, परन्तु ऐसा न हो कि मिलकर [illegible] सभायें केवल शब्दों का आडम्बर दुगना करदें, और कोई भेद न आ[illegible]

—:०:—

आर्यगज़ट तथा जीवनतत्व

पंजाब में समाचार पत्रों की सरगर्मी कम नहीं हो [illegible]। [illegible] झगड़ा ज्यों त्यों [illegible] तय हुआ था, अब आर्य गज़ट और जीवनतत्व का नया झगड़ा उठा है। आर्य गज़ट ने देवसमाज के संस्थापक श्री सत्यानन्द अग्निहोत्री की कुछ पोल खोली, उसके उत्तर में देव समाजी पत्र ऋषिदयानन्द और आर्यसमाज पर गोलाबारूद फेंकने के लिये उतारू हुआ है। इधर सिख सूरमा 'लायल गज़ट' एक ओर तो आर्य गज़ट के सम्पादक म० खुशालचन्द्र की प्रशंसा के गीत गारहा है और दूसरी ओर आर्य गज़ट को ही इस नये झगड़े के लिये उत्तर दाता ठहराता है। इस मामले पर भी कुछ दिन बाज़ार गर्म रहेगा।

—:०:—

CC0 Gu[illegible]

प्रचारक पुस्तक भण्डार
की नई पुस्तकें
आर्यधर्म ग्रन्थमाला

श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा लिखित
आर्यों की नित्य-कर्मपद्धति —मूल्य =)

इस पुस्तिका में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्य्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रतः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिए यह सब बड़ी उत्तमता से दरशाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आंचारानाचार और भक्ष्या-भक्ष्य—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है कि लुआ-लूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किसके साथ खाना चाहिए, किसके घर खाना चाहिये— इन सब प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तिका में भली भांती आगया है।

मातृ भाषा का उद्धार- मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य हैं? आर्य मात्र का इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
का
संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन

कलकत्ते का प्रसिद्ध माडर्न रिव्यू पत्र इस पुस्तक के बारे में लिखता है—"इस पुस्तक में संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक इति वृत्त दिया गया है और भारतवर्ष के इतिहास के भिन्न २ समयों के प्रभाव से उस में शाब्दिक तथा अन्य जो भेद आते रहे उसका वर्णन किया गया है। घटनाओं की परीक्षा सामान्यतया निष्पक्षपात है और हम लेखक महाशय के दिये घटनाओं के मुख्य भाग से सहमत हैं। भाषा लेखक के अन्य ग्रन्थों से पाई हुई कीर्ति के अनुकूल है। छपाई और रंग ढंग अच्छे हैं।"

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है और आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्मप्रचारक

हमारी वर्तमान दशा

दोहा

(१)

हाय यशोगिरि से गिरे, सुकवि कर्ण हम आज!
कुछ कहते बनता नहीं, पड़ी बुद्धि पर गाज!॥

(रोला छन्द)

(१)

पूर्व दशा का हाय? हमें कुछ ज्ञान नहीं है;
हा! क्या से क्या हुए, नेक उर ध्यान नहीं है॥
शोचनीय अब हाय! दशा हो रही हमारी;
करते ही न विचार, विसारी सुध बुध सारी॥

(२)

ऊंचे होकर नीच हमीं अब कहलाते हैं;
मिटा मान, सर्वत्र ठोकरें ही खाते हैं।
स्वावलम्ब, पौरुष्य, ऐक्य भी खोया हमने;
घेर लिए हम हाय! अविद्या रूपी तमने॥

(३)

बिगड़ गया समुदाय, न मिल कर रहते हैं हम;
हा! भारी अपमान, आर्य हो, सहते हैं हम।
फूट खारही हमें, सुमति का पता नहीं है,
ढङ्ग बिगड़ ही गया, न पाना ठौर कहीं है?॥

(४)

सभ्य जगत के बीच, हास्य हो रहा हमारा!
हम ने अब तो भेष दीनता का है, धारा।
रहे न हम स्वाधीन हाय! सर्वस्व लिनाया;
उन्नति खोकर ह्रास, हमीं ने तो है पाया?॥

—"कर्ण"

लावनी लंगड़ी

इत्तफ़ाक़ हो सारे देश में
मैं सब ही से लड़ता रहूं।
निर्भय हो कर सारे विचरें
पर मैं सब से लड़ता रहूं॥ १॥
विद्या फैले सारे देश मे
मैं संतान पढ़ाऊं नहीं।
जगे जगे गुरुकुल बन जावें
मैं गुरुकुल में जाऊं नहीं॥ २॥
आर्य जाति सब उठे नींद से
मैं उस को उकसाऊं नहीं।
खाना पीना एक हो सब का
मैं तो किसी का खाऊं नहीं॥ ३॥
भंग शराब और गांजा सुलफा
इन का कर दो सत्या नाश
लुप कर मैं तो पिऊं बरांडी
बोतल रक्खूं अपने पास॥ ४॥
प्रात काल सब उठें साहसी
बनै धर्म के सब प्यारे!
आलसी होकर पड़ा रहूं मैं
ईश्वर सब कारज सारे॥ ५॥
ब्रह्मचर्य का पालन करके
रोग शोक सब दूर करो।
मैं अध्याशी कभी न छोडूं
कोई जिओ चाहे कोई मरो॥ ६॥
जाति देश सब शिक्षित होवें
और सीखें सब कारिगरी।
सिधुपार नहीं जाऊं कभी मैं
धर्मभ्रष्ट हो सरासरी॥ ७॥
सत् वक्ता हो जावें सारे
मिथ्या बोलें कभी नहीं।
झूट कपट छल मैं नहीं छोडूं
नष्ट होय चाहे सारी मही॥ ८॥
देश जाती का दुःख सुनाकर
आंसू मैं भी बहाऊंगा।
खुद उपाय मैं करूं न कुछ भी
औरों को बतलाऊंगा॥ ९॥
चन्द्र भानु कहै ऐसे वक्ता
जिस देश जाति में होते हैं
देश जाति की किश्ती डूबोकर
स्वयं डूबकर रोते हैं॥ १०॥

भवदीय
चन्द्रभानु आर्य उपदेशक

"गुरुकुलों का नियन्त्रण"

उपरोक्त विषय पर दो लेख आप के पत्र में छप चुके हैं जिन में पहिला लेख कुंवर हरप्रसादसिंह जी की ओर से और दूसरा महाशय बालकृष्ण जी की ओर से प्रकाशित हुआ है। इसी विषय पर चिर काल से मेरे भी चन्द विचार हैं जिन का इस समय प्रकाशित करना उचित समझता हूं।

दोनों महाशय गुरुकुल कांगड़ी को सार्वदेशिक सभा की विद्या सभा के आधीन करने और गुरुकुल कांगड़ी को ही विश्वविद्यालय बनाये रखने में सहमत हैं, अब विचारणीय बात यह है कि किस तरह गुरुकुल कांगड़ी को सार्वदेशिक अथवा विद्या सभा के आधीन किया जावे, क्योंकि जिन लोगों ने दिन और रात परिश्रम करके और अनेक प्रकार के दुःख सहन करके गुरुकुल कांगड़ी को मौजूदा अवस्था तक पहुंचाया है और जो कि इसे कृतकार्यता की हदतक पहुंचाने में दिन और रात लगे हुए हैं जिस प्रान्त के लोगों ने तन मन और धन इसी के निमित्त लगा रखा हो तो आया बिना किन्हीं विशेष अधिकारों के दिये केवल यह बात ध्यान में रखते हुए कि आर्यसमाज का धर्म सार्वभौमिक है हम आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब से यह आशा रक्खें कि वह गुरुकुल कांगड़ी के सुतल्लक सब जायदाद को

सार्वदेशिक सभा के आधीन करदे कहां तक ठीक और न्याय युक्त हो सकता है। अगर सार्वभौमिक धर्मका केवल यही अर्थ हो कि आर्यसमाज का कुल धन एक स्थान में जमा रहे तो भिन्न २ प्रतिनिधि सभाओं में अलहदा २ कोषाध्यक्षों की क्या आवश्यकता है कुल का कुल धन सब प्रतिनिधि सभाओं का चाहे किसीभी फण्ड का क्योंन हो सार्वदेशिक सभा के आधीन कर दिया जावे। अगर ऐसा होना सम्भव हो तो निःसन्देह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को महाशय बालकृष्ण जी की बात मान लेनी चाहिये।

दूसरी बात महाशय बालकृष्ण जी ने लिखी है कि गुरुकुल कांगड़ी में संयुक्तप्रान्त आदि का रुपया अधिक लगा है। मालूम नहीं यह ग़लत बात महाशय जी ने कैसे लिखदी। संयुक्तप्रान्तादि से आधे से अधिक तो एक ओर रहा अगर इस आधे का तीसरा व चौथा अंश भी धन आया हो तो मुमकिन है कि उक्त बात सचाई के समीप हो, मैं तो बहुधा इस बात को विचारा करता हूं कि जब गुरुकुल कांगड़ी में पंजाब और संयुक्तप्रान्त के विद्यार्थियों की गणना लगभग बराबर रहती है और जबकि दोनों प्रान्त एक सा लाभ गुरुकुल कांगड़ी से उठा रहे हैं तो क्या कारण है कि संयुक्तप्रान्त से बहुत कम धन कांगड़ी गुरुकुल को प्राप्त होता है। मुख्य कारण तो इस का जो मैंने समझा है वह और ही है। संयुक्त प्रान्तीय आर्य-प्रतिनिधि सभा के १९१४ से १५ ईस्वी तक के वार्षिक वृत्तान्त को देखिए। उस में आप देखेंगे कि प्रतिनिधि सभा और आर्यसमाज के अधिकारियों की गणना गुरुकुल वृन्दावन को ५००) रुपये अथवा इस से अधिक देने वालों की केवल तीन है जो तीनों सज्जन भिन्न २ आर्यसमाजों के प्रधान हैं। उनका भी १५००) रुपये में से प्राप्त धन केवल ६९०) दर्शाया गया है इसके अतिरिक्त अन्य समस्त रईस आदि सज्जनों की ओर से जो धन इस मद में प्राप्त होना लिखा है उसका कुल जोड़ ४५२०) होता है। यह कुल रक़म अगर मिलादी जावे तो कुल जोड़ ५१७०) हुआ अथवा इतना धन इस गुरुकुल वृन्दावन को इस मद में गत दस बारह वर्षों में प्राप्त हुआ जब से कि गुरुकुल का आरम्भ हुआ है जब ऐसी दशा गुरुकुल वृन्दावन की धन के बारे में हो तो महाशय बालकृष्ण जी का यह लिखना कि गुरुकुल कांगड़ी को आधे से अधिक धन संयुक्तप्रान्त आदि से प्राप्त हुआ है कैसे सत्य माना जा सकता है। जिस संस्था के लिये एक पत्र कई उपदेशक काम कर रहे हों और साथ ही विशेष छपी हुई अपीलों द्वारा अथवा डेपूटेशनों द्वारा धन एकत्र किया जारहा हो और उसका फल उपरोक्त लिखा हो तो अन्य संस्थाओं के लिये जिन के प्रेमी चन्द एक भद्र पुरुष होंगे दान में क्या कुछ प्राप्त हो सकता है—अगर अब दूसरी ओर ध्यान देंगे तो आप को इसी वार्षिक वृत्तान्त के ३३ से ३६ सफे तक जहां ब्रह्मचारियों के नाम दिये हैं विदित हो-जावेगा कि १०८ ब्रह्मचारियों में से केवल एक ब्रह्मचारी पंजाब प्रान्त का गुरुकुल वृन्दावन में विद्याध्ययन कर रहा है और एक सिंध प्रान्त का। हालांकि गुरुकुल कांगड़ी में दोनों प्रान्तों के ब्रह्मचारियों की संख्या लगभग बराबर निकलेगी। इन बातों का ध्यान रखते हुए अगर हम कहें कि गुरुकुल कांगड़ी को कुछ अधिक सहायता इस प्रान्त से नहीं मिल रही तो बेजा न होगा। बहुत से संकुचित हृदय के सज्जन जो कि अकसर पत्रों द्वारा अथवा मौखिक लोगों के दिलों को प्रान्तिक भाव में घसीट कर गुरुकुल कांगड़ी के विरुद्ध करते रहते हैं और अकसर यह लिख देते हैं कि इस प्रान्त से हज़ारों रुपया पंजाब की संस्थाओं को जाता है उनको ऊपर की बातें ध्यान पूर्वक पढ़नी चाहियें। इस प्रसंग में अगर आप महाविद्यालय ज्वालापुर की १९७१ से १९७२ रिपोर्ट के सफा १२ से १४ को देखेंगे तो आपको विदित होगा कि जहां सारे संयुक्तप्रान्त से महाविद्यालय ज्वालापुर को १५८५७) दान से प्राप्त होने लिखे हैं—जिनमें इस के प्रवर्त्तक बाबू सीताराम जी की १७५००) की प्रदत्त पूंजी भी शामिल कर दी गई है वहां दूसरी ओर पंजाब प्रान्त के एक शहर अमृतसर से ही २९०००) यहाँ विद्यालय ज्वाला पुर को दान में प्राप्त हुआ है और अगर आप इसी रिपोर्ट के सफ़ा १९–२९ तक देख जावेंगे तो आप को पता चलेगा कि ७ ब्रह्मचारियों में से केवल तीन पंजाब प्रान्त के हैं। इस लिए धार्मिक पुरुषों को सर्वदा उचित है कि किसी संस्था से उन के ख्याल में अधिक लाभ प्राप्त हो रहा हो अथवा होने की आशा हो बिना किसी प्रान्तिक भाव को लिए हुए उस की तन मन धन से ही यथा योग्य सहायता करते रहें अब मैं अपना तुच्छ विचार उपरोक्त सब बातों का ध्यान रखता हुआ वास्तविक विषय पर पेश करता हूं। वह यह कि जब गुरुकुल कांगड़ी ही विश्वविद्यालय बनाने जाने के योग्य समझा जाता है और लगभग सब प्रान्तों के ब्रह्मचारी उस में शामिल हैं बल्के अन्य दूरस्थ देशों के भी कई ब्रह्मचारी उस में विद्याध्ययन कर रहे हैं तो मेरे ख्याल में यह ठीक होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुकुल कांगड़ी को सार्वदेशिक सभा के आधीन करदे जिस की विद्या सभा में हर एक प्रान्त से उसी हिसाब से विद्वान् पुरुष शामिल कीये जावें जिस कदर कि धन उन २ प्रान्तों की ओर से विश्वविद्यालय कांगड़ी को प्राप्त हुआ हो अथवा आयन्दा होता रहे। अगर ऐसा हो जाये तो आशा हो सक्ती है कि बजाये प्रान्त २ में जुदा २ विश्वविद्यालय खड़े करने के जिन का चलना क्या धन के ख्याल से क्या उत्तम विद्वानों अथवा कार्यकर्त्ताओं के ख्याल से अति कठिन ही नहीं बल्के नामुमकिन सा प्रतीत होता है, केवल इस समय सब प्रान्तों के भाई मिल कर कांगड़ी विश्वविद्यालय को कृतकार्यता की हद्द तक पहुंचा दें और जब एक विश्वविद्यालय आदर्श तक पहुंच जावे तो दूसरा और तीसरा भी खड़ा कर दिया जा सक्ता है क्योंकि अधूरा काम करने कि निसबत जिस में न कामयाबी हो और अपयश प्राप्त हो बेहतर होता है कि उसे न ही किया जावे और "अपनी २ ढपली और अपना २ राग" की कहावत जो कि कुंवर हरसहायसिंह जी के लेखानुसार सदा हानिकारक होती है उसका ध्यान रखते हुए एक संगठन के आधीन हो कर गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी को एक आदर्श विश्व विद्यालय बना दिया जावे।

शालिग्राम
मन्त्री आर्यसमाज
सहारनपुर

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

(गतांक से आगे)

दरवान के जाने पर शाही महलों के प्रबन्धकर्त्ता मंजूरअली ने प्रवेश किया। मंजूर अली इन दिनों शाह आलम का मंज़ूरे नज़र था। उस पर बादशाह की विशेष कृपा थी। अपनी नौकरी के सिवा कभी २ बादशाह के दिल बहलाने का काम भी मंज़ूरअली को करना पड़ता था। इस कामों में वह शाह आलम के एजंट का काम भी करदेता था। प्रतीक्षा में समय कठिनता से गुज़रता हुआ देख कर ही शाहआलम ने उसे बुलवा भेजा था। किन्तु कुछ शराब के आधे २ नशे के कारण, और कुछ दूसरी ओर दिल लगा हुआ होने के कारण उसे यह बात भूल गई, और मंजूरअली के याद दिलाने पर याद आई।

मंज़ूरअली ने आकर लम्बी सलाम की और दूरपड़ी हुई एक सादी चौकी पर बैठ कर आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगा। शाहआलम पर इस समय नशा और आलस्य का राज्य हो रहा था-पर आंख खुली हुई और दरवाजे पर गड़ी हुई थी। मंज़ूरअली को आते देखकर उसने कुछ सुस्त से शब्दों में कहा—'मंजूरअली! अभी तक गुलामक़ादिर नहीं आया। तुम हमेशा कहते हो कि वह वक्त पर काम करदेता है—देर नहीं लगाता। अब न जाने हमें कब तक उसकी राह देखनी पड़ेगी।'

मंजूरअली ने बड़े नम्र शब्दों में कहा "हुजूर! यह यक़ीन जानिये कि गुलामक़ादिर ज़रूर आपका काम करके लौटेगा। वह बिना काम किये लौटने वाला नहीं है। मुझे यक़ीन है कि अब वह आता ही होगा" इसके उत्तर में शाहआलम कुछ गुर्राया जो मंजूरअली ने भी नहीं सुना। फिर सन्नाटा हो गया। कुछ देर ऐसी ही दशा रही। दोनों चुप चाप दरवाज़े की ओर ताकते रहे। कोई भी कुछ न बोला। दोनों ही अपने २ विचार में मस्त थे।

इतने में दरवाज़े पर कई पैरों की आहट सुनाई दी। शाहआलम चौंक कर उठा, और मंजूरअली उठ कर दरवाज़े की ओर को चला। कोई आधा मिनट तक दरवाज़े पर बात चीत सी सुनाई दी और फिर दरबान ने सलाम करके निवेदन किया कि 'जहांपनाह! राजपूत सर्दार कल्याण सिंह दरवाज़े पर हाज़िर है।'

शाहआलम के मुख पर और भी अधिक खिफलाहट के चिन्ह दिखाई दिये उसने कहा—'कल्याणसिंह? अरेतू क्या बकता है, क्यर गुलामक़ादिर मरगया जो कल्याणसिंह दरवाज़े पर आया है। जाओ गुलामक़ादिर को जल्द अन्दर भेजो। और हां—क्या दरवाज़े पर कोई डोली भी है?' दरवान ने झुक कर सूचना दी कि 'हां—एक डोली भी दरवाज़े पर खड़ी है' और गुलामक़ादिर को बुलाने बाहिर चला गया। इधर डोली होना सुन कर शाहआलम ने मुस्करा कर मंजूर अली से आंखें मिलाईं और उसके भी होठों पर सन्तोष की मुसक्यान दिखाई दी।

प्रतीक्षा का एक मिनिट भी बीता दरवान ने दरवाज़े में प्रवेश करके सलाम की और निवेदन किया कि 'हुज़ूर! कल्याणसिंह कहता है कि गुलामक़ादिर कैदी है—वह भी हुज़ूर के सामने पेश होगा। पहले वही हाज़िर होने का प्रार्थी है?'

गुलामक़ादिर कैदी—यह बात शाहआलम के समझ में न आई। मंजूरअली और भी अधिक अचम्भे में हुआ। यह क्या झमेला है? दोनों ने आश्चर्य भरे नेत्रों से एक दूसरे की ओर देखा। दोनों ने आंखों ही आंखों से सलाह करली निश्चय करने में क्षण भर भी न लगा। शाहआलम ने आज्ञा सूचक स्वर में कहा—"अच्छा! कल्याणसिंह को जल्द भेजो।"

यहां पर इतना और सूचित करदेना अनावश्यक न होगा कि मंजूरअली और गुलामक़ादि का परस्पर गहरा सम्बन्ध था। गुलामक़ादिर वस्तुतः पठान सर्दार ज़ाबिताख़ा का पुत्र था। ज़ाबिताख़ा अपने समय में बड़ा साहसिक सर्दार गिना जाता था और मुग़ल सम्राज्य का एक स्तम्भ और उस का पक्का दुश्मन दोनों ही रूपों में रह कर नाम पाचुका था। १७७२ में जब मुग़ल बादशाह ने मरहट्टों की सहायता से उसका पीछा किया तब वह पत्थरगढ़ और सूरवतील के किलों से निकाला जान कर अपने ख़ास दुर्ग घोष गढ़ में पहुंचा, किन्तु वहां भी अपने आपको सुरक्षित न समझ कर जाटों की शरण में भाग गया था। उस समय उसका परिवार मुग़ल बादशाह के हाथों में पड़ा। उस परिबार में बालक गुलामकादिर भी था जो बादशोह के हरम में गुलाम बनाया गया। कुछ देर तक इसी पद पर काम करके क़ादिर सेवा से जुदा हो गया क्योंकि उसका पिता मरहट्टों की सहायता से बादशाह का ख़ास वज़ीर बनाया गया। मुग़ल साम्राज्य की उस समय की गति विचित्र थी। जो आज शत्रु था, कल वही सिर और समझा जाता था—और जो आज बादशह का ख़ास कृपा पात्र होता था, उसे कल दिल्ली में सिर छुपाने को भी स्थान न मिलता था, जो ज़ाबिताख़ां एक साल पूर्व बादशाह का शत्रु था, वही एक साल पीछे मुख्य वज़ीर हो गया।

[शेष फिर]

प्रश्न

लुई कौहनी की किताब का हिन्दी अनुवाद कहां से मिल सकता है यह पुस्तक आप के यहां समालोचनार्थ आई होगी इस की नाम आंगल भाषा में "New Science of Healing" है— पहिला पत्र मकान नं १३७ कूची लालमन दिल्लीदवी १ जे से लिखा गया है— परन्तु यह मकान अब आज कल में ही परिवर्तन कर दिया है अब उत्तर निम्न पते पर देने पर की कृपा करें—

आप का आज्ञाकारी
शिवप्रसाद
म० नं० २७५
Esplonade Road
Delhi

तिवारी महाशय का चैलेंज

गत सप्ताह के सद्धर्मप्रचारक में एक तिवारी (तीन वेद के ज्ञाता ?) महाशय ने हमको चैलेंज देकर, बड़ी हिम्मत का काम किया है ? क्या खूब।

हम जैसा विज्ञानकार शङ्कर महाकाव्य के समझने और अर्थ लगाने की योग्यता लाये कहां से ? तुक्कड़ जो ठहरे ?

आप कोई शंकर महाकाव्य के अच्छे रसिक मालूम होते हैं। तभी तो आपने हमारे लिये चैलेंज दिया है न ? भला इस बहादुरी का भी कहीं ठिकाना है ? धन्य है तिवारी जी। हमारी समझ में तो आपने इस विषय में व्यर्थ टांग अड़ाई है ?

कवि शंकर जी के काव्य में कोई दोष नहीं, इनका सारा ही काव्य नीचे से ऊपर तक निर्दोष है, ऐसा आप मानिए?

हमने कवि शंकर जी के काव्य में जो जो दोष दिखाये हैं, उन उन का आप निराकरण करते, जिससे साहित्य विषय में आपकी योग्यता भी कुछ मालूम हो जाती।

हमारी समझ में आप क्षमा मांगते हुए, अपने चैलेंज को वापस लेलें। आप में हम को "आलोचनात्मक" लेख पढ़ने की योग्यता प्रतीत नहीं होती। हां, यदि आपको पक्षपात से ही काम लेना है, तो बात दूसरी है। इन्सान को इंसाफ़ पसन्द होना चाहिए, जातीय पक्षपात को तिलांजलि देनी चाहिए।

विवाद बढ़ाने से हमें मतलब नहीं। कवि शङ्कर जी से ही हमें आप इतना कहलवादें कि उन के काव्य में जो हमने दोष दिखाये हैं, वे ठीक नहीं, चलो छुट्टी हुई ? हम ऐसा ही मानलेंगे।

आप जिन जिन को साहित्य वेत्ता समझ रहे हैं, कृपा कर उन उन के नामों को भी प्रकाशित कर देते। कवि शंकर जी की दृष्टि में तो न कोई कवि है, न कोई साहित्य वेत्ता। हमारा यह कथन कवि जी के "कविताक्रन्दन" से पुष्ट होता है?

दो तीन वर्ष हुए, मर्य्यादा में, किसी महाशय ने कवि शंकर जी की कविता में, अनेक दोष दिखलाए थे। हमने तो वैसे दोष दिखलाये भी नहीं अस्तु।

रवनीत
"कर्ण"

नगर कीर्तन

श्रीमान् सम्पादक जी नमस्ते !

समाज के वार्षिकोत्सव पर प्रतिवर्ष नगर कीर्तन के हेतु कई भजन मंडलियों को बुलाने से अधिक व्यय हो जाता था और उससे कुछ विशेष लाभ होता नहीं था इस लिये इस समाज का कई वर्षों से यह विचार था कि नगर कीर्तन इस रीति से किया जावे जिस में वृथा अधिक व्यय न हो और लोगों का उत्साह बढ़े। इस विचार की पूर्त्ति के लिए इस समाज ने अपनी अन्तरङ्ग सभा की बैठक ता० २७-९-१६ में एक प्रस्ताव पास किया है वह आपकी सेवा में इस हेतु प्रेरित किया जाता है कि आप उसे कृपा कर अपने पत्र में स्थान दीजिये। इस समाज का वार्षिकोत्सव ता० २६,२७ २८ अक्टूबर को होगा।

प्रस्ताव

नगर कीर्त्तन सहारनपुर के सम्बन्ध में जो लेख सद्धर्मप्रचारक ता० २३ सन् १६ में पृष्ठ ६ पर छपा है पढ़ा गया वादानुवाद के पश्चात् सर्व सम्मति से निश्चित हुआ कि इस वर्ष जिन दो भजनीकों ने आना स्वीकार कर लिया है उन्हीं को केवल बुलाया जावे और शेष जिनसे पत्र व्यवहार हो रहा है, उनको इन्कार लिख दिया जावे और जैसा कि इस समाज का ३ वर्ष से नगर कीर्त्तन के संशोधन का विचार था उसके अनुसार यह निश्चित किया जाता है कि सभासद गण स्वयं भजन गाते हुये नगर कीर्त्तन किया करें। यह समाज श्रीमती अन्तरङ्ग सभा आर्य्यसमाज सहारनपुर के इस निश्चय से कि नगर कीर्त्तन न किया जावे सहमत नहीं है बल्कि उनको यह परामर्श देती है कि उक्तसमाज कृपया अपने प्रस्ताव पर पुनः विचार करें।

और चूंकि नगर कीर्त्तन में भजन मण्डलियों का बुलाना उनका अधिक व्यय उठाना समाजों के लिये हितकर नहीं है अतएव उपरोक्त प्रस्ताव सामाजिक पत्रों में अन्य समाजों की सूचनार्थ प्रकाशित कराया जावे।

आपका:—
बाबूराम उपमन्त्री आर्यसमाज
मण्डी (मुरादाबाद)

आवश्यक निवेदन !!

२७ भाद्रपद ७२ को ३०१ पुस्तकें तथा २६ कार्त्तिक ७३ को १४ पुस्तकें पुरुषार्थ निधि की गुरुकुल की सहायता में धन जमा करने को म० बालकृष्ण जी मन्त्री संरक्षक सभा को यहां से भेजा थीं जिन का भाद्रपद ७३ के अन्त तक धन सहित कार्य्यालय में पहुंच जाना आवश्यक थी परन्तु अब तक बहुत सी पुस्तकें नहीं आई हैं। उक्त मन्त्री जी के लेख से ज्ञात हुआ है कि वह सब पुस्तकें संरक्षक महाशयों के पास भेजी जा चुकीं। अतः जिन महाशयों के पास निम्नलिखित संख्या की पुस्तकें हैं। वह धन सहित शीघ्र गुरुकुल कार्य्यालय में लौटाने की कृपा करें अथवा पुस्तकें ही भेज दी जावें। सुब्याधिष्ठाता

संख्या १ से ७, ९ से १३, १७ से २५, २७, से २८, ३० से ४३, ४५ से ५२, ५४ से ५७, ५९, ६१, से ६७, ६९, ७१, ७३, से ७६, ७८, ७९, ८१ से ८४, ८७ से ९१, ९३ से ९५, ९७ से ९९, १०१ से १०३, १०५, १०७, से ११२, ११५, ११६, ११८, १२०, १२१, १२३ से १३१, १३३ से १४६, १४९ से १६३, १६५ से १६७, १६९ से १७३, १७८ से १८१, १८३ से १८८, १९० से १९१, १९४, १९६ से २००, २०३ से २०७, २०९ से २११, २२४ से २२६, २३० से २३२, २३४, २३५, २३७, २४०, २४२, २४३, २४५, २४७ से २४९, २५१ से २५३, २५६, २५९ से २६५, २६८ से २७१, २७३ से २८१, २८५, २९२ से २९५, २९७, २९८, ३००, ३०१, ३०४ से ३१६ तक।

प्रश्न

१. यदि कोई ईसाई मुसलमान या कोई अन्य कौम जैसे भंगी आदि एक शीशे के गिलास में पानी पीलेवें तो उसे भली प्रकार धोकर एक हिन्दू या आर्य पानी पी सकता है या नहीं ?

करमचन्द स्टूडैण्ट पटियाला

उत्तर—आज कल लोग शीशे के गिलास को स्वतः शुद्ध मान कर एक के पी चुकने पर अच्छी प्रकार धोए बिना ही पानी पी लेते हैं—यों ही पानी चुआ सा देते हैं। यह बुरा है। शीशे के गिलास को भी अच्छी प्रकार धोलेना चाहिए। यदि अच्छी प्रकार शुद्ध कर लिया जाय तो एक 'अन्यकौम' के व्यक्ति के पी चुकने पर आर्य पानी पीले तो कोई हर्ज नहीं।

सम्पादक

सामाजिक समाचार

आर्य्य समाज मिरज़ापुर का उत्सव २७ से ३१ अक्टूबर १९१६ को न होकर उस के स्थान में २५, २६, २७, २८, जनवरी को होगा। परिवर्तन का कारण पूर्वनिर्धारित समय पर उपदेशक महानुभावों की अप्राप्ति के अतिरिक्त और कुछ नहीं है। कृपा कर के स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी अनुभवानन्द जी स्वामी मुनीश्वरानन्द जी तथा देहलीवाली महाशय रामचन्द्र जी अवश्य पधारें।

भवदीय
शिवदास मन्त्री
आर्य्यसमाज मिरज़ापुर

आर्य्य समाज भेरा

आर्य्य समाज भेरा का वार्षिकोत्सव ३,४ और ५ नवम्बर १९१६ को होगा इस लिये सन्यासी महात्माओं तथा आर्य्य उपदेशकों से प्रार्थना है कि दर्शन दे कर कृतार्थ करें।

भवदीय
हरिराम सेठ मंत्री आर्य्यसमाज भेरा।

सहारनपुर

आर्य्यसमाज सहारनपुर का वार्षिकोत्सव जो २७, २८, २९ उन्नतीस अक्टूबर को होगा उस में निम्नलिखित विद्वानों ने पधारना स्वीकार कर लिया है।

श्रीमान् महात्मा मुन्शीराम जी
" स्वामी सर्वदानन्द जी
" पं० रामचन्द्र जी देहली वाले
" मास्टर दुर्गा प्रसाद जी
" पं० फकीर चन्द्र जी वानप्रस्थी

सहारनपुर के इर्द गिर्द के सामाजिक भाई अवश्य पधार कर लाभ उठावें।

—— सालिग्राम मन्त्री

चुनाव

"प्रचारक" में प्रकाशनार्थ आगामी वर्ष के लिये आर्य्यसमाज अलीगढ़ का निर्वाचन भेजा जाता है आशा है आगामी अंक में अवश्य प्रकाशित कर के कृतार्थ करेंगे—

बा० शिव प्रसाद जी वी. ए. वकील प्रधान
मा० नारायनदास जी उपप्रधान
मूलचंद आर्य्य मंत्री
म० मुरलीधर गुप्त आ० पु० वि० उपमंत्री
बा० रघुवर दयाल जी कोशाध्यक्ष
ठाकुर गणपतिसिंह जी वर्मा पुस्तकाध्यक्ष
बा० निद्धालाल जी गुप्त निरीक्षक

अन्तरंग सभासद

बा० गंगा प्रसाद जी गुप्त
बा० पन्नालाल जी खज़ा० चुंगी
बा० विश्वम्भर सहाय जी गुप्त
बा० तोताराम जी वी. ए.

भवदीय—मूलचन्द आर्य्य मंत्री

निवेदन १—जो उपदेशक महोदय इस समाज में पधारने की कृपा करें वह सेठ मूलचन्द जी आर्य मंत्री समाज के मकान पर उतरें जहां उनका यथोचित सत्कार होगा।

२—एक नवयुवक अग्रवाल वैश्य आर्य केवल भोजन वस्तु आश्रय ही पर किसी धार्मिक संस्था (गुरुकुल अनाथालय आदि) में रह कर बड़े उत्साह के साथ कार्य्य करने पर उद्यत है यदि कोई महाशय बुलाना चाहें तो सूचित करें। उनके विषय में विशेष वृतान्त लिखने पर भेजा जा सकता है।

निवेदक मुरलीधर गुप्त
उपमंत्री आर्य्यसमाज
अलीगढ़ सिटी

प्रयाग

"आर्य्यसमाज चौक प्रयाग का वार्षिक निर्वाचन ता० ८-१०-१६ को हुआ जिस में निम्नलिखित अधिकारीगण तथा अन्तरङ्ग सभासद चुने गये—

१. महाशय रामजीदास जी भार्गव प्रधान
२. म० रामजा लाल जी शर्म्मा उपप्रधान
३. सर्दार सुचेतसिंह जी उपप्रधान
४. म० जंग बहादुर जी मन्त्री
५. म० रमानाथ जी पांडे उपमन्त्री
६. म० रामदीन जी वैश्य कोषाध्यक्ष
७. म० विश्वेश्वर प्रसाद जी पुस्तकाध्यक्ष
८. म० लक्ष्मी नारायण जी अन्तरंग सभासद
९. म० ओंकारनाथ जी वाजपेयी "
१०. म० खानचन्द जी ओवरसियर "
११. म० मुरलीधर जी बी.ए. एल.एल.बी." "
१२. म० रमा कान्त जी बी.ए. "
१३. म० शालिग्राम जी "

तथा पं० क्षेमकरण दास जी त्रिवेदी निरीक्षक

भवदीय
जंगबहादुर

कोटा

श्रीमान् जी नमस्ते।

कोइटा आर्यसमाज गुरुकुल का वार्षिक चुनाव १६ सितम्बर को हुआ और निम्नलिखित अधिकारी नियत हुए—

१ श्रीमान् ला० गनेशदास जी बिग प्रधान
२. ला. लढ्ढाराम जी उपप्रधान
३. दीवान मूलराज जी "
४ ला० हाकिम रायजी मन्त्री
५ भगत केशोदास जी उप मन्त्री
६ महाशय मूलचंद जी "
७ ला० अमरीक राय जी कोशाधक्ष
८ ला० मलचंद सत्यदेव पुस्तकाध्यक्ष
ला० रामचंद जी निरीक्षक और अधिष्ठता मकानात

और निम्नलिखित मेम्बरान अन्तरङ्ग सभासद नियत हुए—

पं० काशीराम जी
ला० बोइथराम जी
ला० जमनादास जी
ला० रामचन्द जी गांधी
ला० रामचंद जी बढेरा
ला० लक्ष्मण दास जी
ला० हरीराम जी
ला० कर्मचंद जी

हरीकिशन आर्य्य पुत्री पाठशाला की कमेटी का चुनाव निम्नलिखित हुआ—

प्रधान ला० गनेशदास जी
मैनेजर दीवान मूलराज जी
सहायक मैनेजर ला० मोहन लाल जी
मंत्री० ला० बोईथ राम जी
उप मंत्री ला० रामचन्द जी
मिमबरान कमेटी
१ ला० मूलचंद जी सत्यदेव
२ ला० रामचन्द जी टनन
३ मूलचंद
४ मंत्री समाज ला० हाकिमराय

कोइटा आर्य्यसमाज श्री उपाध्याय रामदेव जी का अत्यन्त धन्यवाद देती है कि जिन की प्रेरणा से ला० हाकिमराय जैसा पुरुषार्थी और सहायक मंत्री उन्हें मिला। इन के वक्त में हमें पूर्ण आशा है कि कोइटा समाज बड़ी उन्नति करेगी।

भवदीय
मूलचन्द उपमंत्री

मेरठ

सालग्रां के वास्ते अधिकारियान आर्यसमाज मवानेकलां जिला मेरठ का निर्वाचन निम्नलिखित अनुसार हुआ है।

नाम अधिकारियान

मथुरादास जी, आनरेरी मजिस्ट्रेट मवानेकलां प्रधान
मुरलीधर जी वर्ड्स उपप्रधान. जगन्नाथ मंत्री शंकरलाल पंसारी कोषाध्यक्ष, मुनशी शंकरलाल जी पुस्तकाध्यक्ष

ह० जगन्नाथ मंत्री आर्यसमाज
भवाना कलां

देहरादून-समाचार

रविवार १—ता० को प्रातः ८॥ बजे समाज के भूत पूर्व उपमंत्री ला० आर्य्य किशोर जी की पुत्री का कर्णवेध संस्कार हुआ और इस प्रकार दान दिया गया—१) आर्य्यसमाज—१) स्त्री समाज१) की मिठाई अनाथालय के अनाथों को बांटी गई और ५) पुरोहितों की दक्षिणा में दिए गये।

फिर आशीर्वादात्मक भजन होने के अनन्तर उपस्थित सज्जनों का मिठाई से सत्कार किया गया।

मनोहर व्याख्यान

इस शीर्षक का विज्ञापन वितीर्ण किया गया और साप्ताहिक अधिवेशन के समय श्रीमान् पं० मनुदत्तजी भारद्वाज-उपदेशक प्रतिनिधि सभा ने 'सन्ध्या' विषय पर एक भाव पूर्ण उपदेश दिया और ओ३म् की महिमा तथा व्याख्या बड़ी सुन्दरता से प्रति पादन की-जिस से की श्रोताओं को बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ और संध्या का महत्व सुन कर विशेष रुचि उत्पन्न हुई।

—:o:—

विजयादशमी

६ ता० शुक्रवार को प्रातः

बृहत् हवन के अनन्तर एक नूतन सभासद को यज्ञोपवीत दिया गया और इस पवित्र त्योहार के उपलक्ष में श्रोत्रिय बा०ज्योति स्वरूप जी वकील प्रधान महोदय ने एक महत्व पूर्ण व्याख्यान दिया। आपने रामायण के विशिष्ट घटना स्थलों की मीमांसा करते हुए यह बतलाया कि इस जाति जीवन वर्धक त्योहार का प्रति वर्ष शान्ति समारोह से मनाया जाना आर्य्यों के लिए विशेष उपयोगी है।

मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री० रामचन्द्र लक्ष्मण भरत श्री सीता देवी और आदर्श सेवक हनुमान आदि के उत्तम चरित्रों को लक्ष करके प्रबन्धकर्ता नरनारी को अपना जीवन सुधार कर दुर्गणों पर विजय प्राप्त करनी चाहिए।

८ ता० रविवार अधिवेशन के अवसर पर बाढ़ पीड़ितों की सहायतार्थ म० गोपालसिंह गोरखा ने ५) जो अपने ग्राम से एकत्र करके दिए और १) भवानीसिंह चौधरी ने दिया और ये ६) सेवा समिती प्रयाग की सेवा में भेजे गये॥

अमरनाथ वैद्य शास्त्री
मन्त्री
आर्य्यसमाज
देहरादून

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

"ओ३म्"

Registered No. A. 434

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १२ कार्त्तिक सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २८ अक्टूबर सन् १९१६ ई० { संख्या २८ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)

विद्यार्थियों से ... ... २॥)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन जिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल

काङ्गड़ी पो०श्यामपुर जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)

[३] आचाराऽनाचार औरभक्ष्याऽभक्ष्य मूल्य=)

[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाजमूल्य -)

[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)

[६] पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर—कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउन्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय

P. O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

———

आर्य कन्या की आवश्यकता

एक क्षत्रिय कुलोत्पन्न सदाचारी आर्य युवक, जिनकी आयु २७ वर्ष की है, गृहस्थ में प्रवेश करना चाहते हैं। रूप रंग और स्वास्थ्य बहुत उत्तम है। संस्कृत की साधारण और आर्य्यभाषा की उत्तम योग्यता रखते हैं। गुरुकुल में कार्य करते हैं। लगभग ३५) मासिक आय है। सम्बन्ध में जाति बन्धन का कोई विचार न रखा जायगा। पत्र व्यवहार निम्नलिखित पते से कीजिए-

प्रबन्धकर्त्ता—सद्धर्मप्रचारक

पो० श्यामपुर-कांगड़ी

ज़िला बिजनौर

———

जापान में स्त्रियों का स्थान

(अक्टूबर के "माडर्नरिव्यू" के आधार पर)

गतांक से आगे

इस "प्रौढ-काल" तक पहुंचते २ उस की आयु लगभग १६ वा १८ साल की हो जाती है। इस समय उस का हृदय पवित्र और प्रम पूरित होता है। उस के अन्दर आत्म सयम का बडा बल होता है। अब वह उस महान् कार्य के लिए पूर्णतया तैय्यार हो जाती हैं जो कि पत्नी वा माता के रूप में उस पर आने वाले हैं।

इस प्रौढ़-काल की समाप्ति के साथ २ जापानी कन्याओं का सब से अधिक प्रसन्नतामय जीवन का भाग समाप्त हो जाता है और जीवन के एक नये क्षेत्र में जोकि कई बन्धनों से युक्त है उतर आने के लिये वह अब तय्यार होती हैं।

पत्नी-काल Womanhood

जापानी स्त्री जब लगभग १६ वर्ष की हो जाती हैं तब उसके विवाह का निश्चय किया जाता है। साधारणतया यह उस की इच्छा पर ही निर्भर रक्खा जाता है कि वह किस पुरुष से विवाह करना चाहती है विवाह स्त्री के लिये एक प्रकार से मृत्यु ही होती है और इस से कोई छूट नहीं सकती। यदि वह स्पष्टतया उस पुरुष से विवाह करना स्वीकार कर लेती है जिसका कि उसके सामने माता पिता द्वारा प्रस्ताव किया जाता है तो प्रायः उसे उस पुरुष से विवाह करने के लिए बाधित ही किया जाता है चाहे वह पीछे से उसे भले ही पसन्द न करे। इन बातों में वहां का न्यायालय कुछ नहीं कर सकता! क्योंकि उसे भी जाति के रीति रिवाजों के ही पीछे चलना होता है।

विवाह की प्रथा वहां इस प्रकार है कि—एक नवयुवक जो विवाह करना चाहता है अपने विवाहित मित्रों से एक अत्युत्तम, सुन्दर और गुणवती कन्या ढूंढने को कहता है। उसके मित्र अपनी २ मित्र मण्डलियों में एक कन्या ढूंढने की कोशिश करते हैं और अन्त में निश्चय करते हैं कि अमुक कन्या उसके योग्य होगी। इस प्रकार निश्चय करके वे उस कन्या के पिता के यहां जाते हैं। कन्या पक्ष वाले इस मंडली का पूरा २ स्वागत करते हैं। और सब गुण, दोष तथा अवस्था इत्यादि देखकर सगाई का निश्चय होता है। विवाह के सब प्रबन्ध इसी मित्र मंडली द्वारा होते हैं। विवाह की कृतकार्यता का उत्तरदातृत्व इसी पर निर्भर होता है और तलाक (divorce) के समय भी यही मंडली इस बात का निश्चय करती है कि तलाक की आवश्यकता है वा नहीं।

विवाह संस्कार जो कि वस्तुतः न तो धार्मिक और नाही नियमानुकूल (Legal) हैं एक विशेष कमरे में किया जाता है। वहां पर कन्या की सहेलियां और नौकरानी साथ होती हैं। जापान में यह प्रथा है कि कन्या पति के घर जाते समय गृहस्थ के कुछ समान साथ लेजाती हैं। यह समान वर-पक्ष के घर पहिले ही भेज दिया जाता है। कन्या निम्नलिखित समान अपने साथ लेजाती है—

(१) लिखने के लिये छोटी डैस्क वा टेबल, (२) एक सन्दूकड़ी, (३) एक सन्दूक जिस में काम काज की चीज़ें रक्खी जाती हैं, (४) दो टेबल इस प्रकार की जिन पर भोजन परोसा जाता है, [५] दो उत्तम पूरे बिस्तरे—इन चीजों के साथ और भी जिन २ चीजों की आवश्यकता होती है वे भी साथ में लेली जाती हैं। और यदि लड़की धनी घराने की है तो वह साथ में सब ऋतुओं में काम देने वाली कई पोशाकें भी लेजाती है। ये सब वस्तुएं अन्तिम जीवन तक उसके पास रहती हैं और यदि पति तलाक़ देदे तो वह इन्हें अपने साथ ही घर लौटा लाती है।

बरात बड़ी धूम धाम से कन्या को साथ लिये हुए वरपक्ष के घर की ओर चलती है। इस शुभावसर की याद गार में कन्या के मातापिता परिवार के प्रत्येक आदमी को—बड़े बूढ़े से लेकर छोटे से बच्चे तक—यहां तक कि नौकर चाकरों और साईसों को भी—कुछ न कुछ अवश्य देता है। इस के अतिरिक्त वधू और वर-दोनों के सम्बन्धी इस युगल को कुछ न कुछ भेंट जो गृहस्थोपयोगी भी हो—अवश्य देते हैं।

प्राचीन समय में विवाह मध्यान्ह के पश्चात् हुआ करता था परन्तु आज कल यह सायंकाल को होता है। बरात वधू के घर से चलकर वर-पक्ष के घर पहुंचती है। वहां एक विशेष मकान में वर-वधू और वही मित्र मण्डली जिसने पहिले वर के लिए कन्या ढूंढी थी—तथा दोनों के माता पिता और वधू की एक सहेली बस इतने ही आदमी उस मकान में होते हैं। बाकी बरातिये उस घर में नहीं आ सकते और वे अलग किसी मकान में बैठे रहते हैं। इस विशेष मकान में विवाह संस्कार होता है। विवाह संस्कार में कोई लम्बी चौड़ी क्रिया नहीं होती, केवल इतना होता है कि वधू की सहेली एक ही प्याले से वर और वधू-दोनों को शराब पिलाती हैं। एक ही प्याले से पिलाने का मतलब यही है कि दोनों ही एक दूसरे के हर्ष और शोक में समान साथी हैं। बस इतनी क्रिया के बाद बाकी बरातिये भी वहां आजाते हैं और फिर सब मिल कर बड़ी २ दावतें उड़ाते हैं।

फिर तीसरे दिन विवाह के पश्चात् यह युगल कन्या पक्ष के घर बड़ी सज धज से जाती है। कन्या का पिता इस मण्डली के स्वागत के लिए सब मित्रों और सब सम्बन्धियों को इकट्ठा करता है। वर अपने साथ भेंट की कुछ वस्तुएं लेजाता है जोकि विवाह के दिन वधू की लाई हुई भेंट के बदले में होती है। यह उत्सव कन्या के घर दुपहर वा शाम से रात तक होता है। इस में दावतें, और नाचगान होता है। कन्या इस समय अपनी माता के साथ रहती है। इस उत्सव की समाप्ति पर सब सम्बन्धी तथा मित्र उसे आशीर्वाद देकर अन्तिम विदाई देते हैं। इस प्रकार वह अपने माता पिता के घर से अन्तिम भेंट के साथ विदा होती है।

विवाह का उद्घोषण करने के लिये दो वा तीन मास के पश्चात् यह दम्पति फिर सब को निमन्त्रण देता है। विवाह संस्कार जिस प्रकार बिना किसी नोटिस वा निमन्त्रण के होता है, यह उत्सव उस प्रकार नहीं होता। इस में बहुत से लोग निमन्त्रित होते हैं और इन सब को उसी प्रकार दावतें दी जाती हैं जिस प्रकार कि कन्या-पक्ष ने पहिले दी थी। यह स्वागत-उत्सव भी बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जाता है। (शेष फिर)

सद्धर्म-प्रचारक।

ऋषि को नमस्कार

भारत में नये युग का आविर्भाव करने वाले हे ऋषिवर ! दीवाली के अवसर पर हम भक्तिपूर्वक आप को प्रणाम करते हैं। यद्यपि आप का भौतिक देह विद्यमान नहीं, तथापि आपकी पवित्र आत्मा किसी न किसी स्थान से हम लोगों की ओर देख रही है—हमारे शुभाशुभ कार्यों का निरीक्षण कर रही है। भगवन् ! यद्यपि हमारे कार्यों से आप को विश्वास न होगा कि हम आप के भक्त हैं, आप पर विश्वास रखते हैं या आप के अनुयायी हैं—तो भी परमात्मा को साक्षी कर के हम कहते हैं कि अयोग्य होते हुए भी हम आप को अपना आचार्य और नेता मानते हैं—आप विश्वास कीजिये।

आचार्यवर ! आप जिस खेती को लगा गये थे, और जिस की रक्षा का भार आर्य समाज और आर्य सन्तान पर डाल गये थे, उस की आज क्या दशा है ? उस की वस्तुतः बुरी दशा है। आपके पुण्य प्रताप और आत्मिक बल के प्रबल प्रभाव ने आपके पीछे भी आज तक खेती को सुरक्षित किया हुआ है, किन्तु जिन्हें आप रखवारे बना गये थे, वे रखवारे नहीं प्रायः भखवारे बन रहे हैं। यह अत्युक्ति नहीं कि आर्यसमाज स्वयं अपने आप से असन्तुष्ट है, और असन्तुष्ट हो भी क्यों न ? आर्यसमाज ने आप के शब्द को पकड़ कर भाव को छोड़ दिया, आप के देह में भक्ति की और आत्मा को बिसार दिया। आपने धर्म को मुख्य समझ कर उस की रक्षार्थ चारों ओर बाड़ लगाई, हमने धर्म को भुला दिया और बाड़ के पुजारी बने। आपने धर्म के संकुचित रूप का खण्डन किया और उस का व्यापक रूप मनुष्य जाति के सामने रखा, हमने आत्मिक क्षीणता के कारण उसे फिर संकुचित कर के छोटा बना दिया। आपने हमें सर्वतोमुख उन्नति का पाठ पढ़ाया—आपने हमें सिखाया कि केवल एक प्रकार की उन्नति अपूर्ण उन्नति है, सब प्रकार की उन्नति के लिये यत्न करना चाहिये, हमने फिर अपने पुराने संस्कारों में पड़ एक अंग को पकड़ कर ही अपनी कृत-कृत्यता मान ली। ऐसी दशा में यदि हमारा मन असन्तुष्ट हो, और आप का सम्बोधन करने में भी लज्जा प्रतीत हो तो आश्चर्य क्या है ?

भगवन् ! आपने आर्य जाति के अर्थ अपने शरीर का त्याग किया—और अपने पवित्र रुधिर से धर्म क्षेत्र को सींचा। संसार ने समझा कि अन्य देशों की भांती यहां भी एक त्यागी के रुधिर की बूंद २ से त्यागी उत्पन्न होंगे—एक दो बूंदों ने पौदे उत्पन्न भी किये—किन्तु ऋषिवर ! वह भारतभूमि, जो कभी उपजाऊ होने में अपना सानी न रखती थी, आज ऊसरपन में अद्वितीय हो रही है। समय बीत गया और वे आप के रुधिर की बूंदें भारत की मिट्टी ने अपने पेट में डाल ली। जिस स्थान में उन बूंदों के पौदे उगने थे, वहां आप के अनुयायियों का ऐसा घमासान युद्ध हो रहा है कि "त्राहिमाम्" के सिवा कोई शब्द नहीं सूझता।

इस प्रकार सब तरह से अयोग्य होते हुए भी भगवन् ! हम आप को बार बार भक्तिपूर्वक नमस्कार करते हैं। अपनी अपार दया के कारण हमारे नमस्कार को स्वीकार कीजिये।

—:o:—

समाज सुधार और राजनीति

राजनीतिक स्वराज्य से पूर्व सामाजिक स्वराज्य, और सामाजिक स्वराज्य से पूर्व आत्मिक स्वराज्य आवश्यक है। अभी झांसी में सोशल कान्फ्रेंस का जो अधिवेशन हुआ था, उस के सभापति रायबहादुर आनन्द स्वरूप ने अपने भाषण में इस सिद्धान्त पर अच्छा बल दिया था। आपने स्वराज्य पाने वालों को एक बात सुनाई थी। आप ने कहा था कि 'स्वराज्य चाहने से पूर्व स्वराज्य के योग्य बनो' यह एक बड़ी पुरानी सचाई है, जो सभी देशों में समय समय पर याद दिलानी पड़ी है। जो योग्य नहीं, उसे कोई वस्तु प्राप्त नहीं हो सकती, और योग्य को सात समुद्र लांघ कर भी मिल जाती है। एक युद्ध से हम ने सुना है एक अंग्रेज़ ने उन से कहा था "जब भारतवासी स्वराज्य के योग्य हो जायंगे तो हमें स्वयं ही अपना बोरिया बंधना उठाकर जाना पड़ेगा।" चाहे सारे अंग्रेज़ इस कथन का समर्थन न करें और यह सम्भव न हो किन्तु इस में सन्देह नहीं कि उक्ति कई अंशों में सत्य है।

हमारी राजनीति उलटे रास्ते पर हो कर चली है। हम ने शाखा को भूमि में गाड़ कर आम उपजाना चाहा है। भारतवासी निचली सीढ़ी पर न चढ़ कर उपरली सीढ़ी पर चढ़ा चाहते हैं, बिना नींव दिए अटारी खड़ा करने के अभिलाषी हैं। इसी लिए कार्यसिद्धि नहीं होती। यह स्मरण रखना चाहिए कि जिस जाति में अभी सामाजिक बन्धन नहीं टूटे, उस के राजनीतिक बन्ध कभी नहीं टूट सकते; जो जाति आंखें बन्द किये पुरोहितों तथा मुल्लाओं के अत्याचारों को सहने का अभ्यास रखती है, उस के विरुद्ध शब्द उठाने का साहस नहीं करती, वह कभी राज्यनीतिक स्वाधीनता के योग्य नहीं। यह भी असन्दिग्ध है कि जिस जाति में सोलह पुराण, रामायण महाभारत और यहां तक कि प्रत्येक संस्कृत श्लोक को 'प्रमाण' करके मानने का और इतने प्रमाणों के उठाने का धैर्य है, उस में सैकड़ों हज़ारों सरकारी कर्मचारियों के आगे झुकने का भी धैर्य होना सम्भव है। एक अभ्यास से दूसरा अभ्यास होता है। संसार की ऐसी ही गति है। जिन के समाज की अवस्था इतनी गिरी हुई हो कि स्त्रियों को दासियों का स्थान दिया जाय, छः करोड़ जीते जागते मनुष्य देहधारियों को कुत्ते बिल्ली से भी बदतर समझा जाय, उन लोगों को स्वराज्य के सपने न लेने चाहिएं

जो मनुष्य अपने से निर्बल पर अत्याचार करता है, वह प्रायः अपने से प्रबल के अत्याचार सह लेता है। जो चपड़ासी आने जाने वालों को सदा तंग किया करता है, वह अपने अफ़सर के सामन नाक से सात लकीरें खेंचने को हर समय उद्यत रहता है। भारतवासी स्त्रियों और अन्त्यजों को निर्बल देख कर उन पर अत्याचार करते हैं, अतः स्वाभाविक है कि वे अत्याचारों या सख़ियों को सहने के योग्य होसकें।

सामाजिक दशा का आधार व्यक्तिगत सुधार है, क्योंकि समाज व्यक्तियों के समूह का नाम है। यदि एक २ फूल में सुगन्ध नहीं तो माला में भी सुगन्ध नहीं हो सकती। जिस घरकी एक २ ईंट कच्ची है, वह सारा पक्का नहीं बन सकता। अवयव से अवयवी बनता है, व्यक्तियों से समाज की रचना होती है, यह युक्त्याभ्यास है कि जो गुण एक में नहीं वह अनेक में हो सकता है। जिस समाज के व्यक्ति आत्मिक शक्ति से हीन हैं, वह समाज कभी सामाजिक उन्नति या राजनीतिक स्वाधीनता के ऊंचे शिखरों के समीप भी नहीं भटक सकता। जिस समाज के राजनीतिक नेताओं के आचार आदर्शरूप नहीं है, और अन्तरात्मा दृढ़ और अदम्य नहीं है, उस जाति का जीवनयुद्ध में भाग लेना नहीं बन सकता कई सालों की गुप्त मन्त्रणाओं के पीछे निराश हो कर मेज़िनी ने कहा था कि 'शोक कि मैं यह भूलगया था कि अशिक्षित होने से इटालियन जाति अभी स्वाधीनता के योग्य नहीं है' जिस जाति में शिक्षा नहीं है—है भी तो उल्टी, जातीयता खोने वाली, मानसिक दासता सिखाने वाली, और धार्मिक गौरव को तिरोहित करने वाली—ऐसी जाति स्वाधीनता के सपने देखे—यह संसार में आठवां आश्चर्य है। भला ऐसा भी कहीं देखा है। इतिहास यदि सच है तो ऐसा होना असम्भव है।

भारतवर्ष के राजनीतिक नेता इस सिद्धान्त को भुलाये बैठे हैं। इसी लिये उनके यत्न सफल नहीं होते, भारत के हित-चिन्तकों की प्रथम चिन्ता यह होनी चाहिये कि देश के बालकों तथा युवकों की शिक्षा का ऐसा प्रबन्ध करें कि वे आगे से अच्छे मनुष्य, अच्छे देशवासी और अच्छे कार्यकर्ता बनसकें। उनकी दूसरी चिन्ता यह होनी चाहिये, कि हमारे अन्दर जितनी सामाजिक कुरीतियां हैं, उनका नाश करें। बाल्यविवाह, वृथा जातपांत, स्त्रीपराधीनता आदि जो सामाजिक दोष घुनकी तरह हमारीजाति को खारहे हैं उन्हें दूर किये बिनाएक कदम भी आगे चलना कठिन है। यहां तक परिश्रम की पूरी मात्रा लगा कर फिर राजनीतिक स्वाधीनता के लिये आंख उठानी चाहिये। जब तक ऐसी दशायें उपस्थित नहीं होती, तब तक मांगने से व्याख्यान झाड़ने से या सभायें जमाने से कुछ नहीं होगा। सारे यत्न अरण्य में रोने के समान व्यर्थ होंगे। और ऐसी अवस्था हो जाने पर थोड़े यत्न से बहुत कार्य हो जायगा। फिर मांगना न होगा—केवल दृढ़ता से कहना होगा, और देखते ही देखते राजनीतिक महत्व का मीठा फल हाथ में आजायगा।

—:०:—

संसार समाचार पर

टिप्पणियां

साहित्य और शिक्षा

वैदिक मेगज़ीन

वैदिक मेगज़ीन का श्रावण भाद्रपद का अंक निकल गया। अंक में सृष्टि रचना पर लेख देखने योग्य है।

———

दिसम्बर में कांग्रेस का अधिवेशन होने वाला है, उस के सभापति का चुनाव हो गया। नवम्बर में हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन होगा—उस के सभापति अभी तक नहीं चुने गये, यदि चुने भी गये हैं तो अभी तक सर्वसाधारण को उसकी सूचना नहीं दी गई। साहित्य विषय ही ऐसा गहन है। इसकी समस्यायें ज़रा धीरे २ ही हल हुआ करती हैं। और फिर साहित्य के भाग्य निर्णेता हमारे सम्मेलन के नेता लोग तो बिल्कुल दार्शनिक ही हैं। साहित्य में दर्शन का पेवन्द लग गया तो गम्भीरता का और सुस्ती का क्या ठिकाना है। देखें सम्मेल के दिन तक सभापति का निर्णय हो जाता है या नहीं। यदि न हो तो भी कोई हर्ज नहीं। सम्मेलन के समय ही किसी विद्वान् को इस के लिए चुन लिया जायगा।

नोट—यह छपने को तय्यार था तब चुनाव की सूचना मिली। आगे देखिये।

—:०:—

संयुक्त प्रान्त के प्रान्तिक साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन ईद की छुट्टियों में हो गया। बनारस के वकील म० गौरीशंकरप्रसाद बी० ए० एल. एल. बी सभापति के स्थान पर बिठाये गये थे। सभापति की वक्तृता उत्तम थी। यद्यपि उस में साहित्य सम्बन्धी सारे प्रश्नों को नहीं छुआ गया, और फैशन के अनुसार वक्तृता पूरी नहीं हुई, तथापि क्रियात्मक दृष्टि से भाषण श्रेष्ठ था। विशेषतया अदालतों के सम्बन्ध में भाषा भाषियों का जो कर्तव्य है, उसकी खूब आलोचना की कई थी। वक्तृता आशावर्धक है, हिन्दी तथा आर्यभाषा के नामों के सम्बन्ध में जो कुछ कहा गया है, वह अब व्यर्थ सा दीखता है। आर्य्यभाषा नाम उत्तम है—हिन्दी नाम वैसा उत्तम नहीं। यों प्रयोग चाहे दोनों का करलें, परन्तु उत्तम नाम अन्त को उत्तम ही है, उस का प्रयोग मीठा दीखता है। सम्मेलन में प्रतिनिधि पर्याप्त संख्या में नहीं आये थे, इस में सूचना का विलम्ब ही हेतु बताया जाता है।

—:०:—

सहयोगी इन्दु का प्रकाश होगया। बेचारे प्रेमी चकोरों को बड़ी लम्बी प्रतीक्षा करनी पड़ी, किन्तु सहयोगी के कथन से प्रतीत होता है अब शीघ्र ही उस का अस्त न होगा। पत्र का अपना प्रेस हो गया है। यह अच्छा ही हुआ। मीठा हो तो सहज पकने में हर्ज ही क्या है। इन्दु का प्रथम अंक उस की पूर्व प्रतिष्ठा के योग्य ही हुआ है। लेख उत्तम हैं। विशेषतया पढ़ने योग्य लेख ये हैं—सुख भरी नींद—लेखक बा० जयशंकर प्रसाद। राष्ट्र के विकास पर बाह्य जगत् का प्रभाव—लेखक, प्रो० श्रीयुत राधाकृष्ण झा एम. ए.। भारत की प्रतिनिधि सभायें—

लेखक—श्रीयुत शारदाप्रसाद एम. ए. एल. एल. बी.। भाषा की मधुरता का कविता पर प्रभाव, लेखक पं० कृष्णविहारी मिश्र बी. ए. एल. एल. बी.। स्वामी चौपटानन्द का औपन्यासिक प्रेम का फन्दा—लेखक, श्रीयुत जी पी. श्रीवास्तव बी. ए. एल. एल बी.। सारांश यह कि अंक पठनीय है, और यदि आगे भी अंक ऐसे ही निकलें तो भाषा में एक अत्युत्तम मासिक पत्र की स्थानपूर्ति होगी।

—:०:—

'शिक्षण कौमुदी' शिक्षा की त्रैमासिक पत्रिका है। यह पत्रिका अपने ढंग की एक है। शिक्षा सम्बन्धी अच्छे २ लेखों का संग्रह इस में पढ़ने के लिये मिलता है। हरएक अंक में दो भाग रहते हैं—एक सामान्य विषयों पर लेखों का संग्रह और दूसरा शिक्षा सम्बन्धी लेखों का संग्रह। दोनों भाग ही उपयोगी होते हैं। यह पत्रिका हिन्दी साहित्य भण्डार के लिये आदर का कारण है।

—०—

अम्बाले से ब्राह्मण समाचार का पुनरुदय हुआ है। पत्र हमारे पास आलोचनार्थ आया है। इस अंक में लेख उत्तम हैं—आगे भी अच्छे ही रहें—यही हमारी इच्छा है।

—०—

अंग्रेजी पत्र 'फीररनर' ने अपने स्तम्भों में एक मनोरंजक प्रश्न पर कुछ गिनतियां छापी हैं। कुछ बालक बालिकाओं से कई प्रश्न किये गये। जो उत्तर मिले उनको छांटा गया। प्रश्न ऐसे थे— तुम किस मनुष्य को सर्वोत्तम समझते हो? यदि तुम्हें कुछ फालतू धन मिल जाय तो तुम उससे क्या करोगे? उत्तरों में एक विलक्षणता पाई गई। जो विद्यार्थी साधारण स्कूलों में पढ़ते थे, उनके उत्तर अच्छे न थे। दृष्टान्त के लिये एक ही प्रश्न लीजिये—प्रश्न था, फालतू धन को क्या करोगे? सौ में से मिशन स्कूल के ६ लड़कों ने उत्तर दिया कि 'मैं बचाऊंगा' अन्य में से केवल दो ने ऐसा उत्तर दिया। मिशन स्कूल के ३० बालकों ने उत्तर दिया कि 'मैं औरों के लिए व्यय करूंगा' अन्य स्कूलों के केवल ४ लड़कों ने ऐसा उत्तर दिया। अन्य स्कूलों के ४५ लड़कों ने उत्तर दिया कि वे धर्मको कपड़े आदि बनवाने पर खर्च गे, मिशन स्कूल के केवल १३ बालकों ने ऐसा उत्तर दिया। इसका तात्पर्य यह निकलता है कि चाहे किसी प्रकार की धार्मिक शिक्षा हो उसका परिणाम विचारों पर उत्तम होता है। जितना ही उत्तमधार्मिक आदर्श होगा—उनका उतना ही अधिक सुधार होगा। जो लोग धार्मिक शिक्षा के विरोधी हैं वे कृपया इन बातों पर विचार करें। आर्यजाति को अपने बालकों की दशा पर ध्यान देना चाहिये।

—०—

गुरुकुल काङ्गड़ी से 'उषा' नाम की एक संस्कृत मासिक पत्रिका निकलती है। उसे निकलते हुए अब तीसरा वर्ष है। यह पत्रिका निकलती २ बीच में बन्द होगई थी- अब तीन मास से फिर समय पर निकलने लगी है। छः अंक बहुत शीघ्र ही निकाल कर पूरे कर दिये गये हैं। इस साल का ५वां तथा छटा अंक अभी निकला है। लेख सभी प्रकार के हैं। कई उत्तमोत्तम कविताओं के अतिरिक्त अवतार मीमांसा शीर्षक लेख में अवतारवाद का निराकरण किया गया है। "वैदिकी धर्मगंगा" शीर्षक लेख में अच्छी तरह दिखाया जा रहा है कि सब मतमान्तर वैदिक धर्म्म से ही बिगड़ कर निकले हैं। और भी कई दार्शनिक तथा सामान्य विषयों पर लेख हैं। हर बार कम संस्कृत जानने वालों के लिए भी दो एक सरल पाठ दिये जाते हैं। यह पत्रिका संस्कृत प्रेमियों के लिये ग्राह्य है।

———

आवश्यकता

एक सुयोग्य पण्डित की मुझे अन्वेषण के कार्य्य में सहायता देने के लिये आवश्यकता है जो प्राचीन साहित्य में प्रवीण हो। पदस्थिरावेतन योग्यतानुसार।

प्रोफ़ेसर बालकृष्ण, एम०ए०
गुरुकुल हरिद्वार

———

सम्मेलन के सभापति

सम्मेलन के सभापति का चुनाव हो गया। जितने चुनाव इस वर्ष किए जा सकते थे, उनमें सर्वोत्तम चुनाव नहीं हुआ—तो भी हम सानन्द अपने पाठकों को सूचना देते हैं कि साहित्याचार्य पं० रामावतार पाण्डेय के सिर पर यह आदर सूचक सेहरा बंधा है। पहले हमारी चाहे कोई सम्मति थी परन्तु अब हम चुने हुए सभापति को हृदय से स्वीकार करते हैं, और सब आर्य्य-भाषा प्रेमियों से निवेदन करते हैं कि वे समय पर जबलपुर पहुंचें और अपनी मातृ भाषा का महत्व बढ़ावें। सम्मेलन एक संस्था है—सभापति कौन है इसकी पर्वा न होनी चाहिए। और फिर साहित्याचार्य जी सभापति पद के सर्वोत्तम अधिकारी न होते हुए भी अधिकारी हैं। आपकी योग्यता का सिक्का सभी भाषा भाषी मानते हैं। हमें आशा है कि आप की प्रारम्भिक वक्तृता बड़ी योग्यता पूर्ण और अनूठेपन से युक्त होगी।

———

गुरुकुल में वायसराय

२१ अक्टूबर को गुरुकुल में भारत के वायसराय धर्मपत्नी सहित पधारे। आप के आने और देखने का पूरा वृत्तान्त अगले पृष्ठों में दिया गया है। यह ऊपर २ का वृत्तान्त है। इस से अतिरिक्त वायसराय तथा उनकी योग्य सह धर्मिणी के जो और विचार के—और उन पर जो २ प्रभाव पड़े वे सब श्री महात्मा मुंशीराम जी की लेखनी द्वारा अगले अंक में पाठकों के पास पहुंच जायंगे। महात्मा जी ने वायसराय की मण्डली का स्वागत किया, उन्हीं से सब दिखाया और विदाई दी। इस लिए हमारे पाठक पूरा वृत्तान्त इस बार पढ़ लें, और विशेष बातों के लिए एक सप्ताह प्रतीक्षा करें।

———

वर की आवश्यकता

श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर में इस समय केवल एक लड़की दोनों नेत्रों से हीन विवाह के योग्य है जिसकी आयु १८ वर्ष के लगभग है जो कोई सज्जन इस नेत्रों से हीन कन्या के साथ सम्बन्ध करना चाहें वे कृपा करके निम्नलिखित पते पर आवेदन पत्र भेजें।

गुलराज गोपाल गुप्त मंत्री
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर

गुरुकुल में बड़े लाट

२१ अक्टूबर के दिन भारत के वायसराय लार्डचम्सफोर्ड लेडी चम्सफोर्ड सहित गुरुकुल में पधारे। युक्त प्रान्त के छोटे लाट सर जेम्स मेस्टन उनके साथ थे। कई और भी वायसराय के पार्श्ववर्ती अंग्रेज़ गुरुकुल देखने आये।

लाटसाहिब के स्वागत के लिये बड़ा उत्तम प्रबन्ध किया गया था। गुरुकुल का मार्ग झण्डियों से खूब सजाया गया था। गुरुकुल भूमि का जहां आरम्भ होता है, ऐन वहीं से झंडों की पंक्ति प्रारम्भ होती थी—उस से थोड़ा आगे चल कर एक बड़ा दरवाज़ा बनाया गया था। दरवाज़ा स्वागत सूचक वाक्यों से और 'नमस्ते' से खूब शोभायमान था। उस द्वार से आगे फिर मार्ग झण्डियों से सजा हुआ था। जहां से गुरुकुल के विस्तृत क्रीड़ा-क्षेत्र प्रारम्भ होते हैं—वहां एक बड़ा और सुन्दर दरवाज़ा तय्यार किया गया था। उस दरवाज़े के नीचे आप महात्मा मुन्शीराम जी, उन के एक ओर श्रीयुत रामकृष्ण जी प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब, म० घासीराम जी एम० ए० प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त, म० वज़ीरचन्द्र जी बी० ए० एल० एल० बी०, म० ब्रजनाथ बी० ए० एल० एल० बी, म० गोवर्धन बी० ए० तथा पं० निहालचन्द जी दिल्ली निवासी थे। उन के पीछे एक ओर गुरुकुल के उपाध्यायों की और सामने स्नातकों की पंक्तियां थीं। उन के पीछे मार्ग के दोनों ओर पीली धोतियों वाले ब्रह्मचारियों की श्रेणियां लगी थीं।

यह सारी सुसज्जित मण्डली वायसरय की मण्डली का स्वागत करने के लिये तय्यार थी। वायसराय की स्पेशलट्रेन प्रातः काल ८—३० पर हरिद्वार पहुंची वहां से लग भग १० बजे किश्तियों द्वारा गंगा की धारा को पार करके हाथियों पर लम्बी यात्रा प्रारम्भ हुई। लगभग दो घण्टे का मार्ग था। १२ बज कर ४ मिनिट हुए थे—जब सामने से आते हुए हाथी दिखाई दिये। जब द्वार के समीप आकर हाथी झुके और वायसराय तथा उनकी सहधर्मिणी ऊपर से उतरने लगे तब सारी गुरुकुल मण्डली की ओर से स्वागत की तालियां पीटी गईं। अभ्यागत मण्डली के साथ प्रतिनिधिसभाओं के प्रधान, और प्रतिष्ठित सज्जनों गुरुकुल के उपाध्यायों तथा स्नातकों का परिचय कराया गया। फिर वायसराय और उन की सहधर्मिणी ब्रह्मचारियों की 'नमस्ते' को सहर्ष स्वीकार करते हुए गुरुकुल भाटिका के द्वार पर पहुंचे।

भाटिका के द्वार पर एक शामियाना लगा हुआ था। वहां जा कर अभ्यागत मण्डली ठहर गई, और पांच ब्रह्मचारियों ने स्वर सहित निम्नलिखित श्लोक पढ़ कर वायसराय तथा वायसरीन का स्वागत किया।

१

अमल-सलिल-वीचि-क्षालितोदान्त-कूले
हिम-धवल-हिमाद्रि-क्षौम-नद्धोत्तमांगे।
इह हरित-वनाली-सुन्दरे धर्मदेशे
प्रवर-धरणिपाल! स्वागतं स्वागतन्ते।

२

विकसति कमलालिर्यस्य राज्ये सदैव
प्रतिनिधिरसि तस्य त्वम्प्रजापालकस्य।
इदमपि कुलमत्र द्योतते धर्मविद्या-
प्रतिनिधि, जनतायै सन्दिशन्मङ्गलानि।

३

अनुपममिह रत्नं गुज्यतां काञ्चनेन
दिनकर-कर-माला संगमेतूत्पलेन।
उपवनमतिकान्तं शोभतां कोकिलेन
क्षितिप! लसतु गेहन्नो भवत्संगमेन।

४

सह विलसति राज्ये यस्य दण्डेन साम-
स्थिरयति किल पादं सम्पदो यः करेण।
प्रतिनिधिरसि तस्य त्वन्ततः किं विचित्र-
न्वयिभृशमुपगूढा भारतो वैभवेन।

५

नरवर! वितरामो धन्यवादाननेकान्
प्रमुदमनुभवन्तः श्रीमतो दर्शनस्य।
सह किल कलयामः प्रेमसिक्तन्नमस्ते
समुदमथ वदामः स्वागतं स्वागतन्ते।

६

जलदमिव भवन्तं याऽनुगच्छत्युदारं
तिमिरशमनहेतुश्चारुविद्युल्लतेव।
भरतधरणिबाला साश्रमुद्वीक्षते यां
गुरुकुलभुवि तस्याः स्वागतं स्वागतञ्च।

जिस समय यह स्वागत हो रहा था—सारे गुरुकुलवासी और उपस्थित जनवृन्द चारों ओर घेरा डाले खड़े थे। स्वागत के अन्त में ब्रह्मचारियों ने फिर अपने अतिथियों पर फूल बरसाये।

स्वागत का दृश्य बड़ा मनोहर था, हमारे अतिथि उस से बड़े प्रसन्न हुए। श्री. मती लेडी चम्सफोर्ड छोटे २ बच्चों को देख कर विशेषतया प्रसन्न हुईं और खूब हसती रहीं।

अभ्यागत मण्डली वाटिका में से होकर विद्यालयाश्रम के द्वार पर पहुंची। वहां विद्यालय के मुख्याध्यापक जी ने उसका स्वागत किया और सारी श्रेणियों में घुमा कर औषधालय भी दिखाया। औषधालय को देखकर वायसराय और उनकी सहधर्मिणि बहुत प्रसन्न हुए। हस्पताल में केवल एक ज्वर का रोगी था। उसे देख कर लेडी चम्सफोर्ड ने हमारे चिकित्सक डा० सुखदेव जी से कहा— 'यहां किसी का रोगी होना तो सम्भव नहीं—हां नमूने के तौर पर आपने एक रख छोड़ा है ताकि आप हमें रोगियों का रहन सहन दिखा सकें" औषधालय की सफ़ाई आदि से अतिथि लोग बहुत प्रसन्न हुए।

इसके पश्चात् महाविद्यालय में प्रवेश हुआ। पहले मण्डली वनस्पति शास्त्र के कमरे में पहुंची। वहां प्रो० महेशचरणसिंह ने अपना और ब्रह्मचारियों का कार्य भली भांति दिखाया।। ब्रह्मचारियों के कृषि सम्बन्धी आलेख्यकार्य को और घन दूध बनाने के यहीं तय्यार किए हुए यन्त्र को देख कर बड़े लाट बहुत प्रसन्न हुए। बहुत देर तक ब्रह्मचारियों के काम को भी देखते रहे। प्रोफेसर सिंहा जी ने अपनी लिखी वैज्ञानिक पुस्तकें भेंट कीं—और जो नई लिख रहे थे वे दिखाईं।

उस के आगे अर्थशास्त्रसमिति—का अधिवेशन हो रहा था। प्रोफेसर बालकृष्ण एम. ए. सभापति के आसन पर थे। ब्रह्मचारी एक आवश्यक आर्थिक प्रश्न पर विवाद कर रहे थे—कुछ देर तक वायसराय वहां ठहर गये आगे संस्कृत सभा में पहुंचे। वहां पर 'भारत के लिए संस्कृत की आवश्यकता है या नहीं?'—इस प्रश्न पर विचार हो रहा था। वहां से रसक्रिया भवन में होते हुए हमारे भान्य अतिथियों ने अंग्रेज़ी की पढ़ाई देखी और फिर सारे विद्यालय का भ्रमण किया। रस क्रिया

Digitized by eGangotri

भवन प्रो० रामसरण जी और पं० विश्वनाथ जी के विद्यार्थियों ने एक चांदी की तश्तरी पर सोने के अक्षरों में कुछ लिख कर वायसराय को दिखाया। पुस्तकालय को अतिथिमण्डल ने विशेष ध्यान पूर्वक देखा। विद्यालय में भ्रमण कर के और महाविद्यालय के ऊपर बनाये हुए अद्भुतालय और प्रकृति के विस्तृत अद्भुतालय को देख कर वायसराय बहुत प्रसन्न हुए।

स्थान को देख कर लेडी चम्सफोर्ड बहुत प्रसन्न हुईं, और बार २ उस की सुन्दरता की प्रशंसा करती रहीं। हमारे कच्चे कमरों को और सस्ते मकानों को देख कर आपने कहा कि इस जलवायु में शिक्षा के लिये सस्ते मकान ही अच्छे हैं। शिक्षा को जहां तक हो सके सस्ता बनाना चाहिये। गुरुकुल में शिक्षकों और विद्यार्थियों के इकट्ठे रहने को देख कर भी आप बहुत खुश हुईं और इस प्रथा से अपनी पूरी सहानुभूति प्रकट की।

शिक्षा का क्रम देख कर अतिथि मण्डल ने पुस्तकालयभवन में बैठ कर कुछ थोड़ासा जलपान किया। देसी पकौड़ों को सबने बहुत पसन्द किया। जल पान के पीछे मण्डली महाविद्यालयाश्रम में से होकर गुज़री। आंगन में ब्रह्मचारी गतका फरी आदि खेलें रहे थे। आगे अनेक दल कबड्डी फुटबाल और हाकी आदि खेलों में लगे हुए थे। वायसराय और इनकी मण्डली के सज्जन खेलों को देखते हुए जिस द्वार से प्रवेश किया था उसके नीचे पहुंच गये।

महात्मा मुंशीराम जी ने इस दिखाने में अपने मान्य अतिथि को गुरुकुल की सारी विशेषतायें सुनाईं और वायसराय उन्हें कई अंशों में पसन्द किया। प्रधान रामकृष्ण जी, प्रो० रामदेव जी प्रो० सेवाराम जी आदि ने दिखाने के कार्य में महात्मा जी की सहायता की।

द्वार पर लौटकर लार्ड चम्सफोर्ड ने एक हास्यपूर्ण छोटी सी वक्तृता दी। वक्तृता में आपने जो कहा उस का भावार्थ यह था कि आप गुरुकुल के विषय में बहुत अभिरुचि रखते हैं; आप ब्रह्मचारियों स्वास्थ्य को देखकर बहुत प्रसन्न हुए हैं, ऐसे स्वास्थ्य को अन्यत्र बहुत आवश्यकता है अन्त में आपने अपने आने की प्रसन्नता में महात्मा जी से आधेदिन की छुट्टी देने के लिये कहा। वक्तृता के पश्चात् तालियों के शब्द के मध्य में वायसराय और उन की मण्डली ने हाथियों पर आरोहण कर के हरिद्वार की ओर प्रस्थान किया।

इस यात्रा में एक विशेष मूर्ति, जो गुरुकुलवासियों को प्रसन्नता देरही थी—सर जेम्समेस्टन की थी। आप का गुरुकुल से विशेष प्रेम है, इस अवसर पर भी आपकी हंसती हुई मूर्ति से गुरुकुल वासियों को विशेष आनन्द हुआ।

यह अवसर कुछ बातों के लिये विशेष स्मरणीय रहेगा। लेडी चम्सफोर्ड ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के साथ बहुत सहानुभूति प्रकाशित की और इन दिनों में जब कि सब स्थानों में मलेरिया का इतना ज़ोर है, वायसराय को गुरुकुल का स्वास्थ्य बहुत ही उत्तम प्रतीत हुआ। यह गुरुकुल के स्थान और चिकित्सक दोनों के लिये ही प्रशंसा की बात है।

—०—

भारतीय नाटकों के इतिहास में

एक रिसर्च स्कालर की नई खोज

आज कल आर्य गज़ट लाहौर में किसी पं० भगवद्दत्त जी बी०ए० "रिसर्च-स्कालर" की रसोद्गारिणी लेखनी से "भारतीय नाटकों का इतिहास" शीर्षक एक लेख निकल रहा है। इस लेख के महोच्च शीर्षक को देखकर मेरे मन में भी उस को पढ़ने का कुतूहल जागृत हुआ; मुझ को आशा थी कि रिसर्च स्कालर महाशय ने उसमें नाटकों की इतिहास विषयिणी कोई नवीन गवेषणा की होगी, किन्तु खेद है कि उस को पढ़ कर मेरी वह आशा दुराशा और मनःसंताप में परिवर्तित हो गई। इस लेख में प्रदर्शित आप की नवीन रिसर्च वा खोज का निष्कर्ष निम्न लिखित संख्याओं में विभक्त किया जा सकता है।

(१) नाटक वाममार्गियों ने चलाए। "ड्रामा वा नाटक आर्य नहीं किन्तु वाममार्ग की शाख है।"

(२) "पुराने वक्तों में यूनानी आर्यों से कोई भिन्न जाति न थी।"

(३) "कालिदास को अनपढ़ लोग सर पर उठाते हैं और जिसे अपनी बेहोशी की तरङ्ग में आर्य्यावर्त का बड़ा आदमी मानते हैं एक वेश्या के घर में मरा।"

(४) "भला कब मुमकिन हो सकता है कि जो आदमी नाटकों का विचार करता रहे, कि जिन में स्त्रियों का पार्ट एक निहायत आवश्यक भाग होता है और अपने मन को भक्ति अथवा पवित्रता की तरफ़ लेजा सके।"

(५) "डूब मरने का मुक़ाम है कि पुरानी सभ्यता की पुकार मचाने वाले और गुरुकुलों की डोंडी पीटने वाले अपने गुरुकुलों में इन्हीं फोहश नाटकों को पढ़ाते हैं।"

आपके लेख से कहां तक उद्धारण दिये जायं, इसी प्रकार के उदात्त उद्गारों से आप का यह लेख परिपूर्ण है। आप की प्रत्येक संख्या पर आलोचना दृष्ट्या कुछ नीचे लिखा जाता है।

यदि आप के उन्हीं उद्गारों का नाम रिसर्च, गवेषणा, वा खोज है तो न जाने तमोलिम्पन किसे कहते हैं। यदि प्रत्येक प्रमाण-शून्य और युक्ति-रहित स्थापना को इतिहास कहा जा सकता है तो प्रत्येक प्रलाप को यही पद क्यों न दिया जाय? यदि वेबर, मोक्षमूलर, मोनियर विलियम्स, मेकडानल, आदि पाश्चात्य पंडित, आप के कथनानुसार, वेद मन्त्रों में आये हुए सम्वादों में नाटकों का अंकुर मानते हैं, तो आप के निषेध मात्र से उसका खंडन कैसे होगया। आपके यह लिख देने मात्र से "कि हमें कोई ऐसा चिन्ह नहीं मिलता कि जिस द्वारा यह निश्चय कर लिया जाय कि वेद में नाटक का गन्ध मात्र भी है" यह कैसे सिद्ध हो गया कि वैदिक संवाद उत्तर काल के नाटकों के जन्म-दाता नहीं होसकते। नाटक में प्रधान कर्म पात्रों का परस्पर संवाद ही होता है। यदि वैदिक संवाद को देखकर ही उत्तर-काल में सभ्यता और ऐश्वर्य के विस्तार समय अभिनय रूप में संवाद की रीति चली हो और उस में पात्रों की वेशकल्पना मात्र अधिक बिठादी गई हो तो इस में क्या असम्भव है, वा पाश्चात्य पंडितों के लेख में आजाने मात्र

से ही कोई बात खंडनीय हो जाती है। इस में आप का भी कुछ अपराध नहीं है। सम्प्रति आर्यसमाज में यह फेशन ही चल पड़ा है कि पूर्ण पण्डित और आर्यसमाजी वही समझा जाता है जो पाश्चात्य पण्डितों की प्रत्येक बात का खण्डन कर देवे। किन्तु जब आर्यसमाज में यह सर्व सम्मत वैदिक सिद्धान्त माना जाता है कि वेद में सब विद्याओं और कलाओं के अङ्कुर विद्यमान हैं तो सर्व सभ्य देशों और उन्नत जातियों में किसी न किसी रूप में प्रचलित नाट्य कला के अंकुर की वेद में विद्यमानता में आप कैसे इंकार कर सकते हैं? फिर "नाटक आर्य नहीं किन्तु वाममार्ग की शाख़ है" इस में जब तक आप कोई युक्ति युक्त हेतु वा प्रमाण न दें तब तक आप की यह स्थापना किसी को भी मान्य नहीं हो सकती।

आप ने नाटकों के नवीन और आप के मत से वाम मार्ग की शाख़ होने में एक हेतु यह दिया है कि यतः नाटकों में सब स्त्री-पात्र प्राकृत बोलते हैं और भारत में प्राकृत भाषा का प्रचार वाम-मार्ग के आविर्भाव से पीछे हुआ है इस लिए नाटक नवीन और वाम मार्ग की शाख़ हैं। यद्यपि आप का यह हेतु स्वतः कोई हेतु नहीं है और आप के इस हेत्वाभास से वाम मार्ग से पीछे प्रचलित प्रत्येक वस्तु "वाम मार्ग की शाख़" सिद्ध हो जायगी तो भी आप के ही माने हुए इस सिद्धान्त से इस का एक निराकरण यह हो सकता है। आप पाणिनि के समय इस देश में संस्कृत का ही प्रचार मानते हैं। आप के शब्द ये हैं, "राम के समय तक संस्कृत ही आर्यवर्त्तीय पुरुषों की मातृ-भाषा थी। राम तो क्या यास्क, पाणिनि के समय तक भी यही अवस्था थी।" किन्तु पाणिनि ने तो आद्य नाट्य सूत्रकारों, कृशाश्व, और शिलालिन, का उल्लेख किया है। देखिए पण्डित कृष्ण शास्त्री एम. ए. अपनी A hisloty of the classical sanskrit literature में क्या लिखते हैं The earliest reference to works on dramatical representations is made by Panini, from which we may infer that at least two works on Natya-sutra by Silalin and Brisaswa must have existed in his time.

इस से प्राकृत भाषा के प्रचार से पूर्व संस्कृत भाषा के समय में भी पाणिनि से पूर्व नाटकों की विद्यमानता सिद्ध होती है और जब पाणिनि तक नाट्य सूत्रकारों का वर्णन करते हैं और आप के ही कथनानुसार मनुस्मृति आदि पुरानी संस्कृत पुस्तकों में नट, शब्द आता है, (जिस नट शब्द से ही नाटक बनता है और जिस नट शब्द के अभिनय कर्त्ता और नाचने वाले के अतिरिक्त आप के बतलाये हुए बाजीगर अर्थ कभी भी नहीं हो सकते क्योंकि उस के लिए संस्कृत में ऐन्द्र जालिक पद विशेष रूढ़ हैं) तब नाटक का बहुत प्राचीन काल से न चला आना कैसे सिद्ध हो सकता है। किन्तु किसी वस्तु की प्राचीनता वा नवीनता ही उस की उपादेयता में हेतु नहीं हो सकती।

पुराणमित्येव न साधु सर्वं,
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परिक्ष्यान्यतरद्भजन्ते,
मूढः परप्रत्ययनेयबुद्धिः॥

खेद है कि जो नाटक हरिश्चन्द्र के सत्य, सीता के पातिव्रत्य, राम की पितृभक्ति, लक्ष्मण का भ्रातृस्नेह, भीष्म की जितेन्द्रियता, भीमार्जुन की वीरता, कर्ण की उदारता आदि में प्रेक्षकों को एक रस तदाकार और तल्लीन बना देता है और उन के जीवन सुधार और चरित्र निर्माण में सहस्रों शुष्क उपदेशों से कहीं बढ़कर काम करने वाला और प्रभावी। पाठक होता है उस को आप वाममार्ग की शाख़ बतलाते हैं।

यदि "स्त्रियों के पार्ट आवश्यक हो जाने से" नाटक घृणित वाममार्ग की शाख़ हो जाते हैं, तो आप का गृहस्थ, जो गृहवा स्त्री के बिना बन ही नहीं सकता ("न गृहं गृहमित्याहु गृहिणी गृह मुच्यते" मनु०) घृणित क्यों नहीं? फिर आप का यह कथन "कि नाटक में स्त्रियों का पार्ट एक निहायत आवश्यक भाग है" नाटकों से आप की अनभिज्ञता द्योतक है। क्या आप ने स्त्री चरित्र से रहित मुद्रा राक्षस का भी नाम नहीं सुना। अहो! इस से अधिक क्या खेद होगा? जो स्त्री जाति संसार का मूल है, धर्माचरण की सहायक है, दया का अवतार है, प्रेम की परम धारा है, गृहस्थ आश्रम की जीवन शक्ति है, जिन को लेकर गृहस्थियों की गृहस्थता, संसारियों का संसार, सुकर्मियों के सुकर्म, और धर्मात्माओं के सब धर्म चलते हैं, मनुष्यों का पितृऋण शोधन होता है, जिन के बिना न वंशस्थिति हो सकती है, न कुल चलते हैं, न धर्मात्माओं का धर्माचरण सिद्ध होता है, न मधुरभाषियों के मधुर आलाप सुनाई देते हैं, न धनियों के हर्म्यतल शोभायमान होते हैं, यह जगत जीर्णारण्य प्रायः शून्य हो जाता है, उन देवियों को आप इतना घृणित बतलाते हैं। मातृ शक्ति की आप की यह अवहेलना और निरादर दृष्टि कभी क्षम्य नहीं हो सकती। आगे चल कर आप ने "नाटकों के विचार करने वालों के मन" "भक्ति अथवा परिव्रज्या की ओर न चल सकने की मनोविज्ञान शास्त्र की एक नवीन ही थ्योरी (Theory) प्रस्तुत की है। क्या आप ने विषय भोग प्रवृत्ति को हटाने वाले भर्तृहरि निर्वेद नाटक और प्रबोध चन्द्रोदय नाटक के भी नाम नहीं सुने? यदि आप ऐसे ही विरक्त और विषयपराङ्मुख हैं तो आप ऐसे कई नाटकों को गुरु मुख से अध्ययन कर सकते हैं।

(२) यूनानियों को आर्यों से कोई भिन्न जाति न मान कर तो आप ने अपने रिसर्च स्कालर होने का पूरा परिचय दे दिया है। आशा है कि आप की इस नई रिसर्च पर मुग्ध होकर कोई इतिहास समिति आप को किसी बड़ी उपाधि से अलंकृत कर डालेगी। इसी लिए इस पर अस्मादृश इतिहासानभिज्ञों का कुछ अधिक लिखना विडम्बना मात्र है। किन्तु आप से इतना पूछने के लिए मेरा मन भी अवश्य लालायित है कि देववाणी में जो हीरा, पिक, तामरस, आदि कतिपय शब्द यूनानियों से आये हुये बतलाए जाते हैं, वे यदि यू

बानी कोई भिन्न जाति न थी, तो कहां से आए!

(३) बेचारे कालीदास के विषय में तो न जाने आपने कौन से जन्म का वैर निकाला है। जिस कालीदास को आज तक भूमण्डल के कवि शिरोमणि कविकुल-गुरु की उपाधि से विभूषित करते आये हैं,-प्रत्युत कविकुल गुरु के उच्चारण मात्र से कालीदास का ही बोध करते हैं—जिस कविकुल गुरु की प्रतिभा की देववाणी इतनी ऋणी हैं, जिस की कविता की उपमा, छाया और भावों का तदुत्तर वर्त्ति-साहित्य पर एकाधिपत्य विराजमान है, जिस की रसमयी शकुन्तला ने आधुनिक-काल में योरुप की दृष्टि संस्कृत की ओर सर्व प्रथम आकर्षित की और पाश्चात्य विद्वानों से संस्कृत को वहशियों की बोली के स्थान में Perfect language परिपूर्ण भाषा का पद दिलवाया. जिस के अभिज्ञान शाकुन्तल को पढ़ कर जर्मनी का प्रसिद्ध कवि Goethe गैटे आमोद से नृत्य करने लगता है, जिस कालीदास के काव्यों के कथानात्मकों में श्री अरविन्द घोष से महाविद्वान् कोई धर्म और आदर्श विरुद्ध बात नहीं पाते और बीच में कहीं २ शृंगार की झलक आने पर भी अन्त में धर्म और आदर्श की ही जय बतलाते हैं वह कालीदास यदि आप की उद्दाम लेखनी से "अनपढ़ लोगों से सर पर उठाया हुवा" और अपनी "बेहोशी की तरंग में आर्यावर्त्त का बड़ी आदमी माना" हुवा कह कर दुतकारा जाय और निन्दा किया जाय तो आप की मेधा और कुशाग्र शेमुषी को धन्य और साधुवाद के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है।

कालीदास के प्रशंसक यदि आप के दरबार से "अनपढ़" और उन्मत्त का पद पायें तो उन को उपालम्भ का कोई अवसर नहीं होना चाहिये। आप से गुण ग्राहक और सहृदय महाशयों के हृदयोद्गारों की बदौलत ही आर्यसमाज को इतर-मतावलम्बिनी विद्वन्मण्डली से परोत्कर्षासहिष्णु गुणग्रहणपराङ्मुख, हृदय शून्य, कविता कुठाराघाती जन समूह की उपाधि मिल रही है। (अपूर्ण)

भवानीप्रसाद गुप्त

—०—

साहित्याचार्य पांडेय रामावतार शर्म्मा एम० ए०।

भारद्वाज वंश के सरयूपारीण बहुत दिनों से सरयू के उत्तर तट पर सारंगारण्य (वर्तमान सारन) के मुख्य नगर छपरा में रहते आए हैं। पंडित देवनारायण शर्मा इसी वंश के एक कुशाग्रबुद्धि संस्कृतज्ञ धार्मिक विद्वान् थे। उनकी स्त्री श्रीमती गोविंददेवी भी अच्छी पढ़ी लिखी थीं। इसलिये इनके चारों पुत्र रामावतार, श्रीकांत, बलदेव और लक्ष्मीनारायण अच्छे विद्वान् हैं।

पांडेय रामावतार का जन्म १७९९ शकाब्द (वि० संवत् १९३४) में हुआ था। पांच वर्ष की अवस्था में ही आपके पिता ने आपका विद्याभ्यास आरम्भ कराया। बारह वर्ष की अवस्था में आपने बाँकीपुर में प्रथम वर्ग में प्रथम परीक्षा पास की और छात्रवृत्ति पाई। प्रायः २० वर्ष की अवस्था में आप काशी संस्कृत कालेज की साहित्याचार्य परीक्षा में प्रथम वर्ग में प्रथम हुए। इसी बीच में आपने एंट्रेंस तथा अन्य कई परीक्षाएं पास कीं और बराबर छात्रवृत्तियां पाईं। प्रायः सभी परीक्षाओं में आप प्रथम रहा करते थे। धनाभाव के कारण आपके पिता को अपने पुत्र की शिक्षा जारी रखने के लिए बहुत कठिनाइयां उठानी पड़ी थीं। २० वर्ष की अवस्था में आपके पिता का देहांत हो गया। उस समय इनकी माता ने ज़ेवर तक बेच कर अपने होनहार पुत्र की शिक्षा का यथेष्ट प्रबंध किया। संवत् १९५५ में आपने एफ० ए०, १९५७ में बी० ए० और १९५८ में कलकत्ता विश्वविद्यालय की एम० ए० की डिग्री प्राप्त की। इन सब परीक्षाओं में भी आप सदा प्रथम वर्ग में प्रथम रहे। एम० ए० की डिग्री प्राप्त करके आप काशीहिन्दूकालेज में अध्यापक और प्रयागविश्वविद्यालय में परीक्षक हुए। संवत १९६३ में आप पटना के सरकारी कालेज में अध्यापक नियुक्त हुए। यहां से दो वर्ष की छुट्टी लेकर आप कलकत्ता गए और वहां विश्वविद्यालय में अध्यापक तथा वसुमल्लिक वेदांत व्याख्याता नियुक्त हुए। १९६६ में कलकत्ता-विश्वविद्यालय ने इन्हें अपनी सिनेट का सदस्य बनाया। आजकल आप पटना-कालेज में अध्यापक हैं।

पांडेय जी को विद्याभ्यास का बहुत अधिक व्यसन है। आप बड़े से बड़ा कोई ऐसा अधिकार पसंद नहीं करते जिसके कारण अध्ययन और अध्यापन में विघ्न पड़े। आप आप छोटे बड़े सब से प्रेम पूर्वक मिलते हैं और उनके सब प्रकार के संदेह मिटाने का प्रयत्न करते हैं।

हिंदी की आपने बहुत कुछ सेवा की है। प्रारंभिक काल से ही आपको लेखादि लिखने का शौक है। अब तक आपके बहुत से विद्वत्तापूर्ण लेख, निबंध और व्याख्यान आदि अनेक पत्रों से प्रकाशित हो चुके हैं। आपके अधिकांश लेख पुरातत्व, इतिहास, विज्ञान आदि विषयों पर ही होते हैं। हिन्दी में आपने यूरोपीय दर्शन, हिन्दी व्याकरणसार आदि कई पुस्तकें लिखी हैं। संस्कृत में भी आपने साहित्यरत्नावली, अशोकप्रशस्ति आदि कई ग्रन्थ रचे हैं। आपने परमार्थ दर्शन नामक एक ग्रन्थ लिखा है जो पाखंड-खंडन विषयक है। आप वर्तमान भारतवासियों के विचारों के विरोधी और नवीन समाज सुधार के पक्षपाती हैं। आप परदे के विरोधी और सांसमक्षण के पक्षपाती हैं। आप शीघ्र ही द्वीपांतरों की रीति जानने के लिये विलायत जाने का विचार करते हैं। आप महामहोपाध्याय पंडित गंगाधर शास्त्री सी० आई० ई० के परमप्रिय और कृपापात्र शिष्यों में से हैं।

पंडित रामावतार पांडेय संस्कृत के धुरंधर विद्वान् हैं, साथ ही हिन्दी के परम भक्त और प्रभावशाली लेखक हैं। आपका स्वभाव बहुत ही सरल और निष्कपट है। इस ग्रन्थ-लेखक को स्वयं पांडेय जी से कई वर्षों तक संस्कृत पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त है।

यह जीवनी 'हिन्दी कोविद रत्नमाला' से लीगई है। पांडेय जी के पांडित्य में और तर्क शक्ति की प्रखरता में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता। आप बिहार के इने गिने विद्वानों में से हैं। इस वर्ष आप हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति निर्वाचित किए गए हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

ज़ाबिता को राज्य के प्रसाद का सुख मिला—किन्तु कुछ दिनों के लिये। असली वज़ीर नूजुफ़ख़ां सरहदों के साथ फिर मिल गया और ज़ाबिता अपने पुराने मित्र भरतपुर के जाटों की शरण में पहुंच गया। ज़ाबिताख़ां ने जाटों के जोशीले नेताओं को फिर भड़का दिया और मुग़लों और जाटों की तलवारें सालों तक भिड़ती रहीं। इन परिवर्तनों में गुलाम क़ादिर अपने पिता के साथ रहा—और मुग़ल शक्ति से द्वेष करने का पाठ पढ़ता रहा। इसके पीछे ज़ाबिता जितनी देर तक जिया दिल्ली का प्रति विद्रोही बन कर ही जिया। गुलामक़ादिरभी पिता के साथ रह कर युद्ध शिक्षा पाता रहा। उसकी शारीरिक सम्पत्ति दिनों दिन खिलने लगी, और इच्छाओं तथा उमंगों का क्षेत्र लहलहाने लगा। वह स्वतन्त्र रीति पर बढ़ने की कामना करने लगा—यहां तक कि अपने पिता के साथ रहना भी उसे बंधन के समान प्रतीत होने लगा। एक दिन इसी धुन में मस्त हो कर, अपने हथियारों से सुसज्जित हो वह पिता के तम्बू से बाहिर हो गया और स्वतन्त्र उन्नति की प्रबल इच्छा से प्रेरित हो कर दिल्लीपति के चरणों में सिर जा रक्खा। उस समय एक साहसी पुरुष के लिये दिल्ली से अच्छा कार्यक्षेत्र न था। जहां बादशाह निर्बल हो वहां प्रजा में से जो भी कन्धा मार सकेगा, रास्ता बना लेगा। कन्धा मार कर रास्ता निकाल लेने का संकल्प करके ही गुलाम क़ादिर भी शाह आलम की सेवा करने के लिये आ खड़ा हुआ।

क़ादिर की सोहनी सूरत और मोहनी बात चीत ने बादशाह पर असर किया, और उसे अच्छा ऊंचा स्थान मिल गया। स्थिति होते ही क़ादिर को पहिली चिन्ता किसी सहायक की हुई। एकसत्तात्मक राज दरबार में बिना जत्था बनाये किसी का जीवन सुरक्षित नहीं। हर एक उठते हुए आदमी को एक गिरोह बनाना पड़ता है, जिस क सभासद् एक दूसरे की हर प्रकार की सहायता करने को तय्यार हो। ऐसे शख़्सी राज्यों में प्रबल से प्रबल योग्यता और गुणों की लकड़ी क्षण भर में टूट जाती है, और निर्गुण तिनकों का जत्था चिरकाल तक स्थित रहता है। गुलाम क़ादिर ने साथी ढूंढने के लिये आंख उठाई तो उसे महलों के प्रबन्धकर्त्ता मंजूरअली भी साथी की तलाश में इधर उधर घूमता हुआ दिखाई दिया। दोनों खोजने वाले मिल गये। दोनों ने समझ लिया कि उनकी कमियां परस्पर पूरी हो सकती हैं। मंजूरअली बात चीत में, धोखेबाज़ी में, महल की गुप्त नीतियों में प्रवीण था, परन्तु तलवार नहीं पकड़ सकता था। गुलामक़ादिर तलवार का धनी था, अतुलसाहसी था, परन्तु कपट-नीति में प्रवीण नहीं था। दोनों को एक दूसरे की ज़रूरत थी—मेल होते देर न लगी। एक दूसरे की पूरी सहायता प्रारम्भ हो गई। मंजूरअली राजा के बहुत समीप रहता था—बादशाह के गुप्त व्यसनों को पूरा करने का बहुतसा भार उसी पर था—उसने दिन रात बादशाह के सामने क़ादिर के गीत गाने प्रारम्भ किये। फल यह हुआ कि कादिर शाही कृपा का विशेष पात्र होने लगा। वायु वेग से उड़ते हुए विमान की भांती गुलामक़ादिर ऊपर को उठने लगा।

कल बादशह ने गुलामक़ादिर को आज्ञा दी है कि वह राजपूत कन्या को छल या बल से ले आवे। कमलदेवी की सूरत ने कामी शाहआलम के हृदय पर घाव कर दिया है—वह कल से आकुल है। दिनभर कुछ काम भी नहीं कर सका—और अब रात भी इसी चिन्ता में बिता रहा है कि गुलाम क़ादिर कब आवे और राजपूत कन्या को मेरे पास ला बिठाये। गुलाम क़ादिर इस कार्य में कृतकार्य हो—मंजूरअली की यह प्रबल इच्छा थी। वह जानता था कि यदि क़ादिर कामी बादशाह की कामवासना को पूर्ण कर सका, तो उन्नति के मार्ग पर और भी तेज़ी से चढ़ने लगेगा। वह यह भी जानता था कि ऐसे मामले में यदि क़ादिर को कृत कार्यता न हुई तो फिर उसका गिराव भी निश्चित है। बादशाह को गुलाम क़ादिर की वीरता और कार्य कुशलता पर विश्वास था, और उसे निश्चय था कि वह राजपूत कन्या को रात तक ले आयगा। बादशाह इसी उपलक्ष में क़ादिर को बहुत सा इनाम देना चाहता था—और उसी इनाम में साक्षी बनने के लिये क़ादिर के मित्र को भी बुलवा भेजा था।

बादशाह की आज्ञा पाकर दरबान बाहिर चला गया और मिनिट पीछे कल्याणसिंह अन्दर घुसा। उसने अपनी तलवार बादशाह के चरणों में डालकर विनीत सलाम किया और आंखें नीची कर खड़ा हो गया। शाहआलम इस समय उठकर बैठ गया था। उसने कल्याणसिंह की ओर देख कर कहा—

'कल्याणसिंह! गुलाम कादिर कहांहै?'

कल्याणसिंह ने फिर झुक कर बड़ी नम्रता से विनय सूचित किया और कहा कि 'जहांपनाह! कैदी है।' शाहआलम ने तीव्र स्वर से पूछा 'क्यों?' कल्याणसिंह ने विनय से कहा 'हुकुम होतो सारा माजरा कह सुनाऊं। उससे सारा भेद खुल जायगा।' शाहआलम ने फिर पूछा—'माजरा फिरसुना जायगा। पहले यह बताओ कि तुम उस राजपूतनी को लाये हो या नहीं?" कल्याणसिंह ने और भी विनय से झुककर निवेदन किया कि 'हुजूर? हम लोग तो उसे ले आये थे—लेकिन गुलामक़ादिर ने धोखे बाज़ी से उसे गुम कर दिया—उसके कुछ साथी उसे ले भागे हैं। इसी लिये हमने क़ादिर को कैदी कर लिया है।'

बादशाह के क्रोध का पारा इस समय तक बहुत चढ़गया था। राजपूतनी के न आने से उसे क्रोध था ही और फिर क़ादिर की धोखेबाज़ी सुनकर तो वह जल उठा। मंजूरअली की ओर देख तीखे स्वर से कहने लगा—'देखा मंजूर अली, यही तुम्हारा गुलामक़ादिर है। इस बदमाश जाबिता के बच्चे से और क्या आशा हो सकती थी। मैं तो पहले ही समझता था कि इस शैतान के बेटे से हमें धोखा ही मिलेगा। तुमने ही शिकारियों के मारे मुझे तंग कर दिया।

(शेषफिर)

दुःख और सुख

आज आपके समक्ष में यह प्रश्न हल करती हूं, कि सुख और दुःख क्या है, और इनकी कभी समाप्ति भी होती है, या नहीं? होती है, तो उनका समय कौन सा है, इत्यादि!

बहुत ही स्थिर चित्त हो विचार करती हूं कि सुख और दुःख क्या है, तो अन्दर से आत्मा साक्षी देता है कि अपने २ मन की इच्छाओं के अनुकूल प्राप्त वस्तुओं का सुख और मन की इच्छाओं के प्रतिकूल प्राप्त वस्तुओं का नाम दुःख है। इस पर जो विचार करती हूं तो वास्तव में ठीक ही प्रतीत होता है। एक मूर्ख कन्या से लेकर एक विदुषी शिक्षित पूरी आयु वाली स्त्री तक से प्रश्न करूंगी, कि आप की इच्छा क्या है तो किसी न किसी वस्तु पर अवश्य बतावेंगी। यह भी स्वाभाविक बात है, कि इच्छा सदैव अप्राप्त नहीं-मिलने वाली वस्तुओं पर चलती है, अब प्रश्न यह उठता है, कि इच्छा की समाप्ति का भी कोई स्थान है, तो उत्तर मिलता है कि नहीं। इच्छा तो रेल की न्याईं दौड़ती ही रहती है। जिस प्रकार रेल का चलाना वा बन्द करना उसके ड्राइवर के हाथ है, उसी प्रकार हमारी इच्छा रूपी रेल का चलना वा बन्द करना हमारे मन रूपी ड्राईवर के हाथ है। जिस प्रकार ड्राईवर रेल को एक स्टेशन पर ठहराके थोड़े ही समय में दूसरे स्टेशन को पहुंचाने की आशा में गाड़ी को चला देता है, उसी प्रकार हमारी इच्छा रूपी रेल का ड्राईवर मन भी उस की प्रथम इच्छा के अनुकूल वा प्रतिकूल सामान प्राप्त होते हों तो दूसरी इच्छा पैदा कर देता है। जिस प्रकार ड्राईवर दूसरे स्टेशन से तीसरे और तीसरे से चौथे इस प्रकार उस को आगे से आगे बढ़ने के लाईनक्लीयर मिलते ही जाते हैं उसी प्रकार हमारी इच्छारूपी रेल के ड्राईवर का भी एक स्टेशन से दूसरे और दूसरे से तीसरे अर्थात् एक इच्छा के पूर्ण होते ही दूसरी और दूसरी के पूर्ण होते तीसरी अभिप्राय यह है। कि उसी प्रकार हमारा मनरूपी ड्राईवर भी आगे से आगे नवीन २ इच्छायें पैदा कर २ के लाईनक्लीयर देता जाता है। जिस प्रकार रेल का ड्राईवर जबतक ड्यूटी पर रहता है तब तक रेल को आगे से समय पहुंचाने की शीघ्रता में किसी प्रकार का आराम नहीं भोग सकता। उसी प्रकार इच्छा रूपी रेल का ड्राईवर मन भी एक पर एक नवीन२ इच्छायें पैदा करने और उनको पूरी करने की शीघ्रता में किसी प्रकार का आराम नहीं कर सकता। अब रहा यह प्रश्न कि रेल का ड्राईवर तो अपनी ड्यूटी (नौकरी) पूरी करके आराम भोगने का समय पालेता है, तो उसी प्रकार इच्छा रूपी रेल का ड्राईवर मन भी आराम पालेता है।"

पाठक! मेरे उपरोक्त कथन से यह तो भली प्रकार से समझ गये होंगे कि सुख दुःख को पैदा करने वाली हमारी इच्छायें हैं अब रहा यह प्रश्न कि इच्छा को कौन पैदा कर सकता है और इस शरीर के इस का सम्बन्ध कब से होता है, तो उत्तर मिलेगा है कि इच्छा को पैदा कर ने वाला हमारा मन है, और जब से इस शरीर रूपी मकान को जीवात्मा अपना निवास स्थान बनाता है, तभी से मन और मन के साथ २ ही इच्छा लग जाती है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है, कि जिस समय हमारा शरीर रूपी मकान अपनी माता के उदर में पूर्ण बन कर उस में जीवात्मा प्रवेश होगया था, तब उसी समय हम को उस तंग जगह में उलटे झूलने की व्याकुलता हो-उसको निवारण करने की इच्छा उत्पन्न हो गई थी, जिस से हम परमात्मा से बड़े ही आग्रह पूर्वक नम्र और दीनता से कहते थे, कि "हे पूर्ण ब्रह्म दीन बन्धू दीनानाथ! मेरे कुकर्मों ने मुझ अपराधिनी कन्या वा लड़के को अपने किये हुए घोर अपराधों का बदला भुगताने को इस नर्कवास रूपी भयंकर और ऐसे तंग स्थान में कि जहां न भली प्रकार से हिल सकती हूं और न स्वांस लेने को नर्क के सिवाय उत्तम हवा है, नौमास तक उलटे झूलने का कठिन से कठिन कारागार का हुकम सुना दिया है।

त्राहिमाम्! त्राहिमाम्!!

इस कठिन कैद से छुटकारा देने योग्य न कोई जज है, न इस घोर विपत्ति में, माता, पिता, पुत्र, पुत्री ति बहिनादि कोई सहायक हैं, मैंने बड़ा भारी धोका खाया है, यदि मुझको मेरे कुसंस्कार एक दिन ऐसी भङ्कर कैद का हुकम सुनादेंगे, और उस विपत्ति काल में सिवाय आपके और मेरे धार्मिक संस्कारों के कोई साथी नहीं बनेगा, मैं कदापि कुसंस्कारों के न पड़ती-हे दीन बन्धु दीनानाथ मैं झूटे नाशवान पदार्थों और थोड़े समय के साथियों के जाल में फंस के न धार्मिक संस्कारों का संग्रह कर सकी और न आप के स्मरण करसकी!

हे प्रभो! आप बड़े भारी दयालु हैं, कृपा सिन्धु हैं, दीन बन्धु हैं, अब कोटिशः शपथ खाकर दीनता पूर्वक नम्रभाव से याचना करती या करता हूं कि हे कृपा सिन्धु मेरी इस बार की अपील को अन्तिम अपील समझ कर स्वीकार कीजिये, यदि इस बार भी आपकी कृपा से विस्मृत हो जाऊं तो पुनः अपील पेश करने का अवसर इसी प्रकार आजावें तो चाहे उस समय की अपील पर छुटकारे के बजाय दुगना दण्ड बढ़ा देना!!"

इस प्रकार का करुणा जनक विलाप सुन कर उस के कर्मों के अनुसार कृपा सागर उस कठिन कैद से मुक्त होने की अवधि का हुक्म सुनाते हैं। जिस प्रकार कुत्ता अपने मालिक को अपना प्रम भाव दर्शाने के लिये उस के सामने अनेक प्रकार के नृत्य करता है, जब उस कैद से निकले बस फिर क्या वहां के ख्याल वहां ही रहे और मन की इच्छायें बढ़ने लगी इसी तरह मनुष्य की इच्छायें कभी ही पूरी नहीं होती जिस तरह समुद्र का अथाह पानी होता है उसी तरह मन की इच्छायें अथाह है।

सरस्वती
सरगोधा

ज़रूरत

"ब्राह्मण-समाचार" कार्य्यालय के लिये एक एन्ट्रेंस पास हिन्दी जानने वाले क्लर्क की बहुत ज़रूरत है। वेतन का फैसला पत्र व्यवहार से करें।

मैनेजर—
ब्राह्मण समाचार
जगाधरी [पञ्जाब]

आर्य सामाजिक समाचार

आर्य्य कुमार सभा लुध्याना का चौथवां वार्षिक उत्सव ८, ९ नवम्बर को होना निश्चित हुआ है। गुरवचनसिंह मन्त्री

आर्य-समाज स्यालकोट

"आर्य समाज स्यालकोट का वार्षिकोत्सव २७, २८ व २९ अक्टूबर के स्थान में २३, २४ व २५ फरवरी सन् १९१७ ई० को होगा।"

भवदीय
रेवती प्रसाद मन्त्रार्थ

देहरादून

"आर्य कुमार सभा दयानन्दाश्रम देहरादून का चतुर्थ वार्षिकोत्सव दीपावली पर ता० २५, २६, २७ अक्टूबर को होगा, जिसमें सन्यासी, महात्माओं और विद्वानों से प्रार्थना है कि वे उत्सव में पधार कर कृतार्थ करें।

देवकीनंदन मंत्री"

आर्य्य-समाज फतेहपुर

आर्य समाज फतेहपुर सिटी का चतुर्थ वार्षिकोत्सव १५, १६, १७ दिसम्बर को होना निश्चित हुआ है, ता० १४ को नगरकीर्तन होगा। जिस किसी को श्री स्वामी सत्यानंद जी व विद्या मित्र जी का पता ज्ञात हो वह कृपा कर शीघ्र सूचना देने की कृपा करें।

नोट—समाज के उत्सव के बाद अन्य मतावलम्बी आने २ उत्सवों का आडम्बर रच के समाज के विरुद्ध बहुत कुछ शोर गुल मचाया करते हैं अतः उन से निवेदन है कि उत्सव के पूर्व नियम तै कर के शास्त्रार्थ करलें।

निवेदक—
मथुराप्रसाद शिवहरे
मंत्री आर्यसमाज फतेहपुर सिटी
E. I. R.

आर्यसमाज गुरदासपुर का वार्षिकोत्सव १७, १८, १९ नवम्बर को होगा।

दीवानचन्द वकील

चिट्ठियां

(१)

नोटिस

"प्रकाश पत्र" के सुयोग्य सम्पादक ने अपने पत्र के ग्राहकों तथा पाठकों से गुरुकुल में अछूत जाति के एक बालक को प्रविष्ट कराने के लिये एक छात्रवृत्ति का रुपया पूरा करके गुरुकुल कोष में दाखिल कराया हुआ है। अछूत जाति का एक बालक बिना फीस गुरुकुल में इस छात्र वृत्ति से प्रविष्ट होने का अधिकारी है।

अछूत जाति के दूसरे बालक के लिये छात्रवृत्ति देने का एक और महाशय ने प्रण किया हुआ है। इस प्रकार इस वर्ष गुरुकुल में अछूत जाति के दो बालक बिना फ़ीस प्रविष्ट हो सकते हैं।

सर्व प्रार्थना पत्र मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी डाकघर शामपुर जिला बिजनौर के पते पर आने चाहियें।

मुंशीराम
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल कांगड़ी

सूचना

श्रीमद्दयानन्द अनाथालयान्तर्गत "ब्रह्मचर्याश्रम आनासागर अजमेर" में इस वर्ष १५ नवीन ब्रह्मचारी प्रविष्ट किये जायेंगे। छात्रों की आयु ८ वर्ष से १० वर्ष के अन्तर्गत हो अधिक आयु के छात्र नियमानुसार प्रविष्ट नहीं हो सकेंगे। निवेदन पत्र मय आयु और योग्यता के निम्नलिखित पते पर शीघ्र ही आने चाहियें। अनाथ छात्रों के अतिरिक्त सनाथ छात्रों का भी प्रविष्ट करने का नियम है। केवल सनाथ छात्रों के संरक्षकों से ७) शुल्क [फीस] मासिक पेशगी ली जाती है।

गुलराज गोपाल गुप्त मंत्री
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर

गुरुकुल

ता० ५ अक्टूबर आश्विन शुक्ल विजयादशमी को हरपुर जान में गुरुकुल खुल गया। उक्त ता० को ब्रह्मचारी प्रवेश किये गये। यज्ञ हवन और प्रचार भी हुआ। चार ब्रह्मचारी बिना शुल्क और इसके अतिरिक्त १०) रु० मासिक शुल्क पर एक प्रवेश किये गये। ता० २५ फरवरी १९१७ ई० तक १५ ब्रह्मचारी १०) रु० शुल्क पर और प्रवेश किये जायंगे। जिन महाशयों को ब्रह्मचारी प्रवेश करना हो वह नीचे लिखे पते से पत्र व्यवहार करें। इस गुरुकुल को सब प्रान्तों से समान मित्रता है।

भवदीय—
कृष्ण बहादुर सिंह मंत्री
गुरुकुल विद्यालय हरपुरजान
पो० राजापट्टी ज़ि० सारन

आर्यसमाज खेमकरण

आर्य्य-समाज खेमकरण का प्रथम वार्षिक उत्सव तारीख ७-८-९ आश्विन सम्वत् १९७३ को निर्विघ्नता से समाप्त हुआ और उपदेशक महाशयों ने बड़े मनोहर व्याख्यान दिए और भजनीकों ने भजनों द्वारा अमृत की वर्षा बरसाई जिसका नगर निवासियों पर उत्तम प्रभाव पड़ा और अपील पर ३५०) नक़द एकत्रित हुए और कुछ वायदा है ऊपर दान जो मिला है यह हर फरडों के वास्ते है और १० आश्विन को स्त्री समाज बड़े समारोह के साथ हुआ और नगर पर प्रभाव उत्तम पड़ा। २७॥-) रोक हर फरडों के वास्ते प्राप्त हुए और महाशय कृष्ण ने भी स्त्री समाज में उपदेशकी जो मिती २५ आश्विन सम्वत् १९७३।

हस्ताक्षर—विष्णुदास प्रधान
मंत्री आर्य्य-समाज खेम करण

मोगा

मैं नमस्ते पर एक पुस्तक नमस्ते प्रचार लिख रहा हूं। इसलिए प्रत्येक आर्य्य अनार्य से प्रार्थना है कि उनके पास जो २ भी नमस्ते के पक्ष वा विरुद्ध प्रमाण तथा युक्तियें हों, वे मेरे पास भेजदें मैं उनका उचित समाधान वा उपयोग कर दूंगा। पुस्तक नवम्बर मास में छपेगी इस लिए प्रत्येक पत्र शीघ्र आजावे पेशगी आर्डर आने पर पुस्तक सस्ती मिलेगी—

सन्तराम वैद्य
P. O. Moga मोगा (पंजाब)

भरतपुर

महानुभाव.

श्री हिन्दी साहित्य समिति, भरतपुर का द्वितीय वार्षिकोत्सव कार्तिक कृष्णा ३० तथा शुक्लपक्ष की १ और २ तदनुसार ता० २६, २७ एवं २८ अक्टूबर (वृहस्पति, शुक्र, शनि) को होगा। अतः अत्यन्त विनीत भाव से निवेदन है कि आप इस अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ाने की कृपा करें। आप जैसे महानुभावों से ही उत्सव की शोभा है।

विनीत निवेदक
अधिकारी जगन्नाथ दास
मंत्री।

भास्कर का ऋषि अङ्क

गत वर्षों के अनुसार इस वर्ष भी दिवाली के अवसर पर भास्कर मासिक पत्र का ऋषि अंक बड़ी सज धज से प्रकाशित होगा। इस वार श्री पं० घासीराम जी प्रधान यू०पी० सभा, श्री प्रो० बालकृष्ण, श्री स्नातक देवराज आदि महानुभावों के लेख प्रकाशित हुए हैं। १५ अक्टूबर तक अंक प्रकाशित हो जायगा। आर्य्य भाषा के प्रेमी भास्कर के ऋषि अंक की अनेकानेक कापियां ख़रीद कर हमारा उत्साह बढ़ावें। प्रत्येक कापी का मूल्य =) है।

पता—मैनेजर भास्कर मासिक पत्र
भेरठ शहर

दानापुर नगर

इस दानापुर नगर में कार्यों की असीम कृपा से सन् १९०९ ई० से अनाथालय स्थापित है। इस संस्था का संचालन विशेष कर इस नगरस्थ तथा प्रान्तिक कार्यों की सहायता से और कतिपय देश हितैषी हिंदू धर्म्मावलम्बियों के असीम उत्साह से होता है। आर्यों ने निमन्त्रण देकर अनाथों को भोजन कराने की परिपाटी भी नियत कर रक्खी है। इनके देखा देखी कतिपय हिंदू जाति भी निमंत्रण दे अनाथों को भोजन कराना अपना परम कर्त्तव्य समझने लगी है परंतु खेद की बात है कि आर्य सज्जन विवाह के समय अनाथों को अशुभ (अभागा) समझ कर याद नहीं करते हों यदि सचमुच में यह भाव हो तो आर्यों के लिए शोक की बात है आर्यों को तो इन्हें अपना पुत्रवत् जान हृदय से लगाय रहना चाहिए क्यों कि वर्त्तमान समय में देश के कर्णधार हैं।

विनीत
अनाथ सेवक

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

* ओ३म् *

Registered NO. A. 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २० कार्त्तिक सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ४ नवम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या २९ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

र्वसाधारण से ... ... ३)
द्यार्थियों से ... ... २॥)
रत विभिन्न देशों से ... ... ४।=)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोक-त के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य ये जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के ध बांटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र को बंटाई के नियम

१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई ोड़ पत्र नहीं बंट सकता!

२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समा-र होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे रे पर सद्धर्म्मप्रचारक का नाम और बं-ने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित जिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रका-ित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख ी त्रिपणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का र करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति ेम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

ता—उषा कार्यालय गुरुकुल
ड़ी पो०श्यामपुर जि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)
[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)
[३] आचाराऽनाचार औरभक्ष्याऽभक्ष्य मूल्य=)
[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाजमूल्य -)
[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)
[६] पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता :—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस शामपुर-कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउण्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय
P.O. शामपुर, ज़िला बिजनौर

———

विज्ञापन

शाखा गुरुकुल थानेश्वर के चिकित्सक महा० शिवराज दो मास के अवकाश पर जाने वाले हैं। यदि कोई डाक्टर महाशय उन दो महीनों के समय में शाखा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की चिकित्सा आदि कार्य्य में सहायता देने के लिये वहां पहुंच सकें तो वे महाशय मेरे से पत्र व्यवहार करें।

मुन्शीराम,
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
डाकखाना शामपुर कांगड़ी
ज़िला, बिजनौर,

———

जापान में स्त्रियों का स्थान

(अक्टूबर के "माडर्नरिव्यू" के आधार पर)

(गतांक से आगे)

जापान में विवाह प्रायः छोटी अवस्था में ही हो जाता है, यहां तक कि पति अभी स्वयं कमाने लायक भी नहीं होता परन्तु उसका विवाह हो जाता है। इस लिये विवाहित नवयुवक अपना कोई घर पृथक स्थापित नहीं कर सकते परन्तु उन्हें अपनी पत्नी के साथ माता पिता के घर ही रहना पड़ता है।

विवाह को नियमानुसार (Legal) बनाने के लिए गवर्नमेन्ट का केवल इतना ही नियम है कि विवाहित कन्या का नाम पिता के परिवार में से कटवा कर पति के परिवार में लिखवा दिया जावे इस समय से -अर्थात पति के परिवार में नाम लिखवाने के बाद से- कन्या के पिता से सिवाय प्रेम-सम्बन्ध के और सब सम्बन्ध टूट जाते हैं।

और गवर्नमेन्ट के नियम तथा देश की प्रथा के अनुसार कन्या का पति और उसके सम्बन्धियों के साथ अपने सम्बन्धियों से भी अधिक प्रेम सम्बन्ध होजाता है।

जापान में इस समय उन प्रथाओं को छोड़ कर जो, अति प्राचीन हैं कोई भी विवाह-पद्धति निश्चित नहीं। विवाह की सब धर्म कर्म की बातें दोनों ओर के पक्षों की इच्छानुसार अथवा सर्वसाधारण की सम्मति की रुख के अनुसार—अदल बदल की जा सकती हैं।

छोटी जातियों में यह एक साधारण प्रथा है कि एक आदमी क्रम से कई स्त्रियों को तलाक देता जावे और वे स्त्रियें भी जिन्हें एक वा दो बार तलाक दिया जा चुका है वे दूसरी वा ३ री वार भी विवाह करलें। ऊंची जातियों में लज्जा और बदनामी का डर, जो कि दोनों से सम्बन्ध रखता है; उन्हें तलाक के स्वेच्छा पूर्वक उपयोग के लिये रोकता है परन्तु तिस पर भी ऊंची जातियों में इसका उपयोग इतना अधिक है कि बहुतेरे प्रतिष्ठा योग्य और प्रतिष्ठित ऐसे २ बड़े आदमी है जिन्होंने अपना जीवन इसी प्रकार के अनुभवों में बिताया है।

जापानी गवर्नमेन्ट का एक ऐसा नियम है जिसके कारण वहां की स्त्रियां तलाक का प्रार्थना पत्र देने की अपेक्षा गृहस्थ का भारी से भारी दुख सहना अच्छा समझती हैं। वह यह है कि सन्तान पिता की होती है, माता की नहीं; चाहे पिता उनके पालने में कितना ही अयोग्य क्यों न हो! तलाक के समय उनका प्रबन्ध करना केवल उसी का काम है। इस नियम के कारण तलाक दी हुई स्त्री बिना किसी सन्तान के घर लौट जाती है! इस लिए स्त्रियां अपनी प्यारी सन्तान को अपने साथ रखने के लिए पति का घोर से घोर अत्याचार सहन करती हैं और पति भी अधिकतर अपने आप को नीच और अयोग्य सिद्ध करता है।

इस नियम का कारण जापान में पूर्वजों की पूजा (Ancestor worship) है। उस पूजा के कारण उनका यह विश्वास है कि सब पूर्वज जिनका उनसे सम्बन्ध है; पुरुष जाति के थे; स्त्री जाति के नहीं और दूसरा उनका यह भी विश्वास है कि सन्तान में अधिक गुण पिता के आते हैं नकि माता के !! इसी प्रथा के कारण वहां यह नियम है कि सन्तान पिता की है माता की नहीं! इस नियम के कारण ही प्रायः यह देखा जाता है कि वहां अच्छी सन्तान तो पिता की होती है और रद्दी माता की। यद्यपि दोनों प्रकार की सन्तानों का अधिकार बराबर है तो भी अच्छी सन्तान पिता के अधिकारों की उत्तराधिकारी समझी जाती है और रद्दी सन्तान तथा माता को उस सन्तान के बराबर नहीं समझा जाता! यदि माता किसी छोटी जाति की है तो सन्तान मानी ही नहीं जाती क्योंकि वे समझते हैं इस के कारण सन्तान में विष युक्त हानिकारक पदार्थ घुस गया है (Quinted)!

यदि गवर्नमेन्ट यह नियम बना भी दे कि सन्तान माता की होती है तब भी यह असम्भव होगा कि वह उन्हें रख सके वा पाल सके। क्योंकि उसके पास ऐसा कोई साधन नहीं है जिससे वह कुछ कमासके क्यों कि वह तो थोड़े पेशे स्त्रियों के लिए हैं। उस के साथ २ उसे बाधित किया जाता है कि वह पिता वा किसी अन्य सम्बन्धी जोकि पुरुष हो-के आधीन वा उस पर निर्भर रहे उस के पिता वा सम्बन्धी चाहे उस के लिए कुछ भी करना चाहते हैं; परन्तु यह निश्चित है कि वे दूसरे घर की (स्त्री के भूतपूर्व पति की) सन्तानों को सहायता देने को कभी भी उद्यत न होंगे क्योंकि प्रथा के अनुसार तलाक के बाद कन्या-पक्ष और वर पक्ष का—आपस में किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नहीं है!

इस प्रकार तलाक दी हुई स्त्रियों का जीवन बड़ा ही दुःखमय होता है इस लिए जापानी स्त्रियां अपने जिगर के टुकड़े, लाडले बच्चों के लिए ही पति का घोर से घोर अत्याचार सहना पसन्द करती हैं परन्तु तलाक देना नहीं!

—"नाथ"

देहरादून-समाचार

गत १७ अक्टूबर रात्रि के समय आर्य समाज मन्दिर में टैम्परेन्स सुसायटी अमृतसर के प्रसिद्ध व्याख्याता मास्टर खजानसिंह जी आन रैरी सैक्ट्री का मैजिक लैम्प द्वारा चित्र दर्शन के साथ व्याख्यान हुआ मादक द्रव्यों से घृणा उत्पन्न कराने के लिए आप का भाषण मनोरंजक होने पर भी सारगर्भित तथा प्रभावशाली था यथार्थ में शिक्षाप्रद चित्रों द्वारा जनता की कु प्रवृत्तियें सुगमता से ही दूर हो जाया करती हैं उस समय स्थानीय गुरुद्वारे के महन्त श्रीयुत लक्ष्मणदास जी महानुभाव ने भी पधार कर समाज को सुशोभित किया था अतएव श्रोतागण पर्याप्त रूप से एकत्र हो गये थे।

दीपमालिका

२६ ता० को दीपमाला के उपलक्ष में वृहद् हवन किया गया किन्तु उसी दिन डी० ए० वी० हाई स्कूल में आर्य कुमार सभा का वार्षिकोत्सव होने के कारण समाज मन्दिर में कोई व्याख्यान नहीं हुआ—

परन्तु संध्या के समय कुमार सभा में गुरुकुल कांगड़ी के प्रोफैसर श्रीमान् महोदय महोचरणसिंह जी एम-एस-सी-का "विद्यार्थियों को दृढ़ प्रतिज्ञ होना चाहिये" इस विषय पर एक मनोहर व्याख्यान हुआ था जिस का कि प्रभाव छात्रों के कोमल चित्त पर सभ्यकतया खचित हुआ—

रात्रि को समाज मन्दिर में विशिष्ट रूप से दीप मालिका प्रज्वलित की गई—यह कहना अत्युक्ति न होगा कि देहरादून में अन्यों की अपेक्षा समाज मन्दिर की ही दीपावली अत्यन्त उत्कृष्ट हुआ करती है

कविराज अमरनाथ
औदिच्य मन्त्री
आर्य्यसमाज देहरादून

—:o:—

आर्य्य-समाज डोईवाला

आर्य्यसमाज डोईवाला जि० देहरादून ऋषि उत्सव अतीव हर्ष पूर्वक मनाया गया प्रार्थना हवन भजन व्याख्यान और ऋषि जी में से लेख पढ़े गये प्रभाव भी उत्तम रहा उपस्थिति भी संतोष जनक थी पश्चात् आगामी वर्ष के अधिकारियों का चुनाव हुआ। प्रधान श्री डा० मदनगोपाल जी, उ० प्र० श्री० बा० शमशेर सिंह जी, मंत्री म० ईश्वरचंद्र जी चूघर, उ० मं० श्री म० ज्वालाप्रसाद जी, खजांची बा० जादौराम जी, पुस्तकाध्यक्ष म०ज्ञानचन्द्र जी अन्तरङ्ग सदों में म०श्री०पं० बद्रीदत्त जी ला०गिरधारी लाल जी, म० गंगाराम जी भी हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

श्रीमान् वाइसराय

एक शिक्षक की दृष्टि से।

श्रीमान वाइसराय के साथ मैं पूरे डेढ़ घन्टों तक बात चीत करते हुए घूमा और इतने काल में जो कुछ भी दिखला-सका उन्हें दिखाया। मुझ पर यह प्रभाव पड़ा कि शिक्षा के विषय में उनको बड़ा अनुराग ही नहीं प्रत्युत इस अंश में उनके विचार भी बड़े उच्च तथा उदार हैं।

हाथी से उतरते ही अभिवादन कर के हार पहिनाए और प्रधानों तथा दो प्राफ़ेसरों से परिचय करा के आगे बढ़ना चाहता था क्यों कि मुझे श्रीमान सरजेम्स-मेस्टन की ताकीद थी कि सवा घन्टे से अधिक वाइसराय को न रोका जाय। परन्तु श्रीमानों ने बड़ी प्रसन्नता से जहां तक हो सका उपाध्यायों और स्नातकों से हाथ मिलाए और कइयों का हाल पूछते हुए आगे बढ़े। जिस समय ब्रह्मचारियों की घेरुआ पंक्तियों के मध्य, पुष्पों की वर्षा में से गुज़र रहे थे तो क्रमानुसार बड़ों से बच्चों तक पहुंच कर कहा—"आपके यहां आयु का क्रमानुसार भेद है" मैं ने निवेदन किया कि हम प्रत्येक वर्ष के आरम्भ में एक बार ही भरती करते हैं और वह भी आरम्भक श्रेणी में—तब बोले "That is a very sound principle" (यह बड़ा सारगर्भित नियम है)—

जब वाटिका के द्वार पर शामियाने के पास पहुंचे तो श्रीमान सरजेम्स मेस्टन ने मेरे पौत्र "रोहिताश्व" को याद किया। स्वागत के श्लोक गाए जाने पर रोहित आगया। श्रीमती लेडी चेम्सफोर्ड ने उसे प्यार किया और गिर्द खड़े बच्चों की ओर देख कर कहा—"इन में से कुछ तो बहुत ही बच्चे हैं-क्या यह माताओं से जुदाई को अनुभव नहीं करते?" वाइसराय ने कहा—"इनके चेहरों की ओर देखो; क्या यह जुदाई को अनुभव कर रहे हैं" श्रीमती-जी ने कहा "Ah! they appear so bright and happy, they could not feel it" 'ओह! वे इतनेखिले हुए और प्रसन्न दीखते हैं कि वे घरको याद नहीं कर सकते।"

वाटिका में पग धरते ही वाइसराय का प्रश्न था—"Do the students work in the gardens?" क्या विद्यार्थी बाग़ में काम करते हैं; मैं ने निवेदन किया कि गत वर्ष इसी वाटिका में सब काम करते थे परन्तु अब के नौ तोड़ भूमि कर के स्वयम् खेती तथा वाटिका का काम करते हैं। श्रीमान खड़े होगए और वहीं से कृषि के विद्यार्थियों की नई वाटिका की ओर दृष्टिडाली। मैंने सब से ऊंची छत पर से फिर वाटिका दिखाई जिसे देख कर प्रश्न हुआ—"क्या आप की अपनी गोशाला है?" मैं ने उसकी ओर भी निर्देश किया। तब बोले—"अपने ताज़े दूध से बढ़कर विद्यार्थियों के लिये अन्य भोजन नहीं है।" वाटिका में क्या क्या भाजी तथा फल उत्पन्न होते हैं? इस पर बहुत जानने का प्रयत्न किया।

आश्रम में जो भारत वर्ष का ज़मीन पर चित्र बना है उस पर कुछ समय लगा और कार्यालय को देख कर तब दशम श्रेणी का कमरा देख कर बिस्तरा खुलवा कर एक नमूना देखा। सारा प्रबन्ध इस तथा नवम श्रेणी के कमरे का देख कर यज्ञशाला की ओर बढ़े। सन्ध्या, अग्निहोत्र के विषय में सब कुछ पूछ कर जब भोजन शाला को बाहर से देखते गए (क्योंकि जूते उतारने में देर होने की संभावना थी) तो सादे और नियम पूर्व प्रबन्ध की प्रशंसा की और परसने के काम में ब्रह्मचारियों के व्रतका हाल सुन कर प्रसन्न हुए।

वस्तु भन्डार में दर्जियों को मशीन से काम करते देख कर मशीन पर(Singer co) 'सिङ्गर' का नाम पढ़ा और कहा—"You appear to be up to date in everything here" 'आप हर बात में नवीनतम साधनों से युक्त हैं।'

औषधालय में पहले आयुर्वेदिक विभाग के कमरों में प्रवेश हुआ। औषधियों के विषय में न केवल स्वयम् प्रश्न किए प्रत्युत अपने डाक्टर से भी कराते रहे। जब वहां से अंग्रेज़ी दवाइयों के स्टोर में डाक्टर सुखदेव लेगए तो कहा कि आप हमारे सिस्टम की सर्वथा उपेक्षा नहीं करते। डाक्टर जी ने Allopathic चिकित्सालय का सब सामान दिखाया। उस समय फिर श्रीमानों ने कहा—"You are up to date here too."

वनस्पति के कमरे में जब प्रोफ़ेसर महेशचरणसिंह जी ने निज रचित पुस्तकें भेंट देकर कुछ हस्त लिखित नई पुस्तकों का मसाला दिखाया तो श्रीमानों ने कहा—"But Science is not literature."

महाविद्यालय के 'रसक्रिया भवन' तथा विद्यालय के 'पदार्थ विज्ञान भवन' और 'आलेख्य भवन' को देखा कहा—"शिक्षा सम्बन्धी सब नए से नए साधन आप लोग काम में ला रहे हैं।" साईंस रूम में प्रवेश करते ही पूछा कि सूक्ष्म तराजू (Chemical balances) कहां है, तब Balance room में लेजाकर तराजू दिखाया गया और उपाध्याय विश्वनाथ को आर्यभाषा द्वारा पढ़ाते देखकर बोले—"मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने से विद्यार्थियों के लिए पढ़ाई सुगम हो जाती है। इसी समय पूछा परन्तु साईन्सादि की पुस्तकें हिन्दी में कहां हैं?" मैं ने उत्तर दिया कि हम वह भी तय्यार कर रहे हैं, परन्तु व्याख्यान और प्रश्न तथा उत्तर पत्र आर्य भाषा में होते हुए भी अंग्रेज़ी की असल पुस्तकें भी विद्यार्थियों के हाथों में दी जाती हैं। पुस्तकालय में पहुंच कर गुरुकुल के उपाध्यायों की निर्माण की हुई पुस्तकें, दो रेशमी रूमालों में बांध कर, पेश की गईं और साथ ही अंग्रेज़ी सत्यार्थप्रकाश, पण्डित गुरुदत्त की रचनाएं आदि में भेंट की गईं।

पुस्तकालय को बड़े ध्यान से देखा। प्रत्येक विषय को देखते हुए जब क़ानून की पुस्तकों तक पहुंचे तो कहा—"Law की पुस्तकें भी आपने रक्खी हैं। क़ानून जानना भी प्रत्येक citizen का कर्त्तव्य है।" नीचे की सब अलमारी में अंग्रेज़ी ही प्रधान देख कर बोले—"But where are the Sauskrit books!" मैंने ऊपर की मंज़िल की ओर निर्देश किया जहां अलमारियां संस्कृत और वैदिक पुस्तकों से भरी हुई थीं। उन्हें देखकर श्रीमानों ने कहा—आप को शीघ्र ही पुस्तकालय का स्थान बढ़ाना पड़ेगा" मैंने उत्तर में कहा कि साइन्स के लिए अलग नया भवन बनवा कर हम वर्तमान साइंस के दोनों कमरों को पुस्तकालय में ही मिलादेंगे; परन्तु धनाभाव बहुत काम अधूरे पड़े हैं।"

आलेख्य के कमरे में अष्टम श्रेणी के ब्रह्मचारी वीरेश्वर का खींचा अपना चित्र देख कर बहुत प्रसन्न हुए। उस समय श्रीमती लेडी चेम्सफोर्ड थककर वृक्षराज के नीचे बैठी थीं और साथ न थीं। जब फलभोज के समय मैंने उन्हें वाइसराय के इस चित्र का हाल सुनाया तो वह भी अकेली फिर से चित्र को देखने गईं, और बहुत प्रसन्न हुईं।

आलेख्य के कमरे को दिखाकर मैं श्रीमान् वाइसराय को सीधा ऊपर लेचला था परन्तु मुख्याध्यापक श्री सुखराम जी ने कहा—"छोटे ब्रह्मचारी तो

बहुत उत्सक बैठे हैं, वे वंचित रह जायंगे।" मैंने कहा कि समय थोड़ा है, परन्तु लार्डचेम्सफ़ोर्ड बोले—"यदि कुटपन के विद्यार्थी जीवन में मेरे साथ ऐसा व्यवहार होता मुझे भी बहुत निराशा होती कुछ बड़ा कष्ट नहीं है; चलो उधर से भी घूम चले।" श्रीमान न केवल घूम ही निकले प्रत्युत प्रत्येक श्रेणी में प्रवेश करके बालकों को प्रसन्न किया। अद्भुतालय में प्रवेश करते ही उपाध्याय म०च०सिंह जी से बहुत कुछ पूछते रहे। आस्ट्रेलिया के जानवरों की कुछ हड्डियों को देखकर बोले—"मैंने उन जानवरों को देखा है जिनकी ये हड्डियाँ हैं।" ब्रह्मचारियों के बनाए लकड़ी के काम को देखकर सन्तोष प्रकट किया ब्रह्मचारियों के बनाए हल तथा खेती के अन्य सामान को देख कर भी प्रसन्नता प्रकट की। अद्भुतालय में सब से अधिक समय लगाया फिर अन्तिम छत पर भी चढ़ गए। वहां से गुरुकुल भूमि के अतिरिक्त पहाड़ नदी आदि के सर्व दृश्य देख, सब स्थानों का हाल पूछा। खुले हरे मैदान को देख कर बड़ा हर्ष प्रकट किया जब चारों ओर देख चुके तो पूछा—"परन्तु आपके रहने का स्थान कहां है। मैंने वृक्षराज की ओट से हटाकर कोने से अपने रहने का स्थान दिखाया तो करुणामय स्वर में बोले—"यह तो नदी के किनारे शान्ताश्रम है।"

ऊपर की छत पर चलते हुए लोहे के नलके की ठोकर लगी। मैंने क्षमा मांगी; श्रीमानों ने कहा—"मैं इस सुन्दर दृश्य में ऐसा मुग्ध था कि देख कर चलना ही भूल गया।"

भोजन के समय श्रीमान् ने गुरुकुल परीक्षा विधि पर बहुत कुछ पूछा और शाखाओं का हाल सुन कर कहा—"Then you are Building a University of your own." (तब आप अपना स्वतन्त्र विश्वविद्यालय बना रहे हो)। मैंने उत्तर दिया कि संस्कृत को प्रधान रख तथा आचार सङ्गठन और ब्रह्मचर्य को मुख्य स्थान देकर और कोई चारा भी नहीं।

क्रीड़ा क्षेत्र में पहुंचते ही श्रीमानों ने कहा—"It is a great relief to see these brood green lawns after the Congestion of simla."(शिमले के घमसान के पीछे इन विस्तृत हरे मैदानों को देखने में आनन्द मिलता है) फिर कहा—These are wonderful level grounds and you most have spent a lot of money on it." (यहां बड़ी आश्चर्य दायक समतल भूमि है। इस के ठीक करने में आप का बड़ा धन व्यय हुआ होगा)

मैंने बतलाया कि हमने कुछ भी व्यय नहीं किया, केवल कुछ वर्षों तक कई बार जङ्गली बूटियां कटवाई हैं। नङ्ग पैर ब्रह्मचारियों को फ़ुटबाल को उड़ाये फिरते देख कर श्रीमानों ने कहा—"मैं तो अपने पगों को ऐसी परीक्षा में डालने का हौसला कभी न करता।" भूलने वालों के कर्त्तव्य देखते एक क्षण ठहर गए थे। हाकी की खेल में ब्रह्मचारियों को धावा करते देख कर बोले—"यह धावा हमारे कुछ उत्तम दलों का मुकाबिला कर सकता है।"

बिछुड़ते हुए श्रीमान वाइसराय तथा श्रीमती लेडीचेम्सफ़ोर्ड ने निश्चय दिलाया कि वे गुरुकुल को स्मरण रक्खेंगे, और इस यात्रा को भूलेंगे नहीं।

वाइसराय ने यह भी पूछा था कि कितनी ब्रह्मचारिणी गुरुकुल विधि पर शिक्षा पाती हैं' मैंने उत्तर दिया कि इस विधि पर तो कोई कन्या गुरुकुल नहीं परन्तु जालन्धर में कन्या महाविद्यालय हैं। यह प्रश्न शायद हमारी नियमावली को पढ़ कर उत्पन्न हुआ होगा।

लिखने के लिए तो बहुत सी बातें और हैं परन्तु उन का लेख बद्ध करना उचित नहीं।

श्रीमान् लार्डचेम्सफ़ोर्ड जहां एक उदार शिक्षक का प्रभाव डाल गए वहां श्रीमती लेडीचेम्सफ़ोर्ड ने विद्यार्थियों और अध्यापकों के हृदयों को अपनी दैवी सहानुभूति और प्रेम से वशी भूत कर लिया। मैं श्री वाइसराय और देवी लेडीचेम्सफ़ोर्ड को दिल से धन्यवाद देते हुए आशा रखता हूं कि वे फिर भी गुरुकुल आश्रम निवासियों को अपने दर्शनों से तृप्त करेंगे।

मुन्शीराम जिज्ञासु

—०—

एक मीठा झूठ

लोग झूठ और झूठ में भेद समझते हैं। उपहास में बोला हुआ झूठ झूठ नहीं समझा जाता; विजातीय या विधार्मिक से कही हुई झूठी बात भी झूठी नहीं समझी जाती। कई झूठों को लोग मीठा झूठ कह कर टाल देते हैं। किन्तु स्मरण रखना चाहिये कि झूठ झूठ ही है—और यदि वह साधारण व्यवहार से आगे ऐतिहासिक या धार्मिक मामलों में भी प्रवेश कर जाय तो उस की झुठाई और भी बढ़ जाती है।

दृष्टान्त लीजिये। एक सज्जन व्याख्यान दे रहे हैं। वे एक कल्पित दृष्टान्त दे रहे हैं। 'एक ऋषि वन में तपस्या कर रहे थे—एक जिज्ञासु उन के पास उपस्थित हुआ। गंगा का तट था। प्रभात का समय था, पूर्व दिशा में सूर्य की सुनहली किरण विचित्र सभा बांध रही थीं। डालियों पर बैठे हुए पक्षी मधुर शब्दों द्वारा आते हुए दिन का मन मोह रहे थे। उस जिज्ञासु ने महात्मा के पास आकर प्रणाम किया और कहा 'महाराज! मैं जिज्ञासु आप की शरण मेंआया हूं—"मेरे सन्देहों का निवारण कीजिये" व्याख्यान समाप्त हुआ। व्याख्याता महाशय ने दूसरे दिन वही व्याख्यान अन्य स्थान पर दिया। वहां कहा 'यमुना का तट है—सायंकाल का समय है। भगवान् मरीचिमाली अस्ताचल पर लम्बायमान हो रहे हैं। ऋषि के पास जिज्ञासु ने आकर कहा 'भगवन्! प्रणाम हो' दृष्टान्त में थोड़ासा भेद आगया। आगया तो इस में कोई हर्ज नहीं। दृष्टान्त कल्पित था। न एक बात सच है—न दूसरी। कल्पित दृष्टान्त में भेद करने का हरेक को दृष्टान्त है।

किन्तु गड़ बड़ तब होती है—जब ऐतिहासिक दृष्टान्त दिये जाते हैं। यह हमने प्रायः देखा है कि व्याख्याता लोग व्याख्यानों में राजपूतों या महाभारत रामायण के ऐतिहासिक दृष्टान्त देते हुए मीठे झूठ बोलने की पर्वा नहीं करते। 'तब राना प्रताप ने उत्तर दिया—'कह कर वक्ता महाशय जिन शब्दों को चाहते हैं प्रयोग कर देते हैं। जो एक ऐतिहासिक

Digitized by eGangotri

बात है उस की कल्पना करने का किसी को क्या अधिकार है। हमने तो यहां तक देखा है कि वक्ता लोग सच्ची घटनाओं के पौर्वापर्य को, देश काल तक को बदल डालते हैं। व्याख्यानों में ऋषि दयानन्द के भी कल्पित ही वाक्य बना डालते हैं। यदि आप उपन्यास या नाटक लिख रहे हों तो आपको काल्पनिक बात चीत बनाने का अधिकार है, किन्तु एक ऐतिहासिक दृष्टान्त सुनाते हुए आपको क्या अधिकार है कि आप कल्पना से काम लें। इतिहासिकों या विज्ञान को पलट कर झूठ और सफेद झूठ है। व्याख्यान को रोचक बनाने का कारण होने से चाहे आप उसे मीठा झूठ कहें।

हम अपने व्याख्याता महोदयों से यह निवेदन करते हैं कि या तो आप लोग ऐतिहासिक दृष्टान्तों को बिलकुल न छुआ करें और यदि छुएं तो कल्पना को तिलांजलि दे दें। ऐतिहासिक व्यक्तियों की मन घड़त बात चीत से चाहे श्रोता पसीज जायं, किन्तु सत्य का खून होता है और श्रोताओं का सत्य प्रेम हलका होता है।

इस छोटे से स्पष्ट निवेदन के लिये आशा है हमें क्षमा किया जायगा।

—०—

एक प्रवासी स्नातक

श्रीयुत हरिश्चन्द्र जी

गुरुकुल के प्रेमी प्रायः अपने स्नातकों के विषय में कुछ जानना चाहा करते हैं। विदेश में गए हुए स्नातकों के विषय में तो विशेष चिन्ता रहती है। इस लिए कभी २ प्रवासी स्नातकों की कहानी कहते रहना व्यर्थ नहीं।

श्रीयुत हरिश्चन्द्र जी के बारे में आर्य जनता को बतलाना और भी अधिक आवश्यक है क्योंकि कई स्वार्थी या गुरुकुल के विरोधी उनके विषय में अनाप शनाप मनगढ़ना कहते फिरते हैं और लोगों को भ्रम में डालते हैं।

श्रीयुत हरिश्चन्द्र जी अमरीका के सानफ्रांसिस्को नगर में रहते हैं—और कृषि आदि का कार्य करके अपना निर्वाह करने के साथ २ दो भाषाओं के अध्ययन में लगे हुए हैं। फ्रेंच भाषा उन्हों ने डेढ़ साल पूर्व ही पढ़नी आरम्भ की थी। उस का खूब अभ्यास कर रहे हैं और स्पेनिश का अभ्यास भी शुरू कर दिया है। इस समय वे सर्वथा स्वतन्त्र हैं। उन पर कोई बन्धन नहीं है। महीनों से बिलकुल स्वाधीन हैं। उन्हें अपने देश लौटने की भी कोई रुकावट नहीं। आने या वहां रहने, विचरने या कार्य करने में उन्हें किसी प्रकार का प्रतिबन्ध नहीं। यह स्पष्टतया लिखना इस लिए आवश्यक हुआ कि कई लोग विविध प्रकार के झूठ फैला रहे हैं—वे अविश्वास्य हैं। पत्र व्यवहार भी बराबर होता है। इसी सप्ताह में उन के चार पत्र प्राप्त हुए हैं। कोई चिन्ता या व्यग्रता की बात नहीं। हमें पूर्णतया विश्वास है कि हमारे योग्य भाई जितने अधिक दिन भी विदेश में रहेंगे, जाति सेवा के उतने ही अधिक योग्य बन कर आयंगे।

———

संसार समाचार पर

टिप्पणियां

धार्मिक

महाराज गायकवाड़ ने गत सप्ताह जालन्धर कन्या कन्या महाविद्यालय का निरीक्षण किया। गायकवाड़ का सारा जीवन ही शिक्षा प्रचार के अर्पण हो रहा है, अतः आश्चर्य नहीं कि आर्य समाज की शिक्षा संस्थाओं में आप की विशेष अभिरुचि हो। विद्यालय के कार्य को देख कर आप बहुत प्रसन्न हुए और कार्यकर्त्ताओं को उत्साहित रहने की प्रेरणा की। आपने यह भी बतलाया कि देश की सब से बड़ी आवश्यक वस्तु 'शिक्षा' है। इतना और समझना चाहिए कि शिक्षा भी ठीक प्रकार की हो जो शिक्षा बेढंगी या हानिकारक है, वह न होने से भी बुरी है। महाराज गायकवाड़ का महाविद्यालय में पधारना विद्यालय की बढ़ती हुई लोक प्रियता का सबूत है। जिस कृतकार्यता से विद्यालय ने गायकवाड़ के स्वागत तथा अभिनन्दन के कार्य को निभाया है—वह अत्यन्त प्रशंसा के योग्य है।

—:०:—

साम्प्रदायिक समाचार पत्रों में आज कल एक विलक्षण प्रवृत्ति दिखाई देती है। उनके सम्पादक अपने से भिन्न सिद्धान्तों वाले पर जब दुर्वा क्यों की बौछाड़ करके थक जाते हैं तो लिख देते हैं कि "अमुक सम्प्रदाय के सिद्धान्त अनुयायियों को युद्ध में जाने से रोकते हैं— इसलिए वह सम्प्रदाय सरकार का विरोधी है— या बुरा है।" यह प्रवृत्ति भारत वासियों की शताब्दियों से आई हुई दास वृत्ति को सूचित करती है। जंग या शांति में से क्या उत्तम है? किसी धर्म की युद्ध की ओर कैसी दृष्टि होनी चाहिये? अनुयायियों का आलसी होना या सदा लड़ने मरने को तय्यार रहना उस सम्प्रदाय की उत्तमता को सूचित करता है— या निकृष्टता को? ये प्रश्न कठिन है—इन का उत्तर शीघ्र नहीं मिल सकता। आर्य गज़ट ने देव समाजियों पर दोष लगाते हुए लिख दिया कि देवसमाज के सिद्धान्त मानने वाले लोग भर्ती नहीं होते, देव समाज के पत्र ने लिख दिया कि आर्य समाज विद्रोही समाज है। उधर खालसा लायल गज़ट ने दोनों पर वार करते हुए लिख दिया कि सरकार आर्य समाजियों तथा देव समाजियों को फौज में भर्ती नहीं करती। क्या कहना है? दासों के युद्ध इसी प्रकार के होने चाहिएं सरकार शक्ति शालिनी है-वह साधन सम्पन्न है। वह अपनी चिन्ता आप कर लेगी, न जाने हमारे सहयोगियों को एक दूसरे के मत को राजद्रोही कह कर तीस मारखां बनने या पुलिस की बही में नाम लिखाने से क्या लाभ होगा? इस प्रकार की प्रवृत्ति निन्दित है। एक दूसरे को कुचलने के लिए सरकार की सहायता चाहना नीचता भी है, और भूल भी है।

—:०:—

पत्रों की सैर में हमने 'राजपूत गज़ट' का एक उद्धरण दिया है। उस में पादरी जेम्सपाल की शुद्धि की कथा वर्णित है।

CCO, Gurukul Kangri Collection

इन पादरी जेम्सपाल से हमारा पुराना परिचय है। हमारी राय में यह व्यक्ति इस योग्य कभी नहीं था कि इसे विना कठोर प्रायश्चित के आर्य समाज में प्रविष्ट कराया जाता। अनारकली आर्य समाज ने एक ऐसे व्यक्ति को, व्यतीत जीवन की पूरी खोज खाज किए विना ही आर्य समाजी का सार्टिफिकेट देने में भारी भूल की है। अनुभव से आदमी वृद्ध होता है, और घटना के पीछे हरएक ही समझदार हो जाता है। आर्य्यसमाज इन नियमों का अपवाद है! ऐसी शुद्धियों (?) के कई परीक्षण भी उसे समझदार न बना सके। शुद्धि होने पर भी नाम पादरी जेम्सपाल ही रहा तो कमाल की शिथिलता है। अनारकली समाज के अधिकारियों को इस विषय पर अवश्यही विशेष प्रकाश डालना चाहिये।

—:०:—

महात्मा मुन्शीराम जी ने गुरुकुल की आर्य्य सिद्धान्त कक्षा में पढ़ने वाले ब्रह्मचारियों को पारसी धर्म पर व्याख्यान देते हुए जो नोट लिखाये थे, वे छप गये हैं। 'पारसीमत और वैदिक धर्म' नाम की पुस्तिका में वे सन्निविष्ट कर दिये गये हैं। इस पुस्तिका में पारसीमत के सिद्धान्तों और पारसियों की भाषा की आलोचना और वैदिक धर्म और वैदिक भाषा के साथ तुलना करके भली प्रकार दिखाया गया है कि पारसीमत का मूल वैदिक धर्म ही है। पुस्तक आर्य्य धर्म में प्रेम रखने वालों के लिये ग्राह्य है। मूल्य =)

—:०:—

वायसराय गुरुकुल में लग भग डेढ़ घण्टे तक रहे। इस बीच में कई मनोरंजक बातें हो गईं। जब आप पुस्तकालय भवन में गये और देखदाख कर बाहिर आये तो द्वार पर लगा हुआ दान का पत्थर देखा। उस पर अंग्रेजी में लिखा था—"यह कमरा लाजूराम (कलकत्ता निवासी) ने महात्मा मुन्शीराम जी की सेवाओं के आदर में बनवाया" इस पर वायसराय ने महात्मा जी से कहा 'आप को अभिमान करना चाहिये क्योंकि जीवन दशा में ही आपकी सेवाओं का आदर हो रहा है—नहीं तो जीता हुआ कोई आदर नहीं पाता'।

—:०:—

सामाजिक पत्रों के ऋष्यङ्क निकल आये। प्रकाश मिलाप और भास्कर के अंक हमें मिल गये हैं। पहला सम्भवतः प्रकाश का रहा। लेखों की दृष्टि से यदि यह अंक पिछले साल से उत्तम नहीं तो उससे ऐसा घटिया भी नहीं। प्रिन्सिपल विस्वानी का लेख और पं० नारायणप्रसाद बेताब की कविता पढ़ने के योग्य है।

—:०:—

संसार में ईमान्दारी भी कोई चीज़ है। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्यसमाज वच्छोवाली लाहौर के अधिकारी उसके अन्धे श्रद्धालु नहीं हैं। उप मंत्री की ओर से हमें उनके उत्सव का विज्ञापन मिला है। व्याख्यान देने वाले सज्जनों में महात्मा मुन्शीराम जी का भी नाम दिया गया है। यह बिल्कुल अशुद्ध है। मन्त्री ने जो चिट्ठी महात्मा जी को लिखी थी, वह फाड़ कर रद्दी में डालदी गई थी। यदि इसका तात्पर्य है कि महात्मा जी ने समाज के उत्सवपर व्याख्यान देना मान लिया है तो अब नया ही न्याय शास्त्र बनाना पड़ेगा।

—:०:—

एक समाचार हमें इस से पूर्व ही पाठकों तक पहुंचना चाहिये था। आगरे के दयानन्द अनाथालय में युक्तप्रान्त के छोटे लाट सरजेम्समेस्टन पधारे। वहां के कार्य को देखकर आप बहुत प्रसन्न हुए। आर्यसमाज के कार्य की प्रशंसा करते हुए आपने अनाथालय के लिये स्वतन्त्र भूमि देने के विषय पर भी अनुकूल विचार करने का वचन दिया।

—:०:—

साहित्य

इतिहास ग्रन्थों के विना कोई साहित्य जीवित साहित्य नहीं कहा सकता। इतिहास हीन साहित्य मनोहर हो सकता है, उद्भट हो सकता है, किन्तु वह जीवन दाता नहीं हो सकता। जीवन देने के लिये सच्चे दृष्टान्तों की आवश्यकता है जो इतिहास से ही मिलते हैं। इस लिये जब कोई ऐतिहासिक पुस्तक आर्य भाषा में छपती है तो हमें विशेष हर्ष होता है। मराठी में पं० विनायक कोंडदेव ओक का लिखा हुआ फ्रांस की राज्य क्रान्ति का इतिहास प्रसिद्ध है। पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी ने उसका भाषानुवाद छाप कर अच्छा काम किया है। अनुवादक म० प्यारेलाल गुप्त हैं। इस पुस्तक में जगत्प्रसिद्ध राज्य क्रान्ति का संक्षिप्त रूप से साद्यन्त वर्णन आगया है। क्रान्ति के कारणों से प्रारम्भ करके वाटर्लू के युद्ध तक को व्याप्त कर लिया गया है। यह सन्दिग्ध सी ही बात है कि यह सारा इतिहास क्रान्ति का ही है या इस में और भी बहुत कुछ मिला हुआ है। दृष्टान्त लीजिये। फ्राँस के प्रसिद्ध लेख मिचलर ने क्रान्ति का इतिहास सोलवें लूई तक ही समाप्त कर दिया है। इंग्लैण्ड का प्रसिद्ध कार्लाईल भी इतनी दूर तक नहीं गया। आगे क्रान्ति नहीं हत्या काण्ड है। यदि हत्या काण्ड को क्रान्ति में गिन भी लें तो नैपोलियन के सम्राट् बन जाने के पीछे का समय किसी हालत में भी क्रान्ति नहीं कहा सकता। वह दो साम्राज्य शक्तियों का युद्ध ही कहा सकता है। कई लेखक क्रान्ति का इतिहास नैपोलियन के अधःपात तक भी मानते हैं। ओक महाशय उन्हीं के अनुयायी हैं। यह अनुवाद आर्य्य भाषा भाषियों के लिये बहुत उपयोगी होगा तरुण—भारत—ग्रन्थावली १२० मुन्नालाल स्ट्रीट कानपुर। के पते पर पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी से मिल सकती है। मूल्य ॥≡)

—:०:—

इतिहास जीवित दृष्टान्त हैं। कल्पित दृष्टान्त भी जीवन के लिये उपयोगी होते हैं। व्याख्याताओं और धार्मिक उपदेशकों के तो वे प्राण हैं। दो बातें आवश्यक हैं—एक तो दिये

हुए दृष्टान्त कुछ संभवता की ओर झुकते हों—बिल्कुल बेसिर पैर के गापोष्टक् न हो। दूसरे वे सभ्यता और औचित्य की सीमा को पार न कर जायं, दृष्टान्त की उत्तमता उनकी कल्पना करने वाले पर निर्भर हैं। हमें दृष्टान्त सागर नाम का ग्रन्थ समालोचनार्थ मिला है। उसके लेखक म० हनुमान्प्रसाद शर्म्मा है। उसमें छोटे बड़े २०३ दृष्टान्त संग्रहीत हैं। कई केवल चुटकले हैं और उन्हें दृष्टान्त ही कहसकते। कई दृष्टान्तों में औचित्य की सीमा पार हो गई है—जैसे दृष्टान्त नं० ९३ में देवर के मुंह से भावज को जो अन्तिम शब्द कहाये गये हैं, वे अनुचित जंचते हैं औचित्य की सीमा को पार कर गये हैं। इन कुछेक त्रुटियों को छोड़कर शेष पुस्तक उपयोगी है। हरेक दृष्टान्त में कोई न कोई उपदेश है। पुस्तक कल्पित दृष्टान्त प्रिय उपदेशकों के लिये उपादेय है। प्राप्ति स्थान—म० श्यामलाल जी शर्म्मा, आर्य्य बुकसेलर बरेली। मूल्य ॥)

—:०:—

अंग्रेजी की जेम्सएलन की Life Triumphant नाम किताब प्रसिद्ध है। उस पुस्तक में उन गुणों का बहुत ही उत्तम वर्णन है जो मनुष्य के जीवन को कृतकार्य बनाने के साधन होते हैं। अल्मोड़ा निवासी म० गंगाप्रसाद ने उसका भाषानुवाद प्रकाशित किया है। पुस्तक ऊंची आशाएं रखने वाले नवयुवकों द्वारा योग्य है। पुस्तक का अनुवाद सरल सुबोध भाषा में किया गया है। यह पुस्तक अन्य उत्तम पुस्तकों के साथ हरेक विद्यार्थी के हाथ में रहनी चाहिये। प्राप्ति स्थान—गंगाप्रसाद—लाल बाज़ार अल्मोड़ा। मूल्य ।)

—०—

यदि कोई मन की विलक्षण गति को देखना चाहे तो किसी २ साम्प्रदायिक पुस्तक तथा साम्प्रदायिक समाचार पत्र का अनुशीलन उसके बड़े काम का होसकता है। मनुष्य और सब प्रकार से समझदार होता हुआ भी कभी २ अपने विश्वासों में कैसी २ भद्दी बातें मान लेता है—यह देख कर आश्चर्य होता है। एक ही दिमाग़ में परस्पर विरुद्ध विचार क्यों स्थान कर जाते हैं—इसका कारण समझना भी बड़े मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की विवेचना चाहता है। ये विचार 'प्रभात' नाम के थियोसोफिकल सोसाइटी के एक मासिक पत्र को देख कर उत्पन्न हुए। यह एक प्रसिद्ध धार्मिक सोसाइटी का पत्र है। उस सोसाइटी में बड़े २ शिक्षित व्यक्ति हैं। इसके पृष्ठ-क-पर दो तीन सिद्धान्त लिखे है—जिन्हें पढ़ कर आश्चर्य होता है। उसके दो टुकड़े हम उद्धृत करते हैं।

सम्प्रदाय के सिद्धान्त

१—हम विश्वास रखते हैं कि एक बड़े गुरु जगत् में शीघ्र पधारेंगे, और इसी लिए हम इस प्रकार रहने की इच्छा रखते हैं कि जब वे पधारें तब हम उन को पहिचान सकें।

२—उनको हृदय में रखते हुए अपने सम्पूर्ण दैनिक कार्यों को उनके भय से करने का यत्न करेंगे।

यही पूर्व का तारा पहले एक मद्रासी बालक के रूप में आक्सफर्ड में शिक्षा पारहा था और इसी का प्रश्न उठने पर श्रीमती एनीबेसेन्ट को हाईकोर्ट तक दौड़ लगानी पड़ी थी। सारे अंक में सम्प्रदाय सम्बन्धी लेख हैं। जिस थियोसोफिकल सोसाइटी के साथ बड़े २ जजों और प्रोफ़ेसरों के नाम हैं वे अभी तक 'पूर्व के तारे' जैसी केवल कल्पना प्रसूत बातों पर विश्वास करते जाते हैं यही आश्चर्य है। पत्र कानपुर से निकलता है वार्षिक मूल्य १॥) है।

—०—

पिछले सप्ताह ब्राह्मण समाचार का पता भूल से 'अम्बाला' लिखा गया था वह वस्तुतः जगाधरी से प्रकाशित होताहै।

—०—

उपन्यासों को लोग पसन्द करते हैं—इस लिए जो लोग थोड़े श्रम से अधिक पैसा कमाना चाहते हैं वे झट उपन्यास लिखने के लिए भागते हैं। फिर चाहे उपन्यास के नाम से कुछ ही लिख मारें। सम्भव असम्भव उचित अनुचित का विचार करना भी आवश्यक नहीं समझा जाता। विश्वविद्याप्रचारक ग्रन्थ माला में एक 'विचित्र वीर' नाम का उपन्यास निकला है। कहानी बनाई जाती तो अच्छी भी होसकती, किन्तु लेखक ने कल्पना को विचित्र रीति से भगाया है। यदि इस का नाम तिलिस्मी उपन्यास रखा जाता तो अच्छा होता। भला हरनामसिंह का दिनदहाड़े बाकरअली और बेगअली की सूरत बनाये फिरना और किसी की पहिचान में न आना तिलिस्म की ही करामात हो सकती है। ऐसे उपन्यासों से कोई विशेष लाभ नहीं।

—०—

जहां हमारी भारत सरकार शिक्षा के विषय में दो कदम चल कर दो घन्टे ठहरने की नीति का अवलम्बन कर रही है, और पटना विश्वविद्यालय के सम्बन्ध में शिक्षा के दायरे को संकुचित करने का यत्न कर रही है वहां हमारी कई रियासतें शिक्षा और शासन के मैदान में तेज़ दौड़ लगा रही है। भारतसरकार के सभ्य शासक रियासतों के अर्द्ध सभ्य शासकों से ऐसे मामलों में कई बातें सीख सकते हैं। माईसोर का वार्षिक शासन का जो वृत्तान्त उसके मुख्य मन्त्री ने सुनाया है—उससे ज्ञात होता है कि रियासत शिक्षा विषय में दिनों दिन उन्नति कर रही है। हम केवल एक नमूना ही देते हैं। पिछले साल रियासत में ६१३७ संस्थायें शिक्षा देती थी, और इस साल उनकी संख्या ७२५८ है। पिछले साल उन में २१७९९७ विद्यार्थी पढ़ते थे, इस साल २३९११२ विद्यार्थी शिक्षा पारहे हैं।

—०—

हिन्दी साहित्य सम्मेलन की स्थायिसमिति की बैठक प्रयाग में १ नवम्बर को सन्ध्या समय होने वाली थी। उसका विज्ञापन हमारे पास प्रकाशनार्थ आया है। वह इतना भद्दा छपा हुआ है, और अक्षर इतनेअधिक उड़े हुए हैं कि सारा पढ़ा नहीं गया। सम्मेलन के यदि दार्शनिक संचालक रूप रंग से इतने अधिक विरक्त न हो तो अच्छा हैं।

राजनीतिक

भारत का कच्चा माल विदेश में जाता है और वहां से मशीन में पड़कर भारत

CC0. Gurukul K

में आता है। जो चीज़ पैसे की गई थी वह रुपये की होकर आती है। पन्द्रह आने विदेश में पहुंच जाते हैं। देश का धन देश में रखने के लिए ज़रूरी यह है कि कच्चे माल को मशीन में से निकाल कर भारत में ही कीमती बना लिया जाय। भारत की शासन करने वाली सरकार से उत्साह पाकर भारतवासियों को ऐसा यत्न करना चाहिये। वह तो एक ओर रहा-यहां तो मामला ही दूसरा है। इम्पीरियल इन्सटिच्यूट की भारतीय समिति को भारत सरकार ने अधिकार दिया है कि वह इस विषय पर रिपोर्ट दे कि भारत का कच्चा माल ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों में किस प्रकार अधिक उपयोग में लाया जासकता है। ठीक है हमारी सरकार उदार है–

त्वयि वर्षति पर्जन्ये सर्वे पल्लविता द्रुमाः
अस्माकमर्क वृक्षानां पूर्वपत्रेषु संशयः।

हे मेघ! तू बरसता है तो और वृक्षों पर पत्ते आते हैं, और हम आक के पौदों को अपने पहले पत्तों की भी चिन्ता हो जाती है।

—०—

जापान से जो समाचार आरहे हैं उनसे पता चलता है कि योरप को जंग में पड़ा देख कर वह अब उनका स्थान लेने की तय्यारी कर रहा है। जापान मेगज़ीन में एक लेखक ने भी यही लिखा है कि अब सफेद चमड़े का गौरव जारहा है-और पीले चमड़े की बारी है। हमारा तो मत है कि चमड़े की सफेदी के मद ने जर्मनी आदि सफेद देशों को गोला बारुद के भयानक रौरव में डाला और पीले चमड़े का मद जापान को उसी रास्ते ले जायगा। संसार को सभ्यता का आदर्श वही देश दिखा सकेगा, सम्पत्ति और वैभव का गर्व जिसके दिमाग़ को चमड़े की सफ़ेदी या पीलेपन के गर्व से न भर देगा। और देश तो उठेंगे और चार दिन की चांदनी दिखाकर डूब जायेंगे।

—०—

हिन्दू यूनिवर्सिटी की आधार शिला रखे जाने के समय महात्मा गान्धी के भाषण में विघ्न डालने का और उन्हें बच्चा लिखने का कार्य श्रीमती एनीबेसेण्ट ने किया था। श्रीमती एनीबेसेण्ट पर भारत रक्षा कानून के द्वारा जो अत्याचार किया गया है, उसके विरुद्ध शब्द उठाने का विशेष कार्य महात्मा गान्धी को देकर बम्बई की प्रान्तिक कान्फ्रेंस के संचालकों ने खूब किया है। क्षमा शीला हि साधवः। महात्मा गान्धी का यही तो अहिंसा व्रत है।

—०—

ट्रांसवाल के भारतवासियों ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक भारतीय एसोसियेशन बनाई है। संघशक्तिका आदर करना भारतवासी सीख रहे हैं। जितना शीघ्र भारतवर्ष में यह सुमति फैलेगी, उतना ही शीघ्र उन्नति का द्वार खुलेगा।

—०—

नीचता का परिचय

(शङ्कर छन्द)

(१)

रेकर्णाधम तुझे सर्वदा,
ध्रुव धर्म्मामृत पीना था।
यदि जगमें कुछ जीना था तो,
अपने लिये न जीना था॥
हा! पर स्वार्थ-सिन्धु में डूबा,
किया न पर उपकार।
है दुस्तर ही फिर तो तेरा,
होना बेड़ा पार॥

(२)

शुभादर्श रखना था तुझको,
पाप बीज क्यों बोना था।
विमला कर नरत्व भवनिधि से,
पार सहज ही होना था॥
किन्तु वृथा ही जीवन खोया,
लाया नेक न ध्यान।
नर होकर भी रहा मूढ़ ही,
है यह शोक महान॥

(३)

पा ऊंचे अधिकार किसी पर,
भी अन्याय न करना था।
किन्तु विचार भला सब ही का,
उच्च भाव उर भरना था॥
हा! पर इस पर ध्यान दिया कब,
पेट भरा कर पाप।
तुझसे कुछ भी तो परिशोधा,
गया न कर्म्म कलाप?॥

(४)

रखना था सौहार्द परस्पर,
वैर—विरोध न रखना था।
सुख पाना था तो न किसीको,
बुरी दृष्टि से लखना था॥
किन्तु कभी यह सीख न धारी,
गिरा रहा सब काल।
जो कुछ किया, किया उलटा ही,
रक्खी ठीक न चाल॥

(५)

प्रेम पाठ पढ़ कर सब ही का,
अरे भला बन जाना था।
हा! क्यों वृथा किसी सज्जन का,
अन्तः करण दुखाना था॥
पर विचार में ला न सका यह,
चाल चली विपरीत।
है तेरी विमूढ़ता ही तो,
किया न चरित पुनीत?॥

(६)

रखना था उद्देश्य सामने,
गौरव कभी न खोना था।
मानी नर होना था किन्तु न,
कुल का नाम डुबोना था॥
एवं निज औचित्य न पाला
किया धर्म्म-धन-नाश।
हा! तू ठोकर खाना सीखा,
खोकर ज्ञान प्रकाश॥

(७)

भूमण्डल भरमें वेदों का,
निर्भय नाद बजाना था।
भूले भटके हुए जनों को,
सत्य मार्ग बतलाना था॥
हाय बिगाड़ लिये सारे ही, हित,
पर हित के कार्य्य।
फिर कैसे तू भला चाहता,
बना न सच्चा आर्य्य?॥

तुकड़—"कर्ण"

सच्चे आर्य्य

—:०:—

(षट्पदी छन्द)

(१)

मन, वच, कर्म्म पवित्र,
सर्वदा रखते हैं जो;

कर जप, तप, भक्ष-दान,
सुधा फल चखते हैं जो।
ब्राह्माडम्बर एक न
जिनमें पाया जाता।
भरा हुआ सारल्य,
भाव ही है लख आता ? ॥
जो पर उपकारी, धीरमति,
ध्रुव धर्म्मात्मा सिद्ध हैं ?
कवि कर्ण वही जन जगतमें,
सच्चे आर्य्य प्रसिद्ध हैं ॥
"कर्ण"

भारतीय नाटकों के इतिहास में

एक रिसर्च स्कालर की खोज

(गतांक से आगे)

यदि आप से और दो चार 'रिसर्च स्कालरों' का आर्यसमाज में आविर्भाव हो जाय तो उस में इतिहास और साहित्य का उद्धार हो जायगा। हां, कृपानिधान! आपने यह संकेत करके कि "कालिदास एक वेश्या के घर मरा" भारत के प्रनष्ट इतिहास का शायद बहुमूल्य पन्ना ही खोज निकाला है।

पर जन-साधारण को उसका कुछ भी पता न बतला कर इस ज्ञान राशि को स्वहृदय कपाट में ही बन्द रखना आप से बड़े लिखाड़ के लिए शोभा नहीं देता।

यदि आप अपनी इस नवीन खोज का कुछ पता देने की कृपा करेंगे तो आगामी रिसर्चस्कालर शायद आप के कृतज्ञ रहेंगे।

(५) पांचवी संख्या के उद्धरण में आपने स्वपाठविधि में नाटकों को स्थान देने वाले गुरुकुलों को बुरी तरह कोसा है और नाटक शब्द के पूर्व "फोहश" विशेषण जोड़ कर जनता के मनोविकारों को भड़काने की चेष्टा की है। आप के भ्रम-निवारणार्थ यह बतला देना आवश्यक प्रतीत होता है कि अलंकार शास्त्र में "फोहश" वा अश्लीलता एक दोष माना गया है जिसको सुकवि लोग अपने काव्यों में यथा शक्य नहीं आने देते यह दूसरी बात है कि कहीं भूल से उस का कुछ आभास आजाय। आज कल हमारे "रिसर्च स्कालर" की कोटि के महाशय शृङ्गार रस वर्णन को भी, जिसको अलंकार शास्त्रियों ने 'शृङ्गारः शुचिरुज्ज्वलः' कहकर सर्वोत्कृष्ट रस माना है, अश्लीलता के अधन्य पद से नामाङ्कित करते हैं। वे इस बात को सर्वथा भूल जाते हैं कि चाहे ब्रह्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए शृङ्गार रस हानि कारक भले ही हो, किन्तु विशेष देश काल और पात्रों के लिए शृङ्गाररस का भी कुछ न कुछ उपयोग अवश्य हो सकता है। ऊपर लिखी बातों को ध्यान में रखते हुए किसी सुकवि प्रणीत काव्य या नाटक में अश्लीलता दोष आना बहुत ही कम सम्भव है। किन्तु शृंगार रस-प्रधान, जो काव्य वा नाटक लिखे गये हैं वे भारत के ऐश्वर्य और विलासितप्राय काल में लिखे गये थे। उनके लेखकों का उद्देश उनको किसी ब्रह्मचारी को पढ़ाये जाने का स्वप्न में भी न था और न ही इस समय किसी भी गुरुकुल में शृंगार रस के कोई नाटक ब्रह्मचारियों को पढ़ाये जाते हैं अश्लील वा फोहश की तो कथा ही क्या है। न जाने रिसर्च स्कालर महाशय ने गुरुकुलों पर यह मिथ्या कलंक किस द्वेष बुद्धि से क्षुब्ध होकर लगाया है।

गुरुकुल कांगड़ी की पाठ विधि में, जहां तक मुझ को लालूम है तीन नाटकों को—मुद्राराक्षस, उत्तररामचरित्र, और वेणी संहार को स्थान दिया गया है। नाटकों के पढ़ने वाले जानते हैं कि इन में से मुद्राराक्षस में तो शृंगारस का लेश भी आने की सम्भावना नहीं है, रहे उत्तररामचरित और वेणिसंहार, सो वे भी क्रमशः करुण-रस और वीर रस प्रधान नाटक हैं। क्या हमारे रिसर्चस्कालर महाशय ने किसी ऐसी नवीन शिक्षा प्रणाली का आविष्कार कर लिया है कि जिस से संसार की किसी उन्नत भाषा का अध्ययन बिना उस के काव्य और नाटकों को पढ़े हुवे किया जासके ? क्या किसी भाषा की सूक्तियां और व्यवहार्य शब्द और वाक्य शैलियां (Choice Expressions, Beauties of idioms.) उस भाषा के सुकवियों के काव्यों और विशेषतः नाटकों को पढ़े बिना आसकती हैं। फिर बिचारी देववाणी ने ही क्या अपराध किया है कि उस के काव्य और नाटक न पढ़े जायं। लेखक की तुच्छ मति में तो जिस अभागे ने व्यास, वाल्मीकि कालिदास, भारवि, माघ, और जगन्नाथ के काव्यों का रसास्वादन नहीं किया, उस ने संस्कृत पढ़ने का "जलताडनवत्" व्यर्थ प्रयास उठाया। पुनः किसी काल विशेष के इतिहास ज्ञान (उस समय के लोक व्यवहार रीति रिवाज और शासन प्रणाली आदि के ज्ञान) के लिए उस काल के बने हुवे नाटकों के अध्ययन की जितनी आवश्यकता है वह सहृदय इतिहास के विद्यार्थियों और प्रेमियों से छिपी हुई नहीं है। आप को यह दिग्दर्शन कराने के लिए कि नाटक सदाचार शिक्षा और सुचरित्र संगठन का कितना बड़ा कार्य करते हैं पण्डित कृष्णमाचार्य एम. ए. बी. एल, की A History of the Classical Sanskrit Literature से नीचे के उद्धरण भावानुवाद सहित दिये जाते हैं।

" Drama is the image of history, the poetry of the present, where the past and future meet. It is likewise a poetical embodiment of universal history. The object of the drama is, to quote Shakespeare, " to hold as it were the mirror up to nature, to show virtue her own feature".....A central idea in every drama is the first requisite, all other actions and events being duly subordinated to it. The different scenes and acts of a drama must have their end in leading the audience gradually towards a definite goal. Besides this central idea, a moral ideal must be present. The sole purpose ought to be the elevation of character through the *inclacation* of sound morals and the illustration of their benifits. The subject of a drama is but action, and actions are inconceivable without ethical codition. Hence the inevitable result is that most dramas, whether intended by the poet or not, are invested with a moral ideal."

नाटक इतिहास का प्रतिबिम्ब होता है। वह उस वर्त्तमान (प्रस्तुत काल) का काव्य होता है, जहाँ भूत और भविष्य

मिलते हैं। इस प्रकार वह सर्वव्यापी इतिहास की काव्य मयी मूर्त्ति है। शेक्सपियर के शब्दों में "नाटक का उद्देश प्रकृति के सामने दर्पण रखना उस का प्रतिबिम्ब दिखलाना और सदाचार की निज विशेषताएँ प्रकट करना है"..... "नाटक के विशेष दृश्य और अभिनयों का अन्तिम उद्देश्य प्रेक्षकों को शनैः शनैः नियत लक्ष्य की ओर लेजाना है। इस कैन्द्रिक विचार के अतिरिक्त उस में सदाचार का आदर्श अवश्य प्रस्तुत रहता है। स्वस्थ सदाचार की शिक्षा और उस के लाभों के उदाहरणों द्वारा आचार को उन्नत बनाना ही उस का मुख्य उद्देश्य हुआ करता है। नाटक का विषय कुछ कार्यों को दिखलाना होता है और कोई कार्य सदाचार सम्बन्धि अवस्थाओं से रहित रहते हुए ध्यान में नहीं आसकता। इस लिए प्रायः नाटकों का अनिवार्य परिणाम, चाहे वह कवि का उद्देश्य भी हो, वा न हो, सदाचार के आदर्श पर ही जाकर स्थित होता है।" आशा है कि हमारे रिसर्चस्कालर महाशय के संतोष और विज्ञ वाचकवृन्द के भ्रम निरासार्थ इतना ही बस होगा। हम को आशा करनी चाहिए कि आगे हमारे अभिनव रिसर्चस्कालर इस विषय में समझ बूझ कर अपनी लेखनी को कष्ट देंगे और अपने पूर्व पुरुषों की कीर्ति पर कालिमा पोतने में ही अपनी यशोवृद्धि न समझ कर इतिहास में कोई अभिनव गवेषणा कर के जनता का उपकार करें गे "अप्रियस्य च पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभा।"

विनीत
भवानीप्रसाद गुप्त

—:o:—

गुरुकुल में दीप मालिकोत्सव

११ कार्तिक तदनुसार २६ अक्टूबर को गुरुकुल में दीप मालिकोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। ३½ बजे हवन की घन्टी बजी तथा ४½ बजे तक उत्सव मण्डप में वृहद् हवन होता रहा। ४½ बजे से ही श्री उपाध्याय बालकृष्ण जी के सभापतित्व में दीपमालिका के उपलक्ष में सभा प्रारम्भ हुई। पहले प्रार्थनाके भजन और एक गीति के अनन्तर ब्र० सत्यव्रत द्वादश श्रेणी ने निम्नभाषण किया—

आज लक्ष्मी की पूजा का दिन है। आज ही राम और दयानन्द ने एहिक और पारलौकिक लक्ष्मी को प्राप्त किया, राम चक्रवर्त्ती और दयानन्द मृत्युञ्जय बन गया। आज की दिवाली आज के लक्ष्मी पतियों से भारत के लिए समृद्धिशाली होने को एक सन्देस लायी है कि ए जूआ खेलने वालो! राम तुम्हें जूआ खेलते देख बड़े प्रसन्न होते हैं, किन्तु उस के सुधार के लिए उत्सुक हैं। वे कहते हैं कि जूआ खेलो परन्तु इस ढंग पर नहीं जिस पर कि आज कल खेलते हो। राम जूए का एक नया ढंग निकालते हैं और कहते हैं कि भारतीय व्यापार के लिए अपने सारे धन को बाज़ी में रख दो। यही सच्चा जूआ और लक्ष्मी की सच्ची उपासना है।"

फिर ब्र० आत्मानन्द १४ श्रेणी ने कहा कि प्रत्येक समाज तथा प्रत्येक व्यक्ति कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने के लिए अपना अग्रणी बना लिया करता है। यह एक स्वाभाविक नियम है जो कि सब जगह काम कर रहा है। मनुष्य प्रायः ऐसे ही श्रेष्ठ पुरुषों के पीछे चलता है। वस्तुतः हम महा-पुरुषों के पीछे चलने में एक तरह बाधित से हैं। महापुरुष कई श्रेणियों में विभक्त किए जा सकते हैं। कोई ब्राह्मण महापुरुष हैं कोई क्षत्रिय तथा कुछ एक वैश्य महापुरुष भी हो सकते हैं। हम ब्राह्मण महापुरुषों में श्री स्वामी जी को मान सकते हैं तथा क्षत्रिय महापुरुषों में मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र को ले सकते हैं। आज के दिन के भी यही दो नायक हैं जिनके जीवनों पर आज हमने विचार करना है। ऐसे महापुरुषों की उन्नति विश्वतो मुखी होती है वे कर्म-योग—भक्ति योग आदि सभी अंगों पर बल दिया करते हैं। एवं उन में अन्य भी अनेक उत्तमोत्तम गुण होते हैं जो कि उन को महापुरुष बनाते हैं। समय अल्प होने के कारण भाषण पूरा न हो सका। इसके बाद एक गीति गाई गई। तदन्तर पं०वेदव्रत जी ने कहा....."हमें संसार में मुख्यतः दो प्रकार के बल कार्य करते प्रतीत होते हैं। प्रथम शारीरिक बल दूसरा बुद्धि बल। यही दो बल महापुरुष बना सकते हैं। परन्तु यह ध्यान रखना चाहिए कि इन बलों से उत्तम कार्य लिया जाए न कि विपरीत। विद्या यदि है तो वह विवाद के लिए होनी ठीक नहीं एवं बल का घमण्ड दिलाने के लिये रखना भी ठीक नहीं। यह शिक्षा हम भी स्वामी जी से लेसकते हैं। स्वामी जी इन बलों को परोपकार के लिये लगाया करते थे। हम यदि स्वामी जी के पीछे चलना चाहते हैं तो हमें भी आचारण में इस शिक्षा को कार्य में लाना चाहिये।' इस के बाद स्नातक बलभद्र जी ने कहा—'आज दिन लक्ष्मी की प्राप्ति का दिन है पर जूआ खेलना लक्ष्मी की प्राप्ति नहीं है। लक्ष्मी की प्राप्ति का वास्तविक साधन उत्साह है। आज के दोनों नायकों में अपूर्व साहस था। रामचन्द्र जी का साहस कभी भी भंग नहीं होता था उधर श्री स्वामी जी भी साहस को कभी छोड़ते न थे जब तक कि उद्देश्य की प्राप्ति न होती'।

तदनन्तर एक गीति हुई। फिर श्री स्नातक जयदेव जी ने बहता दी।

'आज का दिन एक ही महापुरुष का नहीं है पर तीन महापुरुषों के होने के कारण इस दिन का बड़ा महत्व है। मनुष्य तीन ऋणों से बड़ा है। इन में भी कठिन ऋषि-ऋण है। ऋषि-ऋण को पूरा करने के लिये ऋषि की पुस्तकों का स्वाध्याय करना परमावश्यक है।

इस के बाद छोटी श्रेणियों के ब्रह्मचारियों का श्लोक गायन हुआ जो कि बड़ा मनोरंजक था। फिर उपा० सुधाकर जी ने अपनी वक्तृता दी जिसका सारांश यह है—

"ऋषि जीवन पर विचार करने के लिये मैं आप के सन्मुख एक प्रश्न रखता हूं जिसका यदि हम उत्तर दे सके तो मैं समझता हूं कि हमारे जीवन का उद्देश्य निस्सन्देह पूरा हो गया। वह यह प्रश्न है कि 'हमें दयानन्द क्यों प्यारा है?' इस प्रश्न का ठीक उत्तर पाने के लिये, पूर्व आप इस प्रश्न पर विचार करिये कि हमें अपने माता पिता या आचार्य क्यों प्रिय हैं।

(शेष फिर)

पत्रों की सैर

शुद्धि की शुद्धि—पादरी का पादरी

चन्द रोज़ हुए, आर्यसमाज अनारकली ने एक ईसाई पादरी मिस्टर जेम्सपाल को जो जन्म से हिन्दू थे, शुद्ध किया था। अब हमें निहायत अफ़सोस से ऐसा मालूम हुआ है कि आर्यसमाज लाहौर ने भी जेम्सपाल को सिवाय सार्टिफ़िकेट शुद्धि देने के और कोई असली स्टेप इस मामले में नहीं लिया। पादरी जेम्सपाल आज तक जेम्सपाल ही हैं। इन का नाम तक तब्दील नहीं किया गया। हालांकि उन्होंने ज़िम्मेवार मेम्बरान आर्यसमाज से कईबार दरख़ास्त की कि इन का नाम तब्दील कर दिया जावे, मगर मुतलिक सुनवाई न हुई। चुनाचे इन के नाम पर जो खत व किताबत शुद्ध होने के बाद समाज अधिकारियों की ओर से की गई हैं, इस में पादरी जेम्सपाल ही नाम इस्तेमाल किया गया है। अगर कोई पादरी शुद्ध हो कर भी पादरी ही रहता है और जेम्सपाल डोगर राम वगैरा नहीं बन सकता तो यह शुद्धि का ढोंग किस मतलब के लिये है।

(राजपूत गज़ट)

एक सिख अखबार की भूल।

धर्म के विषय में तथा कुछ सामाजिक मामलों में आर्य्यसमाज वालों से अवश्य ही हमारा बहुत बड़ा मतभेद है। परन्तु इस मत भेद के कारण उन की ओर से सरकार को भड़काना या इसी प्रकार और किसी रीति से आर्य्यसमाजियों की या अन्य किसी विधर्मी सम्प्रदाय की पीठ में छुरी मारना हम बड़ी घृणित कायरता और महा नीच कर्म मानते हैं। परन्तु खेद है कि पंजाब के एक सिख अखबार ने इतने नीचे उतर कर सूरमा सिख समाज की मर्यादा के विरुद्ध काम किया है। उस अखबार ने सरकार को यह पट्टी पढ़ाने का उद्योग किया, कि समाजी लोग सिखों को समाजी न बनाने पायें, क्योंकि उनके ऐसा करने में फौजी भरती में बाधा पड़ती है। इनसिंह जी ने यह भी सलाह दी है कि आर्य्यसमाजी या देव समाजी कदापी सेना में भरती न किए जायें, सिख आर्य्यसमाजी न बनाये जायें, इसकी रोक के लिए यह सिख अखबार जितने उचित उपाय सोचे उन का समर्थन हम खुशी से करने को तैयार हैं, परन्तु इस काम में सरकार को अपनी मदद पर बुलाना और वह इस लिए कि जिस से देश के एक समाजको भारी हानि पहुंचे, हम क्या, कोई भी उदारचेता सिख पसंद नहीं करेगा।

(वै० स०)

सुधार

मैसूर और बड़ोदा दोनों ही राज्य प्रजाहित चिन्तन में इस समय कटिबद्ध हैं। मैसूर में प्रजा की आर्थिक दशा सुधारने के लिये नाना प्रकारकी चेष्टाएं हो रही हैं। यह प्रति दिनका अनुभव है, कि छोटी श्रेणी के मनुष्य अधिक पैसा कमाने पर सदा भूखों ही मरते दिखाई देते हैं। उनके रहने के स्थान बड़े मैले होते हैं। प्रयोग में आने वाले वस्त्र गन्दे होते हैं। इस दुर्दशाका कारण उनकी अपव्ययता है। कारखानों और मिलों में काम करने वाले मजदूर अपना मासिक वेतन पाकर खुशी के मारे फूले नहीं समाते और उसे दस दिन ही में उड़ा बैठते हैं दूसरे महीने के अन्तिम तप्ताह में उनके भूखों मरने तक की नौबत आ जाती है। मैसूर सरकारने प्रजाकी इस प्रकार की असावधानता मिटाने की तरकीब सोची है। तरकीब बङ्गलोरमें पहले पहल लड़ायी जायगी। वह घूमने फिरने वाले बङ्कों का स्थापन है। नया स्कीम के अनुसार कुछ ईमानदार अफसर सरकारी वर्दी पहन कर निर्दिष्ट दिनोंमें प्रजा के निवासस्थानों को जायंगे। वे छोटे छोटे दफ्तरों और कारखानों में भी रुपया जमा करने के लिए जायंगे। वे बाजारों और हाटों में भी रहेंगे। उनके पास एक ताला और मुहर लगा हुआ सन्दूक रहेगा, जिस में रुपया डालने के लिए छेद रहेगा। जो रुपया या नोट जमा करेंगे उन्हें एक रसीद काट दी जावेगी और दूसरी अफसर के पास रहेगी। प्रजा को किफायतशारी सिखाने के लिए तरकीब तो अच्छी है और इसमें सफलता होने पर एक बड़े कार्य की सिद्धि होगी। डर यही है, कि बड़े अफसरों की असावधानी होने पर यार लोग वर्दियां पहन कर प्रजा को लूटने की तरकीबें करेंगे। यदि सरकार की कड़ाई सदा रही, तो स्कीम को सफलता होगी।

(कलकत्ता समाचार)

आर्य समाज झज्झर

तारीख़ २४ सितम्बर को पं० रविदत्त जी, आयु २४ वर्ष, गौड़ ब्राह्मण बादली तहसील झज्झर निवासी वर्त्तमान मुख्याध्यापक वैदिक पाठशाला झज्झर का पुनर्विवाह एक गौड़ ब्राह्मण कन्या के साथ हुआ जिसकी आयु २१ वर्ष की है और जो ६ वर्ष की आयु में विधवा हो गई थी आर्य्य-समाज झज्झर के सुप्रबन्ध से बड़े समारोह और धूमधाम के साथ हुआ।

दोपहर के पश्चात् स्वयम्बर व विवाह संस्कार के समय एक हज़ार से अधिक पुरुष स्त्रियां उपस्थित थीं और यद्यपि संस्कार मंडप साधारण रूप से काफ़ी था तथापि बहुत से सज्जनों को स्थानाभाव की शिकायत रही।

विवाह संस्कार श्री पं० बालमुकन्द जी आदि ने बड़ी उत्तमता से कराया और जब कन्या दान का समय आया तो चारों ओर से रुपयों की टंकार से सभा-मण्डप गूंज उठा और ९३॥) रोकड़ तथा नौ चांदी के छल्ले व अंगूठियां दान में आईं और उपस्थित गणों ने एक स्वर होकर वर व वधू का आशीर्वाद दी जिसका प्रभाव ऐसा अच्छा पड़ा कि आज तक विधवा विवाह की महिमा और उस की आवश्यकता के गीत नगर में गाये जा रहे हैं संस्कार की समाप्ति पर निम्नलिखित दान वर पक्ष की ओर से किया गया:—

संस्कारकर्त्ता महोशय दक्षिणा	४)
विधवा सहायक फण्ड मेरठ	५०)

भवदीय
रामचंद्र मंत्री
आर्यसमाज झज्झर

सामाजिक समाचार

मुल्तान छावनी

श्री बृजानन्द जी सन्यासाश्रम का तृतीय वार्षिकोत्सव सानन्द धूम धाम से निर्विघ्न समाप्त हुआ। कोई २०के लग भग यात्री बाहिर से पधारे थे। प्रति दिन यज्ञ के पश्चात् श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री अभूतानन्द जी. श्री विज्ञान भिक्षु जी ने वेद और उपनिषदों की कथा की और श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री परमानन्द जी आगरा, श्री नित्यानन्द जी, कृष्णानन्द, श्री अनुभवानन्द जी, श्री कृपानन्द जी, श्री तितानन्द जी. श्री मगलानन्द जी, श्री सत्यानन्द जी, स्वामी श्री विज्ञानभिक्षु जी के क्रमशः व्याख्यान हुए और म०मुन्शीराम जी, म० हरदत्त जी और म० आत्माराम जी के भजन हुए और सन्यासी सम्मति के निम्नलिखित अधिकारी नियत हुए, श्री स्वामी सर्वदानंद जी प्रधान, श्री परमानन्द जी आगरा निवासी उपप्रधान, कृष्णानन्द मन्त्री, श्री विज्ञानभिक्षु जी उपमन्त्री, श्री सत्यानन्द जी स्वामी,स० उपमंत्री। अन्तिम दिवस के अन्त में अपील के न करने पर भी आश्रम प्रेमी सज्जनों ने निम्नलिखित सहायता दी २४१ ।=)। नकद और ३४) वाइदा—

इतिशम

नोट—सर्व आर्य्य सन्यासियों का पता यहां से मिल सकता है—

कृष्णानन्द—
वृ० स० आ० कालीचर्ण
करपुला
पो० हरदुआगञ्ज
ज़ि० अलीगढ़

—०—

आर्यकुमार सभा जयपुर
का
"प्रथम वार्षिकोत्सव"

हर्ष का स्थान है कि हमारी आर्य्यकुमार सभा का प्रथम वार्षिकोत्सव निर्विघ्न समाप्त हो गया। उत्सव दो दिन तक सायंकाल के ४ बजे से ८ बजे तक समाज मन्दिर में मनाया गया। सभापति का आसन दोनों दिन पं० रामचंद जी आजिनिपुर (अजमेर) ने सुशोभित किया—प्रथम दिवस ठीक ४ बजे हवन आरम्भ हो गया और पौने पांच बजे उक्त पण्डित जी के सभापतित्व में कार्यवाही आरम्भ हुई। बड़ी मनोहर प्रार्थना हुई। रिपोर्ट सुनाई गई भजन संध्या और व्याख्यान हुए। दूसरे दिन इस ही प्रकार संध्या भजन व्याख्यान इत्यादि हुए। पहले दिन आयुर्वेदाचार्य श्री चतुरसेन जी शास्त्री (अजमेर) के व्याख्यान "हमारे जीवन कैसे हों", इस विषय पर और दूसरे दिन "ऋषि दयानन्द की शिक्षा का अन्य आचार्यों की शिक्षा से मुकाबिला" इस विषय पर बड़े ही प्रभाव शाली और गवेषणपूर्ण हुए। दूसरे श्री पं० शिवनन्द जी मंत्री स्थानिक सनातन धर्म मण्डल का प्रेम पूर्ण उपदेश "गृहस्थजीवन" पर बड़ा ही उत्तम था। दोनों दिवस "भारत की उन्नति के लिये एक धर्म होना आवश्यक है या नहीं" उस विषय पर बड़ा ही रोचक तथा मनोहर वाद विवाद (Debate) होता था। इस वाद में कुमारसभा को पूर्ण सफलता मिली। इस में जयपुर के सभी विद्यार्थियों ने चाहे वे आर्य्यकुमार थे अथवा हिन्दूकुमार बड़े उत्साह से भाग लिया। पहला पारितोषिक एक योग्य हिन्दू कुमार कुंवर शिवकिशोर निवाड़ी को और दूसरा बाबू हीरालाल आर्यकुमार को मिला। सभापति जी के भाषण दोनों दिवस उपदेशपूर्ण हुए। इस उत्सव में हिन्दू समाज तथा आर्यसमाज के नेताओं और और कुमारों ने बड़े प्रेम से भाग लिया। भगवान् यह प्रेमअटूट हो।

युद्ध वीरसिंह मंत्री
आर्यकुमार सभा जयपुर

—:०:—

निर्वाचन

प्रधान—मु० युगल किशोर जी वकील
उपप्रधान—(१) मु० मंगलसेन जी मुखत्यार
" " (२) मु० द्वारिका प्रसाद जी
मन्त्री— नन्दकिशोर मुखत्यार
उप मन्त्री—(१) बा० अंगनलाल जी बी० ए० एल. एल. बी. वकील
" " (२) बा० रामनारायण वर्म्मा
कोषाध्यक्ष— लाला रतनलाल जी
पुस्तकाध्यक्ष—अशरफीलाल जी

अब जो सद्धर्म्मप्रचारक पत्र आप भेजा करें वह मेरे नाम भेजा करें।

निवेदक—
नन्दकिशोर मुखत्यार
मंत्री आर्यसमाज बदायूं

—०—

मुलतानछावनी

इस समाज का पहिला वार्षिकोत्सव १७, १८ तथा १९ नवम्बर को होना नियत हुआ है।

आपका शुचिन्तक सुन्दरलाल प्रेमी
थापर आर्यसमाज मन्त्री

—०—

जिज्ञासा

मान्यवर जी नमस्ते। भागल पुर
ता० १६—१०—१६

कृपया मुझे श्रीमान् सत्यवृत्त शर्म्मा जी के पते से सूचित करेंगे और अपने समाचार पत्र में यह भी कृपया छाप देंगे के जहां वह हों वहां से हम लोग उन से पत्र व्यवहार करेंगे। यहां शास्त्रार्थ होने वाला है और उसमें पंडित कालूराम और भीमसेन जी आने वाले हैं। इसी कारण हम लोग भीमसेन जी के दामाद पंडित सत्यवृत्त शर्म्मा जी को बुलाना चाहते हैं। कृपया आप अपने समाचार पत्र में छाप दें।

कमलाकान्त प्रसाद
C/O Mewa Lal Choudhry,
Booking Clerk E.I.R.
(Bhagalpur Behar)

कृपया आप अवश्य इस निवेदन को हमारे कबूल करेंगे और सत्यवृत्त शर्म्मा के आने का प्रयत्न करेंगे

आप का सेवक
कमलाकान्त प्रसाद

—०—

आवश्यकता

मेरे एक मारवाड़ी माहेश्वरी मित्र जो अंग्रेजी हिन्दी पढ़े लिखे तथा व्यापार कार्य में दक्ष अवस्था १९ वर्ष शरीर से आरोग्य और मासिक वर्तमान आय १००) है एक सुयोग्य पढ़ी लिखी आर्य्य सिद्धान्तों को मानने वाली एक ऐसी कन्या के साथ विवाह करना चाहते हैं जो सर्वाङ्ग सुन्दर तथा गृहकार्य में दक्ष हो।

सम्बन्ध प्रत्येक अग्रवाल तथा जैनखतंत्र विचार वाले महाशय के यहां हो सक्ता है।

जिन महाशय को सम्बन्ध करना हो इस पते से पत्र व्यवहार करें।

गोन्दासार शर्मा
मारवाड़ी सम्मेलन
कासबा देवी रोड़
बम्बई

———

मुलतान छावनी

आर्य्य कुमार सभा मुलतान छावनी का वार्षिक चुनाव निम्नलिखित अनुसार हुआ—

(१) म० अर्जुनराम जी प्रधान
(२) म० कुशल जी उपप्रधान
(३) म० मङ्गलराम मंत्री
(४) म० जैदेव जी उपमत्री
(५) म० रामरक्खा जी कोषाध्यक्ष
(६) म० जैचन्द जी पुस्तकाध्यक्ष
(७) म० फेसराम जी, अन्तरंग सभासद

भवदीय
मङ्गलराम अग्रवाल
मंत्री

(२) आर्य कुमार सभा ने विजयदशमी पर "रामका सदेसा" नामी पुस्तक सर्वसाधारण को विना मूल्य बांटी।

भवदीय
मङ्गलराम
मंत्री

———

नन्दलाल सहायक मुख्याधिष्ठाता के प्रबंध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित

Registered N0. A. 434

धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २७ कार्त्तिक सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ११ नवम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३० भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोक-हित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बाँटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई के नियम

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता!

(२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
काङ्गड़ी पो०श्यामपुर ज़ि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २५० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस के (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)
[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)
[३] आचारा ऽनाचार और छुआ छूत मूल्य=)
[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज मूल्य -)
[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)
[६] पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस श्यामपुर—कांङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

शाखागुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउन्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक—पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय
P. O. श्यामपुर, ज़िला बिजनौर

विज्ञापन

शाखा गुरुकुल थानेश्वर के चिकित्सक महा० शिवराज दो मास के अवकाश पर जाने वाले हैं। यदि कोई डाक्टर महाशय उन दो महीनों के समय में शाखा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की चिकित्सा आदि कार्य्य में सहायता देने के लिये वहां पहुंच सकें तो वे महाशय मेरे से पत्र व्यवहार करें।

मुन्शीराम,
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
डाकखाना श्यामपुर कांगड़ी
ज़िला, बिजनौर.

धार्मिक स्वाध्याय

आत्मा के दर्शन

'कठोपनिषद् से'

वाजश्रवा नाम के मुनि ने उत्तम फल की इच्छा से सर्वस्व दान में देदिया। उस का नचिकेता नाम का पुत्र था (१) लोग दान की चीज़ें लेजा रहे थे, उन्हें देख कर बालक के दिल में भी श्रद्धा उत्पन्न हुई। वह सोचने लगा (२) जो पुरुष ऐसी गौओं को दान देता है जो पानी पी चुकीं, घास खा चुकीं, जिनका दूध दुहा जा चुका, और जिन की इन्द्रियां शिथिल हो गई हैं, वह वैसे ही लोकों को जाता है (३) उसने पिता को कहा, तब! मुझे किस के लिये दोगे? दो बार कहा, तीन बार कहा, तब पिता ने उत्तर दिया, मैं तुझे मृत्यु के लिये दान देता हूं (४) नचिकेता सोचने लगा, मैं अपने साथियों में बहुतों से प्रथम—बहुतों में मध्यम हूं। भला मृत्यु का ऐसा क्या काम है जो मुझ से ही हो सकता है?

जो कुछ बीत चुका है उस पर, और जो होने वाला है उस पर विचार करो तो पता लगेगा कि मनुष्य अनाज की तरह पैदा होता और उसी की तरह पकाया जाता है (६) अग्नि के समान ज्योति वाला ब्राह्मण अतिथि (नचिकेता) घर में आता है, उस के शम की शान्ति करो। हे मृत्यु! अतिथि की सेवा के लिये पानी लाओ (७) जिस कम बुद्धि वाले पुरुष के घर में बिना खाये कोई अतिथि वास करता है, उस की आशा, प्रतीक्षा, मेल जोल, मीठी और सत्य वाणी, यज्ञ पुण्य, और पुत्र पशु आदि सब नष्ट हो जाते हैं (८)

(तीन दिनों के पीछे घर आकर यम ने कहा) हे नमस्कार योग्य ब्रह्मन्! तीन रातें तुम ने मेरे घर में बिना खाये काटी हैं। तुम्हारे लिये नमस्कार हो। मेरा भला हो, मुझे पाप न चढ़े इस लिये तू मेरे से कोई तीन वर मांगले (९) (नचिकेता ने पहिला वर मांगा कि) हे मृत्यो! मेरे पिता की इच्छा पूर्ण हो जाय, उस का मन प्रसन्न हो जाय, और उस का क्रोध शान्त हो जाय। तुझ से छूट कर जब मैं जाऊं तो मेरे साथ प्रसन्न हो कर बात चीत करे—यह मैं पहला वर मांगता हूं [१०]

मृत्यु ने उत्तर दिया—औद्दालकि आरुणि [वाजश्रवा] जैसे पहले प्रसन्न रहा करता था, वैसा ही होजायगा। वह रातको सुख से शयन करेगा और मृत्यु मुखसे छूटे हुए तुझे देख कर क्रोध रहित होजायगा। [११]

नचिकेता ने दूसरा वर मांगा—स्वर्ग लोक में कोई डर नहीं है। वहां हे मृत्यो! तेरा राज्य नहीं है। वहां कोई पुरुष बुढ़ापे से भी नहीं डरता। भूख और प्यास को जीत कर वहां पुरुष आनन्द सागर में हिलोरे लेता है। [१२] मृत्यु तू! उस स्वर्ग सम्बन्धी अग्नि को जानता है। सुख देने वाली उस अग्नि का ज्ञान तू मुझे दे। उन सुखमय लोकों से फिर मृत्यु नहीं होती। यह मैं दूसरे वर से मांगता हूं [१३]

मृत्यु ने कहा—हे नचिकेता! मैं सुख सम्बन्धी यज्ञ को जानता हूं और जानता हुआ तुझे बताता हूं। (सुख दायक यज्ञादि कहीं बाहिर नहीं) यह जो अनन्त लोकों की प्राप्ति और स्थिति है यह हृदय के गुप्त स्थान में ही स्थित है (१४)

मृत्यु ने नचिकेता को संसार की कारण भूत उस अग्नि का वर्णन किया। उस के भागों का वर्णन किया और उस की प्राप्ति कैसे सम्भव है, यह भी बताया। जो कुछ मृत्यु ने कहा था नचिकेता ने उसे दोहरा दिया। इस से प्रसन्न हो कर मृत्यु ने फिर कहा [१५] महात्मा मृत्यु ने अत्यन्त सन्तुष्ट हो कर फिर कहा कि इतना वर मैं और देता हूं। यह अग्नि तेरे ही नाम से कही जायगी—और इसके साथ सम्बन्ध रखने वाली अनेक रूप जो आग की मात्रा है, उसे तू ग्रहण कर [१६]

अनोखी दिवाली

खम्माच—तालतिताला

धन भाग भये सखि! कातिक के
प्रभु ने जो अमावस कीन्ही उजेरी।
परलोक को चन्द्र सिधार गयो
जन सागर में पै हिलोरें घनेरी।
अचरज की यह कौन कथा
उदयाचल पै रघुचन्द्र चढ़ेरी
इस काली निशा में दो चाँद भये
अस्ताचल पै यतिचन्द्र चढ़ेरी॥

इधर है काली उधर उजाली,
इधर अमावस उधर दिवाली।
यह रात कैसी निराली आई,
इधर हँसाकर उधर रुला कर॥ टेक।

(१)

इधर विजेता की लारहे हैं
जसा सजा कर तिलक की थाली।
इधर धरम की है बुझती ज्योती
नई शिखाएं जलाजला कर॥

(२)

डरो न जीवन के रण में प्यारो
ज़रा भी घावों से एक पलभर।
भरेगा मिल कर यह लोक सारा
उन्हें यों मरहम लगा लगा कर॥

(३)

सुनो निशा क्या ये कह रही है
तुम्हें कहानी सुना सुना कर।
वह काम करना कि रात काली भी हो
उजाली जो तुम को पाकर॥

(४)

यह शान भारत की काले चोले में
मुंह छिपाये खड़ी हुई थी।
विजय से लौटा दुलारा इस का
तो खिलती पड़दा हटा हटा कर॥

(५)

जो तेज का पुंज मिलने प्यारे
से उड़ के आनन्दधाम पहुंचा।
इधर उधर जो बिखरे थे छींटे
उन्हें यह लाई उठा उठा कर॥

(६)

ज़रा तो सोचो क्या शान होगी
वह कैसा सब का ही प्यारा
कफ़न की जिस के यह आरती सब
हैं गाते दीये जला जलाकर॥

(७)

है आज भी और फिर भी होगी,
मगर दिवाली रंगीली होगी।
हमी हो बत्ती हमी हो दीया
हमें जले जब कि जगमगाकर॥

मराल

सद्धर्म्म-प्रचारक।

बरेली आर्य्यसमाज का कार्य्य

सगत सप्ताह सम्पादक को आर्य्यसमाज बरेली के वार्षिकोत्सव पर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समाज के कार्य को देख कर हृदय में आनन्द उत्साह और आशा का संचार हुआ। निराशा के बादल भाग निकले और एक आकाश वाणी ने आकर हमारे कानों में कहा कि 'आर्य्यसमाज के भविष्य को निराशा की दृष्टि से मत देख। आज भी समाज में ऐसे सेवक विद्यमान हैं जिन्हों ने ऋषि के भाव को अपने हृदय में धारण करके यज्ञ के लिये आत्मबलिदान सीखा है" बरेली समाज में वस्तुतः धर्म का कार्य हो रहा है—और अभी तक जो कुछ हुआ है वह केवल अंकुर स्वरूप है। अभी उसका बहुत कुछ विस्तार हो सकता है और हमें पूर्ण आशा है कि होगा।

हम लोगों में शब्दजाल की मात्रा बहुत अधिक है। शब्दों की माला के सौन्दर्य से पृथक् सौन्दर्य किसी २ स्थान में ही होता है। बरेली समाज के कार्य का सौन्दर्य उसी कोटि का है। अन्य समाजों को भी उस कार्य का पता लगे—ताकि वे भी जान सकें कि वस्तुतः कार्य करने के मार्ग कौन २ से हैं, इस लिये हम समाज के कार्य का कुछ संक्षिप्तसा वृत्तान्त लिखते हैं।

आर्य्यसमाज ने अपने फैले हुए कार्य को संगठन में लाने के लिये तीन समाजें स्थापित की हैं। आर्य धर्म सभा, आर्य विद्या सभा, और आर्य सेवा समिति। आर्य सेवा समिति को यदि राजार्य सभा का प्रतिनिधि मानलें तो ये तीन वेदोक्तसभायें हैं, जो किसी देश के शासन में आवश्यक समझी जाती हैं। उन्हीं के ढंग पर ये सभायें बनाई गई हैं। इनमें से प्रत्येक सभा के प्रबन्ध में निम्नलिखित प्रकार से कार्य सौंपे गये हैं।

धर्म सभा के अधीन—स्त्री समाज, कुमार सभा, बाल सभा, ज़िला प्रचार, साधन मण्डली, शुद्धि सभा।

आर्य विद्यासभा के अधीन—सरस्वती विद्यालय, स्त्रीसुधार विद्यालय, अधम उद्धार समिति, श्री समिति।

आर्य सेवासमिति के अधीन—अनाथ रक्षा, विधवा सहायक, मैडिकल तथा लीगल बोर्ड।

धर्मसभा की ओर से प्रचार का काम ज़ोर शोर से हो रहा है। ज़िले में प्रचार के कारण कई समाजें नई बनी हैं और बहुत सी समाजों ने बरेली समाज के साथ सम्बन्ध जोड़ लिया है। ज़िले की बहुत सी समाजों ने इस वार्षिकोत्सव पर आये हुए प्रतिनिधियों द्वारा बरेली समाज से सम्बन्ध स्थापित किया है। बरेली में विद्यमान आर्यों के आचार व्यवहार का संशोधनकार्य भी धर्म सभा के आधीन है। प्रति दिन सायंकाल समाज में बहुत से आर्य सज्जनों का एकत्र हो जाना एक विशेष जीवन का सूचक है।

आर्य विद्यासभा के अधीन निम्नलिलित पाठशालायें हैं। ५ कन्याशाला पाठशालायें। इन पाठशालाओं में एक भङ्गियों की, एक कंजरों की, शेष चमारों की हैं। मुसलमान बालक भी साथ २ शिक्षा पाते हैं। ४ रात्रि पाठशालायें हैं जिन में वे बालक पढ़ते हैं जो दिन को किसी काम में लगे रहते हैं। स्त्री सुधार विद्यालय में कन्याओं की शिक्षा होती है। बिहारीपुर में एक संस्कृत पाठशाला है जिस में अन्त्यजों तथा अन्य विद्यार्थियों को उपदेशक बनाने के लिये तय्यार किया जाता है। समाज के नीचे अब कई और ग्रामीण पाठशालायें भी हैं। एक सरस्वती विद्यालय शहर से तीन चार मील की दूरी पर बड़े रमणीक स्थान में बनाया गया है, जिसमें रहन सहन सर्वथा गुरुकुल के ढंग पर होता है। अभी तक पढ़ाई इण्ट्रेन्स परीक्षा के योग्य बनने के अनुकूल ही कराई जाती है।

सेवासमिति में बहुत से स्वयं सेवक हैं जो विशेष २ समयों पर समाज सेवा करने के अतिरिक्त आर्य्यसमाज के हरेक कार्य के लिये सदा ही उद्यत रहते हैं। नगर के बड़े २ मेलों या उत्सवों पर सब लोग ही अब समिति के स्वयं सेवकों से सहायता चाहते हैं। यह समिति नवयुवकों को सेवा भाव का उत्तम पाठ पढ़ा रही है।

इतना कार्य विस्तार पिछले वर्ष का समझिये। इस उत्सव पर नौ दस पाठशालायें बरेली समाज को नई मिली हैं। समाज का कार्य विस्तार प्रतिदिन बढ़ रहा है—और सभासदों में जो अद्भुत जोश है वह सब सुख आशा दिलाता है कि बढ़ा हुआ काम सब प्रकार से संभलता जायगा।

बरेली समाज में इस समय जो महान् कार्य हो रहा है, इस का मूल कारण सच्चा आर्य्यत्व और सच्चा त्याग है। इन दोनों गुणों के साथ साहस भी मिल जाय तो फिर क्या कहना है। इन गुणों की सहायता से इस कार्य को प्रारम्भ करने वाले डा० श्यामस्वरूप सत्यव्रत को बरेली के लोग दो तीन साल पहले पागल कहते थे। वे कहते थे कि बरेली हिन्दू-पन का गढ़ है और उसमें ऊंचे विचार उत्पन्न करना कठिन ही नहीं—सर्वथा असम्भव है। आज वे सब बरेलीवासी डाक्टर जी के यत्न को सफल होता हुआ देखकर धुन और साहस का सिक्का मान रहे हैं। अब जो कार्य चल रहा है उसका आधारभूत एक मित्रमण्डल है जिसके केन्द्र डा० श्यामस्वरूप जी हैं। ईश्वरकी कृपा से सब कार्यकर्त्ता एक मन हो कर कार्य कर रहे हैं। छोटे मोटे झगड़ों का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

बरेली समाज के कार्य का संक्षिप्त सा समाचार अपूर्ण होगा यदि हम एक और संस्था की ओर पाठकों का ध्यान न खेंचे। वह संस्था व्यापार-मण्डल है। जिन अन्त्यजों को समाज शुद्ध करती है, वे चमड़े का या और काम छोड़ कर क्या करेंगे? इस प्रश्न को हल करने के लिये एक व्यापार मण्डल खोला गया है जिसमें वे बालक कपड़े के जूते बनाने का काम सीखते हैं। उस मण्डल के ब-

नाये हुए जूते हमने देखे और उन्हें बड़ा सन्तोषजनक पाया। ये चमड़े के जूते से सस्ते हैं, देखने में सुन्दर हैं, और काम भी अच्छा देते हैं। स्लीपर, देसी जूता, बूट, फुलबूट सभी ढंग के जूते स्त्री-पुरुष बालक सब के लिये तय्यार किये जाते हैं। यदि अन्त्यजों को शुद्ध करने का मसला हल करना है तो व्यापार-मण्डल के दृष्टान्त का सब स्थानों में अनुकरण होना चाहिये—ताकि जिन्हें हम ऊपर उठाते हैं वे रोज़ी छोड़ कर निकम्मे न हो जांय।

बरेली आर्य्यसमाज में जो कार्य का अंकुर फूटा है, परमात्मा करे वह दिनों दिन उन्नति करता जाय और अन्य समाजें भी वैर कलह के अनुपयोगी कार्य को छोड़ कर वास्तविक धर्म सेवा में तत्पर हों।

—:०:—

विशेष लेख

इस सप्ताह से हम ऋषि दयानन्द के जीवन पर एक लेख माला प्रारम्भ करते हैं। ये लेख ऋष्युत्सव पर साहित्य परिषद् के विशेषोत्सव में पढ़े गये थे। लेख पढ़ने योग्य हैं और हम पाठकों से आग्रह करेंगे कि वे ७वें पृष्ठ का आलोचन अवश्य करें। तीन अंकों में यह लेख माला प्रकाशित होगी।

—०—

प्रचारक परिवार से बातें

१. अन्य समाचारपत्रों को अपने पाठकों का दिल पिघलाने के लिये अपने और पराये उपन्यास लिखने की आवश्यकता रहती है किन्तु सद्धर्मप्रचारक का अपने प्रेमियों से कुछ ऐसा विलक्षण सम्बन्ध है कि लम्बी भूमिका या टीका टिप्पणी की आवश्यकता नहीं रहती। इस लिये आज हम अपने प्रेमियों से सीधी २ दो तीन बातें करना आवश्यक समझते हैं। हम जानते हैं कि प्रचारक के प्रेमी अपनी ओर से कभी कोई कमी नहीं रखते—किन्तु फिर भी कभी २ ध्यान खेंच देना उत्तम होता है।

२. एक बात शायद पुरानी होने के कारण ग्राहकों को भूल गई हो—वह याद दिलाते हैं। प्रचारक का कोई भी ग्राहक २४) भेज कर ८ साल के लिये स्थिर ग्राहक हो सकता है। इस में ग्राहक को दो लाभ हैं। एक तो बार २ चन्दा भेजने का झमेला न रहेगा और दूसरे हरसाल का जुदा २ मार्ग व्यय न लगेगा। प्रचारक को ऐसे कम से कम दो सौ ग्राहकों की आवश्यकता है। अभी तक बहुत थोड़ी संख्या ने इस नियम से लाभ उठाया है। प्रचारक का इस में यह लाभ है कि उस के पांव सदा के लिये स्थिर हो जायंगे और किसी प्रकार की भी आर्थिक आशंका बीच में न पड़ेगी।

३. दूसरी बात जिस पर हम यहां ध्यान खेंचना चाहते हैं वह इस की ग्राहक संख्या के विषय में है। हम पहले भी कह चुके हैं कि प्रचारक से कभी १ पाई के भी लाभ की आशा नहीं रखी गई। सम्पादक स्वामी या प्रबन्धकर्त्ता के लिये एक कौड़ी की भी आशा नहीं रखी जाती, क्योंकि किसी की भी रोज़ी पत्र पर अवलम्बित नहीं है। इधर विज्ञापनों की आमदनी को हमने नमस्कार कर दिया है। और काग़ज़ घटिया लगाने का विचार नहीं रखते। ऐसी दशा में हम अपने प्रेमी पाठकों को इतनी सूचना देदेना चाहते हैं—और पहिले भी दे चुके हैं कि पत्र की बिल्कुल निश्चिन्त स्थिति होने के लिए एक हज़ार और ग्राहकों की आवश्यकता है। इतने और ग्राहकों के विना हम इस में वे उन्नतियां नहीं कर सकते, जो हमारे दिल में हैं। यह ठीक है कि हमारे प्रेमियों ने प्रचारक के लिये कई बार यत्न किये हैं, और शायद कई लोग तो यत्न करते २ थक भी गये हों, परन्तु जहां इतनी बार किया है, वहां फिर एक बार सही। शायद अगली बार ऐसी प्रेरणा करने की आवश्यकता न पड़ेगी। क्योंकि अब हमारा संकल्प है कि किसी दशा में भी प्रचारक को ढीला न होने देंगे। अब तक कई ऐसे कार्य प्रचारक की निरंतर उन्नति में बाधा डालते रहे जिनपर बहुत कुछ हमारा बल न था। दैवी घटनाओं ने प्रचारक के मार्ग को बहुत कुछ बनाया अब ऐसा प्रतीत होता है कि भाग्य की बही में प्रचारक का जो लंबा प्रोग्राम था, उसमें परिवर्तन न होंगे। परिवर्तनों का प्रोग्राम हो चुका, अब स्थिर उन्नति का प्रोग्राम प्रारम्भ होगा। इस लिये हम बड़े आग्रह से अपने प्रेमियों से निवेदन करते हैं, कि प्रचारक की ग्राहक संख्या को आगे की ओर एक धक्का और देदें—बस फिर देखें कि प्रचारक में नित्य प्रति कौन २ सी उन्नतियां होती हैं।

सम्पादक

———

संसार समाचार पर टिप्पणियां

धार्मिक

परोपकारिणी सभा की नींद भी कभी न कभी टूट ही जाती है। उस की एक बैठक २७ अक्टूबर को अजमेर में हुई। बहुत से सभासद् उपस्थित थे। कई आवश्यक प्रस्ताव स्वीकृत हुए। सभा के चार सभासदों का स्थान ख़ाली हुआ था, उनके स्थान पर संयुक्त प्रान्त से पं० घासीराम जी, पंजाब से पं० रामदेव जी, राजपूताने से जोधपुर के राणा नरेन्द्रसिंहजी, बम्बई से सेठ रणछोड़दासभक्त सभासद् चुने गए। वैदिक यन्त्रालय के अधिष्ठाता श्रीयुत गंगाप्रसाद एम. ए. नियत हुए। सत्यार्थप्रकाश का मूल्य बढ़ाने का विषय पेश हुआ, पहले बहुसम्मति यह थी कि मूल्य बढ़ाया जाय किन्तु बहुत से वादविवाद के पीछे यही निर्णय ठहरा कि मूल्य न बढ़ाया जाय। महात्मा जी विशेषतया इसी प्रश्न के लिए परोपकारिणी के अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे, सन्तोष है कि सभा ने आपके मन्तव्य को स्वीकार कर लिया। परोपकारिणी सभा का अधिवेशन भी एक विशेष घटना होती है क्योंकि आर्य्यसमाज में इतनी गहरी नींद शायद किसी सभा की नहीं।

—:०:—

बरेली आर्य्य समाज का उत्सव अक्टूबर की २५ से प्रारम्भ करके २९ तक हुआ। चार दिन तक खूब रौनक़ रही। महात्मा मुन्शीराम जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्नातक बुद्ध देव जी, प्रो० महेशचरणसिंह जी, पं० शिवशंकर काव्य

तीर्थ जी, स्नातक इन्द्र आदि वक्ताओं के व्याख्यान हुए। २८ को दोपहर के समय पारिवारिक सम्मेलन हुआ, जिस में परिवारों की उन्नति के कई साधनों पर विचार हुआ। नरनारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे। हमारी सम्मति में उत्सवों के साथ ऐसे सम्मेलनों के करने की रीति अत्युत्तम है। उन सम्मेलनों में आर्य स्त्री पुरुष संकोच छोड़कर परस्पर उन्नति के साधनों पर विचार किया करें। समाज की पाठशालाओं के बालकों को महात्मा जी के हाथों से पारितोषिक वितीर्ण कराया गया। २९ की दोपहर के समय मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्य्यसमाज की ओर से पं० इन्द्र और दूसरी ओर से पं० रामलोचन साहित्याचार्य थे। पं० रामलोचन जी बरेली के सनातन-धर्म सभा के नाक समझे जाते हैं। शास्त्रार्थ का पूरा वृत्तान्त बरेली से आयगा, तब मुद्रित होगा— यहां इतना ही जतला देना पर्याप्त है कि वैदिक सिद्धान्त का गौरव बढ़ा और सनातन धर्म सभा को बहुत लज्जित होना पड़ा। शास्त्रार्थ के पीछे एक कट्टर सनातनी सेठ ने २०) शास्त्रार्थ के निमित्त समाज की पाठशालाओं को दान दिये। शास्त्रार्थ का प्रभाव उत्तम रहा। बरेली समाज का वार्षिकोत्सव इस प्रकार कृतकार्यता पूर्वक समाप्त हुआ और उस के लिए समाज के मन्त्री डा० श्यामस्वरूप और उस के मित्र धन्यवादार्ह हैं।

—:०:—

स्त्री जाति को जिन व्यर्थ के बन्धनों में रखा जाता है। उन को हटाने का विशेष कर्तव्य आर्यसमाज ने अपने ऊपर लिया है। पहले से ही आर्यसमाज स्त्री शिक्षा के प्रचार में, पर्दासिस्टम के हटाने में और स्त्रियों का वेद का अनधिकार बतलाने वालों के खण्डन में यत्नवान् रहा है। इस ओर यत्न करके समाज ने बहुत सी कृतकार्यता भी प्राप्त की है। कन्या पाठशालाओं की इतनी बड़ी संख्या इस में साक्षी है। पंजाब में पर्दे का रिवाज बहुत कुछ हटता जाता है, किन्तु सब स्थानों पर समानतया नहीं। संयुक्त प्रान्त की आर्य समाजें इस सुधार के विषय में अपने पंजाबी साथियों से बहुत कुछ पीछे हैं। बरेली के उत्सव पर हमें यह देख कर प्रसन्नता हुई कि इस वर्ष स्त्रियों के आगे से पर्दा उठा दिया गया था। किन्तु अन्य स्थानों पर अभी बड़े सुधार की आवश्यकता है। हमें शोक हुआ कि वहीं बिहारीपुर आर्य स्त्री-समाज के उत्सव के नोटिस के अन्त में मन्त्राणी जी को नोट देना पड़ा कि "परदे का पूरा प्रबन्ध होगा" आर्यस्त्रियों को यह भी सूचना देनी पड़े कि पर्दे का पूरा प्रबन्ध होगा—यह कैसी लज्जा की बात है।

—०—

शाखा गुरुकुलकुरुक्षेत्र, [पो० थानेसर ज़ि० करनाल] के प्रबन्धकर्त्ता सूचना देते हैं किशाखा-गुरुकुल कुरुक्षेत्र का पंचम वार्षिकोत्सव माघ शुदि ४-५६ तदनुसार २६-२७ २८ जनवरी सन् १९१७ को होगा। अतः जो सज्जन पुरुष अपने बालकों को प्रविष्ट कराना चाहें कार्यालय से प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र मंगवालें। १५ जनवरी तक प्रार्थना पत्र लिए जायगें।

—०—

अम्बाला समाज का वार्षिकोत्सव खूब कृतकार्यता के साथ हुआ। स्वामी अनुभवानन्द जी, प्रो० आकृष्ण जी आदि के व्याख्यानों का बड़ा उत्तम प्रभाव हुआ। स्वामी परमानन्द की अपील पर लगभग दो हज़ार चन्दा हुआ।

—०—

आर्यमित्र का क्रिश्चन् निकल आया है। अंक उत्तम है। उस में गुरुकुलों के विषय में पं० बासीराम एम. ए. का बढ़िया लेख है। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की विशेषतायें बताकर आप लिखते हैं-'मानलो कि गुरुकुलों से अभी गौतम और कणाद उत्पन्न नहीं हुए और हम कहते हैं कि यह भी मानलो कि अभी एक दो शताब्दि तक और भी उत्पन्न न हों। और गुरुकुल के पक्ष वालों ने जो आशायें दिलाई थी वह अभी पूरी नहीं हुई तो भी क्या इससे गुरुकुलों की निष्फलता होगई? यह भी क्या दसबीस वर्ष का काम है? दस बीस लाख रुपया के व्यय से क्या सिद्ध होसकता है? गुरुकुलों को सफलता पूर्वक कार्य करते हुए देखना-इसे क्या स्वयं हमारी सन्तान को भी न मिले।"

ये शब्द यों चाहे कुछ निराशा पूर्ण प्रतीत हों किन्तु हैं बुद्धिमत्तायुक्त आशा के। जो कठिनाइयां एक गुरुकुल के सामने हैं, या हो चुकी हैं, वे हो दूसरे गुरुकुलों को भी होंगी। कठिनाइयों से निराश होजाना कायरता है और त्रुटियों का भार एक दूसरे पर फेंकना नीचता है। यही बुद्धिमत्ता की टोन है, जो कार्य कर्ताओं को बचा सकती है। ऐसे २ परीक्षण होचुके हैं, जिन्होंने सौ २ बलियां खाई हैं, और सदियों का समय लिया है। हम दस पन्द्रह साल में ही घबरा गये हैं और निराशा में पड़ कर जहां सफ़ेदी है वहां भी कालिमा देख रहे हैं।

—०—

साहित्य तथा शिक्षा

हिन्दी साहित्यसम्मेलन की स्वागत कारिणी के मन्त्री महाशय या तो बड़े भारी पुरातनतत्वों का अन्वेषण करने वाले हैं और या वर्त्तमान हिन्दी साहित्य की गति से सर्वथा अपरिचित हैं। हमें सम्मेलन के आगामी अधिवेशन की सूचना आई है, जिस पर हमारा पता—सद्धर्मप्रचारक पत्र, दिल्ली—लिखा है। मन्त्री महाशय को यह भी पता नहीं कि प्रचारक गुरुकुल में चला गया है।

—०—

सहयोगी कलकत्ता-समाचार के वर्तमान सम्पादक को केवल हिन्दी भाषा के प्रौढ़ पण्डित और सनातनधर्म के धुरन्धर पक्षसमर्थक मात्र समझना भूल है-आप अंग्रेज़ी भाषा के भी विद्वान् प्रतीत होते हैं। इस में प्रमाण लेना हो तो सहयोगी के नोटों के शीर्षकों पर दृष्टि डाल देखिये। आज कल नोटों तथा लेखों पर भी अंग्रेज़ी शीर्षक रहने लगे हैं। बहुत सोचने पर भी हम इस विलक्षणता का कारण नहीं स-

मझ सके। या तो सम्पादक महाशय की राय है कि कलकत्ता समाचार के पाठक हिन्दी के लेख तो समझ सकते हैं, पर शीर्षक नहीं समझ सकते, इस लिये अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग आवश्यक है। या आप की राय में हिन्दी भाषा में शीर्षक बनाने के लिये शब्दराशि ही नहीं है। तीसरा कारण क्या समझें। सम्भव है, सम्पादक जी कोई सन्तोष जनक कारण बता सकें। बता देंगे तो बड़ी कृपा होगी।

—:०:—

कुलीप्रथा नामक पुस्तक छापने के निमित प्रताप प्रेस से १०००) की ज़मानत मांगी गई है। कुली प्रथा नाम की पुस्तक सरकार ने ज़प्त की थी। उस समय जिन लोगों ने वह पुस्तक देखी है उन की राय थी कि सरकार का कार्य निष्प्रयोजन था। कुलीप्रथा में अशान्ति या राजद्रोह फैलाने वाली चिनगारियां नहीं भरी हुई थीं। अस्तु, ज़ब्ती पर प्रेस के मालिक ने शेष प्रतियां सरकार की भेंट करदीं। किन्तु अब कुछ दिन पीछे उस से ज़मानत मांगना कुछ समझ में नहीं आया। पुस्तक की छपाई हुई, और बिक्री बन्द हो गई। प्रेसवालों को तो स्वयं ही दण्ड मिल गया। उन का ख़र्च न निकला। क्या यही हानि ज़मानत की स्थानापन्न नहीं समझी जासकती थी।

—:०:—

यह तो सरकार की दृष्टि से ज़मानत मांगने की व्यर्थता हुई। यों सोचें तो ज़मानत मांगने या ज़ब्त करने के नियमों के विषय में ही बहुत कुछ कहा जासकता है। यह रीति व्यर्थ है। जिन ग्रन्थों में राजद्रोह का नाम निशान भी नहीं है, उन्हें ज़ब्त करना तो निष्फल अशान्ति का हेतु होता ही है, जहां सरकार से थोड़ा बहुत विरोध हो, वहां भी तो यह नीति फलवती नहीं होती। पुस्तकें चलती ही रहती हैं, प्रकाश नहीं तो गुप्त तौर से चलती हैं। लेखकों और छापने वालों का असन्तोष दिनों दिन बढ़ता जाता है, और लेख की स्वाधीनता के गले में भयानकछुरी फिर जाती है।

—:०:—

देश भक्ति और राज भक्ति—ये दो भक्तियां कहीं एक दूसरे से विरुद्ध होती हैं—और कहीं एक दूसरे के अनुकूल। इन दोनों भक्तियों में से देशभक्ति व्यापक है और राजभक्ति व्याप्य। दोनों भक्तियों के विरोध में पहली भक्ति की ही मुख्यता समझी जाती है। शिक्षा का उद्देश्य सदा देशभक्ति होता है—उस का साधन होने से राजभक्ति की भी उपादेयता हो जाया करती है। शिक्षा देने वाली संस्थायें कभी केवल राजभक्ति सिखाने के लिए नहीं बना करतीं। इन विचारों को दृष्टि में रखते हुए हमें उन पंक्तियों पर आश्चार्य होता है, जो सर जेम्स मेस्टन को अभिनन्दनपत्र देते हुए ऋषिकुल के प्रबन्धकर्ताओं ने लिखी हैं। अभिनन्दन पत्र में 'हिन्दू लोग समझते हैं कि राज्य की सेवा करना एक प्रकार से ईश्वर की सेवा करना है—'इत्यादि पंक्तियों द्वारा हिन्दू धर्म की राजभक्ति का वर्णन कर के लिखा गया है—"यह ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम इसी प्रकार के धार्मिक भावों को सुदृढ़ और सुरक्षित रखते हुए हिन्दू जाति के होनहार बालकों को सुशिक्षित बनाने के लिए खोला गया है" इत्यादि। राज-भक्ति विषयक १८ वीं शताब्दि के आदर्शों का फैलाना ऋषिकुल के उद्देश्यों में से एक है-यह तो हम नहीं मान सकते। हमारी सम्मति में हिन्दू जनता भी ऐसा न मानेगी, यह प्रबन्धकारिणि सभा की ही ज़बर्दस्ती है।

—०—

आगे कुछ और पंक्तियां भी मज़ेदार हैं। लिखा है-'.....हिन्दूजाति के बड़े अभिज्ञ महानुभाव इस आश्रम को हिन्दू जाति का हृदय समझते हैं और यहां साइन्स आदि की शिक्षा न होने पर भी इसे अपना गौरव समझते हैं। प्रत्युत कई लोग तो उस का न होना ही उचित समझते हैं।

ठीक है, कसर इतनी ही है, कि अब अठारवीं सदी नहीं है।

—:०:—

किन्ही म० चम्पाराम मिश्र ने सरस्वती के नवीन अंक में 'हिन्दी पुस्तकों की श्रेणि बद्ध सूचि' का शीर्षक देकर एक लेख लिखा है। लेख के अन्त में हिन्दी साहित्य की प्रामाणिक पुस्तकों की सूचि दी है। सूचि में कुछ विलक्षणता है। तुलसी दास के चार ग्रन्थ इस सौभाग्य-सूचि में आये हैं, भूषण का केवल एक ग्रन्थ इस योग्य समझा गया है, बाबू हरिश्चन्द्र के सात आठ उत्तम बड़े छोटे नाटकों में से केवल तीन का भाग्य चमका है, पं० श्रीधर पाठक के केवल दो ग्रन्थ ही इस महत्व को पासके हैं, और सरस्वती सम्पादक पं० महावीर प्रसाद द्विवेदी जी के पांच ग्रन्थों को यह सम्मान मिला है। और किसी लेखक के पांच ग्रन्थ इस योग्य नहीं समझे गये। इस हिसाब से द्विवेदी जी कई अनुवादग्रन्थ लिखकर भी हिन्दी भाषा के सर्वोत्तम लेखक हुए। लेखक महाशय का न्याय समझना कठिन है, अपनी २ समझ ही तो है—भूषण की शिवाबावनी द्विवेदी जी के हिन्दी महाभारत के सामने और भारतेन्दु का भारत-दुर्दशा नाटक मैथिलीशरण जी के जयद्रथ वध के सन्मुख मात पड़ गये। कालस्य चित्रा गतिः।

—:०:—

साधारण

दिल्ली में वायसराय ने राजाओं की सभा का उद्घाटन कर दिया! वायसराय की और राजाओं के प्रतिनिधि गायकवाड़ की वक्तृतायें तो छप गईं, और यह भी पता लग गया कि इस सभा को ब्रिटिश भारत के प्रबन्ध में हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार न होगा—पर वस्तुतः क्या अधिकार होगा, और सभा के प्रथम अधिवेशन में क्या हुआ, यह पता नहीं लगा। देखें—यह रहस्य कब खुलता है। कहीं वही बात न हो कि—'यावत्प्रविश्य विज्ञातं तावच्चर्म्म च दारुच' अन्दर घुसकर देखा तो चाम और लकड़ी के सिवा कुछ न पाया।

—:०:—

मध्यप्रदेश की सरकार ने भी श्रीमती एनीबेसेण्ट के प्रवेश की मनाही करदी है। मैदान मार लिया—भारतवर्ष से राजद्रोह की जड़ उखाड़ दी, और तो क्या—पांच सवारों में अपना नाम लिखा लिया। यह पता नहीं कि इसी मनाही ने एनीबेसेण्ट को भारतवासियों के लिए और अधिक प्रिय बना दिया।

———

प्रचारक पुस्तक भण्डार की नई पुस्तकें

आर्यधर्म ग्रन्थमाला

श्री महात्मा सुन्शीराम जी द्वारा लिखित आर्यों की नित्य कर्मपद्धति—मूल्य ⁻)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्य मात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिए यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आचाराचार और भूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिए—इन सब प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आ-गया है।

मातृ भाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र का इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृतसाहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन-यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधी प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इस में पहले दिखाया गया है कि सारे नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का गोपीकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्मप्रचारक।

—:o:—

आदित्य ब्रह्मचारी का प्रवेश

एक ब्रह्मपथ का यात्री मानो हिमालय के ऊंचे से ऊंचे शिखर के बहुत ऊपर स्थित है, जहां से वह इस सारे भूमंडल की लीलाओं को अच्छी तरह से देख सकता है। सबसे पहिले उसकी अन्वेषणात्मक दृष्टि इस भूमंडल के उन रमणीय स्थानों पर स्वभाविकतया आकर्षित हुई है जहां प्रकृति का स्वच्छन्द साम्राज्य है। दोनों विजन, शान्त, बर्फ से ढके हुवे ध्रुव, तथा अन्य सुन्दर वन, पर्वत जहां कि अभी तक मनुष्य के मैले हाथों की पहुंच नहीं हुई है, अपनी एकान्तता में प्रफुल्लित दीख रहे हैं। ये अपने सौन्दर्य में सुसज्जित मानो सृष्टिकर्त्ता के गुण-कीर्त्तन महोत्सव में सम्मिलित हुवे बैठे हैं। अहो क्या ही आनन्द है कि यह निष्कलंक विमल सौन्दर्य-किसी भी चंचल मनुष्य हस्त के स्पर्श से न कलंकित और कलुषित हुवे २ शोभा पा रहे हैं। जगदीश्वर की सर्वोच्चता के जीते जागते उदाहरण स्वरूप इन दृष्यों को देखने से जी नहीं भरता।

किन्तु दर्शक इस ईश्वरीय सौन्दर्य के आनन्द को अधिक देर कैसे ले सकता था जबकि एक कोलाहल के शब्द ने इसकी नज़र एक अन्य तरफ फिरा दी। दूर एल्प्स पर्वत को घेरने वाले सर्द देशों से लेकर पश्चिम में पाताल देश तक फैले हुवे भूभाग की स्टेज पर एक अद्भुत नाटक सा खेला जारहा है। इस सारे वायु मंडल में एक ही तरह की हवा वेग से चल रही है। यहां पर पूर्व देखी हुई प्रकृति अपनी सौन्दर्य और छटा में नहीं हैं, यहां इसकी बुरी दशा है। बड़े शोर शराबे और धूमधाम के साथ यहां प्रकृति का शिकार किया जारहा है। प्रकृति के सौन्दर्य को जैसे तैसे साधनों से पकड़ कर तोड़ फोड़ कर अपने घरों में ढेर लगाये जारहे हैं। यह देखिये विस्तृतसमुद्र की सतह पर व्यापारी जहाज़ और डूंडनौट तैर रहे हैं। शायद आकाश का आनन्द लेने के लिए विमान बनाने की भी कोशिशें होरही हैं। आग उगलने वाले और पत्थर का कोयला खाने वाले महादैत्य कलाघरों के रूप में गाढ़ा २ काला धुवें का भयावना श्वास निकाल कर वायु मंडल को कलुषित कर रहे हैं। सब मनुष्य अपने कामों में बड़ी जोर शोर से लगे हुवे हैं। विलासघरों के ज्ञान चक्षु विकास के सिद्धान्त को दिन व दिन हृष्ट पुष्ट होता देखते २ नहीं थकते हैं। व्यापार रूपी संगलें और ज़ंजीरें बड़ी दूर २ तक जाल की तरह फैले हुवे हैं जिनके द्वारा अन्य स्थानों का असंख्यात धन बड़े वेग से खींचा जारहा है, और स्वल्प संख्यक मनुष्य अपने घर में चांदी सोने के पहाड़ खड़े कर रहे हैं।

"यहां पर सब स्वतन्त्रता की नदी में नहाये बैठे हैं और स्वातन्त्र्य मंत्र का जाप कर रहे हैं पर फिर भी बंधे हुवे हैं। तरह २ के दल बने हुवे हैं फिर भी एकता और समता के गीत गाये जारहे हैं। कोई युद्ध नहीं, फिर भी अशान्ति है। सब जगह सुख और आनन्द छाया हुआ है पर फिर भी असंतुष्टि के मारे पीड़ित हैं।" यह विरोधाभास इस भूभाग पर बड़ी अच्छी तरह लगता है।

अहा यहां कैसा सुन्दर कंपाने वाला दृष्य है। सैकिन्डों में खबरें पहुंचाने के लिए तारें लगी हैं; प्रतीक्षण रेलें दौड़ती फिरती हैं। मोटर तथा अन्य देश आराम के यानों पर मनुष्य आनन्द लेरहे हैं। चलने के लिए कहीं रबड़ की सड़कें बनी हुई हैं। कहीं गगनभेदी ४० मंजिले मकान शोभायमान होरहे हैं। गद्दों पर पड़े हैं ऊपर से बिजली के पंखे चल रहे हैं। प्रतिदिन बदलने वाले नये २ फैशनों का उपभोग किया जारहा है। नर नारियां अपनी सजावट और बनावट में मग्न हैं। यहां यह सब आनन्द प्राप्त हैं; जिन्हें प्राप्त नहीं वे भी इसकी प्राप्ति की लालसा में मुंह बाये भ्रम कर रहे हैं।

इस सुन्दर दृष्य को देख कर ऊपर ठहरे हुवे दर्शक का मन लालायित हो सकता था कि वह इस सुखमय प्रदेश में आनन्द लेने के लिए कूद पड़े—नहीं तो कम से कम इस चमकीले सुख दृष्य की ओर से अपनी आंखें कभी भी न हटाये—किन्तु अन्तरिक्षस्थ इस आत्मा ने यह कह कर

कि 'मुझे इस स्थान से अब्रह्मचर्य की सख्त दुर्गन्ध आरही है' इस ओर से अपना मुंह मोड़ लिया।

दूसरी तरफ मुंह उठाया तो उसी ख़राब हवा को आस्ट्रेलिया के बाद अफ्रीका महाद्वीप की स्वभाविकता को कृत्रिम और वहां के पुष्ट सबल शरीरों को दुर्बल और निस्तेज बनाते देखा। आगे दृष्टि बढ़ाई तो इस सभ्यता की वायु को पवित्र जंबूद्वीप में फैलते पाया—चीनादि देशों का पुराना रंग उड़ रहा है जापान की भी चाल ढाल में धीरे २ फर्क होरहा है। इस प्रकार इधर उधर देखते २ अपने ठीक नीचे हिमालय की तराई में तीन ओर से समुद्र से घिरे हुवे एक प्रायद्वीप पर उसकी दृष्टि लगगयी है। उसने देखा कि नयी सभ्यता की यह वायु जिस में ब्रह्मचर्य की सुगन्ध नहीं और जिसमें ईश्वर भक्ति की शीतलता नहीं इस प्रायद्वीप के समुद्री किनारों पर भी वेग पूर्वक टकरा रही है; और कई स्थलों पर बड़ी दूर २ तक सुगमता से अपना असर कर चुकी है।

क्या आपने पहचाना नहीं कि हिमालय की शुभशिखरों की छाया में यह कौनसा वृद्ध पड़ा हुआ है जिसकी ओर दिवस्थ आत्मा ने अपनी उत्सुक तथा करुणा भरी दृष्टि लगादी है।

यह लगभग १ अरब बरस का बुड्ढा है। यह चाहें कितना वृद्ध हो किन्तु इसे अब पड़े रहना नहीं मिलेगा। इसे भी उठना होगा क्योंकि कुछ चंचल छोकरों ने जिन में से बहुत से भारत के अपनेदिनों में गर्भ में भी नहीं आये होंगे और जो कुछ दिनों से नये फिरना और छाल ओढ़ना छोड़ कर कोट पतलूनों में बन्द होना सीख चुके है, आकर इस बुड्ढे को डांट सुनाई हैं। उन्होंने कहा है कि "अब Sernvival of the fittest का ज़माना है अब बुड्ढों का जगत् में काम नहीं। यदि जीनाहै तो जवान बनो काम करो नहीं तो हमारे पैरों तले कुचले जाकर मरजाओ।"

निसन्देह वृद्ध को यह नयी गड़बड़ भाषा बिलकुल भी समझ न आई और वह घबड़ा गया। उसके बड़े शरीर का वह भाग, जिसके समीप वह छोकरे खड़े हो दांव पेच लगा रहे थे, कांपने लगा, और उसमें बिना चाहे हरकत होने लगी। अन्य कारणों से अन्य अंगों में भी ऐसी एक आध स्वतन्त्र चेष्टायें और हुईं किन्तु इस के बाद शनै २ सब हरकतें बन्द होगई, भारत को शान्ति की Sleeping doze पिलादी गई। सब गड़बड़ी दूर गई अतः सभ्यता के लिये मार्ग बिलकुल खुल गये। पश्चिमपने ने धीरे २ शान से भारत में प्रवेश शुरु कर दिया। जिस प्रकार भारत के वर्त्तमान शान्ति स्थापक संरक्षक ने अपने पाश्चात्य भाइयों को हटाकर भारत को कुचलेजाने से रक्षा के लिए भारत पर अपना पूर्णाधिकार जमाया है उसी प्रकार इस पश्चिमपने ने भी भारत में घुसते समय मन में ठान लिया है कि 'मेरे प्रवेश से भरे भारत में जान डल जायगी और मैं इस बुड्ढे को जवान बना दूंगी" और अकाशस्थ आत्मा ने साफ देखा कि पश्चिमपने ने अपनी स्कीम के अनुसार वृद्ध भारत पर अपना काम आरंभ कर दिया है। विचार है कि भारत के झुर्रियों वाले मुंह पर योरोप के कारखानों में बना हुआ पाउडर और ख़ास किस्म के ही सुगन्धित Oil रगड़ २ कर झुर्रियां मिटा कर उस के चेहरों को चिकना चुपड़ा कर जवान का चेहरा बना दिया जायगा। उस के सिर के सफेद बालों पर विलायती खिज़ाब और लेवेन्डर लगाकर उन्हें काले चमकीले और खूब सूरत बना दिया जाय। शायद पश्चिमपने को बुड्ढे की सफेद दाड़ी भी पसंद न आयगी, अतः यह मुंडवादी जायगी और कोमल करने वाले साबुन के साथ प्रतिदिन शेविंग का काम हुआ करेगा। उसकी रद्दी मुसलमानी सी पगड़ी की जगह हैट (भिन्न २ समय के भिन्न २) लेलेंगे। उसके सारे बदन पर (गोरे करने के लिये) साबुन पाउडर इस खूबी से मली जांयगी कि उसके साथ भारत के बुड्ढे शरीर में जवानी भी घुस जायगी। उस को मोटा करने के लिये पोर्ट वाइन के प्याले पिलाये जांयगें। उसे कांटे छुरी के साथ सभ्यता पूर्वक सब प्रकार का मांस खाना सिखाया जायगा। भारत के पास भोगविलास की सामग्री पहुंचा कर उसके अंगों में यौवन ठूंस दिया जायगा। भारत की वाणी में से संस्कृत का मुर्दा निकाल कर तथा अन्य अयोग्य भाषाओं को दूर करके अंग्रेज़ी में गिटपिट करना सिखाया जायगा। पश्चिमपने की स्कीम इतनी ही नहीं किन्तु उसने यह भी सोचा है कि धीरे २ भारत के हृदय पर भी कब्ज़ा कर उसके अन्दर घुसे "ईश्वर, ब्रह्म" के झूठे झगड़े को हटा कर उसकी जगह स्पष्ट आवश्यकतायें बढ़ाने द्वारा प्रकृति के भोग रमण, आनन्द लूटने की शिक्षा दे कर उसे उन्नति मार्ग पर चढ़ा दिया जाय। यह है स्कीम जिसके अनुसार भारत पूरा नौजवान बना दिया जायगा।

इस स्कीम के अनुसार काम प्रारम्भ हो चुका है। तेलादि की चुपड़ा चुपड़ी शुरु है। वह भारत जिसके यहां मुसलमानी समय तक भी शराब पीना पाप था, उसे Wine पिलादी गई है। अब वह हर काम कराने के पीछे Thank you बोलना सीख गया है। अब वह 'स्वागतम्' की जगह 'Welcome' बोल लेने में अपने अहो भाग्य समझता है। किन्तु विशेष काम नीचे से प्रारम्भ हुआ है। उस ओर बड़े वेग से काम हो रहा है। भारत के निर्जीव से नंगे पैरों में, जहां खड़ाऊं या जूती के निशान बिलकुल मिट चुके हैं, सुन्दर जुराब चढ़ादी गई हैं उस पर भड़कीला चटकीला इंग्लैंड का बना काला बूट पहना दिया गया है। उसकी जुराबों पर कसे हुवे चौड़े २ गैटिस धूप में ज़ोर से चमक उठते हैं। यहां तक उस आकाशस्थ आत्मा ने बुड्ढे को जवान होते देखा। आगे शायद उस से देखा न गया।

आगे काम प्रारम्भ हुआ। बुड्ढे की ढीली धोती ऊपर आधी जंघा तक चढ़ा दी गई और उसकी नंगी आधी जंघा पतलून में फंसाई जारही है। भारत अपने पैरों को देख कर कभी २ बड़ा प्रसन्न हो उठता है। और चाहता है कि मेरे सारे अंग ही शीघ्र ही ऐसे सुन्दर और चमकीले बन जांय; किन्तु पतलून के लिये धोती लग भग बिलकुल उतर चुकी है

जब कि यह कार्य बन्दसा होता दीखता है। न जाने कौन भारत के हृदय पर भी हाथ रख कर उसे अपनी इस इच्छा से भी रोक रहा है। पतलून पहनाने वाले के हाथ कांपने लग गये। यह रुकावट कौन है? यह बाढ एक दम क्यों रुक गई? इस प्रश्न का उत्तर देना व्यर्थ है क्योंकि सिवाय ब्रह्मचारी के शक्ति शाली हाथ के और किस में शक्ति है कि प्रवृत्ति की प्रबल बाढ को रोक सके।

भारत में स्वामी जी का जन्म

अब यह बताने की ज़रूरत नहीं रही कि वह आकाशस्थ पवित्र महान् आत्मा को प्रवृत्ति के प्रवाह में बहते जाते संसार की अवस्था पर दया आई और वह आनन्द से अपने भाइयों की दी हुई विष खाने के लिये उनके फेंके हुये ईंट पत्थरों को सहने के लिये जंगलों में अकेले भटकने के लिये और अन्त में जगदुन्नति के पौदे को रुधिर से सींच प्राण त्यागने लिये भारत में जन्म ले चुका है। और उसी ने पाश्चात्यता की चलती गाड़ी को वैसे ही रोक लिया है जैसे की उस ब्रह्मचारी ने विक्रमसिंह की एक दर्शों घोड़ों की गाड़ी रोकने का खेल किया था।

आगे चलने से पूर्व हमें इस प्रश्न का उत्तर देते चलना चाहिये कि भारत में क्या विशेषता थी कि इस जगह ही जन्म लेने की उस आत्मा ने आवश्यकता प्रकट की! जब कि भारत में सदाचार कोई उन्नति दशा में नहीं जब कि ब्रह्मचर्य के कई अंशों में भारत योरोप से भी अधिक गिरा है जब कि भारत के लोग प्रायः निरक्षर हैं, जब कि दूसरी ओर योरोप में प्रायः सब पढ़े लिखे हैं और विद्वान् और आविष्कर्ता बनते हैं जब कि भारत में किसी भी प्रकार का विज्ञान उन्नत नहीं तब इस भूमि को क्यों पसंद किया। उस स्वच्छन्द उडते हुवे पक्षी ने इसी सब तरह से उजड़े हुये वृक्ष पर क्यों घोंसला बनाना चाहा।

इस में कुछ कारण है। उजड़े भारत में कुछ विशेषता अवश्य है। इसी भूमि माता की गोद में बैठ कर पुराने काल के ऋषियों ने ब्रह्म विषयक, अविष्कार किये। यहां पर ही प्रथम सृष्टि का विकास हुआ और वेदों का प्रकाश हुआ यह कहना अत्युक्ति न होगी। और यहां पर ही बड़े २ ब्रह्मचर्य के आदर्श स्थापित हुवे सो अब भी निःसन्देह भारत में ब्रह्मचर्य तप अनाशक्ति की शक्ति संचित है। अब मृत्युदशा में भी अमृतोषधि के कुछ लेश शेष हैं। अतः इस वेदी पर चढ़ कर ही ब्रह्मचर्य का संदेश सुनाया जा सकता है, यहीं पर उस तारे का उदय होय जो कि जगत् को ब्रह्म के आचरण का मार्ग दिखलायगा।

क्योंकि भारत में पूर्व तप, और ब्रह्मचर्य की कर्कशता उपस्थित थी तभी इस पर पाश्चात्यता का रंग शीघ्र न चढ़ा और यही कारण है कि इस ब्रह्मचर्य आदित्य का यहां पूर्व में ही उदय हुआ पश्चिम में न हुआ। चाहें आप इस बात को भक्ति का अतिशय समझ कर न माने कि दयानन्द की आत्मा ने स्वयं स्वइच्छा से यहां जन्म लिया; किन्तु चाहें वह संसार की बुरी दशा देख कर आया या उसे यहां भेजा गया हो—अथवा अचानक ही जन्मा हो यह सच है सन् १८२४ में एक महान् आत्मा भारत के एक किनारे पर पल रहा था और यह संसार का भावी महासुधारक तथा अब्रह्मचर्य की जड़ काटने वाला था।

भावी सच्चे ब्रह्मचारी ने घर की धन दौलत भोग विलास को लात मारी। विवाह के फन्दे से मुक्ति पायी। फिर इधर उधर सत्य तलाश में फिरना प्रारम्भ किया। बड़े घनघोर जंगलों में हिंस्र जीवों के बीच में रातें बिताईं। शरीर पहिले ही लोहू लुहान है सामने फिर काटों में रास्ता निकोलना किन्तु सत्य प्राप्ति में मग्न का आगे बढ़ना नहीं रुकता। कभी हम उसे गला कर जड़ कर देनी वाली हिमालय की ठंडी बरफ में घूमते पाते हैं, कभी ज्येष्ठ की दोपहर में तप्त रेता पर अपने मार्ग में पाते हैं। इस प्रकार से लगातार सत्यान्वेषण में ३४ वर्ष का कठोर घोर तप करने के पश्चात् अपने को ब्रह्म (वेद) का अधिकारी बना कर वह गुरु के चरणों में बैठता है। बिना सत्य तप के कोई ब्रह्मचारी नहीं बन सकता। तप और ब्रह्मचर्य अविच्छेद्य चीज़ें हैं। वह आराम तलब मनुष्य जिस के जीवन पूर्ण तपोमय नहीं, जिसे छुरे की धारा पर नहीं चलना पड़ा वह ब्रह्मचर्य की उच्च पदवी नहीं प्राप्त कर सकता केवल उसे कलंकित कर सकता है।

दयानन्द ने ब्रह्म (वेद वेदांग) पढ़ लिए, विद्याप्राप्ति में पूर्णता पाली। सब तय्यारी हो गयी। दयानन्द को आदित्य ब्रह्मचारी की पदवी मिल चुकी, किसी गवर्नमेन्ट की यूनीसिटी की ओर से नहीं परन्तु योग्यता के कारण परमात्मा के वेद का आज्ञा से।

(जगत में प्रवेश)

इस प्रकार पूर्ण तय्यारी करके और पूर्ण शक्ति प्राप्त कर के ब्रह्मचारी कमर कस कर जगत् सागर में कूद पड़ा। इस से न केवल भारत सरोवर में ही हल चल मच गयी किन्तु इस की लहरें दूर २ तक सारे सागर में व्याप्त हो गईं।

आदित्य का उदय होगया। लोगों ने अपने जगाने वाले पर क्रुद्ध होना, गाली देना, और पत्थर बरसाने शुरू किए। ब्रह्मचर्य की शक्ति ने मुख से सब कुछ सदा [ब्रह्मचारी का कोई प्राकृतिक Body guard नहीं हैं कवच तो क्या उस के नंगे शरीर पर कुरता भी नहीं] अहा! क्या ही विचित्र दृश्य है कि सारे जगत् के सामने एक ही ब्रह्मचारी छाती निकाले खड़ा है। प्रायःसारा जगत् उससे विरुद्ध सम्मति रखने वाला है। सारे जगत् की हवा उस के विरुद्ध बह रही है किन्तु वह हिमाचल की तरह अचल, अटल खड़ा है। बड़े २ तूफ़ान उस का कुछ नहीं कर सकते। उस को सत्य सिद्धान्त से कोई नहीं डिगा सकता। सत्य की चट्टान पर खड़े हुवे ब्रह्मचारी को कोई भी शक्ति नहीं हिला सकती। सारे संसार में कौनसी जगह है जहां पर आसक्ति और प्रवृत्ति का राज्य नहीं। जहां पर ईश्वर रहित सभ्यता जिसे पश्चिमी सभ्यता कहते हैं उस की दुन्दुभि नहीं बज रही। किन्तु इस विश्वव्यापक दुन्दुभि का जवाब देने वाली केवल एक

आदित्य ब्रह्मचारी की सिंहगर्जना है। वह कह रहा है कि "मनुष्य की उन्नति अर्थात् आत्मिक उन्नति प्रकृति के पीछे दौड़ने से न होगी, प्रकृति में फंसने से न होगी। इस के लिए तप और ब्रह्मचर्य का व्रत करो, विषय वासनाओं को निवृत्त करो। ऊपरी लीपा पोती से शरीर में कान्ति, नहीं आती, मुख तेजस्वी तभी होगा जब कि ब्रह्मचर्य और तप साधन किया होगा। कोई भी देश ऊपरी जगमगाहट और टीप टाप से उन्नत न होगा; जब कि भारत की जड़ें ही खोखली हैं तो उस की टहनियों पर सुन्दर रोगन कर देने से क्या बनेगा कठिन ब्रह्मचर्य द्वारा वास्तविक पुष्टता प्राप्त करने का यत्न करो। सख़्त से सख़्त प्रतिनिधिसत्ताक शासन से भी कोई भी राष्ट्र उन्नत नहीं हो सकता जब तक कि उस में ब्रह्मचर्य की दृढ़ नीवें नहीं। धर्म को राज्य प्रबन्ध में भुलाया नहीं जा सकता। कोई भी काम करना हो, चाहें वह राष्ट्रोन्नति हो या व्यापार हो, किन्तु सब के आधार परमेश्वर को उस से अलग नहीं रखा जा सकता। अतः ब्रह्म पर आचरण करो, ब्रह्मचारी बनो, अनासक्ति करो तो सब अत्याचार और अन्याय दूर हो जायेंगे और परम शान्ति प्राप्त होगी।"

उस का यह गम्भीरनाद इस सिरे से उस सिरे तक गूंज गया। जिनके कान खुले थे उन्होंने इसे सुना। जिन के होश कुछ भी ठीक थे उन्होंने इस की सत्यता स्वीकार की। शायद इन शब्दों में कुछ कठोरता है किन्तु यह बिलकुल सत्य है कि भौतिकता से जड़ हुये २ मस्तिष्क इस ब्रह्मचारी के उपदेश को नहीं समझ सकते। नास्तिकता में धुंधलायी हुई आखें उस आदित्य को भी नहीं देख सकतीं।

दयानन्द ने ब्रह्मचारी रूप में इस जगत् के मेले में कदम रक्खा था। उस का संदेशा ब्रह्मचर्य ही था। उस के शरीर का एक २ अंग ब्रह्मचर्य का उपदेश कर रहा था। दयानन्द के निर्भयता आदि सारे गुण उस के ब्रह्मचर्य गुण में आकर केन्द्रित हो जाते हैं।

यहां 'ब्रह्मचर्य' संकुचित अर्थों में प्रयुक्त नहीं है अविवाहित रहने को ही ब्रह्मचर्य नहीं कहते। 'ब्रह्मचर्य शब्द ब्रह्म अर्थात् वेद और ईश्वर की ओर निर्देश करता है। जो वेद निन्दक या जो नास्तिक है वह कभी भी ब्रह्मचारी नहीं बन सकता। एक शब्द में ब्रह्मचर्य 'निवृत्ति' का नाम है। निवृत्ति का अर्थ नववेदान्तियों की अकर्मण्यता नहीं—किन्तु सब प्रकार के प्रलोभन और फंसावटों से अलग रहना प्रकृति का दास न बनना—आवश्यकतायें न बढ़ाना तप करना ही ब्रह्मचर्य या निवृत्ति कहलाता है। इस से विपरीत स्वार्थवश प्रकृति में लिप्त होना 'प्रवृत्ति' है। अब्रह्मचर्य अर्थात् प्रकृति ही पश्चिमता का मुख्य रूप है। ब्रह्मचर्य तथा पश्चिमता का दिन और रात का संबन्ध है।

दयानन्द ने ऊपर से देखा था कि जब यह प्रवृत्ति का बाढ योरोप को भर कर पूर्व की ओर आयी और भारत के किनारों से टकराने लगी—ऋषियों के प्राचीन बन्ध भारत की शताब्दियों की उपेक्षा से टूट चुके थे—यह बाढ़ भारत में दूर २ तक पहुंच गयी थी। प्रवृत्ति की बाढ को प्रबल मनुष्य क्या रोकेगा अतः एक निबल ब्रह्मचारी की ज़रूरत थी। एक ब्रह्मचारी के हाथ लगते ही बाढ़ में स्थिरता आगयी। जिन्होंने सोचा था कि कुछ दिनों में ही भारत को हज़म कर लेंगे वे मुंह बाये ही रह गए। भारत के लिए कहा जाता था कि "इस के हृदय की धड़कन में वेग नहीं रहा है। भारत को उत्थान का संदेसा देना रेता के कण को उत्साह देना है।" किन्तु अब उस हृदय पर दयानन्द का शान्ति दायक हाथ है। ब्रह्मचारी ने भारत के मर्मस्थान पर कब्जा कर लिया है। यह मर्म धर्म है। जब तक भविष्यत में भी यह हाथ में रहेगा तब तक कोई भी यहां निराशा की संभावना नहीं।

इस का भविष्यत् परिणाम

यद्यपि आज के दिन दयानन्द का तेजस्वी मुखड़ा नहीं है, यद्यपि आदित्य अब अस्त होचुके हैं यद्यपि उसका चिन्ह बाक़ी है। आदित्य अपनी कुछ अग्नि छोड़ गया है। ब्रह्मचारी जाते समय इस जगत् की यज्ञशाला में एक पवित्र होमाग्नि प्रज्वलित कर गया है। यही अग्नि आज हमारा पथदर्शक है। इस में इसने अपने पापों को भस्म करना है। यही ज्योति उस आदित्य की प्रतिनिधि है। यही अग्नि आज अब्रह्मचर्य के मुकाबिले में खड़ी है। पापी प्रकृत लोग इस आग की ऊर्ध्वगामिनी ज्वालाओं को देख कांपते हैं—किन्तु जो निर्भय हो समीप आकर इसमें अपने पापों को स्वाहा कर देते हैं वे सारे जगत् से अभय का दान प्राप्त करते हैं। इस की लपलपाती हुई लपटें मानो बता रही हैं कि:—

प्रकृति की सभ्यता—ईश्वर रहित (ब्रह्मचर्य रहित) सभ्यता मृत्यु के मुह में ले जाने वाली है। जिस सभ्यता का कोई ईश्वर मालिक नहीं उस की कौन रक्षा करेगा और वह अभिमानिनी किस की रक्षा कर सकती है। वह निराधार निरालंब सभ्यता कब तक जीवेगी—जिस की नींव ही नहीं वह कब तक बची रहेगी ब्रह्मचर्य की सभ्यता के आधार में अनन्त ब्रह्म है। अनन्त अटल आधार पर स्थित जगदीश्वर की अमन्तर छाया में खड़े हुये को कौन डिगा सता है। हे प्रवृत्ति पथानुयायीयों! हे सभ्यो! अपने पैरों के नीचे की भूमि को देखो कि तुम किस आधार पर खड़े हो। इस कमज़ोर तुच्छ जीव पर तुम महल पर महल, जब तक खड़े कर सकते हो, करते जाओ अपने को उन्नत समझते जाओ—किन्तु यह भंगुर नींव इसे कब तक सहारेगी। याद रखो कि यदि कभी थोड़ीसी भी खटक आवेगी तो सारा भांडा फूट जायगा यदि कभी आंधी चलेगी तो आधार का तुच्छतृणतत्क्षण टूट जायगा और तुम्हारे रंग बिरंगे ऊंचे २ शीशे के महल चकनाचूर हो कर धरती पर बिछ जायंगे। निःसन्देह जब वह परीक्षा का समय उपस्थित होगा तब यह सारा आडंबर और क्षणिक चमकीलापन उड़ जायगा—तुम्हारी कालर नकटाई, बनावट और सजावट उस समय रह जायगी किसी भी काम न आयगी। आज तुम उसे जो इस विलासिता के सामना को तुच्छति तुच्छ समझ इस की ओर नज़र भी नहीं उठाता। दरिद्र समझ उस का अनादर कर लो। आज तुम उस केवल कौपीन धारी,

थल विहीन, सजावट हीन ब्रह्मचारी को असभ्य कह कर के उपदेश पर हंसी उड़ाली—आज तुम उस आदित्य की ओर से जान बूझ के मुंह छिपा लो किन्तु जिस दिन तुम्हारे शान से जगमगाने वाले गैस के लैंप उस आंधी के झोके से बुझ जायगें—तुम अपने को अन्धकार ही अन्धकार में पाओगे तब वह आदित्य याद आयगा और जिसे तुम आज देखना नहीं चाहते वही आदित्य की बधी हुई पूर्वोक्त ज्योति तुम्हे अपनी शरण में लेगी—वही तुम्हारा सहारा होगी। तब समझ में आयगा कि संसार शृंगार में कोई बल नहीं—यह निस्तेज और निःसार हैं। उस समय इस भूषण रहित सादी किन्तु दृढ़ भूमि सभ्यता के चरणों में आकर बैठोगे और उस का मान करोगे। ब्रह्मचारी की जलायी अग्नि के समीप अपनी जड़ता को हटाने के लिये विश्राम ढूंढोगे।

यह प्रकाशमान आग जिसे देख अन्याय अत्याचार और नास्तिकता के पशु डर के भाग जाते हैं उस समय ज़ोर से धधक रही होगी। मनुष्य आ आकर वहां अपनी विषय वासनाओं को भस्म करेंगे।

और न जाने यह, आदित्य की अग्नि जगत् में क्या २ कर डालेगी। इस प्रश्न का उत्तर पाताल में बैठे हुवे एक महानुभाव से पूछो जिस ने कि इस अग्नि को जगत में फैलते देखा है। वह बता रहा है कि 'एक अग्नि सारे जगत् में फैल गयी है जो प्रत्येक वस्तु को जला कर शुद्ध कर रही है। अमेरिका के शीतल मैदानों अफ्रीका के विस्तृत देशों एशिया के प्राचीन पर्वतों और योरोप के विशाल राज्यों पर मुझे इस सब को जलाने और सब को इकट्ठा करने वाले आग की ज्वालायें दीख रहीं हैं। इस अपरिमित अग्नि को देख कर जो निःसन्देह राज्यों साम्राज्यों और संसार भर के प्रबन्ध और नीति के दोषों को पिघला डालेगी। मैं अत्यन्त आनन्दित उत्साहमय जीवन व्यतीत कर रहा हूं। मैं इस अग्नि को मांगलिक समझता हूं जब यह अग्नि सुन्दर पृथ्वी को नवजीवन प्रदान करेगी तो सार्वत्रिक सुख अभ्युदय और आनन्द का युग प्रारम्भ होगा।"

देव शर्मा

—०—

गुरुकुल में दीपमालिकोत्सव

(गतांक से आगे)

इस लिये प्रिय हैं कि हमारा उपकार करते हैं तथा हमें अपना समझते हैं। सचमुच स्वामी जी भी हमें इस लिये प्रिय हैं कि उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था का उद्धार कर हमारी समाज पर बड़ा उपकार किया है। न केवल उन्होंने समाज को ठोकरें खाने से बचाया पर सम्पूर्ण भारत पर भी उनके अनेक उपकार हैं। उनका प्रेम स्वदेश तक ही परिमित न था पर वे सारे संसार को ही अपना समझते थे। अतएव हमें वे इस लिये भी प्रिय हैं कि सारे संसार पर बड़े उपकार किये हैं। इस के अतिरिक्त वैदिक सभ्यता के पुनरुद्धार के लिये भी उनका नाम इतिहास में सदा ही सुवर्णीयाक्षरों में लिखा जाता रहेगा। उनका वैदिक सभ्यता में कितना अटल विश्वास था इसके अनेक दृष्टान्त उनके जीवन में हमें मिलते हैं।"

इसके बाद एक गीति गाई गई। तदनन्तर श्री उपाध्याय इन्द्र वाचस्पति जी ने अपना भाषण प्रारम्भ किया जिस का सारांश निम्नलिखित है—

"संसार में यह एक नियम है कि जो वस्तुएं उद्देश्य रहित हैं उनका कोई मूल्य नहीं होता। ज्यों ज्यों वे किसी उद्देश्य की तरफ बढ़ती जाती हैं उनका मूल्य होता जाता है। वस्तु अपने मूल्य को खो देती है यदि उद्देश्य से हटती जाए। इसी सिद्धान्त के अनुसार हमें मनुष्यों जीवनों पर भी विचार करना चाहिए। जिस मनुष्य का जीवन अन्यों के उपकार के लिये नहीं है उसका जीवन व्यर्थ है। अपना पेट तो काक भी भर ही लेता है 'काकोपि जीवति चिराय बलिञ्च भुंक्ते' रामचन्द्र जी का जीवन एक अपूर्व जीवन था उनका प्रत्येक कार्य वीरता रस से भरपूर है तथापि उनकी वीरता का परिचय उस समय मिलता है जब कि उनको दैववश रावण का संहार करना पड़ता है। इसी समय से उनका जीवन क्रियात्मक होता जाता है तथा अब ही महा-पुरुषता भी प्रकट होती है। अर्थात् महत् कार्य से उनका जीवन उच्च होता गया है।"

'ऋषि के भी सभी कार्य आत्मावस्था से ही एक सूत्र में बद्ध थे। उन का जीवन का आरम्भ सच्ची जिज्ञासा से होता है। उनका जिज्ञासा-पूर्ण मन डावांडोल होता था। परन्तु जब मृत्यु की जीत के साधनों की जिज्ञासा हुई तब उन की जिज्ञासा केन्द्र पर ठहर गई। यही उन की महापुरुषता है। इसी समय वे आदित्य ब्रह्मचारी बन जाते हैं।

हमें भी दोनों महापुरुषों की तरह एक उच्च उद्देश्य रखना चाहिये। हमारी प्रत्येक प्रकार की शक्ति की उन्नति भी एक लक्ष के रखने से ही हो सकती है।'

इसके बाद एक गीति हुई।

तदनन्तर श्री सभापति जी का अन्तिम भाषण हुआ जिसका भाव यह है कि—

"स्वामी जी मृत्युञ्जय थे। मृत्यु से वे कभी भी घबराते नहीं थे। सदा ही अपनी जान को हथेली पर रखा करते थे। आज के दिन से वे हमें यह शिक्षा देगये हैं कि जिस प्रकार यह दीपक तब तक प्रकाश नहीं कर सकते जब तक कि उनकी बत्ती अपने को भस्मपात् नहीं कर देती इसी प्रकार यदि हमने जगत् में प्रकाश करना है तो हमें स्वाहा करना पड़ेगा। आत्मत्याग के बिना कोई भी धर्म नहीं फैले। देखिये ईसाई धर्म पर क्रूर अत्याचारी नीरो ने हजारों अत्याचार किये। ईसाईयों पादरियों को जलाया गया तथापि उस का उद्देश्य पूरा नहीं हुआ। अन्त में ईसाई धर्म की ही जय हुई। कोन्स्टन्टाइन महान् ने ही प्रथम ईसाई धर्म को ग्रहण किया। एवं रिडले के वे प्रसिद्ध वाक्य भी सदा याद रखने चाहियें जो कि उसने लेरी के समय अपने मित्र लेटिमर को कहे थे।

सतलब यह है कि धर्म प्रचार के लिए आहुतियों की आवश्यकता है। यही दीपमालिका का सन्देश है। स्वामी जी Man of action थे। उनका कर्मण्यता का जीवन था! ऋषि ने हमें तीन बातों के लिये विशेष ध्यान दिलाया था।

१. वेद वेदांगों का पठन पाठन।

२. वैदिक धर्म का प्रचार।

३. आर्यावर्त्त के अनाथों का पालन।

यदि हम इन तीन बातों की तरफ ध्यान रखेंगे तभी ब्रह्मर्षि के ऋण से उऋण हो सकते हैं।"

इस के बाद एक अन्तिम गीति के पश्चात् तथा शान्ति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई। तदनन्तर सन्ध्या के बाद सहभोज की घन्टी बजी। जिस में गुरुकुल के माध्य उपाध्याय तथा अध्यापक वर्ग संमिलित थे।

एक दुःख मई घटना

आर्यसमाज मनेर के समीप एक [illegible] नाम का साधारण कस्बा है जहां हिन्दू और मुसलमान दोनों निवास करते हैं। मुसलमानों की संख्या तिहाई है, नाम मात्र के लिये कुछ कतिपय आर्य्यसमाजी भी वहां निवास करते हैं परन्तु उन लोगों का बल नहीं के बराबर है। इस करबे में वैसा ही कोई साल खाली जाता होगा कि जिस साल हिन्दुयानी दो एक रमणियां मुसलमानी न हो जाती हों! हाल ही में एक सात आठ वर्ष की बालिका को जो भटकती चलती थी एक मुसलमान मौलवी ने अपने पास रख लिया—समीप के आर्य्यसमाज मनेर मुर्दा है—कुछ करना नहीं चाहती, यह समाचार मन्त्री आर्य्यसमाज दानापुर को भी दिया गया परन्तु शोक के साथ कहना पड़ता है कि वो भी इस ओर ध्यान नहीं दिये, विशेष शोक तो इस बात पर है कि सरकारी कर्मचारी थानेदार जी मनुष्य के निवास तक लिखते हैं उन को भी खबर नहीं मिली और खबर देने पर भी कुछ विचार नहीं किये—निश्चय आर्य्यों के लिये यह दुःख की बात है कि एक हिन्दू अनाथ बालिका मुसलमानों के गोद में चली जाय।

विनीत जीज्ञासु

—०—

सूचना

आपको ज्ञात होगा कि आगामी सप्तम [illegible] साहित्य सम्मेलन कार्तिक शुक्ल ११, १२ और १३ संवत् १९७३ को [illegible]पलपुर में होने वाला है। अतएव आपसे प्रार्थना है कि आप स्वयं अथवा आपके सुविख्यात पत्र के रिपोर्टर अथवा संवाददाता इस अवसर पर पधारने की कृपाकरें। समाचार मिलने पर आपके अथवा आपके रिपोर्टर के ठहरने तथा भोजन का समुचित प्रबन्ध कर दिया जायगा।

आशा है कि आप स्वा० का० स० की प्रार्थना स्वीकृत करेंगे।

दयाशंकर शास्त्री
मन्त्री स्वा० का० स०

आर्यसमाज पलवल

(१) आर्य्य सेवा में सविनय निवेदन है कि आर्य्यसमाज पलवल का दूसरा वार्षिकोत्सव कार्तिक सुदी १३, १४ तथा १५ सं० १९७३ वि० तदनुसार नवम्बर ७, ८ तथा ९ सन् १९१६ मङ्गल, बुध, बृहस्पति को बड़े समारोह के साथ होगा। आप कृपया अपने इष्टमित्र परिवार सहित पधार उत्सव की शोभा को बढ़ावें और उत्सव समय जो यज्ञ, व्याख्यानादि कृत्य होंगे उनसे लाभ उठावें।

(२) बड़े बड़े योग्य संन्यासी धर्मात्मा विद्वान् इस वार्षिक उत्सव में पधारेंगे, और बड़े २ गायक महोदय भी उपस्थित होंगे।

(३) पलवल रेलवे स्टेशन है जो दिल्ली से मथुरा को जाने वाली लाइन पर विद्यमान है।

आपका दर्शनाभिलाषी
ह० रामदयाल
मन्त्री आर्य्यसमाज, पलवल
ज़िला—गुड़गांवां

—०—

हरदोई

गोपागोशाला हरदोई का छठा वार्षिकोत्सव मिती कार्तिक शुक्ल ८-९-१० तदनुसार ३-४-५ नवम्बर सन् १६ ई० को होगा, अतः निवेदन है कि गोभक्त सज्जन उन तिथियों में पधार कर जलसे की शोभा बढावें।

श्री पूज्य स्वामी अनुभवानन्दजी व श्री पूज्य स्वामी सर्वबान्द जी पधारने के लिये विशेष कर प्रार्थना है।

रामधनी मिश्र
मैनेजर गोशाला हरदोई

—०—

कि हमारी समाज ने ऋषि उत्सव २६-१०-१६ प्रातःकाल बड़े समारोह से मनाया कार्यवाही हवन से आरम्भ हुई। पुनः म० सुन्दरलाल जी ने ईश्वरोपासना कराई। सन्ध्योपासना के पश्चात् एक भजन होकर, म० मंगतराम जी, शोभानन्द जी, ब्र० देवदत्त जी म० आनीलाल जी तथा म० कुशल जी ने अपने २ निबन्ध और व्याख्यान ऋषि जीवन पर उपस्थिति को सुना कर आनन्दित किया। मन्त्री जी ने वेद प्रचार के लिये अपील की जिस पर १२) रु० के लग भग इकत्रित हुये। इस के बाद आर्य्य कुमार सभा के चन्द सभासदों की प्रतिज्ञायें अपने व्रतों पर दृढ़ रहने के लिये सुनाई गईं। प्रधान जी ने कुमारों को अपनी प्रतिज्ञा पूरी करने के लिये आशीर्वाद दिया।

फिर म० विष्णुदत्त जी का एक मनोहर भजन हुआ, प्रकाश के ऋषि नम्बर के पर्चे बांटे जाने के पश्चात् शान्ति पाठ होकर सभा विसर्जन हुई। रात्री को समाज मन्दिर में दीपमाला की गई।

भवदीय
सुन्दरलाल थापर मन्त्री

आर्यसमाज हरदोई

आर्यसमाज हरदोई (अवध) का वार्षिक चुनाव ता० १७ १९१६ के नीचे लिखेनुसार हुआ है—

श्रीमान राय केदारनाथ जी तलुकेदार पतरवां
प्रधान।

श्रीमान् बाबू बृजकिशोर जी प्लीडर उपप्रधान,
श्रीमान् बाबू लाला प्रसाद जी अनुवादक मन्त्री,
श्रीमान् सुरेन्द्रनाथ उपमन्त्री,
श्रीमान् बाबू डालचन्द्र जी कोषाध्यक्ष,
श्रीमान् मु० शिवदयाल जी पुस्तकाध्यक्ष,

(१) उपदेशक व सन्यासा महात्माओं से नम्रतापूर्वक प्रार्थना है कि लखनऊ या बरेली जाते आते समय १ दिवस के लिए हरदोई ठहरने की कृपा किया करें। समाजमन्दिर में उनके ठहरने का समुचित प्रबन्ध रहा करता है।

भवदीय
सुरेन्द्रनाथ मिश्र
उपमन्त्री आर्यसमाज हरदोई

—०—

दीपमालिकोत्सव

हरदोई

सब से प्रथम संस्कार विधि व यजुर्वेद से यज्ञ किया गया उसके उपरान्त श्री० बा० रामचन्द्र जी वर्म्मा व श्री० बा० शिवनारायण जी मिश्र सभासद आर्यसमाज ने ईश्वर प्रार्थना व स्वामी जी के गुणानुवाद के भजन गाये उसके उपरान्त श्री० पण्डित शंकरदयाल जी शास्त्री उपदेशक आर्यसमाज गणेशगञ्ज लखनऊ ने श्री० १०८ स्वामी दयानन्दजी की महत्ता पर एक सारगर्भित व्याख्यान दिया। जिस में कि उन्होंने श्री स्वामी जी महाराज की अनेक महत्ताओं को दर्शाया इसके उपरान्त हमारे समाज के मन्त्री श्री० बा० लालाप्रसाद जी वर्म्मा ने भी श्री स्वामी जी महाराज की जीवनी व महत्ता के बारे में बड़े मनोहर शब्दों में एक छोटासा व्याख्यान दिया। उपरांत एक भजन के बाद हमारे समाज के सुयोग्य उप प्रधान श्री बाबू ब्रजकिशोर जी कपूर वकील ने श्री स्वामी महाराज के गुणानुवाद करते हुये नीचे लिखी कविता जोकि इसी अवसर के लिये रची थी सुनाई। उपरांत आर्ती व शांतिपाठ करके सभा विसर्जन हुई रात्री में समाज मन्दिर में रोशनी हुई।

—०—

शुभ सूचना

सर्व साधारण को विदित हो हो कि आर्य्य कुमार सभा बिजनौर का द्वितीय वार्षिकोत्सव २५, २६ नवम्बर सन् १९१६ ईसवी को होना निचित हुआ है। अत एव श्री स्वामी सत्यानन्द तथा स्वामी सर्वदानन्द सरस्वति जी से सविनय प्रार्थना है कि वे इस शुभ अवसर पर अवश्य पधार कर नवयुवकों को उत्साहित करें। आशा है कि वे प्रार्थना स्वीकार करके अपने दर्शनाभिलाषी विद्यार्थियों को अनुगृहीत करेंगे।

निवेदक
मन्त्री आर्य्यकुमार सभा
बिजनौर

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

Registered NO. A 481

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षामहे । मित्रस्य चक्षुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } ४ मार्गशीर्ष सं० १९७३ वि० (दयानन्दाब्द ३१) ता० १८ नवम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३१ भाग २८

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बाँटे जा सकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

क्रोड़ पत्र की बंटाई के नियम

१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़ पत्र नहीं बंट सकता!

२) क्रोड़ पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिए। क्रोड़ पत्र के आधे भाग पर सद्धर्मप्रचारक का नाम और बंटने की तिथि छपी होनी चाहिये। बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़ पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख और टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का प्रचार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए। ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)
मैनेजर—उषा कार्यालय गुरुकुल कांगड़ी पो०श्यामपुर ज़ि० बिजनौर

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य पथिक लेखराम—केवल २० प्रतिएं रह गई हैं— मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन मूल्य।=)

पं० इन्द्र वेदालङ्कार का लिखा मौलिक निबन्ध, जिस पर (वेद विषयक निबंध सहित) स्वीकार होने पर, उन्हें विद्यावाचस्पति की उपाधि का प्रमाण-पत्र मिला था।

मृतक श्राद्ध पर विचार।

पं० इन्द्र का पं० गिरधर शर्म्मा के साथ शास्त्रार्थ— मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

डाक व्यय सब का मूल्य के अतिरिक्त है।

[१] आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)
[२] पांच महायज्ञों की विधि मूल्य -)
[३] आचाराऽनाचार और छुआ छूत मूल्य=)
[४] ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज मूल्य -)
[५] वेद और आर्यसमाज मूल्य -)
[६] पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

अन्य भाग तय्यार हो रहे हैं।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता :—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफ़िस शामपुर-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

आवश्यकता

शाखा गुरुकुल हरियाने के लिए एक योग्य कम्पाउन्डर की आवश्यकता है जिसे साधारण चिकित्सा करने का भी अभ्यास हो। वेतन योग्यतानुसार २०) मासिक तक---पत्र-व्यवहार नीचे लिखे पते से—

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय
P. O. शामपुर, ज़िला बिजनौर

विज्ञापन

शाखा गुरुकुल थानेश्वर के चिकित्सक महा० शिवराज दो मास के [illegible] वाले हैं। यदि कोई डाक्टर [illegible] महीनों के समय में शाखा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की चिकित्सा आदि कार्य में सहायता देने के लिये वहां पहुंच सकें तो वे महाशय मेरे से पत्र व्यवहार करें।

मुन्शीराम,
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
डाकखाना शामपुर कांगड़ी
ज़िला, बिजनौर,

धार्मिक स्वाध्याय

आत्मा के दर्शन

कठोपनिषद् से

(२)

सुख के देने वाला नाचिकेताग्नि नामक जो परम-ज्ञान है, उसे सुनकर, मनन करके, और उस पर आचरण करके, ब्रह्मचर्य गृहस्थ और वानप्रस्थ इन तीनों जीवन की सन्धियों से उसी को दृढ़ करता हुआ जो मनुष्य यज्ञ स्वाध्याय और दान इन तीन कर्मों को करता है, वह जन्म और मृत्यु को तर लेता है। वेदों के उत्पत्तिस्थान विज्ञानी पूज्य देव को भली प्रकार जान कर शान्ति को अत्यन्त प्राप्त होता है। १७। सुखदायी ज्ञान को सुन कर मनन करके और तदनुकूल आचरण करके जो मनुष्य इस ज्ञान का हृदय में संग्रह करता है, वह मौत की फांसियों को सामने से तोड़ कर, शोक से पार होता हुआ, सुखमय संसार में आनन्द लेता है। १८। हे नचिकेता! यह नाचिकेत अग्नि सुख देने वाली है—इसी को तूने वर से मांगा था। लोग इस अग्नि को तेरे नाम से 'नाचिकेताग्नि' पुकारेंगे। अब तू तीसरा वर मांग। १९।

नचिकेताने कहा-मनुष्य के मरजाने पर प्रश्न होता है—कोई कहते हैं कि मरने के पीछे भी कुछ रहता है, दूसरे कहते हैं, नहीं रहता। तेरे उपदेश से मैं निश्चय करसकूं कि रहता है या नहीं—यह मेरा तीसरा वर है। २०।

मृत्यु—पहले इस प्रश्न पर विद्वान् लोग बहुत विचार कर चुके हैं। यह शीघ्र नहीं जाना जासकता, यह बड़ा सूक्ष्म धर्म है। हे नचिकेता! और कोई वर मांग इस पर आग्रह मत कर। इसे जाने दे।

नचिकेता—देवों ने भी इस प्रश्न पर विचार किया है, और हे मृत्यो! तू इसे कठिन बतलाता है। इस का उत्तर देने वाला तेरे समान मुझे कहां मिलेगा, इसके समान दूसरा कोई वर भी सम्भव नहीं।

मृत्यु—हे नचिकेतः तू सौ बरस की उम्र वाले पुत्र और पौत्र मांगले। बहुत से पशु हाथी घोड़े मांगले, सोना मांगले लम्बी चौड़ी भूमि चाहे तो दूंगा, और स्वयं भी जितने साल तक इच्छा हो, वर द्वारा मांगले। २३। यदि तू इसके समान समझे तो धन मांगले और चिरकाल तक जीवन मांगले। बड़ी भारी भूमि पर शासन करता हुआ हे नचिकेतः! बढ़ता जा। मैं तुझे सब भोगों के यथेच्छ भोग करने की शक्ति देता हूं। २४। मनुष्य लोक में जो २ भोग्य पदार्थ हैं, उन सब को इच्छानुसार मांगता जा। रथों और बाजों के साथ ये स्त्रियां तेरे लिए उपस्थित हैं—इस प्रकार की स्त्रियां मनुष्यों को प्राप्त नहीं हो सकतीं। मेरी दी हुई इन दासियों से तू अपनी सेवा करा, किन्तु हे नचिकेतः! मौत की बातें मत पूछ। २५।

नचिकेता—हे मृत्यो! ये सब पदार्थ अनित्य हैं, आज हैं, कल न जाने होंगे या न होंगे। ये सब इन्द्रियों के तेज को शिथिल कर देते हैं। सारा जीवन छोटा ही है, इस लिये ये रथें, और नृत्यगीत अपने पास ही रख। २६। धन से मनुष्य कभी तृप्त नहीं होता। तुझे देख कर सभी धन पालेंगे। जितना तेरी शक्तियें हैं, उतना हम जी भी लेंगे, मैं तो वही वर मांगूंगा, जो पहले कह चुका हूं। २७। नित्य प्रति जीवन क्षीण करता हुआ, पृथिवी पर स्थित जीव जब अपनी दशा जान लेता है और नित्य आनन्दों के समीप पहुंच जाता है, तब फिर भला यह रूप और प्रेम सुखों को लेकर लम्बे जीवन में सुख कहां अनुभव कर सकता है। २८। जिस विषय में इतना मतभेद है, जो महान् परलोक सम्बन्धी गूढ़ प्रश्न है, हे मृत्यु! उसका उत्तर अवश्य दे।

नचिकेता और वर नहीं मांगता। २९।

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा
सम्यग्ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हिशुद्धो
यंपश्यन्ति यतयः क्षीणदोषाः।

यह आत्मा सत्य, तप, सम्यग्ज्ञान और ब्रह्मचर्य से सदा प्राप्त होता है। यह शुद्ध ज्योतिर्मय आत्मा शरीर के अन्दर विद्यमान है। निर्दोष यति लोग ही जिसे देख सकते हैं। मुण्डकोपनिषद्

शङ्का समाधान

(पहले प्राप्त शंकाओं का समाधान करना प्रचारक का एक अंग समझा जाता था। वह क्रम चिरकाल से छूट गया था। उसे आवश्यक और लाभदायक समझ कर फिर से जारी किया जाता है। यह कालम शंकासमाधान के ही अर्पण हुआ करेगा—सम्पादक)

शंका—शूद्र गुण कर्म से जब ब्राह्मण हो, तब वह ब्राह्मणों के किस गोत्र में गिना जावेगा। जो मुसल्मान अथवा ईसाई शुद्ध किया जायगा, वह किस गोत्र में गिना जायगा। विवाह संस्कार के समय जो गोत्र बताये जाते हैं वे कैसे होंगे। प्रश्न कर्त्ता—कबूलचन्द्र।

उत्तर—वस्तुतः गोत्रों का वर्ण से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। किसी कुल में जो बड़ा हो चुका है, किन्हीं लोगों का जो आचार्य है, उसी के नाम से गोत्र चला करते हैं। प्रसिद्ध पुरुषाओं की यादगार स्थिर रखने के लिये और इन के गौरव के कारण अपना महत्व स्थायी रखने के लिये यह रीति प्रचलित की गई थी। कोई शूद्र यदि गुण कर्म से ब्राह्मण बन जाय, और उसी महा पुरुष के नाम को स्थिर रखना चाहे, जिसको वह पहले अपना पूज्य पूर्वपुरुष मानता था तो वह चाहे, पुराना ही गोत्र रखे, किन्तु यदि उसकी ऐसी इच्छा हो तो हमारी सम्मति में उसे अपने नये आचार्य का गोत्र धारण कर लेना चाहिये। इस में कोई हानि नहीं। यदि भारद्वाज गोत्र सम्भव है तो हमारी राय में दयानन्द गोत्र मानलेने में कोई हानि नहीं। जिसके हम अनुयायी हैं, उसका गोत्र अपने साथ लगा लेने में क्या हर्ज है। ईसाई मुसल्मान भी आर्य बना कर ऐसा ही कर सकते हैं।

हमारी सम्मति में यदि पुराने पक्षपात को छोड़ कर विचारा जाय, तो कहीं समस्या का यह हल असंगत नहीं।

सम्पादक

—०—

सद्धर्म-प्रचारक।

धर्मयुद्ध का एक हथियार

जब ऋषि दयानन्द ने धर्मयुद्ध की भेरी बजाई थी, और जहां कई अन्य मतावलम्बी अपनी २ शक्यतानुसार धनसम्पत्ति ले रहे थे, वहां आर्यवीरों की सेना को खड़ा किया, तब जो विरोधी सेना सब से अधिक घबराई वह ईसाई पादरियों की सेना थी। इस समय तक इन पुरुषार्थी फौजियों के धावों के सामने कोई ताब न ला सकता था। राजशक्ति इन की पीठ पर थी। वारन हेस्टिंग्ज़ की यह सम्मति कि भारत वर्ष में ईसाई धर्म के प्रचार में सहायता देने की सरकार को आवश्यकता नहीं, पुरानी और रद्दी समझी जा कर फेंक दी गई थी, और ईसाई मिशनरी सरकार से खूब सहायता पा रहे थे। इधर राजसाहाय्य—उधर आर्य्य जाति की शिथिलता। अपने आप को हिन्दू कहने वाला समाज सोया पड़ा था। पुरुषार्थी और साहसी ईसाई पादरी मैदान पर मैदान मार रहे थे। उस समय दूर देश से उन्हें एक बांके योद्धा का सिंहनाद सुनाई दिया—जिस के पास यद्यपि राजशक्ति की सहायता न थी तो भी सत्य का पूरा बल उसके तेज को अमोघ बना रहा था।

उस समय ईसाई पादरी घबराये, और अपने जीवन के साधन सोचने लगे। 'आर्यसमाज और ईसाई पक्षपात' शीर्षक वाली लेखमाला में श्रीमहात्मा जी ने भली प्रकार दिखाया था कि इस जीवन-रक्षा के निमित्त ईसाई पादरियों ने कैसे २ ओछे हथियार वर्ते और किन २ शक्तियों को अपने पक्ष में जगाना चाहा। किन्तु सत्य की बेला बढ़ती ही गई और यह कहना असम्भव न होगा, कि उत्तरीय भारत को ऊंचे दर्जे की हिन्दू—सृष्टि में से ईसाइयों के पैर बिल्कुल उखड़ गये।

ऊपर के हिस्से में से बेदखल होकर ईसाई पादरियों ने आर्यजाति के देह के निचले हिस्से में प्रहार प्रारम्भ किये। जिन्हें हम लोगों ने अछूत या अन्त्यज समझ कर छोड़ कर रखा था—उन पर वे अपना लोहा आज़माने लगे। इस में सन्देह नहीं कि वहां पादरियों को बहुतसी कृतकार्यता हुई और असहाय होने के कारण अछूत लोग उत्तम छूत बनने का एक मात्र उपाय देखकर ईसाई मत के दायरे में घुसने लगे।

इस क्षेत्र में भी आर्यसमाज ने पादरियों का पीछा किया। अनेक स्थानों पर ईसाइयों को नीचा दिखलाया—किन्तु यह क्षेत्र बहुत विस्तृत है। इतना विस्तृत और फैला हुआ है कि एक ओर से दूसरे ओर तक एक दृष्टि डालना कठिन है। यह ज्ञात नहीं होता कि ईसाई पादरी किस स्थान पर अन्त्यजों में क्राइस्ट के मिशन के बीज बो रहा है। समूह रूपेण आर्यसमाज इस ओर से सर्वथा उदासीन तो नहीं हां कुछ शिथिल अवश्य है। अभी तक आर्यजाति के निचले हिस्से में जो प्रहार हो रहे हैं, उनके पूरी तरह रोकने में समाज कृतकार्य नहीं हुआ। समाचारपत्रों की जहां गति नहीं, समाजों के वार्षिकोत्सवों का धर्मनाद जहां तक पहुंचने से पूर्व ही रुक जाता है, उन घरों में आर्यत्व को स्थापित करने का कार्य बड़े महत्व का और बड़ा आवश्यक है।

इस समस्या पर विचार करते हुए एक प्रश्न उपस्थित हो जाता है-और वह धर्म युद्ध के नये हथियार का प्रश्न है। ईसाई पादरी बड़ी चतुराई से काम करते हैं। उन्होंने पहिचान लिया है, कि ग्रामवासियों के कौन से अंग में शिथिलता है। उन्हें आर्यजाति के निचले भाग का निर्बल अंग 'पेट' प्रतीत हुआ है। निर्धन भारतवर्ष में पेट से बढ़कर कमज़ोर अंग कौन सा हो सकता है? पादरियों ने वहीं पहुंचने का यत्न किया है। वे लोग ग्रामों के निर्धन लोगों को कई प्रकार से काबू करते हैं—किसी गांव में कर्ज़ा लाकर बुनने की एक बड़ी दूकान खोल दी, जो लोग वहां काम करके पेट भरने लगे वे ईसाई होने लगे। कहीं बड़े २ बाग़ बना दिये—उनकी आमदनी से नये ईसाई पलने लगे। इस प्रकार कहीं किसी ढंग से और कहीं किसी ढंग से निर्धनों को रोटी देकर ईसाई पादरी उन्हें ईसा के अनुगामी बनाने लगे। यह क्रम अबतक जारी है और प्रति दिन बढ़ रहा है। विशेषतया मुक्ति फ़ौज बड़े ढंग से काम कर रही है। यह बड़ा अनिवार्य साधन है। भूखे को रोटी देकर आप कुछ पढ़ा-लीजिए। यह मनुष्य का सब से सहल मनोविज्ञान है। इस मनोविज्ञान को ईसाई पादरियों ने खूब समझ लिया है। किन्तु शोक है कि अभी आर्यसमाज ने समूह रूप से इस मनोविज्ञान को नहीं पढ़ा और यदि पढ़ भी लिया है तो इससे उपयोग नहीं लिया। केवल शब्दों से कोई काम नहीं चल सकता। एक कवि ने ठीक कहा है कि—

'बुभुक्षितैर्व्याकरणन्न भुज्यते
पिपासितैः काव्यरसो न पीयते'

व्याकरण को खाकर भूख नहीं मिट जाती और काव्य का रस पीकर प्यास नहीं बुझ जाती। इसी प्रकार जो भूखा है, उस पर धर्म का उपदेश असर नहीं करता। पेट भरके धर्मोपदेश करना बुरा नहीं। भूखे का पेट भरना भी उपकार है और उसे धर्म का उपदेश देना भी उपकार है। एक उपकार से दूसरा उपकार हो तो हर्ज क्या है? इसमें कोई निन्दा-योग्य या लज्जा-योग्य बात नहीं। कई लोग समझते हैं कि किसी का पेट भर कर फिर धर्मोपदेश करने में कोई नीचता है। यह समझ भूल पर अवलम्बित है। लोभ से बुरा काम कराना पाप है, परन्तु भूखे को रोटी देकर सत्य का उपदेश करदेने में कोई बुराई नहीं। रोटी पाकर भूखा आपको अच्छा समझेगा, आप से प्रेम करेगा, आप के दिये धर्मोपदेश को भी अधिक ध्यान से सुनेगा।

यह एक मनोवैज्ञानिक सत्य है और आंखें बन्द करलेने से अशुद्ध सिद्ध नहीं हो सकता। इसी सच को कार्य परिणत करके ईसाई पादरी प्रचार के कार्य में इतनी कृतकार्यता पारहे हैं। समय है कि आर्यसमाज समूह रूप से इस सत्य को समझे। केवल उपदेश ही पर्याप्त नहीं है। जो भूखा है वह उपदेश को ध्यान से नहीं सुनसकता। हमारे मिशन ग्रामों और वि-

जेयतया उन ग्रामों में जहां अत्यन्त निर्धन लोगों का निवास है, कृतकार्य नहीं हो सकते—जब तक हम साथ ही साथ ग्रामीण लोगों के पेट की समस्या हल करने के साधन नहीं करते तब तक हम उनके अन्तर्हृदय को काबू नहीं कर सकते। इस सम्बन्ध में ईसाई पादरियों से हमें अवश्य शिक्षा लेनी चाहिये और आर्य प्रतिनिधि सभाओं को विशेष कमीशनों द्वारा पता लगाना चाहिये कि आर्य प्रचारक किन साधनों से निर्धन ग्रामीणों की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ २ उनकी धार्मिक समस्याओं को हल कर सकते हैं। यह प्रश्न हरेक उपदेशक या हरेक समाज के सोचने का नहीं है। यह प्रश्न आर्यसमाज को समूह रूप से सोचना चाहिये। प्रतिनिधिसभाओं को विद्वानों की सम्मति लेकर तथा ईसाई मिशनरियों के कार्य पर दृष्टि डाल कर यह पता लगाना चाहिये कि कौनसे सुलभ उपाय हैं—जो इस समस्या को हल कर सकते हैं।

इस प्रश्न का उत्तर किन २ रीतियों से सोचा जासकता है—इस पर हम किसी दूसरे लेख में विचार करेंगे।

प्रचारक का गुरुकुलांक

अभी गुरुकुल के महोत्सव में चार मास हैं—किन्तु हम अपना निश्चय पाठकों को अभी से बतादेते हैं। इस साल से फिर प्रचारक का गुरुकुलांक निकला करेगा। हमने अभी से उस के लिए तय्यारियां प्रारम्भ करदी हैं। उस में कुछ ऐसी विलक्षणता रखी जायगी, जो अभी तक आर्यसमाजिक पत्रों के विशेषकों में नहीं पाई गई। अगले सप्ताह विशेषांकसम्बन्धी बहुत सी बातें हम पाठकों को सुनायंगे। हमारा निवेदन जानकर फिर हमारे पाठक भी अपनी सम्मतियां देंगे और गुरुकुलांक को अधिक उपयोगी और मनोरंजक बनाने के साधन बतायंगे—ऐसी हमें आशा है।

सम्पादक

—०—

संसार समाचार पर टिप्पणियां

धार्मिक

आर्यो ! सावधान।

हरेक मनुष्य को अधिकार है कि वह किसी भी विषय में कोई विचार रखे, किन्तु उसे दूसरे के माथे थोपने या दूसरे के नाम से अपनी बात कहने का किसी को भी अधिकार नहीं हो सकता। इसी प्रकार किसी ग्रन्थ में काट छांट कर देना और फिर अधूरी पुस्तक को ग्रंथ कर्त्ता की बतलाना मिथ्या है। इस समय एक इसी प्रकार का उदाहरण हमारे सामने आया है। स्वामी हरिप्रसाद—जिन्होंने आज कल अपना नाम वैदिक मुनि रख लिया है—एक विचित्र यत्न में लगे हुए हैं। जब तक वे दार्शनिक क्षेत्र में रहते थे—ठीक था, क्योंकि उन्हें दर्शनों का अच्छा परिज्ञान है, किंतु वेदों के विषय में उनका परिचय बहुत कम है। वेदों पर भी बुद्धिपरीक्षा करने का यत्न करना उनके लिये अनुचित है। आपने अपने नाम से एक "सामवेद" छपाया है। इस सामवेद (?) में सामवेद के केवल ७५ मन्त्र दे कर उनके अर्थ दिये गये हैं। इस प्रकार के सामवेद छपाने के विषय में हमारी अनेक आशंकायें हैं। हम इस यत्न को बड़ा भयानक समझते हैं। सामवेद जिस रूप में परम्परा से प्राप्त है, किसी मनुष्य को अधिकार नहीं कि उस की काट छाँट करे। यदि सामवेद के मन्त्र अन्य वेदों में भी मिलते हैं तो इससे क्या वे मन्त्र सामवेद में नहीं रहते। यदि एक पुरुष के भी हाथ पैर आंख नाक हैं, और दूसरों के भी हैं, तो क्या इस का यह तात्पर्य है कि उस के शरीरांग अन्यथा सिद्ध है। उन्हें छांट देना चाहिये। यह उपहास्य बात है। वे मन्त्र अन्य वेदों के भी हैं, और सामवेद के भी हैं। यदि स्वामी हरिप्रसाद इस से वेद में पुनरुक्ति मानते हैं, तो उन्हें अपनी सम्मति रखने का अधिकार है, किन्तु यह कह देना कि अन्य मन्त्रों को निकाल कर केवल ७० या ७५ मन्त्र ही सामवेद के हैं, सर्वथा अनुचित और भारी अपराध है। अपराध इस लिये है, कि यदि यह रीति चल पड़े तो किसी भी ग्रन्थकर्त्ता का ग्रन्थ सुरक्षित नहीं रह सकता। किसी की सम्मति हो सकती है कि स्वामी हरिप्रसाद ने जो वेदान्तभाष्य लिखा है उस में आधे से अधिक भाग अन्य वेदान्तभाष्यों का ही उठा कर रख दिया है, क्या इससे कोई दूसरा 'वैदिक मुनि' काट छांट कर अधूरा वेदान्तभाष्य स्वामी हरिप्रसाद के नाम से छापे तो वह उचित कार्य करेगा? फिर वेद में तो पुनरुक्ति भी नहीं मानी जाती और शास्त्रकारों ने उसके समाधान दिये है। ऐसी दशा में वेद को काट छांट कर अपने नाम से छपाना न केवल अनुचित है अपितु अपराध है। आर्य्यसमाज तो इसका सहन कर ही नहीं सकता—वे लोग भी इसको सहन नहीं करेंगे जो साहित्य से कुछ प्रेम रखते हैं। हमारी सम्मति में इस कुप्रवृत्ति को बीजमात्र में ही दबा देना चाहिये। आर्य्य समाजों को एक स्वर हो कर इस के विरुद्ध शब्द उठाना चाहिये और किसी भी आर्य्यपुरुष को इस नये मनघड़न्त 'सामवेद' का आदर न करना चाहिये।

—:०:—

ज्योतिष् का चमत्कार देखने के लिये ज्योतिषी के पास नहीं जाना पड़ेगा—क्योंकि पत्रिकाओं में अब हरसाल भविष्यद्वाणियां निकल जाती हैं। उन्हीं भविष्यद्वाणियों से लोग ज्योतिष् की परीक्षा कर सकते हैं। मार्गशीर्ष के विषय में भविष्यद्वाणी यों है—'लोगों का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा—परन्तु कम प्रसन्न रहेंगे। यात्री लोगों को कष्ट होगा। किसी बड़े राजवंशज पर आपत्ति आयगी। नाटक कम्पनियों को हानि उठानी पड़ेगी' इस के साथ कुछ हमारी भविष्यद्वाणियां भी सुन लिजिये। 'लोग भोजन किया करेंगे—कोई २ बीमार भी हो जाया करेंगे। किसी २ के कपड़े मैले हो जाया करेंगे और रात को सर्दी भी हुआ करेगी। तोप के गोलों से कई लोग मरेंगे और योरप में राजा लोग चिन्तित रहेंगे।' ऐसी भविष्यद्वाणियां हैं, जिन के आधार पर लोग ज्योतिषी कहाते हैं। इन साधारण गप्पों के लिये इतने लम्बे चौड़े फलित ज्योतिष की क्या आवश्यकता है?

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का आश्विन मास का सरक्यूलर हमें प्राप्त हुआ है। उससे ज्ञात होता है कि इस मास में वेद प्रचार के लिए १५२५) प्राप्त हुए। इसी मास में गुरुकुल के लिए ३०९६) आये। सभा के उपदेशकों तथा भजनीकों ने लगभग पौने दो सौ स्थानों में प्रचार किया। हम पूरा २ हिसाब नहीं लगा सके क्योंकि सरक्यूलर के आवरणपृष्ठ पर पते का चिट चिपक गया है—और कई पंक्तियां लुप्त गई हैं। मास भर में जितने नई समाज प्रान्त में स्थापित होते हैं, उनकी सूचना भी सरक्यूलर में अवश्य होनी चाहिये।

—:o:—

अन्य स्थान पर 'आस्तिक दयानन्द' शीर्षक लेख प्रकाशित किया गया है, पाठक उसे अवश्य पढ़ें।

—:o:—

हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अधिवेशन ५, ६ नवम्बर को जबलपुर में हो गया। आज के पत्र में उस का थोड़ासा वृत्तान्त दिया जाता है। स्थानाभाव से अधिक नहीं दिया जा सका। जो समाचार अभी तक मिले हैं, वे सम्मेलन को भिन्न २ रूप में दिखाते हैं। अभ्युदय का संवाददाता सम्मेलन की कृतकार्यता पर उतना मोहित नहीं, जितना पाटलिपुत्र का संवाददाता है। अभ्युदय के संवाददाता को सभापति के भाषण और प्रबन्ध से वह प्रसन्नता नहीं जो पाटलिपुत्र के संवाददाता को हुई है। तो भी दो बातों में दोनों संवाददाता सहमत हैं। प्रतिनिधियों की संख्या ५०० के लगभग थी। यह संख्या सन्तोषजनक है। स्वागतकारिणी सभा का प्रबन्ध बड़ा उत्तम था। सब कुछ पढ़ कर यही सारांश निकलता है कि सम्मेलन को उत्तम सफलता प्राप्त हुई है। हिन्दू यूनिवर्सिटी में हिन्दी को माध्यम बनाने पर बड़े मनोरंजक भाषण हुए, वे प्रचारक के आगामी अंक में दिए जायंगे।

—o—

दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह को उत्सवों का सप्ताह कहा जाता है। गुरुकुल वृन्दावन का उत्सव भी २४ दिसम्बर से प्रारम्भ होगा। पूर्ण आशा है कि संयुक्त प्रान्त के गुरुकुल प्रेमी इस अवसर पर अवश्य एकत्र होंगे।

बरेली आर्यसमाज के उत्सव का वृत्तान्त दिया जा चुका है। यह लिखना हम भूल गये थे, कि उत्सव में दो दिन थोड़े २ समय के लिए वहां के कलैक्टर साहिब और कमिश्नर साहिब आये थे। कन्याओं के भजन खेल और व्यायामादि देख कर कमिश्नर साहिब ने निम्नलिखित राय दी—

"जब कभी मैंने आपका स्कूल देखा है तो उस में शुद्धता नियम और प्रसन्नता देखकर मैं आकर्षित हुआ हूं? वैसी शुद्धता गवर्नमेन्ट स्कूलों में नहीं पाई जाती। इससे प्रतीत होता है कि आपकी पाठविधि और पाठ रीति में ही कोई विशेषता है, जिसका अनुकरण सरकारी स्कूलों में भी होना चाहिए।" कमिश्नर साहिब ने भी निम्नलिखित कथन किया था—

"जो काम बरेली में होरहा है, मैंने वह अन्य स्थानों में नहीं देखा। आर्यसमाज के प्रति मेरे जो विचार हैं वे आप को विदित ही हैं, और जो काम आप कर रहे हैं मैं गवर्मेन्ट की ओर से आपका शुकरिया अदा करता हूं।"

सैकड़ों समाचार
राजनीतिक

लोकमान्य पं० बालगंगाधर तिलक से पूने के मजिस्ट्रेट ने कई हज़ार की ज़मानत मांगी थी। आपने हाईकोर्ट में अपील की। हाईकोर्ट ने मजिस्ट्रेट की आज्ञा को बदल दिया, और यह बता दिया कि भारत में एक ऐसा भी स्थान है, जहां नैतिक पक्ष की पर्वा न करके अलूता न्याय किया जासकता है। यदि देशों में ऐसे न्यायस्थान न हुआ करें तो अराजकतावादियों की संख्या न जाने कितनी बढ़ जाया करे। देखें अब बम्बई सरकार क्या करती है?

—o—

अमरीका के प्रेसीडेन्ट का चुनाव हो गया। बहुत सम्भव है कि डा० विलसन गये हों फिर भी प्रेसीडेन्ट चुने गये। दूसरे म० ह्यूगस का अमरीका वासी जर्मनों ने बड़ा पक्ष किया था—शायद इसी लिये बेचारे को अमरीका की जलवायु में कृतकार्यता नसीब न हुई।

—:o:—

गुरुकुल समाचार।

वार्षिक बजट की कमी पूरी करने के लिये बहुत कुछ बाकी है। मेरे विशेष पत्रों पर कुछ महानुभावों ने ध्यान दिया, परन्तु शेष सब चुप हैं। यदि एक बार फिर ब्रह्मचारियों के सब संरक्षक (जिन्होंने अब तक कुछ नहीं दिया) ध्यान दें और उदारता दिखाएं तो बजट की कमी पूरी हो सकी है। २५ भाद्रपद तक प्रचारक में २८४५) की रकम प्रकाशित हो चुकी है। उस के पश्चात् निम्नलिखित रकमें आई हैं:—१००) श्री बाबू जगन्नाथ जी डिपुटी कलेक्टर, सन्टगुमरी, १००) श्री म० ज्योतिप्रसाद जी ओवरसियर, ललितपुर (झांसी); १००) श्री म० रामकृष्ण जी कृष्णगढ़, रियासत, १००) श्री ठाकुर गोविन्दसिंह जी, पातूर (बरार) ५०) श्री म० मुरारीलाल जी, बरेली २५) श्री वामन महादेव पाठक—तीसरी क़िस्त, २००) श्री रायसाहेब ला० सन्त राम जी, सबडिवीज़नल आफ़िसर, ५० श्री म० दौलत राम जी, बैदूर, अमृतसर २०) श्री डाक्टर रामलाल जी बुताला, २५ श्री भोजराज जी, १०) श्री रामचन्द जी रंगून, १००) श्री म० रौनकीराम जी सब डिविज़नल आफ़िसर, ६६) श्री म० मुकुन्दलाल जी चुहड़पुर, २५ श्री वामन महादेव पाठक— चौथी क़िस्त। कुछ तो ऐसे महानुभाव हैं जिन्होंने यह प्रतिज्ञा करली है कि अच्छी रकमें भेजेंगे उन से तो यह प्रार्थना है कि अब देर न लगावें। परन्तु जिन्होंने अब तक हिलने का नाम नहीं लिया वे अब हिलें।

ब्रह्मचारियों के संरक्षकों के अतिरिक्त अन्य महाशयों का भी कर्तव्य है कि यथाशक्ति आर्थिक सहायता इस समय भेजें।

नए ब्रह्मचारियों के प्रवेश के लिये प्रार्थना-पत्र ८ दिसम्बर तक जो आयंगे उन पर विचार होगा। प्रार्थना पत्र बराबर आ रहे हैं। चुनाव की तिथियां नियत हो चुकी हैं। प्रविष्ट होने वाले बालकों के संरक्षकों के नाम पत्र भेजे जा रहे हैं। चुनाव

CCO, Gurukul Kangri Collection

वर्ष भी काङ्गड़ी में ही होगा। प्रार्थियों को अपने २ बालक ले कर २१ से २३ दिसेम्बर अर्थात् ७ से ९ पौष, १९७३ तक गुरुकुल भूमि में पहुंच जाना चाहिये। १० और ११ पौष [२४,२५ दिसेम्बर [को चुनाव होगा। गुरुकुल से जो सूचना पत्र जायगे उनमें लिखी सब वस्तुएं लेकर प्रार्थियों को आना चाहिये।

भावी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की आवश्यक इमारतें बन गईं। सड़कें दुरुस्त हो रही हैं तथा अन्य सफ़ाई का काम जारी है। आ० प्र० सभा पंजाब ने आज्ञा दे दी है कि इस समय पुरानी पहली चार श्रेणियां वहां भेजी जायं और नए प्रविष्ट ब्रह्मचारी भी वहीं भेजे जायं। गङ्गा का पुल बन रहा है। पुल तय्यार होने पर इन सब श्रेणियों का समान इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल (दिल्ली के पास) भेज दिया जायगा और ब्रह्मचारी उस के पश्चात् शीघ्र ही प्रस्थान करेंगे। दिल्ली निवासी भाईयों को उनके स्वागत के लिए अभी से तय्यार हो जाना चाहिए। दिल्ली शहर आर्यसमाज ने जो सहायता के लिए सब कमेटी बनाई है, उसे अभी से उत्सव की तय्यारियों में लग जाना चाहिए।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रतिष्ठा तथा नए ब्रह्मचारियों का वेदारम्भसंस्कार १२, १३, ४ जनवरी, १९१७ को होगा। विचार था उत्सव दिसेम्बर के अन्तिम सप्ताह में करने का था, परन्तु श्री मुख्याधिष्ठाता श्री गुरुकुल वृन्दावन की आज्ञा शिरोधार्य समझ कर उत्सव की तिथियां आगे बढ़ादी गई हैं। प्रतिष्ठा के समय आशा की जाती है कि श्री सेठ रघूमल जी उक्त गुरुकुल के स्थिर कोष के लिए ५०,०००) रुपया देंगे। दिल्ली में उस समय के लिए भी तय्यारी होनी चाहिए।

गुरुकुल विश्वविद्यालय में पढ़ाई का काम भली प्रकार आरम्भ हो गया है। उपाध्यक्ष श्री हरदेव जी, उपाध्याय विश्वनाथ सहित, प्रधान गुरुकुल का निरीक्षण करने गए थे। श्री उपाध्याय म०च०सिंह जी को कृषिविभाग के विद्यार्थियों सहित कानपुर का सरकारी कृषि महाविद्यालय देख कर उस से शिक्षा लाभ करने के लिए भेजा गया है। इसी प्रकार अन्य विभागों के ब्रह्मचारियों को भी अपना विशेष विषय दृढ़ करने के लिए उचित स्थानों में, सरस्वती यात्रा के लिए, समय पर भेजा जायगा।

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। ऋतुज्वर भी नाम मात्र ही है। चिकित्सालय में कभी कभी दो तीन मूर्तियां दिखाई देती हैं। विद्यालय विभाग के बड़े ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य में बहुत उन्नति हुई है। तौल में, बहुत से, सेरों बढ़े हैं।

गुरुकुल की आवश्यकताएं उतनी ही बढ़ रही हैं, जितना यह लोक-प्रिय हो रहा है। श्रीमान् वाइसराय तथा उन की धर्म पत्नी ने जो प्रसन्नता, गुरुकुल देख कर, निजूतौर पर उच्च पदाधिकारियों के सामने प्रकट की उस से प्रेरे जाकर अंग्रेज़ और हिन्दोस्तानी-सभी शिक्षाप्रेमी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का अवलोकन करने आरहे हैं। इन सब को संस्था अवलोकन कराने के लिये ही दो योग्य ग्रेजूएट चाहिएं। अन्य बहुत से काम भी बिना योग्य मनुष्यों के अधूरे पड़े हैं। परन्तु आज कल योग्य मनुष्यों की प्राप्ति बिनाधन के कठिन है और गुरुकुल कोष में धन बहुत कम है। गुरुकुल के काम की सब प्रशंसा करते हैं, इसे कहते भी हैं" The only national educational institution (एक मात्र जातीय शिक्षणालय) परन्तु यह किसी को नहीं सूझती कि इस को पर्याप्त धन देकर कार्य कर्त्ताओं को अधिक चिन्ता से मुक्त करदें। युरप अमेरिका वाला मामला तो यहां है नहीं कि कोई करोड़पती घर बैठे २५ लाख भेजकर सारी आवश्यकताएं पूरी करदे, और न हीं हज़ारों दान देने वाले कभी स्वयम् हिलते हैं। निष्कामभाव से, बिना प्रसिद्धी चाहे, दान देने वाले सज्जनों को शिक्षा का गौरव मालूम नहीं। जो मारवाड़ी सेठ वा विधवा सेठानी श्री रामनाथ जी कमलीवाले के हाथ में दस हज़ार से लेकर लाखलाख तक की रक़म बिना रसीद सड़कों, पुलों, मकानों के बनवाने और लोगों को खिलाने के लिए श्रद्धापूर्वक दे आते हैं, उन से गुरुकुल जैसी आत्म-संशोधक संस्था के लिए एक कौड़ी भी प्राप्त करना कठिन है। और जो गुरुकुल के गौरव का सिक्का मानते हैं वे दस लाख की सम्पत्ति में से दसवां भाग भी गुरुकुल के लिए निकालने को तय्यार नहीं। हां यदि पांच छ सुयोग्य महाशयों का डेपुटेशन सारे भारत वर्ष में घूमे तो पर्याप्त धन एकत्र होने की आशा है परन्तु हमारी स्वामिनी सभा के सभासदों के पास न इस काम के लिये समय है और नहीं इस में पूरी श्रद्धा।

गुरुकुल के स्थिरता से चलने का एक ही साधन मैंने सोचा है। यदि ब्रह्मचारियों को रुचि प्रेरणा की जाय तो कृषि और कारख़ाने (workshop) द्वारा वे संस्था को स्वात्मावलम्बी (Self Supporting) बनासक्ते हैं, परन्तु इस के लिए भी (पचीस लाख न सही) पांचलाख रुपयों की आवश्यकता तो फिर भी बनी ही रहती है। अभी एक ग्राम बिक रहा है जिसे ५० सहस्र मुद्रा तक भी ख़रीद कर बड़े काम निकल सक्ते हैं। परन्तु गुरुकुल के प्रेमियों में क्या एक भी ऐसा निकल सक्ता है जो मेरे पास पचास सहस्र का 'चेक' भेज दे जिस से मैं गुरुकुल के लिए वह ग्राम ख़रीद कर गुरुकुल की कुल आवश्यकताओं को पूरा कर सकूं? आर्य जाति से इस समय ऐसी आशायें रखना शेख़चिल्लीपन से कम नहीं और इस लिए इस आशा पर ही जीना है कि शायद अगले चुनाव में हमारी सभा ऐसे सभासदों से युक्त होगी जो अपना अधिक धन और अधिक समय गुरुकुल का कोष पूरा करने के लिए लगा सकेंगे।

(मुंशीराम, मुख्याधिष्ठाता)

—०—

प्रतिष्ठित दर्शक

पिछले दिनों गुरुकुल में कई योग्य दर्शक पधारे। उनमें से कच्छ रयासत के शिक्षा विभाग के निरीक्षक म० विट्ठल गुरुकुलि के कार्य में विशेष अभिरुचि रखते थे। आपने कई दिन ठहर कर गुरुकुल के सारे कार्य को देखा। आपने जो सम्मति दी है, वह अगली वार प्रकाशित की जायगी। आप ऋषि के परम भक्त हैं और दृढ़ आर्य्यसामाजिक हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक पुस्तक भण्डार
की नई पुस्तकें
आर्यधर्म ग्रन्थमाला

श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा लिखित आर्यों की नित्य कर्मपद्धति—मूल्य ⁻)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्य मात्र के पढ़ने योग्य है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आचाराचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है।

मातृ भाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य है?

वैदिक-धर्म और पारसीमत मूल्य =) इस निबन्ध में महात्मा जी ने पारसीमत के सिद्धान्तों की वैदिक-धर्म के सिद्धान्तों से तुलना करके बताया है कि इस मत का उत्पत्तिस्थान वैदिकधर्म ही है। निबन्ध बड़ी खोज से लिखा गया है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति
का
संस्कृतसाहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन

कलकत्ते का प्रसिद्ध मार्डर्न रिव्यू पत्र इस पुस्तक के बारे में लिखता है—इस पुस्तक में संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक वृत्तिवृत्त दिया गया है और भारत वर्ष के इतिहास के भिन्न २ समयों के प्रभाव से उसमें शाब्दिक तथा अन्य जो भेद आते रहे उसका वर्णन किया गया है। घटनाओं की परीक्षा सामान्यतया निष्पक्षपात है और हम लेखक महाशय के दिये घटनाओं के मुख्य भाग से सहमत हैं। भाषा लेखक के अन्य ग्रन्थों से पाई हुई कीर्ति के अनुकूल है। छपाई और रंग ढंग अच्छे है।

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का अविकल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक।

आस्तिक दयानन्द

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे

सभ्य पुरुषो!

पूर्व समय में यूरोप के इतिहास में रोम नगर के निवासी एक बड़े साम्राज्य के संस्थापक हुए हैं। उनकी उठती हुई उज्वल प्रतापज्वाला के बीच में न जाने कितने ही राज्यों ने पतङ्गों के समान आत्म समर्पण किया और कितने ही उसकी लपेट में आकर भस्मसात् होगये। उसी समय उनके उदार मनस्वी नेताओं को सम्बोधन करके संसार के प्रसिद्ध वक्ता सिसरो ने कुछ वाक्य कहे हैं जो कि बड़े भावपूर्ण हैं। उसने कहा "हे रोम वासियों! हम लोग अपने मुख से अपनी चाहे जितनी प्रशंसा करें हमें कोई रोक नहीं सकता; किन्तु एक बात स्मरण रखने योग्य है। वह यह है कि हम लोगों ने जो स्पेनवालों को परास्त किया वह सैन्यबल से नहीं; जो पोनी लोगों को वश में किया वह युद्ध कौशल से नहीं; जो गोल लोगों को मार भगाया वह बाहुबल से नहीं; जो ग्रीक लोगों को पराजित किया वह युक्ति से नहीं। और जाने दीजिये स्वयं इटैलियन और लैटिन लोगों पर भी जो हमने अपनी सत्ता चलाई वह इस लिये नहीं कि वे और हम एक जातीय हैं। किन्तु इस लिये कि औरों की अपेक्षा हम में ईश्वर भक्ति अधिक है औरों की अपेक्षा हम में धार्मिकता अधिक है और औरों की अपेक्षा हमको इस बात का ज्ञान अधिक है कि यह संसार चक्र केवल ईश्वर ही की आज्ञा से चल रहा है। इन्हीं कारणों से हम लोग औरों के ऊपर आधिपत्य करने में समर्थ हुये हैं।"

ये वाक्य हैं जिन के आशय को समझना गम्भीर तत्व वेत्ताओं का कार्य है। मालूम नहीं कि अधिकार मद से मस्त हुये उस समय के रोमवासी इस के आशय को समझ सकते थे वा नहीं—किन्तु यह सत्य है कि संसार सागर की विशाल तरङ्गों में बहे जाने वाले साधारण मनुष्य इस बात को कभी भी नहीं समझ सकते। उन्हें कभी भी नहीं मालूम हो सकता कि आस्तिकता अथवा ईश्वर विश्वास के कारण मनुष्य में इतना अधिक बल उत्पन्न होता है कि वह अकेला समस्त सांसारिक शक्तियों के सामने खड़ा हो सकता है। उसे धन-मान और सन्तान की लालसा उद्देश्य से नहीं हटा सकती और किसी का अनुराग या विराग उसे पीड़ा नहीं पहुंचा सकता। वह अकेला निर्भीक हो कर सत्य का प्रतिपादन कर सकता है और कहीं भी नहीं हिगमगा सकता; क्योंकि उसके आगे पीछे ऊपर और नीचे इतना विस्तृत और बलवान् सहारा होता है कि उसके विरुद्ध कार्य करना सब शक्तियों के बाहिर है। इस का कारण यह है कि ये सब बातें उनके अपने अनुभव के ही बाहिर हैं। यद्यपि उन में ऐसे बहुत से लोग हैं जो कि अपने आप को आस्तिक बताते हैं और कितने ही ऐसे हैं जो कि परमात्मा के अस्तित्व को बड़ी २ अखण्डनीय युक्तियों से सिद्ध कर सकते हैं और बड़े अभिमान के साथ लोगों के सामने उसके अनन्तता, अपरिमेयता, सर्वज्ञता आदि गुणों का व्याख्यान करते हैं। तो भी शोक से कहना पड़ता है कि वे अपने आप अन्धेरे में हैं। वास्तव में उन्हें परमात्मा की शक्तियों पर विश्वास नहीं है। उन्हें इस बात का भरोसा ही नहीं कि सत्य का प्रतिपादन करते समय उनके नीचे अनन्तशक्तिमय पिता का हाथ रहता है जिस पर से उन्हें कोई भी नहीं गिरा सकता। यही कारण है कि उन्हें राजाओं का राज दण्ड डरादेता है लक्ष्मी पतियों का धन लुभा लेता है और जनता का मान अपने मार्ग से डिगा देता है। वे तिल्ली जलाते हैं कुछ प्रकाश करते हैं किन्तु उनकी आत्मारूपी बत्ती में आस्तिकता का तैल ही नहीं जिस से वे स्वयं प्रकाशित हो सकें और औरों को भी संसार सागर के चक्र से पार उतार सकें। ऐसे ही पुरुषों के लिये आज के दिन जब कि एक सम्वत् का प्रारम्भ होता है महर्षि दयानन्द की आत्मा एक सन्देश दे रही है।

वह कहती है कि "स्वयं प्रकाशित होने अथवा ईश्वर पर पूर्ण विश्वास उत्पन्न करने का मार्ग बड़ा दूरूह है। उस

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

समय, जब कि मनुष्य भक्ति पूर्वक परमात्मा की ओर जाना चाहता है और उस पर पूरी श्रद्धा करता है, तर्क अविश्वास तथा दम्भ और अहंकार की इतने वेग से आंधियां चलती हैं कि उस समय उस मनुष्य का श्रद्धा और भक्ति के सरोवर पर तैरते रहना कठिन हो जाता है। उठती हुई तरङ्गें थपेड़ें मार २ कर उसे किनारे पर फैंकदेती हैं और वह बार बार श्रद्धा और भक्ति से बाहिर जा पड़ता है। ऐसे समय में जो दृढ़ रहता है, परमात्मा पर पूर्ण विश्वास रखता है और एक बार इस सरोवर में गहरा गोता लगा लेता है उस का आत्मा पवित्र हो जाता है। उस को परमात्मा का साक्षात्कार हो जाता है और वह अनुभव करने लगता है कि मेरे अन्दर बाहिर इधर उधर सर्वत्र परमात्मा की अनन्त शक्ति व्यापक हो रही है और हर समय मेरी रक्षा के लिये उद्यत रहती है" तब उसमें बल आता है और वह औरों को प्रकाश देने के योग्य बनता है।

स्वामी जी महाराज की आत्मा में वह अनुपम बल विद्यमान् था। उनकी अत्मा स्वयं प्रकाशित हो चुकी थी। वह एक आदर्श आस्तिक आत्मा थी। उस उच्च आत्मा ने सचमुच ईश्वर का साक्षात्कार कर लिया था और संसार को दिखा दिया था कि आस्तिकता में कितना अधिक बल होता है। उसने अपनी अद्वितीय शक्ति से संसार में उगे हुये बड़े भारी पाप वृक्ष को जड़ से हिला दिया और जङ्गल को साफ़ करके उसमें सुन्दर सुगन्धिमय वेद शिक्षारूपी फुलवारी का बीज बोया। आज उस फुलवारी की सुगन्ध से भारत का सारा कानन प्रमोद भरा हो रहा है।

आज यदि कोई पचास साठ बरस का वृद्ध पुरुष भारत को एक सरसरी नज़र से देखे तो वह आश्चर्य से चकित हो जायगा वह देखेगा कि भारत में अब गन्दकी से भरे हुये कीचड़ के तालाब में शनैः २ सूख रहे हैं और उनके स्थान पर अब साफ़ मैदान निकल रहा है वह देखेगा कि अब प्रत्येक समाज अपने २ सुधार में लगा हुआ है और चारों ओर से सुधार की आवाज आरही है। अब यहां वह दुर्गन्ध युक्त वायु बहुत कम हो रही है जिस की गन्ध से मनुष्यों को ऐसा नशा चढ़ता था कि फिर जाग ही नहीं आती थी। वह देखेगा कि अब भारत में कुछ हल चल मालूम होती है कुछ जीवन दीख पड़ता है ऐसा जान पड़ता है कि प्रत्येक मनुष्य अपनी उन्नति के लिए नींद से उठ खड़ा होना चाहता है। यह सब कुछ देख कर उस का आश्चर्य और भी बढ़ जावेगा क्योंकि उस ने अपनी युवावस्था में इन में से एक भी दृश्य नहीं देखा होगा। आश्चर्य में डूबा हुआ वह सोचेगा यह सुगन्ध किस फूल से उठी जिस से यह सारा बन महक उठा है, यह शीतल मलयानिल किस पर्वत की कन्दरा से बहा जिस ने इस बन को इतना रमणीय बना दिया, यह नदी किस स्रोत से निकली जिस ने इस बन को इतना हरा भरा कर दिया, यहां प्रकाश किस सूर्य से आया जिस ने इस बन का अन्धकार सर्वथा मिटा दिया, वह देखेगा कि वह फूल वह पर्वत वह स्रोत वह सूर्य सब कुछ वही एक दयानन्द है जिस की बदौलत यह रमणीय दृश्य दीख रहा है। हम दयानन्द का महत्व इस से भी अधिक देख सकते हैं हम उसे इस से भी अधिक ऊंचे स्थान पर बैठा सकते हैं क्योंकि उस के अन्दर स्वयं ईश्वर विद्यमान् था। मेरा कहने का अभिप्राय यह नहीं कि वह परमात्मा का अवतार था अथवा किसी अन्य प्रकार से वह परमात्मा का कोई निकटवर्ती सम्बन्धी था किन्तु यह एक वास्तविकता है कि संसार में आस्तिक पुरुष ही ईश्वरीय शक्ति के प्रतिनिधि हुआ करते हैं। वे परमात्मा की ओर से न्याय धर्म और सत्यता के लिए निरन्तर लड़ते हैं और अन्त में अपने आप को एक ऐसे यज्ञकुण्ड में आहुति के रूप में डाल देते हैं जहां से न्याय धर्म और सत्यता का वायु संसार को आनन्दित करता हुआ बहता रहा करता है। ऐसे ही पुरुषों का प्रतिनिधि बन कर भगवान् कृष्ण ने कहा है कि—

"यदा यदा हिधर्मस्य
ग्लानिर्भवतिभारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य
तदात्मानंसृजाम्यहम् ॥ १ ॥
परित्राणाय साधूनां
विनाशाय चदुष्कृताम्
धर्म संस्थापनार्थाय
संभवामि युगे युगे ॥ २८ ॥

दयानन्द की आत्मा भी इन्हीं ऐश्वर्य शालिनी आत्माओं में से एक आत्मा थी। इसी लिए मैं कहता हूं कि उसे हम और भी अधिक ऊंचा देख सकते हैं और इस का कारण एक मात्र उस की आस्तिकता अथवा ईश्वर पर पूर्ण भरोसा है।

शिवरात्री के दिन उस के दिल में एक बात खट की थी उस दिन उसे ईश्वर की सर्वशक्तिमता पर अविश्वास हुआ था उस ने समझा था कि बिचारा भगवान् जो एक चूहे को भी दूर करने में अशक्त है उसे क्या बल दे सकेगा। उस के हृदय में बड़े ज़ोर से इस प्रकार के सन्देह की आंधी चली परन्तु हमें हर्ष मनाना चाहिए कि उस आंधी ने उस के कोमल हृदय को किसी प्रकार की भी हानी नहीं पहुंचाई प्रत्युत उस पर पड़े हुए भ्रम जाल को ही दूर किया। उस ने देखा कि वह वहां रहते हुए ही उस अनन्त शक्ति को प्राप्त नहीं कर सकता था इसी लिए उस ने अपना घर छोड़ा और इष्ट की खोज में असीम प्रयत्न करने लग गया। अन्त में वह अपने प्रयत्न में सफल होगया। उसे परमात्मा का साक्षात्कार हुआ। अपने प्रयत्न में उस ने कैसे और कितने अवर्णनीय कष्ट सहे उन के यहां लिखने की आवश्यता नहीं। वे अब सर्वविदित हो चुके हैं। किन्तु महर्षि के जीवन के इस भाग से एक शिक्षा मिलती है। जिसे कभी न भूलना चाहिए।

प्रायः सभी मनुष्यों के हृदयों में इस प्रकार के निराशा के बादल उठा करते हैं और वे आत्मा पर पड़ते हुए परमात्मा रूपी सूर्य के प्रकाश को रोक लेते हैं। उस समय कोई कोई अभागा मनुष्य मार्ग से भटक कर सन्देह रूपी अथाह समुद्र में गोते लगाने लगता है और शनैः शनैः पूरा नास्तिक बन जाता है। उस समय वह गढ़े में गिर रहा होता है क्षीण हो रहा होता है किन्तु समझता है कि वह बराबर ऊंचा चढ़ा जारहा है और उसकी शक्ति

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यां बराबर बढ रही हैं। उसे मालूम नहीं होता कि कोई भी निराधार चीज ऊपर नहीं उठ सकती। मनुष्य कभी भी ऊपर नहीं चढ़ सकता यदि उस के आधार के लिए कोई सीढ़ी पेड़ या मकान न हो। इस को जाने दीजिए निराधार पोल में तो विमान भी नीचे ही गिरेगा ऊपर नहीं उठ सकता। इसी प्रकार किसी पदार्थ में कोई शक्ति नहीं आसकती जब तक वह किसी शक्तिमान के साथ जुड़ा हुआ न हो। कोई भी पिण्ड गरम नहीं हो सकता, जब तक वह किसी अन्य अपने से अधिक गरम पिण्ड के साथ सम्बद्ध न हो इतना ही क्यों कोई भी मानवी शक्ति उत्पन्न नहीं हो सकती यदि मनुष्यों की भोज्य वनस्पतियों में कोई शक्ति विलीन न हो। ठीक इसी प्रकार आत्मा को ऊपर उठाने के लिए आधार की आवश्यकता है उसे शक्तिशाली बनाने के लिए शक्ति भण्डार की आवश्यकता है। जिस ने उस आधार अथवा शक्ति भण्डार को पहिले ही से तिलाञ्जली देदी उस के लिए ऊपर उठने अथवा शक्तिशाली बनने की आशा व्यर्थ है। वह कभी भी ऊपर नहीं उठेगा उस का आत्मा कभी भी बलवान् नहीं होगा। इस के लिए सहारा ढूंढना चाहिये शक्ति भण्डार के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना चाहिये स्वामी दयानन्द की आत्मा शिक्षा देती है कि ऐ! भटके हुए आत्माओ! लौट कर फिर अपने स्थान पर आओ और उस अनन्त शक्ति पर विश्वास रख कर ही ऊपर उठने का प्रयत्न करो नहीं तो तुम्हारे सारे प्रयत्न पानी पर लकीर की तरह मिट जावेंगे और सम्भव नहीं कि तुम किसी काम के रह जाओ। वह उच्च आत्मा साक्षी देती है कि उस ने प्रयत्न किया उसे सहारा मिला शक्ति भण्डार के साथ उस का सम्बन्ध हो गया और फिर वह इतना ऊपर उठा और इतना बलवान् हुआ कि अन्त में उसने मृत्यु रूपी ऐसे शत्रु पर विजय पाई जिस से संसार के बड़े २ वीर सुभट कण्ठ से हार मान चुके हैं।

सभ्य पुरुषो! मैं लिखता हुआ बहुत कुछ इधर उधर बह गया और अन्त में फिर अपने स्थान पर आगया हूं। इस में मेरे निबन्ध का बहुत सा भाग चला गया किन्तु इस सारे में मैंने बता दिया है कि आस्तिकता में क्या बल है? क्यों बल है? और उस की प्राप्ति में मनुष्य को कितना सावधान रहना चाहिये? अब मैं अपने कथन को फिर प्रारम्भ करता हूं और स्वामी जी के जीवन से यह बताने का प्रयत्न करूंगा कि मनुष्य अपने जीवन को आस्तिकमय जीवन कैसे बना सकता है।

(शेष फिर)

—:o:—

प्राप्त पत्र

ऋषि जीवन से शिक्षा

इस में सन्देह नहीं कि दीपमालिका के दिन लाखों नर नारियों ने अपने घरों को लीप पोत कर सुशोभित किया होगा साथ ही प्रत्येक गृह में अनेक दीपक जला कर भवन रमणीक बनाये गये होंगे। आर्य समाजों में भी सर्वत्र ऋषि उत्सव मनाये गये होंगे, समाजों में व्याख्यान तथा समाचार पत्रों में बड़े २ लेख भी प्रकाशित किये गये होंगे-लाखों मन मिठाई की भी खपत हुई होगी। परन्तु हमारा प्रश्न केवल इतना है कि कितने ऐसे आर्यवीर हैं जिन्होंने ऋषि के वास्तविक उद्देश्य को समझ-उस से शिक्षा ग्रहण की हो, ऋषि का आत्मा बनावटी उत्सवों से संतुष्ट नहीं हो सकता। सज्जनो! उनके उद्देश्य को उसी रूप में देखो जिस में ऋषि चाहते थे। अपने आत्मा के मन्दिर को सुशोभित करो, अन्दर के प्रकाश से प्रकाशित करो, ऋषि एक सुन्दर वृक्ष की भान्ति लोगों को अमूल्य वेद मंत्र रूप रस के दाता थे।

दयानन्दो दिविख्यातो वेद विज्ञान दायकः
सुराणां भूसुराणां च वांछितार्थ प्रदोगुरुः

ऋषि एक सुन्दर वृक्ष थे-

वृक्षो दयानन्द इति प्रसिद्धो
ज्ञानं फलं यस्य षडङ्गमूलः।
सूत्राणि पुष्पाणि च वेदशाखः
पत्राणि शास्त्राणि रसोस्ति मन्त्रः॥

उन्होंने वेद विज्ञान देकर आर्य जाति को पुनर्जीवित किया। वास्तव में वे देवताओं के भी गुरु माने जाने योग्य थे। आओ आज हम इस शुभ रात्रि को शुभ बनावें और प्रतिज्ञा करें कि उनकी आज्ञा का पालन करेंगे। उनका ऋण चुकाना हमारा परम कर्त्तव्य हो।

पूर्णानन्द
उपदेशक सभा पंजाब

—o—

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

स्वास्थ्य

(१) गतमास में ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य साधारण रहा, कुछ ब्रह्मचारियों को ऋतुज्वर होगया था। मास कार्तिक में सब आनन्द प्रसन्न हैं। रोगीयह में एक भी नहीं।

परीक्षा

(२) तिथि १५-६-७३ को षाण्मासिक परीक्षा होगई। परीक्षक गुरुकुल कांगड़ी के अध्यापक पं० कन्हैयालाल जी शास्त्री तथा मा० हरिगोपाल जी थे। परिणाम अत्युत्तम रहा।

दीपमालिकोत्सव

[३] इस वार दीपमालिकोत्सव बड़े समारोह के साथ मनायागया, ब्रह्मचारियों ने यज्ञशाला तथा आश्रमों को अच्छा सजाया था। ब्रह्मचारियों के गीतिगान के पश्चात् ऋषि जीवन परसभा हुई, प्रीति भोजन के बाद यह उत्सव समाप्त हुआ।

प्राप्तदान

[४] स्वर्गवासी ला० बालक रामजी रईस पानीपत का गोशाला के लिये १०००) एक सहस्र द्वारा ला० खेमचन्द्र जी रईस।

विद्यालय के तीन कमरों के लिये म० जगन्नाथ जी अकौन्टैण्ट जैनोटरी डिवीजन सहारनपुर ने अपनी धर्म पत्नी की ओर से १५००)

कंबल ८० के लिये म० नारायणदास जी ठेकेदार देहली से १००) और ला० मोहरसिंह जी दृगमोहनलाल जी देहली से ३००)। कपड़ा सीने की नई मैशीन बाबू बद्रीप्रसाद जी मैनेजर सिंगर सुइंग कंपनी ने भेजदी है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

नई आवश्यकतायें

[५] गोशाला के लिये १०००) सहस्र रुपया यदि और आजाय तो चारों ओर से ठीक २ बन जाय।

ब्रह्मचारियों के लिये ८० कुड़ते कुड़तियों के लिये ऊनी कपड़ा चाहिये।

पुस्तकालय में पुस्तकों की बड़ी अवश्यकता है पुस्तकें वा धन भेज कर सहायता करें।

पंचम वार्षिकोत्सव

[६] शाखा का पंचम वार्षिकोत्सव २६-२७-२८ जनवरी सन् १९१७ को होना निश्चित हुआ है।

विष्णु मित्र

पण्डितों के नाम

खुली चिट्ठी।

मैंने इस नाम की १ चिट्ठी पहिले भी प्रकाशित की थी, जिस में लिखा था कि जो विद्वान अपने ही निबन्ध लिखकर भेजेंगे, उन में सर्वोत्तम जिन २ का ठहरेगा उन २ को ५१) रु० भेंट मिलेगा।" इस पर सैंकड़ों निबन्ध आए और आरहे हैं। किन्तु कई विद्वानों के अनेक संशय उठे जिन के निश्चय करने में उन को बड़ा कष्ट होता है। इस लिए मैं एक बार फिर सूचित करता हूं और उन सब का उत्तर भी लिख देता हूं। इसका समय का० शुक्ल १५ तक ही होगा। अर्थात सब निबन्ध १५ से पहिले २ आने चाहियें। दो विषयों पर दो प्रस्ताव लिखे जाने चाहियें। अन्वेषणपूर्ण सुन्दरभाषवाला एवं शक्ति भर विस्तृत हों। दोनों सर्वोत्तम होने पर ५१) रु० और एक होने पर २५) रुपये मिलेंगे। लेख क्या होना चाहिए तथा लेखक के नाम से आने चाहियें। अनुत्तम होने पर किसी का लेख लौटाया नहीं जायगा। अनुत्तमता की शिकायत करने का अधिकार किसी को न होगा। परिणाम चैत्र के अन्त तक प्रकाशित होगा। सब का निर्धारण एक "विद्वत्परिषद्" करेगी जो मार्गशीर्ष में बैठेगी।

तथा एक "स्वर्ण पदक" (सोने का तमगा) उन को दिया जायगा जो "कलित और गणित ज्योतिष" इस विषय पर प्राचीन और अर्वाचीन एवं पाश्चात्य अन्वेषण पूर्ण और मतमतान्तरों के आक्षेपों का सयुक्तिक खण्डन कर कलित का समर्थन और उपयोगी यन्त्रादि का वर्णन एवं शुद्धि के उपाय आदि २ सर्वांगपूर्ण विस्तृत निबन्ध लिखेगा, संस्कृत में लिखें या शुद्ध हिन्दी में, आने की अवधि चैत्र शुक्ल १५ तक है। निबन्ध के साथ जीवनी भी भेजें जो कि निबन्ध के साथ ही छपेगी।

कुछ पूछना हो तो जवाबी कार्ड से पूछें। पत्रादि सब व्यवहार इस पते से करें।

ज्यो. पं० ताराचन्द्र शास्त्री, अध्यक्ष
बृहज्ज्यौतिष कार्यालय
भिवानी (हिसार) पञ्जाब

चुटकला

आर्य्य कुमार सभा देहरा दून के वार्षिकोत्सव से निवृत्त होकर रात्रि की गाड़ी में प्रस्थान करने के निमित्त तीन उपदेशक महोदय समाज मन्दिर में आ बैठे।

उसी समय एक महाशय जोकि उत्सव में उनका व्याख्यान सुन चुके थे और कुछ दिनों से समाज में ठहरे हुए थे वह बाहिर से आकर साधारण भाव से उन से पूछने लगे कि "आप का किस गाड़ी में कहां जाने का विचार है" इस प्रश्न को सुन ने ही एक उपदेशक जीने दूसरों से एका एकी कह दिया कि—

'गुप्तचरोऽयम्' यह क्षुब्धताजनक वाक्य सुन कर उन्हों ने चित में हंस कर कहा कि "यद्यस्ति तर्हि को दोषः" इस प्रकार का प्रत्युत्तर सुन कर वे अवाक् रह गये और लज्जीन भाव से इधर उधर के परीचय की बातें करने लगे।

जब उनको विदित होगया कि यह पूछने वाले भी एक संस्कृत के विद्यार्थि हैं तो फिर क्या था अपने कथन पर क्षमा ई का पोचा फेरने लगे—

इस से विदित होता है कि आज कल लोगों को गुप्तचरों ने कैसा भयभीत कर रक्खा है किसी अपरिचित व्यक्ति पर भी विश्वास करना कठीन होगया है इसी अविश्वास के कारण प्रकट पर सज्जन को भी गुप्तचर समझ कर कैसी झट पटांग बातें होजाती हैं विशेष कर उपदेशकों की दशा तो वैसी ही तीन होती है जैसी कि राम के भय से मरीचि की, ऐसी अवस्था में ईश्वर ही रक्षक है।

अमरनाथ औदीच्य देहरादून

देहरादून

नागरी प्रचारिणी सभा का श्रीयुक्त पं० आनन्द नारायण जी के वकील सभापतित्व में २९ ता. को श्री. ला. अनिरुद्ध कुमार जी रईस के स्थान पर एक विशेष अधिवेशन हुआ।

उस अवसर पर दो प्रस्ताव स्वीकृत हो कर प्रतिनिधियों निर्वाचन किया गया।

१—देहरादून की नागरी प्रचारीणी सभा अजल पुर में होने वाले सप्तम हिन्दी साहित्य सम्मेलन के साथ पूर्ण तथा सहानुभूति प्रकट करती है और पूरी सफलता के लिये - जगदाधार से प्रार्थी है

२—सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये इस सभा की ओर से निम्नलिखित प्रतिनिधि चुनेगये

१—पं० आनन्दनारायण जीवकील
२—स्वमी प्रकाशानन्द जी
३—पं ०अमरनाथ जी वैद्य शास्त्री
४—पं० वंशीधर जी शास्त्री
५—ला० बलदेवसिंह जी भक्तराज
६—ला० अनिरुद्धकुमार जी रईस
७—पं० उदित मिश्र जी
८—ला० आर्य्यकिशोर जी
९—पं० बद्रीनाथ जी उपदेशक
१०—मास्टररामप्रसाद जी

कर्ण जी से प्रश्न

श्रीयुत सम्पादक, सद्धर्म प्रचारक, नमस्ते!

२० कार्त्तिक १९७३ के सद्धर्म प्रचारक में ८ पृष्ठ पर कवि कर्ण को एक कविता शंकर छन्द में छपी है क्या उक्त कवि महाशय कृपया सद्धर्म-प्रचारक में प्रकाशित करेंगे कि शंकर छंद का नाम उन्होंने किस छंदो ग्रन्थ के आधार पर व्यवहृत किया है। जहां तक लोगों को मालूम है यह छंद प्रथम ही प्रथम 'एकान्तवासी योगी' नामक पद्य में काम में लायागया था, पर उस के कर्त्ता ने नवीन पद्य को कोई नाम नहीं दिया था।

विनीत
गिरिधर पाठक

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

आर्यसामाजिक समाचार

आर्यकुमार सभा लुध्याने का वार्षिकोत्सव १५, १६ दिसम्बर को होगा।

———

कादियों का 'नूर' सूचना देता है कि बलरामपुर के आस पास बहुत से मुसल्मान घराने जनेऊ चोटी रख कर हिन्दू बन रहे हैं। इस से सहयोगी बहुत चिन्तित है।

—०—

गोपाष्टमी के दिन गुरुकुल में सभा हुई गोरक्षा सम्बन्धी संगीत के अतिरिक्त कई ब्रह्मचारियों के भाषण हुए। प्रो० बालकृष्ण एम० ए० के व्याख्यान के पीछे श्री आचार्य जी का भाषण हुआ जिस में उन्होंने गोरक्षा के निमित्त एक 'गोरक्षिणी सभा' की स्थापना बनाने के लिये प्रेरणा की। अन्त में उन्होंने बतलाया कि हरेक आर्य गृहस्थी को घर में गौ अवश्य पालनी चाहिये।

—०—

गुरुदास पुर आर्यसमाज का उत्सव कई कारणों से मुल्तवी किया गया है।

———

सीता मढ़ा से म० रामायतार लाल सूचना देते हैं कि वहां विजय दशमी के दिन आर्यसमाज की स्थापना हो गई। बड़ी प्रसन्ता की बात है क्योंकि सीतामढ़ी जैसे स्थान में अभी तक समाज का न होना लज्जा की बात थी।

—०—

आगरा समाज के उपदेश विभाग के अधिष्ठाता म० श्रीराम सूचना देते हैं कि 'श्रीमती आर्य अन्तरंग सभा आर्यसमाज आगरे ने म० लालचन्द्र जी का दोष क्षमा कर दिया है और पुनः श्रीमद्दयानन्द अनाथालय में भजनोपदेशक नियत कर लिया है। अब वे पूर्ववत् कार्य करेंगे।'

—०—

"मृतक श्राद्ध"

विषय पर शास्त्रार्थ

आर्यसमाज बरेली के ३५ वें वार्षिकोत्सव पर आर्यसमाज और सनातन धर्मियों का "मृतक श्राद्ध" विषय पर शास्त्रार्थ हुआ। २९ अक्टूबर को १ बजे से ४ बजे तक शास्त्रार्थ का समय नियत हो चुका था। आर्यसमाज का—विद्वन्मण्डल अनाथालय के मण्डप में १२$\frac{3}{4}$ बजे पहुंच गया था।

सनातनधर्मियों की ओर से पं० रामलोचन जी शास्त्री बोलने वाले थे। आर्य्यसमाज की ओर से पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति बोलने वाले थे। पं० रामलोचन जी १ बजे नहीं आये अतएव सनातनधर्मी पंडितों ने समय गुज़ारने के वास्ते अपने आप बोलना आरम्भ कर दिया। आर्य्य समाज की ओर से पं० बिहारी लाल जी ने सब नियम पढ़ दिये जो कि सनातनधर्मियों ने अपने आप बना कर छपवा दिये थे १$\frac{1}{2}$ बजे पं० रामलोचन जी आर्य्य तब डा० श्यामस्वरूप जी मंत्री आ० स० ने सभापति होने के लिये महात्मा मुंशीराम जी का प्रस्ताव किया। मण्डप में आर्य्यसमाज ने करतल ध्वनि से, तथा सनातनधर्मियों ने "बोलो सनातनधर्म की जय" की ध्वनि से, प्रस्ताव का अनुमोदन किया। जब महात्मा जी ने सभापति का आसन अलंकृत किया तब पुनः करतलध्वनि से तथा "बोलो सनातनधर्म की जय" की ध्वनि से स्वागत किया गया।

कितने मिन्ट हरेक वक्ता बोले इस पर विवाद हुआ दोनों ओर से १२ मिन्ट नियत वक्ताओं के बोलने को दिये गये। २ बजकर ७ मिन्ट हो चुके थे तब पं० रामलोचन जी ने उठ कर कहा।

अवैदिक पदार्थ क्या है, इस का निरूपण करो।

इस पर पं० इन्द्र जी ने कहा कि 'अवैदिक पदार्थ के निरूपण में ही समय बिता देना ठीक नहीं—इस समय जनता मृतक श्राद्ध पर विचार सुनने आई है—सो कृपया आप मृतक-श्राद्ध की सिद्धि में वेदों से प्रमाण दीजिये।'

इस पर पं० रामलोचन जी ने कहा कि 'अच्छा तो आप वही कहिये कि वेद कौन से हैं?'

इस पर फिर पं० इन्द्र जी ने कहा कि आप इन अवान्तर विषयों पर समय न बिताये। यह आप भी जानते हैं कि वेद कितने और कौन से हैं। यदि नहीं जानते तो सत्यार्थ प्रकाश या ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में देखलें या किसी आर्य्यसमाजी बालक से पूछ लें। इस समय तो उत्तम यही है कि आप मृतक श्राद्ध को वेद के प्रमाणों से सिद्ध कर के दिखादें।'

लग भग एक घन्टा तक पं० रामलोचन जी 'अवैदिक' और 'वेद' की व्युत्पत्ति ही पूछते रहे। किन्तु जब उन्हें सुझाया गया कि 'अपने पक्ष को स्थापित न कर के यों ही पूछते जाना वितण्डा कहाता है' तब बहुत तंग आकर आपने सत्यार्थ प्रकाश की प्रथमावृत्ति से मृतक श्राद्ध के विषय में दो तीन पंक्तियां पढ़ दीं। इस पर उन्हें बताया गया कि ऋषिदयानन्द ने पहले संस्करण के विषय में नोटिस निकाल दिया कि वह माननीय नहीं है—तब इस विषय में मौन होकर पं० रामलोचन जी स्वामी जी को प्रमादी आदि कहने लगे और इधर उधर की बातें करने लगे।

जब पं० रामलोचन जी को मृतक श्राद्ध की पुष्टि में कोई प्रमाण न दे ते देखा तो पं० इन्द्र जी ने मृतक श्राद्ध के विरुद्ध जीवित पितृयज्ञ के पक्ष में कई वेद मन्त्र अर्थ सहित प्रमाण में दिये, और पं० रामलोचन जी से कई प्रश्न भी किये। मन्त्रों के विषय में ता पं० रामलोचन जी बिलकुल चुप रहे, और प्रश्नों के उत्तर में कहने लगे कि इतने प्रश्नों का उत्तर यहां नहीं दिया जासकता। स्वयं तीन वेद मन्त्र पढ़ दिये और उन के कोई अर्थ न किये। अन्त में बोलते हुए पं० इन्द्र जी ने पं० रामलोचन के दिये हुए वेद मन्त्रों से दिखाया कि उन से तो जीवित पितृयज्ञ सिद्ध होता है मृतक श्राद्ध नहीं। जीवित श्राद्ध की सिद्धि में कई और प्रमाण अर्थ सहित उपस्थित किये।

उस समय यद्यपि शास्त्रार्थ का समय होचुका था तो भी सामयिक सभापति जी ने एक २ बार और बोलने की आज्ञा दे दी।

किन्तु सनातनी भाई तो पहले से ही विजयमालायें पहने बैठे थे और शास्त्रार्थ को यहीं तोड़देने पर तुले हुए थे। सनातन धर्म का 'जय जय कार' बोलते हुए उठ खड़े हुए। उन से शान्त होने के लिये बहुत प्रार्थना की गई परन्तु लग भग आध घन्टे तक सारा समूह यहीं डटा रहा और उत्सव की कार्य वाही को रोकता रहा। आखिर थक कर 'सनतनधर्म की जय' का शोर मचाता हुआ सनातनी मण्डल लग भग पौने पांच बजे के पण्डाल से रवाना हुआ।

—०—

"आर्य्यसमाज सहारनपुर का वार्षिकोत्सव"

आर्य्यसमाज सहारनपुर का ४०वां वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ उन्तीस अक्टूबर को ईश्वर की कृपा से निर्विघ्नता पूर्वक समाप्त हुआ। बाहिर से श्रीमान् स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी परमानन्द जी, मास्टर दुर्गाप्रसाद जी, प्रोफैसर बालकृष्ण जी एम.ए. ब्रह्मचारी जयदेव जी स्नातक और पं० धनीराम जी शास्त्री पधारे थे। इन विद्वानों के अतिरिक्त ठाकुर नत्थासिंह जी की भजन मंडली शामिल जलसा हुई।

जैसा कि पहिले लिखा जा चुका है इस बार नगर कीर्तन नहीं किया गया। यह तजुर्बा को बुरा साबित नहीं हुआ बल्कि समाज का बहुत सा धन स्वार्थी लोगों के पास जाने से बच रहा। इस विषय पर विस्तार पूर्वक विचार किसी अगाम अंक में प्रकट किये जायेंगे।

शुक्रवार सायं को श्रीमान् मास्टर दुर्गाप्रसाद जी के उपदेश से उत्सव आरम्भ हुआ। शनिवार प्रातः को हवन और भजन होने के पश्चात् श्रीमान मास्टर जी का अत्युत्तम उपदेश हुआ फिर स्वामी परमानन्द जी ने व्याख्यान दिया मध्यान्ह के पश्चात् प्रथम मास्टर जी का व्याख्यान हुआ फिर ब्रह्मचारी जयदेवजी स्नातक का व्याख्यान वैदिक धर्म्म की महत्ता पर हुआ जिस को लोगों ने बड़े प्रेम पूर्वक श्रवण किया। एक भजन हो कर श्रीमान् स्वामी सर्वदानन्द जी का व्याख्यान लगभग दो घन्टे होता रहा व्याख्यान ऐसा शिक्षाप्रद और उत्तम था कि प्रोग्राम में दिये गये समय से एक घन्टा अधिक हो जाने पर भी श्रोतागण बड़े प्रेम पूर्वक आप का भाषण सुनते रहे ईश्वर के बहुनामों की व्याख्या करते हुए आप ने फरमाया कि जैसे एक पुरुष किसी का पुत्र किसी का पिता और किसी का भाई वग़ैरा कहलाता है। इसी प्रकार परमात्मा के अनन्त गुण हैं से अनन्त नाम हैं। भजनों के पश्चात् इस दिन की कार्य्यवाही समाप्त हुई।

रविवार प्रातः को हवन भजन और उपदेश होने के पश्चात् आर्य्य कन्यापाठशाला सहारनपुर की रिपोर्ट मन्त्री समाज ने पढ़ कर सुनाई, जिस से यह विदित होता था कि कम से कम ७

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by...

खर्च कर के कैसा उत्तम लाभ उक्त पाठशाला द्वारा सहारनपुर को पहुंच रहा है और यह भी दर्शाया गया कि गत मार्च में जो सहारनपुर के ज़िले की प्रदर्शनी हुई थी उस में सब से अधिक इनाम इसी पाठशाला की कन्याओं ने प्राप्त किया। इस के पश्चात् क्यों कि पाठशाला की कन्याओं के व्याख्यान और खेलादि होने थे और उन को इनाम बांटा जाना था इस लिये आर्य्य समाज के सच्चे सेवक और वेदों के भक्त श्रीमान मास्टर दुर्गाप्रसाद जी ने प्रधान पद का आसन सुशोभित किया। इस कदर वृद्ध होने पर भी आप का धर्म्मभाव और वैदिक धर्म की सेवा करने का जोश किसी नौजवान से कम नहीं हुआ आप का आत्मिक बल इसी से जाना जा सक्ता है कि कई वर्षों से आप ने निमक का सेवन बिलकुल त्यागा हुआ है आपने कई दर्जन पुस्तकें बनाई हैं। जिन में मुख्य वेदों के प्रचार का ख्याल रखा गया है आज कल भी आप में वेदों का अङ्गरेज़ी भाषा में भाष्य कर रहे हैं ऐसे योग्य विद्वान् का प्रधान पद को स्वीकार करना स्थानीय आर्य्य पुरुषों के लिये बड़े हर्ष का समय था। प्रथम तीन कन्याओं ने व्याख्यान दिये और फिर खेलादि होने के पश्चात् कन्याओं को इनाम तकसीम किया जाना था परन्तु क्योंकि प्रोफेसर बालकृष्ण जी ने मध्यान्ह की गाड़ी से अम्बाला छावनी के उत्सव में सम्मिलित होने के लिये जाना था इस लिये इनाम बटने से पूर्व प्रोफेसर साहिब का वेदों को ईश्वरीय ज्ञान सिद्ध करने के विषय पर एक बड़ा मनोहर और युक्ति पूर्वक व्याख्यान हुआ, जिस का असर उपस्थित जनता पर बड़ा उत्तम पड़ा। इसके पश्चात् कन्याओं को इनाम तकसीम किया गया और प्रधान जी की वक्तृता होकर प्रातः की कार्य्यवाही समाप्त हुई।

मध्यान्ह के पश्चात प्रथम स्वामी परमानन्द जी का व्याख्यान हुआ फिर श्रीमती ठाकुरदेवी जी ने स्त्री शिक्षा पर एक मनोहर व्याख्यान दिया। इस के पश्चात् धन इकत्र करने का समय था सब से बड़ी रक़म १५००) की ला० जगन्नाथ जी प्रधानमन्त्री आर्य्य समाज सहारनपुर की सुनाई गई यह धन उन की धर्म्म पत्नी जी की इच्छानुसार जिन का परलोक वास हुए चन्द दिन हुए थे उन के कुल ज़ेवरों को बेचकर गुरुकुल कुरुक्षेत्र में तीन कमरों के बनने के लिये दिया गया। इस देवी के धर्म्म भाव को इस बात से भली प्रकार जाना जा सक्ता है कि उन की मृत्यु से चन्द दिन पहिले उन के पति बांसमती चावल सौ रु० के खर्च को लाए इस पर उस देवी ने अपने पति से कहा कि ऐसे महंगे चावल तो अपने उन अतिथियों को खिलाएंगे जो कि समाज के उत्सव पर पधारेंगे अपने ख़र्च के लिये अन्य मोटे चावल लावें परन्तु ऐसा ही किया गया इस देवी के धर्म्मभाव और गुरुकुल से प्रेम को देख कर जिसने अपने सर्व आभूषणों को दान देकर उत्तम दान प्रणाली की इस किसम की पहली रिवाज क़ायम की है पूर्ण आशा बंधती है कि परमात्मा की कृपा से वह दिन बहुत दूर नहीं है-जब कि वैदिक धर्म्म पुनः मनुष्य मात्र को अपनी ओर आकर्षित करलेगा और संसार भरमें गुरुकुल शिक्षा प्रणाली फिर से जारी हो जावेगी।

इस के अतिरिक्त लगभग १५००) का और चन्दा जिस में वायदे भी शामिल हैं-सुनाया गया जिस में अधिक धन कन्या पाठशाला सहारनपुर के लिये था। आखरी व्याख्यान पं० धनीराम जी शास्त्री का हो कर मन्त्रीसमाज की ओर से गवर्नमेन्ट, बाहिर से आये हुए भाईयों और उपस्थित सज्जनों का धन्यवाद किया गया। आर्ती और शान्तिपाठ हो कर यह उत्सव समाप्त हुआ जिस को सफल बनाने में लाला नन्दलाल, लाला जगन्नाथ जी एकाउन्टैन्टस व बाबू बुलाकी दास जी का पुरुषार्थ सराहनीय है।

शालिग्राम
मन्त्री

—०—

मनोरंजक समाचार

अलहिलाल पत्र के सम्पादक मौलाना आज़ाद को बिहार की सरकार ने नज़रबन्द कर दिया है। प्रबल साक्षियों से सरकार को यह ज्ञात होचुका है कि मौलाना साहिब सरकार के दुश्मनों से कुछ मेल जोलकर रहे थे।

—०—

लाहौर में तीसरा कान्सिपरेसी केस प्रारम्भ हो गया है।

—०—

युद्ध में गये हुए बहुत से भारतीय डाक्टरों में से पांच के नाम सर पर्सीलेक की रिपोर्ट में विशेषतया दिये गये हैं। उन नामों से एक नाम लैफ्टिनेण्ट सुन्दर दास सौन्धी का है। हम अपने भाई को इस सफलता के लिए बधाई देते हैं।

—०—

गत सप्ताह लाहौर की पुलिस ने दैनिक पत्र किसान के कार्यालय में घुस कर उस के सहायक सम्पादक मौलवी अब्दुलहथा को कैद कर लिया। सम्भवतः मौलवी साहिब राजद्रोह के लिये पकड़े गये हैं।

—०—

सिरसा आर्य्य समाज

श्री स्वामी विज्ञान भिक्षु जी ने ३-११-१६ सं० ५-११-१६ तक तीन अति उत्तम उपदेश सिरसा समाज में दिये। मन को वश करने के उत्तम उपाय बताये जिन को असर श्रोता गणों पर बहुत अच्छा पड़ा।

—०—

सप्तम-हिन्दी-सम्मेलन

[अभ्युदय से संगृहीत]

सप्तम हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के सभापति पं० रामावतार शर्मा एम० ए० साहित्याचार्य और काव्यतीर्थ ४ नवम्बर को सन्ध्या समय बम्बई मेल से जबलपुर पहुंचे। स्टेशन पर स्वागतकारिणी समिति की ओर से अच्छा प्रबन्ध था।

५-नवम्बर कार्यक्रम में १२ बजे से कार्यारम्भ का समय दिया गया किन्तु स्वयं सभापति ही १२—४५ पर पधारे आप के पधारने पर बदस्तूर तालियां बजी। १ बजे के पश्चात् पं० लक्ष्मीप्रसाद शर्मा ने संस्कृत पद्यों में मंगलाचरण और संक्षेपतः सभापति महोदय की प्रशंसा की। स्त्रियों की झिक के समीप में दो पुरुषों ने हारमोनियम बजाये और कुछ महाराष्ट्र स्त्रियों ने हिन्दी में स्वागत-गान गाया।

सभापति का निर्वाचन।

माननीय रायबहादुर शुक्लजी ने इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए कहा आप अंग्रेजी के जैसे ज्ञाता हैं वैसा ही आप संस्कृत के धुरंधर पण्डित हैं। (हिन्दी की विशेष जानकारी सभापति के लिए, एक सहयोगी के शब्दों में, अनावश्यक है) 'विमल बी० ए०' बाबू श्यामसुन्दरदास ने समर्थन में इस का दुखड़ा रोया कि यद्यपि वे इस प्रस्ताव के अनुमोदन के लिए बहुत समय तक यत्न करते रहे तो भी उनको इस के लिए पूछा भी नहीं। क्योंकि बाबू श्यामसुन्दर जी ने साहित्याचार्य जी से संस्कृत पढ़ी थी और कृतज्ञता का बोझ उतारने का ऐसा अच्छा मौका फिर कब मिलने वाला था।

सभापति का भाषण।

छोटे बालकों के गान के बाद भाषण शुरू हुआ। जो भाषण छपा हुआ वितरण किया गया है उसमें डबलक्राउन १६ पृष्ठों के आकार के १५ पृष्ठ हैं। किसी भूतपूर्व सभापति की वक्तृता अब तक इतनी छोटी नहीं हुई थी और जितनी ही छोटी है उतनी ही निःसार भी है। इतना ही नहीं; ऐसे मन्दस्वर से सभापति महोदय ने उसे पढ़ा कि खचाखच भरा हुआ श्रोतृमण्डल उकता गया और प्रस्ताव के अनुमोदन में पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने जो आप की हिन्दी की उपमा प्रयाग की सरस्वती से दी थी वह लोगों को स्मरण आने लगी।

तत्पश्चात् पं० जगन्नाथ प्रसाद चतुर्वेदी ने एक निबन्ध "हमारी शिक्षा किस भाषा में हो" पढ़ा जो बहुत ही अच्छा और स्वभावतः हास्य रस-प्रधान था। अवश्य उसमें हिन्दी ही को शिक्षा के लिए उपयुक्त बतलाया गया। तथा अंगरेजी भाषा और उसकी वर्णमाला के शतशः अकाट्यदूषण दिखलाये गये।

—०—

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered NO. A. 434

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिरविवार को प्रकाशित होता है } ११ मार्गशीर्ष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २५ नवम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३२ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृतप्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सक्ता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिये लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत-साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेदमन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तार पूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्य-अभक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उस का आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन के ग्रन्थों का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिये क्या कर्तव्य हैं? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस शानपुर-काङ्कड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई कोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) कोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। कोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर लिखित कीजिये।

साधारण कोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

धार्मिक स्वाध्याय

आत्मा के दर्शन

कठोपनिषद् से

(३)

(नचिकेता की पूरी तरह परीक्षा करके मृत्यु अपना उपदेश प्रारम्भ करता है)

मृत्यु कहता है—संसार में दो मार्ग हैं, एक श्रेय और दूसरा प्रेय। ये दोनों भिन्न २ प्रकार के मार्ग पुरुष को बन्धनों में बांधते हैं। उन दोनों में से जो पुरुष श्रेय की ओर बढ़ता है, उसका भला होता है; और जो प्रेय के पीछे भागता है वह अभीष्ट को नहीं पा सकता। १। श्रेय और प्रेय दोनों ही मनुष्य की ओर आते हैं। उन्हें भली प्रकार देख कर धीर पुरुष उनमें से चुनता है। देख भाल कर बुद्धिमान् श्रेय मार्ग की और मन्द पुरुष लौकिक सुख की प्राप्ति के लिए प्रेय मार्ग का अनुगमन करता है। २। हे नचिकेतः! मैंने तुझे प्यारे पुत्रादि और प्यारे रूप वाले स्त्री आदि पदार्थों का इतना लोभ दिया—पर तैंने सब को त्याग दिया। धन के उस मार्ग पर नहीं चला, जिस पर चलते हुए सैंकड़ों लोग बीच में ही धंस जाते हैं। ३। विद्या और अविद्या की भिन्न २ गतियां हैं और ये एक दूसरे से बहुत दूर २ चलती हैं। हे नचिकेतः! तुझे प्रलोभनों ने नहीं फंसाया, अतः मैं समझता हूं कि तू सचमुच विद्या की अभिलाषा रखने वाला है। ४। मूर्ख लोग अविद्या—अन्धकार में फंसे रहते हैं, तो भी अपने आपको धीर और पण्डित मानते हैं। कुटिल गतियों को करते हुए वे अन्धे के पीछे चलने वाले अन्धे की भांती इधर उधर भटकते फिरते हैं। ५। धन के लोभ में मस्त हुए प्रमादी मूर्ख को कभी परलोक का ध्यान भी नहीं आता। जो मनुष्य मानता है कि बस यही लोक है और दूसरा कोई नहीं है, वह फिर २ मेरे (मृत्यु के) वश में प्राप्त होता है। ६। इस आत्मा के विषय में बहुत से लोग तो सुनने का अवसर ही नहीं पाते, और कई लोग सुनकर भी नहीं जान सकते। इसका कहने वाला कोई अद्भुत आदमी ही होता है, और जो चतुर आदमी का उपदेश सुनकर आत्मा को जान लेता है, वह भी अद्भुत ही होता है। ७। साधारण आदमी के कहने से यह आत्मा समझ में नहीं आ सकता, चाहे इस पर विचार भी किया जाय। असाधारण पुरुष द्वारा कहे जाने पर ही आत्मा समझ में आसकता है, यह अतर्क्य है और अणु के परिमाण से भी सूक्ष्म है। ८। इस आत्मा के विषय में उत्तम आचार्य के उपदेश से जो बुद्धि उत्पन्न हो, तर्क वितर्क से उसे भगा देना ठीक नहीं। वह बुद्धि मुझे प्राप्त हो रही है। तू सच मुच सत्य का धारण करने वाला है। हे नचिकेतः! तेरे जैसा पूछने वाला दूसरा कोई न हो। ९। मैं जानता हूं कि इस संसार के खज़ाने नष्ट होने वाले हैं। नष्ट होने वाली वस्तुओं द्वारा उस नित्य आशा को नहीं जान सकते। हे नचिकेतः! यही सोचकर मैंने श्रेष्ठ ज्ञान [नचिकेताग्नि] को उपलब्ध किया है और अनित्यद्रव्य से होता हुआ नित्य आत्मा तक पहुंच गया हूं। १०। हे नचिकेतः! तूने भी (अच्छा किया कि) सब इच्छायें जिसमें समाप्त हो जाती हैं, जगत् का जो आधार है, कर्मों का जहां अन्त नहीं, अभय की जो पराकाष्ठा है, ऐसे स्तुति योग्य, उपास्य स्थिर आत्मा को जान कर इस संसार के तुच्छ भोगों को छोड़ दिया। ११। जो पुरुष बाह्य सांसारिक वस्तुओं के अन्दर घुसा हुआ होने से गुप्त, हृदयवर्ती, गहरे, और नित्य आत्मा को समाधि द्वारा जान लेता है, वह पुरुष हर्ष और शोक को त्याग देता है—संसार के दुःख और सुख उस पर असर नहीं डालते। १२।

[असमाप्त]

"हे तेजस्वी परमात्मन्! जिस हिंसा-रहित यज्ञ का तू रक्षक होता है, वह सचमुच सफलता लाभ करता है।"

ऋग्वेद

शङ्का-समाधान

प्रश्न—ऋषिदयानन्द ने लिखा है कि ब्रह्मा वह कहाता है जो 'सांगोपांग वेदों का ज्ञाता है' अंगोपांग तो पीछे से बने। क्या तब तक कोई पुरुष ब्रह्मा न कहा सकता था?

उत्तर—'सांगोपांग' शब्द ऋषिदयानन्द ने इस लिए लिखा है कि जिस से वेदों का भली प्रकार जानने वाला ही ब्रह्मा कहा सके। 'अष्टाध्यायी' या यास्कीय निरुक्त ही अंग नहीं—साधारणतया वेदार्थ तक पहुंचने के जो साधन या उपसाधन हैं, वे ही 'अंगोपांग' कहाते हैं। वे साधन पुस्तक रूप में हों या अन्यथा-अंगोपांग नाम से कहे जायंगे। साधन रूप से वे कल्प कल्पान्तर में विद्यमान रहते हैं, क्योंकि विना विशेष-ज्ञानसाधन के वेद के अर्थ कभी कोई नहीं जान सकता। हां वे ऋषि जिन को वेद मन्त्रों का भान होता है—इस नियम में अपवाद रूप है।

प्रश्न—फिर भी "वेदज्ञ" को "ब्रह्मा" मानने में क्या प्रमाण है?

उत्तर—इसमें वेद प्रमाण है। देखिए-

यत्र देवा ब्रह्मविदो ब्रह्म ज्येष्ठ मुपासते।
यो वै तान्विद्यात्प्रत्यक्षं स ब्रह्मा वेदितास्यात्।

अथर्व। का० १०। ७। १४

जिन में रक्षण करते हुए ब्रह्मज्ञानी विद्वान्, ज्येष्ठ ब्रह्म की उपासना करते हैं, उन वेदों को जो प्रत्यक्ष की भांती जानता है, वह विद्वान् ब्रह्मा कहाता है।

इस मन्त्र से स्पष्ट ही ज्ञात होता है कि ब्रह्म तक पहुंचाने वाले ज्ञान का ज्ञाता विद्वान् ब्रह्मा कहाता है।

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रति मास प्रकाशित होती है; नयी २ गीतिएं, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की रक्षा और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य जाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
काङ्गड़ी पो० श्यामपुर ज़ि० बिजनौर

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक।

हिन्दू यूनिवर्सिटी में आर्य भाषा

इसी अंक में अन्यत्र हिन्दी साहित्य सम्मेलन में दी गई कुछ वक्तृताओं का संक्षेप दिया गया है। उसे पढ़ कर पाठक स्वयमेव विचार करेंगे कि हिन्दी-भाषा-भाषी जगत् का इस विषय में कितना प्रबल मत है। आर्यभाषा के प्रेमी इस बात पर तुले हुए हैं कि हिन्दू यूनिवर्सिटी में उच्च शिक्षा का माध्यम हिन्दी को ही बनाया जावे। आर्य-जनसमूह चाहता था कि उन का एक स्वाधीन विश्वविद्यालय हो, वह नहीं बना और चार्टर लेलिया गया। इस पर यह सन्तोष दिलाया गया कि विश्वविद्यालय सर्वथा स्वाधीन नहीं हुआ तो न सही, उसके चलाने वाले तो भारतवासी होंगे। किन्तु नियमों ने इस दिलासे पर भी पानी फेर दिया। प्रबन्ध पर सरकार का कड़ा निरीक्षण रहेगा और अध्यापकवर्ग में भी अंग्रेज़ सज्जनों की पर्याप्त संख्या होगी। तब आर्य-जनता ने सोचा कि चलो यह भी न सही, हिन्दू विश्वविद्यालय में शिक्षा तो हिन्दी-भाषा द्वारा होगी। इतना ही सही। किन्तु अभागी आर्यजाति के इतने भाग्य कहां। हिन्दू-विश्वविद्यालय में भी शिक्षा का माध्यम वही अंग्रेज़ी भाषा होगी। इस से बढ़ कर अनर्थ कौन सा हो सकता है?

किन्तु अब किया क्या जाय। दिल्ली के लाल किले की मोटी दीवार पर चोट लग सकती है, किन्तु हिन्दू-विश्वविद्यालय के संचालकों के कानों पर चोट नहीं लग सकती। सारा शोर मचाना और चिल्लाना व्यर्थ हो रहा है। शिक्षा का माध्यम तो एक ओर रहा, यहां तो साधारण सूचनायें तक अंग्रेज़ी भाषा द्वारा ही निकलती हैं। जो भारतवासी अंग्रेज़ी देवी से अनभिज्ञ हैं उन्हें इस योग्य भी नहीं समझा जाता कि हिन्दू विश्वविद्यालय सम्बन्धी सूचनायें भी दी जायं। मातृभाषा का इतना अपमान भारतवासियों द्वारा ही हो तो अन्य लोगों से क्या आशा हो सकती है।

सम्मेलन में विश्वविद्यालय के बन्द कानों को खोलने के लिये दो साधन बताये गये थे। एक साधन तो यह था कि हिन्दू यूनिवर्सिटी को आर्थिक सहायता न दी जाय। हमारी सम्मति में यह साधन प्रभावोत्पादक न होगा। कारण यह है कि पहले जोश में आर्यजाति विश्वविद्यालय को धन तो खूब दे चुकी है और सरकार की पृष्ठपोषकता ने नरेशों के ख़ज़ानों को भी हिलाया है। आगे के ख़र्च के लिये भी संचालकों को अधिक चिन्ता नहीं। सरकार की सालाना आर्थिक सहायता पहले ही पर्याप्त है, और आगे भी बढ़ सकती है। तब रुपया न देने से विश्वविद्यालय के दुर्ग की दीवारें न हिलेंगी।

दूसरा उपाय श्रीयुत शिवप्रसाद गुप्त ने बतलाया था। उपाय यह था कि अगली बार विश्वविद्यालय के संचालक वे लोग ही चुने जायं जो आर्यभाषा में विश्वास रखते हों। यह भी कुछ कठिन सा है। जिन भारी२ आदमियों के हाथमें इस समय विश्वविद्यालय की बागडोर गई है, उन से चिरकाल तक उस का छुटकारा पाना कठिन है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन में, प्रायः इस प्रसंग में मान्यवर पं० मदनमोहन मालवीय जी से अपील की जाया करती है, किन्तु उस से कोई लाभ नहीं हो सकता। राम ने लंका जीत कर अपने पास नहीं रखी थी, हमारे पूज्य और आर्यवृत्ति मालवीय जी ने भी शिक्षा की लंका दूसरों के अर्पण करदी है। स्वयं उस में एक साधारण सभासद् की हैसीयत में ही रह गये हैं। उन की प्रबल इच्छा के होते हुए भी आर्यभाषा का प्रवेश विश्वविद्यालय-कार्य्यालय के ज़बर्दस्त पर्दों में नहीं हो सकता।

आज तक हम यही समझते थे कि आर्यभाषा सेवी जगत् इस विषय में एक मत है। किन्तु अभ्युदय के पिछले अंक में सम्मेलन की रिपोर्ट पढ़ कर हमारा यह विचार अशुद्ध सिद्ध हो गया। रिपोर्ट लिखने वाले संवाददाता महोदय की राय प्रतीत होती है कि इस विषय में विश्वविद्यालय के संचालकों को तंग नहीं करना चाहिये क्योंकि सारे देश के हिन्दुओं को साथ लेना आवश्यक है, और मद्रास आदि के हिन्दू हिन्दी के सामने सिर झुकाने को तय्यार नहीं होंगे। यह तर्क प्रायः किया जाता है, और इसे बड़ा ज़बर्दस्त समझा जाता है किन्तु हम इसे बड़ा बोदा तर्क समझते हैं। हिन्दू विश्वविद्यालय किसी आदर्श को लेकर बनाया गया है या पचास लाख रुपया यों ही इकट्ठा किया गया है। यदि उस का कोई आदर्श है तो विश्वविद्यालय के संचालकों को चाहिये कि आर्यजाति को अपना आदर्श समझायें। जो उस आदर्श में विश्वास न करे, उसे युक्तियों से और प्रेम से सुझाया जाय, न कि आदर्श को ही छोड़ दिया जाय। दो चार या सौ हज़ार आदमी हमारे आदर्श को नहीं मानेंगे अतः क्या हमें आदर्श छोड़ देना चाहिए। यदि कुछ लोगों को प्रसन्न करने के लिए आदर्श छोड़ दिया तो फिर विश्वविद्यालय किस लिए खड़ा किया गया है?

आर्य जाति के बड़े भाग का कथन तो यह है कि (१) आर्यभाषा ही भारत वर्ष की एक भाषा हो सकती है (२) शिक्षा देश-भाषा द्वारा ही होनी चाहिए (३) और इसी लिए भारतवासियों की शिक्षा आर्यभाषा द्वारा ही होनी चाहिए (४) हिन्दू विश्वविद्यालय भारतीयबालकों तथा युवकों को शिक्षा देने के लिए बनाया जायगा इस लिए उस में शिक्षा के माध्यम का स्थान आर्यभाषा को ही मिलना चाहिए। यह साधारण सी युक्ति शृङ्खला है, और हमारी राय में यह अकाट्य है। यदि कोई भूले हुए भारतवासी इस युक्ति-शृङ्खला के परिणाम से सहमत नहीं हैं तो उन्हें समझाना चाहिए, उन तक अपनी प्रबल आवाज़ पहुंचानी चाहिए, न कि उनके प्रसन्न करने के लिए अपने सिद्धान्तों को ही छोड़ बैठना चाहिए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

हिन्दू विश्वविद्यालय के संचालकों के कानों तक आवाज़ पहुंचाने का शायद यही उपाय हो कि आर्यभाषा के पक्ष में भाषा-प्रेमियों का शब्द देश के कोने २ में गूंज उठे ताकि उनके बन्द कानों को मुंह खोलना पड़े। साहित्य सम्मेलन को चाहिये कि वह साल भर इस हलचल को जारी रखे। उस से सम्भव है विश्वविद्यालय के संचालक सुनलें, यह भी सम्भव है कि न सुनें। तो भी हमें इतना सन्तोष तो होगा कि अन्य देश वासियों ने ही हिंदी भाषा के पक्ष में युक्तियां सुनलीं।

—:o:—

गुरुकुलांक

(१) प्रचारक के गुरुकुलांक का आकार प्रचारक के साप्ताहिक आकार से दुगना होगा।

(२) विशेषांक में बढ़िया काग़ज़ लगाया जायगा।

(३) विशेषांक में तीन विषयों पर प्रसिद्ध २ विद्वानों के लेख होंगे।

(क) गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी

[ख] आर्य समाज का कार्य

[ग] वैदिक ईश्वर-वाद

इन विषयों पर सामाजिक तथा इतर विद्वानों के लेख प्रकाशित होंगे। विचार यह किया गया है कि प्रत्येक साल गुरुकुलांक में एक वैदिक सिद्धान्त पर कई अच्छे लेख अवश्य दिये जाया करें। इससे विशेषांकों में, एक रस होने से जो नीरसता आनी सम्भव है वह न आयगी। प्रति वर्ष विषय बदलते रहा करेंगे।

लेख और कविताओं के लिये लिखा जा रहा है, और स्वीकृति के पत्र भी आ रहे हैं।

[४] हम प्रतिज्ञा तो नहीं करते परन्तु यदि हो सका, तो पूरा यत्न करेंगे कि कुछ चित्र भी जासकें। इस विषय में हम पीछे से विशेष निवेदन करेंगे।

(५) अन्तिम बात यह है कि गुरुकुलोत्सव तक जो भी प्रचारक के ग्राहक होंगे या हो जायंगे, उन्हें यह गुरुकुलांक विना मूल्य भेंट किया जायगा, और अन्य सज्जनों को मूल्य से दिया जायगा। मूल्य की सूचना पीछे दी जायगी।

सम्पादक

संसार समाचार पर टिप्पणियां

धार्मिक

लखनऊ में कांग्रेस के दिनों में आर्य्यकुमार सम्मेलन का अधिवेशन भी होगा। सम्मेलन के लिए २६, २७, २८ दिसम्बर की तारीखें रखी गई हैं। इन्हीं दिनों कांग्रेस का अधिवेशन होगा। हम नहीं जानते कि सम्मेलन के कार्यकर्ताओं ने अपना समयविभाग किस ढंग से बनाया है। आशा है कि ऐसा प्रबन्ध होगा जिसमें श्रोता लोग दोनों स्थानों में बराबर जा सकें।

———

हमें यह विज्ञापन देते बड़ी प्रसन्नता होती है कि इस वर्ष आर्य्यकुमार सम्मेलन के सभापति का पद प्रो० बालकृष्ण एम० ए० सुशोभित करेंगे। आर्य जनता शोक से सुन चुकी है कि म० हंसराज जी का स्वास्थ्य मास डेढ़ मास से बहुत बिगड़ा हुआ है। इसी लिए आप ने सभापति बनने से इन्कार कर दिया है। सम्मेलन ने प्रो० बालकृष्ण जी से सभापति बनने की प्रार्थना की जो आप ने स्वीकार कर ली। हम सम्मेलन के कार्य कर्ताओं को बधाई देते हैं कि उन्होंने म० हंसराज जी के अभाव में दूसरा चुनाव भी ऐसा उत्तम किया है। प्रो० बालकृष्ण जी पंजाब यूनिवर्सिटी के सुयोग्य फल हैं—आपका सम्पत्ति-शास्त्र का ज्ञान अब पंजाब से बाहिर भी प्रसिद्धि पा चुका है। आर्य्यसमाज के वक्ताओं में आपका नाम कई सालों से आ चुका है। आर्य्यसमाज के धार्मिक सिद्धान्तों पर विचार करने का आपको जो शौक है, उसके परिणामभूत अग्निहोत्र व्याख्या आदि पुस्तक छप कर प्रसिद्धि पा चुके हैं। अब भी वेदों पर आप एक पुस्तक लिख रहे हैं। आर्य्यकुमारों को ऐसे उठते हुए युवक कार्यकर्ता के दृष्टान्त से अवश्य ही बड़ा लाभ होगा।

———

सम्मेलन का समय विभाग इसी सप्ताह अन्यत्र दिया गया है।

———

मुरादाबाद के प्रसिद्ध पं० ज्वालाप्रसाद जी मिश्र की मृत्यु का समाचार सुनकर सबको दुःख हुआ। मिश्र जी सनातन-धर्म सभा के एक प्रसिद्ध स्तम्भ थे। आप का 'दयानन्द तिमिर-भास्कर' सनातन सभा के पण्डितों के लिए वही काम देता है, जो काम गंगा के पंडे अपनी वहियों से लेते हैं। उसमें से वे अपने प्रयोजन का सब माल पा लेते हैं। आपको महामण्डल ने विद्यावारिधि तथा महोपदेशक बनाया था।

———

सर स्मिथ डोरियन इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध सेनापतियों में से हैं। आप इंग्लैण्ड में इस विषय पर व्याख्यान दे रहे हैं कि युद्ध के समय आचरणों पर अधिक ध्यान देना चाहिए। आपने इस्लिंगटन पुस्तकालय में व्याख्यान देते हुए एक कनाडा-वासी सिपाही का पत्र पढ़कर सुनाया जिसकी कुछ पंक्तियों का अनुवाद हम यहां देते हैं—

"युद्ध के लिए जो कनाडा निवासी इंग्लैण्ड में आए थे, वे प्रायः यह सम्मति लेकर वापिस जा रहे हैं कि इंग्लैण्ड में असमानता का बाज़ार गर्म है। यही एक परिणाम वे निकाल सके हैं।"

"उनके अंग्रेज़ साथियों ने उन्हें स्त्रियों का अपमान करना सिखाया है, और जब लोग नाटक देखने जाते हैं तो यही भाव उनके साथ २ जाता है। कनाडा की स्त्रियों को मैंने प्रायः यह कहते सुना है कि यदि हमें इंग्लैंड की अवस्था का ज्ञान पहले होता तो हम अपने पुत्र या भाई को कभी इस देश में न भेजतीं।"

भारतवासियों को आचार शास्त्र का उपदेश करने वाले पादरी यदि घर में सुधार का काम करें, तो जहां एक ओर उनकी जाति का उपकार हो, वहां बेचारे ग़रीब भारतवासी हैट कोट के साथ 'टुमटम' का पाठ सीखने से भी बच जायं।

———

आगे हम एक नोट प्रकाशित करते हैं—पाठक बतायें यह कहां का नोट होगा? पाठक नहीं पहिचान सकेंगे। इस लिये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हम ही बतादेते हैं कि यह हमारे सनातन धर्मी सहयोगी कलकत्ता समाचार का नोट है। प्रसन्नता की बात है कि हम सहयोगी के इस नोट के पीछे 'तथास्तु' लगा सकते हैं—

'हिन्दू जितना हिन्दुओं का अपमान करते जा रहे हैं, उससे दूना तिगुना प्रेम ईसाई पादड़ी इन अपमानितों पर दिखा कर भारत में ईसाइयों की संख्या बढ़ाते जा रहे हैं। बड़े से बड़ा पादड़ी नीच से नीच हिन्दू से इस तरह मिलता जुलता है, कि उसके हृदयपर शीघ्र ही शासन जमा लेता है। ईसाइयों की सफलताकी कुञ्जी तो शिक्षा प्रचार है। जो हिंदू छात्र ईसाइयोंके विद्यालयों में पढ़ते हैं उनपर ईसाई मतका प्रभाव पड़े बिना नहीं रहता। हमारे हिन्दूनेता इस बातपर कभी विचार ही नहीं करते। माता पिता तो लोभ में फंसकर ऊंच नीचका विचार ही नहीं करते। ईसाइयों में यह विशेषता है, कि घृणित से घृणित हिन्दू के साथ वे उत्तम वर्त्ताव करते हैं। चट उन्हें टोप लगवा देते हैं। यही काले साहब फिर अपने को राजाकी बिरादरी वाला समझ कर दिग्गज पण्डितों का अपमान करने में नहीं हिचकते। अभी हाल ही में कुछ ईसाइयोंने मिल कर मिदनापुर में एक अनाथालय खोला है। उसमें सन्थाल जाति के बालक रखे जायेंगे और शिक्षित होंगे। दो तीन पादड़ी इस में तनमन से कार्य करेंगे। निकृष्ट श्रेणीके हिन्दू उच्चश्रेणीके हिन्दुओं की बराबरी करने को ईसाई नहीं होते। एक तो उन पर जमीदारों का अत्याचार होता है, ईसाई होनेपर इससे छुटकारा मिलता है, दूसरे ईसाई पादड़ियों की सहानुभूति उनके चित्तको खींच लेती है। हिन्दुओं को हिन्दुत्व की रक्षाके लिये छोटी श्रेणी के हिन्दुओंकी नितान्त आवश्यकता है। मनुष्यके साथ मनुष्यताका व्यवहार करने में हम नहीं समझते, कि कुलीन हिन्दू अपने उच्चपद रचित हो जयेगा।

———

साहित्य

"अद्भुत विचार" नाम की एक अद्भुत पुस्तक हमें अद्भुत नाम वाले स० रामवरण दमामी से प्राप्त हुई है। पुस्तक में बहुत सी बातें, जिन्हें ग्रन्थकार ने शास्त्रीय समझा है, कथा के ढंग पर कही गई हैं। भाषा की शुद्धता या सौन्दर्य पर ध्यान नहीं दिया, पण्डित लोग जिस भाषा में लोगों को भागवत या ब्रह्म पुराण की कथा सुनाया करते हैं, उसी भाषा का इस में प्रयोग किया गया है। कई गम्भीर विषयों को कथा के तौर पर वर्णन किया है, और आदि से अन्त तक मनोरंजक रखने का भी यत्न किया है। किन्तु भाषा का दूषित होना पुस्तक के मूल्य को कम कर देता है। पुस्तक के सब सिद्धान्तों से हम सहमत नहीं हैं। छापे की भूलें भी बहुत हैं।

———

'त्रैभाषिक विश्वकोश' नाम का हिन्दी संस्कृत, और अंग्रेज़ी इन तीन भाषाओं के पर्यायशब्द देने वाला, और चार प्रेसों में छपा हुआ एक २४८ पृष्ठों का कोश हमें ग्रन्थकर्त्ता पं० रामस्वरूप शुक्ल साहित्याचार्य से प्राप्त हुआ है। इस कोश में पहले हिन्दी शब्द, और उस के आगे संस्कृत तथा अंग्रेज़ी पर्यायवाचक दिए गये हैं। कोश अपने ढंग का अच्छा है। ग्रन्थकर्ता का परिश्रम सराहने योग्य है—और विद्यार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी है। छापे की भूलें कहीं २ रह गई हैं—वे अगले संस्करण में ठीक हो जायंगी। ऐसे ग्रन्थ के बनाने में संग्रहकर्त्ता का जो परिश्रम हुआ है, उस का पुरस्कार देना विद्या प्रेमियों के हाथ में है। ग्रन्थ का संग्रह कीजिए, और साहित्याचार्य जी का उत्साह बढ़ाइये। मूल्य २॥) है। ग्रन्थकर्ता आज कल ऋषिकुल हरिद्वार में अध्यापक हैं— कोश वहीं से मिल सकता है।

———

अजमेर के बाबू रामविलास शारदा ने 'जोगी की फेरी' नाम की छोटी सी कहानी लिख कर प्रकाशित की है। कहानी में कथा मिस से कई उपदेश हैं। आधघण्टे का मनोहर पढ़ना—और कई काम की बातें सीखना। एक पन्थ दो काज। मूल्य ।) पुस्तक ग्रन्थकर्त्ता से ही मिल सकती है। वाक्य ज़रा छोटे २ और पैरे भी कुछ कम लम्बे होते तो कथा साधारण पाठकों के लिए और भी अधिक रुचिकर होती।

———

गुजराती के सस्तु साहित्य वर्धक कार्यालय की ओर से हमें 'जगविख्यात पुरुषो' नाम की पुस्तक प्राप्त हुई है। इस में पं० विनायक कोंडदेव ओककृत ग्लाडस्टन की जीवनी और इन्द्रकृत प्रिंस बिस्मार्क के जीवन चरित का गुजराती अनुवाद है। इसी कार्यालय ने इन्द्र लिखित नैपोलियन बोनापार्ट का भी गुजराती अनुवाद छपाया था। हमें ज्ञात हुआ है कि कनाड़ी और मराठी में भी इन दोनों पुस्तकों के अनुवाद हो रहे हैं।

———

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के सभापति पं० रामावतार शर्मा के भाषण पर विचित्र २ सम्मतियां प्रकाशित हो रही हैं। कोई कहता है, भाषण बहुत अच्छा था; कोई कहता है बिल्कुल निःसार था हम ने उसे पढ़ा है और यह परिणाम निकाला है कि भाषण में सार तो है किन्तु ऐसा सार नहीं जो सर्वसाधारण के उपयोग में आसके। जिन प्रश्नों पर पहले सभापति अपने विचार प्रकट कर चुके थे, उन पर शर्मा जी ने लम्बी टीका टिप्पणी करना आवश्यक नहीं समझा। आपने नया ही ढंग लिया है। यह कई अंशों में अच्छा भी है। हरबार के घिसे हुए विषयों को पीसना अधिक फलदायक नहीं हो सकता। इस अंश में शर्मा जी का भाषण उत्तम था—किन्तु वर्ष भर में हिन्दी साहित्य ने क्या उन्नति की, नये कौन २ से प्रश्न उत्पन्न हुए, अगले वर्ष किस प्रणाली पर कार्य करने से अधिक लाभ की आशा हो सकती है; किन विषयों में अधिक हिन्दी ग्रन्थ अपेक्षित हैं—इत्यादि कई आवश्यक विषयों का छूट जाना अच्छा नहीं। इस से भाषण अपूर्ण सा प्रतीत होता है।

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

योरप के युद्ध ने और बातों पर तो असर डाला ही था, शोक है कि 'मर्यादा' पर भी डाल दिया। असर भी कोई अच्छा नहीं डाला। रूप रंग और लेखों के लिहाज़ से प्रयाग की मर्यादा अपनी मर्यादा छोड़ घटिया हो रही है।

—:o:—

'प्रभाकर' नाम का एक नया मासिकपत्र गोरखपुर से निकलना प्रारम्भ हुआ है। इस के सम्पादक हैं—पं० गौरीशंकर मिश्र। यह पत्र किस उद्देश्य को लेकर प्रवृत्त हुआ है? इस के जीवन की क्या २ आवश्यकतायें हैं? और किस साधन से यह जीवित रहेगा? इन प्रश्नों का उत्तर हमें इसकी आठवीं संख्या से नहीं मिला। शायद अगली किसी संख्या से मिल जाय। १४ पृष्ठ हैं, और दो कविताओं के सिवा एक कहानी है, वही मुख्य लेख यही नोट, और वही प्रेरित पत्र है।

—:o:—

गुरुकुल-समाचार

ब्रह्मचारियों तथा अन्य कुलवासियों का स्वास्थ्य अच्छा है। चिकित्सालय में बहुत कम रोगी जाते हैं। कारण ऋतु की उत्तमता के साथ चिकित्सक महाशय का परिश्रम और अनुभव भी है। व्यायाम खूब होता है और पढ़ाई का काम भी बल से चल रहा है। ऋतु और दृश्यों का सौन्दर्य—दोनों ही—इसमें सहायक हैं।

पुल तय्यार करने में इस साल यह बाधा हुई है कि अब तक नहर में पानी नहीं छोड़ा गया और इस लिए धारा ज़ोर से चल रही है। फिर भी इस वर्ष घाट का ठेका लाला कृष्णचन्द्र (कनखल निवासी) के पास होने से काम बड़ी तेज़ी से चल रहा है। ला० कृष्णचन्द्र व्यय करने में संकोच नहीं करते और यदि उनके आदमियों का बर्त्ताव भी यात्रियों के साथ अच्छा रहा तो जनता का आशिर्वाद उनका सहायक होगा।

धन की सहायता गत मास में अच्छी आई है। गुरुकुल महा-निधि में जहां संरक्षकों की ओर से ३३०) आए वहां अन्य दान से १७३-)॥ आया। कार्तिक मास के अन्त तक बजट के अनुमानिक ७०,२४०) से ५४,५८२-)॥ आ चुका है। यदि १५,६५७॥)॥ आ जायं तो बजट में कुछ भी स्थिर कोश से न डालना पड़े। एक बार ब्रह्मचारियों के संरक्षकों तथा अन्य सज्जनों को भी बल लगाना चाहिए जिस से प्रबन्ध कर्त्ता गण चिन्ता से मुक्त हो जायं। जिन्होंने प्रतिज्ञाएं की थीं, उनके लिए प्रतिज्ञा पूरी करने का इससे बढ़ कर समय न आएगा।

गुरुकुल विश्वविद्यालय का वार्षिकोत्सव आगामी फाल्गुन की होलियों में २२ से २४ फाल्गुन १९७३ [५ से ८ मार्च १९१७] तक होना निश्चित हुआ है। संयुक्त प्रान्त के भाइयों की गतवर्ष शिकायत थी कि उन के यहां होलियों की छुट्टियां कुछ पीछे होती हैं। यदि अभी से संयुक्तप्रान्त के आर्यभाई अपनी छुट्टियों की निश्चित तिथियां लिख दें तो ऐसी तिथियां निश्चित की जासकती हैं जिन में पंजाब तथा संयुक्त—दोनों प्रान्तों को सुगमता हो।

यात्रियों के उतारे के लिए टीनछत के मकान जो बने हुए हैं उन में से आधे से अधिक गिरवा कर फिर से ऊंचे रहने के योग्य बनाए गए हैं। उन पर जो अधिक व्यय हुआ है वह देने की उन आर्य समाजों ने प्रतिज्ञा की थी जिन की ओर से वे मकान बने हुए थे; परन्तु अब तक उन में से बहुतों ने अपने हिस्से का धन नहीं भेजा। जो शेष मकान रह गए थे वे अब बनाने शुरु कर दिए गए हैं। सब आर्यसमाजों के मन्त्री महाशयों की सेवा में आनुमानिक व्यय लिखा जाचुका है। उन में से जिन्हों ने धन भेज दिया है उनको धन्यवाद देता हुआ अन्यों से प्रार्थना करता हूं कि अपने हिस्से का रुपया शीघ्र भेज दें जिस से इमारत का काम बीच में बन्द न हो जाय। उत्सव से पहिले ही यह काम समाप्त कर के गुरुकुल भवन की शोभा तथा उपयोगिता बढ़ जायगी। स्मरणार्थ पत्र फिर से सम्बन्धित आर्य समाजों के मन्त्रियों को लिखे जा रहे हैं।

उत्सव को कृतकार्य बनाने का अभी से यत्न होना चाहिए। गुरुकुल के कर्मचारी तो अपना सारा बल लगा रहे हैं और आशा रखते हैं कि अपने काम से आर्य जनता को सन्तुष्ट करेंगे, परन्तु आगामी वर्ष के व्यय के लिये पर्याप्त धन एकत्र करदेना गुरुकुल के प्रेमियों का कर्त्तव्य है। प्रत्येक स्थान से वार्षिक भेंट लाने के लिये अभी से परिश्रम आरम्भ होजाना चाहिए। पूर्वीय तथा दक्षिण अफ्रीका ब्रह्मा और टापुओं में अभी से आन्दोलन होने की आवश्यकता है। पंजाब के तो कोने कोने में प्रयत्न होगा ही, परन्तु जब इस गुरुकुल में संयुक्तप्रान्त के ब्रह्मचारियों की संख्या भी पंजाब के लग भग बराबर हो है तो इन प्रान्तों से भी अधिक धन आना चाहिए। बम्बई के गुजरात प्रान्त से भी सहायता की आशा है और कलकत्ते के श्रीमान आर्य भाई तो कभी गुरुकुल को भूलते ही नहीं हैं। यदि सब बल लगाएंगे तो सालभर के लिए, धन सम्बन्ध में, निश्चिन्त होना कठिन न होगा।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के मकान बन रहे हैं। पुल तय्यार होने के पश्चात् सामान जाना शुरू होगा चुनाव नए ब्रह्मचारियों का इसवर्ष वहां नहीं होसकता, जिन प्रकाश लाहौर में जो यह छपा है कि चुनाव दिल्ली में होगा वह भूल से निकल गया है। चुनाव गुरुकुल कांगड़ी में ही २४,२५ दिसम्बर १९१६ को होगा प्रार्थियों को अपने अपने बालक लेकर २१ से २३ दिसम्बर तक पहुंच जाना चाहिए! गत वर्षों की तरह स्टेशन पर गुरुकुल लाने के लिए गाड़ियां मौजूद होंगी।

कांगड़ी ग्राम के प्रबन्ध करने तथा वहां वाटिका लगवाने के लिए एक प्रबन्धकर्त्ता की आवश्यकता है। २०) मासिक से अधिक वेतन का गुज़ारा नहीं दिया जासका। पत्रव्यवहार मुख्याधिष्ठाता के साथ होना चाहिए।

सुंशीराम
मुख्याधिष्ठाता।

आवश्यकता है

मारवाड़ी सम्मेलन पोद्दार बालिका विद्यालय के लिये एक प्रधानाध्यापिका की, जिस की हिन्दी की अच्छी और संस्कृत की साधारण योग्यता हो। वेतन योग्यतानुसार अच्छा दिया जायगा। उम्मेदवारों को निम्नलिखित पते पर स्वयं पत्रव्यवहार करना चाहिए।

भवदीय
रामप्रताप शास्त्री
मन्त्री मारवाड़ी सम्मेलन
कालबादेवी रोड बम्बई

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक पुस्तक भण्डार की नई पुस्तकें

आर्यधर्म ग्रन्थमाला

श्री महात्मा मुन्शीराम जी द्वारा लिखित आर्यों की नित्य कर्मपद्धति—मूल्य =)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्य मात्र के पढ़ने योग्य है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आचाराचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है।

मातृ भाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य हैं?

वैदिक-धर्म और पारसीमत मूल्य =) इस निबन्ध में महात्मा जी ने पारसीमत के सिद्धान्तों की वैदिक-धर्म के सिद्धान्तों से तुलना करके बताया है कि इस मत का उत्पत्तिस्थान वैदिकधर्म ही है। निबन्ध बड़ी खोज से लिखा गया है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृतसाहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन

कलकत्ते का प्रसिद्ध गाडर्न रिव्यू पत्र इस पुस्तक के बारे में लिखता है—इस पुस्तक में संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक इतिवृत्त दिया गया है और भारत वर्ष के इतिहास के भिन्न २ समयों के प्रभाव से उसमें शाब्दिक तथा अन्य जो भेद आते रहे उसका वर्णन किया गया है। घटनाओं की परीक्षा सामान्यतया निष्पक्षपात है और हम लेखक महाशय के दिये घटनाओं के मुख्य भाग से सहमत हैं। भाषा लेखक के अन्य ग्रन्थों से पाई हुई कीर्ति के अनुकूल थे। छपाई और रंग ढंग अच्छे है।

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक।

ऋषि का सिंहनाद

जोधपुर जाने के समय ऋषि दयानन्द का अन्य आर्य पुरुषों के साथ प्रश्नोत्तर—

—०—

हमारी है विनय स्वामिन्!
यहां पर आप मत आवें।
रुकूंगा मैं नहीं चाहे
हज़ारों विघ्न आजावें। ॥ टेक ॥
यहां तो रहते हैं संसार
धोखे बाज़ और जाहिल।
नहीं वे कुछ समझते हैं
जो हित उनके किये जावें ॥ १ ॥
उन्हें बस इस लिये ही तो
दिखाऊं मार्ग मैं जल्दी।
गिनूंगा सुख उन्हें दुख जो
धरम के काम में आवें ॥ २ ॥
विनय तो अन सुनी कर के
हमारी आप जाते हैं।
करें पर काम कोमल हो
किन्ही के दिल न दुख पावें ॥ ३ ॥
नहीं मैं पाप के पौदे को
कैंची से कलम करता।
वरन जड़ से उखाड़ूंगा
कि वे फिर से न उग आवें ॥ ४ ॥
कहें क्या आप से भगवन्
हमारा दिल धड़कता है।
वे हैं निर्दय बड़े ही
पाप करने में न घबरावें ॥ ५ ॥
डरो मत ऐ मेरे भाई
सहायक साथ है हरदम।
लिपाऊंगा न मैं सब को
जो सब दुख मिल के आजावें ॥ ६ ॥
जो मेरी उंगलियों को
काट कर बत्ती बनलेवें।
हँसूंगा धर्म की ख़ातिर
मेरे गर प्राण भी जावें ॥ ७ ॥

वा०

—०—

आर्यकुमारसभाओं की आवश्यक्ता व उन से लाभ

इस वर्ष आर्यकुमार सम्मेलन लखनऊ में कांग्रेस के दिनों के लगभग होगा यह तो प्रायः सब को विदित ही है। परन्तु इस सम्मेलन ने अब तक क्या किया और भविष्य में यह क्या करेगा। इसका कोई ठीक ब्योरा मिलना तनिक कठिन है। यद्यपि वह सातवां सम्मेलन होगा, तथापि अब तक इन ७ वर्षों में इसने क्या २ कार्य्य किये तथा इस सम्मेलन से क्या २ लाभ हो सकते हैं वह यहां में सूक्ष्म रूप से पाठकों के सन्मुख रक्खूंगा।

परन्तु यह बतलाने से प्रथम मैं एक निर्मूल भ्रान्ति जो मनुष्यों की बुद्धियों में आजकल अधिकतर आगई है उसको दूर करने की चेष्टा करूंगा और वह यह है कि वर्त्तमान समय में अधिकांश मनुष्यों का विचार यह होता जाता है कि इस प्रकार की संस्थाओं से क्या लाभ? उन की बुद्धि में केवल इस की आवश्यकता है कि विद्या का प्रचार हो। जब यहां विद्यारूपी सूर्य्य मूर्खता के अन्धकार को दूर कर देगा उसी समय हमारे यहां के नवयुवक सुधर जायेंगे। परन्तु उन सज्जनों ने इस बात पर कब विचार किया है कि विद्या का अर्थ क्या है। निस्सन्देह यहाँ पर विद्या-प्रचार की आवश्यकता है परन्तु क्या उस विद्या-प्रचार के एक अंग को यह संस्था पूरा नहीं कर रही। क्या विद्या शब्द के अर्थ दो चार पुस्तकों की परीक्षा से कुछ दिन पहिले घोट कर तय्यार कर लेना और परीक्षोत्तीर्ण हो जाना ही है? यदि केवल यही अर्थ है तो कभी भी ऐसी सामयिक घोटा लगाने वाली मशीनों से देश का कल्याण नहीं हो सकता। क्या उन महानुभावों को यह ज्ञात नहीं कि हमारे बहुत से ऐसे ही विद्वान् यह जानते हुए कि..... इत्यादि २ बहुत से घृणित कार्य्य हैं तथापि उन कार्य्यों के किये बिना उनको संसार में अपना जीवन असाध्य सा प्रतीत होता है। इस पर भी आश्चर्य जनक बात यह है कि ऐसे ही ऐसे महानुभाव हमारी उन संस्थाओं में नेता भी उन्हीं सरीखे विद्वानों द्वारा मान लिये जाते हैं, जिन संस्थाओं को कि हम दूर से बैठे पूज्य दृष्टि से देखते हैं परन्तु यदि हम ऐसे नेताओं की उन जोशभरी स्पीचों को छोड़ कर (जो उन्होंने फलानी संस्था के सभापतित्व में दी थी) उनकी दिनचर्य्या को निहारें तो अधिकांश ऐसे मनुष्यों को पायेंगे जिनके जीवन घृणित हैं जो ऐसे २ निन्दनीय कार्य्य करते हैं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि हमारी श्रद्धा और भक्ति जो उनके लिये थी मिट्टी में मिल जाती है और यही विचार होता है कि हा हतभाग्य देश ! तेरा उद्धार होना निश्चय ही अति दुःसाध्य कार्य्य है ।

अब प्रश्न यह है कि अधिकांश हमारे नेता जो कहते हैं वह करते नहीं क्या उनकी शक्ति के बाहर है कि वे उन भोगों को कि जो घृणित दृष्टि से देखे जाते हैं रोक सकें ?

इसका कारण जहां तक मैंने विचारा—यह है कि विद्यार्थी जीवन में अथवा यों कहिये कि वह समय जो आचरणों के सुधारने का था उस में बड़ी २ ज़्यादती उन लोगों ने की—यद्यपि वे पढ़ने में अवश्य अच्छे नम्बर पाते रहे परन्तु उनकी यदि स्कूली परीक्षा के साथ २ उनके आचरणों की भी परीक्षा होती तो अवश्य उनको शून्य मिलता ।

इस प्रकार से अपने युवा जीवन को बिताने का फल यह हुआ कि जो स्वभाव उनका पड़ गया उसका छुड़ाना असाध्य हो गया और उनसे पूछने पर केवल यही उत्तर मिलता है कि "क्या बतावें साहब हम तो आदत से मज़बूर हैं ।" अब विचारणीय बात यह है कि हमारे क्या भावी नेता भी ऐसे ही रंग के रंगे होंगे कि हमें उनका कुछ रूप बदलना होगा ? निस्सन्देह ही सर्वजन यही कहेंगे कि सुआचरणी विद्वान् ही नेता होने योग्य हैं । अब सुआचरणी मनुष्य कहां मिलें ? इसका उत्तर यही है कि:—

या तो वे [१] गुरुकुल प्रणाली पर विद्याध्ययन करें या [२] किसी सुसंगति में रहें ।

इन उपरोक्त बातों में से कौनसी सुगम है निश्चय ही दूसरे नम्बर की क्योंकि गुरुकुलों में विद्याध्ययन कराने के लिये लड़के भेजने के लिये अब भी बहुत से माता पिता हिचकिचाते हैं । सुसंगति कहां मिले ? पाठक कहेंगे कि यदि वर्त्तमान युवकों की आदतें बिगड़ रही हैं और वृद्धों की आदतें ऊपर लिखे अनुसार खराब हैं तो सुसंगति कहां ?

इसका सुगम साधन केवल नवयुवकों की सभायें स्थापित करना है यथा आर्य्य कुमार सभाएं । ऐसी संस्थाओं के नियमों के अनुसार प्रत्येक सभ्य को सभासद होने के समय प्रण करना चाहिये कि हम कोई भी निन्दित तथा घृणित कार्य न करेंगे । शीघ्र ही फल यह होगा कि ऐसी मण्डली का सभासद कभी भी कोई बुरे कार्य्य करने का साहस निम्नलिखित कारणों से न करेगा:—

(१) क्योंकि हमने प्रण कर लिया है कि हम नियमों के विरुद्ध कभी न चलेंगे ।

(२) यदि हमारे इस अकार्य्य की चर्चा किसी भी सभासद को मालूम हुई तो हमारी बड़ी हंसी होगी ।

इन्हीं सब बातों को सोचकर कुमार सभा इत्यादि नामी संस्थाएं स्थापित की गई जिस से कि अल्पवयस से ही कुमारों में कुत्सित व्यवहारों तथा आचरणों से घृणा और सुकर्मों में प्रेम बढ़े और जन समाज की सेवा करने का भाव उत्पन्न हो ।

इसी प्रकार की एक संस्था Young mans Christian Assosiation नाम से कुछ वर्ष हुए ईसाई दुनिया में खुली और सेवा इस संस्था के सभासदों ने आहत सिपाहियों की वर्त्तमान युद्ध में स्थान २ पर की है उस का यशगान् अभी हाल में हो Lord चेम्सफोर्ड वायसराय तक ने शिमला में गाया है ।

सत्य है कि हमारी सरकार हमारी शिक्षा प्रणाली में एक बहुत बड़े अङ्ग को बड़े उदासीन भाव से देखती है परन्तु यदि हम खुद सुधार करना चाहें तो बहुत कुछ सुधार सक्ते हैं, यथा हमारी शिक्षण-शैली में धार्मिक शिक्षा का नितान्त अभाव क्या यदि हम नियम बनालें कि प्रत्येक आर्य्ययुवक का धर्म्म नित्य प्रातः संध्या करना होगा तो क्या हमें कोई रोकेगा ? उत्तर मिलता है कि रोकने वाला कोई नहीं परन्तु तब तो बहुत से सभासद् ही आ, कु. सभा के न रहेंगे । इस को हल करने के लिए मेरी समझ में यदि सभासद् दो प्रकार के रक्खे जायें तो अत्युत्तम हो:—

१—मुख्य सभासद्—जो नियमों के साथ सहानुभूति रखने के साथ २ नियमों पर चलने का भी यथाशक्ति प्रयत्न करते हों और सहायक सभासदों पर सदा अच्छा प्रभाव डालने का कारण अपना धर्म्म समझें ।

२—सहायक सभासद्—जिन्हें केवल संस्था के साथ सहानुभूति हो ।

यह तो हुई संस्था की आवश्यकता अब यह जांचना है कि कुमार सभाओं ने क्या किया:—

१—सेवाकार्य—जहां कभी भी सभाएं हैं आ० कु० समाजों के सभासदों की सेवा का कार्य सदा अपने हाथ में लिया है ।

उदाहरणार्थ—गुरुकुलों के जलसों पर आगन्तुकों की सेवा सुश्रुषा तथा रोगियों की परिचर्य्या यथा गतवर्ष लखनऊ आ० कु० सभा ने वृन्दावन गुरुकुलोत्सव पर औषधालय तथा सफाई का प्रबन्ध-पानी की बाढ़ आने पर देवियों और बालकों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाना तथा निर्धन और अपाहिजों को चन्दा करके आर्थिक सहायता करना यथा गतवर्ष लखनऊ में और इस वर्ष काशी में":—

२—विद्याप्रचार— आगरे में कुछ दिवस हुए सब्जीमण्डी में एक सुन्दर वाचनालय (Reading Room खोला था । आज कल आर्य्यमित्र सभा आगरा ने एक पुस्तकालय वहां पर यहां पर खोल दिया है जहां से कि बहुत से निर्धन विद्यार्थियों को स्कूल तथा कालेज की किताबें कुछ नियम समय के लिए पढ़ने को मुफ़्त मिल जाती हैं ।

ऐसा ही एक पुस्तकालय लखनऊ में भी स्कूल-विद्यार्थिओं के लिए है ।

इन कार्य्यों के साथ २ धार्मिक प्रचार तो होता ही है साथ ही दैहिक शक्ति बढ़ाने के लिए व्यायामशालाएं भी साधारण मनुष्यों तथा सभासदों के लाभ के लिए खुलती जा रही हैं इस वर्ष ही लखनऊ के डिप्टीकमिश्नर ने एक ऐसी ही व्यायामशाला बनाने के लिए आ० कु० सभा को आ० समाज गंजेशगंज के उद्योग से कुछ स्थान मुफ़्त प्रदान किया है । काम का भी लगा लग गया है और आशा की जाती है कि आगामी सम्मेलन के समय तक शायद व्यायामशाला पक्की इमारत में आजायगी ।

अम्बिका-प्रसाद

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सप्तम-हिन्दी-सम्मेलन

गतांक से आगे

निबन्ध पाठ के पश्चात् अंग्रेज़ी-भक्त श्रीमान् सभापती महोदय से रहा नहीं गया और यूनिवर्सिटियों का पक्ष लेकर और निबन्ध के अंग्रेज़ी—दोष—दर्शनों के समाधान के लिए सुदीर्घ वक्तृता में बड़ी ही चेष्टा की। यदि यही चेष्टा आपने अपनी असली वक्तृता में की होती तो उस में बहुत कुछ सारांश की बातें आ जाती। स्वयं सभापति का इस प्रकार प्रयत्न ही से खण्डन-मण्डन में प्रवृत्त होते देखकर सम्मेलन हितैषियों को आन्तरिक खेद और उस की भविष्य स्थिति पर भय सा होने लगा। लगभग ३¼ बजे सभा बिसर्जित हुई और आज का अधिवेशन कार्य की दृष्टि से फीका रहा।

४½ बजे से १० बजे तक विषय निर्वाचिनी समिति बैठी।

सोमवार, दूसरा दिन।

यद्यपि ११ बजे का समय दिया गया था किन्तु १२ बज कर २० मिनट पर आज सभापति पधारे। दो दिनों के नङ्गे शिर के बाद आज आप के दर्शन फेल्टकेप (टोपी) के सहित हुए। जन-समूह में आज कुछ न्यूनता होने पर भी मण्डप खचाखच भरा था।

प्रारम्भ में महाराष्ट्र महिलाओं ने मङ्गल-गान किया और हारमोनियम पर कलवाले ही पुरुष थे। गीत के कुछ पद इस प्रकार के थे:—

"देव देवकी हमें बनालो कौशल्या कहलाने दो.....स्नेहलताएं लुम्हलाती हैं, आश्रम तरूओ विनय सुनो॥ भारत माताओं रोती हैं, पथ के कण्टक चुनो चुनो॥ भारतमाता के सिर की बिन्दी हिन्दी भारतभाषा हो॥ हमें न भूलो हिलमिल मांगो हरिपूरी अभिलाषा हो॥

तत्पश्चात् पं० सुखराम चौबे के तीन विद्यार्थियों के गान हुए जिसके बाद कविवर पं० माधव शुक्ल तथा खंडवा युवक समाज के विद्यार्थियों ने भी देश और मातृभाषा भक्ति से पूर्ण गान सुनाये। १ बजने के बाद सभापति ने खड़े होकर प्रथम प्रस्ताव उपस्थित किया जो राजभक्ति सूचक था। इसपर आपने वक्तृता भी दी और राजराजेश्वर की जयजयकार मनवाई। दूसरा और तीसरा प्रस्ताव भी आपने उपस्थित किया और तत्पश्चात् पं० रघुवरप्रसाद द्विवेदी जी का वह पत्र, जिसमें माता के परम पद हो जाने के कारण आपने अपने उपस्थित न हो सकने पर दुःख प्रकट किया था, पढ़कर सुनाया। चौथा प्रस्ताव बाबू श्यामसुन्दरदास जी ने उपस्थित किया और गत दिन के सभापति के भाषण से जो भ्रम उत्पन्न हो गया था वह आप के भाषण से दूर हो गया। प्रस्ताव का समर्थन बाबू शिवप्रसाद गुप्त ने किया और बड़ी ही मनोरम वक्तृता दी अनुमोदन करते हुए कुंवर हरिप्रसाद जी ने कहा कि हमको अपना 'पोलिटिकल जीवन' बनाने के लिए अंगरेज़ी की आवश्यकता है किन्तु भाषा के रूप में ही उसे पढ़ाना चाहिये। बाबू घनश्यामसिंह गुप्त और पं० चक्रगोपाल मिश्र जी ने भी समर्थन किया। कुंवर हरिप्रसादसिंह ने एक यह बात बड़ी ही बेतुकी कह डाली कि यदि हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी माध्यम न रक्खी जाय तो हम लोग कोई भी उसके सञ्चालकों को अब रुपया न दें। मालूम नहीं कुंवर साहब ने यह क्यों न सोचा कि विश्वविद्यालय में भारत के भिन्न भिन्न भाषा-भाषियों के भी रुपये हैं जो हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाने के पक्षपाती होते हुए भी हिन्दी को मातृभाषा बनाने के लिए तैयार नहीं। उनके बच्चे हिन्दी में ठीक वैसे ही नहीं समझ सकेंगे जैसे कुंवर साहब के बच्चे उनकी भाषाएं नहीं समझ सकेंगे। यदि हम हिन्दी को माध्यम न बनाने पर क्रोध से रुपया देना रोक देंगे तो हिन्दी को माध्यम बनाने पर मद्रास आदि प्रान्त के निवासी भी क्या रुपया देना बन्द न कर देंगे? अस्तुः यह तो हुआ ही था, सभापति से आज्ञा लेकर ठा० शिवकुमारसिंह ने इस विषय में कुछ कहना चाहा किन्तु कुछ शब्दों के बोलते ही सभापति ने उनको बैठ जाने की आज्ञा देकर प्रस्ताव को पास करवा दिया। सभापति ने यह न सोचा कि दोनों पक्षों को सुनकर तब उसपर सम्मति लेकर प्रस्ताव पास करना होता है किन्तु यहां तो सभापति जी जो आज्ञा दें वही न्याय है। पांचवा प्रस्ताव पं० माधवराव सप्रे ने उपस्थित किया। साथ ही एक उत्तम वक्तृता भी दी जिसमें शिक्षा-प्रचार-मण्डल स्थापित करने की चर्चा थी।

७ ता० की रात्रि में खंडवा की नाटक मंडली ने कृष्णार्जुन नाटक का अभिनय किया जो अच्छा हुआ।

अगला अधिवेशन इन्दौर में होगा।

हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी

(दूसरी रिपोर्ट)

तीसरे प्रस्ताव के बाद छटें प्रस्ताव का उत्थापन बाबू श्यामसुन्दरदास ने किया। इसमें उन्होंने हिन्दू विश्वविद्यालय के इस कार्य्य पर असन्तोष प्रकट किया, कि उन्हों ने हिन्दू-विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी रखने का पूर्ण प्रयत्न नहीं किया। कहा, कि हम अङ्गरेज़ी को उठाना नहीं चहते; हम चाहते हैं, हिन्दी को स्थान दिलाना। हम चाहते हैं, शास्त्र, इतिहास, भूगोल आदि हिन्दी ही के ज़रिये सीखें। इस प्रस्ताव का अनुमोदन समर्थन बाबू शिवप्रसाद गुप्त और बांदे के कुंवर हरप्रसाद जी ने बड़े ओजस्वी शब्दों में किया। बाबू शिवप्रसाद जी ने कहा, कि मुझे स्मरण है, कि हिन्दू विश्वविद्यालय की चर्चा जब सन् १९०५ ई० में पूज्यपाद मालवीय जी ने उठाई थी, तब उन्होंने कहा था, कि शिक्षा का माध्यम अङ्गरेज़ी होने से सर्वसाधारण में शिक्षा का प्रचार अच्छी तरह नहीं होता। इस के बिना कारीगरी का भी अभाव होता जाता है। जब तक हिन्दी की शिक्षा शुरु से अखीर तक हिन्दी में न दी जायगी, तब तक देश का कल्याण न होगा। इसी लिये एक हिन्दू विश्वविद्यालय का प्रयोजन है। सन् १९११ के अकतूबर तक मालवीय जी का यही स्वर रहा। किन्तु सन् १९१२ में उन्होंने हिन्दू-विश्वविद्यालय प्रतिष्ठित करने के लिये समिति बनाई, उसी समय हिन्दी की जड़ में कुठाराघात हुआ। किन्तु यह बात नहीं, कि मा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लवीय जी के कारण यह बात हुई है, वे अभी तक इस के यत्न में हैं। हिन्दूविश्वविद्यालय में हिन्दी का माध्यम न होने से सारे हिन्दी भाषा भाषियों में अत्यन्त असन्तोष फैला हुआ है। और देशों में अपनी मातृभाषा में शिक्षा दी जाती है, विश्वविद्यालय की जितनी [illegible] होती हैं, सब अङ्गरेज़ी में। सिर्फ़ [illegible] कागज़ मुझे हिन्दी में छपा मिला [illegible] हो जाने पर निकला [illegible] और सञ्चालकों की इस [illegible] का कारण मैं हृदयङ्गम नहीं [illegible]। जो कामसो वर्ष से अङ्गरेज़ी [illegible] शिक्षा प्राप्त हम न कर सकें, मात्र [illegible] में शिक्षा प्राप्त कर जापानियों ने उससे सहस्रगुण अधिक कर लिया है। हिन्दू-विश्वविद्यालय में शिक्षा का माध्यम हिन्दी न रखने के विरुद्ध हमें बड़े ज़ोरों की आवाज उठानी चाहिये। यदि वे हमारे भाई हमारी बात न सुनें तो अगले चुनाव में उन्हें हिन्दू-विश्वविद्यालय से अलग कर दीजिये; उन्हें कार्य्यकर्त्ता न चुनिये। जब तक वे स्वीकार न करलें, कि हिन्दी ही हिन्दू-विश्वविद्यालय के नीचे से ऊपर के सभी कक्षाओं में माध्यम न होगी, तब तक हमें चैन की नींद सोने न देना चाहिये। यदि हिन्दी ने इस विश्वविद्यालय में स्थान न पाया, तो हम समझेंगे, कि जिस तरह अनेक भांति से हमारे रुपये नष्ट होते हैं, ये एक लाख भी उसी तरह पानी में गये। इस प्रस्ताव को आप सजीवता से स्वीकार कीजिये और हिन्दूविश्वविद्यालय में हिन्दी को सर्व्वोच्च स्थान देने के लिये ऊंची आवाज उठाइये; क्योंकि हिन्दूविश्वविद्यालय के सञ्चालक ऊंचा सुनते हैं, कान से कम सुनते हैं।

कुंवर हरप्रसाद जी ने इसके समर्थन में कहा, कि हिन्दूविश्वविद्यालय में हिंदी द्वारा ही शिक्षा दी जाये। अंगरेज़ी सिर्फ़ भाषा की भांति पढ़ाई जाये। हिन्दूविश्वविद्यालय का प्रस्ताव उठाते और चन्दा लिखाते समय हमसे कहा गया था, कि हिन्दूविश्वविद्यालय का सारा काम हिन्दी में होगा। पर कार्य्यालय में सञ्चालकों ने कमज़ोरियां दिखाई। उन की इन कमजोरियों के दूर करने का हमें प्रयत्न करना चाहिये। यदि हिन्दूविश्वविद्यालय में हिन्दी द्वारा शिक्षा न दी गई, तो हमें इस बात का दुःख होगा, कि यदि हम इस एक करोड़ रुपये को देश में प्राइमरी शिक्षा के प्रचार में लगाते तो देश बहुत कुछ शिक्षित होता; पर विश्वविद्यालय से हमारा कुछ भी उपकार न हुआ। हमें चाहिए, कि हम हिन्दू-विश्वविद्यालय में हिन्दी का प्राधान्य रखने के लिए आकाश को पाताल और पाताल को आकाश करदें।

इस विषय में श्रीयुक्त घनश्यामसिंह और श्रीयुक्त घनश्यामसिंह वकील ने भी अच्छा कहा था।

शिक्षा का प्रचार भारत में सर्वत्र देशी भाषा में रखने वाले प्रस्ताव को उपस्थित करने के लिए श्रीयुक्त माधवराव सप्रे उठे। आपने एक बड़ी भूमिका के साथ कहा, कि शिक्षा का अर्थ है, स्वावलम्बन का भाव उत्पन्न करना, हमने अबतक जो पाई है, उससे वह हमें नहीं मिला। जब तक देशी भाषा में शिक्षा न दी जायगी, तब तक हमें वह मिलेगा भी नहीं। इस प्रस्ताव का अनुमोदन श्रीप्रकाश जी एम० ए० ने किया। इन्हों ने कहा, कि मुझे हिन्दी से कुछ प्रेम न था। पर जब मैं विलायत पढ़ने के लिए गया तब मेरे एक पहपाठी अंगरेज मित्र मुझ से मिलने मेरे डेरे पर आये। उस समय मेरी अंगरेज़ी में लिखी रोजनामचा बही खुली पड़ी थी। उन्होंने मेरा अपमान करने की इच्छा से पूछा, कि क्या तुम्हारी अपनी कोई भाषा नहीं, कि जिससे तुम अपना रोजनामचा तक लिख सको। इस बात से मेरे हृदय पर बड़ी चोट आई और मैंने उसी दिन से प्रतिज्ञा करली, कि बिना विशेष आवश्यक के मैं कोई काम विदेशी में न करूंगा। यही कारण है, कि हमें अपने बालकों को मातृभाषा के द्वारा ही शिक्षा देनी चाहिये। उससे बहुत जल्द हमारे ज्ञानचक्षु खुल जायेंगे।

इसका समर्थन पं० लक्ष्मीधर वाजपेयी ने बड़े अच्छे ढंग से किया।

इसके बाद मन्त्री की रिपोर्ट पढ़ी गई। इस में बहुत कुछ जानने की बातें थीं। इस में सम्मेलन द्वारा हिन्दी-परीक्षाओं का भी जिक्र था और कहा गया था, कि धीरे धीरे यह शिक्षा एक बहुत बड़ा रूप धारण करेगी और सम्भवतः एक हिन्दी-विश्वविद्यालय में परिणत हो सकती है। बाद परीक्षा-समिति के मन्त्री ने अपना विवरण और परीक्षोत्तीर्णों को सनद प्रदान किया।

पश्चात् श्रीमती गोदावरी बाई नाम्नी एक महाराष्ट्र नार्मल-पास महिला ने हिन्दी में वक्तृता की। कहा कि मैं एक हिन्दी-शाला की अध्यापिक हूं। मुझे वक्तृता देने के लिए खड़ी होते देख आप को विस्मय और शोक दोनों होता होगा। जहां महाराष्ट्रजाति है, कन्या पाठशालायें हैं, वहां हिन्दी का प्रबन्ध होना चाहिये। महाराष्ट्र-क्षेत्र में हिन्दी का बीज बोना चाहिये। नहीं समझते, कि सम्मेलन में स्त्रियों को क्यों निमन्त्रित नहीं किया जाता। अवश्य होना चाहिये।

इसके बाद दो-एक प्रस्ताव सभापति जी ने उपस्थित किये। वे पास हुए।

पश्चात् बम्बई और मदरास विश्वविद्यालयों में हिन्दी को स्थान न मिलने के कारण एक गुजराती, एक महाराष्ट्र और एक मदरासी सज्जन ने शोक प्रकट किया और सरकार से प्रार्थना की, कि वह अवश्य उन में हिन्दी को स्थान दे। इन तीनों सज्जनों का व्याख्यान बहुत ही मज़ेदार हुआ था।

इसके बाद बाबू श्यामसुन्दरदास ने बड़े ही सुन्दर ढंग से पैसे-फण्ड की अपील की इसका समर्थन करते हुए माननीय पंडित विष्णुदत्त शुक्ल ने वितीन शब्दों में प्रार्थना की, कि हिन्दी माता की सहोयता में आप लोग कुछ कुछ पैसे दीजिये। शुक्ल जी ने चादर फैला भिक्षा मांगी थी। तुरत चन्दा प्रारम्भ हो गया। और बहुत सा चन्दा हुआ।

रात विषय निर्द्धारिणी समिति बैठी थी, उसने अगले दिन के लिये कार्यवाही आदि निश्चय किया।

(पाटलिपुत्र से)

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आस्तिक दयानन्द

गतांक से आगे

जिस समय उन्होंने परमात्मा को समझ लिया और एक सच्चे आस्तिक का रूप धारण कर लिया उसी समय से उन्होंने संसार में से क्लेश को दूर करने में परमात्मा के युक्त प्रतिनिधि बनने के लिए कदम भी बढ़ा दिया। वे संसार में उस अपार दयामय की वेद रूपी शिक्षा के द्वार बने, उसकी दया के स्रोत बने, प्रेम के पूज्य बने और न्याय के दण्ड बने। वेद की सचाई के फैलाने में उन्होंने बड़े से बड़े कष्ट सहे और सामने आए हुए बड़े से बड़े लालच को लात मार कर अलग होगए, और अपने स्थान पर दृढ़ खड़े रहे। उनके जीवन से ऐसे अनेक उदाहरण दिखाए जा सकते हैं किन्तु उन सब के यहां देने की आवश्यकता नहीं।

जिस समय उदयपुर के महाराज ने उन्हें लाखों का लालच दिखा कर मूर्ति पूजा के खण्डन से रोकना चाहा तब उन्होंने गम्भीर भाव से केवल यही कहा कि "राजन्! आप मुझे लालच देकर सर्व शक्तिमान् ईश्वर की अवज्ञा करने पर उद्यत किया चाहते हैं ये आपके मन्दिर और ये आपकी छोटी सी रियासत जिसे मैं एक दौड़ में पार कर सकता हूं मुझे किसी दशा में भी उस परमेश्वर के विरुद्ध नहीं कर सकते जिसके राज्य से कोई कभी किसी प्रकार से भी बाहिर नहीं जा सकता।" यह वाक्य जहां उनकी असीम दृढ़ता के परिचायक हैं वहां स्पष्टतया यह भी प्रकट करते हैं परमात्मा की सर्वशक्तिमत्ता, अमरता, और अनन्तता पर उनका कितना अगाध विश्वास था। यह बात हुई जो कि बतलाती है कि प्राकृतिक सम्पत्तियें उन्हें परमात्मा के विरुद्ध कहां तक खैंच सकती थीं किन्तु आगे भी सुनिए। कर्णवास में रईस करणसिंह ने क्रोध में आकर उन पर तलवार चलाई। उस समय उन्होंने धीरतापूर्वक रईस को धक्का देकर परे किया और उसके हाथ से तलवार छीन ली और कहा "अरे धूर्त! यदि शस्त्रार्थ करना है तो धौलपुर और जयपुर के राजाओं से जा लड़ो और यदि शास्त्रार्थ करना है तो वृन्दावन से अपने गुरु को यहां बुलवा लो।" इस प्रकार से आपने देखा कि यह तलवार भी उन्हें अपने उद्देश्य से न गिरा सकी और प्राकृत सम्पत्तियों के साथ साथ प्राकृत शक्तियों की भी हार होगई। उन्होंने कितने ही स्थानों पर इस से भी अधिक धीरता और साहस दिखाया। जोधपुर की कथा आज कल सर्व विदित हो चुकी है उसमें साफ मालूम होता है कि अत्याचार करने वाली राजकीय शक्तियां उन्हें किस हद्द तक डरा सकती थी। उनकी यह निर्भीकता और आसीक दीख पड़ता है। जब वे लाहौर में एक मुसलमान नवाब के घर पर मुहम्मदी मत का खण्डन करते हुए निःशंक होकर कहते थे कि मैं यह सब कुछ जान बूझ कर करता हूं मुझे सिवाय परमात्मा के और किसी का भय नहीं है। ये दो चार घटनाएं हैं जिनसे साफ मालूम देता है कि आस्तिकता के भेद में उन्हें इस बात का ध्यान भी नहीं आता था कि उनके विरुद्ध कितनी मानवीय शक्तियां इकट्ठी हो रही थीं।

इस अनुप दृढ़ता उत्साह और आत्म-विश्वास के साथ २ उस आस्तिक आत्मा में एक और नई बात दीखती है जो ठीक ऐसी ही मालूम होती है जैसे कि परमात्मा में न्याय के साथ दया दीखती है। वह उसका प्रेममय हृदय है कुम्भ के मेले पर लोगों की दुर्दशा देख उस का हृदय करुणा से आदर हो आया उस अविद्यान्धकार से आवृत्त हुए पुरुषों पर दया आई फिर उसने ईर्षा तथा द्वेष रूपी सांप बिच्छुओं से ग्रस्त होकर विष तक देने वाले मनुष्यों पर प्रेम किया और अन्त में अपना सर्वस्व उन्हीं पर न्यौछावर किया। उसके सामने तलवार की धारायें चमकीं और विष के प्याले आए किन्तु उसने इन तलवार चलाने वालों और विष देने वालों की ओर एक बार भी बुरी नज़र से नहीं देखा। ये लोग पकड़े गए तो उसने पकड़ने वालों से केवल यही कहा कि "मैं संसार को कैद से छुड़ाने आया हूं कैद कराने नहीं आया इस लिए तुम इन्हें छोड़ दो। यदि यह लोग अपनी दुष्टता नहीं छोड़ते तो हम अपनी श्रेष्ठता क्यों छोड़ें।" उसने अपने घातक से भी कोई शब्द कहे तो वे यही थे कि "जगन्नाथ तुमने अच्छा नहीं किया अभी मेरा काम समाप्त नहीं हुआ था" इसके अतिरिक्त उन्होंने कोई भी गुस्से का शब्द नहीं कहा। वास्तव में शक्तिहीन पर ऐसा प्रेम दिखाना किसी २ आस्तिक का ही काम होता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि उनमें निःसीम दृढ़ता तथा प्राणिमात्र के लिए निःसीम प्रेम था। इसका कारण केवल एक ही है और वह यह है कि उन्हें ईश्वर पर भी ऐसा ही निःसीम विश्वास था। वे अपने को निरन्तर एक ऐसे आधार पर खड़ा पाते थे जिसको विरुद्ध कोई भी सांसारिक शक्ति सफलता प्राप्त नहीं कर सकती। इसी लिए वे इतने दृढ़ बने रहते थे। और वे प्राणिमात्र से प्रेम इस लिए करते थे कि उन्हें सारा विश्व ईश्वरमय दीखता था और उनका ईश्वर से पूर्ण प्रेम था। ये दो बातें जो उनकी आस्तिकता को प्रकट करती हैं और ये ही दो बातें हैं जो आस्तिक जीवन बनाने वालों को अपने में ग्रहण करनी चाहिएं। इसके लिए बड़े गम्भीर विचार की आवश्यकता है। उन्होंने संसार और अनन्तता की देर तक भली प्रकार देख भाल की और देखा कि प्रति दिन अनन्तता बढ़ती जाती है और संसार तीक्ष्ण होता जाता है। इसी लिए उनका अनन्त शक्ति से प्रेम बढ़ता गया और अन्त में जब कि वे इस लोक से चलने लगे तब जैसे उन्हें संसार में रहते हुए किसी भी पदार्थ से विरक्ति नहीं थी (सबके ईश्वरमय होने के कारण) उसी प्रकार किसी पदार्थ से अनुरक्ति भी नहीं हुई। उन्होंने बड़ी शान्ति और सुख के साथ अपनी आत्मा को ऊपर उठाया और जगन्माता की पावनी गोद में धर दिया धन्य है ऐसे आत्मा जिन्होंने ऐसा पवित्र जीवन व्यतीत किया और संसार को वह उज्वल ज्योति दिखाई, जिससे बहुत से सांसारिक जीवन अपने आपको पवित्र कर सकते हैं। आओ आज के दिन हम सब भी उस आस्तिकता को प्राप्त करने के लिए उसी ज्योति के प्रकाश में खड़े होकर परमात्मा से प्रार्थना करें कि—

"हे हरे! अविद्यारूपी अन्धकार के नियारक जगदीश्वर हमें दृढ़ करो कि हम सब निरन्तर आप ही की दृष्टि के नीचे जीते रहें। और सब प्राणि हम से प्रेम करें हम भी सब प्राणियों से प्रेम करें और इस प्रकार समस्त संसार में प्रेम का राज्य फैल जावे।" इतिशम्

विनायक

CCO, Gurukul Kangri Coll...

सामाजिक समाचार

आर्यकुमार सभा लुधियाना का वार्षिकोत्सव १६, १७ दिसम्बर को होगा

—:o:—

आर्य अनाथालय मुंगेर के मन्त्री महोदय सूचना देते हैं कि अनाथालय की तीन कन्याओं के विवाह तीन आर्यसज्जनों से हो गये। ये आर्य सज्जन विविध स्थानों के थे।

—:o:—

रयासत पटियाले के तलवण्डी गांव में स्वामी विज्ञान भिक्षु जी के ६ बड़े प्रभाव शाली व्याख्यान हुए। लोगों ने उत्साहित हो कर नया आर्य समाज स्थापित कर दिया।

—:o:—

[illegible] पुर में आर्यसमाज की स्थापना हो गई है [illegible] की बात है कि प्रारम्भ से ही इस समाज ने बड़ी उत्तमता से कार्य प्रारम्भ किया है। शहर के मध्य में अपना स्थान भी हो गया है। आवश्यकता यह है कि समीप २ की प्रतिनिधि-सभाओं के उपदेशक लोग इस समाज में समय २ पर पधारते रहें और लोगों को उत्साहित करते रहें।

—:o:—

पं० जगत नारायण जी ने आर्यसमाज मानसा में २३-७-७३, से २६-७-७३ तक खूब प्रचार किया। प्रभाव उत्तम रहा।

—:o:—

कन्या ब्रह्मचर्य्याश्रम ठट्ठा

कराची के निकटस्थ जुङ्गशाही नामक स्टेशन से लगभग १३ दशमील की दूरी पर ठट्ठा नामक नगर इसी नगर में ऊसर भूमिको भी ज्ञानामृत वृष्टि से सिञ्चित करने वाला सुचरित नाम कन्या ब्रह्मचर्याश्रम है इस में लगभग २६ बालायें हैं जिन में ४ से ६ वर्ष तक की १५ बालायें हैं। वर्तमान ७ सात श्रेणियां हैं। अन्य उपयोगी विषयों के साथ तृतीय श्रेणी से संस्कृत प्रारम्भ करादी जाती है, सप्तमश्रेणी में कई एक पंजाब यूनीवर्सिटी की प्राज्ञपरीक्षोपयोगी पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं।

मुझे यहां आये लगभग ३ तीन मास हुए। कन्यायें प्रसन्नचित अपने ब्रह्मचर्य के कठिन नियमों का पालन करती हुई पठन पाठन में दत्तचित्त रहती हैं, प्रातःकाल ४½ बजे छोटी बड़ी सब बालायें उठती हैं, नित्यकर्मानन्तर सब कन्या हवन करती हैं, एवं छोटी बालाओं का शुद्धोच्चारण सहित मंत्र पाठ दर्शकों के सन्मुख प्राचीन गुरुकुल प्रणाली के मनोहर दृश्य को उपस्थित कर देता है। तदनुभोजनादि से निवृत्त हो स्वपितृवर्ग शाटिकाकार्यों से शाला को वसन्त मय करती हुई ११ से ५ पान्च तक शालीय पठन को समाप्त कर शीघ्र ही गृहकार्य में संलग्न हो जाती हैं।

खाना चार बार दिया जाता है प्रातः जुग्ध मध्यान्ह समय भोजन सायं फलादि रात्रि भोजन, आश्रमशुल्क ६) मात्र है पुस्तकें तथा वस्त्रादि कभी यहीं से दिए जाते हैं। कुछ छात्रायें बिना शुल्क भी शिक्षा पा रही हैं।

स्वास्थ्य समाचार—ऋतु इस वर्ष अति वृष्टि के कारण अच्छी न होने के कारण रुग्णालय में मौसमी ज्वर पीड़ित कन्यायों की संख्या अधिक रही, न केवल आश्रम की ही ऐसी दशा थी अपितु ठट्ठा भर में फीसदी ६० ज्वरपीड़ित रहे सम्प्रति ईशकृपा तथा डाक्टर कल्याणदास जी असिस्टेण्ट सर्जन के उद्योग से सब कन्यायें स्वस्थ हैं।

वाग्वर्द्धनी सभा—शनिवार के दिन यह सभा जिस के उद्देश्य नाम के अनुसार ही होती है कन्यायें विविध विषयों पर कविता तथा प्रस्तावादिक तैय्यार करके सुनाती हैं और विविध विषयों पर सम्वाद करके अपनी तर्क शक्ति को बढ़ाती हैं।

भवदीया भगिनी
कु० द्रोपदी देवी शास्त्रिणी
आचार्या श्री कन्या ब्रह्मचर्याश्रम
ठट्ठा (सिन्ध)

—:o:—

लायलपुर

आर्यसमाज लायलपुर का वार्षिकोत्सव १५ कार्तिक को निर्विघ्न तथा आनन्द के साथ समाप्त हुआ। १२ कार्तिक को नगर कीर्तन था। म० गिरधारीलाल तथा म० विष्णुदत्त के भजनों से नगर निवासी बड़े प्रसन्न हुए। स्वामी अच्युतानन्द जी, स्वामी सर्वदानन्द जी, स्वामी विज्ञान भिक्षु जी, पं० जितेन्द्रिय जी, पं० चन्द्रभानु जी तथा पं० नन्दकिशोर जी शास्त्री आदि उपदेशक पधारे थे। जिनके उपदेशों तथा व्याख्यानों का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। १४ कार्तिक को पुत्री पाठशाला की रिपोर्ट सुनाई गई। श्रीमती लक्ष्मीदेवी ने छात्राओं को पारितोषिक वितीर्ण किया और स्त्री-शिक्षा पर, सहस्रों नर नारियों की उपस्थिति में, एक मनोहर व्याख्यान दिया, जिस का प्रभाव अत्युत्तम पड़ा। पं० चन्द्रभानु जी के अपील करने पर विविधनिधियों के लिए १५६४-)६ नकद तथा ११८॥) की प्रतिज्ञाएं हुईं जो शीघ्र प्राप्त हो जायंगी।

१५ कार्तिक को स्त्री समाज में श्री पण्डिता लक्ष्मी देवी तथा माई गंगादेवी के प्रभाव शाली व्याख्यान हुए और अपील पर १११) एकत्रित हुए। रात्री को स्वामी सर्वदानन्द जी का व्याख्यान हुआ जिस ने उपस्थित जनता को मोह लिया था। स्वामी जी ने नगर के समीप श्मशान भूमि में एक "नरमेधवेदी" जिस पर यजुर्वेद का मन्त्र "भस्मान्त शरीरम्" अर्थ सहित लिखा हो, बनवाने को कहा। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि स्त्री समाज ने इस वेदी के बनवाने का पूरा भार अपने ऊपर ले लिया है।

—o—

अम्बाला

आर्यसमाज अम्बाला छावनी के वार्षिकोत्सव पर दो दिन प्रातः १० बजे से १२ बजे तक कानफरन्स हुई, जिस में आर्य भाइयों ने खूब दिलचस्पी ली। उप सभा की ओर से कानफरन्स का प्रबन्ध किया गया था. सारे अम्बाले प्रान्त के भाई इस में सम्मलित थे। कालिज के भाइयों ने भी उदारचित से इस में हिस्सा लिया। पहली कानफरन्स इस विषय पर थी कि अम्बाला प्रान्त में किस रीति से आर्य समाज का प्रचार सुगमता से हो सक्ता है। इस दिन के सभापति म० सुन्दरसिंह जी B.A.B.T. थे जो आर्यसमाज के पुराने सेवक हैं और आर्य सिद्धान्तों से पूरी वाकफीयत रखते हैं।

बहुत से महाशयों ने वक्तृता की—अन्त में निम्नलिखित प्रस्ताव पास हुए।

(१) अम्बाला प्रान्त में प्रचारार्थ उपसभा तथा इसी तरह दूसरे प्रान्तों में भी उपसभा बनाई जावें जो सभा के आधीन हों।

(२) उपसभा के उपदेशकों का फर्ज हो कि वह जिस समाज में जावें उस समाज के सभासदों का आचार देखकर यदि कोई कमजोरी हो तो उस को ठीक करने का यत्न करें।

(३) सेवा समिति हर एक ग्राम व नगर में हों जो हर एक प्राणी मात्र की सेवा करना अपना कर्तव्य समझें।

(४) हर एक समाज अपने सभासदों को आर्य जीवन व्यतीत करने में कोशिश करने की तरफ़ अधिक प्रेरणा करें और केवल फ़ीस एकत्र करने वा देने से ही उस को आर्य समझने का धन्दा छोड़ दें।

सर्व सम्मति से सब प्रस्ताव पास हुये

दूसरे रोज़ की कार्य्यवाही

दूसरे दिन की बैठक के प्रधान श्री बाबू अलखधारी जी थे। बाबू अलखधारी जी इस समाज के प्रधान रह चुके हैं और अपनी विद्वत्ता के कारण आज ग्वालियर के Inspecter General of Commerce & Industry हैं। आप की योग्यता को सरकार भी मान की दृष्टी से देखती है।

इस दिन का विषय बड़ा मनोरञ्जक था। वह था शुद्धी किसकी और किस रीति से होनी चाहिये—इस में भी बहुत से भाइयों तथा उपदेशकों तथा गुरुकुल के स्नातक पं० जयदेव जी ने भी वक्तृता की। इस दिन कोई प्रस्ताव पेश नहीं किया गया परन्तु इस दिन परस्पर खियालात का तबादला खूब हुआ। श्री प्रधान जी ने भी थोड़ी परन्तु गम्भीरता से पूर्ण वक्तृता की।

इस तरह दोनों दिन की कार्य्यवाही बहुत अच्छी तरह समाप्त हुई।

भानाराम
प्रधान उपसभा

—o—

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered No. A, 434

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १८ मार्गशीर्ष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २ दिसम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३३ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य-पथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्य-उपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृतप्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सक्ता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिये लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेदमन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तार पूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला उदयलालसहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि लुआ लूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उस के आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन के ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य-मात्र को इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस शेरपुर-काकड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	...	...	३)
विद्यार्थियों से	...	...	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	...	...	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

CCO, Gurukul Kangri Collection

धार्मिक स्वाध्याय

आत्मा के दर्शन

कठोपनिषद् से

(४)

आत्मा के विषय में श्रवण करके, और ज्ञान का ग्रहण करके, धर्म के मार्ग को उत्साह पूर्वक लेकर, और आत्मा के अणु स्वरूप को जानकर, वह ज्ञाता आनन्द देने वाले पदार्थ को पालेता है, और आनन्द का उपभोग करता है। मैं समझता हूं कि तेरे लिए (ज्ञान का) घर खुला हुआ है। १३।

(इस उपदेश की भूमिका को सुनकर नचिकेता पूछता है)

नचिकेता

धर्म और अधर्म से पृथक्, किये और न किए हुए कामों से जुदा, भूत और भविष्यत् से भी अन्यत्र, जो कुछ तुम देखते हो, उसका मुझे उपदेश करो। १४।

मृत्यु

सारे वेद जिस पद का प्रतिपादन करते हैं, सारे तप जिस पद का उपदेश करते हैं, जिसकी इच्छा से ही लोग ब्रह्मचर्य का सेवन करते हैं, उस 'ओम्' इस पद की मैं संक्षेप से व्याख्या करता हूं। १५।

यह 'ओम्' अक्षर निश्चय से ब्रह्म का नाम है, यह 'ओम्' अक्षर निश्चय से परमात्मा का नाम है। इस अक्षर का परिज्ञान करके जो मनुष्य जिस अर्थ को चाहता है, उसे पालेता है। १६। इसी 'ओम्' नाम के परमात्मा का आश्रय लेना उत्तम है, इसी का आश्रय लेना अच्छा है। इस आलम्बन रूप परमात्मा को जान कर मनुष्य ब्राह्मणों के संसार में पूज्य होजाता है। १७। यह ज्ञान स्वरूप परमात्मा न उत्पन्न होता है और न मरता है; न यह कहीं से आया है, और न पहले किसी अन्य रूप में था। यह अजन्मा, नित्य, शाश्वत और अति प्राचीन परमात्मा इस मनुष्य देह या प्रकृति के स्थूल जगद्रूपी देह के छिन्न भिन्न किये जाने पर छिन्न भिन्न नहीं होता। १८। जो मरने वाला समझता है कि उसने इसे मार दिया, या जो प्राणि मारा जाता है वह समझे कि उसका अन्तर्भूत आत्मा मर रहा है, तो वे दोनों ही नहीं जानते (क्योंकि) यह न मारता है और न मारा जाता है। १९। इस प्राणि का आत्मा सूक्ष्म से सूक्ष्म, और (शक्ति रूप से) महान् से भी महान् है, और हृदय में स्थित रहता है। जो मनुष्य कर्म बन्धनों में बंधा हुआ नहीं है, और जिसके शोक दूर होगये हैं, ऐसा पुरुष परमात्मा की कृपा से आत्मा की महिमा को जान सकता है। २०। यह आत्मा अभी स्थिर रूप से बैठा हुआ दूर चला जाता है, और सोया हुआ भी (स्वप्नावस्था में) चारों ओर घूमता है। कभी सुख और कभी दुःख भोगने वाले इस तेजस्वी को मेरे सिवाय और कौन जान सकता है। २१। जो यह शरीर रहित है, तो भी चंचल तथा अनित्य शरीरों में निवास करता है। ऐसे महान् शक्ति द्वारा विभु आत्मा को जान कर बुद्धिमान पुरुष शोक में नहीं पड़ता। २२।

यह आत्मा उपदेश द्वारा प्राप्त नहीं होसकता केवल बुद्धि द्वारा इसे जानना कठिन है, और बहुत शास्त्र श्रवण से भी इस का ज्ञान नहीं होता। जिसे यह स्वयं वर लेता है, उस द्वारा यह लभ्य होजाता है। इस प्रकार के (आत्मस्वरूपार्थी के सामने आत्मा स्वयं ही अपने रूप को प्रकाशित करदेता है। २३।

जो पाप से नहीं हटा, जो अशान्त है, समाधिस्थ नहीं है, और शान्तमन वाला नहीं है, ऐसा पुरुष केवल ज्ञान से इसको नहीं प्राप्त कर सकता। २४।

जिस आत्मा के (ब्रह्म) ज्ञान और (क्षत्रम्) कर्म (ओदन) प्राणाधार भोजन के समान हैं, मृत्यु जिसका (मारने वाला नहीं अपितु,) सहायक है, वह कहां रहता है-यह कौन जानता है ?

द्वितीय वल्ली समाप्त

शङ्का समाधान

प्रश्न (१) मनुष्य की आयु बढ़ती है या नहीं ? अगर बढ़ती है तो क्या परमात्मा को इस का ज्ञान नहीं था, कि यह कब मरेगा ? क्योंकि हमने अच्छे आचरण किये तो बढ़ेगी, अगर बुरे किये तो घटेगी, तो इस से यह साबित होता है कि परमात्मा एक बार उमर नहीं रखता, क्योंकि उस को ठीक मालूम नहीं अगर कहो कि मालूम है तो यह अच्छे कर्म करेगा या बुरे, और परमात्मा उस मनुष्य की उतनी ही उमर करदेता है तो उमर घटती बढ़ती नहीं।

(२) दूसरा प्रश्न यह है कि अकाल मृत्यु होती है या नहीं ? यदि होती है तो परमात्मा को उसका कोई ज्ञान नहीं, क्योंकि यदि पता हो तो कसाई को बकरा मारने पर कोई पाप न होगा। क्योंकि उस की तो मृत्यु उस दिन थी ही। फिर कसाई को पाप कैसा ? कसाई न मारता तो भी बकरा मर ही जाता।

शेरसिंह
सिपाही नं० २३६४
सिग्नेलर, लखनऊ

उत्तर—(१) पहले प्रश्न का उत्तर तो यह है कि मनुष्य की आयु कर्मानुसार घटती बढ़ती है। नित्य जीवात्मा के लिए जीना मरना साधारण घटना मात्र है, जैसे छोटे २ सुख दुःख कर्मों के फल हैं, वैसे ही जीना मरना भी। जैसे पूर्व कर्म होंगे, वैसा ही फल होगा। जब मनुष्य उत्पन्न होता है तब साधारणतया मनुष्य की आयु निश्चित होती है, किन्तु मनुष्य अपने अति प्रबल अच्छे या बुरे कर्मों से उसे घटा या बढ़ा सकता है। परमात्मा त्रिकालज्ञ है। तीनों कालों की बातों को जानता है, इस लिए मनुष्य के होने वाले जीवन मरण की सारी अवस्था को जानता है। उसी के नियमों से मनुष्य के जीवन मरण की अवधि निश्चित होती है।

अब प्रश्न यह रहजाता है कि क्या इसी जीवन में किये कर्मों से मनुष्य की मृत्यु पास या दूर आजा सकती है या नहीं ? इस जीवन में किए हुए कर्म मनुष्य को फल देते हैं, जैसे रोटी खाने से भूख मिट जाती है। परोपकार करने से आत्मा को सुख होता है। इसी प्रकार हमारे इस जीवन के कर्म हमारी मृत्यु पर भी कुछ न कुछ असर डाल सकते हैं।

परमात्मा इस सारी व्यवस्था को अपने नियमानुसार चलाता है और मनुष्य के कर्मानुसार फल देता है। ईश्वर स्वयं अपनी इच्छा से आयु नहीं बढ़ता किन्तु कर्मानुसार ही बनाता है इस लिए उसकी सर्वज्ञता में कोई त्रुटि नहीं आती।

(शेष अगली बार)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक।

समाजों के साप्ताहिक अधिवेशन

(१)

आर्य्य समाज का स्थायी कार्य आर्य-सभासदों के जीवनों को वैदिक सिद्धान्तों के अनुकूल बनाना है। किसी भी धार्मिक समाज का इस से बढ़ कर आवश्यक कोई अन्य कार्य नहीं हो सकता। वैदिक-धर्म का प्रचार दूसरे दर्जे पर आता है। वही समाज अपने सिद्धान्तों का प्रचार कर सकता है, जो स्वयं उन के अनुकूल आचरण करता है। जिस समाज में धार्मिक जीवन व्यतीत करने वाले सदाचारी पुरुषस्त्री नहीं हैं—वह धर्म के प्रचार में कृतकार्यता लाभ नहीं कर सकता—पहले आत्मसुधार —फिर दूसरे का सुधार। यही क्रम सारे संसार में देखा जाता है। आर्यसमाज भी उस क्रम को तोड़ नहीं सकता।

आर्यसमाज को अपना प्रोग्राम बनाते हुए यह सिद्धान्त दृष्टि में रखना चाहिए। 'प्रचार' के मोहने नाम ने हमें ऐसा मोह लिया है कि हम 'आत्मसुधार' के कम मोहने वाले किन्तु अधिक आवश्यक नाम को सर्वथा भुला बैठे हैं। आर्यसमाज का कार्य 'वेद प्रचार' तो है ही किन्तु उससे भी बढ़कर आवश्यक कार्य 'आत्मसुधार' है। हमने इस सिद्धान्त को बहुत कुछ भुला दिया है—इसका एक प्रमाण हमारे साप्ताहिक अधिवेशनों की कार्यवाही है।

साप्ताहिक अधिवेशनों की रीति ऋषि दयानन्द ने किस लिए चलाई। जहां तक हम जान सके हैं, यह स्पष्ट ही प्रतीत होता है कि साप्ताहिक अधिवेशनों के तीन उद्देश्य थे—(१) आर्यसमाज के सभासद् तथा सहायक सप्ताह में कम से कम एक बार मिलें और अपने जीवनों को आर्य आदर्शों के अनुसार बनाने के साधनों पर विचार करें। (२) परस्पर मिलकर प्रार्थना उपासनादि द्वारा धार्मिक भावों को दृढ़ करें और दूसरों पर भी अपने धर्म का गौरव प्रकाशित करें। (३) और आर्यसमाज के कार्य की उन्नति पर प्रेम पूर्वक विचार करें। ये तीन ही उद्देश्य हैं, जिन्हें लेकर साप्ताहिक अधिवेशनों की प्रणाली प्रारम्भ की गई। केवल प्रचार के कार्य के लिए साप्ताहिक अधिवेशनों की आवश्यकता नहीं, और समाजमन्दिर की भी जरूरत नहीं। यदि साप्ताहिक अधिवेशनों का उद्देश्य व्याख्यान करना या कराना ही होता, या यदि संगीत गाना या सुनना ही होता तो फिर मकान खड़ा करने की क्या आवश्यकता थी? कहीं भी नगर के चौक में या धर्मशाला में या मैदान में ही गान और व्याख्यान होसकते थे। समाज मन्दिर बनाने और साप्ताहिक मेल जोल करने का यही उद्देश्य था कि आर्यपुरुष अपने परिवारों के सहित इकट्ठे हों, परमात्मा की प्रार्थना उपासना और धर्मोपदेश के पीछे आत्मसुधार के साधनों पर विचार करसकें, और अन्य बाहिर के लोगों को भी धार्मिक जीवन का महत्व समझा सकें।

अवश्य ही अनेक स्थानों में साप्ताहिक अधिवेशन के इन असली उद्देश्यों को समझ कर तदनुसार ही कार्य किया जाता है। किन्तु सब स्थानों में ऐसा नहीं है। साप्ताहिक अधिवेशनों की कार्यवाहियां भिन्न २ रीति से की जाती हैं। कई स्थानों पर कार्य हवन से प्रारम्भ किया जाता है। हवन के पीछे एक दो भजन करके सब लोग मिलकर सन्ध्या का पाठ करते हैं। फिर दो एक भजन होकर उपासना की जाती है। तदनन्तर कोई उपदेश और वह न होसकें तो व्याख्यान होजाता है। अन्त में एक दो भजन कर के आरती होजाती है। समाज या तो प्रातः काल ८ या ९ बजे से होता है, या सायं को ६, या ७ बजे से। आरती समाप्त होते २ भोजन का समय हो जाता है। या तो दोपहर के ११ बज गए या रात के ९ बज गये। सब सज्जन अपने २ स्थानों को चले जाते हैं।

इस कार्य्यवाही में से किसी ने एक बात छोड़ दी, किसी ने दो छोड़दीं। कहीं २ सामाजिक पत्रों से लेख भी सुना दिए जाते हैं, किन्तु लगभग यही कार्य, ही भिन्नरूप से की जाती है। हमारी सम्मति है कि जहां इस कार्यवाही में कुछ अनावश्यक भाग आजाता है वहां कुछ आवश्यक भाग छूट भी जाता है। इस के परिपूर्ण करने के लिए दो एक कामों के बढ़ाने की आवश्यकता है। साथ ही यह भी परम आवश्यक है कि जहां तक सम्भव हो, सब समाजों में कार्यवाही एक ही प्रकार से हो। सौन्दर्य इसी में है। ऐसी प्रबल संगठन शक्ति होते हुए भी यदि आर्य समाज अपनी साप्ताहिक अधिवेशन की कार्यवाही को एक सी नहीं कर सकता तो हम लोगों की निर्बलता के सिवाय क्या समझा जासकता है।

पहले हम इस कार्य रीति के कई भागों पर एक सरसरी दृष्टि डालेंगे और फिर उचित कार्य रीति पर अपनी तुच्छ सम्मति देंगे।

(१) अधिवेशन के प्रारम्भ में हवन किया जाता है, इस के विषय में एक निश्चय करना कठिन है। बात यह है कि अधिवेशन के लिए सब स्थानों पर एक समय नहीं हो सकता। कई ऐसे स्थान हैं जहां दिन के समय समाज का अधिवेशन हो सकता है—कई स्थानों में नहीं हो सकता। कहीं सांझ के समय ही सहूलियत रहती है, और कई स्थानों पर रात को ही लोगों का एकत्र होना सम्भव होता है। जहां प्रातःकाल या सायंकाल के समय समाज का अधिवेशन होता है, वहां प्रारम्भ में हवन होना आवश्यक है। इससे समाज का स्थान पवित्र और सुगन्धित होता है और समाज के कार्य में गम्भीरता और धार्मिकता आती है।

जहां रात के समय समाज किया जाता है—वहां हवन करना ठीक नहीं, क्योंकि वह अग्निहोत्र का काल नहीं है।

इस सम्बन्ध में एक बात ध्यान में रखनी चाहिए। चार पांच सज्जनों को कर्तव्य निश्चित कर देना चाहिए कि वे ऐन आरम्भ पर आकर अग्निहोत्र प्रारम्भ करदें। ऐसा प्रायः देखा गया है कि मन्त्र

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

या प्रधान महोशय समय पर आजाते हैं और प्रतीक्षा करते रहते हैं कि कब कोई अन्य सभासद् आयें तो हवन प्रारम्भ किया जाय। जितने में हवन प्रारम्भ किया जाता है इतने में वे लोग भी जमा होने लगते हैं जो केवल व्याख्यान सुनने ही आते हैं। अधिवेशन प्रारम्भ होने में विलम्ब भी होता है और हवन के समय आगन्तुक लोगों के अधिक आजाने से बातचीत भी प्रारम्भ होजाती है। आवश्यक यह है कि ठीक समय पर पधार कर आर्यसज्जन हवन प्रारम्भ करदें ताकि केवल व्याख्यानों की शौकीन जनता की अशान्ति से इस पवित्र कार्य में अशान्ति न फैले।

एक बात और है। शास्त्रों में लिखा है कि वेद के अशुद्ध उच्चारण से पाप होता है। वेदमन्त्रों के अशुद्ध उच्चारण करने से न करना अच्छा है। आर्यमात्र को यह समझ लेना चाहिए कि शुद्ध मन्त्रोच्चारण करना भी एक धर्म और कर्तव्य है। क्या भद्दा दिखता है जब कोई आर्य समाज के प्रसिद्ध वकील या प्रसिद्ध वक्ता मन्त्रोच्चारण करते हैं और संस्कृत पढ़ने वाले बालक भी हंसते हैं। जिस भाषा में हमारे धर्म ग्रन्थ हैं उनका शुद्ध उच्चारण भी न करसकें यह कैसी लज्जा की बात है। अंग्रेज़ी शब्दों का शुद्धोच्चारण सीखने के लिए भारतवासी डिक्शनरियां घोटते हैं और अंग्रेज़ी प्रोफेसरों के शब्दों पर कान लगाते नहीं थकते, किंतु अपनी संस्कृत भाषा का भद्दे से भद्दा उच्चारण करने में भी संकोच नहीं करते। अग्निहोत्र में जो सज्जन भागलें उनके लिए आवश्यक है कि पहले शुद्ध मन्त्रोच्चारण का अभ्यास करें। पंजाबियों का उच्चार स्वभाव से भारी और ऊंचा होता है। जब कोई पंजाबी सज्जन अपने ऊंचे स्वर से अशुद्ध मन्त्रोच्चारण करते हैं, तो निःसन्देह उनसे भय खाकर यज्ञ के राक्षस भी भाग जाते होंगे।

—:o:—

प्रचारक का विशेष दैनिक

हम अपने पाठकों को एक और हर्ष-समाचार सुनाते हैं। गुरुकुल के उत्सव पर हमने प्रचारक का एक दैनिक संस्करण निकालने का विचार किया है। उत्सव के दिन यह विशेष संस्करण प्रकाशित होगा। गुरुकुल भूमि में आये हुए सज्जनों को संसार के और गुरुकुलोत्सव के समाचार सुनाना तथा सूचनायें देना इस का कार्य होगा।

यह देखा गया है कि उत्सव पर आये हुए सब नरनारी उत्सव की सम्पूर्ण कार्यवाही नहीं देख सकते। उस दैनिक द्वारा पहले दिन की सम्पूर्ण कार्यवाही अगले दिन छप जाया करेगी और उस दिन के आये हुए संसार समाचार भी दिये जाया करेंगे। जो सज्जन उत्सव के दूसरे या तीसरे दिन आयंगे उन्हें पहले दिन की कार्यवाही जानने में फ़ायदा होगा। इस दैनिक संस्करण से गुरुकुल में आये हुए यात्रियों को यह लाभ होगा।

जो लोग गुरुकुल में नहीं आते और उत्सव का वृत्तान्त अति शीघ्र जानना चाहते हैं उन्हें इससे और भी अधिक लाभ होगा। आज की कार्यवाही का वृत्तान्त दूसरे दिन उन के पास पहुंच जाया करेगा। इस से बढ़ कर आनन्द क्या हो सकता है।

किन किन तिथियों में यह अंक प्रकाशित होगा - अभी हम इस की निश्चित सूचना नहीं देसकते।

इसके लिए निम्नलिखित नियम होंगे—

(१) जो सज्जन सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक हैं और गुरुकुल से बाहिर प्रचारक का उत्सव-दैनिक पांच दिन तक मंगवाना चाहते हैं—उन्हें =)॥ ढाई आने के टिकट प्रचारक कार्यालय में भेजकर दैनिक की ग्राहक सूचि में नाम लिखा देना चाहिये। साथ अपनी ग्राहक—संख्या अवश्य लिखना चाहिए। ग्राहक संख्या पते के चिट पर लिखी रहती है।

(२) जो प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं वे =) पांच आने भेजकर दैनिक के ग्राहक बन सकते हैं।

(३) गुरुकुल भूमि में यह अंक प्रति दिन बिका करेगा।

इन्द्र
सम्पादक तथा
प्रबन्धकर्ता सद्धर्म-प्रचारक

लाहौर आर्य्यसमाज का उत्सव

जब हम गुरुकुल से लाहौर के लिए चले थे, हमारे चित्त में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिवेशन में उपस्थित होने का विचार था, लाहौर आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव देखने का ख़याल नहीं था। कारण यह था कि हमें ज्ञात था कि पिछले वर्ष की भांती इस वर्ष भी वार्षिकोत्सव का भार उन लोगों पर है जिन्होंने आर्य्य समाज को अपनी दुरिच्छाओं की क्रीड़ास्थली बना रखा है। लाहौर समाज की अवस्था ही ऐसी थी कि उत्सव के सफल होने की कोई आशा नहीं थी। जिस उत्सव मण्डप में तीन साल पीछे दर्शकों का कन्धे से कन्धा छिलता था, गत वर्ष उसकी ख़ाली गैलरियों पर बैठ कर कव्वे अपना अमंगल राग गाते थे। यही सम्भावना इस वर्ष भी थी। इस सम्भावना से हमारा चित्त उदास था और शोक से भरा हुआ था।

× × × × × ×

लाहौर जाकर हमारी सम्भावनायें पूर्ण होती नज़र आईं। हमें रेल के स्टेशन पर ही पता लगा कि रात का नगर कीर्तन बहुत ही फीका रहा। केवल गान्धर्व महाविद्यालय की भजन मण्डलियों के भजन कुछ पसन्द किये गये और वह मंडली कोई सामाजिक भजन मंडली न थी। गत वर्षों के नगर कीर्तनों का आनन्द इसी में था कि श्रोता लोग न सुन सकने का और लोगों के धक्कों से पिस जाने का कष्ट उठावें और उस कष्ट को सुख समझें। देखने वालों ने हमें बतलाया कि किसी बहुत अच्छी आर्यभजनमंडली के अभाव के कारण नगर कीर्तन की रौनक आगे से आधी भी न थी।

× × × ×

अब उत्सव की दशा सुनिए। कोई सुनी सुनाई बात हम नहीं लिखेंगे—जो हमने अपनी आंखों देखा और जिस पर हमने दुःख से लहू के आंसू बहाए, वही कुछ लिखते हैं। पहले दिन प्रातः काल पं० सीताराम जी का व्याख्यान था।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उस से पूर्व स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी की कथा हो चुकी थी, जो हमने नहीं सुनी थी—उसके विषय में हम कुछ नहीं कह सकते। पं० सीताराम जी का व्याख्यान उत्तम था, और विद्वत्तापूर्ण था। पण्डित जी समाज के बहुत पुराने वकीलों में से हैं, और कभी अधिक प्रतिष्ठा पाचुके हैं। समाज के चलते हुए प्रवाह की आशा निराशाओं के साथ सम्बद्ध न रहने के कारण अब लोग उन्हें भूल गये हैं और वे लोगों को भूल गये हैं। व्याख्यान अच्छा था किन्तु उपस्थिति बहुत थोड़ी थी। लाहौर के उत्सव की पुरानी रीत के अनुसार इस समय कम से कम पांच छः हज़ार की हाज़री होनी चाहिये थी किन्तु इस समय बड़ी उदारता से गिनती करने पर भी हम डेढ़ हज़ार से अधिक जन संख्या नहीं कह सकते।

× × + +

मध्यान्ह और सायंकाल की कार्यवाहियों में हमें जाने का सौभाग्य—या दौर्भाग्य प्राप्त नहीं हुआ। सौभाग्य भाषा के मुहाविरे की दृष्टि से और दौर्भाग्य इस लिये कि पण्डाल में जाकर समाज की दुरवस्था पर रोने के सिवा क्या होसकता था! अस्तु—अंतरंग सभा के अधिवेशन के कारण हम उत्सव में न जासके। सुनी सुनाई बात लिखने से क्या लाभ?

× × × ×

रात्रि के समय हम उपस्थित हो सके। जब हम पण्डाल में पहुंचे, उस समय म० जैमिनि बी० ए० का व्याख्यान समाप्त हुआ था। संसार में वे वैद्य धन्य होंगे जो मरे हुओं को जिला सकें किन्तु वे लोग प्रशंसनीय नहीं समझे जाते जो मढ़ियों को खोद २ कर लाशें निकाला करें—क्योंकि सिवाय इस के कि इन लाशों में सड़ांद पैदा हो, और क्या हो सकता है। हमने उस समय सोचा कि लाहौर आर्य्यसमाज में जो पुण्य काम शुरू हुआ है कहीं वह ऐसा ही तो नहीं है। सामाजिक मुर्दों को उखाड़ कर पब्लिक के सामने ला फेंकने से सिवाय इस के क्या फल हो सकता है कि चारों ओर बदबू फैले और वायु मण्डल खराब हो। ऐसी लाशों का दबे रहना ही अच्छा है। महता जैमनि जी भी सामाजिक मुर्दों की श्रेणी में आचुके हैं। जिस समाज के वे सभासद् थे, उस समाज ने उन्हें सभासदी से खारिज कर दिया है, पौराणिक रीति से किए हुए संस्कारों के कारण अब लायलपुर में आप सामाजिक भी नहीं समझे जाते। ऐसी दशा में लाहौर समाज के प्लेट फ़ार्म को वे पवित्र न करते तो कौन करता। यह भी सुनते हैं कि आप के व्याख्यान में निरन्तर तालियां पिटती रहीं—जिन तालियों का अभिप्राय आप ने यह समझा कि मुझे शाबाशी दी जारही हैं, और सम्भवतः यह ठीक भी था। आप का काम शाबाशी के योग्य ही था, जो मनुष्य इतनी ढिठाई कर सके, वह शाबाश के योग्य तो है ही। लोग तालियां पीटते थे कि किसी तरह महता जी बैठ जायं, और महता जी और भी जोश में आरहे थे।

× × × × × ×

महता जी के व्याख्यान के पीछे मास्टर आत्माराम जी अमृतसरी का व्याख्यान था। मास्टर जी को बहुत वर्षों के पीछे लाहौर का प्लेट फार्म मिला था। आशा थी कि आर्य्यजनता पिछली सब बातों को भुला कर मास्टर जी का भाषण सुनने के लिये एकत्र हो जायगी। किन्तु आर्य्यजनता ने पिछली बातों को नहीं भुलाया, और पण्डाल अधिक न भरने पाया। जो कुछ भरा भी था—वह ख़ाली हो गया क्योंकि मास्टर जी की आवाज़ दूर तक नहीं पहुंच सकती थी। किसी दिन मास्टर जी की वाणी श्रोताओं के लिए सम्मोहनास्त्र का प्रभाव रखती थी, किन्तु आज वह खुण्डी हो गई। हम प्लेटफ़ार्म से बहुत दूर नहीं बैठे थे, किन्तु हमारे पल्ले व्याख्यान का चौथाई भाग भी नहीं पड़ा। जिस समय मास्टर जी व्याख्यान समाप्त करके बैठे, पण्डाल में डेढ़ दो हज़ार से अधिक उपस्थिति नहीं दिखाई देती थी।

× × × × × ×

दूसरे दिन प्रातःकाल अपील थी। अपील मास्टर आत्माराम जी की ही थी। यह समय उत्सव में विशेष महत्व रखता है। इस समय दानों पार्टियों के उत्सवों का सामञ्जस्य होता है। अपील के समय की उपस्थिति और चन्दे की राशि से उत्सव के एक अंश की कृतकार्यता या अकृत कार्यता कूती जाती है। कालिज पार्टी के उत्सव में इस समय श्रीमान् लाला हंसराज जी का व्याख्यान था। इस व्याख्यान ने आर्यजनता को अपनी ओर खेंचा और दूसरी ओर कोई ऐसा आकर्षण न था, जो उन्हें रोक लेता। लाहौर आर्यसमाज के अधिकारियों ने एक भूल की थी। मास्टर आत्माराम के नाम से सम्भव था अपील के समय कुछ हाज़री होजाती, किन्तु पहली रात के उनके व्याख्यान ने सारा काम बिगाड़ दिया। लोगों को खेंचने के लिए नवीनता का कारण जाता रहा, और मास्टर जी की वक्तृता उन के मनों को मन्त्रमुग्ध न करसकी। कोई कशिश शेष न रही और पण्डाल की रौनक आधी भी न हुई। व्याख्यान के पीछे चन्दा सुनाने की बारी आई। समाज के अधिकारियों के पुरुषार्थी होने का और आर्य लोगों के विश्वास-पात्र होने का सब से बड़ा सुबूत यह है कि वे सामाजिक कार्यों के लिए पुष्कल चन्दा एकत्र करसकें। यदि नहीं कर सकते तो समझना चाहिए कि या तो वे पुरुषार्थहीन हैं और या लोगों का उन पर विश्वास नहीं। लोगों के चन्दे की लिस्ट सुन कर भिन्न २ प्रकार के जोड़ किये हैं। उन जोड़ों में से छोटे से छोटा जोड़ ३००) का और बड़े से बड़ा जोड़ ७००) का सुनाया गया है। ७००) से अधिक जोड़ शायद किसी की सम्मति से भी नहीं है। बड़ी २ दिव्यमूर्तियों के दान इसी भारी राशि में सम्मिलित हैं। राय मूलराज पंजाब के उन प्रसिद्ध महापुरुषों में से हैं जिन्होंने प्रान्त की सब से अधिक इमारतें तिराई हैं। राय कुञ्जविहारी थायर का नाम भी कई ऐसे कारणों से प्रसिद्ध है, जिन्हें लाहौर की जनता खूब जानती है। आप दोनों परम सहायकों की आर्थिक सहायता पाकर भी लाहौर आर्यसमाज के अधिकारियों ने ७००) से अधिक चन्दा जमा नहीं किया। इससे जो परिणाम

निकल सकता है, उसे लिखने की आवश्यकता नहीं, और हमें कहा गया है कि उसका लिखना ठीक भी नहीं; क्योंकि कई ऐसे नये मामले हवा में हैं, जिनसे उत्तम परिणाम निकलने की आशा है।

+ × × × ×

इधर मास्टर आत्माराम जी की अपील होरही थी, और उधर प्लेटफार्म पर कोई विशेष बात चीत होरही थी। समाज के प्रसिद्ध २ व्यक्ति एक दूसरे के कानों में कुछ बातें कर रहे थे। बहुत देर तक इसी गुप्त बातचीत के पीछे कुछ निश्चय करके यह मंडली उठी। इस मंडली में कौन थे? सब से आगे श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, फिर अमृतसर के चौधरी जय कृष्ण जी, पं० विश्वम्भरनाथ जी, ला० गंगाराम जी, राय ठाकुरदत्त जी, आदि सज्जन उठकर पंडाल से बाहिर चले गये। वहां से यह सारा डेपूटेशन भाटी दरवाजे के पास राय रोशन लाल जी की कोठी पर महात्मा मुन्शीराम जी के पास जा पहुंचा। इन सब सज्जनों ने महात्मा जी से उत्सव में व्याख्यान देने के लिए कहा। महात्मा जी की इस डेपूटेशन ने विश्वास दिलाया कि उनका व्याख्यान देना लाहौर समाज के झगड़े को बहुत कुछ शान्त करने का पहला साधन होगा। इस प्रतिष्ठित मण्डली का कहना-और लाहौर समाजके झगड़ेके शान्त होने की आशा—इन दो कारणों ने महात्मा जी को पूर्व निश्चय बदलने पर बाधित किया। महात्मा जी ने उसी दिन सायंकाल व्याख्यान देना स्वीकार कर लिया।

× × × ×

पण्डाल में उसी समय यह समाचार सुना दिया गया और विशेष विज्ञापन भी बांटा गया। आर्य्यजनता जिस पानी की प्यासी थी, उसकी आशा हुई। इस समाचार का जो परिणाम हुआ उस के विस्तार पूर्वक सुनाने की आवश्यकता नहीं, क्योंकि प्रान्त भर के समाजों में अब तक वह वृत्तान्त पहुंच चुक होगा। ४-३० बजे से महात्मा जी का व्याख्यान था—अढ़ाई बजे के लगभग हम पण्डाल में गए तो दरवाजे तक आदमी भरे हुए थे। कहीं तिल रखने को भी स्थान न था। रास्ता भरा हुआ था—उसमें से होकर प्लेटफार्म तक जाने में जो कष्ट हमें भोगने पड़े उस से हमने लोगों के उस कष्ट का अनुमान किया जो इससे पूर्व लाहौर आर्य्यसमाज के उत्सव की बुरी गति देखकर हो रहा था। उस दिन प्रातः काल अपील की दुर्गति देख कर सचमुच कई पुराने आर्य सज्जनों की आंखों से हमने आंसू बहते हुए देखे थे—उन आंसुओं का ही प्रभाव था कि आर्य जनता को आज शाम की रौनक और शान देखनी भी नसीब हुई।

× × × ×

महात्मा जी के व्याख्यान का विषय 'पवित्रता' था। 'ओम्भूः पुनातु शिरसि' इत्यादि नित्य प्रार्थना मन्त्र की व्याख्या करते हुए आपने पवित्रता के साधनों का भी वर्णन किया। आपने ब्रह्मचर्य सादा भोजन और आत्मसंयम की व्याख्या करते हुए आत्मशुद्धि की उच्चता दिखाई। व्याख्यान के मध्य में आपने एक नीच पुरुष की नीचता पर उसे धिक्कारा जिस पर सारी उपस्थित आर्य जनता ने उस कायर पुरुष के कार्य पर असन्तोष प्रकट किया। इस पर अगले सप्ताह हम कुछ विशेष लिखेंगे-इस समय अधिक नहीं लिखते। इस सायं काल के दृश्य ने हमारे और आर्य जनता के दिल में नए जो भाव उत्पन्न किये—उन का प्रकाशित करना प्रचारक के लिए उचित न समझ कर हम इस विषय को यहीं समाप्त करते हैं।

× × × ×

रात्रि के समय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी का व्याख्यान हुआ। व्याख्यान का विषय था—एकता। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी की व्याख्यानशैली आर्य-जगत को बहुत ही प्रिय है, और आपके हृदय से निकले हुए भावों का बड़ा भारी प्रभाव पड़ता है। आपकी बहुत उत्तम भाषणशैली का यह बहुत ही उत्तम नमूना था। लोग आपके चुभने वाले शब्दों से सचमुच बहुत ही प्रभावित हुए। लगभग आधी उपस्थित जनता के आंखो में से आंसूओं की धारा जारी थी और लोग दिल ही दिल निश्चय कर रहे थे कि अब इस फूट-राक्षसी को शीघ्र ही जड़ से उखाड़ कर बाहिर फेंक देंगे। इस समय भी उपस्थिति पर्याप्त थी।

+ + + +

श्री स्वामी जी के व्याख्यान के पीछे लाहौर आर्य्यसमाज के अधिकारियों की ओर से पं० रामभजदत्त जी किए कराये पर चौंका फेरने के लिए उठे। आपने अपने भाषण में श्री महात्मा जी और श्री स्वामी जी के व्याख्यानों का उत्तर देने का यत्न किया—किन्तु आर्य्यजनता अपना कर्तव्या जोनती है। इस प्रकार के अनुचित भाषियों को चुप कराने की कला उसे ज्ञात है। पं० रामभजदत्त को अपने व्यवहार से आर्यजनता ने शीघ्र ही बता दिया कि वह किसी प्रकार की भी फ़जूल बातें सुनने के लिए तय्यार नहीं हैं। आख़िर कई बार हाथ जोड़ कर और गिड़ गिड़ा कर पं० रामभजदत्त का छुटकारा हुआ—और इस प्रकार लाहौर के समाज के अधिकारयों ने सुखान्त होते हुए भी इस उत्सव को दस मिनट में दुःखान्त बना कर समाप्त कर दिया और दिलों के सूखते २ घावों को फिर से नाखून लगा कर हरा कर दिया।

× × × × × ×

श्री स्वामी सर्वदानन्द जी के और पं० विश्वम्भरनाथ जी के यत्न से उसी रात और दूसरे दिन एक शान्ति सभा बैठी। इस सभा में क्या हुआ, इस में कौन से प्रस्ताव पेश हुए, और हम इस सभा से क्या आशा रखते हैं—इन विषयों पर इस समय कुछ न लिखना अच्छा है। हमारी परम दयालु परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वे इस शान्ति सभा को अपने यत्न में कृतकार्य करें।

———

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रचारक पुस्तक भण्डार की नई पुस्तकें

आर्यधर्म ग्रन्थमाला

श्री महात्मा सुन्दरीराम जी द्वारा लिखित आर्यों की नित्य कर्मपद्धति—मूल्य ८)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्य मात्र के पढ़ने योग्य है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

आचार-अनाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है: कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है।

मातृ भाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिए क्या कर्तव्य हैं?

वैदिक-धर्म और पारसीमत मूल्य =) इस निबन्ध में महात्मा जी ने पारसीमत के सिद्धान्तों की वैदिक धर्म के सिद्धान्तों से तुलना करके बताया है कि इस मत का उत्पत्तिस्थान वैदिकधर्म ही है। निबन्ध बड़ी खोज से लिखा गया है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृतसाहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन

कलकत्ते का प्रसिद्ध मार्डर्न रिव्यू पत्र इस पुस्तक के बारे में लिखता है—इस पुस्तक में संस्कृत साहित्य का ऐतिहासिक इतिवृत्त दिया गया है और भारतवर्ष के इतिहास के भिन्न २ समयों के प्रभाव से उसमें शाब्दिक तथा अन्य जो भेद आते रहे उसका वर्णन किया गया है। घटनाओं की परीक्षा सामान्यतया निष्पक्षपात है और हम लेखक महाशय के दिये घटनाओं के मुख्य भाग से सहमत हैं। भाषा लेखक के अन्य ग्रन्थों से पाई हुई कीर्ति के अनुकूल है। छपाई और रंग ढंग अच्छे है।

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है आर्य सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्म प्रचारक।

नाम का आर्य्य

(१)

कर्णधर्म बन आर्य्य, रहा है नाम का,
रखता है मन में न विचार परार्थ का।
करता है अथ भी न, कभी शुभ काम का,
जाल बिछाया अहो स्वत्व ही स्वार्थ का! ॥
हा! सामाजिक प्रेम, बढ़ाता है नहीं,
दम भरता है व्यर्थ, स्वदेश सुधार का!
धार्मिकता का रङ्ग, चढ़ाता है नहीं,
हेतु हुआ अविवेक और अविचार का! ॥

(२)

नास्तिक होकर भुला, दिया करतार को,
आस्तिकता से हीन, निरा ही अज्ञ है।
उपकारी के भूल, गया उपकार को,
हा! हा!! कैसा मलिन हृदय, अकृतज्ञ है! ॥
कर्णधर्म सत्सङ्ग, कभी करता नहीं,
छाया है सविशेष, हाय! अभिमान में।
अहो! हृदय में भद्र-भाव भरता नहीं,
शुभ अवसर खोरहा, पड़ा अज्ञान में! ॥

(३)

फैलाता है द्वेष, भाव समुदाय में—
करता कोई काम न मेल मिलाप से।
बुरक रहा है नौन, पराये घाल में—
लाभ उठाता हाय! न प्रेमालाप से! ॥
कर्णधर्म अपकीर्त्ति, लोक में पारहा—
हा! विचार-साकूत्य, मिटाता है नहीं!।
अपने को निरत आप गिराता जा रहा,
कर उन्नति के काम, दिखाता है नहीं! ॥

(४)

हो निर्मल-मति नेक, सुयश पाता नहीं—
कुल मर्य्याद विसार, काम उलटे करे!
कुछ भी तो औचित्य, अरे भाता नहीं?
हा! अन्धा बन पाप, भार शिर पै धरे॥
जिस को माने धर्म्म, न हा! उस पर चले
करने में वक्तृत्व, बड़ा बल दे रहा।
निज आचरण सुधार, न हा! फूले फले,
कर्णधर्म नीचत्व, भरे नद में बहा? ॥

"कर्ण"

—०—

आर्यकुमार सभाओं से अपील

भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन का सातवां अधिवेशन २६, २७, २८ दिसम्बर सन् १९१६ ई० को लखनऊ में होगा, इसी समय प्रायः वह सब सम्मेलन जिन के द्वारा समाज का कुछ भी उपकार हो सकता है-जैसे कांग्रेस, धर्म, वाणिज्य, परस्पर संसर्ग बढ़ाने आदि अनेक सभाओं का इस वर्ष यहां यथाविधि अनुष्ठान किया जायगा। इन में उपस्थित होने के लिए देश देशांतरों से देश सेवा परायण बड़े २ विद्वज्जन उच्च श्रेणी के स्वदेशानुरागी सज्जन यहां पधारेंगे। इसी समय उत्साही नवयुवक भी दूर २ प्रान्तों से आ आकर यहां इकट्ठे होंगे और इन से भी अधिक हर्ष की बात यह है कि हम लोग यह आशा कर रहे हैं कि देवी सरस्वती के सच्चे उपासक डी० ए० वी० कालेज को उसकी वर्तमान हर्ष-जनक दशा को पहुंचाने वाले लाला हंसराज जी महाराज को दयालु ईश्वर उस समय तक पुनः स्वास्थ्य दे, जिससे कि आर्यकुमार सम्मेलन के सभापति की गद्दी को कृपया सुशोभित करें।

कैसा ही अच्छा होगा यदि ऐसे अवसर पर हमारे आर्य-नवयुवक अपनी २ सभाओं से प्रतिनिधि नियुक्त होकर यहां पधारें और शिक्षित भारत के सम्मुख सुधार सम्बन्धी अपने २ भावों को प्रगट करें और जाति की वृद्धि के लिए अपने व्यवसाय निष्काम्य तथा प्रेम का परिचय दें।

मैं इस अवसर पर आर्यकुमारों से प्रार्थना करता हूं कि महाशय आइये अवश्य पधारिये अवसर को हाथ से न जाने दीजिये कमर बांध कर सामाजिक व आर्थिक उन्नति के विषय पर विचारने के लिए उद्यत हो जाइये। भातृगण आइये हम सब मिलकर सोचें कि यह हानिकारक कुरीतियां जोकि हमें आगे बढ़ने नहीं देती हैं कैसे निकाल बाहर की जांय और हम लोग किस प्रकार सामाजिक स्वतंत्रता को प्राप्त कर सकें। हम चाहते हैं कि अनेक घृणित दोषों से समाज को बचावें वा अन्य न्यूनताओं को पूरा करके अपने जीवन के प्रत्येक अंगों को परिपूर्ण और प्रफुल्लित करें। इस अभिप्राय से हम लोगों ने एक रोचक सूचीपत्र तैयार किया है और आशा है कि प्रत्येक युवक उसे अपनी इच्छा अनुसार ही पावेगा।

अब तक हम लोगों ने अपने मनों को

अत्यन्त अनहित विषयों में लगा कर सांसारिक हितकारी आवश्यक विषयों को भुला रक्खा था, कभी फूलों का आलङ्करण करते थे। कभी कुत्तों के प्रदर्शन में चित्त लगाते थे किन्तु इन सब बातों में लगे हुये हमने अपनी बढ़ती, नहीं २ अपने हित ही की चिन्ता त्याग दी इस वर्ष यह आर्यकुमार सम्मेलन इन सब बातों को विचार कर नवयुवकों का प्रदर्शन करना चाहता है। इसमें दो दृढ़ांग मांसल युवकों को पदक दिये जांयगे।

इसके अतिरिक्त सर्वसाधारण समाज की ओर युवकों का क्या धर्म है, इस विषय की एक प्रदर्शनी दिखाई जावेगी, इसमें युवकों का एक दल अग्नि को बुझाता हुआ देख पड़ेगा, कुछ युवक बहिया में पीड़ित व दुखी जनों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार सहायता करते हुए देख पड़ेंगे, कुछ लंगेड़े लूलोंकी मल्लमपट्टी करते हस्पताल लेजाते हुये दृष्टिगोचर होगें, और कुछ अनाहार समय में दुर्भिक्ष पीड़ितों को उनके दुखविमोचिनी वस्तु बांटते हुये दृष्टि में पड़ेंगें। एवं बहुतसी और बातें दिखाई जायंगी।

विविधि आर्य्य कुमारसमाजों के प्रतिनिधियों में "कौनसी भाषा स्कूलों वा कालिजों में पढ़ाई का माध्यम होना चाहिये-अंग्रेजी व अन्य हिन्दुस्तानी प्रान्तीय भाषा" इस विषय पर वादविवाद होगा और जिस सभा का प्रतिनिधि इस में अच्छा समझा जायगा उस सभा को एक चांदी का प्याला दिया जायगा। हिन्दुस्तानी विद्यार्थियों की निर्धनता का विचार करके "किस प्रकार हम उन विद्यार्थियों की सहायता कर सकते हैं। जो कि अपने बल स्कूल वा कालिज में विद्याध्यन करना चाहते हैं" इस विषय पर हिन्दी भाषा में एक लेख प्रत्येक सभाओं के कुमारों से लिखने की प्रार्थना की गई है। दस रुपये मूल्य का पारितोषिक उसको दिया जायगा जो ऐसा साधन बतायेगा जिसमें बहुत समय भी न लगे और वह अर्थ दायक और सुख-साध्य हो। लेख पत्र १५ दिसम्बर तक कार्य्य स्थान में आजाना चाहिये।

दौड़, फांद, जमनास्टिक हाकी आदि खेल भी खिलाये जायगे और प्रत्येक खेल में कुछ न कुछ पारितोषिक अवश्य दिया जायगा, आशा है कि कुमारसभाओं का डी. बी. ए. बी. स्कूलों की टीमें अवश्य आवेंगी और सर्व भारतवर्षीय आर्य्यकुमार टूर्नामेन्ट में भाग लेकर खेलों को रोचक बनायेंगे।

अहा क्या ही आल्हाद जनक वह दिवस होगा जबकि भारत के उत्तरीय छोर के युवक पश्चिमी छोर के युवकों से भेंट करके परस्पर वार्तालाप करेंगे और सामाजिक तथा शारीरिक आवश्यकताओं पर चिन्तन करेंगे।

मैं आप से प्रार्थना करता हूं कि आइये यही समय है जब कि आप दूसरों का भला कर सकते हैं और स्वयं भलाई संचित कर सकते हैं। यही अवसर है जब कि आप देशहितार्थियों को संतोष दे सकते हैं कि हम भी आपकी लाई सदा उपनिषद् के इस कथन को अपने सामने रखते हैं 'उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत"।

गंङ्गाप्रसाद रोड़ लखनऊ
१५-११-१६-

आपका दर्शनाभिलाषी
चण्डीप्रसाद बी, ए,
महामन्त्री
आर्यकुमार सम्मेलन

—:o:—

एक अंग्रेज़ सन्यासी का
भारत भ्रमण।
श्रीयुत सन्तराम बी. ए.

साधारण मनुष्य और महापुरुष में भेद यह है कि साधारण मनुष्य तो ईर्षा, द्वेष, और अनुराग आदि मनोविकारों के वशीभूत होकर किसी जाति विशेष से विरोध अथवा प्रेम करने लगता है। स्वार्थवश होकर वह सत्य और न्याय का परित्याग कर देता है। आत्मीय जनों के दोष देख उसे गुण प्रतीत होते हैं और दूसरों के गुण भी दोष देख पड़ते हैं। पर महापुरुष की यह बात नहीं। वह किसी भी नीचभाव के अधीन होकर सत्य का परित्याग नहीं करता। सारे संसार को वह एक ही दृष्टि से देखता है। प्राणिमात्र के दुःख को देख कर उस का हृदय व्याकुल हो उठता है। वह जहां विदेशियों और विजातियों के सद्गुणों की प्रशंसा किए बिना नहीं रहता, स्वजाति के दुर्गुणों की स्पष्टतया निंदा करने में भी नहीं चूकता। ऐसी जगह बंधु प्राणिमात्र के हितैषी प्रायः सभी जातियों और देशों में जन्म ग्रहण किया करते हैं। एडवर्ड कार्पेन्टर महाशय भी इसी कोटि के महात्मा जान पड़ते हैं। आप प्रजासत्तात्मक शासन पद्धति के प्रचारक हैं। अपने मत के प्रचारार्थ उन्होंने कितनी ही पुस्तकें लिखी हैं। इन में Towards Democracy बहुत प्रसिद्ध है।

कार्पेन्टर महाशय ने १८९० ईसवी में भारत का पर्यटन किया था। आपने यहां आकर लङ्का, मद्रास, बङ्गाल, संयुक्तप्रान्त और बम्बई के प्रसिद्ध २ स्थानों को देखा। यहां वालों के गृह-जीवन और आन्तरिक भावों का ज्ञान प्राप्त करने का यत्न किया। साधारणतः अंग्रेज़ लोग भारत वासियों से बहुत कम मेल मिलाप रखते हैं। शासित जाति की प्रजा से शासक जाति अलग रहने में ही अपनी गौरव रक्षा समझती है। इसी लिए उन्हें एक दूसरे की प्रकृत अवस्था और मनोभाव का अपूर्ण ज्ञान है। पर कार्पेन्टर महोदय ऐसे अंग्रेज़ न थे। "भारत में भ्रमण कर चुकने पर आप ने घर जाकर" एक पुस्तक लिखी। उस का नाम है 'From Adam's Peak to Elephenta.' इस में आपने भारत-विषयक अपने अनुभवों का वर्णन करते हुए शासक और शासित दोनों के हितकी बहुत सी बातें कही हैं। दोनों के गुण दोष प्रकट किए हैं और दोनों को खरी खरी सुनाई हैं। इस पुस्तक के पाठ से दोनों को अपनी त्रुटियों का बहुत कुछ ज्ञान हो सकता है। ग्रंथकार ने हमारे विषय में कई बड़े मज़े की बातें कहीं हैं। उन के उपदेश और टिप्पणियां पुस्तक में पत्र पत्र पर बिखरी पड़ी हैं। यहां हम उनकी कुछ एक बातें उसी बिखरी अवस्था में ही उपस्थित करते हैं।

लङ्का में आपने एक हिन्दू मेले के अवसर पर स्त्री पुरुषों को नदी तट पर चुपचाप स्नान करते देखा। इस पर आप लिखते हैं:—हिन्दू स्त्री पुरुषों में वह प-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रस्पर का परिहास बिल्कुल नहीं या बहुत ही कम है जो हम प्रायः पाश्चात्य लोगों में देखते हैं। यहां तक कि लड़कों और युवकों में भी क्रीड़ा और विलास नहीं देख पड़ता। मेरा विचार है कि जो पशु-बुद्धि का अभाव और निश्चेष्टता हिन्दुओं का विशेष गुण है यह उसी का ही एक अंश है। स्त्री पुरुष का जो सम्बध हम समझते हैं उन का भी इस विषय में किसी क़दर हम से भिन्न है।

यहां वालों के दासता प्रेम का उल्लेख करते हुए आप लिखते हैं:—

मेरा विश्वास है कि बहुतसी भारतीय और सिंहाली जातियां (खासे अच्छे स्वामी के अधीन) नौकरी से प्रेम रखती हैं। उनकी स्त्रीसुलभ कोमल और सहृदय प्रकृतियां, जिन में प्रायः साहस का अभाव होता है, पराधीनता का आश्रय लेना पसन्द करती हैं। निस्सन्देह जब इन लोगों के साथ अच्छा बर्ताव हो तो ये अत्युत्तम सेवक बन जाते हैं। उन कौशल और वत्सलता सम्बध को दृढ़ कर देती है। मुझे पता है एक बार एक अंग्रेज़ सिविलियन के साथ उस के निज स्थान से २०० मील की दूरी पर दुर्घटना घटी थी। उस का बहरा यह कुसमाचार सुनकर पैदल ही चल पड़ा क्योंकि वहां जाने के लिए और कोई साधन न था, और अपने स्वामी की मृत्यु के पहले ही वहां जा पहुंचा। पर यह समझना कि कर्तव्य-पालन के विचार से ये लोग कोई काम करदेंगे सरासर भूल है। पूर्वीय शब्द-संग्रह में कर्तव्य शब्द का उस से बढ़कर महत्व नहीं जितना कि युरुप के सेल्टिक लोगों में हैं। जातियों के अन्दर भ्रांति का यह भारी कारण है। अंग्रेज़ अपने भारतीय सेवक को नियमपूर्वक वेतन देता है और आशा करता है कि इस के बदले में वह अपना कर्तव्य पालन करेगा, या न करने की अवस्था में जूते की ठोकरें सहन करेगा। अंग्रेज़ इस बात को न्यायसंगत समझता है। पर देसी नौकर ऐसा कदापि नहीं समझता। वह चाहता है कि वेतन चाहे नियम पूर्वक न मिले पर उस के साथ "मनुष्योचित और भाई का सा बर्ताव" हो। अंग्रेज़ी सभ्यता मनुष्य को दूसरों के सामने प्रत्येक अवस्था में शरीर को सिर से पांव तक कपड़ों से अलंकृत रहने की आज्ञा देती है। इसी लिए उस सभ्यता के अनुयायी भारतीय शिक्षित लोग दारुण ताप के दिनों में भी पतलून, कोट और बूट डटाये रहते हैं। कार्पेन्टर महाशय लङ्का में एक बर्फानी स्थान देखने गये थे। उन के साथ उन का एक देसी कुली, और एक पथप्रदर्शक था। कुली के तन पर केवल लङ्गोटी और कुरता था। पर वह जब अत्यन्त शीतल स्थान में जाकर भी रात को सो गया। पथप्रदर्शक ने भी शीत से कुछ विशेष कष्ट अनुभव नहीं किया। पर साहब के दो तीन कोट, जुराबें, दस्ताने, और बूट होने पर भी वे सारे सरदी के एक मिनट भर न सो सके। इस पर आप लिखते हैं:—

जिस प्रकार इस देश में अंग्रेज़ लोग शीत का अनुभव करते हैं वह बड़ा विचित्र है। इन उष्णता-प्रधान देशों में हम भारी भूल करते हैं जो अपनी त्वचा को धूप और वायु का अधिक स्पर्श नहीं होने देते जिस से यह पुष्ट और दृढ़ हो जाय। दारुण ताप के समय बराबर वस्त्र पहने रहने से त्वचा से सख़्त पसीना बहने लगता है। इस से यह आवश्यकता से अधिक दुर्बल, कोमल, और शीघ्र ग्राहक बन जाती है जिस से सरदी लग जाने की सम्भावना भी बढ़ जाती है। यहां जङ्गलों में मैंने कितनी ही बार सूर्य्य-स्नान किया और इसे लाभदायक पाया। कुली बर्फ़ में सो रहा था, पर मैं सर्द देश का रहने वाला वस्त्रों से लदा हुआ भी दान्त से दान्त बजा रहा था।

उपर्युक्त लिखा जाने के पश्चात् मुझे भारत में अंग्रेज़ों की एक छोटी सी सभा का पता लगा है। यह तन्दरुस्ती, शिष्टता और सौन्दर्य्य—शारीरिक, नैतिक और सौन्दर्य्य-विषयक—इन तीन कारणों से शरीर को नङ्गा रखने और यथासम्भव कम वस्त्र पहरने को प्रोत्साहित करती है। मैं इस सभा को हार्दिक सफलता चाहता हूं। भारत जैसे स्थान में जहां सर्व-साधारण बहुत थोड़े वस्त्र पहनते हैं उन्हें सुख और आनन्द से विचरते देखकर अभागे योरुपियों का कष्ट दुगना हो जाता है क्योंकि वे सर्व-साधारण से मिलते समय प्रत्येक अवसर पर शिख-नख तक कपड़ों से ढका होना आवश्यक समझते हैं। वस्तुतः यह बड़ी आश्चर्य्य जनक बात है कि ये लोग ऐसे प्रचण्ड ताप में, जब कि हलके से हलका वस्त्र पहनना भी कठिन होता है, कोट, कुरतियां, अकड़े हुए कालर तथा कफ़, और औचित्य का सारा परिच्छद कैसे धारण करते हैं। उपरोक्त कारण से शरीर में जो थकावट पैदा होती है उस पर भी आश्चर्य्य नहीं होता। वास्तव में, यद्यपि सूर्य्य और वायु द्वारा त्वचा का पुष्ट और उद्दीप्त करना स्वदेश में भी आवश्यक है, पर भारत ऐसे देश में तो जहां कि शिथिलकारी प्रभाव महा प्रबल हैं, यह सर्वथा अनिवार्य्य है। निस्सन्देह जब मनुष्य भारत में अंग्रेज़ों की शिथिलता के इस कारण पर, और साथ ही दूसरे कारण अत्यन्त दूषित भोजन पर—मांस और मदिरा का प्रचुर सेवन जो कि दोनों ही स्वदेश में भी काफी हानिकारक हैं पर जो गरम देश में तो विनाश जनक हैं—विचार करता है तो आश्चर्य्य इस बात पर नहीं होता कि अंग्रेज़ भारत में बस्तियां बनाने और सन्तान वृद्धि करने में असफल हुए हैं बल्कि वे यहां अपनी व्यक्तिक नौकरी के थोड़े से वर्ष भी कैसे काटते हैं!"

लङ्का में चाय बहुत पैदा होती है। जो अङ्गरेज़ चाय का व्यवसाय करते हैं उन्हें "टी प्लान्टरज़" कहते हैं। चाय के बाग़ीचों के लिए वे हज़ारों कुली लगाते हैं। इन कुलियों की शोक जनक दुर-वस्था को देखकर कार्पेंटर महोदय का हृदय पिघल उठा। देखिए वे कैसे हृदय द्रावक शब्दों में इस प्रथा की निन्दा करते हैं:—

"परन्तु यह कुली प्रथा, व्यापारिक प्रथा की भान्ति ही, प्रायः कुत्सित और पापमय है। निस्सन्देह अनेक अवस्थाओं में यह लज्जाजनक पापों के लिए एक पर्दे का काम देती है। तामिल कुली—स्त्री, पुरुष, और बच्चे—दलों के दल भारत से आते हैं। कुलियों को फुसलाने

CCO, Gurukul Kangri Coll...

और जल तथा थल के मार्ग से उन्हें उन के लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए एक एजन्ट भेजा जाता है। जब वे चाय की कोठी में पहुंचते हैं तो उन में से प्रत्येक को पता लगता है कि मार्ग व्यय के कारण वह कोठी का इतने रुपए का ऋणि है। औसत मंजूरी ६ आने (6d.) प्रति दिन है पर काम में शिथिल न होने देने के मिस उन के लिए विशेष समय के लिए विशेष काम नियत कर दिया जता है। यदि वे वह काम उतने समय में न करें तो उन्हें केवल आधी मज़दूरी मिलती है। अतः यदि मनुष्य सुस्त या आलसी या अस्वस्थ हो तो उसे ३ आना प्रति दिन की आशा करनी चाहिये! ऐसी अवस्था में, अनुमान हो सकता है, उन का ऋण घटने के स्थान में प्रतिदिन बढ़ता रहता है। चाय की कोठी गांव या नगर से बहुत दूर परे पहाड़ पर होती है। इस लिए यही चाय की कोठी एजन्ट बनकर अपने कुलियों के पास चावल तथा जीवन की अन्य आवश्यक वस्तुएं बेचती है। अभागे मनुष्य किसी अन्य स्थान से नहीं खरीद सकते। एक युवक टीग्रान्टर ने मुझे कहा "वे ऋणि होना प्रसन्द करते हैं और जब तक उन पर इतना ऋण न हो जाय जितना लेने की कम्पनी उन्हें आज्ञा दे सकती है तब तक वे समझते हैं कि हम अच्छा काम नहीं करते।" टीग्रान्टर बहुत सुकुमार था और शायद अपने कथन का अनुभव नहीं करता था। पर हा, कैसे नैराश्य की सूचना है! निस्संदेह उसके कथन में कुछ सार होगा। जब ऋण से मुक्त होने की सब आशाएं जाती रहती हैं तो सब से अच्छी बात मनुष्य यही कर सकता है कि जितना अधिक ऋण उसे मिल सके लेले! सप्ताह की समाप्ति पर कुली वेतन का मुंह नहीं देखता, उस के चावल इत्यादि में वह सब कट चुका है, इस लिए उस का ऋण थोड़ासा और बढ़ जाता है, यदि वह भाग जाय तो उस की तलाश होती है और उसे तीन मास का कारावास मिलता है। वह दास (गुलाम) है और आजन्म उसे दास रहना पड़ेगा। पर उस का जीवन बहुत लम्बा नहीं होता क्योंकि निकम्मा भोजन, कपड़ों की कमी, पर्वतों के कुहरे और शीतल पवन शीघ्र ही फेफड़ों के रोग पैदा कर देते हैं और दुर्बल काय तामिल कुली आसानी से मर जाता है। टीग्रान्टर ने कहा "मैं मानता हूं ३ आना दैनिक बहुत कम वेतन है पर आश्चर्य्य की बात है कि ये लोग इतने थोड़े पर निर्वाह कर सकते हैं। उन के दुर्बल शरीरों को देखकर वस्तुतः आश्चर्य होता है कि वे जोते कैसे हैं। शोक, पर उन के घर पर उन की अवस्था इस से भी बत्तर है। जब वे भारत से आते हैं तब आप उन पर दृष्टि डालिए।

हिन्दुओं के सम्मिलित कुटुम्ब का उल्लेख करते हुए लिखा है:—

सामवाथन मुझ से अंग्रेज़ी पढ़ने आता है। उस की आयु तीस से ऊपर है, स्त्री और बच्चे भी हैं। अभी कमाता कुछ नहीं। माता पिता के साथ घर पर रहता है और उन्हीं के आश्रय है? उसके स्वभाव में विद्यार्थियों की सी बहुत सी बातें हैं। वह अपने आदिम गांव (भारत में) दार्शनिक और धार्म्मिक विषयों पर मुफ्त व्याख्यान देता है। उस के व्याख्यान पसन्द भी किए जाते हैं।

—०—

साहित्य-समाचार

नय जीवन का चार महीनों का इकट्ठा ही अंक निकल आया। श्रावण तक का हिसाब चुक गया—अब आगे भी शायद चार महिनों का हिसाब इकट्ठा ही चुकाना पड़े। इस महा-अंक में कई लेख अध्ययन योग्य हैं। विशेषतया पं० चन्द्रमणि विद्यालंकार का शाक्य वंश का उदय और अस्त, मुन्शीदेवीप्रसाद का राजपूताने की कविता और उसके चमत्कार ये लेख सार युक्त हैं। पं० केशवदेव जी के पनामा प्रदर्शनी पर लेख भी अच्छे हैं।

—:०:—

कुली बाज़ार कानपुर में एक कलियुगी पुस्तकालय है, जिस की ओर से पं० मदनमोहन मालवीय जी का एक छोटा सा जीवन चरित निकला है। मूल्य।)

—:०:—

प्रचारक का सम्पादक या पुस्तक-समालोचक कृषि के विषय से अनभिज्ञ है। यद्यपि उसने अपने घर के पास एक छोटी सी खेती लगाई है, जिस में शाक भाजी लगाई है किन्तु इस से उस में युक्तप्रान्त के कृषिविभाग के म० हरिरामसिंह की लिखी हुई 'पूसा का गेंहूं' नामक पुस्तक की समालोचना करने की योग्यता नहीं है। अभी सूचना मात्र ही देते हैं—किसी कृषिविशारद से सम्मति लेकर विशेष लिखेंगे। पुस्तक का मूल्य -)॥

—:०:—

रोहिणी—एक सामाजिक उपन्यास। प्रकाशक—सरस्वती भंडार बांकीपुर। मूल्य -) कहानी अच्छी है।

—:०:—

हिन्दी भजन प्रकाश—लेखक म० भवानीदयाल जी। प्राप्तिस्थान हिन्द आश्रम कलेक्टरगंज, पो० ओ० बौक्स ७९ दरबन, नेटाल। मूल्य ६ पेंसी। इस प्रकाश में अच्छे अच्छे भावों से युक्त गान दिये गये हैं। भजनों के विषय ईश्वर प्रार्थना, मातृ भूमि भक्ति और हिन्दी सेवा आदि हैं।

—:०:—

बम्बई से जैन संसार नाम का नया मासिक पत्र निकला है। लेख केवल साम्प्रदायिक ही नहीं हैं, सर्व जनोपयोगी भी हैं। वार्षिक मूल्य १।=)

—:०:—

मि० वाचा भारतवर्ष के प्रसिद्ध नैतिक नेता हैं, उन की पोती प्रसिद्ध चित्रकार बन रही है। १८ वर्ष की उम्र में उसने बहुत से कार्टून बनाये थे, जो प्रकाशित किये थे। कार्टून छपे हैं और बहुत ही प्रशंसा योग्य कहे जाते हैं।

—:०:—

इतने दिन पीछे भी यह समाचार सुनादेने में कोई हर्ज नहीं कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन का अगला अधिवेशन इन्दौर में होगा।

—:०:—

बनारस में एक विज्ञान समिति स्थापित हुई है जो विविध वैज्ञानिक विषयों पर ग्रन्थ प्रकाशित किया करेगी।

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राप्त पत्र

पत्रप्रेरकों से निवेदन

हम अपने पत्रप्रेरकों से कुछ निवेदन करना चाहते हैं। जो सज्जन प्रचारक के लेखों तथा समाचारों द्वारा अनुगृहीत करते हैं, हम उनका धन्यवाद करते हैं। किन्तु साथ ही दो चार बातें उनके आगे रखना चाहते हैं।

(१) पत्र प्रेरक महोदयों से पहला निवेदन हमें यह करना है कि यह भूमि परिमित है, और इस महायुद्ध ने रास्ते रोक कर उसे और भी परिमित बना दिया है। प्रचारक के पृष्ठ परिमित थे, और इस महायुद्ध ने इसके पृष्ठों को और भी परिमित कर दिया था। इस साल पत्र में अन्य लेख नहीं समा सकते। इसलिये जब लिखा करें तो संक्षिप्त तथा मनोरंजक लिखने का यत्न किया करें। कई लेख इतने लम्बे २ आते हैं, कि प्रचारक का एक अंक उन्हीं से भरजाय। हमारे लेखक महाशय समझते होंगे कि इस से सम्पादक को आराम मिलेगा, क्योंकि उसे कम लिखना पड़ेगा। किन्तु होता उल्टा है। पहले तो हमें काट छांट बहुत करनी पड़ती है और फिर न छाप सकने पर पत्र व्यवहार में भी समय और पैसा लगाना पड़ता है। अत्यन्त दीर्घ लेख साप्ताहिक पत्र में छपने कठिन हैं।

(२) कई सज्जन छोटी से छोटी बात पर लेख लिख भेजते हैं। उनका कोई मित्र है, उसका जीवन चरित लिख भेजा। उन्होंने कोई जंगल देखा, उस पर ६ पृष्ठ लिख दिये। कृपया ऐसे सज्जन यह सोच लिया करें कि इस लेख से प्रचारक के पाठकों को क्या लाभ होगा या लाभ नहीं तो मनोरंजक होगा। दोनों बातें न हों तो लेख कैसे छापे जायं।

(३) कई महाशय उर्दू में लेख या समाचार भेजते हैं, वे कृपा करके गांव या शहर के किसी भाषा जानने वाले से भाषा में कराके भेजा करें, अन्यथा छपेगा या नहीं छपेगा—कोई निश्चय नहीं। कई महाशय ऐसी विलक्षणभाषा बना कर लिखते हैं कि वे आयं तो भी शायद अक्षरों के शब्द न बना सकें। लायलपुर के एक महाशय ने कोई ११ पृष्ठों का एक लेख भेजा है जिसकी भाषा विलक्षण है। ऊपर लिखा है—'श्रीमान समपादक जी' उत्सव को 'उतस्व' और दृष्टि को 'द्रिष्टी' लिखकर आशा यह की है कि लेख सारा छपजाय। यदि लेख न छपेगा, तो वे नाराज़ होंगे और यदि छापना हो तो 'सम-पादक' के साथ 'संशोधक' की जो गत बनेगी, उसका लेखक महाशय अनुमान भी नहीं कर सकते। लेखक महाशय के लेखानुसार 'प्रीनाम' यह होगा कि प्रचारक उनके लेख से वंचित रहेगा।

यदि हमारे पत्रप्रेरक इन बातों पर ध्यान देंगे तो कृपा होगी।

सम्पादक

—:o:—

लेखक महाशयों को सूचनाएं

(१) लायलपुर के महता जी! आपका लेख इसी विषय का एक और पत्र में छप चुका है। इस कारण से तथा एक और कारण से हम आपका लेख छापने में अशक्त हैं।

(२) वृन्दावनवासी म० शालिग्राम जी! अभी टेसूके दिन नहीं आये। आज कल टेसूकी टांग तोड़ना ऐसा ही होगा जैसा सायंकाल के समय आसा का गीत गाना।

———

आवश्यकता है

मारवाड़ी सम्मेलन पोदार बालिका विद्यालय के लिये एक प्रधानाध्यापिका की, जिस की हिन्दी की अच्छी और संस्कृत की साधारण योग्यता हो। वेतन योग्यतानुसार अच्छा दिया जायगा। उम्मेदवारों को निम्नलिखित पते पर स्वयं पत्रव्यवहार करना चाहिए।

भवदीय
रामप्रताप शास्त्री
मन्त्री मारवाड़ी सम्मेलन
कालबादेवी रोड बम्बई

—o—

तीन अध्यापकों की आवश्यकता

आर्य्यसमाज बरेली की पाठशालाओं के लिए ३ संस्कृत जानने वाले अध्यापकों की आवश्यकता है। प्रार्थना पत्र में साथ प्रशंसा पत्र भी आने की आवश्यकता है. प्रार्थना पत्र दिसम्बर की १५ ता० तक आर्यसमाज के मन्त्री के पास अवश्य आजाने चाहिए।

श्यामस्वरूप सत्यव्रत
मन्त्री आर्य्यसमाज
बिहारीपुर बरेली

—o—

नया पुस्तक

"पद्य-पुष्प-हार" बन कर तय्यार है। भिन्न भिन्न विषयों से सम्बन्ध रखने वाली इसमें अनेक कविताएं, सन्निविष्ट हैं। इसे हम से छापने के लिए कोई पुस्तक प्रकाशक चाहे तो लिखा पढ़ी करे।

चहँडौली
पो० हरदुआगंज
(अलीगढ़)
विनीत
कर्ण

आर्यसमाज कालपी

आर्यसमाज कालपी युक्तदेश का वार्षिकोत्सव ६ दिसम्बर १९१६ से १२ दिसम्बर तक होगा। सज्जन महाशय व सन्यासी महाराज तथा पुस्तक विक्रेतागण व भजनीक महोयद पधारें, और आगमन की सूचना दें। जिससे प्रबन्ध में सुविधा रहे। इसी के साथ समाज के खोले हुये आर्यविद्यालय के छात्रों को पारितोषिक वितीर्ण होगा और उसकी रिपोर्ट सुनाई जावेगी, तत्पश्चात् विद्यार्थीगण राजराजेश्वर की विजयकामना करेंगे।

आप का०
शिवचरण लाल सारस्वत
मंत्री आ० स० कालपी

—o—

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ गीतिएं नवे रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
कांगड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection

सामाजिक समाचार

आर्य समाज खुसरुपुर जि० पटना का वार्षिक उत्सव तिथि २, ३, ४ दिसम्बर शनि, रवि, सोम को होना निश्चय हुआ है। आर्यजगत् के प्रसिद्ध उपदेशकों में श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी तथा सुप्रसिद्ध भजनोपदेशक कुंवर सुखलालसिंह जी, का स्वीकार पत्र पहुंच चुका है। और अन्य २ उपदेशकों के लिए भी चेष्टा की जारही है। निमन्त्रित महानुभावों से सविनय प्रार्थना है कि उत्सव के एक दिन पूर्व पहली दिसम्बर शुक्रवार ही को अवश्य दर्शन दें-कृतार्थ करें।

दर्शनाभिलाषी
रघुनन्दनप्रसाद मन्त्री
आर्य्यसमाज खुसरुपुर

पानीपत

ज़िला करनाल की आर्य्यउपप्रतिनिधि सभा कायम है।

उपसभा मंडल करनाल अपना कार्य पूर्ववत् कर रही है पहिले इस का मुख्य स्थान थानेसर था अब पानीपत में परिवर्तित हो गया है-आगामी वर्ष के लिए सभा के अधिकारी निम्नलिखित नियत हुए हैं।

प्रधान चौ० सिंगारसिंह जी, उप प्रधान ला० शादीराम जी, मन्त्री लाला खेमचन्द जी, कोषाध्यक्ष ला० हरगुलालसिंह जी, अधिष्ठाता प्रचार ला० साकुम्भरी दास जी।

उपसभा के टूट ने की जो अफवाहें उडाई जारही हैं वे निर्मूल हैं।

साकुम्भरीदास
अधिष्ठाता प्रचार
करनाल मण्डल

आर्य्यसमाज नज़फ़गढ़

आर्य्यसमाज नजफ़गढ़ का वार्षिकोत्सव २१-२२-२३-२४- दिसम्बर सन् १९१६ ई० तदानुसार १२-१३-१४-अमावस्या पौष कृष्णा सम्वत् १९७३ वि० को होना निश्चित हुआ है-उस में कई एक सन्यासी महोदय तथा अन्य विद्वान् पण्डित-भजनीक महाशय पधारेंगे। नगरकीर्तन २१ दिसम्बर को होगा। तथा २४ दिसम्बर को शङ्का समाधान होगी।

भवदीय
दीपचन्द मन्त्री
नजफ़गढ़

आर्य्यसमाज मजीठा

आर्य्यसमाज मजीठा का निर्वाचन आगामी वर्ष के लिए निम्नप्रकार हुआ।

भक्तचानणसिंह जी प्रधान
हकीम गुलाबसिंह जी उपप्रधान
महाशय दुर्गादत्त जी मन्त्री
महाशय चन्दमल जी पुस्तकाध्यक्ष
पं० रामलाल जी कोषाध्यक्ष
लाला लालचन्द जी प्रतिष्ठित सभासद नियत हुये।

आर्य्यसमाज मजीठा
ज़िला अमृतसर

पं० कालूराम जी का अनुचित व्यवहार और आर्य्यसमाज की

घोरनिद्रा

सर्व आर्य्यसामाजिक जगत् को विदित है कि सनातनी पं० कालूराम जी शर्म्मा ने कुछ अंश में आर्य्यसमाजिकों को और विशेषतया आर्य्यसमाजिकों से अतिरिक्त मनुष्यों को धोखा देने के लिए सत्यार्थ-प्रकाश की प्रथमाऽवृति जो कि स्वामी जी ने प्रकाशित करनी अनुचित समझी थी और द्वितीयावृति अपने विचार के अनुकूल है-इस सिद्धांत को ग्रहण कर स्वामी जी ने प्रथमावृति को रद्द करदी थी, उसी प्रथमावृति को (इस आवृति में जो कुछ विचार हैं यह स्वामी जी के सच्चे विचार थे यह जताने के लिये) प्रकाशित की है तो परोपकारिणी सभा तथा आर्यसमाज प्रतिनिधि सभाओं को इस पर दृष्टि पात करना चहिये कि क्या यह राजकीय नियमों के अनुसार है?

हमारी राय में तो यह अनुचित व्यवहार है।

भवदीय आर्य्य सेवक
रामचन्द्र वर्म्मा

आर्य कुमार सम्मेलन

विषयक सूचनायें

निबंध का विषय "भारत वर्षीय स्कूलों और कालिजों में शिक्षा पाने वाले खावलम्बी विद्यार्थियों की सहायता के लिये क्या २ साधन उपस्थित किये जा सकते हैं।

नोट—सब से उत्तम निबंध लेखक को १०) रुपये का पारितोषक दिया जायगा। निबंध १५ दिसम्बर तक कार्य्यालय स्वागत कारिणी समिति में पहुंच जाना चाहिये।

वादविवाद का विषय "स्कूलों तथा कालिजों में शिक्षा का माध्यम अंगरेज़ी भाषा होनी चाहिये वा अन्य देशी भाषा।

नोट—सब से अच्छे वाद विवाद करने वाले सभासद् की आर्य्य कुमार सभा को एक वर्ष के लिये एक चांदी का प्याला पारितोषिक में मिलेगा।

निम्नलिखित खेलों के लिए आर्य्य-कुमार सभाओं को अपने २ खिलाड़ियों तथा खेलों के नाम कार्य्यालय में ता० १ दिसम्बर तक भेज देना चाहिये:—

	पारितोषिक
१—दौड़	
(क) ½ मील दौड़	एक पुस्तक
(ख) तीन टांग की दौड़	दो पुस्तक
(ग) बोरे की लड़ाई	एक पुस्तक
२—कूद	
(क) लम्बी कूद	दो पुस्तक
(ख) ऊंची कूद	दो पुस्तक
३—जिमनास्टिक कसरत	
(क) पैरेलल बार	एक पुस्तक
(ख) हारीजेन्टल बार	एक पुस्तक
(ग) लीपिङ्ग बोर्ड	एक पुस्तक
४—गोला फेंकना	एक पुस्तक
५—रस्सा खींचना	८ पुस्तक
६—हाकी खेल	११ पुस्तक

७-नव युवक स्वास्थ्य प्रदर्शनी — दो रजक पदक
(Youngmen's Show.)

नोट १—इस प्रदर्शनी में प्रत्येक आर्य्य कुमार सभासद सम्मिलित हो सकेंगे।

नोट २—स्वास्थ्य परीक्षा निम्नलिखित होगी।

(क)—तौल (Weight)
(ख)—आयु (Age)
(ग)—छाती का विस्तार तथा फुलाव (Breadth and Expanding power of the Chest)
(घ)—शायु अनुसार खींचने की शक्ति।
(ङ)—शरीर की साधारण बनावट (General Built of the body.)

नोट ३—इन पांचों बातों के लिये अलग २ नम्बर दिये जायेंगे। दो युवक जो सब से अधिक नम्बर पावेंगे उन्हें पारितोषिक मिलेगा।

८—सामाजिक सेवा प्रदर्शनी (Social Service Show)

(१) प्रथम चिकित्सा (First Aid) करना
(क) डूबे हुए बीमार की।
(ख) हड्डी टूटे हुए बीमार की।
(ग) पैर कुचले हुये बीमार की।
(घ) सिर फूटे हुए बीमार की।
(२) बहिया (Flood) के समय सेवा कर्तव्य।
(३) अति वर्षा के समय सेवा कर्तव्य।
(४) मेलों के अवसर पर सेवा कर्तव्य
(५) दुर्भिक्ष के समय सेवा कर्तव्य।

नोट १—खेल कूद के कार्य्यक्रम के घटाव बढ़ाव तथा बदल देने का अधिकार खेल कूद उप सभा को होगा।

नोट २—जिम्नास्टिक कसरत के अतिरिक्त सब खेलों में केवल आर्य्य कुमार सभासद् ही सम्मिलित हो सकेंगे।

—०—

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered NO. A, 434

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २५ मार्गशीर्ष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ९ दिसम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३४ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृतप्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सक्ता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिये लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत-साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद-मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तार पूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज कर्मचारियों की ओर से मिला है, उस के आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन के ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्य-जाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता :—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार पोस्ट आफिस शामपुर—काङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से	३
विद्यार्थियों से	२॥
भारत विभिन्न देशों से	३॥

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहि के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये प व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में क क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाच होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर स र्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रब कर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १

एक तोले तक १

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजि

CCO, Gurukul Ko

धार्मिक स्वाध्याय

आत्मा के दर्शन

यम

ये धूप और छाया के सदृश परमात्मा और जीव, संसार में साधु-कर्मों के सत्य-फल को देखते हुए, हृदय में और ऊंचे तथा उत्तम स्थान में रहते हैं। जो लोग पञ्चाग्नि गृहस्थी हैं, और जिन्होंने नाचिकेत अग्नि को तीनों रीतियों से प्राप्त किया है, हे नचिकेतः! वे ऐसा ही कहते हैं।१।

जो यज्ञ करने वालों के लिए (संसार नदी से पार करने का साधन होने से) पुल के समान हैं; जो अविनाशी और श्रेष्ठ हैं; पार जाने की इच्छा रखने वालों के लिए जो अभय दान देने वाला है—हे नचिकेतः! उसी नाचिकेत अग्नि से वेद्य ब्रह्म को जानते हुए (हम मोक्ष की ओर जा सकते हैं)। २।

तू आत्मा को रथ का मालिक, और शरीर को उस का रथ जानले। बुद्धि उस रथ का चलाने वाला सारथि है और मन घोड़ों को काबू रखने वाली बागों का काम देता है।३। इन्द्रिय रथ के घोड़ों के समान है, विषय उन घोड़ों के लिये रास्ते हैं। इन्द्रिय और मन से युक्त आत्मा को विद्वान् लोग भोक्ता के नाम से पुकारते हैं।४। जिस की (सारथि सदृश) बुद्धि ठिकाने नहीं, और लगाम का स्थानीय, मन ठीक लगा हुआ नहीं, जैसे सारथि के काबू में दुष्ट घोड़े नहीं आते उसी प्रकार इन्द्रियें उस के काबू में नहीं आतीं। ५। जो मनुष्य बुद्धि से सम्पन्न है, और मन जिस का लगा हुआ है, जैसे अच्छे घोड़े सारथि के वश में रहते हैं, उसी प्रकार इन्द्रियें उस के वश में रहती हैं। ६। जो विज्ञान से रहित है, जिस का मन अपवित्र विचारों से युक्त है, और जो सदा मलिन रहता है, वह उच्च स्थान को नहीं पाता और बारम्बार इस संसार में प्रवेश करता है—बारम्बार बन्धपूर्वक देह धारण करता है। ७। जो पुरुष विज्ञान से युक्त है, जिस का मन युक्त है और जो सदा शुद्ध रहता है, वह उस स्थान को पालेता है, जिस से फिर नहीं लौटता।८।

जिस की बुद्धि सारथि का काम देती है, और जिस का मन लगाम का काम देता है, वह संसार मार्ग से पार उस स्थान पर पहुंच जाता है, जो परमात्मा का परम पद है। (परमात्मा के अत्यन्त समीप पहुंच जाता है। ९।

इन इन्द्रियों की अपेक्षा संसार के विषय अधिक बलवान् हैं। उन विषयों से मन की शक्ति अधिक है। शुद्ध मन से भी अधिक बलवती है, और महान् आत्मा बुद्धि से भी पर है। १०। उस महान् आत्मा से अधिक शक्ति वाली प्रकृति है, और प्रकृति की अपेक्षा अधिक बलवान् परम-पुरुष परमात्मा है। उस से अधिक सामर्थ्य युक्त वस्तु संसार में कोई नहीं है। वह अन्तिम हद्द है, वह परम गति है। ११। सारे पदार्थमात्र में छुपा हुआ यह परमात्मा प्रत्यक्ष से नहीं दीखता। सूक्ष्मदर्शी (योगी) इसे अपनी सूक्ष्म और उत्तम बुद्धि से पालेते हैं। १२। बुद्धिमान् पुरुष की योग्य है कि वह वाणी को मन में, और उस मन को बुद्धि रूप आत्मा में समर्पित करदे—उस बुद्धि रूप आत्मा को महान् जीवात्मा में और उस जीवात्मा को शान्तस्वरूप परमात्मा में समर्पित करदे। १३।

उठो, जागो, और ज्ञानी लोगों के समीप जाकर ज्ञान की प्राप्ति करो। यह संसार रूपी छुरे की धारा तेज़ है और कठिन है। तत्ववेत्ता लोग उस को अत्यन्त दुर्गम मार्ग बतलाते हैं। १४।

जो परमात्मा शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध और विकार से रहित है, और नित्य है, उस अनादि अनन्त, आत्मा से भी पर त्रिकाल में स्थिर ब्रह्म को जान कर (मनुष्य) मृत्यु के मुख से छूट जाता है। १५।

मृत्युद्वारा कहे हुए इस पुराने नाचिकेत उपाख्यान को कह और सुनकर बुद्धिमान् पुरुष ब्राह्मण समूह में प्रतिष्ठा पाता है। १६। जो मनुष्य ब्राह्मणों की सभा में, या श्रद्धापूर्वक किए गये कर्मों के समय इस परमगुप्त रहस्य को सुनाता है, वह अनन्त फल का भागी होता है। १७।

शंका-समाधान

(२) दूसरा प्रश्न यह है कि अकाल मृत्यु होती है या नहीं? इस के उत्तर में पहले अकालमृत्यु शब्द के अर्थ स्पष्ट कर लेने चाहिए।

यदि अकालमृत्यु का यह अर्थ है कि मनुष्य परमात्मा के नियमों के विरुद्ध मर जाता है तो अकालमृत्यु नहीं होती क्योंकि जीवन मरण परमात्मा के नियमों से ही होते हैं।

यदि अकालमृत्यु का यह तात्पर्य है कि मनुष्य अपने जीवन की परमात्मा द्वारा निश्चित की हुई अवधि से पूर्व ही मर जाता है, तब भी अकालमृत्यु नहीं होती, क्योंकि परमात्मा कभी मनुष्य जीवन की झूठी अवधि निश्चित ही नहीं करता वह त्रिकालज्ञ है और ठीक अवधि ही निश्चित करता है।

यदि अकालमृत्यु का यह भाव समझा जाय कि मनुष्य बिना कर्म फल की बारी आये केवल दूसरे के शस्त्र से मर जाता है तो भी अकालमृत्यु नहीं हो सकती क्योंकि मनुष्य को कोई सुख या दुःख कर्मों के बिना नहीं मिलता।

हां— यदि अकालमृत्यु का यह तात्पर्य हो कि यदि किसी प्राणी के जीवन में कोई असाधारण घटना न होती तो हम लोगों की बुद्धि में यही आता कि यह और दस या पन्द्रह साल जी सकता था, और असाधारण घटना से उस का अभी देहान्त हो गया—तो हम कहते हैं हमारी समझ के अनुसार वह अकाल मृत्यु होगी। वस्तुतः कोई अकालमृत्यु नहीं। जो मृत्यु हमारे कर्मों का फल है, वह अकालमृत्यु कैसे?

इस पर दो प्रश्न शेष रह जाते हैं।

यदि अकालमृत्यु नहीं है और सब प्राणी अपने कर्मानुसार नियत समय पर ही मरते हैं तो मारने वाले कसाई या हिंसक को पाप क्यों लगना चाहिए?

दूसरा प्रश्न यह है कि यदि जीना मरना मनुष्य के कर्मों के अधीन है तो ऋषि दयानन्द और पं० लेखराम जैसे सदाचारी महापुरुष इतना शीघ्र ही मृत्यु के ग्रास क्यों हो गए?

इसी सप्ताह में अम्बाला छावनी से म० गेंदाराय जी का पत्र मिला है, उस में भी येही शंकायें की हैं। इन दोनों शंकाओं का उत्तर हम अगले सप्ताह देंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

समाजों के साप्ताहिक अधिवेशन

(२)

सन्ध्या

समाजों के साप्ताहिक अधिवेशनों में बहुत स्थानों पर संध्या करने की प्रणाली प्रचलित है। सब सभासद् मिल कर संध्या का पाठ करते हैं। इस रीति पर बहुत सा मतभेद चला आता है। साप्ताहिक अधिवेशन में सन्ध्या का उच्चस्वर से पाठ करने के पक्षपाती कहते हैं कि इस से दो लाभ होते हैं। प्रथम लाभ तो बहुत मोटा है। ऐसे सामाजिक पुरुषों का अभाव नहीं है जो चिरकाल से समाज में होते हुए भी सन्ध्या के मन्त्रों से अनभिज्ञ हैं। सप्ताह में एक वार सब के साथ मंत्र उच्चारण करने से बहुत सम्भव है कि उन्हें भी सन्ध्या बहुत कुछ याद होती जाय। यह लाभ कोई छोटा नहीं। दूसरा लाभ यह है कि सब के साथ मिल कर सन्ध्या बोलने से एक विशेष एकता का भाव उत्पन्न होता है। मिल कर काम करने से मिलने की ओर रुचि उत्पन्न होती है। मिलकर एक स्वर से मन्त्र उच्चारण करने से धार्मिक कामों में एकता की ओर प्रवृत्ति होती है। ये दो बड़े कारण हैं जो साप्ताहिक अधिवेशन में एक स्वर से सन्ध्या का पाठ करने के पक्ष में दिये जाते हैं। हमारी सम्मति में ये दोनों ही कारण पर्याप्त रीति से पुष्ट हैं। इस में सन्देह नहीं कि सन्ध्या का इकट्ठे उच्चारण करने से—फिर चाहे वह उच्चारण सप्ताह में एक वार ही किया जाय—सन्ध्या के मन्त्रों के स्मरण करने में सहायता मिलती है और यह भी ठीक है कि एक दूसरे के साथ स्वर मिला कर बोलना, मिल कर काम करना सिखाता है; और आर्यमात्र को एक सूत्र में बांधने का एक कारण हो सकता है।

अब दूसरी ओर की भी युक्तियां सुननी आवश्यक हैं। जो लोग समझते हैं कि साप्ताहिक अधिवेशन में सन्ध्या का उच्चस्वर से पाठ करना ठीक नहीं—उन का कथन है कि सन्ध्या के मन्त्र याद करने का उपाय केवल सातवें दिन सन्ध्या के मन्त्र पाठ करना नहीं अपितु प्रतिदिन पाठ करना है। इस लिये सन्ध्या याद कराने का सर्वोत्तम उपाय यह है कि आर्य पुरुष प्रतिदिन समाज-मन्दिर में किसी निश्चित सन्ध्या-समय पर एकत्र हुआ करें, और मिलकर सन्ध्या हवन आदि किया करें। यह नित्य एकत्र होकर सन्ध्या हवन करने की रीति कई स्थानों में प्रचलित है और बहुत उत्तम फल लाई है। इस में जहां नैत्यिक कामों के नियम का अनायास ही पालन हो जाता है वहां साथ ही साथ रोज़ मिलने का अवसर प्राप्त होने से समाज के कार्य को अग्रसर करने के नये २ उपाय भी सोचे जा सकते हैं। यदि सामाजिक पुरुषों को प्रतिदिन बात चीत और सत्संग करने का समय मिलता रहे तो परस्पर मतभेद और वैमनस्य उठने की भी सम्भावना कम रहती है। इस लिये सब से अच्छा तो यही है कि सायंकाल या प्रातःकाल—जिस में भी सहूलियत हो—सन्ध्या के समय सब आर्य पुरुष नियत घड़ी पर मन्दिर में एकत्र हों और नित्य कर्म करके कुछ देर तक परस्पर वार्तालाप करें। जहां तक हो सके वह वार्तालाप किसी धार्मिक या सामाजिक उन्नति सम्बन्धी विषय पर होना चाहिये। जिस प्रकार की बातचीत प्रायः सामाजिक लोगों के मिलने पर हो जाया करती है— और जैसी बात चीत से इस लोगों को कभी २ शर्मिन्दा भी होना चाहिये— वह इस समय न होनी चाहिये। प्रायः आज कल चार सामाजिक पुरुषों के मिलने पर पहला प्रश्न यह होता है कि 'क्यों जी! लाहौर के समाज के झगड़े का क्या हाल है? बन्नू के समाज में अभी शान्ति हुई या नहीं? पं० अखिलानन्द जी आज कल किस शुग़ल में हैं?' बातचीत प्रायः इसी प्रकार प्रारम्भ होती है। इस पर कभी २ अन्य पुरुषों के सामने लज्जित भी होना पड़ता है। समाजमन्दिर में सन्ध्या-समय एकत्र होने पर इस प्रकार के कथा-कलाप न करके सामाजिक या व्यक्तिगत धार्मिक उन्नति के विषय में बात चीत करना ही ठीक है। समाज-मन्दिर को सदा झगड़े के काम में लाना वैसा ही है, जैसा कई लोग माला के मनकों को इसी गिन्ती के काम में लाते हैं कि आज कितने पुरुषों को ठगा या धोखा दे कर लूटा।

इस प्रकार यदि दैनिक सम्मेलन की रीति चलाई जासके, तो सर्वोत्तम है। और इस रीति का चलाना असम्भव भी नहीं। ज़रा से यत्न से ही यह रीति प्रचलित हो सकती है। उस दशा में साप्ताहिक अधिवेशन के समय सन्ध्या पाठ करने की आवश्यकता नहीं। किन्तु यदि अवस्थायें ऐसी हों कि यह आम रीति प्रचलित न की जासके तो साप्ताहिक अधिवेशन के समय सन्ध्या का पाठ कर लेना अच्छा ही है। किन्तु इस में कई बातों का ध्यान रखना चाहिये।

(१) जहां तक हो सके, सन्ध्या-पाठ का समय वही रखना चाहिये जो सन्ध्या करने के लिये उचित हो। प्रातःकाल अन्य कार्यों से पूर्व और सायं-काल अन्य कार्यों से पीछे सन्ध्या समय के आस पास ही मिल कर सन्ध्या-मन्त्रों का पाठ करना ठीक है। प्रातःकाल ९ बजे या सायं काल ४ बजे का समय अनुचित है। जिन नगरों में रात्रि के समय ही समाज का अधिवेशन हो सकता है, उनमें सन्ध्या-पाठ को स्थान न मिलना चाहिये, क्योंकि भोजन के पीछे सन्ध्या का काल नहीं है।

(२) सन्ध्या के समय लोगों के आने जाने और बातचीत करने से प्रायः विघ्न उपस्थित होता है। वह सन्ध्या सन्ध्या नहीं जिस में इस प्रकार के विघ्न आजायं। इसके लिये पूरा यत्न होना चाहिये कि सन्ध्या के समय में मन्दिर में पूरी शान्ति और गम्भीरता हो। इस लिये एक तो यह आवश्यक है कि सन्ध्या पाठ के समय नये लोगों का आना जाना बन्द कर दिया जाय। उस समय अन्दर घुसने का द्वार बन्द हो जाना चाहिये और नये आने वालों की सहूलियत के लिये दरवाज़े के पास कुछ बेंच आदि रख छोड़ने उचित हैं,

CCO, Gurukul Ka...

ताकि जो सज्जन इस समय आवें वे सन्ध्या-पाठ की समाप्ति तक वहीं प्रतीक्षा कर सकें। सन्ध्या पूरे नियत समय पर प्रारम्भ होनी चाहिये ताकि आने वालों को निश्चित काल का ज्ञान रहे। इस प्रकार आवाजाही रोके विना मन्दिर में शान्ति होना सम्भव नहीं। हमें याद है कि शायद परलोकगत डा० चिरंजीव भारद्वाज ने लाहौर समाज में ऐसी रीति प्रचलित भी की थी।

[३] शेष रही सन्ध्या करने वालों की शान्ति। इस के लिए उपस्थित आर्य सज्जनों की सभ्यता पर ही भरोसा रखना चाहिए कि वे सन्ध्या के समय को नए सामाजिक समाचारों पर वार्तालाप करने के काम में न लाया करें।

[४] सब से अन्तिम और सब से अधिक आवश्यक बात यह है कि आर्यमात्र को सन्ध्या-पाठ करने के लिए सन्ध्या के मन्त्र स्मरण कर लेने चाहिए। मन्त्र याद न होने से मन्त्र पाठ के समय जो इधर उधर भागता है, और औरों की एकाग्रता में भी विघ्न उपस्थित करता है। जब तक मनुष्य में यह शक्ति उत्पन्न न हो कि वह विना मन्त्रों के भी परमात्मा का ध्यान कर सके, तब तक मंत्र आवश्यक हैं, और उन का याद करना आर्यमात्र का परम कर्तव्य है।

—:०:—

आर्यसमाज और स्त्रीजाति

का निरादर

जो बाहिर के लोग भारतवर्ष में आते हैं वे यहां के लोगों की एक आदत देख कर बहुत ही आश्चर्यित होते हैं। बाज़ार में जाइये, गली में जाइए, और लाला जी की बैठक में जाइए, बात २ में बोलनेवालों की जिह्वा पर गन्दी गाली सुनिएगा—और गाली भी किसे? सामने बैठे हुए पुरुष को नहीं—माता को, बहिन को, बेटी को। आपस के तकरार में स्त्रियों को गाली देना—यह भारतवर्ष की विशेषता हो गई है। आर्यसमाज ने इस कलंक को दूर करने का बहुत सा यत्न किया है— और स्त्री जाति को आदरणीय स्थान देने के लिये कोशिश की है किन्तु शोक है कि अभी तक कलंक धुला नहीं। पुराने संस्कारों के कारण आर्यसमाज में भी यह कुप्रवृत्ति प्रवेश करती जा रही है। आपस के झगड़ों में अपने आप को आर्य कहने वाले पुरुष दूसरों की बहू बेटियों पर कुशब्द प्रयोग करने तथा गाली प्रहार करने से नहीं चूकते। जहां एक ओर ऐसा करना अधम नीचता है, वहां दूसरी ओर नपुंसक कायरता है। जो बात आप एक अबला स्त्री के लिये लिखते हैं, आप जानते हैं कि यदि वही बात पुरुष के लिये लिखते तो शायद आप को सिर बचाना मुश्किल हो जाता। सिर के डर से आप अपने अवाच्य शब्दों का निशाना पुरुष को नहीं, उसकी बहू बेटियों को बनाते हैं। क्या इस से बढ़ कर भी कायरता हो सकती है।

मनुमहाराज ने लिखा है कि जिसकुल में स्त्रियों का मान नहीं, वह कुल शीघ्र ही कुत्तों का ग्रास बन जाता है। यही सिद्धान्त एक समाज के लिये भी लगता है। जिस समाज में स्त्रियों का मान नहीं होता, उसके दिन गिने हुए समझने चाहियें। उस का जीवन आज नहीं तो कल समाप्त हो जायगा।

आर्य्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर किसी नीच नपुंसक की ओर से एक पेम्फलेट बांटा गया था जिस में आर्य्यसंस्थाओं पर राय देते हुए आर्य पुत्रियों को विशेषतया कलंकित करने का यत्न किया गया था। लिखनेवाले ने अपने आप को 'निष्पक्ष एम० ए०' के नाम से प्रकाशित किया है। इस पेम्फलेट को जिस भद्रपुरुष ने पढ़ा उसी ने एक सर्द आह भरी और आर्यसमाज में ऐसे पुरुषों के होने पर दुःख प्रकाशित किया। कायरता और नीचता मनुष्य से जो कुछ करा सकती हैं, इस एम. ए. महाशय ने वही कुछ किया है। यह पेम्फलेट इस योग्य है कि यदि कोई आर्य पुरुष इसे पावे, तो बिना खोले ही पांव के नीचे पहले कुचलदे और फिर आग में डालदे। जब तक ऐसे नीच पुरुषों की कर्तूतों के साथ ऐसा उचित व्यवहार न किया जायगा तब तक आर्य जाति पर लगा हुआ कलंक धुल नहीं सकता। जो कायर अबलाओं के चरितों पर कलंक लगाता है और अपना नाम प्रकाशित करने का साहस नहीं करता—आर्यजनता को चाहिये कि उस पर और उस के पृष्ठपोषक सहायकों पर अनगिनत वार धिक्कार की बौछार करें—यही ऐसे मनुष्य के होने का प्रायश्चित्त है।

—:०:—

कृतकार्य स्नातक

यह समाचार गुरुकुल-प्रेमी बड़े हर्ष से सुनेंगे कि गुरुकुल के दो स्नातकों ने आयुर्वेद की परीक्षाओं में कृत-कार्यता लाभ की है। स्नातक भरद्वाज विद्यालङ्कार ने आयुर्वेदाचार्य की परीक्षा में सफलता पाई है। आप इस परीक्षा के साथ ही साथ डाक्टरी की परीक्षा देने की भी तय्यारी कर रहे हैं। दूसरे स्नातक ब्रह्मानन्द विद्यालंकार के आयुर्वेद-विशारद परीक्षा में उत्तीर्णता प्राप्त की है। हम अपने दोनों भाइयों को इस सफलता पर बधाई देते हैं।

पं० विशननारायण दर

गत सप्ताह लाहौर समाज के उत्सव के वृत्तान्त ने और लेख रोक लिये। इसी कारण हम भारत-माता के एक सच्चे सपूत के जीवन नाटक के अन्त की सूचना पाठकों तक न पहुंचा सके और न ही अपनी भक्ति की भेंट उनकी स्मृति की सेवा में भेज सके। पं० विशननारायण दर देश के उन कुछ एक नेताओं में से थे, जिन के अन्दर देशभक्ति का वह स्थान हो, जो एक धार्मिक हृदय में धर्म का होता है। देशभक्ति उन का धर्म था। धर्म के लिये मनुष्य में जो निर्भयता चाहिये, दर महोदय में वह पुष्कल राशि में विद्यमान थी। जब राजनियम के कठोर दंड ने बड़े से बड़े चुस्त राजनीतिक पहलवानों की गर्दनें झुकादी थीं; तब भी खरी सुनाना दर महोदय का ही काम था। इस सच्ची देश-भक्ति पर अनूठी योग्यता का पैबन्द ऐसा लगा था कि लोग इस कमबोलनेवाले कृशशरीर नेता पर बड़ा विश्वास रखते थे, और हर समय सलाह की आशा में रहते थे। ऐसे योग्य भारतपुत्र के उठ जाने से अवश्य ही भारत माता की गोद का कुछ भाग खाली हो गया है, और आशा नहीं कि वह भाग शीघ्र ही भरा जासके।

———

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्री गोपिका-गीत

ऐसा कौनसा हिन्दी प्रेमी होगा जिसने पं० श्रीधरपाठक की कविता का आस्वाद कभी न लिया हो? आपकी कविता में मिठास और अर्थ-गौरव का जो मेल है वह और कवियों में मिलना कठिन है। आपके इस छोटे से 'श्री गोपिका गीत' में यह मेल खूब ही उचित सम्बन्ध से हुआ है। भागवत के गोपिका-गीत का यह अनुवाद है, किन्तु अनुवाद का सा सूखापन इस में नाम को भी नहीं है। यह गीत जिसे चाहिये वह श्री गिरिधर पाठक श्री पद्म कोट, लूकरगंज इलाहाबाद से मंगवा सकता है। कृष्णभक्तों को यह गीत विशेषतया रुचेगा।

—:o:—

वैदिक मेगज़ीन

वैदिक मेगज़ीन का दोमास का नया अंक निकल आया। अंक लेखों की दृष्टि से उत्तम हुआ है। लेख प्रायः सभी पढ़ने योग्य हैं। गुरुकुल में वायसराय के आने का मनोहरभाषा में पूरा वृत्तान्त दिया गया है।

—:o:—

गुरुकुल सम्बन्धी पत्र

अन्य स्थान पर इस वार दो गुरुकुल सम्बन्धी पत्र छपे हैं। म० दीनानाथ दोसाज़ आर्यसमाज के एक प्रेमी युवक हैं—और म० सन्तराम बी.ए. भी समाज के कार्य से पूर्ण हित रखते हैं। ये दोनों सज्जन अपनी सन्ततियों के लिये स्वयं उत्तरदाता हैं। म० दीनानाथ जी के लेखानुसार ये पत्र छापे जाते हैं। इस सम्बन्ध में हमें कुछ अधिक निवेदन नहीं करना है। दोसाज़महाशय अपने युवक जोश में महात्मा जी की जिस स्कीम को चौका फेरने वाली कहते हैं, शिक्षा के वैदिक आदर्श के पुनरुद्धार की और आर्यसमाज को सदाचारी और योग्य सेवक देने की यही एक मात्र स्कीम है। शिक्षा के कार्य को आर्यसमाज के कार्य-क्षेत्र से बाहिर समझते हुए दोसाज़ महाशय इस बात को भूल गये हैं, कि सत्य के प्रचार का सर्वोत्तम साधन शिक्षा ही है। जहां सच्ची शिक्षा से ज्ञान की आंखें नहीं खुलीं, वहां सत्यासत्य की परीक्षा कैसे सम्भव है। जातियों और धर्मों के भविष्य शिक्षा पर ही अवलम्बित रहते हैं। जिस राजसभा के ज़िम्मे आप शिक्षा का कार्य सौंपना चाहते हैं, वह या तो कहीं भविष्य की गोद में बैठी है, या किसी युवक मस्तिष्क की कल्पना शक्ति में रह सकती हैं। जब तक कोई आर्य—राज—सभा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धार का कार्य नहीं लेती तब तक शिक्षा सम्बन्धी वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिये, ऋषि की अभिलाषा पूर्ण करने के लिये, आर्यसमाज को सेवक देने के लिए तथा देश में सच्ची शिक्षा का आदर्श स्थापित करने के लिये गुरुकुल विश्वविद्यालय चलाने का भार समाज पर है और रहेगा।

—:o:—

पं० विशननारायण दर तथा आर्यसमाज

स्वर्गवासी पं० विशननारायण दर देशके एक प्रधान रत्नों में से थे। आप के देहान्त ने संयुक्त प्रान्त के सामाजिक जीवन में एक विशेष स्थान रिक्त कर दिया है। जो लोग आपसे परिचित थे वे जानते थे कि आप के चित्त में एक विशेष प्रकार का धार्मिक आवेश था, जो समय २ पर कई रूपों में प्रकट होता रहता था। पहले आप व्यासोफी की ओर झुके किन्तु पीछे से कुछ मतभेद हो जाने से आपने उसका ध्यान छोड़ा दिया। आपके जीवन के पिछले भाग की धार्मिक रुचि के विषय में बहुत सी बातें सुनी जाती हैं, किन्तु हमने तीन साल हुए तब सुना था कि दरमहोदय की विशेष अभिरुचि आर्यसमाज की ओर है। यह भी सम्भव समझा गया था कि शायद वे समाज के सभासद् बन जावें। अब आप के मित्र मि० एस० एन० बहादुर का लीडर में एक लेख छपा है जिससे ज्ञात होता है कि उनका विचार था कि समाज के सभासद् बन जायं, किन्तु कई सिद्धान्तों पर मतभेद होने के कारण वे न बने। आप जब गुरुकुल आये थे, तब आर्यसमाज के नव्वे फ़ीसदी धार्मिक विचारों से सहमत थे, केवल १० फ़ीसदी पर मतभेद था, इन्हीं के कारण आप समासद् नहीं बने, अन्तरात्मा से आप ऋषि दयानन्द के पक्के शिष्य थे।

—:o:—

लाहौर के वार्षिकोत्सव पर हुए व्याख्यानों में से हम दो का हाल लिखना भूल गये थे। श्रीयुत ला० वज़ीरचन्द्र जी के शान्तिरस बरसाने व्याख्यान ने आर्यजनता पर विशेष प्रभाव डाला था। श्रीमती कुमारी लज्जावती जी के भाषण का अपना ही सौन्दर्य था। ऊंचा स्वर, अच्छी भाषण शैली, और विद्यालय के लिये सेवाभाव—ये सब गुण मिला कर आप के व्याख्यानों में विशेष मनोहरता डाल देते हैं। आपके व्याख्यान का समय बड़ा कठिन था, महात्मा जी के व्याख्यान से पूर्व आपका भाषण था, तो भी आपने थोड़ी देर में उपस्थित लोगों को सम्हाल ही लिया और अपना व्याख्यान बड़ी कृतकार्यता से समाप्त किया।

—:o:—

इंग्लैंड के टाइम्स पत्र के शिक्षा-परिशिष्ट में शिक्षा पर लिखते हुए एक लेखक ने कुछ ऐसे वाक्य लिखे हैं जो भारत की शिक्षा-प्रणाली पर खूब घटते हैं। शिक्षणालय से ऐसे लोग कैसे पैदा हो सकते हैं जो कला कौशल में अगुआ बन सकें—इस प्रश्न का उत्तर देते हुए लेखक लिखता है—'जो शिक्षणालय स्वाधीन विश्वविद्यालयों से सम्बन्ध रखते हैं, उन में ऐसा हो सकता है, यदि राज्य इस कार्य को ले तो नहीं कर सकता क्योंकि राज्य के कार्य्यकर्त्ता लोग शिक्षा पर शिक्षा की परिभाषा में नहीं, किन्तु रुपया, राजनीति और कुमन्त्रणा की परिभाषाओं में विचार करते हैं'

भारत वर्ष की शिक्षा समस्या पर विचार करनेवाले सज्जन इस सिद्धान्त को सामने रखें तो बड़ा लाभ हो।

—:o:—

CCO. Gurukul K

गुरुकुल समाचार—

गुरुकुल को जब तक कोई देख नहीं लेता तभी तक सन्देह रहता है। श्रीमान वाइसराय के पधारने के पश्चात् मिस्टर ए. डब्ल्यू. स्टेन्हली साहेब सुपरेन्टेन्डिङ्ग इन्जिनियर नहर, अपनी धर्म पत्नी सहित, पधारे थे। गुरुकुल के भोजन से वे बहुत सन्तुष्ट हुए थे। इसी लिऐ मेरे साथ भन्डारी शालिग्राम जी का भी फ़ोटो लिया था। एक प्रति फ़ोटोज़ की भेजते हुए वह लिखते हैं—"I need not tell you that we greatly enjoyed our visit to you that day, and my wife was specially struck with what we saw. I do not see how anybody with an impartial mind can help being interested in the institution to whose welfare and success you are contributing so much." परन्तु स्टेन्डली साहेब जानते ही होंगे कि संसार में स्वार्थ मनुष्यों को निष्पक्ष नहीं रहने देता।

श्रीमान् वाइसराय ने एक और कृपा गुरुकुल पर की है। मैंने श्रीमानों के प्राइवेटसेक्रेटरी महाशय को लिखा था कि लार्ड तथा लेडी चेम्सफ़ोर्ड के फ़ोटो भेज दें क्योंकि हम फ़ोटोज़ से बड़े चित्रवत्रा कर पुस्तकालय में लगाना चाहते हैं। उसके उत्तर में जो पत्र मिस्टर जे. एल. मैफ़ी साहेब, प्राइवेट सेक्रिटरी, ने भेजा उसकी नक़ल नीचे देता हूं—

"In reply to your letter, dated October the 25th, I write to let you know that Their Excellencies look back with great pleasure on their visit to the Gurukula and that they are glad to learn that the Brahmacharies and Staff have pleasant recollections of the day. His Excellency the Viceroy, on reading your letter, gave orders that portraits of himself and Her Excellency should be dispatched to you. I am arranging for this separately and hope that the portraits will reach you in due course in good condition."

इस के पश्चात मिलिटरी सेक्रेटरी महाशय का पत्र आया कि चित्र इङ्गलैन्ड से मंगाए गए हैं, और अब २४ नम्बर को दिल्ली से चले हुए चित्र पहुंच गए हैं; और शीघ्र ही पुस्तकालय में लटकाये जायंगे। आशा करनी चाहिए कि श्रीमान वाइसराय का सम्बन्ध गुरुकुलके साथ स्थिर रहेगा।

गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ (जो गुरुकुल विश्वविद्यालय की मुख्य शाखा है) के मकान निर्वाह योग्य बन गए हैं। शीघ्र ही चार श्रेणियों का सारा सामान मालगाड़ी द्वारा भेजा जायगा और आशा पड़ती है कि २२ वा २३ दिसम्बर तक अन्तिम चार श्रेणियों के छोटे ब्रह्मचारी वहां पहुंच जायंगे। नए ब्रह्मचारियों का चुनाव २५ दिसेम्बर को समाप्त हो जायगा और उन्हें भी २६ वा २७ दिसम्बर को यहां से इन्द्रप्रस्थ के लिए विदा कर दिया जायगा। इन श्रेणियों के संरक्षकों को सूचना देता हूं कि वे बड़े दिनों की छुट्टियों में उन्हें मिलने काङ्गड़ी आने का कष्ट न उठावें प्रत्युत उक्त नए गुरुकुल की प्रतिष्ठा तथा नए ब्रह्मचारियों के वेदारम्भ संस्कार के समय गुरुकुल के भवन इन्द्रप्रस्थ में ही पधारें।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की प्रतिष्ठा तथा उत्सव की तिथियां निश्चित हो चुकी हैं। १२ जनवरी को संरक्षक महाशय पहुंच जावें। १३ जनवरी को प्रातः स्थान की प्रतिष्ठा और प्रवेश संस्कार होगा। उसी समय आशा की जाती है कि श्री सेठ रघूमल जी उक्त गुरुकुल के स्थिर कोष के लिए ५० सहस्र मुद्रा का चेक वा करंसीनोट देंगे। जो दिल्ली निवासी सज्जन गुरुकुल भवन इन्द्रप्रथ की शेष इमारत को पूरा करने के लिए धन देना चाहें उन को भी उसी समय तय्यार रहना चाहिए। दो पहर को विश्राम करने के पश्चात् २ बजे से फिर उत्सव का अधिवेशन होगा और ५ बजे तक भजन तथा व्याख्यान होंगे। १४ जनवरी को प्रातः नए प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार होगा और एक विशेष व्याख्यान के पश्चात ११½ बजे उत्सव समाप्त हो जायगा। विशेष समय विभाग पीछे से छपवाया जायगा।

ब्रह्मचारियों के सर्व संरक्षक महाशयों से एक निवेदन है। एक संरक्षक सभा बतलाई जाती है जिस के मन्त्री पद के अधिकार से दिल्ली के लाला बालकृष्ण वाली ने, दो वर्ष हुए, एक ट्रैक्ट आक्षेप पूर्वक निकाला था। उसका उत्तर ६५ से अधिक संरक्षकों की सभा में मैंने चैत्र, सम्वत् १९७२ के वार्षिकोत्सव पर दिया था और उस समय सब ने मेरे उत्तर से सन्तोष प्रकट कर के बहुत से भाइयों ने संरक्षक सभा से अपना कोई भी सम्बन्ध न होना जतलाया था। म० बालकृष्ण वाली और उन के दो तीन मित्र एक दो व्यक्तियों से कड़वी बात चीत होने के कारण तथा कुछ गुरुकुल से निकले वा पृथक किए गये अध्यापकों की बहकावट से अबफिर गुरुकुल के विरुद्ध विष फैला रहे हैं। ये लोग सामने बात चीत करते नहीं और ट्रैक्ट लिख कर बांटते हैं जिसकी कोई प्रति न तो गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता को ही भेजते हैं और नहीं गुरुकुल निवासी संरक्षकों को। जो ट्रैक्ट बांटा जा रहा है वा जो लेख विरोधी पत्रों में छपवाए जा रहे हैं, उन का खण्डन तो उन्हीं में विद्यमान है, और इस लिए गुरुकुल के सेवकों को उनके उत्तर में कुछ भी लिखने की आवश्यकता नहीं। परन्तु यह जानना आवश्यक है कि म० बालकृष्ण वाली के साथ कितने संरक्षक सहमत हैं। मैं म० वाली और उन के मित्रों के विरोध का सविस्तर कारण छपवा कर संरक्षक महाशयों की सेवामें भेजना चाहता था, परन्तु जो काम का बोझ मुझ पर है, उसके होते हुए इस काम में शायद दो मास लग जाएं और इधर विष फैलता जायगा। अतएव सब संरक्षक महाशय जुदा जुदा लिख कर भेजें कि उन का संरक्षक सभा के मन्त्री के इस काम से कहां तक सम्बन्ध है।

इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल के उत्सव की समाप्ति पर १४ जनवरी के मध्यानोत्तर वहां उपस्थित संरक्षक महाशयों की एक सभा की जावेगी, जिस में उन के सब प्रश्नों के उत्तर दिए जायंगे।

मुंशीराम मुख्याधिष्ठाता

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ⁄)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्म-प्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल, विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) दैनिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। =) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल, हरिद्वार

टूटा हुआ फूल

[१]

जिसकी शोभा से यह लतिका
हंसती हुई दिखाती थी,
अपनी हरी भरी गोदी को
बारम्बार हिलाती थी।
देख देख कर खिलना जिसका
फूली नहीं समाती थी,
जिसको पाकर अनही मन में
भाग्य बड़ाई गाती थी।

[२]

जिसने वदन हास्य से अपना
पूरा नहीं खिलाया था,
जिस में अब तक कृत्रिम कोई
रंग नहीं लग पाया था।
प्रकृति देवि ने जिस को सुन्दर
सुखद सुरूप दिलाया था,
मुग्ध मधुर सौरभ से जिसने
सब का चित्त लुभाया था।

[३]

उस अधखिले फूल को तू ने
रे बालक क्यों तोड़लिया,
अनजाने तू ने सब उसका
जीवन-सार निचोड़ दिया।
सूनी उस लतिका की गोदी
भली तुझे क्या लगती है,
अश्रुधार आखों से कैसे
उसके अब रुक सकती है।

[४]

जिसको निज जीवन में अपने
हंसना और हंसाना था,
जिस को अपने नव सौरभ का
सुखद समीर बहाना था।
जिस को निज कृत्यों से सब को
भव्य भाव दिखलाना था,
अलि-समूह ने जिस के गुण का
गान अभी कुछ गाना था।

[५]

ऐसे सार भरे जीवन को
क्यों तू ने हा! नष्ट किया,
कोमल उस दुखिया के मनको
अतिशय तू ने कष्ट दिया।
उस के सुख-मय मनोधान में
विष हा! यह लाकर बोया,
सम्पत जीवन प्राण वही था
सर्वस उस का हा! खोया।

[६]

खोल खोल कर कुसुम दलों को
अगर खिलाना चाहेगा,
लाख करेगा यत्न नहीं पर
कभी खिला तू पायेगा।
उस के जीवन की इतिश्री क्यों
तू ने हा! ऐसे कर दी,
आशा भरी गोद यह तू ने
अहो निराशा से भर दी।

[७]

रे बालक अब चला कहां तू
उस को ले कर अपने हाथ,
तेरे और अनेकों साथी
तू खेलेगा जिन के साथ।
नहीं उसे वह कुछ आवेगा
तेरा अहो अनूठा प्यार,
निश्चय जान, किया है तूने
अतिशय घोर कठिन व्यवहार।

[८]

खेल खेल में तेरे साथी
उसे हाथ से लेलेंगे,
निर्दयता से मसल तसल कर
उसे हाथ बिथरा देंगे।
स्थान मान का ध्यान न करके
उस को खूब लताड़ेंगे,
कहीं कीच में कहीं धूल में
मट्टी बुरी बिगाड़ेंगे।

[९]

अब भी उचित यही है तुझ को
उसे यहीं बस रहने दे,
इस ही आल बाल में इस को
दुख सुख जो हो सहने दे।
अपनी माता की गोदी में
पड़े पड़े मुरझाने दे,
अन्तिम क्षण सुख से ही अपने
इस को यहीं बिताने दे।

[१०]

पड़ती तेज धूप को लख कर
पत्तों में वह ढक लेगी,
मृतक देह इस की वह पा कर
छाती ठंडी कर लेगी।
इसके सहयोगी सब सारी
शय्या अहो बना देंगे
शान्त भाव से उस को उस से
मिल के सब दफ़ना देंगे।

[११]

शीतल अनिल सदा ही उस को
शीतलता पहुंचायेगी,
इस की अटल नींद में तब फिर
बाधा और न आयेगी।
इस के प्यारे इस पर नित ही
दो आंसू टपकायेंगे,
देख देख इस को ही अपना
उलझा दिल सुलझायेंगे।

शान्तिस्वरूप

CCO. Gurukul K

गुरुकुल सम्बन्धी पत्र

श्रीमान् सम्पादक जी—नमस्ते

एक निज पत्र में मैंने अपने भाई श्रीमान् लाला सन्तराम जी गोहल B. A. को आर्य्यसमाज विषयक कुछ लिखा था—जिसमें स्वभावतः गुरुकुल कांगड़ी का ज़िकर भी किया—मैं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का सदा से ही अनन्य भक्त रहा हूं—मुझे इस System पर शंका नहीं है—बरंचे मैं शिक्षा के काम को आर्य समाज के कार्य्य-क्षेत्र से पूर्णतया बाहिर समझता हूं—आर्य्य पुरुष अपने निज पुरुषार्थ से भले ही नगर नगर और ग्राम ग्राम में गुरुकुल खोलें परन्तु कृपया आप ही बतलावें कि गुरुकुल का चलाना आर्यसमाज समूह रूप से (as a body) किस नियम के अनुसार कर रहा है? आचार्य ऋषि दयानन्द तीन प्रकार की सभाओं (राजसभा, धर्म सभा, विद्या सभा) का वर्णन करते हुए शिक्षा के कार्य्य को विद्यासभा के आधीन बतलाते हैं—परन्तु धन्य हैं आर्य धर्म सभा के संचालक जिन से एक कार्य अथवा धर्म का प्रचार तो होता नहीं परन्तु शिक्षा के काम को भी अपने हाथ लेना चाहते हैं। (इस समय आर्य समाज केवल आर्य-धर्म सभा नहीं हैं। उसे यथासम्भव आर्यों के लिए सभी सभाओं का काम करना पड़ता है। सम्पादक) मैं प्रत्येक प्रान्तिक प्रतिनिधिसभा के आधीन एक गुरुकुल को तो यह समझ कर कि इस के स्नातक कुछ न कुछ (यहां 'कुछ न कुछ' शब्द का क्या महत्व है? सम्पादक) कार्य्य समाज का करेंगे ही और कि यह एक तजर्बा enperiment ही सही tolerate किया करता था (यह आपकी बड़ी कृपा थी। सम्पादक) परन्तु पिछले दिनों प्रातः स्मरणीय पूज्यपाद महात्मा जी की इस चौंका देने वाली (इन शब्दों के लिए आर्य मात्र आप का धन्य वाद करेंगे। सम्पादक) स्कीम ने कि वह बहुत ही शाखाऐं तथा उप शाखाएं खोल कर आर्य समाज को एक महान विश्वविद्यालय से सुशोभित करेंगे मुझे कुछ लिखने पर बाधित किया है। मैं एक वैदिकधर्मी होते हुए यह शब्द आर्य मात्र के कानों तक पहुंचाना चाहता हूं कि यह शिक्षा का कार्य्य राजसभा का है न कि आर्य्य सभा का (यह ज्ञात नहीं हुआ कि विद्यासभा का है या राजसभा का? राज सभा का क्यों है इस में कारण नहीं दिया। सम्पादक) मैं इसी विषय पर सन्तराम जी का पत्र भी साथ ही भेज रहा हूं—आशा है कि आप दोनों पत्रों को सद्धर्म प्रचारक में स्थान दे कर न केवल मुझे बल्कि आर्य मात्र को कृतार्थ करेंगे—

(हमारे नवयुवक भाई अपनी राय को आर्य मात्र के कानों तक पहुंचाना चाहते थे—इस लिये हमने छाप दिया है। सम्पादक)

आर्यसमाज का सेवक

दीनानाथ दोसाज़

फ़ोर्थ-इयर

मेरठ कालिज, मेरठ

—०—

प्रिय महाशय,

आपने पत्र में जो भाव प्रकट किए हैं, उन के एक बड़े भाग के साथ मैं सहमत हूं, पर सामाजिक शिथिलता को दूर करने के लिए जो उपाय आप बतलाते हैं उन में आप से मेरा मतभेद है। हमारी शिथिलता का कारण किसी हद तक हमारी संस्थाएं हैं उस में कुछ भी संदेह नहीं, पर ये मूल और मुख्य कारण नहीं। हमारी शिथिलता का मूल कारण बहुत गहरा है। स्कूलों को मैं बुरा समझता हूं और आप भी ऐसा ही समझते हैं। पर ऋषि महर्षियों की प्रदर्शित गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली पर से मेरी श्रद्धा नहीं उठी। मैं समझता हूं कि यही एक मार्ग है जिस से आज भी हमारा पुनरुद्धार हो सकता है। बात असल में और है। लोग गुरुकुल को टकसाल समझ रहे हैं पर वह टकसाल नहीं जहां से कि ठप्पा लगकर एक ही नमूने के मनुष्य निकलते रहें। गुरुकुल एक शिक्षणालय है जहां बालक की सोई हुई प्राकृतिक शक्तियों को विकसित करने का प्रयत्न होता है। उचित और अनुकूल परिस्थिति में रखकर, सब प्रकार की सुविधाएं उपस्थित करके, बालक की स्वाभाविक क्षमताओं को जागृत किया जाता है। उस के आचार, विचार, और तन्दुरुस्ती को दृढ़ और परिपक्व किया जाता है। यह भी आप जानते हैं कि मनुष्यों के स्वभाव और प्रकृतियां भिन्न २ हैं। सब की रुचि एक सी नहीं। ऐसी अवस्था में एक कक्षा या एक विद्यालय के सभी छात्रों को एक ही काम के लिए तय्यार करना कितनी भारी भूल है। जिस बालक की रुचि गणित की ओर है जो एक उत्तम गणित-शास्त्री बन सकता है उसे कृत्रिम प्रभावों से एक दार्शनिक पण्डित बनाने का यत्न करना न जाने कहां तक युक्तियुक्त कहला सकता है। यही बात गुरुकुल के छात्रों की है। वहां के प्रत्येक बालक से यह आशा रखना कि वह धर्म्म-प्रवक्ता बन कर दिग्दिगन्तर में वैदिकधर्म्म का डंका बजाता फिरेगा मनुष्य प्रकृति से अनभिज्ञता का प्रमाण है। गुरुकुल का काम केवल इतना ही है कि वह देश-भक्त, शुद्धाचारी, मातृभाषा-प्रेमी, सत्यानुरागी, और उत्तम स्वास्थ्य वाले युवक तैयार करे। वे युवक चाहे लेखक चाहे बढ़ई हों, और चाहे लुहार हो। इस से गुरुकुल का कुछ वास्ता नहीं। मैं तो यहां तक कहने को तैय्यार हूं कि गुरुकुल से निकला हुआ एक सत्यानुरागी, नास्तिक एक अंध विश्वासी और दिखलावे के आस्तिक से कई गुना अच्छा है।

अच्छा, तो फिर गुरुकुल से आर्य्यसमाज को क्या लाभ? यदि आर्य्यसमाज का काम उत्तम मनुष्य तैयार करना है तब तो यह इस के उद्देश्य को पूरा करता है और यदि उस का अभीष्ट धर्म्मान्ध, पक्षपात की अग्नि में जलने वाले, मतवाले पैदा करना है तब उसे इस से फायदा तो क्या उलटा नुकसान है। गुरुकुल उपदेशक विद्यालय नहीं, और मेरी समझ है कि नवयुवक धर्म्म उपदेष्टा बन ही नहीं सकते। ईसाइयों का ढंग हमारे लिए ठीक नहीं। संसार की गर्मी सर्दी देखे हुए, अनुभवी सन्यासी ही वैदिक धर्म्म का अपने आचरणों से प्रचार कर सकते हैं, वही सच्ची आत्मिक शान्ति दे सकते हैं। एक नवयुवक वेद शास्त्रों का पारगामी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पण्डित हो सकता है, वह चित्ताकर्षक व्याख्यान दे सकता है, वह शास्त्रार्थ में अन्य मतावलम्बियों को नीचा दिखा सकता है पर योगाभ्यास और ब्रह्मज्ञान के सूक्ष्म रहस्य वह नहीं बता सकता। और इन के बिना सच्ची शान्ति कहाँ? येन केन प्रकारेण अपनी संख्या बढ़ाना एक बात है और आत्मिक शुद्धि दूसरी बात। ईसाई मुसलमान आदि अपनी संख्या के बढ़ाने में लगे हुए हैं पर आप लोग उन के ही शस्त्रों का प्रयोग नहीं कर सकते। वे हमारे काम के नहीं। हम दुनिया को उनके से साधनों से आकृष्ट नहीं कर सकते। परमात्मा ने हमें किसी उच्च उद्देश के लिए पैदा किया है। आर्य्यसमाज ने यदि नवयुवक उपदेशक ही पैदा करने हैं तो उसे एक अलग उपदेशक-विद्यालय खोलना चाहिए (गुरुकुल विश्वविद्यालय में ही उपदेशक विभाग खोला गया है—उस से यह कार्य भलीभांति हो सकता है—सम्पादक) इसमें केवल वही युवक प्रविष्ट हों जिन की प्रवृत्ति धर्म्म प्रचार की ओर हो—ये युवक चाहे स्कूलों के विद्यार्थी हों और चाहे गुरुकुल के स्नातक। अलबत्ता, गुरुकुल स्नातकों के एक बड़ी संख्या में इस विद्यालय में प्रविष्ट होने की सम्भावना हो सकती है क्योंकि इन लोगों के लिए ऐसा करना अपेक्षाकृत बहुत सुगम होगा।

यदि अपने देशमें स्वराज्य हो तो स्कूलादि बन्द कर के सब कहीं गुरुकुल प्रणाली पर ही शिक्षा दी जाय, क्योंकि गुरुकुल चलाना आधुनिक यूनीवर्सिटियों की भान्ति, राज्य का ही कर्तव्य है। इन गुरुकुलों से निकले हुए स्नातक उपदेशक, डाक्टर, वकील, टीचर एञ्जीनियर, बढ़ई इत्यादि बना करें। आर्य्य लोगों ने अपनी तुच्छ शक्तियों को एकत्र करके बड़ी मुश्किल से एक गुरुकुल चलाया था। और जाति निर्बल तो पहले ही थी, एक विद्यालय चला कर ही थक गई। हम में दीर्घोद्योग की भारी कमी है। हम किसी काम को पूर्ण करने के पहले ही थक जाते हैं। कालेज चलाना कोई शौर्य्य का काम नहीं। नौकरी के लिए लोग स्वयमेव अपने बच्चों को वहां भरती कराते हैं। ये सब निकट का अल्प लाभ सोचते हैं। गुरुकुल दूर का स्थायी हित करता है। वह जाति के जीर्ण कलेवर का उद्धार करना चाहता है। पर काम देर का है दस पांच बरस का नहीं। ईसाइयों और मुसलमानों ने कई कालेज चलारक्खे हैं, सरकार पाश्चात्य सभ्यता के प्रचारार्थ अनेक विश्वविद्यालय खोल रही है तो क्या वैदिक सभ्यता के पुनरुद्धार के लिए आर्य्यसमाज एक गुरुकुल भी नहीं चलासकती! एक करोड़पति सेठ अकेला ही गुरुकुल चला सकता है पर औदार्य चाहिए। वैदिक धर्म्म के प्रचारार्थ अन्य प्रत्यक्ष साधनों का भी प्रयोग कीजिए पर गुरुकुल को भी उन्नत कीजिए। सहज पके सो मीठा हो। इस परीक्षण का फल देर से निकलेगा। यदि इस में कोई त्रुटि है तो उसे दूर कराने का यत्न कीजिए। अधिकारीवर्ग सुनने को तैय्यार हैं। डी०ए०वी० कालेज की भान्ति यूनिवर्सिटी के परिणाम दिखाकर लोगों को प्रसन्न रखना और बात है और जाति के अन्दर प्रकृत जीवन का सञ्चार करना दूसरी। गुरुकुल की उन्नति के मार्ग में जो बाधाएं हैं उन्हें दूर कीजिए तब उस के उत्तम फलों की प्रतीक्षा कीजिए। जैसे स्वा० सत्यानन्द और स्वा० सर्वदानन्द सन्यासी होने पर भी दयानन्द नहीं हो सकते, वैसे ही आजकल के पराधीन जाति के चलाए हुए निर्बल गुरुकुल कपिल और भीम नहीं पैदा कर सकते। हां, समय आ सकता है जब कि ये संस्थाएं जाति के लिए राम और कृष्ण पैदा कर सकेंगी। पर उनकी दो एक वर्षों में आशा करना इतिहास शास्त्र से अनभिज्ञता प्रकट करना है। म० कृष्ण जी से इस विषय में कई बार विचार हो चुका है। कई दिन मैं भी आपके मत का ही पृष्ठपोषक था, पर दीर्घ-चिन्तन ने मेरा भ्रम दूर कर दिया है। गुरुकुल को मैं अब नई दृष्टि से देख रहा हूं। मेरी उस पर अब पहले से भी अधिक श्रद्धा हो रही है।

मैं नहीं समझता कि मैं अपने भाव आप पर भली भान्ति प्रकट कर सका हूं या नहीं। पर मेरे कथन का सार यही है कि गुरुकुल वेद प्रचार में बाधक नहीं वरन् परम सहायक है। कौन कहता है उपदेशक न तैय्यार किए जायं पर जैसे उपदेशक ..... विद्यालय तैय्यार करता है या जैसे उपदेशक आज कल .....आधीन कर्य्य कर रहे हैं इन से विशेष लाभ की सम्भावना नहीं अलबत्ता वे सभा के लिए धन एकत्र करने का एक अच्छा साधन अवश्य हैं। प्रत्यक्ष साधन—पुस्तकें रचना, उत्तम आचार रखना, और सद्व्यवहार—भी गुरुकुल की सहायता से ही सम्पादित हो सकते हैं। उत्तम लेखक जबतक पैदा न हों लिखकर प्रचार कभी नहीं हो सकता। आचार व्यवहार का शुद्ध रखना भी अभ्यास का ही परिणाम है। जब तक कोई साधन-आश्रम—गुरुकुल—न हो साधक तैय्यार नहीं हो सकते। आर्य्यसमाज के अन्दर जैसा लचर साहित्य इस समय तैय्यार हो रहा है उसे कोई भी अन्य मतानुयायी विद्वान् पढ़ने को तैय्यार नहीं। जो दो अक्षर भी जानता है वही ग्रंथ-रचयिता, कवि, और उपदेष्टा बन बैठता है। धर्म्म के नाम पर ये लोग आर्यों को लूट लूट कर खा रहे हैं। जिन्हें आर्य्यसमाज से बाहर कोई भी नहीं पूछता वही यहां धुरंधर लेखक, कवीश्वर, और निखिलशास्त्र निष्णात बन कर टके बटोर रहे हैं।

लिखने को तो बहुत सी बातें थीं पर उन्हें लिखने के लिए शक्ति नहीं। अतएव इतने पर ही बस करता हूं। आप को लिखने का शौक है आप ही किसी पत्र में इस विषय पर अन्दोलन कीजिए। महात्मा जी को लिखिए।

कृपैषी
सन्तराम

हमारी शिथिलता का क्या कारण है इस पर तत्विक गहरा विचार कीजिए, मैं लिख नहीं सकता। आज कल गुरुकुल से अश्रद्धा बहुत फैल रही है। कई अधीर प्रकृति के युवक अश्रद्धा की लहर में बहने लगे हैं। मैं चाहता हूं कि किसी पत्र में उस विषय पर लेख लिखूं। पर एक तो समय मेरे पास नहीं, दूसरे तन्दरुस्ती भी बिगड़ रही है। इस लिए आप को भी आवश्यक समझ कर ही यह लम्बा पत्र लिख सका हूं। यदि आप मेरा यही पत्र आर्य्य मित्र या सद्धर्म्मप्रचारक में छपवादें तो अभीष्ट सिद्ध हो सकती है। इस से अन्दोलन भी होने लगेगा और गुरुकुल को भी बहुत कुछ लाभ पहुंच सकेगा। स० र०

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

कहो अब क्या कहते हो।' मंजूरअली ने कहा--'जहां पनाह ! भला मैं नाचीज़ आप के सामने क्या कह सकता हूं ? पर इतनी अर्ज़ ज़रूर करूंगा, कि आप एक आदमी के कहने से ही ऐसा न मानलें। शायद इस में कोई झूठ हो।' बादशाह ने कहा 'नहीं, झूठ नहीं हो सकता। कल्याणसिंह को मैं जानता हूं-वह सच्चा आदमी है-अच्छा, कल्याणसिंह तुम सारा हाल कह सुनाओ।'

'जहांपनाह ! दास का काम स्वामी की सेवा करना है। उस सेवा में यदि कोई विघ्न पड़े तो उसे हटाना भी दास का कर्तव्य है। हुजूर की आज्ञा का यथावत् पालन किया गया। जब समझाने बुझाने से गुलाब सिंह ने अपनी कन्या देना स्वीकार न किया और अकड़ता ही गया तो हमारे दस्ते ने धावा बोल दिया। सबने बड़ी हिम्मत से काम किया। किसी ने अपनी जान की परवा नहीं की। वह राजपूत लड़की हमारे काबू आगई। हम लोग पालकी पर उसे ले कर दिल्ली की ओर चल पड़े। रास्ते में हमारा किसीने भी पीछा न किया। गांव के लोगों को हमने खूब धोखे में रखा। वे इधर उधर ही घूमते रहे होंगे-हम तक कोई भी नहीं पहुंचा। भरी दोपहर के समय हम एक झाड़ में आराम करने बैठे तो मुरादबख़्श को बुला कर गुलामकादिर ने अपनी कुमन्त्रणा की। उस से कहा कि 'इस राजपूतनी को मैं अपने घर ले जाऊं तो क्या हर्ज है, तुम्हें मैं बादशाह से बहुत सा इनाम दिलवा दूंगा—और ओहदे में भी बढ़वा दूंगा' इसी तरह की बातों से उसे अपने जाल में फंसाना चाहा। मुझे किसी काम के बहाने दूर भेजना चाहा-किन्तु मैं हुजूर के पक्के हुक्म को टाल नहीं सकता था। मुराद ने सारी कुमन्त्रणा का हाल मुझ से कहा, और हम दोनों ने बाकी के सिपाहियों की सहायता से धोखेबाज़ कादिर को गिरिफ्तार कर लिया। ऐसा प्रतीत होता है कि उस धूर्त ने पहले ही इस नीच काम करने के साथी चुन रखे थे। जब इधर हम उसे बांधने लगे तो उधर कादिर के साथी डोली में से रजपूतनी को लेभागे। हुजूर यही सच्चा २ वृत्तान्त मैंने आपकी सेवामें कह सुनाया है। आप जैसे भी चाहें-इसे तस्दीक कर सकते हैं। गुलाम इस की सत्यता के लिये अपनी गर्दन तक देने को तय्यार है।'

यह सारा वृत्तान्त सुनकर बादशाह ने कल्याणसिंह को एक जिज्ञासाभरी दृष्टि से देखा और फिर कहा—

'कल्याणसिंह ! देखो तुमने हमारे एक सर्दार पर बड़ा भारी दोष लगाया है। क्या तुम जानते हो कि इस के सच होने से क़ादिर की और झूठ होने से तुम्हारी गर्दन धड़ से अलग होगी। क्या तुम इस की सत्यता का ज़िम्मा लेते हो' कल्याणसिंह ने विनयपूर्वक झुक कर कहा कि 'कृपानिधान ! दास तो पहले ही इस की सत्यता पर गर्दन रख चुका है। हुजूर जैसे चाहें, मेरी बात की सचाई को परखलें।'

पाठक देखेंगे, कल्याणसिंह की सुनाई गई कहानी बहुत कुछ सच्ची है। केवल दो ही भेद किए गए हैं। एक तो जान बूझ कर तेजसिंह का नाम छोड़ दिया गया है। कल्याणसिंह और मुराद अपने काम का श्रेय तीसरे को नहीं देना चाहते थे, और यह भी भय था कि कहीं बादशाह तेजसिंह के साथ कोई सख़्ती न करें। किले में आने से पूर्व ही कल्याणसिंह ने तेजसिंह को एक विश्वस्त राजपूत के घर छोड़ दिया था। दूसरा भेद यह किया गया था कि कमलदेवी के भगाने का भार कादिर पर डाल दिया था। इस के विना उन दोनों का छुटकारा न था।

कल्याणसिंह बाहिर भेजा गया—और क्रमशः मुराद और दो सिपाही बुलाये गये। मन्जूरअली ने उन से ख़ूब जिरह की, परन्तु सब ने कल्याणसिंह का ही समर्थन किया। सारे दल ने बात रास्ते में ही तय करली थी। सब ने एक ही कहानी सुनाई।' अब तो निश्चय हो गया कि क़ादिर ही आज का अपराधी है। शाह आलम के माथे पर क्रोध की भयानक रेखा दिखाई दी। मंजूरअली ने समझ लिया कि अब क़ादिर का साथ देना अच्छा नहीं, इस में अपनी ही हानि है। वह भी चुप हो रहा।

किसी को कुछ भी पता न चला कि क्या हुआ, किन्तु दूसरे दिन प्रातः काल सारे दरबार में यह समाचार बड़े अचम्भे से कहा जाने लगा, कि गुलामकादिर दरबार से निकाल दिया गया है—और न जाने कहां चला गया है।

तेरहवां परिच्छेद

नदी का सूना तट

जिस को राखे साइयां, उसे न मारे कोय।

एक सुख-पालित बालिका के लिए यह पहला ही अवसर था। जो बिना साथी के कभी घर से बाहिर भी न निकलती थी—आज वह संसार-नदी के चंचल थपेड़ों की मार में बहने लगी। वह नहीं जानती कि किधर जारही है। बस उस के मन में केवल एक इच्छा थी कि अत्याचारियों के हाथ से कैसे निकलूं, अपने धर्म की रक्षा कैसे करूं। उस हरिणी की भांती, जो व्याध के शस्त्र से डर कर चौकड़ी भरती हुई भागती है किन्तु नहीं जानती कि कहां जाकर बचेगी, कमलदेवी यमुना की गम्भीरधारा की पीठ पर एक सामान्य लकड़ी का सहारा लिए भागी जा रही थी। यमुना की धारा उस स्थान पर बहुत तेज़ नहीं थी—इस पर कमलदेवी उस पवित्र नदी को मन ही मन कोस रही थी। यह उसे ज्ञात था कि यमुना में नगरमच्छ बहुत हैं, और कोई भाग्यवन्त व्यक्ति ही उनसे बच कर निकल सकता है किन्तु मगरमच्छ अत्याचारियों से तो अच्छा था। वह धर्म को नहीं मारता था-केवल देह पर वार करता था। कमलदेवी को इस समय पालकी की अपेक्षा मृत्यु बहुत उत्तम प्रतीत होती थी। शान्त गम्भीर जल धीरे २ बह रहा था, उस की पीठ पर

शेष फिर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पिष्ट पशु विधान

वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति,

देहरादून में डालनवाला रोड पर डा० बलदेव सिंह जी के मोहनी भवन के समक्ष-राय शिवनाथ जी आहिताग्नि का सुविस्तृत भूमि में बना हुआ सुरम्य, वैदिक-जीवन-आश्रम है [इस का विशेष वृत्तान्त फिर कभी सुनाया जावेगा] उसमें आज कल प्रथम नवम्बर से 'चातुर्मास्य यज्ञ' का प्रारम्भ हो रहा है जो कि दश दिवस पर्यन्त होता रहेगा—यज्ञ के तृतीय दिवस की यह क्रिया है कि—"वरुण प्रघास के लिये मेष मेषी करण" अर्थात वरुण देवता के लिए मेंढे और मेंढी पशु का बनाना। उस दिन पेसन की एक मेंढी और छोटासा मेढ़ा बनाया गया—इन पशुओं की अस्त व्यस्त पिण्ड रूप आकृति बनाई गई—यदि यज्ञकर्त्ता खिलौने बनाने में कुशल होते तो यह सम्भव था कि मेष मेषी की आकृति तद्रूप बनादी जाती परन्तु फिर भी उन के रोम लगा कर कुछ न कुछ ढांचा बना ही दिया। एक यज्ञकर्ता ने न जाने क्या समझ कर मेढ़ी के सींग से बना दिए इस पर ब्रह्मा जी रुष्ट होकर कहने लगे कि मेषी को सींग लगाने का प्रमाण वेद में नहीं है। यह क्यों अनर्थ कर दिया (धन्य है सींग ढूंढने के लिए भी वेद का प्रमाण) जब पशु तैयार होगये तो एक कुण्ड में उनको स्थापन कर घास जला आगे रख दिया जिस से कि वे पेट भर कर खूब तृप्त हो जावें फिर दूसरे दिन कई प्रकार की क्रियाओं के अनन्तर उन पशुओं को पृथक् २ पात्रों में रखकर उन्हीं में यथाविधि फटा हुआ दुग्ध घृतादि डाले गये और फिर एक विशेष प्रकार की लुरिका (छुरी) रूप यज्ञशस्त्र से वेद मंत्रों द्वारा उन पशुओं का सम्यक्तया हवन करके क्रमशः हवन कुण्ड में डाला गया-उस समय की अवस्था को वे ही अनुभव करसकते हैं जो कि वहां उपस्थित थे। हवन कुंड में पड़े कच्चे आटे के साथ लिपटे हुए हविर्द्रव्य के जलने से ऐसा प्रतीत होता कि प्रत्यक्ष मांसखंड जल रहे हैं-क्योंकि जैसे मांस के जलने से दुर्गन्ध उठा करती है उसी प्रकार मांस जन्य रोमों के जलने से भी दुर्गन्धि का फैलना आवश्यकीय था।

उस समय एक वृद्धपुरुष उस ओर बैठे हुए थे जिधर कि हवन का धुवां आ रहा था-उन्होंने उस गंध से तंग आकर अपने नाक को रुमाल से दबा रक्खा था फिर पुरोडाश हविर्भाग के साथ उन पशुओं के अवशिष्ट खण्डों को भी क्षुरिका से काटकर मिला दिया। जिसमें कि प्रत्यक्ष रोम लिपटे हुए दृष्टि आते थे-उस वेद मंत्रों से पवित्र प्रसाद (राक्षसी दूषितान्न) को समस्त यज्ञ कर्त्ताओं ने श्रद्धा पूर्वक भक्षण किया।

सुना जाता है कि पहिले राय शिवनाथ जी दृढ़ आर्य्य थे और आर्य सिद्धांतों के अनुकूल चलना परमकर्त्तव्य समझा करते थे—स्वामी जी के वेदभाष्य को शुद्ध मानते थे फिर न जाने कौनसी घटना ऐसी होगई कि जिससे अब राय शिवनाथ जी के विचारों में पृथिवी आकाश का अन्तर होगया। कहां वह शुद्ध भाव कि वेदों में नाममात्र भी हिंसा का विधान नहीं और कहां यह विपरीत विचार कि वेदों में जो नरमेध, गोमेध, अश्वमेध, मेषमेध आदि यज्ञों का विधान है वे यथार्थ में उन पशुओं की हिंसा करने से ही सिद्ध होसकते हैं। इन्हीं हिंसक भावों से प्रेरित होकर राय साहिब जी ने ऋग्वेद के प्रथम मंडल का भाष्य भी कर दिया, उसमें अनेक मन्त्रों के ऐसे घृणाजनक अर्थ किये गये हैं जैसे कि एक निरन्तर जीव हिंसा करने वाले के चित्त में भी नहीं आ सकते। सम्भव है कि इस प्रकार के अर्थ आपने सायण भाष्य के आधार पर ही किये हों [मैं फिर किसी लेख में उन मंत्रों का उल्लेख करूंगा। जिन का कि वेद में हिंसा मानने वालों ने कैसे घृणित अर्थ किये हैं और उन्हीं का श्री स्वामी दयानन्द जी ने कैसा पवित्र भाव प्रकट किया है] सम्भव है कि ऐसे ही वेद के घृणित भाष्यों को देख कर पूर्वकाल में बुद्धदेव ने दुःखी हो कर वेदों की जड़ काटने के लिये कुल्हाड़ा उठाया हो-जिसका परिणाम यह हुआ कि आस्तिकाभिमानियों के अत्याचार से वेदभक्त भारत वेदनिन्दक हो गया था।

वैसे तो राय शिवनाथ जी आहिताग्नि वेदों के परम भक्त हैं, हज़ारों रुपये ख़र्च कर के सुन्दर वैदिक जीवन आश्रम स्थापन किया है—वेद विहित कर्म्मों को करते हैं और वेद प्रचार के लिये भी प्रयत्न करते रहते हैं—अतएव प्रशंसा के पात्र हैं—दुःख और खेद केवल इसी बात का है कि पवित्र अर्थों को न मान कर—हिंसायुक्त निन्दित भावों पर दृढ़ विश्वासी हो रहे हैं।

जब यजमान के ही ऐसे सिद्धान्त हों तो बेचारे टकासित्र यज्ञ कराने वाले पंडित कब विरुद्ध व्यवस्था दे सकते हैं—हां में हां मिला कर आजीवन करना ही परम धर्म्म है—वैसा मिलने पर निर्दोष पशुओं के गले पर छुरी चलाने का भाव प्रकट किया जा सकता है।

प्रत्यक्ष हिंसा करके यज्ञ करने में रुकावट केवल यही हो रही है कि दक्षिणी पंडितों ने अभी यह व्यवस्था दी है कि कलियुग में वैश्य प्रत्यक्ष हिंसा कर के यज्ञ सम्पादन नहीं कर सकते। क्योंकि राय साहिब वैश्य-कुल भूषण हैं इस लिये पिष्ट पशुओं का ही बलिदान करके यज्ञ साधन करना उचित समझा गया है।

सम्भव है कि कभी जीवित पशुओं का ही वध कराने की व्यवस्था देने वाले कोई उदार चेता ब्रह्मा मिल जावें—तब फिर तो यज्ञ सर्वाङ्गपूर्ण हो कर स्वर्ग प्राप्ति हो ही जावेगी इसी लिये कहा है कि, वैदिकी हिंसा हिंसा न भवति। हे दयामय! कभी हमें भी दया युक्त शुद्ध ज्ञान दीजिवेगा।

अमरनाथ औदीच्य

—:०:—

CCO, Gurukul Ka...

सामाजिक समाचार

आर्यसमाज सदर बाजार दिल्ली का वार्षिकोत्सव १५,१६, १७ तथा १८ दिसम्बर १९१६ को होना निश्चय हुआ है। १५ को नगर कीर्तन होगा और शंकासमाधान के लिये १८ तारीख नियत हुई है। श्री मंत्री जी आर्योपदेशकों को निमंत्रित करते हैं।

श्री स्वामी सत्यानन्द जी सरस्वती महाराज के ३ शान्तिप्रद उपदेश खुर्जा आर्यसमाज बलदेवाश्रम में हुए। उपस्थिति ५०० से अधिक होती रही।

आर्यसमाज झरिया जिला मानभूम ने अपने २०/११/१६ की अन्तरंग सभा में स्वामी हरप्रसाद जी के ७५ मन्त्रों का सामवेद प्रकाशित करने के विरुद्ध प्रस्ताव पास किया है कि:-

"यह समाज उन की इस कार्य्यवाही को केवल सर्वथा अनुचित, घृणित तथा धर्म्म विरुद्ध ही नहीं किन्तु आर्य्यमात्र के दिल दुखाने वाली समझती है और श्रीमती सार्वदेशिक आर्य्य-प्रतिनिधि सभा से बल पूर्वक प्रार्थना करती है कि इस विषय में शीघ्र ही कोई उचित कार्य्यवाही करे और समस्त आर्य्यसमाजों के मंत्री महाशयों की सेवा में निवेदन करती है कि अपने अपने समाजों से प्रस्ताव पास करा कर शीघ्र सभा में भेजें।"

राय बहादुर मुन्शी दामोदरदास जी प्रधान अनाथालय बरेली की मृत्यु पर शोक प्रकट करने के लिये अनाथालय बरेली में ११-११-१६ को शोक सभा की गई। राय साहिब अनाथालय के पुराने प्रेमी थे अतः उनकी कोई स्थिर यादगार अनाथालय में बनाने का प्रस्ताव पास हुआ।

म० शान्तिस्वरूप जी उपदेशक शुद्धी सभा सूचना देते हैं कि १७/१२/१६ को ३ बजे सायंकाल श्री पंडित लालमणि जी भट्टाचार्य्य वकील फर्रुखाबाद के स्थान पर १२ जन्म के मुसलमानों की शुद्धी की जायगी।

श्री मंत्री जी आ० स० लाहौर छावनी सूचना देते हैं कि पिछले दिनों आर्य्यसमाज लाहौर छावनी के भूतपूर्व प्रधान लाला भगवानदास जी की सुयोग्य पुत्री का विवाह राजा कुन्दनलाल जी रईस हैदराबाद दक्षिण के सुयोग्य पुत्र के साथ बड़े समारोह के साथ लाहौर छावनी में हुआ। गुरुकुल के स्नातक प्र० युधिष्ठिर जी तथा एक दूसरे पंडित जी ने संस्कार बड़ी उत्तम रीति से करवाया जिस का प्रभाव अत्युत्तम रहा। इस अवसर पर कन्या पक्ष की ओर से ७२) तथा वर पक्ष की ओर से २६१) विविध संस्थाओं को दान मिला।

श्री मन्त्री जी दर्शनानन्द तर्कशालिनीसभा दिल्ली आर्य्य पुरुषों से प्रार्थना करते हैं कि पं० रामचन्द्रजी दिल्ली निवासी को फरवरी के अन्त तक किसी समाज के उत्सव पर तथा शास्त्रार्थ के लिये न बुलाया जावे तो बड़ी कृपा होगी। क्योंकि लगभग तीन मास के हुए कि पंडितजी के पुत्र उत्पन्न हुआ था और उसका २ सप्ताह के पश्चात् ही देहान्त होगया। तब से उन की धर्म्म पत्नी जो रोगी चली आती हैं और पंडित जी के बाहर चले जाने पर उनको बड़ा कष्ट होता है। अतः जब तक उनकी धर्मपत्नी जी अच्छी न हो जांय तबतक उनका दिल्ली में रहना ही ठीक है।

(२) श्री दर्शनानन्द तर्कशालिनीसभा के सभासदों को योग्य बनाने के लिये पंडित जी को वर्ष में कम से कम ३ मास तो बराबर साप्ताहिक अधिवेशनों में आना चाहिये।

(३) १५ से १८ दिसम्बर तक आ० स० सदर बाज़ार दिल्ली का उत्सव है और सम्भवतः मास फर्वरी १७ में आ० स० दिल्ली का उत्सव होगा, जिन पर पंडित जी का यहां रहना आवश्यक है।

शुद्धि सीतामढ़ी—गत १२ नवम्बर को श्री लाला गोपीनाथ जी के सुयोग्य पुत्र श्री दुर्गाप्रसाद जी वैदिक संस्कार द्वारा संस्कृत हो कर आर्य्य क्षेत्र में प्रविष्ठ हुए। सपरिवार संस्कार शुद्धि के पश्चात् उन्होंने २५) गुरुकुल को दान दिये। इस संस्कार की विशेष कार्य्यवाही के लिये गुरुकुल से पं० जयदेवजी विद्यालंकार गये थे। वहां श्री पं० जी के छः सात दिन वैदिक सिद्धान्तों पर भिन्न २ स्थानों पर व्याख्यान होते रहे जिनमें सीतामढ़ी के निवासी बड़े उत्सव से भाग लेते रहे। अन्त के दिन स्नातक जी का विद्यार्थियों के प्रति एक बड़ा शिक्षाप्रद उपदेश हुआ। अगले दिन गुरुकुल के लिये ४६।-) एकत्र हुए, जिसमें १) एक मुसलमान भाई का भी है।

गुरुकुल आते हुए पं० जयदेव जी जयपुर की ओर गये थे वहां जोधपुर के श्रीमान् ठाकुर नरेन्द्रसिंह जी से १२) दान प्राप्त हुआ।

—०—

अपील

जोधपुर आर्य्यसमाज मन्दिर जो कि वर्षों से एक यवन के हस्तगत था, छुड़ाकर समाज ने अपने हस्तगत कर लिया है। और आठ मास हुए समाज मन्दिर ही में साप्ताहिक अधिवेशन आदि सामाजिक सर्व कार्य्य बराबर होते हैं। समाज का दृढ़ निश्चय था कि विगत अगस्त अथवा सितम्बर मास ही में स्थानिक समाज का वार्षिकोत्सव भी बड़े ही उत्साह से किया जावेगा। परन्तु समाज के मन्द भाग्य से श्रीमान् पूज्यपाद महात्मा श्री मुन्शीराम जी के अस्वस्थ हो जाने के कारण अब किसी प्रकार से भी उत्सव तो हो नहीं सक्ता। इधर रुपये देने वाला महाजन अपने रुपयों का तकाज़ा करता है, अतः संसार भर के आर्य्य पुरुषों से अपील कर आशा की जाती है कि अपनी उदारता से समाज को शीघ्र ही ऋण से मुक्त करेंगे अस्तु।

समाज ने निश्चय कर लिया है कि एक मास के अन्दर ऋण की पूर्ती हो गई तब तो ठीक, वर्ना समाज मन्दिर बेच कर ऋण चुका दिया जावेगा और जो शेष द्रव्य बचेगा उस से एक छोटासा समाज मन्दिर बनवा लिया जावेगा।

मन्दिर की लागत ८०००) के लगभग है और ऋण केवल ढाई सहस्र के लगभग होगा। इत्यलम्।

जिस किसी पत्र में इस पर कोई महाशय अपने विचार प्रकट करें उस की एक प्रति समाज को भी अवश्य ही भेजने की कृपा करें और दानादि भी मन्त्री समाज के नाम ही भेजें।

आपका दास—
लक्ष्मण आर्य्य
मन्त्री आर्य्यसमाज, जोधपुर

—०—

विज्ञापन

"आर्य्यकन्या पाठशाला अलीगढ़ के वास्ते एक ऐसी सुयोग्य अध्यापिका की आवश्यकता है जो आर्य्यसिद्धान्त को मानने वाली हो और पञ्चम श्रेणी तक कन्याओं को हिसाब आर्य्य भाषा, शिल्प, तथा धर्मशिक्षा में शिक्षा दे सके। वेतन योग्यतानुसार १५) से २५) रु० तक दिया जावेगा। प्रार्थना पत्र सार्टीफिकट सहित को विश्वम्भरसहाय गुप्त वैलइनजिनियर, प्रधान आर्य्य कन्या पाठशाला कमेटी अलीगढ़ के पास भेजे जावें।"

—०—

विज्ञापन

आर्यअनाथालय मूंगेर में तीन कन्यायें विवाह योग्य हैं। जिनको विवाह सम्बन्ध करना हो व्यवहार करें।

आर्यअनाथालय मूंगेर के लिये एक अध्यापिका की आवश्यकता है जो कन्याओं को देवनागरी करने के अतिरिक्त उनको आर्यभाषा पढ़ा सके तथा उनको गृह कार्य्यों की शिक्षा दे सके। वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा।

परमेश्वर प्रसाद वर्मा
मन्त्री
आर्यअनाथालय
मूंगेर—

—०—

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ गीतियां, रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप सरल में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने से इस सर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम करने वाले को न चूकना चाहिए ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल कांगड़ी पो० श्यामपुर जि० बिज

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered NO. A 434

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } २ पौष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० १६ दिसम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३५ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृतप्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सक्ता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिये लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का सपिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेदमन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तार पूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। इन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उस के आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन के ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक गुप्त रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य-मात्र को इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस शामपुर-काङ्गड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन विना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १०)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कुछ उपयोगी बातें

१—माता पिता शिक्षित हों या अशिक्षित, उनकी अन्तःकरण से भक्ति करो। वह समाज में गणनीय अथवा माननीय न भी हों तो भी तुम उन का सन्मान और श्रद्धा करने में कुछ कमी न करो। बड़ों तथा शिक्षा देने वाले गुरुजनों के सामने हमेशा नम्र बने रहो।

२—स्वजाति, कुटुम्ब, ज्ञातीय, बन्धु, बान्धव इत्यादिकों के साथ निष्कपट हो कर सुजनतापूर्ण अच्छा व्यवहार करो। परोपकारी आदमी के हमेशा कृतज्ञ रहो।

३—ऐसे काम करो जिस से कि समीप रहने वालों में शान्ति और मित्रता बढ़े; ऐसी बातों को हमेशा ध्यान में रखो जिन से कि लड़ाई झगड़े का सूत्र पात होता हो।

४—किसान जुलाहा आदि व्यवसायी लोगों को छोटे दर्जे का समझ कर इन से घृणा मत करो क्योंकि यह लोग तुम्हारी भोजन वस्त्र की सहायता करने में परम मित्र हैं।

५—बुरे कामों में धन को खर्च मत करो क्योंकि ऐसा होने से बुरे तरीकों से धन संग्रह करने की आवश्यकता नहीं रहती। जो मितव्ययी हैं लक्ष्मी उनसे अत्यन्त प्रेम करती है।

६—स्कूल व पाठशालाएं तुमको ज़बानी शिक्षा देने के लिये ही नहीं बनाए गये अपितु (बल्कि) तुम्हारी प्राकृतिक उन्नति का साधन करना ही उन का उद्देश्य है। यदि पुस्तकों के ढेर पढ़ कर भी तुम्हारी प्रकृति पवित्र न हुई तो पढ़ने का परिश्रम व्यर्थ गया जानो।

७—विजातीय रीति, नीति, आहार, व्यवहार, और वस्त्रादि का परित्याग करदो। अपने देश की रीति का अवलंबन कर के जातीय गौरव को बिठाओ।

८—भोजन, भाषा, वस्त्र, और पोशाक यही चार जाति के चिन्ह हैं। स्वदेशीय रीति के अनुसार इन का व्यवहार व अनुष्ठान न करने से जातीय प्रकृति का नाश हो जाता है।

९—अशिक्षित मनुष्यों को सबके साथ हमेशा दीनता का व्यवहार करना चाहिये। समय २ पर उनके साथ इकट्ठा मिलकर तात्कालिक विषय सम्बन्धी राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक आन्दोलनका सार लेकर वार्तालाप करना चाहिये।

१०—सभ्यता की शिक्षा इस प्रकार मत दो जिससे कि सदाचार और धर्म की हानि हो।

११—जिस काम में लोगों का मंगल होता हो उसको तुम स्वयं कुछ हानि उठा कर भी सम्पादन करो, क्योंकि ऐसा करने से अन्त में तुम्हारा भला होगा।

१२—पुत्र पुत्री और छोटे भाइयों को अच्छी शिक्षा दिलाओ। ऐसा करने से वे अच्छे रास्ते पर आकर जन्म भर सुखी रह सकेंगे।

१३—लोगों के मुख से सुनकर किसी व्यक्ति की निन्दा मत करो। परनिन्दा करने से जिह्वा अपवित्र और मन कलुषित हो जाता है।

१४—साधु महात्माओं को ऊपर से देख कर ही उनकी प्रकृतिका विचार मत करो। उनका अन्तःकरण अग्निकी तरह ज्वलन्त और उज्वल होता है किन्तु बाहरी काम धूएं की तरह मलीन हुए मालूम होते हैं।

१५—दुष्ट और दुरात्मा मनुष्य को आश्रयदान मत करो। उनको आश्रय देने से सत् पुरुषों को कष्ट उठाना पड़ता है।

१६—लोभी आदमी के साथ कभी भी मित्रता न करो क्योंकि लोभी मनुष्य निःस्वार्थ भाव से तुम्हारे दुःख सुख में सहायक नहीं बन सकता।

१७—जो दूसरे को उपदेश करने लगते हो तुम स्वयं उसको करते हो कि नहीं। इस बात पर विशेष रूप से दृष्टि रखो। जबानी उपदेश देने की अपेक्षा कार्य द्वारा उपदेश देना अच्छा है।

१८—अपने परिवार, मित्रगण अथवा और किसी की भी गुह्य (पोशिदा) बात साधारण स्थान पर कभी भी प्रकाशित न करो।

१९—जिस बात को तुम सिद्ध न कर सको उसको सहसा (यकायक) किसी से मत कहो।

२०—तुम्हारा मित्र हो या शत्रु अपने घर आने पर उसका सत्कार करो। अभ्यागत पुरुष का कभी भी निरादर मत करो।

२१—जिस सभा में अनेक मनुष्य उपस्थित हों वहां सावधान होकर बात चीत करो। क्योंकि वह सब तुम्हारे अनुकूल व स्वधर्मी नहीं हैं। जो बात ठीक और सप्रमाण हो उसको निर्भय होकर प्रकाशित करो।

२२—जिस शुभ काम में हाथ डालो जब तक वह समाप्त व सुसम्पन्न न हो जावे तब तक किसी के सामने उस की चर्चा न करो।

२३—यौवनकाल अत्यन्त संकट से पूर्ण है किन्तु यह काल पुरुषार्थसाधन के बहुत उपयोगी हैं। उस ही को पुण्य, उस ही को महात्मा और उस ही को मनुष्यों में श्रेष्ठ जानो जो यौवन काल की बड़ी विघ्न राशि को धैर्य और संयम के द्वारा दूर कर के श्रेष्ठ कामों को कर सकता हो।

२४—तुम्हारा मित्र हो या शत्रु किसी को तिरस्कार के समय में भी अश्लील कर्कश वचन मत कहो।

२५—ज्ञान देनेवाला जन्म देनेवाले की अपेक्षा अधिक माननीय है और यदि जन्म दाता स्वयं ज्ञान देने वाला हो तो वह सबकी अपेक्षा श्रद्धापात्र होता है।

२६—पवित्र वस्तु खाओ, ऋतुओं के उपयोगी पवित्र वस्त्र धारण करो, पवित्र स्थान में उठो बैठो और पवित्र प्रकृति वाले मनुष्यों के साथ प्रेम उत्पन्न करो।

२७—कोई तुमको मध्यस्थ मानकर विचार करे तो उस समय तुम किसी का भी पक्षपात न करो सत्य और धर्म के अनुरोध से निजबुद्धि अनुसार प्रकृत विषय का निर्द्धारण करदो।

२८—किसी के अनुरोध से कहीं अधिक और लज्जा से कहीं कम परिमाण में भोजन न करो।

२९—जब कोई माननीय पुरुष कुछ कहता हो और तुम उसको सुनते हो तो यदि उसको तुम जानते भी हो तो उस कुछ बादा मत दो। क्योंकि उस बात को तुम्हारे जान लेने से दूसरे सुनने वाले नहीं जान सकते। अथवा तुम जो कुछ जानते हो वह उसकी अपेक्षा और अधिक न कह सकते हैं।

३०—जो मनुष्य विशेष रूप से अनुधान नहीं करते जो कोई कुछ बोलता उसी में विश्वास कर लेते हैं ऐसे अश्रद्धेय शुद्धाशय मनुष्यों की मित्रता कभी मत करो।

वसन्तलाल गुप्त
कनखल

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक।

सच्चा स्वराज्य

(१)

आज भारत के कोने २ में स्वराज्य का शब्द गूंज रहा है। जो लोग इस शब्द के महत्त्व को समझते हैं और जो नहीं समझते, उन सब को यह अत्यन्त प्रिय है। इस में न जाने क्या आकर्षण भरा पड़ा है? इस में न जाने कौनसी मिठास ओतप्रोत है? 'स्वराज्य' इस शब्द का उच्चारण होते ही बालक नाचने लगते हैं, युवकों का रुधिर जोश से दौड़ने लगता है, प्रौढ़ पुरुष भी सीना सीधा करके बैठ जाते हैं, और बूढ़े लोग और कुछ नहीं तो कान लगाकर सुनने ही लगते हैं। भारतआसियों को यह स्वराज्य-शब्द कुछ विलक्षण सा प्रतीत होता है और साथ ही कुछ नया भी मालूम देता है। जो शब्द ऐसा आकर्षण शील है, जिसकी महिमा ऐसी अपार प्रतीत होती है—उसका अर्थ क्या है? उसका असली तात्पर्य क्या है? ये प्रश्न इस समय अप्रासंगिक नहीं हैं।

पाठकगण! आप समाचार पत्रों में तथा पुस्तकों में 'स्वराज्य' नाम का बारम्बार पाठ पढ़ते होंगे—क्या आपने कभी विचारा कि यह स्वराज्य क्या वस्तु है? शायद आपमें से थोड़ों ने ऐसा विचार किया होगा, और उन थोड़ों में से भी अधिक संख्या ने इस शब्द के बहुत संकुचित अर्थ समझे होंगे। उन्होंने यही समझा होगा कि भारतवर्ष के लिए स्वराज्य का तात्पर्य यह है कि भारत-निवासी अपने देश का स्वयं ही प्रबन्ध करें, देशवासी अपने आप ही अपने ऊपर कर लगायें और सरकार की बड़ी से बड़ी नौकरी तक पहुंच सकें। शायद इसी प्रकार का कोई स्वराज्य आपके दिमाग़ में घूम जाता होगा, जब आप किसी समाचारपत्र में स्वराज्य पर लेख पढ़ते होंगे।

हमारा निवेदन है कि स्वराज्यशब्द की यह व्याख्या बहुत संकुचित है। स्वराज्य शब्द के गर्भ में जो भाव छुपे हुए हैं, उनका एक चतुर्थांश भी इस व्याख्या से पूरी तरह नहीं आता। स्वराज्य को केवल राजनीतिक अर्थों में पढ़ना भारी भूल है—और शब्द के महत्त्व को घटाना है। यह शब्द बड़ा व्यापक है—इसके अर्थक्षेत्र का पारावार नहीं। मनुष्य या मनुष्य समूह की क्रियायों का जहां तक विस्तार है, स्वराज्य शब्द वहीं तक व्याप्त है। राजनीति तो मनुष्य की चेष्टाओं का एक बहुत ही थोड़ा भाग है। मनुष्य या मनुष्य समाज का जीवन न राजनीतिमें प्रारम्भ होता है, और न ही उसमें अन्त होता है। राजनीति तो मनुष्य-समाज के जीवन की एक मध्य सीढ़ी है। जो कार्यभाग न प्रथम और न अन्तित होने का गौरव रखता है, स्वराज्य शब्द को केवल उसी तक परिमित कर देना ठीक नहीं।

साथ ही यह भी समझ रखना चाहिए कि केवल राजनीतिक स्वराज्य असम्भव है। स्वराज्य को केवल नीति की परिभाषा मान लेने से हम इसे एक बड़ा अधूरा सिद्धान्त स्वीकार करते हैं। देशों और जातियों का इतिहास हमें बताता है कि केवल राजनीतिक स्वराज्य न कहीं उत्पन्न हो सका है और यदि कहीं उत्पन्न भी हुआ तो रह नहीं सका। जिन लोगों ने स्वराज्य की इस अपूर्ण व्याख्या को मान कर कार्य प्रारम्भ किया, उन्होंने कभी कृतकार्यता लाभ नहीं की। स्वराज्य एक शब्द है—किन्तु इस छोटे से शब्द में एक संसार-व्यापी नियम समाया हुआ है। इस लेख-माला में हम उसी व्यापी नियम को भिन्न २ रूपों में दिखाना चाहते हैं।

(२)

किन्तु प्रथम इसके कि हम इस शब्द के भिन्न २ भागों की विस्तृत व्याख्या करें, आवश्यक है कि इस के शब्दार्थ पर ध्यान देकर मौलिक सिद्धान्त को समझलें। स्वराज्य शब्द दो शब्दों के मिलने से बना है—स्व तथा राज्य। स्व का अर्थ है अपना और राज्य का अर्थ है आधिपत्य। अपना आधिपत्य। इसी शब्द में यही भाव स्वयं आजाता है कि अपने ऊपर अपना आधिपत्य। यह भाव नहीं निकालना चाहिये कि किसी अन्य पर अपना राज्य भी स्वराज्य कहा सकता है। एक नौकर पर स्वामी का आधिपत्य स्वराज्य नहीं—अपने देह या परिवार पर आधिपत्य ही यथार्थ का स्वराज्य है। अपने ऊपर अपना आधिपत्य—इस शब्दार्थ में कोई विशेष राजनीतिक स्पर्श नहीं है, इस लिए स्वराज्य शब्द को केवल राजनीतिक स्वराज्य के अर्थों में प्रयुक्त करना शब्द के साथ अन्याय करना है। स्वराज्य शब्द मनुष्य की हर एक प्रकार की जीवन प्रवृत्ति के सम्बन्ध में प्रयुक्त किया जासकता है। स्वराज्य शब्द का प्रयोग हम व्यक्ति के विषय में, धर्म के विषय में, समाज के विषय में तथा साहित्य के विषय में कर सकते हैं। इसी प्रकार ढूंढते जायं तो हम देखेंगे कि स्वराज्य का विषय उदार-दृष्टि से देखा जाय तो बड़ा विशाल है। उस के बड़े २ प्रान्तों को पृथक् करके हम चार प्रकार के स्वराज्य का परिगणन कर सकते हैं।

(१) आत्मिक स्वराज्य

(२) धार्मिक स्वराज्य

(३) साहित्यिक स्वराज्य

(४) सामाजिक या नैतिक स्वराज्य

इन चार भागों के करने से यह तात्पर्य नहीं है कि स्वराज्य का सिद्धान्त इन चार प्रान्तों में ही मिल सकता है। इनसे बहुत आगे और पीछे भी इस सिद्धान्त का विस्तार है। इनके लेने से हमारा केवल इतना अभिप्राय है कि ये मुख्य २ प्रदेश हैं जिन में स्वराज्य सिद्धान्त के मर्म को हम भली भांती अनुशीलन कर सकते है।

साथ ही एक और प्रश्न भी उठता है। स्वराज्य की इस विस्तृत व्याख्या के विषय में वेद क्या कहता है?

———

CCO, Gurukul Kangri Coll...

संरक्षक सभा का ढोंग

गुरुकुल की स्वामिनी सभा पंजाब के आर्य्यमात्र की प्रतिनिधि-सभा है। गुरुकुल का प्रबन्ध प्रतिनिधि-सभा की अन्तरंग सभा के आधीन है। स्पष्ट है कि पंजाब भर के आर्य्य सभासद् अपने प्रतिनिधियों द्वारा गुरुकुल के मालिक हैं। गुरुकुल का बजट वे स्वीकार करते हैं, गुरुकुल के लिए मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य वे चुनते हैं, गुरुकुल का सारा प्रबन्ध वस्तुतः अपनी अन्तरंग-सभा और अपने मुख्याधिष्ठाता द्वारा प्रान्त-भर के आर्य्यसभासद् ही करते हैं। जब प्रान्त भर के आर्य्यपुरुष गुरुकुल के मालिक और वे ही उस के प्रबन्धकर्त्ता हैं, तो फिर प्रान्त के किसी एक समाज या एक सभा का यह यत्न करना कि वे गुरुकुल को अपनी मलकीयत बनालें, गुरुकुल पर अपना अधिकार रखें, मुख्याधिष्ठाता को अपना बंधुआ बनालें—कैसे उचित और न्यायानुमोदित हो सकता है।

कुछ सज्जनों ने एक ऐसी ही सभा दिल्ली में स्थापित करके गुरुकुल के प्रबन्ध पर अपना आधिपत्य जमाने का यत्न किया है। उन लोगों के बालक गुरुकुल में पढ़ते हैं। हम समझते हैं कि जब उन्होंने अपने बालक गुरुकुल में भेजे थे तब देख लिया होगा कि गुरुकुल प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्यमात्र की संस्था है और उस का प्रबन्ध भी प्रतिनिधि-सभा अपनी अन्तरंग-सभा द्वारा करती है। यह उन्हें ज्ञात था कि केवल बालक भेजने के अधिकार से वे गुरुकुल के स्वामी नहीं हो सकते। इसी बात को जानते हुए ही उन्होंने बालक भेजे—और भेजने के पीछे उन्हें सपना आया कि 'पांच दस संरक्षक मिल कर गुरुकुल के स्वामी या प्रबन्ध का नियम करने वाले क्यों न बनें', इन सज्जनों की समझ पर हमें शोक है। आर्यप्रतिनिधि सभा गुरुकुल की स्वामिनी है। गुरुकुल के प्रबन्ध में उस सभा द्वारा निश्चित की हुई किसी सभा या किसी व्यक्ति के सिवाय दूसरे का हाथ नहीं हो सकता। ऐसी दशा में उन कुछ एक संरक्षकों का यत्न करना कि वे प्रतिनिधि की उपेक्षा करके गुरुकुल के प्रबन्ध में दस्तन्दाज़ी कर सकें—भारी भूल है। उन्होंने दस्तन्दाज़ी करनी चाही और मुख्याधिष्ठाता ने उन्हें रोका—इस पर वे लोग बड़े सख़्त नाराज़ हो गये और गुरुकुल के वर्तमान प्रबन्ध का विरोध प्रारम्भ कर दिया।

इन कुछेक सज्जनों ने अपनी सभा का नाम संरक्षक सभा रखा है। आर्य पब्लिक जानना चाहेगी कि इस सभा में कितने ब्रह्मचारियों के संरक्षक हैं। जो संस्था प्रान्त भर के आर्यों की है, जिसके प्रबन्धकर्त्ता समाजों के ही प्रतिनिधि हैं—उस के प्रबन्ध में अपना दख़ल करने की कुमन्त्रणा में शायद ही कोई समझदार संरक्षक सम्मिलित हो। पिछले साल इन कुछ सज्जनों ने गुरुकुल में संरक्षकसभा का अधिवेशन किया था—और ऐन मौके पर छापा मारना चाहा था, किन्तु समझदार संरक्षकों ने स्पष्टरीति से ऐसी सभा के साथ सम्बन्ध रखने से इन्कार कर दिया था और सभा के जोशीले कार्यकर्त्ताओं को बैरंग वापिस जाना पड़ा था। अब कई कारणों ने इस सभा को फिर उत्साहित किया है। उन्होंने एक अनूठा सरक्यूलर निकाला है, और उस सरक्यूलर में गुरुकुल के प्रबन्ध की पड़ताल करने के लिए एक कमीशन का प्रस्ताव किया है। कमीशन कोई बुरी चीज़ नहीं—अच्छी है। प्रतिनिधि-सभा, जो गुरुकुल की स्वामिनी सभा है, अपने गुरुकुल के प्रबन्ध का निरीक्षण करने के लिए चाहे तो एक नहीं बीस कमीशन बना सकती है। किन्तु इन जोशीले सज्जनों के कमीशन में कुछ ख़ासीयत है, जो सिद्ध करती है कि जैसे कोई पुरुष कपड़ों, बर्तनों, मज़दूरों या मशीनों का व्यापार करने से किसी राज्य का शासन करने के योग्य मुख्य-सचिव नहीं बन जाता, इसी प्रकार कोई व्यक्ति (हमारे एक भाई के शब्दों में) अपने पुत्र का पिता होने से बुद्धिमान् नहीं बन जाता। इस सरक्यूलर और कमीशन की कुछ विशेषताएं हम नीचे देते हैं।

इस सरक्यूलर का शीर्षक है—"क्या गुरुकुल-कांगड़ी का प्रबन्ध नहीं होगा?" इस का तात्पर्य है कि प्रतिनिधि-सभा उस की अन्तरंग सभा और मुख्याधिष्ठाता सब दूकान में बैठे सौदे कर रहे हैं और संरक्षक सभा के अधिकारियों को प्रबन्ध करने की चिन्ता है। आश्चर्य है!

यह सरक्यूलर ऐसे पत्रों को भी भेजा गया है जिन का आर्यसमाज से कोई सम्बन्ध नहीं। कई तो ऐसे पत्रों में यह सरक्यूलर छपा है जिनका काम ही गुरुकुल तथा आर्यसमाज का विरोध करना है। यह इस सभा की सदिच्छा का एक ख़ासा नमूना है।

जिस कमीशन का प्रस्ताव किया गया है, उसे सड़ी हुई खिचड़ी कहें या पंसारी की दूकान कहें। कमीशन में सब इक्कीस सभासद् होंगे। ब्योरा लीजिए।

सार्वदेशिक सभा—१

आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब—१

ठीक है। आर्य्यप्रतिनिधि सभा गुरुकुल की स्वामिनी और प्रान्त भर के आर्यों की सभा है। ऐसी सभा का प्रतिनिधि १ से अधिक कभी नहीं होना चाहिये। जिस सभाने गुरुकुल को बनाया है, और चलाती है, उसे भला गुरुकुल के प्रबन्ध से क्या काम? कोई भी न होता तो और भी अच्छा होता।

गुरुकुल कांगड़ी—१.

यह बड़ी कृपा की।

संरक्षक-सभा गुरुकुल कांगड़ी—२.

आर्यप्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधि और संरक्षकसभा के दो। संरक्षक सभा गुरुकुल की असल स्वामिनी है। कारण यह है कि प्रतिनिधिसभा ने गुरुकुल को बनाया है, उस का प्रबन्ध करती है, उस के लिए कोशिश करती है—उसका गुरुकुल के प्रबन्ध में क्या हाथ—और स्वकल्पित संरक्षक-सभा के दस पांच सभ्यों ने कुछ नहीं किया तो भी तो बीसियों काग़ज़ी घोड़े दौड़ाये हैं, कई लोगों को गुरुकुल से नाराज़ कर दिया है और भर-सक अनार्यसामाजिक पत्रों में गुरुकुल की हंसी करवाई है—क्या इतने से उस का अधिकार बढ़ नहीं जाता। अवश्य बढ़ जाता है।

गुरुकुल के स्नातक १.

गुरुकुल से पृथक् किए ब्रह्मचारी २.

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

ठीक है। राजकाज में हमारे कल्पित सभा वाले खूब परिचित हैं। स्नातक लोग बेचारे गुरुकुल के प्रबन्ध की क्या बात जानें। हां जो बालक किसी अपराध के कारण गुरुकुल से निकाले गए हैं उनका अनुभव बड़ा भारी है। इस बार जब भारत-वर्ष की राज्य व्यवस्था के संशोधनों के लिये कोई कमीशन बैठे तो हमारी संरक्षक-सभा के मन्त्री जी को भारत सरकार के पास एक सलाह अवश्य भेजनी चाहिए कि भारतवर्ष के कैदखानों में जितने कैदी हैं, या जो कभी कैद भुगत चुके अथवा कोई और दण्ड पा चुके हैं, कमीशन में उनके चार नहीं तो दो प्रतिनिधि अवश्य ही रखे जांय-क्योंकि जो नियम-पूर्वक चला-उसकी अपेक्षा जो नियम को तोड़ कर दण्ड पा चुका वह सम्मति देने का डबल अधिकारी है।

इसी तर्क-शास्त्र के अनुसार और ६ सज्जन भी रखे गये हैं, और ७ सभासद् होंगे—विद्यासभा के नेता—(न्यून से न्यून) यह संरक्षक सभा का नया आविष्कार है। यह विद्यासभा भारतवर्ष में—पंजाब में—और आर्यसमाज में तो कहीं नहीं—शायद दिल्ली के चांदनी चौक की किसी दूकान में हो। सभा भी सौभाग्य-शालिनी है—जिसके ७ प्रतिनिधि ओर वे भी न्यून से न्यून। २१ सभासदों में से १४ तो और लिख दिये—फिर इस न्यून से न्यून शब्द का कौनसा ज़ोर है, यह समझ में नहीं आया तो न सही, 'न्यून से न्यून' इतना ही पता लग जाता कि यह विद्यासभा इस भूमण्डल के किस कोने में है, तो उपकार होता।

संरक्षक-सभा के मन्त्री म० बालकृष्ण जाली (एण्ड को) को निश्चय है कि 'गुरुकुल को एक भारी धक्का लगने वाला है।' यदि आप जैसे गुरुकुल के बीस पच्चीस और दोस्त संरक्षक निकल आवें तो शायद गुरुकुल को कोई न कोई धक्का लग ही जायगा, पर अभी तक ख़ैरीयत यही है कि गुरुकुल पर आक्षेप पूर्ण गप्पों से भरे हुए लेख छपवा या लिखवा कर आर्य्यसमाज और गुरुकुल के विरोधी पत्रों में भिजवाने का पुण्य काम अन्य संरक्षकों को नहीं रुचा। रुचेगा भी क्यों? क्या कोई गुरुकुल का समझदार हितैषी इस हानिकारक चेष्टा में शामिल हो सकता है।

हम संरक्षक महोदयों से एक निवेदन करते हैं। गुरुकुल आर्य प्रतिनिधि सभा ने बनाया है, वही इसे चला रही है। आर्य्य प्रतिनिधि सभा में सारे प्रान्त के आर्यों के प्रतिनिधि हैं। गुरुकुल के विषय में किसी को जो कुछ भी वक्तव्य हो, वह प्रतिनिधि-सभा में लाया जा सकता है। बहुत से संरक्षक प्रतिनिधि सभा के सभासद् भी हैं। ऐसी दशा में एक नई संरक्षक-सभा बना कर जो कुछ जोशीले लोग गुरुकुल के लिये नादान दोस्त का काम कर रहे हैं, उनके कार्य पर शोक प्रकाशित करना चाहिए। गुरुकुल का हित किस संरक्षक के, सभा के किस अधिकारी के और गुरुकुल के किस कार्यकर्त्ता के दिल में नहीं है। यह कौन कहता है कि गुरुकुल में कोई भी त्रुटि नहीं और उनका सुधार न होना चाहिये किन्तु उन त्रुटियों की राई का पहाड़ बनाना, जुदा सभायें स्थापित करके गुरुकुल के प्रबन्धकर्त्ताओं को डराने या धमकाने का यत्न करना, गुरुकुल के अहित चिन्तक पत्रों में लेख छपवाना, जो मिले उससे गुरुकुल की बुराई करना— ये दोषों को सुधारने के साधन नहीं हैं, और न गुरुकुल में पढ़नेवाले अपने ब्रह्मचारी के हितसाधन के ही उपाय हैं।

इस संरक्षक-सभा के ढोंग के सरकूलर के साथ आर्यपत्र तथा आर्यसमाजें उचित व्यवहार करेंगी—इसकी हमें पूर्ण आशा है।

—:o:—

उषा

संस्कृत की मासिक-पत्रिका उषा अब नियम पूर्वक निकल रही है। इस साल के आरम्भ में चार पांच मास तक यह पत्रिका बन्द रही थी—इन ६ महीनों में वह कसर पूरी करदी गई है, और आगे पूरे समय पर निकलती रहने की पूर्ण आशा है। भादों और अस्सू का अंक हमारे सामने हैं। इस अंक में सम्पादकीय नोटों में पुराणों की उत्पत्ति आदि पर विचार किया गया है। इटली और भारतवर्ष के देव-वाद की तुलना पर, शाखीय-विषय पर और ऋषि दयानन्द के समाज के सम्बन्ध पर लेख पढ़ने योग्य हैं। कई छोटी २ कवितायें भी हैं। हरबार एक सरल संस्कृत-पाठ संस्कृत के नव सिखुओं के लिये दिया जाता है—इस बार का पाठ 'राम' पर है।

मुल्तान छावनी में उत्सव

आर्य समाज मुल्तान छावनी का वार्षिकोत्सव १७,१८,१९ नवम्बर को बड़ी धूम धाम से हुआ। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री पं० पूर्णानन्द जी, पं० ब्रह्मदत्त जी विद्यालंकार, पं० रामरत्न जी आदि व्याख्याताओं के व्याख्यान तथा उपदेशों से छावनी के नर नारी खूब आनन्दित हुए। सभी व्याख्यानों का उत्तम प्रभाव रहा। यह पहला ही उत्सव था—और इतनी कृतकार्यता से हुआ। समाज के मन्त्री तथा म० सूर्यनारायण जी—जिन्होंने पुरुषार्थ में रात दिन एक कर दिये—इस कृतकार्यता के लिये बधाई के पात्र हैं।

हिन्दी--कविता--सम्मेलन

लखनऊ के उत्साही सज्जनों ने दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में कविता सम्मेलन भी रख दिया है। उसका नोटिस पाठक अन्यत्र पढ़ेंगे।

भरतपुर में नादिरशाही

प्राप्तपत्रों में हम भरतपुर से एक महाशय का पत्र प्रकाशित करते हैं। यदि यह समाचार सत्य है तो हम रियासत के कार्यकर्त्ताओं का ध्यान इस ओर खींचते हैं। ऐसा अनर्थ नहीं होना चाहिए। रियासत के अधिकारियों को चाहिए कि ऐसे असमान व्यवहार का उचित प्रतीकार करें।

गुरुकुल में वेदविषयक खोज

आर्य जनता यह जान कर प्रसन्न होगी कि गुरुकुल के उपाध्यायगण वेद और आर्य सिद्धान्त विषयक छान बीन में लगे ही रहते हैं, कुछेक वर्षों की बात इन

CCO, Gurukul Kangri

पाठकों को सुनाते हैं। उपाध्यक्ष राम-देव जी, पं० जयदेव विद्यालंकार का सहयोग लेकर वैदिक सिद्धान्तों की रोशनी में पुराणों की आलोचना पर एक भारी ग्रन्थ तय्यार कर रहे हैं। जो लोग हमारे उपाध्यक्ष जी की योग्यता से परिचित हैं, उन्हें यह बताना आवश्यक न होगा कि यह ग्रन्थ कितने महत्व का होगा। उपाध्याय बालकृष्ण जी एक बड़ा भारी ग्रन्थ वेदों का महत्व दर्शाने के लिए लिख चुके हैं—यह ग्रन्थ छप रहा है लग भग दो सौ पृष्ठ छप चुके हैं। यह अपने ढंग का अनूठा ही होगा। पृष्ठ संख्या कम से कम पांच सौ तक पहुंचेगी। ग्रन्थ में बड़े आवश्यक विषयों पर विचार होगा। ईश्वरीय ज्ञान की आवश्यकता, ईश्वरीय ज्ञान की परीक्षायें, वेदों में अनित्य इतिहास का अभाव, वैदिक ऋषि कौन थे? इत्यादि आवश्यक प्रश्नों पर बहुत ही विस्तृत और उत्तम विवेचना करते हुए इसमें योरोपियन विद्वानों की भूलों का खूब ही ख़ाका खेंचा गया है। यह किताब आर्य-मात्र के लिये बड़े काम की होगी। उपाध्याय इन्द्र अथर्व वेद की व्याख्या का कार्य कर रहे हैं-बहुत से भाग की व्याख्या तय्यार हो चुकी है उचित प्रेस का प्रबन्ध होते ही छपना प्रारम्भ हो जायगा। पहला भाग शीघ्र ही जनता के हाथों में पहुंच जायगा।

—:०:—

झूठ कहां है
पूर्व में या पश्चिम में

बर्लिन का कमुनीक कहता है कि पेरस से निकला हुआ कमुनीक झूठ लिखता है—पेरिस का कमुनीक बर्लिन के पत्र को मिथ्या बतलाता है। दोनों में से एक सच्चा है और दूसरा झूठा। दोनों सच्चे नहीं हो सकते-एक असत्य अवश्य है। ढाई साल योरप की इसी सत्यवादिता को देखते २ बीत गये। योरुपियन लोग कहा करते हैं कि असत्य बोलना पूर्व की ख़ासीयत है। अब दो ही बातें सम्भव हैं। या तो योरपियन लोगों का यह कथन स्वयं सत्य नहीं अथवा एशिया या अफ्रिका आदि के देशों पर राज्य करते करते यह दोष योरपियनों में कई गुणा हो कर प्रवेश कर रहा है। पश्चिम सभ्यता के दूतों को ज़रा सावधान हो जाना चाहिये।

—:०:—

सम्पादक-समिति

हिन्दी समाचारपत्रों के सम्पादकों की एक समिति बनी थी, वह कब होती है और कब नहीं होती—इसका पता नहीं चलता। इस बार सम्मेलन के साथ इस का अधिवेशन नहीं हुआ—तो क्यों न कांग्रेस के समय और बीसों सभासमितियों के साथ इस का भी अधिवेशन हो जाय। हम इस का प्रस्ताव मन्त्री महोदय के पास भेजते किन्तु सम्पादक सभा के प्रधान, मन्त्री तथा सभासदों का पता ठिकाना पाना कठिन क्या असम्भव है? न जाने सम्पादक समिति का कार्यालय भी भारत के किस कोने में है। तब लिखें किसे? यदि इस नोट को पढ़ कर मन्त्री महोदय स्वयं ही अधिवेशन बुलाने की कृपा करेंगे तो बड़ा अच्छा हो।

———

स्नातक ब्रह्मदत्त जी

स्नातक ब्रह्मदत्त जी स्नातक बनने के समय से ही प्रचार के काम में लगे रहते थे। अब उन्होंने सभा की ओर से प्रचार का कार्य प्रारम्भ कर दिया है। यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। आप सभा के उपमन्त्री का भी कार्य करते हैं। हमें पूर्ण आशा है कि हमारे भाई इस कार्य में पूरी सफलता प्राप्त करेंगे।

कांग्रेस के किले में देसी भाषा

कांग्रेस के अभेद्यदुर्ग में भी काला लोगों की देसी भाषा को स्थान मिला है। स्वागतकारिणी सभा की ओर से सभापति के व्याख्यान का उर्दू और भाषा अनुवाद भी छापा जायगा। बड़ी खुशी है। चलो प्रारम्भ तो हुआ। किसी दिन कांग्रेस के संचालकों की समझ में यह भी आजायगा कि राष्ट्रीयता का प्राण देशी भाषा ही है।

—०—

सर जेम्स मेस्टन

इलाहाबाद का लीडर एक मुख्य लेख में सूचना देता है कि संयुक्त प्रान्त के कई राजा रईसों ने मिल कर यह प्रस्ताव उठाया है कि सर जेम्स मेस्टन ही पांच बरस की समाप्ति पर फिर भी लेफ्टीनेण्ट गवर्नर किये जायें। लीडर इस प्रस्ताव से प्रसन्न नहीं प्रतीत होता। उसे सर जेम्स मेस्टन के स्वास्थ्य की भी बहुत चिन्ता है—इस लिये वह नहीं चाहता कि वे और अधिक समय तक शासन का बोझ उठावें। उसकी बड़ी शिकायत यह है कि राजा रईसों ने यह प्रस्ताव गुप्त रीति से क्यों उठाया है और सर्वसाधारण के सम्मुख क्यों नहीं रखा। इन दोनों कारणों से इस उठते हुए प्रस्ताव को लीडर भय की दृष्टि से देखता है। राजा रईसों ने जिस शैली का अवलम्बन किया है, उसके समर्थन में हमें एक शब्द भी नहीं कहना है। हमारी भी राय है कि यदि इस प्रश्न पर खुले विचार प्रकाशित किये जाते तो अच्छा होता। लीडर के सम्पादक को सर जेम्स मेस्टन के स्वास्थ्य पर जो दया आई है, इस विषय में हमें इतना ही कहना है कि सर जेम्स मेस्टन अपने स्वास्थ्य का ख्याल आप ही कर लेंगे, लीडर को उस की चिन्ता क्यों पड़ी है। हम इस विषयमें एक विचार रखते हैं। इस समय युद्ध के कारण ब्रिटिश सरकार के पास पहले दर्जे के आदमियों की बहुत कमी हो रही है। लार्ड कार्माइकेल के स्थान में लार्ड रोनल्डशे का गवर्नर बनाया जाना ही इसका सूचक है। कह नहीं सकते कि पिछले शासकों के स्थान में जो नये शासक मिलें वे किन विचारों के हों? किस योग्यता के हों? किस पाये के हों? पहले दर्जे के आदमियों की अब सरकार को इंगलैण्ड में ही ज़रूरत है। ऐसी दशा में अच्छे स्वभाव वाले परीक्षित शासकों का रहना ही हम लोगों के लिए अच्छा है। यह ठीक है कि संयुक्त प्रान्त के हिन्दुओं का एक बड़ा भाग सर जेम्स मेस्टन के म्युनिसिपल चुनाव सम्बन्धी अन्तिम कार्य से बहुत असन्तुष्ट हो गया है, किन्तु क्या लीडर के सम्पादक को यह निश्चय है कि सर जेम्स मेस्टन का उत्तराधिकारी बहुत संकुचित विचारों का न होगा? यदि निश्चय नहीं है तो क्या एक नाराज़गी की बात को भुला कर कई अच्छे गुणों को सामने रखना अच्छा न होगा। अन्यथा कहीं ऐसा न हो कि सर जेम्स मेस्टन की कुर्सी पर कोई दूसरे सर माइकेल ओड्वयर आ बैठें।

Collection Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रचारक का

दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में ताज़ा के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार ताज़ा ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ⁄)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनीआर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक

का

गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल, विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। =) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

एक अंग्रेज़ सन्यासी का

भारत भ्रमण।

[विगतांक से आगे]

मद्रास में आने एक परिचित के विषय में लिखा है:—"वह कांग्रेस का भक्त है। आज अपने हज़ारों लाखों अन्य देश भाइयों की भान्ति उसने बृटिश सरकार का पढ़ाया हुआ पाठ खूब याद किया है। वह अपने जीवन में वह दिन देखने की अभिलाषा रखता है जब कि भारतीय जनता के जीवन में Representative and electoral institutions दृढ़ जड़ पकड़ लेंगी और हिन्दू मन्दिरों में शिव और विष्णु की मूर्तियों के स्थान में स्टूयर्ट मिल और हर्बर्ट स्पेन्सर की प्रतिमाएं रक्खी जायंगी।"

भारत की निर्धनता के विषय में लिखा है:—"डिगबी साहब कहते हैं कि सारे देश में ऐसी विस्तृत और गहरी निर्धनता छाई है कि संसार ने ऐसी पहले कभी नहीं देखी। डिगबी महाशय ने उस बात का कोई प्रमाण नहीं दिया कि देसी रियास्तों की प्रजा हमारी प्रजा से अच्छी अवस्था में है। यदि निर्धनता बढ़ नहीं भी रही (यह एक ऐसा विषय है जिस पर निश्चित सम्मति बनाना कठिन है) तो भी कोई ऐसा साक्ष्य नहीं मिलता जिस से सिद्ध हो कि यह घट रही है। दुर्भिक्षों का दल बल बिल्कुल नहीं घटा, और कुतर्क पूर्ण व्यापारिक ऐश्वर्य्य, जो कि लाखों मनुष्यों को दरिद्र बनाकर बड़े बड़े केन्द्र स्थानों में दो चार को धनाढ्य कर रहा है, कृषि के व्यापी पक्षाघात का प्रतिरोध नहीं कर सका।"

भारतीय स्कूलों के विषय में लिखा है:—"भारतीय स्कूलों में पढ़ाई का समय इतना लम्बा है कि हमें तो उसे देख कर डर लगने लगता है। पहले ७ बजे से ८ बजे तक सबेरे। फिर एक घण्टा भोजन के लिये छुट्टी। तब १० बजे से दो बजे दो पहर तक। इस के बाद लघु उपाहार के लिये एक घण्टे का अवकाश। और फिर ३ बजे से ६ बजे तक सायंकाल को। मेरी भावना है कि वे इसे कष्टकर नहीं समझते होंगे। साथ ही यह भी निश्चय है कि देसी बालक—यद्यपि उन के छोटे छोटे मस्तिष्क बड़े अनलस और चंचल होते हैं—अंग्रेज़ लड़कों की अपेक्षा बहुत ज़ियादा शान्त प्रकृति रखते हैं। वे निचला बैठ सकते हैं इस लिए प्रबंध रखने में मास्टर को बहुत कम कष्ट होता है।"

संयुक्त प्रान्त के मैदानों और किसानों के विषय में लिखा है:—"इन मैदानों में किसानों के लिए भी कई मास तक कोई काम नहीं होता। वे फसल बोते हैं, जल सींचते हैं। और इसे काट लेते हैं। कठिन परिश्रम से कतिपय मासों में मुश्किल से एक वर्ष का निर्वाह प्राप्त करते हैं, पर इस से अधिक वे कुछ नहीं कर सकते। ग्रीष्म आती है, हरी खेतियां जल जाती हैं, कृषि बन्द हो जाती है, और सिवाय देवताओं की पूजा करने के और कुछ काम नहीं होता। इसी लिए फरवरी से मई के अन्त तक सब प्रकार के धार्मिक व्यवहारों, विवाहों, संस्कारों और खेल तमाशों का समय होता है।"

काशी में शव को जलाते देख कर आप कहते हैं:—"हिन्दूओं की तितिक्षा लोक प्रसिद्ध है। पर अपने प्यारे और निकट बंधु की दशा ऐसे दृश्य को देख सकना मानुषातीत है।"

काशी में गङ्गा-स्नान के बाद स्त्रियों को गीले कपड़े उतार कर सूखे कपड़े पहनते देख आप आश्चर्य से कहते हैं:—"प्रातः काल की सरदी का मुझे भली भान्ति उस समय पता लगा जब मैं ने स्त्रियों की एक टोली को नदी से स्नान कर के आते देखा। उन के वस्त्रों से जल टपक रहा था और वे थर थर कांप रही थीं। वे मेरे निकट ही आकर ठहरीं। उन के रुई के लम्बे २ कपड़े उन के शरीरों के साथ चिपक रहे थे और मैं हैरान था कि ऐसी अवस्था में वे कपड़े कैसे पहनेंगी। सीढ़ियां भी पानी और कीचड़ से लिथड़ रहीं थी और उन पर बैठा न जा सकता था। पर उन्हों ने किसी प्रकार अपने गीले कपड़े उतार कर साथ ही सूखे कपड़े ऐसी सफाई से पहन लिए कि थोड़े ही समय में और अपने शरीरों को बिना नङ्गा होने देने के साफ और चमकीला वेष धारण कर लिया।"

CCO, Gurukul Kangri

एङ्गलोइण्डियन और देसी।

हिन्दुओं की प्रेरक शक्ति से सर्वथा भिन्न है। उन में धर्म्म पहले है और ममता पीछे। इसी कारण हिन्दू ऐसा अव्यावहारिक, ऐसा जघन्य रूप से तितिक्षु पर हृदय का इतना कोमल और कल्पक देख पड़ता है। भला उस मनुष्य के भावों को एक अंग्रेज क्या समझ सकता है जो रेलवे स्टेशन पर सारा दिन चूतड़ों के भार बैठा हुआ पुनर्जन्म से मुक्ति लाभ करने पर विचार करता रहता है। वे एक दूसरे के भावों को नहीं समझते और न ही समझ सकते हैं। पाश्चात्य शासन का देहात्मक और व्यावहारिक भाव भारत के सामाजिक संगठन के निगूढ़ धार्म्मिक रूप के साथ कभी भी संयुक्त नहीं हो सकता।"

हम (अंग्रेज़) स्पष्टतया उपयोगी कार्य—साध करना, तालाब और रेलें बनाना—भौतिक औचित्य के सच्चे भाव से, और ५ फीसदी वफा की सच्ची व्यग्रता से सम्पादित करते हैं, पर हिन्दुओं के लिए ये सब कुछ भी नहीं—इनका उन के हृदय पर कुछ भी प्रभाव नहीं। इङ्गलैण्ड में व्यापारवाद (Commercilism) की सार्वत्रिक वृद्धि के कारण गत तीस वर्षों में हमारे शासन का व्यापारिक गुण बढ़ गया है। साप और मर्यादा की अपेक्षा उपयोग और ५ फी सदी में अधिक विश्वास होरहा है। जनता के भावों को समझने और उन पर भली भांति शासन करने की अपेक्षा अच्छी आमदनी पैदा करने और बहुत सा धन सञ्चित करके जल्दी ही इङ्गलैण्ड को वापस आजाने की अधिक उत्सुकता है।

विचित्र बात यह है कि जाति भेद की वही समस्या अभी तक अमरीका के संयुक्त राज्य में भी हल नहीं हुई। Abolitionists (उच्छेदकों) के सारे जोश गृह-विद्रोह के महावेग, दासों के उद्धार, मत और राजनैतिक समता के दान और मनुष्य के भक्ति व्यग्रों की भविष्यद्वाणियों के होते होते भी, यह बात अभी सत्य है कि जिन प्रान्तों में अभी ओदिम निवासियों (नीग्रो) की कुछ संख्या है गौराङ्ग लोग अपने भाई (नीग्रो) के साथ रेल के एक ही डिब्बे में नहीं बैठते और नहीं उस शराब खाने से शराब पीते हैं जहां कि वह पीता है। इन विभाजक रेखाओं का उल्लङ्घन करने और उन्हें मिटाने के लिए इतना समय दरकार है। हम सब जानते हैं कि इन को दूर करना आवश्यक है—हम सब जानते हैं कि अन्ततः मनुष्य मात्र को इन उलझनों से निकल कर इन से उच्चतर चढ़ना है। भारत वर्ष का ज्ञानी यह जानता है। उसके धार्मिक तत्त्व ज्ञान और अभ्यास का यह कैन्द्रिक तथ्य है। पाश्चात्य लोकसत्तावादी (democrat) इस बात को जानता है। उस स्वीकृतमत का प्रायः कैन्द्रिक तथ्य है। परन्तु इस की सिद्धि का मार्ग लम्बा, जटिल, और आकुलकारी है।

इस लिए यदि एङ्गलो-इण्डियन देशी मनुष्य को चिमटे से छूता है तो हमें एक दम उस की निन्दा पर नहीं उतर आना चाहिए। निस्सन्देह वह समझता है कि मैं इस लिए ऐसा बर्ताव करता हूं क्योंकि 'सीवी' देशी आदमी एक क्षुद्र, निन्द्य, अविश्वस्त, और अक्षम प्राणी है। सम्भव है यह सारे दोष ठीक हों। पर हमें यह न भूल जाना चाहिए कि 'सीवी' भी एङ्गलो के विरुद्ध ऐसे ही अनेक दोषारोप करता है। परन्तु दोनों ओर प्रकृत सचाई शायद इतनीगहरी है कि सुगमता से बताई नहीं जासकती— दो जातियों के अन्दर बहुमूल घृणा और प्रभेद। ऐसा जान पड़ता है कि परमात्मा ने कई अच्छे कारणों से दोनों को कुछ काल के लिये इकट्ठे कर दिया है ताकि वे एक दूसरे को पीड़ित करें, अधिक कुछ नहीं कहा जा सकता।

एक अंग्रेज़ नवयुवक इक्कीस या तेईस वर्ष की आयु में अक्सर श्रेणी में भरती हो कर आता है। यहां वह दो सोसाइटियां — एक दूसरे से सर्वथा अलग—देखता है। वह दोनों में ही शामिल नहीं हो सकता। वह चाहे सारे संसार को अपना बंधु समझता हो, चाहे शासित जाति से ही मिलने की अभिलाषा रखता हो, पर

[शेष फिर]

मर्यादापुरुषोत्तम "राम" की जयवन्दना

(कान्हरा ताल धीमा तिताला)

है कृपा यह श्री रघुराज की,
जय बोलो सूर्यकुल ताज की।
छोड़ा सकल राजसन आय।
हिये की सुरकाज की॥
बान्धा जलधि सेतु बन आया।
चलीकटक कपिसाज की॥
लंका कहे कौन यह आवे।
सुनी धुनि धनु गाज की॥
मारा समर शत्रु सुर गावें।
जयति जयति रघुराज की॥
जीता धर्म पाप अब हारा।
सुखी पुरी निज आज की॥

आर्य्य बस्ती

यदि आर्य पुरुष विहार में सपरिवार बसने के लिये इच्छा करें तो निम्नलिखित पते पर पत्र व्यहार करें।

ध्यान रहे कि यहां वे ही बस सकेंगे जो कि स्वतन्त्र कृषि से अपने हाथों से भूमि पर धान्य आदि पैदा करें या स्वतः अन्य कोई अच्छा व्यापार करने की अभिलाषा रखते हैं। बसने के लिये भूमि तथा मकान परिवार के अच्छी तरह गुजारे के लिये दिया जायगा, इसी तरह से व्यापार के इच्छुकों को व्यापार के लिये पूंजी में भी यथा सम्भव सहायता प्रदान की जायगी। इस ओर कोई आर्य भद्र पुरुष हस्त कौशाला के औद्योगिक परिश्रमी जनों का भी ध्यान खेंचा जाता। भूमि विहार प्रदेश में हैं। स्थिर कर बन्धन होने से कृषि तथा व्यवसाय की अच्छी उन्नति हो सकती है। अनाथालय तथा अन्य आर्य संस्थाओं के संचालकों का इस ओर विशेष ध्यान आकार्षित किया जाता है।

पत्रव्यहार का पता—
प्रबन्ध कर्ता
सद्धर्म्म प्रचारक

—:०:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल समाचार

गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी, का चौदहवा वार्षिकोत्सव होली की छुट्टियों में होगा। उसकी तिथियां २२, २३, २४, २५ फाल्गुण (५, ६, ७, ८ मार्च १९१७) नियत की गई थीं। परन्तु मालूम हुआ है कि संयुक्त प्रान्त की कचहरियों तथा दफ़्तरों में छुट्टी ८, ९, १० मार्च को रहे गी और ११ मार्च को आदित्यवार है। पंजाब में भी १० मार्च को भाईदूज की छुट्टी अवश्य होगी। इस लिए विचार यह है कि उत्सव की तिथियां ८, ९, १०, ११ मार्च, १९७३ नियत की जायं। इस विषय में यदि हमारे पंजाबी भाइयों को कुछ वक्तव्य हो तो दिसम्बर के अन्त तक मुझे सूचना दें। जनवरी के प्रथम सप्ताह में तिथियां निश्चित कर दी जायंगी।

गुरुकुल के लिए जो धन बाहर एकत्र हो तो वह समय पर गुरुकुल में नहीं पहुंचता। इस का ध्यान गुरुकुल के सहायकों को अवश्य रहना चाहिए। दिल्ली के म० बालकृष्ण वाली जी ने "पुरुषार्थ निधि" की ३१४ पुस्तकें मंगाईं। इन पुस्तकों में तेहरी रसीदें रहती हैं और जिन से गुरुकुल के लिए दान लिया जाय, उन को एक रसीद काटकर दी जाती है। श्री बाली जी ने ब्रह्मचारियों के संरक्षकों में बांटने के लिए ये ३१४ पुस्तकें मंगाई थीं। उन में से जिन पुस्तकों को, धन सहित, संरक्षकों ने लौटाया उन का धन्यवाद किया जाता है; परन्तु नीचे दी हुई सूची के अनुसार अब तक पुस्तकें, न सीधी और न म० बालकृष्ण बाली द्वारा ही लौटी हैं। श्री बाली जी को तगादे के चार पत्र लिखे जा चुके हैं परन्तु वह कुछ भी उत्तर नहीं देते। जिन सज्जन संरक्षकों के पास इन में से कोई पुरुषार्थ निधि की पुस्तक भेजी गई हो और उन्होंने अब तक पुस्तक और रुपया म० बालकृष्ण बाली को न भेजा हो तो अपना इकट्ठा किया हुआ धन, पुस्तक सहित, सीधा गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी के कार्यालय में भेज दें। यदि इन पुस्तकों में से किसी का रुपया म० बालकृष्ण बाली के नाम भेजा जा चुका हो तो उस की सूचना, भेजने की तिथि सहित गुरुकुल कार्यालय में लिख भेजें, जिस से वह धन श्री बालकृष्ण जी से मंगाने का यत्न किया जाय।

म० बालकृष्ण जी बाली & co दिल्ली को २७ भाद्रपद ७२ को संख्या १ से ३०१ तक की ३०१ पुरुषार्थ निधि की पुस्तकें तथा २६ कार्तिक ७३ को ३०४ से ३१६ संख्या की पुस्तकें भेजी गईं। इन में से निम्न संख्या की पुस्तकें तथा धन प्राप्त नहीं हुआ :—

१ से ७, ९ से १३, १७ से २५, २७ से २८ ३० से ३४, ३६ से ४३, ४५ से ४९, ५१, ५२, ५४ से ५७, ५९, ६१ से ६७, ६९, ७१, ७३ से ७६, ७८, ७९, ८१ से ८५, ८७ से ९१, ९३ से ९५, ९७ से ९९, १०१ से १०३, १०५, १०७ से ११२, ११५, ११६, ११८, १२०, १२१, १२३ से १३१, १३३ से १४६, १४९ से १६२, १६६, १६७, १७० से १७३ १७८ से १८१, १८३ से १८८, १९०, १९१, १९४, १९६ से २००, २०३ से २०७, २०९ से २२१, २२४ से २२६, २३० से २३२, २३४, २३५, २३७, २४०, २४२, २४३, २४५, २४७ से २४९, २५१, २५२, २५६, २५९ से २६५, २६८ से २७१, २७३ से २८१, २८५, २९२ से २९५, २९७, २९८, ३००, ३०१, ३०४ से ३१६ तक प्राप्तव्य हैं।

अन्तिम पत्र श्रीबाली जी को २५ कार्त्तिक १९७३ (९ नवम्बर, १९१६) के दिन लिखा गया, परन्तु उन्होंने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। जहां इस लेख द्वारा श्री बाली जी को स्मरण कराया जाता है कि सूची में दी पुरुषार्थ निधि की पुस्तकों का ब्योरा भेजदें, वहां संरक्षक महाशयों से भी प्रार्थना है कि यदि उन के पास कोई धन जमा हो तो भेजदें।

ऋतु की उत्तमता—का वर्णन किया जाय तो ईर्ष्यालु जन उसे उपन्यास की कल्पना बताएंगे, परन्तु वास्तव में ऋतु अपूर्व ही है। यद्यपि नहर भर कर चल रही है फिर भी गुरुकुल धारा का किल किल शब्द रात को लोरियां देता ही रहता है। गुरुकुल वासियों का स्वास्थ्य उत्तम ही है। गंगा की तीनों बड़ी छोटी धाराओं पर पुल बन्ध चुके हैं और मार्ग में किसी प्रकार का भी कष्ट नहीं होता।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ—में प्रथम चार श्रेणियों का सामान भेजा जारहा है। नए ब्रह्मचारियों का चुनाव कांगड़ी में ही २४ दिसम्बर (१० पौष) को होगा। २० ब्रह्मचारी साधारण चुनाव में लिए जायगें और १० ब्रह्मचारी पन्द्रह पन्द्रह सौ एक बार देने वालों के लिए जायंगे। १०) मासिक देने वालों के प्रार्थना पत्र तो १०० के लगभग पहुंचगए हैं परन्तु १५००) एक दम देने वालों के प्रार्थना पत्र अभी तक ५ ही पहुंचे हैं। बालक प्रविष्ट कराने वाले प्रार्थियों को चाहिए कि अपने बालकों को लेकर अधिक से अधिक २३ दिसम्बर की शाम तक गुरुकुल भूमि में पहुंच जावें। उसके पश्चात् जो बालक आवेंगे इनका चुनाव में कुछ भाग न होगा।

यदि आने वाले महाशय हरिद्वार स्टेशन पर पहुंचने की तिथि की सूचना देंगे तो उन्हें बैल गाड़ी स्टेशन पर मिलेगी।

यात्रियों के टीन वाले मकान बनने आरम्भ होगए। मैंने पीछे जो अपील की थी कि जिन आर्यसमाजों के मकान फिर से बन चुके वा बन रहे हैं उन को मेरी चिट्ठी में लिखा धन शीघ्र भेज देना चाहिए, परन्तु मेरे निवेदन पर अब तक थोड़े आर्यसमाजों ने ही ध्यान देकर अपना भाग भेजा है। इमारत तो सारी मैं बनवा ही दूंगा परन्तु यदि आर्यसमाजों के सभासदों ने ध्यान न दिया तो गुरुकुल की स्वामिनी सभा मेरा पल्ला पकड़ेगी और मुझे वह धन किसी प्रकार पूरा करना ही होगा। ऐसी अवस्था न आवे इस लिए मैं फिर बलपूर्वक निवेदन करता हूं कि अपनी सब बाकी एक मास के अन्दर ही बेबाक कर दीजिए।

गुरुकुल के लिए धन की सहायता आती ही रहती है। अभी अफ्रीका से ७००) से कुछ अधिक का चेक आया है। पेशावर सदर से एक भाई ने ७५०) एक निवास गृह के लिए भेजा है। म० रौनक़ीराम जी सबडिविज़नल, आफ़िसर ने जो एक कमरे के लिए १०००) की प्रतिज्ञा की थी और ५००) भेजे थे, उन्होंने बाक़ी ५००) भी नक़द भेज दिए हैं। और ५००) से कम की रक़में आती ही रहती हैं, परन्तु बजट की कमी पूरी करने की ओर इस समय अधिक ध्यान देना चाहिए।

मुन्शीराम, मुख्याधिष्ठाता

ऐतिहासिक उपन्यास

गुलाम कादिर

तेरहवां परिच्छेद

नदी का सूना तट

जारही थी और पीछे मुड़ कर देखती थी कि कोई पीछा तो नहीं कर रहा। जब पानी में कोई पीछा करने वाला न दीखता तो किनारों की ओर नज़र मारती। इतने में देखा, किनारे के पास पानी में से किसी वस्तु ने सिर उठाया—ओह पीछा करने वाले आपहुंचे। कमलदेवी ने भगवान् का नाम लिया, और फिर उस ओर देखा। ओह! यह पुरुष नहीं, यह तो बत्तख़ हैं और पानी में कलोलें कर रही हैं। कमलदेवी कुछ धीर हुई, और फिर आगे को दूर तक दीखते हुए यमुनाजल पर दृष्टि डाली। उस समय उस का चित्त इतना घबराया हुआ था कि वह अपनी दशा पर अधिक विचार भी नहीं कर सकती थी। उस का बिचला भाग भीग रहा था उस के सुन्दर लम्बे २ केश भागने की घबराहट में कन्धे पर बिखर आये थे, और उत्सुकता और भय से सांस ज़ोर से चल रहा था।

देर तक कमलदेवी इसी प्रकार चलती गई—यमुना का जल उस की जीवन नौका को गम्भीर भाव से मार्ग पर ले जाता रहा। बहुत देर तक किसी पीछा करने वाले को न देख कर बालिका का चित्त स्थिर होने लगा। वह अपने मन को स्थिर करने का यत्न करने लगी। उसी समय किनारे पर उड़ते हुए कुछ पक्षियों के चंचल शब्द ने उस का ध्यान आकृष्ट किया। पक्षी वृक्षों की डालियों से उड़ कर आकाश में मंडला रहे थे और बड़ी घबराहट से चिल्ला रहे थे—मानों किसी अत्याचारी राजकर्मचारी ने उन के घर पर डाका मारा हो। कमलदेवी का कोमल हृदय भय से एक दम कांप उठा। हो न हो, ये गुलामकादिर के सिपाही हैं, और उस का पीछा कर रहे हैं। इतने में झाड़ियों के टूटने और गिरने का शब्द होने लगा, मानों कुछ लोग इधर उधर भाग रहे हैं, और किनारे पर आने का मार्ग ढूंढ रहे हैं। कमलदेवी का सन्देह और भी दृढ़ हुआ। अब क्या किया जाय। यदि वह धार के भीतर ही चलती जायगी तो देखली जायगी, और पकड़ी जायगी। पकड़ी जायगी—इतना सोचते ही उसका सारा शरीर थर थर कांप गया। उस कंप कंपी को यमुना के शीतल जल ने भी सहायता दी। मनुष्य के अन्दर आत्मरक्षा की जो स्वाभाविक बुद्धि है, उसी से प्रेरित हो कर कमलदेवी पालकी से अकेली भाग निकली थी; उसी से प्रेरित हो कर उसने मकराकुल यमुना जल में अपनी जीवन नौका छोड़ दी थी; अब उसी की प्रेरणा से वह छाती बाहु और टांगों के बल से दूसरे किनारे की ओर लकड़ी को धकेलने और बढ़ने लगी। तट पर शब्द जारी था—पक्षी मंडला रहे थे—और झाड़ियां ऊंचे शब्द से चिल्ला रही थीं, और कमलदेवी भरसक यत्न करके दूसरे किनारे की ओर भागी जा रही थी। दैवयोग से किनारा बहुत दूर न था, शीघ्र ही वह तट के समीप आगई। जब वह अभी तट से कोई तीन हाथ दूर होगी, तो दूसरे तट के किनारे पर झाड़ियों में से निकली हुई कोई सफ़ेद चीज़ दिखाई दी। निश्चय ही यह कोई पीछा करने वाला है—निश्चय ही यह गुलामकादिर का सिपाही है। कमलदेवी ने लकड़ी को फिर ज़ोर से धक्का दिया, और किनारे के पास आरही। लकड़ी टेक कर पानी में खड़ी हुई। एक वार उलट कर दूसरे किनारे की ओर देखा और एक के स्थान में कई सफ़ेद चीज़ें हिलती हुई दिखाई दीं—हैं—यह क्या? यह कोई मनुष्य तो नहीं है, ये तो गउएं हैं, जो यमुना पर जल पीने आई हैं। कमलदेवी ने एक लम्बा सांसलिया, वह मानों मृत्यु के मुख से निकल कर जीवन क्षेत्र में फिर से प्रविष्ट हुई। इस समय सहसा उसका चित्तअपार दया के भण्डार सर्वान्तर्यामी परमात्मा की ओर को झुक गया। इस विपत् से बचाने वाले यदि परमात्मा नहीं तो कौन हैं? जिस परमात्मा ने दुष्ट अत्याचारी के चुंगल से बचाया, जिस अनाथनाथ ने एक अबला को यमुना के भयानक ग्राहों से सुरक्षित किया और जिस दयालु ने एक भागती हरनी का पीछा करने से दुष्ट चीते को रोक लिया—क्या वे धन्य नहीं हैं? क्या उनकी कृपा का भण्डार अपार नहीं है? कमलदेवी का चित्त उस भगवान् की ओर भोली कृतज्ञता से पूर्ण होगया—और नयन भक्ति के आंसुओं से भरपूर होगये। राजपूत बाला ने भक्ति और प्रेम के उद्रेक में भर कर अपने घुटने भूमि पर टेक दिये—हाथ जोड़ लिए और माथा नवा कर भगवान् के आगे चिरकाल तक नमस्कार किया। उस समय कमलदेवी ने जो टूटे फूटे शब्द बोले वे प्रेम के रस से भरे हुए थे—उसके नयनों से नीर की जो बूंदे गिरीं उन में भक्ति के समुद्र भर पूर थे।

सारा जगत् उस समय उस सती साध्वी अबला की भक्ति—भावना का साथ दे-रहा था। वृक्षों की डालियां झुक २ कर मानों भगवान् को नमस्कार कर रही थीं—पत्तों पर बैठे हुए पखेरू अपने अपने स्वर से विधाता का गुण गान कर रहे थे—मन्दगामिनी यमुना भी अपनी चाल तनिक सवेग सी करके भक्ति का सन्देश देशदेशान्तरों तक पहुंचाने जारही थी, और अस्ताचल की ओर को झुकता हुआ मरीचिमाली मानों भक्ति रस के आवेश में भरा हुआ चमकीले कर उठा २ कर भगवान् को आरती उतार रहा था।

श्रीमती सार्वदेशिक सभा

श्री मती सार्व दैशिक सभा ने निश्चित किया है कि आर्य्यसमाज के कार्य्य पर आज तक जितने व्याख्यान अथवा सम्मतियां उच्च राजाधिकारियों की ओर से प्रकट की आ चुकी हैं वह सब एक पुस्तकाकार में छपाई जायें। यह कार्य्य मुझे सौंपा गया है। आर्य्य सामाजिक संस्थाओं के संचालकों से प्रार्थना है कि जहां कहीं ऐसे व्याख्यान दिये गये हों अथवा सम्मतियां प्रकट की गई हों वह शीघ्र उन को मेरे पास निम्न पते पर भेजने की कृपा करें—तथा साथ में थोड़ा सा यह व्यौरा भी दें कि किस अवसर व तिथि पर वह व्याख्यान दिये गये और सम्मति प्रकट की गई।

भवदीय
मदन मोहन सेठ
मुन्सिफ़—झांसी

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

नादिरशाही ज़माना

राज भरतपुर में कसबा दीग में

रियासत भरतपुर के कौंसिल में एक मुसल्मान मैम्बर हैं उन्होंने हिन्दूराज होते हुये भी मज़हबी तास्सुब रोक नहीं रक्खा है। अंजमन के कहने से कोशिश कर के एक मुसल्मान डिप्टी क्लक्टर को दीग में भेजा है अब से यह डिप्टी क्लक्टर साहिब दीग में आये हैं आर्यों के साथ तो उसी वक्त से कलम जहाद करना शुरु कर दिया है और आर्यों से अत्यन्त ही द्वेष रखते हैं आर्य्य समाज के कुल मैम्बरान को तथा जो उस के सहायक थे उन को भी बेकसूर वहां से दूर २ तबादिले कर दिये गये हैं और अच्छी २ जगह जो जिस जगह को चाहता था उसी पर मुसल्मान भेजे जारहे हैं और यहां पर यह कोशिश हो रही है कि हिन्दू अफसर कोई न रहने पावे। कुल मुसल्मान आजावें कई सिपाही तथा पटवारी और मुसल्मान के साथ अन्याय कर के अपनी जगह से हटाये गये हैं। कई और पृथक् कर दिये गये हैं कइयों पर बेकसूर अपने नातहत अफसरों से मुकद्दमे चलवाये हैं ऐसी धींगाधींगी नादिरशाही जमाने में थी— कोई हिन्दू अपना दुख कौंसिल में रोता है तो वह अर्जी इन्ही डिप्टी क्लेक्टर दीग के यहां अजाती हैं डिप्टी कलेक्टर साहिब इसे दाखिल— दफ्तर कर देते हैं फिर उसे इसतरह तंग किया जाता है महाराज साहिब तक तथा राजा साहिब तक अर्जी कोई भेजता है तो जहां तक हो—वह नहीं पहुंचने पाती इसलिये इस गवर्नमैन्ट तथा श्री मती माजी साहिबा तथा एजेंट साहिब बहादुर राजभरतपुर की सेवा में प्रार्थना करते हैं कि इस का प्रबन्ध करें हिन्दू प्रजा इन डिप्टी कलेक्टर के बर्ताव से असंतुष्ट है बेकसूर ताल में करीब ६० पटवारी जिन में हिन्दू तथा आर्य्य सभी हैं इस गरज से हटाये हैं कि यहां का जलवा न होने पावे और जहां तक हो हिन्दू मुसल्मान बनाये जायें-इसी लिये यहां पर जो नया अफसर आता है मुसल्मान बनाने की कोशिश है। डिप्टी कलेक्टर तथा थानेदार पुलिस— व नायब तहसीलदार और छोटे २ कई मुसल्मान हैं।

सेवक—गंगाधर वर्मा आ० रे० उ० गु० कु० पोठोहार।

—०—

हिन्दी कविता सम्मेलन

अनेक विधिवन्दना के अनन्तर विनती है कि दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह भर लखनऊ में जो अनेक जलसे होंगे उस अवसर पर आर्य्यसमाज के मंडप में आर्य्य-भाषा सम्मेलन का भी प्रबन्ध किया गया है।

कविता सम्मेलन के लिये निम्न लिखित समस्यायें प्रस्तुत कर के आशा की जाती है कि मान्य कविजन कृपा पूर्वक पूर्तियां कर के अनुग्रहीत करेंगे।

यदि कारणवश आपका स्वयम् लखनऊ पधारना न हो सके तब भी पूर्तियां अवश्य ही भेज दें। वे अत्यन्त सन्मान पूर्वक पढ़ कर सुनो दी जायंगी।

(१) धरमधुर धरिये। (२) वेद है। (३) सीतल छाया। (४) गायत्री मंत्र का छन्द मय अनुवाद। सूचना मिलने पर लखनऊ में ठहरने का प्रबंध भी यथावत् किया जायगा।

पूर्तियां यदि १५-२० दिसम्बर तक निवेदक को मिलजांय तो बड़ी सुविधा होगी।

सेवामें कुछ श्रद्धा भेंट भी प्रस्तुत कीजायगी.

आप का चरण सेवक
गदाधरसिंह।
आर्य्य भजनाश्रम मंदिर
गऊघाटगंज लखनऊ

—०—

इसको पंजाब टैक्टबुक कमेटी से सूचना मिली है कि भाषासाहित्य के संवर्धक फंड में पारितोषिकार्ह पुस्तकों पर विचार करने का समय बहुत समीप आगया है। इस फंड के जारी रखने का उद्देश्य प्राच्यविद्या की उन्नति करना है और प्रतिवर्ष हिन्दी, पंजाबी और उर्दू पुस्तकों के बनाने वालों को पारितोषिक दिया जाता है। कमेटी केवल उन पुस्तकों के लिये पारितोषिक देती है जिन के बनाने वाले पंजाब प्रान्त के हों और पारितोषिक के लिए उन बनाने वालों की सिफारिश करती है जिनकी पुस्तकें सब से उत्तम हों।

इस लिए इन पुस्तकों पर विचार करने के लिए कमेटी ने सर्व साधारण के परिज्ञान के लिए कुछ नियम बनाए हैं जिनकी कापी टैक्सबुक कमेटी लाहौर के दफ्तर से मिल सकती है। इन नियमों के कारण किसी पुस्तक पर विचार नहीं किया जा सकता, जिसमें किसी धर्म्य (मज़हबी) वा राजनीति सम्बन्धी विषयों पर वा किसी ऐसे विषय पर लेख लिखा गया हो जो किसी विशेष सम्प्रदाय से सम्बन्ध रखता हो, वा जिसमें भिन्न २ सम्मतियां हों, वा जो पारिभाषिक वा शिल्पकला की पुस्तक हो वा पाठ्य-पुस्तक हो वा सौ पृष्ठ से कम हो वा जो उत्तमता के साथ मुद्रित न की गई हो वा जिसकी जिल्द न हो।

यह नियम अवश्य निषेधद्योती तो हैं पर इनके पढ़ने से पूर्ण रीति के साथ मालुम हो जाता है कि इस फंड के हैं अधिकारियों का आशय क्या

—०—

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ गीतियां, नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव की और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
कांगड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

—०—

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

सामाजिक समाचार

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का पांचवा वार्षिकोत्सव २६-२७ तथा २८ जनवरी सन् १९१७ को होगा। बीस नये ब्रह्मचारी लिये जावेंगे। प्रवेशार्थ प्रार्थना पत्र प्रबंधकर्ता शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र डाकखाना थानेसर ज़िला करनाल से प्राप्त हो सकते हैं।

आर्यसमाज कोटा का १८ वां वार्षिकोत्सव २९ दिसम्बर १६ से १ जनवरी १७ तक होगा।

चुन्नु जिला फ़िरोज़पुर में श्री स्वामी विज्ञान भिक्षुजी के उद्योग से नई समाज स्थापित होगई है। अधिकारियों का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ है। प्रधान—लाला मंगलराम जी। उपप्रधान-म० केशवराम जी, मंत्री— महा० पुन्नूराम जी, उपमंत्री—पं० गंगाराम जी, पुस्तकाध्यक्ष- ला० माहनलाल जी, कोशाध्यक्ष —ला० गंगाराम जी।

आर्यसमाज मुल्तान छावनी के अधिकारियों का निर्वाचन आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार हुआ है। प्रधान–म० गणपतिराय जी, उपप्रधान–म० अमरनाथ जी, मंत्री– म० सुन्दर लाल जी, उपमंत्री–म० सूर्य्यनारायण जी, कोषाध्यक्ष–म० कुशल जी; मंत्री पुत्री पाठशाला म० श्री कृष्ण जी, सहा० मंत्री–म० छाबीलाल जी; प्रतिष्ठित सभासद–म० सन्त राम जी तथा प० सुखदयाल जी।

श्री मंत्री आर्य समाज अमरोहा सब आर्य्य समाजों से निवेदन करते हैं कि सत्यार्थ-प्रकाश तथा अन्य ऋषि कृत-ग्रन्थों पर कमीशन न मिलने के कारण पुस्तक-विक्रेताओं ने इन का रखना बन्द करदिया है, अतः प्रत्येक आर्य्य समाज का कर्तव्य है कि वह लागत मात्र पर बेचने के लिये सत्यार्थ प्रकाश अपने यहां सदैव रक्खा करें। यदि कई समाजें मिलकर वैदिक यंत्रालय अजमेर से सत्यार्थ-प्रकाश एक जगह मंगवा लिया करें तो खर्च भी अधिक न पड़ेगा।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज सहारनपुर सूचना देते हैं कि १६ नवम्बर को महाशय तुलसीदास जी असिस्टैन्ट इन्जीनीअर के पुत्र का नाम करण संस्कार म० बुलाकीदास जी ने कराया। बालक का नाम त्रिलोकीनाथ रखा गया। उपस्थित जनता का सत्कार लड्डुओं से किया गया। इस शुभ अवसर पर १००) विविध संस्थाओं को दान दिये गये। मध्यान्होत्तर कई भद्र पुरुषों तथा देवियों ने उनके घर पर प्रीति भोजन किया।

श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त की अन्तरङ्ग सभा ता० ६ नवम्बर १९१६ के निश्चय संख्या ३१ की प्रति लिपिः—

"विज्ञापन का विषय संख्या ३८ अर्थात् पं० अखिलानन्द ने आर्य्यसमाज के मन्तव्य विरुद्ध वैदिक वर्णव्यवस्था" नामक पुस्तक छपाई है विचारार्थ प्रविष्ट हो कर उक्त पंडित जी की पुस्तक के आवश्यकीय स्थल पढ़ेगये और 'वेद प्रकाश' आश्विन सम्वत् १९७३ में छपा लेख "महाविद्यालय और पं० अखिलानन्द जी" शीर्षक पढ़ा गया। ठा० अमानसिंह जी के प्रस्ताव और ला० ईश्वरीप्रसाद जी के अनुमोदन पर सर्व सम्मति से निश्चित हुआ कि पं० अखिलानन्द ने जो "वैदिकवर्ण व्यवस्था" नामक पुस्तक लिखी है, वह इस सभा के विचार में आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द के सिद्धान्त के विरुद्ध है और ऐसी पुस्तक के रचयिता का समाजों से सम्बन्ध रहना आर्यसिद्धान्तों के लिये हानिकारक है।"

सप्तम भारत वर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन इस वर्ष २६,२७ तथा २८ दिसम्बर को लखनऊ में होगा। उस में निम्न प्रस्ताव प्रविष्ट किये जायंगेः—

१—यह सम्मेलन भारतीय सैनिकों की वीरता और पुरुषार्थ की, जो उन्होंने अपने सम्राट की सेवा में समर भूमि में प्रदर्शित किया है, बड़ी प्रशंसा करता है और परमात्मा से प्रार्थना करता है कि न्याय, मनुष्यत्व और संसार की शान्ति के हेतु सम्मिलित मित्रदल को शीघ्र ही विजय प्राप्त हो।

२—(अ) यह सम्मेलन प्रत्येक युवक से अनुरोध करता है कि इस आवश्यकता के समय में वह अपनी पूर्ण शक्ति से वृटिश-सरकार की सहायता करे और यदि सामार्थ्य हो तो भारतीय-अंगरेज़ सैनिकों की सहायार्थ समर भूमि में जाने के लिये शीघ्र ही निखिल भारतवर्षीय आर्य्यकुमार शुश्रूषा-कारी दल (Ambulance Corps) का प्रबन्ध किया जाय।

(इ) आर्य्यकुमार सभाओं को आदेश किया जाय कि सामाजिक सेवा का और वह अधिक ध्यान दें और सेवा समितियों का संगठन करें और उन्हें प्रथम सहायता (First Aid) तथा शुश्रूषा (Home Nursing) की शिक्षा दिलवावें।

३—युवकों से आग्रह किया जाय कि वे नियमित रीति से नित्य कुछ समय धार्मिक अध्ययन में अवश्य लगाया करें।

४—किसी भी नवयुवक को वयस्क (बालिग़) होने तथा विद्योपार्जन कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने के पूर्व अपने विवाह सम्बन्धी किसी रीति रिवाज भुगतने की अनुमति न देना चाहिए। यह सम्मेलन माता पिताओं से विनय पूर्वक प्रार्थना करता है कि वे ऐसे विषयों में अविवाहित युवकों को अपनी सम्मति देने का अधिकार अवश्य दें।

५—युवकों को अपने भरसक निज विवाह में अपने पिता या रक्षकों को कन्या पक्ष से यौतुक (क़रारदाद) न ठहरानें देना चाहिये।

६—युवकों को वेश्या नृत्य और हीन चरित्र तथा हीन श्रेणी के पेशे वालों द्वारा किए हुये अथवा किसी प्रकार के नीच कोटि के मनोरञ्जन विधानों से परे रह कर अपनी सामाजिक पवित्रता की रक्षा करनी चाहिए।

७—युवकों को किसी प्रकार का मादक द्रव्य का सेवन न करना चाहिए और दूसरों को भी इस कार्य्य से बचाना चाहिए। विशेषतः बालकों को सिगरेट पीने से रोकना चाहिए।

८—युवकों के उपकारार्थ व्यायाम शाला देशी अखाड़े, तथा स्वास्थ्य वर्धक खेलों का आर्य्यकुमार सभाओं द्वारा प्रबन्ध होना चाहिए।

९—युवकों को अपने भारतीय बन्धुओं के साथ व्यवहार में जातीय और दल सम्बन्धी भेद तथा वर्ण और मत सम्बन्धी पक्षपात को भुला देना चाहिए।

१०—युवकों को जीविकोपार्जन के ऐसे ढंगों के लिए तैयार होना चाहिये कि वे देश के व्यापारिक और औद्योगिक उन्नति में सहायक हो सकें।

११—सहकारी (Co-operative) प्रथानुसार भण्डार पुस्तकों तथा विद्यार्थियों के लिए अन्यान्य आवश्यक पदार्थों की दूकानों के स्थापन को उत्तेजन देना चाहिए।

१२-(अ) देश के महत्व पूर्ण केन्द्रों में संपत्ति शास्त्र स्वास्थ्य और नीति के मुख्य २ प्रश्नों पर उन विषयों से विज्ञजनों द्वारा हिंदी में व्याख्यान दिलाने का प्रबन्ध करना चाहिए।

(इ) सर्व साधारण में बांटने के लिए ऊपर लिखे विषयों पर योग्य विद्वानों से हिंदी में छोटे छोटे निबंध लिखवाना चाहिए।

अध्यापकों की आवश्यकता

आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी की शिक्षासमिति को ग्रामीण पाठशालाओं के लिये कुछ ऐसे अध्यापकों की आवश्यकता है जो आर्यभाषा गणित भूगोल आदि विषयों के अतिरिक्त थोड़ी सी संस्कृत भी जानते हों। विचारों में दृढ़ आर्य हों। वेतन १५) तक योग्यतानुसार मिलेगा। अध्यापकों को ग्रामों में रहना और पाठशालाओं म पढ़ाना होगा।

प्रमाण पत्र प्रमाणपत्रों सहित अति शीघ्र आवें—

इन्द्र, मन्त्री
ग्रामीण-शिक्षासमिति
गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार

आवश्यकता

गया में कन्या पाठशाला के लिये एक योग्य अध्यापिका की आवश्यकता है जो मिडिल घरने क्युलर तक पढ़ा सके।

वेतन योग्यतानुसार दिया जायगा। पत्र नीचे लिखे पते से आना चाहिये।

ब्रजनन्दनसिंह
सुपरिटेंडेंट एकसाइज़
गया (बिहार)

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered NO. A 434

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रतिक—मुंशीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है | ९ पौष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २३ दिसम्बर सन् १९१६ ई० | संख्या ३६ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृतप्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सक्ता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिये लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत-साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेदमन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य =)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य =)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तार पूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज कर्मचारियों की ओर से मिला है, उस के आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन के ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिये क्या कर्तव्य हैं? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रति शतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रति शतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रति शतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, पोस्ट आफिस शामपुर-काङ्कड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)

एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

सच्चा स्वराज्य

(३)

आत्मिक स्वराज्य

सारे स्वराज्य का मूलभूत आत्मिक स्वराज्य है। स्व—मुख्यतया आत्मा का ही निर्देश करता है—उसका अपने ऊपर आधिपत्य सब प्रकार के स्वराज्य का आधार भूत समझना चाहिए। अपने ऊपर अपना ही अधिकार हो, और किसी दूसरी शक्ति का—मन का या इन्द्रियों का—अधिकार न हो, यही आत्मा का स्वराज्य है। यदि आत्मा को और शक्तियों ने दबालिया तो दासता का ओंकार प्रारम्भ हो जाता है। जो आत्मा अपने सैनिक इन्द्रियों के या मन्त्री के ही अधीन हो जाय वह फिर संसार में सब के वश में आ सकता है। स्वराज्य का आरम्भ इन्द्रियों के विजय से होता है। वेदों में इन्द्रियों को वश में रखने वाले जीवात्मा का नाम इन्द्र आता है। इन्द्र की वेदों में अपार महिमा वर्णित की है। जो पुरुष इन्द्रियों का स्वामी इन्द्र है, उसको सभी अभीष्ट फलों की प्राप्ति होती है—

अनवद्यैरभि द्युभिर्मखः सहस्वदर्चति।
गणैरिन्द्रस्य काम्यैः। ऋ०। १,६,८।

अनिन्दनीय और दिव्यगुणयुक्त चाहने योग्य उत्तम फलों के समूह से युक्त होता हुआ इन्द्र का प्रत्येक श्रेष्ठ कार्य सिद्धि को प्राप्त होता है।

इन्द्रिय शब्द की उत्पत्ति का मूल है, जो इन्द्र की हो। जो इन्द्र की हैं, उनका जो स्वामी है, वही इन्द्र—वशी जीवात्मा—है। उस वशी जीवात्मा के सारे ही काम सिद्ध होते हैं, इस में सन्देह नहीं।

यह एक अति सरल तर्क है। जो लोग इस तर्क को भी नहीं समझ सकते, उनके बनाये हुए मार्ग पर चल कर भारी धोखा मिलता है। फ्रांस में इतनी भारी राज्य क्रान्ति हुई। राजा और रईसों के अत्याचारों से तंग आकर प्रजाने स्वाधीनता का झंडा उठाया और प्रजा का स्वराज्य स्थापित करने का यत्न किया। यह ठीक है कि प्रजा के जोश ने राजा को सिंहासन पर से उतार दिया, यह भी ठीक है कि रईसों को फ्रांस से भागने से सिवाय या गर्दन झुका देने के सिवाय बचने का कोई चारा नहीं दीखा। किन्तु यह भी सच है कि फ्रांस के अत्याचारी राजाओं ने शायद २५ साल में इतना खून न बहाया होगा जितना क्रान्ति के समय प्रजा ने ७ सालों में बहा दिया। संसार ने इतना भयानक दृश्य इस से पूर्व नहीं देखा था। प्रजा के स्वराज्य के नाम पर इतने रुधिर को बहता हुआ देख कर बड़े से बड़े स्वाधीनता पक्षपाती भी स्वाधीनता के नाम से घबराने लगे थे।

इस का कारण क्या था? ऐसा महान् अनर्थ क्यों हुआ? कारण यही था कि जो प्रजा स्वाधीनता के झण्डे के नीचे आकर युद्ध करने के लिए खड़ी हुई थी—उस में आत्मिक स्वराज्य नहीं था। उन्हों ने संयम का पाठ नहीं पढ़ा था। क्रोधादिदोष आने के समय अपने आप को वश में लाना, और जिस का अपराध नहीं है उसे अपराधी के साथ ही सूली पर न धकेल देना—यही संयम कहाता है। जो मनुष्य काम, क्रोध, लोभ और मोह के आवेग के समय इन्द्रियों को मुट्ठी से नहीं निकलने देता वही आत्मिक स्वराज्यवान् कहा जा सकता है।

यह नियम सदा याद रखने योग्य है। जिस स्वराज्य की पुकार शराब खाने या जुएखाने में चलेगी, वह स्वराज्य नहीं। जो भी यत्न ऐसे स्वराज्य के लिये किए जायंगे वे देश या जाति को सुख देने वाले नहीं हो सकेंगे। ऐसा स्वराज्य यदि दो दिन के लिए आ भी जाय तो वह अमृत के स्थान में वैतरणी नदी का प्रवाह चलाने वाला होगा।

अपनी इन्द्रियों का संयम पहला और मूल भूत स्वराज्य है। यही आत्मिक स्वराज्य कहाता है। यह सब स्वराज्यों की पहली सीढ़ी है।

[४]

धार्मिक-स्वराज्य

इडा सरस्वती मही तिस्रो देवीर्मयो भुवः
बर्हिः सीदन्तु अस्रिधः। ऋ०। १३। ९

इस मन्त्र का तात्पर्य है कि [इडा] स्तुतिरूपवाणी परमात्मा की उपासना [सरस्वती] वाणी, या वाङ्मय अर्थात् विस्तृत अर्थों में साहित्य और [मही] पृथिवी ये तीनों अहिंसित होती हुई संसार में स्थित हों। इस मन्त्र में तीन जीवों की अहिंसा के लिए प्रार्थना है। प्रत्येक जाति और मनुष्य जाति का और उन द्वारा व्यक्ति का कर्तव्य है कि इन तीनों चीज़ों को हिंसित न होने दें—दूसरे के अत्याचार या अनुचित प्रभाव से न दबने दें। इन तीनों रक्षणीय चीज़ों में प्रथम चीज 'इडा' या धार्मिक वाणी है। परमात्मा से प्रत्येक मनुष्य का जो सम्बन्ध है—वह निजू है, इसी लिये अपने धर्म से प्रत्येक व्यक्ति का अपना ही सम्बन्ध है। इस में दूसरे को कोई दखल नहीं। परमात्मा जैसे दूसरे का पिता है वैसे ही मेरा भी पिता है, जैसे मुझे अधिकार है कि मैं अपने पिता की यथेष्ट रीति से सेवा करूं उसे यथेष्ट नाम से पुकारूं इसी प्रकार यह भी मेरा अधिकार है कि मैं परमात्मा की अपनी अभिष्ट रीति से स्तुति प्रार्थना उपासना करूं और उसे यथेष्ट नाम से पुकारूं। दूसरा कोई व्यक्ति मुझे मेरे धार्मिक विचार में बाधित नहीं कर सकता। मुझे तलवार का, सामाजिक बायकाट या किसी अन्य प्रकार का भय या लोभ दिखाकर जो परमात्मा के और मेरे सेव्य सेवक सम्बन्ध में दखल देता है वह अत्याचारी है। वेद की आज्ञा है—कि मैं उसके अत्याचारी की परवा न करता हुआ अपनी 'इडा' की रक्षा करूं।

साथ ही यह भी निश्चित है कि जैसा पिता और पुत्र का सीधा सम्बन्ध होता है, वैसा ही मनुष्य का और परमात्मा का सीधा सम्बन्ध है। पिता पुत्र के बीच में पड़ने की किसी को न आवश्यकता है और न अधिकार है। ऐसे ही रोग में बैठे हुए किसी पोप को मन्दिर में बैठे हुए ब्राह्मण को या काशी में बैठे हुए किसी पुजारी को यह आवश्यकता नहीं कि दूसरे मनुष्य की आत्मा का स्वामी बन कर परमात्मा तक उसकी इच्छायें पहुंचायें, और अपनी थैली में पैसे पहुंचाये। प्रत्येक मनुष्य को अधिकार है कि वह अपने हृदय से निकले हुए शब्दों द्वारा परमात्मा की प्रार्थना उपासना करे। हृदय के असली भाव—पुष्पों से भगवान् की अर्चना करे, बाज़ार से मोल लिये नकली काग़ज़ी फूलों की भेंट करके परमात्मा को धोखा न देना चाहे। यह धार्मिक स्वराज्य का दूसरा अंग है।

आत्मिक स्वराज्य का स्वाभाविक परिणाम धार्मिक स्वराज्य है, और यह अगले सब प्रकार के स्वराज्यों की सीढ़ी है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

पं० अखिलानन्द जी और उनकी वैदिक वर्णव्यवस्था

(लेखक—पं० गंगाप्रसाद एम. ए.)

जब मैंने पहले ही पं० अखिलानन्द जी का "वैदिक वर्णव्यवस्था" नाम का पुस्तक पढ़ा तो मुझ को बड़ा आश्चर्य हुआ। आश्चर्य केवल इस बात पर नहीं कि आर्य्यसमाज के एक प्रसिद्ध विद्वान् ने ऐसे मुख्य सिद्धान्त पर आर्यसमाज से स्पष्ट विरोध किया—किन्तु विशेष कर इस बात पर कि उन्होंने ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को अपनी पुस्तक के अनुदार और अवैदिक विचारों का आधार बनाने का वृथा यत्न किया है।

६ नवंबर सन् १९१६ के "आर्यमित्र" में उक्त पंडित जी ने "निजमन्तव्य का स्पष्टीकरण" शीर्षक का एक छोटा सा लेख छपवाया है जिसका अभिप्राय यह बतलाया है कि "मैं वर्णव्यवस्था के सम्बन्ध में जो मानता हूं उसका रहस्य सर्वसाधारण के समक्ष रख दूं, जिससे मेरे बारे में फैलाये हुए आक्षेप निर्मूल हों इस लिए आज मैं निजमत प्रकट करता हूं।" पण्डित जी से पूछा जासकता है कि क्या "वैदिक-वर्णव्यवस्था" में आपने निजमत प्रकट नहीं किया था? पुस्तक के अन्त में पं० जी ने स्वमन्तव्यामन्तव्य भी दिया है। और लिखा है। "इस ग्रन्थ के लिखने में मुझे बड़ा परिश्रम करना पड़ा है। इस में ५५ ग्रन्थों के प्रमाण दिये गये हैं, लगातार दो वर्ष का समय इसके प्रमाण एकत्र करने में लगा है" इत्यादि। क्या इस पर भी निजमत प्रकट नहीं किया जासकता था?।

आगे पंडित जी लिखते हैं—"सत्यार्थ-प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में 'वर्णव्यवस्था गुणकर्मस्वभाव के अनुसार होनी चाहिए' ऐसा लिखा है। ग्यारवें समुल्लास में 'ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य, शूद्र अंत्यज आदि जाति भेद ईश्वर कृत हैं' यह लिखा है। उसी ग्रन्थ के अन्त भाग में 'वर्णाश्रम गुण-कर्मों की योग्यता से मानता हूं' ऐसा लिखा है। एक ग्रन्थ में तीन प्रकार के परस्पर भिन्न लेख मिलते हैं। इसका ही विवेचन करने के लिए मैंने [वैदिक वर्ण-व्यवस्था] नामक ग्रन्थ लिखा था। उस में ख़ास तौर पर प्राचीन आचार्यों के प्रमाण उद्धृत करके गुण-कर्म-स्वभाव का जो विवरण किया है-यह मेरा निजमत नहीं है, किन्तु उक्त आचार्यों का है। इस विषय में मेरा मत वही है जो ऋषि दयानन्द ने चतुर्थ समुल्लास में लिखा है। मैं इसी जन्म में वर्ण परिवर्तन मानता हूं"। इस लेख से इतना तो स्पष्ट हो गया कि पंडित जी ने अपने पुस्तक में जो प्रमाण दिये हैं जिस में "भागवत" तथा कालीदास कृत "रघुवंश" तकके प्रमाण हैं और ऐसे ऐसे भी प्रमाण हैं "ब्राह्मण पढ़ा हो या बे पढ़ा हो महादेवता है—" "शूद्र यदि वेद सुने तो उसके कान में सीसा या लाख तपा हुआ भर देना चाहिये, यदि वेद का उच्चारण करे तो जीभ काट लेनी चाहिये" इत्यादि, उन सब प्रमाणों को पण्डित जी श्री स्वामी जी के सिद्धान्तों के अनुकूल नहीं समझते। नहीं तो उनको यह लिखने की आवश्यकता न होती कि वे प्रमाण "मेरा निजमत नहीं हैं किन्तु उक्त आचार्यों का मत है, मेरा मत वही है जो ऋषिदयानन्द ने चतुर्थ समुल्लास में लिखा है।"

परन्तु केवल इतना कहने से पण्डित जी की सफाई नहीं हो सकती। पण्डित जी ने अपने पुस्तक में यह कहीं नहीं लिखा कि जो प्रमाण दिये गये हैं वे पंडित जी का निजमत नहीं है। जो कोई पं० जी के पुस्तक को पढ़ेगा उसके चित्त पर यही असर होगा कि पण्डित जी ने अपने मत को दर्शाने और पुष्ट करने के लिए इन प्रमाणों को दिया है।

मैं पं० जी से पूछना चाहता हूं कि उन्होंने अपने पुस्तक में जिस वर्ण व्यवस्था का विधान किया है वह पौराणिक अथवा "सनातनधर्मियों" की वर्णव्यवस्था से किस बात में भिन्न है। यदि आवश्यकता हुई तो मैं दिखलाऊंगा कि कई बातों में आजकल के सनातनधर्मी भी ऐसे तंग विचार नहीं रखते जैसे कि इस पुस्तक में हैं।

पं० जी अब अपने लेख में लिखते हैं "मैं इसी जन्म में वर्ण परिवर्तन मानता हूं।" अच्छा होता कि पं० जी यह भी स्पष्ट कर देते कि वर्ण-परिवर्तन से उनका अभिप्राय केवल ऊंचे वर्ण से नीचे में गिरना नहीं है किन्तु नीच वर्ण से ऊंचे में उन्नति करना भी है। मैं आशा करता हूं कि उनका अभिप्राय दोनों ही से है। यदि ऐसा है तो मैं पं० जी को अपने गुरु ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज के सिद्धान्त की शरण में फिर आने के लिए बधाई देता हूं। क्योंकि निस्सन्देह आर्य्यसमाज और सनातन-धर्मियों के मत में वर्णव्यवस्था विषय पर बड़ा भेद यही है। परन्तु पं० जी के पुस्तक "वैदिक वर्णव्यवस्था" में ऐसा एक शब्द भी नहीं है जिससे पं० जी का इसी जन्म में वर्ण-परिवर्त्तन मानना पाया जाय। होता भी कहां से? सारे पुस्तक का झुकाव इसी ओर है कि वर्ण इस जन्म में नहीं बदल सकता। गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल वर्णव्यवस्था कहते हुए भी "स्वभाव" शब्द के अर्थ में खींचातानी करके और उसको अविनाशी और नित्य बतलाकर वर्णव्यवस्था को जन्ममूलक सिद्ध करने का उद्योग किया है। सत्यकाम जाबाल और कवष ऐलूष जो नीच जन्म होने पर भी ऋषि बन गये उनको जन्म से ब्राह्मण सिद्ध करना चाहा है। पृष्ट ८ पर साफ लिखा है "वर्त्तमान जन्म उसी गुण-कर्म स्वाभाव का होगा जो पूर्व जन्म का प्रारब्ध है। परिवर्त्तन अगले शरीर में होसकता है जो ईश्वराधीन है।" इससे कुछ ऊपर लिखा है "वर्त्तमान शरीर प्राचीन कर्मों का फल है वह जब तक पूरा न होगा तब तक इस में परिवर्त्तन होना असंभव है। ईश्वर के दिये हुए कर्मफल रूप शरीर का मनुष्य परिवर्त्तन नहीं कर सकता"। मैंने पं० जी का लेख छपने पर उनके पुस्तक को ध्यान पूर्वक आदि से अन्त तक दोबारा पढ़ा परन्तु उसमें इस सिद्धान्त का गन्ध भी नहीं मिलता

कि इसी जन्म में वर्ण-परिवर्त्तन हो सकता है।

पुस्तक के २६ पृष्ट पर पं० जी ने अपने सिद्धान्त का निचोड़ इस प्रकार संस्कृत में लिखा है—"ब्राह्मणकुलोत्पन्नत्वे सति तपोविद्याविशिष्टत्वं ब्राह्मणत्वम् ।१॥ क्षत्रियकुलोत्पन्नत्वे सति बलविद्याविशिष्टत्वं क्षत्रियत्वम् ॥ २॥ वैश्यकुलोत्पन्नत्वे सति धनविद्याविशिष्टत्वं वैश्यत्वम् ॥ ३॥ शूद्रकुलोत्पन्नत्वे सति सेवागुणविशिष्टत्वं शूद्रत्वम् ॥४॥ वर्णबाह्यत्वे सत्यन्तरप्रभवत्वं वर्णसङ्करत्वम् ॥ ५ ॥ एतल्लक्षणशास्त्रम।" पं० जी ने इसका भावार्थ नहीं लिखा पर यहां लिखा जाता है—

"ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होने पर तप और विद्या से विशिष्ट होना ब्राह्मण होना है १॥ १॥ क्षत्रिय कुल में उत्पन्न होने पर बल और विद्या से विशिष्ट होना क्षत्रिय होना है॥ २॥ वैश्य कुल में उत्पन्न होने पर धन और विद्या से विशिष्ट होना वैश्य होना है॥ ३॥ शूद्र कुल में उत्पन्न होने पर सेवा गुण से विशिष्ट होना शूद्र होना है॥ ४॥ वर्णों से बाहर होते हुए दो वर्ण के मेल उत्पन्न होना वर्णसंकर होना है॥ ५॥ यह लक्षण शास्त्र हैं।" यदि ये वचन किसी अन्य ग्रन्थ के हैं तो पं० जी को ग्रन्थ का नाम पता आदि लिखना चाहिए था वा कृपा करके अब बतलायें। किसी ग्रन्थ का नाम आदि न होने से यही प्रतीत होता है कि ये वचन पं० जी के हैं यद्यपि यह आश्चर्य होता है कि पं० जी ने भाषा का ग्रन्थ लिखते हुए भी ये वचन संस्कृत में क्यों लिखे और लिखे भी तो इनका भावार्थ क्यों नहीं दिया। यदि ये किसी दूसरे ग्रन्थ के भी हों तो इनसे पूर्व भाषा लेख पढ़ने से पुस्तक पढ़ने वाले को कोई सन्देह नहीं रहसकता कि पुस्तक कर्त्ता ने इन वचनों को निजमत का सारस्वरूप समझ कर दिया है। इन शब्दों से वर्णव्यवस्था जन्म मूलक न हुई तो क्या हुई? क्या वास्तव में पं० जी इसको ऋषिदयानन्द का मत कह सकते हैं?

पुस्तक लिखने का अभिप्राय जो पं० जी ने बतलाया वह भी विचारणीय है। सत्यार्थप्रकाश में एक ही विषय (वर्णव्यवस्था) पर तीन परस्पर भिन्न लेख थे। उनकी विवेचना पं० जी ने की है। यह कुछ कम आश्चर्य्य की बात नहीं कि ऋषिदयानन्द के छिद्रान्वेषी विपक्षियों और पौराणिक पण्डितों को जो उन के सरसों समान दोष को भी बेल समान देख सकते थे ये परस्पर भेद न दीखे।

आपने विवेचना भी ऐसी की कि ऋषि दयानन्द का सिद्धान्त पौराणिकों के मत से ज्यों का त्यों मिल गया। 'वर्णव्यवस्था' उन तीन चार मुख्य विषयों में से है जिनपर आर्य्यसमाज और सनातनधर्मी वा पौराणिक हिन्दुओं में मत भेद-माना जाता है। यदि सनातनी पण्डितों में से कोई पं० अखिलानन्द जी की तरह तीव्र बुद्धि होता तो वह बतला देता कि 'वर्णव्यवस्था' विषय पर आर्य्यसमाज का मन केवल वेदशास्त्रों के विरुद्ध है, किन्तु स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के भी विरुद्ध और इस लिये बिलकुल ही निर्मूल हैं। मैं अन्त में पं० जी से यह निवेदन करना चाहता हूं कि [१] यदि उनका इस विषय पर आर्य्य समाज से, अथवा यों कहो कि ऋषि दयानन्द से मतभेद है, तो उस को छिपाने से वा ऋषि के नाममात्र की शरण ढूंढने से काम न चलेगा। आर्य्यजनता ऐसी भोली नहीं है कि जो असली भेद को न देख सके और ऐसे लेख से जैसा पं० जी ने ६ नवंबर १९१६ ई० के 'आर्य्यमित्र' में छपवाया है, सन्तुष्ट हो सके।

छोटी छोटी बातों पर आर्य्य समाजियों में मतभेद हो, समाज उसकी परवाह नहीं करता और न करना चाहिये। पर 'वर्णव्यवस्था' आर्य्यसमाज का एक मुख्य सिद्धान्त है। स्वयं पं० जी ने अपने पुस्तक की प्रस्तावना में यहां तक लिखा है कि "वैदिकधर्म का अस्तित्व वर्णव्यवस्था पर ही निर्भर है।"

ऐसे विषय पर स्पष्ट विरोध को आर्य्यसमाज उदासीनता से नहीं देख सकता विशेष कर जब उस का आधार ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों को बतलाया जावे। (२) यदि पं० जी को इस विषय पर सन्देह है अथवा उन के विचार आर्य्यसमाज के मत से भिन्न हैं और वे उन को विचार कोटि में रख कर समाधान करने को तय्यार हैं तो यह स्पष्ट होना चाहिये। फिर उन के पुस्तक के आधार पर विचार चल सकता है। (३) यदि कम से कम अब जब कि पं० जी ने यह लेख लिखा है उन का मत वास्तव में वही है जो ऋषि दयानन्द का है तो मैं पं० जी को बधाई देता हूं क्योंकि प्रातःकाल का भूला सायंकाल को घर आजावे तो भूला नहीं कहलाता। पर वैदिक 'वर्णव्यवस्था' पुस्तक में जो कुछ लिखा गया है उसमें से बहुत सा पं० जी को वापिस लेना होगा'

४। १२। १६ गङ्गाप्रसाद

—०—

इंग्लैण्ड में राजनीतिक उलट-फेर

योरप के महायुद्ध ने भूमण्डल की दशा में इतने परिवर्तन कर रखे हैं कि जो चीज़ न बदल जाय, वही सौभाग्य-युक्त समझनी चाहिए। इंग्लैण्ड का राजनीतिक प्रबन्ध अभी तक नहीं बदला था—यह बात युद्ध की देवता को पसन्द न थी। रूमानिया भी दैव के प्रभाव से युद्ध में आमिला, जर्मनी की सीखी हुई सेना ने उसे धर दबाया, मित्रदल की जातियां इस से आश्चर्य में पड़ गईं। जो मित्रदल जर्मनी और उस के साथियों से कई गुणा प्रबल है, उस के मित्र रूमानिया का इस प्रकार कुचला जाना जातियों को कैसे सह्य हो सकता था? इंग्लैण्ड, फ्रांस और रूस में जनता अपनी सरकारों से जवाब मांग रही हैं कि युद्ध शीघ्र क्यों समाप्त नहीं होता और जर्मनी अभी तक क्यों नहीं हराया गया? इसी प्रश्न के उत्तर देने में इन देशों की राज्य-प्रबन्ध कारिणी सभायें अस्त व्यस्त हो रही हैं। कई लोग ऐसे घबरा गए हैं कि पिछले प्रधान सचिव मि० एस्क्विथ तक को भली बुरी कहने लगे हैं। कलकत्ते के स्टेटसमैन में 'हूणों के शत्रु' परिभाषा वाले एक जोशीले अंग्रेज़ ने लेख लिखा है, जिस में विलक्षण बुद्धिमत्ता का परिचय दिया है। वह लेखक लिखता है—"चाहे हम माने चाहे न माने,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सच बात यह है कि इस समय जर्मनी योरप को सर कर रहा है। वह अभीतक ज़बर्दस्त युद्ध कर रहा है, और संघटन, बाधित सैनिकता, और युद्धसम्बन्धी तय्यारी की कीमत बतला रहा है, मांटिनिग्रो सर्विया और रूमानिया में जर्मनी और उस के साथियों ने जो नई भूमि ली है उसे छोड़ भी दें, तो गत दो साल से अधिक समय से लगभग ११००० वर्ग मील बैल्जियम के, १,८०,००० वर्ग मील पोलैण्ड के और काई ६००० वर्ग मील फ्रांस के हूणों के अधिकार में हैं। किन्तु मित्र-मण्डल ने अपने भयंकर हमलों से अभी तक १०० वर्ग मील ही वापिस लिया है। लगभग २,००,००० वर्ग मील लेने में मित्रदल को कितना समय लगेगा और कितना रुधिर और रुपया बहेगा ?"

इसी प्रकार रोना रोकर वह लेखक इस अकृतकार्यता के लिए एस्क्विथ को उत्तरदाता ठहराता है। जिस मन्त्री ने अपनी सन्तान युद्ध पर वार दी, जिसने इस कठिन समय में दो साल से अधिक समय तक जाति की सेवा की, उसे कोसना न जाने कहां तक उचित है। इस लिए लेखक का लेख अनुचित ही समझना चाहिये किन्तु ऐसे लेखों से अंग्रेज़ों के हृदय-भाव प्रकट हो जाते हैं। इसी असन्तोष-युक्त भाव का परिणाम हुआ है कि इंग्लैण्ड में मि० एस्क्विथ के स्थान में मि० लायडजार्ज मुख्य सचिव बना है।

× × × × ×

मि० लायडजार्ज ने बरसों तक मि० एस्क्विथ के नीचे काम किया है। मि० लायडजार्ज की उन्नति का साधन मि० एस्क्विथ ही थे—उसी महापुरुष के कन्धों पर चढ़कर मि० लायडजार्ज ने नाम पाया और काम किया है। जो मि० लोयडजार्ज उदार दल में भी उदार समझे जाते थे आज वे ही अनुदार दल के साथियों को लेकर अपने मुखिया मि० एस्क्विथ को नीचा दिखाने में कृतकार्य हुए हैं। नहीं जानते संसार इस कार्य को किस नाम से स्मरण करेगा ? इसे मि० लायडजार्ज की महापुरुषता भी कह सकते हैं और स्वाभाविक चपलता या आगे बढ़ने की उत्कट अभिलाषा भी कह सकते हैं। वस्तुतः इन दोनों में से कौन सा पक्ष सत्य है—यह नये प्रधानसचिव का कार्य ही बतलायगा। यदि मि० लायडजार्ज सचमुच युद्ध की अवस्थिति में भेद लाने में कृतकार्य हुए, और अगली गर्मियों में जर्मन सेनाओं को कम से कम फ्रांस की भूमि से बाहिर धकेल सके, तो उन का नाम अमर हो जावेगा। किन्तु यदि ऐसा न हो सका [परमात्मा ऐसा न करें किन्तु हम केवल एक सम्भावना करते हैं] तो जाति का मि० लायडजार्ज पर बड़ा भारी कोप होगा क्योंकि वे इस समय एक ऐसे मुखिया की अस्थियों पर खड़े हुए हैं, जो अपनी गम्भीरता और बुद्धिमत्ता के लिए देश और साम्राज्य में विशेष प्रतिष्ठा रखता था।

+ × × × ×

नया मन्त्रि-मण्डल बन गया है, और उस की विशेषतायें देख कर आश्चर्य होता है। मि० लायडजार्ज को युद्ध कार्य में सहयोग देने के लिए लार्ड कर्ज़न चुने गये हैं। भारत के पुराने वायसराय को बधाई है। वस्तुतः लार्ड कर्ज़न गुणकर्म से युद्ध सचिव होने के ही योग्य थे—भारत में भेज कर तो उन्हें तंग ही किया गया। अब यदि वे शत्रु के शिविर में बज्र—विच्छेद की तरह सेना-विच्छेद करा सकें तो बहुत ही अच्छा हो। उन की विच्छेदमयी बुद्धि अब ठीक उपयोग में आयगी। लार्ड कर्ज़न के सहयोगी मि० हरबर्सन बने हैं। दैव का खेल है। एक बड़ा भारी धनिक-दल का मुखिया और दूसरा आयरलैण्ड का नेता। इन दोनों दलों के मरखने बैलों को इकट्ठा जोतने के लिये उतनी चतुराई नहीं चाहिए, जितनी जोत को टूटने से बचाने के लिए चाहिए। देखें मि० लायड जार्ज इस विषम-व्यापार में सफलता लाभ करते हैं या नहीं ?

पं० अखिलानन्द और आर्यसमाज

यदि आर्य्यसमाज ऐसे रंग बदलने वाले पुरुष से भी धोखा खा सकता है, तो उस का जीवित रहने का अधिकार ही नहीं है। जिस पुरुष ने भरी सभाओं में आर्य समाज के सिद्धान्तों के विरुद्ध कहा, बीसियों क्या सैकड़ों पुरुषों के सम्मुख ऋषि दयानन्द को भला बुरा बताया, और वैदिक वर्णव्यवस्था पर पुस्तक छपवा कर स्पष्ट ही वैदिक सिद्धान्तों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखा, यदि वह भी एक चिट्ठी पत्री में छपवाकर अपने आप को आर्य्यसामाजिक सिद्ध कर देगा तो फिर आर्य समाजियों के सीधेपन में क्या सन्देह हो सकता है ? पं० अखिलानन्द ने चिट्ठी छपवा कर आर्यजनता को धोखे में डालना चाहा, किन्तु प्रसन्नता की बात है कि उन की चतुराई फलीभूत नहीं हुई। लाहौर आर्य्यसमाज के उत्सव से पीछे स्वामी विज्ञानभिक्षु जी से उनका शास्त्रार्थ हुआ जिस में सारा बनावटी पर्दा फाड़ कर असली पं० अखिलानन्द प्रकाशित होगया। उस शास्त्रार्थ से स्पष्ट ही ज्ञात हो गया कि जो चिट्ठी पं० अखिलानन्द ने छपवाई थी वह केवल लाहौर समाज के प्लेटफ़ार्म पर बैठने और व्याख्यान झाड़ने के लिए ही छपवाई थी। बैठने को तो कोई भी पण्डित प्लेटफ़ार्म पर बैठ सकता था, परन्तु व्याख्यान कराने की हिम्मत लाहौर समाज के अधिकारियों को भी न हुई। पं० अखिलानन्द ने देखा कि यह तो चाल ख़ाली गई। चिट्ठी भी छपवाई और व्याख्यान भी न हुआ—बस असली अखिलानन्द बीच में से कूद पड़े और आर्यजनता ने उनका रहस्य जान लिया। शास्त्रार्थ के पीछे तो पण्डित जी खुल खेले हैं। घबराये हुए पुरुष की भांती चारों ओर हाथ पांव मार रहे हैं। कहीं चैलेंज देते हैं, और कहीं प्रश्न छापते हैं। भारतमित्रादि पत्रों में आपने महात्मा मुन्शीराम जी, पं० घासीराम जी और म० नारायण प्रसाद जी को चैलेंज दिया है कि आप से वर्णव्यवस्था पर शास्त्रार्थ करलें। वे माननीय सज्जन तो योंही चैलेंज का वही उपेक्षात्मक उत्तर देंगे जो योग्य हैं, किन्तु हम पण्डित जी से निवेदन करते हैं कि क्या स्वामी विज्ञान भिक्षु जी से फटकार खाकर आप का चित्त प्रसन्न नहीं हुआ। अभी उस लज्जा को तो उतार लीजिए, फिर चैलेंज और

शास्त्रार्थ की बात छेड़िए। किन्तु ये तुच्छ बातें हैं। सीधी बात यह है कि पं० अखिलानन्द जी का अब आर्य्यसमाज के सिद्धान्तों पर विश्वास नहीं रहा। ऐसी दशा में भलमनसीयत का काम यही है कि अब वे उदरवृत्ति अन्त के लिए नया खेत और पानी के लिए नया कुआ देखें। आर्यसमाज को क्षमा करें, और आर्य्यसमाजियों के गले पड़ कर पैसे वसूल करना छोड़ें। इसी अंक में पं० गंगाप्रसाद जी का लेख दिया जाता है उस से पं० अखिलानन्द का बहुत सा रहस्य खुल जायगा। आर्य सज्जन ऐसे पुरुष से सावधान रहें।

खुर्जे के म० रामदत्त ने वहां से एक पण्डित जी का वृत्तान्त लिखा है, जिन्होंने ५० वर्ष की उमर में अपनी एक वृद्धा स्त्री के होते हुए भी १४ वर्ष की एक कुमारी से विवाह किया है। यह कार्य अत्यन्त गर्हणीय है—इस में सन्देह नहीं। किन्तु हम क्या लिख कर उन सनातनधर्म के पण्डित जी को लज्जित करें, जब कि अभी थोड़े दिन हुए युक्तप्रान्त के एक प्रसिद्ध आर्यसमाजी उपदेशक ने बुढ़ापे में आकर एक कुमारी कन्या के साथ पाणिग्रहण किया है।

—:०:—

हिन्दूयूनिवर्सिटी की कोर्ट के लिये ३० सभासद् चुने जायंगे। इस प्रतिष्ठित पद को पाने के लिए उम्मेदवारों की बड़ी धांधल मच रही है। चिट्ठियों द्वारा अपने पक्ष में सम्मतियां संग्रह करने का काम खूब ज़ोर शोर से जारी है। एक ताल्लुकेदार चिट्ठियां भेज रहे हैं कि हमें सम्मतियां अवश्य देना, दूसरे महाशय ने जिस सज्जन के लिए स्वयं सम्मति दी है उसे चिट्ठी लिखी है कि आप तो मेरे लिए अवश्य ही सम्मति दें। यदि ऐसे सज्जन नगर नगर ग्राम २ में इस विषय पर व्याख्यान भी देते फिरें कि वे कोर्ट के सभासद् बन कर क्या करेंगे तो बड़ा उत्तम हो। लोगों को पता लगे कि देश का उन सज्जनों से क्या भला होने वाला है?

—:०:—

हमने आर्यसमाज के साप्ताहिक अधिवेशनों पर लिखते हुए सम्मति प्रकट की थी कि जहां रात्रि के समय समाज हो वहां अग्निहोत्र न होना चाहिए। इस पर म० नत्थन लाल की एक चिट्ठी आई है जो अन्यत्र दी जाती है। हवन के जो लाभ महाशय नत्थनलाल ने बताये हैं, वे बिल्कुल ठीक हैं' किन्तु प्रश्न दूसरा है। रात्रि को हवन का निषेध इस लिये है कि उस समय हवन की अग्नि में कीट पतंग आदि के मरने का भय रहता है। अंधेरे तथा रात्रि का समय होने से कीट पतंगे आग की ओर भागते और मरते हैं। इसी लिए प्रायः किसी भी यज्ञ का रात्रि के समय विधान नहीं है। इस लिए रात्रि को समाजों में हवन का छोड़ देना ही अच्छा है।

—:०:—

सहयोगी 'ब्रह्मचारी' के विचारार्थ हम ब्राह्मण समाचार की निम्नलिखित सम्मति उद्धृत करते हैं—

ब्रह्मचारी—यह ऋषिकुल का मुखपत्र है। वा०मू० १॥) सम्पादक श्री गिरिधर शर्म्मा। प्रकाशक को लिखने से आगरा से प्राप्य। इस के सम्पादक एक प्रतिभाशाली सज्जन हैं। इस लिए इसमें भी प्रतिभा प्रकाशित होनी चाहिए। केवल 'वैदिक श्राद्ध' वाले लेख में ब्रह्मचारी का ३ हिस्से कलेवर भर दिया गया है, यह खटकता है। यद्यपि इस में और भी बहुत से शास्त्रीय लेख निकलते हैं, परन्तु हिन्दू समाज के प्रति सनातनधर्म का क्या कर्त्तव्य है? स०ध०—समाज में अनेक फैली हुई कुरीतियों के बहिष्कार के लिए क्या मन्तव्य रखता है? आदि आदियों पर ऋषिकुल जैसी सना० धर्म की प्रधान संस्था से निकलने वाले पत्र में, विशेष शास्त्रीय सप्रमाण लेख निकलने चाहियें। ब्रह्मचारी को समय पर निकालने का यत्न करना परमावश्यक है।"

—:०:—

काशी का शास्त्रार्थ

काशी के शास्त्रार्थ की धूम सप्ताहों से मची हुई है। हमने इस शास्त्रार्थ की दुर्घटना पर अब तक इसी लिए कुछ नहीं लिखा था कि एक ओर डिगरी देना उचित नहीं है। जब तक दोनों पक्ष न सुन लिए जाय, निश्चत सम्मति नहीं दी जा सकती। घटना यों हुई प्रतीत होती हैं। प्रतिवादिभयंकर मठके गुरु श्री मदनन्ताचार्य जी अनेक स्थानों में पंडितों का विजय करके काशी में पहुंचे। वहां भी आपने अपने विशिष्टाद्वैत की धूम धाम मचाने के लिए एक उत्सव का समारोह किया, और दूर २ से वैष्णवों को निमन्त्रण देकर बुलाया! काशी के सब पण्डितों को चैलेंज दे दिया कि वे उत्सव में आकर विशिष्टाद्वैत पर शास्त्रार्थ करें। इस से काशी के पण्डित भड़क उठे। विज्ञापन बाज़ी होने लगी—दोनों ओर से जोश बढ़ने लगा। एक दिन शास्त्रार्थ हुआ भी। दूसरे दिन शास्त्रार्थ का पूरा समारोह था। काशी के पण्डित जब नियत समय पर विश्वेश्वर थियेटर के दरवाज़े पर पहुंचे तो विद्यार्थियों का एक बड़ा समूह उन के साथ था। दरवाज़े पर भीड़ अधिक होने से पुलिस को दस्तन्दाज़ी करनी पड़ी, और पंडितों के लिए भी अन्दर जाना कठिन हो गया। भीड़ से बचने के लिए वैष्णव समारोह के प्रबन्ध-कर्ताओं को दरवाज़ा बन्द करना पड़ा। काशी के पंडितों ने इस पर अपनी विजय घोषणा देदी और पत्रों में भी ऐसे ही समाचार भेज दिए। अब इस पर विद्वेष की मात्रा बहुत ही बढ़ गई है और दोनों ही पक्ष एक दूसरे पर दोष फेंक रहे हैं। हम दोष किसी एक पर नहीं दे सकते, शास्त्रार्थों के आयोजन करने वालों से केवल इतना निवेदन करना चाहते हैं कि 'यदि आप लोग अपने अनुयायियों के अन्धे जोश को काबू में नहीं कर सकते तो शास्त्रार्थों का आयोजन न करना ही अच्छा है। शास्त्रार्थ का परिणाम हुल्लड़ या शास्त्रार्थ नहीं होना चाहिए'।

—:०:—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कहीं भलाई से बुराई न निकले

कीचड़ से कमल का निकलना अच्छा है किन्तु वह दिन अशुभ होगा, जब कमल से कीचड़ निकल आयगा। बुराई से भलाई निकलने में कोई हानि नहीं किन्तु भलाई से बुराई का निकलना दुःखदायी होता है। हिन्दुओं ने हिन्दू यूनिवर्सिटी बनाली, और मुसलमान शायद मुहम्मडन यूनिवर्सिटी बनायेंगे। इन दोनों यूनिवर्सिटियों से शिक्षा का प्रचार होगा—और भारत की भलाई होगी। किन्तु इन दोनों का प्रश्न उठाकर यदि आज ही से विश्वविद्यालयों के पक्ष-पोषक लड़ने और अविश्वास करने लगे तो भलाई से बुराई भी निकल सकती है। अभी संयुक्त प्रान्त की व्यवस्थापकसभा के अधिवेशन में मि० सी वाई चिन्तामणी ने बनारस के क्वीन्स कालिज के कार्य पर असन्तोष प्रकट करने, उसे हिन्दू यूनिवर्सिटी के अधीन करदेने और तोड़देने के प्रस्ताव पेश किये। उस पर बोलते हुए मुसलमान मेम्बरों के जो भाषण हुए वे प्रशंसनीय नहीं है। उन से हिन्दुओं के प्रति बहुत सा अविश्वास टपकता है। सम्भव है—मुसलमान मेम्बरों को हिन्दुओं से कोई शिकायत न हो, जो भी शिकायत हो वह मि० चिन्तामणि से ही हो किन्तु तो भी कौंसिलों में भारतवासियों की पहले ही कम सम्मतियां हैं, यदि उस पर भी हिन्दू और मुसलमानों के जुदा २ तम्बू गड़ जायं तो फिर बेड़ा पार है।

प्रभात और प्रचारक

सहयोगी प्रभात पर टिप्पणी देते हुए हमने लिखा था कि वह थ्योसाफिकल सोसाइटी का पत्र है, सहयोगी अपने दिसम्बर के पर्चे में सूचना देता है कि यह ठीक नहीं, वह 'पूर्व के तारे के सम्प्रदाय का' मासिक पत्र है। प्रश्न यह है कि क्या 'पूर्व के तारे का सम्पदाय, थ्योसाफिकल सोसाइटी' की एक शाखा नहीं। यदि शाखा है तो जो शाखा का पत्र है क्या वह वृक्ष का पत्र नहीं कहा सकता? उसी टिप्पणी में 'उनके नाम से' के स्थान में 'उनके भय से' छप गया था—इस भूल को हम स्वीकार करते हैं। उस सम्प्रदाय का मुख्य सिद्धान्त कैसा मज़ेदार है, यह बताने के लिये सहयोगी की ही पंक्तियां उद्धृत करते हैं। देखिये कैसा गड़ बड़ चौथ है—

"क्या श्रीयुत कृष्णमूर्ति [मद्रासी बालक] जगद्गुरु हैं? सम्प्रदाय की तरफ़ से आज तक कभी यह नहीं कहा गया। इस सम्प्रदाय के कुछ सभासद् मुसलमान हैं जिनका विश्वास है कि हज़रत मेंहदी जो कहीं गुप्त हैं इस समय में प्रकट होंगे। कुछ बौद्धमत के हैं जो अपने बोधि सत्व की बाट जोह रहे हैं और उनके लिये एक सुन्दर मन्दिर बना रखा है। ईसाईमत के बहुत से लोग क्राइस्ट के पुनरागमन का समय यही बतला रहे हैं। हिन्दू लोग कलियुग के लिये श्री-मैत्रेय ऋषि को एक मात्र आचार्य मानते हैं। और उनकी ही बाट इस कठिन समय में देख रहे हैं। इस लिये इस विचित्र सम्प्रदाय की ओर से किसी व्यक्ति विशेष को तारे का रूप बतलाने का अधिकार नहीं है। सभासद् अपनी स्वतन्त्रता रखते हुए गुरुदेव को पहिचानने की शक्ति प्राप्त करने के लिये चेष्टा करते हैं [सम्प्रदाय का छठा सिद्धान्त]"

भारत में शिक्षा

इंग्लैण्ड में ३,६०,००,००० की आबादी है, और उन में से ६० लाख विद्यार्थी स्कूलों में शिक्षा पाते हैं और शिक्षा पर सरकार का दो करोड़ पौण्ड से अधिक व्यय होता है। अंग्रेज़ों के भारत वर्ष में २६ करोड़ की आबादी है, उस में से केवल ७० लाख विद्यार्थी स्कूलों में पढ़ते हैं और १९१३-१४ में शिक्षा पर केवल ३० लाख पौण्ड व्यय हुआ था। शिक्षा पर व्यय कितना कम हुआ और अनुपात से हमारे विद्यार्थी कितने कम हैं। दोनों देशों का शासन एक ही सम्राट् की आज्ञा के अनुकूल होता है। जहां प्रतिविद्यार्थी इतना कम ख़र्च हो, वहां शिक्षा की उत्तमता कहां से हो सकती है?

—•—

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ⁄)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनीआर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल, विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। ⁄) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

कवि विनोद

(पहला पैरा)

तागड़ दिन्ना नागर बेल

(१) एक हमीं, नामी कविराज
और सभी तुकड़ हैं आज
शब्द अनेकों तोड़ मरोड़
कविता लिखें लेखनी तोड़
बोते शुचि कवित्व की बेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(२) और शीर्षक मन भाते न !
सठिया गये, समझ पाते न !
लिखने में पाते आनन्द
देखु नहीं ढकथुलानन्द !।
वाह खूबही भाया खेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(३) है जिन जिन से मनो मुटाव
उन उन ही के दिल पर घाव
कर पाया जो नहीं विशेष
तो सब शक्ति हुई निःशेष
दिया व्यक्तिता पर मन मेल !
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(४) रहे जन्म से जाति बखान
मानें क्यों गुण कर्म्म प्रधान !
बदल किसी की सके न जाति
जोर इसी पर है दिन राति
रहा निकल बालू से तेल
तागड़ दिन्नानागर बेल।

(५) हैं हम कैसे रखी आर्य्य !
तजें न निज विचार सांकर्य्य !
बढ़ा रहे हैं मनो विकार
बढ़े हमारे नीच विचार
होते हैं पद पद पर फेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(६) गिन गिन धरें पराये नाम
है ही और भला क्या काम !
गये भटेरों को भी छेक :
रखना सीखे कुल की टेक
पड़े भोगनी ही क्यों जेल !
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(७) भाया नहीं राम का नाम
पूजे तुलसी शालिग्राम
सत्सङ्गति का प्रेम-प्रसाद
पा न सके तज वाद विवाद
लड़े परस्पर बांध परेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(८) द्रोही साधु-समाज नृशंस
बने न मानस -सर के हंस
क्षीर नीर का तजा विवेक
रही मन्दता बाकी एक
मति अपनी पर डाले डेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(९) जिनको नहीं धर्म्म से प्रीति
जो न सुधारें कुल की रीति
वही अबोध-व्योम के मन्द
फेंक रहे मान्यों पर गन्द !
करें काम सारे अन्मेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१०) जिन में है हिन्दुत्व प्रधान
वह भी निज को आर्य्य बखान
कतरें कान न रखते लाज
फले हाय ! क्यों आर्य्यसमाज ?
हैं छोटे पर बने बड़ेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(११) बन कविता-कामिनि के कान्त
बितायुके जीवन दुःखान्त
अबभी दुर्मति तजते हैं न !
पोच कर्म्म कर लजते हैं न !
व्यर्थ न हम करते अठखेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१२) सत्यामृत प्रवाह पढ़ हाय !
नास्तिक हुए कहा क्या जाय !
हैं पापी भय हुआ सवार
पा सकते न कभी उद्धार
रहे रात दिन पापड़ बेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१३) है जिनका न और व्यापार
जो पल रहे पराये द्वार
मांग रहे वे दान सुवर्ण
मान हमें दानी नृप कर्ण
भिख मङ्गों से हैं नपसेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१४) छिड़ा कर्ण-शंकर संग्राम
पाहीं सके न यह विश्राम
जिस को स्वयं नरेश सहाय
देंगे, वह विजया पद पाय
बना रहेगा वीर अड़ेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१५) जो पर कविता-धन के चोर
वह भी लगे लगाने जोर
ऐसों के साहस को धन्य
होंगे ऐसे और न अन्य
लगे बजाने ढोल ढँढेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१६) शंकर की कविता के दोष
दिखलाने में किया न रोष
उन दोषों को दोष न मान
कविता-चोर करें अपमान
देखो गङ्गा जमुनी मेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

(१७) जो जन सबको प्रेम पसार
एक आंख से रहे निहार
हैं वे धन्य सुता सुत वान
जग जाहिर पूरण गुण खान
उनसे क्या कीजाय ठठेल
तागड़ दिन्ना नागर बेल।

—कवि विनोद का एक पैरा समाप्त कर्ण

एक अँग्रेज़ सन्यासी का

भारत भ्रमण

(गतांक से आगे)

यह स्पष्ट रूप से उस के लिए असम्भव है। ज़रूरी है कि वह अपने लोगों से मिले, जिसका अर्थ यह है कि जब कोई देसी सज्जन मिलने आए तो चिमटे का प्रयोग किया जाय। युवावस्था में उसका चरित्र चाहे कितना ही दृढ़ क्यों न हो, पर उस के लिए उस भारी दबाव को सहन करना, जो कि एङ्गलो इण्डियन लोग उस पर डालते हैं, असम्भव है। जब वह चालीस वर्ष का हो जाता है तो उसके विचार उस की स्थिति के अनुरूप स्थिर हो जाते हैं। इस प्रकार खाड़ी पहले के सदृश ही चौड़ी बनी रहती है।

इस के अतिरिक्त भारतीय लोग अधीन जाति के हैं और उन्हों ने अपना पाठ खूब पढ़ा है। एक भारतीय नगर में चलना ऐसा ही बुरा है जैसा कि किसी डेवन शायर पेरिश में से, जहां कि पासंन (पादरी) और स्क्वायर (जागीरदार) ने अपना घातक काम किया है, जहां कि स्कूल के बच्चे तुम्हें प्रणाम करते हैं, और खेती बाड़ी करने वाले मजदूर, तुम्हारे रास्ता पूछने पर, सलामें करते हुए तुम्हें स्यर (Sir) शब्द से सम्बोधन करते हैं। भारत के इस भाग में मैं दो तीन घन्टे तक एक जनसमूह-पूरित नगर में घूमा हूं और मुझे एक भी अंग्रेज दृष्टि नहीं पड़ा। लोग अत्युपचार से, मेरे लिए मार्ग खाली करने के लिए एक दूसरे को परे हटाते थे। जैसे मैं जा रहा था देशी पोलीस और सिपाही मुझे सलामें करते और बाहों को कन्धों पर रखते थे। यदि दैवात् मैं किसी पर तनिक ध्यान पूर्वक दृष्टिपात करता था तो वह अपने मुख को हाथों से छिपा कर पृथ्वी तक झुक जाता था। सौभाग्य से बम्बई और कलकत्ता आदि बड़े बड़े केन्द्रों में ऐसी अवस्था नहीं, पर उत्तर के अनेक नगरों में अवश्य यही दशा है। यह एक विचित्र अनुभव है जो कि दस सहस्र मील दूर हमारी नन्ही सी मातृ-भूमि की शक्ति का बोध कराता है, जोकि अपना गौरव मनुष्य के चारों ओर फैला रही है। पर इस के साथ ही मनुष्य और मनुष्य के बीच इस खाड़ी के उस दूषित भाव का भी अनुभव होता है जो कि इस गौरव ने पैदा कर दिया है। कल्पना हो सकती है कि इस प्रकार की अवस्था के चिरकाल तक बने रहने से सामान्य एङ्गलो इण्डियन यह समझने लगता है कि मैं श्रेष्ठतर जाति का प्राणी हूं। इस प्रकार यह खाड़ी घटने के स्थान में बढ़ती जाती है।

भारत के लोग गवर्नमेण्ट से अत्यन्त मित्रभाव रखते हैं और यदि अधिकारी-वर्ग तनिक हाथ फैलावें और लेन देन करें तो वे उन के लिए प्राण देने को तैय्यार हैं। पर शोक है कि ऐसी अवस्था नहीं। एक देशी मित्र ने मुझे कहा कि जब कोई देशी किसी अंग्रेज अफसर से मिलने जाता है तो वह ऋतु का हाल पूछने पर ऐसे ही अन्य विषयों के अतिरिक्त और कोई बात नहीं करता। जिस से मनुष्य अनुभव करने लगता है कि यह मेरे यहां बैठने से तंग आगया है और चाहता है कि मैं जल्दी ही चला जाऊं तो इसे आराम मिले। अतः सौहार्द नहीं बढ़ता।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आगरा—यहां भी मैं देशी आबादी से, कम से कम, कोई एक घन्टे के मार्ग पर हूं। पर उन लोगों से बात चीत करने की सम्भावना से मैं कितनी दूर परे हूं, जब कि मैं उन की भाषा नहीं बोल सकता, यदि मैं उन की ओर केवल आंख उठा-कर देखता हूं तो वे पृथ्वी तक झुक जाते हैं, और अंग्रेज़ होने के कारण अपना रोब जमाये रखने के लिए भी मेरा उन से मिलना निषिद्ध है। ताज महल को देखने जाना बड़ा सुगम है, परन्तु जिन मुख—मन्डलों को मैं मार्ग में देख रहा हूं—जो कि सुन्दर और ताज महल से अधिक अद्भुत हैं—उन के पीछे क्या है इस का पता लेना वस्तुतः कठिन है। प्रजा-सत्ताक शासन पद्धति के पक्षपाति-यों के लिए यह बड़ा कष्टकारी दृश्य है, पर कहा जा सकता है कि ऐसे लोगों को भारत में, कम से कम उस की वर्तमान अवस्था में आना ही न चाहिए।

सैय्यद महमूद ने एक दिन मुझे बड़े गर्व से कहा—"आप कहते हैं कि हम मुसलमान लोग स्त्रियों का सन्मान नहीं करते, पर किसी स्त्री का इस (ताज) के समान स्मृति भवन भला सारे योरप में तो दिखलाइए।" तब मुझे याद आया है कि इस बहुमूल्य स्मृति भवन को २०,००० अकाल पीड़ित मज़दूरों ने ज़बरन काम कर के सत्रह वर्ष में बनाया था। फिर विचार होता है कि "उनकी और उनकी स्त्रियों की क्या दशा हुई होगी?"

भारत के इस भाग में लोगों को सैकड़ों की संख्या में रेलवे स्टेशनों पर बैठे गाड़ी की प्रतीक्षा करते देखना एक विचित्र दृश्य है। वे इसी मतलब के लिए बनाए हुए बड़े २ अस्तबलों या अड्डातों में, जिन्हें वेटिङ्ग रूम कहना कठिन है, इकट्ठे होते हैं। न मालून, उन की समय की कल्पना ही बहुत सदोष है, या सोसाइटी की ख़ातिर ही, या विश्राम या रक्षा के लिए वे यहां आते हैं, पर यह निश्चय है कि आप इन पतली २ टांगों वाले अप्रतिपादक लोगों के दृढ़ समूह को, स्त्री और बच्चों सहित, घुतड़ों के भार चौकड़ी मारे, बात चीत करते हुए, या विचार में निमग्न, या सोते हुए, दिन रात के प्रत्येक समय में वहां देखेंगे; मानों गाड़ी का आना बहुत दूर की या बहुत कम महत्व की घटना है। ये लोग अधिकतर तीसरे दर्जे के डिब्बों में सफर करते हैं। स्त्रियों और बच्चों के लिए अलग कमरा होता है—यह नाक की नथों और कान की बालियों की एक अद्भुत प्रदर्शनी होती है।

बम्बई एक दिन मैं बिचारपति तैलिङ्ग की कचहरी में था। उनकी कार्य्यशैली बड़ी ही सराहनीय थी। मैं ने अनुभव किया कि अंग्रेज़ बैरिस्टर, जो वहां उपस्थित थे, देशी जज और वकीलों के मुकाबले में बहुत निर्बल हैं। निश्चय ही मैं यह ख़याल किए बिना नहीं रह सकता कि शिक्षित देशी कानून, गणित आदि विशुद्ध मानसिक विषयों में अंग्रेज़ों के तुल्य बल्कि उन से बढ़कर हैं। उन में त्रुटि है— कई एक अपवादों को छोड़कर सामूहिक रूप से विचार करते हुए— तो केवल उस गुण की जिसे शब्द "कर्तव्या-नुराग" प्रकट करता है। इसी त्रुटि के कारण वे अपनी मस्तिष्क—शक्ति का सब से अच्छा प्रयोग नहीं कर सकते या अन्त में हमारे मुकाबले में नहीं ठहर सकते। यह गुण बड़े महत्व का है। ऐङ्गलो – सेक्सन लोगों का मस्तिष्क चाहे अपूर्ण है पर उन में इस गुण की मात्रा बहुत अधिक है। इसी लिए वे संसार के स्वामी हैं।

बम्बई में मुझे एक भोज दिया गया। वहां इङ्गलेण्ड और भारत के सम्बंध पर खूब गूढ़ बातें हुईं। उपस्थित गण में से एक ने कहा भारत के सभी शिक्षित और विचार शील लोग कांग्रेस के साथ हैं। मैंने कहा यही बात पश्चिम में सोशय-लिस्ट संस्था की है। उसकी समझ है और वे सब उस के साथ सहमत हैं कि किसानों की अवस्था पहले समयों से अब निश्चय ही बदतर है। उसी मित्र ने कहा कि भारत की बढ़ती हुई दौलत के आंकड़े सर्वथा भ्रान्ति जनक है क्योंकि वे केवल सौदागरों और विदेशियों के नफ़े की वृद्धि को ही दिखलाते हैं, सार्व-त्रिक समृद्धि से उनका कुछ सम्बन्ध नहीं। मैंने भी उस के साथ सहमत होकर कहा कि हमारे पास भी इङ्गलेण्ड में इस प्रकार के के बहुतेरे आंकड़े हैं। पर इस परिणाम बिना और किसी बात की आशा ही नहीं होसकती क्योंकि दोनों देशों में शासन श्रेणियों के लोग व्यापार वाद [Commercialism] के रोग से ग्रस्त हैं और राजनैतिक सफलता का अन्दाज़ा उन व्यापारिक लाभों से लगाते हैं, और अपने कानून भी मुख्यतः इसी प्रकार की सफलता का ध्यान रखकर बनाते हैं।

व्यापारिक श्रेणी के शासन की ख़रा-बियों के विषय में लिखा है। जिन ख़रा-बियों को हम स्वदेश में इतना अनुभव करने लगे हैं—अर्थात् शासकों और शा-सितों में मेल मिलाप का अभाव; सब राजनैतिक बातों को व्यापारिक लाभों और dividends (डिविडेण्डों) की कसौटी से जांचना जिस का फल बहुतों को नि र्धन करके एक दो का धनी बन जाना है गन्दी गलियों और कारखानों में लोगों का ज़ियादह काम करना, किसानों और जमीनदारों का निर्धन होते जाना—अब भारत में भी पैदा हो रही हैं।

इस के साथ ही यह समझना कि देसी लोग उन भयानक दोषों से रहित हैं जिन के कारण कि एङ्गलो-इण्डियनों के लिए प्रश्न का हल करना इतना कठिन हो रहा है, असंगत है। इन दोषों में से वाक् छल, धोखा, और गुप्त व्यवहार सम्भाव्यत सब से अधिक भयानक है। हिन्दू विशे षतः अपने सूक्ष्म मन और सहनशील प्र कृति के कारण अविश्वस्त हैं। अपने व चन को निभाने वाले व्यक्ति का, या ऐसे व्यक्ति का जिस के विषय में तुम्हें नि श्चय हो सके कि दृश्यमान उद्देश्य ही उ सका प्रकृत उद्देश्य है, ढूंढ निकालना बड़ा कठिन है। और स्वभावतः इस प्रकार की बातों से अपराग पैदा होता है। इस तु च्छ, गन्दे, लाभ के भूखे, निर्भीक, प्रबल स्वार्थपर "व्यापार की अपेक्षा प्राचीन भा-रत—ज्ञानभूमि—की प्रकृति के अधिक विपरीत और कोई चीज़ नहीं हो सकती। बम्बई तथा कलकत्ता आदि बड़े २ नग-रों में जो विचित्र कलह देख पड़ता है वह केवल असंलग्नता का दर्शक है। पुराने ढर्रे के हिन्दुओं के लिए, जिन का आध्या-त्मिक आदर्श बहुत चिरकालीन है, हमा-रे ऐसी सभ्यता, जिस के धर्म्म और जी-वन की सब से उच्च कल्पना बड़ा डाकघर है, अभिशाप मात्र है। मेरे एक भारतीय मित्र ने लिखा है कि बर्बर तातारी की लूट खसूट ने देश को इतना नष्ट नहीं किया था जितना कि अंग्रेज़ों ने अपने व्यापारिक आदर्शों और संस्थाओं से किया है। य द्यपि मैं इस निन्दा के साथ सर्वथा सह मत नहीं पर मैं समझता हूं कि यदि अं ग्रेज़ों ने बेचारे भारत को पीड़ित और व्यथित किया है तो यह स्वयम् भारती यों का ही अपना दोष है जिन्हों ने अ पनी निश्चेष्टता और आलस्य के कारण ऐसा होने दिया। व्यापारवाद निस्स न्देह जाति पाति के बंधनों को बहुत कुछ सरल और परिवर्तित कर देगा, पर मुझे जान पड़ता है कि लोग जाति पाति के किसी संशोधित रूप की ओर पुनः लौ टेंगे।"

सन्तराम बी० ए०

CCO, Gurukul Kangri Coll...

संरक्षक सभा क्या है ?

(१) श्री ला० विष्णुदास जी प्रधान आ०स० [illegible] विन्दपुर तथा संरक्षक ब्रह्मचारी भीमसेन लिखते हैं—"मेरे ख़्याल में संरक्षक सभा की बुनियाद उन महाशयों ने डाली हुई है जो काम तो गुरुकुल के लिए कुछ नहीं करते, मगरूर आर्य पब्लिक में अपनी प्रसिद्धी के लिए यह आडम्बर रचा हुआ है और गुरुकुल को बहुत हानि पहुंचा रहे हैं।.....न मैं इस सभा का आरम्भ से सभासद हूं और नहीं इस सभा की आवश्यकता समझता हूं।"

[२] श्री लाला मोहनलाल जी कौड़ा लिखते हैं—"मैं ब्रह्मचारी सत्यानन्द, प्राणनाथ और विद्युन्मित्र का संरक्षक हूं, मेरे भाई लाला चुन्नीलाल ब्र० यज्ञेश्वर के और भाई गुलज़ारी लाल ब्र० निरञ्जनदेव के संरक्षक हैं अब .....सुना है कि कोई साहेब नाम निहाद संरक्षक सभा देहली बनाकर गुरुकुल को हानि पहुंचा रहे हैं, और लीडर बनना चाहते हैं और गुरुकुल के विरुद्ध पब्लिक को उकसा रहे हैं। हम तीनों भाई न पहले इस सभा के सभासद हैं और न इसकी आवश्यकता समझते हैं....."

(३) श्री लाला लब्भूराम नय्यड़ संरक्षक ब्र० श्री कृष्ण लिखते हैं—म० बालकृष्ण वाली मन्त्री संरक्षक सभा गुरुकुल कांगड़ी जो समय २ पर सरकयूलर छाप कर, आमतौर पर बांट कर गुरुकुल को हानि पहुंचा रहे हैं.....मेरा इस संरक्षक सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। आप को मालूम होगा कि आमतौर पर संरक्षकों में इनकी निन्दनीय कार्यवाही पर अफ़सोस ज़ाहिर किया जारहा है।

४. श्री भोजराज जी संरक्षक ब्रह्मचारी हंसराज लिखते हैं—"मैं पार साल विजयदशमी के उत्सव पर गुरुकुल गया था जैसा कि हमेशा जाया करता हूं। वहां संरक्षक सभा का जलसा था, उसमें मैं और दूसरे संरक्षक शरीक हुए तो विचार इस बात पर होता रहा कि ब्रह्मचारियों को क्या २ तक़लीफ है और जिस ग़रज़ के लिए ब्रह्मचारी हमने भेजे थे वह पूरी होती है या नहीं। परन्तु मन्त्री जी व प्रधान जी के अनुकूल तो शायद कोई होगा, नहीं तो उन से सहमत कम थे। गोरायों में आपस में भी फ़र्क था। मुझ से पूछा तुमको इस में क्या कहना है। मैंने कहा कि मुझसे ना कोई ब्रह्मचारी ने शिकायत की है और नाहीं मुझे कुछ कहना है। इस के बाद सभा उठ गई। जहां पर मन्त्री व प्रधान जी ठहरे थे वहां मैं भी खड़ा था। उन्होंने कहा कि जो ब्रह्मचारियों की निस्बत कुछ नहीं कहते, वे या तो उन के संरक्षक नहीं हैं या उन को वे घर पर बबाले जान थे जिनको उन्होंने गुरुकुल भेज कर पीछा छुड़ा लिया है। मैंने कहा मैं तो ज़रूर ऐसा ही हूं क्योंकि मेरे तो सिवाय ब्रह्मचारी के और कोई न हक़ीक़ी भाई है और न लड़का लड़की वा स्त्री ही है। परन्तु आप को सब ब्रह्मचारियों का पिता बन कर विचार करना चाहिये। अपने २ का तो हर कोई पिता बन सक्ता है। इसके बाद मैंने १०) दिए क्योंकि यह निश्चय हो चुका था कि सब का रुपया इकट्ठा दिया जायगा। इस लिखने से यह मतलब नहीं कि उन्होंने दिया नहीं होगा, परन्तु मेरे पास कोई रसीद नहीं आई।"

[५] म० महताबराय जी संरक्षक ब्रह्मचारी विद्यानिधि तथा भद्रसेन लिखते हैं कि उनको गुरुकुल से कोई शिकायत नहीं और न वह मन्त्री संरक्षक सभा से सहमत हैं।

[६] गुजरात प्रान्त के १२ ब्रह्मचारी गुरुकुल में पढ़ते हैं। उन के संरक्षकों ने एक उपसंरक्षकसभा स्थापित की हुई है। उस सभा के प्रधान श्री दयालजी लल्लू भाई तथा मन्त्री श्री झीणा भाई देवा भाई लिखते हैं—सुम्बई प्रान्त के जो ब्रह्मचारी गुरुकुल कांगड़ी में हैं उनमें से किसी के भी सम्बन्धी और संरक्षक का म० बालकृष्ण वाली के साथ सम्बंध नहीं है और उनके काम से सहानुभूति भी नहीं है। हमारी उप संरक्षक सभा केवल गुरुकुल की सहायता के लिए है और गुरुकुल का विरोध करने वाले मनुष्यों का काम बुरा मानती है। सुम्बई प्रान्त के ब्रह्मचारियों के संरक्षकों की एक सभा बुलाकर "उप संरक्षक सभा" नाम पलट कर "गुरुकुल सहायकसभा" नाम रखने और सहायता का कार्य करने का हमारा निश्चय है।

(७) श्री महताज्ञानचन्द्र जी लिखते हैं—"आपका लेख प्रचारक के गतांक में देख कर, कि म० बालकृष्ण आदि संरक्षक सभा की ओर से कुछ पैम्फ़लेट बांट रहे हैं जिस की संरक्षकों को ख़बर तक नहीं और वह गुरुकुल के वास्ते हानिकारक हैं, बड़ा शोक हुआ। असल में संरक्षकसभा गुरुकुल को सहायता देने के वास्ते बनाई गई थी, और अधिकारियों को मदद देने के वास्ते थी; न कि गुरुकुल के बरख़िलाफ़ बाधा डालने के वास्ते। मैं संरक्षकसभा का प्रधान भी दो साल रहा हूं और मेरे चार ब्रह्मचारी गुरुकुल में इस समय हैं। मैं सालभर में कम से कम दो तीन महीने गुरुकुल में रहकर (प्रत्येक वर्ष उत्सव कैम्प के मैनेजर होते हैं) सब कुछ देखता हूं। मेरी सम्मति में गुरुकुल के अधिकारी अपनी ओर से बड़े शुद्धभाव से काम कर रहे हैं और चाहते हैं कि गुरुकुल की हर तरह से उन्नति हो। यदि, जिस प्रकार ऊपर लिखा गया है, म० बालकृष्ण जी कार्यवाही कर रहे हैं तो मेरा ऐसी सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है।

(क्रमशः)

श्री मास्टर गोवर्धन जी ने ६ दिसम्बर का मेरा लेख पढ़ कर यह परिणाम निकाला है कि म० बालकृष्ण वाली के ट्रैक्ट के निकलवाने वाले वह समझे जाते हैं और इस लिए एक लम्बे पत्र में उन्होंने "उक्त ट्रैक्ट की छपवाई, बंटवाई और उस में वर्णित विषय और प्रस्ताव" से अपना कोई सम्बन्ध न होने पर बल दिया है। यद्यपि मेरे लेख में किसी का नाम नहीं तथापि मास्टर जी के लेख का आशय इस लिए दे दिया है कि उन पर किसी महाशय को भ्रम न रहे।

प्रथम चार श्रेणियों के ब्रह्मचारियों के संरक्षकों से निवेदन है कि ७ पौष, १९७३ [२१ दिसम्बर, १९१६] के दिन उनके ब्रह्मचारी दिल्ली से १३ मील की दूरी पर इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल में चले जायंगे। उन ब्रह्मचारियों को जो संरक्षक, बड़े दिनों की छुट्टियों में, भी मिलना चाहें वे तुग़लकाबाद के स्टेशन पर उतर कर वहीं जा मिलें।

इन छोटे ब्रह्मचारियों को हरिद्वार रेलवे स्टेशन पर छोड़ने के लिए गुरुकुल के सब ब्रह्मचारी अपने आचार्य तथा उपाध्यायों और अध्यापकों सहित जायंगे जिस का वृत्तान्त आगामी अंक में दिया जायगा।

मुन्शीराम मुख्याधिष्ठाता

—:o:—

Haridwar. Digitized by eGangotri

पं० अखिलानन्द की चालें।

श्रीमान् सम्पादक सद्धर्म्म-प्रचारक जी महोदय नमस्ते !

पं० अखिलानन्द अपने ग्राम चंदुआ के नगला से चल कर जि० एटा मौजा लालपुर में अपने मन्त्र गुरु उस कृष्णकाय के समीप पहुंचा जोकि वर्षों पर्यन्त अपने को महर्षि का शिष्य लिखता रहा है और अब अपशब्द बोलता है। इस समय पर उसको आर्यसमाज मीमांसा नाम की पुस्तक दिखलाई जिसमें कि आर्य्यसमाज की बाह्य और आभ्यन्तरावस्था का हाल लिखा है। यह पुस्तक अभी लिखी है इसको पास कराके आप मैनपुरी एटा होते हुए लाहौर पहुंचे और वहां राय ठाकुरदत्त जी की आज्ञानुसार एक व्याख्यान हुआ। वहां से जो कुछ टके हाथ लगे उनको लेकर अजमेर पधारे परन्तु अजमेर के सामाजिक अधिकारियों ने व्याख्यान न होने दिया। पुनः बड़ौदा आये म० मा० आत्माराम जी अमृसरी की सम्मति से निजमन्तव्य का स्पष्टीकरण' लेख आर्य्यमित्र में छपने को भेजा जोकि मित्र की विगत संख्या में निकलचुका है। और मास्टर साहब से एक पत्र लिखवा कर मुम्बई आर्यसमाज के प्रमुख के नाम लाये जिसमें मास्टर साहब ने लिखा था कि सन्देह त्याग कर पं० अखिलानन्द का व्याख्यान समाज में कराओ। इस पत्र के आधार पर सभापति महाशय डा० कल्याणदास जी ने वहां के दैनिक मुम्बई समाचार में व्याख्यान होने का नोटिस निकाल दिया, इतने में कलकत्ता निवासी म० बा० टेकचन्द्र जी साहब समाज में पधारे और व्याख्यान को रोकना चाहा परन्तु मुम्बई समाचार में नोटिस निकल जानेके कारण से व्याख्यान होना निश्चय रहा और ता० ५ नवम्बर रविवार को व्याख्यान वेद मीमांसा पर हुआ। बीच २ में अखिलानन्द अपनी सफाई भी दिखलाते जाते थे कि मैं स्वामी दयानन्द जी के सिद्धान्त से विरुद्ध नहीं हूं। व्याख्यान के अन्त में यहां तक बोल दिया कि महर्षि के ५१ मन्तव्यों को मैं बराबर मानता हूं। और ऋषि के सिद्धान्त के विरुद्ध होना चाण्डाल भंगी का काम है। किसी महाशय ने बोला कि वर्णव्यवस्था में आपने स्वामी जी के विरुद्ध क्यों लिखा है तो पं० अखि० ने उत्तर दिया कि वह तो मैंने यह दिखलाया है कि कितने ही आचार्य जन्म से भी वर्ण मानते हैं।

प्रातःकाल समाज में हवन होता है एक दिवस भी पं० अखि० वेदी पर आन कर नहीं बैठे—योगेन्द्र शर्मा जोकि बदायूं गुरुकुल की तर्फ से चन्दा करने को आया है उसने एक दिवस बोला कि आओ पं० जी हवन के समय वेदी पर बैठके आप भी मन्त्रोच्चारण किया करो। पं० अखि० ने जवाब दिया कि परमात्मा सर्वत्र है मैं वेदी पर बैठके मन्त्रोच्चारण करूं तो क्या होगा।

१ शब्द बोध व्याकरण, २ वाक्य मीमांसा, ३ पाणिनीय विवरण-इन ग्रन्थों को साथ में लेकर पं० अखि० वृद्ध वैद्य रामेश्वर जी के दवाखाने में पहुंचे और तीनों ग्रन्थ उनको दिखलाये और बोले कि इनको छपवाने के लिए रुपये दो वैद्य जी ने ग्रन्थ देखकर बोला कि स्वामी विरजानंद जी महाराज के समय की तो एक भी प्रतीक नहीं दीखती। अवश्य मथुरा के कागज़ पर आपने लिखे हैं परन्तु जबतक असली कापी न देखलूं इन पुस्तकों को मैं स्वामी विरजानंद जी की रचना नहीं बोल सकता यह तो आपकी ही रचना है। अखि० ने उत्तर दिया कि वह कापी इतनी जीर्ण है कि हाथ में उठाने से चूर्ण होजावे। इसपर विशेष वादविवाद हुआ पुनः अखि० बोले अच्छा एकाद पुस्तक तो अपनी लागत से छपवादो यदि एक भी न छपवाओ तो जो कुछ सहायता देनी होय वही दो। वैद्य जी ने बोला कि "मैं अच्छी तरह से जानचुका हूं कि ब्राह्मणों में से जो महर्षि के सिद्धान्त व उनके समाज से विरुद्ध होते हैं वह पुस्तक और प्रेस का रोज़गार समाल कर बैठते हैं। प्रथम कृष्णकायलालपुरिया भीमसेन ने यही रोजगार उठाया था दूसरे ज्वालापुरिया भीमसेन भी आगरा में सनाढ्य प्रेस खोलकर बैठे हैं। अब आप चन्दुआ चर्मकार के नगला में पुस्तकालय और प्रेस जमाना चाहते हैं सो मैं इस काम में एक पाई न दूंगा।" इतना सुनकर तो नेत्रों में जल भर लाया और बोलने लगा कि मैंतो आपके भरोसे पर आया हूं। वैद्य जी बोले कि "इन ग्रन्थों के छपवाने की अपील का आपने पत्र दिया है उसके उत्तर में हम निषेध लिख चुके हैं पुनः मेरे भरोसे पर आना आपकी भूल है मुझ से कुछ आशा न रखो और गत वर्ष मिथ्या बोल कर मुझे दया उत्पन्न कराई और ५०) आप लेगये वह रुपया वर्णव्यवस्था के छपाने में लगा है अबकी बार आर्यसमाज—मीमांसा आप छपवाना चाहते हैं जिसको आप लालपुर जाकर भीमसेन से पास कराकर लाये हो।" यह सुनकर तो चुप होगया और पुस्तकें समेट कर चला गया। पुनः दूसरे दिवस आया, वैद्य जी ने बोला कि आर्य समाजों में जो व्याख्यान आपने दिया उसकी रिपोर्ट नागरी में लिखकर अपने आप ही आपने छपने को क्यों दी है? या तो समाज का मन्त्री देता अथवा आर्य्य प्रकाश का सम्पादक स्वयं छापता उसके आधार पर आप मुम्बई प्रान्त के समाजों को धोखा देकर टका वसूल करना चाहते हैं।

पं० अखि० बोला कि मुझ से समाज में तो कोई विरुद्ध नहीं है। केवल मुन्शीराम ने अपने लड़कों की प्रतिष्ठा समाज में बढ़ाने के लिए मेरी बदरोबी कर रखी है। दूसरे मेरठ वाले घासीराम ने ब्राह्मणों को गालियां देना शुरूकरदिया है। इन्हीं के दबाने के लिये मैंने वैदिक वर्णव्यवस्था लिखी है।" स्वामी ओंकार सच्चिदानन्द बोले कि 'व्यक्तिगत विरोध के कारण महर्षि के सिद्धान्त पर आक्षेप करना यह कहां तक उचित है।' वैद्य जी बोले कि घासीराम जी तथा म० मुन्शीराम जी को आपने दबादिया और उनके पुत्रों की अप्रतिष्ठा समाज में होगई। अगर तुम हज़ार पुस्तकें भी लिखो तो स्वार्थ त्यागियों की और सत्य के लिये जो प्राण अर्पण कर चुके हैं और सत्य के लिये तथा धर्म के लिए अपना जीवन अर्पण कर रखा है उनकी अप्रतिष्ठा कदापि नहीं हो सकी। मैं भी ब्राह्मण हूं, मुझे समाजी लोग गालियां क्यों नहीं देते और मेरे ऊपर समाचार पत्रों में नोट क्यों नहीं निकलते। जो जैसा है वैसा कहना क्या बुराई है। आप यथार्थ में लुब्ध हो समाजों से व आर्य्य पब्लिक से पैसा लेकर द्रव्यपात्र बनना चाहते हो, क्या स्वार्थ परायणता से ब्राह्मण सबके नेता हो सकते हैं जैसा कि आपने लिखा है। ब्राह्मण और सन्यासी का भूषण स्वार्थत्याग है इसी में उनकी प्रतिष्ठा कूट २ कर भरी हुई है। आप टके के लिए सौ २ आडम्बर रचते हो। धिक्कार है इस ब्राह्मणत्व और विद्वत्व को। समाजों में से

ब्राह्मणों को विरुद्ध करने का प्रयत्न आपने किया है और कर रहे हैं। प्रथम आपको उचित है कि शास्त्रार्थ कर लेवें जैसा कि स्वामी विज्ञानभिक्षु जी ने चैलेंज दे रखा है।' पं० अखिला० बोला कि शास्त्रार्थ तो मैं नहीं करूंगा। मेरे समान जिसने इतने ग्रन्थ लिखे होवें कि जितने मैंने लिखे हैं, मेरे समान विद्वान् होवे उस से मैं शास्त्रार्थ करूं। विज्ञानभिक्षु छोकरा बीस वर्ष का है उस से क्या शास्त्रार्थ करूं। मेरे ऊपर कोई लेख लिखेगा उसका उत्तर भी नहीं दूंगा। मुझ से म० आत्माराम जी ने बोल दिया है कि काम करे जाओ जबाब किसी का न दो। आप कुछ सहायता नहीं देते तो न सही। कहीं दूसरी जगह प्रयत्न करूंगा लेकिन मुझे मार्ग ख़र्च आपको देना होगा मैं हर तरह से मार्गखर्च आप से लूंगा।' इतना बोल कर चला गया।

तीसरे दिवस पुनः वैद्य जी को आ घेरा और मार्ग खर्च के लिए नानाप्रकार की सम्मतियां देनेलगा। मजबूर होकर वैद्य जी ने दश का नोट देकर पीछा छुटाया।

यहां से चल कर एक जैनी जाति के पास गया यहीं से भी मार्ग व्यय को १०) लाया। पुनः जो कोई आर्य समाजी मिला सब से मार्ग खर्च की याचना की और जो कुछ मिला वह ले लिया। पुनः मारवाड़ी बाज़ार तथा गोकलिया गुसाइयों के मंदिरों में मार्ग खर्च मांग कर लाया इसी प्रकार करीब २००) रु० के एकत्र करके मध्य देश स्टेट देवास को चला गया। यह सुना गया कि कहीं २ से चार आने तक लिए हैं।

दर असल यह मनुष्य बिलकुल नास्तिक है इसका किसी सिद्धान्त पर निश्चय नहीं है केवल टके के निमित्त को लेकर दूर देश में समाजों को धोखा देने निकला है कोई लेख ऐसा निकले कि इस के धोखे में लोग न आवें। यह महर्षि वे समाज का पूर्ण रूप से छुपा हुआ शत्रु है।

भवदीय शिवदत्त शर्मा
उपदेशक
सुम्बई
२७।११।१६

समाज में हवन

सद्धर्मप्रचारक २८ मार्गशीर्ष सम्वत १९७३ के पृष्ट ३ पर ५ साप्ताहिक अधिवेशन पर एक लेख निकला है! उस में एक जगह यह बात बतलाई गइ है कि "जहां रात के समय समाज किया जाता है वहां हवन करना ठीक नहीं, क्योंकि वह अग्निहोत्र का काल नहीं है" मैं इस से सहमत नहीं हूं कारण यह है कि प्रत्येक ऐसे कार्य क आरम्भ में जिस में बहुत से मनुष्यों ने एक जगह एकत्र होना है, हवन का करना आवश्यक ही है। ताकि मकान के अन्दर की वायु शुद्ध हो जावे। साप्ताहिक अधिवेशनों में भी चूंकि बहुत से मनुष्य एकत्र होते हैं और समाज मन्दिर भी साप्ताह के पश्चात् एक वार खुलता है इस लिए पहिले अग्निहोत्र द्वारा वायु की शुद्धि आवश्यक है अन्यथा अशुद्ध वायु में श्वास लेने से सरपीड़ा हो जायेगी और लोग दत्तचित्त होकर धर्म उपदेश नहीं सुन सकेंगे। संस्कारों में भी इसी कारण से पहिले साधारण अग्निहोत्र करना आवश्यक समझा गया है। वह साधारण हवन संस्कार का भाग नहीं है, प्रत्येक संस्कार से सम्बन्ध रखने वाली आहुतियां पीछे दी जाती हैं।

नित्य कर्म में हवन के करने का समय प्रातः काल और सायंकाल बतलाया गया है इस का कारण यह है कि और समय है कि और समय में मनुष्य दुनिया के झगड़ों में फंसा हुआ होता है वा चारपाई पर पड़ा हुआ खर्राटे ले रहा होता है। केवल सन्धि वेला ही ऐसा समय है जब कि मनुष्य निश्चिन्त होता है इस लिए यही दोनों समय सन्ध्या और हवन के लिए नियत किए गये हैं, किन्तु इस से यह नहीं समझना चाहिए कि और समय हवन करना लाभ दायक न होगा, हवन हर समय जब आवश्यकता हो वायु की शुद्धि के लिए किया जा सक्ता है।

साप्ताहिक अधिवेशनों में जो हवन किया जाता है वह नित्य कर्म नहीं है जिस के लिए हम नियत समय की खोज करें यह विशेष हवन है। इस लिए अधिवेशन से पहिले करना ही उचित है। चाहे समय कोई हो।

मैंने अपनी सम्मति प्रकाशित की है। आशा है इस से लेखक महाशय रुष्ट न होंगे।

तुच्छ सेवक
नत्थनलाल हिसार

सामाजिक समाचार

आर्य समाज कलकत्ते— का द्वितीय वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ तथा ३० दिसम्बर को होना निश्चय हुआ है। बड़े २ विद्वानों के सम्मिलित होने की आशा है व्याख्यान संस्कृत, हिन्दी, बंगला व अंग्रेज़ी में होंगे-एक महान् यज्ञ भी होगा जिस की समाप्ती पूर्ण सामदेव के मंत्रों से की जायगी। श्री मंत्री जी समाज आर्य भाइयों को सपरिवार निमंत्रित करते हैं।

आर्य समाज खुसरुपर जिला पटना— का सातवां वार्षिकोत्सव ४ दिसम्बर को निविघ्न तथा आनन्द पूर्वक समाप्त हुआ। स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, स्वामी सत्यानन्द जी तथा स्वामी विज्ञान भिक्षुः आदि कई विद्वान सम्मिलित हुए थे। जिन के उपदेशों का प्रभाय उपस्थित जनता पर उत्तम पड़ा। अन्तिम दिन सरकार की विजय के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई और एक तार श्रीमान् विहाराधीश के पास भेजागया जिस के उत्तर में उक्त महोदय ने समाज के साथ सहानुभूति प्रकट की और धन्यवाद दे अपनी उदारता का परिचय दिया। अधिकारियों का चुनाव निम्नप्रकार हुआः—

प्रधान—बा० महावीरप्रसाद जी. मंत्री-बा० रघुनन्दनप्रसाद जी, उपमंत्री—म० रघुनाथ सहाय जी, कोषाध्यक्ष—म० जमूरतमल जी उपकोषाध्यक्ष—म० गुरुप्रसाद जी, पुस्तकाध्यक्ष—म० रामदास जी तथा कारूलाल जी।

श्री मंत्री जी आर्य समाज लायलपुर— सूचना देते हैं कि तिथि २६ मार्गशीर्ष को म० अमीरचन्द्र जी के पुत्र का मुण्डन संस्कार हुआ तथा म० लक्ष्मणदास जी प्रधान समाज के भवन पर बृहद् यज्ञ अथर्ववेद के मंत्रों से ३०० की उपस्थिति में हुआ। १०१) विविध निधियों में दान दिया गया। प्रीति भोजन के पश्चात् महा० शोभाराम तलागंग निवासी को जो लगभग १० वर्ष से पतित होगया था, दो पुत्रों सहित शुद्धि की गई।

आर्य समाज एमनाबाद (ज़िला गुजरांवाला)— का वार्षिकोत्स २३, २४ तथा २५ दिसम्बर को होना निश्चय हुआ है। बड़े २ विद्वानों और महात्माओं के सम्मिलित होने की संभावना है। २३ की सायंकाल नगर कीर्तन और २४ की रात्रि को मैजिकलेनटर्न द्वारा व्याख्यान होगा। तारीख २५ की रात्रि को ८ से १० बजे तक "नवग्रह पूजन वैदिक है वा अवैदिक" इस विषय पर शास्त्रार्थ होगा।

आर्य कुमार सभा मेरठ— की प्रार्थनानुसार श्री पं० हरिशंकर जी व्यास काठियावाड निवासी के चार महत्वपूर्ण उपदेश २९ नवम्बर तथा १, २, ३ व ४ दिसम्बर को आर्यसमाज भवन मेरठ में हुए, जिन से श्रोतागण अति प्रभावित हुए।

—०—

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* ओ३म *

Regd. No. A. 434

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ।

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

प्रतिशनिवार को प्रकाशित होता है } १६ पौष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ३० दिसम्बर सन् १९१६ ई० { संख्या ३७ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृतप्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सक्ता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकती।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिये लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत-साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेदमन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज कर्मचारियों की ओर से मिला है, उस के आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन के ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक गुप्त रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा 'हिन्दी' के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य-मात्र को इस निबन्ध से आर्य भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार पोस्ट आफिस शेरपुर-कालूंकी, ज़िला बिजनौर (संयुक्तप्रान्त) U. P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	...	...	३)
विद्यार्थियों से	...	...	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	...	...	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिये पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाप्त होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्त्ता से पूछकर निश्चित कीजिये।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १)

एक तोले तक १)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सच्चा स्वराज्य

(३)

साहित्यिक-स्वराज्य

ऋग्वेद के जिस मन्त्र में इडा सरस्वती और मही की रक्षा का उपदेश है, वह ऊपर दिया जा चुका है। इडा से धार्मिक वाणी, और सरस्वती से लौकिक भारतीसाहित्य—का ग्रहण है। सरस्वती की रक्षा करना प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जाति और प्रत्येक राष्ट्र का परम कर्तव्य है। आत्मा शरीर का स्वामी है, धर्म शरीर का प्राण है, तो साहित्य शरीर में रुधिर का काम देता है, जैसे रुधिर हृदय से उत्पन्न होकर शरीर के एक २ अंग में जाता और जीवन का संचार करता है, अंगों को सचेत करता और परिपुष्ट करता है, उसी प्रकार साहित्य भी जाति के हृदय स्थल में उपजे हुए भावों को कोने २ में पहुंचा कर जाति के जीवन और पोषण का कारण होता है। यदि जाति का साहित्य विशुद्ध और जीवनाणुओं से युक्त है, तो जाति दिनों दिन वृद्धि करती जायगी। उसके अंग परिपुष्ट और दर्शनीय होते जायंगे। किन्तु यदि वह रुधिर गन्दा होजाय, यदि उस में रोग जन्तु प्रविष्ट होजाय, तो फिर आज ज्वर है तो कल फोड़ा हो जायगा। रुधिर के समान साहित्य भी जातिशरीर में बड़ी द्रुतगति से भागता और नेताओं की सम्मतियों को सर्वसाधारण तक पहुंचाता है।

साहित्य का स्वराज्य क्या है? व्यक्ति के लिये सरस्वती सम्बन्धी स्वराज्य का तात्पर्य है—मनुष्य को अपने आत्मा के अनुकूल वाणी के प्रयोग का अधिकार हो, किसी दूसरे के बलात्कार से वह अपनी वाणी को न बदले। यह व्यक्तिगत साहित्य स्वराज्य है। व्यक्ति सरस्वती की हिंसा नहीं कहाती है कि मुख से जो वाणी निकले वह भय लोभ या निर्बलता के कारण आत्मा की वाणी न हो। इस स्वराज्य में दो प्रकार के विघ्न उपस्थित होते हैं, एक तो आत्मा की प्रकृति से कई लोगों के हृदय में सत्य की भावना इतनी कम होती है, कि वे आत्मा के शब्द को निकाल ही नहीं सकते। असली शुद्ध आटे में रेत मिलाना उनका स्वभाव सा होजाता है। किसी बाह्य कारण से नहीं, अपितु अन्दर की आवृत्ति से मजबूर होकर वे अन्यथा बोलते हैं। ऐसे लोगों का स्वराज्य अन्दर के घुन से ही खाया जाता है। वाणी की स्वाधीनता को रोकने के दूसरे कारण बाह्य होते हैं। बाह्य कारणों में राजभय, लोकभय, पितृ भय, धन लोभ, यश लोभ, आदि अनेक कारणों में होते हैं। इन कारणों में फंस कर मनुष्य अन्यथा कहने पर बाधित होजाता है। इस प्रकार बाधित होकर वाणी की स्वाधीनता नाश करने का पाप दो पर भी होता है। जो भय दिखा कर दूसरे की सरस्वती की हिंसा करता है वह भी पाप का भागी होता है, और जो अपने आप को इतना निर्बल कर लेता है कि भय या लोभ के झटपट ही काबू में आजाय, वह व्यक्ति भी पाप का कम भागी नहीं है। इन दोनों प्रकार के पापों से बचता हुआ जो मनुष्य न दूसरे की वाणी पर बाधा डालता है और न अपनी वाणी पर बाधा पड़ने देता है वही मनुष्य वस्तुतः साहित्य स्वराज्य में निवास कराता है।

यह व्यक्ति के सम्बन्ध में सरस्वती—साम्राज्य बताया। इसी प्रकार जाति के सम्बन्ध में भी समझ लेना चाहिए। जाती की सरस्वती पर भी ऐसे ही अनेक प्रकार के विघ्न आसकते हैं, जिससे उसके स्वराज्य में अनेक प्रकार की रुकावटें उपस्थित हों। जाति के सम्बन्ध में साहित्यिक स्वराज्य का तात्पर्य यह होता है कि किसी जाति का साहित्य स्वतन्त्र विहार करे— न कोई आभ्यन्तर कारण ही उस में बन्धन डाल सके, और न कोई बाह्य कारण ही उसके स्वच्छन्द विहार को रोक सके।

जाति के साहित्य पर बन्धन डालने वाले आभ्यन्तर कारण कई हो जाया करते हैं। कभी २ जाति के जीवन में ऐसे समय आते हैं जब धार्मिक पुस्तकों का लिखा जाना उचित समझा जाता है। इतना उचित समझा जाता है कि और किसी विषय में भी यत्न करना पाप या कम से कम अपराध माना जाने लगता है। साहित्य की उन्नति में यह बड़ी भारी बाधा समझनी चाहिये। एक दूसरे प्रकार की बाधा तब उपस्थित होती है जब कि कोई आचार्य आ कर भाषा के अङ्ग प्रत्यङ्ग पर व्याकरण या अलंकार शास्त्र की ऐसी कड़ी ज़ञ्ज़ीरें डाल देता है कि उसका इधर या उधर हिलना असम्भव हो जाता है। स्वच्छन्द विहारिणी सरस्वती—नदी एक नहर के रूप में आजाती है। उसका फैलाव, उसकी नये २ देशों में सैरें, उसका स्वाभाविक सौन्दर्य—यह सब कुछ सपना हो जाता है। व्याकरण हो, और अलंकार शास्त्र भी हों, किन्तु उन का उद्देश्य भाषा की विद्यमान दशा समझना होना चाहिये, न कि उसे बांधना ही उसका एक मात्र लक्ष्य होजाना चाहिये। सरस्वती परमात्मा की दी हुई अमृत नदी है, उसका बन्धन बुरा है, जाति के जीवन को कुण्ठित करने वाला है।

सरस्वती की हिंसा करनेके बाह्य साधनों में से मुख्य किसी दूसरे साहित्य का भारी आक्रमण है। साहित्यों पर ऐसे आक्रमण प्रायः होते रहते हैं। भारतवर्ष में १८ वीं शताब्दि में फारसी तथा उर्दू का भयंकर आक्रमण हुआ था; जर्मनी के साहित्य पर भी लगभग उसी समय फ्रेंचभाषा का भयंकर आक्रमण हुआ था और आज फिर हमारे देश के समस्त साहित्य पर अंग्रेज़ी भाषा का ज़बर्दस्त हमला हो रहा है। अंग्रेज़ी बोलना, अंग्रेज़ी पढ़ना, भाषा में अंग्रेज़ी घुसेड़ना, अंग्रेज़ी में पुस्तकें लिखने और समाचार पत्र लिखना—यहां तक जातीय सभाओं में व्याख्यान भी अंग्रेज़ी भाषा में ही देना भारत वासियों का धर्म सा हो रहा है। यह जातीय सरस्वती की सब से बड़ी हिंसा है—यह साहित्यिक स्वराज्य का सब से बड़ा अंग-विच्छेद है।

वेद इन सब बाधाओं को दूर कर के व्यक्तिगत और जातीय साहित्य के स्वराज्य की रक्षा करने का उपदेश करता है।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक।

आर्य्यसमाज बरेली की संस्थाएं।

बरेली आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर मैं २८ अक्टूबर, १९१६ की रात को पहुंचा था। २९ और ३० अक्टूबर को मुझे वहां की सारी आर्य संस्थाओं के देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आर्यसमाज में वक्तव्य का युग समाप्त हो चुका है, अब सच-मुच कृतयुग आगया है। यदि यह जनसमाज भी युग के प्रभाव को न समझेगा तो इस का अस्तित्व भी सन्दिग्ध हो जायगा। अब 'पण्डित वह जो गाल बजावा' का समय गया, इस समय पण्डित वे हैं जो "आर्यकर्माणि रचयन्ते भूतिकर्माणि कुर्वते। हितञ्चनाभ्य सूयन्ति पण्डिता भरतर्षभः।"

आश्रम व्यवस्था के ठीक न रहने के कारण आर्यसमाज ने ईसाइयों के अनुकरण में गृहस्थ युवकों को धर्मोपदेशक का उच्चपद तो प्रदान कर दिया, परन्तु ईसाई "मुक्तिफ़ौज" के अनुकरण में उन्हों ने ऐसे कारख़ाने न खोले जहां अपने मतलब के मनुष्य घड़े जासकें। सयालकोट में भेघों के उद्धार का काम अच्छा हुआ है परन्तु आवश्यकता प्रत्येक स्थान में गिरे हुओं को उठाने की है। चाहिये यह था कि जहां कहीं भी काम करने वाले आर्यपुरुष हों वहां ही दीनों को उभारने और उन को काम में लगाने का प्रबन्ध हो।

बरेली आर्यसमाज इस काम में इस समय अगुआ बन चुका है और यदि वर्तमान गति की स्थिति रही तो आशा पड़ती है कि अन्य आर्यसमाजों के लिए यह ज्योतिस्तम्भ का काम देगा। बरेली आर्यसमाज ३५ वर्षों से स्थापित हो कर काम कर रहा है। बरेली में ही ऋषिदयानन्द के आदेशानुसार पहला अनाथालय सं० १९८४ ई० में स्थापित हुआ, परन्तु बीच में उस के प्रबन्ध सम्बन्धी बड़ी शिकायतें सुनने में आती रहीं। फिर आर्य इन्स्टीट्यूशन खुला जो १४ वर्षों तक चल कर, सब प्रकार के ऊंच नीच देख कर चलाने वालों के अभाव से बन्द हो गया। एक कन्यापाठशाला भी खोली गई थी; वह भी बूढ़ आर्यसमाज को दे दी गई जिस के हाथों में अब उस का अच्छा विकाश हुआ है। मुझे उस संस्था को देखने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, परन्तु यदि उक्त कन्यापाठशाला को सरकारी पाठ विधि के अनुसार चलाया जाता है तो उस से पूरालाभ हमारी पुत्रियों को नहीं पहुंच सक्ता। इस प्रकार बरेली आर्यसमाज की अवस्था साधारण थी, क्योंकि धनाढ्य सभासदों के होते हुए भी शिकायत यह थी कि काम करने वाले आदमी नहीं। यद्यपि "मनुष्य रूप" तो बहुत थे परन्तु आदमी एक न था।

फिर समयानुसार आदमी भी आपहुंचा। डाक्टर श्यामस्वरूप जी असिस्टेन्ट सर्जन ने रोगी शरीरों का इलाज शुरू करते ही अनुभव किया कि इन सब के आत्मा भी हैं। आत्मिक चिकित्सा के लिए अकेले आदमी ने संस्थाएं खोलनी आरम्भ कीं। सच्चाव्रत धारण कर के उन्हों ने कृतकार्यता प्राप्त की और अपना नाम सत्यव्रत सार्थक कर दिखाया। फिर काम करने वालों की भी कमी न रही। फिर ग्रेजुएट और वकील ज़मींदार अहलकार, सभी काम करने लगे। इस समय मैंने अनाथालय को २० वर्षों के पश्चात् देखा उस में आश्चर्यजनक परिवर्तन पाया। अभी उन्नति के लिए स्थान तो बहुत है परन्तु बालक और बालिकाएं दोनों प्रसन्न वदन और काम करने वालों के वर्त्ताव से सन्तुष्ट प्रतीत हुईं। एक बालक जो काङ्गड़ी के महादानी मुंशी अमनसिंह जी ने भेजा था, अपने हाथ की बनाई हुई एक कुरसी लेकर मिला जो मैंने वहीं की संस्था को देदी। मुझे जो एड्रेस दिया गया उसकी चौखट अनाथालय के बालक ने तय्यार की थी वह बड़ी सुन्दर है। बैन्डबाजा बालकों ने अपना बना लिया है। मैंने वार्षिकोत्सव में कहा था और अब फिर लिखता हूं कि "अनाथालय" के स्थान में कोई ऐसा नाम, इस संस्था का रखना चाहिए जिससे पता लगे कि ये पुत्रियां और पुत्र 'सनाथ' हैं।

आर्य समाज मन्दिर में सोमवार विद्यालय को मैंने देखा था। इस विद्यालय का आदर्श बहुत उच्च है जिसकी ओर चलने का प्रयत्न होरहा है। इस में कुछ देवियां धर्मभाव से प्रेरित होकर बहुत अच्छा काम कर रही हैं। इस संस्था के भविष्य के लिए अच्छे चिन्ह हैं। कन्याओं की आवश्यकताओं को देवियां ही ठीक समझ सक्ती हैं। इस लिए बरेली स्त्री विद्यालय का उद्देश्य यदि पूरा हुआ और देवियों ने ही योग्यता सम्पादन कर के इस विद्यालय को चलाया तो स्त्री शिक्षा का प्रश्न हल ही हो जायगा।

आर्य विद्यासभा के आधीन १३ पाठशालाएं खुली हुई हैं और उत्सव पर चार पाठशालाओं के खोलने के लिए प्रार्थना पत्र पहुंचे थे। इन पाठशालाओं में चमारों और भङ्गियों तक के लड़के पढ़ते हैं। मैंने उनमें से चार पाठशालाओं को देखा, जिन्हें गिरे हुए आर्यसन्तान ने ज़बरदस्ती अछूत समझ रक्खा है उनको उठाने का, इन पाठशालाओं में अच्छा यत्न किया जाता है। चमार, भङ्गी, मुसलमान--सभी जातियों के बालक नमस्ते कह कर वेद मन्त्रों का पाठ करते और आर्यसमाज के नियमों को सुनाते देख कर चित्त प्रसन्न होता था। इन पाठशालाओं की स्थिरता इसलिए अधिक है कि महल्ले के चौधरी स्वयम् सहायता देते हैं। चमार आदि नाम हटा कर इनका नाम करण "कल्याणी पाठशालायें" करने में भी बड़े उदार भाव से काम लिया गया है।

आर्यसेवा समिति के युवक तो हर समय मेरे अङ्ग सङ्ग ही रहते थे। रेलगाड़ी से उतरते ही जो मैं उन के हवाले हुआ तो बरेली से विदा होने तक मैं उन्हीं की संरक्षा में रहा। अभी तीन महीने ही इस संस्था को खुले हुए थे और काम में सब के सब सभासद् पुराने अनुभवी पुरुषों की तरह रत थे। बरेली ऐसे नगर में दुष्टों से

CCO, Gurukul Kangri Coll...

दीनों की रक्षा के लिए ऐसी समिति की बहुत आवश्यकता थी, जो पूर्ण हो जाय। इन युवकों के लिए उस [illegible] मेरे हृदय से आशिर्वाद निकलता था। [illegible] तक यही [illegible] इच्छा होती है कि बरेली के बदमाशों के हाथों कोमल हृदय बालक तथा बालिकाओं की रक्षा करने में ये युवक कृतकार्य हों। सब से अन्तिम संस्था, जो मैं देखसका

सरस्वती विद्यालय [अहरोला] थी। अहरोला के ज़मीन्दार, म० प्रेमनारायण जी, इस विद्यालय के मुख्याधिष्ठाता है। उन्हों ने मुझे उसका सारा हाल सुनाया। इस विद्यालय को गुरुकुल के चरण चिन्हों पर चलाने का विचार है। गुरुकुल के स्नातक देवराज सिद्धान्तालङ्कार इस पाठशाला के आचार्य नियत किए गए हैं। सायंकाल को मैं गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुछ उपाध्यायों सहित अहरोला पहुंचा था। उस समय आचार्य देवराज जी कुछ नए ब्रह्मचारियों का वेदारम्भ संस्कार करा रहे थे। स्थान एकान्त सुन्दर है और पर्याप्त स्थान मिल सक्ता है। श्री बाबू बलदेव प्रसाद जी वकील प्रधान तथा डाक्टर श्याम स्वरूप जी सत्यव्रत ने भी इसी ग्राम में ज़मीन लेकर वाटिकाएं लगाई हैं जिसका अर्थ यह है कि इस विद्यालय की सहायता ये महानुभाव पूरे बलसे करने का विचार रखते हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के फैलाने में यह विद्यालय भी एक साधन होगा।

आर्य व्यापार मण्डल इन सर्व संस्थाओं का पोषक सिद्ध होगा। इस मण्डल ने एक जूते बेगादि का कारख़ाना खोल रक्खा है। जिन्हें चमार कहते थे वे चमड़े का पीछा छोड कर केवल कपड़े, नमदा, लकड़ी धात्वादि से ही मज़बूत और सुन्दर जूते बना कर भी बेचते हैं। अहिंसा धर्म का प्रचार और दीनों का उद्धार, साथ साथ, होता है। गुरुकुल के स्नातक पं० पूर्णदेव विद्यालङ्कार इस कारख़ाने में विशेष काम करने लगे हैं। ऊपर लिखित उद्योग का फल यह है कि ब्राह्मण कुलोत्पन्न युवा, चमार कुलोत्पन्न कन्या के साथ विवाह करके सुख का जीवन भोग सक्ते हैं। परमात्मा बरैली आर्यसमाज के पुरुषार्थ को कृतकार्य करे यह मेरी हार्दिक इच्छा है। [मुंशीराम जिज्ञासु]

जातीय सप्ताह का

तात्पर्य

पाठक वृन्द ! यह दिसम्बर का अन्तिम सप्ताह है, इसका दूसरा नाम जातीय सप्ताह है। इस सप्ताह में देश भर के नैतिक तथा सामाजिक मुखिया एक स्थान में एकत्र होकर देश की उन्नति के साधनों पर विचार करते हैं। भारतवर्ष की वर्तमान अवस्था का यह सप्ताह ख़ासा नमूना हो जाता है। जितने प्रकार के भी यत्न इस समय देश में हो रहे हैं, उन सब के थोड़े २ दृश्य एक ही स्थान पर दिखा दिये जाते हैं। इस वार देखिये, लखनऊ में क्या क्या होगा? ज़रा सूचि तो देखिये—

[१] कांग्रेस
[२] सोशल कान्फ्रेंस
[३] इण्डस्ट्रियल काफ्रेंन्स
[४] टेम्परेंस कान्फ्रेंस
[५] हिन्दू कान्फ्रेंस
[६] मुस्लिम लीग
[७] थ्योसाफिकल कन्वेन्शन
[८] थीस्टिक कान्फ्रेंस
[९] आर्य कुमार सम्मेलन
[१०] आर्य समाज का प्रचार
[११] जैन कान्फ्रेंस
[१२] खत्री कान्फ्रेंस
[१३] एक लिपि विस्तार परिषद्
[१४] प्रेस एसोसियेशन
[१५] कवि सम्मेलन

यह सूचि पर्याप्त लम्बी है, किन्तु शायद यह भी पूर्ण नहीं है। रोज़ ही दो एक नई सभाओं के समाचार देखने में आ जाते हैं।

× × × × × ×

यह हमारे जातीय जीवन का भाषा-विभाग या व्याख्यान-विभाग समझना चाहिये। इस सप्ताह में, सब कान्फ्रेंसों में मिला कर जितने प्रस्ताव पास होंगे, उनकी संख्या कम से कम २०० तक पहुंचेंगी, बहुत सम्भव यही है कि इस से कहीं अधिक हो। यदि संख्या भी कोई शक्ति है तो हमारी सम्मति में इन प्रस्तावों के भार के नीचे आकर ही भारत की दुर्दशा पिस जायगी। किन्तु प्रतीत होता है कि ऐसा नहीं होता। कारण स्पष्ट है। शब्द आकाश का गुण है, और गुण में भार कहां। तब और किसे कहें, स्वयं विधाता को ही कोसना चाहिये, जिसने शब्द को भार रहित बनाया। अन्यथा अब तक तो भारत की दुर्दशा का नाम भी सुनने को न मिलता। उस के देह की राख़ के अणु भी न जाने कहां लुप्त हो गये होते। यदि शब्दों में भार होता तो देश में ३० साल से जितने प्रस्ताव पास हो रहे हैं उनका भार तो शायद भारत की दुर्दशा के साथ भारत को भी ले बैठता।

× × × × ×

क्या इस प्रस्ताव-सप्ताह का कोई लाभ है? इस प्रश्न के उत्तर दो मिल सकते हैं। कई लोग कहते हैं, यह सप्ताह जाति का जीवनाधार है। प्रस्तावों की बड़ी उपयोगिता है। कांग्रेस के प्रस्ताव न होते तो आज भारत के शासन में इतने सुधार न हो गये होते, भारतवासी इतनी ऊंची २ नौकरियों पर न होते। सोशल कान्फ्रेंस न होती तो न जाने भारत की क्या दशा होती। शायद कोई जोशीला कान्फ्रेंस पक्षपाती कह उठे कि यदि सोशल कान्फ्रेंस न होती तो ब्रह्मो समाज, आर्य्य समाज आदि कोई भी सुधारक समाज न होता। यदि आर्यकुमार सम्मेलन न होता तो आज आर्य कुमार सभायें देखने में न आतीं इत्यादि इत्यादि। तात्पर्य यह है कि एक पक्ष की राय में प्रस्ताव ही जातीय जीवन के आधार भूत हैं।

× × × ×

अब दूसरी ओर की कथा सुनिये। जो लोग प्रस्ताव बाज़ी के विरुद्ध हैं वे कहते हैं कि यह सप्ताह हमारी जातीय जीवन की गाड़ी के एंजिन में एक बड़े छिद्र के समान है। यदि एंजिन के गैस-होल्डर में एक बड़ा छिद्र हो जाय तो सारी गैस भाग जायगी। एंजिन खड़ा का खड़ा रह जायगा। यह सप्ताह भी हमारे एंजिन में भरी हुई सारी गैस को निकाल कर बाहिर कर देता है। बस यही इस सप्ताह की हानि है। यदि यह सप्ताह न हो तो हमारी जातीय गाड़ी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१६० मील प्रतिघंटा के हिसाब से भाग कर संसार की सब गाड़ियों से आगे निकल जाय।

× × × × ×

इस समय देश के समझदार लोग समझ रहे हैं कि सत्य दोनों के मध्य में है। न तो भारत की दुर्दशा प्रस्तावों के भार के नीचे दब कर चकनाचूर हो सकती है, और न ही प्रस्ताव केवल एञ्जिन में छिद्र ढूंढ़ा ही कार्य करते हैं। बात असल में यह है कि कार्य के बिना प्रस्ताव व्यर्थ है, और मिलकर विचार किये बिना कार्य ठीक प्रकार वेग से नहीं चलता—जातीय सम्मति उस के साथ नहीं होती। कांग्रेस तथा अन्य कान्फ्रेंसों का यह बड़ा भारी लाभ हो सकता है कि देश के सब भागों में रहने वाले सर्वसाधारण के नेता लोग मिलते हैं, मिलकर विचार करते हैं, और प्रस्ताव रूप में अपनी सम्मति राजा और प्रजा तक पहुंचाते हैं। यह कार्य्य कुछ कम नहीं। इस से देश में होने वाले यत्नों को उत्साह मिलता है, काम करने वालों को रास्ता दीख पड़ता है, और जागते हुए भारतीय राष्ट्र का एक ज्वलन्त दृष्टान्त मिल जाता है।

× × × × ×

किन्तु यदि साथ ही यह न समझ लिया जाय कि 'कार्य के बिना प्रस्ताव कुछ नहीं—क्रिया के बिना शब्द घोषा है—तो यही प्रस्ताव-सप्ताह हानि कारक भी हो सकता है। केवल बोल कर जो लोग कृतकार्य हो जाते हैं, वे वस्तुतः राष्ट्र की घड़ी की सूइयों को पीछे ले जा रहे हैं। शब्द कार्य का उत्साह वर्धक हो—और कार्य शब्द की सफलता करे—बस यही जीवन का सिद्धान्त है। जो लोग जातीय सप्ताह को लखनऊ बिताने जाते हैं, उनसे हमारा निवेदन है कि आप वहां बड़े २ आदमियों को केवल देखने न जायं—यह कार्य चित्रों से भी सिद्ध हो सकता है। आप वहां कनरस से परे जाकर सुरेन्द्र और एनीबेसेण्ट के भाषण सुनने भी न जायं, उनके भाषण आप समाचार पत्रों में भी पढ़ सकते हैं। आप यदि जायं, तो जीवन का पाठ पढ़ने जायं, अपने कार्य क्रम के लिये रास्ता ढूंढने जायं, अपने जीवन को कार्यमय बनाने का प्रण कर के जायं। इसी में आपका समय सुव्ययीत होगा, इसी में आप का जाने का कष्ट सफल होगा।

महता जैमिनि जी और प्रचारक

हमने आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव का वृत्तान्त लिखते हुए महता जैमिनि जी के व्याख्यान का भी कुछ हाल लिखा था। इसी प्रकरण में महता जी के बारे में भी कुछ राय देदी थी। उस के प्रतिवाद में हमें दो लेख मिले हैं, उन में से एक अन्यत्र दिया जाता है। दूसरा लेख स्वयं महता जी का था जो श्री महात्मा जी के नाम भेजा गया था। उस लेख में महात्मा जी को बहुत से उपदेश देकर बताया गया है कि 'मैं यह भी आप को बतला दूं कि लायलपुर में अरोड़बंस सभा का मैं सेक्रेटरी हूं और आलइण्डिया अरोड़बंस कान्फ्रेंस का जनरलसेक्रेटरी मुन्तखिब किया जा चुका हूं। गोशाला लायलपुर जो एक रजिस्टर्ड जमायत है उसका सेक्रेटरी हूं, आर्यस्कूल का मैनेजर हूं, टेम्परेन्स सोसाइटीका सेक्रेटरी हूं—ग़र्ज़ कि यहां तमाम तहरीकों का कारकुन हूं।' आगे आपने लिखा है कि केवल आर्य समाज ने कई व्यक्तिगत झगड़ों के कारण मुझे जुदा कर दिया है। महता जी ने पत्र महात्मा जी को लिखा है और उन्हीं को लेख के लिए उत्तरदाता ठहराया है। यह तो खैर उनकी न्याय बुद्धि को ही सूचित करता है क्योंकि वे भी जानते हैं कि अब महात्मा जी प्रचारक के सम्पादक नहीं हैं। इन उपर्युक्त सभाओं के सन्निपन का अधिकार दिखाकर आप सिद्ध करना चाहते हैं कि आप की सामाजिक मृत्यु नहीं हुई।

वे दोनों लेख और महता जी के पत्र का सारांश अपने पाठकों तक हम ने पहुंचा दिया, क्योंकि यदि अपनी राय देने का हमें अधिकार है तो किसी व्यक्ति के सन्दिग्ध कार्य की सफ़ाई प्रकाशित कर देना हमारा कर्तव्य है। यह कर्तव्य हम पालन कर दिया है। किन्तु इतना हम अवश्य कह देना चाहते हैं कि इन सब पत्रों से भी दो विषयों में हमारी राय नहीं बदली। महता जी का लाहौर में व्याख्यान बहुत कृतकार्य हुआ, और दूसरे दिन सारी भीड़ महता जी का व्याख्यान सुनने के लिए ही एकत्र हुई थी, 'इस बात को मानना हमारे लिए कठिन है, क्योंकि हम स्वयं उस समय विद्यमान थे, और हमारा विचार यही था कि चाहे किसी कारण से उपस्थित जनता में अधिक भाग उन्हीं लोगों का था जो महता जी के व्याख्यान को पसन्द नहीं करते थे। दूसरा यह प्रश्न है कि क्या महता जी सामाजिक दृष्टि से मर चुके हैं। यदि ये शब्द सख्त हैं तो इन्हें जाने दीजिये, हमारे शब्द हमें दे दीजिए। महता जी सामाजिक दृष्टि से जीवित हैं किन्तु लायलपुर समाज ने उन्हें इस योग्य नहीं समझा कि वे सभासद् रह सकें। य० गुरदित्तारम जी समाज के इस कार्य को अनुचित समझते हैं, जहां तक हमें ज्ञात है यह कार्य अनुचित नहीं था। इसी के आधार पर हमने उस लेख में 'सामाजिक मृत्यु' शब्द का प्रयोग किया था, शब्द न सही, भाव यही है। अब हम इस विवाद को समाप्त करते हैं और इस सम्बन्ध में कोई लेख प्रकाशित न किये जायंगे।

सरकारी रिपोर्ट और आर्यसमाज

आज के पत्र में संयुक्तप्रान्त की बहुत सी समाजों के प्रस्ताव प्रकाशित किये गये हैं, जिन में सरकार की एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट के उन शब्दों पर शोक प्रकाशित किया गया है, जिन में आर्यसमाज और ईसाइयों के युद्ध की उत्तरदातृता आर्यसमाज पर अधिकतया फेंकी गई है। सचमुच उन शब्दों का रिपोर्ट में आना अच्छा नहीं था। आर्यसमाजों ने एकस्वर होकर उन शब्दों के विरुद्ध आवाज़ उठाई है। सरकार को चाहिए कि अपनी रिपोर्ट में इन शब्दों पर एक काग़ज़ की चेपी लगवा दे बस इतने में काम हो जायगा। यह ज्ञात होने में क्या फ़ायदा है कि सरकार एक मतावलम्बियों का कुछ अधिक पक्ष करके निर्दोष ही दूसरे पर दोष आरोपित

करना चाहती है। इस से शासन में कोई सहूलियत नहीं होती।

जातीय समारोह

लखनऊ इस समय तय्यारियों का घर बन रहा है। कांग्रेस का जो बुलटिन छपने को आया है, उस से ज्ञात होता है कि पण्डाल की तय्यारियां खूब हो गई हैं। प्लेटफार्म पर और टिकटों के साथ पच्चीस २ रुपया देने वालों की टिकटें भी होंगी। स्त्रियों के लिए विशेष पर्दे का प्रबन्ध होगा। स्वागतकारिणी के मन्त्री महाशय यह भी सूचना देते हैं कि लखनऊ सब प्रकार के रोगों से रहित है, और ऋतु भी अत्युत्तम है किन्तु सर्दी खूब कड़ी है। जाने वालों को गर्म कपड़े लेकर जाना चाहिए।

राष्ट्रभाषा-सम्मेलन

प्रसन्नता की बात है कि कांग्रेस के समय लखनऊ के मातृभाषा प्रेमियों ने राष्ट्र भाषा को भी भुलाया नहीं है। सूचना आई है कि २६ दिसम्बर को प्रातःकाल ८ बजे आर्यसमाज के मण्डप में राष्ट्र भाषा सम्मेलन का अधिवेशन होगा। कर्मवीर महात्मा गान्धी जी सभापति का आसन सुशोभित करेंगे। सब आर्यभाषा प्रेमियों को चाहिए कि समय पर पधारें और राष्ट्रीय सप्ताह की राष्ट्रीय नागरी में राष्ट्रीय भाषा का झण्डा बुलन्द करें।

पोष्ट आफ़िस की विचित्र करामात

जब रेल द्वारा लोगों के पत्र २५ मील प्रतिघण्टा के हिसाब से नहीं भगाये जाते थे तब कहते हैं लाहौर से चला हुआ पत्र दिल्ली में १५ दिन में पहुंच जाता था। अधिक से अधिक महीना समझ लो। किन्तु अब ज़रा पोस्ट आफिस की करामात देखिए। निम्नलिखित पत्र रामपुर पञ्जाब से २४. ७. १२ को रवाना हुआ था।

श्री प्रबन्धकर्ता
सद्धर्मप्रचारक, दिल्ली

श्रीमान् जी नमस्ते।

कृपा करके निम्नलिखित पते पर प्रचारक का एक वी० पी० भेज कर एक वर्ष का मूल्य वसूल करलें।.....
.....

भवदीय
सन्तराम गोहल बी० ए०
[जि० शिमला]

हमें यह पत्र कब मिला? १९१६ के दिसम्बर मास की १८ तारीख को। १९१३ के ७ वें मास में चला १९१६ के १२ वें मास में पहुंचा। क्या कमाल है। बेतार की तार बर्की क्या इस से जल्दी चल सकती है? विलक्षणता यह कि पते में पत्र का नाम और शहर का नाम अंग्रेज़ी में भी लिखा था। यह नहीं कहा जा सकता कि काले लोगों की भद्दी भाषा में पता लिखा होने से पत्र समय पर नहीं पहुंचा। दुनिया शीघ्र आने जाने में उन्नति कर रही है— भारतीय पोस्ट आफिस ने उन्नति को चरमसीमा तक पहुंचा दिया।

वर्णव्यवस्था और स्वभाव

आज कल कई लोग ऋषि दयानन्द के लेखों के आधार पर जन्मानुसार वर्णव्यवस्था मानने के लिए 'स्वभाव' शब्द का आश्रय ढूंढा करते हैं। वे कहते हैं कि जब ऋषि ने गुण-कर्म स्वभाव से वर्णव्यवस्था मानी है तो फिर उन के विषय में यह कहना कि वे जन्मानुसार वर्णव्यवस्था नहीं मानते थे, अशुद्ध है। स्वभाव शब्द का तात्पर्य है—नित्य प्रकृति। जो चीज़ मनुष्य से नहीं छूटती वह स्वभाव है, और इसी लिए वर्णव्यवस्था जन्मानुसार ज्ञात होती है। इस में पहिला विचारणीय विषय यह है कि क्या स्वभाव और जन्म एक ही बात है। क्षण भर के लिए मान लीजिए-एक ही बात है। स्वभाव किस का होता है, शरीर का या आत्मा का? क्या क्रोधी, लोभी या मोही स्वभाव शरीर का भी हो सकता है। प्रत्येक शास्त्रज्ञ कहेगा कि नहीं। स्वभाव आत्मा का ही होता है। दूसरा प्रश्न यह उठेगा कि जन्म आत्मा का होता है या देह का? शास्त्रज्ञ का उत्तर यही होगा कि आत्मा नित्य है, अजर और अमृत्यु है। केवल शरीर उत्पन्न होता या नष्ट होता है। तब बात ही कैसे बनी। जन्म शरीर का है और जो स्वभाव वर्ण निश्चय करने में साधन हो सकते हैं, वे आत्मा में हैं। स्वभाव तथा जन्म को एकार्थ वाची मानना भूल है। एक मनुष्य का क्रोधी स्वभाव है—यहां स्वभाव शब्द के स्थान में जन्म शब्द रख देने से वाक्य बनेगा-एक मनुष्य का क्रोधी जन्म है। क्या तात्पर्य हुआ? कुछ भी नहीं। जब स्वभाव शब्द का अर्थ जन्म नहीं है, तब गुण कर्म स्वभाव के अनुसार वर्णव्यवस्था होती है, इस कथन से जन्मानुसार वर्णव्यवस्था ले निकलना कैसे उचित और न्यायानुमोदित हो सकता है?

स्वभाव क्या है?

प्रश्न यह होता है कि स्वभाव क्या वस्तु है? स्वभाव का शब्दार्थ है—अपना भाव। विशेष दशाओं के कारण जो आदत पड़ जाती है, उसे स्वभाव कहते हैं। कोई मनुष्य निर्धन के घर में पैदा हुआ, जन्म से मैला कुचैला रखा गया, उसकी आदत मैला रखने की हो जाती है। दैववशात् वह किसी धनी महात्मा की दृष्टि में आगया। उसने उसे लेकर पाला पोसा और पढ़ाया। कुछ सालों में उसी मैला कुचैला स्वभाव रखने वाले पुरुष की आदत स्वच्छ रहने की हो जायगी। कई आदतें इस प्रकार बदल जाती हैं। लोगों ने अपनी आदतें बदली हैं। यही बात जीवन सुधार की एक मात्र आशा बंधाती है। बैंजमिन फ्रैंकलिन ने अपनी डायरी के सहारे आदतों में भारी परिवर्तन कर लिया था। अशोक पहले कितना क्रोधी था, पीछे कैसा शान्त स्वभाव हो गया। ये आदतें ही स्वभाव हैं। ये भी वर्ण निश्चय करने में कारण होती हैं। इसमें जन्मानुसार वर्णव्यवस्था कहां से निकल आई।

सरस्वती आश्रम की पुस्तकें

सरस्वती आश्रम के म० राजपाल जी निःसंदेह आर्य्यसमाज की उपयुक्त सेवा कर रहे हैं। आपने हमारे पास चार पुस्तकें समालोचनार्थ भेजी हैं। उनमें से पहली सत्य-उपदेश-माला- है, जिस में श्री स्वामी सत्यानन्दजी महाराज के व्याख्यानों और लेखों का संग्रह है। भक्ति रस का पान करना हो तो इस संग्रह को लीजिये, और स्वाध्याय के काम लाइये।

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह संग्रह पहले उर्दू में छपा था, अब भाषा में प्रकाशित हुआ है मूल्य ॥)

दूसरी पुस्तक का नाम आनन्द संग्रह है, । इस में श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी महाराज के उपदेशों तथा लेखों का संग्रह है। यों किसी व्याख्याता के व्याख्यानों के पढ़ने से उस आनन्द का दशमांश भी नहीं आता, जितना आनन्द व्याख्यान के सुनने से आता है, किन्तु तो भी सच्ची और खरी बात चाहे सुनी जाय—चाहे पढ़ी जाय—अपना मूल्य रखती है। संग्रह लेने योग्य है। यह संग्रह उर्दू में है। तीसरी 'गुल्दस्त-ए-शाद' नाम की पुस्तक में मास्टर रौनक राम शाद की कविताओं का संग्रह है। एक धार्मिक जोश से भरे हुए दिल के शब्द जो असर रखा करते हैं वह असर इस गीतिका संग्रह में है। इस संग्रह में समाजों में गाने योग्य कई भजन हैं, और सभा में आनन्द देने वाली कई कवितायें हैं। यह संग्रह भी उर्दू में है मूल्य ।)। चौथी पुस्तक 'काशीयात्रा' नाम की है। हमें शोक है कि इस धार्मिक उपन्यास (?) के विषय में कोई बहुत अच्छी राय नहीं दे सकते। हमारी सम्मति में न इसकी भाषा और न इसका कथा-विन्यास ही इस योग्य है कि इसे हम उपन्यास कह सकें। उपन्यास केवल शब्द बहु कहानी का नाम नहीं, उसमें कोई और भी गुण चाहिये। साथ ही एक बात भी ध्यान देने योग्य है। कभी २ कड़वी औषधि मिसरी में डालकर देनी पड़ती है—इसी प्रकार उपन्यास रूप में धार्मिक उपदेश दिये जाते हैं। किन्तु यदि मिसरी तो मीठी न हो और दवा उस से पहले अपना स्वाद दे दे तो उसे मिसरी में डालने से क्या लाभ होगा? भाषा भी उपन्यास योग्य नहीं है। यों कहानी का भाव अच्छा है, पर उसे उपन्यास न कहकर कहानी कहना ही ठीक होगा। मूल्य =)

ऊपर की पुस्तकें सरस्वती आश्रम लाहौर से प्राप्य हैं।

———

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार छपा करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल, विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। =) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक विना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

प्रार्थना

निम्न लिखित पद न० (१) व [२] ताल तेवरा, झूमरा तथा रूपक में व धुन देस, सोरट, विहाग, भैरवी आदि में गाये जा सकते हैं।

[१]

हरितव अलखगति न लखात। टेक
अन्तरा-समुझि प्रभुता तव दशा निज,
अधिर मति ह्वै लात
भ्रम जनक बहु होत अचरज,
चकित चित चकरात—हरितव
तव रचित लघु भानु सन्मुख,
तिमिर राशि विलात
तुव अलत तव गेह ही को,
सम न नेक नशात—हरितव.....
तुमहि केवट भव जलधि कर,
पतित पावन रुपात
तुव लखत दुख भंवर माहीं,
अधम डूबो जात
सकल मंगल परम आनंद,
सदन तुमहिं कहात
शरण तेरी बसत खाकी,
दुखित ह्वै बिलखात

(२)

प्रभु अब करूँ कवन उपाय। टेक
अन्तरा-यथा मति मम जनम बहु विधि,
यतन करत सिराय
पै न मनते मोह ममता,
कठिन हठ अध जाय
प्रभु अब.....
चहूं तव पद प्रेम ज्यों ज्यों,
जगत नेह विहाय
विषय महँ सठ मोहि बरबस,
देत अधिक फँसाय
प्रभु अब.....
सुनत एक न करत अपनी,
निसय लाज गँवाय
भयो अब स्वाधीन या सो,
मोर कछु न बसाय
प्रभु अब..... ....
थकित ह्वै तव शरण खाकी,
परा अब तो आय
द्रवित ह्वै सोइ करहु स्वामिन,
उचित जौन लखाय
प्रभु अब.....

[२] निम्न लिखित पद न० [३] व [४] ताल, तिताला, बोजत [जिन्हे दीपचन्दी भी कहते हैं] में धो धुन, पीलू, काफी, देस, सोरट, विहाग, भैरवी आदि अनेक धुन में गाये जा सकते हैं।

प्रचारक और महता जी

श्री मान्यवर सम्पादक जी नमस्ते !

मैंने, सद्धर्मप्रचारक के किसी अंक में, जब कि मैं सितम्बर मास के अवकाश में शिमले गया हुआ था और पूज्य श्रीमान् महात्मा जी उन दिनों में आर्यसमाज के उत्सव पर पधारे थे, श्री महताजैमनी जी ज़ीदर लायलपुर की चिट्ठी अपने पिता के देहान्त के विषय में जो उनको पं० हरिश्चन्द्र जी के भेजे नोट के एक तरह से उत्तर में भेजनी पड़ी थी, पढ़ी थी। उस पर श्री महात्मा जी के लेख की समाप्ती में श्री महात्मा जी की सम्मति प्रकाशित हुई थी और जो केवल एक बात पर श्री महात्मा जी की राय में पौराणिक थी। मैं समझता था कि श्री महात्मा जी को पूरा हाल न मालूम होने के कारण या श्री महता जी के अपने उत्तर में उस को स्पष्ट न करने से वह ग़लत राय क़ायम करनी पड़ी इस का ज़िकर श्री महात्मा जी से मैंने वहीं कर दिया था। कई कारणों से यहां आकर मैं पत्र में छपने के लिए न भेज सका। अब लाहौर आर्यसमाज के उत्सव के विषय में जो नोट श्री सम्पादक जी की लेखनी से निकले और उस में श्री महता जी पर अधिक कोप प्रकट किया गया है और मैंने देखा कि पुरानी ग़लती तथा भूल के आधार पर श्री सम्पादक जी को भी उन के विषय में लिखने का साहस हुआ। मैंने यह समझ कर कि एक सामाजिक भाई के साथ सुफ़त में अन्याय हो रहा है मैंने अपनी लेखनी इस विषय में उठाई है ताकि आर्य पब्लिक के सन्मुख मामला ज्यों का त्यों रखा जावे। इस लिए मैं आशा करता हूं कि इस को पूरा छापकर कृतार्थ करेंगे। काट छांट करने से कहीं मेरे कथन का सार ही न उलट जावे।

[१] श्री महात्मा जी ने महता जी के पिता देहान्त पर अपनी सम्मति प्रकट की थी कि 'शमशान के रास्ते में जो मार्ग व्यय [पञ्जाबी घड़े भन्न] है उस स्थान पर ठहरने में निर्बलता दिखलाई है, जब कि वहां कोई रीति भी नहीं करनी थी।' जहां तक मुझे याद पड़ता है श्री महात्मा जी के ये शब्द थे। अब इस के विषय में यह निवेदन है कि यहां लायलपुर में मार्ग व्यय तक स्त्रियां जाती हैं, शमशान भूमि तक जाने का कोई रिवाज़ नहीं है। साथ ही नहर है जहां कि स्त्रियां मर्दों की अपेक्षा अरथी के पीछे रह जाती हैं और इस सूरत में भी पीछे थीं। वहां अरथी को रख दिया गया और स्त्रियों के पहुंचने पर उनको नहर पर वापिस कर दिया गया और अरथी को शमशान में लेगये। न घड़ा ही फोड़ा गया और न पिंड इत्यादि भराये गये। अब न मालूम अरथी को उस स्थान पर रख देने से कौनसी पौराणिक बात हो गई जिस से महाता जी की निर्बलता ज़ाहिर हुई। यह है सारांश उस सारी लम्बी चौड़ी गाथा का, इसी के वास्ते सारा शोर-व-गुल मचाया गया, जिस पर ग़लत फ़हमी फैलाकर ग़रीब महता जी को समाजों में बदनाम किया जारहा है और पत्रों में भी कोसा जा रहा है। मेरा विश्वास है कि यदि श्री महात्मा जी को इस विषय में भी पोज़ीशन साफ़ कर दी जाती तो वह इस को भी निर्बलता न कहते या कम से कम पौराणिक न कहा जाता।

(२) अब आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव के नोट के विषय में भी सुन लीजिए। मेरी तुच्छ बुद्धि में महता जी के बरख़िलाफ़ पहिले से ही बिना लेकचर दिए सम्मति क़ायम न हो जाती यदि अख़बार "प्रकाश" लाहौर में उनके विरुद्ध नोट न निकल जाता या यह न लिखा जाता कि महता जी ने लिखा है कि मैं श्री प्रो० रामदेव जी को लेक्चर में मात कर दूंगा। शोक है कि एक ग़लत बात दर्ज करके महता जी को ओछा साबित किया गया है। लाहौर उत्सव पर जाते समय महता जी से इस विषय में पूछा गया तो उन्होंने इस के सत्य होने से साफ़ इनकार कर दिया और साथ ही कहा कि सम्पादक प्रकाश के पास इस की तरदीदी चिट्ठी भेजदी है परन्तु म० कृष्ण जी ने उसे नहीं छापा। लाहौर में इस के न छापने का कारण पूछा गया तो उन्हों ने उत्तर दिया कि चिट्ठी पत्र छप चुकने के पश्चात् पहुंची थी। यदि यह चिट्ठी छप जाती तो कई साहब उस नोट के असर में आकर उनके बरख़िलाफ़ न होते और न ही सम्पादक जी अपने पत्र में ऐसे घृणित शब्दों में श्री महता जी को याद करते।

येही ऊपर दिए हुए दो कारण मुझे इस नोट के प्रेरक मालूम होते हैं। मेरी तुच्छ बुद्धि में इस नोट में निम्नलिखित बातें अनुचित तथा असत्य हैं:—

(क) महता जी के नोट देने में पूर्व मध्याह्न और सायंकाल की कार्य्यवाही का हाल लिखते हैं कि श्री सम्पादक जी उत्सव में न जाने के कारण उनको बाबत कुछ नहीं लिखते "क्योंकि सुनी सुनाई बात लिखने से क्या लाभ ?" अब इस नोट को देते हुए लिखते हैं कि "जब हम पहुंचे, उस समय महता जी का व्याख्यान समाप्त हुआ था।" अब न्यायपूर्वक इस विषय में अपनी ऊपर दी सम्मति अनुसार आपको सुना सुनाया कुछ भी लिखना उचित न था परन्तु यहां बात ही और थी। बहुत कृपा दृष्टि की गई।

(ख) ऐसी उपमा देनी और कटु वचन लिखने सर्वथा अनुचित थे।

(ग) पौराणिक रीति से किए हुए संस्कारों के कारण आप [महता जी] लायलपुर समाज की सभासदी से खारिज किये गए।" ये शब्द मिथ्या हैं। आप को किसी ने ग़लत ख़बर दी है जैसा कि मुझे ज्ञात हुआ है (क्योंकि कई बार याचना करने पर भी न मुझे कन्या पाठशाला के विषय में पत्र व्यवहार दिखलाया गया और न ही मंत्री आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को ही फाइल भेजी गई) आर्य्य कन्यापाठशाला के विषय में किसी पत्र व्यवहार के करने के कारण खारिज हुए; इसबारे में बहुतों की सम्मति है कि महता जी के साथ जुल्म हुआ है, समाज के कई लीडरों का यही ख़याल है कि आर्य्यसमाज लायलपुर ने न जाने किस तरह आर्य्य पद से भी गिरा दिया। यहां की आ० स० की अन्तरङ्गसभा के सभासदों से कई नाराज़ थे।

(घ) महता जी सामाजिक मुर्दे नहीं हैं। वह अब भी तान्दलियांवाला आर्य्य समाज के सभासद हैं और आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभासद हैं। महता जी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्वाध्याय में लगे रहते हैं और समाज के उत्सव इत्यादि में सम्मिलित होते रहते हैं। यदि यही बर्ताव रहा तो इस काम मे भी रहजावेंगे।

(ङ) महता जी के लेकचरों के सम्बंध में भी दो राय थीं। एक दल तो कह रहा था कि लेक्चर कामयाब हुआ, अधिक इसी राय के थे। मैं भी सम्पादक जी के साथ अन्तरङ्गसभा में था। मैंने भी ख़ास तौर पर आकर पूछा था। कइयों की राय में तालियां मखौल के तौर पर थीं परन्तु वह Prejudiced मालूम होते थे। आम राय महता जी के हक़ में थी और महता जी का लेकचर आम तौर पर कामयाब कहा जा सक्ता है। दूसरे दिन शोर से आवाज़ न पहुंचने के कारण बेशक ना कामयाब था इसी के मुताबिक तालियां भी समझ लीजिये।

आशा है कि आप इस पर पुनःविचार करेंगे और आर्य्य जनता भी इसको यथावत् विचार कर ठीक परिणाम पर पहुंचेगी।

भवदीय
गुरदित्तारास
प्लीडर लायलपुर

संशोधन

श्रीमान् सम्पादक जी ! नमस्ते

मेरे गुरुकुल सम्बन्धी पत्र को प्रचारक में स्थान दे कर आपने अत्यन्त कृपा की है जिसके लिए हार्दिक धन्यवाद स्वीकार करें परन्तु श्रीमान जी आपने "चौंका देने वाली स्कीम" शब्दों को बड़ी कठोरता के साथ फेर-फार कर "चौका देने वाली" अथवा "चौका फेरने वाली" के शब्दों में बदल कर जिस निर्दयता तथा पक्षपात का परिचय दिया है उस के लिये मैं आप का कहां तक धन्यवाद करूं-यह समझ में नहीं आता-कृपया इस भारी भूल को मिटाने के लिये मेरा यह पत्र पूर्णतया छापदें।

[२] सम्भव है कि विद्यासभा के स्थान में मैं भूल से राजसभा लिख गया हूं-कृपया इसे भी शुद्ध करलें—यह कि विद्या प्रचार का कार्य्य विद्यासभा का है-श्री पूज्यपाद महात्मा जी के प्रति जो अगाध श्रद्धा तथा भक्ति मेरे हृदय में है उस के प्रगट करने की इस अवसर पर आवश्यकता नहीं समझता परन्तु एक प्रार्थना अवश्य है कि आप महात्मा जी की (personality) को बीच में ला कर प्रश्न को इस के ठीक स्थान (centre) से इधर उधर ले जाने का व्यर्थ यत्न न करें—विशेष और दूसरे पत्र में लिखूंगा—

भवदीय
दीनानाथ दीनाज
फोर्थ-ईयर
मेरठ कालिज-मेरठ

[टिप्पणी] चौंका देने वाली को 'चौका देने वाली' पढ़ने में हमारी भूल हुई उसे हम स्वीकार करते हैं किन्तु इस से भावार्थ में भेद नहीं—म० सन्तराम के बड़े उचित और न्याययुक्त पत्र के उत्तर में आप जो लेख लिखेंगे उसकी हम प्रतीक्षा करते हैं। चाहे हम म० सन्तराम के सारे पत्र के साथ सहमत न हों, परन्तु हमारी सम्मति में उनका स्थापित किया हुआ पक्ष बहुत कुछ न्यायानुमोदित है।

[सम्पादक]

सावधान

एक ठग आर्य्यसमाज की आड़ में हो कर लोगों को लूटता फिरता है जिसका नाम न्यादरसिंह भजनीक है और ग्राम पुरपाण ज़ि० रोहतक का बतलाता है और वर्ण जाट कहता है। न कुछ पढ़ा लिखा है और न संस्कार कराना जानता है, और लोगों को जनेऊ दे २ कर दान लेता फिरता है। ख़ास ज़ि० मेरठ के ग्रामों में फिरता है और अपने को आनरेरी कहता है। इस लिए आर्य्यभाई ख़ासकर ग्रामों के भाई आर्य्यसमाज को बदनाम करने वाले व्यक्ति से बचें—और दूसरे आर्य्य पुरुषों को बचावें। कई ग्रामों से हमारे पास शिकायत आई है।

प्रधान तथा मन्त्री वेद प्रचारणी सभा
छपरोला प्रान्त
मेरठ

फीजी से पुकार

श्रीमान् महाशय सम्पादक सद्धर्म प्रचारक जी ! नमस्ते-आप से निवेदन है कि आप कृपा कर हमारे इस निवेदन पत्र को अपने पत्र में प्रकाशित करदें।

धन्य है उस भारतमाता को जिसके सुपुत्रों ने इस देश में आगमन कर २ के अपनी कीर्ति को पालम कर अपने प्रकाश से हमको प्रकाशित किया।

प्रथम श्रीमान् डाकटर चिरंजीव भारद्वाज जी आये जिन्होंने अति परिश्रम से हम अजीवितों को धर्म जीवन दान दिया, हमारे अभाग्योदय के कारण ईश्वर ने हमसे विमुख हो उन्हें शीघ्र उठा लिया और उनके आत्मा को आनन्द मुक्ति सुख प्रदान किया, और लाला जैगोपाल जी भी हमारे कुछ उपकार कर गये, पश्चात श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज यहां रह कर कुछ समय तक हमें श्रीमान् डाकटर जी के शोक और विलाप पर धैर्य्य को धारण करवाते थे जिसमें हमे कुछ संतोष रहा करता था परन्तु अब यहां से श्री स्वामी जी के चले जाने के कारण हम अनाथ होकर उच्चस्वर से विलाप कर हमारे श्रीमान् महात्मा मुन्शीराम जी से दीन हो प्रार्थना करते हैं कि हम अनाथों के विलाप और पुकार को सुन किसी एक भद्र धर्मोपदेशक पुरुष को शीघ्र हमारे ओर भेजने का यत्न करें, हम अनाथों के शोक और विलाप को दूर करें। हमें पूर्ण आशा है कि महात्मा जी हमारी प्रार्थना को स्वीकार कर इस धर्म कार्य में तनिक भी देर न करते हुये हमारी विपत्ति को दूर कर अनाथ बालकों की रक्षा अवश्य करेंगे।

रामेश्वर प्रधान
फ़ीजी आर्य्यसमाज

गुरुकुल समाचार

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है। गत सप्ताह में कोई भी नया बीमार चिकित्सालय में नहीं आया। गुरुकुल भूमि की सफ़ाई के अतिरिक्त ऋतु भी इस में कारण है। ऋतु बहुत ही उत्तम है और ब्रह्मचारी अपनी पढ़ाई में दत्त चित्त हो रहे हैं।

नए यात्री गृह बन रहे हैं। आशा यह पड़ती है कि जनवरी मास के अन्त तक सारे गृह तय्यार हो जावें गे। जिन आर्यसमाजों की ओर से "टिनशेड" बने हुए थे उनकी ओर से धन आरहा है, परन्तु अभी बहुतों ने उत्तर नहीं दिया। कृपया कुल जनवरी मास में आजाना चाहिए जिससे काम न रुके। महाविद्यालय मंदिर में भी दो छोटे और दः बड़े कमरे बढ़ाने की तय्यारी होरही है। फ़रवरी, १९१७, के आरम्भ से उन कमरों का काम भी आरम्भ हो जावेगा। आशा रखनी चाहिए कि वर्षा ऋतु से पहले वह इमारत भी समाप्त हो जावेगी।

गुरुकुल कोष के लिये सहायता मार्गशीर्ष मास में भी आई, परन्तु आगे अधिक सहायता की आवश्यकता है। गत मास में दान की कुल आय ३५३३ ॥=)॥ हुई। इन में से १३०) स्थिर कोष के लिये, १४०२॥)। विशेष कार्यों के लिए, १८९५॥।=) महानिधि के लिए और शेष छोटी रक़में विविध कार्यों के लिए प्राप्त हुईं। वर्तमान बजट की पूर्ति में वही धन लग सक्ता है जो महानिधि में प्राप्त होता है। संरक्षकों में से श्री मथुरादास जी ने नैरोबी से १००) और म० नत्थूराम जी ने मदीन से ५०) भेजे हैं। यदि संरक्षक महाशय एक बार और बल लगादें तो सारी कमी पूरी हो जाय।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए, ९ पौष को, प्रथम चार कक्षाओं के लगभग ११० ब्रह्मचारियों ने प्रस्थान किया। चलने से पहले, विद्यालय आंगन में, सब एकत्र हुए जब ब्रह्मचारियों और अध्यापकों के प्रतिनिधियों ने उन के प्रति प्रेम और सम्बन्ध का भाव प्रकट किया। श्री उपाध्यक्ष र महेंद्र जी ने आचार्य तथा अध्यापकों के साथ उन के अटूट सम्बन्ध का सुन्दर दृश्य खींचते हुए, जाने वाले ब्रह्मचारियों को आशिर्वाद दिया और आचार्य के हार्दिक आशिर्वाद पूर्वक शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जन हुई। फिर सर्व ब्रह्मचारी, उपाध्याय, अध्यापक (आचार्य सहित) इन कुल पुत्रों को रेल पर चढ़ाने गए। स्टेशन पर जो जीवित विदायगी हुई वह राजों को कहां प्राप्त होती है।

नवीन ब्रह्मचारियों का प्रवेश हो गया। नियत अवधि तक प्रार्थना पत्र तो सौ से अधिक आए थे, और उस के पश्चात् भी ३० से ऊपर आचुके हैं। जो बालक गुरुकुल में चुनाव की तिथि तक पहुंचे उनकी संख्या ९१ है। उन में से २० इन्द्रप्रस्थ के लिये साधारण शुल्क पर लिए गए। ९ ब्रह्मचारी एकदम पन्द्रह पन्द्रह सौ दिए जाने पर प्रविष्ट हुए। अभी १५००) दे कर ९ और प्रविष्ट हो सक्ते हैं। १९ ब्रह्मचारी शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के लिए चुने गए। शेष को शोक से लौटाना पड़ा।

संरक्षक सभा क्या है ?

गत सप्ताह ३४ ब्रह्मचारियों के संरक्षकों ने म० बालकृष्णवाली की कार्यवाही पर शोक प्रकट किया था। उसके पश्चात्—

[८] श्री महाशय उमादत्त जी, कसूर से लिखते हैं—"सद्धर्मप्रचारक के नोट के उत्तर में निवेदन है कि वर्तमान संरक्षक सभा से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं और न ही मैं उसका मेम्बर रहा हूं। मिस्टर बाली को इस बारे में लिख चुका हूं।"

[९] म० अयोध्याप्रसाद जी संरक्षक ब्र० कृष्णदत्त तथा हरिश्चन्द्र लिखते हैं—"सद्धर्मप्रचारक के देखने से विदित हुआ कि बाबू बालकृष्ण जी मन्त्री संरक्षक सभा ने गुरुकुल के ख़िलाफ़ ग़लत फहमी फैलाई है। उसमें हमारी कोई सम्मति नहीं है और न हमारी कोई राय ली गई है। हम बिलकुल बेख़बर हैं।"

[१०] डाक्टर के० बी० पटेल संरक्षक ब्र० दयानन्द लिखते हैं—"मुझे शोक है कि संरक्षक सभा ब्रह्मचारियों के माता पिताओं को ब्रह्मचारियों के कल्याण के विरुद्ध भड़का और भ्रम में डाल रहे हैं। मैं ऐसी सभा से कोई सम्बन्ध नहीं रखना चाहता और आशा रखता हूं कि अन्य संरक्षक भी ऐसा ही करेंगे।"

[११] मान्यवर संरक्षक जन समुदाय पर मेरे विचारः—मेरा पुत्र इस वर्ष स्नातक होगा, दूसरे भाई का पुत्र आगामी वर्ष स्नातक होगा। तीसरे भाई का पुत्र ५ श्रेणी में है। अब मैं एक अपने पुत्र तथा एक भतीजे को इस वर्ष गुरुकुल में प्रवेश कराना चाहता हूं। मेरे बड़े भाग्य होंगे यदि वे ले लिये जावेंगे। मैं संरक्षक सभा का सभासद अवश्य हुआ था, लेकिन जब सभा में यह कहा गया कि जो धन गुरुकुल को दिया जाय वह संरक्षक सभा के द्वारा दिया जाय, क्योंकि ऐसा करने से प्रतिनिधिसभा पंजाब और कर्मचारियों पर दबाव पड़ेगा और हमारी सुनाई होगी इत्यादि अनेक वाद विवाद हुए, तब से मेरी भक्ति संरक्षक सभा से जाती रही। मेरे पास कई पत्र आये थे जिनका मैंने उत्तर नहीं दिया।

इन १४ वर्षों में कितने ही महानुभावों ने मुझे बहकाया लेकिन उनका मनोरथ सफल नहीं हुआ। बहकाने के भाव कुछ ये हैं- [१] संयुक्तप्रान्त के बालकों को अच्छी तरह से नहीं पढ़ाते [२] भोजन वस्त्र में भी दुःभाव है [३] परीक्षा में भेद किया जाता है और पंजाबी बालकों को विशेष अंक दिये जाते हैं।

मैं प्रतिवर्ष गुरुकुल आकर चार से दस दिन तक ठहर कर गुप्त हाल जांचता रहा हूं परन्तु किसी प्रकार की त्रुटि नहीं पाई। जो भ्रम फैलाया जारहा है वह निर्मूल है।

[माधौप्रसाद तिवाड़ी]

श्री म० गैनकराम जी संरक्षक ब्र० परमानन्द द्वारा सेवनी से लिखते हैं:—तारीख़ ९ तथा १६ दिसम्बर के सद्धर्मप्रचारक में संरक्षक सभा का कुछ जिकर किया गया है। मालूम होता है कि यह किसी बेकार आदमी का ख़याल है। जहांतक मुझे मालूम है कोई संरक्षक सभा नहीं क़ायम की गई है और न ही कोई उसका मंत्री है। आचार्य और ब्रह्मचारी के बीच में किसी सभा और मंत्री को दख़ल देने का अधिकार नहीं है। यदि कोई यह ख़्याल करे कि दूधकी नुकता चीनी करना ज़रूरी है तो यह सरासर भूल है। जहां तक मुझको मालूम है आचार्य और ब्रह्मचारी का आपस में गहरा सम्बन्ध है और संरक्षक का इस में कोई दख़ल नहीं होसकता है। धर्म्म शिक्षा के लिए आचार्य की आज्ञा माता पिता से बढ़कर है। आशा है कि बाकी संरक्षक भी आप की सेवामें जो कुछ अनुचित समझेंगे उत्तर देंगे। मेरा इस सभा और मंत्री से कोई संबन्ध नहीं है और न उनके ऐसे अनुचित कार्य में सहमत हूं।

———

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शिवरात्रि-

प्रायः आर्य्य समाजों में ऋषिबोधोत्सव मनाने का नियम है और इसी समय कतिपय आर्य्य समाचार पत्र ऋषिबोधांक के नाम से अपने पत्र का एक विशेषांक, निकाला करते हैं, यह उत्सव शिवरात्री को मनाया जाता है, और उसी के लगभग ऐसे विशेषांक निकला करते हैं, जो कि उत्तर भारत में फाल्गुन कृष्णा १३ को हुआ करती है। यह उत्सव तथा अंक इस सत्ज्ञान के प्रकाश का स्मारक दिवस है जो कि मनुष्य मात्र के कल्याणार्थ शिवरात्री को एक महानात्मा को लगभग १५ वर्ष के बालक मूलशंकर के शरीर द्वारा प्राप्त हुआ था और इसी शुद्ध ज्ञान का प्रचार उस निस्वार्थ आत्मा ने जनता के कल्याण के लिये बड़े २ शारीरिक कष्ट सहन करते हुवे और इस महान यज्ञ में सर्वस्व आहुति दे कर भी किया। यह अत्युत्तम दिवस उस ऋषि के उपकार को स्मरण करने के लिये है। किन्तु आर्य्य जनता इस सम्बन्ध में एक बड़ी भूल करती चली आरही है। उस का रिवाज़ देश में जहां कि इस ज्ञान का प्रादुर्भाव हुआ शिवरात्री माघ कृष्ण १४ को मनाई जाती है जैसा कि उन खोज करने वाले लेखकों ने लिखा है जिन्हों ने महर्षि की जीवनी लिखी है। इस कारण हम को उचित है कि यह स्मारकोत्सव भी इसी माघ कृष्ण १४ को मनाया करें। और पौराणिकों की शिवरात्री अर्थात फाल्गुन कृष्णा १३ को न मनाया करें। अभी इस पर आन्दोलन करने के लिये समय एक मास है इस लिये आशा है कि आर्य्य जनता इस पर आन्दोलन कर अपनी भूल का संशोधन करेगी। और इस विषय के निर्णयार्थ सम्मति इसी में प्रकाशित करेंगे।

रामप्रसाद
उपमन्त्री
आर्य्यसमाज देहरादून

शास्त्रार्थ में ईसाइयों की हार।

इस बात के बताने की आवश्यकता नहीं कि रोहतक कितना बड़ा नगर है, परन्तु रोहतक के आर्य्य समाज की उन्नत दशा को संक्षेप से व्यक्त करना ही कर्त्तव्य है।

उक्त नगर में आर्य्य समाज की खासी प्रतिष्ठा है और अन्यान्य मतावलम्बियों के हृदय में प्रेम भी अच्छा है। उक्त दोनों बातों के अतिरिक्त यहां की समाज का विश्वास ग्राम और नगर निवासियों के हृत्कमलों पर पूर्ण रूप से प्रसारित है।

रोहतक आर्य समाज के मन्त्री महाशय बड़े योग्य हैं आपकी संस्कृत योग्यता पर्य्याप्त है, आर्य्य समाज की सेवा और पठन पाठन प्रभृति ही आपकी दिनचर्य्या व रात्रिचर्य्या है। गत नवंबर मास के अन्त में उक्त मन्त्री जी से आर्य्यसमाज के अपने मंदिर में ईसाइयों के साथ जीव ब्रह्म-प्रकृति के अनादित्व समर्थन पर १½ घंटा शास्त्रार्थ हुआ। उपस्थिति भी अच्छी थी। पूर्वपक्ष उनका और उत्तर पक्ष अपना था। श्री मंत्री जी ने बड़ी योग्यता से न्यायाधार युक्तियों के द्वारा परपक्ष की रसना को स्तम्भित कर दिया। प्रत्युत्पन्नमति की अनुपस्थिति के कारण ईसाई महाशय अर्ह नार्ह की शृंखला को उल्लंघन कर गए। परन्तु स्वपक्ष में क्षमा व शान्ति का ही शासन रहा।

इस शास्त्रार्थ ने उपस्थित जनता पर गौरवान्वित प्रभाव डाला। समझने योग्य तत्व को जनता भलीप्रकार समझ गई। किम्बहुना अन्त में मैं अशेष आर्यसमाज के मन्त्री महाशयों से विनयाग्र प्रार्थी हूं कि वह भी उक्त समाज की तरह निज निज समाजों का विश्वास विस्तीर्ण करें।

मेरे विचार में समाज के अन्यान्य श्रेयस साधनों में एक यह उक्त साधन भी सहायक होगा। शमित्योम्।

कविराज हरदयाल वैद्य वाचस्पति
सभासद् आर्यसमाज रोहतक

विज्ञापन

श्री मद्दयानन्द अनाथालय अजमेर में एक बीजे बुनने की नई मैशीन और कुछ सैकिनहैंड मीजों की मैशीनें जो कि इस अनाथालय को दान में प्राप्त हुई है, विक्रयार्थ रक्खी हुई हैं। जिन किन्हीं सज्जन को मैशीनें लेना हो वे नीचे लिखे पते पर पत्र व्यवहार करें।

निवेदक
चुन्नीलाल गुप्त
मन्त्री
श्रीमद्दयानन्द अनाथालय
अजमेर

—:o:—

विज्ञापन

कन्याब्रह्मचर्य्याश्रम कानपुर के लिए एक उपदेशिका की आवश्यकता है। उपदेशिका को कानपुर नगर और बाहर भ्रमण करना होगा जो महाशया आर्य्य सिद्धान्त के अनुसार आचरण रखती हों निम्न लिखित पते से प्रार्थना पत्र भेजें और प्रार्थना पत्र में अपनी पूर्ण योग्यता और किसी आर्य्यसमाज के मन्त्री की सिफारिस भी लिखवा भेजें।

भवदीय
सत्यवती कन्याब्रह्मचर्य्याश्रम कानपुर

—o—

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ गीतिएं नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्यालय गुरुकुल
कांगड़ी पो० श्यामपुर जि०बिजनौर

सामाजिक समाचार

आर्य समाज अकबरपुर प्रान्त कानपुर के ता० ३½ के अधिवेशन में ता० ३१½ का आर्य्य मित्र तथा सन् १९१४-१५ की संयुक्तप्रान्त की सरकारी एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट पढ़ी जाकर सर्व सम्मति से निश्चित् हुआ कि यह आर्य्य समाज बड़े विनीतभाव से परन्तु बल-पूर्वक उन टिप्पणीयों पर विरोध प्रकट करता है जो सन् १९१४-१५ की संयुक्तप्रान्त की एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट में आर्यसमाज के साहित्य पर की गई है। जिस समय की यह रिपोर्ट है उस में आर्य्य समाज की ओर से ऐसी कोई पुस्तक प्रकाशित नहीं हुई जिस के सम्बन्ध में इस प्रकार टीका टिप्पणी की जासके। रिपोर्ट की इन टिप्पणियों ने आर्य्य सामाजिक लोगों में बहुत अप्रसन्तोष उत्पन्न कर दिया है।

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि उपरोक्त निश्चय की एक प्रतिलिपि प्रान्तीय सरकार की सेवा में उचित विचारार्थ भेजी जावे तथा एक लिपि संयुक्तप्रान्त की प्रतिनिधि सभा की सेवा-में आवश्यकीय कार्यवाही के लिए प्रेषित की जावे और समाचार पत्रों में छपाई जावे।

इसी प्रकार के प्रस्ताव, इगलास, हरदोई, ठंडी सड़क कानपुर, सवाला गुरुकुल वृन्दावन, सिकन्दराराऊ, कासगञ्ज, मैनपुरी तथा हल्दौर की आर्यसमाजों ने किये हैं।

श्री महाशय साकुम्भरीदास जी अधिष्ठाता प्रचार सूचना देते हैं कि स्वर्गवासी श्री लाला बालकराम जी ने अपनी मृत्यु समय भिन्न भिन्न संस्थाओं को निम्न प्रकार दान दियाः—

१०००) गोशाला शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र
५००) अनाथालयों को (जिस में से अनाथालय अजमेर ५०), फिरोजपुर ५०), मेरठ १००)-जालंधर ५०) आगरा १००) बरेली २५)=३७५) शेष १२५) भी किसी और जगह भेज दिए जावेंगे।
५००) सदावत
३००) गोदान
१००) औषधियों के निमित्त
१००) छात्रवृत्तियां
१०००) पानीपत में पानी का नल लगाने के लिए।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में रुपया भेज दिया गया है और गोशाला बन रही है।

गुरुकुल कांगड़ी, थानेसर, वृन्दावन, इन्द्रप्रस्थ तथा कन्या महाविद्यालय जालन्धर और ऋषिकुल हरिद्वार में एक २ गाय क्रय करके भेज दी जावेगी। ५०,०००) पानीपत में हाई-स्कूल खोलने के लिए दान किए गए हैं।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज मुल्तानछावनी सूचना देते हैं कि तिथि ११½ को म० काशीराम जी ठेकेदार के पुत्र का नाम करण संस्कार श्री पं० चूड़ामणि जी ने कराया बालक का नाम सत्यपाल रक्खा गया है। उपस्थित भाईयों का भोजन द्वारा सत्कार किया गया। ५) विविध फण्डों के लिए दान दिए गये।

आर्य सन्यासी आश्रम की शाखा विजरौल ज़िला मेरठ में १० दिसम्बर को खुल गई है। जिस का उत्सव १३ दिसम्बर को आनन्दपूर्वक समाप्त हुआ, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री स्वामी विज्ञानभिक्षु जी, श्रीस्वामी महेशानन्द जी, श्री स्वामी विवेकानन्द जी तथा म०जनमेजय जी आदि विद्वान् सम्मिलित हुए थे। जनता पर प्रभाव अत्युत्तम पड़ा।

श्री मंत्री जी सिटी आर्यसमाज लखनऊ सूचना देते हैं कि चान्दापुर के रईस मुं० प्यारेलाल जी की पौत्री का स्वयम्वर उत्सव ता० ३० दिसम्बर १९१६ को चान्दापुर में होगा। इस में प्रार्थना पत्र भेजने वाले सब कुमारों को एक ही वार न बुलाकर प्रत्येक को पृथक् २ बुलाया गया है और कन्या के सन्मुख कुमारों का और कुमारों के सन्मुख कन्या की परीक्षा ली गई। सब कुमारों में से पं० वासुदेव काशी निवासी को कन्या ने वरा है। इस में दोनों की सम्मति है। अतः उक्त तिथि को इन्ही महाशय को जयमाला पहिनाई जायगी।

मुं० प्यारेलाल जी आर्यजनता को इस शुभ अवसर पर सम्मिलित होने के लिए निमंत्रित करते हैं।

श्री मंत्री जी आर्यकुमार सभा भेरा लिखते हैं कि उक्त सभा ने एक वैदिक पुस्तकालय खोला हुआ है जिस में वैदिक तथा अन्य धर्म सम्बन्धी पुस्तकें रक्खी हुई हैं—जिन महाशयों को किसी पुस्तक व ट्रैक्ट की आवश्यकता हो तो वहां से लिख कर मंगवा सक्ते हैं। आध आने का टिकिट भेजने पर पूरा सूची पत्र भेजा जाता है।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज झरिया ज़िला मानभूम लिखते हैं कि उक्त समाज का द्वितीय वार्षिकोत्सव १ से ३ जनवरी १७ तक होगा। विद्वान सन्यासी महात्मा तथा योग्य उपदेशक पधारेंगे। नगरकीर्तन १ जनवरी को होगा।

झरिया ई० आई० रेलवे का स्टेशन है। गया से जो लाइन कलकत्ते जाती है उस पर धनवाद के स्टेशन से ४ मील का एक टुकड़ा झरिया को जाता है।

श्री मंत्री जी आर्य भाईयों को निमंत्रित करते हैं।

आर्यसमाज फैजाबाद ने ठाकुर बलदेवसिंह जी चौहान (मैनपुरी निवासी) को प्रान्त प्रचारार्थ उपदेशक नियत किया है जो आवश्यकतानुसार समस्त प्रान्तिक समाजों में दौरा करेंगे। श्री प्रधान जी सब आर्य समाजों के मंत्री महानुभावों से प्रार्थना करते हैं कि वे इन के प्रचार के काम में यथाशक्ति सहायता दें। और जो महाशय इन को अपने यहां संस्कारादि में बुलाना चाहें तो मंत्री आ० स० फैजाबाद से पत्र व्यवहार करें।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज कालपी सूचना देते हैं कि उक्त समाज की ओर से उस के ३१ वें वार्षिकोत्सव के समय ता० १२½ को श्री राजराजेश्वर पञ्चम जार्ज महाराज के राज्याभिषेक के उपलक्ष में नगरस्थ सब स्कूलों के छात्र तथा छात्राओं को जिन की संख्या लगभग ६०० थी मिठाई तथा मेवा बांटा गया। वह समय बड़ा ही सुवाहना था जब कि बालक तथा बालिकाएं अपने भोले शुद्ध हृदयों से अपने सम्राट् के लिए ईश्वर से गद्य व पद्य में प्रार्थना करते थे।

आर्य्यसमाज अजमेर का ३४ वां वार्षिकोत्सव मिती फाल्गुण शुक्ला ३,४,५ तदनुसार ता० २४,२५ तथा २६ फरवरी १९१७ को होना निश्चय हुआ है। श्री मंत्री जी समाज श्री स्वामी सर्वदानन्द जी तथा स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज के उत्सव में सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

श्रीस्वामी सर्वदानन्द जी साधु आश्रम पुलकाली नदी पोष्ट हरदुआगंज ज़िला अलीगढ़ से लिखते हैं कि उक्त आश्रम में आठ वर्ष जो आर्य्यभाषा में मिडल पास उस की योग्यता रखते हों-आश्रम और वैदिक शिक्षार्थ प्रविष्ट किये जायेंगे। प्रवेश होने वाले विद्यार्थियों के प्रार्थना पत्र ३१ जनवरी सन् १७ तक आ जाने चाहियें—परन्तु निम्नांकित नियमों का ध्यान रहे—

१—छात्र की आयु १४ वर्ष से कम और १६ वर्ष से अधिक न हो।

२— अविवाहित हों।

३—व्यसन मुक्त, निरोग और परिश्रमी हों।

४—जो पठनार्थ व्यय करने में असमर्थ हों।

५—अपने सदाचार अर्थात् चाल चलन की बाबत किसी योग्य प्रतिष्ठित पुरुष की सम्मति अवश्य देनी होगी।

६—पठन की अवधी कम से कम ५ वर्ष और अधिक से अधिक ८ वर्ष तक होगी।

७—पांच ५ छात्र ऐसे रक्खे जा सकेंगे जो उपरोक्त नियमों के साथ साथ अपना व्यय दे कर पढ़ना चाहें।

८—आर्य भाषा के अतिरिक्त उर्दू या अंगरेज़ी जानने वाले छात्रों पर विशेष ध्यान दिया जावेगा।

आर्य समाज मुलतानछावनी के प्रधान ला० खुशी गणपतराय जी की कन्या का, जिस की आयु १० वर्ष की थी, ७ दिसम्बर को देहान्त हो गया। अन्त्येष्टी संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। परमात्मा मृतक की आत्मा को शान्ति और उस के माता पिता तथा अन्य सम्बन्धियों को धैर्य प्रदान करें।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered NO. A. 434

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

प्रवर्त्तक - मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | २३ पौष सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ६ जनवरी सन् १९१७ ई० | संख्या ३८ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्षपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्य्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना सृष्टिक्रम बना रखा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छपगया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्सगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धु से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रतिशतक और ००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस शेरपुर-कांगड़ी, जिला बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) U.P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	...	...	३)
विद्यार्थियों से	...	...	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	...	...	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

अधिक देर तक विज्ञापन देने के लिए पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

शंका—समाधान

प्रश्न—पीछे से प्रकरणागत प्रश्न यही है कि क्या किसी कसाई को बकरा मारने का पाप चढ़ सकता है ?

जब अकालमृत्यु नहीं, और जो भी सुख दुख हमें हैं वे कर्मों के फल हैं, तो फिर मारने वाले को पाप क्यों होना चाहिये ?

उत्तर—इस प्रश्न का उत्तर देने के लिये पहले दो एक बातें देख लेनी चाहियें। निम्न लिखित शास्त्रीय सिद्धान्त निश्चित हैं।

(१) किये कर्मों का फल अवश्य मिलता है। नाभुक्तं क्षीयते कर्म।

(२) ऐसा फल मनुष्य को नहीं मिल सकता, जो अपने किये कर्म का न हो। अन्यथा 'कृतहानि' और 'अकृताभ्यागम' दोष आजायंगे।

(३) मनुष्यदेह कर्म-भोग-योनि है। वह अपने किये का फल सुख दुख भोगता है। अन्य प्राणी भोग योनि में हैं वे वर्तमान देह में किये अप्रत्यक्ष फल दायक कर्मों का फल नहीं भोगते, मनुष्य पिछले देह में कभी किये कर्मों का भी फल भोगते हैं। एक सांप मनुष्य को डंसता है, इस से सांप को पाप नहीं होता या कुत्ता स्वामी की रक्षा करता है, उसे इससे पुण्य नहीं होता।

(४) परमात्मा की दृष्टि में अनगिनत जड़ शक्तियां हैं, जिन द्वारा परमात्मा मनुष्य को किये का फल देता है। भूकम्प प्लेग या अन्य रोग सब परमात्मा के कर्मचारी हैं, जो मनुष्य को कर्मों का फल देते हैं।

इन सिद्धान्तों को सामने रख कर अब हम उपर्युक्त प्रश्न पर विचार करते हैं। किसी व्यक्ति को अपने किये कर्म का फल मिलता है। परमात्मा की शक्ति में है कि उसे पशुपक्षियों द्वारा या जड़पदार्थों द्वारा फल दे दे। किसी को पीड़ा होनी हो—वह बिच्छू के काटने से हो सकती है, या गड्ढे में गिरने से हो सकती है। कोई आवश्यकता नहीं कि एक दूसरा व्यक्ति आकर उसके डंडा ही मारे। दूसरे मनुष्य के मारे बिना भी परमात्मा के पास हज़ारों साधन हैं, जिन से उसे फल मिल सकता है, उन साधनों को पाप भी नहीं होता।

एक मनुष्य ने उसे डंडा मार दिया। जिस के डंडा लगा, उसने अपने कर्म का फल भोग लिया। किन्तु मारने वाले ने एक कर्म कर लिया। वह कर्म अवश्य ही फल उत्पन्न करेगा यदि मारने वाला कहे कि दूसरे को दुख तो होना ही था—फिर मैंने देदिया तो क्या हर्ज है, तो उसका विचार ठीक नहीं। एक थाली में [क] के लिये भात डाला गया, उसके आने से पूर्व ही चोरी से [ख] ने चट्टन कर लिया। क्या इस से [ख] को पाप न लगेगा ? भात तो खाया ही जाना था, पर [ख] ने जो चोरी की उसका फल उसे अवश्य मिलेगा। परमात्मा को उस डंडा मारने वाले की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं थी—उसका कोई काम रुका न रहता। फिर उस के डंडा क्यों मारा ? क्रोध या लोभ से प्रेरित होकर। इसी लिये उसका डंडा मारना पाप हो गया। पाप का फल अवश्य ही मिलेगा।

कई लोग कहते हैं कि अकालमृत्यु होती है और उसका तात्पर्य यह समझते हैं कि मनुष्य नियत अवधि से पूर्व ही मर जाता है। मनुष्य की उमर प्रकृति के नियम के अनुसार १०० वर्ष की है—अपने कर्मों से मनुष्य उसमें परिवर्तन कर लेता है। उसके कर्मों से वह घट या बढ़ जाती है। इन अर्थों में अकालमृत्यु को माना जासकता है—और किन्हीं अर्थों में नहीं।

प्रचारक का गुरुकुलांक

विशेषांक की तय्यारियां खूब होरही हैं। अभी तक निम्नलिखित सज्जनों ने लेख देना स्वीकार कर लिया है। कइयों ने तो लेख लिखकर सम्पादक के पास भेज भी दिये हैं [१] महात्मा गान्धी जी [२] प्रो० रामदेव जी एम. आर० ए० एस. [४] डा० गोकुलचन्द्र नारंग एम ए. [३] पं० नंगापूसाद एस. ए. [५] पं० घासीराम एम. ए. [६] पं० पूर्णानन्द जी, [७] प्रो० बालकृष्ण जी एम. ए. [८] बाबू श्यामसुन्दरदास बी.ए. [९] श्रीयुत घनश्यानसिंह गुप्त बी.एस.सी. [१०] पं० श्रीपाददामोदर सातवलेकर जी [११] प्रो० सुधाकर एम.ए. [१२] पं० अवदेव विद्यालंकार

प्रारम्भ में श्री पूज्य महात्मा जी का लेख होगा और पूर्ण आशा है कि अमरीका से श्री पं० हरिश्चन्द्र जी का एक लेख आयगा।

कविता के लिए आर्यभाषा के प्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक जी से प्रार्थना की गई, जो उन्होंने स्वीकार की है। म० कर्ण कवि की एक कविता भी होंगी। और गुरुकुल के नव कवियों की भी कविताएं होंगी।

इनके अतिरिक्त जो २ महानुभाव लेख भेज देंगे या भेजना स्वीकार कर लेंगे, उनकी सूचना प्रचारक में देदी जायगी।

आशा का नाद

कांग्रेस के सभापति की वक्तृता

'श्री एड्विन आर्नल्ड' के बनाने वाले कवि की कविता पढ़ कर फिर भूषण की 'शिवा बावनी' पढ़ने में जो आनन्द आता है, गत वर्ष के सभापति मि० एस.पी. सिन्हा के भाषण के पीछे इस वर्ष के सभापति श्रीयुत मोजुमदार का वीरनाद पढ़ने में भी वही आनन्द आता है। मि० मोजुमदार की वक्तृता उदार, साहस युक्त सच्ची और ओजस्विनी है। एक सच्चे भारतवासी के हृदय का उद्गार-और वह भी तेजस्विनी भाषा द्वारा प्रकाशित किया गया है। सभापति के भाषण के शब्द २ एकदेश भक्त निर्भय पुरुष की आत्मा का प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। इस समय देश को जिस जीवन की आवश्यकता है, इस व्याख्यान में वह कूट २ कर भरा हुआ है। सभापति ने निश्चित शब्दों में बता दिया कि शिक्षित भारतवासी इस समय देश की राज्य सम्बन्धी समस्या को किन रूपों में देखते हैं। इस समय की भारत राज्य-संस्था की निर्बलतायें सभापति ने खूब भली प्रकार से प्रकाशित करदी हैं, और उनके सुधार का साधन एक मात्र स्वराज्य को बतलाया है। इस में किसे सन्देह हो सकता है। आंगल प्रधान्य के नीचे भारत का स्वराज्य ही इस समय भारत की शिक्षित और उन द्वारा अशिक्षित प्रजा का भी वाञ्छनीय है। उसी की प्राप्ति के लिए कांग्रेस यत्न कररही है, उसी की प्राप्ति के लिए गर्म और नर्म राजनीतिज्ञ कोशिश कररहे हैं। एक ही उद्देश्य और एक ही आदर्श है, जिसकी ओर सारी भारतीय जनता डग बढ़ाए चली जारही है। यही सभापति की वक्तृता का सार है और इससे अधिक विशुद्ध सत्य दूसरा नहीं होसकता।

प्यारे भाइयो !

बधाई बधाई बधाई।

तुम्हें एक दूसरे के गले लगानेवाले बड़े दिनों की बधाई। भारतपुत्रों को एकता के सूत्र में बांध कर राष्ट्र बनाने वाले स्वराज्य का पवित्र तथा गम्भीर पाठ पढ़ाने वाले, (अत एव) बड़े दिनों की बधाई हर्ष और आनन्द से स्वीकार करो।

भगवान् की इच्छा और भाग्यों से प्रेरित हो कर हम गतसप्ताह लखनऊ गये। वहां हमने भाई भाई को गले मिलते देखा, वहां हमने राष्ट्रीय सभा के कई सालों से सूने माथे पर विजय का **तिलक** लगते देखा, वहां हमने हिन्दुओं और मुसल्मानों को, पारसियों और ईसाइयों को कन्धे से कन्धा और हाथ से हाथ मिला कर धर्मभूमि भारतमाता की मानरक्षा के लिये सन्नद्ध होते देखा। देख कर हमें जो हर्ष हुआ वह अपार है, अवर्णनीय है। हमारा अन्तःकरण आशा की मधुर सुधा से भरपूर हो गया है, और विधाता की उस अघटितघटना पटीयसी शक्ति की ओर कृतज्ञता से परिपूर्ण है। बन्धुओ ! आओ, सब लोग मिलकर दिसम्बर की २९ वीं तारीख के दिन का हृदय से अभिनन्दन करें, और उस के उपलक्ष में अपने आप को धर्म देश और जाति की वेदी पर बलिदान करने की प्रतिज्ञा करें।

सम्पादक

—०—

सद्धर्म-प्रचारक।

लखनऊ में जातीय-सप्ताह

लखनऊ का जातीय सप्ताह समाप्त होगया, और अपने पीछे आशा उत्साह और अध्यवसाय की स्मृति छोड़ गया। हम गत सप्ताह बता चुके हैं कि यह सप्ताह लखनऊ में बहुत सी सभायें देखेगा। जहां तक हम अनुमान लगा सके हैं सप्ताह सम्मेलनों की संख्या चालीस से कम नहीं रही। इन सब सभाओं ने अपने २ मनोवाञ्छित प्रस्ताव पास किये, और आगे से उन्नति करने का निश्चय किया। इन सब सभाओं की के ट्रभून जातीय सभा का यह अधिवेशन, न केवल कांग्रेस के अपितु भारतवर्ष के इतिहास में भी सदा स्मरणीय रहेगा। इस अधिवेशन में और जो प्रस्ताव पास हुए वे प्रतिवर्ष होते थे, उनमें इस साल इतनी ही विशेषता थी कि प्रस्ताव करने वालों का उत्साह बहुत अधिक था। किन्तु एक स्वराज्य-प्रस्ताव ने, और उसी के आधार पर भारत सन्तान का परस्पर जो मेल हुआ है उसने, राष्ट्रसभा के अधिवेशन को विशेषतया स्मरणीय बना दिया है।

× × × × ×

कांग्रेस का यह अधिवेशन अपूर्व कृतकार्यता से युक्त हुआ-यह सर्व सम्मत है। मित्र और शत्रु सभी इस बात को स्वीकार करेंगे। जिसके आंखें या कान हैं, वह इस से इन्कार नहीं कर सकता। इस असाधारण कृतकार्यता के कारण कौन २ से हैं? कृतकार्यता के मुख्य कारणों में से भी मुख्य कारण यह था कि अपने पुराने सब भेदभावों को भुला कर देश के राष्ट्रीयदल के नेता इस अधिवेशन में एकमत हो सम्मिलित हुए थे। सूरत में जिस कलह से भारत के माथे पर कलंक लगा था, लखनऊ में उसका अन्त्येष्टि संस्कार कर दिया गया और शृंगारी नवाबों की [illegible] लखनऊ ने भारत माता का

अभिनव शृंगार किया। जहां गत सालों में कांग्रेस के प्लेटफार्मपर केवल एक नर्मदल के नेता दिखाई दिया करते थे, वहां इस बार मधोलकरके पास मिसेज बेसेण्ट और डाक्टर रासबिहारी घोष से कुछ दूर लोकमान्य तिलक और कर्मवीर गान्धी को बैठा देखकर दर्शकों का हृदय गद्गद हो रहा था। कांग्रेस के माथे पर से फूट का कलंक धुला गया था और भाई भाई को प्रेम मिलाप करता देख जीवित और स्वर्गवासी भारतभक्तों की आत्मायें आनन्दसागर में हिलोरे ले रही थीं,

× × × × ×

इतना ही नहीं—जो मुसलमान भाई अब तक कांग्रेस से परे परे रहते थे, इच्छा रहने पर नवोढा वधू की भांती दूर २ हटते थे, वे भी संकोच और भय को छोड़ कर अपने भाइयों के गले आलगे। इस सारे मेल का कारण स्वराज्य का प्रस्ताव हुआ, जिस पर सब देशभक्तों के भेद दूर होगये। पहले ऐसा एकमत नहीं था। स्वराज्य की जो स्कीम बनाई जारही थी, उस में मुसलमानों और हिन्दुओं की संख्या का झगड़ा था। हिन्दुओं की संख्या कितनी हो, और मुसलमानों की कितनी—यह प्रश्न बड़ा कठिन हो रहा था। दोनों पक्षों में खेंचातानी रही। किन्तु अन्त में महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक और श्रीमती एनीबेसेण्ट के उद्योग से सुलहनामा होगया। सम्भव है—कई हिन्दू और कई मुसलमान उस सुलह नामे से प्रसन्न न हों, किन्तु सुलहनामा चीज़ ही ऐसी है जिससे सब दलों के सब लोग प्रसन्न नहीं होसकते, और दूसरी ओर सुलहनामा राजनीति और लोक व्यवहार की जान है। जहां तक सत्य का खून न होता हो, वहां तक सुलहनामे में कोई हर्ज़ नहीं प्रत्युत वह कृतकार्यता का प्राण है।

× × × × ×

सुलहनामा होगया और देश वासियों के सब प्रतिनिधि स्वराज्य की एक स्कीम पर सहमत हो सके। २९ तारीख के दिन वह प्रस्ताव पेश हुआ। देशके बड़े २ राजनीतिक नेता और कांग्रेस के प्रधान मन्त्री के इसी दिन भाषण हुए। भारत का दुन्दुभिनाद सुनाने वाले सुरेन्द्रनाथ बनर्जी ने स्वराज्य का प्रस्ताव पेश किया। भाषण का सारांश यह था कि भारत वासी अब अपनी रक्षा के लिए, अपनी उन्नति के लिए और अपनी उन्नति द्वारा संसार का उपकार करने के लिए स्वराज्य चाहते हैं। कांग्रेस का सुरेन्द्र अब समय के साथ बूढ़ा हो, रहा है। कांग्रेस के तोपख़ाने की सब से बड़ी तोप अब बुढ़ापे के प्रभाव से प्रभावित हो रही है—इस महामल्ल का सिंहनाद अब अपनी ऊंचाई को छोड़ रहा है, किन्तु फिर भी स्वराज्य का प्रस्ताव पेश करने का अधिकार यदि किसी को है तो कांग्रेस के बूढ़े सिपाही को है। मिसेज़ एनीबेसेण्ट ने इस महाप्रस्ताव का अनुमोदन किया। इस चमत्कारिणी महिला की वाणी में जो जादू है, उसे वे ही जानते हैं जिन्हें कभी उस के प्रभाव में आने का अवसर मिला है। वाणी और अनुभाव की उस सारी शक्ति से, जिसने आप को लाखों के हृदयों की स्वामिनी बनाया हुआ है, मिसेज़बेसेण्टने इस प्रस्ताव का अनुमोदन किया और उपस्थित जनता के हृदयों पर स्वराज्य की उपादेयता अंकित करदी। भारतमाता की सेवा में अपने आप को बलिदान करने वाले लोकमान्य तिलक ने अपने सामान्य किन्तु दृढ़ शब्दों में इस प्रस्ताव का समर्थन किया। जिस व्यक्ति ने स्वराज्य के लिए यत्न करने में अपने तन धन स्वाहा कर दिए, उसको स्वराज्य के प्रस्ताव का समर्थन करना शोभा देता था। आप का सन्देशा सारे देश को यही था कि अब शब्दों और मुहाविरों के दिन होचुके, अब कार्य के दिन हैं। दृढ़ निश्चय पूर्वक स्वराज्य के लिए यत्न करो और सरकार को समझा दो कि हम स्वराज्य लेंगे और अवश्य लेंगे। बस इसीसे स्वराज्य मिलेगा, इसके बिना नहीं। मि० मज़रुलहक ने अपने संक्षिप्त भाषण में मुसलमानों की ओर से स्वराज्य का समर्थन करते हुए कहा कि 'मैं अपने समस्त राजनीतिक जीवन में हिन्दुओं और मुसलमानों के मेल के लिए यत्न करता रहा हूं। आज मुझे अपने यत्न की सफलता दिखाई दी है। अब मुझे सन्तोष है—और यदि मृत्यु भी आजाय तो मैं इस सन्तोष के साथ उसका स्वागत करूंगा कि मेरी अभिलाषा पूर्ण हो गई। जिस व्यक्ति ने बरसों तक अपने मुसलमान भाइयों द्वारा काफ़िर कहा कर भी मेल का गीत अलापना नहीं छोड़ा—सचमुच वह ऐसे शब्द कह सकता था। श्रीयुत विपिन चन्द्रपाल, मि० बैप्टिस्टा आदि के भाषण भी स्वराज्य के समर्थन में हुए। सारांश यह कि कांग्रेस के सम्पूर्ण बड़े २ वक्ताओं ने इस प्रस्ताव का परिपोषण किया। इस प्रस्ताव से स्वराज्य मिल जायगा—यह कोई नहीं कह सकता, किन्तु इस में सन्देह नहीं कि इस प्रस्ताव को लेकर जो मेल हुआ है वह देश के लिए कल्याण और मंगल होगा। सम्भव है—इस प्रस्ताव का भी उतना ही परिणाम हो जितना केवल प्रस्तावों का हुआ करता है, तथापि निकम्मे प्रस्तावों की अपेक्षा उत्तम प्रस्ताव अच्छा है, और उसके कारण जो अभेदभाव हुआ है वह व्यर्थ नहीं जायगा।

× × × × ×

कांग्रेस—पण्डाल के पास ही आर्य्यसमाज का पण्डाल था। उस पण्डाल में हुए मुख्यतया चार कार्य वर्णनीय हैं। आर्य्यकुमार सम्मेलन २६, २७, तथा २८ को कांग्रेस से बचे हुए समय में होता रहा। हम नहीं जानते कि सम्मेलन के इस अधिवेशन को कृतकार्य कहें या नहीं। यदि उपस्थिति पर दृष्टि डालें तो कह सकते हैं कि अन्य सम्मेलनों से कम न थी। किन्तु इसमें सम्मेलन की विशेष कृतकार्यता नहीं समझनी चाहिए। कारण यह है कि इन दिनों लखनऊ में कांग्रेस तथा अन्य कार्यों के निमित्त इतना जनसमूह भारत के भिन्न २ भागों से एकत्र हुआ था कि यदि एक समय में सात स्थानों पर भिन्न २ सोसाइटियों की ओर से व्याख्यान होते थे तो अनायास ही उपस्थिति हो जाती थी। सम्मेलन के सभापति की वक्तृता उत्तम हुई और प्रस्ताव

Digitized by eGangotri

भी पास हुए। कौन २ से प्रस्ताव पास हुए—यह तो पीछे ही ज्ञात होगा क्योंकि जो प्रस्तावसूचि छपी हुई थी, उसमें से कई प्रस्ताव छोड़ दिये गये थे और कई परिवर्तित कर दिये गये थे। बोलने वाले भी उसी समय चुने गये थे और वे अपनी २ वक्तृतायें देकर उठते गये। कारण यह था कि दिन भर कांग्रेस के अधिवेशन से थक कर रात को सम्मेलन करने की हिम्मत साधारण पुरुषों की नहीं हो सकती। हमारी सम्मति में कांग्रेस के दिनों में ही सम्मेलन करना ठीक नहीं हुआ—इससे सम्मेलन का कार्य बहुत गौण होगया। सम्मेलन कराने वालों को अपने समयविभाग के तथा कार्यक्रम के लिये सदा कांग्रेस की अपेक्षा करनी पड़ती थी, इसमें कार्यवाही खुले समय में नहीं हो सकी।

× × × × ×

आर्यसमाज के पण्डाल में २८ दिसम्बर की शाम को ५ बजे से महात्मा मुन्शीराम जी का गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर व्याख्यान था। उपस्थिति बहुत थी। सारा मण्डप खचाखच भरा हुआ था। व्याख्यान में आपने गुरुकुल की बहुत सी विशेषतायें बतलाईं। व्याख्यान का प्रभाव उपस्थित जनता पर खूब हुआ। विशेषतया गुजराती और महाराष्ट्रीय सज्जनों की गुरुकुल के लिये बहुत अभिरुचि उत्पन्न हुई।

× × × × ×

२९ दिसम्बर को प्रातःकाल आर्यसमाज के मण्डप में राष्ट्रभाषा-सम्मेलन का अधिवेशन हुआ। इस सम्मेलन की जनोपस्थिति ने और सब सम्मेलनों की उपस्थिति को मात कर दिया। विस्तृत और खुला पण्डाल भरगया था, और उसके चारों ओर दूर २ तक मनुष्य ही मनुष्य दिखाई देते थे, यहां तक कि कुछ काल के लिए सभा का करना असम्भव प्रतीत होता था किन्तु महात्मा मुंशीराम जी के तथा पं० मदनमोहन मालवीय जी के पुरुषार्थ से कुछ शान्ति हुई और भारत में एक लिपि-नागरी लिपि और एक भाषा—हिन्दी भाषा के प्रचार का प्रस्ताव पेश हुआ। सभापति के आसन पर महात्मा गांधी विराजमान थे। श्री पं० मदनमोहन मालवीय जी, श्रीमती एनीबेसेण्ट तथा श्रीयुत रामस्वामी अय्यर के व्याख्यान हुए। इन तीनों देश नेताओं ने इस प्रस्ताव का बड़ी योग्यता से समर्थन किया। मद्रासी महाशय का समर्थन विशेष बल और तात्पर्य रखता था। अन्त में कर्मवीर गान्धी ने हिन्दीभाषा में अपना भाषण किया। व्याख्यान अनूठा था, और उन लोगों के लिये विचारणीय था जो भारतीय होते हुए भी अंग्रेज़ी को ही अपनी भक्ति का पात्र बनाये रखते हैं और भाषा से अनभिज्ञता रखने में लज्जा नहीं करते। आपने व्याख्यान में दो सलाहें दीं।

[१] एक तो यह कि सम्मेलन उन स्थानों में करना चाहिये, जहां भाषा का प्रचार नहीं। सम्मेलन करके मद्रास आदि प्रान्तवालों को भाषा की उत्तमता बतानी चाहिये।

[२] दूसरा यह कि सम्मेलनों को तथा सभाओं को भाषा के प्रचारक अन्य प्रान्तों में भेज कर भाषा सिखाने का प्रबन्ध करना चाहिए। साथ ही कई अन्य उपयोगी सलाहें दीं। आपने कहा कि हमें सरकारी काग़ज़ात या प्रार्थनापत्र भाषा में ही लिखने चाहियें, कांग्रेस भी भाषा में करनी चाहिये। यह नहीं डरना चाहिये कि सरकार तक हमारी बात नहीं पहुंचेगी क्योंकि यदि हमारी बात अच्छी होगी तो "लाटसाहिब अपने सेक्रेटरी को नहीं तो सी. आई. डी. के पण्डित जी को भेजकर पता लगायंगे कि गान्धी जी क्या कहता है" सारांश यह कि राष्ट्रभाषा सम्मेलन का यह अधिवेशन अपूर्व कृतकार्यता से हुआ और उपस्थित जनता पर असाधारण प्रभाव हुआ।

सायंकाल ३ बजे से प्रसिद्ध कवि पं० श्रीधर पाठक के सभापतित्व में हिन्दी—कविता—सम्मेलन का अधिवेशन हुआ, जिसमें समस्या पूर्तियां सुनाई गईं। हम नहीं कह सकते, कि अन्य उपस्थित जनों को इस कविता सम्मेलन में रस आया या नहीं, अपने लिये हम कह सकते हैं कि बहुत रसिक होने का यत्न करने पर भी हम कविता का रसास्वादन न कर सके। सम्भवतः इस में कवियों का दोष नहीं था यह सम्मेलन चुने हुये काव्य प्रेमियों में किया जाता या कम से कम इस के लिए कोई बन्द और परिमित मण्डप चुना जाता तो अधिक कृतकार्यता प्राप्त होती।

× × × × × ×

देश भाषा का आदर देश में कब होगा? यह प्रश्न अब बहुत कठिन नहीं रहा। यह ठीक है कि कांग्रेस और सोशल कान्फ्रेंस में भाषा का प्रयोग कुफ़र समझा जाता है, यह भी ठीक है कि पढ़े लिखे लोगों के दिमाग़ अभी सुधरे नहीं। तो भी एक घटना ने हमारे हृदय को प्रफुल्लित कर दिया और आशा से भर दिया है। कांग्रेस में महात्मा गान्धी को एक प्रस्ताव पेश करने के लिए कहा गया। आपने अपने सिद्धान्तानुसार हिन्दी में बोलना शुरू किया। इस पर चारों ओर से मद्रासी तथा महाराष्ट्रीय आदि सज्जनों ने 'अंग्रेज़ी' 'अंग्रेज़ी' का शोर मचा दिया। इस पर कर्मवीर गान्धी ने वह प्रस्ताव अंग्रेज़ी में पढ़ दिया और यह कह कर आप बैठ गये कि 'जब तक कांग्रेस अपनी राष्ट्रीय भाषा में भाषण सुनने को तय्यार नहीं तब तक मैं भी कांग्रेस में बोलने को तय्यार नहीं। जिन लोगों ने कभी महात्मा गान्धी को अंग्रेज़ी में भाषण करते सुना है वे जानते हैं कि आप अंग्रेज़ी बोलने में किसी सुवक्ता से भी कम नहीं हैं। फिर भी टूटी फूटी देशभाषा बोलना और लच्छेदार अंग्रेज़ी बोल कर शाबाशी लेने का यत्न न करना कितना बड़ा स्वार्थत्याग है? जिन लोगों की मातृभाषा हिन्दी है, किन्तु जो अंग्रेज़ी लिख या बोल कर वाह वाह लूटे बिना नहीं रह सकते, वे क्या इस महापुरुष के चरित से कुछ शिक्षा प्राप्त करेंगे?

× × × × ×

अपनी भाषा को छोड़ कर विजायती बोली बोलने का शौक़ कभी २ वक्ता को बड़ा भद्दा बना देता है। अन्त्य संबन्धी प्रस्ताव पर एक पंजाबी महाशय बोले।

आप हिन्दी में—और यदि उसमें बोलना कठिन था तो उर्दू में व्याख्यान दे सकते थे। यदि और कुछ नहीं तो लोग आप का भावार्थ तो समझ लेते। किन्तु नहीं—इससे आपका नाम देश के नेताओं में कैसे लिखा जाता? आप अंग्रेजी में बोले, और अंग्रेजी कैसी? हम नहीं जानते कि आप वकील हैं या दूकानदार हैं, किन्तु आपकी अंग्रेज़ी मैट्रीक्यूलेट अंग्रेज़ी की अंग्रेज़ी से अच्छी नहीं थी। वाक्य पूरा करने में कभी कभी आप को सिर से एड़ी तक का ज़ोर लगाना पड़ता था। सभापति ने पांच मिनट के पीछे घन्टी बजादी। अभी आप अपने भाषण में एक चतुर्थांश भी न कह पाये थे। घन्टी—तलवार सामने देखकर आपने सहायता के लिए श्रोताओं की ओर देखा, और करुणा जनक आखों से अपील की कि कोई 'और कहिये' या Go on कहने वाला भी मिले, किन्तु श्रोतागण आपकी विशुद्ध लच्छेदार और आदर्श अंग्रेज़ी से पहिले ही तंग थे। श्रोताओं ने चुप करानेवाली तालियों से जवाब दिया। वक्ता महाशय दिल ही दिल कहते होंगे कि कांग्रेस का श्रोतृवृन्द बड़े मूर्खों का है नहीं तो इतने बड़े वक्ता महाशय के व्याख्यान को क्यों रुकवाता। यदि वक्ता महाशय आगे से विदेशी भाषा को तिलांजलि देकर मातृभाषा का आश्रय लें तो उत्तम होगा।

—०—

कुछ अपने विषय में

इतने दिनों पीछे फिर हम अपने विषय में कुछ निवेदन करते हैं। जिन्हें प्रचारक से प्रेम है, वे इसे ध्यान-पूर्वक पढ़ें और हमें उन प्रश्नों का उत्तर दें जो हम इस लेख में करते हैं। जिन्हें प्रचारक से प्रेम नहीं है, वे इस लेख को न पढ़ें और इस पृष्ठ को उलट कर आगे चले जायं। उन से हमारा निवेदन नहीं है।

पिछले दिनों में दो ऐसी घटनायें हो गई हैं, जो हमें विचार करने पर मजबूर करती हैं। (१) प्रथम घटना काग़ज़ की महंग है। हमारा काग़ज़ का पिछला भण्डार समाप्त होगया और अब नया मगाया जारहा है। काग़ज़ का मूल्य आगे से दुगना होगया है। इस समय प्रचारक का काग़ज़ हमें ७) रीम में भी नहीं मिलता। पहले यही काग़ज़ ४) रीम से कम में पड़ता था। (२) इन्हीं दिनों दूसरी घटना यह हो गई है कि विलायत के सब समाचार पत्रों ने मिल कर अपनी २ कीमत बढ़ादी है। यह उन देशों का हाल है जहां पत्रों के मालिक लखपति हैं। केवल कागज़ नहीं, और सभी कुछ महंगा हो रहा है।

पाठक गण! घटनाओं को सामने रख कर हम पूछते हैं कि आगे को प्रचारक का काम किस प्रकार चलाया जाय। यह कई बार लिखा जा चुका है, और आज फिर दोहराया जाता है कि हमारी प्रचारक से एक कौड़ी भी फ़ायदा उठाने की अभिलाषा नहीं है। काग़ज़ की महंग होने से पूर्व प्रचारक अपना ख़र्च निकाल लेता था। जब काग़ज़ आदि का मूल्य बढ़ा तो पुस्तकों की आमदनी भी प्रचारक ही खाने लगा। इतने दिनों इसी प्रकार कार्य चला, और चल रहा है। किन्तु अब काग़ज़ का मूल्य बढ़ता ही जाता है यह मूल्य भारत के कई समाचार पत्रों का भोजन कर चुका है। प्रचारक के विषय में ऐसा अशुभ विचार तो हम कर ही नहीं सकते। किन्तु प्रश्न यह रह जाता है कि काम किस तरह चलेगा। जिस कठिनाई को विलायत के धनी पत्रों ने अपना मूल्य बढ़ा कर हल किया, हम उसे और किस तरह हल करें? स्वयं क्या सोचें—पाठकों से ही पूछते हैं।

क्या हम प्रचारक का मूल्य बढ़ा दें?

यह कई ग्राहकों को रुच सकता है किन्तु सब को नहीं। जहां काग़ज़ महंगा है, वहां और भी सब चीज़ें महंगी हैं। जब कपड़े का मूल्य आगे से कई गुणा हो रहा है और नमक भी मीठे के भाव बिक रहा है तो हम प्रचारक परिवार से अधिक चन्दा मांगने के पक्ष में नहीं हैं।

तब क्या हम प्रचारक का आकार घटादें?

लेखों के लिए आगे ही स्थान नहीं मिलता। सम्पादकीय विचारों के अतिरिक्त सामाजिक सज्जनों को अपने विचार प्रकाशित करने का कोई साधन मिलना चाहिए। स्थान इतने में भरजाता स्थान आगे ही कम है पृष्ठ संख्या और कम क्या करें।

हम जो कुछ कर सकते हैं, यही है। हां यह कार्य भी हम कर सकते हैं कि अपने प्रेमियों से सारी दशा निवेदन करके उन्हें प्रचारक के स्थिर रखने का असली साधन बतादें। इस समय ऐसा साधन, जिस में न प्रचारक का आकार कम होगा, न ग्राहकों पर और आर्थिक बोझ पड़ेगा, एक है और वह प्रचारक की ग्राहकसंख्या बढ़ने का है। ग्राहक संख्या अधिक होने से हम काग़ज़ के बढ़े हुए मूल्य का भी बोझ बर्दाश्त कर सकेंगे, अन्यथा नहीं।

यह निवेदन हम पहिले भी करचुके हैं—किन्तु प्रेमियों का ध्यान शायद इस ओर नहीं खिचा।

प्यारे पाठको! प्रचारक एक उद्देश्य के लिए, एक आदर्श के लिए जीता है इसी लिए उसे जीवन प्यारा है। वैदिक सत्य धर्म का नाद दिग्दिगन्त में फैले, जातीय जीवन के आधार भूत ब्रह्मचर्य का पुनरुद्धार हो, भारत के अंगों में घुसे हुए सामाजिक दोष रूपी कीड़े नष्ट भ्रष्ट हो जायं, मातृभूमि के सारे क्लेश दूर हों, मातृभाषा अपने आसन पर विराजमान हो—ये सब उद्देश्य हैं जिन्हे लेकर प्रचारक जीता है और जीना चाहता है। प्रचारक परिवार भी इन्हीं कारणों से प्रचारक से प्रेम करता है। यदि प्रचारक का स्वार्थ के लिए जीवन होता तो उसका परिवार न बनता और दूसरे लोग उस परिवार के नाम से न जलते।

क्या इन उद्देश्यों की पूर्ति में हमारे प्रेमी सहायक न होंगे? हमें निश्चय है कि अवश्य होंगे, उस सहायता का एक ही उपाय है, कि प्रचारक की ग्राहक सख्या बढ़ाइये। किस तरह बढ़ाइये—यह हम नहीं कह सकते। हम केवल निवेदन कर सकते हैं, यह हमने कर दिया। ग्राहक संख्या बढ़ने के साथ प्रचारक का जीवन शान्ति-पूर्वक स्थिर रहेगा, नहीं तो स्थिर तो रहेगा पर शांति न रहेगी।

हम नहीं—प्रचारक अपने प्रेमियों से इतना कर्तव्य पालन चाहता है। ठीक उत्तर देना प्रेमियों के हाथ में है।

Digitized by eGangotri

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनीआर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। =) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

विनयाञ्जलि

(१)

सुनहु यह मोर विनय जग त्राता। टेक।
अन्तरा—मैं अति दीन दीन बन्धू तुम,
मैं सुत तुम पितु माता
मैं दुखिया दुख भञ्जन तुम हो,
मैं याचक तुम दाता
सुनहु.....
मैं हूं प्रजा प्रजापति तुम प्रभु,
मैं सेवक तुम ताता।
मैं निर्बल निर्बलपालक तुम,
मैं अधेय तुम धाता॥
सुनहु.....
मैं भवनिधि जलपथिक तुमहिहो,
भवनिधि केवट ख्याता।
मैं अति पतित पतित पावन तुम,
निगमागम अस गाता॥
सुनहु.....
कहूँ लों कहों मोहि सो तो सो,
अगिनित है हरिनाता।
एकहु की सुधि होततोहिजो,
सकल ताप विनशाता॥
सुनहु.....
तुम समर्थ सो बहु नातो लहि,
नित क्लेश अतिपाता।
समुझत यह मति थिर न रहत अब,
तोष हिये नहिं आता॥
सुनहु.....
खाकी अजहूं सुरत भूंलिबो,
हा प्रभु कस तोहि भाता।
मेटहु यह कलंक नहिं तो हरि,
भरम तिहारोइ जाता॥
सुनहु.....

(२)

कहूं कछु छलहु मोहि जग त्राता। टेक।
अन्तरा—जो मैं धर्म विवेक ज्ञान रत,
ह्वै शुभ कर्म्म कमाता।
तौ सुख सम्पति सकल मनोरथ,
बिनु मांगे मैं पाता
कहूं कछु.....
जो नहिं होत पतित पामर मैं,
तौ नहिं मान गवांता।
दसन निकारि पसारि युगल कर,
तोहि याचन नाहिं आता॥
कहूं कछु.....
तब लघु जन नहिं फेरत याचक,
जो समीप तोहि जाता।
तुम अनूप समरथ दाता का,
यह अनुचित कस भाता
कहूं कछु.....
परि तव शरण लगाय आश बहु,
शिर नवाय बिलखाता।
खाकी कवन मोर बश तुम पै,
करहु जो तोहि सोहाता॥
कहूं कछु.....

यह पद नं० [२] लाहनी है, ताल कौवाली वा कँहरवा में गाया जायगा वो यह भी अनेको धुन में गाया जायगा।

(३)

यह दीन अधम अति आरत ह्वै, तोहि टेरो।
दुख समाचार जगदीश सुनहु यह मेरो। टेक
अन्तरा—एक बार हीन रह खुलो द्वार गृहि केरो
एक दीप रहेव घर भीतर करत उजेरो
चिन्ता मणि मुक्ताहीर रतन को ढेरो
अरु भूषण वसन अमोल रुचिर बहुतेरो
सब रहो जतन बिनु धरो दक्ष यह तेरो।
दुख समाचार.....
तेहि समय आय ठग चोर छिपार लुटेरा
लखि सजग हमे घर पास कीन बहु फेरा
धरि पथिक वेष मोहि याचेव रयन बसेरा
तब क्रमशः अन्तः आय कीन सब ढेरा
कियो दिपक अनहित जानि बुझाय अँधेरो।
दुख समाचार.....
दुर्दैव शीश चढ़ समय विपरजय कीना
गए पहर निशा चख नींदहिं आदर दीना
जागा जब नभ बिज गोद भानु शिशु लीना
देखा शत्रुन गृहि सम्पति सर्वस हीना
पुनि तुरत तीन अरि अन्य आय मोहि घेरो।
दुख समाचार.....
सब रिपुन एक मति ह्वै, बहु भांति सताया
मोहि निर्बल करि गृहि पै अधिकार जमाया
दिन हित रक्षक दुख दलन तोहि श्रुति गाया
खाकी सुनि यह शुभ वचन शरण तकि आया
अब वेगि लेहु सुधि मोरि न करहु अबेरी
दुख समाचार.....

———

इतिहास तरंग

फिरोज़शाह की लाट

पाठक वृन्द ! आजकी तरंग इन्द्रप्रस्थ की है। फिरोज़शाह की लाट दिल्ली के समीप ही है। इसका अजब इतिहास है मैं आपको इसका हाल क्या सुनाऊं बाद को जाकर यह लाट ही अपना सब मर्म खोलेगी।

यह लाट दिल्ली के बाहर इन्द्रप्रस्थ के समीप शिकारगाह के बीच में एक चबूतरे में एक ही पत्थर की बनी हुयी बड़ी दृढ़ता से गड़ी है। इसको फिरोज़शाह की लाट के नाम से पुकारा जाता है। परन्तु ऐतिहासिकों की सम्मति में यह अवश्य किसी देशी महाराजे का विजय स्तम्भ है।

इतिहास क्रम के अनुसार फिरोशज़ाह ने १३५१ से १३८८ तक राज्य किया और नव्वे [९०] वर्ष का होकर मरा था। फरिश्ता के अनुसार फिरोज़शाह कोई बड़ा योद्धा न था। फिर भी इसने अपने गुणों के अनुसार शान्ति के राज्य की स्कीमें बनाई हुई थीं। कुमाऊं के लोगों पर इसने बड़ा अत्याचार किया और समन के गवंनर का इसने घात किया सो यही इसके मन में बड़ा लगा था। परन्तु क्योंकि मारे गये लोग सय्यद थे इस से शायद धार्मिक विरोध ने ऐसा करने पर बाधित किया था। इसने अपने ३८ साल के राज्य के बाद ५० बड़े बन्धे ४० मस्जिदें ३० पाठशालायें २० मरायें १०० महल ५ हस्पताल १०० कबरें १० स्नानागार १० मीनारें और कोई १५० कुए १०० पुल और अनगिनत क्रीड़ोपवन बनवाये।

इसके नाम पर प्रसिद्ध लाट के बारे में हस्त अलकीम ग्रन्थ का बनाने वाला महम्मदअलीनराजी कहता है कि फिरोज़शाह के बनाये स्थानों के बीच में एक शिकारगाह है जिसका नाम आम लोग फिरोज़शाह की लाट के नाम से पुकारते हैं। जहां एक ३ मंजिला महल है जिसके बीच में एक लाल पत्थर का खम्भा है देखने से जो २७ जिरां है लम्बा और ५ जरां मोटाई में है। कहाजाता है ? दीखता और दो तिहाई छिपा है सो कुल लम्बाई ८१ जिरां है।

इसके ऊपर कुछ खुदा है जिसका मतलब बड़े विद्वान् भी नहीं बता सके। यह प्रसिद्ध राजों [हिन्दू राजों] का स्मारक है फिरोज़शाह ने इसे अपने शिकारगाह में गाड़ा है। जिरां नामक मुसलमानी लम्बाई का नियत माप तो पता नहीं पर हां वर्त्तमान लम्बाई जो दीखती है ३७ फीट है। और बिचला घेरा १० फीट ४ इंच है वास्तव में वह सारा खम्भा एक ही पत्थर का बना हुआ है। रंग कुछ २ लाल है।

इस प्राचीन आर्य विजय स्तम्भ पर जो कुछ खुदा हुआ है वह भी बड़ा आश्चर्यजनक तथा संस्कृत में है:—

"संवत १२२० वैशाख सुदी १५ शाकम्भरी भूपति श्रीमद् वल्लभदेवात्मज श्रीमद् वीसल देवस्य।"

(१) "आविन्ध्यादा हिमाद्रे र्विरचित विजयस्तीर्थयात्रा प्रसङ्गाद्।
उद्वीवेषु प्रहर्त्तानृपतिषु विनमद्कन्धरेषु प्रसन्नः॥
आर्यावर्त्तंयथार्थं पुनरपि कृतवान् म्लेच्छविच्छेदनाभिः।
देवः शाकम्भरीन्द्रो जगति विजयते वीसलः क्षोणि पालः॥

[२] ब्रुते सम्प्रति वाहुजाततिलकः शाकम्भरी भूपतिः।
श्रीमद्विग्रहराज एषविजयी सन्तान जानात्मनः॥
अस्माभिः करदंण्ड्यधायि हिमवद्विन्ध्यान्तरालंभुवः।
सैष स्वीकरणायमास्तु भवता मुद्योगशून्यंमनः॥

(३) अम्भोनाथ रिपुस्त्रियो नयमयोः प्रत्यर्थिदन्तान्तरे।
प्रत्यक्षाणि तृणानि वैभवमिलत्कट्टं यशस्तावकम्॥
मार्गोलोक विरुद्धएव विजनः शून्यं मनो विद्विषाम्।
श्रीमद् विग्रहराजदेव भवता प्राप्ते प्रयाणोत्सवे॥

(४) लीला मन्दिर सोदरेषु भवतु स्यान्ते षुवामभ्रुवाम्
शत्रुणां ननु विग्रहक्षितिपते न्याय्यश्च वासस्तव।
एङ्का वा पुरुषोत्तमस्य भवतोनास्त्ये ववारांनिधेः।
निर्मथ्यापहृतश्रियः किमु भवान् क्रोड़ेननिद्रायितः।

संवत् श्री विक्रमादित्य १२२० वै. शाख सुदी १५ गुरौलिखितमिदं.....
प्रत्यक्षम् गौड़ान्वय कायस्थ माहव पुत्र श्रीपतिना अत्र सन्धे महामन्त्री राजपुत्र श्रीमल लक्षणपालः।

अर्थ—१२२० विक्रम १५ सुदी, शाकम्भरी के राजा श्रीमान वल्लदेव के पुत्र श्रीमान् वीसलदेव का—

(१) तीर्थ यात्रा करते २ विन्ध्य से लेकर हिमालय तक विजय प्राप्त करके ऊंची गर्दन उठाने वाले [गर्वीले] शत्रुओं को मारता हुआ तथा गर्दन झुकाए हुये राजों पर कृपा करता हुआ तथा आर्य को मलच्छो के नाश करने से फिर यथार्थ करता हुआ महाराज शाकम्भरी का राजा वीसलदेव भूपाल संसार में विजय करते हैं।

[२] [प्रजापति] की बाहुओं से पैदा हुवे क्षत्रिय का तिलक सदृश शाकम्भरी का राजा अपने वंशजों के प्रति अब कहता है कि हमने हिमाचल और और विन्ध्याचल के बीच के भूमि के स्थान को अपने नीचे करदेने वाला [मातकृत] करालिया है। तो फिर कभी भी इसको लेने के लिए तुम्हारा मन उद्योग से शून्य न हो।

[३] हे श्रीमान् विग्रहराज महाराज आपके पयान करने रूपी महोत्सव के आने पर आपके शत्रुओं की स्त्रियों के नेत्रों में जल, शत्रु के दांतों के बीच में प्रत्यक्ष घास दिखाई पड़ता है। तेरा यश सम्पत्ति से मिले कष्ट रूप है। तेरे शत्रुओं का मन हताश तथा मूढ़ है, उनका मार्ग सर्व लोगों से उलटा निर्जनवन का है।

[४] हे विग्रह भूमिपाल तेरा अपने महलों के सदृश ही शत्रु की स्त्रियों के नयनों के अन्दर भी बसना यह भी न्यायानुकूल है। क्या तेरे पुरुषोत्तम होने में भी कोई सन्देह है क्या तेने समुद्र को मथकर निकाली लक्ष्मी की गोद में निद्रा नहीं ली।

श्रीमान् विक्रम के संवत १२२० सुदी १५ गुरुवार को माह के पुत्र गौड़वंश के पैदा

हुये कायस्थ आपति ने सब के सामने लिखा।

इस महा मन्त्री राजपुत्र कामिल लक्षणवाल हैं।

प्रथम श्लोक के नीचे एक त्रिशूल डाल कर यह लिखा है "शिवभयंकर चक्रवर्ती" उसी के पास कुछ पतले अक्षरों में कुछ और भी खुदा हुआ है इसका पता नहीं चलता इस में "सुलतान इब्राहीम" का नाम साफ पढ़ा जाता है।

—०—

नूतन विचार

दक्षापमान संक्रुद्ध रुद्रनिःश्वास सम्भवः

अर्थ—इसका मध्यकालीन टीकाकारों ने इस प्रकार अर्थ किया है जैसे कि शिव की गाथा से निकल सकता है किन्तु मेरी समझ में ग्रन्थकार का यह आशय कथमपि सम्भव नहीं क्योंकि रोगोत्पत्ति निरूपण करते हुए उसकी ऐसी विचित्र उत्पत्ति ग्रन्थकार बताता है कि जिस पर आंख मीचकर यदि विश्वास करलें तो तो कथंचित् ठीक, नहीं तो जरासी भी युक्ति लगाने से यह सर्वथा अर्थाभास मालूम पड़ता है इस लिये मेरे विचारानुसार इस का यह अर्थ हो सकता है।

दक्ष=मनुष्य उस मनुष्य द्वारा किया गया जो अपमान=अर्थात् आहार विहारादि में अपरिमित उस से संक्रुद्ध सम्यक् प्रकारेण क्षुब्ध जो रुद्र="दोष उन का जो निःश्वास=नितरांवृद्धि उस से उत्पन्न हुआ ज्वर ८ प्रकार का होता है दक्षनाम मनुष्य का है और रुद्रनाम दोषों का है क्योंकि यह बढ़ कर मनुष्य को रोगी कर के रुलाने वाले होते हैं।

अपमान शब्द अपपूर्वक "मा" धातु से निष्पन्न होता है जिस 'मा' धातुका अर्थ मितावस्था और अप लगाने से यह हुआ कि जो आहार विहारादि की मितावस्था रहनी चाहिये थी सो न रही अर्थात् मनुष्य ने*आहार विहारादि से विकृति की उस विकृति के कारण से क्षुब्ध हुए दोष [वात पित कफ] उस से आठप्रकार का ज्वर उत्पन्न हुआ है क्यों कि जबतो दोषों की समावस्था रहती है तब तबतो किसी प्रकार का रोगादि उत्पन्न नहीं होता किन्तु जिस समय वे दोष [वात पित कफ] क्षुब्ध होते हैं अर्थात् गौण-प्रधान भाव को प्राप्त होते हैं तब रस और धातुवों को दूषित कर के कोष्ठाग्नि की गर्मी को देह से बाहिर निकाल देते हैं। तथाच जब २ गौणप्रधान भाव होता है तब तब तो अन्य ज्वर होते हैं किन्तु जब उन दोषों [वात पित कफ] की निःश्वास अर्थात् नितरांवृद्धि होती है तब तीनों की वृद्धि से सन्निपात नामक ज्वर उत्पन्न होता है। अपमान के लिये श्रुति इस प्रकार कहती है कि:—

त्र्यम्बकं यजामहे सुगंधिं पुष्टिवर्धनम्'

अर्थ यदि मनुष्य सुगन्धी युक्त पुष्टि की वृद्धि करने वाले पदार्थों का सेवन करता रहे तथा ब्रह्मचर्य्यादि ठीक प्रकार रक्खे तो किसी प्रकार से भी दोष [वात पित कफ] वैषम्य नहीं होंगे।

I सुगन्धी का विपरीत दुर्गगन्धि का फैलाना।

II पुष्टिवर्धन का विपरीत दुर्बलता का होना।

III पतिवेदनं का विपरीत दुराचारादि का होना।

यह बात श्रुति लिखित तथा युक्ति सिद्ध भी है कि हम यदि दुर्गन्धि से बच कर रहें तथा अपनी उत्पन्न की हुई दुर्गन्धि का प्रतीकार हवन करें तो दोष [वातादि] कुपित न होने से हमारे स्वास्थ्य में क्षति कथमपि न होगी क्योंकि शुद्ध वायु का सेवन अत्यन्त आवश्यक है इस विषय में वैद्यक शास्त्र में ऐसा लिखा है।

नाभिस्थः प्राणपवनः स्पृष्ट्वाहृत्कमलान्तरम्।
कन्ठाद्वहिर्विनिर्याति पातुं विष्णु पदामृतम्॥
पीत्वाचावर पीयूषं पुनरायाति वेगतः।
प्रीणयन्देह मखिलं जीवंच जठरानलम्॥

इस का तात्पर्य यह है अन्दर का वायु जोकि अशुद्ध है वह बाहर निकलता है शुद्धि प्राप्त करने के लिये अर्थात् अन्दर का अशुद्ध वायु बाहिर निकल जाता है और [विष्णु पदामृत नाम आकाश का है) बाहिर का शुद्ध वायु अन्दर जाता है और अन्दर जाकर सम्पूर्ण देहको तथा जठरानल [जठराग्नि] को पुष्ट करता है जठरानल के शुद्ध होने पर न दोष कुपित होंगे और नाही ज्वरादिक उत्पन्न होंगे।

II पुष्टिवर्धन=अर्थात् शारीरिक कमजोरियों का दूर करना तथा ब्रह्मचर्य्यादि द्वारा शरीर की पुष्टि करना अत्यावश्यक है क्योंकि शरीर में सारभूत वस्तु वीर्य ही माना है यदि सारनष्ट हो गया तो फल्गु से क्या फल हो सकता है, तब यह आया कि यदि मनुष्य ब्रह्मचर्य्यादि द्वारा रस रक्त मांसमेदः अस्थि मज्जा और वीर्य को ठीक रक्खे तो रुद्र [दोष] कभी भी रुष्ट न होंगे और उनके रुष्ट न होने से किसी प्रकार के रोग [ज्वरादि] भी उत्पन्न न होंगे।

III पति वेदनम्=पैतृक अर्थात् मनुष्यों को दुराचारादियों से बचना चाहिये जो कि नाना प्रकार के रोगों का मुख्य कारण है, इस अवस्था में मनुष्य अवश्य दोषों [वात पित कफ] को क्षुब्ध करता है उस से फिर नाना प्रकार के उपदंश प्रमेह प्रभृति रोग उत्पन्न होते हैं तब तो दक्ष मनुष्य को विरुद्ध आहार विहारादि न करने चाहिये जिस से रुद्र [दोष] कभी भी क्षुब्ध न हों और मनुष्य आनन्द से अपना जीवन व्यतीत करता चलाजाय।

भवदीय विनीत
ज्ञानचन्द्र वैद्यभूषण
गुरुकुल कांगड़ी

*मिथ्याहार विहाराभ्यां दोषा ह्यामाशयाश्रयाः। वहिर्निरिस्य कोष्ठाग्निं ज्वरदाःस्यूरसानुगाः॥

"पं० कालू राम को चैलंज"

श्रीमान् पं० कालूराम जी! नमस्ते

आप के पुस्तक जो आर्य्यसमाज के विरुद्ध छपे हैं वे सब मैंने देखे हैं मैं उन का उत्तर देना चाहता हूं परन्तु दो पुस्तकों पर, आपने एक हज़ार रुपया उत्तर दाता को इनाम देना लिखा है और शेष पुस्तकों पर इनाम देना नहीं लिखा, क्या उन का उत्तर आप लेना आवश्यकीय

नहीं समझते ? वा उन पुस्तकों पर भी इतना ही इनाम देवेंगे इसका उत्तर विस्तार-पूर्वक विस्पष्ट शब्दों में देने की कृपा करें तथा जिन जिन पुस्तकों का इनाम आप दे सकते हैं वह धन कृपया बंगाल बैंक में जमां करा दें तो उत्तर आप की सेवामें भेजा जावे। यदि उत्तर ठीक होगा तो वह धन मैं पालूंगा और यदि वह उत्तर ठीक न होगा तो वह धन आपका आपके पास रहेगा। कृपया इस का उत्तर शीघ्र दें, यदि धन आप जमां न करावेंगे तो आप मिथ्यावादी और झूठी प्रतिज्ञा करने वाले कुतब-फ़रोश समझे जावेंगे।

आपका शुभचिंतक
धर्म्मवीर उपदेशक
आर्य्यप्रतिनिधि सभा पञ्जाब
लाहौर

कुछ उपयोगी बातें

पूर्वानुवृत्ति

३१–जबतक कार्य सिद्ध न हो तबतक उस के लिये प्रयत्न करते रहो। एक दिन के सामान्यतया परिश्रम न करने से तुम्हारे बहुत दिनों का परिश्रम व संकल्प निष्फल हो सकता है।

३२–जिन कामों से तुम्हारा तथा दूसरों का लाभ होता हो उनको करने में देर मत करो। क्योंकि मन धन और जीवन यह सारे ही चञ्चल हैं। विलम्ब करने से कार्य साधन में विघ्न हो सकता है।

३३–जो लोग तुम्हारी अपेक्षा उच्च पद पर या माननीय हों उनके साथ हास्य परिहास मतकरो, यदि वह तुम्हारा आदर करके तुम्हारे साथ हंसी करें तो तुम हंसी के तौर पर उनका उत्तर मतदो। केवल मात्र कुछ मुस्कराकर नीचे को मस्तक करके सुनते रहो।

३४–जब किसी अपरिचित व्यक्ति के साथ प्रथम ही प्रथम बातचीत करो तब इस तरह आलोचना करने लगो कि उसकी प्रकृति का स्पष्ट चित्र देखसको।

३५–प्रतिदिन प्रातःकाल ही सारे दिन में जो २ काम करने हैं उनपर विचार करलो, और रात्रि को सोने के पहिले सारे दिन में जो काम किये हैं उनकी प्रकृति और अच्छे बुरे फल को विचारलो।

३६–जिस समय तुमको धन, विद्या, ज्ञान आदि का अभिमान हो जावे तो तुम उस समय अपनी अपेक्षा अधिक धनी, विद्वान् और ज्ञानी पुरुष की प्रतिभा को स्मरण करो, ऐसा करने से तुम्हारा मस्तक स्वयं ही नीचे झुक जावेगा।

३७-तुम जब किसी का उपकार करो तो उसको भूल जाओ। परन्तु यदि कोई तुम्हारे साथ किसी तरह का उपकार करे तो उसको हमेशा याद रखो। और यदि किसी समय वह तुम्हारा उपकार बुरा भी करदें तो उसको क्षमा करदो।

३८–भयदिखाकर सज्जन को वशीभूत करने की चेष्टा न करो। तुम समय पाकर मनुष्यों के हित का साधन करो लोगों को स्वयं तुम्हारे वश में होना पड़ेगा।

३९–यदि एक आदमी को किसी दूसरे पुरुष के साथ बात चीत करते देखो तो उसके बीच में तुम कभी भी कुछ मत पूछो। तुम उस बात को अच्छी तरह जानते भी जब तक उनकी बात समाप्त न हो जाय तबतक तुम कुछ मत कहो।

४०–एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य के सामने हंसी उड़ाकर या कौतुक छलसे शर्मिन्दा न करो।

४१–जो मनुष्य बहरा कुबड़ा जन्म से रोगी व अंधा हो अथवा किसी प्रकार से अङ्गहीन, चाटूकार(खुशामदी) और घर का भेद लेने वाला हो उसको कभी नौकर मत रखो।

४२–विना आज्ञा दूसरे के नाम का पत्र मत पढ़ो।

४३–हाथी के दांतों की तरह साधु पुरुष के वाक्य एक बार मुख से निकल कर फिर नहीं ढके जासकते। इस लिये ऐसी बात कहो जो किसी से छिपानी न पड़े।

४४–जिस समय क्रोध आया हो उस समय किसी से कुछ मत बोलो। मौनी [चुप] होकर रहो। क्योंकि उस समय मुख से ऐसी अनुचित बात निकल सकती है जिस के लिये तुमको जन्म भर पश्चाताप करना पड़े।

४५–तुम जिस समय जिस स्थान में भी रहो विशेष कर जब तुम घर से किसी दूसरे स्थान पर जाओ तो अपने साथ थोड़ासा, धन, एक चाकू और एक अंगूठी अवश्य रखो। इनके द्वारा अनेक आकस्मिक विपत्तियों से पार हो सकोगे, और उस समय का कार्य सिद्ध हो जाएगा।

४६–जिसको तुम्हारी बातों पर विश्वास न हो उसको कभी उपदेश मत दो किन्तु यदि वह किसी विपत्ती में पड़ कर व्याकुल होतो उसको सत्परामर्श देने में कुण्ठित मत हो जाओ। (समाप्त)

बसन्त लाल गुप्त

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ गीतिएं नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत से भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने के इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता–उषा कार्य्यालय गुरुकुल
कांगड़ी पो० श्यामपुर जि० बिजनौर

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

गुरुकुल समाचार.

गुरुकुल का अपना पोस्ट आफिस खुलगया। प्रथम जनवरी से सबआफ़िस तो गुरुकुल के आश्रय के साथ खुलगया और ब्रांच आफिस शमसपुर रहगया। अब डाकख़ाने का नाम है—गुरुकुल कांगड़ी P. O.—डाकख़ाने का सारा प्रबन्ध मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल के आधीन रहेगा। अब डाक बहुत सवेरे मिला करेगी और भेजने में भी सुवीता रहेगा। इस उत्तम प्रबन्ध के लिए बाबू राधाकृष्ण लाल इन्स्पेक्टर बिजनौर डिवीज़न का धन्यवाद करना चाहिए। जब से यह महाशय इस डिवीज़न में आए हैं, सर्व साधारण की सुगमता के लिए बराबर यत्न करते रहे हैं। ऐसे कर्त्तव्यपरायण अधिकारी डाकख़ाने के महकमें में कम हैं। आगे के लिए पत्रों पर पता डाकख़ाना गुरुकुल-कांगड़ी ज़िला बिजनौर होना चाहिए।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के आगामी वार्षिकोत्सव की तिथियां निश्चित् कर दी गई हैं। २५, २६, २७, २८ फाल्गुन तदनुसार ८, ९, १०, ११ मार्च १९१७ को यह उत्सव मनाया जावेगा। उत्सव में सम्मिलित होने वाले सज्जनों को अभी से स्वयम् दान का सङ्कल्प करना तथा अन्यों से धन उपार्जन करना आरम्भ कर देना चाहिए। इसवार्इ, साधारण भोजन तथा पुस्तकों की दूकानों के लिए अभी से प्रार्थनापत्र आने चाहिएं। दीक्षान्त संस्कार १० मार्च को [भाई दूज के दिन] होना निश्चित हुआ है।

उत्सव में आने वाले यात्रियों के लिए छप्पर बनने शुरू हो गए हैं। जो टीन वाले मकान नए सिरे से बन रहे हैं वे सब भी १५ दिनों तक समाप्त हो जायंगे। जिन आर्य्यसमाजों के नाम उस मद्दे विशेष धन चाहिए उन की ओर से धन भेजने में ढील नहीं होनी चाहिए।

नए प्रविष्ट ब्रह्मचारियों में से कुरुक्षेत्र के लिए जो चुने गए थे, वे दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में ही कुरुक्षेत्र पहुंच गए थे। शेष २८ नए प्रविष्ट ब्रह्मचारी भी २१ पौष को गुरुकुल विद्यालय इन्द्रप्रस्थ की ओर चले गए।

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ का आरम्भिक उत्सव १२ जनवरी से ही शुरू होगा। उस दिन प्रातः काल वृहद् हवन हो कर एक उपदेश होगा। और मध्यानोत्तर व्याख्यान होंगे। १३ जनवरी को प्रातः स्थान की प्रतिष्ठा होगी और मध्यानोत्तर में व्याख्यान होंगे। १४ जनवरी को प्रातः वेदारम्भ संस्कार हो कर उत्सव समाप्त होगा। ब्रह्मचारियों के संरक्षक महाशय पत्र व्यवहार—श्री मुख्याध्यापक गुरुकुल विद्यालय इन्द्रप्रस्थ, P. O. बदरपुर [ज़िला दिल्ली] के साथ करें। मैं भी आजसे दिल्ली ही चला हूं इस लिए आगामी सप्ताह मेरे नाम भी पत्र इसी पते से आवें।

मुन्शीराम मुख्याधिष्ठाता

—:o:—

संरक्षक सभा क्या है ?

गत सप्ताह तक ४४ ब्रह्मचारियों के संरक्षकों की सम्मतियां दी जा चुकी हैं। श्री उपाध्यक्ष रामदेव जी का पुत्र तथा श्री डाक्टर सुखदेव जी का भतीजा भी गुरुकुल के ब्रह्मचारी हैं। उनकी सम्मति प्रसिद्ध ही है। कटे के म० मूलचन्द्र का भाई गुरुकुल में पढ़ता है। इसवर्ष वह अपने पुत्र को भी प्रविष्ट कर गए हैं। इस प्रकार ४७ ब्रह्मचारियों के संरक्षकों की सम्मति आचुकी।

म० दुर्गादास संरक्षक ब्र० योगराज लिखते हैं— "जिस समय संरक्षक सभा बनाई थी उस समय इसका उद्देश्य केवल यही रक्खा गया था कि गुरुकुल के लिए धनादि जमा करने में सहायता दी जायगी वा प्रबन्ध में स्वयम् सहायता दीजायगी और स्वयम् सेवक दिए जायेंगे। परन्तु यह जानकर कि अब अनुचित कार्यवाही होरही है इसलिए मेरा नाम उक्तसभा से अलग समझा जावे। इसकी एक प्रति सेवामें मन्त्री बालकृष्ण बालीजी भेजी जाती है। अज्ञानता तेरा नाश हो जो तू असली मनुष्य को समझने की योग्यता भी नहीं रखती"

डाक्टर गुरुदत्त जी संरक्षक ब्रह्मचारी धर्मपाल लिखते हैं— "इस फ़रजी संरक्षक सभा की लीला प्रकट होने के पूर्व ही से मेरा कोई सम्बन्ध इस सभा के साथ नहीं रहा। गत वर्ष की संरक्षकों की कमेटी के समय भी यह ज़ाहिर होगया था कि सिवाय चार पांच मनुष्यों के प्रायः सबही इस की लीला से अभिज्ञ थे।"

म० बलदेवसहाय जी संरक्षक ब्र० शान्तिस्वरूप तथा ब्र० सुरेन्द्र लिखते हैं—" मैं दो वर्ष से इस सभा का सभासद् नहीं हूं और न गुरुकुल के कार्य्यों में मेरी किसी प्रकार विरुद्ध सम्मति है। मैं जिस समय इस सभाका सभासद् था उस समय इस सभा के ३ निम्नलिखित उद्देश्य थे:— [१] संरक्षकों का परस्पर मित्र भाव रखना [२] गुरुकुल की हर प्रकार से सहायता करना [३] जिन ब्रह्मचारियों के संरक्षक नियत हों उनके ब्रह्मचारियों का गुरुक सम्बन्धी प्रबन्ध करना। किन्तु आजकल यह सभा अपने इन नियमों से नितान्त वञ्चित है। गतवर्ष की विजय दशमी पर मुझे गुरुकुल जानेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वहां म० बालकृष्ण बाली से भी मिला था किन्तु उनके भावों से यह प्रकट होता था कि प्रत्येक संरक्षक से गुरुकुल की त्रुटियों का खोज करना ही उनका मुख्योद्देश्य था, अतएव मैं म० बालकृष्ण बाली के कार्य्यों से घृणा और शोक करता हूं जो उन्होंने बिना किसी संरक्षक की सम्मति के, समय २ पर सरक्यूलर छाप २ कर वितरण करके गुरुकुल को हानि पहुंचाई है। मेरा संरक्षक सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है और न मैंने अपने पुत्र से जो ११ वर्ष से शिक्षा ग्रहण कर रहा है गुरुकुल के विषय में कोई बुराई सुनी है।"

म० हरिश्चन्द्रजी संरक्षक ब्र० शान्तिस्वरूप लिखते हैं—"सद्धर्म प्रचारक में पढ़ कर कि म० बालकृष्ण बाली ने संरक्षक सभा के नाम पर कुछ ऊधम मचाया है। और ऐसा ही उनकी ओर से एक ट्रेक्ट के पहुंचने से भी मालूम हुआ। मैं भी संरक्षक हूं और अपनी तरफ से आपकी सेवा में निवेदन करता हूं कि मेरा इस संरक्षक सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है जिसके मन्त्री म० बाली अपने आपको तहरीर करते हैं वरन् उनकी इस कार्य्यवाही को सर्वथा अनुचित समझता हूं।"

प० बालूराम गुप्त संरक्षक ब्र० दलाराम लिखते हैं—"मुझे यह मालूम करके बड़ा आश्चर्य हुआ कि गुरुकुल के विरोधी भी संरक्षक हो सकते हैं। मैं ऐसे संरक्षकों को संरक्षक नहीं समझता, और न ऐसी सभा में सहमत हूं जो बिना किसी कारण के गुरुकुल को बदनाम करना चाहती है। सभ्यता पूर्ण और उचित मुकदमा चलाने को बुरा नहीं समझता लेकिन यदि यह स्वार्थ [illegible] हो तो बहुत बुरा है। यह [illegible] हो रहा है भारत के भंडफोड़ [illegible] है कि उसमें कोई भी नेक [illegible] विरोधियों का ग्रास हुए बिना नहीं [illegible]। परमात्मा कृपा करें कि विरोधी हमारे लिये लाभ का कारण बनें और गुरुकुल का पवित्र चान्दला नाम उज्ज्वल रहे।

प० सन्तराम जी संरक्षक ब्र० जगदीशकुमार लिखते हैं—"मेरा इस नाममात्र की [illegible] सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। [illegible] विंकोत्सव के अवसर पर दुर्भाग्य से [illegible] थोड़ी देर के लिये उक्त सभा के अधिवेशन में एकरात्रि को चला गया था, परन्तु अब मैंने देखा कि इसका कोई भी नेक उद्देश्य नहीं है मैं वहां से चलदिया।

प० रामस्वरूप जी संरक्षक ब्रह्मचारी भद्रदत्त के पास प० बालकृष्ण शास्त्री का छपा [illegible] गया था। यह उसी के पीछे लिख कर [illegible]

[illegible] देहली से यह पत्र मेरे नाम [illegible] पहुंचा—"मैं ला० बालकृष्ण से सहमत नहीं हूं और [illegible] गुरुकुल कांगड़ी में पिछले साल चंदे से भी इनकार कर दिया था। चंदे के लिए भी चिट्ठी आई है। मैं अपनी सभा में इसको पेश करने की जरूरत नहीं समझता और न [illegible] की हैसियत से भी अपनी प्रतिनिधि सभा [illegible] में इस के विषय में कुछ कहना चाहता हूं उनको भी [illegible] दिया गया—यह आपकी सेवामें भेजता हूं—

सामाजिक समाचार

श्री मंत्री जी आर्यसमाज [illegible] लिखते हैं कि महाशय बनवारीलाल [illegible] ने [illegible] फकरुद्दीन अनाथालय के एक बालक [illegible] को अपना दत्तक पुत्र बनाया है और [illegible] (अर्थात् १०) दान दिये।

बृहन्नरोत्सव [illegible] की [illegible] मृतक संस्कार [illegible] की [illegible] से [illegible] किया गया। कोई हिन्दू रीति [illegible] नहीं की गई। [illegible] आर्य भजन मण्डली भजन [illegible] गाती जाती थी। इस समय [illegible] पुरुषों ने [illegible] गुरुकुल [illegible] पाठशाला तथा [illegible] नायकपुर सदाव्रत के लिये दान दिये।

आर्यसमाज हलद्वानी के कार्यकर्त्ताओं का निर्वाचन आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार हुआ है—प्रधान—पं० बैतराम जी, उप प्रधान—म० हरखीलाल जी, मंत्री—म० गोविन्दप्रसाद जी, उपमंत्री—म० प्यारेलाल जी, कोषाध्यक्ष—म० चिरञ्जीलाल जी, उप कोषाध्यक्ष—म० देवीदास जी, पुस्तकाध्यक्ष—म० रामगोपाल जी तथा कोठार्य पं० जगन्नाथ जी।

आर्यसमाज नजफगढ़ जिला दिल्ली का द्वितीय वार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ समाप्त हुआ। २१ दिसम्बर को नगरकीर्तन था, जिस में तीन भजन मंडलियां थीं। सहस्रों की उपस्थिति में उत्सव तीन दिन तक सफलता पूर्वक होता रहा। २१६) वेद प्रचार के लिये एकत्रित हुए जिसमें से ५०) आर्यसमाज की ओर से थे। २२ दिसम्बर को ३ बजे से ५ बजे तक का समय जैनियों के साथ शास्त्रार्थ का था, परन्तु वे नहीं आये। श्री स्वामी विज्ञानभिक्षु जी ने उन के नहीं आने पर उनके प्रश्नों के उत्तर देदिये।

श्री मंत्री जी आर्यप्रतिनिधिसभा राजस्थान व मालवा सूचना देते हैं कि उक्त सभा का २८ वां वार्षिक वृत्तान्तविवेशन, आर्यसमाज अजमेर के वार्षिकोत्सव के साथ ता० २४, २५ तथा २६ फरवरी १७ को होना निश्चय हुआ है।

आर्यसमाज फतहपुर का चतुर्थवार्षिकोत्सव बड़े समारोह के साथ समाप्त हो गया। ४ दिन ता० १४ से १७ दिसम्बर तक श्री स्वा० सर्वदानन्द जी, श्री स्वा० सत्यानन्द जी पञ्जाब निवासी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी और श्री स्वा० विज्ञानभिक्षु जी के उपदेशों की अमृत वर्षा रही। और श्रीस्वा० अनुभवानन्द जी ने बड़ी योग्यता से ईसाइयों की शंकाओं का समाधान किया। इस अवसर पर बा० ज्वालाप्रसाद जी उपप्रधान प्रतिनिधि सभा ने बड़ी उत्तमता और शान्ति के साथ प्रधान पद का कार्य सम्पादन किया। चौ०तेजसिंह जी और महाशय सुखलाल जी के भजनों का प्रभाव लोगों पर बहुत अच्छा पड़ा—इस वर्ष का उत्सव [illegible] प्रकार से सफलता के साथ निर्विघ्न समाप्त हुआ—आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार से अधिकारियों का निर्वाचन हुआ—

प्रधान—बा० श्री रामजी सहाय
उप प्रधान—बा० मथुरा प्रसाद जी
मन्त्री—बा० अम्बिका प्रसाद जी
उपमन्त्री—लु० मैकीलाल जी
कोषाध्यक्ष—बा० सम्पूर्णदयाल सिंह जी
पुस्तकाध्यक्ष—बा० कामता प्रसाद जी
आडीटर—बा० ललित किशोर जी

एक समाजने अपने २२ दिसम्बर के वृत्तान्त में १९१४-१५ की सरकारी एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट में आर्यसमाज के साहित्य पर की हुई टीका टिप्पणियों पर विरोध प्रगट किया है।

श्री मंत्री जी, आर्य्य समाज कासगंज शोक समाचार देतेहैं कि आर्य्यसमाज कासगंज के उप प्रधान श्री० म० क्षेत्रपाल जी का गत १६ दिसम्बर को प्रातः ७॥ बजे स्वर्गवास होगया। आप की मृत्यु का समाचार सुन सम्पूर्ण नगर में कोलाहल मच गया तथा सम्पूर्ण नागरिक लोग शोक से विलाप करने लगे। वास्तव में आप कासगंज के एक नररत्नों में से थे। आपका जन्म अगहन बदी १२ संवत् १९३० विक्रमी में हुआ था। बीस वर्ष के भी न होने पाये थे तभी से आर्य्य समाज की सेवा में तत्पर होगये थे। २३ वर्ष निरन्तर समाज की अनुपम सेवा की। आर्य्य समाज सकीट तथा प्रान्त की कई अन्य समाजें आपके ही उद्योग से स्थापित हुईं। स्थानीय वैदिक पाठशाला आपके ही परिश्रम का फल है। सोरों में मार्गशिरी के मेले पर धर्म प्रचार आप ने ही प्रारम्भ किया था। कहांतक कहें प्रत्येक धर्म कार्यों में तन,मन, धन से लगे रहते थे। व्याख्यान देने तथा शंका समाधान एवं साधारण शास्त्रार्थ करने में बड़े दक्ष थे। आपकी मृत्यु से यहां की आर्य्य समाज को जो धक्का पहुंचा है उसकी क्षति पूर्ण होना दुःसाध्य है। और्ध्वदैहिक संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से वेद विहित पुष्कल सामिग्री द्वारा कालिन्द्री तटपर श्री पं० ब्रह्मानन्द जी अध्यापक पाठशाला ने कराया। ता० १७ दिसम्बर को आर्यसमाज मन्दिर में शोक सभा कीगई जिस में उन के अनेक गुणानुवाद के पश्चात् निम्न लिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए।

(१) आर्य्य समाज कासगंज श्रीमान् म० क्षेत्रपाल जी उपप्रधान की असमय मृत्यु पर हार्दिक शोक प्रकट करता है तथा इस दुख में उन के कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति प्रकट करता है और ईश्वर से प्रार्थना करता है कि मृतक की आत्मा को सद्गति दे और उन के कुटुम्बियों को धैर्य प्रदान करे।

(२) इस प्रस्ताव की एक प्रतिलिपि उनके गृह पर तथा एक समाचारपत्रों में प्रकाशनार्थ भेजदी जावे॥

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ा से मुद्रित तथा प्रकाशित।

• ओ३म् •

Registered NO. A 434

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ॥

प्रवर्त्तक—[illegible]राम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति श[illegible]र को [illegible]ता है

३० पौष सं० १९७३ वि० (दयानन्दाब्द ३४) ता० १३ जनवरी सन् १९१७ ई०

संख्या ३९
भाग २८

[illegible]रक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेख-[illegible] आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। [illegible]का जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं [illegible]भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। [illegible]र फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनु-[illegible]ी की लेखनी से लिखा गया हो जि-[illegible]ने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही [illegible]पना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका [illegible]ल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म [illegible]ी रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति [illegible]वश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने [illegible] विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम [illegible]—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

[illegible]गलपुर [illegible]हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा [illegible] सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का [illegible]तृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस गुरुकुल-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) U.P.

[illegible]चारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
भारत विभिन्न देशों से ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञा[illegible] छपाई

सर्वथा बन्द कर दी [illegible] केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन [illegible] छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल [illegible] साथ बांटे जासकते हैं।

१) [illegible] बिना प्रचारक में कोई क्रो[illegible] सकता।

२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १०)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

सच्चा-स्वराज्य

[४]

सामाजिक-स्वराज्य

व्यक्ति के लिये तीन प्रकार का स्वराज्य बतलाया जा चुका है। वह स्वराज्य मनुष्य मात्र द्वारा उपादेय है और बलिदान पाने योग्य है। वह स्वराज्य तीन प्रकार का है—[१] आत्मिक स्वराज्य [२] धार्मिक स्वराज्य [३] साहित्य स्वराज्य।

व्यक्तियों के समूह का नाम समाज है। व्यक्तियों के लिये जो स्वराज्य उपादेय है, समाज के लिए भी वही स्वराज्य उपादेय है। समाज को भी आत्मिक, धार्मिक और साहित्यिक स्वराज्य की आवश्यकता है। इन तीन स्वराज्यों के होते हुए ही समाज उन्नति कर सकता है, इन की विद्यमानता में ही उस के अंग खुली तौर पर फैल और बढ़ सकते हैं। जिस समाज में तीन प्रकार का स्वराज्य नहीं रहता, चीनी स्त्रियों के पैरों की भांति वह बढ़ नहीं सकता।

वह समाज कई रूपों में प्रकाशित होता है। समाज का एक साधारण और मौलिक रूप परिवार है, परिवारों के समूह का नाम जाति है। वही जाति एक राज्य और एक देश के साथ दृढ़ सम्बन्ध होने पर राष्ट्र नाम से पुकारी जाने लगती है। परिवार, जाति और राष्ट्र ये तीनों ही अपने २ ढंग का स्वराज्य चाहते हैं। आज कल पृथिवी पर परिवारों या जातियों के नहीं—राष्ट्रों के दिन हैं। आज कल की सामाजिक इकाई राष्ट्र ही है। परिवार की इकाई उन स्थानों में या जातियों में ही पाई जाती है, जिन में सभ्यता अभी निचली अवस्था से नहीं निकली या अत्यन्त गिर कर नीचे दर्जे की हो गई है। जाति अर्थात रुधिर सम्बन्ध से बँधे हुए परिवार ही जाति नाम से कहे जाते हैं। आज भी जातियां हैं किन्तु उनका बन्धन एकता का अधिक प्रेरक नहीं। केवल आर्यजाति में होना अंग्रेज़ों और जर्मनों में युद्ध नहीं रोक सका, पीली जाति का सम्बन्ध चीन और जापान की तलवारों को म्यान में नहीं डाल सकता। जातियां अपने सम्बन्ध से एकता का साधन हो सकती हैं, किन्तु एक मात्र साधन नहीं हो सकता है। अब एक २ राष्ट्र में अनेक जातियों के लोग होते जाते हैं, और वे राष्ट्र के बन्धन में बंधकर जातीय भेदों को भूल जाते हैं।

राष्ट्र का स्वराज्य

राष्ट्र का स्वराज्य व्यक्ति के स्वराज्य के समान तीन प्रकार का तो होता है, किन्तु उसका आत्मिक स्वराज्य राष्ट्र के सम्बन्ध में और ही प्रकार का होता है। वह स्वराज्य वेद के शब्दों में मही-स्वराज्य है। राष्ट्र का मही अर्थात् पृथिवी से विशेष सम्बन्ध निश्चित है—आवश्यक है। इसलिये राष्ट्र के विचार में मही को नहीं भुलाया जा सकता। एक देश में एक राज्य के नीचे रहने वाले समाज का का नाम राष्ट्र है। राष्ट्र के लिये आवश्यक है कि वह अपनी मही—भूमि या मातृभूमि के स्वराज्य की भी रक्षा करे। वह रक्षा राज्य द्वारा हो सकती है इसलिये राष्ट्र के लिये राज्यरक्षा द्वारा मही रक्षा करना अत्यन्त आवश्यक है।

राष्ट्र का स्वराज्य इस प्रकार इन रूपों में परिणत हो जाता है—

(१) धार्मिक स्वराज्य
(२) साहित्यिक स्वराज्य
(३) मही-स्वराज्य

राष्ट्र का धार्मिक स्वराज्य

जैसे व्यक्ति की अपनी इडा धार्मिक स्तुति है—वैसे राष्ट्र की भी इडा है। राष्ट्र का भी अपना धर्म है। यह हो सकता है कि एक ही राष्ट्र में अनेक मतों पर ही विश्वास रखने वाले पुरुष विद्यमान हों, किन्तु जो राष्ट्र पक्का राष्ट्र बन जाता है, उसका धर्म प्रायः एक प्रकार का हो जाता है। एक ही धार्मिक भाव का उनमें संचार हो जाता है। उनको राष्ट्रीय विशेषतायें कहते हैं। राष्ट्र के लिये उन राष्ट्रीय धर्म के अंगों का सुरक्षित करना अत्यन्त आवश्यक है।

दृष्टान्त ... धार्मिक वि... भाव से आर्यजाति विस्तृत है। ... उदार है, उसका धर्म ... ल्टिक आदि जा... है कि अन्य से अन्दर कुछ संकुचि... संयोग से उसके फिर भी स्वाभाविक ... आ जायं; किन्तु जाती। ... ता कहीं नहीं

आर्य जातियां प्रायः ... से एके... श्वरवादिनी होती हैं। ... किसी द्रावीडियन आदि ... संसर्ग से उसमें अनेकेश्वर वादक ... हो जाय, किन्तु तो भी ... आस्तिकता जड़ मूल से नहीं ... सकती।

इन संस्कारों के कारण आर्य रा... के धर्म में भी ये दो अंग आवश्यक से ... आर्य—राष्ट्र आस्तिक, ईश्वरविश्वा... होगा, और उसके धार्मिक विचार ... होंगे। यदि कोई अन्य जाति एक आ... राष्ट्र पर आक्रमण करे और उसके ... विचारों पर प्रहार करना चाहे, तो ... प्रहारों का उत्तर देना उस राष्ट्र का ... र्तव्य होगा। अपने धर्म को मरने दे... पाप होगा।

इसी प्रकार एक ईसाई राष्ट्र ... मुसल्मानों का या एक वैदिकधर्मी रा... पर ईसाइयों का आक्रमण होता है ... हथियार बन्द सिपाहियों की सेना के ... मत के सिपाही भी चढ़ते चले आते हैं ... उस समय राष्ट्र के लिये मत के सैनि... के प्रहार रोकना उतना ही आवश्यक है ... जितना आवश्यक हथियार बन्द सिपा... हियों के आक्रमणों से अपने सिर ... बचाना है।

व्यक्तियों के धर्म बिगड़ कर फिर सुध... सकते हैं, किन्तु राष्ट्रों के धर्मों का फि... सुधरना कठिन, अत्यन्त कठिन हो जाता है। इसलिये व्यक्तियों को अपने धर्म की जितनी चिन्ता होती है, राष्ट्रों को अपने धर्म की रक्षा के लिये उससे कहीं अधिक चिन्ता करनी चाहिये।

सद्धर्म्म-प्रचारक

उन्नति का मूल मन्त्र

अभी हमारी जातीय सप्ताह की स्फूर्ति हरी है—सूखी नहीं। अभी हमारे दिमाग़ में वहीं के विचार घूम रहे हैं, और वहां के दृश्यों से परिणाम निकालने का यत्न कर रहे हैं। वहां के भिन्न २ दृश्यों से जो एक ज़बर्दस्त परिणाम हमने निकाला है, वह पाठकों की भेंट किये बिना हम नहीं रह सके।

स्वराज्य पर तथा अन्य प्रस्तावों पर बोलते हुए देश के नेताओं ने अपने राज की टेक एक ही रखी। चाहे बोलने वाले मि० बनर्जी थे और चाहे श्रीपाल, चाहे श्रीमती बेसेण्ट थी चाहे लो० तिलक सबने यही कहा कि अब शब्दों के दिन जाते रहे। केवल बोलने से अब कुछ न होगा। प्रस्ताव-काल गुज़र गया, काल की गाल में विलीन हो गया। हमें तो इसमें भीसन्देह है कि केवल प्रस्तावों से किसी समय भी कोई लाभ हो सकता था या नहीं, तो भी क्षण-भर के लिये मान लेते हैं कि अभीतक प्रस्तावों या शब्दों से कोई लाभ था। यह संयसम्भव है कि अब वह युग नहीं रहा। सारे राजनैतिक नेता, जो जाति की नैय्या के खेवैय्या कहे जा सकते हैं, ऊर्ध्वबाहु हो कर इसी सन्देश की घोषणा कर रहे हैं।

कार्य करना चाहिये। कर्मयोग ही परमधर्म होना चाहिये। किन्तु वह कार्य कैसे हो—और किस से हो। मुख्य प्रश्न यह उपस्थित होता है, कि करने वाले और कराने वाले कहां से आयें। जब तक केवल प्रस्तावों का युग था, नेता बनना बहुत सरल था। जिसका गला ऊंचा हो, जो लच्छेदार वाक्य बनाले, वह पुरुष भी सेटफ़ार्म पर खड़ा हो कर वही प्रतिष्ठा पा सकता था जो उस पुरुष को प्राप्त होती थी जो देश के लिये हाथों में ज़ंजीरें कसवा चुके हैं, हवालात में महीनों और बरसों निवास कर चुके हैं, और अत्याचारों के अत्याचार को ही अपने कर्तव्य पालन का इनाम समझ चुके हैं। जब केवल प्रस्ताव को—या कांग्रेस के वार्षिक अधिवेशन को ही राजनीति तथा समाज संशोधन का अथ और इति समझा जाता है, तब वे लोग ही आदर पाते हैं जो विदेशीभाषा में घण्टा भर बोलकर तालियां पिटवा सकें या लोगों का ध्यान अपनी ओर खेंच सकें। किन्तु जब कर्मयोग के दिन आते हैं, तब असली आदमी की परीक्षा होती है। जब सामने हथकड़ी दिखाई देती है तब गलफाड़ वक्ता का हृदय कांप जाता है। वही वाणी जो एक दिन स्वराज्य के गुण लच्छेदार शब्दों में वर्णन करती थी, निरन्तर दास्ता के गुण बखानने लगती है। तब काक और कोयल में, असली और बनावटी में भेद प्रतीत हो जाता है।

जो स्थान शब्द योग में शब्दों को मिलता है—वही स्थान कर्मयुग में आत्मिक बल को मिलता है। कर्मयोग की पहली आवश्यक शर्त आत्मिक बल है, विशेष तया भारतवर्ष जैसे देश में, जहां मनुष्य का सेवामार्ग छुरे की तेज़ धाराओं से आच्छादित है, जहां पद २ पर दुख और बंधन के यमदूत तय्यार खड़े हैं, और जहां बड़े से बड़े कर्मयोगी के भी अंगप्रत्यंग मानो निरन्तर ज़ंजीरों से जकड़े रहते हैं। एक ओर लौ, समाज के बन्धन और जाति के अंकुश सभी रुकावटें डालने वाले हैं। यहां सामाजिक जीवन के रथ का रास्ता फूलों का बना हुआ नहीं है। कोई माई का लाल ही इस सेवा स्वर्ग के रोखनरक को लांघ सकता है। जो इस यान में भी मुस्करा सकता है वही भारतवर्ष में कर्मयोगी समाज सेवक हो सकता है, दूसरा नहीं।

यह किस से सम्भव है? कौन पुरुष इन कठिनाइयों को सहन कर सकता है? मनोविज्ञान और मनुष्य शास्त्र का उत्तर है कि वही पुरुष कर्मयोग की इस परीक्षा में पास हो सकता है जो आत्मिक शक्ति से सम्पन्न है। आज दिन भारतवासी केवल आरम्भ शूर कहे जाते हैं। ज़रा-सी कठिनाई आने पर वे विचलित हो जाते हैं। इस का कारण यही है कि हमारे अन्दर आत्मिक शक्ति का अभाव है।

कर्मयुग के प्रारम्भ का तात्पर्य यही है कि अब आत्मिक शक्ति के प्राधान्य का युग प्रारम्भ होता है। भविष्य की कृतकार्यता की चाबी आत्मिक शक्ति है।

यहां तक विचार करने के पीछे मनुष्य स्वभावतः चिन्ताग्रस्त हो जाता है। यह नया मसाला—यह नया माल—भारत में अब कहां से लाया जायगा। यदि इस समय भारतवासियों में आत्मिक शक्ति का अभाव है तो क्यों? आगे से इस शक्ति को लाना होगा क्या साधन किए जा सकते हैं? जिन लोगों ने एकाग्र चित्त हो कर सूक्ष्म दृष्टि से देश की दशा पर विचारा है उन्होंने यह सम्मति बनाई है कि हमारी शिक्षा ही हमारी इस निर्बलता का कारण है। जो शिक्षा हमें दी जाती है, वह आत्मिक शक्ति की सर्वथा उपेक्षा करती है। भारत पुत्रों की शिक्षा में शरीर और मन को शिक्षित किया जाता है, वह भी उस शैली से किया जाता है कि जिस का न सिर है न पैर। कोई दिमाग़ वाला मनुष्य उस शैली के समर्थन में आवाज़ उठाने को तय्यार नहीं हो सकता। शारीरिक और मानसिक शिक्षण अधूरा किया जाता है—किन्तु आत्मिकशिक्षण की तो सर्वथा ही उपेक्षा की जाती है। शिक्षा मनुष्य बनाती है। जिसने आत्मिक शिक्षा प्राप्त ही नहीं की, उस में आत्मिक बल क्या आकाश से उतरेगा। आत्मिक शिक्षण से हीन शिक्षा से बने हुए भारतवासी यदि आत्मिक शक्ति से शून्य हैं—तो इस में आश्चर्य क्या है?

हमारी सम्मति में जहां नये युग का मुख्य विशेषण कर्म है, वहां उस का प्राधार आत्मिकशिक्षण होना चाहिये। कई सालों तक क्रान्ति के लिये यत्न करके मेज़िनीने एक ठंडा सांस लिया और कहा था कि "मेरे देशवासियों की शिक्षा अभी इस योग्य नहीं कि इटली स्वतन्त्र हो" सके यह कथन भारत के नेता आज कह रहे हैं और आगे को भी कहेंगे यदि जाति के युवक

मण्डल की शिक्षा का प्रश्न भलीप्रकार हल न किया जायगा।

शिक्षा का सुधार उन्नति का मूल मन्त्र है। उन्नति असम्भव है जब तक भारत के नवयुवकों में पर्वत की स्थिरता और समुद्र की गम्भीरता न आयगी। यदि यह आजाय, तो देश के स्वार्थ त्यागी नेता ठंडे सांस लेते हुए ही प्राणविसर्जन न करेंगे। देश के नेताओं को इस ओर विशेष ध्यान देना चाहिये।

—:o:—

गुरुकुल हमारी आशाओं का आधार है।

समय है कि सामान्यतः भारतवासी और विशेषतः आर्यपुरुष इस बात को समझलें कि गुरुकुल जातीय जीवन के किस भाग को पूरा करता है? हम यह स्थापना नहीं कर सकते कि गुरुकुल की वास्तविक आवश्यकता को कोई समझता नहीं। किन्तु इस में सन्देह नहीं कि कुछ एक गिने चुने सज्जनों को छोड़ कर गुरुकुल के अन्य हितेषी भी उसे अधूरे या विकृत रूप में देखते हैं, असली रूप में नहीं। कोई सज्जन गुरुकुल को पैसा पैदा करने की दूकान समझ कर पूछते हैं कि गुरुकुल के स्नातक बड़ी २ तनख़ायें कहां से पायेंगे, दूसरे भद्रपुरुष उसे टकसाल समझ कर उस से एक ही गोलाई एक ही आकार और एक ही चिन्हवाली उपज की आशा रखते हैं। कई लोग आक्षेप करते हैं कि गुरुकुल के स्नातक अंग्रेज़ी में कमजोर होते हैं तो दूसरों की शंका है कि वे अंग्रेज़ी और विज्ञान क्यों पढ़ लेते हैं। सारांश यह कि इतने वर्ष बूढ़ा होनेपर भी गुरुकुल लोगों के लिये अभी अज्ञेय है। पुराना होने पर भी नया है।

इस लेख में हम इस प्रकार के सब अधूरे विचारों का निरास करके गुरुकुल के संपूर्ण उद्देश्यों का वर्णन नहीं करना चाहते। यह हम फिर कभी करेंगे। इस समय हम यह दिखलाना चाहते हैं कि भारत के भावी जीवन में गुरुकुल का क्या स्थान है? भारत की भावीनि उन्नति की बनावट में गुरुकुल कौन सा भाग लेगा? यह बड़ा आवश्यक प्रश्न है। यदि गुरुकुल वस्तुतः समाज की किन्हीं आवश्यकताओं को पूर्ण करेगा, तो उस की स्थिति उचित है, अन्यथा नहीं। जो संस्था या व्यक्ति समाज के लिए विशेष हितकारी नहीं, समाज की उन्नति के किसी अंग को पूर्ण नहीं करता, वह समाज के आश्रय पर जीवित रहने का अधिकारी नहीं।

हमारी दृढ़ सम्मति है कि गुरुकुल का समाज और देश की भावी उन्नति में एक बड़ा मुख्य स्थान है। शायद उस स्थान के गौरव को हम इस समय नहीं समझ रहे। किन्तु समय आयगा जब सब देखने वालों की दृष्टियां इसी ओर मुड़ जायंगी। समाज तथा देश को एक वस्तु की भारी आवश्यकता है, जिस का आदर्श स्थापित करना गुरुकुल का कार्य है।

वह आवश्यक वस्तु यह शिक्षाप्रणाली है, जिस में सत और शरीर की यथार्थ शिक्षा के साथ २ आत्मिक शिक्षा भी दी जाती है। हम पिछले लेख में बता आए हैं कि इस समय यदि किसी वस्तु की न्यूनता है तो वह आत्मिक बल की है। आत्मिक बल आत्मिक शिक्षा के विना नहीं हो सकता और आत्मिक शिक्षा देना गुरुकुल का मुख्य लक्ष्य है। विस्तृत शब्दों में हम कह सकते हैं कि शिक्षा का सर्वांङ्ग सम्पूर्ण रूप स्थापित करना गुरुकुल का प्रधान उद्देश्य है।

आत्मिक शिक्षण देने के जो अवसर तथा साधन गुरुकुल में हैं, वे अन्यत्र होने कठिन हैं। गुरुशिष्य का सदा साथ रहना, भाई २ का परस्पर सहायक रूप से रहना, विषयों से दूर उन्नति के स्वच्छन्द अवसरों का मिलना—जैसा गुरुकुल में है, वैसा अन्यत्र नहीं हो सकता। आत्मा को निर्भय और अटँक बनाने के लिए जिन विश्वासों की आवश्यकता है, उन के उत्पन्न होने के लिए गुरुकुल की भूमि विशेषतया उपजाऊ हो सकती है। इन सब कारणों से हमें निश्चय है कि गुरुकुल को आत्मिक शिक्षा और यथार्थ शिक्षा का साधन बनाया जा सकता है। आज भी गुरुकुल इसी कार्य को कर रहा है। गुरुकुल समाज के सामने ऐसी यथार्थ शिक्षा देने का आदर्श स्थापित कर सकता है।

क्षेत्र में ऐसे कार्यकर्त्ताओं की मांग है, जो कि आत्मिक शक्ति से सम्पन्न हों। आर्य्यसमाज ऐसे सेवकों को चाहता है जो अपने विश्वासों पर दृढ़ रह कर धर्मसेवा में जीवन बिता सकें, देश को उन कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है जो त्याग और विश्वास को अपना मार्ग दर्शक तारा मान कर संसार भर की विरोधिनी शक्तियों का उपहास कर सकें। ऐसे सेवकों की उपज गुरुकुल से हो सकती है, और होनी चहिये।

इसी लिये गुरुकुल हमारी आशाओं का केन्द्र है। इसी लिये हम समझते हैं कि जो पुरुष गुरुकुल की स्थिरता के लिये जीता और मरता है वह देश के भविष्य के लिये जीता और मरता है। वे लोग धन्य हैं, जो देश की उन्नति के साधन गुरुकुल को अपने कन्धों पर उठाये हुए मनुष्य सेवा का उत्तम आदर्श स्थापित कर रहे हैं।

—:o:—

मुस्लिम लीग का अधिवेशन

कांग्रेस में जिस मेल का बीज बोया गया, मुस्लिम लीग के अधिवेशन में उसी मेल का अंकुर प्ररोह दिखाई दिया। भारत में बास करने वाली दो मुख्य जातियों के भेद भावों का नाश होते देखना मानुष नहीं दैवी दृश्य है, जिसे देखने वाले जितने सौभाग्य शाली हैं, उस से सहस्रों गुणा वे सौभाग्य शाली हैं जिन के परिश्रमों का वह फल है। मुस्लिम लीग में कांग्रेस के नेताओं का खूब स्वागत हुआ, और उन के भाषण भी हुए। परमात्मा इस मेल के उत्तम फल उत्पन्न करे।

—

एक मज़ाक

मेरठ के श्री सनातन-धर्म युक्तप्रदेश-मण्डल के महामन्त्री श्रीयुत अनन्तिहारीलाल बी० ए० एल० बी० की एक गश्ती चिट्ठी हमें भी मिली है, जिस में हिन्दू मात्र के परस्पर ऐक्य का एक मज़ेदार प्रस्ताव है—वह प्रस्ताव है या मज़ाक है, यह समझ में नहीं आया।

आप हिन्दुओं के परस्पर भेदों को शोक सहित वर्णन करते हुए कहते हैं कि ऐसा प्लेटफार्म जिस पर चारों वर्ण चारों आश्रम शैव वैष्णव और ईश्वरवादियों के साथ प्रकृतिवादी भी साथ खड़े हो सकते हैं, वह सनातनधर्म का प्लेटफार्म है। अभी तक हम समझे हुए थे कि सनातन धर्मी कहाने के लिए ईश्वर वादी होना आवश्यक है, किन्तु अब हमें ज्ञात हुआ कि यह भी आवश्यक नहीं। प्रकृतिवादी भी सनातनधर्मी हो सकता है। हमें ऐसा प्रतीत होता है कि महाशय अवधविहारीलाल ने सनातनधर्म का मखौल उड़ाने के लिए ही यह चिट्ठी लिखी है, नहीं तो ऐसी विलक्षण स्थापना सोच समझ कर करते। आप महा मण्डल के मन्त्री हैं—तब आप का कथन ठीक ही होगा। यदि ठीक है तो ज़रा यह तो बताया जाय की सनातनधर्म किस चिड़िया का नाम है? आस्तिक नास्तिक सभी इस पेट में आजाते हैं तो सनातनधर्म से बाहिरकौन है?

अपना चमड़ा कठोर बनाओ

अन्यत्र हम ज्वालापुर की एक चिट्ठी प्रकाशित करते हैं, जिस में आर्य प्रतिनिधि सभा को सलाह दी गई है कि वह पं० अखिलानन्द से प्रश्न न करती तो अच्छा होता। हमारा इस विषय में इतना ही कथन है कि आप अपने चमड़े को कठोर बनाइये। आप के सिद्धान्त सच्चे हैं या नहीं? यदि सच्चे हैं तो उन को पद दलित करने वाले पुरुष की आप उपेक्षा क्यों करते हैं? यदि कोई स्पष्ट रीति से कह दे कि मैं समाज के अमुक सिद्धान्त को नहीं मानता, और अपने आपको समाज से जुदा करदे, उस सत्य का हम आदर करते हैं, और उसके विश्वासी होने से प्रेम करते हैं। किन्तु जो पुरुष आर्य समाज के मूलसिद्धन्तों पर विश्वास न रखता हुआ भी अपने शिथिल विश्वासों के लिये ऋषि दयानन्द या वेदों के तात्पर्य को अन्यथा बतलाता है, अपनी बुद्धि को धोखा देकर दुनिया को भी धोखा देना चहाता है। और स्पष्ट रीति से अपने विश्वासों के परिवर्तनों के स्वीकार करने का साहस नहीं रखता, उसे किस प्रकार सहन किया जासकता है। हमारी सम्मति में संयुक्तप्रान्त की आर्यप्रतिनिधि सभा ने ठीक ही किया है।

गुरुकुल वृन्दावन का महोत्सव

गुरुकुल महाविद्यालय वृन्दावन का महोत्सव २४ से २७ दिसम्बर तक खूब धूमधाम से हो गया। जो समाचार हमने सुने या आर्यमित्रादि पत्रों में पढ़े हैं, उनसे ज्ञात होता है कि उत्सव को खासी कृतकार्यता प्राप्त हुई है। इतनी और सभा सोसाइटियों के अधिवेशनों में होने परभी नौ दस हज़ार के लग भग लोग एकत्र होगये थे। लगभग २५ सहस्र के धन सुनाया गया, जिस में कोई ७ हज़ार की एक भूमि का दान भी सम्मिलित है। ब्रह्मचारियों के बड़े उत्तम २ भाषण हुए जिन से उनकी योग्यता प्रकाशित होती थी। ब्रह्मचारियों ने शारीरिक व्यायाम के भी कई कौशल दिखाये जिन से ज्ञात होता था कि निरन्तर व्यायाम और उत्तम स्वास्थ्य में कितना सामर्थ्य है। बड़े २ विद्वान् सन्यासियों के व्याख्यान तथा उपदेश हुए। विद्यापरिषद् के अधिवेशनों में अच्छे विद्वत्तापूर्ण भाषण हुए। पं० जगन्नाथ निरुद्धरत्न ने लोकमान्य तिलक के वैदिक समय निरूपण का और मास्टर आत्माराम जी ने डार्विन के विकासवाद का खण्डन कर दिया। सुनते हैं ये सज्जन इन २ विषयों पर मार्के की किताबें भी लिख रहे हैं। श्री स्वामी अच्युतानन्द जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री स्वामी अनुभवानन्द जी आदि मान्य सन्यासियों के उपदेशों का श्रोताओं पर विशेष प्रभाव हुआ।

सभ्यता और घृणा

क्या सभ्यता का और जातियों के परस्पर प्रद्वेष का कोई सम्बन्ध है? होना तो नहीं चाहिये, किन्तु प्रतीत होता है कि शायद हो। प्रश्न यह है कि जिस वस्तु का घृणा से अटूट सम्बन्ध प्रतीत होता है, क्या उसे सभ्यता नाम से पुकारना चाहिए। आज देखिए क्या दशा है सभ्यता के ऊंचे शिखर पर बैठी हुई जाति या एक दूसरे के गले पर छुरा रख रही हैं। इस का कारण यही है कि सभ्यता की उन्नति का राष्ट्रों की परस्पर घृणा से कोई सम्बन्ध समझा जाता है। यह घृणा कई रूपों में प्रकाशित होती है। वस्तुतः यह घृणा का भाव से देशभक्ति के उलटे विचार से प्रारम्भ होता है। अपने देश में भक्ति का तात्पर्य दूसरे देश से द्वेष समझा जाता है। इस का कारण यह है कि एक देश दूसरे पर अत्याचार करता है—इस से अन्य सब देशों से अविश्वास हो जाता है। इस प्रकार अविश्वास और घृणा के बुरे विचार उत्पन्न होते हैं। यह घृणा का विचार व्यापारीय प्रतिद्वन्द्वता के रूप में आता है—और अशक्त जातियों को बहिष्कार का हथियार प्रयोग में लाने के लिये बाधित करता है। जिस समय व्यापार की प्रतिद्वन्द्विता हद तक पहुंच जाती है, तब भी एक वस्तु है जो प्रायः सारे संसार की सांझी समझी जाती है—यह वस्तु ज्ञान है। ज्ञान किसी जाति की अपनी वस्तु नहीं समझी जाती—यह सारे संसार की है। किन्तु इस समय युद्ध ने अन्य वस्तुओं के साथ ज्ञान की व्यापकता का भी संहार कर लिया है। अभी लन्दन में लार्ड कर्जन के सभापतित्व में मि० एड मण्ड गौस का एक व्याख्यान हुआ। उस में दोनो वक्ताओं के भाषण का सारांश यह था कि जहां पहले अंग्रेज़ लोग अपने आप को गैटे और कांट के शिष्य कहने में प्रतिष्ठा समझते थे वहां अब वे उन से घृणा करते हैं, और फ्रेंच लोगों को ही अपना साथी मानते हैं। यदि वे सब बातें सच भी हैं, जो जर्मनी के योद्धादल के विरुद्ध कही जाती हैं, तो क्या गैटे और कांट का महत्व कम हो जाता है? क्या उन की बातें कम सच हो जाती हैं? क्या ज्ञान के क्षेत्र में घृणा का भाव फैलाना यह सिद्ध नहीं करता कि दुनिया की बुद्धि इस समय अपने स्थान से हिल गई है?

अपना पोस्ट आफ़िस

पहली जनवरी से गुरुकुल का अपना पोस्ट आफ़िस खुल गया। अब प्रचारक को देर न हुआ करेगी। पोस्टल विभाग का धन्यवाद।

—०—

मृतक श्राद्ध पर एक

मनोरंजक शास्त्रार्थ

आर्यसमाज की विजय

जिला अम्बाला में खरड़ एक प्रसिद्ध नगर है परमात्मा की अपार कृपा से यहां भी कुछ मास हुए आर्यसमाजरूपि कल्प वृक्ष लग गया है। स्थानीय सनातनधर्मसभा को आग्रहपूर्वक कई पत्र भेज कर शास्त्रार्थ के लिए निमन्त्रण दिया गया परन्तु उक्त सभा ने न केवल हमारे पत्रों का सन्तोषजनक उत्तर दिया प्रत्युत हमारे एक आर्य भाई को जो पत्र लेकर सनातनधर्मसभा के वार्षिकोत्सव में उत्तर लेने गए थे स्व-मण्डप से निकाल कर अपनी निष्ठुरता वा अशीलता का परिचय दिया। अस्तु जनता के विशेष अनुरोध पर बहुत कुछ टालमटोल के पश्चात् मृतक श्राद्ध विषय पर आर्यसमाज को शंका समाधान का अवसर मिला आर्यसमाज की ओर से पंण्डित लोकनाथ जी आर्योपदेशक ने निम्न प्रश्न किये।

[१] श्राद्ध में थाली संकल्प करके जो पितरों के निमित्त ब्राह्मण देवता को दी जाती है, पण्डित जी बतलाएं कि पूर्व भोजन कौन खाता है। यदि पितर, तो ब्राह्मण ने जूठा खाया। यदि पहले ब्राह्मण देवता को भोजन खाता मानें तो पितर ने जूठा खाया, यदि आप ऐसा कहें कि दोनों परस्पर मिलकर खाते हैं तो वे भी मनु धर्म शास्त्र अध्य० २ श्लोक ५६ के विरुद्ध है।

[२] यदि किसी खरड़ के रहने वाले सेठ के ५ पुत्र ग्रेजुवेट होकर ५ भिन्न भिन्न नगरों मुम्बई, कलकत्ता, कराची, लखनऊ, रोपड़ इत्यादि नगरों में निवास करते हों और सनातन धर्मानुसार एक तिथि वा काल में अपने मृतपिता का श्राद्ध करें तो बताओ पितर कहां कहां प्रस्थान करेगा; एक समय में सब स्थानों पर नहीं पहुंच सकता क्योंकि जीवात्मा एक देशी है।

[३] पितर भोजन करने शरीर सहित आते हैं वा बिना शरीर, यदि शरीर सहित आते हैं तो शरीर इन्द्रियों से प्रत्यक्ष होने योग्य है पितर दृष्टिगोचर क्यों नहीं होते? यदि बिना शरीर आते हैं तो जीवात्मा को तो भोजन की आवश्यकता नहीं।

[४] यदि पितर जिस योनि से निकल श्राद्ध का अन्न लेने आएंगे, जीव निकलने से पीछे शरीर मृत होने के कारण उसे कव्वे कुत्ते खाजायेंगे, भोजन आदि के पश्चात् जीव अपनी देह के वहां न पाने पर किस योनि में प्रवेश करेंगे?

[५] प्राचीन काल के ब्रह्मा जैमुनी आदि ऋषियों में से यदि किसी ने श्राद्ध किया हो तो उसका नाम बतलाओ? पण्डितजी के प्रश्नों का उत्तर देने के लिए पं० लक्ष्मी नारायण जी खड़े हुए, परन्तु आप की वक्तृता से प्रत्यक्ष पता लगता था कि हमारे पितर नहीं आते प्रत्युत देवता इत्यादि आते हैं। आप का कथन था कि "श्राद्ध में हमारे मृतपिता आदि नहीं आते हैं, प्रत्युत मनु आदि देवता आते हैं। पिता का श्राद्ध करने पर वसु दादे के श्राद्ध पर रुद्र पड़दादे का श्राद्ध करने पर आदित्य नाम पितर आयंगे।"

द्वितीय वार की वक्तृता में तो आप ने मुक्त कण्ठ से बतलाया कि "आप हवन करते हो क्या तुम्हें उस के बदले में अङ्गारे मिलेंगे? आप कहेंगे पुण्य मिलेगा एवम् श्राद्ध का अन्न तो यहीं रहता है ब्राह्मण खा जाते हैं पुण्य मिला करता है। कोई समाजी मन्दिर बनाता है क्या उसे इस के प्रत्युपकार में शिक्षा मिलेगी? इसी प्रकार श्राद्ध करने से धर्म मिलेगा भोजन नहीं।"

इस के उत्तर में आर्य्य पण्डित महाशय ने पण्डित जी की ओर मुख करते हुए कथन किया कि "ब्राह्मणों को भोजन खिलाने में पुण्य तो आर्यसमाज भी मानता है विवाद तो केवल पितरों को पहुंचने पर था सो आपने स्वयं मान लिया कि पितरों को नहीं मिलता" और श्रोतागणों से कहा कि पण्डित जी श्राद्ध पुण्य के लिये मानते हैं सो इस सदुद्देश्य से तो तुम नित्य ब्राह्मणों को खिलाया करो पितरों के निमित्त कभी नहीं।"

कहिये पाठक! क्या यह उस तपस्वी महo दयानन्द के सिद्धान्त की कुछ कम विजय है?

खरड़ में इस शास्त्रार्थ का अत्यन्त उत्तम प्रभाव पड़ा। प्रत्येक जाति व धर्म के सभ्य पुरुष आर्य समाज के महत्त्व के राग गाते थे। उपस्थिति ३ सहस्र के लगभग थी, पूरे २ घण्टे तक होता रहा, मास्टर बाबूलाल आर्य्य सेवक ने सर्व शास्त्रार्थ नोट कर लिया है। उर्दू में तो शीघ्र प्रकाशित होगा ही हां यदि कोई सज्जन स्व-व्यय से आर्य्य भाषा में लोकोपकारार्थ छपवना चाहें तो उन्हीं से पत्र व्यवहार करें।

आर्य्यधर्म का सेवक
गिरिधारीलाल
मंत्री आर्य्यकुमारसभा
खरड़

—:o:—

सूचना

"नवीन—माहेश्वरी" इस विषय पर बसंत पंचमी तक हमारे पास आने वाले और श्री माहेश्वरी विद्यामहिर (पुस्तकालय) कमैटी द्वारा निर्धारित सर्वोत्तम लेख के लेखक की सेवा में एक स्वर्ण पदक भेट किया जावेगा शेष सभी लेख लेखकों के नाम सहित पुस्तकाकार छपवा कर मुफ्त वितरण किये जावेंगे तथा लेखकों की सेवा में एक प्रति पुस्तक की भेजी जावेगी। लेखकों को ध्यान रहे कि "नवीन—माहेश्वरी" शब्द केवल जातीयता का ही बोधक नहीं है माहेश्वरी समाज की सभी बातों का लेख में समावेश हो सका है।

गोविन्दप्रसाद सेकेटरी
श्री माहेश्वरी विद्यामहिर आगरा
Agracity U.P.

सूचना

भाषा सार नामक पुस्तक प्रथमा परीक्षा की पाठ्य पुस्तकों में लिखी गई है। वह खड्ग विलास प्रेस से अप्राप्य है। जो परीक्षार्थी चाहे सम्मेलन कार्यालय से मंगाले तैयार हो गई है।

ब्रजराज
बी.एस. सी. एल.एल
परीक्षा मंत्री
ब्रजराज

Digitized by eGangotri

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। =) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

स्वराज्य संगीत
(कांग्रेस में गाये गये)

स्वागत प्यारे बन्धु हमारे,
भारत माता तुम को प्यारी,
तुम भारत माता को प्यारे।
देती है प्रेमाश्रु-अर्घ्य यह,
जान तुम्हें आंखों के तारे।
धन्य धन्य उस पर तुम सबने,
अपने तन मन धन सब वारे।
अहो भाग्य राष्ट्रीय सभा में,
तुम जो प्रतिनिधि रूप पधारे।
हुये आज एकत्र देश के,
सब प्रदेश वे न्यारे न्यारे।
प्रगट करो निज भाव प्रेम से,
हरो देश के संकट सारे।
खोलेगा केवल स्वराज्य ही,
उन्नति के सब मार्ग तुम्हारे।

—o—

जय भारत जिस की कीर्ति सुरों ने गाई।
हम हैं भारत सन्तान करोड़ों भाई।
हां गूंज उठे आकाश अनिल के द्वारा।
अगणित कंठों से बहे एक स्वर धारा।
कह दो पुकार कर सुने चराचर सारा।
अब तक भी है अस्तित्व अखंड हमारा।
अब तक भी है कुल कीर्ति हमारी छाई।
हम हैं भारत सन्तान करोड़ों भाई।
बस इसी दिशा से प्रथम प्रकाश हुआ था।
शुभ साम गान से मोह विनाश हुआ था।
एथ्वी तल का पशु भाव हताश हुआ था।
मानव कुल में मनुजत्व विकाश हुआ था।
हम से जीवन की ज्योति जगत ने पाई।
हम हैं भारत सन्तान करोड़ों भाई।
सब बातों में हम रहे सदा आगे हैं।
विघ्नों के डर से कभी नहीं भागे हैं।
सदियों तक सोये किन्तु पुनः जागे हैं।
अब भी हम ने निज भाव नहीं त्यागे हैं।
फिर वारो है संसार! हमारी बारी।
हम हैं भारत सन्तान करोड़ों भाई।

———

कवि विनोद का दूसरा पैरा
चेतनपुर की चेंनिया चमारी के खुले उद्गार।
(कवित्त)

(१)

हाय! हिन्दुओं की दुर दुर छुआ छूत ने ही;
देश य समाज छिन्न भिन्न कर डालेरी!
हाय! इनकी ही अनुदारता-महान्धता से;
अपने बिराने हुए आज चोटी वाले री।
आये दिन इनमें से कम होते जारहे हैं;
बिछुड़ों को एक करने में शिर हाले री!
भारत की हाय! जाति गड्ढा में न शक्ति रही;
चेंनिया चमारी के भी पड़े उर लाले री॥

(२)

चेंनिया चमारी कहे मैं भी निज नाम पर;
प्यारे ईसुओं पै जाय छाप लगाऊंगी।
देश, धर्म्म, कुल के विचार सब छोड़ दूंगी;
देखता मनाऊंगी न, ईसु को मनाऊंगी।
हाय! दुर दुर छुआ छूत जो बढ़ा रहे हैं;
उनकी समझ पर थूक थूकवाऊंगी।
मैं तो बन जाऊंगी मिसेज मान्य चेना जी की;
आरज समाज को भी शर्म्म दिलवाऊंगी॥

(लेखिका, चेतनपुर की चेंनिया चमारी)

———

आर्य्यसमाज के प्रति
(सोरठा)

(१)

प्यारे आर्य्य समाज, है अभीष्ट ही क्या तुझे।
पाया जाता आज, तुझमें हिन्दूपन निरा॥

(२)

तेरा धर्म्म प्रचार, रहा नामका ही अरे।
भारी तार कुतार; तेरा तुझसे हो रहा॥

कवि विनोद का दूसरा पैरा समाप्त—कर्ता

———

"शिवरात्रि"

१६ पौष १९७३ के अंक पृष्ट ११ में महाशय रामप्रसाद जी उप मन्त्री आर्यसमाज देहरादून ने आर्य जनता को एक नोट शिवरात्रि पर देकर यह बतलाया है कि गुजरात काठयावाड़ादि में जहां श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज का जन्म हुआ था और जहां शिवरात्रि को उनको मनुष्य मात्र के कल्याण के लिए ज्ञान

प्राप्त हुआ था शिवरात्रि माघ कृष्णपक्ष १४ को मनाई जाती है और हमारे देश में (पौराणिक) शिवरात्रि फाल्गुन कृष्णपक्ष १३ को होती है। महाशय रामप्रसाद जी ने स्वामी जी की किसी जीवनी का प्रमाण अथवा केवल नाम ही स्पष्ट तौर पर नहीं दिया है जिससे सत्यता मालूम की जाए। अतः दो ही बातें होसकती हैं। एक तो यह कि जीवनी में यह लिखा हो कि स्वामी जी को ज्ञान माघ कृष्णा १४ को हुआ था और इस लिए तो ज़रूरी है कि फाल्गुन कृष्ण १३ के स्थान में माघ कृष्ण १४ को ऋषिबोधोत्सव मनाया करें; या दूसरा यह होसकता है कि ज्ञान माघ कृष्ण १४ को हुआ था और वह शिवरात्रि थी तो इस के लिए देखना यह ज़रूरी है कि देश के इस भाग में शिवरात्रि माघ कृष्ण १४ को होती है अथवा अन्यथा। मैंने इसकी पुष्टी के लिए पञ्चांग जो खेमराज श्रीकृष्णदास जी बंबई वाले ने 'श्रीवेंकटेश्वर' स्टीम प्रेस में छाप कर प्रकाशित करते हैं, देखे और एक नहीं परन्तु बहुत वर्षों की पत्री देखी, जिन में साफ तौर पर शिवरात्रि फाल्गुन कृष्णा १३ या १४ में लिखी है और कहीं भी माघ कृष्णा १४ नहीं है। यह हो सकता है कि पं० गिरधारी लाल या पं० देवीदयालु जी पञ्चांग में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण १३ लिखदें क्योंकि पञ्जाब में इन तिथियों में शिवरात्रि मनाई जाती है और इसी प्रकार खेमराज श्रीकृष्णदास जी भी अपने पञ्चांग में जो बंबई प्रान्त में छपी है माघ १४ लिख देते यदि शिवरात्रि वहां माघ कृष्णा १४ को होती। परन्तु मैं देखता हूं कि पत्रों में भी एक ही तिथि यानी फाल्गुन कृष्ण १३ लिखी हुई है। यदि बंबई और पंजाब अथवा यू० पी० में इतना भेद होता जितना कि पंजाब अथवा यू० पी० और अमरीका या अन्य विदेशों का है तो पृथिवी और सूर्य आदि के सम्बन्ध द्वारा यह माना जासकता था कि एक महीने का फ़रक पड़ जावे परन्तु यहां तो अधिक से अधिक एक दिन का भेद हो सकता है। वह भी इस तरह। फ़रज कीजिए कि यहां तिथि ६ है तो उस वक्त बंबई में ५ या ७ तिथि होगी परन्तु इस से अधिक फ़रक नहीं होसकता है। इस से यह तो स्पष्ट है कि सर्व भारतवर्ष में एक ही तिथि यानि फाल्गुन कृष्णपक्ष १३ या १४ को शिवरात्रि होती है। इस लिए शिवरात्रि को ही बोधोत्सव अवश्य होना चाहिए। अब विचारनीय विषय यह रहगया है कि श्री स्वामी जी की वह जीवनी जिसके आधार पर रा० रामप्रसाद जी ने नोट लिखा है देखी जावे कि आया बोध श्री स्वामी जी को माघ कृष्ण १४ को हुआ है या फाल्गुन कृष्ण १३ को। यदि माघ कृष्ण १४ को ज्ञान हुआ है तो हमें शिवरात्रि को बोधोत्सव न मनाना चाहिए बल्कि एक महीने पहिले, अर्थात् माघ कृष्णा १४ को; और इस दिवस का नाम भी अस्तु 'ऋषिबोध' नियत कर दिया जावे और गवर्नमेन्ट आलिया से निवेदन किया जावे कि जिस तरह और त्यौहारों को पब्लिक होलीडे [Public Holiday] होती है इस तरह माघ कृष्णपक्ष १४ को "ऋषिबोध" नामी होलीडे हुआ करे और पूर्ण आशा है कि सरकार अवश्यमेव अपनी अपारदया और कृपा से हम आर्यों की इस प्रार्थना को स्वीकार करेगी। बाकी रहा यह कि यदि माघ कृष्णा १४ को बोध हुआ तो जीवनी में शिवरात्रि क्यों लिखी गई। और यह साधारण बात है कि एक वार किसी के मुख से निकल गया और उस समय विचार न हुआ होगा और अब वही प्रचलित होगया। या माघ कृष्ण १४ को उस प्रान्त में शिवरात्रि होती होगी जिस दिन स्वामी जी को बोध हुआ होगा और फाल्गुन कृष्णपक्ष १३ को जब यहां शिवरात्रि जिसको केवल शिवरात्रि या महाशिवरात्रि भी कहदेते हैं वहां महाशिवरात्रि होती होगी और पत्रों में सबने महाशिवरात्रि का ज़िक्र किया हो। परन्तु इस प्रान्त में तो सर्व वर्ष में एक ही शिवरात्रि अथवा महाशिवरात्रि होती है। सम्भव है कि उस प्रान्त में प्रति मास शिवरात्रि होती हो और वर्ष में एक बार महाशिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण १३ को होती है।

यदि अब भी संशय रहगया हो तो कृपा करके सूचनादें कि किस जीवनी में ऐसा लिखा है ताकि अधिक विचारा जावे।

भवदीय

उजागरलाल शास्त्रिशर्मा

बी० ए० क्लास गारडन कालिज

रावलपिण्डी

—०—

निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ।

सं० १९७४ की परीक्षा की सूचना।

परीक्षा का समय

निखिलभारतवर्षीय आयुर्वेद विद्यापीठ की आयुर्वेदाचार्य, आयुर्वेदविशारद और वैद्यपरीक्षाएं आगामी चैत्रशुक्ल १, २, ३, और ४ संवत् १९७४ वैक्रमीय अर्थात् शनिवार, रविवार, सोमवार और मंगलवार तारीख २४, २५, २६, और २७ मार्च सन् १९१७ ईस्वी को होंगी।

परीक्षा क्रम

पहले दिन १० बजे से १ बजे तक स्वास्थ्यविज्ञान और फिर २ बजे से ५ बजे तक निदान में, दूसरे दिन १० बजे से १ बजे तक शरीरविज्ञान और फिर २ बजे से ५ बजे तक निघण्टु में, तीसरे दिन १० बजे से १ बजे तक चिकित्सा और २ बजे से ५ बजे तक रसविद्या विषय की परीक्षा होगी। किन्तु वैद्य परीक्षा वालों को तीसरे दिन दूसरे समय परीक्षा नहीं देनी होगी। उनको चिकित्सा और रसायन का प्रश्न पत्र एक साथ ही मिलेगा। चौथे दिन मौखिक परीक्षा होगी।

परीक्षा के केन्द्र।

इस वर्ष आयुर्वेदविशारद और वैद्यपरीक्षा प्रयाग, लखनऊ, कानपुर, हरिद्वार, दिल्ली, लाहौर, अजमेर, अहमदाबाद, बम्बई, पूना, मद्रास, अमरावती, जबलपुर, गोरखपुर, बांकीपुर और कलकत्ते में होगी। इनमें से आयुर्वेदाचार्य

परीक्षा प्रयाग, दिल्ली, बम्बई पूना, मद्रास और कलकत्ते के केन्द्रों में ही होगी।

मौखिक परीक्षा।

आयुर्वेद विद्यापीठ की परीक्षाएँ जैसे सब विषयों में सभी केन्द्रों में एक समान होती हैं उसी तरह मौखिक परीक्षा भी सभी केन्द्रों में एक सिद्धान्त के अनुसार हो, इस लिये इस वर्ष मौखिक परीक्षा निम्न सिद्धान्त के अनुसार होगी:—

१ भेषजपरिचय-[१] हरीवनौषधि—नगर के आस पास मिलने वाली कुछ हरी ताजी औषधि लाकर रखें। उनमें से वैद्य परीक्षा के परीक्षार्थियों से दो दो, आयुर्वेदविशारद के परीक्षार्थियों से तीन तीन और आयुर्वेदाचार्य के परीक्षार्थियों से चार चार औषधि पूछी जायं। [२] सूखी औषधियां पसारियों के यहां मिलने वाली कुछ सूखी औषधि लाकर ऊपर के क्रम से वैद्यवालों से दो दो—विशारद वालों से तीन तीन और आचार्य वालों से चार चार औषधि पहचानवायी जायं [३] विषोपविष—इसी तरह कुछ विषोपविष औषधियां लाकर ऊपर के क्रम से पहचानवायी जायं। इस परीक्षा में सब मिलाकर ४० नम्बर रखे जायं।

२ रोगीपरीक्षा—प्रत्येकपरीक्षा के लिये दो दो रोगी चुन लिये जायं। किन्तु स्मरण रहे कि वैद्यपरीक्षा के लिये जो रोगी लिये जायं वे जटिल रोगी न हों। आयुर्वेदविशारद के लिये जो रोगी रखे जायं उनमें एक साधारण रोगी और एक कुछ जटिल रोगी हो। आयुर्वेदाचार्य-परीक्षा के लिये दोनों रोगी ऐसे हों जिन के रोग पहिचानने में बुद्धि और तर्कणा की काम पड़े। जिन वैद्यों पर मौखिक परीक्षा लेने का भार सौंपा गया हो वे लोग पहले सब रोगियों की परीक्षा कर उनका रोग निश्चय करलें फिर प्रत्येक परीक्षा के लिये दो दो रोगी चुनकर अलग अलग बैठा दिये जायं। प्रत्येक परीक्षार्थियों से बारी बारी से उनकी परीक्षा करने के लिये कह दिया जाय। परीक्षार्थियों से रोग का निदान पूछने के अतिरिक्त उन रोगियों के लिये शास्त्रोक्त और अनुभूत चिकित्सा पूछी जाय और पथ्यापथ्य के सम्बन्ध में भी प्रश्न किये जायं। प्रत्येक रोगी के लिये बीस बीस के हिसाब से इस परीक्षा में भी ४० नम्बर रखे जायं।

३ शरीर विज्ञान-अस्थिपञ्जर और शारीर मूर्ति द्वारा अथवा इन के न मिलने पर चित्रों द्वारा, चित्रों के भी न होने पर प्रश्नों द्वारा शरीर की अस्थि और आशयों की पहचान करायी जाय और शरीर के अंगप्रत्यङ्गों और आशयों की कार्य पद्धति पर प्रश्न किये जायं इस परीक्षा में कुल बीस नम्बर होंगे।

परीक्षापद्धति—ऊपर की तीनों परीक्षाओं में सब मिला कर सौ नम्बर हुए। परीक्षा लेने वालों को उचित है कि प्रत्येक परीक्षा के लिये ऊपर के क्रम से औषधि, रोगी और शरीर सम्बन्धी विषय अलग अलग निश्चित करलें जिस से प्रत्येक परीक्षार्थी से एक ही प्रकार के प्रश्न हो सकें। परीक्षा के समय ऐसा प्रबन्ध करना आवश्यक होगा कि सभी परीक्षार्थी पहले एक स्थान पर बैठा दिए जायं, जहां से वे परीक्षा स्थान की बातें न सुन सकें और न कार्यवाही देख सकें। फिर क्रम, क्रम से परीक्षार्थी बुलाये जायं और जिन से प्रश्न हो चुकें वे दूसरे अलग कमरे में बैठाये जायं। इसी प्रकार ऊपर की तीनों प्रकार की परीक्षा ली जायं भेषजपरिचय, और शरीर प्रश्नों के लिए परीक्षार्थी को पांच पांच मिनट का अवसर दिया जाय और रोगी परिचय के लिए १० मिनट का समय रहे। इसी क्रम से पहले भेषजपरिचय, फिर रोगी परीक्षा और फिर शरीर सम्बन्धी प्रश्न पूछे जावें।

विशेष आवश्यक सूचना

इस वर्ष को सन् १९७४ वैक्रमीय की परीक्षा नए पाठ्यक्रम के अनुसार होनी चाहिए थी; परन्तु कारण विशेष से इस वर्ष की भी परीक्षा पुराने ही पाठ्यक्रम के अनुसार होगी। महाराष्ट्र और गुजरात प्रान्त में विक्रम संवत् कार्तिक शुक्ल से बदला हुआ माना जाता है। इस लिए उत्तर भारत में जब चैत्र शुक्ल से १९७४ संवत् लगेगा, तब दक्षिण भारत में संवत् १९७३ ही वर्तमान समझा जायगा। इस भ्रम के कारण दक्षिण के परीक्षार्थी यहां समझ रहे थे कि ईस्वी सन् के १९१८ वें साल से नये पाठ्यक्रम के अनुसार परीक्षाएं होंगी। इस भ्रम के कारण किसी की हानि न हो, इस लिए इस वर्ष की परीक्षाएं पुराने ही ढंग से होंगी।

इसी प्रकार जिन परीक्षार्थियों ने गत परीक्षा में पुरानी नियमावली के अनुसार अपनी उत्तर पुस्तकें हिन्दी में लिखी थीं और उन में से जो सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो सके हैं, वे इस वर्ष भी अपने शेष विषयों की परीक्षा हिन्दी के द्वारा दे सकेंगे। आयुर्वेदविशारद के नये परीक्षार्थियों को अपनी उत्तर पुस्तकें संस्कृत में ही लिखनी चाहिए। गत परीक्षा में जो परीक्षार्थी सभी विषयों में उत्तीर्ण नहीं हो सके, उन्हें इस वर्ष केवल उन्हीं विषयों में परीक्षा देनी पड़ेगी जिन में वे अनुत्तीर्ण हैं। परीक्षा शुल्क—वैद्य परीक्षा का २) विशारद का ३) और आचार्य का ५) है। विशेष बातें पत्र द्वारा पूछी जा सकती हैं।

जगन्नाथ प्रसाद शुक्ल वैद्य।
मंत्री आयुर्वेद विद्यापीठ
दारागंज-प्रयाग।

पं० अखिलानन्द के नाम

शास्त्रार्थ निमित्त उद्घोषणा

आर्यजनता को विदित है कि पं० अखिलानन्द ने वैदिकवर्णव्यवस्था नामक पुस्तक में आर्यसमाज और सर्वसाधारण को प्रतारणा देने के अभिप्राय से स्वामी दयानन्द जी की पुस्तकों से अधूरे आकांक्षांश उद्धृत किए हैं। परन्तु आर्यसमाज इन के धोखे में न आया। और इन का पूर्ण रूपेण विरोध किया। मैंने भी इन की पुस्तकों का खण्डन समाचार पत्रों द्वारा प्रकाशित कराया। जिस का उत्तर

इन से आज तक नहीं बन आया। आर्य्य-जनता ने भी बौछाड़ डालना आरम्भ किया तो आप भयभीत हुए कि इस अवस्था में तो आर्य्यसमाज में दाल न गलेगी और नहीं आर्य्यसमाजों में विशेष कर आर्यसमाज लाहौर के वार्षिकोत्सव पर मेरा व्याख्यान हो सकेगा तो उसका प्रतिकार करने के लिए आप ने एक पश्चाताप छपवाया। जिसमें उन्होंने लिखा कि मैंने अपनी पुस्तक में पूर्वाचार्यों का ही मत दिखाया है। मेरा निजी सिद्धान्त तो वही है जो स्वामी दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के ४ थे समुल्लास में लिखा है और कि मैं इसी जन्म में ही वर्ण परिवर्तन और पतितों की शुद्धि भी मानता हूं। परन्तु लाहौर में जब इन के साथ मेरा शास्त्रार्थ हुआ तो इन की पोल खुलगई और सर्वसाधारण को विदित हो गया कि इन का पश्चाताप केवल मरीचिमाया ही था। वास्तव में अखिलानन्द आ० स० से बहुत दूर जा पड़े हैं। शास्त्रार्थ का परिणाम यह हुआ कि जहां लाहौर में इनका व्याख्यान न होने पाया वहां आर्यसामाजिक पत्रों ने भी इनके ढोल की पोल प्रकट कर दी। पं० अखिलानन्द अब निराश होकर अपने वास्तविक रूप में आ गये हैं। भारतमित्रादि समाचार पत्रों द्वारा आ० स० के कई एक मुख्यों को ललकार रहे हैं। आ० स० के मुख्यों को अखिलानन्द का ललकारना "छोटा मुंह बड़ी बात" है। अनधिकार चर्चा है। मैं आर्य्य समाज का सेवक चिरकाल से अखिलानन्द जी की चालाकियां जनता पर प्रकट कर रहा हूं और उनके साथ शास्त्रार्थ करने को उद्यत हूं। पं० अखिलानन्द को यदि स्वपाण्डित्य का अभिमान है और यदि अपनी युक्तियों का कुछ गर्व है तो मेरे साथ शास्त्रार्थ करलें। और शकुनशास्त्र, जन्मानुसार वर्णव्यवस्था प्रभृति जिन अवैदिक सिद्धान्तों को अपने पुस्तकान्त में मन्तव्यत्वेन प्रकाशित किया है, का मण्डन करें।

वैदिक-धर्म का सेवक
विज्ञानभिक्षु

एक सलाह

माननीय सम्पादक महोदय जी—नमस्ते, कृपया निम्नलिखित पंक्तियों को अपने प्रतिष्ठित पत्र में स्थान देकर अनुग्रहीत कीजिये—

सम्प्रति पण्डित अखिलानन्द जी के वर्णव्यवस्था संबंधी प्रश्न पर यू० पी० प्रतिनिधि सभा ने जो घोषणा पत्र निकाला है उस के विषय में मेरी प्रार्थना प्रतिनिधि महासभा से यह है कि ऐसे गुरुतर प्रश्न का उत्तर मांगना और देना दोनों ही समाज के अनिष्ट का प्रधान हेतु है। ऐसे प्रश्न इस समय समाजों से उठना ही नहीं चाहिये। समाज का जीवन अभी कोमल वयस्क है ये प्रश्न प्रौढावस्था के हैं इन का निर्णय भविष्य स्वयं कर लेगा। अतः उभय पक्ष से मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि आप लोग अपने२ प्रश्नोत्तरों को पीछे लेने की कृपा करें जिसमें अशांति का दमन हो जावे। आशा है इस प्रार्थना पर ध्यान दिया जायगा—

आपका शुभाकांक्षी
नाथूलाल रिटायरड़ जज
कृष्णगढ़ राजपूताना
(वर्त्तमान पता—ज्वालापुर महाविद्यालय)

गुरुकुल में पोस्टआफ़िस

श्रीमान् महाशय जी, नमस्ते!

अपने अमूल्य पत्र में ये समाचार प्रकाशित करने की कृपा करें कि पोस्ट मास्टर जनरल संयुक्त प्रान्त की कृपा से गुरुकुल कांगड़ी में ही सरकारी डाकखाना खुल गया है। अब सब पत्र व्यवहार इस पते से होना चाहिए।

मुंशीराम
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
डाकखाना गुरुकुल कांगड़ी
ज़िला बिजनौर

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ शिक्षाएं नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए। शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्य्यालय गुरुकुल कांगड़ी
पो० गुरुकुल-कांगड़ी जि० बिजनौर

आवश्यकता

गुरुकुल यन्त्रालय में एक संशोधक की आवश्यकता है जो आर्य-भाषा और संस्कृत का भली प्रकार संशोधन कर सके। वेतन योग्यतानुसार मिलेगी। सब प्रार्थना-पत्र निम्नलिखित पते से आने चाहिएं।

प्रार्थना पत्रों में यह भी लिखा हो कि न्यून से न्यून कितनी वेतन प्रार्थी महाशय को आवश्यक होगा।

मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल-कांगड़ी
पोस्ट गुरुकुल कांगड़ी
ज़ि० बिजनौर

—०—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्य्यसमाज जबलपुर और उसकी दुःख कथा

भूमिका

आर्य्यसमाज जबलपुर मध्य प्रदेश, सन् १९१५ ई० से, जब से मुसलमान भाइयों के साथ शास्त्रार्थ हुआ, एक कठिन परीक्षा में पड़ा हुआ है। शास्त्रार्थ में विजय-लक्ष्मी क्या प्राप्त हुई मानो दुःख समूह के बादल चारों ओर से घिर आए। आर्य-समाज के पास एक छोटा सा मन्दिर है, जिसमें अधिक से अधिक प्रायः १०० मनुष्य बैठ सकते हैं, अतः यह अड़चन उपस्थित हुई कि यदि समाज प्रचार कराना चाहे तो कहां करावे। हमारे हिन्दू भाई कुछ मुसलमान भाइयों के कारण अथवा किन्हीं और कारणों से स्थान देना नहीं चाहते थे। म्युनसिपल कमेटी ने टौन हाल देने से इनकार कर दिया था, ज़िला के प्रधानाध्यक्ष ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि यदि प्रचार कराना चाहते हो तो जिस प्रकार मुसलमानों के पास अपनी मसजिदें और हिन्दुओं के पास अपने मन्दिर हैं तुम लोग भी अपना एक वृहत् मन्दिर बनवालो।

नवीन मंदिर का प्रारम्भ

यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि नवीन मन्दिर किस प्रकार बनाया जावे। यद्यपि ३० अथवा ३५ वर्ष से इस प्रदेश में नाम मात्र को वैदिक-धर्म का प्रचार हो रहा है, परन्तु प्रेम और दान के अभाव तथा पारस्परिक ईर्षा द्वेष और स्वार्थी पुरुषों की स्वार्थपरता से समस्त शक्तियां शिथिल हो रही हैं, तथापि समाज ने निश्चय कर लिया कि १००००) रु० के व्यय से एक वृहत् नवीन समाज-मन्दिर निर्माण किया जावे जो जबलपुर ऐसे बड़े नगर के लिए सब प्रकार योग्य हो। प्रस्ताव निश्चित होगया—परन्तु द्रव्य एकत्रित होने का द्वार कुछेक व्यक्तियों के चन्दे के अतिरिक्त और कोई खुल न था। न कोई उपदेशक ही था जो प्रचार द्वारा द्रव्य एकत्रित करता।

नवीन मंदिर के हेतु स्थान

ठीक इस निराशा के समय परमपिता परमात्मा की अपार कृपा से जबलपुर आर्य्यसमाज के एक सदस्य श्रीयुत महाशय जवाहरलाल आर्य्य के हृदय में दया आई और उन्होंने अपने सब मकानों को जिनका मूल्य प्रायः ३०००) होगा समाज को अर्पण कर दिया और श्रीमती आ० प्र० स० के नाम नियम पूर्वक रजिस्ट्री करादी।

नवीन मंदिर की आधार शिला

विचार हुआ कि नवीन मन्दिर की आधार-शिला सन् १९१६ के वार्षिकोत्सव पर श्रीमान् परम पूज्य श्री १०८ स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती के पवित्र कर कमल द्वारा रक्खी जावे, इस हेतु नीव की भराई का कार्य आवश्यक समझा गया, अतः नक्शे बनवाए और म्युनिसिपल कमेटी को भेजे गए, और प्रार्थना की गई कि यदि वार्षिकोत्सव से कुछ दिन पूर्व आज्ञा मिल जावे तो आर्यसमाज का कार्य भली भांति सफल हो जावे। आर्यसमाज के प्रधान श्रीयुत ला० दीनानाथ जी चड्ढा जो सहायक हेल्थ आफिसर हैं कमेटी के अफ़सरों से मिले और उनसे आज्ञा के हेतु प्रार्थना की। आज्ञा मिल गई नीव का कार्य्य प्रारम्भ हो गया। ८००) व्यय हुआ उत्सव निर्विघ्न समाप्त हुआ और आधार शिला रखदी गई।

आर्य समाज आपत्ति में

उत्सव होने को तो समाप्त हो गया परन्तु द्वेषी पुरुष अपने कार्य में लगे हुए थे। नगर के मुसलमानऔर कुछ ना समझ हिन्दू—हर्ष है कि इनकी संख्या बहुत ही कम है—आर्यसमाज को नीचा दिखाने के लिए, प्रत्येक उचित और अनुचित उपायों से प्रयत्न में लगे हुए थे। गवर्नमेण्ट को भड़काया गया कि आर्यसमाज एक पोलिटिकल बाड़ा है। ऐसे २ विचार साधारणतः फैलाए गए कि गवर्नमेण्ट समाज को सन्देह की दृष्टि से देखती है इत्यादि २।

जहां पर मन्दिर बन रहा है उसके पीछे एक बंगाली महाशय का मकान है। बंगाली महाशय साधारण जनता और दर्बार में एक प्रतिष्ठित पुरुष समझे जाते हैं। आपका विचार था कि यह सब स्थान जिस में अब समाज मन्दिर बन रहा है लेकर स्वयम् अपने लिये एक बड़ा मकान बनावेंगे। अपनी आशा लता पर ओस पड़ते देख कर उन्होंने हिन्दू मुसलमान दोनों को भड़काया। मुसलमानों की ओर से अर्ज़ी दी गई कि समाज का मन्दिर मसजिद के निकट बन रहा है (यद्यपि मसजिद बहुत दूर है) सदैव झगड़ा होने का भय रहेगा, अतएव मन्दिर यहां नहीं बनना चाहिए। हिन्दुओं की ओर से दो अर्ज़ियां दिलवाई गईं। एक यह कि एक महादेव की मूर्ति जहां पर मन्दिर बन रहा है, उसको समाज के प्रधान महाशय ने कहीं उठवाकर फिकवादी हैं, न्याय किया जावे (महादेव की मूर्ति उस स्थान पर थी जिसको समाज ने अपना अहाता बड़ा करने के विचार से मोललिया था और विक्रय कर्ता महाशय यह कह कर कि समाज के हाथ केवल भूमि बेची है मूर्ति नहीं, उठाकर अपने घर ले गये थे)। दूसरी यह कि जहां पर मन्दिर बन रहा है वहां पर आम रास्ता है और पड़ोसियों को इसके बन्द होजाने से बड़ी असुविधा होगी। दूसरी ओर म्युनिसिपल कमेटी को भड़काया गया कि आर्यसमाज ने encroachment किया है। समस्त अफ़सरों को लाला दीनानाथ प्रधान के विरुद्ध भड़काया गया कि उक्त लाला जी ने कमेटी को धोका देकर मंदिर बनाने की आज्ञा लेली है। दूसरी ओर यह विख्यात किया गया कि लाला जी पर धोका देने का अभियोग चलाया गया है वे दो एक दिन में पकड़े जावेंगे। आर्यसमाज को म्युनिसिपल कमेटी ने नोटिस दिया कि मन्दिर के निर्माण कार्य बन्द करदो क्योंकि आर्य समाजने धोका देकर मन्दिर निर्माण की आज्ञा प्राप्त की है। समाज ने इस विचार से कि शान्ति से कार्य करना चाहिए, निर्माण कार्य बन्द कर दिया और शान्ति के साथ परिणाम की प्रतीक्षा करने लगा। लाला दीनानाथ चड्ढा को Departmental enquiry कर के जबरदस्ती अपराधी ठहराया, परन्तु यह मामिला बहुत दिनों तक ज्योंका त्यों पड़ा रहा-अन्त को समाज ने विवश होकर नोटिस दिया कि म्युनिसिपल कमेटी क्या आज्ञा देती है। उत्तर मिला कि मन्दिर को जहां पर encroachment किया है गिरादो अन्यथा कमेटी स्वयम् गिरा देवेगी। समाज ने द्वितीय बार जांच करने और समाज के समस्त कागज़ों को देख कर आज्ञा देने के हेतु पुनः कमेटी को पत्र लिखा परन्तु फल कुछ भी न हुआ। अब समाज विवश थी अतएव कमेटी को १००००) रु० हर्ज़ाने का नोटिस दिया। इस नोटिस का कमेटी पर कुछ प्रभाव न पड़ा वरन् कमेटी की ओर से

आज्ञा पत्र निकला कि यदि ३० नवम्बर तक न्यायालय की ओर से यथा नियम रोकने का नोटिस कमेटी के पास न पहुंचेगा तो कमेटी encroachment किए हुए स्थलों को अवश्यमेव गिरवा देगी। अब समाज के लिए केवल दो ही द्वार थे या तो नालिश करे या मन्दिर गिरवा दे।

गवर्नमेण्ट के पास फ़रयाद

इस हेतु कि आर्य्य-समाज न्यायालय में जाना नहीं चाहता था नोटिस इत्यादि देने के पहले एक Deputation साहब डिपुटी कमिश्नर बहादुर मिस्टर ट्रेंच की सेवा में भेजा गया। उक्त साहब बहादुर ने मामिला सुना और स्थान का भी निरीक्षण किया-समाज को ढाढ़स बन्धाया और कहा कि समाज के साथ न्याय किया जावेगा और प्रधान कमेटी को आज्ञा दी कि वे सारा (केस) उन के पास भेजे परन्तु इस कारण कि साहब बहादुर केवल तीन मास के लिए यहां आये थे प्रधान महाशय ने वह Case उन के पास नहीं भेजा और वह ज्यों का त्यों पड़ा रहा। ट्रेंच साहब के पश्चात् फिर Deputation जिस में श्रीमती आ०प्र०स० के मंत्री महाशय पं० चन्द्र गोपाल मिश्र बी० ए०एल०एल०बी० भी सम्मिलित थे कमिश्नर साहब के पास गया परन्तु कमिश्नर [illegible] की ओर से कोई संन्तोष प्रद उत्तर नहीं मिला (विदित हो कि प्रथम Depu- [illegible] स० के प्रधान [illegible] ने देखा कि न्यायालय में जाने के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है अतः विवश होकर न्यायालय की शरण लेनी पड़ी।

न्यायालय में आर्य्य समाज की फ़रयाद

या तो आर्य्य समाज का मन्दिर तोड़ा जावे या ३० नवम्बर तक नालिश हो, यह दो alternative समाज के पास शेष थे। क्या आर्य समाज इस बात को स्वीकार करता कि उस के बिना किसी अपराध के वह मन्दिर जिस पर उस की गाढ़ी कमाई का रुपया लगाया गया था तोड़ा जावे? समाज के पास उपरोक्त स्थान को अपना सिद्ध करने के हेतु पूर्ण साधन उपस्थित हैं अतः समाज ने न्यायालय में जाना उचित समझा यद्यपि वहां भी सफलता प्राप्त होना परमात्मा ही के आधीन है, परन्तु अपना कर्तव्य समझ कर ३०००) रु० के हर्ज़ाने का दावा म्युनिसिपालिटी पर किया गया है और नियम पूर्वक नोटिस न्यायालय से भिजवाया गया है कि मुकद्दमे के निर्णय होने तक कमेटी मन्दिर न गिरावे। पहिली पेशी १२ जनवरी १९१७ को नियत हुई है।

आर्यसामज के प्रधान आपत्ति में

प्रथम यह बतलाया जा चुका है कि समाज के प्रधान इस नगर के सहायक हेल्थ आफिसर हैं; अब मज़ा देखिए कि जिस दिन न्यायालय का नोटिस मिला तुरन्त ही कमेटी बुलवाई गई और लाला दीनानाथ चड्डा के बरखास्त करने का प्रस्ताव उपस्थित किया गया अन्त को बहुसम्मति से २०) रु० मासिक वेतन में कमी की गई।

अन्तिम निवेदन

सामाजिक भाइयों और पत्र के सम्पादक महाशय उपरोक्त विषय पर विचार करते हुए सोचिए कि आर्य समाज को एक प्रबल शत्रु से काम पड़ा है, और यदि समाज को सफलता प्राप्त न हुई तो मान लीजिए कि समाज का कार्य इस प्रदेश में बहुत ही शिथिल होजावेगा। यह आर्यसमाज की सहिष्णुता है कि अद्यावधि एक पंक्ति भी पत्रों द्वारा आपकी सेवामें अपर्ण नहीं की। अब विवश होकर जब न्यायालय की शरण लेनी पड़ी तो पूर्ण व्यवस्था आपके समक्ष रखदी गई है। आर्यसमाज जबलपुर मध्यप्रदेश के आर्यभाइयों के अतिरिक्त [चाहे किसी भी प्रदेश के रहने वाला है परन्तु अब मध्य प्रदेश में रहते हैं] किसी से रुपये की अपील नहीं करता यद्यपि वर्तमान मुकद्दमे में १०००) रु० से न्यून व्यय नहीं होगा तथापि प्रेम का परिचय आप दूसरी रीति से देसकते हैं। यह समाज अब मुकद्दमे का हाल सविस्तार यथावसर लिखता रहेगा। परमात्मा न करे कि कभी यह शोक सम्वाद भी लिखना पड़े कि आर्यसमाज जबलपुर का पवित्र मन्दिर जिसकी आधार शिला पूज्यपाद् श्रीमान् स्वामी सर्वदानन्द जी सरस्वती के कर कमल द्वारा रक्खी गई थी तोड़ डाला गया और वह भी बृटिश राज्य की न्याय और दया की छत्र छाया तले। अन्त में महात्मा मुन्शीराम जी से साग्रह प्रार्थना है कि वे हमारी सहायता करें और समाज की दशा पर ध्यानदें।

भवदीय
हरिद्वारसिंह वर्मा
उपमन्त्री आर्यसमाज जबलपुर

सामाजिक समाचार

श्री मंत्री जी आर्यसमाज बरनाला सूचना देते हैं कि इस आर्य्य समाज का नवम् वार्षिकोत्सव २६,२७ तथा २८ जनवरी सन् १९१७ को होना निश्चित् हुआ है।

आर्य्य समाज (गुरुकुल विभाग) लायलपुर के अधिकारियों का आगामी वर्ष के लिये चुनाव निम्न प्रकार हुआ है:—प्रधान—म० लक्ष्मणदास जी, उप प्रधान—म० खुशालराम जी तथा डाक्टर सत्यपाल जी, मंत्री—पं० हरिश्चन्द्र जी, उपमंत्री—म० धर्म्मचन्द्र जी, कोषाध्यक्ष—म० दौलतराम जी, पुस्तकाध्यक्ष—म० झण्डाराम जी, मंत्री पुत्री पाठशाला—म० बालमुकुन्द जी।

(२) साधारण सभा के अधिवेशन में प्रस्ताव संख्या ६ द्वारा निश्चित् हुआ कि पं० कालूराम सन् १८७५ ई० को मुद्रित "सत्यार्थ-प्रकाश" को मुद्रित करा के बेच रहा है, जिसको ऋषि दयानन्द जी ने स्वयमेव निषेध कर दिया था। इस से आर्य्य पुरुषों को कष्ट हो रहा है अतएव श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब तथा परोपकारिणीसभा व सार्वदेशिक सभा की सेवामें लिखा जावे कि वे इस सम्बंध में यथोचित प्रबंध करें। आर्य्य समाज लायलपुर यथा शक्ति सहायता करने को तय्यार है।

श्री उपाध्यक्ष जी गुरुकुल पुठोहार लिखते हैं कि गुरुकुल का वर्तमान प्रबन्ध अत्युत्तम है तथा भविष्य भी उत्कृष्ट प्रतीत होता है। कुछ दिनों से प्रबन्धकर्तृ सभा के सदस्यों में गुरुकुल के स्थान परिवर्तन का वाद छिड़ा हुआ था, परन्तु १७ दिसम्बर १६ के बृहदाधिवेशन में उक्त विषय को कुछ शान्त कर दिया गया है। अब समस्त सदस्यों का पूर्ण कर्तव्य है कि मिल कर गुरुकुल का उन्नति की चेष्टा करें, क्योंकि वार्षिकोत्सव भी निकट ही आगया है। जगदाधार प्रभु के अतुल प्रताप से सम्प्रति सब चिन्ह गुरुकुल की भावि उन्नति के ही उपस्थित हो गये हैं अर्थात् व्याकरण न्यायादि विषयों के अपूर्व विद्वान श्री पं० मुक्तिराम जी विद्यावारिधि ने मुख्याध्यापक का पद ग्रहण कर लिया है और मुख्याधिष्ठाता के पद पर श्री० सत्यव्रत जी आगये हैं। अतः वर्तमान काल गुरुकुल का उन्नत गामी है।

आर्यसमाज सुलतानपुर रियासत कपूर्थला का छठा वार्षिकोत्सव १२, १३, १४जनवरी १९१७ को होगा। श्री मंत्री जी समाज श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज से उत्सव में अवश्य सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

आर्य्यसमाज शाहपुर ज़िला अम्बाला का तीसरा वार्षिकोत्सव २३, २४ तथा २५ फरवरी १९१७ को होना निश्चित हुआ है। श्री मन्त्री जी आस पास के आर्य्य भाइयों से उत्सव में सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं।

म० प्यारेलाल उपमंत्री आ० स० चन्दौसी सूचना देते हैं कि चन्दौसी आ० स० के अधिकारी कुछ समय से आर्य्यसमाज में अनुचित स्वार्थसिद्धी करने लगे हैं जिस से अर्थ के स्थान में अनर्थ होता है। इस कारण मैं उपमंत्री के पद से त्याग पत्र देता हूं।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

Registered NO. A. 434.

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ॥

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ८ माघ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २० जनवरी सन् १९१७ ई० | संख्या ४० भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्य देशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। यह से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और द्यूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि लुआ द्यूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उदार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसी मत और वैदिक धर्म मूल्य =) (डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस गुरुकुल-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) U.P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	...	...	३)
विद्यार्थियों से	...	...	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	...	...	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन विना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

(१) पहले देखे विना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर लिखित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

शोक समाचार

यह ज्ञात कर समस्त गुरुकुलहितैषी शोकग्रस्त होंगे कि गुरुकुल के परम हितैषी मि० मायरन एच. फैल्प्स महाशय का मुम्बई हस्पताल में देहान्त होगया। आपके विषय में विशेष हम अगली वार लिखेंगे। आज केवल दुःख प्रकाशित करते हैं। आपके वियोग में भारतवासियों ने गुरुकुल ने और गुरुकुल वालों ने अपना एक सच्चा हितैषी खोदिया।

सम्पादक

भारतवर्षीय आर्य्यकुमार सम्मेलन

(संवाद दाता से)

इस वर्ष भारतवर्षीय आर्य्यकुमार सम्मेलन का अधिवेशन अदृष्टपूर्व सफलता के साथ समाप्त हुआ। लखनऊ नगर में सातवां वर्ष उसने यह शक्ति और लोकप्रियता प्राप्त हुए कि जो उस की दीर्घायु और वैभव के लिये एक भारी शगुन है। इस वर्ष प्रतिनिधियों की संख्या पिछले वर्षों से अधिक थी। रंगून के अतिरिक्त जहां से कोई प्रतिनिधि न आसका दूरी आने वालों के मार्गों में बाधा डालने में समर्थ न हुई।

२३ से २६ दिसम्बर तक प्रत्येक रेलगाड़ी डांक या पैसिंजर छोटी लाइन वा बड़ी लाइन कुछ न कुछ मित्रों के दलों को निरन्तर लाती रहीं। इन सब के हृदयों में एक यही उमंग पाई जाती थी कि भारत के नवयुवक वृद्धि के उच्च शिखरपर पहुंचें।

मित्रों की संख्या इतनी बढ़ती गई कि २४ तारीख की सायंकाल को यह जान पड़ा की उन के रहने की जगह अपर्याप्त है अतएव और बहुत से घर उन के रहने के लिये ढूंढे गये आवश्यक वा सुखदायक वस्तुओं को उनमें पहुंचाने का यथायोग्य यत्न किया गया यद्यपि हम जानते हैं कि हमारा यह मनोरथ सफलता को प्राप्त नहीं हुआ।

२४ की रात्रि बड़ी व्याकुलता से कटी क्योंकि प्रातःकाल देहली की ओर से आने वाली एक्सप्रेस ट्रेन हमारी आशाओं की मूर्ति अर्थात् आर्य्यकुमार सम्मेलन के सभापति को लाने वाली थी। अभी अरुणोदय हुआ ही था कि नगर के राजपन्थों में स्वयम् सेवक आसमानीरंग की पगड़ियां बांधे हुये, प्रेक्षकगण आड़े की तीव्रता से हस्तों को कोप गुप्त किए हुए और शीत कम्पित श्वास लेते हुए दृष्टि गोचर होने लगे। गाड़ियां भी ठंठनाती हुई जा रही हैं जिनका कि स्थित स्थान केवल चार बाग ही है। रवि ने प्राचीमूल को उल्लंघन कर दिया है घड़ी में ८ बज कर मिनट की सुई दस पर पहुंच गई है स्टेशन का घंटे वाला यह सूचना देने के लिए कि रेलगाड़ी स्टेशन प्रांगण में आचुकी है अपनी सर्व शक्ति को समर्पण करने लगा है रेलगाड़ी अबटम्भता से स्टेशन पर पहुंचती है और स्वयम् सेवकों को दल एक पंक्ति से सुशोभित हो जाता है।

"सभापति महोदय तो गाड़ी से नहीं आये" एक ऐसा शब्द सुन पड़ता है किन्तु स्टेशन के बाहर स्वयम् सेवक दल एक छरीरे देह के लम्बी आकृति वाले व्यक्ति का शुभागमन करता हुआ दृष्टि पथ होता है और बालक गण 'संगच्छध्वं संवदध्वं इत्यादि' उच्चस्वर से गान करते हुये सुन पड़ते हैं 'क्या यह ही सभापति हैं' 'क्या यह ही प्रो० आलकृष्ण हैं' ऐसे २ शब्द सुनाई पड़ते हैं। प्रोफेसर महोदय इन प्रश्नों का उत्तर मुस्करा कर देते हैं 'हां मैं ही प्रोफेसर आलकृष्ण हूं मेरे निकट आकर मुझे पहिचानिये, मेरे अब दाढ़ी आगई है' 'प्रो० आलकृष्ण की जय 'भारत माता की जय' इत्यादि शब्द ध्वनि करते हुए जलूस का उस मार्गों से प्रस्थान हुआ जो झाड़ियों वा विविध आदर्श वाक्यों से अलंकृत किये गये थे। यह जलूस आर्य-कुमार व्यायामशाला में आकर ठहरा यहां सभापति महोदय को स्थानीय आर्यकुमार सभा की ओर से हार्दिक शुभागमन किया गया। बाबू रामनारायण वर्मन बी. एस. सी. स्थानिक सभा के प्रधान ने एक संक्षिप्त वक्तृता में सभा के गतचार वर्षों की अनुक्रमिक उन्नति की समालोचना की आचार्य महोदय ने संक्षिप्त किन्तु अर्थमय वक्तृता में धन्यवाद दिया, जलूस तब आगे बढ़ा और अमीनाबाद पारक में प्रेक्षकों के प्रशंसा शब्दों को ग्रहण करता हुआ सभापति के भव्य निवेश स्थान पर समाप्त हुआ।

२६ तारीख की कार्यवाही प्रार्थना से प्रारम्भ हुई स्वागतकारिणी समिति के सभापति ठाकुर जगन्नाथ वरुणसिंह महोदय ने अर्थमय मनोहरणी संशयच्छेदी वक्तृता की जिसमें उन्होंने आराम की सामग्रियों की न्यूनता के लिये क्षमा मांग कर आर्यनवयुवकों को जीवन के अनेक प्रकरणों में शिक्षा देने के लिये अनुरोध किया। श्रोतागणों ने इस वक्तृता को सावधानता से सुना तत्पश्चात् सभापति ने दीर्घ स्वर से व्याख्यान आरम्भ किया इस व्याख्यान में उन्होंने विद्यार्थियों की आवश्यकताओं, न्यूनताओं और उनकी प्रतिक्रियाओं का वर्णन किया व्याख्यान के समय सब लोग सूक्ता को प्राप्त थे। अन्तिम समय कुछ लोगों के मुख पर कांग्रेस में भाग लेने के कारण अधीरता झलकने लगी थी। १२ बजने के निकट प्रोफेसर महोदय का शिक्षाप्रद व्याख्यान समाप्त हुआ, श्रोतावर्ग झट अधिक मानसिक भोजन प्राप्त करने के लिये कांग्रेस को सिधारे।

२७ दिसम्बर खेल प्रदर्शनी के लिये नियत किया गया था छात्र संकुल की शहर के अन्य २ जलसों वा सम्मेलनों में जाने की उत्सुकता देखकर खेलों की संख्या घटा दी गई थी। इस दशा में भी जब कि नगर में बड़े २ सम्मेलन वा कान्फ्रेन्स हो रहे थे बहुत छात्र वर्गों ने जमनास्टिक गोला फैंकना दौड़ की लड़ाई नवयुवक प्रदर्शनी, दौड़ इत्यादि खेलों में भाग लिया। इन सब खेलों में नौजवानों की प्रदर्शनी बहुत मनोरंजन थी। ३ युवकों ने निज आफअनरूप अधिक शारीरिक बल अधिक खींचने की शक्ति वा अधिक छाती के विस्तार होने के कारण बहुत नम्बर पाये। लखनऊ वा इरदोई के नवयुवकों ने पदक प्राप्त किये। सायंकाल के कार्यक्रम में यह विवाद अति विचारपूर्वक था कि स्कूलों वा कालिजों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी भाषा हो या कोई देशी भाषा। घटावे के प्रतिनिधि की वक्तृता प्रासंगिक स्पष्टार्थ तर्कानुरूप थी।

अतएव उन्हीं को विवाद का प्याला दिया गया इसके पश्चात् सम्मेलन की कार्य्यवाही आरम्भ हुई जिसका निर्वाह दूसरे दिन तक रहा।

नवयुवकों में धार्मिक और शारीरिक उन्नति का यत्न करना, करारदाद वा छुटपन के विवाह को दूर करना व्यवाह करने में युवकों की अनुमति ग्रहण करना, नन्दी वा नीच श्रेणी की वार्ताओं से अलग रहना, निर्धन विद्यार्थियों की सहायता के लिए सहकारी भंडार आदि खोलना और धार्मिक तथा आर्थिक नियमों का सर्व साधारण को ज्ञान दिलाने के लिए वक्ताओं का वा पत्रिकाओं को मुद्रित कराने का प्रबन्ध करना इत्यादि विषयों पर पुस्ताओं का निर्णय किया जाय।

[आगे १२वें पृष्ठ पर देखें]

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

दुनिया किधर जारही है ?

देखो, दुनिया किधर जा रही है। आंखें खोल कर देखो, और फिर विचारो कि तुम्हारा क्या कर्तव्य है।

इन दिनों कई घटनायें ऐसी दृष्टिगोचर हुई हैं, जो एक अविश्वासी को विश्वास दिलाने के लिये पर्याप्त हैं। यदि किसी को वैदिकधर्म के भविष्य पर विश्वास न हो, वह आजकल संसार की जो गति है उस पर दृष्टि डाले। उस से अश्रद्धालु के चित्त में भी श्रद्धा उत्पन्न होती है, और अविश्वासी के मन में भी विश्वास उपजता है।

पहली बात जो हमारे सामने आई वह यह थी—अब सारी आर्यजाति इस तत्त्व को समझ गई है कि यदि भारतवर्ष की भलाई हो सकती है तो वेदों के आश्रय से ही हो सकती है। दो मुख्य दृष्टान्त ले लीजिये। कांग्रेस के सभापति सि० मोजुमदार ने अपने व्याख्यान के अन्त में भारतीय युवकों से जागृति की अपील करते हुए जो वाक्य कहे, उन में उन्हें वेदों का महत्त्व गाना पड़ा। वाग्मिवर सुरेन्द्रनाथ जब अपनी जाति की स्वराज्य के लिये योग्यता जतलाने लगे तो आप प्राचीन ऋषियों के वेदों का महत्त्व बखाने बिना न रह सके। यह दृष्टान्त इतना अकस्मात् दिखा देते हैं कि अब उन लोगों की भी वेदों पर दृष्टि पड़ रही है, जो आज से कुछ वर्ष पूर्व वेदों के ऋषियों को जंगली गंवार समझते और कहते थे। यह एक बड़ा शुभ लक्षण है और इस बात का द्योतक है कि आर्य समाज का यत्न व्यर्थ नहीं गया। आर्य समाज ने जितना यत्न किया है, उस का पूर्ण फल नहीं तो भी कुछ न कुछ फल अवश्य हुआ है। इस से अविश्वास तथा अश्रद्धा के बादल छिन्न भिन्न हो जाने चाहिए।

× × × ×

ऋषिदयानन्द का जीवन ब्रह्मचर्य की शक्ति का एक नमूना था। दयानन्द जो कुछ करता या उपदेश में कहता था उसका संक्षिप्त सारांश 'ब्रह्मचर्य' था। ऋषि ने अपने ग्रन्थों में भी स्थान २ पर ब्रह्मचर्य की अपूर्व महिमा का गान किया है। ऋषि के आदेशानुसार आर्य समाज ने भी ब्रह्मचर्याश्रम के उद्धार का बीड़ा उठाया है। इस उद्धार के कार्य का प्रारम्भ एक चौथाई शताब्दि से आर्य समाज ने किया हुआ है, और गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना के साथ इस कार्य का क्रियात्मक आरम्भ भी हो गया है। शुरू २ में कोई नहीं मानता था कि आर्य समाज को अपने यत्न में सफलता प्राप्त हो सकती है। लोग हंसते थे कि क्या कभी संसार १० सदियां पीछे को भी जा सकता हैं ? क्या संसार जंगलियों के आदर्शों की ओर भी लौट सकता है ? संसार यही कहता था, किन्तु आज क्या अवस्था है ? भारत ही नहीं, विदेश के भी बड़े २ डाक्टर यही चिल्ला रहे हैं कि ब्रह्मचर्य्य जातीय जीवन का आधार है, उस के बिना कोई जाति भविष्य में उन्नति नहीं कर सकती। अमरीका के डा० कीवन ने अपनी पुस्तक में विस्तार पूर्वक उन्हीं सिद्धान्तों का वर्णन किया है, जिनका सूत्र रूप में ऋषि दयानन्द वर्णन कर गये हैं। आज भारत के सरकारी अधिकारी और स्वतन्त्र विचारक इस बात पर एकमत है कि भारत बालक समूह की शिक्षा में धार्मिक अंश की कमी है। उनके जीवन में ब्रह्मचर्य्य रक्षा की न्यूनता है।

× × × ×

माता पिता के पास से बालक गुरु के पास भेज दियेजांय, वहीं उनके जीवनों का सुधार हो, वे माता पिता के नहीं, जाति के पुत्र हो जायं—इस प्रकार के वैदिक सिद्धान्त को सुनकर दो प्रकार के आक्षेप किये जायंगे। एक सज्जन कहते थे ऐसा होना असम्भव है, दूसरे सज्जन कहते थे यह हानिकारक है। जो लोग यह असम्भव समझते थे कि माता पिता अपने हृदय के टुकड़ों को गुरुओं के सपुर्द करदेंगे, उन्होंने इतने वर्षों के अनुभव से देख लिया कि गुरुकुलों में प्रविष्ट कराने के लिये प्रार्थना पत्र बहुत अधिक आते हैं, और प्रविष्ट कम किये जा सकते हैं। दूसरा आक्षेप यह था कि ऐसा होना हानि कारक है। आज सभ्य जगत मिल कर कह रहा है कि Residential System (आश्रम-प्रणाली) अत्यावश्यक है। बालकों को विद्यालय में रखना—यहीं के जलवायु में पालना अत्यावश्यक है। पटना यूनिवर्सिटी के प्रबन्ध सम्बन्धी नियमों से चाहे हम कितने असहमत हों, किन्तु उसके एक भाग को हम आदरणीय समझते हैं। वह भाग आश्रम सम्बन्धी है। इस प्रणाली की सचाई शिलाविज्ञों के दिमाग़ों में खूब भरती जाती है। इस वर्ष भारतीय विश्वविद्यालयों के चांसलरों के जो भाषण छपे हैं, वे ध्यान को इसी प्रणाली की ओर खेंच ले जाते हैं।

× × × ×

ऋषिदयानन्द जन्म से गुजराती थे और शिक्षा से संस्कृत भाषा भाषी थे। किन्तु इन दोनों भाषाओं को छोड़ कर उन्हों ने आर्यभाषा में प्रचार किया और अपना नवयुगकारी ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश लिखा। आर्य्यसमाज ने जब अपने गुरुकुल बनाये, तब उन में मातृभाषा, आर्यभाषा, को ही शिक्षा का माध्यम बनाया और साथ ही यह भी कहा कि अंग्रेजी भाषा जब तक भारतीय स्कूलों में शिक्षा का माध्यम रहेगी तब तक शिक्षा का सुधार न होगा। इस पर चतुरसानी लोग हंस दिये। क्या यह भी सम्भव है ? कभी नहीं। किन्तु आज क्या दशा है। ऐसा प्रतीत होता है कि जलवायु ही बदल गया। इलाहाबाद के पायोनियर पत्र ने ५ जनवरी के पर्चे में भारत के सरकारी विश्वविद्यालयों की अकृतकार्यता का बड़ा कारण यही बताया है कि स्कूलों में माध्यम अंग्रेजी भाषा है, और वह—भारतीय विद्यार्थियों को नहीं आती। लखनऊ की कांग्रेस में महात्मा गान्धी ने बोलने से इन्कार कर दिया क्योंकि वे अंग्रेजी में नहीं बोलना चाहते थे। राष्ट्र भाषा सम्मेलन में उन्हों ने स्पष्ट रीति से बताया कि आर्यभाषा ही भारत की राष्ट्र

भाषा हो सकती है—यही शिक्षा का माध्यम बन सकती है। लोकमान्य तिलक ने कानपुर में व्याख्यान देते हुए शोक प्रकाशित किया कि भारत की एक भाषा आर्यभाषा में वह भाषण नहीं कर सकते। मद्रास के मि०राम स्वामी अय्यर ने राष्ट्र भाषा सम्मेलन में आर्यभाषा का हृदय से अनुमोदन करते हुए स्वयं भाषा न बोल सकने पर दुःख प्रकट किया। कलकत्ता विश्वविद्यालय के वाइस-चान्सलर डा० सर्वाधिकारी ने अपने भाषण में देशभाषा द्वारा शिक्षण का खूब समर्थन किया। ये सब आधुनिक दृष्टान्त सिद्ध करते हैं कि दुनिया सचाइयों की ओर आरही है। जिन सचाईयों को आर्य्यसमाज जन्मदिन से आघोषित करता आया है, अन्यलोग उन की ओर झुक रहे हैं। यह सत्य का विजय है—और हमारे यत्नों की नहीं तो इच्छा की सफलता का सबूत अवश्य है।

हमें निराश न होना चाहिये। जिन सिद्धान्तों में हमे कुछ कृतकार्यता प्राप्त होती जाती है, उनमें और भी अधिक कृतकार्यता पाने का यत्न होना चाहिये, और जिनमें अभी अकृतकार्यता नहीं वहां चित्त दे कर यत्न करना चाहिए कि कृतकार्यता अवश्य प्राप्त हो।

गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ का
प्रारम्भिक उत्सव

वर्षों की तय्यारी से इन्द्रप्रस्थ में गुरुकुल के लिये जो भवन तय्यार हुआ है, वहां पर गत सप्ताह 'जंगल में मंगल' हो गया। जनवरी मास की १२,१३, तथा १४ तारीखों को गुरुकुल इन्द्रस्थ का प्रारम्भिक उत्सव बड़े समारोह के साथ हुआ। समारोह आशातीत था। इतनी थोड़ी सूचना से इतना समारोह हो सकेगा, इसके कार्य कर्त्ताओं को भी आशा नहीं थीं। किन्तु जिसकी आशा नहीं होती, वही हो जाया करता है। निश्चित तिथियों में इस जंगली पहाड़ी में हज़ारों नरनारी एकत्र हुए, और एकत्र हो कर उपदेशामृत पान करते रहे। लोगों का उत्साह विशेषतया उत्साह जनक था—उसे देख कर निराशा के बादल छिन्न भिन्न हो जाते थे। दिल्ली नगर गत महीनों में गुरुकुल के विरोधी एक ज़बर्दस्त समूह का केन्द्र रहा है, भय था कि न जाने इस उत्सव पर उस विरोध का बुरा प्रभाव पड़ जाय। प्रभाव पड़ा, किन्तु बुरा नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि विरोधने लोगों के उत्साह को और भी बढ़ा दिया था, और परिणाम यह हुआ कि जहां उत्सव में केवल सैकड़ों की उपस्थिति की आशा थी, वहां हज़रों की उपस्थिति हुई।

उद्योग पर्व

उत्सव के लिये उद्योग पर्व भी अच्छा लम्बा हुआ था। दिल्ली की नींद तोड़ने का यत्न लग भग एक मास से जारी था। पुरुषार्थी भाई म० लक्ष्मण जी रामनगरी के डेरे सार्वदेशिक सभा के भवन में लग गये और गुरुकुलोत्सव सभा के मंत्री म० नारायणदत्त के पुरुषार्थ से बराबर व्याख्यान माला जारी रही। स्नातक बुद्धदेव जी तथा स्नातक जयदेव जी के तीन २ व्याख्यान क्रमशः हुए, और दिल्ली की जनता ने खूब पसन्द किया। उन के व्याख्यानों के पश्चात् कुछ विराम देकर पं० इन्द्र के तीन व्याख्यान हुए, जिन में वर्णाश्रम व्यवस्था, आत्मिक बल तथा गुरुकुल-शिक्षा प्रणाली पर विचार किये गये थे। पूर्णाहुति श्री महात्मा जी के व्याख्यान से दी गई। यह व्याख्यान रायसाहिब लक्ष्मीनारायण की धर्मशाला में हुआ। व्याख्यान में वैदिकधर्म के पुनरोद्धार के एक मात्र साधन ब्रह्मचर्य की महिमा का वर्णन किया गया था। इस व्याख्यान माला का प्रभाव दिल्ली वासियों पर बहुत हुआ।

इधर उत्सव की तय्यारी में कई विघ्न पड़ने लगे। दिल्ली से गुरुकुल जाने के लिए कोई रेल ही नहीं थी। घोड़ा गाड़ी का रास्ता लगभग बारह तेरह मील का था और लोगों के लिए अति कठिन और मंहगा था। दिल्ली से जाने वाली केवल एक गाड़ी गुरुकुल के पास के तुग़लकाबाद स्टेशन पर ठहरती थी, और उस का समय रात को ९ बजे के लग भग था। यह बड़ी मुश्किल थी। इस बारे में रेलवे वालों से पत्र व्यहार किया गया तो जी. आई. पी. रेलवे के प्रबन्ध कर्त्ताओं ने कृपा करके स्पेशल ट्रेनें छोड़ने का निश्चय किया। तदनुसार उत्सव के दिनों में प्रतिदिन प्रातः काल ९—३० पर दिल्ली से स्पेशल गाड़ी तुग़लकाबाद को जाती थी, और शाम को लग भग ७ बजे दिल्ली वापिश आजाती थी। उत्सव देखने के अभिलाषी उत्सव देख कर प्रति दिन दिल्ली लौट सकते थे।

एक और कठिनाई उपस्थित हुई। उन दिनों गुरुकुल के पास के जंगल में चांदमारी हुआ करती थी। इस बार भी १ जनवरी से गढ़वाली पलटन ने चांदमारी प्रारम्भ की और उसकी गोलियां गुरुकुल भूमि में भी गिरने लगीं। उत्सव की तय्यारी भी रुक गई। तब फ़ौज के अधिकारियों से बातचीत की गई, जिस का परिणाम यह हुआ कि ११ से १४ जनवरी तक चांदमारी बंद की गई।

१२ जनवरी

आज उत्सव का प्रथम दिन था, तो भी हाज़िरी पर्याप्त थी। कार्यवाही पं० इन्द्र के सरमन के साथ प्रारम्भ हुई। सरमन में बन्ध से छूटने के उपायों का वर्णन किया गया था। सरमन के पीछे पं० हरिशंकर व्यास का एक बड़ा प्रभावशाली व्याख्यान हुआ, जिसे लोगों ने बहुत पसन्द किया। तीसरा भाषण पं० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार का ब्रह्मवाद के विषय में था। विषय शास्त्रीय था तो भी पण्डित जी ने उसे बड़ी योग्यता से निभाया। अन्तिम उपदेश श्री स्वामी सर्वदानन्द जी का था, जिस में स्वामी जी ने बड़ी उत्तमता से मन की शुद्धि की श्रेष्ठता का वर्णन किया।

१३ जनवरी।

आज हाज़री कल से लगभग दुगनी से भी अधिक थी। प्रारम्भ में श्री स्वामी सत्यानन्द जी का दैनिक संध्या और तप की महिमा पर बहुत ही उत्कृष्ट उपदेश हुआ। लोगों पर इस उपदेश का

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अपूर्व प्रभाव हुआ। आप के उपदेश के पीछे गुरुकुल के मकान की प्रतिष्ठा की गई। यह प्रतिष्ठा दानी सेठ रघुमल जी के हाथों से ही कराई गई। इस समय सेठ जी अपने परिवार सहित मण्डप में उपस्थित थे और लोगों के सामने सरल दानशीलता का उदार दृश्य उपस्थित कर रहे थे। प्रतिष्ठा के पीछे श्री० प्रो० रामदेव जी का एक बड़ा आवेशपूर्ण भाषण हुआ जिस में आपने बताया कि वैदिक धर्म को कोई नहीं दबा सका। राज्य शक्ति और विज्ञान ने भी उस की शक्ति को नहीं घटाया, और आगे भी कोई नहीं घटा सकेगा। आप के भाषण के पश्चात् महात्मा जी ने सेठ रघुमल के दान का कुछ इतिहास सुनाया और अन्त में श्री स्वामी सर्वदानन्द जी का ब्रह्मचर्य पर एक अत्युत्तम उपदेश हुआ आप की वाणी में जो असाधारण शक्ति है, उस के बल से लोगों के चित्तों पर बाल्य विवाह के दोष और ब्रह्मचर्य के गुण अङ्कित हो गये। आज रात को भी भजनों द्वारा उपदेश होता रहा।

१४ जनवरी

आज उपस्थिति पहले के दोनों दिनों से अधिक थी। प्रारम्भ में नये-प्रविष्ट ब्रह्मचारियों का यज्ञोपवीत और वेदारम्भ संस्कार किया गया। उपाध्यक्ष रामदेव जी ने संरक्षकों की ओर से नये ब्रह्मचारियों को और श्री आचार्य जी ने पुराने ब्रह्मचारियों को उपदेश किया। संस्कार के पीछे श्री स्वामी सत्यानन्द जी का मनोहर और शिक्षा दायक उपदेश हुआ। उपदेश के पीछे पं० ब्रह्मदत्त जी और उपाध्यक्ष रामदेव जी के ज्ञान पूर्ण भाषण हुए।

धन संग्रह

इन व्याख्यानों के पश्चात् धन संग्रह का समाचार सुनाया गया। यह समाचार बहुत ही सन्तोष दायक था। सब से प्रथम सेठ रघुमल जी ने २५०००) पचीस सहस्र का एक चेक मुख्याधिष्ठाता जी के नाम प्रदान किया। और २५०००) अगले वर्ष सूद सहित देने का निश्चय प्रकाशित किया। साथ ही आपने यह भी कहा कि गुरुकुल की इमारत के चार तक और कमरे बनने में यदि कोई रुकावट होगी तो उनका व्यय भी वे देंगे। इस महादान के पश्चात् और छोटी बड़ी राशियां सुनाई गईं। सुनाई गई अन्य राशियों में से बड़ी नन्हेमल-जानकीदास की कोठी के मालिक सेठ रामचन्द्र-बनारसीदास की १५००) की रकम थी। और कई बड़ी रकमें थीं, जिन सब को मिला कर निम्नलिखित योग अन्त में सुनाया गया

२५०००) सेठ रघुमल जी के चैक के
१३०००) अन्य नकद दान
लगभग ५६००) के वायदा

यह दान दिल्ली के लिए अधिक नहीं। आगे अभी बड़ी २ आशायें हैं, तथापि एक प्रारम्भिक उत्सव के लिए आशातीत और अत्यन्त उत्साह वर्धक है।

अन्त में श्री महात्मा जी ने उचित शब्दों में गुरुकुल का महत्त्व बतला कर इस महायज्ञ की समाप्ति की—

बधाई

इस कृतकार्य उत्सव के लिए हम किस२ को बधाई दें। सब से पहले उन सेठ रघुमल को बधाई है, जिन के सात्विक दान का यह फल है। फिर सब दिल्ली वासियों को बधाई है, जिन के धार्मिक उत्साह का यह नमूना है और होना चाहिए। अन्त में हम उस छोटी सी उद्योगि-मण्डली को बधाई देते और उनका धन्यवाद करते हैं जिन्होंने दिल्ली के शिथिल वायुमण्डल में रह कर भी अपने व्रत को निभाया और अपने यत्नों से उत्सव को कृतकार्य किया। वह मण्डली बिना नाम दिये ही, हमारी बधाइयों को लेकर स्वीकार करेगी—यह हमें पूर्ण आशा है।

गुरुकुलाचार्य जी ने अपने भाषण में जहां म० नारायणदत्त जी का विशेष धन्यवाद किया था वहां श्री बाबू हरिकादास जी को विशेष बधाई दी थी जिन के उद्योग से ही आरम्भ में भूमि ख़रीदी गई और पहले दिनों इमारत के बनवाने में भी जिन्होंने विशेष सहायता दी थी।

सावधान !

आर्यपत्रिका फिर जागी।

राय मूलराज, रायठाकुरदत्त और लाला रलाराम जी की पूंजी से परिपोषित आर्य्यपत्रिका फिर निकल आई।

पीपल्स बैंक और उस के साथ दर्जनों अन्य बैंकों को बरबाद करने का श्रेय लिये हुए आर्यपत्रिका फिर निकल आई।

लाहौर आर्य समाज में पुलिस बुलाने का, एक सौ से अधिक आर्य सभासदों को बिना कारण समाज से जुदा करने का, लाहौर में आर्य समाज की खिल्ली उड़वाने का पक्षसमर्थन करने वाली आर्य पत्रिका फिर प्रकाशित होने लगी है।

सब लोग सावधान हो जायं!

व्यापारी बैंक, कम्पनियां और मिलें चलाने वाले लोग सावधान हो जायं, क्योंकि लाहौर की त्रिमूर्ति फिर जागी है। अब पंजाब में किसी कम्पनी का जीवन सुरक्षित नहीं है।

विशेषतया पंजाब नेशनल बैंक के कार्यकर्त्ता अधिक सचेत हो जायं, क्योंकि अब लंकापति के विमान का मुख उन्हीं के द्वार की ओर हुआ है। जो तीन अंक अब तक निकले हैं, उन में पंजाब नैशनल बैंक की एक शाखा पर ही तीर कमान कसा गया है, और राई का पहाड़ बनाने का यत्न किया गया है। सुनते हैं, इस साल पंजाब नैशनल बैंक के डायरेक्टरों का जो चुनाव होगा, उस में रायमूलराज को अपने न चुने जाने का भय है। उसी की उपक्रमणिका में ये धमकियां दी जारही हैं। हम नहीं जानते, यह कहां तक सत्य है किन्तु ऐसी किंवदन्ती हमने सुनी है। ऐसा प्रतीत होता है कि त्रिमूर्त्ति के मन्दिर में पूजा करने के लिए न उपस्थित होने के अपराध में पंजाब नेशनल बैंक के अधिकारियों को भी पत्रिका के दरबार से दण्ड मिलेगा। ऐसा होने से कितने अनाथ रंक होंगे, कितनी विधवायें बरबाद होंगी, व्यापार को कितना धक्का पहुंचेगा, इस से आर्यपत्रिका को क्या ग़र्ज़। उसे तो अपना कर्तव्य-पालन

करना है-और वह कर्तव्य है—चौमुखा नाश। इधर व्यापार का नाश और उधर धार्मिक सभाओं का नाश। बस ये दो ही कार्य हैं जिन पर पत्रिका का संचालक-मंडल उतारू हुआ है।

आर्यसमाज भी सचेत होजाय, क्योंकि तीसरे अंक में पत्रिका ने घोषणा देदी है कि जिस सत्य के लिए (?) पत्रिका लड़ती है, उसकी वेदी पर आर्यसमाज भी स्वाहा हो जाय तो पर्वा नहीं। पत्रिका ने स्पष्ट ही इस भयंकर सिद्धान्त को स्वीकार किया है। आर्यपत्रिका का सत्य कौनसा है? आर्यसमाज के नियमोपनियमों का भंग करना आर्य-पत्रिका का सत्य है, या समाजमन्दिर में पुलिस को बुलाना? बैंकों की बरबादी से देश के व्यापार का नाश करना पत्रिका का सत्य है या विधवाओं और अनाथों को कंगाल बनाना? आर्यपत्रिका का सत्य कौन सा है? क्या अन्य संस्थाओं और सभाओं के धन को अपने काबू कर लेना पत्रिका का सत्य है? यदि पत्रिका और उस के रायठाकुरदत्त का सत्य यही है तो उसकी वेदी पर आर्यसमाज को स्वाहा करने की शुभ अभिलाषा त्रिमूर्ति को मुबारिक हो।

लाहौर आर्यसमाज के विषय में छुपा निर्देश कर के भी आर्यपत्रिका ने अपने तीसरे अंक में ये ही भाव प्रकाशित किए हैं। पत्रिका सत्य की मूर्ति है, त्रिमूर्ति का प्रत्येक पुरुष सत्य का अवतार है—आर्यसमाज के शेष सब कार्यकर्ता झूठे धोखेबाज़ आर्य्यसमाज के नाम पर टके कमाने वाले हैं। क्यों न हों। जो आज भी पेन्शन खाते और गृहस्थ के सुख भोगते हैं और आर्यसमाज के लिए कष्ट सहने को तय्यार नहीं वे सच्चे सेवक तो हैं ही। जिन्होंने संसार की सारी आशाओं पर लात मार कर धर्म के लिए अपने आप को बलिदान कर दिया, वे स्वार्थी क्यों न हों। पत्रिका का यही सब से बड़ा सत्य है।

अभी इतना ही बस है। पत्रिका की चालों से सबको सावधान रहना चाहिये—इतना सूचित करना ही इस लेख का उद्देश्य है।

———

प्रचारक परिवार का शब्द

हमने विगत अंक में अपने ग्राहकों से कुछ निवेदन किया था। हमारा वह निवेदन बहरे कानों पर नहीं पड़ा। प्रचारक परिवार ने हमारे शब्द को सुना है और अपनी सम्मतियों से अनुग्रहीत भी किया है। आज अन्यत्र हम दो चिट्ठियां प्रकाशित करते हैं। उन दोनों में दो प्रस्ताव किये गये हैं।

(१) एक प्रस्ताव यह है कि हम प्रचारक में घटिया काग़ज़ लगावें। (२) दूसरा प्रस्ताव यह है कि हम विज्ञापन देने प्रारम्भ करें। यह दोनों पत्रों से ज्ञात होता है और हमें जो २ प्रचारक प्रेमी मिले हैं उनका भी यही विचार जंचता है कि युद्ध समय तक नये ग्राहक एक परिमित संख्या तक ही हो सकते हैं, अधिक नहीं। यह हम भी मानते हैं। फिर भी हम चाहते हैं कि वह परिमित संख्या पूरी होनी चाहिये। उसपर बस नहीं, जब विज्ञापन से तीन चौथाई कलेवर भरने वाले और रद्दी काग़ज़ लगाने वाले पत्र भी अपनी आर्थिक अवस्था पर चिल्ला रहे हैं तो प्रचारक का इतने से काम न चलेगा।

यह हम यहां स्पष्टतया कह दें कि प्रचारक ने अब विज्ञापन न देने का प्रण कर लिया है, वह निभेगा। एक बार प्रचारक अपने प्रण से गिरा था, उसका आज भी हमें खेद है। प्रचारक एक धार्मिक पत्र है, और नर नारी और बालक बालिकाओं के हाथ में जाता है। इसमें रद्दी विज्ञापनों का अभाव ही रहेगा।

काग़ज़ घटिया लगाने या अन्य ढंग से खर्च करने तथा आमदनी बढ़ाकर प्रचारक को जीवित रखने के और उपायों का निर्णय करने से पूर्व हम अपने ग्राहकों की सम्मतियां और अधिक राशि में जानना चाहते हैं। जो भी निर्णय होगा, नये वर्ष के प्रारम्भ से हम उसी के अनुकूल कार्य करेंगे! हम आशा करते हैं, हमारे प्रेमी ग्राहक अपनी २ सम्मतियों से हमें सूचित करेंगे। एक बात स्मरण रखिये। जो सम्मति दीजिये, वह ऐसी हो कि हम उसका पालन कर सकें-उसका क्रिया में आना सम्भव हो।

आगे हम दोनों चिट्ठियां प्रकाशित करते हैं,

—:o:—

श्री पूज्य सम्पादक जी से प्रार्थना और प्रचारक परिवार से समस्या

प्रिय बन्धुवर्ग—

गत कई सप्ताहों में हम प्रचारक की निर्विघ्न स्थिति का क्रन्दन पढ़ चुके हैं। परन्तु अभी तक इस पुकार पर आर्य जनता का कोई विशेष ध्यान आकर्षित नहीं हुआ।

ध्यानाकर्षित करने से पहिले मैं एक प्रश्न का उत्तर चाहता हूं।

प्रचारक को अपने परिवार से इस समय प्रार्थना करने का सौभाग्य क्यूं प्राप्त हुआ? और इस का क्या कारण है? संस्कृत साहित्य में किसी ने कहा है कि—"प्रायः समापन्न विपत्ति काले" हमारे कर्णों में यह शब्द बहुत बार गूंज चुका है कि "प्रचारक" के लिये विज्ञापन भाग को तिलाञ्जलि दे देना श्रेयस नहीं होगा। परन्तु इन शब्दों को सुन कर तत्काल हमें एक दृष्टान्त का स्मरण हो आता है अर्थात् योगाभ्यासी को जैसे २ उसमें आनन्द और प्रतिभा प्राप्त होती जाती है वैसे २ वह भी स्वार्थ वृद्धि शीघ्र आशाओं से बीतश्रद्ध होता जाता है ऐसी अवस्था को देख कर संसारी मनुष्य उस व्यक्ति को "पागल" "बेहमी" 'प्रमाद' प्रभृति शब्दों से सम्बोधित करने लग जाते हैं। किन्तु वह सहनशील ज्ञानी व्यक्ति उक्त शब्दों को अश्रुत सा करके सहर्ष अपने कार्य्य में कृतकार्यता प्राप्त करता हुआ समय आने पर वही उक्तउपाधियों से अलंकृत व्यक्ति सर्वमान्य और पूजार्ह होता है।

यूरोपीय महायुद्ध के कारण बड़े बड़े पत्र सम्पादकों को अपनी प्रस्तुत शृंखला परिवर्तन करने पर बाधित होना पड़ा है। और हम प्रत्यक्ष भी देख रहे हैं कि "प्रचारक" को छोड़ कर प्रायः सभी पत्रों में १ समाचार भाग और शेष ३ विज्ञापन भाग बन रहे हैं ऐसा अपूर्व परिवर्तन करने पर भी उक्त क्रन्दन ध्वनि चारों ओर से चन्द्रकलावत् वृद्धि को प्राप्त होरही है। एतद्भिन्न सम्पादक महाशयों ने विज्ञापन भाग बढ़ाने के अतिरिक्त वार्षिक मूल्य भी बढ़ा दिया है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

किञ्च अभी हमारा प्रिय प्रचारक उसी दशा में अपने अटल प्रण पर आरूढ़ है इसने अभी तक इस भीषण संग्राम में भी अपने पूर्व प्रण में कथमपि शिथिलता नहीं होने दी। ईश्वर हमारे सुधावर्षक प्रचारक को सुस्थिति में रखते हुए सुदीर्घ करें और द्वेषियों को दीर्घ निःश्वास लेने का समय त्वरितता से दिखावें। हमारे कथन का यह अभिप्राय नहीं है कि इस समय प्रचारक अपने प्रण को परिवर्तन करे। किञ्च श्री पूज्य सम्पादक जी से इतनी प्रार्थना अवश्य है कि वह प्रचारक के लिए, ऐसे अत्युग्रदारुण समय में ऐसे उत्तम कागज़ के प्रयोग में किञ्चित् परिवर्तन करके कुछ घटिया काग़ज़ लगादें तो अत्युत्तम हो।

ऐसा करने से अपेक्षा उत्तम काग़ज़ के कुछ तो मूल्य में भी लाभ होगा और ग्राहक भी संतुष्ट होंगे। प्रमाणार्थ "अभ्युदय" पर्याप्त है। और यदि उक्त विज्ञप्ति स्वीकृत न हो तो मेरे विचार में वर्तमान अशान्ति शान्त्यर्थ योग्य चन्दा बढ़ा भी दिया जावे तो भी असंगत न होगा।

प्रिय बन्धुगण हम तब तक किसी कार्य में चेष्टा व सहायता करने के लिए उद्यत नहीं होते जब तक हमें उसकी उपयोगिता व उद्देश्यादि से परिचय प्राप्त न होले विश्वोपकारक जो २ उच्च उद्देश्य प्रचारक की रग रग में सञ्चरण कर रहे हैं उन से आप और जगत् भली प्रकार परिचित हैं प्रचारक के अद्वितीय उद्देश्य प्रशंसनीय हैं।

प्रचारक के विमल विपुल उद्देश्यों में से हमारे लिए तो केवल दो उद्देश्य ही पर्य्याप्त हैं। प्रचारक का पहिला उद्देश्य है कि "वैदिक सत्यधर्म्म का नाद दिग्दिगन्त में फैलाया जाए दूसरा जातीय जीवन के अधारस्तम्भभूत ब्रह्मचर्य तथा गुरुकुल प्रणाली का पुनरुद्धार हो।" शेष उद्देश्यों की बाबत आपही अपनी सम्मति दें कि एतद्भिन्न अन्ययत्रों में भी उक्त उद्देश्यों का गन्ध आता है? मेरी दृष्टि में तो कोई ब्राह्मण सुधारक क्षत्रियसु० वैश्य सु० जाटसु० खालसासु० आदि२ अर्थात् पक्ष व कौटिल्य से मुक्त होकर ऐसा करने के लिए कोई तैयार नहीं दीखता।

प्रचारक प्रिय! संस्कार और सत्संग का प्रभाव आप अच्छी तरह जानते हैं। संस्कार और सत्संग में अधिक नहीं तो काया पलटने तक की शक्ति विद्यमान है।

श्वेत वस्त्र पर चाहे जिस रंग का दाग लगादो दर्शक को निर्भ्रांत उसी रंग का ज्ञान होगा। और यदि वह दाग़ अच्छे रंग का युक्तियुक्त डाला गया हो तो शतशः प्रयत्न करने पर भी निर्मूल नहीं होगा प्रत्युत निर्मूल करने वाले की शक्ति अपव्यय में गण्य होगी। इसी तरह यदि हम अपने इष्ट मित्रों तथा अपनी शिशु सन्तानों के शुद्ध हृत्कमलों पर जिस जाति का जिस धर्म्म का जिस भाषा का जिस प्रणाली का जिस कर्तव्य का नित्योपदेश द्वारा संस्कार रूपी बीज बोयेंगे वही बोया हुआ बीज समयान्तर सुफल में परिणत होगा। होगा और अवश्य होगा।

वर्त्तमान आत्मिक शारीरिक सामाजिक निर्बलताओं का कारण केवल असंस्कार ही है। सुसंस्कार होने पर यह कब सम्भव हो सकता है कि हम अपने आप को आर्य अथवा आर्य्यसामाजिक कहने अथवा सुनने से उपजीविकादि भय से विह्वल हों। शोक। कर्म्मणांगतिः सर्वथैव विचित्रा। वाहरे भारतवर्ष कोई समय था कि एतद्देशीय वीरांगनायें स्वस्वपति प्रभृतियों को आर्यपुत्र कह कर सम्बोधित करती थीं। हे दयामय! वह समय कितना दूर है जबकि हम सर्व आर्य्य कह कर सहर्ष होंगे और उक्त शब्द को निरापद समझेंगे। हमारे श्री पूज्य सम्पादक जी ने प्रचारक की निर्विघ्न स्थिति का मार्गवता तो दिया किञ्च गोल मोल शब्दों में साथही उन्होंने लिखा है कि "प्रचारक की ग्राहक संख्या बढ़ाने पर यह आपत्ति सहज में ही दूर हो जावेगी किञ्च बढ़ाने का तरीक़ा हम क्या बतायें।" इस विषय में मेरा निवेदन है कि प्रचारक के प्रत्येक प्रेमी ग्राहक का अधिक नहीं तो न्यून से न्यून १ ग्राहक नूतन बनाना अपना परम कर्तव्य समझना चाहिये।

ऐसा करने से प्रचारककी ग्राहक संख्या युगत् द्विगुण होजावेगी संख्या के द्विगुण हो जाने पर निर्विघ्न स्थिति सुनिश्चित ही है।

मुझे पूर्णाशा है कि मेरे बन्धु वर्ग उक्त कथन व कार्य्य से सहमत होंगे

भवदीय—

कविराज हरदयाल वैद्यवाचस्पति

रोहतक

(२)

महाशय जी नमस्ते

ताः ६ जनवरी १९१७ का प्रचारक पढ़ा, जिसमें प्रचारक की ग्राहक संख्या बढ़ाने के लिये प्रचारक परिवार से निवेदन किया गया। मेरी अल्प बुद्धि में पुनः प्रचारक में विज्ञापन देना शुरू कर दीजिये। जिससे प्रचारक का जीवन इस आफत-काल में स्थिर रहे। रहा असम्भव झूठे विज्ञापन छापने से प्रचारक की आमद हो। सो आप सोच विचार कर जिसको योग्य समझें विज्ञापन लेवें।

आज कल समाचार पत्रोंका जीवन ही विज्ञापनों से जीवित है। न कि ग्राहक संख्याओं से। अब पुनः प्रश्न होगा विज्ञापन देने से प्रचारक में पढ़ने का मैटर कम रहेगा। अगर हो सके तो फिर प्रचारक १६ पृष्ठ का कर दिया जाय। वरना जब कि सैकड़ों पत्र जब काग़ज़ के अभाव से बन्द हो रहे हैं, सरकार (गवर्नमैन्ट) का गजट तक जब बादामी काग़ज़ में छपने लगा है तब इन चार पृष्ठ ही में प्रचारक का जीवन अगर इस समय में रह जावे तो खुशी व हिम्मत की बात है।

प्रचारक परिवार अगर बहुत ही कोशिश करेगा तो हद से हद १०० या २०० ग्राहक बढ़ायेगा तो कागज़ का मूल्य दुगना होने पर इतने ग्राहक संख्या बढ़ने से प्रचारक को क्षति न होगी कहना असम्भव है। हां प्रचारक परिवार प्रचारक की संख्या भी बढ़ावे, और प्रचारक में विज्ञापन छापना भी शुरू होजाये। जब इस आपत् काल में प्रचारक का जीवन स्थिर रह जावेगा तो फिर विज्ञापन देना बन्द कर दिया जावेगा, जैसा एक दो दफे प्रचारक के विज्ञापन लिये गये फिर बन्द कर दिये गये। मेरी सम्मति यही है, बगैर प्रचारक मे विज्ञापन छपाये इस समय प्रचारक का जीवन जरा कठिन सा प्रतीत देता है। वैसे अन्य प्रचारक परिवार अपनी सम्मति देकर कृतार्थ करें।

ग्राहक संख्या २८६

चिरंजीलाल साह
कुमांऊ बाला लाल
बाज़ार अलमोड़ा

—०—

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ≈)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

(१) गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
(२) आर्यसमाज का कार्य
(३) वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। ≈) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

पं० अखिलानन्दीय
प्रश्नोत्तरी

दिसम्बर सं० १६ ई० के सनातन धर्म पताका में, 'बाबू पार्टी के नेतायों से कुछ प्रश्न' शीर्षक लेख में कविरत्न पं० अखिलानन्द जी ने आर्यसमाज से १५ प्रश्न किए हैं। इस लेख का उद्देश उन्हीं प्रश्नो का उत्तर देना है; आशा है कि कविरत्न जी नेत्रों से स्वार्थमयी ऐनक को उतार कर इसे पढ़ने की कृपा करेंगे—

प्रश्न (१) सत्यार्थ प्रकाश के चौथे भाग में वर्णव्यवस्था गुणकर्मस्वभाव इन तीनों पर मानी है-एकादश में ब्राह्मणादि जाति भेद ईश्वर कृत माना है-अन्त में गुणकर्मों की योग्यता से वर्ण माना है-इन परस्पर विरुद्ध लेखों में सत्य तथा वेदानुकूल कौन है।

उत्तर [१] स० प्र० के उक्त तीनों लेखों में कुछ भी विरोध नहीं है। तीनों का भाव एक है अतः तीनों ही सत्य तथा वेदानुकूल हैं; क्योंकि गुणकर्म का अर्थ तो आप भी वही करते हैं जैसा आ० स० मानती है। भेद केवल स्वभाव शब्द के अर्थ पर है अतः स्वभाव शब्द का अर्थ कर देना ही आप की शान्ति का कारण होगा—स्व और भाव इन दोनों शब्दों में से प्रथम "स्व" का अर्थ "अपना" वा "अपने" भाव का अर्थ है "विचार" अथवा "आशय" अतः स्वभाव का अर्थ हुआ "अपने विचार" अतएव शमदमादि गुण पढ़ना पढ़ाना आदि कर्म तदानुकूल विचार होने पर "ब्राह्मणवर्ण" होता है, इसी प्रकार क्षत्रीयादि भी। लोक में देखा जाता है कि अनेक मनुष्य निज विचारों के विरुद्ध भी किसी कारण वश दिखाने के वास्ते विचारों से भिन्न गुण कर्म रखते हैं। इसी कारण दूर दर्शी ऋषि दयानन्द जी ने वर्ण की प्राप्ति में गुण कर्मों के साथ में स्वभाव [विचार] शब्द का भी प्रयोग किया है।

मनुष्यों में स्त्री व पुरुष जाति भेद ईश्वर कृत हैं। ब्राह्मण क्षत्रियादि जाति भेद नहीं किन्तु वर्ण भेद है, क्योंकि महर्षि गौतम अपने शास्त्र में जाति का लक्षण यह बतलाते हैं [समान प्रसवात्मिका जातिः] अर्थात जिनकी उत्पत्ति और आकृतितुल्य हो वह जाति है—यदि आपके कथनानुसार "ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र अन्त्यज" जाति भेद माना जावे तो इनकी उत्पत्ति तथा आकृति में भेद होना चाहिए, सो नहीं है। अतः सिद्धि है कि "ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र अन्त्यज" सब एक [मनुष्य] जाति हैं। किन्तु इनमें भिन्न २ कर्म होने के कारण वर्ण भेद हैं जैसा कि इस वेद [ब्राह्मणोस्य मुख मासीत] मंत्र में वर्णन है कि मनुष्यों में मुख के तुल्य पढ़ना पढ़ाना आदि कर्मों के करने वाले ब्राह्मण, संसार की रक्षादि करने वाले क्षत्रिय, कृषि और व्योपारादि करने वाले वैश्य तथा सेवादि करने वाले शूद्र और उपरोक्त कर्मों से पतित अन्त्यज अथवा वर्ण संकर कहाते हैं। परन्तु यह सब एक मनुष्य जाति हैं—किन्तु मनुष्यों में दो जाति हैं एक पुरुष द्वितीय स्त्री, इन दोनों की आकृति भिन्न २ है।

वास्तव में वेदों तथा ऋषि दयानन्द का यही सिद्धान्त है क्योंकि जहां स० प्र० एकादश भाग में जाति भेद का निर्णय किया है वहां स्पष्ट लिखा है कि [वर्णों की व्यवस्था गुणकर्मस्वभाव की परीक्षा पूर्वक राजा और विद्वान किया करें] यदि ऋषि "इसी जन्म में" वर्ण परिवर्तन न मानते तो फिर राजा और विद्वानों की परीक्षा कैसी? यदि सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थ के किसी स्थल का भाव इस के विरुद्ध है तो उस ग्रन्थ के संशोधक पं० ज्वालादत्त भीमसैनादि तथा प्रूफसंशोधक और प्रेस की भूल है। अन्त में "गुण कर्मों की योग्यता से वर्ण मानता हूं" इस का आशय भी उपरोक्त मन्त्रानुसार जो जिस वर्ण की योग्यता रखता है अथवा जो जिस वर्ण के योग्य है उस को उसी २ वर्ण का मानता हूं अर्थात पढ़ने पढ़ाने आदि की योग्यता वाला ब्राह्मण, रक्षादि करने वाला क्षत्रिय, व्योपारादि की योग्यता वाला वैश्य, सेवादि की योग्यता वाला शूद्र है। इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश के तीनों लेखों का भाव एक ही है फिर न मालूम कवि रत्न जी को क्यों विरोद्ध सूझता है। इसके समझने का कष्ट पाठक गण स्वयं करें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रश्न २—आर्योद्देश रत्नमाला में जाति को ईश्वर कृत माना है और सत्यार्थप्रकाश में जाति भेद ईश्वर कृत माना है तब वर्ण परिवर्तन कैसा? उत्तर २—यह सर्वदा सत्य है कि जाति भेद ईश्वर कृत है इस लिए जाति का परिवर्तन नहीं हो सकता अर्थात् गदहे का घोड़ा वा घोड़े का बैलादि अथवा पुरुष की स्त्री वा स्त्री का पुरुष नहीं बन सकता है। परन्तु वर्ण जाति से भिन्न योग्यता से प्राप्त होता है; इसका परिवर्तन होसकता है क्योंकि एक साधारण चपरासी का पुत्र योग्य होने पर एक जज के पद पर सुशोभित होसकता है इसी प्रकार जज का पुत्र भी अयोग्य होने पर नीचे गिर सकता है। शूद्र रज वीर्य से जन्म धारी मनुष्य गुण कर्मों की योग्यतानुसार ब्राह्मण तथा ब्राह्मण रज वीर्य से उत्पन्न मनुष्य ब्राह्मणत्व न प्राप्त करने पर शूद्र वर्णस्थ बन सकता है।

प्रश्न ३—आर्योद्देश रत्न माला में जिस स्वभाव को अविनाशी माना है वह कैसे बदल सकता है—

उत्तर ३—आर्योद्देश रत्नमाला में प्राकृतिक स्वभाव को अविनाशी कहा है क्योंकि वहां पर स्वामी दयानन्द जी स्वभाव शब्द की व्याख्या करते हुए लिखते हैं कि "जिस वस्तु का जो स्वाभाविक गुण हैं जैसे अग्नि में रूप और दाह अर्थात् जब तक वह वस्तु रहे तब तक उस का वह गुण भी नहीं छोड़ता इस लिए इसे स्वभाव कहते हैं" कवि रत्न जी को विदित हो कि यह प्राकृतिक स्वभाव की व्याख्या है प्रकरणानुकूल यहां स्वभाव का अर्थ "गुणधर्म" होगा, किन्तु वर्ण व्यवस्था प्रकरण में गुणकर्म के साथ होने से स्वभाव का अर्थ "विचार" होता है एवं मनुष्य पशु आदि का प्राकृतिक स्वभाव भूख प्यास लगना मल मूत्रादि करना है जिसका नाश मृत्यु पर्यन्त नहीं होता। परन्तु इस से वर्ण परिवर्तन में कोई रुकावट नहीं—

प्रश्न—४ गुण द्रव्याश्रित हैं कर्म स्वयं जड़ हैं जन्म इन का आधार न मानने पर आपके मत में इनका आधार क्या है और जाति तथा वर्ण में परिवर्तन शील क्या है तथा वर्ण शब्द शरीर में कब घटता है—

उत्तर ४—पूर्व जन्म के कर्मानुसार जन्म [योनि] प्राप्त होता है। जैसे पशु पक्षी मनुष्य स्त्री आदि और मनुष्यों में भी ब्राह्मणादि स्त्री रोगी निर्धन राजा धनवान होना पूर्व कर्मानुसार है, परन्तु जिस प्रकार निर्धन का पुत्र लक्षाधीश तथा लक्षाधीश का पुत्र वर्तमान योनि में वर्तमान कर्मानुसार निर्धन बन सकता है—इसी प्रकार पूर्व कर्मानुसार ब्राह्मण के यहां उत्पन्न हुवा मनुष्य वर्तमान कर्मानुसार शूद्र तथा शूद्र पुत्र ब्राह्मण बन सकता है—वर्ण परिवर्तन शील है जाति नहीं और वर्ण ग्रहाश्रमी होने पर घटता है—

प्रश्न [५] प्राचीन कर्मों के अधार पर जो जाति आयु और भोग ईश्वर की ओर से नियत होते हैं—उनको इसी जन्म में मनुष्य बदल सकता है अथवा नहीं—

उ० [५] जिस प्रकार २-४-६ मास अथवा एक दो, चार वर्ष की अवधि वाला कैदी अवधि को समाप्त करके मुक्त हो जाता है किन्तु जन्म परियन्त का कैदी वर्तमान जन्म में मुक्त नहीं होता—इसी भांति जाति जन्म परियन्त कैदी के सदृश है जिसका परिवर्तन नहीं होता किन्तु वर्णों में जन्म होना नियत अवधि कैदी के तुल्य है जो मुक्त होकर अन्य वर्ण प्राप्त कर सकता है—इसी प्रकार भोगों को भी समझो और प्रकृति के नियमानुसार मनुष्य योनि के बारे लगभग १०० वर्ष नियत है—परन्तु ब्रह्मचर्य प्राणायामादि गुणों द्वारा अधिक तथा व्यभिचारादि दोषों द्वारा न्यून भी हो सकती है—किन्तु पुराणों में वर्णित सहस्रों तथा लक्षों वर्ष की आयु होना असम्भव और मिथ्या है—व्यभिचारादि के अतिरिक्त किसी विशेष रोग तथा शस्त्र और विष द्वारा भी कम हो सकती हैं।

प्रश्न [६] वर्ण परिवर्तन में जो विश्वामित्रादि का इतिहास दिया जाता है वह किस वेद में है? यदि नहीं तो इस परिवर्तन को अवैदिक क्यों नहीं माना जावे-और रामायण में जो इतिहास आता है वह दश हजार वर्ष के साथ है उसको मान कर एक को न मानना कैसे ठीक है—यदि सम्भव है तो दोनों सम्भव हैं—तो दोनों असम्भव हैं—

उत्तर (६) जिस प्रकार ताजीरात भारत सरकार का कानून है किसी की हिस्ट्री नहीं-इसी प्रकार वेद परमात्मा का कानून है विश्वामित्रादि का इतिहास नहीं तथा रामायण का इतिहास वेदानुकूल होने से अवैदिक नहीं क्योंकि वर्ण परिवर्तन वेदोक्त है जैसा कि हम ऊपर प्रश्नों में बतला आये हैं-यदि वेद से विरुद्ध हो तो आप दिखलाईए तथा दूसरा दश हजार वर्ष का प्रसंग वेदों से प्रतिकूल और असम्भव होने के कारण अवैदिक तथा अप्रमाण है क्योंकि दस हजार वर्ष की आयु मानने पर (जीवेम् शरदः शतम्) से विरोध होगा—

प्रश्न ७—द्विजों के लिए किस वेद में असवर्ण विवाह लिखा है-यदि नहीं तो इस अवैदिक प्रथा का क्यों प्रचार किया जाता है—

उत्तर ७—"ब्रह्मचर्येण कन्या युवानंविन्दते पतिम्" इस वेद मंत्र में बतलाया है कि "कन्या ब्रह्मचर्याश्रम को समाप्त करके युवा पति से विवाह करे अर्थात् प्राप्त हो" इस में कहीं वर्ण का चिन्ह तक नहीं ऐसा ही विवाह प्रकरण के अन्य मंत्रों का आशय है और इतिहास में अनेकों (ऋषियों ने राज कन्यायों तथा राजायों ने ब्राह्मण कन्यायों से विवाह किया है) प्रमाण विद्यामान हैं अतः यह प्रथा अवैदिक नहीं किन्तु वैदिक है किसी भी प्रथा का जब तक वेद से विरोध न हो तब तक वह अवैदिक नहीं हो सकती यदि वेद से विरोध हो तो आप दिखलाईए आ० स० तथा स्वामी जी का यही सिद्धान्त है कि गुण-कर्म-स्वभाव को मिलाकर जो जिस २ प्रकार की योग्यता रखता है उनका विवाह भी उसी प्रकार की योग्य कन्यायों तथा वरों से होना चाहिए—

प्रश्न ८—स्वामी जी ने रजवीर्य के आधार पर दो जातियां वर्ण सङ्कर मानी हैं यह जन्म से वर्णव्यवस्था नहीं तो क्या है—

उत्तर ८—स्वामी जी ने ऐसा कहीं नहीं लिखा यह आप का भ्रम है यदि हो भी तो "सत्य के ग्रहण और असत्य के त्यागने

में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए" यह नियम भी तो उन्हीं ऋषि ने आ० स० को दिया है—

प्रश्न ९–अथर्ववेद में केवल द्विजों को वेदाधिकार मिलता है स्वामी जी यजु० के एक पाद से सब को अधिकार बताते हैं ईश्वरीय पुस्तक में यह परस्पर विरोध क्यों और दोनों में ठीक क्या है—

उत्तर ९—वेदों में किञ्चित भी विरोध नहीं यह केवल आपकी पक्षपातमयी तुच्छ बुद्धि का भ्रम है जिस प्रकार परमात्मा प्रकाशित सूर्यादि से सब मनुष्यों को लाभ प्राप्त करने का अधिकार है इसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान (वेद) से मनुष्य मात्र लाभ प्राप्त कर सकता है अथर्व के उस (विरोध सूचक) मंत्र को दिया होता—

प्रश्न १०—स्वामी जी कृत किसी ग्रन्थ में शूद्र को उपवीत का अधिकार नहीं यदि नहीं तो किस वेद के अधार पर शूद्र को अधिकार दिया जाता है, और किस वेद के आधार पर स्वामी जी ने मूर्ख को शूद्र कहा है—

उत्तर १०—(यथेमां वाचंकल्याणीं) के अनुसार शूद्रादि को सब प्रकार का अधिकार है तथा स्वामी जी ने भी उक्त मंत्र के भाष्य में सब को अधिकार बतलाया है और "ब्राह्मणोस्य मुख मासीत्" के अनुसार निकृष्ट कर्म का करने वाले शूद्र है और जो मूर्खता के कारण उत्तम कर्म करने में असमर्थ होगा वही नीच कर्म करेगा तथा उसी को वेदों में शूद्र कहा है—

प्रश्न ११—जो बालक उत्पन्न होता है उस में गुण कर्म तो होते नहीं फिर किस आधार पर शर्मादि नाम धरा जाता है बड़े होने पर यदि वह लड़का मूर्ख रहा तो प्रथम नाम से वह बुलाया जा सकता है वा नहीं यदि नहीं तो एक संस्कार व्यर्थ हुआ—

उत्तर ११–जो बालक ब्राह्मण के घर जन्म लेगा उसके ब्राह्मण बनने की अधिक सम्भावना है इसीलिए शर्मादि नाम धरा जाता है परन्तु यह भी सम्भव है कि वह लड़का ब्राह्मण न बन कर क्षत्रियादि बने इस से संस्कार व्यर्थ नहीं हो सकता है क्यों कि प्रत्येक औषधि का प्रयोग रोग निवारणार्थ किया जाता है जैसे कुनैन ज्वर के वास्ते परन्तु यह भी प्रत्यक्ष देखा जाता है कि किसी २ का ज्वर उस से नहीं जाता है, इतने से उसका देना व्यर्थ नहीं माना जा सकता, न कुछ औषधि का दोष है। दोष केवल उस के प्रयोग-कर्त्ता तथा पथ्यापथ्य करने वाले का है इसी प्रकार संस्कार का कुछ दोष नहीं।

प्रश्न १२–रजवीर्य की प्रधानता यदि सन्तान में न मानी जावे तो आज जो बालक पैदा हुआ है उसके डाढ़ी तथा कुच हैं ही नहीं फिर कहां से आजाते है यदि आजाता है तो रजवीर्य प्रधान माना जावे या गुण कर्म।

उत्तर १२–रजवीर्य की प्रधानता शरीर बनाने में है और डाढी कुच भी शरीर के अवयव हैं इस से वर्ण से कुछ सम्बन्ध नहीं।

प्रश्न १३–गर्भाधान के अन्त में स्वामी जी ने लिखा है कि स्त्री जबगर्भवती हो तब ऐसा भोजन करे जिससे बालक के गुण-कर्म स्वभाव अच्छे हों यहां पर स्वभाव का अर्थ यदि शरीर नहीं तो इस पहेली का क्या अर्थ है—

उत्तर १३–जिस माता का शीलादि गुणयुक्त स्वभाव होगा उसी की सन्तान के स्वभावादि अच्छे होंगे और उत्तम भोजनादि से ही स्वभावादि अच्छे होते हैं अतः इस पहेली का यही अर्थ है कि माता गर्भ समय से ही उत्तम भोजनादि का साधन करे जिस से बालक उत्पन्न होने तक तामसी अथवा अन्य प्रकार के दूषित खान पान की इच्छा बिलकुल नष्ट हो जावे अतएव बालक उत्पन्न होने पर माता के स्वभावादि के कारण सन्तान के स्वभावादि भी उत्तम हों और स्वभाव का अर्थ शरीर किसी प्रकार नहीं हो सकता—

प्रश्न १४–स्वामी जी ने शूद्र के लिऐ सन्ध्या गायत्री का निषेध किया है और शुद्ध किए हुए से आर्यजन भोजन व्यवहार न करें फिर आज कल इस के विपरीत क्यों किया जाता है—

उत्तर १४—स्वामी जी ने [यथेमां०] इस वेद मंत्र द्वारा मनुष्य मात्र को सन्ध्यादि कार्य करने का आदेश किया है और द्विजों के यहां शूद्र भोजन बनावें इस का विधान आ० प० त० सूत्र में विद्यमान है तथा वेदों से विरोध न होने पर वेदानुकूल है और स्वामी जी ने ऐसा कहीं नहीं लिखा कि आर्य के हाथ का आर्य जन भोजन न करें—

प्रश्न १५–देहरादून में जो अलखधारी है उस को स्वामी जी ने स्वयं शुद्ध किया था परन्तु उपवीत गायत्री नहीं दी और साथ ही उस को समाज के रजिस्टर में शूद्र लिखा था अब बाबू पार्टी इसके विरुद्ध क्या क्या करती है

उत्तर १५—जो ऋषि विश्व भर को धर्मोपदेश करता था क्या यह सम्भव है कि वही ऋषि एक शुद्ध हुए आर्य को गायत्री आदि कार्यों से वञ्चित रखें और जो मनुष्य शुद्ध हो कर आर्य बनें उस को शुद्ध लिखना सर्वदा उचित है क्योंकि आगे जिस प्रकार अधिकाधिक उत्तम कर्म करता जायगा वैसे ही वैसे उस को उच्च वर्ण प्राप्त होता जायगा, जिस प्रकार प्रत्येक बालक प्रथम कक्षा में प्रविष्ट होता है आगे जिस जिस प्रकार उच्चशिक्षा प्राप्त करता जाता है उसी प्रकार उच्चकक्षाओं में सम्मिलित होता जाता है।

इन प्रश्नों के नीचे कविरत्न जी लिखते हैं कि मैं ब्राह्मण पार्टी का आर्य हूं स्वामी जी कृत ग्रन्थों को स्वतः प्रमाण नहीं मानता इन के उत्तर मिलने पर अन्य प्रश्न करूंगा—

इस पर मेरा निवेदन है कि इन प्रश्नों का उत्तर दिया गया है आगे जो प्रश्न होंगे उन का भी उत्तर दिया जावेगा। मैं भी ब्राह्मण पार्टी का आर्य हूं और वेदों के अतिरिक्त संसार की समस्त पुस्तकों को परतः प्रमाण मानता हूं इसी कोटि में स्वामीकृत ग्रन्थों को मानता हूं और ऐसा ही आर्य्यसमाज का सिद्धान्त है—

जौहरीलाल
धौलपुर स्टेट

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बरेली का शास्त्रार्थ

[१] बरेली के शास्त्रार्थ में सनातनी मन्त्री जी ने जिन पण्डित जी को मध्यस्थ-पद के लिये अपनी चिट्ठी में पेश किया था और समाज ने भी स्वीकार कर लिया था परन्तु उस समय सनातनियों के दुन्द मचाने के सबब पंडित जी व्यवस्था न सुना सके पुनः कार्य वश बाहिर चले गये अब उन्होंने अपना व्यवस्थापत्र लिख कर भेजा है पण्डित जी योग्य विद्वान् कवि तथा सनातन धर्म सभा के उपदेशक और कुलीन ब्राह्मण हैं। इन को झूठी व्यवस्था देने के लिये सनातनियों ने बहुत कुछ आग्रह किया तथा लोभ भी दिखाया परन्तु इन्होंने कहा कि मैं वृद्ध हूं ईश्वर को क्या उत्तर दूंगा, मैं असत्य व्यवस्था देकर न्याय को कलंकित न करूंगा इसी भांति यहां अन्य पण्डित लोग भी पण्डित इन्द्र जी वि.वा. की शास्त्रार्थ शैली और विद्वत्ता तथा शान्ति प्रियता की प्रशंसा कर रहे हैं यद्यपि पंडित रामलोचन जी भी बड़ी २ उपाधियां रखने वाले पण्डित हैं परन्तु झूठा पक्ष लेकर कैसे पास होते—व्यवस्था इस प्रकार है।

[२] व्यवस्था—इस वर्ष में २६ अक्टूबर सन् १९१६ ई० को बालबोध सनातन धर्म और आर्य समाज में शास्त्रार्थ मृतक पितृश्राद्ध की वैदिकता के विषय में ठहरा। उभय पक्ष बहुत से विद्वान् लोग समुदित हुये। समय १ बजे से ४ बजे तक का नियत हुआ, समाज की ओर से पण्डित इन्द्रचन्द्र विद्यावाचस्पति गुरुकुल कांगड़ी, बालसभा की ओर से पण्डित रामलोचन शास्त्री बोलने वाले नियत हुये। पण्डित इन्द्र जी ने कहा कि आप मृतक पितृश्राद्ध की वैदिकता सिद्ध कीजिये। शास्त्री रामलोचन जी कुछ काल तक वैदिक और अवैदिक सिद्ध करने करने में तत्पर रहे अनन्तर पृथमाशुक्ति सत्यार्थ प्रकाश दिखाया और कहा कि स्वामी जी लिख गये हैं। पं० इन्द्र जी ने कहा कि यह भूतों की मिलावट है। स्वामी जी ने इस का निराकरण वेद भाष्य के नोटिस में कर दिया है और नोटिस पढ़ कर सुनाया। अनन्तर स्वामी जी का शास्त्री जी ने बाजिद अलीगढ़ से सत्यता कर अश्लील शब्दों का प्रयोग किया। इसी वितण्डा बाद में ४ बज गये परन्तु वेद मन्त्रों से शास्त्री जी मृतक श्राद्ध सिद्ध न कर पाये और जय सनातन धर्म की कहते हुये लोगों के साथ शास्त्री जी प्रस्थित हुए। श्रोतागणों की यह अभिलाषा अव-शिष्ट रही कि वेद मन्त्रों से श्राद्ध न सुना—क्या अब भी सनातनी लोग झूठी जय बोलते रहेंगे।

प्रार्थी
शास्त्री गंगाराम पुत्र
शास्त्री ललिता प्रसाद
पेन्शनर हेड पंडित हाईस्कूल
मथुरा
सौदागरी मुहल्ला बरेली
रुहेलखंड

———

नूतन-विचार-विवेक

२३ पौष के सद्धर्म-प्रचारक में "नूतन-विचार" शीर्षक वाला एक लेख निकला है। इसको पढ़कर मेरे दिल में एक विचार उत्पन्न हुआ जो मैं आपके आगे विचार के लिये प्रस्तुत करता हूं। इस लेख में लेखक ने श्लोक के पदों के कथास्थ अर्थों से असन्तुष्ट होकर सम्भव अर्थ के अनुकूल उनका यौगिक अर्थ किया और केवल 'दक्ष' का अर्थ यौगिक करना छोड़ दिया उसका अर्थ 'मनुष्य' कर दिया। 'दक्ष' शब्द का अर्थ 'अग्नि' करना चाहिये। 'दह भस्मीकरणे' से 'दक्ष' शब्द की कल्पना करके जो भस्म करती है अन्न आदिक वस्तुओं को उस 'अग्नि' का नाम 'दक्ष' है। दक्ष (अग्नि) के अपमान से अर्थात् ठीक परिमाण न रखने से, न्यूनाधिकता होने से संक्षुब्ध अर्थात् सम्यक् प्रकार से क्षुब्ध जो रुद्र अर्थात् दोष (वात, पित्त, कफ) उनके निश्वास अर्थात् अति वृद्धि से अथवा उनमें हलचल आजाने से अर्थात् तीनों दोषों की विशेष परिस्थिति के बिगड़ जाने से ज्वर का सम्भव अर्थात् उत्पत्ति होती है।

भवदीय विनीत
ब्र० देवराज स्नातक
सिद्धांतालंकार

—०—

सामाजिक समाचार

श्री मंत्री जी आर्यसमाज इगलास (अलीगढ़) सूचना देते हैं कि इस वर्ष भी प्रत्येक वर्ष की भांति बसन्तपञ्चमी पर आर्यसमाज का षष्ठ वार्षिकोत्सव २७, २८, २९ जनवरी १७ को होना निश्चित हुआ है। इस बार प्रत्येक मतावलम्बियों को, विशेष कर नवीन वेदान्तियों को शंका समाधान के समय निमन्त्रित किया गया है। आर्यसमाज के सन्यासी महात्मा, विद्वान् उपदेशक तथा सब भाइयों से इस अवसर पर पधारने की प्रार्थना की जाती है।

गुरुकुल सिकन्दराबाद जिला बुलन्दशहर (स्टेशन दनकौर E.I.Ry) का उन्नीसवां वार्षिकोत्सव ता० १७, १८, १९, २० फरवरी १९ १७ को तदनुसार फाल्गुन वदि १०, ११, १२, १३, १४, सम्वत् १९७३ को बड़े समारोह के साथ होगा। दूर से प्रसिद्ध २ विद्वान पधारेंगे। इस वर्ष १५ ब्रह्मचारी (१० ब्रह्मचारी श्रेणी में तथा ५ उपदेशक श्रेणी में) प्रविष्ट किये जावेंगे। श्री मंत्री जी प्रबन्धकर्तृसभा सर्वसज्जनों से प्रार्थना करते हैं कि उक्त अवसर पर पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

श्री मंत्री जी आर्य समाज रावलपिण्डी सूचना देते हैं कि उक्तसमाज का वार्षिकोत्सव २६ तथा २७ जनवरी सन् १९१७ तदनुसार १५ तथा १६ माघ १९७३ को होना निश्चित हुआ है। श्री स्वामी सर्वदानन्द जी तथा श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज से प्रार्थना है कि इस अवसर पर अवश्य पधार कर कृतार्थ करें।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के समाचार

(१) ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य उत्तम है। वार्षिक परीक्षा समीप है अतः सभी ब्रह्मचारी अच्छा प्रयत्न कर रहे हैं, जिससे आशा की जाती है कि परिणाम बहुत ही उत्तम रहेगा। अध्यापक भी प्रशंसनीय कार्य्य कर रहे हैं।

(२) वा० उत्सव अत्यन्त समीप है जिसकी तय्यारी के लिये श्री० ला० गौवर्धनदास जी दिन रात लगे हुये हैं। अन्य किसी सहायक के न होने के कारण वह गत वर्ष के समान समीपवर्ती समाजों में तथा दानी पुरुषों की सेवा में उपस्थित नहीं हो सके. अतः आर्य्य पुरुषों को चाहिये कि अपना कर्तव्य समझ कर गुरुकुल की सहायता के लिये स्वयं प्रयत्न करें। विशेष कर अम्बाला, करनाल, रोहतक, हिसार की समाजों को ध्यान देना चाहिये।

इस वउत्सव पर श्री पूज्य महात्मा जी, प्रोफेसर बालकृष्ण जी, पं० इन्द्र जी वेदालंकार, स्नातक बुद्धदेव जी, और स्नातक जयदेव जी पधारेंगे।

(३) क० पानीपत निवासी स्वर्गवासी ला० बालक राम जी के दिये हुये एक सहस्र रुपया से गोशाला चल रही है, कुछ दिनों के बाद उसे

अधूरा ही- छोड़ना पड़ेगा। यदि किसी दानी ने शेष आधे भाग के लिये एक सहस्र और न भेजा। एक सहस्र आने से दोनों ओर से बन जायगी। हम भी दोनों ओर दोनों दानियों के नाम के पत्थर लगवा देंगे।

इसी गोशाला के अन्दर वा समीप एक छोटे कूप के लिये यदि कोई दानी ५००) रु० भेज देंगे तो कूप भी साथ ही लगवा दिया जायगा।

(४) एक अछूत बालक का १५००) रु० देकर यदि कोई दानी संरक्षक बन जाय तो एक अछूत बालक प्रविष्ट हो सकता है।

विष्णुमित्रः

श्री मंत्री जी आर्यसमाज रायपुर (मध्यप्रदेश) लिखते हैं कि इस वर्ष आर्य्यसमाज रायपुर के उद्योग से कार्तिक की पूर्णमासी पर महादेव घाट के मेले में वेद प्रचार का प्रबन्ध किया गया था। स्वामी ब्रह्मानन्द जी गुरुकुल हुशंगाबाद को इस अवसर पर पधारने के लिए लिखा गया उन की स्वीकृति आने पर मार्ग व्यय तार द्वारा भेजा गया, परन्तु वह किसी कारण से पधार न सके। अस्तु? विज्ञापन छप कर बंट चुका था इस लिए आर्य्य बड़े समारोह से मेले में पहुंचे। स्थान बड़ी उत्तमता के साथ बनाया गया था। बाबू जगमोहन लाल जी के सभापतित्व में कार्य्यारम्भ हुआ। प्रथम भजन गायेगये, पश्चात् सन्ध्योपासना का पाठ तथा वेद मन्त्रों द्वारा हवन किया गया। फिर विद्यार्थी मोहन लाल यदु मन्त्री आर्यकुमार सभा रायपुर का प्रभावशाली भाषण विद्या के विषय पर हुआ। श्रोता मुग्ध होगये। तत्पश्चात् पं० बाल मुकन्द जी सहकारी मंत्री आर्यसमाज रायपुर का "धर्म्म" के ऊपर एक उत्तम व्याख्यान हुआ। आपके व्याख्यान के अन्त में पं० श्रीराम जी शर्मा उप प्रधान रायपुर की एक उत्तम वक्तृता वैदिक काल तथा वर्त्तमान पर हुई। जनता आपके व्याख्यान से अति प्रसन्न हुई। और कई छोटी २ वक्तृताएं होने के पश्चात् अन्त में सभापति जी का भाषण हुआ। और सभा विसर्जन हुई। इस कार्य में बाबू हीरालाल जी का परिश्रम परम सराहनीय था।

यह प्रान्त पौराणिकों का गढ़ है तथा शिक्षा में सब से पीछे है यही कारण है कि ईसाइयों की दाल यहां खूब गलती है। आर्यसमाज का इस ओर बिल्कुल ध्यान नहीं। यहा की प्रतिनिधि सभा नाम मात्र की है इस से कुछ भी अर्थ नहीं निकलता। जब इधर कोई उपदेशक आता ही नहीं तो वैदिक धर्म प्रचारक किस तरह हो सक्ता है।

हमें मध्यप्रदेश तथा बरार की प्रतिनिधि सभा से कुछ भी आशा नही है। हां, यदि पञ्जाब वा युक्तप्रदेश की प्रतिनिधि सभाएं इधर ध्यान दें तो बड़ा कार्य हो सक्ता है। इस प्रान्त में कार्य का क्षेत्र बड़ा विस्तृत है। इधर प्रतिनिधि सभाओं को ध्यान देना चाहिए।

अब यहां बसंत पञ्चमी से राजिम लोचन का बूड़ा मेला भरने वाला है। इस में लाखों मनुष्य एकत्रित होते हैं और यह मेला होली तक रहेगा। इस में प्रचार के लिए योग्य उपदेशिकों की बड़ी आवश्यकता है। यद्यपि रायपुर समाज निर्बल है तथापि उपदेशक महाशयों का योग्य सत्कार करने को उद्यत है।

आशा है यह प्रार्थना निष्फल न जायगी।

आर्य समाज बरेली के अधिकारियों का चुनाव आगामी वर्ष के लिए निम्न प्रकार हुआ है:—प्रधान-बाबू बलदेवप्रसाद जी, उपप्रधान-बाबू युगलकिशोर जी (आर्यसमाज), बाबू अशरफीलाल जी (विद्या सभा), बाबू आनन्दी प्रसाद जी (सेवासमिति), लाला भगवानदास जी (धर्मसभा तथा जिला प्रचार), मन्त्री—राय साहब डा० श्यामस्वरूप जी; सहायक मन्त्री पं० पूर्णदेव जी विद्यालंकार, डा० कौशलानन्द जी (विद्या सभा), बा० द्वारकाप्रसाद जी (धर्म सभा तथा जिला प्रचार), म० देवनाथ जी तथा पं० बिहारीलाल जी (सेवा समिति), म० बिहारीलाल जी (संस्कार प्रचार); मुख्याधिष्ठाता तथा आचार्य सरस्वतीविद्यालय अहरोला—पं० देवराज जी सिद्धान्तालङ्कार; अधिष्ठाता पाठशाला कल्याणी—बाबू जगदम्बा प्रसाद जी; अधिष्ठाता वस्तुभण्डार—म० कुञ्ज बिहारीलाल; जी पुस्तकाध्यक्ष—बाबू रघुनाथ सहाय जी; कोषाध्यक्ष—म० मुरलीधर जी।

धर्मसभा के १७—१२—१६ के अंतरंगसभा के अधिवेशन में सर्कार की १९-१४-१५ की एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट में की हुई टीका टिप्पणियों पर विरोध प्रकट किया।

३ जनवरी को आर्य्य विद्या सभा की विशेष बैठक हुई जिसके सभापति बाबू जानकी प्रसाद जी थे इसमें श्री डाक्टर श्यामस्वरूप जी को राय साहिब की उपाधि मिलने पर प्रसन्नता प्रकट की गई तथा सरकार को धन्यवाद दिया गया।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज डोई वाला लिखते हैं कि तारीख ७ व ८-१-१७ को श्री पं० बद्रीनाथ जी उपदेशक के "मनुष्य जन्म की महिमा तथा "सुख के साधन" पर दो व्याख्यान हुए जिसका प्रभाव अत्युत्तम रहा। यह समाज थोड़े समय से स्थापित है और प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। अतः देहरादून, मन्सूरी, चकरौतादि जाने वाले सन्यासी महात्मा तथा उपदेशक महाशयों से प्रार्थना है कि यहां अवश्य एक दिन के लिये पधारा करें। देहरादून से इस तरफ तीसरा स्टेशन डोई वाला है।

शुजालपुर प्रान्त मालवा में नई आर्य्यसमाज स्थापित हो गई है जिसके अधिकारी निम्न प्रकार चुने गये है।

प्रधान—बाबू महावीर प्रसाद जी, उपप्रधान—बाबू रघुवर दयाल जी, मंत्री—बाबू रामचन्द्र जी, उपमंत्री मुंशी भैरवलाल जी, कोषाध्यक्ष—बा० नर्वदाशंकर जी, पुस्तकाध्यक्ष—बा० भीमशंकर जी।

श्री मद्दयानन्द अनाथालय अजमेर का २२ वां वार्षिक वृहदधिवेशन ता० ३१ मार्च तथा १-२ एप्रैल सन् १९१७ ई० को अनाथालय भवन अजमेर में होना निश्चय हुआ है अतएव समस्त अनाथालय के हितैषियों तथा सभासदों से जो नियम संख्या १० के अनुसार सभासद हैं, जो उनसे मंत्री जी अनाथालय प्रार्थना करते हैं कि कृपा करके इस शुभअवसर पर अवश्य पधार कर अनुग्रहीत करें।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का उत्सव २६-२७-२८ जनवरी सन् १७ का होगा श्री अधिष्ठाता जी इस अवसर पर फिर स्वामी मुनीश्वरानंद जी तथा श्री स्वामी सत्यानंद जी महाराज पर सेवा में प्रार्थना करते हैं कि अवश्य पधार कर कृतार्थ करें और टिकट कुरुक्षेत्र जंकशन का लेवें।

आर्य्य समाज स्यालकोट का वार्षिकोत्सव २३—२४—२५ फरवरी सं० १९१७ तदअनुसार १३-१४-१५ फाल्गुण सं० १९७३ शुक्र, शनि, रवि को होना नियत हुआ है नगरकीर्तन २३ फरवरी शुक्रवार को होगा—

श्री मंत्री आर्य्य समाज लाहौर छावनी सूचना देते हैं कि "ग्राम बदइन्छरा—तहसील रोपड़ जिला अम्बाला में एक महाशय रामकृष्ण खतरी के साथ एक ब्राह्मण की लड़की का पुनर्विवाह वैदिक रीति से ३१-१२-१३ को बड़ी समारोह से हुआ। जिस का प्रभाव बिरादरी और अन्य पुरषों पर अच्छा हुआ वरपक्ष से १०) रुपये दान मुखतलिफ फन्डों में दिया गया।"

यह समाज महाशय रामकृष्ण जी समाज के सभासद का जिन की मारफत यह कार्य हुआ और रुपया मिला, धन्यवाद करती है—

श्री मंत्री आर्य्य समाज लायलपुर लिखते हैं कि:—मिति २४ पौष सं० ७३ वि० को आ०स० के साप्ताहिक उत्सव में दो जन्म की मुसलमान स्त्रियों की और एक म० गोकुलचंद सुनार की शुद्धि हुई। स्त्रियों के नाम, १ भाग्यवती २ धर्म देवी रखे गये। उपस्थित जनों का मिठाई से सत्कार किया गया॥

(दूसरे पृष्ठ से आगे)

वर्णन योग्य निम्नलिखित पुरुषों के व्याख्यान हुये—

पं० रामभजदत्त चौधरी, प्रोफेसर सुधाकर, प्रो० रामदेव, प्रो० लक्ष्मीचन्द, प्रो० केलकार, पं० नरदेव शास्त्री, स्वा० मुनीश्वरानन्द, म० सर्वदानन्द, म० सीतलासहाय। म० रामनरायन वर्मन, म० चांदकरण शारदा।

आगामी वर्ष के लिए सम्मेलन प्रयाग में निमन्त्रित किया गया है।

चण्डीप्रसाद
मंत्री स्वागतकारिणी सभा,

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

Registered NO. A. 434.

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ॥

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | १५ माघ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २७ जनवरी सन् १९१७ ई० | संख्या ४१ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रखा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का बिल्कुल ताजा शास्त्रार्थ छपगया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही कहीं में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की पुष्टि का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(मु० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गधामी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुलदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। अतः से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचाराऽनाचार और कूत-क्रात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ कूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक पुस्तक रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =) (डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जावेगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस गुरुकुल-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) U.P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	...	...	... ३)
विद्यार्थियों से	...	...	... २॥)
भारत विभिन्न देशों से	...	...	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन विना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

गुरुकुल-समाचार

गुरुकुल के वार्षिकोत्सव की तिथियें बदल गईं पंजाब और संयुक्त प्रान्त से बराबर पत्र आते रहे कि होली के समय छुट्टियां कम हैं और सर्दी अधिक होगी इस लिये बिस्तरों का बोझ उठाना पड़ेगा जो रेलवे ट्रेनों की अनिश्चित अवस्था होने के कारण बहुत कष्टदायक होगा। आर्य-प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री जी की भी यही सम्मति रही, इस लिए होली के अवसर से वार्षिकोत्सव की तिथियां आगे बढ़ा दीगईं। ईस्टर की चार-छुट्टियां ६ से ९ अप्रैल अर्थात् २५ से २८ चैत्र तक होंगीं। उन्हीं दिनों गुरुकुल का वार्षिकोत्सव होगा। गुरुकुल के प्रेमियों को भी धन एकत्र करने का अच्छा अवसर मिल जायगा।

ब्रह्मचारियों का स्वास्थ्य अच्छा है। गत सप्ताहों में तो सिवाय एक दो चोट वालों के कोई भी चिकित्सालय में न था: अब इस सप्ताह में दो को साधारण ज्वर हो गया था जो एक ही दिन में उतर गया। इन्द्रप्रस्थगुरुकुल के प्रारम्भिक उत्सव के कारण श्री डाक्टर सुखदेव जी दश दिन अनुपस्थित रहे। उनके पीछे भी कोई आवश्यकता चिकित्सक की प्रतीत नहीं हुई।

पढ़ाई का काम बड़े बल से चल रहा है। महाविद्यालयस्थ ब्रह्मचारियों की परीक्षा २७ माघ से आरम्भ होकर ३ फाल्गुन को समाप्त होजायगी। अधिकारी परीक्षा भी २७ माघ ही को आरम्भ होगी परन्तु वह ८ फाल्गुन तक चलेगी। इस वर्ष गुरुकुल सुलतान से ७ छात्र अधिकारी परीक्षा में सम्मिलित होंगे। गुरुकुल का कार्य्य-क्षेत्र बढ़ता ही जाता है। जितना ही कार्य्य क्षेत्र बढ़ता है उतना ही गुरुकुल के कार्य्यकर्त्ताओं में त्याग और सेवा का भाव अधिक बढ़ना चाहिए।

आशा है कि परीक्षा के परिणाम १० फाल्गुन तक निकल आयंगे और ११ फाल्गुन (२२ फरवरी) को आगामी वर्ष के पहले सत्र की पढ़ाई आरम्भ हो जायगी।

संयुक्त प्रान्त की संस्कृत पाठशालाओं के इन्स्पेक्टर श्री महामहोपाध्याय पं० ठाकुरप्रसाद जी द्विवेदी ८ माघ को गुरुकुल अवलोकनार्थ आये थे। उन्होंने सम्मति पुस्तक में निम्नलिखित सम्मति लिखी है:-

"आज मैंने गुरुकुल कांगड़ी जिला बिजनौर का निरीक्षण किया। सब श्रेणी के छात्रों को संस्कृत पढ़ना आवश्यक है। संस्कृत में वेद, दर्शन, व्याकरण, साहित्य पढ़ाया जाता है। मैंने प्रायः सब श्रेणियों के छात्रों की परीक्षा ली और उन्हों ने सन्तोषप्रद उत्तर दिया, विशेषतः दर्शन में। कईएक अध्यापकों की पाठन प्रणाली भी अवगत हुई, और वह उत्तम प्रमाणित हुई। संस्कृत के अतिरिक्त गणित, चित्रादि विद्या, पदार्थ विद्या भी आर्य्य भाषा में छात्रों को बोधित की जाती है, जोकि एक विलक्षण और नवीन बात है। मुझे वनस्पति और कृषि विद्या के प्रोफेसर ने अपना पाठन क्रम कार्य्य प्रणाली में दर्शाया, जिस से कि चित्त में अत्यन्त आल्हाद हुआ। सब प्रोफेसर और अध्यापक अपने २ कार्य्य में दत्त चित्त पाये गये।

सर्वतो भाव से दृष्टि-पात करने से यह निश्चित भाव होता है कि गुरुकुल उत्तम कार्य कर रहा है। मैंने गुरुकुल महाविद्यालय के अन्य विषयों में अपनी सम्मति १ छपे हुए फार्म में लिख ली है।"

———o———

पौष मास में नीचे लिखी आय हुई-

महानिधि

म० अमृतराय जी सं०र०ब्र अर्जुन १००)
म० माधव प्रशाद जी तिवाड़ी
२) मासिक की प्रतिज्ञा युद्धलक ७२)

श्री सभा द्वारा मास कार्तिक मार्ग शीर्ष में:—

म० लक्ष्मण रामनगरी १३८।=)॥
आर्य्यसमाज श्रीनगर १००)
द्वारा ला० नोतन दास केदार नाथजी ५३९)
द्वारालाला सीताराम केदारनाथजी ८३०॥)
आर्यसमाज रोहतक ४०)
Dr. लाल चन्द्र जी
आर्यसमाज लाहौर सदर २०)
म० मूलचन्द्र जी सुलतान छावनी से ४०)
Dr. हरप्रशाद जी सीनियर सर्ज
असिसटन्ट सर्जन लाहौर ६३)

१९७८=)॥

विविध महाशयों से ४५८॥=)
योग पुरोनीत २४३६॥।-)॥

विशेष कार्य्यार्थ

म० मेटाराम रामरखाया मल की रईस तथा साहूकार मीठाधार से उन के स्मारक में धर्म्म शिक्षामें अधिकारी परीक्षा में १म रहने वाले ब्रह्मचारी को १००) के सूद से पदक दिया जावेगा —१००)
अन्य २)

१०२

मूलधन

म० बजरंग प्रशाद जी S/o
म० कन्हैया लाल जी जज कोर्ट
Mungaon Bhopal
गोरूप ३९) भन्डार ७६॥)॥ मिष्टार्थ २०)
पुस्तकालय २०)
संग्रयोग १५५॥)

२७९४।-)॥

आयव्यय के ब्यौरे (Balancesheet) से पता लगता है कि बजट की कमी पूरी करने के लिये अभी तक ११०००) की और आवश्यकता है। अगले वर्ष के लिये ७०,०००) और आवश्यक होंगे। तब ८१,०००) महानिधि में प्राप्त हो तो आगामी वर्ष का बजट ठीक हो सकेगा। इस के लिये गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के भक्तों को अभी से यत्न आरम्भ करदेना चाहिये।

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव १ माघ से आरम्भ होगया। उस में सम्मिलित होने के लिये गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य और स्नातक बुद्ध तथा स्नातक जयदेव विद्यालङ्कार चलेगये। इस वर्ष शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र में भी २० से अधिक छात्र प्रविष्ट होने के लिये तय्यार हैं।

मुंशीराम
मुख्याधिष्ठाता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

...रकुल और हमारा भविष्य

...के चरणों में प्रचारक की भेंट

आवश्यक समस्या

...ी धिरकार से अपने मार्ग पर ...रही है, सूर्य और चन्द्र अपनी २ निर्दिष्ट पद्धतियों पर तुले हुए हैं, प्रकृति ...व विद्यमान अपने २ स्थान पर स्थिर किन्तु संसार के विचारों में दिनरात ...र क्षण क्षण में भेद आरहे हैं। जो ...ल का असम्भव था, वह आज की ...स्या है; जो कल की समस्या थी, ...आज की कल्पना है; जो कल की ...ना थी वह आज का सत्य है। सं... इसी प्रकार चल रहा है। कई वि... वायुमण्डल में विलीन हो रहे हैं ...कई सुरम्य उद्यानों में अंकुर उपजा ...हैं। इस परिवर्तनशील विचार-स... में दो बातें बहुत स्पष्टतया प्रतीत ...ती हैं—[१] संसारके विचार अन्त... जातियों की शिक्षा पर अव...लम्बित रहते हैं। [२] उन विचारों की ...ी सदा निचले तल पर से उठकर, ऊ... के तल पर आना चाहती है। ये सत्य ...तियों के इतिहास में नित्यप्रति प्र...ट हो रहे हैं। इंग्लैण्ड के प्रसिद्ध सेना... वैलिङ्गटन ने कहा था कि 'वाटलू ...पुड ऐटन [स्कूल] के मैदानों ...जीता गया था' अर्थात् यदि वैलिङ्गटन ...स्कूल में शिक्षा न पाता तो वह ...जीते २ काम न कर सकता।

भारत में भी शिक्षा की समस्या बड़ी ...ता से उठ रही है। आज नहीं—...काल हुआ, इस युग में नहीं—अ... युगों से भारतवर्ष के विद्वान् शिक्षा ...समस्या पर विचार करते आये हैं। ...पहले कभी इतने ज़ोर से यह स... हमारे सम्मुख नहीं आई। का... यह था कि मुसलमानों के समय से ...भारत में एक ही शिक्षा-प्रणाली प्र... थी। वह स्मृतियों और सूत्रों में प्रतिपादित शिक्षा-प्रणाली थी। मुस... ल्मानों के समय में शिक्षा का इ... तना ज़ोर न था। मुसलमान सभ्यता और ज्ञान की कोटि में बहु भारतवर्ष के नि... वासियों से इतने कम थे कि उनके समय में केवल राजनीतिक प्रतिद्वन्द्विता रही, विचारों की प्रतिद्वन्द्विता नहीं। पहले दिन से ही मुसलमान राजाओं की विचार सेना ने अपने हथियार रख दिये।

मुसलमानों के पीछे भारत में एक ऐसी जाति ने पदार्पण किये, जो राजनीति... क धूर्तता और शस्त्रों की चतुराई में तत्कालीन भारतवासियों से आगे बढ़े हुए थे। उनके आने के साथ सब प्रश्नों ने नया रूप धारण किया। उस नई आती हुई जाति की सभ्यता भी बड़ी ऊंची थी, चकाचौंध मचाने वाली थी। जहां उसने हमारे अन्य सब जातीय अंगों पर वार किया, वहां सब के मूलभूत शिक्षा के प्रश्न को भी छुट्टी न मिली। इस नई जाति ने अपनी आवश्यकताओं के अनुसार शिक्षणशालायें स्थापित कीं। सब शिक्षणशालाओं से कई लाभ हुए। सरकार को उन से नौकर और वकील मिल गये; प्रजा को सरकारी नौकरियों का द्वार मिल गया। साथ २ प्रजा को और भी कई लाभ मिल गये। इन शि... क्षणालयों में पढ़कर भारतवासी अपने अंग्रेज़ शासकों की बोली बोल सकते हैं, उनकी सोसाइटी में आ सकते हैं, उ... नके वेष से अपने आपको सजा सकते हैं। वे भारतीय लोग, जिन्होंने जयिता मुसलमानों के विचारों को जीत लिया था, नई जाति की सभ्यता के विचारों से जीते गए। भारतीयों के विचार परा... जय का चिन्ह देश के गली कूंचे में घर द्वार पर दिखाई देने लगा। रोग ने भारत के अंग २ में घर कर लिया। भा... रत की देवी पश्चिम की देवी के चरणों में लोटने लगी।

तब भारत के विचारशील लोग जा... गने लगे, और इस रोग का इलाज सो... चने लगे।

रोग का मुख्य इलाज-गुरुकुल

इस रोग के कई ऐसे अधूरे इलाज सोचे गये, जिन से कोई कार्य सिद्ध न हुई; कई ऐसे उलटे इलाज सोचे गये जिन्होंने रोग को और भी बढ़ा दिया—किन्तु जैसे ऋषिदयानन्द ने देश को और बहुत सी नई बातें दीं, वैसे ही असली इलाज भी उसी ने बतलाया। वह असली इ... लाज गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का उद्धार था। ऋषि दयानन्द का विश्वास था कि न केवल भारत के—अपितु सारे संसार के शिक्षा सम्बन्धी प्रश्नों का हल गुरुकुल शिक्षाप्रणाली से ही होगा। आर्य... समाज ने ऋषि के उस विचार को लेकर गुरुकुल स्थापित किया। किसी दिन गुरु... कुल के नाम पर दुनिया हंसती थी, आज विचारशील लोग उसके प्रति विश्वास और श्रद्धा प्रकाशित कर रहे हैं। किसी दिन लोग गुरुकुल की स्थापना को ही असम्भव समझते थे, आज वे उस के कार्य को स्पष्ट रीति से चलता हुआ देख रहे हैं। चारों ओर से प्रमाण इकट्ठे हो रहे हैं—जो गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का समर्थन कर रहे हैं। उन में से कुछ एक प्रमाण हम यहां संग्रहीत करते हैं।

१ प्रमाण—वायसराय का व्याख्यान

भारत के वर्तमान वायसराय लार्डचेम्स... फोर्ड गुरुकुल पधारे थे। उस समय बीच २ में आपने जो वाक्य कहे, उस से प्रतीत होता था कि आप गुरुकुल शिक्षाप्रणा... ली को खूब पसन्द करते हैं। उस प्रणाली ने उन पर गहरा प्रभाव उत्पन्न किया है। यदि उस समय कोई सन्देह था तो वह अब दूर हो गया। कलकत्ता विश्व... विद्यालय के चांसलर की हैसीयत से भा... षण करते हुए आपने जो कथन किया था, वह प्रकारान्तर से गुरु... कुल शिक्षाप्रणाली का समर्थन था। प्रारंभ में आपने शिक्षा के दो उद्दे... श्य बताये। आप ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुये कहा—"तब हम तुम्हारे यूनिवर्सिटी-जीवन से क्या आशा रखते हैं? प्रथम यह कि तुम यहां से बने हुए और दृढ़ आचरणों वाले बन कर निकलो, तथा वह आचरण तुम्हारे

अयोग्य न हो। दूसरे तुम नगरके भी मनुष्यों के कर्तव्यों को पालन करने और अपने नैतिक जीवन में भाग लेने के योग्य बन कर निकलो—किम्बहुना, हम तुम्हें आचरण और उद्देश्य वाले मनुष्य बना हुआ देखना चाहते हैं" गुरुकुल के ये ही तो उद्देश्य हैं।

लोग कहते हैं कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी कहां से पेट पालेंगे और सरकारी यूनिवर्सिटियों के संचालक कहते हैं कि कालिजों के विद्यार्थी दुनिया में भली प्रकार पेट पालना भी नहीं कर सकते। वायसराय ने अपने भाषण में इसी सम्बन्ध में कहा—

"अभी उस दिन मैंने एक विकालत के विद्यार्थी से पूछा कि तुम ने इतने ख़तरों से युक्त विकालत को क्यों स्वीकार किया उसने उत्तर दिया—"भला मैं, और क्या लेता?" अर्थात् यदि गुरुकुल के विद्यार्थियों के लिये विकालत और सरकारी नौकरी के दरवाज़े बन्द हैं तो कालिज के विद्यार्थियों के लिये इन दो के सिवा और सब दरवाज़े बन्द हैं। सोचने का स्थान है कि यदि शिक्षा का उद्देश्य कमाना भी समझ लिया जायतो कमानेके अवसर किन्हें बहुत हैं—उन्हें जिनके लिये केवल दो द्वार खुले हैं, या उन्हें जिनके लिए शेष सब द्वार खुले हैं?

इसी प्रश्न को आगे बढ़ा कर लार्ड बेमूसकोर्ड कहते हैं—

"जब तक विद्यार्थी यह समझते रहेंगे कि आजीविका के विकालत और क्लर्की ये दो ही उद्देश्य हैं, तब तक इन कामों में लोगों का बहुत अधिक जमाव पायेंगे और उसका परिणाम होगा कि निरुत्साह निराशा और असन्तोष उत्पन्न होंगे।"

क्या ही सत्य वचन हैं! लोग ऐसा समझते हैं तभी तो गुरुकुल पर आक्षेप होता है कि गुरुकुल के स्नातक विकालत और क्लर्की कैसे करेंगे?

आगे आप अपनी इच्छा प्रकट करते हैं—

"हमारी नीति यह है कि शिक्षित युवकों के लिए कमाईके जितने अधिक मार्ग होसकें, खोले जायं, और साथ ही विकालत और सरकारी क्लर्कीसे अन्य आजीविकाओं की ओर जितनों को भी झुकाया जासके, झुकाया जाय।"

उस समय गुरुकुल के आलोचक लोग क्या करेंगे? उस समय तो उनके सुख स्वप्न टूटेंगे— या तब भी नहीं? कालिजों का यही बड़ा लाभ बताया जाता था, सरकार की नीति उस से विपरीत है। आगे ही सैंकड़ों हज़ारों बी०ए० २०) की क्लर्की ढूंढते फिरते हैं, अब तो और कठिनाई होगी? गुरुकुल ने इस प्रश्न को पहले ही हल कर दिया। न उससे सरकार को फ़िक्र—क्योंकि गुरुकुल के स्नातक उससे विकालत या सरकारी नौकरी नहीं मांगते—और न उसकी जनता को चिन्ता, क्योंकि उसके स्नातकोंको नौकरी न मिलने पर निरुत्साह निराशा और असन्तोष का मुंह न देखना पड़ेगा।

आगे के भाषण में भी बहुतसी ऐसी बातें हैं, किन्तु उन्हें छोड़ कर अब हम दूसरी ओर चलते हैं।

२ प्रमाण-सरकारी यूनिवर्सिटियों की अकृतकार्यता

इलाहाबाद के पायनियर-पत्रने-अपने ५ जनवरी के अंक में इस विषय पर एक लेख लिखा है। लेख का प्रारम्भ यों है—

"भारतीय यूनिवर्सिटी की वर्तमान दशा ऐसी है कि कोई भी इस देश की उच्च शिक्षा का हितैषी उसे बड़ी आशंकाओं के बिना नहीं देख सकता।"

इस का कारण भी सुनिए—

"इन दशाओं का एक बड़ा शोक-जनक परिणाम यह हुआ है कि अध्ययन के गुण में बहुत न्यूनता आगई है, जिसे सर्वसाधारण विद्यार्थियों के समतल पहुंचाना पड़ता है। साधारण विद्यार्थी का अंग्रेज़ी भाषासम्बन्धी अपूर्ण ज्ञान उसे अपने विषय की बहुत पुस्तकों को सरलता पूर्वक पढ़नेसे रोकता है; और कई स्थानों पर अध्यापक के व्याख्यान समझने से भी बाधक होता है, और साथ ही इस से भारतीय विद्यार्थियों की उस स्मृति शक्ति पर भी बहुत दबाव डालता है, जो अधिक भारतवासियों में अधिकाई से पाई जाती है।"

यह ठीक है। स्कूलों में बेचारे भारतीय विद्यार्थी अंग्रेज़ी के स्पेलिंग याद करते २ मर मिटते हैं, अपनी मातृभाषा को विदेशी भाषा पर वार देते हैं, तो भी इतनी अंग्रेज़ी आती है कि अध्यापक के व्याख्यान भी नहीं समझते। फिर भी श्रीयुत यदुनाथ सरकार जैसे भारतवासी कहते हैं कि शिक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी ही चाहिए। फिर भी कई लोग गुरुकुल पर आक्षेप करते हैं कहां अंग्रेज़ी में शिक्षा क्यों नहीं दी जाती?

जिस कारण से सरकारी यूनिवर्सिटियों की अकृतकार्यता हुई, उसे हटाने का साइस हिन्दू यूनिवर्सिटी के संचालकों को भी नहीं हुआ! एक गुरुकुल ने उस कारण को हटाया है और अंग्रेज़ी की तिलांजलि दे मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया है।

३. प्रमाण—मुसलमानभाइयों की गवाही

गुरुकुल को आर्यसमाज ने बनाया किन्तु एक ऐसे व्यापक आदर्श को लेकर बनाया है कि सारे देश—या सारे देश सारी जाति या सारी जातियों की सेवा का अधिकारी बन गया है। ईसाई भी गुरुकुल में आते हैं, और प्रसन्न होकर जाते हैं। मुसलमान भाई गुरुकुल में आते हैं, और बड़े प्रेम से कार्य की देखभाल करते हैं। उन्हीं दिनों मुसलमान सज्जनों ने गुरुकुल पर अपनी राय दी है। उन सम्मतियों से ज्ञात होता है कि गुरुकुल का शिक्षा सम्बन्धी आदर्श कहीं नहीं बहुत विस्तृत है। सब धर्मों जातियों के लोगों का हृदय उसकी ओर आकृष्ट होता है।

जासपुर के मौलवी दोस्त मुहम्मद हसनाना गुरुकुल देखने आये, देख कर आपने जो सम्मति प्रकट की है, उस निम्नलिखित संक्षेप हम सहयोगी प्रताप से लेते हैं—

"गुरुकुल के अतिथिसत्कार की प्रशंसा करने के पीछे आपने गुरुकुल के विषय में यह राय कायम की है (!) स्थानकी दृष्टि से यह विद्यालय ऐसी महत्वपूर्ण और रम्य भूमी पर है कि संसार भर में यद ही किसी विद्यालय को भाग्य

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस प्रकार का स्थान प्राप्त हो। गुरुकुल के एक पार्श्व में पहाड़ियां और दूसरे पार्श्व में गंगा की धार चारों ओर हरियाली है। यात्रियों का दृश्य देखने योग्य है। इमारत की सादगी में जो शान पाई गई है उससे मेरे दिल में अलीगढ़ कालिज की आकाश को छूने वाली महोत्तम इमारत को विस्मृत करा दिया है। (२) गुरुकुल को चलाने में सरकार की सहायता लेने में सन्तोष का अवलम्बन किया गया है और "अपनी मदद आप करो" के सुनहरी सिद्धान्तपर आरूढ होकर सफलता से चलने वाली यदि कोई संस्था है तो केवल मात्र यही है। (३) गुरुकुल ही केवलमात्र विद्यालय है जहां शिक्षा केवल शिक्षा के लिए उपलब्ध की जाती है। (४) भारत भर में गुरुकुल ही अकेला विद्यालय है जहां आश्रम निवास प्रथा (Residential System) पर विद्यार्थियों को विद्या और शिक्षा दी जाती है। (५) विद्यार्थियों को वर्तमान समय का फेशन भरा, अलंकृत तथा आडम्बरमय जीवन से दूर हटा कर पूर्व पुरुषाओंका सा सादा परिश्रमी और पापरहित आजीविका का अभ्यासी बनाया जाता है। (६) गुरुकुल के भण्डार अर्थात् भोजन शाला में लाल मिर्च का प्रयोग वर्जित है जो न केवल गुरुकुल के विद्यार्थियों की शक्तियों पर परन्तु उन विद्यार्थियों की आने वाली सन्तति पर भी भारी कृपा है। क्या ही अच्छा होता यदि देश के अन्य बोर्डिङ्ग स्कूलों के नेतागण भी इस का अनुकरण करते। विद्यार्थियों के स्वास्थ्य रक्षा के सम्बन्ध में ऐसी सुदृढ़ सावधानियां मेरे विचार में देश भर में केवल गुरुकुल में ही की जाती हैं।"

कानपुर के ज़माना पत्र में

गुरुकुल विद्यालय पर एक लेख निकला है। उसका अन्तिम भाग हम उद्धृत करते हैं—

"इस प्रकार यदि हम चाहते हैं सारे विषयों पर विचार करने वाले विद्वान पैदा हों तो हमें याद रखना चाहिये कि एक जे० सी० बोस वा रोबिन्द्रनाथ टैगोर भारतीय सभ्यता को एक सौ राजनैतिक वक्ताओं की अपेक्षा अधिक उन्नति के शिखर पर ला सकता है। मुझे देख पड़ता है कि यदि गुरुकुल का काम इसी ढंग से होता रहा जैसा कि अब तक रहा है तो भारती जातीयता में वह भारी भाग लेने लगेगा। मेरे विचार में गुरुकुल के उत्तर दाता लोग जानते हैं कि अभी लक्ष प्राप्ति के लिए बहुत कुछ करना है। विद्यालय और महाविद्यालय की श्रेणियों में शिक्षा की रीति में अभी बहुत कुछ और उन्नति की आवश्यकता है। महाविद्यालय की श्रेणियों में पढ़ाई अंग्रेजी भाषा को लक्ष में रख कर होनी चाहिए। आज कल पश्चिमी विद्याओं के बिना हम गुज़ारा नहीं कर सकते और न हिन्दू अपनी धर्म की भाषा के बिना कुछ कर सकते हैं। इस लिए अंग्रेज़ी और संस्कृत दोनों में से पार होना अनिवार्य है। बुद्धि के संसार में निपुणता की प्राप्ति के आदर्श को सदा लक्ष में रखना चाहिये। कई लोग खड़े लहजे में पूछते हैं कि गुरुकुल के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के पीछे करेंगे क्या? इस का उत्तर स्पष्ट है कि यदि विद्यार्थी ने गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली के अनुकूल शिक्षा पाई है तो वह सरकारी युनीवर्सटी के ग्रेजूएट से बढ़ कर योग्य होता है। हमें उन के आगामी जीवन के विषय में किसी प्रकार का सन्देह मन में न लाना चाहिए। यदि वह योग्य हैं तो संसार में रहेंगे और अपने लिए आजीविका के सुखे मैदान तलाश करेंगे। अन्त को सरकारी अधिकारी भी उन की योग्यता को स्वीकार करेंगे। गुरुकुल में सीधा सादा और पवित्र विचारों का जीवन व्यतीत कराया जाता है इस से बढ़ कर और कौन सा आदर योग्य आदर्श हो सकता है।"

गुरुकुल हमारी आशाओं का आधार है।

ये साक्षियां गुरुकुल के आदर्श की उत्तमता को सिद्ध नहीं करतीं—वह तो भगवान् भास्कर की भांति स्वयंसिद्ध प्रकाशित है। हमारा तात्पर्य केवल यह दिखाने से है कि गुरुकुल के आधार में जो सिद्धान्त है, सब प्रकार के लोग उस की ओर झुक रहे हैं, और उस की सचाई के सामने सिर झुका रहे हैं। इस से हमें अपने संकल्प में दृढ़ होना चाहिए। इस समय भारत भर की शिक्षा सम्बन्धी समस्या के हल करने का भार है। उस बोझ से घबरा जाना निर्बलता है—विघ्नों से डरजाना कायरता है। कार्य महान् है—कर्तव्य बड़ा है—कठिनाइयां भी अवश्य और भयानक हैं। उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए आवश्यकता है-अदम्य साहस की, अनन्त उत्साह की। इन दोनों गुणों की आवश्यकता है और अनन्त विस्तार वाला पुण्य और यश उन का फल है। यदि हम इस शिक्षा प्रणाली के उद्धार में कृतकार्यता पा सके, तो भविष्य सन्तानों के अमर धन्यवादों पात्र होंगे किन्तु यदि हमारे साहस मुंह मोड़ लिया और निरुत्साह ने तोड़ दिया तो दुनियां हम पर हंसेगी और हम अपने आप पर रोवेंगे। इसका तात्पर्य नहीं कि हमें ऐसा सन्देह है-कदापि नहीं। हमें आर्य जाति के भविष्य पर उत्साह और धैर्य पर पूरा विश्वास है 'आर्यजाति अपनी और संसार की शिक्षा समस्या को शीघ्र ही हल कर के भावि संसार के साधुवाद लूटेगी—इस की पूर्ण आशा है।

आर्यजाति का कर्तव्य

आर्य्यजाति का कर्तव्य है कि वह स्वर्णीय अवसर को हाथ से न जाने दे। आर्य जाति ने बहुत कुछ अपने कर्तव्य को समझा और पालन किया है। आवश्यकता है कि वह उसे और भी अधिक समझे और पालन करे। स्थिरता सत्ता की जान है। गुरुकुल के आधार में जो सिद्धान्त हैं वह अटल और स्थिर है। आवश्यकता है कि उसके आधार में जो धनराशि है उसको भी ऐसा स्थिर किया जाय, कि गुरुकुल के आर्थिक भविष्य में कोई सन्देह न रहे। इस समय जहां यह आवश्यक है कि गुरुकुल के कार्यकर्ता अपनी जिम्मेदारियों के पूर्ण भार को समझ कर अपने काम में और अधिक दत्त चित्त हों वहां इस से भी आवश्यक है कि आर्यजन उस के आर्थिक आधार को अटल स्थिर करदें। ऐसा अवसर कभी न आने

गुरुकुल के कार्यकर्ताओं को धन की चि-
ा बाधित करे। खाने पीने के योग्य
न देते हुए उसके स्थिर कोष की भी
ते में भी विशेष यत्न करे।

उत्सव समीप है

गुरुकुल का उत्सव समीप है। लग भग
मास शेष है। उत्सव का समय गुरु-
ल के लिए फस का समय है। उस स-
य जो अन्न इकट्ठा होगा, साल भर वही
ना होगा। उस समय जो धन एकत्र
गा, वर्ष भर उसी से गुज़ारा करना
गा। साथ ही स्थिर कोष की पूर्ति भी
ी समय होनी चाहिये। अब आलस्य
लिये समय नहीं। गुरुकुल के सब
तैषियों को सचेत होकर यत्न करना
हिये। समाजों को भी अपना २ कर्तव्य
लने में चेष्टावान होना चाहिये। सारांश
कि इस पुण्य यज्ञ में सब को
ने अपने हिस्से की आहुति डालने में
ंबद्ध होना चाहिए।

प्रचारक की भेंट

जहां गुरुकुल के प्रति सब का कर्तव्य
वहां सद्धर्मप्रचारक का भी कोई कर्त-
है, प्रचारक परिवार का भी कोई
व्य है। इस कर्तव्य के भार से हम
ग छूट नहीं सकते। और जितने प्रकार
ी गुरुकुलार्थ चन्दा होगा, इस में भाग
हुए प्रचारक परिवार के सभासद्
ने की हैसीयत में भी प्रचारक के
यों को इस यज्ञ में कोई आहुति दा
ी चाहिये। वह आहुति क्या हो?
वर्ष के लिये जो हमने निश्चय किया
अह यह है। गुरुकुल के लिये और
दा तो होगा ही, सद्धर्मप्रचारक की
ोष भेंट से उस के स्थिर कोष में कुछ
होनी चाहिये। आगे के लिये फिर
जायगा—इस वार्षिकोत्सव पर प्रचा-
की ओर से कम से कम

१०००) की रक़म

गुरुकुल के स्थिर कोष में जानी चाहिए।
रक़म, कोई बड़ी नहीं। पांच २
ी के २०० हिस्से हो जाने से ही यह
ा पूरी हो जायगी। अब तर्क वितर्क
समय नहीं। प्रचारक के प्रेमियों को
चाहिये कि इस लेख को देखते ही पांच २
रुपये [इससे न्यूनाधिक हों तो भी हर्ज नहीं]
मनीआर्डर सम्पादक द्वारा या सीधे
कार्यालय में रवाना करदें। इतना साथ
स्पष्टतया लिख दें, कि यह प्रचारक परिवार
के गुरुकुल—स्थिरता—फंड में डाले जायं।

अगले सप्ताह से हर बार आई हुई
राशियों की सूचि नाम सहित छापी
जाया करेगी।

अन्तिम निवेदन

आर्य मात्र से हमारा लेख के अन्त में
यही निवेदन है कि अपने कर्तव्य को,
और भार को समझ कर आते हुए उत्सव के
लिये सचेष्ट और यत्नवान हूजिये।

प्रचारक परिवार से हमारा अन्तिम
निवेदन यह है कि यह छोटी सी राशि
शीघ्र ही पूर्ण कर दीजिये, हमें बार २
प्रार्थना न करनी पड़े, और नाहीं नि-
राशा होना पड़े। स्वयं अपना पांच रु
पये का हिस्सा भेजिये और अन्यों से
भिजवादीजिये।

चित्रमय जगत-और वर्णव्यवस्था

सहयोगी चित्रमयजगत् के एक सम्पा-
दकीय नोट में वर्णव्यवस्था की मीमांसा
करते हुए सम्पादक महाशय लिखते हैं:—

"मरते समय जैसे 'स्वभाव' जो म-
नुष्य अपने साथ लेजाता है, वैसा ही
उस का पुनर्जन्म होता है। पुनर्जन्म पा-
कर फिर वही अपने स्वभावानुसार गुण
धारण करते हुए कर्म करने लगता है।"

अन्त में आप लिखते हैं—

"सारांश यही है कि स्वभाव मनुष्य
के साथ लगा ही रहता है, वह अलग
नहीं हो सकता॥

इस का संक्षितार्थ यही है कि जो
मनुष्य जैसा एक बार होगया, वैसा ही
रहेगा। अशोक पहले क्रूर था, पीछे द-
यालु होगया। वाल्मीकि पहले डाकू था
फिर महाकवि होगया। लोग धार्मिक से
अधार्मिक और अधार्मिक से धार्मिक बनते
रहते हैं। विश्वामित्र क्षत्रिय से ब्राह्मण
होगया यह सब कुछ नहीं जो एक
बार गिरा फिर कोई आशा नहीं। जो
विचार लेकर एक बार मरा, वे अगले
जन्म में रहेंगे। जब वह फिर मरा
तब तक वे ही बिचार स्थिर रहेंगे। फिर
उन्हीं विचारों के साथ मरेगा, और उ-
न्हीं विचारों के साथ अगला जन्म लेगा।
फिर धर्मोपदेश, शिक्षणालय, और समा-
जसंशोधन से क्या लाभ? मनुष्य जाति
के भविष्य में अन्धकार के सिवाय कुछ
नहीं। क्या ऐसा दर्शनशास्त्र कभी जगदी-
श्वर की सृष्टि का संचालक हो सकता है
जिस में आशा उन्नति और अभ्युदय की
आशायें एक दम लुप्त हो जायं?

प्रेम धर्म तथा देशभक्ति

विगत सोमवार को मिसेज़ सरोजिनी
नायडू ने प्रयागवासियों के सन्मुख
देशभक्ति का संगीत-गान किया। अपनी
अपूर्व प्रतिभा से उक्तदेवी ने देशभक्ति के
उच्च भावको और भी उच्च बना दिया
और बतलाया कि 'प्रेम' धर्म और देशभक्ति
'इन तीन भावों की पूर्ति से ही मनुष्य का
जीवन सफल होता है। जिस मनुष्य ने
जीवन में प्रेम नहीं किया, धर्म की श्रद्धा
से हृदय नहीं भरा, और देश की सेवा का
व्रत धारण नहीं किया—वह केवल खस
का थैला है, मनुष्य नहीं। यह प्रिय
और सत्यसिद्धान्त है, जो हरेक मनुष्य को
हृदय में धारण करना चाहिये।

'स्वराज्य' प्रस्ताव किसका है?

लखनऊ की कांग्रेस में स्वराज्य का
प्रस्ताव पास हुआ। बम्बई के गुजराती
पत्र में एक लेख निकला है जिस में सिद्ध
किया गया है कि स्वराज्य के प्रस्ताव का
श्रेय बाबू-विपिनचन्द्रपाल को या किसी
और को नहीं अपितु कांग्रेस को है।
नर्मदल के नेता कहते हैं कि स्वराज्य का
प्रस्ताव उन के यत्नों का फल है। नर्मदल
के नेता शायद ऐसा मानने में संकोच
करेंगे। हम कहते हैं— ये विवाद तुच्छ
हैं। स्वराज्य के प्रस्ताव का श्रेय किसी को
नहीं परमात्मा को है, क्योंकि स्वराज्य
परमात्मा का नियम है। परमात्मा के
अटल नियमों में से एक स्वराज्य भी है।
वेदों में स्वराज्य का विधान है। जातियों
के इतिहास स्वराज्य की हलचल से भरे
पड़े हैं। भारत वर्ष में रावण के अत्या-
चार से ग्रसे हुए ऋषियों से लेकर
आजतक विकृत स्वराज्य की चेष्टा
करते आये हैं। इस युगमें युगकारक
ऋषिदयानन्द ने स्पष्ट शब्दों में निज-
शासन की महिमा वर्णित की है। क्या
इस पर भी स्वराज्य के प्रस्ताव का मूल
ढूंढने की आवश्यकता है? अब श्रेय का प्रश्न
नहीं— अब प्रश्न है क्रिया का।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

एक भाषा के विपक्षी

लखनऊ के एडवोकेट में एक महोदय ने लखनऊ के राष्ट्रभाषा सम्मेलन के विपक्ष में एक लेख लिखा है। लेख का सारांश यह है कि भारत को इस समय एक भाषा की आवश्यकता नहीं है। एक भाषा या एक लिपि के लिये यत्न होने से हिन्दुओं तथा मुसलमानों में परस्पर झगड़ा होना सम्भव है—और एक भाषा करने का यत्न है भी निष्फल। इस सम्प्रदाय से हमारा एक प्रश्न है। ये कांग्रेस के पक्षपाती अवश्य होंगे और इसबार हिन्दुओं तथा मुसलमानों ने मिल कर जो प्रस्ताव पास किए हैं उनके विरोधी न होंगे। यह कैसे सम्भव हुआ? कांग्रेस या मुस्लिमलीग करना कब सम्भव हुआ? अब बहुत से शिक्षित भारतवासियों की भाषा एक अंग्रेज़ी भाषा हुई। एक अंग्रेज़ी भाषा का ही परिणाम है कि भिन्न २ प्रान्तों के लोग एकत्र होकर इतना विचार कर सकें। अंग्रेज़ी में एक दोष है। यह भाषा बहुत थोड़ों की है और भारत के लिए विदेशी है। जाति को एकत्र करने में यह साधनभूत नहीं हो सकती। जाति को एक करने का काम वह भाषा करेगी, जो भारत के सर्वाधिक भाग में प्रचलित हो। ऐसी भाषा आर्यभाषा है। थोड़े से अंग्रेज़ी शिक्षित पुरुषों की आकृति का यह परिणाम है, यदि ३३ करोड़ हिन्दी-भाषा-भाषी होकर एक स्वर से अपनी आकृति की सूचना संसार को सुनायें तो कैसा अद्भुत परिणाम होगा?

कुलीप्रथा

जिस कुलीप्रथा के निवारण करने के लिए महात्मा गान्धी की मण्डली ने अपनी गर्दन तलवार पर रखदी थी, वही कुलीप्रथा फीजी आदि द्वीपों में जारी है। भारत हितैषी मि० एण्ड्रूज़ अपने शिष्य मि० पियर्सन के साथ फीजी गये थे और आंख देखी दुख कहानी एक रिपोर्ट के रूप में पेश की थी। अब सुनते हैं कि यह कुलीप्रथा कम से कम पांच सालों तक चलेगी।

मि० एण्ड्रूज़ और मि० पीयर्सन इस दासप्रथा के विरुद्ध इस बल मचाने का काम प्रारम्भ करने लगे हैं। इस का कार्यप्रयाग से प्रारम्भ हुआ है। समस्त भारत हितैषियों के हृदय इन दोनों सज्जनों की सफलता के लिए परमात्मा से प्रार्थना करते हैं।

बूट और जूती का झगड़ा?

फैज़ाबाद तथा लखनऊ में होने वाले दरबार के दरबारियों को आज्ञा मिली थी कि दरबार में केवल योरपियन रचना का बूट ही आसकेगा—जिनके पास ऐसे बूट न होंगे उन्हें नंगे पांव रहना पड़ेगा। प्रायः अङ्गुतालयों में भी बूट ही आता है—चाहे चार साल पुराना हो। किन्तु देशी जूता नहीं जाता चाहे वह आज ही कारीगर के हाथ से निकला हो। ऐसा क्यों? जर्मनी का बना बूट पहिन कर दरबार में आ सकते हैं, परन्तु बढ़िया देसी जूता पहिन कर नहीं। धन्य है, इस तर्क शास्त्र को

संरक्षकसभा क्या है?

इस शीर्षक के नीचे कुछ नये लेख देने से पहिले वह प्रस्ताव दिया जाता है जो कि गत वार्षिकोत्सव पर ४१ संरक्षकों ने अपने हस्ताक्षर से स्वीकार किया था। उस के पश्चात् कुछ लेख देकर इस विषय को यहीं समाप्त किया जाता है। इन लेखों से पता लगता है कि संरक्षक सभा इस समय केवल महा० बालकृष्ण वाली तक ही परिमित है। इस लिये जब तक महा० बालकृष्ण उन सब महाशयों के हस्ताक्षर करा के न भेजें जो कि इस समय उन के घोषणा पत्र के साथ सहमत हैं तब तक यह सम्मति उन अकेले ही की समझी जायगी।

(क) पुराने प्रस्ताव की प्रतिलिपिः—श्रीमान् शुद्धाधिष्ठाता जी गुरुकुल कांगड़ी की सेवामें निम्न लिखित पत्र भेजा जावेः—

"सेवामें निवेदन है कि बालकृष्ण जी बाली दिल्ली निवासी, आर्य्य गज़ट लाहौर, आर्य मुसाफिर आगरा आदिने गुरुकुल विषयक अपनी अपनी अल्पज्ञताओं के कारण जो लेख गुरुकुल के विरुद्ध लिखे हैं उन्हें हम लोग गुरुकुल के लिये हानिकारक और अनुचित समझते हैं। जब से हम लोगों ने अपने अपने बालकों को आप के सुपुर्द किया और जब से अपने "हृदयेते दयाभि" इत्यादि प्रतिज्ञाओं द्वारा उन्हें शिष्य बनाया, हम लोग समझ गये कि अहोभाग्य इन बालकों के जो आप जैसे महात्मा की शरण में आए।

आप जब कि आर्ष नियमानुसार उक्त बालकों के पितृस्थानीय तथा आचार्य हैं, हम लोग नहीं समझते कि किसी दूसरे को आचार्य्य और शिष्य के बीच मध्यस्थ बनने का क्या अधिकार है? हम लोगों को पूर्ण विश्वास है कि आप अपने सुयोग्य सहकारियों की सहायता से अपने शिष्य के लिए जो कुछ कर रहे हैं उससे आपके शिष्यों की शारीरिक मानसिक और आत्मिक दशाएं दिनों दिन उन्नत होती हैं। हम लोगों को पूर्ण विश्वास है कि अधःपतित मनुष्य जाति का समुत्थान गुरुकुल के स्नातकों के ही द्वारा होगा।

आपके कृपाभिलाषी सेवक,
गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के संरक्षक।

[१] बलदेवप्रसाद [२] ब्रह्मानन्द, [३] महताबचन्द्र [४] उमादत्त, [५] अमीरसिंह [६] मोहनलाल [७] सुन्दर लाल [८] अमीरचन्द [९] घनीराम [१०] रामलाल [११] नथमलतिवाड़ी [१२] जगन्नाथ [१३] परमेश्वरीदास [१४] रामस्वरूप [१५] रौशन लाल [१६] बूटाराम [१७] धनीराम [१८] सुन्दरदास [१९] उदयाराम [२०] रामरत्न [२१] गुरुदित्तामल [२२] रामकृष्ण [२३] जीवन जी माथो जी [२४] माधवकान्ह जी [२५] नत्थूराम [२६] शंकरलाल [२७] हरिचन्द [२८] रामरक्खामल [२९] गुरुदित्तां [३०] भगवानसिंह [३१] हज़ारीलाल [३२] हरिद्वारी [३३] लम्भूराम [३४] बाधयप्रसाद तिवाड़ी [३५] धनीराम अमृतसरी [३६] मेलाराम [३७] दौलतराम [३८] धनीराम [३९] मेलाराम [४०] दौलतराम [४१] जोतसिंह।

(ख) पं० बलदेव प्रसाद संरक्षक ब्र० कृष्णकुमार व ब्र० रामस्वरूप लिखते हैं:—मुझे याद है कि गत गुरुकुलोत्सव के समय श्री-

मान्य प्रधान जी ने प्रायः १००) १५०) सरक्षकों के सन्मुख बाबू बालकृष्ण जी दिल्ली वालों के गुरुकुल के विरुद्ध आक्षेपों का उत्तर देकर उन आक्षेपों को निर्मूल साबित करदिया था। उसी समय से उपस्थित संरक्षकों ने अपना सम्बन्ध बाबू बालकृष्ण जी की संरक्षक नामधारी सभा से बिल्कुल तोड़ दिया था, और बाबू बालकृष्ण जी को पब्लिक को गुरुकुल के विरुद्ध भड़काने और भ्रम में डालने वाली घृणित कार्य्यवाही पर अत्यन्त शोक प्रकट किया था। गत वर्ष संरक्षक सभा टूट चुकी थी, फिर समझ में नहीं आता कि जब सभा की स्थिति ही नहीं रही थी तो बाबू बालकृष्ण जी उस सभा के मंत्री कैसे बने रहे। मेरी राय में बाबू बालकृष्ण जी गुरुकुल के विरोधियों से प्रेरित हुए हैं। परमात्मा उन्हें शुद्ध बुद्धि दें कि इन्हें भले बुरे की पहिचान हो।

अभी तक बाबू बालकृष्ण जी की मनघडन्त संरक्षक सभा ने जो सरकूलर छपवा कर आर्य्य पब्लिक को गुरुकुल के विरुद्ध भड़काने का प्रयत्न किया है, बड़ा ही निन्दनीय कार्य्य किया है। मेरा इस असत्य वादिनी सभा से कोई सम्बन्ध नहीं है। मैं आरम्भ ही से इस की कार्य्यवाहियों को घृणा की दृष्टि से देखता रहा हूं।

(ग) पं० उमादयाल मिश्र संरक्षक ब्र० लक्ष्मण लिखते हैं:—म० बालकृष्ण मंत्री संरक्षक सभा का १/१२ का छपा पत्र मिला। इस से पहिले भी कई पत्र ऐसी ही आशंकाओं के देखने में आए। मेरा भी एक बालक चि० ब्र० लक्ष्मण नवम श्रेणी गुरु० कांगड़ी में है। जब म० धर्मपाल (अखबारों अब्दुलग़फ़ूर) के लेख गुरुकुल के विरुद्ध छपे थे, तब वे लेख भी मैंने बड़ी सावधानी से पढ़े थे। पांच प्रतियां "इन्द्र" समाचार की मेरे पास आई थीं, तब भी मन नहीं डिगा था, अब म० बालकृष्ण का पत्र देख कर भी मन नहीं डिगता; परन्तु यह इच्छा हुई है कि जानूं कि म० बालकृष्ण से और गुरुकुल से क्या द्वेष है? यदि संरक्षक सभा गुरुकुल की कोई सहायता नहीं कर सकती तो गुरुकुल को हानि पहुंचाने को तय्यार क्यों हुई है। उसका तो अन्त ही हो जाना चाहिये। क्या प्रतिनिधि सभा और गुरुकुल के आंखें नहीं हैं कि त्रुटियां देख नहीं पड़ती? परन्तु आश्चर्य्य है कि संरक्षक सभा की बहुत बड़ी आंखें हो गईं कि उसको सब त्रुटियां देख पड़ने लगीं।

(घ) सेवामें निवेदन है कि कतिपय पुरुषों की बनाई हुई संरक्षक सभा वा उसके मन्त्री म० बालकृष्ण वाली के साथ हम लोगों का कोई सम्बन्ध नहीं। हम लोगों को पूर्ण विश्वास है कि आप तथा आपके सहायक ब्रह्मचारियों की रक्षा तथा शिक्षा के लिए अपनी शक्ति भरपूर पुरुषार्थ करते हैं जिस के लिए हम लोग सेवा में धन्यवाद अर्पण करते हैं।

आपके कृपाभिलाषी
नन्दलाल नाज़र, हरप्रकाश,
छोटालाल सुखदेव,

(ङ) २ पौष १९७३ के सद्धर्म प्रचारक में "संरक्षक सभा का ढोंग" शीर्षक लेख हम निम्नलिखित संरक्षकों ने पढ़ा और सुना। आपकी सेवामें निवेदन है कि कतिपय वह लोग जो अपने को संरक्षक सभा का सभासद् कहते हैं तथा उन के मन्त्री म० बालकृष्ण जी वाली की कार्य्यवाही को हम लोग शोक की दृष्टि से देखते हैं। गुरुकुल को जो कुछ हानि उन की कार्य्यवाहियों से पहुंचेगी उसके पाप के भागी वे ही होंगे।

हम लोगों ने तो अपने २ विद्यार्थियों को आपकी शरण में समर्पित कर आप को उनका आचार्य्य और पिता स्थानी बना दिया है। हम लोगों को पूर्ण विश्वास है कि आप तथा, आपके सहातक ब्रह्मचारियों के पोषण तथा शिक्षण का प्रबन्ध जितना मनुष्य की शक्ति के भीतर है उतना करते हैं, जिसके लिए हम लोग आपके चरणों में नम्रता पूर्वक धन्यवाद अर्पण करते हैं:—

ब्रह्मानन्द, दीनदयाल, चुन्नीलाल, शिवप्रसाद, उमरावसिंह, गुसाईराम, केवल राम, राजाराम, लछमूराम, दुर्गसिंह, प्रेमराम, हरद्वारी लाल, जादोराम, शान्तिप्रसाद,

(च) श्रीडाक्टर वजीर चन्द्र जी संरक्षक ब्रह्मचारी आर्य मुनि कंटे से लिखते हैं—गुरुकुल के हितार्थ और संरक्षक सभा के तङ्ग करने पर लिखता हूं कि मैं संरक्षक सभा का सभासद् इस को गुरुकुल की सहायक सभा समझ कर हुआ था और चन्दा भी एक बार दिया था परन्तु जब मैं ने जान लिया कि संरक्षक सभा के अधिकारी गुरुकुल के विरोधियों के चेले हैं, उसी समय से मैंने इस सभा से कोई सम्बन्ध नहीं रक्खा.....अब ७/१२ को पेम्फलेट मेरे पास पहूंचा था तो उस पर मैं ने कई नोट किए थे जो मेरे पास अभी तक रक्खे हैं .....परन्तु यह सोच कर प्रकाशित न किए कि शायद वाली पब्लिक को समझ जावेंगे। अब दूसरी चिट्ठी से इन के भाव सर्वथा प्रकट होगए। गुरुकुल के विरोधी मुझे भी औरों की तरह गुरुकुल के बरखिलाफ़ करते ही रहते हैं; मैं उसी समय तुरंत जवाब दे दिया करता हूं।.....

म० जगन्नाथ डिपुटी कलक्टर संरक्षक ब्र० उपमन्यु लिखते हैं:—सद्धर्मप्रचारक में जो चर्चा संरक्षक सम्बन्धी हो रही है उसको पढ़कर मुझे भी आवश्यकता प्रतीत हुई कि मैं भी इस सम्बन्ध में कुछ लिखूं। संरक्षक सभा केवल गुरुकुल की सहायता और संरक्षकों के आपस के सम्बन्ध को पुष्ट करने के लिए बनाई गई थी। शोक है कि आज कल उसके नाम से उलटा नुकसान पहुंच रहा है। मुझे या मेरे ब्रह्मचारी को गुरुकुल के किसी प्रबन्ध की शिकायत नहीं है क्योंकि गुरुकुल के तमाम कार्यकर्ता नेकनीयती से सब काम कर रहे हैं। यदि किसी संरक्षक को किसी प्रबन्ध में कोई त्रुटि मालूम हो या और कोई शिकायत होतो वह श्री मुख्याधिष्ठाता जी गुरुकुल से मिल कर उसका संशोधन करासकता है। अखबारों में चिट्ठी छपवाना या समाजों से अपील करना हानिकारक है। मैं महाशय वाली की इस कार्यवाही से सहमत नहीं हूं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

म० रामस्वरूप जी सरक्षक ब्र० चन्द्रगुप्त लिखते:—आज तक मुझको या मेरे ब्रह्मचारी को गुरुकुल के किसी भी प्रबन्ध पर किसी प्रकार की शिकायत नहीं है। यदि किसी सरक्षक को कोई शिकायत हो तो श्री मुख्याधिष्ठाता जी की सेवामें निवेदन करके दूर की जा सकती है। पत्रों में देना या समाजों में लिखना हानिकारक है। मैं ऐसी कार्यवाही से सहमत नहीं हूं।

पुस्तक समालोचना

सांख्य दर्शन (उर्दू)

लेखक प्रो० दीवानचन्द्र एम० ए० प्रोफेसर डी० ए० वी० कालिज लाहौर मूल्य १।=)

प्रोफेसर दीवानचन्द्र जी पञ्जाब के विद्वत्समाज में विशेष आदर का स्थान रखते हैं। जिन लोगों को विद्वत्ता तह के नीचे घुसती है और साहित्य सागर के तले से रत्न निकालने का यत्न करते हैं प्रोफेसर दीवानचन्द्र उन में से एक हैं। आप का लिखा 'पञ्चिनीतर्क' आर्यभाषा में अपने ढंग का एक ही ग्रन्थ है। उस ग्रन्थ को देखकर हमें आशा हुई थी कि हिन्दी का सौभाग्य चमकेगा और प्रोफेसर दीवानचन्द्र के उद्योग और पाण्डित्य से भाषासाहित्य के भंडार की पूर्ति होगी। हम आप के इस ग्रन्थ को उर्दू में देखकर अवश्य ही कुछ निराश हुए हैं, तथापि इस आशा से धैर्य धारण करते हैं कि यह ग्रन्थ नागरी बाना पहिन कर भी शीघ्र ही आविर्भूत होगा।

इस पुस्तक में लेखक महाशय ने कपिल के सांख्यदर्शन का भावार्थ सरल उर्दू में समझाने का यत्न किया है। इस यत्न में आप को सफलता हुई है या नहीं? इस का उत्तर कुछ कठिन नहीं। इस में सन्देह नहीं कि ग्रन्थ में सांख्य के मुख्य २ सिद्धान्त बतला दिए गये हैं। कई कठिन सिद्धान्तों को बड़ी सरल और लोकवेद्य भाषा में समझाया गया है। दृष्टान्त के लिये परिणामवाद का कठिन सिद्धान्त लीजिए। इसे अच्छी सुबोध रीति से समझाया गया है। व्यक्त और अव्यक्त का भेद भी अच्छा स्पष्ट किया गया है। सांख्य का ईश्वर के विषय में जो मत है, उसे ग्रन्थकर्त्ता ने अच्छी तरह नहीं खुला। इस का कारण ज्ञात नहीं होता। सांख्य ईश्वर वादी है या नहीं, यह बड़ा आवश्यक प्रश्न है? प्रोफेसर साहिब इस का विस्तृत उत्तर देने का यत्न करते तो अच्छा होता।

दो एक विषयों में हम कुछ निवेदन करने का साहस करते हैं। ५ वें पृष्ठ पर आप ने नित्य और अनित्य के सवाल को उठाकर लिखा है 'दूसरे ख़याल को अनित्यवाद या मायावाद कहते हैं' जहां तक हम समझते हैं अनित्यवाद और मायावाद दोनों शास्त्रीय परिभाषायें हैं। उनका पर्यायवाची होना हमें इसी ग्रन्थ से ज्ञात हुआ। जहां तक हमें ज्ञात है, जिसे लेखक महाशय अनित्यवाद के नाम से बतलाते हैं, उस का मायावाद नाम शास्त्रीय ग्रन्थों में नहीं पाया जाता। ये दोनों वाद भिन्न २ हैं। यदि ये शास्त्रीय परिभाषायें न होतीं तो लेखक महाशय को इन के समानार्थक बनाने का अधिकार होता, किन्तु अब अवस्था ऐसी नहीं है।

१६ वें पृष्ठ पर आपने फ़िलसफ़ा के भाग किए हैं। वहां और सब विद्याओं के संस्कृत नाम दिए हैं—कुलेक के लूट गए हैं। लूटों में से एक फ़िलसफ़ा क़ुदरत भी है। इस का तथा अन्य विद्याओं का भी संस्कृत पर्याय दे दिया जाता तो उत्तम होता।

सांख्य के सत्कार्यवाद की व्याख्या करते हुए ग्रन्थ लेखक ने पृष्ठ १०० पर लिखा है "उपादान कारण की नेचर ही यह है कि वह कार्य या नतीजे से मुख़लिफ़ नहीं होता। कारण और कार्य दोनों एक ही हैं।" पूर्वापर के कई वार पढ़ने से हम यही परिणाम निकाल सके हैं कि इन पंक्तियों में लेखक महोदय ने कपिल के सत्कार्यवाद की व्याख्या की है। यदि हमारा यह ख़याल ठीक है और इन पंक्तियों में किसी और दर्शन के सिद्धान्तों का प्रतिपादन नहीं तो हमारा निवेदन है कि यह ठीक नहीं। सत्कार्यवाद कार्य और कारण में अभेद नहीं मानता, अपितु कारण में कार्य की सत्ता मानता है। कार्य कारण में अनभिव्यक्त रूप से रहता है, कारण ही कार्य नहीं है। कार्य कारण का अभेद अभेदवाद का प्रतिपाद्य है, सत्कार्यवाद का नहीं।

ये दो तीन निवेदन हमने इस लिए नहीं किये कि हम पुस्तक में त्रुटियां दिखाना चाहते थे, प्रत्युत इस लिए किए हैं कि यदि हमारा विचार ठीक हो तो लेखक महोदय इस पर ध्यान दें।

पुस्तक उन लोगों के काम की है, जो उर्दू जानते हैं, और सांख्य दर्शन के सिद्धान्त समझना चाहते हैं। हम प्रोफेसर महोदय से प्रार्थना करते हैं कि वे शीघ्र ही इस ग्रन्थ को भाषा में प्रकाशित करादें। साथ ही हमारा यह भी सादर निवेदन है कि आगे से पहला स्थान आर्य्यभाषा को ही दें, और जो मूल पुस्तकें वे लिखें, आर्यभाषा में लिखें। पीछे से चाहे वे उर्दू में छप जाया करें। आर्यभाषा अपने सेवकों से अनन्यभक्ति चाहती है। इस के बिना अब काम न चलेगा।

पुस्तक की भाषा सुबोध है। बीच में मान रेखाओं और शाखाचित्रों द्वारा गहरे रहस्य समझाये गये हैं, उस से सोने में सुगन्ध हो गई है। इस ग्रन्थ ने लेखक की पूर्वोपार्जित कीर्ति को बढ़ाया है।

सफलता की कुंजी

लेखक—श्रीयुत चन्द्रशेखर। प्रकाशक आर्यबुकडिपो। मूल्य ।=) इस छोटी सी पुस्तक में छोटे २ ऐतिहासिक तथा पौराणिक दृष्टान्तों की सहायता से उत्तम २ उपदेश दिये गये हैं। सुशीलता, अवसर प्राप्ति, अभ्यास—ऐसे २ उपयोगी विषयों को लेकर बालकोपयोगी रीति से समझाया गया है। दो बातें निवेदन करनी हैं। जिस गाथा से पुस्तक का प्रारम्भ किया गया है, वह बहुत उत्कृष्ट नहीं है बालकोपयोगी पुस्तक में, और वहां भी ऐसे प्रारम्भ में, ऐसी कहानी का आना अनुचित है, और सारी पुस्तक के सौन्दर्य को मार देता है। उसी अर्थ को किसी दूसरे सच्चे दृष्टान्त द्वारा समझाय

जासकता था। आर्य बुक डिपो की छपाई पुस्तकों में संशोधन की भूलें बहुत रह-जाती हैं, आशा है, डिपो के संचालक उनकी ओर ध्यान देंगे।

सफल जीवन

लेखक पं० राजाराम प्रो०, बी० ए० बी० कालेज। प्रकाशक आर्य बुक डिपो मूल्य ॥)

इस छोटी सी किन्तु अधिक मूल्य वाली पुस्तक में पं० राजाराम जी ने बहुत से अपने अनुभूत उपदेश लिखे हैं। उपदेश सारे ही अच्छे हैं, और बीच २ में दिये हुए दोहे चौपाइयों से उनका सौन्दर्य बहुत बढ़ गया है। पुस्तिका बालक बालिकाओं के लिए उपयोगी है। मूल्य कुछ अधिक है।

बाबा सीताराम के पांच ट्रेक्ट

सन्त आश्रम झुही कानपुर से बाबा सीताराम जी ने हमारे पास ५ ट्रेक्ट भेजे हैं। उन में से प्रथम—

१. सार्वजनिक सेवा है। इस में सरल मनोरञ्जक रीति पर १२ उपदेश हैं। हरएक उपदेश एक आपबीती या आपदेखी घटना से मिला हुआ है। मूल्य -)

२. तैरने की विधि—इस ट्रेक्ट के सोलह पत्रों में बाबा जी ने तैरने के लाभ और तैरने की रीति संक्षेप से बतलाई है, तैरना सीखने वालों के लिए शिक्षा दायक होगा। मूल्य -)

३. पंच स्वकार—इस ट्रेक्ट में स्वधर्म, स्वावलम्ब, स्वाभिमान, स्वदेश और स्वजन की संक्षिप्त व्याख्या करके दिखाया गया है कि ये पांच स्वकार हरएक स्वयं सेवक के लिए आवश्यक हैं। हमारी सम्मति में यदि स्वजन का स्वदेश में अन्तर्भाव करके स्वभाषा को भी पंच स्वकारों में गिनती की जाय तो अत्युत्तम हो मूल्य -)

४. बंसी बाबू की बुलबुल—इस ट्रेक्ट में पक्षी पालने और बुलबुल आदि लड़ाने के फायदे दिखाये गये हैं। हमें बाबा जी के दिखाये परिणामों से पूरी सहमति नहीं। हम समझते हैं कि अपने से निर्बल पर अत्याचार करना बुरा है—और पक्षी को पिंजरे में बंधना अत्याचार है। न हमें स्वयं पिंजरे में बांधना चाहिए, न दूसरे को बांधना चाहिये। स्वयं स्वाधीन रहना चाहिये, दूसरों को स्वाधीन रखना चाहिये। हां यदि हम पशुपक्षियों को ऐसे ढंग पर रखें कि उनकी पूरी स्वाधीनता भी कायम रहे, तब कोई दोष नहीं। मूल्य -)

५. स्कौट बर्नहाम—इस छोटीसी पुस्तिका में स्कौट बर्नहाम की साहस भरी कैद होने और छूटने की कहानी है। बालकों को साहस का पाठ सिखाने के लिये ऐसी कथायें सुनानी चाहिये। मूल्य =)

बाबा जी की भाषा बड़ी सरल और मनोहर है। ट्रेक्ट उपादेय हैं।

पदार्थों के गुण व स्वभाव—लेखक पं० प्रेमवल्लभ जोशी, बी. एस. सी.। मूल्य ।=)

इस पुस्तक में बड़ी सरल भाषा द्वारा बहुत से रासायनिक पदार्थों के गुण व स्वभाव समझाए गए हैं। सर्वसाधारण को पदार्थ विज्ञान का कुछ परिचय देने के लिए यह पुस्तक बहुत ही लाभदायक सिद्ध होगी। विज्ञान को सुगम करने का यह प्रयत्न अच्छा है।

मिलने का पता—म० सुरेशचन्द्र, मैनेजर, प्रकाश पुस्तकालय, कैसरगंज, अजमेर

—:o:—

(कुण्डलियां)

आया तेरी शरण महँ,
सुख की आश लगाय
यहां भई कछु और गति,
अचरज कहो न जाय
अचरज कहो न जाय,
मौन लखि हे प्रभु तेरो
गई विद्या निज विसरि,
अन्य दुख भूतन घेरो
एक मात्र मैं हाय,
सुखद तव धर्म नशाया
खाकी देश कलंक,
तोहि तव शरण न आया।

[२]

काहत निज कर कोउ नहिं,
विटप बबूलहुं छाय
जग करता पालक प्रभो,
सो कस तोहि सुहाय
सो कस तोहि सुहाय,
प्रथम मानस तह मेरो
आश नीर से सींच,
छिरावा दै यश केरो
कियो पालि फल योग,
सुरस शाखादिक पाटत
खाकी लीख कुठार,
विफलता ते अब काटत।

[३]

मानस जो नहिं दै सकत,
तौ श्रीपति सुनि लेहु
अपनो धामन सुयश को,
भले बरषि तुम देहु
भले बरषि तुम देहु,
नाहिं याचक पछु जाचे
तव उदारता दान,
कथा कहि नाहिं जतावे
खाकी नहिं तो दीन,
अबधि ऐ हैं आशावश
देहैं तोहि कलंक,
नाहिं चैहैं जग मानस।

[४]

हम तुम दुहुं के मध्य में,
हम आवरण महान
ताते रूप अनूप सब,
अब लों नाहिं लखान
अब लों नाहिं लखान,
बयस अनमोल सिरानी
विफल भये सब पतन,
विपुल सामर्थ नशानी
हम जौ लों जग नाहिं,
दरस तब है दुर्लभ तम
खाकी बीते समय,
हाय यह तब जा हम।

[५]

हम हमार निधि धार महँ,
बूड़त अरु उतरात
विवश होय वहि जात हम,
भाग न तनिक लखात
भाग न तनिक लखात,
अनगिनत भरम भँवर यहँ
जग को झूठो मेह आह,
घेरत चहुं दिशि महँ
लहे न औलों त्याग,
पीन यह पोल बुदबुद सम
खाकी नहिं सत बोध,
भूमि पै पहुंचि सकत हम।

[६]

निकसत अंकुर भूमिते,
कहत पुकार पुकार
जग करता है एकही,
मानो मोहि निहार
मानो मोहि निहार,
लखौ मै प्रथम एकहूं
फिर तो मोते होत,
पत्र शाखा अनेकहूं
खाकी फल अरु फूल,
रुचिर बहु लागत विकसत
यह सब कुछ तब होत,
प्रथम जब मैहीं निकसत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[७]

धन धन तेरो हे सुमन,
अनुप उदार सुभाव
भूलिहुं काहु सो कहूं,
रखत न तनिक दुराव
रखत न तनिक दुराव,
निकट रिपुहूं जो आवत
करत न हिय संकुचित,
माहिं निज कोष छिपावत
ताको वह उत्साह,
सहित करि के प्रफुलित मन
तुम तो हंसि हंसि देत,
दीन ताको सुगन्ध धन॥

रासबिहारी उपनाम खाकी
प्र० आ० स० सीवान्
(जि० सारन)

—:०:—

ऋषि बोधोत्सव

श्रीयुक्त सम्पादक जी
"सद्धर्म प्रचारक" गुरुकुल कांगड़ी
श्रीमान् महाशय। नमस्ते।

"ऋषि बोधोत्सव" माघकृष्ण १४ या फाल्गुण कृष्ण १४ में से किस तिथि पर होना चाहिए। इस विषय पर दो लेख आपके पत्र में निकल चुके हैं। एक का पक्ष माघकृष्ण १४ और दूसरे का पक्ष फाल्गुण कृष्ण १४ है। यदि दोनों लेखों के लेखक किञ्चित् विचार कर लेते तो उनको समाचार पत्रों के पृष्ठकाले न करने पड़ते। परन्तु विचार कौन करे। एक के मन में कुछ शंका हुई। उस ने बिना पूर्वा पर विचार के झटिति पत्रों में प्रकाशित करदी। ऐसे ही किसी दूसरे उठकर शंका युक्त है वा अयुक्त हैं, उत्तर कैसा होना चाहिए—इत्यादि की गवेषणा किए बिना ही शंका समाधान कर दिया।

तथ्य वार्ता यह है कि गुजरात देश में शिवरात्रि या महा शिवरात्रि (जिस तिथि पर भारत की वर्तमान स्थिति का विधाता पाषाणमय शिव की उपासना से हटकर चेतन शिव का उपासक बना) माघकृष्ण १४ को ही होती है। और वही तिथि यहां फाल्गुण कृष्ण १४ पड़ती है। इस अन्तर का कारण गणित भेदातीरिक्त कुछ भी नहीं है। उत्तर भारत में चन्द्रमास की समाप्ति पूर्णिमा को होती है। परन्तु काठियावाड़ में अमावास्या मासान्त होता है। अर्थात् उत्तर भारत में मासरिक्त कृष्णपक्ष से होता है और वहां शुक्ल पक्ष से। यथा आजकल उत्तर भारत में माघकृष्णपक्ष है क्योंकि पौष मास पौर्णमासी को अवसित हो चुका है। परन्तु काठियावाड़ में अभी पौष मास है। इस अमावास्या पर पौषान्त हो कर आगामी शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से माघारक्त होगा। फलतः काठियावाड़ियों की माघ कृष्ण चतुर्दशी उत्तर भारत वालों की फाल्गुणकृष्ण १४ होगी। केवल गणनारीति का भेद है। अर्थभेद नहीं है। यदि उभय पक्ष के लेखक आर्य्यवीर आर्य्य प्रर्थिक प्रणीत ऋषिदयानन्द का जीवन चरित्र भी पढ़ लेते तो उनको इतना संशय न होता। अस्तु जो भी हो। "ऋषि बोधोत्सव॥ उत्तर भारत में यथापूर्व ही होना चाहिए—शम्

निवेदक
वेदानन्द तथागत
गुरुकुल-चोहाभगतां
ज़ि० रावलपिण्डी

× पञ्चाङ्गों को भी यदि ध्यान से दोनों महाशय देखते तो वे देखते कि अमावास्या के स्थान में "३०" का अंक दिया रहता है यह मासान्त की ही सूचना है।

संरक्षक सभा

श्रीमान् सम्पादक जी। नमस्ते

कृपया निम्नलिखित पंक्तियों को भी स्थान देकर कृतार्थ कीजिये:—

श्रीमान् संरक्षकसभा के मंत्री महाशय बालकृष्ण जी का छपा हुआ लेख 'क्या गुरुकुल कांगड़ी का प्रबन्ध नहीं होगा' शीर्षक वाला प्राप्त हुआ। पढ़ने से ज्ञात हुआ कि आप गुरुकुल के बड़े ही हितैषी हैं। और आपने किसी की भी पर्वाह न करते हुए अपने विचार प्रगट किये हैं। आपका कथन है कि गुरुकुल में उतने ही संशोधन की आवश्यकता है जितनी अभ्यन्तर दशायें ख़राब हैं। मेरी सम्मति में मंत्री जी ही उन्हें जानते हैं अथवा उनके ख़्याल वाले अध्यापक व आर्यप्रतिनिधि सभा के थोड़े ही सभासद् जानते हैं या कुछ ज्ञात ब्रह्मचारियों के संरक्षकों को है जिनके हाथ पत्थर तले दबे हैं। लाचार इस सुधार के कार्य को जनता के हाथ दे देना चाहिये और एक कमीशन बैठाना चाहिए जो वर्तमान त्रुटियों को जांच कर के संशोधन करें और उनका सभाद्वारा प्रयोग हो, जिससे गुरुकुल गिरती हुई दशा से संभल जावे। आपने कमीशन के २१ सभासद् भी नियुक्त किये हैं। सभाका कर्तव्य भी बताया है कि जो त्रुटियें और कमजोरियें हैं उनकी वर्तमान अधिकारियों से लिखित सम्मतियें लेवें जो कर्मचारी पृथक हो चुके हैं उनसे तथा पृथक् हुए ब्रह्मचारियों से वर्तमान संरक्षकों से प्रसिद्ध २ आर्यपुरुषों से सन्यासी महात्माओं से दानदाताओं से और जिनका गुरुकुल से किसी प्रकार का सम्बन्ध न हो उनकी साक्षी लेकर अपना फैसला दें स्कीम पेश करे और आर्यप्रतिनिधि सभा उस को जनता के जानने के लिये प्रकाशित करे। जिससे गुरुकुल को जो धक्का लगने वाला है वह न लगे।

मंत्री जी के विचार तो बड़े उच्च हैं और दृष्टि भी आपकी गृध्रवत् बहुत दूर तक पहुंचती है। आपसे यह भी एक छोटा सा प्रश्न है कि जिन्होंने इसे खोला है, जिनके हाथ में इसकी सम्पूर्ण सत्ता है और सबकी ओर से प्रतिनिधिरूप मुख्याधिष्ठाता आदि योग्य २ प्रबन्ध कर्ता हैं क्या वे सब आपकी सम्मति में हृदय शून्य और सूरदास होगये हैं जिन्हें कि बिल्कुल नहीं सूझता? यदि आपही दिव्य चक्षु हैं तो आत्मत्याग कर स्वयं ही श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा से आज्ञा लेकर क्यों नहीं परिश्रम उठाते? क्यों गतवर्ष की तरह वृथा धूमधाम मचाते हैं? जो यह पत्र हमारे पास भेजा है वह क्यों नहीं सभा को भेजा? क्या आर्य्य प्रतिनिधि सभा इस गुरुकुल की हितैषिणी नहीं है? संरक्षकों को प्रबन्ध से क्या मतलब है? क्यों अनधिकार चेष्टायें कराते हैं? यदि हम किसी कारण से असंतुष्ट हैं तो अपने छात्रों को उठालें। परन्तु अन्य संरक्षकों की आत्माओं में क्यों बुरे भाव पैदा करें? मैं भी एक संरक्षक हूं। मेरा ब्रह्मचारी नवम श्रेणी में है, वह रोगी होने के कारण इसवर्ष अपना परिश्रम पूरा नहीं कर पाया इसलिये क्या मुझे भी औरों के भाव खराब करने उचित हैं? मेरे विचार से तो मेरा ब्रह्मचारी शहर और कालेजों के विद्यार्थियों से कई गुणे अच्छा है बिलकुल छल कपट रहित है। सदाचारी और सबके मनों को प्रसन्न करने वाला है अभी दो मास की छुट्टी पर लाया हूं उसका प्रभाव बड़े २ प्रसिद्ध पुरुषों पर पड़ता है क्या यह कम बात है? अभी वह विद्वान और पंडित नहीं है परन्तु एक सदाचारी महात्मा जी की दी हुई प्रसादी है जिससे वह सर्व मनस्थ हैं। मेरी सम्मति में कोई आवश्यक्ता नहीं है कि धार्मिक संस्थाओं में राजनीतिका जाल पहुंचाया जावे। जहां पर गुरुशिष्य का एक हृदय से दूसरा हृदय मिला दिया गया है उस में हम लोग अनधिकार चेष्टायें कर हमारे ब्रह्मचारियों के मनोभावों को भी बिगाड़ते हैं और वृथा पापी बनते हैं आप लोगों को यह ज्ञात नहीं है कि गुरु और शिष्य का कितना घनिष्ट सम्बन्ध है शायद आपने भी ब्रह्मचारियों के वेदारम्भ और यज्ञोपवीत संस्कारों के समय में जो २ प्रतिज्ञायें आचार्य जी प्रति वर्ष जनता के समक्ष सुनाते

हैं और साथ ही अपनी कमज़ोरियों के विषय में भी शुद्धभाव से बिना किसी छल कपट के संक्षेप से कहते हैं और उस समय पर सब गद् गद् हो जाते हैं। हम को तो केवल उन्हीं पर विश्वास और भरोसा रख कर उनको उत्साह दिलाते हुये तनमनधन से सहायता देना योग्य है। इस महान् यज्ञ में प्रत्येक शिक्षा सूत्रधारी का कर्तव्य है कि वे बराबर आहुति देते रहें। हमने सरक्षक सभा जो बनाई है वह क्या इस उद्देश्य से बनाई है कि स्वामिनी सभा और मुख्याधिष्ठाता जी की वृथा नुक्ता चीनी कर इस कुल को धक्का दिलावें। परन्तु इस का उद्देश्य तो यह था कि मुख्याधिष्ठाता जी का हाथ बंटावें न कि इस के विपरीत उन के हाथ तोड़ने को तय्यार हो जावें। गतवर्ष में श्रीमान् मुख्याधिष्ठाता जी ने सब प्रश्नों को सरक्षकों के समक्ष हल करदिया था परन्तु सन्निपात की तरह इस वर्ष भी क्यों उठ खड़ी हुई क्या मान्यवर जी अब अपनी ख्याति बढ़ाना चाहते हैं। यदि वे इस अभिप्राय को सिद्ध करना चाहें तो मैं आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब से निवेदन करता हूं कि इन को भारत महामंडल की तरह ऐसी पदवी देवे कि जिस से सारी आर्य्य जनता उन का मान्य करें।

मंत्री जी? उद्देश्य तो बुरा नहीं है परन्तु जो कुछ भी बुराइयें और कमज़ोरियें हों मुख्याधिष्ठाता तथा मंत्री आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की सेवा में निवेदन लिख कर दें जब कि उन्हों ने अपने पर भार लिया है तो अवश्यसमाधानकरेंगे।

अब श्रीमान् मंत्री जी की सेवा में सविनय प्रार्थना है कि व यदि संरक्षक सभा को चलाना चाहते हैं तो ऐसे उत्तम उत्तम प्रस्ताव उपस्थित करें कि जिस से सब के समभाव एक हों और तन मन धन से सहायता करते हुये ऋषि दयानन्द के उद्देश्यों की पूर्ति करें जिस से यह एक ब्रह्मचर्य्याश्रम भी अङ्ग श्रीमान् महात्मा जी द्वारा प्रारम्भ आ है जैसी मुस्तैदी के साथ वे अपने टल सिद्धान्तों पर स्थिर रह कर काम रते चले जा रहे हैं ईश्वर उन्हें चोगुना ात्मिक बल प्रदान करें कि वे ऐसे झकोरों से घबराह न कर कृतकार्य्य हों।

श्रीमान् मंत्री जी ने मुझे वार्षिक ेदे की याद दिलाई है। वह मुझे याद कि मैंने गतवर्ष और वर्तमान वर्ष का न्दा गुरुकुल के वार्षिकोत्सव के समय दे दियाथा और भविष्यत् के लिये आपकी ऐसी संरक्षक सभा को खारिज प्रकाश करता हूं और आशा करता हूं कि श्रीमान् मंत्री जी मुझे इस में जो कुछ आपके प्रति भूल से लिखागया हो क्षमा करेंगे, और मेरे अन्य प्यारे भद्र संरक्षक भ्राता भी मेरे साथ सहमत होंगे।

आपका हितेच्छुक
नथमल तिवाड़ी
अजमेर

सामाजिक समाचार

आर्यसमाज शाहाबाद जिला करनाल का छठा वार्षिकोत्सव १८, १९, २० फरवरी १९१७ को होगा। नगर कीर्तन १८ तारीख को होगा। स्वामी सत्यानन्द जी तथा स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज से मंत्री जी प्रार्थना करते हैं कि इस अवसर पर अवश्य दर्शन दें।

आर्यसमाज फाजिल्का में पं० भोजराजेश्वर जी तथा म० धर्मवीर जी ने पांच दिन वैदिकधर्म्म प्रचार किया और श्रोतागण को आनन्दित किया। व्याख्यान तथा भजन बड़े प्रभाव शाली हुए।

आर्यसमाज चन्दौसी का वार्षिकोत्सव १८, १९ तथा २० फरवरी को होना निश्चित हुआ है। श्री मंत्री जी समाज, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज, श्री स्वामी अनुभवानन्द जी, श्री स्वामी सत्यानन्द जी विज्ञानभिक्षु जी से प्रार्थना करते हैं कि इस उत्सव पर पधार कर कृतार्थ करें।

आर्यसमाज चावड़ी बाजार दिल्ली का वार्षिकोत्सव २३,२४,२५,२६ फरवरी को होना निश्चित हुआ है। श्री मंत्री जी आर्यभाइयों को निमंत्रित करते हैं।

श्री मुख्याधिष्ठाता जी महाविद्यालय ज्वालापुर सूचना देते हैं कि महाविद्यालय का नवम वार्षिकोत्सव २४, २५, २६ तथा २७ फाल्गुन १७ तदनुसार ७, ८, ९ तथा १० मार्च सन् १९१७ को होना निश्चित हुआ है जिसे सब प्रकार से कामयाब बनाने का यत्न किया जा रहा है। बाहर से आने वाले महात्मा सन्यासियों तथा विद्वान् उपदेशकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। जिस प्रकार के उनसे सन्तोष जनक उत्तर आ रहे हैं उससे पूर्ण विश्वास है कि आर्य्यजगत् के कतीय २ सब सुप्रसिद्ध वक्ता इस वर्ष अपने उपदेशों द्वारा अमृत वर्षा करेंगे। उत्सव का प्रोग्राम समय २ पर पत्रों में छपता रहेगा। इस शुभ अवसर पर आर्यजनता महाविद्यालय को अपनाती हुई उपदेशों से लाभ उठाने का प्रयत्न करेगी।

गुरुकुल विद्यालय इन्द्रप्रस्थ के उत्सव पर किन्हीं महाशयों की एक टोपी एक रज़ाई और एक डायरी रह गई है। डायरी में कुछ हिसाब भी लिखा हुआ है। जिन महाशयों की उक्त वस्तुएं हों, वे प्रबन्धकर्ता गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ डाकखाना बदरपुर जिला दिल्ली से पत्र व्यवहार कर अपनी वस्तुएं प्राप्त करलें।

आर्यसमाज उदयपुर (मेवाड़) के अधिकारियों का चुनाव आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार हुआ है:—प्रधान—ठाकुर जगन्नाथ सिंह जी, उप प्रधान—बाबू रामनारायण जी, उपप्रधान तथा कोषाध्यक्ष—बाबू शृंगारचन्द जी, मंत्री म० हीरालाल जी, उप मंत्री—डाक्टर रोमि. दयाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—प्रकाशय गंगासिंह जी, अंतरंगसभासद—म० स्वरूप लाल जी।

श्री सम्पादक जी आर्यगज़ट लाहौर सूचना देते हैं कि सदा की भांति इस वर्ष भी आर्यगज़ट का "ऋषिबोध" अंक बड़ी शान से निकलेगा और १३ फरवरी को डाक में डाल दिया जायगा। इस विशेषांक में बड़े बड़े विद्वानों के विद्वत्ता पूर्ण लेख होंगे। महर्षि दयानन्द सरस्वती के विषय में अन्य मातबलम्बियों के विचार होंगे। इस वर्ष २०००० प्रति छपवाने का विचार है। इस शुभ कार्य्य में आर्य जनता की सहायता आवश्यक है। मूल्य एक प्रति -)॥। तथा १०० प्रतियों का ६॥) डाकव्यय पृथक्।

श्री मंत्री जी आर्य गज़ बाद [अयोध्या] का वार्षिकोत्सव तारीख १७ फरवरी से २० फरवरी तक होना निश्चय हुआ है। आर्यभाइयों से निवेदन है कि उत्सव में पधार कर धर्मोपदेश से लाभ उठायें। श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी महाराज से प्रार्थना है कि इस अवसर पर अवश्य दर्शन दें। उन का पता ज्ञात न होने से पत्र व्यवहार असम्भव है अतः प्रार्थना स्वीकार कर कृतार्थ करें।

आर्यसमाज हाथरस के अधिकारियों का चुनाव आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार हुआ है:—प्रधान डाक्टर कृष्ण प्रसाद जी, उपप्रधान बा० विश्वम्भर सहाय जी तथा सेठ होती लाल जी, मंत्री पं० कन्हैयालाल जी, उपमंत्री पं० चौहजी लाल जी तथा म० हरिशंकर जी, कोषाध्यक्ष—म० हरनारायण जी, पुस्तकाध्यक्ष,—पं० रामप्रसाद जी, वैद्य, निरीक्षक—पं० झाखचन्द्र जी, अंतरंग सभासद—बा० उत्तमचन्द्र जी, पं० दौलतराम जी, पं० रामकिशन जी तथा लाला परमानन्द जी।

तारीख १२ जनवरी से म० सुखलाल उपदेशक आर्य्यमुसाफिर विद्यालय से नगर तथा आस पास के गांवों में प्रचार करना आरम्भ किया। १५ को ग्राम नगला लार्ड में प्रचार किया। यहां ईसाइयों का बड़ा ज़ोर है। प्रचार के समय ईसाइयों की ओर से कुछ विघ्न डालने का यत्न किया गया परन्तु वे असफलकार्य रहे। प्रचार का प्रभाव अत्युत्तम पड़ा। अछूत चमारादि ईसाइयों के फन्दे से बच गये। और उनमें इतना बल आगया कि वे यदि कोई पढ़ाने वाला मिल जाय तो स्वतन्त्र पाठशाला खोलने को तय्यार हैं।

आर्यसमाज बन्नू के अधिकारियों का चुनाव आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार हुआ है:—

प्रधान—लाला लक्ष्मीराम जी, उपप्रधान—डाक्टर ईश्वरदास जी, मन्त्री—ला० परसराम जी, उपमन्त्री—म० दुनीचन्द्र जी, कोषाध्यक्ष—लाला ठाकुरदास जी, अन्तरङ्ग सभासद—ला० नोवतराय जी, सर्दार सुन्दरसिंह जी तथा लाला चम्मन लाल जी। आर्य्यकन्या पाठशाला के अधिकारी निम्न प्रकार निर्वाचित हुए हैं:—मैनेजर—लाला ओधाराम जी, मंत्री तथा कोषाध्यक्ष—सर्दार सुन्दरसिंह जी, अन्तरङ्ग सभासद—लाला ठाकुरदास जी तथा लाला भानमल जी।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered NO. A. 434.

सद्धर्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ॥

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२२ माघ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ३ फरवरी सन् १९१७ ई०

संख्या ४२
भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि यद्यपि संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और भूत-शान्ति—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—

प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, पोस्ट आफिस गुरुकुल—कांगड़ी, ज़िला बिजनौर (संयुक्त प्रान्त) U.P.

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
भारत विभिन्न देशों से	३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२
एक तोले तक १५

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

आर्यसमाज के लिये शुभदिन

गुरुकुल में लोकमान्य

म० हंसराज जी

३१ जनवरी का दिन आर्यसमाज में एक शुभ और स्मरणीय दिन था। उस दिन लोकमान्य महात्मा हंसराज जी गुरुकुल पधारे। आप का गुरुकुल वासियों ने खुले हृदयों और खुली भुजाओं से स्वागत किया। ब्रह्मचारियों ने पुष्प वर्षा से आप का अभिनन्दन किया। लगभग तीन चार घण्टों तक आप गुरुकुल के सब स्थान देखते रहे। सायंकाल ४ बजे ब्रह्मचारियों की ओर से आपको एक अभिनन्दन पत्र दिया गया। जो अगले सप्ताह पत्र में दिया जायगा उसके उत्तर में आपने निम्न लिखित भाषण किया।

श्री महात्मा जी महाराज! अध्यापक गण! और प्यारे ब्रह्मचारियो!

मैं यहां पहली बार आया हूं। भोजन करने के पीछे से बराबर इस पवित्र संस्था को देख रहा हूं। किन्तु अभी तक देखना पूरा नहीं हुआ। आप की संस्था इतनी छोटी नहीं कि इसे आध घण्टे में देखा जासके, इसे अच्छी तरह देखने के लिए पांच या छः घण्टे खर्च करने पड़ते हैं। इससे प्रतीत होता है कि यह इंस्टिट्यूशन कितना बड़ा है। इससे मेरा केवल यह तात्पर्य नहीं कि आपकी इमारतें विस्तृत हैं, आपके क्रीड़ाक्षेत्र खुले हैं और ब्रह्मचारियों के आराम के सब सामान पैदा किये गये हैं। इतना ही नहीं। प्रत्युत मेरी राय में इस संस्था की तह में और इसके working की तह में कुछ पवित्र अमूल काम करते हैं। न केवल पंजाब ही, सारा भारतवर्ष महात्मा मुन्शीराम जी के नाम से वाकिफ़ है। यह गुरुकुल उनके दिमाग़ से निकला है, उन्होंने ही इसे खड़ा किया है। महात्मा जी ने जब प्रण किया था कि मैं अपने घर में प्रवेश न करूंगा जब तक गुरुकुल के लिए ३० हज़ार रुपया जमा न कर लूंगा, और दौरा लगाना प्रारम्भ किया तो कई लोग आपकी कामयाबी में सन्देह करते थे। किन्तु इस काम में कृतकार्यता हुई है, और यह इस बात का सबूत है कि नेक काम में परमात्मा सहायक होते हैं।

कोई संस्था कामयाब नहीं होसकती, जब तक कोई परमात्मा का नेक बन्दा स्वार्थ-त्याग करके उसके सिर पर न बैठे। उन्होंने वकालत छोड़ी, घर का आराम छोड़ा और जंगल में डेरे डाल लिए आज पहली दशाओं का अनुमान नहीं होसकता। यदि कठिनाइयां देखनी हों तो इर्द गिर्द के जंगल में जाकर देखो। इन कठिनाइयों को सहकर इन्स्टिट्यूशन स्थिर हुआ। इस की तह में एक महापुरुष के त्याग और कुर्बानी भक्ति और Devotion हैं।

प्यारे ब्रह्मचारियो! सोचो कि इस संस्था की तह में क्या है और इसके आदर्श क्या हैं? महात्मा जी के सहायक लोगोंने भी, जो यहां काम करते हैं, अपनी दुनियां की उम्मेदों पर पानी फेरा है। वे दुनियां में चमक सकते थे। उन की योग्यता जो कुछ उन्होंने यहां किया है, उससे ज्ञात होता है कि वे दुनियां में और तरह भी कामयाब हो सकते थे। किन्तु उन्होंने सब कुछ छोड़ कर जंगल, तकलीफ़, और तप गवारा किया। मेरा चित्त प्रसन्न हो जाता है जब मैं उन्हें पर्दूलास में सफ़र करते हुए देखता हूं, या उन्हें लायलपुर से दिल्ली, दिल्ली से पेशावर, और पेशावर से लाहौर को दौड़ लगाता हुआ देखता हूं। उन लोगों ने अपना तन मन और धन दिया है। उनके पास धन है नहीं-क्योंकि उन्होंने धन पर लात मारी है। इस लिये उन्हों ने केवल तन और मन दिया—जो उन के पास था। मैं प्रसन्न हूं कि अब तक ऐसे आदमी मिलसकते हैं जो अपना तन मन धर्म के लिये अर्पण करसकें। एक बड़ी प्रसन्नता की बात यह है कि इस इन्स्टिट्यूशन के अपने पुत्र, अपनी सन्तान स्नातक भी इस के कार्य में स्थान पारहे हैं। और उन लोगों ने उस का दुग्ध पिया है, क्योंकि गुरुकुल उन की माता है। मैं प्रसन्न हूं कि वे इस की सेवा करने को तय्यार हैं। मेरे सामने उन स्नातकों का। एक पवित्र और नेक बैंड दिखाई देरहा है। यद्यपि मैं उन सब से परिचित नहीं तथापि मैं अपनी मनोदृष्टि से उन्हें देख रहा हूं। पुराने कार्यकर्ताओं को प्रसन्न होना चाहिये कि उन की सन्तान उनका स्थान लेने को तय्यार हो रही है।

इस संस्था की तह में त्याग भक्ति और लगन है। यह इन्स्टिट्यूशन उन अमूलों का प्रचार करता है जो ऋषि ने बताये थे। आप लोग एक पवित्र संस्था में रहते हैं। मैं आपको मुबारिकबाद देता हूं। स्थान accomodation और शुद्ध वायु और साशनके साधनों, आराम के लिए उत्तम है, उससे भी बढ़ कर संस्था की तह में पवित्र अमूल हैं जिनके बिना जंगलों में भी कुछ नहीं हो सकता। यहां आप लोगों ने जंगल में मंगल कर दिया है।

प्यारे ब्रह्मचारियो! मैं तुमसे कुछ बातें कहना चाहता हूं। जिन असलों को लेकर यह इन्स्टिट्यूशन बना है और जिन के अनुसार पुरातन ब्रह्मचारी अपने जीवन बनाते थे, उन्हें सदा सामने रखो। अपने आचार्य अध्यापकों के लिये तुम्हारे हृदय में सदा सन्मान हो। यदि किसी अपराध पर दण्ड मिले तो यह मत समझो कि यह संस्था बुरी है। ये बातें तुच्छ हैं। संस्था के अध्यापक तुम्हारे सन्मान योग्य हैं। आज्ञा पालन करना तुम्हारा कर्तव्य है।

दूसरी बात यह है कि दुनिया तुम्हारा अन्दाजा उससे लगायगी, जो तुम लोग आगामी जीवन में दिखाओगे। दरख्त फल से पहिचाना जाता है। तुम लोग संसार में त्याग, आत्मसंमान और शुद्धता दिखाओ, धर्म और देश की सेवा में जीवन व्यतीत करो, उसी से तुम्हारी मातृ संस्था का सन्मान होगा, पितृ ऋण उतरेगा। इन बातों का ख्याल रखो।

मैं यहां व्याख्यान देने नहीं आया था। आप के आचार्य जी की आज्ञा और इच्छा के अनुसार और अपने अनुभव के बढ़ाने के लिये आया था। मुझे ज्ञात नहीं था कि आप कोई अभिनन्दनपत्र देंगे। मुझे यह पता होता तो मैं चूंचरा करता और कहता कि मैं इस इज़्ज़त के योग्य नहीं हूं। आपने मेरा जो सन्मान किया है मैं उसके लिये आपको धन्यवाद करता हूं। मैं अन्त में महात्मा जी का और उनके सहायकों का विशेषतया धन्यवाद करता हूं, जिन्हों ने मुझे यह मौका दिया और मुझे अनुग्रहीत किया। परमात्मा करे यह संस्था फले फूले और खुशबूदार फूल पैदा करे।"

अन्त में गुरुकुल के आचार्य जी ने उचित शब्दों में आपका धन्यवाद करते हुए आशा प्रकट की कि 'यह प्रेम-बन्धन जो आज स्थापित होता है, आर्यसमाज के भविष्य के लिये सुखदायी हो।'

रात्रि को आचार्य जी के स्थान पर महात्मा हंसराज जी के साथ सब उपाध्यायं, गुरुकुल चिकित्सक तथा मुख्याध्यापक वृन्द ने भोजन करके उन्हें सादर विदाई दी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

प्रचारक की गुरुकुलार्थ भेंट

गत सप्ताह हमने १०००) की अभ्यर्थना की थी। अब हमें बतलाया गया है कि हमने प्रचारक-परिवार का अपमान किया है। अभी ढाई मास शेष हैं, और हमने केवल एक सहस्र की अभ्यर्थना की। प्रचारक के समस्त ग्राहक यदि पांच २ रुपये भेजें तो सहस्रों की राशि एकत्र होसकी है। हम अपनी भूल स्वीकार करते हैं और प्रचारक-परिवार से क्षमा मांगते हैं। अब हम एक हज़ार की अवधि नहीं लगाते। हमारे प्रेमी अपना २ चंदा भेजते जायं। जितनी भी राशि होजायगी उत्सव पर गुरुकुल की भेंट करदी जायगी। वह राशि जितनी अधिक हो, उतना ही अच्छा है।

मंगला-चरण

बहुतही अच्छा हुआ है। हमें पहली जो चिट्ठी प्राप्त हुई हैं, उसमें इस कोष में एक प्रचारक-प्रेमी ने

५१)

देने का संकल्प प्रकट किया है। दाता महाशय का नाम राशि प्राप्त होने पर छापा जायगा। इस मंगला-चरण से हमारी आशा बहुत बढ़गई है। अब

विलम्ब न कीजिए।

दो काम झटिति कर दीजिए। एक तो प्रचारक परिवार की हैसीयत से

पांच रुपये या न्यूनाधिक

भेजदीजिए, और अपने नगर या गांव में गुरुकुल के चन्दे के लिए

सयत्न होजाइए।

सम्पादक

एक और प्रमाण

"अंग्रेज़ी और भाषा के शिक्षा सम्बन्धी अधिकारों की ओर मेरा निर्देश है। ऊंची शिक्षा के लिए इस समय हम अंग्रेज़ी भाषा पर अवलम्ब रखते हैं। यह सम्भवतः इस लिए है कि आजीविका का द्वार अंग्रेज़ी है और देसी भाषा में पाठ्य पुस्तकें नहीं मिलतीं, किन्तु परिणाम स्पष्ट है। विद्यार्थी एक विदेशी भाषा द्वारा कठिन विषय समझने का यत्न करते हैं, और बहुत अंशों में समझने की योग्यता न होने से पाठ्य पुस्तकों को स्मरण करलेते हैं। इस स्मरण-प्रथा की हम आलोचना करते हैं, किन्तु मेरे मन में इस से उन विद्यार्थियों का आदरणीय जोश टपकता है, जो ज्ञान की अभिलाषा छोड़ने की अपेक्षा उन समग्र पृष्टों या समग्र पुस्तकों को कण्ठस्थ करलेते हैं, जिनका भाव भी वे पूर्णतया नहीं समझते। यह तो शिक्षा—भास है। कुछ दिन हुए मुझे एक प्रसिद्ध भारतवासी के साथ बात-चीत करने का अवसर मिला, जिसने मुझे अपना अनुभव बतलाया। जब उसने इतिहास विषय लिया और देखा (अब वह अंग्रेज़ी का प्रसिद्ध विद्वान् है) कि उसका अंग्रेज़ी का ज्ञान पाठ्य पुस्तक समझने के लिए पर्याप्त नहीं है उसने उसे सम्पूर्णतया याद करने का निश्चय किया। परीक्षा में प्रश्न आया, जिसके विषय में उसे यह तो पता लगगया कि उसका उत्तर अमुक पृष्ठ पर है, किन्तु यह ज्ञात न हुआ कि प्रसंगागत भाग कौन सा है। बुद्धिमत्ता सावधानी में है-उसने सारा पृष्ठ लिख डाला। इस से उसे कुछ कम नम्बर मिले—उसने कुछ अधिक नम्बरों की आशा की थी। परीक्षक से पूछने पर उसे उत्तर मिला कि उत्तर इतना असम्बद्ध था कि प्रश्न समझ कर लिखा हुआ प्रतीत नहीं होता था। मेरी राय में यह गवाही विद्यमान-शिक्षा प्रणाली के दोषों को स्पष्ट कर देती है। मैं आपसे पूछता हूं और एक विश्वविद्यालय का विद्यार्थी रह चुकने की हैसीयत से अपने आप से पूछता हूं कि यदि हमारे समय में एक विदेशी भाषा ही शिक्षा का माध्यम होती तो हमारी क्या गति होती? क्या हम हिम्मत हार कर पढ़ना ही न छोड़ देते और उन विद्यार्थियों के लिए मेरे हृदय में बड़ा आदर भाव उत्पन्न होता है जो दूषित रीति द्वारा डाले हुए भार को उठाने का यत्न करते हैं।" इत्यादि।

पाठक वृन्द! ये सम्पादक के या किसी पक्षपाती भारतवासी के वचन नहीं हैं। ये भारत के वायसराय लार्ड चेम्सफोर्ड के वचन हैं जो उन्होंने अभी दिल्ली में शिक्षा सम्बन्धी एक सभा में व्याख्यान देते हुए कहे थे। हमें यह पहले से ही ज्ञात था कि वर्तमान वायसराय की इस बारे में क्या सम्मति है? उसे जनविदित करके आपने बड़े साहस का काम किया है। ये वचन हमारी सम्मति में बहुत ही ज़ोरदार शब्दों में वर्तमान शिक्षा प्रणाली के भयंकर दोष का वर्णन कर देते हैं। गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का बड़े से बड़ा पक्ष-पाती भी अपनी प्रणाली के एक अंग की पुष्टि इससे अधिक ज़ोरदार शब्दों में शायद न कर सकता। हम समझते हैं, सरकारी तौर से वर्तमान शिक्षाप्रणाली का ऐसा खण्डन अभी तक इस बल से किसी ने न किया था। यह बड़े साहस का कार्य था। इन स्पष्ट शब्दों के लिए वर्तमान बड़े लाट हमारे धन्यवाद के पात्र हैं।

इन सारे वाक्यों में वर्तमान प्रणाली का दोष दिखा कर आपने यह भी कहा है कि इसके दो इलाज हो सकते हैं। या तो देसी भाषा को शिक्षा में स्थान दिया जाय, या अंग्रेज़ी पर और ज़ोर दिया जाय ये सम्भव इलाज हैं, किन्तु आपके बोलने का सारा झुकाव इसी ओर है कि एक विदेशी भाषा में शिक्षा देना अस्वाभाविक है।

ऐङ्गलोइण्डियन समाचार पत्र और उलटे दिमाग़ के लोग शायद इस से यही तात्पर्य निकालेंगे कि भारतीय विद्यार्थियों के दिमाग़ों को अंग्रेज़ी की रटन्त से और भी सड़ाया जाय, किन्तु भाषण का तात्पर्य स्पष्ट है। जो दोष का मूल है, उसे उखाड़ दो; टहनियों की कांट छांट से क्या होगा। विदेशी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना छोड़ दो, मातृ भाषा द्वारा विद्यार्थियों को शिक्षा दो। फिर देखो, चोटा लगाने की कितनी कम आवश्यकता रहेगी। यह गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का एक मुख्य सिद्धान्त है। विचारशील लोग इस सिद्धान्त को स्वीकार कर रहे हैं, और

ल

पुराने संकुचित और अनैसर्गिक विचारों को छोड़ रहे हैं। गुरुकुल के पक्ष में चारों ओर से प्रमाण एकत्र होरहे हैं। गुरुकुल के प्रेमियो ! उठो, जागो, और अपने सत्य सिद्धान्तों पर स्थित धार्मिक राष्ट्रीय सच्चे विश्वविद्यालय की रक्षा और सहायता के लिए तत्पर होजाओ। ऐसा न हो कि तुम ऊंघते रह जाओ, और संसार धीरे२ चलकर तुम से आगे निकल जाय। आगे रहने के अपने अधिकार को स्थिर रखो। औरों को रास्ता दिखाओ—पीछे न रहो, यही हमारा विनय पूर्वक निवेदन हैं।

—०—

उपाधियों का मूल्य

कई लोग रायसाहिबी या खांसाहिबी के लिये मरते हैं, कई सर बनने के लिये तन मन धन और धर्म अर्पण करने को तय्यार हो जाते हैं, किन्तु ऐसे भी लोग हैं जो इन उपाधियों की ओर आंख उठाकर भी नहीं देखते। मि० मालाबारी को सरकार नाइट बनाना चाहती थी, उन्होंने धन्यवाद सहित अस्वीकार किया। लोकमान्य गोखले से पूछा गया तो उन्होंने भी 'सर' बनने से इन्कार कर दिया। इस वर्ष दो समाजसेवकों ने राय बहादुरी अस्वीकार की है। लखनऊ के पं० जगन्नारायण और बम्बई के डाक्टर भजेकर जी ने क्या सोच कर राय बहादुर की उपाधि लेने से इन्कार किया है? उपाधियों में कोई बन्धन नहीं—कोई नौकरी नहीं—फिर मिलती हुई उपाधि को ऐसे विचारशील लोग क्यों अस्वीकार करते हैं? यह प्रश्न स्वभावतः उत्पन्न होता है। आज हम इसी प्रश्न का उत्तर देने का यत्न करेंगे।

इस के कई प्रकार के कारण कहे जा सकते हैं। एक कारण सम्भवतः यह कहा जासकता है कि आज कल भारत वर्ष में जो राय साहिब हैं, उनकी गिन्ती शायद सरकारी रजिस्टरों से ही ज्ञात हो सके—अन्यथा कठिन है। रायसाहिब इतने हो गये हैं, कि उनका मूल्य कुछ नहीं रहा। जो चीज़ बहुत अधिक हो जाय उसका मूल्य घट जाता है। जिस साल अनाज बहुत पैदा हो, सस्ता हो जाता है। महंग उसी साल होती है, जिस में अच्छी उपज न हो। अब रायसाहिबों या रायबहादुरों की उपज इतनी अधिक है कि क्या कहें? काश्मीर में सेब और नाशपाती बेर के भाव बिकती हैं—सन्देह है कि शीघ्र ही रायसाहिबी की भी वही कीमत हो जायगी।

यह एक कारण हुआ। दूसरा सुनिये। कोई इनाम तभी तक इनाम समझा जाता है जब तक वह किसी अच्छे काम के बदले में दिया जाय। आज कल लड़ाई में बीरता दिखाने के उपलक्ष में विक्टोरिया क्रास या आयरन क्रास दिये जाते हैं। यदि कल केवल झुककर सलाम करने के बदले में ये क्रास दे दिये जाया करें, तो कोई बहादुर योद्धा उन्हें अपनी छाती पर न लगाना चाहेगा। जिस इनाम को गोदड़ पा सकता है, उसे शेर क्यों स्वीकार करेगा? जब रायसाहिबी गोदड़ों को मिलने लगी तो फिर शेर उसे क्यों स्वीकार करने लगे। जनता स्पष्ट देखती है कि सैकड़ों जी हजूर केवल लम्बी सलाम करके या अपने भाइयों की टके सेर बिक्री करके रायसाहिबी पा रहे हैं, तो असली समाजसेवक उसे क्यों लेंगे। ऐसी उपाधियां अब कार्य की नहीं—खुशामद का सुबूत समझी जाने लगी हैं।

तीसरा कारण अधिक विस्तृत है। एक नीतिकारने कहा है—

नरपति-हित-कर्त्ता द्वेष्यतां याति लोके
जनपदहितकर्त्ता त्यज्यते राजलोकैः।
इति महति विरोधे वर्तमाने समाने
नृपति-जनपदानां दुर्लभः कार्यकर्त्ता।

जो राजा का प्यारा है, वह लोगों का द्वेष्य होता है, और लोग जिस से प्यार करते हैं, राजा उसे अच्छी निगाह से नहीं देखता। यह कथन और स्थानों में सामान्यतया और भारत वर्ष में विशेषतया सत्य है। ऐसा क्यों होता है? इस प्रश्न का उत्तर हमें आज नहीं देना चाहिए, किन्तु ऐसा होता है, इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं। जो लोग अपना जीवन लोक—सेवा के अर्पण करना चाहते हैं, वे राजमान से भय खाते हैं। उन्हें भय होता है कि कहीं राजा से सम्मान पाने का परिणाम यह न हो कि प्रजा का विरोध हो जाय, या प्रजा अविश्वास करने लगे। ऐसी थोथी उपाधियां प्राप्त न करने की इच्छा रखने का एक यह कारण भी अधिक सम्भव है।

एक चौथा कारण और है। वाचक और मूर्ख बाहिरी इनाम के लिए काम करते हैं, किन्तु बुद्धिमानों के लिए हरेक कार्य स्वयं अपना इनाम रखता है। कर्तव्य का ठीक पूरा हो जाना ही उन के लिए सब से बड़ा पारितोषिक है। गीता में भगवान् कृष्ण ने कहा है 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते माफलेषु कदाचन, तेरा कर्मों में अधिकार है, फलों में नहीं। विज्ञ लोगों के लिए कर्म स्वयं अपना फल है। जो लोग समाज सेवा को अपने जीवन का अन्तिम लक्ष्य मान लेते हैं, अपने आपको उसी के अर्पण कर देते हैं, वे सेवा का इनाम दो तीन शब्दों के रूप में पसन्द नहीं करते। महापुरुष अपने नाम से बड़े हैं—उपाधियों से बड़े नहीं होते। ऋषियों के नाम ही बड़े हैं, राम और कृष्ण की उपाधि कोई नहीं पूछता बुद्ध और दयानन्द बिना भूमिका या उपसंहार के माननीय हैं। इस लिये जिन लोगों ने अपने जीवन का सेवा और धर्म को ही लक्ष्यमान लिया है, वे कभी शब्दों पर नहीं मरते, बल्कि शब्दों से घृणा करते हैं। ऐसे लौकिक इनामों से वे घबराते हैं। उस का कारण यह होता है कि वे मनुष्य के मन की निर्बलता को जानते हैं। एक भी स्वीकार किया हुआ तुच्छ इनाम हृदय-सर को कलुषित कर सकता है। इस लिए—वे ऐसे पारितोषिक को कोसों की दूरी से नमस्कार करते हैं।

—:०:—

ते के न जानीमहे ?

वे कौन हैं—हम नहीं जानते।

आर्यपत्रिका फिर से प्रकाशित होने लगी है—और उसके संचालकों के मानसिक भाव भी प्रकाशित होने लगे हैं। जैसे हम पहले सूचना देआये हैं, इस बार सारा ज़ोर पंजाब नेशनल बंक पर है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पत्रिका के संचालक सब को विश्वास दिलाते हैं कि उनके भाव बड़े शुद्ध हैं। उनकी अभिलाषा केवल बंक का भला करने की है। वे बंक के धोखे बाज़ कार्यकर्ताओं से जनता को बचाना चाहते हैं। उनकी कोई बुरी इच्छा नहीं। रायमूलराज बंक के डायरेक्टरों में से हैं; उनके हाथ में सब काग़ज़ात आसकते हैं, उन्हें गुप्त रखना उनका कर्तव्य है, फिर वे पत्रिका में बंक के गुप्त मामलों को प्रकाशित करा या कर रहे हैं—इससे क्या? वे हैं तो सच्चे आदमी। उनकी इच्छायें तो अच्छी हैं। इस बार उन्हें अपने डायरेक्टर होने की इच्छा है-किन्तु आशा नहीं। लोग उनसे तंग हैं। इससे भी क्या? वे फिर निःस्वार्थ परोपकारी हैं। बंक में उनके जो थोड़े से रुपये थे, वे सब से पहले ही निकलवा कर आपने बंक को हानि पहुंचाने का यत्न किया है—फिर भी आप परोपकारी हैं-भले आदमी हैं। कालापन न आपके बाहिर है—न अन्दर है।

दूसरे ला० रलाराम हैं—जिन्होंने सारे प्रान्त की भलाई का ठेका चिरकाल से ले-रखा है। पत्रिका के सम्पादक आप ही हैं—गुरुकुल के जन्म से विरोधी आप ही हैं आर्यसमाज में ईर्ष्या द्वेष के अवतार आप ही हैं—ये सब कृपायें आपने ही की हैं। फिर भला आप निःस्वार्थ परोपकारी क्यों नहीं? गुजरात वाले में पंजाब नेशनल बंक की जो शाखा है उसके आप डायरेक्टर हैं, और अब के आपको डायरेक्टरी से बरख़ास्त होने की आशंका है। उसी केलिये ये धमकियां हैं। किन्तु तो भी आप भले आदमी हैं। आपके परोपकारी होने में किसी को सन्देह न होना चाहिये। और यदि कहीं हो गया तो बस आर्य पत्रिका के स्तम्भ तलवार लिये विराजमान हैं।

तीसरे, सुनते हैं राय ठाकुरदत्त साहिब हैं। आपने अपने पुण्यव्यक्तित्व से लाहौर आर्यसमाज को रौनक बख़शी हुई है—सम्भव है पंजाब नेशनल बंक को भी जीवन पर्यन्त मुख्य डायरेक्टर रहने का सौभाग्य देने की आपकी इच्छा हो। उसी के ये सब सामान हों।

नीतिकार कहते हैं कि उत्तम मनुष्य दूसरों की भलाई को ही धर्म समझते हैं, साधारण मनुष्य अपनी भलाई को मुख्य रखते हैं, किन्तु निःस्वार्थ भाव से दूसरों का बुरा करने वाले लोग कौन हैं—यह हम नहीं जानते। ऐसे लोग दस्तु हैं या राक्षस हैं, दोनों नामों में से एक का फैसला करना कठिन है।

बेग़म भूपाल का लोकहित

भूपाल की शिक्षित और लोकहित कारिणी बेगम ने अपने सच्चे प्रजाहित का एक और सुबूत दिया है। अभी उस दिन आपने सारी प्रजा के लिये बिना मूल्य आवश्यक शिक्षा का निश्चय किया है। सर्वेषा मेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते। जिस राजा ने अपनी प्रजा को विद्या का दान देदिया, उसने सब से उत्तम वस्तु दान दे दी। विद्यादान में और सब दान आजाते हैं। अपनी प्रजा को विद्यादान देकर शिक्षित राखी ने वह कार्य किया है, जो राजा के लिये अत्यन्त प्रशंसनीय है।

साम्राज्य-सभा में भारत प्रतिनिधि

युद्ध में सब उपनिवेशों ने इंग्लैण्ड को सहायता दी है, इस के उपलक्ष में लन्दन में सब उपनिवेशों के प्रतिनिधि एकत्र होंगे। वे सब मिल कर विचार करेंगे कि आगे से उपनिवेशों को साम्राज्य शासन में अधिक अधिकार कौन से दिये जायं। इस पर कई लोगों ने सोचा कि भला यह क्या? यदि उपनिवेशों ने साम्राज्य की सहायता की है जो भारतवर्ष ने भी कुछ न कुछ हाथ बंटाया ही है। भारत के प्रतिनिधि भी साम्राज्य सभा में क्यों न हों? प्रश्न पक्का था, सरकार को उत्तर क्रिया में देना पड़ा। क्रिया में उत्तर क्या दिया जाय? कौन से प्रतिनिधि नियत किये जायं? सरकार ने अच्छी सोची। सांप मरे लठिया नहीं टूटे। प्रतिनिधि भी हो जायं, और काम भी न बिगड़े, उपनिवेशों के लोगों को भी बुरा न लगे। खूब सोच समझ कर सरकार ने तीन प्रतिनिधि नियत किये हैं, जो भारतवर्ष की ओर से साम्राज्य सभा में भारत सचिव को सहयता देंगे। वे तीन सज्जन ये हैं-सर जेम्स मेस्टन, सर एस. पी. सिन्हा, और महाराज बीकानेर। सरजेम्समेस्टन के विषय में हमें कुछ कहना नहीं है। सर एस. पी. सिन्हा कांग्रेस के कैम्प में अपने ढंग के अकेले हैं, उन के सामने नर्मी भी नर्म हो जाती है। फिर वे किसी भारतवासी सभा आदि की ओर से प्रतिनिधि भी नहीं हैं। महाराज बीकानेर बिल्कुल ठीक हैं- कसर इतनी ही है कि वे भी किसी भारतीय सभा या जनसमाज के निर्वाचित प्रतिनिधि हो कर नहीं जाते। काम तो हुआ पर आनन्द न आया। यदि सरकार प्रजा की सम्मति से ही प्रतिनिधि भेजती तो ठीक होता। सरजेम्समेस्टन भी प्रजा के नहीं, सरकार के ही प्रतिनिधि हैं।

पब्लिकसर्विस कमीशन की रिपोर्ट

रिपोर्ट छप गई किन्तु उसे देख मुंह से कवि के ये वाक्य निकल पड़े।

पूर्वमेव मया ज्ञातम्पूर्णमेतद्वि मेदसा
यावत्प्रविश्य विज्ञातं तावच्चर्म च दारु च।

बहुत ज़ोर सुनते थे पहलू में दिलका।
जो चीरा तो एक कतर-ए-ख़ूं निकला।

रुपये बहुत खर्च हुए, चक्कर खूब लगे, धूमधाम खूब मची—अब कमीशन की रिपोर्ट छपी है। सारांश क्या निकला? सिविल सर्विस को कुछ अधिक अधिकार मिल गये, शासन के सारे सिद्धान्त वैसे के वैसे बने रहे, परिणाम क्या निकला। मोरी वहीं की वहीं रही।

अमृतसर में शास्त्रार्थ

सहयोगी प्रकाश से ज्ञात हुआ कि अमृतसर में सनातन धर्म उपदेशक विद्यालय की ओर से वर्णव्यवस्था पर एक शास्त्रार्थ हुआ। सनातन-धर्म सभा की ओर से पं० राजनारायण अमीन और आर्यसमाज की ओर से पं० ब्रह्मदत्त विद्यालंकार थे। शास्त्रार्थ क्या होता? बेचारे अमीन महाशय, जो संस्कृतज्ञता के अपराधी नहीं हैं, क्या करते। निरुत्तर हो कर चुप हो रहे। कहते हैं, बेचारों की पराजय इतना स्पष्ट हुआ कि उन्हें स्टेशन तक लोढ़ आने का भार भी किसी ने न उठाया। स्वयं ही कन्धे पर बिस्तर उठा यह कहते हुए अमृतसर से रवाना हो गये कि 'बहुत बे आबरू हो कर तेरे कूचे से हम निकले।'

पं० अखिलानन्द के नये रंग

महाराज ? अब माया व्यर्थ है, क्यों-कि समाज को पर्याप्त धोखा मिल चुका है। अब आप कितना विश्वास दिलाइए कि आप सामाजिक हैं, कोई नहीं मानेगा। अब आप 'नौसौ चूहे खाय के बिलाई चली हजको' को कितना ही चरितार्थ कीजिये, कोई भक्त आपकी रास २ को सच्चा नहीं मानेगा। अब आप फिर कहने लगे हैं—मेरी भूल हुई, मैं आर्य्य-सामाजिक हूं। आपका यह अन्यथा वाक्य उन लोगों के सन्देहों को भी दूर कर देगा जो अभी तक कभी २ आप को आर्य्यसमाजी समझ लेते थे। जो आदमी इतनी परस्पर विरुद्ध स्थापनायें कुछ दिनों में ही कर सकता है, वह ऋषि दयानन्द का अनुयायी नहीं हो सकता। इस लिये महाराज ? अब क्षमा कीजिये। आर्यसमाज आपके संग से सन्तुष्ट—अतिसन्तुष्ट हो चुका है। नये खेत और नया घास देखिये, आर्यसमाज की अपनी चाल स्वयं चलने दीजिये।

एक रोगी की कहानी

या

आत्म कहानी

एक बालक को अपनी आयु के दूसरे ही वर्ष में माता की मीठी गोद छोड़नी पड़ी। सब के स्वामी जगन्नियन्ता ने उसे अपने पास बुला लिया। बालक को माता का कुछ भी स्मरण नहीं रहा, माता का स्वर- माता का रूप—कुछ भी याद नहीं आता। छोटी ही अवस्था में उसका स्नेह-सेज से वियोग हो गया।

माता के बिना बच्चे की गति नहीं। जो बच्चा माता के दूध पर नहीं पलता—वह आजन्म रोगी हो जाता है। माता बिना उस बालक के जीवन के लाले पड़ गये। उस समय करुणामय को दया आई—और उस बालक की तायी के रूप में वह दया प्रकट हुई। बालक की तायी उस की मातृ-स्थानीय हो गई। बालक के लिये उस की तायी ने जो कष्ट सहे, जिस प्रेम किया, जितनी रातें उनींदा किया उस का परिमाण कौन करे? मनुष्य में वह शक्ति कहां। बालक में उसके लिए धन्यवाद देने की शक्ति कहां? किन्तु माता मरगई— बालक के जीवन की रक्षिका देवी परलोक-गामिनी हुई। कहां से रोग का पहिला बीज बोया गया।

दूसरे साल का अन्त होते न होते बालक को सख़्त नमोनिया हुआ। बायें फिफड़े पर भयंकर आक्रमण हुआ। कुछ दिनों तक बालक मृत्यु और जीवन के बीच में लटकता रहा। अन्त में परमात्मा की अपारदया से, पिता के पुण्य प्रताप से, तायी की अनवरत सेवा और वैद्यों के अनथक यत्नों से बालक के प्राण बच गये। बच तो गये, पर कोमल फूलकी एक पंखड़ी कुम्हला गई—बायां फिफड़ा हमेशा के लिये कमज़ोर होगया।

तायी की गोद में दो वर्ष और बीत गये। किस तरह बीते, यह बालक को ज्ञात नहीं। हां—आगे कुछ २ ख़्याल आता है। लोग कहते हैं—चौथे साल में बालक पर नमोनिया का दूसरा भयंकर आक्रमण हुआ। इसबार उस रोग ने दोनों फिफड़ों पर आक्रमण किया। यह आक्रमण पहलीवार से अधिक भयावना था। न जाने कितने दिनों तक परिवार चिन्तित रहा—और बन्धु बान्धव बालक के जीवन से हाथ धोकर बैठे रहे। इतना अब भी याद है कि एक बड़े कमरे में जलती अंगीठी से सरहाने अपनी तायी की गोद में पड़े२ दवाई पीना पड़ती थी। कभी २ पिता जी की भव्यमूर्ति सामने आ कर दिलासा दे जाती थी। बस इतनाही याद है। न जाने, भगवान् को क्या अभिप्रेत था। अधमुए को जिला दिया—उस आक्रमण से भी बचाव होगया।

बचाव तो हो गया—पर शरीर में स्थिर निर्बलता आगई। चारों ओर से बीमारियों ने घेरा डाल लिया। एक वार आंखदर्द हुआ तो छः महीनों तक वही चलता रहा। आंख बचने की कोई आशा न रही। एक अनुभवी हितैषी डाक्टर की न जाने दवाई की कितनी बोतलें समाप्त होगईं। तब आंखें खुलीं—और फिर १० सालकी उम्र तक बराबर प्रतिवर्ष दुखती रहीं। उससे पीछे अबतक नहीं दुखीं।

दो बार में नमोनिया ने दोनों फिफड़ों को बहुत निर्बल करदिया। निर्बलता स्थिर हो गई। खांसी नित्य की सखी बन गई। देह का सारा चर्खाही ढीला पड़ गया। सात आठ साल की आयु तक नित्य किसी न किसी रोग का साथ रहने लगा। इस से शरीर की यथोचित वृद्धि न हुई।

अब समय पलटा। बालक एक ऐसे स्थान में शिक्षा पाने के लिये पहुंचा, जिस ने उसे जीवन दिया। पहली उम्र उन्नति की उम्र थी। उस में पाई हुई निर्बलता बड़ी उम्र में बिदा कुलनहीं जा सकती। फिर भी शिक्षणालय की कृपा से उसकी रक्षा हो गई। दायां फिफड़ा बिल कुल अच्छा हो गया। आंखों की शिकायत दूर होगई, शरीर में बल आगया। इन भलाइयों के लिये वह बालक उस शिक्षणालय को जितना धन्यवाद दे कम है।

धीरे २ रोग का बहुतसा भाग दूर होने लगा। उसी समय फिर दुर्भाग्य चमका। बहुत से साथियों के साथ वह बालक पहाड़ की सैर करने गया। सैर में वर्षा ने पीछा किया। बायां फिफड़ा कमज़ोर तो पहले ही था। पहाड़ की वर्षा से सारी पुरानी निर्बलता जाग्रत उठी और नमोनिया की बहिन कठिन प्लूरसी का भयंकर आक्रमण हुआ। भगवान् की कृपा से प्लूरसी तो हट गई परन्तु शरीर को निर्बल छोड़ गई। फिफड़ा बहुत ही कृश हो गया।

इस पर फिर शिक्षणालय की कृपा हुई। दो साल में धीरे २ वह निर्बलता भी जाती रही। कोई विशेष शिकायत न रही। फिफड़ा अपनी असली हालत को पहुंचने लगा। आज वह रोगी रोगी नहीं है। वह अपने आप को कई तन्दरुस्तों से अधिक तन्दरुस्त पाता है। वह दिन में तीस पैंतीस मील सहज ही में चल सकता है, किसी बराबर वाले से भिड़ पड़ने में नहीं डरता और दिन में बारह घण्टों तक लिख पढ़ कर विशेष थकावट अनुभव नहीं करता। हां—शैशव के रोग से उसका शरीर हलका अवश्य है।

यहां पाठकों के चित्त में दो प्रश्न होंगे। एक तो यह कि यह रोग-कथा किस

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की है और दूसरा यह कि प्रचारक के पृष्ठ हमने क्यों काले किये गये।

पहले प्रश्न का उत्तर यह है कि यह रोग-कथा सद्धर्मप्रचारक के सम्पादक की है।

दूसरे प्रश्न का उत्तर जरा लम्बा है। अभी उस दिन हमने इटावे के एक सनातनधर्मी मासिक पत्र में पढ़ा कि गुरुकुल कांगड़ी एक अकृतकार्य संस्था है क्योंकि उसका स्वास्थ्य इन्द्र रोगी रहता है। इस से पूर्व भी, केवल अनार्यों के ही नहीं, कई आर्यनामधारी पत्रों के स्तम्भों में भी ऐसा लेख देखने में आया है। हमारे पाठकों को शायद यह विचित्र जंचेगा। किन्तु विचित्र इस संसार में कुछ नहीं। ऐसे हजारों मनुष्य इस पृथ्वी पर विचरते हैं, जो दूसरे का दिवाला निकलने पर ढोल बजाते हैं, और दूसरे की बीमारी पर हर्ष के जयजयकार सुनाते हैं। ऐसे लोग संसार में न होते तो कदाचित् साधुओं को साधुता प्रकट न होती। अंधेरा न होता तो सूर्य को तेजस्वी कौन कहता। ऐसे समालोचकों के मन की तृप्ति के लिये हमने यह गाथा लिख दी है।

हम वर्षों से पत्रों में इस प्रकार का आक्षेप पढ़ते रहे हैं। हम सोचते थे कि ऐसी दशा में हमारा कर्तव्य क्या है? अन्त में हमने यही निर्णय किया है कि अपने रोग की असली कहानी लिख दो। हमारे समालोचक अवश्य कहेंगे कि हमें दूसरे साल में निमोनिया हुआ, इसमें गुरुकुल का ही दोष है क्योंकि परमात्मा को ज्ञात था कि हमारे पिता गुरुकुल की स्थापना करेंगे, यह उस का दण्ड मिला था। चौथे साल में निमोनिया हुआ, उस में भी गुरुकुल का ही दोष था क्योंकि आखिर शास्त्रों, स्मृतियों में तो गुरुकुल का नाम तब भी था ही। फिर हम आठ साल की उम्रतक रोगी ही रोगी रहे—इस में भी किसी न किसी प्रकार गुरुकुल ही दोषी है। फिर हमें क्षयरोग हुआ। उस में तो सर्वथा गुरुकुल भूमिका दोष है, क्योंकि हम गुरुकुल से सैकड़ों मील दूर एक पहाड़ पर सैर कर रहे थे, और गुरुकुल के चिकित्सकने हमारी रक्षा की थी। समालोचकों का यह कहना अवश्य होगा—तो भी हमने यह कथा लिखदी। लिखने का आशय यही है कि लोगों को असली बात पता लग जाय। वे विरोधीगण जो लेख में या भाषण में अन्तिम उत्तर हमारे रोग पर प्रश्न होने को ही समझते हैं उन्हें यह जानकर अवश्य ही दुःख होगा कि इस समय जगदीश की कृपा से हमें किसी प्रकार की शिकायत नहीं है।

पुस्तक-समालोचना

हमारे शरीर की रचना

लेखक डा० त्रिलोकीनाथ वर्मा, बी.एस. सी. एम, बी. बी. एस। डिमौन्स्ट्रेटर, एनाटोमी, किंगजार्ज मेडिकल कालिज, लखनऊ। उन्हीं से प्राप्य।

इस पुस्तक के बारे में हम संक्षेप से इतना ही कहेंगे कि आर्य भाषा को जिस वस्तु की आवश्यकता है, वही इस में विद्यमान है। जिस प्रकार के ग्रन्थों के अभाव के कारण हमें अन्य भाषाओं के सामने सिर झुका देना पड़ता है, यह उसी प्रकार का है। छपाई कागज़ और जिल्द सुन्दर और प्रशंसनीय हैं। विषय को समझाने के लिए जो लगभग ५८ चित्र दिए गए हैं, उन्होंने पुस्तक का मूल्य कई गुणा कर दिया है। शरीर की बनावट को बड़ी सरल श्रेष्ठ भाषा में समझाने का यत्न किया गया है। जिन लोगों को अंग्रेजी नहीं आती और शरीर के विषय में ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता है, उनके लिए तो डा० त्रिलोकीनाथ जी का पुरुषार्थ बहुमूल्य है ही, साधारण पुरुषों के लिए भी यह कम उपयोगी नहीं। अपने देह के विषय में पूरा ज्ञान प्राप्त करना हमारा कर्त्तव्य है। वह इस पुस्तक से हो जायगा। हमारा आग्रह है कि भाषा जानने वाले सज्जन इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य मंगावें। यह प्रथम भाग है, इस से हमें आगे के लिए बड़ी २ आशायें हैं। पुस्तक का मूल्य २।) है।

महाभारत नाटक

लेखक—पं० माधव शुक्ल। प्रकाशक, पं० रामचन्द्र शुक्ल वैद्य कुंवा श्यामदास प्रयाग मूल्य ॥=)

—:o:—

यह हमारा सौभाग्य है कि कुछ दिनों से उत्तमोत्तम ग्रन्थ हमारे पास समालोचनार्थ आरहे हैं। समालोचना का कार्य बहुत हृदय-प्रिय नहीं होता, उसका बड़ा भार और बड़ी उत्तरदायिता है। उसका भार उसी दशा में कम होता है यदि समालोच्य ग्रन्थों से समालोचक को प्रसन्नता हो। गतसप्ताह भी समालोचना के कार्य में हमें प्रसन्नता हुई थी, इस सप्ताह भी प्रसन्नता हो रही है क्योंकि हमें ऐसी पुस्तकों की आलोचना करनी पड़ी है, जो समय और भाषा की न्यूनताओं को पूर्ण करती हैं। पं० माधव शुक्ल हमारी भाषा के उठते हुए लेखकों में से हैं, और अपने जातीय आवेश के कारण सुप्रसिद्ध हो रहे हैं। आप जो महाभारत नाटक लिखना चाहते हैं, उस का यह प्रथम भाग है। यह भाग महाभारत की गाथा को सभा-पर्व के अन्त तक पहुंचा देता है। शायद यह दो तीन भागों में समाप्त हो सकेगा। उस के खेलने के लिए दो से कम रातें न लगा करेंगी। महाभारत की महती कथा के लिए दो रात्रियां अधिक नहीं हैं।

लेखक को इस नाटक के लिखने का विचार न्यू एलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी के महाभारत नाटक को देख कर हुआ था। उस नाटक के लेखक पं० नारायणप्रसाद बेताब हैं। तुलना करना अच्छा काम नहीं और हम दोनों ही लेखकों को आदर की दृष्टि से देखते हैं, तो भी गुण गुण निश्चय करने के निमित्त थोड़ी सी तुलना के लिये अपने दोनों बन्धुओं से चाहते हैं।

यह सम्पूर्ण नाटक बेताब-महोदय के नाटक के प्रथम अंक की कथा को सम्पूर्ण करता है। नाटक—प्रारम्भ बहुत पूर्व से किया गया है। लाक्षागृह-दाहकी कथा का सन्निवेश, और उससे भी पूर्व भाग का सन्निवेश वस्तु

युधिष्ठिर-सभा की दुर्घटना के समझाने के लिए आवश्यक है। बेताब महोदय का महाभारत एक ही रात में खेला जाता है, उस में संक्षेप का गुण है। यह नाटक अधिक रातों में खेला जाएगा इस लिए इसमें विस्तार गुण है।

युधिष्ठिर-सभा में दुर्योधन के भ्रम का और द्यूतसभा का दृश्य दोनों नाटकों में समान है। इन में से कौनसा अधिक प्रभाव शाली हुआ है? यह एक विकट प्रश्न है, तथापि हम इसका उत्तर देने का साहस करते हैं।

पढ़ने पर हमें ऐसा प्रतीत हुआ है कि माधवकृत नाटक में युधिष्ठिरसभा का दृश्य बेताबकृत नाटक की अपेक्षा निकृष्ट और द्यूत सभा का दृश्य उसकी अपेक्षा उत्कृष्ट हुआ है। अन्त में द्रोपदी के चीर हरण की घटना बेताब ने अधिक नाट्य युक्त और माधव ने अधिक सम्भव बनादी है, दोनों में से किसे उत्तम समझें इसका उत्तर हम नहीं दे सकते।

बेताब के नाटक में गुण यह है कि बीच २ में मार्मिक उक्तियां बहुत हैं, और माधव के नाटक में गुण यह है कि वीरता साहस और देशभक्ति का भाव ओतप्रोत है। बेताब के नाटक की भाषा हिन्दू मुसलमान दोनों के लिए अधिक सुबोध है, माधव के नाटक की भाषा अधिक शुद्ध आर्य भाषा है। माधव के नाटक की कवितायें बड़ी उत्कृष्ट हैं, किन्तु हमारी सम्मति में बेताब की 'कोई प्रीत की रीत बता दो नई' के जोड़ की कोई कविता नहीं हुई। उधर बेताब ने कृष्ण और द्रोपदी के स्नेह का जो दृश्य दिखाया है, उसका उत्तर भी माधव ने दिया है। इन में से हमारी राय में ऊंच नीच दिखाना कठिन है। दोनों दृश्य समान रीति से हृदय-द्रावक हुए हैं। बेताब के:—

प्रेमबिन शूकूं नहीं गाड़ीभरे सामान पर।
रीझ आता है मगर दिल मानके इकपान पर॥

और 'धान चुन दूं धान पर' का उत्तर माधव के—

'रहे दृगंचल सो कहुं कहुं प्रभु इह अंचल को ध्यान'—में विद्यमान है।

एक भेद और है। बेताब का नाटक एक व्यापारी कम्पनी के लिये लिखा गया है। उसमें कवि बेताब की प्रतिभा पर कम्पनी के मालिक का अंकुश लग सकता था, फिर भी उस कवि ने जो कुछ लिख दिया है, वह प्रशंसा का पात्र है। कम्पनी की आवश्यकताओं के पूरा करने के लिये कई अलौकिक दृश्य रखने पड़े हैं और देश भक्ति के भाव सीधे तौर पर नहीं रखे जासके। कवि माधव की प्रतिभा पर कोई अंकुश नहीं। इस लिये इस नाटक में ये दो त्रुटियां न रह सकेंगी, इसकी हमें पूर्ण आशा है।

यह नाटक दो भागों में समाप्त होगा। इस से लाभ यह होगा कि कथानक का अधिक भाग दिखाया जासकेगा। हानि यह सभव है कि अन्य नाटक कम्पनियां इस नाटक को खेलने के लिये शायद न ले सकें गी। कमाने वाली कम्पनियां एक रात में ही नाटक समाप्त करना चाहा करती है। सम्भव है, इससे नाटक का यथेष्ट प्रचार न हो सके।

इतना लिखने के पीछे शायद यह बताने की आवश्यकता न होगी कि हम इस नाटक का हृदय से स्वागत करते हैं। नाटक नाट्यकला के नियमों के अनुसार लिखा गया है और बालकों, विद्यार्थियों या नवसिखुओं के अभ्यास के लिये भी निर्दोष है।

भारत गीतांजलि का यह उत्तरवर्ती अयोग्य नहीं हुआ।

एक बात और लिख कर हम इस लम्बी समालोचना को समाप्त करते हैं। इस नाटक में वही कथाभाग वर्णित है, जिस का बड़ा भाग कवि बेताब के नाटक में वर्णित है। इससे कहीं २ पदसाम्य और भावसाम्य आगये हैं—क्या यह अनिवार्य्य था?

—०—

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

[१] गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
[२] आर्यसमाज का कार्य
[३] वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों से पत्र व्यवहार हो रहा है। =) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक विना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'चेतावनी'

आर्यगण! फिर से संभलना धीर हो,
नीति अपनी को पकड़ना वीर हो। ध्रु०

सत्य-शशि पै दम्भ क्षोणी-तम चढ़ा,
धर्म्म-कदली पै औ माया हिम पड़ा।
है अविद्या देश में छाई हुई,
चील सी वेदी पै मंडलाई हुई।
उड़ गया पाखण्ड कृष्णा चीर हो॥ १॥

अमसमाहट थी जहां विज्ञान की,
है तमोरजनी वहां अज्ञान की।
सूक्ष्ममतों का गढ़ेपण था जहां,
आज है प्राकृत उपासन ही वहां।
अन्य के मुर्दे भी पुजते पीर हो॥ २॥

देश के जब काल का चक्कर बढ़ा,
शब्द के जंजाल की टक्कर चढ़ा।
जो दशा चन्दन की कर देते फणी,
अर्थ दर्शन की वो शब्दों से बनी।
क्यों न फिर यह वर्ष रद्दू कीर हो॥ ३॥

जब निरर्थक शब्द बेड़े चल पड़े।
रात दिन झूटे बखेड़े चल पड़े॥
क्षोभ भारत वारिधी में डालने–
के लिये योगी को भेजा काल ने।
कार्य निज उस ने किया गम्भीर हो॥४॥

देश में प्राचीन दिनकर खिल गया।
नव अंधेरे का पसारा हिल गया।
अधिक जन अपनों को अपनाने लगे,
फूट के पर शुष्त–चर आने लगे।
बात इन की है मधुर ज्यों क्षीर हो॥ ५॥

फिर नवीनों की झलक आने लगी,
आर्य जनता को भी यह भाने लगी।
हा! अभागे देश क्या करने लगा,
उठ के फिर घुटनों के बल गिरने लगा।
ध्यान कर दृढ़ हो ओ वीर शरीर हो॥६॥

भूमि पर चक्कर कभी टेढ़ा चढ़े,
सूर्यका टक्कर धरातल से अड़े।
फट पड़े सुन्दर धरा को फोड़ दे,
अपनी मर्य्यादा को सागर तोड़ दे।
भयन खाना उष्ण चाहे नीर हो॥ ७॥

भवदीय–
युक्तिराम उपाध्याय वि.वा.
मु. अ. गुरुकुल चोहा भक्कां
जि० रावलपिण्डी

—०—

सार्वदेशिक सभा

श्रीमती आर्यवर्तीय सार्वदेशिकार्य प्र० नि०सभा की अन्तरंग तथा वार्षिक साधारण सभा का अधिवेशन जो ता०९ मार्च १९१७ शुक्रवार को दिन के १२ तथा १ बजे से गुरुकुल कांगड़ी में होने वाला था यह अब गुरुकुलोत्सव की तिथियां बदल जाने से ईस्टर की छुट्टियों में ता० ६ तथा ७ अप्रेल १९१७ को रात्रि के ७½ बजे से होगा।

तिथि बदलने के सूचना पत्र सभासद् महाशयों की सेवा में भेजे जाचुके हैं कदाचित किन्ही महाशयों को न मिले हों तो वह कृपया इस के अनुसार अपना प्रोग्राम ठीक कर लेवें। बाकी सब कार्य नोटिस के अनुसार ही होंगे—।

नारायण प्रसाद
मन्त्री

—०—

प्रचारक की रक्षा का प्रश्न

श्रीमान्मान्यवर सम्पादक जी नमस्ते। निवेदन है इस के साथ भेजा हुवा मेरे पिता जी का अभि प्राय उचित समझें तो व्यवहार कीजिए। उस में मेरी मातृभाषा गुजराती होने से जो भाषा दोष हुए हों वह शुद्ध कर दीजिए।

यदि आप मूल्य न तो बढ़ावें सहायक निधि खोल दें। मैं मेरी स्थिति अनुसार इसवर्ष रु०१) एक सहायक निधि में देउंगा अतः आगामी अंक वी०पी० करके वसूल कीजिये या मूल्य साथ चढ़ा कर ले लीजिए। यदि मूल्य बढ़ाया जावे तो भी मैं प्रसन्न हो कर देउंगा।

आपका भृत्य
ब्र० दिनमणि एन-त्रिवेदी

नोटः–ग्राहक वृद्धि के लिये भी कोशिश करता रहूंगा।

—०—

प्रचारक के धर्मपरिवार से प्रार्थना।

धर्म जिज्ञासु बन्धुगण! क्या हमें प्रचारक को प्रार्थना करने का अवसर देने में लज्जा नहीं आती है? याद करो! ४० वर्ष से प्रतिसप्ताह द्वार खट खटा के हमारी सेवा अमृतमय धार्मिक उपदेश दे कर उठाने वाला उपदेशक आज क्रमशः सर्वत्यागी सन्यासी की स्थिति में आ रहा है। देखते हो कि आज जगद्व्यापि युद्धने पदार्थादि सब आवश्यकीयों को महँगा ही से पाहिमां 'त्राहिमां' से तंग कर दिये हैं। तो यह सन्यासी को कितना शोचना और सिसकना पड़ता होगा उसका तनिक खयाल कीजिए। प्राचीन समय में ऐसी स्थितियें थी, ब्राह्मण, सन्यासी, उपदेशक और विद्या के स्थानों की रक्षा राजाओं और क्षत्रियों से होती थी आज वह समय नहीं है। कर्तव्य हमारे शिर आ पड़ा है। आप सुज्ञ हैं, धर्म दृढ़ देश प्रेमी हैं क्योंकि सिवाय धार्मिक और देश हितैषी पुरुष के प्रचारक का ग्राहक कौन हो सकता है? किसी अन्य कारण से हो सकता है तो वह हार्दिक प्रेम से पढ़ता नहीं, पढ़ता है तो न्यून संस्कार होने से उसका धर्मभाव जागृत नहीं होता। बाकी मैं हिम्मत से कहता हूं कि कोई ही ऐसा अभागी होगा कि एक वक्त प्रचारक पढ़ कर सदा के लिये उसका परिवार [ग्राहक] न हो गया है। मैं प्रचारक की प्रशंसा का, उसके साथ उसके परिवार के प्रेम का और उसकी इस दुखद समय में विशेष आवश्यकता का लंबा चौड़ा वर्णन कर के अमूल्य स्थान नहीं रोकसा। थोड़ा समय बीचमें उसकी जब अनुपस्थिति— बंधी हुई थी तब याद करो प्रचारक प्रेमियों में कितना कोलाहल मच गया था। ऐसा समय अब न आवे। नहीं तो हम ही पापी होंगे। उसने अपने विज्ञापन न देने के–सर्वनाश युद्ध की क्षुल्लक बातों का समाचार न छपने आदि के जो प्रश्न किये हैं वह भले–किन्तु हमारा अपना कर्त्तव्य है कि हम इस समय में ज्यों व्यर्थ खर्च घटा कर अपने परिवार को, कुटुंब के पुरोहित को, कुटुंब के वैद्य डाक्टर को, अपने माननीय पुरुष को नि भाते हैं, त्यों हम प्रतिसप्ताह केवल पैसा देकर या यथा शक्ति किंचित् सहाय दे कर निभावें। अर्थात्

[१] जहां तक प्रचारक की पूर्ववत् अनुकूलता न हो वहां तक वार्षिक मूल्य बढ़ाकर रु० ३) के स्थान में रु० ४) कर दिये जावें।

[२] कहां तो न्यून से न्यून एक रुपये से अनेक रुपये तक प्रतिग्राहक को [जिनकी इच्छा न हो वे भले न दें] प्रतिवर्ष "प्रचारक सहायक निधि" में देना चाहिए। जिसने धार्मिक मूल्य दिया हो वह जो सहायता देना चाहे वह आज ही कार्ड लिखकर "आगामी अंक" वी० पी० से मंगाकर जमा करा सकता है।

[३] जो ग्राहक तन सहायता न कर सके वह ग्राहक बढ़ाने का प्रण करे या तो कोई धर्मप्रेमी दानी गृह रूपसे सहायक फंड में धन जमा करावे। प्रतिग्राहक को एक रुपया सहायक निधि में देना कोई बढ़िया बात नहीं है। आज अतिशय माड़वारी होते हुए भी कोई अन्न वस्त्रादि आवश्यक वस्तु बिना नहीं रह सकता, बल्कि दुर्व्यसन भी नहीं छोड़ सकता, तो क्या प्रचारक के उपदेशक तमाकू मानसिक शांतिदायक धर्ममय खुराक की घुस अशांति के समय में उससे कुछ न्यून आवश्यकता है? अधिक ज़रूरत है अभी तो उसकी।

कुछ भी समझें। किन्तु प्रचारक की सहाय 'धन से सहाय ग्राहक बढ़ाकर भी साहाय्य करो और भले प्रचारक घटिया काग़ज़ लगावें, मूल्य बढ़ावे, कुछ भी न्यूनता दिखावे इस आपत्ति के समय में दर गुज़र करके वह अपना ही है ऐसा करके निभा लीजिए। यदि वह राजकीय पत्र होता तो आज ऐसा समय न आता। धार्मिक होने से ही सब आपत्ति हैं और वह धार्मिक पुरुषों को ही उठा लेनी चाहिए। इति शम्।

भवदीय कृ० से०
मास्टर नर्वदा शंकर त्रिवेदी
सैयदपुरा-सूरत (बम्बई)

श्री पूज्यपाद सम्पादक जी। नमस्ते

कृपया इस को प्रचारक में छापदें—निवेदन प्रचारक परिवार से—कि सद्धर्म प्रचारक इस अवस्था में किस प्रकार चल सक्ता है इस के विषय में मैं भी अपनी सम्मति प्रकाश करता हूं कि प्रचारक मुर्दा दिलों में भी धर्म का आवेश करता है, और आर्य्यों के धर्मों को सत्यार्य बनाता है, इस लिये प्रचारक की सहायता करनी सब को आवश्यकीय है, और साथ ही इस में विज्ञापन भी लेना चाहिये और यदि विज्ञापन न ले तो काग़ज़ घटिया लगाने चाहिये अच्छे विज्ञापन लेने में कोई हानि भी नहीं है चाहे प्रचारक ४ पृष्ठ का हो तब भी अच्छा है। बन्द होना आर्य्यों के लिये हानि कारक है। विज्ञापन लिये बगैर काम नहीं चल सक्ता क्योंकि जब औरों ने आकार में परिवर्तन कर दिया है तो यदि इस का आकार बदले तो क्या हानि है [उदाहरण के लिये अभ्युदय, सुधानिधी, भारतमित्र, वगैरा ने परिवर्तन कर दिया बन्द होने से परिवर्तन होना अच्छा है इस लिये सहायता करनी चाहिये आशा है इस पर अनुभव करेंगे।

दास—वैद्य भूषण वेद व्यास दत्त शर्मा
आयुर्वेदा० अध्यापक
आर्य्य स्कूल लुधयाना

श्रीमान् सम्पादक जी! नमस्ते,

मेरी सम्मतियां "सद्धर्म प्रचारक" के बारे में निम्न लिखित हैं।

(१) मूल्य नहीं बढ़ना चाहिये ३) रु० ही काफ़ी है।

(२) विज्ञापनों की कोई आवश्यकता नहीं है!

(३) काग़ज़ "अभ्युदय" का सा वा बादामी ही पर्य्याप्त होगा।

हां हरएक ग्राहक का कर्त्तव्य होना चाहिये कि वह प्रचारक का कम से कम १ ग्राहक तो अवश्य बढ़ावें। मैं भी इस कार्य्य में—कोशिश करूंगा।

ग्राहक १५७० — भवदीय— दौलतरामगुप्त विन्द्रा—बाला चौक खुरजा

श्रीमान् सम्पादक जी करजोड़कर नमस्ते स्वीकृत हो निवेदन है कि सद्धर्म-प्रचारक में आपने मूल्य बढ़ाने अथवा विज्ञापन देने तथा काग़ज़ घटिया लगाने की सम्मति प्रचारक परिवार से मांगी। मेरी सम्मति तो निम्न प्रकार है, काग़ज़ प्रताप का सा लगना ठीक है इस से ज़्यादे घटिया ठीक न होगा और मूल्य बढ़ाना भी उचित नहीं है। मूल्य ३) रु० पर्याप्त है और ऐसे धार्मिक तथा उच्च पत्र में नोटिस देना भी ठीक नहीं है। अतः निवेदन है प्रचारक का आकार तो १२ पृष्ठ का ही ठीक है काग़ज़ प्रताप का सा लगाना उचित होगा अतः सब प्रचारक प्रेमियों को एक २ ग्राहक बढ़ा देना चाहिये जिसमें कोई प्रकार की हेर फेर न करनी पड़े मेरी सम्मति के अनुसार तो मैं एक ग्राहक के नाम वी. पी. भेजने के वास्ते लिखता हूं इस पते से वी० पी० भेज देना छुड़ा लिया जायगा।

म० बनारसीलाल विद्यार्थी छठी क्लास टौन स्कूल मु० शिकारपुर डा० खास [जि: बुलन्दशहर]

प्रचारक नं० १५७१ — आपका कंछीदत्त शर्मा खुरजा

श्रीमान् महोदय जी— नमस्ते

प्रचारक के विषयमें सम्मति—मैं मूल्य बढ़ाना तथा विज्ञापन देना उचित नहीं समझता सुतरां इस समय काग़ज़ घटिया लगाया जावे।

ग्रा०सं० १८८८ — भवदीय द्वारका प्रसाद मोरवाड़ी रुद्रपुर

श्रीमान् जी सादर नमस्ते

आगे ८ माघ सं १९७३ ता० २०। १।१७से तथा—पूर्व पत्र से विदित हुआ कि प्रचारक स्थिति के लिये सम्मति की आवश्यकता है—

मेरी सम्मति में प्रत्येक ग्राहक एक २ ग्राहक और बनादेवे, और प्रत्येक प्रतिनिधि का उपदेशक न्यून से न्यून पांच ग्राहकों को नूतन बनाना कर्त्तव्य समझे। विज्ञापनों को स्थान देना ऐसे पवित्र दशा-वाले पत्र में उचित नहीं है और नहीं इसका काग़ज़ दस्तूर बनाया जावे ग्राहक संख्या के ही, अधिक होने पर निर्विघ्न स्थिति रहेगी मुझे आशा है कि अन्य सज्जन भी सहमत होंगे।

स्वामी कृष्णानन्द सरस्वती

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राप्त

(पत्रप्रेरकों के लेख का सम्पादक उत्तर दाता नहीं है)

महा० तोलाराम परमार्थी

के

धन्यवादार्थ खुला प्रस्ताव

राज्य ग्वालियर की स्थानिक समाज के एक मात्र अपने को स्तम्भ बताने तथा अनेक रूप बदलने वाले, महा० तोलाराम जी, कि जो अपने एकलौते पुत्र शंकरानन्द जी (महा० तोलाराम जी के एक धर्मपुत्र के लेखानुसार द्वितीय अवतार शंकराचार्य्य) के स्वर्गवास होने पर गेरुए वस्त्र धारण कर चुके थे उन्हीं नामधारी परमार्थी जी ने जावद स्थान में परमार्थ करके, तथा इन्दौर में विगत वर्ष खुली रीति से कृतावस्था में प्रायश्चित अर्थात् कम आयु की एक नास्टरनी से अनमेल विवाह करके अहो परमार्थी नाम को सार्थक किया, वहां नास्टरनी को सर्वदा के लिये शुभ कार्य्य "शिक्षा" से विमुख किया था। अब एक मित्र के पत्र से ज्ञात हुआ है कि इसी माघ आप के सन्तति होने वाली है। ऐसे पुरुष को किन शब्दों में धन्यवाद देने के लिये प्रस्ताव उपस्थित किया जाय, समझ में नहीं आता तथापी धन्यवाद देना आवश्यक है। अतः विवश होकर यह कार्य्य राज्य ग्वालियर के आर्य्य भ्राताओं पर ही छोड़ा जाता है कि वे शीघ्र सभा करके ऐसे नर को अवश्यमेव इस लोक के मुताबिक पर बधाई दे डालें, जब कि उनकी समाज में वह अब भी सम्मिलित हैं।

खूबचन्द मंदसौरी
लश्कर तथा उज्जैन
समाज का सेवक

—०—

चान्दापुर में स्वयम्बर

सुना जाता है तथा इतिहास से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में स्वयम्बर विवाह की रीति प्रचलित थी। परन्तु बहुत ज़माने से इस प्रथा के बिलकुल बन्द होजाने से स्वयम्बर की रीति लोगों की दृष्टि में कुछ गिर सी गई है। इसी कारण अपनी प्राचीन अन्य प्रथाओं पर भी दृष्टि डालें तो वे भी इसी प्रकार लुप्त प्राय हो रही हैं। नियोग की प्रथा प्राचीन काल में प्रचलित थी पर अब लोगों को उस प्रथा के जारी करने में बड़ी झिझक मालूम होती है। बात ठीक है जातियों के जीवनों में जो नियम काम कर रहे हैं वे ही नियम व्यक्तियों के जीवनों में भी काम कर रहे हैं। जब एक मनुष्य को एक नयी रीति में ढाला जाता है या उसकी किसी छोड़ी हुई अच्छी आदत को उसके जीवन में फिर से पुनर्जीवित करने का प्रयत्न किया जाता है तो वह उसके ग्रहण में झिझकता है, शरमाता है, एतद्कर्म करने के लिये बिना संकोच के तय्यार नहीं हो जाता। परन्तु दो चार बार एक आदत को ग्रहण करके उसमें से जब गुज़र जाता है तब फिर उसे कोई संकोच नहीं मालूम होता और अपनी शरम बचाने के लिये उस आदत को वह मनुष्य तथा उस रीति को उस जाति के लोग न्याय तथा युक्ति पूर्वक सिद्ध करने का प्रयत्न किया करते हैं यह बात सबजानते ही हैं। जो विद्वान् तथा विचारवान् साहसी पुरुष होते हैं व पहले ऐसे कामों में हाथ तो डालते हैं परन्तु ऐसी तरकीब सोचा करते हैं कि जिससे वे यह दिखाना चाहा करते हैं कि हमने कार्य्य भी किया और अच्छा किया, यहां तक कि पिछली ऐतिहासिक रीति को खराब कह कर उस में दोष दिखा कर अपनी की हुई रीति को श्रेष्ठ और उचित अच्छा बताते हैं।

समाचार पत्रों में प्रकाशित होचुका था कि चान्दापुर में एक स्वयंवर होने वाला है। एक नयी सी बात समझ कर और अपने २ दिलों में स्वयंवर का भिन्न२ प्रकार का चित्र खेंच कर अपने मन कल्पित स्वयंवर की आशा करते हुए नाना जन एकत्रित हुए। मैं लखनऊ में था वहां से मुझे स्वयंवर के एक प्रबन्ध करने वाले महाशय ने अत्यन्ताग्रह पूर्वक मुझे भी स्वयंवर के दर्शक रूप में चलीट लिखा। मैं असमंजस में होकर आधीनसा होकर चलदिया। वहां जब शनैः २ सारी कार्यवाही देखी तो यही कहना पड़ता है कि वह स्वयंवर ही न था। बात यह हुई कि ३१।१२।१९१६ को १२ बजे अग्नि होत्र आरम्भ हुआ। पश्चात् कुछ कालतक आजा बजना आरम्भ हुआ और भजन हुए। भजनों के लिये कोई मंडली न थी परन्तु बरेली अनाथालय के दो छात्र थे जो बरेली आर्य समाज के मन्त्री म० आनन्दीप्रसाद जी के साथ इसी कार्य के लिये चान्दापुर उपस्थित हुए थे। लोगों की भीड़ लगनी आरम्भ हुई, चौरस चबूतरे वाला आंगन भी अच्छा खासा चौड़ा एक सम्मेलन के लिए नियत हुआ था भर गया; लोगों के खड़े होने तक को जगह न थी, स्त्री और पुरुषों के दल के दल टिड्डियों की तरह उमड़ते चले आते थे। सभा में भजनों के पश्चात् म० अवधविहारी जी जो बदायूं में गवर्मेंट हाइस्कूल में अध्यापक हैं और जिन की लड़की रामेश्वरीदेवी ने जो कलकत्ता यूनिवर्सिटी की प्रथम परीक्षा में उत्तीर्ण हुई थी और जिसने हस्तकौशल (दस्तकारी) में बदायूं की प्रदर्शनी में पारितोषिक भी प्राप्त किया था, वह महाशय एक लम्बा लेख सुना रहे थे। इनके सुनाने को बन्द करके मेज़ तथा कुर्सी बीच में से उठवा कर मण्डप के द्वार पर रक्खी गई, जिस से कि श्रोतागण चबूतरे के ऊपर चढ़ने की कृपा न करके नीचे ही बैठते जायें और दूर तक फैल जायें। भीड़ बढ़ते २ मेरे विचार से कोई ५ या ६ हज़ार तक पहुंच गई, परन्तु आते हुए और आने को नदी के पार बैठे हुए और मण्डप के सब पुरुष और स्त्रियों को मिलाकर कहियो के विचार से १०, १२ हज़ार तक जन संख्या हो गई थी। जो लेख इस जन समूह के अन्दर सुनाया जा रहा था उस का तात्पर्य यह था कि प्राचीन काल में जो स्वयंवरों की रीति प्रचलित थी जैसा कि सीता, द्रोपदी और अम्बा अम्बिका अम्बालिका का स्वयंवर मिलता है। इन सब में स्वयंवरों के साथ २ युद्ध लगा हुआ है। स्वयंवरों के साथ युद्ध का सम्बन्ध इस कारण होता चला आया है कि स्वयंवरों में एक बात बहुत अनुचित थी वह यह कि उन में लड़कों को एक

स्थान में एक ही समय लड़की के सामने इकट्ठा किया जाता था जिन में से उस लड़की ने अपना वर चुनना होता था। लड़की के रूप लावण्य को देख कर लड़कों की उस समय प्राप्त करने की विशेष इच्छा हो जाती थी और अपने व्यक्तिक सामर्थ्य की न्यूनता के कारण जो सेना के सामर्थ्य में बलवान होता था वह उस वृत कुमार के साथ युद्ध करने खड़ा हो जाता था। इस प्रकार लड़कों के एक साथ इकट्ठा होने की प्रथा से स्वयंवरों से सदा दुष्परिणाम ही पैदा होते रहे हैं, उसी बात को सोचकर हमने इस स्वयंवर में लड़कों को एक साथ इकट्ठा नहीं किया। इस संशोधित स्वयंवर की रीति इस प्रकार की गई--पहले समाचार पत्रों द्वारा स्वयंवर विवाह की उद्घोषणा देकर प्रार्थना पत्र मंगाये गये। बहुत से प्रार्थना पत्रों में से १५ चुन लिए गए। यह चुनाव माता पिता ने किया। इन पन्द्रहों को अकेले २ बुलाकर लड़की के माता पिता ने उस लड़की के सामने पेश किया। लड़की के माता पिता तथा गुरु ने लड़के की परीक्षा ली और लड़के के माता पिता तथा गुरु ने लड़की की परीक्षा ली। इस प्रकार १५ में से लड़की ने एक को चुन लिया। इस चुनाव में लड़की के माता पिता अपना प्रभाव लड़की पर डालने से पृथक् रहे अर्थात् लड़की की अपनी सम्मति पर छोड़ दिया गया कि वह जिसको चाहती हो अपनी इच्छा से चुनले। यह चुनाव इस सभा से कई दिन पहिले हो चुका था। इस सभा में लड़के के गले में लड़की के हाथ से एक माला डलवाई गई कि लड़की ने इस लड़के को स्वयंवरण किया है। वस्तुतः मेरी सम्मति में स्वयंवर तो पहिले हो ही चुका था जब कि लड़की ने १५ में से एक को चुन लिया था, यह सभा केवल इस लिये बुलाई गई कि इतनी जनता के सामने इस लड़की ने इस लड़के को चुना है इस के प्रभाव से उन दोनों के मनों पर पति पत्नी के सम्बन्ध की दृढ़ता का प्रभाव पड़े, और दूसरी बात यह कि लोगों में एक स्वयंवर विवाह की उद्घोषणा से स्वयंवर विवाह की प्रथा का पुनर्जीवन हो। लड़की ने जिसको स्वयंवरण किया उसका नाम बाबू बालदेव था जो बनारस कालिज की बी. एस सी. श्रेणी में पढ़ता था। इस लड़के को इस के सम्बन्धी बाबू रामकिशोर सिम्नेलर बनारस सिटी और बाबू हनुमानप्रसाद क्लार्क जजिज़ कोर्ट, तथा भूतपूर्व इन्स्पेक्टर प्रतिनिधि सभा यू. पी. लेकर उपस्थित हुए थे। (शेष फिर)

—०—

सामाजिक समाचार

आर्यसमाज सिरसा का १३ वां वार्षिकोत्सव १६,१७ तथा १८ फरवरी सन् १९१७ तदनुसार फाल्गुण कृष्णा ९,१० तथा ११ सम्वत् १९७३ को बड़े समारोह से आर्य्यसमाज मन्दिर में होगा। बड़े बड़े विद्वान् व्याख्याता तथा सन्यासी महात्मा इस अवसर पर पधारेंगे। अतः श्री मन्त्री जी सर्व साधारण से उत्सव में सम्मिलित होने की प्रार्थना करते हैं। नगर कीर्तन १६ फरवरी को १ बजे से आरम्भ होगा।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज बांदा सूचना देते हैं कि उक्त समाज का वार्षिकोत्सव ता. ३०,३१ मार्च तथा १ अप्रैल १९१७ को होना निश्चय हुआ है। १ अप्रैल को मध्याह्न समय उप प्रतिनिधि सभा बुन्देलखन्ड प्रान्त की बैठक भी होगी।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज ठंडी सड़क कानपुर लिखते हैं कि इस समाज का वार्षिकोत्सव तारीख १८-१९ तथा २० फरवरी को होना निश्चित् हुआ है। अतः सन्यासी महात्मा तथा अन्य भद्रजन पधारने की कृपा करें।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज कैथा जिला कानपुर सूचना देते हैं कि २० जनवरी को श्री स्वामी विज्ञान भिक्षुजी यहां पधारे और ३ दिन बराबर व्याख्यान तथा शंकासमाधान होते रहे। स्वामी जी के विद्वत्ता-पूर्ण प्रभावशाली व्याख्यानों से वहां समाज स्थापित होगया है जिस से इस प्रान्त के सुधार की बलवती आशा है। श्री स्वामी जी ने जहां हम द्विजों का सुधार कर समाज स्थापित किया है वहां चमारादि जातियों का भी उद्धार किया है। एक बड़ी भारी अछूत सभा कर के गोरक्षा का उपदेश दिया, जिस से प्रभावित होकर सैंकड़ों चमारों ने गोमांस भक्षण छोड़ दिया तथा अन्यों को छुड़ाने का प्रण किया।

आर्यसमाज मनेर ज़िला पटना के पदाधिकारियों का चुनाव निम्न प्रकार हुआ:—प्रधान—बा० टीपनप्रसाद जी, उपप्रधान—बा० बृजमोहनप्रसाद जी, मन्त्री—म० फकीरचन्द्र जी, उपमंत्री—महा० महावीरप्रसाद जी, कोषाध्यक्ष—म० ठाकुरप्रसाद जी, पुस्तकाध्यक्ष—म० रामविलास जी, प्रतिनिधिसभासद—पं० रामचन्द्र जी तथा बा० टीपनप्रसाद जी, अन्तरङ्गसभासद—बा० अवधबिहारीलाल जी, पं० रामचन्द्र जी, बा० द्वारिकाप्रसाद जी, बा० जगदीशनारायण जी, तथा बाबू बुद्धूलाल जी।

आर्यसमाज बहराइच ने अपने अधिवेशन तिथि १९-१२-१६ में निम्नलिखित दो प्रस्ताव पास किये हैं:—

(१) आर्य्यमित्र तथा प्रकाश जिनमें भारतमित्र के अन्तिम उस लेख का उल्लेख है जिस में पं० अखिलानन्द जी ने अपनी बनाई वर्ण-व्यवस्था नामक पुस्तक के समर्थन में आर्य्यसमाज के विद्वानों को शास्त्रार्थ के लिये उद्घोषित किया है, पढ़ कर निश्चय हुआ कि यह आर्य्यसमाज उक्त पंडित जी की इन कार्य्यवाहियों को घृणा की दृष्टि से देखता है और उनको स्वामी दयानन्द जी महाराज के मन्तव्यों से पतित मानता है तथा उनका समाज से सम्बन्ध रखना आर्य्यसिद्धान्तों के लिये अत्यन्त हानि कारक समझता है।

(२) यह समाज संयुक्त प्रान्त की १९१४-१५ की एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट में आर्य्यसमाज के साहित्य पर की हुई टीका टिप्पणियों पर विरोध प्रकट करता है।

आर्य्यसमाज पत्तोकी का वार्षिकोत्सव २,३, ४ मार्च १७ तदनुसार २०, २१ तथा २२ फाल्गुन ७३ को होना निश्चय हुआ है।

आर्य्यसमाज कल्याणवाला तहसील हाफिजाबाद के अधिकारियों का चुनाव आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार हुआ है:—प्रधान— ला० नन्दलाल जी, मंत्री— म० लद्धाराम जी, कोषाध्यक्ष—म० बूड़ीराम जी, पुस्तकाध्यक्ष—म० दीवानचन्द्र जी, अन्तरङ्ग सभासद्—लाला भक्तराम जी, ला० खरकतराम जी तथा ला० निहाल चन्द्र जी।

श्री मंत्री जी आर्य्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान अजमेर से सूचना देते हैं कि उन के यहां श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज के व्याख्यान सं० १,२,३,४,५,६,७ व ८ विक्रमार्थ हैं। जो महाशय ट्रैक्टों को मोल लेकर प्रचारार्थ बांटना चाहें, उन के लिये बहुत ही उपयोगी हैं और सस्ते भी हैं।

उषा

अङ्क न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ नीतिएं नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए। शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्य्यालय गुरुकुल कांगड़ी पो० गुरुकुल-कांगड़ी जि० बिजनौर

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

Registered No. A. 134.

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२६ माघ सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० १० फरवरी सन् १९१७ ई०

संख्या ४३
भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब यह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(प्र० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों को सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक सन्ध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला जयगोपालजी मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्सङ्गी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। बड़े ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और भूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य-मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, गुरुकुल-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से	...	...	३)
विद्यार्थियों से	...	...	२॥)
छः मास का १॥)	तथा तीन मास का १)		

(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थियों के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जासकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध लाख तक १२)
एक लाख तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए

स्थिर कोष के लिये

प्रचारक परिवार की भेंट

पिछले वार हम ५१) की एक राशि की सूचना दे चुके हैं वह अभी मकद नहीं हुई, किन्तु नक़द के बराबर है। उसके सिवा हमें इस सप्ताह में निम्नलिखित राशियां प्राप्त हुई हैं—

म० लक्ष्मीनारायण जी सनौती	५)
म० छोटेलाल जी, सहारनपुर	५)
म० बालचन्द्र वेतान	५५)
योग	६५)

अभी पहला सप्ताह है। हम आशा करते हैं कि अब गुरुकुल प्रेमी समय की प्रतीक्षा में दिन न बितायेंगे। गुरुकुलोत्सव दो महीने में हैं। इतने में यदि भली प्रकार काम हो तो एक सहस्र क्या दो सहस्र हो जाना भी कुछ कठिन नहीं

सम्पादक

गुरुकुलोत्सव की तय्यारियां

यहां तो गुरुकुलोत्सव की तय्यारियां समाप्त होने को हैं। छप्पर खड़े हो गए हैं, मकान तय्यार हो गये हैं, पण्डाल का खड़ा होना दो दिन की बात है। और भी सब सामला तय्यार है। यहां तो तय्यारी है—बाहिर न जाने अभी तय्यारियां प्रारम्भ भी हुई हैं या नहीं। गुरुकुल के लिये चन्दा होने के समाचार अभी तक हमें नहीं मिले। हमें यह तो पूरी आशा है कि गुरुकुल प्रेमियों ने अपना उद्योग प्रारम्भ कर दिया होगा। यदि न किया हो तो अब शीघ्र ही करदें। साथ ही हमारे पास समाचार भी भेजते रहें, ताकि और लोगों को भी उत्साह हो।

उत्सव का क्रिस्टर के दिनों में चले जाना इस दृष्टि से अच्छा ही हुआ। धन संग्रह करने के लिये अधिक समय मिल सकेगा। संसार अब गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर विश्वास करता जाता है। यह दिखाने का समय है कि हम भी अपने आप पर विश्वास करते हैं।

—०—

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र

का

वार्षिकोत्सव

शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव २७, २८ तथा २९ जनवरी १९१७ को बड़ी धूम धाम से समाप्त हुआ। जन संख्या भी आशातीत थी ता० २५ को श्री पूज्य महात्मा जी का गुरुकुल भूमि में शुभागमन हुआ।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने अपने अध्यापकों तथा अन्य अभ्यागतों के साथ दरवाज़े पर ही अपने पूज्य आचार्य्य जी का हार्दिक स्वागत किया। दरवाज़े पर "गुरुकुल माता की जय" तथा "महात्मा जी की जय" के मोटे अक्षरों से काट कर कपड़े पर लगे हुए थे। रथ पर से महात्मा जी के उतरते ही पहले तो करतल ध्वनी से अपने हृदय का आनन्द प्रगट किया गया। श्री महात्मा जी के दरवाज़े में पाओं रखते ही चार ब्रह्मचारियों ने आगे बढ़ कर और अपने पूज्य आचार्य्य जी की चरणों में सिर नवा कर निम्न श्लोकों से उनका अभिनन्दन किया।

धर्मं प्रसिद्धो सहनीयधामा
विद्या विशेषैः प्रथितो जनानाम्,
त्यागस्य मूर्तिर्विभवादि सिन्धु—
र्जीव्यान्महात्मा महतां महीयान्॥१॥
शीले प्रशस्तो जगतीह पूज्यः
कीर्त्या सदस्यः करुणा प्रदीनः।
मान्यो जनानां गुणिनां गरीया—
र्जीव्यान्महात्मा व्रतिभिः समेतः॥२॥
विद्याविनोदरसिक। सुजनोपकारी
आर्य्य समाज पर है जिन जानवारी
प्रेमोमृतं वदति सोमनुजान् सुखेप्सु।
शोभायमान वह है जिमिफूलकेसु॥३॥
गेहे देहे जनन्यां प्रिय सुतयुगस्नेह
वानाभवद्यः।
मैने वै मातृभूमिं समनर जननीं
मातरं स्वांसकल्पाम्॥
तेनैं येन प्रतिष्ठा गुरुकुल भुवि च
ब्रह्मचर्य्य व्रतस्य।
सोयमान्यैकगण्यः सकल गुणनिधिः
स्वागतं स्वीकरोतु॥४॥
सभ्येषु देशेषु जन प्रकाण्डैः।
अहर्निशं गण्य यशः प्रगीयते॥
तान् पूज्य पादान् भुवनैक बन्धून्।
आचार्य पादानभिनन्दयामः॥

ब्रह्मचारी श्लोक गान कर तथा आचार्य जी के चरणों में झुक कर एक ओर हो गये और ज्योंही महात्मा जी का आगे बढ़ना था कि सब ब्रह्मचारियों और अन्य अभ्यागतों ने मिल कर "महात्मा जी की जय" "गुरुकुल माता की जय" कह २ कर आकाश गुंजा दिया और सब ने अपना २ सिर उनके चरणों में झुका-कर स्वागत किया। इस के बाद ता० २६ को उत्सव की शोभा बढ़ाने के लिये श्री स्वा० बुद्धदेव जी तथा श्री स्वा० जयदेव जी पधारे।

आज के दिन बड़ी धूम धाम से शहर में नगर कीर्तन किया गया जिस का असर नगर निवासियों पर बहुत अच्छा पड़ा।

२७ ता० को प्रातः कोई पौने नौ बजे के लग भग कार्य्यवाही प्रारम्भ हुई पहले तो कुछ देर ढोलक और हारमोनियम के साथ गायक महाशयों ने मधुर स्वरों से कुछ भजन गाये तदनन्तर श्री भण्डारी शालिग्राम जी की कथा प्रारम्भ हुई। आपने छान्दोग्य उपनिषद् के उन ५ प्रश्नों को समझाने का प्रयत्न किया जो उद्दालक आरुणि ऋषि के पुत्र श्वेतकेतु से राजा प्रवाहण ने अपनी सभा में किये। यह उपदेश कोई ९½ बजे प्रारम्भ हुआ और १०½ बजे के लग भग समाप्त हुआ म० रणजीत जी भजनीक के भजन होने के पश्चात् म० रामगोपाल जी उपदेशक उपसभा का वैदिकधर्म पर व्याख्यान प्रारम्भ हुआ और अच्छी प्रकार इस धर्म की सचाई को सिद्ध कर आपने अपना व्याख्यान ११½ के लग भग समाप्त किया और इस प्रकार प्रातः की कार्य्य वाही समाप्त हुई है।

सायं कोई १ बजे के लगभग भजनीकों ने अपने भजन प्रारम्भ कर दिए और और २ से श्री स्वा० जयदेव जी का व्याख्यान प्रारम्भ हुआ। आप का व्याख्यान सरल, गम्भीर तथा खोज पूर्ण था।

[आगे ११ वे पृष्ठ पर देखें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

भरत-मिलाप

वह दृश्य बड़ा दिव्य था। जिन्होंने उसे देखा, उनके सौभाग्य थे। वे अपने आपको धन्य मानेंगे।

३१ जनवरी के दिन, गुरुकुल विश्वविद्यालय की बड़ी यज्ञशाला में, उन दो ज्योतियों का मिलाप हुआ, जिन्होंने गत २० सालों से ऋषि दयानन्द के अनुयायियों को मार्ग दिखाने का कार्य लिया हुआ है। वे ज्योतियां कारण वश भिन्न २ रास्तों में चल पड़ीं, भिन्न २ रीतियों से धर्म और कर्त्तव्य का पालन करती रहीं। महात्मा हंसराज जी ने डी० ए० वी० कालिज के संचालन का भार अपने कन्धे पर लिया, और महात्मा मुन्शीराम जी ने गुरुकुल का झण्डा पवित्र जाह्नवी के तट पर गाड़ा। दोनों समाज सेवकों ने अपने २ ढंग पर स्वार्थ-त्याग तप और लगन का दृष्टान्त स्थापित कर दिया, अपने अनुयायियों की अतुल भक्ति का लाभ किया, और आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ाने का यत्न किया। कसर एक ही रही। परस्पर का भेद न मिटा। लाहौर समाज के वार्षिकोत्सवों पर एक दूसरे के पण्डाल में जाने से अवश्य में भेद न आया, ला० लाजपतराय जी के स्थान पर सन्धि सभा का कुछ पालन हुआ। और भी कई यत्न हुए पर कृतकार्यता न हुई। रोग असाध्य जंचने लगा।

जो कार्य कहीं न होसका, हमें आशा करने दीजिए कि वह भगवती भागीरथी के तट पर, एक पवित्र कुल की मंगलमयी यज्ञशाला में होगया। उस दिन जो देखा, या सुना, वह सहज ही भूल नहीं सकता, हृदय अविश्वासी होना नहीं चाहता। महात्मा हंसराज जी का भाषण पिछली बार प्रचारक में दिया जाचुका है। उन्होंने महात्मा जी के और गुरुकुल के लिए जिन शब्दों का प्रयोग किया था, वे पाठकों को विदित हो चुके हैं, उत्तर में महात्मा जी ने जो कुछ कहा वह आज पत्र में दिया जाता है। पाठकगण उसे पढ़ें और विचारें। दोनों नेताओं का परस्पर कितना सादृश्य है और वे एक दूसरे के गुणों को कितना समझते और पसन्द करते हैं। दोनों नेताओं के भाषण के समय हमारे मन में गोसाईं तुलसीदास की यह चौपाई घूम रही थी—

श्यामलगात रोस भर ठाढ़े।
नवराजीव नयन जल बाढ़े।

यदि गोसाईं जी यहां वर्णन करने के लिए आते, तो कहते कि—

"प्रभु मिलत अनुजहि
सोह मो पहि जात नहि-उपमा कही।
जनु प्रेम अरु शृंगार तनु धरि।
मिलत बर सुखमा-लही"

वे दोनों नेता एक दूसरे को अवश्य कहते होंगे कि—

"बूड़त विरह वारिधि कृपानिधि।
काढ़ि मोहि कर गहिलियो॥"

हमारे पाठक कहेंगे यह अत्युक्ति है। यह दृष्टान्त ठीक नहीं बैठा। राम और भरत भाई, कभी परस्पर विरोधी नहीं हुए। उनका मिलाप और था, इन दोनों नेताओं का मिलाप और है। किन्तु हमारा निवेदन भी सुनिये। उस दिन के भाषणों से हमने जान लिया कि साधारण पुरुषों और बड़े पुरुषों में क्या भेद होता है। साधारण पुरुषों के हृदय संकुचित होते हैं, महापुरुषों के हृदयों के विस्तार की सीमा नहीं। गहरे मतभेद के दिनों में इन दोनों नेताओं में परस्पर गुणज्ञता और बन्धु प्रेम नष्ट न हुआ होगा। बड़े २ तूफ़ानों और विप्लवों में भी उनका भ्रातृवत्प्रेम नष्ट न हुआ होगा। इसी लिए हम इस मिलाप को भरत-मिलाप कहते हैं।

हमें उस दिन जो प्रसन्नता हुई वह हम पाठकों तक पूर्णरूप से पहुंचा नहीं सकते। प्रसन्नता का मूल और कुछ नहीं-यही है कि हमारे नेताओं ने हमें उदारता की शिक्षा दी है, परस्पर गुणज्ञता का पाठ पढ़ाया है। थोड़ा सा मत भेद शायद अब वह भी नहीं है—परस्पर सारे सम्बन्धों को नष्ट नहीं करदेता। भिन्न दल में काम करने से कोई आर्य अनार्य नहीं होजाता। जो धर्म की सेवा करता है वह हमारा प्रेम पात्र है, वह हमारा भाई है।

जो रूस और जापान किसी दिन एक दूसरे के माथे पर तमंचा रखे खड़े थे, आज भुजा में भुजा डाल रणभूमि में गर्ज रहे हैं। जो मुस्लिमलीग कांग्रेस के विरोध में स्थापित की गई थी, वह आज उसके साथ मिल कर प्रस्ताव पास करती है, कांग्रेस और मुस्लिमलीग आज बहनें बन रही हैं। इन दृष्टान्तों को देखकर हमारे दिल में आता था कि क्या वैदिकधर्म के अनुयायी परस्पर भेद-भाव नहीं मिटा सकते? क्या ऋषि दयानन्द के शिष्य एकता के सूत्र में नहीं बंध सकते? क्या हम लोग साधारण नीति-क्षेत्र में काम करने वालों जितनी उदारता भी नहीं दिखासकते? हमारा सन्देह अब दूर होरहा है। महात्मा हंसराज का गुरुकुल में स्वागत हुआ, उन्होंने व्याख्यान दिया। अंत में हमारे आचार्य जी ने अपने मान्य अतिथि को धन्यवाद दिया। ये सारे ही कार्य हमारे सन्देह का नाश करना चाहते हैं। हम भी उसे हृदय में रखना नहीं चाहते। न्यूनता केवल एक है। उस न्यूनता के पूर्ण होते ही हमारा सन्देह काफ़ूर हो जायगा। वह न्यूनता यह है कि अभी दोनों दलों के साधारण अनुयायियों तक इस उदार भाव का सन्देश नहीं पहुंचा। यह सन्देश वहां तक पहुंच जाय, और उनके हृदयों में अपना घर बनालें। जब इतना हो जायगा, तब हम कहेंगे कि "आर्यसमाज का भविष्य असन्दिग्ध होगया, अब उसके चमकीला होने में सन्देह नहीं।

—:०:—

इतना अवश्य हो

हमारी सम्मति में इस भरतमिलाप के पीछे आर्यसमाज के दोनों दलों के व्यवहार में निम्नलिखित भेद अवश्य आना चाहिए—

[१] दोनों दलों के समाचार पत्रों में एक दूसरे पर तेज़ नोक झोंक न हो।

[२] दोनों दलों के आर्यपुरुष वर्ष में कभी २ परस्पर मिल कर आनन्द उत्सव और सहभोज आदि किया करें।

[३] एक दूसरे के कार्यों के गुण-गुण की परीक्षा उदार दृष्टि से की जाया करे।

अभी एकता की ओर इतना पग बढ़ाना पर्याप्त है।

—:o:—

असली और नकली राजभक्ति

राजभक्ति क्यों उत्तम गुण है?

राजा का कर्त्तव्य प्रजा की भलाई और रक्षा करना है। प्रजा और देश का हित राज्य द्वारा होता है—इस लिए देश हितैषी लोग देश हितकारी राज्य के भक्त होते हैं। भक्त होने का तात्पर्य यह है कि वे राज्य की हरप्रकार से सहायता करते हैं। उस भक्ति का मूलकारण देश हित और प्रजाहित है। राजा वा राज्य स्वयं निराधार कोई उपादेय या पूज्य वस्तु नहीं। देश और प्रजा का कार्य नहीं चल सकता, जब तक कि किसी प्रकार का स्थिर प्रबन्ध न हो। वह प्रबन्ध ही राज्य के नाम से कहाता है। उस स्थिर प्रबन्ध का जो केन्द्र है, प्रबन्ध की उस मशीन में जो मुख्य स्थान रखता है, वह चाहे व्यक्ति हो, और चाहे कोई सभा हो—उसी को राजा कहते हैं। संसार में प्रायः ऐसा होता है कि वही राजा या राज्य जिन का कर्त्तव्य प्रजा और देश की रक्षा करना है, उस के भक्षक हो जाते हैं। राजा का जीवन प्रजार्थ होना चाहिए, कभी २ वह अपने लिए प्रजा का जीवन मान लेते हैं। तब प्रजा के लिए राज-भक्ति या राज्य-भक्ति कोई धर्म नहीं रहता। हमारे शास्त्रों में भी जहां २ राज-भक्ति के गुण-गाए गये हैं, वहां यही तात्पर्य है। यह समझ लिया गया है कि राजाप्रजा के लिये है, उस दशा में राज-भक्ति धर्म है ही।

ये विचार हमारे चित्त में क्यों आये? हमारे पास समालोचनार्थ एक पुस्तक आई है, जिस का नाम है 'राज-भक्ति' पुस्तक में राज-भक्ति के गुण बताये गये हैं। लेखक के हृदय के जो भाव हैं, उन्हें प्रकाशित करने का उसे पूरा पूरा अधिकार है। परन्तु ऐसी पुस्तकों के लेखक मूर्ति के केवल एक ही भाग को दिखाते हैं। इस से एक हानि है। राजा और प्रजा के वास्तविक कर्त्तव्यों का सत्यज्ञान नहीं होने पाता। मनुस्मृति के प्रमाणों से यह बता देना सहज है कि राजा इन्द्र यम और अग्नि का आदर्श रखता है, किन्तु साथ यह बतलाना कठिन किन्तु अत्यावश्यक कार्य है कि राजा कौन कहाता है, किस राजा में भक्ति होनी चाहिए, राज भक्ति का रूप और सीमा क्या है। राज भक्ति की व्याख्या करने वाली पुस्तक अधूरी है, यदि वह इन बातों की विवेचना नहीं करती। लोगों को राज-भक्ति नाम का पाठ-मात्र पढ़ादेने की आवश्यकता नहीं। उस के आधार और सीमा का ज्ञान देना भी परमावश्यक है।

यह पुस्तक यू० पी० में छपी है। काग़ज़ और छपाई बढ़िया है। भाव कैसे हैं? इसके कुछ नमूने हम नीचे दिखाते हैं—

'जो मनुष्य राज-भक्त नहीं वह ईश्वरभक्त कभी नहीं हो सकता' पृ० १४ यह सिद्धान्त हुआ। राज-भक्ति क्यों की जाय, इस का कारण लेखक ने बड़े आनन्द दायक शब्दों में लिखा है—

'राजा अपने आज्ञाकारी और सहायकारी को दान, मान आदि से सुखी करता है, इस लिये सुख की इच्छा करने वाला पुरुष सदा राज भक्त बना रहे' पृ० १४।

दाग तो किसी नौकरी के रूप में समझिये और मान किसी उपाधि के रूप में समझिये। राज-भक्त बनने में प्रेरक कारण या तो नौकरी हो, और या कोई रायसाहिब आदि उपाधि हो। लेखक की सम्मति में राज-भक्ति के प्रेरक दो ही कारण मुख्य हैं। यदि किसी को न नौकरी चाहिये, और न उपाधि, उस के लिए राज-भक्त होना ज़रूरी नहीं। खूब।

राज-भक्ति का उपदेश करके लेखक महादेव ने इस युद्ध के सम्बन्ध में राजा महाराजों का और साधारण पुरुषों का कर्त्तव्य बतलाया है। उस के सम्बन्ध में हमें कुछ वक्तव्य नहीं। प्रेस के स्वामी और पत्र सम्पादकों को जो उपदेश दिये गये है, उन्हीं पर हमें एक बात लिखनी हैं। यह पुस्तक सरकेन्सर्स्टम की सम्मति की गई है, और उन्होंने समर्पण को स्वीकार करके लेखक को देश-भक्ति पर भी शाबाश दिया है। इस से प्रतीत होता है कि सरकार ने इस पुस्तक को पसन्द किया है। ऐसी पुस्तक में पत्र सम्पादकों को झाड़ना आवश्यक ही था। आपका उपदेश है कि पत्रों को सदा राज भक्ति का ही प्रचार करना चाहिये, इस बात को मान कर हम पूछते हैं। कि क्या राजा को पत्रों के साथ सदा उचित बर्ताव नहीं करना चाहिए। क्या पत्रों को सर्वथा बंधुआ करदेना ही उन्हें राजभक्ति सिखाने का एक साधन है?

राजभक्ति उत्तम वस्तु है। भारत वासी राजभक्त हैं क्योंकि वे समझते हैं कि वर्तमान दशा में बृटिश सरकार हमारे लिये हितकर है। इसी आधार पर राजभक्ति होनी चाहिए। वही राजभक्ति स्थिर होगी, जो इस आधार पर स्थिर होगी। जो राजभक्ति की लता, राजा के ईश्वरीय अधिकारों पर जमाई जाती है, वह वस्तुतः पानी में बहती हुई लकड़ी पर जमाई जाती है। राजा के ईश्वरीय अधिकारों की कल्पना किसी देश में भी नहीं टिकी। ज्ञान की वृद्धि होते ही यह भद्दी कल्पना काफूर हो जाती है। पानी में बहती लकड़ी लहर के ज़ोर से उलट जाती है। तब लता अथाह पानी में डूबकर अपना नामोनिशां खोदेती है। जो राजा अपनी प्रति प्रजा की भक्ति को इस आधार पर स्थापित करते हैं, उन्हें पीछे पछताना पड़ता है। राजा के ईश्वरीय होने की कल्पना मिथ्या है, अतः झट उड़ जाती है। उस के उड़ते ही राजभक्ति का जीवन ख़तरे में हो जाता है! इस लिये सब से अधिक राज्य का कर्त्तव्य है कि ऐसी भद्दी और मिथ्या क-

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमना के प्रचार में सहायता न दें। जो राजभक्ति समक्ष पर और प्रजा की हित चिन्ता पर आश्रित है वही चिर स्थायिनी होगी, उसी से सरकार को लाभ है।

न जाने सरकार के विज्ञ कर्मचारी ऐसी झूठी कल्पना वाली पुस्तकों को क्यों आदर देते हैं?

इन पुस्तकों से न हमारे पुरातन शास्त्रों का गौरव बढ़ता है और न सरकार का हित साधन होता है। जो भक्ति असत्य कल्पना के आधार पर खड़ी है, वह सदा खतरे में है। वही राज-भक्ति का भवन अटल होगा जो देशभक्ति की नीव पर खड़ा किया जायगा।

—:०:—

आर्य समाज का साहित्य और सरकारी रिपोर्ट

संयुक्तप्रान्त की सरकारी रिपोर्ट में आर्यसमाज के विवाद-सम्बन्धी साहित्य पर यह आक्षेप किया गया था कि वह निन्दनीय था। इसके विरुद्ध संयुक्तप्रान्त के समाजों ने ज़ोरदेस्त शब्द उठाया है। अभी तक सरकार ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। इस बार कौंसिल के अधिवेशन में मि० सी. वाई. चिन्तामणि ने सरकार से प्रश्न किया कि समाजों के प्रस्तावों को देख कर सरकार क्या करना चाहती है। मि० बर्न ने उत्तर दिया है कि सरकार इस सम्बन्ध में कुछ नहीं करना चाहती क्योंकि सरकारी रिपोर्ट में समाज के केवल विवादात्मक साहित्य पर आक्षेप था, सारे साहित्य पर नहीं। इस से क्या? जो अनुचित बात लिखी गई, वह चाहे किसी के विषय में ही, अनुचित ही है। सारा साहित्य न सही—विशेष साहित्य सही। किन्तु दोष तो है—और दोष भी व्यर्थ। ऐसी विवाद-ग्रस्त पंक्तियां सरकारी रिपोर्टों में न आनी चाहियें। मि० बर्न का उत्तर कोई सन्तोषदायक उत्तर नहीं है। यह केवल टालने का ढंग है। आर्यसमाज को केवल इतने से सन्तुष्टि नहीं हो सकती।

—:०:—

त्रिमूर्ति का दिवाला

घनेबादलों को हजार तहों के नीचे छुपा हुआ सत्य भी उघड़ आता है और लुब्ध नीचार की चोटी पर रखा हुआ भी झूठ औंधे मुंह गिर पड़ता है। इस बार जब आर्यपत्रिका अपने हर्ष संभाल कर मैदान में आई थी तब हमने यही समझा था कि आर्यनाम को कलङ्कित करने वाली काली नागिन आई। अब किसी बंक की, किसी धार्मिक संस्था की या किसी भलेमानस की खैर नहीं।

यह समाचार सुनकर चित्त हलका हो गया, सत्य और भलाई के महत्व पर विश्वास बहुत बढ़ गया, कि आर्यपत्रिका का प्राणान्त हो गया, और पंजाब नेशनल बंक का दिवाला निकालते निकालते त्रिमूर्ति का ही दिवाला निकल गया। लाहौर के डिपुटी कमिश्नर ने आर्य-पत्रिका के छापने वाले को बुला कर स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि यदि तुम पत्रिका को छापोगे तो मैं प्रेस तक ज़ब्त कर लूंगा। पत्र का छपना बन्द हो गया, पंजाब में फैले हुए या फैलते हुए कई घातक रोगों में से एक की समाप्ति हो गई। आज प्रान्त के भलेमानस सुख की एक सांस लेंगे।

सुनते हैं, त्रिमूर्ति के मूल राय मूलराज ने कहा है कि अब यह लड़ाई समता की लड़ाई नहीं रही, क्योंकि बंक वालों ने सरकार से सहायता ली है। पहले तो इस में क्या प्रमाण, कि बंक वालों ने डिपुटी कमिश्नर को भरा है। बहुत सम्भव सत्य यही है कि स्वयं ही प्रजाहित के विचार से प्रजा के एक शत्रु को नाम शेष करना उन्होंने आवश्यक समझा हो किन्तु यदि क्षणभर के लिये मान भी लिया जाय कि किसी ने पत्रिका के भयंकर यत्नों का समाचार नगर के शासक तक पहुंचाया, तो भी हम कहते हैं कि रायमूलराज या उसके मित्रों को कोई शिकायत न होनी चाहिये। जिन लोगों ने धर्ममन्दिर के द्वार पर पुलिस को बिठाया, लालपगड़ी के ज़ोर पर आर्यसमाज के नियमोपनियमों की जड़ पर कुल्हाड़ा रखा, उन्हें ऐसी शिकायत क्यों होनी चाहिये। आखिर किसी ने ख़बर पहुंचाई तो उन विधवाओं अनाथों और भद्रपुरुषों की रक्षा के लिए पहुंचाई, जिनका जीवनाधार बंक ही है। अपनी दुरिच्छाओं को पूर्ण करने और समाज के अधिकारों का नित्य ठेका लेने के लिए तो नहीं पहुंचाई।

ख़ैर। अन्त भला तो भला। अच्छी प्रकार मरने के लिए पत्रिका का एक बार और जीना आवश्यक था, अब आशा है कि यह मरना अन्तिम मरना होगा। त्रिमूर्ति को अब एक समस्या पर विचारना चाहिये। कवि ने कहा है कि—

तुलसी जब जगमें भये
जगत हंसे तुम रोय।
ऐसी करनी कर चलो
तुम हंस मुख, जगरोय।

भले आदमी मृत्यु के समय हंसते हैं और दुनिया रोती है। उपकारी समाचार पत्र मरते हैं तो सैकड़ों सज्जनों के आंसुओं से उनकी अरथी पवित्र होती है। आज पत्रिका मरती है, हे त्रिमूर्ति के सभासदो! तुम रोते हो, और लोग हंसते हैं। इस का कारण क्या है? यदि इस प्रश्न पर विचार करोगे तो सम्भव है तुम अगले जीवन को संसार के लिए कम हानि कारक सिद्ध कर सको।

———

डा० ज्योतिस्वरूप जी का भाषण

इस वर्ष सोशल कान्फ्रेंस के सभापति डा० ज्योति स्वरूप जी थे। आपका भाषण अब समाचार पत्रों में छपा है। भाषण में समाजसुधार का बड़े उत्तम रीति से समर्थन किया गया है। विशेषता यह है कि शास्त्रों और स्मृतियों के प्रमाणों से सामाजिक कुरीतियों का खण्डन किया गया है। भाषण बहुत लम्बा नहीं, लच्छेदार बना कर नहीं लिखा गया, किंतु सारयुक्त और प्रकरणानुकूल है। यह भी यदि अन्य सभापतियों के भाषणों की न्याई ट्रैक्ट के रूप में प्रकाशित कर दिया जाय तो उत्तम हो।

दो मौतें

गतसप्ताह दो विशेष व्यक्तियों का देहावसान हो गया। उनमें से पहले लार्ड क्रोमर थे, जिनका नाम मिसर के शासन के सम्बन्ध में प्रसिद्ध हो चुका है। आ-

दमी अवस्थाओं के पेच में आकर कैसे बदल जाता है, इस का दृष्टान्त आप के जीवन से मिल सकता है। आप जब भारत वर्ष में आए थे, उदार विचारों के समझे जाते थे, यहां से आप मिसर गये और अनुदारों के भी अनुदार नेता बन गये। दूसरे सज्जन का नाम नवाब विकारुलमुल्क था। आप किसी समय अलीगढ़ कालिज के स्तम्भरूप समझे जाते थे। देर से आप का शरीर रोगी रहता था। गतसप्ताह आप की भी जीवन लीला समाप्त हो गई।

———

पं० अखिलानन्द को वर्ण व्यवस्था की आलोचना

यह समाचार सुनकर आर्यपुरुषों को अवश्य ही प्रसन्नता होगी कि पं० अखिलानन्द की वैदिक-वर्ण व्यवस्था नामक पुस्तक का उत्तर आर्य्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् पं० गंगा प्रसाद एम० ए० लिख रहे हैं। यह बताने की अवश्यकता नहीं कि आप की योग्यता कितनी है। उस योग्यता, से हम आशा रखते हैं कि आप का लिखा आलोचना ग्रन्थ वर्ण-व्यवस्था विषयक भारी भ्रम-जाल को छिन्न भिन्न करदेगा।

आर्यसमाज और स्वराज्य

मद्रास के न्यूइण्डिया पत्र में आर्य्यसमाज और स्वराज्य शीर्षक का एक लेख निकला था, उसका आर्य्यमित्र में जो अनुवाद प्रकाशित हुआ है, वह अन्यत्र दिया गया है। पाठक उस निष्पक्ष की राय को अवश्य पढ़ें।

कन्या महाविद्यालय का उत्सव

कन्या महाविद्यालय जालन्धर का वार्षिकोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में होगा। उसकी आचार्य्या जी ने हमें सूचना भेजी है कि इस उत्सव पर 'मुल्क भर की सुशिक्षित देवियां और भद्रपुरुष एकत्र होंगे' "अतिथियों की रिहायश का पूरा २ प्रबन्ध होगा।" आर्यपुषों और आर्यदेवियों को चाहिये कि ऐसे उत्सव की रौनक बढ़ावें।

———

मासिक सर्क्युलर के समाचार

पौष मास का आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब का मासिक सर्क्युलर प्राप्त हुआ है। उस से ज्ञात होता है कि सभा का काम बड़ी उत्तमता से चलरहा है। सभा के २६ उपदेशकों ने मास भर में लग भग पौने दोसौ स्थानों में वैदिकधर्म का प्रचार किया। एक उपदेशक छुट्टी पर रहे और एक ने शाखा गुरुकुल मटिण्डू में काम किया। पौष मास में सभा को वेद प्रचार फण्ड के लिये आने पाइयों को छोड़ते हुए ८०२) चार आना मिशन फण्ड के ३५८) और दशांश में १३२) प्राप्त हुए, पौष मास में आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में १४४३-)॥ प्राप्त हुए और २६६४।=)॥ और एक पाई व्यय हुए।

गुरुकुल के लिये कार्त्तिक मास में सारे ५६७१॥-) और मार्गशीर्ष में ३५३३॥=)॥ प्राप्त हुए। वेदप्रचार और गुरुकुल के लिये यह राशि बतलाती है कि आर्यजनता की उदारता धर्मकार्यों के लिए पूर्ववत् प्रशंनीय है।

इस रिपोर्ट से भी यह ज्ञात नहीं होता कि पौष मास में सभा के उपदेशकों द्वारा नये समाज कितने स्थापित हुए।

———

एक शिकायत

इस मासिक सर्क्युलर के सम्बन्ध में हमारी एक शिकायत है। यह सर्क्युलर समाचार पत्रों को नियम पूर्वक नहीं मिलता। हमें गत मास नहीं मिला।

द्वाबा हाईस्कूल जालन्धर शहर।

के प्रेमियों और सर्वसामाजिक जनता को यह जान का प्रसन्नता होगी कि स्कूल ने नये भवन, बोर्डिंग हाउस तथा खेलने के लिये पांच घुमांव भूमि प्राप्त कर लीगई है। यह भूमि संगीत प्रसिद्ध "देवी तालाब" के साथ सटी हुई है। शहर में इस से अच्छी भूमि मिलना असम्भव नहीं तो बहुत कठिन अवश्य था। स्कूल के सौभाग्य की बात है।

———

संक्षिप्त समालोचना

हार्दिक आवाज़—स्वामी प्रकाशानन्द हरिद्वार। इसमें साधु आश्रम की कार्य प्रणाली तथा उद्देश्यों का वर्णन है।

भारत के १०० राज राजेश्वर—लेखक और प्रकाशक, भो० बालकृष्ण एम० ए० मूल्य)॥ यह इस पुस्तिका की द्वितीयावृत्ति है।

सम्मेलन—शतक—यह शतक जबलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में पढ़े जाने के लिये लिखा गया था। कोई २ पद्य मज़ेदार हैं। बिना मूल्य वितीर्ण किया जाता था।

खत्री दर्पण—लेखक, बा० गयाप्रसाद जी खत्री ने लिखा इसमें खत्रियों का कुछ वर्णन देकर कुछ सामाजिक रीतियों के भी सुधार का उपाय बतलाया है।

वल्लभाचार्य के पुष्टिमार्ग का इतिहास—मू०)॥ लेखक गोविन्दराम हासानन्द वर्मा। सद्धर्मप्रचारक यन्त्रालय दिल्ली में छपा। इस पुस्तिका में पुष्टिमार्ग की पोल खोली गई है।

श्री १०८ महाराज गढ़वाल महीमहरेन्द्र श्रीमान नरेन्द्रशाह बहादुर के विवाहोत्सव के उपलक्ष में गढ़वाल हितकारिणी सभा की ओर से धर्मशास्त्रोक्त उपदेश। मूल्य आदिज्ञात नहीं। उपदेश अच्छे हैं। पुस्तक पर टाइटिल पेज की जगह एक सफ़ेद काग़ज़ लगा हुआ है।

नारायण नाम सहस्र—लाहौर के प्रसिद्ध मा०दुर्गाप्रसाद जी ने परमात्मा के सहस्रनामों का संस्कृत श्लोकों में संग्रह किया है। मूल्य -) विरजानन्द यन्त्रालय लाहौर में मुद्रित। यत्न उत्तम है। श्लोकों में छन्दोभंग न होते तो अच्छा होता।

स्वाध्याय मञ्जरी—उक्त मास्टर जी ने ही लिखकर अपने प्रेस में छपवाई है। बहुत से वेद मन्त्रों के भाषा के पद्यों में अर्थ दिये गये हैं। पाठ के लिये पुस्तक अच्छी है। छन्दोभंग का प्रश्न इस में भी हल नहीं हुआ। दोनों ही पुस्तकें साधारण लोगों के लिये उपयोगी हैं।

विश्वविद्यप्रचारक महामण्डल के नियम—चंदौसी में मण्डल के कार्यालय से मिल सकते हैं।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

आर्य्य कुमारसम्मेलन

के मन्त्री जी से हमें निम्नलिखित दो ट्रैक्ट प्राप्त हुए हैं —

सभापति का भाषण—प्रो० बालकृष्ण जी का योग्यतापूर्ण भाषण है।

स्वागत कारिणी के सभापति का भाषण

अर्वाचीन-साहित्य-विवेचना—लेखक, पं० शालिग्राम शास्त्री। ऋषिकुल, हरिद्वार।

इस निबन्ध में लेखक ने बड़ी योग्यता से अर्वाचीन संस्कृतसाहित्य की आलोचना करते हुए उसके सम्बन्ध में अपने कर्तव्यों का विवेचन किया है। संस्कृत-साहित्य हितैषी इस निबन्ध को प्रसन्नता पूर्वक पढ़ेंगे। मूल्य ।)

षष्ठ भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन—(अमृतसर) का वृत्तान्त। इसकी आलोचना क्या करें। पं० जगन्नाथ निरुक्तरत्न जी स्वागत कारिणी के सभापति थे, और श्री स्वामी सत्यानन्द जी सम्मेलन के सभापति थे दोनों के उत्तम भाषण हुए, वे इस रिपोर्ट में दिये गये हैं। सम्मेलन के प्रस्ताव भी दिये हैं।

दो मज़ेदार भूलें हैं। आवरण पृष्ठ पर 'आर्यकुमार सम्मेलने अमृतसर' लिखा है। यह उलटी सप्तमी होगई। 'अमृतसरे आर्यकुमार सम्मेलन' होता तो कुछ मतलब बन भी जाता।

दूसरी भूल भी ऐसी ही है। प्रो० रामदेव जी के व्याख्यान का समाचार देते हुए आपकी कुछ प्रशंसा की गई है। उसमें एक स्थान पर लिखा है—'प्रोफेसर जी का व्याख्यान सर्वदाही विद्वत्तापूर्ण वा प्रभावशाली हुआ करता है' 'सर्वदा ही' होता तो दूसरा अर्थ होता, वही अर्थ लेखक को अभिप्रेत होगा। अब अभिप्राय उल्टा होगया। यह वृत्तान्त मेरठ के स्वामी प्रेस में पं० छुट्टनलाल स्वामी ने मुद्रित किया है।

भारतवर्षीय आर्यकुमार सम्मेलन का सप्तम वार्षिक वृत्तान्त—इसमें पिछले सब सम्मेलनों का भी संक्षिप्त सा वृत्तान्त दिया गया है।

बुन्देलखण्ड अनाथालय बांदा का वार्षिक वृत्तान्त—इस वार्षिक वृत्तान्त से ज्ञात होता है कि गतवर्ष में इस अनाथालय ने अच्छा कार्य किया है। वर्ष के अन्त में ५१ बालक और ८ कन्यायें शिक्षा पा रही थीं। साल की आय ३७३१≡)। दी गई है।

पशुचिकित्सा—लेखक, श्री ब्रह्मभट्ट मैकुलाल शर्मा। मिलने का पता, एम. एल. शर्म्मा, शाहाबाद, ज़िला हरदोई। मूल्य ।) २३ पृष्ठों की पोथी में गाय बैल आदि पशुओं के रोगों का संक्षिप्त वर्णन है। रोग वर्णन औषध का और कुछ अधिक विस्तृत होता तो कुछ न कुछ उपयोगी होता।

दयानन्दकालेजसर्वस्वाय श्रीमते हंसराजाय

अभिनन्दनपत्रम्।

महानुभाव आर्यजनमानसराजहंस !

स्वागतं ते सारस्वतेऽस्मिन् सरसि। त्यागैकधनोऽसि, विप्रोचितां वृत्तिमाश्रितोऽसि, भोगरम्यमायुषो भागन्तपसा पवित्रीकृतवानसि, नीरक्षीरविवेकदक्षोऽसि, चरितेनैवात्मनः परेषां पथदर्शकोऽसि, अनुपजातलोकव्यवहारपाटवानां मात्मन्यप्रत्ययवतां किमुतत्र येनाऽस्माकम्प्रोत्साहनोऽसि, किमुतद्यन्न ते महनीयम्। विशेषतश्चविद्यामन्दिराधिष्ठातुः किं न भवतो यत्प्रियमाप्यायनञ्चास्माकं कुलवासिनाम्।

साप्तपदीनं हि सतां सख्यमाहुः। नूनं सेयं भवतो महानुभावता या खलु मुखरयत्यस्मानपराध्यति। स्नेहसान्द्रैर्दृगन्तैः सम्भावयिष्यत्यत्रभवानस्मानितिनावेदनमाकाङ्क्षति। तथापीदमभ्यर्थयामः—

सरसि मथनकाले यारविन्दावलीनां—
क्षणमिहकलहंसैर्वीचिमालोदपादि।
परिणमयतु नूनं मोदपूरैर्नवीनै
र्जगदुपकृतये तां हंसवंशावतंसः॥

वयं गुरुकुलवासिनो
ब्रह्मचारिणः

महानुभाव आर्यजन मानस राजहंस!

इस सारस्वत सरोवर में हम आपका स्वागत करते हैं। त्याग ही आपका धन है, ब्राह्मणों का मार्ग आपने अवलम्बन किया है, जो संसार की ऐश्वर्य की आयु है उसे आपने तप से पवित्र किया है, आप नीर-क्षीर-विवेक दक्ष हैं, अपने चरित्र ही से आप सबके पथदर्शक हैं। जिन्हें लोक व्यवहार का ज्ञान नहीं और जिन्हें कार्य में लगते कुछ संकोच होता है उन्हें आप उत्साह देने वाले हैं। आपकी कौनसी बात है जो पूज्य नहीं। विशेष कर एक विद्यामन्दिर के आधार आप हम कुल वासियों के हृदय में विशेष प्रेम का संचार करने वाले हैं।

आप की महानुभावता ही हमें बराबर कुछ कहने के लिए प्रेरणा कर रही है। आप हमें सदा स्नेह भरी दृष्टि से देखेंगे यह कहने की आवश्यकता प्रतीत नहीं होती, तथापि अन्त में इतना निवेदन अवश्य करते हैं:—

या सरवीचीमालिका उमड़ी मन्थन काल।
हंसवंशअवतंस तेहि परिहरि करै निहाल॥

गुरुकुल वासी
ब्रह्मचारी

महात्मा मुँशीराम जीका

भाषण

(जो उन्होंने महात्मा हंसराज जी के उत्तर में किया)

श्रीमान् महात्मा हंसराज जी

आपके यहां आने से हमें जो आनन्द प्राप्त हुआ है, उसका मैं वर्णन नहीं कर सकता। हमें आज अपार आनन्द है। ब्रह्मचारियों ने देखा होगा कि अन्य आगन्तुक भद्रपुरुषों का जैसे परिचय कराया जाता था, आपका वैसे परिचय नहीं कराया गया। कारण स्पष्ट है। ब्रह्मचारी आपको भलीभांती जानते हैं। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि ब्रह्मचारी लोग आपसे अपरिचित नहीं हैं, क्योंकि वे बराबर आपके गुणों का गान सुनते हैं। ब्रह्मचारी मुझसे प्रायः पूछा करते थे, कि हमारे गुरुकुल में और इतने लोग आते हैं परन्तु महात्मा हंसराज जी क्यों नहीं आते? आज वे आपको सन्मुख बैठे हुए देख रहे हैं।

आपने आर्यसमाज में पहले पहल त्याग करके हम सब लोगों को मार्ग दिखाया था। आपने जो उत्तम २ उपदेश ब्रह्मचारियों को दिये हैं, आशा है वे उन पर विचार करेंगे, और उन्हें भूलेंगे नहीं। आपने स्नातकों के विषय में जो शब्द

कहे हैं, उनसे उनका उत्साह बहुत बढ़ गया होगा, और आशा है वे अपने व्रतों पर आगे से अधिक दृढ़ होंगे। आपने हम लोगों के विषय में जो कुछ कहा है, ईश्वर करे हम उसके पात्र बनें।

अन्त में मैं उपाध्यायों और अध्यापकों की ओर से आपकी सेवा में एक निवेदन करना चाहता हूं। आज यह नया सम्बन्ध—हमारा परस्पर तो बहुत पुराना सम्बन्ध है-जो स्थापित होता है, प्रतिदिन उत्तरोत्तर बढ़ता जाय। हम लोग अपने आचार्य के उद्देश्यों को—जिन्हें कभी २ हम भूल जाते हैं—सदा स्मरण रखें और पूरा करने का यत्न करते रहें। हमारा निवेदन है कि गुरुकुल के देखने में इस वार आपने जितने घण्टे दिए हैं अगली वार उतने ही दिन दे सकें, और ब्रह्मचारियों को अपने सत्संग का लाभ पहुंचा सकें। परमात्मा से मेरी यही प्रार्थना है कि हम लोगों के परस्पर सम्बन्ध से आर्य पुरुषों का उत्साह तथा प्रेम बढ़े, और हम लोग संसार में शान्ति फैलाने के लिए सदा यत्न करते रहें।"

—०—

आर्यसमाज और स्वराज्य।

(ले० श्री० मिस्टर के० वी० जम्बूनाथन)

यह बड़े ही दुःख की बात है कि आर्यसमाज दक्षिणी भारत में अपना यथोचित प्रचार नहीं कर सका।

आर्यसमाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ही कदाचित् एक मात्र धर्मशिक्षक थे, जिन्हों ने वैदिक-सिद्धान्तों की वास्तविकता और यथार्थता को समझा। उन्होंने वर्तमान जाति-भेद के थोथेपन को समझ कर इस विचार को घृणा की दृष्टि से देखा कि ब्राह्मण-कुल में जन्म लेने मात्र से मनुष्य ब्राह्मण हो सकता है। स्वामी जी ने सत्यधर्म और समाज-संशोधन का प्रचार करते हुये बड़े साहस पूर्वक घोषणा की कि जो ब्रह्म की यथार्थ ज्ञानोपलब्धि की जिज्ञासा में रहता है वही ब्राह्मण है। भक्ति, पवित्रता और सज्जनतादि शुभकर्मों द्वारा प्रत्येक व्यक्ति ब्राह्मण होने का अधिकारी है। ऋषि ने "वर्णाश्रमियों" की जाति सम्बन्धी कपोल कल्पनाओं की उन्हीं के विश्वस्त ग्रन्थों द्वारा खूब पोल खोली तथा तपोधन ऋषियों के सिद्धान्तों की यथार्थता का बोध कराया।

आर्यसमाज की शिक्षा हिन्दुओं के वैदिकधर्म्म पर अवलम्बित है। वेदों के विरुद्ध किसी बात को भी स्वीकार न करने में आर्यसमाज समस्त हिन्दूसमाजों से बढ़कर है। वैदिकसिद्धान्तों की यथार्थता ने अपने अनुयायियों के हृदय में बहुत कुछ उदारता के भावों को उदय कर दिया है। जो निश्चय रूप से उन्हें सच्ची धार्मिकता और अकर्मण्य हिन्दूसमाज की उन्नति की ओर प्रेरित करेंगे।

आर्यसमाज का प्रादुर्भाव प्रत्येक प्रकार की उन्नति के लिये हुआ है। सत्य के संधान में सदैव संलग्न रहने वाले समाज का उत्कर्ष अवश्यम्भावी है। यदि कोई मनुष्य शुभ कार्मों द्वारा समाज में उच्चस्थिति प्राप्त करने का अधिकारी बनता है तो आर्यसमाज उसे ऊंचे वर्ण में मानने को तुरन्त तय्यार हो जाता है। वस्तुतः आर्यसमाज क्रियात्मक रूप से पवित्र हृदय और विशुद्ध मस्तिष्क की केवल एक जाती को मानता है।

धर्म्म, हृदय और मन दोनों के लिये बड़ी आवश्यकीय वस्तु है। यदि कोई विधर्मी वैदिकशिक्षा के महत्व से प्रभावान्वित होकर हिन्दू होना चाहता है तो उसके लिये आर्यसमाज की ओर से किसी प्रकार की अड़चन उपस्थित नहीं की जाती।

शुद्धि का आन्दोलन मेरे मन पर बड़ा प्रभाव उत्पन्न करता है। विशेष कर भारतीय इतिहास की अवस्था में जब कि सद् और असद् भावों द्वारा प्रचण्ड विरोध होने पर भी सामाजिक स्थिति में नाना प्रकार के महत्व पूर्ण परिवर्तन और सुधार किये जा रहे हों। चाहे जिस दृष्टि से देखिये आर्यसमाज का आन्दोलन भारतीय राष्ट्र—निर्माण के लिये बहुत ही समुचित कार्य है। मानवजाति में भ्रातृभाव की स्थापना करना केवल आर्यसमाज का ही काम है, आर्यसमाज ने दिखला दिया कि ईश्वर की दृष्टि में सब मनुष्य केवल एक जाति के अङ्ग हैं। अच्छे कर्मों के कारण वे उच्च कहला सकते हैं। नन्दा (Nanda) के समान यदि कोई "चांडाल" उत्तम कर्म करने वाला एवम् सदाचारी हो तो वह निःसन्देह ब्राह्मण है। इस के विपरीत जो पापाचरण तथा धूर्त्ततापूर्ण जीवन बिता रहा है वह चाहे ब्राह्मण कुल में ही क्यों न उत्पन्न हुआ हो, चांडाल से भी अधिक अधम है। वैदिकधर्म की सचाई में कैसी अपूर्व सुन्दरता है कि एक जन्म का "पडिया" (Pariah) शुद्धि द्वारा अपने जीवन में ही उच्च से उच्च वर्ण को प्राप्त कर सकता है। एक मनुष्य अपने अच्छे कर्मों द्वारा शुद्ध हो जाता है। संसार की समस्त वस्तुओं के परिशोधक अग्निदेव में पवित्र आहुति डालने से "नन्दनर" के जीवन काल में ही प्रत्येक समय शुद्धि संस्कार हो सकता है। परन्तु तो भी 'वर्णाश्रमी' मित्रों का यह विश्वास है कि जातियों में किसी प्रकार का परिवर्तन होना ठीक नहीं और ब्राह्मण जन्म से ही होते हैं।

वस्तुतः यह बड़े ही हर्ष की बात है कि इस प्रकार के एकता के भाव हमें उच्च और उदार अभिलाषाओं की पूर्ति की ओर प्रेरित कर राष्ट्र निर्माण की ओर ले जा रहे हैं। "वर्णाश्रमी" लोग जातिभेद बढ़ाने वाली सभाओं का संगठन करके क्या लाभ उठाते हैं सो समझ में नहीं आता। विशेष कर ऐसे समय में जब कि सारा देश "संयुक्त भारत" का निर्माण करने तथा दयालु बृटिश गवर्नमेंट की छत्र छाया में "स्वराज्य" प्राप्ति की अभिलाषा में निमग्न हो रहा हो जातीय (Caste) पक्षपात बहुत बुरा है। एकता के बल हम खड़े रह सकते हैं और बिना उसके नष्ट भ्रष्ट हो जाना स्वाभाविक ही है।

दक्षिणी भारत में शीघ्र ही एकता के बीज वपन करने के लिये आर्यसमाज के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। मैं आर्यसमाज के नेताओं से प्रार्थना करता हूं कि वे अपने प्रचार कार्य का इस प्रांत तक विस्तार करें।

(आर्यमित्र)

—०—

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

[१] गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी

[२] वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों के लेख आ रहे हैं।

=) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक विना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र

सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता

सद्धर्म-प्रचारक

गुरुकुल हरिद्वार

प्राप्त-पत्र

(प्राप्त पत्रों का उत्तरदाता सम्पादक नहीं है)

आर्य्यकुमार सम्मेलन

"भारतवर्षीय आर्य्यकुमार सम्मेलन लखनऊ के सही २ हालात।"

आप के पत्र में भारतवर्षीय आर्य्यकुमार सम्मेलन लखनऊ के हालात छपे हैं, इस लिए मैं उचित समझता हूं कि उस ग़लत फैमी को जिस में कई पाठकों का पड़ना अवश्य प्रतीत होता है दूर किया जावे।

जिस प्रकार इश्तहारी हकीम बड़े लम्बे चौड़े झूठे विज्ञापन छाप कर बहुत से लोगों को हानि पहुंचाने का कारण बनते हैं और उसी मार्ग को धार्मिक सभायें भी स्वीकार करले और विशेषता जिन के आगे आर्य्य का शब्द पड़ा होतो संसार तो एक ओर रहा भारतवर्ष की उन्नति का ख़याल करना भी बिलकुल निरर्थक है। चिरकाल से मेरा विचार आर्य्यकुमार सम्मेलन की बैठक को देखने का था जो कि इस वर्ष पूरा हुआ। लखनऊ की रौनक कांग्रेस के वहां होने के कारण दिसम्बर मास के अन्तिम सप्ताह में खूब बढ़ी हुई थी इस लिए बहुतसी सभाओं ने अपने २ उत्सव वहां किये।

आर्य्यसमाज के आलीशान पंडाल में भारतवर्षीय आर्य्यकुमार सम्मेलन का उत्सव भी होता रहा। अगर सत्य कहा जावे तो यह उत्सव क्या बाहिर से आये हुए प्रतिनिधियों की संख्या में धर्म्म का प्रचार करने में या आर्य्य पुरुषों की उत्तम सम्मति प्राप्त करने में अथवा युवकों को अपनी ओर खेंचने में बिलकुल फीका रहा।

पत्रों में लिखा गया है कि सहस्रों कोसों से रंगून के अतिरिक्त जहां से कोई प्रतिनिधि न आसका दूरी आने वालों के मार्ग में बाधा डालने में समर्थ न हुई प्रत्येक गाड़ी क्या डाक पेसिंजर कुछ न कुछ मित्रों के दलों को निरन्तर लाती रही परन्तु उन की संख्या कहीं नहीं बताई गई। शायद अंक लिखने में बहुत सा काग़ज़ वृथा जाता। सब से अधिक संख्या निर्वाचन के समय होनी चाहिये थी परन्तु उस समय प्रतिनिधियों की संख्या लगभग बाईस के थी और इसके अतिरिक्त चालीस पचास अन्य प्रतिनिधि होंगे जोकि प्रतिनिधि तो सम्मेलन के बन कर आये थे परन्तु मुख्य प्रयोजन लखनऊ में जाने का कांग्रेस देखने का था। जैसे कि निर्वाचन जैसी आवश्यक सभा में न भाग लेना सिद्ध करता है सम्भव था इतनी थोड़ी संख्या कुछ और बढ़ जाती अगर निर्वाचन की सूचना सब प्रतिनिधियों को दी जाती। यहां तक कि परिषद् के गतवर्ष के उपप्रधान को भी निर्वाचन होने की सूचना न हुई। ऐसे ही इलाहाबाद के एक प्रतिनिधि की शिकायत थी। एक और महाशय ने बताया कि निर्वाचन होने से एक घन्टा पूर्व उन्हें ख़बर मिली परन्तु उस समय उन्होंने कांग्रेस में सम्मिलित होना था, हां इस से एक लाभ अवश्य हुआ। यानि स्वेच्छानुसार निर्वाचन किया जासका। जाति भेद के घृणित असूल को सन्मुख रखकर महामन्त्री महाशय ने पूर्व प्रधान की प्रशंसा करके उनके ही पुनः प्रधान बनाये जाने के लिए बल दिया और सफलता प्राप्त की। फिर स्वयं यहां मन्त्री निर्वाचित होना तो आसान ही था। क्या ऐसा निर्वाचन जिसमें प्रतिनिधियों को सूचना तक न दीजावे कभी जायज़ होसकता है? कदापि नहीं।

दूरी की बाबत अगर देखा जावे तो सारे पंजाब से जहां कि आर्यसमाज का सब से अधिक बल है एक भी आर्य्यकुमार प्रतिनिधि बन कर सम्मेलन में नहीं पहुंचा होगा। ऐसा ही हाल बम्बई, बंगाल, मद्रास आदि प्रान्तों का समझ लीजिये। अजमेर से जहां कि गतवर्ष परिषद् का कार्यालय था तीन चार प्रतिनिधि अवश्य पधारे थे। कानपुर की सेवक मंडली और हरदोई आदि आस पास के निकटस्थ स्थानों के प्रतिनिधियों की संख्या को अगर न गिना जावे तो प्रतिनिधियों की संख्या मुशकिल से बीस पच्चीस तक पहुंचेगी। इससे अधिक अदृष्ट पूर्व सफलता में क्या सन्देह रहजाता है। इस से ज़्यादा एक सौ प्रतिनिधि तो चतुर्थ सम्मेलन

ही शामिल होने लिखे हैं। जिस वर्ष बजट में १००) रुपया व्यय मध्ये स्वीकार हुआ था और पंचम सम्मेलन में घटकर वह २५०) ही रहगया और इस वर्ष शायद इसकी आवश्यकता नहीं समझी गई क्योंकि कुमार सभाओं से तो कुछ अधिक प्राप्ति की आशा है नहीं, ऐन सम्मेलन के मौके पर किसी ऐसे ताल्लुक़दार को स्वागत कारिणी सभा का प्रधान चुन दिया जाया करेगा जो कि ठाकुर जगन्नाथ बख़्श जी की तरह केवल २००) दान देकर स्वागत कारिणी सभा के प्रधान बनाये जावें और आर्यसमाज की वेदी पर से ईश्वर के सब से उत्तम नाम "ओ३म्" को तिलाञ्जलि देकर "जय सीताराम" का पाठ करावें। बल्कि आशा पड़ती है कि उन्नति करते २ अगले वर्ष २००) की बजाये ५००) रुपया देनेवाले को स्वागत कारिणी सभा का प्रधान बनाया जाया करेगा जो कि इस वर्ष से भी अधिक वैदिक सिद्धान्तों की जड़ों पर कुल्हाड़ा चलावे। धन की ख़ातिर धर्म्म को तिरस्कार करने की घृणित मिसाल और क्या हो सकती है। भारत वर्षीय आर्य्यकुमार सम्मेलन की बैठक हो और आर्य्यकुमारों की रुचि उस में इस क़दर हो कि सात बजे का तो समय नियत हो और नौ बजे कार्यवाही आरम्भ की जासके और ऐसा हो भी क्यों न, जब कि रंगून की दूरी प्रतिनिधियों के मार्ग में बाधा डालने में प्रस्तुत थी—भिन्न २ स्थानों से आये हुए आर्य्यकुमारों के दलों की हाकी, फुटबाल और अनेक प्रकार के खेलों की प्रदर्शनी के बारे में सम्मेलन होने से पूर्व पत्रों में खूब घोषणा की गई थी परन्तु अब लिखा जाता है कि छात्र गण की शहर के अन्य २ जलसों या सम्मेलनों में जाने की उत्सुकता देख कर खेलों की संख्या घटा दी गई। शायद इस से पूर्व तो महा मन्त्री महाशय को लखनऊ में अन्य जलसों का होना ज्ञात न था क्यों जो अगर स्पष्ट लिख देते कि जननास्तिक आदि के अतिरिक्त और कुछ नहीं हो सका जिस में दर्शकों और खिलाड़ियों की संख्या केवल चालीस के लगभग थी, हां सायं को चन्द विद्यार्थियों का हाकी का मैच हुआ, जिस में डेढ़ सौ के लगभग दर्शकों संख्या होगी। परन्तु यह सान्ध्य भी परिषद् की ओर से न था, आपस में ही विचार करके विद्यार्थियों ने खेल लिया था, इतनी भारी संख्या क्यों नहीं होती जब कि लखनऊ के लोगों के अतिरिक्त हर एक छोटी लाइन अथवा बड़ी लाईन प्रत्येक रेल गाड़ी डाक या पैसेंजर कुछ न कुछ मित्रों के दलों को निरन्तर लाती रही—अब छापा जाता है कि बहुत से छात्र वर्गों ने भाग लिया—संख्या का देना तो आप आवश्यक नहीं समझते क्योंकि कदाचित् ढोल का पोल न खुल जावे, आर्य्य मित्र में एक जगह अवश्य छपा है कि वादविवाद को श्रवण करने के लिए प्रतिनिधि व दर्शक बड़े उत्सुक थे। उस समय मंडप का विलक्षण दृश्य था। हाज़री भी चार पांच हज़ार मनुष्यों से कम न थी। इस से अधिक सच्चाई का मलयामेट करने की ज़रूरत शायद ही किसी ने की हो। एक प्रतिनिधि महाशय थे जो कि स्वयं भी वादविवाद में बोले थे जब आर्य मित्र उनको पढ़ने को दिया गया, और इस सफ़ेद झूठ के बारे में पूछा गया तो वह बड़े अचम्भित हुए और कहने लगे कि जब वह भाषण कर रहे थे उस समय डेढ़ दो सौ से अधिक उपस्थिति न थी। वास्तव में बात यह थी कि वाद विवाद से पूर्व आर्य्य समाज की ओर से श्रीमन् महात्मा मुन्शीराम जी का व्याख्यान हुआ था, जिस के पश्चात् कुमार सभा की बैठक आरम्भ हुई—महात्मा जी के व्याख्यान के समय चार पांच हज़ार से अधिक की उपस्थिति अवश्य थी। परन्तु व्याख्यान की समाप्ति के साथ हाज़री की भी समाप्ति हो गई और चार पांच सौ की कुल भीड़ भाड़ पण्डाल में रह गई, जो घटते २ समाप्ति तक एक सौ से भी कम रह गई होगी और उसमें कुमार तो मुश्किल से बीस पच्चीस ही होंगे।

पदक किन्होंने प्राप्त किये। लिखा है हरदोई और लखनऊ के युवकों ने। इन दोनों शहरों का अन्तर कितना है? सम्भव है, आप सहस्रों कोषों का समझ जावें। नहीं भाई अगर लखनऊ से डाक गाड़ी में सवार हो कर पंजाब को जावें तो पहिला स्टेशन जहां पर गाड़ी रुकेगी हरदोई का होगा।

जब कि निखिल भारतवर्षीय आर्य्य कुमार सम्मेलन की बैठक थी तो उसमें आर्यसमाज और वैदिक-धर्म की उन्नति के लिए प्रस्ताव तो अवश्य प्रस्तुत हुए होंगे। लीजिये इस पर मास्टर रामदेव जी पंचम सम्मेलन के प्रधान के ख़्यालात जो कि इस बारे में प्रकाश अख़बार द्वारा प्रगट किये गये हैं। पाठकों के अवलोकनार्थ लिख देते हैं। प्रोफेसर साहिब लिखते हैं "स्वागत कारिणी सभा के सभापति एक ऐसे महाशय को बनाया गया जो कि एक ताल्लुक़ेदार हैं, उनकी तक़रीर के ऊपर बजाये "ओ३म्" के "जयसीताराम" छपा हुआ था। मगर फिर भी हमारे लखनऊ के भाइयों के कान पर जूं तक नहीं रींगी, यह अपवित्र राज़ीनामा संयुक्त प्रान्त में किसी दिन आर्यसमाज को ले डूबेगा, जो धर्मसंस्था बाहिर की शान के लिये सचाई का ख़ून करती है और भ्रम मूलक विश्वासों के साथ राज़ीनामा करती है उसकी हस्ती और अदम हस्ती एक जैसी है।" अगाड़ी लिखते हैं "कि कुमारसम्मेलन में प्रस्ताव भी बहुत से स्वीकार हुए—उनमें भी भूल कर आर्यसमाज का काम करने या वैदिकधर्म में सहायता देने की प्रेरणा नौजवानों से नहीं की गई। यह प्रस्ताव ऐसे थे। जो हिन्दुओं या मुसल्मानों की किसी विद्यार्थी सभा में भी पास हो सक्ते थे। इन में से किसी पर भी ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज या वैदिकधर्म की विशेष मोहर न थी। शराब और सिगरेट के बरख़िलाफ तो प्रस्ताव पास हुए परन्तु मांस के बरख़लाफ नहीं जो छपे हुए प्रस्ताव थे उन में Political economy अर्थ शास्त्र पर लैकचर कराने की प्रेरणा तो आर्यकुमार सभाओं को की गई—लेकिन वैदिकधर्म्म और आर्य्यसभ्यता पर प्रस्ताव ख़ामोश थे, शायद यह काम क्रिश्चियन एसोसियेशन करेंगी।"

जिस समय यह प्रस्ताव पास किये जा रहे थे इन पंक्तियों का लेखक भी उस समय पंडाल में स्वामी सर्वदानन्द

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जी के पास मौजूद था उस समय के त्यागी संन्यासी के शब्द सत्य थे कि यह प्रस्ताव पास नहीं किये जा रहे बल्के फेल हो रहे हैं अगर इन शब्दों पर ध्यान पूर्वक सोचा जावे तो निःसंदेह यहां तक वैदिकधर्म्म से इन का सम्बन्ध है यह बिलकुल निस्सम्बंध थे। रहा इन पर चलना सो इस ख़्याल से तो यह डबल फेल थे क्योंकि जिन आर्यकुमारों के लिए यह प्रस्ताव पास किये जा रहे थे वह तो उस समय मुश्किल से बीस भी न मौजूद होंगे उस समय अजब दौड़ दौड़ने समय बांधा हुआ था—प्रस्ताव कर्त्ता प्रस्ताव पेश करते थे और पण्डाल से बाहिर चल देते थे इतने में दूसरे प्रस्ताव के लिए एक नवीन महाशय की खोज़ रहा मन्त्री दल कर छोड़ता था।

प्रस्ताव स्वीकारी के पश्चात् एक अजब दृश्य देखने में आया यानी वाद विवाद के समय तो प्रधान महामन्त्री और एक्स महामन्त्री आदि जूते पहिने प्लेटफार्म्म पर विराजमान थे और एक वृद्ध संन्यासी का जूतों के पास कुड़सियों के ऐन पीछे बैठा हुआ था—देखना तो एक दृश्य था ही—परन्तु यह दृश्य देख कर यह प्रतीत करना मुशकिल हो गया था कि आया हम धर्म्म सभा में बैठे हैं याकि किसी नाटक का खेल देख रहे हैं—जब महाशय चाण्डीप्रसाद जी महामन्त्री बाहिर से आये हुए भाइयों का धन्यवाद दे कर बैठ गये तो दूसरे महा मन्त्री महाशय अलखसुरारी उत्तर देने को खड़े हुए। दैव योग से आप को हिकलाने की मरज़ है दो चार शब्द बोलने के पश्चात् आपने इस प्रकार भाषण आरम्भ किया "हम आप के भोजन छादन.....छादन का शब्द उच्चारण करते ही आप गिडगिड़ा कर हंस पड़े और इस तरह हंसते हुए प्लेटफार्म्म के बिल्ली ओर जहां कि मैदान अब साफ ही था—भाग गये इस खेल के पश्चात् आर्त्ती हो कर आर्य्यकुमार सम्मेलन की समाप्ति हुई। अगले लेख में पाठकों को परिछट्ट का परिचय करवाया जावेगा जिस से भली प्रकार यह विदित हो जावेगा कि कुमार विचारें तो यूंही बदनाम हो रहे हैं वास्तव में इस सारी रचना के जिम्मेवार लोग आप से युक्त दो तीन ऐसे व्यक्ति हैं जो कि कुमार तो एक ओर रहे कई कुमार और कुमारियों के पिता हैं।

शालिग्राम
मन्त्री आर्यसमाज
सहारनपुर

[दूसरे पृष्ठ से आगे]

"उपास्य देवता" विषय था। आपने प्रथम ईश्वर को अपना उपास्य देवता सिद्ध कर ईश्वर के अन्य नामों की बड़ी सरल भाषा में व्याख्या की और उपस्थित जनता को अच्छी प्रकार बतला दिया कि पौराणिकों के लिखे मत्स्य, कूर्म, वराह आदि अवतार अन्य कुछ नहीं यह सब उसी ईश्वर के ही नाम हैं। इस के लिए कोई बाहर से बातें नहीं मिलायीं गई किन्तु पुराण से ही इस बात को सिद्ध कर दिखाया इस के बाद कुछ भजन हो कर स्ना० बुद्धदेव जी का "हमारे उद्देश्यों और उस के साधनों" पर व्याख्यान हुआ और सायंकाल की भी कार्यवाही समाप्त हुई।

१८ की प्रातः श्री स्ना० बुद्धदेव जी का व्याख्यान १० बजे प्रारम्भ हुआ। आध्यात्मिक उन्नति के साधनों पर व्याख्यान देते हुए आपने तीन संस्कारों के पालने का आदेश किया अर्थात्, सत्सङ्ग, स्वाध्याय और संध्या; व्याख्यान रोचक था तथा उपस्थित जनों के चित्त में संध्या के लिए अभि, उत्पन्न करने वाला था इस समय की कार्यवाही इन के व्याख्यान से ही समाप्त हुई। सायंकाल कोई १२½ से ही भजनिकों ने अपना कार्य प्रारम्भ कर दिया और ठीक १½ बजे पं० ब्रह्मदत्त जी का व्याख्यान हुआ।

आपने श्रीस्वामी दयानन्द का संदेश सुनाते हुए कहा कि उन्नति का कोई साधन है तो ब्रह्मचर्य्य प्रेम है। अगर ऋषि ने कोई भी काम किया है तो प्रेम और ब्रह्मचर्य्य के बल से ही। अछूतादिकों के उद्धार के लिए इसी बल से वह सदा के लिए दर्वाजा खोल गया। आर्यजाति का एक मात्र उद्देश्य कि ये व्रत को पूरा करने के लिए सर्वस्व लगा देना है इस को आगे रखकर आर्यजनता से अपील की कि मूल को पोषण करने के लिए आगे कदम बढ़ायें तत्पश्चात् एक भजन हुआ और श्री पूज्य महात्मा जी ने अमृत वर्षा करना प्रारम्भ किया।

महात्मा जी के व्याख्यान का सार यह है

आप लोग ये सब सुन चुके कि भारत की प्राचीन सभ्यता कितनी उच्च थी। मनु भी यह लिख गया कि यहां प्राचीन काल में सब दूर २ देश से सीखने के लिए आया करते थे। परन्तु अब देश की दशा कितनी गिरी हुई है। इसकी दशा को देखकर बहुत से विदेशी भी प्रयत्न कर रहे हैं स्त्री शिक्षा, अछूतोद्धार, सर्व साधारण शिक्षा आदि कितनी आवश्यकताएं हैं पर उनका उद्धार किस प्रकार हो यह सब ही के सामने बड़ी समस्या है। इन सब का एक मात्र उपाय गुरुकुल शिक्षा प्रणाली है। पूर्णायु होकर बालक और बालिकाएं विद्या पढ़ कर ब्रह्मचर्य पूर्वक गृहस्थ में प्रवेश करेंगे तो लक्षों की संख्या में विधवाओं का आर्तनाद बन्द हो सकता है। क्योंकि विधवाएं ही होना बन्द होजाएंगी। आचार हीनता दूर होजायगी नित्य आचार्य के सहवास सम्बन्ध से। गुरुकुल को देखकर अब रेजिडेन्शल सिस्टम का शोर मचाया जारहा है। आर्य भाषा हिन्दी को माध्यम बनाने पर पहले लोग हंसते थे पर अब गुरुकुल ने बना कर दिखाया तो अब लाट साहेब तक ने अनुभव किया और अब राजधानी देहली में कमीशनें बिठा कर विचार किये जारहे हैं। अहिंसा के विषय में गुरुकुलों का प्रभाव इतना है कि १६ साल से किसी शिकारी का डेरा गुरुकुल की भूमि में नहीं गड़ता यहां तक कि वायसराय के लंच तक का डेरा इसी विचार से गुरुकुल भूमि के बाहर गड़वाया गया था। गुरुकुल में वायसराय तथा अन्य सहवर्गों ने जो कुछ भी पकोड़े आदि खाये उसका परीणाम यह हुवा कि खेमें में जाकर उन्होंने कुछ नहीं खाया। उनके साथ आये एक नयपाली गोरखा महाशय ने कहा था कि आपने बड़ा पुण्य किया कि आज इन्होंने मांस नहीं खाया। कि-

ले मांसाहारी स्वदेशी लोग आकर मांस छोड़ने की प्रतिज्ञा कर गये हैं।

...धर्म का सुधार भी गुरुकुल से ही होगा। ...से पतित अवस्था सं... की है जिसमें घरबारी, मठधारी, मुकदमेंदारी सभी चिमटगयी ... इसका सुधार भी सच्चे संन्यासी पैदा करके गुरुकुल ही करेगा। मुसल्मानों में भी गुरुकुल के लिए बड़ा जोश है। मौलाना शिबली ने गुरु... से देखकर जो लेखमाला नि...ली थी वह देखने योग्य है। ईसाई में भी स्टी... साहेब ने कोटगढ़ में अपना गुरुकुल खोलने का बड़ा यत्न किया है। अब ...मैन्ट भी इसी धुन में ल... है। आर्य लोगों को गुरुकुल को चलाने में कोशिश होना चाहिए। ला० ब्रह्मानन्द तथा गंगाराम जी के त्याग तथा ... को सामने रख के आप गुरुकुल के कार्य में दत्तचित्त होजाएं" इसके बाद महात्मा जी ने भाषण की अपील की। तदनन्तर ... हुआ। लगभग २१००) एकत्र हुआ। तदनन्तर कार्य समाप्त हुई।

अगले दिन २७ जनवरी को प्रातःकाल नव प्रविष्ट विद्यार्थियों का उपवीत तथा वेदारम्भ संस्कार हुआ और उत्सव की कार्यवाही समाप्त हुई।

सामाजिक समाचार

अटाला मस्जिद जौनपुर में आर्यसमाज—श्री प्रधान आर्यसमाज जौनपुर सूचना देते हैं कि उक्त समाज के द्वादश वार्षिकोत्सव के प्रसंग पर यहां के मुसलमान इतना घबराए ... अपना ... जल्सा प्रारम्भ कर दिया और म० शान्ति स्वरूप जी को शंका समाधान के हेतु विशेष रूप से निमन्त्रण दिया—परन्तु उक्त महाशय जी के प्रश्नों का उत्तर न दे सके और शास्त्रार्थ प्रारम्भ हो गया। यद्यपि विघ्न का बहुत भय था तथापि महा० शान्तिस्वरूप जी ने ऐसे सभ्यता पूर्वक प्रश्नोत्तर किया कि मुसलमानों को कोई मौका भागने का न मिला।

श्री मुख्याधिष्ठाता ज्वालापुर महाविद्यालय लिखते हैं कि वार्षिकोत्सव की, जो ७ से १० मार्च तक होगा, तय्यारियें हो रहा हैं। इस वर्ष नवीन ब्रह्मचारियों के प्रवेश पत्र ५० से ऊपर आचुके हैं और आरहे हैं, परन्तु प्रविष्ट केवल १० उनमें से ही किये जावेंगे जिन के प्रार्थना ... पत्रों से पूर्व ... के हैं। इस ... सम्बन्ध पत्र भेजने का कष्ट ...

...नपुर ... ...रिक सभा ... ता० २८ ज... ... को ... ...ह के साथ ... ... अ... ... क... आर्यों ने जो ... ... यह ... ... पदार्थ ... ...

ओ३म्

Registered No. A. 434.

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

[illegible]

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ७ फाल्गुन सं० १९७३ वि० | दयानन्दाब्द ३४ | ता० १७ फरवरी सन् १९१७ ई० | संख्या ४४ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से [illegible] मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य =)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषय जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक—आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात मूल्य -)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उन ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य-मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =) (डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, गुरुकुल-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
छः मास का १॥) तथा तीन मास का १)

(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थियों के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए

प्रचारक विषयक सम्मति।

सं० सम्पादक जी नमस्ते।

प्रचारक को सुगमता से चलाने के [illegible] निम्नलिखित सम्मति है:—

[illegible] प्रचारक का मूल्य नहीं बढ़ना चाहिए।

[illegible] काग़ज़ घटिया अर्थात् प्रताप [illegible] न लगाना चाहिए। धार्मिक पत्रों का काग़ज़ देख कर कोई भी ग्राहक प्रसन्न वा अप्रसन्न नहीं होता। क्योंकि धार्मिक पत्रों के लेखों को देख कर ही लोग ग्राहक बनते हैं न कि काग़ज़ की चिकनाई आदि को देख कर।

[२] मैंने पूर्व भी विस्तार से लिखा था और अब संक्षेप से लिखता हूं कि पत्र में विज्ञापन अवश्य होने चाहिए। हां इतनी विशेषता होनी चाहिए कि बिलकुल खराब बिज्ञापन न छापें, बाकी सब तरह के विज्ञापन छपते रहें। यदि १२ पृष्ट का पत्र हो और ८ पृष्ट वा इस से अधिक भी विज्ञापन हो तो कोई हर्ज़ नहीं। कइयों का विचार है कि विज्ञापनों से भोले भाई ठगे जाते हैं, सो भूल है क्योंकि आज कल लोग ऐसे चतुर हो गए हैं कि विज्ञापनों पर नज़र ही नहीं डालते। यदि अच्छे बिज्ञापन दिये जायं तो न सिर्फ पत्र सञ्चालकों को ही लाभ ही परन्तु ग्राहकों को भी लाभ हो सकता है।

व्यापार—कुशल लोग तो अच्छे और बुरे अर्थात् सत्य और असत्य को जान कर भी लाभ उठा सकते हैं और जो लोग बिलकुल ही भोले हैं वे तो [आप के पत्र द्वारा न सही] और दूसरे पत्रों द्वारा ही ठगावेंगे।

संसार भर के पत्र अपनी एक रसद विज्ञापनों द्वारा खैंच कर पत्र की उन्नति और ग्राहकों को प्रसन्न करते हैं फिर आप ही अकेले इस संसारव्यापी नियम के विरुद्ध काम करके क्यों प्रचारक को घाटे में रखते हैं और उस घाटे की पूर्ति के लिये प्रचारक परिवार पर अनुचित बोझा डालते हैं?

मैं भी प्रचारक का एक प्रेमी हूं। अतः दृढ़ता पूर्वक कहता हूं कि प्रचारक में अवश्य विज्ञापन होने चाहिए परन्तु प्रचारक के १२ पेज के कलेवर में से तो एक लाइन भी विज्ञापनों को न देनी चाहिए। विज्ञापन न देने को १२ पेज में ही विज्ञापन ढूंसने से प्रचारक को बहुत घाटा सहना पड़ेगा और आपको बार बार व्यर्थ अपीलें करनी पड़ेंगी। इति

भवदीयः—
गंगाराम उबाना प्रधान, आर्य्य समाज,
नसीराबाद। (राजस्थान)

—:०:—

ग्राम-पत्र

(प्राप्तपत्रों की सम्मतियों के लिये सम्पादक उत्तर दाता नहीं)

गुरुकुल के ज्येष्ठ ब्रह्मचारियों की विदा

(ले० चमूपति बी० ए०)

गुरुकुल सुलतान के ज्येष्ठपुत्र जो कुल की स्थापना के साथ इस में सम्मिलित हुए, इस कुल में अपनी अवधि पूरी होने के कारण यहां से विदा होने वाले हैं। उन के नाम अधिकारी परीक्षा के लिए भेजे जा चुके। अधिकारी परीक्षा में एक मास शेष रहा। ऐसा न हो कि वियोग घड़ी अकस्मात् आए, और उन का जाना दूभर प्रतीत हो, उन्हें विद्यालय में अलग एक कमरा दिया गया जिस में परीक्षा की तैय्यारी निर्विघ्न करें। आज एक दिन गुज़रा, कल दो। होते २ महीना गुज़र गया और गुरुकुल के पुत्रों के जाने में दो दिन ही आरहे। यदि सम्बन्ध स्कूलों की भान्ति रस्मी होता, तो कलली शिष्य कई आए और कई गए। नित्य प्रति प्रवेश भी होता है, निर्गमन भी, शोक क्या? परन्तु गुरुकुल में यह बात नहीं। यहां गुरु और शिष्य एक दूसरे के जीवन में ओत प्रोत होते हैं। यही हाल आपस में ब्रह्मचारियों का है। यहां अलग होते समय भान्ति २ के विचार आते हैं।

२८ जनवरी को अध्यापकों ने जाने वालों को फलाहार दिया। गुरुकुल-उपसभा के सदस्य भी सम्मिलित हुए। एक ओर ब्रह्मचारी बैठे, दूसरी ओर अन्य महानुभाव। खाने के पश्चात् श्री मास्टर ज्वैथराम जी, महाशय तीर्थराम जी, अध्यापकों के प्रतिनिधि चमूपति जी तथा गुरुकुल-आचार्य्य श्री गोपाल जी ने उपदेश दिए। ब्रह्मचारी धर्मदेव ने भाइयों की ओर से उत्तर दिया और फलाहार समाप्त हुआ।

दूसरे दिन प्रातःकाल विद्यासभा हुई, जिस में सब ब्रह्मचारी और सब अध्यापक मिले। प्र० बृहस्पति ने लोक कहा की हमारे भाई विद्योन्नति करने चले हैं, इन में शोक नहीं, हर्ष है, परन्तु प्रार्थना करते समय रोने से न रह सका। सारी सभा पर एक विशेष अवस्था छागई सब ब्रह्मचारियों ने यहां तक कि दूसरी श्रेणी के ब्रह्मचारियों ने भी, अपने भाताओं को बारी २ सम्बोधित कर अपना हर्ष प्रकट किया। अध्यापकों ने प्रेम भरे उपदेशों की वर्षा की। अन्त में जाने वाले ब्रह्मचारी जो सारी सभा की दृष्टियों के केन्द्र थे। एक २ कर के उठे, और हृदय से निकले हुए, हृदय में बैठने वाले शब्दों में अध्यापकों के प्रति अपराधों के क्षमा की प्रार्थना तथा ब्रह्मचारियों को प्रेम-युक्त उपदेश दिए। यह गुरुकुल-इतिहास में एक विशेष घटना थी।

तत्पश्चात् ब्रह्मचारियों और अध्यापकों के मैच हुए, जिन में ब्रह्मचारी जीते।

सायंकाल समस्त-कुल का सहभोज था। खाने को पहले भी इकट्ठे बैठा करते थे, परन्तु आज की "सहनाववतु" कुछ विशेष रहस्य रखती थी। सब जानते थे कि आज से पीछे भोजन-शाला में एक पंक्ति रिक्त रहा करेगी। उसी पंक्ति पर सब की दृष्टि थी और एक २ ग्रास के साथ प्रेम अन्दर जा रहा था।

आखिर वह दिन आया जिस दिन रेलगाड़ी ने ये ब्रह्मचारी हम से ले लेने थे। कुल के छोटे बड़े स्टेशन पर गए। कुछ संरक्षक महाशय भी यहां आगए थे। सब ने तृप्त न होने वाली दृष्टि से भावी यात्रियों को देखा और सन्तुष्ट न होने वाली वाणी से उन से वार्तालाप की। गाड़ी आई और गुरुकुल के प्रेम-पात्र पुत्र बड़े कुल की ओर प्रस्थान करने लगे। आज की "नमस्ते" भी अपूर्व थी। हाथ जोड़ना भी कुछ अर्थ रखता था। धड़कते हुए हृदय, अश्रु-पूर्ण आँख न रुकती हुई। वाणी से सब ने अपने कलेजे के टुकड़ों को विदा किया। शुभ-कामनाएँ यात्रियों के साथ थीं। एक ही समय में ये प्रार्थना सब के हृदयों से निकलती थी कि यात्रियों की यात्रा सफल हो, उनका जीवन सुख-मय हो, और विद्या धर्म वर्द्धिनी हो।

———

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक

गुरुकुल की जन्मगाँठ

कल गुरुकुल के सब निवासी,-गुरुकुल माता के सब पुत्र--मिलकर अपनी प्यारी मातृसंस्था का जन्म-दिवस मना रहे होंगे। गुरुकुल ने एक और वर्ष समाप्त किया है। जिन व्यक्तियों या संस्थाओं का जीवन संसार के लिए अधिक उपयोगी नहीं होता, अथवा जिन के जीवन में अधिक ख़तरे नहीं होते--उनके भी जन्म-दिन मनाये जाते हैं, और उन दिनों को मङ्गल दिन समझा जाता है। तब जो संस्था कुछ आदर्शों को लेकर स्थापित की गई है, और जिस का जीवन प्रति-दिन ख़तरे में है, उसकी वर्ष-गांठ को अत्यन्त शुभ और पवित्र क्यों न समझा जाय। सब से अधिक हर्ष कल गुरुकुलविश्वविद्यालय के आचार्य उपाध्याय और अध्यापक-वृन्द के साथ स्नातकों और ब्रह्मचारियों को होगा, क्योंकि उनके लिए इस समय गुरुकुल ही सब कुछ है। उनसे आगे जिन का कर्त्तव्य और अधिकार है कि वे हर्ष मनावें, वे आर्यसज्जन हैं। आर्य्य-जनता ने अपने स्वार्थ-त्याग और अध्यवसाय से गुरुकुल की स्थापना और रक्षा की है। उसने गुरुकुल के विषय में कई सुखसपने देखे हैं, कई आकाश-वाणियां सुनी हैं, निराशा के कई झकोरे सहे हैं, और फिर भी एक मन होकर अपना विश्वास और यत्न जारी रखा है। आर्य पुरुषों को कल क्यों हर्ष न होगा? उनका परम कर्तव्य है कि वे हर्ष करें, उनका प्रबल अधिकार है कि वे आनन्दित हों।

जो साल आज समाप्त होता है, क्या गुरुकुल के लिए वह शुभ हुआ है? क्या इस वर्ष भर में गुरुकुल विश्वविद्यालय ने अपना क़दम आगे रखा है? प्रश्न स्वाभाविक है। हरेक गुरुकुल-हितैषी के मन में यह विचार उठ सकता है। हमारे मन में भी यह विचार उठा है, और बहुत से विचार और खोज के पीछे जिस सम्मति पर हम पहुंचे हैं, हमें आशा है आर्य-सज्जन भी उसी सम्मति पर पहुंचेंगे।

हमारी सम्मति में यह वर्ष गुरुकुल के जीवन में उन्नति और समृद्धि का वर्ष था। इस छोटे से जीवन में गुरुकुल कई रंग देख चुका है, दैव-मदारी की विविध-माया निहार चुका है। उसने भाग्यों के उतराव चढ़ाव खूब देखे हैं, इस लिए वह ख्याति या अख्याति, उन्नति या अवनति सम्पत्ति या विपत्ति के अर्थों और अनुभवों से अनभिज्ञ नहीं है। उसे इन सब शब्दों का क्रियात्मक ज्ञान प्राप्त होचुका है। उस सारे ज्ञान की सहायता से यदि विचारा जाय तो यह गुज़रा हुआ वर्ष ख्याति उन्नति और सम्पत्ति का वर्ष प्रतीत होता है। इस वर्ष गुरुकुल ने आन्तरिक उन्नति के साथ २ बाह्य उन्नति का दृश्य देखा।

वर्ष के प्रारम्भ से ही गुरुकुल के संचालक-गण इस ध्यान में थे कि गुरुकुल की आन्तरिक कार्य-प्रणाली को और भी उन्नत किया जाय। मनुष्य का काम निर्दोष और पूर्ण नहीं होसकता, इस लिए गुरुकुल का कार्य भी निर्दोष और पूर्ण नहीं था, न है। उन्नति और सुधार की अपेक्षा नन्दन वन में भी रह सकती है। इस वर्ष के प्रारम्भ में गुरुकुल के संचालकों ने अनेक प्रकार के सुधारों तथा उन्नतियों की ओर ध्यान दिया। आर्य-प्रतिनिधिसभा की अन्तरंगसभा ने एक उपसमिति बनाई, जिसने गुरुकुल के सारे नियमों पर पुनर्विचार किया और संशोधित नियम अन्तरंग सभा में पेश हुए। वहां से स्वीकृत होकर वे नियम प्रतिनिधिसभा में भी आये, और अब संशोधित दशा में अगले वर्ष के प्रारम्भ से कार्य में लाये जायंगे। यह तो नियमों का संशोधन हुआ। पाठविधि पर पुनर्विचार भी आवश्यक समझा गया। अनुभव मनुष्य का सर्वोत्तम अध्यापक है। अनुभव ने जो कुछ हमें पढ़ाया है, उसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। इसी सिद्धान्त को सामने रखकर अन्तरंगसभाने पाठविधि पर पुनर्विचार करने के लिए भी एक जुदा उपसमिति बनाई, जो अपने कार्य में लगी हुई है। उस समिति को अधिकार दिया गया कि वह बाहिर के विद्वानों से भी [illegible] चार्य विषयों में सम्मति लेसके और [illegible] किसी विशेष शिक्षालय को देखना [illegible] किसी विशेष विद्वान् से मिल कर सम्मति लेना आवश्यक समझे तो अपने दो सभ्य सदों द्वारा बाहिर जाकर वह भी करसके आशा है, वह समिति शीघ्र ही अपने विचार की समाप्ति तक पहुंचायगी। पढ़ने को पूरा करने के लिए और शिक्षा [illegible] ऊंचे पाये का बनाने के लिये महाविद्यालय के चार वर्षों में एक वर्ष की वृद्धि की गई है। इसी प्रकार प्रबन्ध तथा [illegible] ढ़ाई के बारे में अनेक सुधार किये हैं, जिन से हम इस वर्ष को गुरुकुल के लिए आन्तरिक उन्नति का वर्ष [illegible] सकते हैं।

अब बाह्य उन्नति की ओर [illegible] उठाइये। सब से पहले हमारी गुरुकुल-शिक्षा-प्रणाली के मूल सिद्धान्तों की सर्वप्रियता पर पड़ती है। ज्यों [illegible] समय बीतता है, गुरुकुल-शिक्षा [illegible] मूल-सिद्धान्तों की सत्यता संसार [illegible] विदित होती जाती है। योरप की [illegible] मराग्नि अपनी प्रचण्डता से यदि आ[illegible] शिक्षा और ब्रह्मचर्य के अभाव को [illegible] दर्शा रही, और शिक्षा का कार्य [illegible] वालों से इन अभावों की पूर्ति के [illegible] प्रबल अभ्यर्थना नहीं कर रही तो [illegible] क्या कर रही है? भारतवर्ष के [illegible] असन्तुष्ट और खाली बैठे हुए ग्रेजुवेट [illegible] समूह यदि ज़ोरदार शब्दों में वत[illegible] शिक्षा-प्रणाली का प्रतिवाद नहीं क[illegible] तो और क्या कर रहा है? वाय[illegible] तथा डा० सर्वाधिकारी जैसे उत्त[illegible] कार्यकर्त्ता, महात्मा गान्धी, मिसेज़ [illegible] वेसेण्ट जैसे अनुभवी देशभक्त एक[illegible] से मातृभाषा द्वारा शिक्षा देने का [illegible] कर रहे हैं—क्या यह गुरुकुल-शि[illegible] प्रणाली के मूल सिद्धान्तों का विज[illegible] है? हमारे धर्म ग्रन्थों की, हमारे [illegible] साहित्य की वर्तमान अरक्षित [illegible] को भारत के विचारक आशंक[illegible] दृष्टि से देख रहे हैं, [illegible] गुरुकुल के कार्य का समर्थन न[illegible]

सब चिन्ह हैं जो गुरुकु[illegible]कों को
आशा [illegible], [illegible] उन आदर्शों
और सत्य [illegible] की ज्योति [illegible] चारों
ओर [illegible] करते हैं [illegible] गुरुकुल
की बुनियाद [illegible]।

आर्य्यसमाज में गुरुकुल की स्थिति
[illegible]सी रही। यदि [illegible] आमद के लि-
[illegible] से देखा जाय तो हम कहेंगे कि भा-
[illegible]ीय जनता ने इस वर्ष असाधारण
[illegible] दिखाया है। इधर युद्ध, उधर
[illegible]हंग। फिर भी चन्दे की राशि में कभी नहीं
[illegible]ई—वृद्धि ही हुई है। आर्य्यजनता में
[illegible]कुल के लिये ममता प्रतिदिन बढ़ती
[illegible]ी, और आज आर्य्य पुरुष गुरुकुल को
[illegible]गे से अधिक अपना समझ कर
[illegible]ार करते हैं। हां—सारी सफ़ेद चादर
[illegible] एक छोटा सा काला धब्बा दिखाई
[illegible]ा है, जो धब्बा गुरुकुल के वार्षिक
[illegible]वन पर नहीं, ब्रह्मचारियों के कुछेक
[illegible]क्षकों के जीवन पर है। कुछ अदूर-
[illegible]र्ी संरक्षकों ने मिलकर एक कल्पित
[illegible]क्षक-सभा का ढोंग बनाया और उस
[illegible] ओर से समाचारपत्रों द्वारा और
[illegible]खिक बात चीत द्वारा गुरुकुल को बद-
[illegible]म करने और हानि पहुंचाने का यत्न
[illegible]या। सन्तोष की बात यह है कि
[illegible]हैं उचित और अत्यन्त उचित उत्तर
[illegible]ल गया। बहुत से संरक्षकों के पत्र
[illegible]र्म्मप्रचारक में छप चुके हैं, और बहुत
[illegible] के अभी कार्य्यालय में पड़े हैं, जो
[illegible]वश्यकता होने पर छापे जायंगे।
[illegible] सब पत्रों को पढ़कर हमें यह ज्ञात
[illegible]या है कि हमने जो संरक्षक-सभा को
[illegible] 'ढोंग' लिखा था, वह अशुद्ध न था।
[illegible] वस्तुतः ढोंग है और ब्रह्मचारियों के
[illegible]क्षक उस से कोई सम्बन्ध नहीं रखना
[illegible]हते।

[illegible]न पत्रोंकी अपेक्षा भी अधिक प्रबल एक
[illegible] बात हुई—जिसने इस नये उठते हुए
[illegible]ोध की तुच्छता और निर्बलता को
[illegible]न स्पष्ट कर दिया। इस वर्ष में ब्रह्म-
[illegible]रियों के संरक्षकों ने गुरुकुल के कोष
[illegible]जितना चन्दा दिया है, शायद उतना
[illegible]ी साल ही दिया हो। कल्पित सं-
[illegible] सभा के कल्पित मन्त्री ने कई सं-
[illegible]कों को सीधे गुरुकुल में धन भेजने से
रोका भी—किन्तु लोगों के ऐसे संकल्प नहीं सिद्ध होते तभी तो संसार चलता है। गुरुकुल को हानि पहुंचना तो एक ओर रहा—जनता का गुरुकुल से प्रेम उत्तरोत्तर बढ़ता ही गया और साल भर के हिसाब किताब की जाँच पड़ताल करने पर हम यही कह सकते हैं, कि गुरुकुल का यह वर्ष उन्नति और समृद्धि का वर्ष था।

प्रसन्नता की स्मृतियां उत्पन्न करने वाला वर्ष समाप्त होता है, और आशा उमंग से भरा नया साल प्रारम्भ होता है। यह साल चैन का साल न होगा! संसार बदला नहीं, आज भी दूर आकाश में गर्जती हुई तोपों की चोट कान के पर्दे को अपरोक्ष रूप से हिला रहा है, आज भी चमकीले आकाश में अंधेरेकी एक सूक्ष्म सी रेखा दिखाई दे रही है। अगले साल गुरुकुल की यात्रा पक्के राजमार्ग पर न होगी। मार्ग में अनेक कांटे, अनेक ख़तरे और अनेक भय प्रतीत होते हैं। गतवर्ष भी ऐसा ही प्रतीत होता था। नौका को अब भी नदी का बहुतसा पानी पार करना है, वैसी ही लहरें, वैसे ही भंवर और वैसे ही संकट हैं। खैवय्या बदल जाय तो क्या? अनुभव का स्थान जोश ले ले तो क्या? मार्ग निश्चित है और उसे प्रकाशित करने वाली जगदीश्वर की ज्योति भी पूर्ववत् स्थिर है। आर्य्य सज्जनों की शुभ कामनाओं में और वृद्ध पुरुषों के आर्शीवादों में यदि न्यूनता न आयगी तो आशा रखनी चाहिये कि जो नया साल कल चढ़ता है, वह गुरुकुल के लिये और भी अधिक उन्नति और समृद्धि का लाने वाला होगा। आशा में ही जीवन है। पाठकगण! हमें आशा करने दीजिये, ताकि हमारी जीवन शक्ति में न्यूनता न आये।

—:०:—

गुरुकुलोत्सव की तय्यारियां करो

समयविभाग प्रायः निश्चित हो चुका है। शीघ्र ही प्रकाशित हो जायगा। इसबार उत्सव के समय कई नये सम्मेलन होंगे। उनकी भी सूचना यथा समय प्रकाशित होगी। पत्र व्यवहार तेज़ी से हो रहा है। आर्य्य सज्जन अपने कार्य्य में दत्तचित्त हो रहे होंगे—यह हमें पूर्ण आशा है। नगर २ और ग्राम २ में गुरुकुल प्रेमियों को मण्डलियां बना कर चन्दा एकत्र करने का कार्य्य शुरू कर देना चाहिये। यह स्मरण रखना चाहिये कि युद्ध तथा तत्सम्बन्धी अन्य कारणों से धन की सहायता जितनी कठिन है, उतना ही अधिक परिश्रम अपेक्षित है। परिश्रम होगा तभी गुरुकुल की वार्षिक आवश्यकताओं के अनुकूल धन प्राप्त हो सकेगा, अन्यथा नहीं।

वर्णव्यवस्था पर लो० मा० तिलक

लो०मा०तिलक के भगवद्गीतारहस्य के नाम से कोई भी भारतवासी अपरिचित न होगा। यह ग्रन्थ पाण्डित्य का अगाध समुद्र है। इसमें जीवन की प्रायः सभी समस्याओं पर विचार किया गया है। इसकी संक्षिप्त आलोचना प्रचारक में हो गई हैं, शीघ्र ही इसकी विस्तृत आलोचना भी पाठकों की भेंट की जायगी। इस ग्रन्थ में अनेक विषयों पर ऐसी २ सम्मतियां प्रकाशित की गई हैं, जो जनता को जाननी चाहियें। जानने पर कइयों को सन्तोष होगा—कइयों को आश्चर्य होगा। आज हम आपकी वर्णव्यवस्था पर सम्मति उद्धृत करते हैं—

"पुराने ज़माने में ऋषियों ने (ईश्वर ने नहीं—सम्पादक) श्रम—विभागरूप चातुर्वर्ण्य संस्था इसलिये चलाई थी कि समाज के सब व्यवहार सरलता से होते जावें, किसी एक विशिष्ट व्यक्ति या वर्ग पर ही सारा बोझ न पड़ने पावे, और समाज का सभी दिशाओं से संरक्षण और पोषण भली भांती होता रहे। यह बात भिन्न है कि कुछ समय के बाद चारों वर्णों के लोग केवल जाति मात्रोपजीवी हो गये, अर्थात् सच्चे स्वकर्म को भूल कर वे केवल नामधारी ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य अथवा शूद्र हो गये। इसमें सन्देह नहीं कि आरम्भ में यह व्यवस्था समाजधारणार्थ ही की गई थी; और यदि चारों वर्णों में से कोई भी एक वर्ण अपना धर्म अर्थात् कर्तव्य छोड़ दे, अथवा यदि कोई वर्ण समूल नष्ट हो जाय, और उसकी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कथानपूर्ति दूसरे लोगों से न की जाय तो कुल समाज उतना ही पंगु हो कर धीरे २ नष्ट भी होने लग जाता है अथवा वह निकृष्ट अवस्था में तो अवश्य ही पहुंच जाता है।"

पृष्ठ ६५

हमारी सम्मति में लो० मा० तिलक का यह लेख सब भारतवासियों के ध्यान देने योग्य है। आज यही हो रहा है। वर्ण अपने कर्तव्यों से पतित हो कर नष्ट हो रहे हैं, और नई भर्ती जातिमात्रोपजीवी होने के कारण बन्द है। बस-पंगुभाव या नाश न हो तो और क्या हो?

वर्णव्यवस्था और स्वभाव।

प्रचारक के किसी गत अंक में हमने चित्रमयजगत्—के वर्ण व्यवस्था-विषयक नोट पर कुछ लिखा था। सहयोगी के नये अंक में हमारे लेख की आलोचना प्रकाशित हुई है। आलोचक महाशय की राय है कि 'केवल कर्म के आधार पर 'वर्णव्यवस्था' स्थापित करना बालू की दीवार तय्यार करना है', 'अथवा यों कहना चाहिये कि केवल कर्म के अनुसार वर्णव्यवस्था सम्भव ही नहीं है और न अमल में आसकती है'। इसकी पुष्टि में आप युक्ति यह देते हैं कि जो बदलती रहे वह व्यवस्था कैसे कही जा सकती है। जो वर्ण बदलते रहेंगे, उनकी व्यवस्था सम्भव नहीं है। यह तर्क हमारी सम्मति में निराधार है। यह कौन सा न्याय है कि जो चीज़ बदलती रहे, उसकी व्यवस्था नहीं होती। व्यवस्था यह है कि जो मनुष्य जिस प्रकार के कर्म करता है, वह उसी प्रकार के वर्ण में समझा जाना चाहिये। इस व्यवस्था या नियम के अनुसार मनुष्यों के वर्ण बदल सकते हैं। इससे व्यवस्था में भेद कहां आता है। क्षण भर के लिये हम यह मान भी लें कि जो बदले, उसकी व्यवस्था नहीं हो सकती तो इतना तो कट्टर से कट्टर सनातन धर्मी को भी मानना पड़ता है कि कई जन्मों में या अत्यधिक तप से वर्ण बदल सकता है। विश्वामित्रादि के इतिहास और पुराणों के वचन उन्हें इतना मानने के लिये बाधित करते हैं। उस दशा में आपकी भी तो वर्णव्यवस्था न रही। जो बदल जाय उसकी व्यवस्था कैसी?

स्वभाव का अर्थ हमने 'आदत' या 'टेव' किया था, इससे हमारे आलोचक महाशय सहमत नहीं हैं। आप इस विषय में लिखते हैं "परन्तु 'स्वभाव' के समान गम्भीर अर्थ-प्रचुर शब्द का अर्थ केवल 'आदत' या 'टेव' बतलाना कहां की बुद्धिमत्ता है। वास्तव में 'स्वभाव' का सम्बन्ध आत्मा और पुनर्जन्म से है। आत्मा का जो अपना निज का 'भाव' है और जिसे वह पुनर्जन्म के साथ शरीर में लाता है, उसे स्वभाव कहते हैं। इसी स्वभाव के अनुसार मनुष्य में जैसे 'स्वाभाविक' गुण होते हैं वैसे ही वह कर्म करता है"।

आपके इस लेख पर हमारी निम्न लिखित आशंकायें हैं।

[१] क्या 'स्वभाव' शब्द का अर्थ 'आदत' या 'टेव' नहीं है? यदि है तो फिर हमारा अर्थ क्यों अशुद्ध या 'बुद्धिमत्ता' से विरुद्ध है? यदि नहीं तो स्पष्ट लिख दीजिये कि 'स्वभाव' शब्द का अर्थ 'आदत' नहीं होता।

(२) 'आत्मा का जो अपना निज का भाव है' यह तो ठीक है। आदत भी जब मनुष्य में रहती है तब आंख या नाक का भाव हो कर नहीं रहती—आत्मा में ही उसका भी निवास होता है। किन्तु इस में क्या प्रमाण है कि स्वभाव वही है जिसे आत्मा 'पुनर्जन्म के साथ शरीर में लाता है' इस के लिये आप के पास कौन-सी युक्ति है, कौनसा प्रमाण है?

(३) आपने लिखा है "इसी (पूर्व जन्म से आये हुए) स्वभाव के अनुसार मनुष्य में जैसे 'स्वाभाविक' गुण होते हैं वैसे ही वह कर्म करता है" अर्थात् पूर्व जन्म के संस्कारों से उस का जो स्वभाव बनता है, उसी के अनुसार उस के कर्म होते हैं, पूर्वजन्म-विहित स्वभाव के विरुद्ध मनुष्य कोई कर्म नहीं कर सकता। स्वभाव के विरुद्ध कोई कर्म हो ही नहीं सकता—तब यह तो कहिये, स्वभाव से वर्ण-व्यवस्था होती है? और 'कर्मों से वर्ण-व्यवस्था होती है, इन दोनों [illegible] आपको आपत्ति थी वह [illegible] न होगी। स्वभाव से विलुप्त कर्म [illegible] नहीं सकता। तब आप का यह [illegible] कहना कैसे ठीक होगा कि कर्मों के अनुसार वर्ण व्यवस्था मानना आज कल के [illegible] तय्यार करना है।

आप को इस व्यवस्था पर भी [illegible] यही शंका आती है, तो इसने [illegible] पिछले अंक में की थी, और विस्तार [illegible] देने में हमारे आलोचक नहीं [illegible] कृतकार्य नहीं हुए। इस बार भी आ[illegible] ने माना है कि मनुष्य जन्म के समय [illegible] संस्कार या स्वभाव लाता है, वे न [illegible] बदलते। मृत्युपर्यन्त वे ही रहेंगे [illegible] जिन विचारों के साथ वह मरेगा, उन्हीं विचारों को लेकर वह फिर उत्पन्न होगा। इस प्रकार जो मनुष्य एक बार गि[illegible] गया, जन्मजन्मान्तर में भी उसके उ[illegible] ने की आशा नहीं हो सकती। क्या [illegible] यालु परमात्मा की सृष्टि का ऐसा क्र[illegible] नियम हो सकता है? कभी नहीं। प[illegible] मात्मा की सृष्टि में हरेक व्यक्ति [illegible] उठने का अवसर है। पतित से पति[illegible] मनुष्य भी तदनुकूल यत्न करे तो उ[illegible] हो सकता है। अन्त में आपने भी स[illegible] को रूपान्तर में मान लिया है—आप लि[illegible] खते हैं "इसी प्रकार मनुष्य का वर्ण [illegible] 'संस्कार' से बदल सकता है; संस्कार प्रय[illegible] और कष्टसाध्य है" बिल्कुल ठीक [illegible] कौन कहता है कि प्रयत्न [illegible] बिना ही वर्ण बदल जाता है। वर्ण प्रयत्न से बदलता है, यह ठीक है, किन्तु बद[illegible] लता है, इस में सन्देह नहीं।

आलोचकमहोदय लिखते हैं—"हमने अपने नोट में सिर्फ 'स्वभाव और पुनर्जन्म' का सम्बन्ध दिखलाया था। उस असली विषय को तो सद्धर्मप्रचारक-सम्पादक ने टच नहीं किया और यह 'संक्षिप्तता हमारे वाक्यों को तोड़ मरोड़ कर निकाला है।"

यदि प्रतिषेध करना 'टच' करना नहीं है, तब तो हमने 'टच' नहीं किया। चित्रविद्या में 'टच' करना विद्यमान चित्र के सौन्दर्य को बढ़ाने वाला होता है, हमारा सहयोगी चित्रमयजगत् है, कदाचित् सहयोगी का यही अभिप्राय हो

हमारे लेख में उस के लेख से सौन्दर्य नहीं बढ़ाया। उस दशा में इस सहयोगी से सहमत हैं।

मि० चिन्तामणि और आर्यमित्र

मि० चिन्तामणि ने कौंसिल में आर्य समाज विषय में एक प्रश्न किया था, इस सहयोगी आर्य्यमित्र लिखता है—

"प्रत्येक आर्य को माननीय मि०सी० वाई० चिन्तामणि की इस कृपा के लिए प्रसन्न होना चाहिए"

क्यों? क्या मि० चिन्तामणि भारतवासी नहीं? क्या यह प्रश्न करना उनका कर्तव्य न था? हमें कृतज्ञ तो होना चाहिए किन्तु उसका पत्रद्वारा प्रकाशित करना सूचित करेगा कि मि० चिन्तामणि के हम कोई नहीं। फिर 'कृपा' शब्द के प्रयोग का क्या तात्पर्य है? कर्तव्य पालन में कृपा कैसी?

कौंसिल में भारतीय-सभासद्

दिल्ली में लेजिस्लेटिव कौंसिल का अधिवेशन हो रहा है, उसमें भारतीयसभासद् भी कभी २ प्रस्ताव पेश किया करते हैं। कई बार ऐसा होता है कि पहले तो वे प्रस्ताव पेश करदेते हैं, किन्तु ज्योंही दो चार भाषण होते हैं, या सरकार की ओर से प्रतिवाद होता है, त्योंही प्रस्तावक महोदय खड़े होकर कहदेते हैं—'मैं अपना प्रस्ताव वापिस लेता हूं' क्यों? क्या प्रस्तावकर्ता महोदय ने पहले अन्य भारतीय सभासदों की राय नहीं लेली थी? नहीं—तो क्यों? पहले ही हमारे प्रतिनिधि आपस में मिलजुल कर कोई निश्चय क्यों नहीं कर लिया करते! दर्शक जनता पर इस दृश्य का बुरा प्रभाव होता है। इस से यही प्रतीत होता है कि हमारे प्रतिनिधि लोग बिना सोचे समझे प्रस्ताव कर बैठते हैं। फिर ज़रासा धक्का लगते ही झुक जाते हैं। ऐसा न हुआ करे तो अच्छा हो।

भयानक-शोक-समाचार

दुःख से सुनाना पड़ता है कि गत सप्ताह पाश्चात्य सभ्यता ने समुद्र की गहराई में अपनी कबर खोदली—और सभ्य जातियों की सभ्यता का देहान्त हो गया। जर्मनी ने घोषणा दी है, कि वह समुद्र पर सबके जहाज़ डुबो देगा, किसी के जानमाल की पर्वा न की जायगी। दोनों पक्षों ने एक दूसरे को भूखा मारने का दृढ़ संकल्प कर लिया है—और यह कहना अत्युक्ति न होगी कि इस युद्ध में मनुष्य अपने धर्म को छोड़ कर पशुभाव के समीप २ पहुंच गया है। जो थोड़ी सी कसर थी, वह जर्मनी की नई घोषणा के साथ पूर्ण हो गई। अब योद्धा दलों के हृदयों में दया और कृपा का लेश भी नहीं रहा। इस दयानाश के साथ सभ्यता का शव भी उठ गया समझना चाहिये।

रेलवे में कष्ट

युद्ध के कारण गाड़ियां बन्द हो गई हैं, इससे जहां एक ओर मुसाफ़िरों का कष्ट बढ़ गया है, वहां रेलवे के कर्मचारियों तथा रेलवे पुलीस को मुट्ठी गर्म करने का खूब अवसर मिलेगा। हमें बरेली से म० रामलाल की एक चिट्ठी प्राप्त हुई है, जिस से ज्ञात होता है कि सहारनपुर के रेलवे कर्मचारी लोगों को बहुत तंग करते हैं। संवाददाता ने अपना अनुभव लिखा है। टिकटवाले मुसाफिरों को दो रुपये रिश्वत दिये बिना अन्दर नहीं जाना मिलता था। यह दशा शोचनीय है। रेल के कर्मचारियों को इस प्रश्न पर विचार करना चाहिये।

भारतमित्र और हम

एक महाशय मथुरा से लिखते हैं

"श्रीमान् सम्पादक सद्धर्म प्रचारक जी नमस्ते"

मैं हैरान हूं कि आजकल सम्पादक दैनिक भारतमित्र को क्या हो गया है जो आर्य्य समाज पर और उसके नेताओं पर खुले खुले शब्दों में गाली गलौच के लेख लिख रहा है। यह तो मैं जानता हूं कि यह पत्र आर्य्यसमाज का कट्टर विरोधी है तथापि इसका उत्तर देना आर्य पत्रों का कर्तव्य होना चाहीये, नहीं तो हिन्दू जनता पर बड़ा बुरा प्रभाव पड़ेगा। दैनिक भारतमित्र ने कभी भूल से भी एक शब्द आर्यसमाज के कार्य्यों पर नहीं लिखा अगर कभी भूल से छापा है तो इसे बदनाम करने पर उतारू रहता है। यह मैं जानता हूं कि आजकल आर्य्यसमाजों की तरफ से ऐसे निर्मूल आक्षेपों का नोटिस नहीं लिया जाता परन्तु ३ फर्वरी के दैनिक भारत मित्र में जो पत्र छपा है उस में महात्मा जी पर और आप पर बहुत बुरी तरहे पर कटाक्ष किये गये हैं। जिनको पढ़कर दिल पर बड़ी चोट लगती है—इत्यादि।

सेवक—परमानन्द ग्राहक
सद्धर्म्म-प्रचारक, मथुरा

इस पत्र के उत्तर में हम क्या लिखें? भारतमित्र के सम्पादक महोदय को अपनी योग्यता पर विशेष भरोसा है। अन्य पत्रों के सम्पादक उनके सामने हेच हैं। किसी के विषय में वे क्या लेख छापते हैं इस की सूचना वे उन लोगों तक पहुंचाना ज़रूरी नहीं समझते, जिन के सम्बंध में लेख छपा हो। प्रचारक पर तो उन की विशेष कृपा है। उस कृपा का कारण शायद सम्पादक महोदय को ही ज्ञात होगा? गुरुकुल से सम्पादक महोदय कब से चिढ़ने लगे, यह भी हमें ज्ञात नहीं, किन्तु हां—इतना हम अवश्य जानते हैं कि आप की प्रचारक से उलझने की प्रबल अभिलाषा है, और हमारे गुरुकुल के या महात्मा जी के विषय में दो चार कटु शब्द छाप कर आपको बड़ी प्रसन्नता होती है। आप की प्रसन्नता में हम बाधा नहीं डालना चाहते और उलझने की इच्छा को पूरा नहीं करना चाहते। इसलिये हमने चिरकाल से भारतमित्र को उपेक्षणीय कोटि में डालछोड़ा है।

स्थितिं समीक्ष्योभयथापरीक्षकः
करोत्यवज्ञोपहतम्पृथग्जनम्।

बिहार में आर्य-बस्ती

१६ दिसम्बर १९१६ के प्रचारक में आर्यबस्ती के बारे में एक विज्ञापन निकला था। इस बस्ती के विषय में हमारे पास बहुत से पत्र आरहे हैं उन सब के उत्तर में सूचना दी जाती है। बस्ती बसाने वाले भूमिपति महोदय ने हमारे पास यह विशेष सूचना भेजी है जिसे लक्ष्य में रखना उचित है। उनका पत्र ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाता है—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्यबस्ती

सम्बन्धी विशेष सूचनायें । बस्ती की आवश्यकता:— यूं तो लग भग १० वर्ष से समाज से सम्बन्ध न रखने वाला पर खलिश्क [शुद्धि द्वारा] विगत १२ नवम्बर को प्रविष्ट मैं यह देखता आया हूं कि बहुत से प्रधान २ सामाजिक— कार्यों को बेरादरी के हर ने रोक रखा है और यह आर्य बेरादरी की स्थिति से ही दूर हो सकता है । अतएव मैंने यत्किंचित शक्ति अनुसार यहां एक ऐसी बस्ती बसाने का निश्चय किया है जो एक नमूना सामाजिक बस्ती हो अर्थात् जिसके वासी आर्य-सिद्धान्तों का यहां कार्यतः प्रचार कर सकें । ऐसी बस्ती मुख्यतः समाज में पक्के अनार्यों के गृहस्थ जीवनार्थ स्थापित होने के लिये युक्त होगी और विशेषतः अछूत ही से समाज शासित अनार्य ही उक्त बस्ती के लिये युक्त होंगे क्योंकि अनार्यों को गृहस्थ जीवन में स्थापित करने का भार भी समाज ही के कंधे पर है । बस्ती का उद्देश्य:— सामान्यतः बस्ती का उद्देश्य वैदिक-धर्म का प्रचार करना और मुख्यतः आर्य समाज के उठाए हुए समाज सुधार के कार्यों को कर दिखाने का होगा।

बस्ती का स्थान—मुजफ्फर पुर जिले में सीतामढ़ी नगर के समीप जो B.N.W.R. का स्टेशन भी है ३ मील पर सोखी ग्राम के मेरा थोड़ा हिस्सा है जहां पर बस्ती के लिये घर बनेंगे। गृहस्थ सं० १ ब्राह्मण २ क्षत्रिय ३ वैश्य और ३ शूद्र के लिये फिर होंगे और अन्तिम समाज मन्दिर रहेगा।

बसने का समय:—जैसे बस्ती भाइयों के सप्रमाण प्रतिज्ञा पत्र आते जायंगे घर तय्यार होते जायंगे और लोग बसते जायंगे।

बसती आसियों के प्रार्थना-पत्र प्रबन्धकर्त्ता सद्धर्मप्रचारक द्वारा अथवा विश्वसनीय प्रमाण पत्रों के साथ आने चाहियें तथा विविध बातों के लिये मुझ से पत्र व्यवहार करना चाहिये।

एक आर्य समाज सेवक—
दुर्गाप्रसाद शर्मा
सीतामढ़ी

कलकत्तासमाचार और ब्राह्मण

सहयोगी कलकत्ता-समाचार भारत के भविष्य से निराश नहीं हुआ। निम्न-लिखित घटनाओं की स्मृति ने उनकी आशा बंधवादी है—

"अभी गत वर्ष बङ्गाल के विद्वान् श्रीमान् पद्मानन तर्करत्न वीरोदिया बंगकर एक संस्कृत नाटक लिखकर हिन्दू कुल सूर्य्य महाराणा उदयपुर के दरबार में पधारे थे। उनके दुर्बल अङ्ग पर स्वर्णजटित कामदार कपड़ोंका भार नहीं था। केवल मात्र एक हलकासा रामनामी दुपट्टा था। पांवमें डासन या मेड इन्डिकी कारीगरी नहीं बंधी हुई थी। पांव उघारे थे। भारत के गौरव स्वरूप महाराणा बहादुर शिकार के लिये जाने को उद्यत थे। किन्तु ज्यों ही उन्होंने सुना, कि एक विद्वान् ब्राह्मण हमारा अतिथि होकर आया है, त्यों ही श्रीमान् ने यात्रा रोक दी। तर्करत्न महाशय दरबार में आमन्त्रित किये गये। उस समय हिन्दू-कुल-प्रदीप अपना राजासन छोड़कर ब्राह्मण का आदर करने के लिये खड़े हुए थे। इसीको धर्म-पालन कहते हैं। अभी गतवर्ष रीवाँपति वान्धवेश हरिहर क्षेत्र के मेले में होने वाले प्रान्तीय सनातन-धर्म सम्मेलन में पधारे थे। वहां ब्राह्मण दर्भङ्गानरेश और बालक ब्राह्मण हयुआ-नरेश का जिस श्रद्धापूर्वक उन्होंने चरण-स्पर्श किया था, उसका विवरण शायद पाठक भूले नहीं होंगे। गत पूर्व वर्ष कुम्भ के मेले में हरिद्वार के सनातनधर्म सम्मेलन के अवसर पर महामहिमान्वित श्रीकाश्मीर नरेश ने सभापति का आसन सिर्फ यह कह कर नहीं ग्रहण किया था, कि दर्भङ्गा-नरेश जैसे योग्य ब्राह्मण जब यहां मोजूद हैं, तो मैं इस स्थानपर कैसे बैठ सकता हूं।"

—:o:—

पुस्तक-समालोचना

वेद और वैदिक-मुनि

(१)

(वेद-सर्वस्व की आलोचना)

लेखक० प्रो० बालकृष्ण एम० ए०

"इस परिवर्तन-शील संसार में सर्व पदार्थों की अस्थिरता और चंचलता को देखते हुए भी साधु, सज्जन, मुनिजनों की लोकेषणा के जाल में नहीं फंस सकते। पर हाय! इस दीक्षा वर्ष में सांसारिक वासनाओं को तिलांजलि देकर सन्यास जैसे पवित्र आश्रम धारण करते हुए भी मान, यश, प्रतिष्ठा और लोक-प्रसिद्धि के दुर्गुणों से यदि कोई नहीं बच सकता तो निज बड़ाई या साधु समाज कर यह साधु नहीं होता या बनता। स्व० दयानन्द जी के संन्यास आश्रम में होने से उन्हें सब लोग साधु संन्यासी स्वामी जी कहते हैं और गत कुछ वर्षों से उन्होंने आर्यसमाज में प्रसिद्धि प्राप्त करने के बहुत हाथ पैर मारे हैं, बहुत कुछ लिखे ने आर्यसमाजियों की आंखों में धूल डाली, बहुधा धोखे की टट्टियां खड़ी कर उन्होंने भोले भाले आर्यसमाजियों को मोहित किया, पर अन्त में असली रूप छिप नहीं सका, वह ठीक तौर पर प्रकट हो गया है।

वैदिकमुनि

जहां संन्यास आश्रम में सर्व त्याग चाहिये, जहां संन्यासी वैराग्यरत होना चाहिये, जहां संन्यासी।

लोकैषणायाश्च युष्मायाय भिक्षाचर्य्य च लोक में प्रतिष्ठा प्राप्त करने के भावों को त्याग कर भिक्षुकों के व्रत धारण करते थे, जहां संन्यासी को सर्व भावों से निःस्पृह कांक्षारहित होना चाहिये वहां स्वामी हरिप्रसाद अपने आपको 'वैदिक मुनि' उपाधि आप देकर अमर होने की आशाएं बांध रहे हैं। कुछ मास हुए कि निःस्पृह स्वामी ने सामवेद और वैदिक सर्वस्व नाम पुस्तकें छपाई हैं—जन के प्रकाशक भी स्वयम् हैं और अपने तईं चार उपाधियों से सुशोभित करते हैं:—[१] निखिल-निष्णात [२] पण्डित [३] [४] वैदिक मुनि। अब प्रश्न होता है प्रथम तथा चतुर्थ उपाधियां स्वामी को किस समाज, संस्था, विश्वविद्यालय परिषद्, पण्डित मण्डली ने दी हैं? इन में से किसी ने ये उपाधियां नहीं तो निरभिमान, विराग, निर्लोभ, निःस्वार्थ, निरहंकार, विरक्त, संन्यासी स्वामी हरिप्रसाद का यह है कि वह अपने नहीं निखिल शास्त्र (सब ही में पारंगत) और वैदिक मुनि

और लिखते हैं ? क्या [illegible] से बढ़ कर अभिमान, अहंकार, दर्प और गर्व का कोई उदाहरण हो सकता है ? क्या यह धृष्टता या [illegible] नहीं ? क्या यह [illegible] या [illegible] ? क्या यह वैराग्य है या अनुराग ? क्या निखिल शास्त्र निष्णात होते हुए स्वामी जी ने भगवद्गीता के शब्दों पर कभी [illegible] दिया:—

काम्यानां कर्मणां त्यागं सन्यासं कवयो [illegible] या जातज्ञानावलेप, पंडितमानी विद्याभिमानी संन्यासी स्वामी जी ने साहंकार इन का तिरस्कार कर दिया है ?

मीठी छुरी

फिर स्वामी जी ने जो वेद [illegible] नामक ग्रन्थ लिखा है, जिस का प्रथम भाग प्रकाशित हुआ है—वह आर्यों का सर्वस्व हरण है—उस में वेदों के कल्पवृक्ष पर कुल्हाड़े चलाए गए हैं, भगवान् दयानन्द को आड़े हाथों लिया गया है, प्राचीन ऋषि-मुनियों को [illegible], कपटी, बैमान कहा गया है, आर्य [illegible] के सिद्धान्तों के विरुद्ध विष उगली गई है, पाठकों को नास्तिक बनाने का यत्न किया गया है और मांस भक्षण का प्रचार किया गया है—इन सब घृणित बातों के होते हुए कहीं कहीं वेदों की प्रशंसा की है, ताकि भोले अल्प-विद्या युक्त समाजी धोके में आजावें और स्वामी जी उन के पवित्र कलेजे में विष-[illegible] मीठी छुरी चलावें। स्वामी महाशय ने लोगों की श्रद्धा वेद से उठा [illegible] में कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। उक्त [illegible] को प्रकट करने के लिये बहुत [illegible] और समय चाहिये, अतः संक्षेप [illegible] स्वामी की धृष्टता के कुछ उदाहरण [illegible] हूं।

अद्भुत आविष्कार

पं० हरिप्रसाद ने सर्व प्राचीन ऋषि [illegible]श्वरों और अद्यकालीन भाषाशास्त्र-को मात कर डाला है—उन का अलौकिक आविष्कार तो यह [illegible] कि वेद शुद्ध पंजाबी भाषा के ग्रन्थ [illegible] उनको पंजाब का ग्रामीण गवांर भी [illegible] सकता है, वे अतीव सरल हैं, उनके अर्थ करने में किसी पण्डिताई की आवश्यकता नहीं—गवांर मूर्ख पञ्जाबी भी उन का पाठ कर सकता है ?

कालों और गोरों के वेद

इन शब्दों पर टीका टिप्पणी और खण्डन करने की आवश्यकता नहीं किन्तु दूसरा आविष्कार भी कम हास्यप्रद नहीं है। आप को ज्ञात है कि यजुर्वेद की दो संहिताएं मिलती हैं—एक को कृष्ण यजुर्वेद और दूसरे को शुक्ल यजुर्वेद कहा जाता है। इन दोनों के कृष्ण और शुक्ल नाम क्यों पड़े—इस कारण को टटोलते हुए स्वामी जी ने अन्धकार में चमत्कार कर दिया है:—

"सम्भव है प्रकट में कृष्ण संहिता तथा शुक्ल संहिता शब्द का अर्थ पुरानी संहिता तथा नई संहिता अथवा अशुद्ध संहिता तथा शुद्ध संहिता किया जाता हो, परन्तु भीतर से अर्थ कालों की संहिता तथा गोरों की संहिता ही था।"

वाह स्वामी जी ! कुटिल नीति तो आप प्रयुक्त करते हैं, आज तक बाहिर से आर्य्यसमाजी और अन्दर से नास्तिक तो आप रहे हैं; लोकप्रत्यक्ष तो स्वामी दयानन्द और वेद की प्रशंसा और गुप्त रीति से, निजूबातचीत में उन के विध्वंस करने की नीति तो आपने धारण की हुई है, ऊपर से आप स्वामी हैं और अन्दर २ मांस का प्रचार करते हैं, आर्य्यसमाज के साथ संलग्न रह कर आप बगली सांप का काम करना चाहते थे, ऊपर से आप वेद सर्वस्व नाम रखते हैं और उसके अन्दर वेदों पर कुल्हाड़े चलाते हैं; ऊपर से कहते हैं कि हमारी भगवान् दयानन्द में 'श्रद्धेय बुद्धि' है और फिर जहां तहां अपनी पुस्तक में उनका खण्डन करते हैं ? कुटिल नीति का स्वयं अनुकरण करते हैं और दोष अपने पूर्वजों पर देते हैं। यह कहां की दूरदर्शिता है ? खैर, ऐसे आविष्कार के करने का सौभाग्य आपको प्राप्त हुआ है और इस की बधाई हो। तीसरे आविष्कार की बधाई देने की शक्ति इस लेखनी में नहीं है।

जहां भगवान् दयानन्द ने प्राचीन साहित्य के आधार पर चार वेदों के प्रथम वक्ता—प्राप्त करने वाले ऋषि अग्नि, वायु, सूर्य और अङ्गिरा बताये हैं, वहां पं० हरिप्रसाद ऋग्वेद का शाकल, यजुर्वेद का चरक और अथर्ववेद का अथर्वा ऋषि कहते हैं किन्तु सामवेद का प्रथम सुवक्ता ऋषि सूक्ष्मदर्शी हरिप्रसाद को नहीं मिलसका—इस पुस्तक के अगले भाग के निकलने तक वह उसका नाम अवश्य ढूंढ़ निकालेंगे—इस में हताश होने का भय नहीं !

आर्य्य समाज का विरोध

जहां आर्य्यसमाज वेद और ब्राह्मण दोनों को श्रुति शब्द से नहीं पुकारता, वहां हरिप्रसाद बारंबार चिड़ा कर—जान बूझ कर दोनों के लिये श्रुति शब्द का प्रयोग करते हैं—

"शतपथ-श्रुति की व्याख्या में", "मन्त्र और ब्राह्मण श्रुतियों के मिलादेने," "मन्त्र और ब्राह्मण श्रुतियों की विचित्र संख्या" आदि वाक्य प्रमाण हैं।

वेद ऋषि-कृत हैं

पं० हरिप्रसाद दबे शब्दों में इस सिद्धान्त को प्रकट करना चाहते हैं, कि वेद पुरुषकृत हैं और वे भी ऐसे पुरुष जो साधारण स्मृति के थे। 'वेद के प्रादुर्भावक भी यही सब (विश्वामित्र आदि सात) ऋषि हैं' "वेद में जो शिक्षारत्न उस के पूर्वजों ने उसके लिए गुन्थन किए हुए हैं।" क्यों पण्डित जी महाराज ! वेदों को पुरुष-कृत मानते हुए, उनमें पुनरुक्ति दोष लगाते हुए, हमारे पूर्वजों का बना बतलाते हुए आप 'वेद सर्वस्व' लिखते हैं ? क्या गेरुए वस्त्रों की आड़ में ऐसा उचित है ?

आप के लिए "अन्य पुस्तकों की अपेक्षा ईश्वरीय-पुस्तक का मूल्य कुछ अधिक होता है, परन्तु अपने पूर्वजों की बनाई-पुस्तक का मूल्य भी किसी ईश्वरीय-पुस्तक से अल्प नहीं।" ठीक है पण्डित जी ! यह शब्द आपके हृदय से निकले हैं। पुराण, उपपुराण, सर्व तंत्र ग्रन्थ, कथा सरित् सागर, आदि सहस्रों ग्रन्थ जो हमारे पूर्वजों ने बनाए हैं—उनका

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सूक्ष्म ईश्वरीय—पुस्तक से अल्प नहीं। इस समय तो आप को वेदों का विध्वंस अभीष्ट है—इस कारण पक्षपातियों की वैदिक वा अवैदिक सूक्ति लिख कर भी आप ने तर्क को अवाद देदिया है। क्या आप परमात्मा को निश्चिन्त, सर्वज्ञ, सर्व शक्तिमान् मानते हैं और मनुष्यों को भ्रान्त, अल्पज्ञ, अल्प शक्ति समझते हैं? यदि यह सिद्धान्त है तो भ्रान्त अल्पज्ञ मनुष्यों की विरचित पुस्तकों और सर्वज्ञ ईश्वर की पुस्तक में भूमि—आकाश का ही अन्तर नहीं परञ्च भ्रान्त और अभ्रान्त का अन्तर है, उन में विन्दु और अपारता का भेद है। पर आप को इस सरलता से क्या? आपके मत में तो वेदों में वे बातें भी नहीं मिलतीं जो आप जैसे अल्पज्ञ स्काइन्स के चार अक्षर न जानने वाले जानते हैं क्योंकि आपतो यह मानते हैं कि "एक सौर जगत् के अतिरिक्त और कितने सौर जगत् हैं" पर "उनका वर्णन वेद में नहीं आता।" (७१ पृष्ठ)

मांस का प्रचार

स्वामी जी को मांस प्रचार की धुन ने विविध शब्द लिखवाए हैं। वह स्वप्न में भी ईश्वर को अहिंसक नहीं कहसकते। 'ईश्वर और अहिंसक—यह दोनों शब्द भी ऐसे असम्बद्ध हैं कि जिस के आगे वन्ध्यापुत्र खपुष्प आदि सर्वसम्मत निखिल असम्बद्ध शब्द भी सिर झुका देते हैं।" यहां तक उन्मत्त प्रलाप नहीं, स्वामी जी मनुष्य, पशु, पक्षी, कीट पतंगों को ईश्वर कहते हैं और "सम्पूर्ण जगत् में इन में से कोई ईश्वर अहिंसक दीखने में नहीं आता तो उस ईश्वरोंके ईश्वर में अहिंसक आदि की कल्पना कदापि सम्बद्ध नहीं कही जासकती।" अभी पाठकोंके हृदयों में ईश्वर की अहिंसा कम नहीं हुई, इन्हीं शब्दों से पाठकों का विश्वास ईश्वर में ढीला नहीं हो जावेगा, अतः आप अलंकृत अलंकृत शब्दों में ईश्वर को अहिंसक सिद्ध करने में तत्पर होते हैं, और पाठकों के मन में यह भाव बिठाना चाहते हैं कि 'सर्वशक्ति सर्वज्ञ, जगत्पिता ईश्वर' भी पिता होते हुए हिंसक, घातक, हिंसा करने वाला है तो मनुष्यों का कोई परस्पर पिता पुत्र का सम्बन्ध नहीं और सारी सृष्टि में हिंसा कर्म दोष पड़ता है—इस कारण हिंसा करने में कोई दोष नहीं है। "इस अनंतभ्यात ब्रह्मण्डवर, नभ पर तथा जलचर सन्तान में क्वचित् कोई एक दो ही अहिंसक हों हिंसकतो कीटों से बड़े तक सब हैं ऐसी अवस्था में यह कल्पना करना कि इनका उत्पन्न करने वाला ईश्वर अहिंसक है, बड़ी भूल है।" क्यों स्वामी जी! आप को तो भोले भाले पाठकों को भ्रम में डाल कर, उनके विश्वासों को ढीला कर के, मांस आदि खाने में हिंसा न घातक मानने वाले पैदा करना है। अतः आप ने तर्क का आश्रय क्यूं लेना है? यतः मनुष्य, पशु, कीट पतंग सब जन्म लेते और मरते हैं, इस कारण इन ईश्वरों के ईश्वर में अजन्मा और अमर होने की कल्पना करना कदापि सम्बद्ध नहीं न? इस कारण आपके वैदिक सम्प्रदाय में ईश्वर जन्म लेता और मरता, मनुष्यों की भान्ति भोग भोगता, दुःख उठाता, क्रीड़ा और हिंसा, अन्याय और पाप में प्रवृत्त रहता है। यतः स्वामी जी! इस संसार में प्रायः सब शरीरधारी लोभ मोह अहंकार ईर्षा द्वेष के भावों से प्रेरित होते हैं-इस कारण ईश्वर भी उन भावों से प्रेरित होताहै। इस के विरुद्ध परमात्मा के गुण वर्णन करना ऐसा ही असम्बद्ध है जैसे वन्ध्यापुत्र और खपुष्प आदि का वर्णन? वाह स्वामी जी! आप तार्किक हैं कि परमात्मा को शरीर धारियों के समान क्रूर, भोगी, कामी, व्यभिचारी, हिंसक सिद्ध करते हैं और जब ईश्वर ही आप की आक्षिक अर्च्चियों से नहीं बच सका तो बेचारे अहिंसक, अपवित्र अशेष अखाद्य भोजन न करने वाले जैनियों ने कहां बचना था और ईश्वर की बनाई पुस्तक पर वार करने से आप कहां हटते थे? देखिये स्वामी जी के सुन्दर शब्द

जैनियों पर वार

"जिस विशालमद का विश्वास है कि ईश्वर वस्तुतः ऐसा अहिंसक है जैसा कि एक निकम्मा भारतीय जैनी तो उसके—

वेदों में हिंसा के प्रचार

लिये यही दलील ही काफ़ी है कि वह वेदों को ईश्वरीय ज्ञान कहता ही नहीं मानता है। वाह स्वामी जी! आप ने तो स्वामी जी वेदों पर विश्वास प्रकट कर उन्हें बहुत बन्धन में डाले हैं और दूसरी ओर उन्हें ईश्वरीय ज्ञान कहा ही नहीं मानता है—विश्वासी वा कहीं ठिकाना होता है? वास्तु सन्यास पुष्प उनने ऐसी बातों को आदर दिया किन्तु अभी तक इन का आत्मविश्वास रूप हम प्रकट नहीं कर सके, दूसरे में कुछ अधिक स्वतन्त्र दिखाने का किया जावेगा। इस समय मेरी यही है कि वे निज कर्तव्य पालन करने लिये लिखे जारहे हैं। मुझे शोक कटु शब्दों का प्रयोग भी हो रहा पं० हरिप्रसाद ने जो सकल आपत्ती में प्रकट किए हैं, उसके प्रकाशित के लिये सर्व शिक्षित आर्य्य जन को यत्न करना चाहिये।

आ

—:०:—

विद्याप्रचार के लि

सिंघ स्वयं सेवक

[ले० प्रो० नेवाराम एम० ए

विद्यादान जैसा कोई पवि नहीं और इस मनुष्य भी नर विद्या प्राप्त कर चुका है वहां तक से कम पढ़े लिखों को विद्या लक्ष्य है और इस से अपना बड़ा आत्मलाभ कर सकता है। भारतव पढ़े लिखों की संख्या ८: प्रतिश भी कम है अर्थात् ९४ प्रतिशतीक अधिक मनुष्य अनपढ़ हैं। एक २ लिखे के मुकाबिले में १६ अनपढ़ जाते हैं। क्या पढ़े लिखों का त कर्तव्य नहीं है कि उन सब भाइयों तक अपनी विद्या का प्रका हुंचावें? सद्धर्मप्रचारक के पा आप यह दान औरों को दे सकते हैं आज ही से यह दान देना आरम्भ दें। आप पूछेंगे किस तरह पर?' यह सहज उपाय। आप में से कई रुप ऐसे हैं जो किसी भी धार्मिक

...र्थ सेवक बनना अपना काम ...
...ा समझते हैं। एक दो दिन ...
...अवसर आपको ...
...ा है। यह आशा ...
आप विद्याप्रचार के लिये स्थिर
सेवक बन जावेंगे, और अपने
...ुम ...ार के लिये स्वयं सेवक ब-
...ही ...ये जाने कि इतने देश के
...-...ई हैं। आप रहते हैं
...के पड़ोसी कई ...? आपको दिख
...गे जो वर्णाक्षर भी नहीं जानते, १...
रूपया भी नहीं जानते। अपने पड़ि—
अपने नौकरों में से, अपने पड़...
में से ऐसे पांच दस जन इकट्ठे
...के हैं ...का आप पढ़ा सकते हैं।
इन ...में से ऐसे जन इकट्ठे
...ए और सायंकाल को जब कि
...भी काम से निवृत्त हो जावें और
...खाली हों, उनको अपने मकान पर
...या उन के मकान में जाकर
उनको पढ़ाइए। अगर स्थिर रूप
...ए एक घण्टा भी या न्यून से न्यून
...घण्टा भी इस तरह लगावेंगे
...प विद्या का प्रकाश पांच छः
मनुष्यों तक अवश्य पहुंचा सकेंगे।
...र्म्म का काम आप आज ही से आ-
...रंभ सकते हैं। और इस कार्य्य के
...आप यदि कोई और भी साथी
...तो और भी अच्छा। और लोग
...के लिखे हैं उनको भी प्रेरणा करें
...आप विद्याप्रचार में सहायता
...हैं। पढ़ना, लिखना, गणित के
...धारण नियम / जोड़, ज़रब, गुणा
...ग) जो कोई जानता है वह प्रचार
...स्थिर स्वयम् सेवक हो सकता है।
...न सब स्थिर सेवकों का लक्ष्य ऐसा
...चाहिये कि हम अधिक से अधिक
...को कम से कम प्रारम्भिक अक्षर
...र गणित तो बोध करा सकें। यह
...कर्त्तव्य है और यही एक सच्चा
...का धर्म है। इस तरह हम अपने
...तियों से प्रेम का सम्बन्ध स्थापन
...हैं और उनकी तथा सब से व-
...अपनी आत्मिक उन्नति कर सके
...के बहुत खुशी होगी अगर आप में
...से बहुत से सज्जन इस काम के लिए तय्यार
हो जायं। जहां कहीं भी विद्याप्रचार
के लिये स्थिर स्वयं सेवक सात से अ-
धिक होंगे इकट्ठे हो कर विद्याप्रचार
का काम नियम पूर्वक चलाते रहें।

यदि कोई भाई अपना नाम स्थिर
स्वयं सेवक बनने के लिये भेज देगा तो
धन्यवाद के साथ उस सेवी समाज का-
यालय और इस काम के चलाने के सम्बन्ध
में हमारे साथ पत्र व्यवहार कर सकता
है। प्यारे पाठक! विद्याप्रचार के लिये
आप की सेवा की आवश्यकता है। इस
आवश्यकता को समझ के क्या ही अच्छा
होगा यदि आप निम्नलिखित प्रतिज्ञा ह-
स्ताक्षर करके भेजदें और इस पर नियम पूर्वक
और बल पूर्वक कार्य्य करते रहें और
हमारे साथी सेवक बन जांय।

प्रतिज्ञा

विद्याप्रचार की आवश्यकता को
अनुभव करते हुए मैं विद्याप्रचार के
लिये स्थिर स्वयं सेवक बनने की प्रतिज्ञा
करता हूं। प्रतिदिन इस काम के लिये
एक घण्टा या आध घण्टा अवश्य दिया
करूंगा। अपने चारों ओर अनपढ़ों
को ढूंढूंगा और उनको अक्षर बोध और
गणित सिखाने का यत्न बराबर करता
रहूंगा और अपने पढ़े लिखे भाइयों को
भी इसके लिये प्रेरणा करूंगा।

नाम.....

पता.....

आयु.....

सज्जनों! विद्याप्रचार के लिये स्थिर
स्वयम् सेवक बनिये।

आप का भाई
शिवराम एम० ए०
गुरुकुल—कांगड़ी

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्र-
चारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में
रोज़ के नये २ संसारसमाचार और
गुरुकुलोत्सव के समाचार छपा करेंगे।
जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार
रोज़ ही जानने का शौक़ हो—उन्हें इस
विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा।
गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका
करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म प्रचारक
के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ॥) के
टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना
नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक
नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-
आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में
नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक
समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की
बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न
कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक
का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक
में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध
विद्वानों के लेख होंगे—

[१] गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
[२] वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों के लेख आ रहे हैं।
=) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा
जायगा। सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहकों को
यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्राप्तपत्र

(प्राप्तपत्रों की सम्मतियों के लिये सम्पादक उत्तरदाता नहीं)

निवेदन पत्र

श्रीयुत पण्डित गिरिधर शर्मा चतुर्वेदी व्याकरणाचार्य न्यायशास्त्री—मुख्याधिष्ठाता ऋषिकुल हरिद्वार जी नमस्ते।

आपको ज्ञात होगा कि तारीख २६ नवम्बर १९१६ को भागलपुर श्री बाबू देवीप्रसाद सरावगी जी की [illegible] शाला में श्रीमान् से मैंने यह प्रश्न किया था कि प्राण-प्रतिष्ठा के उपरान्त मूर्त्ति में ऐसी कुछ विशेषता होती है वा नहीं कि जिससे समझा जाय कि मूर्त्ति-प्राण-प्रतिष्ठित होगई? उत्तर में श्रीमान् ने यह कहा था कि विवाह संस्कार होने से क्या दुलहे दुलहिन में कुछ विशेषता होती है? मैंने प्रत्युत्तर में कहा था कि विवाह संस्कार से दम्पतियों में विशेषता होती है। दोनों के मन प्रफुल्लित हो जाते हैं, अंग पुलकित मालूम होने लगता है तथा परस्पर व्यवहार होने लगता है। मैं इसी प्रकार सत्सङ्ग की बातों कर रहा था कि आप के साथी श्रीयुत कृपाराम पद्मनन्दरत्न जी कुछ प्रकरण विरुद्ध बातें करने लगे और आपने कहा कि "अब व्याख्यान का समय निकट आगया मैं शंका को जाता हूं।" यह बात कह कर श्रीमान् उठ गये और प्राण प्रतिष्ठा की बातों वहां तक होकर बन्द रह गई। प्राण-प्रतिष्ठा के विषय में सन्तोषात्मक ज्ञान प्राप्त करने की अभिलाषा मुझे अत्यन्त होगई है और उस दिन के सत्सङ्ग से मेरा सन्देह निवृत्त नहीं हुआ, इस कारण मैं फिर भी श्रीमान् के निकट पत्र द्वारा उपस्थित होता हूं और इस लेख को इस पत्रिका में प्रकाशित कराता हूं कि यदि आपको अवकाश न हो तो अन्यान्य सनातन धर्मावलम्बी विद्वान् भी मुझ दीन को प्राण-प्रतिष्ठा का मर्म्म, ज्ञात करा के मेरे सन्देह को दूर करें।

सन्देह मेरा यह है कि प्राण-प्रतिष्ठा क्यों की जाती है? यदि "ब्रह्ममय जगत" सत्य है तो मूर्त्ति भी ब्रह्ममय है और ब्रह्ममय होने से प्राण-प्रतिष्ठा की कोई आवश्यकता नहीं। और यदि "ब्रह्ममय जगत" सत्य नहीं तो मूर्त्ति भी कभी ब्रह्म-भाव को प्राप्त नहीं कर सकती है चाहे प्राण-प्रतिष्ठा किया जाय अथवा और कुछ किया जाय।

अथवा यदि यों कहा जाय कि मूर्त्ति और ईश्वर में सदा भेद है—परन्तु ईश्वर मूर्त्ति में प्रविष्ट है तो ईश्वर अपनी व्यापकता गुण से पूर्व ही मूर्त्ति में प्रविष्ट है फिर प्राण-प्रतिष्ठा का क्या प्रयोजन? यदि [illegible] कहिये कि मन्त्रिकाआदि जड़ वस्तु से मूर्त्ति बनती है उसको चैतन्य करने के निमित्त प्राण प्रतिष्ठा किया जाता है तो यह बातें कदापि सत्य नहीं। कारण, आज तक कोई भी मूर्त्ति चैतन्य प्राप्त करते नहीं देखी गई? हां, यह होसका है कि पुरोहितजी ने यजमान को विश्वास दिलाने के अभिप्राय से यह रीति निकाली हो कि अब प्राणप्रतिष्ठा होगया अब चैतन्य मूर्त्ति के समान हलुआ मोहनभोग इसे भी चढ़ाना चाहिये, यदि पुरोहित जी का यही उद्देश्य हो तो अच्छा है। क्योंकि यों तो यजमान किसी को तृप्त करेगा नहीं, पुरोहित जी की युक्ति प्रबन्ध से यदि वह दोष से मुक्त होकर दूसरों को मिष्टान्न से तृप्त कराया करे तो पुरोहित जी की यह युक्ति बहुत अच्छी है।

अथवा यदि प्राण प्रतिष्ठा का विधान शास्त्रसिद्ध है पुरोहित जी के अज्ञता वशतः प्राण-प्रतिष्ठा विधिपूर्वक नहीं होने के कारण मूर्त्ति चैतन्य नहीं होती है तो कृपा कर प्राण प्रतिष्ठा की यथार्थ विधि और मन्त्रादिक लिख भेजें, क्योंकि यदि ऐसी कोई युक्ति शास्त्र में है कि जिस से जड़ पाषाण आदि को चैतन्य युक्त किया जा सकता है तो इसे अवश्य सम्पादन करना चाहिए, इससे संसार की बहुत भलाई हो सकती है। कृषक, व्यवसायिकों को बहुत लाभ पहुंच सकता है और भी अनेक अनेक प्रकार का उपकार हो सकता है, युद्ध में भी जड़ मूर्त्ति को चैतन्य करके काम लिया जासकता है।

एक बात इस समय मुझे और भी स्मरण होगई, वह यह है कि इस प्रान्त में [illegible] एक ग्राम है, वह पर यह प्रसिद्ध है कि किसी समय [illegible] देवी के मन्दिर में कई पीढ़ी पहले देवी की मूर्त्ति प्रतिमा न मिलने पाती, और उसके बदले में कोई आदमी या स्त्री, या बालिका अकेले मन्दिर में नहीं जाता है। यहां पर मेरी शंका यह है कि क्या उक्त देवी की मूर्त्ति कन्या को मिलने नहीं होगी? क्या यह बात सत्य हो सकती है? अथवा यह सत्य है कि कन्या सुन्दरी होगी पुरोहित जी सबकों के लेकर किसी ने दूरवर्ती मनुष्य के हाथ ये [illegible] और सीधे साधे ग्राम निवासियों में रटा दिया कि देवी उसे निगल गई इन दो बातों में कौन सत्य हो सकती श्रीमान् कृपा कर लिखें। यदि देवी निगल जाना भी सत्य हो तो प्राण-प्रतिष्ठा के यथार्थ-विधि और मन्त्रादि लिखते समय श्रीमान् इस बात का स्मरण रखें कि विधि और मन्त्र ऐसे न हों कि प्राण-प्रतिष्ठा से मूर्त्ति में की दुष्ट स्वभाव का सञ्चार हो जाय।

पूर्व बात और भी यह है कि अनुभवी कुछकों का कथन है कि मूर्त्ति को निवेदित किया हुआ नैवेद्य का प्रसाद विशेष जाता है। क्या यह भी सत्य है? यदि एक लड्डू मूर्त्ति को भोग लगा कर और दूसरा बिना भोग लगाया हुआ ले आवें क्या कोई मूर्त्ति पूजक कहदेगा कि अमुक भोग लगाया हुआ है और अमुक नहीं

उपरोक्त बातों में किसी कुटाभाव नहीं पूछता, इन सब बातों का सन्तोषजनक ज्ञान प्राप्त करने की मेरी आन्तरिक इच्छा है। श्रीमान् निष्कपट भाव से मुझे यथोचित उत्तर देकर सत्य मार्ग पर ले आवें यही मेरी प्रार्थना है।

श्रीयुत पण्डित कालूराम शास्त्री का पुरा आले गत अक्टूबर मास में भागलपुर पधारे थे और उनसे भी मुझ को इस विषय में वार्तालाप करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था परन्तु वह कोई सन्तोषजनक उत्तर न देसके थे प्रत्युत हमारे एक मित्र बाबू द्वारकाप्रसाद से जो कि पुलिस के किस भागलपुरमें हेडक्लार्क (Head clerk) हैं और जो राधास्वामी मतावलम्बी हैं उक्त पंडित जी की बनाई हुई मूर्त्ति पूजा पुस्तक पर वार्तालाप हुआ था जिसमें बाबू साहेब ने कईएक अशुद्धियां दिखाते हुए पंडित जी को निरुत्तर किया थ

आपका सेवक
कमलाकान्तप्रसाद
स्थान—बांदा

स्वामी पर मेरा अगाध प्रेम ।

दादरा

स्वामीदयानंद पै वारी जाऊं वारियां ॥

शैर

ह पूर्ण पुरुष था कि आ दुनियां को जगाया जिसनें ।
धो को सुझाया जिसने भूलों कोबताया जिसने
सके जाने पै उसकी रूकी दुआ देते थे ।
जी हां वह देव था सतज्ञान सिखाया जिसने
क—ऐसे ऋषि की में चेरी बलिहारियां ॥ १ ॥
स्वामी दयानन्द०

शैर

म प्रतापी गुणी सभ्य सदाचारी था ।
जन स्वभावधीर वीर सत्यधारी था ॥
ों में वह एक रत्न था हारों में जवाहिर थावह
ावान संयमी सुजान ब्रह्मचारी था ॥
—अपने गुरु पै है तनमन निसारियां ॥ २ ॥
स्वामी दयानन्द०

शैर

ज़िंदगी न भुलैंगे तुम्हारी मिहरबानी को ।
उ० लौ०
ाश है शाबाश है तेरी वो जाफिसानी को ॥
ा नेकनामी का तूनें जो यहां बोया था ।
फल के पौदा है तय्यार ज़िंदगानी को ॥
—काशीनाथ रखियो कृपा महरमकारियां ३
ामी दयानन्द पै वारी जाऊं वारियां ॥
"सत्य"

—:०:—

वीरतीज

आर्यसमाजों से निवेदन

आर्य जगत में वीर तीज का शब्द नया
ी हो परन्तु ६ मार्च का दिन किसी
ार्य पुरुष से भूल नहीं सकता यह वह
न है जिस दिन धर्म्मवीर लेखराम ने
च्चे वीरों की न्याईं धर्म्म पर अपने
वन को बलिदान किया । जिस ६
र्च को लेखराम धर्म्म पर बलिदान
उस दिन हमारी स्वदेशी तिथियों
अनुसार फागुन शुदि तीज थी । कई
ी तक फागुन शुदि तीज के स्थान
६ मार्च को धर्म्मवीर की बरसी मनाई
ती रही अब देशीय तिथि के अनु-
र ही यह दिन मनाना उचित समझा
ा है और जिस फागुन शुदि तीज
पं० लेखराम ने वैदिक धर्म के लिए
ने प्राण अर्पण किये उसी का नाम 'वीर
ज' पड़ा उपर्युक्त होगा इस वर्ष वीर-
ज २४ फरवरी १७ को पड़ती है ।

सामाजिक समाचार

श्री मंत्री जी आर्य्यसमाज शाहपुर [अम्बाला] सूचना देते हैं कि उक्त समाज के वार्षिकोत्सव की तिथियां २४ वा २५ फरवरी १७ के स्थान में ७, ८ तथा ९ मार्च १७ नियत की गई हैं । आस पास के आर्य्य भाई नोट करलें ।

आर्यसमाज आगरे का [illegible] वार्षिकोत्सव मिती फाल्गुन कृष्णा १०, ११, १२ । १४ सम्वत् १९७३ तदनुसार १७, १८, १९ व २० फरवरी १७ को होगा और नगरकीर्तन १७ को है ।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज रावलपिण्डी सूचना देते हैं कि इस समाज का वार्षिकोत्सव होली के दिनों में तारीख ८,९,१० तथा ११ मार्च १९१७ को होना निश्चित् हुआ है—विद्वान उपदेशकों तथा भजनीक महाशयों का प्रबन्ध किया जाय । वैदिक धर्म्मानुयाइयों की सेवामें प्रार्थना है कि इस अवसर से लाभ उठावें । श्री स्वामी सर्वदानन्द जी तथा स्वामी सत्यानन्द जी महाराज से विशेष तौर पर प्रार्थना है कि कृपा कर अपने मनोहर उपदेशों से हमें अवश्य कृतार्थ करें ।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज मेहनावां ज़िला पटना सूचना देते हैं—इस समाज का वार्षिकोत्सव ता० ३-४-५-फरवरी १९१७ ई० को हुआ था शंका समाधान का समय भी रखा गया था अतः ता० ५ २/१७ को सनातनधर्म सभा की ओर से पं० गंगाविष्णु जी काव्यतीर्थ शंका समाधानार्थ पधारे—इन्होंने श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के यजुर्वेद भाष्य (अ० ६ मं०१४) और (अ०२५ मं७) पर शंका करते हुए ऋषि दयानन्द जी को आप्तापर हंसी उड़ाई इस का उत्तर यथोचित आ० स० की ओर से श्रीमान् पं० इन्द्र वर्मा जी ने दिया और साथ ही साथ महिधर का भाष्य (यजुर्वेद अ० २३ म १८ से २८) तक दिखलाते हुए सिद्ध कर के दिखला दिया कि आप का आचार्य [illegible] नहीं हो सकता ऋषिदयानन्द जी ही आ[illegible] जी ने सर्वसम[illegible] भी क[illegible] कि श्री [illegible] जी सत्यार्थ प्रकाश में [illegible] आदमी को खाने के लिये [illegible] भी उत्तर देकर यह सिद्ध किया गया कि मांस खाने का विधान आपके ग्रन्थों में पाया जाता है—किन्तु स्वामी जी महाराज इसे नहीं मानते और यह भी रामायण से निकाल कर दिखलाया कि हमारे पुरुषों पर मांस खाने का झूठा धब्बा लगाया जाता है हम इसे नहीं मानते यह प्रक्षिप्त है-परन्तु इस पर पण्डित गंगाविष्णु जी बोले कि आपत्ति काल में रामचन्द्र जी ने मांस खाया था इस में कोई दोष नहीं । इधर से इस का उत्तर दिया गया कि यदि आपत्ति थी तो (दश मृगों का मांस क्यों सुखाया गया) तथा ईश्वरावतार होने पर आपत्ति क्यों ? इत्यादि इस के अनन्तर उत्तर कुछ भी न दे कर सनातन धर्म की जय जय बोलते हुए चले गये)

नोट यह वही पं० गंगाविष्णु है जिन्हों ने (पुरुषपुर ज़ि० पटना) के शास्त्रार्थ से यजुर्वेद में (आखु वाहन गजानाय) यह मन्त्र बना कर मिला दिया था ।

आर्यसमाज जम्मू का—आगामी वार्षिकोत्सव १८, १९ वा २० चैत्र तदनुसार ३०, ३१ मार्च वा प्रथम अप्रैल को बड़े समारोह से [illegible] में प्रसिद्ध सन्यासी महात्मा विद्वान पण्डित उपदेशक वा भजनीकों के सम्मिलित होने वा उन के मनोहर व्याख्यानों, उपदेशों व भजनों द्वारा मृतवर्षा होने की पूर्ण आशा है । इस लिये धर्म्म प्रेमी सज्जनों से सविनय प्रार्थना है कि वह इस शुभ अवसर पर पधार कर लाभ उठावें और हमें कृतार्थ करें ।

—०—

पुरस्कार और पदक

जयपुर के सर्गवासी कुंवर जोधसिंह जी मेहता ने काशी नागरी प्रचारिणी सभा को १०००) रु० दान दिया था । सभा ने निश्चय किया है कि इस रक़म के ब्याज से होने वाली आय में कुछ द्रव्य अपने पास से मिला कर प्रति तीसरे वर्ष २००) रु० नक़द पुरस्कार उस ग्रन्थकार को दिया जाया करे जिस का ग्रन्थ गत तीन वर्षों में हिन्दी में निकले हुए सब ग्रन्थों में श्रेष्ठ होगा । पहिला पुरस्कार ७ जनवरी १९१७ से ३१ दिसम्बर १९ तक प्रकाशित होने वाले ग्रन्थों में से सर्वोत्तम ग्रन्थ के लेखक को दिया जायगा ।

इस के अतिरिक्त प्रति वर्ष के नियमानुसार इस वर्ष भी निम्न लिखित लेखों के लिये इस प्रकार पदक दिए जायंगे ।

(१) डाक्टर छन्नूलाल स्वर्ण पदक विषय "नगरों का निर्माण" (Townplainiy)

(२) राधाकृष्णदास रजत पदक— विषय "भारतवर्ष की शासन प्रणाली"

(३) रोडाचे रजत पदक

विषय—"मनुष्यों का भोजन"

पदकों के लिये लेख ३१ दिसम्बर १९१७ तक मन्त्री, नागरी प्रचारिणी को मिल जाने चाहिए ।

—:०:—

आवश्यकता

आर्य्यसमाज मन्सूरी ज़िला देहरादून की कन्यापाठशाला के लिये एक अध्यापिका की आवश्यकता है । इस पहाड़का स्वर्गीय जल वायु से लाभ उठाने वाले वेतनादि के लिये मुझ से पत्र व्यवहार करें ।

रामचन्द्र
प्रधान आर्य्यसमाज
मन्सूरी ज़ि० देहरादून

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अनुपम लाभ ! ऐसा अवसर कदापि न चूकिये !! शीघ्रता कीजिये !!!

अपूर्व उपहार !

अपूर्व उपहार !!

बहुमूल्य सचित्र राष्ट्रीय ग्रन्थ

'दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास'

क्या आप को भारत माता के सच्चे सपूत महात्मा गांधी के जीवन की घटनायें मालूम हैं ?

क्या आप सच्चे कर्मवीर भारत सपूत महात्मा गांधी का विस्तृत चरित्र जानना चाहते हैं ?

क्या आप को भारत के सच्चे धर्मवीर के असाधारण वीरत्व के कार्यों को सविस्तार जानने की अभिलाषा है ?

यदि हां, तो

'दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्रह का इतिहास' पढ़िये

यदि आप 'सत्याग्रह' की अनुपम लड़ाई का विस्तार और सचित्र वृत्तान्त जानना चाहते हैं।

यदि आप प्रवासी भारतवासियों के अनुपम [illegible] की अनुपम वीरता और अनुपम स्वदेश भक्ति की जीती जागती तस्वीर [illegible] चाहते हैं।

यदि आप संसार के इतिहास में अपने ढङ्ग की अनुपम लड़ाई, भारत ललनाओं की आश्चर्यजनक वीरता, धीरता, सहनशीलता और सतीत्व की रक्षाके प्रत्यक्ष उदाहरण देखना चाहते हैं।

और

यदि इन सब रोमाञ्चकारी वृत्तान्तों से आप कुछ शिक्षा ग्रहण करना चाहते हैं।

तो

'दक्षिण अफ्रिका के सत्याग्र का इतिहास' पढ़िये

यह पुस्तक हिन्दी साहित्य में अद्वितीय है। सचित्र है। एक नहीं दो नहीं बल्कि पूरे ६० सुन्दर हाफ़टोन चित्र बढ़िया आर्ट पेपर पर छपे हुये इसमें हैं। हम दावे से कहते हैं कि ऐसी पुस्तक आपने कभी नहीं देखी होगी। इस अनुपम पुस्तक का मूल्य केवल १॥) है।

किन्तु

"नवजीवन" के सं० १९७३ वि० के ग्राहकों को केवल ॥।) में

३) रु० "नवजीवन" का मूल्य और ॥।) उपहार का मूल्य तथा।) डाकव्यय के कुल ४) रु० का मनीआर्ड भेज दीजिये या वी० पी० मंगा लीजिये।

शीघ्रता कीजिये। क्योंकि पुस्तक के बहुत ही शीघ्र बिक जाने की पूरी आशा है। यदि देर हुई तो सम्भव है कि यह बहुमूल्य रत्न आपको प्राप्त न हो सके।

व्यवस्थापक—"नवजीवन"
सरस्वती-सदन,
केम्प इन्दौर (C. I.)

खरीदिये ! हिन्दी भाषा में एकदम नई और अनुपम पुस्तकें !! खरीदिये !!!

१) ऋतुचर्या।
।) धर्म्मशिक्षा। प्रथम भाग।
।=) धर्म्मशिक्षा। द्वितीय भाग।
।) उपदेश माला। प्रथम भाग।
-)॥ प्रार्थना विधि।
२) फाटका जञ्जाल नाटक।
।) प्रवास कुसुमावली। प्रथम गुच्छ।
।=) प्रवास कुसुमावली। द्वितीय गुच्छ।
।) गीतार्थ पद्यावली (मराठी)
।) बालोपदेश।
।=) इटाली की स्वाधीनता।
=) ईश और केनोऽपनिषद भाष्य।
।=) दिशा भूल।
१।) सूर्य्य चक्रवेध।
।=) भारतवर्ष की वीर और विदुषीस्त्रियां। प्रथमभाग।
=)॥ भारतवर्षकी वीर और विदुषीस्त्रियां। द्वितीयभाग।
॥) गर्भरक्षा विधान।
।) वकील हैवानात। (उर्दू)
।=) उपदेश मञ्जरी (उर्दू)
।=) भारती शासन।
॥) लम्बी दाढ़ी।
॥=) मानी वसन्त नाटक।
-)॥ महाराष्ट्रोदय।
।) लक्ष्मी।
=) हनूमान चालीसा।
=) यमुनाबाई।

पुस्तकें मिलने का पता:—व्यवस्थापक, सरस्वती-सदन, केप, इन्दौर (C. I.)

CCO. Gurukul

इस पत्र की इसी संख्या का क्रोड़पत्र

आर्य्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान्, भारत जननी के सच्चे सुपूत

धर्मवीर अमेरिका प्रवासी

भिषगाचार्य, कविराज श्री पण्डित केशवदेवजी शास्त्री एम०डी० द्वारा प्रवर्तित

राष्ट्रीय आर्य्य भाषा का प्रसिद्ध सचित्र मासिक पत्र

"नवजीवन"

जो पहले ५.६ वर्षतक काशी से प्रकाशित होता रहा [illegible] १९७२ वि. से इन्दौर से प्रकाशित होरहाहै

आपको "नवजीवन" के [illegible] बनिये

इसलिये कि—

"नवजीवन"—आर्य्यसमाज में अपने ढङ्ग का एक ही उच्च कोटि का मासिक पत्र है।

"नवजीवन"—का आकार "सरस्वती" जैसा है। छपाई, काग़ज़ और चित्रोंकी सुन्दरता के लिहाज़ से यह आर्य्यसमाज में अद्वितीय है।

"नवजीवन"—में पवित्र वैदिकधर्म्म के गूढ़ तत्व तर्क और प्रमाणों के द्वारा वैज्ञानिक व दार्शनिक नियमों पर प्रकाशित करने का विशेष प्रबन्ध किया जा रहा है।

"नवजीवन"—में प्राच्य और पाश्चात्य साहित्य और इतिहास का अन्वेषण करके रत्न निकाल लेने-वाले प्रसिद्ध विद्वानों के द्वारा लिखे हुये लेख प्रकाशित करने का विशेषरूप से प्रबन्ध होरहा है।

"नवजीवन"—के द्वारा आर्यकुमार तथा कुमारियों में नवीन जीवन का सञ्चार करने और आर्य्य जीवन की मर्यादा स्थापित करने की विशेषरूप से चेष्टा की जाती है।

"नवजीवन"—का सम्बन्ध आर्यसमाज की किसी विशेष पार्टी से नहीं है। इसलिये इसमें आर्य्य समाज को अपने उद्देश्य पर दृढ़ रखने के निमित्त, पार्टी स्प्रिट से सर्वथा दूर रहकर निर्भीकता और निष्पक्षता के साथ गम्भीर विचार किया जाता है।

"नवजीवन"—आर्य्यसमाज के तथा अन्य समाजों के मननशील विद्वानों के राष्ट्रीयता के प्रत्येक अंग पर मार्मिक लेख प्रकाशित करने और वैदिकधर्म को उसके असली स्वरूप में प्रकाश करने का एक मात्र साधन है।

"नवजीवन"—में जननी जन्म भूमि और स्वधर्म के प्रति अपने कर्त्तव्यों का ज्ञान कराने के लिये बड़े ही विद्वत्ता पूर्ण मार्मिक लेख प्रतिमास प्रकाशित होते हैं।

इन सब इकट्ठी विशेषताओं को रखनेवाले आर्य्य समाज के एक मात्र उच्चकोटि के सचित्र मासिकपत्र के आप अभी तक ग्राहक नहीं हैं **आश्चर्य !!!** आपके द्वारा उत्साहित किये जाने पर **"नवजीवन"** के सञ्चालक आर्य समाज में **युगान्तर** उपस्थिति कर देने की अभिलाषा रखते हैं। अवश्य ही ग्राहक बनकर सहायता कीजिये। **मूल्य कुछ नहीं, केवल ३) रु० वार्षिक, अग्रिम। विदेशों से ६ शिलिंग। नमूने के लिये ।=) के टिकट भेजिये। नमूना बिना मूल्य नहीं भेजा जाता।**

पता :—व्ययस्थापक, "नवजीवन," सरस्वती सदन, केम्प, इन्दौर (C. I.)

समाचार

——बड़ोदा नरेश ने अपने यहां कालेज में सर्व धर्म शिक्षा अनुसन्धान और शिक्षा प्रबन्ध के लिये आज्ञा प्रदान की है। इस कार्य के लिये तीन विद्वान नियत होंगे जिनको १२०) रुपया मासिक वेतन मिलेगा। इन विद्वानों का कार्य धार्मिक अनुसंधान करना होगा। तत्त्वज्ञान के प्रोफ़ेसर की अध्यक्षता में फ़ारसी और संस्कृत के प्रोफ़ेसरों की सहायता से यह कार्य होगा।

——भारती पुलिस के लिये जो तमग़े सम्राट ने प्रदान किये थे वह मलोजा जहाज़ पर, कि जो डूब गया, आरहे थे। अब पुलिसवालों को उस समय तक कि दूसरे तमग़े बनकर न आजावें इन्तज़ार करना पड़ेगा।

——कलकत्ते में २३ आदमी पकड़े गये हैं और वे डिफ़ेन्स आफ़ इंडिया एक्ट के मुताबिक़ नज़र बन्द रक्खे गये हैं।

——सनातन धर्म महा सम्मेलन के अवसर पर मथुरा में ग्यारह दिन तक एक विष्णु यज्ञ होगा।

——एक बंगाली युवक ने एक बंगाली बालिका को, जो नाव पर से नदी में गिर गई थी, पैर कर बचा लिया।

——सर सत्येन्द्र प्रसन्नसिंह बंगाल के एडवोकेट नियत हुये हैं।

——कलकत्ते में सरे बाज़ार दो आदमियों में डाकू तीस हज़ार रुपया लेकर भाग गये।

——इस साल सारे भारत में २ करोड़ २५ लाख एकड़ भूमि में गेहूं बोया गया है। अर्थात् गत वर्ष की अपेक्षा ६ फ़ी सदी कम भूमि में गेहूं बोया गया। युक्त प्रान्त में पैदावार का अन्दाज़ ८० फ़ी सदी, आगरा, मेरठ, और रुहेलखंड में ९०.८५ फ़ी सदी सोचा गया है। पंजाब में जहां सिचाई का सुभीता है वहां पैदावार अच्छी होगी।

——बंगाल प्रांत में सन् १८५७ में ५० स्कूल थे परन्तु वहां अब यह संख्या बढ़कर ७६१ होगई है। इसके अलावा वहां ५१ कालेज और हैं।

——स्वराज्य के भूतपूर्व सम्पादक रामचरण को जेल में काम न करने के अपराध में ६ मास कड़ी कैद का दंड दिया गया।

——सेना में विवाहितों को भर्ती करने के लिये आज्ञा दी गई थी; परन्तु उसका विरोध होने से पुनः गवर्नमेंट इस बात पर विचार कर रही है।

Onkar Press Allahabad.

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

Registered No. A. 434.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार का प्रकाशित होता है | १४ फाल्गुन सं० १९७३ वि० (दयानन्दाब्द ३४) ता० २४ फरवरी सन् १९१७ ई० | संख्या ४५ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्योपदेशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम दे सकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाव ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। बहुत से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और मलमा-अस्पृश्य का क्या रहस्य है। किस के घर जाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्य्य समाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की अर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्त्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक भण्डार, गुरुकुल—कांगड़ी, ज़िला बिजनौर

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से	३)
विद्यार्थियों से	२॥)
छः मास का १॥।) तथा तीन मास का	१)

(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थियों के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

[११ वें पृष्ठ से आगे]

डा० बालकृष्णजी के बाद उपाध्यक्ष रामदेव जीने अपना कथन प्रारम्भ किया। उन्होंने गुरुकुल को एक व्यक्ति के रूप में खड़ा किया और दर्शाया कि इसकी किस प्रकार से शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति हुई है। उन्होंने कहा कि भयानक कटीली झाड़ियों के स्थान में इन रम्य भवनों के बनने का ही यदि इतिहास लिखा जावे तो एक उत्तम आश्चर्यमय घटनाओं से पूर्ण रोमाञ्चकारी उपन्यास बन सकता है। इससे पता लगता है कि इसकी कितनी अधिक शारीरिक उन्नति हुई है। मानसिक उन्नति के लिए शिक्षा प्रणाली के विषय में एक ओर भारत के वायसराय और दूसरी ओर भारत के कट्टर से कट्टर नेशनलिस्ट के पास एक गुरुकुल ही उदाहरण है जिसे वे अन्तिम कह सकते हैं और आत्मिक उन्नति के लिए यद्यपि हम इतना अधिक अभिमान नहीं कर सकते तथापि निश्चय पूर्वक कह सकते हैं कि संसार के किसी भी उन्नत से उन्नत दिमाग ने आचार विषयक उन्नति के लिए गुरु शिष्य सम्बन्ध से बढ़ कर कोई स्कीम नहीं निकाली है। अन्त में उन्होंने कहा कि ऐसे उन्नतिपथारूढ़ कुल का आज एक वर्ष बीता है इसके लिए हमें अवश्य हर्ष मानना चाहिए।

इसके पश्चात् एक गीति हुई और तदन्तर श्री आचार्य जी ने ब्रह्मचारियों और अपने सहकारी कार्यकर्ताओं को सम्बोधन करते हुवे अपने व्याख्यान को प्रारम्भ किया उन्होंने कहा "इस उत्सव के आरम्भ में प्रेम के लिए प्रार्थना की गई थी। बीच में प्रेम की मधुरकूक लगी थी और अन्त में भी प्रेम के लिए याचना थी। बस इस से बढ़ कर मुझे और कौनसा सौभाग्य हो सकता है। आज सब ब्रह्मचारियों और उपाध्यायों ने जब अपने २ भाव प्रकट किए उस समय एक आशा मेरे दिल में थी जो पूरी तौर पर पूर्ण नहीं हुई। तो भी मुझे निश्चय है कि आज तुम लोगों के हृदय-तन्तु दूर वर्ती दो प्रवासी भाइयों के हृदयों को खैंच रहे होगें और उन के सामने इस समय गुरुकुल को एक २ हर्षदायक दृश्य घूम रहा होगा। उनको देख कर मैं तुम्हें कह सकता हूं कि वास्तव में तुम्हें इस प्रश्न का उत्तर देने की कोई आवश्यकता नहीं कि "गुरुकुल के ब्रह्मचारी क्या कर सकेंगे।" मुझे इस बात का सन्तोष है कि वे उस प्रकार की निराश्रित अवस्था में भी गुरुकुल की कीर्ति को बढ़ाने में समर्थ हो सके हैं। तुम निश्चय रखो कि एक व्रतधारी सब कुछ कर सकता है।

अब मुझे एक और बात कहनी है। छिपाने की कोई आवश्यकता नहीं। यह मेरी अन्तिम बार है कि मैं गुरुकुलमाता में तुम्हारे साथ इस प्रकार से सम्मिलित हूं इसके बाद तुम मेरी बहुत सी बातें सुनोगे पर तुम्हारा और मेरा इस प्रकार का समागम फिर कभी नहीं होगा। अतएव इस समय मुझे ब्रह्मचारियो तुमसे और उपाध्यायों से एक एक बात कहनी है। मेरे सहकारियो! आप से मेरी केवल एक छोटी सी प्रार्थना है। आपने बिना जाने या जान बूझ कर एक व्रत लिया है मैं आशा करता हूं कि आप उसपर आगे के लिये दृढ़ रहेंगे।

प्रिय पुत्र ब्रह्मचारियो! तुमसे मैंने एक पाठ सीखा है। अच्छे पिता के मिलने के कारण मुझमें सेवा का भाव प्रादुर्भूत हुवा था और माता के स्मरण ने भी कुछ २ सिखाया था किन्तु अभी तक मेरा प्रेम सकुचित ही था। किन्तु पुत्रो! तुमसे मैंने सीखा है कि प्रेम सकुचित नहीं रह सकता। अब मेरा तुमसे ही नहीं प्रत्युत विद्यार्थी जीवन से प्रेम हो गया है और कितने ही ऐसे विद्यार्थी हैं जिनके साथ किसी प्रकार का भी बाह्य सम्बन्ध न होते हुवे तुम्हारे सम्बन्ध के समान ही अन्तरीय सम्बन्ध है। अब मैं इससे भी आगे जाने के लिये तुम से जुदा होऊंगा किन्तु पुत्रो! इस बात को याद रखना कि तुम्हारे साथ मेरा कुछ विचित्र ही सम्बन्ध रहा है। वह सम्बन्ध अब विस्तृत ही होगा, टूटेगा नहीं। इस समय महर्षि स्वरूप आचार्य के आज्ञा पालन करने के लिये तुम से जुदे होते हुवे मुझे किसी प्रकार का शोक नहीं और तुम्हें भी नहीं होना चाहिये। अब यदि तुम अपनी आंख के सामने पर्दा भी करना चाहोगे तो मुझे निश्चय है कि आत्मस्वरूप उस आचार्य का दिया हुवा बल मुझे शक्ति देगा कि मैं तुम्हें अपनी ओर खैंच सकूं और ठीक रास्ते पर लासकूं। चाहे इस बात का तुम्हें भी पता न हो और मुझे भी पता न हो। और अन्त में तुम्हें विश्वास दिलाता हूं कि जिस परमेश्वर को साक्षी रख कर तुमने सम्बन्ध की प्रतिज्ञा की थी वही परमात्मा फिर भी तुम्हारा रक्षक रहेगा। इसी लिए हम सब को परमात्मा से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह कुल की अभिवृद्धि में सदा सहायक रहे" इसके बाद सबने मिल कर कुलगीत गाया और फिर शान्ति पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

विनायकराव
मन्त्री
स्वा. का. सभा

"हम नहीं समझते"

बहुत से भाइयों का यह विचार है कि सच हम मजबूरी से नहीं बोल सकते हालांकि हम समझते हैं कि सच बोलना धर्म अथवा अच्छा है बेईमानी करते हैं लेकिन बेईमानी को बुरा समझते हैं। चोरी करते हैं लेकिन चोरी को बुरा समझते हैं। रिश्वत लेते हैं लेकिन रिश्वत को बुरा समझते हैं आदि२ परन्तु मेरा विचार है कि वे लोग असत्य वादी हैं। इन से शेखसादी ही अच्छे रहे जिन्होंने कहा कि "दरोगमसलसत आमेज़ बेह अज़ रास्ती फितना ओज़" भला कहीं तो उन्होंने झूठ को जायज माना लेकिन हम हैं जो यह कहते हुए कि झूठ कहीं भी न बोलना चाहिए और बोलते हैं, रिश्वत लेना बुरा कहते हैं मगर लेते हैं। इस से स्पष्ट प्रतीत होता है कि जो झूठ बोलता है सत्य उसकी दृष्टि में कुछ नहीं है। मिसाल के लिये "एक मनुष्य झूठी गवाही देने को तय्यार हो जाता है उस समय रुपया के मुक़ाबले में सत्य पर लात मार देता है फिर पूछो उसी मनुष्य से कि सच बोलना अच्छा है या बुरा वह कह देगा कि झूठ बोलना बुरा है। इस से सिद्ध है कि झूठ बोलने को वह अच्छा समझता है। इसी प्रकार रिश्वत लेने वाला जिस समय रिश्वत लेता है उसको अच्छा समझता है क्योंकि एक बालक जिस को अग्नि का बोध नहीं है। अग्नि को लाल २ सुहावनी समझ कर उसके पकड़ने को दौड़ता है जब वह वस्तुतः जान जाता है कि अग्नि जला देती है कभी भी उस के पास नहीं जाता। ठीक यही हाल हम लोगों का है कि मिथ्या ज्ञान रखते हुये अपने को सत्य ज्ञानी कहते हैं इन से तो वही भले कि जिन से हम 'नमस्ते" करते हैं, वह उत्तर देते हैं कि "हम नहीं समझते"

ओ३म् शम्

वैदिक धर्म का सेवक
प्रभूदयाल निगम
मन्त्री कटरा समाज
प्रयाग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक

प्रचारक की अपील

प्रचारक के प्रेमियो ! आप लोगों का ध्यान किस ओर है ? आपने प्रचारक का शब्द अभी तक क्यों नहीं सुना ? क्या कारण है कि आपने प्रचारक की अपील पर पूरा २ ध्यान नहीं दिया ? यदि ध्यान देते और हमारी अपील को देखते ही अपने हिस्से के पांच रुपये मनीआर्डर कर देते तो आज तक राशि सैकड़ों की जगह हज़ारों तक पहुंची होती।

अधिक नहीं—केवल पांच रुपये मांगते हैं। इस से अधिक हों तो और अच्छा है। कम भेजें तब भी हर्ज नहीं—दान ही है, कम भी अच्छा है, बहुत भी अच्छा है। गुरुकुल के स्थिर कोष के लिए क्या आप पांच रुपये नहीं भेजेंगे ? नीचे दी हुई सूचि से पता लगेगा कि दानियों ने और प्रेमियों ने सहायता की है, किन्तु अभी सब की आंखें नहीं खुलीं। अभी तक प्राप्त धन की सूचि नीचे दी जाती है—

पूर्व योग ६५)
म० सुखराम जी [गुरुकुल] ५१)
म० पूर्णचन्द्र जी [धर्म कोट] ५)
म० द्वारकाप्रसाद जी [रुद्रपुर] ४)
म० बूढ़ीराम जी अत्तार चक्कुमरा] ५)
रावत उम्मेदसिंह जी [अलमोड़ा] ५)
पं० निहालचन्द्र जी [देहली] ५)
प्रो० रामेश्वर वाजपेयी जी [कलकत्ता] ५)
प्रो० सेवाराम जी [गुरुकुल] ५)
प्रो० सुधाकर जी [गुरुकुल] ५)
प्रो० रामदेव जी [गुरुकुल] ५)
डा० सुखदेव जी [गुरुकुल] ३)
सर्वयोग १६३)

तीन सप्ताहों में यह राशि कुछ भी नहीं। शायद कई प्रेमी यह सोच रहे होंगे कि चलो—औरों को भेजने दो, हमारे ५ रुपयों से क्या भेद आयगा, किन्तु यह ठीक नहीं। शायद इसी तरह सब चुप बैठ जायं, और प्रचारक-परिवार की दान शीलता पर धब्बा आजाय। ऐसा धब्बा न आना चाहिए। तुर्त ही अपने हिस्से की राशि भेजिये, और इस छोटी सी थैली को भरदीजिये। अब विलम्ब न हो।

इन्द्र
सम्पादक

—०—

प्रचारक की स्थिरता का प्रश्न

प्रचारक की स्थिरता के साधन सोचने का प्रश्न कई सप्ताहों से प्रचारक-परिवार के सन्मुख है। हितैषियों की बहुत सी चिट्ठियां आई हैं, जिन में से कुछ नमूने की दीगई हैं। उन चिट्ठियों में पाठकों ने निम्न लिखित सलाहें देखी होंगी।

[१] काग़ज़ घटिया लगाया जाय।
[२] विज्ञापन दिये जायं।
[३] प्रचारक के लिए सहायता फण्ड खोला जाय।
[४] ग्राहक बढ़ाये जायं।

इन में से पहली प्रायः सभी हितैषियों ने लिखी हैं। हमारी इच्छा यही थी कि हम काग़ज़ में भेद न आने दें। किन्तु काल-चक्र की गति किसी के हाथ में नहीं है। युद्ध और भी भयंकर रूप पकड़ गया है, भारत में भी बहुत पुतली-घरों में गोले ही तय्यार होने लगे हैं, महंग दिनों दिन दूनी चौगनी हो रही है। ऐसी दशा में हमने सब हितैषियों की सलाह स्वीकार करना ही उचित समझा। यह भेद ऐसा है जिस से भाव या आदर्श में भेद नहीं आता, केवल बाना बदलता है। बाने का परिवर्तन अवस्थाओं द्वारा समर्थित हो तो दोषावह नहीं होता। गत सप्ताह भी पत्र बादामी काग़ज़ों पर ही छपा था, उस से हमें ज्ञात होगया कि इस काग़ज़ पर बहुत बुरी छपाई नहीं होती।

अब दूसरी सलाह लीजिये। कई सज्जनों ने हमें विज्ञापन छापना प्रारम्भ करने की सलाह दी है। हमें शोक है कि हम उन हितैषियों की सलाह स्वीकार नहीं करसकते। जो व्रत एक बार धारण किया है वह अब नहीं टूट सकता। अब प्रचारक का कलेवर विज्ञापनों से कभी दूषित न होगा। लोग प्रायः पूछते हैं कि आप ऐसी निराली चाल क्यों रखते हैं सारे संसार से विलक्षण रहने में क्या लाभ है ? उनके उत्तर में हमारा निवेदन है कि प्रचारक का जीवन जीने के लिए नहीं, कुछ आदर्शों के लिए है। उन आदर्शों में एक यह भी है कि धार्मिक कार्य में व्यापार की दृष्टि न चाहिये। विज्ञापनों का छापना मनुष्य को आदर्श की ऊंची चोटी से गिराकर व्यापार के नीचे तल पर ले आता है। जहां विज्ञापन की चाट लगी, वहां फिर छुटकारा नहीं हमारा अपना दो सालों का अनुभव यह है। जब हमने बीच में विज्ञापन छापना प्रारम्भ किये थे तो हमारा ख़याल यही था कि केवल शुद्ध सच्चे विज्ञापन छापे जायगे, दूसरे नहीं। विज्ञापन का काम क्लार्क को ही करना पड़ता है। उस से असावधानियां होने लगीं। क्लार्क की ओट में हम बचने लगे और धीरे २ शुद्धाशुद्ध का विवेक नष्ट हो गया। अन्य पत्रों की भी यही दशा है। कई ऐसे सम्पादक, जिन्हें पहले झूठे या अश्लील विज्ञापनों से वैसी ही घृणा थी, जैसी हमें है, धीरे २ विज्ञापनों के पक्षपाती होगये। इस लिये अब हमारा संकल्प यही है कि प्रचारक को कभी विज्ञापनों से दूषित न करेंगे जिन उद्देश्यों के लिये प्रचारक जीता यदि वे जगदीश्वर को अभीष्ट होंगे—और हमें निश्चय है कि अभीष्ट हैं—तो विज्ञापनों के बिना भी प्रचारक जीवित रह लेगा। इसी विश्वास पर हम काम किये जाते हैं।

तीसरी सलाह यह है कि हम प्रचारक के लिये सहायता मांगलें। प्रचारक परिवार के प्यारे सभासदो ! जीते जी प्रचारक यह नहीं हो सकता कि वह अपने लिये अभ्यर्थनायें करने बैठे। प्रचारक अपने लिये अभ्यर्थना न करेगा—अन्य शुभ कार्यों के लिये अभ्यर्थना करना उस अपना धर्म बनाया हुआ है।

अन्तिम उपाय है ग्राहक बढ़ाना। शायद हमारे प्रेमी ग्राहक बनाते २ थक गये हैं, किन्तु हम उनकी सेवा में एक निवेदन करना चाहते हैं। प्रचारक को वास्तविक सहायता देने का एकमात्र उपाय य

कि [illegible] ग्राहक बढ़ें । अन्य सब उपायों से अधिक उपाय है—यह निश्चय स्थिर है । यह भी ठीक नहीं कि सकल ग्राहक बढ़ नहीं सकते । अभी कुछ दिन हुये लाहौर के एक अखबार में पढ़ा कि एक सप्ताह में उस के ग्राहक बढ़ाये गए हैं । युद्ध के समय भी ग्राहकों का बढ़ना कठिन नहीं है ।

और भी कई उपाय हैं, जिनसे आप प्रचारक की ग्राहकों द्वारा सहायता कर सकते हैं—जिन में से एक उपाय यह है कि धनी लोग कुछ सहायता दे कर निर्धन लोगों को कम कीमत पर प्रचारक भिजवादें । यह ग्राहकों की सहायता है ।

इन सब से बढ़ कर प्रचारक की सहायता करने का उपाय यह है कि प्रचारक के प्रेमी उस के लिये अत्यन्त शुभ कामना रखें, प्रचारक के प्रति अपने प्रेम को कम न होने दें । उनके प्रेम की सहायता, आर्थिक सहायता से कहीं अधिक काम करेगी ; उन की हितकामना हमारे लिए अन्य सब वस्तुओं की अपेक्षा अधिक बलदायक होगी ।

—:o:—

मृतक-श्राद्ध का मूलकारण

मृतक श्राद्ध का प्रारम्भ क्यों हुआ ? यह प्रश्न बड़ा मनोरंजक है । जीवित पितरों का तर्पण तो वेदों में भी विहित है और सारे भूमण्डल की सब जातियों में माता पिता आचार्यादि की पूजा को धर्म में परिगणना की जाती है । किन्तु मृतक श्राद्ध की प्रथा निराली है । यह किसी २ जाति में ही पाई जाती है । इस का मूल कारण क्या है ? विना कारण के कोई कार्य्य नहीं हुआ करता । इतिहास हमें यही शिक्षा देता है कि जातियों के विचारों या क्रियाकलापों में जो भेद आते हैं, उनका कोई न कोई निमित्त अवश्य होता है ।

मृतकश्राद्ध की विधि बड़ी उपहास्य है । जो मन्त्र श्राद्ध के समय पढ़े जाते हैं, उन में जीवित पितृगणों की पूजा के यह स्पष्ट रीति से पाये जाते हैं । (आरुया जानुदक्षिणतो निषद्य) घुटना नीचा कर आसन पर बैठना (उदीरतामवर उत्परासः) बोलना और इसी प्रकार अन्य चेष्टायें करना क्या कभी मृतकों में सम्भव है ? कभी नहीं । यह विलक्षण प्रणाली कहां से चली ? जीवित पितरों के मन्त्रों से मृतकों की पूजा करना एक विलक्षण ही कार्य्य है, जिसका कुछ न कुछ मूल अवश्य ही होना चाहिये ।

मृतक-श्राद्ध की प्रथा पौराणिक काल से ही प्रारम्भ होती है । पौराणिक काल बौद्ध काल के अन्त गुरू में होता है । इतिहास हमें बताता है कि वह समय गिरावट का समय था । उस समय भारत इतिहासोपजीवी हो रहा था । लोग व्यतीत काल के महत्व पर अभिमान करने और आंसू बहाने लगे थे । जब जाति गिरने लगती है, तब उसे गुज़रा हुआ अच्छा समय याद आता है । समृद्ध और उन्नत जातियां अपने भविष्य में भी प्रसन्न रहती हैं । अधःपात के समय में स्वभावतः भारत वासियों के हृदय भूतकाल की ओर खिचने लगे । अपनी वर्तमान गिरी हुई दशा की प्राचीन लोगों की उन्नत दशा से तुलना करके लोग रोने लगे । इसी से प्राचीनों में उनका श्रद्धाभाव भी बढ़ने लगा ।

अब उनके लिये दो रास्ते खुले थे, या तो वे लोग प्राचीनों के कार्यों का अनुकरण करके स्वयं उन्नत होने का यत्न करने लगते, अथवा प्राचीनों की केवल पूजा में लग जाते । भारत के दुर्भाग्य से हमारे पूर्वजों ने दूसरा रास्ता लिया । प्राचीनों के कार्यों के अनुकरणों पर ध्यान देना छोड़कर उनके नाम पर पुष्प पत्र चढ़ा कर या साल में एक बार संस्कार कराकर ही प्रसन्न होने लगे । जीवतों की पूजा ने मृतकों के श्राद्ध का रूप ले लिया । प्राचीन लोगों में श्रद्धा रखने से जाति का साहस और उत्साह स्थिर रह सकता है-किन्तु वह उसी दशा में यदि उनके प्रति जो भक्तिभाव है, वह अनुकरण के रूप में परिवर्तित हो । किन्तु यदि वह भक्तिभाव पानी डालने या ब्राह्मणों को भोजन देने के रूप में परिवर्तित हो जाय, तो जाति का अधःपात प्रारम्भ हो जाता है । जाति की क्रियाशीलता नष्ट हो जाती है और जहां क्रिया नहीं, वहां जीवन नहीं ।

यहां एक और कल्पना भी की जा सकती है । महाराज चन्द्रगुप्त के राज्य से कुछ पूर्व भारत में सिकन्दर का धावा हुआ था । सिकन्दर के साथ यूनानियों के बहुत रीति रिवाज़ भी भारत में आये । यद्यपि वे बहुत अधिक जड़ नहीं पकड़ सके, तो भी अपने अस्पष्ट चरण-चिन्ह तो छोड़ ही गये । यूनानियों के प्राचीन मत में देखते हैं तो हमें मरे हुए महापुरुषों की नियम पूर्वक पूजा के कई दृष्टान्त मिलते हैं । यूनानियों के धर्म का यह भी एक अंग था । असम्भव नहीं कि मृतकों को विशेष संस्कार से पूजा करने के भाव का बीज भारत में सिकन्दर के साथी ही बोगये हों ।

मानव-धर्म-शास्त्र तथा शासन पद्धति

महात्मा जी ने संक्षिप्त ग्रन्थ-माला प्रकाशित करनी प्रारम्भ की थी, उसका नवम और इस समय अन्तिम गुच्छक प्रकाशित हो गया है । इस गुच्छक में शासन-पद्धति के मूलसिद्धान्तों का वर्णन किया गया है । संक्षेप से सभी आवश्यक अंगों का वृत्तान्त आगया है । आर्य-भाषा में ऐसी पुस्तकों की बड़ी आवश्यकता है । सिद्धान्तों को कई सरल दृष्टान्तों से भली भांती समझाया गया है । मूल्य =)॥

गुरुकुल-समाज का शिक्षा-कार्य

यह जानकर आर्य्य पुरुषों को प्रसन्नता होगी कि आर्यसमाज गुरुकुल कांगड़ी का शिक्षासम्बन्धी कार्य खूब बढ़ रहा है । गत वर्ष उत्सव के अन्तिम दिन आर्य-पुरुषों ने कांगड़ी ग्राम में उस कार्य्य का एक नमूना देखा था । उस समय समाज की ओर से केवल दो पाठशालायें चलती थीं । इस समय दो और पाठशालायें स्थापित हो चुकी हैं, और तीसरी पाठशाला एक सप्ताह के भीतर चल निकलेगी । यह तो दिन की पाठशालाओं का कार्य है । शिक्षासमिति के पुरुषार्थी सभासद प्रो० सेवाराम जी के उद्योग से गुरुकुल

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भूमि में वहां के नौकरों के लिये पांच रात्रि पाठशालायें चलती हैं। कांगड़ी तथा सज्जनपुरे में भी दो रात्रिपाठशालायें चलती हैं। इस प्रकार शिक्षा समिति के सम्बन्ध में सात रात्रि पाठशालायें और चार प्रारम्भिक शिक्षाशालायें चल रही हैं। एक शिक्षा शाला अभी प्रारम्भ होने वाली है। एक समाज के लिये यह कार्य्य पर्याप्त हो—किन्तु शिक्षासमिति का लक्ष्य बहुत ऊंचा है। शिक्षा समिति अपने उद्योग को सारे ज़िले और प्रान्त में विस्तृत करना चाहती है। यह सारा कार्य अभी तक ग्रामों के निवासियों और गुरुकुल के कार्य्यकर्ताओं की आर्थिक सहायता से ही चल रहा है। आशा है अगले वर्ष शिक्षासमिति अपने उद्देश्य में और भी अधिक कृतकार्य्यता लाभ कर सकेगी।

आर्यकुमारसम्मेलन पर चिट्ठियां

लखनऊ के आर्य्य-कुमार-सम्मेलन की कृतकार्यता और अकृतकार्यता पर दो चिट्ठियां प्रकाशित हो चुकी हैं। इस विवाद को अब अधिक बढ़ाना निष्प्रयोजन है। हमारे पास आगरे से एक और महाशय ने सम्मेलन की अकृतकार्यता दिखाने वाली चिट्ठी भेजी है। उस में प्रायः वे ही बातें लिखी गई हैं, जो म० शालिग्राम जी की चिट्ठी में थीं। सम्मेलन के अधिवेशन के विषय में हमारी सम्मति वही है, जो हमने अपने राष्ट्रीय सप्ताह के वृत्तान्त वाले अंक में दी थी। सम्मेलन के मन्त्री जी ने जिस प्रसन्न और उदारदृष्टि से सम्मेलन की सफलता को देखा है, शायद दर्शक गण उस में तथास्तु नहीं कह सकते। हमारा भी यही ख्याल है कि कांग्रेस ने सम्मेलन को दबा लिया था। सम्मेलन के चुनाव की सूचना प्रतिनिधियों को न मिलने की शिकायत बहुत थी। हमें इस का स्वयं अनुभव नहीं। पर एक मज़ेदार बात हमें भी स्मरण है। दो वर्ष हुए प्रचारक का सम्पादक सम्मेलन का शायद कोषाध्यक्ष नियत किया गया था (हम ने शायद इसलिये लिखा है कि हमारे पास कोई नियुक्ति पत्र विद्यमान नहीं है। शायद उपाधि की याद में भी भूल हो गई हो) साल भर हम कोषाध्यक्ष रहे। उस सालभर में न हमें कोषाध्यक्ष होने की सूचना मिली, न कोई रजिस्टर आया, न आयव्यय का कोई पता लगा। हमें उस साल सम्मेलन के हिसाब का उतना ही ज्ञान था, जितना पायनियर के सम्पादक को होगा। जिस सम्मेलन ने उस साल अत्यन्त कृपा करके हमें अपना कोषाध्यक्ष बनाया था, उसी सम्मेलन ने अगले साल चुप चाप उससे भी अधिक कृपा करके हमें उस अधिकार से पृथक् कर दिया। हमें कोषाध्यक्ष बनने और पदच्युत होने के समाचार जनश्रुति से ही पता चले।

सम्मेलन के अधिकारियों से हमारा निवेदन है कि वे जनता की आवाज़ की उपेक्षा न करें। सम्मेलन की स्थिति को यथार्थ बनाना चाहिये और अन्य कान्फ्रेंसों की अपेक्षा भी कम तात्विक न होने देना चाहिये। आर्यजनता आर्यकुमारसभाओं से या सम्मेलन से जो आशायें रखती है, यदि कार्यकारिवृन्द उसे पूर्ण करेगा, तो वह सहानुभूति का पात्र होगा, अन्यथा भय है कि कहीं सम्मेलन के लिये अर्थोत्पन्न सहानुभूति समय के, रूखे प्रभाव से ही न मुरझा जाय।

मा० मालवीय जी का प्रस्ताव

'इम्पीरियल लेजिस्लेटिव कौंसिल, का अधिवेशन तीन महीने में एक बार अवश्य हुआ करे, और दिसम्बर से मार्च तक के समय में हर सप्ताह हुआ करे।' यह प्रस्ताव उसी कौंसिल में माननीय मालवीय जी ने पेश किया था। उस पर बड़ा विचार हुआ। विवाद हो कर प्रस्ताव का पूर्वार्ध स्वीकृत हुआ। प्रस्ताव के विरुद्ध बोलते हुए एक सरकारी अधिकारी ने कहा कि माननीय सभासद् [मालवीय जी] काम के भूखे हैं। वे चाहते हैं कि और लोग भी उन की भांति काम के बोझ से दबे रहें' कह नहीं सकते, सरकारी कर्मचारी का यह कथन केवल उपहास के भाव से किया गया था, या यथार्थ प्रशंसा के भाव से। यदि केवल उपहास था तो किसी को कोई वक्तव्य न होगा, यदि वस्तुतः उस सभासद् ने अपना मानसिक भाव प्रकाशित किया था तो हमें यह उत्तर है कि इंग्लैंड [illegible] प्रायः यही कहा करते हैं कि भारत में अंग्रेज़ कर्मचारी बहुत अधिक परिश्रम करते हैं, अपने कर्तव्य के नीचे बहुत अधिक दबे रहते हैं। इंग्लैण्ड में पार्लियामेंट का अधिवेशन महीनों तक बराबर चलता है, रोज़ नये नये प्रस्ताव पेश होते हैं फिर भी कभी कार्याधिक्य की शिकायत नहीं होती। भारत में इतने कम अधिवेशनों से ही सरकारी आदमियों का मर खाना उन के परिश्रमी होने का सबूत नहीं है।

युद्ध-पिशाच की सन्तोषदायक उन्नति

अमरीका भी युद्ध वैतरणी में कूदने के लिये किनारे पर खड़ा है और समय की प्रतीक्षा कर रहा है।

भारत से अन्य देशों को जाने वाले जहाज़ स्त्रियों तथा बालकों को नहीं लेजाते। लेडी मेस्टिन को इंग्लैण्ड जाने का पासपोर्ट नहीं मिला। युद्ध पिशाच की उन्नति सच मुच सन्तोष दायक हो रही है।

महात्मा जी का संन्यास और "प्रकाश"

दो सप्ताह हुए, सहयोगी प्रकाश ने महात्मा मुन्शीराम जी के संन्यास लेने के विचार को लेकर एक लेख लिखा था। लेख में सम्पादकमहोदय ने लिखा था कि महात्मा जी ग़ालबन गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर संन्यास लेंगे। सहयोगी के उस लेख से लोगों को दो एक भ्रम हो सकते हैं।

यह ठीक है कि महात्मा जी ने चतुर्थाश्रम में प्रवेश करने का दृढ़ संकल्प कर लिया है। इस के लिये वे चिरकाल से तय्यारी कर रहे थे। अन्तिम बन्धन गुरुकुल का था। इस वर्ष वह भी टूट गया। सभा ने महात्मा जी के स्थान में दूसरे उत्तराधिकारी अस्थिर रूप से चुन लिये हैं। गुरुकुल उत्सव ६ अप्रैल को समाप्त होगा। १० अप्रैल को वे गुरुकुल का कार्य्य अपने उत्तराधिकारियों को सौंप देंगे और ११ को गुरुकुल भूमि से चलदेंगे। उस के

पश्चात् जब उचित अवसर समझेंगे, तभी आश्रम बदल लेंगे। उत्सव के समय बदलने का उन का कोई निश्चय नहीं है। हम नहीं कह सकते, सहयोगी को यह 'शालबम सहित' समाचार कहां से मिला? और इतना आवश्यक समाचार देने से पूर्व उसने पक्का निश्चय क्यों न कर लिया?

११ अप्रैल से पश्चात महात्मा जी कब संन्यास लेंगे, यह अवस्थाओं पर निर्भर है। संन्यास लेने पर भी कुछ काल उनका विचार एकान्त वास करने का है। सम्भव है कुछ लोग महात्मा जी के आश्रम-परिवर्तन के संस्कार को भी उत्सव का एक भाग समझ बैठें, या गुरुकुलोत्सव में आते हुए इस संस्कार के देखने की भी इच्छा रखते हों। उन के भ्रम निवारणार्थ इतना लिखना आवश्यक था।

इस विषय में हम पत्र-सम्पादकों तथा अन्य सज्जनों से एक प्रार्थना करते हैं। महात्मा जी का यह कार्य लोकहितार्थ होगा, इसलिये इस में हर तरह की सहायता करना हमारा कर्तव्य है। इस समय सहायता यही है कि इस प्रश्न पर शान्ति धारण की जाय, पत्रों में या प्राइवेट तौर पर इस मामले को न उलझाया जाय। घटनायें जैसे बदलेंगी, उन्हें वैसे ही बदलने दिया जाय, यही हमारी सब से प्रार्थना है।

गुरुकुल-जन्मोत्सव

गुरुकुल-जन्मोत्सव का वृत्तान्त अन्यत्र मुद्रित किया जाता है। आज हम उस उत्सव को देख चुके और उस पर विचार भी कर चुके। दिल पर हाथ रख कर, आगे की अपेक्षा अधिक विश्वास से आज हम कह सकते हैं कि गुरुकुल कांगड़ी मानुषिक इच्छाओं का नहीं, परमात्मा की इच्छा का फल है। उसी जगन्नियन्ता की शुभप्रेरणा से बना है, उसी की आज्ञा का पालन करने के लिये इस की स्थापना हुई है, इसलिये यह स्थिर रहेगा। इस पर कितने ही वार हों, इसका कितना ही विरोध हो, यह नहीं हिलेगा। इस पर कोई घाव न होगा। परमात्मा इसके इसके हैं, उन्हीं का हाथ इसके भाग्यों का निर्माता है, फिर कौन सी शक्ति है, जो भगवान् के कार्य को हानि पहुंचा सके।

वीरतीज

२४ फरवरी को वीरतीज है। उस दिन ऋषिदयानन्द के कट्टर शिष्य, वैदिक धर्म के पक्के अनुयायी और धर्म के योद्धा आर्य्यपथिक लेखराम का देहान्त हुआ था। उस दिन उस वीर ने हमें मरते हुए भी जीने और जीते हुए भी मरने का भेद दिखलाया था। आज आर्य्यपथिक इस भूलोक पर नहीं हैं—तो भी वे जीते हैं, और हमारे हृदयों में जीते हैं। यह यश—जीवन उन्हीं को प्राप्त होता है, जो धर्म पर अपने तनमनधन को कुर्बान कर देते हैं। आर्य्यपथिक का जीवन स्वार्थत्याग निर्भयता और विश्वास का क्रियात्मक पाठ है। आर्य्य पुरुषों के और विशेषतया आर्य्य नवयुवकों के हृदयों में यह चरित घूमता रहना चाहिये।

स्वदेश में विदेशी

परमाइकेल ओड्वायर ने हुकम दिया है कि लोकमान्य तिलक पंजाब की भूमि पर पांव न धर सकेंगे। इसमें आश्चर्य क्या है? जिस युद्ध ने सभ्यतम जातियों को संग्राम के विषय में असभ्यतुल्य बना दिया, वही युद्ध लोगों को स्वदेश में भी विदेशी बना सकता है। लो० मा० तिलक के लिये पंजाब ही कैनेडा हो गया है।

अर्थशास्त्र का भाषानुवाद

पुस्तक समालोचना में पं० जयदेव विद्यालंकार का चाणक्य के अर्थशास्त्र पर एक लेख प्रकाशित हुआ है। इस में बताया गया है कि यह नया उपलब्ध ग्रन्थ कितने महत्व का है। इस पुस्तक के विषय में चाहे प्रो० कीथ आदि का यही विचार ठीक हो कि इसे चाणक्य ने नहीं उस के किसी शिष्य ने बनाया है तो भी ग्रन्थ का गौरव नहीं घटता। चन्द्रगुप्त के समय का नहीं तो बिम्बिसार के समय का बना हुआ ग्रन्थ भी कम महत्व का नहीं। एक विद्यालंकार महोदय इस का सरल आर्यभाषा में अनुवाद कर रहे हैं। अनुवाद शीघ्र ही प्रकाशित होगा। अनुवादक महोदय हमें सूचना देते हैं कि जो लोग इस ग्रन्थ के ग्राहकों में पहले से ही अपना नाम लिखालेंगे, उन से डाक मसूल न लिया जायगा। पत्र व्यवहार अनुवादक महोदय से गुरुकुल के पते पर या प्रचारक सम्पादक से किया जा सकता है।

—०—

पुस्तक समालोचना

वेद और वैदिक मुनि

(ले० प्रो० बालकृष्ण एम० ए०)

(२)

गत सप्ताह पाठकों के सामने स्वामी हरिप्रसाद जी की आस्तिक स्थिति रक्खी गई थी, किन्तु वह दिग्दर्शन मात्र था। इस लेख में भारत के प्राचीन ऋषि मुनियों के विषय में जो विचार स्वामी जी ने अपने ग्रन्थ में प्रकट किये हैं, उन का उल्लेख करना प्रथम अभीष्ट है। अधिक टीका टिप्पणी के विना ही स्वामी जी की पहिली बात यह है कि वह ऋषियों पर वेदों में मिलावट करने और उन की स्मृतिविभ्रंश होने का दोष देते हैं। स्वामी जी का वक्तव्य यह है कि हैं तो वे ऋषि, पर उन की स्मृति विभ्रष्ट हो जाती है, या वे जान बूझ कर ईश्वरीय ज्ञान वेद में मिलावट करते हैं,—"जिस की स्मृति ठीक न रही, अथवा जिसने अपनी इच्छा से अन्य प्रचलित मन्त्रों का समावेश कर लिया, उस की संहिता में मन्त्र न्यूनाधिक हो गए और पाठभेद भी हो गया।" [पृ० १०१]

फिर याज्ञवल्क्य ऋषि को दुष्टस्वभाव द्वेषवश दूसरों के लिए अपशब्द प्रयुक्त करने वाला कहा ही गया है किन्तु नित्य अनादि ईश्वरवाणी वेद में उस ने अपने मन्त्र बनाकर जहां तहां मिला दिये यह अपराध लगाना स्वामी जी का ही काम है। उन के वाक्य शब्द ये हैं—"इस के पीछे याज्ञवल्क्य ने अपने आराध्य देवता सूर्य भगवान् के प्रसाद से प्राचीन 'वरकाध्वर्यु संहिता' का अवान्तर विभाग तथा मन्त्रों का क्रमभंग कर और मन्त्रों के पाठ का कुछ व्यत्याय तथा उनके आदि, मध्य, अन्त में छोटे २ कल्पित मंत्रांश मिला कर एक विलक्षण नई संहिता निर्माण की।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यहीं तक ही याज्ञवल्क्य ऋषि पर बेईमानी का अपराध नहीं लगाया गया बल्कि उनका कथन है कि कृष्णयजुर्वेद में तो मन्त्र ब्राह्मण भाग मिले हैं ही पर शुक्लयजुर्वेद में ऋषि ने मिलावटें की हैं और ऐसी तरह से कि आगामी जनता न जान सके कि कोई मिलावट इस में कभी की गई है। "शुक्ल यजुर्वेद में अयात याम (अभूत पूर्व) बनाने के अभिप्राय से मंत्रों के मध्य में मिलाया तथा मंत्र सा बना दिया गया है, यह ब्राह्मण है, ऐसा लिखा नहीं" क्या याज्ञवल्क्य ऋषि को गिराने वाले इससे अधिक शब्द हो सकते हैं? आपने गोरे याज्ञवल्क्य को अच्छा काले दिल वाला बनाया है और काले को सफेद दिलवाला। "शुक्ल यजुर्वेद में जो ब्राह्मण भाग मिला हुआ है, वह पाठ मात्र से तो क्या, गहरी अन्वेषणा से प्रतीत नहीं होता।" यदि आप की गहरी गवेषणा भी ज्ञात नहीं कर सकती है कि शुक्ल में ब्राह्मण और मन्त्र कौन से हैं तो आप ने यह निश्चय कैसे किया कि यजुर्वेद में याज्ञवल्क्य ऋषि ने अपने मन्त्र कल्पना कर के मिला दिये, बल्कि ब्राह्मणों के टुकड़े भी इधर उधर से ले कर उन्हें भी मन्त्र रूप में देदिया? एक ओर तो आप अपनी अशक्ति प्रकट करते हैं और दूसरी ओर ऋषि पर बेईमानी का अपराध लगाते हैं। इस पर फिर भी आप लिखते हैं "याज्ञवल्क्य ने यजुर्मंत्रों और ऋग्मंत्रों का संग्रह तथा उन के साथ स्वाहा शब्द का सम्बन्ध कर के संहिता को संहिता और पद्धति, दोनों के लक्षण से बाहर कर दिया है। चाहे याज्ञवल्क्य ने अपनी बुद्धि से आर्यजनता के लिए यह उपकारी कृत्य किया है, परन्तु दूरदर्शी बुद्धिमान् उस के इस कृत्य की प्रशंसा नहीं करसकते ऐसा कृत्य करने से भी ब्राह्मण ग्रन्थों-कल्प सूत्रों तथा पद्धतियों की आवश्यकता ज्यूं की त्यूं बनी हुई है।" यह तो सोने पर सुहागा है।

स्वामी जी महाराज यह बताइये कि यह बुद्धिमान् महाशय कौन से हैं जिन का यह मन्तव्य है कि याज्ञवल्क्य संहिता में ऋचा मंत्र, स्वाहा शब्द तथा छोटे २ अर्वाचीन काल्पनिक मंत्रांशों को छोड़ कर शेष सब यजुर्मंत्र प्राचीन हैं।" यही कारण है कि आप यजुर्वेद के १०१८ मन्त्र मानते हैं वेदों का जैसी संस्करण तो आप शीघ्र तय्यार करेंगे ही। क्योंकि आप के मत में।

अथर्ववेद के ६०० मन्त्र हैं,
यजुर्वेद के १०१८ "
सामवेद के तो ७८ "

कुल १६९६ मन्त्रों का छोटा सा गुटका अब शीघ्र तय्यार होगा। पर हमारी समझ में यह नहीं आया कि आप शुक्ल को कृष्ण के बराबर दर्जा देते हुए बल्कि कृष्ण से भी निचले दर्जे का सिद्ध करके फिर उसे प्रामाणिक क्यों मानते हैं! आप के यह शब्द विस्मयिकारक हैं—"वैदिक सिद्धान्त में वाजसनेयी संहिता ही प्रमाण है, तैत्तिरीयसंहिता प्रमाण नहीं।"

क्यों स्वामी जी! एक ओर तो आपने अपने ग्रन्थ के चवालीस पृष्ठों में शुक्ल यजु० की न्यूनता व नीचता और उनके संग्रह कर्त्ता याज्ञवल्क्य के प्रक्षेप करने की हार्दिक निन्दा की है किन्तु दूसरी ओर उसी वेद को प्रमाण मानते हैं। यह किस के भय से? क्या आप अपनी पुस्तक के ये शब्द भी भूल गए थे:—

"आप तैत्तिरीय संहिता को सामने रखकर वाजसनेयी संहिता का आदि से अन्त तक पाठ कर जायं, आप को स्वयं विदित होजायगा कि ऋषि याज्ञवल्क्य ने यजुर्वेद के मंत्रों में कितना व्यर्थपद प्रक्षेप करके उनको नए (अयात याम) समझने की चेष्टा की है, और उन के क्रम का विपर्य्यास करने तथा उन के साथ ब्राह्मण वाक्यों का सम्बन्ध जोड़ने में कितना प्रयत्न किया है। कोई बुद्धिमान यह परिणाम कदापि नहीं निकाल सकता कि अमुक संहिता का मंत्र पाठ तथा मंत्र क्रम युक्त और अन्य सब अयुक्त हैं। १४० पृष्ठ।"

स्वामी जी? आप पूर्व कह चुके हैं कि याज्ञवल्क्य ने प्रक्षेप करने में ऐसी चतुराई दिखाई है कि गहरी अन्वेषणा से भी ज्ञात नहीं होसकता है कि [illegible] भाग कौनसा है। [illegible] को भी मन्त्र और ब्राह्मण और [illegible] यजुर्वेद में प्रतीत होने लगता है। [illegible] प्रक्षेप है और उस में ब्राह्मण भाग [illegible] हुआ है—इस की समालोचना तो [illegible] गामी लेखों में होगी पर यहां पर [illegible] के सामने एक अंग्रेज़ की सम्मति [illegible] लता हूं। ज़रा पादरी फिलिप्स के [illegible] वाक्यों पर भी ध्यान दीजिए। "[illegible] इस के कि ब्राह्मण ग्रन्थों की एक [illegible] भी बनाई गई हो, वे चार संहि[illegible] पूर्णतया समाप्त हो चुकी थीं और [illegible] का यही रूप था जो उन का अब [illegible] मंत्रसंहिताओं की समाप्ति और ब्रा[illegible] ग्रन्थों की रचना काल में दीर्घ काल [illegible] अन्तर है—यह कथन इस सत्य से [illegible] कट है कि ब्राह्मण ग्रन्थों के कर्त्ता [illegible] के अर्थों के समझने में प्रायः असमर्थ [illegible]

(Teaching of the Vedas by Philipo-

आप अंग्रेज़ की साक्षी का तिर[illegible] इन शब्दों से करदेंगे कि यह लोग [illegible] स्कृत ही क्या जानते हैं जो अ[illegible] बातों को समझ सकें किन्तु क्या [illegible] सत्य नहीं कि ब्राह्मण ग्रन्थों ने [illegible] के कर्मकाण्ड प्रतिपादक अर्थ कर के [illegible] के अध्यात्म अर्थों को 'गौण कर [illegible] ब्राह्मण ग्रन्थ वेदों की अपेक्षा [illegible] अर्वाचीन हैं तो फिर वेद में ब्राह्मण [illegible] के शब्दों का प्रक्षेप कैसे हो [illegible] ता है? हां, याज्ञवल्क्य जैसे बेईमान [illegible] आप के कथनानुसार प्रक्षेप कर [illegible] हैं और उसने ऋग्वेद ब्राह्मण ग्रन्थों [illegible] उस समय के प्रचलित वाक्यों तथ[illegible] पने मन घड़ंत वाक्य बना कर [illegible] मन्त्रों के साथ ऐसा मिला दिय[illegible] आप के अतिरिक्त अन्यों के लि[illegible] करना कठिन हो रहा है—मन्त्र [illegible] विवेक की विधि के आविष्कृत क[illegible] सौभाग्य आप को प्राप्त हुआ है [illegible] देखे कि यह कब तक आप का [illegible] देता है।

—०—

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक दैनिक निकला करेगा। उस में [illegible] के सबे २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार छपा करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार [illegible] ही जानने का शौक हो—उन्हें इस पत्र के दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। मूल्य इस दैनिक एक पैसे में बिकेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ॥) के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनीआर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में अपना नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:o:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

१] गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
२] वैदिक—ईश्वर—वाद

इन विषयों के लेखकों के लेख आ रहे हैं। ।) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

कौटिल्य का अर्थ-शास्त्र

(ले० पं० जयदेव शर्मा विद्यालंकार)

वर्तमान में संस्कृत साहित्य की प्राचीन हस्तलिखित पुस्तकों की गवेषणा करते २ बहुतसी अपूर्व पुस्तकें भी हस्तगत हुई हैं—जिनके प्रकाशित होने से एक अपूर्व चमत्कार होता प्रतीत होता है। राजनीति विषयक अपूर्व ग्रन्थ वर्तमान में मद्रास के विद्वान् शाम शास्त्री ने हाल ही में सम्पादन किया है जिसका नाम "कौटिलीय अर्थ-शास्त्र" है। धर्मशास्त्र मन्वादि उपलब्ध होते थे, कामशास्त्र वात्स्यायन भी प्राप्त था, मोक्षशास्त्र वेदान्तादि व्यासादि महर्षिप्रणीत भी प्राप्त थे; परन्तु अभी तक अर्थशास्त्र अप्राप्त था, सो पं० शाम शास्त्री ने इस अपूर्व ग्रन्थ को प्रकाशित करके बड़ा ही लोकोपकार किया है। इससे अर्थ-शास्त्र भी सुप्राप्य हो गया। अब इस के प्राप्त होने से चतुर्वर्ग साधन सुलभ हो गया।

इस अर्थ-शास्त्र की चर्चा प्राचीन साहित्य के नाना ग्रन्थों में पाई जाती है। कवि दण्डी ने इस के विषय में यह लिखा है:—

"अधीष्वतां बहुदण्डनीतिम्। इयमिदानीमाचार्य विष्णुगुप्तेन मौर्यार्थं षड्भिः श्लोकसहस्रैः संक्षिप्ता सैवेयमधीत्य सम्यगनुष्ठीयमाना यथोपकर्मलभेति।"

अर्थात् चन्द्रगुप्त मौर्य को पढ़ाने के लिये आचार्य विष्णु गुप्त ने ६००० श्लोकों में दण्डनीति या अर्थ-शास्त्र को संक्षेप में प्रतिपादन किया है। इस के पढ़ने से और इसके अनुकूल ठीक कार्य करने से सब कार्य ठीक होते हैं। इस से यह चाणक्य या कौटिल्य या विष्णु गुप्त इसका कर्त्ता है और यह चन्द्रगुप्त के जमाने का है अर्थात् ईसासे २७२ वर्ष पूर्व का बना हुवा यह ग्रन्थ है।

यह भी सुना जाता है कि ईसा के पहले बालिद्वीप में आर्य लोग गये वहां कामन्दकीय नीतिसार की उपलब्धि होती है। कामन्दक चाणक्य का शिष्य था—यह कामन्दक ने स्वतः अपने ग्रन्थ में स्वीकार किया है। इसी वर्तमान में उपलब्ध कामन्दक में भी चाणक्य के लिये लिखा है:—

नीतिशास्त्रामृतं धीमान् अर्थशास्त्रमहोदधेः
समुद्धे नमस्तस्मै विष्णुगुप्ताय वेधसे॥

अर्थशास्त्र रूपी समुद्र से नीतिशास्त्र रूपी अमृत को जिसने निकाला उस विष्णुगुप्त रूप विद्वान् ब्रह्मा को मैं नमस्कार करता हूं पञ्चतन्त्र में भी—

नमस्ते सारस्वते कामं पराशरपराशर वसुपाय
चाणक्याय च विदुषेनमो
अस्मन्नय शास्त्रक दृभ्यः॥

इस प्रकार मनुस्मृति व्याख्याकार तथा चाणक्य इन नीतिशास्त्र के प्राचीन प्रणेताओं को नमस्कार किया है। इसी प्रकार अन्य में भी "धर्मशास्त्राणि मन्वादीनि, अर्थशास्त्राणि चाणक्यादीनि, कामशास्त्राणि वात्स्यायनादीनि इति" यह लिख कर इसका प्रमाण देदिया कि कौटिलीय अर्थ-शास्त्र पञ्चतन्त्र के समय भी प्रचलित था। बहुतों का अनुमान है कि पञ्चतन्त्रकार विष्णुशर्मा तथा अर्थशास्त्रकार चाणक्य या विष्णुशर्मा और चन्द्रगुप्त का महामन्त्री, राज्य दिलाने वाला चाणक्य, ये एक ही व्यक्ति हैं। भिन्न नहीं। जैन ग्रन्थ में भी नीतिशास्त्र की निन्दा करते हुए नन्दिसूत्र में लिखा है।

"अणुजोगदारचूर्ण, चाणक्कं चेव भूलभद्दं च"
"चाणक्यः अमात्यपुत्रः चाणक्यश्चैव स्थूलभद्रश्च" इसी प्रकार "भारहरामायणं भीमासुरक्खं कोडिल्लियम्" "भारत रामायण भीमा सुरोक्तकौटिलीयकादि" ये सब मिथ्या शास्त्र बता कर निन्दा की है। इस में कौटिलीय शास्त्र इसी अर्थ शास्त्र का वाचक प्रतीत होता है।

मल्लिनाथ प्रसिद्ध टीकाकार ने भी रघुवंशादि की टीका करते हुए बहुतसी पंक्तियें इसी ग्रन्थ शास्त्र की उद्धृत की। जैसे—

"क्रियाद्रव्यं विनयति जा
द्रव्यम्।" इत्यादि

अर्थ शास्त्र के स्वतः देखने से भी यही प्रतीत होता है कि यह अर्थशास्त्र चाणक्य ने ही बनाया है क्योंकि वहीं आत्मोत्कर्ष के अन्त में लिखता है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Harjdwar, Digitized by eGangotri

सर्वं शास्त्रं प्रयुज्यैतत्
प्रयोगमुपलभ्य च ।
कौटिलेयेन चण्डेन
शास्त्रस्य विधिः कृतः ॥

सर्व शास्त्रों को देख भालकर उनका प्रयोगादि देखकर कौटिल्य ने यह राजा के लिये शास्त्र विधान किया है। इसी प्रकार ग्रन्थ की समाप्ति में—

येन शास्त्रं च शस्त्रं च
नन्दराज्य गता च भूः ।
अमर्षेणोद्धृतान्याशु
तेन शास्त्रमिदं कृतम् ॥

जिसने शस्त्र और शास्त्र और नन्दराज्य का देश कोष में आकर उद्धरण किया था, उसी ने यह शास्त्र बनाया है।

मुद्राक्षि प्रतिपत्तिं बहुधा
शास्त्रेषु भाष्य कारणां ।
स्वयमेव विष्णुगुप्तः
चकार सूत्रं च भाष्यञ्च ॥

शास्त्रों में भाष्य कारों के विरोध देखकर विष्णु गुप्त ने स्वयं सूत्र और भाष्य दोनों ही किये हैं।

इसी प्रकार अनुक्रमणिका के अन्त में:—

मुखग्रहणसिद्धयं तत्त्वार्थं पदनिश्चयम् ।
कौटिल्येन कृतं शास्त्रं विमुक्त ग्रन्थविस्तरम्

कौटिल्यन ने ऐसा शास्त्र बनाया है जो लम्बा चौड़ा न होने से सुलभता से धारण किया जा सकता है और जिस के तत्व अर्थ और पद भी निश्चित ही हैं।

विवेचक दृष्टि से देखने से यह भी प्रतीत होता है कि इस ग्रन्थ का कर्ता ही आचार्य वात्स्यायन था जिस ने कि न्याय सूत्रों पर प्रौढ़ भाष्य किया है। क्योंकि दोनों ग्रन्थों की भाषा स्वभा बहुत ही मिलती है। और न्याय के प्रथम सूत्र के आरम्भ में ही "सत्तेषां विद्याः" इस प्रकरण का सम्पूर्ण उद्धरण अर्थशास्त्र में भी है। और आन्वीक्षकी के विषय वात्स्यायन में—

"प्रदीपः सर्व विद्यानां सुपायः सर्वकर्मणाम्
आश्रयः सर्वधर्माणां विद्योद्देशे प्रकीर्तिता"

लिखा है।

यह पद्य ज्यों का त्यों अर्थशास्त्र में है। और "विद्योद्देशे प्रकीर्तिता" इस से और भी स्पष्ट हो जाता है कि अर्थशास्त्र के विद्या समुद्देश प्रकरण में यह गया है। यदि भिन्न ग्रन्थकार होते तो यह उस ग्रन्थ का नाम अवश्य देते परन्तु यह स्वयं एक ही हैं अतः केवल प्रकरण का नाम लेदिया है। यही पक्षिल स्वामी के नाम से प्रसिद्ध हुये हैं।

कतिपय पाश्चात्य विद्वान इस को देख कर अज्ञान वश यह कहते हैं कि कौटिल्य सम्प्रदाय का यह सान्प्रदायिक ग्रन्थ है एक विशेष चाणक्य का बनाया हुआ नहीं है। क्योंकि उसमें आचार्य विशुद्धान्त का निर्णय करते हुये वे कहां अन्य शास्त्रकारों का उद्धरण देते हुए लिखते हैं—इतिभारद्वाजः; इतिविशुनः-इतिबातव्याधिः इत्यादि इसी प्रकार लिखते हैं "नेतिकौटिल्यः"

इस से कौटिल्य भी शास्त्रकार से पृथक हैं। परन्तु यह उनका भ्रम तथा मिथ्या ज्ञान है। क्योंकि प्राचीन शास्त्रकारों की यही शैली है। जैसे महाभाष्यकार पतञ्जलि लिखते हैं कि "गोनर्दीयस्त्या, ह" अर्थात् "मैं गोनर्द देशवासी इस प्रकार कहता हूं।" और भी कि इसमें "इत्याचार्याः" इस प्रकार ग्रन्थ कारने अपने गुरु के उद्धरण को दिखाने के लिये लिखा है अतः यह भी संगत नहीं। और शास्त्र के बीच के तथा अन्त के उद्धृत श्लोकों में तो ग्रन्थकार ने स्वतः स्वीकार कर लिया कि यह स्वयं ग्रन्थकार है।

इस शास्त्र के पढ़ने से यह भी प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में बहुत से अर्थ शास्त्रकार हुए हैं क्योंकि यही लिखता है:—

"पृथिव्यालाभे पालने च यावन्ति अर्थशास्त्राणि पूर्वाचार्यैः प्रस्थापितानि प्रायशस्तानि संहृत्यैकमिदमर्थशास्त्रं कृतम्॥ पृथिवी की प्राप्ति और रक्षा करने के विषय में जितने अर्थशास्त्र प्राचीन पूर्व आचार्यों ने बनाये थे प्रायः सब को संगृह करके यह अर्थशास्त्र बनाया है।

इस अर्थशास्त्र में यह निम्नलिखित बहुत पूर्व आचार्य देखे जाते हैं। पाराशर दीर्घनारायण पिशुन कौणपदन्त बातव्याधिः। बाहुदन्तीपुत्र, विशालाक्ष, भारद्वाज, और इनके आचार्य तथा बृहस्पति। पाराशर के विषय में कभी एक वचन तथा कभी बहु वचन दोनों का प्रयोग दीखता है। इति पराशरः। इति पाराशराः। अर्थात् कभी—पराशर के उद्धारण है तो कभी पराशर का पिशुन कौणपदन्त तथा बाहुदन्तीपुत्र का ब्राह्मणों तक में वर्णन, देवताओं के गुरु बृहस्पति भी पुराण तथा ब्राह्मण तक में बहुत प्रसिद्ध हैं। इनकी स्मृति भी उपलब्ध होती है। उशना भी पुराणादि ही हैं इनका शुक्रनीतिसार उपलब्ध है जिसको देखकर प्रायः सभी देश तथा विदेश भारतीय प्राचीन राज्य प्रणाली देखकर चकित हैं।

बातव्याधि उद्धृत का नाम है वे भी बहुत बड़े नीतिज्ञ हुए हैं। महाभारत में प्रसिद्ध कृष्ण के छोटे भाई हैं। आप दूसरे सर्ग में भी—"प्रायेण पवन व्याधिर्नरमुत्तरपक्षताम्" ॥१५॥ पवन व्याधि यावात व्याधि से उद्धृत का ही निर्देश है भारद्वाज और विशालाक्ष इन दोनों शास्त्रकारों का थोड़ा सा शास्त्र प्रकरण यशस्तिलक चम्पू के बनाने वाले सोमदेव सूरि भी उद्धृत किया है।

"अवक्षेपेण हिंसता मंत्रां प्रग्रहेण च ।
तथा सत्वेष्वनिद्रोहाद् धर्मस्य प्रकाशना

विनाननाच्च मान्यानां
विश्वस्तानांच घातनम् ।
प्रधानां त्यागलोपो नृपते श्चायुषाश्रयः

"कथमिद मभिधत्तेऽहु
रयमस्तार्थे भारद्वाजः ।"

ये उपरोक्त दोनों पद्य भारद्वाज आचार्य के बनाये हुये अर्थशास्त्र के बाह्यण प्रकरण में आते हैं। इसी को लाया लेख चाणक्य ने भी अपने आर्य शास्त्र कौटिलीय अर्थशास्त्र के बाह्यण्य प्रकरण में "अवक्षेपेण हिंसता मंत्रां प्रयुंजते च" लेकर ६ श्लोक उद्धृत किये हैं। इसी साथ ही सोमदेव सूरि ने विशालाक्ष वचन उद्धृत किये हैं।

"चातुर्मास्ये स्वर्णमासिकम्, दर्शपूर्णमासयो श्चातुरात्रिकम्, राजनक्षत्रे गुरुपर्वणि चैत्रीरात्रिकम् एवमन्यानुचो बहूनतिथिषु द्विरात्रमेकरात्रं वासवैवाधाचोद्यप्रायुर्बलवद्व्यवधं मित्तिकयज्ञनिपदि बदतिस्म विशालाक्षः ॥" (चतुर्थ आश्वास:)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उपनिषद् प्रकरण नीतिशास्त्र या अर्थशास्त्र का ... एक आवश्यक प्रकरण है ... परन्तु काव्य के लोकोत्तर ने उपनिषद् के ... विषय में ... अलङ्कृत है। वि... का ... नाम प्रभाकर ऋषि बतलाया है। अर्थशास्त्र में भी सब से अन्तिम अधिकरण औपनिषदिक अधिकरण ही है। देवी भागवत में भी विशालाक्ष को विष्णु का अवतार लिखा है।

इस प्रकार प्राचीन अन्य अर्थशास्त्रकारों के ग्रन्थ यद्यपि उपलब्ध नहीं हुए तथापि इस एक इतिहास प्रसिद्ध अर्थशास्त्र के उपलब्ध होने से सब ग्रन्थकारों के नाम चमक गये।

—०—

संस्कृत साहित्य सम्मेलन

१० फरवरी के दैनिक भारत मित्र में उपरोक्त शीर्षक का एक समाचार प्रकाशित हुआ था—और वृत्तान्त के नीचे सम्मेलन के संयुक्त मंत्री—श्री हरिहर स्वरूप शर्मा जी ने यह लिखा था—

[नोट—अन्य समाचार पत्रों को भी यह सुसंवाद कृपा करके अपने पाठकों तक पहुंचाना चाहिए]

सो अब हम मंत्री जी की आज्ञानुकूल सद्धर्मप्रचारक के पाठकों के लिए वह सुसंवाद यथा तथ्य उद्धृत करते हैं।

"गत ४ फरवरी रविवार को १ बजे लाहौर [लाहौर] के माननीय रा० ब० रामशरणदास सी० आई० ई० की लाल कोठी में भा० सनातन धर्म्म सम्मेलन के अर्थ सम्मिलित हुई सभा के साथ ही दूसरे कमरे में संस्कृत साहित्य सम्मेलन के चतुर्थ अधिवेशन के प्रबन्ध आदि का विचार करने के उद्देश्य से म० म० पं० शिवदत्त जी के 'सभापतित्व' [सभापतित्व—क्या ठीक] में एक विचार सभा हुई। म० म० पं० हरनारायण शास्त्री प्रोफेसर गुलबहारसिंह [क्या संस्कृतोचितनाम है] एम० ए० पं० ईश्वरीदत्त शास्त्री बी० ए० सन्त गोकुलचन्द्र शास्त्री प्रभृति [प्रभृति-] विद्वान् उपस्थित थे। आरम्भ में श्री हरिहरस्वरूप शर्मा ने संस्कृत साहित्य सम्मेलन की कृपावना और पहिले अधिवेशनों आदि का इतिवृत्त सुनाते हुए इस वर्ष 'महासम्मेलन' [महासम्मेलन क्या विचित्र भूत है] के साथ ही 'लाहौर में ने... सका' [लाहौर में इसका—क्या बढ़िया संयोजन है] भी चतुर्थ अधिवेशन करने का प्रस्ताव उपस्थित किया। उपस्थित सभ्य मंडली ने सहर्ष अनुमोदन और समर्थन किया और सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ। इसके पश्चात् निश्चय हुआ कि स्वा० का० समिति गठित की जाय और तदनुसार निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

१—सभापति—मि० ए० सी० वुलनट' [बूलनर] एम० ए० रजिस्ट्रार पञ्जाब यूनिवर्सिटी।

२—उपसभापति—म० म० पंडित शिवदत्त दाधीच पं० गणेशदत्त शास्त्री और पं० दुर्गादत्त जी शास्त्री—

३—मंत्री—प्रोफ़ेसर गुलबहारसिंह [समझ में नहीं आता कि यह नाम संस्कृत साहित्य के अनुकूल है वा उर्दू साहित्य के मुताबिक—खेद तो इस बात का है कि इतने संस्कृत के धुरंधर विद्वान् एकत्र हुए किन्तु किसी ने मंत्री जी के इस नाम की निरुक्ति न की—सम्भव है कि सम्मेलन के समय नाम का शुद्ध संस्करण होजावे—जहां कि—मैक्समूलर का मोक्षमूलक होना सम्भव है तो वहां—गुलबहारसिंह का गणेश विहारी सिंह क्यों नहीं होजाता] एम० ए० एल० बी०।

४—सहकारी मन्त्री—पं० रामरंग शास्त्री और 'रक्षित' [पण्डित—सम्भव है कि यह व्याकरण से सिद्ध होसकें]

उपस्थित सज्जनों ने स्वा० का० समिति का सदस्य होना स्वीकार किया—पञ्जाब प्रान्त' के सभी संस्कृत सेवी और प्रेमी इसके सभ्य हो सकते हैं [परन्तु इस बैठक में डी. ए. वी. कालेज के पंडित गण सम्मिलित नहीं हुए न जाने क्या कारण है] सभापति के चुनाव पर संस्कृतानुरागियों को अभिमत प्रकट करने चाहिये।

पाठक गण! देखा आपने इस छोटे से सूचना समाचार में-स भापतित्व-प्रभृति म सम्मेलन लन लाहौर मैनेजर की कुलाट और कब से बढ़कर रक्षित कैसे २ गूढ़ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया गया है—क्या यह संस्कृत साहित्य का नमूना है व प्रेस के भूतों की करतूत-अथवा संशोधकों का चमत्कार—मैं हूं देख कर पढ़ने वाला

—०—

गुरुकुल में जन्म दिवस

(संवाद दाता से)

गत ८ फाल्गुन को गुरुकुल का जन्मदिवस था। आज के दिन आर्य्यजनता के कुछ एक महानुभावों ने गुरुकुल रूपी वर्तमान विशाल कल्पतरु का बीज गङ्गा के तट पर इस तपोवन में बोया था जो कि कुछ ही वर्षों में अंकुरित होकर आज कल अपने फलों और पुष्पों के लिये इतना अधिक विख्यात हो रहा है। आज उसे लगे हुये १३ वर्ष समाप्त हो चुके और चौदहवां वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। यह दिन गुरुकुल में बड़े समारोह के साथ मनाया गया। गुरुकुल के प्रत्येक विद्यार्थी अध्यापक और उपाध्याय के हृदय में खुशी की बड़ी गांठ बनाने के लिये अपूर्व हर्ष आनन्द और उत्साह था। जन्मदिवस की सभा के लिये महाविद्यालयाश्रम के आंगन में एक मण्डप लगाया गया था और उसे वेदमन्त्रों झंडियों और फूलों द्वारा खूब अच्छी तरह से सजाया गया था। प्रातः काल ठीक सवासात बजे परमात्मा की प्रार्थना के साथ सभा प्रारम्भ हुई। परमपिता परमात्मा से प्रेम और शान्ति के लिये प्रार्थना की गई और फिर सब ने मिलकर कुलवन्दना का गीत गया। गीत गाने के पश्चात् ब्र० अमीचन्द्र और ब्र० विद्यारत्न ने अपने २ निबन्ध पढ़े जिन में भारत की भूत और वर्तमान दशा को बड़ी ललित भाषा में दिखाते हुए इस बात को दिखाया गया था कि भारत के भविष्य को सुधारने के लिए गुरुकुल जैसी संस्थाओं की बड़ी भारी आवश्यकता है। इस के बाद ब्र० धर्मदेव ने बड़ी योग्यता पूर्वक इस बात को सिद्ध करने का प्रयत्न किया कि गुरु कुल गुरु और शिष्य के पारस्परिक सम्बन्ध के कारण आचार की विशेषता के कारण और सादे जीवन के कारण भारत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में एक अद्वितीय और लाभदायिनी संस्था है। इस के बाद ब्रह्मचारी राजेन्द्रश्रव ने गुरुकुल के स्नातकों और विद्यार्थियों के सामने इस बात को पेश किया कि बाहिरी शिक्षा क्योंकि मातृभूमि के लिये किसी प्रकार से भी लाभदायक नहीं है अतएव हमारा कर्तव्य होना चाहिये कि हम स्थान २ पर गुरुकुल सी संस्थायें खोल कर इस की शिक्षा को सस्ती और विस्तृत करें।

इस निबन्ध के बाद ब्रह्मचारियों ने एक अभिनन्दन पत्र द्वारा मुन्शी अमनसिंह जी का सत्कार किया। जिस समय गुरुकुल को खोलने का विचार हुआ था उस समय दानवीर मुन्शी जी की ही उदारता थी जिस ने कुलरूपी कल्पतरु को बोने के लिए भूमि प्रदान की थी। आज उनकी भूमि में यह वृक्ष बहुत कुछ बढ़ा हुआ है और बड़े उत्तम २ फल देने लायक हुआ है। इस लिए कुलवासी ब्रह्मचारियों की इच्छा थी कि वे किसी न किसी प्रकार उनके सामने अपने कृतज्ञता के हार्दिक भाव को प्रकट करें। इस के लिए उन के आने पर ब्रह्मचारियों ने खड़े होकर उन का स्वागत किया और एक अभिनन्दन पत्र सब के बीच में सम्मान सहित पढ़कर उन्हें अर्पित किया। इस की उत्तर में उन्होंने ब्रह्मचारियों को चिरायु और विद्यावान् होने के लिए आशीर्वाद दिया।

इस अभिनन्दन के बाद ब्र० देवेश्वर ने अपनी ओजस्विनी भाषा में बताया कि संसार वास्तविक उच्च मानसिक शिक्षा को जिससे मनुष्य के सब मानसिक विचार और शारीरिक चेष्टायें पवित्र हों, भूला हुआ है। यही कारण है कि इस में अशान्ति है। गुरुकुल उस अशान्ति को दूर करने का प्रयत्न है। अतएव उन्होंने बतलाया कि गुरुकुल के आचार्यों और आचार्य के सहकारियों से प्रार्थना है कि वे हम कुल पुत्रों की वृत्तियों को उचित मार्ग पर चलाने के लिए यथाशक्ति और भी अधिक प्रयत्नशील हों। इस व्याख्यान के उपरान्त ब्र० धर्मदत्त ने बतलाया कि गुरुकुल का उद्देश्य श्रेष्ठ आचार वाले भारतीय ब्रह्मचारियों को पैदा करना है। उन्होंने कहा कि इस में से पहिले भाग की अब तक बहुत व्याख्या हो चुकी है। मेरा वक्तव्य इतना ही है कि हमें अपने में भारतीयता पैदा करने के लिये भारत के प्राचीन साहित्य की उन्नति में विशेष तौर से ध्यान देना चाहिये। इस वक्तृता के अनन्तर ब्र० सत्यानन्द का भाषण हुआ उन्होंने कहा कि अबतक गुरुकुल की बड़ीभारी विशेषता भुलाई गई है और वह वेदों का रहस्य खोलना है। अन्त में उन्हों ने कहा कि मैं इस के लिये गुरुकुल स्नातक और उपाध्यायों का बहुत ही कृतज्ञ हूं जो कि हमारे लिये इस विषय में इतने ध्यानशील रहते हैं और आशा करता हूं कि वैदिक जीवन से चमकते हुवे और प्रेमसूत्र में बन्धे हुवे हम भारत के वक्षःस्थल का शोभायमान हार बन सकेंगे। इन आशामय शब्दों के बाद एक मनोहर भजन हुआ और उपरान्त स्नातक बलभद्र जी का भाषण हुवा। उन्हों ने कहा कि यदि मान भी लिया जावे कि गुरुकुल के स्नातक अकृतकार्य रहे हैं तो भी समूहरूपेण गुरुकुल ने जाति के सामने स्वावलम्ब और स्वतन्त्रता का एक ऐसा उदाहरण रखा है जो कि जाति के लिये बड़े ही गौरव और अभिमान का चिन्ह है। इस के बाद गुरुकुल के मुख्याध्यापक जी ने इस नववर्षारम्भ के लिये अपना हर्ष और आनन्द प्रकट किया और कहा कि जब कोई भी कुल-पुत्र किसी भी कारण से कुल से जुदा होता है तो मेरे हृदय में अलक्ष्य वेदना होती है। ऐसी ही सब के हृदयों में भी होती होगी अतएव हम सब को अपने प्रेम बन्धन को ऐसा दृढ़ करना चाहिये कि इस से कोई भी कुल पुत्र कभी भी न छूट सके। इस के बाद एक गीति के अनन्तर गुरुकुल के भण्डारी शालिग्राम जी ने गुरुकुल के इतिहास को सुनाते हुवे कहा कि भारतमाता महर्षि के उपचार से रोगमुक्त हो चुकी है किन्तु अभीतक उस की कमजोरी नहीं गई; उसे दूर करना ही गुरुकुल के स्नातकों का कार्य है, इसी में उन्हें तत्पर होजाना चाहिये। भण्डारी जी के बाद उपाध्याय महेशचरणसिंह जी ने कहा कि गुरुकुल के उद्देश्य के विषय में मेरे पहले भिन्न २ विचार थे किन्तु अब मेरा दृढ़ विश्वास है कि गुरुकुल का उद्देश्य अच्छे वेदवक्ता उपदेशक तैयार करना ही है और इसी में ही देश का कल्याण है। इसके बाद स्नातक चन्द्रमणि जी ने कर्मसिद्धान्त पर विश्वास रखते हुये अपने सफल होने का निश्चय कराया। तदुपरान्त प्रो० सेवाराम जी ने जनरल बूथ के एक चित्र के आधार पर उत्तमतया संसारसागर की दुःखमयस्थिति का वर्णन किया और फिर हाथ उठा कर उपस्थित सज्जनों से प्रतिज्ञायें करवाईं कि वे आज के दिन के उपलक्ष्य में अपने हृदयों को परमात्मा की भेंट कर देंगे और कुछ न कुछ समय आत्मसुधार और परोपकार में लगावेंगे। इसके पीछे सुलतान से आये हुये मा० विद्यारत्न जी ने अपने सम्मिलित होने पर प्रसन्नता प्रकट की और स्नातक बुद्धदेव जी ने बताया कि हमारा उद्देश्य निरे वेदवक्ताओं का पैदा करना ही नहीं प्रत्युत ऐसे पुरुषों को पैदा करना है जो कि वेदवक्ता हों और साथ ही साथ ऐसे भी हों जिनका जीवन वेदमय हो। इसके बाद पं० जयदेव जी ने वर्तमान फेशन के विरुद्ध आवाज़ उठाई और कहा कि गुरुकुल वास्तव में तब कृतकृत्य समझा जावेगा जब कि यह संसार में प्राचीन ऋषि आश्रमों के दृश्यों को ला सकेगा। पंडित जी के बाद म. लक्ष्मण दास जी बोले जिन्होंने सब अवस्थाओं में गुरुकुल में आत्मस्वरूप उद्देश्य को स्थिर रखने के लिये अपील की।

इन व्याख्यानों के बाद प्रो० बालकृष्ण जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने नवीन स्नातकों को सम्बोधन करके वेदों के उत्तम शब्दों में उपदेश किया और स्वामी जी की दण्डधारी मूर्ति की ओर निर्देश करके कहा कि उद्देश्य की ओर जाने का मार्ग बहुत ही विकट है उस पर स्वार्थ त्याग पूर्वक चलना ही स्नातकों का काम है। और उन्होंने अन्त में आशा प्रकट की कि इस कुल कुलवाटिका से निकला हुवा फूल भारत के प्रत्येक कोने को सुगन्धित कर सकेगा

[आगे २ पृष्ठ पर देखें]

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सामाजिक समाचार

[illegible]

(१) आर्य्यसमाज [illegible] ३०० रु० [illegible] भूमि में [illegible] देवी [illegible] प्रतिज्ञा को पूर्ण कर दिया है। सभा का यह काम सराहा के योग्य है।

(२) आर्य्यसमाज मंदिर में बड़े [illegible] शाल कमरे बनवाये जा रहे हैं जो शीघ्र ही तैयार आवेंगे।

(३) पारिवारिक उपासना निरन्तर अनुकूल होती है आर्य्यपुरुषों की रुचि [illegible] ओर प्रतिदिन बढ़ती जाती है। [illegible] सर्व कार्य बड़ी शान्ति और उत्साह [illegible] रहे हैं।

(४) मिति [illegible] सभा ने प्रस्ताव [illegible] निश्चय [illegible] कि आर्यसमाज के साप्ताहिक उत्सव आगामी प्रतिमास दोनों अष्टमी, पूर्णमासी और अमावस को ५ बजे सायंकाल हुआ करें। और इसी प्रकार मु०पा० शाला में अनध्याय हो जाया करें।

सिरसा

१८, १९, २० की रात को श्री सूरतमल जी [illegible] सिरसा की पुत्री, का विवाह [illegible] वैदिक रीति से श्री पं० हरदयाल जी उपदेशक आ० प्र० नि० सभा पंजाब से कराया उक्त श्री पं० जी ने हरएक विषय की अच्छी तरह से व्याख्या करदी जिस का उत्तम प्रभाव पड़ा।

दो पौराणिक पंडितों ने कई प्रश्न किये जिन का लाजवाब उत्तर श्री पं० हरदयाल जी ने दिया।

और उन की भली प्रकार तसल्ली करदी।

निम्न प्रकार दान मिला ४१) वर पक्ष की ओर से और ४ कन्या पक्ष की ओर से

वरपक्ष

१०) गुरुकुल कांगड़ी
१०) वेद प्रचार फं०
१०) अनाथालय अजमेर
११) आर्यसमाज सिरसा सिरसा

कन्यापक्ष

२) गुरुकुल कांगड़ी
२) आर्यसमाज सिरसा

भवदीय
रणजीत राय मन्त्री

बहराइच

आर्यसमाज बहराइच (अवध) का [illegible] वार्षिकोत्सव [illegible] फरवरी को ईश्वर की आज्ञा से [illegible] समाप्त होगया। २,३, फरवरी [illegible] कालेज [illegible] भजनीक [illegible] ने [illegible] किया—[illegible] कार [illegible] पाया—[illegible] उत्सव [illegible] हुआ।

[illegible] शाम को कुमार [illegible] उत्सव पं० [illegible] पन्थ [illegible] के सभा पतित्व में निर्विघ्न [illegible] हुआ—५ की सुबह [illegible] का उत्सव प्रारम्भ हुआ। ईश्वर की [illegible] अनुकूल होगया—पुत्री पाठशाला [illegible] वेद मन्त्रों तथा मनोहर भजनों [illegible] को बहुत ही प्रसन्न किया। [illegible] राजा बद्रप्रताप नारायण सिंह—[illegible] मु० कोर्ड ने अपने करकमलों [illegible] पुरस्कार वितरण किया। और—(५) दान में देकर अपनी उदारता का परिचय किया—जिस के लिये आपको धन्यवाद दिया गया। तत्पश्चात् स्वामी सत्यानन्द जी महाराज व पं० वंशीधर जी पाठक, पं० राज कुमार स्वामी, पं० ज्वालादत्त जी पं० देवदत्त व डा: बलदेव सिंह जी के सारगर्भित उपदेश हुए—जनता इन आत्माओं के अमृतमय उपदेशों से मुग्ध रहा। शंकासमाधान के समय एक मुहम्मदी भाई ने, ईश्वर जीव, प्रकृति के अनादित्व पर शंका की—जिस का उत्तर म० देवकली प्रसाद ने बड़ी योग्यता से दिया। लेकिन समय व्यतीत होजाने से पहले खतम कर देनी पड़ी। श्री सम्राट के लिये विजय प्रार्थना के पश्चात् सभा विसर्जित हुई—

आगामी वर्ष के लिये निम्न प्रकार अधिकारी निर्वाचन हुवे—(बहु मतानुसार)—

१. म० सेठ गोविन्द प्रसाद जी प्रधान
२. म० मोहनलाल जी सक्सेना उपप्रधान
३. म० त्रिवेणीदयाल सिंह मंत्री
४. म० लाल विहारी मास्टर उपमंत्री
५. म० देवकली प्रसाद जी; कोषाध्यक्ष
६. म० चैतन्यलाल जी पुस्तकाध्यक्ष
१. म० देवकाली प्रसाद जी; प्रबन्धकर्ता पुत्री पाठशाला
२. त्रिवेणी दयालसिंह कोषाध्यक्ष पुत्री पाठशाला

भवदीय
श्री वेणी प्रसाद

फर्रुखाबाद

ता० ६ फरवरी को मुसलमान श्रीमान् प्रताप नारायण जी वकील के मकान पर की गई शुद्ध होने वालों के इसलामी नाम निम्नलिखित हैं नसीबन, रसूलन, हफीजन, शरीफन, लहादबंदी, अबदुल्ली, रसूलमहम्मद,

निवेदक
शान्तिस्वरूप
उपदेशक शुद्धि सभा
फरुखाबाद

डोई वाला

गत बुधवार ता ७ फरवरी सन् १९१७ ई० को-महाशय धर्मवीर जी एक बरयात्रा के साथ डोई वाला ग्राममें पधारे-दो रोज खूब धूम धाम से प्रचार हुआ-शुक्रवार कोरात्री पाठशाला देहरा के साथ आप देहरादून पधारे उस ही रात को बढ़ई चर्मकार जाति में खूब प्रचार किया। इसही जाति के लोग लग भग तीन सौ के करीब उपस्थित थे—उनके व्याख्यान का बहुत प्रभाव पड़ा यदि ऐसे २ सज्जन कभी २ इस जातिके ऊपर इसी प्रकार कृपा करते रहा करें तो आशा है कि शीघ्र ही यह लोग अपनी उन्नति के राह को जान कर आगे को कदम बढ़ावेंगे।

बिहारी लाल

झुग्गीवाला

आर्य्य समाज झुग्गीवाला तहसील अलीपुर ज़िला मुज़फ्फरगढ़ का तीसरा वार्षिकोत्सव, ता० २७-२८-२९फाल्गुण सं० १९७३ तदनुसार १०,११, १२ मार्च १९१७ निश्चित की गई हैं। जिस में अच्छे २ विद्वान् उपदेशकों तथा भजनीकों का पधारने की आशा है कृपा करके सर्व सज्जनगण उक्तसमय पर दर्शन दे कर उत्सव की शोभा को बढ़ावें विशेष करके श्रीमान पूजनीय स्वामी सर्वदानन्द जी की सेवा में सविनय प्रार्थना है कि इस उत्सव पर अवश्य दर्शन दे कर कृतार्थ करें-क्योंकि सुना गया है इस प्रान्त को अपने उपदेशामृत से सिञ्चन करने के लिये उद्यत हुए हैं हम चातक भी प्रार्थी हैं।

ईश्वर दास
मंत्री आर्य्य स० झुग्गीवाला

जलालपुर जहां का चुनाव

प्रधान-श्री ला० जगन्नाथ जी बाहरी
उपप्रधान-श्री० ला० रामशरण दास जी
तथा ला० देवीदत्तमल जी
पैन्शनर सूबेदार बहादुर
मन्त्री-श्री पं० शिवराम जी भूषण
उपमन्त्री-श्री मुं० गणेशदास जी सूरी
कोषाध्यक्ष-श्री ला० मूलराज जी भसीन
म्युनिसिपल कमिश्नर
पुस्तकाध्यक्ष-श्री पं० भूमानन्द जी आर्य्य
अकौन्टेन्ट-श्री पं० काका राम जी

शेष निम्नलिखित सज्जन अन्तरङ्गसभा के मेम्बर चुने गये—
श्री ला० लालचन्द्र जी हैडमास्टर
श्री ला० दीवानचन्द्र जी सैकण्डमास्टर
श्री ला० अनन्तराम जी कपूर
श्री ला० गोपालदास जी बाहरी
श्री ला० सन्तराम जी भसीन
श्री ला० बज़ीरचन्द्र जी बाहरी
श्री ला० कृपाराम जी हांडा
श्री ला० गुरादित्तामल जी चड्ढा

—०—

प्रो बालकृष्ण एम० ए० रचित

सर्वोपयोगी पुस्तकें !!

१. अर्थशास्त्र = धनविद्या ५६० पृष्ठ १॥)
२. प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली ॥)
३. आर्यों की वैज्ञानिक उन्नति =)
४. ईश्वरीय ज्ञान वेद ५०० पृष्ठ १॥)

आर्य पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल पुस्तकालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

Registered No. A. 34

सद्धर्म्मप्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

प्रवर्त्तक - मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | २१ फाल्गुन सं० १९७३ वि० (दयानन्दाब्द ३४) ता० ३ मार्च सन् १९१७ ई० | संख्या ४ भाग २

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्यों देशकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र मृत प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब वह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऋषिकुल वाला शास्त्रार्थ छपगया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की सचाई का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचारानाचार और छूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक शुद्ध रूप में नहीं छपी थीं। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति की मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्त्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशत ५०) और उस से अधिक के खरीदार २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशत कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्त्ता प्रचारक पुस्तक भण्डार, गुरुकुल-कांगड़ी ज़िला बिजनौर

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ...

विद्यार्थियों से ... ...

छः मास का १॥) तथा तीन मास का

(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थि के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।

भारत विभिन्न देशों से ... ... :

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोक के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समा होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आध तोले तक

एक तोले तक

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राष्ट्रीयवाद

[१]

गिर कर नीचे रात !
हमें कौन है उठाता ।
के इस को विकास
पूर्ण कर दिखाते ?
क्यों हम [illegible]
व्यर्थ ही मान घटाते ।
क्यों न हमें स्वातन्त्र्य
प्यारा फिर जीवन जावे ॥

[२]

वीरों के इति[illegible]
[illegible] से [illegible] न पड़े हम ?
गिरि पर, भाग महान्,
क्यों न कहें हम
अहो ! हमीं ही क्यों न
सुयश की ध्वजा [illegible] वें ?
है असुचित ही [illegible] में
[illegible] जावें ? ॥

[३]

क्यों न हमारे हाथ,
पुनः शुभ अवसर आवे ?
[illegible] में भी तो पूर्ण—रक्त,
बहने लग जावे ।
उर धारें वीरत्व,
हमीं क्यों ? पोच कहावें ?
हममी तो पौरुष्य और
उत्साह बढ़ावें ॥

[४]

क्यों न हमारा कर मातृ भूमि
सेवा व्रत धारें ?
क्यों न हमीं निज भेष
भाव-भाषा, विस्तारें ?
क्यों न हमीं आदर्श,
स्वदेशी को ठहरावें ?
स्वाभिमान खो हाय !
हमीं क्यों ठोकर खावें ? ॥

कर्ण

राष्ट्रीय उद्बोधन

[१]

कविकर्ण समुदायका,
बल कम होने दो न ।
दृढ़-मूर्ति को भी तथा,
गौरव खोने दो न ॥

—:०:—

(पुनः)

[१]

पावन [illegible] ज [illegible] मूर्ति के,
[illegible] ब की रक्षा कीजिए ।
किए पुरुष [illegible] कर्म न इसी के—
हैं उपकार ध्यान धरिए ॥
भेष और भाषा में परता
[illegible] प्रवेश मत होने दो ।
बीस भद्र भावों का अमृतो,
सब ही को उर होने दो ॥
हो उद्देश्य एक ही सबका,
सब को आगे बढ़ने दो ।
भेद भिन्नता खोकर सब को,
यशो शिखर पर चढ़ने दो ॥

कर्ण

—:०:—

हमारी बातें

१. आप सुनिये तो हमारी बातें ।
मीठी मीठी ओ सलोनी बातें ॥
२. हो हमें लाभ तो वह बात नहीं ।
हैं मगर आप के हित की बातें ॥
३. मूर्ति पूजा से परे ही रहना ।
कि हैं यह ज्ञान से रीती बातें ॥
४. मिले ईश्वर नहीं सम्भव इनसे ।
जग में पत्थर यह बनेंगे बातें ॥
५. मार डाला तुम्हें छू छू के ने ।
अब भी समझो यह हैं झूठी बातें ॥
६. गिरते दे हैं पर हो अंगी तक के ।
हद से ज़ियादह हैं यह गंदी बातें ॥
७. टीका माथे पे लहू का खींचा ।
कैसी गंदी हैं यह छी छी बातें ॥
८. बच्चे मरते हैं इनही बातों से ।
हत्या मूलक हैं यह झूठी बातें ॥
९. मुक्ति दाता नहीं गङ्गा जमना ।
भूल जाओ यह हैं थोथी बातें ॥
१०. सर्व व्यापी है वह अन्तर्यामी ।
तीर्थों में हैं ठगी की बातें ॥
११. एक ईश्वर पे भरोसा रक्खो ।
वह संवारेगा तुम्हारी बातें ॥
१२. उस से बढ़ कर नहीं शक्ति कोई ।
सब से ऊंची है उसी की बातें ॥
१३. सर्व आधार जगत का पालक ।
हैं उसी में ही यह पटती बातें ॥
१४. हो निराकार की सूरत कैसे ।
तुम ने यों भी कभी सोची बातें ॥
१५. पढ़ो वेदों की विचारो उन को ।
सुनना चाहो जो सुख दुख की बातें ॥
१६. रसी रसी सी छिपी हैं उन में ।
आप के हित की हैं जितनी बातें ॥

निरंजन सिंह

—०—

शोक

महाशय श्री छगनसिंह जी वर्मा कलवाड़ा कन्ट्रेक्टर जोधपुर का कुमार ओंकारसिंह वर्मा का टाईफाईड बीमार से अकस्मात स्वर्गवास होगया। लड़का बड़ाही होनहार प्रतीत होता था। परमात्मा उसकी आत्मा को सद्गति और माता पितादि को धैर्य प्रदान करें, हमारी यह हार्दिक प्रार्थना है।

ओंकारसिंह का अन्त्येष्ठिसंस्कार संबंधी वैदिक रीत्यानुसार लक्ष्मण आर्य्य ने कराया। महाशय छगनसिंह जी वर्मा ने इस प्रकार दान दिया।

१०) आर्य समाज जोधपुर
१०) श्रीमद्दयानन्द अनाथालय अजमेर,
५) गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी हरिद्वार,
५) गौशाला आबूरोड,
२५) योग । इत्यलम्

आपका दास—
लक्ष्मण आर्य
मन्त्री, आर्यसमाज, जोधपुर.

कसूर

आर्य समाज कसूर का वार्षिकोत्सव २०,२१,२२ अप्रेल तदनुसार ८,९,१० बैसाख को होना निश्चित किया गया है।

आपका शुभचिन्तक
नत्थूराम
मंत्री समाज

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म-प्रचारक

सादगी का विजय

'भूत वह जो सिर पर चढ़ कर बोले' सत्य ऐसी वस्तु है कि जो लोग उससे पराङ्मुख रहते हैं उन्हें भी समय पर आकर उसके सम्मुख सिर झुकाना पड़ता है। जब तक वह समय नहीं आता, लोग उसकी उपेक्षा करते हैं, विडम्बना करते हैं। किन्तु सुधार का भी एक दिन आ ही जाता है। ऐसी दशायें उपस्थित होजाती हैं कि पराङ्मुख व्यक्ति को मुंह सीधा करना पड़ता है। सत्य की विजय-दुन्दुभि अनायास ही बजने लगती है और अविश्वासी पुरुषों को भी विश्वास का दम भरना पड़ता है।

आज से चार साल पूर्व क्या दशा थी? अर्थशास्त्र और समाज शास्त्र के विद्वान् मिल कर करते थे कि सादगी असभ्यता का चिन्ह है आवश्यकताओं का बढ़ाना उन्नति का मूल मंत्र है; और जितनी ही आराम की चीज़ों की मांग बढ़ेगी, उतनी ही सभ्यता की उन्नति होगी। लोगों का यही विश्वास था। यदि कोई विचारक सादगी का पक्ष लेता था तो उसे आधा पागल समझा जाता था। यह मानने में शर्म समझी जाती थी कि आवश्यकताओं को कम करना दासता से छूटना है। वह दिन बहुत दूर नहीं गया युद्ध की घोषणा से एक दिन पूर्व तक यही समझा जाता था। किन्तु ज्यों ही रणचण्डी का शंखनाद हुआ त्यों ही संसार के विचार पलट गए। रूस ने शराब की उपजकम करदी, फ्रांस और इंग्लैण्ड ने उसी मार्ग का अनुसरण किया। जर्मनी के राजनीतिज्ञों ने ज़बर्दस्त साधनों से देश में फालतू वस्तुओं की बिक्री बन्द करदी। ये सब कार्य किसने कराये? संग्राम के प्रबल हाथ ने; विधाता की प्रबल आज्ञा ने। जो कार्य मनुष्य ने अपनी इच्छा से न किया, वह भगवान् की आज्ञा से होगया। अब प्रतिदिन लाखों मनुष्य [illegible] के लिये [illegible] रहे थे [illegible] विवाह विच्छेद की चिन्ता छोड़ [illegible] विवाह करने का विचार हुआ। [illegible] पति का दण्ड सिर पर पड़ा, अन्तिम [illegible] की आशें टूटीं। [illegible] पर भी राम याद आया करता है [illegible] की समय बड़े से बड़ा व्यक्ति भी [illegible] प्यारा हो जाता है। [illegible] युद्ध के दबाव के नीचे आकर वह से बड़े अर्थ-शास्त्रज्ञ भी सादगी के सिद्धान्त का [illegible] मानने लगे हैं।

अब हरेक देश में सादगी का शोर मचा हुआ है। जर्मनी, इंग्लैण्ड, रूस और फ्रांस ने समाचार पत्रों के लम्बे और राजनीतिज्ञों की व्याख्याओं में सादगी का राग ही अलापा जाता है। फ़ज़ूलखर्ची छोड़ दो—मितव्यय धर्म है—ये ही शब्द हैं, जो पत्रों में दिखाई देते हैं। अभी उस दिन पार्लिमेण्ट में भाषण करते हुए मि० लायडजार्ज ने कहा था कि सौकीनी की बहुत से चीज़ों का बनाना बिलकुल बन्द करना पड़ेगा तभी युद्ध में कृतकार्यता हो सकती है, अन्यथा नहीं।

उस समय क्या होगा? जिस जाति में व्यर्थ ज्ञानशौकत या आरामतलबी पहले ही कम है, वह युद्ध की समस्याओं का सामना सुलभता से कर सकती है। जिस जाति ने अर्थशास्त्र के सिद्धान्तों के अनुसार आरामतलबी को धर्म बनाया हुआ है, वह कठिनाई में पड़ेगी, उसके लोग समझते हुए भी सादगी के बिना चल न सकेंगे। सरकार चाहती हुई भी अपने नियमों का पालन ठीक २ न करा सकेगी। जो मनुष्य अब तक सुरा को जीवन का रस समझते रहे, वे रसे शीघ्र ही विष नहीं समझ सकेंगे। जिन्हों ने अबतक बहुमूल्य कपड़े को जीवन का एक मात्र उद्देश्य समझा, वे शीघ्र ही सादे कपड़ों में गुज़ारा करना न सीख सकेंगे।

योरप सादगी का पाठ पढ़ रहा है—भारत अभी ऊंघ रहा है। भारत वासी अब भी धोखे की नींद सो रहे हैं। वे समझते हैं, कि युद्ध योरप में हो रहा है, हम पर इसका क्या प्रभाव हो सकता है। जर्मनी और इंग्लैण्ड में विद से रोटियां मिलती रहें, फ़ज़ूल खर्ची को बन्द करने के लिए [illegible] रहें आर्य [illegible] सकते हैं, [illegible] कोई प्रभाव [illegible] पर [illegible] भारी [illegible] है। [illegible] सर्वत्र ये [illegible] भी [illegible] आर्य [illegible] दिन [illegible] हैं, [illegible] की [illegible] [illegible] ने [illegible] है। आज [illegible] देश में [illegible] मुसिबत के [illegible] [illegible] है। [illegible] प्रतिदिन [illegible] हो रहा है सरकारी [illegible] छापने [illegible] वह [illegible] काम में [illegible] जाता [illegible] और [illegible] पहले [illegible] बांधन के [illegible] भी न [illegible] था। [illegible] कष्टों में [illegible] हमारे द्वार पर भी [illegible] कर [illegible] है। [illegible] अभी [illegible] न [illegible] दी जाना [illegible] दिये। [illegible] के [illegible] और [illegible] के [illegible] जिनका गुज़ारा नहीं होगा उन्हें कि [illegible] दिन [illegible] और [illegible] पगड़ी से [illegible] करना पड़ेगा। उस दिन के लिये तय्यार [illegible] चाहिये।

युद्ध के समय में [illegible] मोटे और [illegible] कपड़े [illegible] उत्तम होंगे। सादगी का [illegible] मीठा होगा—चाहे वह किसी ही कारण अनुभवों के पीछे पैदा हो।

किस की प्रतीक्षा है?

लायलपुर से समाचार आया है [illegible] वहां गुरुकुल के [illegible] के लिये कार्य [illegible] आरम्भ होने वाला है। हम कह नहीं [illegible] कि—अन्य स्थानों में क्या हो रहा [illegible] या कुछ हो भी रहा है या नहीं? आश्चर्य की बात है कि ऐसे गढ़े [illegible] में ऐसी शिथिलता और उपेक्षा दृष्टि [illegible] चर हो। जिसकी आशा न हो—[illegible] हो जाया करता है, किन्तु बहुत [illegible] और कभी कभी। प्रायः किये का [illegible] मिलता है, और यत्न करने वाले के [illegible] बाकी रहती है। हमारी प्रार्थना है—[illegible] सानुग्रह प्रार्थना है कि अब आर्य्य सज्ज आलस्य त्याग कर कर्तव्य पालन में [illegible] बधान हों। नगर २ में, ग्राम २ [illegible] कमेटियां बना कर कार्य प्रारम्भ करदें।

दिल्ली आर्यसमाज का उत्स

आर्य्य समाज चावड़ी बाज़ार दि [illegible] का वार्षिकोत्सव फ़रवरी की २५, २६ तारीखों में हुआ। दिल्ली में वैसी शान चाहिये, इस उत्सव

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[illegible] प्राप्त हुआ करती है। [illegible] अच्छा समारोह रहा। म- [illegible] मुन्शीराम जी, [illegible] रामदेव जी, पूर्णानन्द जी [illegible] सीताराम जी [illegible] आर्य्य, श्रीयुत इन्द्र [illegible] व्याख्यान हुए। उत्सव [illegible] के विशाल भवन में [illegible] अच्छा जमाव [illegible] पर्याप्त संख्या में [illegible] होती थीं। पं० पूर्णानन्द जी [illegible] पर लग भग एक ज़ार [illegible] प्रचार फण्ड को प्राप्त हुआ। धर्म [illegible] की अच्छी धूमधाम रही। २८ ता [illegible] की रात को शिव सभा के उत्सव में [illegible] पूजा पर शास्त्रार्थ हुआ। आर्य- [illegible] की ओर से पं० पूर्णानन्द जी थे, दूसरी ओर से षट्शास्त्री शास्त्रार्थ [illegible] पं० राजनारायण अर्जुन देहलवी [illegible] शास्त्रार्थ क्या होता? लोग अरमान [illegible] का दुःसाहस देख कर आश्चर्यित [illegible] थे। आर्यसमाज का प्रभाव अ- [illegible] रहा। दूसरे दिन के उत्सवों में [illegible] का अवशेष भी हुआ। पं० पू- [illegible] जी ने नवग्रहपूजा का खण्डन [illegible] हुए अरमान महोदय का कुछ ख- [illegible] किया और अरमान महोदय ने पं० [illegible] जी के साथ आर्य्यसमाज को [illegible] ऋषि दयानन्द को पेट भर के गा [illegible] दी। हमें ज्ञात है कि पं० पूर्णा- [illegible] जी ने यह कार्य अपनी इच्छा से वि- [illegible] समाज के मन्त्री की आग्रह पर [illegible] था। हमारी सम्मति में शास्त्रार्थों [illegible] परिशिष्ट न हुआ करें तो अच्छा [illegible] से शास्त्र विचार में सहायता [illegible] और परस्पर वैमनस्य में [illegible] होती है।

प्रतिनिधियों का चुनाव

[illegible] वर्ष के साथ पंजाब के समाजों के [illegible] प्रतिनिधियों का समय समाप्त [illegible] है। वैशाख में जिस प्रतिनिधि सभा [illegible] अधिवेशन होगा वह नये प्रतिनि- [illegible] से बनी होगी। आर्य्य प्रतिनिधि [illegible] अपना प्रतिनिधि भेजना आर्य्य [illegible] का कर्त्तव्य है। आर्य्य समाज [illegible] दिक धर्म प्रचार सम्बन्धी विषयों [illegible] सम्मति देने के लिये हरेक समाज को अवश्य ही अपना प्रतिनिधि भेजना चाहिये। किसी समाज को भी दस से कम सभासद न रहने देने चाहिये, और अपना प्रतिनिधि सभा में भेजे बिना सन्तोष न करना चाहिए। यदि समाज में ऐसा कोई सज्जन न हो जो सभा के अधिवेशनों में जा सके, या प्रतिनिधि सभा में बैठने का सामर्थ्य रखता हो तो किसी अन्य नगर के प्रतिष्ठित आर्य सभासद को भी चुना जा सकता है।

वेदप्रचार का भी ध्यान रखो

ऋषि दयानन्द के मिशन को पूरा करने के लिये जो प्रथम साधना प्रारम्भ हुई थी, वह वेद प्रचार फण्ड था। वेद प्रचार का कार्य आर्य्यसमाज की स्थिति के लिये उतना ही आवश्यक है, जितना आवश्यक गुरुकुल का कार्य्य। ये सब कार्य एक ही मुख्य कार्य्य की सिद्धि के लिए हैं एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिये है। जैसे सब नदी नाले मिल कर एक ही लक्ष्य—समुद्र की ओर को बह जाते हैं इसी प्रकार वेद प्रचारक रूपी महानद में मिलकर और सब पानी एक ही लक्ष्य की ओर चले जाते हैं—और वह लक्ष्य है मनुष्य जाति का उद्धार। वेद प्रचार की ओर से आर्यपुरुषों की कभी असावधान न होना चाहिये।

समाचार पत्रों पर आपत्ति

युद्ध का भयंकर दंड समाचार पत्रों के सिर पर चमक रहा है। काग़ज़ की महंग प्रतिदिन डर दिखला रही है। इधर इंग्लैण्ड के प्रधानमन्त्री मि० लायडजार्ज ने उस दिन पार्लिमेण्ट में भाषण करते हुए इस विषय पर कुछ आशंकायें प्रकट की थी। यहां तक सन्देह हो रहा है कि शायद आज्ञा से सब समाचार पत्रों के आकार आधे २ करने पड़ें। ये थोड़े से दिन समाचार पत्रों के लिए बड़े खतरे के हैं। नहीं कह सकते—किस का जीवन रहेगा, किसका नहीं? जब विलायत के धनी पत्रों का यह हाल है तो भारत के निर्धनों का क्या कहना है? यहां तो सब जान हथेली पर लिए काम कर रहे हैं।

भारतरक्षा के लिये नई सेना

आखिर भारतीय सेना नेगी। गत सप्ताह बड़ी व्यवस्थापक सभा में भारत के सेनापति ने जो प्रस्ताव पेश किया है, उसे पढ़ कर ज्ञात हुआ कि भारत की रक्षा के लिए भारतीय सेना तय्यार की जायगी। भारतवासियों को खूब भर्ती किया जायगा। इससे प्रचारक जैसे धार्मिक पत्र की ओर कोई न खुशी है न नाराज़गी—है तो इतना सन्तोष है कि धर्म के आवश्यक अंग वर्ण व्यवस्था में एक न्यूनता की पूर्ति होगी। हमारे देश में और वर्ण कुछ थोड़े बहुत मिल भी जाते हैं—परन्तु क्षत्रिय वर्ण बिल्कुल उपलब्ध नहीं होता। राम और भीम की, प्रताप और शिवाजी की सन्तान में क्षत्रियत्व का अभाव सा प्रतीत होता है। क्षत्रिय वह नहीं जो चार पैसे के लिये या चार रुपयों के लिये अपने प्राण सन्देह में डालता है, सच्चा क्षत्रिय वह है जो देश की रक्षा के लिये युद्ध की तय्यारी करता है। आज तक बहुत थोड़े भारतीय देश की रक्षा के लिए शस्त्र धारण करते थे—अब इस नए प्रस्ताव से जो भारतीय सिपाही भर्ती होंगे व इसी लक्ष्य को रखकर हथियार धारण करेंगे। वे सचमुच क्षत्रिय होंगे। वर्ण व्यवस्था की पूर्णता में ही मनुष्य जाति की भलाई समझने वाला आर्य्य पुरुष वर्णों की शृंखला को टूटी हुई एक लड़ी को जुड़ता देख क्यों प्रसन्न न होगा? मुहारिक

महात्मा जी का संन्यास

(हमें इस विषय में कई लेख प्राप्त हुए हैं। हम उनमें से केवल एक यहां पर देते हैं। सम्पादक)

संसार में देखा जाता है कि संयोग और वियोग की धारा एक अनादि काल से बह रही है। इस से कोई भी शरीर धारी प्राणी नहीं बच सकता और सारे शास्त्रज्ञों का भी यही सिद्धान्त और लक्ष्य है कि ऐसा उद्योग किया जावे जो इस आवागमन रूपी संयोग और वियोग से मुक्त हो—इस के लिये वेद भगवान ने ब्राह्मण ग्रन्थों ने, उपनिषदों ने, और स्मृति आदि पुराण ग्रन्थों ने इसका मार्ग वर्णाश्रम धर्म ही उनमें उत्तरोत्तर बताया

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। महाभारत के समय तक तो यह प्रथा जारी रही, परन्तु दुर्दैव के कारण से (अथवा और कुछ भी कारण समझ लिया जावे) यह प्रथा निर्मूल होगई, जिस के कारण से हम लोगों के दोनों लोक बिगड़ रहे हैं। इसकी विशेष विवेचना न करके या मुझको केवल आर्य पुरुषों को ही नहीं—परन्तु भारत के और सर्व द्वीपद्वीपान्तरों के शिखासूत्र धारियों से भारत आग्रह पूर्वक निवेदन है कि श्रीमान् परमहंस परिव्राजकाचार्य्य श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आप के वैदिक धर्म्म और वर्णाश्रम धर्म की रक्षा के लिये क्या २ यत्न नहीं किये, और इसको निष्पक्ष भाव से यदि कहा जावे तो यह ही कहा जायगा कि सचमुच इस घोर कलिकाल में वैदिकधर्म्म की डूबती हुई नैय्या को बचाया है जो कुछ भी आजकल जागृति हो रही है वह उक्त स्वामी जी की तपस्या का ही फल है। चाहे हम उस उपकार को मानें या न मानें परन्तु अपने अन्दर आत्माओं से यह ही साक्षी होती है कि यदि स्वामी जी न होते तो आज तक बहुत सा भाग हिन्दुओं का ईसाई और मुसल्मान हो जाता, उसी ही स्वामी का एक अंग ब्रह्मचर्य्य था, जिस व्रत को उन्हों ने स्वयं धारण कर संसार को दिखा दिया उसी ही अंग की पूर्ति हमारे एक नायक श्रीमान् महात्मा मुंशीराम जी ने अपने सर्वस्व की आहुति इसी यज्ञ में देकर गुरुकुल कांगड़ी को एक आदर्श गुरुकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम जनता की सहायता से खोलकर बता दिया है और उस गुरुकुलरूपी वृक्ष के कुछ फल भी हो गये हैं और भविष्यत में भी ऋतु २ पर इसी तरह से बराबर फल लगते हुये चले जावेंगे। इसी आशापर श्रीमान् महात्मा जी गुरुकुलरूपी बगीचे के माली ने यह सोच लिया है कि यह बगीचा अब हरा भरा हो गया है विश्राम लेना भी प्रत्येक कार्य्य के पीछे नियमानुसार होता ही है—जैसे दिन के पीछे रात और रात के पीछे दिन, इसी उद्देश्य को लेते हुये श्री स्वामी जी के परम भक्त और ईश्वर के पूर्ण विश्वासी महात्मा मुंशीराम जी ने अपने [illegible] आश्रम में अन्तिम लक्ष्य की पूर्ति के लिये प्रवेश करने की ठानी है, जिसके समाचार "प्रकाश" अखबार में प्रकाशित हो चुके हैं। इसके सुनने से मुझको भी एक प्रकार का बड़ा भारी दुःख भी हुआ, और दूसरी ओर प्रसन्नता भी होती है कि एक धर्मवीर अपने सारे कर्तव्यों को अपनी शक्ति के अनुसार पूरा कर एक दूसरे कर्म्मवीर को कार्य क्षेत्र में काम करने को अवकाश देता है। वैसे तो श्रीमान् जी सन्यासियों में से भी एक विशेष सन्यास धर्म को पालते थे, परन्तु हम सरीखे निर्बलों को स्वयं आदर्श रूप होकर दिखा देना ही शायद कर्तव्य समझा हो। यहां तक तो रही श्रीमानों के आत्मिक बल की बात। अब हमारे स्वार्थ की कौन सुनेगा उसके लिए भी हम में से यदि कोई इस भार को लेने के लिए तैयार हो जावे तो बड़े ही सौभाग्य की बात हो। नहीं तो बलात् (जबर्दस्ती) से श्रीमान् के स्थान के लिए मैं अपनी सम्मति में श्रीमान् माननीय आर्यप्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्ण जी के लिए सम्मति देता हूं और आशा है कि मेरे साथ आर्यभ्राता सहमत होंगे—क्योंकि आपका तीसरा आश्रम आ चुका है। यह तो हुई स्वार्थ की बात—अब रही गुरुकुल की आर्थिक दशा की, जिसको सारी जनता जानती है कि नित्य कूप खोदना और नित्य जल पीना। सो इस अनाथ कूप को खोदने वाले तो अब हमसे वियोग करने को तय्यार हैं जिनके सद्भाव से अब तक हमारे आर्य्य युवक अपने परम पुरुषार्थ से बराबर सहायता देते दिलाते रहे हैं और अब भी देवेंगे ही। इसमें कोई संशय नहीं है परन्तु मेरी तुच्छ बुद्धि के अनुसार आर्य्य जनता से प्रार्थना है कि इस यज्ञ की पूर्ति करने के लिये और श्रीमान् महात्मा जी की आत्मा को भविष्यत् में सदैव के लिये शान्ति देने के लिए प्रत्येक आर्य अपनी आय में से श्रद्धापूर्वक व आंख मूंदकर दशांश धन इस समय एक बार ही गुरुकुलरूपी यज्ञ में आहुति देदें तो आशा है कि गुरुकुल [illegible] के लिये [illegible] हो जावेगा। [illegible] रियों को मुक्त [illegible] हो जावेगी, [illegible] भी सदैव के लिए [illegible] से मुक्त हो जावेंगे। [illegible] आत्मा को भी बड़ी भारी शान्ति हो जावेगी फिर कभी भी उनका इस [illegible] ध्यान न होगा और संन्यास धर्म के अनुसार निर्भ्रान्त जिस परोपकारी [illegible] में लगेंगे उसे भी पूर्ण निर्विघ्नता [illegible] कर सकेंगे।

सदैव से यह एक प्राचीन प्रथा आर्य पुरुषों में चली आ रही है कि साधु संन्यासी राजा गुरु आदि पूज्य जनों की विदाई के समय गृहस्थी लोग भेंट किया करते हैं उसी रीति को लेकर हम अपने २० वर्ष के अतिथि श्री महात्मा जी, जिन्होंने निष्काम भाव से हमारे कुल की सेवा बराबर की है, आज उनके इस मुबारिक वियोग के समय यदि हम साल भर की आय में से एक मास की आय श्रीमान्य महात्मा जी की भेंट (दक्षिणा) गुरुकुल कांगड़ी के स्थिर कोष में जमा करा कर सदैव की अपीलों का मुंह बन्द करदें। क्योंकि बार २ मांगने वालों से बार २ देने वाले भी घबरा जाते हैं अतएव इस लेख के साथ मैं भी एक मास की आयकी प्रतिज्ञा करता हूं कि उत्सव के समय ५०) जमा करा दूंगा, मुझ को तनखाह तो केवल ४५) ही मिलती है। आशा है कि हमारे विद्या प्रेमी ऐसे धार्मिक पर्व को हाथ से न जाने देंगे हिन्दू धर्मावलम्बी भाई जड़ रूपी राहुकेतु के दुःख निवारण के लिये लक्षों का दान ग्रहण पर करते हैं क्या हम अपने एक चेतन नायक के संन्यासाश्रम में प्रवेश की खुशी और यादगार में एक मास की आय का भी त्याग न करेंगे? अवश्य ही करेंगे और फिर भी समय २ पर करते रहेंगे। ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

आपका हितैषी
पं० नथमल तिवाड़ी
अजमेर

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्यसमाज का प्रचार

(श्री [illegible] जी. ए. गुरुकुल मुलतान)

करांची से हरिद्वार तक और एपटाबाद से देहरादून तक की आर्यसमाजों में [illegible] जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है परन्तु इन में पुराने जोश का अभाव देखकर सदेह उत्पन्न होजाता है कि कहीं [illegible] का प्रभाव अधूरा ही न रह जावे, कहीं उन्हीं पवित्र पुण्यात्मा का मिशन बन्द ही न हो जावे। जिस ओर जाते हैं उधर मुर्दनी छाई हुई दीख पड़ती है। मुझे इस दशा के [illegible] केवल दो ही प्रतीत होते हैं।

(१) काल का प्रभाव

[२] हमारी अपनी भूल

'संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि किसी जाति या धर्म ने उन्नति नहीं की जिस के अनुयायियों ने आत्म त्याग को रूप में नहीं [illegible] जहां स्वार्थ का राज्य है वहां ही गिरावट और अवनति है आर्यसमाज सोचे कि इन उपरोक्त दो कारणों में से कौनसा कारण आर्यसमाज के प्रचार में अधिक बाधा डाल रहा है, और इन का प्रतिकार क्या हो सकता है?

[१] काल का प्रभाव—आर्यसमाज में अब तक दूसरे मतों का खंडन कर अपने धर्म की स्थापना की जाती है। इसी हथियार का ही प्रयोग कर अब तक हमने अपना प्रचार किया है, परन्तु अब काल का प्रभाव किसी और ओर को है। हम चाहे मूर्तिपूजा का खण्डन करें या न करें—अब भूत प्रेत का खंडन कोई करे या न करे इस प्रकार अन्य जितने पाखंड हैं उन का खंडन चाहे आप करें या न करें। नूतन काल की शिक्षा और स्थिति ही बिना हमारे यत्न किये हुवे स्वयं ही उन सब बातों का खंडन कर रही है, अब तो भय लग रहा है उस पश्चिमीय विज्ञानरूपि आंधी का जो कि सब की आंखों में धूल डाल रही है अब तो विचार यह करना है कि किस प्रकार हम अपने धर्म की रक्षा उन पश्चमीय विज्ञान के आक्रमणों से करसकते हैं। जो आक्रमण हमारे भारतीय सुशिक्षित दल को दबा रहे हैं।

आप [illegible] कहें कि अमुक thing हमारे यहां पहले ही थी-परन्तु सुशिक्षित दल को विश्वास तभी हो सकता है जब उस विषय पर आन्दोलन कर उस को सम्यक्तया सिद्ध कर दिया जावे। शोक है आर्यसमाज के लेखक नित नई पुस्तकें लिखने में तत्पर हैं परन्तु जिस कारण से आर्यसमाज के प्रचार को धक्का लग रहा है उस विषय की ओर ध्यान बिल्कुल नहीं दिया जारहा है। सुशिक्षित दल आर्यसमाज से उपराम होरहा है उसका विशेष कारण यही है कि आर्यसमाज पुरातन साधनों को ही अब तक वर्त रहा है। उन महानुभावों को अपनाने के लिये, उनकी आत्मा को तृप्त करने के लिए कुछ यत्न नहीं किया जारहा।

आर्यसमाज की फिलासफी भले ही दूसरों की अपेक्षा उच्च हो। आर्यसमाज का द्वैतवाद अनुपम ही क्यूं न हो परन्तु प्रश्न तो यह है कि इन सब बातों के होते हुवे भी आर्यसमाज ने अब तक क्या साहित्य निकाला जिस को हम सुशिक्षित दल के सन्मुख पेश कर सकें ऋषि दयानन्द की पुस्तकों को और पं० गुरुदत्त के चार पांच tracts को छोड़ कर अब तक आर्यसमाज के वैज्ञानिक साहित्य में क्या वृद्धि हुई है? ऐसी अवस्था में हम कैसे आशा कर सकते हैं कि भारत का सुशिक्षित दल जिस पर नित्य नये आविष्कारों के प्रभाव पड़ते हैं—हमारे पवित्र धर्म को ग्रहण करसकेगा।

क्या आर्यसमाज के नेताओं को पता नहीं कि उच्च शिक्षा प्राप्त किये हुवे महानुभाव पूर्व की अपेक्षा अब आर्यसमाज के काम में कम भाग लेते हैं क्या उन की संख्या पहले की अपेक्षा भारत में कम होगई है? उनकी संख्या तो बढ़ी है परन्तु आर्यसमाज के दुर्भाग्य वहां आर्यसमाज में उनकी संख्या कम हुई २ प्रतती होती है?

मुख्य कारण वही है कि उनके काल को बुझाने के लिए ऐसा साहित्य ही नहीं उत्पन्न किया गया, जिस से वह पश्चमीय चमक से हट कर हमारे यहां आसकें। अतएव ऐसे वीर आर्यसमाज में से निकलें जो सांसारिक वैभव पर लात मार कर इस प्रकार का साहित्य पैदा करें, जिस में पश्चमीय विज्ञान के आक्रमणों का सामुख्य होसकें।

अब लीजिये मौखिक प्रचार को इस समय जो हमारे पूज्य उपदेशक काम कर रहे हैं वह काम सराहनीय तथा प्रशंसनीय है उन महानुभावों को आर्यसमाज की खातिर अनेक कष्ट सहन करने पड़ते हैं। हम ने अपनी आंखों से देखा कि कई आर्यसमाजें उनका अपमान भी करती हैं परन्तु धन्य है उन का जीवन जो इन सब बातों को सहन करते हुवे भी काम तन मन से कर रहे हैं परन्तु काल का चक्र इस आवश्यकता को अनुभव कर रहा है, कि उन के साथ २ एक ऐसे उपदेशकों की श्रेणी भी होनी चाहिये जिन्हों ने पूर्वीय तथा पश्चमीय विज्ञान तथा साहित्यरूपी समुद्र को भली-प्रकार मथन किया हुआ ही इन्हीं महानुभावों का प्रभाव अधिकतर सुशिक्षित दल पर पड़सकता है।

(२) हमारी अपनी भूल

अब तक हमने ज्ञानात्मक (Theoritical) पक्ष को ही लिया है—यह पक्ष अधूरा रह जावेगा यदि हमने क्रियात्मक पक्ष को परे फैंक दिया। आचार और विचार साथ २ चलने चाहिए इसको न समझना ही हमारी भूल है।

जिन सज्जनों ने Christian Martyrs का वृत्तान्त पढ़ा है वह सम्यक्तया जानते हैं कि किस प्रकार उन्होंने अपने धर्म प्रचारार्थ कष्ट सहन किये. St Steplean का हाल कौन नहीं जानता कि किस प्रकार उस महात्मा पर ईन्टों की वर्षा होती थी वह ईन्टें खाता २ हीं अपने प्राण स्वधर्म की खातिर देगया। कितना कष्ट St Pall और सेन्ट जेम्स को दिया गया Nero ने किस प्रकार जिन्दा क्रिश्चियनों के शरीरों पर रुई लपेट कर तेल से फूंक कर उनका तमोशा देखा। इन सब वीरों का जीवन पढ़िये और देखें कि किस प्रकार आचार विचार आपस में ओत प्रोत हुए हुए हैं पत्थर से पत्थर दिल भी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस के वृत्तान्त को सुन कर मोम की तरह पिघल जाता है।

परन्तु हम हैं जो चाहते हैं कि हींग लगे न फटकी और धर्म का प्रचार हो जावे। यहां तो धुन है बड़ा बनने की न कि सेवा करने की। यहां तो यत्न है प्रसिद्धि प्राप्त करने की। चाहे उसके लिए अनुचित साधन ही क्यूं न बर्तने पड़ें, लोगों के घर खाक में मिल जावें। परन्तु हमारा उल्लू सीधा हो जावे। स्वार्थ ने घर किया हुआ है। आत्मत्याग नाम को नहीं। सत्य कहने के लिए निर्भयता नहीं दूसरों के लिए अन्दर से प्रेम नहीं, और जाति के लिए कभी एकान्त में बैठ कर उस की दुर्दशा पर चार आंसू बहाये नहीं। और चाहते हैं प्रचार हो जावे, मूमण्डल के कोने कोने में आचार को विचार से अलग कर चाहते हैं, वेद का डंका बजे सारे संसार में, यह नहीं होसकेगा यही हमारी भूल है।

हमें तो ऐसे प्रचारक चाहिये जो जीवें तो अपने धर्म के लिए, जो मरें तो अपने धर्म के लिए, हमें ऐसे वीर चाहिए जो वैदिक धर्म पर दीवानों की तरह फिरते हों—पर जिन के विचार में अहोभाग्य की भी त्रुटि न हो।

सारांश क्या? कि आर्यसमाज का प्रचार वर्तमान स्थिति में केवल वैज्ञानिक साहित्य, तथा पूर्ण विद्वान् उपदेशकों तथा उच्च आचार वाले महात्माओं द्वारा ही होसकता है, जो हर समय अपनी जान को हथेली पर रखे हुवे निष्काम सेवा की धुन में मस्त फिर रहे हों, दूसरे लेख में हम बतलावेंगे कि ऐसे महावीर कहां उत्पन्न हो सकते हैं।

अपूर्ण

—०—

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार हुआ करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनीआर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

[१] गुरुकुल विश्वविद्यालय, कांगड़ी
[२] वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों के लेख आ रहे हैं।

=) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्त्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

मराठी साहित्य सम्मेलन
का
नवें अधिवेशन
(पेरिस)

हमें यह सुनकर अत्यन्त आनन्द हुआ है कि मराठी साहित्य सम्मेलन का नवें अधिवेशन मध्य भारत के प्रख्यात नगर इन्दौर में होने वाला है। व्यापारिक सामाजिक, विद्या प्रचार आदि की दृष्टि से इन्दौर मध्य भारत की नाक कहा जा सकती है। हमें पूर्ण आशा है कि मराठी साहित्य सम्मेलन की इस अधिवेशन का कार्य अत्यन्त समारोह तथा सफलता पूर्वक समाप्त होगा—वहां रा० ब० [illegible] माधव राव कि वे, डाक्टर गोपाल [illegible] चन्द्र तावे आदि धुरन्धर विद्वान् [illegible] मातृभाषा के प्रेमी उपस्थित हैं, [illegible] श्रीमन्त महाराजा होलकर बहादुर [illegible] विद्या प्रचार तथा समाज सुधार के [illegible] दत्तचित्त हैं वहां ऐसे महान् कार्य की सफलता में सन्देह करना नितान्त निर्मूल ही है। मराठी, गुजराती, हिन्दी, बंगाली आदि परिषदें बहुत दिनों से साहित्य प्रचार, भाषा उन्नति तथा समाज सुधार का उद्योग कर रही हैं और समय पर जो लाभ दायक पुस्तक [illegible] उपस्थित हुई हैं उन में से अधिक कार्य में परिणित हो चुके हैं और देश, समाज तथा साहित्य को बहुत लाभ पहुंच चुका है। प्रत्येक पुस्तक की आलोचना हम यहां स्थान भाव [illegible] रण नहीं कर सकते। परन्तु इतना [illegible] कह सकते हैं कि आज तक जो [illegible] हुई है वह स्थानिक तथा प्रान्तिक है। स्थानिक या प्रान्तिक उन्नति कोई भी विरोधी नहीं हो सकता, पहले घर का सुधार करके ही [illegible] सुधार हो सकता है। भिन्न भिन्न [illegible] की परिषदें और सम्मेलन अपने प्रान्तों के लिए जो जो कार्य आ चुके हैं उन पर सूक्ष्म दृष्टि डालने होता है कि वे अपने अपने मन्त्र बहुत कुछ सफलता प्राप्त कर और आगे होने की बहुत कुछ सा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। साहित्य का प्रचार ऐसा बढ़ गया है कि जिन विषयों का [illegible] नाम भी नहीं जानते, [illegible] ही पुस्तकें प्रान्तिक भाषाओं में [illegible] कर तैयार हो गई हैं। [illegible] सामाजिक कुरीतियाँ [illegible] हैं और दिन प्रति दिन [illegible] हैं। राजनीति के वि[illegible] में जो [illegible] हुआ [illegible] भी [illegible] चुका है। [illegible] में एक [illegible] और [illegible] सर्व देशीय [illegible] तथा [illegible] का है। प्रत्येक प्रान्त के नेता [illegible] बात को मुक्त कंठ से स्वीकार कर [illegible] हैं कि ऐसी सफलता, जब तक एक [illegible] भाषा नियत न की जावे, कदापि [illegible] नहीं हो सकती और इसके मा[illegible] के लिए तर्क वितर्क की भी आवश्य[illegible] नहीं है। यह प्रस्ताव स्वयं सिद्ध है। [illegible] कि जब तक राष्ट्र भाषा निश्चित नहीं [illegible] तब तक एक प्रान्त में क्या हो रहा [illegible] उसका अनुकरण दूसरे प्रान्त वाले क[illegible] नहीं कर सकते। जो सर्व देशीय [illegible] तथा सर्व व्यापी एकता का मूल [illegible] है। पृथक् पृथक् वंशी बजा कर [illegible] राग में बहुत कुछ सफलता प्राप्त [illegible] चुकी। अब सब स्पष्ट स्वर में [illegible] रहे कि हे भारत माता के सु[illegible] उठो और कटिबद्ध हो कर एक ही [illegible] और एक ही स्वर अलापो अर्थात् [illegible] भाषा को राष्ट्र भाषा बनाने का उ[illegible] करो। तभी इस दीन हीन भारत [illegible] का उद्धार हो सकता है। राष्ट्र[illegible] बनाने योग्य कौनसी भाषा है इस [illegible] में भिन्न भिन्न प्रान्तों के भिन्न २ [illegible] भाषी जो अपनी सम्मति प्रका[illegible] कर चुके हैं उसका सूक्ष्म उल्लेख हम [illegible] करते हैं:—

[illegible]] श्रीमान् महाराजा गायकवाड़[illegible] अपनी राय आमतौर पर प्रका[illegible] कर चुके हैं कि हिन्दी भाषा राष्ट्र [illegible] बनाने योग्य है—Hindu Patriot[illegible].

[illegible]] भिन्न भिन्न प्रदेशों की एक सा[illegible] [illegible] बनने का सम्मान हिन्दी [illegible] चाहिए। हिन्दी ही रा[illegible]ष्ट्रभाषा होनी चाहिए—डाक्टर [illegible] कृष्ण भण्डारकर।

[३] देवनागरी लिपि तथा हिन्दी भाषा का सर्वत्र प्रचार किया जावे। पांचवे गुजराती साहित्य परिषद् का ९-१०वां प्रस्ताव; प्रस्ताव कर्त्ता रणछोड़ लाल लालू भाई।

[४] यह मेरे लिए शोक की बात है कि मैं आपकी मातृभाषा [हिन्दी] में व्याख्यान नहीं दे सकता, जोकि राष्ट्र भाषा कहाने योग्य है। मुझे विश्वास है कि हिन्दी ही राष्ट्रभाषा होगी—लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक।

[५] हिन्दी भाषा में जब तक सार्वजनिक कार्य न होगा तब तक देश की उन्नति नहीं हो सकती। ....जहां राष्ट्रीय प्रश्न हो—वहां राष्ट्र भाषा [हिन्दी] ही में उसका विचार होना चाहिए। ... आगामी कांग्रेस में अगर कोई बिना हिन्दी जाने आवेगा तो मेरे व्याख्यान से उसे कुछ भी लाभ न होगा—कर्म्मवीर गांधी।

[६] इस सभा की सम्मति में देश में एकता की वृद्धि और राष्ट्रीय भावों के प्रचार के लिए यह अति आवश्यक है कि देश व्यापी व्यवहारों और कार्यों में एक राष्ट्र लिपि और भाषा का प्रयोग किया जाय और इसके लिए देवनागरी लिपि और हिन्दी भाषा ही उपर्युक्त है—राष्ट्र भाषा सभा—लखनऊ; प्रस्ताव कर्त्ता लाला मुन्शीराम जी, अनुमोदन तथा समर्थन कर्त्ता माननीय मदन मोहन मालवीय, मि० राम स्वामी ऐयङ्गार तथा मिसेज ऐनी बीसेण्ट।

[७] समस्त भारतीय भाषाओं के लिखने के लिये देवनागरी लिपि सर्वोत्तम है और प्रत्येक प्रान्त की प्रत्येक पाठशाला में अंग्रेज़ी तथा प्रान्तिक भाषा के साथ हिन्दी पढ़ाई जावे—आठवां मराठी साहित्य सम्मेलन का जो सर गङ्गाधर राव राजा साहिब मिराज की अध्यक्षता में हुआ था, प्रस्ताव प्रस्ताव कर्त्ता रा० ब० सरदार माधवराव कि वे, समर्थक श्री राजाराम बोड्स एम.ए. एल.एल. बी.।

[८] ऐसे शुभ समय में राष्ट्र भाषा स्थिर करके उसके प्रचार में बहुत हीन-उत्साह ज्ञात होता है। यह ठीक नहीं राष्ट्र भाषा कौनसी होनी चाहिए यह ठहर चुका है और यह भाषा हिन्दी ही है। गत मराठी साहित्य सम्मेलन में यह बात ठहर चुकी है कि राष्ट्र भाषा हिंदी ही होनी चाहिए और हिन्दी ही राष्ट्र भाषा होने योग्य है। इस ठहराव को मराठी पाठक भूले न होंगे। गुजराती सम्मेलन के समय यही प्रस्ताव स्वीकार हो चुका है। बंगाली इस प्रस्ताव का विरोध कदापि नहीं कर सकते—मराठी भाषा का पत्र सन्देश।

(९) यूना नगर महाराष्ट्र की राजधानी है।.....यहां के महाराष्ट्र बन्धु हिन्दी से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं। उन्हें सोलह आना विश्वास हो गया है कि यदि कोई राष्ट्रीय भाषा सारे भारत की हो सकती है तो वह हिन्दी ही है। फल यह हुआ है कि अब यहां कोई सार्वजनिक सभा होती है तो उसमें हिन्दी भाषा का प्रवेश अवश्य रहता है।.....फरवरी के अन्तिम सप्ताह में जो यहां वैद्यक सम्मेलन होने वाला है उसकी भी यहां अधिकांश हलचल हिन्दी में ही हो रही है। और उक्त अधिवेशन के अवसर पर यहां के महाराष्ट्र भाइयों के अनेक भाषण राष्ट्रीय भाषा में ही सुनाई देंगे।..... महाराष्ट्र की राजधानी में राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रचार का जो अत्यन्त महत्व पूर्ण हर्ष—समाचार हम पाठकों को सुनाते हैं वह यह हैं कि यहां की दक्षिण शिक्षा समिति की प्रारम्भिक मराठी पाठशाला में हिन्दी की श्रेणी खुल गई है और यहां के विद्यार्थियों को हिन्दी भी दूसरी भाषा के तौर पर मराठी के साथ साथ पढ़ाई जाने लगी है। चित्रमय जगत, दिसम्बर १९१६।

सारांश में हिन्दी राष्ट्रभाषा मानी जा चुकी है। अब रहा इस महान् कार्य को कार्य में परिणत करना सो—यह सर्व साधारण के हाथ की बात है। नेताओं का कर्तव्य पथ प्रदर्शन है। उस पथ पर चल कर मंजिल पर पहुंचना सर्व साधारण का कर्तव्य है। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक, माननीय मदन मोहन मालवीय, कर्मवीर गांधी, विदुषी बीसेण्ट आदि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सब देश भक्तों के, जिन्हों ने अपना समस्त जीवन देशहित में व्यतीत किया है महत्व पूर्ण विचारों तथा उनकी लालसाओं को हम यदि कार्य रूप में परिणत करने का उद्योग न करें तो इस से बढ़ कर कृतघ्नता की बात और कौन हो सकती है? लोकमान्य तिलक के वाक्य भी लोकमान्य होने चाहिए, सब साधारण को उनके महा वाक्यों को पूर्ण करने का उद्योग करना चाहिए। श्रीयुत रा० ब० सरदार माधव राव कि वे इन्दौर के प्रतिष्ठित २ ईस तथा राज कर्मचारी हैं। आपने ही आठवें मराठी साहित्य सम्मेलन में हिन्दी के राष्ट्रीय भाषा होने का बीज बोया था जिस को महाराष्ट्र भाइयों ने सींच कर वृक्ष का रूप दिया है। अब उसमें फल फूल आने का समय है हम आशा करते हैं कि ऐसे समय में सरदार साहब उसके लालन पालन का यथार्थ उद्योग करके इस महान् कार्य की पूर्णता की ओर असर करते हुए समस्त भारतवर्ष में यश के भागी बनेंगे। अब हम फिर अन्त में एक बार कहते हैं कि अब अकर्मणीय सभा सम्मेलनों का समय नहीं है। अपनी अपनी वंशी और अपने २ सुर अलापने का भी समय नहीं है। अब सब को एकत्र होकर कार्य करने का समय है। प्रत्येक सम्मेलन और सभा में भिन्न २ प्रान्तों के नेताओं को निमन्त्रण देने और सार्वजनिक विषयों पर विचार करने का समय आ गया है। इस लिए सब मिलकर एक ही वंशी बजाओ और एक ही सुर अलापा।

—०—

पंडित अखिलानन्द जी

की वर्तमान परिस्थिति

(स्वामी अनुभवानन्द जी)

आज कल पंडित अखिलानन्द जी के धार्मिक विचारों के विषय में सामाजिक समाचार पत्रों में खूब आन्दोलन हो रहा है। इस में सन्देह नहीं कि जब यह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था तब कुछ शीघ्रता से काम लिया गया था, किन्तु इस समस्त आन्दोलन का आधार पंडित जी का अपना ही कार्य क्रम और विचार परिवर्तन था। यदि वे पूर्व की भांति स्वच्छ हृदय से स्वामी दयानन्द के वैदिक विचारों का प्रचार एवं विस्तार करते रहते, यदि वे आर्यसमाज की वेदी पर पांव जमा कर वैदिक सिद्धान्तों और स्वामी दयानन्द के विचारों की अवहेलना आरम्भ न करदेते, यदि वे "वैदिक वर्ण-व्यवस्था" लिखकर उसमें—"स्वभाव" का अनुचित आश्रय लेकर—स्वामी दयानन्द जी के पुस्तकों की कतरब्योंत करते हुए आर्यसमाज के मूल भूत "वर्ण व्यवस्था" सिद्धान्त पर इतनी निर्दयता से चोटें न करते, यदि वे अथर्ववेद के नाम से भूत प्रेत, छुआछूत, फलित ज्योतिष, शकुनापशकुन, आदि कुविचारों एवं अवैदिक बातों का वैदिक धर्म को वेदियों पर भरे उत्सवों में प्रचार न करते; तो हम समझते हैं कि उनके विषय में इतनी शीघ्रता से यह आन्दोलन अब भी नहीं होता और वे कुछ दिन के लिये और भी आर्यसमाज में रह सकते। परन्तु उनसे रहा न गया, और समय से पहिले ही—अगला पांव जमाने से पहिले ही पिछला पांव उठा लिया और इस प्रकार अपने वास्तविक स्वरूप में आने से पहले ही घायल हुए। इस तमाम अदूर दर्शिता का यह परिणाम अवश्यम्भावि था जो कि निकला। अस्तु। यह आन्दोलन हुआ और खूब हुआ।

पंडित जी के मित्रों शुभचिन्तकों ने समझाने अथवा कुछ दिन और सामाजिक सृष्टि में रखने की कोशिश की, उन से स्पष्टीकरण करवाये, मन्तव्य एवं वक्तव्य लिखवाये; यह सब कुछ किया परन्तु पंडित जी एक इञ्च भी इधर को न सरके। हां उनकी उस ओर की तीव्रगति कुछ २ मन्द अवश्य होगई। हमें कुछ लोगों ने यह समझाना चाहा कि "उन के सन्मित्रों की समझौती ही ऐसी थी कि तुम धीरे २ उधर को बढ़ो—इतनी तेज़ी मत करो" परन्तु हमें इस बात पर विश्वास करने का कोई कारण न मिला। अस्तु। इतना तो हम भी अवश्य कह सकते हैं कि पंडित जी पहले से कुछ मन्द गति से अपनी जन्म भूमि-पौराणिक स्थली की ओर जाने लगे हैं। हां यदि वे अपनी पहली चाल से [illegible] अपने लक्ष्य स्थान पर पहुंच जाते तो अब इस समझौती से महाभारत के "विशेषु" की भांति मध्य में ही पहुंच कर मन्द गति के कारण कुछ दिन के लिये रह गये। परन्तु उनकी साधारण अथवा मन्द गति ही आर्यसमाज के लिए कई अंशों में हानिकारक हुई।

हमारी सम्मति में पंडित श्रीमतीन जी आर्यसमाज से सर्वथा पृथक हो कर कोई हानि नहीं पहुंचा सके, धर्मपालादि एक दो दूसरे मनुष्य भी समाज का परित्याग करके इसे उतनी हानि नहीं पहुंचा सके; जितनी कि पंडित अखिलानन्द जी अपने आपको सोलह आना आर्यसमाजी बताते हुए अपने पिछले भाषणों और लेखों द्वारा पहुंचा चुके हैं तथा पहुंचा रहे हैं।

इस समय आर्यसमाज और पंडित अखिलानन्द जी के मध्य में कैसा एक अद्भुत खेल अथवा तमाशा सा हो रहा है?। एक ओर आर्यमित्रादि सामाजिक पत्रों में यदि पश्चात पूर्वक अपने मन्तव्य के स्पष्टीकरण प्रकाशित किये जाते हैं, तो दूसरी ओर भारत मित्रादि में समाज के तमाम गिने चुने नेताओं के नाम उन्हीं विषयों पर शास्त्रार्थ करने की घोषणायें दी जाती हैं। एक ओर यदि बंगाल बिहार की श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा के सन्मुख लेख बद्ध वक्तव्य उपस्थित करते हुए अपनी भूल स्वीकार करके पुस्तक के भावि संस्करण को सुधार देने की प्रतिज्ञा पूर्वक मृगतृष्णा के जल की भांति आशा दिलाई जा रही है तो दूसरी ओर "सनातन धर्म पता का एवं पाटलिपुत्र" आदि में उन्हीं भूल से लिखे हुए लेखों को "हु" मानकर आर्यसमाज पर प्रश्न पर प्रश्न भी छोड़े जा रहे हैं। इधर यदि स्वामी दयानन्द के एक २ अक्षर को सत्य मान कर अपने आप को सोलह आना आर्यसामाजी बताया जा रहा है तो उधर "अजमेर" आदि की ब्राह्मण सभाओं के उत्सवों पर उसी स्वामी दयानन्द के वेद भाष्य की अवहेलना करते हुए सायण और महीधर के भाष्य को निरुक्त और निघण्टु के अधिक अनुकूल कहकर उपादेय भी बनाया-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यदि स्वामी दयानन्द के समस्त मन्तव्यों से अधिक मानने की दावा की जाती है तो इस समय जिस मण्डली में [illegible] ऋग्वेद को ठोक पीटकर [illegible] शकुन, मुआकुन, शुभ शेन, [illegible] शकुन [illegible] होना; आदि का उपदेश ही नहीं बल्कि प्रचारक अथवा [illegible] आदि संस्थापक कहोशिल किया जा रहा है [illegible] दि पत्नियों की वृद्धि और इसी [illegible] परिवर्तन को खुले बाजारों [illegible] स्वीकार किया जा रहा है तो यहां "ब-रेली" के श्रीराम मन्दिर में श्री पं० हरि शंकर जी के सभापतित्व में व्याख्यान में न्याय शास्त्रोक्त "जाति" को वर्ण पर वाक्य बन कर इसके की चोट से अनु [illegible] कर में एक इन्च भी इधर उधर न कर करने वाली बल्कि ब्रह्म की भांति सदा एक रस, अपरिवर्तन शील एवं शुद्ध, बुद्ध मुक्त स्वभाव सिद्ध किया जा रहा है। यदि सच पूछो तो पंडित जी की धार्मिक और सामाजिक अवस्था इस समय ठीक वह है कि:—

"जहां देखी तवा परात,
वहीं गवाई सारी रात।"

आर्यसमाज की वेदी पर आवे तो वहीं दिन बीत गया, और यदि ब्रह्मण सभाओं में जा पहुंचे तो वहीं रात कट गई। ऐसी दशा में पंडित जी और उस के सच्चे शुभ चिन्तकों से प्रत्येक आर्यसमाजी पूछ सकता है कि यह सब कुछ लिखावट अथवा समझा नहीं तो और क्या है? हमें तो आश्चर्य इस बात का है कि यदि पंडित जी स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों को अक्षरशः मानते हैं, (जैसा कि वे समाचार पत्रों में प्रकाशित कर रहे हैं) यदि वे इसी जन्म में वर्ण परिवर्तन मानते हैं अतएव "वैदिक-वर्णव्यवस्था" प्रतिपादित वर्ण पर वाक्य जाति को अनित्य मानते हैं, यदि वे वेदों की कतर ब्योंत कर के शकुन आदि अवैदिक विचारों को सब सब मुख अवैदिक मानते हैं, यदि वे स्वामी दयानन्द के सच्चे हृदय से अनुयायी हैं, अथवा सोलह आना वैदिक आर्यसमाजी हैं, तो यह भारतमित्रादि

से शब्द [illegible] को घोषणा किस के नाम, से शब्द [illegible] को घोषणा किस के नाम, किस बात की, और किस विषय की? क्या जिन के नाम यह घोषणा प्रकाशित हुई है स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को नहीं मानते! क्या वे इसी जन्म में वर्ण परिवर्तन नहीं मानते, क्या वे वर्ण पर वाक्य जाति को नित्य नहीं मानते क्या पत्नियों की वृद्धि नहीं मानते या करने के नफरत मानते हैं! क्या वे वैदिक धर्म को छोड़ पौराणिक मत की ओर जा रहे हैं? आखिर बात क्या है जिस पर हिन्दू सम्वाद पत्रों में इतना वारथेला म-चाया गया!!

सच तो यह है कि आर्यसमाज में अब आप की आशालतायें कुछ कुछ कुम्हला चली थीं। इस लिये आप बड़े वेग से सब कुछ कह कहा कर भी "यथान्यास मेवास्तु" का अनुसरण करते हुए अपने अ-सलत स्वभाव में बंध रखने की तैयारियां करने रहे थे, बल्कि रस भी दिया था कि अचानक आप के शुभ चिन्तकों ने पकड़ लिया और कुछ दिन और इधर रहने की प्रेरणा अथवा अनुरोधना की। अस्तु। आप जिस बहाव में जाने के लिये पग बढ़ा चुके, एवं हाथ पसार चुके थे, उस में भी आप को बहुत कुछ दिखाई दे रहा था, इस लिये आपने दोनों ओर हाथ बांध लेना ही उचित समझा और इसी धारण का अवलम्बन किया। सद्धर्मप्रचारक के पाठकों को ज्ञात होगा कि एक पं० जी ने अपने लेख वह वक्तव्य में अपने पुस्तक के सिद्धान्त विरुद्ध अंशों को-वर्णन की त्रुटियों का कारण माना है। परन्तु आप के पुस्तक को यदि आप के इन व्याख्यानों में मिला कर पढ़ा जाय जो कि आर्यसमाज फतेहपुर, आर्यसमाज बिन्दकी रोड पेशावर तथा अजमेर एवं बरेली आदि स्थानों पर दिये गये हैं—तो एक थोड़ी सी समझ रखने वाला भी बड़ी आसानी से यह परिणाम निकाल सकता है कि पुस्तक में सिद्धान्त विरुद्ध भासने वाले स्थल-वर्णन की त्रुटियों के कारण नहीं, बल्कि जो कहीं २ सिद्धान्त के अनुकूल भासता है वस्तुतः वह वर्णन की त्रुटियों के कारण, अथवा आर्यसमाजियों की सिद्धान्त विषय परीक्षा य. अपवाद भीरुता या अन्य किसी आवश्यक कारण से जान बूझ कर किया है जिस का वास्तविक भेद-रहस्य पंडित जी ही जानते होंगे। अन्यथा आप तो स्वामी दयानन्द का नाम ले-कर और उनके अनुयायी बनकर उनके विचारों को हिन्दू मत के गहरे रंग में रंगना चाहते थे।

ऐसी दशा में हम तो निश्चय पूर्वक कहदेना चाहते हैं कि ये जितने भी प्रका-शित स्पष्टी करण, मन्तव्य, और लेख वक्तव्य समाजिक पत्रों में प्रकाशित हो रहे हैं ये पंडित जी के स्वविचारों के बोधक नहीं बल्कि आप के [illegible] न्तकों की ओर से, हां आप की लेखनी द्वारा निकल रहे हैं। कहने को तो आप स्वामी दयानन्द के पूरे अनुयायी, उनके एक २ अक्षर को मानने वाले, अतएव सोलह आना आर्यसमाजी बल्कि अपने शब्दों में "घोर दयानन्दी" हैं, पर अभीष्ट स्थानों और जिस मण्डली में पहुंच कर उनके मन्तव्यों एवं विचारों को सब सभी कतर ब्योंत करके अवहे-लना न करना भी आप अपनी विद्वत्ता, योग्यता बल्कि शान के विपरीत समझते हैं। सच तो यह है कि अब आप आर्य-समाज के सामने अपने वास्तविक स्वरूप में आने के लिये खुल से गये हैं, और कोई शक्ति अब आप को ऐसा करने से रोक नहीं सकती। आपके सम-स्त मन्तव्य, वक्तव्य एवं स्पष्टी करण नवीन वेदान्तियों की "माया" की भांति अनिर्वचनीय से हो रहे हैं। यद्यपि हमें आशा नहीं कि हमारे कथन पर ध्यान दिया जायगा परन्तु फिर भी हम पंडित जी से प्रेम पूर्वक निवेदन करना चाहते हैं कि:—

आप इस प्रकार से स्वामी दयानन्द और उनके मन्तव्यों का अमंगल उपहास करके, उनकी गुप्त अवहेलना करके; उन के सिद्धान्तों एवं पुस्तकों की पूरी सिद्ध-यता से कतर ब्योंत करके; आर्यसमाजिक हृदयों में कुछ उत्तम आशा आशा जनक भाव उत्पन्न नहीं कर सकेंगे। ऐसा करने से जहां आप अपने आप को पूर्ण अप्रीति-भाजन बनावेंगे वहां अपनी विद्वत्ता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

योग्यता और अविद्या पति पर भी बहुत बड़ा अमित कलंक लगाने का स्वयं ही अवसर प्रदान कर लेंगे। आपने अपने इन बारम्बार पदच्युतियों, बरतरफियों, और कलङ्की करणों से लोगों के रहे सहे भी सन्देह दूरकरके विश्वास दिला दिया है कि वस्तुतः अब आप आर्यसमाज से कितनी दूर पहुँच गये हैं। इस लिये अब उचित यही है कि आप अपनी अवस्थाओं व्यवस्थाओं पर पूर्ण विचार करके किसी एक किनारे खड़े हों। हम यद्यपि यह नहीं चाहते कि आप आर्यसमाज से सर्वथा ही पृथक हो जावें, किन्तु हम यह भी सहन नहीं कर सकते कि आप मार आस्तीन बनकर गुप्त, किंवा प्रत्यक्ष रूप से उस की भली भाँती करतब्योंत करके अवहेलना करते होलें। हम हृदय से चाहते हैं कि आप विशुद्ध वैदिक धर्मी और आर्य धर्मानुयायी बनें और आजीवन वैदिकधर्म की शुद्ध मन से सेवा करें। परन्तु यदि आप ऐसा नहीं कर सकते या नहीं करना चाहते, यदि आप के विचार सचमुच परिवर्तन पा-चुके हैं जैसा कि आप के कार्य कलाप से जाना जा रहा है, यदि आप का आत्मा अब इतना निर्बल हो गया है कि किसी उचित उपाय से इस अवस्था का त्याग नहीं कर सकता, यदि आप की आशाओं की पूर्ति आर्यसमाज से नहीं हो सकती; तो आप निःसंकोच भाव से इस वेदी का परित्याग करके दूसरे किनारे पहुँच जाईये। आर्यसमाज को आप से कोई गिला या रंज नहीं है। वह आप से भली भाँति सन्तुष्ट है, प्रसन्न है और उपकृत है। इसे आप धीमी या मंद जैसी भी हो अपनी चाल से चलने दीजिये। यदि बहुत से दूसरे वियोगों को पार कर भी विकलित नहीं हो सका तो क्या इस नवीन शोक को भी सह ही लेगा। किन्तु इन तमाम वियोगों—वेदना ओं को यह बड़ी आसानी से सहता हुआ भी यह नहीं सहन कर सकेगा कि अब स्वामी दयानन्द के नाम से, वेदों के नाम से और वैदिक सिद्धान्तों के नाम पे; आर्य समाज की ही वेदी पर शकुन शास्त्र, वेद विरुद्ध, केवल जन्म से ब्राह्मणों को ही वेदाध्यापनाधिकार, कलित ज्योतिष; और गुरुकुलों को शूद्रों के लिये बता कर उनका उपहास एवं तिरस्कार का चारों ओर प्रचार करें। अब तक आप ने बहुत कुछ किया आप का सहारा पाकर औरों ने×भी बहुत किया, बहुत किया और खूब किया; किन्तु अब हमें आशा है कि यदाद्विचार पूर्वक किसी एक किनारे का अनुसरण करेंगे और कि वे मल्लाह नाव की भांती विचार सागरही में गोते न लगाते रहेंगे।

॥ ओम् शम् ॥

+ नोट हमें यह मालूम करके कितना दुःख हुआ कि श्रीमती आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रांत के सुयोग्य वैतनिक उपदेशक श्री पंडित शिवशर्मा जी ने भी आर्यसमाज बड़ौत जि० मेरठ के उत्सव के समय भरी वेदी पर श्री स्वामी सर्वदानन्द जी से इसी विषय पर शास्त्रार्थ कर डाला। यदि यह सच है जिस में कि हमें सन्देह है तो किमाश्चर्यमतःपरम्।

—०—

आवश्यक्ता है।

[१] गुरुकुल कांगड़ी में सरकार की ओर से डाकघर १ जनवरी १९१७ से खुल गया है। उक्त डाकघर के लिए पोस्ट मास्टर का प्रबन्ध गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता के आधीन रक्खा गया है। यदि कोई रिटायर्ड पोस्ट मास्टर (Retired Postmaster) गुरुकुल में कार्य करना चाहें तो मेरे से पत्र व्यवहार करें। और उनको अपने निर्वाहार्थ जो न्यून से न्यून आवश्यक हो उस से भी प्रार्थना पत्र में सूचित करें।

सुखबीरराम,
मुख्याधिष्ठाता गुरुकुल कांगड़ी
जि० बिजनौर

—०—

पं० अखिलानन्द का पोल

पं० अखिलानन्द और उनके सत्यार्थप्रकाश तथा महर्षि दयानन्द के मूल सिद्धान्त के विरुद्ध वर्ण व्यवस्था पर पुस्तकलिखी है उसकी पोल समाचार पत्रों द्वारा अच्छी भान्ति खुलचुकी है। अब हमें विश्वस्त सूत्र द्वारा पता लगा है कि श्री स्वामी विद्यानभिक्षु जी [जो कि पं० अखिलानन्द से इसी विषय पर शास्त्रार्थ भी कर चुके हैं।] एक पुस्तक "वैदिकवर्ण प्रकाश" नामक छपवा रहे हैं जो कि शीघ्र ही भाषा में छप कर तैय्यार हो जायगी।

(एक जानकार)

—०:—

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ नीतियें नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देवभाषा का उद्धार करने के इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यनाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिये। शीघ्र ग्राहक बनिए। बोलिंक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्य्यालय गुरुकुल कांगड़ी
पो० गुरुकुल-कांगड़ी जि० बिजनौर

—०—

श्री बालकृष्ण एम० ए० रचित

महोपयोगी पुस्तकें ॥

१. अर्थशास्त्र = धनविद्या पृष्ठ ६०० मूल्य १॥)
२. प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली ॥)
३. आर्यों की वैज्ञानिक उन्नति =)
४. ईश्वरीय ज्ञान वेद पृष्ठ ४०० मूल्य १॥)

आर्य पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[illegible]मिक समाचार

श्री [illegible] जी [illegible] सूचना [illegible] कि महाविद्यालय का [illegible] १० मार्च तक होने वाला [illegible] कारणों से उसे परिवर्तित कर ६ से १० अप्रैल १९१७ को रक्खा गया है।

श्री अधिष्ठाता जी मेरी शारदाश्रम ज्वालापुर (हरि[illegible]) [illegible] देते हैं कि ज्वालापुर [illegible] "निकटवर्ती कन्या ब्रह्मचर्याश्रम" तथा "विधवा शिक्षणालय" का पञ्चम महोत्सव हरिद्वार [illegible] सड़क पर देहरादून निवासी श्रीमान् भक्तराज लाला बलदेवसिंह जी के मेरी शारदाश्रम के बाग में वैशाख कृष्णा ५,६,७,८, तदनुसार १२,१३,१४,१५ अप्रैल १७ को बड़े समारोह से होगा। इस अवसर पर योग्य विद्वान और विदुषियां पधारेंगी। छात्राओं के शिक्षाप्रद अभिनय तथा खेल भी देखने योग्य होंगे।

श्री मंत्री जी गुरुकुल हरपुरजान डाकखाना राजापट्टी (सारन) लिखते हैं कि उक्त गुरुकुल की नियमावली छप कर तय्यार है। जिन सज्जनों को आवश्यकता हो)॥ का टिकट भेज कर मंगवा सकते हैं।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज श्रीनगर (काश्मीर) सूचना देते हैं कि शिवरात्रि को आर्य्यसमाज श्रीनगर तथा आ० स० रणवीरगञ्ज बाज़ार की ओर से ऋषि बोधोत्सव बड़े समारोह से मनाया गया। विद्यार्थियों ने वेद मंत्रोच्चारण किये तथा भजन गाये। भक्त हरिश्चन्द्र जी तथा ला० गोविन्द सहाय जी के व्याख्यान हुए। उपस्थित भाइयों का मिठाई से सत्कार किया गया। ऋषि बोधोत्सव के परचे वितीर्ण किए गये। उपस्थिति लग भग २०० थी। उत्सव का प्रभाव अत्युत्तम पड़ा।

आर्यसमाज लुध्याना का वार्षिकोत्सव ३०, ३१ मार्च तथा १ अप्रैल १९१७ को होना निश्चित् हुआ है। श्री मंत्री जी संन्यासी महात्माओं, उपदेशक तथा भजनीक महाशयों से प्रार्थना करते हैं कि इस अवसर पर अवश्य पधार कर नगरनिवासियों को लाभ पहुंचावें।

आर्यसमाज फगवाड़ा में श्री महाराजा साहब कपूर्थला पधारे थे। आप पुस्तकालय देख कर [illegible] प्रसन्न हुए। लाला शरणदास जी उपप्रधान ने आप को फूलों की माला पहिना कर अभिनन्दन पत्र भेंट किया-जिसे आपने सहर्ष स्वीकार किया। लाला मथुरादास जी मंत्री से आर्यसमाज के सम्बन्ध में बहुत प्रश्न किये जिनके उत्तर मंत्री जी ने बड़ी अच्छी तरह दिए।

म० जनकप्रसाद जी भूतपूर्व मंत्री आर्यसमाज गया सूचना देते हैं कि गुरुकुल हरपुरजान के उपदेशक पं० वेदव्रत शर्म्मा जी म० रामलाल जी भजनीक को साथ लिए हुए दो महिनों से ज़िला चम्पारन में प्रचार कर रहे हैं। इस प्रचार का इतना प्रभाव पड़ा कि मोतीहारी नगर में आर्य्यसमाज स्थापित होने वाली है। बेतिया में भी बड़ी धूम धाम से प्रचार हो रहा है। इस प्रान्त में ऐसे ही पुरुषार्थी उपदेशक की आवश्यकता थी सो ईश्वर की कृपा से पूर्ण हो गई।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज अबोहर जिला फिरोजपुर सूचना देते हैं कि आर्य्यसमाज मन्दिर में वीरोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। पहिले हवन किया गया फिर भजन गाये गये। तदुपरान्त लेखराम मेमोरिअल फण्ड के लिये चन्दा एकत्रित किया गया।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज शाहाबाद जिला करनाल सूचना देते हैं कि उक्त समाज का छठा वार्षिकोत्सव तारीख २० फरवरी को धूम धाम से समाप्त हुआ। नगर कीर्त्तन में म० इन्द्रजीत सिंह जी ने नगर निवासियों को खूब आनन्दित किया। श्रीमती आर्य्यप्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से पं० चन्द्रभानु जी, पं० ब्रह्मानन्द जी, पं० बालमुकन्द जी तथा गुरुकुल कांगड़ी से स्नातक बुद्धदेव जी विद्यालङ्कार और पानीपत से पं० राम गोपाल जी पधारे थे। यों तो व्याख्यान सब प्रभाव शाली हुए-परन्तु स्नातक बुद्धदेव जी का व्याख्यान विशेषतया पसन्द किया गया। सारी जनता गुरुकुल की महिमा गा रही थी।

श्री स्नातक जी के अपील पर वेदप्रचार के लिये २४०) एकत्रित हुए। हम श्रीमान् मुख्याधिष्ठाता जी का धन्यवाद करते हैं कि जिन्हों ने कृपा करके श्रीमान स्नातक जी को यहां भेज कर हम को कृतार्थ किया।

२-एक नवीन वेदान्ती महाशय ने कुछ शंकाएं कीं जिनका उत्तर श्रीमान पं० बुद्धदेव जी ने बड़ी योग्यता पूर्वक दिया, जिसका प्रभाव उपस्थित जनता पर अत्युत्तम पड़ा।

३-मोहन सिंह, जो शाहाबाद समाज में सन् १९१४ में शुद्ध हुआ था, वैदिक धर्म से च्युत हो चुका है अतः जो प्रमाणपत्र समाज की ओर से शुद्धी के समय दिया गया था, उसका विश्वास, अब कोई महाशय न करें।

श्री प्रधान जी आर्य्यकुमार सभा (अछूत जाति) जगाधरी सूचना देते हैं कि जो अनाथ कन्या ईसाइयों के फन्दे में था उसका श्रीमान् डिप्टी कमिश्नर साहिब ने वापिस हमें दिलवा दी। इसके लिये डिप्टी कमिश्नर महोदय धन्यवाद के पात्र हैं।

श्री मंत्री जी आर्य समाज मधुबन जिला आज़मगढ़ लिखते हैं कि उक्त समाज का वार्षिकोत्सव तारीख ६, ७, तथा ८ मार्च १९१७ को होना निश्चित् हो चुका है, परन्तु अब तक बहुत पत्रव्यवहार करने पर भी, श्री स्वामी मुनीश्वरानन्द जी और म० सुखलाल जी भजनोपदेशक तथा मास्टर धर्म्म सिंह जी का पता नहीं चला। यदि किसी महाशय को इन महानुभावों का पता हो तो शीघ्र ही सूचना दें।

मारवाड़ी एसोसिएशन

का

वार्षिक उत्सव

मारवाड़ी एसोसिएशन दिल्ली का वार्षिक उत्सव (वार्षिक अधिवेशन) चैत्र शुक्ल १ शनिवार सम्वत् १९७४ वि० तदनुसार ता० २४ मार्च १७ ई० को होगा। एसोसिएशन के समस्त सभासदों को सूचित किया जाता है कि वे उक्त तिथि पर एसोसिएशन भवन में पधार कर उत्सव में सम्मिलित हों। समय दिन के चार बजे का है।

निवेदनकर्ता सेवकः—
केदारनाथ गोयनका, मंत्री,
मारवाड़ी एसोसिएशन, दिल्ली

विज्ञापन

एक अरोड़वंश कन्या के लिये वर की आवश्यकता है। लड़का आर्य्य विचार रखता हो। आयु २५ वर्ष तक हो। अच्छी आमदनी रखता हो या कालिज में शिक्षा पाता हो। निम्न पते से पत्र व्यवहार कीजिए:—

प्रियतमदास
प्रधान आर्य्यसमाज वज़ीराबाद

—०—

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

सद्धर्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ॥

प्रवर्तक - मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

२८ फाल्गुन सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० १० मार्च सन् १९१७ ई०

संख्या ४७
भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

[illegible] आर्यमित्र [illegible]—चक्रवर्ती पं० लेख-राम आर्यपथिक के जीवनचरित्र थे। इसका जीवन चरित्र हर एक आत्माओं की जीवन पुस्तक का काम देसकता है। [illegible] चरित्र था। चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया है जिसने ३१ वर्षों से धार्मिक-धर्म की सेवा ही अपना सहोदर बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म प्रचारक का शौक पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

कृत

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—लिखकर विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का आधार वेदों तथा प्राचीन ग्रन्थों पर है। फिर वेदों से लेकर मुसलमान समय तक संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का गुरुकुल वाला शास्त्रार्थ छपगया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही कहीं में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य-सिद्धान्त की पुष्टि का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

१ गुरुकुल-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

२ द्वितीय गुच्छक—पाच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

३ तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धालु ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

४ चतुर्थ गुच्छक—आचाराचार और भूत-शुद्धि—मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

५ पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

६ षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निदर्शन किया है।

७ सप्तम गुच्छक—मातृभाषा का उद्धार मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा की सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी तक पुस्तक रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्य जाति का मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है

८ अष्टम गुच्छक—पारसीमत और वैदिक धर्म मूल्य =)

(डाक व्यय जुदा लगता है)

९ नवम गुच्छक—मानव-धर्म-शास्त्र तथा शासन पद्धति मूल्य =)॥

आर्य सिद्धान्त के विद्यार्थियों को धर्म्म-शास्त्र (Jurisprudence) का तत्व बतलाते हुए यह पुस्तक तय्यार हो गई। इस की तय्यारी में कहां रोमन जस्टी-नियन और आंग्ल-स्मृति-शास्त्रज्ञों की पुस्तकों से सहायता ली गई है; वहां डाक्टर किशोरीलाल सरकार की अपूर्व मीमांसा-शास्त्र पर टिप्पणी रूपी पुस्तक के सहारे से पूर्व मीमांसा से धर्म्म शास्त्र का सम्बन्ध समझाने का प्रयत्न किया गया है।

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के खरीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के खरीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के खरीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्ता,
प्रचारक पुस्तक भण्डार, गुरुकुल-कांगड़ी,
ज़िला बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दासों का मे. द्वार

[illegible] वर्षों का मैं दास
[illegible] तुझसे आकर मैं,
[illegible] सुधरने की आस
[illegible] करने की [illegible] तमका
[illegible] करें नाश
[illegible]
[illegible] आधान का पात्र
[illegible] तेरा [illegible] है,
[illegible] [illegible] आधार
उन्मीलन करणे से होगा,
निश्चय मम पूर्ण-विकास

एक

विद्या प्रचार और परस्पर प्रेम

(लेखक, श्रीयुत प्रोफेसर सेवाराम जी एम० ए०)

भारतवर्ष में परस्पर प्रेम की बड़ी आवश्यकता है। मारे २ फिरने से यह आवाज़ [illegible] में एकता हो, [illegible] एकता समान उद्देश्यों को लेकर परस्पर प्रेमपूर्वक उनके लिये यत्न करने से होती है। क्या इस में किसी को सन्देह होसकता है कि धनियों और निर्धनियों के बीच में जितना परस्पर प्रेम होना चाहिये उतना नहीं। क्या यह सच नहीं कि पढ़े लिखे और अनपढ़ों में जितना प्रेम बढ़ाया जासकता है उतना बढ़ाने का यत्न दिखाई नहीं देता? तथा च चारोंवर्णों के बीच में जो परस्पर सहायता और सेवा की आवश्यकता है यह भी पूर्णमात्रा में दिखाई नहीं देती और भिन्न २ समाजें और उनके विभाग भी जहां तक समान उद्देश्य रखते हैं वहां तक भी मिलकर कार्य्य करते नहीं दीखते? अतः स्पष्ट है कि भारत में सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि, धनी और निर्धनों में, पढ़े लिखे और अनपढ़ो में, और चारों वर्णों तथा भिन्न २ समाजों के बीच में परस्पर प्रेम जितना बढ़ाया जा सकता है उतना बढ़ाया जाय।

जहां प्रेम होगा वहां सहानुभूति होगी और एक दूसरे के दुःख और उनमें किसी बात की कमी को देखकर पूर्ण रूप से उस को हटाने का यत्न किया जायगा।

प्रिय पाठकगण! आप यह सोच सकते हैं कि विद्याप्रचार से हम परस्पर प्रेम कितना बढ़ा सकते हैं। क्या यह एक सच्ची सेवा का प्रकार नहीं कि जहां कहीं विद्या की आवश्यकता हो और हम पहुंचा सकते हों—पहुंचायें? यदि आवश्यकता है तो आप के धन का क्या इस से अधिक सदुपयोग नहीं कि वह धन विद्याप्रचार में लगाया जाय विशेषतया ऐसे देश में जहां ९४ प्रतिशतक अनपढ़ हैं।

ऐ धनी महाशयो! यदि आप निर्धन तथा अनपढ़ भाईयों की इस प्रकार सहायता वा सेवा करेंगे तो क्या आपका और उनका परस्पर प्रेमभाव न बढ़ेगा?

जो लोग आपके नौकर हैं वा आपके आश्रित हैं उनतक विद्या पहुंचाने या उनको विद्या प्राप्ति में सहायता देने का आपने क्या यत्न किया? यदि आपने कुछ नहीं किया वा पूरा यत्न नहीं किया तो धर्म का सन्देश यह है कि आज से ही उन तक विद्या पहुंचाने का कार्य प्रारम्भ करदो।

मेरे पढ़े लिखे भाईयो! यदि आप अपना धार्मिक कर्तव्य पालन करना चाहें तो जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी अविद्या के अन्धकार को यहां से दूर कीजिये इस काम के लिये अपना धन समय तथा शक्ति का निश्चित भाग अर्पण कीजिये और अनपढ़ों तक पहुंच कर कम से कम उनको अक्षरज्ञान, लिखना पढ़ना तथा साधारण गणित सिखाने का यत्न कीजिये। इस प्रकार से पढ़े लिखे तथा अनपढ़ों के बीच में परस्पर प्रेम बढ़ सकता है।

अछूत जातियों के उद्धार की बड़ी भारी लहर चल रही है—क्या उनके उद्धार का सब से अच्छा तरीका यह नहीं कि उन तक विद्या पहुंचाई जाय? वास्तव में सबसे उच्च वर्ण का वही आदमी है जो सब से अधिक और सब से उत्तम प्रकार से औरों की सेवा करे। अतः यदि आप अपने को उच्च-वर्ण वाला समझते हैं तो कभी आपने अपने आत्मा से यह प्रश्न भी पूछा है कि हम सेव्य हैं वा सेवक? क्या कभी आप यह भी सोचते हैं कि हम किस उत्तम प्रकार की सेवा निष्काम भाव से करते हैं? अब यदि आप किसी प्रकार की सेवा नहीं करते तो आप वास्तव में उच्चवर्ण वाले नहीं जब तक आप औरों की उत्तम से उत्तम प्रकार की और अधिक से अधिक सेवा नहीं करते।

उच्चवर्ण वालों का यही धार्मिक कर्तव्य है कि धर्म और विद्या को घर २ वालों तक पहुंचायें। आज सब समाजें यह तो मानती हैं कि विद्या अधिक से अधिक फैलाई जाय पर इस का हर एक समाज का यह कर्तव्य नहीं कि अपने समासदों में से तो हर एक तक विद्या पहुंचाने का यत्न करे, न केवल इतना ही किन्तु इस समान [illegible] तक सारी समाजों से मिलकर कार्य्य हो सकता हो वहां तक उस से मिल कर कार्य्य किया जाय।

समाजों में परस्पर प्रेम तब ही हो सकता है जब कि जहाँ कहीं उनका उद्देश्य समान हो वहां उस समान अङ्ग को लेकर सम्मिलित रूप में कार्य्य करें। सब धार्मिक समाजों का यह कर्तव्य है कि विद्याप्रचार के लिए जितने अधिक से अधिक स्थिर स्वयं सेवक बना सकें बनायें, और उन को सेवा में रखने का यत्न करें, जितनी अधिक से अधिक पाठशालायें विद्यालय, महाविद्यालयादि जारी कर सकें वा रख सकें उतने जारी करें और रक्खें तथा च विद्याप्रचार के कार्य में कन्धे से कन्धा मिला कर जहां तक कार्य्य कर सकें करें। ऐसे ही समान अङ्गों और समान उद्देश्यों को लेकर समाजों का परस्पर प्रेम बढ़ेगा और वह एकता आयेगी जिसकी कि भारत वर्ष को बहुत आवश्यकता है।

भारतवर्ष में ३१½ करोड़ आदमी हैं अर्थात् इतने आदमी हैं कि यदि बीस २ की एक २ टोली लगातार रात दिन हमारे सामने से एक २ मिनट में गुज़रती चली जाय तो अन्तिम टोली ३० साल के पीछे हमारे सामने आयगी। कौनसी ऐसी समाज है जो इन सब लोगों को पापों के पञ्जे से छुड़ाने वा अविद्या के अन्धकार से हटाने का कार्य्य अकेली ही कर सकती है? इस लिये क्यूं न एक दूसरे के विद्या फैलाने तथा पापों को दूर करने के यत्न सम्मान की दृष्टि से देखे जायं और जहां तक उस विषय में मिलकर कार्य्य किया जा सकता है किया जाय?

इस लिए मेरी आप सब से यही प्रार्थना है कि आईये हम सब मिल कर विद्याप्रचार के लिए जितने स्थिर स्वयं सेवक पैदा कर सकें करें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक

प्रचारक का समय विभाग

गुरुकुलोत्सव समीप आरहा है, उस समय विशेषांक भी निकलेगा। प्रचारक का समयविभाग निम्नलिखित होगा—

२४ मार्च को गुरुकुलांक निकलेगा। यह अंक प्रचारक के दो अंकों के समान होगा।

३१ मार्च का अंक विशेषांक के कारण बन्द रहेगा।

७ अप्रैल का अंक उत्सव के कारण बन्द रहेगा। ६, ७, ८ और ९ अप्रैल को प्रचारक गुरुकुल में दैनिक निकलेगा। यह दैनिक गुरुकुल में पैसे में बिकेगा, और बाहिर प्रचारक के ग्राहकों को =)॥ में और अन्यों को ।-) में भेजा जायगा।

१४ अप्रैल का अंक गुरुकुलोत्सव के सम्पूर्ण समाचारों को लिये हुए प्रकाशित होगा।

गुरुकुलांक =) का टिकट भेजने वाले को भेजा जा सकेगा।

विशेषांक के लेख

प्रथम भाग

१. श्री महात्मा मुंशीराम जी का अग्र लेख।

२. श्री महात्मा गान्धी जी का लेख शिक्षणपद्धति पर,

३. श्रीयुत बा० स्वरूपसुन्दर दास जी का लेख 'शिक्षा के माध्यम' पर।

४. प्रो० बालकृष्ण एम० ए० का लेख;

५. श्रीयुत घनश्याम सिंह गुप्त बी० एस सी० एल० एल० बी० का लेख।

६. श्रीयुत बा० ब्रजनाथ बी० ए० एल० एल० बी० का लेख।

७. पं० जयदेव विद्यालंकार का लेख।

८. कुंवर हुक्मसिंह जी (प्रधान आ० प्र० नि० सभा युक्त प्रान्त) का लेख।

दूसरा भाग

१. पं० गंगाप्रसाद एम० ए० का लेख 'वैदिक ईश्वरवाद' पर।

२. प्रो० रामदेव जी (उपाध्यक्ष, गुरुकुल महाविद्यालय) का लेख "वेदोक्त ईश्वरवाद" पर

३. पं० घासीराम एम० ए० का लेख 'वेदों की ईश्वरकल्पना' पर।

४. श्री पं० श्रीपाददामोदर सातवलेकर जी का लेख 'क्या वेद में एक ईश्वर की कल्पना है' इस विषय पर।

कवितायें

१. पं० श्रीधर पाठक जी की कविता 'व्योमवीणा' पर—

२. पं० हरिश्चन्द्र जी की कविता 'भारत के उद्बोधन' पर,

३. पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार की कविता में 'मंगल चरण'।

४. म० कर्णकवि की कविता 'आर्योद्गार' पर,

प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म्मप्रचारक

गुरुकुल का

पन्द्रहवां वार्षिकोत्सव।

पूर्व निश्चयानुसार २५ से २८ चैत्र १९७३ [६ से ९ अप्रैल १९१७] तक होगा। समय विभाग बन गया है जो दूसरे पृष्ठ पर दिया जाता है। आवश्यकतानुसार इसमें परिवर्तन करके अन्तिम समय विभाग, उत्सव के दिनों, गुरुकुल भूमि में ही बांटा जायगा। उत्सव के सम्बन्ध में कुछ बातें आवश्यक हैं, जिन पर आर्य जनता का ध्यान खींचता हूं। इन बातों को दोहराने के लिए अवसर नहीं मिलेगा, इस लिए गुरुकुल शिक्षाप्रणाली के सहायक समाचार पत्रों के सम्पादक महाशयों से निवेदन है कि इसे अपने २ पत्रों में उद्धृत कर लें।

[१] उत्सव के समय स्पेशल [विशेष] ट्रेनें छोड़ने का विचार रेलवे ऑफिसर कर रहे हैं। पंजाब और संयुक्त प्रान्त दोनों प्रान्तों की ओर से विशेष गाड़ियों का प्रबन्ध होगा। यदि सर्व स्थानों के भाई मुझे लिख भेजें कि उन के यहां से कितने यात्रियों के सम्मिलित होने की संभावना है तो मैं रेलवे अफ़सरों को मार्च के अन्तिम सप्ताह में यह सूचना दे सकूंगा कि किन तिथियों पर स्पेशल ट्रेनें अधिक उपयोगी हो सकेंगी।

(रेल पर बैलगाड़ियों का पूर्ववत् प्रबन्ध होगा और स्वयम् रोगी स्वागत के लिए उपस्थित रहेंगे।

जो महाशय सायंकाल वा उसके पश्चात पहुंचेंगे उनके ठहराने का प्रबन्ध मायापुर की गुरुकुल वाटिका में रहेगा।

[३] स्वास्थ्य रक्षा (सफ़ाई) के निमित्त एक आना प्रति यात्री जो गुरुकुल भूमि में पहुंचते ही सन्दूक में डलवाया जाता था, वह इस वर्ष से बन्द कर दिया गया है। कैम्प मेनेजर के कमरे के बाहर एक सन्दूक "स्वास्थ्यरक्षा-निधि" नाम से रक्खा रहेगा। जो महाशय प्रसन्नता पूर्वक उसमें कुछ डालदेंगे वह सारा धन मेले की सफ़ाई में ही व्यय होगा।

[४] कैम्प सारा तय्यार हो गया। छप्पर पूरे बन गए। टिमशेड भी सब नए तय्यार हो गए। जो सज्जन अपने खेमे वा छोलदारियां लगवाना चाहें उन्हें उचित है कि १५ मार्च तक ही मालगाड़ी द्वारा मेरे नाम, हरिद्वार स्टेशन के लिए, बुक करादें। आज कल माल का शीघ्र पहुंचना कठिन है। अच्छा तो यह है कि खेमों के बखेड़े में न पड़ें। यहां सब प्रकार के पर्याप्त स्थान ठहरने को विद्यमान हैं।

[५] गुरुकुल का यह अन्तिम वार्षिकोत्सव है जिसका प्रबन्ध मैं करूंगा। वर्तमान अवस्था में आर्यभाइयों से मिलने का यह अन्तिम अवसर है। इस लिए यदि आर्य समाज के सब पुराने सेवक, अपनी उदासीनता को छोड़कर, वैदिक धर्म प्रचार और शिक्षा के उद्धार पर विचार करने के लिए जमा हो जावें तो मुझे बड़ा सन्तोष होगा।

[६] गुरुकुल की आर्थिक सहायता के विषय में मुझे कुछ भी लिखना नहीं है। आर्य जाति का भावी जीवन गुरुकुल पर ही अवलम्बित है। अपने हिताहित को जाति अब भली-प्रकार समझती है; इस लिए उनको कर्त्तव्य पालनार्थ चेतावनी देना मेरा काम नहीं।

एक निवेदन उन आर्य सज्जनों से करना है, जिनके बनवाए टिमशेडों [लोहे की चादर छतवाले अतिथि गृहों] को नए सिरे से बनवा कर मैंने गुरुकुल कोष

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

में से १८००) के [illegible] कर दिए हैं। यदि सभी अपने हिस्से का व्यय [जिसका [illegible] पास आ चुका है] भेज दें तो मैं गुरुकुल को आर्थिक हानी [illegible] के कलंक से बच जाऊंगा। यदि [illegible] ने कृपा न की तो, अपने पास कुछ [illegible] न होने से, मैं तो यह [illegible] पूरी न कर सकूंगा और गुरुकुल को आर्थिक हानि पहुंचाने का कलंक मुझ पर लगा रहेगा।

[७] इस वर्ष पर्याप्त समय होने से [illegible] के लिए पदक तय्यार [illegible] दीक्षान्त संस्कार के [illegible] दिए जा सकेंगे। यदि कोई महाशय किसी विषय के लिए इस वर्ष कोई विशेष पदक देना चाहें तो अभी से धन कार्यालय में भेज दें।

आर्य प्रतिनिधि सभा के सभासदों से विशेष निवेदन

२५, २६, २७ चैत्र १९७३ [६, ७, ८ अप्रैल १९१७] को सभा का साधारण अधिवेशन होगा। यह अन्तिम अधिवेशन है जिसमें मैं सम्मिलित हूंगा। ३० चैत्र को मैं गुरुकुल से विदा हो जाऊंगा। गुरुकुल के प्रबन्ध में उन्नति तथा स्थिरता प्राप्त करने के विचार से मैंने "गुरुकुल नियन्त्रण परिषद्" के निर्माण का प्रश्न सात आठ वर्षों से सभा में रक्खा हुआ है। बिना सभासदों के $\frac{2}{3}$ भाग की उपस्थिति के वह विषय पेश नहीं हो सकता। यदि गुरुकुल के आगामी वार्षिकोत्सव पर $\frac{2}{3}$ सभासद इकट्ठे हो जावें तो इस आवश्यक विषय पर विचार होकर इसका अन्तिम निश्चय हो सकेगा। ईस्टर की चार छुटियां हैं। वकील और सरकारी नौकर सब सम्मिलित हो सकते हैं। यदि सब सभासद आने का निश्चय करलें तो एक बड़ा कार्य सिद्ध हो सकता है।

मुन्शीराम मुख्याधिष्ठाता

गुरुकुल विश्वविद्यालय काङ्गड़ी

के

पन्द्रहवें वार्षिक महोत्सव का कार्य्य-विवरण

जो

तारीख ६ अप्रैल से ८ अप्रैल १७ तक होगा

शुक्रवार

तारीख ६ अप्रैल १९१७ तदनुसार २५ चैत्र १९७३।

प्रातःकाल

[illegible] से ७-३०—हवन तथा भजन

[illegible]-३० से १०-३०-सरस्वती सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन जिसमें ब्र० शशिभूषण संस्कृत में एक निबन्ध कवि बाणभट्ट पर पढ़ेंगे। इस पर मनोरञ्जक वाद-विवाद होगा। श्री पं० कृष्णमाचार्य्य एम०ए० मद्रास निवासी सभापति का आसन ग्रहण करेंगे।

मध्याह्नोत्तर

१-३० से २—तक भजन

२ से २-४५ ,, श्री स्वामी सत्यानन्दजी का उपदेश

२-४५ से ३ ,, भजन

३ से ६ ,, सरस्वती सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन। इसमें म० रत्नलाल जी बी० ए० एल० एल० बी० वर्णव्यवस्था पर आर्य भाषा में निबंध पढ़ेंगे, मनोरंजक वाद-विवाद भी होगा, फिर सभापति के भाषण के पश्चात् यह कार्यवाही समाप्त होगी।

६ से ६-३०—भजन

रात्रि

७-३० से ८—भजन

८ से ९—श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज का उपदेश।

९ से १०—श्री पं० पूर्णानन्द जी का व्याख्यान।

शनिवार

ता० ७ अप्रैल १९१७ तदनुसार २६ चैत्र १९७३।

प्रातःकाल

६-३० से ७-३०—हवन तथा भजन

७-३० से १०-३०—आर्य्यभाषा सम्मेलन।

प्रयाग के श्री पं० श्रीधर जी पाठक ने सभापति का आसन ग्रहण करना स्वीकार किया है।

मध्याह्नोत्तर

१-३० से २ तक भजन

२ से ४ तक आर्यशिक्षा-सम्मेलन।

इसमें गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली तथा वास्तविक कन्या-शिक्षा को प्रचार तथा उन को सुदृढ़ करने के साधनों पर विचार होगा।

४ से ६ तक—देववाणी सम्मेलन—इसमें ब्रह्मचारी संस्कृत में भाषण करेंगे तथा श्लोक बोलेंगे। इसके सभापति मद्रास प्रान्त की स्कूलों के निरीक्षक श्री पं० कृष्णमाचार्य M.A. होंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रात्रि

७-३० से ८ तक भजन
८ से ९ तक पं० बृजलाल जी बी० ए० का "वास्तविक मुक्ति" पर व्याख्यान होगा।
९ से १० तक श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का उपदेश होगा।

रविवार

ता० ८ अप्रैल १९१७ तदनुसार २७ चैत्र १९७३।

प्रातःकाल

७ से १०—दीक्षान्त संस्कार

मध्याह्नोत्तर

१ से २ तक भजन
२ से ३ तक श्री उपाध्याय रामदेव जी का "आर्य और दस्यु" पर व्याख्यान।
३ से ३-३० तक भजन
३-३० से ४-३० तक मुख्याधिष्ठाता का भाषण,
४-३० से ६ तक धन एकत्रित करना।

रात्रि

७-३० से ८ तक भजन
८ से ९ तक उपाध्याय बालकृष्ण जी एम० ए० का "वेद और वैदिक मुनि" पर व्याख्यान।
९ से १० तक श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज का उपदेश।

सोमवार

ता० ९ अप्रैल १९१७ तदनुसार २८ चैत्र १९७३।

प्रातःकाल

७ से ७-३० तक भजन तथा हवन
७-३० से ९ तक सरस्वती सम्मेलन का तृतीयाधिवेशन इसमें वेद सम्बन्धी विषयों पर निबन्ध पढ़े जायंगे। इसके सभापति अथर्ववेद के प्रसिद्ध टीकाकार पं० खेमकरण जी होंगे।
९ से ११-३० तक 'वेदों में अवतार' इस विषय पर खुला शास्त्रार्थ होगा।

मध्याह्नोत्तर

१-३० से २ तक भजन
२ से ४ " वैदिक धर्म प्रचार सम्मेलन। इसमें आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रचार साधनों पर विचार होगा।

रात्रि

७-३० से १० तक आर्य-संगीत-सम्मेलन

विशेष द्रष्टव्य १—ग्रामीण पाठशालाओं का उत्सव ५ अप्रैल को होगा।
" २—आवश्यकतानुसार कार्य विवरण में मुख्याधिष्ठाता परिवर्तन कर सकता है।
" ३—स्त्रियां ६ तथा ७ अप्रैल को मध्याह्नोत्तर आश्रम तथा विद्यालय देख सकेंगी।

गुरुकुलोत्सव का समय विभाग।

गुरुकुलोत्सव के समय विभाग का पूरा चिट्ठा ऊपर प्रकाशित है। यहां हम उसकी विशेषताओं का हाल पाठकों को सुनाते हैं। यों तो सब सदा से एक ही रहा है—हमारे उत्सवों की शोभा भी उन्हीं आर्यरत्नों से है; जो प्रतिवर्ष अपने अमूल्य विचारों से उपस्थित जनता को लाभ पहुंचाते हैं। तो भी प्रतिवर्ष कोई न कोई नई बात होनी चाहिए, ताकि जनता को आनन्द भी दिया जा सके। इस वर्ष व्याख्यानों का प्रबन्ध पहले सालों की भांती ही उत्तम रहेगा। सन्यासी महात्माओं के और विद्वानों के उपदेश होंगे।

सरस्वती-सम्मेलन

सरस्वती सम्मेलन में इस वर्ष भी पहले वर्षों की भांती योग्यता पूर्ण निबन्ध पढ़े जायंगे। वेदों पर विशेष लेखों का विशेष प्रबन्ध किया गया है। सभापतित्व के लिए मद्रास से सहृदया सम्पादक श्री पं० कृष्णमाचार्य एम.ए. ने आने का वादा किया है।

आर्यभाषा सम्मेलन

इस वर्ष आर्य-भाषा-सम्मेलन विशेष रौनक से होगा। आर्यभाषा सेवकों के नाम यही विशेष निमन्त्रण पत्र है। वे सज्जन कृपया अवश्य पधारें। सभापति का आसन आर्यभाषा के प्रसिद्ध कवि पं० श्री धरपाठक जी द्वारा सुशोभित किया जायगा।

शिक्षा-सम्मेलन

यह इस उत्सव की विशेषता इस सम्मेलन में सभापति का प्रसिद्ध आर्य महानुभाव को दि यगा। इस सम्मेलन में गुरुकु प्रणाली को विस्तृत करने, गुरुकुलों के परस्पर सम्बन्धों करने के साधनों के स स्त्री शिक्षा के सुधार पर भी होगा। आर्य जनता को इस अवश्य सम्मिलित होना चाहि के जीवन में यह समय भारी प समय है। परिवर्तन सिद्धान्त व्यक्ति का है, तो भी उस पर संसार का परिवर्तन आजाता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

...ल के भविष्य पर ...
...आवश्यक है ...
...होगा।

...तस्कार

...प्रचार एक ...
...भाग होगा। ...
...कार ...
...ए। इस ...
...वेष से ...
...जावेंगे।

...का सम रोह

...कुम्भ एक ...
...यों के ...
...मिलने जुलने का एक ...
...अवसर है। प्रान्त भर ही क्या—देश के आर्य पुरुष इतनी संख्या में शा- ही कभी एकत्र होते हैं। इस कारण इसे केवल वार्षिकोत्सव न कहकर र्यों का पारिवारिक सम्मेलन ही क- ा चाहिए। इस सम्मेलन का अपार मूल्य है। परस्पर प्रेम बढ़ाना, ऐक्य उत्पन्न करना, एक ही धार्मिक र के प्रभावित करना—ये ही सब इस सम्मेलन के लाभ होते हैं। यह आ- पुरुष वस्तुतः अपने आपको अभागा समझता है जो किसी कारण से मेले में ीं पहुंच सकता।

—०—

कौंसिल में हिन्दी का प्रस्ताव

एक बुराई से दूसरी बुराई उत्पन्न होती । जातीय विद्वेष के कारण न जाने ारे देश की कितनी समस्यायें हल नहीं ने पातीं। २६ फरवरी को लखनऊ युक्तप्रान्त की कौंसिल का जो आधि न हुआ, उस में मि. बी, बाई. चि- ामणि ने प्रस्ताव पेश किया, जिसका ार्थ यह था कि छोटे जजों और मु- सफ़ों की नियुक्ति के सम्बन्ध में जो यम हैं, उन में ऐसा परिवर्तन कर दिया ए, जिससे इन पदों पर वे ही नियुक्त किये जा सकें, जो हिन्दी जानते हों। केवल उर्दू [उर्दू] जानना ही पर्याप्त समझा जाय। प्रस्ताव बिल्कुल निर्दोष उर्दू का जानना आवश्यक है ही, नागरी अक्षरों का जानना और ज़- री बताया। इससे यह लाभ होता कि ...की भाषा में लिखी अर्ज़ियां तथा अन्य पत्रादि भी सब छोटी कचहरियों में स्वीकृत हो सकते। ऐसा होना भी चाहिए। संयुक्त प्रान्त में आर्यभाषाभाषियों की संख्या इतनी अधिक है कि उर्दू से पक्ष- पात करने का कोई कारण प्रतीत नहीं होता। कौंसिल के मुसलमान सभासदों ने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया। इस विरोध का कारण समझना कठिन सा प्रतीत होता है। यदि हिन्दू उम्मेदवारों के लिए उर्दू सीखने में कोई कठिनाई नहीं है, तो नागराक्षर सीखने में मुसलमानों को क्यों कठिनाई होनी चाहिए? नागराक्षरों का ठीक २ सीखलेना अधिक से अधिक तीन मास के अभ्यास का कार्य है। ऐसी सुलभ सी बात का न जाने मु- सलमान सभासदों ने इतना विरोध क्यों किया? जातीय विद्वेष राष्ट्रीय विद्वेष से कहीं बढ़कर हानि कारक है। मि. चिन्तामणि का प्रस्ताव न मानने में स- रकार की ओर से मि० बर्न ने जो युक्ति दी, वह बिल्कुल निराली थी। आपने कहा कि उर्दू लिपि चिरकाल से कचहरियों में प्रयुक्त होती आई है—अब सरकार को कोई कारण प्रतीत नहीं होता कि एक नया परीक्षण क्यों किया जाय। खैर यहां तक तो साधारण बात हुई। सरकार ऐसे नये परीक्षणों में नहीं पड़ना चाहती। यदि प्रेस का गला दबाने के लिए नया नियम पास करना हो सरकार नया और भयंकर परीक्षण करने से नहीं डरती, किन्तु ऐसे सुगम और निर्दोष प्रस्ताव के मानने से डरती है, इस तर्क का समझना असम्भव प्रतीत होता है, किन्तु इस सम्बन्ध में हम यह सोच कर सन्तोष कर लेते हैं, कि सरकार के कर्मचारी कभी न्यायशास्त्र में प्रवीण नहीं हुआ करते। सरकारी दफ्तरों की ड्योढ़ी पर न्याय या तर्क के लिये 'अ- न्दर जाने की आज्ञा नहीं' लिखा र- हता है। और ही विचार पर शासन की कला चलती है।

आगे की बात में तो मि० बर्न ने क- माल कर दिया। आपने कहा कि अदा- लतों में इस का प्रवेश न करने का मुख्य कारण यह कि हम लिपि के पढ़ने और लिखने में देर लगती है। यह बर्न सा- हिब का नया आविष्कार है। जो भाषा बिल्कुल स्पष्ट लिखी जाती है, जिस में लगमात्रा तक नहीं छूट सकती, जिस में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है, वह भाषा शीघ्र नहीं पढ़ी जा सकती और जिस की लिपि में किसी अक्षर की छोड़ नहीं तो किसी का सिर नहीं, लि- खने वाले को जिस लिपि में लिखते हुए अक्षरों के अंगों को खा जाने तक का पूरा अधिकार है, जिस में अशुद्धि को आसरे जगादेना असम्भव नहीं है, वह भाषा खूब जल्दी बाँची जा सकती है। शीघ्र लिखने के विषय परीक्षण हो चुके हैं, और उन से सिद्ध हुआ है कि नागरी लिपि शुद्ध भी लिखी जाती है और शीघ्र भी। न जाने मि० बर्न ने ऐसा अद्भुत स- माचार कहां आवश्यक समझा। यह मानने को तो जी नहीं चाहता कि मि० बर्न इन भाषाओं से इतने अज्ञ हैं कि उर्दू लिपि को नागरी लिपि की अपेक्षा अधिक सुगम समझ सकते हैं। इसी लिये उपर्युक्त कथन को हम मज़ाक स- मझते हैं।

बहुत सोचने पर भी हम नहीं समझ सके कि सरकार को यह प्रस्ताव क्यों माननीय नहीं हुआ। पुलिस के कर्मचा- रियों के लिये नागराक्षर जानना आ- वश्यक है—फिर अदालतों में ही उन्हें अछूत क्यों समझा जाय।

नया आविष्कार

सहयोगी कलकत्ता समाचार ने एक नया आविष्कार किया है। वह लिखता है 'हिन्दू धर्म की रक्षा यथार्थ में उस स- मय तक न होगी जब तक ये टुटपूंजिये बाबू नेता का पद पायेंगे' कुछ आगे बढ़ कर वही सहयोगी फिर फ़र्माता है 'उत्तर भारत में आज जितने नेता बन रहे हैं उनकी रहन सहन शैली बड़ी विलक्षण है। उनके कुलों में देवनागरी अक्षर दो तीन पीढ़ियों से नहीं लिखे गये हैं' यह सच मुच आविष्कार है। बहुत सम्भव है एक ही घड़ल्ले में सब को धर घसीटने से समाचार के लेख में बल आगया होगा, और टुटपूंजिये लिखने से सम्पादक महोदय के दिल की आग ठण्डी पड़ गई होगी।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दरबन में बाल विवाह का निषेध

सहयोगी धर्मवीर लिखता है 'ता० १० जनवरी को दरबन के अदालत में एक भारतीय इस लिये अपराधी समझा गया कि उसने १६ वर्ष से कम उमर की कन्या के साथ समागम किया। सन् १९१६ के धारा १ और तफ्सीरा १ के अनुसार उस के ऊपर मुकद्दमा चलाया गया था। सुधार के पक्षपाती यह जान कर प्रसन्न होंगे कि इस नये कानूनी के अनुसार कोई भी मनुष्य १६ वर्ष से कम अवस्था वाली लड़की से समागम नहीं कर सकता।

यह समाचार हमारे सनातनी भाइयों को अवश्य ही बड़ी कठिनाई में डालेगा। दरबन सरकार के इस नियम का सब हिन्दू एकस्वर से समर्थन नहीं करेंगे। परन्तु बात तो अच्छी है।

पंजाब में दल और आर्य्य मित्र

गुरुकुल में महात्मा हंसराज के आने की प्रसन्नता में सहयोगी आर्य्य मित्र लिखता है—'पंजाब की कालिज पार्टी और महात्मा पार्टी के लीडरों का मेल हो गया, यह बात पाठक गतांक में पढ़ चुके हैं। हमारी सम्मति में अब दोनों पार्टियों को एक हो जाना चाहिये।'

सहयोगी की इच्छा उत्तम है, किन्तु क्रियात्मक नहीं दिखती। यह ठीक है कि मनुष्य के दोनों हाथ परस्पर मिल कर, सहायता करके ही कार्य-सिद्धि कर सकते हैं। उनका परस्पर लड़ते रहना शरीर के लिये हानिकारक होगा। किन्तु इसका यह तात्पर्य नहीं कि दोनों हाथों को पृथक् सत्ता ही खो देनी चाहिये। दोनों की जुदा २ सत्ता आवश्यक है। इसी प्रकार जहां एक ओर महात्मा और कालिज पार्टियों का परस्पर संग्राम करते रहना हानिकारक है, वहां साथ ही उन दोनों दलों का एक होजाना—पृथक् सत्ता खोदेना—भी अब कम हानिकारक नहीं होगा। दोनों दल आर्य समाज की दो भुजायें हैं। दोनों के मेल की आवश्यकता है किन्तु मेलका यह तात्पर्य नहीं कि दोनों का बिलकुल एक होजाना चाहिये, यह एक क्षण भर के लिये भी न समझना चाहिये कि दोनों में से कोई दल भी समाज हित के लिये काम नहीं कर रहा है—सब अपनी २ रुचि अनुसार कार्य कर रहे हैं। इसी प्रकार कार्य चलना चाहिये—परस्पर द्वेषभाव या कटुता को हटा देना, और सामान्य हित के लिये एक दूसरे के हाथ पकड़ कर चलना ही इस समय बस होगा।

—०—

श्रीयुत देवेन्द्रनाथ मुकर्जी का देहान्त

यह जान कर दुःख हुआ कि दयानन्देर चरित' के लेखक श्रीयुत देवेन्द्र नाथ मुकर्जी का देहान्त होगया। आप आर्य समाजी न होते हुए भी ऋषि दयानन्द के बड़े भक्त थे। आपने ऋषि के जीवन के विषय में अनेक प्रकार की खोजें की थीं। उन से कोई सहमत हो या न हो, आप के यत्न की सराहना किये बिना कोई नहीं रहसकता। चिरकाल से आप व्याधिग्रस्त थे।

———

नव जीवन

सहयोगी नवजीवन की आज कल खूब उन्नति होरही है। कलेवर तथा लेख आदि की दृष्टि से यह अब उत्तम पत्रों में गिना जाने योग्य हो रहा है। हम इस के सम्पादक महोदय के यत्नों की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते।

—:०:—

उषा

अब न चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ रीतिएं नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए। शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्य्यालय गुरुकुल कांगड़ी

पो० गुरुकुल-कांगड़ी जि० बिजनौर

प्रचारक का दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन विशेषांक निकाला करेगा। उस में रोज के नये २ समाचारों के अतिरिक्त गुरुकुलोत्सव के समाचार छपा करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज ही जानने का शौक हो—उन्हें यह विशेष दैनिक संस्करण बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे =)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक का गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

[१] गुरुकुल शिक्षाप्रणाली

[२] वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों के लेख आ रहे हैं।

=) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र

सम्पादक तथा प्रबन्धक

सद्धर्म-प्रचारक

गुरुकुल कांगड़ी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक मुनि और वेद

(३)

[ले० पं० बालकृष्ण एम० ए०]

इस लेख में अथर्ववेद विषयक स्वामी हरिप्रसाद का मत हम देना चाहते हैं। अन्य विचारों के तुल्य उन के वैदिक [?] सम्प्रदाय के सिद्धान्त बड़े विलक्षण हैं। स्वामी जी ने इस वेद की जेबी एडीशन बनाने, इसे मनुष्यकृत सिद्ध करने, इस में मिलावटों के [illegible] और इस में बहुत से साधारण [illegible] विषयों की सत्ता प्रकट करने का सिर तोड़ यत्न किया है। अथर्ववेद जो इस समय २० काण्डों का बना सर्वसम्मत है, उसे स्वामी जी कुछ आंग्ल लेखकों के आधार पर और कुछ अपनी मनः कल्पित बातें बना कर १० काण्डों वाला बताते हैं और शेष दस काण्ड परिशिष्ट बताए गए हैं, कारण कि 'उनमें से कुछ मन्त्र तो ऋग्वेद से उद्धृत हैं, शेष मन्त्रों का प्रतिपाद्य विषय पहिले दस काण्डों से कुछ विभिन्न और गम्भीर प्रतीत नहीं होता जिन से उनको संहिता के अन्तर्गत माना जावे'।

स्वामी जी ने यह नहीं लिखा कि यह उद्धरण किस मनुष्य ने किया और पिछले दस काण्डों में जो मंत्र ऋग्वेद से नहीं मिलते वे किस मनुष्य ने बनाए? क्या अंगिरः ने आप के मत के अनुसार इन्हें बनाया है? यहां पर आप यह सिद्ध करते हैं कि वेदों में पुनरुक्ति है। पर क्या स्वामी जी! आप को याद है कि आपने १६ मार्च १९१६ के आर्य मित्र में अपनी शुभ लेखनी से लिखा था कि 'मैं वेदों में पुनरुक्ति मानना तो क्या मुख से कहना भी पाप समझता हूं। वेदों की काट छांट मनुष्य नहीं कर सकता।' क्यों जी, यह क्या? एक ओर तो ऐसी उद्घोषणा और दूसरी ओर यजुर्वेद में मिलावटें और ऋषि याज्ञवल्क्य को बेईमान सिद्ध करना, स्वयम् सामवेद की काट छांट करके उसमें ७५ मन्त्र शेष रखने और अथर्ववेद के पिछले १० काण्डों को परिशिष्ट, ऋग्वेदादि से बनाए हुए बताना यह परस्पर विरोधी बातें आपकी लेखनी से कैसे निकलीं? क्या आप आर्य्य मित्र के लेख को भूल गए या उसी समय आप इस पुस्तक में ये शब्द लिख चुके थे और कुछ काल के लिए लोगों की आंखों में धूलि डालने के लिये आर्य्य मित्र में वे शब्द छपवाए थे? आपका वेद स्वस्व नवम्बर में छप चुका था अतः मार्च तक हो आपने उसे लिख ही लिया होगा, तो क्या यह साधु वृत्ति और सरलता है कि एक ही समय में परस्पर विरोधी लेख लिखकर आप इस प्रकार जनता को धोका दें?

अङ्गिरोवेद अपेय क्षार जल के समान अग्राह्य है

अब आपने जिन युक्तियों पर अथर्ववेद के पिछले काण्डों को परिशिष्ट सिद्ध किया है—उनकी असारता पर ध्यान दीजिये। क्यों जी? क्या यही वैदिक सम्प्रदाय का तर्क है कि यतः दस मंडलों वाले ऋग्वेद से अथर्व का घनिष्ट सम्बन्ध है, अतः अथर्व के १० काण्ड होने चाहियें? आगे यह क्यों नहीं कहते कि उन दस काण्डों में समान मन्त्रः भी होने चाहियें? फिर यह घनिष्ट सम्बन्ध किसी प्राचीन लेखक ने भी दर्शाया है या केवल आपने?

फिर आप गोपथकार के आश्रय पर अंगिरोवेद को अथर्ववेद से पृथक् सिद्ध करना चाहते हैं। यदि आप अपने मन माने सिद्धान्त को यथा तथा पुष्ट करने के मद में न बह गए होते तो गोपथ ब्राह्मण में ही आप को बहुत सी बातें मिलतीं जिन से आप को ज्ञात होता है कि आप नितान्त भ्रान्त हैं। आपने उस ब्राह्मण में अथर्ववेद और अङ्गिरोवेद की उत्पत्ति का जो वर्णन है—उसे ठीक न समझ कर यह परिणाम निकाला है कि ब्राह्मणकार दो वेद अथर्व और अङ्गिरः नामक मानता था—या अङ्गिरो वेद को अथर्ववेद से पृथक् एक परिशिष्ट मानता था। पर आप प्रपाठक १ काण्ड ६, ७ को सारा पढ़ जाते तो कदापि यह भ्रम न होता और आप भोली भाली जनता में असत्य विचारों का प्रचार करके पाप के भागी न होते। देखिये कि जब चार वेदों के देवता, छन्द और आदि मन्त्र कहे हैं तो वहां चौथे वेद को अथर्ववेद कहा है [अथर्ववेद मधीयते] किन्तु उसी को ही वहीं भृग्वंगिरस चर वर कहा है और वहीं उसे अथर्वांगिरस [अथर्वांगिरसो ह यो वेदः सर्वेद सर्वं] कहा है, अतः सिद्ध है कि अथर्व वेद, भृग्वंगिरस वेद या अथर्वांगिरस—यह गोपथ ब्राह्मण में पर्याय वाचक शब्द हैं।

यदि ये प्रमाण आपको पर्याप्त न प्रतीत हों तो और लीजिए। आप जानते हैं कि अथर्ववेद के ज्ञाता को ब्रह्मा नामक ऋग्वेद की पदवी ब्राह्मणकार ने दी है, यदि अथर्व और अंगिरोवेद भिन्न हैं और अंगिरोवेद अपेय खारी जल के समान घृणित है तो ब्रह्मा का अंगिरोवेद से क्या सम्बन्ध हो सकता है? पर अनेक प्रमाण इस ब्राह्मण से न देकर आठ प्रमाणों से ही अथर्व, अथर्वांगिरस, भृग्वङ्गिरस और ब्रह्मवेद की पर्यायवाचकता हम सिद्ध करते हैं—

अथर्वांगिरसो गोप्तारः। १.१३.
अथर्वांगिरोभिः [३ वार—८.१४]
ब्रह्मैव विद्वान् यद् भृग्वंगिरोवित् ८.५.
ब्रह्मैव भृग्वंगिरोवित् ७. ५.
अथर्वांगिरोविदं ब्रह्माणं ३. २४.
अथर्वाणो ब्रह्मत्वं कुर्वन्ति ९. ९.
ब्रह्मवेदो भूत्वा ब्रह्मा ऽभवत् २.१९.

यदि पूर्वोक्त प्रमाण पर्याप्त न हों तो इस वाक्य का क्या उत्तर आप देते हैं "अथर्वभिरङ्गिरोभिश्च गुप्ता यज्ञश्चतुष्पाद् ३. १. और यदि अङ्गिरोवेद अपेय खारी जल के तुल्य अग्राह्य और घृणित हैं तो यहां यज्ञ की रक्षा का साधन उसे गोपथकार ने कैसे माना? फिर यह बताईये कि ५.२४.२५ में भी अथर्ववेद को अथर्वांगिरः और भृग्वंगिरः क्यों कहा और यह चौथे वेद का ही नाम है यह बात ५.२४ के वाक्य के पढ़ने से स्पष्ट है यहां आर्य भाषा में ही उसका अर्थ हम देते हैं—ऋग्वेद में पृथ्वी के अग्नि की व्याख्या होती है। यजुर्वेद में अन्तरिक्ष के वायु का ज्ञान होता है। सामवेद से सूर्य्य की प्रशंसा होती है और अथर्वांङ्गिरोवेद से जलों में गुप्त चन्द्रमा और उस से बनने वाली औषधियों का ज्ञान होता है किन्तु ५,२५ में कहा है कि "सर्वान् लोकान् यद् भृग्वंगिरोवित्" भृग्वंगिरोवेद के ज्ञाता को सब लोक लोकान्तर का ज्ञान

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होना है ऐसी बलवती साक्षियों के होते हुए आपने यह कैसे लिखा कि "गोपथकार के समय में अंगिरोवेद अथर्ववेद के अन्तर्गत नहीं माना जाता था किन्तु उस का परिशिष्ट सबत्र प्रसिद्ध और शिष्ट गोष्ठि में अग्राह्य था।"

क्यों स्वामी जी! अंगिरोवेद शिष्ट गोष्ठी में अग्राह्य था—यह वाक्य किन प्रमाणों के आधार पर आपने लिखे हैं? बीस एक प्रमाण तो हम पूर्व दे चुके हैं कि अंगिरोवेद प्रमाणिक है। वह पूर्णतया ग्राह्य है और उस के बिना यज्ञ पूर्ण नहीं होता। यदि अङ्गिरोवेद अग्राह्य है तो गोपथ ब्राह्मण में ये शब्द क्यों हैं? प्रजापतिने पहिले यज्ञ का विस्तार किया। उस ने ऋचाओंसे होता बनाया, यजुओं से अध्वर्यु साम से उद्गाता और अथर्वाङ्गिरः से ब्रह्मा बनाया (अथर्वाङ्गिरोभिः ब्रह्मत्वम् १,२)" फिर निम्न वाक्य की क्या समीक्षा है—सर्वविद् वाहाभृद् भृग्वङ्गिरोविद् (५.१८) जो भृग्वांगिरोवेद का ज्ञाता है वही सर्वविद् है। क्या अग्राह्य का ग्रहण करना भी आवश्यक है और जो अंगिरोवेद आपको विसिक्त और गम्भीर प्रतीत नहीं होता उसे ही गोपथकार सर्वज्ञान का साधक बताता है। और इस सम्मति को २.३९ में गोपथकार ने अधिकतया स्पष्ट किया है "भूतं सर्वं भृग्वंगिरोमयम्"-यह सकल संसार भृग्वङ्गिरोमय है—चराचर जगत का ज्ञान अथर्वाङ्गिरस से ज्ञात होता है। नहीं २, स्वामी जी! अभी देखिये कि गोपथ ब्राह्मण आप के मन माने असत्य विचार को कैसे काटता है?

एते त्रयो वेदा भृग्वङ्गिरसो ऽनुगाः

यह तीनों वेद भृग्वङ्गिरस-अथर्ववेद के पीछे पीछे चलते हैं।"

अङ्गिरोवेद को वेद कहना पाप है

ऐसी अकाट्य युक्तियों के होते हुए आपने यह शब्द कैसे लिखे "अथर्ववेद के बहुत पीछे [अङ्गिरः द्वारा] संग्रह हुए दस कांड मन्त्रों को परिशिष्ट रूप से स्वीकार होने पर भी वेद रूप से स्वीकार पाप माना जाता है।"

स्वामी जी महाराज—यह जगत अब स्वप्न में लिखे शब्द प्रतीत नहीं होते क्योंकि गोपथकार ने स्वयम् अंगिरो वेद शब्द रख है तो क्या उसने पाप किया है? शतपथ १३.४.३.८ का प्रमाण अंगिरसो वेद शब्द पर आपने भी दिया है तो उसे वेद कहने में याज्ञवल्क्य ऋषि ने भी पाप किया? मनुस्मृति ११.३३ में "अनिरुक्तांङ्गिरसोः" अथर्वांगिरस को वेद कह कर मनु भगवान् ने पाप किया! नहीं। फिर शौनकायन और आश्वलायन ऋषियों ने पाप किया कि अपने श्रौत सूत्रों १६.२. और १०.७ में आङ्गिरसोवेद शब्द लिखा। इन से बढ़ कर उपनिषद्कार ऋषि, कई ब्राह्मणों और आरण्यकों के लेखक ऋषि पापी होंगे क्योंकि आङ्गिरसोवेद या अथर्वाङ्गिरसोवेद शब्द उन्होंने प्रयुक्त किये हैं! क्या आपके अनुसार अथर्ववेद का कर्ता ईश्वर भी पापी है जिसने [अथर्वाङ्गिरसो मुखम्] अथर्वाङ्गिरस को अपने तई सर्वाधार परमात्मा कह कर आप के अग्राह्य वेद को अपना मुख बताया है? क्या यही आप के सकल शास्त्र निष्णात होने का प्रमाण है? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि आप का कोई स्थिर मत नहीं और आप की स्मृति बड़ी छोटी है। आप ही अपने लेखानुसार सब से बड़े पापी हैं। देखिये अपनी वेदान्त सूत्र वृत्ति पृष्ठ ४५ में आपने उक्त मन्त्र की व्याख्या में "अथर्वाङ्गिरसां चाथर्ववेद इति संज्ञेतत्रवगन्तव्यम्" अर्थात् अथर्वाङ्गिरस को अथर्ववेद कहते हैं—यह लिख कर अब आप अथर्व और अंगिरस के दो भेद करते हैं जिस में से अंगिरस को वेद के नाम से पुकारना पाप समझाते हैं! फिर देखिये कि आप सायणाचार्य पर जो दोष लगाते हैं वही आप पर अलक्षतः चलते हैं। "सायण ने केवल प्रसिद्धि के वशीभूत होकर अथर्ववेद को अथर्वाङ्गिरोवेद और १० कांड वाले को २० काण्ड वाला वेद लिखा और उस का यह कर्म शिष्टपद्धति से बहुत दूर है।" स्वामी जी? क्या यह गजब नहीं कि आप ने वेदान्त की वृत्ति में प्रसिद्धि के वशीभूत होकर स्वयम् अथर्वाङ्गिरोवेद को अथर्ववेद लिखा है, क्या यह शिष्टपद्धति है कि एक पुस्तक में अंगिरः को वेद मानें और दूसरी में उसे वेद कहना पाप समझें! यह कह, की बुद्धि कि अथर्ववेद को अथ "गिरः सायण पार्श्व ने पहले लिखा है। अथर्ववेद, ब्राह्मण, आरण्यकों, उपनिषद् धर्म-सूत्रों और स्मृतियों में उसे अथर्वांगिरस नहीं कहा गया। फिर सायण ने नाम उसे कैसे दिया। वेदों में मिलता है और

अंगिरः मन्त्रभ्यवादी कपटी

इससे बढ़ कर सौन्दर्य यह है कि अंगिरः ऋषि पर कपटी और असत्यवादी होने का अपराध स्वामी जी लगाते। उनका कथन है कि अथर्वाङ्गिरसो मुखम् अंगिरो वेद के शब्द हैं। अथर्ववेद नहीं। "अथर्ववेद में किसी प्रकार से विष्ट होगया है जैसा कि दूसरे वेदों मन्त्रों का समावेश देखा जाता है—"अर्थात् अन्य वेदों में मिलावट या प्रक्षेप हैं ही यह मन्त्र भी पीछे मिला दिया है और अंगिरोवेद को अथर्व में मि का यत्न अंगिरः के अतिरिक्त कि किया है? अतः अंगिरः ऋषि ही मन्त्र मिलाने का छल किया। इसी लावट की कारण उसका वेद वेदों के से निकाल दिया गया है। वेदों में मि है, यह कह कर फिर स्वामी जी पोज़ीशन साफ़ करते हैं—उनके शब्द

मंत्र भिन्न कालीन हैं

"एक स्वर से यह निश्चित मत मन्त्रों का एक काल नहीं वे संग्रह किये हैं, उन में मनः कल्पित मिलावट फिर यही अविचल वैदिक सिद्ध कि चार संहिताओं का संगठन क यज्ञोपयोगी एक है"। इस कथन से जो यह सिद्ध करना चाहते हैं यज्ञों ऋषि के साथ चार वेदों क समाप्त हो गया, वा अङ्गिरः अथर्वा की शिष्य परम्परा में चा रहा या जो ५० वर्ष पीछे, हुआ का कहना अंगिरोवेद वेद नहीं वह क्षेत्र में अपेक्षाकृत जल के समान अग्राह्य हेय है, वह सब प्रकार से पर्या और अंगिरः ने अथर्व में उनदस का समावेश किया है फिर साथ ने महाभ्रान्ति की कि अथर्वा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Harjdwar, Digitized by eGangotri

अथर्ववेद कहा और उस के २० काण्ड माने। अब स्वामी जी! स्पष्ट क्यों नहीं कहते कि सायण के समान ऋषि दयानन्द ने भूल की कि अथर्ववेद को अंगिरःऋषि का दृष्ट वेद माना, उसके बीस काण्ड माने और ईश्वरोक्त सिद्ध किया जब कि आप इन में मिलावटें, मन्त्रों के अनेक पाठ, ब्राह्मण ग्रन्थों के वाक्यों का प्रक्षेप और अथर्ववेद तथा अंगिरः के दस काण्डों को पुरुष कृत प्रकट करते हैं। स्वामी जी! विचारिये कि सब ब्राह्मणों और उपनिषदों के ऋषि, धर्म सूत्रों, गृह्य सूत्रों और स्मृतियों के कर्ता अपने ग्रन्थों में अथर्वाङ्गिरस को एक वेद मानते थे, किसी ने अंगिरोवेद को परिशिष्ट नहीं कहा, उस को ईश्वरोक्त सबने माना है, दूसरी ओर आप अंगिरः ऋषि को छली कपटी सिद्ध करते, सायण पर प्रसिद्धि के वशी-भूत हो कर मन माना दोष लगाते हैं और स्वयम् उसी अपराध के भागी हैं, फिर अङ्गिरः के दस काण्डों को वेद कहना पाप समझते हैं, क्या यह आपकी भूल नहीं, क्या आपने राई का पहाड़ नहीं बनाया और असत्य फैलाने का पाप सिर पर नहीं लिया?

(शेष फिर)

—०—

नये मासिक पत्र

बालसखा-सम्पादक बदरीनाथ भट्ट बी. ए.। इंडियन प्रेस प्रयाग से प्रकाशित। वार्षिक मूल्य २)।

यह नया पत्र होनहार प्रतीत होता है। रूप रंग इंडियन प्रेस के योग्य है। कागज़-अकाल में भी कागज़ बढ़िया लगाया गया है। प्रथम अंक में छोटे बड़े १४ लेख हैं। सभी तरह का मसाला दिया गया है। शिक्षा भी है, मनोरंजन भी है; धर्मोपदेश भी हैं। सम्पादक महोदय भाषा संसार में पहले ही अच्छी प्रसिद्धि पा चुके हैं। हमें आशा है, यह पत्र बालक बालिकाओं के लिये बड़ा उपयोगी होगा।

वैष्णव धर्म पता का-सम्पादक, पं० माधव शर्मा चन्दाबाड़ी, बम्बई। वार्षिक मूल्य २) है।

यह मासिक पत्र वैष्णवधर्म को गोस्वामी सम्प्रदाय की ओर से निकला है। इसमें अधिकतर साम्प्रदायिक लेख हैं। विशेषतया यह सम्प्रदायक आचार्य श्री देवकान्दन आचार्य जी की गुण गरिमा प्रख्यापित करने के लिये निकाला गया है।

प्रेम विलास-एडीटर श्री स्वामी मित्रसेन जी महाराज। वार्षिक मूल्य १।)

प्रेम की कथा, प्रेम के गीत और प्रेम भरी बातें इस पत्र में पढ़ने को मिलती हैं। छपाई और भाषा की शुद्धता की ओर ध्यान नहीं दिया गया-शायद प्रेम-मार्ग में भाषादि की शुद्धि आवश्यक भी नहीं।

जाति प्रबोधक-सम्पादक, दयाचन्द्र गोयलीय बी. ए.। लखनऊ। यह मासिक पत्र जैन लोगों में समाज सुधार के भाव फैलाने के लिये निकलता है। पत्र विशेष धर्म से सम्बन्ध रखता है, तो भी उदार विचारों से युक्त है। सर्व साधारण हिन्दू भी इससे लाभ उठा सकते हैं।

मुनि-सम्पादक, श्री विश्वम्भरदास गार्गीय।

यह पत्र भी जैन धर्म से सम्बन्ध रखता है। लेख भी अच्छे हैं। जैन धर्मानुयायी इस पत्र से भी अच्छा लाभ उठा सकते हैं। जैन लोगों के उत्साह भाव को देख कर प्रसन्नता होती है है।

प्राप्तिस्वीकार तथा संक्षिप्तालोचना

दान प्रथा सुधार, आनरेबिल ला० सुखबीर सिंह का एक निवेदन। मुज़फ्फर नगर से प्राप्य।

फूलों का गुच्छा-व होली का तुर्रा-देश भक्ति पूर्णपद्यों का संग्रह। नहीं जानते, इसे कविता या पद्य के नाम से पुकारें या नहीं? तुक स्वर आदि पर ख़ास ध्यान नहीं दिया गया।

मूल्य -)

मुबाहिसा दिल्ली-मुसल्मानों के साथ म० रामचन्द्र का मुबाहिसा हुआ था, उसका यह वृतान्त है। इन्द्रप्रस्थार्य एजन्सी दिल्ली से मिल सकता है।

—०—

आग्नेयास्त्र का इतिहास

(१)

(लेखक पं० जयदेव शर्म्मा विद्यालङ्कार)

१. योरोप की रण चण्डी का घोर नाद सुनकर सम्पूर्ण धरातल आमूल-चूल कांप उठता है। इसमें सन्देह नहीं कि यदि सम्पूर्ण पृथिवी लोहमय होती तो वर्तमान आसुरी संहारक वैज्ञानिक, अपने विज्ञान के बल से, एक इतनी भयङ्कर तोप बनाता—जिस से सम्पूर्ण पृथिवी मण्डल के गोले को दागकर अपने शत्रु के, ब्रह्माण्ड के परले कोने पर लगे मोर्चे को तोड़ डालता। और सारे चौदहों लोकों को गोले का भीषण नाद अवश्य धरा देता। तात्पर्य इस उत्प्रेक्षित अतिशयोक्ति का यह है कि आग्नेयास्त्र का वर्तमान में आविष्कृत मूल मन्त्र तथा क्रिया काण्ड इतना प्रबल है कि अपने अनुकूल क्षेत्र में बड़े ही अलौकिक कार्य्य कर सकता है। वास्तव में यह अपने ज़माने में बहुत ही ज़ोर पर रहा है। प्राचीन महाभारत में आग्नेयास्त्र बड़ा भयङ्कर था। परन्तु वर्तमान में तो अन्य सब अस्त्र शस्त्रों को इसी आग्नेयास्त्र ने हड़प कर लिया है। आओ पाठको! इस का इतिहास सुनाएं देखो कैसा मनोरञ्जक है।

२. यह निर्णय करना बहुत कठिन है कि यह सब से पहले किस देश में पैदा हुआ, पर, हां सब से अधिक और वृहदाकार वृद्धि निस्संदेह हरिवर्ष के भूखण्ड में हुई, और उत्तरोत्तर वृद्धि करते अब कृतघ्न बनने की धमकी दे रहा है। पूर्वीय देशों का सौभाग्य है कि उनकी बगलों में ऐसा साँप नहीं पला। इस का मूल बीज फूटने वाला बारूद ही है। यह बारूद सब से पहिले किस स्थान पर आविष्कृत हुआ और किसने आविष्कार किया। यह एक वर्तमान सभ्यता के भयंकर आग्नेय असुर का रूप देख कर प्रश्न हो जाता है।

कइयों के सिर पर इस के आविष्कार का सेहरा बन्ध सकता है। ऐसा प्रतीत होता है कि भिन्न २ समय में भिन्न आविष्कारकों ने इस को नये सिरे से प-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रीक्षण करके इस को आविष्कृत किया है, और भिन्न २ देशों में इस ने अपने भिन्न २ रूप दिखाए हैं, परन्तु फिर भी सब से पहिला आदि जनक इसका कौन है इस समस्या को हल करते हुए मैं तो यही कहूंगा कि भारत वर्ष के उन्नत मस्तिष्कों ने इस बारूद की नाड़ी पहिचानी थी और सब से पुरातन लेख इस आग्नेयास्त्र तथा बारूद का यदि किसी भाषा में लिखा गया है तो केवल संस्कृत में ही। भारतवर्ष के प्राचीन काल में इस अस्त्र द्वारा सीसे की गोलियां फेंकना तथा बेंधने वाले बाण फेंकना, पत्थर फेंकना आदि बहुत से उपयोग लिये जाते थे। चीन जैसे बूढ़े पौराणिक की पुराण-माला में भी कोई पंक्ति इस विषय में शुक्र-नीति से पुरानी नहीं मिलती। इस से उस का इस विषय में नाम नहीं लेना अच्छा है—परन्तु इस प्रकरण को हम आगे दिखाएंगे—पहले हरिवर्ष के आग्नेयास्त्ररूपी तारकासुर का हाल सुनिये।

३. एक फ्रांसिस्कन पादरी बर्थोल्ड-श्वार्ज जिसका असली नाम कान्सेन्टीन आंकेलिजन था। जो जर्मनी में रहता था उसने सब से पहिले बारूद का आविष्कार किया, जिस का दन्त कथाओं के अनुसार बनना १३२० ई० में शुरू हो गया। उपरोक्त पादरी रसायन का बड़ा प्रेमी था। एक बार तो वह इस का परीक्षण करता २ ऐसा पछाड़ खाकर-पड़ा कि अधमरा हो गया परन्तु ईश्वर की दया ने बचाया। उस समय में यूरप में यह नियम था कि जादूगर कैद में डाल दिये जायें। कड़ी तरह से दण्डित हों और यहां तक कि जीतेजी जला भी दिये जायें। लोगों में यह फैल गया कि पादरी श्वार्ज जादूगर हैं इस को सरकार ने कैद में दे दिया।

४. परन्तु दूसरा फ्रांसिस्कन पादरी बेकन भी रसायनादि विज्ञान का बहुत ही प्रिय था। उसने शोरे के कतिपय अद्भुत गुण पता लगाये, परन्तु पादरी लोगों में इसकी विज्ञानप्रियता ने संशय उत्पन्न कर दिया। उन्होंने भी उस पर जादू का दोष लगाया और कैद में डाल दिया। पोप क्लिमेंट ने पुकार छोड़ दिया परन्तु इसी दोष पर पोप निकलसन ने फिर पकड़ लिया। बेकन ने अपने समय के लोगों को अनुमति दी थी कि युद्ध के समय में शत्रु को नाश करने के लिये शोरे का उपयोग करना चाहिये। वह कहता है कि इसकी बिजली कौंधी कड़क तथा ज्वालामुखी की सी भड़क होती है। इसका उपयोग पटाकों और आतिश बाजियों में किया जाता है। वह अपने "विद्या के गुप्त रहस्य" नामी पुस्तक में लिखता है कि बारूद बनाने के लिये दो चीजें बहुत उपयुक्त होती थीं। एक शोरा और दूसरी गन्धक। परन्तु उसने अपने ज़माने के घोर अत्याचार को देखकर इनके नामों को बहुत छिपाकर विचित्र सा बनाकर रक्खा। यह कहा जाता है कि बारूद बनाने का यह रहस्य उसने स्पेन में मूर लोगों से सीखा था। यह जाति उस समय भी कुछ बहुत सभ्यन थी। परन्तु फिर भी अपने आचार व्यवहार तथा पुराने इतिहास से पूर्वीय जातियों से बहुत सम्बन्ध रखती थी।

५. १२४६ ईस्वी में अरबी भाषा में बारूद के ऊपर ही एक हस्तलिखित पुस्तक मिली—जो अब भी रायल एस्क्यूरिन (Royal asqurian) पुस्तकालय में विद्यमान है।

६. पैरिस के नैशनल पुस्तकालय में "मार्कस ग्रेक्स" के नाम पर एक हस्तलिखित पुस्तक है। इस ग्रन्थकार के बारे में हमें कुछ भी विशेष पता नहीं है। कई कहते हैं कि यह पुरुष नौवीं शताब्दी में हुआ है और दूसरे कहते हैं कि तेहरवीं शताब्दी में हुआ है। प्रतीत होता है कि इसका प्रथम ग्रन्थ यूनानी भाषा में लिखा था। इस पुस्तक में शोरे का नाम तीन बार आया है। इसकी सम्मति में बारूद बनाने के लिये, दो हिस्से कोयला, एक हिस्सा गन्धक, और छः हिस्से शोरा, होना चाहिये।

७. ७ वीं शताब्दी के अन्त में वस्तु-विद्या के ज्ञाता कालि-निकस हेलिकोपोलिस निवासी जिसने, जब कि अरब वासियों ने कुस्तुनतुनिया को ६६८ में घेर लिया था, एक ग्रीक आग तैयार की। जिसका आकार भयंकर तुल्य था। जिसका मुंह आगे को था और जिसमें लोहे के गोले और रादि भर दिये जाते थे। और रखकर छोड़ देने से इतना भयंकर शब्द करता था कि घेरने वाले शत्रु घेरा कर भाग जाते थे। इस के अनन्तर हैं कि इस बारूद के रहस्य को वालों ने ४ शताब्दियों तक छिपाये रखे परन्तु एक फ्रांसीसी ने इनके इस से कान लिया जिसका उपयोग उस ने जैरोसिलम में क्रूसेड के युद्धों में लिया परन्तु गवेषणा से पता लगता है कि यूनान वासी की बारूद बनाने की थी। जिस में सबसे अधिक भाग का था। यह द्रव्य सालियन के किनारे झाड़ के जलने की राख में बहुत है जिस का तेल भी इसी क्षार के बहुत से वृक्षों में होता है नैप्था कास्पियन के किनारे से स्थान पर मेसोपोटेमिया में कूप में उत्तर भारत में और चीन में मिलता है। शायद कालीनियस ने का आविष्कार किया हो। परन्तु भी पहिले पूर्वीय देशों में इसका होता था। इसी का उपयोग फ्रांस किलिप आगस्टिस ने डेप्पी के किया था। अरब के लोगों में कि चली आई हैं कि बारूद की विद्या भारत वासियों से सीखी है इस का व्यापार भी प्रायः बहुत हुआ था। हां यह बात अवश्य है कि इसकी उन्नती किसी हद्दतक करली थी। भारत ही को अग्नि की माता मानने के बारे में भी कतिपय गवेषकों की प्रबल सम्मति

८. सबसे प्रथम देश जिसमें बा बने अस्त्रों का प्रयोग हुआ सं क्योंकि एक अरबका लेखक १३२३ के बारे में यही सम्मति देता है।

९. यह शस्त्र नली के रूप में जाते थे इसीलिये इसका नाम canno इसका मूल शब्द कानू canna f अर्थ है सरकण्डा है।

[शेष फि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Harjdwar, Digitized by eGangotri

...ब्रह्मचारी ... है। इस समय श...
...रियों की संख्या ८० है। नूतन प्रवेश
...ब्रह्मचारियों में कोई ब्रह्मचारी असम...
...आया, जो कि पहिले यहां की भर्ती
...और वह पांच ब्रह्मचारियों में मेला।
...समय अन्य ब्रह्मचारियों से पृथक् कर
...। और ठीक प्रकार से सफाई आदि का
...या गया। अब सर्वथा सर्व प्रकार आ...
...है। वे ब्रह्मचारी भी जिन्हें खसरा
...सर्वथा प्रसन्न हैं। अन्य सब ब्रह्म-
...न्द पूर्वक अपने पठन में लगे हुये हैं।
...वार्षिक परीक्षा २... फरवरी के स्थान
...हो गई थी। प...क श्री ए...न्द्र-
...वेद्यालङ्कार उपाध्याय ...कांगड़ी
...थ ली को छोड़कर ...ब थे शि-
...रिवार उप...स्था। ...र्य की
...के ... ब्रह्मचारि... ...पंचम
...१ तृतीय, ... द्वितीय, १ ... में उ-
...त्ती। ...र्ण हो गये।
...पूरे नम्बरों पर तो नहीं। ...
...सी है वह ...काम नहीं। अतः नि-
...या गया ...क १० उत्तम शील्ड्स...
...। वि. ...कुमार चौधरी के लिये
...० आया पड़ा ...गौण प्रतियोगि...
...ही आदमी अब दिये गये हैं। शेष
...लाने वाले दानी पुरुष धन भेज
...ख्या पूरी हो जायगी। संरक्षकों को
...र्य में सहायता देना चाहिये। गौओं
...जन २ दानियों ने धन भेजा है वा
...ा, उस सब का सूची अगले समा-
...धवाद पूर्वक दी जावेगी।
...शाला का मकान एक ओर से बन
...र एक ओर से अधूरा ही पड़ा है यदि
...रुपया और आजाय तो पूरा हो जा-
...दोनों ओर बनवाने वालों के नाम
...र दिये जायंगे। विष्णुमित्र

जी आ० स० कालपी सूचना देते

...ोत्सव के दिन बाबू दौलतराम जी
...र० के गृह पर हवन, भजन, कथा,
...हुए। ६॥)॥ वेद-प्रचार के लिये प्रात

...ाध्यालय कालपी का निरीक्षण श्री
...साद जी तिवारी लेफ्टिनेन्ट पल्ट-
...या। देख कर बड़े प्रसन्न हुए तथा
...में बहुत अच्छी सम्मति अंकित
...की ओर से आपका धन्यवाद है।

...जी आ०स० डोइवाला (देहरादून)
...तारीख २ फरवरी को म० ज्वा-
...दो पुत्रों का मुण्डन संस्कार पं०
...पदेशक ने कराया और संस्कारों की
...याख्यान हुए। भक्तराजजी म० बल्देव-

लिंह जी की मण्डली के भजन हुए। उपस्थिति
...अच्छी थी। आर्य्य संस्थाओं को दान भी मिला।

ता० ३ से ६ तक आस पास के ग्रामों में पं०
...नाथ जी भजन मण्डली सहित प्रचार करते
...रहे। प्रभाव ऐसा पड़ा कि ... वाले अब भी
...वहां पधारने के लिए आ २ कर ...ईना करते हैं।

ता० ... को ब्रह्मचारी ... पं० बद्रीनाथ
...जी की पुत्री का विवाह था। बारात पंजाब
...से ... बजे म० ... समाज के
...सब ... भजनी, भजन मण्डली तथा पं०
...धर्मवी... उपदेशक, कुरुकावली, तेली,
...बालादि ग्रामों ... नगर कीर्तन करते हुए ६॥ बजे
...कन्या के गृह पर पहुंचे। दूसरे दिन २॥ बजे
...दिन तक ... पं० ... जी तथा पं०
...कृष्ण ... जी के कराये। हर कन्या ने अपना २
...भाग स्वयम् समर्पण किया। ५) हर पढ़े
...लिखे समाज को दान मिले तथा २ दिन तक
...धुआंधार प्रचार हुआ।

ता० ११ को आ० स० मन्दिर में
...पं० धर्मवीर जी के व्याख्यान तथा भजन
...हुए। उपस्थिति इतनी थी कि समाज मन्दिर
...भर कर ... लोग बाहर वर्षा में भी डटे रहे,
...प्रभाव मुसलमानों तथा सिक्खों पर विशेष
...पड़ा।

ता० ... को ऋषि बोधोत्सव मनाया गया।
...हवन, भजन तथा व्याख्यान हुए और लेख पढ़े
...गये। सभा के लिये विजय कामना की गई।

ता० २४ को वीरतीज मनाई गई, हवन, भ-
...जन तथा व्याख्यान हुए।

कनखल के लाला कृष्णचन्द्र जी के छोटे भाई
...ला० वेणीप्रसाद जी का विवाह ता० २५ फ-
...रवरी की रात्रि को पूर्ण वैदिक रीति से सहा-
...रनपुर में हुआ, जिसमें उपाध्याय रामदेव जी,
...पं० इन्द्र जी विद्यावाचस्पति, पं० शिवदत्त जी
...काव्यतीर्थ तथा पं० कन्हैयालाल जी शास्त्री
...आदि विद्वान् भी सम्मिलित थे। इस अवसर
...पर गुरुकुल को ३०) तथा ज्वालापुर महाविद्-
...यालय को २५) दान मिले।

म० सत्यराम जी कहु बसरा से सुखबरी देते
...हैं कि हमारे पुरुषार्थी भाई म० रघुनन्दनजी वहां
...भी गुरुकुल के लिये धन एकत्रित कर रहे हैं।
...इस समय तक २००) तो इकट्ठे हो गये हैं और
...भी अधिक एकत्र होने की आशा है।

श्रीस्वामी अच्युतानन्द जी महाराज अजमेर आ-
...र्यसमाज के उत्सव पर गये थे। उत्सव की स-
...माप्ती से आप वहां उपनिषदों की कथा कर
...रहे हैं जिससे नगर निवासी बड़ा लाभ उठा
...रहे हैं। गत वर्ष भी कथा हुई थी जिस से स-
...माज के ४० सभासद् बढ़े थे, अब ... आशा
...करनी चाहिये कि अच्छी वृद्धि होगी।

श्री मंत्री जी आर्यसमाज सिरसा सूचना देते हैं कि
...उक्त समाज का १३ वां वार्षिकोत्सव १८ फरवरी
...१७ को निर्विघ्न समाप्त होगया। इस में श्री-
...स्वामी विद्यानन्द जी, पं० चन्द्रभानु जी, पं०
...धर्मवीर जी, श्रीमती पार्वतीदेवी जी तथा म०
...मनीराम जी आदि पधारे थे। व्याख्यान तथा
...भजन अत्युत्तम हुए। श्री पं० चन्द्रभानु जी की
...अपील पर २२७॥=) भिन्न २ निधियों के लिए
...एकत्रित हुए। २१ महाशयों का यज्ञोपवीत
...हुआ।

—o—

आवश्यकता

आ० समाज मुज़फ्फरनगर को एक संस्कृत के विद्वान, आर्य्य सिद्धान्तों के ज्ञाता, संस्कारों में दक्ष, उपदेश और प्रचार करने में योग्य पण्डित की आवश्यकता है। वेतन योग्यतानुसार। प्रार्थना पत्र में आयु, योग्यता आदि का भी विवरण हो। प्रमाण पत्र साथ भेजें।

अनोखेलाल मन्त्री

विज्ञापन

एक अरोड़वंश कन्या के लिये वर की आवश्यकता है। लड़का आर्य्य विचार रखता हो; आयु २५ वर्ष तक हो। अच्छी आमदनी रखता हो या कालिज में शिक्षा पाता हो। निम्न पते से पत्र व्यवहार कीजिए:—

प्रियतमदास
प्रधान आर्य्यसमाज बज़ीराबाद

—o—

श्री बालकृष्ण एम० ए० रचित

महोपयोगी पुस्तकें !!

१. अर्थशास्त्र = धनविद्या ५६० पृष्ठ १॥)
२. प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली ॥)
३. आर्यों की वैज्ञानिक उन्नति =)
४. ईश्वरीय ज्ञान वेद ५०० पृष्ठ १॥)

आर्य पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी।

—o—

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
छः मास का १॥) तथा तीन मास का १)

(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थियों के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।)

भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥)

प्रचारक में विज्ञापन छपाईं

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई ओढ़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) ओढ़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। ओढ़-पत्र के आधे सिरे पर सदर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर लिखित कीजिए।

साधारण ओढ़-पत्र आधे तोले तक १२)
एक तोले तक १५)

विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

* ओ३म् *

Registered no. A. 434

सद्धर्म-प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

प्रवर्त्तक - मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है | ५ चैत्र सं० १९७३ वि० (दयानन्दाब्द २५) ता० १७ मार्च सन् १९१७ ई० | संख्या ४८ भाग २८

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्यपथिक लेखराम—धर्मवीर पं० लेखराम आर्य्य लेखकों के शिरोमणि थे। उनका जीवनचरित्र ग्रन्थ प्राय आत्माओं में भी जीवन फूंकने का काम देसकता है। और फिर जब यह चरित्र एक ऐसे अनुभवी की लेखनी से लिखा गया हो जिसने ३१ वर्षों से वैदिक-धर्म की सेवा ही अपना उद्देश्य बना रक्खा है तो उसका मूल्य और भी बढ़ जाता है। आर्य धर्म की रक्षा का पाठ पढ़ना हो तो एक प्रति अवश्य मंगाइए—मूल्य १)

निम्नलिखित पुस्तकें और कहीं से नहीं मिल सकतीं।

पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

का

संस्कृत-साहित्य का ऐतिहासिक अनुशीलन—यह निबन्ध विद्यावाचस्पति की उपाधि प्राप्त करने के लिए लिखा जाकर स्वीकृत हुआ था। इसमें पहले दिखाया गया है कि नवीन संस्कृत साहित्य का मूल वेदों तथा ब्राह्मण-ग्रन्थों पर है। फिर रामायण से लेकर मुसलमान समय तक के संस्कृत-साहित्य का भारतवर्ष के इतिहास के साथ गहरा सम्बन्ध दिखाया गया है। निबन्ध केवल नये ढंग का ही नहीं मनोरञ्जक भी है। मूल्य ।=)

मृतक श्राद्ध पर शास्त्रार्थ

पं० इन्द्र तथा पं० गिरिधर शर्म्मा का ऐतिहासिक बरेली वाला शास्त्रार्थ छप गया है। इस शास्त्रार्थ में श्राद्ध विषयक जितने वेद मन्त्रों पर विचार हुआ है, शायद ही किसी में हुआ हो। श्राद्ध विषयक वेद मन्त्रों की खान है। आर्य्य-सिद्धान्त की पुकार का नमूना है। मूल्य =)॥

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(श्री मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति—मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक—पांच महायज्ञों की विधि—मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नित्यक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक—विस्तारपूर्वक संध्या-विधि—मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला लक्ष्मण सहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्य जनता तक पहुंचाया है। प्रभु से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक—आचार-अनाचार और खान-पान मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्य-अभक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये—इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक—ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज—मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक—वेद और आर्यसमाज—मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति दिखलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द तथा उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक—[illegible] मूल्य =)

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी ने क्या उक्ति सुनाई। उन्हें आपने और कहां तक हो गये वह अभी तक पुस्तक रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति का सार क्या "हिन्दी" के लिये यत्न करना है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से [illegible] का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक—पातञ्जल और वैदिक धर्म मूल्य =)

नवम गुच्छक—मानव-धर्म-शास्त्र तथा शासन पद्धति मूल्य =)॥

आर्य सिद्धान्त के विद्यार्थियों को धर्म्म-शास्त्र (Jurisprudence) का तत्व बतलाते हुए यह पुस्तक तय्यार हो गई। इस की तय्यारी में जहां वेदान्त जर्मन नियम और आंग्ल-स्मृति-शास्त्रज्ञों की पुस्तकों से सहायता ली गई है; वहां डाक्टर कि-शोरीलाल सरकार की अपूर्व मीमांसा-शास्त्र पर टिप्पणी रूपी पुस्तक के सहारे से पूर्व मीमांसा से धर्म्म शास्त्र का लक्षण समझाने का प्रयत्न किया गया है।

(डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर—२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पता:—प्रबन्धकर्त्ता,

प्रचारक पुस्तक-भण्डार, गुरुकुल-कांगड़ी,

ज़िला बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Harjdwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक सम्बन्धी सूचना

प्रचारक का [illegible] विभाग

गुरुकुलोत्सव समीप आरहा है, उस समय विशेषांक भी निकलेगा। प्रचारक का [illegible] विभाग निम्नलिखित होगा—

२४ मार्च का गुरुकुलांक निकलेगा। यह अंक प्रचारक के [illegible] अंकों के समान होगा।

३१ मार्च का अंक विशेषाँक के कारण बन्द रहेगा।

७ अप्रैल का अंक उत्सव के कारण बन्द रहेगा। ६, ७, ८ और ९ अप्रैल को प्रचारक गुरुकुल में दैनिक निकलेगा। यह दैनिक गुरुकुल में पैसे में बिकेगा, और [illegible] प्रचारक के ग्राहकों को ≈)॥ में और अन्यों को ।-) में भेजा जायगा।

१४ अप्रैल का अंक गुरुकुलोत्सव के सम्पूर्ण समाचारों को लिये हुए प्रकाशित होगा।

गुरुकुलांक ≈) का टिकट भेजने वाले को भेजा जा सकेगा।

प्रचारक की अपील:—

पूर्व योग	१६३)
म० ज्ञानचन्द्र जी दिल्ली	५)
" परमानन्द जी माण्डला	५)
" अमीचन्द्र जी बसौली	५)
" वामन महादेव जी पाठक ब्रह्मा	५)
" मदनगोपाल जी भारद्वाज धर्मपुर	२)
" रौनकीराम जी बारासेनी	५)
श्रीमती धर्मपत्नी जी पं० मोतीलाल जी कौल ननकाना साहब	६)
म० हीरालाल जी फोर्टसेण्डमन	७)
" मय्यादास जी मिरटगुमरी	५)
" चिरंजीलाल जी छज्जू नगर	५)
" वज़ीरचन्द्र जी क्वेटा	५)
" हुक्मचन्द्र जी आगरा	५)
सर्वयोग	२२३)

प्रचारक परिवार की ओर से अपील पर बहुत कम ध्यान दिया गया है। वार्षिकोत्सव के अब १० दिन शेष रहगये हैं परन्तु अब तक केवल २२३) ही प्राप्त हुए हैं। वर्तमान चाल बहुत धीमी है। अतः प्रचारक प्रेमियों को इस ओर शीघ्र ध्यान देना चाहिये ताकि वार्षिकोत्सव पर उनकी ओर से पूरी भेट दी जासके।

प्रचारक के ग्राहक बढ़ाने में निम्नलिखित महाशयों ने इस प्रकार सहायता दी है-

[१] म० हीरालाल जी फोर्टसेण्डमन—आधे मूल्य पर दो ग्राहक=३)

[२] सर्दार गुरुदत्तसिंह चरणदास जी कोटनिका—एक २ रुपये की रियायत पर दो ग्राहक तथा ½ मूल्य पर एक=३॥)

[३] म० वजीरचन्द्र जी क्वेटा—एक२ रुपये की रियायत पर ३ ग्राहक=३)

मूल्य में कमी केवल निर्धनों के साथ ही की जायगी। अतः प्रार्थना पत्र समाज के प्रधान तथा मंत्री महाशय के द्वारा आने चाहिएं। जिनको अधिकारी समझा जायगा उनके नाम प्रचारक रिआयती मूल्य पर [शेष धन का वी० पी० करके] जारी कर दिया जायगा।

आगामी गुरुकुल महोत्सव

सम्बन्धी

आवश्यकीय निवेदन

(१) गुरुकुल महोत्सव पर जो ६ से ९ अप्रैल तक होगा, तन्दूर की दुकानों की अधिकतया आवश्यकता है।

(२) पुस्तकों की दूकानें दो प्रकार की होंगी।

(क) साधारण चिम का दरवाज़ा बाज़ार की ओर होगा।

(ख) दरमियान वाली लैन में दूकानें होंगी जिनके दो दरवाज़े अर्थात् दोनों बाजारों की ओर (दरवाज़े) होंगे। ऐसी दूकानों का किराया प्रति दूकान ७) रुपया होगा।

(ग) इसी प्रकार सड़क की ओर सिरे पर तीन दूकानें होंगी, बीचवाली का किराया १०), और शेष दोनों का प्रति दूकान ७) होगा।

(३) आटा दालादि की दूकानों की भी आवश्यकता है।

[४] जिन महाशयों को पृथक् छप्परों की आवश्यकता होवे अभी से ५) प्रति छप्पर के दर से रुपया भेजदें, अन्यथा पीछे बनवाए नहीं जा सकेंगे।

मुन्शीराम
मुख्याधिष्ठाता
गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी
पोष्ट गुरुकुल कांगड़ी
ज़िला बिजनौर

सूचना

गुरुकुल मध्य भारत का ५वां वार्षिक महोत्सव होशंगाबाद [नर्मदा तट पर] अपने नूतन भवन में होगा।

[१] तारीख ५,६,७ अप्रैल सन् १९१७ ई० मिती चैत्र सुदी १३,१४,१५, सं० १९७४ दिन बृहस्पति, शुक्र, शनिवार को होना निश्चित हुआ है, अतः सब सज्जनों से विनय है कि नियत तिथि को पधार कर उत्सव की शोभा बढ़ावें।

[२] इस साल गुरुकुल में १० ब्रह्मचारी पूरे शुल्क पर प्रवेश किये जावेंगे अतः जिन महाशयों को अपने पुत्रों को गुरुकुल में प्रवेश कराना होवे एक दिन प्रथम ही अपने पुत्रों को लेकर आवें।

[३] श्रीमति आर्य्य प्रतिनिधि सभा मध्य प्रदेश व विदर्भ का वार्षिक अधिवेशन भी इसी अवसर पर होगा।

भवदीय
बिहारीलाल
मंत्री गुरुकुल होशंगाबाद।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सद्धर्म्म-प्रचारक

हमारा साहित्य और मौलिकता

नदी का जल बढ़ कर फैल सकता है, एक स्थान से दूसरे तक जीवन के साधन पहुंचा सकता है। नदी का जल ही सैंकड़ों हज़ारों मील की दूरी पर बसे हुए नगरों और ग्रामों की पुष्पवाटिकाओं को सींच सकता है, शस्य मालिकाओं को जल से आप्लावित और आप्यायित कर सकता है। किंबहुना, कार्य शक्ति यदि किसी जल में है तो चलते हुए जल में। खड़े हुए जल की शक्ति बहुत परिमित होती है। तालाब का पानी अगर चलते पानी से सम्बद्ध न हो, और साफ़ न किया जा सके, तो वह सड़ जायगा, और निकम्मा हो जायगा।

जो पानी मूल से सम्बद्ध है, वही बह सकता है। नित्य बहने वाले नाले से उत्पन्न होकर नाले नदियों के रूपों में परिवर्तन हो जाते हैं, और मानव जाति के आनन्द के हेतु होते हैं। जो पानी मूल से सम्बद्ध नहीं रहता वह सूख जाता है, उसकी बहने की शक्ति जाति रहती है।

जो पानी की अवस्था है, वही साहित्य की भी समझनी चाहिए। वाणी रूपी जल की नदी मनुष्य जाति के मानसिक और आत्मिक अन्न की उपजाने वाली होती है। मानसिक अन्न का महत्व भौतिक अन्न के महत्व से कम नहीं है। भौतिक अन्न केवल शरीर का पोषण करता है, मानसिक अन्न शरीर के अधिष्ठाता मन की शक्तियों का पीसने हारा है। यदि शरीर से मन ऊपर है तो, जल की नदी की अपेक्षा वाणी रूपी सरस्वती का भी महत्व बहुत ऊंचा है। किन्तु देखिये, कैसे आश्चर्य की बात है। लोग अपने घरों के कुओं में से पानी निकलवाते रहते हैं, ताकि गन्दा पानी जाकर नया शुद्ध और मूल-सम्बद्ध पानी प्राप्त हो। लोग तालाबों को नदी के पानी से भरते हैं, समय २ पर उन्हें खाली करते हैं, ताकि पुराना जल जाय, और नया जल उसका स्थान ले। आश्चर्य और महाश्चर्य है कि वाणी रूपिणी नदी की शुद्धि के लिए वैसे यत्न नहीं किये जाते। यह यत्न नहीं किया जाता कि साहित्य संसार में भी शुद्धिकर वही कर्तव्य जारी किया जाय, जो भौतिक संसार में किया जाता है। मनुष्य समाज की कुछ प्रवृत्ति ही ऐसी है। देखिए। लोग धार्मिक विचारों को कितना महत्व देते हैं किन्तु उन पर विचार करते हुए उन साधारण नियमों को भी भुला देते हैं, जो नित्य जीवन में साधारण व्यवहार में लाये जाते हैं। लोग कुए के पानी की सफाई के लिए निकास को आवश्यक समझते हैं, किन्तु धार्मिक कूप के पानी में परिवर्तन की आवश्यकता नहीं समझते। भक्तजन तालाब की अपेक्षा नदी के स्थान की महिमा अधिक समझते हैं, क्योंकि नदी का पानी बहता है। इस प्रकार भौतिक जगत् में वे सामयिक परिवर्तन के सिद्धान्त को मानते हैं, किन्तु धार्मिक जगत् में यदि उन से संशोधन के लिए कहा जाय तो घबरा जाते हैं, और कानों पर हाथ रखते हैं। जो सिद्धान्त सामान्य व्यवहार में उचित समझे जाते हैं, ऊंचे वायु मंडल में जाकर भयावह समझा जाता है।

साहित्य क्षेत्र में भी प्रायः यही निर्बलता दिखाई देती है। साहित्य के जीवन के लिये उपर्युक्त दोनों सिद्धान्तों को जिस आवेश से स्वीकारना चाहिए, वह आवेश हम लोगों में दिखाई नहीं देता। यह दौर्भाग्य विशेषतया आर्यभाषा साहित्य को प्राप्त है। अन्य भाषाओं में इन स्वर्णाक्षर लेखनीय सिद्धान्तों की उतनी उपेक्षा नहीं की जाती, जितनी हमारी भाषा में की जाती है। वे सिद्धान्त में हैं—

[१] साहित्य नदी का जल निरन्तर बदलता है रहना चाहिए। एक ही पकड़े हुए ढर्रे पर चलते रहने से कभी उन्नति और जीवन की आशा नहीं हो सकती। पुरानेपन के स्थान में मौलिकता का आदर होना चाहिए। मौलिकता शब्द से हमारा यह तात्पर्य नहीं, कि पुरानी प्रणाली के स्थान में अंग्रेज़ी लेख शैली। योरपियन विचार, और पाश्चात्य सभ्यता को अपनाने से ही मौलिकता आजाती है। यह मौलिकता नहीं-यह तो मानसिक दासता है, और दुमनी दूषित दासता है। पुराने की दासता में कम से कम अस्वाभाविकता का दोष नहीं है। इस नई दासता में दासता भी है और अस्वाभाविकता का कलंक भी है। यह मौलिकता नहीं। मौलिकता से हमारा अभिप्राय यह है कि लेखकों के दिमाग़ साहित्य—भागीरथी के लिए गंगोत्तरी का काम दें? दिमाग़ों से विचार निकलें, लेखनी से जो शब्द निकलें, वे गंगोत्तरी के जल की शुद्धता और समूलकता लिये हुए हों। पहाड़ी नालों या बरसाती नदियों का पानी उस में न मिला हुआ हो।

इस विषय में भारती अन्य बंगला आदि भाषाओं की अपेक्षा हमारी आर्यभाषा अधिक अभागी है। हमारे यहां लेखकों की कमी नहीं है। लेखक बहुत हैं, उनकी गिन्ती भी बहुत है। पुस्तकें भी कम नहीं छपतीं। पर यह कहने में किसी को भी संकोच न होगा कि हमारे लेखकों की रुचि ग्रन्थों के बाहुल्य की ओर है, मौलिकता की ओर नहीं। नकली सौ मोतियों से असली एक मोती अधिक कीमती होता है। अनुकरण या अनुवाद रूप इस पुस्तकों का जो मूल्य है, एक मौलिक ग्रन्थ का मूल्य उससे कहीं अधिक है। हमारे दिमाग़ स्वभावतः मौलिकता की ओर अधिक नहीं झुकते। यह दौर्भाग्य की बात है। इतने वर्ष भी हमारे साहित्य में एक स्कार, एक टैनिसन, एक मैकाले, एक रवीन्द्र बाबू या एक चिपलूण कर पैदा नहीं कर सके। आर्य्य भाषा सेवियों के दिमाग़ स्वभावतः किसी से कम नहीं हैं, परन्तु मौलिकता क

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

और हमारी कवि [illegible] नहीं है। [illegible] के एक कवि [illegible] आते हैं जो अपने [illegible] ग्रन्थ अन्त कर कहते हैं, किन्तु आप कहते हैं केवल एक काव्य बनाया है। रामचन्द्र को कोई नहीं जानता, परन्तु रामायण का प्रत्येक कवि विद्यार्थी आप से भली परिचित है। हमारे साहित्य में [illegible] रामचन्द्र बनने की इच्छा बहुत है, आप बनने की कम। यही कारण है कि अन्य भाषाभाषी हमारा सिद्धान्त नहीं मानते। अंग्रेज भाषाभाषी अपनी गद्दन ऊंची किये चलते हैं, क्योंकि हम यूरोपियन लेखकों के नामों से उन्हें चुप नहीं करा सकते। आवश्यक है कि आर्य्य भाषा साहित्य सेवी इस सत्य को अपने सामने रखें। ग्रन्थों का आधिक्य ही किसी भाषा को धनी नहीं बनाता, जिस कोष में अधिक पैसे हों, वह अधिक समृद्धि शाली नहीं होगा। जिस कोष में एक भी असली रत्न होगा, उसकी समृद्धि में किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता। हमारे साहित्य में अब पैसों की नहीं, रत्नों की आवश्यकता है। शोक से कहना पड़ता है कि जिन से रत्न की आशा है, वे भी अधिक संख्या में पैसे ही तय्यार कर रहे हैं। विनय पूर्वक हमारा भाषा सेवियों की सेवा में निवेदन है कि अब पैसायुग समाप्त कर रत्नयुग प्रारम्भ करें।

दूसरा सिद्धान्त, जिस पर ध्यान देना अत्यन्त आवश्यक है, सामयिक शुद्धि का सिद्धान्त है। यह इतना परीक्ष्य या तिरस्कृत सिद्धान्त नहीं है। उचित आलोचना की रीति आर्य्य भाषा में चल चुकी है। किन्तु एक बात की अभी न्यूनता है। समालोचना भाषा या रूप रंग के बारे में कम होती है, ग्रन्थ के भावों की कम। ग्रन्थ समयोचित विचारों से अनुकूल है, या नहीं, इस पर हम लोग बहुत कम ध्यान देते हैं। समालोचना का उद्देश्य केवल यही नहीं कि पुस्तकों की बिक्री में सहायता मिले या सम्पादकों के पास पुस्तकें आजाया करें। समालोचना का उद्देश्य साहित्य शुद्धि भी है। जैसी पुस्तकों की समय और समाज को आवश्यकता है, समालोचना उन्हें उत्साहित करती है, और ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता नहीं, उनकी वृद्धि को रोकता है। समालोचना द्वारा ग्रन्थ लेखकों की रुचियों में उचित परिवर्तन होते रहना चाहिए। यदि लेखकों तथा पाठकों को रास्ता नहीं दिखा सकती तो उससे क्या लाभ है?

इस कार्य के सम्पादन में दो प्रकार के विघ्न उपस्थित होते हैं। पहले प्रकार का विघ्न समालोचकों और दूसरा लेखकों की ओर से उपस्थित होता है। समालोचक लोग या तो उदारता का परिचय देते हुए प्रशंसा मात्र में अवसान कर देते हैं, या कभी २ अन्य व्यक्तिगत स्नेह या विरोध के भावों से प्रभावित हो जाते हैं। ग्रन्थ लेखकों की ओर से विघ्न इस रूप में उपस्थित होता है। किसी के ग्रन्थ की विपरीत आलोचना हुई, वह अन्य पत्रों में आलोचक की आलोचना करने लगता है या आगे से अपनी पुस्तकें भेजना बन्द कर देता है। हम इन वाक्यों को अपनी उत्तर-दायिता समझ कर लिखते हैं और अपने आपको भी इन दोषों से रहित नहीं समझते। हमारी सम्मति है कि यदि समालोचक लोग अपनी सम्मति निर्भय होकर प्रकाशित करें, किसी व्यक्तिगत स्नेह या विद्वेष का भाव बीच में न आने दें, और ग्रन्थ लेखक आलोचना का असली तात्पर्य समझें, और व्यर्थ की नाराज़गी प्रकाशित करने के स्थान में उस से लाभ उठाने का यत्न करें, तो बड़ा लाभ हो। समालोचकों के हाथ पैर न बांधे जायं, साहित्य में उचित शुद्धि का कार्य बराबर जारी रहे, और हमारी दशा दिनों दिन बढ़ती जाय।

उत्सव को न भूलना

गुरुकुल का महोत्सव सिर पर है। कई स्थानों से उस के लिए कार्य होने के समाचार आरहे हैं। जिन स्थानों से समाचार नहीं आये, आशा है वहां भी कार्य हो हो रहा होगा। उत्सव से पूर्व अब आगे हमें आप लोगों को प्रेरित करने का अवसर न मिलेगा। इस लिए इस आप हमारा अन्तिम निवेदन समझिये। आप गुरुकुल में आते हैं। गुरुकुल वर्तमान समय का सप्तर्षितीर्थ है। यहां आते हुए अपनी भेंट साथ लाइये। जो ब्रह्मदान का कार्य यहां हो रहा है, उस में रुकावट न हो। जो यज्ञाग्नि यहां प्रदीप्त हो रही है, उस में अपने हिस्से की एक समिधा भी फेंक जाइये। ताकि इस अवसर कार्य के आश्रित रखने का श्रेय आप को भी प्राप्त हो जाय।

नवयुवको! भर्ती हो

भारत सरकार ने युद्ध की आवश्यकताओं से प्रेरित होकर देश रक्षा के लिए भारतवासियों को भर्ती करने का प्रस्ताव स्वीकार किया है। यह ठीक है कि इस प्रस्ताव द्वारा अंग्रेजों तथा भारतवासियों को समान अधिकार प्राप्त नहीं होते, यह भी ठीक है कि हमारी सम्पूर्ण आशायें पूर्ण नहीं होतीं, तथापि 'शब्धरेलेभ्यस्तत:' यह समय भी बड़े सौभाग्य से आया है।

भारतीय युवकों को भर्ती होने में उत्साह दिखाना चाहिए। यदि यह स्वराज्य नहीं तो भी स्वराज्य की योग्यता के लिए परीक्षा अवश्य है। क्या भारतवासी देश रक्षा के लिए स्वार्थ त्याग कर सकते हैं? इस प्रश्न का उत्तर देने का यही समय है। महात्मा गान्धी ने इसे स्वराज्य की पहली किश्त कहा है। निःसन्देह यह है भी ऐसी ही।

वायसराय और पत्र सम्पादक

पत्र सम्पादकों का डेपुटेशन वायसराय के पास अपना रोना लेकर गया। वायसराय के भाषण को पढ़ कर ईङ्गलोइण्डियन पत्र एक स्वर हो चिल्ला उठे हैं—'आश्चर्य'। भारतीय पत्र सम्पादक एक स्वर होकर कह रहे हैं—'शोक'। बात ऐसी हुई है। वायसराय ने खूब ही तेज़ उत्तर दिया है। उल्टे पत्र सम्पादकों को बुद्धू बनाने का यत्न किया है। उस समय पत्र सम्पादक कोई उत्तर नहीं दे सकते थे—इसलिए वायसराय का कथन ही अन्तिम रहा। किन्तु सम्पादक समाज अपना उत्तर पत्रों के स्तम्भों में दे सकता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है, और देता। हमारी सम्मति में वायसराय महोदय ने पत्रों के गले में रस्सी बांधने के पक्ष में जो भी युक्तियां दी हैं, उन में एक ही त्रुटि है। वह त्रुटि यह है कि उन सबसे भी पत्र प्रतिबन्धक नियम की सार्थकता सिद्ध नहीं होती। आप ने पत्रों के कुछ उद्धरण दिये थे, जिन से यह सिद्ध करना चाहा था कि १९१६ तक भी भारतीय पत्रों का स्वर नहीं बदला है। मान लीजिए। तब तो ऐसे नियम भी पत्रों के स्वर को नहीं बन्द कर सकते। फिर उस से लाभ क्या? सच बात तो यह है कि ये पत्र प्रतिबन्धक नियम भारत में ब्रिटिश शासन के माथे पर कलंक का टीका है, इसे यथा सम्भव शीघ्र ही धो देना सरकार का कर्तव्य है।

पर्चे निकल गये

बंगाल में यूनिवर्सिटी परीक्षा के परीक्षा पत्र निकल गये। लोग आश्चर्य में हैं कि यह कैसे हुआ? इतने तालों में से, इतनी सावधानियों में से परीक्षा पत्र कैसे निकल गये? यह एक ऐसा प्रश्न है, जिस का उत्तर अभी भी नहीं दे सका। ज्यों २ यूनिवर्सिटियां अपने नियमों में कठोरता लाती जाती हैं, त्यों २ दूसरी ओर भी दिमाग़ तेज़ होते जाते हैं। ज्यों २ कुफ़ल पक्के बन रहे हैं, त्यों २ कुफ़ल तोड़ भी चतुर हो रहे हैं। आये साल भारत के किसी न किसी भाग में शोर सुन जाता है कि पर्चे निकल गये। क्या शिक्षा का यही परिणाम होना चाहिए कि विद्यार्थी पर्चे निकालने का यत्न करें। यदि यही परिणाम है तो शिक्षा को दूर से नमस्कार है। बात तो असल में यह है कि आज कल हमारी शिक्षा मन को शिक्षित करती है आत्मा को नहीं। आत्मा के शिक्षित हुए बिना मन की शिक्षा किसी काम की भी नहीं।

आवश्यक निवेदन

प्रचारक का वर्ष चैत्र में समाप्त होता है। उसके साथ ग्राहकों की अधिक संख्या का वर्ष भी समाप्त होता है। इसलिए जो ग्राहक महाशय उत्सव पर पधारें उनसे प्रार्थना है कि अपना २ प्रचारक का मूल्य प्रचारक कार्यालय में जमा करा दें। और जो न आसकें उनसे निवेदन है कि अपना २ मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेज देवें। जिनका मूल्य प्राप्त नहीं होगा उनके नाम गुरुकुलांक से अगला अंक ३-) का वी० पी० करके भेजा जायगा।

प्रबन्धकर्ता

पुस्तक समालोचना

संस्कृत का स्वयं शिक्षक द्वितीय भाग—लेखक श्रीपाद पं० सातवलेकर जी मूल्य—१।) प्राप्ति स्थान सरस्वति आश्रम लाहौर।

प्रथम भाग की आलोचना प्रचारक में हो चुकी है। द्वितीय भाग की भूमिका से ज्ञात होता है कि प्रथम भाग संस्कृत सीखने की इच्छा रखने वालों के लिए बहुत उपयोगी सिद्ध हुआ है। मुसलमानों तक ने उससे संस्कृत सीखने में कृतकार्यता प्राप्त की है। द्वितीय भाग विद्यार्थियों को संस्कृत गद्य और पद्य के कठिन २ वाक्यों के ज्ञान तक पहुंचा देता है। यह भी प्रथम भाग की भांति उपयोगी सिद्ध होगा। जिन्होंने शिक्षक के प्रथम भाग से संस्कृत में कुछ गति की है उनके लिए तो यह द्वितीय भाग बहुत उपयोगी होगा ही, अन्यों के लिए भी इसकी उपयोगिता कम नहीं है। एक निवेदन जो पहिले भाग की आलोचना में करना पड़ा था इस बार भी करना पड़ता है। ठ.पी की साधारण अशुद्धियें बहुत अधिक है। दृष्टान्त के लिए कुछ उदाहरण दीजिए—छठे पृष्ठ पर 'स्याही' लिखने में रफ के साथ आ और ई दोनों लगाए हैं। २७० पृष्ठ पर ऊपर की जगह बदर और २७१ पृष्ठ पर "अंगुलीय" शब्द के आगे विसर्ग अनुचित ही हैं। ये उदाहरण ढूंढ कर नहीं निकाले गए अपितु पृष्ठ पलटते २ स्वयम् ही दृष्टि में आगए हैं। [illegible] बार बार अशुद्धियों को दूर करना आवश्यक है। यह ठीक है कि [illegible] के मुद्रण में जो अशुद्धि की [illegible] सम्पादक की [illegible] किन्तु इससे [illegible] विषय की वृद्धि नहीं होती, तो भी पुस्तक की उपयोगिता में कोई [illegible] नहीं।

गीता का हार अर्थात् श्रीमान् लाला हंसराज जी के व्याख्यानों का संग्रह प्राप्ति स्थान सरस्वति आश्रम लाहौर मूल्य केवल ।=)

पुस्तक का विषय उपनाम से ही स्पष्ट है। आर्यसमाज के एक प्रसिद्ध नेता के विचारों को पुस्तक रूप में लाकर म० राजपाल जी ने निःसन्देह एक उपयोगी कार्य किया है। प्रारम्भ में प्रोफेसर गो० बिन्दराम की लिखी हुई एक भूमिका अतिरिक्त संग्रह कर्ता का लिखा हुआ म० हंसराज जी का एक जीवन चरित्र भी दिया गया है जिसे पढ़ कर अन्य समाजियों के हृदय में भी आर्यसमाज के एक नेता के लिए अधिक भाव उत्पन्न होगा।

फूलों का गुच्छा—अर्थात् लाला दीवान चन्द्र के लेखों का संग्रह है। प्राप्ति स्थान सरस्वति आश्रम लाहौर। मूल्य ।=)

लाला दीवानचन्द जी प्रान्त के कुछ चुने हुये विद्वान पुरुषों में से हैं। उनके लेखों का संग्रह आर्यसज्जनों के लिए अवश्य ही रुचिकर होगा। हम समझते हैं कि यह पुस्तक आर्य पुस्तकालयों का एक आवश्यक अंक होगी।

हिन्दी पत्रों के होली अंक—कई पत्रों के होली अङ्क में रुचि और भावों की उच्चता देखकर अवश्य ही चित्त मग्न होता है। इस साल एक नई बात हुई सहयोगी आर्यमित्र ने भी होली का अंक निकाला है। इस सम्बन्ध में विशेष इस के हम और कुछ नहीं लिखना चाहते कि होली का झूंठे उपहास या हुल्लड़ मचाने के साथ कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। कम से कम धार्मिक पत्रों को इस विषय में यह अंक होना चाहिए

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

होली [illegible] नेतृत्व का [illegible] और बम्बई के पत्रों के शिर पर ही बन्धा करता है। इस साल भी इन स्थानों के प्रतिष्ठित समाचार पत्रों ने अपना अधिकार नहीं छोड़ा। जो लोग अपने आप को सर्व साधारण की सम्मानों के संचालक समझते हैं यदि होली के दिनों में उनके दिमाग भी ठिकाने नहीं रहते तो सर्व साधारण का क्या कहना?

प्रत्युत्तर

लाहौर के दैनिक बुलिटिन ता० २८ फरवरी १९१७ में अम्बाला छावनी के महाशय मुंशीराम जी ने प्रकाशित कराया है—कि आर्य्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के उपदेशकों ने आर्य समाज अम्बाला छावनी का बायकाट कर दिया है। न जाने महाशय जी को यह समाचार कहां से प्राप्त हुवा—अतः जहां तक मुझे विदित है किसी उपदेशक ने अम्बाला छावनी समाज को बायकाट नहीं किया है और नहीं उपदेशक बायकाट को धर्म्म समझते हैं और नहीं उसे उचित समझते हैं। अपितु अत्यन्त निन्दित कार्य्य समझते हैं। परन्तु महाशय मुंशीराम जी उस लेख का उत्तर जो डाक्टर भानाराम जी ने ४ मार्च १९१७ के बुलिटिन में प्रकाशित कराया है वह सभ्यता से अत्यन्त पतित घृणित और विशेष कर मुझ पर ही लक्ष्य कर के लिखा गया है। दृष्टान्तार्थ मैं उन के लेख से कतिपय [illegible] करता हूं—

"यहां [illegible] के एक [illegible] ...और उस [illegible] के पीछे [illegible] मुंशीराम [illegible] भी समाज से [illegible] पड़ा... ... ...उस लड़के [illegible] के मन्त्री महाशय की खास [illegible] है और सभा के चन्द उपदेशक भी [illegible] हैं... ... ... सभा के हेड [illegible] के विरुद्ध ऐसी दूषित [illegible] कर सकते हैं।... ... ... [illegible] नाजायज [illegible] की, जिस से यह [illegible] किसी से मिले [illegible] और सब उपदेशकों को बहकाने लग पड़े... ... ...बल्कि उनको मंत्री सभा की नाजायज खुशामद से रोकना चाहता हूं।... ... ...उपदेशक सभा के मातहत होते हुये सभा की मातहत समाजों में जाने से इनकार नहीं कर सकते—वरना उनको अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ेगा।"

महाशय जी! उस हतभाग्य भजनीक का एवं उन उपदेशकों का नाम सभा के मन्त्री के पास लिख भेजें। वास्तव में यह वार्त्ता है कि डाक्टर साहब का स्वभाव ही ऐसा है कि वह किसी को अपशब्द कहने में संकोच नहीं करते। हम लोग वैदिक धर्म्म के उपदेशक हैं। हमारे पास गालियों का कोई उत्तर नहीं। हम उनको कृपा व दया का पात्र समझ कर उनकी अवस्था पर छोड़ देते हैं।

सभा के हेड उपदेशक शब्द से संकेत मेरी ओर हैं—मैं अहर्निश संस्था का कार्य करता हूं। मैं संस्था का हिताहित सम्यक जानता हूं। जब मैंने कोई शुद्धि नहीं कराई तो किसी से पूछने के क्या अर्थ। यदि मुझे शुद्धि करानी होती तो मुझे किसी से आज्ञा लेने की क्या आवश्यकता थी—क्योंकि मैं वैदिक-धर्म का उपदेशक हूं—मुझे शुद्धि कराने के लिये किसी से आज्ञा प्राप्त करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

वैदिक धर्म के उपदेशक किसी से क्रुद्ध होना नहीं जानते मैं न तो किसी से क्रुद्ध हुआ और नाहीं मैं बिना किसी को मिले आया अपितु डाक्टर साहब के पिता आदि योग्य अधिकारियों से मिलकर आया था। न जाने यह झूंठ असत्य कल्पना डाक्टर साहब ने कहां से उत्पन्न की।

मैं किसी उपदेशक को बहकाना तो दूर रहा—अपितु उत्साह तो देता रहता हूं। जब इस बात का मूल ही नहीं—तो उस के आधार पर कल्पित बात कहां रह सकती है इसे विचारशील स्वयं विचार [illegible]।

उपदेशक सभा के आधीन इस बातों कार्य्य करते हैं, कि सभा की संगठन जो आर्य्यसमाज का एक विशेष गुण है—स्थिर रहे—उपदेशक आपके वेतन के लोभ से कार्य नहीं करते। आप ने "नौकरी" शब्द का प्रयोग करके अपनी मनोऽवस्था प्रकट करदी है—उपदेशक किसी के नौकर नहीं हैं। वे वैदिक धर्म के प्रचारक हैं—वे अपने आत्मा के विरुद्ध न तो कर सकते हैं और न करते हैं।

डाक्टर जी का सद्धर्म्म प्रचारक वाला लेख पढ़कर उपदेशकों को अवश्य ही बुरा प्रतीत हुआ—परन्तु वे इतने क्षुद्रमना नहीं है—कि एक साधारण व्यक्ति के लेखों से क्षुब्ध हो जावें।

अन्त में डाक्टर जी से प्रार्थना है कि वे ऐसे झगड़ों में न पड़ा करें जिससे उनकी एवं उनके समाज की अकीर्ति हो—अम्बाला छावनी समाज को भी उचित है कि वे डाक्टर जी को शान्त रहने का अनुरोध करें।

भवदीय
पूर्णानन्द उपदेशक

टिप्पणी—इस विवाद को हम शोकभरी दृष्टि से देखते हैं। डा० भानाराम जी यदि इस प्रकार का व्यक्तिगत कटाक्ष पूर्ण लेख न लिखते तो अच्छा होता, और यदि म० मुन्शीराम जी इस झगड़े को न उठाते तो और भी उत्तम होता। बुलटिन वाले लेख में डा० भानाराम जी ने हमारा नाम भी बीच में लिख दिया है। उपदेशकों के सम्बन्ध में हमारे लेखों का जो भाव था, डाक्टर जी के लेख का भाव उससे सर्वथा भिन्न था। यह लेख तो छाप दिया, किन्तु आगे यह विवाद न बढ़ेगा।

सम्पादक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वेद और वैदिक मुनि

[४]

(लेखक श्री प्रो० बालकृष्ण, एम. ए.)

वैदिकमुनि विरचित अवैदिक सर्वस्व की सामान्य समालोचना हम पूर्व तीन लेखों में कर चुके हैं, यह चौथा और अन्तिम लेख सामान्य समालोचना विषयक है। हमें उस छोटे से ग्रन्थ की सैकड़ों बातों से मत-भेद है, उन के प्रकट करने के लिए पर्याप्त स्थान चाहिए। साथ ही हमारे ईश्वरीय ज्ञान-वेद नामक ग्रन्थ में वेदविषयक भ्रमों का पर्याप्त वा विस्तृत उत्तर मिलेगा, अतः दोबारा जनता के सामने वही विचार लाने उचित नहीं। पूर्वागत तीन लेखों के समान इस लेख में अवैदिक सर्वस्व पर सामान्य दृष्टि ही हम डालेंगे और आशा करते हैं कि हिन्दूजाति, आर्य जनता और वेदों के प्रेमी सज्जन सब वैदिक मुनि की स्थिति से परिचित हो कर उन के सम्प्रदाय का नाम लें।

पतंजलि मुनि १८०० वर्ष पूर्व हुए

स्वामी हरिप्रसाद जी का मत है कि पतञ्जलि मुनि का उत्पन्न हुए १८०० वर्ष हुए हैं, अर्थात् वे ईसा के सम्वत् से १०० वर्ष पीछे हुए हैं। जहां पौराणिक भाई उन्हें अति प्राचीन काल का मानते हैं और मुस्लिम लोग भी १५०-१४० वर्ष ईसा से पूर्व पतञ्जलि मुनि का समय रखते हैं, वहां स्वामी जी ने २५० वर्ष पीछे मुनि का समय रक्खा है और इस सम्मति के लिए कोई प्रमाण नहीं दिया। वीवर, गोल्डस्टकर और भंडारकर में चिरकाल तक मुनि के काल पर परस्पर वादविवाद होता रहा, अन्यों ने भी इस विषय में भाग लिया, अन्त में १५० ईसा से पूर्व का काल निश्चित हुआ है। "पुष्यमित्रं याजयामहे"—पुष्यमित्र का अश्वमेध यज्ञ हम कराते हैं—ऐसे शब्दों से वे मुनिवर पुष्यमित्र के समय में प्रमाणित होते हैं और उस महाराज का राजकाल १८४ वर्ष ईसा से पूर्व आरम्भ होता है, एवम् १५० वर्ष ईसा पूर्व बहुत दूर नहीं प्रतीत होता, पर स्वामी जी ने, न जाने, किसी साक्षी पर उस मुनि के काल को २५० वर्ष और पीछे हटा दिया है। आशा तो यह हो सकती थी कि आप कोई ऐसे प्रमाण निकालते जो १५० ईसा पूर्व की साक्षी को सन्दिग्ध कर सकते, पर आपने अपनी उत्तरदायिता को दूर रख कर ऐसी विलक्षण सम्मति प्रकट की है, अतः आर्यजनता देख सकती है कि स्वामी जी कहां तक आर्य्य गौरव के रक्षक वा पोषक हैं।

सामवेद में ७० मन्त्र !

सामवेद के विषय में स्वामी जी ने जो स्थिति ली है, वह अत्यन्त विलक्षण है। उन का एक मत यह है कि ऋग्वेद से जो मन्त्र नहीं लिये गए—उन का बना हुआ सामवेद समझना चाहिए—यह संख्या ७० से ७८ तक बताई गई है किन्तु उनका निश्चित सिद्धान्त यही है कि ७५ मंत्रों का ही सामवेद है। पर उन में से भी ५ मंत्र परिशिष्ट हैं शेष ७० मंत्र ही सामवेद में हैं, इसी कारण स्वामी जी ने सामवेद नाम की लघु आकार वाली एक .... पृष्ठों की पुस्तक छपवाई है—उस में आर्य्यभाषा में मंत्रों का अर्थ कर दिया है और एक भू एका भी ... पृष्ठों की साथ ही है। देखा जावे तो स्वामी जी ने इस पुस्तक का इतना आकार भी व्यर्थ बढ़ाया है, क्योंकि ७० मंत्र चार पृष्ठों में आ सकते थे—२ पत्रों की एक पत्री छपवा कर उस का नाम सामवेद रखते तो अच्छा होता। फिर हमें बड़ा आश्चर्य है कि एक ओर तो स्वामी जी इस बात का प्रचार करते हैं कि "वेद की भाषा के विषय में तो यह कथन कुतूहल जनक न होगा कि वह पंजाबी भाषा से यत्किंचित् भी कठिन नहीं है।" जब वेद की भाषा पंजाबी से जरा भी मुश्किल नहीं और सामवेद तो गान के मंत्रों का संग्रह है, अतः वे अधिक सरल भाषा में लिखे हुए होंगे। तब आर्य्य भाषा में उन के अर्थ करने की क्या आवश्यकता हुई? पंजाबी को, बालक, स्त्री, पुरुष, सब सुगमता से समझते हैं तो दो पत्रों की पत्री बनाना ही पर्याप्त था, पंजाबी से भी अधिक सरल भाषा के अर्थ करना आप जैसे विद्वान् की शान के शायां न था! किन्तु आप को पञ्जाबी से विशेष प्रेम है, इस कारण आप 'अठवञ्जा' ५८ और 'चौरञ्जा' ५४ शब्द आर्य्य भाषा में भी लिखते हैं। ऐसे प्रेम के होते हुए आपने सामवेद का आकार व्यर्थ में बढ़ाया!

सामवेद में प्रक्षेप

स्वामी जी की दूसरी सम्मति है कि आरण्यक अध्याय और महानाम्नी मंत्र सामसंहिता के अन्तर्गत नहीं—सामवेद संहिता का परिशिष्ट आरण्यक अध्याय और आरण्यक अध्याय का परिशिष्ट महानाम्नी आर्चिक है। स्वामी जी एक वैदिक [?] सम्प्रदाय बना कर आचार्य होना चाहते हैं—उनकी शुभकामना श्लाघनीय है क्योंकि हरएक को उन्नति करने में स्वतन्त्रता है। किसी की इच्छाओं आकांक्षाओं को, नहीं नहीं, स्वप्नवत् कामनाओं या तरंगों को सीमित परिमित वा बाधित करना उचित नहीं। बड़े महान् व्यक्तियों के चित्ततरंग और मनोलौल्य ही काल की क्रीड़ा से स्वयंसिद्ध प्रमाणित हो जाते हैं। निस्सन्देह हमें यह देख कर आनन्द है कि आचार्य्यों की गणना में स्वामी हरिप्रसाद जी का नाम भी गिना जावे और एक वैदिक सम्प्रदाय स्वामी जी के नाम पर चले, पर इस सम्प्रदाय के सिद्धान्तों को देख कर दुःख होता है। एक तो नाम संस्कार अशुद्ध किया गया है क्योंकि वेदों में मांस भक्षण की शिक्षा है, परमदयालु प्रभु हिंसक है, वेदों में मिलावट है, ब्राह्मणग्रन्थों और आरण्यक आदि कई ग्रन्थों से वाक्य निकाल कर वेदों में मिला दिए गए हैं, वैदिक ऋषि कपटी थे, वेद पुरुषकृत हैं, वे भिन्न कालों में बने हैं— ऐसे सिद्धान्तों वाला सम्प्रदाय वैदिक कैसे हो सकता है? यह तो काले को सफ़ेद और सूरदास को नयनदास कहने से भी अधिक हास्यप्रद है। अतः इस का नाम अवैदिकसम्प्रदाय रखना "यथा गुणा तथा नाम" के सिद्धान्तानुसार उचित होगा।

पर एक विलक्षणता और है कि स्वामी जी ने शेख चिल्ली के समान अपने हवाई घोड़े दौड़ा कर यह समझ लिया है कि उन के सम्प्रदाय के लाखों चेले पहिले ही मौजूद हैं। इस कारण यह विचित्र शब्द लिए गए हैं—"आरण्यक और महानाम्नी को सामवेद संहिता के अन्तर्ग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मानना भूल हो [illegible] वैदिक मर्यादा का उल्लङ्घन [illegible] आवश्य है। वैदिक मर्यादा [illegible] कि पूर्व और उत्तर, आर्चिक [illegible] नाम सामवेद संहिता है—यही वैदिक मर्यादा सब वैदिकों को सर्वदा सर्वत्र सर्वतो मान्य है। फिर चारों वेदों का [illegible] अथवा ऋषि है—यही [illegible] वैदिक सिद्धान्त है।"

मन्त्रों का अर्थ संगत नहीं

इनके सम्प्रदाय का कहां तक निरूपण करें? सामवेद के आरण्यक अध्याय के [illegible] में यह सिद्धान्त है—"तैत्तिरीयारण्यक के परिशिष्ट नारायणोपनिषद् के [illegible] भगवान् नहीं ठहरते प्रायः यह मन्त्र ऋग्वेद से और कुछ अन्य आरण्यकों से संग्रह किए गए हैं। संग्रह ऐसा परस्पर असम्बद्ध हुआ है कि कोई [illegible] अर्थ [illegible] नहीं सकता [illegible] पाठ की दृष्टि [illegible] कर [illegible] जा सकता है।"

महर्षि दयानन्द का वेदभाष्य भद्दा और असंगत है

सकल शास्त्रनिष्णात स्वामी हरिप्रसाद को सामवेद के आरण्यक अध्याय के मन्त्रों का अर्थ असंगत और संग्रह बड़ा असम्बद्ध प्रतीत होता है, यहीं तक ही वैदिक मुनि जी का भान नहीं हुआ—उन्हें महर्षि दयानन्द का यजुर्वेद-भाष्य भद्दा मालूम होता है। मेधावी स्वामी जी कहते हैं कि वर्तमान काल में दो प्रकार के भाष्य यजुर्वेद के मिलते हैं—सायणाचार्य, महीधर आदि के भाष्य हैं—यह याज्ञिकों को प्रिय हैं, पर वे सर्वजन प्रिय नहीं। दूसरी ओर "जो कोई भाष्य याज्ञिक पद्धति से नहीं किया गया [जैसे स्वामी दयानन्द का एकाकी भाष्य] वह और भी भद्दा है क्योंकि कर्मकाण्ड का प्रतिपादन उस में यत्किञ्चित् भी नहीं। [वह भाष्य] परस्पर असंगत इतना है कि पढ़ने को चित्त नहीं चाहता।"

इस प्रकार आर्य जनता ने देखा कि निखिल शास्त्रनिष्णात पंडित साधुवृत्ति स्वामी को महर्षि दयानन्द का भाष्य असंगत लगता है। भगवान दयानन्द में, स्वामी हरिप्रसाद अपने अवैदिक सर्वस्व [पृ० ४२] में ही मानते हैं कि "मेरी श्रद्धेय बुद्धि है।" यह भगवान् दयानन्द के श्रद्धालु भक्त हैं। नहीं गुरुकुल वृन्दावन के १९१५ के उत्सव पर अपने व्याख्यान में आर्य जनता के सामने उन्हों ने यह उद्घोषित किया था कि "मैं स्वामी दयानन्द को अपना आचार्य मानता हूं" इस प्रकार अपने आचार्य गुरु का भाष्य उन्हें भद्दा, असंगत प्रतीत होता है और उस के पढ़ने को उनका चित्त नहीं चाहता।

अपने तईं आर्यसमाजी प्रकट करने वाले, आर्य समाज की वेदी पर से व्याख्यान देने वाले, षड्दर्शनों की वैदिक वृत्ति लिखने वाले शिष्य स्वामी हरिप्रसाद अपने आचार्य, आर्यसमाज के प्रवर्त्तक, ऋषि दयानन्द के विषय में यहीं तक वार नहीं करते, बल्कि 'करेला और नीम चढ़ा' का सिद्धान्त यहां लगता है।

महर्षि दयानद को बुद्धू बना दिया

देखिए कि पंडित हरिप्रसाद की ओजस्विनी लेखनी से कैसे शब्द अपने गुरु के विषय में निकलते हैं—"सामवेदियों ने गाने की सुविधा के लिए स्वरों के स्थान में मन्त्रों पर एक दो तीन अंक लगाये हुए हैं। उन अंकों को देख कर कई एक बुद्धिसागर कहते और लिखते हैं कि वे अंक गणित विद्या का बीज हैं और जगत्पिता ईश्वर ने स्वयं लगाये हैं।

सत्याभिलाषी, निःशंक, साहसी स्वामी की यह साधु वृत्ति है कि यहां पर भगवान् दयानन्द का नाम नहीं लिया और कई एक शब्दों की आड़ में अपने आचार्य को बुद्धिसागर कहते हैं। पाठक को कहीं सन्देह न रहे इस कारण हम ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में से ऋषि दयानन्द के शब्द उद्धृत करते हैं—अं-क इत्यादि संकेतेनैतन्मन्त्रादिभ्यो बीजगणितं निःसरतीत्यवधेयम्॥ यथैका क्रिया द्व्यर्थकरी प्रसिद्धेति न्यायेन स्वरसंकेताङ्कैर्बीजगणितमपि साध्यत इति बोध्यम्।"

सामवेद के मन्त्रों के अक्षरों पर अं-क जो संकेत लगे हुए हैं उनके द्वारा मंत्रों से बीजगणित निकलता है ऐसा समझना चाहिये। जैसे सामवेद के प्रथम मंत्र के उदाहरण से स्पष्ट होगा। 'एक पन्थ दो काज' की उक्ति के अनुसार सामवेद के मंत्रों पर के स्वर संकेतांकों द्वारा दो कार्य सिद्ध हो जाते हैं। यह अंक स्वर भेद दर्शाने वाले तो हैं ही, पर साथ ही उन से बीजगणित भी सिद्ध हो जाता है।

इस प्रकार पाठकों को ज्ञात हो गया कि भगवान् दयानन्द ने सामवेद के स्वरों के अङ्कों से बीजगणित निकालने का भाव प्रगट किया है किन्तु स्वामी ने उनका नाम लेने का साहस न करके "कई एक" शब्दों की आड़ में अपने आचार्य्य पर प्रहार किया है।

जो स्वामी ईश्वर को हिंसक कहते, उनकी कल्याणी वेद वाणी को पुरुषकृत, असंगत, असम्बद्ध, अरोचक बताते, जो प्राचीन ऋषि मुनियों को कपटी, छली, बेईमान सिद्ध करते हैं, जो ऊपर २ से अपने तईं आर्यसमाजी प्रकट करते हुए निजू बात चीत में उसे मूल से उन्मूल करने में यत्न करते रहे हैं, वे अपने आचार्य्य और गुरु पर वार करने से कैसे टल सकते थे? यद्यपि यह स्वामी चिरकाल से आर्य्यसमाज में बगली सांप के तुल्य हो रहे थे, पर आर्य्य जनता को पूरा भान नहीं हुआ था कि वह मुख में मधु और सम्पूर्णतया विष से भरे हुए पात्र के समान हैं, अब परमपिता परमात्मा का धन्यवाद है कि स्वामी का असली स्वरूप प्रकट हो गया है और उन के अवैदिक सम्प्रदाय के दूषित गर्हित निन्दित विषालु सिद्धान्तों का परिचय सर्व साधारण को होगया है, साथ ही उन के अहंकार अभिमान और आकांक्षा से भी परिचिति आर्य जनता को होगई है। अब हमने तो सामान्यतः अवैदिक सर्वस्व से पण्डित हरिप्रसाद का परिचय जनता को दे कर अपना कटु कर्तव्य पूरा किया है, हम देखेंगे कि आर्य्य जनता भी अपना कर्तव्य पूरा करती है या नहीं।

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रचारक का
दैनिक संस्करण

गुरुकुलोत्सव के पांच दिन, सद्धर्म-प्रचारक प्रतिदिन निकला करेगा। उस में रोज़ के नये २ संसारसमाचार और गुरुकुलोत्सव के समाचार छपा करेंगे। जिन लोगों को गुरुकुलोत्सव के समाचार रोज़ ही जानने का शौक हो—उन्हें इस विशेष दैनिक संस्करण से बड़ा लाभ होगा। गुरुकुल में यह दैनिक एक पैसे में बिका करेगा।

गुरुकुल से बाहिर जो सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक इसे मंगवाना चाहें, वे ⁄)॥ के टिकट भेज कर ग्राहक श्रेणी में अपना नाम लिखवा लें।

जो सज्जन सद्धर्म-प्रचारक के ग्राहक नहीं हैं, वे ।-) के टिकट अथवा मनी-आर्डर भेज कर दैनिक प्रचारक श्रेणी में नाम लिखा सकते हैं।

इतने सस्ते में गुरुकुलोत्सव के दैनिक समाचार पढ़ना—यह कैसे आनन्द की बात है। ग्राहक बनने में विलम्ब न कीजिये।

—:०:—

सद्धर्म-प्रचारक
का
गुरुकुलांक

गुरुकुलोत्सव के समय सद्धर्मप्रचारक का विशेषांक निकलेगा। इस विशेषांक में निम्नलिखित तीन विषयों पर प्रसिद्ध विद्वानों के लेख होंगे—

[१] गुरुकुल शिक्षाप्रणाली
[२] वैदिक—ईश्वर—वाद

प्रसिद्ध लेखकों के लेख आ रहे हैं।

⁄) के टिकट भेजने से गुरुकुलांक भेजा जायगा। सद्धर्म प्रचारक के ग्राहकों को यह अंक बिना मूल्य भेंट होगा।

शीघ्र ही इस के ग्राहक बनिये—

इन्द्र
सम्पादक तथा प्रबन्धकर्ता
सद्धर्म-प्रचारक
गुरुकुल हरिद्वार

—:०:—

आग्नेयास्त्र का इतिहास

[२]

(लेखक पं० ब्रह्मदेव शर्मा विद्यालङ्कार)

इसी तोप का वर्णन करते हुए उसके गोले लगाकर चलाने की विधि का वर्णन करते हुए शुक्र नीति में लिखा है कि [illegible] या पीपल की १०अंगुल १५२१ दे० [illegible] था। उस अस्त्र का नाम त्रिघ्न था जिसका नाम हिन्दी में बिलौंदा है। पहिले गर्म करके। दे० सलाई या बत्ती ही देनी पड़ती थी। फिर चलती थी। परन्तु बारूद तथा पानी के समय यह सब निकम्मा हो जाता था अतः अब उन्नति रुक गई और उन्नति होते २ वर्तमान रूप हो गया जो सब कोई जानता है। अब हम पूर्वीय देशों की ओर झुकते हैं।

१०. इतिहास बताता है कि देहली के पास तिमरलेन और सुलतान महमूद की लड़ाई हुई इसमें महमूद ने १०,००० घुड़सवारों और ४०००० पैदलों और बहुत से हाथियों को लेकर शत्रु का सामना किया। हाथी कवचों से ढके हुए थे। हाथियों की पीठों पर बड़े २ हौदे थे। जिन में बैठे बन्दूकची लोग गोलियां और आग बरसाते थे और तीर मारते थे।

चोटें खाकर तिमूर की सेना भागनी थी और हाथी आगे बढ़ते थे। पहली बार तो तिमूर इन कवची हाथियों से हार कर लौट गया परन्तु अगले दिन तिमूर ने बहुत से ऊंट लिए और उन पर सूखा घास लाद दिया। और हाथियों के आगे कर दिया। युद्ध शुरू हुआ और हाथियों के पास जाते ही तिमूर ने घास में आग देदी, हाथी डर कर भाग गए।

(११) भटनेर के किले पर आक्रमण करते हुए भी तिमूर को ऐसी ही कठिनाइयां उठानी पड़ी थीं। किले के अन्दर के आदमी उस पर नाल पत्थर तथा आग की वर्षा करते थे।

(१२) फ़रिश्ते के अनुसार पश्चिमी एशिया में मुगल राज्य के संस्थापक हलाकूखां ने १२५८ ई० में देहली के राजा के पास राजदूत भेजा था। उसका देहली के वज़ीर ने बड़ी धूम धाम से स्वागत किया। दर्शनीय दृश्य यही कि ३००० हाथियों [illegible] यही बड़ा नहीं था। उसी समय में [illegible] की सूचना आती है कि चीन और मुगुल [illegible] हुये सुईं में इस बन्दूक [illegible] अग्नि के अस्त्र का प्रयोग हुआ; यह [illegible] प्रकार का तीर होता था। इस का [illegible] अग्नि बाण होता था। एक बांस की [illegible] नली में मटर के से गुल [illegible] दाने डाल कर उस में बारूद दे [illegible] जाती थी, और आग लगाने पर [illegible] वेग से ज्वाला के साथ निकलते [illegible] और "फाह" सा भयंकर शब्द होता [illegible] जो १५० कदमों तक बखूबी सुनता था।

(१३) अफ़ग़ानिस्तान के वासी कहते [illegible] कि भारतीय लोगों में आतिश बाजी [illegible] अग्नि लीला बहुत होती थी।

[१४] फ़रिश्ता कहता है कि पेशावर पर महमूद गजनवी चढ़ाई करते [illegible] लोध और तुरुक को काम में लाया था।

[१५] कर्नल टाड कहता है कि रा[illegible] स्थान के इतिहास में हिन्दी कवियों [illegible] छन्दों में आग्नेयास्त्र या अग्नि गोले [illegible] वर्णन बहुत आता है। कई कवियों ने [illegible] क्षेत्र के चलाने वालियों का वर्णन किया [illegible]

[१६] मुहम्मद कासिम ने मंजनी [illegible] नाम का यन्त्र प्रयोग किया था जब [illegible] बांस के अन्दर पर छप्पर किया [illegible] पहले काम से ले यह लिया था कि [illegible] पत्थरों को ऊपर पर भारकर उस [illegible] झोड़ा गिराया गया था। ६ हिजरी [illegible] को मुहम्मद हजरत ने भी ताइफ़ के युद्ध [illegible] इस मञ्जनीक नाम के अस्त्र का प्रयोग किया था।

हेनिबल सिलोस्टेट्स जो राजा फराव [illegible] के दर्बार में थां लिखता है कि सिकन्दर यदि जमना पार कर लेता तो अवश्य [illegible] रत वर्ष के सब पास पास के देश अ[illegible] आधीन कर लेता। परन्तु फिर भी [illegible] धर्म सिद्ध पुरुषों के दुर्गों का जय क[illegible] कठिन था। क्योंकि वे लोग दिवारों से [illegible] फान और उपद्रव, बिजली और वज्र [illegible] राते हैं। शायद इसी लिए सिकन्दर [illegible] पना सा मुंह लेकर लौट गया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(१७) [illegible] फिर बहुत भी उसी विद्युत् [illegible] पर से हताश होकर लौट गए थे।

(१८) सिकन्दर ने एक पत्र में अपने गुरु अरस्तू को लिखा था कि मेरी सेना बहुत आपत्ति में है क्योंकि उस पर भारत वासियों ने भड़कती ज्वालावाली बिजली फेंक कर निकम्मा कर दिया।

(१९) पोरस राजा के महान्ध हाथियों की [illegible] खा खा कर निराश होकर लौटे हुये सिकन्दर के पूछने पर, फ़र्दीती ने [illegible] ए दी, कि एक लोहे का घोड़ा बना [illegible], उसमें बारूद आदि भर कर, उस को [illegible] हियों पर रख कर, हाथियों के [illegible] में [illegible] ड़ा करो, और आग दे दो, सब हाथी [illegible] से उड़ जायगें।

(२०) भारत [illegible] में ऐतिहासिक ते- [illegible] लिखते हैं। प्राचीनभारतीय एक तेल [illegible] यार करते हैं जिसमें आग बहुत ही [illegible] लदी लग जाती है। यह तेल एक बहुत [illegible] जानवर से निकाला जाता है। यह [illegible] समुद्र बड़ी २ नदियों और समुद्रों में [illegible] ता है। इसके दो बड़े दान्त होते हैं। [illegible] म में कीचड़ीली भूमि में रेत पर लोटा [illegible] रता है और रात को अपनी भोजन की [illegible] ाज में जङ्गलों में घूमता है। और बड़े २ [illegible] ुओं को निगल जाता है। सौफ्लीस [illegible] न्स के अनुसार यह पशु हाथी को [illegible] ग्रस जाता है, ऐसे जानवर को पकड़- [illegible] के लिए बकरियों को बांध दिया जाता [illegible], और मौका पाकर शिकार कर लिया [illegible] ता था। इसे मार कर धूप में लटका [illegible] थे। ३० दिन में इसका तेल चू चू कर [illegible] ट्ठा हो जाता था। इस तेल को मट्टी [illegible] घटकों में इकट्ठा कर लेते थे। १० मन [illegible] करीब तेल एक पशु से निकल आता [illegible]; इस पर राजा की मोहर लग कर [illegible] ना के गोदाम में आ जाता था। यह [illegible] ट ही भड़क जाया करता था, इसलिए दूर से फिर आने पर इसको जला २ कर [illegible] ढूंढ कर आग [illegible] पर बरसाई जाया करती थी। इन के मटके अनुओं [illegible] ने दिए जाते थे। जिससे भी छू जाता [illegible] वही आग २ हो जाता था। एक बार [illegible] ने की देखी थी कि इसका बुझना [illegible] कठिन था। सैकड़ों हजारों पर मनुष्य पशु [illegible] कोई भी नहीं बच सकता था इसी बात का उल्लेख-तीसरी [illegible] भी करता है- इसके अतिरिक्त:-

(२१) यह जन्तु [illegible] था [illegible] शब्द विदेशी लोगों ने [illegible] अनुवाद किया है सो यह उनको भ्रम में डालता है कि कीड़ा इतना बड़ा कैसे। पर यह भ्रम है क्योंकि जन्तु से [illegible] [illegible] लिए जाते हैं] [illegible] [illegible] मिट्टी [illegible] में से आ जाते हैं [illegible] इसका नाम स्कोलक्स है। महाशय ऐसे ऐसे जन्तु की सत्ता को असम्भव समझते हैं। एच. एच. विल्सन की सम्मति में यह जन्तु मकर ही है। यह ७ हाथ लम्बा होता है। यूनानी नाम स्कोलेक्स इसके संस्कृत नाम घुलूकी से मिलता है। इस घुलूकी का वर्णन बहुत कुछ शिशुमार घड़ियाल से मिलता है। (घुलुक संस्कृत में कीचड़ को कहते हैं) सरोक महा जन्तु घुलूकी ही है।

(२२) एक प्रकार का तेल ही एक बड़ी मछली से भी पश्चिमीय भारतीय समुद्र तट पर निकालते हैं।

[२३] घुलूकि अवश्य मकर या ऐसी ही कोई जाति है। क्योंकि इसी के आकार वाली छिपकिली भी किलुलुक कहलाती है। हमने अवश्य बहुत दूर तक आग्नेयास्त्र की वंशावली पाली है; अवश्य इसके तेल को या मट्ठे को खयाल कर किन्हीं साधनों [पिचकारी आदिकों] से शत्रु की सेना पर फेंका जाता होगा।

[२४] इस प्रकार, पाठक जान गए होंगे, कि किस प्रकार आग्नेयास्त्र किस २ रूप में कहां २ और कब २ बना तथा ही बनाया रहा है।

शेष अगली बार भारत वर्ष का और भी दूरतक आग्नेयास्त्र विद्या का प्रचार व आविष्कार दिखाएंगे।

इति प्रथम प्रकरण।

शिवरात्रि

आज शिवरात्रि है। आर्यसमाजों में आनन्दोत्सव हो रहे हैं। लेखक भी स्थानीय समाज के उत्सव में सम्मिलित होने के लिए गया था ४½ बजे शाम से दोनों समाजों ने सम्मिलित हो कर उत्सव मनाया। ७ बजे शाम तक ऋषि के गुण कीर्तन होते रहे। लोग कुछ तो प्रायः समय काटने के लिए आए थे वह घड़ी दो घड़ी यहां भी काट कर चले गए। लेखक जब घर पर आया उस के मन में तरङ्गों का सागर उमड़ रहा था। वह तरङ्गें पहिले भी उठा करती थीं—परन्तु आज बड़े वेग से उठ रही हैं। कारण क्या? आज शिवरात्रि है ऋषि दयानन्द को इसी कल्याणकारी रात्रि में बोध हुआ था; उसके अनुयायी आज की रात्रि को ज्ञानोत्पत्ति रात्रि जानते हैं। अतः मेरे हृदय में भी जो तरङ्गें रोज साधारणतया उठा करती थीं उन्हों ने आज बड़े वेग से ठाठें मारनी शुरु कीं। पहिला विचार जो इन तरङ्गों से हृदय से मस्तिष्क तक गया वह था कि रोज तो प्रायः ठीक समय पर सन्ध्या करते थे। परन्तु आज ७ आर्यसमाज में ही बज गए। कुछेक जो वहां गप्पें मारने के लिए भद्र पुरुष ठहर गए—उन्हों ने ८ भी वहीं बजाए। परन्तु सन्ध्या का आज ख्याल तक भी नहीं। आज तो बोधोत्सव था आज तो विशेष प्रकार से स्वाध्याय करना था। रोज यदि ½ घंटा संध्या के अर्पण होता था तो आज १ घण्टे तक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है इसे। परन्तु आज पर्व के दिन ही का-
ण हुआ है इसके कारण तो चित्त चञ्चल
हो रहा है। यह तो आज एक मोटासा
उदाहरण मिला है परन्तु कौन नहीं जा-
नता कि आर्यसमाज की गति शिथिल हो
रही है। शायद किसी ने सच कहा
है कि पण्डित और निठल्ले दोनों एक समान होते हैं—यद्यपि दूसरों
के लिए वह प्रकाश करते हैं परन्तु आप अन्धेरे में ही रहा करते हैं। आज कल
हमारी अवस्था क्या है? इसी पर कुछ
विचार करना है। संसार को आज ऋषि
दयानन्द का सन्देश भली प्रकार विदित
हो गया है यदि संसार को कहना अत्युक्ति
हो तो भारत वर्ष तो निःसंदेह जान
चुका है। आर्य समाज से द्वेष रखने वाली
(जिस का जन्म केवल आर्य समाज को
मलियामेट करने के लिए आया) आर्य
समाज के सिद्धान्तों के अनुकूल काम
कर उन्नति कर रही हैं। परन्तु आर्य-स-
माज में क्या रह गया है? बाहरी
आडम्बर!

अभी कोई बिचारा जिज्ञासु आप से
ही हम से कुछ शंका समाधान करना
चाहेगा तो हम हाथ धो कर उस के पीछे
पड़ जाएंगे। परन्तु यदि कोई हमारी
परीक्षा ले तो हमें पता लग जावेगा कि
हम कितने पानी में हैं। आडम्बर और
केवल बाहरी आडम्बर का ज्वलन्त
उदाहरण लेना हो तो हमारे वार्षि-
कोत्सवों को देखिए। आज किसी समाज
के उत्सव होने को अभी चार मास हैं और
तैयारियां शुरु हो जाती हैं। किस लिए?
क्या सभासदों की संख्या बढ़ाने के लिए?
नहीं। तब किस लिए? क्या प्रचार का
विशेष प्रबन्ध करने के लिए? कदापि
नहीं। तब किस लिए? चन्दा मांगने के
लिए। जिस किसी भी व्यक्ति के पास
हो हम जाने से संकोच न करेंगे। चाहे
कैसा भी अनाचारी हो उस की मिथ्या
प्रशंसा [illegible] लोभ के लिए करेंगे।
यदि उसने दुत्कार दिया तो अभीष्टसिद्धि
पूर्ण हो गयी—न दिया तो अजमेर से ही
लेकर चले आए। इसी पुस्तक के लेख-
कारों को बुलाने की है उस के लिए भी
बड़े धनाढ्यों सेठसाहूकारों के पत्र छपवाकर
भेज देते हैं केवल इन लोगों को रौनक
बढ़ाने के लिए कि बड़ों सभाओं पर उनके नाम
का आदि का खर्च होने से पहली फिर
जाता है। उस महात्मा को जो वह
आने वाले का होता है उसकी कुछ चिन्ता
नहीं। अजमेर को तो अपना ही नहीं
किया। कहीं भजनकीर्तन धोका न रहे,
इस लिए सदाचार का भी ख्याल नहीं।
जो ज़रा तान तीरी कर सकता हो अन्दर
आवे। भजनकीर्तन की शोभा तो हो
जावेगी। अभी एक भजनीक महाशय
को एक उत्सव पर देखा था। मेरे
शरीर में होलियों के स्थान में राजा इन्द्र
का स्थान मिलजुल है आपको याद उस
से कुछ कम न थी। दोनों तरफ़ अलग
अलग दो सारंगी वाले बैठे हैं। आगे
तबलची बैठे हैं—बीच में सिंहासन पर
गायनाचार्य जी विराजे ताले तोड़ रहे हैं।
यह तो हरि कीर्तन का हाल है। सारांश
यह कि आडम्बर ही आडम्बर रह गया
है। उत्सव की कार्यवाही वेद पाठ और
हवन से आरम्भ होनी है—पर इस बात
चुके, पं० पूर्णानन्द जी के सिवाय न समाज
के अधिकारी किसी का दर्शन हुआ है
और न एक भी श्रोता आया है। शोक
यह तो हमारी हालत हो रही है और
फिर हम कहते हैं कि हम उन्नति
कर रहे हैं। हमारा जीवन ही आर्य जी-
वन नहीं हुआ। यदि घर में पिता आर्य
है तो पुत्र के विचारों तक का पता
नहीं। वह धर्म के नाम से ही कोसों
दूर भागता है। कारण स्पष्ट है—बाहरी
आडम्बर ने कहीं का नहीं रखा। कर्म
काण्ड तो कहीं जाने नहीं है। खण्डन
की जिन्हें नहीं। समाज में भी तो
सभी जाने हैं जब कुछ पद प्राप्ति हो।
यदि हमारे विचारों में साम्य किसी का
मतभेद हुआ—तब हम विरुद्ध गए।
Party feelings हमारे अन्दर आए हमने
एक जत्था बनाया हमारे विपक्षी ने
दूसरा। किसी तीसरे ने तीसरा। बस
अब क्या है। अपनी ही अन्त्याहुती
स्वयं करने लगे।

विज्ञ पाठक सोचो क्या करना था
क्या करने लग गए हैं क्या इस अवस्था को
भी देखा नीहार न लेवेगा जो हमारे
धर्मबन्धु इसी पर विचार करके हमें सीधे
मार्ग पर लगावेगा? पाठक! यदि आप
सचेत हुए हैं तो आप भी कमर उठाएं
इस हटे रास्ते पर जिस पर अन्धाधुन्ध
में आर्य समाज आ रहा है—इसे हटाने
के लिये आन्दोलन करें।

पूज्य सभासद जी ने कुछ कुछ विचार आप
के सामने रखे हैं। आप तो अनुभवी
क्या आप आर्य समाज की वर्तमान स्थिति
पर विचार नहीं कर रहे। क्या मेरे म
को लहरें कुरेद कर रखती हैं? क्या य
जो कुछ कहा है सत्य है अथवा मेरा
भ्रम है? मैं तो समझता हूं मुझ से अ
शब्द ही नहीं बन पड़े कि मैं ठीक
समाज का चित्र खींच सकूं। यह
विस्तारभय से अब आगे नहीं लिखता
यदि आप आज्ञा देंगे तो दूसरे लेख
इन सब बातों को कैसे दूर कर के उ
पग कैसे बढ़ाना चाहिए इस के वि
में कुछ अपनी बुद्धि अनुसार लिखूंगा

भवदीय

आर्य समाज का तुच्छ सेव

ज्ञानीलाल आर्य।

—:o:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सामाजिक समाचार

आर्यसमाज [illegible] का वार्षिकोत्सव ३१ मार्च तथा १,२ अप्रैल १७ को होना निश्चय हुआ है। श्री मंत्री जी संन्यासी महात्मा, उपदेशक महाशयों तथा आर्य पुरुषों को निमन्त्रित करते हैं।

श्री मंत्री आर्यसमाज अबोहर सूचना देते हैं कि [illegible] फाल्गुण ७३ को श्री लाला दुलाराम जी [illegible] आर्यसमाज अबोहर की सुयोग्य पुत्री द्रोपदीदेवी जी का विवाह डेरागाजीखां के पं० जी[illegible]लाल जी के सुपुत्र डाक्टर भीमसेन जी के [illegible] पूर्ण वैदिक रीति से श्री पं० गंगादत्त जी [illegible] कराया। उपस्थिति ५०० के लगभग थी। [illegible] उत्तम पड़ा। वर पक्ष की ओर से ४२) [illegible] २ संस्थाओं के लिए दान मिला।

श्री मंत्री आर्यसमाज कादियां (गुरदासपुर) [illegible] देते हैं कि उक्त समाज का वार्षिकोत्सव [illegible],२४ तथा २५ मार्च [illegible] को होना निश्चय [illegible] है। इस में बड़े [illegible] संन्यासी महात्मा तथा [illegible] उपदेशक पधारेंगे।

श्री मंत्री जी आर्य कुमार सभा केथल सूचना [illegible] हैं कि उक्त सभा का चतुर्थ वार्षिकोत्सव १४ व १५ अप्रैल १७ को होना निश्चित् हुआ [illegible] में बड़े २ विद्वान और महात्माओं [illegible] पधारने की संभावना है। यदि किसी महा[illegible] को श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का [illegible] हो तो शीघ्र सूचना दें। यदि श्री स्वामी जी [illegible]राज की दृष्टि इस सूचना पर पड़े तो वह [illegible] प्रतिज्ञानुसार अवश्य पधारें और सूचना [illegible] दें।

[illegible] मंत्री जी आर्यसमाज जालन्धर छावनी सूचना देते [illegible] इस समाज के अधिकारियों का आगामी [illegible] के लिए इस प्रकार निर्वाचन हुआ है:—प्र[illegible]—ला० नारायणदास जी; उपप्रधान—ला० [illegible]न्द्र जी, मंत्री—ला० मूलराज जी; उपमंत्री [illegible]नुवामल जी; कोषाध्यक्ष—ला० हंसराज [illegible] पुस्तकाध्यक्ष—पं० भक्तराम जी; अन्तरंग [illegible]द—बा० चोथूराम जी तथा रामचन्द्र जी।

[illegible]र्यसमाज दानापुर का निर्वाचन इस प्रकार [illegible] है:—प्रधान राय साहिब जनकधारीलाल [illegible]प्रधान—म० रामविलाससिंह जी मुन्सिफ [illegible]—म० देवदत्त जी वकील; उपमन्त्री—म० [illegible]प लाल जी, कोषाध्यक्ष—म० देवनाथ [illegible] जी; पुस्तकाध्यक्ष—म० सहदेवलाल।

[illegible]समाज सहारनपुर का निर्वाचन निम्न प्र[illegible]आ है:—प्रधान—म० मेलाराम जी वकील [illegible]न—सेठ देवीचन्द्र जी; मंत्री—म० [illegible]; उप मंत्री पं० खेमचन्द्र जी, [illegible] [illegible]० हरनामसिंह जी, पुस्तकाध्यक्ष—ला० [illegible]ल जी।

रामलोभितसिंह दानापुर से सूचना देते हैं [illegible]न् बाबू श्यामलाल शाह चौधरी जी की आत्मजा का शुभ विवाह श्रीमान् बाबू [illegible] लक्ष्मीनारायण जी के कनिष्ठ भ्राता के साथ सानन्द हो गया। यह विवाह विहारी आर्यों के लिए आदर्श स्वरूप है। कन्या की अवस्था १६ वर्ष की और वर की अवस्था २५ वर्ष की थी। कन्या पढ़ी लिखी सुशीला है और वर भी पढ़े लिखे सुसभ्य तथा योग्य हैं। इस विवाह में नाच आदि कुछ नहीं था। कन्या पक्ष से स्थानीय श्रीमद्दयानन्द अनाथालय के अनाथ बालकों को तीन दिन तक प्यार के साथ भोजन कराया गया और २५) नकद मिले। वर पक्ष की ओर से भी अनाथों के एक शाम के लायक पूरी और ३०) नकद तथा सर्वदा के लिए १०) मासिक सहायता देने के लिए प्रतिज्ञा हुई। इस महती उदारता के लिए उभय पक्ष के सज्जन हार्दिक धन्यवाद के पात्र हैं और कन्या वर को दीर्घायु करने के लिए परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है और साथ २ विहारी आर्यों से जो विवाहोत्सव में अनाथों का मुख देखना अनर्थ का कारण समझते हैं निवेदन है कि बाबू साहब के विचार का अनुकरण करें।

उपनयन संस्कार—पाठकों को यह बात जानकर हर्ष होगा कि बालिकाओं के उपनयन संस्कार की प्रथा की ओर भी आर्य्य सज्जनों की प्रवृत्ति होने लगी है। यह बात समझी जाने लगी है कि पुरुषों को अपना यज्ञोपवीत पहनना चाहिये और स्त्रियों को अपना। स्त्रियों का यज्ञोपवीत छीनकर पुरुष ६ तारों का स्वयं पहनले यह अनुचित है। ईरान में अब तक स्त्री और पुरुष अपना २ यज्ञोपवीत पहनते हैं। शाहजहांपुर के डाक्टर रामचन्द्र एल० एम० एस० एसिस्टैन्ट सिविल सर्जन ने अपने घर में अपनी स्त्री तथा अन्य ४ बालिकाओं को अहरोला—गुरुकुल के आचार्य द्वारा यज्ञोपवीत धारण करवाया। डाक्टर साहब कहते हैं कि २० वर्ष पहले से मेरा यह विचार था कि पुरुष और स्त्री को अपना २ यज्ञोपवीत अलग २ पहिनना चाहिये और ८।३।१७ को वह मेरी पुरानी इच्छा पूर्ण हुई।

इस के लिये उन्हों ने हर्ष प्रकट किया और अहरोला—गुरुकुल को १०) दान में दिये।

ब्र० देवराज स्नातक

सूचना

सं० १९७४ की प्रथमा तथा मध्यमा परीक्षा निम्नलिखित केन्द्रों में होगी। परीक्षार्थियों को चाहिए कि शुल्क तथा आवेदन पत्र भेजने की अंतिम तिथि ३ अप्रैल सन् १९१७ ई० के पहले ही से शुल्क आवेदन पत्र परीक्षा मन्त्री हिन्दी-साहित्य सम्मेलन प्रयाग के पास भेजदें। स्त्रियों को शुल्क न देना होगा।

अजमेर, अल्मोड़ा, अलवर, अलीगढ़, आगरा, आरा, इन्दौर, एटा, कलकत्ता, कानपुर, काशी, कोटा, खण्डवा, गोरखपुर, जबलपुर, जयपुर, झांसी, दिल्ली, नरसिंहपुर, प्रयाग, फिरोजाबाद, फैजाबाद, ब्यावर, बड़ौदा, बांकीपुर, बिलासपुर, बीकानेर, बुलन्दशहर, भरतपुर, मुजफ्फरपुर, मेरठ, राजनांदगांव, रायबरेली, लखनऊ, लश्कर, शाहजहांपुर, हरदोई और हरिद्वार।

विज्ञापन

एक अरोड़वंश कन्या के लिये वर की आवश्यकता है। लड़का आर्य्य विचार रखता हो; आयु २५ वर्ष तक हो। अच्छी आमदनी रखता हो या कालिज में शिक्षा पाता हो। निम्न पते से पत्र व्यवहार कीजिए:—

प्रियतमदास
प्रधान आर्य्यसमाज वज़ीराबाद

—o—

प्रो बालकृष्ण एम० ए० रचित

महोपयोगी पुस्तकें !!

१. अर्थशास्त्र = धनविद्या ५६० पृष्ठ १॥)
२. प्राचीन भारत की राज्य प्रणाली ॥)
३. आर्यों की वैज्ञानिक उन्नति =)
४. ईश्वरीय ज्ञान वेद ५०० पृष्ठ १॥)

आर्य पुस्तक भण्डार गुरुकुल कांगड़ी।

—o—

उषा

अब ना चूकिये

उषा संस्कृत मासिक पत्रिका प्रतिमास प्रकाशित होती है। नयी २ गीतिएं नये रोचक लेख नयी टिप्पणियां, आप संस्कृत में भी पढ़ सकते हैं। प्राचीन गौरव और देववाणी का उद्धार करने से इस अवसर पर प्रत्येक आर्य्यजाति का नाम धारण करने वाले को न चूकना चाहिए। शीघ्र ग्राहक बनिए। वार्षिक मूल्य १॥)

पता—उषा कार्य्यालय गुरुकुल कांगड़ी
पो० गुरुकुल-कांगड़ी जि० बिजनौर

प्रचारक का वार्षिकमूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
छः मास का १॥।) तथा तीन मास का १)
(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थियों के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन विना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे विना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आधे तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्ता से कीजिए।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

Registered. NO. A. 434

सद्धर्म्म प्रचारक

गुरुकुलाङ्क

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजु ॥

प्रवर्त्तक--मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक---इन्

प्रति शनिवार को प्रकाशित होता है

१२ चैत्र सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० २४ मार्च सन् १९१७ ई०

संख्या भाग

गुरुकुलाङ्क

के

लेखक महाशयों के नामः-

१-श्री महात्मा मुंशीराम जी,
२-श्री पं० बुद्धदेवजी विद्यालंकार (मंगला-चरण)
३-श्री महात्मा गान्धी जी,
४-श्री बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०
५-श्री पं० जयदेव जी विद्यालंकार
६-श्री प्रो० बालकृष्ण जी एम० ए०
७-श्री कुंवर हुक्मसिंह जी प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त
८-श्रीयुत पं० हरिश्चन्द्र जी विद्यालंकार अमरिका (कविता)
९-श्री पं० श्रीधरजी पाठक प्रयाग (कविता)
१०-श्री पं० गंगाप्रसाद जी एम० ए०, एम० आर० ए० एस०
११-श्री पं० श्रीपाद दामोदर सात्वलेकर जी,
१२-श्री पं० घासीराम जी एम० ए०

आवश्यक निवेदन

प्रचारक का वर्ष चैत्र में समाप्त होता है। इस के साथ ग्राहकों की अधिक संख्या का वर्ष भी समाप्त होता है। इस लिए जो ग्राहक महाशय उत्सव पर पधारें उनसे प्रार्थना है कि अपना २ प्रचारक का मूल्य प्रचारक कार्यालय में जमा करावें। और जो न आसकें उनसे निवेदन है कि अपना २ मूल्य मनीआर्डर द्वारा भेजदें। जिन का मूल्य प्राप्त नहीं होगा उन के नाम आगामी अंक ३-) का वी० पी० करके भेजा जायगा।

प्रबन्धकर्ता

प्रचारक पुस्तक-भण्डार

आर्य-धर्म ग्रन्थ-माला

(म० मुंशीराम जिज्ञासु द्वारा रचित)

प्रथम गुच्छक-आर्यों की नित्य-कर्म पद्धति मूल्य -)

इस पुस्तक में आर्यों के नित्य कर्मों की सुन्दर व्याख्या है। आर्यमात्र के पढ़ने योग्य है। प्रातः काल से उठ कर किस प्रकार दिन व्यतीत करना चाहिये, यह सब बड़ी उत्तमता से दर्शाया गया है। महात्मा जी के इतने समय के अनुभवों का सार है।

द्वितीय गुच्छक-पाच महायज्ञों की विधि मूल्य -)

सन्ध्या करने की विधि अर्थ सहित बतलाकर शेष चार नैत्यिक महायज्ञों का भी सरल रीति से वर्णन किया है।

तृतीय गुच्छक-विस्तारपूर्वक संध्या-विधि मूल्य =)

स्वर्गवासी लाला ज्वालासहाय मुनिवर पं० गुरुदत्त के सत्संगी थे। उन्होंने उर्दू में अपने विचार लिखे थे। आर्यभाषा में अनुवाद कर के उन के धर्म-भाई ने उन्हें आर्यजनता तक पहुंचाया है। श्रद्धा से ईश्वरोपासना में बैठने वालों के लिये बहुत उपयोगी है।

चतुर्थ गुच्छक-आचारानाचार और छूत-छात मूल्य =)

इस निबन्ध में महात्मा जी ने इस विषय का निर्णय किया है। कि छुआ छूत और भक्ष्या-भक्ष्य का क्या रहस्य है। किस के घर खाना चाहिये---इस प्रकार के प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में भली भांति आगया है।

पंचम गुच्छक-ईसाई पक्षपात और आर्यसमाज-मूल्य =)

ईसाइयों के विरोध के मूल कारणों की पड़ताल करते हुए सिद्ध किया है कि जितना कष्ट आर्य-समाज को राज-कर्मचारियों की ओर से मिला है, उसके आदि कारण ईसाई मिशनरी थे।

षष्ठ गुच्छक-वेद और आर्यसमाज---मूल्य =)

वेदों की आर्य-समाज में स्थिति बतलाते हुए आचार्य ऋषि दयानन्द ने उनके ग्रन्थों के स्थान का भी निरूपण किया है।

सप्तम गुच्छक---मातृभाषा का उद्धार मूल्य

भागलपुर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन में महात्मा जी सभापति हुए थे। उस समय आपने जो वक्तृता दी थी वह अभी शुद्ध रूप में नहीं छपी थी। उस वक्तृता में बताया गया था कि आर्यजाति की मातृभाषा "हिन्दी" के लिये क्या कर्त्तव्य है? आर्य मात्र को इस निबन्ध से आर्य-भाषा के गुणों का ज्ञान हो सकता है।

अष्टम गुच्छक-पारसीमत और वैदिक-धर्म मूल्य =)

नवम गुच्छक-मानव-धर्म्म शास्त्र तथा शासन पद्धति मूल्य =)॥

आर्य्य सिद्धान्त के विद्यार्थियों को धर्म्म-शास्त्र (Jurisprudence) का तत्व बतलाते हुए यह पुस्तक तय्यार हो गई। इस की तय्यारी में जहां रोमन जस्टी-नियन और आंग्ल स्मृति-शास्त्रज्ञों की पुस्तकों से सहायता ली गई है; वहां डाक्टर किशोरीलाल सरकार की अपूर्व मीमांसा शास्त्र पर टिप्पणी रूपी पुस्तक के सहारे से पूर्व मीमांसा से धर्म्म शास्त्र का लक्षण समझाने का प्रयत्न किया गया है। (डाक व्यय जुदा लगता है)

कमीशन की दर-२५) और उस से अधिक के ख़रीदार को १५) प्रतिशतक, ५०) और उस से अधिक के ख़रीदार को २०) प्रतिशतक और १००) तथा उस से अधिक के ख़रीदार को २५) प्रतिशतक कमीशन दिया जायगा।

मिलने का पताः---प्रबन्धकर्त्ता, प्रचारक पुस्तक-भण्डार, गुरुकुल-कांगड़ी, ज़िला बिजनौर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुल की [illegible] वृद्धी होगी

पूरे १७ [illegible] मास सात महीने हुए जब गुरुकुल की [आर्य प्र० सभा निर्मित] शिक्षा पद्धती को [illegible] में लेकर मैं आर्य जनता से सहायता मांगने के लिए बाहर निकला था। छः महीनों में ही इच्छित धन तो, उस समय दुर्भिक्ष होते हुए भी, जमा होगया; परन्तु ईर्ष्या की अग्नि में भस्म होने से बच कर उस पद्धती के प्रयोग में आने के लिए दो वर्षों से अधिक समय लग गया। तत्पश्चात् गुरुकुल स्थापन तो एकान्त देश में ही हुआ, परन्तु ईर्ष्या की अग्नि से, उसका कोमल शरीर, आरम्भ में ही कुछ दग्ध होचुका था। उस की केवल रक्षा ही नहीं करनी थी प्रत्युत आरम्भ में ही गला घुटने से भी उसे बचाने की आवश्यकता थी। यह युद्ध वर्षों तक जारी रहा, और शायद आगे भी [किसी और रूप में] जारी रखना पड़े परन्तु बहुत से धर्मात्मा, त्यागी सज्जनों के परिश्रम और आर्य जनता के प्रेम और उदार-भाव से सुरक्षित, गुरुकुल रूपी पौदा इस समय एक प्रौढ़ वृक्ष बनचुका है जिस की छत्र-छाया में सैकड़ों गुरु शिष्य, व्यसनों के आक्रमण से मुक्त, विश्राम पारहे हैं और जिस के पत्तों, फूलों और फलों की शोभा विरोधियों के मनों को भी वशीभूत कालेती है। उपरोक्त आश्चर्यजनक परिणाम परमात्मा की कृपासे हुआ है, मनुष्यों की शक्ति से नहीं।

मैं गुरुकुल को बड़े सन्तोष के साथ छोड़ रहा हूं। मुझे इस संस्था के भविष्य में तनिक भी सन्देह नहीं। मैं जानता हूं कि गुरुकुल की रक्षा और उन्नति में मेरा और मेरे सहकारी सेवकों का भाग नहीं के बराबर है; यह संस्था अपनी मौलिक शक्ति के कारण, परमेश्वर की कृपा से, उन्नति कर रही है। मेरी निर्बलताओं के कारण तो, शायद, इस संस्था को यत्किञ्चित हानि ही पहुंची होगी; निःस्वार्थ प्रेम से काम करने वाले मेरे उत्तराधिकारी इसे अधिक लोक प्रिय बना सकेंगे। इस लिए, विदा होते हुये, मुझे पुनः सन्तोष ही है।

फिर भी जो आदर्श इस संस्था के सामने था वह अब तक सर्वांशपूर्ण नहीं हुआ। उसकी पूर्ति में जो कार्य सहायक हो सकेंगे उनकी गणना मात्र कर देता हूं जिससे इस कुल का बोझ जिस आर्यजनता पर है वह अपने कर्तव्य को समझ सके। उन कार्यों में से पहला एक नियन्त्रण परिषद् का स्थापन करना है जिस का मुख्य स्थान गुरुकुल विश्व विद्यालय का भवन ही हो। इससे गुरुकुल के कोष की पूर्ति सुगमता से हो सकेगी और स्नातकों तथा ब्रह्मचारियों के संरक्षकों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रान्त में बड़ी सहायता मिलेगी। द्वितीय वैदिक धर्म की रक्षा के लिए जहां आर्य सिद्धान्त के कम से कम, २५ विद्यार्थियों के लिए एक समय छात्रवृत्तियों के मिलने का प्रबन्ध हो (इस समय केवल ४ छात्रवृत्तियें ही नियत हैं) वहाँ साथ ही जो वेद भाष्य का काम श्री सेठ जयनारायण जी के दान से चलने लगा है वह बन्द न हो प्रत्युत अधिक वेग से चले। तीसरे गुरुकुल के स्नातकों के अन्दर इस भाव को अधिक स्थिर किया जाय कि अपने कुल की उन्नति और रक्षा का भार मुख्यतया उन पर है। इस में ब्रह्मचारियों के माता पिता भी विशेष सहायता दे सकते हैं। चौथे ब्रह्मचारियों की आजीविका के विचार से ही नहीं प्रत्युत अपनी मातृभूमि की आर्थिक सहायता के योग्य उन्हें बनाने के लिए भी, जो कृषि विभाग खोला जा चुका है उस को बन्द न होने देना, तथा जिस आयुर्वेद और व्यापार सम्बन्धी शिक्षा पद्धती के निर्माणार्थ, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, एक कमीशन की स्थापना कर चुकी है उस को शीघ्र प्रचलित करना तो गुरुकुल के आरम्भिक नियमों के अनुसार ही आवश्यक है परन्तु इस के अतिरिक्त भौतिक विज्ञान की शिक्षा का प्रबन्ध करना तथा व्यवसाय के लिए एक बड़ा कारख़ाना खोलना भी आवश्यक है जिस से प्रत्येक ब्रह्मचारी एक न एक स्वतन्त्र आजीविका के योग्य बन सके। यन्त्रालय, खेती और अन्य गुरुकुल के बहुत से काम ऐसे हैं जिन के चलाने के लिए व्यवसाय का ज्ञान सुगमता से हो सकता है। और गुरुकुल के जंगल की पैदावार से भी बहुत काम लिया जा सकता है। पांचवें गुरुकुल की आर्थिक स्थिरता के लिए आवश्यक है कि एक और ग्राम ख़रीद कर उस की तथा कांगड़ी ग्राम की भूमि की उपजाउ शक्ति बढ़ाई जावे, और यत्न यह किया जावे कि कुलनिवासियों के भोजन छादन का सब सामान घर में ही पैदा हो सके। इस के लिए गोशाला में बहुत सी उन्नति करने की आवश्यकता होगी और उस की ओर अधिक ध्यान देना पड़ेगा। यदि गोशाला पर अधिक समय लगाया जावे तो दूध इतना हो सकता है कि सारे गुरुकुल का काम चल सके और फिर दूधों में जो दूध आवे उस का ताज़ा रक्खन घी का स्थान पूरा कर सकेगा और [illegible] गढ़े हुए घृत ब्रह्मचारियों के स्वास्थ्य में बाधा न डाल सकेंगे। छोटे गुरुकुल को दान लेने में बड़ी सावधानी करनी होगी। प्रलोभन में फंस कर ऐसा दान भूल से भी नहीं ग्रहण करना चाहिए जिस से गुरुकुल की विशेषता ही उड़जाय। वैदिक तथा आधुनिक संस्कृत साहित्य की प्रधानता को हटा कर जिस दान की बदौलत मातृभाषा को भी तिलाञ्जली देनी पड़े, ऐसे दान को विष के तुल्य त्यागने का साहस मुख्यकार्यकर्त्ता तथा प्रबन्धकर्त्री सभा में निरन्तर रहना चाहिए। सातवें और अन्तिम आवश्यकता यह है कि गुरु और शिष्य- अध्यापक तथा विद्यार्थी- दोनों को ही ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करने का अभ्यास हो। गृहस्थ अध्यापक भी मनु भगवान् के आदेशानुसार ब्रह्मचर्य का जीवन व्यतीत करते हुए ही सन्तान उत्पन्न करें और विद्यार्थियों के ब्रह्मचर्य की रक्षा में सहायता दें। शिक्षा और उन्नति का मूल मन्त्र ब्रह्मचर्य ही है।

उपरोक्त कार्यों की सिद्धि में कई कारणों से मुझे इतनी कृतकार्यता नहीं हुई जो नए मुख्याधिष्ठाता और आचार्यों को हो सकेगी। परमेश्वर उन को बल देंगे, और उनके अन्दर सच्चे सेवा भाव का प्रादुर्भाव होगा—यह मुझे निश्चय है केवल एक ही निवेदन करना है। यह कार्य जितना ऊंचा है उतना ही ऊंचा भाव लेकर मेरे उत्तराधिकारियों को आना चाहिये। यह प्रतीक्षा करना कि आर्यजनता उन्हें एक सार से, उनकी शर्तें मानकर, बुलावेगी धर्म मार्ग को उलटा चलाने का यत्न है! शुद्ध भाव से अपनी सेवा स्वयं दे देनी चाहिए; जिनकी सेवा स्वीकार की जायगी उनके शुद्ध भाव जहां कार्य में उन्हें बलदेंगे वहां पंचायत की शक्ति भी उन की दैवी सहायता से कम सहायक न होगी। (जिज्ञासु)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मंगलाचरण

नटनागर रचना दिखलादे

बहुत हुई अब जाग गया हूं,
तू आंधी कितनी ही चलादे।
धूल उड़ादे, बन्ध लुड़ादे,
इस लोरी सुर-नींद सुलादे।
उठीं तरङ्गें शैल-विशाला,
इनको चाहे और उठादे।
गोद पड़ा हूं आकर तेरी,
अब तो इस में मुझे झुलादे।
समझ गया हूं अब न टलूंगा,
घटाटोप घनघोर हटादे।
श्यामघटा में भेद छिपा जो,
उसकी उजली झलक दिखादे।
दासदास के हितके कारण,
भय-रचना कितनी ही बनादे।
भींच ओंठ प्रभु बहुत डराया,
बस बस बस अबतो मुसकादे॥

सराज

शिक्षण-पद्धति

[ले० महात्मा गान्धी जी]

हम लोगों में रिवाज हो गया है कि जो कुछ हम करते हैं उसका मुकाबला पश्चिमी सभ्यता के साथ करते हैं। हम कहते हैं कि पूर्व सभ्यता पश्चिमी से बड़ी है परन्तु हमारा आचरण इस से उलटा है। इसी लिये भारतीय विद्यार्थियों की शिक्षण-पद्धति बर्णसंकर हो गई है।

हमारे विद्यालयों में से हम अपने प्राचीन ऋषि मुनियों के वारिस उत्पन्न नहीं कर सकते यह बड़ी दुःखप्रद बात है। इसी बात का मैं बहुत समय से विचार कर रहा हूं। परिणाम में जो विचार मेरे हृदय में आये हैं उनको मैं वाचकवृन्द के सन्मुख रखता हूं।

देश का आधार जिस धंदे पर हो उस धंदे का सामान्य ज्ञान सब विद्यार्थियों को देना चाहिये। इस सिद्धान्त पर कोई ना नहीं करेगा—इस सिद्धान्त के अनुसार हमारे सब विद्यार्थियों को खेती का और बुनने का काम सिखाना चाहिये क्योंकि भारतवर्ष के प्रायः ९५ सैंकड़ा मनुष्य खेती के काम में रुके हुये हैं और ९० फीसदी बुनने के काम में रुके रहते थे।

जब तक शिक्षित वर्ग इन दो बातों पर ध्यान नहीं देगा तब तक हमारे करोड़ों कृषिकार और लाखों जुलाहों के दुःख का कुछ ख़याल हमें नहीं आसकता और न इन दोनों में ही कुछ सुधार हो सकता है।

यदि हमारा शरीर तन्दुरुस्त न होगा तो हम कुछ काम नहीं कर सकते, इस लिए लड़कों को बचपन से आरोग्यशास्त्र की शिक्षा देना आवश्यक है।

धर्म के ऊपर सब कुछ निर्भर है और संस्कृत जाने बिना धर्मशास्त्रों का ठीक ज्ञान मिलना अशक्य है, इस लिए संस्कृत का जानना भी प्रत्येक हिन्दू लड़के का कर्तव्य है। किन्तु गुरुकुल का प्रबन्ध मेरे विचार से बड़ा कठिन है—सामान्य शिक्षण को सामान्य ज्ञान देकर समाप्त करना चाहिए—जिस विद्यार्थी में असाधारण शक्ति हो उसके लिए चाहे विशेष प्रबन्ध हो।

इतिहास व भूगोल के शिक्षण में सरकारी पद्धति को बदलना चाहिये। इतिहास और भूगोल में प्रायः हिन्दुस्तान ही का ज्ञान होना चाहिये। मेरा अनुभव ऐसा है कि बहुत लड़कों को लिंडल सैक्स मालूम रहता है लेकिन काठियावाड़ वा सोरठ प्रान्त का ख़याल नहीं रहता। इतिहास में अंग्रेजी राज्य का पूरा ज्ञान रहता है और हमारे शिवाजी को एक लुटेरा समझते हैं।

गणित शास्त्र में भी लड़कों को बड़े २ हिसाब मालूम रहते हैं पर व्यापार के हिसाब से वे अज्ञात रहते हैं। देशी तोल का उन को कम ख़याल होता है।

हमारा शिक्षण प्रत्येक प्रान्त में उसी की मातृभाषा में होना चाहिए और तदुपरान्त भारतवर्ष की दो तीन और भाषाओं का ज्ञान होना चाहिए।

अंग्रेज़ी का ज्ञान केवल थोड़े से लड़कों को विदेशी भाषा के तौर से दिया जाय मुझे विश्वास है कि जब तक हमारे मन में से अंग्रेज़ी पढ़ने का मोह नहीं दूर होगा तब तक हमारे में सच्चा स्वराज नहीं आसकता। कुछ मित्र मुझे कहते हैं कि साधारण कामों में जैसे कि रेलगाड़ी की मुसाफिरी में व तार पढ़ने में अंग्रेजी जाने बिना हम [illegible] रहते हैं—पर ऐसी स्थिति के [illegible] हैं। हमारी नम्रता के [illegible] अपना धर्म भूल जायंगे तो [illegible] दशा और भी निकृष्ट हो जायगी।

परिणाम यह आएगा कि हमारे करोड़ों भाई जो कदापि अंग्रेज़ी सीखने वाले नहीं हैं गुलाम बन जायंगे अंग्रेज़ी पढ़े हुए और उन के बीच में एक महासागर उपस्थित हो जायगा।

हमारे घरों में प्रचलित शिक्षण का कुछ असर नहीं होता-गो कि नियम यह है कि विद्यार्थी जीवन का प्रभाव सारे देश पर पड़ना चाहिए। थोड़े से इत्र की सुगन्धि जैसे सब जगह फैल जाती है वैसे विद्यार्थीजीवन का होना चाहिए। मेरे ख़याल से स्वराज की कुंजी हमारी सरकार के हाथ में नहीं है जितना कि हमारी शिक्षण प्रणाली पर है।

शिक्षा का साध्यम।

(ले० श्रीयुत श्यामसुन्दरदास बी. ए.)

इस समय जो सब से महत्व का प्रश्न देश के सन्मुख उपस्थित है और जिस पर लोगों का ध्यान आकर्षित हो रहा है वह देश में शिक्षा का प्रचार है। सब लोग इस बात को एक स्वर से स्वीकार करतेहैं कि देश में अधिकाधिक विद्याप्रचार में ही हमारा कल्याण और हमारी आपदाओं तथा कठिनाइयों की निवृत्ति है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए निरंतर उद्योग भी हो रहा है, परंतु जैसी चाहिए वैसी सफलता नहीं प्राप्त हो रही है। राजा और प्रजा दोनों में इस बात में मत भेद है कि शिक्षा कैसी और कितनी होनी चाहिए। दोनों इस बात को भली भांति जानते हैं कि इस "कैसी" और "कितनी" शिक्षा पर ही उस का भविष्य निर्भर है। दोनों शिक्षा की अमोघ शक्ति से भलीभांती परिचित है और दोनों ही उसे अपने अनुकूल बनाने में बद्धपरिकर हैं। दुःख का विषय तो यह है कि राजा और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रजा में उद्देश्यों की विभिन्नता है और इस विभिन्नता से ही शिक्षा के प्रचार में बाधा उपस्थित हो रही है। राजा शिक्षा को अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उपयोग बनाना चाहता है और प्रजा इस बात को चाहती है कि शिक्षा का अधिक प्रचार हो और वह ऐसी हो जिस से देशाभिमान और आत्म गौरव की पुष्ट भविष्यत् के नागरिकों पर चढ़ जाय और वे देश को उन्नत तथा शक्तिशाली बनाने में समर्थ हों। इस बात के कहने की आवश्यकता नहीं है कि समय प्रथा व्यवस्था के अनुकूल है और दूसरी व्यवस्था के अनुसार कार्य होने में अभी देर है। जब राजा और प्रजा के उद्देश्यों की विभिन्नता न रह जायगी और दोनों एक साथ एक भाव से उन की सफलता के लिए बद्धपरिकर होजायंगे तभी देश की वास्तविक उन्नति और उस का सच्चा कल्याण हो सकेगा। अब हमें विचार इस बात का करना है कि हमें कैसी और कितनी शिक्षा की आवश्यकता है।

"कैसी" शिक्षा का प्रश्न थोड़े से ही शब्दों में हल हो सकता है, अतएव पहले उसी पर विचार कर लेना चाहिए। विद्या के गुण और प्रभाव को कौन नहीं जानता और मानता? अतएव यह आवश्यक है कि जितना अधिक उसका प्रचार हो उतना ही अच्छा है। किसी देश का यह परम सौभाग्य समझना चाहिए कि उस के प्रत्येक बालक बालिका शिक्षित है। अभी तक ऐसा सौभाग्य भूमण्डल के किसी देश को नहीं प्राप्त हुआ है, परन्तु सब बड़े बड़े शक्तिशाली राज्यों में इस बात का निरन्तर उद्योग होता रहता है कि शिक्षा का प्रचार अधिकाधिक होता जाय। इस भूमन्डल में भारत इस बात में सबसे पिछड़ा हुआ है। अतएव यहां इस बात की आवश्यकता है कि शिक्षा अनिवार्य करदी जाय। साथ ही इस बात की भी आवश्यकता है कि वह अमूल्य हो। यहां की साधारण प्रजा इतनी गरीब है कि वह अपने संतान को शिक्षा का व्यय उठाने में असमर्थ है।

दूसरा प्रश्न जो हमारे सम्मुख उपस्थित है वह यह है कि "कैसी" शिक्षा होनी चाहिए। सब से आवश्यक सुधार यह है कि हमारी शिक्षा का माध्यम विदेशीय भाषाएं न हों। शिक्षा भलीभांति मातृभाषा द्वारा हो सकती है। यह प्रकृति के विरुद्ध है कि अपनी मातृभाषा को छोड़ कर दूसरी विदेशीय भाषाओं को इस कार्य के लिए आवश्यक समझा जाय। यह तो ऐसा ही है जैसे कोई अपने घर की धन संपत्ति को भुला कर दूसरों से ऋण लेकर अपना काम चलावे। संसार में कोई भी ऐसा शक्तिशाली देश नहीं है जहां मातृभाषा का अनादर करके विदेशीय भाषाएं शिक्षा का माध्यम बनाई गई हों। इस के विपरीत यूरोप में मातृभाषा के प्रभाव को भलीभांति समझा जाता है। दक्षिणी अफ्रिका में जब बूअर युद्ध समाप्त होकर मेल का समय आया तो वहां के उच्च निवासियों ने संधि में यह शर्त करली कि उन की मातृभाषा के प्रचार करने तथा उसे शिक्षा माध्यम बनने में कोई बाधा न उपस्थित की जायगी। अलसेस लोरेन नामका प्रांत पहले फ्रांस राज्य के अन्तर्गत था। गत शताब्दी में जब फ्रांस और जर्मनी में युद्ध हुआ तो वह जर्मनी के आधीन होगया। यूरोप के आधुनिक महायुद्ध में फ्रांस इस बात के उद्योग में लगा हुआ है कि वह प्रान्त उसके राज्य में मिल जाय। इस के विपरीत जर्मनी उसे अपने ही पास रखना चाहता है। ये सब राजनैतिक घटनाएं हैं जिन से हमारे उपस्थित विषय से कोई प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं है, परन्तु इन राजनैतिक घटनाओं के अन्तर्गत एक और घटना होगई है जो बड़े महत्व की है। आलसस लोरेन के निवासियों की मातृभाषा फ्रासीसी है। अब यह प्रदेश फ्रांस के आधीन था यहां के जन साधारण के व्यवहार की भाषा फ्रासीसी ही थी और उसी के द्वारा शिक्षण का काम भी होता था। जब जर्मनी ने यह प्रदेश छीन लिया तो यह क्रम उलट गया। फ्रासीसी के स्थान पर जर्मन भाषा का प्रयोग आरम्भ हो गया। आधुनिक महायुद्ध में इस प्रदेश का जितना खंड फ्रांस जीत चुका है उस में पुनः फ्रासीसी भाषा का साम्राज्य स्थापित होगया है और जितना अभी तक जर्मनी के आधीन है वहां जर्मन भाषा का राज्य है। इस घटना के उल्लेख करने का यही तात्पर्य है कि हम लोग देखें कि यूरोपवासियों में मातृभाषा का कितना गौरव है और उस के प्रचार के लिए वहां के लोग कितना उद्योग करते हैं। यह एक साधारण राजनैतिक रहस्य है कि किसी विजित देश को सदा सर्वदा के लिए अपने अधीन बनाए रखने का सबसे प्रथम उपाय यह है कि वहां की भाषा और तब वहां के इतिहास का सब प्रकार से नाश कर दिया गया। जिस जाति की अपनी भाषा और अपना इतिहास नहीं रह जाता, वह अपने आपको समय पाकर भूल जाती है और उस के किसी दूसरी जाति में विलीन हो जाने के लिए केवल समय की अपेक्षा रह जाती है। इस सिद्धान्त के दृष्टान्त देने की आवश्यकता नहीं है। जिन्होंने इतिहासों का ध्यान पूर्वक अध्ययन किया है और अपनी आंखों के सामने होती हुई घटनाओं पर विचार किया है उनसे इस नीति के गूढ़ रहस्य छिपे नहीं हैं। अस्तु, मेरे कहने का तात्पर्य इतना ही है कि विदेशी भाषा द्वारा शिक्षा का दिया जाना एक अप्राकृतिक बात है और उस से बहुत सी हानियां होती हैं।

किसी भाषा के ज्ञान और विद्या के उपार्जन से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं है। विद्या का उपार्जन, तथा ज्ञान की वृद्धि और वस्तु है और किसी भाषा का ज्ञान और ही है। विद्या का उपार्जन भाषा के ज्ञान बिना भी हो सकता है। भाषा, ज्ञान का एक साधान मात्र है। मुख्य बात विद्या का उपार्जन है। फिर, विद्या के उपार्जन से तात्पर्य संसार के संचित ज्ञान को प्राप्त करना और मस्तिष्क की शक्तियों की इस प्रकार उन्नति करना है कि जिस में वे सत् असत् का निर्णय करने में समर्थ हों और संसार के ज्ञान की वृद्धि कर सकें। इन सिद्धान्तों को सम्मुख रख कर जब हम भारतवर्ष की साधारण शिक्षा प्रणाली पर विचार करते हैं तो हमें यह स्पष्ट देख पड़ता है कि उस का उद्देश्य ज्ञान की वृद्धि नहीं है, वरन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भाषा का ज्ञान उपार्जन कराना है और सो भी विशेष कर इस लिये कि जिस में सरकारी काम करने के लिए उपयुक्त आदमी मिल सकें। कम से कम यदि हम यह बात स्पष्ट प्रमाणित नहीं कर सकते तो इसमें तो कोई सन्देह नहीं है कि इस प्रणाली का फल अब तक यही हुआ है। यदि इस प्रणाली से शिक्षा पाकर भी भारत वर्ष में आधुनिक समय में बड़े बड़े विद्वान् हुए हैं तो यह इस नियम का अपवाद मात्र है न कि उसका निश्चित फल। इस अवस्था का मुख्य कारण विदेशीय भाषा द्वारा शिक्षा देना है। बालकों का सारा समय अंग्रेज़ी भाषा की जटिलता के हल करने में लग जाता है, उनका सारा ध्यान भाषा के अंगों प्रत्यंगों के समझने, मनन करने तथा उन्हें स्मरण रखने की ओर लगा रहता है, विषय की ओर अपेक्षाकृत उनका ध्यान कम जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि उनकी बुद्धि कुंठित हो जाती है और मस्तिष्क का वह विकास नहीं होने पाता जो वांछनीय है और जो शिक्षा का प्रधान गुण भी है। यह तो मस्तिष्क और बुद्धि की दशा हुई। इस अवस्था का परिणाम शरीर पर भी अनिष्टकारी पड़ता है। आंखें कमज़ोर हो जाती हैं। भांति भांति के रोग आघेरते हैं और हमारे नवयुवक अपूर्ण आयु में ही काल-कवलित हो जाते हैं। हमारी समझ में यह बात नहीं आती कि इस बात की क्या आवश्यकता है कि गणित, विज्ञान, दर्शन, इतिहास, भूगोल आदि की शिक्षा के लिये भी विदेशीय भाषाओं का ही आश्रय लिया जाय। क्या इन विषयों का ज्ञान देशी भाषाओं द्वारा नहीं कराया जा सकता? यह कुव्यवस्था इतनी प्रबल हो पड़ी है कि अब देशी भाषाओं की शिक्षा का माध्यम भी अंग्रेज़ी हो गई है। देशी भाषाओं की परीक्षाओं में उनकी पुस्तकों के अंश उद्धृत करके उनका अनुवाद अंग्रेज़ी में करने को कहा जाता है। प्रश्न यह है कि परीक्षा देशी भाषाओं के ज्ञान की होती है या अंग्रेज़ी के। यदि मातृभाषा द्वारा सब विषयों की शिक्षा दी जाय तो बालकों का बहुत सा समय बच जाय, वे शास्त्रों के ज्ञान में अधिक दत्तचित हो सकें, उन्हें शास्त्रों का वास्तविक ज्ञान हो सके और वे असामयिक मृत्यु के ग्रास बनने से बच जांय। अतएव यह उचित ही नहीं नितांत आवश्यक है कि शिक्षा का माध्यम मातृभाषाएं हों।

मेरे इस कहने का तात्पर्य यह नहीं है कि अंग्रेज़ी की पढ़ाई भारत वर्ष में हो ही नहीं। मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि हमारे राजनैतिक जीवन के लिये यह परम आवश्यक है कि हम अंग्रेज़ी का पठन पाठन बनाए रक्खें। यदि हमें जीवित रहना है, यदि संसार की अन्य जातियों के साथ समकक्षिता प्राप्त करने का हमारा विचार है तो यह आवश्यक है कि हम अंग्रेज़ी का अभ्यास करें और उसे उपेक्षा की दृष्टि से न देखें, पर इसका यह आशय नहीं है कि हम अपने आप को भूल जायं और अपना सर्वस्व खो कर अंग्रेज़ी के कोरे ज्ञान को प्राप्त करने में ही अपना जीवन सफल समझें।

देशी भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने में हमें तीन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। पहली कठिनाई तो यह है कि देशी भाषाओं में उच्च शिक्षा के उपयोगी पुस्तकें नहीं हैं। यह प्रश्न आवश्यक और उसकी पूर्ति का है। जब किसी वस्तु की आवश्यकता आ उपस्थित होती है तो उसकी पूर्ति का उपाय भी आप से आप हो जाता है। बिना आवश्यकता हुए पूर्ति का उपाय करना मानवी प्रकृति के अनुकूल नहीं है। साथ ही यह भी जान लेना चाहिए कि भाषा की भांति पुस्तकें भी विद्योपार्जन का साधन मात्र हैं। बड़े बड़े ग्रन्थ शिक्षकों के शिक्षा प्रदान के फल स्वरूप प्रस्तुत होते हैं। यदि देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा दी जाने लगे तो थोड़े ही काल में आवश्यक पुस्तकें उत्तम से उत्तम उपस्थित होजांयगी और इस प्रकार इन भाषाओं के भण्डार की पूर्ति भी यथेच्छ होने लग जायगी।

दूसरी कठिनाई यह है कि यदि देशी भाषाओं द्वारा शिक्षा दी जाने लगेगी तो उन अंग्रेज़ों की नौकरियों का ठिकाना भारतवर्ष में न रह जायगा जो इस समय शिक्षाविभाग के ऊंचे २ पदों पर सुशोभित हो रहे हैं। इसका उत्तर केवल यही है कि अपने सौ दो सौ भाइयों की भलाई के लिए किसी देश में शिक्षा-प्रचार में बाधा उपस्थित करना बड़े अन्याय की बात है।

तीसरी कठिनाई इस उद्देश्य की सफलता के मार्ग में यह है कि भारतवर्ष में अनेक देशभाषायें प्रचलित हैं जिनके कारण इस काम में अड़चन उपस्थित होती हैं। यह आपत्ति किसी अंश में ठीक है पर ध्यान रखना चाहिए कि भारतवर्ष की समानता किसी साधारण देश से नहीं की जासकती। इसका विस्तार बहुत बड़ा है और इसकी जनसंख्या भी अधिक है। भारतवर्ष का एक एक प्रान्त यूरोप के भिन्न भिन्न देशों से बड़ा है। इस अवस्था में यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यहां अनेक देशी भाषाओं का प्रचार है। आश्चर्य यदि किसी बात पर हो सकता है तो वह यह है कि इन सब देशी भाषाओं में एक विचित्र समानता है। तिस पर भी देश में एक भाषा और एक लिपि के सार्वभौमिक प्रचार का उद्योग होरहा है। जब तक इस उद्देश्य में सफलता न प्राप्त हो तब तक भिन्न भिन्न प्रान्तों की देशी भाषाओं से भलीभांति काम चल सकता है।

अतएव भारतवर्ष में विद्या के प्रचार के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा का माध्यम देशीभाषाएं हों और अंग्रेज़ी के साथ ही साथ हिन्दी भाषा तथा देवनागरी लिपि का ज्ञानभी अवश्य कराया जाय। इसका परिणाम यह होगा कि समय पाकर देश में एक भाषा और एक लिपि का प्रचार हो सकेगा और परस्पर भावों तथा विचारों के परिवर्तन में सुभीता होगा।

प्रारम्भ में यह प्रश्न उठाया गया था कि शिक्षा कैसी होनी चाहिए। मैं अब तक उसके एक ही अंश पर संक्षेप में अपने विचार प्रगट कर सका हूं। इसके और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अंशों पर विचार करने से यह लेख बहुत बढ़ जायगा। अतएव मैं यहां केवल इतना ही निवेदन करना चाहता हूं कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए।

(१) जिस में पढ़ने वालों के मस्तिष्क का पूरा विकास होसके, उन्हें आप अपने भले बुरे पर विचार करने की शक्ति आजाय और वे संसार के ज्ञान की वृद्धि कर सकें।

(२) जिससे उन में चरित्र-बल उत्पन्न होसके।

(३) जिससे उनमें उचित धार्मिक भावों का आदर हो।

(४) जिससे उन में देशाभिमान के भाव उत्पन्न हों।

(५) जिससे वे अपनी मातृभूमि को सब प्रकार से सम्पन्न और शक्तिशाली बना सकें।

जो बातें ऊपर कही गई हैं उनकी उपयोगिता का स्पष्ट प्रमाण कांगड़ी का गुरुकुल महाविद्यालय है - इसमें उच्च से उच्च शिक्षा देशी भाषाओं द्वारा दी जाती है और वह देशी भाषा हिन्दी है। इसकी शिक्षा प्रणाली से शिक्षित हो जो स्नातक तय्यार हुए हैं वे अन्य सरकारी विश्वविद्यालयों के ग्रेजुएटों से किसी प्रकार कम नहीं हैं वरन देश सेवा, देशाभिमान और आत्मगौरव में उनसे बढ़े हुए हैं। अतएव अनेक बातो में गुरुकुल महाविद्यालय को हमें अपना आदर्श मानकर उसे पूर्णता पर पहुंचाने में सहायक होना तथा विद्या के प्रचार और विस्तार में उसका अनुकरण करना चाहिए।

लखनऊ ४-२-१७ } श्यामसुन्दरदास

प्राचीन भारत में शिक्षा

(ले० पं० जयदेव विद्यालंकार)

[१] पाश्चात्यों के सिद्धान्त भारतवर्ष पर नहीं लग सकते यह बात ठीक है, क्योंकि पाश्चात्यों के अभी तक कोई निश्चित सिद्धान्त ही नहीं बने। अभी सब सिद्धान्त प्रायः पूर्वपक्ष या एकदेशी कल्पनाएं ही कही जासकती हैं, क्योंकि पाश्चात्य सभ्यता भी अभी किसी नियत पराकाष्ठा पर नहीं पहुंची। काल रूपी प्रोफेसर का अन्तिम व्याख्यान अभी नहीं हुआ। अभी उसे Evobution विकास [बालक से बढ़ २ कर युवा बनने] के स्वप्न ही आरहे हैं। पूर्ण यौवन का काल भी अभी नहीं आया। अतः ऐसी नाबालिग जनसमाज की पूर्णानुभवी कहना बहुत ही कठिन तथा अनुपयुक्त है। नवयौवन के आकस्मिक जोशखरोश के चिन्ह पाश्चात्य मानव धर्म के जीवन में पाये जाते हैं और साथ ही साथ प्रयत्नों के सफल न होने पर बीच में आई हुयी निराशाओं की लहरें भी बीच बीच में उठती दीखती हैं। यह बात ठीक है कि दैवयोग से पाश्चात्य जनसमाजों की गति प्रायः अभिलषित उन्नति के मार्ग पर ही शनैः२ आरही है, और आशा की जाती है कि यदि किसी आसुरीय विपत्ति ने उस पर आक्रमण कर के बीच ही में नाश न किया तो कदाचित् पूरा जीवन भी निभा ले, और पूर्ण यौवन को भोग कर वार्धक्य का धर्ममय जीवन बिताने का अवसर पा सके।

पाश्चात्य देशों का जीवन यदि इतिहास की दृष्टि से देखा जाय तो ३० सदियों से अधिक पुराना नहीं। पर ये ३० सदिएं किस गिनती की जब कि एक तरफ़ युगों का जीवन भोग २ कर अपनी कबरों में पड़े बैबीलोनिया और असीरिया, मिस्र और पुराना यूनान अब भी अपने अवशेष से वैज्ञानिकों के विस्मयपात्र बन रहे हैं; और जब कि उन्हीं की एक बग़ल में पड़ा, फटी गूदड़ी वाला, जोगी, भारत नया शरीर धारण करने की फ़िकिर में अरबों वर्षों पुराने कितने २ कल्पों का गीत गा रहा है। नौजवान पाश्चात्य मानव समाज को यद्यपि अपने नये ज़ोर पर घमण्ड है, पर फिर भी उसका आत्मिक अनुभव इस बूढ़े के पुराने अनुभव की तुलना में तृणप्राय है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण और क्या दिया जाय। यही पर्याप्त है कि सब प्रकार के विज्ञान के आविष्कारों की तथा भोगसाधनों की पराकाष्ठा तक उन्नति के होते हुए भी वहां उच्च से उच्च विचार-धन पुरुष भी अन्तिम श्वास में उपनिषदों का गीत गाकर जीवन सफल समझते हैं। पूर्वीय अन्वेषण करने में कितने ही दत्तचित्त होकर लगे रहते हैं, और कितने ही पाश्चात्य प्राकृतिकमाया के विलास से उद्विग्न होकर भारत के राम, कृष्ण और ब्रह्माविष्णु की उपासना में मग्न हो जाते हैं। कितने ही थियासोफ़ी के संघ में बुद्ध भगवान् के उपदेश तथा गीत और महाभारत के उपदेशों को बार २ पढ़ भारतीय नहीं पूर्वीय एशिया के चमत्कारों और प्रकाश के भण्डारों के अनन्त अक्षय कोश को सराहा करते हैं। किंबहुना इस पुरातन भारत को सब भूमण्डल की माता कहने में भी मुक्तकण्ठ हो, पोलक जैसे विद्वान् अपना अहोभाग्य समझ गए हैं। इस प्रकार के सकल शिरोमणि प्राचीन भारत की प्रत्येक वस्तु में अत्यन्त पुरातन अनुभव राशि तथा दृढ़ ज्ञान का सम्बन्ध प्रतीत होता है।

वर्त्तमान में सब से कड़ी समस्या यदि किसी विषयमें है तो केवल शिक्षा के विषय में हैं। यद्यपि हरिवर्ष में अक्षरमात्र बांचलेने वाले विद्वानों की संख्या बहुत है परन्तु वास्तविक शिक्षा का अभाव अब भी योरूप में अपरिमित है, जिसमें प्रमाण भूत केवल निम्नलिखित उद्धरण ही पर्याप्त है। यह उद्धरण १९११ में प्रकाशित ब्रिटानिया के प्रसिद्ध महाविश्वकोश [Encyclopedia Britanica] का है।

"Prostitution appears to be inseparable from human society in large communities. In different Countries and ages it has in turn been patronised and prohibited, ignored and recognised, tolerated and condemned, regulated and let alone, flaunted and concealed. Christianity, the greatest moral force in the history of mankind has repeatedly and systematically attacked it with a scourge in one hand and the balm in the other but the effect has been trifling or transcient. Nor have all the social and administrative resources of modern civilisation avail to exercise an effective control. The elementry laws on which prostitutes rest, are stronger than the artificial codes imposed by moral teachings conventional standards or legislatures; and attempts at repression only

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

lead to a change of form not of substance. It servives all treatments; and though it may consist with national vigour, its extravagant development is one of the signs of a rotten and decaying civilisation.'

इस का भावार्थ यह है कि:—"वेश्यावृत्ति अधिक संख्या में रहती हुवी मनुष्य समाज से दूर नहीं की जासकती। भिन्न २ ज़मानों और देशों ने इस वेश्या वृत्ति को चलाया और रोका, उपेक्षा की और ध्यान दिया, सहा और कोसा, नियमित किया और छोड़ दिया, दबाया और छुड़ाया परन्तु संसार भर के मनुष्य समाज के इतिहास में प्रसिद्ध सब से बड़ी सदाचार की शक्ति क्रिश्चियानिटी ने भी बार बार और बड़े २ ढंगों से इस [वेश्या वृत्ति] पर एक हाथ में शान्ति का प्रलोभन और दूसरे हाथ में दण्ड का कोड़ा लेकर आक्रमण किया परन्तु परिणाम अत्यन्त तुच्छ तथा अत्यन्त ही अस्थिर हुवा। सम्पूर्ण राज्य प्रबन्ध की धर्मव्यवस्था की सम्पूर्ण शक्तियें इसके विरोध में लगकर भी इस पर कुछ प्रभाव नहीं करसकीं।

साधारण बनावटी आचार की शिक्षा तथा धर्म सन्देश [चर्चा] का उपदेश तथा राज्य के नियमों से भी अधिक बलवान् प्रारम्भिक नियम हैं जिन पर कि वेश्याएं आश्रित हैं। इस लिए इसको दबाने के सब प्रयत्नों का परिणाम केवल ऊपर के रूप को बदलना है न कि वास्तविक मूल को। सब कोई उपाय करलेने पर भी वह ज्यों का त्यों बना रहता है।

यद्यपि यह राष्ट्र की बढ़ती शक्ति के साथ ही साथ विद्यमान रहती है तो भी इसका अत्यन्त ही अधिक फैले रहना एक नष्टप्राय तथा गली सड़ी सभ्यता का चिन्ह है।" यह है नवीन सभ्यता का उत्तम फल जो अभी तक निकला है।

क्या यही शिक्षा का आदर्श है जिसको देख २ कर अपना भी हरिवर्ण का चित्त नहीं भरता। अब आइये हमारे पूर्वज ऋषियों के पाठ विधि का आन्दोलन कीजिए। देखिये परिणाम-एक राजा दम भर कर कहता है "कि मेरे राज्य में कोई चोर नहीं, दुष्ट नहीं, कोई शराबी नहीं, कोई यज्ञ न करने वाला नहीं, कोई अविद्यावान् नहीं, कोई व्यभिचारी नहीं, व्यभिचारिणी तो हो ही कैसे सकती है" क्या कोई है योरोप में छोटी स्टेट भी जिसका मुख्य अधिकारी इस प्रकार का दावा करसके। बस यह है प्राचीन शिक्षा का फल जिससे प्राचीन शिक्षा की तथा नवीन सभ्यता की परीक्षा की जासकती है। क्योंकि फल से ही वृक्ष की अच्छाई और बुराई निर्णय की जाया करती है। उपर्युक्त उद्धरण में वर्तमान में दीजाने वाली सब प्रकार की आचार शिक्षा को कृत्रिम Artificial कहा गया है पर खोजना यह है कि वह कौनसी शिक्षा है जो वास्तविक है पाठकगण! इस समस्या का वास्तविक उत्तर ऋषियों की तपोनिष्ठ हड्डियां ही देंगी। ब्रह्मचर्य प्रणाली, आचार्य कुल में वास गुरुकुल के कड़े नियमों का पालन, यम नियम आसनादियोगाङ्ग का आचरण, और विद्यास्नातक व्रतस्नातक बनकर संसार के मैदान में उतरना-बस यही एक उपाय है जिससे पूर्वोक्त ब्रह्म राज्य की स्थापना की जासकती है। वर्तमान में हमने सभी को तिलाञ्जलि देकर अपना सर्वस्व खोदिया है।

(२) सार्वजनिक शिक्षा के लिए देश विदेश में बड़े २ विश्वविद्यालय से लेकर छोटे से छोटे प्राईमरी स्कूल तक की परीक्षा करलेवें। परन्तु बतलाइये कि कौनसा इन्स्टिट्यूशन है जिसने अपना सर्वस्व लगाकर जनसमाज को शिक्षित करने का ठेका लेलिया हो। कौनसी ऐसी संस्था बनसकी जिस में कि विद्या का सा अनमोल रत्न बाज़ारू भाव से बिका नहीं।

परन्तु आइये पाठक प्राचीन भारतवर्ष के दृश्यों को देखिये। जनसमाज का एक चौथाई हिस्सा इस व्रत को निष्काम भाव से अपने ऊपर लेता है और एक पैसे की भी याचना न करता हुआ व्रतधारण करता है कि सारे जनसमाज को वह शिक्षा देगा। उसकी कुटी में देश के बच्चे व्रतधारण करेंगे विद्या अध्ययन करेंगे दीक्षित होंगे और सब प्रकार की विद्याएं पढ़ कर देश की यथाशक्ति सेवा करेंगे। यह चौथाई हिस्सा ब्राह्मण भाग है। इसी के लिए यह पक्का नियम आपोपित है:—

'अध्यापनं अध्ययनं यजनं याजनं तथा'

यही चतुर्थभाग ब्राह्मण-समाज का शिरोभाग होता हुआ सब को शिक्षा देगा।

[३] कौनसा ऐसा देश है जिस में बालकों को शिक्षा का प्रबन्ध इतरवृत्ति की प्रयत्नशून्यता से ही किया जाता हो। वर्तमान में भूमण्डल में तो कोई ऐसा देश दृष्टि गोचर नहीं होता। अच्छा तो खोलिये आंख और देखिये भारत के प्राचीनकाल के दृश्य को। गर्भाधान संस्कार से लेकर अन्त्येष्टी संस्कार तक १६ महासंस्कारों द्वारा किस प्रकार मनुष्य के आत्मा की सदाचार की शिक्षा (Traninig) की विधि बनी हुई है।

[४] किस देश में एक २ दर पर जाकर शिक्षा देने वाले उच्च पद के ब्रह्मोपाध्याय (Masters of Knowledge) धार्मिक तथा जातीय, और अन्य प्रकार की विद्याओं की शिक्षा देते हैं? किस राज प्रबन्ध ने अभी तक ऐसा प्रबन्ध किया अपनी प्रजा को शिक्षित करने का, जिस से बिना किसी प्रकार के प्रजा पर टैक्स या फीस लिए अमूल्य शिक्षा का वितरण किया जाता हो? वर्तमान में तो कोई राज प्रबन्ध नहीं। तो फिर मुख फेर कर देखें प्राचीन भारत वर्ष के दृश्यों को। लंगोटी बन्द सन्यासी कमण्डल हाथ में लिये ब्रह्मदण्ड का आश्रय करके ओंकार का जप करते हुवे दर २ पर घूमते हुवे अपने आचार से आचार की शिक्षा और ज्ञान पूर्ण उपदेश से ज्ञान की शिक्षा देते हैं।

[५] कौनसा देश है जिसमें कि शिक्षकों व मान्य उपाध्यायों की हृदय से पूजा हो तथा अत्यन्त निष्काम भाव से आदर हो। देखिए भारत के प्राचीन काल के दृश्य को। देखिए लंगोट बन्द ब्राह्मण राज दरबार में आता है, राजा महाराजा उठकर पैर छूते हैं और आशीर्वाद लेते हैं। और देखिए। दिलीप जैसे चक्रवर्ती राजा वसिष्ठ के घर पर जाकर क्या करते हैं। अहो भाग्य समझते हैं कुटिया में जाकर कुशा के आसन पर बैठने में। अहोभाग्य समझते हैं ब्राह्मण को दक्षिणा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

देने में। भारत में तो अब तक इस श्रद्धा के आधार पर सब संन्यासी तथा ब्राह्मण प्राण धारण करते हैं। भारतवासियों की नस नस में "पांव लागन" आदि शब्दों से ही विनय की पराकाष्ठा सूचित है। गुणों का मान इसे ही कहते हैं।

[६] कौनसा ऐसा देश है कि जहां कहानियों और किस्सों में भी धर्म का रस मिलाने का विशेष प्रबन्ध किया हो। हां नई सभ्यता ने अजब २ उपन्यासों को रच २ कर नौजवानों के जीवन को भ्रष्ट करने के लिए जगह व जगह स्टेशनों पर भी बुकस्टौल लगा रखे हैं परन्तु धर्म-चर्चा का उनमें लेशमात्र भी नहीं है।

परन्तु देखिए भारत को। इसमें स्थान २ पर इतिहास महाभारत रामायण तथा पुराणों की कथा केवल धर्म का अंग सिखाने के उद्देश्य पूरा करने के लिए कराई जाती है।

[७] किस देश में और किस सभ्यता ने एक जन समाज भर की पाठविधि बनाई है? हां एक संस्था की या स्कूल की विद्यालय की पाठविधियें तो बहुत रिपोर्टों और प्रौस्पैक्टसों के रूप में बनी हुई हैं। परन्तु एक जन समाज की नहीं। परन्तु भारत में श्रुति, स्मृति, शास्त्र, इतिहास पुराण, साहित्य [दृश्य और श्रव्य] यह है पाठ विधि। श्रुति सब कोई श्रवण करे, स्मृति सब कोई स्मरण करे। शास्त्रों को सब कोई मनन करे, इतिहास पुराण का सब कोई सुन कर उपदेश ले। साहित्य का सब रस पिये। यही सब जातीय पाठविधि का निर्माण ऋषियों ने किया। इन्हीं का उपदेश प्राचीन ब्राह्मण देश देशान्तर द्वीप द्वीपान्तर और ग्राम ग्राम नगर नगर और घर घर और दर दर पर करते थे।

यह थी प्राचीन शिक्षा की प्रणाली। परन्तु प्रश्न यह है कि ऐसे स्वार्थ त्यागी स्वयं सेवक शिक्षक अब कहां से पैदा हों।

संक्षेप से उत्तर यह है कि अमित बलधारी सिंह हिमालय की गुफा से निकला करते हैं न कि शहरों की चार दिवारी से। तपस्वी शिक्षक तेजस्वी ब्रह्मचारी तपोवन की कुटिया से निकलते हैं न कि भोग विलास से भरे दुमंजिले तिमंजिले ईंटों के ढेरों से।

वर्त्तमान सभ्यता के झकोरों ने भारत में बड़े आग्रह पूर्वक प्रवेश किया है। इस नये घातक चमत्कार ने विद्युत्प्रपात की न्याईं सारी की सारी सञ्चित शक्ति को ऐसा धक्का मारा है कि भारत की आर्य जाति इस समय अपना वैभव सर्वथा भूल गयी है। अब उसी के रंग में रंगे जाकर अपनी ऋषि कुटियें छोड़कर महलों में विद्या पढ़ना अधिक भाता है। वास्तविक विद्या का भूषण धारण करने के बजाय फैशन में मस्त होना सुहाता है। तपोवृत्ति से द्वन्द्व का सहन न करके रूई और रेशमें में लिपट कर जीवन बिताना उत्तम प्रतीत होता है। सादा भोजन करके प्राण यात्रा न करने की अपेक्षा ऊंचे पकवान तथा चटपटे भोजनों द्वारा पेट भर कर जीवन बिताना भला मालूम होता है।

इसी प्रकार की भूलों में पड़ कर हमारा वास्तविक उद्देश्य तथा उस की प्राप्ति के साधन हमारी पहुंच के बाहर हो गए हैं। हमें उन्नत होने के लिए फिर उसी ब्रह्मचर्य प्रणाली को जगाना होगा। फिर से हिमालय की गुफा की शरण लेनी होगी। और महलों की दिवारें छोड़ कर तपोवन की झोंपड़ी की छाया का आश्रय लेना होगा। भोग विलास की सम्पत्ति पर लात मार कर वृक्षों की छाल पहन कर और व्रत पूर्वक भिक्षा वृत्ति से तपोजीवन निवाह कर सामर्थ्य तथा वीर्यधारण करना होगा। तभी आशा है कि इस मृत प्राय जाति को अज्ञान गुफाओं में फिर से आदित्यों का प्रकाश पहुंच सकेगा। और फिर से मनुभगवान् का कहा प्रौढ़ वाक्य चरितार्थ होगा।

एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवा॥

फिर भी उपनिषदों के ज़माने की न्याईं कैकय देश के राजा अश्वपति के सदृश भारत का राजा कह सकेगा कि:—

"न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपो नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥" इतिशम्।

आर्य्यसमाज पर एक दृष्टि

[लेखक—प्रो० बालकृष्ण, एम० ए०]

यदि इस त्रिलोकी भूमंडल के नाना मतमतान्तरों की तुलना आर्य-समाज से धर्म से की जावे तो अतीव मनोरञ्जक, शोभायमान, निराला और शिक्षाप्रद दृश्य दृष्टि गोचर होता है। क्या यह असन्दिग्ध बात नहीं कि भक्ष्याभक्ष्य, आचार अनाचार, विद्या अविद्या, आत्मा अनात्मा, ऐहिक आमुष्मिक विषयों के सम्बन्धों में आर्यसमाज अन्य सर्व धर्मों से सर्वोपरि है। जहां आज बीसवीं शताब्दी की विलक्षण सभ्यता में निवास करने वाले कोटिशः नर नारी घृणित कुरीतियों के जालरन्ध्रों में ग्रस्त, सहस्रों भ्रमों के दास, आत्मिक अवनति के महापंक में निमग्न हो रहे हैं, जहां वे मांस भक्षण व मूर्ति पूजन में आसक्त हो रहे हैं, वहां आर्य्यसमाज इन्हीं कुरीतियों और पापों के पाशों को तोड़ कर आत्मिक उन्नति के शिखर पर बिठाना चाहता है। आर्यसमाज एक नवीन उत्तम धर्म ही सकल संसार के समक्ष रखने के लिए नहीं आया, परन्तु समाज सुधार, जातीय संगठन, स्त्री-स्वतन्त्रता, राजनीति, शारीरिक उन्नति और शिक्षा के विषय में आदर्श विचार प्रकट करने के लिए जन्मा है। सभ्य देशों में समष्टिवादी, प्रजावादी, विराष्टवादी, स्त्री स्वतंत्रतावादी, पैत्रिक संस्कारवादी, तथा अन्यान्य उन्नति—अभिलाषी सम्प्रदायों के अनुयायी पृथक् २ जो अनथक परिश्रम कर रहे हैं, इन सब की असिद्ध परम कामनाओं की सिद्धि का केन्द्र आर्य्यसमाज है। आर्य्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द ने इन सब प्रश्नों के सम्भव उत्तर दे दिए हैं, ऐसी परमोन्नतिप्रद संस्था आज भूमंडल पर नहीं दीख पड़ती, सर्व प्रकार की वृद्धि वा उन्नति, उदय वा उत्कर्ष के अमूल्य बीज इस संस्था में विद्यमान हैं। सर्व धर्मों का जन्म एशिया महाद्वीप में और उनका अंकुर भारत भूमि में हुआ है, आर्य्यावर्त का पुनः भी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भाग्य है कि एक अतीव सुन्दर उन्नति-प्रद धर्म का कल्प-वृक्ष पुनः इस देश में उत्पन्न हुआ है, यहां के निवासी भाग्यशाली हैं कि उन्हें प्रकाश के लिए अन्य जातियों का मुख न देखना पड़ेगा। परन्तु भारत ही पुनः ज्योतिस्तम्भ होकर देश देशान्तरों में अपनी मनआह्लादन ज्योति की किरणें भेजकर उन्हें प्रफुल्लित करेगा।

सिद्धान्त के तौर पर जिस संस्था का ऐसा शोभायमान रूप है, कर्म में उसकी क्या गति है? बंगाल, बिहार, आसाम और गुजरात के प्रदेशों को छोड़कर शेष उत्तरीय भारत में इस संस्था के विशाल भवनों, विद्यालयों, गुरुकुलों, अनाथालयों, पुत्री पाठशालाओं, विधवा भवनों, शुद्धि सभाओं और प्रचारक मंडलियों का मुकाबला ईसाइयों के अतिरिक्त कोई स्वदेशी धार्मिक संस्था नहीं कर सकती। बाम्बे, बर्मा, बंगाल, बिहार में भी यत्किञ्चित् कार्य हो रहा है, मारीशस में आर्यसमाजें प्रतिवर्ष बढ़ती जाती हैं, अमरीका और इंग्लैंड में समाज की स्थापना हो चुकी है। उस की गुरुकुल शिक्षा प्रणाली अन्तर्जातीय प्रसिद्धि की संस्था हो चुकी है। अछूतों और विधर्मियों के उद्धाराय समाज भारतविख्यात हो रही है। परन्तु सज्जनो! स्वयं ही सोचिए कि सर्व प्रकार से सन्तोषजनक उन्नति हो रही है या नहीं? क्या आर्य सामाजियों में पुराना उत्साह-प्रेम, भक्ति, त्याग पाया जाता है? क्या अधिकांश सभ्य सन्ध्या, प्रार्थना, उपासना, अग्निहोत्र, स्वाध्याय करते हैं? क्या वे परस्पर एक दूसरे के सुख दुःख में अन्यों से अधिक भाग लेते हैं? क्या वे परोपकार में अधिक परिश्रम करते हैं? क्या हमारी धार्मिक और सामाजिक अवस्था उन्नत हो रही है? हमारा अनुभव इस उत्तर के देने पर बाधित करता है कि हम उन्नति नहीं कर रहे हैं, हमारा यथोचित प्रचार नहीं हो रहा। हमारा मुकाबला ईसाई और मुसलमानी धर्मों के साथ है, पर उन के प्रचारक नगर नगर और ग्राम २ में रह कर वा यात्रा कर के अपने धर्मों की अरे भैक्षा को आकर्षित कर रहे हैं पर हमारी सभाओं में पण्डित ही नहीं दीख पड़ते। कोई १०० प्रचारक सारे भारत वर्ष में हमारे धर्म का प्रचार करने वाले हैं, जब कि इसाईमत के प्रचार करने वाली १३६ सभाएं प्रोटैस्टैन्ट मत की ही भारत में विद्यमान थीं, इन की ओर से १९११ में ४३६५८ प्रचारक भारत में काम कर रहे थे-उन के गिरजों की संख्या ६३०४ थी और सर्वप्रकार के विद्यालय २८७०३ थे जिन में ११६१७३४ विद्यार्थी पढ़ रहे थे। फिर ६९ हस्पताल खुले हुए थे जिन में एक वर्ष में ३०४६६९७ रोगी आए। जहां आर्य समाज के प्रतिनिधि सभाओं की ओर से ४ पत्र उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी संस्कृत के निकलते हैं वहां १२९ समाचार पत्र प्रोटैस्टैन्ट ईसाइयों की ओर से निकल रहे हैं। जहां आर्य समाज और ईसाइमत के प्रचार में भूमि और आकाश का सा भेद हो वहाँ हमें कामयाबी कैसे हो सकती है? क्या हमारे पास काम करने वाले आदमी नहीं, क्या धन नहीं, क्या व्यवस्था नहीं, क्या उत्साह नहीं, क्या धर्म प्रेम नहीं? क्या हमने गम्भीरता से अपने कार्य पर दृष्टि डाल कर अपनी अवस्था को सुधारने का कभी यत्न किया है? कभी अपने कर्मों की पड़ताल हमने नहीं की। हम अपनी उत्तरदातृत्व को भुला देते हैं और कुछ अनुत्साही, अनुदार, पुराण प्रिय सन्तोषी वा निराश से हो गए हैं। हमें अवस्थाओं के परिवर्तित होते ही अपने कार्य क्षेत्र को निरीक्षण करके नवीन साधनों का अवलम्बन करना चाहिए। बहुत से परिषद् करके नवीन साधनों को विचार करना चाहिए और हरएक आर्य समाजी अपने जीवन को उन्नत करके यदि धर्म प्रचार में थोड़ा बहुत समय दे और दूसरे के दुःखों को दूर करने में यत्नवान् हो तो भी कुछ सफलता हो सकती है। क्या हमें यह आशा करनी चाहिए कि हरएक आर्य अपनी उत्तरदायिता को समझ कर अपने प्राणप्रिय धर्म के प्रचार में तन मन धन से यत्न करेगा और अपनी संस्था के गत जीवन पर दृष्टि डाल कर उस के सुधार में दत्तचित्त होगा? परमात्मा करे कि हम सब अपनी २ ज़िम्मेवारी को समझें और वैदिकधर्म को सकल संसार में प्रचलित करने के परमोपयोगी साधनों को प्रस्तुत करें।

—०—

शिक्षाप्राप्ति का उद्देश्य

और उसकी सफलता

(लेखक-कुंवर हुकमसिंह जी, प्रधान आर्य्य प्रतिनिधि सभा संयुक्तप्रान्त)

प्रियपाठक वृन्द! विचार करने से अवगत होता है कि शब्द "शिक्षा प्राप्ति" के अर्थ को स्पष्ट करने के लिये यदि कोई पर्य्यायवाची शब्द हो सकता है तो "ब्रह्मचर्य" शब्द हो सकता है। शब्द 'ब्रह्मचर्य' दो शब्दों के योग से बना है, ब्रह्मचर्य अर्थात् ब्रह्म कहते हैं विद्या अथवा शिक्षा को और चर्य नाम ग्रहण करने अथवा प्राप्त करने का है। अतएव सिद्ध हुआ कि शब्द "शिक्षा प्राप्ति" और "ब्रह्मचर्य" एकार्थवाची हैं। इस के उद्देश्य के वर्णन करने के प्रयोजन से हम स्वयं कुछ न कह कर पूर्वज विद्वानों के मत प्रकट करते हैं। महर्षि चरक महाराज का वचन है कि:—

पुण्यतमम् यु प्रकर्षकरं जराव्याधिप्रशमनं ऊर्जस्करमृतं शिवं शरण्यमुदारतमम् श्रोतुमर्हथोपधारयितुम् प्रकाशयितुं च प्रजानुग्रहार्थमार्षं ब्रह्मचर्यं॥

भगवान् चरक उपदेश करते हैं कि तुम ब्रह्मचर्य अर्थात् शिक्षा प्राप्ति के पुण्यतम सिद्धान्तों को मुझ से सुनो और प्रजा अर्थात् सर्वसाधारण के उपकारार्थ उन का प्रकाश और प्रचार सर्वत्र करो। वह ब्रह्मचर्य आयु का वृद्धिकारी, वृद्ध अवस्था के कष्ट का निवारक सम्पूर्ण रोगों का नाशक, मृत्युदुःख से बचाने वाला, कल्याण कारी, रक्षा करने योग्य और आनन्द का देने वाला है। उपरोक्त वाक्य में भगवान् चरक ने जो कुछ बतलाया यही शिक्षा के उद्देश्य हैं। पाठक अनुभव कर सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली से यह सिद्धान्त कितनी दूर है। उनकल की शिक्षाप्रणाली में केवल लिखना सीख लेने और पुस्तकों को बांच लेने ब

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समझ लेने की शक्ति को सम्पन्न कर यूनीवर्सिटी की डिगरियों के काग़ज़ प्राप्त करलेना ही उद्देश्य समझा जाता है। जिस का मुख्य प्रयोजन यह है कि डिगरी प्राप्त करके नौकरी मिल सके तथा धन कमाया जा सके। इस शिक्षा में आयु की वृद्धि, आरोग्यता, दृढ़ता, बल सम्पन्नता, हृष्ट पुष्टता, वीर्यसञ्चय और वास्तविक आनन्द प्राप्ति से कुछ प्रयोजन नहीं रक्खा जाता, जो कि वास्तव में शिक्षा प्राप्ति और ब्रह्मचर्य का सिद्धान्त और उद्देश्य है।

प्रिय पाठकगण! भगवान् चरक का एक वाक्य और है कि 'विद्या ब्रह्मणानाम' अर्थात् शिक्षा से सब प्रकार की वृद्धि अर्थात् उन्नति प्राप्त होती है। अर्थात् शारीरिक, आत्मिक, और सामाजिक उन्नति जो कि सम्पूर्ण उन्नतियों का मूल है। वास्तव में शिक्षा का पवित्र और सर्व श्रेष्ठ उद्देश्य यही हो सकता है कि शिक्षा से सर्व प्रकार की उन्नति प्राप्त हो। परन्तु आज कल की शिक्षा का उद्देश्य केवल नौकरी और धन कमाने तथा स्वार्थ पोषण पर ही समाप्त हो जाता है, जो कि जाति का नाशक और सर्व उन्नतियों का विदारक है। सज्जन पाठक विचार सकते हैं कि जिस जाति का शिक्षित समुदाय शिक्षा का फल केवल उदर पूर्ति और धनसंग्रह का स्वार्थ सिद्धि ही समझता हो, नहीं नहीं किन्तु नौकरी अर्थात् दासत्व (गुलामी) करना ही समझता हो वह जाति कैसे उन्नति कर सकती है? वह जाति क्यों कर उठ सकती है? जहां कि ऋषि बताते हैं कि सर्व प्रकार की उन्नतियों को प्राप्त करना शिक्षा का उद्देश्य है वहां शिक्षा से धन कमाना और दासत्व गुण करना कितनी शोकजनक घटना है। आर्य जाति के लहलहे पौधो! और हरे भरे वृक्षो!! यदि तुम जाति का अभ्युदय चाहते हो तो शारीरिक आत्मिक और सामाजिक उन्नति को शिक्षा का उद्देश्य आदर्श और सिद्धान्त बनाओ।

प्रिय पाठकवृन्द! भगवान् गोतम अपनी स्मृति में लिखते हैं कि:—

आयुस्तेजो बलम् वीर्यं
प्रज्ञा श्रीश्च महद्यशः
पुण्यंच प्रतिभत्वं च
ह्रियते ब्रह्मचर्यया।

अर्थात्—अब्रह्मचर्य से आयु, तेज, बल, वीर्य, बुद्धि, शोभा, लक्ष्मी, परमकीर्ति, पुण्य, प्रेम का नाश हो जाता है। अर्थात् इस के विरुद्ध ब्रह्मचर्य [शिक्षा प्राप्ति] से यह सम्पूर्ण उत्तम वस्तुऐं प्राप्त होती हैं। अतएव भगवान् गोतम के मतानुसार शिक्षा का सिद्धान्त और उद्देश्य यही स्थिर होता है कि जिस से शिक्षित पुरुष दीर्घायु, बल, वीर्य, बुद्धि और तेज को प्राप्त कर शोभा और लक्ष्मी को प्राप्त करते हुए पुण्यवान् बन परम कीर्ति को प्राप्त करें और जातिका प्रेम और संसार का प्रेम शिक्षित के हृदय में उत्पन्न होकर 'परोपकारार्थ सतांविभूतयः, को अपना कर्तव्य बना लें। परन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इन पवित्र कर्त्तव्यों से कोई सम्बन्ध नहीं रक्खा गया है। आज कल का शिक्षित समुदाय जो अब्रह्मचर्य के कारण बल वीर्य, तेज और शोभा को खो चुका है किन्तु नकली जरी चमकीली भड़कीली वस्तुओं से फैशन [आकृति] बना कर धन कमाने और स्वार्थ साधन में मस्त हो रहा है क्या शिक्षा के अन्तिम सिद्धान्त 'प्रेम' को निज कर्तव्य में स्थान देकर जातीयप्रेम देशप्रेम और धर्मप्रेम करने में निमग्न होगा? क्या शिक्षा के मार्ग में जाने वाले वर्तमान समय के विद्यार्थीगण आयु वृद्धि बल वीर्य वृद्धि प्राप्ति के निमित्त सदाचार को ग्रहण करने का प्रयत्न करेंगे?

एवं पुण्य और प्रेम को निज लक्ष्य जान कर अपने तन मन धन से सर्व साधारण के उपकार करने की तय्यारी करने में निमग्न होंगे?

सज्जन वृन्द! इस स्थल पर मुझे एक वचन शतपथ का स्मरण आया है कि "विद्यया तदारोहन्ति यत्र कामाः परागताः" अर्थात् शिक्षा से वह पद प्राप्त होता है जहां सब सुखों की सीमा है। इस से शिक्षा का उद्देश्य, सर्व सुखों की सीमा की प्राप्ति स्थिर होती है। अतएव प्रश्न यह उत्पन्न होता है कि सर्व सुखों की सीमा किस प्रकार प्राप्त हो सकती है? जो इस मन्त्र पर दृष्टिपात करते हैं तो यही प्रतीत होता है कि किसी समाज, जाति, देश अथवा राष्ट्र की सर्व प्रकार की उन्नति होने से ही सर्व सुखों की सीमा किसी व्यक्ति को मिलसकती है। अतएव जो पुरुष शिक्षा प्राप्त करता है वह समाज की सम्पूर्ण न्यूनताओं को अपने विद्याबल और पुरुषार्थ से दूर करके समाज को बहुत उच्च अवस्था पर उठा देता है और अपने सदाचार और ब्रह्मचर्य से अपनी शारीरिक और मानसिक दशा को सुधार कर पुष्ट कर लेता है, और ईश्वराराधन से अपनी आत्मिक अवस्था को उन्नत कर लेता है। इस प्रकार वह शिक्षा प्राप्ति से सर्व सुखों की सीमा पर पहुंच जाता है।

सज्जन वाचक वृन्द! कहांतक गिनावें शिक्षा के उद्देश्यों के सम्बन्ध में पूर्वज ऋषि महर्षि और विद्वान् पुरुष एक से एक उत्तम शिक्षा देगये हैं। हितोपदेशकार ने बतलाया है कि:—

विद्याददाति विनयं विनयाद्याति पात्रताम्।
पात्रत्वाद्धनमाप्नोति धनाद्धर्मं ततः सुखम्॥

शिक्षा से विनय [नम्रता, निरभिमानता] विनय से सुयोग्यता, सुयोग्यता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख प्राप्त होता है। प्रयोजन यह है कि शिक्षा से नम्रता, सुयोग्यता, धन, धर्म और सुख प्राप्त होना चाहिए। यदि शिक्षा प्राप्त पुरुष में नम्रता और निरभिमानता उत्पन्न न होकर जाति के साथ प्रेम उत्पन्न न हो तो समझना चाहिए कि शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ है। इसी प्रकार शिक्षा पाकर नम्र होकर और इस प्रकार योग्य बन कर जो धन संग्रह किया हो उस से धर्म न किया हो अर्थात् शिक्षित पुरुष ने अपने धन को अपने ऐश व आराम में व्यय किया हो अथवा उसे कृपण बन धर्म के काम में व्यय न कर धनाढ्य बने रहने के निमित्त सञ्चय कर छोड़ा हो तो समझना चाहिये कि शिक्षा का उद्देश्य पूर्ण नहीं हुआ और फिर उसे सुख नहीं मिल सकता। हालांकि लोगों ने समझ यही रक्खा है कि धन संग्रह कर उसे स्वार्थ में

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

धन में व्यय करने ही से सुख मिलता है। परन्तु ऐसा समझना उनकी नितान्त भूल है। कोई व्यक्ति उस समय तक सुख प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि समाज सुखित अवस्था को प्राप्त न हो। इस कारण जाति अथवा समाज सुधारार्थ पूर्ण धन दान और पुरुषार्थ परम कर्तव्य हैं तभी शिक्षा का अन्तिम उद्देश्य सुख प्राप्त होसकता है।

धर्मात्मा शिक्षित समुदाय! अब हम विस्तार भय से अधिक न लिख कर अन्त में केवल यही निवेदन करते हैं कि "ब्रह्मचर्य पूर्वक शिक्षण" का प्रचार करो और सम्पूर्ण पुरुषार्थ को इसी परम कर्त्तव्य और पुण्यतम कार्य में लगाओ। क्योंकि बिना शिक्षा के सब संसार अंधा है और शिक्षा ही सब की आंखें हैं जैसा कि हितोपदेश में वर्णन है कि:—

अनेकसंशयोच्छेदि परोक्षार्थस्य दर्शकम्
सर्वस्य लोचनं शास्त्रं यस्य नास्त्यन्ध एव सः

अर्थात्—अनेक संशयों को उच्छेदन करने वाली, अप्रत्यक्ष पदार्थों का ज्ञान उत्पन्न कराने वाली सब संसार की आंखे यह शास्त्र शिक्षा है जिस के पास यह नहीं वह अन्धा ही है। अतएव शिक्षित पुरुष का कर्त्तव्य यही है कि वह शिक्षा के प्रचार और वृद्धि में तन मन धन से प्रयत्न वान् हो जैसा कि किसी कवि ने कहा है:—

धर्माधर्मं न जानाति लोको ऽयं विद्यया विना
तस्मात्सदैव धर्मात्मा विद्यादानरतो भवेत्।

अर्थात्—इस संसार में शिक्षा के बिना धर्म और अधर्म का ज्ञान उत्पन्न नहीं होसकता, इस कारण धर्मात्मा और शिक्षित पुरुषों को सदैव शिक्षा के प्रचार में निमग्न रहना ही परम कर्तव्य है। ऐसा करने से ही शिक्षा का उद्देश्य सफल हो सकता है।

॥ इति ॥

—०—

भारतोद्बोधन

(पं० हरिश्चन्द्र जी, अमरीका)

[१]
भारत से लेकर योरप तक,
जितना भूमीतल विस्तार।
आंख खोल कर ज़रा निहारो,
मचा भयानक हाहाकार॥

[२]
रंक कुटी में धनिक-भवन में,
जहां कहीं पर जाते हैं।
बाह्य सुखाडम्बर के भीतर,
दुःख-कथा सुन पाते हैं॥

[३]
नास्तिकता-दावानल फैली,
चित्तलता कुम्हलाती है।
देश-भक्ति की शीतल गङ्गा,
सूख सूख विकलाती है॥

[४]
बढ़ी हुई धन-तृष्णा जग में,
विकट अनर्थ मचाती है।
त्याग-वृत्ति का नाम नहीं है,
पर-सेवा सकुचाती है॥

[५]
चण्डी रण-देवी भी अपना,
भैरवनृत्य दिखाती है।
पाप-भरे विध्वंस-कर्म का,
भीषण-काण्ड सिखाती है॥

[६]
दीन अमीरों के नित झगड़े,
धनिक-जनों के अत्याचार
टूट गई वर्णाश्रम सीमा,
हुआ मोह-मद का संचार॥

[७]
देखें जहां, वहीं व्याकुलता,
जगती-तल पर छाई है।
स्वार्थवृत्ति का राज्य बड़ा है,
प्रेमलता मुरझाई है॥

(८)
ऐसे कष्ट-समय में भारत!
सुख-निद्रा क्यों सोता है?
आर्य्यजाति का करुण-हृदय क्यों
स्वार्थ-परायण होता है?

[९]
विपद-पंक में जब जब भूमी-
चक्र निमग्न निहारा था।
तब तब देकर हाथ सहारा,
भारत ने उद्धारा था॥

[१०]
आज हज़ारों वर्ष हुये जब,
संकट जग में छाया था।
बुद्धदेव का जन्म हुआ तब
करुणामृत बरसाया था॥

[११]
प्राणिमात्र का था वह बन्धु,
दयासिन्धु कहलाता था।
दुःख देख कर दारुण जग का,
हार्दिक अश्रु बहाता था॥

[१२]
त्यागी राज-पाट की लीला,
किये निछावर अपने प्राण।
दिया अनाकुल मोक्षसँदेसा,
फैलाया जग में कल्याण॥

[१३]
दिन की दीपकला के पीछे,
गाढ निशातम आता है।
पाप निशाचर फिर दुखदायी,
अपना राज्य जमाता है॥

[१४]
इस के विकट अनाचारों से,
जगतीतल अकुलाता है।
पर देखो वह पूर्व दिशा में,
दिनकर झलक दिखाता है

[१५]
दयानन्द नामी सेनापति,
धर्मराज का आया है।
नभतल में फिर मङ्गलकारी,
धर्म-केतु फहराया है॥

[१६]
सत्य-शास्त्र के शस्त्र हाथ में,
दिव्य तेज का है आधान।
पाप-विजय की मन में इच्छा,
दिया लड़ाई का एलान॥

[१७]
कठिन-शिला-तल-सम बाहिर से,
भीतर करुणा का अवतार।
देख दुःख से पीड़ित जग को,
पकड़ी शान्तिमयी तलवार॥

[१८]
लड़ा पाप से वह संन्यासी,
किया अविद्या का संहार।
प्राण बिछोड़े रणभूमी में,
धन धन मुनि को बारंबार॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[१९]

उसी वीर के तुम सैनिक हो,
सुनो वीर आर्य सन्तान।
चरण चिन्ह पर उसी ऋषी के,
चलने से होगा कल्याण॥

[२०]

शस्त्र संभालो अपने वीरो,
करो युद्ध की तय्यारी।
महामोहघातक की सेना,
पड़ी जीतने को भारी॥

[२१]

क्रूर युद्ध का दृश्य नहीं है,
शान्ति राज्य को लाना है।
रुधिर नदी का स्थान यहां पर,
प्रेम सुधाका पाना है॥

(२२)

गले पराये नहीं कटेंगे,
सिर अपना कटवाना है।
लोक राज्य की इच्छा छोटी,
स्वर्ग राज्य पद पाना है॥

(२३)

परम पिता के सब पुत्रों में,
भ्रातृभाव फैलाना है।
धर्म युद्ध का दृश्य अनूठा,
हमें आज दिखलाना है॥

(२४)

दूर दूर देशों में वीरो!
शान्ति संदेशा देना है।
विषय विघ्न रूपानल को भी,
सहजपार कर लेना है॥

(२५)

भूतदया के भाव हृदय में,
जिन के विकसित होते हैं।
बढ़ें आज वे वीर अगाड़ी,
सत्य सुधाकण खाते हैं॥

(२६)

व्याकुल पृथ्वीतल यह सारा,
सत्य धर्म का प्यासा है।
उठो वीर भारत सन्तानो!
हमें तुम्हीं पर आसा है॥

—:०:—

व्योम-वीणा

(पं० श्रीधर पाठक)

कहीं पै स्वर्गीय कोई बाला,
सुमंजु वीणा बजा रही है!
सुरों के संगीत की सी कैसी,
सुरीली गुञ्जार आ रही है!
हरेक स्वर में नवीनता है,
हरेक पद में प्रवीनता है।
निराली लय है औ लीनता है,
अलाप अद्भुत मिला रही है॥
अलक्ष्य पर्दों से गत सुनाती,
तरल तरारों से मन लुभाती।
अनूठे अटपट स्वरों में स्वर्गिक,
सुधा की धारा बहा रही है॥
कोई पुरन्दर की किंकरी है कि,
या किसी सुर की सुन्दरी है।
वियोग तप्ता सी भाग-सुप्ता,
हृदय के द्वार गा रही है॥
कभी नई तान प्रेम-मय है,
कभी प्रकोपन, कभी विनय है।
दया है, दाक्षिण्य का उदय है,
अनेकों बानक बना रही है॥
भरे गगन में हैं जितने तारे,
हुए हैं बदमस्त गत पै सारे।
समस्त ब्रह्माण्ड भर को मानों,
दो उँगलियों पर नचा रही है॥
सुनो तो सुनने की शक्तिवालो,
सकी तो जाकर के कुछ पता लो।
है कौन जोगन ये जो गगन में,
कि इतनी चुलबुल मचा रही है?

श्रीधर पाठक.

—०—

वैदिक ईश्वर-वाद

(ले० पं गंगाप्रसाद एम० ए० एम० आर०ए० एस०)

संसार में जितने धर्म हैं, दो एक को छोड़ कर, सब किसी न किसी रूप से ईश्वर को मानते हैं और आस्तिक होने का दम भरते हैं। परन्तु सब के ईश्वर विषयक विचार एक से नहीं। ईश्वरवाद के मुख्य तीन भेद हैं— (१) एक ईश्वर-वाद monothiesm (२) बहु ईश्वरवाद, Polythiesm और (३) अद्वैतवाद Panthiesm. ईसाई और पाश्चात्य लोग बहुधा केवल ईसाई मुहम्मदी और यहूदी मतों को एक ईश्वर प्रतिपादक बतलाते हैं, वैदिकमत को नहीं। उदाहरण के लिए देखिए मदरास के प्रसिद्ध जे० मरडक J. Murdock साहब अपने "वैदिक हिन्दू धर्म" Vedic Hinduism नामक पुस्तक में लिखते हैं—

Panthiesm and Polythiesm are often combined, but monothiesm in the strict sense of the word, is not found in Hinduism. The Chhandogya formula- **Ehamevadvitiyam brahma** (one god without a second) was also adopted by Keshova Chandra Sen. But it does not mean that there is no second God, but that there is no second anything,-a totally different doctrine.

(अर्थात्) "हिन्दू धर्म में अद्वैतवाद और बहु ईश्वर वाद बहुधा मिले रहते हैं परन्तु एक ईश्वरवाद वास्तविक अर्थ में नहीं पाया जाता। छा दोग्य के बचन "एक मेवाद्वितीयं ब्रह्म" को केशव चन्द्र सेन ने भी स्वीकार किया था। परन्तु इस का अर्थ यह नहीं है कि दूसरा ब्रह्म नहीं किन्तु यह है कि दूसरा कोई पदार्थ ही नहीं, जो एक बिलकुल भिन्न सिद्धान्त है।"

वेदों में केवल एक ईश्वर का उपदेश है। सूर्य, चन्द्र, अग्नि, वायु, आदि अनेक देवताओं का जहां वर्णन है वहां उन उन नाम के भौतिक पदार्थों से तात्पर्य है

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दिव्य गुण युक्त होने से वे "देवता" कहलाते हैं। उनके गुणों का वर्णन किया गया है पर उन की उपासना नहीं बतलाई गई। जहां उपासना का विषय है वहां ये सब नाम अपने यौगिक अर्थों के अनुकूल एक परमात्मा के हैं जो सब देवों का अधिदेव है।

ऋग्वेद मं० १ सू० १६४, मं० ४६ में स्पष्ट कहा गया है—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्नि माहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वान माहुः॥

(अर्थ) उस दिव्य उत्तम और अनन्त गुण युक्त परमात्मा को इन्द्र (ऐश्वर्य युक्त), मित्र (प्रेममय) वरुण (श्रेष्ठ), अग्नि (पूज्य) कहते हैं। एक ही अविनाशी परमात्मा को विद्वान् लोग बहुत से नामों से पुकारते हैं जैसे अग्नि, यम, मातरिश्वा आदि॥

'सत्यार्थ प्रकाश, के १ समुल्लास और 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' के देवता स्थल में ऋषि दयानन्द ने इस विषय का ऐसा स्पष्ट कर दिया है कि इस पर अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं रही। प्रोफेसर मैक्समूलर ने भी अपने "India: What can it teach us?" नामक पुस्तक में जो ऋषिकृत वेदभाष्य-भूमिका के पीछे छपा, यह मुक्तकण्ठ से स्वीकार कर लिया है कि वेदों में देव शब्द केवल ईश्वर के लिये नहीं आता। वह पृष्ट २१८ पर कहते हैं—

Deva which we translated by God is nothing but an adjective, expressive of a quality shared by the heaven, and earth, by the sun and the stars, and the down and the sea, viz brightness

[अर्थात्] देव शब्द जिस के अर्थ हम ईश्वर किया करते थे केवल एक गुणवाचक शब्द है, और उस दिव्य [वा प्रकाश] गुण का बोधक है जो आकाश और पृथिवी, सूर्य, और तारागण, उषा और समुद्र में समान है।

नीचे ऋग् और अथर्व वेद के दो सूक्त दिये जाते हैं। जिनसे ईश्वर संबन्धी वैदिक मन्तव्य स्पष्ट हो जायगा—

ऋग्वेद मं० १० सूक्त १२१—मन्त्र १-१०

हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे-
भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवीं द्यामुतेमां-
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ १॥

[अर्थ] सृष्टि से पूर्व एक परमात्मा था जो सब दिव्य वा प्रकाशमय पदार्थों को अपने गर्भ में धारण किये था। वह सब उत्पन्न जगत् का पति हुआ, उसीने पृथिवी और आकाश को धारण किया। हम उसी परमात्मा की उपासना करें॥ १॥

य आत्मदा बलदा यस्य विश्व उपासते
प्रशिशं यस्यदेवाः
यस्यच्छायामृतं यस्य मृत्युः
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ २॥

[अर्थ] जो आत्मज्ञान और शारीरिक बल देने वाला है जिसकी सब विश्व उपासना करता है जिसकी छाया अमृत है जिसकी मृत्यु है उसी परमात्मा की हम उपासना करें॥ २॥

यः प्राणतो निमिषतो महित्वैक
इद्राजा जगतो बभूव।
य ईश अस्य द्विपदश्चतुष्पदः
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ३॥

(अर्थ) जो अपनी महिमा से इस प्राणी और अप्राणी जगत् का एक ही राजा है, जो दुपायों और चौपायों का ईश है उसी परमात्मा की हम उपासना करें॥३॥

यस्येमे हिमवन्तो महित्वा
यस्य समुद्रो रसया सहाहुः।
यस्येमा प्रदिशो यस्य बाहू
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ४॥

[अर्थ] जिसकी महिमा को ये हिम से ढके हुए पर्वत और जल से भरे हुए समुद्र वर्णन करते हैं, जिसकी ये दिशाएं बाहु है, उसी परमात्मा की हम उपासना करें॥ ४॥

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा
येन स्वः स्तभितं येन नाकः।
योऽन्तरिक्षे रजसो विमानः
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ५॥

[अर्थ] जिसने आकाश को ऊंचा और पृथिवी को दृढ़ किया है, जिसने स्वर्ग को स्थापित किया है जो सारे अन्तरिक्ष में सर्व व्यापकता से विराजमान है उसी परमात्मा की हम उपासना करें॥ ५॥

यं क्रन्दसी अवसा तस्तभाने
अभ्यैक्षेतां मनसारेजमाने।
यत्राधि सूर उदितो विभाति
कस्मै देवाय हविषा विधेम॥ ६॥

[अर्थ] जिसकी ओर पृथिवी और आकाश देखते हैं, उसकी रक्षा से वे स्थित हैं और जिसकी शक्ति से वे घूमते हैं, जिसमें सूर्य्य उदित हो कर चमकता है, उसी परमात्मा की हम उपासना करें॥ ६॥

आपो ह यद् बृहतीर्विश्वमायन्
गर्भं दधानाः जनयन्तीरग्निम्।
ततो देवानां समवर्ततासुरेकः
कस्मै देवाय हविषाविधेम॥ ७॥

(अर्थ) जब (सृष्टि समय) प्रकृति के परमाणु सब ओर फैले हुए, अग्नि उत्पन करते हुए इस विश्व

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को गर्भ में धारण किए थे, — उस समय वही सब देवों का एक प्राण था, उसी परमात्मा की हम उपासना करें ॥ १॥

यश्चिदापो महिना पर्य्यपश्यद्,
दक्षं दधानाः तनयन्तीर्यज्ञम् ।
यो देवानामधिदेव एक आसीत्,
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ८॥

(अर्थ) जिस ने उस समय अपनी महिमा से फैले हुए परमाणुओं को देखा जो उस की शक्ति धारण किए हुए, जगत् को रचते थे, जो सब देवों का एक ही अधिदेव है उसी परमात्मा की, हम उपासना करें ॥ ८ ॥

मानो हिंसीज्जनिता यः पृथिव्या
यो वा दिवं सत्यधर्मा जजान ।
यश्चापश्चन्द्रावृहतीर्जजान
कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥ ९ ॥

(अर्थ) जो पृथिवी का जनिता है, जिस ने आकाश को भी पैदा किया, जिसने चमकते हुए प्रकृति कणों को दूर तक फैलाया है वह सत्य और धर्म का स्वामी हम को दुःख न देवे, उसी परमात्मा की हम उपासना करें।

प्रजापते न त्वदेतान्यन्यो
विश्वाजातानि परिता बभूव ।
यत्कामास्ते जुहुमस्तन्नो अस्तु
वयं स्याम पतयो रयीणाम् ॥ १०॥

(अर्थ) हे सब प्रजा के स्वामी ! तुझ से अन्य कोई इन सब उत्पन्न पदार्थों का पति और नियन्ता नहीं है ! जिन कामनाओं से हम तेरी प्रार्थना उपासना करते हैं वह हमारी होवें और हम सम्पत्तियों के स्वामी होवें ॥ १० ॥

अथर्व वेद काण्ड ४ सूक्त १६

बृहन्वेषामधिष्ठाता अन्तिकादिव पश्यति ।
यस्तायन्मन्यते चरन् सर्वं देवा इदं विदुः ॥

(अर्थ) इस सब जगत् का अधिष्ठाता परमेश्वर मानो पास से सब को देखता है। जो छिप कर फिरना मानता है उस सब को परमेश्वर जानता है ॥१ ॥

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति
यो निलायं चरति यः प्रतंकम् ।
द्वौ संनिषद्य यन्मन्त्रयेते राजा
तद्वेद वरुणस्तृतीयः ॥ २ ॥

(अर्थ) जो खड़ा है, वा चलता है, और जो छिपता है, जो लेट कर चलता है— दो बैठ कर जो गुप्त मन्त्रण करते हैं, वरुण परमेश्वर जो सब जगत् का राजा है इस सब को जानता है—वह यहां तीसरा है ॥ २ ॥

उतेयं भूमिर्वरुणस्य राज्ञ
उतासौ द्यौर्बृहती दूरे अन्ता ।
उतो समुद्रो वरुणस्यकुक्षी
उतास्मिन्नल्प उदके निलीनः ॥ ३ ॥

(अर्थ) यह सब भूमि उसी राजा वरुण की है, उसी का यह बड़ा आकाश है जिस के सिरे दूर हैं। समुद्र और अन्तरिक्ष उस की कोख हैं और वह इस पानी की छोटी बूंद में भी छिपा है ॥ ३ ॥

उत यो द्यामति सर्पात् परस्तान्न,
समुच्यातै वरुणस्य राज्ञः ।
दिवस्पशः प्रचरन्ति दमस्य
सहस्राक्षा प्रतिपश्यन्ति भूमिम् ॥ ४ ॥

(अर्थ) जो कोई आकाश से भी परे चला जावे पर वह राजा वरुण से नहीं बच सकता। उस के सहस्र आंखों वाले चर सब संसार में घूमते हैं और सारी भूमि को देखते हैं ॥ ४ ॥

सर्वं तद्राजा वरुणो विचष्टे
यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात् ।
संख्याता अस्य निमिषो जनानां
मक्षानिव श्वघ्नी निमिनोति तानि ॥

(अर्थ) जो कुछ पृथिवी और आकाश के बीच है और जो इस से भी परे है राजा वरुण उस सब को देखता है। उसने मनुष्यों के पलक मारने तक की संख्या करली है और सब उस के नियम में हैं। ५ ।

ये ते पाशा वरुण सप्त सप्त ।
त्रेधातिष्ठन्ति विषिता रुशन्तः ॥
छिनन्तु सर्वे अनृतं वदन्तः
यः सत्यवाद्याति तं सृजन्तु ॥ ६ ॥

(अर्थ) हे वरुण तेरे दृढ़ पाश जो सात सात और तीन प्रकार फैले हुए हैं वे झूंठ बोलने वालों को फांसें और जो सत्य बोलता है उसको छोड़ देवें ॥ ६॥

इन मन्त्रों में बार बार एक शब्द आया है। क्या उन को देखते हुए कोई वेदों के एक ईश्वरवाद पर सन्देह करसकता है अथवा उन में अद्वैतवाद बतला सकता है। इन मन्त्रों में ईश्वर को सब जगत का पति राजा और अधिष्ठाता, सब का रचने वाला, सबको देखने वाला, सब का उपास्य जिससे सब प्रार्थना की जावें इत्यादि कहा है। अद्वैत वाद के अनुकूल सब कुछ ब्रह्म ही है, कोई दूसरा पदार्थ ही नहीं। इन वेद मन्त्रों में इस सिद्धान्त की गन्ध भी नहीं।

वेदों में एक ईश्वर का प्रतिपादन स्पष्ट है, पर क्या वैदिक ईश्वर वाद ऐसा ही है जैसा कि बाइबल या कुरान में है ? कदापि नहीं। वह उन से बहुत उच्च और शुद्ध है। बाइबिल और कुरान में ईश्वर को एक बड़े मनुष्य के समान वर्णन किया है। बाइबिल के उत्पत्ति पुस्तक (अध्याय ४ आयत ८–१९) में लिखा है कि ईश्वर "दिन में ठंडक के समय अदन के बाग़ में टहलता था।" उसने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

"आदम को पुकारा", आदम ने उसका शब्द "सुना", इन बातों को हमारे ईसाई भाई कदाचित् अलंकार कहकर टाल देवें। पर बाइबिल में जो ईश्वर का वर्णन है उसमें मनुष्यों की मानसिक दुर्बलताएं भी स्पष्ट पाई जाती हैं। उत्पत्ति अ० ६ आ० ६ ७ में लिखा है कि मनुष्य को रचकर 'पछताया', 'उसके हृदय में दुःख हुआ", और उसने कहा—"मैं मनुष्य और पशु दोनों का नाश कर दूंगा, और रेंग कर चलने वालों और हवा में उड़ने वालों का। क्योंकि मैं पछताता हूं कि क्यों मैंने उनको बनाया", उनके नाश करने को ईश्वर ने एक बड़ा तूफ़ान रचा परन्तु कदाचित् इस विचार से कि सबको नाश करके फिर पछताना न पड़े उसने नूह को आज्ञा दी कि वह एक नौका बनावे और कटुम्ब के हर जीव जन्तु के एक जोड़े को उसमें बिठला कर रक्षित रक्खे। तूफ़ान आया और शेष सब मनुष्य और जीव जन्तु नष्ट होगये। तूफ़ान का अन्त होने पर नूह ने अग्नि द्वारा बलि दी। ईश्वर ने उसका "सुगन्ध सूंघा" और कहा—"मैं फिर कभी मनुष्य के कारण पृथिवी को शाप न दूंगा, क्यों कि मनुष्य का चित्त लड़कपन के कारण बुरा है (क्या ईश्वर पहले इस बात को नहीं जानता था ?) और जैसा कि मैंने किया फिर कभी सब जानदार को न मारूंगा" (उत्पत्ति का पुस्तक अ० ८ आ० २१)

अपने किए काम पर पछताना और दुःख सहना, उसको नाश करने का प्रण करना और फिर पछताना-इत्यादि ऐसी बातें हैं जो किसी धीर और शान्त मनुष्य को भी शोभा नहीं देतीं, ईश्वर में ऐसे दोष आरोपण करना उसका अपमान करना है।

बाइबिल में लिखा है कि ईश्वर ने मनुष्य को अपने रूप में बनाया। वास्तव में बात यह है कि बाइबिल के कर्त्ताओं ने ईश्वर को मनुष्य के रूप में बना लिया है। सब मनुष्य अपने विचारों के अनुकूल ईश्वर की कल्पना करते हैं? एक जर्मन विद्वान् ने लिखा है कि यदि भैंस ईश्वर विषयक विचार कर सकती तो वह ईश्वर को एक बड़ी हृष्ट पुष्ट भैंस के समान समझती और उसका, एक रम्य स्थान में जहां सुन्दर हरी घास और जल से भरे हुए ताल हों, रहना मानती। ईश्वर विषयक ज्ञान सब संसार में वेदों ही के द्वारा गया है। परन्तु जहां मनुष्य अपनी कल्पना शक्ति को ऐसे दुर्गम विषयों में लगाता है, वहां ऐसे ही दोष आजाते हैं। वेदों में जो ईश्वर का ज्ञान है उसमें मानुषी विचार और कल्पनाओं का मेल नहीं, इसलिए वह सब प्रकार के दोषों से रहित और शुद्ध है।

११-१ १७ गंगाप्रसाद

क्या वेद में एक ईश्वर की कल्पना है ?

(ले० पं० श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी)

यूरपानुगामी पाठक समझते हैं कि (१) वेद में जड़ पदार्थ तर्गत तत्वों की पूजा Nature worship है, (२) एक ईश्वर की कल्पना वेद मन्त्रों में अगर किसी स्थान पर भासमान होगी तो वह मंत्र सूर्य के विषयक ही होगा, (३) अथवा वह मंत्र आधुनिक होगा। तात्पर्य 'नेचरवर्शिप' भूत पूजा के सिवाय वेद मंत्रों में कुछ नहीं हैं। एक ईश्वर की उच्च कल्पना उपनिषदों के समय से उत्पन्न हुई है। यह कल्पना वेद के समय नहीं थी।

इस मत का विचार मैंने इस निबन्ध में करना है। मैंने ऊपर लिखा है कि यूरप के वेद के पण्डित होते हैं और हमारे देश के यूरपानुगामी पाठक होते हैं। दुर्दैव से ऐसी बात होने के कारण ही हमारे देश का स्वत्व नष्ट हो गया है और भारतवासियों की पर प्रवृत्ति हो गई है। हमारी आजकल की शिक्षा प्रणाली परकीय होने के कारण हमारे अन्दर की स्वतन्त्र विचार करने की शक्ति नष्ट हो गई है और हमारे देश के विद्वानों की अवस्था यहां तक पहुंची है कि वे यूरप के विद्वानों के लिखे हुये पुस्तकों के पाठक बने हैं। इस लिये गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली के समान स्वदेशीय स्वतन्त्र शिक्षा के केन्द्र स्वदेश में शतशः उत्पन्न करने चाहिएं और उनके द्वारा स्वातन्त्र्य प्रिय विद्वान् उत्पन्न करने चाहियें, इतना कहने के सिवाय यहां रहा नहीं जाता।

ऊपर दिये हुये यूरपीयमत के तीन विभाग हैं-(१) वेद मन्त्रों में भूत पूजा है, (२) एक ईश्वरवाद के मन्त्र सूर्य्य विषयक हैं, तथा (३) वे आधुनिक हैं।

इस प्रकार जिन्होंने अपना मत बनाया है, उनका मत खण्डन करना कई प्रकारों से अशक्य है क्योंकि अगर हमने कोई मन्त्र एकेश्वरोवाद का सामने धर दिया तो झट् वे कह सकते हैं कि "अः! यह मन्त्र पीछे से बना है।" जिन्होंने भाग जाने के लिये इतना बड़ा रास्ता रक्खा है तथा जो लोग मन्त्रों का प्राचीनत्व तथा अर्वाचीनत्व सिद्ध करने का बोझ अपने सिर पर लेने के लिये तैय्यार नहीं होते हैं परन्तु उस मत का आश्रय लेकर अपना बचाव करते हैं; उनका खण्डन किस प्रकार किया जाय। तथापि आर्यों का काम युद्ध से भागने का नहीं है, शत्रु

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

[illegible] अथवा धर्मात्मा हो उसके साथ दो हाथ अ[illegible]य करते हैं। उन्हें प्रतिस्पर्धी जहां भागेंगे वहां जाकर उनका मुक़ाबला करना है। मुक़ाबले से हटना नहीं।

यूरप के विद्वान् तथा हम भी मानते हैं कि उपनिषदों में एकेश्वरीवाद है तथा उपनिषदों का तात्पर्य एक ईश्वर की सिद्धि में है।

ईशा वास्यमिदं सर्वम्०

यह ईशावास्योपनिषद् का पहिला मंत्र है जिस में "ईश" (एक ईश्वरनें) इस एक वचन वाले शब्द ने सिद्ध कर दिया है कि, 'सब पदार्थों में एक ईश्वर भरा है'। इस में एक ईश्वर की कल्पना भरी है परंतु कहा जाता है कि यह उपनिषद् का वाक्य है!

यह वाक्य निःसंदेह उपनिषद् में हैं परन्तु जिस ईशावास्य उपनिषद् का यह वाक्य है वह सब का सब उपनिषद् यजुर्वेद के चालीसवें अध्याय में आया है। इस के ऊपर प्रतिपक्षी यह कहते हैं कि "तुम्हारा यजुर्वेद आधुनिक है"!!!

अच्छा! अगर हम अथर्ववेद के आधार देंगे तो वे कहेंगे, कि जहां यजुर्वेद आधुनिक हुआ वहां अथर्ववेद का प्राचीनत्व कैसा माना जासकता है! अथर्ववेद तो सब से नया है। बस। इस प्रकार यजुर्वेद, सामवेद तथा अथर्ववेद युरपीयनों के मतानुसार आधुनिक होने से अप्रमाण हुए। अर्थात् इन में एकेश्वरवाद का कोई मंत्र आगया तो वह भी अप्रमाणही समझा जायगा।

अच्छा भाई! ऋग्वेद तो हमारे पास हैना? उसी से देखेंगे कि एकेश्वरीवाद सिद्ध होता है वा नहीं!

तदेवाग्नि स्तदादित्यस्तद्वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः॥ यजुर्वेद

"वही (ईश्वर) अग्नि, आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आपः प्रजापति इन नामों से प्रसिद्ध है" यह एकेश्वरीवाद का मंत्र यजुर्वेद में आने से आधुनिक माना जाता है! इस लिए इसी अर्थ का ऋग्वेद का मंत्र देते हैं:—

इंद्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गुरुत्मान्॥ एकं सद् विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः॥

ऋ०१।१६४।४६॥

"एक ही ईश्वर को अनेक नामों से बुद्धिमान पुकारते हैं, इद्र, मित्र, वरुण अग्नि, सुपर्ण, यम, मातरिश्व इत्यादि"

नाम अनेक हैं परन्तु नामी एक है, शब्द अनेक हैं परन्तु भाव एक है, मंत्र अनेक हैं परन्तु माननीय एक है यही भाव उक्त मंत्र का है। यह मंत्र ऋग्वेद में है इतना ही नहीं परन्तु ऋग्वेद के पहिले मंडल में है। ऋग्वेद के आरंभ में हैं। आरम्भ में इस लिए दिया है कि वेद के पाठक भूल न करें और अनेकदेवतावाद वेद के सिर पर मारने न लगें। परन्तु शोक की बात है कि इस मंत्र को भी यूरप के विद्वान् आधुनिक मानते हैं। कहते हैं कि ऐसे कई मंत्र ऋषियों ने नये बनाकर बीच में घुसेड़ दिये हैं! अर्थात एकेश्वरीवाद के सब मंत्र वेद में नये हैं। अगर ये लोक किसी एक स्थान को प्राचीन मानेंगे तो उस स्थान से एकेश्वरीवाद का मंत्र हम निकाल सकते हैं। परन्तु जो मन्त्र हम पेश करते हैं उसको झट से कहते हैं कि यह आधुनिक है।

दूसरा आक्षेप इस मंत्र के विषय में यह है कि यह मंत्र अग्नि अथवा सूर्य के विषयक है न कि परमात्मा के विषय का है। मान लीजिये कि यह मंत्र अग्नि के विषय का है। अगर यह मंत्र अग्नि का वर्णन करता है तो उसका अर्थ निम्न लिखित होगा:—

"एक ही अग्नि को विद्वान् लोक इन्द्र, मित्र, वरुण, सुवर्ण, यम, मातरिश्वा इन नामों से पुकारते हैं।"

मातरिश्वा नाम वायु का है। जो लोक अग्निको वायु कहेंगें उनको (विप्राः) विशेष बुद्धिवाले कैसा कहा जा सकता है? उसी प्रकार सूर्य को भी जो वायु कहेंगें उनको भी कैसा बुद्धिमान माना जायगा। उक्त मंत्र में कहा है कि "विशेष बुद्धि वाले लोक [विप्राः] एक ही सत्य वस्तु को बहुत प्रकार से बोलते हैं:—

विप्राः एकं सत् बहुधा वदन्ति।

अर्थात् युरपीयों के मतानुकूल मानने से कोई बुद्धिमत्ता उक्त मंत्र में प्रकट नहीं होती है इस लिये उनका कहना माननीय नहीं समझा जा सकता।

इस मंत्र के साथ साथ ऋग्वेद के कुछ मंत्र पेश करते हैं वे भी देखने योग्य हैं।

अहं रुद्रेभिर्वसुभिश्चराम्य हमादित्यैरुत विश्वदेवैः। अहं मित्रावरुणो भा बिभर्म्यहमिन्द्राग्नि अहमश्विनो भा।

ऋ० १०।१२५।१

"मैं रुद्र, वसु, आदित्य तथा संपूर्ण देवता इनके साथ संचार करता हूं। मैं मित्र, वरुण, इन्द्र, अग्नि, अश्विनौ इनका भरण-पोषण करता हूं।"

इस मंत्र में अग्नि, इन्द्र आदि देवताओं के पोषक शक्ति का स्पष्ट उल्लेख है। जो शक्ति इन्द्र, अग्नि आदि देवताओं का पालन पोषण करती है उसी को ईश्वर कहते हैं और उसी का वर्णन उक्त देवताओं के मंत्र यहां उद्धृत नहीं किये जा सकते।

मंत्र में "अहं" इस एक वचनी शब्द से हुआ है अर्थात् वह शक्ति एक है यह सिद्ध हुआ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जो लोक यह कहते हैं कि वेद में केवल भौतिक अग्नि की पूजा है उनको निम्न मंत्र देखना चाहिए:—

वैश्वानरं मनसाऽग्निं निचाय्य ० ॥

ऋ. ३ । २६ । ७

(वैश्वानरं) विश्व का नेता (अग्निं) अग्नि को (मनसा) मन से अथवा मन में (निचाय्य) प्रदीप्त करके० ॥

इस मंत्र में मन से या मन में अग्नि को प्रदीप्त करना लिखा है। जो अग्नि चूल्हे में जलता है उसको मन में कैसे प्रदीप्त करना है इस का विचार पाठकों को करना चाहिए। अर्थात् यह मंत्र "जगन्नियन्ता परमेश्वर का मन से चिन्तन करने को" बताने वाला है। इस में अग्नि शब्द का परमेश्वर ऐसा ही अर्थ है। तथा:—

इन्द्रो यातोऽवसितस्य राजा।

ऋ० १ । १ । ३२ । १५

"(इन्द्रः) इन्द्र (यातः) चलनेवाले तथा (अवसितस्य) स्थावर न हिलने वाले (अर्थात् स्थावर जंगम सर्व सृष्टि का) राजा है"

यह मंत्र इन्द्र का वास्तविक स्वरूप बताता है। विचार कर कोई यह नहीं कह सक्ता है कि यहां इन्द्र शब्द परमात्मा वाची नहीं है।

इसी प्रकार हम बता सकते हैं कि वेद में आया हुवा देवताओं का वर्णन मुख्यतया परमात्मा का वर्णन है और गौणतया अन्य विषयों का है। और इसी हेतुसे "इन्द्रमित्र" इस ऊपर दिये हुए मंत्रमें "विद्वान लोक एक सद्वस्तु को अनेक नामों से बोलते हैं" ऐसा कहा है।

अब जो यह कहना कि ऐसे सब मंत्र आधुनिक है वह चिन्त्य है। इस लिये कि जो बात "इन्द्रमित्र"० इस मंत्रने कहा है वही बात इन्द्र अग्नि आदि देवताओं के जिनमें वर्णन आये हैं उन मंत्रों में भी आयी है इसकी साक्षी,, वैश्वानरं मनसा" ,,इन्द्रो यातो" इन मन्त्रों से ऊपर दी हुई है। विस्तार भयसे अन्यान्य

अर्थात् वैदिक सूक्तों का भाव एकेश्वरवाद की सिद्धि में ही है न कि अनेक देवता वाद की सिद्धि में, यह बात सिद्ध हुवी ० ॥

श्रीपाद दामोदर सातवलेकर

वैदिक-ईश्वर-वाद

(ले० पं० घासीराम एम. ए.)

डार्विन का विकासवाद पश्चिमी वैज्ञानिक संसार में इतना व्याप्त हो गया है कि विज्ञान के सभी विभाग उसके रंग में रंगे हुए दिखाई देते हैं—मानो उसने सब विचारकों को स्वप्नायित कर दिया है जैसे एक स्वापक सिद्ध (Hypnotiser) अपने कृत्याधीन मनुष्य के मस्तिष्क पर अधिकार जमाकर उस से जो चाहे सो कहाता और कराता है ऐसे ही डार्विन ने सब वैज्ञानिकों के मस्तिष्कों पर अपने विचारों का आवरण डाल दिया है और सब वही बोली बोल रहे हैं, जो डार्विन उन से बुलवानी चाहता है। विकासवाद का नाद इतना विश्व व्यापी हो गया है कि हर कहीं उसका ही अनुवाद सुनाई दे रहा है। न केवल सृष्टि-तत्त्व की खोज करने वाले ही डार्विन के शिष्य बन गये हैं किन्तु इतिहास वेत्ता, दार्शनिक, मानस-शास्त्र के पण्डित, अर्थ-शास्त्र के ज्ञाता इत्यादि भी इसी प्रयत्न में हैं कि कोई ऐसा उपाय निकालें जिस से वह भी उसकी शिष्य मण्डली में सम्मिलित होने का सौभाग्य प्राप्त कर लें, और इस अभिप्राय से वह स्वयं ही अपनी २ शिखा काटकर डार्विनिये बन रहे हैं—और विकासवाद के कार्यक्षेत्र को सर्वव्यापी बनाने के लिये हाथ पैर मार रहे हैं। सारांश यह कि इन विचारकों के मत में क्रमशः विकास का सिद्धान्त केवल निरिन्द्रिय और सेन्द्रिय सृष्टि पर ही लागू नहीं है प्रत्युत मनुष्य की मानसिक शक्तियों, विचारों, रीति नीति इत्यादि भी उसी जगद्धात्री माता की गोद में पलकर हुई और हो रही हैं—जैसे एक सजीव और सचेष्ट आरम्भिक कोष्ठ से क्रमशः उन्नति होकर वानर बना और फिर उसकी पूछ गिर कर नर बन गया ऐसे ही मनुष्य के समस्त विचार और व्यवहार भी अव्यक्त और अपक्व अवस्था से उन्नति करते २ व्यक्त और पक्व हुए हैं—डार्विन के चेले जब अपनी विजय यात्रा करने निकले तो किसी ने किसी विचार को विजय करने की ठहराई और किसी ने किसी को—इस विश्वव्यापी संग्राम में यह असम्भव था कि ईश्वरवाद पर आक्रमण न होता और यह दिखाने का यत्न न किया जाता कि एक परमेश्वर का विचार और विश्वास भी अनघड़ बेडौल विचारों से आरम्भ होकर सहस्रों वर्षों में इस सुघड़ सुडौल अवस्था में पहुंचा है जिस में आज हम उसे देखते हैं—

एक चेलेराज ने इस पक्ष को सिद्ध करने के लिए एक पुस्तक लिखी है—उस पुस्तक का नाम है, "इवोल्यूशन आफ़दि आइडिया आफ़ गाड"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वा ईश्वर के विचार का विकास" और लेखक का नाम है प्रापट ऐलन—इनका कथन है कि जंगली लोगों में जीवित और मृत मनुष्य में भेद करने की बुद्धि ही नहीं होती—उन में मनुष्यों की मृत्यु बहुधा शत्रुओं के हाथों से वा हिंस्र पशुओं से वा अन्य कारणों से होती है इस लिये वह यह नहीं समझ सकते कि मृत्यु स्वभावतः भी हो सकती है—वह देखते हैं कि जब वह रात्रि को सोते हैं तो मृतप्राय हो जाते हैं—कभी २ ऐसा भी होता है कि किसी आघात के कारण मनुष्य मृत तुल्य हो जाते हैं परन्तु सोए हुए मनुष्य फिर उठ बैठते हैं आहत मनुष्यों की मूर्छा टूट जाती है और वह जी उठते हैं, इस कारण जब कोई मनुष्य वास्तव में मर जाता है तो भी जंगलियों को यही विश्वास रहता है कि वह फिर जी उठेगा और वह उसके शव को कई २ दिन रखे रहते हैं और जब उसे गाड़ते हैं तो भी उसके लिए ऐसा प्रबन्ध करते हैं कि मानो उसे जीवितों की न्याईं खान पान आदि सब सामग्री की आवश्यकता होगी और उस के साथ खाना, वस्त्र आदि उसकी क़बर में रखते हैं—स्वप्नावस्था में मनुष्य स्वप्न देखता है वह सोया पड़ा है परन्तु कार्य्य जीवित जागृत मनुष्यों के समान कर रहा है इस से जंगली लोग देह से पृथक् एक सत्ता जीवात्मा के अस्तित्व को कुछ २ समझने लगते हैं और भूत प्रेत की सृष्टि होने लगती है और यह विश्वास उत्पन्न हो जाता है कि भूत सुख दुःख दे सकता है और इस प्रकार उसकी पूजा का आरम्भ हो जाता है—जब एक वार यह अंकुर मनुष्य के हृदय में उत्पन्न हो गया कि शरीर से अलग कोई अदृश्य वस्तु है तो ईश्वर के विचार की नींव रखदी जाती है और फिर अनेक कारणों से अनेक देवी देवताओं की सृष्टि खड़ी हो जाती है जो शनैः शनैः एक-ईश्वर वाद में परिणत और लीन हो जाती है—हर्बर्ट स्पेन्सर भी यही कहते हैं, बल्कि वह तो इस से भी बढ़ कर कहते हैं कि संसार के सारे मत और धर्म भूत प्रेत की पूजा से ही आरम्भ हुए हैं—इस युक्ति शृंखला को बांधने के लिए उनके पास यह सूत्र है कि वह संसार की असभ्य जातियों के विचार व्यवहार को देख कर बताते हैं कि देखो अमुक जाति में यह विचार है अमुक में यह, इन में यह समानता है कि यह भूत प्रेत की पूजा करते हैं यह लोग जंगली और असभ्य हैं इस लिए इन को हमें सभ्यता के विकास की आरम्भिक अवस्था में रखना चाहिए—जो जातियां आज सभ्य कहलाती हैं वह भी ऐसी अवस्था में रही होंगी यह विद्वान् सभ्य जातियों के पूर्व इतिहास से भी ऐसे २ उदाहरण निकाल रखते हैं जिनसे उनके सिद्धान्त की पुष्टि हो—पुराने यूनानियों, मिश्रियों में ही क्या आर्यों में भी भूतों की पूजा के चिन्ह दिखाने का यत्न करते हैं—इस प्रकार वह अपने मनोनीत मत का प्रतिपादन करते हैं—यदि इन विकासवादियों का सिद्धान्त मान लिया जाय तो किसी ईश्वर प्रदत्त ज्ञान की आवश्यकता नहीं रहती और बाह्य तथा अन्तर्जगत् आत्मा ही और परमात्मा सब ही प्रकृति की विभूति मात्र रह जाते हैं—ईश्वर भी एक मानुषी विचार का पुतला रह जाता है जिसे मनुष्य कभी किसी ढंग का कभी किसी रूप और रंग का बनाता रहता है—

अब देखना यह है कि ईश्वर विषय में यह विकासवाद ठीक है या नहीं—जो कल्पनाएं और युक्तियां विकासवादी देते हैं उनमें कुछ तत्व भी है या केवल वह उनके विचारों की स्वयं जात स्फूर्त्तियां हैं—इस से पहिली बात इस विषय में यह है कि मनुष्य का आत्मिक जगत् विकासवाद के अधिकार के अन्तर्गत है या नहीं—सूक्ष्म विचार करने से प्रतीत होता है कि बुद्धि और उस के कार्य विकासवाद के नियमों का शासन स्वीकार नहीं करते—यह एवर्ट वालेस साहब को भी जो डार्विन के समान ही विकासवाद के स्वतंत्र आविष्कर्त्ता समझे जाते हैं अपने ग्रन्थों में जो उन्हों ने अपनी आयु के अन्तिम भाग में लिखे थे और जिन्हें उनके सूक्ष्मविचारों का परिणाम जानना चाहिये स्पष्ट शब्दों में स्वीकृत है—वह कहते हैं कि विकासवाद के सिद्धान्त के अनुसार हमें मनुष्य के विचारों में उत्तरोत्तर वृद्धि मिलनी चाहिये—परन्तु हमें वह नहीं मिलती। यह ठीक है कि उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दियों में बहुत से नूतन आविष्कार हुए हैं जिनसे प्रकृति के ऊपर मनुष्य का अधिकार बहुत विस्तृत हो गया है परन्तु इस से यह सिद्ध नहीं होता कि मनुष्य की विचार शक्ति में कोई अलौकिक उन्नति हो गई है। महाभारत के कर्त्ता या प्राचीन तत्व वेत्ताओं के बुद्धि वैभव को किसी अंश में भी आधुनिक विद्वानों के बुद्धि कौशल से नीची श्रेणी का नहीं कह सकते। यदि वालेस साहब से विकासवाद के आचार्य यह स्वीकार करते हैं तो एक प्रकार से विकासवाद की जड़ ही खोखली हो जाती है और फिर यह कहते नहीं बनता कि मनुष्य के विचार विकास शास्त्र के नियमों के अनुकूल उत्तरोत्तर उन्नति

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

करते चले आए हैं। मैं समझता हूँ कि स्पेन्सर आदि की यह कल्पना भी, कि जंगली जातियों के मानसिक विचार की आरम्भिक अवस्था में गिनने चाहिये ठीक नहीं हैं—यह कल्पना इस लिए की जाती है कि जंगली जातियों के विचारों से अधिक भद्दे विचार हमें अन्य कहीं नहीं मिलते—और जब हमें आज कल उस आरम्भिक अवस्था का कोई उदाहरण नहीं मिलता जो वास्तव में आदिकाल के मनुष्यों की रही होगी तो जंगली जातियों को ही आदिकाल के मनुष्यों का प्रतिनिधि मान लेने में कोई हानि नहीं है—परन्तु यह कहना ठीक नहीं जंचता। प्रथम तो यह कैसे सिद्ध होता है कि आज कल की जंगली जातियां आदिकाल से अब तक किसी अन्य जाति के सम्पर्क में नहीं आईं; क्योंकि जब तक यह सिद्ध न हो तब तक उन के ज्ञान को जिस अवस्था में भी वह अब है शुद्ध नैसर्गिक ज्ञान नहीं कहा जा सकता। दूसरे यह क्यों न माना जावे कि यह जातियां जिन्हें आज कल जंगली कहा जाता है किसी समय में सभ्य रही होंगी और किन्हीं बड़े विकल्पों के कारण वह सभ्य समाज से अलग हो गये हों और सभ्यता के उपकरणों के जाते रहने से वह अपने पूर्व ज्ञान को खो बैठी हों और इस अधोगति को पहुंच गई हों जिस में वह आज दिखाई पड़ती हैं—यदि आज एक योरोपियन जाति को कोई विजेता उसके देश से निकाल कर किसी मरुस्थल में भेज दे जहां न लोहे की खान हो न कोयले की, जहां न कृषि का व्यवसाय हो सकता हो न अन्य व्यापार, जहां उसका संसर्ग किसी सभ्य जाति से न रहे तो क्या यह समझना कठिन है और क्या यह निराधार अनुमान होगा कि वह शनैः शनैः एक ऐसी असभ्य और अशिक्षित जाति बन जायगी जो केवल वन के पशुओं को मार कर अपना पेट भरने वाली उनके चर्म से अपना देह ढांपने वाली होगी जिस के पास न कोई पुस्तक होगी न कोई साहित्य, न हतियार होंगे न कला आदि। जिसकी वाणी जो कभी सुसंस्कृत और बहु शब्दमयी थी थोड़े से बचे खुचे टूटे फूटे शब्दों में परिमित होगी। तीसरे हम नित्यप्रति देखते हैं और इतिहास में ऐसे उदाहरण हमें मिलते हैं कि मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि तब होती है जब नीची श्रेणी के ज्ञान का उच्चश्रेणी के ज्ञान से संसर्ग होता है। जब यूनानियों और रोमनों का संसर्ग हुआ तो रोम में ज्ञान की वृद्धि हो गई। पश्चिम और पूर्व

[illegible] ने ऊंचे ज्योतिर्मय द्युलोक को सभ्यताओं के टकराने [illegible] को दृढ़ किया उसी ने चमत्कार प्रत्यक्ष ही दीख रहा है। जूलू जैसे जंगली मनुष्यों में भी हमें ऋजुएट दृष्टिगोचर हो रहे हैं। यदि विकासवाद ठीक है तो यह नितान्त असम्भव होना चाहिए कि एक ऐसी असभ्य जाति में उत्पन्न बालक एकदम ऐसी उन्नति कर सके कि वह थोड़े ही काल में इंग्लिश विश्वविद्यालय से बी.ए. की डिगरी प्राप्त करले। इन सब बातों पर ध्यान करने से हमें तो यही परिणाम निकालना पड़ता है कि मनुष्य का ज्ञान परम्परागत है। दीपक से दीपक जलता है ऐसे ही एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से ज्ञान का उपार्जन करता है। यह शृंखला ऐसे ही चली आई है। अन्त में मानना पड़ेगा कि सृष्टि के आरम्भ में जब कोई अन्य मनुष्य ज्ञान दाता न था तब मनुष्य ने समस्त ज्ञान के भण्डार परमेश्वर से ही ज्ञान उपलब्ध किया और फिर उसने उसको बढ़ाया।

विकास वादियों की यह स्थापना है कि मनुष्य का ज्ञान उत्तरोत्तर उन्नत होता आया है। ईश्वर विचार का अंकुर प्रेतों की पूजा से आरंभ हुआ, फिर उसमें अनेक देवी देवताओं की पूजा के बुद्दे, उहनियां लगीं और उसकी उन्नति की पराकाष्ठा एक ईश्वरवाद पर हुई इत्यादि। अब यदि हम यह सिद्ध कर सकें कि जो विचार ईश्वरवाद में अत्युच्च कोटि के समझे जाते हैं और जिनको परिमार्जित और संस्कृत करते २ मनुष्य के सहस्रों वर्ष लगे हैं वा वेदों में जिन्हें अति प्राचीन काल के मनुष्यों के स्वच्छन्द हृदयोद्गार कहा जाता है उपस्थित थे, तो निस्सन्देह ही विकासवादियों की स्थापना निर्मूल हो जाती है। वेदों से प्राचीन तर पुस्तक संसार में अन्य नहीं हैं—यह यूरप के विद्वानों को भी माननीय है—यह दूसरी बात है कि वह वेदों को ईसा से २००० वा १५०० वर्ष पूर्व का मानते हैं, परन्तु उनके प्राचीनतम ग्रन्थ होने में किसी को अणु मात्र भी विवाद नहीं है—अब हमें केवल यही देखना है कि ईश्वर के विषय में वेद क्या कहते हैं—

वेदों के ऊपर यूरोपियन पण्डित यह दोष लगाते हैं कि उनमें प्रकृति की शक्तियों की पूजा का विधान है। कहीं सूर्य को इन्द्र नाम से उपास्य ठहराया गया है, कहीं नीलिमायुक्त आकाश की स्तुति की गई है, कहीं अग्नि कहीं वायु की प्रशंसा के गीत गाए गए हैं। वेदों की इस प्रकृति पूजा की एक और विशेषता बतलाई जाती है जिसे मैक्समूलर ने हेनोथीज़्म का मनघड़न्त नाम दिया है—वह यह कि जब कभी वैदिक ऋषि किसी देवता की स्तुति करते हैं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वा ईश्वर के विचार का विकास" देवों का देव, है प्राण्ट ऐलन—इनको [illegible] लगते हैं अर्थात् उस क्षण के लिए केवल वह एक देव ही परमेश्वर बन जाता है—उनकी यह कल्पना नितान्त भ्रम मूलक है—वेदों में प्रकृति की शक्तियों की उपासना नहीं—वरन् प्रकृति के एक अधिपति की ही अनन्य भाव से पूजा विहित ठहराई गई है, हां यह अवश्य है कि उसकी स्तुति अनेक नामों से की गई है। वेद में यह बात भी अति स्पष्ट रीति से बता दी गई है कि इन्द्र, मित्र, वरुण, अग्नि आदि सब उसी एक सर्व शक्तिमान, सर्वोपरि विराजमान, स्रष्टा नियन्ता जगत्पति के ही नाम हैं—देखिए इससे अधिक स्पष्ट और क्या हो सकता है—

इन्द्रं मित्रं वरुणमग्निमाहुरथो दिव्यः स सुपर्णो गरुत्मान्। एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्त्यग्निं यमं मातरिश्वानमाहुः।

ऋ० मं० १ सू० १६४ मं० ४६

अर्थात् एक ही अविनाशी त्रिकालवा[illegible]तीत प्रकाशस्वरूप परमात्मा का ज्ञानी जन बहुत प्रकार से वर्णन करते हैं कभी उसे इन्द्र कहते हैं कभी मित्र, वरुण, अग्नि, सुपुर्ण, गरुत्मान्, यम, अग्नि और मातरिश्वा कहते हैं।

तदेवाग्निस्तदादित्यस्तदु वायुस्तदु चन्द्रमाः।
तदेव शुक्रं तद्ब्रह्म ता आपः स प्रजापतिः म० ३२

यह अग्नि आदित्य, वायु, चन्द्रमा, शुक्र, ब्रह्म, आप, प्रजापति नामों से कहा जाता है।

इन स्पष्ट और असंदिग्ध प्रमाणों के होते हुए कौन निष्पक्ष विद्वान् यह कहने का साहस कर सकता है कि वेदों में अनेक देवताओं की उपासना है?

अब ईश्वर विषय में उच्च से उच्च विचारों को लेलीजिए और आप को वह सब वेदों में मिलेंगे-प्रथम इसी विचार को लीजिए कि परमेश्वर एक है। हम साभिमान कह सकते हैं कि परमेश्वर की एकता का प्रतिपादन जिस बल के साथ वेदों में किया गया है अन्य धर्मों में नहीं किया गया—मुसलमान तौहीद अर्थात् परमेश्वर की एकता के विषय में बड़े गर्व से कहते हैं कि केवल कुरान में ही परमेश्वर को वहदहुल्लाशरीक कहा गया है परन्तु वेद के इन मन्त्रों को देखिए और फिर कहिए कि एकता का प्रतिपादन किसी प्रकार भी इस से बढ़कर हो सकता है—

न द्वितीयो न तृतीयस्तुर्यो नाप्युच्यते॥
न पंचमो न षष्ठः सप्तमो नाप्युच्यते॥
नाष्टमो न नवमो दशमो नाप्युच्यते।
तमिदं निगतं सहः। स एष एक एकवृदेकवृत्॥

अथर्व० का० १३ अनुवाक मं०

१६। १७। १८। [illegible]

दूसरा न तीसरा न चौथा परमेश्वर है। न पांचवां न छटां न सातवां परमेश्वर है, न आठवां न नवां न दसवां परमेश्वर है॥ उसी में यह जगत् स्थित है [illegible] सब को सहन करने वाला एक है वह एक [illegible] सब का अधिकरण है वह एक ही है।

इन मंत्रों में परमेश्वर की एकता को इस ढंग से वर्णन किया है कि उस के दो तीन आदि होने का सन्देह ही नहीं होसकता—यह विचार करना तक असंभव होजाता है कि परमेश्वर एक से अधिक है—उस की एकता भी विलक्षण रूप से दर्शाई गई है। यही नहीं कि उस जैसा कोई नहीं बल्कि उस से भिन्न प्रकार का भी कोई ईश्वर नहीं है—पारसी परमेश्वर से भिन्न बुराई के अध्यक्ष अहरमन को और ईसाई मुसलमान शैतान को मानते हैं। वेदों ने इस अनोखे विचार की भी समाप्ति करदी—परमेश्वर सर्व शक्तिमान और सर्व नियन्ता है उसके सामने पाप की शक्ति ठहर नहीं सकती इतना ही नहीं—वह सदा एक रस रहता है—यह नहीं कि आज उसकी अवस्था कुछ है और कल कुछ है; और सब ही उसके आश्रित हैं वह किसी का नहीं। परमेश्वर की एकता का इससे स्पष्टतर प्रबलतर वर्णन हो नहीं सकता—अन्य धर्म जो इस बात का बड़ा गर्व करते हैं कि उनके धर्म में परमेश्वर की एकता की शिक्षा दी गई है इस वर्णन को पढ़ कर देखें और सोचें कि उनके धर्म की शिक्षा वैदिक धर्म की शिक्षा से इस विषय में कितनी पीछे रहजाती है—

अब फिर हम अपने विकासवादी मित्रों से प्रश्न करेंगे कि जब आप के मतानुसार परमेश्वर की एकता का विचार एक उच्च कोटि का विचार है, जिसे मनुष्य क्रमशः उन्नति करते २ ही प्राप्त कर सकता है तो यह विचार इतनी शुद्ध अवस्था में, जिस में यह हमें आज भी अन्य धर्मों में नहीं मिलता, वेदों में ऐसे समय में कैसे आया [illegible] कि आप के अनुसार वैदिक ऋषि सूर्य को देख कर नाचते और चांद को देख कर उछलते थे और आनन्द में मग्न होकर सूर्य और चन्द्रादिको ही अपना उपास्य देव मानते थे? ऐसी अवस्था में मनुष्य तो ऐसे उच्चतम विचारों पर स्वयं [illegible] सकता था अवश्य ही किसी अन्य से उसे [illegible] होंगे—किस से मिले इस का उत्तर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सिवाय इस के कुछ नहीं बन जाता कि उसी एक से जिस की एकता का ऐसा अद्वितीय वर्णन है—

केवल यहीं पर बात समाप्त नहीं होती जितने भी ऊंचे से ऊंचे और सूक्ष्म से सूक्ष्म विचार ईश्वर के विषय में कोई मनुष्य पेश कर सकता है उन सब का अस्तित्व वेदों में पाया जाता है—

परमेश्वर भौतिक शरीरधारी नहीं है यह कितनी पूर्णता के साथ इस मन्त्र में दर्शाया गया है—

स पर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणमस्नाविरꣳ शुद्ध-मपापविद्धम् । कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्या-थातथ्यतोऽर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्यः समाभ्यः ॥

यजु० अ० ४० मं० ८ ॥

वह परमेश्वर सब में ओत प्रोत है—तेजोमय, बलिष्ठ भौतिक शरीर न रखने वाला, अच्छेद्य, अभेद्य, नाड़ी नस के बन्धन से रहित, शुद्ध पाप से सर्वथा मुक्त सर्वदा पृथक, ज्ञानमय, सर्वज्ञ सबके मन का साक्षी सर्वोपरि विराजमान सब में परिपूर्ण अनादि अजन्मा है उसने अपनी अनादि प्रजा जीवों के हितार्थ अपनी सनातन सत्य विद्या का उपदेश किया है—

इस मन्त्र ने उन लोगों के लिए, जो ईश्वर की मूर्त्ति बनाकर पूजते या उसका अवतार लेना सिद्ध करते हैं तिल धरने की जगह नहीं छोड़ी मानो उनके मुंह पर ताला लगा दिया—इस मन्त्र का एक २ शब्द परमेश्वर के शरीर धारण करने का अत्यन्त निषेध करता है—

कई लोग कहते हैं कि परमेश्वर कर्त्ता नहीं—यदि उसे कर्त्ता माना जावेगा तो उस में बहुत सी उपाधियां लग जायंगी—परन्तु यह बात भूल है—सारा जगत् ही उस की अनन्त शक्ति और क्रिया का प्रतिक्षण जीता जागता प्रत्यक्ष प्रमाण है—वही सारे जगत् का उत्पादक और धारण करने वाला है।

सूर्य्याचन्द्रमसौ धाता यथा पूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ॥

वही परमेश्वर सब का स्रष्टा है उसी ने सूर्य और चन्द्र को पृथिव्यादि लोकों को अन्तरिक्षस्थ द्यौःस्थ लोक नक्षत्र तारादि गण को उत्पन्न किया जैसा उसने पहिले कल्प में किया था—

येन द्यौरुग्रा पृथिवी च दृढा येन
स्वः स्तभितं येन नाकः । योऽन्तरिक्षे
रजसो विमानः कस्मैदेवाय हविषा विधेम—
मानो हिꣳसीज्जनिता यः पृथिव्या
योवा दिवं सत्यधर्माजान यश्चाप-
श्चन्द्रा बृहतीर्जजान कस्मैदेवाय हविषा
विधेम ॥ ऋ० मं १० । सू० १२१ ॥

उसी परमेश्वर ने ऊंचे ज्योतिर्मय द्युलोक को धारण किया, उसी ने पृथ्वी को दृढ़ किया उसी ने नक्षत्रादि तारागणों को स्वस्वकक्षा में स्थापित किया वही अन्तरिक्ष में लोकों का माप कर्त्ता है उसी सुख स्वरूप को हमें उपासना करनी चाहिये—

वही सत्यक्रिय सत्यज्ञान परमेश्वर पृथ्वी का उत्पन्न करने वाला, वही द्युलोक का उत्पन्न करने वाला, वही संसार के बनाने की सूक्ष्म सामग्री का उत्पन्न करने वाला है, वह हमारी रक्षा करे उसी सुख स्वरूप परमेश्वर की हमें उपासना करनी चाहिये।

परमेश्वर के सर्व व्यापकत्व सर्व द्रष्टा सर्व कर्त्ता सर्वाधार होने का अति सुन्दर वर्णन अगले मन्त्र में देखिये—

विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बा-हुरुत विश्वतस्पात् । सं बाहुभ्यां धमति सं पत-त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥

वह परमेश्वर सब को देखने वाला सर्व अन्तर्यामी सब को धारण करने वाला सर्व रक्षक सर्वगत और सब जगह गति रखने और क्रिया करने वाला है वही एक द्युलोक और पृथ्वीलोक प्रकाशमय और प्रकाश रहित लोकों का उत्पन्न करने वाला है।

परमेश्वर का मनुष्य के साथ क्या सम्बन्ध है यह इस मंत्र में दिखाया है।

सनो बन्धुर्जनिता स विधाता धामानि वेद भुवनानि विश्वा । यत्र देवाऽअमृतमानशाना-स्तृतीये धामन्नध्यैरयन्त ॥

परमेश्वर हमारा बन्धु, पिता, उत्पन्न करने वाला नियन्ता है वह सारे नाम जन्म और स्थान सब लोकलोकान्तरों का रचियता और जानने वाला है. उसी में और उसी की कृपा से ज्ञानी पुरुष मोक्ष सुख को प्राप्त होते हैं।

श्रीयुत् बाबू केशवचन्द्रसेन कहते थे कि परमेश्वर की पिता रूप से तो अन्यों ने भी उपासना की है परन्तु परमात्मा की मातृ शक्ति का हम ही ने अनुभव किया है-उनका यह कथन निर्मूल ही था क्योंकि वेदों में परमात्मा को जगत्पति ही नहीं जगन्माता भी कहागया है।

त्वं हि न पिता वसो त्वं माता शत-क्रतो बभूविथ । अधा ते सुम्नमीमहे ॥

हे सब में वास करने वाले सब को अपने में बसाने वाले अनन्त क्रिया युक्त परमेश्वर ! आप ही हमारे पिता हैं आप ही हमारी माता हैं आप से ही हम सुख की याचना करते हैं।

परमेश्वर की सर्व व्यापकता का इस से मनोहर, ललित और हृदय ग्राही वर्णन और क्या हो सकता है—

यस्मिन् चरित यच्च वक्ष्यति यो निलायं चरति प्रजासु । द्वौ संनिषद्य यन्मंत्रयेते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

राजा तद्वेद वरुणस्तृतीयः॥ अथर्व कां०४ सू०१६मं०२। सर्वं तद्राजा वरुणो विचष्टे यदन्तरा रोदसी यत्परस्तात्। संख्याता अस्य निमिषो जनानामक्षानिवश्वघ्नी निमितीति तानि॥५॥

जो मनुष्य चलता है या खड़ा होता है या छिपता है या सोता है या जागता है, राजा वरुण [परमेश्वर] उसे जानता है जहां दो मनुष्य बैठकर गुप्त रीति से बातचीत करते हैं वहां तीसरा राजा वरुण उपस्थित रहता है।

द्यावा पृथ्वी के बीच में और उस से परे जो कुछ भी है परमेश्वर उन सबको देखता है उसने मनुष्यों के पलक मारने खोलने को गिन रक्खा है—जैसे खोलने वाला पासे को फेंकता है वैसे ही परमात्मा सब की स्थिति करता है—[लोक में भी प्रसिद्ध है, पासा पड़े सो दाव—राजा करे सो न्याव (न्याय)—ऐसे ही मन्त्र में खेलने वाले का उदाहरण देकर यह बताया गया है कि नियमों के बनाने में परमेश्वर किसी के अधीन नहीं है वह स्वतन्त्र है जैसे खिलाड़ी का दाव पर कोई अधिकार नहीं ऐसे ही परमात्मा के नियमों पर किसी का अधिकार नहीं है]।

परमात्मा के स्वरूप का वर्णन और मोक्ष की प्राप्ति का उपाय नीचे लिखे मन्त्र में दर्शाया है।

वेदाहमेतं पुरुषं महान्त मादित्यवर्णं तमसः परस्तात्। तमेव विदित्वाऽतिमृत्यु मेति नान्यः पंथा विद्यते ऽयनाय यजु०अ०३१।मं०१८

मैं इस सब ब्रह्माण्ड में व्यापक महान् परमात्मा को जो प्रकाश स्वरूप और अन्धकार से परे है जानूं उसी को जानकर मनुष्य मृत्यु के पार जासकता है मृत्यु के पार जाने का और कोई मार्ग नहीं है परमात्मा प्रकाश स्वरूप हैं—प्रकाश पवित्रता, ज्ञान, सात्विकता आदिगुणों का द्योतक है। परमात्मा के स्वरूप का इस से उत्तम वर्णन और कोई हो ही नहीं सकता कि उसको प्रकाश स्वरूप कहा जाय। बाइबिल भी उसे प्रकाश ही कहती है कुरान भी उसके जलाल का ही वर्णन करता है— परन्तु वेदों में परमात्मा को आदित्य वर्ण कहने में कुछ और ही रहस्य है—वेदों के एक ही शब्द में अनेक अर्थ रहते हैं— आदित्य के अर्थ हैं अखण्डनीय अर्थात् एक रस। नित्य परमात्मा सदा एक रस रहता है उस के खण्ड नहीं हो सकते—सूर्य का नाम भी आदित्य है—सारे संसार का जीवनाधार सूर्य है उसी के कारण हमारे सारे व्यवहार सिद्ध होते हैं—सूर्य ही तेज और तपन का स्रोत है—वही मेघ बनाता और जल बर्षाता है— जल न हो तो पृथ्वी जल जाय—वनस्पति उत्पन्न न हों और प्राणी मात्र का विध्वंस हो जाय—सूर्य की किरणें जितने अद्भुत गुणों से भरी हैं—सूर्य ही विद्युत का पुंज है—परमेश्वर भी सारे संसार का प्राणाधार है—वही सारे ज्ञान का स्रोत—सारी क्रियाओं का आधार सारे सुखों का दाता है जैसे सूर्य सारे ग्रहों उपग्रहों को नियम में रखने वाला है वैसे ही परमेश्वर सारे ब्रह्माण्ड का नियन्ता है इत्यादि भाव परमेश्वर को आदित्य वर्ण कहने से हृदयंगम होते हैं। मोक्ष का केवल एक ही मार्ग है और वह परमेश्वर का ज्ञान है तिलक छाप या नाम के जाप से मुक्ति नहीं मिलती न तीर्थों के स्नान से न धन के दान से न किसी व्यक्ति पर ईमान लाने से न किसी देवी देवता पर बलिदान चढ़ाने से। प्रकाश के पास जो जायगा वह स्वयं ही प्रकाशित हो जायगा। अन्धकार और प्रकाश का सामीप्य हो ही नहीं सकता। जीव के लिए मुक्ति का एक ही द्वार है और वह ब्रह्मज्ञान है। यह उपदेश किसी अन्य मत में मिल ही नहीं सकता क्योंकि वहां तो सम्प्रदायों के स्वामियों की कृपा और आश्रय के बिना स्वर्ग के फाटक खुल ही नहीं सकते—

और देखिए

यो भूतंच भव्यं च सर्वं यश्चाधितिष्ठति। स्वर्यस्य च केवलं तस्मै ज्येष्ठाय ब्रह्मणेनमः

परमात्मा सुख स्वरूप है वही इस सब का अध्यक्ष है जो कुछ हो चुका है और जो कुछ होगा—वही सब से ज्येष्ठ है उसी की उपासना करनी योग्य है।

कहां तक लिखा जाय सारे वेद उसी जगत्पिता प्रभु की महिमा का सहस्र मुख से गान कर रहे हैं—इस छोटे से लेख में उस का सहस्रांश भी नहीं समा सकता।

इस लेख का प्रयोजन केवल यही दिखाना है कि वैदिक ईश्वर वाद अपूर्व अद्वितीय और अनुपम है जिसकी कोई आस्तिक धर्म समता नहीं कर सकता कहीं भी ऐसे ईश्वर के स्वरूप उसके ज्ञान बल और क्रिया का ऐसा शोभन सुन्दर युक्ति-युक्त, शुद्ध और बुद्धि का तृप्ति कारक वर्णन नहीं मिलता जैसा वेदों में मिलता है—न कोई आधुनिक और प्राचीन विद्वान ही अब तक ऐसा हुआ है जिसने परमात्मा का कोई नया गुण निकाल कर दिखाया हो जो वेदों में न पाया जाता हो—कोई पुस्तक भी वेदों से प्राचीन अभी तक किसी के हस्तगत नहीं हुई और जब इस प्राचीन तम ग्रन्थ में ऐसे उच्चतम और श्रेष्ठतम विचार हैं जिन्हें मैक्समूलर जैसे कहर ईसाई तक उन्नीसवीं शताब्दी के विचार कहने को बाध्य हुए हैं—विचारों की पराकाष्ठा कर दी गई है तो फिर हर कोने में क्रमशः उन्नति के ढूंढने वाले विकाश वादियों की स्थापना मिट्टी में मिल जाती है और वेदों के जादू से उन का बना बनाया महल, जिसे न जाने बेचारों ने कितने परिश्रम से बनाया था, भूमिशायी हो जाता है।

वैदिक ईश्वर वाद पर ही विश्वास लाने और वैदिक ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना से ही मनुष्य क्लेशों ताप दूर हो सकते हैं—ईश्वर आशीर्वाद दें कि वैदिक धर्म का सारे संसार में प्रचार हो और आर्यजाति को बलदें कि वह उस के प्रचार में संलग्न हों। ॥ ओ३म् शम् ॥

—०—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

किसी सस्ती मुक्ति है !

योगी ही मुक्त हो सकता है क्योंकि विज्ञान की प्राप्ति उसी को होती परन्तु योग का मार्ग ऋषि मुनियों बहुत कठिन बतलाया है। वहां तप जीवन व्यतीत करना पड़ता है। इन लोग घबराते थे। अब योग का बड़ा मार्ग दक्षिण (मद्रास प्रान्त) में निकला है। "कुम्भाकोनम" नगर से एक महाशय ने "सच्चिदानन्द सरस्वती स्वामी" ने अंग्रेज़ी में मुझे पत्र लिखा है, जिस का शारांस यह है—"मैं कंजीवराम" (नगर) के उपनिषद् मठ का संन्यासी हूं। और सारे भारतवर्ष में १६ वर्षों से घूमता रहा हूं। अब १६ वर्ष के भ्रमण के पश्चात मुझे कुम्भाकोनम् में एक स्थान मिला है जहां योग, बिना समाधि अवस्था में ले जाय, जाग्रत अवस्था में ही सिखाया जाता है। कुछ परिश्रम नहीं करना पड़ता। गृहस्थ कर सकते हैं। किसी प्राणायाम की आवश्यकता नहीं। हमारा गुरु एक स्वस्थ है। बिना औषधि के रोगों का नाश किया जाता है और योग का साधन सिखाया जाता है। हमारा उस्ताद, जीवित गुरु कुम्भाकोनम का एक ज़मींदार है। मैं समझता हूं कि आपके गुरुकुल को योग साधन से बहुत लाभ पहुंचेगा। मैं योग साधन के प्रार्थियों के लिए कुछ सूचनाएं भेजता हूं।"

ऊपर लिखित भाव विचित्र लश्करी अंग्रेज़ी में प्रकट किए गए हैं और साथ सूचनाओं का पर्चा है। (१) प्रार्थी की आयु २१ से ५५ तक हो (२) आवश्यक नहीं कि प्रार्थी अपनी सम्प्रदाय के कर्मकाण्ड का त्याग करे, (३) माता पिता की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक है। देवियों के लिए पति की आज्ञा (४) प्रार्थी की आजीविका और सम्पत्ति पर्याप्त होनी चाहिए (५) उसे को घृणित वा दीर्घ कालीन रोग नहीं होना चाहिए, (६) चिन्ताओं से मुक्त होना चाहिए (७) सदाचारी होना चाहिए (८) १० वर्षों से पहले उसे अभ्यास नहीं छोड़ना होगा (९) उसे प्राणायाम और समाधि और गायत्री के अतिरिक्त बीजाक्षरों का जप छोड़ना होगा (१०) प्रार्थना पत्र का फ़ार्म भर कर भेजना होगा जिस पर एक साधन सम्पन्न इस योग स्कूल के चेले के हस्ताक्षर हों। (११) दीक्षा की फ़ी ब्राह्मण पुरुष के लिए ७) स्त्री के लिए ३॥) अब्राह्मण पुरुष के लिए १५) स्त्री के लिए ७॥)-दीक्षा के समय यह फ़ीस दी जानी चाहिए (१२) वार्षिक चन्दा सब अगाऊ देना होगा। तीन प्रकार के चन्दे हैं २४) वा १२) वा ६) वार्षिक। चन्दा छठे, तीसरे महीने वा प्रति मास भी दिया जा सकता है (१३) स्कूल चलाने के लिए और जो भी दान दिया जाय, धन्यवाद पूर्वक स्वीकार होगा [१४] मतलब यह नहीं है कि जो भी स्कूल में दाखिल हों वे कुम्भाकोनम के रहने वाले हों। वे कहीं भी रहें, परन्तु दीक्षा के समय अवश्य आवें। वर्ष में दो बार उनकी उपस्थिति आवश्यक है जिसकी सूचना दी जाया करेगी।

मुझे ऊपर का पत्र और नियमावली क्यों भेजेगए? इस का उत्तर सरस्वती स्वामी के पत्र का आरम्भक वाक्य देता है:—

"Yesterday when I had been to Conjeveram that Munshi Ram the starter and Patron of the Kangra Gurukula is trying to become a Sanyasin and going to seclusion I dont agree with him in the request." इसके दो दिन पहले भी इन्हीं महाशय का निम्नलिखित पत्र आया था—"Just now I heard of mine that you are willing to give up the work you have undertaken and, renounce the world by taking the Samiasin Asram. I wish to advice you the contrary. I shall try to explain the yoga in physical practice which will prolong your lifewith out any disgust." साथ ही गुरुकुल के मेम्बरों में नियम फैलाने की प्रार्थना थी। इस विलायती अंग्रेज़ी का अनुवाद मेरी शक्ति से बाहर है। इस योग स्कूल से मैं तो कुछ लाभ उठा नहीं सकता क्योंकि मेरी आयु ५५ से बढ़ कर ६० वर्षों का भी उलंघन कर गई है। और फिर योगस्कूल वाले मुझे अब्राह्मण बतलाकर १५) दीक्षा की फ़ीस मांगेंगे और मेरी न आजीविका कुछ है और न ही सम्पत्ति—तब पर्याप्त का तो प्रश्न ही क्या होसकता है।

ऊपर के पत्र को पढ़ कर क्या आर्यसमाज के सभासदों को जाग नहीं उठना चाहिए? देश में कितनी अविद्या फैली हुई है, वेद के प्रकाश को कितनी काली घटाएं छिपा रही हैं और हम हैं कि गहरी नींद में, घोड़े बेच कर, सो रहे हैं। भारत के अन्धेरे कोनों में भी नहीं, जहां नई रोशनी का प्रकाश है वहां भी नरनारी ठगे जा रहे हैं। दुःख का रोग संसार में फैल रहा है, यदि उस के निदान और चिकित्सा के लिए सद्वैद्य नहीं खड़े होंगे तो पत्तेबाज़ों की चांदी होगी और सरल हृदय नरनारी ठगे जायंगे। अनार्य सम्प्रदाएं योग के सच्चे साधनों से सर्वसाधारण को विमुख करके अपने हाथ रंग रहे हैं और आर्य्य पुरुष प्रमाद वश हो कर आपस में झगड़ रहे हैं। सच्ची उपासना से विमुख हो कर जितने दुःख भारत सन्तान ने उठाए हैं उनसे अब भी मुक्ति के चिन्ह दिखाई नहीं देते। सच्चे धर्म के प्रचार बिना दुःख को कैसे दूर कर सकेंगे? परन्तु क्या वाणी द्वारा ही धर्म प्रचार होगा? जिस प्रचार के साथ मन और कर्म का योग नहीं होता वह कब फलीभूत होता है?

आर्य समाज मन्दिर साधन के लिए विशेष आश्रम होने चाहिए थे, परन्तु ईंट, पत्थर और लकड़ी में क्या कुछ जीवित शक्ति होती है। समय था जब आर्य्य मन्दिरों में जीवन मार्ग के पथिकों को शिक्षा मिलती थी। उस समय वे सजीव आश्रम थे। इस समय तो बालकों और बालिकाओं की पाठशालाओं से जब आश्रम मुक्त होते हैं तो उनमें अधिकारों के लिए ही संग्राम दिखाई देता है। आर्य्यवीर दृढ़ संकल्प करलें कि आर्य मन्दिरों की काया पलट जाय तो कल से ही अन्धकार दूर होने लगेगा। [जिज्ञासु]

—:o:—

प्रचारक का वार्षिक मूल्य

सर्वसाधारण से ... ... ३)
विद्यार्थियों से ... ... २॥)
छः मास का १॥।) तथा तीन मास का १)
(एक वर्ष से न्यून समय के लिये विद्यार्थियों के साथ भी मूल्य में कमी न होगी।)
भारत विभिन्न देशों से ... ... ३॥।)

प्रचारक में विज्ञापन छपाई

सर्वथा बन्द कर दी गई है। केवल लोकहित के कोई २ विज्ञापन बिना मूल्य छापे जाते हैं। विज्ञापन केवल प्रचारक के साथ बांटे जा सकते हैं।

(१) पहले देखे बिना प्रचारक में कोई क्रोड़-पत्र नहीं बंट सकता।

(२) क्रोड़-पत्र में आधा कालम समाचार होना चाहिये। क्रोड़-पत्र के आधे सिरे पर सद्धर्म-प्रचारक का नाम और बंटने की तिथि प्रबन्धकर्ता से पूछ कर निश्चित कीजिए।

साधारण क्रोड़-पत्र आधे तोले तक १२)
एक तोले तक १५)
विशेष पत्र-व्यवहार प्रबन्धकर्त्ता से कीजिए।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गुरुकुल का मेला और रेलों का प्रबन्ध

मुरादाबाद के डिस्ट्रिक्ट ट्रैफ़िक मैनेजर ने जब स्वयं पूछा कि गुरुकुल के मेले पर कितने आदमी आयंगे तो मैंने यह समझा कि गतवर्ष की तरह इस वर्ष भी वे स्पेशल ट्रेनों का प्रबन्ध करना चाहते हैं। परन्तु अब पता लगा कि यह भी एक चाल थी। अमरोहा, पीलीभीत, देवबन्द, गङ्गोहादि स्थानों से पत्र आरहे हैं जिन से पता लगता है कि संयुक्त-प्रान्त के कुछ ज़िलों के कलेक्टरों द्वारा तहसीलों में रोवेकार जा रही हैं कि लोगों को गुरुकुल के मेले पर जाने से रोका जावे, क्योंकि कोइले की कमी के कारण पर्याप्त ट्रेनें नहीं चल सकतीं। मुझे बड़ा शोक है कि साहेब ट्रैफ़िक मैनेजर ने मुझे सीधा लिखने के स्थान में ऐसी टेढ़ी चाल से काम लिया। पंजाब प्रान्त से इस प्रकार की कोई शिकायत नहीं आई, परन्तु मुझे दोनों ओर के रेलवे मैनेजरों ने कुछ उत्तर नहीं दिया। सारांश यह है कि जो ट्रेनें इस समय चल रही हैं उनके बिना किन्हीं नई स्पेशल ट्रेनों के चलने की संभावना नहीं हैं। इस समय जब भयंकर युद्ध के कारण गवर्नमेन्ट को सेना भेजने के लिए बराबर ट्रेनों की आवश्यकता है, विशेष आन्दोलन स्पेशल ट्रेनों के लिए करने से कुछ लाभ न होगा।

तो क्या इस कारण गुरुकुल के वार्षिकोत्सव पर यात्री आना बन्द कर देंगे। मेरी सम्मति यह है कि यदि सावधानी तथा बुद्धिमत्ता से काम किया जावे तो जलसे की रौनक और धन की आय में कुछ भी कमी न होगी।

यात्रियों को गुरुकुल भूमि में कैसे पहुंचाया जावे? इस प्रश्न का उत्तर सुगम है। बिजनौर, मुज़फ़्फ़रनगर, सहारनपुर और मेरठ के ज़िलों से तो यात्री पैदल और बैल गाड़ियों पर बड़ी सुगमता से आसक्ते हैं। तीर्थयात्रा का पुराना ढङ्ग भी यही है। शेष स्थानों से आने वाले सज्जनों में जो सरकारी नौकर नहीं, वे उत्सव के आरम्भक दिन से दो तीन दिन पहले चल कर बड़ी सुगमता से पहुंच सक्ते हैं। ऋतु ऐसी सुहावनी होगी कि कपड़ों का अधिक बोझ उठाने की आवश्यकता न होगी। जिन्हें ईस्टर की छुट्टियों से पहले अवकाश न मिले वे कुछ कष्ट सहन करके भी पहुंच जावें। कुछ भी करना पड़े—छुट्टी लेनी पड़े, मार्ग का कष्ट सहन करना पड़े—परन्तु रेलवालों की टेढ़ी नीति को परास्त करके यहां पहुंचने का अवश्य प्रबन्ध करना चाहिए।

गुरुकुल के लिए पर्याप्त धन कैसे आजावे? जो ढङ्ग श्री प्रकाशाचार्य जी ने लाख रुपया जमा करने का बतलाया था, वह तो केवल काग़ज़ पर ही रहेगा। कारण यह कि उसके साथ मेरा सम्बन्ध ही बाधक है। मुझे याद है कि एक बार मेरी बिमारी पर मेरे स्मारक की तहरीक हुई। उस पर शायद साढ़े बत्तीस रुपये नक़द जमा हुए थे। फिर मेरे प्रचारक पत्र से अलग होने पर स्मारक के लिए अपील हुई। उस पर शायद ५००) से कुछ अधिक धन वसूल हुआ और दो हज़ार की कमी रहने पर परीक्षा भवन न बन सका। अब उन्नति होगी तो शायद ७००) वसूल हो जावें। ऐसे ढङ्ग से गुरुकुल का भरण पोषण नहीं हो सक्ता। मुझे विश्वास है कि अन्य वर्षों की तरह इस बार भी वार्षिक निर्वाह के लिए पर्याप्त धन इकट्ठा हो जायगा। परन्तु एक और विधि धन एकत्र करने की है। विशेष ट्रेनों का प्रबन्ध न होने के कारण बहुत से उत्सुक सज्जन रेल में स्थानाभाव होने से न आ सकेंगे। वे सब यदि इस यात्रा में व्यय करने के लिए सङ्कल्प की रक़म का तीन चौथाई भाग भी गिन कर मनीआर्डर द्वारा भेज दें तो सहस्रों रुपए इस प्रकार गुरुकुल कोष में भेज सक्ते हैं। परन्तु सौ बात की एक बात यह है कि चाहे आ सकें चाहे न आसकें, जो भी कुछ दे सकें वह बीमा रस्टिरी करा के वा मनीआर्डर द्वारा इस लेख को देखते ही भेज दें।

पंजाब प्रान्त के यात्रियों से निवेदन है कि अपने यहां के आने वाले सज्जनों की संख्या लिख कर गुरुकुल में भेजने के स्थान में "मैनेजर नार्थ वेस्टर्न रे[illegible] नाम लाहौर भेज दिया करें। सम्भ[illegible] कि आप लोगों के पत्रों को पढ़[illegible] मैनेजर महाशय का हृदय कुछ [illegible] जाय और वह आपकी मनोकामना [illegible] करने में सहायक हो जायं। इस [illegible] वाय और कुछ नहीं हो सक्ता।

वार्षिकोत्सव सम्बन्धी

आने वाले सज्जनों में मद्रास के पं[illegible] ष्णाचार्य [illegible] ए०, २ अप्रैल को [illegible] जावेंगे, उसी समय के लगभग पं० [illegible] पाठक पहुंचेंगे, श्री महात्मा गांधी [illegible] में सम्मिलित होने का [illegible] प्रयत्न कर रहे [illegible] उतारे का प्रबन्ध पूर्ववत् खुला हो [illegible] है। विशेष छप्परों के [illegible] बहुत महा[illegible] ने लिख दिया है [illegible] अपने ख़ेमे भेजना चाहें तो अभी से [illegible] करदें, मालगाड़ी का [illegible] देर से पहुंचता है।

टीनशेड की मरम्मत हो गई। [illegible] पर बड़ा सुन्दर दृश्य हो गया है। [illegible] आर्य्य समाजों ने अपने हिस्से का [illegible] पया नहीं भेजा वे शीघ्र भेज दें।

ऋतु में शीत नहीं रहेगा। कपड़े [illegible] बिस्तरा बहुत ही [illegible] काम [illegible] अधिक बोझ [illegible] की [illegible] नहीं है।

सफ़ाई का प्रबन्ध इस [illegible] उत्तम करने का विचार [illegible] यदि दर्शक स्वास्थ्य के नियमों [illegible] रना अपना कर्तव्य समझ लेंगे [illegible] सहस्रों यात्रियों [illegible] होगा, वहां गुरुकुल [illegible] का बीज न जमा [illegible] यह अन्तिम [illegible] सम्भव न [illegible] यह है कि [illegible] फैलाने वाले [illegible] को उपेक्षा करते हुए [illegible] समझते हुए यदि [illegible] होगे तो कृत-कार्य्यता में कुछ भी [illegible] नहीं है।

[illegible] विष्ठात[illegible]

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ा से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

• ओ३म् •

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

संस्करण (१) { २५ चैत्र सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ६ अप्रेल सन् १९१७ ई० } भाग २८

युद्ध समाचार

...रिका युद्ध में आगया

...की कांग्रेस में व्याख्यान देते ...विल्सन ने घोषणा दी है कि ...और अमरिका परस्पर युद्ध की ...हैं। एक दूसरे का कोई लिहाज़ ...डा० विल्सन के व्याख्यान ...यह है कि जर्मनी के शासकों ...के सब नियमों को तोड़ डाला ...की भलाई के लिए आवश्यक ...नी को इन अत्याचारियों से ...ाय। युद्ध होगा और युद्ध में ...मित्र दल का पूरा साथ देगा।

...रूज़वेल्ट डा० विल्सन को जा... ...री भवन में मिले और युद्ध की ...पर बधाई दी। साथ ही ...की कि कुछ सेना लेकर वे ...जायंगे।

...अमरीका ने आस्ट्रिया से युद्ध ...।

...एक छोटे जहाज़ ने जर्मनी का ...रीन डुबोदिया।

...जर्मनी की सेनाओं को अं... ...ाओं ने कई स्थानों पर पीले ...

...हैं कि जर्मनी और उसके साथी ...ती के प्रस्ताव करने का विचार ...हैं। उन लोगों का ऐसा विचार ...न्हों से जाना गया। आज कल ...के महाराजा, महारानी और अन्य ...चारी कैसर और कैसराइन से मि... ...लिए आये हुए हैं। इससे परखने ...नुमान करने लगे हैं कि अवश्य ...न का नया प्रस्ताव करेंगे। पर... ...लों के अनुमान ठीक भी निकले ...अशुद्ध भी। यह अनुमान भी ...ा निकले?

...मैदान का समाचार है कि ज... ...ग इल्कुल और क्रोवो में भयंकर ...ण कर रहे हैं। जर्मन लोगों ने स्तो... ...नदी को पार कर लिया है—और ...न लोग कहते हैं कि उनकी कुछ ...ों की बड़ी हानि हुई है। माल्डे ...में भी जर्मन लोग दबा रहे हैं। ...गर्मी पूर्व दिशा में भी हो ...है।

उत्सव सम्बन्धी सूचनायें

आज मध्याह्न के समय विभाग

२ से २-४५ तक श्री स्वामी सत्यानन्द जी का उपदेश

२-४५ से ३ तक भजन

३ से ६ तक सरस्वती सम्मेलन में म० रत्नलाल बी० ए० एल० एल० बी० का वर्णव्यवस्था पर आर्य्यभाषा में निबन्ध पढ़ा जायगा।

सभापति उस समय उपस्थित विद्वानों में से कोई व्यक्ति चुने जायगे।

६ से ६ ३० तक भजन

रात्रि के समय व्याख्यान

७ ३० से ८ तक भजन

८ से ९ तक श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज,

९ से १० तक श्री पं० पूर्णानन्द जी

आज रात्रि के समय ८ बजे से गुरुकुल पुस्तकालय में आर्य्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का अधिवेशन होगा।

किसी महाशय की एक घड़ी पड़ी मिली है। जिस महाशय की हो, वह कैम्प-मैनेजर महाशय से जाकर ले लें।

कैम्पमैनेजर महोदय सूचना देते हैं कि इन्क्वायरी आफिस के लिए एक स्वयं सेवक की आवश्यकता है—जो सज्जन यह कार्य करने को तय्यार हों वे मैनेजर साहिब के पास जाकर सूचना दें।

पुस्तक ग्राहकों को सूचना

सद्धर्मप्रचारक कार्यालय की सब पुस्तकें सद्धर्मप्रचारक की दूकान पर मिल जाती है। महात्मा जी के ट्रैक्ट, पं० इन्द्र जी की नयी पुस्तकें तथा वैदिक ईश्वरवाद आदि की इच्छा रखने वाले उन्हें उत्सव मण्डप के द्वार पर प्रचारक की दुकान पर से ले सकते हैं। प्रबन्धकर्ता

नया अवसर—नया ढंग

प्यारे वाचक वृन्द! यह नया रूप हमने क्यों धारण किया है, इस प्रश्न का उत्तर देने की विशेष आवश्यकता नहीं जंचती। नये समय नई रीतियां नये उपाय चाहते हैं। हमारे लिए सालभर में एक विशेष अवसर गुरुकुलोत्सव है। नया रूप कौन धारण नहीं करता। चारों ओर आँख उठाकर देखो, अपने प्यारे वसन्तराज का आगमन सुन मधुर गुणमयी प्रकृति ने थोड़ा नहीं—सम्पूर्ण शरीर ही बदल डाला है। पेड़ों के पुराने पत्ते झड़ गये—नई कोंपलें फूल पड़ीं, वन उपवन नए ही नए रंग दिखाने के ढंग बना रहे हैं। प्रेमी सज्जनों! गुरुकुल का वार्षिकोत्सव और फिर वसन्त के दिनों में! सोने में सुहागा सा प्रतीत होता है। ऐसे समय पर भला सम्पादक को प्रचारक के जीवन में एक नया ढंग दिखाने की इच्छा हो तो उसमें अस्वाभाविक क्या है?

गुरुकुल में आए हुए सज्जनों! हमारे उत्साह का पहला परिणाम लो, हमारे प्रेम की पहलीभेंट लो। यह दैनिक आप को क्या सुनायगा?

१. नित्य के नये युद्ध समाचार।
२. उत्सव सम्बन्धी आवश्यक सूचनायें।
३. गुरुकुलोत्सव का वृत्तान्त

उत्सव की लम्बी प्रस्तावना

कई २ ग्रन्थकार पुस्तक जितनी दीर्घ ही उसकी प्रस्तावना कर दिया करते हैं। इस वर्ष उत्सव की भूमिका लगभग उत्सव जितनी ही दीर्घ हुई है। ३ अप्रैल से ही कार्य प्रारम्भ होगये। उन कार्यों का विवरण पाठक अन्यत्र देखेंगे। इस वर्ष गाड़ियों की गड़ बड़ के भय से दर्शक लोग भी पहले ही आरहे थे। यह अच्छा ही है। मिला जुलाकर एक पूरा सप्ताह भर उत्सव का समारोह रहेगा। यह सप्ताह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्यसमाज का सम्मेलन सप्ताह ही समझना चाहिए। सम्मेलनों के मेलमिलाप के जो लाभ होते हैं, प्यारे पाठकों! गुरुकुलोत्सव से उन लाभों के उठाने का अवश्य यत्न करो।

एक सूचना

जो लोग पुस्तकें ख़रीदना चाहते हैं, उन्हें इतनी सूचना देना आवश्यक है, कि गुरुकुल की पुस्तकों की दूकान के सिवा म० राजपाल की पुस्तकों की दूकान का बहुतसा लाभ भी गुरुकुल को ही जायगा। इसलिए गुरुकुल प्रेमी इन दूकानों से आवश्यक पुस्तक ख़रीदने में वस्तुतः गुरुकुल कोष में ही धन भेज रहे होंगे।

गुरुकुलोत्सव की प्रस्तावनायें

गुरुकुलोत्सव की तय्यारियां दिनों से जारी थीं। पुराने अनुभवी और कृतकार्य उपनिवेशाध्यक्ष [कैम्पमैनेजर] महताज्ञानचन्द्र जी कई दिन से आये हुए थे, कैम्प बन कर तय्यार खड़ा था। ऐसी ही दशा में अप्रैल की ३ सरी तारीख़ आ पहुंची। उस दिन उत्सव के चिन्ह भली प्रकार दिखाई देने लगे।

महापुरुषों का आगमन

उस दिन प्रातः काल की गाड़ियों से अन्य बहुत से यात्रियों के अतिरिक्त कई प्रतिष्ठित सज्जन आये। श्री स्वामी अच्युतानन्द जी और श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और पहले कई दिनों से गुरुकुल भूमि को सुभूषित कर रहे थे। उस दिन श्री स्वामी सत्यानन्द जी और श्री पं० पूर्णानन्द जी पधारे। दो और विशेष माननीय व्यक्ति आये। पं० श्रीधर पाठक जी आर्यभाषा के प्रसिद्ध कवि हैं। आप इस वर्ष आर्यभाषा सम्मेलन के सभापति बनेंगे। पं० कृष्णमाचार्य एम.ए. विद्याभूषण मद्रास के प्रसिद्ध संस्कृतज्ञ हैं और सहृदया के सम्पादक हैं। आप इस वर्ष सरस्वती सम्मेलन की एक बैठक में सभापति के आसन को शोभा देंगे।

ग्रामीणों की पाठशाला

क्या ही आनन्द दायक दृश्य है! किस देश हितैषी का दृश्य इस दृश्य को देख कर उत्साह की उमंगों से भर पूर न होगा। दृश्य क्या है? सज्जनपुरा ग्राम गुरुकुल से लग भग तीन चार मील दूर है। वहां आर्यसमाज कांगड़ी की ओर से एक पाठशाला बनी हुई है। ३ अप्रैल को प्रातःकाल उसी पाठशाला का उत्सव था। गुरुकुल के बहुत से ब्रह्मचारी, कई उपाध्याय अध्यापकगण तथा अनेक अन्य दर्शक भी उपस्थित थे। श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी भी कष्ट उठाकर पधारे थे। ग्रामीण पाठशालाओं के विद्यार्थी खूब शोभायमान हो रहे थे, आरम्भ में गुरुकुल के पं० रामचन्द्र जी के मनोहर भजन हुए। उसके पश्चात् पाठशालाओं के विद्यार्थियों ने प्रार्थना के भजन गाये, और छोटे २ भाषण किये, उस समय ग्राम के बहुत से नर नारी उपस्थित थे। उन लोगों को विद्या के प्रचार में अभिरुचि लेता देख कर आनन्द होता था। अन्त में श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी ने विद्या के लाभों पर कुछ शुद्ध उपदेश दिया, और डाक्टर सुखदेव जी ने ग्रामवासियों से सहायता के लिये अपील की। अपील के उत्तर में ग्राम वासियों ने लगभग १०५) दान में दिये। सज्जनो! इस दान को छोटा न समझिये। सज्जनपुरे का गांव क्या चीज़ है। साथ शामपुर के भी कई लोगों का दान था—किन्तु वह गांव मिल कर बहुत थोड़ा होता है। इन फूंस की झोपड़ियों में से शिक्षा के लिये इतना धन निकाल लेना निःसन्देह समाज के लिये उत्साहवर्धक है। अन्त में मन्त्री ने सब को धन्यवाद दिया और ग्राम वासियों के उत्साह की प्रशंसा की।

पं० कृष्णमाचार्य एम. ए. का व्याख्यान

४ अप्रैल को प्रातःकाल ब्रह्मचारियों तथा कई विद्वानों की उपस्थिति में संस्कृत साहित्य की अनुशीलन शैली पर एक व्याख्यान हुआ। व्याख्यान श्रोताओं के लिये बहुत ही मनोरंजन और उत्साह का हेतु हुआ।

बरेली की पार्टी

४ को प्रातःकाल बरेली से अनाथालय की मण्डली बैण्ड बाजा बजाते हुए आ पहुंची।

मि० पोलक का व्याख्यान

मि० पोलक को आज कौनसा भारत वासी नहीं जानता। आपने कर्मवीर गांधी के साथ मिल कर दक्षिण आ[illegible] सत्याग्रह का पालन किया था, [illegible] ने लखनऊ कांग्रेस के समय रौण्ड[illegible] पदा फाड़ दिया था। आप की धीरता पर भारतवासी मोहित [illegible] अप्रैल की शाम को आप गुरुकुल [illegible] और श्री आचार्य जी के पास [illegible] की। उसी रात आप का ब्रह्म[illegible] और बाहिर के विद्वानों की [illegible] में व्याख्यान हुआ। व्याख्यान में ब्रह्मचारियों को सम्बोधित क[illegible] सामाजिक जीवन की कठिनाइयां सन्मुख रखीं। भारतवर्ष में सम[illegible] करना कितना कठिन है? बहुत [illegible] करने पर भी कोई फल दिखाई न [illegible] किन्तु दृष्टान्त दे कर आपने [illegible] कि हमें यत्न करते जाना चाहिए [illegible] हमारे सामने को उत्पन्न न हो[illegible] हमारे आगे सन्तानों के समय में तो [illegible] होगा ही। सुन्दर भाषा में आ[illegible] क्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह के शहीद जीवनों का वर्णन करते हुए आपने कि 'उनके कार्यों को देख कर अपने जीवन को बनाओ, देश सेवा में अ[illegible] ष्टों को भूल जाओ, वर्तमान युद्ध की निर्देश कर के आपने कहा कि 'संसा[illegible] प्रकृतिमय जीवन ही उसे नाश की लेजा रहा है। धन बुरा नहीं, किन्तु के पीछे भागना मनुष्य को समाज की योग्यता से गिरा देता है।' गुरुकु[illegible] वास के कारण ब्रह्मचारियों का जो प्राप्त है उन का आपने वर्णन किया। गंगा तथा हिमालय के गुणों का अ[illegible] रण करने की प्रेरणा की। महात्मा जी के पति बनने से अपना आदृत होना कहते आपने बतलाया कि 'गुरुकुल आने की स्म[illegible] मुझे तब तक स्मरण रहेगी जबतक [illegible] स्मृति कायम है। व्याख्यान के [illegible] एक ब्रह्मचारी ने एक गीति सुनाई, [illegible] में मि० पोलक के जीवन का और कार्यों [illegible] वर्णन था। अन्त में महात्मा जी ने मि० पोलक का धन्यवाद किया और आ[illegible] की मि० पोलक का गुरुकुल से सम्ब[illegible] स्थायी रहेगा।

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी से मुद्रित तथा प्रकाशित।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ओ३म्

Registered. No. A. 434.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे । यजुः ॥

तिक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

क-संस्करण (३) { २७ चैत्र सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ८ अप्रैल सन् १९१७ ई० } भाग २८

आठ अप्रैल

दीक्षान्त संस्कार

न प्रातःकाल दीक्षान्त संस्कार था। शा और प्रतीक्षा की लहर जो इस प्रातःकाल से पूर्व सारे जनता आया करती है, आज भी घूम रही रों ओर तय्यारियों के चिन्ह दि- ते थे। समय से पूर्व ही सारा नर नारियों से भर गया। समय २ अम्बाले की हनुमान क्लब का ा हुआ और पीछे २ पुराने तथा तकों की पंक्ति उपाध्यक्ष रामदेव ाथ पहुंची। समय पर प्रो० लाल- ने कार्यारम्भ की सूचना दी। उस की अद्भुत शोभा थी। सब से ान पर बीच में सन्यासि मण्डल ासन उनके बांयें गुरुकुल के उपा- डल के साथ ही आर्य्य-प्रतिनिधि क प्रान्त की अन्तरङ्ग सभा के सभ्य ान थे। दाईं ओर पंजाब की आर्य- सभा के सभ्य थे। इनके सामने के प्रधान व्यक्ति, प्रधान रामकृष्ण गुरुकुलाचार्य श्री महात्मा जी वि- थे। बिचले स्थान पर पुराने तथा नये स्नातकों के सामने ी अतिथि सुशोभित थे। यज्ञादि ए स्नातकों को चोले पहिनाए आचार्य जी की ओर से प्रमाण गए। स्नातकों ने संसार सेवा -सेवा की प्रतिज्ञाएं की। जी के उपदेश ने पुराने ये स्नातकों पर अद्भुत दिखाकर दिया। स्नातक बुद्धदेव ने ाय प्याली और जोशदार शब्दों नातकों का संस्था में स्वागत आर के व्याख्यान का मुख्य था कि अब हम सबको वह ने के लिये तय्यार होजाना चाहिए तक आचार्य जी के कन्धों पर ये स्नातकों की ओर से स्नातक ने आर्य जाति की सेवा का हुए उचित उत्तर दिया अन्त में ने और आशीर्वाद के साथ कार्य- माप्तता हुई।

—:o:—

क्या शास्त्रार्थ होगा ?

लोग प्रायः पूछते हैं कि क्या कल शास्त्रार्थ होगा ? इसका उत्तर भला हम क्या दें ? हमारा खुला चेलेञ्ज जा चुका हैं। संतोष दायक उत्तर कोई नहीं आया। हरिद्वार की विद्वत्समिति के मन्त्री कहते हैं कि जब तक गुरुकुल वाले यह न कह दें कि 'अब तक हम लोग शास्त्रार्थों में हारते रहे हैं' तब तक वे ना आयंगे। वस्तुतः बात यह है कि अभी पं० गिरिधर जी के सिर पर से समराले और गुरुमण्डलाश्रम के शास्त्रार्थों का भार उतरा नहीं। पं० केशवानन्द जी कहते हैं कि गुरुकुल शब्द ही अशुद्ध है—हमारा चैलेंज ही ग़लत है फिर शास्त्रार्थ कैसा ? लाहौर की सनातनधर्म-सभा कहती है कि हमें शास्त्रार्थ का अधिकार ही नहीं। हरिद्वार भोलाश्रम के लोग कहते हैं कि वे ऐसी भूमि में शास्त्रार्थ न करेंगे जो केवल आर्य लोगों की हो। बतलाइये—शास्त्रार्थ कैसे हो ? हां, ऐन समय पर कोई आ पहुंचे तो ज्ञात नहीं।

उत्सव कैम्प की सफ़ाई

अब के उत्सवमें एक बात विशेषतया ध्यान योग्य हैं। बाज़ार में और कैम्प में सफ़ाई का उत्तम प्रबन्ध है। इस सफ़ाई के प्रबन्ध में लोगों को भी सहायता देनी चाहिये कैम्प के पास ही पास गन्द न फैलाना चाहिये।

कविता कुसुमाञ्जलि तय्यार है।

गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की उत्तम तथा ललित कविताएं छपकर निकल गईं। आर्य्यसामाजिक उत्सवों पर गाये जाने के लिए उपयोगी संगीत और मनोरञ्जनार्थ अन्य विविध प्रकार की कविताओं का भी एकत्र समावेश है। प्रत्येक आर्य्यसमाज मन्दिर तथा आर्य परिवार में इस पुस्तक की एक प्रति अवश्य होनी चाहिये। लेने में शीघ्रता कीजिये क्योंकि थोड़ी ही प्रतिएं छपाई गई हैं। इस विषम समय में भी ८० पृष्ठ ।-)-५ आने में—यहीं पर गुरुकुल की दुकान से मिलती है। उत्सव पर न पधारने वाले सज्जन भी 'गुरुकुल पुस्तक भण्डार' से मंगा सकते हैं।

—:o:—

गुरुकुल का उत्सव

७ अप्रैल

ऋतु

सप्ताह का समय बहुत ही उत्तम होगया था। सिर पर बादल खड़े थे, किन्तु बरस नहीं रहे थे। वह गर्मी जो शायद बहुत ही दुखदायिनी होती, वहां बिलुप्त हो गई थी। प्रातःकाल की बूंदों ने और भी शान्ति करदी थी। इस प्रकार अनुकूल ऋतु में ... पहर की कार्यवाही प्रारम्भ हुई।

जन संख्या

इस समय पण्डाल का राहस्य उपस्थित था। अभी भजन ही हो रहे थे और पण्डाल नरनारियों से परिपूर्ण था। पण्डाल कहीं से भी खाली नहीं दिखाई देता था। स्त्रियों के बैठने के स्थान बहुत भरे पड़े थे। स्थान भरा होने पर भी स्त्रियां मण्डप से बाहिर फैली हुई थीं मण्डप की दशा देख कर जब ... पर जाते थे, तब और रौनक दिखाई देती थी, वहां भी बहुत खूब ... उपस्थिति थी। बाज़ार के मार्ग पर पहुंचिये, वहां भी रौनक थी। सारी ... का वृत्तान्त देख कर जब कैम्प मैनेजर से पूंछते हैं तो पता लगता है कि 'इस बार हाज़िरी पिछले कई वर्षों से अधिक है।' लोगों की शिकायत है कि रहने को स्थान नहीं मिलता। कई लोग हरिद्वार कनखल को वापिस जा रहे हैं।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

शिक्षा सम्मेलन

शिक्षा सम्मेलन के प्रारम्भ होने की सूचना देते हुए प्रो० रामदेव जी ने बतलाया कि इस सम्मेलन के प्रस्तावित सभापति पं० घासीराम जी किसी कारण से नहीं आसके, अतः सम्मेलन के सभापतित्व का कार्य श्री महात्मा जी के ही सुपुर्द किया जाय। महात्मा जी के आसनासीन होने पर स्त्री कन्याओं के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली प्रचलित करने का प्रस्ताव प्रो० रामदेव जी ने उपस्थित किया। प्रस्तावकर्त्ता महाशय ने स्त्रियों की शिक्षा पर मानसिक शारीरिक और आर्थिक दृष्टियों से विचार करते हुए परिणाम निकाला कि कन्याओं के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही अत्युपयोगिनी है। आपने विशेष बल इस बात पर दिया कि आजकल कन्याओं को जो अंग्रेजी पढ़ाने का फैशन चल गया है वह दूषित है। इस से आर्य गृहस्थों के बिगड़ने का भय है। पं० पूर्णानन्द जी ने उचित शब्दों में आप का अनुमोदन और पं० विष्णुदत्त जी ने समर्थन किया। प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

दूसरा प्रस्ताव गुरुकुल के जीवन के लिए बहुत ही आवश्यक था। वह था २ रुपयों के भागों से वर्ष में १ लाख रुपया एकत्र करने के बारे में था। उसे श्री स्वामी सत्यानन्द जी ने प्रस्तुत किया। माननीय सन्यासी जी ने प्रस्ताव करते हुए बतलाया कि अब तक आर्य जनता गुरुकुल की ओर से निश्चिन्त थी किन्तु अब महात्मा जी के पृथक होने से सब्य उनके कन्धों पर बड़ा भार पड़ता है। इस भार को सुलभता से उठाना किसी रीति से हो सकता है यह रीति बड़ी उत्तम है। श्री लक्ष्मण जी ने इसका अनुमोदन करते हुए कहा कि असभ्य अवस्था में लोग रोज कमा कर खाना पसन्द कर सकते हैं किन्तु उन्नत दशा में लोग स्थिर वृत्ति ही पसन्द करते हैं। दस रुपये किसी को पता भी न लगेंगे और अनायास ही भण्डार भर जायगा। श्रीयुत इन्द्र ने आप का समर्थन किया और प्रस्ताव स्वीकृत हुआ।

तीसरा परस्पर मेल जोल विषयक प्रस्तावक पं० ब्रजनाथ जी ने लम्बी वक्तृता में प्रस्ताव किया, पं० ब्रह्मदत्त जी ने भाव पूर्ण वक्तृता में अनुमोदन किया, राय साहिब डा० श्यामसुन्दर जी ने उचित शब्दों में समर्थन किया और पं० गंगाप्रसाद जी ने संक्षिप्त शब्दों में प्रति समर्थन किया। पं० ब्रह्मदत्त जी की दोहुई यह सलाह प्रायः सबने पसन्द की कि भिन्न प्रान्तों के गुरुकुल महाविद्यालय में भिन्न २ पुस्तकें पढ़ाने का प्रबन्ध करें तथा ब्रह्मचारी एक गुरुकुल से दूसरे गुरुकुल में स्वतन्त्रता ही आसकें इस प्रकार यह शिक्षा सम्मेलन समाप्त हुआ।

देववाणी सम्मेलन

अब देववाणी सम्मेलन प्रारम्भ हुआ। लगभग ४ बजगये थे। महात्मा जी के सभाने पर भी बहुत सी जनता डट गई शेष जनता की उपस्थिति इस सम्मेलन के ऐन योग्य हो गई। प्रारम्भ में ब्रह्मचारियों के प्रस्तावानुमोदन से श्री पं० कृष्णाचार्य एम. ए. सभापति के आसन पर विराजमान हुए और आपने संस्कृत भाषा के निवेदन पर एक कविता पढ़कर सुनाई। पं० विष्णुदत्त जी ने संस्कृत भाषा के विषय में एक आर्य भजन गाया। तदन्तर चार ब्रह्मचारियों के व्याख्यान हुए। व्याख्यानों से स्पष्ट ही प्रतीत होता था कि ब्रह्मचारी खूब संस्कृत बोलसकते हैं। अन्त में गुरुकुल कांगड़ी की षष्ठ श्रेणि, शाखा गुरुकुल कुरुक्षेत्र की सप्तम षष्ठ श्रेणी और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ की चतुर्थ पञ्चम श्रेणी के कुल ब्रह्मचारियों का संस्कृत श्लोकों में परस्पर अन्त्याक्षरी शास्त्रार्थ हुआ। यह कार्य बड़ा मनोरंजक रहा। बहुत देर के बाद इन्द्रप्रस्थ का विजय रहा। अन्त में पं० कृष्णाचार्य जी ने गुरुकुल में संस्कृत की जीवित आयुत दशा पर अत्यन्त हर्ष प्रकट करते हुए लोगों को संस्कृताध्ययन में प्रोत्साहित किया।

—०—

नीचे शिक्षा सम्मेलन के प्रस्ताव प्रतिलिपि दी जाती है—

१. गुरुकुल विश्वविद्यालय को लि[ए] के लिए आवश्यक है कि उसके लिए का स्थिर प्रबन्ध किया जाय। इस द्रव्य की पूर्ति के लिए यह स[भा] आर्य-प्रतिनिधि सभा को सेवा में [नि]म्नलिखित विचार पेश करता है:—

[क] कुछ ऐसे उपदेशक नियु[क्त] जांय जो वर्ष भर भ्रमण करके [ग्रा] सहायकों से दस २ रुपये दान [रू]पूर्वक गुरुकुल की सहायता के लिए [प्रा] करें।

[ख] गुरुकुल-सहायक वे लोग [बना] जायं जो प्रतिवर्ष दस रुपये गुरुकुल लिये देने की प्रतिज्ञा करें।

[ग] यत्न किया जाय कि गु[रु] सहायकों की संख्या दस सहस्र सदा

२—इस सम्मेलन की सम्मति में [आ]वश्यक है कि भिन्न २ गुरुकुलों को पर[स्प]र गहरे और प्रेममय बन्धनों में बांधा [जा] और एक विस्तृत संगठन में लाया [जा] इस विचार को कार्य में परि[णत] करने के साधनों पर विचार के लिए निम्नलिखित सज्जनों की उपसमिति बनाई जाय जो अगले इसी सम्मेलन में अपने निश्चयों सूचना दें।

३—इस सम्मेलन की सम्मति है कन्याओं की शिक्षा पर किसी जाति जीवन अवलम्बित है और गुरुकुल प्रणाली बालकों की भांति उचित वर्तन के साथ कन्याओं के लिए परमोपयोगिनी है। इस लिए यह स[भा] उन आर्य्यसमाज के वर्तमान कन्या पाठशालाओं के संचालकों से निवेदन है कि वे उन शिक्षणालयों में गुरु शिक्षा प्रणाली को प्रचलित करें आगे जो इस प्रकार की संस्थाएं खो जांय उन में भी इसी शिक्षा प्रणाली अवलम्बन किया जाय।

—०—

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

नन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

• श्रीम् •

Registered. NO. A. 434.

सद्धर्म्म प्रचारक

मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे यजुः ॥

प्रवर्त्तक—मुन्शीराम जिज्ञासु

सम्पादक—इन्द्र

नि-संस्करण (२) { २ चैत्र सं० १९७३ वि० { दयानन्दाब्द ३४ } ता० ७ अप्रेल सन् १९१७ ई० } भाग २८

...र्यभाषा सम्मेलन (७ अप्रैल)

...ज प्रातःकाल ७-३० से आर्यभाषा ...लन प्रारम्भ होने को था। समयपर ...त प्रारम्भ हुआ और सभ्यगण स- ...में एकत्र होने लगे। उसी समय ...श में मेघ मण्डल भी एकत्र हो ...देखते ही देखते बूंदें उतर आ ...वर्षा होने लगी। पण्डाल चारों ओ ...लगा और कई लोग घबरा गये ...भजन जारी रहे। वर्षा लगभग तीन ...ाय घण्टे तक जारी रही। उतनी ...क कार्य रुका रहा। बूंदें बन्द होते ...तु अति मनोहर होगई, और श्री ...ा मुन्शीराम जी के प्रस्ताव तथा ...ामदेव जी के अनुमोदन से पं० ...पाठक सभापति के आसन पर ...गये।

...प ने प्रारम्भ में भाषण करते हुए ...भाषा के गौरव का वर्णन किया ...नोहर भाषा में बताया कि भारत ...-भाषा के बिना उन्नति नहीं ...ता। भाषण समयान्तर में मुद्रित

...दनन्तर निम्नलिखित प्रस्ताव स्वी- ...ए:—

...इस सम्मेलन की सम्मति है कि ...एकता के लिए भाषा की एकता ...क है। सारे भारत की एक भाषा ...के योग्य केवल आर्य-भाषा

...देवनागरी लिपि अन्य लिपियों से ...सुबोध और भारतीय भाषाओं ...उपयोगिनी है। भारतवासी ...ो अपनी भाषा लिखने में उसी ...का प्रयोग करना चाहिए।

...यह सम्मेलन सामान्यतया आर्य- ...से औ विशेषतया आर्य्य समाजों ...ा रखता है कि वे अपने सब व्यव- ...आर्य भाषा में ही रखेंगे और अपने ...न्दिरों के ... आर्यभाषा के पुस्तका- ...और वाचनालय खोल कर भाषा ...चार में सहायक होंगे।

...४. (क) यह सम्मेलन समझता है कि सब भारतीय बालकों की शिक्षा का माध्यम मातृ-भाषा ही होनी चाहिये। ऐसा होना असम्भव नहीं है।

(ख) इस सम्मेलन की सम्मति है कि देश में जितनी राष्ट्रीय संस्थायें हैं, उनकी सारी कार्यवाही राष्ट्रभाषा द्वारा ही होनी चाहिये।

—०—

५ अप्रैल

पारितोषिकों को धूमधाम

अब कांगड़ी ग्राम की बारी है। प्रातःकाल से ही नरनारी उपस्थित हो रहे हैं। उत्सव जम रहा है। धीरे २ सन्यासी तथा विद्वज्जन पधारे। कांगड़ी ग्राम की पाठशाला के विद्यार्थियों ने सन्ध्या भजन और भाषण सुनाकर लोगों का चित्त हर लिया। पं० रामचन्द्र जी और म० डोरी लाल के संगीत ने भी खूब ही मनोरंजन किया। पं० गङ्गादत्त जी और पं० पूर्णानन्द जी ने विद्या के लाभों पर कुछ भाषण किया, उनके पीछे ...० जयचन्द्र ने बतलाया कि शिक्षा का असली उद्देश्य जीवन बनाना है। तदनन्तर मन्त्री ने संक्षेप से आर्यसमाज कांगड़ी के शिक्षा कार्य का वर्णन किया और प्रस्ताव किया कि पाठशालाओं के ...कार्य बालकों को श्री पं० श्रीधर पाठक जी पारितोषिक प्रदान करें। उपस्थित जनता ने, जिसमें ग्राम वासी भी सम्मिलित थे, इस प्रस्ताव का तालियों से समर्थन किया और श्री पण्डित जी सभापति के आसन पर पधारे। आपने प्रारम्भ करते हुए कहा कि आज मेरा चित्त बहुत ही आह्लादित हुआ है। मैं उस प्रसन्नता का वर्णन नहीं कर सकता जो मुझे इस कार्य को देख कर प्राप्त हुई है। विद्यार्थियों को पारितोषिक बांटा गया। अन्त में पाठशाला के लिये उसी समय लगभग ६२) प्राप्त हुए। इस उत्सव में मि० पोलक और पं० कृष्णमाचार्य जी भी उपस्थित थे, जो इस प्रकार के ग्रामीणों में शिक्षा-प्रचार को देख कर बहुत प्रसन्न हुए।

कविता का आनन्द

इस वर्ष एक आनन्द दायक कार्य ...ा दिया गया। मिलजुल कर सोचा ...क्यों न एक कविता सम्मेलन भी ...किया जाय। विचार सूझा और फलीभूत हो गया। ५ अप्रैल को दोपहर के समय ...बजे गुरुकुल पुस्तकालय श्रोतागणों से ठसाठस भर गया। कार्यारम्भ में पं० इन्द्र ने प्रस्ताव किया कि कविता सम्मेलन में सभापति का कार्य सम्पादित करने के लिए कविमूर्धन्य पं० श्रीधर जी पाठक से उत्तम व्यक्ति और कहां मिलेगा। अतः आप को ही सभापति बनाया जाय। पं० पूर्णानन्द जी के अनुमोदन पर आप आसन पर विराजे। तदनन्तर आपकी एक गीति से ही प्रारम्भ किया गया, और फिर कई ब्रह्मचारियों और स्नातकों ने अपनी २ कवितायें सुनाईं। कई कवितायें बहुत ही अधिक ...द की गईं। अन्त में सभापति जी की कई कवितायें ब्र० विद्याधर ने गाकर सुनाईं। इस सम्मेलन में बहुत ही आनन्द रहा। सज्जनों का समय सुव्यतीत हुआ। अन्त में सभापति जी का धन्यवाद देकर सम्मेलन समाप्त किया गया।

स्नातक मंडल

रात्रि को पुस्तकालय भवन में स्नातक मण्डल का अधिवेशन हुआ। नए वर्ष के चुनाव के अतिरिक्त कई अन्य उत्तम प्रस्ताव भी स्वीकार किए गए।

प्रचार

रात के समय खूब प्रचार हुआ। भजनीकों ने उत्सव मण्डप के समीप संगीत का बहुत आनन्द रखा।

जनसंख्या

आज सायंकाल तक कैम्प तथा शैडों में उत्सवार्थ आये लोगों की जनसंख्या पांच सहस्र के लगभग हो गई है।

—:०:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

६ अप्रैल

सरस्वती सम्मेलन

प्रातःकाल ७ बजे से सरस्वती सम्मेलन का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में उपाध्यक्ष श्री रामदेव जी ने साहित्य परिषद् के उद्देश्यों आदि का वर्णन किया और कार्यवाही प्रारम्भ होने की सूचना दी। स्नातक धर्मदत्त के प्रस्ताव और ब्र० विद्यासागर के अनुमोदन पर श्री पं० कृष्णमाचार्य एम. ए. सभापति के आसन पर सुशोभित हुए। आपने प्रारम्भ में कुछ श्लोकों द्वारा मंगलाचरण करके अपना संक्षिप्त सा भाषण सुनाया। भाषण में गुरुकुल के और उस के आचार्य जी के विषय में आपने अत्यन्त आदर प्रकाशित की और ब्रह्मचारियों की संस्कृतज्ञता तथा उत्साह की अप्रतिबद्ध शब्दों में प्रशंसा की। तदनन्तर स्नातक अशिमूलक ने कविवर बाण भट्ट पर अपना निबन्ध सुनाया जिस में बाण के समय स्थान चरित्रादि वर्णन के अनन्तर उसके काव्य के गुणदोषों का भली प्रकार विवेचन किया गया था।

निबन्ध के पश्चात् उस पर वादविवाद हुआ। अनेक विद्वानों तथा ब्रह्मचारियों के भाषण हुए। अन्त में निबन्ध लेखक ने उत्तर दिया। सभापति के पाण्डित्यपूर्ण अन्तिम भाषण को सुनकर सभी श्रोतागण गद्गद् प्रसन्न हुए। आपकी भाषण शक्ति और योग्यता का उपस्थित जनता पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

मनोहर उपदेश

मध्याह्नोत्तर २ बजे कार्यवाही प्रारम्भ हुई। उत्तम भजनों के अनन्तर श्री स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का बड़ा ही शिक्षादायक उपदेश हुआ। उपदेश में योग्य स्वामी जी ने अनेक प्रकार की शिक्षाओं के अनन्तर मन की शुद्धि पर विशेष बल दिया। आपने बतलाया कि स्वाध्याय मनःशुद्धि का एक भारी साधन है। अन्त में आप ने लोगों को सब प्रकार से मन तथा आत्मा के बल प्राप्त करने का आदेश किया। व्याख्यान का जनता पर अपूर्व असर पड़ा।

वर्ण व्यवस्था पर निबन्ध

व्याख्यान के पीछे म० डोरीलाल का एक भजन हुआ और तत्पश्चात् सरस्वती सम्मेलन की दूसरी बैठक शुरू हुई। प्रारम्भ श्री प्र० रामदेव जी ने प्रस्ताव किया कि आज के सभापति महात्मा मुंशीराम जी हों। आप के आसन पर बैठ जाने पर म० रत्नलाल बी. ए. मुन्सिफ ने अपना निबन्ध पढ़ना प्रारम्भ किया। निबन्ध में गुण कर्मानुसार वर्णव्यवस्था का खूब ही प्रमाणों और युक्तियों से पोषण किया गया था। निबन्ध में पं० अखिलानन्द के फैलाये कई भ्रमवादों का भी निरास किया गया था। निबन्धकर्ता का स्वर छोटा था, इस लिए बीच में निबन्ध पढ़ने का भार श्रीयुत ब्रह्मनाथ बी. ए. एल. एल. बी. पर पड़ा। आप ने उच्च स्वर से निबन्ध सुनाया, जो शायद दो घण्टों में समाप्त हुआ। निबन्ध के अनन्तर पं० गंगाप्रसाद एम. ए. ने पं० अखिलानन्द की वर्णव्यवस्था विषयक नई किताब की कई भूलें दिखाईं। आपने भारत धर्म महामण्डल के भूत पूर्व जस्टिस मि० शारदा चरण मित्र की चिट्ठियां सुनाईं, जिन में शूद्रों को वेदाङ्ग और उपाङ्गों का अधिकार बताया गया था। आपके पीछे पक्ष प्रतिपक्ष में कई वक्ता उठे। म० शोकतराय पं० चूड़ामणि जी तथा पं० ब्रह्मानन्द जी ने कर्मानुसार वर्णव्यवस्था मानने पर कई दोष उठाये, जिनके उत्तर में श्री स्वामी अच्युतानन्द जी, श्री स्वामी सर्वदानन्द जी, प्रो० रामदेव जी और पं० शातव लेकर जी आदि ने उत्तम रीति से दिये। अन्तिम उपसंहार करते हुए सभापति महोदय ने वर्णव्यवस्था के आधारभूत गुण कर्मों की अच्छी व्याख्या की। यह बैठक बहुत ही कृतकार्य तथा उत्तम समझी गई। लोगों पर इस का गहरा प्रभाव पड़ा।

गुरुकुल के भावी अधिकारी

रात को ९ बजे से गुरुकुल के पुस्तकालय भवन में आर्य प्रतिनिधि सभा का अधिवेशन हुआ जिसमें लगभग ३ घण्टे के वादविवाद के पीछे निश्चय हुआ कि मई के अन्ततक प्रधान रामकृष्ण जी गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता का कार्य संभाले और प्रो० रामदेव जी स्थिर रूप से गुरुकुल के आचार्य नियत हों।

उत्सव सम्बन्धी सूचनायें

गुरुकुल के चिकित्सक डा० सुखदेव जी सूचना देते हैं कि स्त्रियां और पुरुष भी प्रायः घरों के समीप ही शौच के लिए बैठ जाते हैं। झगड़ियां दिखाने पर भी नहीं हटते। ऐसा होने से बीमारियों का डर है। कृपया सब लोग निर्मल सीमा से दूर ही जाया करें।

आज दोपहर १२ बजे पुस्तकालय भवन में फिर प्रतिनिधि सभा का में अधिवेशन हुआ।

कल प्रातःकाल दीक्षान्तसंस्कार होगा।

आज सायंकाल शिक्षा सम्मेलन में हुए प्रस्तावों में ये दो मुख्य हैं—

१ गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थिरता के लिये आवश्यक है कि उसके लिए आय का स्थिर प्रबन्ध किया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए यह सम्मेलन आर्यप्रतिनिधि सभा की सेवा में निम्नलिखित विचार पेश करता है:

(क) कुछ ऐसे उपदेशक निश्चित किये जाय जो वर्ष भर भ्रमण करके गुरुकुल सहायकों से दस २ रुपये दान निर्धक गुरुकुल की सहायता के लिये लिया करें।

(ख) गुरुकुल सहायक वे लोग बनाये जायं जो प्रति वर्ष दस रुपये गुरुकुल के लिए देने की प्रतिज्ञा करें।

(ग) यत्न किया जाय कि गुरुकुल सहायकों की संख्या दस सहस्र सदा

२—इस सम्मेलन की सम्मति में आवश्यक है कि भिन्न २ गुरुकुलों को स्वर गहरे और प्रेममय बन्धनों में बांधा जाय और एक विस्तृत संगठन में लाया जाय। इस विचार को कार्य में परिणत करने के साधनों पर विचार करने के लिए निम्नलिखित सज्जनों की एक उपसमिति बनाई जाय जो वर्ष इसी सम्मेलन में अपने निश्चय की सूचना दें।

(१) पं० घासीराम जी एम.
(२) म० नारायणप्रसाद जी
(३) डा० श्यामस्वरूप जी
(४) प्रो० रामदेव जी
(५) प्रधान रा कृष्ण जी
(६) पं० इन्द्र जी

६ अप्रैल रात्रि

कुछ भजनों के पश्चात् श्री स्वामी अच्युतानन्द जी महाराज का व्याख्यान हुआ व्याख्यान का विषय वैदिक जी ही था। वेद मन्त्रों के प्रमाणों से सम्मान वक्ता ने श्रोताओं के हृदयों पर के अध्ययन की उपदेशता अंकित की साथ ही उन्हें परस्पर प्रेम विनय आदि विषयों का सदुपदेश दिया देश का श्रोताओं पर प्रभाव हुआ

पुस्तकालयनन्दलाल के प्रबन्ध से गुरुकुल यन्त्रालय कांगड़ी में मुद्रित तथा प्रकाशित।

गुरुकुल काँगड़ी
CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

151137

ARCHIVES DATA BASE
2011 - 12

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri